उर्दू-हिन्दी शब्दकोश

१.३
२

(१३) ग्रं

उर्दू-हिन्दी शब्दकोश

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
पुस्तकालय

विषय संख्या २/ २.३/२
पुस्तक संख्या १२०
आगत पञ्जिका संख्या ३३,४८५
पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कृपया १५ दिन से अधिक समय तक पुस्तक अपने पास न रखें।

यह पुस्तक वितरित न की जाय
NOT TO BE ISSUED

सन्दर्भ ग्रन्थ
REFERENCE BOOK

३३,८५२

Stock Verification-2024

Stock Verification-2024

उर्दू-हिन्दी शब्दकोश

[illegible] 1973
Initial

1.3/2
33485

हिन्दी समिति ग्रन्थमाला—२१

उर्दू-हिन्दी शब्दकोश

(जिसमें अरबी, फारसी, तुर्की के वे तमाम शब्द हैं जो प्राचीन फारसी ग्रन्थों में प्रयुक्त हुए हैं और जिनमें से अधिकतर अब भी प्रचलित हैं।)

संकलनकर्ता

मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ाँ 'मद्दाह'

प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग
उत्तर प्रदेश

प्रथम संस्करण
१९५९

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः
पुस्तक
आगत
ता० 33,482.
गुरुकुल ग्रन्थालय काँगड़ी.

मूल्य
सोलह रुपया

मुद्रक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, वाराणसी

प्रकाशकीय

राष्ट्रभाषा हिन्दी की गौरव-वृद्धि और उसके साहित्य को विविध विषयों की उपयोगी पुस्तकों से समलंकृत करने के लिए उत्तर प्रदेश प्रशासन ने जो योजना बनायी थी, उसका एक लक्ष्य अन्यान्य भाषाओं के बहुमूल्य ग्रन्थों का अनुवाद हिन्दी में प्रकाशित करना भी रहा है। तदनुसार हिन्दी समिति के अभी तक के प्रकाशनों में कितनी ही अनूदित रचनाएँ निकल चुकी हैं तथा और भी कई प्रकाशनार्थ स्वीकृत की जा चुकी हैं। अंग्रेजी, फ्रेन्च, ग्रीक आदि भाषाओं की तरह उर्दू, फ़ारसी तथा अरबी में भी कितने ही ऐसे ग्रन्थ विद्यमान हैं जिनमें इतिहास, दर्शन, ज्योतिष आदि सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण सामग्री भरी पड़ी है। यह उर्दू-हिन्दी शब्दकोश इसी दृष्टि से प्रकाशित किया गया है जिससे उक्त ग्रन्थों को पढ़ने, समझने अथवा हिन्दी में उनका अनुवाद करने की इच्छा रखनेवालों को यथेष्ट सहायता मिल सके।

यह ग्रन्थ हिन्दी समिति ग्रन्थमाला का २१ वाँ पुष्प है। इसके रचयिता (स्वर्गीय) मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ाँ 'मद्दाह' अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, संस्कृत, बंगला आदि भाषाओं के अच्छे जानकार और अनुभवी ग्रन्थकार थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखी हैं जिनमें कई कविता-संग्रह तथा तीन-चार अन्य कोश भी हैं। उनकी तुलना में यह कोश काफी बड़ा है और लेखक ने तीन-चार वर्ष के अनवरत परिश्रम के बाद इसे तैयार किया था। हिन्दी में इस तरह का कोई अच्छा उर्दू-हिन्दी कोश अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ था। जो दो-तीन कोश निकले भी हैं, वे छोटे और अधूरे हैं तथा उनमें उर्दू के लेखकों द्वारा प्रयुक्त अरबी, फ़ारसी, तुर्की आदि के कठिन शब्द प्रायः नहीं मिलते। इसमें उनका विशेष रूप से संग्रह किया गया है और इसे अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की चेष्टा की गयी है। खेद है कि श्रीमद्दाह अपनी कृति का प्रकाशन अपने जीवनकाल में न देख सके।

उर्दू में एक ही उच्चारण के लिए एकाधिक अक्षरों का प्रयोग होता है, जैसे—'त' के लिए ते और तोय, 'स' के लिए से, स्वाद और सीन, तथा 'ज' के लिए ज़े, ज़ेह, ज़ाल, ज़ो आदि, इसीसे मूल शब्दों के साथ, कोष्ठक में, उनकी अक्षरी फ़ारसी लिपि में भी दे दी गयी है, जिससे शुद्ध हिज्जे के सम्बन्ध में किसी तरह का भ्रम या सन्देह न होने पाये। आशा है, उर्दू साहित्य का अध्ययन करनेवाले हिन्दी-प्रेमियों तथा उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करनेवालों और उर्दू-हिन्दी के सामान्य पाठकों के लिए भी यह शब्दकोश यथेष्ट रूप से उपयोगी प्रमाणित होगा।

भगवतीशरण सिंह
सचिव, हिन्दी समिति

प्राक्कथन

कोश लिखने का शौक मुझे पागलपन की हद तक शुरू से ही है। अब से १५-१६ वर्ष पहले इसका श्रीगणेश पाली-उर्दू शब्दकोश से हुआ। इसके पश्चात् हिन्दी-उर्दू, फिर संस्कृत-उर्दू, फिर अरबी, फ़ारसी, तुर्की-उर्दू के बड़े-बड़े कोश लिखे। सन् १९५० में मेरे जेल के साथी आदरणीय श्री नारायणप्रसादजी अरोड़ा ने कहा कि 'उर्दू साहित्य बड़ी तेजी से हिन्दी में लिप्यन्तरित हो रहा है, तुम एक उर्दू-हिन्दी-कोश केवल हिन्दी जाननेवालों के लिए हिन्दी लिपि में लिख दो।' बात अच्छी थी, बहुत पसन्द आयी और मैंने लिखना प्रारम्भ कर दिया। जब मैं उसे काफ़ी लिख चुका तो अचानक ध्यान आया कि यदि किसी समय भारत से उर्दू लिपि खत्म हो गयी तो क्या होगा? भारत का सारा प्राचीन इतिहास फ़ारसी लिपि में है और एक समय उसका अनुवाद होना अनिवार्य है। ऐसी दशा में एक ऐसे कोश की आवश्यकता महसूस होगी, जो इस कठिनाई का समाधान कर सके, और हमें प्राचीन फ़ारसी ग्रन्थों का अनुवाद करने में कोई विशेष परिश्रम न करना पड़े, इसलिए मैंने फिर से अपना काम शुरू किया। अब दृष्टिकोण दूसरा था, इसलिए काम बहुत क्लिष्ट हो गया और एक वर्ष के बजाय उसमें साढ़े तीन साल लग गये।

अब यह पूर्ण रूप से मुकम्मल है और आशा है कि भविष्य में इस पर कुछ विशेष बढ़ाया न जा सकेगा।

अंग्रेजी में संसार की सारी भाषाओं के कोश मिलते हैं, यहाँ तक कि उन भाषाओं के शब्दकोश भी हैं, जो बहुत कम प्रचलित हैं, या बहुत थोड़े क्षेत्र में बोली जाती हैं।

भारत को भी यह सब करना है। यद्यपि अभी उसे स्वतन्त्र हुए बहुत कम समय बीता है, फिर भी उसे यह करना होगा। यदि मेरे जीवन ने कुछ और साथ दिया तो एक तुर्की-हिन्दी, एक आधुनिक अरबी-हिन्दी, एक आधुनिक फ़ारसी-हिन्दी कोश और लिखूँगा। इस समय तो मैं सारा जोर एक हिन्दी-हिन्दी कोश पर दे रहा हूँ, जिसकी बहुत अधिक आवश्यकता है, और वह है प्राचीन हिन्दी-शब्दों का संग्रह और उनका अर्थ जो चन्द्रवरदाई, सूर, जायसी, तुलसीदास, बिहारी और अन्य प्रमुख कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रयुक्त किये हैं, और जिनका कोई मुकम्मल ग्रन्थ नहीं है, यहाँ तक कि 'नागरी प्रचारिणी सभा' के शब्द-सागर में भी उनमें से बहुत-से शब्द नहीं हैं।

मैं अपना यह साहित्यिक परिश्रम माननीय श्री डाक्टर सम्पूर्णानन्दजी की सेवा में उपस्थित करते हुए गर्व महसूस करता हूँ, क्योंकि वह हमारे प्रदेश के मुख्य मन्त्री ही नहीं हैं, बल्कि बड़े साहित्य-मर्मज्ञ, विद्वान् और सहृदय व्यक्ति हैं। मेरी उनसे यह भी प्रार्थना है कि वह ऐसे महत्त्वपूर्ण कामों के लिए भी एक रक़म हर साल बजट में सुरक्षित कर दिया करें।

मुमकिन है, इन कामों को अभी लोग महत्त्व न दें, लेकिन समय आयेगा जब लोग इसकी क़द्र करेंगे। मैंने यह काम उसी समय के लिए किया है।

उच्चारण की शुद्धता

किसी भाषा का सारा महत्त्व उसके शब्दों के शुद्ध उच्चारण में है। यदि उच्चारण अशुद्ध है तो बोलनेवाला कितना ही विद्वान् हो लोग उसे जाहिल समझेंगे। शुद्ध उच्चारण तभी होगा, जब हम शब्द को शुद्ध रूप से लिखेंगे। यदि हम संस्कृत के शब्द 'सम्बद्ध' को 'समबदध' लिख दें, तो यह शब्द मज़ाक बन जायगा। इसी प्रकार यदि हम उर्दू के शब्द 'फुज़्ल:' (विष्ठा) को 'फुजला' (विद्वान् लोग) लिख दें तो कितना बड़ा अन्तर हो जायगा। इस कोश में इस बात पर यथेष्ट ध्यान दिया गया है।

हिन्दी में जो उर्दू के कोश लिखे गये हैं, या हिन्दी शब्दकोशों में जो उर्दू के शब्द दिये गये हैं, उन सबका उच्चारण प्रायः अशुद्ध है क्योंकि उनके लेखकों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है।

शब्द-क्रम

कोश को आधुनिक ढंग से लिखा गया है, और पहले अनुस्वारवाला अक्षर लिया गया है। जैसे—हिन्दी में पहला शब्द 'अंक' है। परन्तु इस कोश में इस सम्बन्ध में शायद कुछ लोग भ्रम में पड़ जायँ कि 'अंकाश्तः' तो अनुस्वार से है, 'परन्तु इन्कार' अनुस्वार से नहीं है। बात यह है कि फारसी में 'ङ' की ध्वनि है, परन्तु अरबी में नहीं है। 'इङ्कार' लिखने से 'इंकार' होता और अरबी के उच्चारण के अनुसार अशुद्ध होता, क्योंकि अरबी में यह शब्द 'इन्कार' है।

शब्दों की उर्दू लिपि

कुछ लोग यह भी सोचेंगे कि हिन्दी में लिखने के पश्चात् शब्द को उर्दू अक्षरों में लिखने की आवश्यकता क्या थी? इसके विषय में प्रार्थना है कि यह विवशतः किया गया है। उर्दू में एक उच्चारण के कई-कई अक्षर हैं जैसे—'स' के लिए तीन (ث-س-ص), ज के लिए छः (ج-ذ-ز-ژ-ض-ظ), और अ, क, ग, त, ह के लिए दो-दो हैं। ऐसी दशा में शब्द के साथ उर्दू हिज्जे लिखना अनिवार्य हो गया।

'असीर' शब्द उर्दू में पाँच प्रकार से लिखा जाता है और सबका अर्थ अलग-अलग है। اسیر बन्दी, क़ैदी; اثیر निष्केवल, ख़ालिस; عسیر दुष्कर, मुश्किल; عصیر अंगूर का शीरा; عثیر धूलि, गर्द। यदि हर शब्द के साथ उर्दू लिपि न हो तो बड़ी कठिनता हो।

उच्चारण-भेद

एक दूसरी बहुत ही आवश्यक और ध्यान में रखनेवाली बात यह है कि संस्कृत में जहाँ एक अक्षर में दूसरा भिन्न अक्षर मिलता है वहाँ प्रायः उस अक्षर का जिसमें दूसरा अक्षर मिला है द्वित्व हो जाता है, मगर फ़ारसी या अरबी के शब्दों में ऐसा कभी नहीं होता। जैसे—'भद्र' का उच्चारण 'भद्द्र होगा, परन्तु अरबी शब्द 'बद्र' का उच्चारण 'बद्‌र' होगा। 'अन्याय' का उच्चारण अन्‌न्याय होगा, परन्तु दुन्या का उच्चारण 'दुन्‌या' होगा। इसी तरह 'पत्री' का उच्चारण 'पत्‌त्री' होगा, परन्तु 'फ़ित्री' का उच्चारण 'फ़ित्‌री' होगा। इन्हीं उदाहरणों पर सारे कोश का अनुमान लगा लीजिए।

एक शब्द के कई उच्चारण

अरवी, फ़ारसी कोश में बहुत-से शब्द ऐसे हैं जिनके कई-कई उच्चारण हैं। इस कोश में उन सबको दे दिया गया है। साथ ही जो शब्द अशुद्ध बोले जाते हैं, वह अशुद्ध शब्द भी दे दिये गये हैं और

वहीं उनके शुद्ध शब्द का हवाला दे दिया गया है। जो शब्द अशुद्ध हैं, परन्तु उर्दू या फ़ारसी में शुद्ध मान लिये गये हैं उनकी व्याख्या भी कर दी गयी है।

एक विवशता

हिन्दी में 'ज' के नीचे बिन्दी देकर 'ज़' बना लिया गया है और उससे ज़े, ज़ाल, ज़्वाद, ज़ो का काम ले लिया गया है, परन्तु 'फ़ारसी ज़े' (के लिए कोई ऐसा चिह्न) न मिल सका जो इसके उच्चारण की पूर्ति कर देता। 'फ़ारसी ज़े' का उच्चारण अंग्रेजी शब्द 'treasury' के 'ज़' की तरह है, पाठकगण उर्दू शब्द देखकर, इसका उच्चारण करें।

अलबत्ता 'ऐन' और 'अलिफ़' का फ़र्क करने के लिए जहाँ 'ऐन' शब्द के बीच में आया है वहाँ (–'–) चिह्न लगाकर उसे प्रकट कर दिया है। जैसे—आ'ला (اعلی), मे'यार, (معیار) मा'क़ूल (معقول) इत्यादि।

मुहम्मद मुस्तफ़ा ख़ाँ 'मद्दाह' (अहमक़)

सङ्केत-तालिका

अ० फा०–अरबी फारसी
अव्य०–अव्यय
इ०–इब्रानी
उ०–उर्दू
उदा०–उदाहरण, जैसे
क्रि०–क्रिया
ती० शु० हैं–तीनों शुद्ध हैं
तु०–तुर्की
तु० फा०–तुर्की फारसी
दे०–देखिए
दो० शु० हैं–दोनों शुद्ध हैं

पुं०–पुंल्लिग
प्रत्य०–प्रत्यय
फा०–फारसी
फा० अ०–फारसी अरबी
फा० तु०–फारसी तुर्की
बहु०–बहुवचन
व्या०–व्याकरण
लघु०–लघु रूप
वा०–वाक्य
वि०–विशेषण
स्त्री०–स्त्रीलिङ्ग

उर्दू-हिन्दी शब्द-कोश

अ

अंकाश्तः (انکاشتہ) फा. वि.–दे. 'अंगाश्तः' जो अधिक शुद्ध है।

अंकिश्त (انکشت) फा. पुं.–कोयला, जली हुई लकड़ी।

अंकुज़ (انکژ) फा. पुं.–हाथीवान का आँकुस, अंकुश।

अंकुस (انکس) फा. पुं.–आँकुस, अंकुश।

अंगल्यून (انگلیون) फा. स्त्री.–इंजील, बाइबिल, ईसाइयों का धार्मिक ग्रंथ।

अंगारः (انگارہ) फा. पुं.–रेखाचित्र, ख़ाका; अधूरा चित्र; हिसाब-किताब का रजिस्टर; उपन्यास, कहानी; लेख, निगारिश; हर अधूरी वस्तु।

अंगार (انگار) फा. प्रत्य.–सोचनेवाला, चाहनेवाला, जैसे 'सह्ल अंगार' सुगमता चाहनेवाला।

अंगाश्तः (انگاشتہ) फा. वि.–जाना हुआ, समझा हुआ, ज्ञात।

अंगाश्तनी (انگاشتنی) फा. वि.–जानने योग्य, समझने योग्य।

अंगिश्त (انگشت) फा. पुं.–दे. 'अंकिश्त' दो. शु. हैं।

अंगुज़ः (انگوزہ) फ़ा. स्त्री.–हींग, एक प्रसिद्ध गोंद।

अंगुज़ (انگز) फा. पुं.–दे. 'अंकुस'।

अंगुलः (انگلہ) फा. पुं.–कुरते आदि का तुक्मः, जिसमें घुंडी डाली जाती है।

अंगुश्त (انگشت) फा. स्त्री.–उँगली, अंगुलि।

अंगुश्तनुमा (انگشت نما) फा. वि.–प्रसिद्ध, मशहूर; कुख्यात, बदनाम। उर्दू में दूसरे अर्थ ही लिये जाते हैं।

अंगुश्तनुमाई (انگشت نمائی) फा. स्त्री.–कुख्याति, बदनामी, अपयश, निंदा।

अंगुश्तपेच (انگشت پیچ) फा. पुं.–वचन, प्रतिज्ञा, अह्द; दस्तावेज़।

अंगुश्त बदंदाँ (انگشت بدندان) फा. वि.–जो अचंभे के कारण दाँतों में उँगली दाबकर रह गया हो, निस्तब्ध, चकित।

अंगुश्तरी (انگشتری) फा. स्त्री.–मुद्रिका, अँगूठी।

अंगुश्तानः (انگشتانہ) फा. पुं.–उँगली की रक्षा के लिए उस पर पहना जानेवाला धातु आदि का ख़ोल, अंगुलित्राण।

अंगुश्ते ज़िन्हार (انگشت زنہار) फा. वि.–पराजित, वशीभूत, मग़्लूब।

अंगुश्ते नर (انگشت نر) फा. पुं.–अँगूठा, अंगुष्ठ।

अंगुश्तो (انگشتو) फा. पुं.–घी और शक्कर डालकर चूर की हुई रोटी, मलीदा, चूरमा।

अंगूर (انگور) फा. पुं.–एक सुप्रसिद्ध फल, द्राक्षा; भरते हुए ज़ख़्म के लाल दाने।

अंगूरी (انگوری) फा. वि.–अंगूर के रंग की (वस्तु); अंगूर से बनी हुई; अंगूर से संबंध रखनेवाली (वस्तु)। लाक्षणिक अर्थ में अंगूर-निर्मित (मदिरा) भी।

अंगेख़्तः (انگیختہ) फा. वि.–उठाया हुआ, उत्थापित; उभारा हुआ, उत्तेजित।

अंगेख़्तनी (انگیختنی) फा. वि.–उठाने योग्य; उभारने योग्य।

अंगेज़ः (انگیزہ) फा. पुं.–कारण, सबब।

अंगेज़ (انگیز) फा. प्रत्य.–उठानेवाला, उभारनेवाला, जैसे 'दर्द-अंगेज़' दर्द उठाने अर्थात् उत्पन्न करनेवाला, पीडाजनक।

अंगेज़िंदः (انگیزندہ) फा. वि.–उठानेवाला; उभारनेवाला; उत्तेजित करनेवाला।

अंगेज़ीदः (انگیزیدہ) फा. वि.–उठाया हुआ; उभारा हुआ; तेज़ किया हुआ।

अंगेज़ीदनी (انگیزیدنی) फा. वि.–उठाने योग्य; उभारने योग्य; तेज़ करने योग्य।

अंगोज़ः (انگوزہ) फा. स्त्री.–दे. 'अंगुज़ः'; शुद्ध उच्चारण वही है, परन्तु यह भी बोलते हैं।

अंग्बीं (انگبیں) फा. पुं.–मधु, शहद।

अंज़ (عنز) अ. स्त्री.–बकरी, अजा; हरिणी।

अंजब (انجب) अ. वि.–बहुत अधिक शुद्ध रक्तवाला, कुलीनतम; दासीपुत्र, लौंडी-बच्चा।

अंजल (انجل) अ. वि.–बड़ी आँखोंवाला, विशालनेत्र।

अंजस (انجس) अ. वि.–बहुत अधिक अपवित्र, बहुत ही गंदा।

अंज़ा' (انزع) अ. वि.–जिसके माथे के दोनों ओर के बाल झड़ गये हों।

अंजाम (انجام) फा. पुं.–परिणाम, फल, नतीजा; अन्त, अख़ीर; पूर्ति, तक्मील।

अंजामिंदः (انجامنده) फा. वि.–अंजाम पानेवाला, पूर्ण होनेवाला; समाप्त होनेवाला, ख़त्म होनेवाला।

अंजामीदः (انجامیده) फा. वि.–अंजाम पाया हुआ, पूरित; समाप्त, ख़त्मशुदः।

अंज़ार (انظار) अ. स्त्री.–'नज़र' का बहु., दृष्टियाँ, नज़रें।

अंजास (انجاس) अ. स्त्री.–'नजिस' का बहु., अपवित्रताएँ, गंदगियाँ।

अंजीदः (انجیده) फा. वि.–क्षत, आहत, ज़ख़्मी, घायल; अभिभूत।

अंजीर (انجیر) अ. पुं.–दे. शु. उच्चारण 'इंजीर'।

अंजुदान (انجدان) अ. पुं.–हींग का पेड़; हींग की लकड़ी जो दवा के काम आती है।

अंजुम (انجم) अ. पुं.–'नज्म' का बहु., उडुगण, तारे।

अंजुमन (انجمن) फा. स्त्री.–सभा, संस्था, इदारः; गोष्ठी, महफ़िल; समिति, कमेटी; संघ, एसोसिएशन।

अंजुमनआरा (انجمن آرا) फा. वि.–सभा की शोभा बढ़ानेवाला (वाली), सभा में अपनी उपस्थिति से श्रीवृद्धिकर्त्ता, सभा में उपस्थित, जैसे–"वह अंजुमनआरा हैं महफ़िल में रक़ीबों की", सभा में सुशोभित।

अंजुमन आराई (انجمن آرائی) फा. स्त्री.–सभा की शोभा बढ़ाना, सभा में उपस्थिति।

अंतर (عنتر) अ. पुं.–एक प्रकार की बड़ी मक्खी, ख़रमगस।

अंद (اند) फा. वि.–अल्प, न्यून, थोड़ा; कतिपय, चंद।

अंदक (اندک) फा. वि.–अल्प, न्यून, कम, थोड़ा।

अंदर (اندر) फा. वि.–भीतर, अंतर्गत।

अंदरूँ (اندروں) फा. पुं.–'अंदरून' का लघु. दे. 'अंदरून'।

अंदरून (اندرون) फा. पुं.–भीतर, अंदर; जठर, पेट।

अंदरूनी (اندرونی) फा. वि.–आंतरिक, भीतरी; मानसिक, रूही।

अंदर्ज़ (اندرز) फा. स्त्री.–हितोपदेश, नसीहत।

अंदर्वा (اندروا) फा. वि.–लटका हुआ; अधोमुख, औंधा; उद्विग्न, परेशान; चकित, हैरान, क्षुब्ध।

अंदल (عندل) अ. वि.–बड़े डीलडौल का ऊँट; सर्व का लंबा पेड़।

अंदलीब (عندلیب) अ. स्त्री.–एक प्रसिद्ध गानेवाली चिड़िया, बुलबुल, कलविकक, गोवत्सक।

अंदलुस (اندلس) अ. पुं.–यूरोप का एक राष्ट्र, स्पेन।

अंदाइश (اندائش) अ. स्त्री.–दीवार पर किया जानेवाला लेस, लेपन, कहगिल।

अंदाख़्तः (انداخته) फा. वि.–फेंका हुआ; डाला हुआ।

अंदाख़्तनी (انداختنی) फा. वि.–फेंकने योग्य; डालने योग्य।

अंदाज़ः (اندازه) फा. पुं.–अनुमान, अनुमिति, तख़्मीना; अटकल, क़ियास; विचार, ख़याल; शक्ति, ताक़त; साहस, जुर्रत; नमूना, बानगी; चिह्न, निशान; निश्चय, इरादा।

अंदाज़ (انداز) फा. पुं.–अनुमान, अंदाज़; अटकल, क़ियास; शैली, पद्धति, तर्ज़; हावभाव, नाज़ो अंदाज़ा, (प्रत्य.) फेंकनेवाला, जैसे 'तीर अंदाज़' तीर चलानेवाला। "तीरंदाज़" भी प्रयुक्त, जैसे––"तिर्छी नज़रों से न देखो आशिक़े दिलगीर को, कैसे 'तीरंदाज़' हो, सीधा तो कर लो तीर को"।

अंदाज़न (اندازاً) फा. वि.–अनुमानतः, अंदाज़े से; अटकल से, क़ियासन; लगभग, क़रीब-क़रीब।

अंदाम (اندام) फा. पुं.–शरीर, देह, जिस्म।

अंदामी (اندامی) फा. पुं.–वह सुन्दर वस्त्र जो शरीर पर बिलकुल ठीक हो।

अंदामे निहानी (اندام نهانی) फा. स्त्री.–स्त्री की गुह्येन्द्रिय, योनि, भग, फ़ुर्ज़, वराङ्ग, स्त्री का गुप्तांग।

अंदायः (اندایه) फा. पुं.–दीवारों पर लेस करने की करनी, गिल मालः।

अंदार (اندار). फा. पुं.–कहानी, आख्यायिका, क़िस्सा।

अंदीक (اندیک) फा. अव्य.–आशा है, उम्मेद है।

अंदीदः (اندیده) फा. वि.–चकित, स्तब्ध, हैरान।

अंदीदनी (اندیدنی) फा. वि.–अचंभे के योग्य।

अंदुर्ज़ (اندرز) फा. स्त्री.–दे. 'अंदर्ज़' दो. शु. हैं।

अंदुहाँ (اندهاں) फा. वि.–दुःखित, खेदग्रस्त, ग़मगीन।

अंदूदः (اندوده) फा. वि.–लेपा हुआ, पोता हुआ; मढ़ा हुआ, चढ़ाया हुआ।

अंदेशः (اندیشه) फा. पुं.–शंका, शुब्हा; भय, ख़तरा; चिंता, फ़िक्र।

अंदेशःनाक (اندیشه ناک) फा. वि.–चिन्ताजनक, तश्वीशनाक; भयानक, ख़तरनाक।

अंदेश (اندیش) फा. प्रत्य.–सोचनेवाला जैसे 'बदअंदेश' बुराई सोचनेवाला। अभिलाषी, 'ख़ैर-अंदेश'=शुभाभिलाषी।

अंदेशिंदः (اندیشنده) फा. वि.–सोचनेवाला, विचारनेवाला।

अंदेशीदः (اندیشیده) फा. वि.–सोचा हुआ, विचारा हुआ।

अंदेशीदनी (اندیشیدنی) फा. वि.–सोचने योग्य, शोचनीय।

अंदोख़्तः (اندوختہ) फा. वि.–कमाया हुआ, उपार्जित; जमा किया हुआ, संचित; धन, संपत्ति।

अंदोख़्तनी (اندوختنی) फा. वि.–कमाने योग्य; जमा करने योग्य।

अंदोह (اندوہ) फा. पुं.–क्लेश, दुःख, कष्ट, रंज।

अंदोहगीं (اندوہگیں) फा. वि.–दुःखित, शोकान्वित, रंजीदा।

अंदोहनाक (اندوہناک) फा. वि.–शोकपूर्ण, रंज में डूबी हुई बात, शोकान्वित, विषादपूर्ण।

अंद्जान (اندجان) फा. पुं.–तूरान का एक नगर।

अंबः (انبہ) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध फल, आम्र, आम, रसाल।

अंबज (انبج) अं. पुं.–दे. 'अंबः'।

अंबर (عنبر) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध बहुमूल्य सुगंधित पदार्थ, जो मछली के मुख से द्रवित होता एवं दवा में काम आता है।

अंबरचः (عنبرچہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'अंबरीनः'।

अंबरबारीस (انبرباریس) अ. स्त्री.–एक खट्टा फल जो दवा में चलता है, ज़िरिश्क।

अंबरबेज़ (عنبربیز) अ. फा. वि.–अंबर जैसी सुगंध फैलानेवाला; अंबर छिड़कनेवाला।

अंबरबेज़ी (عنبربیزی) अ. फा. स्त्री.–अंबर छिड़कना, अंबर की सुगंध फैलाना।

अंबरागीं (عنبرآگیں) अ. फा.–वि. दे. 'अंबरीं'।

अंबरीं (عنبریں) अ. फा. वि.–जिसमें अंबर जैसी सुगंध हो; जो अंबर की सुगंध में बसा हो; जिसमें अंबर मिला हो।

अंबरीनः (عنبرینہ) अ. फा. स्त्री.–स्त्रियों की गले में पहनने की धुकधुकी।

अंबरेसारा (عنبرسارا) अ. फा. पुं.–वह अंबर जो बिलकुल बेमेल हो, विशुद्ध अम्बर। हृदयशक्तिवर्धक औषध-द्रव्य।

अंबह (انبہ) अ. वि.–बहुत अधिक सूचना देनेवाला; बहुत अधिक चेतावनी देनेवाला।

अंबाग़ (انباغ) अ. स्त्री.–सौत, एक पुरुष की दो स्त्रियों में से कोई एक जो दूसरी की सौत होती है।

अंबाज़ (انباز) फा. वि.–भागीदार, साझेदार, शरीक, पार्टनर।

अंबाज़ (انباز) अ. पुं.–'नबज़' का बहु. उपाधियाँ, अल्क़ाब।

अंबानः (انبانہ) फा. पुं.–मश्क जैसा एक चमड़े का पात्र जिसमें नाज भरा जाता है।

अंबान (انبان) फा. पुं.–कमाया हुआ चमड़ा, क्रूम; फ़क़ीर की चमड़े की झोली; छोटी मश्क, मश्कीज़ः।

अंबानेनिफ़्त (انبان نفط) फा. अ. पुं.–चमड़े का कुप्पा, जिसमें बारूद अथवा मिट्टी का तेल भरकर शत्रु की सेना पर फेंकते थे।

अंबानेबाद (انبان باد) फा. पुं.–लोहार की चमड़े की धौंकनी।

अंबार (انبار) अ. पुं.–ढेर, राशि, टाल।

अंबारख़ानः (انبارخانہ) अ. फा. पुं.–वह गोदाम जहाँ माल का स्टाक रहता है, मालगोदाम।

अंबुरः (انبرہ) तु. पुं.–सड़सी, जिससे लोहार गर्म लोहा पकड़ते हैं।

अंबुर (انبر) तु. पुं.–दे. 'अंबुरः'।

अंबुह (انبہ) फा. पुं.–'अंबोह' का लघु. दे. 'अंबोह'।

अंबूबः (انبوبہ) अ. पुं.–दे. शु. उच्चारण 'उंबूबः'।

अंबोह (انبوہ) फा. पुं.–समुदाय, समूह, भीड़, जमाव, हुजूम।

अंसफ़ (انصف) फा. वि.–बहुत अधिक न्याय करनेवाला।

अंसब (انسب) अ. वि.–बहुत मुनासिब, अत्युचित।

अंसाब (انساب) अ. पुं.–'नसब' का बहु., वंशावलियाँ, नसबनामे।

अंसाब (انصاب) अ. पुं.–'नसब' का बहु. आपत्तियाँ, दुःख-समूह, मुसीबतें; मूर्तियाँ जो पूजी जाती हैं।

अंसार (انصار) अ. पुं.–'नस्र' का बहु., सहायता करनेवाले, सहायकगण; मदीने के वह लोग जिन्होंने हज़रत मुहम्मद साहब को और उनके साथियों को अपने घरों में ठहराया था और उनकी सहायता की थी।

अंसारी (انصاری) अ. वि.–अरब की अंसार जमाअत का व्यक्ति; अंसार का वंशज; आधुनिक समय में जुलाहों की उपाधि।

अआज़िम (اعاظم) अ. पुं.–'आ'ज़म' का बहु., बड़े-बड़े लोग।

अआजिम (اعاجم) अ. पुं.–'आ'जम' का बहु., गूँगे लोग।

अआदी (اعادی) अ. पुं.–'अदू' का बहु. शत्रुगण, दुश्मन लोग।

अआली (اعالی) अ. पुं.–'आ'ला' का बहु., ऊँचे और प्रतिष्ठित लोग।

अइज़्ज़ः (اعزہ) अ. पुं.–'अज़ीज़' का बहु., वंशवाले, नातेदार।

अइन्नः (اعنہ) अ. पुं.–'इनान' का बहु., घोड़ों की लगामें।

अइफ़्फ़ः (اعفا) अ. पुं.–अफ़ीफ़ का बहु., इन्द्रियनिग्रही लोग, वे लोग जो पराई स्त्री की ओर आँख न उठाएँ।

अइम्मः (ائمہ) अ. पुं.–'इमाम' का बहु., किसी कलाविशेष के आचार्य लोग।

अइम्मः (اعمہ) अ. पुं.–'अम' का बहु., चचा लोग।

अकक (عکک) अ. पुं.–उमस, तौंस; गर्मी, ग्रीष्म।

अक़द (عقد) अ. पुं.–बात करने में ज़बान का लड़खड़ाना; रस्सी में गाँठ पड़ना।

अकद (عکد) अ. पुं.–मोटा होना, स्थूल होना, चरबी चढ़ना।

अक़बः (عقبہ) अ. पुं.–कड़ा रास्ता; कठिनता से पहुँचने वाला स्थान; जटिल समस्या।

अक़ब (عقب) अ. पुं.–परोक्ष, पीठ पीछे; पश्चात्, बाद।

अकब (عکب) अ. पुं.–होंठ या चिबुक का मोटापा।

अकर (عکر) अ. पुं.–तेल की गाद; शराब की तलछट; हौज़ के पानी की गाद।

अक़ल [ल्ल] (اقل) अ. वि.–बहुत थोड़ा, अत्यल्प।

अक़ल्लीयत (اقلیت) अ. स्त्री.–किसी देश की वह जनता जो दूसरी जनता की अपेक्षा कम हो, अल्पसंख्यक।

अक़स (عقص) अ. पुं.–कृपण होना; दुःशील होना।

अकस (عکص) अ. पुं.–पशु का चंचल, शरीर और बुरे स्वभाव का (जैसे कटखना) होना।

अक़ाइद (عقائد) अ. पुं.–'अक़ीदः' का बहु., अक़ीदे, धर्म विश्वास।

अक़ाक़ (عقاق) अ. पुं.–पेट का बोझ, गर्भ; पीठ का बोझ, गट्ठर।

अक़ाक़ीर (عقاقیر) अ. स्त्री.–'अक़्क़ार' का बहु., जंगली जड़ी-बूटियाँ, वनस्पतियाँ।

अकाज़ीब (اکاذیب) अ. पुं.–'किज़्ब' का बहु., झूठी और सारहीन बातें।

अक़ानीम (اقانیم) अ. पुं.–'उक़्नूम' का बहु., ईसाई धर्मग्रंथ।

अक़ानीमे सलासः (اقانیم ثلاثہ) अ. पुं.–ईसाई धर्मग्रंथ की तीन महत्त्वपूर्ण पुस्तकें।

अकाबिर (اکابر) अ. पुं.–'अकबर' का बहु., प्रतिष्ठित जन, बड़े लोग।

अक़ारिब (اقارب) अ. पुं.–'अक़्रब' का बहु., समीपवाले; रिश्तेदार, स्वजन।

अक़ारिब (عقارب) अ. पुं.–'अ'क़्रब' का बहु., बहुत-से बिच्छू।

अकारिम (اکارم) अ. पुं.–'अक्रम' का बहु., पूज्य व्यक्ति, श्रेष्ठ जन।

अक़ालीम (اقالیم) अ. पुं.–इक़्लीम का बहु., बहुत से देश, बहुत से महाद्वीप।

अकासिरः (اکاسرہ) अ. पुं.–'किस्रा' का बहु., 'किस्रा' उपाधि रखनेवाले सम्राट्।

अक़ासी (اقاصی) अ. वि.–'अक़्सा' का बहु., दूरवाले।

अक़िब (عقب) अ. पुं.–एड़ी; बेटा, पुत्र; पोता, बेटे का बेटा।

अकिलः (اکلہ) अ. पुं.–एक बहुत ही ख़राब फोड़ा, जिसे 'आकिलः' भी कहते हैं।

अक़ीक़ः (عقیقہ) अ. पुं.–मुसलमान बच्चों का मुंडन और नामकरण संस्कार जिसमें बकरी की कुर्बानी होती है।

अक़ीक़ (عقیق) अ. पुं.–एक बहुमूल्य पत्थर जो कई रंग का होता है। नज़र बचाने के लिए माताएँ इसे बच्चों के गले में पहनाती हैं। दिल धड़कने की बीमारी में पहनने से लाभ होता है।––"अक़ीक़े-सुर्ख़ की तख़्ती है लख़्ते-दिल मेरा, गले में डाल लो इसको नज़र-गुज़र के लिए।"

अक़ीदः (عقیدہ) अ. पुं.–धर्म, मत, मश्रब; श्रद्धा, ऐतिक़ाद; विश्वास, यक़ीन।

अकीद (اکید) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत, पुख़्तः।

अक़ीदत (عقیدت) अ. स्त्री.–श्रद्धा, आस्था, एतिकाद; भरोसा, एतबार, निष्ठा।

अक़ीदत केश (عقیدت کیش) अ. फा. वि.–श्रद्धावान्, श्रद्धालु, मो'तक़िद।

अक़ीदतमंद (عقیدت مند) अ. फा. वि.–दे. 'अक़ीदत केश'।

अक़ीदत शिआर (عقیدت شعار) अ. वि.–दे. 'अक़ीदत केश'।

अक़ीदत संज (عقیدت سنج) अ. फा. वि. दे.–'अक़ीदत केश'।

अक़ीब (عقیب) अ. वि.–पीछे आनेवाला, पीछे चलनेवाला, अनुगामी, अनुकर्ता, पैरो, अनुयायी।

अक़ीमः (عقیمہ) अ. स्त्री.–बाँझ, बंध्या, जिस स्त्री के सन्तान न होती हो।

अक़ीम (عقیم) अ. पुं.–बाँझ पुरुष, जिस पुरुष के वीर्य में संतान उत्पन्न करने के कीटाणु न हों, क्लीव, नपुंसक।

अक़ीर (عقیر) अ. वि.–निराश, नाउम्मेद; बाँझ, बंध्या।

अकीलः (اکیلہ) अ. स्त्री.–खाने की चीज़, खाद्य पदार्थ।

अक़ीलः (عقیلہ) अ. वि.–अपनी जाति का नेता; हर अच्छी चीज़; श्रेष्ठतम, बरगुज़ीदः, (स्त्री.) पर्दानशीन स्त्री; बुद्धिमती, आक़िलः।

अक़ील (عقیل) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; ऊँट के पाँव बाँधने की रस्सी।

अकील (اکیل) अ. वि.–साथ खानेवाला, हमकासः, सहभोजी।

अक़ूबत (عقوبت) अ. स्त्री.–यातना, पीड़ा, तकलीफ़; पाप, यातना, अज़ाब।

अक़ूर (عقور) अ. वि.–जिसे कुत्ते ने काट लिया हो, श्वानदंशित।

अकूल (اکول) अ. वि.–बहुत खानेवाला, बहुभक्षी।

अक़्अक़ (عقعق) अ. पुं.–एक प्रकार का कौआ, जो बहुत तेज़ उड़ता है।

अक्कः (عکہ) अ. पुं.–दे. 'अक़्अक़' ।

अक़्क़ार (عقّار) अ. पुं.–वनस्पति, जंगली जड़ी-बूटी ।

अक्कार (اکار) अ. पुं.–कृषक, किसान; कूपकार, कुआँ खोदनेवाला ।

अक्कालः (اکالہ) अ. वि.–बहुत ही अधिक खानेवाला, बहुत बड़ा पेटू, अतिभोजी, अमिताहारी ।

अक्काल (اکال) अ. वि.–बहुत खानेवाला, बहुभक्षी ।

अक्कास (عکاس) अ. वि.–छापाकार, फोटोग्राफ़र; चित्रकार, अक्स उतारनेवाला ।

अक्कासी (عکاسی) अ. स्त्री.–छापाकर्म, फ़ोटोग्राफ़ी; चित्रकारी, अक्स उतारना; प्रतिलिपि, नक़्ल, नक़ल ।

अक़्चः (اقچہ) तु. पुं.–सोने-चाँदी का छोटा टुकड़ा ।

अक्ज़ब (اکذب) अ. वि.–बहुत बड़ा झूठा; बहुत बड़ा पापी ।

अक़्ज़ा (اقضی) अँ. वि.–बहुत बड़ा हुक्म देनेवाला; बहुत बड़ा काम करनेवाला ।

अक़्ज़ियः (اقضیہ) अ. पुं.–'क़ज़ा' का बहु., आज्ञाएँ, हुक्म ।

अक़्ता' (اقطع) अ. वि.–जिसके हाथ कटे हों ।

अक़्ताअ (اقطاع) अ. पुं.–'क़त्अ' का बहु., जागीरें, परगने; प्रदेश, इलाक़े ।

अक़्ताब (اقطاب) अ. पुं.–'क़ुत्ब' का बहु., बड़े-बड़े महात्मा और बली ।

अक़्तार (اقطار) अ. पुं.–'क़त्र:' का बहु., बूँदें; 'क़ुत्र' का बहु., किनारे ।

अक़्तार (اقتار) अ. पुं.–'क़ुत्र' अथवा 'क़ुतुर' का बहु., किनारे; शिकारियों की ठाहें ।

अक़्द (عقد) अ. पुं.–विवाह, पाणिग्रहण, ब्याह; ग्रंथि, गाँठ; वचन, प्रतिज्ञा, अह्द, निकाह ।

अक्दर (اکدر) अ. वि.–बहुत गँदला, बहुत मैला ।

अक़्दस (اقدس) अ. वि.–बहुत पवित्र, बहुत पाक; बहुत प्रतिष्ठित, बहुत बुज़ुर्ग; बहुत कल्याणकारी ।

अक़्दह (اقدح) अ. वि.–बहुत ख़राब, निकृष्टतम; बहुत अधिक व्यंग और कटाक्ष करनेवाला; बहुत दूषित ।

अक़्दाम (اقدام) अ. पुं.–क़दम का बहु., बहुत से पाँव, चरण-समूह ।

अक़्दाह (اقداح) अ. पुं.–'क़दह' का बहु. पियाले ।

अक़्दे अनामिल (عقد انامل) अ. पुं.–उँगलियों पर हिसाब लगाने की एक विधि ।

अक़्दे नमकीं (عقد نمکیں) अ. फा. पुं.–'मुताअ' शीयों की वह विवाह-पद्धति, जो थोड़े समय के लिए होती है ।

अक़्दे रवाँ (عقد رواں) अ. फा. पुं.–दे. 'अक़्दे नमकीं' ।

अक़्दे सानी (عقد ثانی) अ. पुं.–दूसरा ब्याह, पुनर्विवाह ।

अक्नान (اکنان) अ. पुं.–'किन' का बहु. पर्दे, आड़ें ।

अक्नाफ़ (اکناف) अ. पुं.–'कन्फ़' का बहु., किनारे, छोर; दिशाएँ, सिम्तें; त्राण-स्थान, पनाहगाहें ।

अक्नूँ (اکنوں) फा. अव्य०–दृढ़; इस समय ।

अक्फ़र (اکفر) अ. वि.–बहुत बड़ा काफ़िर, बहुत बड़ा नास्तिक, बहुत बड़ा विधर्मी ।

अक्फ़ा (اکفا) अ. पुं.–'कुफ़्व' का बहु., बहुत से गोत्र, बहुत से ख़ानदान ।

अक्फ़ा (اکفی) अ. वि.–बहुत काफ़ी, बहुत पर्याप्त ।

अक़्फ़ाल (اقفال) अ. पुं.–'क़ुफ़ुल' का बहु., ताले ।

अक़्ब (عقب) अ. वि.–किसी के पीछे आना, अनुगमन, अनुसरण ।

अक्बर (اکبر) अ. वि.–महान्, अज़ीम; सबसे बड़ा, (पुं.) एक सुप्रसिद्ध मुग़ल सम्राट् ।

अक़्बल (اقبل) अ. वि.–बहुत क़ाबिल, बड़ा विद्वान्; भेंगा, जिसे एक की दो चीज़ें दिखाई देती हों ।

अक़्बह (اقبح) अ. वि.–निकृष्टतम, बहुत ख़राब ।

अक्बाद (اکباد) अ. पुं.–'कबिद' का बहु., जिगर ।

अक्मल (اکمل) अ. वि.–बहुत कामिल, पूर्णतम, सर्वाङ्ग-पूर्ण ।

अक्माम (اکمام) अ. पुं.–आस्तीनें; बीजों के ऊपर के ग़िलाफ़ ।

अक़्मिशः (اقمشہ) अ. पुं.–'क़ुमाश' का बहु., कपड़े, वस्त्र-समूह ।

अक़्याल (اقیال) अ. पुं.–प्रतिष्ठित जन, बड़े लोग; पूज्य व्यक्ति, बुज़ुर्ग लोग ।

अक्याल (اکیال) अ. पुं.–'कैल' का बहु., नाज आदि नापने के पैमाने ।

अक़्र (عقر) अ. पुं.–बाँझपन, अनपत्य दोष ।

अक़्रअ (اقرع) अ. वि.–गंजा, खल्वाट ।

अक़्रब (اقرب) अ. वि.–बहुत करीब, समीपतम, अति निकट ।

अक़्रब (عقرب) अ. पुं.–बिच्छू, वृश्चिक, अलि; वृश्चिक राशि, बुर्जे अक़्रब ।

अक़्रबी (عقربی) अ. वि.–बिच्छू से संबंध रखनेवाला, (पुं.) पद्मराग अर्थात् लाल का एक प्रकार, मणि विशेष, बदख़शाँ के लाल सुप्रसिद्ध हैं ।

अक्रम (اکرم) अ. वि.–अति दानी, वदान्य, बहुत बड़ा सखी; अति प्रतिष्ठित, बड़ा बुज़ुर्ग ।

अक़्राद (اقراد) अ. पुं.–'क़िरद:' का बहु., बंदरों की टोली, बहुत-से बंदर ।

अक़्रान (اقران) अ. पुं.–'क़र्न' का बहु., युग-समूह, लंबे ज़माने।

अक्राम (اکرام) अ. पुं.–'करम' का बहु., कृपाएँ, दयाएँ; दान, बख्शिशें।

अक़्रास (اقراص) अ. पुं.–'क़ुर्स' का बहु., रोटियाँ; टिकियाँ, चपटी आकार की बटी, टेब्लेट।

अक़्रिबा (اقربا) अ. पुं.–'क़रीब' का बहु., स्वजनगण, अज़ीज़ो अक़ारिब।

अक्ल (اکل) अ. पुं.–खाना, भोजन करना।

अक़्ल (عقل) अ. पुं.–बुद्धि, धी, प्रज्ञा, मेधा, सूझ-बूझ; चतुरता, होशयारी; विवेक, तमीज़।

अक़्लमंद (عقلمند) अ. फा. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, तेज़ अक़्ल वाला।

अक़्लमंदी (عقل مندی) अ. फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, अक़्ल वाला होना।

अक़्ले कुल (عقل کل) अ. पुं.–जिब्रील फ़िरिश्तः (व्यंग) घामड़, मूर्ख, लाल बुझक्कड़।

अक़्ले सलीम (عقل سلیم) अ. स्त्री.–ऐसी बुद्धि जिसका निश्चय सदा ही ठीक और शांत रहता हो, सत्यनिश्चयी बुद्धि, सद्बुद्धि, संतुलित बुद्धि।

अक़्वः (عقوہ) अ. पुं.–मैदान, खुला हुआ क्षेत्र; आँगन, अजिर।

अक़्वा (اقوی) अ. वि.–सबसे बलवान्, पराक्रमी, महाबली, बड़ा ज़ोरावर।

अक़्वात (اقوات) अ. पुं.–'क़ूत' का बहु., ख़ुराकें।

अक्वाब (اکواب) अ. पुं.–बिना टोंटी और पेंदे के लोटे, लुटियाँ, गड़ुवे, (व्यंगार्थ–चंचल प्रकृति वाला, अस्थिर-बुद्धि)।

अक़्वाम (اقوام) अ. पुं.–'क़ौम' का बहु., क़ौमें, बिरादरियाँ; राष्ट्रसमूह, सल्तनतें; जातियाँ, जातें।

अक़्वाल (اقوال) अ. पुं.–'क़ौल' का बहु., किसी बड़े व्यक्ति या धर्माचार्य के कहे हुए प्रवचन।

अक़्वास (اقواس) अ. पुं.–'क़ौस' का बहु., धनुषें, कमानें।

अक़्विय: (اقویاء) अ. पुं.–'क़वी' का बहु., ज़ोरदार लोग, बलीजन, बलवान् व्यक्ति।

अक्स (عکس) अ. पुं.–प्रतिबिंब, साया; चित्र, तसवीर; प्रत्युत, विपरीत, बरअक्स।

अक्सर (اکثر) अ. वि.–बहुधा, प्रायः, उमूमन।

अक़्सर (اقصر) अ. वि.–बहुत छोटा, ह्रस्वतम, अल्पतम, लघुतम।

अक्सरीयत (اکثریت) अ. स्त्री.–किसी देश की वह जनता जो दूसरी जनता की अपेक्षा अधिक हो, बहुसंख्यक।

अक्सरेज़ (عکس ریز) अ. फा. पुं.–एक्सरे।

अक़्सा (اقصی) अ. वि.–बहुत दूर; दूरवर्ती; अंत को पहुँचा हुआ।

अक़्सा (اقصا) अ. पुं.–कतारें, छोर; दूरियाँ।

अक़्साम (اقسام) अ. पुं.–'क़िस्म' का बहु., क़िस्में, प्रकार; 'क़सम' का बहु. शपथें, सौगंधें।

अक़्सिमः (اقسمہ) अ. पुं.–'क़िस्म' का बहु., क़िस्में, प्रकार।

अक़्सियः (اقسیہ) अ. पुं.–'क़ियास' का बहु., अटकलें, अंदाज़े।

अक्सोतर्द (عکس وطرد) अ. पुं.–एक काव्यालंकार जिसमें आधे मिस्रे में जो शब्द लाये जाते हैं, बाक़ी आधे मिस्रे में उन्हीं को उलट दिया जाता है।

अक्हल (اکحل) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी पलकें निकलने का स्थान काला हो; जिसकी आँखें अंजनसार हों।

अख़ (اخ) अ. पुं.–भ्राता, भाई।

अख़अख़ (اخ اخ) फा. अव्य.–वाह वाह, ख़ूब ख़ूब; उफ़ उफ़, हा हा।

अख़फ़ [फ़्फ़] (اخف) अ. वि.–बहुत हलका, लघुतम।

अख़वात (اخوات) अ. स्त्री.–'उख़्त' का बहु., बहिनें।

अख़स [स्स] (اخص) वि.–बहुत ही ख़ास, मुख्यतम।

अख़स [स्स] (اخس) वि.–बहुत ही ख़सीस, अति कृपण, मक्खीचूस।

अख़स्सुल ख़सीस (اخس الخسیس) अ. वि.–सारे कृपणों में सबसे अधिक कृपण, धनपिशाच।

अख़स्सुल ख़ास (اخص الخاص) अ. वि.–सबसे अधिक मुख्य, जो मुख्य हैं उन सब में मुख्य, मुख्यतम।

अख़िल्ला (اخلا) अ. पुं.–'ख़लील' का बहु., मित्रगण, दोस्त लोग, यार, सुहृद्‌जन।

अख़िस्सा (اخسا) अ. पुं.–'ख़सीस' का बहु., कृपणगण, कंजूस लोग।

अख़ी (اخی) अ. अव्य.–मेरा भाई; हे भाई।

अख़ीर (اخیر) अ. पुं.–अंत, इख़्तिताम; छोर, किनारा; मरण-काल, मौत का समय। (वि.) समाप्त, ख़त्म।

अख़ुंद (اخوند) फा.–शिक्षक, उस्ताद।

अख्गर (اخگر) फा. पुं.–स्फुलिंग, अग्निकण, पतंगा, चिनगारी–"सुन अय ! जुनूने-इश्क़ ! तुझे इसमें क्या मिला ? 'अख्ग़र' सा तहे-ख़ाक जलाया किया मुझे।"

अख्चः (اخچہ) तु. पुं.–सोने या चाँदी का कण या टुकड़ा, दे. 'अक्चः'।

अख़्ज़ (اخذ) अ. पुं.–ग्रहण, आदान, लेना; प्राप्ति, हुसूल, लब्धि।

अख़्ज़म (اخزم) अ. पुं.–नर साँप।

अख़्ज़र (اخضر) अ. वि.–गहरे हरे रंग का, हरा रँगा हुआ।

अख़्ज़रीयत (اخضریت) अ. स्त्री.–हरापन।

अख़्तःख़ानः (اختہخانہ) फा. पुं.–तबेला, अश्वशाला।

अख़्तब (اخطب) अ. वि.–बहुत बड़ा वक्ता, भाषण-पटु।

अख़्तर (اختر) फा. पुं.–तारा, सितारा, उडु; भाग्य, प्रारब्ध, क़िस्मत।

अख़्तरशनास (اخترشناس) फा. वि.–ज्योतिषी, नजूमी।

अख़्तरशुमारी (اخترشماری) फा. स्त्री.–तारे गिनना, तारे गिन-गिनकर रात काटना, बेचैनी में रात काटना, जैसे–"अल्ला रे! शबे-हिज्र की अख़्तर-शुमारियाँ!!"

अख़्तरे जौज़ा (اخترجوزا) फा. अ. पुं.–बुध ग्रह, उतारिद।

अख़्तान (اختان) अ. पुं.–'ख़तन' का बहु., दामाद लोग।

अख़्दान (اخدان) अ. पुं.–'ख़िद्न' का बहु., मित्र लोग; प्रेमपात्र लोग।

अख़्फ़श (اخفش) अ. वि.–जिसकी आँखें निर्बल हों; जो चुंधा हो।

अख़्बस (اخبث) अ. वि.–बहुत ही ख़बीस, अत्यंत दुष्ट, बहुत बड़ा पापी।

अख़्बार (اخبار) अ. पुं.–'ख़बर' का बहु., ख़बरें, समाचार-पत्र।

अख़्बार नवीस (اخبار نویس) अ. फा. वि.–पत्रकार, अख़्बार का एडीटर।

अख़्बारी (اخباری) अ. वि.–अख़्बार से सम्बन्धित; अख़्बार का।

अख़्मः (اخمہ) अ. पुं.–झुर्री, शिकन, बल।

अख़्म (اخم) अ. पुं.–माथे की शिकन, ललाट बल; भौं की शिकन, अब्रू का बल।

अख़्मस (اخمص) अ. पुं.–तलवे का वह भाग जो भूमि से नहीं लगता।

अख़्मिरः (اخمرہ) अ. पुं.–'ख़िमार' का बहु., ओढ़नियाँ; चादरें।

अख़्याफ़ी (اخیافی) अ. वि.–वह भाई बहन, जिनके बाप अलग-अलग और माँ एक हो।

अख़्यार (اخیار) अ. पुं.–'ख़ैर' का बहु., पुण्य-समूह, यश-समूह, भलाइयाँ, नेकियाँ।

अख़्रब (اخرب) अ. वि.–निर्जन, वीरान; उर्दू छंदशास्त्र में 'मफ़ाईलुन्' में से 'म' और 'न' गिराकर 'फ़ाईल्' करके 'मफ़्ऊल्' बनाना।

अख़्रम (اخرم) अ. वि.–जिसकी नाक कटी हो; उर्दू छंदशास्त्र में 'मफ़ाइलुन्' में से 'म' गिराकर 'फ़ाईलुन्' करके 'मफ़्ऊलुन्' बनाना।

अख़्रस (اخرس) अ. वि.–गूँगा, जो न बोल सके न सुन सके।

अख़्लकंद् (اخل کند) फा. पुं.–झुनझुना, बच्चों को खिलाने का झुनझुना।

अख़्लाक़ (اخلاق) अ. पुं.–'ख़ुल्क़ का बहु., परन्तु उर्दू में एक-वचन के अर्थ में प्रयुक्त है, शिष्टाचार, ख़ुशख़ुल्की।

अख़्लाक़ी (اخلاقی) अ. वि.–अख़्लाक़ सम्बन्धी, शिष्टाचार-सम्बन्धी।

अख़्लाक़े आलियः (اخلاق عالیہ) अ. पुं.–सत्त्व गुण, अच्छे अख़्लाक़, उच्च कोटि का शिष्टाचार।

अख़्लाक़े ज़मीमः (اخلاق ذمیمہ) अ. पुं.–दे. 'अख़्लाके रदीयः।'

अख़्लाक़े रदीयः (اخلاق ردیہ) अ. पुं.–तमोगुण, बुरे अख़्लाक़।

अख़्लात (اخلاط) अ. पुं.–ख़िल्त का बहु., धातुएँ, वात, पित्त, कफ और रक़्त।

अख़्लाफ़ (اخلاف) अ. पुं.–'ख़लफ़' का बहु., लड़के, लड़के पोते आदि।

अख़्वाल (اخوال) अ. पुं.–'ख़ाल' का बहु., ख़ालू, बहनोई, मौसा; झंडे, ध्वजाएँ।

अख़्शम (اخشم) अ. वि.–जिसे सुगंध और दुर्गंध का अनुभव न हो।

अख़्सम (اخصم) अ. वि.–लंबी नाकवाला।

अगर (اگر) फा. अव्य.–यदि, जो।

अगरचे (اگرچہ) फा. अव्य.–यद्यपि, गोकि।

अग़ाइद (اغائد) अ. पुं.–'अग़ीद' का बहु., अत्यंत कोमल और मृदुल अंगों वाली स्त्रियाँ, तन्वङ्गी, कृशाङ्गी, कोमलाङ्गी।

अग़ानिम (اغانم) अ. पुं.–'ग़नम' का बहु., भेड़-बकरियाँ।

अग़ानी (اغانی) अ. पुं.–'उग़्नियः' का बहु., वह बाजे जो फूँककर न बजाये जायँ, जैसे सितार, मृदंग आदि।

अग़्ज़ियः (اغذیہ) अ. स्त्री.–'ग़िज़ा' का बहु., ग़िज़ाएँ, खाद्य पदार्थ।

अग़्नाम (اغنام) अ. पुं.–'ग़नम' का बहु., भेड़-बकरियाँ।

अग़्निया (اغنیا) अ. पुं.–ग़नी का बहु., धनाढ्य लोग।

अग़्फ़र (اغفر) अ. वि.–बड़ा छिपानेवाला।

अग़्बर (اغبر) अ. वि.–धूसर, मटीला, ख़ाकी रंगवाला।

अग़्यार (اغیار) अ. पुं.–'ग़ैर' का बहु., अस्वजन, ग़ैर लोग, प्रतिद्वंद्वी जन, रक़ीब लोग।

अग़्रब (اغرب) अ. वि.–आश्चर्यजनक, बहुत अजीब, अद्‌भुत, विलक्षण।

अग़्राज़ (اغراض) अ. पुं.–'ग़रज़' का बहु., इच्छाएँ, ख़्वाहिशें, अभिप्राय, मक़ासिद, स्वार्थ-समूह, ख़ुदग़रज़ियाँ।

अग़लत (اغلط) अ. वि.- बहुत अशुद्ध, बहुत गलत; अत्यंत झूठ, बिलकुल मिथ्या।

अग़लब (اغلب) अ. वि.–निश्चय, यक़ीनी।

अग़लबन (اغلباً) अ. वि.–यक़ीनी तौर पर, करीब-करीब, अवश्य ही।

अग़लाज़े ऐमान (اغلاظِ ایمان) अ. पुं.–बुरी-बुरी क़समें।

अग़लात (اغلاط) अ. पुं.–'ग़लत' का बहु., अशुद्धियाँ, ग़लतियाँ; त्रुटियाँ, भूलें।

अग़लाल (اغلال) अ. पुं.–'ग़िल' का बहु., अपराधियों के गले में डाले जाने वाले तौक़; बहते हुए पानी।

अग़सान (اغصان) अ. पुं.–'ग़ुस्न' का बहु., छोटी फैली शाखाएँ, डालियाँ।

अचार (اچار) फा. पुं.–प्रसिद्ध खटास, खटाई।

अच्ची (اچی) तु. पुं.–बड़ा भाई, अग्रज।

अज़ंग (ازنگ) फा. पुं.–झुर्री, बल, शिकन, खाल की झुर्री।

अज़ [ज़्ज़] (عض) अ. पुं.–दाँतों से काटना।

अज़ [ज़्ज़] (غظ) अ. पुं.–ज़मीन से चिपकना।

अज़ (از) फा. अव्य.–से।

अज़ [ज़्ज़] (عز) अ. पुं.–प्रभुत्व स्थापित करना, ग़्लबः करना; ज़ोर की वर्षा, तेज़ बारिश।

अज़ अव्वल ता आख़िर (از اول تا آخر) फा. वि.–आदि से अंत तक, शुरू से अख़ीर तक, आद्योपांत; नितांत, बिलकुल।

अज़कार रफ़्तः (ازکار رفتہ) फा. वि.–काम से गया बीता, अपाहज; नपुंसक, क़्लीव, नामर्द; बेकार, व्यर्थ, निकम्मा।

अज़ ख़ुद (از خود) फा. अव्य.–स्वयम्, आप से; आप ही आप, स्वतः, ख़ुद ब ख़ुद।

अज़ख़ुद रफ़्तः (از خود رفتہ) फा. वि.–संज्ञाहीन, निश्चेष्ट, बेसुध, बेख़बर, बेख़ुद।

अजफ़ (عجف) अ. स्त्री.–दुर्बलता, कमज़ोरी; दुबलापन, लाग़री, कृशता, तनुता।

अजब (عجب) अ. वि.–विचित्र, अद्‌भुत, अनोखा; आश्चर्य, अचंभा।

अज़ब (عزب) अ. पुं.–वह पुरुष जो स्त्री न रखता हो।

अजबतर (عجب تر) अ. वि.–बहुत ही विचित्र, निहायत अजीब।

अज़बर (از بر) फा. वि.–वह चीज़ जो ज़बानी याद हो, कंठ, कंठस्थ, मुखाग्र, बरज़बाँ।

अज़बस (از بس) फा. अव्य.–अत्यंत, अधिक; बहुत, चूँकि।

अजम (اجم) अ. पुं.–'अज्मः' का बहु., जंगलात, बीहड़; एक प्रकार का खाना खाने से घबरा जाना, शाम का एक स्थान।

अजम (عجم) अ. पुं.–'अरब' के अतिरिक्त बाक़ी संसार, ईरान और तूरान; दाना; धान्य, (वि.) मूक, गूँगा, जो बोल न सके।

अज़मत (عظمت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा; बुज़ुर्गी, बड़ाई; आदर, सम्मान, इज़्ज़त, यह शब्द उर्दू में 'अज़्मत' है, दे. 'अज़्मत'।

अजमी (عجمی) अ. वि.–जो अरबी न हो; ईरानी, ईरान-निवासी।

अज़ रुए इंसाफ़ (از روے انصاف) फा. अव्य.–न्यायतः, न्याय के अनुसार, इंसाफ़ से।

अजल (اجل) अ. स्त्री.–मृत्यु, मरण, मौत; समय, काल, वक़्त।

अजल [ल्ल] (اجل) अ. वि.–श्रेष्ठतम, बहुत ही मुअज़्ज़ज़।

अज़ल [ल्ल] (اذل) अ. वि.–अति नीच, अधमतर, बहुत ही कमीना।

अज़ल (عضل) अ. पुं.–'अज़्लः' का बहु., पट्ठे, स्नायु-समूह।

अज़ल [ल्ल] (ازل) अ. पुं.–जिसकी जंघाएँ और नितंब दुबले-पतले हों।

अज़ल (ازل) अ. वि.–वह समय जिसकी शुरूआत न हो, अनादि काल, वह समय जब सृष्टि की रचना हुई––"दिल, अज़ल से है, कोई आज से शैदाई है?"

अजल गिरिफ़्तः (اجل گرفتہ) अ. फा. वि.–जो मौत के मुँह में हो, मरणासन्न।

अजल रसीदः (اجل رسیدہ) अ. फा. वि.–जिसकी मौत आ गयी हो, मृतप्राय।

अज़ली (ازلی) अ. वि.–अनादि काल से संबद्ध; अनादि कालवाला; सृष्टि की रचना के समय का।

अज़ सर ता पा (از سر تا پا) फा. वि.–सिर से पाँव तक, आपादमस्तक; सर्वथा, नितांत, बिलकुल, नख से शिख तक, पूर्णतः।

अज़ सरे दस्त (از سر دست) फा. वि.–शीघ्र, तुरंत, ज़ल्द; सहसा, निःसंकोच, बेतअम्मुल; चुस्त, स्फूर्तियुक्त, फुर्तीला।

अज़ सरे नौ (از سر نو) फा. वि.–नये सिरे से, फिर से, पुनः।

अज़हद (ازحد) फा. अ. वि.–असीम, अपार, बेहद; अत्यधिक, बहुत ज़्यादा।

अज़ाँ (ازاں) फा. अव्य.–उससे।

अज़ाँ (اذاں) अ. स्त्री.–'अज़ान' का लघु., दे. 'अज़ान'।

अज़ाँजुम्लः (ازاں جملہ) अ. फा. अव्य.–उन सबमें से, उनमें से।

अज़ांपेश (ازاں پیش) फा. वि.–उससे पहले, तत्पूर्व।

अज़ाँबाज़ (ازاں باز) फा. वि.–उस समय से, उस वक़्त से।

अज़ाँबाद (ازاں بعد) अ. फा. वि.–उसके बाद, उसके पश्चात्, तत्पश्चात्।

अज़ाँसू (ازاں سو) फा. वि.–उस ओर से, उधर से।

अज़ा (اذی) अ. स्त्री.–कष्ट, दुःख, अज़ीयत, यातना।

अज़ा (عزا) अ. पुं.–मृत्युशोक, मातम, दैवी आपत्ति पर धैर्य और उस पर दृढ़ता।

अजाइज़ (عجائز) अ. पुं.–'अजूज़' का बहु., बूढ़ी स्त्रियाँ।

अज़ाइफ़ (اضائف) अ. पुं.–'ज़ैफ़' का बहु., मेहमान लोग, अतिथिगण।

अजाइब (عجائب) अ. पुं.–'अजीब' का बहु., विचित्रताएँ, अजीब बातें।

अजाइब ख़ानः (عجائب خانہ) अ. फा. पुं.–कौतुकालय, विचित्रालय, अद्‌भुतालय, अजायबघर।

अजाइबात (عجائبات) अ. पुं.–'अजाइब' का बहु., चूँकि 'अजाइब' स्वयं बहुवचन है इसलिए इसका बहु. अशुद्ध है, परन्तु उर्दू में प्रचलित है।

अज़ाइम (عزائم) अ. पुं.–'अज़ीमत' का बहु., वे मंत्र और पाठ जो भूत, प्रेत आदि को वश में करने या रोकने के लिए पढ़े जाते हैं; बीमार के अच्छा होने के लिए पढ़ी जाने वाली दुआएँ।

अज़ाख़ानः (عزاخانہ) अ. फा. पुं.–शोकगृह, मातमख़ाना, जहाँ कोई मर गया हो और उसका शोक मनाया जा रहा हो।

अजाज (عجاج) अ. पुं.–धूल-मिट्टी, गर्द-ग़ुबार।

अज़ाज़ील (عزازیل) अ. पुं.–शैतान का नाम, जब वह फ़िरिश्ता था।

अज़ादार (عزادار) अ. फा. वि.–जो किसी के मरने का शोक कर रहा हो, मातमदार; मुहर्रम में इमाम हुसैन का मातम मनानेवाला।

अज़ादारी (عزاداری) अ. फा. स्त्री.–मृत्यु-शोक-काल; इमाम हुसैन का मातम मनाना; ता'ज़ियादारी।

अज़ान (اذان) अ. स्त्री.–नमाज़ का बुलावा; नमाज़ की सूचना के शब्द जो ज़ोर से पुकारे जाते हैं।

अजानिब (اجانب) अ. पुं.–'अज्नबी' का बहु., अपरिचित लोग, बेगाने; अस्वजन, ग़ैर।

अज़ाब (عذاب) अ. पुं.–पापों का वह दंड जो यमलोक में मिलता है; पापकष्ट; यातना, पीड़ा, दुःख, तकलीफ़।

अज़ाबुल क़ब्र (عذاب القبر) अ. पुं.–क़ब्र के भीतर का अज़ाब, जो मुसलमानों के मतानुसार 'मुन्कर नकीर' दो फ़िरिश्तों द्वारा होता है।

अज़ाबुलहून (عذاب الهون) अ. पुं.–तिरस्कृत और अपमानित करने की यातना।

अज़ाहीफ़ (ازاحیف) अ. पुं.–'अज़्हाफ़' का बहु., जो 'ज़िहाफ़' का बहु. है, उर्दू छंदों के गणों के परिवर्तन।

अज़ाहीर (ازاهیر) अ. पुं.–'अज़्हार' का बहु., जो 'ज़हरः', 'ज़ुहरः' और 'ज़ुहः' का बहु. है, कलियाँ, बिन खिले फूल, शगूफ़े।

अजिज़ (عجز) अ. स्त्री.–श्रोण, नितंब, चूतड़, दे. 'अजुज़', दोनों शुद्ध हैं।

अजिन्नः (اجنہ) अ. पुं.–'जनीन' का बहु., वे बच्चे जो माँ के पेट में हों, भ्रूणसमूह।

अजिफ़ (عجف) अ. वि.–दुबला, लाग़र, कमज़ोर, कृशकाय।

अज़िमः (ازمہ) अ. पुं.–दुर्भिक्ष का कष्ट, क़ह्त की सख़्ती और तकलीफ़।

अज़िम्मः (ازمہ) अ. पुं.–'ज़िमाम' का बहु., लगामें।

अजिल्लः (اجلہ) अ. पुं.–'जलील' का बहु., बड़े लोग, प्रतिष्ठित जन।

अज़िल्लः (اذلہ) अ. पुं.–'ज़लील' का बहु. अधम लोग, निकृष्ट लोग, कमीने लोग, नीच जन।

अज़ीं (ازیں) फा. अव्य.–इससे।

अज़ींसमर (ازیں سمر) फा. अ. अव्य.–इस कारण से, इस सबब से।

अजीज़ (عجیز) अ. वि.–नामर्द, नपुंसक, क्लीब।

अज़ीज़ (عزیز) अ. वि.–स्वजन, रिश्तेदार, प्रिय, प्यारा; रुचिकर, मर्ग़ूब; अप्राप्य, कामयाब; मिस्र के प्राचीन बादशाहों की उपाधि।—"मिलने से भी अज़ीज़ है मिलने की आर्ज़ू, है वस्ल से ज़ियादः मज़ा इंतज़ार में॥"—(प्रिय के अर्थ में)

अज़ीज़ तरीन (عزیز ترین) अ. फा. वि.–बहुत ही प्यारा, अज़ीज़; बहुत अधिक पसंद, प्रियतम।

अजीन (عجین) अ. वि.–गुँधा हुआ, सना हुआ; ख़मीर।

अजीब (عجیب) अ. वि.–विचित्र, आश्चर्यजनक; अनुपम, अद्वितीय, बेमिस्ल; अनोखा, निराला।

अजीब तर (عجیب تر) अ. फा. वि.–बहुत ही विचित्र; बहुत ही अनुपम; बहुत ही निराला, अति अद्‌भुत।

अजीबुलख़िल्क़त (عجیب الخلقت) अ. वि.–जिसकी आकृति और बनावट विचित्र हो, विकटमूर्ति; जो प्राकृतिक रूप से विरुद्ध हो, अप्राकृतिक।

अजीबो ग़रीब (عجیب وغریب) अ. वि.–जिसमें बहुत-सी बातें ऐसी हों जो दूसरों में न हों, बहुत ही विचित्र।

अज़ीम (عظیم) अ. वि.–महान्, बहुत बड़ा; विशाल, विस्तृत।

अज़ीमत (عزیمت) अ. स्त्री.–संकल्प, निश्चय, इरादा; तंत्र-मंत्र, अभिचार, जादू-टोना, भूतों को बुलाने और उन्हें बंद करने आदि के लिए मंत्र आदि का उच्चारण।

अज़ीमत ख़्वाँ (عزیمت خواں) अ. फा. वि.–वह व्यक्ति जो अभिचार और जादू से भूत-प्रेतों को बुलाये।

अज़ीमुलजुस्सः (عظیم الجثہ) अ. वि.–बहुत बड़े डील-डौल का, गिरांडील, महाकाय।

अज़ीमुश्शान (عظیم الشان) अ. वि.–बहुत बड़ा, महान्, विशाल; महामान्य, बड़े मर्तबेवाला।

अज़ीयत (اذیت) अ. स्त्री.–कष्ट, यातना, तकलीफ।

अज़ीयत देह (اذیت دیہ) अ. फा. वि.–कष्टदायी, दुःखदायी, तकलीफ़ देनेवाला।

अज़ीयत रसाँ (اذیت رساں) अ. फा. वि.–दे. ‘अज़ीयत देह।

अजीर (اجیر) अ. वि.–श्रमिक, मज़दूर।

अजीर (عجیر) अ. वि.–क़्लीब, नपुंसक, नामर्द।

अजील (عجیل) अ. वि.–फुर्तीला, चुस्त, जल्दबाज़, आतुर।

अजुज़ (عجز) अ. पुं.–श्रोण, नितंब, कटिदेश, सुर्रान।

अज़ुद (عضد) अ. पुं.–भुजा, बाहु, बाज़ू।

अजूज़ः (عجوزہ) अ. स्त्री.–दे. ‘अजूज़’।

अजूज़ (عجوز) अ. स्त्री.–बूढ़ी स्त्री, वृद्धा; वह वृद्धा नारी जिसमें काम-वासना का आधिक्य हो।

अजूबः (عجوبہ) अ. वि.–अनोखी चीज़, दे. ‘उजूबः’ शुद्ध वही है, परंतु उर्दूवाले दोनों प्रकार से बोलते हैं।

अज़ूबत (عزوبت) अ. स्त्री.–मधुरता, मिठास, रसीलापन; पानी का स्वादिष्ठ होना।

अजूल (عجول) अ. वि.–बहुत शीघ्रता करनेवाला; स्तब्ध, चकित, हैरान; वह ऊँटनी जिसका बच्चा खो गया हो।

अज़ेरा (ازیرا) फा. अव्य.–‘ज़ेरा’ का बृहत् रूप, इसलिए, इस कारण; किसलिए, क्यों।

अज़्अफ़ (اضعف) अ. वि.–बहुत ज़ईफ़, बहुत कमज़ोर, अति निर्बल।

अज़्आफ़ (اضعاف) अ. पुं.–‘ज़ेफ़’ का बहु., दूने, दोगुने।

अज़्का (اذکی) अ. वि.–बहुत ही प्रतिभाशाली, बहुत ही ज़हीन, कुशाग्रबुद्धि, मेधावी।

अज़्का (ازکی) अ. वि.–बहुत ही पवित्र, बहुत ही पाक।

अज़्कार (اذکار) अ. पुं.–ज़िक्र का बहु., चर्चाएँ, तज़्किरे; जप-तप, वज़ीफ़े आदि।

अज़्किया (اذکیا) अ. पुं.–ज़की का बहुवचन, कुशाग्र बुद्धिवाले, प्रतिभाशाली लोग।

अज़्किया (ازکیا) अ. पुं.–‘ज़की’ का बहु., अति पवित्र लोग; पुण्यात्मा लोग, बुज़ुर्ग लोग।

अज़्ख़र (اذخر) अ. वि.–बहुत ही तीव्र गंधवाला, तेज़बू।

अज़्ग़ास (اضغاث) अ. पुं.–घास के मुट्ठे जिसमें सूखी गीली घास मिली हो, अस्त-व्यस्त वस्तु।

अज़्ग़ासे अह्लाम (اضغاث احلام) अ. पुं.–ऐसे स्वप्न जिनका स्वप्न-फल ठीक न बताया जा सके, परीशान-ख़्वाब।

अज़्ज़ः (عز) अ. पुं.–प्रभुत्व, ग़लबा।

अज़्ज़ः वजल्लः (عزوجل) अ. वि.–जो गालिब और महान हो, ईश्वर के नाम के साथ बोलते हैं।

अज्ज़म (اجزم) अ. वि.–जिसके हाथ कटे हों।

अज्ज़ाए तर्कीबी (اجزاے ترکیبی) अ. पुं.–वे मूल धातुएँ जिनसे मिलकर कोई पदार्थ बना हो, संयोजक पदार्थ, उपादान तत्त्व।

अज्ज़ा (اجزا) अ. पुं.–‘जुज़’ का बहु., टुकड़े, खंड, किसी पदार्थ की मूल धातुएँ अथवा वस्तुएँ, किसी नुस्ख़े की दवाएँ।

अज़्दः (ازدہ) फा. पुं.–असमानता, नाहमवारी; रेती का खुरदरापन।

अज़्द (عضد) अ. पुं.–एक राजा की दूसरे राजा की सहायता; सहायता, मदद।

अज्दअ (اجدع) अ. वि.–जिसकी नाक या जिसके कान कटे हों।

अज़्दर (ازدر) फा. पुं.–अजगर, अज़्दहा, बहुत बड़ा साँप।

अज़्दरदहाँ (ازدردہاں) फा. वि.–जिसका मुँह अजगर जैसा हो, जिसके मुँह में जाकर कोई ज़िंदा न बचे, जो आग बरसाता हो।

अज़्दरहा (ازدرہا) फा.–अज़्दहा, अजगर, यह शब्द एकवचन है।

अज्दल (اجدل) अ. पुं.–एक शिकारी चिड़िया, चर्ग़।

अज़्दहा (ازدہا) फा. पुं.–अज़्दर, अजगर।

अज्दाद (اجداد) अ. पुं.–‘जद’ का बहु. पूर्वज, बाप-दादे, पुराने लोग, पुरखे।

अज़्दाद (اضداد) अ. पुं.–‘ज़िद’ का बहु., परस्पर विरोधी चीजें।

अज्न (عجن) अ. पुं.–गूँधना; ख़मीर करना।

अज्नब (اجنب) अ. वि.–दे. ‘अज्नबी’।

अज्नबी (اجنبی) अ. वि.–अपरिचित, अनजान; अस्वजन, ग़ैर।

अज्नाद (اجناد) अ. पुं.–‘जुंद’ का बहु., सेनाएँ, फ़ौजें।

अज़्नाब (ازناب) अ. पुं.–‘ज़नब’ का बहु., पूँछें, दुमें।

अज्नास (اجناس) अ. स्त्री.–‘जिंस’ का बहु., जिंसें, ग़ल्ले, अनाज; क़िस्म, प्रकार; चीज़, असबाब, सामान।

अज्निहः (اجنحہ) अ. पुं.–'जनाह' का बहु., पक्ष, पर।

अज्फ़ (عجف) अ. पुं.–स्वयं भूखा रहकर अपना खाना दूसरे भूखे को खिलाना; विपत्ति में धैर्य रखना।

अज़्फ़र (اذفر) अ. वि.–तीव्र सुगंध वाला, तेज़ बू वाला।

अज़्फ़र (اظفر) अ. वि.–बड़े-बड़े नखोंवाला।

अज्फ़ान (اجفان) अ. पुं.–'जफ़्न' का बहु., पपोटे; पलकें।

अज़्ब (عذب) अ. पुं.–मधुर, मीठा; स्वादिष्ठ, मज़ेदार, मीठा पानी।

अज़्ब (عضب) अ. पुं.–काटना, विच्छेदन; खड्ग, तलवार।

अज़्बीयत (عضبیت) अ. स्त्री.–ज़बान की तेज़ी, बोलने की शक्ति, भाषण-पटुता।

अज़्बुल लिसान (عذب السان) अ. वि.–जिसकी बातों में रसीलापन हो, मधुरभाषी।

अज़्बुल बयान (عذب البیان) अ. वि.–दे. 'अज़्बुल लिसान'।

अज़्म (عزم) अ. पु.–संकल्प, निश्चय, इरादा; दृढ़ निश्चय, तहीदः; इच्छा, ख़्वाहिश।

अज्म (عجم) अ. पुं.–अक्षर पर बिंदी रखना।

अज़्म (عظم) अ. पुं.–हड्डी, अस्थि; श्रेष्ठता, पुनीतता, बुज़ुर्गी।

अज्मईन (اجمعین) अ. वि.–सब, सारे, तमाम, संपूर्ण।

अज़्मत (عظمت) अ. स्त्री.–माहात्म्य, महिमा, बुज़ुर्गी; महत्त्व, अहमीयत; सम्मान, आदर, इज़्ज़त।

अज़्मबिल ज़ज़्म (عزم بالجزم) अ. पुं.–दृढ़ संकल्प, दृढ़ निश्चय, पक्का इरादा।

अज्मल (اجمل) अ. वि.–बहुत अधिक रूपवान्, सुंदरतम।

अज्मा (عجما) अ. पुं.–गूँगा, मूक।

अज़्मात (عزمات) अ. पुं.–'अज़्म' का फारसी बहु., इरादे, निश्चय।

अज़्मान (ازمان) अ. पुं.–'ज़मन' का बहु., ज़माने, युग।

अज़्मिनः (ازمنہ) अ. पुं.–'ज़मानः' का बहु., काल-समूह, ज़माने।

अज़्यक़ (اضیق) अ. वि.–बहुत अधिक संकुचित और तंग।

अज्यद (اجید) अ. वि.–बहुत ही उत्तम, बहुत ही उम्दा।

अज़्या' (اضیع) अ. वि.–बहुत अधिक नष्ट करनेवाला, बहुत 'ज़ाये' करनेवाला, हिन्दी में 'ज़ाया' (नष्ट, बर्बाद) बहुत प्रचलित है।

अज़्याफ़ (اضیاف) अ. पुं.–'ज़ैफ़' का बहु., मेहमान लोग, आगंतुक जन।

अज़्याल (اذیال) अ. पुं.–'ज़ैल' का बहु., दामन, बहुत से दामन।

अज्र (اجر) अ. पुं.–प्रत्युपकार, भलाई का बदला, सत्कर्म-फल, सवाब।

अज़्रक़ (ازرق) अ. वि.–नीला, नीले रंग का।

अज्रब (اجرب) अ. वि.–जिसे खाज का रोग हो।

अज़्रा (عزرا) अ. स्त्री.–अविवाहिता, कुमारी; सुंदर गालों वाली; प्रकट, व्यक्त, कन्या राशि, बुर्जे संबुलः; अरब की एक सुंदरी जो 'वामिक़' की प्रेमिका थी।

अज़्राब (اضراب) अ. पुं.–'ज़र्ब' का बहु., क़िस्में, प्रकार; सदृश, समान, अम्साल।

अज्राम (اجرام) अ. पुं.–'जिर्म' का बहु., पिण्डसमूह, यह शब्द आकाशीय पदार्थों अथवा बहुमूल्य रत्नों के लिए प्रयुक्त है।

अज़्रार (اضرار) अ. पुं.–'ज़रर' का बहु., हानियाँ, नुक़्सानात।

अज़्लः (عضلہ) अ. पुं.–पुट्ठा, स्नायु, नस।

अज़्ल (عضل) अ. पुं.–विधवा को दूसरा विवाह करने से रोकना।

अज़्ल (عزل) अ. पुं.–पदच्युत करना, मा'ज़ूल करना; पदच्युति, मा'ज़ूली; बेकारी, निठल्लापन, मुअत्तली।

अज्ल (اجل) अ. पुं.–उत्तेजित होना, उभरना।

अज्ला (اجلا) अ. वि.–बहुत ही चमकदार, बहुत ही साफ़।

अज़्लाअ (اضلاع) अ. पुं.–'ज़िल्अ' का बहु., ज़िले, मंडल; पसलियाँ; भुजाएँ, रेखाएँ।

अज्लाफ़ (اجلاف) अ. पुं.–'जिल्फ़' का बहु., कमीने लोग, नीच लोग।

अज़्लाम (اظلام) अ. पुं.–'ज़ुल्मत' का बहु., अँधेरे, अंधकार-समूह।

अज़्लोनस्ब (عزل؛نصب) अ. पुं.–किसी को पद से हटाना और किसी को उसके स्थान पर नियुक्त करना।

अज़्व (عزو) अ. पुं.–एक वस्तु को दूसरी वस्तु से सम्बन्धित करना; विपत्ति में धैर्य रखना।

अज्वफ़ (اجوف) अ. वि.–जो बीच से खाली हो, सुषिर, खोखला; वह अरबी शब्द जिसके बीच का अक्षर 'अलिफ़', 'वाव' या 'ये' हो।

अज़्वाज (ازواج) अ. स्त्री.–'ज़ौज' का बहु., पत्नियाँ, स्त्रियाँ, भार्याएँ।

अज्विबः (اجوبہ) अ. पुं.–'जवाब' का बहु., जवाबात, उत्तर।

अज्साद (اجساد) अ. पुं.–'जसद' का बहु., देहें, शरीर।

अज्साम (اجسام) अ. पुं.–'जिस्म' का बहु., देहें, शरीर।

अज्सुर (اجسر) अ. पुं.–'जस्र' का बहु., बहुत से पुल।

अज्हर (اجہر) अ. वि.–जिसे दिन में न दिखाई देता हो, दिनांध, रोज़कोर।

अज़्हर (ازہر) अ. वि.–यश और कीर्ति से मुख की उज्ज्वलता; बहुत अधिक प्रकाशमान्, रौशनतर; मिस्र का प्राचीन विश्वविद्यालय, 'जामिअए अज़्हर'।

अज़्हर (اظہر) अ. वि.–बहुत अधिक स्पष्ट, बहुत ही साफ़।

अज़्हर मिनश्शम्स (اظہر من الشمس) अ. वि.–सूर्य से अधिक स्पष्ट और उज्ज्वल, सर्वविदित, सबको ज़ाहिर।

अज्हल (اجہل) अ. वि.–बहुत अधिक जाहिल, मूर्खतम।

अज़्हा (اضحى) अ. स्त्री.–क़ुर्बानी, बलि।

अज़्हान (اذہان) अ. पुं.–'ज़ेहन' का बहु., प्रतिभाएँ, ज़ेहन।

अतगः (اتکہ) तु. पुं.–दायः का पति, दूध पिलानेवाली धाय का पति।

अतन (عطن) अ. पुं.–ऊँटों के पानी पीने का स्थान।

अतबः (عتبہ) अ. पुं.–चौखट, देहलीज़; देहलीज़ की लकड़ी या पत्थर; कष्ट, सख़्ती; रमल की एक आकृति।

अत्तब (عتب) अ. पुं.–तर्जनी और मध्यमा या मध्यमा और अनामिका उँगलियों के बीच का अंतर।

अतब (عطب) अ. पुं.–मरण, हलाकत, वध।

अतम [म्म] (اتم) अ. वि.–बिलकुल पूरा, मुकम्मल, सर्वांग-पूर्ण, संपूर्ण।

अतल (عطل) अ. स्त्री.–बिना शृंगार की हुई स्त्री; बिना बिंदीवाला अक्षर।

अतश (عطش) अ. स्त्री.–प्यास, पिपासा, तश्नगी।

अता (آتا) तु. पुं.–पितृ, पिता, जनक, बाप।

अता (عطا) अ. स्त्री.–दान, प्रदान, बख़्शिश; पुरस्कार, अतीय; दिया हुआ, दत्त।

अताई (عطائی) अ. वि.–जिसने कोई कला या गुण नियम-पूर्वक गुरु से न सीखा हो, वरन् यों ही सुन-सुनाकर या देख-भालकर या किसी अनाड़ी के पास रहकर थोड़ा-बहुत उलटा-सीधा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

अताक़ (عتاق) अ. पुं.–दास का अपने स्वामी के बंधनों से मुक्त होना।

अतान (آتان) अ. स्त्री.–गधी, गर्दभी, गधे की मादा।

अताबुक (اتابک) तु. पुं.–गुरु, उस्ताद, सरदार।

अताया (عطایا) अ. पुं.–'अतीयः' का बहु., बख़्शिशें।

अतालियः (اطالیہ) अ. पुं.–इटली, यूरोप का एक प्रसिद्ध राष्ट्र।

अतालीक़ (اتالیق) तु. पुं.–शिक्षक, उस्ताद; शिक्षा के साथ साथ शिष्टता, सभ्यता और व्यवहार-निष्ठता आदि सिखानेवाला और चाल-चलन की देख-रेख करनेवाला गुरु।

अतिब्बा (اطبا) अ. पुं.–'तबीब' का बहु., चिकित्सकगण, हकीम लोग।

अतीक़ (عتیق) अ. वि.–पुरातन, क़दीम; बंधनमुक्त, आज़ाद; श्रेष्ठ, गिरामी।

अतीद (عتید) अ. वि.–विद्यमान, मौजूद; उपस्थित, हाज़िर; तत्पर, आमादा।

अतीफ़ (عطیف) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसमें नम्रता, पातिव्रत्य और आज्ञाकारिता हो।

अतीयः (عطیہ) अ. पुं.–अनुदान, बख़्शिश; प्रदान, अता; पुरस्कार, इन्आम, उपहार, तोहफ़ा।

अतीयात (عطیات) अ. पुं.–'अतीयः' का बहु., बख़्शिशें; अताएँ; इन्आमात; तोहफ़े।

अतील (عتیل) अ. वि.–प्यासा, तृषित।

अतूफ़ः (عطوفہ) अ. स्त्री.–सुशील और विनम्र स्त्री।

अतूफ़ (عطوف) अ. वि.–दयालु, मेहरबान; वह ऊँटनी जो अपने बच्चे से बहुत स्नेह करे, वत्सला; चिड़ीमार का जाल।

अतूफ़त (عطوفت) अ. स्त्री.–अनुकंपा, अनुग्रह, शफ़क़त।

अत्इमः (اطعمہ) अ. पुं.–'तआम' का बहु., खाने, भोजन।

अत्क़िया (اتقیا) अ. पुं.–'तक़ी' का बहु., ऋषि और मुनि लोग; सदाचारी और धर्मनिष्ठ लोग।

अत्गह (اتکہ) तु. पुं.–शाही महल में दूध पिलानेवाली धाय का पति।

अत्तार (عطار) अ. वि.–सुगंधकार, इत्र बनाने बेचनेवाला; ओषधियाँ बेचनेवाला; एक मुसलमान महात्मा।

अत्तार (عتار) अ. वि.–साहसी, शूर, दिलेर बलिष्ठ घोड़ा; वह स्थान जिसमें जी न लगे।

अत्फ़ (عطف) अ. पुं.–कृपा, दया; मिलाना, जोड़ना; फिराना; लपेटना; दो शब्दों के बीच में 'व़ाव' या कोई दूसरा अक्षर या शब्द लाकर उन्हें आपस में मिलाना।

अत्फ़ाल (اطفال) अ. पुं.–'तिफ़्ल' का बहु., बालकगण, बच्चे, लड़के।

अत्ब (عتب) अ. पुं.–निंदा करना, क्रोध करना।

अत्बाअ (اتباع) अ. पुं.–'तबा' का बहु. अनुकारी वर्ग, पैरवी करनेवाले।

अत्मक (اتمک) तु. स्त्री.–रोटी, नान।

अत्यब (اطیب) अ. कि.–बहुत अच्छी सुगंधवाला।

अत्राक (اتراک) तु. पुं.–'तुर्क' का बहु., तुर्क लोग।

अत्राफ़ (اطراف) अ. पुं.–'तरफ़' का बहु., दिशाएँ, सिम्तें।

अत्राब (اتراب) अ. स्त्री.–'तिर्ब' का बहु., समवयस्क पुरुष या स्त्रियाँ।

अत्रियः (اطریہ) अ. स्त्री.–सिवैयाँ।

अत्लस (اطلس) अ. स्त्री.–एक बहुमूल्य रेशमी वस्त्र (पुं.) स्वच्छ आकाश, साफ़ आस्मान।

अत्लाल (اطلال) अ. पुं.–पुराने और ध्वस्त मकान आदि के चिह्न।

अत्वार (اطوار) अ. पुं.–'तौर' का बहु., आचरण, आ'माल।

अत्शान (عطشان) अ. वि.–प्यासा, तृपित।

अत्सः (عطسه) अ. स्त्री.–झींक।

अत्हर (اطہر) अ. वि.–बहुत ही पवित्र, अत्यन्त पाक।

अद [द्द] (عد) अ. पुं.–गिनना, गणना करना, शुमार करना।

अदक़ [क़्क़] (ادق) अ. वि.–बहुत ही क्लिष्ट, बहुत ही गूढ़, रहस्यमय, बहुत ही सूक्ष्म, निहायत दक़ीक़।

अदक़चः (ادقچه) तु. पुं.–पलंग पर बिछाने की कामदार चादर।

अदद (عدد) अ. पुं.–संख्या, अंक; तादाद, मात्रा।

अदन (عدن) अ. पुं.–यमन का एक द्वीप जहाँ का मोती प्रसिद्ध है।

अदब (ادب) अ. पुं.–हर चीज़ का अंदाज़ा और हद को दृष्टि में रखना; शिष्टता, सभ्यता, तमीज़; आदर, सत्कार, ताज़ीम; साहित्य, कला, लिट्रेचर; बुद्धि, विवेक।

अदब आमोज़ (ادب آموز) अ. फा. वि.–अदब सिखानेवाला, अदब सीखनेवाला।

अदब नवाज़ (ادب نواز) अ. फा. पुं.–जो साहित्य का क़द्रदान और साहित्यकारों का गुणग्राही हो।

अदबी (ادبی) अ. वि.–साहित्यिक, साहित्य सम्बन्धी, अदब से मुतअल्लिक़।

अदबीयत (ادبیئت) अ. स्त्री.–साहित्यिक प्रवाद, साहित्यिकता।

अदबीयात (ادبیات) अ. स्त्री.–साहित्य सम्बन्धीं पुस्तकें आदि।

अदम (عدم) अ. पुं.–यमलोक, परलोक, जहाँ मनुष्य मरकर जाता है; हीन, बिना; अभाव, फ़िक़्दान।

अदम आबाद (عدم آباد) अ. फा. पुं.–यमलोक, परलोक, अदम की बस्ती।

अदरनः (ادرنه) तु. पुं.–एडिरयानोपिल।

अदल [ल्ल] (ادل) अ. वि.–बहुत ही मुदल्लल, तर्कयुक्त, संगतियुक्त।

अदवात (ادوات) अ. पुं.–अदात का बहु., आले, आलात, औजार, उपकरण-समूह।

अदा (ادا) फ़ा. स्त्री.–हाव-भाव, अंगभंगी, नाज़अंदाज़; पद्धति, तर्ज़, प्रणाली।

अदा (ادا) अ. पुं.–बेबाक़ करना, देना, चुकाना; बेबाक़, परिशुद्ध।

अदाइगी (ادائگی) अ. फ़ा. स्त्री.–बेबाक़ी, परिशुद्धि।

अदाए क़र्ज़ (ادائے قرض) अ. पुं.–ऋण-शुद्धि, क़र्ज़ की बेबाक़ी।

अदाए ख़ास (ادائے خاص) फ़ा. अ. स्त्री.–पद्धति-विशेप, ख़ास तर्ज़।

अदाकार (اداکار) फ़ा. वि.–अभिनेता, नट, ऐक्टर (पुरुष); अभिनेत्री, तारिका, लब्वा, ऐक्ट्रेस।

अदात (ادات) अ. पुं.–औज़ार, आला, उपकरण।

अदानी (ادانی) अ. पुं.–'अदना' का बहु., बहुत पासवाले; बहुत कमीने।

अदालत (عدالت) अ. स्त्री.–न्यायालय, कचहरी; न्याय, इंसाफ़।

अदालत पज़ोह (عدالت پژوه) अ. फ़ा. वि.–न्यायनिष्ठ, मुंसिफ़मिज़ाज।

अदालते आलियः (عدالت عالیه) अ. स्त्री.–उच्च न्यायालय, हाईकोर्ट।

अदालते ख़फ़ीफ़ः (عدالت خفیفه) अ. स्त्री.–अल्पवाद न्यायालय, स्माल काज़ कोर्ट।

अदालते दीवानी (عدالت دیوانی) अ. फ़ा. स्त्री.–व्यवहारालय, लेन-देन और रुपये-पैसेवाली कचहरी, व्यवहार-न्यायालय।

अदालते फ़ौजदारी (عدالت فوجداری) अ. फा. स्त्री.–दंड-न्यायालय, वह कचहरी जहाँ अपराधों के इस्तिग़ासे होते हैं।

अदालते मातहत (عدالت ماتحت) अ. स्त्री.–अधीन न्यायालय।

अदालते माल (عدالت مال) अ. स्त्री.–राजस्व न्यायालय, मालगुज़ारी, लगान और खेती सम्बन्धी कचहरी।

अदालते मुजाज़ (عدالت مجاز) अ. स्त्री.–अधिकृत न्यायालय, जिसे किसी मुआमले के सुनने और निर्णय करने का अधिकार हो।

अदालते मुराफ़अः (عدالت مرافعه) अ. स्त्री.–पुनर्विचारालय, अदालते अपील।

अदावत (عداوت) अ. स्त्री.–शत्रुता, वैर, दुश्मनी।

अदावतन (عداوتاً) अ. वि.–अदावत से, शत्रुता से।

अदावत पेशः (عداوت پیشه) अ. फा. वि.–जिसका काम हरेक से शत्रुता रखना हो, वैरवृत्त।

अदावते क़ल्बी (عداوت قلبی) अ. स्त्री.–हार्दिक वैर, दिली दुश्मनी, बहुत अधिक शत्रुता।

अदावते फ़ित्री (عداوت فطری) अ. स्त्री.–पैदाइशी दुश्मनी, प्राकृतिक वैर, जैसी साँप और न्योले में।

अदाशनास (اداشناس) फा. वि.–यह समझनेवाला कि इस समय उसका स्वामी क्या चाहता है, और क्या करना चाहिए, भालदर्शी।

अदिल्लः (ادلہ) अ. स्त्री.–'दलील' का बहु., दलीलें।

अदीद (عدید) अ. स्त्री.–अधिक, बहुत; गणना, शुमार; सदृशता, नज़ीर।

अदीब (ادیب) अ. वि.–साहित्यकार, कलाकार।

अदीम (عدیم) अ. वि.–अप्राप्य, नायाब।

अदीम (ادیم) अ. पुं.–कच्चा और बूदार चमड़ा; धरातल, ज़मीन की सतह; खाना, भोजन।

अदीमज़्ज़ुहा (ادیم الضحی) अ. पुं.–सूर्योदय के पश्चात् का समय, चाश्त का शुरू, प्रत्यूष-आतप।

अदीमुन्नज़ीर (عدیم النظیر) अ. वि.–जिस जैसा दूसरा न हो, अनुपम, अद्वितीय, बेमिसाल, अनुपमेय।

अदीमुलअर्ज़ (ادیم الارض) अ. पुं.–धरातल, ज़मीन की सतह।

अदीमुलफ़ुर्सत (عدیم الفرصت) अ. वि.–जिसके पास समय न हो, अवकाश-विहीन।

अदीमुलमिसाल (عدیم المثال) अ. वि.–देखिए 'अदीमुन्नज़ीर'।

अदील (عدیل) अ. वि.–समान, तुल्य, हमसर; दो व्यक्ति जो एक कजावे पर दोनों ओर बैठें।

अदूल (عدول) अ. पुं.–सत्यनिष्ठ व्यक्ति, सच्चा पुरुष; सच्चा गवाह।

अदूले हुक्म (عدول حکم) अ. पुं.–अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान।

अद्इयः (ادعیہ) अ. स्त्री.–'दुआ' का बहु., दुआएँ।

अद्कन (ادکن) अ. पुं.–ख़ाकी रंग, ऐसा रंग जो कालिमा लिये हो।

अद्ख़िनः (ادخنہ) अ. पुं.–'दुख़ान' का बहु., धुएँ।

अद्न (عدن) अ. पुं.–निवास, क़यास; किसी जगह हमेशा रहना; स्वर्ग के बाग़।

अद्ना (ادنی) अ. वि.–तुच्छ, अधम, कमीना; बहुत छोटा, ज़रा सा (काम आदि); पास, समीप।

अद्नान (عدنان) अ. पुं.–हज़रत मुहम्मद साहब के एक पूर्वज जो बड़े अच्छे वक्ता थे।

अद्नास (ادناس) अ. पुं.–'दनस' का बहु., मैल-कुचैल।

अद्मान (ادمان) अ. पुं.–'अदम' का बहु., गंदुमी रंग के मनुष्य।

अद्यान (ادیان) अ. पुं.–'दीन' का बहु., बहुत से धर्म और मज़हब।

अद्ल (عدل) अ. पुं.–न्याय, इंसाफ़; न्यायकर्ता, मुंसिफ; वह सच्चा व्यक्ति जो गवाही के लिए ठीक हो; सदृश, मिस्ल; एक वस्तु को दूसरी वस्तु के बराबर करना।

अद्लपर्वर (عدل پرور) अ. फा. वि.–न्यायनिष्ठ, न्यायप्रिय, हर बात में न्याय का ख़्याल रखनेवाला।

अद्लैन (عدلین) अ. पुं.–दो सच्चे व्यक्ति जो गवाही के लिए उचित हों।

अद्वन (ادون) अ. वि.–अधमतर, कमीनःतर; समीपतर, क़रीबतर।

अद्वात (ادوات) अ. पुं.–'अदात' का बहु., औज़ार, उपकरण-समूह।

अद्वार (ادوار) अ. पुं.–'दौर' का बहु., बारियाँ।

अद्वियः (ادویہ) अ. स्त्री.–'दवा' का बहु., ओषधियाँ, दवाएँ।

अद्हम (ادہم) अ. पुं.–काला; काला घोड़ा; काला साँप; बेड़ी।

अन (عن) अ. अव्य.–से, अज़।

अनक़रीब (عن قریب) अ. अव्य.–शीघ्र ही, बहुत जल्द।

अनत (عنت) अ. पुं.–पाप, गुनाह; दोष, ख़राबी; हत्या, हलाकी।

अनफ़ (انف) अ. स्त्री.–नाक, नासा, बीनी।

अनब (انب) अ. पुं.–बैंगन, भाँटा।

अनलबर्क़ (انا البرق) अ. वा.–मैं बिजली हूँ।

अनलबह्र (انا البحر) अ. वा.–मैं समुद्र हूँ।

अनलल्लाह (انا اللہ) अ. वा.–मैं ईश्वर हूँ।

अनलहक़ (انا الحق) अ. वा.–मैं सत्य हूँ, मैं सदाक़त हूँ; मैं ब्रह्म हूँ, अहं ब्रह्मास्मि, मैं ख़ुदा हूँ।

अना (انا) अ. अव्य.–मैं।

अना (انا) तु. स्त्री.–माता, जननी, माँ।

अना (عنا) अ. स्त्री.–कष्ट, दुःख, तकलीफ; प्रयास, मशक़्क़त।

अनाक़ (عناق) अ. पुं.–बकरी की बच्ची।

अनाक़ीद (عناقید) अ.पुं.–'उन्क़ूद' का बहु., अंगूर के गुच्छे।

अनाजील (اناجیل) अ. स्त्री.–'इंजील' का बहु., इंजीलें, बाइबिलें।

अनात (انات) अ. स्त्री.–देर, विलंब, दिरंग।

अनातूलियः (اناطولیہ) तु. पुं.–तुर्किस्तान का एक नगर।

अनादिल (عنادل) अ.उभ.–'अंदलीब' का बहु., बुलबुलें।

अनानीयत (انانیت) अ. स्त्री.–अहंवाद, ख़ुदी, यह भावना कि जो कुछ हूँ, बस मैं हूँ।

अनाम (انام) अ. पुं.–जनता, सर्वसाधारण, अवाम।

अनामिल (انامل) अ. स्त्री.–'अन्मिलः' का बहु., उँगलियों के सिरे।

अनार (انار) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध फल, दाड़िम।

अनारदानः (اناردانہ) फा. पुं.–अनार के सूखे हुए बीज जो दवा में काम आते हैं, अनारदाना।

अनासिर (عناصر) अ. पुं.–'उंसुर' का बहु., पंचभूत–आग, पानी, हवा, मिट्टी और आकाश।

अनीक़ (انیق) अ. वि.–अद्‌भुत, आश्चर्यजनक, अजीबोग़रीब; सुन्दर, मनोरम, हसीन।

अनीद (عنید) अ. वि.–लड़ाकू, झगड़ालू; उद्दंड, सरकश।

अनीन (انین) अ. पुं.–चीख़ना, चिल्लाना।

अनीफ़ (عنیف) अ. वि.–तीव्र, तेज; खुरदरा, दुरुस्त; झगड़ालू, लड़ाकू।

अनीस (انیس) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त।

अनीसून (انیسون) अ. स्त्री.–एक प्रकार की सौंफ जो दवा में काम आती है।

अन्कबूत (عنکبوت) अ. स्त्री.–लूता, मकड़ी।

अन्कबूतीयः (عنکبوتیہ) अ. स्त्री.–आँख का चौथा पर्दा या पटल।

अन्क़स (انقص) अ. वि.–बहुत ही ख़राब, अत्यन्त निकृष्ट।

अन्क़ा (عنقا) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध साहित्यिक पक्षी जो केवल कल्पित है; वह वस्तु जो अप्राप्य हो; लंबी गर्दनवाली स्त्री।

अन्क़ाब (عنقاب) अ. पुं.–'नक़्ब' का बहु., छिद्र-समूह, बहुत से सूराख़।

अन्क़ास (انقاس) अ. पुं.–'निक़्स' का बहु., लिखने की स्याहियाँ।

अन्क़ास (انقاص) अ. पुं.–'नक़्स' का बहु., कमियाँ; त्रुटियाँ; अशुद्धियाँ; दोष, ऐब।

अन्नाब (عناب) अ. वि.–अंगूर बेचनेवाला।

अन्फ़ (عنف) अ. पुं.–खुर्दरापन, रूखापन; रुखाई, बेरुख़ी, दे. 'इन्फ़' और 'उन्फ़'; तीनों शुद्ध हैं।

अन्फ़त (انفت) अ. पुं.–घृणा और अवहेलना करना।

अन्फ़स (انفس) अ. वि.–बहुत ही नफ़ीस, बहुत ही उत्तम, अत्यधिक सुन्दर।

अन्फ़ास (انفاس) अ. पुं.–'नफ़स' का बहु., साँसें।

अन्फ़िख़ः (انفخہ) अ. पुं.–'नफ़्ख़' का बहु., फूँकें।

अन्फ़िहः (انفحہ) अ. पुं.–पनीर मायः, वह जमा दुग्ध जो नवजात शिशु-पशु को मारकर उसके मेदे से निकालते हैं।

अन्फ़ुस (انفس) अ. पुं.–'नफ़्स' का बहु., रूहें, आत्माएँ; व्यक्तियाँ, ज़ातें।

अन्मलः (انملہ) अ. स्त्री.–'दे. 'अन्मिलः'।

अन्मार (انمار) अ. पुं.–'नम्रः' का बहु., चीते।

अन्मिलः (انملہ) अ. स्त्री.–उँगली का सिरा, यह शब्द नौ प्रकार से आता है, परन्तु बोला यही जाता है, 'अलिफ़' और 'मीम' पर ज़बर, ज़ेर, पेश, तीनों आते हैं।

अन्मुलः (انملہ) अ. स्त्री.–दे. 'अन्मिलः'।

अन्‌वर (انور) अ. वि.–बहुत अधिक चमकदार, उज्ज्वलतम।

अन्‌वाअ (انواع) अ. पुं.–'नौअ' का बहु., प्रकार, क़िस्में।

अन्‌वार (انوار) अ.पुं.–'नूर' का बहु., प्रकाशपुंज, जममगाहटें, रोशनियाँ।

अन्‌हार (انہار) अ. पुं.–'नह्ल' का बहु., नहरें, नदियाँ, चश्मे।

अफ़ [फ़्फ़] (عف) अ. पुं.–सतीत्व, पातिव्रत्य, इस्मत।

अफ़न (عفن) अ. पुं.–मलिन होना, गंदा होना।

अफ़रना (عفرنا) अ. पुं.–फाड़ खानेवाला शेर, व्याघ्र।

अफ़ा (عفا) अ. पुं.–मरना, हलाक होना; नापैद होना; आँख के पपोटों की कालिमा।

अफ़ाई (افاعی) अ पुं–'अफ़्ई' का बहु., काले साँप।

अफ़ाग़िनः (افاغنہ) अ. पुं.–'अफ़्गान' का बहु., अफ़्गानी लोग, काबुली।

अफ़ाज़िल (افاضل) अ. पुं.–'अफ़्ज़ल' का बहु., विद्वज्जन, पंडित लोग; प्रतिष्ठित जन, बड़े लोग।

अफ़ाफ़ (عفاف) अ. पुं.–संयम, पार्साई; सतीत्व, इस्मत।

अफ़ारीत (عفاریت) अ. पुं.–इफ़्रीत का बहु., पिशाच-समूह, देव लोग।

अफ़िन (عفن) अ. वि.–दुर्गंधयुक्त, बदबूदार।

अफ़िस (عفص) अ. वि.–बकठा, कसीला; बकठी चीज़।

अफ़ीफ़ः (عفیفہ) अ. स्त्री.–सती, साध्वी, पतिव्रता, बाइस्मत।

अफ़ीफ़ (عفیف) अ. वि.–पत्नीव्रत, परस्त्रीविमुख, दूसरी स्त्री पर आँख न उठानेवाला।

अफ़ील (افیل) अ. पुं.–जवान ऊँट।

अफ़्अफ़ (عفعف) अ. अव्य.–कुत्ते के भूंकने का शब्द।

अफ़्आल (افعال) अ. पुं.–'फ़ेल' का बहु., कार्य-समूह; कृतियाँ, करतूत।

अफ़्इदः (افئدہ) अ. पुं.–'फ़ुआद' का बहु., हृदय-समूह।

अफ़्ई (افعی) अ. पुं.–काला साँप, नाग।

अफ़्क़र (افقر) अ. वि.–बहुत ही कंगाल, बहुत ही फ़क़ीर।

अफ़्कार (افکار) अ. पुं.–'फ़िक्र' का बहु., फ़िक्रें, चिंताएँ; रचनाएँ, तसानीफ़।

अफ़्गंदः (افگندہ) फा. वि.–फेंका हुआ, गिराया हुआ।

अफ़्गंदः सुम (افگندہسم) फा. वि.–लाचार, दुःखित; चलने-फिरने में विवश।

अफ़्गंदनी (افگندنی) फा. वि.–फेंकने के योग्य, डालने के योग्य, गिराये जाने योग्य।

अफ़्ग़ाँ (افغاں) फा. पुं.–'अफ़्ग़ान' का लघु., दे. 'अफ़्ग़ान'।

अफ़्गानः (افگانہ) फा. पुं.–भ्रूण, अधूरा बच्चा; वह बच्चा जो सात महीने से पूर्व उत्पन्न हो जाय।

अफ़ग़ान (افغان) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान का निवासी, अफ़ग़ानी, काबुली।

अफ़ग़ानिस्तान (افغانستان) फा. पुं.–काबुलियों का देश, काबुल का मुल्क, काबुल का राष्ट्र।

अफ़ग़ानी (افغانی) फा. वि.–काबुली, अफ़ग़ान।

अफ़गार (افگار) फा. वि.–क्षत, घायल; (प्रत्य.) ज़ख़्म खाया हुआ जैसे 'दिल अफ़गार' जख़्मी दिलवाला।

अफ़्ज़ल (افضل) अ. वि.–बहुत ही बढ़िया, उत्तमतर; बहुत अधिक, बहुत ज़्यादा।

अफ़्ज़लीयत (افضلیت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, बड़प्पन, बड़ाई।

अफ़्ज़ह (افضح) अ. वि.–बहुत ही निंदित, बहुत ही बदनाम, कुख्यात।

अफ़्ज़ा (افزا) फा. प्रत्य.–बढ़ानेवाला जैसे हौसलः 'अफ़्ज़ा' उत्साह बढ़ानेवाला।

अफ़्ज़ाइश (افزائش) फा. स्त्री.–वृद्धि, बढ़ती, ज़्यादती।

अफ़्ज़ाइशे नस्ल (افزائش نسل) फा. स्त्री.–संतान-वृद्धि, वंशवृद्धि, नस्ल का बढ़ना।

अफ़्ज़ाइशे हुस्न (افزائش حسن) फ़ा. अ. स्त्री.–सौंदर्य-वृद्धि, सुन्दरता का बढ़ना।

अफ़्ज़ियः (افضیه) अ. स्त्री.–'फ़ज़ा' का बहु., खुले स्थान।

अफ़्ज़ूँ (افزوں) फा. वि.–अत्यधिक, प्रचुर, बहुत ज़्यादा; कुल जोड़, ग्रांड टोटल।

अफ़्ज़ूनी (افزونی) फा. स्त्री.–अधिकता, प्रचुरता, बहुतायत, ज़्यादती।

अफ़्दर (افدر) अ. पुं.–भतीजा, भ्रातृ-पुत्र; भानजा, भगिनी-पुत्र।

अफ़्याल (افیال) अ. पुं.–'फ़ील' का बहु. बहुत से हाथी।

अफ़्राख़्तः (افراخته) फा. वि.–उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ।

अफ़्राख़्तनी (افراختنی) फा. वि.–उठाने योग्य, ऊँचा करने योग्य।

अफ़्राज़ (افراز) फा. प्रत्य.–'उठानेवाला' 'ऊँचा करनेवाला', जैसे 'सरअफ़्राज़' सिर ऊँचा करनेवाला।

अफ़्राज़िदः (افرازنده) फा. वि.–उठानेवाला, ऊँचा करनेवाला।

अफ़्राज़ीदः (افرازیده) फा. वि.–उठाया हुआ, बलंद किया हुआ।

अफ़्राद (افراد) अ. पुं.–'फ़र्द' का बहु., व्यक्तियाँ, आदमी।

अफ़्राश्तः (افراشته) फा. वि.–उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, बलंद किया हुआ।

अफ़्राश्तनी (افراشتنی) फा. वि.–उठाने योग्य, ऊँचा करने योग्य।

अफ़्रास (افراس) अ. पुं.–'फ़रस' का बहु., घोड़े।

अफ़्रासियाब (افراسیاب) फा. पुं.–तूरान का एक प्राचीन शासक।

अफ़्रासे आब (افراسِ آب) फा. पुं.–वे बुलबुले जो पानी बरसते समय उठते हैं।

अफ़्रोख़्तः (افروخته) फा. वि.–जलाया हुआ, रौशन किया हुआ; क्रुद्ध, गुस्से में; उत्तेजित, मुश्तइल।

अफ़्रोख़्तगी (افروختگی) फा. स्त्री.–क्रोध, रोष; उत्तेजना, उकसाहट; रौशनी।

अफ़्रोख़्तनी (افروختنی) फा. वि.–जलाने योग्य; उत्तेजित करने योग्य; क्रुद्ध करने योग्य।

अफ़्रोज़ (افروز) फा. प्रत्य.–जलानेवाला, रौशन करनेवाला, उज्ज्वलकारी, वृद्धिकारी, जैसे—-दिल-अफ़्रोज़, दिल को उज्ज्वल करनेवाला, रौनक़-अफ़्रोज़—–शोभावृद्धिकारी।

अफ़्लाक (افلاک) अ. पुं.–'फ़लक' का बहु., आकाश-समूह, सब आस्मान।

अफ़्लाक़ (فلاق) अ. पुं.–'फ़लक़' का बहु., प्रातःकाल के उजाले।

अफ़्व (عفو) अ. पुं.–क्षमा, मुआफ़ी।

अफ़्वाज (افواج) अ. स्त्री.–'फ़ौज' का बहु., फ़ौजें, सेनाएँ।

अफ़्वाह (افواه) अ. स्त्री.–बहुवचन है, परन्तु एकवचन में प्रयुक्त होता है, किंवदंती, जनश्रुति, लोकोक्ति, उड़ती हुई शोहरत।

अफ़्वाहन् (افواهاً) अ. वि.–अफ़्वाह के तौर पर, उड़ते-उड़ते।

अफ़्श (عفش) अ. पुं.–पथिक का सामान।

अफ़्शाँ (افشاں) फा. स्त्री.–स्त्रियों के बालों अथवा गालों पर छिड़कने का सुनहला या रुपहला चूर्ण, (प्रत्य.) झाड़नेवाला, छिड़कनेवाला, जैसे—'दस्त अफ़्शाँ' हाथ झाड़नेवाला।

अफ़्शार (افشار) तु. पुं.–तुर्कों में 'क़िज़िलवाश' जाति का एक गोत्र।

अफ़्शुरः (افشره) फा. पुं.–दे. 'अफ़्शुर्दः'।

अफ़्शुर्दः (افشرده) फा. वि.–निचोड़ा हुआ, (पुं.) निचोड़ा हुआ अरक़ आदि।

अफ़्शुर्दए अंगूर (افشردهٔ انگور) फा. पुं.–अंगूर का निचोड़ा हुआ अरक़; अंगूर की मदिरा।

अफ़्स (عفص) अ. पुं.–माज़ू, माजूफल, एक वनौषधि।

अफ़्सर (افسر) अ. पुं.–मुकुट, ताज; पदाधिकारी, ओहदेदार; सरदार, अध्यक्ष।

अफ़्सरी (افسری) अ. स्त्री.–पदाधिकार, ओहदादारी; सत्ता, हुकूमत, अध्यक्षता, सरदारी।

अफ़सह (افصح) अ. वि.–बहुत फ़सीह, जो बड़ी विद्वत्ता से बातचीत करता हो और बहुत अच्छे शब्द बोलता हो।

अफ़साँ (افساں) फा. पुं.–धार तेज़ करने का पत्थर, शाण, सान।

अफ़सा (افسا) फा. पुं.–अभिचारक, मायावी, जादूगर।

अफ़सानः (افسانہ) फा. पुं.–आख्यायिका, कहानी; उपन्यास, नाविल; लम्बा वृत्तान्त; मनगढ़ंत कहानी या हाल।

अफ़सानःगो (افسانہگو) फा. वि.–कहानियाँ कहनेवाला, क़िस्सःगो।

अफ़सानः नवीस (افسانہ نویس) फा. वि.–कहानियाँ लिखनेवाला; उपन्यास-लेखक।

अफ़सानः निगार (افسانہ نگار) फा. वि.–दे. 'अफ़सानः नवीस'।

अफ़सार (افسار) फा. पुं.–घोड़े की बागडोर।

अफ़सुर्दः (افسردہ) फा. वि.–जाड़े से ठिठरा हुआ; बुझा हुआ, ठंडा; खिन्न, उदास।

अफ़सुर्दःदिल (افسردہدل) फा. वि.–बुझे दिलवाला, खिन्नचित्त, उदास।

अफ़सुर्दःदिली (افسردہدلی) फा. स्त्री.–दिल का बुझा होना, उदासी।

अफ़सुर्दगी (افسردگی) फा. स्त्री.–मलिनता, खिन्नता, उदासीनता; ठिठरापन; बेरौनक़ी, शोभाहीनता।

अफ़सुर्दनी (افسردنی) फा. वि.–ठिठरने योग्य; मलिन होने योग्य।

अफ़सूँ (افسوں) फा. पुं.–अभिचार, मायाकर्म, इन्द्रजाल, जादू।

अफ़सूँगर (افسوںگر) फा. वि.–अभिचारक, मायावी, जादूर।

अफ़सूँतराज़ (افسوںطراز) फा. वि.–दे. 'अफ़सूँगर'।

अफ़सून (افسون) फा. पुं.–दे. 'अफ़सूँ'।

अफ़सूने सामिरीˆ (افسون سامری) फा. अ. पुं.–'सामिरी' का जादू, बहुत सख़्त जादू।

अफ़सोस (افسوس) फा. पुं.–शोक, रंज; पश्चात्ताप, खेद, पशेमानी।

अफ़सोसनाक (افسوسناک) फा. वि.–शोकजनक, रंजदेह; अशुभ, मनहूस; दयनीय, क़ाबिले रहम।

अब [ब्ब] (عب) अ. पुं.–बार-बार पानी पीना; मुँह भर-भर के खाना।

अबदः (عبدہ) अ. पुं.–'आबिद' का बहु. तपस्वी लोग।

अबद (ابد) अ. पुं.–वह समय जिसका अंत न ज्ञात हो; नित्यता, हमेशगी।

अबदन (ابداً) अ. वि.–कदापि, हरगिज़; नित्य, हमेशा।

अबदी (ابدی) अ. वि.–नित्य की, हमेशा की; सार्वकालिक, दायमी।

अबदीयत (ابدیت) अ. स्त्री.–नित्यता, हमेशगी; अनश्वरता, लाज़वालीयत।

अबदुल आबाद (ابدالآباد) अ. पुं.–नित्यता, हमेशगी।

अबवी (ابوی) अ. वि.–बाप का; बाप संबंधी।

अबस (عبث) अ. वि.–व्यर्थ, निरर्थक, फ़जूल, बेकार।

अबस (عبس) अ. पुं.–रूखापन, बदमिज़ाजी; सूखा पेशाब-पाखाना।

अबा (عبا) अ. पुं.–लंबा चुग़ा; वस्त्र, लिबास।

अबाबील (ابابیل) अ. स्त्री.–एक प्रसिद्ध काली और छोटी चिड़िया, जो उजाड़ मकानों में रहती है, भांडकी।

अबिक़ (عبق) अ. वि.–सुगंधित, ख़ुशबूदार।

अबीद (عبید) अ. पुं.–'अब्द' का बहु., ईश्वर के दास।

अबीर (عبیر) अ. पुं.–एक प्रकार की सुगंधित गुलाबी बुकनी जो कपड़ों पर छिड़की जाती है।

अबूर (عبور) अ. पुं.–नई बकरी या भेड़; वह मनुष्य जिसका ख़त्ना न हुआ हो।

अबूस (عبوس) अ. वि.–बदमिज़ाज और ख़ुर्रा व्यक्ति, रूखे स्वभाववाला।

अब्अद (ابعد) अ. वि.–बहुत अधिक दूर।

अब्आद (ابعاد) अ. पुं.–'बो'द' का बहु., दूरियाँ, फ़ासिले।

अब्आदे सलासः (ابعاد ثلاثہ) अ. पुं.–तीन फ़ासिले, लंबाई, चौड़ाई और मोटाई या ऊँचाई या गहराई।

अब्इरः (ابعرہ) अ. पुं.–'बईर' का बहु., उष्ट्र-समूह, बहुत से ऊँट।

अब्क़र (عبقر) अ. पुं.–शोरा, एक क्षार जिससे बारूद बनती है।

अब्क़र (عبقر) अ. पुं.–भूत-प्रेत और जिनों आदि का एक कल्पित नगर।

अब्क़री (عبقری) अ. वि.–बहुत बढ़िया और अद्भुत वस्तु जिसे मनुष्य न बना सके, बल्कि जिसे जिनों या भूतों ने बनाया हो; उम्दा और नफ़ीस कपड़ा; हर उत्तम और अद्भुत वस्तु।

अब्का (ابکی) अ. वि.–बहुत रोनेवाला।

अब्कार (ابکار) अ. पुं.–'बिक्र' का बहु., कुआँरियाँ; बुक्रः का बहु., सबेरे, प्रातःकाल के समय।

अब्ख़रः (ابخرہ) अ. पुं.–'बुख़ार' का बहु., धुएँ; भापें।

अब्ख़र (ابخر) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसके मुँह से दुर्गंध आती हो, गंदादहन।

अब्खल (ابخل) अ. वि.–बहुत अधिक कंजूस, कृपणतम।

अब्जद (ابجد) अ. स्त्री.–वर्णमाला, अलिफ़, बे; अरबी अक्षरों का वह क्रम जिसमें हर अक्षर का मूल्य एक से हज़ार तक, क्रमशः दिया गया है, और वह इस प्रकार
۴ ۳ ۲ ۱ ۷ ۶ ۵
है, अबजद (ا ب ج د) हव्वज़ (ہ و ز) हुत्ती
۱۰ ۹ ۸ ۵۰ ۴۰ ۳۰ ۲۰
(ح ط ی) कलिमन (ک ل م ن) सअफ़स
۹۰ ۸۰ ۷۰ ۶۰ ۴۰۰ ۳۰۰ ۲۰۰ ۱۰۰
(س ع ف ص) फ़रशत (ف ر ش ت) सख़ज़
۷۰۰ ۶۰۰ ۵۰۰ ۱۰۰۰ ۹۰۰ ۸۰۰
(ث خ ذ) ज़ज़्ज़ग़ (ض ظ غ) –इन
अक्षरों की सहायता से लोगों के मरने और पदा होने का साल निकाला जाता है, और कुछ लोग अपने बच्चों के नाम भी इसी हिसाब से रखते हैं जिससे उनके जन्म का वर्ष मालूम हो जाता है।

अब्जदख़्वाँ (ابجد خواں) अ. फा. वि.–अलिफ़, बे, पढ़ने वाला; नौसिखिया।

अब्ज़ार (ابذار) अ. पुं.–'बज़्र' का बहु., अनाजों के बीज।

अब्ज़ार (ابزار) अ. पुं.–'बज़्र' का बहु., तरकारियों के बीज।

अब्तर (ابتر) अ. वि.–अस्तव्यस्त, तितर-बितर; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल।

अब्तरी (ابتری) अ. स्त्री.–अस्त-व्यस्तता, गड़बड़; कुव्यवस्था, बदनज़्मी; राज्य-परिवर्तन, इन्क़िलाब।

अब्द (عبد) अ. पुं.–दास, सेवक, बंदः, भक्त, फ़िदाई।

अब्दान (ابدان) अ. पुं.–'बदन' का बहु., बहुत से शरीर।

अब्दीयत (عبدیت) अ. स्त्री.–दासता, सेवाभाव, बंदगी; ईश्वर का दास होना।

अब्दुद्दराहिम (عبدالدراہم) अ. पुं.–रुपये का दास, जिसका धर्म ईमान केवल रुपया हो।

अब्दुल जिन्नः (عبدالجنہ) अ. पुं.–काबूस रोग, जिसमें रोगी अनुभव करता है कि किसी ने उसका गला घोंट दिया।

अब्दुलबत्न (عبدالبطن) अ. पुं.–पेट का बंदा, उदर-सर्वस्व, पेटू।

अब्ना (ابنا) अ. पुं.–'इब्न' का बहु., बेटे, पुत्रगण।

अब्नाए ज़मानः (ابنائے زمانہ) अ. पुं.–संसारवाले, दुनियावाले; अवसरवादी लोग, दुनियासाज़ लोग।

अब्नाए जिंस (ابنائے جنس) अ. पुं.–एक जातिवाले; एक आयुवाले, समवयस्क।

अब्नाए वतन (ابنائے وطن) अ. पुं.–वतनवाले, देशवाले।

अब्नियः (ابنیہ) अ. स्त्री.–'बिना' का बहु., बुनियादें, नींव।

अब्बादान (عبادان) अ.पुं.–फ़ारस की खाड़ी का एक द्वीप।

अब्बास (عباس) अ. पुं.–रूखे स्वभाव वाला; व्याघ्र, शेर; हज़रत मुहम्मद साहब के चचा, अब्बासी ख़लीफ़ा इन्हीं से सम्बन्धित हैं।

अब्बासियाँ (عباسیاں) अ. पुं.–हज़रत अब्बास की संतानवाले।

अब्बासी (عباسی) अ. वि.–हज़रत अब्बास का वंशज; हज़रत अब्बास से सम्बन्धित; एक फूल, गुलाबाँस।

अब्यज़ (ابیض) अ. वि.–बहुत सफ़ेद, धवलतम।

अब्यस (ابیس) अ. वि.–बहुत ख़ुश्क, बहुत ख़ुश्की पैदा करनेवाला।

अब्यात (ابیات) अ. स्त्री.–'बैत' का बहु., शेर।

अब्रः (ابرہ) अ. पुं.–दोहरे कपड़े में ऊपर वाला कपड़ा, अस्तर का उलटा।

अब्र (ابر) फा. पुं.–मेघ, बलाहक, बादल।

अब्र (عبر) अ. पुं.–स्वप्न का फल बताना, ता'बीर कहना।

अब्र आलूद (ابرآلود) फा. वि.–बादल से घिरा हुआ, मेघाच्छादित।

अब्रक (ابرک) फा. पुं.–अभ्रक, एक प्रसिद्ध और बहुत ही उपयोगी पारदर्शी धातु।

अब्रक़ (ابرق) अ. पुं.–दे. 'अब्रक'।

अब्रस (ابرص) अ. वि.–जिसे सफ़ेद कोढ़ का रोग हो, सिध्म।

अब्रार (ابرار) अ. पुं.–'बार' का बहु., ऋषि, मुनि लोग।

अब्री (ابری) फा. स्त्री.–अब्र से सम्बन्धित; एक चित्रित और रंगीन कागज़, जो प्रायः जिल्दों पर चढ़ाया जाता है।

अब्रू (ابرو) फा. स्त्री.–भ्रू, भृकुटी, भौं।

अब्रूकमाँ (ابروکماں) फा. वि.–जिसकी भौंहें धनुष-जैसी मेहराबदार हों; सुंदर भौंहोंवाली हसीना।

अब्रू कशीदः (ابروکشیدہ) फा. वि.–जिसकी भौंहें तनी हों, संकुचित भ्रू।

अब्रेग़लीज़ (ابرغلیظ) फा. अ. पुं.–काली घटा, घनघोर घटा।

अब्रेतीरः (ابرتیرہ) फा. पुं.–दे. 'अब्रेग़लीज़'।

अब्रेनैसाँ (ابرنیساں) फा. पुं.–चैत के महीने का बादल, जिसके लिए प्रसिद्ध है कि उसकी हर बूंद मोती बन जाती है।

अब्रेबहार (ابربہار) फा. पुं.–वसंत ऋतु का मेघ।

अब्रेबाराँ (ابرباراں) अ. पुं.–बरसता हुआ बादल, द्रोण मेघ; वर्षाकाल का बादल।

अब्लक़ (ابلق) अ. वि.–चितकबरा, काला और सफ़ेद; चितकबरा घोड़ा, काला और सफ़ेद घोड़ा।

अब्लह (ابلہ) अ. वि.–भोला भाला; मूर्ख, बेवकूफ़।

अब्लहाँ (ابلہاں) अ. पुं.–'अब्लः' का फारसी बहु., भोले-भाले लोग; मूर्ख लोग।

अब्लही (ابلہی) अ. स्त्री.–भोलापन; मूर्खता, नादानी।

अब्लूज (ابلوج) फा. स्त्री.–सफेद शक्कर, शर्करा; मिस्री, खंड शर्करा।

अब्स (عبس) अ. पुं.–रूखापन, तुरुशरूई; एक पैरा, सीसंबर।

अब्हर (عبہر) अ. स्त्री.–वह नर्गिस का फूल जिसके भीतर पीलापन हो; वह व्यक्ति जिसके शरीर में मांस खूब हो।

अब्हा (ابہیٰ) अ. वि.–सुंदरतम, ज़ेबतर, मनोरम, खुशनुमा।

अब्हार (ابحار) अ. पुं.–'बह्र' का बहु., बहुत से समुद्र।

अम [म्म] (عم) अ. पुं.–चचा, पितृभ्राता।

अमलः (عملہ) अ. पुं.–कर्मचारीवर्ग, किसी संस्था या कार्यालय के काम करनेवाले लोग।

अमल (عمل) अ. पुं.–कार्य, कर्म काम; लोकाचार, तर्ज़े अमल; संसार में अच्छा या बुरा किया हुआ काम, कृत्य; कोई जप या वज़ीफ़ा; मिस्मरेज़्म का अमल।

अमल (امل) अ. स्त्री.–आशा, आस, उम्मीद।

अमलख़ानः (عمل خانہ) अ. पुं.–दीवानख़ानः।

अमलदारी (عمل داری) अ. फा. स्त्री.–शासन, सत्ता, राज्याधिकार, हुकूमत।

अमलन (عملاً) अ. वि.–अमल के तौर पर, कार्यान्वित करके।

अमली (عملی) अ. वि.–कार्य सम्बन्धी; काम का; कर्मनिष्ठ, कर्मठ, बाअमल।

अमलीयात (عملیات) अ. पुं.–जंत्र-मंत्र जो भूत-प्रेत आदि के लिए प्रयुक्त होते हैं।

अमश (عمش) अ. पुं.–दृष्टि की निर्बलता; आँख से आँसू बहना।

अमा (عما) अ. स्त्री.–अंधता, नाबीनाई; कुमार्ग, गुमराही; हलका बादल; गहरा बादल।

अमाइद (عمائد) अ. पुं.–'अमीद' का बहु., बड़े लोग, प्रतिष्ठित लोग; उच्च पदाधिकारी लोग।

अमाइम (عمائم) अ. पुं.–'इमामः' का बहु., पगड़ियाँ, साफ़े।

अमाकिन (اماکن) अ. पुं.–'मकान' का बहु., बहुत से घर, बहुत से मकान।

अमाजिद (اماجد) अ. पुं.–'अम्जद' का बहु., प्रतिष्ठित जन, पूज्य व्यक्ति, बुज़ुर्ग लोग।

अमान (امان) अ. स्त्री.–सुरक्षा, हिफ़ाज़त, पनाह; निर्भयता, बेख़ौफ़ी; शांति, सुकून।

अमानत (امانت) अ. स्त्री.–न्यास, थाती, धरोहर; किसी को कोई वस्तु सिपुर्द करना।

अमानतदार (امانت دار) अ. फा. वि.–जिसके पास कोई धरोहर रखी हो, न्यासधारी; सत्यनिष्ठ, ईमानदार।

अमानी (امانی) अ. पुं.–'उम्नीयत' का बहु., आशाएँ, आकांक्षाएँ, आर्ज़ूएँ।

अमाम (امام) अ. वि.–सामने, प्रत्यक्ष।

अमारत (امارت) अ. स्त्री.–चिह्न, निशान; लक्षण, अलामत।

अमारात (امارات) अ. स्त्री.–'अमारत' का बहु., निशानात, चिह्न; अलामतें, लक्षण।

अमारिद (امارد) अ. पुं.–'अम्रद' का बहु., बे डाढ़ी-मूँछ के ख़ूबसूरत लड़के।

अमारी (عماری) अ. स्त्री.–हाथी का हौदा, अम्मारी।

अमासिल (اماثل) अ. पुं.–'अम्सल' का बहु., उदाहरण, मिसालें।

अमीक़ (عمیق) अ. वि.–अगाध, गहन, गंभीर, गहरा, डुबाऊ; सूक्ष्म, गूढ़, दक़ीक़।

अमीद (عمید) अ. वि.–प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज़; नेता, रहबर, लीडर।

अमीन (امین) अ. वि.–न्यासधारी, अमानतदार; सत्यनिष्ठ, ईमानदार।

अमीम (عمیم) अ. वि.–व्यापक, आम, जो सबके लिए हो।

अमीर (امیر) अ. वि.–धनाढ्य, दौलतमंद; अध्यक्ष, सरदार; लीडर, नेता; शासक, हाकिम।

अमीरज़ादः (امیرزادہ) अ. फा. वि.–अमीर का लड़का, धनीपुत्र; आर्यपुत्र, शरीफ़ज़ादा।

अमीरानः (امیرانہ) अ. फा. वि.–अमीरों जैसा, रईसों की तरह।

अमीरी (امیری) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; धनाढ्यता, मालदारी; स्वामित्व, सरदारी।

अमीरुल अस्कर (امیرالعسکر) अ. पुं.–सेनापति, सिपहसालार, कमांडर।

अमीरुल उमरा (امیرالامرا) अ. पुं.–शाही ज़माने की एक बड़ी पदवी; अमीरों का अमीर, बहुत बड़ा अमीर।

अमीरुल बह्र (امیرالبحر) अ. पुं.–नौ-सेनापति, समुद्री फ़ौज का कमांडर।

अमीरे कारवाँ (امیر کارواں) अ. फा. पुं.–यात्रीदल का अध्यक्ष।

अमीरे नह़्ल (امیر نحل) अ. पुं.–हज़रत अली की उपाधि।

अमूद (عمود) अ. पुं.–स्तंभ, खंभा; वस्त्रपट, ख़ैमः; शिश्न, लिंग; अध्यक्ष, सरदार; तराज़ू की मूठ; लंब, वह खड़ी रेखा जो दूसरी पड़ी रेखा पर गिरकर ९० अंश का कोण बनाये।

अमूदी (عمودی) अ. वि.–अमूद से सम्बन्धित; अमूद जैसा।

अमूम (عموم) अ. वि.–दे. शु. उच्चारण 'उमूम'।

अमूर (عمور) अ. पुं.–दाँतों और मसूढ़ों के बीच का मांस।

अमूल (عمول) अ. वि.–बहुत अधिक काम करनेवाला।

अम् (عم) अ. पुं.–चचा, बाप का भाई।

अम्अक़ (عمعق) अ. पुं.–अरब का एक शायर।

अम्आ (امعا) अ. पुं.–'मिआ' का बहु., आँतें।

अम्किनः (امکنہ) अ. पुं.–'मकान' का बहु., मकानात।

अम्जद (امجد) अ. वि.–अत्यंत पवित्र; अत्यंत बुज़ुर्ग।

अम्जाद (امجاد) अ. पु.–प्रतिष्ठित जन, बुज़ुर्ग लोग।

अम्ज़िजः (امزجہ) अ. पुं.–'मिज़ाज' का बहु., स्वभाव, मिज़ाज।

अम्त (امت) अ. पुं.–ऊँची भूमि; दीवार आदि का पुश्ता।

अम्तार (امطار) अ. पुं.–'मतर' का बहु., बरसातें, बरसात के पानी।

अम्तिअः (امتعہ) अ. पुं.–'मताअ' का बहु., मालो अस्बाब।

अम्द (عمد) अ. पुं.–संकल्प, इरादः; इच्छा, ख़्वाहिश।

अम्दन (عمداً) अ. वि.–समझते-बूझते हुए, जान-बूझकर, निश्चयपूर्वक, इरादे के साथ।

अम्न (امن) अ. पुं.–शांति, सुकून; सुख-चैन, आराम।

अम्न पसंद (امن پسند) अ. फा. वि.–अम्न का हामी, शांतिप्रिय, जो यह चाहता हो कि किसी प्रकार का झगड़ा न हो।

अम्न पसंदी (امن پسندی) अ. फा. स्त्री.–अम्न की हिमायत, शांतिप्रियता, झगड़ा न चाहना।

अम्मः (عمہ) अ. स्त्री.–फूफी, बाप की बहन; मनुष्यों का समूह।

अम्माँ (عماں) अ. पुं.–'अम्म' का बहु., फ़ारसी में।

अम्मान (عمان) अ. पुं.–शाम का एक नगर।

अम्मारः (امارہ) अ. वि.–पाप की ओर प्रवृत्त करनेवाला, गुनाह की तर्ग़ीब देनेवाला; बहुत हुक्म करनेवाला।

अम्मारः (عمارہ) अ. पुं.–जहाज़ों का बेड़ा।

अम्मारी (عماری) अ. स्त्री.–हाथी का हौदा।

अम्या (عمیا) अ. स्त्री.–अंधी स्त्री।

अम्र (امر) अ. पुं.–आदेश, आज्ञा, हुक्म; कर्म, कार्य, काम; विषय, मुआमला; समस्या, मस्अलः।

अम्रद (امرد) फा. पुं.–बिना दाढ़ी-मूँछ का सुंदर लड़का।

अम्रद परस्त (امرد پرست) फा. वि.–गुद्भोगी, बच्चः-बाज़; सुंदर लड़कों से प्रेम करनेवाला।

अम्रद परस्ती (امرد پرستی) फा. स्त्री.–सुंदर लड़कों से प्रेम करना।

अम्राज़ (امراض) अ. पुं.–'मरज़' का बहु., रोग-समूह, बहुत से रोग।

अम्लः (عملہ) अ. स्त्री.–भलाई, उपकार, नेकी।

अम्लज (املج) अ. पुं.–आँवला, एक प्रसिद्ध फल।

अम्लस (املس) अ. वि.–चिकना, मुलायम; समतल, हमवार; नर्म, साफ़, मृदुल।

अम्लाक (املاک) अ. पुं.–'मिल्क' का बहु., सम्पत्तियाँ, जायदादें।

अम्लाह (املاح) अ. पुं.–'मिल्ह' का बहु., बहुत से नमक।

अम्वाज (امواج) अ. स्त्री.–'मौज' का बहु., मौजें, लहरें, तरंगें।

अम्वात (اموات) अ. स्त्री.–'मौत' का बहु., मौतें, मृत्युएँ।

अम्वाते अहमर (اموات احمر) अ. स्त्री.–वध होनेवाले; शहीद होनेवाले।

अम्वाल (اموال) अ. पुं.–'माल' का बहु., सम्पत्तियाँ, धन-समूह।

अम्वाह (امواہ) अ. पुं.–'माअ' का बहु., बहुत पानी।

अम्स (امس) अ. पुं.–गत कल, गुज़रा हुआ कल।

अम्सल (امثل) अ. वि.–पूज्य, श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग।

अम्सार (امصار) अ. पुं.–'मिस्र' का बहु., बड़े-बड़े नगर।

अम्साल (امثال) अ. पुं.–'मसल' का बहु., कहावतें, लोकोक्तियाँ, मसलें।

अम्सिलः (امثلہ) अ. पुं.–'मिसाल' का बहु., मिसालें, उदाहरण।

अयाँ (عیاں) अ. वि.–स्पष्ट, ज़ाहिर, दृष्टिगोचर, इस शब्द का शुद्ध उच्चारण 'इयाँ' है।

अया (عیا) अ. पुं.–ऐसी पीड़ा जिसकी चिकित्सा न हो सके।

अयाक़ (ایاق) तु. पुं.–दे. 'अयाग़'।

अयाग़ (ایاغ) तु. पुं.–प्याला, पानपात्र, चषक।

अयाज़ (ایاز) फा. पुं.–महमूद के गुलाम का नाम जिसे वह बहुत चाहता था,—"न वो ग़ज़नवी में तड़प रही, न वो ख़म है ज़ुल्फ़े-अयाज़ में।" इक़बाल।

अयादी (ایادی) अ. पुं.–'यद' का बहु., बहुत-से हाथ; बहुत-सी भलाइयाँ।

१ / २२७ ३३,४८२ २
LIBRARY
HARIDWAR

अयामा (ایاما) अ. वि.–'ऐयिम' का बहु., बिना पति की स्त्रियाँ; बिना स्त्रियों के पुरुष।

अयार (ایار) फ़ा. पुं.–रूमियों का एक महीना जो जेठ में पड़ता है।

अयार (عیار) अ. पुं.–तोलना; चाँदी-सोने को कसौटी पर कसना; परख, जाँच।

अयाल (ایال) फ़ा. पुं.–घोड़े की गर्दन के लंबे बाल, फ़ारसी शब्द 'याल' है।

अयास (ایاس) फ़ा. पुं.–'अयाज़' का असली नाम।

अय्यार (عیار) अ. वि.–बहुत अधिक चालाक, धूर्त, वंचक, छली, दे. ऐयार'।

अय्याश (عیاش) अ. वि.–भोग-विलास और अच्छे खाने-पीने का शौक़ीन; व्यभिचारी, दे. 'ऐयाश'।

अय्यूक़ (عیوق) अ. पुं.–एक तारा जो बहुत तेज़ और प्रकाशमान् होता है, दे. 'ऐयूक़'।

अय्यूब (ایوب) अ. पुं.–एक पैगम्बर जो बड़े ही धैर्यवान् थे, दे. 'एयूब'।

अरक़ (عرق) अ. पुं.–जल, दवाओं का खींचा हुआ पानी; मदिरा, शराब; पसीना।

अरक़ [क़्क़] (ارق) अ. वि.–बहुत अधिक पतला, बहुत रक़ीक़; बहुत अधिक सूक्ष्म, बारीकतर।

अरक़ (ارق) अ. स्त्री.–अनिद्रा, बेख़्वाबी, जागरण, बेदारी।

अरक (ارک) तु. पुं.–कोट, दुर्ग, क़िला।

अरक़गीर (عرق گیر) अ.फ़ा. पुं.–अरक़ खींचने का भभका।

अरक़चीं (عرق چیں) अ.फ़ा. पुं.–कुलाह जो पगड़ी के नीचे पहनी जाती है; पसीना पोंछने का छोटा रूमाल।

अरक़रेज़ (عرق ریز) अ.फ़ा. वि.–दास, सेवक, नौकर; लज्जा देनेवाला, लज्जित करनेवाला।

अरक़ीयः (عرقیہ) अ. पुं.–पसीना पोंछने का छोटा रूमाल।

अरक़ेबहार (عرق بہار) अ.फ़ा. पुं.–मदिरा, शराब।

अरचंद (ارچند) फ़ा. अव्य.–हरचंद, अगरचे।

अरज़ (عرض) अ. पुं.–वह चीज़ जो दूसरी के सहारे क़ायम हो, जैसे–'रंग' जो कपड़े के सहारे क़ायम होता है; वह उपरोग जो किसी बड़े रोग के कारण उत्पन्न हो जाय, जैसे–बुख़ार में सिर का दर्द।

अरज (عرج) अ. पुं.–लँगड़ापन, लंग।

अरफ़ः (عرفہ) अ. पुं.–अरबी ज़िलहिज्जः महीने का नवाँ दिन, जिस रोज़ हज होता है।

अरफ़ात (عرفات) अ. पुं.–मक्के से नौ कोस पर वह मैदान जहाँ हाजी लोग हज के दिन एकत्र होते और दोपहर और शाम की नमाज़ पढ़ते हैं।

अरब (عرب) अ. पुं.–अरब देश; अरब का निवासी; अरब का व्यक्ति।

अरब नज़ाद (عرب نژاد) अ. वि.–अरब की नस्ल का, अरबी।

अरबिस्तान (عربستان) अ. फ़ा. पुं.–अरब देश।

अरबी (عربی) अ. वि.–अरब का निवासी; अरब का व्यक्ति; अरब से सम्बन्ध रखनेवाला, (स्त्री.) अरबी भाषा।

अरश (ارش) अ. पुं.–कोहनी से उँगलियों तक का हाथ।

अरस (ارس) फ़ा. पुं.–आज़रबाईजान का एक नगर और उसकी एक नदी।

अरस्तातालीस (ارسطاطالیس) अ. पुं.–'अरस्तू'।

अरस्तू (ارسطو) अ. पुं.–यूनान का एक प्रसिद्ध वज्ञानिक जो ३८४-३२२ ईसा पूर्व हुआ है। यह अफ़्लातून का शिष्य और सिकंदर का गुरु था।

अरा (عرا) अ. पुं.–चटयल मैदान, जहाँ न घास हो न पेड़; दरगाह, आश्रम।

अराइक (ارائک) अ. पुं.–'अरीकः' का बहु., बहुत से तख़्त, सिंहासन-समूह।

अराइज़ (عرائض) अ. पुं.–'अर्ज़ी' का बहु., अर्ज़ियाँ, प्रार्थनाएँ।

अराइज़ नवीस (عرائض نویس) अ. फ़ा. वि.–अर्ज़ी लिखनेवाला।

अराइब (ارائب) अ. पुं.–'इर्ब' का बहु.।

अराइस (عرائس) अ. पुं.–अरूस का बहु., दूल्हा; दुल्हनें।

अराक (اراک) अ. पुं.–पीलू का पेड़; जमीन का टुकड़ा।

अराज़िल (اراذل) अ. पुं.–'अर्ज़ल' का बहु., कमीने लोग।

अराजिल (اراجل) अ. पुं.–'रजुल' का बहु., मनुष्य लोग, बहुत से आदमी।

अराज़ी (اراضی) अ. स्त्री.–'अर्ज़' का बहु., ज़मीनें, भूमियाँ; खेतियाँ, खेतों की ज़मीनें।

अराजीफ़ (اراجیف) अ. पुं.–'अर्जाफ़' का बहु., व्यर्थ की बातें; बेहूदा लोग।

अराबः (ارابہ) फ़ा. पुं.–गाड़ी, शकट, छकड़ा।

अराबः (عرابہ) अ. पुं.–दे. 'अराबः'।

अराबची (ارابچی) फ़ा. पुं.–गाड़ीवान, गाड़ी हाँकनेवाला।

अरामिल (ارامل) अ. स्त्री.–'अर्मलः' का बहु., विधवा स्त्रियाँ; बिना स्त्रियों के पुरुष; बिना पुरुष की स्त्रियाँ।

अराया (عرایا) अ. पुं.–खजूर के पेड़ जो किसी ग़रीब व्यक्ति को फल खाने के लिए दे दिये गये हों।

अरिज (ارج) अ. वि.–हर वस्तु जो सुगंधित हो।

अरिश (ارش) अ. वि.–बुद्धिमान्, प्रतिभावान्, होशियार, प्रवीण, चतुर, पटु।

अरी (اری) अ. पुं.–मधु, शहद।

अरीकः (اریکہ) अ. पुं.–सिंहासन, तख़्त, राजमंच।

अरीकः (عریکہ) अ. पुं.–अभिमान, गर्व; स्वभाव, तबीयत; ऊँट का कौहान।

अरीज़ः (عریضہ) अ. पुं.–प्रार्थनापत्र, दरख़्वास्त; पत्र, चिट्ठी।

अरीज़ः गुज़ार (عریضہ گزار) अ. फा. वि.–प्रार्थना करने वाला, प्रार्थना पत्र देनेवाला, प्रार्थी; पत्र भेजनेवाला।

अरीज़ः निगार (عریضہ نگار) अ. फा. वि.–पत्र लिखनेवाला, पत्र-लेखक

अरीज़ (عریض) अ. वि.–चौड़ा; चौड़ा चकला; एक साल का बकरा।

अरीफ़ (عریف) अ. वि.–पहचाननेवाला।

अरीशः (عریشہ) अ. पुं.–झोंपड़ा, छप्पर, जहाज़ का डेक।

अरीश (عریش) अ. पुं.–झोपड़ा, छप्पर; अंगूर की बेल चढ़ाने की टट्टी।

अरीस (عریس) अ. पुं.–दूल्हा, वर।

अरुज़्ज़ (ارز) अ. पुं.–चावल, तंडुल।

अरूज़ (عروض) अ. पुं.–पिंगल, छंदशास्त्र।

अरूज़दाँ (عروض داں) अ. फा. वि.–दे. 'अरूज़ी'।

अरूज़ी (عروضی) अ. वि.–जो पिंगल शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो।

अरूफ़ (عروف) अ. वि.–बहुत पहचानने वाला; धैर्यवान्, साबिर।

अरूब (عروب) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो अपने पति को बहुत प्यार करती हो; वह स्त्री जिसे उसका पति बहुत चाहता हो, प्राणप्रिया।

अरूस (عروس) अ. अव्य.–दूल्हा, वर, नोशः; दुल्हन, वधू।

अरूसक (عروسک) अ. स्त्री.–गुड़िया, बीर बहोटी।

अरूसी (عروسی) अ. वि.–विवाह, शादी, निकाह; विवाह सम्बन्धी।

अरूसुलबिलाद (عروس البلاد) अ. पुं.–ऐसा नगर जो सब नगरों में दुल्हन के समान हो।

अर्अर (عرعر) अ. पुं.–चीड़ का पेड़।

अर्क़म (ارقم) अ. पुं.–काला साँप जिसकी पीठ पर सफ़ेद चित्तियाँ होती हैं।

अर्कान (ارکان) अ. पुं.–'रुक्न' का बहु., खंभे, सुतून; सदस्य लोग, मेम्बर।

अर्काने दौलत (ارکان دولت) अ. पुं.–राज्य के प्रमुख पदाधिकारी, बड़े-बड़े ओहदेदार।

अर्काने सल्तनत (ارکان سلطنت) अ. पुं.–दे. 'अर्काने दौलत'।

अर्काने हुकूमत (ارکان حکومت) अ. पुं.–दे. 'अर्काने दौलत'।

अर्काम (ارکام) अ. पुं.–पत्र-समूह, ख़तूत।

अर्ग़न (ارغن) अ. पुं.–अरगन बाजा।

अर्ग़नू (ارغنوں) अ. पुं.–अरगन बाजा।

अर्ग़ूं (ارغوں) अ. पुं.–अरगन बाजा।

अर्ग़वाँ (ارغواں) फा. पुं.–'अर्ग़वान' का लघु., दे. 'अर्ग़वान'।

अर्ग़वान (ارغوان) फा. पुं.–एक लाल फूल लानेवाला पेड़; एक लाल रंग का फूल।

अर्ग़वानी (ارغوانی) फा. वि.–लाल रंग में रँगा हुआ, लाल, सुर्ख़, "पियें साक़िया क्या जवानी में पानी—मये अर्ग़वानी मये अर्ग़वानी।"—जिगर।

अर्ज़ंग (ارژنگ) फा. पुं.–चीन का एक चित्रकार; मानी के चित्रों का अल्बम; मानी का नाम, मानी अर्ज़ंग।

अर्ज़ः (عرضہ) अ. पुं.–एक बार ज़ाहिर करना, एक बार सामने रखना।

अर्ज़ः (ارضہ) अ. पुं.–दीमक, एक कीड़ा।

अर्ज़ (ارض) अ. स्त्री.–पृथ्वी, ज़मीन, भूमि, वसुन्धरा।

अर्ज़ (عرض) अ. स्त्री.–प्रार्थना, गुज़ारिश; (पुं.) चौड़ाई; घरेलू सामान।

अर्ज़ (ارز) फा. पुं.–मूल्य, दाम, कीमत।

अर्ज (ارج) फा. पुं.–मूल्य, क़ीमत; पद, मर्तबा; सुगंध, ख़ुशबू; अनुमान, अटकल; निंदा, हत्क।

अर्ज़गाह (عرض گاہ) अ. फा. स्त्री.–सेना के गिनती करने का स्थान।

अर्ज़ गुज़ार (عرض گزار) अ. फा. वि.–प्रार्थना करनेवाला, प्रार्थी।

अर्ज़दाश्त (عرضداشت) अ. फा. स्त्री.–प्रार्थना, इल्तिजा; प्रार्थनापत्र, दरख़्वास्त।

अर्ज़बेगी (عرض بیگی) अ. फा. पुं.–बादशाह के सामने प्रार्थनाएँ और प्रार्थियों को पेश करने वाला व्यक्ति।

अर्जमंद (ارجمند) फा. वि.–प्रतिष्ठित, मान्य, मुअज़्ज़ज़; सफल, कामयाब; प्रतापी, इक़्बालमंद।

अर्ज़ल (ارذل) अ. वि.–बहुत ही नीच, बहुत ही कमीना।

अर्जल (ارجل) अ. वि.–लंबी टाँगोंवाला व्यवित; वह घोड़ा जिसका एक पाँव सफ़ेद हो।

अर्ज़ाँ (ارزاں) फा. वि.–सस्ता, मंदा, कम दामों का। "शिगुफ़्ता देख ले नर्गिस तो मजनूँ यह लगे कहने—चमन में चश्मे-लैला का नज़ारा कितना अर्ज़ाँ है।"

अर्ज़ाँफ़रोश (ارزاں فروش) फा. वि.–सस्ता बेचनेवाला, जो बहुत कम लाभ पर सौदा बेचे।

अर्ज़ाँफ़रोशी (ارزاں فروشی) फा. स्त्री.–कम लाभ पर सौदा बेचना, सस्ता माल बेचना।

अर्ज़ानी (ارزانی) फा. स्त्री.–सस्तापन, मंदा, बाज़ार भाव गिर जाना।

अर्ज़ाल (ارذال) अ. पुं.–'रज़ील' का बहु., रज़ीले, नीच लोग, कमीने।

अर्ज़ी (عرضی) अ. स्त्री.–प्रार्थनापत्र, दरख़्वास्त।

अर्ज़ी (ارضی) अ. वि.–भूमि संबंधी, भौमिक; ज़मीन का।

अर्ज़ीदा'वा (عرضی دعوئی) अ. पुं.–वादपत्र, नालिश के ब्यौरे का काग़ज़।

अर्ज़ीन (ارضین) अ. पुं.–'अर्ज़' का बहु., ज़मीनें।

अर्ज़ीर (ارزیر) अ. पुं.–राँगा, राँग, एक धातु।

अर्ज़े उम्र (عرضِ عمر) अ. स्त्री.–दे. 'अर्ज़े हयात'।

अर्ज़े हयात (عرضِ حیات) अ. स्त्री.–जीवन के आनंद, सांसारिक सुख, सुख-चैन में जीवन व्यतीत करना।

अर्तंग (ارتنگ) फा. पुं.–चित्रकार का तख़्ता जिस पर काग़ज़ रखकर वह चित्र खींचता है, मानी के चित्रों का संचय।

अर्तजक (ارتجک) फा. पुं.–बिजली, विद्युत्, बर्क़।

अर्ताल (ارطال) अ. पुं.–'रत्ल' का बहु., आध सेर के बाँट; शराब के ग्लास।

अर्द (ارد) फा. पुं.–क्रोध, रोष, गुस्सा।

अर्दशेर (اردشیر) फा. पुं.–बहमन बिन इस्फ़ंद यार की उपाधि।

अर्दबेल (اردبیل) फा. पुं.–एक नगर।

अर्नब (ارنب) अ. पुं.–शशक, खरहा, ख़रगोश।

अर्फ़ (ارف) अ. पुं.–सुगंध, ख़ुशबू; कभी-कभी दुर्गन्ध के लिए भी प्रयुक्त होता है।

अर्फ़ा' (ارفع) अ. वि.–बहुत ऊँचा, उच्चतम।

अर्बईन (اربعین) अ. वि.–चालीस।

अर्बजी (عربجی) अ. पुं.–गाड़ीवान, दे. अराबजी।

अर्बदः (عربدہ) अ.–कुस्वभाव, कुप्रकृति, आदतेबद, बुरा स्वभाव; लड़ाकापन, कलहप्रियता।

अर्बदः ख़ू (عربدہ خو) अ. फा. वि.–झगड़ालू, जिसको स्वभाव से झगड़ा पसंद हो; मा'शूक़, प्रेमपात्र।

अर्बदःजू (عربدہ جو) अ. फा. वि.–झगड़े के लिए बहाने ढूंढ़नेवाला; प्रेमपात्र, माशूक़।

अर्बा' (اربع) अ. वि.–चार, चार की संख्या।

अर्बा (عربا) अ. पुं.–शुद्ध जाति का अरब, ख़ालिस अरब।

अर्बाअ (ارباع) अ. पुं.–स्थान-समूह, मक़ामात; गृह-समूह, मकानात।

अर्बानः (عربانہ) अ. पुं.–डफ, दाइरः, बड़ी खँजरी।

अर्बान (عربان) अ. पुं.–बैआनः, अग्रिम धन, बयाना।

अर्बाब (ارباب) अ. पुं.–'रब' का बहु., वाले, अहल।

अर्बाबे अक़्ल (اربابِ عقل) अ. पुं.–बुद्धिवाले, मेधावीगण, अक़्लमंद लोग।

अर्बाबे इल्म (اربابِ علم) अ. पुं.–विद्यावाले, विद्वज्जन, पढ़े-लिखे लोग।

अर्बाबे कमाल (اربابِ کمال) अ. पुं.–गुणवान् लोग, हुनरमंद लोग।

अर्बाबे क़लम (اربابِ قلم) अ. पुं.–लेखकगण, लिखने-पढ़ने का काम करनेवाले; साहित्यकार वर्ग, अदीब लोग।

अर्बाबे फ़न (اربابِ فن) अ. पुं.–कलाकार लोग; शिल्पकार लोग; साहित्यकार लोग; विद्वज्जन।

अर्बाबे वफ़ा (اربابِ وفا) अ. पुं.–प्रेमीजन, आशिक़ लोग; भक्तगण, फ़िदाई।

अर्बाबे शुऊर (اربابِ شعور) अ. पुं.–शिष्टजन, तमीज़दार लोग; बुद्धिमान् जन, अक़्लमंद लोग।

अर्बाबे हुज्जत (اربابِ حجت) अ. पुं.–न्यायशास्त्र जाननेवाले लोग, मंतिक़ जाननेवाले, नैयायिक, मंतिक़ी, तार्किक।

अर्बाबे हुनर (اربابِ ہنر) अ. फा. पुं.–दे. 'अर्बाबे कमाल' अथवा 'अर्बाबे फ़न'।

अर्मद (ارمد) अ. वि.–जिसकी आँखें आयी हुई हों।

अर्मन (ارمن) फा. वि.–एक देश, काकेशिया।

अर्मनी (ارمنی) फा. वि.–अर्मन का निवासी, काकेशियन।

अर्मान (ارمان) तु. पुं.–इच्छा, ख़्वाहिश; उत्कंठा, इश्तियाक़; लालसा, लालच।

अर्मुग़ाँ (ارمغاں) फा. पुं.–उपहार, पुरस्कार, तोहफ़ा।

अर्रादः (عرادہ) अ. पुं.–एक यंत्र जिससे दुर्ग पर बड़े-बड़े पत्थर फेंके जाते हैं।

अर्वाह (ارواح) अ. पुं.–'रूह' का बहु., आत्माएँ, रूहें; फ़िरिश्ते, मलाइक।

अर्शः (عرشہ) अ. पुं.–घर की छत; जहाज़ की छत।

अर्श (عرش) अ. पुं.–सिंहासन, तख़्त; आकाश, आसमान; सब आस्मानों से ऊपर का स्थान।

अर्श (ارش) अ. पुं.–युद्ध, लड़ाई; झगड़ा, फ़साद, फ़ितना।

अर्शद (ارشد) अ. वि.–सीधा रास्ता पानेवाला; वह शिष्य जिसपर गुरु ने सब से अधिक परिश्रम किया हो।

अर्शी (عرشی) अ. वि.–अर्श से सम्बन्ध रखनेवाला; अर्श पर रहनेवाला।

अर्शे आ'ज़म (عرشِ اعظم) अ. पुं.–ईश्वर के सिंहासन का स्थान।

अर्शे सानी (عرش ثانی) अ. पुं.–कुर्सी, वह स्थान जहाँ तारे हैं।

अर्सः (عرصہ) अ. पुं.–क्षेत्र, मैदान; समय, वक़्त; अंतर, फ़ासिला; शतरंज की बिसात।

अर्सः गाह (عرصہ گاہ) अ. फा. स्त्री.–रणक्षेत्र, मैदाने जंग।

अर्सए जंग (عرصۂ جنگ) अ. फा. पुं.–रणभूमि, युद्धक्षेत्र, समरांगण, मैदाने जंग।

अर्सए ज़ीस्त (عرصۂ زیست) अ. फा. पुं.–जीवनकाल, ज़िंदगी का ज़माना।

अर्सए दराज़ (عرصۂ دراز) अ. फा. पुं.–लंबा समय, दीर्घकाल।

अर्सए हयात (عرصۂ حیات) अ. पुं.–दे. 'अर्सएज़ीस्त'।

अर्सए हश्र (عرصۂ حشر) अ. पुं.–क़यामत का मैदान, जहाँ सब मुर्दे एकत्र हों।

अर्सलाँ (ارسلاں) तु. पुं.–व्याघ्र, सिंह, शेर; दास, गुलाम।

अर्हम (ارحم) अ. वि.–महादयालु, बहुत अधिक दया करनेवाला।

अलक़ (علاق) अ. स्त्री.–जोंक, रक्तपा, जलौका; जमा हुआ रक्त; प्रेम या शत्रुता जो छुटे नहीं; हर वह चीज़ जो चिपक जाय।

अलत्तवातुर (علی التواتر) अ. वि.–निरंतर, लगातार, मुसल्सल।

अलद [द्द] (الد) अ. वि.–बहुत ही झगड़ालू, कलहप्रिय।

अलद्दवाम (علی الدوام) अ. वि.–नित्य, सर्वदा, सदा, हमेशा, सतत।

अलद्दुलख़िसाम (الدالخصام) अ. पुं.–शत्रुओं से बहुत झगड़ा करनेवाला।

अलन (علن) अ. वि.–प्रकट, व्यक्त, ज़ाहिर।

अलप अर्सलाँ (الپ ارسلاں) तु. पुं.–बहादुर शेर, तुर्की शासकों की उपाधि।

अलफ़ (علف) अ. स्त्री.–घास, हरी घास, हरा चारा।

अलफ़ ज़ार (علفزار) अ. फा. पुं.–चरागाह, पशुओं के चरने का स्थान, सब्ज़ाज़ार, गोचर।

अलम (الم) अ. पुं.–दुःख, क्लेश, रंज, ग़म।

अलम (علم) अ. पुं.–ध्वजा, पताका, झंडा; प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त; पहाड़।

अलमअंगेज़ (الم انگیز) अ. फा. वि.–शोकजनक, दुःखप्रद, रंज बढ़ानेवाला।

अलमदार (علمدار) अ. फा. वि.–सेना के आगे झंडा लेकर चलनेवाला, ध्वजावाहक, पताकिक।

अलमनश्रह (الم نشرح) अ. वि.–सबमें ज़ाहिर, सर्वविदित, सबमें फैली हुई बात।

अलमनाक (الم ناک) अ. फा. वि.–खेदजनक, कष्टप्रद, रंजदेह।

अलम बरदार (علم بردار) अ. फा. वि.–झंडा उठानेवाला, सेना के आगे झंडा लेकर चलनेवाला, ध्वजावाहक।

अलमीयः (المیہ) अ. पुं.–कष्टसूचक बात; दुःखांत, ट्रैजिडी, वह कहानी जिसका अंत शोकमय हो।

अलर्रग़्म (علی الرغم) अ. वि.–बरख़िलाफ़, बरअक्स।

अलल इत्तिसाल (علی الاتصال) अ. वि.–निरंतर, लगातार, पैदर पै।

अलल इत्लाक़ (علی الاطلاق) अ. वि.–नितांत, क़त्ई, बिलकुल।

अलल ए'लान (علی الاعلان) अ. वि.–खुलेखज़ाने, खुल्लमखुल्ला, सब प्रकार से।

अललख़ुसूस (علی الخصوص) अ. वि.–मुख्यतः, ख़ासकर।

अललहाल (علی الحال) अ. वि.–तत्क्षण, तत्काल, इसी समय, तुरंत, फ़ौरन, सद्यः।

अलवी (علوی) अ. पुं.–हज़रत अली की वह संतान जो हज़रत फ़ातिमा से अतिरिक्त है।

अलस्त (الست) अ. स्त्री.–'अलस्तु बिरब्बिकुम क़ाल्बला' का संक्षेप, सृष्टि की उत्पत्ति के समय ईश्वर ने कहा था "क्या मैं तुम्हारा ईश्वर नहीं हूँ", तो सबने कहा था कि, अवश्य तू हमारा ईश्वर है। अलस्त कहकर सृष्टिकाल भी मुराद लिया जाता है।

अलस्सबाह (علی الصباح) अ. वि.–प्रातःकाल, बहुत तड़के, मुँह अँधेरे, 'अलस्सुबः' भी प्रचलित है।

अलस्सवा (علی اسواء) अ. वि.–बराबर-बराबर, एक सा, जितना एक को उतना ही सब को।

अला (الا) अ. अव्य.–सावधान! ख़बरदार! होशियार!

अला (علا) अ. स्त्री.–सम्मान, बुज़ुर्गी; उच्चता, बुलंदी।

अला (الا) फा. अव्य.–संबोधन-सूचक शब्द, ऐ! आय! हे!

अला (علی) अ. अव्य.–ऊपर, पर।

अलाइक़ (علائق) अ. पुं.–'अलाक़ः' का बहु. तअल्लुक़ात, सम्बन्ध।

अलाक़ः (علاقہ) अ. पुं.–सम्बन्ध, लगाव, प्रेम-व्यवहार, दोस्ती।

अलाचः (الاچہ) तु. पुं.–धारीदार कपड़ा जो दुरंगा हो।

अलात (علات) अ. पुं.–निहाई, अहरन, जिस पर रखकर गर्म लोहा कूटा जाता है।

अलानियः (علانیہ) अ. वि.–स्पष्ट, साफ़ तौर से; खुल्लमखुल्ला प्रकार से, उद्घोषित रूप से, लाक्षणिक अर्थ में–डंके की चोट से।

अलामत (علامت) अ. स्त्री.–चिह्न, निशान; लक्षण, पहचान।

अलामते इम्तियाज़ (علامت امتیاز) अ. स्त्री.–बिल्ला, सम्मान-सूचक चिह्न, पदक, बैज।

अलामते बुलूग़ (علامت بلوغ) अ. स्त्री.–जवान होने का लक्षण या चिह्न।

अलामते मर्दुमी (علامت مردمی) अ. फा. स्त्री.–पुरुष होने का चिह्न या लक्षण।

अलालत (علالت) अ. स्त्री.–रोग, बीमारी।

अलावः (علاوہ) अ. अव्य.–दे. 'इलावः' वही शुद्ध है, परंतु उर्दू में अलावः भी बोलते हैं; सिवा, सिवाय, अतिरिक्त।

अलाहदः (علاحدہ) अ. वि.–पृथक्, अलग, जुदा।

अला हाज़ल क़ियास (علی ھزالقیاس) अ. अव्य.–इस पर क़ियास करके, इस विचार के अनुसार।

अलिफ़ (الف) अ. पुं.–उर्दू वर्णमाला का पहला अक्षर, जो अ, इ और उ का काम देता है, चिह्न।

अलिफ़ क़ामतां (الف قامتاں) अ. पुं.–पलकें; निगाह।

अलिफ़े कूफ़ी (الف کوفی) अ. पुं.–टेढ़ी वस्तु।

अलिफ़े ताज़्यानः (الف تازیانہ) अ. फा. पुं.–शरीर पर कोड़ा लगने का चिह्न।

अली (علی) अ. वि.–उच्च, ऊँचा; ईश्वर का एक नाम; हज़रत मुहम्मद के दामाद और चौथे ख़लीफ़ा।

अलीक़ः (علیقہ) अ. पुं.–घोड़े को दाना खिलाने का तोबड़ा।

अलीफ़ (الیف) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त; एक जैसे स्वभाववाले; प्रेमपात्र, महबूब।

अलीम (الیم) अ. वि.–कष्टजनक, दुःखद, पीड़ा देनेवाला, दर्दनाक।

अलीम (علیم) अ. वि.–सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ, महाज्ञानी; ईश्वर का एक नाम।

अलील (علیل) अ. वि.–रोगी, बीमार, रुग्ण; दूषित मा'यूब।

अलैहा (علیہا) अ. अव्य.–उस पर (स्त्री-वाचक)।

अलैहि (علیہ) अ. अव्य.–उस पर (पुरुष-वाचक)।

अलैहिम (علیہم) अ. अव्य.–उन सब पर (पुरुष-वाचक)।

अल्अजब (العجب) अ. अव्य.–आश्चर्य के समय बोलते हैं, कितने आश्चर्य की बात है।

अल्अजल (العجل) अ. वा.–जल्दी करो, शीघ्रता करो।

अल्अतश (العطش) अ. अव्य.–प्यास के समय बोलते हैं, हाय पानी, हाय पानी, हाय प्यास, हाय प्यास।

अल्अमान (الامان) अ. अव्य.–घबराहट के समय बोलते हैं, बचाओ, बचाओ, त्राहि, त्राहि।

अल्आन (الآن) अ. अव्य.–इस समय; इसी समय, अभी; अभी तक; अब तक।

अल्क़त (القط) अ. वि.–समाप्त, इतिश्री, बस, ख़त्म।

अल्कन (الکن) अ. वि.–तोतला, तुतलाकर बोलनेवाला।

अल्क़ाब (القاب) अ. पुं.–'लक़ब' का बहु., उपाधियाँ, ख़िताबात; ख़त का अल्क़ाब, प्रशस्ति।

अल्काहिल (الکاہل) अ. पुं.–सुस्त, प्रशांत। बहरुल्काहिल= प्रशांत महासागर, पैसिफ़िक ओशन।

अल्क़िस्सः (القصہ) अ. अव्य.–किंबहुना, क़िस्सा मुख़्तसर, सारांश यह कि।

अलख़ालुक़ (الخالق) तु. पुं.–एक विशेष वस्त्र।

अल्ग़रज़ (الغرض) अ. अव्य.–दे. 'अल्क़िस्सः'।

अल्ग़यास (الغیاث) अ. अव्य.–दे. 'अल् अमान'।

अल्चः (الچہ) तु. पुं.–युद्ध में शत्रु से प्राप्त माल-अस्बाब और धन आदि।

अल्जज़ाइर (الجزائر) अ. पुं.–अल्जीरिया, अफ़्रीका का एक देश।

अल्ज़म (الزم) अ. वि.–बहुत ही ज़रूरी, अत्यावश्यक, अनिवार्य।

अल्जूअ (الجوع) अ. अव्य.–भूख के समय कहते हैं, हाय भूख, हाय भूख, हाय रोटी, हाय रोटी।

अल्तफ़ (الطف) अ. वि.–अत्यंत मृदुल, कोमल और मुलायम।

अल्तमिश (التمش) तु. स्त्री.–आगे चलनेवाली सेना; छः की संख्या।

अल्ताफ़ (الطاف) अ. पुं.–'लुत्फ़' का बहु., दयाएँ, कृपाएँ, मेहरबानियाँ।

अल्तून (التون) तु. पुं.–सुवर्ण, सोना।

अल्प अर्सलाँ (الپ ارسلاں) तु. पुं.–दे. 'अलप अर्सलाँ', दो. शु. हैं।

अल्फ़ (الف) अ. वि.–हज़ार, सहस्र।

अल्फ़ाफ़ (الفاف) अ. पुं.–आपस में लिपटे हुए वृक्ष।

अल्बत्तः (البتہ) अ. अव्य.–अवश्य, ज़रूर; परंतु, लेकिन।

अल्बान (البان) अ. पुं.–'लबन' का बहु., दूध, बहुत से दूध।

अल्बुर्ज़ (البرز) अ. पुं.–एक पहाड़।

अल्मई (المعی) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी राय सदा ही ठीक होती हो, जो बहुत ही प्रवीण और प्रतिभावान् हो।

अल्मदद (المدد) अ. अव्य.–दुःख के समय या भय के समय कहते हैं, सहायता करो, बचाओ।

अल्मस्त (المست) फ़ा. वि.–नशे में चूर, बहुत ही मस्त।

अल्मान (المان) अ. पुं.–दे. 'अल्मानियः'।

अल्मानियः (المانیہ) अ. स्त्री.–जर्मनी, यूरोप का एक प्रसिद्ध देश।

अल्मास (الماس) फा. पुं.–हीरा, एक परम मूल्यवान् रत्न।

अल् मुख़्तसर (المختصر) अ. अव्य.–दे. 'अल्क़िस्सः'।

अल्यः (الیہ) अ. स्त्री.–नितंब, कटिदेश, सुर्रीन।

अल्यौम (الیوم) अ. पुं.–आज, आज का दिन।

अल्लाती (علاتی) अ. वि.–वह भाई-बहन जो दूसरी माँ से हों, मगर बाप एक हो।

अल्लाफ़ (علاف) अ. वि.–घास बेचनेवाला, घसेरा, घसियारा।

अल्लामः (علامہ) अ. वि.–बहुत बड़ा विद्वान्, महापंडित, जिसके इल्म की थाह न हो।

अल्लाम (علام) अ. वि.–बहुत बड़ा विद्वान्, बहुविद्य।

अल्लामी (علامی) अ. वि.–दे. 'अल्लामः'।

अल्लाह (اللہ) अ. पुं.–ईश्वर, परमात्मा, ख़ुदा।

अल्वंद (الوند) फा. पुं.–हमदान में ईरान का एक पहाड़।

अल्वान (الوان) अ. पुं.–'लौन' का बहु., बहुत से रंग।

अल्वाह (الواح) अ. पुं.–'लौह' का बहु., तख़्तियाँ, पट्टिकाएँ।

अल्वियः (الویہ) अ. पुं.–'लिवा' का बहु., झंडे, ध्वजाएँ, पताकाएँ।

अल्सग़ (الثغ) अ. वि.–जो अक्षरों का शुद्ध उच्चारण न कर सके 'र' के स्थान पर 'ल' और 'श' के स्थान पर 'स' बोले।

अल्सिनः (السنہ) अ. स्त्री.–'लिसान' का बहु., जीभें, जिह्वाएँ; भाषाएँ, ज़बानें।

अल्हक़ (الحق) अ. वि.–सत्यतः, सचमुच, हक़ीक़त में।

अल्हान (الحان) अ. पुं.–'लह्न' का बहु., आवाज़ें।

अल्हाल (الحال) अ. वि.–तत्क्षण, इसी समय, तुरंत, फ़ौरन।

अलहासिल (الحاصل) अ. अव्य.–सारांश यह कि, ख़ुलासा यह कि।

अवा (اوا) अ. पुं.–शृगाल, सियार, गीदड़।

अवाइक़ (عوائق) अ. पुं.–'आइक़ः' का बहु., घटनाएँ; बाधाएँ।

अवाइद (عوائد) अ. पुं.–'आइद': का बहु., लौटनेवाले, फिरनेवाले; मुनाफ़े, लाभ; कृपाएँ; बदले, सिले।

अवाइल (اوائل) अ. पुं.–'अव्वल' का बहु., शुरूआत, आरंभ-काल।

अवाक़िब (عواقب) अ. पुं.–'आक़िबः' का बहु., नतीजे, फल, परिणाम।

अवातिफ़ (عواطف) अ. पुं.–'आतिफ़ः' का बहु., कृपाएँ, अनुकंपाएँ, मेहरबानियाँ।

अवान (اوان) अ. पुं.–समय, काल, वक़्त।

अवान (عوان) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन, सधवा।

अवानी (اوانی) अ. पुं.–'आनियः' का बहु., बरतन, भाँड़े।

अवाम (عوام) अ. पुं.–'आम' का बहु., साधारण जन, सर्वसाधारण, आम लोग।

अवामिर (اوامر) अ. पुं.–'आमिरः' का बहु., आदेश, हुक्म, आज्ञा।

अवामिल (عوامل) अ. पुं.–'आमिलः' का बहु., अमल करनेवाले; अरबी भाषा के कारक।

अवामुन्नास (عوام الناس) अ. पुं.–सर्वसाधारण, जनसाधारण, जनता, अवाम।

अवारात (عوارات) अ. पुं.–'अवारः' का बहु., बुराइयाँ, दोष, ऐब।

अवारिजः (اوارجہ) फा. पुं.–हिसाब का रजिस्टर, बही।

अवारिज़ (عوارض) अ. पुं.–'आरिज़ः' का बहु., बीमारियाँ, रोग-समूह।

अवारिफ़ (عوارف) अ. पुं.–'आरिफ़' का बहु., पहचाननेवाले; उपकार करनेवाले; सुगंधियाँ; बख़्शिशें।

अवालिम (عوالم) अ. पुं.–'आलम' का बहु., बहुत से संसार, बहुत सी दुनयाएँ या दुनियाएँ।

अवाली (عوالی) अ. पुं.–'आलियः' का बहु., ऊँची वस्तुएँ।

अवासिफ़ (عواصف) अ. पुं.–'आसिफ़ः' का बहु., तेज़ हवाएँ, आँधियाँ।

अविर (عور) अ. वि.–दुष्टात्मा, बदबातिन।

अवील (عویل) अ. पुं.–रोने के साथ आवाज़।

अवीसः (عویصہ) अ. वि.–दुष्कर, कठिन, मुश्किल।

अवीस (عویص) अ. वि.–कठिन, मुश्किल।

अव्वल (اول) अ. वि.–प्रथम, पहला; प्रमुख, ख़ास; सबसे पहले।

अव्वलन (اولاً) अ. वि.–पहले-पहल, सबसे पहले, सर्वप्रथम।

अव्वलीं (اولیں) अ. फा. वि.–प्रथम, पहला; सबसे पहले वाला, प्रमुख, ख़ास।

अव्वलीयत (اولیت) अ. स्त्री.–प्रथमता, पहलापन; प्रधानता; फ़ौक़ियत।

अव्वा (عوا) अ. पुं.–बहुत भूँकनेवाला कुत्ता; बूढ़ा ऊँट; तेरहवाँ नक्षत्र।

अव्वान (عوان) अ. वि.–अत्याचारी, ज़ालिम; क्षमा न करनेवाला, सख़्त पकड़ करनेवाला।

अव्वारः (عوارہ) अ. वि.–जिसका चित्त हट गया हो, बददिल।

अव्विदा (اودا) अ. पुं.–'वदीद' का बहु., मित्रगण, यार, दोस्त।

अशक़ [क़्क़] (اشق) अ. वि.–बहुत कठिन, बहुत मुश्किल।

अशक़ (عشق) अ. पुं.–किसी को बहुत चाहना; किसी चीज़ में चिपक जाना, 'इश्क़' बहुप्रचलित।

अशज [ज्ज] (اشج) अ. वि.–जिसका सर टूट गया हो, सर फटा।

अशद [द्द] (اشد) अ. वि.–बहुत सख़्त, प्रचंड, अति तीव्र।

अशम (عشم) अ. स्त्री.–सूखी रोटी।

अशरः (عشرہ) अ. पुं.–दस, दस की संख्या।

अशर [र्र] (اشر) अ. वि.–बहुत ही शरीर, बहुत ही धूर्त, अत्यधिक दुष्ट, बहुत ही पाजी।

अशर (عشر) अ. वि.–दस, दस की संख्या।

अशरात (عشرات) अ. पुं.–दहाइयाँ, दस-दस के थोक।

अशल [ल्ल] (اشل) अ. वि.–लुंझा, अपाहज, जिसके हाथ-पाँव काम न दें, अपंग।

अशाइर (عشائر) अ. पुं.–'अशीरः' का बहु., स्वजनगण, अज़ीज़दार; गोत्र या कुटुम्बवाले।

अशिक़ः (عشقہ) अ. पुं.–इश्क़पेचाँ, एक प्रसिद्ध बेल।

अशिद्दा (اشدا) अ. पुं.–'शदीद' का बहु., सख़्ती और अनीति करनेवाले।

अशीक़ः (عشیقہ) अ. स्त्री.–प्रेमिका, प्रेयसी, मा'शूक़ा।

अशीयत (عشیت) अ. स्त्री.–रात्रि, रात, निशा।

अशीरः (عشیرہ) अ. पुं.–अज़ीज़, स्वजन, नातेदार; घरवाले, घर के लोग, बाल-बच्चे।

अशीर (عشیر) अ. वि.–अज़ीज़, स्वजन; पड़ोसी, प्रतिवेशी; वह व्यक्ति जो दूसरे किसी व्यक्ति के साथ रहन-सहन करता हो।

अशूक़ (عشوق) अ. वि.–बहुत अधिक प्रेम करनेवाला।

अशूर (عشور) अ. पुं.–चुंगी का भाड़ा या शुल्क।

अशेअः (اشعہ) अ. स्त्री.–'शुआअ' का बहु., किरणें, शुआएँ।

अश्अरीयः (اشعریہ) अ. पुं.–मुसलमानों का एक संप्रदाय जिसका मत है कि मनुष्य अच्छा-बुरा ख़ुद करता है, ईश्वर का इसमें कोई हाथ नहीं होता।

अश्अश (عشعش) अ. अव्य.–आश्चर्य, हैरत।

अश्आर (اشعار) अ. पुं.–'शेर' का बहु., बहुत-से शेर।

अश्क (اشک) फा. पुं.–अश्रु, आँसू।

अश्क अफ़्शाँ (اشک افشاں) फा. वि.–दे. 'अश्क फ़िशाँ'।

अश्क फ़िशाँ (اشک فشاں) फा. वि.–आँसू बहानेवाला, अर्थात् रोनेवाला।

अश्कबार (اشک بار) फा. वि.–आँसू बरसानेवाला, अर्थात् रोनेवाला, "तेरी वफ़ा पे जब से मुझको एतबार आया, तेरा ख़्याल-अश्कबार बार-बार आया।"

अश्क़र (اشقر) अ. वि.–लाल और सफ़ेद; घोड़ा जिसकी अयाल और पूँछ लाल हो; हर लाल वस्तु जिसमें पीलापन और कालापन हो।

अश्करेज़ (اشک ریز) फा. वि.–दे. 'अश्क फ़िशाँ', अश्रुवर्षक।

अश्कल (اشکل) अ. वि.–वह डोरी जिससे ऊँट की काठी कसते हैं, पशुओं के पाँव बाँधन की रस्सी।

अश्क़ा (اشقی) अ. वि.–बहुत ही निर्दय, बहुत ही शक़ी।

अश्क़िया (اشقیا) अ. पुं.–'शक़ी' का बहु., निर्दय और कठोर हृदयवाले।

अश्कील (اشکیل) अ. पुं.–वह घोड़ा जिसका सीधा हाथ और उलटा पाँव सफ़ेद हो।

अश्ख़ास (اشخاص) अ. पुं.–'शख़्स' का बहु., कई व्यक्ति, लोग।

अश्ख़ुस (اشخص) अ. पुं–'शख़्स' का बहु., लोग।

अश्गर्फ़ (اشگرف) फा. वि.–प्रतिष्ठित, पूज्य, महान्, अज़ीद, बुज़ुर्ग।

अश्ग़ल (اشغل) अ. वि.–बहुत अधिक काम में व्यस्त, बहुत अधिक मश्ग़ूल।

अश्ग़ाल (اشغال) अ. पुं.–'शुग़्ल' का बहु. कामधंधे, मश्ग़ले।

अश्जा' (اشجع) अ. वि.–बहुत ही वीर, बड़ा ही शूर, विक्रमी, बहादुरतरीन।

अश्जार (اشجار) अ. पुं.–'शजर' का बहु., वृक्ष-समूह, पेड़।

अश्तात (اشتات) अ. पुं.–'शतीत' का बहु., अस्त-व्यस्त और तितर-बितर चीज़ें।

अश्ताद (اشتاد) फा. पुं.–ईरानी महीने की छब्बीसवीं तारीख़।

अश्दक़ (اشدق) अ. वि.–चौड़े दहानेवाला, जिसके मुँह का दहाना चौड़ा हो।

अश्ना' (اشنع) अ. वि.–निकृष्टतम, बहुत ही बुरा, बहुत ही ख़राब।

अश्फ़ा (اشفی) अ. स्त्री–चमड़ा सीने की सुताली।

अश्फ़ा' (اشفع) अ. वि.–बहुत अधिक सुफ़ारिश (सिफ़ारिश) करनेवाला।

अश्फ़ाक़ (اشفاق) अ. पुं.–'शफ़क़त' का बहु., अनुकंपाएँ, कृपाएँ, शफ़क़तें।

अश्बाक (اشباک) अ. पुं.–'शबकः' का बहु., बहुत से जाल।

अश्बाल (اشبال) अ. पुं.–'शिब्ल' का बहु., शेर के बच्चे।

अश्बाह (اشباہ) अ. पुं.–'शिबहः' का बहु., मिसालें, उदाहरण।

अश्बाह (اشباح) अ. पुं.–'शबह' और 'शब्ह' का बहु., अनेक व्यक्ति, लोग; बहुत से शरीर, बहुत से जिस्म।

अश्या (اشیا) अ. स्त्री.–'शय' का बहु., वस्तुएँ, चीज़ें।

अश्याअ (اشیاع) अ. पुं.–'शीअः' का बहु., मित्रों के समूह, मित्रमंडल, दोस्तों के गिरोह।

अश्रः (عشرہ) अ. पुं.–दस, दहाई; मुहर्रम के दस दिन; मुहर्रम की दसवीं तारीख़।

अश्रफ़ (اشرف) अ. वि.–बहुत ही शरीफ़, बहुत ही प्रतिष्ठित; बहुत अच्छे कुल का, कुलीनतम।

अश्रफ़ी (اشرفی) अ. स्त्री.–स्वर्ण-मुद्रा, मोहर, अशर्फ़ी।

अश्रफ़ुल अश्राफ़ (اشرف الاشراف) अ. वि.–कुलीन जनों में सबसे कुलीन, कुलीनतम।

अश्रफ़ुल मख़्लूक़ (اشرف المخلوق) अ. वि.–सारे प्राणि-वर्ग में सबसे श्रेष्ठ; मनुष्य, आदमी।

अश्रम (اشرم) अ. वि.–नाक फटा हुआ, जिसकी नाक फटी हो।

अश्राफ़ (اشراف) अ. पुं.–'शरीफ़' का बहु., शरीफ़ लोग, सज्जन लोग, अच्छे ख़ानदानवाले।

अश्रार (اشرار) अ. पुं.–'शरीर' का बहु., धूर्त लोग, दुष्टात्मा लोग, बुरे लोग।

अश्रिबः (اشربہ) अ. पुं.–'शराब' का बहु., पीने की चीज़ें; मद्य, मदिराएँ, शराबें।

अश्वः (عشوہ) अ. पुं.–दे. 'इश्वः'।

अश्वक़ (اشوق) अ. वि.–बहुत शौक़वाला, बहुत शौक़ीन।

अश्वाक़ (اشواق) अ. पुं.–'शौक़' का बहु.।

अश्हब (اشہب) अ. वि.–हर काली चीज़ जिसमें सफ़ेदी अधिक हो; सब्ज़ा घोड़ा जिसके सफ़ेद बालों में काले बाल अधिक हों।

अश्हर (اشہر) अ. वि.–बहुत अधिक प्रसिद्ध, बहुत मश्हूर।

अश्हल (اشہل) अ. वि.–काली आँखों वाला पुरुष; पीलापन लिये हुए काला रंग।

अश्हा (اشہای) अ. वि.–बहुत अधिक उत्कंठा रखनेवाला, उत्सुक; बहुत अधिक रुचिकर, बहुत ही मर्ग़ूब।

असदः (اسدہ) अ. स्त्री.–व्याघ्री, सिंहिनी, शेरनी।

असद (اسد) अ. पुं.–सिंह, व्याघ्र, शेर।

असदुल्लाह (اسداللہ) अ. पुं.–अल्लाह का शेर, हज़रत अली की उपाधि।

असफ़ (اسف) अ. पुं.–बहुत अधिक खेद, सख़्त रंज।

असबः (عصبہ) अ. पुं.–पट्ठा, स्नायु; लड़के-वाले, पुत्रादि; स्वजन लोग, अज़ीज़दार।

असब (عصب) अ. पुं.–स्नायु, पट्ठा।

असबात (عصبات) अ. पुं.–'असबः' का बहु., लड़के या नातेदार (पुरुष लोग)।

असबीयत (عصبیت) अ. स्त्री.–दूसरों की अपेक्षा अपने लोगों को लाभ पहुँचाने की भावना; पक्षपात, तरफ़दारी।

असम[म्म] (اصم) अ. वि.–निपट बहरा, बधिर।

असर [र्र] (اسر) अ. वि.–बहुत ही आनंदित, प्रमुदित, बहुत ही मस्रूर।

असर (اثر) अ. पुं.–प्रभाव; चिह्न, निशान; गुण, तासीर।

असरअंदाज़ (اثرانداز) अ. फा. वि.–असर डालनेवाला, प्रभावित करने वाला।

असरअंदाज़ी (اثراندازی) अ. फा. स्त्री.–असर डालना, प्रभावित करना।

असर पिज़ीर (اثرپذیر) अ. फा. वि.–जिस पर असर पड़ा हो, जो प्रभावित हुआ हो, प्रभावित, मुतअस्सिर।

असरपिज़ीरी (اثرپذیری) अ. फा. स्त्री.–प्रभाव पड़ना, मुतअस्सिर होना।

असल (عسل) अ. पुं.–मधु, शह्द।

असस (اسس) अ. स्त्री.–नीव, बुनियाद।

असस (عسس) अ. पुं.–कोतवाल, शह्नः; रात में गश्त करनेवाला।

असह [हह] (اصح) अ. वि.–अत्यधिक शुद्ध, बहुत ही ठीक, बहुत ही सही।

असा (عسیٰ) अ. अव्य.–क़रीब है कि ऐसा हो; यक़ीन, निश्चय; शायद।

असा (عصا) अ. पुं.–हाथ में पकड़ने की लकड़ी।

असाकिर (عساکر) अ. पुं.–'अस्कर' का बहु., सेनाएँ, फ़ौजें।

असाग़िर (اصاغر) अ. पुं.–'अस्ग़र' का बहु., छोटे लोग; बच्चे, बालक।

असातिज़ः (اساتذہ) अ. पुं.–'उस्ताज़' का बहु., गुरुजन, शिक्षकगण, पढ़ानेवाले।

असातीन (اساطین) अ. पुं.–'उस्तुवानः' का बहु., खंभे, सुतून।

असातीर (اساطیر) अ. पुं.–'उस्तूरः' का बहु., कहानियाँ, कथाएँ, गाथाएँ, क़िस्से।

असादिक़ (اصادق) अ. पुं.–'अस्दक़' का बहु., बहुत ही सच्चे लोग, सत्यनिष्ठ।

असाफ़िल (اسافل) अ. पुं.–'अस्फ़ल' का बहु., नीच लोग, अधम लोग, लोफ़र लोग।

असाफ़ी (اثافی) अ. पुं.–'उस्फ़ीयः' का बहु., चूल्हे के पाये।

LIBRARY HARDWAR

असाफ़ीर (اصافیر) अ. पुं.–'उस्फ़ूर' का बहु., गौरैयाँ, घरेलू चिड़ियाँ, चटकगण।

असाबे' (اصابع) अ. पुं.–'इस्बा' का बहु., उँगलियाँ।

असामी (اسامی) अ. पुं.–'अस्मां' का बहु., नामावली, नाम; क़िसान; किसी दुकानदार या महाजन से लेन-देन रखनेवाला।

असामी (آثامی) अ. पुं.–पापी लोग, गुनाहगार लोग; अपराधी लोग, मुज्रिम (मुजरिम) लोग।

असामीर (عصامیر) अ. पुं.–'उस्मूर' का बहु., बहुत से रहट; बहुत से डोल।

असार (عسار) अ. स्त्री.–दरिद्रता, कंगाली; फ़क़ीरी, साधूपन।

असारून (اسارون) अ. स्त्री.–एक इकाई।

असालत (اصالت) अ. स्त्री.–खरापन, असलियत; कुलीनता, शराफ़त।

असालतन (اصالتاً) अ.–स्वयं, खुद, बराहे रास्त।

असालीब (اسالیب) अ. पुं.–'उस्लूब' का बहु., शैलियाँ, पद्धतियाँ, तर्ज़ें।

असाविरः (اساورہ) अ. पुं.–'अस्विरः' का बहु., बाज़ूबंद; एक क़ौम।

असासः (اثاثہ) अ. पुं.–सामग्री, सामान; संपत्ति, धन-दौलत; पूँजी, सरमाया।

असास (اساس) अ. स्त्री.–नीव, बुनियाद।

असास (اثاث) अ. पुं.–सामान, असबाब।

असासुल बैत (اثاث البیت) अ. पुं.–घर का सामान, गृहस्थी का सामान।

असिर (عسر) अ. वि.–कठिन, दुष्कर, दुश्वार।

असिह्हा (اصحا) अ. पुं.–'सहीह' का बहु., स्वस्थ लोग, तनदुरुस्त लोग।

असी (اسی) अ. वि.–दुःखित, खेदित, ग़मग़ीन, म्लान।

असीदः (عصیدہ) अ. पुं.–एक प्रकार का हलवा।

असीफ़ (اسیف) अ. वि.–दुःखित, खेदग्रस्त, मलूल, रंजीदा।

असीब (عصیب) अ. वि.–पक्षपाती, तरफ़दार; स्वजन, आत्मीय जन, रिश्तेदार।

असीम (اثیم) अ. वि.–पापी, गुनाहगार।

असीर (عثیر) अ. पुं.–धूलि, गर्द।

असीर (اثیر) अ. पुं.–उच्च, बलंद; अंतरिक्ष, फ़ज़ाए बसीत; आकाश, आस्मान; ईथर; निष्केवल, ख़ालिस।

असीर (اسیر) अ. वि.–बंदी, क़ैदी, कारावासी।

असीर (عصیر) अ. पुं.–निचोड़ा हुआ अरक़; अंगूर की मदिरा।

असीर (عسیر) अ. वि.–कठिन, दुष्कर, क्लिष्ट, मुश्किल।

असील (اصیل) अ. वि.–कुलीन, शरीफ़; खरा, उत्तम; अच्छे लोहे का अस्त्र।

असूफ़ (عسوف) अ. वि.–कुमार्गगामी, वेराह; अनीति करनेवाला, अत्याचारी, दुराचारी, ज़ालिम।

असूफ़ (عصوف) अ. पुं.–झक्कड़, अँधियाव, झंझावात।

असूम (عصوم) अ. वि.–बहुत खानेवाला, बहुभक्षी।

अस्अद (اسعد) अ. वि.–बहुत ही शुभ, बहुत ही मुबारक, अत्यधिक मांगलिक।

अस्क़फ़ (اسقف) अ. वि.–लंबा और क़मर झुका पुरुष।

अस्कर (عسکر) अ. पुं.–सेना, फ़ौज; एक नगर का नाम।

अस्करी (عسکری) अ. वि.–सैनिक, सिपाही।

अस्करीयः (عسکریہ) अ. स्त्री.–फ़ौजी खिदमत, सैन्य-सेवा।

अस्क़ल (اثقل) अ. वि.–बहुत ही भारी, अति गुरु, गुरुतम।

अस्क़लान (عسقلان) अ. पुं.–शाम का एक नगर।

अस्क़ाम (اسقام) अ. पुं.–'सुक़्म' का बहु., बुराइयाँ, त्रुटियाँ, खराबियाँ; बीमारियाँ, रोग-समूह।

अस्क़ाल (اثقال) अ. पुं.–'सिक़्ल' का बहु., बहुत से बोझ।

अस्ख़िया (اسخیا) अ. पुं.–'सख़ी' का बहु., सख़ी, दाता लोग, देनेवाले लोग।

अस्ग़र (اصغر) अ. वि.–बहुत अधिक छोटा, सग़ीर (छोटा) का लघुरूप, लघुतर।

अस्जद (عسجد) अ. पुं.–सोना, चाँदी और रत्न।

अस्जाअ (اسجاع) अ. पुं.–'सज्अ' का बहु., मुक़फ़्फ़ा बातें, ऐसी बातें जिनमें तुक हों, सतुकान्त वाक्यावलि।

अस्त (است) फा. क्रि.–अस्ति, है।

अस्तब्ल (اصطبل) फा. पुं.–तबेला, घुड़साल, अश्वशाला।

अस्तर (استر) फा. पुं.–खच्चर, अश्वतर; अब्रः का उलटा, आस्तर।

अस्ता' (اسطع) अ. वि.–बहुत ऊँचा; लंबी गरदनवाला।

अस्तार (استار) अ. पुं.–'सत्र' का बहु., पर्दे।

अस्तुख़्वाँ (استخوان) फा. स्त्री.–हड्डी, अस्थि।

अस्दक़ (اصدق) अ. वि.–बहुत सच्चा, सत्यनिष्ठ।

अस्दाद (اسداد) अ. पुं.–'सद' का बहु., रुकावटें, रोकें।

अस्दाफ़ (اصداف) अ. पुं.–'सदफ़' का बहु., सीपियाँ, शुक्तियाँ।

अस्दिक़ा (اصدقا) अ. पुं.–'सदीक़' का बहु., मित्र-समूह, सुहृद्-जन, दोस्त लोग।

अस्ना (اثنا) अ. अव्य.–मध्य, बीच, दरमियान।

अस्ना (اسنی) अ. वि.–बहुत ऊँचा; बहुत उज्ज्वल।

अस्नाद (اسناد) अ. पुं.–'सनद' का बहु., सनदें, प्रमाणपत्र।

अस्नान (اسنان) अ. पुं.–‘सिन्न’ का बहु., दंतावली, दाँत।

अस्नाफ़ (اصناف) अ. पुं.–‘सिन्फ़’ का बहु., क़िस्में, प्रकार।

अस्नाम (اصنام) अ. पुं.–‘सनम’ का बहु., मूर्तियाँ।

अस्नियः (اثنیہ) अ. स्त्री.–‘सना’ का बहु., स्तुतियाँ।

अस्प (اسپ) फा. पुं.–अश्व, वाजि, हय, घोटक, घोड़ा।

अस्पग़ोल (اسپغول) फा. पुं.–ईसबगोल, एक प्रकार के दाने जो दवा में चलते हैं।

अस्पदुवानी (اسپدوانی) फा. स्त्री.–घुड़दौड़।

अस्फ़र (اصفر) अ. वि.–पीला, पीत, ज़र्द।

अस्फ़ल (اصفل) अ. वि.–बहुत नीचा, सबसे नीचा; बहुत अधम, कमीना।

अस्फ़लुस्साफ़िलीन (اسفلالسافلین) अ. स्त्री.–नरक का सातवाँ तबका।

अस्फ़ा (اصفیٰ) अ. वि.–बहुत स्वच्छ, बहुत साफ़, निर्मल।

अस्फ़ाद (اصفاد) अ. पु.–‘सफ़्द’ का बहु., क़ैदें; ज़ंजीरें; बख़्शिशें।

अस्फ़ार (اسفار) अ. पुं.–‘सिफ़्र’ का बहु., बड़े ग्रंथ; ‘सफ़ीर’ का बहु., पथिक लोग; दूत लोग; ‘सफ़र’ का बहु., दिनों के प्रकाश।

अस्फ़ार (اصفار) अ. पुं.–‘सिफ़्र’ का बहु., बिन्दु, बिंदियाँ, नुक़्ते।

अस्फ़िया (اصفیا) अ. पुं.–‘सफ़ी’ का बहु., पूज्य लोग, बुज़ुर्ग लोग; ऋषि लोग, वलीअल्लाह।

अस्बः (عصبہ) अ. पुं.–स्नायु, पट्ठा।

अस्बक़ (اسبق) अ. वि.–सबसे आगे, सबसे अव्वल।

अस्बक (اسبک) अ. पुं.–बड़ा तंवू, बड़ा ख़ेमा।

अस्बाक़ (اسباق) अ. पुं.– ‘सबक़’ का बहु., पुस्तक के पाठ।

अस्बाग़ (اسباغ) अ. पुं.–‘सब्ग़’ का बहु., बहुत से रंग।

अस्बात (اسباط) अ. पुं.–‘सिब्त’ का बहु., नाती, पोते।

अस्बाब (اسباب) अ. पुं.–‘सबब’ का बहु., कारण-समूह, वजहें; उपकरण, सामान।

अस्बाबे ख़ानः (اسباب خانہ) अ. फ़ा. पुं.–घर का सामान, गृह-सामग्री।

अस्बाह (اصباح) अ. पुं.–‘सुब्ह’ का बहु., प्रातःकाल-समूह, सुबहें।

अस्मन (اسمن) अ. वि.–बहुत मोटा, बहुत चर्बीला।

अस्लख़ (اسلخ) अ. वि.–गंजा, खल्वाट; बहुत लाल।

अस्लख़ (اصلخ) अ. वि.–बधिर, बहरा।

अस्मर (اسمر) अ. वि.–गेहुएँ रंगवाला।

अस्मराँ (اسمران) अ. पुं.–गेहूँ, गंदुम, गोधूम।

अस्मा (اسما) अ. पुं.–‘इस्म’ का बहु., नामावली, नामों की सूची।

अस्मा’ (اصمع) अ. वि.–छोटे कानोंवाला।

अस्माअ (اسماع) अ. पुं.–‘सम्अ’ का बहु., कान, बहुत से कान।

अस्मा उर्रिजाल (اسماءالرجال) अ. पुं.–बड़े-बड़े लोगों का नाम और उनकी कीर्तियों का वर्णन।

अस्मान (اثمان) अ. पुं. ‘समन’ का बहु., क़ीमतें, मूल्य।

अस्मार (اثمار) अ. पुं.–‘समर’ का बहु., फल, मेवे।

अस्याफ़ (اسیاف) अ. पुं.–‘सैफ़’ का बहु., तलवारें।

अस्र (عصر) अ. पुं.–समय, काल, वक़्त; सूर्यास्त से पहले का समय; इस समय की नमाज़।

अस्र (اثر) अ. पुं.–तलवार के लोहे की धारियाँ; मुहम्मद साहब की हदीस का वर्णन।

अस्रा’ (اسرع) अ. वि.–बहुत शीघ्र, बहुत जल्द; बहुत तेज़।

अस्रा (اسریٰ) अ. पुं.–‘असीर’ का बहु., क़ैदी लोग, कारावासी।

अस्रानः (عصرانہ) अ. फा. पुं.–शाम को दी जानेवाली चाय आदि की दावत, ऐट होम।

अस्रार (اسرار) अ. पुं.–‘सिर’ का बहु., मर्म, भेद, राज़।

अस्रे अतीक़ (عصرعتیق) अ. पुं.–प्राचीन काल, पुराना जमाना।

अस्रे क़दीम (عصرقدیم) अ. पुं.–दे. ‘अस्रे अतीक़’।

अस्रे जदीद (عصرجدید) अ. पुं.–आधुनिक काल, नवीन काल, आजकल का मौजूदा जमाना।

अस्रे नौ (عصرنو) अ. फा. पुं.–दे. ‘अस्रे जदीद’।

अस्रे हाजिर (عصر حاضر) अ. पुं.–दे. ‘अस्रे जदीद।

अस्ल (اصل) अ. स्त्री.–मूल, जड़; आधार, बुनियाद; सत्य, सच; यथार्थ, वाक़ई।

अस्ल (اثل) अ. पुं.–झाऊ का पेड़।

अस्लन (اصلاً) अ. वि.–यथार्थतः, वाक़ई, अस्ल में।

अस्लम (اسلم) अ. वि.–बहुत ही सुरक्षित, बिलकुल महफ़ूज़; बहुत ही सहिष्णु, मुतहम्मिल।

अस्लम (اصلم) अ. वि.–बूचा, जिसके कान कटे हों, कनकटा।

अस्लह (اصلح) अ. वि.–बहुत ही सदाचारी; परम शुद्ध; बहुत ही उचित।

अस्ला (اصلا) अ. वि.–कदापि, हरगिज़; नितांत, बिलकुल, ज़रा भी।

अस्ला’ (اصلع) अ. वि. –खल्वाट, गंजा।

अस्लाफ़ (اسلاف) अ. पुं.–‘सलफ़’ का बहु., पूर्वज, पुराने बुज़ुर्ग, पुरखा।

अस्लाब (اصلاب) अ. पुं.–‘सुल्ब’ का बहु., औरस, नुत्फ़े।

अस्लिहः (اسلحہ) अ. पुं.–'सिलाह' का बहु., अस्त्र-शस्त्र, हथियार।

अस्लिहः ख़ानः (اسلحہ خانہ) अ. फा. पुं.–शस्त्रागार, अस्त्रशाला, आयुधागार, हथियारघर।

अस्ली (اصلی) अ. वि.–जो नक़ली न हो, अकृत्रिम; सत्य, सच्चा; निष्केवल, ख़ालिस; यथार्थ, वाक़ई।

अस्लीयत (اصلیت) अ. स्त्री.–यथार्थता, वाक़ईयत; सत्यता, सच्चाई, वास्तविकता।

अस्लुलउसूल (اصل الاصول) अ. पुं.–संपूर्ण नियमों की जड़, सबसे बड़ा नियम।

अस्लुस्सूस (اصل السوس) अ. स्त्री.–एक पेड़ की जड़, मुलेठी।

अस्व (عصو) अ. पुं.–छड़ी से मारना।

अस्वद (اسود) अ. विं.–बहुत काला; काला, कृष्ण।

अस्वदोअह्मर (اسودواحمر) अ. पुं.–'हबश' और 'रूम' के देश।

अस्वब (اصوب) अ. वि.–बहुत ही ठीक, शुद्ध और सही।

अस्वाक़ (اسواق) अ. पुं.–'सूक़' का बहु., बाज़ार, बहुत से बाज़ार।

अस्वात (اصوات) अ. स्त्री.–'सौत' का बहु., आवाज़ें, ध्वनियाँ, स्वर-समूह।

अस्वाब (اثواب) अ. पुं.–'सौब' का बहु., वस्त्र-समूह, कपड़े।

अस्वार (اسوار) अ. पुं.–सवार, अश्वारोही।

अस्वार (اثوار) अ. पुं.–'सौर' का बहु., बहुत से बैल।

अस्विलः (اسولہ) अ. पुं.–'सवाल' का बहु., बहुत से प्रश्न, प्रश्नावली, सवालात।

अस्सार (عصار) अ. पुं.–तैलकार, तेली, रौग़नगर।

अस्हल (اسہل) अ. वि.–बहुत ही सुगम, बहुत ही आसान।

अस्हाब (اصحاب) अ. पुं.–'साहिब' का बहु., साहिबान; हज़रत मुहम्मद साहिब के सिहाबी; वाले।

अस्हाबुर्राय (اصحاب الرائے) अ. पुं.–शुद्ध रायवाले, जिनकी राय हर विषय में ठीक होती हो।

अस्हाबुश्शिमाल (اصحاب الشمال) अ. पुं.–नरक़वाले।

अस्हाबे कह्फ़ (اصحاب کہف) अ. पुं.–सात ईश्वरभक्त जो दक़्यानूस बादशाह के अत्याचार के भय से एक गुहा में छिप रहे थे।

अस्हाबे फ़ह्म (اصحاب فہم) अ. पुं.–बुद्धिमान् लोग, समझदार लोग।

अस्हाबे फ़िक्र (اصحاب فکر) अ. पुं.–ग़ौरो फ़िक्र करनेवाले लोग, चिंतनशील लोग।

अस्हाबे मिन्क़ल (اصحاب منقل) अ. पुं.–बेतकल्लुफ़ दोस्त, लँगोटिया यार दोस्त, बूज़म फ़्रेंड।

अस्हार (اسحار) अ. पुं.–'सहर' का बहु., सबेरे, प्रातःकाल।

अहक़ [**क़्क़**] (احق) अ. वि.–जो बहुत अधिक हक़दार हो।

अहद (احد) अ. वि.–एक, एक की संख्या, (पुं.) ईश्वर, ख़ुदा।

अहम [**म्म**] (اہم) अ. वि.–महत्वपूर्ण, ज़ोरदार, वज़नी; मुख्य, ख़ास।

अहम्मीयत (اہمیت) अ. स्त्री.–महत्ता, महिमा, वज़न; मुख्यता, ख़ुसूसियत।

अहाली (اہالی) अ. पुं.–'अह्ल' का बहु., लोग, अनेक व्यक्ति; बड़े लोग, प्रतिष्ठित जन।

अहासिन (احاسن) अ. पुं.–'अह्सन' का बहु., अच्छे लोग, सज्जनगण; अच्छाइयाँ, ख़ूबियाँ।

अहिब्बा (احبا) अ. पुं.–'हबीब' का बहु., मित्रगण, यार-दोस्त।

अहिल्लः (اہلہ) अ. पुं.–'हिलाल' का बहु., नये चाँद।

अह्कम (احکم) अ. वि.–बहुत बड़ा हाकिम, बहुत बड़ा शासक; बहुत अधिक दृढ़, बहुत मज़बूत।

अह्कमुल हाकिमीन (احکم الحاکمین) अ. पुं.–सारे हाकिमों का हाकिम, सारे शासकों का शासक अर्थात् ईश्वर।

अह्क़ाद (احقاد) अ. पुं.–'हिक़्द' का बहु., द्वेष, कीने।

अह्काम (احکام) अ. पुं.–'हुक्म' का बहु., आज्ञाएँ, आदेश।

अह्ज़म (احزم) अ. वि.–बहुत अधिक प्रवीण, बहुत अधिक प्रतिभावान्, अत्यन्त निपुण।

अह्ज़ान (احزان) अ. पुं.–'हुज़्न' का बहु., खेद-समूह, बहुत से रंज।

अह्ज़ाब (احزاب) अ. पुं.–'हिज़्ब' का बहु., दल, पार्टियाँ।

अह्जार (احجار) अ. पुं.–'हजर' का बहु., पत्थर।

अह्द (عہد) अ. पुं.–प्रतिज्ञा, इकरार; वचन, क़ौल; युग, काल, ज़माना; समय, वक़्त।

अह्दनामः (عہدنامہ) अ.फा. पुं.–प्रतिज्ञापत्र, इक़रारनामा।

अह्दाक़ (احداق) अ. पुं.–'हदकः' का बहु., आँखों के ढेले।

अह्दी (احدی) अ. वि.–बहुत ही आलसी, बड़ा ही काहिल।

अह्देअतीक़ (عہدعتیق) अ. पुं.–प्राचीन काल, पुराना जमाना।

अह्देजदीद (عہدجدید) अ. पुं.–आधुनिक काल, नया जमाना।

अह्देज़रीं (عہدزریں) अ. फा. पुं.–स्वर्ण-युग, बहुत ही अच्छा जमाना, सुखद समय।

अह्दे संग (عہد سنگ) अ. फा. पुं.–प्रस्तर-युग, वह समय जब मनुष्य पत्थर के अस्त्र प्रयोग करता था।

अह्दे हाज़िर (عہد حاضر) अ. पुं.–आधुनिक काल, मौजूदा जमाना, वर्तमान समय।

अह्दे हुकूमत (عہد حکومت) अ. पुं.–शासन-काल, राज्य-काल, हुकूमत का जमाना।

अह्नफ़ (احنف) अ. वि.–जिसके घुटने एक ओर को झुके हों और चलने में टकराएँ।

अह्फ़ाद (احفاد) अ. पुं.–'हफ़्द' का बहु., नाती-पोते; नौकर- चाकर।

अह्बाब (احباب) अ. पुं.–'हबीब' का बहु., मित्र लोग, दोस्त, अहबाब।

अह्बार (احبار) अ. पुं.–'हिब्र' का बहु., बुद्धिमान् लोग; वैज्ञानिक लोग।

अह्मक़ (احمق) अ. वि.–बहुत ही मूर्ख, निपट अनाड़ी; मूर्ख, बेअक़्ल।

अह्मज़ (احمض) अ. वि.–खट्टा, अम्ल।

अह्मर (احمر) अ. वि.–लाल, सुर्ख़, रक्त।

अह्माल (احمال) अ. पुं.–'हम्ल' का बहु., बोझ, बहुत से बोझ।

अह्यान (احیان) अ. पुं.–'हीन' का बहु., काल-समूह, वक़्त।

अह्यानन (احیاناً) अ. वि.–कभी-कभी; सहसा, एकाएक, इत्तिफ़ाक़न।

अह्रमन (اہرمن) फा. पुं.–ईरान के आतशपरस्तों के मतानुसार "बदी" का ख़ुदा।

अह्राम (احرام) अ. पुं.–'हरिम' का बहु., बहुत बूढ़े लोग।

अह्रार (احرار) अ. पुं.–'हुर' का बहु., आज़ाद लोग।

अह्रुफ़ (احرف) अ. पुं.–'हर्फ़' का बहु., अक्षर-समूह, हुरूफ़।

अह्ल (اہل) अ. वि.–योग्य, पात्र, मुस्तहक़; वाले।

अह्लकार (اہلکار) अ. फा. पुं.–कर्मचारी, सरकारी दफ़्तर में काम करनेवाला व्यक्ति।

अह्लमद (اہل مد) अ. पुं.–माल, दीवानी अथवा फ़ौजदारी न्यायालयों में काम करनेवाला एक कर्मचारी।

अह्ला (احلیٰ) अ. वि.–बहुत ही मीठा।

अह्लाम (احلام) अ. पुं.–'हुलुम' या 'हुल्म' का बहु., स्वप्न-समूह, ख्वाब।

अह्लियः (اہلیہ) अ. स्त्री.–पत्नी, भार्या, स्त्री, जोरू।

अह्लियत (اہلیت) अ. स्त्री.–दे. 'अहलीयत' दो., शु. हैं।

अह्ली (اہلی) अ. वि.–'वह्शी' का उल्टा, पालतू, पालू।

अह्लीयत (اہلیت) अ. स्त्री.–योग्यता, क़ाबिलीयत; पात्रता इस्तेहक़ाक़; निपुणता, होशयारी।

अह्ले अदम (اہل عدم) अ. पुं.–यमलोक के निवासी, मृत, वे लोग जो मर चुके हैं।

अह्ले इल्म (اہل علم) अ. पुं.–विद्वान् लोग, पंडित जन, आलिम लोग, काफ़ी पढ़े-लिखे लोग।

अह्ले ख़ैर (اہل خیر) अ. पुं.–वे लोग जो परोपकार में जी खोलकर खर्च करते हैं, दानशील लोग।

अह्ले ज़मीं (اہل زمیں) अ. फा. पुं.–संसारिक लोग, पृथ्वी पर बसनेवाले लोग।

अह्ले ज़िम्मः (اہل ذمہ) अ. पुं.–वह ग़ैर मुस्लिम जो मुस्लिम राज्य में रहते हों।

अह्ले वतन (اہل وطن) अ. पुं.–देशवासी, वतनवाले।

अह्ले हक़ (اہل حق) अ. पुं.–सत्यनिष्ठ लोग, ईमानदार लोग; सच्चे लोग; महात्मा लोग।

अह्वज (اہوج) अ. वि.–लंबा-तड़ंगा व्यक्ति; जल्दबाज़ी करनेवाला मूर्ख।

अह्वन (اہون) अ. वि.–बहुत आसान, बहुत सुगम।

अह्वल (اہول) अ. वि.–भेंगा, जिसे एक वस्तु की दो वस्तुएँ दिखाई दें।

अह्वा (اہوا) अ. स्त्री.–'हवा' का बहु., इच्छाएँ, ख्वाहिशें।

अह्वाल (احوال) अ. पुं.–'हाल' का बहु., घटनाएँ, हालात; समाचार, हाल; समस्याएँ, मुआमले।

अह्वाल (اہوال) अ. पुं.–'हौल' का बहु., भय, डर, ख़ौफ़।

अह्शा (احشا) अ. पुं.–'हश्व' का बहु., आँतें, अँतड़ियाँ; पेट के भीतर की सब चीज़ें, जिगर, तिल्ली, पाकाशय और आँतें पीतें सब।

अह्शाम (احشام) अ. पुं.–'हशम' का बहु., नौकर-चाकर।

अह्संत (احسنت) अ. वि.–साधु-साधु, धन्य-धन्य, वाह-वाह।

अह्सन (احسن) अ. वि.–अति सुंदर, बहुत हसीन; अत्युचित, बहुत मुनासिब; अत्युत्तम, बहुत उम्दा।

अह्सने तक़्वीम (احسن تقویم) अ. पुं.–मानव शरीर, जो ईश्वर की कारीगरी का बेहतरीन नमूना है, ईश्वरीय कृति का सर्वोत्तम कलापूर्ण उदाहरण।

आ

आइंदः (آئندہ) फा. वि.–आने वाला, जो आने को हो; भविष्य, मुस्तक़्बिल।

आइदः (عائدہ) अ. पुं.–परम्परा, रिवाज; शुल्क, महसूल; लाभ, नफ़ा; उपकार, एहसान; प्रतिकार, बदला; अनुकम्पा; दवा।

आइद (عائد) अ. वि.–लौटनेवाला, पलटनेवाला; लागू होनेवाला, लगनेवाला।

आइनः (آئنہ) फा. पुं.–'आईनः' का लघु. दे. 'आईनः'।

आइन (عائن) अ. वि.–सहायक, मददगार।

आइलः (عائلہ) अ. पुं.–कुल, ख़ानदान, वंश, अभिजन।

आइल (عائل) अ. वि.–संन्यासी, दरवेश, फ़क़ीर।

आइस (آئس) अ. वि.–निराश, नाउम्मीद।

आईनः (آئنہ) फा. पुं.–दर्पण, मुकुर, आदर्श, शीशा; (वि०) स्पष्ट, साफ़।

आईनःगर (آئنہ گر) फा. वि.–आईनः (आईना, शीशा) बनानेवाला, दर्पणकार।

आईनःबंदी (آئنہ بندی) फा. स्त्री.–किसी बड़े व्यक्ति के आगमन के समय या किसी बड़े उत्सव पर नगर की सड़कों और बाज़ारों को झाड़-फ़ानूस से सजाना।

आईनः साज़ (آئنہ ساز) फा. वि.–'आईनःगर'।

आईन (آئین) फ़ा. पुं.–विधान, क़ानून; नियम, कायदा; परम्परा, रवाज; व्यवहार, चलन; प्रणाली, पद्धति, तरीक़ा, तर्ज़।

आईनदाँ (آئین داں) फा. वि.–क़ानून जाननेवाला, विधानज्ञ, वकील।

आईनबंदी (آئین بندی) फा. स्त्री.–कमरे में झाड़ आदि सजाना; फ़र्श में पत्थर आदि की जुड़ाई।

आईनसाज़ (آئین ساز) फा. वि.–विधान बनानेवाला, विधायक; विधान बनानेवाली परिषद्, विधायिका।

आईनी (آئینی) फा. वि.–क़ानूनी, वैधानिक, वैध।

आक़[क़्क़] (عاق) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसे उसकी माता या पिता ने उद्दंडता के कारण बहिष्कृत कर दिया हो।

आक (اک) फा. प्रत्य.–सम्बन्ध का वाक्य, जैसे 'ख़ुराक' और 'सोज़ाक'; (पुं.) दोष, ऐब।

आक़रक़र्हा (عاقرقرحا) अ. पुं.–एक जंगली जड़ जो दवा में चलती है, अक़रकरा।

आक़ा (آقا) तु. पुं.–स्वामी, प्रभु, मालिक; अध्यक्ष, सरदार।

आका (آکا) तु. पुं.–बड़ा भाई, अग्रज।

आक़ासी (آقاسی) तु. पुं.–दीवानख़ाने का दारोग़ा।

आक़िद (عاقد) अ. वि.–ग्रंथि लगानेवाला, गाँठ देनेवाला; वचन देनेवाला, प्रतिज्ञा करनेवाला।

आकिफ़ (عاکف) अ. वि.–किसी जगह निवास करनेवाला; किसी चीज़ के चारों ओर फिरनेवाला; मस्जिद में तपस्या के लिए बैठनेवाला।

आक़िब (عاقب) अ. वि.–किसी के पीछे आनेवाला; किसी की अनुपस्थिति में उसकी जगह काम करनेवाला।

आक़िबत (عاقبت) अ. स्त्री.–यमलोक, आख़िरत; परिणाम, अंजाम; अंत, अख़ीर। (आक़्बत)

आक़िबत अंदेश (عاقبت اندیش) अ. फा. वि.–हर काम को उसका परिणाम सोचकर करनेवाला, परिणामशोची, परिणामदर्शी।

आक़िबत नाअंदेश (عاقبت نااندیش) अ. फा. वि.–जो कार्य के परिणाम से बेख़बर (असावधान) रहकर काम करता हो, अपरिणामदर्शी।

आक़िबतबीं (عاقبت بیں) अ. फा. वि.–दे. 'आक़िबत अंदेश'।

आक़िर (عاقر) अ. वि.–निःसंतान पुरुष; बाँझ स्त्री; रेत का टीला जिस पर कोई चीज़ न होती हो।

आक़िलः (عاقلہ) अ. स्त्री.–बुद्धिमती स्त्री; वह शक्ति जिससे पदार्थों का ज्ञान किया जा सके।

आक़िल (عاقل) अ. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद; पहाड़ों पर भागने-फिरनेवाला हरिन।

आक्चः (آقچہ) तु. पुं.–रुपया; अश्रफ़ी, स्वर्णमुद्रा, मोहर।

आख़ (آخ) फा. अव्य.–वाह वाह, साधु साधु; (पुं.) शोर, कोलाहल; विलाप, रोना-धोना।

आख़िज़ (آخذ) अ. वि.–पकड़नेवाला, लेनेवाला, ग्रहणकर्ता, उद्धरणदाता।

आख़िर (آخر) अ. वि.–अंत, अख़ीर; पिछला, आख़िरी; अंततः, आख़िरकार।

आख़िरत (آخرت) अ. स्त्री.–परलोक, यमलोक, उक़्बा; अंत, अख़ीर; परिणाम, नतीजा।

आख़िरतबीं (آخرت بیں) अ. फा. वि.–परिणामदर्शी, अंतदर्शी, दूरदर्शी, अंजाम पर दृष्टि रखनेवाला।

आख़िरी (آخری) अ. वि.–अंतिम, पिछला, अख़ीरी; निश्चित, क़तई।

आख़िरुल अम्र (آخرالامر) अ. वि.–आख़िर को, अंततः, आपाततः, आख़िरकार।

आख़िरेकार (آخرکار) अ. फा. वि.–दे० 'आख़िरुल अम्र'।

आख़ुंद (آخوند) तु. पुं.–शिक्षक, पढ़ानेवाला।

आख़ुर (آخور) तु. पुं.–अश्वशाला, मन्दुरा, तवेला; गोचर, चरागाह।

आख़ुरेसंगी (آخور سنگی) तु. फा. पुं.–ऐसा स्थान जहाँ घास और हरियाली न हो।

आख़ोर (آخور) तु. पुं.–'आख़ुर' का बिगड़ा हुआ रूप, कबाड़, फ़ुज़ूल सामान।

आख़्तः (آختہ) फा. वि.–खींचा हुआ; ख़स्सी, बधिया, बध्रि, मुष्कशून्य।

आख़्तः बेगी (آختہ بیگی) फा. वि.–बधिया करनेवाला।

आख़्शीज (آخشیج) अ. पुं.–दे. 'आख़्शेग'।

आख़्शेग (آخشیگ) फा. पुं.–विरोधी वस्तु; उंसुर, तत्त्व।

आगंदः (آگندہ) फा. वि.–भरा हुआ, पूर्ण।

आग़श्तः (آغشتہ) फा. वि.–सना हुआ, लथड़ा हुआ।

आग़श्तः बख़ूँ (آغشتہ بخوں) फा. वि.–ख़ून में लथड़ा हुआ, ख़ून में लतपत।

आग़श्तए ख़ूँ (آغشتۂ خوں) फा. वि.–दे. 'आग़श्तः बख़ूँ'।

आगही (آگہی) फा. स्त्री.–'आगाही' का लघु. रूप ज्ञान, जानकारी; सूचना, इत्तिलाअ; परिचय, पहचान।

आग़ा (آغا) तु. पुं.–स्वामी, मालिक; भ्राता, भाई; काबुली, अफ़ग़ानी पठान।

आग़ाज़ (آغاز) फा. पुं.–अनुष्ठान, प्रारम्भ, शुरूआत; इब्तिदा, आदि।

आग़ाज़िंदः (آغازندہ) फा. वि.–शुरू करनेवाला, आरंभ-कर्ता।

आग़ाज़ीदः (آغازیدہ) फा. वि.–शुरू किया हुआ, प्रारब्ध।

आग़ाज़ेकार (آغازکار) फा. पुं.–काम की शुरूआत, कार्यारंभ, सूत्रपात।

आग़ारीदः (آغاریدہ) फा. वि.–गूंधा हुआ, माड़ा हुआ, साना हुआ।

आग़ाल (آغال) फा. पुं.–जंगल में भेड़-बकरियों के सोने का सुरक्षित स्थान।

आग़ालीदः (آغالیدہ) फा. वि.–शत्रुता और युद्ध पर उत्तेजित किया हुआ।

आगाह (آگاہ) फा. वि.–ज्ञात, जाना हुआ; सूचित, मुत्ताला; परिचित, वाक़िफ़।

आगाही (آگاہی) फा. स्त्री.–ज्ञान, जानकारी; सूचना, इत्तिलाअ; परिचय, जान-पहचान।

आग़ोश (آغوش) फा. उभ.–अंक, क्रोड, गोद, बग़ल।

आग़ोशकुशा (آغوش کشا) फा. वि.–गोद फैलाये हुए, किसी को लिपटाने के लिए गोद खोले हुए।

आज़ंग (آژنگ) फा. पुं.–झुर्री, बल, शिकन।

आज (عاج) अ. पुं.–हाथीदाँत, हस्तिदंत।

आज़ (آز) फा. स्त्री.–लोभ, लालच, हिर्स।

आज़ख़ (آژخ) फा. पुं.–मस्सा, मोटा और उठा हुआ तिल।

आ'जज़ (اعجز) अ. वि.–अत्यन्त विवश, बहुत ही लाचार।

आज़मंद (آزمند) फा. वि.–लोभी, लालची, हरीस।

आ'ज़म (اعظم) अ. वि.–बहुत बड़ा, महान्; विशाल, वसीअ।

आ'जम (اعجم) अ. वि.–गूँगा, मूक, जो बोल न सके।

आज़र्दः (آزردہ) फा. वि.–सताया हुआ, पीड़ित; खिन्न, मलिन, अफ़सुर्दा; दुःखित, रंजीदा; रुष्ट, नाराज़।

आज़र्दः पुश्त (آزردہ پشت) फा. वि.–कुबड़ा, कुब्ज, जिसकी पीठ में कूबड़ हो।

आज़र्द (آژرد) फा. पुं.–बहुत खाना, बहुभक्षण।

आज़र्दगी (آزردگی) फा. स्त्री.–खिन्नता, उदासी; दुःख, रंज; रोष, नाराज़गी; सताव।

आज़र्दनी (آزردنی) फा. वि.–सताने के क़ाबिल; दुःखित करने योग्य; रुष्ट करने योग्य।

आज़र्म (آزرم) फा. पुं.–शांति, सलाह; कृपा, दया; लज्जा, शर्म; सम्मान, इज़्ज़त; प्रतिष्ठा, बुज़ुर्गी।

आ'ज़ा (اعضا) अ. पुं.–'उज़्व' का बहु., शरीर के अंग, हाथ, पाँव, सिर आदि।

आज़ाए रईसः (اعضاے رئیسہ) अ. पुं.–शरीर के वह अवयव जो सर्वश्रेष्ठ हैं। जैसे—हृदय, जिगर, मस्तिष्क आदि।

आज़ादः (آزادہ) फा. वि.–स्वच्छद, स्वेच्छाचारी, निरंकुश, आज़ाद।

आज़ादःरवी (آزادہ روی) फा. स्त्री.–स्वेच्छाचार, मन की मौज।

आज़ादःरौ (آزادہ رو) फा. वि.–स्वेच्छाचारी, मनमौजी।

आज़ाद (آزاد) फा. वि.–स्वतंत्र, स्वाधीन; बंधनमुक्त, गुलुख़लास; निरंकुश, ख़ुदराए; एक प्रकार के फ़क़ीर जो धर्म आदि के बंधनों से मुक्त होते हैं; रिहा, कारामुक्त।

आज़ाद तब्अ (آزاد طبع) फा. अ. वि.–दे. 'आज़ाद मिज़ाज'।

आज़ादमनिश (آزادمنش) फा. वि.–दे. 'आज़ाद मिज़ाज'।

आज़ाद मिज़ाज (آزادمزاج) फा.अ. वि.–मनमौजी, स्वेच्छाचारी, वह व्यक्ति जिसके मन में जो आये सो करे।

आज़ादानः (آزادانہ) फा. वि.–स्वतंत्रतापूर्वक, आज़ादी के साथ, बे रोक-टोक।

आज़ादी (آزادی) फा. स्त्री–स्वतंत्रता, ख़ुदमुख़्तारी; निरंकुशता, ख़ुदराई; बंधनमुक्ति, ख़लासी।

आज़ादीपसंद (آزادی پسند) फा. वि.–जिसे स्वच्छंदता पसंद हो, जो निरंकुश रहना चाहता हो; जो स्वतंत्रता चाहता हो, जिसे ग़ुलामी पसंद न हो।

आज़ान (آذان) अ. पुं.–'उज़ुन' या 'उज़्न' का बहु. कान।

आजाम (آجام) अ. पुं.–'अजम' का बहु. वृक्षों के झुंड, पेड़ों के समूह।

आज़ार (آزار) फा. पुं.–रोग, बीमारी; आपत्ति, मुसीबत; खेद, रंज; दुर्व्यसन, लत। (प्रत्य०) दुःख देनेवाला,

सतानेवाला; जैसे, 'दिल आज़ार' हृदय को दुःख देनेवाला।

आज़ार तलब (آزار طلب) फा. अ. वि.–जिसे कष्टों में रहना अच्छा लगता हो, दुःखप्रिय।

आज़ार देह (آزار ده) फा. वि.–कष्ट देनेवाला, दुःखदायी।

आज़ारिंदः (آزارنده) फा. वि.–सतानेवाला, दुःख देनेवाला।

आज़ारी (آزاری) फा. वि.–रोगी, बीमार, अस्वस्थ।

आज़ारीदः (آزاریده) फा. वि.–सताया हुआ, दुःख पहुँचाया हुआ, पीडित, दुःखित।

आजाल (آجال) अ. पुं.–'अजल' का बहु. मौत के वक्त; मृत्युएँ, मौतें।

आजिज़ (عاجز) अ़. वि.–निराश्रय, असहाय; बेबस, लाचार; ऊबा हुआ, परीशान; विनम्र, ख़ाकसार।

आजिज़ी (عاجزی) अ. स्त्री.–असहायता; बेबसी; ऊबना; विनम्रता।

आजिदः (أجده) फा. स्त्री.–तल की असमानता, सतह की नाहमवारी; रेती का खुर्दरापन।

आज़िम (عازم) अ. वि.–इच्छा करनेवाला, इरादा करनेवाला।

आजिर (آجر) अ. वि.–मजूरी (उजरत) देनेवाला।

आजिलः (عاجلة) अ. स्त्री.–मर्त्यलोक, संसार; जिसमें विलंब न हो।

आजिल (عاجل) अ. वि.–जल्दी करनेवाला, जल्दबाज़; जल्दीवाली वस्तु; संसार, दुनिया।

आजिल (آجل) अ़. वि.–जिसमें विलंब और देर हो; परलोक, उक़्बा।

आज़ीनः (آزینه) फा. पुं.–छेनी, टाँकी, पत्थर आदि छीलने का यंत्र।

आज़ीश (آذیش) फा. स्त्री.–अग्नि, आग।

आज़ुक़ः (آزقه) फा. पुं.–दे. 'आज़ूक़ः'।

आज़ुर (آذر) फा. पुं.–ईरानियों का नवाँ महीना; स्फुलिंग, चिनगारी।

आजुर (آجر) फा. स्त्री.–पकी हुई ईंट।

आज़ुर्दः (آزرده) फा. वि.–दे. 'आज़र्दः' वही शुद्ध है।

आज़ूक़ः (آزوقه) फा. पुं.–जीविका, रोज़ी, मआश; थोड़ी सी ग़िज़ा जिस से जीवन बना रहे।

आज़ूर (آزور) फा. वि.–लालची, लोभी, हरीस।

आज़्दः (آزده) फ़ा. पु.–झुर्री, बल, चीन; चिह्न, निशान; कोई नोकदार वस्तु चुभाना।

आज़्मा (آزما) फा. प्रत्य.–आज़मानेवाला; जैसे, 'क़िस्मत आज़्मा' भाग्य की परीक्षा करनेवाला।

आज़्माइंदः (آزمائنده) फा. वि.–आजमानेवाला, परीक्षा करनेवाला।

आज़्माइश (آزمائش) फा. स्त्री.–परीक्षा, परख, जाँच।

आज़्मूदः (آزموده) फा. वि.–परखा हुआ, जाँचा हुआ, परीक्षित।

आज़्मूदःकार (آزموده‌کار) फा. वि.–अनुभवी, कार्यसिद्ध, बहुदर्शी, ताजिूब:कार (तजरबाकार)।

आज़्मूदनी (آزمودنی) फा. वि.–परीक्षा के योग्य, परीक्षणीय, परखे जाने के क़ाबिल।

आज़्मून (آزمون) फा. पुं.–जाँच, परीक्षा, इम्तिहान।

आत (آت) तु. पुं.–घोड़ा, अश्व।

आतश (آتش) फा. स्त्री.–अग्नि, अनल, वह्नि, कृशानु, आग।

आतशअंगेज़ (آتش انگیز) फा. वि.–आग भड़कानेवाला, उत्तेजित करनेवाला; आग जलानेवाला।

आतश अफ़्गन (آتش افگن) फा. वि.–आग फेंकनेवाला, आग बरसानेवाला।

आतशक (آتشک) फा. स्त्री.–गरमी का रोग, उपदंश।

आतशकदः (آتش کده) फा. पुं.–दे. 'आतशख़ानः'।

आतशकार (آتش کار) फा. वि.–आतशबाज़; रसोइया, बाबरची।

आतशख़ानः (آتش خانه) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ पूजा की आग रहती है, अग्निशाला; पारसियों की अग्निशाला जहाँ की आग कभी बुझती नहीं है; चूल्हा, भट्ठी; वह स्थान जहाँ चूल्हा या भट्ठी जलती हो।

आतशख़्वार (آتش خوار) फा. पुं.–आग खानेवाला; चकोर, कब्क, एक पक्षी जो चाँद का प्रेमी है।

आतशगाह (آتش گاه) फा. स्त्री.–दे. 'आतशख़ानः'।

आतशगीर (آتش گیر) फा. वि.–आग पकड़ लेनेवाला, वह वस्तु या माद्दा जो तुरंत आग पकड़ ले, विस्फोटक, ज्वलनशील; जिस चीज़ से आग पकड़ी जाय; जैसे, चिमटा।

आतशज़दः (آتش زده) फा. वि.–जिसमें आग लग गयी हो, आग लगा हुआ; आग से जला हुआ, सोख़्ता।

आतशज़दगी (آتش زدگی) फा. स्त्री.–आग लगना, अग्निकांड।

आतशज़नः (آتش زنه) फा. पुं.–चकमक पत्थर, चुंबक; जिस चीज़ से आग फोड़ें।

आतशज़न (آتش زن) फा. वि.–आग लगानेवाला; 'क़ुक़्नुस' पक्षी, जिसके गाने से आग लग जाती है।

आतशज़नी (آتش زنی) फा. स्त्री.–दे. 'आतशज़दगी'।

आतशज़बाँ (آتش زباں) फा. वि.–धुआँधार भाषण देनेवाला, वावदूक, व्याख्यान में आग बरसानेवाला।

आतश ज़ेर पा (آتش زیر پا) फा. वि.–जिसके पाँव के नीचे आग हो, बहुत ही बेताब, आतुर।

आतश तब्अ (آتش طبع) फा. अ. वि.–दे. 'आतश मिज़ाज'।

आतशताब (آتش تاب) फा. वि.–आग से तपा हुआ, आग जैसी चमक रखनेवाला।

आतशदस्त (آتش دست) फा.वि.–फुर्तीला, तेज़, चालाक।

आतशदस्ती (آتش دستی) फा. स्त्री.–फुर्ती, तेज़ी, चालाकी; प्रभुत्व, ग़लबः।

आतशदान (آتش دان) फा. पुं.–चूल्हा, अँगीठी, भट्ठी।

आतशदीदः (آتش دیدہ) फा. वि.–आग पर सेंका हुआ, आग पर जला हुआ।

आतशनफ़स (آتش نفس) फा. अ. वि.–जिसकी साँस के साथ आग निकले, अर्थात् प्रेमी, दिलजला।

आतशनफ़सी (آتش نفسی) फा.अ. स्त्री.–साँस के साथ आग निकलना, दिल का दग्ध होना, प्रेमाग्नि से हृदय का जलना।

आतशनाक (آتش ناک) फा. वि.–आग की तरह तमतमाता हुआ, आग से भरा हुआ।

आतशपरस्त (آتش پرست) फा. वि.–आग की पूजा करनेवाला, अग्नि-पूजक; ईरान का पारसी, ज़रतुश्त का अनुयायी।

आतशपरस्ती (آتش پرستی) फा. स्त्री.–अग्निपूजा, आग की परस्तिश।

आतशपा (آتش پا) फा. वि.–दे. 'आतश ज़ेर पा'।

आतशपारः (آتش پارہ) फा. पुं.–अग्निकण, चिनगारी; अग्निखंड, अंगारा।

आतशबजाँ (آتش بجاں) फा. वि.–जिसके अंदर आग ही आग हो, अग्निगर्भ; प्रेमी, आशिक़।

आतशबाज़ (آتش باز) फा. पु.–आतशबाज़ी बनानेवाला, बारूद के खिलौने बनाने और बेचनेवाला।

आतशबाज़ी (آتش بازی) फा. स्त्री.–बारूद के खिलौने बनाने का काम; अग्निक्रीडा, बारूद के खिलोने।

आतशमिज़ाज (آتش مزاج) फा. अ. वि.–जिसके स्वभाव में हृद से अधिक रोष हो, क्रुद्धात्मा, गुस्सैल।

आतशमिज़ाजी (آتش مزاجی) फा. अ. स्त्री.–स्वभाव का अधिक रोष।

आतशरंग (آتش رنگ) फा. वि.–आग जैसे रंगवाला, दहकता हुआ, खूब लाल।

आतशीं (آتشیں) फा. वि.–आग का; आग का बना हुआ, अग्निमय; आग जैसा लाल।

आतशींरुख़ (آتشیں رخ) फा. वि.–जिसका मुख आग जैसा भभूका हो, बहुत ही सुंदर।

आतशीं रुख़सार (آتشیں رخسار) फा. वि.–जिसके गाल आग जैसे लाल हों।

आतशे अफ़्सुर्दः (آتش افسردہ) फा. स्त्री.–बुझी हुई आग।

आतशे ख़ामोश (آتش خاموش) फा. स्त्री.–बुझी हुई आग; दबी हुई आग।

आतशे जिगर (آتش جگر) फा. स्त्री.–हृदय की आग, प्रेमाग्नि।

आतशेतर (آتش تر) फा. स्त्री.–बहती हुई आग, शराब, मदिरा।

आतशे दरूँ (آتش دروں) फा. स्त्री.–दे. 'आतशे जिगर'।

आतशे दिह्क़ाँ (آتش دہقاں) फा. स्त्री.–वह आग जो कृषक घास-फूस जलाने के लिए खेतों में लगा देते हैं।

आतशे नुम्रूद (آتش نمرود) फा. अ. स्त्री.–वह आग जो हज्रत इब्राहीम को जलाने के लिए नुम्रूद बादशाह ने जलवायी थी।

आतशे फ़ारिस (آتش فارس) फा. स्त्री.–वह आग जो ज़रतुश्त के समय से ईरान में जल रही थी, जिसे इस्लाम ने बुझाया।

आतशे बेदूद (آتش بےدود) फा. स्त्री.–(धूम्रहीन अग्नि) सूर्य, आफ़ताब, सूरज।

आतशे महलूल (آتش محلول) फा. अ. स्त्री.–पानी में हलकी हुई आग, शराब, मदिरा।

आतशे सैयाल (آتش سیال) फा. अ. स्त्री.–पिघली और बहती हुई आग, शराब, मदिरा।

आतशे मुर्दः (آتش مردہ) फा. स्त्री.–बुझी हुई आग।

आतिफ़ (عاطف) अ. वि.–कृपा करनेवाला, मेहरबान।

आतिफ़त (عاطفت) अ. स्त्री.–कृपा, दया, मेहरबानी।

आतिर (عاطر) अ. वि.–सुगंधित, सुगंधमय; सुगंध से प्रेम करनेवाला।

आतिश (آتش) फा. स्त्री.–अग्नि, आग, 'आतिश' भी शुद्ध है, मगर 'आतश' अधिक बोलते हैं।

आतूस (عاطوس) अ. पुं.–छींक लानेवाली वस्तु, हुलास; वह पशु या पक्षी जिसका देखना अशकुन होता है।

आदत (عادت) अ. स्त्री.–प्रकृति, स्वभाव, ख़स्लत; व्यसन, लत; अभ्यास, मश्क।

आदत (آدت) अ. पुं.–अस्त्र, हथियार।

आदतन (عادتاً–عادۃً) अ. वि.–स्वभाव से, आदत से, स्वभावतः।

आदम (آدم) अ. पुं.–हज़्रत आदम जो सबसे पहले पुरुष थे, मूल पुरुष; मानव, मनुज, पुरुष, आदमी, इंसान।

आदमक़द (آدمقد) अ. वि.–दे. 'क़द्देआदम'।

आदमख़ोर (آدمخور) अ. फा. वि.–आदमी को खा जानेवाला, नरभक्षी, मानुषाशी।

आदमगर (آدمگر) अ. फा. वि.–दयालु, कृपालु, रहमदिल।

आदमज़ाद (آدمزاد) अ. फा. पुं.–मनुष्य का पुत्र, मनुष्य, आदमी।

आदमबेज़ार (آدمبیزار) अ.फा. वि.–वह व्यक्ति जो मनुष्यों की संगत से घबराता हो।

आदमी (آدمی) अ. पुं.–मनुष्य, मानव, इंसान; सभ्य, शिष्ट, मुहज़्ज़ब।

आदमीज़ादः (آدمیزاده) अ. फा. पुं.–आदमी की संतान, मनुष्य, आदमी।

आदमीयत (آدمیت) अ. स्त्री.–मानवता, इंसानियत; सभ्यता, शिष्टता, तमीज़दारी; सुशीलता, अख़्लाक़।

आदमे आबी (آدم آبی) अ. फा. पुं.–पानी में रहनेवाला मनुष्य की आकृति का जानवर, जलमानुष।

आदमे सह्राई (آدم صحرائی) अ. पुं.–एक बड़ा बंदर, वनमानुष; जंगली आदमी, देहाती; उजड्ड, अक्खड़।

आदमे सानी (آدم ثانی) अ. पुं.–'हज़्रत नूह', तूफ़ान के पश्चात् इन्हीं से संतान चली है।

आ'दल (اعدل) अ. वि.–बहुत अधिक न्याय करनेवाला।

आ'दा (اعدا) अ. पुं.–'अदू' का बहु. शत्रु लोग, दुश्मन लोग।

आदात (آدات) अ. पुं.–'आदत' का बहु. हथियार।

आदात (عادات) अ. स्त्री.–'आदत' का बहु. आदतें, स्वभाव, प्रकृतियाँ।

आ'दाद (اعداد) अ. पुं.–'अदद' का बहु. संख्याएँ, गिनतियाँ, हिंदसे।

आदाब (آداب) अ. पुं.–'अदब' का बहु. प्रणाम, नमस्कार, तस्लीम; तरीक़े, ढंग; शिष्टाचार, तहज़ीब; सुशीलता, अख़्लाक़।

आदाबे फ़ाज़िलः (آداب فاضله) अ. पुं.–अच्छे स्वभाव; चार गुण—शूरता, सतीत्व, न्याय और विद्या।

आदिल (عادل) अ. वि.–न्यायनिष्ठ, न्यायवान्, मुंसिफ़-मिज़ाज।

आदी (عادی) अ. वि.–जिसे कुछ खाने या कुछ करने की लत पड़ गयी हो, अभ्यस्त, अनुसेवी, व्यसनी।

आदीनः (آدینه) फा.–शुक्रवार, जुमा'।

आद्रफ़्श (آدرفش) फा. पुं.–चमारों की सुताली (सूजा)।

आनः (عانه) अ. पुं.–उपस्थ, पेड़ू, ज़ेरेनाफ़।

आनः (آنه) फा. प्रत्य.–सम्बन्ध का वाक्य; जैसे, रोज़ाना, सालाना; (पुं०) रुपये का सोलहवाँ भाग, एक आना।

आन (آن) अ. स्त्री.–क्षण, पल, लम्हा।

आन (آن) फा. स्त्री.–छटा, छवि, शोभा; टेक, बात, नाक; हाव-भाव, नाज़ोअदा।

आ'नक़ (اعنق) अ. वि.–बड़ी गर्दनवाला।

आनक आनक (آنک آنک) फा. अव्य.–वह वह दूरवर्ती।

आनन फ़ आनन (آناً فآناً) अ. वि.–तत्क्षण, तुरंत, फ़ौरन, फ़ौरन ही, ज़रा सी देर में, बात की बात में, आनन फानन।

आ'नश (اعنش) अ. वि.–छः उँगलियोंवाला, छंगा।

आ'नाक़ (اعناق) अ. स्त्री.–'उनुक़' का बहु., गर्दन, गले।

आनात (آنات) अ. पुं.–'आन' का बहु. बहुत से समय, काल-समूह।

आनिद (عاند) अ. वि.–शत्रु, दुश्मन, वैरी।

आनिफ़ (عانف) अ. वि.–वशीभूत, मुतीअ; आज्ञाकारी, फ़र्माबिरदार।

आनियः (آنیه) अ. पुं.–'इना' का बहु., बहुत से बरतन।

आनिसः (آنسه) अ. स्त्री.–कुमारी, दोशीज़ः।

आनिस (آنس) अ. वि.–स्नेह करनेवाला, प्रेमी, हिल जानेवाला।

आनी (عانی) अ. वि.–क़ैदी, बंदी; बहता हुआ ख़ून।

आनी (آنی) अ. वि.– क्षणिक, थोड़ी देर का; सामयिक, तात्कालिक, वक़्ती।

आनुक (آنک) फा. पुं.–सीसा, एक धातु।

आपा (آپا) तु. स्त्री.–बड़ी बहन, जीजी।

आफ़ (عاف) अ. वि.–क्षमा करनेवाला, अपराध क्षमा करनेवाला।

आफ़त (آفت) फा. स्त्री.–आपत्ति, विपदा, मुसीबत; दुःख, कष्ट, तकलीफ़; शामत।

आफ़तज़दः (آفتزده) फा. वि.–विपद्ग्रस्त, मुसीबत का मारा।

आफ़तनसीब (آفتنصیب) फा. अ. वि.–जिसके भाग्य में आपत्तियाँ ही आपत्तियाँ हों।

आफ़तरसीदः (آفترسیده) फा. वि.–दे. 'आफ़तज़दः'।

आफ़ते नागहानी (آفت ناگہانی) फा. स्त्री.–अचानक पड़नेवाली विपत्ति, दैवात्यय, दैवी घटना।

आफ़ाक़ (آفاق) अ. पुं.–'उफ़ुक़' का बहु. उपाएँ, संसार, दुनिया।

आफ़ाक़ी (آفاقی) अ. वि.–दुनियावाला, सांसारिक।

आफ़ाक़े माइलः (آفاق مائله) अ. पुं.–पृथ्वी का वह भाग जो ख़ुश्क है।

आफ़ात (آفات) फा. स्त्री. 'आफ़त' का बहु. आपत्तियाँ, मुसीबतें।

आफ़िंदी (آفندی) तु. पुं.–श्रीमान्, महोदय, जनाब।

आफ़ियत (عافیت) अ. स्त्री.–सुख, चैन, आराम; शांति, सुकून; नैरुज्य, स्वास्थ्य।

आफ़ियत केश (عافیت کیش) अ. फा. वि.–शांतिप्रिय, अम्नपसंद।

आफ़ियत कोश (عافیت کوش) अ. फा. वि.–शांति के लिए प्रयत्न करनेवाला।

आफ़ियतगाह (عافیت گاہ) अ. फा. स्त्री.–शांति का स्थान, जहाँ सुकून और शांति हो, एकांतवास।

आफ़िल (آفل) अ. वि.–नीचे जानेवाला, लोप होनेवाला।

आफ़िलीन (آفلین) अ. पुं.–नीचे जानेवाले; लोप होनेवाले, 'आफ़िल' का बहु.।

आफ़्ताबः (آفتابہ) फा. पुं.–एक प्रकार का लोटा जिसमें दस्ता होता है।

आफ़्ताब (آفتاب) फा. पुं.–सूर्य, रवि, दिनकर, सूरज।

आफ़्ताब आसार (آفتاب آثار) फा. अ. वि.–जिसमें सूर्य का प्रताप हो, जिसमें सूर्य जैसा जलाल हो।

आफ़्ताबगीर (آفتاب گیر) फा. पुं.–छज्जा, साइबान; छतरी, आतपत्र, छाता; धूप रोकने के लिए ताना हुआ कपड़ा आदि।

आफ़्ताबपरस्त (آفتاب پرست) फा. वि.–सूरज की पूजा करनेवाला, सूर्यपूजक; गिरगिट, कृकलास।

आफ़्ताबपरस्ती (آفتاب پرستی) फा. स्त्री.–सूरज की पूजा, सूर्य-पूजा, रविभक्ति।

आफ़्ताब सवार (آفتاب سوار) फा. वि.–बहुत तड़के उठनेवाला।

आफ़्ताबी (آفتابی) फा. वि.–धूप में रखकर बनायी हुई औषधि आदि; सूरज का; सूरजमुखी का फूल।

आफ़्ताबे लबे बाम (آفتاب لب بام) फा. पुं.–डूबने के क़रीब सूरज; मरने के क़रीब पुरुष, मरणासन्न।

आफ़्ताबे सरे शाम (آفتاب سر شام) फा. पुं.–संध्या समय का सूर्य, डूबता हुआ सूरज; वह व्यक्ति जिसका सम्मान उठ जाय।

आफ़्ताबे हश्र (آفتاب حشر) अ. फा. पुं.–महाप्रलय-काल का सूर्य, जो बहुत निकट होगा।

आफ़्रीं (آفریں) फा. अव्य.–धन्यवाद, शाबाश, साधु साधु।

आफ़्रीदः (آفریدہ) फा. वि.–पैदा किया हुआ, उत्पादित।

आफ़्रीदगार (آفریدگار) फा. वि.–पैदा करनेवाला, उत्पत्तिकर्ता, स्रष्टा।

आफ़्रीदनी (آفریدنی) फा. वि.–पैदा करने योग्य।

आफ़्रींनिंदः (آفرینندہ) फा. वि.–स्रष्टा, उत्पत्तिकर्ता, खालिक़, पैदा करनेवाला।

आफ़्रीनिश (آفرینش) फा. स्त्री.–उत्पत्ति, सृष्टि, पैदाइश।

आब (آب) फा. पुं.–जल, वारि, सलिल, नीर, आप, पानी।

आबकामः (آبکامہ) फा. पुं.–खट्टे पदार्थों से बनाया हुआ पानी।

आबकार (آبکار) फा. वि.–मदिरा बेचनेवाला, शराब का व्यवसाय करनेवाला, मद्य-व्यवसायी।

आबकारी (آبکاری) फा. स्त्री.–मदिरा का व्यवसाय, मदिरा का विभाग, मद्य-विभाग।

आबकोर (آبکور) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसके दाने-पानी में किसी का भाग न हो, बहुत ही कृपण, मक्खीचूस।

आबख़ानः (آبخانہ) फा. पुं.–पाख़ानः, शौचगृह।

आबख़ुर (آب خور) फा. पुं.–दे. 'आबख़ुर्द'।

आबख़ुर्द (آبخورد) फा. पुं.–भाग्य, प्रारब्ध, किस्मत; भाग, हिस्सा; वह तालाब जहाँ मनुष्य और पशु पानी पीयें।

आबख़ेज़ (آبخیز) फा. स्त्री.–वह भूमि जिसे जहाँ भी खोदें, थोड़ी दूर पर पानी निकल आये; लहर, तरंग, मौज।

आबख़ोरः (آبخورہ) फा. पुं.–पानी पीने का मिट्टी का पियाला, कुल्हड़, पुरवा।

आब गर्दिश (آب گردش) फा. स्त्री.–जीविका, रोज़ी; वह रोग जो देश-विदेश में फिरने और पानी बदलने से उत्पन्न हो।

आबगीनः (آبگینہ) फा. पुं.–बहुत ही बारीक काँच की बड़े पेट की बोतल, जो अब से कुछ पहले शराब और गुलाब जल रखने के काम आती थी; बोतल, शीशा; बहुत ही नाज़ुक शीशा।

आबगीर (آبگیر) फा. पुं.–छोटा तालाब, तलैया, जूहड़, क्षुद्र जलाशय।

आबजू (آبجو) फा. स्त्री.–नदी, नहर, चश्मा।

आबजोश (آبجوش) फा. पुं.–शोरबा, रसा; यख़्नी, गोश्त का पानी; सोडा वाटर; सुर्ख़ मुनक़्क़ा।

आबदंदाँ (آبدنداں) फा. पुं.–एक प्रकार का हलवा।

आबदरज़ू (آب درجو) फा. स्त्री.–सम्पत्ति, दौलत; सत्ता, हुकूमत।

आबदस्त (آبدست) फा. पुं.–शौच कर्म के पश्चात् पानी लेना, इस्तिंजा करना।

आबदस्ताँ (آبدستاں) फा. पुं.–आफ़्ताबः, हत्थेदार लोटा।

आबदार (آبدار) फा. वि.–चमकदार, उज्ज्वल; धारदार, पानीदार; पानी पिलानेवाला।

आबदार ख़ानः (آبدار خانہ) फा. पुं.–वह ठंडा स्थान जहाँ पिलाने के लिए पानी के घड़े आदि रखे जाते हों।

आबदारी (آبداری) फा. स्त्री.–चमक, आभा; शोभा, छटा, रौनक़।

आबदीदः (آبدیدہ) फा. वि.–जिसकी आँखों में आँसू भरे हों, सजलनयन, रुआँसा।

आब दुज़्द (آب دزد) फा. पुं.–वह रास्ता जिसके नीचे पानी हो; एक तंग मुँह का बर्तन जिसकी तली में छेद होते हैं।

आबदोज़ (آبدوز) फा. वि.–पानी के अंदर का रास्ता; पानी के भीतर चलनेवाला पोत आदि।

आबनाए (آبنائے) फा. पुं.–पृथ्वी का वह तंग भाग जो दो समुद्रों को मिलाता हो, जलडमरूमध्य।

आबपाशी (آبپاشی) फा. स्त्री.–भूमि और खेती की सिंचाई, सेचन, सिंचन।

आबबाज़ (آب باز) फा. वि.–तैरनेवाला, तैराक, पैराक।

आबबाज़ी (آب بازی) फा. स्त्री.–तैरना, पानी में तैरना।

आबयानः (آبیانہ) फा. पुं.–सिंचाई का महसूल, जलकर।

आबयारी (آبیاری) फा. स्त्री.–सिंचाई, आबपाशी।

आबरुख़ (آبرخ) फा. स्त्री.–दे. 'आबरू'।

आबरू (آبرو) फा. स्त्री.–प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; सतीत्व, इस्मत; कीर्ति, यश, नेकनामी।

आबरूदार (آبرودار) फा. वि.–प्रतिष्ठित, संमानित, बावक़्अत; सती, साध्वी, इस्मत मआब।

आबरूरेज़ी (آبروریزی) फा. स्त्री.–मानहानि, इज़्ज़त उतरना; सतीत्व-हरण, इस्मतदरी।

आबलः (آبلہ) फा. पुं.–छाला, फफोला।

आबलए फ़िरंग (آبلہ فرنگ) अ. पुं.–गर्मी रोग, आतशक, उपदंश।

आबशनास (آبشناش) फा. वि.–माँझी, मल्लाह, कर्णधार; यह जाननेवाला कि समुद्र में कहाँ कितना पानी है।

आबशार (آبشار) फा. पुं.–झरना, निर्झर, प्रपात।

आबसाल (آبسال) फा. पुं.–बाग, वाटिका।

आबसालाँ (آبسالاں) फा. पुं.–दे. 'आबसाल'।

आबा (آبا) अ. पु.–'अब' का बहु. पूर्वज, बाप दादे, पुरखे।

आबाए उल्वी (آبائے علوی) अ. पुं.–नौ आक़ाश; सप्तग्रह।

आबाद (آباد) फा. वि.–जिसमें आबादी हो, वसित; वह ज़मीन जो बोई-जोती जाती हो; जहाँ चहल-पहल हो, गुलज़ार।

आबाद (آباد) अ. पुं.–'अबद' का बहु., हमेशगियाँ, नित्यताएँ।

आबादकार (آبادکار) फा. वि.–वह जो किसी वीरान (बंजर) इलाक़े को आबाद करे; वह किसान जो किसी परती भूमि को उपजाऊ बनाये।

आबादकारी (آبادکاری) फा. स्त्री.–किसी वीरान इलाक़े या देश को आबाद करना; किसी बंजर भूमि को उपजाऊ बनाना।

आबादान (آبادان) फा. वि.–दे. 'आबाद'।

आबादानी (آبادانی) फा. स्त्री.–दे. 'आबादी'।

आबादी (آبادی) फा. स्त्री.–बस्ती, बसा हुआ इलाका; चहल-पहल, रौनक़।

आबान (آبان) फा. पुं.–ईरानियों का एक महीना जो अगहन में पड़ता है।

आबारः (آبارہ) फा. पुं.–हिसाब, हिसाब-किताब।

आबार (آبار) अ. पुं.–जला हुआ सीसा, सीसे का भस्म।

आबिदः (عابدہ) अ. स्त्री.–तपस्विनी, इबादतगुज़ार स्त्री।

आबिद (عابد) अ. वि.–तपस्वी, इबादत करनेवाला पुरुष।

आबिर (عابر) अ. वि.–पथिक, बटोही, राहगीर; नदी या पुल आदि को पार करनेवाला।

आबिस्तः (آبستہ) फा. स्त्री.–गर्भवती, गुर्विणी, हामिला।

आबिस्तनी (آبستنی) फा. वि.–गर्भवती, अंतर्वत्नी, हामिला, पेट से।

आबी (آبی) फा. वि.–एक मेवा, विही; जल सम्बन्धी; जल का; पानी की मोटी रोटी जो पलोथन के बिना पकती है।

आ'बुद (اعبد) अ. पुं. 'अब्द' का बहु., सेवकगण, दास लोग।

आबे अंगूर (آب انگور) फा. पुं.–अंगूर का अरक़, अंगूर का शीरा; अंगूर की मदिरा।

आबे अनार (آب انار) फा. पुं.–अनार का अरक़, अनार के अरक़ जैसी लाल मदिरा।

आबे आतशरंग (آب آتش رنگ) फा. पुं.–आग के रंग का पानी, अर्थात् शराब, मदिरा।

आबे आतशीं (آب آتشیں) फा. पुं.–आग जैसा पानी, अर्थात् मदिरा, शराब।

आबे कमां (آب کماں) फा. पुं.–धनुष का ज़ोर।

आबे कौसर (آب کوثر) अ. फा. पुं.–स्वर्ग के हौज़ का पानी।

आबे ख़ंजर (آب خنجر) फा. पुं.–खंजर की धार, छुरी की धार।

आबे ख़िज़्र (آب خضر) फा. अ. पुं.–आबेहयात, अमृतजल।

आबे ख़ुश्क (آب خشک) फा. पुं.–विल्लूर का पियाला।

आबे गोश्त (آب گوشت) फा. पुं.–गोश्त की यख़्नी या शोरबा।

आबे गौहर (آبِ گوهر) फ़ा. पुं.–मोतियाबिंद, आँख में पानी उतरने का रोग।

आबे जारी (آبِ جاری) अ. फ़ा. पुं.–बहता हुआ पानी, प्रवाहित जल।

आबे जाविदाँ (آبِ جاوداں) फ़ा. पुं.–आबे हयात, अमृत।

आबे ज़ुलाल (آبِ زلال) अ. फ़ा. पुं.–निथरा हुआ पानी; ठंडा पानी।

आबे तरब (آبِ طرب) फ़ा. पुं.–मदिरा, शराब।

आबे बक़ा (آبِ بقا) अ. फ़ा. पुं.–आबे हयात, मदिरा।

आबे बस्तः (آبِ بستہ) फ़ा. पुं–शीशा, काँच; जमा हुआ पानी।

आबे मर्वारीद (آبِ مروارید) अ. फ़ा. पुं.–मोतियाबिंद का रोग।

आबे मुंजमिद (آبِ منجمد) अ. फ़ा. पुं.–जमा हुआ पानी; बिल्लूर का पियाला।

आबे मुर्दः (آبِ مردہ) फ़ा. पुं.–ठहरा हुआ पानी, जो पानी बहता न हो, स्थिर जल।

आबे रवाँ (آبِ رواں) फ़ा. पुं.–बहता हुआ पानी, जारी पानी; एक बारीक मलमल।

आबे शोर (آبِ شور) फ़ा. पुं.–खारा पानी; काला पानी, अंडमान।

आबे सियाह (آبِ سیاہ) फ़ा. पुं.–गहरा पानी; मोतियाबिंद।

आबे हयात (آبِ حیات) फ़ा. अ. पुं.–अमृतजल, सुधा।

आबे हराम (آبِ حرام) फ़ा. अ. पुं.–मदिरा, शराब।

आबे हैवाँ (آبِ حیواں) फ़ा. अ. पुं.–दे. 'आबे हयात'।

आबोगिल (آب وگل) फ़ा. पुं.–मनुष्य का ढाँचा।

आबोताब (آب وتاب) फ़ा. स्त्री.–चमक-दमक, ठाठ-बाट; शानोशौकत; धूमधाम।

आबोदानः (آب ودانہ) फ़ा. पुं.–दाना-पानी, अन्न-जल; जीविका, रोज़ी।

आबोरौग़न (آب وروغن) फ़ा. अ. पुं.–बातचीत में नमक-मिर्च, चिकनी-चुपड़ी बातें।

आबोहवा (آب وهوا) फ़ा. अ. स्त्री.–स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से किसी स्थान का पानी और वायु, जलवायु।

आब्नूस (آبنوس) फ़ा. पुं–एक प्रसिद्ध काली लकड़ी जो बहुत भारी होती है।

आमः (آمہ) फ़ा. स्त्री.–दवात, मसिपात्र।

आम (عام) अ. वि.–सर्वव्यापक, हमःगीर; सर्वसाधारण, आम लोग; जो मुख्य न हो, गौण।

आमदः (آمدہ) फ़ा. वि.–आया हुआ, आगत।

आमद (آمد) फ़ा. स्त्री.–आगमन, आमद; आय, आमदनी; वह विचार जो मस्तिष्क में बिना सोचे आया हो।

आमद आमद (آمد آمد) फ़ा. स्त्री.–किसी के आगमन की धूमधाम; किसी के आने की ख़बर।

आमदनी (آمدنی) फ़ा. स्त्री.–आय, आमद; कमाई; उत्पत्ति, पैदावार।

आमदोख़र्च (آمدوخرچ) फ़ा. पुं.–आमदनी और ख़र्चा, आय-व्यय।

आमदोरफ़्त (آمدورفت) फ़ा. स्त्री.–आना-जाना, यातायात।

आ'मा (اعمی) अ. वि.–अंधा, नेत्रहीन, अंध।

आ'माक़ (اعماق) अ. पुं.–'उमुक़' का बहु. लंबाइयाँ, चौड़ाइयाँ और ऊँचाइयाँ या गहराइयाँ।

आमाज (آماج) फ़ा. पुं.–निशाना, लक्ष्य।

आमाजगाह (آماجگاہ) फ़ा. स्त्री.–वह स्थान जिसे ताककर उसपर निशानः लगाया जाय, लक्ष्यस्थान, हरफ़, "क़िस्मत मेरे सिवा तुझे कोई मिला नहीं—आमाजगाहे-जौर बनाया किया मुझे।"

आमादः (آمادہ) फ़ा. वि.–तत्पर, उद्यत, तैयार; अनुमत, राज़ी।

आमादगी (آمادگی) फ़ा. स्त्री.–तत्परता, मुस्तैदी; अनुमति, रज़ामंदी।

आ'माम (اعمام) अ. पुं.–'अम' का बहु. चचा लोग।

आ'मार (اعمار) अ. स्त्री–'उम्र' का बहु. उम्रें, अवस्थाएँ।

आमाल (آمال) अ. स्त्री.–'अमल' का बहु. आशाएँ, उम्मीदें।

आ'माल (اعمال) अ. पुं.–'अमल' का बहु. काम, कार्य-समूह; कृतियाँ, कर्म-समूह; आचार-व्यवहार; जप-तप, विर्द वज़ीफा आदि।

आ'मालनामः (اعمال نامہ) अ. फ़ा. पुं.–वह पत्र जिस पर मनुष्य के अच्छे बुरे कर्म लिखे जाते हैं; वह काग़ज़ जिसमें सरकारी नौकरों की कारगुज़ारियाँ या बद आ'मालियाँ लिखी जाती हैं।

आमास (آماس) फ़ा. पुं.–सूजन, शोथ।

आमास ज़दः (آماس زدہ) फ़ा. वि.–सूजा हुआ, शोथित।

आमासिंदः (آماسندہ) फ़ा. वि.–सूजनेवाला।

आमासीदः (آماسیدہ) फ़ा. वि.–सूजा हुआ।

आमिनः (آمنہ) अ. स्त्री.–निर्भय स्त्री, निडर स्त्री; हज़रत मुहम्मद साहब की श्री माताजी का नाम।

आमिन (آمن) अ. वि.–निर्भय, निडर, बेख़ौफ़; सुरक्षित, महफ़ूज़।

आमियानः (عامیانہ) अ. फ़ा. वि.–आम लोगों जैसा, बाजारियों जैसा, अश्लील, अशिष्ट, नाशाइस्ता।

आमिरः (عامرہ) अ. पुं.–भरा हुआ, परिपूर्ण; आबाद करनेवाला, बसानेवाला ।

आमिर (عامر) अ. वि.–बसानेवाला, आबाद करनेवाला; आबाद, बसा हुआ; भरा हुआ, परिपूर्ण ।

आमिर (آمر) अ. वि.–हुक्म करनेवाला; शासक, हाकिम, डिक्टेटर, अधिनायक ।

आमिरीयत (آمریت) अ. स्त्री.–शासन, हुकूमत; शख़्सी हुकूमत, डिक्टेटरी, अधिनायकता ।

आमिलः (عاملہ) अ. स्त्री.–काम करनेवाली स्त्री; कार्यकारिणी, विषय निर्धारिणी, मज्लिसे आमिला ।

आमिल (عامل) अ. वि.–शासक, हुक्मराँ; पदाधिकारी, हाक़िम; जो मिस्मिरेज़म आदि का अमल करता हो; जो भूतप्रेत या जिन और परी उतारता हो ।

आमिल (آمل) अ. वि.–इच्छुक, ख़्वाहिशमंद; आशा करनेवाला, उम्मेदवार ।

आमी (عامی) अ. वि.–सामान्य व्यक्ति, साधारण जन; बाज़ारी आदमी, लोफ़र, नीच ।

आमीन (آمین) अ. अव्य.–एवमस्तु, तथास्तु ।

आमुख़्तः (آمختہ) फा. पुं.–दे. 'आमोख़्तः', यह भी शुद्ध है ।

आमुर्ज़गार (آمرزگار) फा. वि.–बख़्शनेवाला, मोक्ष देनेवाला अर्थात् ईश्वर ।

आमुर्ज़िंदः (آمرزندہ) फा. वि.–मोक्ष देनेवाला, बख़्शनेवाला ।

आमुर्ज़िश (آمرزش) फा. स्त्री.–मोक्ष, कल्याण, नजात, बख़्शिश ।

आमुर्ज़ीदः (آمرزیدہ) फा. वि.–मोक्षप्राप्त, बख़्शा हुआ, नजात पाया हुआ ।

आमुर्ज़ीदनी (آمرزیدنی) फा. वि.–मोक्ष प्राप्त होने के योग्य, नजात पाने के काबिल ।

आमुलः (آملہ) अ. पुं.–आँवला, एक फल, आमलक ।

आमुल (آمل) फा. पुं.–'माज़िंदरान' का एक नगर ।

आमूदः (آمودہ) फा. वि.–भरा हुआ, पूर्ण ।

आमूदनी (آمودنی) फा. वि.–भरने योग्य ।

आमून (آمون) फा. पुं.–ईरान और तूरान के बीच की एक नदी ।

आमेख़्तः (آمیختہ) फा. वि.–मिला हुआ; मिलाया हुआ; कृत्रिम, मिलावट किया हुआ ।

आमेख़्तनी (آمیختنی) फा. वि.–मिलाने योग्य; मिलने योग्य ।

आमेग़ (آمیغ) फा. प्रत्य.–दे. 'आमेज़' ।

आमेज़ (آمیز) फा. प्रत्य.–मिलनेवाला, मिलानेवाला, जैसे, 'रंग आमेज़'—रंग मिलानेवाला ।

आमेज़गार (آمیزگار) फा. वि.–सुशील, ख़ुश अख़्लाक़ ।

आमेज़िंदः (آمیزندہ) फा. वि.–मिलनेवाला; मिलानेवाला ।

आमेज़िश (آمیزش) फा. स्त्री.–मिलावट, उपाधि, मिलौनी ।

आमेज़ीदः (آمیزیدہ) फा. वि.–मिलानेवाला ।

आमोख़्तः (آموختہ) फा. पुं.–पढ़े हुए पाठ को फिर से पढ़ना, उद्धरणी; (वि.) पठित, पढ़ा हुआ; सीखा हुआ ।

आमोख़्तनी (آموختنی) फा. वि.–सीखने योग्य; सिखाने योग्य; पढ़ने योग्य; पढ़ाने योग्य ।

आमोज़गार (آموزگار) फा. वि.–शिक्षक, सिखानेवाला; शिक्षार्थी, सीखनेवाला ।

आमोज़िंदः (آموزندہ) फा. स्त्री.–सिखानेवाला; सीखनेवाला ।

आमोज़िश (آموزش) फा. स्त्री.–शिक्षण, सिखाई, सीख ।

आमोज़ीदः (آموزیدہ) फा. वि.–सीखा हुआ; सिखाया हुआ ।

आमोज़ीदनी (آموزیدنی) फा. वि.–सीखने योग्य, सिखाने योग्य ।

आम्मः (عامہ) अ. वि.–सार्वजनिक, अवामी, सब जनता की, जैसे 'राए आम्मः' अर्थात् सारी जनता का मत ।

आम्मतुन्नास (عامۃالناس) अ. पुं.–सर्वसाधारण, जनसाधारण, आम जनता, अवाम ।

आम्मतुलख़लाइक़ (عامۃالخلائق) अ. पुं.–सर्वसाधारण, अवाम, आम जनता ।

आयंदः (آیندہ) फा. वि.–आनेवाला, आगामी; भविष्य, मुस्तक़्बिल; आगे चलकर, भविष्य में ।

आयंदगानो रविंदगाँ (آیندگانو روندگاں) फा. पु.–आनेजानेवाले लोग ।

आयत (آیت) अ. स्त्री.–चिह्न, निशान; क़ुरान का एक वाक्य, उस वाक्य के अंत पर बना हुआ गोल चिह्न ।

आयत (اعیط) अ. वि.–लंबी गर्दनवाला ।

आयद (عاید) अ. वि.–दे. 'आइद', 'आयद' अशुद्ध है ।

आ'यन (اعین) अ. वि.–बड़ी-बड़ी आँखों वाला ।

आया (آیا) फा. अव्य.–एक प्रश्नवाचक शब्द, क्या, किम्, जैसे 'आया आप वहाँ जायँगे', क्या आप वहाँ जायँगे ।

आयात (آیات) अ. स्त्री.–'आयत' का बहु., क़ुरान की आयतें ।

आयान (آیان) फा. पुं.–आनेवाला, आगमनकर्ता ।

आ'मान (اعیان) अ. पु.–'ऐन' का बहु., बड़े-बड़े लोग, प्रतिष्ठित जन, महान् व्यक्ति ।

आयानी (آیانی) फा. स्त्री.–'शिष्टता, सभ्यता, सुशीलता, शाइस्तगी; सुंदरता, उत्तमता, अच्छाई ।

आ'यानी (اعیانی) अ. वि.–सगा, एक माँ-बाप का।

आ'युन (اعین) अ. स्त्री.–'ऐन' का बहु., आँखें।

आर (عار) अ. पुं.–लज्जा, लाज, ग़ैरत; घृणा, नफ़रत, घिन; दोष, ऐब।

आ'रज (اعرج) अ. वि.–लँगड़ा, पंगु।

आरज़्म (آرزم) फा. स्त्री.–युद्ध, समर, लड़ाई, जंग।

आरश (آرش) फा. पुं.–ईरान का एक पहलवान जो धनुर्विद्या में अत्यंत निपुण था।

आरा (آرا) फा.प्रत्य.–सँवारनेवाला, सजानेवाला, जैसे, 'जहाँ आरा'—संसार को सजाने या सँवारनेवाला अथवा वाली।

आरा (آرا) अ. स्त्री.–'राय' का बहु. रायें, मत।

आराइंदः (آرائندہ) फा. वि.–सँवारनेवाला, सजानेवाला।

आराइश (آرائش) फा. स्त्री.–सजावट, सुसज्जा।

आराद (آراد) फा. पुं.–हर ईरानी महीने की पच्चीसवीं तारीख।

आ'राफ़ (اعراف) अ. पुं.–स्वर्ग और नरक के बीच का स्थान।

आ'राब (اعراب) अ. पुं.–वे अरब लोग जो जंगल में इधर-उधर घूम-फिरकर जीवन व्यतीत करते हैं, बद्दू लोग। (यह शब्द बहुवचन है, परंतु इसका एकवचन नहीं है।)

आ'राबी (اعرابی) अ. पुं.–अरब जाति का व्यक्ति, बद्दू।

आराम (آرام) अ. पुं.–'रीम' का बहु., हिरनों के बच्चे।

आराम (آرام) फा. पुं.–सुख, चैन, ऐश; आनंद, हर्ष, ख़ुशी; सुगमता, आसानी।

आरामकुर्सी (آرام کرسی) फा. स्त्री.–बड़ी कुर्सी जिस पर लेट सकते हैं, सुखासंदी।

आरामख़्वाह (آرام خواہ) फा. वि.–सुख चाहनेवाला, काम-धंधों से जी चुरानेवाला।

आरामगाह (آرام گاہ) फा. स्त्री.–ठहरने और आराम करने का स्थान, विश्रामालय; शयनागार, सोने का स्थान, ख़्वाबगाह।

आरामतलब (آرام طلب) फा. अ. वि.–आराम चाहनेवाला, सुखेच्छु; आलसी, काहिल।

आरामतलबी (آرام طلبی) फा. अ. स्त्री.–सुख की चाह; काहिली, आलस्य; पड़े-पड़े खाना और काम से जी चुराना।

आरामदेह (آرام دہ) फा. वि.–सुख देनेवाला, आराम पहुँचानेवाला, सुखदायी; आराम पहुँचानेवाली वस्तु या काम।

आरामपसंद (آرام پسند) फा. वि.–दे. 'आरामतलब'।

आरामरसाँ (آرام رساں) फा. वि.–दे. 'आरामदेह'।

आरामिंदः (آرامندہ) फा. वि.–आराम करनेवाला।

आरामिश (آرامش) फा. स्त्री.–सुख, चैन, राहत।

आरमीदः (آرامیدہ) फा. वि.–आराम किया हुआ, जिसने आराम किया हो।

आरामे जाँ (آرام جاں) फा. पुं.–प्राणों का सुख, प्रेमिका; पुत्र।

आ'राश (اعراش) अ. पुं.–'अर्श' का बहु., बहुत से अर्श।

आ'रास (اعراس) अ. पुं.–'उर्स' या 'उरूस' का बहु., बहुत से उर्स।

आरास्तः (آراستہ) फा. वि.–सुसज्जित, सजा हुआ (घर आदि); शृंगारित, आभूषित, ज़ेवर आदि से सजी हुई (स्त्री)।

आरास्तः मू (آراستہ مو) फा. वि.–बाल सँवारे हुए, चोटी आदि गूँथे हुए।

आरास्तगी (آراستگی) फा. स्त्री.–घर आदि की सजावट; स्त्री आदि का शृंगार; क्रम, तर्तीब।

आरिज़ः (عارضہ) अ. पुं.–रोग, बीमारी, व्याधि, आमय; व्यसन, लत।

आरिज़ (عارض) अ. पुं.–कपोल, गाल, रुख़सार; बाधक, रुकावट डालनेवाला।

आरिज (عارج) अ. वि.–ऊपर की ओर जानेवाला।

आरिज़ी (عارضی) अ. वि.–अस्थायी, ग़ैर मुस्तक़िल; क्षणिक, थोड़ी देर का।

आरिफ़ः (عارفہ) अ. स्त्री.–आरिफ़ स्त्री, ब्रह्मज्ञानी; पहचाननेवाली।

आरिफ़ (عارف) अ. वि.–ज्ञाता, जाननेवाला; परिचित, वाक़िफ़; ब्रह्मज्ञानी, हक़ आगाह; सूफ़ी।

आरिफ़ बिल्लाह (عارف باللہ) अ. वि.–ईश्वर को पहचाननेवाला, ब्रह्मज्ञानी, खुदा रसीदः, ऋषि, मुनि, वली।

आरिफ़ानः (عارفانہ) अ. फा. वि.–आरिफ़ों जैसा, सूफ़ियों जैसा, ब्रह्मज्ञानियों जैसा, ऋषियों जैसा।

आरियत (عاریت) अ. स्त्री.–अस्थायित्व, नापाइदारी; किसी वस्तु का माँगा हुआ होना।

आरियतन (عاریتاً) अ. वि.–थोड़ी देर के लिए; माँगा हुआ।

आरियती (عاریتی) अ. वि.–अस्थायी, अल्पकालिक, आरिज़ी; माँगी हुई वस्तु।

आरी (عاری) अ. वि.–नंगा, नग्न; वंचित, महरूम; गद्य का एक प्रकार जो सीधा-सादा होता है, और जिसमें अलंकार आदि कुछ नहीं होते, रोज़मर्रा की नस्र।

आरे (آرے) फा. स्त्री.–हाँ, जी हाँ।

आरोग़ (آروغ) फा. स्त्री.–डकार, उद्‌गार, धूम।

आरोग़िंदः (آروغندہ) फा. वि.–डकार लेनेवाला।

आरोग़े तुरुश (آروغ ترش) फा. स्त्री.–खट्टी डकार, अम्लोद्‌गार, अम्लिका।

आर्ज़ू (آرزو) फा. स्त्री.–इच्छा, ख़ाहिश; उत्कंठा, इश्तियाक़; आश्रय, सहारा; मनोकामना, दिली मुराद; आशा, उम्मीद।

आर्ज़ूए ख़ाम (آرزوئے خام) फा. स्त्री.–वह इच्छा जो पूरी न हो सके।

आर्ज़ूए मुर्दः (آرزوئے مردہ) फा. स्त्री.–मरी हुई आस, बुझी हुई आस, मृतेच्छा।

आर्ज़ूए मुलाक़ात (آرزوئے ملاقات) फा. अ. स्त्री.–मिलने की इच्छा; प्रेमिका से मिलन की इच्छा।

आर्ज़ूए वस्ल (آرزوئے وصل) फा. अ. स्त्री.–प्रेमिका से प्रेमी के मिलने की इच्छा।

आर्ज़ूगाह (آرزوگاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ से कोई मनोकामना सिद्ध होने की आशा हो।

आर्ज़ूमंद (آرزومند) फा. वि.–इच्छुक, अभिलाषी, ख़्वाहिशमंद।

आर्ज़ूमंदी (آرزومندی) फा. स्त्री.–इच्छा, अभिलाषा।

आर्द (آرد) फा. पुं.–आटा, पिसा हुआ अन्न, चून।

आर्वी (آروی) फा. पुं.–शफ़्तालू, एक फल।

आलंग (آلنگ) तु. पुं.–चरागाह, हरियाली का मैदान, सब्ज़ाज़ार।

आलः (آلہ) अ. पुं.–उपकरण, औज़ार।

आल (آل) अ. स्त्री.–संतान, औलाद, बाल-बच्चे; वंशज, कुलवाले।

आल (آل) तु. वि.–लाल, सुर्ख़, रक्त।

आलएकार (آلۂ کار) अ. फा. पुं.–काम करने का यंत्र; वह व्यक्ति जो किसी कार्य-सिद्धि में माध्यम हो; वह व्यक्ति जिससे हर काम लिया जा सके।

आलए कुशावर्ज़ी (آلۂ کشاورزی) अ. फा. पुं.–खेती के औज़ार।

आलए तनासुल (آلۂ تناسل) अ. पुं.–शिश्न, लिंग।

आलए नक़्बज़नी (آلۂ نقب زنی) अ. फा. पुं.–चोरों का सेंध लगाने का यंत्र, साबर, सबरी।

आलए मोहलिक (آلۂ مہلک) अ. पुं.–वह हथियार जिससे हत्या हो सके, प्राणघातक शस्त्र।

आलए हर्ब (آلۂ حرب) अ. पुं.–लड़ाई का हथियार, युद्धास्त्र।

आलची (آلچی) तु. पुं.–लेनेवाला, वसूल करनेवाला।

आलत (آلت) अ. पुं.–शिश्न, लिंग।

आल तम्ग़ा (آل تمغا) तु. पुं.–किसी को पुश्त दर पुश्त के लिए कोई जागीर दे देना।

आ'लन (اعلن) अ. वि.–बहुत अधिक स्पष्ट।

आ'लम (اعلم) अ. वि.–बहुत अधिक जाननेवाला; सबसे अधिक जाननेवाला।

आलम (عالم) अ. पुं.–जगत्, संसार, दुनिया; दशा, हालत।

आलम (آلم) अ. वि.–बहुत अधिक कष्ट देनेवाला।

आलम अफ़्रोज़ (عالم افروز) अ. फा. वि.–संसार को प्रकाशित करनेवाला।

आलम आरा (عالم آرا) अ. फा. वि.–संसार को सुसज्जित और शृंगारित करनेवाला।

आलम आराई (عالم آرائی) अ. फा. स्त्री.–संसार की सजावट और शृंगार।

आलम आश्कार (عالم آشکار) अ. फा. वि.–विश्व-विदित, संसार भर में ज़ाहिर।

आलम आश्कारा (عالم آشکارا) अ. फा. वि.–दे. 'आलम आश्कार'।

आलम आश्ना (عالم آشنا) अ. फा. वि.–सारे संसार से परिचित, सब का मित्र; जिससे सारा संसार परिचित हो, सर्वप्रिय।

आलम आश्नाई (عالم آشنائی) अ. फा. स्त्री.–सारे संसार का परिचित होना; सारे संसार से परिचित होना।

आलमगीर (عالمگیر) अ. फा. वि.–विश्वव्यापी, संसार में फैला हुआ; विश्वविजयी, संसार को जीतनेवाला।

आलमताब (عالمتاب) अ. फा. वि.–सारे संसार को प्रकाशित करनेवाला।

आलम फ़रेब (عالم فریب) अ. फा. वि.–विश्वमोहन, सारे संसार को मुग्ध करनेवाला।

आलमी (عالمی) अ. वि.–सांसारिक, दुनियावी; संसार का निवासी; पूर्ण संसार का।

आलमे अज्साम (عالم اجسام) अ. पुं.–मर्त्यलोक, भूलोक, दुनिया।

आलमे अर्वाह (عالم ارواح) अ. पुं.–आत्माओं के रहने का लोक, परलोक, स्वर्ग।

आलमे अलवी (عالم علوی) अ. पुं.–परलोक, स्वर्ग।

आलमे अस्बाब (عالم اسباب) अ. पुं.–जहाँ हर कार्य के लिए कोई कारण अवश्य हो, जगत्, दुनिया।

आलमे आब (عالم آب) अ.फा. पुं.–वह स्थान जहाँ पानी ही पानी हो; मद्यपान की अवस्था।

आलमे क़ुद्दुस (عالم قدس) अ. पुं.–स्वर्ग, सुरलोक।

आलमे कौनोफ़साद (عالم کون وفساد) अ. पुं.–वह जगत् जहाँ चीज़ें पैदा होती और मिटती रहें, अर्थात् संसार।

आलमे ख़याल (عالم خیال) अ. पुं.–कल्पना-जगत्, ऐसी दुनिया जिसे केवल तसव्वुर ने बनाया हो।

आलमे ख़ाक (عالم خاک) अ. फा. पुं.–भूलोक, मर्त्यलोक, दुनिया।

आलमे ख़्वाब (عالم خواب) अ. फा. पुं.–स्वप्न-जगत्, वह स्थान जहाँ मनुष्य स्वप्न में पहुँच जाता है; स्वप्न की अवस्था, नींद की हालत।

आलमे ग़ैब (عالم غیب) अ. फा. पुं.–परोक्ष लोक, वह जगत् जो हमें दिखाई नहीं पड़ता, अदृश्य जगत्।

आलमे जबरूत (عالم جبروت) अ. पुं.–ब्रह्मलोक, आलमे क़ुदुस; वह लोक जहाँ ईश्वर ही ईश्वर होता है।

आलमे जावेद (عالم جاوید) अ. फा. पुं.–नित्यलोक, जहाँ हमेशा रहना पड़े, स्वर्ग।

आलमे ज़ाहिर (عالم ظاہر) अ. पुं.–वह जगत् जो दृष्टिगत रहता है, संसार, दुनिया।

आलमे तसव्वुर (عالم تصور) अ. पुं.–वह संसार जहाँ प्रेमी अपनी प्रेमिका के ध्यान में पहुँच जाता है।

आलमे तस्वीर (عالم تصویر) अ. पुं.–स्तब्धता और निश्चेष्टता की अवस्था।

आलमे नासूत (عالم ناسوت) अ. पुं.–मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक, इहलोक, दुनिया।

आलमे फ़ना (عالم فنا) अ. पुं.–दे. 'आलमे फ़ानी'।

आलमे फ़ानी (عالم فانی) अ. पुं.–नश्वर जगत्, वह लोक जिसे नाश होना है, अर्थात् दुनिया।

आलमे बक़ा (عالم بقا) अ. पुं.–वह लोक जिसका कभी नाश नहीं होता, देवलोक, परलोक, स्वर्ग।

आलमे बर्ज़ख़ (عالم برزخ) अ. पुं.–वह लोक जो स्वर्ग और नरक के बीच में है।

आलमे बाक़ी (عالم باقی) अ. पुं.–दे. 'आलमे बक़ा'।

आलमे बाला (عالم بالا) अ. पुं.–परलोक, देवलोक; आकाश, आस्मान, यमलोक, अदम।

आलमे मलकूत (عالم ملکوت) अ. पुं.–देवलोक, जहाँ केवल फ़िरिश्ते रहते हैं।

आलमे मा'ना (عالم معنی) अ. पुं.–वह अवस्था, जिसका अनुभव न किया जा सके।

आलमे मिसाल (عالم مثل) अ. पुं.–वह जगत् जो परलोक के अंतर्गत है, और जिसमें संसार की हर वस्तु ज्यों की त्यों मौजूद है।

आलमे रोया (عالم رویا) अ. पुं.–दे. 'आलमे ख़्वाब'।

आलमे लाहूत (عالم لاہوت) अ. पुं.–ब्रह्मलोक, जहाँ ईश्वर के सिवा और कुछ नहीं होता।

आलमे लौहो क़लम (عالم لوح و قلم) अ. पुं.–अर्श, वह लोक जहाँ ईश्वर का सिंहासन है।

आलमे वुजूद (عالم وجود) अ. पुं.–जीवनावस्था, अस्तित्व।

आलमे शुहूद (عالم شہود) अ. पुं.–वह जगत् जिसमें हम सब कुछ देख सकें, मर्त्यलोक, दुनिया।

आलमे सिफ़्ली (عالم سفلی) अ. पुं.–तुच्छ जगत्, अधम-लोक अर्थात् संसार, दुनिया।

आलमे सुग़ा (عالم صغری) अ. पुं.–मनुष्य का शरीर, जिसमें सूक्ष्म रूप में वह सब कुछ है जो संसार में है।

आलमे हयूलानी (عالم ہیولانی) अ. पुं.–जगत्, संसार, मर्त्यलोक, दुनिया।

आ'ला (اعلی) अ. वि.–सबसे अच्छा, सर्वश्रेष्ठ; उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया।

आलाइश (آلائش) फा. स्त्री.–पेट के अंदर का मल; पाप, गुनाह।

आलाईदः (آلائیدہ) फा. वि.–लथड़ा हुआ, सना हुआ।

आलात (آلات) अ. पुं.–'आलः' का बहु., औज़ार, उपकरण; हथियार, अस्त्र-शस्त्र।

आलाते जंग (آلات جنگ) अ. फा.–लड़ाई के हथियार, युद्धास्त्र, आयुध।

आलाते हर्ब (آلات حرب) अ. पुं.–दे. 'आलाते जंग'।

आलाफ़ (آلاف) अ. पुं.–'अल्फ़' का बहु., हज़ारों।

आलाफ़ (اعلاف) अ. पुं.–'अलफ़' का बहु., हरी घासें।

आलाम (آلام) अ. पुं.–'अलम' का बहु., कष्ट-समूह, हर प्रकार के दुःख; आपत्तियाँ, मुसीबतें।

आ'लाम (اعلام) अ. पुं.–'अलम' का बहु., संज्ञाएँ, नामावाली।

आलामे रोज़गार (آلام روزگار) अ. फा. पुं.–सांसारिक कष्ट, दुनिया की आपत्तियाँ।

आलिफ़ (آلف) अ. वि.–स्नेह करनेवाला।

आलिमः (عالمہ) अ. स्त्री.–विद्वान् स्त्री, विदुषी।

आलिम (عالم) अ. वि.–विद्वान्, पंडित, कोविद; ज्ञाता, जाननेवाला।

आलिम (آلم) अ. वि.–कष्ट देनेवाला, दुःखदायी।

आलिमानः (عالمانہ) अ. फा. वि.–विद्वानों जैसा, आलिमों की तरह।

आलिमुलग़ैब (عالم الغیب) अ. वि.–अंतर्यामी, परोक्षवेत्ता, ग़ैब की बातें जाननेवाला।

आलिमे कुल (عالم کل) अ. वि.–सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ, सर्वविद्।

आलिमे ग़ैब (عالم غیب) अ. वि.–दे. 'आलिमुल ग़ैब'।

आलिमे बाअमल (عالم باعمل) अ. पुं.–ऐसा विद्वान् जिसका आचार व्यवहार विद्वानों जैसा हो, उसने जो कुछ पढ़ा हो उसी के अनुसार उसका आचरण भी हो।

आलिमे बे अमल (عالم بےعمل) अ. फा. पुं.–ऐसा विद्वान् जिसका आचरण विद्वानों से विरुद्ध हो, उसका आचरण पढ़े हुए से प्रतिकूल हो।

आली (عالی) अ. वि.–उच्च, बलंद; श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया; विशाल, बड़ा; महान्, अज़ीम।

आलीक़द्र (عالی قدر) अ. वि.–बहुत बड़े मर्तबेवाला, महामहिम।

आली ख़ानदान (عالی خاندان) अ. फा. वि.–बहुत ऊँचे वंशवाला, उच्चकुल, कुलीनतम।

आली गुहर (عالی گہر) अ.फा. वि.–दे. 'आली ख़ानदान'।

आली जनाब (عالی جناب) अ. फा. वि.–अत्रभवान्!, जनाबे आली!; महामान्य, आलीजाह।

आली ज़र्फ़ (عالی ظرف) अ. वि.–बड़े दिलवाला, जो प्रत्येक की बुरी-भली बातें सुनकर सहन करे, उच्चाशय, विशाल-हृदय, उदारमना।

आलीजाह (عالی جاہ) अ. वि.–बहुत बड़े रुत्बेवाला, महामान्य; बड़े आदमियों का संबोधन-वाक्य।

आलीतबार (عالی تبار) अ. फा. वि.–दे. 'आली ख़ानदान'।

आली दिमाग़ (عالی دماغ) अ. वि.–बड़ी सूझ-बूझवाला, महाप्रज्ञ, उच्चबुद्धि, उदारधी।

आलीनज़र (عالی نظر) अ. वि.–उच्च दृष्टि, बलंद नज़र, उदाराशय; फ़राख़ दिल।

आली नसब (عالی نسب) अ. वि.–दे. 'आली ख़ानदान'।

आली मक़ाम (عالی مقام) अ. वि.–दे. आलीक़द्र।

आली मनिश (عالی منش) अ. फा. वि.–दे. 'आली ज़र्फ़'।

आली मर्तबत (عالی مرتبت) अ. वि.–दे. 'आलीक़द्र'।

आली वक़ार (عالی وقار) अ. वि.–दे. 'आली मर्तबत'।

आलीशान (عالی شان) अ. वि.–महान्, भव्य, अज़ीमुश्शान; बहुत बड़े मर्तबेवाला, महामान्य।

आली हिम्मत (عالی ہمت) अ. वि.–बड़े हौसलेवाला, दिलावर, उच्चोत्साही, महासाहसी।

आलीहौसलः (عالی حوصلہ) अ. वि.–दे. 'आली हिम्मत'।

आलुफ़्तः (آلفتہ) फा. वि.–निरंकुश, स्वच्छंद, बेबाक।

आलू (آلو) फा. पुं.–आलूबुख़ारा।

आलूचः (آلوچہ) फा. पुं.–एक मीठा मेवा।

आलूदः (آلودہ) फा. वि.–लिप्त, सना हुआ।

आलूदः दामन (آلودہ دامن) फा. वि.–अपराधी, दोषी, जिसका किसी जुर्म में हाथ हो।

आलूद (آلود) फा. वि.–दे. 'आलूदः'।

अलूदए इस्याँ (آلودۂ عصیاں) फा. अ. वि.–पाप से भरा हुआ, पापमय।

आलूदए मा'सियत (آلودۂ معصیت) फा. अ. वि.–दे. 'आलूदए इस्याँ'।

आलूदगी (آلودگی) फा. स्त्री.–अपवित्रता, नापाकी; किसी जुर्म में शुमूलियत, पापलिप्तता, अपराध।

आलू बुख़ारा (آلوبخارا) फा. पुं.–एक मशहूर मेवा, आरूक।

आले अबा (آل عبا) अ. पुं.–हज़्रत फ़ातिमा, हज़्रत अली और इमाम हसन और हुसैन।

आवंग (آونگ) फा. पुं.–अलगनी।

आवंद (آوند) फा. पुं.–बरतन, ज़र्फ़।

आव (آو) फा. पुं.–पानी, आव।

आवख़ (آوخ) फा. अव्य.–आह, हाय, उफ़; वाह, ख़ूब, अजीब, अद्भुत।

आ'वज (اعوج) अ. वि.–टेढ़ा, वक्र।

आ'वर (اعور) अ. वि.–सौतेला भाई; काना, यक चश्म; एक आँत का नाम; कौआ, काक।

आवरिंदः (آورندہ) फा. वि.–लानेवाला; आक्रमण करनेवाला, हम्लाआवर।

आवर्दः (آوردہ) फा. वि.–लाया हुआ, (प्र.) किसी का ख़ास व्यक्ति; किसी का सिफ़ारिशी; किसी का दलाल; एजेंट।

आवर्द (آورد) फा. स्त्री.–'आमद' का उलटा, वह विचार जो कविता में सोच-साच कर लाया गया हो, मस्तिष्क में तुरंत न आया हो।

आवर्दनी (آوردنی) फा. वि.–लाने योग्य।

आवा (آوا) फा. स्त्री.–'आवाज़' का लघु., स्वर, शब्द, नाद, आवाज़।

आवाज़ः (آوازہ) फा. पुं.–यशोध्वनि, कीर्ति की धूम, शुह्रत, नामवरी।

आवाज़ (آواز) फा. स्त्री.–स्वर, शब्द, नाद, ध्वनि, बोली।

आवाज़े पा (آواز پا) फा. स्त्री.–पाँव की आहट, पगध्वनि।

आवाज़े बाज़गश्त (آواز بازگشت) फा. स्त्री.–प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द, प्रतिवाद, टकराकर लौटी हुई आवाज़।

आवान (آوان) अ. पुं.–'आन' का बहु. बहुत से काल।

आ'वान (اعوان) अ. पुं.–'औन' का बहु. सहायकगण, मदद करनेवाले।

आवारः (آوارہ) फा. वि.–बदचलन, कदाचारी, दुश्चरित्र; बेकार घूमनेवाला, व्यर्थ भ्रमण करनेवाला; जिसका किसी एक स्थान पर ठिकाना न हो, संचारजीवी।

आवारः गर्द (آوارہ گرد) फा. वि.–व्यर्थ में इधर-उधर मारा-मारा फिरनेवाला, व्यर्थ भ्रमणशील।

आवारः गर्दी (آوارہ گردی) फा. स्त्री.–व्यर्थ में इधर-उधर घूमना।

आवारः मनिश (آوارہ منش) फा. वि.–बदचलन, कुमार्गी; व्यर्थ भ्रमण करनेवाला, आवारा गर्द।

आवारः मिज़ाज (آوارہ مزاج) फा. अ. वि.–दे. 'आवारः मनिश', दुष्टप्रकृति, दुश्शील।

आवारः मिज़ाजी (آوارہ مزاجی) फा. स्त्री.–बदचलनी; व्यर्थ भ्रमण, आवारागर्दी।

आवारः वतन (آوارہ وطن) फा. अ. वि.–जो अपना घर-बार छोड़कर परदेश में मारा फिर रहा हो, प्रवासी, परदेशी।

आवारगी (آوارگی) फा. स्त्री.–बेकार इधर-उधर फिरना; दुराचार, बदचलनी।

आविनः (آونہ) अ. पुं.–'अवान' का बहु., समय और काल।

आवेख़्तः (آویختہ) फा. वि.–लटका हुआ; लटकाया हुआ।

आवेख़्तनी (آویختنی) फा. वि.–लटकने योग्य, लटकाने योग्य।

आवेज़ः (آویزہ) फा. पुं.–कान का बुंदा, लोलक, लटकन।

आवेज़ (آویز) फा. प्रत्य.–लटकन या लटकानेवाला जैसे दिलआवेज़ दिल को लटकानेवाला अर्थात् सुंदर।

आवेज़ए गोश (آویزۂ گوش) फा. पुं.–कान का लटकन, बुंदा, लोलक।

आवेज़िंदः (آویزندہ) फा. वि.–लिपटनेवाला, लटकनेवाला; लिपटानेवाला, लटकानेवाला।

आवेज़िश (آویزش) फा. स्त्री.–लाग-डाँट, चढ़ा-ऊपरी; गुत्थमगुत्था, हाथापाई; युद्ध, लड़ाई।

आश (آش) फा. पुं.–वह पतला खाद्य पदार्थ जो पिया जा सके, पेय।

आशपुज़ (آش پز) फा. वि.–रसोइया, बावर्ची।

आ'शा (اعشی) अ. वि.–रतौंधी का रोगी, रात्र्यंध, शबकोर।

आशाम (آشام) फा. पुं.–चावल की पीच; भोजन, खुराक; खीर, (प्रत्य.) 'पीनेवाला', जैसे 'मय आशाम' शराब पीनेवाला, मद्यप।

आशामिंदः (آشامندہ) फा. वि.–पीनेवाला।

आशामीदः (آشامیدہ) फा. वि.–पिया हुआ, जो पिया गया हो।

आशामीदनी (آشامیدنی) फा. वि.–पीने योग्य, पेय।

आशिक़ (عاشق) अ. वि.–प्रेमी, अनुरागी, मुहिब; व्यसनी, लती।

आशिक़ मिज़ाज (عاشق مزاج) अ. वि.–जिसके स्वभाव में प्रेम अधिक हो, और जो हर सुंदर व्यक्ति से प्रेम करने के लिए तत्पर रहता हो, प्रेमप्रवण।

आशिक़ानः (عاشقانہ) अ. फा. वि.–प्रेमियों जैसा; प्रेमपूर्ण, प्रेम के भावों से भरा हुआ।

आशिक़ी (عاشقی) अ. स्त्री.–प्रेम, अनुराग, स्नेह, चाहत, इश्क़।

आशिर (عاشر) अ. वि.–दसवाँ, दसवाँ भाग।

आशुफ़्तः (آشفتہ) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; आतुर, व्याकुल, परीशान।

आशुफ़्तः ख़याल (آشفتہ خیال) फा. अ. वि.–जिसके विचार अस्त-व्यस्त हों, व्यस्तविचारवान्; प्रेमी, आशिक़।

आशुफ़्तः ख़ातिर (آشفتہ خاطر) फा. अ. वि.–जिसका मन एकाग्र न हो, उद्विग्नचित्त; जिसका दिल परेशान हो; प्रेमी।

आशुफ़्तः तब्अ (آشفتہ طبع) फा. अ. वि.–दे. 'आशुफ़्तः ख़ातिर'।

आशुफ़्तः नवा (آشفتہ نوا) फा. वि.–व्यर्थ की बकवाद करनेवाला, अनर्थ भाषी; प्रेमी।

आशुफ़्तः बयाँ (آشفتہ بیاں) फा. अ. वि.–दे. 'आशुफ़्तः नवा'।

आशुफ़्तः मिज़ाज (آشفتہ مزاج) फा. अ. वि.–जिसका चित्त परेशान हो, उद्विग्नचित्त; जिसका मन एकाग्र न हो; प्रेमी।

आशुफ़्तः मू (آشفتہ مو) फा. वि.–बाल बिखेरे हुए; शोकग्रस्त, रंजीदा, प्रेमी।

आशुफ़्तः रोज़गार (آشفتہ روزگار) फा. वि.–समय जिसके प्रतिकूल हो, दुःखी, कालचक्र-ग्रस्त।

आशुफ़्तः सर (آشفتہ سر) फा. वि.–जिसका सिर फिर गया हो, विक्षिप्त, पागल; प्रेमी।

आशुफ़्तः हाल (آشفتہ حال) फा. वि.–कालचक्र-ग्रस्त, हतभाग्य, मुसीबत में फँसा हुआ; प्रेमी।

आशुफ़्तगी (آشفتگی) फा. स्त्री.–उद्विग्नता, व्यग्रता, परेशानी; बौखलाहट, बदहवासी।

आशूर (عاشور) अ. पुं.–दे. 'आशूरा'।

आशूरा (عاشورا) अ. पु.–मुहर्रम की दसवीं तारीख़।

आशोब (آشوب) फा. पुं.–हलचल, उथल-पुथल; उपद्रव, बलवा; विप्लव, इन्क़िलाब।

आशोब कदः (آشوب کدہ) फा. पुं.–दे. 'आशोब गाह'।

आशोबगाह (آشوبگاہ) फा. स्त्री.–हलचल और झगड़े-फ़साद का स्थान, अर्थात् संसार।

आशोबिंदः (آشوبندہ) फा. वि.–परेशान होनेवाला; मोहित होनेवाला।

आशोबीदः (آشوبیدہ) फा. वि.–उद्विग्न, व्याकुल, परेशान; मुग्ध, आसक्त, फ़रेफ़्तः।

GURUKULA KANGRI LIBRARY HARDWAR

आशोबे आगही (آشوب آگہی) फा. पुं.–माया-जाल, मोह-बंधन, संसार के झगड़े।

आशोबे चश्म (آشوب چشم) फा. पुं.–आँखें दुखने का रोग, नेत्राभिष्यंद।

आशोबेदह्र (آشوب دہر) फा. अ. पुं.–सांसारिक उथल-पुथल, इन्क़िलाबात ज़माना।

आशोबे रोज़गार (آشوب روزگار) फा. पुं.–दे. 'आशोबे दह्र' भाग्यचक्र की उथल-पुथल।

आशोरदः (آشوردہ) फा. वि.–गूँधा हुआ, मिलाया हुआ; ख़मीर किया हुआ।

आश्कार (آشکار) फा. वि.–दे. 'आश्कारा'।

आश्कारा (آشکارا) फा. वि.–व्यक्त, प्रकट, ज़ाहिर; स्पष्ट; साफ़।

आश्ती (آشتی) फा. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती; शांति, सुकून; संधि, सुलह।

आश्तीकोश (آشتی کوش) फा. वि.–मित्रता के लिए कोशिश करनेवाला, शान्ति के लिए यत्नवान्।

आश्ती ख़ू (آشتی خو) फा. वि.–जो स्वभावतः मित्रता और शांति चाहता हो, शांतप्रकृति।

आश्ती पसंद (آشتی پسند) फा. वि.–जिसे शांति पसंद हो, जो अमन चाहता हो; जो मित्रता और संधि पसंद करता हो; शांतिप्रिय, संधिप्रेमी।

आश्ना (آشنا) फा. पुं.–मित्र, सुहृद्, दोस्त; जार, उपपति, यार; परिचित, जानकार, वाक़िफ़।

आश्नाई (آشنائی) फा. स्त्री.–मैत्री, दोस्ती; नाजाइज़ सम्बन्ध, जारत्व।

आश्ना फ़रोशी (آشنا فروشی) फा. स्त्री.–मित्र की उसके मुँह पर प्रशंसा करना।

आश्ना रू (آشنا رو) फा. वि.–जो सूरत पहचानता हो, सूरत आश्ना, मुखचर्या-निरीक्षक।

आश्ना सूरत (آشنا صورت) फा. अ. वि.–जिसकी शक्ल पहचानी हुई हो; जिसे पहले देखा हो, पर उससे परिचय न हो, परिचित-मुख।

आश्नाह (آشناہ) फा. स्त्री.–तैरना, पैरना, पैराकी, तैराकी; (वि.) तैरनेवाला, तैराक, पैराक।

आश्माली (آشسالی) फा. स्त्री.–चापलूसी, चाटुकारिता, ख़ुशामद।

आश्याँ (آشیاں) फा. पुं.–घोंसला, नीड़, कुलाय।

आश्यानः (آشیانہ) फा. पुं.–दे. 'आश्याँ'।

आस (آس) फा. स्त्री.–चक्की, पेषणी; ताश, गंजिफ़ः।

आस (آس) अ. पुं.–एक पेड़ जिसके फल और पत्ते दवा में प्रयुक्त होते हैं।

आस [स्स] (عاس) अ. पुं.–रात में पहरा और गश्त देनेवाला।

आसफ़ (آصف) अ. पुं.–हजरत सुलेमान का वज़ीर जो बहुत ही बुद्धिमान् और निपुण था।

आसाँ (آساں) फा. वि.–'आसान' का लघु., दे. आसान।

आसा (آسا) फा. अव्य.–समान, तुल्य, वत्, संज्ञा के अंत में आकर अर्थ देता है, जैसे–हबाब आसा, बुलबुले के सदृश।

आसाइंदः (آسائندہ) फा. वि.–आराम पानेवाला, सुख पानेवाला।

आसाइश (آسائش) फा. स्त्री.–सुख, चैन, आराम; सुगमता, सुविधा, सुहूलत; समृद्धि, ख़ुशहाली।

आसाईदः (آسائیدہ) फा. वि.–आराम पाया हुआ, जिसे सुख मिला हो।

आसाईदनी (آسائیدنی) फा. वि.–सुख पाने योग्य।

आसान (آسان) फा. वि.–सुगम, सरल, सुकर, सहज, सह्ल।

आसान पसंद (آسان پسند) फा. वि.–जो हर काम में सुविधा चाहता हो, परिश्रम या झंझट के काम से घबरानेवाला।

आसानी (آسانی) फा. स्त्री.–सुविधा, सुगमता, सरलता, सुकरता, सुहूलत।

आसानी पसंद (آسانی پسند) फा. वि.–दे. 'आसान पसंद'।

आ'साब (اعصاب) अ. पु.–'असब' का बहु., पट्ठे, स्नायु-समूह।

आसायश (آسایش) फा. स्त्री.–दे. 'आसाइश', वही शुद्ध है।

आसार (آثار) अ. पुं.–'असर' का बहु., लक्षण, अलामतें; चिह्न, निशानात; दीवाल की चौड़ाई; पुरानी इमारतों के खंडहर।

आसारुस्सनादीद (آثار الصنادید) अ. पुं.–पूर्वजों की निशानियाँ।

आसारे क़दीमः (آثار قدیمہ) अ. पुं.–पुरानी क़ाबिले यादगार इमारतों के अवशेष, भग्नावशेष।

आसारे क़ियामत (آثار قیامت) अ. पुं.–महाप्रलय के लक्षण; कोई बहुत ही भयानक घटना होने के लक्षण।

आसाल (آصال) अ. पुं.–'असील' का बहु., संध्याएँ, शाम के वक़्त।

आसास (آساس) अ. पुं.–'असस्' का बहु., नीवें, बुनियादें।

आसिफ़ (عاصف) अ. पुं.–आँधी, झक्कड़; लक्ष्य से हटनेवाला बाण; जिस दिन तेज़ आँधी चले; तेज़ उड़ने वाला शुतुरमुर्ग़।

आसिम (عاصم) अ. वि.–अलग रखनेवाला, बाज़ रखनेवाला; पत्नीव्रत, पाकदामन।

आसिम (آثم) अ. वि.–पापी, पातकी, गुनहगार।

आसिम (عائم) अ. वि.–देर लगानेवाला, विलंब करनेवाला, दीर्घसूत्री।

आसियः (آسیہ) अ. स्त्री.–फ़िरऔन की स्त्री का नाम।

आसिया (آسیا) फा. स्त्री.–चक्की, पेषणी, "सुन अयजुनूने-इश्क़ तुझे इसमें क्या मिला–मानिंद आसिया के घुमाया किया मुझे।"

आसियाए आब (آسیاے آب) फा. स्त्री.–पानी से चलनेवाली चक्की, पनचक्की, जलपेषणी।

आसियाए बाद (آسیاے باد) फा. स्त्री.–वायु के वेग से चलनेवाली चक्की, पवन चक्की, पवन-पेषणी।

आसिया ज़नः (آسیازنہ) फा. पुं.–चक्की टाँकने की छेनी।

आसियाब (آسیاب) फा. स्त्री.–पानी की चक्की, जलपेषणी।

आसिल (عاسل) अ. वि.–शहद जमा करनेवाला, शहद निकालनेवाला; (पुं.) ज़ोर से चलाया हुआ भाला।

आसी (آسی) अ. वि.–दुःखित, ग़मग़ीन; वह वैद्य या हकीम जो रास्ते में दुकान लगाता है; उर्दू के एक सुविख्यात दार्शनिक शायर।

आसी (عاسی) अ. वि.–बहुत ही बूढ़ा, वृद्धतम।

आसी (عاصی) अ. वि.–पातकी, पापी, पापाचारी, गुनाहगार।

आसीमः (آسیمہ) फा. वि.–स्तब्ध, चकित, शशदर; आतुर, उद्विग्न, व्याकुल, परेशान।

आसूदः (آسودہ) फा. वि.–धनवान्, समृद्ध, ख़ुशहाल; संतुष्ट, मुत्मइन; पेट भरा हुआ, अघाया हुआ।

आसूदः ख़ातिर (آسودہ خاطر) फा. अ. वि.–जिसका मन भर गया हो, परितृप्त।

आसूदः दिल (آسودہ دل) फा. वि.–जिसे पूर्ण संतोष प्राप्त हो, जिसका मन अघाया हुआ हो।

आसूदः हाल (آسودہ حال) फा. अ. वि.–धन-धान्य से परिपूर्ण।

आसूदगी (آسودگی) फा. स्त्री.–संतोष, तृप्ति, इत्मीनान; समृद्धि, धन-संपन्नता, ख़ुशहाली; पेट भरा होना।

आसूदनी (آسودنی) फा. वि.–आसूदः होने के क़ाबिल, तृप्त होने योग्य।

आसेब (آسیب) फा. पुं.–प्रेत-बाधा, भूत-प्रेत, जिन-परी; कोई बड़ा अनिष्ट, ख़त्रः (खतरा)।

आसेबज़दः (آسیب زدہ) फा. वि.–जिस पर जिन या भूत का ख़लल हो, प्रेतबाधा-ग्रस्त, भूताविष्ट।

आसेबे बाद (آسیب باد) फा. पुं.–बगूला, वातचक्र, चक्रवात, वातावर्त्त, बवंडर।

आस्तर (آستر) फा. पु.–दोहरे कपड़े में नीचे वाला कपड़ा, अस्तर।

आस्ताँ (آستاں) फा. पुं.–चौखट, देहलीज़; ड्योढ़ी; किसी ऋषि का आश्रम या वली की ख़ानक़ाह।

आस्तानः (آستانہ) फा. पुं.–दे. 'आस्ताँ', "नसीब हो न सकी दौलते क़दमबोसी–अदब से चूम के हज़्रत का आस्तानः चले।"

आस्ताने यार (آستان یار) फा. पुं.–प्रेमिका के मकान की चौखट, प्रेमिका का निवासस्थान।

आस्तीं (آستیں) फा. स्त्री.–आस्तीन का लघु., दे. 'आस्तीन'।

आस्तीन (آستین) फा. स्त्री.–कुर्ते, अँगरखे या कोट का वह भाग, जो बाँहों को छिपाता है।

आस्माँ (آسماں) फा. पुं.–'आस्मान' का लघु., दे. 'आस्मान'।

आस्माँ क़द्र (آسماں قدر) फा. अ. वि.–बहुत ऊँची पदवीवाला, बहुत अधिक प्रतिष्ठित, सर्वोच्च प्रतिष्ठित, उच्चासनासीन।

आस्माँजाह (آسماں جاہ) फा. वि.–दे. 'आस्माँ क़द्र'।

आस्माँ रस (آسماں رس) फा. वि.–आकाश तक पहुँचनेवाला, गगनस्पर्शी।

आस्माँ रिफ़अत (آسماں رفعت) फा. अ. वि.–दे. 'आस्माँ क़द्र।

आस्माँ शिगाफ़ (آسماں شگاف) फा. वि.–आकाश को फाड़ देनेवाला, गगनभेदी।

आस्माँ सैर (آسماں سیر) फा. अ. वि.–आकाश पर उड़नेवाला, गगनभ्रमी, गगनचारी, आकाशगामी।

आस्मानः (آسمانہ) फा. पुं.–छत।

आस्मान (آسمان) फा. पुं.–आकाश, गगन, अंबर, नभ, व्योम, फ़लक, चर्ख़।

आहंग (آہنگ) फा. पुं.–संकल्प, निश्चय, इरादा; गान, राग, नग़्मः; समय, काल, वक़्त।

आहंज (آہنج) अ. पुं.–दे. 'आहंग'।

आह (آہ) फा. स्त्री.–हृदय से निकलनेवाला आर्तनाद, उच्छ्वास; हाय, अफ़्सोस।

आहक (آہک) फा. पुं.–चूना, जला हुआ पत्थर।

आहन (آہن) फा. पुं.–लोह, लौह, अय, लोहा।

आहन गर (آہن گر) फा. वि.–लोहार, लौहकार, अयस्कार।

आहन रुबा (آهن ربا) फा. पुं.–चुंबक पत्थर, मक़्नातीस।

आहनीं (آهنیں) फा. वि.–लोहे का; लोहे का बना हुआ, लोहमय; लोहे जैसा।

आहनीं अज़्म (آهنیں عزم) फा. अ. वि.–लोहे की तरह अटूट निश्चयवाला, वह व्यक्ति जो अपने संकल्प पर अटल रहे।

आहनीं जिगर (آهنیں جگر) फा. वि.–लोहे जसे कठोर हृदयवाला, निर्दय, दयाशून्य, संगदिल, वीर।

आहनी (آهنی) फा. वि.–लोहे का; लोहे का बना हुआ।

आहर्मन (آهرمن) फा. पुं.–'अहरमन' पार्सियों का बदी का ख़ुदा।

आहा (آها) फा. अव्य.–वाह-वाह, साधु-साधु।

आहाद (آهاد) अ. पुं.–'अहद' का बहु., दवाइयाँ।

आहार (آهار) फा. पुं.–लेई, जिससे काग़ज़ आदि चिपकाते हैं; खाना, भोजन।

आहिरः (عاهره) अ. स्त्री.–व्यभिचारिणी, कुलटा, ज़ानियः।

आहिर (عاهر) अ. वि.–व्यभिचारी, विषयी, ज़ानी।

आहिल (آهل) अ. पुं.–जहाँ किसी के बाल-बच्चे हों।

आहिल (عاهل) अ. स्त्री.–बे शौहरवाली स्त्री; सम्राट्, महाराज, शहंशाह; जिसका कोई स्वामी न हो, जो अपना ख़ुद मालिक हो, ख़ुदमुख़्तार।

आहिस्तः (آهسته) फा. वि.–मंद, धीमा; शनैः शनैः, धीरे-धीरे।

आहिस्तःकार (آهسته کار) फा. वि.–बहुत धीरे-धीरे काम करनेवाला, दीर्घसूत्री।

आहिस्तःख़िराम (آهسته خرام) फा. वि.–धीरे-धीरे चलनेवाला, मंदगामी, मृदुलगति, शनैःगामी।

आहिस्तःरवी (آهسته روی) फा. स्त्री.–धीरे-धीरे चलना।

आहिस्तःरौ (آهسته رو) फा. वि.–धीरे-धीरे चलनेवाला, मंदगति, मंदगामी।

आहिस्तगी (آهستگی) फा. स्त्री.–मंदता, धीमापन; मृदुलता, मुलायमपन; गंभीरता, धैर्य, मलानत, तहम्मुल।

आहू (آهو) फा. पुं.–मृग, हरिण, हिरन; छिद्र, दोष, ऐब।

आहूए रम ख़ुर्दः (آهوے رم خورده) फा. पुं.–भागा हुआ हिरन।

आहूगीर (آهوگیر) फा. वि.–हिरन पकड़नेवाला, व्याध; छिद्रान्वेषी, दोष पकड़नेवाला, ऐबचीं।

आहूचश्म (آهوچشم) फा. वि.–हिरन-जैसी आँखोंवाली सुन्दरी, मृगनयनी, मृगाक्षी; हिरन-जैसी आँखोंवाला मनुष्य, मृगनयन।

आहूनिगाह (آهو نگاه) फा. वि.–दे. 'आहूचश्म'।

आहूपरस्ती (آهو پرستی) फा. स्त्री.–हिरन पकड़ने या मारने का शौक़, मृगया-प्रेम।

आहू बचः (آهو بچه) फा. पुं.–हिरन का बच्चा, मृगशावक।

आहू बरः (آهو بره) फा. पुं.–दे. 'आहू बचः'।

आहू शिकार (آهو شکار) फा. वि.–हिरन का शिकार करनेवाला, व्याध, बहेलिया; बड़ी-बड़ी आँखोंवाली सुन्दरी, जो हिरनों को मुग्ध कर ले।

आहेख़्तः (آهیخته) फा. वि.–लटकाया हुआ; खींचा हुआ।

आहेख़्तनी (آهیختنی) फा. वि.–लटकाने के योग्य; खींचने योग्य, आकर्षणीय।

आहेज़ीदः (آهیزیده) फा. वि.–लटकाया हुआ; खींचा हुआ।

आहे नीम कश (آهِ نیم کش) फा. स्त्री.–वह आह जो बदनामी के भय से खुलकर न खींची जाय, अर्धोच्छ्वास।

आहे नीम शबी (آهِ نیم شبی) फा. स्त्री.–वह आह जो आधी रात को जब सब सोते हैं खींची जाय, विरह की रात में खींची जानेवाली आह।

आहोज़ारी (آهوزاری) फा. स्त्री.–रोना-धोना, रोना-पीटना, विलाप।

आहोबुका (آهو بکا) फा. अ. स्त्री.–दे. 'आहोज़ारी'।

इ

इंजाज़ (انجاز) अ. पुं.–प्रतिज्ञा पूरी करना, प्रतिज्ञापूर्ति, वादा वफ़ा करना; किसी की ज़रूरत पूरी करना।

इंज़ाज (انضاج) अ. पुं.–पकाना; फल को पाल आदि द्वारा पकाना; शरीर की दूषित धातुओं को दवाओं द्वारा पकाकर इस क़ाबिल करना कि वे शरीर से निकाली जा सकें; दवाओं द्वारा गाढ़े माद्दे को पतला और पतले को गाढ़ा करना।

इंज़ाम (انظام) अ. पुं.–सजाना, सँवारना, व्यवस्थित, करना क्रम से लगाना, विभूषित करना।

इंज़ार (انظار) अ. पुं.–मोहलत देना, छुट्टी देना।

इंज़ार (انزار) अ. पुं.–डराना, त्रास देना; डरना, ख़ौफ़ खाना।

इंज़ाल (انزال) अ. पुं.–नीचे उतरना; नीचे उतारना; स्त्री-प्रसंग अथवा स्वप्न में वीर्यपात होना।

इंजास (انجاس) अ. पुं.–अपवित्र करना, गंदा करना।

इंजाह (انجاح) अ. पुं.–इच्छा पूरी करना, हाजतबरारी करना; इच्छा पूरी होना।

इंजाहे मराम (انجاح مرام) अ. पुं.–मनोकामना सिद्ध होना, मनोरथपूर्ति, दिली मुराद बर आना।

इंजिज़ाब (انجذاب) अ. पुं.–जज़्ब होना, आत्मसात् होना; आकृष्ट होना, खिचना।

इंज़िबात (انضباط) अ. पुं.–दृढ़ता, मज़बूती; नियमबद्धता, बाक़ाइदगी।

इंजिमाद (انجماد) अ. पुं.–जम जाना, जमकर ठोस होना, बस्तः होना।

इंज़िमाम (انضمام) अ. पुं.–जुड़ना, सटना, युक्त होना; मिश्रित होना, मिलना।

इंज़ियाग़ (انزیاغ) अ. पुं.–यथार्थ को छोड़कर अनृत (झूठ, मिथ्या) की ओर झुकना।

इंजिला (انجلا) अ. पुं.–चमकना, प्रकाशमान होना; घर या देश से निकलना; बादल का छँटना; दुःख का दूर होना।

इंजिलाब (انجلاب) अ. पुं.–आकृष्ट होना, खिंचना।

इंज़िवा (انزوا) अ. पुं.–एकान्तवासी होना, गोशःनशीनी करना; एकान्त, गोशः, तनहाई।

इंज़िहाक़ (انزھاق) अ. पुं.–नष्ट होना, बरबाद होना; मर जाना; हलाक होना।

इंजीर (انجیر) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध फल, अंजीर। (यह उच्चारण अशुद्ध है।)

इंजील (انجیل) अ. स्त्री.–ईसाइयों की मुख्य धार्मिक पुस्तक, बाइबिल।

इंतिआश (انتعاش) अ. पुं.–ऊपर उठना, बलंद होना; समृद्ध होना, खुशहाल होना।

इंतिक़ा (انتقا) अ. पुं.–चुनना, बीनना; स्वीकार करना, क़बूल करना।

इंतिक़ाअ (انتقاع) अ. पुं.–मुँह फेर लेना, पराङ्मुख होना।

इंतिक़ाज़ (انتقاض) अ. पुं.–प्रतिज्ञा आदि भंग करना।

इंतिक़ाद (انتقاد) अ. पुं.–नक़्द लेना; भुस में से अनाज के दाने अलग करना; जाँचना, परखना; आलोचना करना, तनक़ीद करना; आलोचना, तनक़ीद।

इंतिकाफ़ (انتکاف) अ. पुं.–किसी वस्तु का घृणास्पद होना।

इंतिक़ाम (انتقام) अ. पुं.–दुश्मनी चुकाना, वैरशुद्धि; बदी का बदला लेना, प्रत्यपकार।

इंतिक़ामानः (انتقامانہ) अ. फा. वि.–इंतिक़ाम से भरा हुआ; इंतिक़ाम का ध्यान रखते हुए, शत्रुतापूर्ण।

इंतिक़ाल (انتقال) अ. पुं.–एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना; मरना, मृत्यु; एक से दूसरे को पहुँचना।

इंतिक़ाले अराज़ी (انتقال اراضی) अ. पुं.–ज़मीन का एक के पास से दूसरे की मिलकियत में चला जाना।

इंतिक़ाले ज़िह्नी (انتقال ذہنی) अ. पुं.–खयाल का एक ओर से दूसरी ओर जाना, कुछ सोचते हुए कुछ सोचने लगना।

इंतिक़ाश (انتقاش) अ. पुं.–साकार होना; काँटा निकालना; मोचने से बाल उखेड़ना।

इंतिकास (انتکاس) अ. पुं.–उलटा होना, औंधा होना; उलटा, औंधा, अधोमुख।

इंतिकास (انتکاث) अ. पुं.–वादा पूरा न करना, प्रतिज्ञा भंग करना।

इंतिक़ास (انتقاص) अ. पुं–कम करना; कम होना।

इंतिख़ाब (انتخاب) अ. पुं.–बहुतों में से थोड़ा-सा छाँट लेना; चुनना, बीनना; चुनाव, निर्वाचन, एलेक्शन, खतियौनी के किसी कागज की बाज़ाब्ता नक़ल।

इंतिख़ाबे जुदागानः (انتخاب جداگانہ) अ. फा. पुं.–ऐसा चुनाव जो साम्प्रदायिक आधार पर हो, अर्थात् जिसमें मुसलमान मुसलमानों को, हिन्दू हिन्दुओं को, ईसाई ईसाइयों को वोट दें, पृथक् निर्वाचन।

इंतख़ाबे मख़्लूत (انتخاب مخلوط) अ. पुं.–वह चुनाव जिसमें सब मिलकर वोट दें, संयुक्त निर्वाचन।

इंतिजा (انتجا) अ. पुं.–किसी को अपना भेदी बनाना।

इंतिज़ाअ (انتزاع) अ. पुं.–उखड़ना, अस्त-व्यस्त होना; इन्क़िलाब होना, विप्लव होना।

इंतिज़ाए सल्तनत (انتزاع سلطنت) अ. पुं.–राज्य का उथल-पुथल होना, मुल्क में इन्क़िलाब आना, राज्यक्रांति।

इंतिजाब (انتجاب) अ. पुं.–प्रतिष्ठित होना, सम्मानित होना, श्रेष्ठ होना।

इंतिज़ाम (انتظام) अ. पुं.–काम का दुरुस्त होना; काम का दुरुस्त करना; प्रबंध करना; बंदोबस्त करना; प्रबंध, बंदोबस्त।

इंतिज़ार (انتظار) अ. पुं.–राह देखना, प्रतीक्षा करना; आस लगाना, सहारा देखना; प्रतीक्षा।

इंतिताह (انتطاح) अ. पुं.–गाय-भैंस आदि का किसी को सींग मारना।

इंतिदाब (انتداب) अ. पुं.–किसी काम के लिए बुलाना; अपना प्रतिनिधि बनाना; प्रतिनिधित्व, नियाबत।

इंतिफ़ा (انتفا) अ. पुं.–नष्ट करना; नष्ट होना।

इंतिफ़ा (انطفا) अ. पुं.–आग का बुझना; चिराग़ का गुल होना।

इंतिफ़ाअ (انتفاع) अ. पुं.–लाभ उठाना, नफ़ा हासिल करना।

इंतिफ़ाख़ (انتفاخ) अ. पुं.–पेट फूलना, अफार होना; किसी चीज़ में हवा भरना, आनाह, आध्मान।

इंतिफ़ाश (انتفاش) अ. पुं.–मवेशियों को रात में चरागाह में छोड़ देना बिना रखवाले के।

इंतिबाअ (انطباع) अ. पुं.–छपना, मुद्रित होना; कोई

चित्र या लेख दूसरी चीज़ पर ज्यों का त्यों उतरना, यथावत् अवतरण, यथानुरूप चित्रण।

इंतिबाक़ (انطباق) अ. पुं.–एक दूसरे में मिलना, जुड़ना; घटित होना, मुताबिक़ होना।

इंतिबाश (انتباش) अ. पुं.–नंगा करना, कपड़े उतारना; क़ब्र में से मुर्दे का कफ़न उतार लेना, कफ़न चुराना।

इंतिबाह (انتباہ) अ. पुं.–चेतावनी देना, तंबीह करना; चेतावनी, तंबीह।

इंतिमा (انتما) अ. पुं.–किसी से सम्बन्धित होना; विकसित होना, (प्रत्य.) अधिक या विकसित करनेवाला जैसे 'सआदत इंतिमा' सआदत बढ़ानेवाला, 'लुत्फ़-इंतिमा' आनन्दवर्धक।

इंतिमास (انطماس) अ. पुं.–लुप्त होना, ग़ायब होना।

इंतियाअ (انتیاع) अ. पुं.–समस्या का हल होना; बहना, प्रवाहित होना।

इंतिलाक़ (انطلاق) अ. पुं.–जाना, गमन करना।

इंतिवा (انطوا) अ. पुं.–लिपटा हुआ होना।

इंतिशार (انتشار) अ. पुं.–तितर-बितर होना, अस्त-व्यस्त होना; अस्त-व्यस्तता, गड़बड़; घबराहट, परेशानी, बेचैनी; लिंगेंद्रिय का खड़ा होना।

इंतिसाक़ (انتساق) अ. पुं.–व्यवस्था ठीक करना, प्रबंध दुरुस्त करना; क्रमबद्ध करना, तर्तीब देना; शैली, ढंग, तरीक़ा; प्रबंध, इंतिज़ाम।

इंतिसाख़ (انتساخ) अ. पुं.–किसी लेख आदि की नकल लेना।

इंतिसाफ़ (انتصاف) अ. पुं.–न्याय पाना, न्याय के अनुसार काम होना; अध्धा-आधा होना; आधा पाना।

इंतिसाब (انتساب) अ. पुं.–किसी वस्तु को किसी से संबंधित करना; किसी पुस्तक आदि को किसी के नाम सर्मपित करना; डेडीकेशन, समर्पण।

इंतिसाब (انتصاب) अ. पुं.–होना, उठ खड़ा होना, बरपा होना।

इंतिसाम (انتسام) अ. पुं.–सुगंधित पदार्थ सूँघना, सुगंध लेना, ख़ुशबू सूँघना।

इंतिसाल (انتسال) अ. पुं.–वंश का आगे चलना, लड़का उत्पन्न होना, वंशवृद्धि।

इंतिसाह (انتصاح) अ. पुं.–हित की बात सुनना, नसीहत मानना।

इंतिहा (انتہا) अ. स्त्री–पराकाष्ठा, आख़िरी हद; छोर, सिरा; अत्यधिक, बहुत ज़ियादा; चरम सीमा।

इंतिहाई (انتہائی) अ. वि.–अत्यधिक, बहुत; आख़िरी हदवाला, अन्तवाला।

इंतिहाज़ (انتہاز) अ. पुं.–फ़ुर्सत पाना, अवसर प्राप्त होना; क़ाबू पाना, बस में लाना।

इंतिहाज़ (انتہاض) अ. पुं.–कूच करना, प्रस्थान करना; कूच, प्रस्थान; उठना, खड़ा होना।

इंतिहापसंद (انتہاپسند) अ. फा. वि.–हर काम को उसकी अन्तिम सीमा में पसंद करनेवाला; क्रान्ति और हिंसा द्वारा देश में इन्क़िलाब लाने का सिद्धान्त माननेवाला।

इंतिहापसंदी (انتہاپسندی) अ. फा. स्त्री.–क्रान्ति द्वारा देश में इन्क़िलाब लाने का सिद्धान्त मानना; हर काम को उसकी अंतिम सीमा में पसंद करना।

इंतिहाब (انتہاب) अ. पुं.–डाके आदि में लुट जाना; बरबाद हो जाना; ग़ारत करना, लूटना।

इंतिहार (انتہار) अ. पुं.–हाँपना, हाँफना।

इंतिहाल (انتحال) अ. पुं.–किसी दूसरे की कविता या लेख को अपना बताना।

इंदज़्ज़ुरूरत (عندالضرورت) अ. वि.–आवश्यकता पड़ने पर, जब ज़रूरत हो तब।

इंदत्तलब (عندالطلب) अ. वि.–माँगने के समय, जब माँगा जाय तब; एक प्रकार का ऋणपत्र जिसमें जिस समय माँगा जाय उसी समय रुपया देना ज़रूरी है।

इंदत्तहक़ीक़ (عندالتحقیق) अ. वि.–जाँच के समय; जाँच के अनुसार।

इंदन्नास (عندالناس) अ. वि.–आम जनता की राय में, सर्वसाधारण के नज़दीक।

इंदल्लाह (عنداللہ) अ. वि.–ईश्वर के नज़दीक, ख़ुदा के यहाँ।

इंदल्‌हाजत (عندالحاجت) अ. वि.–दे. 'इंदज़्ज़ुरूरत'।

इंदार (اندار) अ. पुं.–डालना।

इंदिक़ाक़ (اندقاق) अ. पुं.–कूटा जाना, कुटना।

इंदिफ़ाअ (اندفاع) अ. पुं.–दूर होना, दफ़ा होना, निराकरण होना।

इंदिबाग़ (اندباغ) अ. पुं.–चमड़ा पकाना और रँगना।

इंदिमाज (اندماج) अ. पुं.–घुसना; निकलना; किसी जगह मज़बूती से खड़ा होना।

इंदिमाल (اندمال) अ. पुं.–घाव का भरना, क्षतपूर्ति।

इंदियः (عندیہ) अ. पुं.–अभिप्राय, उद्देश, मक़सद; विचार, ख़याल।

इंदिराअ (اندراع) अ. पुं.–सामने आना, घटना का उपस्थित होना।

इंदिराज (اندراج) अ. पुं.–दर्ज होना, लिखा जाना; रजिस्टर आदि में लिखा जाना।

इंदिरास (اندراس) अ. पुं.–जीर्ण होना, पुराना होना; जीर्णता, पुरानापन; नष्ट होना।

इंदिलाअ (اندلاع) अ. पुं.–तोंद निकल आना, पेट बढ़ जाना।

इंदिलाक़ (اندلاق) अ. पुं.–उगल पड़ना।

इंदिलास (اندلاص)अ. पुं.–गिर पड़ना।

इंदिसास (اندساس) अ. पुं.–छुपना, छिपना, गुप्त होना; मिट्टी में छिपना।

इंबा (انبا) अ. पुं.–सूचना देना, ख़बर देना।

इंबात (انبات) अ. पुं.–उगना, जमना; उगाना।

इंबार (انبار) अ. पुं.–राशि, ढेर; ग़ल्ला (अनाज) जमा करने का स्थान (अंबार)।

इंबाह (انباہ)अ. पुं.–जगाना, बेदार करना, सोते से उठाना।

इंबिआस (انبعاث) अ. पुं.–उत्थान, उठना; उत्तेजित होना, तेज़ होना।

इंबिग़ा (انبغا)अ. पुं.–पात्र होना, मुस्तहक़ होना; इच्छित होना, अभिलषित।

इंबिसात (انبساط) अ. पुं.–खुलना, शगुफ़्तः होना; आनंद, हर्ष, ख़ुशी; गुस्ताख़ी, धृष्टता।

इंबिसास (انبثاث) अ. पुं.–तितर-बितर होना, मुंतशिर होना।

इंशा (انشا) अ. स्त्री.–लेख लिखना; लिखना, तहरीर करना; साहित्य, अदब; उत्पन्न करना; आरंभ करना।

इंशा अल्लाह (انشا اللہ)अ. फा. स्त्री.–दे. 'इन्शा अल्लाह'।

इंशाद (انشاد)अ. पुं.–कविता सुनाना, शेर पढ़ना।

इंशा पर्दाज़ (انشا پرداز) अ. फा. वि.–गद्य-लेखक, निबंधकार, नस्रनिगार; साहित्यकार, अदीब।

इंशा पर्दाज़ी (انشا پردازی)अ. फा. स्त्री.–मज़्मून निगारी, निबंध-रचना।

इंशिक़ाक़ (انشقاق)अ. पुं.–फट जाना, तड़कना, शक़ होना, दरकना।

इंशिराह (انشراح) अ. पुं.–हृदय का खुल जाना, दिल का कुशादः हो जाना; चित्त की प्रसन्नता, मसर्रत।

इंशिराहे क़ल्ब (انشراح قلب) अ. पुं.–हृदय का इस प्रकार विकसित हो जाना कि सारी परोक्ष बातें ज्ञात हो जायँ, दिव्य दृष्टि प्राप्त हो जाना, दवी ज्ञान प्राप्त होना।

इंस (انس) अ. पुं.–लोग, मनुष्यवर्ग, यह शब्द बहुवचन के अर्थ में आता है, परन्तु इसका एकवचन नहीं है।

इंसा (انسا)अ. पुं. –भुला देना।

इंसाक़ (انساق) अ. पुं.–नियम और दस्तूर बनाना, किसी चीज़ को क़ायदे के अंदर लाना।

इंसान (انسان) अ. पुं.–मनुष्य, आदमी; मानव जाति, नौए इंसानी; सभ्य, शिष्ट, मुहज़्ज़ब; सज्जन, भलामानस, शरीफ़।

इंसानी (انسانی) अ. वि.–मानवीय, आदमी का; मनुष्य जैसा, आदमी की तरह का।

इंसानीयत (انسانیت) अ. स्त्री.–मानवता, आदमियत; सभ्यता, शिष्टता, तमीज़दारी।

इंसानेऐन (انسان عین)अ. पुं.–आँख की पुतली, कनीनिका।

इंसाफ़ (انصاف)अ. पुं.–न्याय, नीति, अद्ल।

इंसाफ़न (انصافاً)अ. वि.–इंसाफ़ से, न्यायतः, न्याय के अनुसार।

इंसाफ़ पसंद (انصاف پسند)अ. फा. वि.–न्याय की बात कहनेवाला, न्यायप्रिय, पक्षपात न करनेवाला।

इंसाफ़ पसंदी (انصاف پسندی)अ. फा. स्त्री.–न्यायप्रियता, न्याय की बात पसंद करना, पक्षपात न करना।

इंसिकाब (انسکاب) अ. पुं.–पानी गिरना; बहुत रोना।

इंसिदाअ (انصداع) अ. पुं.–फटना, बीच में दर्ज हो जाना।

इंसिदाद (انسداد)अ. पुं.–बंद होना, रुक जाना; निवारण, ख़ातिमा।

इंसिदादेजुर्म (انسداد جرم) अ. पुं.–जुर्मों का रुक जाना, चोरियाँ डकैतियाँ आदि न होना।

इंसिबाग़ (انصباغ) अ. पुं.–रंग चढ़ना, रंगीन होना, रँगा जाना।

इंसिबाब (انصباب) अ. पुं.–पानी या किसी पतली चीज़ का रसना या टपकना।

इंसियाक़ (انسیاق)अ.पुं.–बहना,प्रवाहित होना,रवाँ होना।

इंसिराफ़ (انصراف)अ. पुं.–फिरना, लौट आना।

इंसिराम (انصرام) अ. पुं.–कटना, कटफर अलग होना; समाप्त होना, पूरा होना; प्रबंध, व्यव्स्था, इंतिज़ाम।

इंसिलाक (انسلاک)अ. पुं.–एक चीज़ का दूसरी चीज़ में प्रवेश करना, घुसना।

इंसिलाब (انسلاب) अ. पुं.–नष्ट होना, ज़ाए जाना; खो जाना, गुम होना।

इंसिहाक़ (انسحاق) अ. पुं.–घिसा जाना।

इंसी (انسی) अ. पुं.–मनुष्य, आदमी; सीधी ओर, दाहिनी तरफ़; शरीर का भीतरी अवयव।

इआदः (اعادہ) अ. पुं.–लौटकर आना, वापस आना, कही हुई बात को फिर से कहना; पुनरावृत्ति, दुहराना।

इआदत (عیادت) अ. स्त्री.–दे. 'एयादत'।

इआनत (اعانت) अ. स्त्री.–सहायता, मदद; सहयोग, तआवुन।

इआनते मुज्रिमानः (اعانت مجرمانہ) अ. स्त्री.–किसी अवैध कार्य में सहायता, किसी काम में ऐसी मदद जो जुर्म हो।

इआर (عیار) अ. पुं.–कसौटी का कस, बानगी, चाशनी; सोना तौलने का काँटा।

इक़ाब (عقاب) अ. पुं.–यातना, कष्ट, दुख, तकलीफ़; पाप कष्ट, अज़ाब।

इकाफ़ (اکاف) अ. पुं.–घोड़े या गधे का पलान, (शिश्न)।

इक़ामत (اقامت) अ. स्त्री.–किसी स्थान पर ठहरना, रहना, बसना; क़ायम करना; नमाज़ के लिए तक्बीर।

इक़ामत पज़ीर (اقامت پزیر) अ. फा. वि.–जो कहीं ठहरा हुआ हो, जो कहीं रह रहा हो।

इक़ालः (اقالہ) अ. पुं.–बेची हुई चीज़ को आपस की रज़ामंदी से वापस ले लेना; किसी काम का विचार छोड़ देना।

इक़ालत (اقالت) अ. स्त्री.–दे. 'इक़ालः'।

इक़ित (اقط) अ. पुं.–दे. 'इक़्त'।

इक़्त (اقط) अ. पुं.–पनीर, शुष्क दही जिसमें नमक मिलाया गया हो, दे. 'इक़ित'। दोनों शुद्ध हैं।

इक़्आ (اقعا) अ. पुं.–मनुष्य का चूतड़ों के बल बैठना, जिसमें दोनों पिंडलियाँ खड़ी रहें।

इक़्तिज़ा (اقتضا) अ. पुं.–इच्छा, आकांक्षा, चाह, ख़्वाहिश; समय की माँग, वक़्त की ज़रूरत।

इक़्तिज़ाज़ (اقتضاض) अ. पुं.–कुँआरी स्त्री के साथ संभोग।

इक़्तिज़ाब (اقتضاب) अ. पुं.–काटना, टुकड़े करना।

इक़्तिताफ़ (اقتطاف) अ. पुं.–मेवा चुनना; फल बीनना; फल पाना, सम्रः पाना।

इक्तिताब (اکتتاب) अ. पुं.–किताब आदि में लिखना; चंदे की फ़ेहरिस्त खोलना।

इक़्तिताम (اکتتام) अ. पुं.–छुपाना, गोपन; गुप्ति, पोशीदगी; बालों में ख़िज़ाब लगाना।

इक़्तिदार (اقتدار) अ. पुं.–सत्ता, प्रभुत्व, ताक़त; हुकूमत, राज, शासन; आतंक, रोबदाब; सम्मान, इज़्ज़त।

इक़्तिदारे आ'ला (اقتدار اعلیٰ) अ. पुं.–राज्य के सर्वोच्च पदाधिकारियों की मंडली, हाई कमांड।

इक़्तिदा (اقتدا) अ. पुं.–अनुकरण करना, पैरवी करना; अनुकरण, तक़्लीद; इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना।

इक़्तिना (اقتنا) अ. पुं.–किसी काम और व्यवसाय के लिए पूँजी इकट्ठी करना।

इक़्तिनाअ (اقتناع) अ. पुं.–निस्पृह रहना, जो कुछ मिल जाय उसी पर गुज़र करना, क़नाअत करना।

इक्तिनाफ़ (اکتناف) अ. पुं.–किसी की शरण लेना, पनाह में आना।

इक़्तिनास (اقتناس) अ. पुं.–शिकार करना; व्यवसाय करना, जीविका कमाना।

इक्तिनाह (اکتناہ) अ. पुं.–बात की तह-तक पहुँचना।

इक्तिफ़ा (اکتفا) अ. पुं.–पर्याप्त होना, काफ़ी होना।

इक़्तिफ़ा (اقتفا) अ. पुं.–अनुकरण; पैरवी।

इक़्तिफ़ाल (اقتفال) अ. पुं.–क़ुफ़्ल (ताला) में बंद होना, मुक़फ़्फ़ल होना।

इक़्तिबास (اقتباس) अ. पुं.–जल उठना, आग पकड़ लेना; रौशन होना, प्रकाशमान होना; किसी पुस्तक, लेख या काव्य-संग्रह में से आवश्यकतानुसार इबारत (वाक्य) या अश्आर अपनी किताब में देना, उद्धरण।

इक्तिमान (اکتمان) अ. पुं.–छुपना, छिपकर बैठना; छिपकर घात में बैठना; छिपाना।

इक्तियाब (اکتئاب) अ. पुं.–दुःखी होना, ग़मगीन होना।

इक़्तियास (اقتیاس) अ. पुं.–अनुकरण करना, पैरवी करना; अनुमान करना, क़ियास करना।

इक़्तिराज़ (اقتراض) अ. पुं.–उधार लेना, क़र्ज़ लेना।

इक़्तिरान (اقتران) अ. पुं.–समीप होना, निकट होना, पास-पास होना।

इक़्तिराब (اقتراب) अ. पुं.–समीप होना, क़रीब होना; पास आना; समीपता, नज़दीकी।

इक़्तिराह (اقتراح) अ. पुं.–पूछना, जिज्ञासा करना; प्रश्न करना, सवाल करना; इच्छा करना, चाहना।

इक्तिवा (اکتوا) अ. पुं.–बीमारी में किसी अंग को दाग़ना, दाग़ देना।

इक्तिशाफ़ (اکتشاف) अ. पुं.–प्रकट होना, खुलना, ज़ाहिर होना।

इक्तिसा (اکتسا) अ. पुं.–कपड़े पहनना।

इक़्तिसाद (اقتصاد) अ. पुं.–बीच की राह चलना; किफ़ायतशिआरी करना; अर्थ, रुपया।

इक़्तिसादी (اقتصادی) अ. वि.–आर्थिक, माली, रुपये-पैसे से सम्बन्धित।

इक़्तिसादीयात (اقتصادیات) अ. स्त्री.–अर्थव्यवस्था, आर्थिक समस्याएँ, माली मसाइल; अर्थशास्त्र, अर्थ-विज्ञान, एकोनोमिक्स।

इक्तिसाब (اکتساب) अ. पुं.–उपार्जन, कमाना, स्वयं अपने प्रयत्न से प्राप्त करना।

इक्तिसाबे इल्म (اکتساب علم) अ. पुं.–विद्योपार्जन, ज्ञान प्राप्त करना, इल्म हासिल करना।

इक्तिसाबे ज़र (اکتساب زر) अ. फा. पुं.–धनोपार्जन, रुपया कमाना।

इक्तिसाबे फ़न (اکتساب فن) अ. पुं.–कोई शिल्प या हुनर प्राप्त करना, फ़न सीखना।

इक्तिसाबे माल (اکتساب مال) अ. पुं.–दे. 'इक्तिसाबे ज़र'।

इक़्तिसाम (اقتسام) अ. पुं.–बाँटना, तक़्सीम करना।

इक़्तिसार (اقتسار) अ. पुं.–ज़बर्दस्ती किसी से कोई काम लेना; ज़बर्दस्ती।

इक़्तिसार (اقتصار) अ. पुं.–कम करना, छोटा करना; एक चीज़ पर खड़ा होना; ऐसी इबारत लिखना जिसमें शब्द बहुत हों और अर्थ कम हो।

इक़्तिसास (اقتصاص) अ. पुं.–ख़ून का बदला लेना, प्रतिहिंसा करना।

इक़्तिहाम (اقتحام) अ. पुं.–इख़्तियार करना, धारण करना; किसी चीज़ में घुसना; अत्याचार करना; अपमानित करना, ज़लील करना।

इक्तिहाल (اکتحال) अ. पुं.–आँखों को अंजनसार करना, सुरमा लगाना।

इक़्दाम (اقدام) अ. पुं.–किसी काम करने के इरादे से आगे बढ़ना, पेशक़दमी करना; अग्रसरता, पेशक़दमी।

इक़्दामे क़त्ल (اقدام قتل) अ. पुं.–मार डालने के लिए आगे बढ़ना, क़त्ल के लिए तैयारी करना।

इक़्दाह (اقداح) अ. पुं.–ऐब करना, बुराई करना, निन्दा करना; निंदा, बदगोई।

इक्दिश (اکدش) तु. पुं.–प्रिया, प्रेयसी, महबूबः; वह व्यक्ति जिसकी माँ हिन्दुस्तानी और बाप तुर्की हो; वह घोड़ा जिसकी माँ तुर्की और बाप अरबी हो।

इक़्ना (اقنا) अ. पुं.–किसी व्यवसाय में पूँजी लगाना; व्यवसाय करना, धन कमाना।

इक़्रान (اقران) अ. पुं.–समीप आना, पास पहुँचना; पास-पास होना।

इक्राम (اکرام) अ. पुं.–सम्मान, सत्कार, आव-भगत; प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

इक्फ़ा (اکفا) अ. पुं.–क़ाफ़िए का एक दोष जिसमें दो ऐसे अक्षरों का काफिया होता है जो उच्चारण में समीपवर्ती होते हैं, जैसे 'सबाह' (صباح) और सिपाह (سپاہ) इनमें एक 'बड़ी हे' है और एक 'छोटी हे।

इक्फ़ार (اکفار) अ. पुं.–किसी आस्तिक को नास्तिक बताना, काफ़िर कहना।

इक्बाब (اکباب) अ. पुं.–औंधे मुँह गिरना, मुँह के बल गिरना।

इक़्बाल (اقبال) अ. पुं.–प्रताप, तेज, जलाल; सौभाग्य, ख़ुशकिस्मती, समृद्धि, फ़राग़त; स्वीकृति, इक़्रार (इक़रार)।

इक़्बालमंद (اقبال مند) अ. फा. वि.–प्रतापवान्, तेजस्वी, जिसका इक़्बाल जोरों पर हो।

इक़्बालमंदी (اقبال مندی) अ. फा. स्त्री.–इक़्बाल का ज़ोर, तेज की प्रबलता।

इक़्बाली (اقبالی) अ. वि.–इक़रार करनेवाला, इक़रारी; जो अपराधी अपने अपराध को स्वीकार करे।

इक़्बालेजुर्म (اقبال جرم) अ. पुं.–अपराध करने और दोषी होने का इक़रार, स्वीकारोक्ति।

इक़्बाह (اقباح) अ. पुं.–किसी वस्तु को बिगाड़कर भोंडा कर देना।

इक़्माअ (اقماع) अ. पुं.–तोड़ना, खंड-खंड करना।

इक्माल (اکمال) अ. पुं.–पूरा करना, समाप्त करना, ख़त्म करना।

इक़्मास (اقماس) अ. पुं.–ग़ोता लगाना, डुबकी मारना, निमज्जन।

इक़्माह (اقماح) अ. पुं.–आकाश की ओर इस प्रकार सिर उठाना कि आँखें पृथ्वी की ओर रहें।

इक़्राअ (اقراع) अ. पुं.–लाटरी डालना; पाँसा फेंकना।

इक़्राज़ (اقراض) अ. पुं.–उधार लेना, क़र्ज़ लेना।

इक़्रार (اقرار) अ. पुं.–प्रतिज्ञा, अहद; वचन, वादा; स्वीकृति, इक़्बाल; संविदा, ऐग्रीमेंट।

इक़्रारनामः (اقرارنامہ) अ. फा. पुं.–प्रतिज्ञापत्र, अहदनामा; संविदा, ऐग्रीमेंट।

इक़्रारे सालेह (اقرار صالح) अ. पुं.–वह प्रतिज्ञा जो सच्चे दिल से की गयी हो, पक्का निश्चय, दृढ़ प्रतिज्ञा।

इक़्राश (اقراش) अ. पुं.–निंदा करना, बदगोई करना; निंदा, बुराई।

इक्राह (اکراہ) अ. पुं.–घृणा, नफ़रत, घिन, कराहत।

इक़्लाअ (اقلاع) अ. पुं.–उखेड़ना, जड़ से उखेड़ना; नष्ट करना, बरबाद करना, सफ़ाया करना।

इक़्लीद (اقلید) अ. स्त्री.–'क़िलीद' का मुअर्रब (अरबीकृत), कुंजी, ताली।

इक़्लीदिस [दस] (اقلیدس) अ. स्त्री.–ज्यामिति, रेखागणित, ज्यामेट्री।

इक़्लीम (اقلیم) अ. स्त्री.–महाद्वीप, बर्रेआ'ज़म; देश, मुल्क; प्रदेश, इलाक़ा।

इक़्लीमिया (اقلیمیا) अ. स्त्री.–रूपामक्खी, चाँदी का मैल; सोनामक़्खी, सोने का मैल।

इक़्लीमियाए जहबी (اقلیمیائے ذہبی) अ. स्त्री.–सोने का मैल, सोनामक़्खी।

इक़्लीमियाए फ़िज़्ज़ी (اقلیمیائے فضی) अ. स्त्री.–चाँदी का मैल, रूपामक़्खी।

इक्लील (اکلیل) अ. पुं.–मुकुट, ताज; टोपी।

इक्लीलुलमलिक (اکلیل الملک) अ. पुं.–एक वनस्पति, पुरंग, अस्परक।

इक़्वा (اقوا) अ. पुं.–क़ाफ़िए का एक दोष जिसमें से रवी से पहले के अक्षर की मात्रा एक-सी न हो। जैसे–गुल और दिल का क़ाफ़िया, इसमें 'ग' पर पेश है और 'द' पर ज़ेर।

इक़्सा (اقسا) अ. पुं.–हृदय का कठोर होना, निर्दय होना।

इक़्सा (اقصا) अ. पुं.–अलग करना, हटाना, दूर करना; किनारे पहुँचाना।

इक़्साब (اقصاب) अ. पुं.–काटना, टुकड़े करना।

इक़्साम (اقسام) अ. पुं.–हिस्से करना; शपथ लेना, क़सम खाना।

इक़्सार (اکثار) अ.–बहुत कहना; बहुत करना; बहुत खाना; अधिकता, इफ़्रात (इफ़रात)।

इक़्सास (اقصاص) अ. पुं.–ख़ून के बदले में जान लेना, हिंसा के बदले हिंसा, प्रतिहिंसा।

इक्सीर (اکسیر) अ. स्त्री.–रसायन, कीमिया; (वि.), अमोघ, अचूक, जैसे दमे के लिए इक्सीर (अकसीर)।

इक्सीरी (اکسیری) अ. वि.–कीमियागर, रसायन बनानेवाला।

इक्सून (اکسون) फा. स्त्री.–एक काला रेशमी कपड़ा।

इख़ाज़ः (اخاذہ) अ. पुं.–तड़ाग, तालाब, जलाशय।

इख़ाज़ (اخاذ) अ. पुं.–लेना, ग्रहण करना; वह तालाब जो जंगल में हो; वह ज़मीन जो राजा अपने लिए अलग कर ले।

इख़्तार (اخطار) अ. पुं.–अपने को जान जोखिम में डालना, ख़तरे में फँसाना।

इख़्तिज़ाब (اختضاب) अ. पुं.–बालों में ख़िज़ाब लगाना।

इख़्तिताफ़ (اختطاف) अ. पुं.–उचक लेना, उड़ा लेना।

इख़्तिताम (اختتام) अ. पुं.–समाप्त होना, ख़त्म होना; अन्त, समाप्ति।

इख़्तिनाक़ (اختناق) अ. पुं.–गला बंद होना, गला घुटना।

इख़्तिनाक़ुर्रहिम (اختناق الرحم) अ. पुं.–स्त्रियों का मूर्छा रोग, हिस्टीरिया।

इख़्तिफ़ा (اختفا) अ. पुं.–गोपन, छिपाना, पोशीदा करना।

इख़्तिफ़ार (اختفار) अ. पुं.–प्रतिज्ञा भंग करना।

इख़्तिबार (اختبار) अ. पुं.–ख़बर लेना; परीक्षा करना; परीक्षा, इम्तिहान।

इख़्तिमार (اختمار) अ. पुं.–ख़मीर उठाना, औषधियों आदि को पानी आदि में भिगोकर रखना ताकि सड़कर उनका ख़मीर उठ आये।

इख़्तियान (اختیان) अ. पुं.–अमानत में ख़ियानत करना।

इख़्तियार (اختیار) अ. पुं.–अधिकार, हक़; सत्ता, हुकूमत; स्वामित्व, मालिकीयत।

इख़्तियारी (اختیاری) अ. वि.–जो अनिवार्य न हो, जो लाज़िमी न हो।

इख़्तियारे समाअत (اختیار سماعت) अ. पुं.–मुक़दमा सुनने का अधिकार।

इख़्तियाल (اختیال) अ. पुं.–अवज्ञा, नाफ़र्मानी; उद्दंडता, सरकशी; ध्यान रखना, ख़याल करना।

इख़्तिराअ (اختراع) अ. पुं.–ऐसी चीज़ बनाना जो पहले न हो; आविष्कार, ईजाद।

इख़्तिराआत (اختراعات) अ. पुं.–नयी नयी ईजादें, नये नये आविष्कार।

इख़्तिराई (اختراعی) अ. वि.–ईजाद से सम्बन्धित; मनगढ़ंत, फ़र्ज़ी, कल्पित।

इख़्तिराक़ (اختراق) अ. पुं.–फटना, विदीर्ण होना; फाड़ना, विदीर्ण करना।

इख़्तिलाज (اختلاج) अ. पुं.–दिल की धड़कन, हौलदिल।

इख़्तिलाजे क़ल्ब (اختلاج قلب) अ. पुं.–दिल की धड़कन, हृत्कम्प।

इख़्तिलात (اختلاط) अ. पुं.–मैत्री, दोस्ती; प्रेम-व्यवहार, मेल-जोल; चुंबनालिंगन, चूमाचाटी।

इख़्तिलाफ़ (اختلاف) अ. पुं.–मतभेद, राय का इख़्तिलाफ़; वैमनस्य, रंजिश; फूट, नाइत्तिफ़ाक़ी, भिन्नता, अलग-अलग होना।

इख़्तिलाल (اختلال) अ. पुं.–विघ्न, विकार, ख़लल; कुव्यवस्था, अस्त-व्यस्तता, गड़बड़ी।

इख़्तिलाले दिमाग़ (اختلال دماغ) अ. पुं.–दे. 'इख़्तिलाले हवास'।

इख़्तिलाले हवास (اختلال حواس) अ. पुं.–बुद्धि-विकार, मतिभ्रम; पागलपन, बुद्धि-विक्षेप।

इख़्तिलास (اختلاس) अ. पुं.–उचक ले जाना।

इख़्तिसाम (اختصام) अ. पुं.–शत्रुता करना, दुश्मन होना।

इख़्तिसार (اختصار) अ. पुं.–संक्षिप्त करना, कम करना; संक्षेप, कमी; बड़े मज़्मून को काट-छाँटकर छोटा करना।

इख़्तिसास (اختصاص) अ. पुं.–विशेषता, मुख्यता, ख़ुसूसियत।

इख़्दाम (اخدام) अ. पुं.–सेवा करना, ख़िद्‌मत करना।

इख़्फ़ा (اخفا) अ. पुं.–छिपाना, प्रकट न करना।

इख़्फ़ाए जुर्म (اخفائے جرم) अ. पुं.–अपराध करके उसे छिपाना, जुर्म ज़ाहिर न करना।

इख़्फ़ाए राज़ (اخفاے راز) अ. फा. पुं.–भेद छिपाना।

इख़्फ़ाए वारिदात (اخفاے واردات) अ. पुं.–दे. 'इख़्फ़ाए जुर्म'।

इख़्फ़ाफ़ (اخفاف) अ. पुं.–दूसरों की दृष्टि में हलका होना, ख़फ़ीफ़ होना।

इख़्बार (اخبار) अ. पुं.–ख़बर देना, सूचना देना; जासूसी करना, भेद बताना।

इख़्मार (اخمار) अ. पुं.–आग बुझाना।

इख़्राज (اخراج) अ. पुं.–ख़ारिज करना, निकाल देना; बहिष्कार; ख़र्च, व्यय।

इख़्राजात (اخراجات) अ. पुं.–व्यय, ख़र्च।

इख़्राब (اخراب) अ. पुं.–वीरान करना, सुनसान करना, निर्जन करना; नष्ट करना, मिटाना; ख़राब करना।

इख़्लाक़ (اخلاق) अ. पुं.–पुराना करना; पुराना होना; पुरानापन।

इख़्लास (اخلاص) अ. पुं.–निश्छलता, निष्कपटता, ख़ुलूस; सच्चा और निष्कपट प्रेम।

इख़्लासमंद (اخلاص مند) अ. फा. वि.–सच्चा और स्वार्थहीन मित्र, ख़ालिस प्रेमी।

इख़्लासमंदी (اخلاص مندی) अ. फा. स्त्री.–निःस्वार्थ मित्रता, सच्चा प्रेम।

इख़्वान (اخوان) अ. पुं.–'अख़' का बहु., भाई-बंधु, बंधुवर्ग।

इख़्वानुश्शयातीन (اخوان الشیاطین) अ. पुं.–शैतानों के भाई-बंधु, खल और धूर्त लोग।

इख़्वानुस्सफ़ा (اخوان الصفا) अ. पुं.–सज्जन लोग, भलेमानस।

इख़्सा (اخصا) अ. पुं.–अंडकोष निकालना, ख़स्सी करना।

इग़ारत (اغارت) अ. स्त्री.–लूटना, ग़ारत करना; दौड़ना, भागना; पीछे दौड़ना, तआक़ुब करना।

इग़ासत (اغاثت) अ. स्त्री.–किसी दुखी की फ़र्याद सुनना, किसी अन्याय का न्याय करना।

इग़्ज़ा (اغزا) अ. पुं.–किसी को लड़ाई पर उकसाना; किसीको बरग़लाना, बहकाना।

इग़्ज़ा (اغضا) अ. पुं.–चश्मपोशी करना, किसी की ग़लती पर नोटिस न लेना, ध्यान न देना।

इग़्ज़ाल (اغزال) अ. पुं.–चर्ख़ा कातना, सूत कातना।

इग़्तिज़ाब (اغتضاب) अ. पुं.–किसी को ग़ुस्से में लाना, ग़ुस्सा दिलाना।

इग़्तिज़ाल (اغتزال) अ. पुं.–सूत कातना।

इग़्तिफ़ार (اغتفار) अ. पुं.–मोक्ष, मुक्ति, मग़्फ़िरत।

इग़्तिमास (اغتماس) अ. पुं.–डुबकी लगाना, ग़ोता मारना, निमज्जन।

इग़्तियाब (اغتیاب) अ. पुं.–ग़ीबत करना, पीठ पीछे बुराई करना; पिशुनता, चुग़ुलख़ोरी।

इग़्तिराब (اغتراب) अ. पुं.–परदेसी होना; मुसाफ़िर होना; अपने कुल से अलग स्त्री से ब्याह करना।

इग़्तिराफ़ (اغتراف) अ. पुं.–ओक से पानी आदि पीना; चुल्लू बनाना।

इग़्तिशाश (اغتشاش) अ. पुं.–हलचल, आंदोलन।

इग़्तिसाब (اغتصاب) अ. पुं.–किसी का माल ग़ायब करना, ज़बरदस्ती छीन लेना; गस्ब, अपहरण, मोषण।

इग़्तिसाल (اغتسال) अ. पुं.–स्नान करना, नहाना; शुद्ध-करना, धोना; स्नान, ग़ुसल।

इग़्ना (اغنا) अ. पुं.–मालदार बनाना, समृद्धिशाली करना; निःस्पृह करना, बेनियाज़ बनाना।

इग़्नान (اغنان) अ. पु.–मक्खी आदि का भिनभिनाना।

इग़्मा (اغما) अ. पुं.–बेहोश करना, अचेत कर देना; बेहोशी, संज्ञाहीनता।

इग़्माज़ (اغماض) अ. पुं.–किसी का क़ुसूर देखते हुए टाल जाना, चश्मपोशी करना; दर गुज़र, चश्मपोशी।

इग़्माज़ (اغماز) अ. पुं.–निंदा, तिरस्कार, बेहुर्मती; पिशुनता, चुग़ली।

इग़्माम (اغمام) अ. पुं.–बादल घिरकर आना, घटा छाना।

इग़्रा (اغرا) अ. पुं.–उत्तेजित करना, भड़काना, उभारना; बहकाना, बरग़लाना।

इग़्राक़ (اغراق) अ. पुं.–बात बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अतिशयोक्ति, मुबालग़ा; ऐसी बात जिसका होना बुद्धि के अनुसार संभव हो, पर कभी हुई न हो; डुबाना, ग़र्क़ करना; कमान ज़ोर से खींचना।

इग़्राज़ (اغراض) अ. पुं.–सताना, दुःखी करना, उत्पीड़ित करना।

इग़्राब (اغراب) अ. पुं.–अनोखी चीज़ लाना, नयी बात करना; परदेशी होना, मुसाफ़िर होना; पानी से मश्कें भरना।

इग़्राम (اغرام) अ. पुं.–मार डालना; लालच करना; तावान लेना, हर्जाना वसूल करना।

इग़्ला (اغلا) अ. पुं.–भाव बढ़ाना, मँहगा ख़रीदना।

इग़्लाक़ (اغلاق) अ. पुं.–दरवाज़ा बंद करना; मुश्किल बनाना; कठिन, मुश्किल।

इग़लात (اغلاط) अ. पुं.–ग़लती करना, अशुद्धि करना; अशुद्धि, त्रुटि, ग़लती।

इग़लाम (اغلام) अ. पुं.–गुदमैथुन करना; गुदमैथुन, पुंमैथुन, बालमैथुन, बच्चःबाज़ी।

इग़लाल (اغلال) अ. पुं.–अमानत में ख़ियानत करना; द्वेष रखना; ख़ियानत; द्वेष, कीना।

इग़वा (اغوا) अ. पुं.–बहकाना, बरग़लाना; बहकाकर भगा ले जाना, विशेषतः स्त्री को।

इग़शा (اغشا) अ. पुं.–पर्दा डालना; आड़ करना; अंधा करना, आँखें फोड़ना।

इग़सा (اغسا) अ. पुं.–रात का नियत अँधियारा होना।

इज़ा (ازا) अ. पुं.–आमना-सामना, मुक़ाबला; समान, बराबर।

इज़ा (اذا) अ. अव्यं.–जब, जिस समय; आकस्मिक, अचानक।

इज़ाअत (اضاعت) अ. स्त्री.–नष्ट करना, बरबाद करना; नाश, बरबादी।

इज़ाअत (اضائت) अ. स्त्री.–चमकाना, रौशन करना; सुशोभित करना, ख़ुशनुमा करना; ख़ुशनुमाई।

इजाज़त (اجازت) अ. स्त्री.–अनुमति, आज्ञा, परवानगी। आदेश, निर्देश, हुक्म।

इजाज़तनामः (اجازت نامہ) अ.फा. पुं.–आज्ञापत्र, अनुमतिपत्र, इस बात की लिखित आज्ञा कि अमुक व्यक्ति को अमुक काम करने का हक़ है।

इज़ाफ़ः (اضافہ) अ. पुं.–वृद्धि, बढ़ोतरी, उन्नति, तरक़्क़ी।

इज़ाफ़त (اضافت) अ. स्त्री.–सम्बन्ध, निस्बत; फार्सी शब्दों के नीचे ज़ेर की मात्रा; फार्सी में छठे कारक का चिह्न।

इजाबत (اجابت) अ. स्त्री.–स्वीकृति, क़ुबूलियत; शौच, दस्त, पाख़ाना।

इज़ाबत (اذابت) अ. स्त्री.–पिघलाना, पिघलाकर नर्म करना, धातु आदि को पिघलाना।

इजाबते दुआ (اجابت دعا) अ. स्त्री.–ईश्वर से जो प्रार्थना की जाय उसका स्वीकृत होना, दुआ का क़बूल होना।

इज़ाम (عظام) अ. स्त्री.–'अज़्म' का बहु., हड्डियाँ, (पुं.) बड़े लोग, प्रतिष्ठित जन।

इजारः (اجارہ) अ. पु.–ठेका, एकाधिकार; ज़ोर, हक़, सत्त्व।

इजारःदार (اجارہ دار) अ.फा. वि.–ठेकेदार, एकाधिकारी।

इजारःदारी (اجارہ داری) अ.फा. स्त्री.–ठेकेदारी।

इज़ार (ازار) फा. स्त्री.–पाजामा।

इज़ार (عذار) अ. पुं.–गाल, कपोल, रुख़सार।

इज़ारबंद (ازار بند) फा. पुं.–कमरबंद, नारा, पाजामा बाँधने का फ़ीता आदि।

इजालः (عجالہ) अ. पुं.–हर वह चीज़ जो बहुत जल्द लायी गयी हो; शीघ्रता, जल्दी।

इज़ालः (ازالہ) अ. पुं.–निवारण, निराकरण, दफ़ीआ; क्षतिपूर्ति, तलाफ़ी।

इज़ालए मरज़ (ازالۂ مرض) अ. पुं.–रोग-निवारण, बीमारी का चला जाना।

इज़ालए हैसियते उर्फ़ी (ازالۂ حیثیت عرفی) अ. पुं.–मानहानि, हत्के इज़्ज़त।

इज़ालत (ازالت) अ. स्त्री.–दे. 'इज़ाल:'।

इजालत (عجالت) अ. स्त्री.–दे. 'इज़ाल':।

इजालत (اجالت) अ. स्त्री.–घुमाना, फिराना, चक्कर देना; आग की बनेठी फिराना।

इज़ाहत (ازاحت) अ. स्त्री.–दूर करना, हटाना।

इज़् (**ज्ज़**) (عز) अ. स्त्री.–इज़्ज़त, सम्मान, सत्कार।

इज़्आज (ازعاج) अ. पुं.–हिलाना; निकालना; उठाना; लालची बनाना; किसी पर पाप लगाना।

इज़्आन (اذعان) अ. पुं.–आज्ञा-पालन, हुक्म मानना।

इज़्आफ़ (اضعاف) अ. पुं.–दूना करना; निर्बल करना।

इज़्कार (اذکار) अ. पुं.–ज़िक्र करना, चर्चा चलाना, किसी के बारे में बातचीत करना।

इज़्ख़र (اذخر) अ. पुं.–एक ओषधि, सिरकंडे की जड़।

इज्ज़ (عجز) अ. पुं.–नम्रता, विनीति, आजिज़ी; असमर्थता, बेबसी, कमज़ोरी, नाताक़ती।

इज़्ज़त (عزت) अ. स्त्री.–सम्मान, आदर, आवभगत; प्रतिष्ठा, मान-मर्यादा, आबरू; सतीत्व, इस्मत; पद, पदवी, दर्जा।

इज़्ज़त तलब (عزت طلب) अ. वि.–जो हर व्यक्ति से अपनी इज़्ज़त कराना चाहता हो, मानेच्छुक।

इज़्ज़तदार (عزت دار) अ. फा. वि.–प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज़; कुलीन, शरीफ़; सती, बाइस्मत।

इज्ज़ा (اجزا) अ. पुं.–जिज़्या देना; बदला देना (नेकी का), निःस्पृह करना, बेनियाज़ करना।

इज्जास (اجاص) अ. पुं.–आलू बुख़ारा, एक प्रसिद्ध फल जो दवा के काम आता है।

इज्तिआद (ازدعاد) अ. पुं.–ऊँट का बहुत ज़ोर से बलबलाना।

इज्तिजाअ (اضطجاع) अ. पुं.–करवट से सोना।

इज्तिना (اجتنا) अ. पुं.–फल बीनना, मेवा चुनना।

इज्तिनाब (اجتناب) अ. पुं.–दूर रहना, घृणा करना; घृणा, उपेक्षा, नफ़रत।

इज्तिबा (اجتبا) अ. पुं.–छाँटना, चुनना; पवित्र करना; पसंद की चीजों में से सबसे अच्छी चीज़ को अलग करना।

इज्तिमाअ (اجتماع) अ. पुं.–सम्मेलन, कान्फ़रेंस; जनसमूह, भीड़; चंद्र और सूर्य का एक राशि में होना, जिसमें चाँद दिखाई नहीं पड़ता और यह समय अशुभ माना जाता है।

इज्तिमाई (اجتماعی) अ. वि.–सबका मिला-जुला, सामूहिक।

इज्तिमाए जिद्दैन (اجتماع ضدین) अ. पुं.–दो परस्पर विरोधी चीज़ों का एक जगह जमा हो जाना, यह असंभव है, मिथ्या योग।

इज्तिमाए नक़ीजैन (اجتماع نقیضین) अ. पुं.–दे. 'इज्तिमाए ज़िद्दैन'।

इज्तिराब (اضطراب) अ. पुं.–व्याकुलता, बेचैनी, बेताबी; आतुरता, जल्दी, जल्दबाज़ी, व्यग्रता, "यह इज़्तिराबे-शौक़ तो बुलबुल का देखिए–जी चाहता है गोद में ले ले बहार को।"

इज्तिराम (اضطرام) अ. पुं.–लपटें उठना, शोले बलंद होना।

इज्तिरार (اضطرار) अ. पुं.–आतुरता, जल्दी, बे इख़्तियारी।

इज्तिरारी (اضطراری) अ. वि.–बेइख़्तियाराना, आतुरता में।

इज्तिहाद (اجتہاد) अ. पुं.–प्रयत्न करना, कोशिश करना; रास्ता ढूँढ़ना; जहाँ क़ुरान और हदीस का आदेश साफ न हो वहाँ अपनी राय से उचित रास्ता निकालना।

इज़्दियाद (ازدیاد) अ. पुं.–आधिक्य, बाहुल्य, इफ़रात, ज़ियादती।

इज़्दिराद (ازدراد) अ. पुं.–निगलना, गले के नीचे उतारना।

इज़्दिवाज (ازدواج) अ. पुं.–विवाह, निकाह, पाणिग्रहण।

इज़्दिहाम (ازدحام) अ. पुं.–भीड़, जन-समूह, जमाव।

इज़्नाब (اذناب) अ. पुं.–पाप करना, गुनाह करना।

इज्नाब (اجناب) अ. पुं.–स्नान न किये होना, मैथुन के पश्चात् स्नान न करना।

इज़्फ़ार (اظفار) अ. पुं.–विजय प्राप्त करना, जीतना; विजय, फ़तेह।

इज्बार (اجبار) अ. पुं.–किसी से ज़बरदस्ती कोई काम लेना।

इज्माअ (اجماع) अ. पुं.–किसी एक बात पर बहुमत होना।

इज्माए उम्मत (اجماع امت) अ. पुं.–सारी जनता का बहुमत; मुसल्मानों का किसी धार्मिक समस्या में बहुमत।

इज्माम (اجمام) अ. पुं.–घोड़े को सवारी के लिए सजाना।

इज़्मार (اضمار) अ. पुं.–किसी वाक्य में नाम के स्थान पर सवनाम का प्रयोग।

इज़्मार क़ब्ल ज़िक्र (اضمار قبل ذکر) अ. पुं.–नाम आने से पहले सर्वनाम लाना, यह दोष है।

इज्माल (اجمال) अ. पुं.–संक्षेप, इख़्तिसार; किसी लंबे वृत्तांत में से मुख्य-मुख्य बातें लेकर उसे बहुत क़म कर देना; बात खोलकर न कहना।

इज्मालन (اجمالاً) अ. वि.–संक्षिप्त रूप में, मुख़्तसर करके।

इज्माली (اجمالی) अ. वि.–संक्षेप में, संक्षिप्त, मुख़्तसर।

इज़्मील (ازمیل) अ. पुं.–चमड़ा काटने का यंत्र, राँपी।

इज़्मीर (ازمیر) तु. पुं.–तुर्किस्तान का एक प्रसिद्ध नगर, इस्मरना, समरना।

इज़्मेहलाल (اضمحلال) अ. पुं.–शिथिलता, खिन्नता, श्रांति, ग्लानि, अफ़्सुर्दगी।

इज़्यूत (عزیوط) अ. पुं.–वह व्यक्ति जिसे मैथुन के समय पाख़ाना हो जाने का रोग हो।

इज्रा (اجرا) अ. पुं.–संचालन, अनुष्ठान, शुरूआत; जारी करना, भेजना।

इज़्राईल (عزرائیل) अ. पुं.–यमराज, धर्मराज, यमदूत, प्राणांतक, मौत का फ़िरिश्ता, मलकुलमौत।

इज्राए कार (اجرائے کار) अ. फा. पुं.–किसी कार्य का सूत्रपात (आरम्भ), अनुष्ठान, काम की शुरूआत।

इज़्राब (اضراب) अ. पुं.–अवज्ञा करना, हुक्म न मानना; एक स्थान पर ठहरना; सर झुकाना; नर का मादा-पर छोड़ना; तृप्त करना, अघाना; किसी का सदृश न होना, बेमिस्ल होना, अनुपम होना।

इज़्राम (اضرام) अ. पुं.–आग जलाना।

इज़्रार (اضرار) अ. पुं.–हानि पहुँचाना, नुक़सान देना; आघात करना, चोट पहुँचाना।

इज्ल (عجل) अ. पुं.–गाय का बच्चा, बछड़ा।

इज्लत (عجلت) अ. स्त्री.–शीघ्रता, जल्दी; आतुरता, जल्दबाज़ी (उजलत)।

इज़्लाक़ (ازلاق) अ. पुं.–फिसलना; फिसलाना।

इज्लाफ़ (اجلاف) अ. पुं.–अत्याचार करनेवाला; ख़ाली घड़ा; हर वह वस्तु जो भीतर से ख़ाली हो।

इज़्लाम (اظلام) अ. पुं.–अंधकारमय होना, तारीक होना।

इज्लाल (اجلال) अ. पुं.–श्रेष्ठता, उत्तमता, बुज़ुर्गी; वैभव, शानो शौकत।

इज़्लाल (ازلال) अ. पुं.–किसी को डगमगाना।

इज़्लाल (اضلال) अ. पुं.–किसी को कुमार्ग पर चलाना, गुमराह करना।

इज़्लाल (اظلال) अ. पुं.–छाया डालना।

इज्लास (اجلاس) अ. पुं.–बिठाना, बैठालना; न्यायालय में

हाकिम के बैठने का स्थान, हिंदी में इजलास प्रचलित, कोर्ट, अदालत।

इज़्हाक (اضحاک) अ. पुं.–छलकना; घास जमना; हँसाना, ऐसी बात कहना जिससे हँसी आये।

इज़्हात (عزھات) अ. पुं.–नपुंसक, क्लीब, नामर्द।

इज़्हाफ़ (اجحاف) अ. पुं.–नुकसान करना; कोई वस्तु उड़ा लेना; पास आना; किसी के काम में शरीक होना।

इज़्हाब (اذھاب) अ. पुं.–ले जाना, तेज़ करना, रवाँ करना, ऊपर से सोना चढ़ाना, मुलम्मा करना।

इज़्हाम (اجحام) अ. पुं.–रोकना, मना करना; मरने के क़रीब होना, मृतप्राय होना।

इज़्हार (اظہار) अ. पुं.–प्रकट होना या करना; न्यायालय में वादी-प्रतिवादी या साक्षी आदि का बयान।

इज़्हार (ازھار) अ. पुं.–दीपक जलाना; चिराग़ रौशन करना।

इज़्हार (اجہار) अ. पुं.–ज़ोर से बोलना; व्यक्त करना, ज़ाहिर करना।

इज़्हाल (ازھال) अ. पुं.–ग़ाफ़िल होना, सतर्क न होना, बेख़बर होना।

इताअत (اطاعت) अ. स्त्री.–आज्ञा-पालन, फ़र्माबरदारी; सेवा, ख़िदमत।

इताअत गुज़ार (اطاعت گزار) अ. फा. वि.–आज्ञाकारी, फ़र्मावरदार।

इताअतमंद (اطاعت مند) अ.फा. वि.–दे. 'इताअत गुज़ार'।

इताअत शिआर (اطاعت شعار) अ. वि.–दे. 'इताअत गुज़ार'।

इताद (عتاد) अ. पुं.–सामान, उपकरण; तैयारी।

इताब (عتاب) अ. पुं.–कोप, क्रोध, ग़ुस्सा; प्रकोप, ग़ज़ब, "जाने क्या लिख गया था उन्हें मैं इताब में, क़ासिद की लाश आयी है ख़त के जवाब में।"

इताबत (اطابت) अ. स्त्री.–सुगंधित करना; शौच में पानी लेना, शरीर को पवित्र करना; ख़ुश करना, प्रसन्न करना।

इताबनामः (عتاب نامہ) अ. फा. पुं.–वह पत्र जिसमें क्रोध प्रकट किया गया हो, कोप-पत्र।

इतारत (اطارت) अ. स्त्री.–चिड़िया आदि को उड़ाना।

इतालः (اطالہ) अ. पुं.–दे. 'इतालत'।

इतालत (اطالت) अ. स्त्री.–लंबा करना, तवील करना।

इतालत (عطالت) अ. स्त्री.–निठल्लापन, बेकारी।

इताहत (اطاحت) अ. स्त्री.–मार डालना, हलाक करना; डालना, भीतर करना।

इत्आम (اطعام) अ. पुं.–खाना खिलाना, भोजन देना।

इत्तिआद (اتعاد) अ. पुं.–वचन देना, वादा करना।

इत्तिआब (اتعاب) अ. पुं.–दुःख में डालना, मुसीबत में फाँसना।

इत्तिक़ा (اتقا) अ. पुं.–संयम, इंद्रिय-निग्रह, पारसाई।

इत्तिका (اتکا) अ. पुं.–भरोसा करना, सहारा ढूँढ़ना; भरोसा, सहारा।

इत्तिक़ान (اتقان) अ. पुं.–दृढ़ता करना, मज़बूती करना।

इत्तिकार (اتکار) अ. पुं.–घोंसला वनाना।

इत्तिकाल (اتکال) अ. पुं.–भरोसा करना, सहारा पकड़ना।

इत्तिख़ाज़ (اتخاذ) अ. पुं.–ग्रहण करना, लेना।

इत्तिजार (اتجار) अ. पुं.–व्यवसाय करना, व्यापार करना, तिजारती कारोबार करना।

इत्तिज़ाह (اتضاح) अ. पुं.–प्रकाशित होना, रौशन होना।

इत्तिफ़ाक़ (اتفاق) अ. पुं.–संयोग, दैवयोग, अचानकपन; मैत्री, दोस्ती; एकता, इत्तिहाद; सहमति, राय का एक होना।

इत्तिफ़ाक़न (اتفاقاً) अ. वि.–सहसा, अचानक, अकस्मात् यदृच्छया, दववशात्, अचानक।

इतिफ़ाक़ात (اتفاقات) अ. पुं.–आकस्मिक होनेवाली घटनाएँ।

इत्तिफ़ाक़ियः (اتفاقیہ) अ. वि.–दे. 'इत्तिफ़ाक़न'।

इत्तिफ़ाक़ी (اتفاقی) अ. वि.–आकस्मिक, नागहानी; संयुक्त, मिला-जुला, मुत्तहदा।

इत्तिबाअ (اتباع) अ. पुं.–अनुकरण, पैरवी, धर्म या पथ का अनुसरण, मतानुगमन।

इत्तिलाअ (اطلاع) अ. स्त्री.–सूचना, ख़बर, इत्तिला, इत्तला।

इत्तिलाअन (اطلاعاً) अ. वि.–इत्तिलाअ के लिए, सूचनार्थ।

इत्तिलाअनामः (اطلاع نامہ) अ. फा. पुं.–वह पर्चा जिसमें इत्तिलाअ दर्ज हो, सूचनापत्र।

इत्तिलाई (اطلاعی) अ. वि.–सूचना से संबद्ध।

इत्तिसाअ (اتساع) अ. पुं.–चौड़ा होना, विस्तृत होना, आँख का एक रोग।

इत्तिसाक़ (اتساق) अ. पुं.–क्रमबद्ध करना, तर्तीब देना; इकट्ठा होना, एकत्र होना; ठीक होना।

इत्तिसाख़ (اتساخ) अ. पुं.–मैला होना, दूषित होना।

इत्तिसाफ़ (اتصاف) अ. पुं.–प्रशंसा करना, तारीफ़ करना; किसी विशेष गुण का अधिकारी समझा जाना।

इत्तिसाम (اتسام) अ. पुं.–चिह्न बनाना, निशान करना; अंकित करना, नक़्श करना।

इत्तिसाल (اتصال) अ. पुं.–मिलना, एक जगह होना, बराबर होना, लगातार होना; मेल-मिलाप, निरंतरता; क्रमशः।

इत्तिहाद (اتحاد). अ. पुं.–एकत्व, एकता, मेल-मिलाप; मैत्री, दोस्ती।

इत्तिहादी (اتحادی) अ. वि.–परस्पर एकता और मैत्री रखनेवाले; वह राज्य जो परस्पर मित्र हों।

इत्तिहाफ़ (اتحاف) अ. पुं.–भेंट देना, तोहफ़ा देना; उपहार, भेंट, पुरस्कार, तोहफ़ा।

इत्तिहाब (اتہاب) अ. पुं.–किसी के नाम हिवा करना, बख्शना, बख्शिश स्वीकार करना।

इत्तिहाम (اتہام) अ. पुं.–आरोप लगाना, इल्ज़ाम देना; आरोप, लांछन, दोष, तोहमत।

इत्नाब (اطناب) अ. पुं.–लंबा करना, बढ़ाना; बात लंबी-चौड़ी करना।

इत्फ़ा (اطفا) अ. पुं.–आग बुझाना; चिराग गुल करना।

इत्फाल (اطفال) अ. पुं.–छोटा बच्चा होना, शिशु होना।

इत्बाअ (اتباع) अ. पुं.–अनुयायी होना, पैरो होना।

इत्बाक़ (اطباق) अ.पुं.–दरवाज़ा भेड़ना, किवाड़ बंद करना।

इत्बाख़ (اطباخ) अ. पुं.–खाना पकाना, बावरचीगरी करना।

इत्वाल (اتبال) अ. पुं.–शत्रुता रखना, दुश्मनी रखना; द्वेष, वैर, शत्रुता, अदावत; मित्रता भंग करना।

इत्माअ (اطماع) अ. पुं.–किसी को लालच में डालना, प्रलोभन देना।

इत्माम (اتمام) अ. पुं.–समाप्त करना, ख़त्म करना; समाप्ति, पूर्ति।

इत्मामे हुज्जत (اتمام حجت) अ. पुं.–किसी को आखिरी तौर पर बुराई-भलाई समझा देना, ताकि फिर अगर वह काम करे तो उसकी जिम्मेदारी दूसरे पर न हो।

इत्मीनान (اطمینان) अ. पुं.–तुष्टि, संतुष्टि, सब्र; विश्वास, प्रत्यय, यक़ीन; सांत्वना, तसल्ली।

इत्मीनानी (اطمینانی) अ. वि.–इत्मीनानवाला व्यक्ति, विश्वस्त; इत्मीनानवाली बात।

इत्यान (اتیان) अ. पुं.–प्रवेश करना, भीतर जाना; प्रवेश, दाखिला।

इत्र (عطر) अ. पुं.–सुगंध, ख़ुशबू; पुष्पसार, फ़ूलों का इत्र।

इत्र आगीं (عطر آگیں) अ.फा. वि.–इत्र में बसा हुआ।

इत्रत (عترت) अ. स्त्री.–संतान, औलाद; स्वजन, अज़ीज़।

इत्रदान (عطردان) अ. फा. पुं. –इत्र रखने की पिटारी।

इत्रबेज़ (عطربیز) अ.फा.वि.–इत्र की महक फैलानेवाला, सुगंध बरसानेवाला।

इत्रा (اطرا) अ. पुं.–किसी की प्रशंसा बढ़ा-चढ़ाकर करना।

इत्राज़ (اطراز) अ. पुं.–अंकित करना, नक़्श करना।

इत्राब (اتراب) अ. पुं.–मट्टी में मिलाना; मट्टी में भर जाना; मालदार होना।

इत्रास (اتراص) अ. पुं.–दृढ़ करना, मज़बूत बनाना, बराबर करना।

इत्राह (اطراح) अ. पुं.–नीव रखना, बुनियाद डालना; डालना।

इत्रीफ़ (عطریف) अ. पुं.–शूर, वीर, बहादुर, महारथी, सफ़ शिक।

इत्रीफ़ल (اطریفل) अ. पुं.–एक यूनानी अवलेह जिसमें हड़, बहेड़ा, आँवला होता है, 'त्रिफला' का मुअर्रब।

इत्रीयः (اطریہ) अ. पुं.–सिवैयाँ।

इत्रीयत (عطریت) अ. स्त्री.–सुगंध, खुशबू, इत्रपन।

इत्लाक़ (اطلاق) अ. पुं.–बंधनमुक्त करना; खोलना; कहना; जारी करना; दस्त आना; चरितार्थ होना, मुताबिक़ होना।

इत्लाफ़ (اتلاف) अ. पुं.–नष्ट होना, बरबाद होना, हत होना, मारा जाना।

इत्लाफ़े जाँ (اتلاف جاں) अ. फा. पु.–प्राणों का नाश, प्राणियों का घात।

इत्वाल (اطوال) अ. पुं.–लंबा करना, बढ़ाना।

इत्हार (اطہار) अ. पुं.–पवित्र करना, पाक करना।

इदाम (ادام) अ. पुं.–सालन, जिससे रोटी खायी जाती है, व्यंजन।

इदामत (ادامت) अ. स्त्री.–नित्यता, शाश्वतता, हमेशगी।

इदारः (ادارہ) अ. पुं.– संस्था, सभा, अंजुमन; कार्यालय, दफ़्तर; विभाग, महकमा।

इदारए निज़ामी (ادارۂ نظامی) अ. पुं.–सैन्य विभाग, फ़ौजी महकमा।

इदारत (ادارت) अ. स्त्री.–संपादन, एडीटरी।

इदारियः (اداریہ) अ. पुं.–संपादकीय लेख, एडीटोरियल।

इद्क़ाक़ (ادقاق) अ. पुं.–बारीक करना, कूटकर चूर्ण करना।

इद्ख़ान (ادخان) अ. पुं.–अलग होना, पृथक् होना।

इद्ख़ाल (ادخال) अ. पुं.–प्रवेश करना, दाखिल करना, अंदर ले जाना; रुपया आदि जमा करना।

इद्ग़ाम (ادغام) अ. पुं.–किसी चीज़ को बे चबाये खाना, घोड़े के मुँह में लगाम देना; किसी अक्षर का दूसरे अक्षर में मिलकर एक होना, आदेश।

इदजान (ادجان) अ. पुं.–ज़ोर की वर्षा होना, मेंह की झड़ी लगना।

इद्दत (عدت) अ. स्त्री.–गणना, गिनती; मुसलमानों में पति के मरने या तलाक़ देने के बाद का वह समय जिसमें स्त्री

पुनर्विवाह नहीं कर सकती, वह समय सौ दिन का होता है।

इद्दिआ (ادعا) अ. पुं.–दावा करना; इच्छा करना; दावा।

इद्दिआम (ادعام) अ. पुं.–तकिया लगाना, सहारा लेना।

इद्दिकार (ادکار) अ. पुं.–याद करना, नसीहत पकड़ना।

इद्दिख़ार (ادخار) अ. पुं.–जमा करना, ज़ख़ीरा करना।

इद्दिलाज (ادلاج) अ. पुं.–रात्रि का पिछला भाग बीतना।

इद्दिहान (ادهان) अ. पुं.–तेल चुपड़ना।

इद्नाफ़ (ادناف) अ. पुं.–सूरज (सूर्य) का अस्त होने के क़रीब होना।

इद्बाज (ادباج) अ. पुं.–किसी वस्तु को लपेटना।

इद्बार (ادبار) अ. पुं.–दरिद्रता, निर्धनता, कंगाली; तबाही, दुर्दशा।

इद्मान (ادمان) अ. पुं.–लोहूलुहान होना, ख़ून में तर होना।

इद्राक (ادراک) अ. पुं.–अगोचर वस्तुओं का अनुभव, ग़ैर-महसूस चीज़ों की दर्याफ़्त; ज्ञान, बोध, समझ-बूझ।

इद्राज (ادراج) अ. पुं.–परस्पर लिपटना।

इद्रार (ادرار) अ. पुं.–जारी होना; तेज़ वर्षा होना; वृत्ति, वज़ीफ़ा; बार-बार पेशाब करना; बार-बार पुरस्कार और बख़शिश देना।

इद्लाज (ادلاج) अ. पुं.–रात में सैर करना; रात की सैर; रात्रि का पहला भाग बीतना।

इद्हान (ادهان) अ. पुं.–ख़ियानत करना; ख़ियानत; फूट डालना।

इद्हाम (ادهام) अ. पुं.–काला होना, सियाह होना।

इनब (عنب) अ. पुं.–अंगूर, द्राक्षा।

इनबीयः (عنبیه) अ. पुं.–आँख का एक पर्दा।

इनबुस्सा'लब (عنب الثعلب) अ. पुं.–मकोय, एक प्रसिद्ध वनौषधि।

इनाँ (عناں) फ़ा. स्त्री.–'इनान' का लघु., दे. 'इनान', लगाम, बागडोर, अश्वपरिचालक सूत्र।

इनाँ गर्दिश (عناں گردش) फ़ा. स्त्री.–घोड़े का कावा।

इनाँगीर (عناں گیر) फ़ा. वि.–लगाम पकड़कर सवार को रोक लेनेवाला, आगे बढ़ने न देनेवाला; चलते हुए काम में बाधा डालनेवाला, बाधक, मुज़ाहिम, निरोधक।

इनाँ गुसिस्तः (عناں گسسته) फ़ा. वि.–जिस घोड़े की लगाम टूट गयी हो और वह इधर-उधर मारा-मारा फिर रहा हो; स्वच्छंद, निरंकुश, मुत्लक़ुल इनाँ।

इनाँ ताब (عناں تاب) फ़ा. वि.–वह सधा हुआ घोड़ा जो लगाम के इशारे पर चले।

इना (انا) अ. पुं.–बरतन, ज़र्फ़।

इनाअत (انائت) अ. स्त्री.—विलंब, देर; ढील, सुस्ती; आहिस्तगी, धीमापन।

इनाद (عناد) अ. पुं.–शत्रुता, वैर, दुश्मनी; द्वेष, कीना।

इनान (عنان) अ. स्त्री.–घोड़े की लगाम, कविका।

इनाने हुकूमत (عنان حکومت) अ. स्त्री.–हुकूमत की बागडोर, शासनसूत्र, शासन-तंत्र।

इनाबत (انابت) अ. स्त्री.–ईश्वर की ओर फिरना; बुरे कामों से अलग हो जाना; तौबा करना।

इनायत (عنایت) अ. स्त्री.–कृपा, दया, अनुकंपा, मेहरबानी; इरादा करना; दुःख उठाना किसी के लिए।

इनायतनामः (عنایت نامه) अ. फ़ा. पुं.–कृपापत्र, किसी दोस्त या बड़े आदमी के पत्र के लिए बोलते हैं।

इनारत (انارت) अ. स्त्री.–आग जलाना, जलाना, प्रकाशित करना।

इनास (اناث) अ. स्त्री.–'उंसा' का बहु., स्त्रियाँ, महिलाएँ, औरतें।

इन्आम (انعام) अ. पुं.–पुरस्कार, बख़्शिश; किसी काम के लिए उजरत के अलावा रुपया।

इन्इक़ाद (انعقاد) अ. पुं.–आयोजन, सभा आदि की व्यवस्था; होना, मुन्अक़िद होना, आयोजित होना।

इन्इकास (انعکاس) अ. पुं.–परछाईं पड़ना, प्रतिबिंबित होना; अक्स, प्रतिबिंब।

इन्इताफ़ (انعطاف) अ. पुं.–लौटना, फिरना; प्रवृत्त होना, रुजू होना, झुकना।

इन्इदाम (انعدام) अ. पुं.–नष्ट होना, ध्वस्त होना, मिट जाना।

इन्क़ा (انقا) अ. पुं.–चुनना, बीनना।

इन्क़ाज़ (انقاذ) अ. पुं.–छुड़ाना, मुक्त कराना।

इन्कार (انکار) अ. पुं.–अस्वीकृति, न मानना, नामंजूरी।

इनकास (انکاس) अ. पुं.–औंधा करना, उलटा करना; खोलना।

इन्क़ास (انقاص) अ. पुं.–कम करना, घटाना; नाक़िस करना, अपूर्ण कर देना।

इन्क़िज़ा (انقضا) अ. पुं.–समय पूरा हो जाना, नियत समय का बीत जाना।

इन्क़िज़ाज़ (انقضاض) अ. पुं.–ऊपर गिर पड़ना।

इन्क़िताअ (انقطاع) अ. पुं.–कटना, विच्छिन्न होना, अलग-अलग होना।

इन्क़िबाज़ (انقباض) अ. पुं.–सिकुड़ना, मिंचना; चित्त का मलिन और उदासीन होना; खिन्नता, अफ़सुर्दगी।

इन्किबाब (انکباب) अ. पुं.–मुँह के बल गिरना; ओषधियों की धूनी लेना।

इन्क़िमाअ (انقماع) अ. पुं.–अपमानित और तिरस्कृत होना, ज़लीलो ख्वार होना।

इन्क़ियाद (انقیاد) अ. पुं.–वशीभूत होना, अधीन होना, ताबे' होना।

इन्क़िराज़ (انقراض) अ. पुं.–कटना, टुकड़े होना; समय का खत्म होना, मुद्दत पूरी होना।

इन्क़िलाअ (انقلاع) अ. पुं.–उखड़ा हुआ होना, उखड़ना।

इन्क़िलाब (انقلاب) अ. पुं.–उलट-पलट, परिवर्तन; काल-चक्र, समय का उलट-फेर; राज्य-परिवर्तन, क्रान्ति, शासन की तब्दीली।

इन्क़िलाबात (انقلابات) अ. पुं.–लगातार इन्क़िलाब।

इन्क़िलाबी (انقلابی) अ. वि.–इन्क़िलाब लानेवाला; वह व्यक्ति जो किसी बड़े इन्क़िलाब लाने की साज़िश में शरीक हो।

इन्क़िशाअ (انقشاع) अ. पुं.–बादल खुल जाना, अभ्र छट जाना।

इन्किशाफ़ (انکشاف) अ. पुं.–प्रकट होना, ज़ाहिर होना; खुलना, पता चलना; गवेषणा, तहक़ीक़।

इन्किसाफ़ (انکساف) अ. पुं.–सूरज को ग्रहण लगना, सूर्यग्रहण होना।

इन्क़िसाम (انقسام) अ. पुं.–बँटना, विभक्त होना, तक़्सीम होना; तक़्सीम, विभाजन, बँटवारा।

इन्क़िसाम (انقصام) अ. पुं.–टूटकर टुकड़े-टुकड़े होना।

इन्किसार (انکسار) अ. पुं.–टूटना, टुकड़े होना; नम्रता, विनय, ख़ाकसारी।

इन्ख़िज़ाअ (انخزاع) अ. पुं.–कटना, विच्छिन्न होना।

इन्ख़िदाअ (انخداع) अ. पुं.–धोखा खाना, फ़रेब में आ जाना।

इन्ख़िफ़ाज़ (انخفاض) अ. पुं.–किसी शब्द के नीचे 'ज़ेर' होना; नीचे गिर पड़ना।

इन्ख़िफ़ाफ़ (انخفاف) अ. पुं.–संकुचित होना, लज्जित होना; लज्जा, संकोच, ख़िफ़्फ़त।

इन्ख़िराक़ (انخراق) अ. पुं.–फटना, तड़कना।

इन्ख़िरात (انخراط) अ. पुं.–आदमियों में जाना; किसी चीज़ में घुसना; सुई में डोरा डालना; डोरे में पिरोया जाना।

इन्ख़िराम (انخرام) अ. पुं.–छीजना, कम हो जाना।

इन्ख़िलाअ (انخلاع) अ. पुं.–नष्ट होना, बरबाद होना; बँधी हुई हवा का उखड़ना।

इन्ख़िलाक़ (انخلاق) अ. पुं.–बँधना, बाँधा जाना।

इन्ख़िलाल (انخلال) अ. पुं.–नष्ट होना, तबाह होना; नाश, तबाही।

इन्‌ग़िमाम (انغمام) अ. पुं.–दुःखित होना, खेद में होना, ग़मगीन होना।

इन्‌ग़िमास (انغماس) अ. पुं.–डुबकी मारना, गोता लगाना, निमज्जन।

इन्‌ग़िरास (انغراس) अ. पुं.–वृक्ष लगाना, पेड़ लगाना।

इन्नीन (عنین) अ. वि.–क़्लीब, नपुंसक, नामर्द।

इन्फ़हः (انفحہ) अ. पुं.–पनीर मायः, दे. 'पनीर मायः'।

इन्फ़ाक़ (انفاق) अ. पुं.–व्यय करना, खर्च करना; जीविका देना, रोज़ी देना।

इन्फ़ाज़ (انفاذ) अ. पुं.–जारी करना; भेजना, प्रेषण; रवाना करना; तलवार मारना।

इन्फ़ाल (انفال) अ. पुं.–लड़ाई में लूट का माल बाँधना।

इन्‌फ़िआल (انفعال) अ. पुं.–लज्जित होना, शर्मिंदा होना; किसी असर से प्रभावित होना; लज्जा, संकोच, शर्म।

इन्फ़िकाक (انفکاک) अ. पुं–मुक्त होना, अदा होना, छूटना; अलग-अलग होना।

इन्फ़िजार (انفجار) अ. पुं.–रिसना, टपकना; निकलना, प्रकट होना; पीप बहना।

इन्फ़िताक़ (انفتاق) अ. पुं.–बादल छट जाना, फट जाना।

इन्फ़ितार (انفطار) अ. पुं.–टुकड़े-टुकड़े होना; उत्पन्न करना, पैदा करना।

इन्फ़िताह (انفتاح) अ. पुं.–खुलना, विस्तृत होना, कुशादा होना।

इन्फ़िराक़ (انفراق) अ. पुं.–फटना, शिगाफ़्तः होना।

इन्फ़िराद (انفراد) अ. पुं.–अकेला होना, तनहा होना।

इन्फ़िरादी (انفرادی) अ. वि.–एक आदमी का, व्यक्तिगत, वैयक्तिक, शख्सी।

इन्फ़िरादीयत (انفرادیت) अ. स्त्री.–अकेलापन, बेमिस्ली।

इन्फ़िलाक़ (انفلاق) अ. पुं.–फटना, फट जाना।

इन्फ़िसाम (انفصام) अ. पुं.–टूट जाना।

इन्फ़िसाल (انفصال) अ. पुं.–वाद का निर्णय होना, फ़ैसला होना; निर्णय, फ़ैसला।

इन्मास (انماس) अ. पुं.–शिकारी का शिकार के लिए आड़ में छिपना; छिपना, लुप्त होना।

इन्मिलाक़ (انملاق) अ. पुं.–मित्रता, दोस्ती; चापलूसी, चाटुकारिता; अनुकंपा, दया, मुक्ति पाना, छुटकारा; बराबर होना, एक-सा होना।

इन्‌हा (انحا) अ. पुं.–जारी करना; फिराना।

इन्‌हा (انہا) अ. पुं.–ख़बर पहुँचाना, सूचना देना।

इन्‌हाब (انہاب) अ. पुं.–लूटना, ग़ारत करना।

इन्‌हिज़ाज़ (انہضاض) अ. पुं.–टूटना, शिकस्त होना।

इन्‌हिज़ाम (انہضام) अ. पुं.–पचना, हज़म होना।

इन्‌हिज़ाम (انہزام) अ. पुं.–पराजय होना, हारना; पराजय, शिकस्त।

इन्‌हितात (انحطاط) अ. पुं.–ह्रास होना, घटना; कमी, ह्रास।

इन्‌हितात (انحتات) अ. पुं.–पतझड़, ख़िज़ाँ।

इन्‌हिताम (انحطام) अ. पुं.–शिकस्त होना, टूटना।

इन्‌हिदाब (انحداب) अ. पुं.–कुबड़ा होना; कुब्ज, कूबड़।

इन्‌हिदाम (انہدام) अ. पुं.–मकान आदि का ध्वस्त होना, गिरना; बरबाद होना, वीरान होना; ध्वंस, बरबादी।

इन्हिना (انحنا) अ. पुं.–टेढ़ा होना, झुकना; टेढ़, झुकाव; कुब्जपन, कुबड़ापन।

इन्‌हिमाक (انہماک) अ. पुं.–तन्मयता, संलग्नता, तल्लीनता, तनदिही, किसी कार्य में दत्तचित्त होना।

इन्‌हिमाम (انہمام) अ. पुं.–गलना, घुलना, पिघलना।

इन्‌हिराफ़ (انحراف) अ. पुं.–एक ओर को फिर जाना; किसी की ओर से फिर जाना, अवज्ञाकारी हो जाना; अवहेलना, अनाज्ञा, अवज्ञा, नाफ़र्मानी।

इन्‌हिलाल (انحلال) अ. पुं.–विस्तृत होना; नष्ट होना, नापैद होना; तुच्छ होना, नाचीज़ होना।

इन्‌हिलाल (انہلال) अ. पुं.–बहुत अधिक वर्षा होना, मूसलाधार पानी बरसना।

इन्‌हिसार (انحصار) अ. पुं.–निर्भर होना, आश्रित होना, मुनहसिर होना; निर्भरता, दारोमदार।

इन्‌हिसार (انحسار) अ. पुं.–बाल झड़ जाना।

इफ़ाक़ः (افاقہ) अ. पुं.–रोग का स्वास्थ्य की ओर परिवर्तन; आरोग्य-लाभ; फिर से होश में आना; सँभाल लेना; आरोग्योन्मुखता।

इफ़ाक़त (افاقت) अ. स्त्री.–दे. 'इफ़ाक़ः'।

इफ़ाज़ः (افاظہ) अ. पुं.–मार डालना, हलाक करना।

इफ़ाज़ः (افاضہ) अ. पुं.–यश पहुँचाना, फ़ैज़ पहुँचाना; बहुत अधिक दान करना।

इफ़ाज़त (افاضت) अ. पुं.–दे. 'इफ़ाज़ः'।

इफ़ादः (افادہ) अ. पुं.–लाभ पहुँचाना (विद्या आदि का, धन का नहीं)।

इफ़ादत (افادت) अ. स्त्री.–दे. 'इफ़ादः'।

इफ़ादी (افادی) अ. वि.–ऐसी चीज़ जिससे ज्ञान की वृद्धि हो।

इफ़ादीयत (افادیت) अ. स्त्री.–लाभकारिता, उपादेयता, फ़ाइदामंदी।

इफ़्क (افک) अ. पुं.–झूठ, मृषा, मिथ्या, असत्य; आरोप, लांछन, बोहतान, झूठा इल्ज़ाम।

इफ़्क़ार (افقار) अ. पुं.–बिना दाना-पानी के होना, फ़ाक़े से होना, निर्जल व्रत रहना।

इफ़्ज़ाअ (افزاع) अ. पुं.–डराना, भय-प्रदर्शन, ख़ौफ़ दिलाना।

इफ़्ज़ाल (افضال) अ. पुं.–कृपा, दया, अनुकंपा, करम; बढ़ाना, वृद्धि करना।

इफ़्ज़ाह (افضاح) अ. पुं.–निन्दा करना, बदनाम करना; भर्त्सना करना, फ़ज़ीहत करना।

इफ़्ता (افتا) अ. पुं.–'फ़त्वा' देना, यह बताना कि धर्म के अनुसार अमुक काम कैसा है।

इफ़्तार (افطار) अ. पुं.–रोज़ा खोलना, रोज़ा खोलने के लिए कुछ खाना या पीना।

इफ़्तारी (افطاری) अ. स्त्री.–रोज़ा खोलने की खाद्य सामग्री।

इफ़्तिआल (افتعال) अ. पुं.–आरोप, मिथ्या लांछन, बोहतान।

इफ़्तिकाक (افتکاک) अ. पुं.–पृथक् होना, अलग होना, जुदा होना; पृथक्ता; अलाहिदगी।

इफ़्तिक़ाद (افتقاد) अ. पुं.–अनुकंपा करना, मेहरबानी करना; अनुपस्थित करना, खो देना; खोजना, तलाश करना; खोई हुई वस्तु को ढूँढ़ना, अन्वेषण।

इफ़्तिक़ार (افتقار) अ. पुं.–दरिद्रता, कंगाली; फ़क़ीरी, साधुता; विनीति; आजिज़ी; तिरस्कृति, ख्वारी।

इफ़्तिख़ार (افتخار) अ. पुं.–गर्व, गौरव, मान, फ़ख्र।

इफ़्तिज़ाह (افتضاح) अ. पुं.–फ़ज़ीहत करना, निन्दा करना, भर्त्सना करना; निन्दा, भर्त्सना, रुस्वाई।

इफ़्तितान (افتتان) अ. पुं.–झगड़ा खड़ा करना, बवंडर बनाना; झगड़े में डाल देना।

इफ़्तिताश (افتتاش) अ. पुं.–तफ़्तीश करना, जाँच-पड़ताल करना, खोज लगाना।

इफ़्तिताह (افتتاح) अ. पुं.–उद्घाटन, अनुष्ठान, शुरूआत; खोलना; खुलना, प्रारम्भ करना।

इफ़्तिताहीयः (افتتاحیہ) अ. पुं.–संपादकीय लेख, अग्र लेख, एडीटोरियल।

इफ़्तिदा (افتدا) अ. पुं.–प्राणों के बदले माल देना, किसी के प्राण ले लेने पर उसके वारिसों को धन देकर राज़ी कर लेना।

इफ़्तिरा (افترا) अ. पुं.–आरोप, लांछन, तोहमत।

इफ़्तिराक (افتراق) अ. पुं.–परस्पर एक दूसरे को अलग-अलग कर देना; फूट डालना; फूट, वैमनस्य।

इफ़्तिरा पर्दाज़ (افترا پرداز) अ. फा. वि.–झूठा आरोप लगाने-

वाला; झूठा आरोप लगाकर झगड़ा खड़ा कर देनेवाला।

इफ़्तिरार (افترار) अ. पुं.–दाँत निकालना, दाँत चमकाना।

इफ़्तिराश (افتراش) अ. पुं.–निन्दा करना, बदगोई करना; खोज लेना, टोह लगाना।

इफ़्तिरास (افتراس) अ. पुं.–किसी चिह्न से किसी वस्तु को पहचानना; घोड़े पर चढ़ना; गर्दन तोड़ना; मार डालना।

इफ़्तिराह (افتراح) अ. पुं.–हर्षित होना, ख़ुश होना, ख़ुशी मनाना।

इफ़्ना (افنا) अ. पुं.–नाश करना, नष्ट करना, फ़ना करना।

इफ़्नान (افنان) अ. पुं.–थोड़ा-थोड़ा लाना।

इफ़्फ़त (عفت) अ. स्त्री.–सतीत्व, पातिव्रत्य, इस्मत, अस्मत।

इफ़्फ़त मआब (عفت مآب) अ. वि.–सती, पतिव्रता, बाइस्मत।

इफ़्रंज (افرنج) अ. पुं.–फ़िरंगिस्तान, यूरोप, इंग्लिस्तान।

इफ़्रंजी (افرنجی) अ. वि.–अंग्रेज़, यूरोपियन।

इफ़्रात (افراط) अ. स्त्री.–प्राचुर्य, बाहुल्य, बहुतात, कस्रत।

इफ़्रातो तफ़्रीत (افراطوتفریط) अ. स्त्री.–आधिक्य एवं न्यूनता, कमोबेश, थोड़ा-बहुत, तारतम्य, न्यूनाधिक।

इफ़्राश (افراش) अ. पुं.–अधिकता और न्यूनता, ज़ियादती और कमी।

इफ़्राह (افراح) अ. पुं.–हर्षित करना, प्रसन्न करना, ख़ुश करना।

इफ़्रीत (عفریت) अ. पुं.–राक्षस, देव।

इफ़्लाज (افلاج) अ. पुं.–किसी अंग का सुन्न हो जाना; फ़ालिज गिरना।

इफ़्लास (افلاس) अ. पुं.–धनहीनता, कंगाली, मुफ़लिसी।

इफ़्लासज़दः (افلاس زدہ) अ. फा. वि.–दरिद्र, निर्धन, मुफ़लिस, दरिद्रता से पीड़ित, निर्धनता से दुखी।

इफ़्लासज़दगी (افلاس زدگی) अ. फा. स्त्री.–दरिद्रता, निर्धनता, मुफ़लिसी।

इफ़्लाह (افلاح) अ. पुं.–हित करना, भलाई करना; समृद्धि, ख़ुशहाली; मुक्ति, मोक्ष।

इफ़्शा (افشا) अ. पुं.–प्रकट करना, ज़ाहिर करना।

इफ़्शाएराज़ (افشائے راز) अ. फा. पुं.–रहस्य का प्रकट हो जाना, भेद खुल जाना।

इफ़्साद (افساد) अ. पुं.–उपद्रव करना, फ़साद करना; नष्ट करना, तबाह करना।

इफ़्हाम (افہام) अ. पुं.–समझाना, अच्छी तरह बताना, बोध कराना।

इफ़्हाम (افحام) अ. पुं.–किसी को वाद-विवाद में तर्क द्वारा चुप कर देना।

इफ़्हामो तफ़्हीम (افہام وتفہیم) अ. पुं.–स्वयं समझना और दूसरे को समझाना, विचार-विनिमय, समझौते की बातचीत।

इफ़्हाश (افحاش) अ. पुं.–अश्लील बातें बकना, फ़ुह्श बकना, अवाच्यवाद।

इबा (ابا) अ. स्त्री.–अस्वीकृति, इन्कार; घृणा, नफ़रत, घिन।

इबाद (عباد) अ. पुं.–'अब्द' का बहु., सेवकगण, दास लोग, ग़ुलाम।

इबादत (عبادت) अ. स्त्री.–उपासना, आराधना, पूजा, बंदगी, तप, तपस्या।

इबादतख़ानः (عبادت خانہ) अ. फा. पुं.–इबादत करने का स्थान, उपासना गृह, मसजिद, मंदिर, गिर्जा आदि।

इबादतगाह (عبادت گاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'इवादतख़ानः'।

इबादतगुज़ार (عبادت گزار) अ. फा. वि.–बहुत अधिक इबादत करनेवाला, तपस्वी, तपःशील।

इबारत (عبارت) अ. स्त्री.–अक्षर-विन्यास, पदावली, इबारत; श्रुत लेख, अनुलेख, इम्ला; लेख, तह्रीर।

इबारत आराई (عبارت آرائی) अ. फा. स्त्री.–शब्दाडंबर, इबारत में बना-बनाकर शब्द लाना; लेख को अलंकारादि से सुसज्जित करना, इबारत को पुरतकल्लुफ़ बनाना; लेख लिखना।

इबाहत (اباحت) अ. स्त्री.–किसी खान-पान अथवा कार्य का धर्म के अनुसार विहित होना, मुबाह होना।

इबिल (ابل) अ. पुं.–ऊँट, उष्ट्र, यह शब्द बहुवचन है, इसका एकवचन नहीं है।

इब्आद (ابعاد) अ. पुं.–दूर करना, छुटाना, दूर फेंकना।

इब्क़ा (ابقا) अ. पुं.–बाक़ी रखना, बचा लेना।

इब्का (ابکا) अ. पुं.–रुलाना, रुदित करना।

इब्कार (ابکار) अ. पुं.–प्रातःकाल, प्रभात, सवेरा, सुबह।

इब्त (ابط) अ. स्त्री.–बग़ल, कक्ष।

इब्ता (ابطا) अ. पुं.–देर करना, विलम्ब करना, ढील डालना।

इब्ताल (ابطال) अ. पुं.–झुठलाना, गलत ठहराना; खंडन करना, तर्दीद करना; खंडन, तर्दीद।

इब्तिआद (ابتعاد) अ. पुं.–दूर होना, पक्ष से हटना।

इब्तिकार (ابتکار) अ. पुं.–नया करना, नवीन करना।

इब्तिग़ा (ابتغا) अ. पुं.–इच्छा करना, चाहना; चाह, इच्छा, ख़ाहिश।

इब्तिज़ाल (ابتزال) अ. पुं.–अपव्यय, फ़ुज़ूलख़र्ची; अश्लीलता, फूहड़पन, फक्कड़पन।

इब्तिदा (ابتدا) अ. स्त्री.–प्रारम्भ, आरम्भ, शुरुआत; आदिकाल, इब्तिदाए ज़माना।

LIBRARY HARDWAR

इब्तिदाअन् (ابتداءً) अ. वि.–आरम्भ में, पहले-पहल, शुरू-शुरू में ।

इब्तिदाई (ابتدائی) अ. वि.–प्रारम्भिक, प्राथमिक, आदिम, शुरू का, पहला ।

इब्तिला (ابتلا) अ. पुं.–परीक्षा, आज़माइश; दुःख में डालना; दुःख, कष्ट, मुसीबत ।

इब्तिलाअ (ابتلاع) अ. पुं.–निगलना, हलक़ में उतारना ।

इब्तिलाल (ابتلال) अ. पुं.–भीगना, तर होना ।

इब्तिसाम (ابتسام) अ. पुं.–खिलना, प्रफुल्ल होना; हँसना, मुस्कराना ।

इब्तिहाज (ابتہاج) अ. पुं.–आनन्द, हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी ।

इब्तिहाल (ابتہال) अ. पुं.–रोना-धोना, रोना, गिड़गिड़ाना ।

इब्दा (ابدا) अ. पुं.–प्रकट करना, जाहिर करना; उत्पन्न करना, पैदा करना ।

इब्दाअ (ابداع) अ. पुं.–ऐसी वस्तु बनाना जो बिलकुल नयी और अनोखी हो, आविष्कार करना ।

इब्दाल (ابدال) अ. पुं.–बदलना; एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलना ।

इब्न (ابن) अ. पुं.–पुत्र, बेटा ।

इब्नः (ابنہ) अ. स्त्री.–पुत्री, बेटी ।

इब्ना (ابنا) अ. पुं.–नींव डालना, बनाना ।

इब्नुल अख़ (ابن الاخ) अ. पुं.–भतीजा, भाई का लड़का ।

इब्नुल इर्स (ابن العرس) अ. पुं.–नेवला, एक जंगली जन्तु ।

इब्नुल उख़्त (ابن الاخت) अ. पुं.–भानजा, बहन का लड़का ।

इब्नुल ग़ैब (ابن الغیب) अ. पुं.–वह लड़का जिसके पिता का पता नहीं, जारज, दोग़ला, अज्ञातकुलशील ।

इब्नुल लबून (ابن اللبون) अ. पुं.–ऊँट का दूध पीता बच्चा ।

इब्नुल वक़्त (ابن الوقت) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो अपने को समय के अनुसार ढाल ले, अवसरवादी ।

इब्नुस्सबील (ابن السبیل) अ. पुं.–पथिक, मुसाफ़िर, राहगीर ।

इब्ने आवा (ابن آوی) अ. पुं.–शृगाल, गीदड़, सियार ।

इब्ने सुब्ह (ابن صبح) अ. पुं.–सूर्य, सूरज ।

इब्रः (عبرہ) अ. पुं.–नाव या जहाज़ का महसूल; राहदारी का महसूल; नदी पार करना; ख़िराज ।

इब्रः (ابرہ) अ. स्त्री.–सुई, सूची ।

इब्रत (عبرت) अ. स्त्री.–वह मानसिक खेद जो किसी बड़े आदमी को बुरी अवस्था में या किसी अपराधी को कड़ी सज़ा या दैवी कष्ट में देखकर होता है ।

इब्रत अंगेज़ (عبرت انگیز) अ. फ़ा. वि.–इब्रत पैदा करनेवाली बात ।

इब्रतख़ेज़ (عبرت خیز) अ. फ़ा. वि.–ऐसी बात जिससे इब्रत पैदा हो ।

इब्रतनाक (عبرتناک) अ. फ़ा. वि.–इब्रत अंगेज़; भयानक, भयंकर, बहुत सख़्त ।

इब्रा (ابرا) अ. पुं.–बेज़ारी, उपेक्षा; रोगमुक्ति, शिफ़ा; अदा करना, चुकता करना; पवित्र होना, शुद्ध होना, पाक होना ।

इब्राक़ (ابراق) अ. पुं.–बिजली गिराना; बिजली का शाक लगना ।

इब्राज़ (ابراز) अ. पुं.–प्रकट करना, ज़ाहिर करना ।

इब्रानी (عبرانی) अ. स्त्री.–मुल्क शाम की एक प्राचीन भाषा, इब्री ।

इब्राम (ابرام) अ. पुं.–दृढ़ करना, मज़बूत करना; कष्ट देना; दुःखित करना; रस्सी बटना ।

इब्रार (ابرار) अ. पुं.–भलाई करना; बख़्शिश करना; यश देना ।

इब्राहीम (ابراہیم) अ. पुं.–एक पैग़म्बर जिन्हें नम्रूद ने आग में जलाना चाहा था, परन्तु वह आग का समुद्र उनके लिए बाग़ बन गया ।

इब्री (عبری) अ. स्त्री.–दे. 'इब्रानी' ।

इब्रीक़ (ابریق) अ. पुं.–एक प्रकार का चमड़े का टोंटीदार लोटा; शराब का जग ।

इब्रीज़ (ابریز) अ. पुं.–खरा सोना और चाँदी ।

इब्रीज (ابریج) अ. स्त्री.–छाछ बिलोने की रई, मथानी ।

इब्रेशम (ابریشم) अ. पुं.–रेशम, कौशेय; कच्चा रेशम, रेशम का कोया ।

इब्ल (ابل) अ. पुं.–ऊँट, उष्ट्र, दे. 'इबिल', दोनों शुद्ध हैं ।

इब्लाग़ (ابلاغ) अ. पुं.–पहुँचाना, भेजना ।

इब्लीस (ابلیس) अ. पुं.–जो ईश्वर की दया से निराश हो; शैतान, दैत्य ।

इब्सार (ابصار) अ. पुं.–देखना, आलोकन, अवलोकन ।

इब्हाम (ابہام) अ. पुं.–चुपके से कहना; चुपके से छोड़ देना; द्वार बन्द करना; अँगूठा; निगूढ़ता, क्लिष्टता, इग़्लाक़ ।

इमा (اما) अ. स्त्री.–'अमत' का बहु., लौंडियाँ, दासियाँ, कनीज़ें ।

इमादः (عمادہ) अ. पुं.–स्तम्भ, सुतून ।

इमाद (عماد) अ. पुं.–इमादः का बहु., खंभे, सुतून ।

इमामः (عمامہ) अ. पुं.–पगड़ी, उष्णीष, साफ़ा ।

इमाम (امام) अ. पुं.–नेता, अग्रसर, पेशवा; नमाज़ पढ़ानेवाला, जो नमाज़ में इमामत करे ।

इमामत (امامت) अ. स्त्री.–नेतृत्व, नेतापन, पेशवाई; नमाज़ पढ़ाना; नमाज़ पढ़ाने की नौकरी।

इमामतपेशः (امامت پیشہ) अ. फा. वि.–वह व्यक्ति जो किसी मसजिद में नमाज़ पढ़ाकर जीविका चलाता हो।

इमामियः (امامیہ) अ. वि.–शीआ मुसलमान।

इमामे नातिक़ (امام ناطق) अ. पुं.–हज़रत इमाम जा'फ़रे सादिक़, अभिभाषक-इमाम, उपदेशक–धर्मगुरु।

इमारत (امارت) अ. स्त्री.–धनाढ्यता, मालदारी; शासन, राज्य, हुकूमत, हिन्दी में अमारत प्रचलित 'अमीर' से भाववाचक संज्ञा बनी।

इमारत (عمارت) अ. स्त्री.–मकान, बिल्डिग।

इमालः (امالہ) अ. पुं.–फ़ार्सी अथवा अरबी में किसी शब्द के 'अलिफ़' को 'ये' बना देना जैसे 'किताब' को 'कितेब' कर देना।

इम्आन (امعان) अ.पुं.–गहरी दृष्टि डालना, ग़ौर से देखना; ख़ूब ग़ौर करना, गहरा सोचना।

इम्आने नज़र (امعان نظر) अ. पुं.–गहरी दृष्टि, ग़ाइर नज़र, सूक्ष्म दृष्टि।

इम्कान (امکان) अ. पुं.–संभावना, मुमकिन होना, हो सकने का भाव।

इम्ज़ा (امضا) अ. पुं.–आदेश जारी करना; किसी काग़ज़ पर मोहर और हस्ताक्षर करना।

इम्ताअ (امتاع) अ. पुं.–लाभ पहुँचाना।

इम्तार (امطار) अ. पुं.–पानी बरसना, वर्षा होना।

इम्तिक़ाअ (امتقاع) अ. पुं.–रंग उतर जाना, रंग फीका पड़ जाना।

इम्तिख़ाख़ (امتخاخ) अ. पुं.–हड्डी से गूदा निकालना।

इम्तिज़ाज (امتزاج) अ. पुं.–मिलाना, मिश्रित करना; मिश्रण, मिलावट।

इम्तिदाद (امتداد) अ. पुं.–खिंचा हुआ होना; दीर्घता, लम्बाई, विस्तार।

इम्तिदादे ज़मानः (امتداد زمانہ) अ. पुं.–अधिक समय बीत जाना, दीर्घकालीनता।

इम्तिनाअ (امتناع) अ. पुं.–निषेध, प्रतिबंध, मनाही।

इम्तिनाए शराब (امتناع شراب) अ. पुं.–मद्य-निषेध, शराबबंदी।

इम्तिनान (امتنان) अ. पुं.–अच्छी-अच्छी नेमतें देना; एहसान रखना, कृतज्ञ करना।

इम्तियाज़ (امتیاز) अ. पुं.–दो एक-सी चीज़ों में भेद करना, विवेक, तमीज़; मुख्यता, ख़ुसूसियत; एक को दूसरे पर तर्जीह; परीक्षा में विद्यार्थियों को अच्छे नम्बर लाने के फलस्वरूप डिस्टिंकशन, विशेष योग्यता।

इम्तियाज़नामः (امتیاز نامہ) अ. फा. पुं.–लाइसेंस।

इम्तियाज़ी (امتیازی) अ. वि.–मुख्य, ख़ुसूसी, विशेष।

इम्तिराश (امتراش) अ. पुं.–उचक लेना, छीनकर भागना।

इम्तिला (امتلا) अ. पुं.–पेट में अन्न का अधिक हो जाना; बदहज़मी, अजीर्ण; भर जाना, आध्मान, अफारा।

इम्तिशात (امتشاط) अ. पुं.–बालों में कंघी करना।

इम्तिसाल (امتثال) अ. पुं.–आज्ञा-पालन, फ़र्माबरदारी।

इम्तिसाले अम्र (امتثال امر) अ. पुं.–हुक्म मानना, आज्ञा-पालन करना।

इम्तिसाले हुक्म (امتثال حکم) अ.पुं.–दे. इम्तिसाले अम्र।

इम्तिसास (امتصاص) अ. पुं.–चूसना, चूषण।

इम्तिहात (امتحاط) अ. पुं.–नाक साफ़ करना।

इम्तिहान (امتحان) अ. पुं.–परीक्षा, जाँच, परख; विद्यार्थियों की परीक्षा, पढ़ाई की जाँच।

इम्तिहान (امتہان) अ. पुं.–अपमानित रखना।

इम्तिहाल (امتہال) अ. पुं.–मोहलत देना, छुट्टी देना।

इम्दाद (امداد) अ. स्त्री.–सहायता, मदद, सहयोग।

इम्दादे बाहमी (امداد باہمی) अ. फा. स्त्री.–मिल-जुलकर काम करना, सहकारिता।

इम्रा (امرا) अ. पुं.–पेट में अन्न का पचना, खाना हज़म होना।

इम्रान (عمران) अ. पुं.–आबादी, जनसंख्या।

इम्रार (امرار) अ. पुं.–गुज़ारना, गुज़रवाना।

इम्रोज़ः (امروزہ) फा. वि.–आज का, आज के दिन का।

इम्रोज़ (امروز) फा. पुं.–आज, अद्य, आज का दिन।

इम्लः (عملہ) अ. पुं.–काम, मज़दूरी।

इम्ला (املا) अ. स्त्री.–अक्षर-विन्यास, इबारत; श्रुतलेख, अनुलेख, वह इबारत जो बच्चों को पुस्तक दिखाये बिना लिखायी जाती है; भरना।

इम्लाक़ (املاق) अ. पुं.–दरिद्रता, कंगाली; फ़क़ीरी, साधुता।

इम्लाक (املاک) अ. पुं.–किसी को किसी वस्तु का स्वामी बनाना, मालिक करना।

इम्लाल (املال) अ. पुं.–दुःखित करना, मुलूल करना।

इम्लास (املاص) अ. पुं.–पेट गिराना, भ्रूणपात।

इम्लाह (املاح) अ. पुं.–नमकीन करना, नमक मिलाना।

इम्शब (امشب) फा. स्त्री.–आज की रात, आज रात।

इम्सा (امسا) अ. पुं.–रात कर देना; हाल बदल जाना, अवस्था का परिवर्तित होना।

इम्साल (امسال) फा. पुं.–इस साल, मौजूदा साल।

इम्साल (امثال) अ. पुं.–कान-नाक काटना।

इम्सास (امساس) अ. पुं.–स्पर्श करना, छूना; मर्दन, मसलना।

इम्हाल (امہال)अ. पुं.–मोहलत देना, समय देना।

इयाँ (عیاں) अ. पुं.–प्रकट, व्यक्त, स्पष्ट, ज़ाहिर (अयाँ)।

इयाज़ (عیاذ)अ. स्त्री.–त्राण, रक्षा पनाह।

इयादत (عیادت) अ. स्त्री.–रोगी का हाल पूछने और उसे ढारस देने के लिए उसके पास जाना।

इयाब (ایاب) अ. पुं.–वापस आना, लौटना, प्रत्यागमन।

इयाबोज़हाब(ایاب وذہاب)अ. पुं.–आना-जाना, यातायात।

इयारिज (ایارج) अ. पुं.–एलुआ, गुआरपाठा (घीकुआर) का सुखाया हुआ रस।

इयाल (عیال) अ. पुं.–बाल-बच्चे (अयाल)।

इयालत (ایالت) अ. स्त्री.–रखवाली करना, निरीक्षण; दंड देना, सज़ा देना; डाँट-फटकार करना।

इयालत (عیالت) अ. स्त्री.–बाल-बच्चोंवाला होना।

इयास (ایاس) अ. पुं.–निराश होना, नाउम्मीद होना।

इरम(ارم) अ. पुं.–'आद' नाम की क़ौम का नगर; 'आद' नामक व्यक्ति का पिता; वह कृत्रिम स्वर्ग जो शद्दाद ने बनाया था; स्वर्ग, बिहिश्त।

इराअत (ارائت) अ. स्त्री–दिखाना, नुमाइश करना।

इराक़ः (اراقہ) अ. पुं.–पानी या कोई दूसरी पतली चीज़ गिराना।

इराक़ (عراق) अ. पुं.–पूर्वी अरब का एक देश, जिसकी राजधानी 'बग़दाद' है

इराक़त (اراقت) अ. स्त्री.–दे. 'इराक़ः'।

इराग़ः (اراغہ) अ. पुं.–दे. 'इराग़त'।

इराग़त (اراغت) अ. पुं.–माँगना, तलब करना।

इरादः (ارادہ) अ. पुं.–संकल्प, क़स्द; निश्चय, तहैय:; इच्छा; ख़्वाहिश।

इरादत (ارادت) अ. स्त्री.–श्रद्धा, आस्था, एतिक़ाद।

इरादत केश(ارادت کیش) अ. फा. वि.–श्रद्धावान्, श्रद्धालु, मो'तक़िद; भक्त, नियाज़मंद।

इरादतन (ارادۃً) अ. वि.–जान-बूझकर, क़स्दन।

इरादतमंद (ارادت مند) अ. फा. वि.–दे. 'इरादतकेश'।

इरादी (ارادی)अ. वि.–इरादे का; इरादे से सम्बन्धित।

इराबत (ارابت)अ. स्त्री.–शक करना, संदेह करना; किसी को संदेह में डालना।

इराहत (اراحت) अ. स्त्री.–मरना; किसी चीज़ की बू सूँघना; अपवित्र होना; सुख देना; तृप्त होना।

इर्आश (ارعاش) अ. पुं.–दूसरे को कँपाना।

इर्क़ (عرق) अ. स्त्री.–स्नायु, पट्ठा, रग।

इर्काज़ (ارکاض) अ. पुं.–बच्चे का पेट में फिरना।

इर्क़ाम (ارقام) अ. पुं.–लेखन, लिखना।

इर्क़ास (ارقاص) अ. पुं.–उछालना; बच्चे को खेल में लगाना, ऊँट को भगाना।

इर्क़ुन्नसा(عرق النسا)अ. स्त्री.–वह दर्द जो चूतड़ से एड़ी तक उठता है, कुलंग, गृध्रसी स्नायु-शूल, साइटिका, नर्व्स पेन।

इर्ख़ा (ارخا) अ.पुं.–ढीला करना, शिथिल करना; छोड़ देना।

इर्ख़ास (ارخاص)अ. पुं.–सस्ता करना, भाव गिराना।

इर्ग़ाम (ارغام) अ. पुं.–अपमानित करना, ज़लील करना; नाक रगड़वाना।

इर्जा (ارجا) अ. पुं.–आशान्वित करना; फेंकना; रास्ते का ख़त्म के क़रीब आना।

इर्ज़ा (ارضا) अ. पुं.–मनाना, राज़ी करना।

इर्जाअ (ارجاع) अ. पुं.–रजूअ करना, आकृष्ट करना, मुतवज्जेह करना।

इर्ज़ाअ (ارضاع) अ. पुं.–स्त्री का बच्चे को दूध पिलाना।

इर्तिआद (ارتعاد) अ. पुं.–कंपन, कँपकँपाहट, थरथरी, लर्ज़िश।

इर्तिआश (ارتعاش)अ. पुं.–कँपकँपी, कंपन, लर्ज़ा; काँपना, थरथराना।

इर्तिकाज़ (ارتکاز)अ. पुं.–रगड़ना, मर्दन; भरोसा करना।

इर्तिकाज़ (ارتکاض)अ. पुं.–पेट में डोलना, बच्चे का पेट में हरकत करना।

इर्तिकाब (ارتکاب) अ. पुं.–पाप करना; किसी बुरे काम की शुरुआत करना; किसी चीज़ पर सवार होना।

इर्तिक़ाब (ارتقاب) अ. पुं.–आशा रखना, उम्मेद रखना।

इर्तिकाबे गुनाह (ارتکاب گناہ) अ. फा. पुं.–पाप करना, गुनाह करना।

इर्तिकाबे जुर्म (ارتکاب جرم) अ. पुं.–अपराध करना, क़ुसूर करना।

इर्तिख़ास(ارتخاص) अ. पुं.–सस्ता खरीदना, भाव गिराकर मोल लेना।

इर्तिजा (ارتجا) अ. पुं.–आशा रखना, आशान्वित होना।

इर्तिज़ा(ارتضا)अ. पुं.–राज़ी होना, प्रसन्न होना; पसंद करना।

इर्तिजाअ (ارتجاع) अ. पुं.–लौटाना, फिराना।

इर्तिज़ाअ (ارتضاع) अ. पुं.–बच्चे का स्त्री का दूध पीना।

इर्तिजाज (ارتجاج) अ. पुं.–हिलना, डोलना; कँपकँपाना, थरथराना।

इर्तिजाल(ارتجال)अ. पुं.–बिना सोचे तुरन्त ही किसी विषय पर बोलने लगना; बिना सोचे तुरन्त ही कविता करना; किसी काम को तुरन्त ही कर देना।

इर्तिजालन् (ارتجالاً) अ. वि.–इर्तिजाल के तौर पर, फ़िलबदीह, आशु गति से ।

इर्तिताम (ارتطام) अ. पुं.–दलदल में फँसना; गिरफ़्तार होना; नीचे जाना; कीचड़ में कोई चीज़ फेंकना ।

इर्तिदा (ارتدا) अ. पुं.–चादर ओढ़ना ।

इर्तिदाद (ارتداد) अ. पुं.–धर्म-परिवर्तन, अपना धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में चला जाना ।

इर्तिफ़ाअ (ارتفاع) अ. पुं.–ऊँचा उठना; कहीं से निकलना; ग़ल्ला उठाना; लगान; देश की आय; ऊँचाई ।

इर्तिफ़ाक़ (ارتفاق) अ. पुं.–साथ देना, दोस्ती निबाहना; कोहनी का तकिया लगाना, कोहनी पर टेक लगाना ।

इर्तिबात (ارتباط) अ. पुं.–एक चीज़ को दूसरी से बाँधना; मेल-मिलाप; मैत्री, दोस्ती ।

इर्तिबाह (ارتباح) अ. पुं.–व्यापार में ब्याज लेना ।

इर्तियाद (ارتیاد) अ. पुं.–माँगना, तलब करना; ढूँढ़ना, खोज लगाना ।

इर्तियाब (ارتیاب) अ. पुं.–शक में डालना, शंका में डालना ।

इर्तियाश (ارتیاش) अ. पुं.–अवस्था का अच्छा होना ।

इर्तियाह (ارتیاح) अ. पुं.–प्रसन्न होना, हर्षित होना, ख़ुश होना ।

इर्तिशा (ارتشا) अ. पुं.–रिश्वत लेना, घूस लेना, उत्कोच ग्रहण ।

इर्तिशाफ़ (ارتشاف) अ. पुं.–चूसना ।

इर्तिसाम (ارتسام) अ. पुं.–चित्रित करना, चित्र बनाना ।

इर्तिहान (ارتہان) अ. पुं.–रेहन की वस्तु अपने पास धरना, गिरौ रखना ।

इर्तिहाल (ارتحال) अ. पुं.–किसी वस्तु को एक जगह से उठाना; कहीं जाना; प्रस्थान करना, कूच करना ।

इर्दगिर्द (اردگرد) फा. वि.–चारों ओर, चहुपास, चारों तरफ़, आस-पास ।

इर्दा (اردا) अ. पुं.–मार डालना ।

इर्फ़ान (عرفان) अ. पुं.–विवेक, ज्ञान; तमीज़; ब्रह्मज्ञान, मा'रिफ़त ।

इर्ब (ارب) अ. स्त्री.–आवश्यकता, ज़रूरत ।

इर्मन (ارمین) अ. पुं. –एक देश, काकेशिया ।

इर्मनी (ارمینی) अ. वि.–इर्मन का निवासी, काकेशियन ।

इर्माग़ (ارماغ) अ. पुं.–हग मारना, पाखाना निकल जाना ।

इर्माज़ (ارماض) अ. पुं.–गर्म रेत से जलना ।

इर्वा (اروا) अ. पुं.–पानी देना, सेराब करना, तृप्त करना ।

इर्शाद (ارشاد) अ. पुं.–सीधा रास्ता दिखाना; आज्ञा देना, हुक्म करना; दीक्षा देना; हिदायत करना; आज्ञा, हुक्म; दीक्षा, पीर की हिदायत, धर्मगुरु का उपदेश ।

इर्शाश (ارشاش) अ. पुं.–फुहार पड़ना, धीमी वर्षा होना; आँसू गिरना; ख़ून टपकना ।

इर्स (ارث) अ. स्त्री.–किसी काम का पुश्त दर पुश्त चलना, मीरास; मूल, असल; राख; बाक़ी बची हुई वस्तु; परम्परा, पूर्व-प्रचलित मान्यता ।

इर्साद (ارصاد) अ. पुं.–निरीक्षण, निगरानी करना, देखभाल करना ।

इर्साल (ارسال) अ. पुं.–प्रेषण, भेजना; भूलना; उपहार, भेंट, तोहफ़ा ।

इलल आन (الی ال آن) अ. अव्य.–अब तक, इस समय तक; अब भी, अद्यापि ।

इला (الا) अ. स्त्री.–भलाई, अच्छाई, नेकी; नेमत, दिव्य पदार्थ ।

इलाक़ः (علاقہ) अ. पुं.–क्षेत्र, सर्किल; देश, मुल्क; प्रदेश, ख़ितः ।

इलाज (علاج) अ. पुं.–उपचार, चिकित्सा, दवा-दारू; उपाय, प्रयत्न, तदबीर ।

इलाज पिज़ीर (علاج پزیر) अ. फा. वि.–जो दवा के क़ाबिल हो, साध्य ।

इलावः (علاوہ) अ. अव्य.–अतिरिक्त, सिवाय । हिन्दी में अलावा प्रचलित है । (अलावा) ।

इलाह (الہ) अ. पुं.–ईश्वर, अल्लाह, ख़ुदा ।

इलाहा (الہا) अ. अव्य.–हे ईश्वर, ए ख़ुदा ।

इलाही (الہی) अ. अव्य.–मेरा ईश्वर, मेरा ख़ुदा; ईश्वर, ख़ुदा ।

इलाहीयात (الہیات) अ. स्त्री.–ब्रह्मज्ञान से सम्बन्धित शास्त्रादि ।

इल्आब (العاب) अ. पुं.–खेलना, क्रीड़ा करना ।

इल्क़ा (القا) अ. पुं.–पहुँचाना, डालना; दैवी शक्ति द्वारा अनायास मन में कोई विचार उत्पन्न होना, जिससे अनिष्ट से बचाव अथवा इष्ट के ग्रहण की ओर संकेत हो ।

इल्ग़ा (الغا) अ. पुं.–डालना, फेंकना; हटाना, निवारण करना; झुठलाना ।

इल्जा (التجا) अ. पुं.–बुराई और पाप से बचना; अपने काम को ईश्वरेच्छा पर निर्भर कर देना ।

इल्ज़ाक़ (التزاق) अ. पुं.–चिपकना; चिपकाना ।

इल्जाम (الجام) अ. पुं.–घोड़े के मुँह में लगाम देना ।

इल्ज़ाम (الزام) अ. पुं.–दोष, अपराध, जुर्म; कोई बात अपने ऊपर या दूसरे पर लाज़िम कर देना ।

इल्ज़ामात (الزامات) अ. पुं–'इल्ज़ाम' का बहु., दोष-समूह, बहुत से अपराध, जराइम ।

इल्ताफ़ (الطاف) अ. पुं.–कृपा करना, दया करना, करम करना (लुत्फ़ का बहुवचन : अल्ताफ़) ।

इल्तिक़ा (التقا) अ. पुं.–इकट्ठा होना; एक दूसरे में घुसना; एक दूसरे को देखना।

इल्तिक़ात (التقاط) अ. पुं.–चुनना, बीनना; चुनकर इकट्ठा करना।

इल्तिक़ाम (التقام) अ. पुं.–कौर करना, निवाला करना।

इल्तिजा (التجا) अ. स्त्री.–प्रार्थना करना, दरख़ास्त करना; प्रार्थना, दरख़ास्त; दुहाई देना।

इल्तिज़ाक़ (التزاق) अ. पुं.–चिपकना, सटना।

इल्तिजाज (التجاج) अ. पुं.–लड़ना, युद्ध करना।

इल्तिज़ाज़ (التذاذ) अ. पुं.–स्वाद लेना, मज़ा चखना; आनंद लेना, लुत्फ़ उठाना।

इल्तिज़ाम (التزام) अ. पुं.–किसी कार्य को अपने ऊपर लाज़िम और अनिवार्य कर लेना।

इल्तिफ़ात (التفات) अ. पुं.–कनखियों से देखना; कृपा, दया; तवज्जुह, प्रवृत्ति, प्रणय-कटाक्ष, कृपाकोर।

इल्तिबास (التباس) अ. पुं.–एक-सा होना; सदृश होना; सदृशता, मुशाबहत।

इल्तिमाअ (التماع) अ. पुं.–चमकना, प्रकाशमान् होना।

इल्तिमास (التماس) अ. स्त्री.–प्रार्थना करना, सवाल करना; प्रार्थना, सवाल।

इल्तियाअ (التياع) अ. पुं.–प्रेम की अग्नि से हृदय का दाह।

इल्तियात (التياط) अ. पुं.–चिपकाना, मिलाना, जोड़ना।

इल्तियाम (التيام) अ. पुं.–घाव का भरना, ज़ख़्म का अच्छा होना; परस्पर पैवस्त होना।

इल्तिवा (التوا) अ. पुं.–लिपटना; मुलतवी होना, रुक जाना।

इल्तिसाक़ (التساق , التصاق) अ. पुं.–चिपकना ।

इल्तिसाम (التثام) अ. पुं.–किसी चीज़ को चूमना।

इल्तिहा (التحا) अ. पुं.–दाढ़ी निकलना।

इल्तिहाफ़ (التحاف) अ. पुं.–सिर से कपड़ा ओढ़ना।

इल्तिहाब (التهاب) अ. पुं.–आग का भड़कना, आग का लपटें मारना।

इल्फ़ (الف) अ. पुं.–अभ्यस्त होना, आदत पड़ जाना।

इल्फ़ाफ़ (القاف) अ. पुं.–लपेटना।

इल्बाब (الباب) अ. पुं.–बसना, ठहरना, मुक़ीम होना।

इल्बास (الباس) अ. पुं.–कपड़े पहनना।

इल्म (علم) अ. पुं.–विद्या, विज्ञान; ज्ञान, जानकारी; शिल्प, दस्तकारी; कला, फ़न; बुद्धि, अक़्ल; विवेक, शऊर; शिक्षा, तालीम।

इल्मदाँ (علمداں) अ. फ़ा. वि.–विद्वान्, पंडित, आलिम, फ़ाज़िल।

इल्मदोस्त (علمدوست) अ. फ़ा. वि.–विद्या से प्रेम करनेवाला; विद्वज्जनों की क़द्र करनेवाला, गुणग्राही।

इल्मी (علمی) अ. वि.–इल्म से सम्बन्धित; इल्म का; विद्वत्तापूर्ण, क़ाबिलाना।

इल्मीयत (علمیت) अ. स्त्री.–विद्वत्ता, पांडित्य, क़ाबिलीयत, योग्यता।

इल्मुत्तवारीख़ (علم التواریخ) अ. पुं.–इतिहास विज्ञान, तारीख़ का इल्म।

इल्मुन्निसा (علم النسا) अ. पुं.–कोकशास्त्र, कामशास्त्र।

इल्मुल अख़्लाक़ (علم الاخلاق) अ. पुं.–नीतिशास्त्र।

इल्मुल अग़्ज़ियः (علم الاغذیہ) अ. पुं.–आहार-विज्ञान, भोजन-विज्ञान।

इल्मुल अज्साम (علم الاجسام) अ. पुं.–शरीर-विज्ञान।

इल्मुल अद्वियः (علم الادویہ) अ. पुं.–औषधि-विज्ञान, वनस्पतिशास्त्र, ।

इल्मुल अफ़्लाक (علم الافلاک) अ. पुं.–अंतरिक्ष-विज्ञान।

इल्मुल अब्दान (علم الابدان) अ. पुं.–दे. 'इल्मुलअज्साम'।

इल्मुल अम्राज़ (علم الامراض) अ. पुं.–रोग-निदान-शास्त्र।

इल्मुल अर्वाह (علم الارواح) अ. पुं.–प्रेतविद्या।

इल्मुल अस्सिनः (علم الاسنہ) अ. पुं.–भाषा-विज्ञान।

इल्मुल अश्जार (علم الاشجار) अ. पुं.–वृक्षायुर्वेद, वनस्पतिशास्त्र, निघण्टु-विज्ञान।

इल्मुल आ'ज़ा (علم الاعضا) अ. पु.–शरीर-रचना-शास्त्र।

इल्मुल इक़्तिसाद (علم الاقتصاد) अ. पु.–अर्थशास्त्र।

इल्मुल इर्तिक़ा (علم الارتقا) अ. पुं.–विकास-विज्ञान।

इल्मुल इलाज (علم العلاج) अ. पुं.–चिकित्सा- शास्त्र।

इल्मुल क़ाबिलः (علم القابلہ) अ. पुं.–धात्रीविद्या, दायःगरी, रोगीपरिचर्या-विज्ञान।

इल्मुल जराहत (علم الجراحت) अ. पुं.–शल्यशास्त्र, शल्यविद्या।

इल्मुल मिसाहत (علم المساحت) अ. पुं.–ज्यामिति, क्षेत्रगणित, रेखागणित।

इल्मुल हयात (علم الحیات) अ. पुं.–जीव-विज्ञान।

इल्मुल हैवान (علم الحیوان) अ. पुं.–प्राणिशास्त्र।

इल्मे अदब (علم ادب) अ. पुं.–साहित्य-शास्त्र।

इल्मे अरूज़ (علم عروض) अ. पुं.–पिंगल, छंदःशास्त्र।

इल्मे इंशा (علم انشا) अ. पुं.–गद्य-रचना-शास्त्र।

इल्मे इंसाफ़ (علم انصاف) अ. पुं.–व्यवहार-शास्त्र।

इल्मे इलाज (علم علاج) अ. पुं.–दे. 'इल्मुलइलाज'।

इल्मे इलाहीयात (علم الهيات) अ. पुं.–दर्शन-शास्त्र ।

इल्मे कलाम (علم كلام) अ. पुं.–मीमांसा, तर्कशास्त्र ।

इल्मे क़ाफ़ियः (علم قافيه) अ. पुं.–अनुप्रास-शास्त्र ।

इल्मे क़ियाफ़ः (علم قيافه) अ. पुं.–सामुद्रिक-शास्त्र, अंगविद्या ।

इल्मे कीमिया (علم كيميا) अ. पुं.–रसायन-शास्त्र ।

इल्मे ग़ैब (علم غيب) अ. पुं.–परोक्ष-विद्या, भविष्य-ज्ञान, परोक्ष-ज्ञान ।

इल्मे जरासीम (علم جراثيم) अ. पुं.–कीटविद्या, कैटिकी, कीटाणु-विज्ञान ।

इल्मे जिमादात (علم جمادات) अ. पुं.–खनिज-विज्ञान, धातु-विद्या ।

इल्मे तख़्लीक़ (علم تخليق) अ. पुं.–सृष्टि-विज्ञान ।

इल्मे तबक़ातुलअर्ज़ (علم طبقات الارض) अ. पुं.–भूगर्भ-शास्त्र, भौमिकी, भूगर्भ-विद्या ।

इल्मे तब्ईयात (علم طبعيات) अ. पुं.–प्रकृति-विज्ञान, विज्ञान-शास्त्र ।

इल्ले तमद्दुन (علم تمدن) अ. पुं.–नागरिक-शास्त्र ।

इल्मे तसव्वुफ़ (علم تصوف) अ. पुं.–अध्यात्म, ब्रह्मविद्या ।

इल्मे तस्ख़ीर (علم تسخير) अ. पुं.–वशीकरण-शास्त्र ।

इल्मे तारीख़ (علم تاريخ) अ. पुं.–दे. 'इल्मुत्तवारीख़' ।

इल्मे तिजारत (علم تجارت) अ. पुं.–वाणिज्य-शास्त्र ।

इल्मे तिलिस्म (علم طلسم) अ. पुं.–भोजविद्या, इंद्रजाल ।

इल्मे दस्तबीनी (علم دست بينى) अ. फा. पुं.–हस्त-सामुद्रिक विद्या ।

इल्मे दीन (علم دين) अ. पुं.–धर्मशास्त्र ।

इल्मे नफ़्सीयात (علم نفسيات) अ. पुं.–मनोविज्ञानशास्त्र, मानसशास्त्र ।

इल्मे नबातात (علم نباتات) अ. पुं.–वनस्पति-शास्त्र, उद्भिज्ज-शास्त्र ।

इल्मे नुजूम (علم نجوم) अ. पुं.–फलित ज्योतिष, ज्योतिष-विज्ञान ।

इल्मे फ़ल्सफ़ः (علم فلسفه) अ. पुं.–विज्ञान, साइंस; पदार्थ-विज्ञान; दर्शनशास्त्र, वेदान्त, ब्रह्मविद्या ।

इल्मे बयान (علم بيان) अ. पुं.–फ़साहतो बलाग़त का इल्म वर्णन-पटुता, भाषण-कौशल ।

इल्मे मंतिक़ (علم منطق) अ. पुं.–न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, तर्कविद्या ।

इल्मे मा'क़ूल (علم معقول) अ. पुं.–दर्शनशास्त्र; तर्कशास्त्र ।

इल्मे मा'दनीयात (علم معدنيات) अ. पुं.–खनिज-विज्ञान ।

इल्मे मा'रिफ़त (علم معرفت) अ. पुं.–अध्यात्म-ज्ञान ।

इल्मे मुआशरत (علم معاشرت) अ. पुं.–समाज-शास्त्र ।

इल्मे मुनाज़रः (علم مناظره) अ. पुं.–शास्त्रार्थ-विज्ञान ।

इल्मे मूसीक़ी (علم موسيقى) अ. पुं.–संगीतशास्त्र, गान-विद्या, नादशास्त्र ।

इल्मे मौजूदात (علم موجودات) अ. पुं.–सृष्टि-विज्ञान ।

इल्मे रियाज़त (علم رياضت) अ. पुं.–योगशास्त्र ।

इल्मे रियाज़ी (علم رياضى) अ. पुं.–गणितशास्त्र ।

इल्मे रीमिया (علم ريميا) अ. पुं.–इंद्रजाल, जादूगरी ।

इल्मे लदुन्नी (علم لدنى) अ. पुं.–ईश्वरदत्त ज्ञान ।

इल्मे लिसानीयात (علم لسانيات) अ. पुं.–दे. 'इल्मुल अल्सिन:' ।

इल्मे शे'र (علم شعر) अ. पुं.–काव्यशास्त्र ।

इल्मे सनाअत (علم صناعت) अ. पुं.–शिल्प-शास्त्र ।

इल्मे सनाए (علم صنائع) अ. पुं.–अलंकारादि-शास्त्र ।

इल्मे सिफ़्ली (علم سفلى) अ. पुं.–पिशाचविद्या, भूत-विद्या ।

इल्मे सियासत (علم سياست) अ. पुं.–राजनीति-शास्त्र ।

इल्मे सीमिया (علم سيميا) अ. पुं.–परकाय-प्रवेश-विद्या ।

इल्मे सेहत (علم صحت) अ. पुं.–स्वास्थ्य-विज्ञान ।

इल्मे हिंदिसः (علم هندسه) अ. पुं.–गणितशास्त्र, अंकशास्त्र ।

इल्मे हैअत (علم هيئت) अ. पुं.–खगोल-विज्ञान ।

इल्यास (الياس) अ. पुं.–एक पैग़म्बर जो सदा जीवित रहेंगे, यह समुद्रों के संरक्षक हैं ।

इल्ल (ال) अ. पुं.–वचन, प्रतिज्ञा, पैमान; शरण, अमान; शपथ, सौगंद ।

इल्लत (علت) अ. स्त्री.–कारण, हेतु, सबब; रोग, बीमारी; दुर्व्यसन, बुरीलत; झंझट ।

इल्लतुल इलल (علت العلل) अ. स्त्री.–मूल कारण, निदान, सारे कारणों का कारण; ईश्वर, ख़ुदा ।

इल्लतुल मशाइख़ (علت المشائخ) अ. स्त्री.–बूढ़े लोगों वाला दुर्व्यसन, गुदादान व्यसन, बुरा काम कराने की लत, भवेसिया ।

इल्लते आफ़्ताब (علت آفتاب) अ. स्त्री.–क़मल रोग, यरक़ान ।

इल्लते उबनः (علت ابنه) अ. स्त्री.–दे. 'इल्लतुल मशाइख़' ।

इल्लते ग़ाई (علت غائى) अ. स्त्री.–मूल कारण, निदान, अस्ल सबब, जिस कारण के लिए कोई काम किया जाय ।

इल्लते ताम्मः (علت تامه) अ. स्त्री.–पूरा कारण, कामिल सबब ।

इल्लते फ़ाइली (علت فاعلى) अ. स्त्री.–किसी कार्य का कारण, जैसे—मकान के लिए राज ।

इल्लते सूरी (علت صوری) अ. स्त्री.–ज़ाहिरी इल्लत, जैसे —मकान का आकार।

इल्ला (الا) अ. अव्य.–मगर, परन्तु; नहीं तो, वरना।

इल्साक़ (الصاق, الساق) अ. पुं.–चिपकाना।

इल्हा (الحا) अ. पुं.–झगड़े में डालना।

इल्हाक़ (الحاق) पुं.–मिलाना, जोड़ना; मूल पुस्तक में ऊपर से कुछ जोड़ देना, क्षेपक।

इल्हाद (الحاد) अ. पुं.–नास्तिकता, बेदीनी।

इल्हान (الحان) अ. पुं.–स्वर-माधुर्य, ख़ुशआवाज़ी; गान, नग़्मः; अच्छी आवाज़, कंठ-माधुर्य।

इल्हाब (الہاب) अ. पुं.–आग भड़कना, शोले उठना।

इल्हाम (الہام) अ. पुं.–ईश्वर की ओर से हृदय में आयी हुई बात; देववाणी, आकाशवाणी।

इल्हाह (الحاح) अ. पुं.–गिड़गिड़ाना, आजिज़ी करना, घिघियाना; ख़ुशामद, विनती; गिड़गिड़ाहट।

इलहाहोज़ारी (الحاح وزاری) अ. फा. स्त्री.–रोना और गिड़गिड़ाना।

इवान (اوان) फा. पुं.–ईवान, प्रासाद, महल।

इशक (اشک) तु. पुं.–गधा, गदहा, खर।

इशा (عشا) अ. स्त्री.–रात्रि, रात; रात का अँधेरा; रात की नमाज़।

इशाअत (اشاعت) अ. स्त्री.–प्रचार, प्रसार, मुश्तहरी; संस्करण, एडीशन; प्रकटन, ज़ुहूर।

इशाकत (اشاکت) अ. स्त्री.–गड़ाना, चुभोना।

इशादत (اشادت) अ. स्त्री.–ऊँचे स्वर से पढ़ना।

इशारः (اشارہ) अ. पुं.–संकेत, इंगित, ईमा; तात्पर्य, मतलब।

इशारःबाज़ी (اشارہ بازی) अ.फा. स्त्री.–आपस में इशारे करना, संकेत करना।

इशारत (اشارت) अ. स्त्री.–दे. 'इशारः'।

इशारतन् (اشارتاً) अ.वि.–संकेत से, इशारे में, संकेत करके।

इशारात (اشارات) अ. पुं.–इशारः का बहु., इशारे।

इश्आर (اشعار) अ. पुं.–सचेत करना, सूचना देना, आगाह करना।

इश्आल (اشعال) अ. पुं.–आग भड़काना।

इश्क़ (عشق) अ. पुं.–प्रेम, अनुराग, आसक्ति, मोह, महब्बत; दुर्व्यसन, लत।

इश्कनः (اشکنہ) अ. पुं.–बढ़ई का बर्मा।

इश्क़बाज़ (عشق باز) अ.फा. वि.–इश्क़ करनेवाला, प्रेमी।

इश्क़बाज़ी (عشق بازی) अ.फा. स्त्री.–प्रेम-व्यवहार, इश्क़ करना।

इश्काल (اشکال) अ. पुं–कठिनता, दुष्करता, दुश्वारी, कठिनाई।

इश्कूख़ (اشکوخ) अ. पुं.–ठोकर; फिसलन।

इश्क़े पेचाँ (عشق پیچاں) अ. फा. पुं.–एक बेल, जो पेड़ों पर लिपट जाती है।

इश्क़े मजाज़ी (عشق مجازی) अ. पुं.–मानव-प्रेम, भौतिक प्रेम, प्राणियों से प्रेम, सांसारिक प्रेम।

इश्क़े हक़ीक़ी (عشق حقیقی) अ. पुं.–ईश्वर-प्रेम, ईश्वर-भक़्ति, इश्क़े इलाही।

इश्तात (اشتات) अ. पुं.–तितर-बितर करना।

इश्तिआल (اشتعال) अ. पुं.–उत्तेजना, भड़काना; जोश दिलाकर मारकाट पर आमादा करना; लपट मारना, भड़कना।

इश्तिका (اشتکا) अ. पुं.–उलाहना देना, गिला करना।

इश्तिक़ाक़ (اشتقاق) अ. पुं.–लकड़ी आदि का चीरना; एक शब्द से दूसरा शब्द बनाना।

इश्तिकार (اشتکار) अ. पुं.–शिकायत करना, गिला करना।

इश्तिग़ाल (اشتغال) अ. पुं.–काम में लगना, मश्ग़ूल होना; तन्मयता, संलग्नता; मुँह फेरना, बेज़ार होना।

इश्तिदाद (اشتداد) अ. पुं.–तीव्रता, प्रचंडता, तेज़ी; अत्याचार, ज़ुल्म।

इश्तिबाक (اشتباک) अ. पुं.–दोनों हाथों की उँगलियाँ एक दूसरे में पैवस्त करना; पेड़ की डालियों का एक दूसरे में गुँथना।

इश्तिबाह (اشتباہ) अ. पुं.–संदेह, शंका, शक।

इश्तिमाल (اشتمال) अ. पुं.–कई चीज़ों को मिलाकर एक करना।

इश्तिमालीयत (اشتمالیت) अ. स्त्री.–मिलाकर एक करने का सिद्धांत।

इश्तिमाले आराज़ी (اشتمال اراضی) अ. पुं.–विभिन्न खेतों की भूमि को मिलाकर एक कर देना, चकबंदी।

इश्तियाक़ (اشتیاق) अ. पुं.–बहुत अधिक शौक़, उत्कंठा, लालसा।

इश्तियाक़े मालायुताक़ (اشتیاق مالا یطاق) अ. पुं.–ऐसी बढ़ी हुई उत्कंठा जो रोकी न जा सके, बहुत ही अधिक लालसा, अभिलाषा।

इश्तियाफ़ (اشتیاف) अ. पुं.–संमानित करना, सर बलंद रखना।

इश्तिरा (اشترا) अ. पुं.–मोल लेना, ख़रीदना।

इश्तिराक (اشتراک) अ. पुं.–भागीदारी, साझा; समानता, मुसावात; साम्यवाद, कम्यूनिज़्म।

इश्तिराकी (اشتراکی) अ. वि.–यह सिद्धांत माननेवाला कि देश के धन में सब बराबर के भागीदार हैं, साम्यवादी। **शितराकीयत** (اشتراکیت) अ. स्त्री.–साम्यवाद, कम्यूनिज़्म।

इश्तिरात (اشتراط) अ. पुं.–बाज़ी बदना, शर्त लगाना।

इश्तिहा (اشتہا) अ. स्त्री.–क्षुधा, भूख, इच्छा; ख़्वाहिश; रुचि, रग़्बत।

इश्तिहाए काज़िब (اشتہائے کاذب) अ. स्त्री.–झूठी भूख।

इश्तिहाए सादिक़ (اشتہائے صادق) अ. स्त्री.–सच्ची भूख, तेज़ भूख।

इश्तिहार (اشتہار) अ. पुं.–प्रचार, प्रसार, प्रोपेगंडा; विज्ञापन, मुश्तहरी का पर्चा; मुनादी, घोषणा।

इश्तिहारी (اشتہاری) अ. वि.–इश्तिहार द्वारा प्रसारित, जैसे–इश्तिहारी दवा; वह अपराधी जो भागा हुआ हो और जिसके पकड़ने के लिए इश्तिहार जारी हो; इश्तिहार से सम्बन्धित।

इश्नूसः (اشنوسہ) फा. स्त्री.–छींक, विक्षाव।

इश्फ़ाक़ (اشفاق) अ. पुं.–कृपा करना, दया करना; कृपा-दृष्टि; त्रास, डराना, 'अश्फ़ाक़' भी प्रचलित।

इश्बाअ (اشباع) अ. पुं.–पेट भर खिलाना; 'ज़बर', 'ज़ेर' और 'पेश' को इतना बढ़ाना कि वह अलिफ़, ये और वाव हो जाय, जैसे 'ख़र' में 'ख़े' के ज़बर को बढ़ा दें तो 'ख़ार' हो जाय।

इश्बाल (اشبال) अ. पुं.–विधवा का अपने बच्चों के कारण पुनर्विवाह न करना; कृपा करना, मेहरबानी करना।

इश्बाह (اشباہ) अ. पुं.–सदृश होना, तुल्य होना, एक-सा होना।

इश्बेख़्तः (اشبیختہ) फा. वि.–छिड़का हुआ, बखेरा हुआ।

इश्माअ (اشماع) अ. पुं.–चिराग़ की लौ का बढ़ जाना, चिराग का तेज़ जलना।

इश्माम (اشمام) अ. पुं.–सूँघना; सुँघाना।

इश्रत (عشرت) अ. स्त्री.–सुख, आनंद, चैन, आराम; भोग-विलास का सुख, ऐयाशी; हर्ष, ख़ुशी।

इश्रत अंजाम (عشرت انجام) अ.फा. वि.–वह कार्य जिसका अंत आनंदमय हो।

इश्रतकदः (عشرت کدہ) अ. फा. पुं.–रंगभवन, रंगशाला, ऐशमहल।

इश्रतख़ानः (عشرت خانہ) अ. फा. पुं.–दे. 'इश्रतकदः'।

इश्रतगाह (عشرت گاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'इश्रतकदः'।

इश्रते इम्रोज़ (عشرت امروز) अ. फा. स्त्री.–वह सुख जो आज प्राप्त हो, अर्थात् सांसारिक सुख।

इश्रते फ़र्दा (عشرت فردا) अ. फा. स्त्री.–वह सुख जो कल मिलेगा, अर्थात् पारलौकिक सुख।

इश्रते फ़ानी (عشرت فانی) अ. स्त्री.–वह सुख जो क्षणिक हो, थोड़े दिनों का सुख, अर्थात् सांसारिक सुख।

इश्राक़ (اشراق) अ. पुं.–चमकना; उज्ज्वल होना; सूर्योदय के पश्चात् का समय।

इश्राक़ी (اشراقی) अ. वि.–प्राचीन वैज्ञानिकों का वह दल अथवा व्यक्ति जो आत्मशक्ति द्वारा दूर बैठे हुए पठन-पाठन करता था। ये लोग यूनान देश के थे।

इश्राफ़ (اشراف) अ. पुं.–ऊँचा होना; ऊँचे पर बैठना; किसी चीज़ की चोटी पर बैठना; वाक़िफ़ होना; ऊपर से देखना।

इश्रीन (عشرین) अ. पुं.–बीस।

इश्वः (عشوہ) अ. पुं.–सुंदर स्त्रियों का हाव-भाव।

इश्वःकार (عشوہ کار) अ. फा. वि.–दे. इश्वःगर।

इशवःकारी (عشوہ کاری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'इश्वःगरी'।

इश्वःगर (عشوہ گر) अ. फा. वि.–हाव-भाव से दिल मोह लेनेवाला (वाली), नाज़ो अंदाज़ दिखानेवाला (वाली)।

इश्वःगरी (عشوہ گری) अ. फा. स्त्री.–हाव-भाव दिखाने का भाव।

इश्वःतराज़ (عشوہ طراز) अ. फा. वि.–दे. 'इश्वःगर'।

इश्वःतराज़ी (عشوہ طرازی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'इश्वःगरी'।

इश्वःसंज (عشوہ سنج) अ. फा. वि.—'इश्वःगर'।

इश्वःसंजी (عشوہ سنجی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'इश्वःगरी'।

इसा (اسا) अ. पुं.–अपने साथ बुराई करना।

इसाअः (اساعہ) अ. पुं.–नष्ट करना, ज़ाए करना; त्यागना, छोड़ना।

इसाअत (اساعت) अ. स्त्री.–बुराई, बदी; पाप, गुनाह।

इसाख़त (اصاخت) अ. स्त्री.–सुनने के लिए कान लगाना।

इसादः (اسادہ) अ. पुं.–तकिया, वालिश, उपधान।

इसाबः (اصابہ) अ. पुं.–हैज़े में मुब्तला होना, हैज़ा हो जाना।

इसाबः (عصابہ) अ. पुं.–सर बाँधने की पट्टी।

इसाब (عصاب) अ. पुं.–पट्टी।

इसाबत (اصابت) अ. स्त्री.–पहुँच, रसाई; ठीक पाना; यथार्थता, हक़ीकत।

इसाबते राए (اصابت رائے) अ. स्त्री.–राय का ठीक और शुद्ध होना।

इसाम (عصام) अ. पुं.–मश्क उठाने का तस्मा; बेद मुश्क।

इस्आद (اسعاد) अ. पुं.–शुभान्वित करना, मंगलकारी बनाना; मैत्री, दोस्ती।

इस्आफ़ (اسعاف) अ. पुं.–इच्छा पूरी करना, काम निकाल देना, किसी का काम उसकी मंशा के अनुसार कर देना।

इस्कंदर (اسکندر) अ.पुं.–सिकंदर, यूनान का प्राचीन शासक।

इस्कंदरीयः (اسکندریہ) अ. स्त्री.–मिस्र देश का प्रसिद्ध बंदरगाह जिसे सिकंदर ने बनाया था।

इस्कदार (اسکدار) फा. पुं.–डाकिया, हरकारा; डाक की चौकी।

इस्क़ा (اسقا) अ. पुं.–पानी या शराब आदि पिलाना।

इस्क़ात (اسقاط) अ. पुं.–गिरना, डालना; पेट से बच्चा गिरना या गिराना।

इस्कात (اسکات) अ. पुं.–चुप कर देना, चुप कर देनेवाली बात करना।

इस्क़ाते हम्ल (اسقاط حمل) अ. पुं.–स्त्री के पेट से बच्चा गिरना; गर्भपात, गर्भक्षय, गर्भस्राव।

इस्कान (اسکان) अ. पुं.–शांति, सुकून; अक्षर को हल् करना।

इस्काफ़ (اسکاف) अ. पुं.–जूता बनानेवाला, मोची।

इस्क़ाल (اثقال) अ. पुं.–भारी होना।

इस्किनः (اسکنہ) अ. पुं.–छेद करने का बरमा।

इस्कीज़ः (اسکیزہ) अ. पुं.–घोड़े की दुलत्ती।

इस्क़ील (اسقیل) अ. पुं.–जंगली पियाज़।

इस्ग़ा (اسغا) अ. पुं.–बात सुनने के लिए कान झुकाना।

इस्ग़ाब (اسغاب) अ. पुं.–भूखा होना।

इस्जाअ (اسجاع) अ. पुं.–बातों में तुक वाले शब्द बोलना, मुक़फ़्फ़ा इबारत बोलना, सतुकान्त भाषण।

इस्तंबोल (استنبول) तु. पुं.–यूरोपीय तुर्की की राजधानी, क़ुस्तुंतीनिया।

इस्त (است) अ. पुं.–मलद्वार, गुदाद्वार, मक़्अद का सूराख।

इस्तख़र (استخر-اصطخر) अ. पुं.–तड़ाग, तालाब; ईरान का एक दुर्ग।

इस्तब्रक़ (استبرق) अ. पुं–एक बहुमूल्य रेशमी कपड़ा।

इस्तब्ल (اصطبل) अ. पुं.–अश्वशाला, घुड़साल, तवेला, 'अस्तबल' भी प्रचलित है। (अस्तब्ल)।

इस्तम (استم) अ. पुं.–अत्याचार, सितम।

इस्ता (استا) फा. स्त्री.–प्रशंसा, तारीफ़।

इस्ताज (استاج) अ. पुं.–सूत लपेटने का अटेरन।

इस्तादः (استادہ) फा. वि.–सीधा खड़ा हुआ।

इस्तादगी (استادگی) फा. स्त्री.–खड़े होने का भाव, खड़ापन; लिंगेंद्रिय का उत्थान।

इस्तादनी (استادنی) फा. वि.–खड़े होने योग्य।

इस्तारः (اسطارہ) अ. पुं.–दे. 'उस्तूरः'।

इस्तार (استار) अ. पुं.–छिपाना, गोपन; साढ़े चार मिस्क़ाल या २०$\frac{१}{४}$ माशे का एक भार।

इस्तिंजा (استنجا) अ. पुं.–मूत्र या शौच के पश्चात् पानी लेना, आबदस्त।

इस्तिंताक़ (استنطاق) अ. पुं.–बात पूछना; प्रश्न करना; बोलने की शक्ति चाहना।

इस्तिंबात (استنباط) अ. पुं.–बात में से बात निकालना, किसी बात से कोई निष्कर्ष निकालना।

इस्तिंबाह (استنباہ) अ. पुं.–चेतावनी चाहना; सतर्कता ढूँढ़ना।

इस्तिंशाक (استنشاق) अ. पुं.–नाक से हवा या पानी खींचना, नाक से दवा सुड़कना, "नोज़-स्पञ्ज"।

इस्तिंसार (استنثار) अ. पुं.–नाक छिनकना, नाक साफ़ करना; तितर-बितर करना।

इस्तिंसार (استنصار) अ. पुं.–सहायता चाहना, मदद माँगना।

इस्तिआज़त (استعاذت) अ. स्त्री.–त्राण चाहना, पनाह ढूँढ़ना; शरणागति।

इस्तिआदत (استعادت) अ. स्त्री.–लौटाने की इच्छा करना।

इस्तिआनत (استعانت) अ. स्त्री.–सहायता चाहना, मदद माँगना।

इस्तिआरः (استعارہ) अ. पुं.–उधार लेना; शाइरी की परिभाषा में किसी अगोचर वस्तु को साकार मानकर उस से काम लेना जैसे–'सरे होश' होश का सिर और 'पाए फ़िक्र' फ़िक्र के पाँव, इसमें होश और फ़िक्र को आदमी मानकर उसके सिर और पैर बनाये हैं। 'काव्य में अमूर्त्त का मानवीकरण', रूपक।

इस्तिकाक (اصتکاک) अ. पुं.–दो कड़ी वस्तुओं की रगड़ से पैदा होनेवाली आवाज़।

इस्तिकानत (استکانت) अ. स्त्री.–नम्रता दिखाना, तिरस्कार करना; विनति, नम्रता, आजिज़ी।

इस्तिक़ामत (استقامت) अ. स्त्री.–सीधा होना; दृढ़ होना; सिधाई, सरलता; दृढ़ता, मज़बूती।

इस्तिक्ताब (استکتاب) अ. पुं.–लिखना, लेखन; किसी चीज़ के लिखने को कहना।

इस्तिक़्दाम (استقدام) अ. पुं.–स्वागत करना, पेशवाई करना; आगे होना।

इस्तिक्फ़ाफ़ (استکفاف) अ. पुं.–हाथ फैलाना।

इस्तिक्बार (استکبار) अ. पुं.–अपने को महान् जानना; अवज्ञा करना; आगे होने के लिए कहना।

इस्तिक़्बाल (استقبال) अ. पुं.–आगे बढ़कर लेना, स्वागत करना; स्वागत के लिए आगे जाना; चाँद-सूरज का आमने-सामने होना, यह पूर्णमासी की रात को होता है; भविष्य, मुस्तक़्बिल

इस्तिक़्रा (استقرا) अ. पुं.–गवेषणा करना; तलाश करना; अनुसरण करना, पैरवी करना, कुछ बातों से कोई निष्कर्ष निकालना।

इस्तिक़्राज़ (استقراض) अ. पुं.–उधार माँगना, क़र्ज़ चाहना, ऋण लेना।

इस्तिक़्रार (استقرار) अ. पुं.–ठहरना, रुकना; शांत होना; प्रमाणित होना।

इस्तिक्रार (استکرار) अ. पुं.–बार-बार माँगना।

इस्तिक़्रारे हक़ (استقرار حق) अ. पुं.–अपना हक़ (स्वत्व, अधिकार) माँगना; हक़ साबित करना।

इस्तिक्राह (استکراہ) अ. पुं.–घृणा करना, नफ़रत, नापसंद करना।

इस्तिक़्लाल (استقلال) अ. पुं.–अपने सहारे खड़ा होना; थोड़ा जानना; दृढ़ता, मज़बूती; किसी बात पर अटल रहना।

इस्तिक़्सा (استقصا) अ. पुं.–किसी चीज़ के अंत को पहुँचना; बहुत अधिक इच्छा करना; कृपणता, कंजूसी; प्रयत्न, आयास, कोशिश।

इस्तिक्साब (استکساب) अ. पुं.–अपनी ज़ाती (निजी) कोशिश से कोई चीज़ या गुण प्राप्त करना।

इस्तिक़्साम (استقسام) अ. पुं.–भाग करवाना, बटवारे की इच्छा करना; शपथ लेना, क़सम खिलवाना।

इस्तिक़्सार (استقصار) अ. पु.–कम करने की इच्छा करना, कम करना।

इस्तिक्सार (استکثار) अ. पुं.–अधिकता चाहना।

इस्तिख़ारः (استخارہ) अ. पुं.–किसी कार्य में दैवी सहायता चाहना; परोक्ष ज्ञान की इच्छा करना; किसी धार्मिक कृति द्वारा यह जानना कि अमुक काम शुभ है या अशुभ।

इस्तिख़्दाम (استخدام) अ. पुं.–सेवा करने की इच्छा करना; नौकरी चाहना।

इस्तिख़्फ़ाफ़ (استخفاف) अ. पु.–लज्जा, शर्म; संकोच, नदामत; तिरस्कार, तहक़ीर।

इस्तिख़्राज (استخراج) अ. पु.–बाहर निकालना, निष्कासन; निकालने की इच्छा करना।

इस्तिख़्लास (استخلاص) अ. पुं.–बंधनमुक्त करना, छोड़ देना।

इस्तिग़ासः (استغاثہ) अ. पुं.–वाद, नालिश, फ़ौजदारी का दावा'; मदद की पुकार।

इस्तिग़ासत (استغاثت) अ. स्त्री.–दे. 'इस्तिग़ासः'।

इस्तिग़ना (استغنا) अ. पुं.–निस्पृहता, अनिच्छा, बेनियाज़ी।

इस्तिग़फ़ार (استغفار) अ. पुं.–ईश्वर से पापों की क्षमा चाहना; मुक्ति चाहना, मोक्ष-प्राप्ति की इच्छा करना।

इस्तिग़्राक़ (استغراق) अ. पुं.–अपनी दशा में ऐसा मग्न होना कि किसी का पता न चले; तन्मयता, तल्लीनता, संलग्नता, इन्हियाक, महवियत।

इस्तिग़्राब (استغراب) अ. पु.–आश्चर्य में डालना, अनोखी बात करना; बहुत अधिक प्रशंसा करना; आश्चर्य, हैरत।

इस्तिज़ा (استضا) अ. पुं.–रौशनी पकड़ना, प्रकाशित होना।

इस्तिजाज़ः (استجازہ) अ. पुं.–आज्ञा माँगना, इजाज़त चाहना।

इस्तिजाबत (استجابت) अ. स्त्री.–प्रश्न का उत्तर देना; प्रार्थना स्वीकार करना।

इस्तिज्बार (استجبار) अ. पुं.–अभिमान करना, अवज्ञा और उद्दंडता करना।

इस्तिज्ला (استجلا) अ. पुं.–प्रकाशमान करना, रौशन करना।

इस्तिज़्लाक़ (استزلاق) अ. पुं.–फिसलाना।

इस्तिज्लाब (استجلاب) अ. पुं.–अपनी ओर खींचना; कोई वस्तु प्राप्त करना।

इस्तिज़्लाल (استظلال) अ. पुं.–छाया ढूँढ़ना; छाया में आना; किसी की रक्षा में आना।

इस्तिज़्हार (استظہار) अ. पुं.–सहायता चाहना; किसी का सहायक होना; बलवान् होना; कंठ पढ़ना।

इस्तिताअत (استطاعت) अ. स्त्री.–सामर्थ्य, शक्ति, मक़्दरत, ज़ोर, बल, क़ुव्वत।

इस्तिताबत (استتابت) अ. स्त्री.–पाप न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करना, तौबा करना।

इस्तिताबत (استطابت) अ. स्त्री.–पवित्र करना; सुगंधित करना; आनंद करना।

इस्तितार (استتار) अ. पुं.–पर्दे में छिप जाना; ग़ायब हो जाना।

इस्तित्राद (استطراد) अ. पुं.–किसी के बाहर आने की इच्छा करना; किसी को भगाने की इच्छा करना; काम की तेज़ी।

इस्तित्लाअ (استطلاع) अ. पुं.–सूचना चाहना, आगाही पाने की इच्छा करना; सूचना, इत्तिलाअ।

इस्तित्लाक़ (استطلاق) अ. पुं.–बंधन-मुक्त करना, क़ैद से छोड़ना, रिहा करना।

इस्तिदामत (استدامت) अ. स्त्री.–नित्यता चाहना, किसी कार्य के हमेशा होने की इच्छा करना।

इस्तिदारत (استدارت) अ. स्त्री.–बंधक होना, गिरौ होना।

इस्तिद्आ (استدعا) अ. पुं.–प्रार्थना, निवेदन, दरख़ास्त, 'इस्तिदुआ' भी प्रचलित।

इस्तिद्फ़ाअ (استدفاع) अ. पुं.–अपने से अलग करना, एक चीज़ को दूसरी चीज़ से अलग करना।

इस्तिद्राक (استدراک) अ. पुं.–समझने की इच्छा करना।

इस्तिद्राज (استدراج) अ.पुं.–वह करामात या चमत्कार जो किसी नास्तिक द्वारा प्रकट हो।

इस्तिदलाल (استدلال) अ. पुं.–प्रमाण चाहना, सुबूत माँगना; गवाह माँगना; दलील देना, तर्क करना; तर्क, दलील; प्रमाण, सुबूत।

इस्तिनाअ (اصطناع) अ. पुं.–भलाई करना, नेकी करना, फिरना, घूमना।

इस्तिनाद (استناد) अ. पुं.–सहारा लगाना; सनद (प्रमाणपत्र) चाहना; प्रमाणित होना।

इस्तिनाबत (استنابت) अ. स्त्री.–किसी का प्रतिनिधित्व चाहना, नियाबत चाहना।

इस्तिनारत (استنارت) अ. स्त्री.–प्रकाशमान होना; दूसरे प्रकाशित पदार्थ से प्रकाश ग्रहण करना।

इस्तिन्क़ाअ (استنقاع) अ. पुं.–सूखे मेवों आदि को पानी में भिगोकर और हाथ से मलकर, निचोड़कर उनका रस लेना, नुक़ूअ ग्रहण करना।

इस्तिन्काफ़ (استنکاف) अ. पुं.–बुरा जानना, घृणा करना।

इस्तिन्फ़ाज़ (استنفاض) अ. पुं.–किसी के कपड़ों की तलाशी लेना, झाड़ा लेना, जामातलाशी।

इस्तिन्फ़ास (استنفاس) अ. पुं.–जीवन की इच्छा करना; ख़ून निकलना।

इस्तिफ़ा (اصطفا) अ. पुं.–प्रतिष्ठा, बुज़ुर्गी; स्वीकार करना, लेना।

इस्तिफ़ाज़ः (استفاضہ) अ. पुं.–किसी का यश चाहना, फ़ैज़ तलब करना।

इस्तिफ़ाज़त (استفاضت) अ. स्त्री.–दे. 'इस्तिफ़ाज़ः'।

इस्तिफ़ादः (استفادہ) अ. पुं.–किसी से लाभान्वित होना, नफ़ा उठाना।

इस्तिफ़ादत (استفادت) अ. स्त्री.–दे. 'इस्तिफ़ादः'।

इस्तिफ़ाफ़ (اصطفاف) अ. पुं.–पंक्तिबद्ध होना, सफ़ बाँधना।

इस्तिफ़ाफ़ (استفاف) अ. पुं.–फंकी फाँकना।

इस्तिफ़्ता (استفتا) अ. पु.–मुफ़्ती से फ़त्वा माँगना।

इस्तिफ़्राग़ (استفراغ) अ. पुं.–वमन करना, क़ै करना, उलटी करना; वमन, क़ै, उलटी; फ़ुर्सत चाहना।

इस्तिफ़्सार (استفسار) अ. पुं.–प्रश्न, सवाल; जिज्ञासा, पूछताछ, दरयाफ़्त।

इस्तिफ़्हाम (استفہام) अ. पुं.–किसी चीज़ को समझना चाहना, समझने की इच्छा करना; पूछना, सवाल करना।

इस्तिफ़्हामे इन्कारी (استفہام انکاری) अ. पुं.–ऐसा प्रश्न जिससे किसी बात की अस्वीकृति प्रकट हो।

इस्तिफ़्हामे इक़ारी (استفہام اقراری) अ. पुं.–ऐसा प्रश्न जिससे किसी बात की स्वीकृति प्रकट हो।

इस्तिबाग़ (اصطباغ) अ. पुं.–चमड़ा रँगना; पानी में ग़ोता देना; ईसाई धर्म में बपतिस्मा देना।

इस्तिबार (اصطبار) अ. पुं.–धैर्य धरना, सब्र करना।

इस्तिबाह (اصطباح) अ. पुं.–सबेरे की शराव पीना।

इस्तिबाहत (استباحت) अ. स्त्री.–धर्म विहित करना, उचित करना, हलाल करना, जायज़ करना, मुवाह करना।

इस्तिब्आद (استبعاد) अ. पुं.–दूर हटना, अलग होना; दूर जानना।

इस्तिब्क़ा (استبقا) अ. पुं.–बाक़ी रखना, बाक़ी बचाना, शेष छोड़ देना।

इस्तिब्ता (استبطا) अ. पुं.–देर करना, ढील करना, विलंब करना।

इस्तिब्दाद (استبداد) अ. पुं.–अकेले किसी काम में लगना और किसी की बात न मानना; अत्याचार, ज़ुल्म।

इस्तिब्रा (استبرا) अ. पुं.–दोष से अलग रहने की इच्छा; पवित्रता, शुद्धि।

इस्तिब्शार (استبشار) अ. पुं.–अच्छी खबर पूछना; शुभ समाचार सुनने की इच्छा।

इस्तिब्सार (استبصار) अ. पुं.–दिव्य दृष्टि, बीनाई, बसारत; बुद्धिमत्ता, दानाई।

इस्तिमाअ (استماع) अ. पुं.–सुनना, श्रवण।

इस्तिमालत (استمالت) अ. स्त्री.–अपनी ओर आकृष्ट करना; अपने से राज़ी करना।

इस्तिम्ज़ाज (استمزاج) अ. पुं.–अनुमति लेना, राय पूछना; आज्ञा, इजाज़त; मर्ज़ी, अनुमति।

इस्तिम्ताअ (استمتاع) अ. पुं.–लाभ-प्राप्ति की इच्छा करना, नफ़ा चाहना; नफ़े की तलाश।

इस्तिम्दाद (استمداد) अ. पुं.–सहायता चाहना, मदद माँगना; सहायता, मदद।

इस्तिम्ना (استمنا) अ. पुं.–वीर्यपात करने की इच्छा, मनी ख़ारिज करना।

इस्तिम्ना बिलयद (استمنا بالید) अ. पुं.–हाथ से इंद्रिय-संचालन करके वीर्यपात करना, हस्तमैथुन, हथलस।

इस्तिम्रार (استمرار) अ. पुं.–नित्यता, हमेशगी; निरंतरता, लगातारपन, तसल्सुल।

इस्तिम्रारी (استمراری) अ. वि.–जो सदा के लिए हो, स्थायी; माज़ी अर्थात् भूतकाल का एक प्रकार, 'इस्तमरारी' भी प्रचलित।

इस्तिम्साक (استمساک) अ. पुं.–रोकने की इच्छा करना, रोकना; रोक, निरोध, रुकावट; चंगुल मारना।

इस्तियाद (اصطیاد) अ. पुं.–शिकार मारना, शिकार खेलना; शिकार, आखेट।

इस्तिराक (استراق) अ. पुं.–चोरी से छिपकर किसी की बातें सुनना, कनसुए लेना।

इस्तिरादः (استرادہ) अ. पुं.–फिरना, पलटना।

इस्तिराहत (استراحت) अ. स्त्री.–सुख चाहना, आराम की इच्छा करना; सुख, चैन, विश्राम, आराम।

इस्तिर्ख़ा (استرخا) अ. पुं.–ढीला हो जाना; शरीर के किसी अंग का ढीला और शिथिल हो जाना; ढीलापन।

इस्तिर्ख़ाए आ'साब (استرخاے اعصاب) अ. पुं.–पट्ठों का ढीला पड़ जाना।

इस्तिर्ख़ास (استرخاص) अ. पुं.–जाने की आज्ञा लेना, विदा लेना; सस्ता मोल लेना।

इस्तिर्ज़ा (استرضا) अ. पुं.–अनुमति लेना, मर्ज़ी पूछना; राय, अनुमति, मर्ज़ी।

इस्तिर्जाअ (استرجاع) अ. पुं.–दी हुई चीज़ वापस माँगना; 'इन्ना लिल्लाह' पढ़ना।

इस्तिर्दाद (استرداد) अ. पुं.–लौटा लेना, वापस माँग लेना।

इस्तिर्हाब (استرهاب) अ. पुं.–डराना, भयभीत करना।

इस्तिलाम (استلام) अ. पुं. हाथ या मुँह से पत्थर चूमना।

इस्तिलाम (اصطلام) अ. पुं.–जड़ से उखेड़ना, उन्मूलन।

इस्तिलाह (اصطلاح) अ. स्त्री.–परस्पर संधि करना; किसी शब्द का वह अर्थ जो किसी शास्त्र विशेष में किसी निर्दिष्ट भाव या उद्देश्य के लिए संकेत मान लिया गया हो, परिभाषा।

इस्तिलाहात (اصطلاحات) अ. स्त्री.–परिभाषिक शब्दावली, इस्तिलाही लफ़्ज़ों का मजमूआ।

इस्तिलाही (اصطلاحی) अ. वि.–पारिभाषिक, परिभाषा-वाला शब्द।

इस्तिल्क़ा (استلقا) अ. पुं.–पेट के बल लेटना, चित लेटना।

इस्तिल्ज़ाज़ (استلذاذ) अ. पुं.–स्वाद ग्रहण करना, मज़ा लेना; आनंद लेना, लुत्फ़ उठाना।

इस्तिवा (استوا) अ. पुं.–समानता, बराबरी; दोपहर का समय, मध्याह्न; विषुवत रेखा, भूमध्य रेखा, ख़त्ते इस्तिवा।

इस्तिव्ज़ार (استوزار) अ. पुं.–विज़ारत चाहना, मंत्री के पद की इच्छा करना।

इस्तिशारः (استشارہ) अ. पुं.–परामर्श करना, सलाह-मशवरा करना।

इस्तिशारत (استشارت) अ. स्त्री.–दे. 'इस्तिशारः'।

इस्तिश्आर (استشعار) अ. पुं.–मन ही मन में डरना।

इस्तिश्फ़ाअ (استشفاع) अ. पुं.–सिफ़ारिश चाहना, अनुशंसा-याचना।

इस्तिश्माम (استشمام) अ. पुं.–सूँघना।

इस्तिश्हाद (استشهاد) अ. पुं.–गवाही चाहना, गवाह माँगना, साक्षी-याचना।

इस्तिश्हादनामः (استشهادنامہ) अ. फा. पुं.–प्रमाणपत्र, सनद, डिप्लोमा, सर्टिफिकेट।

इस्तिसा (استصا) अ. पुं.–स्वास्थ्य चाहना।

इस्तिस्आद (استسعاد) अ. पुं.–कल्याण चाहना, भलाई चाहना; सहायता चाहना, मदद चाहना।

इस्तिस्क़ा (استسقا) अ. पुं.–पानी माँगना; तृष्णा, पिपासा, प्यास; वर्षा चाहना; जलंधर, जलोदर।

इस्तिस्क़ाए ज़िक़्क़ी (استسقاے زقی) अ. पुं.–वह जलंधर जिसमें सारा शरीर सूजकर मश्क जैसा हो जाता है।

इस्तिस्क़ाए तब्ली (استسقاے طبلی) अ. पुं.–वह जलंधर जिसमें केवल पेट नक़्क़ारे की भाँति फूल जाता है।

इस्तिस्ना (استثنا) अ. पुं.–बहुत में से किसी वस्तु को अलग कर देना; किसी व्यापक नियम में से किसी की मुक्ति, अपवाद।

इस्तिस्मार (استثمار) अ. पुं.–पेड़ के नीचे से मेवा चुनना; फल चाहना।

इस्तिस्लाम (استسلام) अ. पुं.–शांति चाहना; क्षमा चाहना; गर्दन झुकाना, आज्ञा मानना।

इस्तिस्लाह (استصلاح) अ. पुं.–परामर्श लेना, सलाह पूछना।

इस्तिस्वाब (استصواب) अ. पुं.–यथार्थता की तलाश; ठीक-ठीक बात जानने की इच्छा; स्वीकृति लेना।

इस्तिस्वाबे राए (استصواب راے) अ. पुं.–किसी विषय में ठीक-ठीक राय जानना चाहना; राय लेना, वोट लेना, मतादान।

इस्तिहाज़: (استحاضہ) अ. पुं.–मासिक धर्म अधिक मात्रा में आने का रोग, अति रजस्राव, अत्यार्तव।

इस्तिहानत (استہانت) अ. स्त्री.–अपमानित और तिरस्कृत जानना।

इस्तिहाल: (استحالہ) अ. पुं.–किसी वस्तु की प्राप्ति असंभव होना; एक दशा से दूसरी दशा में जाना; बहाना करना।

इस्तिहालत (استحالت) अ. स्त्री.–दे. 'इस्तिहाल:'।

इस्तीआब (استیعاب) अ. पुं.–आदि से अंत तक सब ले लेना; किसी पुस्तक को आदि से अंत तक पढ़ना; जड़ से उखेड़ना, उन्मूलन।

इस्तीजाब (استیجاب) अ. पुं.–योग्य होना, पात्र होना, अधिकारी होना, मुस्तहक़ होना।

इस्तीनाफ़ (استیناف) अ. पुं.–नये सिरे से आरंभ करना; शुरू से लेना; अपील।

इस्तीनास (استیناس) अ. पुं.–किसी से प्रेम-व्यवहार करना; प्रेम, मुहब्बत; किसी बात की आदत पड़ जाना।

इस्तीफा (استیفا) अ. पुं.–सब ले लेना; अपना पूरा हक़ लेना। दे० 'इस्तेफ़ा'।

इस्तीला (استیلا) अ. पुं.–किसी पर विजय पाना, किसी पर ग़ालिब होना।

इस्तीलाद (استیلاد) अ. पुं.–संतान होने की इच्छा करना।

इस्तीलाफ़ (استیلاف) अ. पुं.–किसी से प्रेम की इच्छा करना।

इस्तीसाक़ (استیثاق) अ. पुं.–दृढ़ता चाहना, मज़बूत बनाने की इच्छा करना।

इस्तीसाल (استیصال) अ. पुं.–जड़ से उखेड़ फेंकना, उन्मूलन, समूल विनाश।

इस्ते'जाब (استعجاب) अ. पुं.–आश्चर्य प्रकट करना, तअज्जुब करना; आश्चर्य, तअज्जुब।

इस्ते'जाल (استعجال) अ. पुं.–किसी बात में शीघ्रता चाहना; दौड़ना, भागना, जल्दी करना।

इस्ते'ताफ़ (استعطاف) अ. पुं.–दयादृष्टि चाहना, मेहरबानी चाहना; किसी का दिल मुट्ठी में लेना।

इस्ते'दाद (استعداد) अ. पुं.–योग्यता, पात्रता, क़ाबिलीयत; विद्वत्ता, इल्मीयत; किसी चीज़ से प्रभावित होने की योग्यता।

इस्ते'फ़ा (استعفا) अ. पुं.–क्षमा चाहना; नौकरी का त्याग; त्यागपत्र, टर्मिनेशन आफ सर्विस।

इस्ते'बाद (استعباد) अ. पुं.–दास बनाना, ग़ुलामी में लेना।

इस्ते'माल (استعمال) अ. पुं.–प्रयोग करना, बरतना; औषध आदि खाना, सेवन करना।

इस्ते'माश (استعماش) अ. पुं.–दृष्टि कम हो जाना, आँख से कम नज़र आना।

इस्ते'ला (استعلا) अ. पुं.–ऊँचा होना, बलंद होना; प्रतिष्ठित होना, बड़ा होना।

इस्ते'लाज (استعلاج) अ. पुं.–चिकित्सा कराना, इलाज कराना; खाल का कड़ा हो जाना।

इस्ते'लाम (استعلام) अ. पुं.–सूचना चाहना, जानने की ख़्वाहिश।

इस्तेह्क़ाक़ (استحقاق) अ. पुं.–अपना हक़ माँगना, जाइज़ हक़ चाहना; हक़ साबित करना; हक़, स्वत्व।

इस्तेह्काम (استحکام) अ. पुं.–दृढ़ता, मज़बूती; स्थिरता, पायदारी।

इस्तेह्क़ार (استحقار) अ. पुं.–अपमान करना, हक़ीर जानना; अपमान, हक़ारत; निंदा, बुराई।

इस्तेह्ज़ा (استہزا) अ. पुं.–हँसी उड़ाना, ठठोल करना; हँसी, मज़ाक़, खिल्ली, मख़ौल।

इस्तेह्ज़ार (استحضار) अ. पुं.–याद रखना, स्मरण रखना; किसी के सामने रहने की इच्छा; किसी को सामने रखने की इच्छा।

इस्तेह्फ़ाज़ (استحفاظ) अ. पुं.–निरीक्षण करना, निगरानी करना; निगरानी, निरीक्षण।

इस्तेह्बाब (استحباب) अ. पुं.–अच्छा जानना, पसंद करना।

इस्तेह्माम (استحمام) अ. पुं.–हम्माम में नहाना; किसी चीज़ की भाप लेना।

इस्तेह्लाफ़ (استحلاف) अ. पुं.–शपथ लेना, कसम खिलाना।

इस्तेह्लाल (استہلال) अ. पुं.–नया चाँद देखना; बच्चे का पैदा होते समय रोना; व्यक्त होना, ज़ाहिर होना।

इस्तेह्सा (استحصا) अ. पुं.–गिनना, शुमार करना; क्रमबद्ध करना, तर्तीब से लगाना।

इस्तेह्सान (استحسان) अ. पुं.–अच्छा जानना; पसंद करना; उपकार, भलाई।

इस्तेह्सार (استحصار) अ. पुं.–निर्भर करना, मुन्हसिर करना; गिनना, हिसाब करना।

इस्तेह्साल (استحصال) अ. पुं.–प्राप्त करना, लेना, हासिल करना।

इस्तेह्साल बिलजब्र (استحصال بالجبر) अ. पुं.–ज़बरदस्ती छीनना, बलात् अपहरण।

इस्दाक़ (اصداق) अ. पुं.–किसी की बात की तस्दीक़ करना।

इस्ना अशर (اثنا عشر) अ. वि.–बारह, द्वादश; बारह इमाम।

इस्ना अशरी (اثنا عشری) अ. वि.–बारह इमामों को माननेवाला, शीआ।

इस्नाद (اسناد) अ. पुं.–एक चीज़ को दूसरी चीज़ का सहारा देना; एक चीज़ का दूसरी चीज़ से सम्बन्ध जोड़ना; सनद देना।

इस्नान (اصنان) अ. पुं.–बग़ल से दुर्गंध आने का रोग, गंदा बग़ल।

इस्पंज (اسپنج) फा. पुं.–एक मरा हुआ समुद्री कीड़ा जो पानी सोखने के काम आता है।

इस्पंद (اسپند) फा. पुं.–एक तरह के दाने जो दवा में चलते हैं और नज़र उतारने के लिए जलाये जाते हैं, काला दाना।

इस्परक (اسپرک) फा. पुं.–एक घास जिससे कपड़ा रँगा जाता था, स्पृक्का।

इस्पह्बद (اسپہبد) फा. पुं.–सेनापति, सिपहसालार।

इस्पानाख़ (اسپاناخ) फा. पुं.–पालक का साग।

इस्फ़ंजः (اسفنجہ) अ. पुं.–दे. 'इस्पंज'।

इस्फ़ंज (اسفنج) अ. पुं.–दे. 'इस्पंज'।

इस्फ़ंदयार (اسفندیار) फा. पुं.–ईरान का एक बहुत बहादुर बादशाह जिसे रुस्तम ने अंधा करके मारा था।

इस्फ़ंदार (اسفندار) फा. पुं.–ईरानी बारहवाँ महीना।

इस्फ़हान (اصفہان) फा. पुं.–ईरान का एक प्राचीन और प्रसिद्ध नगर।

इस्फ़ानाख़ (اسفاناخ) अ. पुं.–पालक का साग, दे. 'इस्पानाख़'।

इस्फ़ार (اسفار) अ. पुं.–प्रकाशित होना, रौशन होना।

इस्फ़ार (اصفار) अ. पुं.–दरिद्र होना, कंगाल होना।

इस्फ़ाह (اصفاح) अ. पुं.–याचक के प्रश्न को टाल जाना, माँगनेवाले को कुछ न देना; किसी वस्तु को फैलाना।

इस्फ़िरार (اصفرار) अ. पुं.–पीला होना; पीलापन।

इस्फ़ेदबाज (اسفیدباج) अ. पुं.–मरीज़ों के लिए बे मसाले के गोश्त का शोरबा।

इस्फ़ेदाज (اسفیداج) अ. पुं.–सफ़ेदा काश्ग़री।

इस्बा' (اصبع) अ. पुं.–अँगुली, उँगली।

इस्बाग़ (اسباغ) अ. पुं.–पूरा करना, पूर्ति करना; समाप्त करना, ख़त्म करना।

इस्बात (اثبات) अ. पुं.–प्रमाणित करना, साबित करना।

इस्बाते जुर्म (اثبات جرم) अ. पुं.–अपराध साबित करना।

इस्बाल (اسبال) अ. पुं.–कपड़े उतारना, जारी करना।

इस्बाह (اصباح) अ. पुं.–सवेरा करना; एक दशा से दूसरी दशा में परिवर्तित होना; सवेरे (तड़के) जाना।

इस्म (اثم) अ. पुं.–पाप, पातक, गुनाह; बदी, बुराई।

इस्म (اسم) अ. पुं.–नाम, संज्ञा।

इस्मत (عصمت) अ. स्त्री.–सतीत्व, पातिव्रत्य, पाक‌दामनी, नामूस, 'अस्मत' भी प्रचलित।

इस्मतदर (عصمت در) अ. फा. वि.–सतीत्व हरण करनेवाला, बलात्कारी।

इस्मतदरी (عصمت دری) अ. फा. स्त्री.–सतीत्व-हरण, बलात्कार, आबरूरेज़ी।

इस्मत फ़रोश (عصمت فروش) अ. फा. वि.–अपना सतीत्व बेचनेवाली—पुंश्चली, फ़ाहिशा; गणिका, वेश्या, वारांगना।

इस्मत फ़रोशी (عصمت فروشی) अ. फा. स्त्री.–रुपया लेकर सतीत्व बेचना, वेश्याकर्म, पेशा।

इस्मत मआब (عصمت مآب) अ. वि.–अपने सतीत्व की रक्षा करनेवाली, सती, साध्वी।

इस्मत मआबी (عصمت مآبی) अ. स्त्री.–अपने सतीत्व की रक्षा, सतीत्व-पालन।

इस्माअ (اسماع) अ. पुं.–सुनाना; गाली बकना; गाना गाना।

इस्मार (اثمار) अ. पुं.–फल लाना।

इस्मिद (اثمد) अ. पुं.–सुरमा, एक पत्थर, जिसका अंजन बनता है।

इस्मे आज़म (اسم اعظم) अ. पुं.–महामंत्र।

इस्मे जामिद (اسم جامد) अ. पुं.–वह संज्ञा जो किसी से बनी न हो, रूढ़ि।

इस्मे नकिरः (اسم نکرہ) अ. पुं.–जातिवाचक संज्ञा।

इस्मे मा'रिफ़ः (اسم معرفہ) अ. पुं.–व्यक्तिवाचक संज्ञा।

इस्याँ (عصیاں) अ. पुं.–इसयान् का लघु रूप, दे. 'इस्यान', पाप, "मेरे इस्याँ से ज़ियादह रहमतों में जोश है, मैं नदामत-पेश हूँ, मौला नदामत-पोश है।"

इस्याँकार (عصیاں کار) अ. फा. वि.–पापजीवी, पाप में जीवन व्यतीत करनेवाला, पातकी।

इस्याँ शिआर (عصیاں شعار) अ. फा. वि.–दे. 'इस्याँकार'।

इस्यान (عصیان) अ. पुं.–पाप, अघ, पातक, गुनाह; अवज्ञा, नाफ़र्मानी।

इस्रा (اسرا) अ. पुं.–रात्रि में यात्रा करना, रात में रस्ता चलना।

इस्राईल (اسرائیل) अ. पुं.–हजरत यूसुफ़ के पूज्य पिता हज़रत याक़ूब का नाम।

इस्राईलो (اسرائیلی) अ. वि.–हज़रत याक़ूब के मत का अनुयायी, यहूदी।

इस्राफ़ (اسراف) अ. पुं.–आवश्यकता से अधिक व्यय, अपव्यय, फ़ुज़ूलख़र्ची।

इस्राफ़ (اصراف) अ. पुं.–व्यय करना, ख़र्च करना; व्यय, ख़र्च।

इस्राफ़ील (اسرافیل) अ. पुं.–वह फ़िरिश्ता जो क़यामत में सूर फूँकेगा।

इस्रार (اسرار) अ. पुं.–छिपाना, गुप्त करना; भेद बताना; भेद, राज़।

इस्रार (اصرار) अ. पुं.–बार-बार कहना; हठ करना, ज़िद करना; हठ, ज़िद।

इस्लाख़ (اسلاخ) अ. पुं.–खाल उतारना, खाल खींचना।

इस्लाफ़ (اسلاف) अ. पुं.–आगे भेजना।

इस्लाम (اسلام) अ. पुं.–शांति चाहना; ईश्वराज्ञा के आगे सर झुकाना; इसलाम धर्म।

इस्लामी (اسلامی) अ. वि.–इसलाम धर्म सम्बन्धी; मुसलमानों का।

इस्लामीयात (اسلامیات) अ. स्त्री.–इसलामी साहित्य।

इस्लाल (اسلال) अ.पुं.–घूँस देना, रिशवत देना; चोरी करना।

इस्लाह (اصلاح) अ. स्त्री.–बिगड़ी हुई अवस्था का सुधार, त्रुटियाँ दूर करना, शुद्धि; संशोधन, तर्मीम; काव्य या लेख की त्रुटियों की शुद्धि।

इस्लाहात (اصلاحات) अ. स्त्री.–'इस्लाह' का बहु., 'इस्लाहें'।

इस्लाही (اصلاحی) अ. वि.–सुधार सम्बन्धी; शुद्ध किया हुआ।

इस्हाक़ (اسحاق) अ. पुं.–एक पैग़म्बर, जो हज़रत इब्राहीम के सुपुत्र थे।

इस्हाब (اسہاب) अ. पुं.–बहुत बोलना; जंगल में फिरना।

इस्हाल (اسہال) अ. पुं.–दस्त, शौच, पतला, पाख़ाना; दस्तों की बीमारी, अतिसार।

इहातः (احاطہ) अ. पुं.–घर, वेष्ठन; चारदीवारी, प्राचीर; प्रदेश, इलाका; क्षेत्र, हल्का (अहाता)।

इहानत (اهانت) अ. स्त्री.–अपमान, तिरस्कार, अनादर, बेइज़्ज़ती; मानहानि, हत्के इज़्ज़त।

ई

ईं (این) फा. अव्य.–यह, यह वस्तु, यह व्यक्ति।

ईंचुनी (این چنین) फा. अव्य.–इस प्रकार, ऐसे।

ईंनां (اینان) फा. अव्य.–यह सब, 'ईं' का बहु.।

ईंहा (این ها) फा. अव्य.–यह सब, ईं का बहु.।

ईआज़ (ایعاز) अ. पुं.–संकेत करना, इशारा करना; आदेश देना, हुक्म करना।

ईआद (ایعاد) अ. पुं.–वचन देना, वादा करना।

ईक़ाअ (ایقاع) अ. पुं.–घटित करना, वाक़े' करना; युद्ध में घसीटना।

ईक़ाज़ (ایقاظ) अ. पुं.–नींद से उठाना, जगाना।

ईक़ाद (ایقاد) अ. पुं.–चिराग़ जलाना, दिया बारना।

ईक़ान (ایقان) अ. पुं.–निश्चय, यक़ीन; किसी बात पर दृढ़ विश्वास।

ईक़ाफ़ (ایقاف) अ. पुं.–ठहराना, रोकना; पदच्युत करना, मुअत्तल करना।

ईकार (ایقار) अ. पुं.–बोझ लादना; भारी करना।

ईकाल (ایکال) अ. पुं.–खाना खिलाना; आलोचना करना।

ईक़ास (ایقاص) अ. पुं.–जड़ से उखेड़ना।

ईख़ाश (ایخاش) अ. पुं.–ख़राब होना, दूषित होना।

ईग़ार (ایغار) अ. पुं.–गरम करना, खौलाना, औंटाना।

ईज़ा (ایزا) अ. स्त्री.–कष्ट देना, दुःख देना; कष्ट, पीड़ा, यातना, तकलीफ़।

ईजाज़ (ایجاز) अ. पुं.–संक्षिप्त करना; संक्षेप, इख़्तिसार; बड़े लेख को छोटा करना।

ईजाद (ایجاد) अ. स्त्री.–नयी बात पैदा करना; आविष्कार, इख़्तिराअ।

ईज़ाद (ایزاد) अ. पुं.–अधिकता, ज़ियादती (यह शब्द इस अर्थ में अशुद्ध है)।

ईजादेबंदः (ایجادبندہ) अ. फा. स्त्री.–मनगढ़ंत, कपोल-कल्पित।

ईज़ादेही (ایذادہی) अ. फा. स्त्री.–कष्ट देना, दुःख पहुँचाना।

ईज़ान (ایزان) अ. पुं.–सूचना देना, चेतावनी देना, आगाह करना, ख़बरदार करना।

ईजाब (ایجاب) अ. पुं. अनिवार्य करना, वाजिब करना।

ईजाबोक़बूल (ایجاب و قبول) अ. पुं.–निकाह के समय, दूल्हा दुल्हन का एक दूसरे को स्वीकार करना।

ईजार (ایجار) अ. पुं.–किराए पर उठाना।

ईज़ारसाँ (ایزارساں) अ. फा. वि.–कष्ट देनेवाला, दुःखदायी।

ईज़ारसानी (ایزارسانی) अ. फा. स्त्री.–कष्ट देना, दुःख देना, तकलीफ़ पहुँचाना।

ईजाल (ایجال) अ. पुं.–त्रासना, डराना, भयभीत करना।

ईजास (ایجاس) अ. पुं.–मन में डरना, भयभीत होना।

ईज़ाह (ایضاح) अ. पुं.–प्रकाशित करना, रौशन करना; स्पष्ट करना, वाज़ेह करना।

ईता (ایطا) अ. पुं.–पाँव तले रौंदना; क़ाफ़िए का एक दोष, जिसमें दो शब्दों को जो सानुप्रास न हों कोई अक्षर या शब्द बढ़ाकर क़ाफ़िया बनाना, जैसे—'उठ' और 'गिर' से 'उठा' और 'गिरा' बनाना।

ईताअ (ایناع) अ. पुं.–फल का वृक्ष में पकना।

ईताए ख़फ़ी (ایطاےخفی) अ. पुं.–ईता की वह क़िस्म जिसमें उसका दोष हलका हो, जैसा कि ऊपर के उदाहरण में दिये गये 'उठा' और 'गिरा' के क़ाफ़िए।

ईताए जली (ایطاےجلی) अ. पुं.–ईता की वह क़िस्म जिसमें उसका दोष भारी हो, जैसे 'ख़ुशतर' और 'बेहतर' के क़ाफ़िए जिनमें 'ख़ुश' और 'बेह' पर जो सानुप्रास नहीं हैं 'तर' बढ़ाया गया है।

ईतान (ایتان) अ. पुं.–आगमन, आना।

ईतान (ایطان) अ. पुं.–किसी दूसरी जगह को अपना वतन बनाना, प्रवास।

ईतिनाफ़ (ایتناف) अ. पुं.–नये सिरे से कोई काम करना।

ईतिमान (ایتمان) अ. पुं.–अमानतदार बनाना।

ईतिमार (ایتمار) अ. पुं.–परस्पर परामर्श करना; आज्ञा-पालन करना; काम बनाना।

ईतिलाक़ (ایتلاق) अ. पुं.–चमकना, प्रकाशमान होना, रौशन होना।

ईतिलाफ़ (ایتلاف) अ. पुं.–एकत्र होना, एक जगह होना; मेल-जोल होना; मित्रता, दोस्ती।

ईद (عید) अ. स्त्री.–हर्ष, आनंद, ख़ुशी; मुसलमानों का एक त्योहार। यह शब्द ऊद (عود) से बना है, अर्थात् प्रतिवर्ष आनेवाला।

ईदगाह (عیدگاہ) अ.फा. स्त्री.–ईद की नमाज़ पढ़ने का स्थान।

ईदर (ایدر) फा. अव्य.–इधर; अब; यहाँ।

ईदी (عیدی) अ. स्त्री.–ईद से सम्बन्धित; पढ़ानेवाले मुल्ला को ईद का इन्आम।

ईदुल अज़्हा (عیدالاضحی) अ. स्त्री.–दे. 'ईदे क़ुर्बां' जो मास (ذوالحجہ') की दस तारीख़ को होती है।

ईदुल फ़ित्र (عیدالفطر) अ. स्त्री.–वह ईद जो रोज़े पूरे होने की ख़ुशी में मनायी जाती है और जिसमें सिवैयाँ पकती हैं। यह तारीख़ पहली शव्वाल को होती है।

ईदे अज़्हा (عید اضحی) अ. स्त्री.–दे. 'ईदे क़ुर्बां'।

ईदे क़ुर्बां (عید قرباں) अ. स्त्री.–वह ईद जो हज की ख़ुशी में मनायी जाती है और जिसमें क़ुर्बानी होती है, बक़्रीद।

ईदे रमज़ाँ (عید رمضاں) अ. स्त्री.–दे. 'ईदुल फ़ित्र'।

ईदैन (عیدین) अ. स्त्री.–दोनों ईदें, ईद और बक़्रीद।

ईन (عین) अ. स्त्री.–'ऐना' का बहु., काली आँखों वाली स्त्रियाँ।

ईनक (اینک) अ. अव्य.–यह, समीपवर्ती।

ईनत (اینت) फा. अव्य.–साधु-साधु, वाह-वाह; ओहो, बहुत अजीब।

ईनाँ (ایناں) फा. अव्य.–दे. 'ईंनाँ'।

ईनास (ایناس) अ. पुं.–अभ्यस्त होना, आदत पड़ जाना; जानना; सुनना; देखना।

ईफ़ा (ایفا) अ. पुं.–वचन पूरा करना, प्रतिज्ञा-पालन।

ईफ़ाअ (ایفاع) अ. पुं.–लड़के का बालिग़ होना; ऊँचा होना, उठना।

ईफ़ाए अह्द (ایفاے عہد) अ. पुं.–वचन या प्रतिज्ञा का पालन।

ईफ़ाए क़ौल (ایفاے قول) अ. पुं.–बात का पालन।

ईफ़ाए वा'दः (ایفاےوعدہ) अ. पुं.–प्रतिज्ञा का पालन, बात निबाहना।

ईफ़ाग़ (ایفاغ) अ. पुं.–दे. 'ऐफ़ाग़'।

ईफ़ाल (ایفال) अ. पुं.–रोगमुक्त होना; जल्दी जाना।

ईबा (ایبا) अ. पुं.–संकेत, इशारा।

ईबास (ایباس) अ. पुं.–सुखाना, ख़ुश्क करना।

ईमाँ (ایماں) अ. पुं.–ईमान का लघु. दे. 'ईमान'।

ईमाँ फ़रोश (ایماں فروش) अ. फा. वि.–बेईमानी करनेवाला, ईमान बेचनेवाला।

ईमाँ फ़रोशी (ایماں فروشی) अ. फा. स्त्री.–ईमान बेचना, बेईमानी करना।

ईमा (ایما) अ. पुं.–संकेत, इंगित, इशारा।

ईमान (ایمان) अ. पुं.–धर्म पर दृढ़ विश्वास; धर्म, मज़हब; विश्वास, यक़ीन; पथ, पंथ, अक़ीदा।

ईमानदार (ایماندار) अ. फा. वि.–जो धर्म में पक्का हो, धर्मनिष्ठ; जो लेन-देन में सच्चा हो, व्यवहारनिष्ठ।

ईमानदारानः (ایماندارانہ) अ. फा. वि.–ईमानदारों जैसा, ईमानदारी का।

ईमानदारी (ایمانداری) अ. फा. स्त्री.–धर्मनिष्ठता; व्यवहारनिष्ठता।

ईमान फ़रोश (ایمانفروش) अ. फा. वि.–जो अपना ईमान बेच दे, बेईमान, ग़द्दार।

ईमान फ़रोशी (ایمانفروشی) अ. फा. स्त्री.–ईमान बेच देना, बेईमानी करना, बेईमानी, ग़द्दारी।

ईमान बिलग़ैब (ایمان بالغیب) अ. पुं.–बिना देखे किसी बात पर विश्वास; अनदेखे ईश्वर पर निष्ठा।

ईमाने कामिल (ایمان کامل) अ. पुं.–पक्का ईमान, पूर्ण धर्मविश्वास।

ईयल (ایل) अ. पुं.–बारहसिंगा, हरिण की एक जाति।

ईयास (ایاس) अ. पुं.–निराश करना, नाउम्मीद करना।

ईर (عیر) अ. पुं.–यात्रीदल, क़ाफ़िला; हर जानवर जिस पर नाज लादा जाय।

ईरां (ایراں) फा. पुं.–'ईरान' का लघु., दे. 'ईरान'।

ईरा (ایرا) अ. पुं.–आग जलाना; चिमटे से आग निकालना।

ईराक़ (ایراق) अ. पुं.–वृक्ष में से हरे पत्ते फूटना, कोंपल निकलना।

ईराद (ایراد) अ. पुं.–लागू करना, वारिद करना; आपत्ति उपस्थित करना, एतंराज़ करना।

ईरान (ایران) फा. पुं.–एशिया का एक प्रसिद्ध देश, फ़ार्स, फ़ारस।

ईरानी (ایرانی) फा. वि.–ईरान का निवासी, ईरान से सम्बन्धित।

ईरास (ایراس) अ. पुं.–पेड़ के पत्ते पीले होना।

ईरास (ایراث) अ. पुं.–अपना उत्तराधिकारी बनाना; दाय (रिक़्थ) देना, तरिकः पहुँचाना; किसी को शेष वस्तु देना।

ईर्मान (ایرمان) अ. पुं.–जो बे बुलाये किसी दूसरे निमंत्रित व्यक्ति के साथ दावत में जाय, तुफ़ैली; लज्जा, शर्म; पश्चात्ताप, अफ़सोस।

ईर्सा (ایرسا) अ. स्त्री.–इंद्रधनुष, धनक; सौसन की जड़ जो दवा में चलती है।

ईल (ایل) तु. पुं.–वर्ष, साल; वशीभूत, ताब'दार; मित्र, दोस्त; अनुकूल, मुआफ़िक़।

ईल (ایل) सु. पुं.–ईश्वर, ख़ुदा।

ईला (ایلا) अ. पुं.–दान देना, बख़्शना; पास होना; शपथ खाना।

ईलाक़ात (ایلاقات) तु. पुं.–तुर्कों के रहने के मकानात और उनकी खेतों की ज़मीन आदि।

ईलाज (ایلاج) अ. पुं.–एक वस्तु को दूसरी वस्तु के अन्दर घुसेड़ना।

ईलाद (ایلاد) अ. पुं.–बच्चा पैदा करना, जनना।

ईलाफ़ (ایلاف) अ. पुं.–अभ्यस्त होना, आदी होना; रुष्ट होना, बेज़ार होना।

ईलाम (ایلام) अ. पुं.–दुःखित करना, कष्ट देना।

ईलिया (ایلیا) सु. पुं.–बहुत सच्चा।

ईवा (ایوا) अ. पुं.–बसाना, आबाद करना; स्थान देना, जगह देना।

ईवान (ایوان) फा. पुं.–प्रासाद, भवन, महल; परिषद्, कौंसिल।

ईवाने ज़ेरीं (ایوان زیریں) फा. पुं.–निम्न सदन, लोअर हाउस।

ईवाने बाला (ایوان بالا) फा. पुं.–उच्च सदन, अपर हाउस।

ईवाने शाही (ایوان شاہی) फा. पुं.–राजभवन, राजद्वार, शाही महल।

ईशः (عیشہ) अ. पुं.–चैन और सुख का जीवन।

ईश (ایش) अ. पुं.–गुप्तचर, जासूस।

ईशाअ (ایشاع) अ. पुं.–पेड़ में कलियाँ निकलना।

ईस (عیس) अ. पुं.–सफ़ेद ऊँट, जिनकी सफ़ेदी में लालिमा हो।

ईस (عیص) अ. पुं.–पेड़ों का झुंड; भीड़, अंबोह।

ईसवी (عیسوی) अ. वि.–हज़रत ईसा से सम्बन्धित वस्तु, जैसे–ईसवी सन्।

ईसा (ایصا) अ. पुं.–उत्तराधिकारी बनाना, अपने बाद अपना वारिस बनाना; उपदेश देना, वसीयत करना।

ईसा (عیسیٰ) अ. पुं.–हज़रत ईसा, ईसा मसीह, ईसाई धर्म के संस्थापक।

ईसाई (عیسائی) अ. वि.–हज़रत ईसा के धर्म का अनुयायी, ख्रिष्टीय, क्रिश्चियन।

ईसाद (ایصاد) अ. पुं.–पर्दा डालना, ढाँकना, छिपाना; दरवाज़ा बन्द करना।

ईसानफ़स (عیسیٰ نفس) अ. वि.–जिसकी फूंक से मृतक प्राणी जी उठें, मुर्दों को जीवन प्रदान करनेवाला।

ईसानफ़सी (عیسیٰ نفسی) अ. स्त्री.–मृतक प्राणियों को जीवित करना, मुर्दे जिलाना।

ईसार (ایثار) अ. पुं.–दूसरे के हित के लिए अपना हित त्याग देना, स्वार्थत्याग।

ईसार (ایسار) अ. पुं.–मालदार होना, धनवान् होना।

ईसारपेशः (ایثار پیشہ) अ. फा. वि.–जो दूसरों के लिए अपना हित सदा ही त्याग देता हो।

ईसाल (ایصال) अ. पुं.–पहुँचाना, भेजना।

ईसाले सवाब (ایصال ثواب) अ. पुं.–मुर्दों की रूह को क़ुरान पढ़ने या खाना खिलाने का सवाब पहुँचाना।

ईहाम (ایہام) अ. पुं.–भ्रम, भ्रांति, वहम; एक अर्थालंकार जिसमें ऐसा शब्द लाते हैं जिसके दो अर्थ होते हैं और पासवाला अर्थ छोड़कर दूरवाला अर्थ लगाते हैं।

उ

उंबूबः (انبوبہ) अ. पुं.–टोंटी, नली।

उंबूब (انبوب) अ. पुं.–उंबूबः का बहु., टोंटियाँ, नलियाँ।

उंस (انس) अ. पुं.–स्नेह, प्रेम, मुहब्बत; लगाव, तअल्लुक़।

उंसा (انثی) अ. स्त्री.–मादा, स्त्री।

उंसीयत (انسیت) अ. स्त्री.–स्नेह, मुहब्बत; लगाव, तअल्लुक़

उंसुर (عنصر) अ. पुं.–आग, पानी, हवा, मिट्टी, जिनसे आदमी का शरीर बना है, तत्त्व, भूत।

उंसुल (عنصل) अ. पुं.–जंगली पियाज़।

उक़द (عقد) अ. पुं.–'उक़्दः' का बहु., ग्रंथियाँ, गाँठें।

उक़ला (عقلا) अ. पुं.–'आक़िल' का बहु., बुद्धिमान् जन।

उक़ाब (عقاب) अ. पुं.–गरुड़, एक शिकारी चिड़िया।

उक़ाबीन (عقابین) अ. पुं.–लोहे के काँटे।

उक़ाबैन (عقابین) अ. पुं.–दो लम्बी लकड़ियाँ जिन पर अपराधियों को लटकाते थे।

उक़ार (عقار) अ. स्त्री.–मदिरा, शराब; एक प्रकार का लाल कपड़ा।

उकाशः (عکاشہ) अ. स्त्री.–मकड़ी, लूता।

उक़ूक़ (عقوق) अ. पुं.–माता-पिता की अवहेलना और अवज्ञा।

उक़ूल (عقول) अ. स्त्री.–'अक़्ल' का बहु., बुद्धियाँ, अक़्लें।

उक्काश (عکاش) अ. पुं.–मकड़ी, लूता।

उक़्दः (عقدہ) अ. पुं.–ग्रंथि, गुत्थी, गाँठ; जटिल समस्या, पेचीदा मसला।

उक़्दःकुशा (عقدہ کشا) अ. फा. वि.–गाँठ खोलनेवाला; समस्या हल करनेवाला; दुःख निवारण करनेवाला।

उक़्दःकुशाई (عقدہ کشائی) अ. फा. स्त्री.–गाँठ खोलना, समस्या हल करना; दुःख मेटना।

उक़्दए ला यन्हल (عقدۂ لاینحل) अ. पुं.–ऐसी गाँठ जो खुल न सके; ऐसी समस्या जो हल न हो सके।

उक्नूं (اکنوں) फा. अव्य.–अब, इस समय।

उक़्नूम (اقنوم) अ. पुं.–मूल, जड़; ईसाई धर्म की एक किताब जो तीन महान् ग्रंथों में से है।

उक़्बा (عقبی) अ. पुं.–परलोक, यमलोक, आख़िरत।

उक़्बान (عقبان) अ. पुं.–'उक़ाब' का बहु., बहुत से उक़ाब, गरुड़-समूह।

उक़्र (عقر) अ. पुं.–बाँझपन।

उक़्लः (عقلہ) अ. पुं.–बंद, बाँध, रोक; रमल की एक शक्ल।

उक़्लीदिस (اقلیدس) अ. स्त्री.–रेखागणित, ज्यामिति।

उक़्हुवान (اقحوان) अ. पुं.–एक वनस्पति, बाबूनः।

उख़्त (اخت) अ. स्त्री.–बहन, भगिनी।

उख़्दूद (اخدود) अ. पुं.–ज़मीन की लम्बी-लम्बी दर्ज़ें और खोहें।

उख़्रवी (اخروی) अ. वि.–परलोक सम्बन्धी, आख़िरत का; आख़िर का, अन्त का।

उख़्रा (اخری) अ. स्त्री.–आख़िरी, अंतिम।

उख़ुव्वत (اخوت) अ. स्त्री.–भाईचारा, बंधुत्व।

उग़ुल (اوغل) तु. पुं.–लड़का, बालक।

उग़्लूतः (اغلوطہ) अ. पुं.–कोई वस्तु या बात जिससे दूसरा भ्रम में पड़ जाय, धोखा।

उचुब (اوچوب) तु. वि.–विस्तृत, कुशादा।

उज़मा (عظما) अ. पुं.–अज़ीम का बहु., बड़े लोग, प्रतिष्ठित जन।

उजाक़ (اوجاق) तु. पुं.–चूल्हा, अँगीठी।

उजाग़ (اوجاغ) तु. पुं.–दे. 'उजाक़'।

उजाज (اجاج) अ. पुं.–खारा पानी; कड़वा नमक।

उज़ाद (عضاد) अ. पुं.–दरवाज़े में बाज़ू की लकड़ी।

उजाब (عجاب) अ. पुं.–आश्चर्य, विस्मय, तअज्जुब।

उज़ाम (عظام) अ. पुं.–'अज़ीम' का बहु., बड़े लोग, महान् अनेक व्यक्ति।

उजालः (عجالہ) अ. पुं.–वह वस्तु जो तुरन्त लायी जा सके।

उजालत (عجالت) अ. स्त्री.–दे. 'उजालः'।

उज़ुन (اذن) अ. पुं.–कान, कर्ण।

उजूबः (عجوبہ) अ. वि.–विलक्षण, विचित्र, अद्भुत, अजीबो ग़रीब।

उजूरः (اجورہ) अ. पुं.–मज़दूरी, पारिश्रमिक।

उज्जः (عجہ) अ. पुं.–अण्डे का ख़ागीनः, आमलेट।

उज्ज़ (عجز) अ. पुं.–श्रोणि, कटिदेश, चूतड़।

उज़्ज़ा (عزی) अ. पुं.–अरब की एक प्राचीन मूर्ति जिसकी पूजा होती थी।

उज़्ज़ाम (عظام) अ. पुं.–'अज़ीम' का बहु., बड़े लोग।

उज़्न (اذن) अ. पुं.–कान, कर्ण, दे. 'उज़ुन' दोनों शुद्ध हैं।

उज्ब (عجب) अ. पुं.–अहंकार, अभिमान, ग़ुरूर।

उज़्म (عزم) अ. पुं.–निश्चय, संकल्प, इरादा; दे. 'अज़्म', दोनों शुद्ध हैं।

उज़्म (اوزم) तु. पुं.–अंगूर, द्राक्षा।

उज़्र (عزر) अ. पुं.–आपत्ति, एतराज़; विवशता, मजबूरी।

उज्रत (اجرت) अ. स्त्री.–मज़दूरी, भृति, पारिश्रमिक।

उज़्रदार (عزردار) अ. फा. वि.–आपत्तिकर्ता, एतराज़ करनेवाला; क़ानूनी उज़्रदारी करनेवाला।

उज़्रदारी (عزرداری) अ. फा. स्त्री.–आपत्ति करना, उज़्र लगाना, किसी दूसरे के मुक़ाबले में अपने हक़ की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करना।

उज्रा (اجری) अ. पुं.–वृत्ति, वज़ीफ़ा।

उज़्रेज़नाँ (عزرزناں) अ. फा. पुं.–मासिक धर्म, हैज़।

उज़्रेलंग (عزرلنگ) अ. फा. पुं.–ऐसा उज़्र जिसे मानने में संदेह हो, झूठा उज़्र।

उज़्लत (عزلت) अ. स्त्री.–बाल-बच्चों से विरक्त होकर ईश्वर-स्मरण में लगना; एकान्तवास करना; एकान्त, तन्हाई।

उज्लत (عجلت) अ. स्त्री.–शीघ्रता, जल्दी, इसका शुद्ध उच्चारण 'इज्लत' है, परन्तु उर्दू में 'उज्लत' ही बोलते हैं।

उज़्लतगुज़ीं (عزلت گزیں) अ. फा. वि.–एकांतवासी, संसार के झगड़ों से विरक्त, गोशानशीन।

उज़्लतनशीं (عزلت نشیں) अ. फा. वि.–दे. 'उज़्लतगुज़ीं'।

उज़्व (عضو) अ. पुं.–अवयव, अंग, शरीर का कोई भाग।

उज़्हूकः (اضحوکہ) अ. वि.–वह जिस पर सब हँसें, हास्यास्पद।

उताक़ः (اتاقہ) तु.–कलग़ी।

उताक़ (اتاق) तु.–घर, गृह, मकान; कोठा, कमरा।

उताग़ (اتاغ) तु.–दे. 'उताक़'।

उतारिद (عطارد) अ. पुं.–बुध ग्रह।

उताश (عطاش) अ. स्त्री.–प्यास की बीमारी, वह रोग जिसमें प्यास अधिक लगे।

उतास (عطاس) अ. स्त्री.–छींकें आने का रोग; छींक।

उतुल [ल्ल] (عتل) अ. पुं.–बहुत खानेवाला; कड़ी आवाज़-वाला; अत्याचारी; कड़ा नैज़ा, मोटा बल्लम।

उतुव्व (عتو) अ. वि.–अभिमान, ग़ुरूर; उद्दंडता, सरकशी; हद से गुज़र जाना; बहुत बूढ़ा हो जाना।

उत्ती (عتی) अ. वि.–दे. 'उतुव्व'।

उत्तू (اتو) फा. पुं.–लोहे का ठप्पा जिसे गरम करके कपड़ा छापते हैं।

उत्बः (عتبہ) अ. पुं.–अरब का एक व्यक्ति।

उत्बा (عتبیٰ) अ. पुं.–आज्ञा, मर्ज़ी।

उत्रुज (اترج) अ. पुं.–निम्बु, नींबू।

उत्रूबः (اطروبہ) अ. पुं.–वह वस्तु जो आनन्द दे, बाजा-गाजा आदि मनोरंजन के साधन।

उत्रूश (اطروش) अ. वि.–बधिर, बहरा।

उत्लत (عطلت) अ. स्त्री.–निठल्लापन, बेकारी, काम का अभाव।

उदबा (ادبا) अ. पुं.–अदीब का बहु., साहित्यसेवी लोग, अदीब लोग।

उदात (عدات) अ. पुं.–'आदी' का बहु., शत्रु लोग।

उदूल (عدول) अ. पुं.–अवज्ञा, अवहेलना, नाफ़र्मानी।

उदूलहुक्मी (عدول حکمی) अ. स्त्री.–आज्ञा न मानना, आज्ञोल्लंघन, नाफ़र्मानी।

उद्दत (عدت) अ. स्त्री.–तत्परता, तैयारी; बनावट, साख्त।

उद्वः (عدوہ) अ. पुं.–दूर का स्थान; नदी का किनारा, नदीतट।

उद्वान (عدوان) अ. पुं.–शत्रुता, दुश्मनी; अत्याचार, ज़ुल्म।

उनसा (انسا) अ. पुं.–'अनोस' का बहु., मित्रगण, दोस्त, अहबाब।

उनास (اناث) अ. स्त्री.–'उंसा' का बहु., मादाएँ, स्त्रियाँ।

उनास (اناس) अ. पुं.–लोग, जन-समूह (इस शब्द का एक-वचन नहीं है)।

उनुक़ (عنق) अ. स्त्री.–गर्दन, ग्रीवा, गला।

उनुस (انث) अ. स्त्री.–'उंसा' का बहु., मादाएँ।

उनूद (عنود) अ. पुं.–सत्य के प्रतिकूल कार्य करना; युद्ध करना, लड़ना।

उनूस (عنوس) अ. पुं.–लड़की का बालिग़ होकर बिना पति के बहुत दिनों घर में बैठना।

उन्क़ (عنق) अ. स्त्री.–दे. 'उनुक़'; दोनों शुद्ध हैं।

उन्नाब (عناب) अ. पुं.–झरबेरी की तरह के फल जो दवा में काम आते हैं।

उन्नाबी (عنابی) अ. वि.–उन्नाब जैसे रंगवाला, हलका बैंगनी।

उन्फ़ (عنف) अ. पुं.–खुर्रापन, खुरदरापन; रुखाई, बेरुखी।

उन्फ़ुवान (عنفوان) अ. पुं.–प्रारम्भ, शुरुआत; युवावस्था का आरम्भ।

उन्फ़ुवाने शबाब (عنفوان شباب) अ. फा. पुं.–जवानी की उठान, यौवनारम्भ।

उन्मूज़ज (انموذج) अ. पुं.–नमूना, बानगी।

उन्वान (عنوان) अ. पुं.–शीर्षक, सुर्ख़ी; शैली, पद्धति, तर्ज़; प्रशस्ति, सरनामा, ख़त का अल्क़ाबो आदाब; प्रस्तावना, दीबाचा; प्रयत्न, युक्ति, तदबीर।

उफ़ (اف) अ. अव्य.–हाय, ओह, आह, हा।

उफ़ुक़ (افق) अ. पुं.–क्षितिज, वह स्थान जहाँ आकाश पृथ्वी से मिला हुआ जान पड़ता है।

उफ़ूनत (عفونت) अ. स्त्री.–दुर्गन्ध, बदबू; सड़ाँध, सड़ने की दुर्गंध।

उफ़ूल (افول) अ. पुं.–अस्त होना, डूबना।

उफ़ूसत (عفوصت) अ. स्त्री.–कसीलापन, बकठापन।

उफ़्ताँ (افتاں) फा. वि.–गिरता-पड़ता।

उफ़्तादः (افتادہ) फा.वि.–गिरा हुआ, पड़ा हुआ; दुःखित, दलित, मुसीबतज़दा।

उफ़्ताद (افتاد) फा. स्त्री.–आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत; दैवी आपत्ति, बला, क़ह्र (क़हर)।

उफ़्तादगी (افتادگی) फा. स्त्री.–गिरना, पड़ना; विपत्ति, आपत्ति, दुःख; विनय, आजिज़ी।

उफ़्तादनी (افتادنی) फा. वि.–गिरने योग्य, जो गिराया जा सके, जो गिर सके।

उबाब (عباب) अ. पुं.–छुहारे के पेड़ का पत्ता; पानी की प्रचंड बाढ़; बहुतायत; भरा होना; उँचाई; शुरुआत।

उबुव्वत (ابوت) अ. स्त्री.–बाप होना, पितृत्व।

उबूदीयत (عبودیت) अ. स्त्री.–दासता, वंदगी।

उबूर (عبور) अ. स्त्री.–नदी आदि को पार करना, उतरना।

उबूसत (عبوست) अ. स्त्री.–तुरुश रुई, मुँह बनाना, विमुखता, उपेक्षा।

उब्हुल (ابہل) अ. पुं.–एक वनौषधि, हाऊबेर।

उम(म्म) (ام) अ. स्त्री.–माता, माँ।

उमम (امم) अ. स्त्री.–'उम्मत' का बहु., उम्मतें, विभिन्न धर्म-समुदाय।

उमर (عمر) अ. पुं.–मुसलमानों के दूसरे खलीफ़ा।

उमरा (امرا) अ. पुं.–'अमीर' का बहु., धनवान् लोग।

उमीद (امید) फा. स्त्री.–दे. 'उम्मीद'।

उमीदवार (امیدوار) फा. वि.–दे. 'उम्मीदवार'।

उमुक़ (عمق) अ. पुं.–गहराई, गंभीरता।

उमुद (عمد) अ. पुं.–'अमूद' का बहु., खंभे।

उमूम (عموم) अ. पुं.–साधारण, आम़।

उमूमन (عموماً) अ. वि.–प्रायः, बहुधा, अक्सर।

उमूमी (عمومی) अ. वि.–सार्वजनिक, अवामी, जनसाधारण से सम्बन्ध रखनेवाला।

उमूमीयः (عمومیہ) अ. स्त्री.–जनता, पब्लिक।

उमूमीयत (عمومیت) अ. स्त्री.–साधारणता (विशेषता का उलटा)।

उमूमीयत (امومیت) अ. स्त्री.–माँ की ममता, वात्सल्य।

उमूर (امور) अ. पुं.–'अम्र' का बहु., कार्य-समूह, काम; समस्याएँ, मसले।

उमूरेआम्मः (امورعامہ) अ. पुं.–जनसाधारण के हित सम्बन्धी कार्य।

उम्दः (عمدہ) अ. वि.–उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया; सुन्दर, मनोरम; विश्वासपात्र, मा'तमद।

उम्दगी (عمدگی) अ. फा. स्त्री.–उत्तमता, बढ़ियापन; सुन्दरता, खुशनुमाई; श्रेष्ठता, खरापन।

उम्नीयत (امنیت) अ. स्त्री.–आशा, आर्जू, उम्मीद; झूठ, मिथ्या; उद्देश, मक़्सद; पुस्तक का पाठ।

उम्मः (امہ) अ. स्त्री.–माता, जननी, माँ।

उम्मत (امت) अ. स्त्री.–किसी विशेष अवतार या पैग़म्बर को माननेवाला समुदाय।

उम्महत (امہت) अ. स्त्री.–माता, माँ, (केवल मानव जाति की)।

उम्महात (امہات) अ. स्त्री.–'उम्महत' का बहु., माताएँ। यह शब्द केवल मानवजाति के लिए प्रयुक्त होता है।

उम्महातेसिफ़्ली (امہات سفلی) अ. स्त्री.–पंचभूत, अनासिर; पृथ्वी के तल।

उम्मात (امات) अ. स्त्री.–'उम्मः' का बहु., मानवजाति के अतिरिक्त दूसरी माताएँ।

उम्मान (عمان) अ. पुं.–अरब के शाम प्रदेश का एक नगर।

उम्माल (عمال) अ. पुं.–आमिल का बहु., कर्मचारी वर्ग, अमला।

उम्मी (امی) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसका पिता बाल्यावस्था में मर जाय और जिसके कारण वह पढ़-लिख न सके; वह व्यक्ति जो लिखना-पढ़ना न जानता हो, चाहे अपने बाप की छत्रछाया में जवान हुआ हो; मुहम्मद साहब का लक़ब जिन्होंने किसी से पढ़ा न था।

उम्मीद (امید) फा. स्त्री.–आशा, आस, उंमीद; इच्छा, ख्वाहिश; उत्कंठा, इश्तियाक़; भरोसा, सहारा, आसरा।

उम्मीदवार (امیدوار) फा. वि.–आशान्वित, आस लगाये हुए; नौकरी आदि का उम्मीदवार।

उम्मुद्दिमाग़ (ام الدماغ) अ. स्त्री.–सिर के भीतर भेजा रहने का स्थान।

उम्मुल उलूम (ام العلوم) अ. स्त्री.–व्याकरण।

उम्मुल किताब (ام الکتاب) अ. स्त्री.–क़ुरान की पहली सूरत, 'फ़ातिहा'।

उम्मुल ख़बाइस (ام الخبائث) अ. स्त्री.–सारी बुराइयों की माँ अर्थात् शराब।

उम्मुल जराइम (ام الجرائم) अ. स्त्री.–सारे अपराधों की माँ, दरिद्रता, मुफ़िलसी।

उम्मुस्सिब्यान (ام الصبیان) अ. स्त्री.–बच्चों का एक रोग, जमोगा।

उम्मेग़ीलां (ام غیلاں) अ. स्त्री.–बबूल का पेड़।

उम्मेमिल्दम (ام ملدم) अ. स्त्री.–मौत की माँ, क्षयरोग, तपेदिक़।

उम्मेवलद (ام ولد) अ. स्त्री.–वह दासी जिसने अपने स्वामी के सहवास से पुत्र या कन्या को जन्म दिया हो।

उम्रः (عمرہ) अ. पुं.–हज करनेवालों की एक इबादत, मक्के से तीन कोस पर 'तन्ईम' नामक स्थान पर नमाज़ पढ़कर वापस आकर, का'बे का तवाफ़ करते हैं।

उम्र (عمر) अ. स्त्री.–आयु, अवस्था, सिन।

उयून (عیون) अ. पुं.–'ऐन' का बहु., चश्मे, सोते; आँखें, नेत्र-समूह।

उयूब (عیوب) अ. पुं.–'ऐब' का बहु., बहुत से दोष।

उयूल (عیول) अ. स्त्री.–संन्यास, दरवेशी; फ़क़ीरी, निर्धनता।

उरफ़ा (عرفا) अ. पुं.–आरिफ़ का बहु., ब्रह्मज्ञानी लोग, महात्मा लोग।

उराज़ः (عراضہ) अ. पुं.–वह वस्तु जो यात्री विदेश से लाकर उपहार के तौर पर मित्रों को दे।

उरात (عرات) अ. पुं.–'आरी' का बहु., नग्न लोग, नंगे।

उरुज (عروج) अ. पुं.–उन्नति, तरक़्क़ी; ऊँचाई, बलंदी; उत्कर्ष, उत्थान, उठान।

उरुज़्ज़ (ارز) अ. पुं.–चावल।

उरुस (عرس) अ. पुं.–दे. 'उर्स', दोनों शुद्ध हैं।

उरूक़ (عروق) अ. स्त्री.–'इर्क़' का बहु., रगें, नसें।

उरूज़ (عروض) अ. पुं.–प्रकट होना, जाहिर होना; लागू होना, आरिज़ होना।

उरूफ़ (عروف) अ. पुं.–किसी चीज़ से मुँह फेर लेना; दिल सर्द हो जाना, उत्साह न रहना, लग्नाभाव।

उरेब (اریب) फ़ा. पुं.–तिरछा, टेढ़ा; तिरछापन, टेढ़, वक्रता।

उर्ज़ः (عرضہ) अ. पुं.–साहस, हिम्मत; मिष, बहाना; बीच में डाला हुआ।

उर्दक (اردک) तु. स्त्री.–मुर्ग़ाबी, एक प्रसिद्ध जल पक्षी।

उर्दक परानी (اردک پرانی) तु. फा. स्त्री.–ठठोल, उपहास, मसखरी।

उर्दी (اردی) फा. पुं.–ईरानी दूसरा महीना, बहार का महीना।

उर्दीबिहिश्त (اردی بہشت) फा. पुं.–दे. 'उर्दी'।

उर्दू (اردو) तु. पुं.–सेनावास, छावनी, फ़ौजी पड़ाव (स्त्री.) उर्दू भाषा।

उर्दूए मुअल्ला (اردوے معلی) तु. अ. स्त्री.–वह उर्दू जो दिल्ली के क़िले में बेगमें बोलती थीं, उच्च कोटि की उर्दू भाषा।

उर्दूबाज़ार (اردو بازار) तु. फा. पुं.–सेनावास, छावनी, सदर बाज़ार।

उर्फ़ (عرف) अ. पुं.–मुख्य नाम के अतिरिक्त दूसरा छोटा नाम जो प्रायः बचपन में पड़ जाता है।

उर्फ़ीयत (عرفیت) अ. स्त्री.–उर्फ़ होना; उर्फ़वाला नाम।

उर्बीयः (اربیہ) अ. स्त्री.–जाँघ की जड़, चिड्ढा।

उर्मः (ارمہ) सु. पुं.–उर्मिया का लघु., दे. 'उर्मिया'।

उर्मिया (ارمیا) सु. पुं.–ख़िज्र का नाम।

उर्मुज़्द (ارمز) फा. पुं.–हर ईरानी महीने की पहली तारीख़।

उर्यां (عریاں) अ. वि.–नग्न, नंगा; अश्लील, फ़ोह्श।

उर्यां नवीस (عریاں نویس) अ. फा. वि.–अश्लील लेख लिखनेवाला, फ़ोह्श निगार।

उर्यां निगार (عریاں نگار) अ. फा. वि.–दे. 'उर्यां नवीस'।

उर्यानी (عریانی) अ. स्त्री.–नग्नता, नंगापन; अश्लीलता, फक्कड़पन।

उर्यानीपसंद (عریانی پسند) अ. फा. वि.–जिसे अश्लीलता पसंद हो।

उर्वः (عروہ) अ. पुं.–हर चीज़ का किनारा; लोटे आदि का दस्ता, हत्था।

उर्वतुलवुस्क़ा (عروۃ الوثقیٰ) अ. पुं.–प्रमाणित, दस्तावेज़।

उर्स (عرس) अ. पुं.–व्याह का खाना; किसी मुसलमान ऋषि का वार्षिक उत्सव।

उलंग (النگ) तु. पुं.–चरागाह, गोचर, सब्ज़ाज़ार।

उलमा (علما) अ. पुं.–'आलिम' का बहु., आलिम लोग, विद्वज्जन।

उला (علا) अ. स्त्री.–उच्चता, बलंदी; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; उत्तमता, उम्दगी।

उलाक़ (الاق) तु. पुं.–गधा, गदहा, खर, रासभ।

उलाग़ (الاغ) तु. पुं.–दे. 'उलाक़'।

उलाचुक़ (الاچق) तु. पुं.–जंगली आदमियों की झोंपड़ी जो बालों से बनायी जाती है।

उलुग़ (الغ) तु. पुं.–बड़ा, श्रेष्ठ, महान्।

उलुलअज़्म (اولوالعزم) अ. वि.–बड़ी हिम्मतवाला, साहसी, उच्चोत्साही।

उलुलअज्निहः (اولوالاجنحہ) अ. पुं.–परोंवाला, फ़िरिश्तः।

उलुलअम्र (اولوالامر) अ. वि.–शासक, हुक्मरां, युग का महापुरुष।

उलुलअल्बाब (اولوالالباب) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

उलुवीयां (علویاں) अ. फा. पुं.–सैयद लोग, सादात।

उलुव्व (علو) अ. पुं.–उच्चता, ऊँचाई, बलंदी।

उलुश (اولوش) तु. पुं.–अमीरों के आगे का बचा हुआ खाना जो नौकरों का हक़ होता है; किसी ऋषि मुनि के आगे का बचा हुआ खाना, जो प्रसाद के तौर पर खाया जाता है; तबर्रुक; प्रसाद; भोग।

उलुस (اولوس) तु. पुं.–राष्ट्र, क़ौम; जाति, बरादरी, बिरादरी।

उलूक़ (علوق) अ. पुं.–लटकना; मित्र रखना; गर्भाशय में भ्रूण बनने के समय पुरुष के वीर्य के साथ स्त्री के रक्त का जमना।

उलूफ़ः (علوفه) अ. पुं.–खुराक, भोजन; खाद्य पदार्थ, ख़ुर्दनी चीज़।

उलूफ़ (الوف) अ. पुं.–'अल्फ़' का बहु., सहस्रों, हज़ारों।

उलूम (علوم) अ. पुं.–इल्म का बहु., विद्याएँ, शास्त्र समूह।

उलूमेअक़्ली (علوم عقلی) अ. पुं.–वे विद्याएँ जिनका सम्बन्ध बुद्धि और तर्क से है।

उलूमेनक़्ली (علوم نقلی) अ. पुं.–वे विद्याएँ जिनका सम्बन्ध बुद्धि से नहीं है, बल्कि पुस्तक में लिखे हुए को मानने से है, जैसे—धर्म-सम्बन्धी विद्याएँ।

उल्कः (الکه) तु. पुं.–देश, राष्ट्र।

उल्फ़त (الفت) अ. स्त्री.–प्रेम, स्नेह, मुहब्बत।

उल्या (علیا) अ. स्त्री.–'आ'ला' का स्त्रीलिंग, जैसे—पुरुष के लिए 'आ'ला हज़्रत' स्त्री के लिए 'उल्या हज़्रत'।

उवैस (اویس) अ. पुं.–एक मुसलमान ऋषि, जो यमन देश के 'क़रन' गोत्र से थे।

उश(श्श) (عش) अ. पुं.–नीड, घोंसला।

उशक़ (اشق) अ. पुं.–एक गोंद जो दवा में काम आता है।

उशाक़ (اشاق) तु. पुं.–बिना दाढ़ी मूँछ का सुन्दर लड़का, अम्रद।

उश्तुर (اشتر) फा. पुं.–उष्ट्र, ऊँट।

उश्तुलुम (اشتلم) तु. पुं.–प्रचंडता, तेज़ी; अत्याचार, ज़ुल्म; प्रभुत्व, ग़लबा।

उश्नान (اشنان) फा. पुं.–एक घास जिससे खाद बनता है।

उश्बः (عشبه) अ. पुं.–एक वनौषधि जो रक्त शुद्धि के लिए प्रसिद्ध है।

उश्ब (عشب) अ. पुं.–हरी घास।

उश्र (عشر) अ. वि.–दसवाँ भाग, दशम अंश, $\frac{१}{१०}$।

उश्रे अशीर (عشر عشیر) अ. वि.–दसवें का दसवाँ भाग अर्थात् सौवाँ भाग, $\frac{१}{१००}$, शतांश।

उश्वः (عشوه) अ. पुं.–आग जो रात में दूर से दिखायी पड़े; छिपाकर काम करना।

उश्शाक (عشاق) अ. पुं.–'आशिक़' का बहु., प्रेमी लोग।

उस(स्स) (عس) अ. पुं.–बड़ा पियाला, बादियः।

उसात (عصات) अ. पुं.–'आसी' का बहु., पापी लोग।

उसामः (اسامه) अ. पुं.–व्याघ्र, शेर, एक सिहाबी।

उसारः (عصاره) अ. पुं.–किसी पेड़ के पत्तों आदि का कुचल कर निकाला हुआ रस जो धूप या आग में जमा लिया जाता है।

उसारा (اساری) अ. पुं.–'असीर' का बहु., बंदीजन, क़ैदी लोग।

उसुर (عسر) अ. स्त्री.–दे. 'उस्र, दोनों शुद्ध हैं।

उसूफ़ (عصوف) अ. पुं.–वायु का बहुत वेग से चलना, झक्कड़ चलना।

उसूल (اصول) अ. पुं.–'अस्ल' का बहु., जड़ें; सिद्धान्त समूह; नियम, क़ायदे।

उसूलन (اصولاً) अ. वि.–उसूल से, नियमानुसार।

उसूली (اصولی) अ. वि.–मौलिक, आधारभूत, बुनियादी।

उसैलः (عسیله) अ. पुं.–मैथुनानंद, हमबिस्तरी की लज़्ज़त; वीर्य, मनी।

उस्उस (عصعص) अ. पुं.–चूतड़ों के बीच की हड्डी, दुमगजा; सुस्त और आलसी व्यक्ति।

उस्क़ुफ़ (اسقف) अ. पुं.–ईसाइयों का धार्मिक गुरु, पादरी।

उस्क़ुफ़े आ'जम (اسقفِ اعظم) अ. पुं.–सबसे बड़ा पादरी, लाट पादरी।

उस्कुफ़्फ़ः (اسکفه) अ. पुं.–देहलीज़, चौखट।

उस्कुरः (اسکره) अ. पुं.–छोटा पियाला, सकोरा।

उस्कुर्जः (اسکرجه) अ. पुं.–दे. 'उस्कुरः'

उस्ग़ार (اسغر) फा. पुं.–सेही, एक प्रसिद्ध जन्तु।

उस्तः (استه) फा. पुं.–खजूर की गुठली।

उस्ता (اوستا) फा. पुं.–पार्सियों का एक धार्मिक ग्रंथ।

उस्ताज़ (استاذ) अ. पुं.–दे. 'उस्ताद'।

उस्ताद (استاد) फा. पुं.–शिक्षक, अध्यापक; कोई शिल्प आदि सिखानेवाला; चालाक, होशियार।

उस्तादानः (استادانه) फा. वि.–उस्तादों जैसा; चालाकी का।

उस्तादी (استادی) फा. वि.–उस्ताद से सम्बन्धित (स्त्री.) चालाकी, धूर्तता।

उस्तुक़ुस (اسطقس) अ. पुं.–तत्त्व, पंचभूत, उंसुर।

उस्तुख़्वां (استخوان) फा. पुं.–हड्डी, अस्थि।

उस्तुख़्वांदार (استخواندار) फा. वि.–दृढ़, मज़बूत; स्थिर, क़ायम।

उस्तुन (استن) अ. पुं.–स्थूण, सुतून, खंभा।

उस्तुरः (استره) फा. पुं.–हजामत बनाने का नाई का छुरा।

उस्तुर्दः (استرده) फा. वि.–मूँडा हुआ, मुंडित।

उस्तुर्लाब (اصطرلاب) अ. पुं.–एक यंत्र जिससे ग्रहों आदि की पैमाइश होती है।

उस्तुवानः (اسطوانه) अ. पुं.–स्थून, सुतून, खंभ।

उस्तुवार (استوار) फा. वि.–दृढ़, मज़बूत; स्थायी, मुस्तक़िल।

उस्तुवारी (استواری) फा. वि.–दृढ़ता, मज़बूती; स्थायित्व, इस्तिक़्लाल।

उस्तूरः (اسطورہ) अ. पुं.–कहानी, आख्यायिका, अफ़्साना।

उस्तूल (اسطول) अ. पुं.–युद्धपोत, जंगी जहाज़।

उस्पुश (اسپش) फा. पुं.–जूँ, स्वेदज।

उस्फ़ुर (عصفر) अ. पुं.–कुसुम का फूल।

उस्फ़ूर (عصفور) अ. पुं.–चटक, गौरैया, एक प्रसिद्ध घरेलू चिड़िया।

उस्बः (عصبہ) अ. पुं.–मनुष्यों का समूह जो बीस से चालीस तक हो।

उस्बूअः (اسبوعہ) अ. पुं.–सप्ताह, हफ़्ता।

उस्बूअ (اسبوع) अ. पुं.–सप्ताह; हफ़्ता, सात वार; सात दिन।

उस्मान (عثمان) अ. पुं.–मुसलमानों के तीसरे ख़लीफ़ा।

उस्मूर (عصسور) अ. पुं.– पानी का रहट; डोल।

उस्रः (عسرہ) अ. पुं.–दे. 'उस्रत'।

उस्र (عسر) अ. पुं. कठिनता, दुश्वारी।

उस्रत (عسرت) अ. स्त्री.–कठिनता, दुष्करता, असुगमता, दुश्वारी; दरिद्रता, कंगाली।

उस्रतज़दः (عسرتزدہ) अ. फा. वि.–दरिद्र, कंगाल।

उस्रुब (اسرب) अ. पुं.–सीसा, सीसक, एक प्रसिद्ध धातु जिसकी गोली बनती हैं।

उस्लूब (اسلوب) अ. पुं.–पद्धति, शैली, ढंग; आचरण, वज़ा; व्यवहार, तर्जेअमल।

उस्वः (اسوہ) अ. पुं.–नेता, पेशवा; ऐसा आचरण जिसका अनुकरण कल्याणकर हो; जटिल समस्याओं को हल करनेवाली नेता।

उस्वएहसनः (اسوۂحسنہ) अ. पुं.–सदाचार, अच्छा आचरण।

उहूद (عہود) अ. पुं.–'अह्द' का बहु., प्रतिज्ञाएँ, वचन, वा'दे।

उहदूसः (احدوثہ) अ. पुं.–कहानी, आख्यान, क़िस्सा।

उह्बत (اہبت) अ. पुं.–हथियार और सामान।

ऊ

ऊ (او) फा. अव्य.–वह।

ऊक़ (عوق) अ. पुं.–'ऊज' का पिता।

ऊक़ियः (اوقیہ) अ. पुं.–आधी छटाँक से कुछ अधिक की एक तोल।

ऊक़ियानूस (اوقیانوس) अ. पुं.–अतलांतिक महासागर।

ऊज (عوج) अ. पुं.–एक बहुत ही लम्बा व्यक्ति जो हज़रत आदम के जमाने में पैदा हुआ और हज़रत मूसा के जमाने तक रहा; साढ़े तीन हज़ार बरस की आयु पायी, इसके बाप का नाम 'ऊक़' है। जो लोग 'ऊजबिन उनुक़' कहते हैं वे ग़लत कहते हैं; 'ऊजबिन ऊक़' कहना चाहिए।

ऊद (عود) अ. पुं.–एक सुगंधित लकड़ी, अगरु; एक बाजा, बर्बत।

ऊदनवाज़ (عودنواز) अ. फा. पुं.–बर्बत बजानेवाला।

ऊदसाज़ (عودساز) अ. फा. वि.–बर्बत बाजा बनानेवाला।

ऊदसोज़ (عودسوز) अ. फा. पुं.–ऊद सुलगाने का पात्र, अगरदान।

ऊर (عور) फा. वि.–नग्न, नंगा, बरह्नः।

ऊरी (عوری) फा. वि.–नग्नता, नंगापन।

ऊस (عوس) अ. स्त्री.–बकरी की एक जाति।

ए

ए (اے) फा. अव्य.–ऐ, अयि, बुलाने का संबोधन, 'ए'।

एआदः (اعادہ) अ. पुं.–दोहराना, पुनरावृत्ति; लौटना, वापस आना।

एआदए शबाब (اعادۂ شباب) अ. फा. पुं–युवावस्था की पुनःवापसी, बूढ़े का जवान बनना।

एआनत (اعانت) अ. स्त्री.–सहायता, मदद।

एआनते मुज्रिमानः (اعانت مجرمانہ)अ. फा. स्त्री.–अपराध करने में सहायता, अवैध सहायता।

एज़द((ایزد) फ़ा. पुं.–ईश्वर, ख़ुदा।

एज़द परस्त(ایزد پرست)फा. वि.–आस्तिक, ईश्वरवादी, ख़ुदा को माननेवाला।

एज़दी (ایزدی) फा. वि.–ईश्वरीय, ईश्वर का; ईश्वर-सम्बन्धी।

एजाज़(اعجاز)अ. पुं.–चमत्कार, करामात;—"तेरे एजाज़ की है धूम ज़माने भर में—मैं जो बच जाऊँ तो समझूँ कि मसीहाई है।"

ए'जाज़े ईसवी (اعجازعیسوی) अ. पुं.–मृतक प्राणियों को जीवित करने का चत्मकार।

ए'जाब (اعجاب) अ. पुं.–अभिमान करना, घमंड करना; मान, हर्ष, घमंड।

ए'जाल (اعجال) अ. पुं.–शीघ्रता करना, जल्दी करना।

एज़ाज़ (اعزاز) अ. पुं.–सम्मान, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; राज्य या किसी बड़ी सभा की ओर से कोई महत्वपूर्ण काम सपुर्द करके सम्मान।

एज़ाज़ी (اعزازی) अ. वि.–कोई काम जो सम्मान के लिए हो, अवैतनिक कार्य।

ए'ता (اعطا) अ. पुं.–देना, प्रदान करना, अता करना; बख़्शिश, पुरस्कार।

ए'ताक़ (اعتاق) अ. पुं.–दास को मुक्त करना, अपने बंधन से छोड़ना।

ए'ताश (اعطاش) अ. पुं.–प्यासा करना।

ए'तिक़ाद (اعتقاد) अ. पुं.–श्रद्धा, आस्था, अक़ीदः; प्रत्यय, विश्वास, यक़ीन।

ए'तिकाफ़ (اعتکاف) अ. पुं.–एकान्त में ईश्वर की तपस्या; एकान्तवास, गोशानशीनी।

ए'तिज़ाज़ (اعتزاز) अ. पुं.–प्रिय होना, प्यारा होना, अज़ीज़ होना।

ए'तिज़ाम (اعتزام) अ. पुं.–संकल्प करना, इरादा पक्का करना, दृढ़-प्रतिज्ञ होना।

'तिज़ार (اعتزار) अ. पुं.–उज्र करना, विवशता प्रकट करना; उज्रदारी करना; उज्र, आपत्ति।

ए'तिज़ाल (اعتزال) अ. पुं.–अलग होना; एकान्तवासी होना; यह अक़ीदा होना कि मनुष्य अच्छे बुरे कर्मों का स्वयं ही कर्ता है, ईश्वरेच्छा का इसमें कोई प्रश्न नहीं।

ए'तिदा (اعتدا) अ. पुं.–अनीति करना, ज़ुल्म करना।

ए'तिदाल (اعتدال) अ. पुं.–गर्मी-सर्दी या तरी-ख़ुश्की में बराबर होना; संतुलन, बराबरी।

ए'तिना (اعتنا) अ. पुं.–सहानुभूति करना, हमदर्दी करना; रोगी की देख-रेख करना; दया करना; सहानुभूति; तीमारदारी; दया, कृपा।

ए'तिनाक़ (اعتناق) अ. पुं.–गले मिलना, एक दूसरे के गले में हाथ डालना।

ए'तिमाद (اعتماد) अ. पुं.–किसी चीज़ पर पीठ टेकना, सहारा लेना; सहारा, भरोसा; विश्वास, यक़ीन।

ए'तिमाल (اعتمال) अ. पुं.–काम करना।

ए'तियाक़ (اعتیاق) अ. पुं.–मना करना, बाज़ रखना, रोकना।

ए'तियाज़ (اعتیاض) अ. पुं.–बदला लेना; बदला देना।

ए'तियास (اعتیاص) अ. पुं.–किसी पर कोई कार्य कठिन होना, कठिनाई में पड़ना।

ए'तिराज़ (اعتراض) अ. पुं.–आपत्ति, उज्र; हस्तक्षेप, दस्तंदाज़ी; बीच में आ जाना।

ए'तिराफ़ (اعتراف) अ. पुं.–स्वीकृति, अंगीकृति, इक़ार; अपने अपराध को स्वीकृति, इक़ारेजुर्म।

ए'तिला (اعتلا) अ. पुं.–ऊपर उठना, ऊँचा होना, बलंद होना।

ए'तिलाफ़ (اعتلاف) अ. पुं.–पशु का घास खाना।

ए'तिलाल (اعتلال) अ. पुं.–बीमार पड़ना, रोग-ग्रस्त होना।

ए'तिवार (اعتوار) अ. पुं.–किसी वस्तु को हाथों-हाथ लेना।

ए'तिशाश (اعتشاش) अ. पुं.–बाल-बच्चों के लिए बहुत थोड़ा खाना लाना।

ए'तिसाफ़ (اعتساف) अ. पुं.–कुमार्ग पर चलना; अनीति करना, ज़ुल्म करना।

ए'तिसाम (اعتصام) अ. पुं.–संयम, इंद्रियनिग्रह, परहेज़गारी।

ए'तिसार (اعتصار) अ. पुं.–निचोड़ना।

ए'तिसास (اعتساس) अ. पुं.–रात को पहरा देना, रात को गश्त लगाना।

ए'दाम (اعدام) अ. पुं.–ध्वस्त करना, बरबाद करना।

ए'फ़ाफ़ (اعفاف) अ. पुं.–किसी को संयम नियम का पाबंद बनाना।

एबक (ایبک) तु. पुं.–दास, ग़ुलाम, एलची, दूत; प्रेमपात्र, मा'शूक़।

एमन (ایمن) फा. वि.–'आमन' का इमालः; सुरक्षित, महफ़ूज़; अभय, निडर।

एमनी (ایمنی) फा. स्त्री.–सुरक्षा, हिफ़ाज़त; भयहीनता, निडरपन।

एमिन (ایمن) फा. वि.–सुरक्षित; अभय, निडर।

ए'राज़ (اعراض) अ. पुं.–किसी की ओर से मुँह फेर लेना, विमुखता, उपेक्षा; प्रकट होना; चौड़ा चकला होना; बकरी के बच्चे का अंडकोष निकालना; भलाई करना।

ए'राब (اعراب) अ. पुं.–'ज़बर', 'ज़ेर' और 'पेश'।

एलची (ایلچی) तु. पुं.–पत्रवाहक, क़ासिद; राजदूत, सफ़ीर।

ए'ला (اعلا) अ. पुं.–ऊँचा करना, उठाना; प्रसार करना, फैलाना।

ए'लान (اعلان) अ. पुं.–घोषणा, अभिज्ञापन, मुनादी, उद्घोष।

ए'लाम (اعلام) अ. पुं.–ज्ञान कराना, बताना, जताना।

ए'लाल (اعلال) अ. पुं.–बीमार करना, रोगी बनाना।

ए'वास (اعواص) अ. पुं.–शत्रु पर काम मुश्किल कर देना, शत्रु को कठिनाई में डाल देना।

ए'विजाज (اعوجاج) अ. पुं.–टेढ़ा होना; टेढ़, वक्रता, कजी।

एशां (ایشاں) फा. अव्य.–यह लोग, यह सब।

ए'शाश (اعشاش) अ. पुं.–दूसरे के घर में इस इरादे से आ बैठना कि वह घबराकर घर छोड़कर भाग जाय।

एसार (اعصار) अ. पुं.–लड़की का बालिग़ होना; बादल का बरसने के क़रीब होना।

एस्तादः (ایستادہ) फा. वि.–दे. 'इस्तादः', दोनों शुद्ध हैं।

एस्तादगी (ایستادگی) फा. स्त्री.–दे. 'इस्तादगी', दोनों शुद्ध हैं।

LIBRARY
HARDWAR

एस्तादनी (ایستادنی) फ़ा. वि.–दे. 'इस्तादनी', दोनों शुद्ध हैं।

एहक़ाक़ (احقاق) अ. पुं.–हक़ साबित करना; ठीक जानना।

एहक़ाक़े हक़ (احقاقِ حق) अ. पुं.–अपना हक़ साबित करना; सच्ची बात साबित करना।

एहज़ान (احزان) अ. पुं.–दुःखित करना, ग़म में डालना।

एहजार (اھجار) अ. पुं.–अश्लील बातें करना, फ़ुह्श बकना।

एहज़ार (اھزار) अ. पुं.–बहुत बोलना, बहुत बातें करना; वाचालता, बकवास।

एहज़ार (احضار) अ. पुं.–उपस्थित करना, हाज़िर करना; घोड़े का दौड़ना।

एहतिकाक (اھتکاک) अ. पुं.–अपमान करना, अवहेलना करना, हत्क करना।

एहतिक़ान (احتقان) अ. पुं.–पिचकारी लगाना, इंजकशन करना; हुक़्नः देना, इनेमा करना।

एहतिक़ार (احتقار) अ. पुं.–तिरस्कार करना, अपमानित करना।

एहतिकार (احتکار) अ. पुं.–इस विचार से अन्न संचित करना कि भाव तेज़ होने पर बेचा जायगा।

एहतिजाज (احتجاج) अ. पुं.–वाद-विवाद करना, हुज्जत करना; अपने किसी अहित के लिए अहितकर्ता से रोष प्रकट करना।

एहतिज़ाज़ (احتظاظ) अ. पुं.–आनंद लेना, लुत्फ़ उठाना।

एहतिज़ाज़ (اھتزاز) अ. पुं.–झूमना; झूमकर मस्त होना।

एहतिजाम (احتجام) अ. पुं.–पछने लगवाना।

एहतिज़ार (احتضار) अ. पुं.–सामने आना, हाजिर होना; मृत्यु का आना; नागरिक होना; घोड़ा दौड़ना।

एहतिदा (اھتدا) अ. पुं.–सन्मार्ग पाना, सीधा रास्ता प्राप्त होना।

एहतिफ़ाल (احتفال) अ. पुं.–सभा करना; सभा होना।

एहतिबाल (احتبال) अ. पुं.–जाल से शिकार पकड़ना।

एहतिबास (احتباس) अ.पुं.–अवरोध, रुकना, बंद होना; निरोध, अवरोध, बंदिश।

एहतिबासे तम्स (احتباس طمث) अ. पुं.–मासिकधर्म का रुक जाना।

एहतिबासे हैज़ (احتباس حیض) अ. पुं.–दे. 'एहतिबासे तम्स'।

एहतिमाम (اھتمام) अ.पुं.–प्रयोजन, इंतिज़ाम; तत्त्वावधान, देख-रेख; निरीक्षण, निगरानी, बंदोबस्त, प्रबन्ध।

एहतिमाल (احتمال) अ. पुं.–शंका करना, शक करना; शंका, संदेह, शुबहा।

एहतियाज (احتیاج) अ. स्त्री.–आवश्यकता, ज़रूरत; दरिद्रता, कंगाली।

एहतियाज़ (احتیاز) अ.पुं.–एकत्र होना, इकट्ठा होना, जमा' होना।

एहतियात (احتیاط) अ. स्त्री.–सावधानी, ख़बरदारी; चौकसी, होशयारी।

एहतियातन (احتیاطاً) अ. वि.–एहतियात के तौर पर, सावधानी के रूप में।

एहतियाती (احتیاطی) अ. वि.–एहतियात सम्बन्धी; जिसमें एहतियात का ध्यान रहे।

एहतियाल (احتیال) अ. पुं.–हीलाबाज़ी करना, बहाने बनाना।

एहतिराक़ (احتراق) अ. पुं.–जलना; चाँद और सूरज को छोड़कर बाक़ी पाँच ग्रहों में से किसी एक का छिप जाना।

एहतिराज़ (احتراز) अ.पुं.–परहेज़ करना, बचना, अलग रहना; घृणा करना, नफ़रत करना।

एहतिराम (احترام) अ. पुं.–संमान करना, इज़्ज़त करना; संमान, आदर, इज़्ज़त।

एहतिलाम (احتلام) अ. पुं–सोते में वीर्यस्खलन होना; स्वप्न-दोष।

एहतिवा (احتوا) अ. पुं.–चारों ओर से घेरना, इहाता करना।

एहतिशाम (احتشام) अ.पुं.–लज्जा करना; बहुत से नौकर चाकर वाला होना; वैभव, शानोशौक़त।

एहतिसाब (احتساب) अ. पुं.–हिसाब करना; निपिद्ध वस्तुओं के खान-पान से रोकना।

एहदा (اھدا) अ. पुं. –किसी को उपहार भेजना।

एहदार (اھدار) अ. पुं.–किसी को किसी व्यक्ति की हत्या करने की आज्ञा देना; किसी का हक़ नष्ट करना।

एहदास (احداث) अ. पुं.–नयी बात निकालना, जिद्दत पैदा करना, आविष्कार।

एहमाल (اھمال) अ. पुं.–भूल से छोड़ जाना, भूल जाना।

एहमाल (احمال) अ. पुं.–लादना, बोझ उठाना।

एहया (احیا) अ. पुं.–जीवित करना, प्राण दान देना, ज़िंदा करना।

एहराक़ (احراق) अ. पुं. –जलाना।

एहराम (احرام) अ. पुं.–हाजियों का वस्त्र, दो चादरें जो बिना सिली हुई एक बाँधी और एक ओढ़ी जाती है।

एहराम (اھرام) अ. पुं.–बहुत बूढ़ा होना; बहुत अधिक बुढ़ापा, परमवृद्धत्व।

एहलाक (اہلاک) अ.पुं.–प्राण ले लेना, मार डालना, हिंसा हलाक करना, वध करना।

एहलील (احلیل) अ.पुं.–मूत्र की नली; स्त्री के दूध की नली।

एहलीलज (اہلیلج) अ. पुं.–हलेला, हड़।

एहसा (احصاء) अ. पुं.–गणना करना, गिनना; सीमित करना, महद्दूद करना; गिनती, गणना, शुमार।

एहसान (احسان) अ. पुं.–उपकार, आभार, भलाई, नेकी।

एहसान (احصان) अ.पुं.–पुरुष का स्त्री की इच्छा करना; स्त्री का पुरुष की इच्छा करना; गर्भवती होना; संयमी होना; मज़बूत करना; घेरा डालना।

एहसान नाशनास (احسان ناشناس) अ.फा. वि.–अकृतज्ञ, कृतघ्न, नमकहराम, जो उपकार न माने।

एहसान फ़रामोश (احسان فراموش) अ.फा.वि.–कृतघ्न, नमकहराम, जो किसी का उपकार भूल जाय।

एहसान फ़रोश (احسان فروش) अ. फा. वि.–जो उपकार करके सबसे कहता फिरे।

एहसानमंद (احسان مند) अ. फा. वि.–कृतज्ञ, आभारी, उपकार माननेवाला।

एहसानमंदी (احسان مندی) अ. फा. स्त्री.–कृतज्ञता, उपकार मानना।

एहसान शनास (احسان شناس) अ. फा. वि.–कृतज्ञ, उपकार को पहचाननेवाला।

एहसार (احصار) अ. पुं.–गिनना, शुमार करना; घेरे में लेना,; खुला रखना; हज को न जाना।

एहसास (احساس) अ. पुं.–अनुभव, संवेदन, हिस; ध्यान, खयाल; पाना; देखना।

एहसासात (احساسات) अ. पुं.–एहसास का बहुवचन।

ऐ

ऐ (اے) अ. अव्य.–ए, अयि, हे।

ऐक़ (عیق) अ. पुं.–रोके रखना, बाज़ रखना।

ऐज़न (ایضاً) अ. अव्य.–जैसा पहले या ऊपर था वैसा ही।

ऐत (عیط) अ. पुं.–गर्दन का लंबा होना।

ऐताम (ایتام) अ. पुं.–'यतीम' का बहु., अनाथ बच्चे।

ऐन (عین) अ. पुं.–नेत्र, नयन, आँख; छोटी नदी; स्रोत, चश्म; सदृश, तुल्य, मिस्ल; यथार्थ, वास्तविक वाक़ई।

ऐनक (عینک) अ. फा. स्त्री.–आँखों में लगाने का चश्मा, उपनेत्र।

ऐना (عینا) अ. स्त्री.–सुंदर आँखोंवाली स्त्री।

ऐनुद्दीक (عین الدیک) अ. स्त्री.–घुंघची।

ऐनुलमाल (عین المال) अ. पुं.–मूलधन, असल पूँजी।

ऐनुलयक़ीन (عین الیقین) अ. पुं.–वह विश्वास जो आँखों देखकर प्राप्त हो।

ऐफ़ाग़ (ایفاغ) अ. पुं.–पिशुन, चुग़ल; ऊँघता हुआ, निद्रालु; धृष्ट, शोख़।

ऐबः (عیبہ) अ. पुं.–चमड़े का थैला; कपड़े रखने का पात्र; रहस्य का स्थान।

ऐब (عیب) अ. पुं.–दोष, बुराई; पाप, गुनाह; त्रुटि, भूल; अशुद्धि, ग़लती।

ऐबगो (عیب گو) अ. फा. वि.–दोष बतानेवाला, दोष निकालनेवाला।

ऐबचीं (عیب چیں) अ. फा. वि.–दोष ढूँढ़नेवाला, ऐब तलाश करनेवाला, छिद्रान्वेषी।

ऐबजू (عیب جو) अ. फा. वि.–दोष ढूँढ़नेवाला, छिद्रान्वेषी।

ऐबतराश (عیب تراش) अ. फा. वि.–ऐब लगानेवाला, दोषारोपक; ढूँढ़-ढूँढ़कर ऐब निकालनेवाला।

ऐबदार (عیب دار) अ. फा. वि.–दोषयुक्त, दोषी, जिसमें ऐब हो; ख़राब, दूषित; धूर्त, पाजी।

ऐबपोश (عیب پوش) अ. फा. वि.–दोषों को छिपानेवाला, ऐबों पर पर्दा, डालनेवाला, दोषवारक।

ऐबबीं (عیب بیں) अ. फा. वि.–दे. 'ऐबजू'।

ऐबस (ایبس) अ. वि.–बहुत अधिक ख़ुश्क; बहुत अधिक ख़ुश्की बढ़ानेवाला।

ऐमः (ایمہ) फा. अव्य.–अब, इस समय; मिथ्या, अनर्थ।

ऐम (عیم) अ. पुं.–प्यासा होना; तृप्त होने की इच्छा होना।

ऐम (ایم) अ. पुं.–सफ़ेद साँप।

ऐमन (ایمن) अ. वि.–बड़ा कल्याणकारी, बहुत ही शुभान्वित; दाहनी ओरवाला।

ऐमान (ایمان) अ. पुं.–अनेक शपथ, क़स्में; ताक़तें, बल 'यमीन' का बहु.।

ऐयाम (ایام) अ. पुं.–'यौम' का बहु., दिन-समूह।

ऐयार (عیار) अ. वि.–वंचक, छली, चालाक।

ऐयारानः (عیارانہ) अ. फा. वि.–वंचकों जैसा, छलियों की भाँति।

ऐयारी (عیاری) अ. स्त्री.–वंचकता, छल, चालाकी।

ऐयाश (عیاش) अ. वि.–व्यभिचारी, विषय-लंपट, ज़ानी; अच्छे खाने-पहनने और आराम से रहने का शौक़ीन।

ऐयाशानः (عیاشانہ) अ. फा. वि.–ऐयाशों-जैसा।

ऐयाशी (عیاشی) अ. स्त्री.–व्यभिचार, ज़िना; अच्छा खाना-पहनना और आराम से रहना।

ऐयिम (ایم) अ. वि.–बिना पति की स्त्री, विधवा; बिना स्त्री का पुरुष, रँडुआ, विधुर।

ऐयूक़ (عیوق) अ. पुं.–एक तेज़ और चमकदार तारा।

ऐयूब (ایوب) अ. पुं.–एक पैग़म्बर जो बड़े ही धैर्यवान् थे।

ऐर (ایر) अ. पुं.–शिश्न, लिंग।

ऐर (عیر) अ. पुं.–जंगली गधा, गोरख़र।

ऐलः (عیلہ) अ. स्त्री.–संन्यास, फ़क़ीरी।

ऐवान (ایوان) फा. पुं.–प्रासाद, भवन, महल; राजप्रासाद, शाहीमहल; परिषद्, संसद, कौंसिल।

ऐवानेज़ेरीं (ایوان زیریں) फा. पुं.–निम्न सदन।

ऐवानेबाला (ایوان بالا) फा. पुं.–उच्च सदन।

ऐश (عیش) अ. पुं.–भोग विलास, विषयवासना; व्यभिचार; खाने-पीने का सुख।

ऐशतलब (عیش طلب) अ. फा. वि.–भोग-विलास का आनंद चाहनेवाला।

ऐशतलबी (عیش طلبی) अ. फा. स्त्री.–भोगविलास के आनंद की इच्छा।

ऐशपरस्त (عیش پرست) अ. फा. वि.–दे. 'ऐयाश'।

ऐशपरस्ती (عیش پرستی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ऐयाशी'।

ऐशपसंद (عیش پسند) अ.फा. वि.–दे. 'ऐशतलब'।

ऐशपसंदी (عیش پسندی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ऐश तलबी'।

ऐशमंज़िल (عیش منزل) अ. स्त्री.–रंगभवन, रंगमहल, ऐश करने की जगह।

ऐशमहफ़िल (عیش محفل) अ. स्त्री.–दे. 'ऐशमंज़िल'।

ऐशेरफ़्तः (عیش رفتہ) अ. फा. पुं.–बीता हुआ सुख चैन, बीता हुआ सुख का समय।

ऐशोनशात (عیش ونشاط) अ. पुं.–सुख चैन, भोगविलास, सब प्रकार के आनंद।

ऐस (عیث) अ. पुं.–भेड़िए का बकरियों के झुंड को नाश करना; विनाश, बरबादी।

ऐस (ایس) अ. पुं.–निराशा, नैराश्य, नाउम्मेदी।

ऐसर (ایسر) अ. वि.–बहुत सुगम, अति सरल, बहुत आसान।

ओ

ओ (او) फा. अव्य.–वह।

ओफ़्तादः (اوفتادہ) फा. वि.–दे. 'उफ़्तादः', दो. शु. हैं।

ओफ़्ताद (اوفتاد) फा. स्त्री.–दे. 'उफ़्ताद', दो. शु. हैं।

ओफ़्तादगी (اوفتادگی) फा. स्त्री.–दे. 'उफ़्तादगी', दो. शु. हैं।

ओफ़्तादनी (اوفتادنی) फा. वि.–दे. 'उफ़्तादनी', दो. शुद्ध हैं।

ओस्ता (اوستا) फा. पुं.–दे. 'उस्ता'।

ओस्ताद (اوستاد) फा. पुं.–दे. 'उस्ताद', दो. शु. हैं।

ओस्तादानः (اوستادانہ) फा. वि.–दे. 'उस्तादानः', दो. शु. हैं।

ओस्तादी (اوستادی) फा. स्त्री.–दे. 'उस्तादी', दो. शु. हैं।

ओहदः (عہدہ) अ. पुं.–पद, दर्जा, पदवी, मर्तबा, पदाधिकार, अफ़सरी।

ओहदःदार (عہدہدار) अ.फा. वि.–पदाधिकारी, अफ़्सर।

ओहदःबरा (عہدہبرا) अ. फा. वि.–ज़िम्मेदारी पूरी करनेवाला।

ओहदःबराई (عہدہبرائی) अ. फा. स्त्री.–ज़िम्मेदारी की पूर्ति।

औ

औइयः (اوعیہ) अ. पुं.–'विआ' का बहु., बरतन-भांडे।

औक़र (اوقر) अ. वि.–बधिर, बहरा।

औक़स (اوقص) अ. वि.–छोटी गर्दनवाला; ऐसा माल जिसके बढ़ने पर ज़कात न देना पड़े।

औका' (اوکع) अ. वि.–कृपण, कंजूस।

औक़ात (اوقات) अ. पुं.–'वक़्त' का बहु., समयावली (स्त्री.) प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, मान मर्यादा।

औक़ाफ़ (اوقاف) अ. पुं.–'वक़्फ़' का बहु., वे जायदादें आदि जो समर्पित हैं; देवोत्तर सम्पत्तियाँ।

औज़ः (اوضہ) अ. पुं.–क्रम, कोठा।

औज (اوج) अ. पुं.–उच्चता, ऊँचाई, बुलंदी; उन्नति, तरक़्क़ी; प्रतिष्ठा, मान, वक़्अत।

औज (عوج) अ. पुं.–वक्रता, टेढ़ापन।

औज़ह (اوضح) अ. वि.–अत्यंत स्पष्ट, बिलकुल साफ़।

औज़ाअ (اوزاع) अ. पुं.–मनुष्यों के समूह।

औजाअ (اوجاع) अ. पुं.–'वजा' का बहु. पीडाएँ, दर्द।

औज़ाअ (اوضاع) अ. पुं.–'वज़्अ' का बहु., तौर-तरीक़े।

औज़ान (اوزان) अ.पुं.–'वज़्न' का बहु., तौलन के बाँट; तोलें।

औज़ार (اوزار) अ. पुं.–'विज़्र' का बहु., उपकरण समूह, आलात, कारीगरों के यंत्र।

औताद (اوتاد) अ. पुं.–'वतद' या 'वतिद' का बहु., खूँटियाँ, मेखें, खूँटे।

औतान (اوطان) अ. पुं.–'वतन' का बहु. जन्मभूमियाँ।

औतार (اوتار) अ. पुं.–'वतर' का बहु., धनुषों की ज्याएँ; बाजे के तार।

औद (عود) अ. पुं.–लौटना, वापसी, पलटना।

औन (عون) अ. वि.–सहायक, मददगार।

औफ़ (عوف) अ. पुं.–आपत्ति, आपदा, मुसीबत; कष्ट, दु:ख, तकलीफ़।

औफ़क़ (اوفق) अ. वि.–अनुकूलतम, बहुत मुआफ़िक।

औबाश (اوباش) अ.पुं.–'बौश' का बहु., लंपटजन, शोहदे-लोग, लोफ़र, दुराचारी।

औबाशी (اوباشی) अ. स्त्री.–धूर्तता, लंपटता, शुहदपन, लोफ़रपन।

औरंग (اورنگ) फा. पुं.–राजसिंहासन, तख़्तेशाही; बुद्धिमत्ता, दानाई।

औरंगज़ेब (اورنگ زیب) फा.वि.–राजसिंहासन की शोभा; शासक, हुक्मरां; एक मुगल सम्राट की उपाधि।

औरंगनशीं (اورنگ نشیں) फा. वि.–सिंहासनारूढ़, तख़्तनशीं।

औरंगे जहाँ बानी (اورنگ جہاں بانی) फा. पुं.–राजसिंहासन, शाही तख़्त, संसार का राजसिंहासन।

और (عور) अ. पुं.–कानापन, एक आँख का होना।

औरत (عورت) अ. स्त्री.–स्त्री, नारी, महिला; जाया, भार्या, पत्नी, जोरू; मनुष्य या स्त्री के गुप्तांग; हर वह चीज़ जिसके देखने से लज्जा आये।

औराक़ (اوراق) अ. पुं.–'वरक़' का बहु., पुस्तक के पन्ने, किताब के वरक़, पेड़ों के पत्ते।

औरात (عورات) अ. स्त्री.–'औरत' का बहु., स्त्रियाँ, औरतें; मनुष्य या स्त्री के गुह्यांग।

औराद (اوراد) अ. पुं.–'विर्द' का बहु. जपतप, विर्दवज़ीफ़ः।

औराम (اورام) अ. पुं.–'वरम' का बहु., सूजनें, वरम।

औरिदः (اوردہ) अ. पुं.–'वरीद' का बहु., रक्तवाहिनी रगें (नाड़ियाँ)।

औल (عول) अ. पुं.–पालन-पोषण करना, रोटी कपड़ा देना, दान; बख़्शिश।

औला (اولیٰ) अ. वि.–बहुत बढ़िया, अति उत्तम; बहुत मुनासिब, परमोचित।

औलातर (اولیٰ تر) अ.फा. वि.–उत्तमतर, बहुत उम्दा, उचिततर, मुनासिबतर।

औलातरीन (اولیٰ ترین) अ. फा. वि.–बहुत ही उत्तम; बहुत ही उचित।

औलाद (اولاد) अ. पुं.–'वलद' का बहु., संतान, बाल-बच्चे।

औलिया (اولیا) अ. पुं.–'वली' का बहु., उत्तराधिकारीगण, वारिसीन, ऋषिगण, वली अल्लाह लोग।

औशंग (اوشنگ) फा. स्त्री.–अलगनी।

औस (عوص) अ. पुं.–कठिनता, दुश्वारी, कठिनाई।

औसक़ (اوثق) अ. वि.–बहुत ही मज़बूत, दृढ़तम।

औसत (اوسط) अ. वि.–मध्य, बीच, दरमियान; माध्यम, दरमियानी; अनुपात, माध्य; एवरेज।

औसतन (اوسطاً) अ. वि.–औसत के हिसाब से, अनुपात के अनुसार।

औसतुल हाल (اوسط الحال) अ. वि.–ऐसा व्यक्ति जो न बहुत अमीर हो न बहुत ग़रीब, मध्यवित्त।

औसा (اوسع) अ. वि.–बहुत अधिक विस्तृत, वसीअतर।

औसान (اوثان) अ. पुं.–'वसन' का बहु., मूर्तियाँ, बुत।

औसान (اوسان) अ. पुं.–हवास, होश, संज्ञा, बुद्धि।

औसाफ़ (اوصاف) अ. पुं.–'वस्फ़' का बहु., गुणसमूह, ख़ूबियाँ, अच्छाइयाँ।

औसाफ़े हमीदः (اوصافِ حمیدہ) अ. पुं.–अच्छे और श्लाघ्य गुण, सत्त्वगुण, प्रशंसनीय शालीनता।

औसिया (اوصیا) अ. पुं.–'वसी' का बहु., रिक्थाधिकारी, उत्तराधिकारी, वारिस लोग।

औहद (اوحد) अ. वि.–अद्वितीय, यगाना, अनुपम।

औहाम (اوہام) अ. पु.–'वह्म' का बहु., भ्रांतियाँ, मुग़ालते, धोके।

क

कंज़ (کنز) अ. पुं–कोश, निधि, ख़ज़ाना।

क़ंज़फ़ीर (قنزفیر) अ. पुं.–वृद्धा स्त्री., बूढ़ी औरत।

कंज़े मख़्फ़ी (کنز مخفی) अ. पुं.–ज़मीन के भीतर दबा हुआ ख़ज़ाना, भूनिहित निधि।

क़ंतरः (قنطرہ) अ. पुं.–पुल, सेतु.; बड़ी इमारत, प्रासाद।

क़ंतर (قنتر) अ. वि.–ह्रस्व, छोटा, कोताह।

क़ंतूरः (قنتورہ) अ. पुं.–एक प्रकार का कोट जिसके दामन छोटे होते और जिसमें काज बहुत होते हैं।

कंदः (کندہ) फा. वि.–अंकित, खुदा हुआ; लिखित, लिखा हुआ; पत्थर आदि पर खुदा हुआ।

कंदः (کندہ) फा. पुं.–खाई, खंदक।

कंदकार (کندہ کار) फा. वि.–चाँदी, सोने, लकड़ी अथवा पत्थर पर बेल-बूटे बनाने का काम करनेवाला।

कंदःकारी (کندہ کاری) फा. स्त्री.–वे बेल-बूटे जो सोने, चाँदी, लकड़ी अथवा पत्थर आदि पर बनते हैं; बेल-बूटे बनाने का काम।

क़ंद (قند) अ. स्त्री.–सफ़ेद दाना दार शकर, शर्करा।

कंद (کند) तु. पुं.–गाँव, ग्राम, देहात।

कंद (کند) फा. स्त्री.–कंद, शकर, शर्करा, खंड।

क़ंदख़ानः (قندخانه) अ. फा. पुं.–खंडसाल, शकर बनाने का कारख़ाना।

कंदील (کندیل) फा. स्त्री.–दीपक, चिराग़; दे. 'क़िंदील'।

कंदूरी (کندوری) फा. पुं.–ख़ाना खाने का कपड़ा, दस्तरख़ान।

क़ंबर (قنبر) अ. पुं.–हज़रत अली का एक दास, जो उनका बड़ा भक्त था।

क़ंस (قنص) अ. पुं.–शिकार खेलना; जाल लगाना।

कंस (کنس) अ. पुं.–घर आदि झाड़ना, झाड़ू देना।

क़अलची (قعلچی) तु. पुं.–मीर शिकार, वह व्यक्ति जो बादशाहों के शिकार का प्रबंध करता है।

क़ईद (قعید) अ. वि.–साथ बैठने-उठनेवाला, सभासद।

क़ईर (قعیر) अ. पुं.–अथाह, गहरा, अगाध।

क़ऊर (قعور) अ. पुं.–गहरा, अथाह, गंभीर।

कख़ कख़ (کخ کخ) फा. अव्य.–छीछी, घृणावाचक शब्द; खिलखिल हँसने का शब्द।

कचः (کچه) फा. पुं.–छल्ला, उँगली में पहनने की बिना नग की अँगूठी।

कचकोल (کچکول) फा. पुं.–भीख माँगने का पियाला, भिक्षापात्र, दे. 'कजकोल' और 'कश्कोल'।

कज़ः (کژه) फा. पुं.–तालू का कौआ।

कज (کج) फा. वि.–टेढ़ा, वक्र, तिर्छा।

कज़ (کژ) फा. पुं.–कच्चा रेशम, अबरेशम; कज़, वक्र, टेढ़ा।

कज़ (کز) फा. वि.–दे. 'कज़ کژ।'

कज अक़्ल (کج عقل) अ. फा. वि.–ऐसा व्यक्ति जिससे जो कुछ कहा जाए उसका उलटा समझे, वक्रमति, विपरीतबुद्धि।

कज अख़्लाक़ (کج اخلاق) फा. अ. वि.–बेमुरव्वत, दुःशील, ख़ुर्रा, रूखा।

कज अदा (کج ادا) फा. वि.–जिसमें शील-संकोच न हो, जो बहुत ही ख़ुर्रा हो।

कज अदाई (کج ادائی) फा. स्त्री.–शील-संकोच की हीनता, ख़ुर्रापन।

कज आज़ा (کج اعضا) फा. अ. वि.–जिसके शरीर के अंग टेढ़े-मेढ़े हों, वक्रांग।

कजक (کجک) फा. पुं.–अंकुश, आँकुस, हाथीवान का यंत्र।

कज़क (کژک) फा. पुं.–दे. 'कजक'।

कज कुलाह (کج کلاه) फा. वि.–टेढ़ी टोपी ओढ़नेवाला, प्रेमपात्र, मा'शूक़; शासक, राजा।

कज कुलाही (کج کلاهی) फा. स्त्री.–बाँकापन, मा'शूक़ियत, राजापन।

कजकोल (کجکول) फा. पुं.–भीख माँगने का वर्तन, भिक्षापात्र, दे. 'कचकोल' और 'कश्कोल'।

कज ख़ुल्क़ (کج خلق) अ. फा. वि.–दे. 'कज अख़्लाक़'।

कज ख़ुल्क़ी (کج خلقی) अ. फा. स्त्री.–दुःशीलता, ख़ुर्रापन।

कज़ ज़ख़्मः (کژ زخمه) फा. वि.–धूर्त, दग़ाबाज़।

कज तब्अ (کج طبع) फा. अ. वि.–दे. 'कज मिज़ाज'।

कज़दुम (کژدم) फा. पुं.–बिच्छू, वृश्चिक।

कज निगाह (کج نگاه) फा. वि.–भेंगा, जो टेढ़ी आँखें करके देखता हो; ग़ुस्सैल, क्रुद्धात्मा।

कज निगाही (کج نگاهی) फा. स्त्री.–भेंगापन, क्रोध।

कज निहाद (کج نهاد) फा. वि.–दे. 'कज मिज़ाज'।

क़ज़्फ़ (قذف) अ. पुं.-चटयल मैदान, लंबा-चौड़ा मैदान।

कज फ़ह्म (کج فهم) फा. अ. वि.–उलटी समझवाला, मूर्ख, वक्रबुद्धि।

कज फ़हमी (کج فهمی) फा. अ. स्त्री.–उलटी समझ, मूर्खता।

कज बह्स (کج بحث) फा. अ. वि.–उलटी सीधी बहस करनेवाला, मूर्खता का वाद-विवाद करनेवाला, कुतर्की।

कज बह्सी (کج بحثی) फा. अ. स्त्री.–उलटा सीधा वाद-विवाद, किसी की बात न मानकर केवल अपनी बात मनवाना।

कजबाज़ (کج باز) फा. वि.–लेन-देन में व्यवहार-कुशलता न करनेवाला, बदनीयत।

कजबीं (کج بین) फा. वि.–केवल बुराइयाँ और त्रुटियाँ देखनेवाला।

कजबीनी (کج بینی) फा. स्त्री.–केवल बुराइयाँ और त्रुटियाँ देखना।

क़ज़्म (قزم) अ. स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनगी; अधम, नीच, कमीना; कमीने, नीच लोग।

कज मज (کج مج) फा. वि.–जिसकी जिह्वा बात करते समय लड़खड़ाती हो, जो ठीक से बात न कर सके।

कज मज ज़बाँ (کج مج زبان) फा. वि.–जिसकी जीभ बातें करते समय लड़खड़ाती हो; जिसे बात करने की तमीज़ न हो, मूर्ख।

कज मज बयाँ (کج مج بیان) फा. अ. वि.–दे. 'कज-मज-ज़बाँ'।

कजमदारो मरेज़ (کج مدار و مریز) फा. वा.–'टेढ़ा रखो और गिराओ मत'। ऐसी बात का आदेश जो असंभव हो और हो न सके।

कज मिज़ाज (کج مزاج) फा. अ. वि.–जिसके स्वभाव में टेढ़ापन हो, जो सीधी-सादी बात में भी शंका करे।

कज रफ़्तार (كج رفتار) फा. वि.–टेढ़ी चाल चलनेवाला, बुरा आचरण करनेवाला; अत्याचारी, ज़ालिम।

कजरवी (كج روى) फा. स्त्री.–टेढ़ीचाल, दुराचार, अत्याचार, ज़ुल्म।

कजरौ (كجرو) फा. वि.–दे. 'कज रफ़्तार'।

क़ज़ल (قزل) अ. पुं.–लँगड़ापन, बहुत अधिक लँगड़ापन।

क़ज़ा (قضا) अ. स्त्री.–आदेश देना; मृत्यु, मौत; न्याय, इंसाफ़; जो इबादत अपने ठीक समय पर न की गयी हो।

क़ज़ा (قزى) अं. पुं.–तिनका, घास-फूस; आँख में तिनका पड़ जाना।

क़ज़ाए कार (قضائے كار) अ. फा. वि.–दे. 'क़ज़ारा'।

क़ज़ाए मुअल्लक़ (قضائے معلق) अ. स्त्री.–वह मृत्यु जो आचनक हो, जैसे पेड़ से गिर के, आकस्मिक मृत्यु।

क़ज़ाए मुब्रम (قضائے مبرم) अ. स्त्री.–वह मृत्यु जो टल न सके, निश्चित मृत्यु।

क़ज़ाए हाजत (قضائے حاجت)अ. स्त्री-शौचकर्म, पाख़ाना, आकस्मिक आवश्यकता।

क़ज़ाकंद (كزاكند, قزاكند) फा. पुं.–एक प्रकार का कोट जिसमें कच्चा रेशम लपेटा जाता है, जिससे उस पर तलवार असर नहीं करती।

क़ज़ाया (قضايا) अ. पुं.–'क़ज़ीयः' का बहु., हुक्म; ख़बरें; झगड़े।

क़ज़ारा (قضارا) अ. फा. वि.–अचानक, अनायास, सहसा, अकस्मात्, नागहाँ।

कजावः (كجاوه) फा. पुं.–ऊँट का हौदा जिसमें दोनों ओर अदमी बैठते हैं।

कज़ा व कज़ा (كزا و كزا) अ. अव्य.–ऐसे और ऐसे, यों और यों।

कज़िब (كزب) अ. वि.–झूठा, मिथ्याभाषी।

क़ज़िर (قزر) अ. वि.–अपवित्र, नापाक; मलिन, गंदा।

क़ज़िल (قزل) अ. वि.–लँगड़ा, पंगु।

कजी (كجى) फा. स्त्री–टेढ़ापन, वक्रता।

कजीन (كجين) तु. पुं.–घोड़े की पाखर।

क़ज़ीब (قضيب) अ. पुं.–पेड़ की डाली; शिश्न, मेहन, लिंग।

कज़ीम (كظيم) अ. वि.–क्रोध पी जानेवाला।

क़ज़ीम (قضيم) अ. पुं.–घोड़े को दिये जानेवाले जौ, क्रोध के समय क्रोध न करनेवाला, क्षमाशील।

कजीम (كجيم) तु. पुं.–दे. 'कज़ीन'।

क़ज़ीयः (قضيه) अ. पुं.–आदेश, हुक्म; झगड़ा, आपसी झगड़ा, व्यवहार, मुक़दमा।

क़ज़्ग़ान (قزغان) तु. स्त्री.–बड़ी डेगची; कड़ाही।

क़ज़्ज़ाक़ (قزاق) तु. पुं.–लुटेरा, डाकू, दस्यु।

क़ज़्ज़ाक़ी (قزاقى) तु. स्त्री.–लूटमार, डकैती।

कज़्ज़ाब (كزاب) अ. वि.–बहुत बड़ा झूठा, अनर्गलभाषी; गप्पी, वाचाल, मुखर।

क़ज़्फ़ (قزف) अ. पुं.–पत्थर मारना; गाली देना; किसी पर व्यभिचार या दुराचार का आरोप लगाना।

कज़्म (كزم) फा. पुं.–काई, जो पानी के किनारे हो जाती है।

कज़्म (كظم)अ. पुं.–ग़ुस्सा पी जाना, क्रोध के समय क्रोध न करना।

कज़्लिक (كزلك) फा. पुं.–छोटा चाक़ू।

क़ज़्वीन (قزوين) फा. पुं.–इराक़ अजम का एक नगर।

क़त (قط) अ. पुं.–क़लम की नोक; क़लम की नोक बनाना।

क़तक़ (قتق) तु. पुं.–वह खटास जो आटे में मिलाते हैं।

कतख़ुदा (كت خدا) फा. वि.–विवाहित अथवा विवाहिता; गृहस्वामी, घरवाला, गृहस्थ।

कतख़ुदाई (كتخدائى) फ़ा. स्त्री.–विवाह, पाणिग्रहण, ब्याह, शादी।

क़तज़न (قطزن) अ. फा. पुं.–वह चीज़ जिस पर रखकर क़लम को क़त लगाते हैं।

क़तन (قطن) अ. पुं.–दोनों चूतड़ों के बीच की हड्डी; पक्षी की पूँछ की जड़।

क़तम (قطم) अ. पु.–कामातुरता, शह्वत का ज़ोर।

कताँ (كتان) फा. पुं.–अलसी, अलसी का बीज, अलसी के पेड़ के रेशे से बना हुआ कपड़ा।

क़ता (قطا) अ. पुं.–एक चिड़िया जो पत्थर खाती है।

क़ताइफ़ (قطائف) अ. पु.–'क़तीफ़ः' का बहु., मख़मल की चादरें, मख़मली कपड़े।

कताइब (كتائب)अ. पु.–'कतीबः' का बहु., सेनाएँ, फ़ौजें।

क़ताम (قتام) अ. पुं.–धूल-मिट्टी, गर्द-ग़ुबार।

कताम (كتام) अ. पुं.–छिपना, गुप्त होना।

क़तार (قطار) अ. स्त्री.–शुद्ध शब्द 'क़ितार' है, परंतु उर्दू में 'क़तार' ही बोलते हैं, पंक्ति, पाँति, पंगत।

कतार दर क़तार (قطار در قطار) अ. फा. वि.–बहुत-सी पंवितयों में, पंक्तियाँ बनाकर; बहुत अधिक।

क़तारीक़ (قطاريق) अ. पुं.–युद्ध में सैनिकों का कोलाहल; कोलाहल, शोर-ग़ुल।

कतिफ़ (كتف) अ. पुं.–कंधा, स्कंध, शाना।

क़तीअः (قطيعه) अ. पुं.–भेड़-बकरी या गाय-भैंसों का रेवड़।

कतीअ (قطيع) अ. पु.–दे. 'क़तीअः'।

कतीअत (قطیعت) अ. स्त्री.–जुदाई, विच्छेद; पृथक्ता, अलाहदगी; काटना।

क़तीन (قتین) अ.वि.–कम खानेवाला, पुरुष अथवा स्त्री।

क़तीफ़ः (قطیفہ) अ. पु.–मख़मल का कपड़ा।

कतीबः (کتیبہ) अ. पुं.–सेना, फ़ौज।

कतीब (کتیب) अ. वि.–लिखित, लिखा हुआ।

कतीरः (کتیرہ) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध गोंद जो दवा के काम आता है, और जिसका अधिक खाना नपुंसक बना देता है।

क़तील (قتیل) अ. वि.–जिसे मार डाला गया हो, पुरुष हो अथवा स्त्री, हत, वधित।

क़तूर (قطور) अ. पुं.–पतली दवा जो कान या नाक में टपकायी जाती है।

क़तूर (قتور) अ. वि.–बख़ील, कंजूस, कृपण।

क़त्अः (قطعہ) अ. पुं.–खंड, टुकड़ा; ज़मीन का टुकड़ा, भूमिखंड; ता'दाद, मात्रा, जैसे–चार क़त्अः कपड़े; उर्दू अथवा फ़ार्सी नज़्म की एक क़िस्म जिसमें ग़ज़ल की तरह क़ाफ़िए की पाबंदी होती है, और जिसमें कोई एक बात कही जाती है।

क़त्अ (قطع) अ. स्त्री.–काटना; पृथक् करना; विच्छेद; वेषभूषा, वज़्अ; प्रकार, रंग।

क़त्अन् (قطعاً) अ. वि.–कदापि, हरगिज़; नितांत, बिलकुल।

क़त्ई (قطعی) अ. वि.–कदापि, हरगिज़; नितांत, बिलकुल; अटल, मज़बूत; अंतिम, आख़िरी।

क़त्ईयत (قطعیت) अ. स्त्री.–अंतिमता, आख़िरीपन; अटलपन।

क़त्ए तअल्लुक़ (قطع تعلق) अ. पुं.–परस्पर मेल-मिलाप का ख़ातिमा, सम्बन्ध-विच्छेद; विवाह-विच्छेद, तलाक़, "क़तअ कीजिए न तअल्लुक़ हमसे, कुछ नहीं है तो अदावत ही सही!"–ग़ालिब।

क़त्तात (قتات) अ. वि.–निंदक, बदगो; पिशुन, चुग़ुल।

क़त्तामः (قطامہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसमें काम-वासना अधिक हो; स्त्रियों के लिए एक गाली, 'छिनाल'।

क़त्तालः (قتالہ) अ. स्त्री.–बहुत अधिक क़तल करनेवाली; प्रेयसी, प्रेमिका, माशूक़ा।

क़त्ताल (قتال) अ. वि.–बहुत अधिक क़तल करनेवाला, जल्लाद; प्रेमपात्र, माशूक़।

क़त्फ़ (قطف) अ. पुं.–फल आदि बीनना, मेवा चुनना।

कत्फ़ (کتف) अ. पुं.–कंधा, स्कन्ध; धीरे-धीरे चलना; दोनों हाथ पीछे बाँधना; कंधे का ऊँचा होना।

कत्बः (کتبہ) अ. पुं.–वह पत्थर जो किसी इमारत या क़ब्र पर लगाया जाता है, और जिसमें मकान आदि बनने का विवरण या मरनेवाले का नाम और उसके मरने की तारीख़ आदि दी जाती है, शिलालेख, अंतर्लेख, अभिलेख।

कत्म (کتم) अ. पुं.–छिपाव, गुप्ति, पोशीदगी।

कत्मे अदम (کتم عدم) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ जीवात्मा उत्पत्ति से पहले रहती है।

क़त्रः (قطرہ) अ. पुं.–बिंदु, बूँद।

क़त्रःज़न (قطرہ زن) अ. फा. वि.–बहुत शीघ्र चलने या दौड़नेवाला, शीघ्रगामी।

क़त्रःदुज़्द (قطرہ دزد) अ. फा. पुं.–बादल, अभ्र; सूर्य, सूरज।

क़त्र (قطر) अ. पुं.–वर्षा, बारिश।

क़त्रए अश्क (قطرۂ اشک) अ. फा. पुं.–आँसू की बूँद, अश्रुकण।

क़त्रए आब (قطرۂ آب) अ. फा. पुं.–पानी की बूँद, जलकण।

क़त्ल (قتل) अ. पुं.–वध, हनन, हत्या, हिंसा, जान से मार डालना।

क़त्लगाह (قتلگاہ) अ. फा. स्त्री.–क़त्ल करने का स्थान, वधस्थल, वधभूमि, वधगृह।

क़त्ला (قتلی) अ. पुं.–'क़तील' का बहु., क़तल होनेवाले।

क़त्ले अम्द (قتل عمد) अ. पुं.–जान-बूझकर हत्या, प्रयतित वध, वध करने के निश्चय से वध।

क़त्ले आम (قتل عام) अ. पुं.–सर्वसाधारण का वध, अपराधी अनपराधी छोटे-बड़े पुरुष स्त्री सब की सिर से हत्या।

कदः (کدہ) फा. पुं.–घर, गृह, मकान, प्रत्यय रूप में–मदिरा+कदः=आलय (मदिरालय—मैख़ाना)।

कद (کد) फा. पुं.–दे. 'कदः'।

क़द [द्द] (قد) अ. पुं.–डील, आकार, क़ामत।

कद [द्द] (کد) अ. स्त्री.–वैमनस्य, रंजिश; द्वेष, कीना; प्रयत्न, परिश्रम, कोशिश।

कदख़ुदा (کدخدا) फा. वि.–दे. 'कतख़ुदा'।

कदख़ुदाई (کدخدائی) फा. स्त्री.–दे. 'कत ख़ुदाई'।

क़दग़न (قد غن) तु. पुं.–मनाही का हुक्म, निषेधादेश; प्रतिबंध, रोक, मनाही।

क़दग़नची (قدغنچی) तु. पुं.–रोकनेवाला, मना करनेवाला, निषेधक, प्रतिबंधक।

कदबानू (کدبانو) फा. स्त्री.–गृह-स्वामिनी, घर की मालिक; घर-गृहस्ती वाली स्त्री, महिला, ख़ातून।

क़दम (قدم) अ. पुं.–पद, पाँव, पैर; डग, एक क़दम की दूरी।

क़दम ब क़दम (قدم بقدم) अ. फा. वि.–क़दम से क़दम मिलाकर, बराबर-बराबर, साथ-साथ।

क़दमबाज (قدم باز) अ. फा. वि.–तेज़ चलनेवाला, शीघ्र-गति; 'क़दम चाल' चलनेवाला घोड़ा।

क़दमबोस (قدم بوس) अ. फा. वि.–पाँव चूमनेवाला, पद-चुंबक।

क़दमबोसी (قدم بوسی) अ. फा. स्त्री.–पाँव चूमना, पद-चुंबन; बड़े व्यक्ति की मुलाक़ात।

क़दमरंजः (قدم رنجہ) अ. फा. वि.–पदार्पण करनेवाला, आनेवाला, पधारनेवाला।

क़दमरंजगी (قدم رنجگی) अ. फा. स्त्री.–पदार्पण, आना, तशरीफ़ लाना।

क़दर (قدر) अ. स्त्री.–आदेश, हुक्म; पराकाष्ठा, इंतिहा; अनुमान, अंदाजा; शक्ति, ताक़त; भाग्य, तक़्दीर।

कदर (کدر) अ. स्त्री.–अँधेरा, तीरगी; मलिनता, मैला-पन।

कदर (کدر) फा. पुं.–केवड़े का पेड़।

क़दरअंदाज़ (قدر انداز) अ. फा. वि.–ठीक निशाना लगाने वाला, लक्ष्यभेदी, शीघ्रभेदी।

क़दरअंदाज़ी (قدر اندازی) अ. फा. स्त्री.–ठीक निशाना लगाना, निशाने का अचूक होना।

क़दह् (قدح) अ. पुं.–पियाला, चषक; शराब पीने का जाम, पान-पात्र, पेयपात्र, प्रत्यय रूप में—मै=मद्य+क़दह्=प्याला, पात्र (मधुपात्र, मधुप्याला)।

क़दह्कश (قدح کش) अ.फा. वि.–शराबी, मद्यप।

क़दह्ख़्वार (قدح خوار) अ.फा. वि.–दे. 'क़दह्कश'।

क़दह्नोश (قدح نوش) अ. फा. वि.–दे. 'क़दह्कश'।

क़दामत (قدامت) अ. स्त्री.–प्राचीनता, पुरातत्त्व, पुरानापन (समय का)।

क़दामत परस्त (قدامت پرست) अ.फा. वि.–जो पुरानी बातों को छोड़कर नयी बातें ग्रहण न करे, रूढ़िवादी, प्राचीनतावादी।

क़दामत परस्ती (قدامت پرستی) अ. फा. स्त्री.–पुरानी बातों को छोड़कर नये खयालात का ग्रहण न करना, 'रूढ़िवाद' प्राचीनतावाद।

क़दामत पसंद (قدامت پسند) अ.फा. वि.–दे. 'क़दामत परस्त'।

क़दामत पसंदी (قدامت پسندی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'क़दामत परस्ती'।

कदिर (کدر) अ. वि.–मैला, गँदला, मलिन, मटीला।

कदीद (کدید) अ. स्त्री.–कूटी-पीटी ज़मीन।

क़दीद (قدید) अ. पुं.–सुखाया हुआ मांस जिसे पकाकर खाते हैं।

क़दीम (قدیم) अ. वि.–पुरातन, पुराना; जो आदि से हो, अनादि, बहुत दिनों का।

क़दीमानः (قدیمانہ) अ. फा. वि.–पुराने समय का; पुराना जैसा, क़दीमी।

क़दीमी (قدیمی) अ. वि.–पुराना, पुरातन; पुराने समय का।

कदीरः (کدیرہ) अ. वि.–मलिन, गदला, मटीला; गुप्त, पोशीदा।

क़दीर (قدیر) अ. पु.–शक्तिमान्, ताक़तवर; समर्थ, क़ुद्रतवाला; सर्वशक्तिमान् ईश्वर।

क़दीस (قدیس) अ. पुं.–मुक्ता, मोती।

कद्दू (کدو) फा. पुं.–लौकी, तूँबी; लौकी का ख़ोल, जिसका पियाला आदि बनाते हैं; पियाला।

क़दूअ (قدوع) अ. वि.–अधम, नीच, कमीना।

कदूए हज्जाम (کدوے حجام) अ. फा. पुं.–पछने लगानेवालों का पियाला जिससे वह ख़ून खींचते हैं, फ़स्द खोलनेवाले नाई का प्याला।

कदूकश (کدو کش) फा. पुं.–लौकी आदि छीलने का यंत्र, कद्दूकश।

कदूद (کدود) अ. वि.–विपत्ति उठानेवाला व्यक्ति, (पु.) वह कुआँ जिसमें से पानी बड़ी कठिनता से निकले।

क़दूम (قدوم) अ. पुं.–बढ़इयों का बसूला; बार-बार आगे आनेवाला व्यक्ति।

क़दूस (قدوس) अ. वि.–तलवार लेकर सामना करनेवाला व्यक्ति।

क़दूह् (قدوح) अ. पुं.–वह कुआँ जिसमें से हाथ से पानी निकाल लें, बहुत उथला कुआँ।

कदेवर (کدیور) फा. पुं.–किसान, कृषक; गृहस्वामी, घरवाला; गाँव का मुखिया, पटेल।

क़दो क़ामत (قدو قامت) अ. पुं.–डील-डौल, "क़दो-क़ामत यार का समझा अँधेरी रात में, धोके-धोके में बहुत बोसे लिए शहतीर के।"

कदो काविश (کدو کاوش) फा. स्त्री.–दौड़-धूप, भाग-दौड़, परिश्रम, मेहनत।

क़द्दावर (قدآور) अ.फा. पुं.–लंबा-तड़ंगा, गिरांडील।

क़द्दे आदम (قد آدم) अ. वि.–मनुष्य की लंबाई के बराबर लंबा।

क़द्र (قدر) अ. स्त्री.–आदर, सत्कार, आवभगत; सम्मान, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; मूल्य, क़ीमत; गुण की परख।

क़द्रदाँ (قدرداں) अ. फा. वि.–गुण की क़द्र (क़दर) पहचाननेवाला, गुण-ग्राहक, गुणज्ञ।

क़द्रदानी (قدردانی) अ.फा. स्त्री.–गुण की क़द्र पहचानना, गुण की परख।

क़द्रशनास (قدرشناس)अ.फा. वि.–दे. 'क़द्रदाँ'।

क़द्रशनासी (قدرشناسی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'क़द्रदानी'।

क़द्रे (قدرے) फा. वि.–थोड़ा, ज़रा-सा, किसी क़दर, किंचित्, किंचन, किंचिन्मात्र।

क़द्ह (قدح) अ. स्त्री.–निंदा, हज्व; तिरस्कार, अपमान, तहक़ीर।

कन (کن) फा. प्रत्य.–खोदनेवाला, जैसे–'कानकन', कान खोदनेवाला।

कनफ़ (کنف)अ. पुं.–किनारा; तरफ़, छोर; दिशा, जानिब, ओर; पनाह, रक्षा, त्राण।

कनब (کنب) अ. पुं.–चटाई बुनने की एक घास; काम की अधिकता से हाथों के छाले; हँसी में हाथा-पाई।

क़नवात (قنوات) अ. पुं.–'क़नात' का बहु., पटी हुई नालियाँ; भाले; पीठ के बाँसे (रीढ़) की हड्डियाँ।

क़नस (قنس) अ. पुं.–थोड़ी-सी क़।

क़नाअत (قناعت) अ. स्त्री.–थोड़ी-सी चीज़ पर संतोष, भाग्यतुष्टि।

क़नाअत गुज़ीं (قناعت گزین) अ. फा. वि.–जो कुछ मिल जाय उसी पर प्रसन्नता से जीवन व्यतीत करनेवाला, भाग्यतुष्ट।

क़नाअत शिआर (قناعت شعار)अ.वि.–दे.'क़नाअत गुज़ीं'।

कनाइस (کنائس) अ. पुं.–'कनीसः' का बहु., ईसाइयों के गिरजे।

क़नात (قنات) अ. पुं.–पटी हुई नाली; भाला; रीढ़ की हड्डी।

क़नात (قنات) तु. स्त्री.–मोटे कपड़े का पर्दा जिसकी दीवार खड़ी की जाती है।

क़नादील (قنادیل) अ. स्त्री.–'क़िंदील' का बहु., क़िंदीलें।

कनानः (کنانہ) अ. वि.–पुराना, जीर्ण, कोह्नः।

कनान (کنان) अ. वि.–दे. 'कनानः'।

कनारः (کنارہ) फा. पुं.–तट, साहिल; छोर, सिरा; अंत, अख़ीर; एकान्त, गोशा।

कनारःकश (کنارہ کش) फा. वि.–पृथक्, अलग; निवृत्त, बेतअल्लुक़; एकांतवासी, गोशानशीन।

कनारःकशी (کنارہ کشی) फा. स्त्री.–पृथक्ता, अलहदगी; निवृत्ति, बेतअल्लुक़ी; एकांतवास, गोशानशीनी।

कनार (کنار) फा. पुं.–अंक, क्रोड़; गोद, किनारः, छोर; तट, साहिल।

कनंदः (کنندہ) फा. वि.–खोदनेवाला।

कनिश (کنش)फा. स्त्री.–कीना, द्वेष; वैमनस्य, मनमुटाव।

कनीज़ (کنیز) फा. स्त्री.–दासी, सेविका, लौंडी, बाँदी।

कनीज़क (کنیزک) फा. स्त्री.–छोटी दासी।

कनीफ़ (کنیف) अ. पुं.–शौचगृह, पाख़ाना; तलगृह, तहख़ाना; स्नानागार, ग़ुस्लख़ाना।

कनीसः (کنیسہ) अ. पुं.–ईसाइयों का उपासना-गृह, गिरजा, दे. 'किनीसः'।

क़नीस (قنیص) अ. पुं.–शिकार, आखेट, मृगया।

क़नूत (قنوط) अ. वि.–निराश, हताश, नाउम्मीद।

कनूद (کنود) अ. वि.–कृतघ्न, अकृतज्ञ, एहसान फ़रामोश।

कन्आँ (کنعاں) अ. पुं.–'कन्आन' का लघु., देखो।

कन्आन (کنعان) अ. पुं.–हज़रत यूसुफ़ की जन्मभूमि।

कन्आनी (کنعانی) अ. वि.–'कन्आन' का निवासी; 'कन्आन' से सम्बन्धित।

क़न्नाद (قناد) अ. पुं.–मिठाई बनानेवाला, हलवाई; शकर बनानेवाला।

क़न्नादख़ानः (قنادخانہ) अ.फा. पुं.–शकर का कारख़ाना; हलवाई की दुकान।

कन्नास (کناس) अ. पुं.–झाड़ू देनेवाला, मेहतर, भंगी; फाँसी देनेवाला, जल्लाद।

कन्फ़ (کنف) अ. पुं.–देख-रेख करना, निगरानी करना; सहायता करना; फिर जाना, पलट जाना।

क़न्फ़ज़ (قنفز) अ. स्त्री.–दे. शुद्ध शब्द 'क़ुन्फ़ुज़'।

कपंक (کپنک) अ. पुं.–कम्मल।

कपी (کپی) फा. पुं.–बंदर, शाखामृग, कपि, वानर।

कप्नक (کپنک) फा. पुं.–कम्मल, कम्बल।

कफ़ः (کفہ) फा. पुं.–अधकुटी बाल जिसमें दाने हों।

कफ़ (کف) फा. पुं.–फेन, झाग।

कफ़ [फ़फ़] (کف) अ. पुं.–पंजा, हाथ का पंजा; हथेली, करतल; उर्दू छंद की परिभाषा में सात अक्षरवाले 'गण' का अंतिम अक्षर गिराकर 'फ़ाइलातुन्' से 'फ़ाइलातु' और 'मुफ़ाईलुन्' से 'मुफ़ाईलु' आदि बनाना—"पहचानिए तो, किसका यह नक़्शे–कफ़े–पा है, अक्सीर उठा लाया दुश्मन की गली से मैं।"—दाग़।

क़फ़ (قف) अ. स्त्री.–घास या तरकारी, जो सूखी हुई हो।

कफ़गीर (کفگیر) फा. स्त्री.–चमचा, डोई; एक प्रकार का छेददार चमचा।

कफ़चः (کفچہ) फा. पुं.–कफ़गीर, डोई; चमचा; साँप का फन।

कफ़चए मार (کفچۂ مار) फा. पुं.–साँप का फन, फण।

क़फ़द (قفد) अ. पुं.–पाँव की उँगलियों के बल चलना।

कफ़न (کفن) अ. पुं.–मुर्दे को दिया जानेवाला कपड़ा, मृतचैल, मृतावरकवस्त्र।

कफ़न दुज़्द (کفن دزد) अ. फा. वि.–ऐसा धूर्त चोर जो मुर्दे का कफ़न भी न छोड़े, बहुत ही बेईमान; क़ब्र से क़फ़न निकालकर उससे अपना ख़र्च चलानेवाला।

कफ़रः (کفرہ) अ. पुं.–'काफ़िर' का बहु., काफ़िर लोग।

क़फ़र (قفر) अ. पुं.–धन का कम होना; शरीर में मांस का कम होना।

कफ़ल (کفل) अ. पुं.–उपस्थ, नितंब, चूतड़।

क़फ़स (قفس, قفص) अ. पुं.–पिंजड़ा, वितंस; कारागार, क़ैदखाना।

क़फ़सआश्ना (قفس آشنا) अ. फा. वि.–जिसे पिंजड़े में रहने का अभ्यास हो; जो कारागार में रह चुका हो।

क़फ़से उंसुरी (قفس عنصری) अ. पुं.–पंचभूत रूपी पिंजड़ा, या पिंजड़ा रूपी पंचभूत, मनुष्य का शरीर, प्राणी का शरीर।

कफ़ा (کفا) अ. पुं.–सिर के बल गिरना, औंधा गिरना; फिराना, लौटाना।

क़फ़ा (قفا) अ. पुं.–गुद्दी, सिर के पीछे का भाग।

कफ़ाफ़ (کفاف) अ. पुं.–अनुमान, अंदाज़ा; प्रतिदिन की जीविका जो ग़ुजर भर की हो।

क़फ़ार (قفار) अ. पुं.–बे सालन की रोटीं; बिना हरियाली की भूमि।

कफ़ालत (کفالت) अ. स्त्री.–प्रतिभूति, ज़मानत; भरण-पोषण, परवरिश।

कफ़ालतनामः (کفالت نامہ) अ. फा. पुं.–प्रतिभूतिपत्र, ज़मानतनामा।

क़फ़ाहीर (قفاهیر) फ़ा. पुं.–सुंदर और प्रियदर्शन मुख।

कफ़ीदः (کفیدہ) फा. वि.–फटा हुआ, तड़का हुआ, विदीर्ण।

क़फ़ीफ़ (قفیف) अ. पुं.–सूखी हुई घास।

क़फ़ीर (قفیز) अ. पुं.–एक सौ चवालीस शर्ईगज़ भूमि; छियानवे रतल का पैमाना।

कफ़ील (کفیل) अ. वि.–प्रतिभू, ज़ामिन; पोषक, परवरिश कुनिंदः।

कफ़ूर (کفور) अ. वि.–कृतघ्न, अकृतज्ञ, नाशुक्रा।

कफ़े दस्त (کف دست) फा. पुं.–हथेली, करतल।

कफ़े पा (کف پا) फा. पुं.–तलवा, पदतल।

कफ़े मार (کف مار) फा. पुं.–साँप का फन।

क़फ़्क़ाज़ (قفقاز) फा. पुं.–काकेशिया, यूरोपीय रूस का प्रदेश।

कफ़्तः (کفتہ) फा. वि.–फटा हुआ, विदीर्ण।

कफ़्तार (کفتار) फा. पुं.–बिज्जू, बिल्ली के बराबर एक काला जंतु जो मृत मनुष्य का मांस खाता है।

क़फ़्फ़ाफ़ (قففاف) अ. पुं.–चाँदी-सोना।

कफ़्फ़ारः (کفارہ) अ. पुं.–किसी पाप से शुद्धि के लिए किया जानेवाला कृत्य, प्रायश्चित्त।

क़फ़्फ़ाल (قفال) अ. वि.–क़ुफ़ुल बनानेवाला, ताला बनानेवाला।

कफ़्फ़ुल ख़ज़ीब (کف الخضیب) अ. पुं.–एक तारा।

कफ़्फ़े ख़ज़ीब (کف خضیب) अ. पुं.–रँगा हुआ हाथ।

कफ़्र (کفر) अ. पुं.–छिपाना, गोपन; बड़ा पियाला।

कफ़्श (کفش) फा. स्त्री. जूता, पादुका, पदत्राण।

कफ़्शकार (کفش کار) फा. वि.–जूते बनानेवाला; जूते मारनेवाला, कफ़्शकारी करनेवाला।

कफ़्शकारी (کفش کاری) फा. स्त्री.–जूते बनाने का काम; जूते मारने का काम, जूतेबाज़ी।

कफ़्शदोज़ (کفش دوز) फा. वि.–जूते गाँठनेवाला, मोची।

कफ़्शदोज़ी (کفش دوزی) फा. स्त्री.–जूते गाँठने का काम।

कफ़्सबरदार (کفش بردار) फा. वि.–जूते उठानेवाला; बहुत बड़ा भक्त, बहुत बड़ा श्रद्धावान्।

कफ़्शबरदारी (کفش برداری) फा. स्त्री.–जूते उठाना; भक्ति, श्रद्धा।

क़बक़ (قبق) तु. पुं.–लौकी, कद्दू।

क़बक़अंदाज़ (قبق انداز) तु. फा. वि.–बहुत अच्छा निशानेबाज, लक्ष्यभेदी, निशानची, निशाना लगानेवाला।

क़बक़अंदाज़ी (قبق اندازی) तु. फा. स्त्री.–अच्छा निशाना लगाना, निशानाबाज़ी, क़दर अंदाज़ी।

क़बक़अफ़्गन (قبق افگن) तु. फा. वि.–दे. 'क़बक़ अंदाज'।

क़बक़अफ़्गनी (قبق افگنی) तु. फा. स्त्री.–दे. 'क़बक़ अंदाज़ी'।

कबद (کبد) अ. स्त्री. कठोरता, सख़्ती; कठिनाई।

क़बज़ (قبض) अ. पुं.–पेट की ऐंठन और पीड़ा, 'क़ब्ज़' भी प्रचलित।

क़बब (قبب) अ. वि.–पतली कमरवाला, कृशोदर, कृशकटि।

क़बस (قبس) अ. पुं.–अंगारा, अग्निखंड, दहकता हुआ कोयला।

कबस (کبس) अ. पुं.–गढ़े में मुँह के बल गिरना।

क़बा (قبا) अ. स्त्री.–दोहरा लंबा अँगरखा, चोग़ा, गाउन।

कबाइर (کبائر) अ. पुं.–'कबीरः' का बहु., बड़े-बड़े पाप, महापातक।

क़बाइल (قبائل) अ. पुं.–‘क़बील:.’ का बहु., क़बीले, कुटुंब, जरगे।

क़बाइली (قبائلی) अ. वि.–सरहदी, अफ़ग़ानिस्तान की सरहद के निवासी।

क़बाएह (قبائح) अ. पुं.–‘क़बीह:’ का बहु., बुराइयाँ, ख़राबियाँ।

क़बाचा (قباچا) फा. पुं.–छोटी क़बा।

कबादः (کبادہ) फा. पुं.–बहुत नरम धनुष; लेज़ुम, जिसे पहलवान हिलाते हैं।

क़बादोज़ (قبادوز) अ. फा. वि.–क़बा सीनेवाला, दर्ज़ी।

कबाबः (کبابہ) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध बीज, तोमर के बीज।

कबाब (کباب) अ. पुं.–क़ीमे की तली हुई टिकियाँ अथवा सीख पर सेंकी हुई नलियाँ।

कबाबचीनी (کبابچینی) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध बीज, शीतलचीनी।

क़बालः (قبالہ) अ. पुं.–ज़मानत करना; घर की बिक्री की दस्तावेज़; बिक्री का काग़ज़।

क़बालःनवीस (قبالہنویس) अ. फा. वि.–क़बाला लिखनेवाला, दस्तावेजें लिखनेवाला।

क़बालःनवीसी (قبالہنویسی) अ. फा. स्त्री.–क़बाले और दस्तावेज़ें लिखने का पेशा।

क़बाह (قباح) अ. पुं.–निकृष्ट होना, ख़राब होना, बुरा होना।

क़बाहत (قباحت) अ. स्त्री.–बुराई, ख़राबी, अनिष्ट, आपत्ति; कठिनता, मुश्किल; बाधा, ख़लल।

कबिद (کبد) अ. पुं.–जिगर, कलेजा, यकृत्।

क़बीज़ (قبیض) अ. वि.–बहुत तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगामी।

कबीदः (کبیدہ) फा. वि.–दुःखित, पीड़ित, रंजीदा; मलिन, खिन्न, अफ़्सुर्दः।

कबीदःख़ातिर (کبیدہخاطر) फा. अ. वि.–मलिनचित्त, खिन्नमनस्क, अप्रसन्न, नाख़ुश, अफ़्सुर्दः।

कबीदगी (کبیدگی) फा. स्त्री.–मलिनता, अफ़्सुर्दगी, अप्रसन्नता, नाराज़ी।

कबीब (کبیب) अ. वि.–औंधे मुँह पड़ा हुआ; सिर के बल गिरा हुआ; अधोमुख।

कबीरः (کبیرہ) अ. पुं.–बड़ी स्त्री; बड़ा पाप, महापातक।

कबीर (کبیر) अ. वि.–बड़ा, महान्; श्रेष्ठ, उत्तम, आ’ला।

क़बीलः (قبیلہ) अ. पुं.–वंश, गोत्र, ख़ानदान; एक दल के आदमी।

क़बील (قبیل) अ. पुं.–क़बूल करनेवाला; दल, समुदाय, गिरोह।

कबीसः (کبیسہ) अ. पुं.–कुआँ या नदी जो मट्टी से पट गयी हो; सिर झुकाये हुए, परीशान; मलमास, लौंद का महीना।

क़बीह (قبیح) अ. वि.–निकृष्ट, ख़राब; दूषित, बुरा; अप्रियदर्शन, बदनुमा।

क़बीहसूरत (قبیح صورت) अ. वि.–बुरी सूरत वाला, कुरूप, कदाकार।

क़बुर्ग़ः (قبرغہ) तु. पुं.–पार्श्व, पहलू, बग़ल; पार्श्वास्थि, पहलू की हड्डी।

कबूतर (کبوتر) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध चिड़िया, कपोत, पारावत।

कबूतरख़ानः (کبوترخانہ) फा. पुं.–कबूतरों के रहने का कावुक; ऐसा स्थान जहाँ लोग आते-जाते रहते हों।

कबूतरदम (کبوتردم) फा. पुं.–लंबा चुंबन, ख़ूब खींचकर लिया हुआ बोसा।

कबूतरपरपा (کبوتر پرپا) फा. पुं.–एक प्रकार का कबूतर जिसके पाँव में पर होते हैं और वह अच्छी तरह उड़ नहीं सकता।

कबूतरबाज़ (کبوترباز) फा. वि.–कबूतर उड़ानेवाला, कबूतर पालनेवाला।

कबूतरबाज़ी (کبوتربازی) फा. स्त्री.–कबूतर उड़ाने और पालने का काम, कपोत-क्रीडा।

कबूद (کبود) फा. पुं.–हलका नीला रंग; हलके नीले रंग का।

कबूदी (کبودی) फा. वि.–नीले रंगवाला।

क़बूल (قبول) अ. वि.–स्वीकृत, मंज़ूर; स्वीकृति, मंज़ूरी, सबेरे की ठंडी हवा।

क़बूलसूरत (قبول صورت) अ. वि.–प्रियदर्शन; जिसकी शक्ल अच्छी हो, सुंदर, हसीन, लावण्यानन, सुमुख, निर्दोषरूप।

क़बूली (قبولی) अ. स्त्री.–चने की दाल का पुलाव या खिचड़ी।

क़बूलीयत (قبولیت) अ. स्त्री.–स्वीकृति, अंगीकार, मंज़ूरी; मकानदार या ज़मींदार की तरफ़ से पट्टे या किराये की तसदीक़ की तहरीर।

क़बूह (قبوح) अ. वि.–निकृष्ट, ख़राब, बुरा।

कब्क (کبک) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध पक्षी जो चाँद का प्रेमी है, चकोर।

क़ब्क़ब (قبقب) अ. पुं.–पेट, जठर, उदर।

क़ब्क़ाब (قبقاب) अ. पुं.–लकड़ी का खड़ाऊँ, चट्टी; झूठ बोलना; स्त्री की भग जो बहुत बड़ी हो।

कब्के दरी (کبک دری) फा. पुं.–पहाड़ी चकोर, जिसकी चाल बड़ी सुंदर होती है।

क़ब्ज़ः (قبضہ) अ. पुं.–अधिकार, इख़्तियार; बश, क़ाबू; मूठ, दस्ता; पकड़, गिरिफ़्त।

क़ब्ज (قبج) अ. पुं.–दे. 'कब्क'।

क़ब्ज़ (قبض) अ. पुं.–बदहज़मी, कोष्ठबद्धता; सिकुड़न, खिंचाव; पकड़, गिरिफ़्त; आनाह, अजीर्ण।

क़ब्ज़ाए क़ुद्रत (قبضۂ قدرت) अ. पुं.–दैव शक्ति, ख़ुदाई कुव्वत; अधिकार, क़ाबू, इख़्तियार (अख़्तियार)।

क़ब्ज़ुल वुसूल (قبض الوصول) अ. पुं.–प्राप्तिपत्र, रसीद, वसूलयाबी का सूचक अधिकारपत्र।

क़ब्ज़े रूह (قبض روح) अ. स्त्री.–शरीर से प्राणों का निकलना।

कब्त (کبت) अ. पुं.–अपमानित करना, तिरस्कृत करना।

कब्द (کبد) अ. पुं.–जिगर, यकृत्, दे. 'कबिद', वही अधिक बोला जाता है।

क़ब्बान (قبان) अ. पुं.–एक पल्ले की तराज़ू; बड़ी तराज़ू, तक।

क़ब्र (قبر) अ. स्त्री.–वह गर्त जिसमें मुसलमानों के शव गाड़े जाते हैं, ग़ोर, समाधि-भवन।

क़ब्रपरस्त (قبر پرست) अ. फा. वि.–मुसलमान महात्माओं की क़ब्र पर फूल चढ़ाने, दीप जलाने, सफाई करने और चादर आदि चढ़ानेवाला।

क़ब्रिस्तान (قبرستان) अ. फा. पुं.–जहाँ बहुत सी क़ब्रें हों, जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हों, समाधि-क्षेत्र।

क़ब्ल (قبل) अ. वि.–पूर्व, पहले।

क़ब्ल अज़ वक़्त (قبل از وقت) अ. फा. वि.–समय से पहले, नियत समय से पूर्व।

क़ब्लअज़ीं (قبل ازیں) अ. फा. वि.–इससे पहले, अब से पहले, तत्पूर्व।

क़ब्ललवुक़ूअ (قبل الوقوع) अ. वि.–घटना से पहले, वाक़ए से पहले।

कब्श (کبش) अ. पुं.–मेंढ़ा, सींगोंवाली नर भेड़।

कब्स (کبس) अ. पुं.–कुएँ को मिट्टी से पाटना; गर्दन नीचे लटकाना; शबख़ून मारना, रात में आक्रमण करना।

कमंद (کمند) फा. स्त्री.–फंदा, पाश; एक लम्बी रस्सी जिसके एक सिरे पर गोह बँधी रहती थी, उसके द्वारा ऊँची-ऊँची दीवारों पर चढ़ा जा सकता था, गोह जहाँ चिपक जाती है फिर कितना ही ज़ोर किया जाय वहाँ से नहीं छूटती, "क़िस्मत की देखो ख़ूबी टूटी कहाँ कमंद—दो-चार हाथ जब कि लबे-बाम रह गया।"

कमंद अंदाज़ (کمند انداز) फा. वि.–कमंद फेंकनेवाला।

कमंदे ज़ुल्फ़ (کمند زلف) फा. स्त्री.–बालों की कमंद, केशपाश।

कम (کم) फा. वि.–अल्प, न्यून, थोड़ा; हीन, विहीन, बिना।

कम (کم) अ. वि.–कितने, कितना; बहुत, अधिक।

कमअक़्ल (کم عقل) अ. वि.–बेवक़ूफ़, नासमझ, अल्पधी।

कम अज़ कम (کم از کم) फा. वि.–कम से कम, अधिक न हो तो इतना अवश्य।

कमअस्ल (کم اصل) फा. अ. वि.–अकुलीन, बदनस्ल; अधम, पामर, नीच।

कमआज़ार (کم آزار) फा. वि.–जो अधिक न सताये, कम दुःख देनेवाला।

कमआमेज़ (کم آمیز) फा. वि.–जो लोगों से मिलने-जुलने में कतराता हो, जिसे मनुष्यों की संगत पसंद न हो, "रिज़र्व्ड नेचर"।

कमइख़्तिलात (کم اختلاط) फा. वि.–दे. 'कम आमेज़'।

कमइयार (کم عیار) फा. अ. वि.–वह सोना या चाँदी जो कसौटी पर खरा न उतरे; ख़राब व्यक्ति।

कमइल्म (کم علم) फा. अ. वि.–जिसे विद्या सम्बन्धी ज्ञान कम हो, कम पढ़ा-लिखा, अल्पविद्य।

कमउम्र (کم عمر) फा. अ. वि.–छोटी आयुवाला, वयोबाल, अल्पवयस्क, कमसिन।

कमउम्री (کم عمری) फा. अ. स्त्री.–कमसिनी, बाल्यावस्था, अल्पवय।

कमऔक़ात (کم اوقات) फा. अ. वि.–तिरस्कृत, अनादृत, बेक़द्र।

कमक़द्र (کم قدر) फा. अ. वि.–दे. 'कम औक़ति'।

कमकम (کم کم) फा. वि.–थोड़ा-थोड़ा।

कमक़ीमत (کم قیمت) फा. अ. वि.–थोड़े मूल्यवाला, सस्ता, अल्प मूल्य।

कमख़र्च (کم خرچ) फा. वि.–थोड़ा ख़र्च करनेवाला, अल्पव्ययी, मितव्ययी।

कमख़र्ची (کم خرچی) फा. स्त्री.–थोड़ा खर्च करना, किफ़ायत-शिआरी बरतना, मितव्यय।

कमख़ाब (کمخاب) फा. पुं.–एक प्रकार का बहुमूल्य कपड़ा।

कमख़ोर (کم خور) फा. वि.–कम खानेवाला, मिताहारी, मितभोजी, स्वल्पाहारी।

कमख़ोरी (کم خوری) फा. स्त्री.–कम खाना, मिताहार।

कमख़्वाब (کم خواب) फा. वि.–कम सोनेवाला, मितस्वापी।

कमगो (کم گو) फा. वि.–कम बोलनेवाला, कम बातें करनेवाला, मितभाषी।

क़मची (قمچی) तु. स्त्री.–कोड़ा, चाबुक, प्रतोद; पतली छड़ी, साँटी।

कमज़न (کم زن) फा. वि.–कम हिम्मतवाला, अल्पसाहसी।

कमज़र्फ़ (کم ظرف) फा. अ. वि.–ओछा, तुच्छ, कमीना; अनुदार, तंग नज़र।

कमज़र्फ़ी (کم ظرفی) फा. अ. स्त्री.–ओछापन; अनुदारता।

कमज़ोर (کمزور) फा. वि.–दुर्बल, नाताक़त, अशक्त।

कमज़ोरी (کمزوری) फा. स्त्री.–दुर्बलता, नाताक़ती, अशक्ति।

कमतर (کمتر) फा. वि.–बहुत कम, न्यूनतर।

कमतरीन (کمترین) फा. वि.–बहुत ही कम, न्यूनतम, इस शब्द का प्रयोग बोलनेवाला नम्रता दिखाने को अपने लिए भी करता है।

कमतवज्जुही (کم توجہی) फा. अ. स्त्री.–रूखापन, दुःशीलता, उपेक्षा।

कमतालिई (کم طالعی) फा. अ. स्त्री.–भाग्य की खराबी, अभागापन।

कमनसीब (کم نصیب) फा. अ. वि.–बदक़िस्मत, हतभाग्य, मंदभाग्य।

कमनसीबी (کم نصیبی) फा. अ. स्त्री.–क़िस्मत की ख़राबी, भाग्यहीनता।

कमनिगही (کم نگہی) फा. स्त्री.–उपेक्षा, रूखापन; कृपणता, कंजूसी।

कमनिगाही (کم نگاھی) फा. स्त्री.–दे. 'कमनिगही'।

कमपायः (کم پایہ) फा. वि.–जो पदवी और सम्मान में कम हो।

कमपायगी (کم پایگی) फा. स्त्री.–पदवी और मर्तबे में कम होना।

कमफ़ह्म (کم فہم) फा. अ. वि.–नासमझ, अल्पबुद्धि, बेअक़्ल, मूर्ख।

कमफ़ह्मी (کم فہمی) फा. अ. स्त्री.–समझ की कमी, बेअक़्ली, मूर्खता।

कमफ़ुर्सत (کم فرصت) फा. अ. वि.–जिसे काम की अधिकता से छुट्टी न मिले, अवकाशहीन।

कमफ़ुर्सती (کم فرصتی) फा. अ. स्त्री.–छुट्टी न होना, अवकाशहीनता।

कमबख़्त (کم بخت) फा. वि.–बदक़िस्मत, हतभाग्य, शामत का मारा।

कमबख़्ती (کم بختی) फा. स्त्री.–भाग्य की ख़राबी, हतभाग्यता, अभागापन; शामत।

कमबीं (کم بیں) फा. वि.–कम देखनेवाला, अल्पदृष्टि; अनुदार, तंगनज़र; अदूरदर्शी, आक़िब्त ना अंदेश।

कमबीनी (کم بینی) फा. स्त्री.–कम देखना, दृष्टि की ख़राबी; अनुदारता, तंगनज़री; अदूरदर्शिता, आक़िब्त नाअंदेशी।

कममश्क़ (کم مشق) फा. अ. वि.–जिसे किसी काम का अभ्यास कम हो, नवाभ्यस्त, नौसिखिया।

कममश्क़ी (کم مشقی) फा. स्त्री.–नवाभ्यास, नौसिखियापन।

कममायः (کم مایہ) फा. वि.–थोड़ी पूँजीवाला, टुटपुँजिया; तुच्छ, नीच, कमीना।

कममायगी (کم مایگی) फा. स्त्री.–पूँजी की कमी; नीचता, कमीनगी।

कमयाब (کم یاب) फा. वि.–जो बहुत कम मिल सके, दुष्प्राप्य; जो बिलकुल न मिल सके, अप्राप्य।

कमयाबी (کم یابی) फा. स्त्री.–किसी वस्तु का अभाव, कम मिलना अथवा बिलकुल न मिलना।

कमर (کمر) फा. स्त्री.–कटि, लंक, मध्यदेश।

क़मर (قمر) अ. पुं.–चाँद, चन्द्र, चंद्रमा, शशि, राकेश।

क़मर तल्अत (قمر طلعت) अ. वि.–चाँद-जैसी प्रभा वाला या वाली, चन्द्रप्रभ, चन्द्रकान्त, चन्द्रप्रभा, चन्द्रकान्ता।

क़मर दर अक़्रब (قمر در عقرب) अ. फा. वि.–चंद्रमा का वृश्चिक राशि में होना, जो अत्यन्त अशुभ माना जाता है।

क़मर पैकर (قمر پیکر) अ. फा. वि.–चाँद जैसे शरीरवाला या वाली, चंद्रांग, चंद्रांगना।

कमरबंद (کمربند) फा. पुं.–पाजामे आदि की डोरी, नाड़ा, इज़ारबंद, नीवी, (वि.) जो किसी काम के लिए कील-काँटे से लैस हो।

कमरबंदी (کمربندی) फा. स्त्री.–किसी काम के लिए तैयारी, पुलिस आदि के सिपाहियों की कहीं दबिश या आक्रमण के लिए वर्दी और हथियार आदि से दुरुस्त होकर कूच की तैयारी।

कमरबस्तः (کمر بستہ) फा. वि.–कमर बाँधे हुए, तैयार, कटिबद्ध, बद्धपरिकर।

कमरशिकस्तः (کمر شکستہ) फा. वि.–जिसकी कमर टूट गयी हो, जिसका सहारा छिन गया हो।

कमरसी (کم رسی) फा. स्त्री.–कमइल्मी, कम पढ़ा-लिखा होना, विद्वत्ता का अभाव।

क़मरी (قمری) अ. वि.–चाँद से सम्बन्ध रखनेवाला; चन्द्रमास, हिंदी या इस्लामी महीना जो चाँद के हिसाब से होता है, चान्द्रमास।

कमरू (کم رو) फा. वि.–बदसूरत, बुरी शक्लवाला, कुरूप; जो किसी बड़े पद पर न जँचे।

कमरे कोह (کمر کوہ) फा. स्त्री.–पहाड़ का मध्य; पहाड़ की गुफ़ा।

क़मरैन (قمرین) अ. पुं.–चाँद और सूरज, चन्द्र-सूर्य।

क़मल (قمل) अ. पुं.–जूँ पड़ना, कपड़ों या बालों में जुएँ हो जाना; पेट का बड़ा हो जाना।

कमसंज (کم سنج) फा. वि.–कम तोलनेवाला, डंडी मारनेवाला।

कमसंजी (کمسنجی) फा. स्त्री.–कम तोलना, डंडी मारना, तुलाकूट।

कमसिन (کمسن) फा. अ. वि.–कम आयुवाला, छोटी उम्र का, अल्पवयस्क; अवयस्क, नाबालिग़।

कमसिनी (کمسنی) फा. अ. स्त्री.–कमउम्री, बाल्यावस्था, अल्पवय; नाबालिग़ी, अवयस्कता।

कमसुख़न (کمسخن) फा. वि.–जो बातचीत कम करे, मितभाषी, अल्पवादी, कम बोलनेवाला।

कमसुख़नी (کم سخنی) फा. स्त्री.–कम बोलना, कम बातें करना, मितभाषण।

कमहिम्मत (کمهمت) फा. अ. वि.–जिसमें साहस की कमी हो, अल्पोत्साह, अल्पसाहसी।

कमहिम्मती (کمهمتی) फा. अ. स्त्री.–साहस और हिम्मत की कमी, साहसाभाव।

कमहैसियत (کمحیثیت) फा. अ. वि.–बेक़द्र, अनादृत, अप्रतिष्ठित; जिसकी आर्थिक दशा अच्छी न हो; अकुलीन, बदनस्ल।

कमहौसलः (کمحوصله) फा. अ. वि.–दे. 'कमहिम्मत'।

कमहौसलगी (کمحوصلگی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'कमहिम्मती'।

क़मह्दुवः (قمحدوه) अ. पुं.–खोपड़ी का पिछला भाग, गुद्दी।

कमाँ (کماں) फा. स्त्री.–'कमान' का लघु., दे. 'कमान'।

कमाँअंदाज (کماں انداز) फा. वि.–तीरंदाज़, धनुर्धर।

कमाँअब्रू (کماں ابرو) फा. वि.–जिसकी भौंहें धनुष की तरह टेढ़ी और सुन्दर हों, अंचितभ्रू; प्रेमिका, प्रेयसी, मा'शूका।

कमाँकश (کماںکش) फा. वि.–धनुर्धर, तीरअंदाज़।

कमाँगर (کماںگر) फा. वि.–धनुष बनानेवाला, धनुष्कार।

कमाँगीर (کماںگیر) फा. वि.–धनुर्धर, तीरंदाज़।

कमाँगुरोहः (کماں گروهه) फा. स्त्री.–गुलेल, जिसमें ग़ुल्ला चलाते हैं।

कमाँजोलः (کماں جوله) फा. पुं.–गले में पहना जानेवाला चमड़े का तस्मा जिसमें कमान लटकायी जाती है, कमाँदान, क़र्बान।

कमाँदार (کماںدار) फा. वि.–धनुर्धर, तीर चलानेवाला।

कमाँपुश्त (کماںپشت) फा. वि.–कुबड़ा, कुब्ज।

कमाँबदस्त (کماں بدست) फा. वि.–हाथ में कमान लिये हुए, धनुष्पाणि।

कमाँबरदार (کماں بردار) फा. वि.–धनुष लेकर चलनेवाला, धनुर्धर, तीरअंदाज़।

कमात (کمات) अ. पुं.–कुकुरमुत्ता, बरसात में पैदा होनेवाली खुंबी।

कमानः (کمانه) फा. पुं.–बढ़इयों की कमान, जिससे वह बर्मा चलाते हैं।

कमान (کمان) फा. स्त्री.–धनुष, धनु, धन्व, धन्वा, तीर चलाने का यंत्र, क़ौस।

कमानचः (کمانچه) फा. पुं.–छोटी कमान, धनुही, धनुक।

कमानी (کمانی) फा. स्त्री.–कमान की तरह झुकी हुई चीज़ अथवा पुर्ज़ा।

कमाने शैतां (کمان شیطاں) फा. स्त्री.–इंद्रधनुष, धनक, क़ौसे क़ुज़ह।

कमामंबग़ी (کماینبغی) अ. वि.–जैसा चाहिए वैसा, यथेष्ट, यथोचित।

क़मारी (قماری) अ. स्त्री.–'क़ुम्री' का बहु., क़ुम्रियाँ।

कमाल (کمال) अ. पुं.–गुण, ख़ूबी; कला, फ़न; शिल्प, दस्तकारी; विद्वत्ता, क़ाबिलीयत; पूर्णता, पूरापन; चालाकी, धूर्तता; अधिक, बहुत।

कमालात (کمالات) अ. पुं.–'कमाल' का बहु., बहुत-से गुण, बहुत-सी ख़ूबियाँ, बहुत-से हुनर।

कमाले फ़न (کمال فن) अ. पुं.–किसी कला की जानकारी की पराकाष्ठा, कला-नैपुण्य।

कमाही (کماهی) अ. वि.–पूरी-पूरी, यथेष्ट।

कमीं (کمیں) अ. पुं.–'कमीन' का लघु., दे. 'कमीन'।

कमींगाह (کمیںگاه) अ. फा. स्त्री.–वह गुप्त स्थान जहाँ किसी की ताक में छिपकर बैठा जाय, आड़, शिकार की ताक में छिपकर बैठने का स्थान।

कमी (کمی) फा. स्त्री.–न्यूनता, थोड़ापन; दोष, नक़्स; त्रुटि, ग़लती।

कमीनः (کمینه) फा. वि.–नीच, अधम, खल, धूर्त, पाजी; अकुलीन, ग़ैर शरीफ़।

कमीन (کمین) अ. पुं.–दे. 'कमींगाह', (उ.) कमीनः।

क़मीम (قمیم) अ. वि.–सूखी हुई तरकारी।

क़मीस (قمیص) अ. स्त्री.–एक विशेष प्रकार का कुर्ता, क़मीज़।

क़मुर्ग़ः (قمرغه) तु. पुं.–शिकार खेलने का जंगल, आखेट-स्थल, शिकारगाह।

कमून (کمون) अ. पुं.–ज़ीरा, जीरक।

कमूनी (کمونی) अ. स्त्री.–एक यूनानी दवा जिसमें ज़ीरा प्रधान होता है (यथा माजून=अवलेह+कमूनी=ज़ीरे की), जीरकावलेह।

क़मूस (قموس) अ. पुं.–बहुत गहरा कुवाँ।

कमोबेश (کموبیش) फा. वि.–थोड़ा-बहुत, न्यूनाधिक।

क़म्अ (قمع) अ. पुं.–तोड़ना; तिरस्कृत करना; उमूद (लंब) डालना।

क़म्क़ाम (قمقام) अ. पुं.–बड़ा चाकू, छुरी; नदी, दर्या; श्रेष्ठ, मुअज़्ज़ज़।

क़म्तरीर (قمطریر) अ. पुं.–विपत्ति और मुसीबत का दिन।

कम्मह (کمہ) अ. वि.–जन्मांध होना, पैदाइशी अंधा होना।

क़म्मास (قماس) वि.–ग़ोताख़ोर, डुबकी लगानेवाला।

कम्मी (کمی) अ. वि.–शूर, वीर, दिलावर।

कम्मीयत (کمیت) अ. स्त्री.–मात्रा, मिक़दार।

कम्मून (کمون) अ. पुं.–ज़ीरा, जीरक।

क़म्रा (قمرا) अ. स्त्री.–एक चिड़िया; चाँदनी रात; चाँद की किरन।

क़म्ल (قمل) अ. स्त्री.–जूँ, कपड़े या बालों में पड़नेवाला कीड़ा।

क़य (قے) फा. पुं.–दे. 'क़ै'।

कयाँ (کیاں) फा. पुं.–'कय' का बहु., सम्राट्, ईरान में चार सम्राट् हुए हैं–कैकाऊस, कैख़ुस्रौ, कैक़ुबाद, कैलोहास्प।

कयानी (کیانی) फा. वि.–'कयाँ' से सम्बन्धित, ऐसी अद्भुत वस्तु और अमूल्य वस्तु जो बड़े-बड़े सम्राटों के योग्य हो।

क़यामत (قیامت)–दे. 'क़ियामत'।

क़य्यूर (قیور). अ. वि.–जिसके कुल का पता न हो, अज्ञातकुल, वर्णसंकर, दोग़ला।

क़रंतीनः (قرنطینہ) अ. पुं.–रोककर टीका लगाने का अमल; समुद्र पार जाते हुए रास्ते में रुकने और टीका लगवाने का स्थान, कोरण्टाइन।

करंब (کرنب) अ. पुं.–करमकल्ला, एक शाक।

कर (کر). फा. वि.–बहिरा, बधिर, जिसे ऊँचा सुनाई देता हो।

करख़ (کرخ) फा. वि.–'करख़्त' का लघु., दे. 'करख़्त'।

करख़्त (کرخت) फा. वि.–कठोर, कर्कश, सख़्त; वह अंग जो सुन्न हो गया हो।

करख़्तगी (کرختگی) फा. स्त्री.–कठोरता, कर्कशता, सख़्ती; अंग का सुन्न होना।

क़रन्फ़ुल (قرنفل) अ. स्त्री.–लौंग, लवंग, (आभूषण विशेष, न कि मसाले की लौंग) (यह शब्द संस्कृत के 'कर्णफुल्ल' से बनाया गया है, और अरब में डेढ़ हज़ार बरस पहले से प्रचलित है, जिससे अरब और भारत के प्राचीन सम्बन्ध का पता चलता है) कान में पहना जानेवाला पुष्पाकृति का आभूषण।

करफ़्स (کرفس) फा. स्त्री.–एक बीज, जो अजवाइन जैसे होते हैं और दवा में चलते हैं।

करब (کرب) अ. वि.–बेचैन रहना; दुःखित होना।

करम (کرم) अ. पुं.–दया, कृपा, मेहरबानी; दानशीलता, बख़्शिश।

करमगुस्तर (کرم گستر) अ. फा. वि.–दयालु, कृपालु, मेहरबान।

करमगुस्तरी (کرم گستری) अ. फा. स्त्री.–दया कर्म, कृपा करना।

करमफ़र्मा (کرم فرما) अ. फा. वि.–दयालु, मेहरबान; मित्र, दोस्त।

करमफ़र्माई (کرم فرمائی) अ. फा. स्त्री.–दया करना, कृपा करना।

कराँ (کراں) फा. पुं.–छोर, किनारा; हद, सीमा; पराकाष्ठा, इंतिहा।

करा' (کرع) फा. पुं.–वर्षा का रुका हुआ पानी; तालाब आदि में मुँह से पानी पीना; (वि.) पतली पिंडलियोंवाला।

करा (کریٰ) अ. पुं.–सोने का आरम्भ, स्वापारंभ; एक पक्षी, जिसे 'दुबारा' और 'चर्ज़' कहते हैं, अरु का नर।

क़रा (قرا) तु. पुं.–काला रंग।

क़रा' (قرع) अ. पुं.–सर के बाल गिरना।

क़राइन (قرائن) अ. पुं.–'क़रीनः' का बहु., क़रीने, आसार, लक्षण; सभ्यताएँ, शिष्टाचार।

क़राक़िर (قراقر) अ. पुं.–'क़र्क़र' का बहु., पेट की गुड़गुड़ाहट।

क़राक़ुरम (قراقرم) तु. पुं.–तुर्किस्तान की एक पर्वतमाला।

क़रातीस (قراطیس) अ. पुं.–'क़िर्तास' का बहु., काग़ज़ के तख़्ते, बहुत से काग़ज़।

करानः (کرانہ) फा. पुं.–टल, किनारा; छोर, अख़ीर; हद, सीमा; इंतिहा, पराकाष्ठा।

क़राबः (قرابہ) अ. पुं.–शराब की सुराही; बहुत बड़ी बोतल।

क़राबःकश (قرابہ کش) अ. फा. वि.–शराबी, मद्यप; बहुत पीनेवाला, पूरी सुराही पी जानेवाला।

क़राबःनोश (قرابہ نوش) अ. फा. वि.–दे. 'क़राबःकश'।

क़राबत (قرابت) अ. स्त्री.–समीपता, नज़दीकी; नातेदारी, स्वजनता।

क़राबतदार (قرابت دار) अ. फा. वि.–रिश्तेदार, नातेदार, सगोत्र, स्वजन।

क़राबतेक़रीबः (قرابت قریبہ) अ. स्त्री.–बहुत ही क़रीब की रिश्तेदारी।

क़राबादीन (قرابادین) अ. स्त्री.–वह ग्रंथ जिसमें यूनानी आयुर्वेद सम्बन्धित दवाएँ और नुस्खे लिखे रहते हैं। यूनानी

योग-संग्रह, यूनानी भेषज संकलन, जैसे–क़राबादीन ज़काई, क़राबादीन शिफ़ाई इत्यादि।

क़राबीन (قرابین) तु. स्त्री.–एक प्रकार की तोड़ेदार बंदूक़, जो अब से सौ बरस पहले तक प्रचलित थी।

करामत (کرامت) अ. स्त्री.–कृपा, नवाज़िश; प्रतिष्ठा, बुज़ुर्गी; चमत्कार, शो'बद:; मो'जिज़:, अवतारों का चमत्कार।

करामतनाम: (کرامت نامہ) अ. फ़ा. पुं.–कृपापत्र, इनायतनामा।

करामात (کرامات) अ. स्त्री.–करामत का बहु., करामतें, चमत्कार, मो'जिज़े।

करामाती (کراماتی) अ. वि.–करामात दिखानेवाला, चमत्कारी; शो'बदेबाज़, मायावी, जादूगर; धूर्त।

क़रार (قرار) अ. पुं.–स्थिरता, सुकून; सान्त्वना, ढाड़स; प्रतिज्ञा, इक़रार, चैन, आराम।

क़रारदाद (قرارداد) अ. फ़ा. स्त्री.–प्रस्ताव, तज़्वीज़; निश्चय, तै, पहले से तै दहेज।

क़रारेवाक़ई (قرارواقعی) अ. वि.–यथेष्ट, पूरा-पूरा, काफ़ी।

क़रावुल (قراول) तु. पुं.–सैनिक, सिपाही; शिकारी, आखेटक; वह फ़ौज जो आगे चलती और शत्रु की सेना की खबर देती है।

करासीस (کراسیس) अ. पुं.–'कुरीस:' का बहु., पुस्तक के अध्याय, किताब के जुज़; क़ुरान के सीपारे।

क़राह (قراح) अ. पुं.–स्वच्छ और निर्मल जल, विमल जल, साफ़ और ख़ालिस पानी।

कराहत (کراہت) अ. स्त्री.–घृणा, घिन, नफ़रत; अरुचि, नापसंदीदगी; उदासीनता, बददिली।

कराहतन (کراہتاً) अ. वि.–कराहत के साथ, बददिली के साथ, घिन करते हुए।

कराहीयत (کراہیت) अ. स्त्री.–दे. 'कराहत'।

करिश (کرش) अ. पुं.–जुगाली करनेवाले पशुओं का पाकाशय; छोटे बच्चे; बाल-बच्चे, दे. 'कर्श'।

क़रीं (قریں) अ. वि.–'क़रीन' का लघु., दे. 'क़रीन'।

करी (کری) फ़ा. स्त्री.–बहरापन, बधिरता।

क़रीअ (قریع) अ. वि.–प्रतिद्वंद्वी, हरीफ़; तुल्य, समान, मानिंद; श्रेष्ठ, पूज्य, बुज़ुर्ग।

क़रीज़ (قریض) अ. पुं.–पद्यात्मक वाक्य, नज़्म किया हुआ कलाम, छंदोबद्ध रचना।

क़रीन: (قرینہ) अ. पुं.–ढंग, तर्ज़; शिष्टता, तमीज़; क्रम, तर्तीब; प्रसंग; अनुमति, अंदाज़ा।

क़रीन (قرین) अ. वि.–समीप, निकट, नज़दीक; सभासद, सखा, मुसाहिब।

क़रीने अक़्ल (قرین عقل) अ. वि.–जो बात अक़्ल क़बूल कर ले, बुद्धिगम्य, मतिग्राह्य।

क़रीने इंसाफ़ (قرین انصاف) अ. वि.–जो बात न्याय से ठीक हो, न्यायोचित।

क़रीने क़ियास (قرین قیاس) अ. वि.–जो बात अटकल और अंदाज़े से ठीक हो, ज्ञानगम्य।

क़रीने मस्लहत (قرین مصلحت) अ. वि.–जो बात समय और अवस्था के अनुकूल होते हुए अपने हित में हो।

क़रीब (قریب) अ. वि.–निकट, समीप, पास, नज़दीक़; उर्दू की एक बह्र; कम दूर।

क़रीबतर (قریب تر) अ. फ़ा. वि.–बहुत पास, समीपतर; बहुत कम दूरी पर, निकटतर।

क़रीबुल इख़्तिताम (قریب الاختتام) अ. वि.–ख़त्म होने के क़रीब, जो शीघ्र ही समाप्त होनेवाला हो, समाप्तप्राय।

क़रीबुल इन्हिदाम (قریب الانہدام) अ. वि.–गिरने और ध्वस्त होने के क़रीब, भग्नप्राय, नष्टप्राय।

क़रीबुलख़त्म (قریب الختم) अ. वि.–समाप्त होने के क़रीब; मरने के क़रीब, मरणासन्न, मृतप्राय।

क़रीबुलफ़ह्म (قریب الفہم) अ. वि.–जिसका समझना सरल हो, सुबोध।

क़रीबुलमौत (قریب الموت) अ. वि.–जो मरने के निकट हो, मृतप्राय, मरणासन्न।

क़रीबुलहज़्म (قریب الہضم) अ. वि.–जो खाया हुआ पदार्थ पचने के समीप हो, हज़म होने के क़रीब, पक्वप्राय।

करीम (کریم) अ. वि.–कृपालु, मेहरबान; दानशील, सख़ी; ईश्वर का एक नाम।

करीमी (کریمی) अ. स्त्री.–कृपा, दया, करम; ईश्वरी माया।

करीमुन्नफ़्स (کریم النفس) अ. वि.–सदाचारी, पुण्यात्मा, सदात्मा, नेकदिल।

क़रीर (قریر) अ. पुं.–प्रसन्न, हर्षित, ख़ुश; प्रसन्नता, हर्ष, ख़ुशी।

क़रीस (قریس) अ. पुं.–बहुत कड़ा जाड़ा; पुरानी और जीर्ण वस्तु।

क़रीस (قریص) अ. पुं.–एक प्रकार का सालन।

क़रीह: (قریحہ) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत; वह पानी जो कुएँ से पहले निकले; हर चीज का अग्रभाग।

करीह (کریہ) अ. वि.–घृणास्पद, मक्रूह; कदाकार, कुरूप, बदशक्ल; अप्रियदर्शन, कुदर्शन, बदनुमा।

क़रीह (قریح) अ. वि.–ख़ालिस और बेमेल वस्तु, विशुद्ध, (पुं.) घाव, ज़ख़्म ।

करीहुलमंज़र (کریہ‌المنظر) अ. वि.–जो देखने में भोंडा हो, जिसे देखकर घिन आये, दुर्दर्शन, घृणित रूप ।

करीहुस्सूरत (کریہ‌الصورت) अ. वि.–जिसकी शक्ल भद्दी हो, जो देखने में बुरा लगे, दुराकृति, कुरूप, अप्रियदर्शन ।

करीहुस्सौत (کریہ‌الصوت) अ. वि.–जिसकी आवाज़ बहुत ख़राब हो, कटुस्वर, कर्कश स्वर ।

करूबी (کروبی) अ.पुं.–फ़िरिश्ता, देवता ।

क़र्अ़ः (قرعہ) अ. पुं.–लौकी, कद्दू ।

क़र्अ़ (قرع) अ. पुं.–दरवाज़ा खटखटाना; खटखट करना; लौकी ।

क़र्क़ (قرق) अ. पुं.–मुर्ग़ियों का शब्द ।

क़र्क़ (قرق) तु. पुं.–दुंबा, मेदपुच्छ, भेड़ की वह क़िस्म जिसकी पूँछ पर चर्बी का चकत्ता होता है ।

क़र्क़फ़ (قرقف) अ. पुं.–मदिरा, शराब; ईसाइयों के तीन धार्मिक ग्रंथ ।

कर्ग (کرگ) फा. पुं.–'कर्गदन' का लघु., देखो 'कर्गदन' ।

कर्गदन (کرگدن) फा. पुं.–गैंडा, एक प्रसिद्ध जंगली जानवर जो हाथी से छोटा होता है, तुंगमुख, वज्रचर्म ।

कर्गन (کرگن) फा. पुं.–अधपका अन्न जिसे भूनकर खाते हैं ।

कर्गस (کرگس) फा. पुं.–गीध, गिद्ध, गृध्र, एक प्रसिद्ध पक्षी ।

क़र्ज़ (قرض) अ. पुं.–ऋण, उधार, क़र्ज़ा ।

क़र्ज़ख़्वाह (قرض‌خواہ) अ. फा. वि.–क़र्ज़ लेनेवाला, ऋणेच्छुक ।

क़र्ज़दार (قرض‌دار) अ. फा. वि.–जिस पर क़र्ज़ हो, ऋणी, अधमर्ण ।

क़र्ज़े हसनः (قرض حسنہ) अ.पुं.–ऐसा ऋण जिस पर न कोई व्याज हो न उसका तक़ाज़ा किया जा सके, ऋणी को जब सुविधा हो उसे अदा करे, और न अदा कर सके तो उस पर कोई भार न रहे ।

क़र्तबान (قرطبان) अ. पुं.–दय्यूस, भगभोगी, क़ल्तबान ।

क़र्ती (قرطی) अ. पुं.–एक प्रकार का कपड़ा जो काले और हरे रंग का होता है ।

कर्दः (کردہ) फा. वि.–किया हुआ, कृत ।

कर्द (کرد) फा. पुं.–कार्य, काम; कृति, अमल ।

कर्दगार (کردگار) फा. वि.–ईश्वर, सर्वशक्तिमान्, दे. 'किर्दगार', नियमानुसार 'किर्दगार' अशुद्ध है, परन्तु शुद्ध समझा जाता है ।

कर्दनी (کردنی) फा.वि.–करने योग्य, जो किया जा सके; जिसका करना उचित हो, करणीय ।

कर्दार (کردار) फा. पुं.–आचरण, व्यवहार, चलन, दे. 'किर्दार', व्याकरण के अनुसार शुद्ध रूप 'कर्दार' ही है, परन्तु प्रचलित 'किर्दार' है ।

क़र्न (قرن) अ. पुं.–शृंग, विषाण, सींग; बाल, केश; लंबा समय जो ३० से १०० वर्ष तक माना जाता है ।

कर्नब (کرنب) अ. पुं.–करमकल्ला, एक प्रसिद्ध सब्ज़ी ।

कर्ना (کرنا) अ. पुं.–दे. 'क़र्ना' ।

क़र्ना (قرنا) अ. पुं.–तुरही, एक प्राचीन बाजा जो फूँककर बजाया जाता है ।

कर्पास (کرپاس) फा. पुं.–मोटा कपड़ा, संस्कृत 'कर्पट' का अपभ्रंश ।

कर्फ़श (کرفش) फा. स्त्री.–छिपकली, गृहगोधिका ।

कर्ब (کرب) अ. पुं.–व्याकुलता, बेचैनी; पीड़ा, यातना, दुःख ।

कर्बला (کربلا) फा. पुं.–इराक़ का एक प्रसिद्ध स्थान, जहाँ हज़रत इमाम हुसैन शहीद हुए थे, और जहाँ उनकी मज़ार है ।

कर्बलाई (کربلائی) फा.वि.–कर्बला की ज़ियारत करनेवाला; एक कपड़ा ।

कर्बस (کربس) फा. स्त्री.–छिपकली, गृहगोधिका ।

कर्बासू (کرباسو) फा. स्त्री.–दे. कर्बस, कर्फ़श ।

कर्म (کرم) अ. पुं.–अंगूर का पेड़ ।

क़र्म (قرم) अ. पुं.–व्याघ्र, शेर, अपनी जाति का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति ।

क़र्यः (قریہ) अ. पुं.–ग्राम, गाँव, मौज़ा ।

कर्रत (کرت) अ. स्त्री.–बार, दफ़ा ।

कर्रात (کرات) अ. पुं.–'कर्रत' का बहु., कई बार, बहुत दफ़ा ।

कर्रार (کرار) अ. वि.–शत्रु की सेना पर बारंबार आक्रमण करनेवाला; हज़रत अली की उपाधि ।

कर्रूबियान (کروبیان) अ. पुं.–'कर्रूबी' का बहु., फ़िरिश्ते ।

कर्रूबी (کروبی) अ. पुं.–फ़िरिश्ता, दे. 'करूबी', वही अधिक फ़सीह है, शुद्ध दोनों हैं ।

कर्श (کرش) अ. पुं.–जुगाली करनेवाले पशु का पाकाशय; बाल-बच्चे, दे. 'करिश' ।

कर्सनः (کرسنہ) फा. पुं.–मटर, एक प्रसिद्ध अन्न ।

क़र्हः (قرحہ) अ. पुं.–वह घाव जिसमें पीप पड़ गयी हो ।

क़लंग़ः (قلنغہ) तु. पुं.–घेरे में लेना, मुहासरः करना; बाहर जानेवाले पियादे की ख़ुराक ।

कलंद (کلند) फा. पुं.–ज़मीन खोदने का एक यंत्र, खुर्पी; हल में लगनेवाला फाल ।

क़लंदर (قلندر) फा. पुं.–एक प्रकार के फ़क़ीर जो मस्त

और आज़ाद रहते हैं; मस्त और आज़ाद मनुष्य; धृष्ट, गुस्ताख़।

क़लंदरानः (قلندرانہ) फा. वि.–क़लंदरों-जैसा; आज़ादों-जैसा; गुस्ताख़ों-जैसा।

क़लंदरी (قلندری) फा. पुं.–क़लंदर का काम या पेशा; एक प्रकार का ख़ेमा, रावटी।

क़लंसुवः (قلنسوہ) अ. पुं.–टोपी, कुलाह।

कल (ल्ल) (کل) अ. पुं.–गूँगा होना, बोल न सकना; बोझ, भार; भारी बोझ; वह व्यक्ति जिसके न बाप हो न लड़के।

कल (کل) तु. वि.–गंजा, खल्वाट।

कलक (کلک) फा. पुं.–पछना; चीरा लगाने का नश्तर, शल्य, (स्त्री.) आपत्ति, बला, (वि.) अशुभ, मनहूस।

क़लक़ (قلق) अ. पुं.–व्याकुलता, बेचैनी; दुःख, कष्ट, तकलीफ़; शोक, खेद, अफ़सोस।

क़लक़अंगेज़ (قلق انگیز) अ.फा. वि.–शोकजनक, दुःखप्रद, रंज पैदा करनेवाला।

क़लक़अफ़्ज़ा (قلق افزا) अ. फा. वि.–दे. 'क़लक़ अंगेज़'।

क़लक़आमेज़ (قلق آمیز) अ. फा. वि.–शोक मिला हुआ, शोकान्वित, रंजदेह।

कलकख़ुस्प (کلک خسپ) फा. वि.–दरिद्र, निर्धन, कंगाल।

कलफ़ (کلف) अ. पुं.–काले दाग़ जो मुँह पर पड़ जाते हैं, झाईं।

क़लम (قلم) अ. पुं.–लेखनी, किल्क; पेड़ की डाली जो काटकर लगायी जाती है; काटा हुआ, तराशा हुआ; कनपटी के बाल; किसी पदार्थ का पतला और लम्बा टुकड़ा।

क़लमकश (قلمکش) अ. फा. वि.–लिखनेवाला, क़लम से काम करनेवाला; काट देनेवाला, मिटा देनेवाला।

क़लमकार (قلمکار) अ. फा. पुं.–क़लम से काम करनेवाला, लिखनेवाला, एक फूलदार नक़्शीन कपड़ा।

क़लमज़द (قلمزد) अ.फा. वि.–क़लम फेरा हुआ, कटा हुआ, मंसूख़।

क़लमज़न (قلمزن) अ. फा. वि.–लिखनेवाला; चित्रकार, मुसव्विर; क़लमज़द करनेवाला, मंसूख़ करनेवाला।

क़लम दरकशीदः (قلم درکشیدہ) अ. फा. वि.–मिटाया हुआ, मह्व किया हुआ।

क़लमदस्त (قلمدست) अ. फा. वि.–जो क़लम से काम करता हो, लिखनेवाला; चित्रकार।

क़लमदान (قلمدان) अ. फा. पुं.–क़लम-दवात रखने का पात्र, पद, पदवी, ओहदा।

क़लमदाने वज़ारत (قلمدان وزارت) अ. पुं.–मंत्री का पद, वज़ीर का ओहदा।

क़लम पाक कुन (قلم پاک کن) अ. फा. पुं.–वह कपड़ा जिससे क़लम की सियाही पोंछी जाती है।

क़लमबंद (قلمبند) अ. फा. वि.–जो लिखा गया हो, लिपिवद्ध, चित्रकार की कूची बनानेवाला।

क़लम बरदाश्तः (قلم برداشتہ) अ.फा.वि.–क़लम उठाकर बिना सोचे लिखा हुआ लेख।

क़लमरौ (قلمرو) अ. फा. स्त्री.–राष्ट्र, राज्य, हुकूमत, सल्तनत।

क़लमी (قلمی) अ. वि.–क़लम सम्बन्धी; हस्तलिखित ग्रंथ, विशेषतः पुराने हस्तलिखित ग्रंथ; क़लम लगाये हुए पेड़ का फल; लंबा और पतला पदार्थ, जैसे––'क़लमी शोरा'।

क़लमे फ़ौलाद (قلم فولاد) अ.फा. पुं.–फाउण्टेन पेन, मसीगर्भ, लौह-लेखनी।

क़लमेरसास (قلم رصاص) अ. पुं.–पेंसिल, सीसांकनी।

क़लमेसुर्ब (قلمسرب) अ. पुं.–दे. 'क़लमे रसास'।

क़लमेसुर्मः (قلم سرمہ) अ. पुं.–दे. 'क़लमे रसास'।

कलल (کلل) अ. स्त्री.–कलग़ी, शिरमौर।

क़लह (قلح) अ. स्त्री.–दाँतों का मैल और उनका पीलापन।

कलाँ (کلاں) फा. वि.–ज्येष्ठ, बड़ा; दीर्घ, लंबा।

क़ला (قلا) अ. पुं.–किसी से शत्रुता करना; शत्रुता, दुश्मनी।

क़लाइद (قلائد) अ. पुं.–'क़िलादः' का बहु., गले के पट्टे।

कलातः (کلاتہ) फा. पुं.–छोटा गाँव, नगला।

कलात (کلات) फा. पुं.–गाँव, ग्राम; पहाड़ी पर बना हुआ दुर्ग।

कलानी (کلانی) फा. स्त्री.–ज्येष्ठता, बड़ापन; दीर्घता, लम्बाई; गुरुत्व, भारीपन।

कलापेसः (کلاپیسہ) फा. पुं.–आँखों की रंगत का बदल जाना, जैसे––गुस्से में या मैथुन के समय।

कलाबः (کلابہ) फा. पुं.–चर्ख़े पर काती जानेवाली अंटी, पिंदिया।

कलाम (کلام) अ. पुं.–शब्द, वाणी, वोली; वार्तालाप, गुफ़्तगू; आपत्ति, ए'तिराज़; मीमांसा, इल्मे कलाम।

कलामुल्लाह (کلام اللہ) अ. पुं.–ख़ुदा का कलाम, ईश्वर की वाणी, क़ुरानशरीफ़।

कलामे मुस्तदाम (کلام مستدام) अ. पुं.–ईश्वर की ओर से पैग़म्बर पर आनेवाला आदेश, वही।

कलालः (کلالہ) अ. पुं.–दे. 'कलालात'।

कलाल (کلال) अ. पुं.–ग्लानि, थकन, माँदगी।

कलालत (کلالت) अ. स्त्री.–थकन, ग्लानि, माँदगी।

कलावः (کلاوہ) फा. पुं.–चर्खे पर काती जानेवाली पिंदिया।

क़लावुज़ी (قلاوزی) फा. स्त्री.–अग्रगमन, आगे चलना; मार्ग-दर्शन, रहबरी; सेना का अग्रभाग।

क़लिक़ (قلق) अ. वि.–व्याकुल, मुज़्तरिब; दुःखित, रंजीदा।

कलिब (کلب) अ. वि.–दीवाना, पागल, कटखना (कुत्ता)।

कलिमः (کلمہ) अ. पुं.–शब्द, लफ़्ज़, वाक्य, जुम्ला, वचन, बात, मुसलमानों का धर्ममंत्र।

कलिमःख़्वाँ (کلمہ خواں) अ. फा. वि.–दे. 'कलिमःगो'।

कलिमःगो (کلمہ گو) अ. फा. वि.–कलिमः (कलमा) पढ़नेवाला अर्थात् मुसलमान।

कलिम (کلم) अ. पुं. 'कलिमः' का बहु., कलिमे, जुम्ले, वाक्य-समूह।

कलिमतुलख़ैर (کلمۃالخیر) अ. पुं.–भलाई की बात, ऐसी बात जिसमें किसी का हित हो।

कलिमतुलहक़ (کلمۃالحق) अ. पुं.–सच्ची बात, बेलाग बात, इंसाफ़ की बात, सदुक्ति।

कलिमात (کلمات) अ. पुं.–कलिमः का बहु., कलिमें, बातें, शब्द, अल्फ़ाज़।

क़लीद (قلید) अ. स्त्री.–बटी हुई रस्सी।

कलीदान (کلیدان) फा. पुं.–लकड़ी का कुंदा जो अपराधियों के पाँव में बाँधा जाता है।

क़लीब (قلیب) अ. पुं.–पुराना कुआँ।

कलीम (کلیم) अ. पुं.–बात करनेवाला, बातचीत करनेवाला; घायल, ज़ख़्मी; हज़रत मूसा की उपाधि।

कलीमुल्लाह (کلیم اللہ) अ. पुं.–ईश्वर से वार्तालाप करनेवाला, हज़रत मूसा की उपाधि।

क़लीयः (قلیہ) अ. पुं.–भुना हुआ गोश्त।

क़लीलः (قلیلہ) अ. पुं.–क़ैलूलः करने का समय, दोपहर में थोड़ी देर सोने का समय।

कलील (کلیل) अ. वि.–शिथिल, माँदा; मंद, सुस्त; गूँगा; कुंद, भोथरा।

क़लील (قلیل) अ. वि.–अल्प, न्यून, थोड़ा; ह्रस्व, छोटा।

क़लील तरीन (قلیل ترین) अ. फा. वि.–बहुत ही छोटा।

क़लीलुल क़ीमत (قلیل القیمت) अ. वि.–थोड़ी कीमतवाला, कम दामों का, सस्ता।

क़लीलुल बिज़ाअत (قلیل البضاعت) अ. वि.–जिसके पास पूंजी थोड़ी हो, जो अप्रतिष्ठित हो, कम हैसियत।

क़लीलुल मिक़्दार (قلیل المقدار) अ. वि.–थोड़ा, कम, अल्प मात्रा में।

क़लीलुस्समाअत (قلیل السماعت) अ. वि.–जो कम सुनता हो, बधिर, बहरा।

क़लीस (قلیس) अ. वि.–कृपण, कंजूस, बख़ील।

क़लूस (قلوص) अ. स्त्री.–जवान ऊँटनी।

क़लौला (قلولا) अ. पुं.–काज़, एक प्रसिद्ध पक्षी।

क़ल्अः (قلعہ) अ. पुं.–दुर्ग, कोट, गढ़, क़िला।

क़ल्अःगीर (قلعہ گیر) अ. फा. वि.–दुर्ग विजित करनेवाला, महारथी, बहुत बड़ा शूर।

क़ल्अःशिकन (قلعہ شکن) अ. फा. वि.–दुर्ग को ध्वस्त कर देनेवाला, दुर्गभेदी (तोप या कोई यंत्र)।

क़ल्ई (قلعی) अ. स्त्री.–वंग, राँग; फुँका हुआ चूना; मुलम्मा; बर्तनों पर राँगा का मुलम्मा; चूने की पुताई।

क़ल्ईगर (قلعی گر) अ. फा. वि.–बरतनों पर राँग का मुलम्मा करनेवाला।

कल्क (کلک) फा. स्त्री.–कक्ष, बग़ल; क्रोड, गोद, आग़ोश।

कल्कज (کلکج) फा. वि.–लड़नेवाला, युद्ध करनेवाला।

क़ल्क़लः (قلقلہ) अ. पुं.–आवाज़ करना, बोलना; हिलाना।

क़ल्क़ान (قلقان) तु. स्त्री.–ढाल, सिपर।

कल्ग़ी (کلغی) फा. स्त्री.–फुँदना, तुर्रा, पक्षी के सिर का केस।

कल्तः (کلتہ) फा. वि.–पूँछ कटा हुआ; थोड़ा, न्यून; जो शुद्ध उच्चारण न कर सके; सोंटा, डंडा, गतका।

क़ल्तबान (قلتبان) फा. पुं.–वह निर्लज्ज मनुष्य जो अपनी स्त्री को पर-पुरुष के पास जाने दे, भगभोजी, स्त्री की कमाई खानेवाला, भँड़ुआ।

क़ल्तबानी (قلتبانی) फा. स्त्री.–स्त्री की कमाई खाना, भँड़ुअई।

कल्पत्रः (کلپترہ) फा. वि.–मिथ्या, झूठ, अनर्गल, बेहूदा।

क़ल्पाक़ (قلپاق) तु. स्त्री.–टोपी, कुलाह।

क़ल्फ़ः (قلفہ) अ. पुं.–ख़तना का न होना, बे ख़तना होना।

कल्फ़ (کلف) अ. पुं.–मुग्ध होना, आसक्त होना, शेफ़्तः होना।

क़ल्ब (قلب) अ. पुं.–हृदय, मन, दिल; मध्य, बीच; कूट, खूँटा; औंधा, उलटा; १७वाँ नक्षत्र।

कल्ब (کلب) अ. पुं.–कुक्कुर, श्वान, कुत्ता।

कल्बतान (کلبتان) अ. स्त्री.–लोहार की सड़सी, संगसी; मोमबत्ती का गुल काटने की क़ैंची, गुलगीर।

कल्बतैन (کلبتین) अ. स्त्री.–दे. 'कल्बतान'।

क़ल्बसाज़ (قلب ساز) अ. फा. वि.–खोटा रुपया बनानेवाला, कूटकृत।

क़ल्बसाज़ी (قلب سازی) अ.फा. स्त्री.–जाली रुपया बनाना।

क़ल्बी (قلبی) अ. वि.–हार्दिक, दिली; मानसिक, रूही; हृदय-सम्बन्धी।

क़ल्बे अव्वा (قلب عوا) अ. पुं.–बहुत भोंकनेवाला कुत्ता; एक नक्षत्र।

कल्बे कलिब (کلب کلب) अ. पुं.–कटखना और पागल कुत्ता।

क़ल्बे माहीयत (قلب ماهیت) अ. स्त्री.–किसी पदार्थ के धर्म और गुण का परिवर्तन, कायाकल्प।

कल्म (کلم) अ. पुं.–घायल करना, ज़ख्मी करना।

कल्मल (کلمل) फा. पुं.–कोलाहल, शोर-गुल।

कल्मुर्ग़ (کلمرغ) फा. पुं.–गिद्ध की एक जाति।

क़ल्यः (قلیه) उ. पुं.–भुना हुआ मांस, शुद्ध शब्द 'क़लीयः' है, परन्तु प्रचलित यही है। (क़लिया)

क़ल्यान (قلیان) फा. पुं.–हुक़्क़ा, चिलम पीने का यंत्र, गुड़गुड़ी, दे. 'क़िल्यान', दोनों शुद्ध हैं।

कल्लः (کله) फा. पुं.–जबड़ा; कनपटी; सिर।

कल्लःदराज़ (کله دراز) फा. वि.–मुखर, ज़बाँदराज़।

कल्लःमनार (کله منار) फा. अ. पुं.–वह जयस्तंभ जो मारे गये सैनिकों के सिरों से बनाया जाता था।

कल्लए क़ंद (کلهٔ قند) फा. पुं.–मिस्री का कूज़ा।

क़ल्लमा (قلما) अ. वि.–थोड़ा, किंचित्।

कल्ला (کلا) अ. अव्य.–सत्य है, यथार्थ है, ठीक है।

क़ल्लाब (قلاب) अ. वि.–छली, वंचक, दग़ाबाज़।

क़ल्लाबी (قلابی) अ. स्त्री.–छल, दग़ाबाज़ी।

क़ल्लाश (قلاش) तु. पुं.–नीच, कमीना; निर्धन, कंगाल।

क़ल्लास (قلاس) अ. पुं.–चढ़ी हुई नदी, बाढ़ पर आयी हुई नदी; समृद्ध, मालामाल।

क़ल्स (قلس) अ. पुं.–जो एक बार मुँह से निकले, (कई बार निकले तो उसे क़ै कहते हैं); नाव की मोटी रस्सी।

क़वद (قود) अ. पुं.–क़सास, प्रतिहिंसा, किसी की हत्या होने पर उसके ख़ून का बदला लेना।

कवल (کول) फा. पुं.–कम्मल, कंबल।

क़वाइद (قواعد) अ. पुं.–'क़ाइदः' का बहु., नियमावली, ज़ाबिता; व्याकरण, सर्फ़न ह्व; सेना की परेड; परम्पराएँ, रस्मोरिवाज़।

क़वाइदगाह (قواعدگاه) अ. फा. स्त्री.–परेड करने का मैदान, सैन्य-व्यायाम-क्षेत्र।

क़ंवाइददाँ (قواعددان) अ. फा. वि.–परेड सीखा हुआ सैनिक, परेड से परिचित; किसी कार्य के नियमों से परिचित।

कवाइफ़ (کوائف) अ. पुं.–'क़ैफ़ियत' का बहु., हालात, समाचार; घटनाएँ, समस्याएँ, मसाइल।

कवाइब (کواعب) अ. स्त्री.–'काइब' का बहु., वे स्त्रियाँ जिनकी छातियाँ कड़ी हों।

कवाइबे अंजुम (کواعب انجم) अ. स्त्री.–सप्तर्षि-मंडल, बनातुन्ना'श।

क़वाइम (قوائم) अ. पुं.–'क़ाइमः' का बहु., मनुष्य के हाथ-पाँव; चूल्हे आदि के पाये।

कवाकिब (کواکب) अ. पुं.–'कौकब' का बहु., तारे, उडुगण।

क़वानीन (قوانین) अ. पुं.–'क़ानून' का बहु., हर प्रकार के क़ानून।

क़वाफ़िल (قوافل) अ. पुं.–'क़ाफ़िला' का बहु., यात्रियों के क़ाफ़िले; पतली कमर के घोड़े।

क़वाफ़ी (قوافی) अ. पुं.–'क़ाफिया' का बहु., क़ाफ़िए।

क़वाम (قوام) अ. पुं.–सत्यता, सच्चाई; सरलता, रास्ती; न्याय, इंसाफ़।

क़वामीस (قوامیس) अ. पुं.–'क़ामूस' का बहु., बड़ी-बड़ी नदियाँ, महानद-समूह।

क़वारीर (قواریر) अ. पुं.–'क़ारूरः' का बहु., क़ारूरे की शीशियाँ; बोतलें, शीशियाँ।

क़वारे' (قوارع) अ. पुं.–'क़ारिअः' का बहु., आपत्तियाँ, सख्तियाँ; सांसारिक दुर्घटनाएँ, हादिसे।

क़वी (قوی) अ. वि.–बलवान्, शक्तिशाली, ज़ोरावर; ईश्वर का एक नाम।

क़वीउलजुस्सः (قوی الجثه) अ. वि.–मज़बूत डीलडौल का, दृढ़ांग, हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा।

क़वीतरीन (قوی ترین) अ. फा. वि.–बहुत अधिक शक्तिशाली, महाबल।

क़वीदस्त (قوی دست) अ. फा. वि.–शक्तिशाली, ज़ोरावर।

क़वीपंजः (قوی پنجه) अ. फा. वि.–दे. 'क़वी बाज़ू'।

क़वीपुश्त (قوی پشت) अ. फा. वि.–जिसे किसी महान् पुरुष का सहारा प्राप्त हो, जिसकी पीठ पर किसी बड़े व्यक्ति का हाथ हो, ताक़तवर हिमायती, बलिष्ठ पक्षपाती।

क़वीबाज़ू (قوی بازو) अ. फा. वि.–जिसकी भुजाएँ काफ़ी दृढ़ हों, जो अपनी भुजाओं के बल पर हर कार्य करता हो, पराक्रमी; साहसी, जफ़ाकश्।

क़वीमः (قویمه) अ. स्त्री.–सीधी, सरल; दृढ़, पुष्ट, मज़बूत (स्त्री.)।

क़वीम (قویم) अ. वि.–सीधा, सरल, रास्त; दृढ़, पुष्ट, मज़बूत।

कवुर्गः (کورگه) तु. पुं.–बड़ा नक़्क़ारः (नगाड़ा), धौंसा।

क़वुर्मः (قورمه) तु. पुं.–कोर्मः, शोरबेदार गोश्त, जिसमें

तरकारी आदि न हो, शुद्ध उच्चारण यही है, पर उर्दू में, 'क़ोर्मः' बोलते हैं।

कव्वः (کوہ) अ. पुं.–दीवार का छेद चाहे वह आरपार हो या ताक़नुमा हो; दरीचा, झरोखा।

क़व्वात (قواط) अ. पुं.–भेड़-बकरियों के झुंड का चरवाहा।

क़व्वाल (قوال) अ. पुं.–बहुत बातें करनेवाला; क़व्वाली गानेवाला।

क़व्वाली (قوالی) अ. स्त्री.–वे इसलामी गाने जो मज़ारों आदि पर गाये जाते हैं, हक़्क़ानी गाने।

क़व्वास (قواس) अ. वि.–धनुष्कार, कमानें बनानेवाला।

कश (کش) फा. पुं.–कक्ष, बग़ल; वक्षःस्थल, छाती; दम, खींच, जैसे—हुक़्क़े का कश; (प्रत्य.) खींचनेवाला, जैसे—'कमाँकश' धनुष खींचनेवाला; सहन करनेवाला, जैसे—'सितमकश' अत्याचार सहन करनेवाला, मयकश–शराब खींचने या पीनेवाला।

क़श [श्श] (قش) (अ.) पुं.–दुबलेपन के बाद मोटा होना; भलाई पाना।

कशफ़ (کشف) फा. पुं.–कछवा, कूर्म।

क़शफ़ (قشف) अ. पुं.–सूरज की धूप में मुँह का झुलस जाना; दरिद्रता और फ़ाक़ों से मुँह की शोभा का चला जाना।

कशमकश (کش مکش) फा. स्त्री.–खींचातानी, आपाधापी; वैमनस्य, कशीदगी; असमंजस, संकोच, दुविधा, पसोपेश; संघर्ष, लड़ाई; दौड़-धूप, पराक्रम।

कशाँ (کشاں) फा. प्रत्य.–खींचते हुए, जैसे—'मूकशाँ' बाल पकड़कर खींचते हुए।

कशाँ कशाँ (کشاں کشاں) फा. वि.–खींचते-खींचते, खींचते हुए, ज़बरदस्ती।

कशाकश (کشاکش) फा. स्त्री.–खींचाखींची, संघर्ष; चढ़ा-ऊपरी, स्पर्धा; असमंजस, तज़ब्ज़ुब।

कशावर्ज़ (کشاورز) फा. पुं.–कृषक, काश्तकार, किसान।

कशावर्ज़ी (کشاورزی) फा. स्त्री.–कृषिकर्म, काश्तकारी, खेती, किसानी।

कशिश (کشش) फा. स्त्री.–आकर्षण, खिंचाव; रोचकता, जाज़िबीयत; प्रवृत्ति, मनोवृत्ति, रुज्हान।

कशिशे इश्क़ (کشش عشق) फा. अ. स्त्री.–प्रेम का आकर्षण, मुहब्बत का जज़्बा।

कशिशे सिक़्ल (کشش ثقل) फा. अ. स्त्री.–गुरुत्वाकर्षण।

कशीदः (کشیدہ) फा. वि.–खिंचा हुआ, अंचित; अप्रसन्न, नाराज़, (पुं.) बेल-बूटे का काम।

कशीदःकमर (کشیدہ کمر) फा. वि.–झुकी हुई कमर-वाला।

कशीदःक़ामत (کشیدہ قامت) फा. अ. वि.–लम्बे आकार वाला, लम्बे क़दवाला, लंबकाय।

कशीदःकार (کشیدہ کار) फा. वि.–कशीदे का काम करनेवाला, चिकन काढ़नेवाला।

कशीदःकारी (کشیدہ کاری) फा. स्त्री.–कपड़े पर बेलबूटे बनाना, चिकन बनाना।

कशीदःख़ातिर (کشیدہ خاطر) फा. अ. वि.–अप्रसन्न, रुष्ट, नाख़ुश; खिन्न, मलिन, अफ़्सुर्दः।

कशीदःरू (کشیدہ رو) फा. वि.–लम्बे मुँहवाला, लंबोतरे मुँह का; मुँह बिगाड़े हुए, रुष्ट, नाराज़।

क़शीब (کشیب) अ. पुं.–नया वस्त्र, पहनने का नया कपड़ा।

कशीश (کشیش) तु. पुं.–ईसाइयों का धर्मगुरु, पादरी।

क़शूर (قشور) अ. पुं.–चेहरे पर मलने की दवा जिससे मुँह का रंग साफ़ होता है।

क़श्क़ः (قشقہ) अ. पुं.–चंदन आदि से माथे पर बनायी जानेवाली लकीरें, तिलक, चित्रक।

कश्क (کشک) फा. पुं.–छिलके उतारे हुए जौ; सूखा दही; जौ का पानी जो रोगियों को दिया जाता है।

कश्काब (کشکاب) फा. पुं.–छिलके उतरे हुए जौ का पानी जो रोगियों को दिया जाता है, आशे जौ।

कश्कोल (کشکول) फा. पुं.–भिक्षापात्र, भीख माँगने का बर्तन, दे. 'कचकोल', 'कजकोल'।

कश्ख़ान (کشخان) फा. पुं.–दे. 'क़ल्तबान'।

कश्ती (کشتی) फा. स्त्री.–नाव, नौका, तरणी, "जोशे तूफ़ाँ, शोरे-दर्या, बर्क़ें लर्ज़ां, बादे तुंद, कश्तीए उम्रे रवाँ यारब बड़ी मुश्किल में है"।

कश्तीबान (کشتی بان) फा. वि.–नाव चलानेवाला, नाविक, कर्णधार, मल्लाह।

कश्तीबानी (کشتی بانی) फा. स्त्री.–नाव चलाना, नाव खेना।

कश्तीराँ (کشتی راں) फा. वि.–दे. 'कश्तीवान'।

कश्तीरानी (کشتی رانی) फा. स्त्री.–दे. 'कश्तीवानी'।

कश्फ़ (کشف) अ. पुं.–ज़ाहिर होना, प्रकट होना; आत्मशक्ति द्वारा गुप्त बातों का ज्ञान, मुवाशफ़ः।

कश्मीर (کشمیر) फा. पुं.–भारत का एक प्रसिद्ध प्रदेश।

कश्मीरी (کشمیری) फा. वि.–कश्मीर से सम्बन्धित; कश्मीर का निवासी; कश्मीर की भाषा; कश्मीर का।

क़श्र (قشر) अ. पुं.–छिलका, भूसी, तुष।

क़श्रुलबैज़ (قشر البیض) अ. पुं.–अंडे का छिलका।

कश्वर (کشور) फा. स्त्री.–देश, मुल्क; महाद्वीप, बर्रे-आ'ज़म; प्रदेश, इलाक़ः, दे. 'किश्वर', दोनों शुद्ध हैं।

क़श्वर (قشور) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसे मासिक-धर्म न आता हो, नष्टार्तव।

कश्वरकुशा (کشورکشا) फा.वि.–शासक, हाकिम, हुक्मराँ।

कश्वर सितां (کشور ستاں) फा. वि.–विश्वविजयी, आलमगीर।

कश्शाफ़ (کشاف) अ. वि.–खोलनेवाला, प्रकट करनेवाला।

क़स[स्स] (قص) अ. पुं.–वक्षस्थल, सीना, छाती; सीने की हड्डी।

कस (کس) फा. पुं.–व्यक्ति, शख़्स।

क़सबः (قصبہ) अ. पुं.–डाली, शाखा; छोटा शहर।

क़सब (قصب) अ. पुं.–नर्कट, नर्कुल, नम; हर चीज़ जो नर्कट-जैसी भीतर से खाली हो।

क़सबुज़्ज़रीरः (قصب الزریرہ) अ. पुं.–चिरायता, एक वनौषधि।

क़सबुलजीब (قصب الجیب) अ. पुं.–काँस, एक घास।

क़सबुलजैब (قصب الجیب) अ. पुं.–ख़त रखने का बाँस आदि का खोल, जिसमें रखकर ख़त भेजे जाते थे।

क़सबुलहबीब (قصب الحبیب) अ. पुं.–गन्ना, नैशकर, ऊख।

क़सबुस्सबक़ (قصب السبق) अ. पुं.–वह वल्लम जो दूर पर गाड़ दिया जाता है और कुछ सैनिक सवार घोड़े दौड़ाकर उसकी ओर दौड़ते हैं, जो उसे पहले उखाड़ लेता है उसे इनाम दिया जाता है।

क़सम (قسم) अ. स्त्री.–शपथ, सौगंद।

कसमपुर्सी (کسمپرسی) फा. स्त्री.–बेबसी, बेकसी; ऐसा जीवन जिसमें कोई पूछनेवाला न हो।

कसल (کسل) अ. पुं.–शिथिलता, आलस्य, काहिली; क्लांति, श्रान्ति, थकावट।

कसलमंद (کسل مند) अ. फा. वि.–क्लान्त, म्लान, श्रांत, थका हुआ।

क़सस (قصص) अ. पुं.–क़िस्सा कहना, कहानी कहना।

क़साइद (قصائد) अ. पुं.–'क़सीदः' का बहु., क़सीदे।

कसाद (کساد) अ. पुं.–सस्तापन, मंदता; ख़रीदारों का अभाव; किसी वस्तु का प्रचलित न होना, बेरिवाजी।

कसादबाज़ारी (کساد بازاری) अ. फा. स्त्री.–बाज़ार भाव का बहुत मंदा हो जाना; बाज़ार में ख़रीद फ़रोख़्त बहुत कम हो जाना; किसी चीज़ की पूछताछ न होना, कसमपुर्सी।

कसाफ़त (کثافت) अ.स्त्री.–मलिनता, समलता, मैलापन; अशुद्धता, गंदगी।

क़सारत (قصارت) अ. स्त्री.–कपड़े धोना, धोबी का काम।

कसालत (کسالت) अ. स्त्री.–दे. 'कसल'।

क़सावत (قساوت) अ. स्त्री.–निर्दयता, बेरहमी; कठोरता, सख़्ती।

क़सावतेक़ल्बी (قساوت قلبی) अ. स्त्री.–हृदय का कठोर होना, निर्दयता।

क़सी (قسی) अ. वि.–निर्दय, कठोर, हृदय, बेरहम।

कसी-उल-क़ल्ब (قسی القلب) अ. वि.–कठोर हृदयवाला, पाषाणहृदय, सख़्त दिल।

कसीदः (کسیدہ) अ. वि.–वह माल जिसकी बिक्री न हो, जिसका चलन उठ गया हो।

क़सीदः (قصیدہ) अ. पुं.–पद्यात्मक प्रशंसा; नज़्म की एक क़िस्म जिसमें किसी महान व्यक्ति की प्रशंसा की जाती है ऐसी प्रशंसा जिसमें यथार्थता कम हो, भटई।

क़सीदःख़्वाँ (قصیدہ خواں) अ. फा. वि.–क़सीदा पढ़नेवाला; झूठी प्रशंसा करनेवाला, ख़ुशामदी; भाट, बंदी।

क़सीदःख़्वानी (قصیدہ خوانی) अ. फा. स्त्री.–क़सीदा पढ़ना; झूठी प्रशंसा करना, भटई करना।

क़सीदःगो (قصیدہگو) अ. फा. वि.–क़सीदा लिखनेवाला, वह शाइर जो क़सीदे अधिक और अच्छे लिखता हो।

क़सीदःगोई (قصیدہگوئی) अ. फा. स्त्री.–क़सीदे लिखना।

कसीद (کسید) अ. वि.–वह माल जिसका चलन न रहा हो।

क़सीद (قصید) अ. पुं.–सूखा चमड़ा; तीन शे'रों से अधिक दस तक; टूटा हुआ, शिकस्ता।

कसीफ़ (کثیف) अ. वि.–मलिन, मैला; अपवित्र, गंदा।

कसीफ़ुत्तब्अ (کثیف الطبع) अ. वि.–जिसकी आत्मा अशुद्ध हो, बदबातिन।

कसीफ़ुलबातिन (کثیف الباطن) अ. वि.–दे. 'कसीफ़ुत्तब्अ'।

क़सीमः (قسیمہ) अ. पुं.–मुश्क का नाफ़ा।

क़सीम (قسیم) अ. वि.–भागीदार, साझीदार, शरीफ़; बाँटनेवाला, विभाजक।

क़सीर (قصیر) अ. वि.–ह्रस्व, छोटा; वामन, बौना।

कसीर (کثیر) अ. वि.–अधिक, प्रचुर, बहुत।

कसीर (کسیر) अ. वि.–टूटा हुआ, शिकस्तः, खंडित।

कसीरुज़्ज़ौजात (کثیر الزوجات) अ. पुं.–जिसकी बहुत-सी पत्नियाँ हों, अनेकभार्य, बहुपत्नीक।

कसीरुत्तहम्मुल (کثیر التحمل) अ. वि.–जिसमें धैर्य बहुत हो, बहुक्षम, बहुधैर्य।

कसीरुत्ता'दाद (کثیر التعداد) अ. वि.–जो गिनती में बहुत हों, बहुसंख्यक, विपुल, असंख्य।

कसीरुलअख़्लाक़ (کثیر الاخلاق) अ. वि.–जो बहुत सुशील और मिलनसार हो, बहुशील।

कसीरुलअज़्लाअ (كثیرالاضلاع) अ. वि.–वह क्षेत्र जिसमें बहुत-सी भुजाएँ हों, बहुभुज क्षेत्र ।

कसीरुलअत्फ़ाल (كثیرالاطفال) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी संतान बहुत हो, बहुसंतति; वह स्त्री जिसने बहुत से बच्चे जने हों, बहुप्रसवा, बहुसू, कृमिला ।

कसीरुलअफ़्कार (كثیرالافكار) अ. वि.–जिसे चिंताएँ बहुत हों, बहुचिंत ।

कसीरुलअलाइक़ (كثیرالعلائق) अ. वि.–जो मायाजाल में पूरी तरह फँसा हो; जिसके मित्र और रिश्तेदार बहुत हों; जिसके पीछे दुनिया के बहुत से झगड़े लगे हों ।

कसीरुलअश्काल (كثیرالاشكال) अ. वि.–जिसके बहुत से रूप हों; बहुरूप, अनेकाकार ।

कसीरुलइयाल (كثیرالعیال) अ. वि.–जिसके बाल-बच्चे बहुत हों; जिसकी संतति अधिक और आय कम हो ।

कसीरुलइल्म (كثیرالعلم) अ. वि.–जो बहुत बड़ा विद्वान् हो, बहुविद् ।

कसीरुलऔलाद (كثیرالاولاد) अ. वि.–दे. 'कसीरुलइयाल' ।

कसीरुलऔसाफ़ (كثیرالاوصاف) अ. वि.–जिसमें बहुत अधिक गुण और अच्छाइयाँ हों, बहुगुण ।

कसीरुलकलाम (كثیرالكلام) अ. वि.–जो बहुत बातें करता हो, वाचाल, बहुलालाप, बक्की, झक्की ।

क़सीरुलक़ामत (قصیرالقامت) अ. वि.–बहुत छोटे डील-डौल का; बौना, वामन, ह्रस्वांग ।

कसीरुलख़ैर (كثیرالخیر) अ. वि.–जो बहुत अधिक दानशील हो, जो अच्छे कामों में काफ़ी ख़र्च करता हो, जो ग़रीबों की काफ़ी सहायता करता हो ।

कसीरुलमा'ना (كثیرالمعنی) अ. वि.–वह शब्द, वाक्य या शे'र जिसके बहुत से अर्थ हों, अनेकार्थ ।

कसीरुलमाल (كثیرالمال) अ. वि.–जिसके पास धन बहुत हो, धनाढ्य, विपुलद्रव्य, पृथुलधन ।

कसीरुलवुक़ूअ (كثیرالوقوع) अ. वि.–ऐसी घटना जो प्रायः घटित होती रहती हो ।

कसीरुश्शा'र (كثیرالشعر) अ. वि.–जिसके शरीर पर बाल बहुत हों, लोमश, बहुलोमा ।

कसीरुश्शह्वत (كثیرالشهوت) अ. वि.–जिसमें कामवासना का आधिक्य हो, बहुकाम, अतिकामी, घोर विषयी ।

कसीरुस्समर (كثیرالثمر) अ. वि.–ऐसा वृक्ष जिसमें फल बहुत आते हों ।

क़सील (قصیل) अ. पुं.–जौ, जो अभी पूरी तरह पके न हों, अधपका जौ ।

कसीस (كسیس) अ. पुं.–सुखाया हुआ क़ीमा; छुहारे की मदिरा ।

कसीह (كسیح) अ. वि.–विवश, लाचार; जो एक जगह ठहरकर रह गया हो, हिल-डुल न सके ।

कसूस (كثوث) अ. पुं.–एक बेल जो वृक्षों पर फैलती है, अमर बेल ।

कसे बाशद (كسے باشد) फ़ा. वा.–कोई हो, चाहे कोई हो ।

कसो को (كس و كو) फ़ा. पुं.–मित्र और स्वजन ।

कसो नाकस (كس و ناكس) फ़ा. पुं.–अच्छा-बुरा, हर प्रकार का व्यक्ति, बड़ा-छोटा, हर आदमी ।

क़स्द (قصد) अ. पुं.–संकल्प, निश्चय, इरादा; इच्छा, कामना, ख़्वाहिश ।

क़स्दन (قصداً) अ. वि.–जान-बूझकर, निश्चयपूर्वक ।

क़स्बः (قصبه) अ. पुं.–शहर से छोटी और गाँव से बड़ी बस्ती ।

कस्ब (كسب) अ. पुं.–कमाई, उपार्जन; उद्यम, धंधा, रोज़गार; वेश्यावृत्ति, वेश्याकर्म, रंडीपन ।

क़स्ब (قصب) अ. पुं.–काटना, छेदन ।

कस्बी (كسبی) अ. वि.–वह विद्या जो कमाने और परिश्रम करने से प्राप्त हो, 'वहबी' का उलटा; वेश्या, गणिका ।

कस्बे इल्म (كسب علم) अ. पुं.–विद्या प्राप्त करना, विद्योपार्जन ।

कस्बे कमाल (كسب كمال) अ. पुं.–कोई गुण प्राप्त करना, गुणोपार्जन ।

कस्बे ज़र (كسب زر) अ. फ़ा. पुं.–रुपया कमाना, धनोपार्जन ।

कस्बे हुनर (كسب هنر) अ. फ़ा. पुं.–कोई शिल्प या कला सीखना, शिल्पोपार्जन ।

क़स्म (قسم) अ. पुं.–बाँटना, वंटन; दान करना, बख़्शिश करना ।

क़स्मत (قسمت) अ. स्त्री.–हिस्से लगाना, हिस्से बाँटना ।

कस्रः (كسره) अ. पुं.–उर्दू में 'ज़ेर' की अलामत, ज़ेर की मात्रा ।

कस्र (كسر) अ. पुं.–ज़ेर की मात्रा; टूट, शिकस्तगी; वह संख्या जो एक से कम हो, भिन्न, जैसे, $\frac{१}{६}$, $\frac{१}{४}$, $\frac{३}{८}$, $\frac{९}{२०}$ ।

क़स्र (قسر) अ. पुं.–किसी से बलात् कोई काम लेना, ज़बरदस्ती किसी काम पर लगाना ।

क़स्र (قصر) अ. स्त्री.–न्यूनता, कमी; त्रुटि, ख़ामी, (पुं.) भवन, प्रासाद, महल ।

कस्रत (كسرت) अ. स्त्री.–व्यायाम, वर्ज़िश ।

कस्रत (كثرت) अ. स्त्री.–प्राचुर्य, बाहुल्य, अधिकता, प्रचुरता, बहुतात, इफ़रात ।

कस्रतगाह (کسرتگاہ) अ. फा. स्त्री.–कस्रत करने का स्थान, व्यायामशाला।

कस्रेनफ़्सी (کسرنفسی) अ. स्त्री.–नम्रता, विनीति, खाकसारी।

कस्रेशान (کسرشان) अ. स्त्री.–शान के ख़िलाफ़, हेठी, अपमान, बेइज़्ज़ती।

कस्लान (کسلان) अ. वि.–आलस, काहिल, सुस्त, आलसी।

क़स्वः (قسوہ) अ. पुं.–हृदय की कठोरता, सख़्तदिली।

क़स्वरः (قسورہ) अ. पुं.–व्याघ्र, सिंह, शेर।

क़स्सा (قثا) अ. स्त्री.–ककड़ी।

क़स्साब (قصاب) अ. पुं.–गोश्त बेचनेवाला, मांस-विक्रेता; पशुवध करनेवाला, क़साई।

क़स्साबख़ानः (قصابخانہ) अ. फा. पुं.–मांस विकने का स्थान; पशुवध का स्थान, वधस्थल, कसाईख़ाना।

क़स्साम (قسام) अ. वि.–वाँटनेवाला, वितरण करनेवाला; क़िस्मत लिखनेवाला, भाग्य-लिपिक।

क़स्सामे अज़ल (قسام ازل) अ. पुं.–मनुष्य की उत्पत्ति के समय उसके भाग्य में उसका भाग लिखनेवाला, ईश्वर।

क़स्सार (قصار) अ. वि.–कपड़े धोनेवाला, धोबी, रजक।

कह (کہ) फा. स्त्री.–‘काह’ का लघु., घास, तृण।

कहकशाँ (کہکشاں) फा. स्त्री.–आकाशगंगा, छायापथ।

कहगिल (کہگل) फा. स्त्री.–मट्टी में घास मिलाकर दीवारों पर लेस करने के लिए बनाया जानेवाला गारा।

कहनः (کہنہ) अ. पुं.–‘काहिन’ का बहु., शकुन विचारनेवाले।

कहर (کہر) फा. पुं.–कुमैत, कुम्मैत; कुम्मैती रंग।

कहरुबा (کہربا) फा. पुं.–एक हलका पत्थर जो घास को अपनी ओर खींचता है, तृणमणि।

कहरुबाई (کہربائی) फा. वि.–कहरुबा से सम्बन्ध रखनेवाला; बर्क़ी, विद्युत्सम्वन्धी।

कही (کہی) फा. पुं.–वह सैनिक जो सेना के आगे चलकर पड़ाव के लिए घोड़ों के दाना-घास का प्रबंध करते हैं।

कहूल (کہول) अ. वि.–खिचड़ी डाढ़ीवाला, अधेड़ उम्र वाला।

क़ह्क़ाह (قہقاہ) फा. पुं.–अट्टहास, क़ह्क़हा “किसी के क़हक़हे में प्यार की रंगीन अँगड़ाई, उतर आई हज़ारों बार दिल में, छू के गहराई।”

क़ह्त (قحط) अ. पुं.–दुर्भिक्ष, अकाल; अभाव, क़िल्लत, बहुत अधिक कमी।

क़ह्तज़दः (قحطزدہ) अ. फा. वि.–अकाल का मारा हुआ, जिसे अकाल के कारण खाने को बहुत कम मिला हो, दुर्भिक्षग्रस्त।

क़ह्तज़दगी (قحطزدگی) अ. फा. स्त्री.–अकाल के कारण भूखों मरना।

क़ह्तसाली (قحطسالی) अ. फा. स्त्री.–दुर्भिक्ष, अकाल; अवर्षा, पानी की कमी।

क़ह्तुर्रिजाल (قحطالرجال) अ. पुं.–अच्छे और सज्जन मनुष्यों का अभाव।

कह्फ़ (کہف) अ. पुं.–गर्त, गढ़ा, ग़ार; ख़ोह, गुफा, कंदरा।

क़ह्बः (قحبہ) अ. स्त्री.–दे. शु. उच्चारण ‘क़ुह्ब:’।

क़ह्र (قہر) अ. पुं.–क्रोध, कोप, ग़ुस्सा; दैवी कोप, अज़ाब; दैवी आपत्ति, बलाए आस्मानी।

कह्र (کہر) अ. पुं.–सूरज निकलना, दिन होना; चिल्लाना, शोर करना; कुपित होना, ग़ुस्सा करना।

क़हरमान (قہرمان) तु. पुं.–काम करनेवाला, कर्मचारी, कारकुन।

क़ह्रमान (قہرمان) फा. पुं.–शासक, हाकिम; शासन, हुकूमत; अत्याचार और अन्याय का शासन।

कह्ल (کہل) अ. पुं.–अधेड़ आयुवाला मनुष्य।

कहल (کحل) अ. पुं.–दुर्भिक्ष का समय, क़ह्त का साल।

क़ह्वः (قہوہ) अ. पुं.–एक दाना जिसे भूनकर पीसते और उबालकर पीते हैं, काफ़ी।

क़ह्वःख़ानः (قہوہخانہ) अ. फा. पुं.–जहाँ क़हवा पिया जाता है, काफ़ी-हाउस।

क़ह्हार (قہار) अ. वि.–बहुत अधिक क्रोप करनेवाला, महाकोपी; ईश्वर का एक नाम।

कह्हाल (کحال) अ. वि.–आँख के रोगों की चिकित्सा करनेवाला, सथिया; सुरमा बनाने और बेचनेवाला।

का

क़ाअ’ (قاع) अ. पुं.–लंबी-चौड़ी ज़मीन, जो समतल भी हो।

क़ाआन (قاآن) तु. वि.–न्यायशील राजा, आदिल बादशाह।

क़ाइदः (قاعدہ) अ. पुं.–नियम, उसूल; सिद्धांत, नज़रीय:; विधि, पद्धति, तरीक़ा; बच्चों के पढ़ने की अलिफ़ बे की पुस्तक।

क़ाइदःदाँ (قاعدہداں) अ. फा. वि.–क़ाइदा जाननेवाला, जिसे नियम और विधि आदि मालूम हो, आज़म, बड़ा वैधानिक।

क़ाइद (قائد) अ. वि.–अंधे की लाठी पकड़कर उसके आगे चलनेवाला; नेता, लीडर; फ़ौज का सरदार, सेनाध्यक्ष।

क़ाइद (قاعد) अ. वि.–बैठा हुआ, (स्त्री.) वह स्त्री जो रजोधर्म और जनन से फ़ारिग हो, (पुं.) वह खजूर जिस तक हाथ पहुँच जाय।

काइद (کائد) अ. वि.–छली, वंचक, धूर्त, मक्कार।

LIBRARY
HARDWAR

क़ाइदए कुल्लीयः (قاعدۂ کلیہ) अ. पुं.–वह नियम जो एक-सी चीज़ों में सब पर लागू हो, व्यापक नियम।

काइन (کائن) अ. वि.–उपस्थित होनेवाला; उत्पन्न होनेवाला।

क़ाइन (قائن) तु. पुं.–पति का भाई, देवर; पत्नी का भाई (साला)।

काइनात (کائنات) अ. स्त्री.–ब्रह्मांड, ख़लाए आस्मानी; संसार, दुनिया; सामर्थ, हैसियत, बिसात।

क़ाइफ़ (قاعف) अ. पुं.–बहुत ही कड़ी वर्षा, सख़्त बारिश।

क़ाइफ़ (قائف) अ. वि.–चेहरा देखकर हाल बता देनेवाला, क़ियाफ़ःशनास, सामुद्रिक।

क़ाइमः (قائمہ) अ. पुं.–पाया, खंभा; नब्बे अंश का कोण; वह खड़ी लकीर जो पड़ी लकीर पर गिरकर नब्बे अंश का कोण बनाये।

क़ाइम (قائم) अ. वि.–खड़ा होनेवाला, उल्लंबित; दृढ़, मज़बूत; स्थिर, पायदार (क़ायम)।

क़ाइम अंदाज़ (قائم انداز) अ.फा. वि.–शतरंज का बहुत बड़ा उस्ताद; बहुत बड़ा शक्तिशाली।

क़ाइम बिज़्ज़ात (قائم بالذات) अ. वि.–जिसका अस्तित्व बिना दूसरे के सहारे के हो।

क़ाइम बिलग़ैर (قائم بالغیر) अ. वि.–जिसका अस्तित्व दूसरे के अस्तित्व पर अवलंबित हो, जैसे–रंग का अस्तित्व कपड़े के सहारे।

क़ाइम मक़ाम (قائم مقام) अ. वि.–जो किसी दूसरे के पद या स्थान पर नियुक्त हो, स्थानापन्न (क़ायम मुक़ाम)।

क़ाइम मिज़ाज (قائم مزاج) अ. वि.–जो किसी निश्चय पर अटल रहे, दृढ़निश्चय।

क़ाइलः (قائلہ) अ. स्त्री.–कहनेवाली, बात करनेवाली; क़ौलूल: करनेवाली।

क़ाइल (قائل) अ. वि.–कहनेवाला, बोलनेवाला; लाजवाब, निरुत्तर; दोपहर में खाने के पश्चात् थोड़ी देर लेटनेवाला (क़ायल)।

काऊस (کاؤس) फा. पुं.–कैकाऊस, ईरान का सम्राट्, रुस्तम इसी का नौकर था।

क़ाक़ (قاق) तु. पुं.–सुखाया हुआ मांस; सूखा-साखा मनुष्य।

क़ाक़ (قاق) अ. वि.–बहुत लम्बा व्यक्ति।

काक (کاک) फा. स्त्री.–आटे की मोटी और छोटी रोटी, टिकिया।

का'क (کعک) अ. स्त्री.–दे. 'काक'।

काका (کاکا) तु. पुं.–बड़ा भाई, अग्रज; घर का बड़ा बूढ़ा नौकर।

क़ाक़ुम (قاقم) फा. पुं.–एक जंगली जन्तु जिसकी खाल बहुत मुलायम होती है और उसका पोस्तीन बनता है; उस जानवर की खाल।

क़ाक़ुमे उंगुश्तनुमा (قاقم انگشت نما) फा. पुं.–एक प्रकार का क़ाक़ुम जिसके रोएँ अंगुल-अंगुल भर उठे होते हैं।

क़ाक़ुलः (قاقلہ) अ. स्त्री.–बड़ी इलाइची।

काकुल (کاکل) फा. स्त्री.–बालों की लट, केशपाश; अलक, ज़ुल्फ़; माथे पर के बाल।

क़ाक़ुलतैन (قاقلتین) अ. स्त्री.–छोटी और बड़ी दोनों इलाइचियाँ।

काकुले परीशाँ (کاکل پریشاں) फा. स्त्री.–बिखरे हुए बाल।

काकुले पेचाँ (کاکل پیچاں) फा. स्त्री.–घुँघरवाले बाल।

काकुले शम्अ (کاکل شمع) फा. अ. स्त्री.–चिराग़ या शमा का धुवाँ।

काख़ (کاخ) फा. पुं.–भवन, प्रासाद, महल; वर्षा, बारिश।

काग़ (کاغ) फा. पुं.–आग, अग्नि; पशुओं की जुगाली; रोना-धोना, शोरग़ुल।

काग़ज़ (کاغذ) अ. पुं.–लिखने का काग़ज़, पत्र; दस्तावेज़ आदि।

काग़ज़गर (کاغذگر) अ. फा. वि.–काग़ज़ बनानेवाला, काग़ज़ी।

काग़ज़गीर (کاغذگیر) अ. फा. पुं.–खिड़की या झरोखा जिस पर काग़ज़ या अभ्रक मढ़ा गया हो।

काग़ज़ात (کاغذات) अ. पुं.–'काग़ज़' का बहु., वह काग़ज़ जो किसी विषय से सम्बन्धित हों।

काग़ज़ी (کاغذی) अ. वि.–काग़ज़ से सम्बन्धित; काग़ज़ का; काग़ज़ बनानेवाला; बहुत हलके छिलके का; काग़ज़ का बना हुआ।

काग़ज़ेज़र (کاغذ زر) अ. फा. पुं.–प्रामेसरी नोट, पत्र मुद्रा।

काग़ज़ेबाद (کاغذِ باد) अ. फा. पुं.–पतंग, जो हवा में उड़ाई जाती है।

काग़ज़े हल्वा (کاغذ حلوا) अ. पुं.–मिठाई पर लपेटा जानेवाला काग़ज़; व्यर्थ वस्तु, जैसे—मिठाई खा लेने के बाद उसका काग़ज़ व्यर्थ हो जाता है।

काग़द (کاغد) फा. पुं.–दे. 'काग़ज़'।

काचक (کاچک) फा. पुं.–खोपड़ी की हड्डी।

काचार (کاچار) फा. पुं.–घर का सामान, घर का असबाब, गृह-सामग्री।

काचाल (کاچال) फा. पुं.–दे. 'काचार'।

काज़ः (کازہ) फा. पुं.–वह गढ़ा जिसमें शिकारी छिपकर बैठता है और उस पर पत्ते और घास-फूस डाल लेता है।

क़ाज़ (قاز) तु. पुं.–हंस की जाति का एक पक्षी जो

दूसरे ठंडे देशों से जाड़ों में भारत आ जाता है और जाड़ों के बाद लौट जाता है।

काज (کاز) फा. पुं.–फूस का छप्पर या झोंपड़ा, फूस का मकान।

काज (کاچ) फा. अव्य.–काश, ईश्वर करे; भेंगा, जिसे एक की दो चीज़ें दिखाई पड़ती हों।

काज (کاژ) फा. पुं.–भेंगा, अह्वल; सनोवर की एक जाति।

क़ाज़िए चर्ख़ (قاضئی چرخ) अ. फा. पुं.–मुश्तरी, बुध ग्रह।

क़ाज़िए शह्र (قاضئی شہر) अ. फा. पुं.–वह क़ाज़ी जो शह्र में निकाह पढ़ाता है।

काज़िबः (کاذبہ) अ. स्त्री.–झूठ बोलनेवाली, मिथ्या-वादिनी।

काज़िब (کاذب) अ. वि.–झूठा, मिथ्यावादी।

क़ाज़िब (قازب) अ. वि.–लालची व्यापारी, जो माल पर अधिक से अधिक लाभ लेना चाहता हो।

काज़िम (کاظم) अ. वि.–क्रोध की बात पर क्रोध न करनेवाला, धैर्यवान्; इमाम मूसारिज़ा की उपाधि।

क़ाज़ियुल हाजात (قاضی الحاجات) अ. पुं.–कामनाएँ पूरी करनेवाला; ईश्वर।

क़ाज़ी (قاضی) अ. वि.–न्यायकर्ता, मुंसिफ़; निकाह पढ़ानेवाला; देनेवाला, अदा करनेवाला।

काजीरः (کاجیرہ) फा. पुं.–दे. 'काज़ीरः'

काज़ीरः (کازیرہ) फा. पुं.–कुसुम का फूल।

क़ाज़ूरः (قاذورہ) अ. स्त्री.–अपवित्रता, नापाकी; गंदगी, मलिनता।

क़ाज़ूरात (قاذورات) अ. स्त्री.–नापाकियाँ, गंदगियाँ।

कात (کات) फा. पुं.–ख़ुरासान का एक नगर; 'एक चावल; कत्था।

क़ातईन (قاطعین) अ. पुं.–'क़ाते' का बहु., यात्रा करनेवाले, मुसाफ़िर लोग, पथिकगण।

क़ातिउत्तरीक़ (قاطع الطریق) अ. पुं.–रास्ते में लूट लेनेवाला, लुटेरा, क़ज़्ज़ाक़।

क़ातिएतरीक़ (قاطع طریق) अ. पुं.–दे. 'क़ातिउत्तरीक़' दोनों शुद्ध हैं।

क़ातिएबाह (قاطع باہ) अ. फा. पुं.–वह खाद्य पदार्थ जो काम-शक्ति के लिए विनाशकर हो, वीर्यनाशक पदार्थ।

क़ातिन (قاطن) अ. वि.–जो किसी स्थान पर ठहरा हुआ हो, जो सफ़र में न हो, 'मुसाफ़िर' का उलटा।

क़ातिनीन (قاطنین) अ. पुं.–ठहरे हुए लोग।

कातिब (کاتب) अ. वि.–लिखनेवाला, लेखक; क्लर्क, लिपिक; लीथो प्रेस पर छपने के लिए एक विशेष काग़ज़ पर विशेष सियाही से लिखने का काम करनेवाला।

क़ातिबतन (قاطبتاً) अ. वि.–नितान्त, बिलकुल, सर्वथा; सब, तमाम।

कातिबे अजल (کاتب ازل) अ. पुं.–मनुष्य की उत्पत्ति के समय भाग्य-रचना करनेवाला, भाग्य-लेखक, ईश्वर।

कातिबे आ'माल (کاتب اعمال) अ. पुं.–भले बुरे कर्म लिखनेवाला फ़िरिश्ता, कर्म-लेखक।

कातिब क़िस्मत (کاتب قسمت) अ. पुं.–भाग्य-लेखक, कातिबे अज़ल।

कातिबे क़ुद्रत (کاتب قدرت) अ. पुं.–दे. 'कातिबे अज़ल'।

कातिबे तक़्दीर (کاتب تقدیر) अ. पुं.–दे. कातिबे क़िस्मत।

क़ातिम (قاتم) अ. वि.–काला, कृष्ण, सियाह।

क़ातिर (قاتر) तु. पुं.–अश्वतर, ख़च्चर।

क़ातिल (قاتل) अ. वि.–वध करनेवाला, मार डालनेवाला, वधक, हिंसक, वधिक।

क़ाते' (قاطع) अ. वि.–काटनेवाला, विच्छेदक; सफ़र करनेवाला, पथिक।

क़ादिम (قادم) अ. वि.–यात्रा करके लौटा हुआ, सफ़र से वापस आया हुआ।

क़ादिमुलइंसान (قادم الانسان) अ. पुं.–मनुष्य की खोपड़ी, आदमी का सिर।

क़ादिर (قادر) अ. वि.–शक्तिशाली, ताक़तवर; समर्थ, क़ाबूदार; ईश्वर का एक नाम।

क़ादिर अंदाज़ (قادر انداز) अ. फा. वि.–जँचा-तुला निशाना लगानेवाला, निशानची, लक्ष्यभेदी, शब्दभेदी।

क़ादिर अंदाज़ी (قادر اندازی) अ. फा. स्त्री.–जँचा-तुला निशाना लगाना, लक्ष्यभेद।

क़ादिर अललइत्लाक़ (قادر عل الاطلاق) अ. पुं.–सर्वशक्तिमान्, हर बात करने की शक्ति रखनेवाला, अर्थात् ईश्वर।

क़ादिरदस्त (قادر دست) अ. फा. वि.–जिसका हाथ किसी काम में मँजा हुआ हो।

क़ादिरुलकलाम (قادر الکلام) अ. वि.–बातचीत करने या भाषण देने में निपुण, वागीश, वाक्यपटु।

क़ादिरे मुत्लक़ (قادر مطلق) अ. पुं.–दे. 'क़ादिर अललइत्लाक़'।

क़ादिस (قادس) अ. पुं.–बड़ी नाव, स्टीमर।

कान (کان) फा. स्त्री.–खान, खनि, मख़्ज़न।

क़ान (قان) तु. पुं.–रक्त, लोहू, ख़ून।

कानकन (کان کن) फा. वि.–खान में काम करनेवाला मज़दूर, खनक।

कानकनी (کان کنی) फा. स्त्री.–खान में काम करना, खान में खुदाई का काम, खनि-कर्म।

क़ानित (قانت) अ. वि.–आज्ञाकारी, फ़र्माबरदार; नमाज़ में दुआ माँगनेवाला।

क़ानितीन (قانتين) अ. पुं.–'क़ानित' का बहु., आज्ञाकारी लोग; नमाज़ में दुआ माँगनेवाले।

क़ानिस (قانص) अ. वि.–शिकार करनेवाला, आखेटक।

कानी (کانی) फा. वि.–खान से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु; खान से निकला हुआ पदार्थ।

क़ानी (قانی) तु. वि.–बहुत अधिक लाल।

क़ानून (قانون) अ. पुं.–विधान, आईन; नियम, उसूल; रीति, विधि, तरीका, परम्परा, रिवाज।

कानून (کانون) फा. स्त्री.–भट्ठी, भ्राष्ट्र; चूल्हा, अँगीठी।

क़ानूनगो (قانون گو) अ. फा. पुं.–माल विभाग का एक पदाधिकारी जो पटवारियों के काम की देख-रेख करता है।

क़ानूनदाँ (قانون داں) अ. फा. वि.–क़ानून जाननेवाला, विधानज्ञ; वकील, अभिभाषक, अभिवक्ता।

क़ानूनदानी (قانون دانی) अ. फा. स्त्री.–क़ानून जानना, क़ानून की जानकारी।

क़ानूनन (قانوناً) अ. वि.–विधान के अनुसार, क़ानून के मुताबिक़।

क़ानूनशिकनी (قانون شکنی) अ. फा. स्त्री.–क़ानून को न मानना, नियम-भंग; सिविल नाफ़र्मानी; सविनय अवज्ञा।

क़ानूनसाज़ (قانون ساز) अ. फा. वि.–क़ानून बनानेवाला, विधायक; क़ानून बनानेवाली एसेम्बली, विधायिका।

कानूने अव्वल (کانون اول) फा. अ. पुं.–एक तुर्की महीना जो 'पूस' के लगभग पड़ता है।

कानूने आख़िर (کانون آخر) अ. पुं.–एक तुर्की महीना जो 'माघ' के लगभग पड़ता है।

क़ानूने जंग (قانون جنگ) अ. फा. पुं.–लड़ाई का क़ानून, युद्धविधान।

क़ानूने ता'ज़ीरात (قانون تعزيرات) अ. पुं.–सज़ा का क़ानून, दंड-विधान।

क़ानूने फ़ित्रत (قانون فطرت) अ. पुं.–प्राकृतिक नियम, नेचर का क़ानून।

क़ानूने विरासत (قانون وراثت) अ. पुं.–किसके बाद कौन उत्तराधिकारी होता है इसका क़ानून।

क़ानूने शहादत (قانون شہادت) अ. पुं.–गवाही लिये जाने का क़ानून, साक्षी-विधान, 'एविडेन्स ऐक्ट'।

क़ानूने हिसस (قانون حصص) अ. पुं.–दाय और रिक्थ में किसको कितना भाग मिलना चाहिए, इसका क़ानून।

क़ाने' (قانع) अ. वि.–जो कुछ मिल जाय उसी पर संतुष्ट रहनेवाला, आत्मसंतोषी, स्थितप्रज्ञ, निस्पृह, कालतुष्ट।

काने ज़र (کان زر) फा. स्त्री.–सोने की खान, स्वर्णाकर।

काने नमक (کان نمک) फा. स्त्री.–नमक की खान, लवणाकर; बहुत ही सलोना और सुन्दर व्यक्ति।

काने मलाहत (کان ملاحت) फा. अ. स्त्री.–अति लावण्यमयी सुन्दरी, बहुत ही मलीह हसीना।

क़ापी (قاپی) तु. पुं.–दरवाज़ा, द्वार।

क़ापू (قاپو) तु. पुं.–दरवाज़ा, द्वार।

क़ापूची (قاپوچی) तु. वि.–द्वारपाल, दरवान, ड्योढ़ीदार।

क़ाफ़ (قاف) फा. पुं.–एक उर्दू अक्षर; कोहे क़ाफ़, काकेशिया, जहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध है।

काफ़ (کاف) फा. पुं.–एक उर्दू अक्षर; 'शिगाफ़' का लघु., दे. 'शिगाफ़'।

क़ाफ़ ता क़ाफ़ (قاف تا قاف) फा. वि.–सारा संसार, संपूर्ण जगत्, सारी दुनिया।

काफ़र (کافر) अ. पुं.–दे. 'काफ़िर', शुद्ध उच्चारण वही है परन्तु फ़ार्सीवाले काफ़र भी लिखते हैं।

क़ाफ़ियः (قافیہ) अ. पुं.–अन्त्यानुप्रास, अनुप्रास, तुक।

क़ाफ़ियःबंद (قافیہ بند) अ. फा. वि.–वह शेर जिनमें क़ाफ़िए की पाबंदी की गयी हो।

क़ाफ़ियःबंदी (قافیہ بندی) अ. फा. स्त्री.–कविता, शाइरी; फुसफुसी शाइरी जिसमें केवल क़ाफ़िए हों, मज़मून न हो।

काफ़िर (کافر) अ. पुं.–सत्य को छिपानेवाला; ईश्वर की दी हुई ने'मतों पर कृतज्ञता प्रकट न करनेवाला, नदी; दर्या; कृषक, किसान; 'काफ़िरिस्तान' देश का निवासी; प्रेमपात्र, मा'शूक़।

काफ़िर माजरा (کافر ماجرا) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी दशा काफ़िरों जैसी हो।

काफ़िरी (کافری) अ. वि.–क़ाफ़िरपन, नास्तिकता, मा'शूक़ीयत।

काफ़िरे ने'मत (کافر نعمت) अ. पुं.–अकृतज्ञ, कृतघ्न, नाशुक्रा।

क़ाफ़िलः (قافلہ) अ. पुं.–यात्रियों का समूह, मुसाफ़िरों की जमाअत, यात्रीदल।

क़ाफ़िलः सालार (قافلہ سالار) अ. फा. पुं.–यात्रियों के समूह का अध्यक्ष, सार्थपति।

काफ़िल (کافل) अ. वि.–प्रतिभू, ज़ामिन।

काफ़ी (کافی) अ. वि.–पर्याप्त, आवश्यकता के अनुसार; अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

क़ाफ़ूर (کافور) फा. पुं.–कपूर, कर्पूर; स्वर्ग का एक चश्मा।

काफ़ूरख़्वार (کافورخوار) फा. वि.–नपुंसक, क्लीब, नामर्द; कपूर खानेवाला।

काफ़ूरी (کافوری) फा. वि.–काफ़ूर के रंग का, बहुत सफ़ेद; काफ़ूर की बनी हुई वस्तु; काफ़ूर पड़ी हुई वस्तु; काफ़ूर क़ा।

काफ़ेराँ (کافراں) फा. स्त्री.–भग, योनि, फ़ुर्ज।

काफ़्तः (کافتہ) फा. वि.–फटा हुआ, विदीर्ण, शिगाफ़्तः।

काफ़्फ़ः (کافہ) अ. वि.–सर्व, समस्त, कुल, तमाम।

काफ़्फ़त्तुन्नास (کافتہالناس) अ. पुं.–जनसाधारण, सर्वसाधारण, जनता, अवाम।

काफ़्फ़तुल अनाम (کافتہالانام) अ. पुं.–दे. 'काफ़्फ़तुन्नास'।

का'बः (کعبہ) अ. पुं.–मक्के की एक इमारत जिसे मुसलमान ईश्वर का घर समझते हैं; चौकोर चीज़; पाँसा।

क़ाब (قاب) फा. पुं.–चश्मा रखने का घर; आईना रखने का केस; पाँसा।

क़ाब (قاب) तु. पुं.–बड़ी रिकाबी, थाल; खाने का ख्वान (पात्र)।

क़ाब (قاب) अ. पुं.–थोड़ी वस्तु; धनुष की मूठ और बाण रखने के स्थान का अन्तर।

क़ा'ब (قعب) अ. पुं.–लकड़ी का बड़ा पियाला; इतना बड़ा पियाला जो एक आदमी के लिए हो।

का'ब (کعب) अ. पुं.–टख़ना, पिंडली और पाँव के पंज़े के बीच की हड्डी।

क़ाब ख़ानः (قاب خانہ) फा. पुं.–जुआघर, द्यूतागार, क़िमारख़ाना।

का'बतैन (کعبتین) अ. पुं.–पाँसों की जोड़ी, जिससे चौसर खेलते हैं।

क़ाबिज़ (قابض) अ. वि.–जिसका अधिकार हो, जिसका क़ब्ज़ा हो; कोष्ठ-ग्राहक, क़ब्ज़ करनेवाला पदार्थ।

क़ाबिज़े अर्वाह (قابض ارواح) अ. पुं.–प्राण निकालनेवाला, यमराज, धर्मराज, मलकुल मौत।

काबिर (کابر) अ. वि.–प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य, बुज़ुर्ग।

क़ाबिलः (قابلہ) अ. स्त्री.–विद्यावती स्त्री, क़ाबिल औरत; बच्चे जनानेवाली स्त्री, धाय, धात्री।

क़ाबिल (قابل) अ. वि.–विद्वान्, इल्मदाँ; योग्य, अह्लिय रखनेवाला; पात्र, मुस्तहक़; उचित, मुनासिब; कुशल, माहिर; दक्ष, निपुण, होशियार।

क़ाबिलानः (قابلانہ) अ. फा. वि.–विद्वत्तापूर्ण, आलिमाना; दक्षतापूर्ण, होशयाराना।

काबिलीयत (قابلیت) अ. स्त्री.–विद्वत्ता, कौविद्य, इल्मीयत; योग्यता, क्षमता, अह्लीयत; पात्रता, इस्तेहक़ाक़; कुशलता; महारत; दक्षता, निपुणता, होशियारी।

क़ाबिले अदब (قابل ادب) अ.वि.–मान्य, पूज्य, प्रतिष्ठित, जिसका आदर आवश्यक हो।

क़ाबिले अदा (قابل ادا) अ. वि.–जिसका दिया जाना आवश्यक हो, देय।

क़ाबिले आज़्माइश (قابل آزمائش) अ. फा. वि.–जिसकी परीक्षा ज़रूरी हो, परीक्ष्य।

क़ाबिले इंतिक़ाल (قابل انتقال) अ. वि.–वह सम्पत्ति और जाइदाद जो हस्तान्तरित हो सके, जो बेची या दी जा सके।

क़ाबिले इंतिख़ाब (قابل انتخاب) अ. वि.–वे मज़मून आदि जो किसी पुस्तक में सम्मिलित करने के लिए चुने जा सकें, उद्धरणीय; वह व्यक्ति जो किसी निर्वाचन-क्षेत्र से चुना जा सके।

क़ाबिले इख़्राज (قابل اخراج) अ. वि.–निकाल देने योग्य, निष्कासनीय; नाम ख़ारिज कर देने योग्य; बरख़ास्त कर देने योग्य।

क़ाबिले इन्आम (قابل انعام) अ. वि.–पुरस्कार दिये जाने योग्य व्यक्ति; पुरस्कार के योग्य काम।

क़ाबिले इन्क़िसाम (قابل انقسام) अ. वि.–बँटवारे के योग्य, विभाज्य; तक़सीम के लायक़, वितरणीय।

क़ाबिले इन्फ़िकाक (قابل انفکاک) अ. वि.–जो वस्तु बंधकमुक्त हो सकती हो, जो चीज़ रेहन से छूट सकती हो।

क़ाबिले इन्फ़िसाख़ (قابل انفساخ) अ. वि.–जो प्रतिज्ञा या वचन भंग किया जा सके; जो निर्णय रद्द किया जा सके, मंसूख़ हो सके।

क़ाबिले इम्तिहान (قابل امتحان) अ.वि.–जिसकी परीक्षा की जा सके, परीक्ष्य; जिसकी परीक्षा आवश्यक हो।

क़ाबिले इम्दाद (قابل امداد) अ. वि.–सहायता देने के योग्य, दुःखी, लाचार, असहाय।

क़ाबिले इल्तिफ़ात (قابل التفات) अ. वि.–जिसकी ओर ध्यान देना आवश्यक हो।

क़ाबिले इल्तिवा (قابل التوا) अ. वि.–जिस समस्या का स्थगित या मुल्तवी हो जाना आवश्यक हो; जो स्थगित किया जा सके।

क़ाबिले इश्तिबाह (قابل اشتباہ) अ. वि.–जिस पर संदेह किया जा सके; शंकनीय।

क़ाबिले इस्ते'माल (قابل استعمال) अ. वि.–जो प्रयोग किया जा सके, जिसका प्रयोग ज़रूरी हो, प्रयोज्य।

क़ाबिले उबूर (قابل عبور) अ. वि.–जो पार किया जा सके, जिसके आर-पार जाया जा सके।

क़ाबिले ए'तिबार (قابل اعتبار) अ. वि.–जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वसनीय; मोतबर, विश्वस्त।

क़ाबिले ए'तिमाद (قابل اعتماد) अ.वि.–जिस पर भरोसा किया जा सके, विश्वासपात्र; मोतबर, विश्वस्त।

क़ाबिले ए'तिराज़ (قابل اعتراض) अ. वि.–जो बात एतराज़ के लायक़ हो, ग़लत बात, आपत्तिजनक।

क़ाबिले एह्तिराम (قابل احترام) अ. वि.–जिसकी प्रतिष्ठा आवश्यक हो, पूज्य, मान्य।

क़ाबिले एह्सास (قابل احساس) अ. वि.–जो बात हृदय में कोई खटक पैदा करे, दिल को जँचने योग्य, जिसका अनुभव हो सके।

क़ाबिले क़बूल (قابل قبول) अ. वि.–जो बात मानी जा सके, स्वीकरणीय; जो बात मन को लग सके, जिस बात को चित्त क़बूल करें, ग्रहणीय, ग्राह्य; जिस वस्तु के लेने में कोई आपत्ति न हो।

क़ाबिले गुज़ारिश (قابل گزارش) अ.फा.वि.–जो बात कहने योग्य हो, आवेदनीय; जिसका कहा जाना आवश्यक हो, प्रार्थना के योग्य।

क़ाबिले ग़ौर (قابل غور) अ.वि.–जिस बात पर विचार करना आवश्यक हो, चिंत्य, विचार्य; जो बात अथवा समस्या, साधारण तौर पर तै कर देना उचित न हो, ध्यान देने योग्य।

क़ाबिले ज़िक्र (قابل ذکر) अ. वि.–जिसकी चर्चा या उल्लेख आवश्यक हो, उल्लेखनीय, वर्णनीय, कथनीय।

क़ाबिले ज़िराअ़त (قابل زراعت) अ. वि.–ऐसी भूमि जिसे जोता-बोया जा सके, कृष्य, खेती योग्य।

क़ाबिले तंबीह (قابل تنبیہ) अ. वि.–ऐसा व्यक्ति जिसे किसी भूल पर डाँटना और चेतावनी देना आवश्यक हो।

क़ाबिले तक़्सीम (قابل تقسیم) अ. वि.–जो बाँटा जा सके, विभाज्य; जिसका बँटवारा आवश्यक हो।

क़ाबिले तज्वीज़ (قابل تجویز) अ. वि.–जिसका निर्णय किया जा सके, निर्णेय; जो सोचा जा सके; जिसका निर्णय आवश्यक हो।

क़ाबिले तज़्हीक (قابل تضحیک) अ.वि.–ऐसा विषय जो उपहास के योग्य हो, जिस पर लोग हँसें, हास्य।

क़ाबिले तब्दील (قابل تبدیل) अ. वि.–जो बदला जा सके; जिसमें परिवर्तन आवश्यक हो, परिवर्तनीय।

क़ाबिले तरद्दुद (قابل تردد) अ. वि.–जो चिन्ता के योग्य हो, चिंतनीय; जो भूमि जोतने-बोने के योग्य हो; कृष्य।

क़ाबिले तर्क (قابل ترک) अ. वि.–छोड़ देने के योग्य, त्याज्य; जिसका त्याग आवश्यक हो।

क़ाबिले तर्जीह (قابل ترجیح) अ. वि.–ऐसा व्यक्ति या विषय जिसे दूसरे व्यक्ति या विषय पर प्रधानता दी जा सके।

क़ाबिले तर्दीद (قابل تردید) अ.वि.–जिसका रद्द या खंडन आवश्यक हो, खंडनीय, क़ाबिले-मंसूख़, रद्द करने योग्य।

क़ाबिले तवज्जुह (قابل توجہ) अ. वि.–जिस पर ध्यान देना आवश्यक हो, ध्यान देने योग्य।

क़ाबिले तस्लीम (قابل تسلیم) अ. वि.–जिसका मानना ज़रूरी हो, मान्य, ग्राह्य, स्वीकार्य।

क़ाबिले तह्रीर (قابل تحریر) अ. वि.–जिसका लिखा जाना आवश्यक हो, उल्लेखनीय; जो लिखा जा सके।

क़ाबिले तह्सीन (قابل تحسین) अ. वि.–जो प्रशंसा के योग्य हो, श्लाघ्य, प्रशंसनीय; जिसे शाबाशी दी जाय, सराहनीय।

क़ाबिले ताईद (قابل تائید) अ. वि.–जिसका समर्थन किया जाना आवश्यक हो, समर्थनीय, अनुमोदनीय।

क़ाबिले ता'रीफ़ (قابل تعریف) अ. वि.–दे. 'क़ाविले तह्सीन'।

क़ाबिले दस्तअंदाज़ी (قابل دست اندازی) अ. फा. वि.–जिसमें हस्तक्षेप आवश्यक हो; जिसमें हस्तक्षेप किया जा सके, 'काग्ज़िनेबुल'।

क़ाबिले दस्तमाल (قابل دست مال) अ. फा. वि.–हाथों से मले जाने के लायक़।

क़ाबिले दस्तरस (قابل دسترس) अ. फा. वि.–जहाँ पहुँच हो सके, जो प्राप्त हो सके, हस्तप्राप्य, हस्तलभ्य।

क़ाबिले दार (قابل دار) अ. फा. वि.–जो फाँसी की सज़ा के योग्य हो, प्राणदंड के योग्य।

क़ाबिले नफ़्रत (قابل نفرت) अ. वि.–जो घृणा के योग्य हो, वीभत्स, उपेक्ष्य, गर्हित, घृण्य।

क़ाबिले निकाह (قابل نکاح) अ. वि.–वह मनुष्य या स्त्री जो ब्याह के योग्य हो, जिसका विवाह कर दिया जाना उचित हो।

क़ाबिले पर्वरिश (قابل پرورش) अ. फा. वि.–जिसका पालन-पोषण आवश्यक हो; जिस पर दया आवश्यक हो।

क़ाबिले फ़त्ह (قابل فتح) अ. वि.–जो जीता जा सके, जेय, जेतव्य।

क़ाबिले फ़ना (قابل فنا) अ. वि.–जो भंगुर हो, जो मिट जाय, नाशवान्, नश्वर।

क़ाबिले फ़ह्म (قابل فہم) अ. वि.–जो समझा जा सके, सुबोध, बोधगम्य।

क़ाबिले बरदाश्त (قابل برداشت) अ. फा. वि.–जो सहा जा सके, सहनीय; जो उठाया जा सके, सहनशील, सह्य।

क़ाबिले बाज़पुर्स (قابل بازپرس) अ. फा. वि.–जिससे

जवाब तलब किया जा सके; जिसे उसकी त्रुटि पर दंड दिया जा सके।

क़ाबिले मंज़ूरी (قابل منظوری) अ. वि.–ऐसी बात जिसके लिए स्वीकृति लेना आवश्यक हो; ऐसा विषय जिसकी स्वीकृति दी जा सके।

क़ाबिले मंसूख़ी (قابل منسوخی) अ. वि.–ऐसी बात जो रद की जा सके; ऐसा निर्णय जो रद हो सके।

क़ाबिले मुआख़ज़ः (قابل مواخذہ) अ. वि.–दे. 'क़ाबिले-बाज़पुर्स'।

क़ाबिले मुआवज़ः (قابل معاوضہ) अ. वि.–जिस वस्तु के ले लेने पर उसका मूल्य दिया जाना आवश्यक हो; जिस काम का मेहनताना दिया जाना ज़रूरी हो।

क़ाबिले रह्म (قابل رحم) अ. वि.–जिस पर दया की जा सके, दयनीय; दुःखित, क्लेशित, बेबस, लाचार।

क़ाबिले राज़ (قابل راز) अ. फा. वि.–राज़ में रखने के क़ाबिल, प्रकट न करने के योग्य, गोपनीय।

क़ाबिले वुसूल (قابل وصول) अ. वि.–जो प्राप्त हो सके, जो वुसूल किया जा सके, प्राप्य।

क़ाबिले सज़ा (قابل سزا) अ.वि.–जिसे दंड दिया जा सके, जो सज़ा का पात्र हो, दंडनीय।

क़ाबिले समाअत (قابل سماعت) अ. वि.–जो सुना जा सके, जिसकी सुनवाई हो सके।

क़ाबिले सरज़निश (قابل سرزنش) अ. फा. वि.–दे. 'क़ाबिले तंबीह'।

क़ाबिले सिताइश (قابل ستائش) अ.फा. वि.–दे. 'क़ाबिले तह्सीन'।

क़ाबिले सुफ़ारिश (قابل سفارش) अ. फा. वि.–जिसकी सुफ़ारिश की जा सके, अनुशंस्य, अभिस्ताव्य, सिफ़ारिश भी प्रचलित।

क़ाबिले हज्व (قابل ہجو) अ. वि.–जिसकी निन्दा की जा सके, निन्दनीय, गर्ह्य।

काबीनः (کابینہ) अ. पुं.–वज़ीरों की मजलिस, मंत्रिमंडल, कैबिनेट।

काबीन (کابین) फा. पुं.–निकाह में बँधनेवाला मेह्र।

काबीननामः (کابین نامہ) फा. पुं.–निकाह में मेह्र का काग़ज़, मेह्रनामा।

काबीशः (کابیشہ) फा. पुं.–कुसुम का फूल।

काबुक (کابک) फा. पुं.–कबूतरों का दरबा, कपोत-पालिका।

काबुल (کابل) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी।

काबुली (کابلی) फा. वि.–काबुल का निवासी, अफ़ग़ान, ख़ान; काबुल से सम्बन्धित।

क़ाबू (قابو) तु. पुं.–अवसर, फ़ुर्सत; बश, ज़ोर; अधिकार, क़ब्ज़ा।

क़ाबूची (قابوچی) तु. वि.–स्वार्थ-साधक, ख़ुदग़रज़; द्वारपाल, क़ापूची।

काबूस (کابوس) अ. पुं.–एक भयानक रोग जिसमें सोते हुए ऐसा जान पड़ता है कि किसी भूत ने उसका गला दबा दिया है।

क़ाबूस (قابوس) अ. पुं.–दे. 'काऊस'।

कामः (کامہ) फा. पुं.–कामना, इच्छा, उद्देश्य, मक़्सद; खट्टा सालन, संस्कृत रूप फ़ारसी में प्रचलित।

काम (کام) फा. पुं.–इच्छा, मनोरथ, ख़्वाहिश; तालू, मूर्द्धा, संस्कृत रूप फ़ारसी में प्रचलित।

कामगर (کامگر) फा. वि.–दे. 'कामगार'।

कामगार (کامگار) फा. वि.–सफलमनोरथ, प्राप्तकाम, कामयाब।

क़ामत (قامت) अ. पुं.–शरीर, देह, जिस्म; डील, लम्बा शरीर।

क़ामते ज़ेबा (قامت زیبا) अ. फा. पुं.–सुन्दर और सुडौल शरीर।

कामदार (کامدار) फा. वि.–कारकुन।

काम ना काम (کام نا کام) फा. वि.–चार नाचार, विवशतापूर्वक, लाचार होकर, विवश होकर।

कामयाब (کامیاب) फा. वि.–सफल, सफलकाम, प्राप्तमनोरथ, बामुराद; परीक्षा में उत्तीर्ण, पास, कृतार्थ, कृतकार्य।

कामयाबी (کامیابی) फा. स्त्रीः–सफलता, कामरानी; परीक्षा में सफलता।

कामरवा (کامروا) फा. वि.–अटके में काम निकालनेवाला, हाजतरवाई करनेवाला।

कामरवाई (کامروائی) फा. स्त्री.–अटके पर काम निकालना, हाजतरवाई करना।

कामराँ (کامراں) फा. वि.–दे. 'कामयाब'।

कामरानी (کامرانی) फा. स्त्री.–दे. 'कामयाबी'।

कामिन (کامن) अ. वि.–छिपनेवाला, लुप्त होनेवाला।

कामिल (کامل) अ. वि.–पूरा, समूचा, संपूर्ण; बिलकुल, मुकम्मल, सर्वांगपूर्ण; निपुण, दक्ष, होशियार; चमत्कारी साधु या फ़क़ीर; एक बह्र, एक उर्दू छन्द।

कामिलन (کاملاً) अ. वि.–पूरे तौर पर, अच्छी तरह, पूर्णतया; पूरा-पूरा।

कामिलुल इयार (کامل العیار) अ. वि.–वह सोना और चाँदी जो कसौटी पर पूरा कस दे, खरा सोना या चाँदी।

कामिले फ़न (کامل فن) अ. वि.–किसी फ़न में या कला में निपुण।

क़ामूस (قاموس) अ. पुं.–गहरी नदी; शब्दकोष, लुग़त।

क़ामे’ (قامع) अ. वि.–तोड़-फोड़ देनेवाला, विध्वंसक; निरादृत करनेवाला, ख़्वार करनेवाला।

क़ा’र (قعر) अ. पुं.–गहराई, गंभीरता।

क़ार (قار) तु. पुं.–बर्फ़, तुहिन।

कार (کار) फा. पुं.–कार्य, काम; उद्यम, पेशा; कला, फ़न; विषय, मुआमला।

क़ार [रं] (قار) अ. वि.–स्थिर रहनेवाला, ठहरनेवाला, एक स्थान पर क़रार पकड़नेवाला।

क़ार (قار) अ. स्त्री.–क़ीर, राल, तारकोल।

कारआगाह (کارآگاه) फा. वि.–दे. ‘कार आज़्मूदः’।

कारआज्मूदः (کارآزموده) फा. वि.–कार्यक्षम, कार्य-कुशल, काम में माहिर; अभनुवी, तज्रिबःकार, (तजुरबाकार)।

कारआज्मूदगी (کارآزمودگی) फा. स्त्री.–काम में महारत, कार्य-क्षमता; तज्रिबःकारी (तजुरबाकारी), अनुभव।

कारआमद (کار آمد) फा. वि.–उपयोगी, उपयुक्त, वामसरफ़।

कारकर्दः (کارکرده) फा. वि.–दे. ‘कारआज़्मूदः’।

कारकर्दगी (کارکردگی) फा. स्त्री.–कार्यक्षमता, काम में महारत; अनुभव, तज्रिबःकारी।

कारकुन (کارکن) फा. वि.–कार्यकर्ता, काम करनेवाला; उहदेदार, कर्मचारी; गुमाश्ता, एजेंट, अभिकर्ता।

कारख़ानः (کارخانه) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ चीज़ें बनती हैं, शिल्पशाला, उद्योगशाला, कार्यालय।

कारख़ानःदार (کارخانه‌دار) फा. पुं.–कारख़ाने का मालिक।

कारगर (کارگر) फा. वि.–गुणकारी, फ़ाइदामंद; प्रभावकर, असरअंदाज़।

कारगाह (کارگاه) फा. स्त्री.–कार्यालय, काम करने का स्थान; कपड़े बुनने का स्थान।

कारगुज़ार (کارگزار) फा. वि.–सुन्दरता से काम करनेवाला, कार्यपटु; जिसने बड़े-बड़े और पेचीदा काम किये हों, कार्यक्षम।

कारगुज़ारी (کارگزاری) फा. स्त्री.–बड़े-बड़े काम सरलता और सुगमता से करना, कार्य-कौशल; कारनामा; किसी महत्वपूर्ण कार्य का सरअंजाम।

कारचोब (کارچوب) फा. पुं.–लकड़ी का चौखटा जिसमें कपड़ा कसकर क़सीदे का काम हो, ज़रदोज़ी।

कारचोबी (کارچوبی) फा. पुं.–ज़रदोज़ी, क़सीदाकारी।

कारज़ार (کارزار) फा. पुं.–युद्ध, संग्राम, लड़ाई, जंग।

कारतलब (کارطلب) फा. अ. वि.–शूरवीर, बहादुर, शुजाअ।

कारदाँ (کاردان) फा. वि.–किसी काम को अच्छे प्रकार से जाननेवाला; अनुभवी, तजुरबाकार।

कारदानी (کاردانی) फा. स्त्री.–कार्य-कौशल, काम की अच्छी जानकारी, अनुभव, तज्रिबाकारी।

कारदार (کاردار) फा. वि.–दे. ‘कारदाँ’।

कारदीदः (کاردیده) फा. वि.–अनुभवी, जिसके हाथ से बहुत से काम निकले हों, परिपक्व, पुख़्ताकार।

कारदीदगी (کاردیدگی) फा. स्त्री.–अनुभव, परिपक्वता, पुख़्ताकारी।

क़ारन (قارن) फा. पुं.–रुस्तम के समय का एक पहलवान।

कारनामः (کارنامه) फा. पुं.–ऐसा काम जो यादगार रहे, बहुत बड़ा काम; चित्रकारों के चित्रों का अल्बम जिसमें वह अपने कला-प्रदर्शन के लिए बढ़िया-बढ़िया चित्र रखते हैं।

कारपर्दाज़ (کارپرداز) फा. वि.–व्यवस्थापक, मुंतज़िम; अभिकर्ता, कारकुन।

कारफ़र्मा (کارفرما) फा. वि.–काम करनेवाला; असर डालनेवाला, प्रभावकारी।

कारफ़र्माई (کارفرمائی) फा. स्त्री.–काम करना; असर डालना।

कारबंद (کاربند) फा. वि.–पाबंद, बाध्य; विवश, मजबूर।

कारबरारी (کاربراری) फा. स्त्री.–कामनापूर्ति, मंशा पूरी होना; स्वार्थसिद्धि, ग़रज़ निकलना।

कारमंद (کارمند) फा. वि.–दास, नौकर, ख़िदमतगार।

काररवाई (کارروائی) फा. स्त्री.–रूदाद, कार्यवाही; कार्य, काम।

कारशनास (کارشناس) फा. वि.–दे. ‘कारआज़्मूदः’।

कारशनासी (کارشناسی) फा. स्त्री.–दे. ‘कारआज़्मूदगी।

कारसाज़ (کارساز) फा. वि.–बिगड़े हुए कामों को बनानेवाला, अर्थात् ईश्वर।

कारसाज़ी (کارسازی) फा. स्त्री.–बिगड़े हुए कामों को बनाना, ईश्वर की माया।

कारिंदः (کارنده) फा. वि.–ज़मींदार का एजेंट; कर्मचारी, कारकुन।

क़ारिअः (قارعه) अ. पुं.–दुर्घटना, हादिसा।

क़ारिज़ (قارض) अ. वि.–उधार देनेवाला, उत्तमर्ण, क़र्ज़ देनेवाला, ऋणदाता।

क़ारिब (قارب) अ. स्त्री.–छोटी नाव जो बड़ी नाव के साथ चलती है।

क़ारी (قاری) अ. वि.–पढ़नेवाला, पाठक; क़ुरान को शुद्ध उच्चारण से पढ़नेवाला।

कारी (کاری) फा. वि.–भरपूर, पूरा-पूरा।

कारीगर (کاریگر) फा. वि.–शिल्पकार, शिल्पी, दस्तकार; गुणवान्, हुनरमंद; दक्ष, कुशल, होशयार; छली, धूर्त।

कारीगरी (کاریگری) फा. स्त्री.–शिल्पकर्म, दस्तकारी; गुणज्ञान, हुनरमंदी, दक्षता, होशयारी; छल, कपट, धूर्तता।

क़ारून (قارون) अ. पुं.–एक बहुत बड़ा धनवान् जो अत्यन्त कृपण था, और अन्त में अपने धन सहित पृथ्वी में समा गया; वह व्यक्ति जो मालदार होने के साथ बहुत ही कंजूस हो।

क़ारूनी (قارونی) अ. वि.–क़ारून का काम; क़ारून से सम्बन्धित; कृपणता, कंजूसी।

क़ारूरः (قارورہ) अ. पुं.–शीशी, बोतल; बीमार का पेशाब; पेशाब की शीशी; बारूद की कुप्पी।

क़ारे' (قارع) अ. वि.–शकुन विचारनेवाला, शकुन-विचारक।

कारे आब (کارِ آب) फा. पुं.–मद्यपान, शराबनोशी।

कारे ख़ैर (کارِ خیر) फा. अ. पुं.–पुण्य का काम, दूसरों की भलाई का काम।

कारेज़ (کاریز) फा. पुं.–पटी हुई नाली, जो खेतों में पानी देने के लिए बनायी जाती है।

कारे दस्त बस्तः (کارِ دست بستہ) फा. पुं.–ऐसा कठिन काम जो हरेक के बस का न हो, केवल कोई एक ही व्यक्ति कर सके, जो उसे करता रहा हो।

कारे नुमायाँ (کارِ نمایاں) फा. पुं.–ऐसा काम जो सारे कामों से ऊपर हो, बहुत बड़ा काम, कारनामा।

कारे सवाब (کارِ ثواب) फा. अ. पुं.–पुण्य का काम, दूसरों की भलाई का काम; ऐसा काम जिससे परलोक में पुण्य प्राप्त हो।

कारेह (کارہ) अ. वि.–घृणा करनेवाला, घिन करनेवाला।

कारोबार (کاروبار) फा. पुं.–व्यवसाय, व्यापार, तिजारत; कामकाज, कामधंधा।

कार्द (کارد) फा. पुं.–चाक़ू।

कार्वां (کارواں) फा. पुं.–क़ाफ़िला, यात्रीदल, सार्थ।

कार्वांसरा (کارواں سرا) फा. स्त्री.–मुसाफिरों के ठहरने की सराय, पथिकाश्रय।

कार्वांसालार (کارواں سالار) फा. पुं.–क़ाफ़िले का सरदार, सार्थपति, सार्थवाह।

कालः (کالہ) फा. पुं.–दे. 'काला'; दोनों शुद्ध हैं; कच्चा ख़रबूज़ा; मदिरा पीने का पात्र; खेती के लिए कमायी हुई भूमि।

क़ाल (قال) अ. पुं.–वचन, कथन, क़ौल, बात।

क़ालब (قالب) फा. पुं.–दे. 'कालब', दोनों शुद्ध हैं।

क़ालमक़ाल (قال مقال) अ. स्त्री.–लम्बी चौड़ी बातचीत, वाद-विवाद, हुज्जत।

काला (کالا) फा. पुं.–गृहस्थी का सामान, घर का अस्बाब।

क़ालिब (قالب) अ. पुं.–शरीर, देह; ढाँचा; साँचा।

क़ाली (قالی) तु पुं.–क़ालीन का सामान।

क़ालीचः (قالیچہ) तु. पुं.–छोटा कालीन।

क़ालीदः (قالیدہ) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर।

कालीन (قالین) तु. पुं.–बिछाने का एक ऊनी और रोयेंदार बहुमूल्य वस्त्र, गलीचा।

कालुम (کالم) फा. स्त्री.–वह स्त्री जो कुमारी न हो, परन्तु जिसका पति या तो मर गया हो या दुःखी हो, दिल से परित्यक्ता।

कालेव (کالیو) फा. वि.–निस्तब्ध, साबूत, शशदर, उद्विग्न, परेशान, पागल, विक्षिप्त रति।

कालेवगी (کالیوگی) फा. स्त्री.–निस्तब्धता, हैरानी, उद्विग्नता, परेशानी, पागलपन, विक्षेप, दीवानगी।

कालेह (کالح) अ. वि.–कटु स्वभाव का, तुरुशरू।

क़ालोक़ील (قال و قیل) अ. स्त्री.–वाद-विवाद, तर्क-वितर्क, कहा-सुनी, हुज्जत।

क़ालोमक़ाल (قال و مقال) अ. स्त्री.–दे. 'क़ाल मक़ाल'।

काल्बुद (کالبد) फा. पुं.–शरीर, देह, जिस्म; अस्थि-पंजर, ढाँचा।

कावः (کاوہ) फा. पुं.–ईरान के एक लोहार का नाम, जिसने 'ज़ह्हाक' के अत्याचारों से तंग आकर उसके विरुद्ध लड़ाई लड़ी और उसको हराकर 'फ़िरीदूँ' को उसके स्थान पर उपस्थित किया।

कावकाव (کاو کاو) फा. स्त्री.–परिश्रम, प्रयास, कोशिश, मेहनत।

कावर्सः (کاورسہ) फा. पुं.–हर वह वस्तु जो छुटाई में बाजरे जैसी हो।

कावर्स (کاورس) फा. पुं.–बाजरा, एक प्रसिद्ध अन्न।

कावली (کاولی) फा. स्त्री.–वेश्या, गणिका, रंडी।

कावाक (کاواک) फा. वि.–खोखला, सुषिर; निस्सार, बेमग्ज़।

काविंदः (کاوندہ) फा. वि.–खोदनेवाला।

काविश (کاوش) फा. स्त्री.–खोद, कुरेद; टोह, खोज, तलाश, जिज्ञासा; चिन्ता, फ़िक्र।

कावी (کاوی) अ. वि.–लोहा आदि गरम करके अंग पर दाग़ देनेवाला, दाग़नेवाला।

कावीदः (کاویدہ) फा. वि.–खोदा हुआ।

कावीदनी (کاویدنی) फा. वि.–खोदने योग्य।

क़ाश (قاش) तु. स्त्री.–लम्बी फाँक, फाँक, खण्ड, टुकड़ा।

काश (کاش) फा. अव्य.–ईश्वर करे, ख़ुदा करे, (पुं.) काँच, काच, शीशा।

काशके (کاشکے) फा. अव्य.–दे. 'काश'।

काशानः (کاشانہ) फा. पुं.–छोटा-सा घर जिसे शीशा आलात से सजाया जाय।

काशान (کاشان) फा. पुं.–ईरान का एक नगर।

काशिफ़ (کاشف) अ. वि.–प्रकट करनेवाला, खोलनेवाला; नंगा करनेवाला; पर्दा उठानेवाला, उद्घाटक।

काशिफ़े अस्रार (کاشف اسرار) अ. पुं.–भेदों को प्रकट करनेवाला, रहस्योद्घाटक।

क़ाशिर (قاشر) अ. वि.–छिलका उतारनेवाला।

काशी (کاشی) फा. वि.–'काशान' का निवासी।

क़ाशुक़ (قاشک) तु. पुं.–छोटा चमचा, चमसः।

क़ाशूर (قاشور) अ. वि.–अशुभ, मनहूस; जिसका देखना अशकुन करे; बड़ा दुर्भिक्ष, सख़्त क़हत।

क़ाशेज़ीं (قاش زیں) तु. फा. स्त्री.–ज़ीन के सामने का उठा हुआ भाग।

काशेह (کاشح) अ. पुं.–वह शत्रु जो शत्रुता प्रकट न करे, मन में ही रखे।

काश्तः (کاشتہ) फा. वि.–जोता-बोया हुआ, कृषित।

काश्त (کاشت) फा. स्त्री.–कृषि, काश्तकारी; खेत की भूमि, खेती।

काश्तकार (کاشتکار) फा. वि.–कृषक, कृषीबल, किसान।

काश्तकारी (کاشتکاری) फा.–कृषिकर्म, किसानी।

काश्तनी (کاشتنی) फा. वि.–जोतने-बोने योग्य, कृषि के योग्य।

कासः (کاسہ) अ. पुं.–पियाला, चषक।

कासःगर (کاسہگر) अ. फा. वि.–पियाले बनानेवाला, कंसकार; मिट्टी के बर्तन बनानेवाला, कुंभकार, कुम्हार।

कासःगरी (کاسہگری) अ. फा. स्त्री.–मिट्टी के पियाले बनाने का काम, मिट्टी के बरतन बनानें का काम।

कासःबाज़ (کاسہباز) अ. फा. वि.–छली, वंचक, कपटी, धूर्त, मक्कार।

कासःबाज़ी (کاسہبازی) अ.फा. स्त्री.–छलकर्म, धोखेबाज़ी, धूर्तता, मक्कारी।

कासःलेस (کاسہلیس) अ.फा. वि.–चाटुकार, ख़ुशामदी, चापलूस।

कासःलेसी (کاسہلیسی) अ.फा. स्त्री.–ख़ुशामद, चापलूसी, चाटुकर्म।

कासः सर निगूँ (کاسہ سر نگوں) अ.फा. वि.–दरिद्र, कंगाल, मोहताज।

क़ास [स्स] (قاص) अ. वि.–कहानी कहनेवाला; किसी के पीछे आनेवाला; सूचना देनेवाला; धर्मोपदेशक, वाइज़।

कास (کاس) फा. पुं.–बड़ा नगाड़ा, धौंसा, दुंदुभि; शूकर, सुअर।

कास (کاس) अ. पुं.–मदिरा पीने का पियाला, पान-पात्र।

कासए गदाई (کاسۂ گدائی) अ. फा. पुं.–भीख माँगने का ठीकरा, भिक्षापात्र।

कासए चश्म (کاسۂ چشم) अ. फा. पुं.–वह गढ़ा जिसमें आँखों के ढेले रहते हैं, चक्षु-गोलक।

कासए सर (کاسۂ سر) अ. फा. पुं.–खोपड़ी, कपाल।

कासमू (کاسمو) फा. पुं.–सुअर के बाल।

कासात (کاسات) अ. पुं. 'कासः' का बहु., पियाले।

क़ासित (قاسط) अ. वि.–अत्याचारी, ज़ालिम; अन्यायी, नामुंसिफ़; फ़र्याद सुननेवाला, न्यायकर्ता।

क़ासिद (قاصد) अ. वि.–इरादा करनेवाला; चिट्ठी ले जानेवाला, पत्र-वाहक; दूत, एलची।

कासिद (کاسد) अ. वि.–खोटा, कूट, जाली; जिसका चलन न हो, अप्रचलित।

कासिफ़ (کاسف) अ. वि.–छिपानेवाला; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल; कड़ुए स्वभाववाला, तुरुशरू।

कासिब (کاسب) अ. वि.–कमानेवाला, उपार्जक; परिश्रम से जीविका चलानेवाला, उद्यमी।

क़ासिम (قاسم) अ. वि.–बाँटनेवाला, वितरक; बँटवारा करनेवाला, विभाजक।

क़ासिर (قاصر) अ. वि.–कमी करनेवाला, कसर रखनेवाला; असमर्थ, नाकाम।

क़ासिर (قاسر) अ. वि.–ज़बर्दस्ती किसी से कोई काम लेनेवाला।

कासिर (کاسر) अ. वि.–तोड़नेवाला, भंजक; एक दर्द।

क़ासिरातुत्तर्फ़ (قاصرات الطرف) अ. स्त्री.–वह पतिव्रता स्त्री जो पर-पुरुष की ओर आँख उठाना पाप समझती हो।

क़ासी (قاسی) अ. वि.–कठोर हृदयवाला, सख़्तदिल।

क़ासी (قاصی) अ. वि.–बात की तह को पहुँच जानेवाला, दूर स्थान का रहनेवाला; दूर।

कास्तः (کاستہ) फा. वि.–घटा हुआ।

कास्तनी (کاستنی) फा. वि.–घटने योग्य; कम करने योग्य।

क़ास्नी (کاسنی) फा. स्त्री.–एक पौधा जिसकी जड़ और बीज दवा में चलते हैं और जिसके हरे पत्तों का अरक़ दवा में पिया जाता है।

काह (کاہ) फा. स्त्री.–घास, तृण।

क़ाह (قاہ) अ. पुं.–आज्ञाकारिता, फ़र्माबिरदारी।

काहकशाँ (کاہکشاں) फा. स्त्री.–आकाश गंगा, कहकशाँ।

क़ाह क़ाह (قاہ قاہ) फा. पुं.–अट्टहास, क़हक़हा।

काहरुबा (کاہربا) फा. पुं.–दे. 'कहरुबा'।

काहिनः (کاہنہ) अ. स्त्री.–शकुन विचारनेवाली स्त्री।

काहिन (کاہن) अ. वि.–शकुन विचारनेवाला पुरुष।

क़ाहिफ़ (قاحف) अ. पुं.–बहुत अधिक वर्षा।

क़ाहिरः (قاہرہ) अ. वि.–बलवान्, ज़ोरावर; अत्याचारी, ज़ालिम, (प्र०) मिस्र की राजधानी।

क़ाहिर (قاہر) अ. वि.–प्रकोप करनेवाला, बहुत अधिक ग़ुस्सा करनेवाला।

काहिल (کاہل) अ. वि.–आलसी, अलस, सुस्त, मंद।

काहिलवुजूद (کاہل وجود) अ. वि.–दे. 'काहिलुलवुजूद'।

काहिली (کاہلی) अ. स्त्री.–आलस्य, सुस्ती; फ़ुर्ती का न होना।

काहिलुलवुजूद (کاہل الوجود) अ. वि.–बहुत बड़ा आलसी, जो काम-धंधा न करे, पड़ा रहे।

काहिश (کاہش) फा. स्त्री.–ह्रस्व, घटाव, कमी, क्षीणता।

काही (کاہی) फा. वि.–घास का बना हुआ; घास का; घास-जैसे रंग का, हरा।

काहीदः (کاہیدہ) फा. वि.–घटा हुआ, ह्रस्व, लघु रूप में होना।

काहीदःतन (کاہیدہ تن) फा. वि.–सूखे शरीरवाला, दुबला-पतला, क्षीणांग।

काहीदःरू (کاہیدہ رو) फा. वि.–कुम्हलाये हुए मुँह का, उतरे हुए मुँहवाला, म्लानमुख।

काहीदगी (کاہیدگی) फा. स्त्री.–घटाव, कमी।

काहीदनी (کاہیدنی) फा. वि.–घटने योग्य।

काहू (کاہو) फा. पुं.–एक पौधा जो दवा में काम आता है, काहू-कद्दू-बादाम इनके बीजों के तेल में गुलाब का तेल मिलाकर मस्तिष्क-निर्बलता में प्रयोग करते हैं।

कि

किंगश (کنگش) तु. पुं.–'किंगाश' का लघु., दे. 'किंगाश'।

किंगाश (کنگاش) तु. पुं.–परामर्श, मशविरा, सलाह।

क़िंतार (قنطار) अ. पुं.–एक बोरी भर चाँदी या सोना।

क़िंदील (قندیل) अ. स्त्री.–दीप, दीपक, चिराग़, दिया; एक प्रकार की काग़ज़ मढ़ी हुई-बड़ी सी लालटेन, जिसमें काग़ज़ की तस्वीरें बनी होती हैं और वह हवा से घूमती हैं, क़न्दील।

क़िंबील (قنبیل) अ. पुं.–एक दवा, कमीला।

क़िज़िल (قزل) तु. वि.–रक्त, लाल, सुर्ख़।

क़िज़िल अर्सलान (قزل ارسلان) तु. पुं.–लाल रंग का व्याघ्र, लाल शेर; एक बादशाह की उपाधि।

क़िज़िलबाश (قزلباش) तु. पुं.–लाल टोपीवाला सैनिक; ईरान के शाह इस्माईल सफ़वी ने अपनी तुर्की सेना को लाल टोपी पहनायी थी और उनका नाम क़िज़िलबाश रखा था।

किज़्ब (کزب) अ. पुं.–झूठ, मिथ्या, असत्य; गप, असार बात।

क़िज़्बान (قضبان) अ. पुं.–'क़ज़ीब' का बहु., डालियाँ; लिंग।

किज़्लिक (کزلک) फा. पुं.–छोटा चाक़ू।

क़िताफ़ (قطاف) अ. पुं.–अंगूर और दूसरे फलों के पकने का समय, जब वह तोड़े जा सकें।

किताबः (کتابہ) अ. पुं.–कत्बः, वह शिला या तख़्ती, जो इमारतों या क़ब्रों पर लगती है।

क़िताब (قطاب) अ. पुं.–कुर्ते आदि का गला, गिरीबाँ।

किताब (کتاب) अ. स्त्री.–पुस्तक, ग्रंथ; कापी, मियाज़।

किताबख़ानः (کتاب خانہ) अ. फा. पुं.–पुस्तकालय, किताबें बिकने की दुकान।

किताबचः (کتابچہ) अ. फा. पुं.–छोटी किताब, पुस्तिका।

किताबत (کتابت) अ. स्त्री.–कापीनवीसी का पेशा, लीथो प्रेस के लिए लिखाई का काम।

किताबिस्तान (کتابستان) अ. फा. पुं.–पुस्तकालय, मक़्तबा।

किताबी (کتابی) अ. वि.–पुस्तक सम्बन्धी; पुस्तक जैसी; पुस्तक में लिखी हुई; लंबोतरा, जैसे—किताबी चेहरा।

किताबुल्लाह (کتاب اللہ) अ. स्त्री.–ईश्वरीय ग्रंथ, इलहामी किताब; क़ुरान शरीफ़।

किताबेरुख़ (کتابِ رخ) अ. फा. स्त्री.–प्रेमिका की पुस्तकाकार मुखाकृति, किताबी चेहरा, जिस मुख पर प्रणय-चेष्टाएँ अंकित हों।

क़ितार (قطار) अ. स्त्री.–श्रेणी, पंक्ति, लाइन; परा, सफ़, इस शब्द का शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में 'क़तार' बोलते हैं।

क़िताल (قتال) अ. पुं.–रक्तपात, मार-काट, ख़ूँरेज़ी; युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

क़ित्अः (قطعہ) अ. पुं.–दे. 'क़त्अः', शुद्ध यही है, परन्तु पढ़े-लिखे लोग अधिक वही बोलते हैं।

कित्फ़ (کتف) अ. पुं.–कंधा, स्कंध, दे. 'कतिफ़' और 'कत्फ़'। तीनों शुद्ध हैं।

कित्मान (کتمان) अ. पुं.–छिपाव, दुराव, गोपन।

क़ित्मीर (قطمیر) अ. पुं.–थोड़ी चीज़; छोटा, ह्रस्व; छुहारे में की बारीक झिल्ली।

क़ित्र (قطر) अ. पुं.–पिघला हुआ ताँबा।

क़िदम (قدم) अ. पुं.–प्राचीनता, पुरातत्त्व, क़दामत; नित्यता, अनश्वरता, लाज़वालपन।

किदेवर (کدیور) फा. पुं.–कृषक, किसान, दे. 'कदेवर', दोनों शुद्ध हैं।

क़िद्मत (قدمت) अ. स्त्री. –पुराना होना।

क़िद्र (قدر) अ. पुं.–हाँडी, देगची।

क़िद्वः (قدوہ) अ. पुं.–नायक, नेता, प्रधान, सरदार।

क़िद्वतुल आरिफ़ीन (قدوۃ العارفین) अ. पुं.–ब्रह्मज्ञानी, महात्माओं में सर्वश्रेष्ठ।

क़िद्वतुस्सालिकीन (قدوۃ السالکین) अ. पुं.–संन्यासियों और साधुओं में सर्वश्रेष्ठ।

किनायः (کنایہ) अ. पुं.–गुप्त संकेत, छिपा हुआ इशारा; छिपी हुई बात; उर्दू साहित्य की परिभाषा में उपमेय का वर्णन न करके, केवल उपमान का वर्णन करना, जैसे–– कहा जाय कि 'नर्गिस ने मोती बरसाये' और मतलब यह हो कि प्रेयसी की आँखों से आँसू गिरे। यहाँ 'नर्गिस' 'आँख' का उपमान है और 'मोती' 'आँसू' का। प्रस्तुत के स्थान पर अप्रस्तुत की योजना की जाय, जैसे––"चश्मे-गिरियाँ ने लुटाये थे गुहर–रात भर रोए थे हम, शबनम नहीं।"

किनायत (کنایت) अ. स्त्री.–गुप्त बात; गुप्त संकेत; किनायः।

किनायतन (کنایتاً) अ. वि.–गुप्त रीति से, इशारे में, संकेत से।

किनारः (کنارہ) फा. पुं.–शुद्ध 'कनारः' है, परन्तु 'किनारः' भी बोलते हैं, तट, किनारा, साहिल।

किनार (کنار) फा. पुं.–क्रोड, गोद, आग़ोश।

क़िनीनः (قنینہ) अ. स्त्री.–शराब रखने का बरतन, दे. 'क़िन्नीनः', दोनों शुद्ध हैं।

किनीसः (کنیسہ) फा. पुं.–ईसाइयों का गिरजा, दे. 'कनीसः', दोनों शुद्ध हैं।

किन्न (کن) अ पुं.–वस्त्र, लिबास, पहनने के कपड़े।

क़िन्नब (قنب) अ. स्त्री.–भाँग, भंग, विजया, एक घोंट-छानकर पी जानेवाली मादक पत्ती।

क़िन्नीनः (قنینہ) अ. स्त्री.–मदिरा रखने का पात्र, दे. 'क़िनीनः', दोनों शुद्ध है।

क़िन्यः (قنیہ) अ. पुं.–पूँजी, सरमाया।

क़िन्व (قنو) अ. पुं.–फलों का गुच्छा, ख़ोशः।

क़िन्वान (قنوان) अ. पुं.–गुच्छे, ख़ोशे।

किफ़ायत (کفایت) अ. स्त्री.–पर्याप्त, क़ाफ़ी होना; अल्प व्यय, जुज़रसी।

किफ़ायतशिआर (کفایت شعار) अ. वि.–कम ख़र्च करनेवाला, बचानेवाला, मितव्ययी, जुज़रस,।

किफ़ायतशिआरी (کفایت شعاری) अ. स्त्री.–ख़र्च में कमी, मितव्यय, जुज़रसी।

क़िफ़्ल (کفل) अ. पुं.–खंड, अंश, टुकड़ा, हिस्सा; जो घोड़े पर न चढ़ सके; घोड़े की पीठ का नमदा।

क़िबाब (قباب) अ. पुं.–'कुब्बः' का बहु., छोटे गुंबद, क़ुब्बे।

किबार (کبار) अ. पुं.–'कबीर' का बहु., आयु में बड़े लोग; प्रतिष्ठा में बड़े लोग।

क़िबालः (قبالہ) अ. पुं.–बच्चे जनाने का काम, धायकर्म, दाय:गीरी, दूसरे अर्थ के लिए, दे. 'क़बालः'।

क़िब्चाक़ (قبچاق) तु. पुं.–तुर्किस्तान और तूरान के बीच का एक जंगल, जहाँ के तुर्क निर्दय और उद्दंड होते हैं।

क़िब्ती (قبطی) अ. पुं.–प्राचीन मिस्री जाति, जो फ़िरऔन के वंशज हैं।

किब्र (کبر) अ. स्त्री.–बड़ाई, ज्येष्ठता; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

किब्रसिन (کبرسن) अ. वि.–बूढ़ा, वयोवृद्ध, जरत्।

किब्रसिनी (کبرسنی) अ. स्त्री.–बुढ़ापा, जरा, वृद्धावस्था।

किब्रिया (کبریا) अ. पुं.–महत्ता, बड़ाई; ईश्वर, परमात्मा।

किब्रियाई (کبریائی) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, बड़प्पन; महत्ता, ईश्वरत्व, ख़ुदाई।

किब्रीत (کبریت) अ. स्त्री.–गंधक, एक ज्वलनशील पदार्थ, जिससे बारूद बनती है।

किब्रीते अहमर (کبریت احمر) अ. स्त्री.–लाल गंधक, जो रसायन में काम आती है; अप्राप्य वस्तु, नायाब चीज़।

क़िब्लः (قبلہ) अ. पुं.–मक्के में वह स्थान जहाँ हजरे अस्वद (काला पत्थर) स्थापित है, और जिसकी ओर मुँह करके, मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं का'बः; प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्तियों के लिए संबोधन का शब्द।

क़िब्लःगाह (قبلہ گاہ) अ.फा. वि.–मान्य, पूज्य, श्रद्धेय।

क़िब्लःनुमा (قبلہ نما) अ. फा. पुं.–पश्चिम की दिशा बतानेवाला यंत्र, दिग्दर्शक यंत्र।

क़िब्लःपरस्त (قبلہ پرست) अ. फा. वि.–मुसलमान।

क़िब्लएआलम (قبلۂ عالم) अ.पुं.–दे. 'क़िब्लःगाह', जगत्पूज्य पीर या बुज़ुर्ग, "ये बातें राज़ की हैं, क़िब्लएआलम भी पीते हैं।"

क़िब्लएहाजात (قبلۂ حاجات) अ. पुं.–आशाकेन्द्र, वह स्थान जहाँ से स्वार्थ-सिद्धि हो; वह व्यक्ति जो आशाएँ पूर्ण करे।

क़िमत्र (قمطر) अ. पुं.–छोटे आकार का मनुष्य, मेंठा, ठिगना; मोटा ऊँट; पुस्तकों की पेटी।

क़िमम (قمم) अ.स्त्री.–'क़ुम्मः' का बहु., चोटियाँ, उँचाइयाँ।

क़िमात (قماط) अ. पुं.–वह कपड़ा जिसमें नवजात शिशु लपेटा जाता है।

किमाद (کماد) अ. पुं.–दवाओं की पोटली को गरम करके उससे किसी अंग को बार-बार सेंकना, टकोर।

क़िमार (قمار) अ. पुं.–जुआ, द्यूत, कैतव, पण।

क़िमारख़ानः (قمارخانہ) अ.फा. पुं.–जुआ खेलने का फड़, अक्षवार, पणशाला, द्यूतागार, जुआघर।

क़िमारबाज़ (قمارباز) अ. फा. वि.–जुआ खेलनेवाला, द्यूतकार, कितव, कैतव, जुआरी, जुएबाज़।

क़िमारबाज़ी (قماربازی) अ. फा. स्त्री.–जुए का खेल, द्यूतक्रीडा, द्यूतकर्म, कैतव, जुएबाज़ी।

क़ियम (قیم) अ. स्त्री.–'क़ीमत' का बहु., क़ीमतें, मूल्य।

किया (کیا) फा. पुं.–पहलवान, मल्ल; स्वामी, मालिक; पवित्र, पाक़ीज़ः, स्वच्छ।

क़ियादत (قیادت) अ. स्त्री.–नेतृत्व, रहनुमाई, मार्ग-प्रदर्शन, नेतागिरी; क़ुरम साक़ी, भड़ुआपन, दल्लाली,।

क़ियाफ़ः (قیافہ) अ. पुं.–चेष्टा, हुल्यः; चेहरे के आकार-प्रकार और उसके चिह्नों द्वारा मनुष्य के स्वभाव आदि का ज्ञान, सामुद्रिक विद्या, क़याफ़ा भी प्रचलित, "आदमी पहचान लेते हैं कयाफ़ा देखकर, ख़त का मज़्मूँ भाँप लेते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर।"

क़ियाफ़ःदाँ (قیافہ داں) अ. फा. वि.–दे. 'क़ियाफ़ःशनास', चेहरे को देखकर मनुष्य-स्वभाव पहचाननेवाला।

क़ियाफ़ःशनास (قیافہ شناس) अ.फा.वि.–क़ियाफ़ा पहचानने वाला, चेष्टा देखकर हाल बता देनेवाला, सामुद्रिकवेत्ता।

क़ियाफ़ःशनासी (قیافہ شناسی) अ. फा. स्त्री.–क़ियाफ़ा पहचनाने की विद्या; चेहरे से हाल जानना।

क़ियाम (قیام) अ. पुं.–अस्थायी निवास, थोड़े दिनों का वास; किसी संस्था आदि की नींव, स्थापना; नमाज़ में खड़े होने की अवस्था; निश्चय, यक़ीन, क़याम भी प्रचलित।

क़ियामगाह (قیام گاہ) अ. फा. स्त्री.–ठहरने का स्थान; रहने का स्थान, निवासस्थान।

क़ियामत (قیامت) अ. स्त्री.–महाप्रलय, सारी दुनिया का उलट-पलट; महाप्रलय-काल, हश्र का दिन; बहुत ही सुन्दर और बढ़िया, बलाका; अत्यन्त, बहुत (क़यामत)।

क़ियामतअंगेज़ (قیامت انگیز) अ.फा. वि.–दे. 'क़ियामत ख़ेज़'।

क़ियामत आसार (قیامت آثار) अ. वि.–जिसमें क़ियामत के लक्षण हों, बहुत अधिक उपद्रवी; जिसमें बहुत उथल-पुथल होने की संभावना हो।

क़ियामतख़ेज़ (قیامت خیز) अ.फा. वि.–क़ियामत उठानेवाला, प्रलयंकर; बहुत उथल-पुथल करनेवाला, विप्लवकारी।

क़ियामतख़ेज़ी (قیامت خیزی) अ. फा. स्त्री.–क़ियामत उठाना, उथल-पुथल करना।

क़ियामपिज़ीर (قیام پزیر) अ. फा. वि.–बसा हुआ, ठहरा हुआ, मुक़ीम।

क़ियास (قیاس) अ. पुं.–विचार, ख़याल; अनुमान, अटकल, अंदाज़ा।

कियासत (کیاست) अ. स्त्री.–दक्षता, निपुणता, चातुरी, चतुराई, दानाई।

क़ियासन (قیاساً) अ. वि.–अटकल से, अंदाज़े से, अनुमानतः।

क़ियासी (قیاسی) अ. वि.–अटकलवाली बात, अललटप; कल्पित, फ़र्ज़ी।

क़िरब (قرب) अ. स्त्री.–'क़िर्ब' का बहु., पानी की मश्कें।

किरा (کرا) फा. अव्य.–किसको, किसे।

किरा (کرا) अ. पुं.–किराया, भाड़ा।

क़िराअत (قرائت) अ. स्त्री.–दे. 'क़िअर्त', दोनों शुद्ध हैं।

किराइंदः (کرائندہ) फा. वि.–किराए पर लेनेवाला।

क़िरान (قران) अ. पुं.–समीपता, निकटता, नज़दीकी; दो ग्रहों का एक राशि में होना, योग।

क़िरान (قران) अ. पुं.–'क़र्न' का बहु., ज़माने, युग।

क़िरानुस्सा'दैन (قران السعدین) अ. पुं.–दो शुभ ग्रहों का एक राशि में होना, शुभ-योग।

क़िराब (قراب) तु. पुं.–तलवार या भुजाली आदि का नियाम, कोष, मियान।

क़िराब (قراب) अ. पुं.–समीपता, नज़दीकी; नापने की जरीब, (स्त्री.) 'क़िर्ब': का बहु., पानी की मश्क़ें।

किराम (کرام) अ. पुं.–'करीम' का बहु., कृपालु जन, दयालुवर्ग; दानशील जन, फ़ैयाज़ लोग; पूज्य लोग, प्रतिष्ठित लोग।

क़िराम (قرام) अ. पुं.–हलका और महीन पर्दा; चित्रित और नक़्शीन पर्दा।

किरायः (کرایہ) अ. पुं.–भाड़ा, भाटक।

किरायःदार (کرایہ دار) अ.फा. वि.–किराये पर कोई चीज़ प्रयोग करनेवाला, किराये पर घर आदि में रहनेवाला।

किरायःदारी (کرایہداری) अ. फा. स्त्री.–किराये पर कोई चीज़ प्रयोग करना, किराये पर घर आदि में रहना।

किरायःनामः (کرایہنامہ) फा. पुं.–किराये पर कोई वस्तु लेने का इक़रारनामा, भाटकपत्र।

किरिश्मः (کرشمہ) फा. पुं.–आँख या भौं का संकेत, सैन; हाव-भाव, नाज़ोअदा; माया, इन्द्रजाल, जादू; चमत्कार, शा'बदः; आश्चर्य, अचम्भा (करिश्मा)।

किरिश्मःकार (کرشمہکار) फा. वि.–दे. 'किरीश्मःसाज़'।

किरिश्मःकारी (کرشمہکاری) फा. स्त्री.–दे.'किरिश्मःसाज़ी'।

किरिश्मःसाज़ (کرشمہساز) फा. वि.–मायावी, शो'बदःबाज़; हाव-भाववाला, नाज़ो-अंदाज़वाला, जादूगर।

किरिश्मःसाज़ी (کرشمہسازی) फा. स्त्री.–मायाकर्म, शो'बदःबाज़ी।

किरिश्म (کرشمہ) फा. पुं.–दे. 'किरिश्मः'।

क़िर्अत (قرأت) अ. स्त्री.–पढ़ने का भाव, पढ़ाई; क़ुरान की शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ाई।

क़िर्तबूस (قرطبوس) अ. पुं.–बहुत बड़ी दैवी आपत्ति।

क़िर्तास (قرطاس) अ. पुं.–काग़ज़-पत्र।

क़िर्तासि अब्यज़ (قرطاس ابیض) अ. पुं.–सफेद काग़ज़, श्वेत पत्र, व्हाइट पेपर।

क़िर्दः (قردہ) अ. पुं.–बन्दर की मादा, वानरी, बंदरिया।

क़िर्द (قرد) अ. पुं.–बंदर, वानर, कपि, शाखामृग।

किर्द (کرد) फा॰ पुं.–दे. 'कर्द'।

किर्दगार (کردگار) फा. पुं.–दे. 'कर्दगार', परन्तु अधिक किर्दगार ही बोलते हैं, वह यद्यपि अशुद्ध है, परन्तु फ़ारसी और उर्दू के विद्वानों नें शुद्ध माना है।

क़िर्बः (قربہ) अ. पुं.–पानी भरने की मश्क, भस्त्री।

किर्बास (کرباس) अ. पुं.–सफेद कपड़ा, श्वेत वस्त्र; सूती कपड़ा।

किर्म (کرم) फा. पुं.–कीड़ा, कीट, कृमि, संस्कृत कृमि का फ़ारसी में प्रचलित रूप।

किर्मक (کرمک) फा. पुं.–छोटा कीड़ा, कृमिक, कीट।

किर्मकुश (کرمکش) फा. वि.–कीड़ों को मारनेवाली दवा, कृमिनाशक।

किर्मकेशबताव (کرمک شب تاب) फा. पुं.–जुगनू, खद्योत, ज्योतिरिंगण, कीटमणि, ज्योतिर्बीज।

किर्मखुर्दः (کرم خردہ) फा. वि.–कीड़ों का खाया हुआ, जिसे कीड़ों ने चाटकर खराब कर दिया हो।

किर्मखुर्दगी (کرم خوردگی) फा. स्त्री.–किसी वस्तु का कीड़ों का खा जाना।

किर्मपीलः (کرم پیلہ) फा. पुं.–रेशम का कीड़ा।

किर्मान (کرمان) फा. पुं.–ईरान का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ का ज़ीरा और फ़र्श प्रसिद्ध है।

क़िर्मिज़ (قرمز) अ. पुं.–एक प्रकार के छोट-छोटे लाल कीड़े जिन्हें सुखाकर उनसे रेशम रँगते हैं।

क़िर्मिज़ी (قرمزی) अ. वि.–क़िर्मिज़ के रंग का, रक्त, लाल, सुर्ख़।

किर्मे शबअफ़्रोज़ (کرم شب افروز) फा.पुं.–दे.'किर्मे शवताव'।

किर्मे शबचिराग़ (کرم شب چراغ) फा. पुं.–दे. 'किर्मेशवताव'।

किर्मेशबताब (کرم شب تاب) फा. पुं.–खद्योत, कीटमणि, ज्योतिरिंगण, ज्योतिर्बीज।

किर्मेशिकम (کرم شکم) फा. पु.–पेट के कीड़े, उदर-कृमि।

किर्यास (کریاس) अ. पुं.–अट्टालिका, अटारी, वालाखाना; शौचालय या स्नानागार जो अटारी पर हो; राजभवन, राजद्वार, शाही दरवार।

क़िर्वात (قرواط) अ. स्त्री.–नाव, नौका, किश्ती; हवा भरी हुई मश्क, जिस पर बैठकर नदी पार करते हैं।

क़िलाअ' (قلاع) अ. पुं.–'क़ल्अः' का वहु., दुर्ग-समूह, क़िले।

क़िलादः (قلادہ) अ. पुं.–गले का पट्टा, कुत्ते या ऊँट के गले का पट्टा; गुलूबंद।

किलाब (کلاب) अ. पुं.–'कल्ब' का वहु., कुत्ते।

क़िलीच (قلیچ) तु. पुं.–तलवार, खड्ग।

किलीद (کلید) फा. स्त्री.–कुंजी, ताली, कुंचिका।

किलीदे कामरानी (کلید کامرانی) फा. स्त्री.–सफलता की कुंजी, सफलता का गुर।

किलीदे फ़त्हेबाब (کلید فتح باب) फा. अ. स्त्री.–दरवाजा खोलने की कुंजी; सफलता का गुर (मूलमंत्र)।

किलीदे बिहिश्त (کلید بہشت) फा. स्त्री.–स्वर्ग की कुंजी; पुण्यकर्म, नेक आ'माल।

किलीसा (کلیسا) फा. पुं.–ईसाइयों का गिरजा, चर्च।

किलीसाई (کلیسائی) फा. वि.–ईसाई, ख्रिष्टीय।

किलेसा (کلیسا) फा. पुं.–दे. 'किलीसा', दो. शु. हैं।

किल्क (کلک) फा. स्त्री.–नरकट, नरसल, नरकुल, नै; एक विशेष नरकट की बनी हुई क़लम; क़लम, लेखनी।

क़िल्यान (قلیان) फा. पुं.–हुक़्क़ा, चिलम पीने की गुड़गुड़ी, दे. 'क़ल्यान', दो. शु. हैं।

क़िल्लत (قلت) अ. स्त्री.–न्यूनता, कमी; अभाव, नायाबी।

क़िल्लते आब (قلت آب) अ. फा. स्त्री.–पानी की कमी, जलाभाव, जलकष्ट।

क़िल्लते ग़िज़ा (قلت غزا) अ. स्त्री.–खाने के पदार्थों की कमी, खाद्याभाव।

क़िल्लते बाराँ (قلت باراں) अ. फा. स्त्री.–बरसात की कमी, वर्षाभाव, क़हतसाली ।

क़िल्लतो कस्रत (قلت و کثرت) अ. पुं. –कमी-बेशी, न्यूनता और अधिकता, न्यूनाधिक्य ।

किल्स (کلس)अ. पुं.–चूना ।

क़िवाम (قوام) अ. पुं.–मूल, तत्त्व, अस्ल; क्रम, तर्तीब, निज़ाम; शीरा, चाशनी, पक्वस्वरस ।

किवेर (کویر) फा. पुं.–समतल भूमि; बिना पानी की भूमि; मरीचिका, मृगतृष्णा, सराब ।

किशावर्ज़ (کشاورز) फा. वि.–कृषक, किसान, दे. 'कशा वर्ज़', दो. शुद्ध हैं।

किशावर्ज़ी (کشاورزی) फा. स्त्री.–कृषिकर्म, किसानी, दे. 'कशावर्ज़ी', दो. शु. हैं ।

किशिक (کشک) तु. पुं.–पहरा, चौकसी, निगहबानी, रखवानी ।

किशिकची (کشکچی) तु. पुं.–पहरेदार, रखवाला ।

किशिकदार (کشکدار) तु. फा. पुं.–दे. 'किशिकची' ।

किश्तः (کشتہ) फा. पुं.–शफ़तालू व ज़र्दालू आदि जिनके बीज निकालकर गूदा सुखा लेते हैं; कस्तूरी, केसर और लोबान आदि का मिश्रण जिसे गुलाब में घिसकर टिकिया वना लेते और सुलगाते हैं ।

किश्त (کشت) फा. स्त्री.–कृषि, खेती; शतरंज की 'शह' ।

किश्तकार (کشتکار)फा. वि.–कृषक, काश्तकार, किसान ।

किश्तकारी (کشتکاری) फा. स्त्री.–कृषिकर्म, किसानी ।

किश्तज़ार (کشتزار) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ बोये हुए खेत ही खेत हों, सब्ज़:ज़ार ।

किश्ते ज़ा'फ़रान (کشت زعفران)फा. अ. स्त्री.–ऐसा स्थान जहाँ केसर के खेत हों; वह स्थान जहाँ चित्त में उल्लास और आनंद उत्पन्न हो ।

क़िश्फ़ (قشف) अ. वि.–विकृत, जिसका रंग-रूप बिगड़ गया हो, दूषित ।

किश्मिश (کشمش) फा. स्त्री.–मुनक़्क़े की जाति का सूखा हुआ छोटा अंगूर जिसमें बीज नहीं होता, अवीजा ।

किश्मिशी (کشمشی) फा. वि.–'किश्मिश' जैसे रंग का , हलका हरा; जिसमें किश्मिश मिली हो; किश्मिश का ।

क़िश्लाक़ (قشلاق) तु. पुं.–वह गरम 'स्थान जहाँ जाड़े गुज़ारे जायँ ।

किश्वर (کشور) फा. स्त्री.–देश, मुल्क; राष्ट्र, सल्तनत; महाद्वीप, बर्रेआ'ज़म, दे. 'कश्वर', दो. शु. हैं ।

किश्वर कुशा (کشور کشا) फा. वि.–विश्वविजयी, दिग्विजयी, जहाँगीर ।

किश्वर सिताँ (کشورستاں) फा. वि.–दे. 'किश्वर कुशा' ।

क़िसस (قصص)अ. पुं.–'क़िस्स:' का बहु., क़िस्से, कहानियाँ ।

क़िसास (قصاص) अ. पुं.–ख़ून के बदले में ख़ून, प्रतिहिंसा ।

क़िस्अः (قصعہ) अ. पुं.–बड़ा पियाला ।

क़िस्त (قسط) अ. स्त्री.–न्याय, इंसाफ़; भाग, अंश, हिस्सा; खंड, टुकड़ा; अदाइगी का एक जुज़ ।

क़िस्तबंदी (قسطبندی) अ. फा. स्त्री.–अदाइगी के लिए क़िस्तों की नियति ।

क़िस्तास (قسطاس) अ. स्त्री.–बड़ी तराज़ू, नक ।

क़िस्म (قسم) आ. स्त्री.–प्रकार, भाँति, तरह; जाति, नौअ ।

क़िस्मत (قسمت) अ. स्त्री.–विभाजन, तक़्सीम, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, तक़दीर ।

क़िस्मत आज़्मा (قسمت آزما) अ. फा. वि.–भाग्य की परीक्षा करनेवाला, किसी कठिन काम का बीड़ा उठानेवाला, कोई कड़ी परीक्षा देनेवाला ।

क़िस्मत आज़्माई (قسمت آزمائی) अ. फा. स्त्री.–भाग्य की परीक्षा, किसी कठिन काम का साहस, किसी कड़ी परीक्षा की तैयारी ।

क़िस्मतवर (قسمتور) अ.फा. वि.–भाग्यशाली, भाग्यवान्, ख़ुशनसीब ।

क़िस्मतवरी (قسمتوری) अ. फा. स्त्री.–ख़ुशक़िस्मती, भाग्यशीलता, भाग्यशालीनता ।

किस्रा (کسریٰ) अ. पुं.–ईरान के शासकों की उपाधि; नौशेरवाँ की उपाधि ।

किस्वत (کسوت) अ. स्त्री.–वस्त्र, वसन, लिबास, पोशाक; नाई की पेटी, नापित-पेटिका ।

क़िस्सः (قصہ) अ. पुं.–कथा, कहानी; उपन्यास, नाविल; वृत्तांत, हाल; घटना, वाक़िअ:; कलह, झगड़ा; समस्या, मस्अल: ।

किस्सःकोताह (قصہ کوتاہ) अ. फा. अव्यं.–सारांश यह कि, किं बहुना, क़िस्स: मुख़्तसर ।

क़िस्सःख़्वां (قصہ خواں). अ.फा. वि.–दे. 'क़िस्स: गो' ।

क़िस्सःगो (قصہ گو) अ.फा.वि.–कहानियाँ कहनेवाला; अब से कुछ पहले क़िस्से कहनेवालों की एक बड़ी संख्या सारे देश में फैली हुई थी और वह कल्पित कहानियाँ सुना-सुनाकर अपना जीवन निर्वाह करती थी, 'दास्तां गो' ।

क़िस्सः मुख़्तसर (قصہ مختصر) अ. अव्य.–दे. 'किस्सः कोताह' ।

क़िस्सीस (قسیس) अ. पुं.–ईसाइयों का धर्मगुरु, पादरी, राहिब ।

किहीं (کہیں) फा. वि.–अति क्षुद्र, बहुत छोटा ।

किहीनः (کہینہ) फा. वि.–क्षुद्र, छोटा; आयु में छोटा, अल्पवयस्क।

क़िह्.फ़ (قحف) अ. पुं.–खोपड़ी, कपाल।

की

कीं (کیں) फा. पुं.–'कीन' का लघु., दे. 'कीन'।

कीं (کیں) फा. अव्य.–कि यह।

कीनः (کینہ) फा. पुं.–वह शत्रुता जो दिल में रहे, द्वेष, खुंस, अमर्ष, "अय ज़हे रंजिश ! कि क़ल्बे यारकी मंज़िल में है। रुतबा देखो मेरे 'कीने' का कि उनके दिल में है॥"

कीनः अंदोज़ (کینہ اندوز) फा. वि.–दे. 'कीनःवर'।

कीनः अंदोज़ी (کینہ اندوزی) फा. स्त्री.–दे. 'कीनःवरी'।

कीनःकश (کینہ کش) फा. वि.–दे. 'कीनःवर'।

कीनःकशी (کینہ کشی) फा. स्त्री.–दे. 'कीनःवरी ।

कीनःतोज़ (کینہ توز) फा. वि.–दे. 'कीनःवर'।

कीनःतोज़ी (کینہ توزی) फा. स्त्री.–दे. 'कीनःवरी'।

कीनःपर्वर (کینہ پرور) फा. वि.–दे. 'कीनःवर'।

कीनःपर्वरी (کینہ پروری) फा. स्त्री.–दे. 'कीनःवरी ।

कीनःवर (کینہ ور) फा. वि.–किसी की ओर से हृदय में द्वेष रखनेवाला, जो मुँह पर तो कुछ न कहे, परंतु समय पड़ने पर पूरी शत्रुता दिखाये।

कीनःवरी (کینہ وری) फा. स्त्री.–मन में द्वेष रखना और समय पड़ने पर शत्रुता प्रकट करना।

कीन (کین) फा. पुं.–दे. 'कीनः', द्वेष, अमर्ष, खुंस, रंजिश।

क़ीन (قین) अ. पुं.–सेवक, दास; लोहार, लोहकार; लोहारी का काम, दे. 'क़ैन', वही अधिक शुद्ध है।

कीपा (کیپا) तु. पुं.–एक प्रकार का पुलाव जो बकरी की आँतों में चावल और मसाला भरकर पकाया जाता है।

क़ीफ़ (قیف) फा. स्त्री.–बोतल आदि में तेल आदि उँडेलने का यंत्र, कीप।

क़ीफ़ाल (قیفال) अ. स्त्री.–एक बड़ी रक्तवाहिनी नाड़ी जिसकी फ़स्द ली जाती है, सरोरू।

क़ीमः (قیمہ) फा. पुं.–कुटा हुआ मांस, जिसके कोफ़्ते या कबाब बनते हैं।

क़ीमत (قیمت) अ. स्त्री.–मूल्य, दाम; प्रतिष्ठा, क़द्र; श्रेष्ठता, उच्चता, बड़ाई।

क़ीमतन् (قیمتاً) अ. वि.–मूल्य देकर, दामों से।

क़ीमती (قیمتی) अ. वि.–बहुमूल्य, मूल्यवान्, बेशक़ीमत।

कीमिया (کیمیا) अ. स्त्री.–रसायन, कैमिस्ट्री; सोना-चाँदी बनाने की कला, धातुवाद।

कीमियाअसर (کیمیااثر) अ. वि.–अति गुणकारी, बहुत ही फ़ायदेमंद; मट्टी को सोना बना देनेवाली चीज़।

कीमियागर (کیمیاگر) अ. फा. वि.–ताँबे आदि से सोना बनानेवाला; बहुत बड़ा हुनरमंद।

कीमियागरी (کیمیاگری) अ.फा. स्त्री.–ताँबे आदि से सोना बनाना; हुनरमंद होना।

कीमियादाँ (کیمیادان) अ.फा. वि.–पारे आदि से सोना बनाना जाननेवाला।

कीमियादानी (کیمیادانی) अ. फा. स्त्री.–पारा आदि से सोना बनाना।

कीमियासाज़ (کیمیاساز) अ. फा. वि.–दे. 'कीमियागर'।

कीमियासाज़ी (کیمیاسازی) अ.फा.स्त्री.–दे. 'कीमियागरी'।

कीमुख़्त (کیمخت) फा. पुं.–घोड़े या गधे का कमाया हुआ चमड़ा।

क़ीर (قیر) फा. पुं.–राल; तारकोल।

क़ीरगूँ (قیرگوں) फा. वि.–काले रंग का, तारकोल जैसा।

क़ीरात (قیراط) अ. स्त्री.–एक तौल जो चार जौ के बराबर होती है, रत्तियों के हिसाब से तीन रत्ती।

क़ीलः (قیلہ) अ. पुं.–अंडवृद्धि, फ़ोते बढ़ने का रोग; दोपहर को थोड़ी देर लेटना, क़ैलूलः।

क़ीलोक़ाल (قیل وقال) अ. स्त्री.–वाद-विवाद, तर्क-वितर्क, बहस-मुबाहसा।

कीसः (کیسہ) अ. पुं.–जेब, पाकेट, ख़लीताः; थैली।

कीसःतराश (کیسہ تراش) अ. फा. वि.–जेब काटनेवाला, जेबकतरा, ग्रंथिमोचक, पाकेटमार, जेबतराश।

कीसःतराशी (کیسہ تراشی) अ.फा. स्त्री.–जेब काटने का काम, जेबकतरापन, पाकटमारी, ग्रंथिमोचन।

कीसःबुर (کیسہ بر) अ. फा. वि.–दे. 'कीसःतराश'; 'कीसावर' भी प्रचलित।

कीसःबुरी (کیسہ بری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'कीसःतराशी', 'कीसावरी' भी प्रचलित।

कीस (کیس) अ. पुं.–दे. 'कीसः'।

कीसे फ़िदा (کیس فدا) अ. फा. पुं.–शत्रुओं में घिर जाने के समय भागते हुए रुपया फेंक देना, ताकि लोग उसे बटोरने में लग जायँ और पीछा न करें।

क़ीह (قیح) अ. स्त्री.–पीप, मवाद, पीव, क्षतस्राव।

कु

कुंग (کنگ) फा. वि.–मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट; शक्तिशाली, बलवान्; छुहारों का गुच्छा।

कुंगुरः (کنگرہ) फा. पुं.–भवन आदि की गुमटी, छोटा गुंबद, कँगूरा।

कुंगुर (کنگر) फा. पुं.–दे. 'कुंगुरः'।

कुंज (کنج) फा. पुं.–एकांत, गोशः, "दुनिया में रंजोग़म से जो फ़ुर्सत न मिल सकी, आख़िर को थक के सो गये कुंजे मज़ार में।"

कुंजकावी (کنجکاوی) फा. स्त्री.–तलाश, खोज, जिज्ञासा; परिश्रम, मेहनत; ध्यानपूर्वक विचार, ग़ौर।

कुंजद (کنجد) फा. स्त्री.–तिल, तिल्ली, एक प्रसिद्ध बीज।

कुंजारः (کنجارہ) फा. पुं.–तेल निकलने के पश्चात् बीज का फोक, खल, खली।

कुंजिश्क (کنجشک) फा. स्त्री.–वह छोटी चिड़िया जो घरों में रहती है, गौरैया, चटक।

कुंजे इंज़िवा (کنج انزوا) फा. अ. पुं.–एकांत, गोशः, अकेला स्थान, निर्जनस्थल।

कुंजे उज़्लत (کنج عزلت) फा.अ. पुं.–दे. 'कुंजे इंज़िवा'।

कुंजे क़फ़स (کنج قفس) फा.अ. पुं.–पिंजड़े का कोना, पिंजड़े का एकांत स्थान; कारागार, क़ैदख़ाना, ज़ेलख़ाना।

कुंजे ख़ल्वत (کنج خلوت) फा.अ. पुं.–दे. 'कुंजे इंज़िवा'।

कुंजे तन्हाई (کنج تنہائی) फा. पुं.–दे. 'कुंजे इंज़िवा'।

कुंजेदहन (کنج دہن) फा. पु.–मुँह का दहाना, मुँह का कोना।

कुंजेरां (کنجران) फा. पुं.–रान की जड़, चिड्ढा।

कुंजे लहद् (کنج لحد) फा. अ. पुं.–क़ब्र का कोना, क़ब्र का एकांत स्थान।

कुंदः (کندہ) फा. पुं.–लकड़ी का मोटा और छोटा टुकड़ा; बंदूक़ का कुंदा।

कुंदःकार (کندہکار) फा. वि.–दे. शु. उच्चारण, 'कंदःकार'।

कुंदः कारी (کندہکاری) फा.स्त्री.–दे.शु. उच्चारण 'कंदःकारी'।

कुंद (کند) फा वि.–मंद, मूढ़, भोथरा; मंद, सुस्त, आलसी।

कुंदए नातराश (کندہ ناتراش) फा. पुं.–अख्खड़, उजड्ड, असभ्य, घामड़, बुद्धू, बिना तराशी लकड़ी का मोटा टुकड़ा, लाक्षणिक अर्थ मूर्ख।

कुंदएपा (کندہ پا) फा. पुं.–एक मोटी और भारी लकड़ी जिसमें कई छेद होते हैं जिनमें अपराधी के पाँव डाल दिये जाते हैं।

कुंदज़ेह्न (کندذہن) फा. अ. वि.–जिसका ज़ेह्न तेज़ न हो, मंदप्रतिभ।

कुंदपीर (کندپیر) फा. स्त्री.–बहुत बुढ़िया स्त्री, सठियाई मूर्खा स्त्री।

कुंदाक़ (قنداق) तु. पुं.–बंदूक का कुंदा।

कुंदावर (کنداور) फा. पं.–मेधावी, दाना; वैज्ञानिक, हकीम; पहलवान, मल्ल।

क़ुंदुज़ (قندز) अ. पुं.–कुत्ते के प्रकार का एक जंतु, जिसकी खाल से पोस्तीन बनते हैं; उस जानवर की पोस्तीन; जल-कुक्कुर, पानी का कुत्ता।

कुंदुर (کندر) फा. पुं.–एक गोंद जो दवा के काम आता है।

कुंदुलान (کندلان) तु. पुं.–वह बड़ा ख़ेमा जो बादशाह के दरवाज़े पर लगाया जाता है।

कुंदुश (کندش) अ. अव्य.–दे. कुंदुर; दे. 'अक़्अक़'।

कुंदू (کندو) फा. पुं.–पात्र, बरतन।

कुंदूएआब (کندوۓ آب) फा. पुं.–पानी की टंकी या हौज़।

कुंदूएग़ल्लः (کندوۓ غلہ) फा. पुं.–नाज का कोठार या बखारी।

क़ुऊद (قعود) अ. पुं.–बैठने का भाव, बैठक; नमाज़ में बैठने का अमल।

क़ुक़्नुस (ققنس) अ. पुं.–एक बहुत ही मधुरस्वर चिड़िया जिससे यूनानियों ने गानविद्या सीखी, इसके गाने से आग लग जाती है।

कुख़ कुख़ (کخ کخ) फा. अव्य.–खाँसने का स्वर।

क़ुच (قچ) तु. पुं.–मेढ़ा, नर भेड़ जिसके सींग होते हैं, और जो लड़ाई के काम आता है।

क़ुज़ह (قزح) अ. पुं.–वह फ़िरिश्ता जो बाद्लों का प्रबंध करता है, इंद्र।

कुजा (کجا) फा. अव्य.–कहाँ, किस स्थान पर।

कुज़ाअः (قضاعہ) अ. पुं.–एक समुद्री जंतु जिसके अंडकोष से 'जुंदबे दस्तर' निकलता है, जो दवा में प्रयुक्त होता है।

कुज़ाज़ (کزاز) अ. पुं.–रगों और पट्ठों के खिंचाव से उत्पन्न होनेवाली एक पीड़ा।

क़ुज़ात (قضات) अ. पुं.–'क़ाज़ी' का बहु., निकाह पढ़ानेवाले क़ाज़ी; न्यायकर्ता क़ाज़ी।

क़ुज़ुर (قزر) अ. स्त्री.–अपवित्रता, गंदगी, पलीदी।

कुतल (کوتل) तु. पुं.–ख़ास सवारी का घोड़ा, 'कोतल' भी प्रचलित।

क़ुतास (قوتاس) तु. पं.–पहाड़ी गाय (सुरा गाय) की पूँछ, जिससे मोरछल बनता है।

क़ुतुन (قطن) अ. पुं.–कपास; कपास का खेत; रुई, तूल।

कुतुब (کتب) अ. स्त्री.–'किताब' का बहु., पुस्तकें, किताबें।

कुतुबफ़रोश (کتب فروش) अ.फा. वि.–पुस्तकें बेचनेवाला।

कुतुबफ़रोशी (کتب فروشی) अ.फा. स्त्री.–पुस्तकें बेचने का काम।

क़ुतूफ़ (قطوف) अ. पुं.–'क़त्फ़' का बहु., मेवे, फल आदि।

कुत्कः (کتکہ) तु. पुं.–मोटा और छोटा डंडा।

क़ुत्ताअ (قطاع) अ. वि.–'क़ाते' का बहु., काटनेवाले।

क़ुत्ता उत्तरीक़ (قطاع الطریق) अ. वि.–राह में लूटनेवाले, डाकू, लुटेरे, बटमार।

क़ुत्ती (قتی) तु. स्त्री.–पिटारी, संदूक़ची।

क़ुत्न (قطن) अ. पुं.–कपास; रुई, दे. 'क़ुतुन', दो. शु. हैं।

क़ुत्नी (قطنی) अ. पुं.–सूत का बना हुआ कपड़ा; रेशम और सूत मिला हुआ कपड़ा।

क़ुत्ब (قطب) अ. पुं.–पृथ्वी का धुरा, ध्रुव; एक तारा जो अपने स्थान पर स्थिर रहता है, ध्रुव तारा; एक प्रकार के मुसलमान ऋषि जिनके सिपुर्द कोई बड़ा इलाक़ा होता है।

क़ुत्बनुमा (قطب نما) अ. फा. पुं.–दिशा बतानेवाला यंत्र, दिग्दर्शक यंत्र।

क़ुत्बे जुनूबी (قطب جنوبی) अ. पुं.–दक्षिणी ध्रुव।

क़ुत्बे शिमाली (قطب شمالی) अ. पुं.–उत्तरी ध्रुव।

क़ुत्बैन (قطبین) अ. पुं.–उत्तरी और दक्षिणी दोनों ध्रुव।

क़ुत्र (قطر) अ. पुं.–वह रेखा जो किसी परिधि से गुज़रती हुई, उसे दो बराबर के भागों में बाँट दे, व्यास।

क़ुत्रुब (قطرب) अ. पुं.–एक बहुत छोटा कीड़ा जो पानी पर दौड़ता रहता है और कभी नहीं थमता; पागलपन की एक क़िस्म, इस रोग का रोगी किसी एक स्थान पर नहीं ठहरता और सब से भागता है।

क़ुदमा (قدما) अ. पुं.–'क़दीम' का बहु., पुराने लोग; प्राचीन विद्वान् लोग; प्राचीन वैज्ञानिक लोग।

क़ुदुस (قدس) अ. वि.–पवित्र, पाक; पवित्रता, पाकीज़गी।

क़ुदूम (قدوم) अ. पुं.–आगमन, पदार्पण, आना।

क़ुदूर (قدور) अ. स्त्री.–'क़िद्र' का बहु., हाँड़ियाँ, डेगचियाँ।

कुदूरत (کدورت) अ. स्त्री.–मैल, मलिनता, गँदलापन; मनोमालिन्य, शकररंजी।

क़ुद्दूस (قدوس) अ. वि.–अत्यंत पवित्र, बहुत ही पाक; ईश्वर का एक नाम।

क़ुद्रत (قدرت) अ. स्त्री.–प्रकृति, निसर्ग, नेचर, फ़ित्रत; सामर्थ्य, शक्ति, मक़्दूर; दैवी माया, ख़ुदा की क़ुदरत; वश, ज़ोर; शक्ति, ताक़त; समृद्धि, दौलतमंदी।

क़ुद्रतन (قدرتاً) अ. वि.–क़ुदरती तौर पर।

क़ुद्रती (قدرتی) अ. वि.–प्राकृतिक, नेचुरल; ईश्वरीय, दैवी, ख़ुदाई; क़ुदरत से सम्बन्धित।

क़ुद्रते हक़ (قدرت حق) अ. स्त्री.–ईश्वर की माया, ख़ुदा की क़ुदरत।

क़ुद्स (قدس) अ. पुं.–पवित्रता, पाकीज़गी; पवित्र, पाक; यरोशलम का एक पहाड़।

क़ुद्सियाँ (قدسیاں) अ. पुं.–'क़ुद्सी' का बहु., फ़िरिश्ते; ऋषिगण, औलिया अल्लाह।

क़ुद्सी (قدسی) अ. वि.–फ़िरिश्ता, देवता।

क़ुद्सी सिफ़ात (قدسی صفات) अ. वि.–फ़िरिश्तों जैसे गुणवाला, देवोपम, देवात्मा।

कुन (کن) फा. प्रत्य.–करनेवाला, जैसे 'कारकुन'–काम करनेवाला।

कुन (کن) अ. क्रि.–हो जा, ये शब्द ईश्वर की ज़बान से निकले थे, जिनसे सृष्टि की रचना हुई।

कुनाम (کنام) फा. पुं.–पशुओं का निवासस्थान; चिड़ियों का घोंसला; चरागाह, गोचर।

क़ुनार (قنار) अ. पुं.–लंबी लकड़ी या लोहे की सलाख़ जिस पर चिकवे बकरी की खाल उधेड़कर टाँगते हैं।

कुनार (کنار) फा. पुं.–बेर, बेरी, कोल, बदरी।

कुनारे दश्ती (کنار دشتی) फा. पुं.–जंगली बेर, झरबेरी।

कुनासः (کناسہ) अ. पुं.–झाड़ू में बटोरा हुआ कूड़ा-करकट।

कुनिश्त (کنشت) फा. पुं.–उपासनागृह, इबादतख़ाना; मूर्तिगृह, बुतख़ाना; अग्निशाला, आतशकदा।

क़ुनुक़ (قنق) अ. पुं.–मेहमान, अतिथि, आगंतुक।

क़ुनूअ (قنوع) अ. पुं.–क़ाने' होना, निःस्पृह होना, जो कुछ मिल जाय उसी पर संतुष्ट रहना।

कुनूज़ (کنوز) अ. पुं.–'कंज़' का बहु., ख़ज़ाने, निधियाँ।

क़ुनूत (قنوت) अ. पुं.–आज्ञापालन करना, फ़र्माबरदारी करना; नमाज़ में चुप खड़ा होना; दुआ पढ़ना।

क़ुनूत (قنوط) अ. पुं.–निराशा, नाउम्मेदी।

क़ुनूती (قنوطی) अ. वि.–निराश, नाउम्मेद; निराशावादी, जिसका विचार हो कि उसे किसी काम में सफलता न होगी।

क़ुनूतीयत (قنوطیت) अ. स्त्री.–निराशावाद।

कुन्नियत (کنیت) अ. स्त्री.–दे. शु. उच्चारण 'कुन्यत'।

क़ुन्फ़ज़ (قنفز) अ. स्त्री.–दे. 'कुन्फ़ुज़' दो. शु. हैं।

क़ुन्फ़ुज़ (قنفز) अ. स्त्री.–साही, सेहाँ, एक जंतु जिसके शरीर पर काँटे होते हैं।

क़ुन्यः (قنیہ) अ. पुं.–पूँजी, सरमाया।

कुन्यत (کنیت) अ. स्त्री.–वह नाम जिसमें अरबी परंपरा के अनुसार अपने पिता, माता या लड़के का सम्बन्ध प्रकट किया जाय, जैसे–'अबुलहसन' या 'उम्मेकुल्सूम'; उपाधि, लक़ब।

कुफ़ात (کفات) अ. पुं.–'काफ़ी' का बहु., बुद्धिमान् लोग।

क़ुफ़ुल (قفل) अ. पुं.–ताला, द्वारयंत्र, तालिका।

कुफ़ूर (کفور) अ. पुं.–कृतघ्नता, अकृतज्ञता, नाशुक्री।

क़ुप्फ़ः (قفہ) अ. पुं.–उच्च, ऊँचा; ऊँची भूमि; ऊँचा स्थान।

कुफ़्फ़ार (کفار) अ. पुं.–'क़ाफ़िर' का बहु., काफ़िर लोग, नास्तिक लोग।

कुफ़्र (کفر) अ. पुं.–अस्वीकृति, क़बूल न करना; कृतघ्नता, अकृतज्ञता, नाशुक्री।

कुफ़्र आश्ना (کفر آشنا) अ. फा. वि.–जिसे कुफ़्र से प्रेम हो, जो काफ़िरों से प्रेम करता हो, जो स्वयं आधा काफ़िर हो, पाप-परायण।

कुफ़्रान (کفران) अ. पुं.–कृतघ्नता, एहसान फ़रामोशी।

कुफ़्राने ने'मत (کفران نعمت) अ. पुं.–ईश्वर की दी हुई ने'मतों (नियामतों) की अकृतज्ञता।

कुफ़्रिस्तान (کفرستان) अ. फा. पुं.–काफ़िरों के रहने का स्थान; ऐसा स्थान जहाँ अत्याचारी लोगों के कारण न्याय और नीति का व्यवहार न हो।

कुफ़्रोइल्हाद (کفروالحاد) अ. पुं.–बेदीनी, नास्तिकता।

क़ुफ़्ल (قفل) अ. पु.–ताला, द्वारयंत्र, तालिका।

क़ुफ़्ल शिकनी (قفل شکنی) अ.फा. स्त्री.–घर या दुकान आदि का ताला टूटना, चोरी होना।

क़ुफ़्ले वस्वास (قفل وسواس) अ. पुं.–गोरखधंधा।

क़ुबब (قبب) अ. पुं.–'क़ुब्बः' का बहु., क़ुब्बे, गुमटियाँ, छोटे गुंबद।

कुबरा (کبرا) अ. पुं.–'कवीर' का बहु., बड़े लोग, प्रतिष्ठित जन।

क़ुबुल (قبل) अ. पुं.–'क़बील' का बहु., दल, गरोह; सामने की वस्तु, सामने का रुख़; सामने का शरीर।

क़ुबूब (قبوب) अ. पुं.–धान का सूखना; कोलाहल करना, शोर मचाना; शत्रुता और लड़ाई; शरीर की खाल और मांस का मुरझाना।

क़ुबूर (قبور) अ. स्त्री.–'क़ब्र' का बहु., क़ब्रें।

क़ुबूल (قبول) अ. पुं.–सामने आना, उपस्थित होना।

क़ुब्बः (قبه) अ. पुं.–छोटा गुंबद, बुर्जी, गुमटी।

क़ुब्बरः (قبره) अ. पुं.–अबाबील पक्षी; सुर्ख़ाब पक्षी।

कुब्रा (کبریٰ) अ. स्त्री.–'अक्बर' का स्त्री., बहुत बड़ी, जैसे 'क़ियामते कुब्रा', बहुत बड़ी आपत्ति।

क़ुब्लः (قبله) अ. पुं.–चुंबन, बोसा, चूमा।

क़ुब्ल (قبل) अ. स्त्री.–भग, योनि, फ़र्ज।

क़ुब्ह (قبح) अ. पुं.–दोप, ऐब, खराबी; त्रुटि, ग़लती; भोंडापन।

क़ुम (قم) अ. क्रि.–'उठ बैठ', 'खड़ा हो जा', ये वे शब्द हैं जिनके उच्चारण से हज़रत ईसा मृत व्यक्ति को जीवित कर देते थे।

कुम[म्म] (کم) अ.–आस्तीन।

क़ुमल (قمل) अ. स्त्री.–वह छोटा कीड़ा जो बालों और कपड़ों में पड़ जाता है, जूँ।

कुमाचः (کماچه) तु. पुं.–एक प्रकार की रोटी।

क़ुमामः (قمامه) अ. पुं.–कूड़ा-करकट जो घर झाड़ने से निकले; मनुष्यों का दल।

क़ुमाश (قماش) अ. पुं.–वस्त्र, कपड़ा, लिबास; घर का सामान; गुण, हुनर।

कुमुक (کمک) तु. स्त्री.–सहायता, मदद, काम में अथवा युद्ध में।

कुमेज़ (کمیز) फा. पुं.–पेशाब, मूत्र, मूत।

कुमैत (کمیت) अ. पुं.–कालिमा लिये हुए लाल घोड़ा, जिसकी पूँछ और अयाल के बाल काले हों; अंगूर की लाल मदिरा।

क़ुम्क़ुमः (قمقمه) अ. पुं.–काँच का गोल लट्टू जो छतों की सजावट के काम आता है; बिजली का बल्ब, कूज़ा; पियाला।

क़ुम्मः (قمه) अ. पुं.–हर चीज़ का सिरा; हर चीज़ की ऊँचाई, चोटी; जनसमुदाय, गरोह।

क़ुम्मल (قمل) अ. पुं.–'क़ुम्मलः' का बहु., किलनियाँ, जो पशुओं की देह में चिपककर उनका रक्त पीती हैं; टिड्डियाँ।

कुम्मस्रा (کمثریٰ) अ. पुं.–अमरूद, एक प्रसिद्ध फल।

क़ुम्मा (قما) तु. स्त्री.–दासी, लौंडी, कनीज़।

कुम्मैत (کمیت) अ. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'कुमैत'।

क़ुम्री (قمری) अ. स्त्री.–एक प्रसिद्ध सफ़ेद पक्षी।

क़ुम्ल (قمل) अ. पुं.–जूँ।

कुम्लक (کوملک) तु.पुं.–वस्त्र, लिबास; कुर्ता, क़मीस।

कुयूस (کیوس) अ. पुं.–'कासः' का बहु., पियाले, कटोरे।

कुरंग (کرنگ) फा. पुं.–लाल रंग का घोड़ा।

कुरः (کره) अ. पुं.–वर्तुल, परिधि, घेरा; गेंद, कंदुक; गोला, मंडल।

क़ुर [र्र] (قر) अ. पुं.–जाड़े की ऋतु, शीतकाल।

कुरए अर्ज़ (کرهٔ ارض) अ. पुं.–भूगोल, भूमंडल।

कुरए आतश (کرهٔ آتش) अ. फा. पुं.–अग्निमंडल।

कुरए आफ़्ताब (کرهٔ آفتاب) अ.फा. पुं.–रविमंडल, सूर्यमंडल।

कुरए आब (کرهٔ آب) अ. फा. अव्य.–सारी पृथ्वी पर फैला हुआ जल।

कुरए आस्माँ (کرهٔ آسماں) अ. फा. पुं.–आकाशमंडल, खगोल।

कुरए ज़मीं (کرهٔ زمیں) अ. फा. पं.–दे. 'कुरए अर्ज़'।

कुरए ज़म्हरीर (کرهٔ زمہریر) अ. फा. पुं.–वह वायुमंडल जो बहुत ही ठंडा है।

कुरए नार (کرهٔ نار) अ. पुं.–अग्निमंडल।

कुरए फ़लक (کرهٔ فلک) अ. पुं.–दे. 'कुरए आस्मान'।

कुरए बाद (کرۂ باد) अ.फा. पुं.–वायुमंडल।

कुरए माह (کرۂ ماہ) अ. फा. पुं.–चंद्रमंडल।

कुरए शम्स (کرۂ شمس) अ. पुं.–दे. 'कुरए आफ़ताब'।

कुरए हवा (کرۂ ہوا) अ. पुं.–दे. 'कुरए बाद'।

कुरगः (کورگہ) तु. पुं.–बड़ा नगाड़ा, धौंसा, दुंदुभि।

क़ुरमसाक़ (قرمساق) तु. पुं.–वह निर्लज्ज व्यक्ति जो अपनी पत्नी की कमाई खाता हो।

क़ुरशी (قرشی) अ. वि.–क़ुरैशके वंश से सम्बन्ध रखनेवाला, इस अर्थ में 'क़ुरैशी' अशुद्ध है।

क़ुरा' (قرع) अ. पुं.–'क़ुर्अः' का बहु., पाँसे।

क़ुरा (قرىٰ) अ.पुं.–'क़र्यः' का बहु., बहुत से गाँव, ग्राम-समूह।

कुराअ (کراع) अ. पुं.–गाय-भैंस या बकरी के पाये, पशु की पिंडली; घोड़ों का समूह; पहाड़ की चोटी।

क़ुराजः (قراضہ) अ. पुं.–वह कण जो क़ैंची से कटकर गिरे; चाँदी और सोने का कण।

क़ुरात (قرات) अ. पुं.–'क़ारी' का बहु., क़ारी लोग, क़ुरान को शुद्ध उच्चारण से पढ़नेवाले हाफ़िज़।

क़ुराद (قراد) अ. स्त्री.–किलनी, पशुओं का रक़्त पीनेवाला कीड़ा।

क़ुरान (قران) अ. पुं.–दे. 'कुर्आन', शुद्ध उच्चारण वही है, परंतु फ़ार्सीवालों ने 'क़ुरान' भी लिखा है, अतः यह भी शुद्ध है।

कुरासः (کراسہ) अ. पुं. –ग्रंथ, पुस्तक, किताब; क़ुरान।

क़ुरुत (قوروت) तु. पुं. –दही, दधि।

क़ुरुती (قوروتی) तु. पुं.–एक प्रकार का दलिया जिसमें सूखा दही डाला जाता है।

क़ुरून (قرون) अ. पुं.–'क़र्न' का बहु., बहुत से युग, बहुत से ज़माने; बहुत से सींग।

क़ुरूने ऊला (قرون اولیٰ) अ. पुं.–इस्लाम का प्रारंभिक काल, प्रारंभिक काल, इब्तिदाई ज़माना।

क़ुरूने ख़ालियः (قرون خالیہ) अ. पुं.–पिछले युग, गुज़रे हुए ज़माने।

क़ुरूनेवुस्ता (قرون وسطیٰ) अ. पुं.–इस्लाम का मध्यवर्ती समय; मध्यवर्ती समय, दरमियानी ज़माना।

कुरूब (کروب) अ. पुं.–'कर्ब' का बहु., व्याकुलताएँ; कष्ट, पीड़ाएँ।

क़ुरूह (قروح) अ. पुं.–'क़र्हः' का बहु., बहुत से घाव।

क़ुरैश (قریش) अ. पुं.–अरब का एक प्रतिष्ठित वंश, जिसमें हज़रत महम्मद साहिब उत्पन्न हुए थे।

क़ुरैशी (قریشی) अ. वि.–दे. 'क़ुरशी', शुद्ध वही है, परंतु उर्दू में क़ुरैशी भी बोलते हैं।

कुरोह (کروہ) फा. पुं.–एक कोस या दो मील का अंतर, कोस, क्रोश।

क़ुर्अः (قرعہ) अ. पुं.–पाँसा, पाशक, सारि, शारि।

क़ुर्अः अंदाजः (قرعہ انداز) अ.फा. वि.–पाँसा फेंकनेवाला; शकुन विचारनेवाला।

क़ुर्अः अंदाज़ी (قرعہ اندازی) अ. फा. स्त्री.–पाँसा फेंकना, किसी विषय में निर्णय के लिए पाँसा फेंककर समझौता करना।

क़ुर्अए फ़ाल (قرعہ فال) अ. पुं.–शकुन विचारने के लिए पाँसा फेंकना।

क़ुर्आन (قرآن) अ. पुं.–मुसलमानों का धर्म ग्रंथ, जो उनके मतानुसार आस्मानी किताब है, जिसमें तीस 'पारे', छोटी बड़ी एक सौ चौदह 'सूरतें', ६६४० 'आयतें' और ५४० 'रुकूअ' हैं।

क़ुर्क़ (قرق) तु. पुं.–निषिद्ध, मना किया हुआ; रोका हुआ, वर्जित; देखभाल, निगरानी; रोकना, अलग रखना।

क़ुर्क़ अमीन (قرق امین) तु. अ. वि.–दीवानी या माल का वह कर्मचारी जो डिग्री या मुतालबे में कुर्क़ी करता है।

क़ुर्क़ी (قرقی) तु. स्त्री.–किसी डिग्री आदि में सरकारी कर्मचारी द्वारा जायदाद, माल या रुपये की ज़ब्ती।

कुर्की (کرکی) अ. पुं.–एक पक्षी, कुलंग।

कुर्कुम (کرکم) फा. पुं.–केसर, ज़ा'फ़रान।

कुर्तः (کرتہ) तु. पुं.–पहनने का कमीस जैसा एक वस्त्र।

क़ुर्त (قرط) अ. पुं.–कान में पहनने का बुंदा, लटकन, गोशवारा।

क़ुर्त (قورت) तु. पुं.–दही, जुग़्रात, दधि।

क़ुर्तक़ (قرطق) अ. पुं.–दे. 'कुर्तः'।

क़ुर्तुम (قرطم) अ. पुं.–कुसुम, कड़।

कुर्द (کرد) तु. पुं.–तुर्कों की एक संचारजीवी अर्थात् खानाबदोश जाति, जो प्रायः जंगलों में रहती और बड़ी बहादुर होती है।

कुर्दक (کردی) फा.पुं.–बहुत मोटा-ताज़ा और बलवान् व्यक्ति।

कुर्दिस्तान (کردستان) तु. फ. पुं.–कुर्द जाति के तुर्कों के रहने का प्रदेश।

क़ुर्नक़ (قورنق) तु. पुं.–दास, नौकर; दासी, लौंडी; कनीज़।

क़ुर्नास (قرناس) अ. पुं.–पिशाच, राक्षस, देव; पहाड़ की चोटी।

कुर्नुश (کورنش) तु. स्त्री.–झुककर प्रणाम करना।

क़ुर्ब (قرب) अ. पुं.–समीपता, निकटता, नज़दीकी।

क़ुर्बत (قربت) अ. स्त्री.–सामीप्य, नैकट्य, नज़दीकी; सहवास, मैथुन, सोहबत।

कुर्बत (کربت) अ. स्त्री.—कष्ट, क्लेश, दुःख; शोक, रंज।

क़ुर्बां (قرباں) अ. पुं.—'क़ुर्बान' का लघु., दे. 'क़ुर्बान'।

क़ुर्बांगाह (قرباںگاہ) अ. फा. स्त्री.—वधस्थल, क़ुर्बानी करने का स्थान।

क़ुर्बान (قربان) अ. पुं.—बलि, सदक़ः; न्योछावर, निसार।

क़ुर्बान (قربان) फा. पुं.—गले में पहनने की पेटी जिसमें धनुष लटकाया जाता है।

क़ुर्बानी (قربانی) अ. स्त्री.—किसी पशु का किसी देवता आदि के लिए वध; किसी बड़े काम के लिए जान की भेंट; त्याग, ईसार।

क़ुर्बोजुवार (قرب‌وجوار) अ. पुं.—आसपास, चारों ओर, चहुँपास।

कुर्म (کرم) अ. पुं.—अत्यंत शोक और दुःख।

क़ुर्रः (قرہ) अ. पुं.—ठंडक, शीतलता; सुख, चैन; ज्योति, रौशनी।

कुर्रः (کرہ) अ. पुं.—गधे या घोड़े का बच्चा; कोड़ा, चाबुक, प्रतोद।

क़ुर्रतुलऐन (قرةالعین) अ. पुं.—आँखों की ठंडक, आँखों की ज्योति, इस शब्द का प्रयोग प्रायः पुत्र के लिए होता है।

क़ुर्रमसाक़ (قرم ساق) तु. पुं.—दे. शु. उच्चारण 'क़ुरमसाफ़'।

कुर्रासः (کراسہ) अ. पुं.—पुस्तक का एक खंड अथवा अध्याय; क़ुरान का एक पारा।

कुर्रास (کراث) अ. पुं.—गंदना, एक दाना जो दवा में चलता है।

कुर्रासी (کراثی) अ. वि.—गंदने के रंग का, मटमैला।

क़ुर्स (قرص) अ. पुं.—रोटी, नान, रोटिका; टिकिया, वाटिका, दवा की चपटी गोली।

कुर्सी (کرسی) अ. स्त्री.—बैठने का विशेष प्रकार का आसन, आसंदी, चेयर।

कुर्सीनशीं (کرسی‌نشیں) अ. फा. वि.—पदासीन, ओहदेदार; प्रतिष्ठित, संमानित, मुअज़्ज़ज़।

कुर्सीनामः (کرسی‌نامہ) अ. फा. पुं.—खानदान का शजरा, वंशवृक्ष, वंशतालिका, वंशावली।

कुर्सीनुमा (کرسی‌نما) अ. फा. वि.—कुर्सी के आकार-प्रकार का, कुर्सी जैसा।

क़ुर्सेरोइं (قرص‌روئیں) अ. फा. पुं.—घड़ियाल, जो समय बताता है।

क़ुर्हः (قرحہ) अ. पुं.—घाव, ज़ख्म।

कुलंग (کلنگ) फा. पुं.—एक प्रसिद्ध पक्षी, कलिंग।

क़ुलः (قلہ) अ. पुं.—'गिल्ली' जो डंडे से खेली जाती है, और जिस खेल को गिल्ली-डंडा कहते हैं।

कुल (کل) अ. वि.—सर्व, सब, तमाम।

क़ुल (قل) अ. पुं.—किसी बुज़ुर्ग के उर्स में आखिरी फ़ातहः; अंत, समाप्ति, ख़ातिमः; क़ुरान की चार छोटी सूरतें जो प्रायः किसी के फ़ातहः में पढ़ी जाती हैं।

क़ुलआऊज़ी (قل‌آعوزی) अ. पुं.—दे. 'क़ुलाऊज़ी'।

क़ुलक़ुल (قلقل) फा. स्त्री.—सुराही से शराब के निकलने की आवाज़; व्यर्थ की बातचीत, "हँसी के साथ याँ रोना है मिस्ले क़ुलक़ुले-मीना"—ज़ौक़।

क़ुलल (قلل) अ. पुं.—'क़ुल्लः' का बहु., पहाड़ों की चोटियाँ।

कुलह (کلہ) फा. स्त्री.—'कुलाह' का लघु रूप, टोपी; शिश्न, लिंग।

क़ुलाअ (کلاع) अ. पुं.—मुँह आने का रोग, मुँहाँ।

क़ुलाऊज़ी (قلاعوزی) अ. पुं.—कठमुल्ला, रोटियों पर मस्जिद में पड़ा रहनेवाला मुल्ला; बहुत ही तुच्छ, नीच और गर्हित व्यक्ति।

क़ुलाक़ (قلاق) तु. पुं.—कान, कर्ण, गोश।

कुलाग़ (کلاغ) फा. पुं.—जंगली कौआ, डोम काक।

क़ुलाबः (قلابہ) अ. पुं.—दे. 'क़ुल्लाबः' शुद्ध वही है, परंतु उर्दू में 'क़ुलाबः' ही बोलते हैं; किवाड़ों में डालने का लोहे का हल्क़ः, नोना खरोचने का यंत्र।

कुलालः (کلالہ) फा. पुं.—टेढ़े बाल, घूँघरवाले बाल; अलक, ज़ुल्फ़।

कुलाल (کلال) फा. पुं.—मट्टी के बरतन बनानेवाला, कुम्हार, कुंभकार।

कुलाह (کلاہ) फा. पुं.—टोपी; ताज, मुकुट।

क़ुली (قلی) तु. पुं.—सेवक, दास, नौकर; स्टेशनों पर सामान ढोनेवाला व्यक्ति।

कुलीचः (کلیچہ) फा. पुं.—ख़मीरी टिकिया।

कुलुंबः (کلنبہ) फा. पुं.—वह कुलीचः जिसमें हलवा, खोया और मग़ज़ बादाम आदि भरकर घी में पकाते हैं, पिराक, गुझिया।

कुलूख़ (کلوخ) फा. पुं.—ढेला, मट्टी का टुकड़ा, ईंट या पत्थर का टुकड़ा।

कुलूख़अंदाज़ (کلوخ‌انداز) फा. वि.—ढेला मारनेवाला; दुर्ग में बनी हुई दराज़ें जिनमें से बंदूक चलायी जाती है; गोफन, फ़ला ख़न।

कुलूख़अंदाज़ी (کلوخ‌اندازی) फा. स्त्री.—ढेले मारना; क़िले के सूराखों से बंदूक चलाना; गोफन से पत्थर फेंकना।

क़ुलूब (قلوب) अ. पुं.—'क़ल्ब' का बहु., मनुष्यों के हृदय।

कुलूम (کلوم) अ. पुं—'कल्म' का बहु., बहुत-से घाव, बहुत-से ज़ख्म।

कुल्लो (کلو) फा. वि.–महान् व्यक्ति, बड़ा आदमी; रईस, धनवान्; महल्ले या गाँव का मुखिया।

क़ुल्क़तार (قلقطار) फा. पुं.–फिटकरी, एक ओषधि।

क़ुल्क़ास (قلقاس) फा. पुं.–घुइयाँ, अरुई, अर्वी।

कुल्चः (کلچه) फा. पुं.–दे. ‘कुलीचः’।

क़ुल्चाक़ (قلچاق) तु. पुं.–लोहे का दस्ताना।

क़ुल्ज़ुम (قلزم) अ. पुं.–नदी, दर्या; समुद्र, सागर।

क़ुल्त (قلت) फा. स्त्री.–मोठ, एक अन्न।

क़ुल्फ़ः (قلفه) अ. पुं.–ख़तना न किये हुए शिश्न का अग्रभाग, लिंगाग्र।

कुल्फ़त (کلفت) अ. स्त्री.–कष्ट, दुःख, तक़लीफ़; रंज, क्षोभ, ग़म।

क़ुल्बः (قلبه) फा. पुं.–हल, लांगल, खेत जोतने का यंत्र।

कुल्बः (کلبه) फा. पुं.–छोटा-सा घर, झोपड़ा; दुकान का कोना,

क़ुल्बःराँ (قلبهران) फा. वि.–हल चलानेवाला, किसान, खेतिहर, कृषक।

क़ुल्बःरानी (قلبهرانی) फा. स्त्री.–हल चलाना, किसानी, कृषिकर्म।

कुल्बए अह्ज़ाँ (کلبۂ احزان) फा. अ. पुं.–शोकगृह, ग़म का घर, दुखियों के रहने का घर; प्रेमी का घर।

क़ुल्माश (قلماش) फा. पुं.–अनर्गल, व्यर्थ, बेहूदा।

कुल्यः (کلیه) अ. पुं.–शरीर का एक अंग विशेष, गुर्दा।

कुल्यतैन (کلیتین) अ. पुं.–दोनों गुर्दे।

क़ुल्लः (قله) अ. पुं.–पहाड़ की चोटी, शृंग; हर चीज़ की चोटी; बड़ा घड़ा जिसमें छः सौ रतल (७½ मन) पानी आता है; मौन, डहर; तलवार की मूठ, क़ब्ज़ा।

क़ुल्लए कोह (قلۂ کوه) अ.फा. पुं.–पहाड़ की चोटी।

क़ुल्लग़्ची (قلغچی) तु. पुं.–वह व्यक्ति जो नौकर तो हो, परन्तु राज्य का नौकर न हो, अधिकारी का निजी नौकर।

कुल्लतैन (قلتین) दो घड़े पानी अर्थात् १५ मन पानी।

क़ुल्लाज (قلاج) तुं. पुं.–किसी चीज का बलपूर्वक खींचना, जैसे–धनुष का; दोनों फैले हुए हाथों की लम्बाई।

क़ुल्लाबः (قلابه) अ. पुं.–दे. ‘क़ुलाब’, उर्दू में वही प्रचलित है, परन्तु शुद्ध ‘क़ुल्लाबः’ है, क़ुलाबः भी प्रचलित।

क़ुल्लाब (قلاب) अ. पुं.–लोहे का टेढ़ा काँटा जिसमें कोई चीज़ लटकाई जा सके।

कुल्लियः (کلیه) अ. पुं.–ऐसा नियम जो एक जैसे विषय में सब पर लागू हो सके, व्यापक नियम।

कुल्लियात (کلیات) अ. पुं.–‘कुल्लियः’ का बहु., बहुत से व्यापक नियम; किसी शायर की तमाम रचनाओं का संग्रह, जिसमें ग़ज़लें, मस्नवियाँ, कत्आत, मुसद्दस, मुख़म्मस, नज़्में आदि सभी चीज़ें होती हैं, ‘दीवान’ में केवल ग़ज़लें होती हैं।

कुल्ली (کلی) अ. वि.–कुल से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु; पूरी तौर पर; समग्र, समस्त, सब।

कुल्लूब (کلوب) अ. पुं.–लोहारों की सँड़सी।

क़ुवा (قوی) अ. पुं.–‘क़ुव्वत’ का बहु., शक्तियाँ, ज़ोर, बल; इंद्रियाँ, हवास।

क़ुवाए नफ़्सानी (قوائے نفسانی) अ. पुं.–दृष्टि, घ्राण, श्रवण, स्पर्श, स्मरण, स्वाद और विचार आदि की शक्तियाँ।

क़ुवाए शह्वानी (قوائے شہوانی) अ. पुं.–जननेंद्रिय।

क़ुवाए हैवानी (قوائے حیوانی) अ. पुं.–जीवन-रक्षा करनेवाली शक्तियाँ जो हृदय की गति को संतुलित अवस्था में रखकर, शरीर की धातुओं को दूषित होने से बचाती और शारीरिक शक्ति को बढ़ाती हैं।

क़ुवारः (قواره) अ. पुं.–कतरन, टुकड़ा, किसी वस्तु के चारों ओर से कटी हुई वस्तु।

क़ुव्वः (قوه) अ. पुं.–दे. ‘क़ुव्वत’।

कुव्वः (کوه) अ. पुं.–दीवार का छेद; ताक़, ताखा; दरीचा।

क़ुव्वत (قوت) अ. स्त्री.–शक्ति, बल, ज़ोर; सामर्थ्य, ताक़त, मक्दिरत; इंद्रिय, हिस।

क़ुव्वते आज़्मा (قوت آزما) अ.फा. वि.–बल दिखानेवाला, किसी कार्य में बल लगानेवाला।

क़ुव्वते आज़्माई (قوت آزمائی) अ. फा. स्त्री.–किसी कार्य में बल लगाना; बल दिखाना, बल-प्रदर्शन।

क़ुव्वतबख़्श (قوت بخش) अ. फा. वि.–ताक़त देनेवाला, ताक़त बढ़ानेवाला, बलदायक, बलवर्द्धक।

क़ुव्वते आख़िज़ः (قوت آخذه) अ. स्त्री. –लेने की क़ुव्वत, ग्रहण-शक्ति।

क़ुव्वते इरादी (قوت ارادی) अ. स्त्री.–इरादे की क़ुव्वत, संकल्प-शक्ति।

क़ुव्वते ईजाद (قوت ایجاد) अ. स्त्री.–नयी बात पैदा करने की शक्ति, आविष्कार-शक्ति, उद्भावना, कल्पशक्ति।

क़ुव्वते कशिश (قوت کشش) अ. फा. स्त्री.–खींचने की क़ुव्वत, आकर्षण-शक्ति।

क़ुव्वते गोयाई (قوت گویائی) अ. फा. स्त्री.–दे. ‘कुव्वते नातिक़ः’।

क़ुव्वते ज़ाइक़ः (قوت ذائقه) अ. स्त्री.–चखने की क़ुव्वत, स्वादेंद्रिय।

क़ुव्वते जाज़िबः (قوت جاذبه) अ. स्त्री.–जज़्ब करने या अपनी ओर खींचने की क़ुव्वत, आकर्षण-शक्ति।

क़ुव्वते दाफ़िअः (قوت دافعه) अ. स्त्री.–हटाने की क़ुव्वत, निवारण-शक्ति, उत्क्षेंद्रक-शक्ति।

क़ुव्वते नातिक़ः (قوت ناطقه) अ. स्त्री.–बोलने की क़ुव्वत, वाणी, वाक्‌शक्ति, वाचन-शक्ति, वाक्य-शक्ति।

क़ुव्वते नामियः (قوت نامیه) अ. स्त्री.–बढ़ानेवाली शक्ति, विकास-शक्ति।

क़ुव्वते फ़िक्र (قوت فکر) अ. स्त्री.–विचार करने की शक्ति, विचार-शक्ति।

क़ुव्वते फ़ैसलः (قوت فیصله) अ. स्त्री.–दो बातों में अच्छा बुरा सोचकर अच्छी बात ग्रहण करने की शक्ति, अच्छे-बुरे में तमीज़ करने की क़ुव्वत, विवेचन-शक्ति, निर्णय-शक्ति।

क़ुव्वते बरदाश्त (قوت برداشت) अ. फा. स्त्री.–कष्ट या कड़वी बात सहने की शक्ति, सँभार, सहनशीलता, सहन-शक्ति।

क़ुव्वते बर्क़ी (قوت برقی) अ. स्त्री.–बिजली की शक्ति, विद्युत्-शक्ति।

क़ुव्वते बाज़ू (قوت بازو) अ. फा. स्त्री.–अपनी निजी मेहनत, निजी परिश्रम, बाहुबल।

क़ुव्वते बासिरः (قوت باصره) अ. स्त्री.–देखने की शक्ति, नेत्रशक्ति, दृष्टिशक्ति।

क़ुव्वते बाह (قوت باه) अ. स्त्री.–स्त्री-प्रसंग की क़ुव्वत, रति-शक्ति, काम-शक्ति।

क़ुव्वते मर्दानगी (قوت مردانگی) अ.फा. स्त्री.–दे. 'क़ुव्वते बाह'।

क़ुव्वते मासिकः (قوت ماسکه) अ. स्त्री.–सुरक्षा करनेवाली शक्ति।

क़ुव्वते मुतख़ैयिलः (قوت متخیله) अ. स्त्री.–ख्याल करने की क़ुव्वत, विचार-शक्ति, कल्पना-शक्ति।

क़ुव्वते मुमैयिज़ः (قوت ممیزه) अ. स्त्री.–दो चीज़ों में भेद करने की शक्ति, विवेचन-शक्ति।

क़ुव्वते मुतसर्रिफ़ः (قوت متصرفه) अ. स्त्री.–किफ़ायतशारी की ताक़त, मितव्यय की शक्ति, अधिकार करने की शक्ति।

क़ुव्वते मुद्रिकः (قوت مدرکه) अ. स्त्री.–दे. 'क़ुव्वते मुफ़क्किरः'।

क़ुव्वते मुफ़क्किरः (قوت مفکره) अ. स्त्री.–विचार करने की शक्ति, विचार-शक्ति।

क़ुव्वते मुशाहदः (قوت مشاهده) अ. स्त्री.–दे. 'क़ुव्वते बासिरः'।

क़ुव्वते रूहानी (قوت روحانی) अ. स्त्री.–आत्मा की शक्ति, आत्मबल, मनोबल, आत्मशक्ति।

क़ुव्वते लामिसः (قوت لامسه) अ. स्त्री.–छूने की शक्ति, स्पर्श-शक्ति।

क़ुव्वते वाहिमः (قوت واهمه) अ. स्त्री.–भ्रम में डालनेवाली शक्ति, कल्पना-शक्ति।

क़ुव्वते शाम्मः (قوت شامه) अ. स्त्री.–सूँघने की शक्ति, घ्राणशक्ति।

क़ुव्वते सामिअः (قوت سامعه) अ. स्त्री.–सुनने की क़ुव्वत, श्रवण-शक्ति।

क़ुव्वते हाज़िमः (قوت هاضمه) अ. स्त्री.–हज़म करने की शक्ति, पाचन-शक्ति।

क़ुव्वते हाफ़िज़ः (قوت حافظه) अ. स्त्री.–याद रखने की शक्ति, स्मरण-शक्ति।

क़ुव्वते हास्सः (قوت حاسه) अ. स्त्री.–दरयाफ़्त करने की शक्ति, जसे–श्रवण-शक्ति, स्पर्श-शक्ति आदि।

कुश (کش) फा. प्रत्य.–मार डालनेवाला, जैसे–'जरासीम कुश' कीड़ों को मार डालनेवाला।

क़ुश (قوش) तु. पुं.–बाज़, श्येन पक्षी।

कुशक (کوشک) फा. पुं.–दे. शु. उच्चारण 'कुश्क' और 'कोशक'।

कुशा (کشا) फा. प्रत्य.–खोलनेवाला, जैसे–'क़ब्ज़कुशा' क़ब्ज़ को खोलनेवाला।

कुशाइश (کشائش) फा. स्त्री.–विस्तार, 'कुशादगी'; वृद्धि, बढ़ती।

कुशादः (کشاده) फा. वि.–चौड़ा चकला, फैला हुआ, विस्तृत, वसीअ।

कुशादःअब्रू (کشاده ابرو) फा. वि.–जिसकी दोनों भौंहों के बीच काफ़ी अन्तर हो।

कुशादःकफ़ (کشاده کف) फा. वि.–जिसके हाथ देने के लिए खुले रहते हों, दानशील, वदान्य, मुक्तहस्त।

कुशादःजबीं (کشاده جبیں) फा. वि.–हँसमुख, ख़ुशमिज़ाज।

कुशादःदस्त (کشاده دست) फा. वि.–दे. 'कुशादः कफ़'।

कुशादःदिल (کشاده دل) फा. वि.–उदारचित्त, उदारहृदय, मुक्त हृदय, फ़राख़दिल।

कुशादःनफ़स (کشاده نفس) फा. अ. वि.–वाचाल, मुखर, बातूनी, बकवासी।

कुशादःपेशानी (کشاده پیشانی) फा.वि.–दे. 'कुशादःजबीं'।

कुशादःरू (کشاده رو) फा. वि.–जिसका मुँह प्रसन्नता के कारण खिला हुआ हो, प्रफुल्लवदन।

कुशाद (کشاد) फा. स्त्री.–हर्ष, ख़ुशी; प्राप्ति, लाभ, नफ़ा; विजय, फतह; उद्‌घाटन, खुलना।

कुशादगी (کشادگی) फा. स्त्री.–विस्तार, फैलाव; गुंजाइश, समाई; खुलापन; प्रसन्नता, उदारता।

कुशादनी (کشادنی) फा. वि.–ख़ुलने योग्य।

कुशादे कार (کشادکار) फा. स्त्री.–सफलता, कामयाबी; इच्छापूर्ति, मक़्सद बरारी।

क़ुशा'रीरः (قشعریرہ) अ. पुं.–शरीर के रोंगटे खड़े हो जाना।

कुशिंदः (کشندہ) फा. वि.–मारनेवाला, वध करनेवाला।

क़ुशुन (قوشون) तु. पुं.–सेना, फ़ौज, लश्कर, दे. 'क़ुशून'।

कुशूदः (کشودہ) फा. वि.–खुला हुआ, खोला हुआ।

कुशद (کشود) फा. स्त्री.–खुलाव, खुलापन।

कुशूदे कार (کشودکار) फा. स्त्री.–दे. 'कुशादे कार'।

क़ुशून (قوشون) तु. पुं.–दे. 'क़ुशुन', शुद्ध वही है, परन्तु क़ुशून भी बोला और लिखा जाता है।

क़ुशूर (قشور) अ. पुं.–'क़श्र' का बहु., छिलके, छालें।

कुशूस (کشوث) अ. पुं.–एक मशहूर दाने जो दवा के काम आते हैं, तुख़्मे कशूस।

कुश्क (کشک) फा. पुं.–प्रासाद, भवन, महल; दे. 'कोशक'।

कुश्तः (کشتہ) फा. वि.–मारा हुआ, वध किया हुआ, (पुं.) भस्म, फूँकी हुई धातु; आशिक़, प्रेमी।

कुश्त (کشت) फा. पुं.–मार-धाड़, इस शब्द का प्रयोग ख़ून के साथ होता है और 'कुश्तो ख़ून' बोलते हैं।

कुश्तए इश्क़ (کشتۂ عشق) फा. अ. वि.–प्रेमाग्नि में भस्म किया हुआ, इश्क़ का मारा हुआ, अर्थात् प्रेमी, आशिक़।

कुश्तए ग़म (کشتہ غم) फा. अ. वि.–दे. 'कुश्तए इश्क़'।

कुश्तए नाज़ (کشتۂ ناز) फा. वि.–प्रेमिका की अदाओं का मारा हुआ, प्रेमी, आशिक़।

कुश्तए हिज्र (کشتۂ ہجر) फा. अ. वि.–प्रेयसी की विरहाग्नि में जला हुआ, फ़िराक़ का मारा हुआ, विरह-विदग्ध।

कुश्ती (کشتی) फा. स्त्री.–दो पहलवानों का परस्पर बाहु-युद्ध, नियुद्ध, मल्लयुद्ध, व्यायाम-युद्ध, बाहुयुद्ध।

कुश्तीगीर (کشتی گیر) फा. वि.–कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान, मल्ल, नियोद्धा।

कुश्तीबाज़ (کشتی باز) फा. वि.–दे. 'कुश्ती गीर'।

कुश्तोख़ून (کشت وخون) फा. पुं.–मारकाट, कटाघनी, रक्तपात, ख़ूँरेज़ी।

कुश्नीज़ः (کشنیزہ) फा. पुं.–अंगूर के फल जो प्रारम्भ में धनिए के बराबर होते हैं।

कुश्नीज़ (کشنیز) फा. पुं.–धनिया, धान्यक, मसाले की एक वस्तु।

कुस (کس) फा. स्त्री.–भग, योनि, फ़ुर्ज।

कुसूफ़ (کسوف) अ. पुं.–सूर्यग्रहण, सूरज गहन।

क़ुसूर (قصور) अ. पुं.–'क़स्र' का बहु., बहुत से भवन, हवेलियाँ; दोष, अपराध, जुर्म; त्रुटि, ग़लती; न्यूनता, कमी।

कुसूर (کسور) अ. स्त्री.–'कस्र' का बहु., भिन्न संख्याएँ।

क़ुसूरवार (قصوروار) अ. फा. वि.–अपराधी, दोषी, मुल्ज़िम।

कुसूरे आ'शारियः (کسور اعشاریہ) अ. स्त्री.–दशमलव भिन्न, कुसूर या कसर=भिन्न, आशारिया=दशमलव।

क़ुस्त (قسط) अ. स्त्री.–एक वनौषधि, कूट।

क़ुस्तनतीनियः (قسطنطینیہ) अ. पुं.–यूरोपीय टर्की की राजधानी, इस्तम्बोल।

क़ुस्ता (قسطا) फा. पुं.–पार्सियों का एक धार्मिक ग्रंथ।

कुह (کہہ) फा. पुं.–'कोह' का लघु., पहाड़, पर्वत (यौगिक शब्दों में प्रयुक्त होता है, जैसे–'कुहसार')।

कुहन (کہن) फा. वि.–पुरातन, पुराना।

कुह नसाल (کہن سال) फा. वि.–वयोवृद्ध, बूढ़ा।

क़ुहाब (قحاب) अ. पुं.–खाँसी।

कुहूलत (کہولت) अ. स्त्री.–अधेड़ आयु का होना, काले और सफ़ेद बालोंवाला होना।

कुह्नः (کہنہ) फा. वि.–पुराना, पुरातन; क़दीमी, हमेशा का; बहुत दिनों का।

कुहनःमश्क़ (کہنہ مشق) फा. अ. वि.–जिसे किसी काम का पुराना अभ्यास हो, चिराभ्यस्त।

कुह्नःमश्क़ी (کہنہ مشقی) फा. अ. स्त्री.–किसी काम का पुराना अभ्यास, चिराभ्यास।

कुहनःसाल (کہنہ سال) फा. वि.–बूढ़ा, जरठ, वयोवृद्ध।

कुह्नःसाली (کہنہ سالی) फा. स्त्री.–बुढ़ापा, जरा, वद्धावस्था।

कुह्नगी (کہنگی) फा. स्त्री.–पुरानापन, प्राचीनता; जीर्णता, फटा पुरानापन; बहुत दिनों का हो जाना।

क़ुह्बः (قحبہ) अ. स्त्री.–व्यभिचारिणी, परपुरुषगामिनी, फ़ाहिशः; गणिका, वारमुखी, वेश्या, रंडी।

क़ुह्बःख़ानः (قحبہ خانہ) अ. फा. पुं.–चकला, वेश्यालय, रंडियों का महल्ला।

कुह्राम (کہرام) अ. पुं.–हाहाकार, वावैला, शोरोग़ुल।

कुह्ल (کحل) अ. पुं.–सुरमा, रसांजन।

कुह्ली (کحلی) अ. वि.–सुरमे के रंग का, सुरमई; एक काला वस्त्र जो ईरानी स्त्रियाँ पहनती हैं।

कुह्लुल जवाहिर (کحل الجواہر) अ. पुं.–ऐसा सुरमा जिसमें मोती आदि बहुमूल्य रत्न पड़े हों।

कुह्लुलबसर (کحل البصر) अ. पुं.–नेत्र-ज्योति बढ़ानेवाला सुरमा।

कुहसार (کہسار) फा. पुं.–दे. 'कोहसार', पर्वत-श्रेणियाँ, उपत्यका, पहाड़ियों का अंचल।

कू

कूँ (کوں) फा. स्त्री.–'कून' का लघु., दे. 'कून'।

कू (کو) फा. अव्य.–कि वह।

कू (کو) फा. पुं.–कूचः का लघु., दे. 'कूचः'।

कूए ख़राबात (کوے خرابات) फा. पुं.–दे.–'कूए मुग़ाँ'।

कूए मुग़ाँ (کوے مغاں) फा. पुं.–मधुशाला की गली, शराबख़ाने का कूचा।

कूक (کوک) फा. स्त्री.–ज़ोर की आवाज़; काहू का बीज।

कूकू (کوکو) फा. स्त्री.–फ़ाख़्ता की बोली, (पुं.) एक प्रकार का पुलाव।

कूख़ (کوخ) अ. पुं.–फूस की झोंपड़ी जिसमें रौशनदान न हो।

कूचः (کوچہ) फा. पुं.–दो घरों के बीच वाली तंग गली, वीथी, गली।

कूचःगर्द (کوچہگرد) फा. वि.–गलियों के चक्कर काटनेवाला, गलियों में मारा-मारा फिरनेवाला।

कूचःगर्दी (کوچہگردی) फा. स्त्री.–गलियों में मारा-मारा फिरना, आवारागर्दी।

कूचः दर कूचः (کوچہ در کوچہ) फा. वि. दे.–'कूचः बकूचः'।

कूचःबंद (کوچہبند) फा. वि.–ऐसी गली जिसमें रक्षार्थ फाटक आदि लगा हो, जो संकट के समय वन्द किया जा सके।

कूचःबंदी (کوچہبندی) फा. स्त्री.–गली में हिफ़ाज़त के लिए फाटक आदि लगाना, जिससे समय पर गली की रक्षा हो सके।

कूचः बकूचः (کوچہ بکوچہ) फा. वि.–गली-गली, कूचे-कूचे, घर-घर, हर स्थान पर।

कूच (کوچ) फा. पुं.–प्रस्थान, रवानगी; मरण, मौत; सेना का प्रस्थान।

क़ूच (قوچ) तु. पुं.–मेंढ़ा, नर भेड़, दे. 'क़ुच', दो. शु. हैं।

कूचए इश्क़ (کوچۂ عشق) फा. अ. पुं.–प्रेम की गली।

कूचए ख़मोशाँ (کوچۂ خموشاں) फा. पुं.–क़ब्रिस्तान, श्मशान।

कूचए नौ (کوچۂ نو) फा. पुं.–चकला, वेश्यालय, रंडियों का स्थान।

कूज़ः (کوزہ) फा. पुं.–मट्टी का सकोरा, मृत्कंस; कुब्ज, कुबड़ा।

कूज़ःक़िमार (کوزہ قمار) फा. अ. वि.–जुआरियों को उधार देकर जुआ खिलानेवाला।

कूज़ःगर (کوزہگر) फा. वि.–मिट्टी के सकोरे बनानेवाला, कंसकार, कसगर।

कूज़ःगरी (کوزہ گری) फा. स्त्री.–मिट्टी के सकोरे बनाने का काम, कंसकर्म, कसगरी।

कूज़ःपुश्त (کوزہپشت) फा. वि.–कुबड़ा, कुब्ज।

कूज़पुश्ती (کوزہپشتی) फा. स्त्री.–कुबड़ापन।

कूज़ःफ़रोश (کوزہفروش) फा. वि.–मिट्टी के सकोरे बेचनेवाला।

कूज़ (کوز) फा. वि.–कुबड़ा, कुब्ज।

कूज़ (کوز) अ. पुं.–कूज़ा, सकोरा।

क़ूत (قوت) अ. स्त्री.–भोजन, खाना, ग़िज़ा।

क़ूतबसरी (قوت بسری) अ. फा. स्त्री.–गुज़र भर आमदनी, इतनी आमदनी जो केवल खाने भर को काफ़ी हो सके, जीवन व्यतीत करने में केवल भोजनमात्र की सुविधा।

क़ूते ला यमूत (قوتلایموت) अ. स्त्री.–इतना भोजन जिससे जीवन बना रहे, बहुत थोड़ा भोजन।

कूद (کود) फा. पुं.–अन्न की राशि, अनाज का ढेर; समाहार, मजमूआ।

कून (کون) फा. स्त्री.–मलद्वार, गुदा, मनुष्य के पाख़ाने का मुक़ाम।

कूनस्तः (کونستہ) फा. पुं.–मनुष्य का चूतड़, नितंब; कून, गुदा।

कूने ख़र (کون خر) फा. स्त्री.–गधे का मलद्वार, अत्यन्त मूर्ख और निकम्मे व्यक्ति के लिए बोला जाता है।

कूफ़ः (کوفہ) अ. पुं.–ईराक़ का एक नगर।

कूफ़ (کوف) फा. पुं.–उल्लू, उलूक, वायसाराति, बूम, चुग़्द।

कूफ़ी (کوفی) अ. वि.–कूफ़े का निवासी; बहुत ही निर्दय और बेईमान व्यक्ति, क्योंकि कूफ़ियों ने हज़रत इमाम हुसैन को बड़े-बड़े वचन देकर बुलाया था और फिर उन्हें अकेला छोड़कर क़त्ल होने दिया था।

कूब्कू (کوبکو) फा. वि.–दे. 'कूचः बकूचः', गली दर गली।

क़ूबा (قوبا) अ. स्त्री.–एक रोग, दाद, दद्रु।

कूरः (کورہ) फा. पुं.–ईंटें पकाने का पजावा; चूना पकाने का भट्ठा।

क़ूरुत (قورت) तु. पुं.–दही, दधि।

क़ूलंज (قولنج) अ. पुं.–दे. 'क़ूलिंज', दो. शु. हैं, परन्तु 'क़ूलिंज' अधिक प्रचलित है।

क़ूलिंज (قولنج) अ. पुं.–आँतों की एक पीड़ा जो कभी-कभी घातक सिद्ध होती है।

क़ूश (قوش) तु. पुं.–बाज़ पक्षी, श्येन।

कूस (کوس) फा. पुं.–डंका, धौंसा, दुंदुभि, नक़्क़ारः।

कूसे रहील (کوس رحیل) फा. अ. पुं.–कूच का नक़्क़ारः, क़ाफ़िले के चलते समय बजनेवाला धौंसा।

कूसे रेहलत (کوس رحلت) फा. अ. पुं. दे.–'कूसे रहील', प्रस्थान-वाद्य।

के

केद (کید) फा. पुं.–एक अशुभ तारा, केतु।

केर (کیر) फा. पुं.–शिश्न, मेहन, लिंग, उज़्वे तनासुल।

केश (کیش) फा. पुं.–धर्म, पंथ, मश्रब; आचरण, व्यवहार, अमल; तर्कश, तूणीर।

केहाँ (کیہاں) फा. पुं.–संसार, जगत्, दुनिया; काल, समय, ज़माना।

क़ेह्फ़ (قحف) अ. स्त्री.–खोपड़ी, कपाल।

कै

क़ै (قے) अ. स्त्री.–वमन, उद्गार, उलटी।

कै (کے) फा. पुं.–सम्राट्, शाहंशाह, ईरान में चार सम्राट् हुए हैं–कैकाऊस; कैक़ुबाद; कैख़ुस्रौ; कैलोह्रास्प।

कै (کے) अ. पुं.–गर्म लोहे का दाग़; अंग को दाग़कर रोग की चिकित्सा।

कैक (کیک) फा. पुं.–काटनेवाला एक लाल कीड़ा।

कैकाऊस (کیکاؤس) फा. पुं.–ईरान का एक सम्राट्, काऊस।

कैख़ुस्रौ (کیخسرو) फा. पुं.–ईरान का एक साम्राट्।

क़ैंची (قینچی) तु. स्त्री.–कतरनी, कपड़ा आदि काटने का यंत्र, कर्तरी, कर्तनी।

क़ैतून (قیطون) तु. स्त्री.–रेशम की गोट जो दामनों और गलों पर लगती है।

क़ैद (قید) अ. स्त्री.–गिरफ़्तारी, उपग्रह; कारावास, जेल की सज़ा।

कैद (کید) अ. स्त्री.–छल, कपट, धोखा, फ़िरेब।

क़ैदक (قیدک) अ. फा. स्त्री.–नत्थी, फ़ाइल।

क़ैदख़ानः (قیدخانہ) अ. फा. पुं.–कारागार, कारागृह, जेल, ज़िंदाँ।

क़ैदी (قیدی) अ. वि.–कारावासी, जेल में क़ैद के दिन काटनवाला; आबद्ध, गिरिफ़्तार।

क़ैदे तन्हाई (قید تنہائی) अ. फा. स्त्री.–ऐसी क़ैद जिसमें क़ैदी को अलग कोठरी में बंद कर दिया जाता है, वहीं उससे मशक़्क़त ली जाती है और वहीं खाना आदि दिया जाता है।

क़ैदे फ़िरंग (قید فرنگ) अ. फा. स्त्री.–अंग्रेज़ी क़ैद, जिसकी प्रचंडता और निर्दयता प्रसिद्ध है।

क़ैदे बामशक़्क़त (قید بامشقت) अ. फा. स्त्री.–ऐसी क़ैद जिसमें मेह्नत ली जाय, कठोर कारावास, असाधारण कारावास।

क़ैदे बिला मशक़्क़त (قید بلامشقت) अ. स्त्री.–जिस क़ैद में मेनहत न करना पड़े, साधारण कारावास, सामान्य कारावास।

क़ैदे मह्ज़ (قید محض) अ. स्त्री.–साधारण कारावास, क़ैदे बिला मशक़्क़त।

क़ैदे शदीद (قید شدید) अ. स्त्री.–दे. 'क़ैदे सख़्त'।

क़ैदे सख़्त (قید سخت) अ. फा. स्त्री.–कठोर कारावास, असाधारण करावास, क़ैदे बा मशक़्क़त।

क़ैन (قین) अ. पुं.–लोहार, लोहकार।

कैनूनत (کینونت) अ. स्त्री.–उत्पत्ति, पैदाइश; सृष्टि, आफ़्रीनिश; होना।

कैफ़ (کیف) अ. पुं.–मद, नशा; आनंद, सुरूर; वज्द, हाल, "रफ़ता रफ़्ता ये हुआ कैफ़े तसव्वर का असर, दिल के आईन में तस्वीर उतर आयी है।"

कैफ़दान (کیفدان) अ. फा. पुं.–नशे की वस्तु रखने की डिबिया।

कैफ़र (کیفر) फा. पुं.–बुराई का बदला, प्रत्यपकार।

कैफ़रे कर्दार (کیفر کردار) फा. पुं.–करनी की सजा, बुरे कर्मों का बदला, कर्म-दण्ड।

कैफ़ी (کیفی) अ. वि. मत्त, मदोन्मत्त, मख़्मूर।

कैफ़ीयत (کیفیت) अ. स्त्री.–समाचार, हाल; दशा, हालत; हर्ष, आनन्द, सुरूर, मस्ती, नशा; रिमार्क, नोट; वज्द, हाल, "कैफ़ीयते-चश्म उसकी मुझे याद है 'सौदा'।"

क़ैमाक़ (قیماق) तु. स्त्री.–मलाई, बालाई, क्षीरसार।

क़ैमाज़ (قیماز) फा. स्त्री.–दासी, सेविका, कनीज़।

कैमूस (کیموس) अ. पुं.–खाये हुए अन्न का वह रस जो जिगर के दूसरे पाक में बनता है।

कैयाद (کیاد) अ. वि.–बहुत बड़ा छली, बहुत बड़ा धूर्त, बहुत बड़ा फ़रेबी।

कैयादी (کیادی) अ. स्त्री.–छल करना, छल, दग़ाबाज़ी, कपट।

कैयाल (کیال) अ. वि.–नापनेवाला, पैमानों से अनाज आदि नापनेवाला।

क़ैयूम (قیوم) अ. वि.–अनश्वर, नित्य, लाज़वाल; ईश्वर का एक नाम।

क़ैयूर (قیور) अ. वि.–जिसके कुल का पता न हो, अज्ञातवंश, वर्णसंकर।

क़ैरूती (قیروطی) अ. स्त्री.–मोम रौग़न की भाँति, सीने आदि पर मलने की एक दवा।

क़ैलः (کیلہ) अ. पुं.–दे. 'कैल'।

कैल (کیل) अ. पुं.–सूखी वस्तु नापने का पैमाना।

क़ैलूलः (قیلولہ) अ. पुं.–दोपहर में खाना खाकर थोड़ी देर आराम करना।

कैलूस (کیلوس) अ. पुं.–खाये हुए अन्न का पहला हज़्म जो आमाशय में होता है।

कैलोह्रास्प (کےلہراسپ) फ़ा. पुं.–ईरान के चार सम्राटों में से चौथा।

कैवाँ (کیواں) फा. पुं.–'कैवान' का लघु. दे. 'कैवान'।

कैवान (کیوان) फा. पुं.–शनिग्रह, ज़ुहल; सातवाँ आकाश।

क़ैस (قیس) अ. पुं.–अरब का एक प्रेमी जो लैला पर मुग्ध था। लोग उसे 'मजनूँ' कहते थे।

क़ैस (قیص) अ. पुं.–दाँतों का जड़ से निकल जाना; पेट की गति।

क़ैसर (قیصر) अ. पुं.–रूम के शासकों की पदवी; बादशाह, राजा।

क़ैसरी (قیصری) अ. वि.–बादशाही, राज्य।

क़ैसूर (قیصور) अ. पुं.–एक नगर जहाँ का कपूर प्रसिद्ध है।

क़ैह (قیح) अ. पुं.–घाव की पीप अथवा कचलोहू।

कैहाँ (کیہاں) फा. पुं.–संसार, दुनिया, काल, समय, ज़माना।

को

को (کو) फा. अव्य.–कि वह।

कोकः (کوکہ) तु. पुं.–वह लड़का जिसने किसी दूसरे लड़के के साथ एक माँ का दूध पिया हो।

कोक (کوک) फा. स्त्री.–बाजे के तार ठीक करना; बाजे की आवाज़ में आवाज़ मिलना; खाँसी, कास।

कोकनार (کوکنار) फा. पुं.–पोस्त, पोस्ता, पोस्ते की बोंड़ी जिसमें दाने हों।

कोकलताश (کوکلتاش) तु. पुं.–वह लड़का जिसने किसी दाई के लड़के के साथ दूध पिया हो।

कोख (کوخ) फा. पुं.–ऐसा झोंपड़ा जिसमें रौशनदान न हो; एक घास जिससे चटाई बनाते हैं; कीट, कीड़ा।

कोचक (کوچک) फा. वि.–छोटा, लघु।

कोचकदिल (کوچک دل) फा. वि.–थुड़दिला, अनुदार; लघुचेता, तंगनज़र; मृदुलहृदय, नर्मदिल।

कोचकदिली (کوچک دلی) फा. स्त्री.–दिल का छोटा होना; तंगनज़री; दिल का नर्म होना।

कोचकी (کوچکی) फा. स्त्री.–छुटाई, लघुता।

कोज़ः (کوزہ) फा. पुं.–एक फूल, जो नर्गिस-जैसा होता है।

कोज़ (کوز) अ. वि.–टेढ़ापन, वक्रता; कुबड़ा, कुब्ज।

कोज़पुश्त (کوزپشت) फा. वि.–कुबड़ा, कुब्ज।

कोतल (کوتل) तु. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'कुतल', परन्तु उर्दू-वाले कोतल भी लिखते हैं, ख़ास सवारी का घोड़ा।

कोतह (کوتہ) फा. वि.–'कोताह' का लघु. दे. 'कोताह'।

कोतहअंदेश (کوتہ اندیش) फा. वि.–लघुचेता, अदूरदर्शी, नाअंदेश; मूर्ख, बेवक़ूफ़।

कोतहअंदेशी (کوتہ اندیشی) फा. स्त्री.–अदूरदर्शिता, नाअंदेशी; मूर्खता, जहालत।

कोतहनज़र (کوتہ نظر) फा. अ. वि.–नाआक़िबत अंदेश, अदूरदर्शी।

कोतहनज़री (کوتہ نظری) फा. अ. स्त्री.–नाआक़िबत अंदेशी, अदूरदर्शिता।

कोतही (کوتہی) फा. स्त्री. दे.–'कोताही'।

कोताह (کوتاہ) फा. वि.–ह्रस्व, छोटा; अल्प, थोड़ा।

कोताहअंदेश (کوتاہ اندیش) फा. वि.–दे. 'कोतहअंदेश'।

कोताहअंदेशी (کوتاہ اندیشی) फा. स्त्री.–दे. 'कोतहअंदेशी'।

कोताहक़द (کوتاہ قد) फा. अ. वि.–छोटे डीलडौल का, अल्पकाय, ह्रस्वांग।

कोताहक़लम (کوتاہ قلم) फा. अ. वि.–जो चिट्ठी-पत्री लिखने में बहुत आलसी हो।

कोताहक़लमी (کوتاہ قلمی) फा. अ.–चिट्ठी-पत्री लिखने में आलस।

कोताहक़ामत (کوتاہ قامت) फा. अ. वि.–दे. 'कोताहक़द' छोटे डील-डौलवाला मनुष्य।

कोताहक़ामती (کوتاہ قامتی) फा. अ. स्त्री.–डौल-डौल का छोटा होना।

कोताहगर्दन (کوتاہ گردن) फा. वि.–छोटी गर्दन का व्यक्ति, ऐसा मनुष्य चालाक होता है।

कोताहदस्त (کوتاہ دست) फा. वि.–जिसकी पहुँच किसी विशेष स्थान या कार्य तक न हो सके, नीरसा; जिसके हाथ छोटे हों।

कोताहदस्ती (کوتاہ دستی) फा. स्त्री.–पहुँच न होना, हाथ की छोटाई।

कोताहदामन (کوتاہ دامن) फा. वि.–जिसके दामन में गुंजाइश कम हो, कम हौसला।

कोताहदामनी (کوتاہ دامنی) फा. स्त्री.–दामन की छोटाई, उमंग की कमी।

कोताहनज़र (کوتاہ نظر) फा. वि.–जो दूर तक न देख सके; जो दूर तक न सोच सके; अनुदार, तंगदिल।

कोताहनज़री (کوتاہ نظری) फा. अ.–दूर तक न देख सकना; दूर तक न सोच सकना; अनुदारता, तंगदिली।

कोताहपाचः (کوتاہ پاچہ) फा. वि.–दे. कोताहक़ामत; एक जंगली चौपाया।

कोताहफ़ह्म (کوتاہ فہم) फा. अ. वि.–जिसकी समझ भोथरी हो, मंदबुद्धि।

कोताहफ़ह्मी (کوتاہ فہمی) फा. स्त्री.–बात की समझ पूरी-पूरी न हो, कमसमझी, बुद्धिमांद्य।

कोताहबीं (کوتاہ بیں) फा. वि.–दे. 'कोताहनज़र'।

कोताहबीनी (کوتاہ بینی) फा. स्त्री.–दे. 'कोताहनज़री'।

कोताहहिम्मत (کوتاہ ہمت) फा. अ. वि.–कमहिम्मत, अल्पोत्साह, मंद साहस।

कोताही (کوتاہی) फा. वि.–लघुता, छोटाई; न्यूनता, कमी; त्रुटि, ख़ामी; भूल, ग़फ़लत।

कोद (کود) फा. पुं.–मल, पाख़ाना, विष्ठा।

कोदक (کودک) फा. पुं.–बालक, शिशु, बहुत छोटा बच्चा; बाल, किशोर, ज़वानी के क़रीब लड़का।

कोदाब (کوداب) फा. पुं.–अंगूर के रस में पकाया जानेवाला एक पेय।

कोपलः (کوپلہ) फा. पुं.–वे बुलबुले जो पानी और हरेक पतले पदार्थ में उत्पन्न होते हैं।

कोफ़्तः (کوفتہ) फा. वि.–कूटा हुआ; चोट खाया हुआ, परिश्रम से थका हुआ; (पुं.) वह कमाई जो भड़ुएपन से प्राप्त हो; क़ीमे की गोली, पके हुए मांस का एक विशिष्ट प्रकार का सालन।

कोफ़्तःबेख़्तः (کوفتہ بیختہ) फा. वि.–कूटकर छाना हुआ, (पुं.) कुटी-छनी वस्तु।

कोफ़्त (کوفت) फा. स्त्री.–मनस्ताप, दिली ख़लिश; दुःख, कष्ट, रंज; परिश्रम, प्रयास, मेहनत।

कोफ़्तनी (کوفتنی) फा. वि.–कूटने के योग्य।

कोबः (کوبہ) फा. पुं.–मिट्टी आदि कूटने की मोगरी।

कोबःकार (کوبہ کار) फा. वि.–मोगरी से कूटनवाला; मार-पीट करनेवाला।

कोबःकारी (کوبہ کاری) फा. स्त्री.–मोगरी से कुटाई; मार-पीट, मरम्मत।

कोब (کوب) फा. प्रत्य.–कूटनेवाला; जैसे–'पाकोब' पाँव पीटनेवाला।

कोबां (کوباں) फा. वि.–कूटता हुआ; मारता हुआ।

कोबिंदः (کوبدہ) फा. वि.–कूटनेवाला।

कोबिंदः (کوبندہ) फा. वि.–कूटा हुआ।

कोरः (کورہ) फा. पुं.–भाग, अंश, हिस्सा; ईरान देश का पाँचवाँ भाग।

क़ोर (قور) तु. पुं.–अस्त्र, हथियार।

कोर (کور) फा. वि.–अंधा, नेत्रहीन, अंध, नाबीना।

कोरअक़्ल (کورعقل) फा. अ. वि.–अक़्ल का अंधा, जिसकी समझ में कुछ न आये, हतबुद्धि, अंधबुद्धि, नितान्त मूर्ख।

क़ोरख़ानः (قورخانہ) तु. फा. पुं.–शस्त्रागार, हथियारघर, अस्लिहःख़ानः।

कोरचश्म (کورچشم) फा. वि.–नेत्रहीन, अंधा।

कोरचश्मी (کورچشمی) फा. स्त्री.–अंधापन, नेत्रहीनता।

क़ोरची (قورچی) तु. पुं.–सैनिक, सिपाही, फ़ौजी; लोहार, लोहकार; शाही दरबार का प्रबंधक।

कोरदिल (کوردل) फा. वि.–दे. कोरबातिन।

कोरदिली (کوردلی) फा. स्त्री.–दे. 'कोरबातिनी'।

कोरदीं (کوردیں) फा. पुं.–ऊन का मोटा कपड़ा, कम्मल, धुस्सा।

कोरदीदः (کوردیدہ) फा. वि.–दे. 'कोरचश्म'।

कोरदीदगी (کوردیدگی) फा. स्त्री.–दे. 'कोरचश्मी'।

कोरदेह (کوردہ) फा. पुं.–ऐसा गाँव जो बड़ी बुरी जगह बसा हो और जहाँ ज़रूरत की कोई वस्तु न मिले।

कोरनिश (کورنش) तु. स्त्री.–दे. 'कुर्नुश', शुद्ध उच्चारण वही है, परन्तु उर्दू में यही अशुद्ध उच्चारण प्रचलित है, झुककर सलाम करना।

कोरबख़्त (کوربخت) फा. वि.–अंधे भाग्यवाला, अत्यन्त दुर्भागी, हतभाग्य।

कोरबख़्ती (کوربختی) फा. स्त्री.–बहुत ही अभागापन।

कोरबातिन (کورباطن) फा. अ. वि.–जिसकी आत्मा में ज्ञान का प्रकाश न हो, अन्धात्मा; जिसमें धर्म न हो।

कोरबातिनी (کورباطنی) फा. अ. स्त्री.–आत्मा में ज्ञान के प्रकाश का अभाव; धर्म के प्रकाश का अभाव।

क़ोरबेगी (قوربیگی) तु. पुं.–शस्त्रागार का रक्षक, अस्लिहःख़ाने का मुहाफ़िज़।

कोरमग़्ज़ (کورمغز) फा. अ. वि.–जिसकी समझ बहुत मोटी हो, कोढ़मग़ज़, मंदबुद्धि।

कोरमग़्ज़ी (کورمغزی) फा. अ. स्त्री.–समझ का अत्यन्त मोटा और भोथरापन।

कोरी (کوری) फा. स्त्री.–अंधापन, आंध्य।

कोरे मादर ज़ाद (کور مادرزاد) फा. वि.–जो माँ के पेट से ही अंधा पैदा हुआ हो, जन्मांध।

कोरे मुक़्री (کور مقری) फा. अ. पुं.–माँ के पेट से अंधा, जन्मांध; बच्चों का पढ़ानेवाला, अंधा हाफ़िज़।

कोरोकर (کوروکر) फा. वि.–अंधा और बहरा, जो न कुछ देख सके और न कुछ सुन सके।

कोल (کول) फा. पुं.–ताल, तालाब, तड़ाग।

कोलाब (کولاب) फा. पुं.–ताल, तालाब, तड़ाग।

कोश (کوش) फा. पुं.–ईरानी हर महीने का चौदहवाँ दिन, दे. 'गोश', दो. शु. हैं, (प्रत्य.) कोशिश करनेवाला, जैसे 'मस्लहत कोश' हित की कोशिश करनेवाला।

कोशक (کوشک) फा. पुं.–भवन, प्रासाद, महल, दे. 'कुश्क', दोनों शुद्ध हैं।

कोशाँ (کوشاں) फा. वि.–कोशिश करनेवाला, प्रयत्न में लगा हुआ, यतमान, यत्नवान्।

कोशिश (کوشش) फा. स्त्री.–प्रयत्न, उद्यम, प्रयास, जिद्दोजहद; उपाय, तद्बीर; परिश्रम, मेह्नत।

कोसः (کوسہ) फा. पुं.–वह व्यक्ति जिसकी दाढ़ी मूँछ-वयस्क होने के बहुत दिनों बाद निकलें।

कोस (کوس) फा. पुं.–नक़्क़ारः, दुंदुभि, डंका, धौंसा।

कोस्तः (کوستہ) फा. वि.–कूटा हुआ।

कोस्त (کوست) फा. पुं.–मनस्ताप, खेद, सदमा।

कोहः (کوہہ) फा. पुं.–कोहान, ऊँट या बैल की पीठ का उभार।

कोह (کوہ) फा. पुं.–पहाड़, पर्वत, गिरि, ज़बल।

कोहकन (کوہکن) फा. वि.–पहाड़ काटनेवाला, पर्वतभेदी, (पुं.) 'शीरीं' के प्रेमी 'फ़र्हाद' की उपाधि, जिसने शीरीं की आज्ञा से पहाड़ काटते हुए अपने प्राण दे दिये–"कह दो यह कोहकन से कि मरना नहीं कमाल, मर मर के हिज्रे-यार में जीना कमाल है।"

कोहकनी (کوہکنی) फा. स्त्री.–पहाड़ काटना; कोई बहुत कठिन काम करना।

कोहजिगर (کوہ جگر) फा. वि.–पहाड़-जैसा अचल साहस रखनेवाला, बहुत बड़ा वीर, वज्र-हृदयी, वज्र-साहसी।

कोहपायः (کوہ پایہ) फा. वि.–पहाड़-जैसी महत्ता रखनेवाला (पुं.) पहाड़ की तराई की भूमि, गिरि-सा गौरवमय।

कोहपैकर (کوہ پیکر) फा. वि.–पहाड़-जैसा डीलडौल रखनेवाला, बहुत ही गिरांडील, पर्वताकार, महाकाय, भीमकाय।

कोहपैमा (کوہپیما) फा. वि.–पहाड़ों में मारा-मारा फिरनेवाला, (पुं.) आधुनिक समय में पहाड़ों की चोटियों तक पहुँचने और वहाँ का हाल जानने का प्रयत्न करनेवाला, पर्वतारोही।

कोहपैमाई (کوہپیمائی) फा. स्त्री.–पहाड़ों में फिरना; पहाड़ों की चोटियों पर चढ़कर वहाँ की दशा और दूसरे समाचार ज्ञात करना।

कोहवक़ार (کوہوقار) फा. अ. वि.–पर्वत-जैसा धैर्य रखनेवाला, महाधैर्य; पर्वत-जैसी प्रतिष्ठा रखनेवाला, महाप्रतिष्ठित।

कोहसार (کوہسار) फा. पुं.–वह देश जहाँ पहाड़ ही पहाड़ हो; पहाड़ों का सिलसिला, पर्वतमाला, उपत्यका।

कोहान (کوہان) फा. पुं.–ऊँट या बैल की पीठ का कूबड़, ककुद।

कोहिस्तान (کوہستان) फा. पुं.–पहाड़ी इलाक़ा, पहाड़ी प्रदेश; पहाड़ी सिलसिला, पर्वतमाला।

कोहिस्तानी (کوہستانی) फा. वि.–पहाड़ी प्रदेश का निवासी, पहाड़ी; पहाड़ी इलाक़े से सम्बन्ध रखनेवाला।

कोही (کوہی) फा. वि.–पहाड़ से उत्पन्न; पहाड़ से सम्बन्धित; पहाड़ का।

कोहे आतशफ़िशाँ (کوہ آتش فشاں) फा. पुं.–आग उगलनेवाला पहाड़, ज्वालामुखी।

कोहे आदम (کوہ آدم) फा. अ. पुं.–लंका के एक पहाड़ की चोटी।

कोहे क़ाफ़ (کوہ قاف) फा. अ. पुं–काकेशिया का पहाड़ जहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध है।

कोहे तूर (کوہ طور) फा. अ. पुं.–वह पहाड़ जिस पर हज़रत मूसा ने ईश्वर का प्रकाश देखा था।

कोहे नूर (کوہنور) फा. अ. पुं.–प्रकाश का पहाड़, बहुत अधिक प्रकाश; विश्व का वह सर्वश्रेष्ठ हीरा जो गोलकुंडा से प्राप्त हुआ था और मुग़ल सम्राटों के क़ब्ज़े में रहा, और अब ब्रिटिश सम्राट् के ताज में जड़ा है।

कोहे बेसुतूँ (کوہ بیستوں) फा. पुं.–अर्मन देश का वह पहाड़ जिसे फ़र्हाद ने काटा था।

कोहे सफ़ा (کوہ صفا) फा. अ. पुं.–मक्के की एक पहाड़ी, जिससे दो सौ क़दम पर दूसरी पहाड़ी मर्वः है और इन दोनों के बीच में हाजी दौड़ते हैं।

कोहे सीना (کوہ سینا) फा. अ. पुं.–शाम का एक पहाड़।

कोहे सैना (کوہسینا) फा. अ. पुं.–दे. 'कोहे सीना'।

कोह्नः (کہنہ) फा. वि. दे.–'कुह्नः' प्राचीन, जीर्ण, पुराना।

कौ

क़ौंसल (قونصل) अ. पुं.–राजदूत, सफ़ीर।

क़ौंसलखानः (قونصل خانہ) अ. फा. पुं.–सफ़ीर के रहने का स्थान, दूतावास, सिफ़ारतख़ाना।

कौकबः (کوکبہ) अ. पुं.–जनसमूह, भीड़, अंबोह; ठाट-बाट, शानो-शौकत; धूम-धाम; लोहे का एक चमकदार गेंद जो एक लंबी लकड़ी में जिसकी नोक टेढ़ी होती है लटकाकर बादशाह की सवारी के आगे-आगे चलाया जाता है।

कौकब (کوکب) अ. पुं.–बड़ा और तेज़ प्रकाश का तारा; तारा, उडु।

क़ौदन (کودن) अ. वि.–मूर्ख, घामड़, बहुत ही बेवुक़ूफ़; लद्दू घोड़ा जो बहुत धीरे चलता है; कम चलनेवाला टट्टू, मठ्ठर।

कौन (کون) अ. पुं.–संसार, जगत्, दुनिया; उत्पत्ति, सृष्टि, तख़्लीफ़।

कौनोमकान (کون ومکان) अ. पुं.–संसार, जगत्, जहान।

कौनैन (کونین) अ. पुं.–दोनों संसार, यह संसार और ऊपरी संसार अर्थात् परलोक।

क़ौमः (قومہ) अ. पुं.–नमाज़ में खड़े होने की अवस्था।

क़ौम (قوم) अ. पुं.–जाति, वंश; राष्ट्र, सल्तनत; बिरादरी; वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय या शैख, सैयिद आदि जातियाँ।

क़ौमी (قومی) अ. विं.–राष्ट्रीय, मल्की; जातीय, बिरादरी का; वर्ण-सम्वन्धी।

क़ौमीयत (قومیت) अ. स्त्रीं.–राष्ट्रीयता, नैशनलिटी; विरादरी; वर्ण।

कौरः (کورہ) अ. पुं.–निर्जन और वीरान स्थान।

क़ौर (قور) अ. पुं.–पंजों के बल चलना, ताकि कोई आहट न सुन सके।

कौर (کور) अ. पुं.–वृद्धि, बढ़ती; समृद्धि, फ़राग़त।

क़ौल (قول) अ. पुं.–कथन, वचन, बात; प्रवचन, मक़ूलः; प्रतिज्ञा, इक़्रार, वादा।

क़ौलन (قولاً) अ. वि.–ज़बानी, बातों से, ज़बान से, क़ौल से, 'फ़े'लन' का उलटा।

क़ौले सालेह (قول صالح) अ. पुं.–सच्ची बात, ठीक बात; सच्ची राय, सही राय।

क़ौलोक़रार (قول وقرار) अ. पुं.–आपस में प्रतिज्ञा करना, पारस्परिक प्रतिज्ञा और वचन।

क़ौलोक़सम (قول وقسم) अ. पुं.–परस्पर शपथ और प्रतिज्ञा, अह्दोपैमा।

क़ौलो फ़े'ल (قول وفعل) अ. पुं.–कहना और करना, कथन और कर्म, कथनी और करनी।

क़ौस (قوس) अ.स्त्री.–धनुष, धनु, धन्व, कमान; धनुराशि, वुर्जे क़ौस।

कौसज (کوسج) अ. पुं.–वह व्यक्ति जिसकी डाढ़ी-मूछें बहुत समय के पश्चात् निकलें, दे. 'कोसः'।

क़ौसनुमा (قوس نما) अ. फा. वि.–कमान की शक्ल का, धनुपाकार,

कौसर (کوثر) अ. पुं.–स्वर्ग का एक कुंड या हौज़।

क़ौसुन्नहार (قوس النہار) अ.स्त्री.–सूरज की पूर्व से पश्चिम तक की यात्रा, जो १२ घंटे में समाप्त होती है और पूरा धनुप वनाती है।

क़ौसुस्समा (قوس السما) अ. स्त्री.–आकाशमंडल जो धनुष की तरह दिखाई पड़ता है।

क़ौसे क़ुज़ह (قوس قزح) अ. स्त्री.–इंद्रधनु, धनुक।

क़ौसे शैतान (قوس شیطان) अ. स्त्री.–दे. 'क़ौसे क़ुज़ह'।

क़ौसैन (قوسین) अ. स्त्री.–दो धनुष, दो कमानें; कोष्ठक, ब्रैकेट।

ख़

ख़ंजर (خنجر) अ. पुं.–छुरी, भुजाली, वड़ा चाक़ू, पेश क़ब्ज़, क्षुरिका।

ख़ंजरज़न (خنجرزن) अ. फा. वि.–ख़ंजर मारनेवाला, छुरी भोंकनेवाला।

ख़ंजरज़नी (خنجرزنی) अ. फा. स्त्री.–छुरा भोंकना, ख़ंजर से घायल करना।

ख़ंजरबकफ़ (خنجر بکف) अ. फा. वि.–हाथ में छुरी लिए हुए, वधोद्यत।

ख़ंजरी (خنجری) अ. स्त्री.–एक प्रकार की छोटी डफली।

ख़ंदः (خندہ) फा. पुं.–मुस्कुराहट, मुस्कान, मंदहास; हँसी, ज़ोर की हँसी, अट्टहास, क़हक़हा।

ख़ंदहज़न (خندہزن) फा. वि.–हँसनेवाला; हँसी उड़ानेवाला।

ख़ंदःज़नी (خندہزنی) फा. स्त्री.–हँसना, मुस्कुराना; हँसी उड़ाना।

ख़ंदःदहन (خندہدہن) फा. वि.–हँसमुख, जिसके मुँह पर हर समय हँसी खेलती रहती हो।

ख़ंदःपेशानी (خندہ پیشانی) फा. वि.–ख़ुश अख़्लाक़, सुशील; जिसके चेहरे पर मुस्कुराहट रहती हो, स्मितमुख।

ख़ंदःरू (خندہرو) फा. वि.–दे. 'ख़ंदःपेशानी'।

ख़ंदःरूई (خندہروئی) फा. स्त्री.–चेहरे की मुस्कुराहट; सुशीलता, ख़ुश अख़्लाक़ी।

ख़ंदःलब (خندہلب) फा. वि.–जिसके होंठों पर मुस्कान रहती हो, अधर-स्मिति।

ख़ंदःलबी (خندہلبی) फा. स्त्री.–होंठों पर मुस्कुराहट रहना।

ख़ंदए ज़ख़्म (خندۂ زخم) फा. पुं.–घाव का मुँह खुला होना, घाव का खुलापन।

ख़ंदए ज़मीं (خندۂ زمیں) फा. पुं.–फलों और हरियालियों का भूमि से निकलना।

ख़ंदए जाम (خندۂ جام) फा. पुं.–शराब उँडेलने का शब्द, शराब के प्याले की लहर।

ख़ंदए ज़ेरेलब (خندۂ زیرلب) फा. पुं.–ऐसी हँसी जो होंठों में ही रह जाय, मंदहास, मुस्कुराहट, तबस्सुम।

ख़ंदए दंदाँ नुमा (خندۂ دنداں نما) फा. पुं.–ऐसी हँसी जिसमें दाँत खुल जायँ, ज़ोर की हँसी।

ख़ंदए सुब्ह (خندۂ صبح) फा. अ. पुं.–प्रातःकाल की सफ़ेदी।

ख़ंदक़ (خندق) अ. स्त्री.–दुर्ग आदि के चारों ओर का गहरा गढ़ा, खाई; ग़ार, गर्त, गढ़ा।

ख़ंदरीस (خندریس) अ. पुं.–पुरानी मदिरा; पुराना गेहूँ।

ख़ंदाँ (خنداں) फा. वि.–हँसता हुआ।

ख़ंस (خنث) अ. पुं.–सुस्त होना, मंद होना; दोहरा होना, झुका होना, (वि.) मंद, सुस्त; वंक्र, टेढ़ा।

ख़च्चर (خچر) तु. पुं.–घोड़े और गधे के मेल से उत्पन्न एक प्रसिद्ध पशु, अश्वतर, वेसर, गर्दभाश्व।

ख़ज़ [**ख़्ज़**] (خز) अ. पुं.–एक रेशमी कपड़ा; रेशम और सूत मिला एक कपड़ा।

ख़ज़ (خز) फा. पुं.–'ख़ज़ाँ' का लघु., दे. 'ख़ज़ाँ' (स्त्री.) उच्चता, ऊँचाई, (पुं.) एक नगर।

ख़ज़ज़ (خضض) अ. पुं.–रंगबिरंगी खाना; सफ़ेद मोती जो वालकों के गले में पहनाये जाते हैं।

ख़ज़न (خزن) अ. पुं.–गोश्त का सड़ जाना।

ख़ज़फ़ (خزف) अ. स्त्री.–ठीकरा, गुट्टी; मट्टी का वरतन, सकोरा, कुल्लहड़।

ख़ज़फ़ (خذف) अ. स्त्री.–दे. 'ख़ज़फ़'।

ख़ज़फ़ (خضف) अ. पुं.–खरवूज़े।

ख़ज़फ़रेज़ः (حزف ریزہ) अ. फा. पुं.–मट्टी का ठीकरा, गुट्टी।

ख़ज़ब (خضب) अ. पुं.–रँगना, रंग करना।

ख़ज़ब (خزب) अ. पुं.–मूर्खता, नादानी; लंबाई, दराज़ी।

ख़ज़र (خزر) अ. पुं.–उत्तरी तुर्किस्तान का एक प्रदेश जहाँ के निवासी वहुत ही सुन्दर होते हैं।

ख़जल (خجل) अ. पुं.–दे. 'खजलत'।

ख़जलत (خجلت) अ. स्त्री.–लज्जा, व्रीडा, शर्मिंदगी।

ख़जलतज़दः (خجلت زدہ) अ. फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदा।

ख़ज़ाँ (خزاں) फा. स्त्री.–पतझड़ की ऋतु, जाड़े का मौसिम, ख़िज़ाँ भी प्रचलित।

ख़ज़ाँआश्ना (خزاں آشنا) फा. वि.–वह पक्षी जिसे पतझड़ और ऊजड़ स्थान में रहने का अभ्यास हो।

ख़ज़ाँदीदः (خزاں دیدہ) फा. वि.–वह पत्ता या पेड़, जो पतझड़ का कष्ट उठा चुका हो, जो पतझड़ के दुःख से दुःखित हो।

ख़ज़ाँरसीदः (خزاں رسیدہ) फा. वि.–जिस पर पतझड़ का समय आ गया हो, जो पतझड़ के कारण नष्ट होनेवाला हो।

ख़ज़ा' (خزع) अ. पुं.–मित्रों से वचन का पालन न करना; दान करना, देना।

ख़ज़ाइन (خزائن) अ.पुं.–'ख़िज़ानः' का वहु., निधियाँ, ख़ज़ाने।

ख़ज़ानः (خزانہ) अ. पुं.–निधि, कोष; भंडार, मख़्ज़न; सरकारी ख़ज़ाना, राजकोष, इस शब्द का शुद्ध उच्चारण ख़िज़ानः है, परंतु उर्दू में ख़ज़ानः ही बोलते हैं।

ख़ज़ानए आमिरः (خزانۂ عامرہ) अ. पुं.–ऐसा ख़ज़ाना जो भरपूर हो।

ख़ज़ानची (خزانچی) अ. फा. वि.–ख़ज़ाने का हिसाव-किताव रखनेवाला, कोषाध्यक्ष।

ख़ज़ार (خضار) अ. पुं.–बहुत-सा पानी मिला हुआ दूध; नयी तरकारी।

ख़जालत (خجالت) अ. स्त्री.–लज्जा, व्रीडा, शर्म; पश्चात्ताप, नदामत; संकोच, पशेमानी।

ख़ज़िम (خزم) अ. वि.–तेज़ तलवार; शूर व्यक्ति।

ख़ज़िर (خضر) अ.पुं.–हरी डाली; हरियाली, सब्जी; हज़्रत ख़िज़्र।

ख़ंजिल (خجل) अ. वि.–लज्जित, शर्मिंदा; पश्चात्तापी, नादिम; संकोच, पंशेमानी।

ख़ज़ी (خزی) अ. वि.–बदनाम, निंदित, रुस्वा।

ख़ज़ीज़ (خضیض) अ. पुं.–बरसात की अधिकता से भीगी हुई भूमि।

ख़ज़ीनः (خزینہ) अ. पुं.–दे. 'ख़ज़ानः'।

ख़ज़ीब (خضیب) अ. वि.–रंग किया हुआ।

ख़जीर (خجیر) अ. वि.–उत्तम, अच्छा; रुचिकर, पसंदीदः।

ख़ज़ूर (خضور) अ. वि.–हरा होनेवाला।

ख़ज़ूल (خزول) अ. वि.–लज्जित, शर्मिंदा।

ख़ज़अः (خزعہ) अ. पुं.–एक पाँव का लँगड़ापन।

ख़ज़्ख़ज़ः (خضخضہ) अ. पुं.–हस्त-मथुन, ज़लक़।

ख़ज़्न (خزن) अ. पुं.–माल ज़मीन में गाड़ना; रहस्य को छिपाना; गोश्त का सड़ जाना।

ख़ज़्फ़ (خزف)–हाथ-पाँव से चलना।

ख़ज़्फ़ (خضف) –भोजन करना, खाना खाना; जल्दी देना; दिशा, ओर, तरफ।

ख़ज़्म (خزم) अ. पुं.–शंका करना; ऊँट, बैल आदि के नथनों में नाथ डालना।

ख़ज़्रज (خزرج) अ. पुं.–अरब का एक वंश।

ख़ज़्रा (خضرا) अ. पुं.–हरियाली, सब्ज़ः; हरी घास।

ख़ज़्राए दिमन (خضراے دمن) अ. फा. पुं.–घूर पर उगी हुई हरियाली या फूल आदि; हर चीज़ जो ऊपर से ख़ूब सजी हुई हो, परंतु भीतर से अच्छी न हो; वह स्त्री जो अकुलीना हो, परंतु बहुत ही सुंदर हो।

ख़ज़्रान (خزران) अ. पुं.–तुर्किस्तान का एक नगर।

ख़ज़्री (خزری) अ. वि.–'ख़ज़्रान' का निवासी, अथवा वहाँ से सम्बन्धित।

ख़जल (خجل) अ. पुं.–लज्जा, शर्म, लाज।

ख़जलत (خجلت) अ. स्त्री.–लज्जा, शर्म, व्रीड़ा, लाज; संकोच, पशेमानी।

ख़जलतज़द: (خجلت زده) अ. फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदा; संकुचित, पशेमान।

ख़त [त्त] (خط) अ. पुं.–लकीर, रेखा; पत्र, चिट्ठी; मूँछ, डाढ़ी; लेख, तह्रीर; परवाना, राजादेश; चिह्न, निशान।

ख़तकशीद: (خط کشیده) अ. फा. वि.–लकीर खिंचा हुआ, वह इबारत आदि जिसके नीचे ध्यान दिलाने के लिए लकीर खींची गयी हो।

ख़ततराश (خط تراش) अ. फा. वि.–हजामत बनानेवाला, नाई, नापित।

ख़तन (ختن) अ. पुं.–दामाद, जामाता; ससुर, श्वशुर; साला, श्यालक, हर वह पुरुष जो स्त्री का नातेदार हो।

ख़तम (ختم) अ. वि.–मुँह्र की हुई वस्तु, जिस चीज़ पर मुह्र हो, मुद्रांकित।

ख़तर (خطر) अ. पुं.–भय, त्रास, डर; शंका, संदेह, शुब्हा।

ख़तरनाक (خطرناک) अ. फा. वि.–भयानक, भयंकर, हौलनाक; अनिष्टकर, नुक़्सानदेह।

ख़तरनाकी (خطرناکی) अ. फा. स्त्री.–भयानकता, हौलनाकी; अनिष्ट, हानि, नुक़सान।

ख़तल (خطل) अ. पुं.–मंदता, सुस्ती; हलकापन; शीघ्रता, जल्दी; आतुरता, उतावलापन, घबड़ाहट।

ख़ता (خطا) अ. स्त्री.–दोष, अपराध; पाप, गुनाह; त्रुटि, भूल।

ख़ता (ختا) फा. पुं.–चीन का एक प्रदेश; चीन।

ख़ता (ختا) फा. पुं.–किसी काम से रोकना; फल देना।

ख़ताकार (خطاکار) अ. फा. वि.–दोषी, अपराधी, मुज्रिम; पापी, पातकी, गुनाहगार।

ख़ताकारी (خطاکاری) अ. फा. स्त्री.–दोष करना, दोषी होना; पाप करना, पाप कर्म।

ख़तागर (خطاگر) अ. फा. वि.–दे. 'ख़ताकार'।

ख़तागरी (خطاگری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ख़ताकारी'।

ख़तापोश (خطاپوش) अ. फा. वि.–पाप और अपराध देखते हुए उन पर पर्दा डालनेवाला।

ख़तापोशी (خطاپوشی) अ. फा. स्त्री.–पाप और अपराध देखते हुए उन पर पर्दा डालना, उन्हें प्रकट न करना।

ख़ताफ़ (خطاف) अ. पुं.–देव, राक्षस, पिशाच।

ख़ताब: (خطابه) अ. पुं.–ख़तीबी करना, भाषण देने का काम करना।

ख़ताबख़्श (خطابخش) अ. फा. वि.–अपराध क्षमा करनेवाला; पाप क्षमा करनेवाला; मोक्ष देनेवाला।

ख़ताबख़्शी (خطابخشی) अ. फा. स्त्री.–अपराध क्षमा करना; पाप क्षमा करना; मोक्ष देना।

ख़ताबीं (خطابیں) अ. फा. वि.–दोष और पापों का देखनेवाला, अर्थात् ईश्वर।

ख़ताबीनी (خطابینی) अ. फा. स्त्री.–दोष और पाप देखना।

ख़ताया (خطایا) अ. पुं.–'ख़तीय:' का बहु., बहुत से अपराध; बहुत से पाप।

ख़तावार (خطاوار) अ. फा. वि.–अपराधी, सिद्धदोष, क़ुसूरवार; पापी, गुनहगार।

ख़ताशिआर (خطاشعار) अ. वि.–जिसका काम ही पाप करना हो, पाप करने में धृष्ट, पापप्रवण, पापाभ्यस्त।

ख़तिल (خطل) अ. वि.–मूर्ख, बेवुक़ूफ़; उतावला, आतुर, जल्दबाज़।

ख़तीअ: (ختیعه) अ. पुं.–धनुष चलानेवालों की अँगूठी जो वह अँगूठे में पहनते हैं।

ख़तीफ़ (خطیف) अ. पुं.–तेज चलनेवाला ऊँट; आटे और दूध की लपसी।

ख़तीब: (خطیبه) अ. स्त्री.–भाषण देनेवाली स्त्री, वक्त्री।

ख़तीब (خطیب) अ. वि.–ख़ुत्ब: पढ़नेवाला, मस्जिद या निकाह में ख़ुत्ब: पढ़नेवाला; भाषण देनेवाला, वक्ता; धर्मोपदेश करनेवाला, वाइज़, धर्मोपदेशक।

ख़तीबान: (خطیبانه) अ. फा. वि.–ख़तीबों-जैसा, वाइज़ों-जैसा।

ख़तीबी (خطیبی) अ. स्त्री.–ख़ुत्ब: पढ़ने का काम या पेशा; भाषण देने का काम।

ख़तीय: (خطیه) अ. पुं.–पाप, अपराध, गुनाह।

ख़तीर (خطیر) अ. वि.–बहुत अधिक, अत्यधिक, बहुत ज़ियादा; महान्, श्रेष्ठ, अज़ीम।

ख़ते अज़्रक़ (خط ازرق) अ. पुं.–जामे जमशेद की रेखाओं में से चौथी रेखा।

ख़ते अफ़्व (خط عفو) अ. पुं.–मुआफ़ीनामा, क्षमापत्र।

ख़ते अमान (خط امان) अ. पुं.–इस बात की तह्रीर कि अमुक व्यक्ति की रक्षा की जायेगी, संरक्षणपत्र।

ख़ते अमूद (خط عمود) अ. पुं.–वह खड़ी रेखा जो किसी पड़ी रेखा पर गिरकर ९० अंश का कोण बनाये।

ख़ते आज़ादी (خط آزادی) अ. फा. पुं.–किसी को बंधनमुक्त करने का लिखित प्रमाण, मुक्तिपत्र।

ख़ते इस्तिवा (خط استوا) अ. पुं.–भूमध्य रेखा, विषुवत् रेखा, विषुव रेखा।

ख़ते ए'तिदाल (خط اعتدال) अ. पुं.–दे. 'ख़ते इस्तिवा'।

ख़ते ग़ुलामी (خط غلامی) अ. पुं.–इस बात का लिखित प्रमाण कि अमुक व्यक्ति, फ़लाँ व्यक्ति का सदैव दास रहेगा, दासता-पत्र।

ख़ते चलीपा (خط چلیپا) अ. पुं.–हाशिये पर जो इबारत तिरछी लकीरों में लिखी जाती है।

ख़ते जदी (خط جدی) अ. पुं.–उष्ण कटिबंध की दक्षिणी रेखा, मकर-रेखा।

ख़ते जबीं (خط جبیں) अ. फा. पुं.–दे. 'ख़ते पेशानी'।

ख़ते जली (خط جلی) अ. पुं.–मोटी लकीर; मोटे क़लम से लिखा हुआ लेख।

ख़ते जवाज़ (خط جواز) अ. पुं.–पर्वानिए राहदारी, पास्पोर्ट, परिपारपत्र।

ख़ते तक़्दीर (خط تقدیر) अ. पुं.–किस्मत का लिखा, भाग्यलेख, भाग्यरेखा।

ख़ते तहरीर (خط تحریر) अ. वि.–ख़त की लिखावट, "मुद्दतों के बाद क़ासिद आज लाया है पयाम, फ़ैसला क़िस्मत का ज़ाहिर है ख़ते तहरीर से।"

ख़ते तक़्सीम (خط تقسیم) अ. पुं.–वह रेखा जो किसी भूमि आदि को दो भागों में बाँट दे, विभाग-रेखा।

ख़ते तर्सा (خط ترسا) अ. फा. पुं.–पार्सियों का लेख जो बहुत टेढ़ा-मेढ़ा होता है।

ख़ते तस्दीक़ (خط تصدیق) अ. पुं.–प्रमाणपत्र, सर्टीफ़िकेट।

ख़ते तस्लीम (خط تسلیم) अ. पुं.–सरल रेखा, सीधी लकीर।

ख़ते दीवनी (خط دیوانی) अ. फा. पुं.–दफ़्तर के मुंशियों का लेख, जो बहुत घसीट होता है।

ख़ते नस्तालीक़ (خط نستعلیق) अ. पुं.–वह लिपि जिसमें आधुनिक उर्दू की लीथो पुस्तकें छपती हैं।

ख़ते निस्फ़ुन्नहार (خط نصف انہار) अ. पुं.–वह कल्पित रेखा जिस पर आकर, सूरज दिन को दो बराबर भागों में बाँट देता है।

ख़ते पर्कार (خط پرکار) अ. फा. पुं.–वह गोल रेखा जो पर्कार से खींची जाती है।

ख़ते पेशानी (خط پیشانی) अ. फा. पुं.–तक़्दीर का लिखा, ललाट-रेखा, भाग्य-रेखा।

ख़ते बंदगी (خط بندگی) अ. फा. पुं.–दे. 'ख़ते ग़ुलामी'।

ख़ते मंदल (خط مندل) अ. पुं.–वह घेरा जो मंत्र द्वारा खींचा जाता है और जिसमें रहने से एक विशेष समय तक कोई अनिष्ट नहीं होता, अथवा भूत-प्रेत अपना प्रभाव नहीं डाल सकते।

ख़ते मुख़्तसर (خط مختصر) अ. पुं.–संक्षिप्त लिपि, संकेत-लिपि, शीघ्रलिपि, शार्टहेंड।

ख़ते मुतवाज़ी (خط متوازی) अ. पुं.–वह रेखा जो दूसरी रेखा से बराबर अंतर पर हो, समानांतर रेखा।

ख़ते मुन्हनी (خط منحنی) अ. पुं.–टेढ़ी लकीर, वक्र रेखा।

ख़ते मुमास (خط مماس) अ. पुं.–संपात रेखा।

ख़ते मुस्तक़ीम (خط مستقیم) अ. पुं.–सीधी लकीर, सरल रेखा।

ख़ते मुस्तदीर (خط مستدیر) अ. पुं.–गोल रेखा।

ख़ते राह (خط راہ) अ. फा. पुं.–दे. 'ख़ते जवाज़'।

ख़ते शिकस्तः (خط شکستہ) अ. फा. पुं.–वह लिखावट जो बहुत टेढ़ी-मेढ़ी लिखी जाय।

ख़ते सर्तान (خط سرطان) अ. पुं.–उष्ण कटिवंध की उत्तरीय रेखा, कर्क रेखा।

ख़ते हिलाली (خط ہلالی) अ. पुं.–कमान की तरह आधी गोल रेखा, धन्वाकार रेखा, अर्धवृत्ताकार रेखा, चंद्राकार रेखा।

ख़तो किताबत (خطو کتابت) अ. स्त्री.–पत्रव्यवहार, चिट्ठियों का आदान-प्रदान।

ख़त्तार (ختار) अ. वि.–मुग्ध होनेवाला, फ़रेफ़्ता होने वाला।

ख़त्फ़ः (خطفہ) अ. पुं.–एक बार इस प्रकार चमकना कि आँखों में चकाचौंध उत्पन्न कर दे।

ख़त्फ़ (خطف) अ.पुं.–बिजली का आँखों में चकाचौंध उत्पन्न करना।

ख़त्म (ختم) अ. वि.–समाप्त, पूरा; मृत, मरा हुआ; संपूर्ण, मुक़म्मल, (पुं.) समाप्ति, ख़ातिमः।

ख़त्म (ختم) अ. पुं.–नाक में नकेल डालना; नाथ डालने के लिए नथने छेदना।

ख़त्मी (خطمی) अ. स्त्री.–एक बीज जो दवा में काम आता है, दे. 'ख़ित्मी'।

ख़त्मी मआब (ختمی ماب) अ. पुं.–हज़रत मुहम्मद साहिब की उपाधि।

ख़त्र (ختر) अ. पुं.–मुग्ध होना, फ़रेफ़्ता होना।

ख़त्ल (ختل) फा. पुं.–बलख़ के निकट एक नगर, जहाँ के घोड़े बहुत अच्छे होते हैं।

ख़त्ल (ختل) अ. पुं.–भेड़िये का शिकार के लिए छिपना; धोखा देना, छल करना।

ख़त्लान (ختلان) फा. पुं.–दे. 'ख़त्ल', एक नगर।

ख़त्ली (ختلی) फा. वि.–वह घोड़ा जो 'ख़त्ल' अथवा 'ख़त्लान' से आता है।

ख़त्वः (خطوہ) अ. पुं.–एक डग, एक क़दम।

ख़दंग (خدنگ) फा. पुं.–एक विशेष पेड़ जिसके वाण वनते हैं; छोटा बाण, नावक।

ख़द [द्द] (خد) अ. पुं.–कपोल, गाल, रुख़सार; भूमि के भीतर की लंबी दरार या मार्ग, सुरंग।

ख़दअः (خدعہ) अ. पुं.–छल, कपट, कूट, दग़ा, फ़रेब।

ख़दम (خدم) अ. पुं.–'ख़ादिम' का बहु., सेवक लोग, नौकर-चाकर।

ख़दर (خدر) अ· पुं–आलस्य, सुस्ती; तंद्रा, ग़ुनूनदगी।

ख़दरी (خدری) अ. पुं.–एक पीड़ा जिससे किसी अंग की हिस जाती रहती है।

ख़दाज (خداج) अ. पुं.–दे. 'ख़िदाज', दो. शु. हैं।

ख़दाद (خداد) अ. पुं.–गाल का दाग़।

ख़दिर (خدر) अ. वि.–सुन्न, बेहिस; मंद, सुस्त।

ख़दीअः (خدیعہ) अ. पुं.–छल, कपट, मक्र; एक खाद्य जिसमें गोश्त और ज़ीरा होता है।

ख़दीजः (خدیجہ) अ. स्त्री.–हज़रत मुहम्मद साहिब की पहली पत्नी।

ख़दीज (خدیج) अ. वि.–वह शिशु जो समय से पहले उत्पन्न हो, परंतु सर्वांगपूर्ण हो।

ख़दीन (خدین) अ. वि.–मित्र, दोस्त; प्रेमपात्र, मा'शूक़।

ख़द्अः (خدعہ) अ. पुं.–छल, कपट, ब्याज, मक्र।

ख़द्दाअ' (خداع) अ. वि.–बहुत अधिक छली, बड़ा मक्कार; अधम, नीच; खोटा, कूट।

ख़द्ल (خدل) अ. पुं.–पिंडलियों और भुजाओं का भरा हुआ होना।

ख़द्शः (خدشہ) अ. पुं.–शंका, संदेह, शक; भय, डर।

ख़द्शात (خدشات) अ. पु.–'ख़द्शः' का बहु., शंकाएँ, शुबहे; डर, भय।

ख़नस (خنس) अ. पुं.–वापस लौटना, प्रत्यागमन।

ख़नाक़ (خناق) अ. पुं.–एक रोग जिसमें रोगी को अपना गला घुटता हुआ लगता है; गला घोंटने का स्थान।

ख़नाजिर (خناجر) अ. पुं.–'ख़ंजर' का बहु., छुरियाँ, भुजालियाँ।

ख़नांज़ीर (خنازیر) अ. पुं.–'ख़िज़ीर' का बहु., बहुत से सुअर; एक गले का रोग, कंठमाला।

ख़नाजीर (خناجیر) अ. पुं. 'खिजीर' का बहु., जली हुई हड्डियों की गंधें।

ख़नाफ़िस (خنافس) अ. पुं.–'ख़ुन्फ़सा' का बहु., गुबरीले।

ख़निक़ (خنق) अ. वि.–जिसका गला घोंटा गया हो।

ख़नीक़ (خنیق) अ. वि.–दे. 'ख़निक़'।

ख़नीदः (خنیدہ) फ़ा. वि.–उत्तम, उम्दा; रुचिकर, पसंदीदः।

ख़नीफ़ (خنیف) अ. पुं.–सफ़ेद अलसी।

ख़नूर (خنور) फ़ा. पुं.–पात्र, भाजन, बर्तन; चषक, पियाला।

ख़नूस (خنوس) अ. वि.–छिपनेवाला।

ख़न्क़ (خنق) अ. पुं.–गला घोंटना, गला घोंटकर मारना।

ख़न्नास (خناس) अ. पुं.–राक्षस, देव, शैतान, पिशाच; अहंकार, अभिमान, ग़ुरूर।

ख़पः (خپہ) फ़ा. पुं.–गला घोंटना।

ख़फ़ः (خفہ) अ. पुं.–गला घोंटना, गला घोंटकर मारना; जिसको गला घोंटकर मारा गया हो।

ख़फ़ (خف) फ़ा. पुं.–चकमक़ में जलाने का फूस, वह चीज़ जिसमें चकमक़ से आग लगायी जाय।

ख़फ़क़ान (خفقان) अ. पुं.–दिल की धड़कन का रोग, हृत्कंप, इख़्तिलाज; वहशत, घबराहट।

ख़फ़कानी (خفقانی) अ. वि.–जिसे दिल धड़कने का रोग हो; जिसके स्वभाव में घबराहट बहुत हो।

ख़फ़गी (خفگی) फ़ा. स्त्री.–गला घोंटने का भाव; अप्रसन्नता, वैमनस्य, नाराज़ी।

ख़फ़र (خفر) अ. पुं.–लज्जा, लाज, शर्म; देखरेख, निगहबानी।

ख़फ़श (خفش) अ. पुं.–दृष्टि की निर्बलता; जन्म से आँख का छोटा होना।

ख़फ़ा (خفا) अ. पुं.–छिपाव, दुराव, पोशीदगी, (वि.) क्रुद्ध, रुष्ट, नाराज़,—"गर मुझसे हो ख़फ़ा तो उसे दीजिए निकाल–तुम कौन रखनेवाले हो मेरे मलाल के।"

ख़फ़ाजः (خفاجہ) अ. पुं.–अरब का एक लुटेरा क़बीला।

ख़फ़ाया (خفایا) अ. पुं.–'ख़फ़ीयः' का बहु., छिपी हुई बातें।

ख़फ़ी (خفی) अ. वि.–गुप्त, छिपा हुआ; प्रकट, व्यक्त, ज़ाहिर; बारीक, महीन।

ख़फ़ीक़ (خفیق) अ. पुं.–पानी बहने का शब्द; वायु चलने का शब्द।

ख़फ़ीफ़ः (خفیفہ) अ. स्त्री.–एक दीवानी न्यायालय, जिसमें छोटे केस सरसरी सुने जाते हैं, जिनकी अपील नहीं होती।

ख़फ़ीफ़ (خفیف) अ. वि.–हलका, सबुक; थोड़ा, कम; लज्जित, शर्मिंदा; अधम, कमीना; एक बह्र, वृत्त।

ख़फ़ीफ़ुत्तब्अ (خفیف الطبع) अ.वि.–दे. 'ख़फ़ीफ़ुल हरकात'।

ख़फ़ीफ़ुल हरकात (خفیف الحرکات) अ. वि.–छिछोरी हरकतें करनेवाला, टुच्चा, तुच्छप्रकृति, छिछोरा।

ख़फ़ीर (خفیر) अ. वि.–मार्ग-प्रदर्शक, रहनुमा; सुरक्षक, निगहबान; त्राता, पनाह देनेवाला; निकृष्ट, ज़लील।

ख़फ़्क़ान (خفقان) अ. पुं.–दे. 'ख़फ़क़ान', परंतु उर्दू में 'ख़फ़्क़ान' भी बोलते हैं।

ख़फ़्चाक़ (خفچاق) तु. पुं.–जंगली तुर्कों की एक जाति।

ख़फ़्ज़ (خفض) अ. पुं.–किसी को उसके पद से गिराना; हौले-हौले चलना; ऐश्वर्य, ऐश; आरामतलबी।

ख़फ़्तः (خفتہ) अ. वि.–झुका हुआ, ख़मीदा।

ख़फ़्तान (خفتان) अ. पुं.–सिपाहियों के पहनने का एक विशेष कोट।

ख़फ़्द (خفد) अ. पुं.–तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

ख़फ़्फ़ाफ़ (خفاف) अ. वि.–जूता बनानेवाला; जूता बेचनेवाला; चमड़े के मोज़े बनाने और बेचनेवाला।

ख़फ़्रक़ (خفرق) अ. वि.–निकृष्ट, अधम, बुरा; अपमानित, बेइज़्ज़त; दुःस्वभाव, बदख़ू।

ख़बख़्ब (خبخب) अ. पुं.–चुंबन का शब्द, बोसे की आवाज़।

ख़बज़ (خبز) अ. पुं.–रेत, रेग; एक स्थान का नाम।

ख़बब (خبب) अ. पुं.–नदी का मौजें मारना; घोड़े का कभी इस पाँव और कभी उस पाँव पर खड़ा होना।

ख़बर (خبر) अ. स्त्री.–सूचना, संवाद, इत्तिलाअ; संदेश, सँदेसा, पैग़ाम; समाचार, हाल; मुहम्मद साहब का प्रवचन, हदीस।

ख़बरगीर (خبرگیر) अ. फा. वि.–ख़बर लेनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला; रक्षक, देख-रेख करनेवाला।

ख़बरगीरी (خبرگیری) अ. फा. स्त्री.–पालन-पोषण; रक्षा, देख-रेख।

ख़बरदार (خبردار) अ. फा. वि.–सचेत, सतर्क, बाख़बर; सावधान ; चेतावनी देने का शब्द, होशयार !

ख़बरदारी (خبرداری) अ.फा. स्त्री.–सतर्कता, होशयारी।

ख़बरदिहंदः (خبر دہندہ) अ. फा. वि.–सूचना देनेवाला, सूचक।

ख़बररसाँ (خبررساں) अ. फा. वि.–सूचना पहुँचानेवाला, सूचना-वाहक, पत्र-वाहक।

ख़बररसानी (خبررسانی) अ. फा. स्त्री.–सूचना पहुँचाना, खबर ले जाना, खबर लाना।

ख़बसः (خبثہ) अ. पुं.–ख़बीस का बहु., ख़बीस लोग।

ख़बस (خبث) अ. स्त्री.–अपवित्रता, गंदगी, मलिनता, मैलापन।

ख़बा (خبا) अ. पुं.–छिपाना; छिपाव, गुप्ति; वर्षा, वारिश; घास, सब्ज़ः।

ख़बाइस (خبائث) अ. पुं.–नापाकियाँ, अपवित्रताएँ।

ख़बाया (خبایا) अ. पुं.–'ख़बा' का बहु., छिपाव; 'ख़िबा' का बहु., खेमे, रावटियाँ।

ख़बार (خبار) अ. पुं.–मुलाइम और भुरभुरी मट्टी, अथवा भूमि।

ख़बाल (خبال) अ. पुं.–विनाश, तबाही; कुमार्गता, गुमराही; हत्या, हलाकी; श्रांति, थकान; घातक विष।

ख़बासत (خباثت) अ. स्त्री.–दुष्टता, नीचता, कमीनगी; हृदय की अपवित्रता, अंतःमलिनता।

ख़बी (خبی) अ. वि.–गुप्त, पोशीदा; अंतर्धान, ग़ाइब।

ख़बीर (خبیر) अ. वि.–जानकार, आगाह, जिसे ज्ञात हो; ईश्वर का एक नाम।

ख़बीस (خبیث) अ. वि.–अंतःकुटिल, शरीर; अंतःमलिन, बदबातिन; बहुत बड़ा पापी; बहुत बड़ा धूर्त; भूत-प्रेत।

ख़बीस (خبیس) अ. वि.–विनोदप्रिय, ज़रीफ़, मख़ोलिया; हँसमुख, ज़िंदादिल।

ख़बीस (خبیص) अ. पुं.–घी और खजूर से बना हुआ एक भोजन।

ख़बीस तीनत (خبیث طینت) अ.वि.दे.–'ख़बीस बातिन'।

ख़बीस बातिन (خبیث باطن) अ. वि.–जिसका मन बहुत ही पापी हो, जो बहुत बड़ा धूर्त हो, अंतर्मल।

ख़बीसुल बातिन (خبیث الباطن) अ. वि.–दे. 'ख़बीस बातिन'।

ख़ब्जः (خبجہ) फा. पुं.–इमली, एक खट्टा फल।

ख़ब्ज़ (خبز) अ. पुं.–रोटी पकाना।

ख़ब्त (خبط) अ. पुं.–बुद्धि में पागलपन की मिलावट, बुद्धि-विकार, पागलपन।

ख़ब्ती (خبطی) अ. वि.–विकृतबुद्धि, पागल, मिराक़ी, विकृतमस्तिष्क, दूषितबुद्धि।

ख़ब्तुल हवास (خبط الحواس) अ. वि.–दे. 'ख़ब्ती'।

ख़ब्न (خبن) अ. पुं.–कुर्ते या अंगरखे आदि का दामन लपेटना या सीना ताकि वह छोटा हो जाय; छंदःशास्त्र के अनुसार किसी 'गण' का दूसरा अक्षर जो हल् हो, उसे गिरा देना, जैसे—'फ़ाइलातुन' से 'फ़इलातुन्' बनाना।

ख़ब्बाज़ (خباز) अ. वि.–रोटी पकानेवाला, नानबाई।

ख़ब्बाज़ी (خبازی) अ. स्त्री.–रोटी पकाने का काम, नानबाईपन।

ख़म (خم) फा. पुं.–वक्रता, टेढ़ापन; झुकाव, ख़मी, (वि.) वक्र, टेढ़ा, ख़मीदः।

ख़म [म्म] (خم) अ. पुं.–मांस का सड़ जाना; घर या कुएँ का अपवित्र हो जाना।

ख़मज़दः (خمزدہ) फा. वि.–भागा हुआ।

ख़म दर ख़म (خم در خم) फा. वि.–पेचीदा, जिसमें बहुत से पेच हों, जो बहुत उलझा हो।

ख़मदार (خمدار) फा. वि–झुका हुआ, ख़मीदा; वक्र, टेढ़ा।

ख़मदीदः (خمدیدہ) फा. वि.–दे. 'ख़मदार'।

ख़मन (خمن) अ. पुं.–अपवित्रता, मलिनता, गंदगी।

ख़मी (خمی) फा. स्त्री.–वक्रता, कुटिलता, टेढ़ापन; झुकाव।

ख़मीत (خمیط) अ. वि.–बिना छिलके के भुनी हुई वस्तु

ख़मीदः (خمیدہ) फा. वि.–झुका हुआ, ख़मदार; वक्र, टेढ़ा।

ख़मीदःक़द (خمیدہ قد) फा. अ. वि.–जिसका शरीर झुक गया हो, विनतकाय, वक्रकाय; बहुत बूढ़ा।

ख़मीदःकमर (خمیدہ کمر) फा. वि.–जिसकी कमर झुक गयी हो, वक्रकटि; बहुत बूढ़ा,—"कमर ख़मीदा नहीं बेवजह ज़ईफ़ी में–ज़मीन ढूँढ़ रहा हूँ मज़ार के क़ाबिल।"

ख़मीदःक़ामत (خمیدہ قامت) फा. अ. वि.–दे. 'ख़मीदः क़द'।

ख़मीदःसर (خمیدہ سر) फा. वि.–जिसका सर झुका हो, सर झुकाये, नतमस्तक; लज्जित, व्रीडित, शर्मिंदा।

ख़मीरः (خمیرہ) फा. पुं.–चाटनेवाली मीठी और स्वादिष्ठ दवा; पीने का सुगंधित तंबाकू।

ख़मीर (خمیر) अ. पुं.–ओषधियों में पानी डालकर सड़ाया हुआ अरक़; आटे में सोडा और नमक डालकर बनाया हुआ खट्टा आटा जिससे ख़मीरी रोटी बनती है।

ख़मीरमायः (خمیرمایہ) अ. फा. पुं.–वह वस्तु जो किसी वस्तु की बढ़ोतरी का कारण हो।

ख़मीरी (خمیری) अ. वि.–ख़मीर से बनी हुई चीज़, विशेषतः रोटी; ख़मीर मिली हुई वस्तु; ख़मीर से सम्बन्धित।

ख़मील (خمیل) अ. पुं.–हलका भोजन; घंटा, बादलों का झुंड; पैबंद लगे हुए कपड़े।

ख़मीस (خمیس) अ. पुं.–वृहस्पतिवार, जुम्अरात; पाँच अंगोंवाली सेना।

ख़मीस (خمیص) अ. वि.–पतले पेट और कमरवाला, कृशोदर।

ख़मूश (خموش) अ. पुं.–पिस्सू, डाँस; मशाक, मच्छर।

ख़म्मोचम (خم وچم) फा. पुं.–सुंदर स्त्रियों के चलते समय के हाव-भाव।

ख़म्त (خمط) अ. पुं.–पीलू की एक जाति जिसमें छोटे-छोटे फल होते हैं।

ख़म्मान (خمان) अ. पुं.–कमज़ोर भाला; तुच्छ व्यक्ति।

ख़म्मार (خمار) अ. वि.–शराब बनानेवाला; शराब बेचनेवाला।

ख़म्मारख़ानः (خمارخانہ) अ. फा. पुं.–मदिरालय, शराबख़ाना।

ख़म्मूद (خمود) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ आग सुरक्षित रखते हों।

ख़म्याज़ः (خمیازہ) फा. पुं.–अँगड़ाई, नतीजा, परिणाम, जँभाई, जृंभा; भुगतमान, करनी का फल।

ख़म्याज़ःकश (خمیازہ کش) फा. वि.–अँगड़ाई लेनेवाला; जँभाई लेनेवाला; भुगतमान भुगतनेवाला, परिणामभोगी।

ख़मयाज़ःकशी (خمیازہ کشی) फा. स्त्री.–अँगड़ाई लेना; जंभाई लेना; भुगतमान भुगतना, करनी का फल भोगना।

ख़मयाज़ए ख़ुश्क (خم یازہ خشک) फा. पुं.–ऐसी इच्छा जो कभी पूरी न हो सके।

ख़म्रः (خمرہ) अ. पुं.–'खंमीरः' का लघु., दे. 'खमीरः'।

ख़म्र (خمر) अ. पुं.–ख़मीर करना; मदिरा, शराव।

ख़म्ल (خمل) अ. पुं.–कपड़े के तार, (वि.) ख़ालिस, बेमेल।

ख़म्सः (خمسہ) अ. पुं.–पाँच वस्तुओं का समाहार; उर्दू नज़्म का एक प्रकार जिसमें पाँच मिस्रे हर बंद में होते हैं; ग़ज़ल के दो मिस्रों पर तीन मिस्रे बढ़ाकर उसे भी ख़म्सः किया जाता है।

ख़म्सए मुतहैयिरः (خمسہ متحیرہ) अ. पुं.–सूर्य और चंद्रमा को छोड़कर बाक़ी पाँच ग्रह, जिनकी चाल उलटी-सीधी होती है।

ख़म्सए मुस्तशर्क़ः (خمسہ مستشرقہ) अ. पुं.–ईरानी साल में हर मास तीस दिन का होता है, परंतु 'इस्फ़ंदार' को ३५ दिन का कर देते हैं। यह पाँच दिन 'ख़म्सएमुस्तशर्क़ः' कहलाते हैं।

ख़यफ़ (خیف) अ. पुं.–एक आँख काली और एक नीली होना।

ख़याल (خیال) अ. पुं.–विचार, ध्यान; कल्पना, तख़ैयुल; तवज्जुह, प्रवृत्ति; भावना, जज़्बः; मति, राय; स्मृति, याद; संज्ञा, होश; संलग्नता, इन्हियाक; दुर्भावना, बदगुमानी; भ्रम, वह्म; अनुमान, अंदाज़ः; एक कविता।

ख़यालआराई (خیال آرائی) अ. फा. स्त्री.–परवाज़े फ़िक्र, कल्पनाएँ; कविता के लिए मज़्मून की तलाश।

ख़यालबंदी (خیال بندی) अ. फा. स्त्री.–अनेक कल्पनाएँ करना; एक विशेष कविता (ख़याल) की रचना करना।

ख़यालात (خیالات) अ. पुं.–'ख़याल' का बहु., ख़यालों का ताँता, विचारधारा।

ख़याली (خیالی) अ. वि.–काल्पनिक, फ़र्ज़ी; कपोल-कल्पित, मनगढंत; ख़याल से सम्बन्धित।

ख़याले ख़ाम (خیال خام) अ. फा. पुं.–असंगत और मिथ्या विचार, ग़लत ख़याल; भ्रम, वह्म।

ख़याले फ़ासिद (خیال فاسد) अ. पुं.–दे. 'ख़याले ख़ाम'।

ख़याले बातिल (خیال باطل) अ. पुं.–दे. 'ख़याले ख़ाम'।

ख़याशीम (خیاشیم) अ. पुं.–'ख़ैशूम' का बहु., नथने।

ख़यू (خیو) फा. पुं.–थूक, मुखस्राव, दे. 'ख़ियू', दो. शु. हैं।

ख़य्यात (خیاط) अ. वि.–दर्ज़ी, कपड़ा सीनेवाला, सूचिक।

ख़य्याते अज़ल (خیاط ازل) अ. वि.–परलोक में आत्मा को शरीररूपी वस्त्र पहनानेवाला, अर्थात् ईश्वर।

ख़य्याब (خیاب) अ. वि.–निराश, नाउम्मीद; वंचित, महरूम; अभागा, वदक़िस्मत।

ख़य्याम (خیام) अ. वि.–खटिया बनानेवाला, ख़ैमे सीनेवाला, फ़ारसी का प्रसिद्ध मधुवादी कवि, जो नैशापुर नगर का निवासी था, मधु की प्रतीकवादी पद्धति में उसकी काव्याभिव्यंजना सर्वोत्तम हुई है।

ख़रः (خرہ) फा. स्त्री.–तेल निकले हुए बीजों की खली; मिट्टी और धूल का ढेर।

ख़रः (خرہ) अ. पुं.–गधा, छोटा, लघु।

ख़र (خر) फा. पुं.–गधा, गर्दभ, रासभ; शराब की गाद; दे. खरचोव, (वि.) विशाल, महान्।

ख़र(र्) (خر) अ. पुं.–ऊपर से नीचे को पाँव फिसलना।

ख़रक (خری) फा. पुं.–दे. 'ख़रचोव'।

ख़रक़ (خرق) अ. पुं.–लज्जित होना; मूर्खता, हिमाक़त।

ख़रकुस (خرکس) फा. वि.–मूर्ख, बुद्धू, बेवक़ूफ़।

ख़रख़ेज़ (خرخیز) फा. पुं.–चीनी तुर्किस्तान का एक प्रदेश।

ख़रगह (خرگہ) फा. पुं.–'ख़िरगाह' का लघु., दे. 'ख़रगाह'।

ख़रगहेमह (خرگہ مہ) फा. पुं.–कर्क राशि, बुर्जे सर्तान; चंद्रमंडल, चाँद में पड़नेवाला घेरा, हालः।

ख़रगाह (خرگاہ) फा. पुं.–बड़ा ख़ैमा, बड़ी रावटी, दे. 'ख़िरगाह', दोनों शुद्ध हैं।

ख़रगोश (خرگوش) फा. पुं.–शश, शशक, खरहा।

ख़रचंग (خرچنگ) फा. पुं.–केकड़ा, कर्कट, सर्तान; कर्कराशि, बुर्जे सर्तान।

ख़रचोब (خرچوب) फा. पुं.–वह छोटी लकड़ी जो सितार या रवाव की तुंवी पर होती है और जिसमें तार जड़ते हैं।

ख़रज़ः (خرزہ) फा. पुं.–मोटा और लम्बा लिंग।

ख़रज़ः (خرزہ) अ. पुं.–पीठ की हड्डी की गुरिया, मोह्रः।

ख़रज़ (خرز) अ. पुं.–'ख़रज़ः' का वहु., पीठ की हड्डी के मोहरे, रीढ़ की गुरियाँ।

ख़रज़न (خرزن) फा. पुं.–चावुक, कोड़ा, कशा।

ख़रदलः (خردلہ) अ. पुं.–दे. 'ख़र्दलः'।

ख़रदल (خردل) अ. पुं.–दे. 'ख़र्दल'।

ख़रदिल (خردل) फा. वि.–डरपोक, भीरु, बुज़दिल।

ख़रदिली (خردلی) फा. स्त्री.–भीरुता, डरपोकपन, बुज़दिली।

ख़रनफ़्स (خرنفس) फा. अ. वि.–वहुत अधिक कामशक्तिवाला; वहुत बड़े लिंगवाला।

ख़रपाचः (خرپاچہ) फा. पुं.–गधे का वच्चा, खर-शावक।

ख़रपुश्तः (خرپشتہ) फा. पुं.–वहुत वड़ा पुश्ता।

ख़रफ़ (خرف) अ. पुं.–बुद्धि का विनाश, अक़्ल की तबाही।

ख़रबंदः (خربندہ) फा. पुं.–गधे का मालिक, गधेवाला।

ख़रबत (خربط) फा. पुं.–बड़ी बतख़, राजहंस; मूर्ख, घामड़।

ख़रबुज़ः (خربزہ) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध फल, 'ख़रबूजा'।

ख़रमगस (خرمگس) फा. पुं.–एक वड़ी मक्खी, जो घाव पर वैठती है तो उसमें कीड़े पड़ जाते हैं।

ख़रमस्ती (خرمستی) फा. स्त्री.–ऐसी मस्ती जिसमें पुरुष बिलकुल गधा बन जाय और वेहूदा और अश्लील हरकतें करने लगे, पिशाचोन्माद।

ख़रमोहरः (خرمہرہ) फा. पुं.–छोटा घोंघा जो तालाबों में होता है।

ख़रमोहरए कोचक (خرمہرۂ کوچک) फा. पुं.–कौड़ी, कपर्दिका, वराटिका।

ख़रमोहरए ज़र्द (خرمہرۂ زرد) फा. पुं.–दे. 'ख़रमोहरए कोचक'।

ख़रमोहरए सफ़ेद (خرمہرۂ سفید) फा. पुं.–शंख, दर, कंवु, संख।

ख़रवार (خروار) फा. पुं.–एक गधे का बोझ; किसी वस्तु का गधे के वरावर ऊँचा ढेर।

ख़रसंग (خرسنگ) फा. पुं.–बड़ा पत्थर, शिला।

ख़रस (خرس) अ. पुं.–गूँगा होना, मूक होना।

ख़रस (خرص) अ. पुं.–भूखा होना।

ख़रह (خرہ) अ. पुं.–कुक्कुट, मुर्ग़ा; मुर्ग़े के आकार की सुराही।

ख़रा' (خرع) अ. पुं.–आलस्य, सुस्ती; मंदता, सस्तापन; डालियों का टूटकर गिरना।

ख़राइद (خرائد) अ. स्त्री.–'ख़रीदः' का वहु., कुँवारी स्त्रियाँ; अनविधे मोती; लज्जावती महिलाएँ।

ख़राइफ़ (خرائف) अ. पुं.–'ख़रीफ़ः' का बहु., खजूर के वे पेड़ जिनके खजूर तोड़ लिये गये हों।

ख़राज (خراج) अ. पुं.–लगान, भूमिकर; वह रक़म जो अधीन राज बड़े राज को देता है, चौथ।

ख़राजगुज़ार (خراج گزار) अ. फा. वि.–ख़राज देनेवाला, अधीन राज अथवा राजा।

ख़रात (خراط) अ.पुं.–लकड़ी पर रंदा करना, लकड़ी खरादना, दे. 'ख़राद'।

ख़रातीन (خراطین) फा. पुं.–केचुआ, भूलता, महीलता, किंचुलक, भूनाग।

ख़रातीम (خراطیم) अ. पुं.–'ख़ुर्तूम' का बहु., हाथी की सूँड़ें; राष्ट्र अथवा जाति के महान् व्यक्ति।

ख़राद (خراد) फा. पुं.–लकड़ी खरादने की क्रिया; लकड़ी खरादने का यंत्र, शुद्ध शब्द 'ख़रात' है, परन्तु उर्दू और फार्सी में 'ख़राद' ही है।

ख़राबः (خرابہ) फा. पुं.–निर्जन और अन्न - जल - रहित स्थान; खँडहर, वीरान; शत्रु शासक का देश।

ख़राबः आबाद (خرابہ آباد) फा. पुं.–संसार, जगत्, दुनिया।

ख़राब (خراب) अ. वि.–बिगड़ा हुआ, विकृत; दूषित, नाक़िस; अपवित्र, नापाक; निकृष्ट, बुरा; नीच, कमीना; धूर्त, बदमआश; विध्वस्त, बरबाद; निर्जन, वीरान; उन्मत्त, मतवाला; कदाचारी, बदचलन।

ख़राबहाल (خراب حال) अ. वि.–जिसकी आर्थिक दशा ख़राब हो, दुर्दशाग्रस्त; जिसकी दशा बिगड़ी हुई हो, पतले हालवाला।

ख़राबात (خرابات) फा. पुं.–मधुशाला, मदिरालय, शराबख़ानः; कैतवालय, अक्षवार, जुआघर।

ख़राबाती (خراباتی) फा. वि.–हर समय नशे में मस्त रहनेवाला; जुआ खेलने का धर्ता।

ख़राबी (خرابی) अ. स्त्री.–विकार, दोष, नक़्स; अनिष्ट, हानि, ज़रर; निकृष्टता, ज़िश्ती; उन्माद, मस्ती; निर्जनता, वीरानपन, विध्वंस, बरबादी।

ख़राश (خراش) फा. स्त्री.–उचटता हुआ घाव, छीलन, रगड़।

ख़राशीदः (خراشیدہ) फा. वि.–खरोच लगा हुआ।

ख़रास (خراس) फा. पुं.–बैल आदि से चलनवाली चक्की; तेल का कोल्हू।

ख़रीफ़ (خریف) अ. वि.–बहुत बूढ़ा, सठियाया हुआ।

ख़रिब (خرب) अ. वि.–निर्जन, वीरान, ख़राबशुदा, ध्वस्त।

ख़रीक़ (خریق) अ. वि.–जिसका पर्दा फट गया हो, जिसकी बुराइयाँ प्रकट हो गयी हों।

ख़रीज (خریج) अ.पुं.–एक खेल जो अरब में खेला जाता है।

ख़रीतः (خریطہ) अ. पुं.–थैला, झोला, लिफ़ाफ़ा; सरकारी आदेशपत्र का लिफ़ाफ़ा।

ख़रीदः (خریدہ) फा. वि.–मोल लिया हुआ, क्रीत।

ख़रीदः (خریدہ) अ. स्त्री.–कुमारी, दोशीज़ः; लज्जावती स्त्री. (पुं.) अनबिधा मोती।

ख़रीद (خرید) फा. स्त्री.–मोल लेने का भाव, ख़रीदारी।

ख़रीदार (خریدار) फा. वि.–मोल लेनेवाला, ग्राहक।

ख़रीदारी (خریداری) फा.स्त्री.–मोल लेने का काम, ख़रीद।

ख़रीदो फ़रोख़्त (خرید و فروخت) फा. स्त्री.–मोल लेना और बेचना, क्रय-विक्रय।

ख़रीफ़ (خریف) अ. स्त्री.–फ़सली साल की दो ऋतुओं में से एक, कार्तिक की फ़सल।

ख़रूफ़ (خروف) अ. पुं.–घोड़े, भेड़-बकरी अथवा खरगोश का बच्चा।

ख़र्क़ (خرق) अ. पुं.–फटना, टुकड़े होना।

ख़र्क़े आदत (خرق عادت) अ. पुं.–प्राकृतिक कार्य के विरुद्ध कार्य, चमत्कार मो'जिज़ः।

ख़र्क़ो इल्तियाम (خرق و التیام) अ.पुं.–फटना और मिलना, अलग-अलग होकर एक हो जाना, तलवार की कटन भर जाना, घाव भर जाना।

ख़र्च (خرچ) फा. पुं.–व्यय, सर्फ; उपभोग, इस्ते'माल।

ख़र्ज (خرج) अ. पुं.–बाहर निकलना, व्यय, ख़र्च।

ख़र्ज़ (خرز) अ. पुं.–चमड़े का मोज़ा सीना; जूता सीना।

ख़र्त (خرط) अ. पुं.–लकड़ी पर रंदा करना; हर कटी और छिली चीज़ को चिकना करना।

ख़र्दलः (خردلہ) अ. पुं.–राई का एक कण।

ख़र्दल (خردل) अ. स्त्री.–राई।

ख़र्फ़ (خرف) अ. पुं.–फल बीनना, मेवा चुनना।

ख़र्बक़ (خربق) अ. स्त्री.–कुटकी, एक दवा।

ख़र्म (خرم) अ. पुं.–नथना छेदना; काटकर कम करना; किसी 'गण' का पहला अक्षर गिराना, जैसे–'फ़ऊलुन्' से ऊलुन करके 'फ़अ्लुन्' बनाना।

ख़र्मन (خرمن) फा. पुं.–बिना दाँयँ चलाया हुआ खलियान।

ख़र्या' (خریع) अ. पुं.–शश-शावक, खरगोश का बच्चा।

ख़र्राजः (خرازہ) अ. पुं.–ज़ोर की आवाज़ करके बहनेवाला पानी।

ख़र्राज़ (خراز) अ. वि.–चमड़ा सीनेवाला, जूता सीनवाला, मोची।

ख़र्रात (خراط) अ. वि.–ख़राद का काम करनेवाला, बढ़ई।

ख़र्राती (خراطی) अ. स्त्री.–ख़राद का काम।

ख़र्राद (خراد) फा. वि.–खराद का काम करनेवाला, लकड़ी पर रंदा फेरनेवाला।

ख़र्रादी (خرادی) फा. स्त्री.–खराद का काम, रंदे का काम।

ख़र्रास (خراس) अ. वि.–कुम्हार, कुंभकार।

ख़र्रास (خراص) अ. वि.–कूत करनेवाला, कूतनेवाला, तख़्मीनः करनेवाला; झूठा, मिथ्यावादी।

ख़र्श (خرش) अ. पुं.–छीलना; बच्चों के लिए रोटी कमाना, कमाई करना।

ख़र्स (خرس) अ. पुं.–घड़ा, कुंभ, मटका।

ख़र्स (خرص) अ. पुं.–खड़ी फ़सल का कूत करना; झूठ बोलना।

ख़लंज (خلنج) अ. पुं.–दे. 'खदंग'।

ख़लः (خلہ) फा. पुं.–नोकदार सीख; हर चुभनेवाली वस्तु; लम्बी लकड़ी जिससे नाव चलाते हैं, पतवार।

ख़ल[ल्ल] (خل) अ. पुं.–सिर्का, एक प्रसिद्ध खटास।

ख़लक़ (خلق) अ. पुं.–कपड़ों का पुराना होना; पुराना वस्त्र, पुराना लिबास।

ख़लक़ान (خلقان) अ. पुं.–पुराना लिबास, पुराना वस्त्र।

ख़लज (خلج) अ. पुं.–काम की थकन से जोड़ों का दर्द; आँख या किसी अन्य अंग का फड़कना।

ख़लजान (خلجان) अ. पुं.–दे. 'ख़ल्जान', शुद्ध यही है, परन्तु उर्दू में 'ख़ल्जान' ही बोलते हैं।

ख़लद (خلد) अ. पुं.–हृदय, मन, दिल; आत्मा, रूह।

ख़लफ़ (خلف) अ. पुं.–सुपुत्र, अच्छा लड़का, सपूत, (वि.) पीछे आनेवाला।

ख़लफ़ुर्रशीद (خلف الرشید) अ. पुं.–सपूत, अच्छा और नेक लड़का।

ख़लफ़ुस्सिद्क़ (خلف الصدق) अ. पुं.–दे. दो 'ख़लफ़ुर्रशीद'।

ख़लल (خلل) अ. पुं.–विघ्न, बाधा, अड़चन; हस्तक्षेप, दख़्लअंदाज़ी; विकार, ख़राबी।

ख़ललअंदाज़ (خلل انداز) अ. फा. वि.–गड़बड़ी और बाधा डालनेवाला, विघ्नकर; हस्तक्षेप करनेवाला।

ख़ललअंदाज़ी (خلل اندازی) अ. फा. स्त्री.–गड़बड़ करना, बाधा डालना; हस्तक्षेप करना।

ख़लले दिमाग़ (خلل دماغ) अ. पुं.–दिमाग़ की ख़राबी, बुद्धिदोष, पागलपन।

ख़ला (خلا) अ. पुं.–अंतरिक्ष, फ़िज़ाए आस्मानी; रिक्त होना, ख़ाली होना; अकेला होना, एकाकी होना; एकान्त में किसी के साथ आना।

ख़लाअत (خلاعت) अ.स्त्री.–माता-पिता की आज्ञा न मानना; बे सामान और परीशान होना; पापकर्म और दुराचार।

ख़लाइक़ (خلائق) अ. स्त्री.–'ख़लीक़:' का बहु., जनता, जनसाधारण, अवाम।

ख़लाइफ़ (خلائف) अ. पुं.–'ख़लीफ़:' का बहु. प्रतिनिधि लोग, जानशीन लोग।

ख़लाक़ (خلاق) अ. पुं.–किसी व्यक्ति में सद्‌गुणों की बहुतात।

ख़लाक़त (خلاقت) अ. स्त्री.–पुराना होना, जीर्णता।

ख़लाबः (خلابہ) अ. पुं. दे.–'ख़लाबत'।

ख़लाब (خلاب) अ. स्त्री.–कीचड़-पानी मिली हुई मिट्टी।

ख़लाबत (خلابت) अ. स्त्री.–किसी को बातों से मुग्ध कर लेना।

ख़लामला (خلاملا) अ. पुं.–गहरा मेलजोल, गहरा प्रेम-व्यवहार।

ख़लाशः (خلاشہ) फा. पुं.–कूड़ा-करकट।

ख़लाश (خلاش) फा. पुं.–कोलाहल, शोर-ग़ुल।

ख़लाशाँ (خلاشاں) फा. पुं.–'ख़लाश:' का बहु., कूड़ा-करकट, इसका अर्थ लिया जाता है; ईर्ष्यालु और विरोधी लोग।

ख़लास (خلاص) अ. पुं.–मुक्ति, छुटकारा, रिहाई, (वि.) मुक्त, रिहा, छुटकारा पाया हुआ, रिक्त।

ख़लासी (خلاصی) तु. स्त्री.–मुक्ति, छुटकारा, रिहाई।

ख़लिक़ (خلق) अ. पुं.–पुराना कपड़ा।

ख़लिफ़ (خلف) अ. स्त्री.–गाभिन ऊँटनियाँ।

ख़लिश (خلش) फा. स्त्री.–चुभन, चुभने का भाव; दर्द की टीस; चिन्ता, फ़िक्र, उलझन।

ख़लीअ (خلیع) अ. पुं.–जुआरी और शिकारी जिनका दाँव ख़ाली जाय; अवज्ञाकारी और परेशान व्यक्ति; भेड़िया, वृक।

ख़लीउल इज़ार (خلیع العزار) अ. वि.–जिसकी बागडोर टूट गयी हो, स्वच्छंद, बे लगाम।

ख़लीक़ः (خلیقہ) अ. पुं.–जन साधारण, जनता; संसार में उत्पन्न हर वस्तु, स्वभाव, प्रकृति, तबीअत।

ख़लीक़ (خلیق) अ. वि.–सुशील, सुष्ठु, मिलनसार, मुरव्वतवाला।

ख़लीज (خلیج) अ. स्त्री.–नदी आदि की शाखा; खाड़ी, कुक्षि, समुद्र-कुक्षि।

ख़लीत (خلیط) अ. वि.–किसी संपत्ति के भागीदार; पति, शौहर; चचा का लड़का, चचाज़ाद भाई।

ख़लीफ़ः (خلیفہ) अ. पुं.–प्रतिनिधि, नाइब, नुमाइंदः; किसी की अनुपस्थिति में उसके स्थान पर काम करनेवाला; हज़रत मुहम्मद साहिब के बाद उनका जानशीन।

ख़लीफ़ (خلیف) अ. पुं.–पीछे आनेवाला; दो पहाड़ों के बीच का मार्ग।

ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन (خلیفت المسلمین) अ. पुं.–महम्मद साहिब के ख़लीफ़ाओं की उपाधि; मुसलमान शासकों की उपाधि।

ख़लीयः (خلیہ) अ. वि.–वह स्त्री जिसे तलाक़ दे दी गयी हो, विवाह-विच्छिन्ना; वह ऊँट जिसे छोड़ दिया गया हो।

ख़लील (خلیل) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त।

ख़लीलुल्लाह (خلیل اللہ) अ. पुं.–ईश्वर का मित्र, 'हज़्रत इब्राहीम' की उपाधि।

ख़लीस (خلیص) अ. वि.–मिश्रित, मिला हुआ।

ख़लूक़ (خلوق) अ. पुं.–सुगंध, ख़ुशबू; एक प्रकार का सुगंधित मिश्रण।

ख़ल्अ (خلع) अ. पुं.–किसी अंग का अपने स्थान से विचलित हो जाना; पहने हुए वस्त्र उतारना; स्थान से हटना; किसी को ख़िल्अत देना।

ख़ल्एबदन (خلع بدن) अ. पुं.–दे. 'ख़ल्एरूह'।

ख़ल्‌एरूह (خلع روح) अ. पुं.–अपने प्राणों को किसी दूसरे के शरीर में डालना; प्राण का शरीर से निकाल देना।

ख़ल्क़ (خلق) अ. पुं.–सृष्टि करना, उत्पत्ति करना; उत्पत्ति, पैदाइश; उत्पन्न, पैदाशुदः; जनता, अवाम।

ख़ल्क़ुल्लाह (خلق الله) अ. स्त्री.–ईश्वर की मख़्लूक़; प्राणी-वर्ग, जानदार; मानवजाति, जन साधारण।

ख़ल्ख़ाल (خلخال) अ. स्त्री.–नूपुर, अंदुक, पाज़ेब।

ख़ल्जान (خلجان) अ. पुं.–झगड़ा, बखेड़ा, खटखट; चिन्ता, फ़िक्र; दुबिधा, द्विधा, तज़ब्ज़ुब।

ख़ल्त (خلط) अ. पुं.–मिलाना, मिश्रित करना, मिश्रण।

ख़ल्तमल्त (خلط ملط) तु. पुं.–मिला-जुला, मिश्रित; गड्डमड्ड, एक में मिला हुआ; प्रेम-व्यवहार, खिल्तमिल्त।

ख़ल्ते मब्हस (خلط مبحث) अ. पुं.–किसी एक प्रसंग के वीच दूसरा प्रसंग छेड़ देना; एक काम के बीच दूसरा काम उपस्थित कर देना।

ख़ल्फ़ (خلف) अ. पुं.–कपूत, बुरा लड़का, कुपुत्र; पीछा।

ख़लिफ़शार (خلفشار) फा. पुं.–गड़बड़, खलबली, अशांति; आपाधापी, अपनी-अपनी पड़ना; घबराहट।

ख़ल्लाक़ (خلاق) अ. वि.–बहुत अधिक उत्पन्न करनेवाला; सृष्टि को उत्पन्न करनेवाला, ईश्वर।

ख़ल्लुज (خلج) अ. पुं.–तुर्की का एक नगर।

ख़ल्वत (خلوت) अ. स्त्री.–जहाँ कोई दूसरा न हो, एकान्त, तन्हाई; स्त्री-पुरुष का एकान्तवास।

ख़ल्वतकदः (خلوت کده) अ. फा. पुं.–वह स्थान जहाँ कोई दूसरा न हो।

ख़ल्वतख़ानः (خلوت خانه) अ. फा. पुं.–दे. 'ख़ल्वतकदः'।

ख़ल्वतगाह (خلوت گاه) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ख़ल्वतकदः'।

ख़ल्वतगुज़ीं (خلوت گزیں) अ. फा. वि.–सबसे अलग रहकर एकांत में वास करनेवाला, एकान्तवासी।

ख़ल्वत्‌गुज़ीनी (خلوت گزینی) अ. फा. स्त्री.–सबसे अलग रहकर एकान्त में रहना।

ख़ल्वतदोस्त (خلوت دوست) अ. फा. वि.–अकेला जीवन व्यतीत करने में आनन्द प्राप्त करनेवाला, एकांतप्रिय।

ख़ल्वतनशीं (خلوت نشیں) अ. फा. वि.–दे. 'ख़ल्वतगुज़ीं'।

ख़ल्वतनशीनी (خلوت نشینی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ख़ल्वतगुज़ीनी'।

ख़ल्वतपसंद (خلوت پسند) अ. फा. वि.–दे. 'ख़ल्वत दोस्त'।

ख़ल्वतपसंदी (خلوت پسندی) अ.फा. स्त्री.–अकेला जीवन व्यतीत करने में आनन्द लेना।

ख़ल्वतसरा (خلوت سرا) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ख़ल्वतकदः'।

ख़ल्वतियाँ (خلوتیاں) अ. फा. पुं.–'ख़ल्वती' का वहु., एकान्त में वास करनेवाले; किसी एकांतवासी के पास आने-जानेवाले।

ख़ल्वती (خلوتی) अ. वि.–एकांत जीवन व्यतीत करनेवाला; किसी एकांत निवासी के पास आने-जानेवाला।

ख़ल्वते सहीह (خلوت صحیح) अ. स्त्री.–निकाह के वाद पुरुष और स्त्री का संभोगार्थ एकांत में रात काटना जहाँ कोई दूसरा प्राणी न हो।

ख़बर (خبر) अ. पुं.–आलस्य, सुस्ती; समाचार।

ख़वर्नक़ (خورنق) अ. पुं.–वह अद्‌भुत भवन जो नो'मान विन मुंज़िर ने वह्रामगोर के लिए बनवाया था।

ख़वल (خول) अ. पुं.–'ख़ाइल' का वहु., ईश्वर के दिये हुए नौकर-चाकर और धन-संपत्ति आदि।

ख़वाक़ीन (خواقین) अ. पुं.–'ख़ाक़ान' का वहु., सम्राट् लोग।

ख़वातिफ़ (خواتف) अ. पुं.–'ख़ातिफ़ः' का वहु., उचक ले जानेवाले, उड़ा ले जानेवाले; आपत्तियाँ, मुसीवतें, सद्‌मे।

ख़वातिम (خواتم) अ. पुं.–'ख़ातिमः' का वहु., ख़ातिमे।

ख़वातिर (خواطر) अ. पुं.–'ख़ातिर' का वहु., हृदय में आनेवाले विचार।

ख़वातीन (خواتین) अ. स्त्री.–'ख़ातून' का वहु., महिलाएँ, बड़े लोगों की स्त्रियाँ।

ख़वातीम (خواتیم) अ. पुं.–'ख़ातम' का वहु., अँगूठियाँ, मुहर करनेवाली अँगूठियाँ।

ख़वानीन (خوانین) अ. पुं.–'ख़ान' का वहु., 'ख़ान' की उपाधि रखनेवाले लोग; बड़े-बड़े सरदार।

ख़वाफ़ी (خوافی) अ. पुं.–'ख़ाफ़ियः' का वहु., पेड़ के तने के पासवाली शाखाएँ; पक्षी के नीचेवाले पर।

ख़वारिक़ (خوارق) अ. पुं.–'ख़ारिक़ः' का वहु., वह आचार-व्यवहार जो दूसरे व्यक्तियों के लिए आश्चर्यजनक हों।

ख़वारिज (خوارج) अ. पुं.–'ख़ारिजी' का वहु., 'ख़ारिजी' सम्प्रदाय के व्यक्ति जो हज़रत अली को वुरा जानते और कहते हैं।

ख़वास (خواص) अ. पुं.–'ख़ास' का वहु., ख़ास लोग, मुख्य लोग; 'ख़ास्सः' का वहु., गुण, धर्म, ख़ासियतें, (स्त्री) शाहीमहल की वह दासी जो वादशाह के पास एकांत में आती-जाती हो।

ख़वासी (خواصی) अ. स्त्री.–मुसाहिवत, ख़िदमतगारी, उच्च सेवाकार्य, राजसेवा।

ख़वीद (خوید) फा. पुं.–गेहूँ या जौ का हरा पेड़ जिसे भूनकर दाने चबाते हैं।

ख़व्वान (خوان) अ. वि.–बहुत अधिक ख़ियानत करनेवाला।

ख़व्वास (خواص) अ. वि.–थैले बनानवाला; खजूर की चटाइयाँ बनाने और बेचनेवाला।

ख़शन (خشن) फा. पुं.–पलास, टाट, मोटा कपड़ा।

ख़शब (خشب) अ. पुं.–लकड़ी, इमारती लकड़ी; ईंधन, जलाने की लकड़ी।

ख़शम (خشم) अ. पुं.–मांस सड़ जाना; नाक के नथन चौड़े हो जाना; नाक में रोग से दुर्गन्ध उत्पन्न होना।

ख़शिन (خشن) अ. वि.–खुरदरा, खुर्रा, (पुं.) एक पीड़ा जिससे शरीर की त्वचा खुरदरी हो जाती है।

ख़शी (خشی) अ. स्त्री.–डरना, भय करना।

ख़शीयत (خشیت) अ. स्त्री.–डर, ख़ौफ़, भय, त्रास।

ख़श्ख़शः (خشخشہ) अ. पुं.–काग़ज़ अथवा नये कपड़ों का शब्द।

ख़श्ख़ाश (خشخاش) अ. स्त्री.–पोस्त का दाना, ख़शख़श, (वि.) सशक्त व्यक्ति, मुसल्लह।

ख़श्फ़ (خشف) अ. पुं.–हिलना, झूमना; पूछना, जानना; पत्थर से सर टकराना, सर फोड़ना।

ख़श्ब (خشب) अ. पुं.–किसी चीज़ में से दूसरी चीज़ छाँटना; किसी चीज़ में दूसरी चीज़ मिलाना।

ख़श्म (خشم) फा. पुं.–क्रोध, कोप, रोष, गुस्सा, दे. 'ख़िश्म', दोनों शुद्ध हैं।

ख़श्म (خشم) अ. पुं.–नथने का टूट जाना।

ख़श्मगीं (خشمگیں) अ. फा. वि.–रोष से भरा हुआ, क्रोधातुर, प्रकुपित।

ख़श्मनाक (خشمناک) अ. फा. वि.–दे. 'ख़श्मगीं'।

ख़श्शाम (خشام) अ. वि.–बहुत बड़ी नाकवाला व्यक्ति, जिसके नथने बहुत उठे हों।

ख़स (خس) फा. स्त्री.–सूखी घास; एक सुगंधित जड़, उशीर; फूस, गाडर।

ख़स [स्स] (خس) अ. पुं.–कम करना; कंजूस होना; काहू, एक पेड़।

ख़सक (خسک) फा. पुं.–गोखरू, गोक्षुर; लोहे के गोखरूनुमा काँटे।

ख़सख़ानः (خس خانہ) फा. पुं.–ख़स का मकान, झोंपड़ा।

ख़सपोश (خس پوش) फा. वि.–घास से ढँका हुआ, घास से पाटा हुआ।

ख़साइल (خصائل) अ. पुं.–'ख़स्लत' का बहु., अच्छे स्वभाव, कभी बुरे स्वभावों के लिए भी आता है।

ख़साइस (خسائس) अ. पुं.–'ख़सीसः' का बहु., नीचताएँ, कमीनगियाँ; बुराइयाँ, निकृष्टताएँ।

ख़साइस (خصائص) अ. पुं.–'ख़सीसः' का बहु., विशेषताएँ, ख़ुसूसियतें।

ख़सारः (خسارہ) अ. पुं.–हानि, क्षति, नुक़सान।

ख़सारत (خسارت) अ. स्त्री.–हानि, नुक़सान; हत्या, हलाकी; कुमार्ग-गमन, गुमराही।

ख़सासः (خصاصہ) अ. पुं.–दरिद्रता, कंगाली; संन्यास, दरवेशी।

ख़सासत (خساست) अ. स्त्री.–कृपणता, कंजूसी; नीचता, अधमता, कमीनगी।

ख़सीन (خصین) अ. वि.–छोटा, लघु, (पुं.) कुल्हाड़ी।

ख़सीफ़ (خسیف) अ. पुं.–पथरीली ज़मीन में खोदा हुआ कुवाँ, जिसका पानी कभी कम न होता हो।

ख़सीम (خصیم) अ. वि.–शत्रु, दुश्मन।

ख़सीसः (خصیصہ) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

ख़सीसः (خسیسہ) अ. स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनगी; निकृष्टता, बुराई।

ख़सीस (خسیس) अ. वि.–कृपण, नद्धन, व्ययकुंठ, बद्धमुष्टि, कंजूस; पामर, अधम, नीच, कमीना।

ख़सूर (خسور) अ. वि.–जिसे घाटा आया हो, दिवालिया।

ख़सूस (خصوص) अ. पुं.–दे. 'ख़ुसूस', दोनों शुद्ध हैं।

ख़सूसीयत (خصوصیت) अ. स्त्री.–दे. 'ख़ुसूसीयत', दोनों शुद्ध हैं।

ख़स्तः (خستہ) फा. वि.–क्षत, घायल, ज़ख़्मी; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल; श्रान्त, क्लान्त, थका हुआ; भुरभुरा, जिसमें खस्तापन हो, (पुं.) गुठली, फल का बीज।

ख़स्तःख़ानः (خستہ خانہ) फा. पुं.–ज़ख़्मियों का चिकित्सालय।

ख़स्तःजाँ (خستہ جاں) फा. वि.–दे. 'ख़स्तःदिल'।

ख़स्तःजानी (خستہ جانی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़स्तःदिली'।

ख़स्तःजिगर (خستہ جگر) फा. वि.–दे. 'ख़स्तःदिल'।

ख़स्तःजिगरी (خستہ جگری) फा. स्त्री.–दे. 'ख़स्तःदिली'।

ख़स्तःतन (خستہ تن) फा. वि.–जिसका तमाम शरीर घायल हो; जिसका शरीर थका हुआ हो।

ख़स्तःतनी (خستہ تنی) फा. स्त्री.–सारे शरीर का घायल होना; शरीर का थका हुआ होना।

ख़स्तःदिल (خستہ دل) फा. वि.–जिसका हृदय घायल हो, क्षतहृदय; जिसका मन दुखी हो, दुःखितहृदय; प्रेमी, आशिक़।

ख़स्तःदिली (خستہ دلی) फा. स्त्री.–हृदय का घायल होना; मन का दुःखी होना।

ख़स्तःहाल (خستہ حال) फा. अ. वि.–जिसका हाल दुःख से पतला हो, दुःखितहृदय, जिसकी आर्थिक दशा खराब हो, दरिद्र, अकिंचन।

ख़स्तःहाली (خستہ‌حالی) फा. अ. स्त्री.–दुःख से हाल पतला होना; दरिद्र होना, निर्धन होना, कंगाल होना।

ख़स्तएग़म (خستۂ غم) फा. अ. वि.–दुःख से बदहाल; प्रेम के रोग से पीड़ित।

ख़स्तगी (خستگی) फा. स्त्री.–शिथिलता, थकन; घायल होने का भाव; भुरभरापन।

ख़स्फ़ (خسف) अ. पुं.–किसी को भूमि का निगलना; चाँद को ग्रहण लगना; आँखों का गढ़े में बैठ जाना।

ख़स्फ़ (خصف) अ. पुं.–ना'ल ठोंकना; एक वस्तु को दूसरी में जोड़ना और चिपकाना।

ख़स्म (خصم) अ. पुं.–शत्रु, बैरी, दुश्मन; स्वामी, मालिक, पति।

ख़स्मानः (خصمانہ) अ. फा. पुं.–देख-रेख, देख-भाल।

ख़स्ल (خصل) अ. पुं.–वह धन जो जुए के दाँव में एक वार रखा जाय।

ख़स्लत (خصلت) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत; धर्म, गुण, ख़ासियत।

ख़स्साफ़ (خصاف) अ. वि.–ना'ल जड़नेवाला, ना'लबंद; मिथ्यावादी, झूठा।

ख़ह (خہ) फा. अव्य.–अहो, वाह।

ख़ह ख़ह (خہ خہ) फा. अव्य.–वाह वाह, साधु साधु।

ख़हे (خہے) फ़ा. अव्य.–वाह, अहो, साधु।

ख़ा

ख़ाँ (خاں) फा. पुं.–'ख़ान' का लघु., दे. 'ख़ान'।

ख़ाँ बहादुर (خاں بہادر) फा. तु. पुं.–अंग्रेजी राज के समय की एक उपाधि जो वह अपने मुसलमान भक्तों को दिया करता था।

ख़ा (خا) फ़ा. प्रत्य.–खानेवाला; जैसे—'शकरख़ा' शकर खानेवाला।

ख़ाइन (خائن) अ. वि.–बददियानत, रुपये-पैसे में ख़ुर्द-बुर्द करनेवाला, व्यवहारानिष्ठ।

ख़ाइफ़ (خائف) अ. वि.–भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ; डरनेवाला।

ख़ाइब (خائب) अ. वि.–हताश, निराश, नाउम्मीद; वंचित, विहीन, महरूम।

ख़ाइल (خائل) अ. वि.–किसी वस्तु की चौकसी करनेवाला; टहलनेवाला।

ख़ाईदः (خائیدہ) फा. वि.–चबाया हुआ, चर्वित; खाया हुआ, भुक्त।

ख़ाईदनी (خائیدنی) फा. वि.–चबाने योग्य; खाने योग्य।

ख़ाक़ः (خاکہ) फा. पुं.–रेखाचित्र, तस्वीर का ढाँचा; किसी कार्यादि का ढाँचा, रूपरेखा; किसी कहानी आदि का प्लाट, कथावस्तु; किसी कार्यविशेष का प्लाट।

ख़ाक (خاک) फा. स्त्री.–धूलि, रज, गर्द; मृत्तिका, मिट्टी; भूमि, ज़मीन।

ख़ाकअंदाज़ (خاک انداز) फा. पुं.–कूड़ा-करकट डालने का पात्र, कूड़ाख़ाना; किसी चीज़ के खो जाने पर शंकित लोगों से धूल फिकवाने की क्रिया, ताकि वह धूल में मिलाकर चीज़ फेंक दें और किसी को निंदित न होना पड़े।

ख़ाकआमेज़ (خاک آمیز) फा. वि.–मिट्टी मिला हुआ, जिस वस्तु में मिट्टी मिली हो।

ख़ाकआलूद (خاک آلود) फा. वि.–मिट्टी में लथड़ा हुआ, मिट्टी में सना हुआ, मिट्टी या धूल लगा हुआ।

ख़ाकज़ाद (خاک زاد) फा. वि.–मिट्टी से उत्पन्न, मनुष्य और दूसरे प्राणी।

ख़ाकदान (خاکدان) फा. पुं.–कूड़ा डालने का स्थान, कूड़ाघर; संसार, जगत्, दुनिया।

ख़ाकदाने देव (خاکدان دیو) फा. पुं.–संसार, दुनिया।

ख़ाकनशीं (خاک نشیں) फा. वि.–भूमि पर बैठनेवाला, विनम्र, विनीत; दीन, दुखी, लाचार।

ख़ाकनशीनी (خاک نشینی) फा. स्त्री.–विनम्रता, विनति, खाकसारी; दीनता, हीनता, लाचारी।

ख़ाकनाए (خاکنائے) फा. पुं.–पानी का वह तंग हिस्सा जो पृथ्वी के दो भागों को अलग करता है।

ख़ाकनिहाद (خاک نہاد) फा. वि.–दे. 'ख़ाकी निहाद'।

ख़ाकबसर (خاک بسر) फा. वि.–सर पर ख़ाक डालता हुआ, धूल उड़ाता हुआ, शोक से रोता-पीटता हुआ।

ख़ाकबाज़ (خاک باز) फा. वि.–धूल-मिट्टी उड़ानेवाला, मिट्टी से खेलनेवाला।

ख़ाकबेज़ (خاک بیز) फा. वि.–ख़ाक छाननेवाला; न्यारिया, जो मिट्टी में से सोना-चाँदी निकालता है।

ख़ाकबेज़ी (خاک بیزی) फा. स्त्री.–खाक छानना; न्यारा कमाना, न्यारिये का काम करना।

ख़ाकरोबः (خاک روبہ) फा. पुं.–झाड़ू से झड़ा हुआ कूड़ा-करकट।

ख़ाकरोब (خاکروب) फा. वि.–झाड़ू लगानेवाला, झाड़नेवाला; मेहतर, भंगी।

ख़ाकरोबी (خاکروبی) फा. स्त्री.–झाड़ू लगाने का काम; मेहतर का काम।

ख़ाकशी (خاکشی) फा. स्त्री.–एक बहुत ही महीन दाने जो दवा में काम आते हैं।

ख़ाकसार (خاکسار) फा. वि.–विनम्र, विनीत, आजिज़; बोलनेवाला इस शब्द का प्रयोग अपने लिए भी करता है।

ख़ाकसारी (خاکساری) फा. स्त्री.–विनम्रता, विनति, आजिज़ी।

ख़ाक़ान (خاقان) तु. पुं.–सम्राट्, महाराज, शहनशाह; तुर्की शासकों की उपाधि; चीनी शासकों की उपाधि।

ख़ाकिस्तर (خاکستر) फा. स्त्री.–राख, भस्म; जली हुई वस्तु का अवशेष।

ख़ाकिस्तरी (خاکستری) फा. स्त्री.–मटमैला रंग; मटमैले रंग का।

ख़ाकी (خاکی) फा. वि.–मिट्टी से सम्बन्धित; मिट्टी का वना हुआ, मृण्मय; खाकी रंग।

ख़ाकी निहाद (خاکی نہاد) फा. वि.–जिसकी रचना मिट्टी से हुई हो; प्राणिवर्ग; मनुष्य।

ख़ाके अंगेख़्तः (خاکی انگیختہ) फा. स्त्री.–पृथ्वी, भूगोल।

ख़ाके जिगरगीर (خاکی جگرگیر) फा. स्त्री.–ऐसा स्थान जहाँ से मन कहीं और जाने को न करे।

ख़ाके पा (خاکی پا) फा. स्त्री.–पाँव की धूल, पदरज, पदार; बोलनेवाला बड़े आदमी से संबोधन करते हुए अपने को भी कहता है।

ख़ाके फ़रामोशाँ (خاکی فراموشاں) फा. स्त्री.–समाधि-क्षेत्र, क़ब्रिस्तान।

ख़ाके मुरक्कब (خاکی مرکب) फा. अ. स्त्री.–प्राणिवर्ग, वनस्पतिवर्ग और पाषाणवर्ग का समाहार।

ख़ाके मुर्दः (خاکی مردہ) फा. स्त्री.–ऐसी भूमि जिसमें कुछ उत्पन्न न हो, ऊसर, बंजर।

ख़ाके शिफ़ा (خاکی شفا) फा. अ. स्त्री.–रोगमुक्त करनेवाली मिट्टी, किसी महात्मा या वली के द्वार की धूल; करबला की मिट्टी जिसकी मालाएँ आदि वनती हैं।

ख़ाके सियाह (خاکی سیاہ) फा. स्त्री.–जलकर काली राख वना हुआ, भस्मसात्, भस्मीभूत।

ख़ाग (خاگ) फा. पुं.–मुर्ग़ी का अंडा।

ख़ागीनः (خاگینہ) फा. पुं.–अंडों का आमलेट।

ख़ाज़ः (خازہ) फा. पुं.–सनी हुई मिट्टी जो दीवारों पर लेसी जाती है।

ख़ाज (خاج) अ. स्त्री.–ईसाइयों की सलीब, क्रास।

ख़ाज़नः (خازنہ) फा. स्त्री.–साली, पत्नी की बहन।

ख़ाज़िक़ (خازق) अ. पुं.–निशाने पर लगा हुआ तीर।

ख़ाज़िन (خازن) अ. वि.–खज़ानची, कोषाध्यक्ष।

ख़ाज़े' (خاضع) अ. वि.–विनम्रता और विनती करनेवाला, विनम्र, सुशील।

ख़ात (خات) फा. स्त्री.–चील, चिल्ल, एक प्रसिद्ध पक्षी।

ख़ातम (خاتم) अ. स्त्री.–अँगूठी, मुद्रा; मोहर लगाने की अँगूठी।

ख़ातमकार (خاتمکار) अ. फा. वि.–वह व्यक्ति जो हाथी-दाँत आदि के वेलबूटे बनाकर लकड़ी आदि में जड़ता है।

ख़ातमकारी (خاتمکاری) अ. फा.–हाथी-दाँत या दूसरी वस्तु के बेलबूटे बनाकर लकड़ी आदि में जड़ने का काम।

ख़ातमबंद (خاتمبند) अ. फा. दे.–'ख़ातमकार'।

ख़ातमबंदी (خاتمبندی) अ. फा. स्त्री. दे.–'ख़ातमकारी'।

ख़ातिफ़ (خاطف) अ. वि.–उचक ले जानेवाला, उड़ा ले जानवाला; आँखों की ज्योति उड़ा ले जानेवाला।

ख़ातिब (خاطب) अ. वि.–वह पुरुष जो स्त्री की चाह में हो; वह स्त्री जो पुरुष की चाह में हो; दामाद।

ख़ातिमः (خاتمہ) अ. पुं.–अन्त, अख़ीर; परिणाम, अंजाम; मृत्यु, मौत।

ख़ातिमःबिलख़ैर (خاتمہ بالخیر) अ. पुं.–सद्गति-लाभ, मोक्ष-प्राप्ति, नजात का हुसूल।

ख़ातिम (خاتم) अ. वि.–ख़त्म करनेवाला, समाप्त करनेवाला; सबके पीछेवाला, बादवाला।

ख़ातिर (خاطر) अ.स्त्री.–वह विचार जो मन में उत्पन्न हो; हृदय, मन, दिल; सम्मान, सत्कार, तवाज़ो'; लिहाज़। आदर; लिए, वास्ते, निमित्त।

ख़ातिरख़्वाह (خاطرخواہ) अ. फा. वि.–मनचाहा, मनोवांछित।

ख़ातिरदार (خاطردار) अ. फा. वि.–आदर-सत्कार करनेवाला, आव-भगत करनेवाला।

ख़ातिरदारी (خاطرداری) अ. फा. स्त्री.–आवभगत, आदर-सत्कार, खातिर-तवाज़ो।

ख़ातिरन् (خاطراً) अ. वि.–दिल रखने के लिए।

ख़ातिरनशाँ (خاطرنشاں) अ. फा. वि.–दे. 'ख़ातिरनशीं', वही शुद्ध है।

ख़ातिरनशीं (خاطرنشیں) अ.फा. वि.–हृदय में जमनेवाली बात, बोधगम्य, हृदयंगम।

ख़ाती (خاطی) अ.वि.–जान-बूझकर अपराध करनेवाला।

ख़ातून (خاتون) तु. स्त्री.–सभ्य और शिष्ट स्त्री, महिला।

ख़ातूने अरब (خاتون عرب) तु. अ. स्त्री.–का'बः।

ख़ातूने ख़ानः (خاتون خانہ) तु. फा. स्त्री.–घर में रहनेवाली स्त्री, गृहिणी, गृहस्वामिनी, धर्मपत्नी, मनकूहा बीबी, चिराग़ेखानः।

ख़ातूने फ़लक (خاتون فلک) तु.अ.स्त्री.–सूर्य, रवि, सूरज।

ख़ातूने महफ़िल (خاتون محفل) तु. अ. स्त्री.–सबके सामने

आनेवाली और सबसे मिलनेवाली स्त्री, सोसाइटी गर्ल, शमए-अंजुमन।

ख़ातूने यग़मा (خاتون یغما) तु. स्त्री.–सूर्य, रवि, सूरज।

ख़ाद (خاد) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ात'।

ख़ादिमः (خادمہ) अ.स्त्री.–दासी, परिचारिका, नौकरानी।

ख़ादिम (خادم) अ. वि.–दास, सेवक, नौकर।

ख़ादिमुलख़ुद्दाम (خادم الخدام) अ. वि.–नौकरों का नौकर, दासानुदास, बहुत ही तुच्छ।

ख़ादे' (خادع) अ. वि.–धोखा देनेवाला, छली, मक्कार।

ख़ानः (خانہ) फा. पुं.–गृह, गेह, घर; संदूक़ आदि का ख़ाना; रजिस्टर आदि का ख़ाना; जन्मकुंडली आदि का घर; छेद, विवर।

ख़ानःआबाद (خانہ آباد) फा. वा.–घर आबाद रहे, एक आशीर्वाद।

ख़ानःआबादाँ (خانہ آباداں) फा.अ.वि.–वह व्यक्ति जो बहुत अधिक परिश्रम करता हो; निडर और बेधड़क आदमी।

ख़ानःआबादी (خانہ آبادی) फा. स्त्री.–विवाह, ब्याह, शादी।

ख़ानःकन (خانہ کن) फा. वि.–घरबार नष्ट कर देनेवाला व्यक्ति, धन-संपत्ति उड़ा डालनेवाला, कुपूत, कुलघातक।

ख़ानःकनी (خانہ کنی) फा. स्त्री.–घरबार तबाह कर देना, धन में आग लगा देना, कपूतपन।

ख़ानःख़राब (خانہ خراب) फा. वि.–जिसका घरबार और धन आदि सब नष्ट हो गया हो; अभागा, भाग्यहीन, बदनसीब।

ख़ानःख़राबी (خانہ خرابی) फा.अ. स्त्री.–घरबार और धन-दौलत का नाश; अभागापन, भाग्यहीनता, बदक़िस्मती।

ख़ानःख़्वाह (خانہ خواہ) फा. वि.–मुसाफ़िर के जान-पहचान का घर जहाँ वह उतरे।

ख़ानःजंगी (خانہ جنگی) फा. स्त्री.–किसी देश के भीतर की आपसी लड़ाई, अंतःकलह, गृह-युद्ध।

ख़ानःज़ाद (خانہ زاد) फा. वि.–घर में उत्पन्न, घर का पैदा हुआ; घर की लौंडी से उत्पन्न, दासीपुत्र, इस शब्द का प्रयोग वक्ता अपने लिए भी करता है।

ख़ानःतलाशी (خانہ تلاشی) फा. तु. स्त्री.–पुलिस आदि की ओर से घर की तलाशी।

ख़ानःदामाद (خانہ داماد) फा. पुं.–वह दामाद जो अपना घर छोड़कर सुसराल में रहे।

ख़ानः दामादी (خانہ دامادی) फा. स्त्री.–दामाद का अपना घर छोड़कर सुसराल में रहना; दामाद से सुसराल में रहने की शर्त पर शादी करना।

ख़ानःदार (خانہ دار) फा. वि.–गृहस्थ, घरेलू जीवन व्यतीत करनेवाला; घर का स्वामी; घर का व्यक्ति; द्वारपाल, दरबान।

ख़ानःदारी (خانہ داری) फा. स्त्री.–घर-गृहस्थी का जंजाल, घरेलू जीवन।

ख़ानःनशीं (خانہ نشیں) फा. वि.–सांसारिक विषय-वासनाओं से निवृत्त होकर एकान्त में रहनेवाला।

ख़ानःनशीनी (خانہ نشینی) फा. स्त्री.–संसार के झगड़ों से मुक्त होकर एकान्त में जीवन व्यतीत करना।

ख़ानःपुरी (خانہ پری) फा. स्त्री.–किसी फ़ार्म या रजिस्टर के ख़ानों का भरना; केवल दिखाने या छूछा उतारने के लिए बेदिली से कोई कार्य करना।

ख़ानःबख़ानः (خانہ بخانہ) फा. वि.–घर-घर, हर घर में।

ख़ानःबदोश (خانہ بدوش) फा. वि.–घर का सामान साथ रखकर, इधर-उधर जीवन बितानेवाला, संचारजीवी।

ख़ानःबदोशी (خانہ بدوشی) फा. स्त्री.–इधर-उधर घूम-फिरकर जीवन बिताना।

ख़ानःबरंदाज़ (خانہ برانداز) फा. वि.–घर को विनष्ट करनेवाला, गृह-घातक।

ख़ानः बरअंदाज़ (خانہ برانداز) फा. वि.–दे. 'ख़ानः बरंदाज़', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ानःबरबाद (خانہ برباد) फा. वि.–दे. 'ख़ानःख़राब'।

ख़ानःबरबादी (خانہ بربادی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ानःख़राबी'।

ख़ानःबाग़ (خانہ باغ) फा. पुं.–वह बाग़ जो घर से मिला हो, गृहवाटिका, गृहोद्यान, पाईंबाग़।

ख़ानःबुस्ताँ (خانہ بستاں) फा. पुं.–दे. 'ख़ानःबाग़'।

ख़ानःरस (خانہ رس) फा. वि.–घर में पकाया हुआ फल, पाल का मेवा।

ख़ानःवीराँ (خانہ ویراں) फा. वि.–दे. 'ख़ानःख़राब'।

ख़ानःवीरानी (خانہ ویرانی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ानःख़राबी'।

ख़ानःशुमार (خانہ شمار) फा. वि.–घरों की गिनती करनेवाला।

ख़ानःशुमारी (خانہ شماری) फा. स्त्री.–घरों की गिनती।

ख़ानःसाज़ (خانہ ساز) फा. वि.–घर का बना हुआ, घर की बनी हुई वस्तु, गृह-निर्मित।

ख़ानःसियाह (خانہ سیاہ) फा. वि.–अभागा, बदनसीब; कृपण, कंजूस।

ख़ानःसोज़ (خانہ سوز) फा. वि.–घर की संपत्ति फूँक डालनेवाला, घर को नष्ट कर देनेवाला।

ख़ानःसोज़ी (خانہ سوزی) फा. स्त्री.–घर की संपत्ति नष्ट कर देना, घर बरबाद कर देना।

खान (دان) तु. पुं.–अध्यक्ष, अमीर, सरदार; वहुत वड़ा और प्रतिष्ठित व्यक्ति।

खान (خان) फा. पुं.–'खान:' का लघु., जो यौगिक शब्दों में व्यवहृत है, जैसे—'खानमाँ'; पठान, काबुली।

खानए खुदा (خانۂ خدا) फा. पुं.–ईश्वर का घर, उपासनालय, मस्जिद।

खानए खुर्शीद (خانۂ خرشید) फा. पुं.–सिंहराशि, बुर्जे असद।

खानए चश्म (دانۂ چشم) फा. पुं.–वह गढ़ा जिसमें आँख का ढेला रहता है; आँखरूपी घर, जिसमें प्रेमिका का निवास होता है।

खानए तीर (خانۂ تیر) फा. पुं.–मिथुन राशि, बुर्जे जौज़ा।

खानए दिल (خانۂ دل) फा. पुं.–हृदयरूपी घर, हृद्देश, जिसमें प्रेयसी का निवास रहता है।

खानए बेतकल्लुफ़ (خانۂ بے تکلف) फा. अ. पुं.–ऐसा घर जहाँ तकल्लुफ़ न करना पड़े।

खानए माही (خانۂ ماہی) फा. पुं.–नदी तालाब आदि, जहाँ मछलियाँ रहती हों।

खानक़ाह (خانقاہ) फा. स्त्री.–फ़क़ीरों और साधुओं के रहने का स्थान, आश्रम।

खानगी (خانگی) फा. वि.–निजी, ज़ाती; घरेलू, घर-गृहस्थी सम्बन्धी, (स्त्री) वह घरेलू स्त्री जो व्यभिचारिणी हो, बिना व्याही स्त्री जो घर में स्त्री की तरह रख ली गयी हो, उपपत्नी, रखेली, रखैल, बैठाली स्त्री।

खानदान (خاندان) फा. पं.–वंश, कुल, परिवार, घराना।

खानदानी (خاندانی) फा. वि.–खानदान का, वंश सम्बन्धी; वंश का व्यक्ति, स्वजन, अज़ीज़; कुलीन, शरीफ़, (व्यंग) अकुलीन, दोग़ला।

खानम (خانم) तु. स्त्री.–खान की स्त्री; बड़े घर की स्त्री, महिला।

खानवादः (خانوادہ) फा. पुं.–वंश, कुल, खानदान।

खानसामाँ (خانساماں) फा. पुं.–खाने की मेज़ या दस्तरख्वान का प्रवंध करनेवाला; बावरची, रसोइया।

खानिक़ (خانق) अ. वि.–गला घोंटनेवाला, गला घोंटकर मार डालनेवाला।

खानी (خانی) फा. वि.–छोटा हौज़।

खाने' (خانع) अ. वि.–दुराचारी, वदकार; बुरा विचार रखनेवाला, बदगुमान।

खानोमाँ (خان وماں) फा. पुं.–गृहस्थी का सामान, गृहसामग्री।

खान्माँ (خانساں) फा. पुं.–दे. 'खानोमाँ'।

खान्माँखराब (خانساں خراب) फा. वि.–दे. 'खान: खराब'।

खान्माँबरबाद (خانساں برباد) फा. वि.–दे. 'खान:वरबाद'।

खाफ़िक़ैन (خافقین) अ. पुं.–पूरब और पच्छिम।

खाफ़िज़ः (خافضہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो स्त्रियों के खत्ने करे।

खाफ़िज़ (خافض) अ. वि.–नीचे लानेवाला, पस्त करनेवाला; अक्षर पर 'ज़ेर' देनेवाला; ईश्वर का एक नाम, जिसका अर्थ है, अत्याचारियों को अपमानित करनेवाला।

खाफ़ियः (خافیہ) अ. वि.–दिया हुआ, गुप्त।

खाबियः (خابیہ) अ. पुं.–सिर्का आदि रखने की मटकी, मर्तबान।

खाबूर (خابور) अ. पुं.–एक घास; एक चश्मा; एक गाँव।

खामः (خامہ) फा. पुं.–लेखनी, क़लम।

खामःफ़र्सा (خامہ فرسا) फा. वि.–क़लम घिसनेवाला, अर्थात् लिखनेवाला, खाम:वर्दार, लेखक, राइटर।

खामःफ़र्साई (خامہ فرسائی) फा. स्त्री.–लिखना, तहरीर करना, खाम:वर्दारी, लेखन-कार्य।

खाम (خام) फा. वि.–कच्चा, अपरिपक्व; असंस्कृत; नातज्रिब:कार, अनुभवहीन; खालिस, निष्केवल; कच्ची शराब।

खाम [म्म] (خام) अ. पुं.–सड़ा हुआ मांस।

खामअक़्ल (خام عقل) फा. वि.–जिसकी समझ-बूझ कच्ची हो, अपरिपक्वमति; नातज्रिब:कार, अननुभवी।

खामअक़्ली (خام عقلی) फा. अ. स्त्री.–समझ-बूझ का कच्चापन; नातज्रिब:कारी, अनुभवहीनता।

खामकार (خام کار) फा. वि.–मिथ्या कार्य करनेवाला, मिथ्याकारी; अननुभवी।

खामकारी (خام کاری) फा. स्त्री.–मिथ्या काम करना; अनुभवहीनता।

खामखयाल (خام خیال) फा. अ.–मूर्ख, वेवुक़ूफ़; जिसकी विचारधारा ठीक न हो; जो ठीक बात को ग़लत समझे; कच्चा विचार, ग़लत विचार।

खामखयाली (خام خیالی) फा. अ. स्त्री.–मूर्खता; ठीक बात को गलत समझना; विचार ठीक न होना।

खामखू (خام خو) फा. वि.–नादान, मूर्ख; नातज्रिब्र:कार, अननुभवी।

खामचर्म (خام چرم) फा. वि.–मनुष्य की देह, इंसानी जिस्म।

खामतब्अ (خام طبع) फा. अ. वि.–नासमझ, मंदमति।

खामतब्ई (خام طبعی) फा. अ. स्त्री.–नासमझी।

खामतमा' (خام طمع) फा. अ. वि.–लालची, लोभी, लोलुप।

ख़ामदस्त (خام دست) फा. वि.–जिसे काम का अभ्यास न हो, अनभ्यस्त; फ़ज़ूलख़र्च, अपव्ययी, अननुभवी।

ख़ामदस्ती (خام دستی) फा. स्त्री.–काम का अनभ्यास, अनाड़ीपन; फ़ुज़ूलख़र्ची, अपव्यय; अननुभव।

ख़ामपारः (خام پارہ) फा. स्त्री.–(गाली) वह स्त्री जिसका कौमार्य नष्ट हो गया हो, क्षतयोनि; व्यभिचारिणी, छिनाल।

ख़ामरीश (خام ریش) फा. वि.–मूर्ख, घामड़, बुद्धू; विदूषक, मसख़रा।

ख़ामसोज़ (خام سوز) फा. वि.–वह पदार्थ जो ऊपर से जल गया हो, परन्तु भीतर कच्चा हो।

ख़ामसोज़ी (خام سوزی) फा. स्त्री.–ऊपर से जल जाना और भीतर कच्चा रहना।

ख़ामिल (خامل) अ. वि.–ऐसा व्यक्ति जिसे कोई याद न करे, गुमनाम, तुच्छ।

ख़ामिस (خامس) अ. वि.–पाँचवाँ, पंचम।

ख़ामी (خامی) फा. स्त्री.–कच्चापन, अपरिपक्वता; नातज्रिब्र:कारी, अनुभवहीनता।

ख़ामुशी (خامشی) फा. स्त्री.–'ख़ामोशी' का लघु., दे. 'ख़ामोशी'

ख़ामोश (خاموش) फा. वि.–चुप, निर्वाक्, नीरव, अवाक्, मौन; शान्त, साकिन।

ख़ामोशी (خاموشی) फा. स्त्री.–नीरवता, मौन, चुप्पी; सन्नाटा।

ख़ायः (خایہ) फा. पुं.–अंडा, अंड; अंडकोष, फ़ोता।

ख़ायःबरदार (خایہ بردار) फा. वि.–झूठी और गिरी हुई ख़ुशामद करनेवाला, बहुत ही तुच्छ ख़ुशामदी, चाटुकार।

ख़ायःबरदारी (خایہ برداری) फा. स्त्री.–झूठी और तुच्छ ख़ुशामद, चाटुकर्म।

ख़ायःरेज़ (خایہ ریز) फा. पुं.–ख़ाग़ीनः, आमलेट, अंडों का चीला।

ख़ायस्क (خایسک) फा. पुं.–सुनारों या लुहारों का हथौड़ा।

ख़ायिस्क (خایسک) फा. पुं.–दे. 'ख़ायस्क', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ारः (خارہ) फा. पुं.–एक बहुत ही कठोर पत्थर, ख़ारा; एक वस्त्र जो सूरज की धूप में फट जाता है।

ख़ार (خار) फा. पुं.–काँटा, कंटक; चुभने और कष्ट देनेवाली बात; पक्षी के पाँव का काँटा।

ख़ारकश (خارکش) फा. वि.–लकड़हारा, लकड़ी काटने और वेचनेवाला।

ख़ारकशी (خارکشی) फा. स्त्री.–लकड़हारे का काम।

ख़ारख़सक (خارخسک) फा. पुं.–गोखरू, गोक्षुर।

ख़ारख़ार (خارخار) फा. वि.–सोच में पड़ा हुआ, चिन्तित; उद्विग्न, परेशान, (पुं.) फ़िक्र, चिन्ता; लगाव, सम्बन्ध।

ख़ारचंग (خارچنگ) फा. पुं.–कर्कट, केकड़ा।

ख़ारचीं (خارچیں) फा. पुं.–काँटों की वाड़ जो खेतों के चारों ओर लगा देते हैं।

ख़ारदार (خاردار) फा. वि.–कँटीला, काँटेदार।

ख़ारपुश्त (خارپشت) फा. स्त्री.–साही, शल्लकी, एक जंतु जिसकी पीठ पर लंबे काँटे होते हैं।

ख़ारबंद (خاربند) फा. पुं.–दे. 'ख़ारची'।

ख़ारबस्त (خاربست) फा. पुं.–दे. 'ख़ारचीं'।

ख़ारशुतुर (خارشتر) फा. पुं.–एक काँटेदार झाड़, जिसे ऊँट बड़े प्रेम से खाता है, ऊँटकटारा।

ख़ारा (خارا) फा. पुं.–एक बहुत ही कठोर पत्थर, ख़ारः; एक रेशमी कपड़ा जो लहरियेदार होता है।

ख़ाराशिकन (خاراشکن) फा. वि.–दे. 'ख़ाराशिगाफ़'।

ख़ाराशिगाफ़ (خاراشگاف) फा. वि.–पत्थर में छेद कर देनेवाला, पाषाणभेदी, प्रस्तरभेदी।

ख़ारिंदः (خارندہ) फा. वि.–खुजानेवाला।

ख़ारिक़ (خارق) अ. वि.–फाड़नेवाला, विदारक।

ख़ारिक़े आदात (خارق عادات) अ. पुं.–चमत्कार, मो'जिज़: कारामात, करिश्मा।

ख़ारिजः (خارجہ) अ. पुं.–पृथक्, अलग; रसीद का दूसरा परत; विदेशी, परराष्ट्रीय।

ख़ारिज (خارج) अ. वि.–निकलनेवाला; निकला हुआ; रद किया हुआ; बहिष्कृत, बिरादरी से ख़ारिज।

ख़ारिज अज़ अक़्ल (خارج از عقل) अ. फा. वि.–जो बात समझ से बाहर हो, ज्ञानातीत; जो व्यक्ति बुद्धि से ख़ारिज हो, मूर्ख।

ख़ारिज अज़ आहंग (خارج از آهنگ) अ. फा. वि.–जो बात बिना इरादे के हो; जो स्वर स्थान से विचलित हो।

ख़ारिज अज़ क़ियास (خارج از قیاس) अ. फा. वि.–अनुमान से अधिक, बहुत अधिक।

ख़ारिज अज़ बह्स (خارج از بحث) अ. फा. वि.–जो बात असंगत हो; जो बात सर्वमान्य हो; निर्विवाद बात।

ख़ारिज आहंगी (خارج آهنگی) अ. फा. स्त्री.–स्वर का विचलित हो जाना।

ख़ारिज क़िस्मत (خارج قسمت) अ. पुं.–वह संख्या जो भाग देने से प्राप्त हो, लब्धि, भजनफल, भागफल।

ख़ारिजन् (خارجاً) अ. वि.–उड़ते-उड़ते, अविश्वस्त रूप से (सुनने के लिए प्रयुक्त होता है)।

ख़ारिजी (خارجی) अ. वि.–बाहरी, बाह्य; मुसलमानों का एक समुदाय जो हज़रत अली को नहीं मानता।

ख़ारिजुलअक़्ल (خارج العقل) अ. वि. दे.–'ख़ारिज अज़ अक़्ल'।

ख़ारिजुलबलद (خارج البلد) अ. वि.–वतन से निकाला हुआ, देश-निष्कासित, जलावतन।

ख़ारिफ़ (خارف) अ. वि.–खजूरों की देखरेख करनेवाला।

ख़ारिम (خارم) अ. वि.–नाक काटनेवाला; नथने छेदनेवाला; शरारती, उपद्रवी।

ख़ारिश (خارش) फा. स्त्री.–खुजली, कंडू, खर्जू, विर्चचिका, खाज।

ख़ारिश्त (خارشت) फा. स्त्री. दे.–'ख़ारिश'।

ख़ारिश्ती (خارشتی) फा. वि.–जिसे खाज हो, खुजली का मरीज़।

ख़ारिशी (خارشی) फा. वि. दे.–'ख़ारिश्ती'।

ख़ारिस्तान (خارستان) फा. पुं.–काँटों का जंगल, जहाँ काँटे ही काँटे हों।

ख़ारीदः (خاریدہ) फा. वि.–खुजलाया हुआ।

ख़ारीदनी (خاریدنی) फा. वि.–खुजलाने के लाइक़।

ख़ारे अक़्रब (خار عقرب) अ. फा. पुं.–मिर्रीख़; कज़्दुम, बिच्छू का डंक; नामुबारक, मनहूस, अशुभ।

ख़ारे मुग़ीलाँ (خار مغیلاں) फा. पुं.–बबूल का काँटा, बब्बूर-कंटक।

ख़ारोख़स (خاروخس) फा. पुं.–कूड़ा-करकट।

ख़ारोख़सक (خاروخسک) फा. पुं. दे.–'ख़ारख़सक'।

ख़ालः (خالہ) अ. स्त्री.–माँ की बहन, मामी, मौसी, मातृष्वसा।

ख़ालः (خالہ) फा. पुं.–छाला, फफोला।

ख़ालःज़ाद (خالہزاد) अ. फा. वि.–मौसी का लड़का या लड़की।

ख़ाल (خال) अ. पुं.–तिल, बिन्दु, शरीर का काला दाग़; मामूँ, माँ का भाई; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; मेधा, बुद्धि, अक़्ल; अहंकार, अभिमान, ग़ुरूर।

ख़ाल ख़ाल (خال خال) अ. वि.–कहीं-कहीं, यदा-कदा, कोई-कोई, बहुत कम।

ख़ालिक़ (خالق) अ. वि.–उत्पत्तिकर्ता, पैदा करनेवाला; सृष्टिकर्ता, स्रष्टा, ईश्वर।

ख़ालिक़े कुल (خالق کل) अ. पुं.–ब्रह्मांड की हर वस्तु उत्पन्न करनेवाला, सर्वस्रष्टा, ईश्वर।

ख़ालिद (خالد) अ. वि.–हमेशा रहनेवाला, नित्य, अनश्वर; इस्लाम का एक प्रसिद्ध सेनापति।

ख़ालिफ़ः (خالفہ) अ. वि.–बहुत अधिक प्रतिकूल पुरुष; जिससे किसी को यश न हो; रावटी का खंभा।

ख़ालिफ़ (خالف) अ. वि.–पानी खींचनेवाला; पीछे छूटा हुआ, जो पीछे रह गया हो; ऐसा व्यक्ति जो यशहीन हो।

ख़ालियः (خالیہ) अ. वि.–प्राचीन, पुरातन; क़दीम; पिछला, गुज़रा हुआ, गत।

ख़ालिसः (خالصہ) अ. पुं.–राजा की निजी और ज़ाती भूमि और जायदाद; निर्मल, निष्केवल, ख़ालिस; सिक्खों का एक सम्प्रदाय (ख़ालसा)।

ख़ालिस (خالص) अ. वि.–बेमेल, विशुद्ध, निष्केवल; निश्छल, मुख़्लिस; केवल, सिर्फ़।

ख़ालिसुन्नस्ल (خالص النسل) अ. वि.–जिसके वंश में कोई दोष न हो, कुलीन।

ख़ालिसुलअस्ल (خالص الاصل) अ.वि. दे.–'ख़ालिसुन्नस्ल'।

ख़ाली (خالی) अ. वि.–जिसमें कुछ भरा न हो, रिक़्त; जिसमें कोई रहता न हो, ग़ैर आबाद; केवल, सिर्फ़।

ख़ाली अज़ अक़्ल (خالی از عقل) अ. फा. वि.–बुद्धिहीन, मूर्ख,बेवक़ूफ़।

ख़ाली अज़ इल्लत (خالی از علت) अ. फा. वि.–बिना बाधा का, बिना दोष का।

ख़ालू (خالو) अ. पुं.–माँ का भाई, मामूँ, परन्तु इस समय माँ की बहन के पति को कहते हैं, (माँ की बहन, ख़ाला, मौसी)।

ख़ाले' (خالع) अ.वि.–वह स्त्री जिसे पति ने छोड़ दिया हो; वह पति जिसे स्त्री ने छोड़ दिया हो; ख़ूब पका हुआ खजूर।

ख़ाले आरिज़ (خال عارض) अ. पुं.–गाल का तिल।

ख़ाले रुख़ (خال رخ) अ. फा. पुं.–मुँह का तिल; गाल का तिल।

ख़ावंद (خاوند) फा. वि.–ख़ुदावंद का लघु., स्वामी, मालिक; पति, शौहर (ख़ाविंद)।

ख़ावंदी (خاوندی) फा. स्त्री–स्वामित्व, मालिकीयत; पतित्व, शौहरपन।

ख़ावर (خاور) फा. वि.–पूर्व दिशा, पूरब, मश्रिक़; पश्चिम दिशा, पच्छिम, मग़्रिब।

ख़ावियः (خاویہ) अ.वि.–रिक़्त, ख़ाली; पड़ा हुआ, उफ़्तादः।

ख़ाशः (خاشہ) फा. पुं.–कूड़ा-करकट।

ख़ाश (خاش) फा. स्त्री.–सास; पति की माँ; पत्नी की माँ।

ख़ाशाक (خاشاک) फा. पुं.–कूड़ा-करकट।

ख़ाशे' (خاشع) अ. वि.–विनम्र, विनीत, ख़ाकसार।

ख़ासः (خاصہ) अ. पुं.–राजाओं और बादशाहों का खाना।

ख़ास(स्स) (خاص) अ.वि.–विशेष, मख़्सूस; मुख्य, प्रधान।

ख़ासगी (خاصگی) अ. फा. पुं.–राजाओं के पास उठने-बैठनेवाला; सेनापति; (स्त्री.) वह बाँदी जिससे राजा संभोग करता हो; राजा की रखैल दासी; हर अच्छी और सुन्दर वस्तु।

ख़ासदान (خاصدان) अ.फा.पुं.—पान रखने का पात्र-विशेष।

ख़ासनवीस (خاص نویس) अ. फा. वि.—पर्चानिवीस, जो बादशाहों को हर बात की सूचना देता हो, निजी लेखक, पर्सनल असिस्टेंट।

ख़ासबरदार (خاص بردار) अ. फा. पुं.—वह नौकर जो बंदूक़ या बल्लम लेकर मालिक के आगे चलता है।

ख़ासियत (خاصیت) अ. स्त्री.—गुण, सिफ़त; धर्म, गुण, मिज़ाज; स्वभाव, आदत।

ख़ासिरः (خاصرہ) अ. स्त्री.—कमर और पेड़ू।

ख़ासिर (خاسر) अ.वि.—वह व्यक्ति जो स्वयं अपना नुकसान करे; जिसे माल में घाटा आया हो।

ख़ासीयत (خاصیت) अ. स्त्री. दे.—'ख़ासियत', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ासोआम (خاص وعام) अ. पुं.—छोटे-बड़े सब व्यक्ति, सर्वसाधारण, अवाम।

ख़ास्सः (خاصہ) अ. पुं. दे.—'ख़ासियत'।

ख़ास्सीयत (خاصیت) अ.स्त्री. दे.—'ख़ासियत', सबसे अधिक शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु प्रचलित 'ख़ासियत' ही है।

ख़ाहाँ (خاہاں) फा. वि. दे.—'ख़्वाहाँ'।

ख़ाहिश (خواہش) फा. स्त्री. दे.—'ख़्वाहिश'।

ख़ि

ख़िंग (خنگ) फा. वि.—श्वेत, सफ़ेद; सफ़ेद घोड़ा, श्वेताश्व।

ख़िंगबुत (خنگ بت) फा. पुं.—श्वेत मूर्ति, सफ़ेद बुत; बिल्लूर का पियाला; गोरा मा'शूक़।

ख़िंग मगसी (خنگ مگسی) फा. पुं.—सफ़ेद घोड़ा, जिस पर काली बुँदकियाँ हों।

ख़िंजीर (خنجیر) अ. पुं.—हड्डी सुलगने की दुर्गंध।

ख़िंज़ीर (خنزیر) अ. पुं.—शूकर, वराह, सुअर।

ख़िंसर (خنصر) अ. स्त्री. दे.—'ख़िंसिर'।

ख़िंसिर (خنصر) अ. स्त्री.—हाथ की सबसे छोटी उँगली, छिगुली, कनिष्ठा, कनिष्ठिका, कनीनिका।

ख़िज़र (خضر) अ.पुं.—यह उच्चारण अशुद्ध है, केवल 'ख़िज़्र्' और 'ख़ज़िर' शुद्ध हैं।

ख़िज़ाँ (خزاں) फा. स्त्री.—दे. शु. उच्चारण 'ख़ज़ाँ'।

ख़िज़ानः (خزانہ) अ. पुं.—दे. 'ख़ज़ानः', शुद्ध यही है, परन्तु उर्दू में प्रचलित 'ख़ज़ानः' ही है।

ख़िज़ानगी (خزانگی) फा. स्त्री.—ऐसी सुन्दर और बहुमूल्य वस्तु जो राजाओं के योग्य हो।

ख़िज़ाब (خضاب) अ. पुं.—बालों के रँगने का मसाला; रँगा हुआ हाथ; एक तारा जिसके बीच आशक में आने पर जो दुआ माँगी जाय वह पूरी होती है।

ख़िज़्र् (خضر) अ. पुं.—एक अमर पैग़म्बर जिनके अधिकार में वन हैं और जो भूले-भटकों को मार्ग बताते हैं; एक समुद्र, कैस्पियन; लम्बी आयु का फ़रिश्ता—"गुज़ार दूँ तेरे ग़म में जो उम्रे ख़िज़्र मिले"।

ख़िज़्रसूरत (خضر صورت) अ. वि.—जो देखने में हज़रत ख़िज़्र की भाँति सहृदय और दयालु हो।

ख़िज़्रे मंज़िल (خضر منزل) अ.पुं.—मार्गदर्शक, रहनुमा, ख़िज़्र की तरह मंज़िल तक रास्ता बतानेवाला,—'क्या मिला ख़िज़्र से सिकंदर को—किसको अब रहनुमा करे कोई।"—ग़ालिब।

ख़िज़्रे राह (خضر راہ) अ. फा. पुं. दे.—'ख़िज़्रेमंज़िल।

ख़िज़्लान (خذلان) अ. पुं.—वंचकता, हीनता, महरूमी; अभागापन, बदक़िस्मती; मित्र की सहायता न करना।

ख़िता (خطا) अ. स्त्री.—शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में 'ख़ता' बोलते हैं, दे. 'ख़ता'।

ख़ितान (ختان) अ. पुं.—ख़त्नः, लिंग के सिर की खाल काटना; लिंग का वह भाग जो काटा जाय, लिंगाग्र।

ख़िताब (خطاب) अ. पुं.—उपाधि, लक़ब; संबोधन, मुख़ातबः; सरकार की ओर से मिली हुई उपाधि।

ख़िताबत (خطابت) अ. स्त्री.—संबोधन, ख़िताब; ख़तीब का काम, भाषण देने का काम; ख़ुत्बः पढ़ने का काम।

ख़िताबयाफ़्तः (خطاب یافتہ) अ. फा. वि.—जिसे राज की ओर से उपाधि मिली हो, प्राप्तोपाधि, राज्य-प्रदत्त पदवी पाया हुआ व्यक्ति।

ख़िताम: (ختامہ) अ. पुं.—दे. 'ख़िताम'।

ख़िताम (ختام) अ. पुं.—चपड़ा या मोम जिसपर मोहर की जाती है।

ख़िताम (خطام) अ. पुं.—ऊँट की नकेल।

ख़ित्तः (خطہ) अ. पुं.—क्षेत्र, इलाक़ा; प्रदेश, देश; ज़मीन का प्लाट जिस पर घर बनाया जाय।

ख़ित्बः (خطبہ) अ. पुं.—स्त्री की चाह, ब्याह की इच्छा।

ख़ित्बत (خطبت) अ. स्त्री.—मँगनी, सगाई; वह शब्द जो ख़तीब निकाह के समय पढ़ता है; वह बात जो झगड़ा तै कर दे।

ख़ित्मी (خطمی) अ. स्त्री.—शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में ख़त्मी बोलते हैं, दे. 'ख़त्मी'।

ख़िदफ़ (خدف) अ. पुं.—कुर्ते या अँगरखे के अंग।

ख़िदाअ (خداع) अ. पुं.—छल करना, धोखा देना, फ़रेब करना; छल, कपट, फ़रेब।

ख़िदाज (خداج) अ. पुं.—हानि, नुकसान; अपूर्ण, नातमाम; समय से पहले जनना, दे. 'ख़दाज', दोनों शुद्ध हैं।

ख़िदारत (خدارت) अ. स्त्री.–स्त्री का पर्दे में रहना, पर्दानशीनी।

ख़िदेव (خدیو) फा. पुं.–राजा, बादशाह, शासक; स्वामी, पति, मालिक।

ख़िद्न (خدن) अ. पुं.–मित्र, दोस्त; प्रेमपात्र, मा'शूक़।

ख़िद्मत (خدمت) अ. स्त्री.–दासता, ग़ुलामी; सेवा, नौकरी; शुश्रूषा; कार्यक्रम।

ख़िद्मतगार (خدمتگار) अ. फा. वि.–दास, नौकर, ख़िद्मती।

ख़िद्मतगारी (خدمتگاری) अ. फा. स्त्री.–दासता, नौकरी, परिचर्या।

ख़िद्मतगुज़ार (خدمتگزار) अ. फा. वि.–दिल से सेवा करनेवाला; आज्ञापालक, फर्माबरदार।

ख़िद्मतगुज़ारी (خدمتگزاری) अ. फा. स्त्री.–दिल से सेवा करना; आज्ञापालन करना।

ख़िद्मती (خدمتی) अ. वि.–सेवक, दास, ख़िद्मतगार।

ख़िद्मते ख़ल्क़ (خدمت خلق) अ. स्त्री.–जनता की सेवा, देशसेवा।

ख़िद्र (خدر) अ. पुं.–सिंह के रहने की माँद; आड़, पर्दा।

ख़िफ़ा (خفا) अ. पुं.–छिपाव, दुराव, पोशीदगी।

ख़िफ़ारः (خفارہ) अ. पुं.–प्रतिज्ञा-पालन का वचन देना; परस्पर क़ौल-क़रार करना; प्रतिज्ञा, वचन, क़ौल-क़रार।

ख़िफ़्फ़त (خفت) अ. स्त्री.–लाज, लज्जा, शर्म; संकोच, नदामत; न्यनता, कमी।

ख़िफ़्रक़ (خفرق) अ. वि.–निकृष्ट, दूषित, ख़राब, नाक़िस।

ख़िफ़्रिक़ (خفرق) अ. वि.–दे. 'ख़िफ़्रक़'।

ख़िफ़्रीक़ (خفریق) अ. वि.–दे. 'ख़िफ़्रक़'।

ख़िबा (خبا) अ. पुं.–ख़ैमः, रावटी, तंबू।

ख़िब्रत (خبرت) अ. स्त्री.–परीक्षा, आज़माइश; बुद्धिमत्ता, दानिश; दक्षता, चातुर्य, होशयारी।

ख़िमार (خمار) अ. स्त्री.–ओढ़नी, दुपट्टा।

ख़िम्अ (خمع) अ. पुं.–घातक भेड़िया।

ख़िम्मीर (خمیر) अ. वि.–जो हर समय शराब में मस्त रहता हो।

ख़ियम (خیم) अ. पुं.–'ख़ैमः' का बहु., रावटियाँ, तम्बू, ख़ैमे।

ख़ियरः (خیرہ) अ. पुं.–'ख़ैर' का बहु., सज्जन लोग, अच्छ और नेक लोग।

ख़ियात (خیاط) अ. स्त्री.–सुई, सूची, सूजी, कपड़ा सीने की सूजी।

ख़ियातत (خیاطت) पुं. स्त्री.–कपड़ा सीने का काम, सिलाई; सिलाई का पेशा।

ख़ियानत (خیانت) अ. स्त्री.–ग़बन, मोषण, अपहरण।

ख़ियानते मुज्रिमानः (خیانت مجرمانہ) अ. फा. स्त्री.–निंद्य भावना से धन हथिया लेना।

ख़ियाबाँ (خیابان) फा. पुं.–कियारी, रविश; उद्यान, बाग़।

ख़ियाम (خیام) अ. पुं.–'ख़ैमः' का बहु., ख़ैमे, तम्बू।

ख़ियार (خیار) अ. पुं.–खीरा, एक प्रसिद्ध फल।

ख़ियारक (خیارک) फा. पुं.–रान की जड़ में निकलनेवाला फोड़ा, बद।

ख़ियारज़ः (خیارزہ) अ. फा. पुं.–ककड़ी, एक प्रसिद्ध फल।

ख़ियारशंबर (خیارشنبر) अ. पुं.–अमलतास, आरग्वध।

ख़ियारैन (خیارین) अ. पुं.–खीरा और ककड़ी दोनों।

ख़ियू (خیو) फा. पुं.–थूक, मुखस्राव, दे. 'ख़यू', दोनों शुद्ध हैं।

ख़िरगाह (خرگاہ) फा. पुं.–बड़ी रावटी, बड़ा ख़ैमः, दे. 'ख़रगाह', दोनों शुद्ध हैं।

ख़िरद (خرد) फा. स्त्री.–बुद्धि, धी, मनीषा, मेधा, अक़्ल।

ख़िरदपर्वर (خردپرور) फा. वि.–दे. 'ख़िरदमंद'।

ख़िरदमंद (خردمند) फा. वि.–मेधावी, मनीषी, बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

ख़िरदमंदी (خردمندی) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, अक़्लमंदी।

ख़िरदवर (خردور) फा. वि.–दे. 'ख़िरदमंद'।

ख़िराज (خراج) अ. वि.–दे. शु. उच्चारण 'ख़राज'।

ख़िरातत (خراطت) अ. स्त्री.–लकड़ी खरादने का काम।

ख़िराम (خرام) फा. स्त्री.–चाल, गति, रफ़्तार; नर्म चाल, मृदुल गति, (प्रत्य.) चलनेवाला; जैसे–'सबुकख़िराम' हलकी चाल चलनेवाला।

ख़िरामाँ (خرامان) फा. वि.–टहलते हुए; टहलनेवाला।

ख़िरामाँ ख़िरामाँ (خرامان خرامان) फा. वि.–धीरे-धीरे टहलते हुए; हलकी चाल से, मंद गति से।

ख़िरामेनाज़ (خرامناز) फा. स्त्री.–इठलाती हुई चाल, मा'शूक़ाना चाल।

ख़िर्क़ः (خرقہ) अ. पुं.–गुदड़ी, फटा-पुराना लिबास; किसी ऋषि या वली के शरीर से उतरा हुआ लिबास।

ख़िर्क़ःपोश (خرقہ‌پوش) अ. फा. वि.–फ़क़ीरों का ख़िर्क़ः पहननेवाला, फ़क़ीर, साधु।

ख़िर्क़ (خرق) अ. वि.–विनोदी, हँसोड़, मख़ोलिया; शूर, वीर, बहादुर।

ख़िर्निक़ (خرنق) अ. पुं.–ख़रगोश का बच्चा।

ख़िर्मन (خرمن) फा. पुं.–वह खलियान जिस पर दाँयँ चल गयी हो; भूसा मिला हुआ अन्न; भूसा निकला हुआ अन्न का ढेर।

ख़िर्मने माह (خرمنِ ماہ) फा. पुं.–चाँद का घेरा, हालः, चंद्रमंडल।

ख़िर्संक (خرسک) फा. पुं.–एक खेल, जिसमें एक घेरे में एक लड़का खड़ा होता है, और सब लड़के उसे मारते हैं, जिस लड़के के शरीर में वह लड़का पाँव मार देता है, उसे उस घेरे में खड़ा होना पड़ता है।

ख़िल [ल्ल] (خل) अ. पुं.–मित्र, दोस्त, सखा, यार।

ख़िलाअ (خلاع) अ. स्त्री.–'ख़िल्अत' का बहु., ख़िल्अतें।

ख़िलाअत (خلاعت) अ. स्त्री.–रोग के कारण दुखी रहना।

ख़िलाक़ (خلاق) अ. पुं.–एक प्रकार की सुगंध।

ख़िलात (خلاط) अ. पुं.–बुद्धि-विकार, अक़्ल की ख़राबी; नर और मादा का मेल।

ख़िलाफ़ (خلاف) अ. पुं.–बेत का पेड़, वेत्र, (वि.) विरुद्ध, मुख़ालिफ़; प्रतिकूल, नामुआफ़िक़; प्रत्युत, बरअक्स; शत्रु, दुश्मन।

ख़िलाफ़त (خلافت) अ. स्त्री.–प्रतिनिधित्व, नुमाइंदगी; स्थानापन्नता, क़ाइममक़ामी; मुहम्मद साहब के बाद उनकी जानशीनी।

ख़िलाफ़ते राशिदः (خلافتِ راشدہ) अ.स्त्री.–हज़रत मुहम्मद के चार ख़लीफ़ाओं का समय और उनकी ख़िलाफ़त।

ख़िलाफ़बयानी (خلاف بیانی) अ. स्त्री.–झूठ कहना, ग़लत बयान करना, मिथ्यावाद।

ख़िलाफ़वर्ज़ी (خلاف ورزی) अ. फा. स्त्री.–अवज्ञा, आज्ञोल्लंघन, हुक्मउदूली।

ख़िलाफ़े उम्मीद (خلافِ اِمید) अ. फा. पुं.–आशा के ख़िलाफ़, जिसकी आशा न हो; आशा से अधिक, आशातीत।

ख़िलाफ़े क़ाइदः (خلافِ قاعدہ) अ. पुं.–नियम के विरुद्ध, उसूल के ख़िलाफ़; क़ानून के विरुद्ध, अवैध।

ख़िलाफ़े क़ानून (خلافِ قانون) अ. पुं.–विधान के विरुद्ध, अवैध; नियम के विरुद्ध, क़ाइदे के ख़िलाफ़।

ख़िलाफ़े क़ियास (خلافِ قیاس) अ. पुं.–अनुमान के परे, ज्ञानातीत; जो सोचा हो उसके ख़िलाफ़।

ख़िलाफ़े ज़ाबितः (خلافِ ضابطہ) अ. पुं.–दे. 'ख़िलाफ़े क़ाइदः'।

ख़िलाफ़े तवक़्क़ो' (خلافِ توقع) अ.पुं.–आशा के ख़िलाफ़, आशातीत।

ख़िलाफ़े तह्ज़ीब (خلافِ تہذیب) अ. पुं.–सभ्यता और शिष्टता के विरुद्ध, अश्लील।

ख़िलाफ़े दस्तूर (خلافِ دستور) अ. फा. पुं.–दे. 'ख़िलाफ़े क़ाइदः'; परंपरा के विरुद्ध, रवाज के ख़िलाफ़, नियम-विरुद्ध।

ख़िलाफ़े मर्ज़ी (خلافِ مرضی) अ. पुं.–दे. 'ख़िलाफ़े मिज़ाज' इच्छा-विरुद्ध।

ख़िलाफ़े मिज़ाज (خلافِ مزاج) अ. पुं.–जिस बात को जी न चाहता हो, मर्ज़ी के विरुद्ध, स्वभाव-विरुद्ध।

ख़िलाफ़े मौज़ूअ (خلافِ موضوع) अ. पुं.–किसी विषय के अतिरिक्त दूसरा विषय, विपयांतर; जो प्रसंग चल रहा हो उसके विरुद्ध दूसरा प्रसंग, अप्रासंगिक।

ख़िलाफ़े वज़्अ' (خلافِ وضع) अ. पुं.–अपनी परंपरा और वज़ा'दारी के विरुद्ध, परंपरा-विरुद्ध।

ख़िलाफ़े वज़्ए फ़ित्री (خلافِ وضعِ فطری) अ. पुं.–अप्राकृतिक मैथुन, स्त्री के सिवा किसी और से रति-क्रीड़ा।

ख़िलाफ़े शान (خلافِ شان) अ. पुं.–अपनी आनबान के विरुद्ध, अपनी मर्यादा के विरुद्ध।

ख़िलाब (خلاب) अ. स्त्री.–कीचड़, कीच; दे. 'ख़लाब', दोनों शुद्ध हैं परन्तु वह अधिक शुद्ध है।

ख़िलाल (خلال) अ. पुं.–मध्य, बीच; दो वस्तुओं के बीच का अन्तर; मैत्री, दोस्ती; दाँत कुरेदने का तिनका; ताश की बाज़ी में मात।

ख़िलाले माइदः (خلالِ مائدہ) अ. पुं.–सिवैयाँ।

ख़िलाश (خلاش) अ. पुं.–रास्ते की कीचड़।

ख़िलास (خلاص) अ. पुं.–ख़ालिस, निष्केवल; खरा चाँदी और सोना; श्रेष्ठ, उत्तम; प्रेम और सच्चाई।

ख़िल्अत (خلعت) अ. स्त्री.–राज की ओर से सम्मानार्थ दिये जानेवाले वस्त्र आदि, जो तीन कपड़ों से कम नहीं होते; अपने शरीर से उतारकर दूसरे को वस्त्र पहनाना।

ख़िल्अते फ़ाख़िरः (خلعتِ فاخرہ) अ. स्त्री.–पूरा ख़िल्अत, जिसमें सात कपड़े, मोतियों की माला, रत्नजटित पगड़ी का ज़ीग़ः और तलवार आदि होते हैं।

ख़िल्क़त (خلقت) अ. स्त्री.–उत्पत्ति, सृष्टि, पैदाइश; जनता, जनसाधारण, अवाम।

ख़िल्क़ी (خلقی) अ. वि.–पैदाइशी, जन्मसिद्ध; प्राकृतिक, फ़ित्री।

ख़िल्तः (خلطہ) अ. पुं.–मिश्रण, मिलना; किसी के साथ रहकर जीवन व्यतीत करना।

ख़िल्त (خلط) अ. स्त्री.–शरीर के अंदर वात, पित्त, कफ आदि रस, धातु।

ख़िल्ते फ़ासिद (خلطِ فاسد) अ. स्त्री.–दूषित धातु, प्रकुपित धातु, वह वात, पित्त आदि जो बिगड़ गया हो।

ख़िल्ते सालेह (خلطِ صالح) अ. स्त्री.–शुद्ध धातु, वह ख़िल्त जिसमें कोई विकार न हो।

ख़िल्फ़ः (خلفہ) अ. पुं.–एक दूसरे के पीछे आना अथवा जाना; एक दूसरे के पीछे आया हुआ।

ख़िल्फ़ (خلف) अ. पुं.–मनुष्य अथवा पशु के स्तन का सिरा; लड़ाका मनुष्य।

ख़िल्म (خلم) फा. पुं.–नाक से निकलनेवाला रेंट।

ख़िल्म (خلم) अ. पुं.–मित्र, सखा, दोस्त; हरिण का ठाह, उसका निवासस्थान।

ख़िश्त (خشت) फा. स्त्री.–ईंट, इष्टिका; छोटा नैज़ा, साँग, शक्ति।

ख़िश्तक (خشتک) फा. पुं.–कपड़े का वह टुकड़ा जो कुर्ते आदि में बग़ल के नीचे लगता है, चौबग़ला।

ख़िश्तबारी (خشت‌باری) फा. स्त्री.–ईंटें फेंकना, ईंटों की मार, ईंटबाज़ी।

ख़िश्म (خشم) फा. पुं.–क्रोध, रोष, कोप, ग़ुस्सा, दे. 'ख़श्म' दोनों शुद्ध हैं।

ख़िसांदः (خساندہ) फा. पुं.–दे. 'ख़ेंसादः,' दोनों शुद्ध हैं, परन्तु प्रचलित वही है।

ख़िसाम (خصام) अ. पुं.–'ख़स्म' का बहु., शत्रु लोग, लड़नेवाले लोग; युद्ध करना, लड़ाई लड़ना।

ख़िसाल (خصال) अ. पुं.–'ख़स्लत' का बहु., स्वभाव, आदतें, प्रकृतियाँ।

ख़िस्कदानः (خسکدانہ) फा. पुं.–कुसुम के बीज।

ख़िस्ब (خصب) अ. पुं.–विभव, वैभव, समृद्धि, फ़राग़त; घास और सब्ज़ी की बहुतात; गुंजान नगर।

ख़िस्सत (خست) अ. स्त्री.–कृपणता, कंजूसी।

ख़िस्सतमआब (خست‌مآب) अ. वि.–बहुत बड़ा कंजूस, मक्खीचूस, कृपण-प्रकृति।

ख़ी

ख़ीक (خیک) फा. स्त्री.–पानी भरने की मश्क, भस्त्रा।

ख़ीत (خیط) अ. वि.–सिला हुआ।

ख़ीते बातिल (خیط باطل) अ. पुं.–हवा के वे कण और महीन रेशे जो मकान के सूराख में से दिखायी पड़ते हैं।

ख़ीद (خید) फा. पुं.–गेहूँ और जौ जो पूरे पके न हों और भूनकर चबाये जायँ, दे. 'ख़वीद', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ीफ़ः (خیفہ) अ. पुं.–भय, डर, ख़ौफ़।

ख़ीम (خیم) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

ख़ीरः (خیرہ) फा. वि.–धृष्ट, ढीठ, बेहया; जिसकी आँखों में चकाचौंध हो गयी हो, चौंधयाया हुआ; अंधकारमय, अँधियारा; चकित, हैरान, स्तब्ध; अकारण, बे सबब।

ख़ीरःकुश (خیرہ‌کش) फा. वि.–बिना कारण वध करनेवाला; निर्दय, पाषाण-हृदय, संगदिल।

ख़ीरःकुशी (خیرہ‌کشی) फा. स्त्री.–बिना कारण प्राण लेने का कर्म; निर्दयता, बेरहमी।

ख़ीरःचश्म (خیرہ‌چشم) फा. वि.–निर्लज्ज, बेहया; धृष्ट, बेबाक, गुस्ताख़।

ख़ीरःचश्मी (خیرہ‌چشمی) फा. स्त्री–.निर्लज्जता, बेहयाई; धृष्टता, गुस्ताख़ी।

ख़ीरःबातिन (خیرہ‌باطن) फा. अ. वि.–जिसकी आत्मा पापमयी हो, अंतःमलिन, बदसिरिश्त।

ख़ीरःबातिनी (خیرہ‌باطنی) फा. अ. स्त्री.–आत्मा की अशुद्धि, अंतःमलिनता, बदसिरिश्ती।

ख़ीरःसर (خیرہ‌سر) फा. वि.–उद्दंड, सरकश; अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान; स्वच्छंद, खुदराय; लोलुप, लालची।

ख़ीरःसरी (خیرہ‌سری) फा. स्त्री.–उद्दंडता; अवज्ञा; स्वच्छंदता; लोभ।

ख़ीर ख़ीर (خیرخیر) फा. वि.–मिथ्या, फ़ुज़ूल, बेहूदः।

ख़ीरगी (خیرگی) अ. स्त्री.–आँखों की चकाचौंध; धृष्टता, बेहयाई; अँधेरा; स्तब्धता, हैरानी।

ख़ीरी (خیری) फा. स्त्री.–दे. 'ख़त्मी'।

ख़ीरू (خیرو) फा. स्त्री.–दे. 'ख़त्मी'।

ख़ीवः (خیوہ) फा. पुं.–'ख़्वारज़्म' (रूसी तुर्किस्तान) का एक नगर।

ख़ीवक़ (خیوق) अ. पुं.–दे. 'ख़ीवः'।

ख़ीश (خویش) फा. पुं.–दे. 'ख़ेश'।

ख़ीस (خیس) अ. पुं.–सिंह के रहने की माँद, कछार; पेड़ों का झुण्ड।

ख़ीस (خیص) अ. स्त्री.–मसि, सियाही, लिखने की रौशनाई; थोड़ी सजावट, दे. 'ख़ैस', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ु

ख़ुंदगार (خندگار) फा. पुं.–'ख़ुदावंदगार' का लघु., सम्राट्, शहंशाह; बादशाह, शासक; 'ख़्वांदगार' का लघु, शिक्षक, पढ़ानेवाला, अध्यापक।

ख़ुंबक (خنبک) फा. पुं.–साज़ के साथ ताल देना, ताली बजाना; फ़क़ीरों के पहनने का एक मोटा कपड़ा; सिर और पूँछ हिलाना; कोलाहल, शोर।

ख़ुंसा (خنثیٰ) अ. पुं.–वह पुरुष जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों के चिह्न हों, ज़नाना, नरदारा, शिखण्डी।

ख़ुजंद (خجند) फा. पुं.–मावराउन्नह्र का एक छोटा नगर।

ख़ुजस्तः (خجستہ) फा. वि.–कल्याणमय, शुभान्वित, मुबारक।

ख़ुजस्तःपै (خجستہ پے) फा. वि.–जिसका आगमन कल्याणकर हो, मुबारकक़दम।

ख़ुजस्तःराय (خجستہ راے) फा. अ. वि.–जिसकी सलाह बहुत ठीक और शुभान्वित होती हो।

ख़ुज़ाअः (خزاعہ) अ. पुं.–किसी वस्तु से काटा हुआ खंड, टुकड़ा; अरब का एक वंश।

ख़ुज़ा'बील (خزعبیل) अ. वि.–अनृत, असत्य, ग़लत, बातिल।

ख़ुज़ारः (خضارہ) अ. पुं.–नदी, दर्या।

ख़ुज़ूअ (خضوع) अ. पुं.–नम्रता, विनीति, ख़ाकसारी।

ख़ुज़ूर (خضور) अ. पुं.–'ख़ज़र' का बहु., हरियालियाँ, सब्ज़ियाँ।

ख़ुज़्रत (خضرت) अ. स्त्री.–हरियाली, हरिमा, सब्ज़ी।

ख़ुज़्री (خضری) अ. स्त्री.–तरकारी, शाक, सब्ज़ी।

ख़ुज़्रीयात (خضریات) अ. स्त्री.–तरकारियाँ, सब्ज़ियाँ।

ख़ुज़्रूफ़ (خضروف) अ. वि.–युद्ध में फुर्ती से लड़नेवाला, युद्ध-कुशला (स्त्री.) चमड़े की फिरकी जिसमें डोरा डालकर घुमाते हैं।

ख़ुतन (ختن) फा. पुं.–चीन का एक नगर जहाँ की कस्तूरी प्रसिद्ध है।

ख़ुतार (ختار) अ. पुं.–घास-फूस से खेत को साफ़ करना, जमे हुए खेत में से घास आदि निकलना।

ख़ुतुवात (خطوات) अ. पुं.–'ख़ुत्वः' का बहु., डगें, क़दम।

ख़ुतूत (خطوط) अ. पुं.–'ख़त' का बहु., लकीरें, रेखाएँ, चिट्ठियाँ।

ख़ुतून (ختون) अ. पुं.–दामाद बनना।

ख़ुत्ताफ़ (خطاف) अ. स्त्री.–एक प्रसिद्ध चिड़िया, अबाबील; पानी खींचने के पुर का कुंडा।

ख़ुत्बः (خطبہ) अ. पुं.–पुस्तक की भूमिका, प्राक्कथन; उपदेश, धर्मोपदेश; भाषण, बयान; नमाज़ या निकाह का ख़ुत्बः।

ख़ुत्वः (خطوہ) अ. पुं.–एक डग, एक क़दम, चलते समय दोनों पाँवों के बीच का अंतर।

ख़ुद (خود) फा. अव्य.–स्वयं, आप; स्वतः, अपने आप।

ख़ुदअंदोख़्तः (خود اندوختہ) फा. वि.–अपने आप कमाकर इकट्ठा किया हुआ धन आदि, स्वोपार्जित।

ख़ुदअः (خدعہ) अ. वि.–जो दूसरों को छले।

ख़ुदआरा (خود آرا) फा. वि.–अपने को बना-सँवारकर रखनेवाला (वाली), स्वयंसज्जिता, सुसज्जिता।

ख़ुदआराई (خود آرائی) फा. स्त्री.–अपने आपको बनाने-सँवारने की क्रिया।

ख़ुदइत्मीनानी (خوداطمینانی) फा. अ. स्त्री.–अपने पर इत्मीनान होने का भाव; अपने मन को संतोष होने का भाव।

ख़ुदए'तिमाद (خوداعتماد) फा. अ. वि.–अपने पर भरोसा और विश्वास करनेवाला, आत्मविश्वासी।

ख़ुदए'तिमादी (خوداعتمادی) फा. अ. स्त्री.–अपने पर भरोसा और विश्वास करना, आत्म-विश्वास।

ख़ुदक (خودی) फा. पुं.–मन में उत्पन्न होनेवाले भ्रम और विचार।

ख़ुदकफ़ालत (خودکفالت) फा. अ. स्त्री.–अपना भार ख़ुद उठाना।

ख़ुदकफ़ील (خودکفیل) फा. अ. वि.–अपना भार स्वयं उठानेवाला, स्वावलंबी, आत्मावलंबी।

ख़ुदकाम (خودکام) फा. वि.–स्वच्छंद, निरंकुश, ख़ुदराय।

ख़ुदकामी (خودکامی) फा. स्त्री.–स्वच्छंदता, निरंकुशता, ख़ुदरायी।

ख़ुदकुश (خودکش) फा. वि.–आत्महत्या करनेवाला, ख़ुद को मार डालनेवाला।

ख़ुदकुशी (خودکشی) फा. स्त्री.–ख़ुद को मार डालना, आत्महत्या।

ख़ुदग़रज़ (خودغرض) फा. अ. वि.–अपने मतलब में चौकस, केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला, स्वार्थी, स्वार्थपर।

ख़ुदग़रज़ी (خودغرضی) फा. अ. स्त्री.–स्वार्थपरता, आत्म-लाभ, स्वार्थसाधन, ख़ुदमत्लबी।

ख़ुदद (خدد) अ. पुं.–'ख़ुद्दः' का बहु., सुरंगें, भूमि के भीतर के रास्ते।

ख़ुददार (خوددار) फा. वि.–अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान रखनेवाला, स्वाभिमानी।

ख़ुददारी (خودداری) फा. स्त्री.–अपनी प्रतिष्ठा और मर्यादा की रक्षा, स्वाभिमान, आत्मगौरव, आत्मसम्मान।

ख़ुदनविश्त (خودنوشت) फा. वि.–अपने क़लम का लिखा हुआ; स्वयं लिखे हुए अपने हालात।

ख़ुदनुमा (خودنما) फा. वि.–अपने सौंदर्य अथवा वैभव आदि का प्रदर्शन करनेवाला (वाली), आत्मप्रदर्शी।

ख़ुदनुमाई (خودنمائی) फा. स्त्री.–अपने हुस्न अथवा अपनी शान-शौकत का प्रदर्शन, आत्मप्रदर्शन।

ख़ुदपरस्त (خودپرست) फा. वि.–हर बात में अपना गौरव और अपनी महत्ता जतानेवाला, आत्मपूजक।

ख़ुदपरस्ती (خودپرستی) फा. स्त्री.–अपने ही को सब कुछ जानने का भाव, आत्म-पूजा।

ख़ुदपसंद (خودپسند) फ़ा. वि.–अपने को सबसे अच्छा और बड़ा समझनेवाला।

ख़ुदपसंदी (خودپسندی) फ़ा.स्त्री.–अपने को सबसे अधिक पसंद करने का भाव।

ख़ुदफ़रामोश (خودفراموش) फ़ा. वि.–ऐसा अचेत जो अपने को भी भूल जाय, आत्म-विस्मारक, "अपना भी मुंतज़िर हूँ तेरे इंतज़ार में"।

ख़ुदफ़रामोशी (خودفراموشی) फ़ा. स्त्री.–खोया खोया रहना, बेसुध रहना, अपना होश न रहना, आत्म विस्मृति।

ख़ुदफ़रेब (خودفریب) फ़ा. वि.–अपने को धोखा देनेवाला, अपने को धोखे में रखनेवाला, आत्मवञ्चक।

ख़ुदफ़रेबी (خودفریبی) फ़ा. स्त्री.–अपने को धोखे में रखना, आत्मवञ्चना।

ख़ुदफ़रोश (خودفروش) फ़ा. वि.–वह व्यक्ति जो धन या पद के लोभ में अपने राष्ट्र या अपने स्वामी से विश्वासघात करे, आत्म-विक्रेता।

ख़ुदफ़रोशी (خودفروشی) फ़ा. स्त्री.–अपने को दूसरों के हाथ बेच देना, ग़द्दारी करना, आत्म-विक्रय।

ख़ुदफ़िगन (خود فگن) फ़ा. वि.–घोड़े का अच्छा चढ़नेवाला।

ख़ुद ब ख़ुद (خود بخود) फ़ा. वि.–अपने आप, आपसे आप, स्वतः, स्वयं।

ख़ुदबदौलत (خود بدولت) फ़ा. अ. पुं.–श्रीमान्, महोदय, जनाव; स्वयं, आप, आप ख़ुद।

ख़ुदबीं (خودبیں) फ़ा. वि.–अपने को सब कुछ समझनेवाला, आत्मदर्शी; अहंकारी, अभिमानी, मग़रूर।

ख़ुदबीनी (خودبینی) फ़ा. स्त्री.–अपने को सब कुछ समझना, आत्मदर्शन; अहंकार, अभिमान, ग़ुरूर।

ख़ुदमत्लब (خودمطلب) फ़ा. अ. वि.–दे. 'ख़ुदग़रज़', स्वार्थ-साधक।

ख़ुदमत्लबी (خودمطلبی) फ़ा. अ. स्त्री.–दे. 'ख़ुदग़रज़ी', स्वार्थ-साधन।

ख़ुदमुख़्तार (خودمختار) फ़ा. अ. वि. –स्वेच्छाचारी, निरंकुश, मनमानी करनेवाला; स्वतंत्र, स्वाधीन, आज़ाद।

ख़ुदमुख़्तारी (خودمختاری) फ़ा. अ. स्त्री.–स्वच्छंदता, मन की मौज; स्वतंत्रता, स्वाधीनता, आज़ादी।

ख़ुदरफ़्तः (خودرفتہ) फ़ा. वि.–जो अपने आपे में न हो, संज्ञाहीन, निश्चेष्ट, बेसुध।

ख़ुदरफ़्तगी (خودرفتگی) फ़ा. स्त्री.–अपने आप में न होना, निश्चेष्टता।

ख़ुदराई (خودرائی) फ़ा. अ. स्त्री.–अपनी ही राय पर चलना, दूसरे का परामर्श न मानना, स्वेच्छाचार, स्वच्छंदता।

ख़ुदराए (خودرائے) फ़ा. अ. वि.–जो केवल अपने विचारों पर चले और किसी की बात न माने, स्वेच्छाचारी।

ख़ुदरुस्तः (خودرستہ) फ़ा. वि.–दे. 'ख़ुद रो'।

ख़ुदरो (خودرو) फ़ा. वि.–अपने आप उगा हुआ, जो बोया न गया हो।

ख़ुदशनास (خودشناس) फ़ा. वि.–अपना हलकापन या भारीपन पहचाननेवाला, अपनी जगह पहचाननेवाला।

ख़ुदशनासी (خود شناسی) फ़ा. स्त्री.–अपना हलका-भारीपन पहचान कर वैसी ही बात करना, निजज्ञान।

ख़ुदशाँ (خودشاں) फ़ा. पुं.–वह सब।

ख़ुदशिकन (خودشکن) फ़ा. वि.–विनम्र, विनीत, ख़ाकसार।

ख़ुदशिकनी (خودشکنی) फ़ा. स्त्री.–विनम्रता, विनीति, ख़ाकसारी।

ख़ुदसना (خودثنا) फ़ा. अ. वि.–दे. 'ख़ुदसिता'।

ख़ुदसर (خودسر) फ़ा. वि.–उद्दंड, उजड्ड, अक्खड़; अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान; विद्रोही, बाग़ी।

ख़ुदसरी (خودسری) फ़ा. स्त्री.–उद्दंडता, उजड्डपन; अवज्ञा, हुक्मउदूली; विद्रोह, बग़ावत।

ख़ुदसवार (خودسوار) फ़ा. वि.–दे. 'ख़ुदराए'।

ख़ुदसवारी (خودسواری) फ़ा. स्त्री.–दे. 'ख़ुदराई'।

ख़ुदसाख़्तः (خودساختہ) फ़ा. वि.–अपना बनाया हुआ, आत्म-निर्मित; मनगढ़ंत, कपोल-कल्पित।

ख़ुदसाज़ (خودساز) फ़ा. वि.–अपनी बाह्य वेशभूषा को सुसज्जित रखनेवाला; अपने आचरण की शुद्धि का प्रयत्न करनेवाला।

ख़ुदसाज़ी (خودسازی) फ़ा. स्त्री.–अपनी वेशभूषा को सँवारना; अपने आचरण की शुद्धि की कोशिश करना।

ख़ुदसिता (خودستا) फ़ा. वि.–अपने मुँह मियाँमिट्ठू बननेवाला, आत्मश्लाघी, आत्म-प्रशंसक।

ख़ुदसिताई (خودستائی) फ़ा. स्त्री.–अपने मुँह से अपनी प्रशंसा करना, आत्मश्लाघा, आत्मप्रशंसा।

ख़ुदसुपुर्दगी (خودسپردگی) फ़ा. स्त्री.–अपने को किसी के अधिकार में दे देना, आत्मसमर्पण, अंगदान।

ख़ुदा (خدا) फ़ा. पुं.–परमात्मा, ईश्वर, अल्लाह।

ख़ुदाई (خدائی) फ़ा. स्त्री.–संसार, जगत्, दुनिया; ईश्वरत्व, खुदापन, (वि.) दैवी, ग़ैबी, आस्मानी।

ख़ुदातर्स (خداترس) फ़ा. वि.–ईश्वर से डरनेवाला, दूसरों पर दया करनेवाला, सदय, दयावान्।

ख़ुदातर्सी (خداترسی) फ़ा. स्त्री.–ईश्वर का भय, दूसरों पर दयाभाव, सदयता, दयालुता।

ख़ुदादाद (خداداد) फा. वि.–ख़ुदा का दिया हुआ, ईश्वर-दत्त; जो परिश्रम और प्रयास से न प्राप्त हो बल्कि ईश्वर की कृपा से मिले।

ख़ुदा न ख़्वास्तः (خدا نخواستہ) फा. अव्य.–ख़ुदा न करे, ईश्वर ऐसा न करे, एक आशीर्वाद का वाक्य, जो किसी अनिष्ट की शंका के समय बोलते हैं, जैसे—'ख़ुदा न ख़्वास्तः चोट आ गयी तो क्या होगा ?'

ख़ुदा ना कर्दः (خدا ناکردہ) फा. अव्य.–दे. 'ख़ुदा न ख़्वास्तः।

ख़ुदा ना ख़्वास्तः (خدا ناخواستہ) फा. अव्य.–दे. 'ख़ुदा न ख़्वास्तः', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ुदा ना तर्स (خدا نا ترس) फा. वि.–ईश्वर से न डरनेवाला, निर्दय, बेरहम।

ख़ुदा ना तर्सी (خدا ناترسی) फा. स्त्री.–ईश्वर का भय न होना, निर्दयता, बेरहमी।

ख़ुदापरस्त (خداپرست) फा. वि.–ख़ुदा को पूजनेवाला, धर्मनिष्ठ; ख़ुदा के अस्तित्व का क़ाइल, आस्तिक; सत्य-निष्ठ, ईमानदार; ऋषि, मुनि, वली; दयावान्, रहमदिल; ईश्वर-भक्त।

ख़ुदापरस्ती (خداپرستی) फा. स्त्री.–धर्मनिष्ठता; आस्तिकता; सत्यता; ऋषित्व, वलीपन; दयालुता, रहमदिली; ईश्वर-भक्ति।

ख़ुदायगाँ (خدایگاں) फा. पुं.–स्वामी, मालिक; राजा, बादशाह।

ख़ुदाया (خدایا) फा. अव्य.–हे ईश्वर, ऐ ख़ुदा, हे प्रभु, प्रभो।

ख़ुदारा (خدارا) फा. अव्य.–ईश्वर के लिए, ख़ुदा के वास्ते।

ख़ुदावंद (خداوند) फा. पुं.–ईश्वर, ख़ुदा; स्वामी, मालिक।

ख़ुदावंदगार (خداوندگار) फा. पुं.–दे. 'ख़ुदावंद'।

ख़ुदावंदा (خداوندا) फा. अव्य.–दे. 'ख़ुदाया'।

ख़ुदावंदी (خداوندی) फा. स्त्री.–ईश्वरत्व, ख़ुदाई।

ख़ुदाशनास (خداشناس) फा. वि.–ब्रह्मज्ञानी, आरिफ़; दयालु, रहमदिल; न्यायवान्ः, मुंसिफ़मिज़ाज।

ख़ुदाशनासी (خداشناسی) फा. स्त्री.–ब्रह्मज्ञान, मा'रिफ़त; दयालुता, रहमदिली; न्यायकर्म, इंसाफ़परवरी।

ख़ुदासाज़ (خداساز) फा. वि.–ख़ुदा का बनाया हुआ, जो अपने परिश्रम से न हो, अपने आप हो जाय।

ख़ुदाहाफ़िज़ (خدا حافظ) फा. अ. वा.–किसी को विदा करते समय बोला जानेवाला वाक्य, अर्थात् ईश्वर आपकी रक्षा करे।

ख़ुदी (خودی) फा. स्त्री.–अहंकार, अहंवाद, यह भाव कि बस हमीं हम हैं; गर्व, अभिमान, घमंड।

ख़ुदुक (خودک) फा. पुं.–दे. 'ख़ुदूक'।

ख़ुदू (خدو) फा. पुं.–थूक, मुखस्राव।

ख़ुदूक (خدوک) फा. पुं.–क्रोध, ग़ुस्सा; लज्जा, शर्म; उद्विग्नता, परेशानी; मन के बुरे विचार, भ्रम; ईर्ष्या, रश्क।

ख़ुद्अः (خدعہ) अ. पुं.–छल, कपट, फ़रेब, (वि.) वह व्यक्ति जिसे दूसरे लोग छलें।

ख़ुद्दः (خدہ) अ. पुं.–भूमि के भीतर का मार्ग, सुरंग।

ख़ुद्दाम (خدام) अ. पुं.–'ख़ादिम' का बहु., नौकर लोग, सेवकगण।

ख़ुनाक़ (خناق) अ. पुं.–दे. 'ख़नाक़'।

ख़ुनुक (خنک) फा. वि.–शीतल, ठंडा; सुन्दर, अच्छा; क्लीव, नामर्द।

ख़ुनुकी (خنکی) फा. स्त्री.–शीत, शीतलता, ठंडक; शीतकाल, जाड़ा; नपुंसकता, नामर्दी।

ख़ुनूअ (خنوع) अ. पुं.–विनम्रता दिखाना, ख़ाकसारी करना; नम्र करना, नर्म करना।

ख़ुनूस (خنوس) अ. पुं.–पीछे रह जाना; किसी चीज़ के पीछे छिपना।

ख़ुन्फ़सा (خنفسا) अ. पुं.–गुबरीला, गोबर का एक कीड़ा।

ख़ुन्या (خنیا) फा. पूं.–गान, राग, नग़्मः; वाद्य, साज़।

ख़ुन्यागर (خنیاگر) फा. वि.–गानेवाला, गायक, गवैया।

ख़ुन्यागरी (خنیاگری) फा. स्त्री.–गाने का काम; गाने का पेशा।

ख़ुफ़ [फ़्फ़] (خف) अ. पुं.–मोज़ा; शुतुरमुर्ग़; पाँव का तलवा; ठोस ज़मीन; बूढ़ा ऊँट।

ख़ुफ़ाफ़ (خفاف) अ. वि.–हलका, अगुरु, लघु।

ख़ुफ़ारः (خفارہ) अ. पुं.–दे. 'ख़िफ़ारः', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ुफ़ीयः (خفیہ) अ. पुं.–छिपा हुआ, गुप्त, पोशीदा।

ख़ुफ़ूक़ (خفوق) अ. पुं.–तारे का डूबना; नींद की अधिकता से सिर हिलना; रात में चलना; पक्षी का उड़ना।

ख़ुफ़ूफ़ (خفوف) अ. पुं.–हलका होना; तेज़ चलना; कम होना।

ख़ुफ़्चः (خفچہ) फा. पुं.–पशुओं के हाँकने की छड़ी, जिसके सिरे पर नोकदार कील लगी होती है।

ख़ुफ़्तः (خفتہ) फा. वि.–सोया हुआ, सुप्त।

ख़ुफ़्तःनसीब (خفتہ نصیب) फा. अ. वि.–जिसका भाग्य सो रहा हो, हतभाग्य, दुर्दैव, दुर्दृष्ट।

ख़ुफ़्तःनसीबी (خفتہ نصیبی) फा. अ. स्त्री.–भाग्यहीनता, बदनसीबी।

ख़ुफ़्तःबख़्त (خفتہ بخت) फा. वि.–दे. 'ख़ुफ़्तःनसीब'।

ख़ुफ़्तःबख़्ती (خفتہ بختی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुफ़्तःनसीबी'।

ख़ुफ़्तक (خفتک) फा. पुं.–काबूस का रोग, दे. 'काबूस'।

ख़ुफ़्तगी (خفتگی) फा. स्त्री.–सोने का भाव, स्वप्नता।

ख़ुफ़्तनी (خفتنی) फा. वि.–सोने के क़ाबिल।

ख़ुफ़्फ़ाश (خفاش) अ. पुं.–चमगादड़, चर्मचटक, वातुलि।

ख़ुफ़्यः (خفیہ) अ. वि.–'ख़ुफ़ीयः' का उर्दू रूप, छिपा हुआ, गुप्त; रहस्यमय, राज़दारानः; गुप्तचर, जासूस, (स्त्री.) गुप्तचरी, जासूसी।

ख़ुफ़्यःनवीस (خفیہ نویس) अ. फा. वि.–छिपकर किसी काम को देखने और उसकी रिपोर्ट करनेवाला।

ख़ुबस (خبث) अ. वि.–अपवित्र, गंदा, मलिन, पलीद।

ख़ुबसा (خبثا) अ. पुं.–'ख़बीस' का बहु., ख़बीस लोग, दुष्ट लोग।

ख़ुबात (خباط) अ. स्त्री.–पागलपन, बुद्धि-विक्षेप, दीवानगी।

ख़ुब्ज़ (خبز) अ. स्त्री.–रोटी, नान, रोटिका।

ख़ुब्स (خبث) अ. पुं.–मैलकुचैल; दुष्टता, ख़बासत; पाप, गुनाह; अन्तर्मलिनता, बदबातिनी।

ख़ुब्सुलहदीद (خبث الحدید) अ. पुं.–लोहे का मैल, मंडूर।

ख़ुब्से नफ़्स (خبث نفس) अ. पुं.–आत्मा की मलिनता, हृदय का पापमय होना।

ख़ुब्से बातिन (خبث باطن) अ. पुं.–दे. 'ख़ुब्से नफ़्स'।

ख़ुम (خم) फा. पुं.–घड़ा, मटका; शराब रखने का मटका; "ख़ुम के ख़ुम पी जाऊँगा मैं ऐसा बादानोश हूँ।"

ख़ुम[म्म] (خم) अ. पुं.–मुर्ग़ियों का दरबा।

ख़ुमकदः (خم کدہ) फा. पुं.–मदिरालय, सुरालय, शराबख़ाना।

ख़ुमकश (خم کش) फा. वि.–पूरी मटकी पी जानेवाला, घती शराबी, पान शौंद।

ख़ुमख़ानः (خم خانہ) फा. पुं.–दे. 'ख़ुमकदः'।

ख़ुमाअ' (خماع) अ. पुं.–चलते हुए झूमना, झूमते हुए चलना।

ख़ुमार (خمار) अ. पुं.–नशे के उतार की अवस्था, जिसमें हलका सिरदर्द और हलकी ऐंठन होती है; नशा, मद, उन्माद,—"आँखों ने मए हुस्न पिलाई थी एक रोज़–अँगड़ाइयाँ लेता हूँ अभीतक ख़ुमार में।"

ख़ुमारआलूदः (خمار آلودہ) फा. वि.–नशे में मस्त, मदोन्मत्त, प्रायः प्रेमिका की आँखों के लिए आता है। "ख़ुमार-आलूदः नज़रें तीरसी दिल में उतरती हैं।"

ख़ुमारआलूद (خمار آلود) फा. वि.–दे. 'ख़ुमार आलूदः'।

ख़ुमारीं (خماریں) अ. फा. वि.–दे. 'ख़ुमार आलूदः'।

ख़ुमाल (خمال) अ. पुं.–गठिया का दर्द; सच्चा मित्र।

ख़ुमासी (خماسی) अ. पुं.–अरबी का वह शब्द जिसमें पाँच अक्षर हों।

ख़ुमाहन (خم آهن) फा. पुं.–लालिमा लिये हुए एक काला पत्थर।

ख़ुमूद (خمود) अ. पुं.–आग का कुम्हला जाना या ख़त्म हो जाना, अर्थात् बुझ जाना।

ख़ुमूल (خمول) अ. पुं.–गुमनामी का जीवन व्यतीत करना, अज्ञातवास; गुमनामी।

ख़ुमूश (خموش) अ. पुं.–छीलना।

ख़ुमूस (خموص) अ. पुं.–सूजन का उतर जाना, सूजे हुए अंग का ठीक हो जाना।

ख़ुमे अफ़्लातून (خم افلاطون) फा. अ. पुं.–वह मटका जिसमें अफ़्लातून को मरते समय बंद करके पहाड़ की खोह में रख दिया गया था।

ख़ुमे ईसा (خم عیسی) फा. अ. पुं.–वह घड़ा जिसमें चाहे जिस रंग का कपड़ा डाला जाता, हज़रत ईसा की दुआ से वह सफ़ेद या काला निकलता था।

ख़ुमे मय (خم مے) फा. पुं.–शराब की मटकी।

ख़ुयूल (خیول) अ. पुं.–'ख़ैल' का बहु. समूह, समुदाय, जमाअतें।

ख़ुरः (خورہ) फा. पुं.–एक रोग जिसमें बाल झड़ने लगते हैं।

ख़ुर (خور) फा. पुं.–सूर्य, सूरज।

ख़ुरदाद (خرداد) फा. पुं.–फ़ार्सी का एक महीना जो असाढ़ के लगभग पड़ता है।

ख़ुरशीद (خرشید) फा. पुं.–रवि, दिनक्रर, दिवाकर, सूर्य, सूरज।

ख़ुरशेद (خرشید) फा. पुं.–दे. 'ख़ुरशीद', शुद्ध दोनों हैं, मगर 'ख़ुरशीद' फ़सीह है।

ख़ुराक (خواک) फा. स्त्री.–भोजन, खाना; खाद्य, खाने की वस्तु, ग़िज़ा।

ख़ुराज (خراج) अ. पुं.–फोड़ा, व्रण; घाव, ज़ख़्म, क्षत।

ख़ुराफ़त (خرافت) अ. स्त्री.–बकवास, अनर्गल प्रलाप, बेहूदःगोई।

ख़ुराफ़ात (خرافات) अ. स्त्री.–'ख़ुराफ़त' का बहु., बेहूदा बातें, बकवासें; बेहूदा और व्यर्थ के काम।

ख़ुरिंदः (خورندہ) फा. वि.–खानेवाला।

ख़ुरिश (خورش) फा. स्त्री.–ख़ुराक, भोजन, ग़िज़ा।

ख़ुरूज (خروج) अ. पुं.–निकलना, निःसरण; शासन के विरुद्ध विद्रोह, बग़ावत।

ख़ुरूजुल मक़अद (خروج المقعد) अ. पुं.–बच्चों को काँच निकलने का रोग, गुदभ्रंश, गुद-निर्गम।

ख़ुरूर (خرور) अ. पुं.–गिरना, गिर पड़ना; सोनेवाले के गले का बोलना, ख़र्राटे लेना।

ख़ुरूस (خروس) फा. पुं.–मुर्ग़ा, कुक्कुट।

ख़ुरोश (خروش) फा. पुं.–कोलाहल, शोर; हाहाकार, कोह्राम।

ख़ुर्ख़जीवन (خورخجیون) फा. अ.–एक शैतान जो स्त्रियों से संभोग करने के लिए उनके शरीर में प्रवेश कर जाता है।

ख़ुर्जीं (خورجیں) फा. पुं.–लद्दू गधे या घोड़े की पीठ का थैला, गौन, गोण।

ख़ुर्जी (خرجی) फा. पुं.–दे. 'ख़ुर्जीं'।

ख़ुर्तूम (خرطوم) अ. पुं.–हाथी की सूँड़, शुंड; तेज़ नशेवाली मदिरा; क़ौम का सरदार।

ख़ुर्दः (خردہ) फा. वि.–खाया हुआ, केवल यौगिक शब्दों के अंत में आता है, जैसे–'ज़ख्मख़ुर्दः' घाव खाया हुआ।

ख़ुर्दः (خردہ) फा. पुं.–खंड, टुकड़ा, रेज़ः; दोष, ऐब; रेज़गारी, नाबाँ।

ख़ुर्दःकार (خردہکار) फा. वि.–काम में बारीकी पसंद करनेवाला; कठिन काम सुगमता से करनेवाला।

ख़ुर्दःकारी (خردہکاری) फा. स्त्री.–काम में बारीकी पसंद करना; कठिन काम सरलता से करना।

ख़ुर्दःगीर (خردہگیر) फा. वि.–ऐब ढूँढ़नेवाला, छिद्रान्वेषी, ऐबची।

ख़ुर्दःगीरी (خوردہگیری) फा. स्त्री.–दोषों की खोज, छिद्रान्वेषण, ऐबचीनी।

ख़ुर्दःचीं (خردہچیں) फा. वि.–दे. 'ख़ुर्दःगीर'।

ख़ुर्दःचीनी (خردہچینی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुर्दःगीरी'।

ख़ुर्दःफ़रोश (خردہفروش) फा. वि.–फुटकर माल बेचनेवाला, थोकफ़रोश का उलटा।

ख़ुर्दःफ़रोशी (خردہفروشی) फा. स्त्री.–फुट माल बेचना।

ख़ुर्दःबीं (خردہبیں) फा. वि.–दे. 'ख़ुर्दःगीर'।

ख़ुर्दःबीनी (خردہبینی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुर्दःगीरी'।

ख़ुर्द (خورد) फा. वि.–छोटा, क्षुद्र; लघु, क़सीर; ह्रस्व, नाक़िस; कण, रेज़ः; योग्य, लायक़।

ख़ुर्द (خورد) फा. क्रि.–खाया।

ख़ुर्दनी (خوردنی) फा. वि.–खाने योग्य; खानेवाली वस्तु।

ख़ुर्दबीं (خردبیں) फा. वि.–छोटी चीज़ को देखनेवाला; दे. ख़ुर्दबीन।

ख़ुर्दबीन (خردبین) फा. स्त्री.–एक यंत्र, जिसमें छोटे से छोटी चीज़ बहुत बड़ी दिखाई देती है।

ख़ुर्दबीनी (خردبینی) फा. स्त्री.–छोटी वस्तु को देख लेना।

ख़ुर्दबुर्द (خوردبرد) फा. वि.–ग़ार्त, रबूद, नष्ट, बरबाद; ग़बन, अपहृत।

ख़ुर्दसाल (خردسال) फा. वि.–अल्पवयस्क, वयोबाल, कमसिन।

ख़ुर्दसाली (خردسالی) फा. स्त्री.–बाल्यावस्था, अल्पवयस्कता, कमसिनी।

ख़ुर्दी (خردی) फा. स्त्री.–छोटाई, लघुता।

ख़ुर्नूब (خرنوب) अ. पुं.–एक जंगली पेड़ जिसका फल दवा में काम आता है; उस पेड़ का फल।

ख़ुर्फ़ः (خرفہ) अ. पुं.–एक साग जिसके बीज दवा में काम आते हैं।

ख़ुर्मा (خرما) फा. पुं.–छुहारा, सूखा खजूर; हरा छुहारा, पिंड खजूर।

ख़ुर्रम (خرم) फा. वि.–प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, ख़ुश।

ख़ुर्रमी (خرمی) फा. स्त्री.–प्रसन्नता, हर्ष, आनंद, ख़ुशी।

ख़ुर्संद (خرسند) फा. वि.–दे. 'ख़ुर्रम'।

ख़ुर्संदी (خرسندی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुर्रमी'।

ख़ुल [ल्ल] (خل) अ. पुं.–मित्र, दोस्त, यार, सखा।

ख़ुलता (خلطا) अ. पुं.–'ख़लीत' का बहु., साझेदार लोग।

ख़ुलफ़ा (خلفا) अ. पुं.–'ख़लीफ़ः' का बहु., प्रतिनिधि लोग; स्थानापन्न लोग; हज़्रत अबूबक्र आदि ख़लीफ़े; मुसलमान शासकगण।

ख़ुलासः (خلاصہ) अ. पुं.–सार, संक्षेप, निचोड़; परिणाम, नतीजा; सारांश, तल्ख़ीस।

ख़ुलुक़ (خلق) अ. पुं.–दे. 'ख़ुल्क़', दो. शु. हैं।

ख़ुलुब (خلب) अ. पुं.–कचला मिट्टी, एक काली और चिपकनेवाली मिट्टी; बटी हुई रस्सी।

ख़ुलुव्व (خلو) अ. पुं.–दे. 'ख़ुलू'।

ख़ुलू (خلو) अ. पुं.–ख़ाली होना, रिक़्त होना; रिक्तता, ख़ालीपन।

ख़ुलूए मे'दः (خلوے معدہ) अ. पुं.–आमाशय का भोजन आदि से रिक़्त होना, पेट ख़ाली होना।

ख़ुलूज (خلوج) अ. पुं.–आँख का या किसी दूसरे अंग का फड़कना।

ख़ुलूद (خلود) अ. पुं.–सदा रहना, हमेशा रहना; नित्यता, हमेशगी।

ख़ुलूफ़ (خلوف) अ. पुं.–'ख़लफ़' का बहु., मृत व्यक्ति के पीछे रहनेवाले बाल-बच्चे; भोज्य पदार्थ का स्वाद बिगड़ जाना; पानी भरना; पुराने कपड़े उतारना और नये पहनना; नाश होना, बरबाद होना।

ख़ुलूस (خلوص) अ. पुं.–निष्कपटता, निश्छलता, सिद्क़दिली; सत्यता, सच्चाई; गाद, तलछट।

ख़ुलूअ (خلع) अ. पुं.–मुसलमान स्त्री का अपने पति से तलाक़ चाहना।

ख़ुल्क़ (خلق) अ. पुं.–सुशीलता, मुरव्वत; सदाचार, अख़्लाक़; स्वभाव, आदत।

ख़ुल्क़ान (خلقان) अ. पुं.–पुरातन, पुराना; पुराना वस्त्र, पुराना लिबास।

ख़ुल्त (خلطہ) अ. पुं.–भागीदारी, शिर्कत, साझा।

ख़ुल्त (خلت) अ. पुं.–अच्छा स्वभाव, सत्प्रकृति।

ख़ुल्दः (خلدہ) अ. पुं.–कान का बुंदा, लटकन, गोशवारा।

ख़ुल्द (خلد) अ. पुं.–स्वर्ग, नाक, बिहिश्त; नित्यता, हमेशगी, (स्त्री.) छछूंदर, एक जंतु।

ख़ुल्द आश्याँ (خلد آشیاں) अ. फा. वि.–जिसका घर स्वर्ग में हो, स्वर्गवासी, दिवंगत।

ख़ुल्दनशीं (خلدنشیں) अ. फा. वि.–दे. "ख़ुल्द आश्याँ'।

ख़ुल्दमकां (خلدمکاں) अ. वि.–दे. 'ख़ुल्द आश्यां'।

ख़ुल्देबरीं (خلدبریں) अ.फा.पुं.–सबसे ऊँचा स्वर्ग, सातवाँ स्वर्ग।

ख़ुल्फ़ (خلف) अ. पुं.–वचनभंग, प्रतिज्ञा-भंग, वादाख़िलाफ़ी।

ख़ुल्फ़े वा'दः (خلف وعدہ) अ. पुं.–प्रतिज्ञा का पालन न करना, प्रतिज्ञा-भंग।

ख़ुल्लत (خلت) अ. स्त्री.–मैत्री, दोस्ती।

ख़ुल्लब (خلب) अ. पुं.–वह बादल जिसमें पानी न हो।

ख़ुल्लान (خلان) अ. पुं.–ख़लील का बहु., मित्रगण, दोस्त लोग।

ख़ुल्लास (خلاص) अ. पुं.–घर के सूराख़; घर की बुराइयाँ।

ख़ुल्सः (خلسہ) अ. पुं.–काले और सफ़ेद बाल मिले हुए, खिचड़ी बाल; सूखी और तर घास मिली हुई।

ख़ुवार (خوار) अ. पुं.–बैल की डौंकन।

ख़ुश (خوش) फा. वि.–प्रसन्न, मस्रूर; शुभान्वित, मुबारक; सुंदर, हसीन; प्रियदर्शन, ख़ुशनुमा; पवित्र, पाक; पुनीत, नेक; उत्तम, श्रेष्ठ, आला।

ख़ुशअंजाम (خوش انجام) फा. वि.–जिसका परिणाम अच्छा हो वह काम, शुभ परिणाम।

ख़ुशअख़्लाक़ (خوش اخلاق) फा. अ. वि.–सुशील, चारुशील, ख़ुशख़ुल्क़; विनम्र, विनीत, मुन्कसिर।

ख़ुशअख़्लाक़ी (خوش اخلاقی) फा. अ. स्त्री.–सुशीलता, ख़ुशख़ुल्क़ी; विनीति,इ न्किसार।

ख़ुशअत्वार (خوش اطوار) फा. अ. वि.–अच्छे आचरण वाला, सदाचारी।

ख़ुशअदा (خوش ادا) फा. वि.–जिसकी अदाएँ अच्छी हों; जिसकी वर्णन-शैली अच्छी हो।

ख़ुशअमल (خوش عمل) अ. फा. वि.–शुद्ध आचरण-वाला, सदाचारी।

ख़ुशआब (خوش آب) फा. वा.–अच्छी चमक-दमक वाला।

ख़ुशआमदेद (خوش آمدید) फा. वि.–शुभागमन, आपका आना शुभान्वित हो, एक वाक्य, जो किसी बड़े व्यक्ति के आने पर कहा जाता है।

ख़ुशआ'माल (خوش اعمال) फा. अ. वि.–अच्छे आचार-विचारवाला, व्यवहार-शील।

ख़ुशआयंद (خوش آیند) फा. वि.–जिसका भविष्य अच्छा हो; अच्छा, सुंदर, उत्तम।

ख़ुशआवाज़ (خوش آواز) फा. वि.–जिसका स्वर अच्छा हो, कलरव, कलकंठ, सुस्वर।

ख़ुशआवाज़ी (خوش آوازی) फा. स्त्री.–स्वर का अच्छा होना।

ख़ुशइंतिज़ाम (خوش انتظام) फा. अ. वि.–जो प्रबंध अच्छा करता हो, प्रबंध-कुशल।

ख़ुशइंतिज़ामी (خوش انتظامی) फा. अ. स्त्री.–प्रबंध की अच्छाई, प्रबंध-कौशल।

ख़ुशइक़्बाल (خوش اقبال) फा. अ. वि.–प्रतापवान्, तेजोमय, तेजस्वी; भाग्यवान्, सुभागीन, भाग्यशाली।

ख़ुशइक़्बाली (خوش اقبالی) फा. अ. स्त्री.–प्रतापवान् होना; भाग्यवान् होना।

ख़ुशइनाँ (خوش عناں) फा. अ. वि.–वह घोड़ा जो लगाम के इशारे पर चले, लगाम का सच्चा।

ख़ुशइयार (خوش عیار) फा. अ. वि.–वह सोना अथवा चाँदी जो कसौटी पर पूरा कस दे, खरा, ख़ालिस।

ख़ुशइल्हान (خوش الحان) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुश आवाज़'।

ख़ुशइल्हानी (خوش الحانی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'ख़ुश आवाज़ी'।

ख़ुशउस्लूब (خوش اسلوب) अ. फा. वि.–जिसका तौर तरीका बहुत अच्छा हो, सद्व्यवहार।

ख़ुशउस्लूबी (خوش اسلوبی) फा.अ. स्त्री. आचार-व्यवहार की अच्छाई।

ख़ुशऔक़ात (خوش اوقات) फा. अ. वि.–जिसका समय अच्छा बीते; जो अपना काम ठीक समय पर करता हो।

ख़ुशक़दम (خوش قدم) फा. अ. वि.–ऐसा व्यक्ति जिसके आने से घर में बरकत और कल्याण हो।

ख़ुशक़लम (خوش قلم) फा. अ. वि.–अच्छा लिखनेवाला; अच्छा और चिकना काग़ज़।

ख़ुशकलाम (خوش کلام) फा. अ. वि.–मधुरभाषी, मिष्टभाषी, शीरींगुफ़्तार।

ख़ुशकलामी (خوش کلامی) फा. अ. स्त्री.–बातचीत का माधुर्य, शीरींगुफ़्तारी।

LIBRARY HARDWAR

खुशक़ामत (خوش قامت) फा. अ. वि.–जिसके शरीर की बनावट सुंदर और सुडौल हो, सुष्ठु।

खुशक़ामती (خرش قامتی) फा. अ. स्त्री.–शरीर का सुडौल और सुंदरपन, सौष्ठव, तनासुबे आ'ज़ा।

खुशक़िस्मत (خوش قسمت) फा. अ. वि.–सौभाग्यशाली, सुभागीन, भाग्यवान्; अच्छी तक़्दीर वाला।

खुशक़िस्मती (خوش قسمتی) फा. अ. स्त्री.–सौभाग्य, तक़्दीर की अच्छाई।

खुशकुन (خوش کن) फा. वि.–ख़ुश करनेवाला, विशेषत: दूसरे शब्द के साथ आता है, जैसे–दिल ख़ुशकुन, चित्त को प्रसन्न करनेवाला।

खुशख़त (خوش خط) फा. अ. वि.–जिसका लिखना अच्छा हो, अच्छा लिखनेवाला, सुलेखक।

खुशख़ती (خوش خطی) फा. अ. स्त्री.–लिखावट का अच्छा होना, अच्छी लिखावट, सुलेख।

खुशख़बरी (خوش خبری) फा. अ. स्त्री.–अच्छा समाचार, शुभ समाचार, शुभ संवाद, ललित सूचना।

खुशख़याल (خوش خیال) फा. अ. वि.–अच्छा विचार रखनेवाला; जिसका विचार किसी की ओर से अच्छा हो।

खुशख़रीद (خوش خرید) फा. वि.–नक़द दामों से खरीदी हुई वस्तु।

खुशख़िराम (خوش خرام) फा. वि.–अच्छी चाल वाला (वाली), सुगामी, सुगामिनी, गजगामिनी।

खुशख़िरामी (خوش خرامی) फा. स्त्री.–सुंदर चाल।

खुशख़ुराक (خوش خوراک) फा. वि.–अच्छा खानेवाला, खाने का शौक़ीन।

खुशख़ुल्क़ (خوش خلق) फा. अ. वि.–हरेक से ख़ुश होकर मिलनेवाला, सबसे सुशीलता का व्यवहार करनेवाला, सच्छील, सद्वृत्त, सुशील।

खुशख़ुल्क़ी (خوش خلقی) फा. अ. स्त्री.–शील-संकोच, सद्वृत्ति, अच्छा अख़्लाक़।

खुशख़ू (خرش خو) फा. वि.–अच्छे स्वभाववाला, सत्प्रकृति; अच्छे अख़्लाक़ वाला, सच्छील, सद्वृत्त।

खुशख़ूई (خوش خوئی) फा. स्त्री.–अच्छा स्वभाव; अच्छा अख़्लाक़।

खुशगप्पी (خوش گپی) फा. स्त्री.–हँसी-मज़ाक़, वाग्विलास, रसवाद।

खुशगाम (خوش گام) फा. वि.–दे. 'खुशख़िराम'।

खुशग़िलाफ़ (خوش غلاف) फा. वि.–वह तलवार जो तुरंत ही म्यान से निकल आये, अच्छी, हलकी और बाढ़दार तलवार; वह स्त्री जो ज़रा-सी लगावट में पर-पुरुष के साथ सहवास को तैयार हो जाय।

ख़ुशगुज़रान (خوش گزران) फा. वि.–अच्छे प्रकार से जीवन व्यतीत करनेवाला, अच्छा खाने-पहननेवाला।

ख़ुशगुफ़्तार (خرش گفتار) फा. वि.–जिसकी बोलचाल मीठी हो, मधुरभाषी, मिष्टभाषी; अच्छा भाषण देनेवाला, सुवक्ता।

ख़ुशगुफ़्तारी (خوش گفتاری) फा. स्त्री.–बोलचाल और बातचीत की मिठास, वार्ता-माधुर्य; धुआँधार भाषण देना।

ख़ुशगुमान (خوش گمان) फा. वि.–जिसके विचार किसी की ओर से अच्छे हों।

ख़ुशगुमानी (خوش گمانی) फा. स्त्री.–विचार का किसी की ओर से अच्छा होना।

ख़ुशगुलू (خوش گلو) फा. वि.–जिसका गला सुरीला हो, कलकंठ, मधुरकंठ, ख़ुशइल्हाँ।

ख़ुशगुलूई (خوش گلوئی) फा. स्त्री.–गले का सुरीला होना, कंठ-माधुर्य।

ख़ुशगुवार (خوش گوار) फा. वि.–जो चित्त के अनुकूल हो, जो मन को अच्छा लगे, मनोवांछित, रुचिकर; सुस्वाद, ख़ुशज़ाइका।

ख़ुशगुवारी (خوش گواری) फा. स्त्री.–मन को पसंद आने का भाव, अच्छा लगने का भाव; मज़े का अच्छा होना।

ख़ुशगो (خوش گو) फा. वि.–दे. 'ख़ुशगुफ़्तार'।

ख़ुशगोई (خوش گوئی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुशगुफ़्तारी'।

ख़ुशचश्म (خوش چشم) फा. वि.–अच्छी आँखों वाला (वाली), सुनेत्र, सुनेत्रा, सुलोचना, चारुनेत्रा।

ख़ुशचश्मी (خوش چشمی) फा. स्त्री.–आँखों की सुंदरता, नेत्र-सौंदर्य।

ख़ुशचेहः (خوش چہرہ) फा. वि.–दे. 'ख़ुशरू'।

ख़ुशज़बाँ (خوش زباں) फा. वि.–दे. 'ख़ुशगुफ़्तार'।

ख़ुशजमाल (خوش جمال) फा. अ. वि.–अच्छे सौंदर्यवाला (वाली), सुंदर, हसीन, सुंदरी, रूपवती, सुरूप, हसीना।

ख़ुशज़ाइक़ः (خوش ذائقہ) फा. अ. वि.–जिसका स्वाद अच्छा हो, सुस्वाद, स्वादिष्ठ, मुखप्रिय।

ख़ुशज़ौक़ (خوش ذوق) फा. अ. वि.–जिसको कविता-सम्बन्धी गुण-दोष का अच्छा ज्ञान हो, जो काव्य-मर्मज्ञ हो, रसिक, सहृदय, रसानुभवी; जिसे दूसरी किसी कला में रुचि हो।

ख़ुशज़ौक़ी (خوش ذوقی) फा. अ. स्त्री.–काव्य-मर्मज्ञता, रसिकता, सहृदयता; किसी दूसरे विषय में अच्छी दिलचस्पी।

ख़ुशतक़्दीर (خوش تقدیر) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुशक़िस्मत'।

ख़ुशतब्अ (خوش طبع) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुशमिज़ाज'।

ख़ुशतब्ई (خوش طبعی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'ख़ुशमिज़ाजी'।

ख़ुशतर (خوشتر) फा. वि.–बहुत अच्छा, उत्तमतर।

ख़ुशतरक (خوشتری) फा. वि.–बहुत ही अच्छा, अत्यधिक उत्तम।

ख़ुशताले' (خوش طالع) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुशक़िस्मत'।

ख़ुशदामन (خوش دامن) फा. स्त्री.–सास, श्वश्रू, चारु देवी।

ख़ुशदिल (خوش دل) फा. वि.–जो हर समय प्रसन्न रहे, प्रसन्नचित्त, सुमनस्क; जो विनोदप्रिय हो, मनोरंजक, पुरमज़ाक़।

ख़ुशदिली (خوش دلی) फा. स्त्री.–हर समय प्रसन्न रहने का भाव; विनोदप्रियता, पुरमज़ाक़ी।

ख़ुशनवीस (خوش نویس) फा. वि.–जिसकी लिखावट अच्छी हो, सुलेखक; जो ख़ुशनवीसी का पेशः करता हो, कातिब।

ख़ुशनवीसी (خوش نویسی) फा. स्त्री.–अच्छा लिखना, सुलेख, ख़ुशख़ती; ख़ुशनवीसी का पेशा।

ख़ुशनशीं (خوش نشیں) फा. वि.–वह व्यक्ति जिसे अगर कोई स्थान पसंद आ जाय तो वहीं का हो रहे।

ख़ुशनशीनी (خوش نشینی) फा. स्त्री.–कोई स्थान पसंद आने पर वहीं का हो रहना।

ख़ुशनसीब (خوش نصیب) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुशक़िस्मत'।

ख़ुशनसीबी (خوش نصیبی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुशक़िस्मती'।

ख़ुशनिहाद (خوش نہاد) फा. वि.–अच्छी प्रकृति वाला, अच्छे स्वभाव वाला, सत्प्रकृति, सदात्मा।

ख़ुशनीयत (خوش نیت) फा. अ. वि.–ईमानदार, व्यवहारनिष्ठ; जो यह चाहता हो कि किसी का पैसा उस पर न रहे; जो यह चाहता हो कि उसका पैसा अच्छे कामों में व्यय हो।

ख़ुशनीयती (خوش نیتی) फा. अ. स्त्री.–ईमानदारी; किसी का ऋणी न रहने का भाव; अच्छे कामों में पैसा खर्च करने का भाव।

ख़ुशनुमा (خوش نما) फा. वि.–जो देखने में अच्छा लगे, नेत्रप्रिय, प्रियदर्शन, मनोरम; सुन्दर, हसीन।

ख़ुशनुमाई (خوش نمائی) फा. स्त्री.–नेत्रप्रियता, दिलकशी; सुन्दरता, हुस्न।

ख़ुशपोश (خوش پوش) फा. वि.–जो अच्छे वस्त्र पहनने का शौक़ीन हो, जो सदा अच्छे कपड़े पहनता हो, चारुवेष।

ख़ुशपोशाक (خوش پوشاک) फा. वि.–दे. 'ख़ुशपोश'।

ख़ुशपोशी (خوش پوشی) फा. स्त्री.–अच्छे वस्त्र का शौक़, सुवस्त्रप्रियता।

ख़ुशफ़हम (خوش فہم) फा. अ. वि.–शीघ्र बात समझ जानेवाला, तीव्रबुद्धि; किसी की ओर से अच्छा विचार रखनेवाला, ख़ुशगुमान।

ख़ुशफ़हमी (خوش فہمی) फा. अ. स्त्री.–बुद्धि की तीव्रता, अक़्ल की तेज़ी; किसी की ओर से अच्छा गुमान, सुधारणा।

ख़ुशफ़े'ली (خوش فعلی) फा. अ. स्त्री.–मनोरंजन, मनोविनोद, तफ़्रीह, चुहल, मज़ाक़।

ख़ुशबख़्त (خوش بخت) फा. वि.–दे. 'ख़ुशक़िस्मत'।

ख़ुशबख़्ती (خوش بختی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुशक़िस्मती'।

ख़ुशबयान (خوش بیان) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुशगुफ़्तार'।

ख़ुशबयानी (خوش بیانی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुशगुफ़्तारी'।

ख़ुशबाश (خوش باش) फा. वि.–अच्छे प्रकार से रहनेवाला; रहने के स्थान को सुसज्जित रखनेवाला, बेफ़िक्री में जीवन व्यतीत करनेवाला, (वा.) एक आशीर्वाद, ख़ुश रहो, स्वस्तु।

ख़ुशबू (خوشبو) फा. वि.–सुगंधित, अच्छी सुगंधवाला, (स्त्री.) सुगंध, अच्छी महक।

ख़ुशबूदार (خوشبودار) फा. वि.–जिसमें सुगंध हो, सौरभित, सुगंधित।

ख़ुशमंज़र (خوش منظر) फा. अ. वि.–जो देखने में अच्छा लगे, प्रियदर्शन, शुभदर्शन, नेत्रप्रिय।

ख़ुशमआश (خوش معاش) फा. अ. वि.–'बदमआश' का उलटा; अच्छी कमाई से जीवन बितानेवाला; नेकचलन।

ख़ुशमआशी (خوش معاشی) फा.अ. स्त्री.–'बदमआशी' का उलटा; अच्छी कमाई से जीवन बिताना; नेकचलनी।

ख़ुशमज़ाक़ (خوش مزاق) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ुशज़ौक़', ज़िंदादिल, विनोद-रसिक।

ख़ुशमज़ाक़ी (خوش مزاقی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'ख़ुशज़ौक़ी', ज़िंद:दिली, विनोदप्रियता।

ख़ुशमनिश (خوش منش) फा. वि.–दे. 'ख़ुशमिज़ाज', सज्जन, शरीफ़।

ख़ुशमनिशी (خوش منشی) फा. स्त्री.–दे. 'ख़ुशमिज़ाजी', सज्जनता, शराफ़त।

ख़ुशमिज़ाज (خوش مزاج) फा. अ. वि.–ज़िंदादिल, हासप्रिय, विनोद-रसिक; सुशील, सच्छील, ख़ुश अख़्लाक़।

ख़ुशमिज़ाजी (خوش مزاجی) फा. अ. स्त्री.–ज़िंदादिली, हासप्रियता; सुशीलता, ख़ुश अख़्लाक़ी।

ख़ुशमुआमल: (خوش معاملہ) फा. अ. वि.–लेन-देन का पाक-साफ़, व्यवहारनिष्ठ; वा'दे का सच्चा, दृढ़प्रतिज्ञ।

ख़ुशमुआमलगी (خوش معاملگی) फा.अ.स्त्री.–लेन-देन की सफ़ाई, व्यवहारनिष्ठता; वचनबद्धता, वा'दे की सच्चाई।

ख़ुशरंग (خوش رنگ) फा. वि.—अच्छे रंगवाला, सुवर्ण।

ख़ुशरंगी (خوش رنگی) फा. स्त्री.—रंग की सुन्दरता, वर्ण-सौन्दर्य।

ख़ुशरफ़्तार (خوش رفتار) फा. वि.—दे. 'ख़ुशख़िराम'।

ख़ुशरफ़्तारी (خوش رفتاری) फा. स्त्री.—दे. 'ख़ुशख़िरामी'।

ख़ुशरू (خوش رو) फा. वि.—रूपवान्, सुरूप, अच्छी शक़्लवाला; रूपवती, सुरूपा, हसीना।

ख़ुशरूई (خوش روئی) फा. स्त्री.—मुखमंडल की सुन्दरता, चेहरे की ख़ुशनुमाई।

ख़ुशलगाम (خوش لگام) फा. वि.—दे. 'ख़ुशइनाँ'।

ख़ुशलह्‌जः (خوش لہجہ) फा. अ. वि.—जिसका लवो लहजा (टोन) सुन्दर हो; जिसकी आवाज़ सुन्दर हो, कलकंठ।

ख़ुशलिबास (خوش لباس) फा. अ. वि.—दे. 'ख़ुशपोश'।

ख़ुशलिबासी (خوش لباسی) फा. अ. स्त्री.—दे. 'ख़ुशपोशी'।

ख़ुशवक़्त (خوش وقت) फा. अ. वि.—जिसका समय अच्छा हो; समृद्ध, संपन्न, फ़ारिग़ुल बाल; भाग्यवान्, ख़ुशक़िस्मत।

ख़ुशवक़्ती (خوش وقتی) फा. अ. स्त्री.—समय की अनुकूलता; समृद्धि, दौलतमंदी; भाग्यशीलता, ख़ुशक़िस्मती।

ख़ुशवज़्अ (خوش وضع) फा. अ. वि.—जो अपनी परंपरा पर दृढ़ रहे, वज़ा'दार।

ख़ुशवज़्ई (خوش وضعی) फा. अ. स्त्री.—परम्परा पर दृढ़ता, वज़ादारी।

ख़ुशसलीक़ः (خوش سلیقہ) फा. अ. वि.—जिसे हर बात का ढंग आता हो, व्यवहार-कुशल; जो हर वस्तु क्रम और तर्तीब से रखता हो, शिष्ट।

ख़ुशसलीक़गी (خوش سلیقگی) फा. अ. स्त्री.—हर बात का ढंग; हर चीज़ को क्रम से रखने की तमीज़।

ख़ुशसवाद (خوش سواد) फा. अ. वि.—वह नगर जिसके चारों ओर का दृश्य अच्छा हो।

ख़ुशसीरत (خوش سیرت) फा. अ. वि.—अच्छी प्रकृतिवाला, अच्छे स्वभाववाला; शील-संकोचवाला।

ख़ुशसीरती (خوش سیرتی) फा. अ. स्त्री.—स्वभाव की शिष्टता; सुशीलता, ख़ुश अख़्लाक़ी।

ख़ुशहाल (خوش حال) फा. अ. वि.—जिसकी आर्थिक दशा अच्छी हो, संपन्न, समृद्ध, मालदार।

ख़ुशहाली (خوش حالی) फा. अ. स्त्री.—संपन्नता, समृद्धि, मालदारी।

ख़ुशा (خوشا) फा. अव्य.—अहो, क्या ख़ूब, वाह वाह, "ख़ुशा! नसीब! तपिशहाए-आलमे-बेदाद, हमारे सर पे तुम्हारा हसीन साया है।"

ख़ुशाक़िस्मत (خوشاقسمت) फा. अ. अव्य.—अहो भाग्य, वाह री तक़्दीर, वाह रे मैं।

ख़ुशानसीब (خوشانصیب) फा. अ. अव्य.—दे. 'ख़ुशाक़िस्मत'।

ख़ुशाम (خشام) अ. पुं.—वह व्यक्ति जिसकी नाक ऊँची हो; वह पहाड़ जिसकी चोटी ऊँची हो।

ख़ुशामद (خوشامد) फा. स्त्री.—चापलूसी, चाटुकारिता; मिन्नत, समाजत, उल्लाप।

ख़ुशामदगो (خوشامدگو) फा. वि.—ख़ुशामद करनेवाला, चाटुकार।

ख़ुशामदपसंद (خوشامدپسند) फा. वि.—जिसे चापलूसी अच्छी लगती हो, जो चाहता हो कि लोग उसकी ख़ुशामद करें, चटुलालस।

ख़ुशामदशिआर (خوشامدشعار) फा.अ. वि.—जिसे ख़ुशामद करने की आदत हो, जिसका काम ही ख़ुशामद करना हो, चाटुपटु।

ख़ुशामदी (خوشامدی) फा. वि.—ख़ुशामद करनेवाला, चाटुकार, चाटुलोल, उल्लापी।

ख़ुशी (خوشی) फा. स्त्री.—हर्ष, आनंद, मसर्रत; इच्छा, रुचि, मर्ज़ी; वच्चे की पैदाइश, वाल-जन्म; स्वीकृति, मंज़ूरी; आनंदित, हर्षित, ख़ुश।

ख़ुशूअ (خشوع) अ. पुं.—नम्रता, विनय, आजिज़ी; तारे का अस्त होने के निकट होना; नींद से आँख का वंद होना।

ख़ुशूनत (خشونت) अ. स्त्री.— खुरदरापन, खुरखुरापन; अक्खड़पन, रूखापन, वदमिज़ाजी।

ख़ुश्कः (خشکہ) फा. पुं.—उबाले हुए चावल, भात।

ख़ुश्क (خشک) फा. वि.—सूखा हुआ, शुष्क; विना रस का, नीरस; दुःशील, रूखा; अनुदार, तंगदिल; कृपण, कंजूस।

ख़ुश्कदिमाग़ (خشک دماغ) फा. अ. वि.—जिसके मस्तिष्क में ख़ुश्की बहुत हो, चिड़चिड़ा, वदमिज़ाज।

ख़ुश्कमग़्ज़ (خشک مغز) फा. अ. वि.—दे. 'ख़ुश्कदिमाग़'।

ख़ुश्कमिज़ाज (خشک مزاج) फा. अ. वि.—बहुत ही रूखा फीका व्यक्ति, नीरसप्रकृति, खुर्रा।

ख़ुश्कमिज़ाजी (خشک مزاجی) फा. अ. स्त्री.—मिज़ाज का रूखापन, खुर्रापन।

ख़ुश्कलब (خشک لب) फा. वि.—प्यासा, पिपासित, जिसके ओंठ प्यास के कारण सूख गये हों।

ख़ुश्कसाल (خشک سال) फा. वि.—दे. 'ख़ुश्कसाली'।

ख़ुश्कसाली (خشک سالی) फा. स्त्री.—अवर्षा, वरसात का अभाव; दुर्भिक्ष, क़हतसाली।

ख़ुश्कारी (خوشکاری) फा. स्त्री.–वे छना आटा; बंजर ज़मीन, ऊसर।

ख़ुश्की (خشکی) फा. स्त्री.–सूखापन, शुष्कता; बद-अख़्लाक़ी, दुःशीलता; खुर्रापन, बदमिज़ाजी; मिज़ाज की ख़ुश्की।

ख़ुसुर (خسر) फा. पुं.–पत्नी का बाप, ससुर, श्वशुर।

ख़ुसुरख़ानः (خسرخانہ) फा. पुं.–सुसराल, ससुराल, श्वशुरालय।

ख़ुसूफ़ (خسوف) अ. पुं.–चंद्रग्रहण, चाँद-गहन।

ख़ुसूमत (خصومت) अ. स्त्री.–द्वेष, कीना; वैर, शत्रुता, अदावत।

ख़ुसूस (خصوص) अ. पुं.–दे. 'ख़ुसूसीयत'।

ख़ुसूसन (خصوصاً) अ. वि.–खास तौर पर, विशेष करके, मुख्यतः, विशेषतः।

ख़ुसूसी (خصوصی) अ. वि.–मुख्य, प्रधान, ख़ास।

ख़ुसूसीयत (خصوصیت) अ. स्त्री.–विशेषता, प्रधानता, ख़ासवात; मैत्री, दोस्ती, गाढ़ी मैत्री।

ख़ुस्त (خوست) फा. वि.–मला-दला, मसला हुआ, मर्दित।

ख़ुस्यः (خصیہ) अ. पुं.–अंडकोष, मुष्क, फ़ोता।

ख़ुस्यतैन (خصیتین) अ. पुं.–दोनों फ़ोते।

ख़ुस्र (خسر) अ. पुं.–हानि करना, क्षति पहुँचाना, टोटा होना।

ख़ुस्रान (خسران) अ. पुं.–हानि, क्षति, घाटा, टोटा; वंचकता, हीनता, मह्रूमी; अभागापन, दुर्भाग्य।

ख़ुस्रो (خسرو) फा. पुं.–सम्राट्, शहंशाह; परवेज़ का लड़का जिसने फ़र्हाद को मरवाया था; नौशेरवाँ का लड़का; चौदहवीं शताब्दी के एक भारतीय महाकवि और विद्वान् जिन्होंने सबसे पहले हिंदी भाषा का कविता में प्रयोग किया। इनकी 'मुकरनी' हिन्दी काव्य में बहुत विख्यात है।

ख़ुह्लः (خوہلہ) फा. वि.–टेढ़ा, वक्र।

ख़ू

ख़ूँ (خوں) फा. पुं.–'ख़ून' का लघु. दे. 'ख़ून'।

ख़ूँआलूदः (خوں آلودہ) फा. वि.–लोहू में लथड़ा हुआ, रक्ताक्त।

ख़ूँआलूद (خوں آلود) फा. वि.–दे. 'ख़ूँआलूदः', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ूँआशाम (خوں آشام) फा. वि.–ख़ून पीनेवाला, रक्तापी, रक्तपायी; निर्दय, पापाणहृदय, ज़ालिम।

ख़ूँआशामी (خوں آشامی) फा. स्त्री.–ख़ून चूसना, ख़ून पीना; निर्दयता, ज़ुल्म।

ख़ूँकर्दः (خوں کردہ) फा. वि.–जिसकी हत्या की गयी हो, वधित।

ख़ूँख़ुर्दः (خوں خوردہ) फा. वि.–जिसने ख़ून पिया हो; जिसका ख़ून पिया गया हो।

ख़ूँख़्वार (خونخوار) फा. वि.–ख़ून पीनेवाला, रुधिराशी, रक्तपायी; प्राण ले लेनेवाला श्वापद आदि, दरिंदा; अत्याचारी, ज़ालिम; निर्दय, बेरह्म।

ख़ूँख़्वारी (خونخواری) फा. स्त्री.–ख़ून पीना; अत्याचार; निर्दयता।

ख़ूँख़्वाह (خونخواہ) फा. वि.–ख़ून का बदला चाहनेवाला, प्रतिहिंसक।

ख़ूँगर्मी (خوں گرمی) फा. स्त्री.–प्रेम, स्नेह, इश्क; मैत्री, मुहब्बत।

ख़ूँगश्तः (خوں گشتہ) फा. वि.–जो ख़ून हो गया हो, जो पिघलकर मांस आदि से ख़ून बन गया हो।

ख़ूँगिरिफ़्तः (خوں گرفتہ) फा. वि.–जिसकी मृत्यु समीप हो, मरणासन्न; जो वध होना चाहता हो, वधेच्छु।

ख़ूँचिकाँ (خوں چکاں) फा. वि.–रक्त टपकता हुआ, जिसमें से ख़ून बह रहा हो।

ख़ूँचिकानी (خوں چکانی) फा. स्त्री.–ख़ून टपकना, ख़ून का बहाव।

ख़ूँदार (خوندار) फा. वि.–वधिक, हिंसक, ख़ूनी।

ख़ूँदारी (خونداری) फा. स्त्री.–वध, हत्या, ख़ून।

ख़ूँनाबः (خوں نابہ) फा. पुं.–ख़ून और पानी मिला हुआ, मिश्रण; ख़ून के आँसू।

ख़ूँनाबःफ़िशाँ (خوں نابہ فشاں) फा. वि.–ख़ून के आँसू बहानेवाला, ख़ून रोनेवाला।

ख़ूँनाबःफ़िशानी (خونابہ فشانی) फा. स्त्री.–ख़ून के आँसू बहाना, ख़ून रोना।

ख़ूँनाब (خوناب) फा. पुं.–दे. 'ख़ूँनाबः'।

ख़ूँफ़िशाँ (خوں فشاں) फा. वि.–ख़ून बहाने या बरसानेवाला, जिससे ख़ून टपके।

ख़ूँफ़िशानी (خوں فشانی) फा. स्त्री.–ख़ून बरसाना।

ख़ूँबहा (خوں بہا) फा. पुं.–ख़ून की क़ीमत, प्राणों का मूल्य; किसी की हत्या हो जाने पर उसके उत्तराधिकारियों को धन देकर राज़ी करने की क्रिया; वह धन जो प्राणों के बदले में दिया जाय, ख़ून=क़त्ल+बहा=मूल्य, प्राणों के बदले में प्रदेय धन।

ख़ूँबार (خوں بار) फा. वि.–ख़ून बरसानेवाला, रक्तवर्षक।

ख़ूँबारी (خوں باری) फा. स्त्री.–रक्त बरसाना।

ख़ूँरेख़्तः (خوں ریختہ) फा. वि.–जिसका ख़ून बहाया गया हो।

ख़ूंरेज़ (خوں ریز) फा. वि.–ख़ून बहानेवाला, हिंसक, हत्यारा; निर्दय, बेरह्म।

ख़ूंरेज़ी (خوں ریزی) फा. स्त्री.–ख़ून बहाना, हत्या करना; निर्दयता, बेरह्मी।

ख़ू (خو) फा. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

ख़ूएबद (خوے بد) फा. स्त्री.–बुरा स्वभाव, बुरी आदत।

ख़ूक (خوک) फा. पुं.–शूकर, वराह, सुअर।

ख़ूकर्दः (خوکردہ) फा. वि.–दे. 'ख़ूगर'।

ख़ूगर (خوگر) फा. वि.–जिसे किसी बात की आदत हो, अभ्यस्त; जिसे कोई लत हो, व्यसनी, लती।

ख़ूत (خوط) फा. पुं.–मृदुल शाखा, नाज़ुक डाली; मोटा-ताज़ा व्यक्ति जो फुर्तीला और हँसमुख हो।

ख़ूद (خود) फा. पुं.–दे. 'ख़ोद', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ून (خون) फा. पुं.–रक्त, रुधिर, लोहू; वध, क़त्ल, हत्या।

ख़ूनाबः (خونابہ) फा. पुं.–दे. 'ख़ूँनाबः'।

ख़ूनाब (خوناب) फा. पुं.–दे. 'ख़ूँनाब'।

ख़ूनीं (خونیں) फा. वि.–ख़ून में सना हुआ, रक्ताक्त; रक्त सम्बन्धी; ख़ून का; ख़ून मिला हुआ।

ख़ूनींकफ़न (خونیں کفن) फा. वि.–जिसका कफ़न ख़ून में लथड़ा हो, अर्थात् जिसकी हत्या प्रेम ने की हो, शहीदे इश्क़।

ख़ूनींजिगर (خونیں جگر) फा. वि.–जिसका जिगर (हृदय) ख़ून में सना हो, जिसके दिल को प्रेम ने घायल किया हो, प्रेमी।

ख़ूनींनवा (خونیں نوا) फा. वि.–जिसकी आवाज़ से सुननेवालों के हृदय से ख़ून टपकता हो; अत्यन्त द्रवी; प्रेमी, आशिक़।

ख़ूनी (خونی) फा. वि.–हत्या करनेवाला, वधिक; ख़ून से सम्बन्धित।

ख़ूने कबूतर (خون کبوتر) फा. पुं.–लाल रंग की मदिरा।

ख़ूने नामूस (خون ناموس) फा. अ. पुं.–मदिरा, शराब।

ख़ूने नाहक़ (خون ناحق) फा. अ. पुं.–बिना अपराध के हत्या, बिना क़ुसूर किसी का क़त्ल।

ख़ूब (خوب) फा. वि.–सुन्दर, हसीन; उत्तम, उम्दा; स्वच्छ, साफ़; शुभदर्शन, ख़ुशनुमा; शुभ, मुबारक, (अव्य.) वाह, क्या ख़ूब।

ख़ूबकलाँ (خوب کلاں) फा. स्त्री.–एक दवा, ख़ाकशी।

ख़ूबतर (خوب‌تر) फा. वि.–बहुत अच्छा, अत्युत्तम।

ख़ूबतरीन (خوب‌ترین) फा. वि.–बहुत ही अच्छा, उत्तमोत्तम, सबसे बढ़िया।

ख़ूबरू (خوبرو) फा. वि.–रूपवान्, रूप-विशिष्ट, ख़ूबसूरत, सुन्दर, हसीन; माशूक़, प्रियतमा।

ख़ूबरूई (خوب روئی) फा. स्त्री.–सौन्दर्य, सुन्दरता, ख़ूबसूरती।

ख़ूबसूरत (خوب صورت) फा. अ. वि.–दे. 'ख़ूबरू'।

ख़ूबसूरती (خوبصورتی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'ख़ूबरूई'।

ख़ूबाँ (خوباں) फा. पुं.–'ख़ूब' का बहु., सुन्दर स्त्रियाँ; मा'शूक़ लोग, प्रियतमाएँ।

ख़ूबानी (خوبانی) फा. स्त्री.–एक मेवा, ज़र्दालू।

ख़ूबी (خوبی) फा. स्त्री.–गुण, वस्फ़; सुन्दरता, हुस्न; उत्तमता, उम्दगी; सज्जनता, शराफ़त; कला, हुनर; नवीनता, अजूबापन।

ख़ूलिंजान (خولنجان) फा. पुं.–एक दवा, कुलंजन, पान की जड़।

ख़े

ख़ेज़ (خیز) फा. स्त्री.–पानी की लहर, मौज, हिल्लोल; नर से मिलने के समय मादा कबूतर की मस्ती, (प्रत्य.) उठानेवाला, जैसे 'तूफ़ाँख़ेज़' तूफान उठानेवाला; बढ़ानेवाला, जैसे–'वहशत ख़ेज़', हौल बढ़ानेवाला।

ख़ेज़राँ (خیزراں) फा. पुं.–बेंत का वृक्ष, वेत्र, बेंत।

ख़ेज़िश (خیزش) फा. स्त्री.–उठान, उत्थान; लिंगेंद्रिय की उठान, इस्तादगी।

ख़ेज़ोमेज़ (خیزومیز) फा. पुं.–मेलजोल, रब्तज़ब्त; ज़ौक़-शौक़, चाव।

ख़ेश (خویش) फा. पुं.–स्वयं, ख़ुद; स्वतः आप; स्वजन, अज़ीज़; दामाद, जामाता।

ख़ेश (خیش) फा. पुं.–एक मोटा कपड़ा, खेस।

ख़ेशतन (خویشتن) फा. पुं.–स्वतः, अपने आप, स्वयं ख़ुद।

ख़ेशदार (خویش دار) फा. वि.–वह व्यक्ति जो अपने को आपत्तियों से बचाता हुआ जीवन व्यतीत करे।

ख़ेशदारी (خویش داری) फा. स्त्री.–अपने को आपत्तियों से बचाते हुए जीवन व्यतीत करना।

ख़ेशपर्वर (خویش پرور) फा. वि.–अपने कुन्बेवालों और मित्रों का पालन-पोषण करनेवाला, उनको रिआयत देनेवाला।

ख़ेशपर्वरी (خویش پروری) फा. स्त्री.–अपने लोगों का पालन-पोषण करने और उनको अनुचित रिआयत देने की प्रवृत्ति।

ख़ेशावंद (خویشاوند) फा. पुं.–अपने रिश्तेदार, अज़ीज़, अक़ारिब, स्वजनगण।

ख़ेशी (خویشی) फा. स्त्री.–अपनायत, स्वजनता; दामादी।

ख़ेसांदः (خیساندہ) फा. पुं.–पानी में भीगी हुई दवाएँ जो बिना औटाये पी जायँ, हेम, 'जोशांदा' में दवा औटायी जाती है, इन दोनों में यही अन्तर है।

ख़ै

ख़ै (خوے) फा. पुं.–पसीना, स्वेद।

ख़ैजुरान (خیزران) अ. पुं.–'ख़ेज़रान' का अरबी रूप, बेंत का वृक्ष, वेत्र।

ख़ैत (خیط) अ. पुं.–डोरा, तागा, सूत्र; हराममग़ज़, रीढ़ की हड्डी के भीतर का गूदा।

ख़ैते अब्यज़ (خیط ابیض) अ. पुं.–प्रातःकाल की सफ़ेदी।

ख़ैते अस्वद (خیط اسود) अ. पुं.–रात की कालिमा।

ख़ैफ़ (خیف) अ. पुं.–भय, डर; समुद्र के स्तर से ऊँची और पहाड़ से नीची भूमि; पहाड़ के किनारे की हर उँचाई अथवा निचाई।

ख़ैबत (خیبت) अ. स्त्री.–निराशा, नैराश्य, नाउम्मेदी; वंचकता, हीनता, महरूमी।

ख़ैबर (خیبر) अ. पुं.–अरब का एक दुर्ग, जिसे हज़रत अली ने जीता था।

ख़ैमः (خیمہ) अ. पुं.–कपड़े का मकान, पटवास, ख़ैमा, डेरा, रावटी, तम्बू।

ख़ैमःगाह (خیمہگاہ) अ. फा. स्त्री.–जहाँ तम्बू गड़ा हो वह स्थान।

ख़ैमःदोज़ (خیمہدوز) अ. फा. वि.–तम्बू बनानेवाला, ख़ैमा सीनेवाला।

ख़ैयात (خیاط) अ. पुं.–दर्ज़ी, सूचिक, सीनेवाला, कपड़े सीनेवाला।

ख़ैयाती (خیاطی) अ. स्त्री.–कपड़ा सीने का काम या पेशा।

ख़याब (خیاب) अ. वि.–निराश, हताश, नाउम्मेद; वंचित, हीन, महरूम।

ख़ैयाम (خیام) अ. वि.–तम्बू बनानेवाला, ख़ैमादोज़; फ़ार्सी का एक सुप्रसिद्ध शाइर नैशापुर-निवासी जिसकी रुबाइयों का अनुवाद संसार की प्रायः सारी भाषाओं में हो चुका है, उमर ख़ैयाम, यह बड़ा वैज्ञानिक, वैद्य (हकीम) तथा ज्योतिषी भी था।

ख़ैर (خیر) अ. स्त्री.–कुशल, मंगल, ख़ैरियत; शुभ, श्रेष्ठ, उम्दा; उपकार, भलाई; पुण्य, सवाब; प्रदान, बख़्शिश, अव्य. अस्तु।

ख़ैरअंदेश (خیر اندیش) अ. फा. वि.–भलाई की बात सोचनेवाला, शुभचिंतक, ख़ैरख़्वाह।

ख़ैरअंदेशी (خیر اندیشی) अ. फा. स्त्री.–भलाई की बात सोचना, ख़ैरख़्वाही।

ख़ैरख़्वाह (خیر خواہ) अ. फा. वि.–भलाई चाहनेवाला, शुभचिंतक, शुभेच्छु।

ख़ैरख़्वाही (خیر خواہی) अ. फा. स्त्री.–भलाई चाहना, ख़ैर अंदेशी, शुभेच्छा।

ख़ैरबाद (خیرباد) अ. फा. वा.–एक आशीर्वाद, कल्याण हो, विदा के समय का नमस्कार, गुड बाई।

ख़ैरमक़्दम (خیر مقدم) अं. पुं.–स्वागत, इस्तिक़्बाल, शुभागमन।

ख़ैरसिगाल (خیر سگال) अ. फा. वि.–भलाई की बात सोचनेवाला, शुभचिंतक।

ख़ैरसिगाली (خیر سگالی) अ. फा. स्त्री.–भलाई, ख़ैर-अंदेशी; शुभकामना।

ख़ैरात (خیرات) अ. स्त्री.–'ख़ैर' का बहु., दान, धर्मादि।

ख़ैरातख़ानः (خیراتخانہ) अ. फा. पुं.–अन्नसत्र, मोहताजख़ाना, जहाँ कंगालों और अपाहिजों को भोजन आदि दिया जाता हो।

ख़ैराती (خیراتی) अ. वि.–दान का, ख़ैरात का; ख़ैरात-सम्बन्धी।

ख़ैरियत (خیریت) अ. स्त्री.–कुशल, मंगल, ख़ैरो आफ़ियत।

ख़ैरियतनामः (خیریتنامہ) अ. फा. पुं.–ख़ैरियत का ख़त, कुशल-पत्र।

ख़ैरोआफ़ियत (خیرو عافیت) अ. स्त्री.–क्षेम-कुशल, शान्ति और कुशल, ख़ैरियत और अमन।

ख़ैरोबरकत (خیرو برکت) अ. स्त्री.–कल्याण और समृद्धि।

ख़ैल (خیل) अ. पुं.–समुदाय, जनसमूह, जमाअत; घोड़ों का गल्ला; सवारों का समूह, (वि.) अधिक, बहुत।

ख़ैलख़ानः (خیلخانہ) अ. फा. पुं.–वंश, कुटुम्ब, क़ुनवा, ख़ानदान।

ख़ैलताश (خیلتاش) अ. तु. पुं.–एक स्वामी के सेवक, वे सेवक आपस में ख़ैलताश हैं।

ख़ैले (خیلے) फा. अव्य.–बहुत ज़ियादा, अत्यधिक।

ख़ैश (خیش) अ. पुं.–एक मोटा कपड़ा, खेस।

ख़ैशूम (خیشوم) अ. पुं.–नथना, नासापुट।

ख़ैस (خیص) अ. पुं. लिखने की सियाही, मसि, रौशनाई; थोड़ी सजावट, दे. 'ख़ीस', दोनों शुद्ध हैं।

ख़ो

ख़ोजिस्तान (خوزستان) फा. पुं.–ईरान का एक प्रदेश।

ख़ोजी (خوزی) फा. वि.–ख़ोज़िस्तान का निवासी।

ख़ोगीर (خوگیر) फा. पुं. घोड़े का पालान, घोड़े की पीठ का नम्दा, चारजामा, ज़ीन, काठी।

ख़ोगीरदोज़ (خوگیردوز) फा. वि.–पालान सीनेवाला; ज़ीन सीनेवाला।

ख़ोगीरदोज़ी (خوگیردوزی) फा. स्त्री.–पालान सीने का काम; ज़ीन सीने का काम या पेशा।

ख़ोद (خود) फा. पुं.–लोहे की टोपी जो सिपाही ओढ़ते हैं, शिरस्त्राण।

ख़ोल (خول) फा. पुं.–वेष्टन, ग़िलाफ़; कोष, म्यान।

ख़ोशः (خوشہ) फा. पुं.–गेहूँ या जौ की बाल; गुच्छा, मंजरी, गुच्छ।

ख़ोशःचीं (خوشہ چیں) फा. वि.–खेती में सिला बीननेवाला, उंछवृत्त; लाभ उठानेवाला।

ख़ोशःचीनी (خوشہ چینی) फा. स्त्री.–सिला बीनना, उंछवृत्ति; लाभ, प्राप्ति।

ख़ोशएअंगूर (خوشۂ انگور) फा. पुं.–अंगूर का गुच्छा।

ख़ोशएगंदुम (خوشۂ گندم) फा. पुं. गेहूँ की बाल।

ख़ोशएचर्ख़ (خوشۂ چرخ) फा. पुं.–कन्याराशि, बुर्जे जौज़ा।

ख़ोशएपर्वीं (خوشۂ پرویں) फा. पुं.–कृत्तिका नक्षत्र।

ख़ोशीदः (خوشیدہ) फा. वि.–सूखा हुआ, सुखाया हुआ।

ख़ोशीदनी (خوشیدنی) फा. वि.–सूखने के योग्य, सुखाने के योग्य।

ख़ौ

ख़ौ (خو) फा. स्त्री.–लकड़ी की पाड़, जिस पर बैठकर राज मकान बनाते हैं; एक घास जो खेतों में पैदा होती है।

ख़ौक़ (خوق) अ. पुं.–कान के कुंडल का घेरा, गोशवारे का हल्का।

ख़ौख़ (خوخ) अ. पुं.–आड़ू, शफ़्ता लू।

ख़ौज़ (خوز) अ. पुं.–शत्रुता, दुश्मनी।

ख़ौज़ (خوض) अ. पुं.–विचार, मनन, चिन्तन, ग़ौर, यह शब्द ग़ौर के साथ मिलकर आता है, अकेला नहीं बोला जाता।

ख़ौद (خود) अ. स्त्री.–कोमल, मृदुल और सुन्दर स्त्री।

ख़ौन (خون) अ. पुं.–दृष्टि की कमी और मंदता; धोखा देना और बेवफ़ाई करना।

ख़ौफ़ (خوف) अ. पुं.–भय, त्रास, डर; शंका, संदेह, शुब्हा।

ख़ौफ़ज़दः (خوفزدہ) अ. फा. वि.–भयभीत, डरा हुआ।

ख़ौफ़ज़दगी (خوفزدگی) अ. फा. स्त्री.–भयभीत होना, डरना, ख़ौफ़ खाना।

ख़ौफ़नाक (خوفناک) अ. फा. वि.–भीषण, भयंकर, डरावना; जहाँ या जिसमें प्राणों का भय हो।

ख़ौफ़नाकी (خوفناکی) अ. फा. स्त्री.–भयानकता, डरावनापन; जान जोखिम, प्राणों का भय।

ख़ौफ़े जाँ (خوف جاں) अ. फा. पुं.–जान का डर, प्राणभय, मरने का ख़ौफ़।

ख़ौश (خوش) अ. स्त्री.–नितंब, कटिदेश, चूतड़, (पुं.) भाला मारना; ब्याह करना; लेना, पकड़ना।

ख़ौस (خوس) अ. पुं.–धोखा देना, दग़ा करना; ख़ियानत करना; खोटा होना।

ख़ौस (خوص) अ. पुं.–आँखों का गढ़े में चला जाना।

ख़्व

ख़्वाँ (خواں) फा. प्रत्य.–पढ़नेवाला, जैसे—'मीलादख़्वाँ' मीलाद पढ़नेवाला।

ख़्वाँ (خواں) फा. पुं.–'ख़्वान' का लघु., दे. 'ख़्वान'।

ख़्वांदः (خواندہ) फा. वि.–पढ़ाया हुआ, शिक्षित; बुलाया हुआ, निमंत्रित, आहूत।

ख़्वांदगी (خواندگی) फा. स्त्री.–पढ़ंत, पढ़ाई; परिषद् में किसी क़ानून की पढ़ाई।

ख़्वांदनी (خواندنی) फा. स्त्री.–पढ़ने योग्य, पाठ्य।

ख़्वाजः (خواجہ) तु. पुं.–स्वामी, पति, मालिक।

ख़्वाज़ः (خوازہ) फा. स्त्री.–इच्छा, ख़्वाहिश।

ख़्वाज़ःगर (خوازہ گر) फा. वि.–इच्छुक, चाहनेवाला, ख़्वाहिश करनेवाला।

ख़्वाजःताश (خواجہ تاش) तु. वि.–एक स्वामी के दास, जो आपस में ख़्वाजःताश कहलाते हैं।

ख़्वाजःसरा (خواجہ سرا) तु. फा. पुं.–महल का रखवाला; ज़नाना, हीजड़ा, नरदारा; शिखण्डी।

ख़्वान (خوان) फा. पुं.–थाल, ट्रे; खाने से भरा हुआ थाल।

ख़्वानपोश (خوان پوش) फा. पुं.–ख़्वान पर ढँकने का कपड़ा आदि।

ख़्वाना (خوانا) फा. वि.–बुलानेवाला, पुकारनेवाला।

ख़्वानिंदः (خوانندہ) फा. वि.–बुलानेवाला, पुकारनेवाला; पढ़ानेवाला, शिक्षक।

ख़्वाब (خواب) फा. पुं.–स्वप्न, स्वाप, सोने की क्रिया; स्वप्न, जो सोते में दिखाई दे।

ख़्वाबआवर (خواب آور) फा. वि.–नींद लानेवाली ओषधि आदि, निद्राकर, निद्राकारक।

ख़्वाबिंदः (خوابندہ) फा. वि.–सोता हुआ, सुप्त।

ख़्वाबीदः (خوابیدہ) फा. स्त्री.–सोने और नींद लेने का भाव, सोने की दशा।

ख़्वाबीदगी (خوابیدگی) फा. वि.–सोने के योग्य।

ख़्वाबे ख़रगोश (خواب خرگوش) फा. पुं.–धोखा, छल; गहरी नींद।

ख़्वाबे ग़फ़्लत (خواب غفلت) फा. अ. पुं.–गहरी नींद।

ख़्वाबे परीशाँ (خواب پریشاں) फा. पुं.–उचटती हुई नींद,

ऐसी नींद जो बार-बार उचट जाय; ऐसा स्वप्न जिसका स्वप्नफल न जाना जा सके।

ख़्वाबे सैयाद (خواب صیاد) फा. अ.–बनावटी नींद; छल, धोखा, फ़रेब।

ख़्वार (خوار) फा. वि.–अपमानित, तिरस्कृत, ज़लील; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल।

ख़्वारी (خواری) फा. स्त्री.–अपमान, अनादर, ज़िल्लत; दुर्दशा, बदहाली।

ख़्वाल (خوال) फा. पुं.–भोजन, खाना।

ख़्वालगर (خوالگر) फा. वि.–रसोइया, बावरची।

ख़्वालगीर (خوالگیر) फा. वि.–दे. 'ख़्वालगर'।

ख़्वास्तः (خواستہ) फा. वि.–चाहा हुआ, माँगा हुआ।

ख़्वास्त (خواست) फा. स्त्री.–चाह, माँग, सवाल।

ख़्वास्तगार (خواستگار) फा. वि.–माँगनेवाला, चाहनेवाला, इच्छुक।

ख़्वास्तगारी (خواستگاری) फा. स्त्री.–इच्छा, चाह; मँगनी, सगाई।

ख़्वास्तगी (خواستگی) फा. स्त्री.–इच्छा, चाह, माँग।

ख़्वास्तनी (خواستنی) फा. वि.–चाहने योग्य, माँगने योग्य।

ख़्वाह (خواہ) फा. प्रत्य.–चाहनेवाला, अच्छा लगनेवाला, जैसे—'दिलख़्वाह' मन को अच्छा लगनेवाला, (अव्य.) अथवा, या; चाहे।

ख़्वाहर (خواہر) फा. स्त्री.–भगिनी, बहन।

ख़्वाहाँ (خواہاں) फा. वि.–चाहनेवाला, इच्छुक; माँगनेवाला, याचक।

ख़्वाहिंदः (خواہندہ) फा. वि.–चाहनेवाला, इच्छुक; माँगनेवाला, याचक।

ख़्वाहिश (خواہش) फा. स्त्री.–इच्छा, चाह, तलब; लालसा, उत्कंठा, इश्तियाक़।

ख़्वाहीदः (خواہیدہ) फा. वि.–चाहा हुआ, वांछित, अभीप्सित।

ख़्वाहीदनी (خواہیدنی) फा. वि.–चाहने योग्य, माँगने योग्य।

ग

गंग (گنگ) फा. स्त्री.–गंगा नदी।

गंगबरार (گنگ برار) फा. स्त्री.–गंगा या दूसरी नदी की धारा के नीचे से निकली हुई (नयी) जमीन।

गंगल (گنگل) फा. पुं.–उपचार, जादू; ठठोल, मस्ख़री।

गंगोजमन (گنگوجمن) फा. स्त्री.–गंगा और यमुना।

गंजः (گنجہ) फा. पुं.–एक नगर।

गंज (گنج) फा. पुं.–निधि, ख़ज़ाना, कोष।

ग़ंज (غنج) अ. पुं.–आँख अथवा भौंह का संकेत, सैन; हावभाव, नाज़ोअंदाज़।

ग़ंज़ (غنظ) अ. पुं.–बहुत अधिक दुःख; नित्य का शोक।

गंजदान (گنجدان) फा. पुं.–वह स्थान जहां धन गड़ा हो; ख़ज़ाने का स्थान, कोषागार।

गंजबख़्श (گنج بخش) फा. वि.–ख़ज़ाना बाँटने या देनेवाला, बहुत बड़ा दाता; एक मुसलमान ऋषि की उपाधि।

गंजारः (گنجارہ) फा. पुं.–गुलगूनः, मुखचूर्ण, मुख पर मलने का सुगंधित लाल पाउडर।

ग़ंजार (غنجار) अ. पुं.–दे. 'गंजारः'।

गंजिंदः (گنجندہ) फा. वि.–समानेवाला, प्रवेश करनेवाला।

गंजिफ़ः (گنجفہ) फा. पुं.–ताश के प्रकार का एक खेल, जो ताश से पहले प्रचलित था; ताश पत्तों का खेल।

गंजीदः (گنجیدہ) फा. वि.–समाया हुआ।

गंजीदनी (گنجیدنی) फा. वि.–समाने योग्य।

गंजीनः (گنجینہ) फा. पुं.–निधि, कोष, ख़ज़ाना।

गंजीनए ज़र (گنجینۂ زر) फा. पुं.–केवल सोने का ख़ज़ाना, स्वर्णनिधि।

गंजूर (گنجور) फा. वि.–ख़ज़ाने का मालिक, निधि-स्वामी; ख़ज़ानची, कोषाध्यक्ष।

गंजे इलाही (گنج الٰہی) फा. पुं.–क़ुरान।

गंजे क़ारून (گنج قارون) फा. पुं.–'क़ारून' का ख़ज़ाना जो चार लाख चालीस हज़ार बोरी भर था और जिसमें से वह एक पैसा भी ईश्वर के नाम पर व्यय नहीं करता था, अन्त में हज़रत मूसा के शाप से वह अपनी निधि समेत पृथ्वी में धँस गया।

गंजे गाव (گنج گاؤ) फा. पुं.–जमशेद की निधियों में से एक निधि का नाम, जो एक किसान को मिला था।

गंजे बादावर्द (گنج باد آورد) फा. पुं.–दे. 'गंजे शायगाँ' क्योंकि इस ख़ज़ाने को हवा लेकर आयी थी, वायु-प्रेरित निधि, वायु-प्रदत्त निधि।

गंजे रवाँ (گنج رواں) फा. पुं.–दे. 'गंजे क़ारून' क्योंकि क़ारून का खज़ाना क़ियामत तक ज़मीन में धँसता चला जायगा।

गंजे शहीदाँ (گنج شہیداں) फा. पुं.–क़ब्रिस्तान, समाधि-क्षेत्र; जहाँ बहुत-से शहीद दफ़्न हों।

गंजे शायगाँ (گنج شایگاں) फा. पुं.–रूम के क़ैसर ने पर्वेज़ के भय से अपना धन जहाज़ों में भरकर एक द्वीप में भेजा था, हवा के प्रतिकूल होने से वह पर्वेज़ के देश में पहुँच गया, चूँकि यह बहुत बड़ा ख़ज़ाना था और बिना परिश्रम मिला था इस कारण इसे 'गंजे शायगाँ' कहते हैं।

गंदः (گندہ) फा. वि.–मलिन, मैला, अपवित्र, नापाक; दुर्गंधयुक्त, बदबूदार; दूषित, ख़राब; अशुद्ध, जिसमें मैल हो; गँदला, मटमैला।

गंदःदहन (گندہ دہن) फा. वि.–गालियाँ बकनेवाला, दुर्भाषी; जिसको मुँह से दुर्गंध आने का रोग हो।

गंदःदहनी (گندہ دہنی) फा. स्त्री.–गालियाँ बकने का रोग; मुँह से दुर्गंध आने का रोग।

गंदःबग़ल (گندہ بغل) फा. वि.–जिसे बग़ल से दुर्गंध आने का रोग हो।

गंदःबग़ली (گندہ بغلی) फा. स्त्री.–बग़ल से दुर्गंध आने का रोग।

गंदःमग़ज़ (گندہ مغز) फा. वि.–अहंकारी, घमंडी; डींगिया, शेख़ीख़ोर।

गंदःमग़ज़ी (گندہ مغزی) फा. स्त्री.–अहंकार, घमंड; डींग, शेख़ी।

गंद (گند) फा. स्त्री.–बदबू, दुर्गंध।

गंदगी (گندگی) फा. स्त्री.–दुर्गंध, बदबू; अपवित्रता, नापाकी; मलिनता, मैलापन; विष्ठा, गू।

गंदना (گندنا) फा. पुं.–एक बीज जो दवा में चलता है।

गंदनागूँ (گندناگوں) फा. वि.–गंदने-जैसे रंगवाला, ख़ाकी रंग का, मटमैला।

गंदीदः (گندیدہ) फा. वि.–सड़ा हुआ, दुर्गंधित।

गंदुम (گندم) फा. अ. पुं.–गेहूँ, गोधूम।

गंदुमगूँ (گندم گوں) फा. वि.–गेहुएँ रंग का।

गंदुमनुमा जौफ़रोश (گندم نما جوفروش) फा. वि.–गेहूँ दिखाकर जौ तौलनेवाला, छली, वंचक, ठग।

गंदुमी (گندمی) फा. वि.–गेहूँ से सम्बन्धित; गेहूँ का; गेहुएँ रंग का।

गच (گچ) फ़ा. स्त्री.–चूने की टीप, चूने से पक्की की हुई जगह।

गज़ंद (گزند) फा. स्त्री.–हानि, अनिष्ट, नुक़सान; दुःख, कष्ट, तक़लीफ़।

गज़ः (گزہ) फा. पुं.–नगाड़ा बजाने की लकड़ी; एक प्रकार का तीर।

गज़ (گز) फा. पुं.–नापने की लकड़ी जो १६ गिरह या ३६ इंच की होती है; झाऊ का पेड़।

ग़ज़ [ज़्ज़] (غز) अ. पुं.–घाव में पीप पड़ना और उसका घाव से बहना।

ग़ज़ [ज़्ज़] (غض) अ. पुं.–आँखें बन्द करना; आवाज़ धीमी करना; धैर्य धरना; बुरी बात का सहन करना; हानि करना।

गज़क (گزک) फा. पुं.–शराब के साथ खाने की चीज़; एक मिठाई जो शकर और तिल से बनती है।

ग़ज़गाव (غزگاؤ) फा. पुं.–एक जंगली गाय जिसकी पूँछ से मोरछल बनते हैं, सुरा गाय।

गज़पा (گزپا) फा. पुं.–एक लम्बे पाँव का पक्षी, सारस।

ग़ज़न्फ़र (غضنفر) अ. पुं.–व्याघ्र, शेर, फाड़ खानेवाला सिंह।

ग़ज़ब (غضب) अ. पुं.–क्रोध, गुस्सा; बहुत अधिक क्रोध, प्रकोप; दैवी प्रकोप, ख़ुदाई क़हर।

ग़ज़बआलूद (غضب آلود) अ. फा. वि.–कोपयुक़्त, ग़ुस्सा मिला हुआ।

ग़ज़बनाक (غضبناک) फा. वि.–कुपित, प्रकुपित, ग़ुस्से में भरा हुआ।

गज़बाज़ी (گزبازی) फा. स्त्री.–एक प्रकार का नाच।

गज़र (گزر) फा. स्त्री.–गाजर, एक प्रसिद्ध शाक।

ग़ज़र (غضر) अ. पुं.–मँहगाई के पश्चात् मंदी; दरिद्रता के पश्चात् समृद्धि।

ग़ज़ल (غزل) अ. स्त्री.–प्रेमिका से वार्तालाप; उर्दू, फ़ारसी कविता का एक प्रकार विशेष, जिसमें प्रायः ५ से ११ शेर होते हैं। सारे शे'र एक ही रदीफ़ और क़ाफ़िए में होते हैं, और हर शे'र का मज़्मून अलग होता है, पहला शे'र 'मत्ला' कहलाता है जिसके दोनों मिस्रे सानुप्रास होते हैं, और अंतिम शे'र 'मक़्ता' होता है जिसमें शाइर अपना उपनाम लाता है। ग़ज़ल के संग्रह को 'दीवान' एवं संपूर्ण प्रकार के पद्य-संग्रह को 'बयाज़' कहते हैं।

ग़ज़लगो (غزل گو) अ. फा. वि.–वह शाइर जो ग़ज़ल अच्छी कहता हो, जिसकी सारी कविताओं में ग़ज़ल सर्वश्रेष्ठ हो।

ग़ज़लगोई (غزل گوئی) अ. फा. स्त्री.–ग़ज़ल कहना।

ग़ज़लसरा (غزل سرا) अ. फा. वि.–ग़ज़ल सुनानेवाला, ग़ज़ल पढ़नेवाला, ग़ज़ल गानेवाला।

ग़ज़लसराई (غزل سرائی) अ. फा. स्त्री.–ग़ज़ल पढ़ना, ग़ज़ल गाना।

ग़ज़वात (غزوات) अ. पुं.–'ग़ज़्वः' का बहु., इस्लाम धर्म की परिभाषा में वे लड़ाइयाँ जिनमें पैग़म्बर साहिब साथ थे।

ग़ज़ा (غزا) अ. पुं.–धर्मयुद्ध, मज़्हबी लड़ाई, दे. 'ग़िज़ा', दोनों शुद्ध हैं।

गज़ा (گزا) फा. प्रत्य.–खानेवाला, जैसे–'जाँगज़ा' प्राणों को खा जानेवाला; हानि पहुँचानेवाला।

ग़ज़ा (غضا) अ. पुं.–बेर-जैसा एक वृक्ष, जिसकी लकड़ी बहुत देर तक जलती रहती है।

ग़ज़ाज़ः (غضاضہ) अ. पुं.–नवीन होना; एक पत्थर खानेवाली चिड़िया, (स्त्री.) नवीनता, नयापन।

ग़ज़ात (غضات) अ. पुं.–'ग़ज़ा' का बहु., बेर-जैसे पेड़ जिनकी आग बहुत देर तक रहती है।

ग़ज़ारः (غزارہ) अ. पुं.–दूध, पानी अथवा फल आदि का अधिक होना; बहुतात, बाहुल्य, प्राचुर्य, इफ़ात।

ग़ज़ारः (غضارہ) अ. पुं.–एक चिपकनेवाली मिट्टी, कचला मिट्टी; समृद्धि, दौलतमंदी; वैभव, ऐश; मंदापन, सस्तापन।

ग़ज़ार (غزار) अ. पुं.–मकान के चारों ओर की दीवार; घर का भीतरी भाग।

ग़ज़ार (غضار) अ. स्त्री.–एक चिपकनेवाली मट्टी, कचला मट्टी।

ग़ज़ालः (غزالہ) अ. पुं.–हिरन का बच्चा, मृगशावक; सूर्य, सूरज, उतूस के निकट एक गाँव, ग़ज़ाल भी प्रचलित, जैसे—"दावा ज़ुवाँ का लखनऊवालों के सामने, इज़्हारे बूए मुश्क ग़ज़ालों के सामने।"

ग़ज़ालःचश्म (غزالہ چشم) अ. फा. वि.–हिरन के बच्चों-जैसी सुन्दर और बड़ी-बड़ी आँखोंवाला (वाली), मृग-शावक-नयनी।

ग़ज़ाल (غزال) अ. पुं.–हिरन का बच्चा, मृगशावक; सूर्य, सूरज।

ग़ज़ालचश्म (غزال چشم) अ. फा. वि.–दे. 'ग़ज़ालःचश्म' मृगनयनी।

ग़ज़ालचश्मी (غزال چشمی) अ. फा. स्त्री.–हिरन के बच्चा-जैसी सुन्दर और बड़ी-बड़ी आँखें होना।

ग़ज़ाली (غزالی) अ. वि.–'ग़ज़ाला' का निवासी।

गज़िंदः (گزندہ) फा. वि.–काटनेवाला, काट खानेवाला; डसनेवाला।

ग़ज़िंदः (غژندہ) फा. वि.–बच्चों की भाँति चूतरों के बल घिसट-घिसटकर चलनेवाला।

गज़िंदगी (گزندگی) फा. स्त्री.–काटने का भाव; डसने का भाव, डसन।

ग़ज़ीज़ (غضیض) अ. वि.–नवीन, नया; ताज़ा, प्रफुल्ल; मृदुल और कोमल कली।

गज़ीत (گزیت) फा. पुं.–भूमिकर, लगान; राजकर, खराज; जिज़्या।

गज़ीदः (گزیدہ) फा. वि.–काटा हुआ; डसा हुआ, दंशित।

गज़ीद (گزید) फा. स्त्री.–दे. 'गज़ीत', काटा हुआ।

गज़ीदगी (گزیدگی) फा. स्त्री.–दे. 'गज़िंदगी'।

गज़ीदनी (گزیدنی) फा. वि.–काटने योग्य; डसने योग्य।

ग़ज़ीर (غزیر) अ. वि.–हर चीज़ जो बहुत हो; बहुत वर्षा; बहुत अधिक पानीवाला कुँआँ या तालाब; बहुत आँसुओंवाली आँख।

ग़ज़ीर (غضیر) अ. वि.–हर पदार्थ जो हरा और कोमल हो।

ग़ज़ूब (غضوب) अ. वि.–बहुत अधिक क्रुद्ध, ग़ज़बनाक।

ग़ज़्ज़ाल (غزال) अ. वि.–रस्सी बनाने और बेचनेवाला।

ग़ज़्नः (غزنہ) फा. पुं.–दे. 'ग़ज़्नी'।

ग़ज़्नवी (غزنوی) फा. वि.–'ग़ज़्नीं' का निवासी; महमूद ग़ज़्नवी।

ग़ज़्नीं (غزنیں) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर, 'ग़ज़्नी'।

ग़ज़्बान (غضبان) अ. वि.–बहुत अधिक प्रकुपित, बहुत ग़ज़बनाक; वे पत्थर जो 'मिंजनीक़' से दुर्ग पर फेंके जायँ।

ग़ज़्म (غزم) अ. पुं.–अंगूर का फल जो ताज़ा और पक्का हो।

गज़्म (گزم)–फा. पुं.–झाऊ का पेड़।

ग़ज़्ल (غزل) अ. पुं.–रस्सी बटना; रस्सी, रज्जु; डोर।

गज़्लक (گزلک) फा. पुं.–वह चाक़ू जिसकी नोक मुड़ी हो, क़लम बनाने का चाक़ू।

ग़ज़्वः (غزوہ) अ. पुं.–धर्मयुद्ध, मज़हबी लड़ाई; हज़रत मुहम्मद साहिब के समय का वह युद्ध जिसमें वह स्वयं सम्मिलित हुए।

ग़ज़्वर (غضور) अ. स्त्री.–चिपकनेवाली मिट्टी, कचला।

ग़त[त्त] (غط) अ. पुं.–पानी में ग़ोता देना, पानी में डुबोना।

ग़तफ़ (غطف) अ. पुं.–आँखों की विशालता और पलकों की लम्बाई।

ग़तम्तम (غطسطم) अ. पुं.–महासागर।

ग़तात (غطاط) अ. पुं.–एक पक्षी जो पत्थर खाता हैं, संग-ख्वार।

ग़तीत (غطیط) अ. पुं.–सोते समय खर्राटों का शब्द; गला घुँटे हुए का शब्द; गला कटे हुए का शब्द।

ग़तीम (غطیم) अ. पुं.–महासागर।

ग़तूस (غطوس) अ. वि.–वह शूर व्यक्ति, जो युद्ध या आपत्ति के समय सबसे आगे बढ़े।

ग़त्तास (غطاس) अ. पुं.–पनडुब्बी, एक जलपक्षी।

ग़त्स (غطس) अ. पुं.–पानी में घुसना; पानी में डुबाना; बरतन में लेकर पानी पीना।

गद (گد) फा. पुं.–भीख माँगना, दे. 'गिद्यः'।

ग़द (غد) अ. पुं.–आनेवाला कल।

ग़दक़ (غدق) अ. पुं.–बहुत अधिक पानी।

ग़दद (غدد) अ. पुं.–महामरी, वबा; ऊँटों का ताऊन।

ग़दफ़ (غدف) अ. पुं.–समृद्धि, सम्पन्नता, फ़राखी; ने'मत, ईश्वर का दिया हुआ धन आदि।

ग़दर (غدر) अ. पुं.–वह पथरीली भूमि जिसमें कोई जन्तु बिल न बना सके; रात का अँधियारा होना।

ग़दा (غدا) अ. पुं.–आगामी कल।

गदा (گدا) फा. वि.–भीख माँगनेवाला भिक्षुक, भिखमंगा, भिखारी, मँगता।

ग़दाइर (غدائر) अ. पुं.–'ग़दीरा' का बहु., गुँधी हुई चोटियाँ।

गदाई (گدائی) फा. स्त्री.–भीख माँगने का काम, भिक्षावृत्ति, भिक्षाकर्म।

गदागर (گداگر) फा. वि.–भिक्षुक, भिक्षु, भिखमंगा, फ़क़ीर।

गदागरी (گداگری) फा. स्त्री.–भीख माँगने का काम, भिक्षावृत्ति।

ग़दात (غدات) अ. स्त्री.–प्रातःकाल, सबेरा।

गदायानः (گدایانہ) फा. वि.–भिखमंगों-जैसा, भिखारियों की तरह।

ग़दीरः (غدیرہ) अ. पुं.–गुँधी हुई चोटी, गुँधे हुए बाल।

ग़दीर (غدیر) अ. पुं.–वह पानी जो नदी में बाढ़ आने के समय नदी से निकलकर कहीं जमा हो जाय; इस पानी के एकत्र होने का स्थान, जलाशय।

ग़द्दूर (غدور) अ. वि.–कृतघ्न, बेवफ़ा, गद्दारी करनेवाला।

ग़द्दार (غدار) अ. वि.–कृतघ्न, नमकहराम; देशद्रोही, मुल्क का दुश्मन; बहुत बड़ा, विशाल (केवल नगर के लिए)।

ग़द्दारी (غداری) अ. स्त्री.–कृतघ्नता, बेवफ़ाई, नमकहरामी; देशद्रोह, मुल्क की दुश्मनी।

ग़द्फ़ (غدف) अ. पुं.–बहुत अधिक दान।

ग़द्र (غدر) अ. पुं.–विप्लव, क्रान्ति, इन्क़िलाब; सैन्य-द्रोह, बग़ावत; लूटमार; प्रबंध की बहुत ही बुरी व्यवस्था।

ग़द्वः (غدوہ) अ. पुं.–प्रातःकाल और सूर्योदय के बीच का समय।

ग़द्व (غدو) अ. पुं.–आगामी कल, आनेवाला कल।

ग़नज (غنج) अ. पुं.–हाव-भाव दिखाना; बूढ़ा पुरुष।

ग़नम (غنم) अ. स्त्री.–भेड़ और बकरी।

ग़ना (غنا) अ. पुं.–लाभ, नफ़ा, प्राप्ति।

ग़नाइम (غنائم) अ. पुं.–'ग़नीमत' का बहु., युद्ध में लूटे हुए माल-अस्बाब और धन आदि।

ग़नी (غنی) अ. वि.–धनवान्, मालदार; निःस्पृह, अनिच्छुक, बेनियाज़।

ग़नीम (غنیم) अ. वि.–प्रतिद्वंद्वी, हरीफ़; वह राजा जो किसी दूसरे राज पर आक्रमण करे।

ग़नीमत (غنیمت) अ. स्त्री.–युद्ध में शत्रु की सेना से छीना हुआ माल, (वि.) उत्तम, अच्छा।

ग़न्ना (غنا) अ. पुं.–किसी चीज़ के ढेर होने का स्थान; किसी चीज़ के बहुत होने का स्थान।

गप (گپ) फा. स्त्री.–मिथ्यावाद, अपवाद, व्यर्थ बात, बकवास; उड़ती हुई बात।

गपबाज़ (گپ باز) फा. स्त्री.–गप्पी, बकवादी; डींगिया, शेखीख़ोर।

गपबाज़ी (گپ بازی) फा. स्त्री.–गप हाँकना, डींग मारना।

ग़फ़र (غفر) अ. पुं.–सफ़ेद बालों को खिज़ाब से छिपाना; छोटी घास; गर्दन और गुद्दी के बाल; डाढ़ी के दोनों ओर के बाल।

ग़फ़ल (غفل) अ. पुं.–निश्चेष्टता, संज्ञाहीनता, बेख़बरी; विस्मृति, भूल।

ग़फ़ीर (غفیر) अ. पुं.–लोहे की टोपी जो सारे सिर को छिपा ले (वि.) छिपानेवाला; इतनी भीड़ जो शुमार में न आ सके।

ग़फ़ूर (غفور) अ. वि.–बहुत अधिक क्षमावान्; मोक्षदाता, बख़्शनेवाला; ईश्वर का एक नाम।

ग़फ़ूल (غفول) अ. वि.–बहुत अधिक निश्चेष्ट, बहुत ही बेख़बर।

गफ़्फ़ार (غفار) अ. वि.–बहुत अधिक क्षमा करनेवाला; पापों को छिपानेवाला; मोक्षदाता; ईश्वर का एक नाम।

ग़फ़्फ़ारी (غفاری) अ. स्त्री.–पापों को छिपाने का कर्म; मोक्षदान, बख़्शिश; ईश्वरत्व, ख़ुदाई।

ग़फ़्र (غفر) अ. पुं.–वैभव का आधिक्य, ऐश की फरावानी।

ग़फ़्लत (غفلت) अ. स्त्री.–असावधानी, असतर्कता, बेख़बरी; संज्ञाहीनता, निश्चेष्टता, बेहोशी; त्रुटि, भूल, चूक; उपेक्षा, बेपर्वाई; आलस्य, काहिली।

ग़फ़्लतआश्ना (غفلت آشنا) अ. फा. वि.–जो बहुत सुस्ती बरतता हो।

ग़फ़्लतकदः (غفلت کدہ) अ. फा. पुं.–ग़फ़लत और असावधानी का स्थान, अर्थात् संसार।

ग़फ़्लतज़दः (غفلت زدہ) अ. फा. वि.–असावधान, बेख़बर; संज्ञाहीन, बेहोश; आलसी, सुस्त।

ग़फ़्लतज़दगी (غفلت زدگی) अ. फा. स्त्री.–असावधानी; संज्ञाहीनता; बेहोशी, ध्यानहीनता, आलस्य, सुस्ती।

ग़फ़्लतपेशः (غفلت پیشہ) अ. फा. वि.–जिसका स्वभाव ही ग़फ़्लत करने का हो; बहुत ही आलसी; असावधान।

ग़फ़्लतशिआर (غفلت شعار) अ. वि.–दे. 'ग़फ़्लतपेशः'।

ग़फ़्स (غفص) अ. वि.–मोटा, गफ़।

ग़ब [ब्ब] (غب) अ. पुं.–पशु का एक दिन बीच करके पानी पीना।

ग़बन (غبن) अ. पुं.–बुद्धि और मति में कमी; भूल जाना, विस्मृति; निश्चेष्ट करना, ग़ाफ़िल करना।

ग़बब (غبب) अ. पुं.–ठुड्डी के नीचे का गोश्त।

ग़बरः (غبرہ) अ. पुं.–धूल-मिट्टी, गर्द-ग़ुबार; बहुत पेड़ोंवाली भूमि।

ग़बस (غبس) अ. वि.–मटमैले रंगवाला, ख़ाकी रंगवाला।

ग़बावत (غباوت) अ. स्त्री.–ज़ेहन का तीव्र न होना, कुंदज़ेह्नी; बुद्धि का तेज़ न होना, कमअक़्ली।

ग़बी (غبی) अ. वि.–मंदबुद्धि, कुंदज़ेह्न; अतीव्रबुद्धि, कमअक़्ल, मंदमति।

ग़बीत (غبیط) अ. पुं.–समतल भूमि, हमवार ज़मीन।

ग़बीन (غبین) अ. वि.–मंदमति, जिसकी राय ठीक न होती हो।

ग़बीसः (غبیثہ) मक्खन और पनीर मिला हुआ।

ग़बूक़ (غبوق) अ. स्त्री.–शाम के पीने की शराब, ह्विस्की।

गब्ज़ (گبز) फा. पुं.–मोटा, दबीज़; मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट।

ग़ब्ग़ब (غبغب) अ. स्त्री.–वह मांस जो ठोड़ी के नीचे होता है; ठोड़ी, चिबुक, ज़क़न।

गब्तः (غبطہ) अ. पुं.–दे. 'ग़िब्तः'।

ग़ब्त (غبط) अ. पुं.–बकरी और दुंबे की पीठ और कोख में उँगलियाँ गड़ाकर यह देखना कि वह चरबीला है या दुबला।

ग़ब्न (غبن) अ. पुं.–माल लेने-देने में घाटा; अमानत में खियानत, पोषण, अपहरण, ख़ुर्द-बुर्द।

गब्र (گبر) फा. वि.–आतशपरस्त, पार्सी।

ग़ब्रा (غبرا) अ. पुं.–वह भूमि जिसमें पेड़ बहुत हों; फलदार वृक्ष; भूमि, ज़मीन, (स्त्री.) चकोर की मादा; चकोरी।

गब्रोतर्सा (گبروترسا) फा. पुं.–आतशपरस्त और ईसाई।

ग़म[म्म] (غم) अ. पुं.–खेद, शोक, क्षोभ, रंज; कष्ट, क्लेश, दुःख; डाह, ईर्ष्या, हसद; मनस्ताप, संताप, अंदरूनी ख़लिश; चिन्ता, फ़िक्र।

ग़मअंगेज़ (غم انگیز) अ. फा. वि.–ग़म बढ़ानेवाला, शोकप्रद, खेदजनक।

ग़मआगीं (غم آگیں) अ. फा. वि.–ग़म से भरा हुआ, दुःखपूर्ण।

ग़मआलूद (غم آلود) अ. फा. वि.–दे. 'ग़मआगीं'।

ग़मक़ (غمق) अ. पुं.–भूमि के ऊपरी भाग के पानी से भीग जाना।

ग़मकदः (غم کدہ) अ. फा. पुं.–ग़म का घर, जहाँ शोक ही शोक हो, जहाँ शोकग्रस्त लोग रहते हों; जहाँ कोई मृत्यु हो गयी हो।

ग़मकश (غم کش) अ. फा. वि.–दुःख सहनेवाला, क्लेश उठानेवाला, क्लेशग्रस्त।

ग़मख़ानः (غم خانہ) अ. फा. पुं.–दे. 'ग़मकदः'।

ग़मख़ोर (غم خور) अ. फा. वि.–ग़म खानेवाला, दुःख सहन करनेवाला, सहनशील।

ग़मख़्वार (غم خوار) अ. फा. वि.–सहानुभूति करनेवाला, हमदर्द।

ग़मख़्वारी (غم خواری) अ. फा. स्त्री.–सहानुभूति, हमदर्दी।

ग़मगीन (غمگین) अ. फा. वि.–दुःखित, संतप्त, रंजीदा।

ग़मगुसार (غم گسار) अ. फा. वि.–दे. 'ग़मख़्वार'।

ग़मगुसारी (غم گساری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ग़मख़्वारी'।

ग़मचशीदः (غم چشیدہ) अ. फा. वि.–दे. 'ग़मज़दः'।

ग़मज़ (غمز) अ. पुं.–बुरी कमाई का धन, निकृष्ट माल; अशक्त पुरुष।

ग़मज़दः (غم زدہ) अ. फा. वि.–संतप्त, दुःखित, रंजीदा; शोकग्रस्त, मातमदार।

ग़मद (غمد) अ. पुं.–कुएँ में पानी की अधिकता; कुएँ से पानी का ख़त्म हो जाना।

ग़मदीदः (غم دیدہ) अ. फा. वि.–दे. 'ग़मगीन'।

ग़मदोस्त (غم دوست) अ. फा. वि.–जिसे क्लेश और दुःख पसंद हो, निराशावादी।

ग़मनाक (غمناک) अ. फा. वि.–दुःखपूर्ण, कष्टपूर्ण, शोकयुक्त; दुःखित, रंजीदा।

ग़मनाकी (غمناکی) अ. फा. स्त्री.–दुःखपूर्णता, ग़म भरा होना; दुःखित होने का भाव, रंजीदगी।

ग़मरसीदः (غم رسیدہ) अ. फा. वि.–जिसे दुःख पहुँचा हो, जिसे दुःख दिया गया हो, दुःखित।

ग़मरात (غمرات) अ. पुं.–ग़म्रः का बहु., आपत्तियाँ, मुसीबतें; मनुष्यों के समूह।

ग़मस (غمص) अ. पुं.–आँख का मैल; आँख का मैल जो बाहर बहे।

ग़माँ (غماں) अ. फा. वि.–दे. 'ग़मनाक'।

ग़माइम (غمائم) अ. पुं.–'ग़माम' का बहु., बादलों के समूह।

ग़मामः (غمامہ) अ. पुं.–सफ़ेद बादल; एक बादल, बादल का एक टुकड़ा।

ग़माम (غمام) अ. पुं.–मेघ, बादल, अब्र; सफ़ेद बादल।

ग़मार (غمار) अ. पुं.–अधिकता, बहुतायत; समूह होना, जमघट।

ग़मारत (غمارت) अ. स्त्री.–मनुष्यों का जमाव; पानी की अधिकता।

ग़मिक़ (غمق) अ. पुं.–वह तरकारी या घास जो पानी की सीलन से बिगड़ या सड़ जाय।

ग़मी (غمی) अ. स्त्री.–ग़म से सम्बन्धित; मृत्यु, मौत।

ग़मूस (غموص) अ. पुं.–झूठी क़सम; एक तारा; ख़ैबर के सात दुर्गों में से एक।

ग़मूस (غموس) अ. पुं.–ऐसी शपथ जिससे किसी का हक़ या धन आदि मारा जाय, (वि.) झूठी शपथ लेनेवाले को दंड देनेवाला।

ग़मे गेती (غم گیتی) अ. फा. पुं.–सांसारिक दुःख, जीवन की व्यथाएँ, जीवन-कष्ट।

ग़मे दिल (غم دل) अ. फा.–मनस्ताप, मनःपीड़ा, दिल का रंज।

ग़मे दौराँ (غم دوراں) अ. फा. पुं.–दे. 'ग़मे गेती'।

ग़मे पिन्हाँ (غم پنہاں) अ. फा. पुं.–मानसिक दुःख, मनस्ताप; प्रेम की व्यथा, इश्क़ का ग़म।

ग़मे रोज़गार (غم روزگار) अ. फा. पुं.–दे. 'ग़मे गेती'।

ग़मोरंज (غمورنج) अ. फा. पुं.–रंज और ग़म, कष्ट-समूह, मुसीबतें।

ग़म्ज़ः (غمزہ) अ. पुं.–आँख का संकेत, सैन; हावभाव, नाज़ोअदा।

ग़म्ज़ (غمز) अ. पुं.–आँख का इशारा, सैन; दबाकर निचोड़ना; आलोचना, सुख़नचीनी।

ग़म्ज़ (غمض) अ. पुं.–नीची भूमि; गुप्त गढ़ा, छिपा हुआ गर्त; ऐसी बात करना जो समझ में न आये, बात का समझ से परे होना।

ग़म्त (غمط) अ. पुं.–किसी को अपमानित करना; कृतघ्नता, नाशुक्री।

ग़म्द (غمد) अ. पुं.–तलवार को म्यान में करना; किसी का अपराध छिपाना; कुएँ का पानी बढ़ जाना।

ग़म्माज़ (غماز) अ. वि.–पिशुन, चुग़ुल; आँख के इशारे से चुग़ली खानेवाला; गुप्तचर, जासूस; दोष ढूँढ़नेवाला।

ग़म्र (غمر) अ. पुं.–पानी का किसी वस्तु को छिपा लेना; बहुत पानी; उदार, सख़ी; शूर, जवाँमर्द।

ग़म्रुर्रिदा (غمرالردا) अ. वि.–बहुत ही उदार और दानशील।

ग़म्रुलबर्द (غمرالبرد) अ. वि.–दे. 'ग़मुर्रिदा'।

ग़म्श (غمش) अ. पुं.–भूख-प्यास की तीव्रता से आँखों में अँधेरा छा जाना।

ग़म्स (غمس) अ. पुं.–किसी को तुच्छ जानना; आलस्य करना (किसी का हक़ देन में); दोष लगाना, कृतघ्नता, नाशुक्री।

ग़यद (غید) अ. पुं.–गर्दन का टेढ़ा होकर एक ओर झुक जाना; शरीर का मृदुल और कोमल होना।

ग़यब (غیب) अ. पुं.–'ग़ाइब' का बहु., ग़ाइब (गायब) होनेवाले, छिपनेवाले, लोप होनेवाले।

ग़याबत (غیابت) अ. स्त्री.–लुप्त होना, ग़ाइब होना; कुएँ की गहराई; वह वस्तु जो किसी वस्तु को छिपा ले।

ग़यूर (غیور) अ. वि.–ग़ैरतमंद, स्वाभिमानी।

ग़यूरानः (غیورانہ) अ. फा. वि.–स्वाभिमानियों-जैसा, ग़ैरतमंदों की तरह।

ग़य्याफ़ (غیاف) अ. वि.–जिसकी डाढ़ी बहुत लंबी और घनी हो।

गर (گر) फा. अव्य.–'अगर' का लघु., यदि, जो, अगर।

ग़र (غر) फा. स्त्री.–व्यभिचारिणी, कुलटा, फ़ाहिशा।

ग़र[र्र] (غر) अ. पुं.–वे दाने जो पक्षी चोंच में लेकर अपने बच्चों को खिलाता है, चुगा; कपड़े की शिकन, सिलवट; भूमि की दरार; ज़मीन के भीतर पानी की नाली; मुग्ध होना।

ग़रक़ (غرق) अ. पुं.–पानी में डूब जाना; पानी सिर से ऊँचा हो जाना।

गरगर (گرگر) फा. पुं.–ईश्वर के नामों में से एक नाम, जिसका अर्थ है सारी निर्मित वस्तुओं का निर्माता।

ग़रज़ (غرض) अ. स्त्री.–इच्छा, ख़्वाहिश; स्वार्थ, मतलब; आशय, मक़्सद; किंबहुना, क़िस्सा मुख़्तसर; सम्बन्ध, तअल्लुक़; प्रयोजन, मतलब।

ग़रज़ (غرز) अ. पुं–एक घास।

ग़रज़आश्ना (غرض آشنا) अ. फा. वि.–मतलब का यार, स्वार्थसाधक, स्वार्थी।

ग़रज़मंद (غرض مند) अ. फा. वि.–इच्छुक, ख़्वाहिशमंद; जिसका कोई मतलब अटका हो।

ग़रज़मंदी (غرض مندی) अ. फा. स्त्री.–इच्छा, ख़्वाहिशमंदी; मतलब अटका होना।

ग़रज़े कि (غرضے کہ) अ. फा. अव्य.-सारांश यह कि।

ग़रद (غرد) अ. पुं.–गले में आवाज़ को लुढ़काना।

ग़रदिल (غردل) फा. वि.–डरपोक, भीरु, बुज़दिल।

ग़रर (غرر) अ. पुं.–शंका, भय, डर; शर्त, पण।

ग़रव (غرو) अ. पुं.–नरकट जिससे क़लम बनाते हैं।

ग़रस (غرث) अ. स्त्री.–भूख, क्षुधा।

गराँ (گراں) फा. वि.–दे. 'गिराँ', शुद्ध दोनों हैं, परन्तु वह अधिक फ़सीह है।

गरा (گرا) फा. पुं.–भूमि समतल करने का यंत्र।

ग़रा (غرا) अ. पुं.–हर चिपकनेवाली चीज़; सरेस, मछली का सरेस; हर चुपड़नेवाली वस्तु; शिशु, बच्चा; दुबला।

ग़राइब (غرائب) अ. पुं.–'ग़रीबः' का बहु., आश्चर्यजनक वस्तुएँ।

ग़राइर (غرائر) अ. पुं.–'ग़िरारः' का बहु., लादने की गोनें, ख़ुर्जियाँ।

ग़रानिक़ः (غرانقہ) अ. पुं.–दे. 'ग़रानीक़'।

ग़रानीक (غرانیق) अ. पुं.–'ग़ुर्नूक' का बहु., कुलंग पक्षी; सुन्दर और युवा लोग; गुँधी हुई चोटियाँ।

ग़राबीब (غرابیب) अ. पुं.–' ग़ुर्बीब का बहु., बहुत अधिक काले।

ग़राबत (غرابت) अ. स्त्री.–अनोखापन, अद्‌भुतता।

ग़राम (غرام) अ. पुं.–दुष्टता; लोभ, लालच; हत्या, हलाकत; पीड़ा, अज़ाब; मोह, प्रेम।

ग़रामत (غرامت) अ. स्त्री.–हानि उठाना; पश्चात्ताप, पशेमानी; दुःख, पीड़ा, अज़ाब।

ग़रारः (غرارہ) फा. पुं.–मुँह में पानी भरकर चलाना, ग़र्ग़रः, आचमन।

ग़रारः (غرارہ) अ. पुं.–नातज्रिबःकारी, अनाड़ीपन, अपरिपक्वता; धोखा खाना, छला जाना।

ग़रास (غراس) अ. पुं.–खाने या पीनेवाली दवा का वह अंश जो गिर जाय।

ग़रिक (غرق) अ. वि.–दे. 'ग़रीक़'।

ग़रीक़ (غریق) अ. वि.–जो पानीमें डूब गया हो, निमग्न, प्लावित, निमज्जित।

ग़रीज़ (غریض) अ. पुं.–नवीन, ताज़ा, नया; प्रफुल्ल, शगुफ़्ता; वर्षा का जल; नयी मदिरा; हर सफ़ेद वस्तु; कली, शिगूफ़ा।

ग़रीज़त (غریزت) अ. स्त्री.–प्रकृति, स्वभाव, आदत।

ग़रीज़ी (غریزی) अ. वि.–स्वाभाविक, प्राकृतिक, नेचुरल, फ़ित्री, विशेषतः 'हरारत' के लिए आता है, 'हरारते ग़रीज़ी' अर्थात् शरीर की प्राकृतिक गर्मी।

ग़रीब (غریب) अ. वि.–विदेशी, परदेसी; जो सफ़र में हो; दरिद्र, दीन, कंगाल; असहाय, बेचारा, लाचार; दीन, दुखी, बेबस।

ग़रीबआज़ार (غریب آزار) अ. फा. वि.–दीन दुखी व्यक़्तियों को सतानेवाला।

ग़रीबख़ानः (غریب خانہ) अ. फा. पुं.–ऐसा घर जिसमें सुख का कोई साधन न हो, वक्ता अपने घर को भी बोलता है।

ग़रीबज़ादः (غریب زادہ) अ. फा. पुं.–वेश्यापुत्र, रंडी का लड़का, रंडी-बच्चा।

ग़रीबनवाज़ (غریب نواز) अ. फा. वि.–दीनों दुखियों पर करुणा करनेवाला, प्रणतपाल, दीनवत्सल।

ग़रीबनवाज़ी (غریب نوازی) अ. फा. स्त्री.–दीनों और असहाय व्यक़्तियों पर कृपादृष्टि।

ग़रीबपर्वर (غریب پرور) अ. फा. वि.–दे. 'ग़रीबनवाज़'।

ग़रीबपर्वरी (غریب پروری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ग़रीबनवाज़ी'।

गरीबाँ (گریباں) फा. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'गिरीबाँ'।

ग़रीबी (غریبی) अ. स्त्री.–घरबार से दूरी; दरिद्रता, कंगाली; दीनता, लाचारी; एक बहुत बढ़िया कपड़ा।

ग़रीबुद्दयार (غریب الدیار) अ. वि.–दे. 'ग़रीबुलवतन'।

ग़रीबुलवतन (غریب الوطن) अ. वि.–बेवतन, जो अपना घरबार छोड़ परदेश में पड़ा हो, प्रवासी, परदेशी।

ग़रीबेशह्र (غریبِ شہر) अ. फा. वि.–जो नगर में किसी को जानता पहचानता न हो और मुसाफ़िर की तरह पड़ा हो।

ग़रीम (غریم) अ. वि.–जिसे टोटा हुआ हो; ऋणी, क़र्ज़दार; ऋणदाता, क़र्ज़ख़्वाह।

ग़रीर (غریر) अ. वि.–वह युवक जो अनुभवी न हो; ज़ामिन, प्रतिभू, (पुं.) अच्छा स्वभाव, अच्छी आदत।

गरूगर (گروگر) फा. पुं.–ईश्वर के नामों में से एक, जिस का अर्थ है कामनाएँ पूरी करनेवाला।

ग़रूर (غرور) अ. वि.–छली, धोखेबाज़, (पुं.) वह दवाओं का पानी जिससे ग़रारा करें।

ग़र्क़ः (غرقہ) अ. वि.–डूबा हुआ, निमग्न।

ग़र्क़ (غرق) अ. पुं.–पानी में डूबना, निमज्जन, (वि.) डूबा हुआ, निमग्न।

ग़र्क़ए ख़ूँ (غرقۂ خوں) अ. फा. वि.–ख़ून में डूबा हुआ।

ग़र्क़ाब (غرقاب) अ. फा. वि.–डूबा हुआ, निमज्जित, (पुं.) डूबना, निमज्जन; डुबाऊ पानी।

ग़र्क़ी (غرقی) अ. स्त्री.–डूबना; बाढ़, तुग़्पानी; जुलाहों के कपड़ा बुनने का गढ़ा।

गर्ग (گرگ) फा. पुं.–खुजली, खर्जूर; एक नगर।

ग़र्ग़रः (غرغرہ) अ. पुं.–मुँह में पानी लेकर फिराना, ग़रारा करना, आचमन।

ग़र्ग़र (غرغر) अ. पुं.–सूत लपेटने की चर्ख़ी।

गर्गीं (گرگیں) फा. वि.–जिसे खाज का रोग हो।

ग़र्चः (غرچہ) फा. वि.–क़्लीब, नपुंसक, नामर्द; मूर्ख, नादान, बुद्‌धू।

ग़र्चक (غرچک) फा. वि.–मूर्ख, घामड़, बुद्‌धू।

गर्ज़मान (گرزمیاں) फा. पुं.–सबसे ऊपर का आकाश।

गर्दंग (گردنگ) फा. पुं.–स्त्री की कमाई खानेवाला, दैयूस, भगभोगी, भँडुवा।

गर्दः (گردہ) फा. पुं.–पिसा हुआ कोयला जो सुई से छिदे हुए काग़ज़ पर फेरकर बेल-बूटे बनाने के काम आता है; छिदा हुआ काग़ज़ जिस पर बेलबूटे बने होते हैं, और जिस पर कोयला फेरा जाता है।

गर्द (گرد) फा. स्त्री.–रज, धूलि, ख़ाक; नगर, शहर; सूरज, सूर्य; खेद, रंज; लाभ, वफ़ा; एक अच्छा रेशम, (प्रत्य.) फिरने वाला, जैसे—'जहाँगर्द' संसार में फिरने वाला।

गर्दआलूद (گردآلود) फा. वि.–दे. 'गर्दालूद'।

गर्दन (گردن) फा. स्त्री.–ग्रीवा, गला; कंठ, हल्क़।

गर्दनकश (گردن کش) फा. वि.–अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान; विद्रोही, बाग़ी; उद्दंड, अक्खड़।

गर्दनकशी (گردن کشی) फा. स्त्री.–अवज्ञा, नाफ़र्मानी; विद्रोह, बग़ावत; उद्दंडता, अक्खड़पन।

गर्दनजदनी (گردن زدنی) फा. वि.–जो गर्दन मारने के योग्य हो, वध्य, हंतव्य।

गर्दनजन (گردن زن) फा. वि.–गर्दन काटनेवाला, जल्लाद; वधिक, क़ातिल; क़साई।

गर्दनजनी (گردن زنی) फा. स्त्री.–गर्दन काटने का काम; जल्लादी; हत्यापन; क़साईपन।

गर्दनफ़राज (گردن فراز) फा. वि.–बड़े पदवाला, बड़ी पदवीवाला, आला रुत्बा; गर्दन ऊँची करके चलनेवाला, गौरवशाली।

गर्दनबारीक (گردن باریک) फा. वि.–लाचार, बेबस, दीन; अधीन, वशीभूत, मुतीअ।

गर्दनी (گردنی) फा. पुं.–चाँटा, थप्पड़।

गर्दां (گرداں) फा. वि.–घूमता हुआ, चक्कर खाता हुआ, घूर्णित।

गर्दान (گردان) फा. स्त्री.–व्याकरण में कारकों या लकारों की आदि से अंत तक कंठ-पुनरावृत्ति।

गर्दालूद (گردالود) फा. वि.–धूलि में अटा हुआ, धूलि-धूसर; धूल मिला हुआ, धूल्याक्त।

गर्दिदः (گردندہ) फा. वि.–फिरनेवाला, घूमनेवाला, चक्कर खानेवाला।

गर्दिश (گردش) फा. स्त्री.–चक्कर, फिराव; दुर्भाग्य, बदक़िस्मती; कालचक्र, आपत्ति का समय; भ्रमण, सैर-सपाटा।

गर्दिशजदः (گردش زدہ) फा. वि.–कालचक्रग्रस्त, मुसीबत का मारा।

गर्दिशजदगी (گردش زدگی) फा. स्त्री.–काल-चक्रग्रस्तता, मुसीबत का मारा होना।

गर्दिशे दौराँ (گردش دوراں) फा. स्त्री.–समय का चक्कर, काल-चक्र, समय का उलटफेर।

गर्दिशे पैमानः (گردش پیسانہ) फा. स्त्री.–मदिरा के पियाले का चक्कर, शराब का दौर।

गर्दिशे पैहम (گردش پیہم) फा. स्त्री.–लगातार चक्कर; लगातार आपत्तियाँ।

गर्दिशे रोज़गार (گردش روزگار) फा. स्त्री.–दे. 'गर्दिशे दौराँ'।

गर्दिशे लैलोनहार (گردش لیل ونہار) फा. अ. स्त्री.–रात-दिन का उलट-फेर, समय का चक्कर, समय का फेर।

गर्दिशे हादिसात (گردش حادثات) फा.अ. स्त्री.–दुर्घटनाओं का चक्कर, आपत्तियों का ताँता।

गर्दीदः (گردیدہ) फा. वि.–फिरा हुआ, घूमा हुआ, घूर्णित; लौटा हुआ, वापस आया हुआ।

गर्दीदनी (گردیدنی) फा. वि.–फिरने के योग्य, घूमने के योग्य, चक्कर खाने के योग्य।

गर्दूं (گردوں) फा. पुं.–आकाश, व्योम, आस्मान; शकट, छकड़ा, गाड़ी।

गर्दूंअसास (گردوں اساس) फा. अ. वि.–जिसकी नीव आकाश में हो, बहुत बड़े पदवाला।

गर्दूंइक़्तिदार (گردوں اقتدار) फा. अ. वि.–आकाश-जैसी सत्तावाला, बहुत बड़ा प्रतिष्ठित।

गर्दूंजाह (گردوں جاہ) फा. वि.–दे. 'गर्दूंइक्तिदार'।

गर्दूंसरीर (گردوں سریر) फा. अ. वि.–जिसका सिंहासन आकाश हो, बहुत बड़ी महत्तावाला।

गर्दे मलाल (گرد ملال) फा. अ. स्त्री.–मन का मैल, मनोमालिन्य, रंजिश।

गर्दे सफ़र (گرد سفر) फा. अ. स्त्री.–सफ़र की थकान।

ग़र्नातः (غرناطہ) अ. पुं.–स्पेन का एक नगर।

ग़र्फ़ः (غرفہ) अ. पुं.–चुल्लू से एक बार पानी उठाना।

ग़र्ब (غرب) अ. पुं.–पश्चिम दिशा, पश्चिम; बड़ा डोल, पुर।

ग़र्बलत (غربلت) अ. स्त्री.–चलनी में छानना; काटना, विच्छेदन; हत्या करना, हनन।

ग़र्बाल (غربال) अ. स्त्री.–आटा आदि छानने का यंत्र, चलनी, चालनी, छलनी।

ग़र्बी (غربی) अ. वि.–पश्चिम दिशा का, पश्चिमी; यूरोप का, मग़्रिबी।

ग़र्बीब (غربیب) अ. वि.–बहुत अधिक काला, काला निसोत।

गर्म (گرم) फा. वि.–तप्त, उष्ण, जो गर्म हो; गर्म तासीरवाला, उष्णवीर्य; तीव्र, तेज़; शीघ्र, जल्द; क्रुद्ध, कुपित।

ग़र्म (غرم) अ. पुं.–रात का अँधेरा होना।

गर्मइनाँ (گرم عناں) फा. अ. वि.–तेज चलनेवाला घोड़ा; तेज़ चलनेवाला सवार।

गर्मक (گرمک) फा. पुं.–उबाले हुए मटर; सफ़ेद ख़रबूज़ा, सर्दे की एक जाति, (वि.) कम गर्म।

गर्मख़ूँ (گرمخوں) फा. वि.–गाढ़ा मित्र, लँगोटिया यार; दयालु, कृपालु, मेह्‌रबान।

गर्मख़ू (گرمخو) फा. वि.–तीव्र प्रकृति, तेज़ मिज़ाज।

गर्मख़ेज़ (گرمخیز) फा. वि.–फुर्तीला और चालाक; ह्‌र समय काम के लिए तत्पर।

गर्म गर्म (گرمگرم) फा. वि.–गर्मागर्म, ताज़ी सिंकी या भुनी हुई चीज़।

गर्मजोशी (گرمجوشی) फा. स्त्री.–गाढ़े प्रेम का प्रदर्शन, संभ्रांति, तपाक।

गर्मजौलां (گرمجولاں) फा. वि.–द्रुतगति, शीघ्रगामी, तेज़ रौ।

गर्मजौलानी (گرمجولانی) फा. स्त्री.–तेज़ रफ़्तारी, तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

गर्मतर (گرمتر) फा. वि.–अधिक गर्म, उष्णतर; जिस ओषधि में गर्मी के साथ तरी हो।

गर्मतरीन (گرمترین) फा. वि.–बहुत अधिक गर्म, उष्णतम, परमोष्ण।

गर्मदिमाग़ (گرمدماغ) फा. अ. वि.–अहंकारी, घमंडी।

गर्मदिमाग़ी (گرمدماغی) फा. अ. स्त्री.–अहंकार, घमंड।

गर्मबाज़ारी (گرمبازاری) फा. स्त्री.–भाव की तेज़ी, ग्राह्‌कों की बहुतात माल की माँग।

गर्ममिज़ाज (گرممزاج) फा. अ. वि.–चिड़चिड़े स्वभाववाला; जिसे जल्दी क्रोध आ जाय; जिसकी प्रकृति गर्म हो।

गर्ममिज़ाजी (گرممزاجی) फा. अ. स्त्री.–चिड़चिड़ापन; जल्दी क्रोध आना; प्रकृति की उष्णता।

गर्मरफ़्तार (گرمرفتار) फा. वि.–तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगामी, गतिशील।

गर्मरफ़्तारी (گرمرفتاری) फा. स्त्री.–तेज़ चलना, चाल की तेज़ी, शीघ्र गति।

गर्मरवी (گرمروی) फा. स्त्री.–दे. 'गर्मरफ़्तारी'।

गर्मरौ (گرم رو) फा. वि.–दे. 'गर्मरफ़्तार'।

गर्मसेर (گرمسیر) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ का जल-वायु गर्म हो।

गर्मा (گرما) फा. पुं.–गर्मी का मौसम, ग्रीष्म ऋतु; गर्मी का समय, उष्ण काल।

गर्मागर्मी (گرماگرمی) फा. स्त्री.–धूमधाम, ज़ोर-शोर; तेज़मतेज़ी, बातचीत में तेज़ी, मौखिक युद्ध, वाग्युद्ध।

गर्माबः (گرمابہ) फा. पुं.–ह्‌म्माम जहाँ पानी गर्म मिले, स्नानागार; गर्म पानी की टंकी या सक़ाबः।

गर्मिए बाज़ार (گرمئی بازار) फा. स्त्री.–बाज़ार में भाव की तेज़ी, ग्राह्‌कों की बहुतायत, माल की माँग।

गर्मी (گرمی) फा. स्त्री.–उष्णिमा, उष्णता, ह्‌रारत; उपदंश, गर्मी रोग; बुख़ार, ज्वर; ज़ोर, तीव्रता; क्रोध, रोष, गुस्सा; गर्व, अभिमान, घमंड।

गर्मीदानः (گرمی دانہ) फा. पु.–अन्हौरी, घर्म-चर्चिका।

गर्मे सुख़न (گرم سخن) फा. वि.–बातें करता हुआ, वार्तालाप करता हुआ।

गर्मोसर्द (گرموسرد) फा. पुं.–ठंडा और गर्म, शीतोष्ण; सांसारिक दुःख सुख; ऊँच नीच, निंशेबोफ़राज़।

गर्मोसर्द चशीदः (گرموسرد چشیدہ) फा. वि.–संसार की ऊँच-नीच देखे हुए, संसार के दुःख-सुख उठाये हुए, अनुभवी, बहुदर्शी।

ग़र्रः (غرہ) अ. पुं.–मुग्ध होना, फ़रेफ़्ता होना; घमंड, गर्व, अकड़, हेकड़ी।

ग़र्रां (غراں) आ. वि.–भयानक शब्द से चीख़ता चिल्लाता हुआ।

गर्रा (گرا) फा. पुं. –पछने लगाने वाला; नापित, नाई; सेवक, दास, नौकर।

ग़र्रा (غرا) अ. स्त्री.–ह्‌र स्वच्छ और उज्ज्वल वस्तु जो स्त्रीलिंग हो।

ग़र्व (غرو) अ. पुं.—नरकट, जिसके क़लम बनते हैं।

ग़र्स (غرث) अ. स्त्री.–भूख, क्षुधा।

ग़र्स (غرس) अ. पु.–पेड़ लगाना, पेड़ रोपना, वृक्षारोपण; लगाया हुआ पेड़।

ग़र्सान (غرثان) अ. वि.–भूखा, क्षुधित।

ग़ल[ल्ल] (غل) अ. पुं.–भीतर जाना; भीतर ले जाना।

ग़लक़ (غلق) अ. पुं.–किवाड़ बंद करने की लकड़ी, अर्गल।

ग़लत (غلط) अ. पुं.–अशुद्ध, जो ठीक न हो; असत्य, झूठ; त्रुटि, भूल; अनुचित, ग़ैरवाजिब; अशुद्धि, ग़लती।

ग़लत (غلط) अ. पुं.–हिसाब की ग़लती।

ग़लत अंदाज़ (غلط انداز) अ. फा. वि.–भ्रम में डालने वाला (वाली); ऐसी दृष्टि जो हो तो किसी और की ओर परंतु समझे कोई अपनी ओर, इस शब्द का प्रयोग दृष्टि के साथ ही होता है; भूलभुलैया।

ग़लतकार (غلطکار) अ. फा. वि.–काम में बहुधा चूक जानेवाला; जान बूझकर काम खराब करनेवाला; अंट-शंट काम करनेवाला।

ग़लतकारी (غلطکاری) अ. फा. स्त्री.–काम में चूकना; जानते हुए काम ख़राब करना; अंट-शंट काम करना।

ग़लतगो (غلطگو) अ. फा. वि.–झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, झूठा।

ग़लतगोई (غلطگوئی) अ. फा. स्त्री.–झूठ बोलना, मिथ्यावाद।

ग़लतनामः (غلطنامہ) अ. फा. पुं.–किसी पुस्तक आदि के अंत में उसकी अशुद्धियों का परिशिष्ट, शुद्धिपत्र।

ग़लतफ़ह्मी (غلطفہمی) अ. स्त्री.–कुछ का कुछ समझना, बोधभ्रम; कुधारणा, बदगुमानी।

ग़लतबयां (غلطبیاں) अ. वि.–दे. 'ग़लतगो'।

ग़लतबयानी (غلط بیانی) अ. स्त्री.–दे. 'ग़लतगोई'।

ग़लतबर्दार (غلطبردار) अ. फा. वि.–वह रबर आदि जिससे काग़ज़ से अशुद्ध अक्षर मिटाया जाता है; वह काग़ज़ जिसपर अशुद्ध अक्षर सुगमता से बदल जाता है।

ग़लतबीं (غلطبیں) अ. फा. वि.–जिसे किसी व्यक्ति के दोष ही दोष दिखाई दें, उसकी अच्छाइयाँ नज़र न आयें।

ग़लतबीनी (غلطبینی) अ. फा. स्त्री.–किसी के गुणों को छोड़कर केवल उसकी बुराइयाँ ही देखने का भाव।

ग़लतुलअवाम (غلطالعوام) अ. पुं.–वह ग़लती जो कुपढ़ और जाहिल लोग करें।

ग़लतुल्आम (غلطالعام) अ. पुं.–वह ग़लती जो विद्वज्जन करें और वह शुद्ध मान ली जाय।

ग़लफ़ (غلف) अ. पुं.–वैभव की बहुतायत; देश में अन्न की बहुतात; ख़त्ना न करना।

ग़लबः (غلبہ) अ. पुं.–प्रभुत्व, सत्ता, इक़्तिदार; प्राचुर्य, बहुतायत; मत-बाहुल्य, कस्रते राय; विजय-प्राप्ति, तसल्लुत, सामूहिक झगड़ा या मार-काट।

ग़लब (غلب) अ. पुं.–जीतना, ग़ालिब होना; अवज्ञाकारी होना, नाफ़र्मानी करना।

ग़लबात (غلبات) अ. पुं.–'ग़लबः' का बहु., 'ग़लबे'।

ग़लयान (غلیان) अ. पु.–उबाल, जोश।

ग़लल (غلل) अ. स्त्री.–पिपासा, प्यास; जलन, सोज़िश; मनस्ताप, ख़लिश।

ग़लस (غلس) अ. स्त्री.–रात्रि के अंत का अँधियारा।

ग़ला (غلا) अ. पुं.–अन्न आदि का भाव तेज़ हो जाना; दुर्भिक्ष, क़ह्त।

ग़लिक़ (غلق) अ. पुं.–वह बात जो कठिनता से समझ में आये, गूढ़, निगूढ़।

ग़लिब (غلب) अ. वि.–विजित, ग़ालिब; अवज्ञाकारी, सरकश।

ग़लिम (غلم) अ. वि.–तीव्रकाम, तेज़ शह्वत।

ग़लीज़ (غلیظ) अ. वि.–गाढ़ा, निविड़; विष्ठा, मल; प्रगाढ़, सघन।

ग़लीज़ (غلیز) अ. वि.–प्रगाढ़, गाढ़ा।

ग़लीज़ुल क़िवाम (غلیظالقوام) अ. वि.–जिसकी चाशनी गाढ़ी हो गयी हो; जो धातु आदि दूषित होकर गाढ़ी हो गयी हो।

ग़लील (غلیل) अ. वि.–पिपासित, प्यासा, (पुं.) द्वेष, कीनः; मनस्ताप, दिली रंज; प्यास की तीव्रता।

ग़लीस (غلیث) अ. पुं.–जौ और गेहूँ मिला हुआ, गुजई; हर वह वस्तु जिसमें दूसरी वस्तु मिली हो।

ग़लूल (غلول) अ. पु.–वह भोजन जो बूढ़ों और रोगियों को सुगमता से पच जाय।

ग़ल्क़ (غلق) अ. पुं.–दरवाजा बंद करना; भूमि में गहरे तक घुसना; घृणा, कराहियत; बंधन, बाँधना।

ग़ल्ग़लः (غلغلہ) अ. पुं.–तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

ग़ल्ज़ (غلظ) अ. पुं.–वह नीची भूमि जो ऊबड़-खाबड़ और असमतल हो।

ग़ल्ज़त (غلظت) अ. स्त्री.–दे. 'ग़िल्ज़त', दो: शु. हैं।

ग़ल्तक (غلطک) फा. पुं.–करवट लेना, पहलू बदलना; गाड़ी का पहिया, चक्र।

ग़ल्ताँ (غلطاں) फा. वि.–लुढ़कता हुआ, लोटता हुआ, लुंठायमान।

ग़ल्तां व पेचाँ (غلطاں و پیچاں) फा. वि.–लुढ़कता और बल खाता हुआ; असमंजस और दुबिधा में पड़ा हुआ।

ग़ल्फ़ (غلف) अ. पुं.–तलवार आदि को म्यान में करना; सर अथवा डाढ़ी के बालों में सुगंध लगाना।

ग़ल्फ़क़ (غلفق) अ. पुं.–काई, जो पानी पर होती है; नर्म धनुष; एक पानी की घास।

ग़ल्बः (غلبہ) अ. पुं.–दे. 'ग़लबः', शुद्ध वही है, परंतु उर्दूवाले यह भी बोलते हैं।

ग़ल्ब (غلب) आ. पुं.–विद्रोही होना, बाग़ी होना; अवज्ञाकारी और उद्दंड होना।

ग़ल्बा (غلبا) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ बहुत घने पेड़ हों, झुंड की लड़ाई, दो ग़ोलों में आपसी मारकाट।

ग़ल्मः (غلمہ) अ. पुं.–काम-वासना की तेज़ी, शह्वत का जोश।

ग़ल्म (غلم) अ. पु.–कामातुर होना, शह्वत से बेचैन होना; तेज़ चलना।

ग़ल्यान (غلیان) अ. पुं.–दे. 'ग़लयान' शुद्ध वही है, पर उर्दूवाले 'ल' को हल् भी कर देते हैं।

ग़ल्लः (غلہ) अ. पुं.–अन्न, अनाज, धान्य, दाना।

गल्लः (گلہ) फा. पुं.–भेड़ों, बकरियों या गायों, भैंसों का झुंड, रेवड़।

ग़ल्लःफ़रोश (غلہ‌فروش) अ. फा. वि.–अन्न बेचनेवाला, अन्न-विक्रेता।

गल्लःबान (گلہ‌بان) फा. वि.–रेवड़ की रखवाली करनेवाला, चरवाहा, गड़रिया।

गल्लःबानी (گلہ‌بانی) फा. स्त्री.–रेवड़ की रखवली का काम या पेशा, चरवाहापन।

ग़ल्लाब (غلاب) अ. वि.–वह व्यक्ति जो हर जगह विजय प्राप्त करता हो।

गव (گو) फा. पुं.–गर्त, गढ़ा; नीची भूमि; योद्धा, जवाँमर्द; मल्ल, पहलवान; पूज्य, बुज़ुर्ग।

ग़वक़ (غوق) अ. पुं.–गहरी और गंदी भूमि।

गवक (گوک) फा. पुं.–गर्त, गढ़ा; छोटा गढ़ा।

गवज़ (گوز) फा. पुं.–'गवज़्न' का लघु., दे. 'गवज़्न'।

गवज़्न (گوزن) फा. पुं.–बारहसिंघा, विकटशृंग।

गवाँ (گواں) फा. पुं.–बहुत से पहलवान; बहुत से योद्धा; श्रेष्ठ लोग, 'गव' का बहुवचन।

ग़वाइल (غوائل) अ. पुं.–'ग़ाइलः' का बहु., आपत्तियाँ; अनिष्ट-समूह; दैवी आपत्तियाँ।

ग़वादी (غوادی) अ. पुं.–'ग़ादिव' का बहु., प्रातःकाल के बादल।

ग़वानी (غوانی) अ. स्त्री.–'ग़नियः' का बहु., वे स्त्रियाँ जिन्हें अपने सौन्दर्य और तरुणाई के कारण आभूषण आदि की आवश्यकता न हो।

ग़वाम[म्म] (غوام) अ. पुं.–सर के बाल।

ग़वामिज़ (غوامض) अ. पुं.–'ग़ामिज़ः' का बहु., बात की गहराइयाँ, गूढ़ताएँ, नुक़्ते।

ग़वायत (غوایت) अ. स्त्री.–कुमार्गता, गुमराही।

गवार (گوار) फा. प्रत्य.–अच्छा लगनेवाला, जैसे—'ख़ुशगवार', शु. उ. 'गुवार' है, परंतु उर्दू में 'गवार' ही बोलते हैं।

गवारा (گوارا) फा. वि.–रुचिकर, पसंदीदः; सह्य, क़ाबिले बरदाश्त, शुद्ध उच्चारण 'गुवारा' है, परंतु उर्दू में 'गवारा' ही बोलते हैं।

ग़वाशी (غواشی) अ. पुं.–'ग़ाशियः' का बहु., पर्दे, आड़ें, वस्त्र, लिबास; भीतरी रोग; बेसुध करनेवाले।

गवाह (گواہ) फा. पुं.–गवाही देनेवाला, साखी, साक्षी, शुद्ध उच्चारण 'गुवाह' है, परंतु उर्दू में 'गवाह' बोलते हैं।

गवाही (گواہی) फा. स्त्री.–साक्ष्य, शहादत, गवाही देने का काम।

गवाहे ऐनी (گواہِ عینی) फा. अ. पुं.–वह गवाह जिसके सामने कोई घटना घटी हो, प्रत्यक्ष साक्षी, चाक्षुष साक्षी।

गवाहे हाशियः (گواہ حاشیہ) फा. अ. पुं.–वह गवाह जिसके हस्ताक्षर किसी दस्तावेज के हाशिये पर हों।

ग़वी (غوی) अ. वि.–गुमराह, राह से भटका हुआ, भ्रष्टपथ, मार्गभ्रष्ट।

ग़व्वास (غواص) अ. वि.–ग़ोतःख़ोर, मज्जनार, ग़ोता लगाकर समुद्र से मुक्ता आदि निकालनेवाला।

ग़व्वासी (غواصی) अ. स्त्री.–ग़ोताख़ोरी, गोता मारने का का काम, समुद्र में पैठ कर मोती निकालने का काम।

गश (گش) फा. वि.–सुंदर, हसीन; नाज़ से इठलाकर चलनेवाला (वाली) (वि.), मूर्च्छित, बेहोश।

ग़श [श्श] (غش) अ. पुं.–ख़ियानत करना, शोषण; शुभचिंतक न होना; जो मन में हो उसके ख़िलाफ़ कहना; अच्छी चीज़ में घटिया चीज़ मिलाना; मूर्च्छित होना।

गशन (گشن) फा. वि.–गुंजान, घना (पुं.) समूह, भीड़, जमाव; (स्त्री.) अधिकता, बहुतायत।

ग़शयान (غشیان) अ. पुं.–मूर्च्छित होना, बेहोश होना।

गशश (غشش) अ. स्त्री.–अँधेरापन, अँधियारा।

ग़शावः (غشاوہ) अ. पुं.–दे. 'ग़िशावः' दोनों शुद्ध हैं, परंतु वह अधिक बोला जाता है।

ग़शाश (غشاش) अ. पुं.–शीघ्रता, जल्दी।

ग़शी (غشی) अ. स्त्री.–बेहोशी, मूर्च्छा, ग़श।

गश्त (گشت) फा. पुं.–चक्कर, गर्दिश; पर्यटन, दौरा; थानेवालों की रात में घूम फिर कर देखभाल।

गश्ती (گشتی) फा. स्त्री.–वह आदेश जो किसी विभाग के सारे कर्मचारियों के लिए हो, सर्कुलर, परिपत्र।

ग़श्न (غشن) अ. पुं.–लकड़ी या तलवार आदि से मारना।

गश्न (گشن) फा. पुं.–दे. 'गशन'।

ग़सक़ (غسق) अ. स्त्री.–रात्रि का प्रारंभिक अँधेरा, शुरू रात की अँधियारी; मोटा और निकृष्ट अन्न; जैसे—काकुन, सावाँ आदि।

ग़सक (غسک) फा. पुं.–खटमल, मत्कुण।

ग़सफ़ (غسف) अ. स्त्री.–रात का अँधेरा।

ग़सयान (غثیان) अ. पुं. -जी मतलाना, मतली।

ग़सर (غسر) अ. पुं.–जो तिनका आदि हवा से उड़कर आँख में गिरे।

ग़सस (غصص) अ. पुं.–निवाले का गले में अटक जाना।

ग़साक़ (غساق) अ. पुं.–गंदी और बदबूदार चीज़, जैसे—पीप आदि।

ग़सिर (غسر) अ. वि.–गुप्त और शंकित काम।

ग़सील (غسیل) अ. वि.–धुला हुआ, माँझा हुआ, शुद्ध।

ग़सीस (غسیس) अ. पुं.–वे खजूर या छुहारे जो गल-सड़कर खाने के योग्य न रहे हों।

ग़सूल (غسول) अ. पुं.–वह पानी जिससे कुछ धोया जाय; हाथ या सर धोने की वस्तु; जैसे—साबुन या खली।

ग़स्क़ (غسق) अ. पुं.–आँख की ज्योति का चला जाना; आँख से आँसू बहना; रात का बहुत अधिक अँधियारा होना।

ग़स्ब (غصب) अ. पुं.–ज़बरदस्ती किसी के माल पर क़ब्ज़ा कर लेना, बलाद्धरण; निर्दयता से किसी के बाल उखेड़ना।

ग़स्र (غسر) अ. पुं.–ऋणी पर अपना ऋण वुसूल करने के लिए अत्याचार करना।

ग़स्ल (غسل) अ. पुं.–धोना।

ग़स्साक (غساق) अ. पुं.–दे. 'ग़साक़।

ग़स्साल (غسال) अ. वि.–नहलानेवाला, स्नापक; मुर्दे का नहलानेवाला, मृतस्नापक।

ग़स्सूल (غسول) अ. पुं.–दे. 'ग़सूल'।

गह (گہ) फा. अव्य.–'गाह' का लघु., दे. 'गाह'।

गहगीर (گہگیر) फा. पुं.–वह घोड़ा जो अपनी पीठ पर सवार न होने दे।

ग़हब (غہب) अ. स्त्री.–असावधानी, ग़फ़्लत; अज्ञान, अनजानपन; विस्मृति, भूल; इरादे का न होना।

गहे (گہے) फा. अव्य.–'गाहे' का लघु., कभी, किसी समय।

गह्वारः (گہوارہ) फा. पुं.–बच्चों के झूलने और सोने का खटोला, पालना, हिंडोला, आंदोलक।

गह्वारः जुंबाँ (گہوارہ جنباں) फा. वि.–पालना झुलानेवाला (वाली)।

गह्वारःजुंबानी (گہوارہ جنبانی) फा. स्त्री.–पालना झुलाने का काम।

गा

गाँ (گاں) फा. अव्य.–'गान' का लघु., दे. 'गान'।

ग़ाइत (غائط) अ. पुं.–नीची और लम्बी-चौड़ी भूमि; विष्ठा, मल, पाखाना।

ग़ाइब (غائب) अ. वि.–जो नज़र के सामने न हो, लुप्त, तिरोहित (गायब)।

ग़ाइबबाज़ (غائب باز) अ. फ़ा. वि.–शतरंज का वह खिलाड़ी जो सामने बिसात न रखकर शतरंज खेलता हो, बहुत बड़ा शातिर।

ग़ाइबानः (غائبانہ) अ. फा. वि.–पीठ-पीछे, परोक्षतः, अनुपस्थिति में।

ग़ाइर (غائر) अ. वि.–गहरा पैठनेवाला, गहराई में दूर तक जानेवाला; नीची भूमि।

ग़ाइलः (غائلہ) अ. स्त्री.–अनिष्ट, बदी; हानि, गज़ंद; आपत्ति, मुसीबत; अचानक दबोच लेनेवाली।

ग़ाइस (غائص) अ. वि.–पानी में पैठनेवाला; डुबकी मारनेवाला।

ग़ाई (غائی) अ. वि.–अन्तिम, आख़िरी; आधारभूत, मौलिक, बुनियादी।

गाईदः (گائیدہ) फा. वि.–जिसके साथ मैथुन किया हो, संभोग्या।

ग़ाक़ (غاق) अ. पुं.–जलकौआ, पनडुब्बी; कौआ, काक।

ग़ागः (غاغہ) फा. पुं.–पोदीना।

ग़ाग़ः (غاغہ) अ. पुं.–तितर-बितर टोलियाँ; मिले-जुले लोग; जनसमूह, भीड़।

ग़ाज़ः (غازہ) फा. पुं.–मुँह पर मलने का पाउडर, मुख-चूर्ण।

गाज़ः (گازہ) फा. पुं.–झूला, जिस पर झूलते हैं; शिकारी के छिपने का स्थान; फ़ालेज़ की झोंपड़ी; पहाड़ की चोटी पर का मकान।

गाज़ (گاز) फा. पुं.–घास, हरी घास; कैंची, कतरनी; चिराग़ का गुल काटने की कैंची, गुलगीर।

गाज़ (گاژ) फा. पुं.–स्थान, जगह।

ग़ाज़ [ज़्ज़] (غاذ) अ. पुं.–आँख की एक रग, जिसमें से मैल निकलने लगे तो बंद नहीं होता।

ग़ाज़एरुख़ (غازۂ رخ) फा. पुं.–मुख-चूर्ण, मुँह पर मलने का सुगंधित और लाल पाउडर।

ग़ाज़िफ़ (غاضف) अ. वि.–जिसकी दशा अच्छी हो, ख़ुशहाल; जिसका हृदय कोमल हो, नाज़ुकदिल।

ग़ाज़ियः (غاذیہ) अ. स्त्री.–हज़्म करने की क़ुव्वत, पाचन-शक्ति, वह शक्ति जो आमाशय में अन्न पचाती है।

ग़ाज़िर (غاضر) अ. पुं.–बहुत अच्छा कमाया हुआ और चित्रित किया हुआ चमड़ा; बहुत तड़के अपने काम को निकल जानेवाला।

ग़ाज़ी (غازی) अ. वि.–मज़्हबी लड़ाई लड़नेवाला, धर्मयोद्धा, धर्मवीर।

ग़ाज़ी (غازی) फा. वि.–नट, रस्सी पर कलाबाज़ी खानेवाला।

गाज़ी (گازی) फा. पुं.–केवड़ा, एक प्रसिद्ध फूल।

गाज़ुर (گازر) फा. पुं.–कपड़ा धोनेवाला, धोबी, रजक।

ग़ातफ़र (غاتفر) फा. पुं.–दे. 'ग़ान्फ़र'।

ग़ादिफ़ (غادف) अ. पुं.–नाव चलानेवाला, नाविक, कर्णधार, मल्लाह, माँझी।

ग़ादियः (غادیہ) अ. पुं.–प्रातःकाल का बादल; प्रातःकाल, सवेरा।

ग़ादिर (غادر) अ. वि.–कृतघ्न, नाशुक्रा; वचन-भंजक, वा'दः ख़िलाफ़; अभक्त, बेवफ़ा।

ग़ादी (غادی) अ. पुं.–सवेरे का बादल; सवेरे की वर्षा; सवेरा, प्रातः।

ग़ादूफ़ (غادوف) अ. पुं.–वे दो लकड़ियाँ जो नाव के दोनों ओर बँधी होती हैं, और जिन्हें हिलाने से नाव चलती है।

गानः (گانہ) फा. प्रत्य.–किसी संख्या के अन्त में आकर 'वाला' का अर्थ देता है, जैसे—'चहार गानः' अर्थात् चार वाला; अपना, जैसे—यगानः (यक+गानः) अपना अर्थात् स्वजन; बेगानः जो अपना न हो, अस्वजन।

गान (گان) फा. प्रत्य.–कर्ता अथवा कर्मवाचक फारसी शब्द जिनके अन्त में विसर्ग हों। उनके अन्त में आकर बहुवचन बनाता है, जैसे—कुश्तः से 'कुश्तगान'; कुशिंदः से 'कुशिंदगान'।

ग़ानिज़ (غانز) अ. पुं.–कंठ, गला; कंठ में वह स्थान जहाँ से स्वर निकलता है।

ग़ानियः (غانیہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो अपनी सुन्दरता और यौवन के कारण आभूषण आदि से बेनियाज़ हो; वह सुन्दर सदाचारिणी और जवान स्त्री जिसे पुरुष की इच्छा न हो।

ग़ानी (غانی) अ. वि.–जिसे कोई इच्छा न हो; समृद्ध, दौलतमंद।

ग़ान्फ़र (غانفر) फा. पुं.–तुर्किस्तान का एक नगर।

ग़ाफ़िर (غافر) अ. वि.–छिपानेवाला, गोपनकर्ता; पापनाशक, गुनाह बख़्शनेवाला।

ग़ाफ़िल (غافل) अ. वि.–संज्ञाहीन, बेहोश; असावधान; बेख़बर; आलसी, काहिल।

ग़ाफ़िस (غافث) अ. स्त्री.–एक वनौषधि।

ग़ाबः (غابہ) अ. पुं.–सिंह के रहने की कछार; वन, जंगल।

ग़ाब (غاب) अ. पुं.–'ग़ाबः' का बहु., सिंह की ठाहरें; वनसमूह, जंगलात।

ग़ाबात (غابات) अ. पुं.–'ग़ाबः' का बहु., दे. 'ग़ाब'।

ग़ाबित (غابط) अ. वि.–किसी की अवनति चाहे बिना स्वयं वैसा बनने की इच्छा करनेवाला।

ग़ाबिन (غابن) अ. वि.–काम करने में आलसी।

ग़ाबिर (غابر) अ. वि.–आनेवाला; जानेवाला; बाक़ी बचा हुआ, शेष; बरसनेवाला।

गाम (گام) फा. पुं.–डग, क़दम, पग, (प्रत्य.) चलनेवाला; जैसे—'तेज़गाम' तेज़ चलनेवाला,—"दो गाम न चल पाये ज़ंजीर नज़र आयी।"

गामज़न (گامزن) फा. वि.–चलनेवाला, गमनकर्ता; चलता हुआ।

गामज़नी (گامزنی) फा. स्त्री.–चलना, जाना, गमन करना।

गामफ़र्सा (گامفرسا) फा. वि.–दे. 'गामज़न'।

गामफ़र्साई (گامفرسائی) फा. स्त्री.–दे. 'गामज़नी'।

ग़ामिज़ (غامض) अ. वि.–वह बात जो समझ से बाहर हो; नीची भूमि; गर्त, गढ़ा; अज्ञात, गुमनाम; अपमानित, ज़लील।

ग़ामिद (غامد) अ. पुं.–भरी हुई नाव; वह कुआँ जिसका पानी उबलता हो।

ग़ामिर (غامر) अ. स्त्री.–वह भूमि जो पानी में डूबी रहती हो; बंजर ज़मीन, (वि.) वह व्यक्ति जो अपने को आपत्ति में डाले।

ग़ामी (غامی) अ. वि.–निर्बल, बलहीन, कमज़ोर; असमर्थ, नातवान।

गायंदः (گایندہ) फा. वि.–मैथुन करनेवाला।

ग़ायत (غایت) अ. स्त्री.–उद्देश्य, मक़्सद; छोर, किनारा; कारण, सबब; पराकाष्ठा, इंतिहा; पताका, झंडा।

ग़ायत माफ़िलबाब (غایت مافی الباب) अ. स्त्री.–किसी विषय का अंतिम निर्णय, आख़िरी बात; सारांश, ख़ुलासा।

ग़ायतुलअम्र (غایتہ الامر) अ. स्त्री.–अंततः, आख़िरकार, आपाततः, अगत्या।

ग़ार (غار) अ. पुं.–गहरा गढ़ा, खड; गर्त, गढ़ा; पहाड़ की कंदरा, गुफा; जंतुओं के रहने का भीटा।

गार (گار) अ. प्रत्य.–करनेवाला; जैसे—'ख़िदमतगार', सेवा करनेवाला।

ग़ारत (غارت) अ. स्त्री.–नष्ट करना, बर्बाद करना; लुंठन, लूटना, (वि.) नष्ट, बरबाद; विध्वस्त, तबाह; लुंठित, लुटा-पिटा।

ग़ारतगर (غارتگر) अ. फा. वि.–लूटनेवाला, लुटेरा, डाकू, लुंठक; बरबाद करनेवाला, विनाशक।

ग़ारतगरी (غارتگری) अ. फा. स्त्री.–लूटमार, लुटेरापन; विनाश, तबाही।

ग़ारतगाह (غارتگاہ) अ. फा. स्त्री.–लूटमार करने का स्थान; वह स्थान जहाँ लोग लुट जाते हों; वह स्थान जहाँ लुटने का भय हो।

ग़ारतीदः (غارتیدہ) फा. वि.–लूटमार किया हुआ, नष्ट किया हुआ, ग़ारत किया हुआ।

ग़ारिक़ (غارق) अ. वि.–डूबनेवाला, डूबा हुआ, निमज्जित।

ग़ारिज़ (غارز) अ. स्त्री.–थोड़ा दूध देनेवाली ऊँटनी।

ग़ारिब (غارب) अ. वि.–ऊँट की गर्दन और कोहान के बीच का भाग; ऊँट के दोनों कंधों के बीच का स्थान।

ग़ारिम (غارم) अ. वि.–वह ऋणी जो अपना ऋण अदा न कर सके।

ग़ारिस (غارس) अ. वि.–वृक्ष लगानेवाला, पेड़ रोपनेवाला, वृक्षारोपक।

ग़ारीक़ून (غاریقون) अ. पुं.–एक ओषधि।

गाल (گال) फा. पुं.–एक अन्न, काकुन; बाजरा; छल, फ़रेब; दूर, परे; शृगाल, सियार।

ग़ाल [ल्ल] (غال) अ. पुं.–वह नीची ज़मीन जिसमें पेड़ बहुत हों; पेड़ उगने का स्थान।

ग़ालिब (غالب) अ. वि.–शक्तिशाली, ज़बरदस्त; विजेता, फ़ातेह; उर्दू के एक श्रेष्ठ कवि का उपनाम।

ग़ालिबन् (غالباً) अ. वि.–संभवतः, कदाचित्, शायद; निश्चित, यक़ीनन।

ग़ालिबानः (غالبانہ) अ. फा. वि.–ज़बरदस्तों-जैसा।

ग़ालियः (غالیہ) फा. पुं.–कई सुगंधित पदार्थों को मिलाकर बनाया हुआ एक सुगंधित द्रव्य।

ग़ालियःमू (غالیہ مو) फा. वि.–सुगंध लगे हुए बाल, सुगंधित बाल।

ग़ाली (غالی) अ. वि.–अपनी सीमा से आगे बढ़ जानेवाला, अति करनेवाला; भारी, वज़नी; बहुमूल्य, बेशक़ीमत।

ग़ालीचः (غالیچہ) तु. पुं.–छोटा क़ालीन।

ग़ालीदः (غالیدہ) फा. वि.–लुढ़का हुआ; लुढ़काया हुआ।

गालीदः (گالیدہ) फा. वि.–जो अलग हो गया हो, निवृत्त।

ग़ालीन (غالین) तु. पुं.–दे. 'क़ालीन'।

गाव (گاو) फा. पुं.–बैल, वृषभ; गाय, गो, धेनु; शराब का पियाला जो गाय की शक्ल का हो।

गावअंबर (گاوعنبر) फा. अ. पुं.–गाय-जैसा एक समुद्री पशु, जिसका गोबर 'अंबर' होता है।

गावआहन (گاوآهن) फा. पुं.–हल का फल, फाल।

गावकुशी (گاوکشی) फा. स्त्री.–गाय की हत्या करना, गाय का ज़बह करना, गोवध।

गावकून (گاوکون) फा. वि.–मूर्ख, घामड़, अहमक़।

गावख़रास (گاوخراس) फा. स्त्री.–वह चक्की जो बैल आदि से चले।

गावख़ानः (گاوخانہ) फा. पुं.–मवेशियों का बाड़ा; काँजीहौस, मवेशीख़ाना।

गावख़ुर्द (گاوخورد) फा. वि.–नष्ट, बरबाद; ख़ुर्द बुर्द, ग़बन, अपहृत।

गावचश्म (گاوچشم) फा. वि.–गाय–जैसी आँखोंवाला, (पुं.) एक फूल।

गावज़बाँ (گاوزباں) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध ओषधि, भूतांशुक, गोजिह्वा।

गावज़ोर (گاوزور) फा. वि.–बहुत बड़ा बलवान्; ज़बरदस्ती करनेवाला।

गावज़ोरी (گاوزوری) फा. स्त्री.–ज़बर्दस्ती, अन्याय; शक्ति-संपन्नता, ज़ोरमंदी।

गावतक्यः (گاوتکیہ) फा. पुं.–बड़ा तक्यः, मस्नद, जो पीठ के नीचे रखा जाता है।

गावताज़ी (گاوتازی) फा. स्त्री.–डींग, शेख़ी; मुक़ाबले में बुज़दिली दिखाना।

गावदी (گاودی) फा. वि.–मूर्ख, बुद्धू, बेवक़ूफ़; कुंदज़ेहन, मंदप्रभ, मन्दमति।

गावदीदः (گاودیدہ) फा. वि.–दे. 'गावचश्म'।

गावदुम (گاودم) फा. वि.–गाय की पूँछ-जैसा ऊपर से नीचे को पतला, मख़्रूती, गो-पुच्छ।

गावदोशः (گاودوشہ) फा. पुं.–दूध दूहने का बर्तन, दुधाड़ी।

गावदोश (گاودوش) फा. पुं.–दे. 'गावदोशः'।

गावपुश्त (گاوپشت) फा. वि.–गाय की पीठ की तरह ढालू।

गावपैकर (گاوپیکر) फा. वि.–बैल-जैसे डील-डौलवाला, वृषकाय।

गावमेश (گاومیش) फा. स्त्री.–भैंस, महिषी।

गावरस (گاورس) फा. पुं.–बाजरा, एक प्रसिद्ध अन्न।

गावरीश (گاوریش) फा. वि.–मूर्ख, अज्ञानी, घामड़, बुद्धू।

गावशीर (گاوشیر) फा. पुं.–एक तरल ओषधि, जावशीर।

गावसर (گاوسر) फा. वि.–बैल-जैसे सिरवाला, (पुं.) 'फ़िरीदूँ' के गुर्ज़ का नाम, गावसार।

गावसार (گاوسار) फा. वि.–'फ़िरीदूँ के गुर्ज़ का नाम, गावसर।

गावेज़मी (گاوزمی) फा. पुं.–दे. 'गावे सरा'।

गावेगर्दूं (گاو گردوں) फा. पुं.–वृषराशि, बुर्जे सौर।

गावेपर्वारी (گاوپرواری) फा. पुं.–ख़ूब खिला-पिलाकर और धूप से बचाकर मोटा किया हुआ बैल।

गावेसरा (گاو ثری) फा. अ. पुं.–वह गाय जिसके सींगों पर पृथ्वी सधी बतायी जाती है।

गावेसिफ़ालीं (گاو سفالیں) फा. पुं.–शराब का मटका।

ग़ाशियः (غاشیہ) फा. पुं.–वह कपड़ा जो घोड़े के चारजामे पर पड़ता है; क़ियामत, महाप्रलय; नरक की आग; भीतरी रोग।

ग़ाशियः बरदोश (غاشیۂ بردوش) फा. वि.–दे. 'ग़ाशियः बरदार'।

ग़ाशियः बर्दार (غاشیہ بردار) फा. वि.–सवारी के समय ज़ीनपोश लेकर चलनेवाला, साईस, नौकर; आज्ञाकारी, अनुयायी।

ग़ासिक़ (غاسق) अ. पुं.–चंद्रमा, चाँद; कृत्तिका नक्षत्र, पर्वी; शिश्न, लिंग।

ग़ासिब (غاصب) अ. वि.–ज़बर्दस्ती छीन लेनेवाला, ग़स्ब कर लेनेवाला, अपहारक।

ग़ासिबानः (غاصبانہ) अ. वि.–ग़ासिबों-जैसा, लुटेरों की तरह।

गाह (گاہ) फा. अव्य.–कभी, किसी समय; समय, वक़्त; स्थान, जगह; सिंहासन, तख़्ते शाही; ख़ेमा, रावटी, तम्बू; जुए का दाँव।

गाह गाह (گاہ گاہ) फा. वि.–कभी-कभी, यदा-कदा।

गाह ब गाह (گاہ بگاہ) फा. वि.–दे. 'गाह गाह'।

गाहे (گاہے) फा. वि.–किसी समय, कभी; कभी-कभी।

गाहे गाहे (گاہے گاہے) फा. वि.–कभी-कभी, यदा-कदा, 'सरसरी उनसे मुलाक़ात है गाहे-गाहे। सोहबते ग़ैर में गाहे, सरे राहे गाहे॥"

गाहे ब गाहे (گاہے بگاہے) फा. वि.–दे. 'गाहे गाहे'।

गाहे माहे (گاہے ماہے) फा. वि.–कभी-कभी, महीने में एक बार।

गि

ग़िचक (غچک) फा. स्त्री.–सारंगी, एक बाजा।

ग़िज़ा (غذا) अ. स्त्री.–भोजन, खाद्य, ख़ुराक; अन्न, अनाज।

ग़िज़ा (غزا) अ. पुं.–धर्मयुद्ध, मज़हबी जंग, दे. 'गज़ा', दोनों शुद्ध हैं।

ग़िज़ाई (غذائی) अ. वि.–भोजन सम्बन्धी; अन्न सम्बन्धी।

ग़िज़ाईयत (غذائیت) अ. स्त्री.–किसी खाद्य पदार्थ में शरीर को पुष्टि पहुँचाने और रस बननेवाला अंश, अन्न-तत्त्व।

ग़िज़ाए रूहानी (غزاےروحانی) अ. स्त्री.–आत्मा का भोजन, अर्थात् अच्छी आवाज़, गाना।

ग़िज़ाए लतीफ़ (غزاے لطیف) अ. स्त्री.–शीघ्र पच जानेवाला भोजन, लघुपाक।

ग़िज़ाए सक़ील (غزاے ثقیل) अ. स्त्री.–देर में पचनेवाला भोज्य, गरिष्ठ।

ग़िज़ाज़ (غضاض) अ. पुं.–भीख माँगना, भिक्षाटन।

ग़िज़ाब (غضاب) अ. पुं.–आँख में उड़कर पड़नेवाला तिनका; शरीर पर पड़नेवाले फफोले।

गिज़्लिक (گزلک) फा. पुं.–क़लम बनाने का चाक़ू।

ग़िता (غطا) अ. पुं.–पर्दा; पहनने के कपड़े, वस्त्र।

ग़ित्रीफ़ (غطریف) अ. वि.–कुलीन, शरीफ़; वीर, बहादुर; पूज्य, बुज़ुर्ग।

ग़ित्रीस (غطریس) अ. वि.–अत्याचारी, ज़ालिम; अहंकारी, मग़रूर।

ग़िद्दीर (غدیر) अ. वि.–बहुत अधिक कृतघ्न, नमकहराम।

गिद्यः (گدیہ) फा. स्त्री.–भीख माँगना, भिक्षाटन।

ग़िना (غنیٰ) अ. पुं.–समृद्धि, दौलतमंदी; निःस्पृहता, बेनियाज़ी।

ग़िना (غنا) अ. पुं.–गान, गाना।

ग़िब[ब्ब] (غب) अ. पुं.–इकतरा, एक दिन बीच देकर आनेवाला ज्वर; सीमा, हद, पराकाष्ठा; जो एक दिन आये और एक दिन न आये; सप्ताह में एक दिन किसी से मिलने जाना।

ग़िब्तः (غبطہ) अ. पुं.–किसी के माल की इच्छा उसे हानि पहुँचाये बिना, किसी-जैसा बनने की इच्छा, उसे हानि पहुँचाये बिना।

ग़िमामः (غمامہ) अ. पुं.–पशु के मुँह पर चढ़ाने की थैली।

गिमीज़ (گمیز) फा. पुं.–पेशाब, मूत्र।

ग़िम्द (غمد) फा. पुं.–तलवार अथवा छुरी या चाक़ू का कोष।

ग़ियार (غیار) अ. पुं.–धर्म-चिह्न जो हर समय पास रहे, जैसे—जनेऊ, सलीब या यहूदियों का पीला कपड़ा जो वे लोग कंधे के पास कपड़े में सिला रखते हैं।

ग़ियास (غیاث) अ. पुं.–दुःख और आपत्ति में सहायता करना, (वि.) दुःख और कष्ट के समय सहायता करनेवाला।

ग़िर[र्र] (غر) अ. वि.–निश्चेष्ट व्यक्ति, बेख़बर आदमी; अनुभवहीन व्यक्ति, नातज्रिबःकार आदमी।

गिरह (گرہ) फा. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'गिरिह'।

गिराँ (گراں) फा. वि.–भारी, वज़्नी; बहुमूल्य, क़ीमती; महँगा, तेज़ भाववाला।

गिराँक़द्र (گراں قدر) फा. अ. वि.–बड़े पद और रुतबेवाला; बहुमूल्य, क़ीमती; महत्त्वपूर्ण, अहम।

गिराँक़ीमत (گراں قیمت) फा. अ. वि.–बहुमूल्य, बेशक़ीमत।

गिराँख़ातिर (گراں خاطر) फा. अ. वि.–बददिल, उदास; मनोमलिन, दुःखी।

गिराँख़्वाब (گراں خواب) फा. वि.–गहरी नींद सोनेवाला।

गिराँगोश (گراں گوش) फा. वि.–ऊँचा सुननेवाला, बहरा, बधिर।

गिराँजाँ (گرانجاں) फा. वि.–आलसी, काहिल; जो कड़ी आपत्तियाँ झेलकर भी जीवित रहे।

गिराँजानी (گراں جانی) फा. स्त्री.–आलस्य, काहिली; कड़ी मुसीबतों में फँसकर भी उनसे निकल जाना।

गिराँतर (گراں تر) फा. वि.–बहुत भारी; बहुत महँगा।

गिराँतरीन (گراں ترین) फा. वि.–सबसे अधिक भारी; सबसे अधिक महँगा।

गिराँताब (گراں تاب) फा. वि.–अच्छी तरह तपाया हुआ।

गिराँपायः (گراں پایہ) फा. वि.–दे. 'गिराँक़द्र'।

गिराँफ़रोश (گراں فروش) फा. वि.–महँगा बेचनेवाला।

गिराँफ़रोशी (گراں فروشی) फा. स्त्री.–महँगा बेचना।

गिराँबहा (گراں بہا) फा. वि.–बहुमूल्य, बेशक़ीमत; महत्त्वपूर्ण, अहम।

गिराँबार (گراں بار) फा. वि.–बोझ के नीचे दबा हुआ; ऋण अथवा उपकार के बोझ से दबा हुआ।

गिराँबारी (گراں باری) फा. स्त्री.–बोझ से दबना; ऋण आदि के बोझ से दबना।

गिराँमायः (گراں مایہ) फा. वि.–बहुमूल्य, क़ीमती; महत्त्वपूर्ण, अज़ीम।

गिराँरिकाब (گراں رکاب) फा. अ. वि.–वह घोड़ा जो चलने में सुस्त हो; वह व्यक्ति जो रणक्षेत्र में डटकर लड़े और पाँव पीछे न हटाये; धैर्यवान्, शान्ति स्वभाव, बातम्कीन।

गिराँसंग (گراں سنگ) फा. वि.–भारी भरकम, गंभीर, मलीन; आत्मसंतोषी, क़ाने।

गिराँसर (گراں سر) फा. वि.–अभिमानी, घमंडी; रुष्ट, अप्रसन्न, नाख़ुश।

गिराँसायः (گراں سایہ) फा. वि.–दे. 'गिराँक़द्र'।

ग़िरा (غرا) अ. स्त्री.–सरेश; जिसके चार पाँव न हों।

गिराइंदः (گرایندہ) फा. वि.–चाहनेवाला, इच्छा करनेवाला, इच्छुक।

गिराइश (گرایش) फा. स्त्री.–रुचि, इच्छा, रग़बत; प्रवृत्ति, रुझान।

गिराईदः (گرائیدہ) फा. वि.–चाहा हुआ, इच्छित, वांछित, अभिलषित।

गिराईदनी (گرائیدنی) फा. वि.–चाहने योग्य, वांछनीय।

गिरानी (گرانی) फा. स्त्री.–भारीपन, बोझ; महँगाई, भाव की तेज़ी; हज़्म की ख़राबी।

ग़िराफ़ (غراف) अ. पुं.–'ग़ुर्फ़ः' का बहु., गुर्फ़े, झरोखे; एक बड़ा पैमाना।

गिरामी (گرامی) फा. वि.–पूज्य, बुज़ुर्ग; महान्, अज़ीम; पुनीत, मुक़द्दस; प्रिय, अज़ीज़।

गिरामीक़द्र (گرامی قدر) फा. अ. पुं.–महोदय, महाशय, आलीजनाब; महत्त्वपूर्ण, अहम।

गिरामीनामः (گرامی نامہ) फा. पुं.–कृपापात्र, वालानामा।

गिरामीमनिश (گرامی منش) फा. वि.–पुनीतात्मा, पुण्यात्मा, बुज़ुर्ग निहाद।

ग़िरारः (غرارہ) अ. पुं.–गौन, ख़ुर्जी, गोण।

ग़िरार (غرار) अ. पुं.–आचार-व्यवहार, तौरतरीक़ा; बाजार का मंदा होना; हानि, घाटा, कमी; मूर्खता, नादानी।

ग़िरास (غراس) अ. पुं.–पेड़ लगाने का समय; लगाया हुआ पेड़।

ग़िरास (غراث) अ. पुं.–'ग़रीस' का बहु., भूखे लोग, क्षुधातुर जन।

गिरिफ़्तः (گرفتہ) फा. वि.–लिया हुआ, पकड़ा हुआ, गृहीत; संकुचित; डींग; कटाक्ष, तंज़।

गिरिफ़्तःख़ातिर (گرفتہ خاطر) फा. अ. वि.–दे. 'गिरिफ़्तःदिल'।

गिरिफ़्तःज़न (گرفتہ زن) फा. वि.–डींगिया, दूर की हाँकनेवाला; व्यंग करनेवाला, ताना देनेवाला।

गिरिफ़्तःज़बाँ (گرفتہ زباں) फा. वि.–जिसकी जीभ बात करने में लड़खड़ाती हो; हकला; तोतला।

गिरिफ़्तःदिल (گرفتہ دل) फा. वि.–अप्रसन्न, अफ़्सुर्दः, उदास; दुःखित, रंजीदा।

गिरिफ़्तःलब (گرفتہ لب) फा. वि.–मौन, अवाक्, चुप, ख़ामोश।

गिरिफ़्त (گرفت) फा. स्त्री.–पकड़, ग्रहण; हिसाब में त्रुटि की पकड़; अपराध की पकड़; आपत्ति, ए'तिराज़; अधिकार, क़ब्ज़ा; चंगुल, पंजा; हस्तक, दस्ता।

गिरिफ़्तगी (گرفتگی) फा. स्त्री.–पकड़, गिरिफ़्त; पड़ जाना, बैठ जाना (आवाज़); उदासीनता, उदासी, अफ़्सुर्दगी।

गिरिफ़्तनी (گرفتنی) फा. वि.–पकड़ने के योग्य, ग्राह्य; लेने के योग्य, लभ्य।

गिरिफ़्तार (گرفتار) फा. वि.–ग्रस्त, मुब्तला; बंदी, क़ैद; आसक्त, आशिक़; फँसा हुआ, बँधा हुआ।

गिरिफ़्तारी (گرفتاری) फा. स्त्री.–ग्रस्त होना; बंदी होना; बँधना; फँसना; प्रेम होना।

गिरिह (گرہ) फा. स्त्री.–ग्रंथि, गाँठ; समस्या, मस्अला; उलझन, परेशानी (गिरह)।

गिरिहकुशा (گرہ کشا) फा. वि.–गाँठ खोलनेवाला; समस्या हल करनेवाला; कठिनता का निवारण करनेवाला।

गिरिहकुशाई (گرہکشائی) फा. स्त्री.—गाँठ खोलना; समस्या हल करना; कठिनता का निवारण।

गिरिह बर गिरह (گرہ برگرہ) फा. वि.—गाँठ पर गाँठ, कठिनाई पर कठिनाई, आपत्ति पर आपत्ति।

गिरिहबुर (گرہبر) फा. वि.—गाँठ काटनेवाला, जेबकतरा।

गिरीबाँ (گریباں) फा. पुं.—'गिरीबान' का लघु., दे. 'गिरीबान', कुर्ते व कमीज़ का गला, दामन, सिरा।

गिरीबांगीर (گریباںگیر) फा. वि.—गला पकड़नेवाला, तक़ाज़ा करनेवाला।

गिरीबांचाक (گریباںچاک) फा. वि.—जिसने अपना गिरीबान फाड़ डाला हो; पागल, दीवाना; प्रेमी, आशिक़।

गिरीबांदर (گریباںدر) फा. वि.—गिरीबान फाड़नेवाला; पागल; प्रेमी।

गिरीबांदरीदः (گریباںدریدہ) फा. वि.—दे. 'गिरीबांचाक'।

गिरीबान (گریبان) फा. पुं.—ग्रीवा, गला; कुर्ते कमीज़ आदि का गला।

गिरीबाने कोह (گریبانکوہ) फा. पुं.—पहाड़ का दामन, पहाड़ की तराई।

गिरेबाँ (گریباں) फा. वि.—दे. 'गिरीबाँ', वही अधिक फ़सीह है।

गिरेवः (گریوہ) फा. पुं.—टीला, ढूह; पुश्ता; पहाड़ी, टीकरी।

ग़िरेव (غریو) फा. पुं.—कोलाहल, ग़ुलगपाड़ा, शोरोगुल।

ग़िरेवाँ (غریواں) फा. वि.—शोर मचाता हुआ, चीखता और चिल्लाता हुआ।

गिरोह (گروہ) फा. पुं.—दे. शुद्ध उच्चारण 'गुरोह'।

गिरौ (گرو) फा. पुं.—गिरवी रखना, बंधक करना। (वि.) गिरवी रखी हुई वस्तु।

ग़िर्ग़िर (غرغر) अ. स्त्री.—जंगली मुर्ग़ी, वनकुक्कुटी।

गिर्दः (گردہ) फा. पुं.—गोल टिकिया; अख़रोट, एक प्रसिद्ध फल, अक्षरोट।

गिर्द (گرد) फा. पुं.—घेरा, हल्क़ा; आसपास, चारों ओर; आसपास का स्थान।

गिर्दक (گردک) फा. स्त्री.—रावटी, ख़ेमा; कोठा, कमरा; पहेली, प्रहेलिका।

गिर्दगां (گردگاں) फा. पुं.—अख़रोट, अक्षरोट।

गिर्द ब गिर्द (گردبگرد) फा. वि.—चारों ओर, चहुँपास।

गिर्दबाद (گردباد) फा. पुं.—वातावर्त, चक्रवात, पवनचक्र, बगूला, बवंडर।

गिर्दबालिश (گردبالش) फा. पुं.—गोल छोटा तकिया जो गालों के नीचे रखा जाता है, गलतकिया, चक्रगंडु।

गिर्दबुर (گردبر) फा. पुं.—बढ़इयों का बरमा।

गिर्दागिर्द (گرداگرد) फा. वि.—चारों ओर, हर तरफ़, चहुँपास, चहुँओर।

गिर्दाब (گرداب) फा. पुं.—जलावर्त, कलंकुर, भँवर।

गिर्दावर (گرداور) फा. वि.—हर ओर गश्त लगानेवाला, दौरा करनेवाला।

गिर्दावरी (گرداوری) गश्त लगाने और दौरा करने का काम।

ग़िर्नौक़ (غرنوق) अ. पुं.—दे. 'ग़ुर्नीक़'।

गिर्फ़ः (غرفہ) अ. पुं.—चुल्लू में पानी उठाना।

ग़िर्बान (غربان) अ. पुं.—'ग़ुराब' का बहु., कौए, काक-समूह।

ग़िर्बाल (غربال) अ. स्त्री.—आटा आदि छानने की छलनी, चलनी, चालनी, दे. 'गब्ल' दोनों शुद्ध हैं।

गिर्बीब (غربیب) अ. पुं.—अंगूर की एक बहुत बढ़िया जाति।

गिर्यः (گریہ) फा. पुं.—रुदन, रोना, आँसू बहाना।

गिर्यःआवर (گریہآور) फा. वि.—आँसू लानेवाला, रुलानेवाला।

गिर्यःकुनाँ (گریہکناں) फा. वि.—रोता हुआ, आँसू बहाता हुआ।

गिर्यएग़म (گریۂغم) फा. अ. पुं.—दुःख का रोना, दुःख-विलाप; किसी की मृत्यु पर रोना, शोक-विलाप।

गिर्यएशादी (گریۂشادی) फा. पुं.—ख़ुशी की अधिकता में आँखों से आँसू निकल आना।

गिर्यओज़ारी (گریہوزاری) फा. स्त्री.—रोना-धोना, हाय-हाय करना।

ग़िर्रः (غرہ) अ. स्त्री.—नातज्रिबःकारी, अनाड़ीपन, अननुभव; प्रेम, स्नेह, इश्क़।

गिर्वीदः (گرویدہ) फा. वि.—मुग्ध; मोहित, फ़रेफ़्तः, लट्टू; प्रेमी, आशिक़।

गिर्वीदगी (گرویدگی) फा. स्त्री.—किसी ओर हद से बढ़ी हुई दिलचस्पी, मोह, फ़रेफ़्तगी।

गिर्वीदनी (گرویدنی) फा. वि.—मुग्ध होने योग्य।

ग़िर्स (غرس) अ. पुं.—वह गाढ़ी रुतूबत जो गर्भाशय से बच्चे के साथ निकलती है; वह झिल्ली जिसमें शिशु गर्भाशय में लिपटा रहता है।

गिलः (گلہ) फा. पुं.—उपालंभ, उलाहना, शिक्वा।

गिलःगुज़ार (گلہگزار) फा. वि.—उलाहना देनेवाला, उपालंभक।

गिल (گل) फा. स्त्री.—मिट्टी, मृत्तिका, मृत्।

ग़िल[ल्ल] (غل) अ. पुं.—द्वेष, कीना; ख़ियानत, मोषण; मलिनता, गदलापन।

गिलअंदूदः (گلاندودہ) फा. वि.—मिट्टी से लेपा हुआ, मिट्टी चढ़ाया हुआ।

गिलएरोज़गार (گلۂ روزگار) फा. पुं.–दुर्भाग्य का रोना, कालचक्र की शिकायत।

गिलख़ोरः (گل خورہ) फा. पुं.–भूलता, केंचुआ, ख़रातीन।

ग़िल्ज़ (غلظ) अ. पुं.–गाढ़ापन; दल, मोटाई।

गिलनाक (گل ناک) फा. वि.–गदला, मटमैला।

गिलमालः (گل مالہ) फा. पुं.–राज की करनी जिससे वह प्लास्टर चढ़ाता है।

ग़िलाज़ (غلاظ) अ. पुं.–'ग़लीज़' का बहु., गाढ़े पदार्थ; गंदगियाँ; गू, विष्ठा।

ग़िलाज़त (غلاظت) अ. स्त्री.–गंदगी, मल, मैल; विष्ठा, मल, गू; अपवित्रता, नापाकी; गाढ़ापन, ग़िल्ज़।

ग़िलाज़तख़ानः (غلاظت خانہ) अ. फा. पुं.–कूड़ा-करकट और गू-गोबर फेंकने का स्थान।

ग़िलाज़तख़ोर (غلاظت خور) अ. फा. वि.–विष्ठा खानेवाला, शूकर, सुअर; बुरी कमाई खानेवाला।

ग़िलाफ़ (غلاف) अ. पुं.–तकिए आदि का ख़ोल; सूखे और दानेदार फल का बकला; पलक, दृगंचल; तलवार आदि का कोष।

गिलाबः (گلابہ) फा. पुं.–मिट्टी में भूसा आदि मिलाकर बनाया हुआ दीवारों का लेस, लेसन, कहगिल।

ग़िलालः (غلالہ) अ. पुं.–वह कुर्ता जो कवच के नीचे पहनते हैं।

गिलीं (گلیں) फा. वि.–मिट्टी का बना हुआ, मृन्मय; मिट्टी मिला हुआ।

गिली (گلی) फा. वि.–दे. 'गिलीं'।

गिलेअर्मनी (گل ارمنی) फा. स्त्री.–एक प्रकार का गेरू जो दवा में चलता है।

गिलेचस्पाँ (گل چسپاں) फा. स्त्री.–चिपकनेवाली मिट्टी, जिससे कहगिल बनता है, कचला मिट्टी।

गिलेमख़्तूम (گل مختوم) फा. अ. स्त्री.–एक प्रकार का गेरू जो गिलेअर्मनी से भिन्न है।

ग़िलेवाज़ (غلیواز) फा. स्त्री.–चील पक्षी, चिल्ल।

ग़िलोग़िश (غل وغش) अ. स्त्री.–मैल, मल; चिन्ता, फ़िक्र; बाधा, विघ्न।

ग़िल्मः (غلمہ) अ. पुं.–ग़ुलाम का बहु., लड़के, बालक; दास, नौकर-चाकर।

ग़िल्माँ (غلماں) अ. पुं.–'ग़िल्मान' का बहु., दे. 'ग़िल्मान'।

ग़िल्मान (غلمان) अ. पुं.–स्वर्ग के बालक; यह शब्द 'ग़ुलाम' का बहु. है, परन्तु उर्दू और फ़ारसी में एक वचन में व्यवहृत है।

ग़िल्लीम (غلیم) अ. वि.–तीव्र काम-वासनावाला, तेज़ शहवतवाला, तीव्र बटुक-विलासी।

गिश[श्श] (غش) अ. स्त्री.–ख़ियानत, मोषण; अशुभ चिन्तन, बदख़्वाही; द्वेष, कीना; आत्मा की दुष्टता।

ग़िशा (غشا) अ. स्त्री.–झिल्ली, महीनखाल; पर्दा, पटल; ग़िलाफ़, उपरना; वस्त्र, लिबास।

ग़िशावः (غشاوہ) अ. पुं.–पर्दा, पटल।

ग़िशाश (غشاش) अ. पुं.–अँधेरे का प्रारंभिक और अंतिम समय; शीघ्रता, जल्दी; थोड़ी चीज़।

ग़िश्यान (غشیان) अ. पुं.–मैथुन, रतिक्रीड़ा, जिमाअ।

ग़िसान (غسان) अ. पुं.–बच्चों के पहनने का वस्त्र, विशेषतः जो खाल का बनता है।

ग़िस्ल (غسل) अ. पुं.–वह पानी जिससे कुछ धोया गया हो।

ग़िस्लीन (غسلین) अ. पुं.–वह पानी जिससे घाव धोया जाय; वह मवाद जो नरकवासियों की देह से बहे।

गी

गीं (گیں) फा. प्रत्य. –'गीन' का लघु., दे. 'गीन'।

गी (گی) फा. प्रत्य.–जिस फ़ारसी शब्द के अन्त में विसर्ग हो, उसके साथ लगाने से भाववाचक संज्ञा बनती है; जैसे 'ख़स्तः' से 'ख़स्तगी' 'दरिंदः' से 'दरिंदगी'।

ग़ीज़ (غیض) अ. पुं.–कली, कलिका; गुच्छा, ख़ोशा।

गीद (گید) फा. पुं.–चील, चिल्ल; गृध्र, गीध।

गीदी (گیدی) फा. वि.–भीरु, डरपोक; निर्लज्ज, बेहया।

गीन (گین) फा. प्रत्य. शब्द के अन्त में आकर 'युक्त' का अर्थ देता है, जैसे—'ग़मगीन', शोकयुक्त, यह शब्द आगीन का लघु. है।

गीपा (گیپا) फा. पुं.–एक प्रकार का पुलाव।

ग़ीबत (غیبت) अ. स्त्री.–पिशुनता, चुग़ुली।

गीरः (گیرہ) फा. पुं.–लोहे का शिकंजा।

गीर (گیر) फा. प्रत्य.–पकड़नेवाला; जैसे—'माहीगीर' मछली पकड़नेवाला; काटनेवाला; जैसे—'गुलगीर' चिराग़ का गुल काटनेवाला।

गीरख़ (گیرخ) फा. स्त्री.–पुस्तक रखने की रेहल।

ग़ीरत (غیرت) अ. स्त्री.–रश्क, होड़; ख़ून के बदले में दिया हुआ धन।

गीरमाल (گیرمال) फा. वि.–टूटी हुई हड्डी जोड़नेवाला; उतरी हुई हड्डी चढ़ानेवाला; शरीर की मालिश करनेवाला, अंगमर्दक।

गीराई (گیرائی) फा. स्त्री.–गिरिफ़्त, पकड़।

गीरिंदः (گیرندہ) फा. वि.–पकड़नेवाला।

ग़ील (غیل) अ. पुं.–वन, कानन, जंगल; सिंह की कछार; पानीवाली तराई; पेड़ों का झुंड।

ग़ीलां (غیلاں) अ. पुं.–'ग़ीलान' का लघु., दे. 'ग़ीलान'।

ग़ीलान (غیلان) अ. पुं.–'ग़ूल' का बहु. भूत-प्रेत।

ग़ीलान (گیلان) फा. पुं.–एक नगर, जीलान।

गीली (گیلی) फा. वि.–गीलान का निवासी।

गीहा (گیہا) फा. स्त्री.–घास, गियाह।

गु

गुंग (گنگ) फा. वि.–जो बोल न सकता हो, मूक, गूंगा।

गुंगमहल (گنگ محل) फा. अ. पुं.–वह मकान जिसे अकबर बादशाह ने केवल गूंगों के लिए बनवाया था, इस अनुभव के लिए कि बड़े होकर इनके बाल-बच्चे कौन-सी भाषा बोलते हैं, परन्तु वह अपने माता-पिता की भाँति, गें-गें ही करते रहे।

ग़ुंचः (غنچہ) फा. पुं.–कली, कलिका।

ग़ुंचःदहन (غنچہ دہن) फा. वि.–कली-जैसे सुन्दर और छोटे मुँहवाला (वाली)।

ग़ुंचःदहाँ (غنچہ دہاں) फा. वि.–दे. 'गुंचःदहन'।

ग़ुंचःलब (غنچہ لب) फा. वि.–कली-जैसे कोमल, मृदुल और गुलाबी ओंठोंवाला (वाली)।

ग़ुंचए नाशिगुफ़्तः (غنچۂ ناشگفتہ) फा. पुं.–वह कली जो खिली न हो, मुकुल, अविकसित कलिका।

ग़ुंचगी (غنچگی) फा. स्त्री.–कली होने का भाव, गुंचःपन।

ग़ुंजः (غنجہ) अ. पुं.–गुंचः, कली।

ग़ुंज (غنج) अ. पुं.–हावभाव, नाज़ोअदा।

गुंजश्क (گنجشک) फा. स्त्री.–दे. 'गुंजिश्क' दोनों शुद्ध हैं।

गुंजाइश (گنجائش) फा. स्त्री.–विस्तार, कुशादगी; सामर्थ्य, मक़्दूर; समाई, जगह; प्रेम, उदारता, फ़राख़दिली।

गुंजान (گنجان) फा. वि.–घना, गहन।

गुंजिश्क (گنجشک) फा. स्त्री.–गौरैया, चटक।

गुंदः (گندہ) फा. वि.–दबीज़, गफ़, दलदार।

ग़ुंदः (غندہ) अ. वि.–लम्पट, धूर्त, लोफ़र, गुंडा।

ग़ुंद (غند) फा. वि.–लिपटा हुआ; एकत्र, जमाशुदा; जोड़ा हुआ, उपार्जित।

ग़ुंदर (غندر) फा. वि.–मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट; गफ़, दलदार, दबीज़; मृदुल, नाज़ुक; गिड़गिड़ानेवाला।

ग़ुंदुर (غندر) फा. वि.–दे. 'ग़ुंदर'।

गुंद्बीर (گندبیر) फा. स्त्री.–बूढ़ी स्त्री, वृद्धा।

गुंबद (گنبد) फा. पुं.–इमारतों के ऊपर का गोल मंडप जो बड़ा हो, गुंबज।

गुंबदे आब (گنبدِ آب) फा. पुं.–पानी का बुलबुला।

गुंबदे गर्दूं (گنبد گردوں) फा. पुं.–आकाश का गुंबद, आकाश-वर्तुल।

गंबदे गुल (گنبد گل) फा. पुं.–कलिका, कली।

गुंबदे चारबंद (گنبدِ چاربند) फा. पुं.–संसार, दुनिया; आकाश, आस्मान।

गुक (گوک) तु. पुं.–आकाश, गगन, आस्मान।

गुज़र (گزر) फा. स्त्री.–निर्वाह, गुज़र-बसर; जीविका, रोगी, (पुं.) प्रवेश, पहुँच, रसाई; आगमन, आमद।

गुज़रगाह (گزرگاہ) फा. स्त्री.–निकलने-पैठने का स्थान; मार्ग, रास्ता, पथ।

गुज़रनामः (گزرنامہ) फा. पुं.–राहदारी का पर्वाना, खन्ना; पासपोर्ट, पारपत्र।

गुज़रान (گزران) फा. स्त्री.–दे. 'ग़ुज़र'।

गुज़रिंदः (گزرندہ) फा. वि.–गुज़रनेवाला।

गुज़श्तः (گزشتہ) फा. वि.–गुज़रा हुआ, बीता हुआ, व्यतीत; भूतकाल, माज़ी।

गुज़श्तगां (گزشتگاں) फा. पुं.–'गुज़श्तः' का बहु., गुज़रे हुए लोग, पूर्वज।

गुज़श्तनी (گزشتنی) फा. वि.–गुज़रने योग्य; जहाँ से गुज़र जाना उचित हो।

गुज़ाफ़ः (گزافہ) फा. पुं.–जिसका कूता किया गया हो, तोला नापा न गया हो; असीम, अपार, बेहद।

गुज़ाफ़ (گزاف) फा. स्त्री.–बकवास, मिथ्यावाद; डींग, शेखी।

ग़ुज़ाब (غضاب) अ. पुं.–वह तिनका आदि जो आँख में पड़ जाय; शरीर पर पड़नेवाले आबले।

गुज़ारः (گزارہ) फा. पुं.–निर्वाह, गुज़र-बसर; नदी पार करना।

गुज़ार (گزار) फा. पुं.–दे. 'गुज़र', निबाहना, बसर करना, "गुज़ार दूं तेरे ग़म में जो उम्रे-ख़िज़्र मिले।" (प्रत्य.) करनेवाला, जैसे—'ख़िदमतगुज़ार' ख़िदमत करनेवाला।

गुज़ारिंदः (گزارندہ) फा. वि.–गुज़ारनेवाला, अदा करनेवाला।

गुज़ारिश (گزارش) फा. स्त्री.–प्रार्थना, निवेदन, आवेदन, अर्ज़।

गुज़ारिशनामः (گزارش نامہ) फा. पुं.–प्रार्थनापत्र, आवेदन-पत्र, दरख़्वास्त।

गुज़ारिशपिज़ीर (گزارش پذیر) फा. वि.–प्रार्थना स्वीकार करनेवाला, बात सुनकर उसे माननेवाला।

गुज़ारिशात (گزارشات) फा. स्त्री.–'गुज़ारिश' का बहु., प्रार्थनाएँ, गुज़ारिशें, बातें।

गुज़ाश्तः (گزاشتہ) फा. वि.–छोड़ा हुआ, त्यक्त ।

गुज़ाश्त (گزاشت) फा. स्त्री.–छूट, त्याग ।

गुज़ाश्तनी (گزاشتنی) फा. वि.–छोड़ने योग्य, त्याज्य ।

गुज़ीं (گزیں) फा. प्रत्य.–चुननेवाला, पसंद करनेवाला, जैसे—'ख़ल्वत गुज़ीं' एकांतवास पसंद करनेवाला ।

गुज़ीदः (گزیدہ) फा. वि.–चुना हुआ, छाँटा हुआ ।

गुज़ीदनी (گزیدنی) फा. वि.–चुनने योग्य, छाँटने योग्य ।

गुज़ीरः (گزیرہ) फा. पुं.–उपचार, चिकित्सा, इलाज; उपाय, प्रयत्न, तद्बीर ।

गुज़ीर (گزیر) अ. पुं.–चिकित्सा, इलाज; प्रयत्न, उपाय, चारा ।

गुज़ीरी (گزیری) फा. स्त्री.–चिकित्सा, उपचार, इलाज ।

ग़ुज़ूज़ः (غضوضہ) अ. पुं.–नवीनता, नयापन; प्रफुल्लता, शिगुफ़्तगी; नया होना ।

ग़ुज़्रूफ़ (غضروف) अ. स्त्री.–चपनी हड्डी; पस्लियों के सिरे; कंधे की हड्डी का सिरा; हर चबाई जानेवाली हड्डी, कुर्री ।

ग़ुतात (غطاط) अ. पुं.–प्रातःकाल, सबेरा; प्रातःकाल की सफ़ेदी; रात का अँधेरा ।

ग़ुदद (غدد) अ. पुं.–'ग़ुद्दः' का बहु., शरीर के ग़ुदूद, ग्रंथियाँ, गिल्टियाँ ।

गुदाख़्तः (گداختہ) फा. वि.–पिघला हुआ, द्रवीभूत, द्रवित ।

गुदाख़्त (گداخت) फा. स्त्री.–दे. 'गुदाख़्तगी' ।

गुदाख़्तगी (گداختگی) फा. स्त्री.–पिघलाव; गुदाख़्त ।

गुदाख़्तनी (گداختنی) फा. वि.–पिघलने योग्य; पिघलाने योग्य ।

गुदाज़ (گداز) फा. पुं.–शरीर का मांसल होना, शरीर में ख़ूब गोश्त होना (प्रत्य॰) पिघलानेवाला, जैसे—'आहन गुदाज़' लोहे को पिघलानेवाला; 'सोज़-गुदाज़्' जलाकर पिघलानेवाला ।

गुदाज़ां (گدازاں) फा. वि.–पिघलता हुआ; पिघलाता हुआ ।

गुदाज़िंदः (گدازندہ) फा. वि.–पिघलनेवाला; पिघलाने वाला ।

ग़ुदाफ़ (غداف) अ. पुं.–काले और लंबे बाल; काला कौआ; बहुत परोंवाला गिद्ध ।

ग़ुदुव (غدو) अ. पुं.–प्रातःकाल, सबेरा ।

ग़ुदूद (غدود) अ. पुं.–शरीर के भीतर की गिल्टियाँ, ग्रंथियाँ ।

ग़ुद्दः (غدہ) अ. पुं.–शरीर के भीतर की गिल्टी, ग्रंथि ।

ग़ुद्र (غدر) अ. वि.–कृतघ्न, नाशुक्रा, बेवफ़ा ।

ग़ुद्वः (غدوہ) अ. पुं.–प्रातःकाल और सूर्योदय के बीच का समय ।

गुनह (گنہ) फा. पुं.–'गुनाह' का लघु., दे. 'गुनाह' ।

गुनहगार (گنہگار) फा. वि.–दे. 'गुनाहगार' ।

गुनहगारी (گنہگاری) फा. स्त्री.–दे. 'गुनाहगारी' ।

गुनाह (گناہ) फा. पुं.–पाप, पातक, मासियत; दोष, अपराध, क़ुसूर ।

गुनाहगार (گناہگار) फा. वि.–पापी, पातकी, आसी; दोषी, अपराधी, क़ुसूरवार ।

गुनाहगारी (گناہگاری) फा. स्त्री.–पाप कर्म, मा'सियत; दोष करना, क़ुसूरवारी ।

गुनाहे कबीरः (گناہِکبیرہ) फा. अ. पुं.–बड़ा पाप, महापातक ।

गुनाहे सग़ीरः (گناہِصغیرہ) फा. अ. पुं.–छोटा गुनाह, लघुपातक ।

ग़ुनुज (غنج) अ. पुं.–हावभाव, नाज़ोअदा ।

ग़ुनूदः (غنودہ) फा. वि.–जिसकी आँखों में नींद भरी हो, ऊँघता हुआ, उन्निद्र, तंद्रालु ।

ग़ुनूदगी (غنودگی) फा. स्त्री.–ऊँघ, तंद्रा, निद्रालस, प्रमीला ।

ग़ुनूदनी (غنودنی) फा. वि.–ऊँघने के योग्य; जिसका ऊँघना आवश्यक हो ।

ग़ुन्नः (غنہ) अ. पुं.–वह 'न' जो नाक में पढ़ा जाय, 'अनुस्वार'; वह अक्षर जिस पर अनुस्वार हो ।

ग़ुन्यत (غنیت) अ. स्त्री.–धनाढ्यता, मालदारी ।

ग़ुफ़ार (غفار) अ. पुं.–डाढ़ी के दोनों ओर के बाल; गर्दन और गुद्दी के बाल; पिंडली के बाल ।

ग़ुफ़ुर (غفر) अ. पुं.–'ग़फ़ूर' का बहु., मोक्ष देनेवाले, बख़्शनेवाले ।

ग़ुफ़ूल (غفول) अ. पुं.–भूलना, विस्मृति; किसी वस्तु का त्याग; निश्चेष्टता, बेख़बरी ।

गुफ़्तः (گفتہ) फा. वि.–कहा हुआ, उक़्त ।

गुफ़्त (گفت) फा. स्त्री.–कहन, कथन, बात ।

गुफ़्तगू (گفتگو) फा. स्त्री.–बातचीत, वार्तालाप ।

गुफ़्तनी (گفتنی) फा. वि.–कहने योग्य, जो बात कही जा सके; जिसका कहना आवश्यक हो ।

गुफ़्तार (گفتار) फा. स्त्री.–बोली, वाणी, शब्द, आवाज़; वार्तालाप, बातचीत ।

गुफ़्तुगू (گفتگو) फा. स्त्री.–दे. 'गुफ़्तगू' दो. शुद्ध हैं ।

गुफ़्तोगू (گفت‌وگو) फा. स्त्री.–दे. 'गुफ़्तगू' दो. शु. हैं ।

गुफ़्तोशनीद (گفت‌وشنید) फा. स्त्री.–बातचीत, गुफ़्तगू; कहासुनी, वादविवाद; हुज्जत, तर्क-वितर्क ।

ग़ुफ़्राँ (غفراں) अ. पुं.–'गुफ़ान' का लघु., दे. 'ग़ुफ़ान' ।

ग़ुफ़्राँमआब (غفراں مآب) अ. वि.–मोक्षप्राप्त, स्वर्गीय, बड़े लोगों की आत्मा के लिए बोला जाता है ।

ग़ुफ़ान (غفران) अ. पुं.–मोक्ष, मुक्ति, सद्गति, वख़्शिश; क्षमा, मुआफ़ी।

ग़ुफ़्ल (غفل) अ. वि.–वह व्यक्ति जिससे न भलाई की आशा हो, न अनिष्ट का भय हो; हर वह वस्तु जिसका कोई पता-निशान न हो; अनुभवहीन व्यक्ति; वह कवि जिसे कोई जानता न हो; वह व्यक्ति जिसका कुल अज्ञात हो।

ग़ुब [ब्ब] (غب) अ. पुं.–वह बाढ़ पर आयी हुई नदी जिसका पानी नदी से निकलकर जंगलों में बहे; नीची भूमि।

ग़ुबारः (غباره) फा. पुं.–हवा में उड़नेवाला काग़ज़ का बड़ा गेंद, ग़ुब्बारा; हवाई जहाज़, वायुयान; बैलून।

ग़ुबार (غبار) अ. पुं.–धूल, रज, धूलि; मनोमालिन्य, दिल का मैल।

ग़ुबारआलूदः (غبارآلوده) अ. फा. वि.–धूल में भरा हुआ, धूलिधूसर; जिस पर धूल पड़ी हो।

ग़ुबारआलूद (غبارآلود) अ.फा. वि.–दे. 'ग़ुबारआलूदः'।

ग़ुबारे ख़ातर (غبارخاطر) अ. पुं.–मन की मलिनता, दिल का मैल; दिल का बुख़ार, मन की भड़ास; मनोमालिन्य, रंजिश।

ग़ुबूर (غبور) अ. पुं.–बाक़ी रहना, शेष बचना; विलंब करना, देर करना; छोड़ देना, क्षमा करना; आगमन, आना।

ग़ुबैस (غبیس) अ. अव्य.–कदापि, हरगिज़; नित्य, हमेशा।

ग़ुब्बारः (غباره) फा. पुं.–दे. 'ग़ुबारः'।

गुम (گم) फा. वि.–खोया हुआ; भटका हुआ; तल्लीन, मुन्हमिक; अचेत, ग़ाफ़िल; आत्मविस्मृत, ख़ुदरफ़्तः।

गुमकर्दः (گم کرده) फा. वि.–खोया हुआ, जो खो गया हो; जिसने खो दिया हो; भूला हुआ।

गुमकर्दःराह (گم کرده راه) फा. वि.–जो राह भूल गया हो, जो रास्ते से भटक गया हो, पथ-भ्रष्ट।

गुमगश्तः (گم گشته) फा. वि.–खोया हुआ, जो खो गया हो, "लाओ देखें कहीं मेरा दिले गुमगश्तः न हो, आप कहते हैं कि इक चीज़ पड़ी पायी है।"

गुमगश्तगी (گم گشتگی) फा. स्त्री.–खो जाना, रस्ता भूल जाना।

गुमज़दः (گم زده) फा. वि.–दे. 'गुमराह'।

गुमज़न (گم زن) फा. वि.–नष्ट और ध्वस्त करनेवाला; मृदुल, नाज़ुक।

गुमनाम (گمنام) फा. वि.–जिसे कोई न जानता हो, अज्ञात, अप्रसिद्ध; जिसका नाम न मालूम हो, अज्ञातनाम।

गुमनामी (گمنامی) फा. स्त्री.–शोहरत न होना, अख्याति।

गुमबूदगी (گم بودگی) अ. स्त्री.–दुःखित होना।

गुमराह (گمراه) फा. वि.–जो मार्ग भूल गया हो, रास्ते से भटका हुआ, मार्ग-भ्रष्ट; नास्तिक, लामज़्हब; कदाचारी, बदचलन।

गुमराहकुन (گمراه کن) फा. वि.–बदगुमानी पैदा करनेवाला, भ्रमात्मक; गुनाह की ओर प्रवृत्ति करनेवाला।

गुमराही (گمراهی) फा. स्त्री.–मार्ग भूलना; नास्तिकता, लामज़्हबीयत; गुनाह की ओर प्रवृत्ति।

गुमशुदः (گم شده) फा. वि.–खोया हुआ, खोई हुई वस्तु।

गुमशुदगी (گم شدگی) फा. स्त्री.–खो जाना, कहीं रह जाना; रास्ता भूल जाना।

गुमशुदनी (گم شدنی) फा. वि.–खोने योग्य।

गुमाँ (گماں) फा. पुं.–'गुमान' का लघु., दे. 'गुमान'।

गुमाँबरी (گماں بری) फा. स्त्री.–शंका करना, शुबहः करना; बदगुमानी करना।

गुमान (گمان) फा. पुं.–शंका, शुबह, शक; भ्रम, वह्म; बदगुमानी, कुधारणा।

गुमाने क़वी (گمان قوی) फा. अ. पुं.–ऐसा शुबहा जो यक़ीन के दर्जे तक पहुँच जाय।

गुमाने ग़ालिब (گمان غالب) फा. अ. पुं.–दे. 'गुमाने क़वी'।

गुमाने बद (گمان بد) फा. पुं.–किसी की ओर से बुरा विचार, कुधारणा।

गुमाने सहीह (گمان صحیح) फा. अ. पुं.–ऐसा गुमान जो ठीक साबित हो।

ग़ुमाम (غمام) अ. पुं.–ज़ुकाम, प्रतिश्याय, प्रतिश्यान।

ग़ुमार (غمار) अ. पुं.–आधिक्य, प्राचुर्य, बहुतायत; जनसमूह, जमाव।

गुमारिंदः (گمارنده) फा. वि.–निंयुक्त करनेवाला, मुक़र्रर करनेवाला।

गुमार्दनी (گماردنی) फा. वि.–नियुक्ति के योग्य, तक़र्रुर के क़ाबिल।

गुमाश्तः (گماشته) फा. वि.–नियुक्त किया हुआ; प्रतिनिधि, नुमाइंदः; कारकुन, एजेंट, अभिकर्ता।

गुमाश्तगी (گماشتگی) फा. स्त्री.–नियुक्ति, तक़र्रुर; एजेंटी, कारिंदागीरी।

गुमाश्तनी (گماشتنی) फा. वि.–नियुक्त करने योग्य, मुक़र्रर करने के लायक़।

ग़ुमूज़ (غموض) अ. पुं.–भूमि का नीचा और गढ़ेदार होना; बात का गुप्त और समय से बाहर होना।

ग़ुमूज़त (غموضت) अ. स्त्री.–बात का समझ से परे होना; गुप्त होना, छिपना; भूमि का नीचा होना।

ग़ुमूम (غموم) अ. पुं.–'ग़म' का बहु., खेद और शोक; छोटे तारे जो दिखाई न पड़ें।

ग़ुम्जः (غمجہ) अ. पुं.–जूठा पानी, पिया हुआ पानी; पिये हुए पानी का घूँट।

ग़ुम्दान (غمدان) अ. पुं.–यमन का अद्‌भुत और विचित्र भवन; संसार, दुनिया।

ग़ुम्मः (غمہ) अ. पुं.–नदी की तह; हर चीज़ की तह; गुप्त काम; खेद, ग़म।

गुम्रक (گمرک) फा. पुं.–चुंगी, कस्टम।

गुम्रकख़ानः (گمرک خانہ) फा. पुं.–चुंगीघर, कस्टम हाउस।

ग़ुर[र्र] (غر) अ. पुं.–'अग़र' का बहु., श्रेष्ठ लोग; प्रसिद्ध लोग; माथे की सफ़ेदियाँ।

ग़ुर (غر) फा. पुं.–बढ़ा हुआ अंडकोष; गले का घेघा।

गुरफ़ (غرف) अ. पुं.–'ग़ुर्फ़ः' का बहु., झरोखे।

ग़ुरबा (غربا) अ. पुं.–'ग़रीब' का बहु., गरीब लोग; दरिद्र और दीन लोग; परदेसी लोग।

ग़ुरबापर्वर (غرباپرور) अ. फा. वि.–दीन और दुखियों पर दया करनेवाला।

ग़ुरमा (غرما) अ. पुं.–'ग़रीम' का बहु., ऋणी, क़र्ज़दार लोग; ऋणदाता, क़र्जख़्वाह लोग; जिन्हें टोटा आया हो, वे लोग।

ग़ुरर (غرر) अ. पुं.–'ग़ुर्रः' का बहु., महीने की पहली तारीखें; जाति के सर्वश्रेष्ठ लोग; लौंडी ग़ुलाम।

गुरस्नः (گرسنہ) फा. वि.–भूखा, क्षुधातुर, क्षुधित, दे. 'गुस्नः' और 'गुसस्नः'।

गुरस्नःचश्म (گرسنہ چشم) फा. वि.–लोलुप, लालची; कृपण, कंजूस; भिक्षुक, भिखारी।

गुरस्नःचश्मी (گرسنہ چشمی) फा. स्त्री.–लालच; कंजूसी; भिखमंगापन।

गुराज़ (گراز) फ़ा. पुं.–शूकर, सुअर (वि.) अत्याचारी, ज़ालिम; शूर, वीर, बहादुर।

ग़ुराब (غراب) अ. पुं.–कौआ, काक, काग।

ग़ुराबुलबैन (غراب البین) अ. पुं.–वह अशुभ भाषी कौआ जिसके बोलने पर घर के व्यक्ति अथवा मित्र लोग अलग-अलग हो जाते हैं।

गुरास (گراس) फा. पुं.–कवल, ग्रास, निवाला।

गुरिंज (گرنج) फा. पुं.–धान से निकला हुआ चावल, तंदुल।

ग़ुरिश (غرش) फा. स्त्री.–दे. 'ग़ुर्रिश'।

ग़ुरुफ़ात (غرفات) अ. पुं.–'ग़ुर्फ़ः' का बहु., झरोखे।

ग़ुरुब (غرب) अ. वि.–अद्‌भुत, अभूतपूर्व, अजीबोग़रीब।

गुरुस्नः (گرسنہ) फा. वि.–भूखा, क्षुधित, दे. 'गुरस्नः, गुस्नः'।

ग़ुरूब (غروب) अ. पुं.–डूबना, किसी तारे का विशेषतः सूरज का डूबना, अस्त होना।

ग़ुरूर (غرور) अ. पुं.–अभिमान, अहंकार, गर्व, घमंड; शेख़ी, अहंवाद।

गुरेख़्तः (گریختہ) फा. वि.–भागा हुआ, पलायित।

गुरेख़्तगी (گریختگی) फा. स्त्री.–भगोड़ापन, पलायन।

गुरेख़्तनी (گریختنی) फा. वि.–भागने योग्य।

गुरेज़ (گریز) फा. पुं.–बचाव, उपेक्षा, बेए'तिनाई; घृणा, नफ़रत; क़सीदे में अनुष्ठान को प्रशंस्य (मम्दूह) के गुण-गाथा की ओर मोड़ देने का अलंकार।

गुरेज़पा (گریزپا) फा. वि.–जो बहुत भाग जाता हो, भगोड़ा; वह नौकर जो बार-बार भाग जाता हो।

गुरेज़पाई (گریزپائی) फा. स्त्री.–भगोड़ापन, बार-बार भागने की क्रिया।

गुरेज़ाँ (گریزاں) फा. वि.–भागता हुआ, भाग कर जाता हुआ; बचकर निकल जानेवाला, पास न आनेवाला।

गुरेज़िंदः (گریزندہ) फा. वि.–भागनेवाला, पलायन-कर्ता; बचनेवाला, परहेज़ करनेवाला, उपेक्षक।

गुरेज़ी (گریزی) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, चतुराई; धूर्तता, मक्कारी।

गुरेज़ीदः (گریزیدہ) फा. वि.–भागा हुआ, पलायित।

गुरोह (گروہ) फा. पुं.–समुदाय, जमाअत; दल, पार्टी; जनसमूह, हुजूम; झुंड, ग़ोल, हिन्दी में 'गिरोह' प्रचलित।

गुरोह दर गुरोह (گروہ در گروہ) फा. वि.–झुंड के झुंड, ग़ोल के ग़ोल, अर्थात् बहुत अधिक (मनुष्य)।

गुरोहबंद (گروہ بند) फा. वि.–गुटबंद, पार्टीबंद, दलबंद, प्रचलित 'गिरोहबंद'।

गुरोहबंदी (گروہ بندی) फा. स्त्री.–दलबंदी, गुटबंदी, पार्टीबंदी, प्रचलित 'गिरोहबंदी'।

गुर्ग (گرگ) फा. पुं.–भेड़िया, वृक।

गुर्गज़ादः (گرگ زادہ) फा. पुं.–भेड़िये का बच्चा, वृक-शावक; खल पुरुष का पुत्र।

गुर्गीनः (گرگینہ) फा. पुं.–पोस्तीन, बालोंदार खाल का कोट।

गुर्गुन (گرگن) फा. पुं.–हरा अन्न जो भुना हो, चबेना, होरहा।

गुर्गेबग़ल (گرگ بغل) फा. पुं.–बग़ल में रहनेवाला भेड़िया, बग़ली दुश्मन, आस्तीन का साँप।

गुर्गेबारांदीदः (گرگ باراں دیدہ) फा. पुं.–वह भेड़िया जिसने बहुत-सी बरसातें देखी हों; बहुत ही धूर्त व्यक्ति; बहुत ही अनुभवी मनुष्य।

गुर्ज़ः (گرزہ) फा. पुं.–साँप का बड़ा और फैला हुआ फन (वि.) भयानक, ख़ौफ़नाक।

गुर्ज़ (گرز) फा. पुं.–एक प्राचीन अस्त्र, गदा।

गुर्ज (گرج) फा. पुं.–दे. 'गुर्द'।

गुर्ज़बरदार (گرزبردار) फा. वि.–गुर्ज़ से लड़नेवाला, गुर्ज़ रखनेवाला, गदाधर।

गुर्जिस्तान (گرجستان) फा. पुं.–जारजिया, एक प्रदेश।

गुर्जी (گرجی) फा. वि.–गुर्जिस्तान का निवासी।

ग़ुर्ज़ूफ़ (غرضوف) अ. स्त्री.–दे. 'ग़ुज़्रूफ़', दो. शु. हैं।

गुर्द (گرد) फा. पुं.–एक देश; मल्ल, पहलवान; योद्धा, बहादुर।

ग़ुर्नीक़ (غرنیق) अ. पुं.–कुलंग पक्षी; गोरा चट्टा और मृदुलांग युवक।

ग़ुर्नूक (غرنوق) अ. पुं.–दे. ग़ुर्नीक, घुँघरवाले बाल; गुँधी हुई चोटी।

गुर्पुज (گرپز) फा. वि.–दे. 'गुर्बुज़'।

ग़ुर्फ़ः (غرفه) अ. पुं.–झरोखा, गवाक्ष, वातायन; अट्टालिका, बालाख़ाना।

ग़ुर्फ़ःनशीं (غرفهنشیں) अ. फा. वि.–झरोखे में बैठनेवाला (वाली)।

ग़ुर्फ़ात (غرفات) अ. पुं.–'ग़ुर्फ़ः' का बहु., झरोखे।

गुर्बः (گربه) फा. स्त्री.–बिल्ली, मार्जारी।

गुर्बःगूँ (گربهگوں) फा. वि.–धूर्त्त, मक्कार, छली, वंचक।

गुर्बःचश्म (گربهچشم) फा. वि.–दुःशील, बेमुरव्वत।

गुर्बएमिस्कीं (گربۂمسکیں) अ. फा.. स्त्री.–वह व्यक्ति जो देखने में बहुत सीधा सादा हो, परंतु बहुत ही धूर्त और चालाक हो।

ग़ुर्बत (غربت) अ. स्त्री.–परदेशी होना; परदेश, बेवतनी; दरिद्रता, कंगाली।

ग़ुर्बतज़दः (غربتزده) अ. फा. वि.–घरबार छोड़कर परदेश में पड़ा हुआ, प्रवासी; निर्धन, कंगाल।

ग़ुर्बत ज़दगी (غربتزدگی) अ. फा. स्त्री.–बेवतनी, परदेस में होना; निर्धनता, कंगाली।

ग़ुर्बतदीदः (غربتدیده) अ. फा. वि.–दे. 'ग़ुर्बतज़दः'।

गुर्बुज़ (گربز) फा. वि.–छली, वंचक, ठगिया, मक्कार।

गुर्बुज़ी (گربزی) फा. स्त्री.–छल, वंचकता, ठगई, मक्कारी।

ग़ुर्म (غرم) अ. पुं.–तावान, दंड।

ग़ुर्म (غرم) फा. स्त्री.–पहाड़ी बकरी।

गुर्म (گرم) फा. पुं.–दुःख, रंज; खेद, संताप, ग़म; कष्ट, तक्लीफ़; मनस्ताप, दिलगीरी; इंद्रधनुष।

ग़ुर्रः (غره) अ. पुं.–चाँद के महीने की पहली तारीख़, जो हिंदी हिसाब से कृष्णपक्ष की तृतीया होती है; घोड़े के माथे की सफ़ेदी; हर वह वस्तु जो उत्तम हो; दास अथवा दासी।

ग़ुर्रएशव्वाल (غرۂشوال) अ. पुं.–शव्वाल महीने की पहली तारीख़, अर्थात् ईद का दिन।

ग़ुर्रिश (غرش) फा. स्त्री.–ग़ुर्राहट, गर्जन; आतंक, भय, हैबत।

गुर्स (گرس) फा. स्त्री.–भूख, क्षुधा; प्यास, पिपासा।

गुर्सनः (گرسنه) फा. वि.–भूखा, क्षुधातुर; दे. 'गुरस्नः' और 'गुरुस्नः', तीनों शुद्ध हैं।

गुर्सनःचश्म (گرسنهچشم) फा. वि.–लालची, हरीस; कृपण, कंजूस; भिक्षुक, फ़क़ीर।

गुर्सनःचश्मी (گرسنهچشمی) फा. स्त्री.–लोभ, लालच; कृपणता, कंजूसपन; भिखमंगापन।

गुर्सनगी (گرسنگی) फा. स्त्री.–भूख, क्षुधा, बुभुक्षा।

ग़ुल [ल्ल] (غل) अ. पुं.–लोहे का तौक़ जो क़ैदियों के गले में पड़ता है; प्यासा, सतृष्ण; प्यास की तीव्रता; मनस्ताप, हृदय की जलन।

ग़ुल (غل) फा. पुं.–कोलाहल, शोर, चीख़, पुकार।

गुल (گل) फा. पुं.–फ़ूल, पुष्प, सुमन; गुलाब का फूल; चिराग़ का गुल; आँख की फूली।

गुलअंदाम (گل اندام) फा. वि.–फूल-जैसे कोमल, मृदुल, सुकुमार और सुगंधित शरीरवाला (वाली), पुष्पांगी, पुष्पांगना।

गुलअफ़्शां (گل افشاں) फा. वि.–फूल बरसानेवाला, पुष्पवर्ष; जिससे फूल झड़ते हैं।

गुलअफ़्शानी (گل افشانی) फा. स्त्री.–फूल बरसाना; फूल बरसना; मज़ेदार बातें।

गुलइज़ार (غلعزار) फा. अ. वि.–गुलाब-जैसे सुकुमार और कोमल गालोंवाला (वाली)।

गुलक़ंद (گلقند) फा. पुं.–गुलाब के फूल और खाँड़ के मिश्रण से बनी हुई एक औषध।

गुलकदः (گل کده) फा. पुं.–वह घर जहाँ फूल ही फूल हों, पुष्पागार, कुसुमालय।

गुलकार (گلکار) फा. वि.–बेल-बूटे बनानेवाला।

गुलकारी (گلکاری) फा. स्त्री.–बेल-बूटे बनाने का काम; बेल-बूटे, नक़्शोनिगार।

गुलख़न (گلخن) फा. पुं.–भाड़, भट्ठी; चूल्हा।

गुलख़ाल (گل خال) फा. वि.–चितकबरा, दाग़ोंवाला, चित्तेदार।

गुलगश्त (گل گشت) फा. पुं.–बाग़ की सैर; सैर का स्थान, क्रीडास्थल।

गुलगीर (گل گیر) फा. पुं.–चिराग़ या शमा का गुल कतरने की क़ैंची।

ग़ुलग़ुलः (غلغله) अ. पुं.–शोर, कोलाहल; हर्षध्वनि, ख़ुशी का शोर।

गुलगूँ (گلگوں) फ़ा. वि.—गुलाब-जैसे रंगवाला; लाल रंग का घोड़ा; शीरीं के घोड़े का नाम।

गुलगूनः (گلگونہ) फ़ा. पुं.—मुँह पर मलने का सुगंधित और गुलाबी पाउडर।

गुलचीं (گل چیں) फ़ा. वि.—फूल चुननेवाला, पुष्पचायी; माली, मालाकार।

गुलचीनी (گل چینی) फ़ा. स्त्री.—फूल बीनना; माली का काम।

गुलचेहरः (گل چہرہ) फ़ा. वि.—दे. 'गुलरुख़'।

गुलज़मीं (گل زمیں) फ़ा. स्त्री.—ऐसा स्थान जहाँ फूल बहुत पैदा होते हों, पुष्पवन, पुष्पोद्यान; फूलों से लदी हुई ज़मीन।

गुलज़ार (گلزار) फ़ा. पुं.—उद्यान, आराम, वाटिका, बाग़; वह स्थान जहाँ ख़ूब चहल-पहल और रौनक़ हो।

गुलदस्तः (گل دستہ) फ़ा. पुं.—फूलों का गुच्छा, रंग-बिरंगी फूलों का मुट्ठा, पुष्पस्तवक,; पत्रिका, रिसालः।

गुलदान (گلدان) फ़ा. पुं.—गुलदस्ता सजाने का पात्र।

गुलनार (گل نار) फ़ा. पुं.—अनार का फूल, गुले अनार; अनार की एक जाति, जिसमें फल नहीं आता और जिसके फूल का दवा में प्रयोग होता हैं।

गुलपाश (گلپاش) फ़ा. वि.—फूलों की वर्षा करनेवाला, पुष्पवर्षक।

गुलपाशी (گل پاشی) फ़ा. स्त्री.—फूलों की वर्षा।

गुलपैरहन (گل پیرہن) फ़ा. वि.—गुलाबी कपड़े पहनने वाला (वाली), गुलाब के फूल-जैसे रंगीन, कोमल और सुगंधित कपड़े पहननेवाली नायिका।

गुलपैरहनी (گل پیرہنی) फ़ा. स्त्री.—फूलों-जैसे रंगीन और सुगंधित कपड़े पहनने का भाव।

गुलपोश (گل پوش) फ़ा. वि.—फूलों से ढका हुआ, फूलों से मढ़ा हुआ, फूलों से लदा हुआ।

गुलपोशी (گل پوشی) फ़ा. स्त्री.—फूलों से ढका होना।

गुलफ़ाम (گل فام) फ़ा. वि.—दे. 'गुलअंदाम'।

गुलफ़िशां (گل فشاں) फ़ा. वि.—फूल बरसानेवाला, (स्त्री.) फुलझड़ी, एक प्रसिद्ध आतशबाज़ी।

गुलफ़िशानी (گل فشانی) फ़ा. स्त्री.—फूल बरसाना।

गुलबदन (گل بدن) फ़ा. वि.—फूल-जैसे कोमल और मृदुल अंगोंवाला (वाली) (पुं.) एक रेशमी कपड़ा।

गुलबदनी (گل بدنی) फ़ा. स्त्री.—फूल-जैसे कोमल मृदुल और सुगंधित शरीर का होना।

गुलबर्ग (گل برگ) फ़ा. पुं.—फूल का पत्ता, पुष्पदल।

गुलबांग (گل بانگ) फ़ा. स्त्री.—वह शोर जो किसी के व्याह-शादी आदि के अवसर पर होता है, हर्षध्वनि; बुलबुल आदि मधुरस्वर पक्षियों की चहचहाहट।

गुलबाज़ी (گل بازی) फ़ा. स्त्री.—एक दूसरे की ओर फूल फेंकने का खेल, पुष्पक्रीड़ा।

गुलबुन (گلبن) फ़ा. पुं.—गुलाब का वृक्ष।

गुलमेख़ (گل میخ) फ़ा. स्त्री.—फुल्लीदार बड़ी कील जो किवाड़ों आदि में लगती है।

गुलरंग (گل رنگ) फ़ा. वि.—गुलाब के फूल-जैसे गुलाबी रंगवाली वस्तु।

गुलरुख़ (گل رخ) फ़ा. वि.—फूल-जैसे सुंदर, सुकोमल और सुकुमार मुखवाली नायिका, पुष्पमुखी।

गुलरुख़सार (گل رخسار) फ़ा. वि.—गुलाब के फूल-जैसे सुंदर कपोलोंवाली नायिका, पुष्पकपोला।

गुलरू (گلرو) फ़ा. वि.—दे. 'गुलरुख़'।

गुलरेज़ (گل ریز) फ़ा. वि.—जिससे फूल झड़ते हों (स्त्री.) एक आतशबाज़ी, फुलझड़ी।

ग़ुलल (غلل) अ. पुं.—'ग़लील' का बहु., प्यासे।

गुलशकर (گل شکر) फ़ा. पुं.—दे. 'गुलक़ंद'।

गुलशन (گلشن) फ़ा. पुं.—उद्यान, वाटिका, बाग़।

गुलशन आरा (گلشن آرا) फ़ा. वि.—उद्यानपाल, माली; बाग़ को सजाने और सँवारनेवाला।

ग़ुलाज़ (غلاظ) अ.. वि.—मोटा, दलदार; कड़ा, कठोर, सख़्त।

ग़ुलात (غلات) अ. पुं.—'ग़ाली' का बहु., अति करनेवाले, किसी विषय में बहुत अधिक अति करनेवाले।

गुलाब (گلاب) फ़ा. पुं.—एक प्रसिद्ध फूल, गुल; गुलाबजल, गुलाब का अरक़।

गुलाबपाश (گلاب پاش) फ़ा. पुं.—सभा आदि में गुलाबजल छिड़कने का यंत्र।

गुलाबी (گلابی) फ़ा. वि.—गुलाब-जैसे रंगवाली वस्तु, हलका लाल (स्त्री.) शराब की रंगीन काँच की सुराही।

ग़ुलाम (غلام) अ. पुं.—लड़का, बालक; दास, ख़ादिम; पराधीन, महकूम।

ग़ुलामगर्दिश (غلام گردش) अ. फ़ा. स्त्री.—कोठी या मकान के चारों ओर का बरामदा।

ग़ुलामचापार (غلام چاپار) अ. फ़ा. पुं.—डाकिया, पोस्टमैन, चिट्ठीरसाँ।

ग़ुलामज़ादः (غلام زادہ) अ. फ़ा. पुं.—दासी-पुत्र, लौंडी-बच्चा; विनय प्रदर्शन के लिए वक्ता अपने पुत्र के लिए भी कहता है।

ग़ुलामानः (غلامانہ) अ. फ़ा. वि.—ग़ुलामों-जैसा, दासोचित।

ग़ुलामी (غلامی) अ. स्त्री.–दासता, बंदगी; पराधीनता, महकूमी।

ग़ुलालः (غلالہ) फा. स्त्री.–प्रेयसी की अलक, मा'शूक़ा की ज़ुल्फ़।

गुलिस्ताँ (گلستاں) फा. पुं.–'गुलिस्तान' का लघु., दे. 'गुलिस्तान'।

गुलिस्ताँज़ादः (گلستاں زادہ) फा. पुं.–पुष्प, फूल; बाग़ की घास, सब्ज़ा; दासी-पुत्र, लौंडी-बच्चा।

गुलिस्तान (گلستان) फा. पुं.–उद्यान, बाग़, वाटिका, आराम।

ग़ुलुफ़ (غلف) अ. पुं.–'ग़िलाफ़' का बहु., बहुत से ग़िलाफ़ अथवा कोष।

ग़ुलुव (غلو) अ. पुं.–दे. 'ग़ुलू'।

गुलू (گلو) फा. पुं.–कंठ, गला, हुल्क़ूम।

ग़ुलू (غلو) अ. पुं.–पूरा हाथ उठाना; जनसमूह, भीड़; अति करना, हद से गुज़र जाना; ऐसी अत्युक्ति जो न बुद्धि के अनुसार ठीक हो न प्राकृतिक हो।

गुलूख़लासी (گلوخلاصی) फा. स्त्री.–बंधनमुक्ति, छुटकारा; किसी जंजाल से छुटकारा।

गुलूगीर (گلوگیر) फा. वि.–गला पकड़नेवाला (वाली); आवाज़ रुँधा देनेवाला (वाली)।

गुलूबंद (گلوبند) फा. पुं.–गले का एक आभूषण; गले और कानों में लपेटने का मफ़्लर।

गुलूबस्तः (گلوبستہ) फा. वि.–जिसका स्वर बैठ गया हो।

गुलूबुरीदः (گلوبریدہ) फा. वि.–जिसका गला कट गया हो, छिन्नग्रीव, वधित।

ग़ुलूलः (غلولہ) अ. पुं.–जनसमूह, हुजूम; आवेग, जोश।

गुलूलः (گلولہ) फा. पुं.–ग़ुलेल का गुल्ला; बंदूक़ की गोली; दवा की गोली।

ग़ुलूल (غلول) अ. पुं.–वृक्षों के बीच में बहता हुआ पानी; ग़नीमत के माल में ख़ियानत।

गुलूसोज़ (گلوسوز) फा. वि.–अति सुंदर, बहुत अच्छा; बहुत मीठा; चरपरी वस्तु।

गुले अब्बास (گل عباس) फा. अ. पुं.–एक प्रसिद्ध फूल और उसका पेड़, गुलाबाँस।

गुले आतशीं (گل آتشیں) फा. पुं.–सदा गुलाब, गुलाब की एक जाति जो सदा फूलती है।

गुले आफ़्ताबपरस्त (گل آفتاب پرست) फा. पुं.–सूरजमुखी का फूल।

गुले काग़ज़ी (گل کاغذی) फा. अ. पुं.–काग़ज़ के फूल जो सजावट के काम आते हैं; दिखावे की वस्तु।

गुले ख़ंदाँ (گل خنداں) फा. पुं.–खिला हुआ फूल।

गुले ख़ुदरो (گل خودرو) फा. पुं.–जो फूल बोया न गया हो बल्कि अपने आप उगा हो।

गुले चश्म (گل چشم) फा. पुं.–आँख की फुल्ली, टेंट।

गुले जा'फ़री (گل جعفری) फा. अ. पुं.–एक पीले रंग का फूल।

गुले तुर्रः (گل طرہ) फा. पुं.–मुर्गकेस, एक प्रसिद्ध फूल।

गुले दाऊदी (گل داؤدی) फा. अ. पुं.–एक प्रसिद्ध फूल।

गुले नाफ़र्मां (گل نافرماں) फा. पुं.–एक फूल।

गुले नाशिगुफ़्तः (گل ناشگفتہ) फा. पुं.–बिन खिला फूल, कली, गुंचः, मुकुल; कुँवारी स्त्री, कुमारी, दोशीज़ः।

गुले पलास (گل پلاس) फा. पुं.–टेसू का फूल, ढाक का फूल, 'पलाश' संस्कृत में भी टेसू को कहते हैं, संस्कृत और फ़ारसी के प्राचीन सम्बन्ध का परिचायक है।

गुले पियादः (گل پیادہ) फा. पुं.–हर वह फूल जिसकी पियाली छोटी हो; अपने आप उगनेवाला फूल।

गुले बेगानः (گل بیگانہ) फा. पुं.–दे. 'गुले ख़ुद रो'।

गुले यासमन (گل یاسمن) फा. पुं.–चमेली का फूल, नवमल्लिका, मालती।

गुले यासमीन (گل یاسمین) फा. पुं.–दे. 'गुलेयासमन'।

गुले राना (گل رعنا) फा. पुं.–एक दोरंगा फूल जो अंदर लाल और बाहर पीला होता है।

गुले लालः (گل لالہ) फा. पुं.–एक मशहूर फूल जो बहुत प्रकार का होता है, विशेषतः लाल रंग का, पोस्ते का फूल, गुले ख़शख़ाश।

गुले वर्द (گل ورد) फा. अ. पुं.–गुलाब का फूल।

गुले शबअफ़्रोज़ (گل شب افروز) फा. पुं.–रात की रानी, एक प्रसिद्ध फूल, रजनीगंधा।

गुले शब बो (گل شب بو) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध फ़ूल, सुगंधरा, (गुल=फूल+शब=रात+बो=बू) रजनीगंधा की एक जाति।

गुले शम्अ (گل شمع) फा. अ. पुं.–चिराग़ या मोमबत्ती का गुल।

गुले सद बर्ग (گل صد برگ) फा. पुं.–सौ पंखड़ियों वाला फूल; गुलाब; गुलनार; गेंदा, (विशेषतः गेंदे के लिए बोलते हैं)

गुले सर सबद (گل سر سبد) फा. पुं.–वह फूल जो माली की टोकरी में सबसे ऊपर रहता और सारी टोकरी में सबसे बड़ा और सुगंधित होता है; वह व्यक्ति जो सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम हो।

गुले सुर्ख़ (گل سرخ) फा. पुं.–गुलाब का फूल।

गुले सूरी (گل سوری) फा. पुं.–एक प्रकार का गुलाब।

गुले सौसन (گل سوسن) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध आस्मानी रंग का फूल, जिसकी पंखड़ी ज़बान की तरह् होती है—"सौसन ने चमन में ज़ुबान खोली"।

गुले हज़ारः (گل ہزارہ) फा. पुं.–हज़ारे का फूल।

ग़ुलैम (غلیم) अ. पुं.–छोटा लड़का, बहुत प्यारा और छोटा-सा बालक।

ग़ुल्ज़त (غلظت) अ. स्त्री.–दे. 'ग़िल्ज़त', दो. शु. हैं।

ग़ुलफ़ (غلف) अ. पुं.–'गिलाफ़' का बहु., तकिये के ग़िलाफ़, तलवार आदि के कोष।

ग़ुल्मः (غلمہ) अ. पुं.–कामातुर होना, तेज़ शहवत होना; कामातुरता, शहवत की तेज़ी।

ग़ुल्लः (غلہ) अ. पुं.–प्यास, पिपासा; हृदय की जलन, दिल की सोज़िश; ज़िरिह् के नीचे पहनने का कुर्ता आदि।

गुवा (گوا) फा. पुं.–'गुवाह्' का लघु., दे. 'गुवाह्'।

गुवार (گوار) फा. वि.–दे. 'गुवारा'।

गुवारा (گوارا) फा. वि.–शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु उर्दू में 'गवारा' बोलते हैं, दे. 'गवारा'।

गुवारिंदः (گوارندہ) फा. वि.–अच्छा लगनेवाला, गवारा होनेवाला; शीघ्र पच जानेवाला।

गुवारिश (گوارش) फा. स्त्री.–अच्छा लगने का भाव; हज़्म होने का भाव, पचन; सुस्वाद होने का भाव, ख़ुशमज़गी।

गुवारीदः (گواریدہ) फा. वि.–जो रुचिकर हो चुका हो; जो पच चुका हो।

गुवारीदनी (گواریدنی) फा. वि.–रुचिकर होने योग्य; पचने योग्य।

गुवार्दनी (گواردنی) फा. वि.–दे. 'गुवारीदनी'।

ग़ुवास (غواث) अ. पुं.–फ़र्याद, दुहाई, न्याय-याचना; फ़र्याद सुननेवाला, न्यायकर्ता।

गुवाह् (گواہ) फा. पुं.–साक्षी, गवाह्, शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु उर्दूवाले 'गवाह्' बोलते हैं और यही प्रचलित है।

ग़ुश [श्श] (غش) अ. वि.–ख़ियानत करनेवाला, मोषक; अशुभ-चिंतक, बदख़्वाह; जिसके मन में कुछ और मुँह पर कुछ हो।

ग़ुशावः (غشاوہ) अ. पुं.–दे. 'गिशावः'।

गुश्नी (گشنی) फा. स्त्री.–मैथुन, संभोग, विषय, प्रसंग।

ग़ुस [स्स] (غس) वि.–अशक्त, कमज़ोर; दुष्टात्मा, ख़बीस; अधम, नीच, कमीना।

ग़ुसन (غسن) अ. पुं.–'गुस्न' का बहु., अशक्त जन, कमज़ोर लोग।

ग़ुसस (غصص) अ. पुं.–'ग़ुस्सः' का बहु., 'ग़ुस्से'।

गुसार (گسار) फा. प्रत्य.–खानेवाला, जैसे—'मयगुसार' शराब पीनेवाला; 'ग़मगुसार' ग़म खानेवाला।

गुसारिंदः (گسارندہ) फा. वि.–खानेवाला, भक्षक; छोड़नेवाला, त्यागी।

गुसार्दः (گساردہ) फा. वि.–छोड़ा हुआ; खाया हुआ।

ग़ुसालः (غسالہ) अ. पुं.–जिस पानी से स्नान किया गया हो, धोवन।

ग़ुसुल (غسل) अ. पुं.–सारा शरीर धोना, नहाना, स्नान करना, ग़ुस्ल, नखशिख-मार्जन।

ग़ुसून (غصون) अ. पुं.–'ग़ुस्न' का बहु., शाखाएँ, शाखें, डालियाँ।

ग़ुसूसः (غثوثہ) अ. पुं.–दुर्बल होना, दुबला होना।

गुस्तर (گستر) फा. प्रत्य.–विछानेवाला, फैलानेवाला, जैसे 'करमगुस्तर' यश का फैलानेवाला, कृपा विस्तारक।

गुस्तरिंदः (گسترندہ) फा. वि.–बिछानेवाला, फैलानेवाला।

गुस्तर्दः (گستردہ) फा. वि.–विछाया हुआ, फैलाया हुआ।

गुस्तर्दनी (گستردنی) फा. वि.–बिछाने योग्य, फैलाने योग्य।

गुस्ताख़ (گستاخ) फा. वि.–धृष्ट, ढीठ; दुःसाहसी, वेबाक; अशिष्ट, बदतमीज़।

गुस्ताख़तब्अ (گستاخ طبع) फा. अ. वि.–फक्कड़, मुँह्फट, मुखर।

गुस्ताख़दस्त (گستاخ دست) फा. वि.–चालाक, चतुर, तेज़, होशयार; किसी ऐसे काम के लिए हाथ बढ़ानेवाला जो उसके साहस से परे हो; गुस्ताख़ी के साथ किसी की ओर हाथ बढ़ानेवाला।

गस्ताख़ानः (گستاخانہ) फा. वि.–गुस्ताख़ों-जैसा, धृष्टतापूर्वक।

गुस्ताख़ी (گستاخی) फा. स्त्री.–धृष्टता, ढीठपन; दुःसाह्स, बेबाकी; अशिष्टता, बदतमीजी।

ग़ुस्न (غسن) अ. वि.–अशक्त, निर्बल, नाताक़त।

ग़ुस्न (غصن) अ. पुं.–शाखा, शाख़, डाली।

ग़ुस्र (غثر) अ. वि. अधम, नीच, कमीना।

ग़ुस्ल (غسل) अ. पुं.–स्नान, नहाना; धोना, माँजना।

ग़ुस्लख़ानः (غسل خانہ) अ. फा. पुं.–नहाने का स्थान, स्नानागार, स्नानगृह।

ग़ुस्ले मय्यित (غسل میت) अ. पुं.–शव का स्नान, मुर्दे को नहलाना, मृतकस्नान।

ग़ुस्ले सेहत (غسل صحت) अ. पुं.–वह स्नान जो रोगमुक्ति पर किया जाता है, आरोग्य-स्नान।

ग़ुस्सः (غصہ) अ. पुं.–क्रोध, कोप; प्रकोप, ग़ज़ब; द्वेष, बुग़्ज़।

गुस्सःवर (غصہ ور) अ. फा. वि.–जिसके स्वभाव में क्रोध अधिक हो, क्रोद्धी।

गुहर (گہر) फा. पुं.–'गौहर' का लघु., मुक्ता, मोती।

गुहरअफ़्शां (گہرافشاں) फा. वि.–दे. 'गौहरअफ़्शां'।

गुहरअफ़्शानी (گہرافشانی) फा. स्त्री.–दे. 'गौहरअफ़्शानी'।

गुहरबार (گہربار) फा. वि.–दे. 'गौहरबार', मुक्तावर्षक, 'चश्मे गुहरबार' रोती आँख,—"दामन पे तेरे ग़ैर के माथे का पसीना, और वह भी मेरी चश्मे गुहरबार के आगे।"

गुहरबारी (گہرباری) फा. स्त्री.–दे. 'गौहरबारी'।

गुहररेज़ (گہرریز) फा. वि.– दे. 'गौहररेज़।

गुहररेज़ी (گہرریزی) फा. स्त्री.–दे. 'गौहररेज़ी।

गुहरशनास (گہرشناس) फा. वि.–दे. 'गौहरशनास', मोती चुनने या परखनेवाला, विज्ञ पुरुष।

गुहरशनासी (گہرشناسی) फा. स्त्री.–दे. 'गौहरशनासी'।

गू

गूँ (گوں) फा. प्रत्य.–रंगवाला, जैसे—'नीलगूँ' नीले रंग वाला, 'गुलगूँ' गुलाब के फूल के रंगवाला।

गू (گو) फा. पुं.–गेंद, कंदुक, लड़कों के खेलने का गेंद; पोलो खेलने का गेंद।

ग़ूक (غوک) फा. पुं.–मेंढक, दुर्दुर, मंडूक, दादुर।

गूगिर्द (گوگرد) फा. स्त्री.–गंधक।

गूगिर्दे अहमर (گوگرداحمر) फा.अ. स्त्री.–लाल गंधक जिससे रसायन बनती है; ऐसा व्यक्ति, जो सर्वगुण-संपन्न हो, और जिसका मिलना दुर्लभ हो।

गूगिर्दे सुर्ख़ (گوگردسرخ) फा. स्त्री.–दे. 'गूगिर्दे अहमर'।

ग़ूच (غوچ) तु. पुं.–मेंढा, नर भेड़ जिसके सींग होते हैं।

ग़ूतः (غوطہ) अ. पुं.–ग़ोता, डुबकी, शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु उर्दू में प्रचलित नहीं है, इसके स्थान पर 'ग़ोतः' बोलते हैं।

गूदः (گودہ) तु. पुं.–शरीर, देह।

गूनः (گونہ) फा. पुं.–रंग, रविश; गुना, जैसे—'दोगूनः' दोगुना।

गून (گون) फा. पुं.–रंग, वर्ण, रंगत।

गूना (گونا) फा. पुं.–रंग, वर्ण; ग़ाज़ः, मुखचूर्ण; नियम, क़ायदा, "एक गूना बेख़ुदी मुझे दिन रात चाहिए।"–ग़ालिब,

गूनागून (گوناگون) फा. वि.–रंगबिरंगी, चित्र-विचित्र।

गूनाब (گوناب) फा. पुं.–मुखचूर्ण, ग़ाज़ः, गुलगूनः।

गूनिया (گونیا) फा. पुं.–एक तिकोना यंत्र जिससे राज और बढ़ई इमारत की सीध नापते हैं।

ग़ूल (غول) फा. पुं.–दे. 'ग़ोल'।

ग़ूल (غول) अ. पुं.–भूत, प्रेत, शैतान, खवीस; राक्षस, देव; दैवी आपत्ति, बला; हर वह वस्तु जिससे बुद्धि नष्ट हो जाय।

ग़ूले बियाबाँ (غول بیاباں) अ. फा. पुं. –जंगल में फिरने वाले भूत-प्रेत, मसान, वैताल आदि।

ग़ूले बियाबानी (غول بیابانی) अ. फा. पुं.–दे. 'ग़ूले बियाबाँ'।

गे

गेज (گیج) फा. वि.–उद्विग्न, व्यस्तमना, परेशान; अस्त-व्यस्त, तितर-बितर।

गेती (گیتی) फा. स्त्री.–जगत्, संसार, दुनिया।

गेतीअफ़्रोज़ (گیتی افروز) फा. वि.–संसार को ज्योतिर्मय करनेवाला।

गेतीआरा (گیتی آرا) फा. वि.–संसार को सजाने और सँवारनेवाला।

गेतीनवर्द (گیتی نورد) फा. वि.–संसार में फिरनेवाला, विश्वभ्रमी।

गेतीपैमा (گیتی پیما) फा. वि.–दे. 'गेतीनवर्द', विश्व-पर्यटक।

गेसू (گیسو) फा. पुं.–अलक, ज़ुल्फ़; लम्बे बाल जो पीठ पर रहते हैं; बाल, केश।

गेसूदराज़ (گیسودراز) फा. वि.–जिसके बाल बहुत लंबे हों।

गेसूदार (گیسودار) फा. वि.–लौंडी-बच्चा, दासी-पुत्र; पुच्छल तारा, दुमदार सितारा।

गेसूबुरीदः (گیسو بریدہ) फा. वि.–जिसके बाल कटे हों; निर्लज्ज, बेहया।

गेवः (گیوہ) फा. पुं.–एक प्रकार का जूता, किर्मिच का जूता।

गेव (گیو) फा. पुं.–ईरान का एक बहुत बड़ा योद्धा, जो गौदर्ज़ का पुत्र था।

गेहाँ (گیہاں) फा. पुं.–दे. 'गैहाँ', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु, 'गैहाँ' अधिक मान्य है।

गै

ग़ै (غے) अ. पुं.–निराशा, नाउम्मेदी; कुमार्गता, गुमराही; नरक में एक स्थान।

ग़ैज़ः (غیضہ) अ. पुं.–सिंह की कछार; जंगल, वन।

ग़ैज़ (غیظ) अ. पुं.–बहुत अधिक, क्रोध, प्रकोप; भीतरी क्रोध, अमर्ष।

ग़ैज़ (غیض) अ. पुं.–अधूरे दिनों का उत्पन्न शिशु; पृथ्वी में धँसना; भाव का मंदा होना।

ग़ैज़ोग़ज़ब (غیظوغضب) अ. पुं.–बहुत ही क्रोध और ग़ुस्सा।

ग़ैन (غین) अ. पुं.–अभ्र, बादल; तृष्णा, प्यास; अँधेरा, तम।

ग़ैबः (غیبہ) अ. पुं.–तूणीर, तरकश।

ग़ैब (غیب) अ. पुं.–परोक्ष, पीठ पीछा; परलोक, देवताओं का स्थान; नियति, भाग्य,––"काम रुकने का नहीं अय दिले नाँदा कोई, ख़ुद बख़ुद ग़ैब से हो जायेगा सामाँ कोई।"

ग़ैबत (غیبت) अ. स्त्री.–पीठ पीछा, परोक्ष; अंतर्धान होना, लोप होना, ग़ायब होना; अनुपस्थिति, ग़ैरमौजूदगी।

ग़ैबदाँ (غیبداں) अ. फा. वि.–जो छिपी हुई बातें जाने, अंतर्यामी; जो आनेवाले समय की बातें बता दे, भविष्यवेत्ता।

ग़ैबी (غیبی) अ. वि.–आकाशीय, आस्मानी; दवी, ख़ुदाई; पीठ पीछे की, परोक्ष की।

ग़ैबूबत (غیبوبت) अ. स्त्री.–लोप, छिपाव, दुराव; वियोग, जुदाई; अनुपस्थिति, नामौजूदगी।

ग़ैम (غیم) अ. पुं.–बादल, अभ्र; पिपासा, प्यास; आँख की भीतरी गर्मी।

ग़ैयाफ़ (غیاف) अ. वि.–जिसकी डाढ़ी बहुत लम्बी और घनी हो, रीशाईल।

ग़ैर (غیر) अ. पुं.–अन्य, दूसरा; विभिन्न, मुख़्तलिफ़; अनात्मीय, बेगाना; विरुद्ध, खिलाफ़।

ग़ैरअहम (غیراھم) अ. वि.–जिसका कोई महत्त्व न हो, महत्त्वहीन, साधारण, मामूली।

ग़ैरआईनी (غیرآئینی) अ. फा. वि.–जो क़ानून के विरुद्ध हो, अवैध।

ग़ैरआबाद (غیرآباد) अ. फा. वि.–जो बसा न हो, निर्जन; जो खँडहर हो, वीरान।

ग़ैरइंसानी (غیرانسانی) अ. वि.–जो मनुष्यों-जैसा न हो, अमानुषिक।

ग़ैरक़ानूनी (غیرقانونی) अ. वि.–दे. 'ग़ैरआईनी'।

ग़ैरकारआमद (غیرکارآمد) अ. फा. वि.–जो उपयोग के क़ाबिल न हो, अनुपयुक्त; जो काम न दे, बेकार।

ग़ैरजानिबदार (غیرجانبدار) अ. फा. वि.–जो किसी का पक्षपात न करे, तटस्थ, उदासीन।

ग़ैरजानिबदारी (غیرجانبداری) अ. फा. स्त्री.–निष्पक्षता, अतटस्थता।

ग़ैरज़िम्मःदार (غیرذمہدار) अ. फा. वि.–जो अपनी ज़िम्मःदारी महसूस न करे, दायित्वहीन।

ग़ैरज़िम्मःदारी (غیرذمہداری) अ. फा. स्त्री.–ज़िम्मःदारी का एहसास न होना।

ग़ैरज़ीअक़्ल (غیرذی عقل) अ. वि.–जिसमें बुद्धि न हो, बुद्धिहीन; जिसमें अच्छे बुरे की तमीज़ न हो, विवेकहीन।

ग़ैरज़ीरूह (غیرذی روح) अ. वि.–जिसमें प्राण न हो, निर्जीव, निष्प्राण।

ग़ैरज़ीशुऊर (غیرذی شعور) अ. वि.–जिसमें विवेक और चेतना न हो, जड़।

ग़ैरज़ुरूरी (غیرضروری) अ. वि.–जो आवश्यक न हो, अनावश्यक।

ग़ैरत (غیرت) अ. स्त्री.–लज्जा, लाज, शर्म; स्वाभिमान, ख़ुददारी।

ग़ैरतदार (غیرتدار) अ. फा. वि.–स्वाभिमानी, ख़ुददार।

ग़ैरतनख़्वाहदार (غیرتنخواہدار) अ. फा. वि.–जो वेतन के बिना काम करे, अवैतनिक।

ग़ैरतमंद (غیرتمند) अ. फा. वि.–दे. 'ग़ैरतदार'।

ग़ैरतह्ज़ीबयाफ़्तः (غیرتہذیب یافتہ) अ. फा. वि.–असभ्य, अशिष्ट, नामुहज़्ज़ब।

ग़ैरता'लीमयाफ़्तः (غیرتعلیم یافتہ) अ. फा. वि.–बे पढ़ा-लिखा, निरक्षर; अशिष्ट, असभ्य, उजड्ड।

ग़ैरपसंदीदः (غیرپسندیدہ) अ. फा. वि.–अप्रिय, अरुचिकर; अनुचित, नामुनासिब।

ग़ैरपाएदार (غیرپائدار) अ. फा. वि.–जो टिकाऊ न हो, अदृढ़।

ग़ैरपुख़्तः (غیرپختہ) अ. फा. वि.–जो कच्चा हो (फल आदि), अपक्व; जो निश्चित न हो, ग़ैरयक़ीनी (वचन आदि); जो कच्ची ईंटों का बना हो।

ग़ैरफ़सीह (غیرفصیح) अ. वि.–जिसे साहित्यिक जन असाधु समझें (शब्द आदि), साहित्य में अप्रचलित या अप्रयुक्त शब्द।

ग़ैरफ़ानी (غیرفانی) अ. वि.–जो कभी नष्ट न हो, जो कभी न मरे, अनश्वर, शाश्वत।

ग़ैरफ़ित्री (غیرفطری) अ. वि.–जो प्राकृतिक न हो, अनैसर्गिक, अप्राकृतिक।

ग़ैरमक़्तूअ (غیرمقطوع) अ. वि.–जो कटा न हो, अविछिन्न, अखण्डित।

ग़ैरमक्फ़ूल (غیرمکفول) अ. वि.–वह संपत्ति आदि जो किसी ऋण आदि में रेहन न हो, बंधकहीन।

ग़ैरमक़्बूल (غیرمقبول) अ. वि.–जिसे लोग पसंद न करें, अप्रिय; जो माना न जाय, अमान्य; जो मंज़ूर न हो, अस्वीकृत।

ग़ैरमक्रूह (غیرمکروہ) अ. वि.–जो देखने में कुरूप न हो, शुभदर्शन; जिसका खान-पान घृणित न हो।

ग़ैरमख़्सूस (غیرمخصوص) अ. वि.–जो ख़ास न हो, साधारण, सामान्य।

ग़ैरमग़्शूश (غیرمغشوش) अ. वि.–जिसमें मिलावट न हो, अकृत्रिम।

ग़ैरमज़्रूअः (غیرمزروعہ) अ. वि.–वह भूमि जो बोई-जोती न जाती हो, अकृष्य।

ग़ैरमज़्रूअ (غیرمزروع) अ. वि.–दे. 'ग़ैरमज़्रूअः'।

ग़ैरमत्बूअः (غیرمطبوعہ) अ. वि.–वह पुस्तक जो प्रकाशित न हुई हो, अप्रकाशित, अमुद्रित, हस्तलिखित, पाण्डुलिपि।

ग़ैरमत्बूअ (غیرمطبوع) अ. वि.–जो मनोवांछित न हो, अरुचिकर, नापसंदीदः।

ग़ैरमत्रूकः (غیرمتروکہ) अ. वि.–वह वस्तु जो छोड़ी न गयी हो; वह संपत्ति आदि जो तरीके से अलग हो।

ग़ैरमत्रूक (غیرمتروک) अ. वि.–वह शब्द जो साहित्य में व्यवहृत हो; वह वस्तु जो छोड़ी न गयी हो, अत्याज्यं।

ग़ैरमत्लूब (غیرمطلوب) अ. वि.–जिस वस्तु की इच्छा न हो, अवांछित, अनिच्छित।

ग़ैरमद्ऊ (غیرمدعو) अ. वि.–जो किसी दावत आदि में बुलाया न गया हो, अनिमंत्रित।

ग़ैरमद्ख़ूलः (غیرمدخولہ) अ. वि.–वह स्त्री जो रखेली न हो; जो वस्तु दाखिल की हुई न हो।

ग़ैरमन्क़ूलः (غیرمنقولہ) अ. वि.–वह संपत्ति जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके, जैसे—भूमि आदि, स्थावर, अचल।

ग़ैरमन्क़ूल (غیرمنقول) अ. वि.–जो हट न सके, जिसका स्थानान्तरण न हो सके।

ग़ैरमन्कूहः (غیرمنکوحہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसका विवाह न हुआ हो, अविवाहिता।

ग़ैरमन्कूह (غیرمنکوح) अ. पुं.–वह पुरुष जिसका विवाह न हुआ हो, अविवाहित।

ग़ैरमफ़्तूह (غیرمفتوح) अ. वि.–जो जीता न गया हो, अविजित; जो जीता न जा सके, अजेय; जो हारा न हो, अपराजित।

ग़ैरमम्नूअ (غیرممنوع) अ. वि.–जिसकी मनाही न हो, अनिषिद्ध; जिसका खान-पान वर्जित न हो।

ग़ैरमम्नून (غیرممنون) अकृतज्ञ, अनाभारी, नाशुक्रा, ग़ैरमश्कूर।

ग़ैरमर्ई (غیرمرئی) अ. वि.–जो दिखाई न पड़े, अगोचर, अदृश्य।

ग़ैरमर्ऊब (غیرمرعوب) अ. वि.–जो रोब में आया न हो, जो डरा न हो, वेधड़क, निर्भय।

ग़ैरमर्ग़ूब (غیرمرغوب) अ. वि.–जो पसंदीदः न हो, अप्रिय, अरुचिकर।

ग़ैरमर्तूब (غیرمرطوب) अ. वि.–जो शीतल न हो, जो ठंडा न हो; जिसका स्वभाव शीतप्रधान न हो; जिसमें नमी या तरलता न हो।

ग़ैरमर्बूत (غیرمربوط) अ. वि.–जो क्रमबद्ध न हो, भग्नक्रम, असंबद्ध; जो अंट-शंट हो (बात), बेख़्त, विश्रृंखल।

ग़ैरमश्कूक (غیرمشکوک) अ. वि.–जिसमें कोई शंका न हो, असंदिग्ध।

ग़ैरमश्हूर (غیرمشہور) अ. वि.–जो प्रसिद्ध न हो, अप्रसिद्ध, अविख्यात।

ग़ैरमस्मूम (غیرمسموم) अ. वि.–जो विषयुक्त न हो, जो ज़हरीला न हो, निर्विष।

ग़ैरमा'मूली (غیرمعمولی) अ. वि.–जो साधारण न हो, असाधारण; महत्वपूर्ण, अहम।

ग़ैरमा'यूब (غیرمعیوب) अ. वि.–जिसमें दोष न हो, दोषहीन।

ग़ैरमायूस (غیرمایوس) अ. वि.–जो निराश न हो, निराशाहीन, आशान्वित।

ग़ैरमा'सूम (غیرمعصوم) अ. वि.–जो पाप रहित न हो, पापयुक्त।

ग़ैरमाहिर (غیرماہر) अ. वि.–जो किसी काम का अच्छा ज्ञाता न हो, अविज्ञ।

ग़ैरमुऐयन (غیرمعین) अ. वि.–जो निश्चित न हो, अनिश्चित।

ग़ैरमुकम्मल (غیرمکمل) अ. वि.–जो अधूरा हो, अपूर्ण, नाक़िस।

ग़ैरमुक़र्ररः (غیرمقررہ) अ. वि.–जो मुक़र्रर न हो, अनिश्चित।

ग़ैरमुक़र्रर (غیرمقرر) अ. वि.–दे. 'ग़ैरमुक़र्ररः'।

ग़ैरमुकर्रर (غیرمکرر) अ. वि.–जो दोबारा न हो, जो दोहराया न गया हो; अपरिचित, अनजान।

ग़ैरमुजज़्ज़ा (غیرمجزیٰ) अ. वि.–जो अलग-अलग टुकड़ों में न हो, संबद्ध; जो अध्यायों और खंडों में न हो।

ग़ैरमुजस्सम (غیرمجسم) अ. वि.–जिसने शरीर धारण न किया हो; जिसका कोई रूप निश्चित न हो, निराकार।

ग़ैरमुजाज़ (غیرمجاز) अ. वि.–जिसको किसी कार्य-विशेष की आज्ञा न हो, अनधिकारी।

ग़ैरमुतअल्लिक़ (غیرمتعلق) अ. वि.–जो किसी विषय विशेष से सम्बन्धित न हो, असंगत, असंबद्ध।

ग़ैरमुतअस्सिब (غیرمتعصب) अ. वि.–जिसमें धार्मिक या जातीय संकीर्णता न हो, उदाराशय, बृहच्चित्त।

ग़ैरमुतअस्सिर (غیرمتاثر) अ. वि.–जिसने असर न लिया हो, जो प्रभावित न हुआ हो, अप्रभावित, तटस्थ, निष्पक्ष।

ग़ैरमुतअह्हिल (غیرمتاہل) अ. वि.–जिसका ब्याह न हुआ हो, और जिसके बाल-बच्चे न हों।

ग़ैरमुतग़ैयिर (غیرمتغیر) अ. वि.–जो बिगड़ा न हो, जो ख़राब न हुआ हो, अविकृत, अरूपान्तरित।

ग़ैरमुतदय्यिन (غیرمتدین) अ. वि.–जिसमें दियानतदारी न हो, अविश्वस्त, सत्यानिष्ठ।

ग़ैरमुतनाही (غیرمتناہی) अ. वि.–अपार, असीम, जिसकी सीमा और छोर न हो।

ग़ैरमुतमद्दिन (غیرمتمدن) अ. वि.–जो सभ्य और शिष्ट न हो, असभ्य, अशिष्ट; जंगली, वह्शी।

ग़ैरमुतवक़्क़े' (غیرمتوقع) अ. वि.–जिसकी आशा न हो, अप्रत्याशित; जो आशा से अधिक हो, आशातीत।

ग़ैरमुतशद्दिद (غیرمتشدد) अ. वि.–जो हिंसा पर विश्वास न रखता हो; जो हिंसक न हो, अहिंसक।

ग़ैरमुतशद्दिदानः (غیرمتشددانہ) अ. फा. वि.–जिसमें हिंसा का प्रयोग न हो, शान्तिमय।

ग़ैरमुतहक़्क़िक़ (غیرمتحقق) अ. वि.–जिसकी जाँच-पड़ताल न हुई हो, जिसका निश्चय न हुआ हो, अनिश्चित, संदिग्ध।

ग़ैरमुतहम्मिल (غیرمتحمل) अ. वि.–जिसमें सहनशीलता न हो, असहिष्णु।

ग़ैरमुतहर्रिक (غیرمتحرک) जो चलता-फिरता न हो, अचल; जो अपनी जगह से हिल न सके, गतिहीन।

ग़ैरमुदल्लल (غیرمدلل) अ. वि.–जिसका सुबूत न हो, अप्रमाणित; जिसके लिए कोई दलील न हो, अतर्क्य, अयुक्तिसंगत।

ग़ैरमुनज़्ज़म (غیرمنظم) अ. वि.–जिसका संगठन न हो, असंगठित; जो क्रमबद्ध न हो, बेतर्तीब, असंबद्ध।

ग़ैरमुनासिब (غیرمناسب) अ. वि.–जो उचित न हो, अनुचित; अश्लीलतापूर्ण, फ़ोह्श; उद्दंडतापूर्ण, नामुहज़्ज़ब।

ग़ैरमुम्किन (غیرممکن) अ. वि.–जो हो न सके, असंभव, अशक्य।

ग़ैरमुरव्वज (غیرمروج) अ. वि.–जिसका चलन न हो, ज़ो प्रचलित न हो, अव्यवहृत, अप्रचलित।

ग़ैरमुवस्सक़ (غیرموثق) अ. वि.–जो प्रमाणित न हो; जो निश्चित न हो; जो युक्तिसंगत न हो।

ग़ैरमुशख़्ख़स (غیرمشخص) अ. वि.–जिसका निदान (तशख़ीस) न हुआ हो; जिसके वंश और कुल आदि का पता न हो।

ग़ैरमुशाबेह (غیرمشابہہ) अ. वि.–जो एक दूसरे से मिलते-जुलते न हों, जो एक-जैसे न हो, असहरूप।

ग़ैरमुश्तबह (غیرمشتبہ) अ. वि.–जिसमें संदेह न हो, असंदिग्ध, अविकल्प, यक़ीनी।

ग़ैरमुसद्दक़ः (غیرمصدقہ) अ. वि.–जिस सूचना या वार्ता के झूठ सच का निश्चय न हुआ हो, अविश्वस्त; जिसकी तसदीक न हुई हो, अप्रमाणित।

ग़ैरमुसद्दक़ (غیرمصدق) अ. वि.–दे. 'ग़ैरमुसद्दक़ः'।

ग़ैरमुसल्लम (غیرمسلم) अ. वि.–जो माना न जाय, अमान्य; जिसका सुबूत न हो, अप्रमाणित।

ग़ैरमुसल्लह (غیرمسلح) अ. वि.–जो हथियारबंद न हो, निरस्त्र, शस्त्रहीन।

ग़ैरमुसल्सल (غیرمسلسل) अ. वि.–जो ज़ंजीर में जकड़ा न हो, विशृंखल; जो लगातार न हो, अनिरंतर।

ग़ैरमुसावी (غیرمساوی) अ. वि.–जो बराबर न हो, असमान।

ग़ैरमुस्तक़िल (غیرمستقل) अ. वि.–जो हमेशा के लिए न हो, जो थोड़े दिनों के लिए हो, अस्थायी।

ग़ैरमुस्ततीअ (غیرمستطیع) अ. वि.–जिसमें सामर्थ्य न हो, अशक्त; जो निर्धन हो, धनहीन, दरिद्र।

ग़ैरमुस्तनद (غیرمستند) अ. वि.–जिसके पास प्रमाणपत्र न हो, जो सनदयाफ़्तः न हो; जिसका विश्वास न हो, अविश्वस्त।

ग़ैरमुस्तहक़ (غیرمستحق) अ. वि.–अपात्र, अयोग्य, नाअह्ल; अनधिकारी, ग़ैरहक़दार।

ग़ैरमुस्ता'मल (غیرمستعمل) अ. वि.–जिसका प्रयोग न हुआ हो, अप्रयुक्त; जिसका प्रयोग किया न जाता हो, अव्यवहृत।

ग़ैरमुहज़्ज़ब (غیرمہذب) अ. वि.–दे. 'ग़ैरतहज़ीबयाफ़्तः', अशिष्ट, दु:शील, उजड्ड।

ग़ैरमूहिम (غیرموہم) अ. वि.–जिसमें संदेह न हो, असंदिग्ध, जो भ्रम में न डाले।

ग़ैरमे'मारी (غیرمیعاری) अ. वि.–जो आदर्श के अनुसार न हो; जो विद्वत्तापूर्ण न हो; जो दर्जे से गिरा हुआ हो।

ग़ैरमौजूद (غیرموجود) अ. वि.–अनुपस्थित, ग़ैरहाज़िर; अविद्यमान, नामौजूद।

ग़ैरमौजूदगी (غیرموجودگی) अ. फा. स्त्री.–अनुपस्थिति, ग़ैरहाज़िरी; अविद्यमानता, नामौजूदगी।

ग़ैरमौरूसी (غیرموروثی) अ. वि.–वह ज़मीन या जायदाद जो मौरूसी न हो, अपैतृक।

ग़ैरवाक़िई (غیرواقعی) अ. वि.–जो सत्य न हो, असत्य, झूठ; जो ठीक न हो, अयथार्थ; जो उचित न हो, अनुचित।

ग़ैरवाजिब (غیرواجب) अ. वि.–अनुचित, नामुनासिब; जिसका अदा करना आवश्यक न हो, अदेय।

ग़ैरवाज़ेह (غیرواضح) अ. वि.–जो साफ़-साफ़ न हो, धुँधला, अस्फुट; जिसका स्पष्टीकरण न हुआ हो, अस्पष्ट।

ग़ैरशरीफ़ (غیرشریف) अ. वि.–अकुलीन, हीनयोनि, ग़ैर-खानदानी; अनार्य, असज्जन; अधम, नीच।

ग़ैरशरीफ़ानः (غیرشریفانہ) अ. फा. वि.–नीच लोगों-जैसा, अशिष्टतापूर्ण, अनार्योचित।

ग़ैरसहीह (غیرصحیح) अ. वि.–जो सच न हो, असत्य, झूठ; जो शुद्ध न हो, अशुद्ध; जो तन्दुरुस्त न हो, अस्वस्थ।

ग़ैरसालह (غیرصالح) अ. वि.–अशुद्ध, दूषित, फ़ासिद; असज्जन, नाशरीफ़।

ग़ैरहमदर्द (غیرہمدرد) अ. फा. वि.–जिसमें सहानुभूति न हो, जो दुःख आदि में सहायता न करे।

ग़ैरहाज़िर (غیرحاضر) अ. वि.–जो अपनी डयूटी पर हाज़िर न हो, अनुपस्थित; जो मौजूद न हो, अविद्यमान।

ग़ैरहाज़िरी (غیرحاضری) अ. स्त्री.–अनुपस्थिति; अविद्यमानता।

ग़ैल (غیل) अ. पुं.–मोटा-ताज़ा शिशु; भरी हुई बाँहें; वह दूध जो स्त्री संभोग के समय शिशु को दे।

ग़ैलम (غیلم) अ. स्त्री.–वह लड़की जो पूरी आयु को पहुँच गयी हो और जिसमें कामेच्छा उत्पन्न हो गयी हो; कुएँ का स्रोत।

ग़ैस (غیث) अ. पुं.–वर्षा, वृष्टि, मेंह, बारिश; बरसना; बरसाना।

ग़ैसान (غیسان) अ. पुं.–युवावस्था की तेज़ी, जवानी का जोश, युवावेग।

ग़ैहम (غیہم) अ. स्त्री.–तिमिर, अन्धकार, तारीकी, अँधेरा।

गैहाँ (گیہاں) फा. पुं.–'गैहान' का लघु., दे. 'गैहान'।

गैहान (گیہان) फा. पुं.–संसार, जगत्, दुनिया।

गो

गो (گو) फा. अव्य.–यद्यपि, अगरचे, (प्रत्य.) कहनेवाला, जैसे—'हक़गो' सच्ची बात कहनेवाला।

गो (گو) फा. पुं.–गाय, गो, धेनु; कंदुक, गेंद; पोलो का गेंद (संस्कृत से साम्य)।

गोइंदः (گوئندہ) फा. वि.–कहनेवाला, वक्ता; गुप्तचर, जासूस।

गोइया (گوئیا) फा. अव्य.–दे. 'गोया', यह शब्द अब व्यवहृत नहीं है, इसके स्थान पर 'गोया' बोलते हैं "तुम मेरे पास होते हो गोया"—मोमिन।

गोए (گوے) फा. पुं.–गेंद, कंदुक, पोलो का गेंद।

गोएगिरीबाँ (گوے گریباں) फा. पुं.–गले में लगाने की घुंडी।

गोएचौगाँ (گوے چوگاں) फा. पुं.–पोलो खेलने का गेंद।

गोएबाज़ी (گوےبازی) फा. स्त्री.–गेंद-बल्ले का खेल, क्रिकेट।

ग़ोक (غوک) फा. पुं.–मेंढक, दर्दुर, मंडूक।

गोज़ (گوز) फा. पुं.–अधोवायु, अपान वायु, रियाह।

गोज़ेशुतुर (گوز شتر) फा. पुं.–ऊँट का अपान वायु, अर्थात् ऐसी आवाज़ जिसे कोई न सुने, मिथ्या और फ़ुज़ूल बात।

ग़ोतः (غوطہ) अ. पुं.–डुबकी, मज्जन, पानी में पैठना, मूल शब्द 'ग़ूतः' है, परन्तु वह प्रचलित नहीं है।

ग़ोतःख़ोर (غوطہخور) अ. फा.–डुबकी लगानेवाला, मज्जनार।

ग़ोतःख़ोरी (غوطہخوری) अ. फा. स्त्री.–डुबकी लगाना, गोता मारना।

ग़ोतःगाह (غوطہگاہ) अ. फा. स्त्री.–डुबकी लगाने का स्थान।

ग़ोतःज़न (غوطہزن) अ. फा. वि.–दे. 'ग़ोतःख़ोर'।

ग़ोतःज़नी (غوطہزنی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ग़ोतःख़ोरी'।

गोदबांन (گودبان) फा. पुं.–ऊँट का कोहान।

गोनाब (گوناب) फा. पुं.–ग़ाज़ः, गुलगूनः, मुखचूर्ण, फ़ेस पाउडर।

गोमगो (گومگو) फा. वि.–असमंजस, ऊहापोह, दुबिधा, तज़ब्ज़ुब।

गोयाँ (گویاں) फा. वि.–बोलता हुआ, कहता हुआ।

गोया (گویا) फा. अव्य.–मानो, जैसे, गोया कि (वि.) बोलनेवाला, वक्ता।

गोयाई (گویائی) फा. स्त्री.–वाक्शक्ति, वाचन-शक्ति, बोलने की क़ुव्वत।

ग़ोरः (غورہ) फा. पुं.–कच्चा अंगूर।

ग़ोर (غور) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान का एक प्रसिद्ध नगर।

गोर (گور) फा. स्त्री.–क़ब्र, समाधि-भवन; जंगल, कानन; गोरख़र, जंगली गधा विशेष।

गोरकन (گورکن) फा. वि.–क़ब्र खोदनेवाला; बिज्जू, एक प्रसिद्ध जन्तु जो क़ब्र खोदकर मुर्दे खाता है।

गोरकनी (گورکنی) फा. स्त्री.–क़ब्रें खोदन का काम या पेशा।

गोरख़र (گورخر) फा. पुं.–एक जंगली गधा-विशेष, वन-गर्दभ।

गोरख़ानः (گورخانہ) फा. पुं.–क़ब्र, समाधि-भवन।

गोरपरस्त (گورپرست) फा. वि.–क़ब्र पूजनेवाला, मुसलमानों का वह संप्रदाय जो महात्माओं की कब्रों का सम्मान करता, उन पर चिराग़ जलाता और फूल आदि चढ़ाता है।

गोरपरस्ती (گورپرستی) फ़ा. स्त्री.—क़ब्र पर फूल आदि चढ़ाना और रौशनी करना।

गोलः (گولہ) फा. पुं.—गोल पिंड, गोल चीज़; तोप आदि का गोला।

गोलःअंदाज़ (گولہ انداز) फा. वि.—तोपची, तोप का गोला चलानेवाला।

गोलःबारी (گولہ باری) फा. स्त्री.—तोप से गोलों की वर्षा।

ग़ोल (غول) फा. पुं.—कान, कर्ण; सैनिकों का दल; समूह, समुदाय, भीड़; दे. 'ग़ूल'।

ग़ोल (غول) तु. पुं.—वह सेना जिसके साथ सेनापति हो।

गोल (گول) फा. वि.—मूर्ख, मूढ़, अनाड़ी।

ग़ोलबियाबाँ (غول بیاباں) फा. पुं.—दे. 'ग़ूले बियाबाँ'।

गोशः (گوشہ) फा. पुं.—घर का कोना, एकान्त; ज़ावियः, कोण।

गोशःगीर (گوشہ گیر) फा. वि.—दे. 'गोशःनशीं'।

गोशःगीरी (گوشہ گیری) फा. स्त्री.—दे. 'गोशःनशीनी'।

गोशःगुज़ीं (گوشہ گزیں) फा. वि.—दे. 'गोशःनशीं'।

गोशःगुज़ीनी (گوشہ گزینی) फा. स्त्री.—दे. 'गोशःनशीनी'।

गोशःनशीं (گوشہ نشیں) फा. वि.—एकान्तवासी, कोने में बैठनेवाला; सबसे अलग-थलग अकेला रहनेवाला।

गोशःनशीनी (گوشہ نشینی) फा. स्त्री.—एकान्त में रहना; सबसे अलग होकर अकेला रहना।

गोश (گوش) फा. पुं.—कान, श्रवण, कर्ण।

गोशएइंज़िवा (گوشۂ انزوا) फा. अ. पुं.—एकान्त, निर्जन स्थान, जहाँ कोई न हो ऐसा छोटा-सा स्थान।

गोशएतनहाई (گوشۂ تنہائی) फा. पुं.—एकान्त, गोशए इंज़िवा,—"सैकड़ों हस्रतें आबाद किये हैं इसको, कौन कहता है कि दिल गोशए तनहाई है।"

गोशएकमाँ (گوشہ کماں) फा. पुं.—कमान का चिल्ला।

गोशएचश्म (گوشۂ چشم) फा. पुं.—आँख का कोना।

गोशख़ा (گوش خا) फा. स्त्री.—कनसलाई, एक लंबा और पतला कीड़ा जो कान में घुसकर बड़ा कष्ट देता है।

गोशगिराँ (گوش گراں) फा. वि.—जिसे ऊँचा सुनाई देता हो, बहरा, बधिर।

गोशगुज़ार (گوش گزار) फा. वि.—कहा हुआ, प्रार्थित, कथित, श्रुत।

गोशज़द (گوش زد) फा. वि.—कान में पड़ी हुई बात, श्रुत, सुना हुआ।

गोश ता गोश (گوش تاگوش) फा. वि.—इधर से उधर तक, इस सिरे से उस सिरे तक।

गोशदार (گوش دار) फा. वि.—बात सुनने के लिए कान लगानेवाला, कनसुए लेनेवाला; निरीक्षक, निगहबान।

गोशदारी (گوش داری) फा. स्त्री.—कनसुए लेना; निरीक्षण, देखरेख।

गोशबरआवाज़ (گوش بر آواز) फा. वि.—आवाज़ की आहट पर कान लगाये हुए, उत्कर्ण।

गोशमाल (گوش مال) फा. वि.—कान उमेठनेवाला; कान उमेठना।

गोशमाली (گوش مالی) फा. स्त्री.—कान उमेठना, लड़कों अथवा छोटे नौकरों को सज़ा देने के लिए उनके कान मलना।

गोशमाही (گوش ماہی) फा. पुं.—घोंघा; सीप; पियाला।

गोशवारः (گوشوارہ) फा. पुं.—किसी हिसाब आदि के अलग-अलग व्योरे का काग़ज़; कान का लटकन, बुंदा।

गोशे शुन्वा (گوش شنوا) फा. पुं.—सुननेवाला कान, वह कान जो बात ग़ौर से सुने, अर्थात् वह व्यक्ति जो बात पर कान धरे।

गोशे होश (گوش ہوش) फा. पुं.—होश के कान, होशियारी और सतर्कता से बात सुनना।

गोश्त (گوشت) फा. पुं.—मांस, आमिष, माँस।

गोश्तख़ोर (گوشت خور) फा. वि.—गोश्त खानेवाला, मांसाहारी; जो प्रकृति से मांसाहारी हो, जैसे—सिंह आदि।

गोश्तख़ोरी (گوشت خوری) फा. स्त्री.—गोश्त खाना, मांसाहार, मांसभक्षण।

गोसालः (گوسالہ) फा. पुं.—गाय का बछड़ा, गोवत्सल।

गोसालए फ़लक (گوسالۂ فلک) फा. अ. पुं.—वृषराशि, बुर्जे सौर।

गोस्पंद (گوسپند) फा. स्त्री.—बकरी, अजा।

गोस्फ़ंद (گوسفند) फा. स्त्री.—दे. 'गोस्पंद'।

गौ

ग़ौग़ा (غوغا) फा. पुं.—कोलाहल, शोर; हाहाकार, कोहराम।

ग़ौग़ाई (غوغائی) फा. वि.—कोलाहल करनेवाला, शोर मचानेवाला।

ग़ौज़ (غوز) अ. पुं.—संकल्प, निश्चय, इरादा।

ग़ौत (غوط) अ. पुं.—किसी चीज़ में घुसना; एक चीज़ का दूसरी चीज़ में समाना।

ग़ौर (غور) अ. पुं.—चिन्तन, मनन, सोच; विचार, ध्यान, ख़याल; तन्मयता, इन्हिमाक; तसव्वुर, अनुध्यान; तवज्जुह, ध्यान।

ग़ौरतलब (غور طلب) अ. वि.—जिस पर विचार किया जाय, विचारणीय; जिस पर विचार आवश्यक हो।

ग़ौरोख़ौज़ (غور و خوض) अ. पुं.—सोच-विचार, बहुत अधिक ग़ौर।

ग़ौरोपर्दाख़्त (غور و پرداخت) अ. फा. स्त्री.–देखरेख, पालन-पोषण।

ग़ौल (غول) अ. पुं.–दुःख, रंज; हत्या, हनन, हलाक; अचानक पकड़ लेना।

ग़ौस (غوث) अ. पुं.–वह मुसलमान महात्मा जो वली से बड़ा पद रखता है, (वि.) दुहाई सुननेवाला, न्यायकर्ता; न्याय के लिए पुकारना, दुहाई देना।

ग़ौस (غوص) अ. पुं.–पानी में पैठना, ग़ोता मारना; अचानक किसी चीज़ पर उतरना।

गौहर (گوہر) फा. पुं.–मुक्ता, मुक़्तक, मुक़्ताहल, मोती।

गौहरअफ़्शाँ (گوہر افشاں) फा. वि.–मोती बिखेरनेवाला; ऐसी मीठी बातें करनेवाला मानो मोती बिखर रहे हों।

गौहरअफ़्शानी (گوہر افشانی) फा. स्त्री.–मोती बिखेरना; मीठी-मीठी बातें करना।

गौहरफ़रोश (گوہرفروش) फा. वि.–मोती बेचनेवाला, जौहरी; गुणग्राहकों के सामने अपने गुणों का प्रदर्शन करनेवाला।

गौहरफ़रोशी (گوہرفروشی) फा. स्त्री.–मोती बेचना; गुणग्राहकों के सामने गुणों का प्रदर्शन।

गौहरफ़िशाँ (گوہرفشاں) फा. वि.–दे. 'गौहरअफ़्शाँ'।

गौहरफ़िशानी (گوہرفشانی) फा.स्त्री.–दे.'गौहरअफ़्शानी'।

गौहरबार (گوہربار) फा. वि.–मोती बरसानेवाला, मुक्तावर्षक; रोनेवाला (विशेषतः आँख)।

गौहरबारी (گوہرباری) फा. स्त्री.–मोती लुटाना; रोना, आँसू बहाना।

गौहररेज़ (گوہرریز) फा. वि.–दे. 'गौहरबार'।

गौहररेज़ी (گوہرریزی) फा. स्त्री.–दे. 'गौहरबारी'।

गौहरशनास (گوہرشناس) फा. वि.–मोती की परख रखनेवाला, जौहरी; गुण की परख रखनेवाला, गुणग्राही।

गौहरशनासी (گوہرشناسی) फा. स्त्री.–मोती की परख; गुणों की परख।

गौहरसंज (گوہرسنج) फा. वि.–मोती तौलनेवाला, जौहरी; गुणों का परखनेवाला; अच्छी कविता करनेवाला।

गौहरसंजी (گوہرسنجی) फा. स्त्री.–मोती तौलना, जौहरी का काम; गुणों की परख; अच्छी कविता करना।

गौहरे ताबाँ (گوہر تاباں) फा. पुं.–बहुत अच्छी चमक देनेवाला मोती।

गौहरे दंदाँ (گوہردنداں) फा. पुं.–मोतियों-जैसे दाँत, मोतीरूपी दाँत।

गौहरे यकता (گوہر یکتا) फा. पुं.–वह मोती जो सीप में एक ही होता है, इसलिए बड़ा और बहुमूल्य होता है।

च

चंग (چنگ) फा. पुं.–एक टेढ़े आकार का बाजा; मुट्ठी, पंजा; हर टेढ़ी वस्तु।

चंगनवाज़ (چنگ نواز) फा. वि.–चंग बजानेवाला।

चंगनवाज़ी (چنگ نوازی) फा. स्त्री.–चंग बजाने का काम या पेशा।

चंगलूक (چنگ لوک) फा. वि.–जिसके हाथ-पाँव टेढ़े हों, लुंझा।

चंगाल (چنگال) फा. पुं.–दे. 'चंगुल'।

चंगी (چنگی) फा. वि.–चंग बजानेवाला।

चंगुल (چنگل) फा. पुं.–मनुष्य का पंजा; पक्षी का पंजा; शेर आदि का पंजा।

चंगूक (چنگوک) फा. वि.–दे. 'चंगलूक'।

चंगेज़ (چنگیز) तु. पुं.–दे. शुद्ध उ. 'चिंगेज़'।

चंदः (چندہ) फा. पुं.–वह धन जो बहुत-से लोगों से लेकर किसी कार्य-विशेष में व्यय किया जाता है।

चंद (چند) फा. वि.–थोड़े, कतिपय, कितने।

चंदगाह (چندگاہ) फा. स्त्री.–बहुधा, प्रायः, अक्सर।

चंद दर चंद (چند درچند) फा. वि.–बहुत अधिक।

चंदन (چندن) एक प्रसिद्ध सुगंधित लकड़ी, संदल।

चंदमर्दः (چندمردہ) फा. वि.–वह व्यक्ति जो अकेला कई आदमियों का काम करे।

चंदरोज़ः (چندروزہ) फा. वि.–थोड़े दिनों का, अस्थायी; जो अधिक काम न दे, बोदा; जो नाशवान् हो, नश्वर, फ़ानी।

चंदसालः (چندسالہ) फा. वि.–जो थोड़ी आयु का हो; जो थोड़े वर्षों के लिए हो; जो थोड़े वर्षों में समाप्त हो।

चंदाँ (چنداں) फा. अव्य.–इतना, इस क़दर; कितना, किस क़दर; ज़रा भी, कुछ भी।

चंदाल (چندال) फा. पुं.–अधम, नीच, चांडाल; चौकीदार, रखवाला।

चंदीं (چندیں) फा. अव्य.–इतना, इस क़दर; कितना, किस क़दर।

चंदे (چندے) फा. वि.–थोड़े दिन; थोड़ी देर।

चंबर (چنبر) फा. वि.–परिधि, मुहीत; बड़ी डफ़ली, डफ़; घेरा, हल्का; तौक़, गले का एक आभूषण; कमंद, ऊपर चढ़ने की रस्सी; क़ैद, कारावास; चक्कर देना।

चंबरीं (چنبریں) फा. वि.–गोल, मंडलाकार।

चक (چک) फा. पुं.–दस्तावेज़, लेख्य; बैनामा, विक्रय-लेख; सीमा, हद; क्षेत्र, रक्बा; उद्यान, बाग़; आदेशपत्र,

हुक्मनामा; धुनकी की मूठ; खलियान समेटने की पाँच शाखावाली लकड़ी, पचा; वृत्ति, वज़ीफ़ा।

चकश (چکش) फा. पुं.–श्येन का घोंसला, बाज़ के रहने का स्थान।

चकस (چکس) फा. पुं.–दे. ‘चकश’।

चकाद (چکاد) फा. स्त्री.–ललाट, माथा।

चकावक (چکاوک) फा. पुं.–चंडूल, एक मधुरस्वर पक्षी; टटीरी, टिट्टिभि।

चकीदः (چکیده) फा. वि.–टपका हुआ, गिरा हुआ।

चकीदनी (چکیدنی) फा. वि.–टपकने योग्य, गिरने योग्य।

चकुश (چکش) तु. पुं.–लोहार का हथौड़ा।

चकोचानः (چکوچانه) फा. पुं.–योग्यता, विद्वत्ता, क़ाबिलीयत; पात्रता, इस्ते’दाद।

चक्मः (چکمه) तु. पुं.–मोज़ा, जुर्राब; बूट जूता।

चक़्माक़ (چقماق) तु. पुं.–एक आग देनेवाला पत्थर, अग्नि प्रस्तर; व्यंग, कटाक्ष, तंज़।

चक्रः (چکره) फा. पुं.–बूँद-बूँद टपकना।

चक्लः (چکله) तु. पुं.–वेश्यालय, रंडियों का महल्ला।

चक्श (چکش) तु. पुं.–लोहारों का हथौड़ा, दे. ‘चकुश’, दोनों शुद्ध हैं।

चक्श (چکش) फा. पुं.–बुलबुल अथवा बाज़ आदि के विठाने की लकड़ी, अड्डा।

चक्सः (چکسه) फा. पुं.–पुड़िया, जिसमें सौदा बँधा होता है।

चख़ (چخ) फा. स्त्री.–कलह, झगड़ा; कहा-सुनी, तू-तू, मैं-मैं।

चख़श (چخش) फा. स्त्री.–गले की बतौड़ी, रसौली।

चख़िंदः (چخنده) फा. वि.–लड़नेवाला।

चख़ीं (چخین) फा. वि.–दुःखित, क्लेशित, रंजीदा।

चख़ीदः (چخیده) फा. वि.–लड़ा हुआ, जो लड़ा हो।

चख़ीदनी (چخیدنی) फा. वि.–लड़ने योग्य।

चग़ (چغ) फा. स्त्री.–मठा फेरने की रई।

चग़रिश्तः (چغرشته) फा. पुं.–सूत की पिंडिया, अंटी।

चग़ाज़ (چغاز) फा. स्त्री.–व्यभिचारिणी, फ़ाहिशा, कुलटा; मुँहफट और वाचाल स्त्री।

चग़ानः (چغانه) फा. पुं.–धुनिए की मूठ-जैसी एक लकड़ी में झाँझें डालकर बजाने का एक बाजा।

चग़ानःज़न (چغانه‌زن) फा. वि.–चग़ाना बजानेवाला।

चगिल (چگل) फा. पुं.–दे. ‘चिगिल’।

चग़ूक (چغوک) फा. पुं.–चटक, गौरैया पक्षी; सुर्ख़ाब पक्षी।

चग़ज़ (چغز) फा. पुं.–मेंढक, दर्दुर, मंडूक; वह फोड़ा जिसका मुँह बंद हो और भीतर पीप हो।

चज़ (چز) फा. पुं.–कपि, बंदर, वानर।

चतूक (چتوک) फा. पुं.–दे. ‘चग़ूक’।

चत्र (چتر) फा. पुं.–छत्री, छाता; वह छाता जो राजाओं के सर पर लगाया जाता है।

चत्रज़न (چترزن) फा. वि.–ज़मीन पर हाथ टेककर और पाँव ऊपर करके खड़ा होनेवाला।

चत्रपोश (چترپوش) फा. वि.–जो छाते से ढँका हो, जिस पर छाता लगा हो।

चत्रवश (چتروش) फा. वि.–छाते-जैसा, छाते की तरह गोल और सायादार।

चत्रसाँ (چترسان) फा. वि.–दे. ‘चत्रवश’।

चत्रे अंबरीं (چتر عنبریں) फा. अ. पुं.–रात्रि, रात, निशा।

चत्रे आबगूँ (چتر آبگوں) फा. पुं.–आकाश, आस्मान।

चत्रे कुह्‌ली (چتر کحلی) फा. अ. पुं.–आकाश, आस्मान; काली घटा।

चत्रे ज़रनिगार (چتر زرنگار) फा. पुं.–सोने के काम से सुसज्जित छाता; ताराओं जड़ा आकाश।

चत्रे नूर (چتر نور) फा. अ. पुं.–सूर्य, सूरज।

चत्रे शाही (چتر شاهی) फा. पुं.–बादशाहों के सर पर लगाया जानेवाला बड़ा छाता।

चत्रे सीमाबी (چتر سیمابی) फा. पुं.–दे. ‘चत्रे सीमीं’।

चत्रे सीमीं (چتر سیمیں) फा. पुं.–पूरा चाँद, पूर्णचंद्र।

चनाब (چناب) फा. पुं.–रावटी की लकड़ी का छेद।

चनार (چنار) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध वृक्ष, कहते हैं कि रात को इसमें से चिनगारियाँ झड़ती हैं।

चप (چپ) फा. वि.–बायाँ, वाम; वायीं ओर, उलटी तरफ़।

चपअंदाज़ (چپ‌انداز) फा. वि.–वह तीरअंदाज़ जिसका तीर निशाने पर पड़कर लौट आये; छली, ठगिया।

चपकन (چپکن) फा. स्त्री.–अचकन के प्रकार का एक वस्त्र, अँगरखा।

चपक़ुलश (چپقلش) तु. स्त्री.–खींचातानी, आपाधापी; भीड़-भाड़, जगह की तंगी; झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई।

चपचलः (چپچله) फा. पुं.–झूला, झूलने का यंत्र; रपटन, फिसलन।

चपत (چپت) फा. स्त्री.–दे. ‘चपात’।

चपदादः (چپ‌داده) फा. वि.–छोड़ा हुआ, त्यक्त।

चपदिहंदः (چپ‌دهنده) फा. वि.–छोड़नेवाला, त्यागी।

चपरास (چپراس) फा. स्त्री.–कमर में बाँधने की पेटी, जो चौकीदार और सरकारी पियादे लगाते हैं।

चपरासी (چپراسی) फा. पुं.–चपरास बाँधनेवाला; माल के विभाग का सम्मन आदि ता’मील करनेवाला व्यक्ति।

चपात (چپات) फा. स्त्री.–चपत, थप्पड़।

चपाती (چپاتی) फा. स्त्री.–पतली रोटी, जो हाथ पर वढ़ायी गयी हो और बड़ी हो।

चपार (چپار) फा. पुं.–'चापार' का लघु., डाक; डाकिया।

चपोरास्त (چپوراست) फा. पुं.–दायें-बायें, इधर-उधर, दोनों ओर।

चप्पः (چپہ) फा. पुं.–जो उलटे हाथ से सारा काम करता हो, खब्बा।

चफ़ालः (چفالہ) फा. पुं.–सेना, फ़ौज; पक्षियों का झुंड।

चफ़ीदः (چفیدہ) फा. वि.–चिपका हुआ।

चफ़ीदनी (چفیدنی) फा. वि.–चिपकने योग्य।

चफ़्तः (چفتہ) फा. वि.–वक्र, टेढ़ा; धन्वाकार, ख़मीदः; मिथ्यारोप, तोहमत; बकरी का सिर, सिरी।

चफ़्त (چفت) फा. स्त्री.–अंगूर आदि की टट्टी, बाँस की खपच्चियों से वनी हुई चौकोर टट्टी।

चफ़्सीदः (چفسیدہ) फा. वि.–चिपका हुआ।

चबाग़ (چباغ) फा. स्त्री.–एक मछली।

चबूतरः (چبوترہ) फा. पुं.–दे. 'चौतरा'।

चबग़ुत (چبغت) फा. पुं.–रुई भरा हुआ पुराना कपड़ा।

चम (چم) फा. पु.–इठलाती हुई चाल; पेच।

चमगर्दिश (چمگردش) फा. स्त्री.–इठलाकर चलना; खिरामेनाज़।

चमन (چمن) फा. पुं.–उद्यान, आराम, वाटिका, वाग़।

चमनआरा (چمن آرا) फा. वि.–वाग़ को सँवारने और सजानेवाला, माली, उद्यानपाल।

चमनआराई (چمن آرائی) फा. स्त्री.–वाग़ के सजाने का काम।

चमनपैरा (چمن پیرا) फा. वि.–दे. 'चमनआरा'।

चमनपैराई (چمن پیرائی) फा. स्त्री.–दे. 'चमनआराई'।

चमनबंद (چمن بند) फा. वि.–वाग़ सजानेवाला; वाग़ लगानेवाला।

चमनबंदी (چمن بندی) फा. स्त्री.–वाग़ की सजावट; वाग़ के लिए पेड़ लगाना।

चमनिस्ताँ (چمنستاں) फा. पुं.–'चमनिस्तान' का लघु., दे. 'चमनिस्तान'।

चमनिस्तान (چمنستان) फा. पुं.–चमन, वाग़।

चमाँ (چماں) फा. वि.–इठलाकर चलनेवाला; चलने में इठलाता हुआ।

चमानः (چمانہ) फा. पुं.–तोंवी का पियाला जिसमें खाते पीते हैं (वि.) इठलाता हुआ, इठलाकर चलता हुआ।

चमान (چمان) फा. पुं.–पेशाव-पाखाने के कीड़े।

चमिंदः (چمندہ) फा. वि.–इठलाते हुए टहलनेवाला।

चमिश (چمش) फा. स्त्री.–लचक, इठलाहट।

चमी (چمی) फा. वि.–जो भौतिक न हो, मानसिक, मानवी।

चमीदः (چمیدہ) फा. वि.–जो इठलाकर टहला हो, टहलता या चलता हो।

चमीद (چمید) फा. स्त्री.–लचक, मटक, इठलाहट।

चमीदनी (چمیدنی) फा. वि.–लचकने योग्य, नाज़ से चलने योग्य।

चमीन (چمین) फा. पुं.–पेशाब, पाख़ाना।

चमोख़म (چم و خم) फा. पुं.–नाज़ोअंदाज़, हावभाव।

चम्चः (چمچہ) तु. पुं.–हाँडी चलाने का पात्रविशेष; खाने का पात्रविशेष।

चरंदः (چرندہ) फा. पुं.–दे. 'चरिंदः', दो. शु. हैं।

चर (چر) फा. प्रत्य.–चरनेवाला; जैसे–'काहचर' घास चरनेवाला।

चरस (چرس) फा. पुं.–शिकंजः, अड़गड़ा; चरागाह, गोचर; भीख का माल।

चरा (چرا) फा. अव्य.–क्यों, किसलिए, किस कारण, (पु.) चरागाह, पशुओं के चरने का स्थान; चरना।

चराग़ (چراغ) फा. पुं.–दीप, दीपक, दिया; चरना।

चराग़दान (چراغدان) फा. पुं.–चराग़ रखने का पात्र, दीवट आदि।

चराग़पा (چراغ پا) फा. पुं.–दीवट, चिराग़दान, (वि.) जो अलफ़ हो गया हो; जो ग़ुस्से में आपे से बाहर हो गया हो।

चरागर (چراگر) फा. वि.–चरनेवाला।

चराग़वारः (چراغوارہ) फा. पुं.–दीवट, चराग़दान; क़ंदील।

चराग़ां (چراغاں) फा. पुं.–जलते हुए चराग़ों की क़तारें, दीपावली; पंक्तियों में बहुत-से दीपक जलाने का कर्म; अपराधी को शारीरिक यातना देने की एक अमानुषिक शैली, जिसमें उसके सिर पर बहुत से घाव बनाकर हर घाव में एक जलती हुई बत्ती रखते थे।

चरागाह (چراگاہ) फा. स्त्री.–गो आदि के चरने का स्थान, गोचर।

चराग़ी (چراغی) फा. स्त्री.–किसी बुज़ुर्ग के मज़ार पर फातेहा दिलानेवाले से रोशनी के लिए लिया जानेवाला पैसा।

चराग़े आस्मानी (چراغ آسمانی) फा. पुं.–विद्युत्, बिजली।

चराग़े कुश्तः (چراغ کشتہ) फा. पुं.–बुझा हुआ दीपक।

चराग़े तहेदामन (چراغ تہ دامن) फा. पुं.–हवा के वेग से बचाने के लिए दामन के नीचे किया हुआ दीपक।

चराग़े मज़ार (چراغِ‌مزار) फा. अ. पुं.–क़ब्र पर जलनेवाला दिया; आशिक़ की क़ब्र पर जलनेवाला दीपक, यह शब्द विशेषतः इन्हीं अर्थों में बोला जाता है।

चराज़न (چرازن) फा. वि.–चरनेवाला, घास खानेवाला, पशु, जानवर।

चरिंदः (چرندہ) फा. वि.–पशु, चौपाया, मवेशी, चरनेवाला।

चरिंद (چرند) फा. पु.–दे. ‘चरिंदः।

चरीदः (چریدہ) फा. वि.–चरा हुआ, जिसे चरा गया हो।

चरीदनी (چریدنی) फा. वि.–चरने योग्य।

चर्कस (چرکس) तु. पुं.–एक तुर्की जाति।

चर्ख़ः (چرخہ) फा. पुं.–सूत या ऊन कातने का यंत्र, चर्ख़ा।

चर्ख़ (چرخ) फा. पुं.–चक्कर, चक्र; आकाश, आस्मान; कुम्हार का चाक; पहिया, चक्र; कड़ा धनुष; रहट, कुएँ से पानी निकालने का गर्रा; दामन का घेर; चारों ओर फिरना, घूमना; कुर्ते का गला।

चर्ख़अंदाज़ (چرخ انداز) फा. वि.–अच्छा तीर चलानेवाला, धनुर्धर।

चर्ख़क़बा (چرخ قبا) फा. अ. पुं.–एक प्रकार की अतलस।

चर्ख़गी (چرخگی) फा. स्त्री.–पहलवान का अखाड़े में जीतने के समय ख़ुशी से नाचना-कूदना।

चर्ख़ज़न (چرخ زن) फा. वि.–नाचनेवाला, (वाली) नर्तक, नर्तकी; पर्यटन करनेवाला, सैयाह।

चर्ख़ज़नी (چرخ زنی) फा. स्त्री.–नाचना; पर्यटन करना।

चर्ख़जी (چرخچی) फा. स्त्री.–सेना का आगे चलनेवाला दस्ता।

चर्ख़रीसक (چرخ ریسک) फा. पुं.–झींगुर।

चर्ख़ाब (چرخاب) फा. पु.–जलावर्त, भँवर, (चर्ख़=चक्कर+आब=पानी) गिर्दाब।

चर्ख़ी (چرخی) फा. स्त्री.–कपास ओटने का यंत्र; पतंग की डोर लपेटने का हुचका; एक आतशबाज़ी; फिरकी।

चर्ख़ुश्त (چرخشت) फा. पुं.–कोल्हू।

चर्ख़ूक (چرخوک) फा. पुं.–लट्टू।

चर्ख़े कमाँ (چرخِ کماں) फा. पुं.–धनुष का घेरा।

चर्ख़े फ़लक (چرخِ فلک) फा. अ. पुं.–सब से ऊँचा आकाश, जिस पर ईश्वर का सिंहासन है, अर्श।

चर्ख़े बरीं (چرخِ بریں) फा. पुं.–ऊँचा आकाश; सबसे ऊपरवाला आकाश।

चर्ग़ (چرغ) फा. पुं.–श्येन, शिक्रा बाज़, शिकारी पक्षी; लकड़बग्घा, चर्ख़ा।

चर्ग़द (چرغد) फा. पुं.–झींगुर।

चर्ग़ीनः (چرغینہ) फा. वि.–नीच, कमीना, अधम।

चर्ज़ः (چرزہ) फा. पुं.–मनुष्य अथवा पशु की ख़ाल।

चर्ज़ (چرز) फा. पुं.–एक पक्षी।

चर्तः (چرتہ) फा. पुं.– दे. ‘चर्दः’।

चर्दः (چردہ) फा. पुं.–रंग, वर्ण, परंतु यह शब्द केवल ‘सियाह’ के साथ बोला जाता है, और ‘काले रंगवाला’ का अर्थ देता है।

चर्बः (چربہ) फा. पुं.–वह महीन और चिकना काग़ज़ जो दूसरे काग़ज़ पर रखकर उसके वेलबूटे उतारने के काम आता है, अक्सी काग़ज़; इस प्रकार उतारा हुआ काग़ज़; ख़ाका, रेखाचित्र; नक़्ल, प्रतिलिपि।

चर्ब (چرب) फा. वि.–चिकना, स्निग्ध, घी में चुपड़ा या मला हुआ, घी में तलना, सेंकना।

चर्बआख़ोर (چرب آخور) फा. वि.–वह व्यक्ति जो बिना परिश्रम के तर माल खाता हो, मुफ़्तख़ोर।

चर्बक (چربک) फा. पुं.–पूरी, घी में तला हुआ फुलका; मलाई, क्षीरस्तर; वह महीन काग़ज़ जिस पर दूसरे चित्र का अक्स लिया जाता है।

चर्बक़ामत (چرب قامت) फा. अ. वि.–अच्छे डीलडौल का, सुडौल।

चर्बज़बाँ (چرب زباں) फा. वि.–चापलूस, चाटुकार, ख़ुशामदी; मुखर, वाचाल, बातूनी; ख़ुशामद से मीठी-मीठी बातें करनेवाला।

चर्बज़बानी (چرب زبانی) फा. स्त्री.–चापलूसी; बातूनी होना; मीठी-मीठी बातें करना।

चर्बदस्त (چرب دست) फा. वि.–किसी काम में होशियार, सिद्धहस्त; दस्तकार, शिल्पकार।

चर्बदस्ती (چرب دستی) फा. स्त्री.–काम में कुशलता; दस्तकार होना।

चर्बपहलू (چرب پہلو) फा. वि.–चर्बीला, मोटा-ताज़ा; वह व्यक्ति जिसके पास बैठना उठना लाभदायक हो।

चर्बिंदः (چربندہ) फा. वि.–जीतनेवाला, विजेता।

चर्बिंदगी (چربندگی) फा. स्त्री.–विजय, जीत।

चर्बीदः (چربیدہ) फा. वि.–जीता हुआ, जो जीत गया हो, प्राप्तविजय।

चर्बीदनी (چربیدنی) फा. वि.– जीतने योग्य, जेय।

चर्बू (چربو) फा. स्त्री.–चर्बी, मेदा।

चर्बोख़ुश्क (چرب و خشک) फा. पुं.–अच्छा-बुरा, बुरा-भला; उदार और कंजूस।

चर्मः (چرمہ) फा. पुं.–गोन, ख़ुर्जी।

चर्म (چرم) फा. पुं.–चमड़ा, चर्म, (संस्कृत का फ़ार्सी में प्रचलित तत्सम रूप)।

चर्मदाँ (چرمداں) फा. पुं.–चमड़े का थैला।

चर्मदोज़ (چرمدوز) फा. वि.–चमड़ा सीनेवाला, मोची, चर्मकार।

चर्मदोज़ी (چرمدوزی) फा. स्त्री.–चमड़ा सीने का काम, मोचीपन।

चर्मीं (چرمیں) फा. वि.–चमड़े का बना हुआ।

चर्मीनः (چرمینہ) फा. पुं.–चमड़े की बनी हुई वस्तु।

चर्मे आहू (چرمِ آہو) फा. पुं.–हिरन का चमड़ा।

चर्विंदः (چروندہ) फा. वि.–दौड़नेवाला; उपाय ढूँढ़नेवाला।

चर्वीदः (چرویدہ) फा. वि.–दौड़ा हुआ; उपाय ढूँढ़ा हुआ।

चलंजू (چلنجو) फा. वि.–वह व्यक्ति जो कपड़ा जल्द मैला करता हो।

चलपची (چلپچی) फा. स्त्री.–हाथ धोने का एक विशेष-पात्र।

चलाली (چلالی) फा. पुं.–छींका।

चलिंदः (چلندہ) फा. वि.– चलनेवाला।

चलीदः (چلیدہ) फा. वि.–चला हुआ।

चलीदनी (چلیدنی) फा. वि.–चलने योग्य।

चलीपा (چلیپا) फा. वि.–सलीव, क्रास।

चलीपाई (چلیپائی) फा. वि.–सलीब के आकार का।

चल्पक (چلپک) फा. स्त्री.–पूरी, घी में सिंकी हुई रोटी।

चल्पासः (چلپاسہ) फा. स्त्री.–छिपकली, गृहगोधा, दे. 'चिल्पासः', दो. शु. हैं।

चल्ब (چلب) फा. स्त्री.–झाँझ।

चशः (چشہ) फा. पुं.–चटनी, चाटने की खट-मिट्ठी चीज़; अवलेह, लऊक़।

चश (چش) फा. प्रत्य.–चखनेवाला, जैसे—'लज़्ज़तचश' मज़ा चखनेवाला।

चशक (چشک) फा. स्त्री.–चखावट।

चशिंदः (چشندہ) फा. वि.–चखनेवाला।

चशीदः (چشیدہ) फा. वि.–चखा हुआ।

चशीदनी (چشیدنی) फा. वि.–चखने योग्य।

चश्पर (چشپر) फा. पुं.–पाँव का चिह्न।

चश्मः (چشمہ) फा. पुं.–सोता, स्रोत; सरिता, छोटी नदी; उपनेत्र, ऐनक; प्राकृतिक स्रोत, कुंड।

चश्मःगाह (چشمہگاہ)–फा. स्त्री.–चश्मे का स्थान।

चश्मःज़ार (چشمہزار) फा. पुं.–जहाँ चश्मे ही चश्मे हों।

चश्मःसार (چشمہسار) फा. पुं.–दे. 'चश्मःज़ार', चश्मों से भरा हुआ स्थान।

चश्म (چشم) फा. पुं.–नेत्र, नयन, चक्षु, आँख; आशा, उम्मीद।

चश्मए आफ़ताब (چشمۂ آفتاب) फा. पुं.–सूरज, सूर्य।

चश्मए ख़िज़्र (چشمۂ خضر) फा. अ. पुं.–आवेहयात का चश्मा, अमृत कुंड।

चश्मए गर्म (چشمۂ گرم) फा. पुं.–वह सोता जहाँ से गर्म पानी निकलता हो।

चश्मए सीमाब (چشمۂ سیماب) फा. पुं.–सूरज, सूर्य।

चश्मए होर (چشمۂ ہور) फा. पुं.–सूरज, सूर्य।

चश्मए हैवाँ (چشمۂ حیواں) फा. अ. पुं.–दे. 'चश्मए ख़िज़्र'।

चश्मक (چشمک) फा. स्त्री.–गुप्त बात के लिए आँख का संकेत; उपनेत्र, ऐनक।

चश्मकज़न (چشمکزن) फा. वि.–आँख से संकेत करनेवाला।

चश्मकज़नी (چشمکزنی) फा. स्त्री.–आँख से संकेत करना।

चश्मख़ानः (چشمخانہ) फा. पुं.–वह गढ़ा जिसमें आँख का ढेला रहता है, चक्षु गोलक।

चश्मगश्तः (چشمگشتہ) फा. वि.–विषम दृष्टि, भेंगा।

चश्मज़ख़्म (چشمزخم) फा. पुं.–बुरी दृष्टि का प्रभाव।

चश्मज़द (چشمزد) फा. पुं.–नज़र लगाना; आँख का संकेत करना; डरना; पलक झपकना; पल, लमहा।

चश्मज़दन (چشمزدن) फा. पुं.–पलक झपकना, निमेष।

चश्मज़ाग़ (چشمزاغ) फा. वि.–निर्लज्ज, वेहया।

चश्मदरीदः (چشمدریدہ) फा. वि.–निर्लज्ज, धृष्ट, वेहया।

चश्मदाश्त (چشمداشت) फा. स्त्री.–आशा, भरोसा, उम्मेद, आँख लगाना।

चश्मदीद (چشمدید) फा. वि.–आँख से देखा हुआ, जो आँखों के सामने घटित हुआ हो।

चश्मनुमाई (چشمنمائی) फा. स्त्री.–आँखें तरेरना, आँखें तरेरकर धमकी देना।

चश्मपोशी (چشمپوشی) फा. स्त्री.–किसी का दोष देखते हुए भी निगाह बचा जाना, दर गुज़र।

चश्मबंद (چشمبند) फा. वि.–वह मंत्र या जादू जिससे नींद उड़ जाती है।

चश्मबंदी (چشمبندی) फा. स्त्री.–मंत्र या जादू के द्वारा नींद का उड़ जाना।

चश्मबरजा (چشمبرجا) फा. वि.–टकटकी बाँधे हुए, एकटक देखता हुआ।

चश्मबराह (چشم براہ) फा. वि.–रस्ते पर आँखें लगाये हुए, बेचैनी से प्रतीक्षा करनेवाला।

चश्मरसीदः (چشم رسیدہ) फा. वि.–जिसे नज़र लग गयी हो।

चश्मरौशनी (چشم روشنی) फा. स्त्री.–मुबारकबाद, बधाई।

चश्महादीदः (چشمہا دیدہ) फा. वि.–बहुत-सी आँखें देखे हुए, अर्थात् बहुत ही अनुभवी।

चश्मारू (چشمارو) फा. पुं.–खेत रखाने के लिए बनाया हुआ फूँस आदि का मनुष्य, धोखा।

चश्मे ख़ुरूस (چشم خروس) फा. स्त्री.–घुँघची, घुमचिल।

चश्मे ख़ूँआलूद (چشم خوں آلود) फा. स्त्री.–ऐसी आँखें जो क्रोध के वेग से लाल हो रही हों, मानो उनमें ख़ून उतर आया है।

चश्मे ज़ाहिर (چشم ظاہر) फा. अ. स्त्री.–साधारण आँख जिससे देखते हैं, चर्मचक्षु।

चश्मे नम (چشم نم) फा. स्त्री.–गीली आँख, जो आँसुओं से तर हो।

चश्मे नीमबाज़ (چشم نیم باز) फा. स्त्री.–अधखुली आँख; ऊँघते हुए की आँख; नशे में मस्त की आँख।

चश्मे नीमवा (چشم نیم وا) फा. स्त्री.–दे. 'चश्मे नीमबाज़।

चश्मे पुरआब (چشم پر آب) फा. स्त्री.–जिस आँख में आँसू भरे हुए हों, रोनेवाली आँख, डबडबाई हुई आँख।

चश्मे पुरनम (چشم پرنم) फा. स्त्री.–दे.. 'चश्मे पुरआब'।

चश्मे फ़िरंगी (چشم فرنگی) फा. स्त्री.–उपनेत्र, चश्मा, ऐनक।

चश्मे बद (چشم بد) फा. स्त्री.–बुरी नज़र, कुदृष्टि, लगनेवाली नज़र।

चश्मे बद्दूर (چشم بد دور) फा. वा.–एक आशीर्वाद, तुम्हें बुरी नज़र न लगे।

चश्मे बातिन (چشم باطن) फा. अ. स्त्री.–'चश्मे ज़ाहिर' का उलटा, दिल की आँख, अंतर्दृष्टि, ज्ञानचक्षु, दिव्य दृष्टि।

चश्मे बीना (چشم بینا) फा. स्त्री.–देखनेवाली आँख, जिस आँख में ज्योति हो, स्वस्थ आँख।

चश्मे बीमार (چشم بیمار) फा. स्त्री.–अधखुली आँख, विशेषतः प्रेमिका की आँख के लिए बोलते हैं।

चश्मे बेआब (چشم بے آب) फा. स्त्री.–जिस आँख में पानी न हो, अर्थात् निर्लज्ज।

चश्मे बेदार (چشم بیدار) फा. स्त्री.–जागती हुई आँख, खुली हुई आँख, सजग, सचेष्ट।

चश्मे शब (چشم شب) फा. स्त्री.–चंद्रमा, चाँद।

चश्मे शोर (چشم شور) फा. स्त्री.–दे. 'चश्मेबद'।

चश्मे सियाह (چشم سیاہ) फा. स्त्री.–इस शब्द का प्रयोग जब प्रेमिका के लिए हो तो सुन्दर आँख और जब अपने लिए हो तो अंधी आँख।

चश्मे हिस्सी (چشم حسی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'चश्मे ज़ाहिर'।

चश्मोचराग़ (چشم و چراغ) फा. पुं.–अपने लिए आँख और घर के लिए दीपक, अर्थात् पुत्र, बेटा।

चस्तः (چستہ) फा. पुं.–घोड़े, गधे अथवा ऊँट की ख़ाल की बनी हुई एक वस्तु विशेष; पशु की रान का मांस।

चस्तःख़्वार (چستہ خوار) फा. वि.–मुफ़्तख़ोर।

चस्पाँ (چسپاں) फा. वि.–चिपका हुआ; चरितार्थ, मुताबिक़।

चस्पानीदः (چسپانیدہ) फा. वि.–चिपकाया हुआ।

चस्पिंदः (چسپندہ) फा. वि.–चिपकानेवाला।

चस्पीदः (چسپیدہ) चिपका हुआ।

चस्पीदगी (چسپیدگی) फा. स्त्री.–चिपकन, चिपक।

चस्पीदनी (چسپیدنی) फा. वि.–चिपकने योग्य।

चह (چہ) फा. पुं.–'चाह' का लघु., दे. 'चाह'।

चहचहः (چہچہہ) फा. पुं.–चिड़ियों की चहकार, चहचहाहट।

चहार (چہار) फा. वि.–चार, चार की संख्या।

चहारगानः (چہارگانہ) फा. वि.–चार से सम्बन्ध रखनेवाला; चार सूत्रवाला; चार प्रकारवाला।

चहारगाह (چہارگاہ) फा. पुं.–गाने का एक प्रकार।

चहारचंद (چہارچند) फा. वि.–चौगुना।

चहारजानिब (چہارجانب) फा. अ. वि.–चारों ओर, चारों तरफ़।

चहारतारः (چہارتارہ) फा. पुं.–एक साज़ जिसमें चार तार होते हैं।

चहारदह (چہاردہ) फा. वि.–चौदह, चतुर्दश।

चहारदहुम (چہاردہم) फा. वि.–चौदहवाँ, चतुर्दश; चौदहवीं, चतुर्दशी।

चहारदांग (چہاردانگ) फा. वि.–चारों ओर, सब तरफ़; संसार भर।

चहारपहलू (چہارپہلو) फा. वि.–चार कोनेवाला, चौखूटा, चतुष्कोण।

चहारमीर (چہارمیر) फा. अ. पुं.–चारों ख़लीफ़ा, अबूबक्र, उमर, उस्मान, अली।

चहार मेख़े हयात (چہارمیخ حیات) फा. अ. स्त्री.–आग, पानी, वायु, पृथ्वी, चारों तत्त्व।

चहारशंबः (چہارشنبہ) फा. पुं.–बुधवार, बुध का दिन।

चहारुम (چہارم) फा. वि.–चौथा, चतुर्थ।

चहारुमी (چہارمیں) फा. वि.–चौथे का; चौथावाला; चौथा।

चा

चाउश (چاوش) तु. पुं.–दे. 'चाऊश', दो. शु. हैं।

चाऊश (چاؤش) तु. पुं.–सेना अथवा क़ाफ़िले के आगे आगे चलनेवाला चारक, नक़ीब।

चाक़ (چاق) तु. वि.–स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट; सतर्क, सचेत, चौकस; तत्पर, मुस्तइद।

चाक (چاک) फा. पुं.–दरार, दर्ज़, शिगाफ़; विदीर्ण, फटा हुआ; फटन, फटने का भाव।

चाक चाक (چاک چاک) फा. वि.–पुर्ज़े-पुर्ज़े, टुकड़े-टुकड़े, भिन्न-भिन्न।

चाक़माक़ (چاقماق) तु. पुं.–बंदूक़ का घोड़ा; दे. 'चक़्माक़'।

चाकर (چاکر) फा. पुं.–सेवक, दास, नौकर।

चाकरी (چاکری) फा. स्त्री.–सेवा कर्म, दासता, नौकरी।

चाकश (چاکش) फा. पुं.–बंदूक़ का घोड़ा।

चाक़ू (چاقو) फा. पुं.–एक विशेष प्रकार की दस्तेदार छोटी छुरी।

चाके गिरीबाँ (چاک گریباں) फा. पुं.–कुर्ते आदि के गले की फटन।

चाके जिगर (چاک جگر) फा. पुं.–हृदय की फटन, हृदय का घाव, प्रेम का ज़ख़्म।

चाके दामन (چاک دامن) फा. पुं.–दामन की फटन, जो प्रेम के आवेग में फाड़ा जाता है।

चाके राँ (چاک راں) फा. पुं.–रान की फटन, भग, योनि।

चाग़र (چاغر) फा. पुं.–चिड़ियों का बीट, जिसमें अन्न रहता है।

चाच (چاچ) फा. पुं.–रूसी तुर्किस्तान का एक प्राचीन नगर जो अब ताशक़ंद कहलाता है, यहाँ का धनुष बहुत बढ़िया होता था।

चाची (چاچی) फा. वि.–चाच की बनी हुई वस्तु, विशेषतः धनुष; ढँढोरिया, घोषणा करनेवाला।

चाची कमाँ (چاچی کماں) फा. स्त्री.–चाच का बना हुआ धनुष।

चादर (چادر) फा. स्त्री.–ओढ़ने का वस्त्र, प्रच्छादन; ख़ेमा, रावटी; तख़्ता, शीट।

चादरबदोश (چادربدوش) फा. वि.–कंधे पर चादर डाले हुए, चादर ओढ़े हुए।

चादरे आब (چادر آب) फा. स्त्री.–पानी की सतह, जलस्तर।

चादरे महताब (چادر مہتاب) फा. स्त्री.–सफ़ेद चादर की तरह बिछी हुई चाँदनी, चाँदनी का फ़र्श।

चानः (چانہ) फा. पुं.–नीचे का जबड़ा; नीचे जबड़े की हड्डी।

चाप (چاپ) फा. पुं.–छाप, मुद्रण, छपना, अर्धवृत्त, क़ौस।

चापची (چاپچی) फा. वि.–छापनेवाला, मुद्रक।

चापाती (چاپاتی) फा. स्त्री.–चपाती, पतली और बड़ी रोटी, जो हाथ से बढ़ायी गयी हो।

चापार (چاپار) फा. पुं.–डाक, पोस्ट; डाकिया, चिट्ठी-रसाँ।

चाप्लूस (چاپلوس) फा. वि.–चाटुकार, ख़ुशामदी।

चाप्लूसी (چاپلوسی) फा. स्त्री.–ख़ुशामद, चाटूक्ति।

चाबुक़ (چابق) तु. पुं.–चषक, पियाला।

चाबुक (چابک) फा. पुं.–कोड़ा, कशा, प्रतोद; तीव्र, तेज़; निपुण, होशयार।

चाबुकख़िराम (چابک خرام) फा. वि.–तेज़ चलनेवाला, तीव्रगति, शीघ्रगामी।

चाबुकख़िरामी (چابک خرامی) फा. स्त्री.–तेज चलना, शीघ्र गति, शीघ्र गमन।

चाबुकज़न (چابک زن) फा. वि.–कोड़ा मारनेवाला।

चाबुकज़नी (چابک زنی) फा. स्त्री.–कोड़ा मारना।

चाबुकदस्त (چابک دست) फा. वि.–कारीगरी में कुशल, क्षिप्रहस्त, कुशलहस्त; तेज़ काम करनेवाला।

चाबुकदस्ती (چابک دستی) फा. स्त्री.–कारीगरी में कुशलता; काम की तेज़ी।

चाबुकसवार (چابک سوار) फा. पुं.–घोड़े का अच्छा चढ़नेवाला; वह व्यक्ति जो घोड़ों को सधाता और सिखाता है।

चाबुकसवारी (چابک سواری) फा. स्त्री.–घोड़े पर अच्छा चढ़ना; घोड़ों को सधाने और सिखाने का काम।

चाबुकी (چابکی) फा. स्त्री.–निपुणता, दीक्षता, होशियारी (पुं.) तेज़ घोड़ा।

चामः (چامہ) फा. पुं.–कविता, काव्य, शे'र, ग़ज़ल।

चामःगो (چامہ گو) फा. वि.–कविता करनेवाला, कवि, शाइर।

चाम (چام) फा. पुं.–पहाड़ी की घाटी।

चामक़ (چامق) तु. पुं.–दे. 'चामग़'।

चामग़ (چامغ) तु. पुं.–गहरा कुआँ।

चामिदः (چامدہ) फा. वि.–मूतनेवाला, पेशाब करनेवाला।

चामीं (چامیں) फा. पुं.–'चामीन' का लघु., दे. 'चामीन'।

चामीदः (چامیدہ) फा. वि.–जिसने पेशाब किया हो।

चामीदनी (چامیدنی) फा. वि.–पेशाब करने योग्य।

चामीन (چامیین) फा. पुं.–पेशाब और पाख़ाना, गू और मत।

चारः (چارہ) फा. पुं.–उपाय, तदबीर; प्रयत्न, कोशिश; उपचार, इलाज; आश्रय, सहारा; छल, मक्र।

चारःगर (چارہگر) फा. वि.–चिकित्सक, उपचारक, वैद्य, तबीब।

चारःगरी (چارہگری) फा. स्त्री.–चिकित्सा, उपचार, इलाज, दवा-दारू।

चारःजोई (چارہجوئی) फ़ा. स्त्री.–प्रयत्न, तदबीर, दौड़-भाग, कोशिश।

चारःपिज़ीर (چارہپذیر) फा. वि.–जिसकी चिकित्सा हो सके, साध्य; जिसका उपाय हो सके।

चारःपिज़ीरी (چارہپذیری) फा. स्त्री.–इलाज हो सकना; उपाय हो सकना।

चारःसाज़ (چارہساز) फा. वि.–दे. 'चारःगर'।

चारःसाज़ी (چارہسازی) फा. स्त्री.–दे. 'चारःगरी'।

चार (چار) फा. वि.–चार की संख्या, चत्वर; जो चार हो; चिकित्सा, इलाज; उपाय, तदबीर।

चारअब्रू (چارابرو) फा. पुं.–डाढ़ी, मूँछ, सिर और भौंह के बाल।

चारआईनः (چارآئنہ) फा. पुं.–एक चौकोर लोहे का पत्र जो तीर आदि के बचाव के लिए कपड़ों के नीचे छाती पर पहना जाता था।

चारएकार (چارۂکار) फा. पुं.–कार्य का उपाय, प्रयत्न; अंतिम उपाय, आख़िरी कोशिश।

चारएदर्द (چارۂدرد) फा. पुं.–पीड़ा की चिकित्सा; प्रेम के रोग का इलाज।

चारक (چارک) फा. वि.–नक़ीब, चोबदार।

चारक़ुब (چارقب) तु. पुं.–धनवान् लोगों के पहनने का एक वस्त्र-विशेष।

चारख़म (چارخم) फा. पुं.–पूरा, खिंचा हुआ धनुष; एक प्रकार का धनुष।

चारख़ानः (چارخانہ) फा. पु.–चौकोर ख़ानोंवाला कपड़ा; जिसमें चार ख़ानें हों।

चारगामः (چارگامہ) फा. वि.–तेज़ चलनेवाला घोड़ा।

चारगाह (چارگاہ) फा. पु.– एक रागिनी; आदमी का शरीर जो आग, पानी, वायु और मिट्टी इन चार तत्त्वों से बना है।

चारज़बाँ (چارزبان) फा. वि.–बहुत अधिक बोलनेवाला, वातूनी, वाचाल।

चारज़ानू (چارزانو) फा. पुं.–आलती पालती (पलथी) मारकर बैठने की मुद्रा।

चारजामः (چارجامہ) फा. पुं.–एक प्रकार की ज़ीन; ज़ीनपोश।

चारताक़ (چارطاق) फा. पुं.–एक प्रकार की रावटी।

चारताक़ अफ़गन (چارطاق افگن) फा. वि.–रावटी गाड़ने और फ़र्श आदि विछानेवाला, फ़र्राश।

चारदह (چاردہ) फा. वि.–चौदह, चतुर्दश।

चारदहुम (چاردهم) फा. वि.–चौदहवाँ, चतुर्दश।

चारदाँग (چاردانگ) फा. पुं.–चारों ओर, सब तरफ़; सारा संसार।

चारदीवार (چاردیوار) फा. स्त्री.–रात्रि, रात, निशा।

चारदीवारी (چاردیواری) फा. स्त्री.–घर, कोठी, बाग़ या इमारत आदि के घेरे की दीवार, प्राचीर, प्राकार, इहाता।

चारपा (چارپا) फा. पुं.–चौपाया, पशु, मवेशी।

चारपायः (چارپایہ) फा. पुं.–दे. 'चारपा'।

चारपारः (چارپارہ) फा. पु.–बंदूक़ में भरा जानेवाला छर्रा।

चारबर्ग (چاربرگ) फा. पुं.–एक फूल; पहाड़ी लाला।

चारबाग़ (چارباغ) फा. पुं.–बहुत बड़ा और सुंदर बाग़, जिसमें हर प्रकार के पेड़ और फूल हों।

चारबालिश (چاربالش) फा. पुं.–बड़ा तकिया, मस्नद, गावतकिया।

चारबेख़ (چاربیخ) फा. स्त्री.–चार वनौषधियों की जड़, कासनी, सौंफ़, करफ़्स और अंगूर की जड़।

चारमग़्ज़ (چارمغز) फा. पुं.–अख़रोट, अक्षरोट, एक प्रसिद्ध फल, तथा चार वनस्पतियों के बीज जो दवा में पड़ते हैं।

चारमेख़ (چارمیخ) फा. स्त्री.–अपराधी को सज़ा देने का एक तरीक़ा, जिसमें चार खूँटियाँ गाड़कर उसमें उसके हाथ-पाँव बाँध दिये जाते थे।

चारमौजः (چارموجہ) फा. पुं.–भँवर, जलावर्त, गिर्दाब।

चारशंबः (چارشنبہ) फा. पुं.–बुधवार, बुध।

चारशानः (چارشانہ) फा. वि.–मोटा ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट; बहुत बड़े डीलडौल का, गिरांडील।

चारसू (چارسو) फा. पु.–चारों ओर, हर हरतरफ़; वह बाजार जिसमें चारों ओर रास्ते और दुकानें हों, चौक-बाज़ार।

चारुक़ (چارق) तु. पुं.–जंगली तुर्कों के पहनने की एक प्रकार की जूती।

चारुम (چارم) फा. वि.–चहारुम, चतुर्थ, चौथा।

चारुमीं (چارمیں) फा. वि.–चौथा, चतुर्थ; चौथे का।

चारोनाचार (چاروناچار) फा. वि.–विवशतापूर्वक, मज्बूर होकर।

चाय (چاے) फा. स्त्री.–पीने की एक प्रसिद्ध पत्ती, चाह।

चाल (چال) फा. पु.–गर्त, गढ़ा; कुआँ, कूप; चकोर पक्षी; जुए का दाँव; वह घोड़ा जिसके लाल और सफ़ेद बाल मिले हुए हों।

चालाक (چالاک) फा. वि.–निपुण, दक्ष, होशियार; धूर्त, वंचक, छली; फुर्तीला, चुस्त; व्यवहारानिष्ठ; वेईमान; तीव्र, तेज़।

चालाकदस्त (چالاکدست) फा. वि.–जिसके हाथ में वहुत फ़ुर्ती हो; जो आँखों के सामने से चीज़ उड़ा ले, हाथ की सफ़ाई दिखानेवाला।

चालाकदस्ती (چالاکدستی) फा. स्त्री.–काम की तेज़ी; हाथ की सफ़ाई।

चालाकी (چالاکی) फा. स्त्री.–धूर्तता, ठगी; वेईमानी; फ़ुर्ती, चुस्ती; दक्षता, महारत; तीव्रता, तेज़ी।

चालिश (چالش) फा. स्त्री.–आक्रमण, चम्ला; धावा, चढ़ाई।

चालीक (چالیک) फा. पुं.–गिल्ली-डंडे का खेल।

चालीश (چالیش) फा. पुं.–इठलाकर टहलने का भाव।

चावली (چاولی) फा. पुं.–सूप, छाछ, जिससे नाज फटका जाता है।

चावीदः (چاویدہ) फा. वि.–चवाया हुआ।

चाश (چاش) तु. पुं.–भूसा से निकाला हुआ ग़ल्ला।

चाश्त (چاشت) फा. स्त्री.–सूर्योदय से एक पहर तक का समय; इस समय का हलका खाना, नाश्ता, जलपान; इस समय की नमाज़।

चाश्नी (چاشنی) फा. स्त्री.–शकर आदि का क़िवाम; चखावट, चखने का भाव।

चाश्नीगीर (چاشنی گیر) फा. वि.–चाश्नी लेनेवाला, वावरची, रसोइया।

चाह (چاہ) फा. पुं.–कुआँ, कूप; गढ़ा, गर्त।

चाहकन (چاہکن) फा. वि.–कुआँ खोदनेवाला, कूपकार; दूसरे के काम में विघ्न डालनेवाला; छली, वंचक, फ़रेवी।

चाहकनी (چاہکنی) फा. स्त्री.–कुआँ खोदने का काम; दूसरे के काम में वाधा डालना; छल करना, दग़ावाज़ी।

चाहजू (چاہجو) फा. पुं.–कुएँ में गिरी हुई वस्तु निकालने का काँटा।

चाहमग़ (چاہمغ) फा. पुं.–गहरा कुआँ।

चाहे कन्आँ (چاہکنعاں) फा. अ. पुं.–वह अंधा कुआँ जिसमें हज़्रत यूसुफ़ को उनके भाइयों ने डाला था।

चाहे ख़सपोश (چاہخس پوش) फा. पुं.–घास से ढंका हुआ कुआँ, तृणाच्छन्न कूप।

चाहे ग़ब्ग़ब (چاہغبغب) फा. पुं.–दे. 'चाहे ज़क़न।

चाहे ज़क़न (چاہذقن) फा. अ. पुं.–वह गढ़ा जो ढोड़ी के वीच में होता है, चिबुक-कूपिका।

चाहे ज़नख़ (چاہزنخ) फा. पुं.–दे. 'चाहे ज़क़न'।

चाहे ज़नख़दाँ (چاہزنخداں) फा. पुं.–दे. 'चाहे ज़क़न'।

चाहे नख़्शब (چاہنخشب) फा. पुं.–नख़्शव (तुर्किस्तान का एक नगर) का वह ग़ार जहाँ से उस समय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक हकीम इव्ने मुक़न्ना ने एक कृत्रिम चंद्रमा उदय किया था, जो चोरों ओर बारह-बारह मील रौशनी देता था, और दिन को ग़ार में छिप जाता था।

चाहे नाफ़ (چاہناف) फा. पुं.–नाभिकूप, टुंडी, तुंडी।

चाहे निस्याँ (چاہنسیاں) फा. अ. पुं.–अंधा कुआँ, जिसमें पानी न हो और ध्वस्त हो गया हो।

चाहे बाबुल (چاہبابل) फा. पुं.–वह कुआँ जिसमें 'हारूत' और 'मारूत' नाम के दो फ़िरिश्ते वंद हैं, और जो लोगों को जादू सिखाते हैं।

चि

चिंगेज़ (چنگیز) तु. पुं.–हुलाकू ख़ाँ का दादा, जो वड़ा अत्याचारी था, बारहवीं शताब्दी (ईसवी) में।

चिंगेज़नज़ाद (چنگیزنژاد) तु. फा. वि.–उज़्बुक वंश के लोग।

चिंदावुल (چنداول) तु. पुं.–सेना का वह दल जो सेना के पीछे उसकी रक्षा के लिए चलता है।

चि (چہ) फा. अव्य.–क़्या, किं।

चिक़ (چق) तु.–चिलमन।

चिकाँ (چکاں) फा. वि.–टपकता हुआ; टपकानेवाला (प्रत्य.) टपकानेवाला; जैसे–'ख़ूँचिका' ख़ून टपकानेवाला।

चिकांनिदः (چکانندہ) फा. वि.–टपकानेवाला।

चिकानीदः (چکانیدہ) फा. वि.–टपकाया हुआ।

चिकारः (چکارہ) फा. वि.–निकम्मा, नाकारः।

चिंकिदः (چکندہ) फा. वि.–टपकनेवाला।

चिकिन (چکن) फा. स्त्री.–एक प्रकार का कशीदा जो रेशम या सूत से कपड़ पर काढ़ा जाता है; इस कशीदे का कपड़ा।

चिकिश (چکش) फा. स्त्री.–टपकन, टपक।

चिकीदः (چکیدہ) फा. वि.–टपका हुआ।

चिकीदनी (چکیدنی) फा. वि.–टपकने योग्य।

चिख़ुश (چہ خوش) फा. वा.–एक व्यंगात्मक शब्द, क्या ख़ूब, बहुत ख़ूब।

चिग़ (چغ) तु. स्त्री.–दे. 'चिक़'।

चिगिल (چگل) फा. पुं.–तुर्किस्तान का एक प्राचीन नगर, जहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध है।

चिगीं (چگیں) फा. पुं.–कढ़ा हुआ कपड़ा, चिकिन।

चिगूनः (چگونہ) फा. अव्य.–किस प्रकार, कैसे, क्योंकर।

चिगूनगी (چہگونگی) फा. स्त्री.–क्या है, क्यों है, कैसा है, यह भाव; वृत्तांत, हाल, कैफ़ियत।

चिग़ता (چغتا) तु. पुं.–तुर्कों की एक क़ौम।

चिग़ताई (چغتائی) तु. वि.–चिग़ता क़ौम का व्यक्ति।

चिज़िक (چژک) फा. स्त्री.–साही, एक काँटेदार जंतु।

चिदार (چدار) फा. स्त्री.–गाड़ी, शकट।

चिप्लक (چپلک) फा. वि.–अपवित्र, नापाक; मलिन, मलिष्ठ, गंदा।

चिरा (چرا) फा. अव्य.–क्यों, किसलिए, किस कारण।

चिराग़ (چراغ) फा. पुं.–दे. 'चराग़', दो. शु. हैं।

चिराग़ाँ (چراغاں) फा. पुं.–दे. 'चराग़ाँ', दो. शु. हैं।

चिरिंग (چرنگ) फा. पुं.–धमाका; चोट लगने का शब्द।

चिर्क (چرک) फा. पुं.–मैल, गंदगी; विष्ठा, गू; पीप, रीम; आँख का मैल।

चिर्कआलूद (چرک آلود) फा. वि.–मलयुक्त, गंदा।

चिर्कीं (چرکیں) फा. वि.–'चिर्कीन' का लघु., दे. 'चिर्कीन'।

चिर्कीन (چرکین) फा. वि.–मलिन, मलिष्ठ, गंदा।

चिर्म (چرم) फा. पुं.–दे. शु. उ. 'चर्म', यह अशुद्ध है।

चिल (چل) फा. वि.–'चिहिल' का लघु., चालीस; मूर्ख, बुद्धू (पुं.) चीड़ का पेड़।

चिलग़ोज़ः (چلغوزہ) फा. पुं.–चीड़ का फल, जो मशहूर मेवा है।

चिलचिलः (چلچلہ) फा. पुं.–चील, चिल्ल; कछुआ, कच्छप।

चिलतः (چلتہ) फा. पुं.–कवच, ज़िरिह।

चिलिम (چلم) फा. स्त्री.–तम्बाकू पीने का पात्र, जो हुक़्क़े पर रखकर या हाथ से पिया जाता है। (चिलम)

चिलिमपोश (چلم پوش) फा. पुं.–चिलिम पर ढाँकने का ढक्कन, जिससे आग न उड़े।

चिली (چلی) फा. वि.–मूर्ख, बेवक़ूफ़, बुद्धू।

चिल्क़द (چلقد) फा. पुं.–कवच, ज़िरीह, दे. चिल्क़ब और 'चिल्तः'।

चिल्क़ब (چلقب) फा. पुं.–दे. 'चिल्क़द' और 'चिल्तः'।

चिल्तः (چلتہ) फा. पुं.–कवच, ज़िरिह, दे. चिल्क़द और 'चिल्क़ब'।

चिल्पासः (چلپاسہ) फा. स्त्री.–छिपकली, गृहगोधा, दे. 'चल्पासः' दोनों शुद्ध हैं।

चिल्लः (چلہ) फा. पुं.–कोना, गोशा; चालीस दिन में होनेवाला काम; चालीस दिन का समय; चालीस दिन तक लगातार पढ़ा जानेवाला मंत्र आदि।

चिल्लःकश (چلہ کش) फा. वि.–चालीस दिन तक नियमपूर्वक मंत्र आदि पढ़नेवाला।

चिल्लःकशी (چلہ کشی) फा. स्त्री.–किसी कार्यविशेष की सिद्धि के लिए नियमपूर्वक चालीस दिन कोई जप अथवा मंत्र उच्चारण करना।

चिल्लए कमाँ (چلۂ کماں) फा. पुं.–धनुष का कोना।

चिश्त (چشت) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान का एक गाँव।

चिश्ती (چشتی) फा. वि.–चिश्त गाँव का निवासी; हज़रत मुहीउद्दीन चिश्ती जिनका मज़ार अजमेर में है; चिश्ती ख़ानदान का मुरीद।

चिहा (چہا) फा. अव्य.–क्या-क्या, कैसा-कैसा, कितना कुछ, क्या कुछ, बहुत कुछ।

चिहिल (چہل) फा. वि.–चालीस।

चिहिलक़दमी (چہل قدمی) फा. अ. स्त्री.–धीरे-धीरे टहलना, हवाख़ोरी करना, मन-बहलाव के लिए थोड़ी दूर तक टहलना। (चहलक़दमी)

चिहिलतः (چہلتہ) फा. पुं.–दे. 'चिलतः'।

चिहिलतन (چہلتن) फा. पुं.–चालीस बड़े महात्मा जिन पर सारे संसार का भार होता है।

चिहिल रोज़ः (چہل روزہ) फा. वि.–चालीस दिन में ख़त्म होनेवाला काम; चालीस दिन के प्रोग्राम का काम।

चिहिलुम (چہلم) फा. वि.–चालीसवाँ; मुर्दे का चालीस दिन में होनेवाला संस्कार; कर्बला के शहीदों का चालीसवाँ।

चिह्रः (چہرہ) फा. पुं.–दे. 'चेह्रः'।

चिह्र (چہر) फा. पुं.–दे. 'चेह्र'।

चिह्लुम (چہلم) फा. पुं.–दे. 'चेहलुम'।

ची

चीं (چیں) फा. प्रत्य.–'चीन' का लघु., दे. 'चीन'।

चीं बअब्रू (چیں بہ ابرو) फा. वि.–भौंह पर बल पड़े हुए, भौं तनी हुई, जिसकी भौंह पर अप्रसन्नता से बल पड़े हों, रुष्ट।

चीं ब जबीं (چیں بہ جبیں) फा. वि.–जिसके माथे पर नाख़ुशी से बल पड़ गये हों, अप्रसन्न, रुष्ट, नाख़ुश।

चीं बर जबीं (چیں بر جبیں) फा. वि.–दे. 'चीं ब जबीं'।

ची (چی) तु. प्रत्य.–वाला, शब्द के अन्त में आकर अर्थ देता है, जैसे—'तोपची'।

चीक चीक (چیک چیک) फा. स्त्री.–चिड़ियों की चेहकार।

चीज़ (چیز) फा. स्त्री.–वस्तु, पदार्थ, द्रव्य, शय।

चीज़मीज़ (چیز میز) फा. स्त्री.–थोड़ा, न्यून, अल्प।

चीज़लीज़ (چیز لیز) फा. स्त्री.–पूँजी, सरमाया; सामर्थ्य, बिसात।

चीदः (چیدہ) फा. वि.–चुना हुआ, छाँटा हुआ।

चीदःचीदः (چیدہچیدہ) फा. वि.–चुने-चुने, छटे-छटे; मुख्य-मुख्य, ख़ास-ख़ास।

चीदनी (چیدنی) फा. वि.–चुनने योग्य, छाँटने योग्य।

चीनः (چینہ) फा. पुं.–वे अन्न के दाने जो पक्षी खाते हैं; दीवार का रद्दा।

चीनःदानः (چینہدانہ) फा. पुं.–पक्षी का पोटा।

चीनःदान (چینہدان) फा. पुं.–दे. 'चीनःदानः'।

चीन (چین) फा. प्रत्य.–चुननेवाला, जैसे—'गुलचीन' फूल चुननेवाला (पुं.) एक प्रसिद्ध देश (स्त्री.) झुर्री, शिकन, बल।

चीनिंदः (چینندہ) फा. वि.–चुननेवाला।

चीनी (چینی) फा. वि.–चीन का निवासी; चीन की भाषा; चीन की सफ़ेद मिट्टी।

चीने अब्रू (چین ابرو) फा. स्त्री.–भौंहों का तनाव, भौं का बल, जो क्रोध का चिह्न है।

चीने जबीं (چین جبیں) फा. स्त्री.–माथे का बल, जो अप्रसन्नता का चिह्न है।

चीने पेशानी (چین پیشانی) फा. स्त्री.–दे. 'चीने जबीं'।

चीरः (چیرہ) फा. वि.–शक्तिशाली, ताक़तवर; विजेता, ग़ालिब (पुं.) पगड़ी, उष्णीष।

चीरःदस्त (چیرہدست) फा. वि.–अत्याचारी, अन्यायी, ज़ालिम; ज़ोरावर, ज़बर्दस्त।

चीरःदस्ती (چیرہدستی) फा. स्त्री.–अत्याचार, ज़ुल्म; ज़ोरावरी, ज़बर्दस्ती।

चीरःबंद (چیرہبند) फा. वि.–पगड़ी बाँधनेवाला, (स्त्री.) वह वेश्या-पुत्री जो अभी कुमारी हो।

चीरःबंदी (چیرہبندی) फा. स्त्री.–पगड़ी बाँधना।

चीरगी (چیرگی) फा. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी; ज़बरदस्ती, अन्याय।

चीलदो (چیلدو) तु. पुं.–इन्आम, पुरस्कार, बख़्शिश।

चीस्त (چیست) फा. अव्य.-क्या है?

चीस्ताँ (چیستاں) फा. स्त्री.–पहेली, प्रहेलिका, मुअम्मा।

चु

चुंग (چنگ) फा. स्त्री.–चोंच, चंचु।

चुंदुर (چندر) फा. पुं.–चुक़ंदर, एक तरकारी।

चुंबल (چنبل) फा. पुं.–भिक्षापात्र, कमंडल।

चुक़ंदर (چقندر) फा. पुं.–एक तरकारी।

चुकुस (چکس) फा. पुं.–बुलबुल आदि के बैठाने का अड्डा।

चुख़ा (چوخا) तु. पुं.–एक प्रकार का कोट जो प्रायः फ़क़ीर पहनते हैं, दे. 'चूख़ा'।

चुग़ा (چوغا) तु. पुं.–एक प्रकार का अँगरखा।

चुग़ुल (چغل) तु. वि.–पिशुन, चुग़ली खानेवाला।

चुग़ुलख़ोर (چغل‌خور) अ. वि.–क़ाइदे से यह शब्द अशुद्ध है, क्योंकि 'चुग़ुल' का अर्थ चुग़ली खानेवाले के हैं।

चुग़ुलख़ोरी (چغل‌خوری) अ. स्त्री.–चुग़ली खाना, पिशुनता, क़ाइदे से यह शब्द अशुद्ध है, इसके स्थान पर 'चुग़ुली' शुद्ध है।

चुग़ुली (چغلی) तु. स्त्री.–चुग़ली खाना, पिशुनता।

चुग़ज़ (چغز) फा. पुं.–मेंढक, मंडूक; बंद फोड़ा, दे. 'चग़ज़' दो. शुद्ध हैं।

चुग़द (چغد) फा. पुं.–उलूक, पेचक, उल्लू (वि.) मूर्ख बुद्धिहीन, मूढ़, उल्लू।

चुग़ली (چغلی) तु. स्त्री.–पिशुनता, चुग़ुलख़ोरी।

चुनां (چناں) फा. अव्य.–वैसा, उस प्रकार का; उतना, वैसा; इतना, ऐसा।

चुनांचे (چنانچہ) फा. अव्य.–अतः, इसलिए; फलस्वरूप, नतीजे में।

चुनाक़ (چناق) तु. पुं.–दे. 'चुनाग़', दो. शु. हैं।

चुनाग़ (چناغ) तु. पुं.–ज़ीन, घोड़े की काठी; पालान, नमदा।

चुनीं (چنیں) फा. अव्य.–ऐसा, इस प्रकार का; ऐसे, इस तरह, यूँ।

चुनीदः (چنیدہ) फा. वि.–चुना हुआ, छाँटा हुआ।

चुनू (چنو) फा. अव्य.–'चूँ' का लघु., दे. 'चूँ'।

चुफ़्त (چفت) फा. वि.–मोटा-ताज़ा, चर्बीला; फुर्तीला, तेज़; मोटा, दलदार।

चुमाक़ (چماق) तु. पुं.–वह गदा जो लोहे का होता है और जिसका गोला षट्कोण होता है; शिश्न, मेहन, लिंग।

चुम्चः (چمچہ) तु. पुं.–चम्चः, चमस, शु. उ. नहीं है, परंतु उर्दूवाले 'चम्चः' बोलते हैं, दे. 'चम्चः'।

चुर्बक (چربک) फा. पुं.–असत्य, झूठ; चाटुकर्म, ख़ुशामद; व्यंग, तंज़; अश्लीलता, फक्कड़पन; लज्जा; पहेली।

चुलाव (چلاؤ) तु. पुं.–भात, ख़ुश्कः, सादे चावल।

चुलिस्ताँ (چولستاں) तु. पुं.–वह जंगल जिसमें न पेड़ हों न पानी।

चुली (چلی) फा. स्त्री.–भीरुता, कायरता, डरपोकपन, नपुंसकता, क़्लीबता, नामर्दी।

चुलूक (چلوک) फा. स्त्री.–गाड़ी, शटक; धतूरा, धत्तूर, एक विषैला फल।

चुवाक (چواک) फा. स्त्री.–पूरी, घी में बना हुआ फुलका।

चुस (چس) फा. पुं.–वह अपान वायु जिसमें शब्द न हो।

चुस्तः (چستہ) फा. पुं.–बकरी आदि का ऐन, खीरी।

चुस्त (چست) फा. वि.–फुर्तीला, मुस्तहद; दक्ष, होशियार; कसा हुआ लिबास; ठीक, फ़िट; दृढ़, मज़बूत।

चुस्ती (چستی) फा. स्त्री.–फुर्तीलापन; दक्षता, होशयारी; दृढ़ता, मज़बूती।

चुह्लः (چہلہ) फा. पुं.–बिना डाढ़ी-मूछों का लड़का, अम्रद।

चू

चूं (چوں) फा. अव्य.–कैसे, किस प्रकार; जब, जिस समय; तुल्य, समान।

चूंकि (چونکہ) फा. अव्य.–क्योंकि।

चूख़ा (چوخا) तु. पुं.–ऊनी कोट जो फ़कीरों का लिबास है।

चूजः (چوجہ) फा. पुं.–दे. 'चूज़ः'।

चूज़ः (چوزہ) फा. पुं.–मुर्गी का बच्चा (व्यंग) नयी और सुंदर स्त्री।

चूज़ःरुबा (چوزہ ربا) फा. स्त्री.–चील, चिल्ल।

चूज़ (چوز) फा. पुं.–चकोर, कब्क; वह शिकारी पक्षी का बच्चा जिसने अभी शिकार करना न सीखा हो।

चूनीं (چونیں) फा. अव्य.–दे. 'चुनीं'।

चूनोचरा (چون وچرا) फा. स्त्री.–वाद-विवाद, कहा-सुनी।

चे

चेख़ (چیخ) फा. पुं.–वह मनुष्य जिसकी पलकें झड़ गयी हों, चुंधा।

चेचक (چیچک) तु. स्त्री.–फूल, गुल; सीतला रोग, माता, शीतला, विस्फोटक; मसूरिका, ख़स्रा।

चेनः (چینہ) फा. पुं.–दे. 'चीनः'।

चेनःदान (چینہ دان) फा. पुं.–दे. 'चीनःदान'।

चेहरः (چہرہ) फा. पुं.–मुखाकृति, मुखमंडल, शक्ल, सूरत; सामने का भाग; हुल्याः।

चेहरःकुशा (چہرہ کشا) फा. वि.–मुँह पर से पर्दा उठानेवाला, मुँह खोलनेवाला।

चेहरःकुशाई (چہرہ کشائی) फा. स्त्री.–मुँह खोलना; किसी की तस्वीर पर से पर्दा उठाने की रस्म।

चेहरःख़ेज़ (چہرہ خیز) फा. वि.–स्वच्छ, साफ़; प्रकाशित, रौशन।

चेहरःनवीस (چہرہ نویس) फा. वि.–हुल्या लिखनेवाला।

चेहरःनवीसी (چہرہ نویسی) फा. स्त्री.–हुल्या लिखने का काम।

चेहरःपर्दाज़ (چہرہ پرداز) फा. वि.–चित्रकार, मुसव्विर, चितेरा।

चेहरःपर्दाज़ी (چہرہ پردازی) फा. स्त्री.–चितेरे का काम, मुसव्विरी।

चो

चो (چو) फा. अव्य.–जो, अगर, यदि; जब, जिस समय।

चोख़ीदः (چوخیدہ) फा. वि.–फिसला हुआ।

चोख़ीदनी (چوخیدنی) फा. वि.–फिसलने योग्य।

चोबः (چوبہ) फा. पुं.–बाण, तीर; छोटी कील।

चोब (چوب) फा. स्त्री.–काष्ठ, काठ, लकड़ी; लाठी, यष्टि।

चोबक (چوبک) फा. स्त्री.–छोटा डंडा; नक़्क़ारा बजाने की लकड़ी।

चोबकज़न (چوبک زن) फा. वि.–नक़्क़ारची, नक़्क़ारा बजानेवाला; चौकीदारों का मेट जो एक लकड़ी और एक तख़्ता लेकर रात में गश्त करता और तख़्ते पर लकड़ी ठोंकता था, जिससे सारे पहरा देनेवाले होशयार हो जाते थे।

चोबकी (چوبکی) फा. वि.–चोबदार, दंडधारी।

चोबख़्वार (چوب خوار) फा. वि.–लकड़ी खानेवाला कीड़ा, दीमक।

चोबगज़ (چوب گز) फा. पुं.–कपड़ा नापने का गज़।

चोबगीं (چوبگیں) फा. स्त्री.–कपास ओटने की चर्खी।

चोबचीनी (چوب چینی) फा. स्त्री.–चीन देश की एक लकड़ी जो दवा के काम आती है। लाल रंग की तथा अत्यन्त रक्त-शोधक होती है।

चोबदस्त (چوبدست) फा. स्त्री.–दे. 'चोबदस्ती'।

चोबदस्ती (چوبدستی) फा. स्त्री.–हाथ में पकड़ने की छड़ी।

चोबदार (چوبدار) फा. पुं.–लकड़ी लेकर आगे चलनेवाला व्यक्ति, नक़ीब; प्रतिहारी, द्वारपाल, दरवान।

चोबा (چوبا) फा. पुं.–लकड़ी की थूनी, थुनकी; लोहे की पतली और लंबी कील।

चोबीं (چوبیں) फा. वि.–लकड़ी का बना हुआ, काष्ठमय।

चोबी (چوبی) फा. वि.–दे. 'चोबीं'।

चोबे तरीक़ (چوب طریق) अ. फा. स्त्री.–पबलिक को किसी बात से रोकने के हेतु डराने के लिए कर्मचारियों का डंडा।

चोबे ता'लीम (چوب تعلیم) फा. अ. स्त्री.–पढ़ानेवाले का डंडा, जिससे वह मारता है।

चोबे मुहस्सिल (چوب محصل) फा. अ. स्त्री.–चुंगी आदि वसूल करनेवाले का डंडा।

चोबे शिगाफ़ (چوب شگاف) फा. स्त्री.–चिरी हुई लकड़ी की फटन में दी जानेवाली पच्चर।

चोशिंदः (چوشندہ) फा. वि.–चूसनेवाला!

चोशीदः (چوشیدہ) फा. वि.–चूसा हुआ।

चोशीद (چوشید) फा. स्त्री.–दे. 'चोशीदगी'।

चोशीदगी (چوشیدگی) फा. स्त्री.–चूसने का भाव, चूस।

चोशीदनी (چوشیدنی) फा. वि.–चूसने के योग्य।

चौ

चौगाँ (چوگاں) फा. पुं.–'चौगान' का लघु., दे. 'चौगान'।

चौगाँबाज़ (چوگاں باز) फा. वि.–चौगान (पोलो) खेलनेवाला।

चौगाँबाज़ी (چوگاں بازی) फा. स्त्री.–पोलो का खेल।

चौगान (چوگان) फा. पुं.–एक खेल जिसमें घोड़ों पर चढ़कर गेंद खेला जाता है, पोलो।

चौगानी (چوگانی) फा. पुं.–वह घोड़ा जो पोलो पर सधा हो।

चौतरः (چوترہ) फा. पुं.–मकान के आगे का फ़र्श, चबूतरा।

चौपाँ (چوپاں) फा. पुं.–'चौपान' का लघु., दे. 'चौपान'।

चौपान (چوپان) फा. पुं.–रेवड़ चरानेवाला, चरवाहा।

चौपानी (چوپانی) फा. स्त्री.–रेवड़ चराने का काम, चरवाहागीरी, गल्लःबानी।

चौसिदः (چوسندہ) फा. वि.–चिपकनेवाला।

चौसीदः (چوسیدہ) फा. वि.–चिपका हुआ।

चौसीदनी (چوسیدنی) फा. वि.–चिपकने के लायक़।

ज

जंग (جنگ) फा. स्त्री.–युद्ध, रण, समर, संग्राम, संयुग, लड़ाई, हर्ब; कलह, झगड़ा, झड़प; उपद्रव, फ़साद; वैर, शत्रुता, दुश्मनी; प्रतिद्वंद्विता, रक़ाबत।

ज़ंग (زنگ) फा. पुं.–ठंड और तरी से धातुओं में लगने वाला मैल, कसाव, मोरचा, मंडूर; मैल, गंदगी; पाप, गुनाह; घंटा, घड़ियाल; हब्श देश।

जंगआज़्मा (جنگ آزما) फा. वि.–लड़ाई का अनुभवी, युद्ध-कुशल; लड़ाई में मशग़ूल, युद्धरत।

जंगआज़्माई (جنگ آزمائی) फा. स्त्री.–लड़ाई का अनुभव; लड़ाई में मशग़ूलियत; लड़ाई।

जंगआज़्मूदः (جنگ آزمودہ) फा. वि.–लड़ाई के मैदान मारे हुए, अनुभवी योद्धा, युद्ध-कुशल।

जंगआज़्मूदगी (جنگ آزمودگی) फा. स्त्री.–लड़ाई का अनुभव रखना, युद्ध-अनुभव, युद्ध-कौशल।

ज़ंगआलूदः (زنگ آلودہ) फा. वि.–मोरचा खाया हुआ, ज़ंग लगा हुआ।

ज़ंगआलूदगी (زنگ آلودگی) फा. स्त्री.–मोरचा लग जाना, ज़ंग लगकर खराब हो जाना।

ज़ंगख़ुर्दः (زنگ خوردہ) फा. वि.–दे. 'ज़ंगआलूदः'।

ज़ंगख़ुर्दगी (زنگ خوردگی) फा. स्त्री.–दे. 'ज़ंगआलूदगी'।

जंगख़्वाह (جنگ خواہ) फा. वि.–लड़ाई चाहनेवाला, जो चाहता हो युद्ध हो जाय।

जंगगाह (جنگ گاہ) फा. स्त्री.–लड़ाई का मैदान, रंगभूमि, रणस्थल, युद्ध-क्षेत्र।

जंगजू (جنگ جو) फा. वि.–प्रकृति से लड़ाई-झगड़ा पसंद करनेवाला, लड़ाका; सैनिक, सिपाही।

जंगजूई (جنگ جوئی) फा. स्त्री.–लड़ाकापन; सैनिकता, सिपाहीपन; युद्ध, लड़ाई।

जंग ना आज़्मूदः (جنگ نا آزمودہ) फा. वि.–जिसे युद्ध का अनुभव न हो।

जंगपसंद (جنگ پسند) फा. वि.–जिसे युद्ध और रक्तपात अच्छा लगता हो, युद्धप्रिय।

जंगपसंदी (جنگ پسندی) फा. स्त्री.–युद्ध और रक्तपात को पसंद करना।

जंगबाज़ (جنگ باز) फा. वि.–जो हर समय लड़ाई की ही बात सोचता रहता हो, जिसे हर समस्या का हल युद्ध में दीख पड़ता हो।

जंगबाज़ी (جنگ بازی) फा. स्त्री.–हर समय लड़ाई की ही बात सोचना, हर समस्या को लड़ाई द्वारा ही हल करने की कोशिश करना।

जंगल (جنگل) फा. पुं.–वन; विपिन, कानन, सह्रा; चटयल मैदान, बियावान।

जंगली (جنگلی) फा. वि.–जंगल का निवासी; असभ्य, अशिष्ट, वह्शी; जंगल में मिलनेवाली वस्तु।

जंगली यकपा (جنگلی یک پا) फा. पुं.–एक जानवर जो मनुष्य की आकृति का होता है, केवल एक पाँव रखता है और बोल नहीं सकता; घामड़ व्यक्ति, हब्न्नक़।

ज़ंगार (زنگار) फा. पुं.–मंडूर, ज़ंग; ज़ंग से बनी हुई एक औषध।

ज़ंगारी (زنگاری) फा. वि.–जिसमें ज़ंगार पड़ा हो; ज़ंगार डालकर बनायी हुई ओषधि; ज़ंगार के रंग का।

जंगाह (جنگاہ) फा. स्त्री.–'जंगगाह' का लघु., युद्ध-भूमि, रणांगण, मैदाने जंग।

जंगी (جنگی) फा. वि.–लड़ाई से सम्बन्ध रखनेवाला; लड़ाई में काम आनेवाला।

ज़ंगी (زنگی) फा. वि.–हब्श देश का निवासी, हब्शी; बहुत ही काले रंग का व्यक्ति।

ज़ंगी नज़ाद (زنگی نژاد) फा. वि.–हब्शी नस्ल का, हब्शी।

ज़ंगुलः (زنگلہ) फा. पुं.–झाँझ, बड़े मजीरे; घुँघरू।

ज़ंगूलः (زنگولہ) फा. पुं.–दे. 'ज़ंगुलः'।

जंगे आज़ादी (جنگ آزادی) फा. स्त्री.–देश को पराधीनता से मुक्त कराने की लड़ाई।

जंगे ज़रगरी (جنگ زرگری) फा. स्त्री.–झूठमूठ की केवल दूसरों को दिखाने की लड़ाई, कूटयुद्ध।

जंगे बर्री (جنگ بری) फा. अ. स्त्री.–ख़ुश्की की लड़ाई, स्थल-युद्ध।

जंगे बह्री (جنگ بحری) फा. अ. स्त्री.–समुद्र में जहाज़ों की लड़ाई, जलयुद्ध।

जंगे साख़्तः (جنگ ساختہ) फा. स्त्री.–दे. 'जंगे ज़रगरी'।

जंगे हवाई (جنگ ہوائی) फा. अ. स्त्री.–आकाश में वायुयानों द्वारा लड़ाई, वायु-युद्ध।

जंगोजदल (جنگ وجدل) फा. अ. स्त्री.–मारकाट, रक्तपात, लड़ाई-झगड़ा।

जंगोजिदाल (جنگ وجدال) फा .अ. स्त्री.–दे. 'जंगोजदल'।

ज़ंचक (زنچک) फा. स्त्री.–व्यभिचारिणी, कुलटा, फ़ाहिशा।

ज़ंज (زنج) अ. पुं.–दे. ज़ंग (देश)।

ज़ंजबार (زنجبار) अ. पुं.–पूर्वी अफ़्रीक़ा का एक साहिली टापू जहाँ से लौंग आती है।

ज़ंजबील (زنجبیل) अ. स्त्री.–सोंठ, शुंठि, सूखा हुआ अदरक।

ज़ंजरः (زنجرہ) अ. पुं.–झींगुर, एक प्रसिद्ध कीड़ा।

ज़ंजी (زنجی) अ. वि.–दे. 'ज़ंगी', हबश का निवासी, हबशी।

ज़ंजीरः (زنجیرہ) फा. पुं.–तरंग, मौज, लहर; एक प्रकार की सिलाई।

ज़ंजीरःबंदी (زنجیرہ بندی) फा. स्त्री.–एक वस्तु का दूसरी वस्तु से अनिवार्य सम्बन्ध।

ज़ंजीर (زنجیر) फा. स्त्री.–शृंखला, साँकर; क्रम, तर्तीब।

ज़ंजीरकशीदः (زنجیر کشیدہ) फा. वि.–दे. 'ज़ंजीर गुसिस्तः'।

ज़ंजीरख़ानः (زنجیرخانہ) फा. पुं.–कारावास, जेलख़ाना।

ज़ंजीरगर (زنجیرگر) फा. वि.–शृंखलाकार, ज़ंजीर वनानेवाला।

ज़ंजीरगुसिस्तः (زنجیرگسستہ) फा. वि.–जिसके पाँव का वंधन टूट गया हो, स्वच्छंद, स्वतंत्र, आजाद।

ज़ंजीरदार (زنجیردار) फा. वि.–सम्बन्ध रखनेवाला; अनुयायी, मुत्तबे'।

ज़ंजीरफ़र्सा (زنجیر فرسا) फा. वि.–ज़ंजीर को रग़ड़नेवाला।

ज़ंजीरबान (زنجیربان) फा. वि.–कारागार का अध्यक्ष, जेलर।

ज़ंजीरमू (वाली) (زنجیرمو) फा. वि.–घुँघराले बालोंवाला।

ज़ंजीरसर (زنجیرسر) फा. वि.–दे. 'ज़ंजीरमू'।

ज़ंजीरसाज़ (زنجیرساز) फा. वि.–दे. 'ज़ंजीरगर'।

ज़ंजीरसोज़ (زنجیرسوز) फा. वि.–ज़ंजीर को जला देनेवाला, ज़ंजीर को ख़त्म कर देनेवाला, वंधनों को तोड़ देनेवाला।

ज़ंजीरी (زنجیری) फा. वि.–वंदी, क़ैदी; पागल, दीवाना।

ज़ंजीरे आहन (زنجیرآہن) फा. स्त्री.–लोहे की जंजीर, लोहपाश।

ज़ंजीर जुनूँ (زنجیر جنوں) फा. अ. स्त्री.–वह जंजीर जो पागल व्यक्ति को पहनायी जाती है।

ज़ंदः (زندہ) फा. वि.–महान्, वड़ा, अज़ीम।

ज़ंदःपील (زندہ پیل) फा. पुं.–वहुत वड़ा हाथी।

ज़ंदःरोद (زندہ رود) फा. पुं.–वहुत वड़ी नदी, महानद।

ज़ंद (زند) फा. वि.–वड़ा, महान्, अज़ीम; चक़माक़, अग्नि-प्रस्तर।

ज़ंद (زند) अ. पुं.–पहुँचा, कलाई।

ज़ंद (زند) फा. पुं.–ज़रदुश्त का ग्रंथ, जो पार्सियों का मूल धार्मिक ग्रंथ है।

ज़ंदख़्वाँ (زندخواں) फा. वि.–दे. 'ज़ंदवाफ़'।

ज़ंदपील (زند پیل) फा. पुं.–दे. 'ज़ंदपील'।

ज़ंदबाफ़ (زندباف) फा. वि.–गानेवाला पक्षी; वुलवुल, क़ुमरी अथवा फ़ाख़्ता आदि।

जंदर्मः (جندرمہ) अ. पुं.–पुलीस।

जंदल (جندل) अ. पुं.–वड़ा पत्थर, शिला।

ज़ंदलाफ़ (زندلاف) फा. वि.–दे. 'ज़ंदवाफ़'।

ज़ंदो उस्ता (زندو اوشتا) फा. पुं.–'ज़ंद' का मूल ग्रंथ और उसका महाकाव्य 'उस्ता'।

ज़ंदोपाज़ंद (زندوپازند) फा. पुं.–'ज़ंद' का मूल और उसका महाभाष्य 'पाज़ंद'।

जंब (جنب) अ. पुं.–पार्श्व, पहलू; वक्षःस्थल, सीना; पस्ली।

ज़ंब (ذنب) अ. पुं.–पाप, पातक, गुनाह।

ज़ंबक़ (زنبق) अ. पुं.–चंपा, एक प्रसिद्ध फूल।

ज़ंबर (زنبر) फा. पुं.–बोझ उठाने की सीढ़ी के आकार की एक चीज़, मंझी।

ज़बील (زنبیل) अ. स्त्री.–थैला, वेग; पिटारा।

ज़ंबूरः (زنبورہ) फा. पु.–छोटी तोप; वाण का फल; भिड़, वर्रं।

ज़ंबूर (زنبور) फा. पुं.–छोटी तोप; वाण का फल; भिड़, वर्रं; एक औज़ार; शहद की मक्खी।

ज़ंबूरक (زنبورک) तु. पुं.–छोटी और हलकी तोप, जो ऊँट आदि पर लादी जा सके।

ज़ंबूरख़ानः (زنبورخانه) फा. पुं.–भिड़ों का छत्ता।

ज़ंबूरची (زنبورچی) तु. पुं.–तोप चलानेवाला, तोपची।

ज़ंबूरी (زنبوری) फा. पुं.–जालीदार कपड़ा; 'ज़ंबूर' से सम्बन्ध रखनेवाला।

ज़ंबूरे असल (زنبور عسل) फा. अ. पुं.–शहद की मक्खी।

ज़ईफ़ः (ضعیفه) अ. स्त्री.–वृद्धा स्त्री; निर्बला स्त्री।

ज़ईफ़ (ضعیف) अ. वि.–वृद्ध, वयोगत, वयोवृद्ध, बूढ़ा; निर्बल, शक्तिहीन, कमज़ोर।

ज़ईफ़ आवाज़ (ضعیف آواز) अ. फा. वि.–जिस की आवाज़ बहुत कमज़ोर हो, जो बहुत धीमे से बोले।

ज़ईफ़ी (ضعیفی) अ. स्त्री.–वृद्धावस्था, बढ़ापा; निर्बलता कमज़ोरी।

ज़ईफ़ुद्दिमाग़ (ضعیف الدماغ) अ. वि.–जिसका मस्तिष्क कमज़ोर हो; जिसे बात याद न रहती हो।

ज़ईफ़ुन्नज़र (ضعیف النظر) अ. वि.–जिसकी नेत्र-शक्ति कमज़ोर हो, मंद दृष्टि।

ज़ईफ़ुलअक़्ल (ضعیف العقل) अ. वि.–जिसकी बुद्धि कमज़ोर हो, जिसमें समझ-बूझ की कमी हो, मंदमति।

ज़ईफ़ुलईमान (ضعیف الایمان) अ. वि.–जिसका विश्वास धर्म पर दृढ़ न हो, मंदनिष्ठ।

ज़ईफ़ुलउम्र (ضعیف العمر) अ. वि.–वयोवृद्ध, बड़ी आयुवाला।

ज़ईफ़ुलएतिक़ाद (ضیف الاعتقاد) अ. वि.–जिसकी श्रद्धा किसी पर कम हो; जो संतों-साधुओं पर विश्वास कम रखता हो।

ज़ईफ़ुलक़ल्ब (ضعیف القلب) अ. वि.–जिसका दिल कमज़ोर हो, जो किसी दुर्घटना की ख़बर से तुरंत हो व्याकुल जाय।

ज़ईफ़ुलक़ुवा (ضعیف القوی) अ. वि.–जिसके हाथ-पाँव कमज़ोर हो गये हों, जो शक्तिहीन हो गया हो।

ज़ईफ़ुलबसर (ضعیف البصر) अ. वि.–दे. 'ज़ईफ़ुन्नज़र'।

ज़ईफ़ुलबुन्यान (ضعیف البنیان) अ. वि.–जिसकी नींव कमज़ोर हो।

ज़ईफ़ुलमेदः (ضعیف المعده) अ. वि.–जिसकी पाचनशक्ति कमज़ोर हो।

ज़ईफ़ुलहज़्म (ضعیف الهضم) अ. वि.–दे. 'ज़ईफ़ुलमेदः' या मेदा, दो. शु. हैं।

ज़ईम (زعیم) अ. पुं.–नेता, लीडर, रहनुमा।

ज़ईमुलमिल्लत (زعیم الملت) अ. पुं.–राष्ट्र का नेता, पूरी क़ौम का नेता।

ज़क़ंद (زقند) फा. स्त्री.–छलाँग, फलाँग, उछाल।

ज़क (زک) फा. स्त्री.–हानि, अनिष्ट, नुक़्सान; पराजय, हार, शिकस्त; लज्जा, शर्म; अपमान, तिरस्कार, ज़िल्लत।

ज़क़न (ذقن) अ. स्त्री.–चिबुक, ठुड्डी।

ज़कर (ذکر) अ. पुं.–शिश्न, मेहन, लिंग; नर, पुरुष प्राणी।

ज़करीया (زکریا) अ. पु.–एक पैग़ंबर जो आरे से चीरे गये थे।

ज़का (زکا) अ. स्त्री.–बढ़ना, विकास; फलना - फूलना; अधिक होना; सुखचैन करना।

ज़का (ذکا) अ. स्त्री.–बुद्धि, मति, समझ, अक़्ल; विवेक, तमीज़।

ज़कात (زکات-زکوٰۃ) अ. स्त्री.–इस्लाम धर्म के अनुसार अढ़ाई प्रतिशत का दान जो उन लोगों को देना पड़ता है जो मालदार हों और उन लोगों को दिया जाता है जो अपाहिज या असहाय और साधनहीन हों।

ज़काब (زکاب) अ. स्त्री.–लिखने की सियाही, मसि, मसिजल, रोशनाई।

ज़कावत (ذکاوت) अ. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, मनीषा, अक़्लमंदी; प्रतिभा, तेज़फ़ह्मी।

ज़कावत (زکاوت) अ. स्त्री.–वृद्धि, विकास; तीव्रता, तेज़ी तीक्ष्णता।

ज़कावते हिस (زکاوت حس) अ. स्त्री.–संवेदन शक्ति का बढ़ जाना, क़ुव्वते एहसास का अधिक हो जाना।

ज़की (ذکی) अ. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद।

ज़की (زکی) अ. वि.–पवित्र, शुद्ध, पाक; अनीह, निःस्पृह, अनिच्छुक, बेनियाज़।

ज़कीउलहिस (زکی الحس) अ. वि.–जिसकी हिस तेज़ हो जाय, जिसकी संवेदन शक्ति बढ़ जाय।

ज़कीक (زکیک) अ. स्त्री.–धीमी चाल, मंद गति।

ज़कीयः (زکیه) अ. स्त्री.–बुद्धिमती, अक़्लमंद स्त्री; प्रतिभावती, तेज़ तबा स्त्री।

ज़क़ूम (زقوم) फा. पुं.–थूहड़ का पेड़।

ज़क़ूमाब (زقوم آب) फा. पुं.–थूहड़ के पेड़ को कूटकर निचोड़ा हुआ पानी।

ज़क़्क़ूम (زقوم) अ. पुं.–थूहड़ का पेड़।

ज़ख़ाइर (ذخائر) अ. पुं.–'ज़ख़ीरः' का बहु., 'ज़ख़ीरे'।

ज़ख़ाम (ضخام) अ. वि.–हर चीज़ जो बड़े डीलडौल की हो।

ज़ख़ामत (ضخامت) अ. स्त्री.–मोटाई, दल; स्थूलता, मुटापा।

ज़ख़ारिफ़ (زخارف) अ. पुं.–'ज़ख़्रफ़ः' का बहु., झूठी और बनावटी बातें।

ज़ख़ीम (ضخیم) अ. वि.–मोटा, दलदार; स्थूल, फ़र्बेह।

ज़ख़ीरः (ذخیرہ) अ. पुं.–जमा किया हुआ, संचित किया हुआ, स्कंध।

ज़ख़ीरःअंदोज़ (ذخیرہ اندوز) अ. फा. वि.–नाज आदि का संचय करनेवाला।

ज़ख़ीरःअंदोज़ी (ذخیرہ اندوزی) अ. फा. स्त्री.–नाज आदि अथवा दूसरी बिकनेवाली वस्तुओं को इस आशय से जमा करना कि जब महँगी होगी तब वेचेंगे।

ज़ख़ीरएअमल (ذخیرۂ عمل) अ. पुं.–अच्छे-बुरे कर्मों का परलोक के लिए संचय।

ज़ख़ीरएआख़िरत (ذخیرۂ آخرت) अ. पुं.–परलोक में काम आनेवाले कर्म अर्थात् जप-तप आदि का संचय।

ज़ख़्ख़ार (زخار) अ. वि.–अपार, जिसका छोर न मिले; मौजें मारती हुई (नदी)।

ज़ख़्ख़ार (زخار) फा. वि.–शोर करनेवाला, घोर नाद करनेवाला।

ज़ख़्मः (زخمہ) फा. पुं.–हर वह चीज़ जिससे कोई बाजा वजाए, मिज़्राब, वाद्ययष्टि।

ज़ख़्मःज़न (زخمہ زن) फा. वि.–मिज़्राब से साज़ बजानेवाला।

ज़ख़्मःज़नी (زخمہ زنی) फा. स्त्री.–मिज़्राब से साज़ बजाना।

ज़ख़्म (زخم) फा. पुं.–आघात, क्षति, घाव; अनिष्ट, हानि, ज़रर।

ज़ख़्मकोस (زخم کوس) फा. पुं.–बड़ा नगाड़ा, धौंसा।

ज़ख़्मख़ुर्दः (زخم خوردہ) फा. वि.–जिसे ज़ख़्म लगा हो, क्षत, आहत, घायल, ज़ख़्म खाया हुआ।

ज़ख़्मख़ुर्दगी (زخم خوردگی) ज़ख़्म खाना, घायल होना।

ज़ख़्मदीदः (زخم دیدہ) फा. वि.–दे. 'ज़ख़्मख़ुर्दः'।

ज़ख़्मनाख़ुर्दः (زخم ناخوردہ) फा. वि.–जिसने ज़ख़्म न खाया हो, जो घायल न हुआ हो।

ज़ख़्मनादीदः (زخم نادیدہ) फा. वि.–दे. 'ज़ख़्मनाख़ुर्दः'।

ज़ख़्मरसीदः (زخم رسیدہ) फा. वि.–क्षत, आहत, घायल; नुक़्सान उठाया हुआ।

ज़ख़्मरसीदगी (زخم رسیدگی) फा. स्त्री.–ज़ख़्मी होना; नुक़्सान उठाना।

ज़ख़्मी (زخمی) फा. वि.–घायल, आहत, क्षत, मज्रूह; आशिक़, नायक।

ज़ख़्मीदिल (زخمی دل) फा. वि.–जिसका हृदय प्रेम से ज़ख़्मी हो, क्षतहृदय, मर्माहत।

ज़ख़्मेकारी (زخم کاری) फा. पुं.–गहरा घाव, भरपूर घाव।

ज़ख़्मेकुह्नः (زخم کہنہ) फा. पुं.–पुराना घाव।

ज़ख़्मेख़ंदां (زخم خنداں) फा. पुं.–खुला हुआ ज़ख़्म, ख़ून देनेवाला ज़ख़्म, जिस घाव में टाँके न लगे हों।

ज़ख़्मेजिगर (زخم جگر) फा. पुं.–जिगर का घाव, इश्क़ का ज़ख़्म।

ज़ख़्मेताज़ः (زخم تازہ) फा. पुं.–नया नया घाव।

ज़ख़्मेतेज़ (زخم تیز) फा. पुं.–गहरा ज़ख़्म।

ज़ख़्मेदामनदार (زخم دامن دار) फा. पुं.–चौड़ा ज़ख़्म, फैला हुआ घाव।

ज़ख़्मेदिल (زخم دل) फा. पुं.–हृदय का घाव, प्रेम का घाव।

ज़ख़्मेपिन्हाँ (زخم پنہاں) फा. पुं.–भीतरी घाव, दिल का ज़ख़्म, प्रेम का ज़ख़्म।

ज़ख़्रफ़ः (زخرفہ) अ. पुं.–झूठी और बनावटी बात।

ज़ग़ंद (زغند) फा. स्त्री.–दे. 'ज़क़ंद'।

ज़ग़न (زغن) फा. स्त्री.–चील, चिल्ल, एक प्रसिद्ध पक्षी।

ज़ग़्तः (ضغطہ) अ. पुं.–अटकाव, भिमचाव, रुकाव।

ज़चः (زچہ) फा. स्त्री.–दे. 'ज़च्चा'।

ज़च्चः (زچہ) फा. स्त्री.–वह स्त्री जिसने वच्चा जना हो, प्रसूता, सूतिका, प्रजाता, जातापत्या।

ज़च्चःख़ानः (زچہ خانہ) फा. पुं.–सूतिकागृह, प्रसवगृह, सूतिकागार, ज़च्चा के रहने का कमरा आदि।

ज़च्चःगरी (زچہ گری) फा. स्त्री.–वच्चा पैदा कराने का काम, दायागरी, कौमारभृत्य, धात्री-कर्म।

जज़ा' (جزع) अ. स्त्री.–आतुरता, अधीरता, वेसब्री।

जज़ा (جزا) अ. स्त्री.–प्रतिकार, बदला, इवज़; अच्छे काम का बदला, प्रत्युपकार।

जज़ाइर (جزائر) अ. पुं.–बहुत-से जज़ीरे, द्वीप-समूह।

जज़ालत (جزالت) अ. स्त्री.–दृढ़ता, मज़वूती; सुन्दरता, हुस्न; उत्तमता, श्रेष्ठता, ख़ूबी।

जज़ीरः (جزیرہ) अ. पुं.–टापू, द्वीप, वह ज़मीन जो समुद्र के बीच में हो।

जज़ीरःनुमा (جزیرہ نما) अ. फा. पुं.–ख़ुश्की का वह भाग जो तीन ओर पानी से घिरा हो, प्रायद्वीप।

जज़ील (جزیل) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत; सुन्दर, हसीन; उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा।

जज़्बः (جذبہ) अ. पुं.–भावना, मनोवृत्ति।

जज़्ब (جذب) अ. पुं.–आकर्षण, कशिश; ब्रह्मलीनता, नेस्ती, (वि.) आत्मसात्, एक में समाया हुआ।

जज़्बएइश्क़ (جذبۂ عشق) अ. पुं.–प्रेमाकर्षण, मुहब्बत की कशिश।

जज़्बएकामिल (جذبۂ کامل) अ. पुं.–पूर्णाकर्षण, पूरी कशिश; प्रेमाकर्षण, इश्क़ की कशिश,—"रफ़्ता-रफ़्ता जज़्बेकामिल ने दिखाया यह असर, पहले जो मुझ में थी उल्फ़त अब वो उनके दिल में है।"

जज्बएदिल (جذبۂدل) अ. फा. पुं.–दिल की कशिश, हृदाकर्षण।

जज्बात (جذبات) अ. पुं.–भावनाएँ, जज़्बे; ख़यालात, विचार।

जज्बाती (جذباتی) अ. वि.–भावनाओं की रौ में बह जानेवाला, भावुक।

जज्बातीयत (جذباتیت) अ. स्त्री.–भावुकता, भावनाओं का वेग।

जज्बी (جذبی) अ. वि.–जज़्ब से सम्बन्ध रखनेवाला।

जज्बेदिल (جذبِدل) अ. फा. पुं.–दिल की कशिश, प्रेम का आकर्षण।

जज्बोकशिश (جذب وکشش) अ. फा. स्त्री.–जज़्बः और कशिश।

जज़्म (جزم) अ. पुं.–दृढ़, पक्का, मज़बूत; अक्षर को हल करने का चिह्न (ˎ)

जज़्र (جذر) अ. पुं.–वह संख्या जो किसी संख्या में उतनी ही वार भाग देने से प्राप्त हो, जैसे—१६ का जज़्र ४।

जज़्र (جزر) अ. पुं.–घटाव, उतार, पानी का उतार, भाटा।

ज़ज्र (زجر) अ. स्त्री.–डाँट-डपट, झिड़की, फटकार, भर्त्सना, तर्जन।

ज़ज्रोतौबीख़ (زجر وتوبیخ) अ. स्त्री.–डाँट-फटकार, डाँट-डपट।

ज़ज्रोमद (زجر ومد) अ. पुं.–समुद्र के पानी का उतार-चढ़ाव, ज्वारभाटा।

ज़दः (زدہ) फा. वि.–मारा हुआ, आहत; हत्, (प्रत्य.) मारा हुआ, जैसे—'ग़मज़दः' ग़म का मारा हुआ।

ज़द (زد) फा. स्त्री.–चोट, मार; निशाना, सामना।

जद (جد) अ. पुं.–दादा, पितामह; नाना, मातामह।

जदल (جدل) अ. स्त्री.–युद्ध, समर, जंग; कलह, झगड़ा; वाक्कलह, वाद-विवाद, हुज्जत।

जदाविल (جداول) अ. पुं.–'जद्वल' का बहु., सारणी-समूह।

जदी (جدی) अ. पुं.–वकरी का वच्चा, अजाशावक; मकर राशि, वुर्जेजदी।

जदीद (جدید) अ. वि.–नूतन, नवीन, नया; आधुनिक, हाल का; प्रतीच्य, मग़्रिवी।

जदीदान (جدیدان) अ. पुं.–दिनरात, अहर्निश।

ज़दोकोब (زدوکوب) फा. स्त्री.–मार-पीट, लात-घूंसा।

जद्इ (جدی) अ. स्त्री.–दे. 'जदी', शुद्ध उच्चारण यही है।

जद्दः (جدہ) अ. स्त्री.–दादी, पितामही; नानी, मातामही।

जद्देअम्जद (جدِامجد) अ. पुं.–दादा, पितामह।

जद्देआला (جدِاعلیٰ) अ. पुं.–मूल पुरुष, वंश प्रवर्तक, मूरिसेआ'ला, जिससे ख़ान-दान चला हो।

जद्देफ़ासिद (جدِفاسد) अ. पुं.–नाना, मातामह।

जद्वल (جدول) अ. स्त्री.–नहर, छोटी नदी; पुस्तक के चारों ओर का हाशिया; सारिणी, ख़ानोंदार तफ़सीली नक़्शा।

जद्वार (جدوار) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध दवा निरविसी।

ज़न (زن) फा. स्त्री.–स्त्री, जनि, नारी, योषित्, औरत; भार्या, जाया, पत्नी, जोरू, बीबी, (प्रत्य.) मारनेवाला, जैसे—'तेग़ज़न' तलवार मारनेवाला।

ज़न (ظن) अ. पुं.–विचार, ख़याल; धारणा, गुमान।

ज़नख़-दाँ (زنخداں) फा. स्त्री.–चिबुक, ठुड्डी।

ज़नचक (زن چک) फा. स्त्री.–व्यभिचारिणी, फ़ाहिशा, पुंश्चली।

ज़नपरस्त (زن پرست) फा. वि.–स्त्री की पूजा करनेवाला, स्त्री-पूजक; पत्नी की बात के ख़िलाफ़ न करनेवाला, पत्नी-भक्त।

ज़नब (ذنب) अ. पुं.–पुच्छ, पूँछ, दुम; राहु, एक सितारा।

ज़नबमुज़्द (زن بمزد) फा. पुं.–स्त्री की कमाई खानेवाला, भार्याट, दैयूस, भँड़ुवा।

ज़नमुरीद (زن مرید) फा. अ. वि.–अपनी पत्नी को ही सब कुछ समझनेवाला, स्त्रीजित, भार्याजित, पत्नीभक्त, पत्नीव्रती।

ज़नबुलफ़रस (ذنب الفرس) अ. पुं.–एक सितारा, राहु।

ज़नाँ (زناں) फा. स्त्री.–'ज़न' का बहु., स्त्रियाँ, (वि.) मारता हुआ (प्रत्य.) मारता हुआ, जैसे–ख़ंदःज़नाँ, क़हक़हा मारता हुआ।

जनाज़ः (جنازہ) अ. पुं.–कफ़न में लपेटा हुआ शव, कपड़े में लिपटी हुई लाश, दे. 'जिनाज़ः'।

जनाज़ःबरदार (جنازہ بردار) अ. फा. वि.–जनाज़ा उठानेवाला।

जनाज़ःबरदोश (جنازہ بردوش) अ. फा. वि.–कंधे पर जनाज़ा उठाये हुए।

जनाज़एरवाँ (جنازۂرواں) अ. फा. पुं.–घोड़ा, अश्व; घोड़े का सवार, अश्वारोही।

ज़नादिक़ः (زنادقہ) अ. पुं.–'ज़िंदीक़' का बहु., नास्तिक और अधर्मी लोग।

ज़नानः (زنانہ) फा. पुं.–स्त्रियों-जैसे स्वभाववाला पुरुष, नरदारा; क्लीव, हिजड़ा; स्त्रियों का; स्त्रियों के योग्य।

ज़नानख़ानः (زنانخانہ) अ. पुं.–स्त्रियों का घर, जहाँ स्त्रियाँ रहती हों, अन्तःपुर।

जनानेबाज़ारी (زنانِ بازاری) फा. स्त्री.–वेश्याएँ, रंडियाँ, बाज़ारू औरतें, सतीत्व बेचनेवाली।

जनाब (جناب) अ. स्त्री.–ड्योढ़ी, चौखट, आस्तानः; सम्मुख, सामने; श्रीमान्, महोदय, महाशय; पार्श्व, पहलू; दरगाह, आश्रम।

जनाबत (جنابت) अ. स्त्री.–मैथुन के पश्चात् स्नान की आवश्यकता, अशुचि, अपवित्रता; दूरी, अलाहिदगी, पृथक्ता।

ज़नाबीर (زنابیر) अ. पुं.–'ज़ंबूर' का बहु., भिड़ें।

ज़नाबील (زنابیل) अ. पुं.–'ज़ंबील' का बहु., थैले।

जनाबे आली (جنابِ عالی) अ. वि.–श्रीमन्महोदय, मान्यवर।

जनाबे मुकर्रम (جنابِ مکرم) अ. वि.–दे. 'जनाबे आली'।

जनाबे मोहतरम (جنابِ محترم) अ. वि.–दे. 'जनाबे आली'।

जनाबे वाला (جنابِ والا) अ. वि.–दे. 'जनाबे आली'।

ज़नाशोई (زناشوئی) फा. स्त्री.–दाम्पत्य, स्त्री-पुरुष का, मियाँ-बीबी का।

जनाह (جناح) अ. पुं.–पक्ष, पंख, पुर; बाहु, भुजा, बाज़ू; सेनाग्र, हिरावुल।

जनीन (جنین) अ. पुं.–पेट के भीतर का बच्चा, गर्भस्थ, भ्रूण।

जनीने मुर्दः (جنینِ مردہ) अ. फा. पुं.–वह बच्चा जो पेट में मर गया हो।

जनीबत (جنیبت) फा. पुं.–कोतल घोड़ा जो बादशाहों और राजाओं की सवारी का हो।

ज़नीम (زنیم) अ. वि.–वह व्यक्ति जो किसी वंश का प्रसिद्ध हो, परन्तु उस वंश का न हो; वह व्यक्ति जो दुष्टता और कृपणता में प्रसिद्ध हो।

जनूब (جنوب) अ. पुं.–दक्षिण, दक्खिन, दकन।

जनूबी (جنوبی) अ. वि.–दक्षिणीय, दक्खिन का।

जन्नत (جنت) अ. स्त्री.–स्वर्ग, नाक, देवलोक, सुरलोक, बिहिश्त; उद्यान, आराम, वाटिका, बाग़।

जन्नत आरामगाह (جنت آرامگاہ) अ. फा. वि.–जो स्वर्ग में आराम कर रहा हो, दिवंगत, स्वर्गीय, मर्हूम।

जन्नतनशीं (جنت نشیں) अ. फा. वि.–जो स्वर्ग में रह रहा हो, अर्थात् जो मर गया हो, स्वर्गवासी।

जन्नतमकां (جنت مکاں) अ. वि.–जिसका घर स्वर्ग हो, अर्थात् मरा हुआ व्यक्ति, स्वर्गीय, स्वर्ग-वेश्म।

जन्नती (جنتی) अ. वि.–जिसको मरने के पश्चात् स्वर्ग प्राप्त हुआ हो, स्वर्गीय; स्वर्ग के योग्य व्यक्ति, सदाचारी, पुण्यात्मा।

जन्नतुलफ़िर्दौस (جنت الفردوس) अ. स्त्री.–सब से ऊँचा (स्वर्ग); वह बाग़ जिसमें हर वह चीज़ हो जो दूसरे बागों में हो।

जन्नतुलमावा (جنت الماوی) अ. स्त्री.–सबसे ऊपर का स्वर्ग।

जन्नते नज़र (جنت نظر) अ. स्त्री.–ऐसी सुन्दर और अद्भुत चीज़ जो दृष्टि के लिए स्वर्ग के समान हो, जो दृष्टि को स्वर्ग का आनन्द दे।

जन्नते निगाह (جنت نگاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'जन्नते नज़र'।

ज़न्नी (ظنی) अ वि.–काल्पनिक, कल्पित, ख़याली; भ्रमात्मक, मौहूम।

ज़न्नेबद (ظنِ بد) अ. फा. पुं.–कुधारणा, बुरा गुमान।

ज़न्नेबातिल (ظنِ باطل) अ. पुं.–बिलकुल मिथ्या विचार, ग़लत गुमान।

ज़फ़र (ظفر) अ. स्त्री.–जय, विजय, जीत; सफलता, कामयाबी।

ज़फ़रक़रीं (ظفر قریں) अ. वि.–विजेता, विजयी, फ़ातेह।

ज़फ़रनसीब (ظفر نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में विजय हो, विजयशील।

ज़फ़रनिशाँ (ظفر نشاں) अ. फा. वि.–विजेता, फ़तहमंद।

ज़फ़रपैकर (ظفر پیکر) अ. फा. वि.–दे. 'जफ़रयाब'।

ज़फ़रमौज (ظفر موج) अ. फा. वि.–दे. 'ज़फ़रयाब'।

ज़फ़रयाब (ظفریاب) अ. फा. वि.–जिसे विजय प्राप्त हुई हो, विजयी, जित्वर, विजेता, जिष्णु।

ज़फ़रयाबी (ظفریابی) अ. फा. स्त्री.–जीत, विजय-प्राप्ति।

जफ़ा (جفا) फा. स्त्री.–अत्याचार, अन्याय, अनीति, ज़ुल्म, सितम।

जफ़ाएचर्ख़ (جفائے چرخ) फा. स्त्री.–आस्मान की जफ़ा, दैवीकोप, भाग्यचक्र, दिनों की गर्दिश।

जफ़ाकश (جفاکش) फा. वि.–देह पर कष्ट उठानेवाला, कठिन परिश्रम करनेवाला, पराक्रमी, मेहनती, कर्मशूर।

जफ़ाकार (جفاکار) फा. वि.–अत्याचार करनेवाला, ज़ालिम।

जफ़ाकेश (جفاکیش) फा. वि.–जिसकी प्रकृति में अत्याचार हो, बहुत बड़ा अत्याचारी।

जफ़ाख़ू (جفاخو) फा. वि.–दे. 'जफ़ाकश'।

जफ़ाजू (جفاجو) फा. वि.–नयी-नयी जफ़ाएँ और नये-नये अत्याचार तलाश करनेवाला।

जफ़ापरस्त (جفاپرست) फा. वि.–महा अत्याचारी, जो अनीति को पूजता हो; जो प्रेमिका के अत्याचारों की पूजा करता हो, आशिक़।

जफ़ापर्वर (جفاپرور) फा. वि.–अत्याचारों को प्रोत्साहन देनेवाला, घोर अत्याचारी।

जफ़ापेशः (جفاپیشہ) फा. वि.–जिसका काम केवल अत्याचार करना हो, बहुत बड़ा अन्यायी।

जफ़ापेशगी (جفاپیشگی) फा. स्त्री.–अत्याचार का व्यवहार।

जफ़ाशिआर (جفاشعار) फा. वि.–दे. 'जफ़ाकेश'।

ज़फ़्दे (ضفدع) अ. पुं.–मेंढक, दर्दुर, भेक, दे. 'ज़िफ़्दे' दोनों शुद्ध हैं।

जफ़्न (جفن) अ. पुं.–आँख का पपोटा।

जफ़्र (جفر) अ. पुं.–बकरी या भेड़ का बच्चा; एक विद्या जिससे परोक्ष ज्ञान प्राप्त होता है।

जफ़्रदां (جفرداں) अ. फा. वि.–जफ़्र की विद्या जाननेवाला, भविष्यवक़्ता, परोक्षवादी।

ज़ब [ब्ब] (ضب) अ. स्त्री.–गोह, गोधिका।

ज़बद (زبد) अ. पुं.–झाग, फेन।

ज़बर (زبر) फा. पुं.–उर्दू में (ऊ) का चिह्न (´) वि. ऊपर, उपरि; शक्तिशाली, ताक़तवर; भारी, बोझिल।

ज़बरजद (زبرجد) फा. पुं.–एक रत्न, पीत मणि, पुखराज।

ज़बरदस्त (زبردست) फा. वि.–शक्तिशाली, ताक़तवर; प्रचंड, अति तीव्र, बहुत तेज़।

ज़बरदस्ती (زبردستی) फा. स्त्री.–अत्याचार, ज़ुल्म; हठात्, बलात्, बलपूर्वक, जब्रन।

जबरूत (جبروت) अ. पुं.–प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

जबल (جبل) अ. पुं.–पर्वत, अचल, पहाड़।

जबलुत्तारिक़ (جبل الطارق) अ. पुं.–जिब्राल्टर।

ज़बाँ (زباں) फा. स्त्री.–जिह्वा, रसना, रसेंद्रिय, जीभ; किसी देश की बोली, भाषा; क़ौल, क़रार, संविदा; वचन, कथन।

ज़बाँआवर (زباں آور) फा. वि.–भाषा का बहुत अच्छा ज्ञाता, भाषापटु; कवि, शाइर।

ज़बाँआवरी (زباں آوری) फा. स्त्री.–भाषा का अच्छा ज्ञान; कविता, शाइरी।

ज़बाँगीर (زباں گیر) फा. वि.–गुप्तचर, जासूस।

ज़बाँज़द (زباں زد) फा. वि.–जो सबकी ज़बानों पर हो, जनता में प्रसिद्ध बात।

ज़बाँदराज़ (زباں دراز) फा. वि.–जिसकी जीभ बहुत लम्बी हो, गुस्ताख़, मुक्तकंठ, बदज़बान, दुर्मुख।

ज़बाँदराज़ी (زباں درازی) फा. स्त्री.–गुस्ताख़ी, बदज़बानी, दुर्मुखता, दुर्वचन।

ज़बाँदाँ (زباں داں) फा. वि.–किसी भाषा का विद्वान्, भाषाविज्ञ, भाषाविद्।

ज़बाँफ़रोश (زباں فروش) फा. वि.–बक्की, मुखर, वाचाल।

ज़बाँबंदी (زباں بندی) फा. स्त्री.–बोलने की मनाही, राज की ओर से जनता में भाषण देने का निषेध।

ज़बानः (جبانہ) अ. पुं.–वन, जंगल, कानन।

ज़बानः (زبانہ) फा. पुं.–लौ, लपट, अग्नि-ज्वाला, अग्निशिखा।

जबान (جبان) अ. वि.–क़्लीब, नपुंसक, भीरु, डरपोक।

ज़बान (زبان) फा. स्त्री.–दे. 'जबाँ'।

जबानत (جبانت) अ. स्त्री.–क्लीबता, नामर्दी; भीरुता, डरपोकपन।

ज़बानी (زبانی) फा. वि.–मौखिक, मुँह से कहा हुआ; कंठ, मुखाग्र, बर ज़बाँ; मुँह से, ज़बान से।

ज़बाने क़लम (زبانِ قلم) फा. अ. स्त्री.–क़लम की नोक; होल्डर का निब; क़लमरूपी मनुष्य की ज़बान।

ज़बाने ख़ामः (زبانِ خامہ) फा. स्त्री.–दे. 'ज़बाने क़लम'।

ज़बाने शीरीं (زبانِ شیریں) फा. स्त्री.–मीठी ज़बान, जिस ज़बान से मीठी-मीठी बातें निकलती हों।

ज़बाने हाल (زبانِ حال) फा. अ. स्त्री.–दशा, हालत, दशारूपी मनुष्य की जिह्वा।

जबीं (جبیں) फा. स्त्री.–माथा, ललाट, भाल, पेशानी।

जबीं फ़र्सा (جبیں فرسا) फा. वि.–माथा रगड़नेवाला, ज़मीन पर माथा टेककर सलाम करनेवाला; बहुत ही दीनता प्रकट करनेवाला।

जबीसा (جبیں سا) फा. वि.–दे. 'जबींफ़र्सा'।

जबीसाई (جبیں سائی) फा. स्त्री.–माथा रगड़ना, बहुत ही झुककर सलाम करना; दीनता और नम्रता का प्रदर्शन, "मुआज़ल्ला! तसव्वर का यह अंदाज़े-जबींसाई। कि होता ही नहीं महसूस उनका दूर हो जाना!"

ज़बी (ظبی) अ. पुं.–हरिण, मृग, हिरन, आहू।

जबीन (جبین) फा. स्त्री.–दे. 'जबीं'।

ज़बीब (زبیب) अ. पुं.–सूखा हुआ अंगूर, शुष्क द्राक्षा मुनक़्क़ा।

जबीयः (ظبیہ) अ. स्त्री–हरिणी, मृगी, हरनी।

जबीरः (جبیرہ) अ. स्त्री.–टूटी हड्डी पर बाँधने की लकड़ी।

ज़बीहः (ذبیحہ) अ. पुं.–ज़बह किया हुआ जानवर; वध, ज़बह।

ज़बीह (ذبیح) अ. वि. वधित, ज़बह किया हुआ।

ज़बीहुल्लाह (ذبیح اللہ) अ. पुं.–हज़रत 'इस्माईल' की उपाधि जिन्हें उनके पूज्य पिताजी ने ईश्वर की आज्ञा से वध करना चाहा था।

ज़बूँ (زبوں) फा. वि.–निकृष्ट, दूषित, ख़राब।

ज़बँहाल (زبوں حال) फा. अ. वि.–दुर्दशाग्रस्त, फटेहाल, बुरी हलात में।

ज़बँहाली (زبوں حالی) फा. अ. स्त्री.–दुर्दशा, बदहाली।

ज़बून (زبون) फा. वि.–दे. 'ज़बूँ'।

ज़बूनी (زبونی) फा. स्त्री.–निकृष्टता, ख़राबी; तिरस्कार, ज़िल्लत; दुःख, क्लेश, कष्ट, तकलीफ़।

ज़बूनीकश (زبونی کش) फा. वि.–कष्ट और दुःख उठानेवाला; तिरस्कार सहनेवाला।

ज़बूर (زبور) अ. स्त्री.–वह आस्मानी किताब जो हज़रत 'दाऊद' पर उतरी थी।

ज़ब्त (ضبط) अ. पुं.–सहन, सहनशीलता, बरदाश्त; क्रम, तर्तीब; प्रबंध, व्यवस्था, इंतज़ाम; ज़ब्तशुद:, जो चीज़ ज़ब्त हो गयी हो।

ज़ब्ती (ضبطی) अ. स्त्री.–किसी चीज़ पर जबरदस्ती कब्ज़ा; सरकारी हुक्म से किसी चीज़ पर क़ब्जा।

ज़ब्ते अश्क (ضبط اشک) अ. फा. पुं.–आँसू रोकना।

ज़ब्ते आह (ضبط آہ) अ. फा. पुं.–आह रोकना, मुँह से आह न निकलने देना।

ज़ब्ते ग़म (ضبط غم) अ. फा. पुं.–कष्ट और दुःख प्रकट न होने देना; प्रेम की व्यथा का इज़्हार न करना।

ज़ब्ते गिर्य: (ضبط گریہ) अ. फा. पुं.–आँसू न निकलने देना, रोने पर क़ाबू रखना।

ज़ब्ते नाल: (ضبط نالہ) अ. फा. पुं.–मुँह से चीख़ पुकार न निकलने देना, रोना-धोना न करना।

ज़ब्ते फ़ुग़ाँ (ضبط فغاں) अ. फा. पुं.–दे. 'ज़ब्ते नाला'।

जब्र (جبر) अ. पुं.–अत्याचार, अन्याय, ज़ुल्म; किसी बात के लिए मजबूर करना, हठ; यह सिद्धान्त कि मनुष्य नितान्त बेवश है जो कुछ करता है ईश्वर करता है।

जब्रन (جبراً) अ. वि.–ज़बरदस्ती, हठात्, बलात्।

जब्री (جبری) अ. वि.–ज़बरदस्ती का; यह सिद्धान्त माननेवाला कि मनुष्य बिलकुल विवश है।

जब्रीय: (جبریہ) अ. वि.–ज़बरदस्ती का; जब्री; यह सिद्धान्त माननेवाला कि मनुष्य ख़ुद कुछ नहीं करता, सब कुछ ईश्वर कराता है।

जब्रे मशीयत (جبر مشیت) अ. पुं.–दैव की ज़बरदस्ती, भाग्य का हठ।

जब्रोक़द्र (جبر و قدر) अ. पुं.–यह सिद्धान्त कि ईश्वर सब कुछ करता है और मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।

जब्रोतअद्दी (جبر و تعدی) अ. स्त्री.–अत्याचार और अन्याय।

जब्रोमुक़ाबल: (جبر و مقابلہ) अ. पुं.-'अलजब्रा' बीजगणित।

ज़ब्ल (زبل) अ. पुं.–घोड़े और गधे की लीद।

जब्ह: (جبہہ) अ. स्त्री.–पेशानी, माथा, ललाट, भाल; दसवाँ नक्षत्र, मघा।

जब्ह:फ़र्सा (جبہہ فرسا) अ. फा. वि.–दे. 'जबींफ़र्सा'।

जब्ह:सा (جبہہ سا) अ. फा. वि.–दे. 'जबींसा'।

ज़ब्ह (ذبح) अ. पुं.–वध, ज़बीह:; हत्या, हिंसा, क़त्ल।

जम (جم) फा. पुं.–जमशेद का लघुरूप, दे. 'जमशेद'।

जम (جم) अ. पुं.–भीड़, जमाव।

ज़म (ذم) अ. पुं.–निंदा, बुराई, हजो; अश्लीलता, फ़ुह्श होना।

ज़म (زم) अ. पुं.–शीत, सर्दी।

ज़म (ضم) अ. पुं.–मिलना, मिल जाना; मिला हुआ, संबद्ध, संयुक्त; पेश का चिह्न (ُ) ज़बर।

ज़मज़म (زمزم) अ. पुं.–मक्के का एक कुआँ जिसका पानी बहुत ही पवित्र समझा जाता है; उस कुएँ का पानी।

जमजाह (جمجاہ) फा. वि.–जमशेद-जैसी शानोशौक़त रखनेवाला, महाप्रतापवान्।

जमन (جمن) फा. स्त्री.–जमना नदी, यमुना।

ज़मन (زمن) अ. पुं.–ज़माना; संसार, जगत्, विश्व; काल, समय, वक़्त; आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत।

जमल (جمل) अ. पुं.–ऊँट, उष्ट्र, नर ऊँट।

जमशेद (جمشید) फा. पुं.–ईरान का एक प्राचीन शासक, जिसके पास एक प्याला था जिससे उसे संसार भर का हाल ज्ञात हो जाता था।

ज़माँ (زماں) अ. पुं.–ज़माना, काल, समय; संसार, विश्व, दुनिया।

जमाअत (جماعت) अ. स्त्री.–पंक्ति, क़तार; वर्ग, तब्क़; कक्षा, क्लास।

जमाद (جماد) अ. स्त्री.–जड़ पदार्थ, वह चीज़ जिसमें विकास आदि न हो, जैसे–पत्थर आदि।

जमादात (جمادات) अ. स्त्री.–बेजान औ जड चीज़ें।

जमादी (جمادی) अ. वि.–जड सम्बन्धी।

ज़मान: (زمانہ) अ. पुं.–समय, काल, वक़्त; युग, क़र्न; विलंब, देर, अतिकाल; मुद्दत, अर्सा; दशा, हालत।

ज़मान:शनास (زمانہ شناس) अ. फा. वि.–समय को पहचाननेवाला, समय के अनुकूल काम करनेवाला।

ज़मान:साज (زمانہ ساز) अ. फा. वि.–मुतफ़न्नी, धूर्त, छली; इबनुल वक़्त, अवसरवादी।

ज़मान (زمان) अ. पुं.–दे. 'ज़मान:'।

ज़मानए क़दीम (زمانۂ قدیم) अ. पुं.–प्राचीनकाल, पुराना जमाना।

ज़मानए जदीद (زمانۂ جدید) अ. पुं.–आधुनिक काल, मौजूद: ज़माना।

ज़मानए जाहिलीयत (زمانۂ جاہلیت) अ. पुं.–मूर्खता-काल, बेवक़ूफ़ी का जमाना; इस्लामी परिभापा के अनुसार इस्लाम से पूर्व का समय।

ज़मानए दराज़ (زمانۂ دراز) अ. फा. पुं.–लम्बा समय, दीर्घ काल।

ज़मानए माक़ब्ले तारीख़ (زمانۂ ماقبل تاریخ) अ. पुं.–वह समय जब इतिहास नहीं लिखा जाता था, इतिहास-पूर्वकाल, पूर्वेतिहासिक काल।

ज़मानए माज़ी (زمانۂ ماضی) अ. पुं.–गुज़रा हुआ समय, बीता हुआ ज़माना; भूतकाल।

ज़मानए मुसीबत (زمانۂ مصیبت) अ. पुं.–व्यसनकाल, विपत्तिकाल, संकटकाल, आफ़तों का ज़माना।

ज़मानए सलफ़ (زمانۂ سلف) अ. पुं.–प्राचीन काल, पुरातन काल, बहुत पिछला ज़माना।

ज़मानत (ضمانت) अ. स्त्री.–प्रतिभूति, ज़ामिनी।

ज़मानतदार (ضمانتدار) अ. फा. पुं.–प्रतिभू, ज़ामिन।

ज़मानतनामः (ضمانت نامہ) अ. फा. पुं.–प्रतिभूति पत्र, ज़मानत की तहरीर।

ज़मानती (ضمانتی) अ. पुं.–दे. 'ज़मानतदार'; ज़मानत का।

जमाल (جمال) अ. पुं.–सौन्दर्य, रूप, सुन्दरता, हुस्न; शोभा, छटा, छवि; मुखकांति, मुखाभा, तल्अत।

जमालिस्तान (جمالستان) अ. फा. पुं.–वह जगह जो सुन्दरता की खान हो, जहाँ सुन्दरियां ही सुन्दरियां हों।

जमाली (جمالی) अ. वि.–रूप से सम्बन्ध रखनेवाला; 'जलाली' का उलटा, वह जाप (अमल) जिसके जप में प्राणभय न हो।

जमालीयात (جمالیات) अ. पुं.–सौंदर्य सम्बन्धी बातें।

जमाहीर (جماهیر) अ. पुं.–'जुमहूर' का बहु., बड़े-बड़े व्यक्ति।

ज़मिस्ताँ (زمستاں) फा. पुं.–जाड़े की ऋतु, जाड़े का मौसिम, शीतकाल।

ज़मिस्तानी (زمستانی) फा. वि.–जाड़ेवाला, शरद ऋतु-वाला।

ज़मीं (زمیں) फा. पुं.–पृथ्वी, धरा, अवनि, कुरए ज़मीन; भूमि, भूखंड, जमीन का टुकड़ा; देश, मुल्क; पेशबंदी, पुरश्चरण; ग़ज़ल की रदीफ़, क़ाफ़ियः और बह्र।

ज़मींदार (زمیندار) फा. पुं.–ज़मीन का मालिक, भूस्वामी, भूमिपति।

ज़मींदारी (زمینداری) फा. स्त्री.–राज की ओर से गाँव के ठेके की पद्धति।

जमीअ (جمیع) अ. वि.–समस्त, समग्र, कुल, सब; संपूर्ण, समूचा, पूरा।

ज़मीन (زمین) फा. स्त्री.–दे. 'जमीं'।

ज़मीमः (ذمیمہ) फा. वि.–ज़मीम की स्त्री. निकृष्टा, बुरी।

ज़मीमः (ضمیمہ) अ. पुं.–किसी विशेष और आवश्यक समाचार के लिए अखबार का ततिम्मः; किसी पुस्तक का विशेष भाग, परिशिष्ट।

ज़मीम (ذمیم) अ. वि.–बुरा, खराब, निकृष्ट।

ज़मीर (ضمیر) अ. पुं.–अंतरात्मा, अंतःकरण, कानशंस; सर्वनाम; मन, दिल, जी।

ज़मीरआगाह (ضمیرآگاہ) अ. फा. वि.–अंतर्यामी, दिल की बात जाननेवाला।

ज़मीरफ़रोश (ضمیرفروش) अ. फा. वि.–आत्मविक्रेता, ग़द्दार, अवसरवादी।

ज़मीरफ़रोशी (ضمیرفروشی) अ. फा. स्त्री.–ग़द्दारी, आत्म-विक्रय।

ज़मीरे ग़ाइब (ضمیر غائب) अ. स्त्री.–प्रथम पुरुष का सर्वनाम, 'वह'।

ज़मीरे मुख़ातब (ضمیر مخاطب) अ. स्त्री.–मध्यम पुरुष का सर्वनाम, 'तुम'।

ज़मीरे मुतकल्लिम (ضمیر متکلم) अ. स्त्री.–उत्तम पुरुष का सर्वनाम, मैं।

ज़मीरे हाज़िर (ضمیر حاضر) अ. स्त्री.–दे. 'ज़मीरे मुख़ातब'।

जमील (جمیل) अ. वि.–सुन्दर, रूपवान्, हसीन।

जम्अ (جمع) अ. स्त्री.–आय, आमद; उपार्जित, संचित, जमाशुदः; निशाना।

जम्अअंदाज़ (جمع انداز) अ. फा. वि.–बहुत अच्छा निशाना लगानेवाला, लक्ष्यभेदी, निशानची।

जम्अदार (جمعدار) अ. फा. पुं.–सिपाहियों का नायक।

जम्अबंदी (جمع بندی) अ. फा. स्त्री.–ज़मींदारी की सारी आमदनी।

जम्ईयत (جمعیت) अ. स्त्री.–दल, यूथ, समूह, जमाअत, समुदाय; संतोष, इत्मीनान; सभा, गोष्ठी, प्ररिषद्, इदारः।

जम्ईयतुलउलमा (جمعیت العلما) अ. स्त्री.–आलिमों की जमाअत, विद्वानों की मंडली।

जम्ईयते ख़ातिर (جمعیت خاطر) अ. स्त्री.–आत्मसंतोष, इत्मीनाने क़ल्ब।

ज़म्ज़मः (زمزمہ) फा. पुं.–चहचहः, चहकार, चिड़ियों की चहक, कलरव; गान, गीत, नग़्मः।

ज़म्ज़मःख़्वाँ (زمزمہ خواں) फा. वि.–चहचहानेवाला पक्षी; गानेवाला, गायक।

ज़म्ज़मःपरदाज़ (زمزمہ پرداز) फा. वि.–दे. 'ज़म्ज़मःख़्वाँ'।

ज़म्ज़मःपैरा (زمزمہ پیرا) फा. वि.–दे. 'ज़म्ज़मःख़्वाँ'।

ज़म्ज़मःसंज (زمزمہ سنج) फा. वि.–गानेवाला; चहचहानेवाला; मधुर स्वर में बातचीत करनेवाला।

ज़म्ज़मःसंजी (زمزمہ سنجی) फा. स्त्री.–गाना; चहचहाना; मधुर स्वर में बातचीत करना।

ज़म्ज़म (زمزم) अ. पुं.–मक्के का एक पवित्र कुआँ; उस कुएँ का पानी।

ज़म्ज़मी (زمزمی) अ. स्त्री.–ज़म्ज़म रखने की कुप्पी।

ज़म्द (ضمد) अ. पुं.–मर्‌हम लगाना; दवा चुपड़ना।

ज़म्मः (ضمہ) अ. पुं.–'पेश' का चिह्न, 'उ' की मात्रा।

जम्माज़ः (جمازہ) अ. स्त्री.–तेज़ चलनेवाली ऊँटनी, साँडनी।

जम्माश (جماش) अ. वि.–चपल, चंचल, शोख़, शरीर; साहसी, हिम्मती; शूर, वीर।

जम्मे ग़फ़ीर (جم غفیر) अ. पुं.–बहुत बड़ा जमाव, बहुत बड़ी भीड़।

जम्रः (جمرہ) अ. पुं.–चिनगारी, अग्निकण, स्फुलिंग; कंकरी, ठीकरी; एक प्रकार की फुंसियाँ जिनमें बड़ी जलन होती है।

ज़म्र (ضمر) अ. पुं.–छरहरे और दुबले शरीर का व्यक्ति।

ज़म्हरीर (زمہریر) फा. पुं.–बहुत ही कड़ा जाड़ा; वायुमंडल का वह भाग जो बहुत ही ठंडा है।

ज़र (زر) फा. पुं.–स्वर्ण, सुवर्ण, हेम, हाटक, कांचन, सोना; धन, संपत्ति, दौलत; बहुत बूढ़ा या बूढ़ी।

जर[र्] (جر) अ. पुं.–खींचना; आकर्षण, खिंचाव; ज़ेर की हरकत।

ज़र[र्] (ضر) अ. पुं.–दुःख, कष्ट, तकलीफ़; दुर्दशा, बदहाली; निर्धनता, ग़रीबी; निर्बलता, दुबलापन।

ज़रअंदूदः (زراندودہ) फा. वि.–सोने से मढ़ा हुआ, सोना चढ़ा हुआ।

ज़रअफ़्शाँ (زرافشاں) फा. वि.–दे. 'ज़रफ़्शाँ'।

ज़रअफ़्शानी (زرافشانی) फा. स्त्री.–दे. 'ज़रफ़्शानी'।

ज़रक (زرک) फा. पुं.–सोने के वरक़ों का चूरा।

ज़रकश (زرکش) फा. वि.–सोने-चाँदी के तारों से कलाबत्तू बनानेवाला; सोने-चाँदी के तारों से बना हुआ कपड़ा।

ज़रकशी (زرکشی) फा. स्त्री.–सोने-चाँदी के तारों का काम, कलाबत्तू का काम।

ज़रकार (زرکار) फा. वि.–सुनहले काम की चीज़।

ज़रकोब (زرکوب) फा. वि.–सोने-चाँदी के वरक़ बनानेवाला; वह चीज़ जिसपर सोने के पत्र चढ़े हों।

ज़रकोबी (زرکوبی) फा. स्त्री.–सोने-चाँदी के वरक़ बनाना।

ज़रख़रीद (زرخرید) फा. वि.–अपने दामों से मोल लिया हुआ; मोल लिया हुआ दास।

ज़रख़ेज़ (زرخیز) फा. वि.–अच्छी उपजाऊ भूमि, उर्वरा, सस्यप्रद।

ज़रख़ेज़ी (زرخیزی) फा. स्त्री.–ज़मीन का उपजाऊ होना।

ज़रगर (زرگر) फा. पुं.–स्वणकार, सुनार, सोने-चाँदी के ज़ेवर बनानेवाला।

ज़रगरी (زرگری) फा. स्त्री.–स्वर्णकर्म, सोने-चाँदी का काम बनाना, सोने-चाँदी के ज़ेवर बनाना।

ज़रग़ूनी (زرغونی) अ. स्त्री.–एक यूनानी दवा।

ज़रतार (زرتار) फा. वि.–सोने के तारों से बना या गुँथा हुआ।

ज़रतुश्त (زرتشت) फा. पुं.–दे. 'ज़रदुश्त'।

ज़रदार (زردار) फा. वि.–धनी, धनाढ्य, मालदार।

ज़रदारी (زرداری) फा. स्त्री.–धनाढचता, धनवानी, मालदारी।

ज़रदुश्त (زردشت) फा. पुं.–'मिनूचेह्र' का वंशज एक ईरानी महात्मा, जो यूनान के हकीम फ़ीसाग़ोरस का शिष्य था। इसने सम्राट् गुश्ताश्प के समय में एक धर्म चलाया जिसका मुख्य उद्देश्य अग्निपूजा था, इसका धर्मग्रंथ 'ज़ेंद' है।

ज़रदोज़ (زردوز) फा. वि.–ज़रदोज़ी का काम करनेवाला, कारचोब, सल्मासितारा और कलाबत्तू का काम बनानेवाला।

ज़रदोज़ी (زردوزی) फा. स्त्री.–कारचोबी, सल्मेसितारा और ज़री का काम।

ज़रदोस्त (زردوست) फा. वि.–धन का लोभी, बहुत ही लोभी और कंजूस।

ज़रदोस्ती (زردوستی) फा. स्त्री.–धन का लोभ, धन का बहुत अधिक प्रेम; कृपणता, कंजूसी।

ज़रनिगार (زرنگار) फा. वि.–सोने के काम से सजा हुआ, सोने के बेलबूटे बना हुआ।

ज़रपरस्त (زرپرست) फा. वि.–रुपये की पूजा करनेवाला, धन-पिशाच; बहुत बड़ा कंजूस।

ज़रपरस्ती (زرپرستی) फा. स्त्री.–रुपये की पूजा; हद से बढ़ा हुआ लोभ।

ज़रपाश (زرپاش) फा. वि.–सोना बरसानेवाला, दानशील, फ़ैयाज़।

ज़रपाशी (زرپاشی) फा. स्त्री.–सोना बरसाना, बहुत अधिक दानशीलता।

ज़रफ़िशाँ (زرفشاں) फा. वि.–दे. 'ज़रफ़्शाँ'।

ज़रफ़िशानी (زرفشانی) फा. स्त्री.–दे. 'ज़रफ़्शानी'।

ज़रफ़्शाँ (زرافشاں) फा. वि.–सोना बरसानेवाला अर्थात् बहुत अधिक दानशील।

ज़रफ़्शानी (زرافشانی) फा. स्त्री.–सोना बरसाना, बहुत बड़ी दानशीलता।

जरब (جرب) अ. स्त्री.–खुजली, ख़ारिश, खर्जू, कंडू।

ज़रब (ضرب) अ. पुं.–सफ़ेद शहद, श्वेत मधु।

ज़रब (ذرب) अ. पुं.–पेट का एक रोग जिसमें कभी दस्त होने लगते हैं कभी बंद हो जाते हैं।

ज़रबफ़्त (زربفت) फा. पुं.–सोने-चाँदी के तारों से बना हुआ कपड़ा।

ज़रबान (ضربان)अ. पुं.–हृदय की धड़कन; दर्द की लपक।

ज़रबाफ़ (زرباف) फा. वि.–ज़रबफ़्त बनानेवाला।

ज़रबाफ़ी (زربافی) फा. स्त्री.–जरबफ़्त बुनना।

ज़रबी (ضربی) अ. वि.–शहदवाली वस्तु।

जरम (جرم) अ. पुं.–उपचार, इलाज; उपाय, तद्बीर।

जरयान (جریان) अ. पुं.–स्राव, प्रवाह, बहाव, प्रमेह, धातुस्राव रोग।

जरयाने ख़ून (جریان خون) अ. फा. पुं.–शरीर से रक्त का स्राव।

जरयाने तम्स (جریان طمس) अ. पुं.–रज का स्राव, मासिक धर्म का अधिक मात्रा में आना।

जरयाने दम (جریان دم) अ. पुं.–रक़्त का स्राव, ख़ून का खारिज होना।

जरयाने मनी (جریان منی) अ. पुं.–वीर्य का स्राव, वीर्य का पतला होकर मूत्र के साथ निकलना; एक रोग, प्रमेह।

ज़रर (ضرر) अ. पुं.–हानि, नुक़्सान; आघात, चोट; अनिष्ट, खराबी।

ज़ररसाँ (ضرررساں)अ. फा. वि.–हानिकारक, नुक़्सानदेह।

ज़ररसानी (ضرررسانی) अ. फा. स्त्री.–हानिकारिता, नुक़्सानदिही।

ज़ररसी (ضرررسی) अ. फा. स्त्री.–नुक़्सान पहुँचना, हानि पहुँचना।

ज़ररसीदः (ضرررسیدہ) अ. फा. वि.–हानि पहुँचा हुआ, हानि-पीड़ित।

ज़ररेज़ (زرریز) फा. वि.–सोना बरसानेवाला, अतिदानी।

ज़ररेज़ी (زرریزی) फा. स्त्री.–सोना बरसाना, फ़ैयाज़ी करना।

जरस (جرس) फा. पुं.–घंटा, घड़ियाल; वह घंटा जो यात्रियों के दल के साथ रहता है।

ज़रा (ذرع)अ. पुं.–लोभ, लालच; जंगली गाय का बच्चा।

ज़रा (ذرا-زرا) तु. वि.–तनिक, किंचित, अल्प, थोड़ा।

ज़रा (ضرا) अ. पुं.–रोना धोना, क्रन्दन; विनम्रता, आजिज़ी।

ज़राअत (زراعت) अ. स्त्री.–दे. शु. उ. 'ज़िराअत'।

ज़राअत(ضراعت) अ. स्त्री.–रोना, क्रन्दन; विनती करना, घिघियाना।

जराइद (جرائد) अ. पुं.–'जरीदः' का बहु., समाचारपत्र।

ज़राइफ़ (ظرائف) अ. पुं.–'ज़रीफ़ः' का बहु., ज़राफ़तें, मनोरंजन की बातें।

जराइम (جرائم) अ. पुं.–'जरीमः' का बहु., अनेक प्रकार के अपराध; बहुत से अपराध।

जराइमपेशः (جرائم پیشہ) अ. फा. वि.–जिसे जुर्म करने की आदत हो; जो प्रकृति से ही जुर्म का आदी हो।

जराइमपेशगी (جرائم پیشگی) अ. फा. स्त्री.–अपराधकरने का स्वभाव।

ज़राइर (ذرائر) अ. पुं.–'ज़र्रः' का बहु., छोटे-छोटे च्यूँटें।

ज़राए' (ذرائع) अ. पुं.–'ज़रीअः' का बहु., ज़रीए, साधन।

जराद (جراد) अ. पुं.–टीड़ी, टिड्डी, जो खेत खा जाती है।

ज़राफ़ (زراف) अ. पुं.–एक जंगली पशु जो ऊँट के बराबर होता है, और तेंदुए जैसी शरीर पर धारियाँ होती हैं, दे. 'ज़िराफ़' दोनों शुद्ध हैं।

ज़राफ़त (ظرافت) अ. स्त्री.–हँसी, ठठोल, मस्ख़रापन; ख़ुशतब्ई, मनोरंजन; व्यंग, तंज़; हास्यरस, मिज़ाहनिगारी।

ज़राफ़तअंगेज़ (ظرافت انگز) अ. फा. वि.–ज़राफ़त पैदा करनेवाला।

ज़राफ़तआमेज़ (ظرافت آمیز) अ. फा. वि.–जिसमें हँसी-दिल्लगी की बातें मिली हों, परिहासपूर्ण।

ज़राफ़तनिगार (ظرافت نگار) अ. फा. वि.–हास्य-लेखक, मिज़ाहनिगार।

ज़राफ़तनिगारी (ظرافت نگاری) अ. फा. स्त्री.–हास्य-लेख लिखना, मिज़ाहनिगारी।

ज़राफ़तपसंद (ظرافت پسند) अ. फा. वि.–जिसे मनोरंजन पसंद हो, परिहासप्रिय।

ज़राफ़तपसंदी (ظرافت پسندی) अ. फा. स्त्री.–मनोरंजन की बातों का अच्छा लगना।

ज़राब (زرآب) फा. पुं.–सोने का पानी, पानी की शक़्ल में सोना, हल किया हुआ सोना; पीले रंग की मदिरा।

ज़रारत (ضرارت)अ. स्त्री.–हानि पहुँचाना, नुक़्सान करना; अंधा होना।

ज़रारीह (ذراریح), अ. पुं.–'ज़ुर्रूह' का बहु., एक प्रकार के कीड़े जो दवा में काम आते हैं, यह शब्द एकवचन में प्रयुक्त है।

ज़रावंद (زراوند) फा. स्त्री.–एक दवा जो गोल और लम्बे दानों के आकार की होती है, गोल को 'मुदव्वर' और लंबे को 'तवील' कहते हैं।

जरासीम (جراثیم) अ. पुं.–'जुर्सूमः' का बहु., छोटे-छोटे कीड़े, कीटाणुगण।

जरासीमकुश (جراثیم کش) अ. फा. वि.–कीड़े मारनेवाली दवा, कीटनाशक।

जराहत (جراحت) अ. स्त्री.–इस शब्द का शुद्ध उच्चारण 'जिराहत' है, परंतु उर्दू में दोनों तरह बोलते हैं, घाव, ज़ख़्म; चीरफाड़, शल्यक्रिया।

जराहतख़ुर्दः (جراحت خوردہ) अ. फा. वि.–घायल, ज़ख़्मी, आहत, क्षत।

जराहतनसीब (جراحت نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में घायल होना ही हो, जिसे हर जगह ज़ख़्म खाने को मिले।

ज़रीं (زریں) फा. वि.–सोने का बना हुआ, स्वर्णमय; सोने का, स्वर्णिम; सोने से सम्बन्ध रखनेवाला।

जरी (جری) अ. वि.–वीर, शूर, बहादुर; उत्साही, साहसी, जवाँमर्द।

ज़री (زری) फा. स्त्री.–दे. 'ज़रीं'; सोने-चाँदी के तार जिन पर सुनहरा मुलम्मा हो; गोटा किनारी का कपड़ा।

ज़रीअः (ذریعہ) अ. पं.–साधन, वसीला; माध्यम, वासिता; द्वारा, मारिफ़त; उपाय, तदबीर।

जरीदः (جریدہ) अ. पुं.–एकाकी, अकेला; समाचारपत्र, अख़बार।

जरीदःनिगार (جریدہ نگار) अ. फा. वि.–पत्रकार, अख़बारनवीस।

जरीदःनिगारी (جریدہ نگاری) अ. फा. स्त्री.–पत्रकारी, अख़बारनवीसी।

जरीद (جرید) अ. पुं.–पत्रवाहक, क़ासिद; गुप्तचर, जासूस।

जरीदिल (جری دل) अ. फा. वि.–साहसी, जवाँमर्द, जिसे भय न हो।

ज़रीनः (زرینہ) फा. स्त्री.–सुनहरी।

ज़रीफ़ (ظریف) अ. वि.–हँसोड़, मस्ख़रा; ख़ुश मिज़ाज, विनोदप्रिय; प्रतिभाशाली, ज़हीन।

ज़रीफ़तब्अ (ظریف طبع) अ. वि.–दिल्लगी बाज़, हँसोड़, मनोविनोदी।

ज़रीफ़मिज़ाज (ظریف مزاج) अ. वि.–जिसके स्वभाव में मनोविनोद और हँसी मज़ाक़ बहुत हो, विनोदप्रिय।

ज़रीफ़ानः (ظریفانہ) अ. फा. वि.–मनोविनोद से भरा हुआ, हास्यपूर्ण।

ज़रीफ़ुत्तब्अ (ظریف الطبع) अ. वि.–दे. 'ज़रीफ़तब्अ'।

ज़रीफ़ुलमिज़ाज (ظریف المزاج) अ. वि.–दे. 'ज़रीफ़मिज़ाज'।

ज़रीबः (ضریبہ) अ. स्त्री.–स्वभाव, आदत; तलवार की तीक्ष्णता (वि.) तलवार से घायल।

जरीब (جریب) फा. स्त्री.–खेत नापने की ज़ंजीर; हाथ में पकड़ने की छड़ी।

जरीबकश (جریب کش) फा. वि.–जरीब से खेत नापनेवाला।

जरीबकशी (جریب کشی) फा. स्त्री.–जरीब द्वारा खेतों की पैमाइश।

ज़रीबत (ضریبت) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

ज़रीबाफ़ (زری باف) फा. वि.–सोने-चाँदी के तार या सुनहरी लैस बनानेवाला।

जरीमः (جریمہ) अ. पुं.–पाप, पातक, गुनाह; दोप, अपराध, क़ुसूर।

जरीम (جریم) अ. वि.–जड़ से काटा हुआ, उन्मूलित; बड़े डीलडौल का।

ज़रीम (ضریم) अ. वि.–जला हुआ, दग्ध।

जरीरः (جریرہ) अ. पुं.–पाप, गुनाह।

ज़रीर (ضریر) अ. वि.–अंधा, अंध, नेत्रहीन; अशक़्त, निर्बल, दुबला।

जरीश (جریش) अ. पुं.–दलया, जो पकाया जाता है।

जरीस (جریس) अ. वि.–बहुत भूखा, क्षुधातुर।

ज़रीह (جریح) अ. वि.–आहत, घायल, ज़ख़्मी।

ज़रीह (ضریح) अ. स्त्री.–क़ब्र, समाधि।

ज़रूर (ضرور) अ. वि.–अवश्य, यक़ीनी; निश्चित रूप से; निःसंदेह, बेशुब्हः।

ज़रूर (ذرور) अ. पुं.–दवा की बुकनी जो घाव या आँख आदि में छिड़की जाय।

ज़रूरत (ضرورت) अ. स्त्री.–आवश्यकता, चाह; आकांक्षा, ख़्वाहिश; कारण, सबब।

ज़रूरतन् (ضرورتاً) अ. वि.–कारणवश, आवश्यकता से।

ज़रूरतमंद (ضرورت مند) अ. फा. वि.–इच्छुक, ख़्वाहिशमंद; मोहताज, दरिद्र; भिक्षुक, भिखारी।

ज़रूरी (ضروری) अ. वि.–आवश्यक, यक़ीनी; अनिवार्य, लाज़िमी।

ज़रूरीयात (ضروریات) अ. स्त्री.–'ज़रूरी' का बहु., आवश्यकताएँ, ज़रूरतें।

ज़रे अस्ल (زر اصل) अ. फा. पुं.–मूलधन, अस्ल रुपया।

ज़रे क़ल्ब (زر قلب) फा. अ. पुं.–खोटा सिक्का; खोटा सोना या चाँदी।

ज़रे ख़ालिस (زر خالص) फा. अ. पुं.–खरा सिक्का; खरा सोना या चाँदी।

ज़रे गुल (زر گل) फा. पुं.–पराग, पुष्परज, फूल का ज़ीरा।

ज़रे नक़्द (زر نقد) फा. अ. पुं.–नक़्द रुपया, कैश।

ज़रे नातिक़ (زر ناطق) फा. अ. पुं.–बोलनेवाला धन; नौकर-चाकर, दास आदि; पशुधन।

जरे पेशगी (زرِ پیشگی) फा. पुं.–अग्रिम धन, किसी काम के लिए पहले दिया हुआ रुपया।

जरे फ़ाज़िल (زرِ فاضل) फा. अ. पुं.–अतिरिक्त धन, फ़ालतू रुपया, लेने या देने से अधिक रुपया।

जरे बैआनः (زرِ بیعانہ) फा. अ. पुं.–अग्रिम धन, पेशगी, रुपया।

जरे मस्कूक (زرِ مسکوک) फा. अ. पुं.–रुपया या अश्रफ़ी।

जरे महलूल (زرِ محلول) फा. अ. पुं.–पानी के रूप में पिघला हुआ सोना।

जरे मुआवज़ः (زرِ معاوضہ) फा. अ. पुं.–किसी चीज़ के बदले का रुपया।

जरे मुतालबः (زرِ مطالبہ) फा. अ. पुं.–डिग्री आदि का वाजिब रुपया।

जरे मुनाफ़अः (زرِ منافعہ) फा. अ. पुं.–कारोबार में लाभ का रुपया।

जरे सफ़ेद (زرِ سفید) फा. पुं.–चाँदी, रजत।

जरे सामित (زرِ صامت) फा. अ. पुं.–न बोलनेवाला धन, रुपया-पैसा या जाइदाद।

जरे सुर्ख़ (زرِ سرخ) फा. पुं.–सोना, स्वर्ण।

जरोगौहर (زروگوہر) फा. पुं.–सोना और मोती।

जरोजवाहिर (زروجواہر) फा. अ. पुं.–सोना और रत्न।

जर्अ (ذرع) अ. पुं.–शक्ति, बल; हाथ से नापना।

जर्अ (زرع) अ. स्त्री.–उगना, जमना; कृषि, खेती।

जर्अ (ضرع) अ. पुं.–गाय, वकरी आदि का थन।

जर्क़ (زرق) अ. वि.–छल, मक्र; असत्य, झूठ; मुँह पर कुछ होना और ज़बान पर कुछ।

जर्क़ (ذرق) अ. स्त्री.–पक्षी का वीट।

जर्क़बर्क़ (زرق برق) अ. वि.–तड़क-भड़कवाला, भड़कदार, चमकीला, भड़कीला।

जर्क़ा (زرقا) अ. स्त्री.–नीली आँखोंवाली स्त्री।

जर्गः (جرگہ) तु. पुं.–दल, समूह, जमाअत; गोत्र, वंश, खानदान, जिर्गः भी शुद्ध है।

जर्ग़ब (زرغب) फा. पुं.–कीमुख़्त, एक प्रकार का चमड़ा।

जर्ग़ूनी (زرغونی) अ. स्त्री.–एक दवा जो यूनानी में प्रचलित है।

जर्दः (زردہ) फा. पुं.–एक प्रकार के मीठे चावल; खुशबूदार पत्ती का तंबाकू।

जर्दः (جردہ) फा. पुं.–दे. 'चर्दः' इस अर्थ में 'जर्दः' अशुद्ध है।

जर्द (زرد) फा. वि.–पीत, पीला, पीले रंगवाला; पीला रंग।

जर्द (زرد) अ. पुं.–निवाला निगलना; गला घोंटना; कवच विनना।

ज़र्दआब (زرد آب) फा. पुं.–दे. 'ज़र्दाब', वही उच्चारण अधिक शुद्ध है।

ज़र्दआलू (زرد آلو) फा. पुं.–दे. 'ज़र्दालू', वही उच्चारण अधिक शुद्ध है।

ज़र्दक (زردک) फा. स्त्री.–गाजर, पीत क़ंद, एक प्रसिद्ध कंद।

ज़र्दगोश (زردگوش) फा. पुं.–छली, धूर्त, मक्कार; द्वय भाषी, मुवाफ़िक़; दुविधा में पड़ा हुआ, मुज़ब्ज़ब।

ज़र्दचश्म (زردچشم) अ. पुं.–बाज़ और उसकी जाति के शिकारी पक्षी।

ज़र्दचोब (زردچوب) फा. स्त्री.–हल्दी, हरिद्रा।

ज़र्दरू (زردرو) फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदा; जिसके शरीर में ख़ून न हो, लाग़र, दुवला।

ज़र्दरूई (زردروئی) फा. स्त्री.–लज्जा, शर्म; शरीर में ख़ून न होना।

ज़र्दाब (زرد آب) फा. पुं.–फोड़े से बहनेवाला कच-लोहू।

ज़र्दालू (زرد آلو) फा. पुं.–ताज़ी ख़ूबानी।

ज़र्दी (زردی) फा. स्त्री.–पीतिमा, पीलापन; अंडे की ज़र्दी।

ज़र्नब (زرنب) फा. स्त्री.–एक दवा, तालीस पत्र।

ज़र्नीख़ (زرنیخ) फा. स्त्री.–हड़ताल, एक ओषधि।

ज़र्फ़ (ظرف) अ. पुं.–वर्तन, भाजन, पात्र; योग्यता, सलाहीयत; गंभीरता, तहम्मुल; सहनशीलता, वुर्दबारी।

ज़र्फ़े आब (ظرفِ آب) अ. फा. पुं.–पानी रखने का वरतन, जलपात्र।

ज़र्फ़े ज़मां (ظرفِ زماں) अ. पुं.–वह संज्ञा जो समय की सूचक हो, जैसे–प्रात: और संध्या।

ज़र्फ़े मकां (ظرفِ مکاں) अ. पुं.–वह संज्ञा जो स्थान की सूचक हो, जैसे—-घर या पाठशाला।

ज़र्फ़े मय (ظرفِ مے) अ. फा. पुं.–शराव का वरतन, सुरापात्र।

ज़र्फ़े शीर (ظرفِ شیر) अ. फा.–दूध रखने का बरतन, क्षीरपात्र।

ज़र्बः (ضربہ) अ. पुं.–चोट, आघात, ज़र्ब; पाँसा, क़ुर्थः।

ज़र्ब (ضرب) अ. स्त्री.–आघात, चोट, (पुं.) गुणा, दो संख्याओं का गुणा।

ज़र्बख़ानः (ضرب خانہ) अ. फा. पुं.–टंकशाला, टकसाल, जहाँ रुपया ढलता है।

ज़र्बत (ضربت) अ. स्त्री.–ज़र्ब, चोट, आघात।

ज़र्बात (ضربات) अ. स्त्री.–'ज़र्बत' का बहु., चोटें, मारें।

ज़र्बीयः (ضربیہ) अ. पुं.–टैक्स, कर, महसूल।

ज़र्बुलमसल (ضرب المثل) अ. पुं.–कहावत, लोकोक्ति, मसल।

ज़र्बे ख़फ़ीफ़ (ضرب خفیف) अ. स्त्री.–हलकी चोट, जिसमें हड्डी आदि न टूटे।

ज़र्बे दस्त (ضرب دست) अ. फा. स्त्री.–हाथ की चोट, थप्पड़, हस्ताघात।

ज़र्बे पा (ضرب پا) अ. फा. स्त्री.–पाँव की ठोकर, पदाघात।

ज़र्बे फ़त्ह (ضرب فتح) अ. स्त्री.–लड़ाई जीतने की ख़ुशी में बजनेवाला बाजा।

ज़र्बे मुफ़्रद (ضرب مفرد) अ. पुं.–साधारण गुणा, किसी पूरी संख्या का पूरी संख्या से गुणा।

ज़र्बे मुरक्कब (ضرب مرکب) अ. पुं.–रुपया, आना और पाई या मन, सेर और छटाँक आदि का गुणा।

ज़र्बे लाज़िब (ضرب لازب) अ. स्त्री.–वह चोट जिसका चिह्न अच्छे होने पर भी बाक़ी रहे।

ज़र्बे शदीद (ضرب شدید) अ. स्त्री.–गहरी चोट जिसमें हड्डी टूट जाय या और कोई ऐसा ही घाव आये जिससे प्राणभय हो।

ज़र्बे शम्शीर (ضرب شمشیر) अ. फा. स्त्री.–तलवार का घाव।

ज़र्रः (ذرہ) अ. पुं.–कण, अणु, रेणु, बहुत ही बारीक रेज़ा; अति तुच्छ, बहुत ही हक़ीर; छोटा चींटा।

ज़र्रः (ضرہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो एक स्त्री की उपस्थिति में व्याह कर लायी जाय, सौकन, सौत।

ज़र्रः नवाज़ (ذرہ نواز) अ. फा. वि.–छोटों पर दया करनेवाला, दीनदयालु, दीनबंधु।

ज़र्रःपर्वर (ذرہ پرور) अ. फा. वि.–दे. 'ज़र्रःनवाज़'।

ज़र्रए नाचीज़ (ذرۂ ناچیز) अ. फा. पुं.–बहुत ही छोटा और सूक्ष्म कण, अर्थात् अत्यंत तुच्छ व्यक्ति, वक्ता अपने लिए भी इस शब्द का प्रयोग करता है।

ज़र्रए बेमिक़्दार (ذرۂ بےمقدار) अ. फा. पुं.–दे. 'ज़र्रए नाचीज़'।

ज़र्रतान (ضرتان) अ. स्त्री.–वे दो स्त्रियाँ जो एक पुरुष के व्याह में हों, 'ज़र्रः' का द्विवचन, दो सौतें।

ज़र्राक़ (زراق) अ. वि.–जिसके मन में कुछ हो और मुँह पर कुछ, द्विजिह्व, मुनाफ़िक़।

ज़र्राअ (ضراع) अ. स्त्री.–कष्ट, आपत्ति, दुःख; हानि, नुक़सान।

ज़र्राक़ख़ानः (زراق خانہ) अ. फा. पुं.–ऐसा स्थान जहाँ वे सब लोग एकत्र हों जिनके दिलों में कुछ होता है और मुँह पर कुछ, धूर्त्तावास।

ज़र्राद (زراد) अ. वि.–ज़िरिहवक़्तर बनानेवाला।

ज़र्राफ़ (ظراف) अ. वि.–बहुत अधिक हँसोड़, बड़ा दिल्लगी बाज़; बड़ा प्रतिभाशाली, बहुत ज़हीन।

ज़र्रादख़ानः (زرادخانہ) अ. फा. पुं.–शस्त्रागार, हथियार-घर।

ज़र्राब (ضراب) अ. वि.–सिक्के पर ठप्पा लगानेवाला, मुद्रा छापनेवाला।

जर्रारः (جرارہ) अ. पुं.–एक अत्यंत विषैला विच्छू जो पूँछ ज़मीन पर घसीटता हुआ चलता है; बहुत बड़ी सेना।

जर्रार (جرار) अ. वि.–बहुत बड़ी सेना; बहुत बड़ी भीड़ जो लोगों के हुजूम के कारण धीरे-धीरे चलती हो; अपनी ओर खींचनेवाला।

जर्राह (جراح) अ. पुं.–चीर-फाड़ से ज़ख़्मों का इलाज करनेवाला, शल्य-चिकित्सक।

जर्राही (جراحی) अ. स्त्री.–जर्राह का काम, घावों और फोड़े-फुंसियों की चिकित्सा, चीर-फाड़, शल्य-क्रिया।

ज़र्रीं (زریں) फा. वि.–सोने का; सोने से मढ़ा हुआ, सोना चढ़ा हुआ; सुनहला।

जर्रे सक़ील (جر ثقیل) अ. पुं.–भारी बोझ खींचने और उठाने की विद्या।

जर्ह (جرح) अ. स्त्री.–चोट, आघात; किसी बात के झूठ सच की जाँच के लिए प्रश्न।

जर्होक़द्ह (جرح وقدح) अ. स्त्री.–वाद-विवाद, तर्क-वितर्क, बहस, हुज्जत।

जल्क़ (جلق) अ. स्त्री.–हाथ से इंद्रिय-संचालन द्वारा वीर्यपात, हस्त-मैथुन, हथलस।

ज़लक़ (زلق) अ. स्त्री.–फिसलन, फिसलना; साफ और चौरस मैदान या ज़मीन; हस्तमैथुन, हथलस।

जल्क़ज़दः (جلق زدہ) अ. फा. वि.–हस्तमैथुनिक, जिसे हथलस का दुर्व्यसन हो।

जल्क़ी (جلقی) अ. वि.–हथलस करनेवाला, जल्क़ लगानेवाला, हस्तमैथुनिक।

ज़लक़ुलअम्आ (زلق الامعا) अ. स्त्री.–आँतों की फिसलन, एक रोग जिसमें आँतें मवाद रोक नहीं सकतीं और दस्त आते रहते हैं।

ज़लमः (ظلمہ) अ. पुं.–'ज़ालिम' का बहु., निर्दय और अत्याचारी लोग।

ज़ल्मानी (ظلمانی) अ. वि.–तमिस्र, अंधकारमय, तारीक।

ज़लल (زلل) अ. पुं.–फिसलन, फिसलना; फिसलने की जगह; ह्रास, कमी; त्रुटि, ग़लती।

जला (جلا) अ. वि.–किसी को देश निकाला देना; स्वयं देश त्याग करके परदेश जाना।

जलाजिल (جلاجل) अ. पुं.–'जुल्जुल' का बहु., वह घुंघरू जो किसी कपड़े पर टाँककर पशु आदि के गले में डालते हैं। वे मजीरे जो डफ़ की परिधि में होते हैं; बड़े मजीरे, झाँझ।

ज़लाज़िल (زلازل) अ. पुं.–'ज़ल्ज़लः' का बहु., ज़ल्ज़ले, भूकंप।

ज़लाक़त (ذلاقت) अ. स्त्री.–वाक्पटुता, तेज़ बयानी, बात को अच्छे ढंग से और ज़ोरदार शब्दों में कहना।

जलादत (جلادت) अ. स्त्री.–स्फूर्ति, फुर्ती, चुस्ती; शूरता, वीरता, बहादुरी।

ज़लाम (ظلام) अ. पुं.–संध्या के बाद की अँधेरी, शुरू रात का हलका अँधेरा।

ज़लाल (ظلال) अ. पुं.–बादल की छाया; सायःदार जगह।

ज़लाल (ضلال) अ. पुं.–गुमराही, मार्ग भ्रंश, रस्ते से भटक जाना; पाप, गुनाह।

जलाल (جلال) अ. पुं.–प्रताप, तेज़, अज़मत; हैबत, किसी महात्मा या ऋषि, मुनि का रोब।

जलालत (جلالت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, महत्ता, बुज़ुर्गी।

जलालत मआब (جلالت مآب) अ. वि.–श्रेष्ठतायुक्त, अतिश्रेष्ठ।

जलालते शान (جلالت شان) अ. स्त्री.–व्यक्तित्व की महत्ता।

जलाली (جلالی) अ. वि.–जलालवाला, प्रतापवान्; 'जमाली' का उलटा, वह मंत्र, जाप या वज़ीफ़ा जिस में जान जाने का भय हो।

जलावत (جلاوت) अ. स्त्री.–उज्ज्वलता, प्रकाश, रौशनी; स्वच्छता, धवलता, सफ़ाई।

जलावतन (جلاوطن) अ. वि.–वह व्यक्ति जो अपना देश त्याग कर परदेश में रह रहा हो, निर्वासित, पुरुषार्थी, शरणार्थी।

जलावतनी (جلاوطنی) अ. स्त्री.–स्वदेश त्याग, अपना घर-वार छोड़कर दूसरे देश में रहना, अज्ञात वास।

जली (جلی) अ. वि.–व्यक्त, प्रकट, ज़ाहिर, मोटे अक्षरों में लिखा हुआ लेख।

जलील (جلیل) अ. वि.–प्रतिष्ठित, महान्, अज़ीम; मान्य, पूज्य, मोहतरम।

ज़लील (ذلیل) अ. वि.–भ्रष्ट, अधम, पामर, नीच, कदर्थित, कमीना; तिरस्कृत, अनाहत, अपमानित, बेइज़्ज़त।

जलीलुलक़द्र (جلیل القدر) अ. वि.–बड़े मरतबेवाला, महत्प्रतिष्ठ, महामना।

जलीस (جلیس) अ. पुं.–पास बैठनेवाला, सखा, पार्श्ववर्ती, हमनशीं, पार्षद, सहवर्ती।

ज़लू (زلو) फा. स्त्री.–जोंक, जलौका, रक्तपा।

ज़लूक (زلوک) फा. स्त्री.–दे. 'ज़लू'।

ज़लूम (ظلوم) अ. वि.–अत्यंत अत्याचारी, बहुत बड़ा ज़ालिम।

ज़ल्ज़लः (زلزلہ) अ. पुं.–भूकंप, भूडोल, भूचाल, भूप्रकंप।

ज़लज़लःअफ़गन (زلزلہ افگن) अ. फा. वि.–जो ज़ल्ज़लः डाल दे, जो पृथ्वी को हिला दे।

जल्द (جلد) फा. वि.–शीघ्र, त्वरित, सत्वर, तुरंत, फ़ौरन।

जल्द अज़ जल्द (جلد از جلد) फा. वि.–शीघ्रातिशीघ्र, जल्द से जल्द, जितनी जल्दी हो सके।

जल्दतर (جلدتر) फा. वि.–अतिशीघ्र, बहुत जल्द, फौरन, तुरंत ही।

जल्दबाज़ (جلدباز) फा. वि.–जो चाहता हो कोई काम जल्द हो जाय, उतावला, आतुर।

जल्दबाज़ी (جلدبازی) फा. स्त्री.–तुरंत काम हो जाने की चाह; तुरंत करने की उत्कंठा।

जल्ब (جلب) अ. स्त्री.–लेना, ग्रहण करना; हासिल करना, उपार्जन।

जल्बे मन्फ़अत (جلب منفعت) अ. स्त्री.–लाभोपार्जन, नफ़ा कमाना।

ज़ल्लः (زلہ) अ. पुं.–वह भोजन जो किसी के लिए रख दिया जाय; बचा हुआ खाना, जूठन, उच्छिष्ट; वह भोजन जो दासों और दासियों को दिया जाता है।

ज़ल्लः (زلہ) फा. पुं.–झींगर।

जल्लःजलालुहू (جل جلالہ) अ. अव्य.–ईश्वर के नाम के साथ आता है अर्थात् उसका जलाल (प्रताप) अति महान् है।

ज़ल्लःरुबा (زلہ ربا) अ. फा. वि.–जूठन खानेवाला, किसी बड़े व्यक्ति के सहारे रहनेवाला।

ज़ल्लत (زلت) अ. स्त्री.–फिसलन, फिसलना; त्रुटि, भूल, लग़्ज़िश।

जल्लाद (جلاد) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो अपराधियों को कोड़े मारता है; वह व्यक्ति जो अपराधियों की गर्दन मारता है; वह व्यक्ति जो फाँसी पर चढ़ाता है; अत्यंत निर्दय और अत्याचारी।

जल्लादी (جلادی) अ. स्त्री.–जल्लाद का काम या पेशा; घोर अत्याचार करनेवाला।

जल्लाब (جلاب) अ. वि.–ले जानेवाला, एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जानेवाला; पशुओं को बेचने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जानेवाला।

जल्वः (جلوہ) अ. पुं.–अपने को बनाव सिंगार करके दिखाना; अपने को दूसरे के सामने पेश करना; दर्शन, दीदार; प्रदर्शन, नुमाइश।

जल्वःआरा (جلوہ آرا) अ. फा. वि.–बनाव सिंगार और ठाट-बाट से किसी स्थान पर उपस्थित; किसी श्रेष्ठ और महान् व्यक्ति की उपस्थिति के लिए भी आता है।

जल्व:आराई (جلوہآرائی) अ. फा. स्त्री.–बनाव सिंगार के साथ उपस्थित; किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की उपस्थिति।

जल्व:गर (جلوہگر) अ. फा. वि.–दे. 'जल्व:आरा'।

जल्व:गरी (جلوہگری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'जल्व:आराई'।

जल्व:गाह (جلوہگاہ) अ. फा. स्त्री.–जल्व: दिखाने का स्थान, प्रेमिका का घर।

जल्व:फ़र्मा (جلوہفرما) अ. फा. वि.–दे. 'जल्व:आरा'।

जल्व:फर्माई (جلوہفرمائی) अ. फा. स्त्री.–दे. जल्व:आराई।

जल्वत (جلوت) अ. स्त्री.–अपने को सब को दिखाना; 'ख़लवत' का उलटा भीड़, जमाव।

जल्सः (جلسہ) अ. पुं.–सभा, मजलिस; नाच गाने की महफ़िल; बैठक, किसी कमेटी आदि की निशस्त।

जलसःगाह (جلسہگاہ) अ. फा. स्त्री.–जहाँ जल्सा हो रहा हो, जल्से की जगह, सभास्थल।

जल्सए ता'ज़ियत (جلسۂتعزیت) अ. पुं.–किसी की मृत्यु पर शोक प्रकट करने का जल्सा, शोकसभा।

जव (جو) अ. पुं.–अंतरिक्ष, ख़ला, ज़मीन और आस्मान के बीच की जगह।

जवाँ (جواں) फा. पुं.–जवान का यौगिक रूप; जवान, युवा, युवक, तरुण; वयस्क, बालिग।

जवाँताले' (جواں طالع) अ. फा. वि.–दे. 'जवाँवख़्त'।

जवाँदौलत (جواں دولت) फा. अ. वि.–जिसका धन तरुण हो, समृद्ध, धनाढच, बहुत ही मालदार।

जवाँवख़्त (جواں بخت) फा. वि.–जिसका भाग्य पूरी जवानी पर हो, महा भाग्यशाली।

जवाँमर्ग (جواں مرگ) फा. वि.–जो युवावस्था में मर जाय।

जवाँमर्गी (جواں مرگی) फा. स्त्री.–जवानी की मृत्यु, युवावस्था की मौत।

जवाँमर्द (جواں مرد) फा. वि.–वीर, शूर, बहादुर; साहसी, हिम्मतवर; दानी, वदान्य, सख़ी।

जवाँमर्दी (جوانمردی) फा. स्त्री.–शूरता, बहादुरी; साहस, हिम्मत; दानशीलता, सख़ावत।

जवाँमीर (جواں میر) फा. वि.–दे. 'जवाँमर्ग'।

जवाँसाल (جواں سال) फा. वि.–नयी उम्र का, नवयुवक, नबल, नव यौवन, नौ जवान, उठती जवानी का।

जवाँहिम्मत (جواں ہمت) फा. अ. वि.–बड़े हौसलेवाला, पूर्णोत्साही, महोत्साह।

जवाइद (زوائد) अ. पुं.–'ज़ाइदः' का बहु., फ़ालतू चीज़ें; वतोड़ियाँ।

जवाज़ (جواز) अ. पुं.–जाइज़ होना, औचित्य; धर्म के अनुसार जायज़ होना; पारपत्र, पास्पोर्ट।

जवाद (جواد) अ. वि.–मुक्तहस्त, वदान्य, दानशील, सख़ी, फ़ैयाज़।

जवान (جوان) फा. पुं.–तरुण, युवा, नौजवान; वयस्क, व्यवहार प्राप्त, बालिग़; रूपवान्, सजीला।

जवानानः (جوانانہ) फा. वि.–जवानों की तरह।

जवानामर्ग (جوانامرگ) फा. वि.–दे. 'जवाँमर्ग'।

जवानामर्गी (جوانامرگی) फा. स्त्री.–दे. 'जवाँमर्गी'।

जवानी (جوانی) फा. स्त्री.–युवावस्था, तरुणिमा, तारुण्य, नौजवानी।

जवाब (جواب) अ. पुं.–उत्तर, प्रश्न का जवाव; अस्वीकृति, इन्कार; जोड़, मद्दे मुक़ाविल।

जवाबतलब (جواب طلب) अ. वि.–वह पत्र आदि जिसका उत्तर जाना आवश्यक हो।

जवाबतलबी (جواب طلبی) अ. स्त्री.–किसी त्रुटि या अपराध पर पूछ-ताछ।

जवाबदावा (جواب دعویٰ) अ. पुं.–नालिश के दावे का उत्तर, जिसमें यह दिखाया जाता है कि वाद अमुक कारणों से झूठा है।

जवाबदेह (جواب دہ) अ. फा. वि.–उत्तरदाता, जवाव देनेवाला; उत्तरदायी, ज़िम्मःदार।

जवाबदेही (جواب دہی) अ. फा. स्त्री.–उत्तरदायित्व, ज़िम्मःदारी।

जवाबित (ضوابط) अ. पुं.–ज़ावितः का बहु., नियमावली, क़ायदे।

जवाबी (جوابی) अ. वि.–जवाव में, वदले में, जैसे— जवाबी हम्ला; जवाब के लिए दूसरा परत, जैसे—जवाबी तार अथवा ख़त।

जवाबुलजवाब (جواب الجواب) अ. पुं.–किसी प्रश्न के उत्तर में दिया हुआ उत्तर, प्रत्युत्तर।

जवाबे बा सवाब (جواب باصواب) अ. फा. पुं.–ठीक-ठीक और उचित उत्तर।

जवामीस (جوامیس) अ. पुं.–जायूस का बहु., भैंसे।

जवामे (جوامع) अ. पुं.–जामिअः का बहु., समग्र, समस्त, सब, कुल।

जवाया (زوایا) अ. पुं.–'ज़ावियः' का बहु., ज़ाविए, कोण।

जवारिश (جوارش) फा. स्त्री.–एक यूनानी, अवलेह के प्रकार की स्वादिष्ठ औषध जो पेट की बीमारियों में दी जाती है और बहुत प्रकार की होती है।

जवारेह (جوارح) अ. पुं.–'जारिहः' का बहु., हाथ, पाँव और दूसरे अवयव; शिकारी जानवरों का ग़ोल।

ज़वाल (زوال) अ. पुं.–गिराव, पतन; अवनति, उन्नति का उलटा; ह्रास, कमी।

ज़वालआबाद (زوال آباد) अ. फा. वि.–संसार, जगत्, दुनिया।

ज़वालआमादः (زوال آمادہ) अ. फा. वि.–जो पतन की ओर जाने को तैयार हो, पतनोन्मुख; जो नाशवान् हो, नश्वर।

ज़वालपिज़ीर (زوال پذیر) अ. फा.–वि. जिसका पतन हो रहा हो, अवनतिशील, पतनशील।

जवासीस (جواسیس) अ. पुं.–'जासूस' का बहु., गुप्तचरों का समूह।

जवाहिर (جواہر) अ. पुं.–'जौहर' का बहु., रत्नसमूह।

ज़वाहिर (زواہر) अ. पुं.–'ज़ाहिरः' का बहु., उज्ज्वल वस्तुएँ; ऊँचे स्थान; कलियाँ, शगूफ़े।

ज़वाहिर (ظواہر) अ. पुं.–'ज़ाहिर' का बहु., व्यक्त और प्रकट वस्तुएँ; ऊपरी और ज़ाहिरी हालतें।

जवाहिरख़ानः (جواہر خانہ) अ. फा. पुं.–जहाँ जवाहिरात हों, रत्नागार।

जवाहिरनिगार (جواہر نگار) अ. फा. वि.–रत्न जटित, रत्न जड़ा हुआ।

जवाहिररक़म (جواہر رقم) अ. वि.–जैसे रत्न जड़े हों ऐसी सुंदर लिखावट लिखनेवाला।

ज़विलअर्हाम (ذوی الارحام) अ. पुं.–साहिबे रहम, कृपावान, दयालुजन।

ज़विलक़ुर्बा (ذوی القربی) अ. पुं.–रिश्तेदार, स्वजन, नातेदार।

ज़विलफ़राइज़ (ذوی الفرائض) अ. पुं.–साहबे फ्रायज़् (फ्ऱ्ज़ का बहु.) कर्त्तव्यवान्, कर्मनिष्ठ।

ज़विलफ़ुरूज़ (ذوی الفروض) अ. पुं.–दे. ज़विलफ्रायज़।

जव्व (جو) अ. पुं.–अंतरिक्ष, खला; पृथ्वी और आकाश के बीच का वायुमंडल।

ज़व्वार (زوار) अ. वि.–तीर्थयात्री, ज़ियारत करनेवाला।

जव्वालः (جوالہ) अ. पुं.–बहुत अधिक चक्कर खानेवाली वस्तु।

जश्न (جشن) फा. पुं.–उत्सव, समारोह, कोई बहुत बड़ी ख़ुशी जिसे सारा देश या किसी सम्प्रदाय या दल के सारे आदमी मनायें।

जश्ने अज़ीम (جشن عظیم) अ. फा. पुं.–बहुत बड़ा समारोह, महोत्सव।

जश्ने अरूस (جشن عروس) फा. अ. पुं.–ब्याह की ख़ुशी, विवाहोत्सव।

जश्ने आज़ादी (جشن آزادی) फा. पुं.–किसी देश के पराधीनता से मुक्त होने का जश्न।

जश्ने ईद (جشن عید) फा. अ. पुं.–ईद की ख़ुशी, ईदोत्सव।

जश्ने चराग़ां (جشن چراغاں) फा. पुं.–दिवाली का जश्न, दीपावली; किसी ख़ुशी में चरागाँ, दीपोत्सव।

जश्ने जुमहूरियत (جشن جمہوریت) फा. अ. पुं.–गणतंत्र-महोत्सव।

जश्ने ताजपोशी (جشن تاج پوشی) फा. पुं.–अभिषेकोत्सव, किसी राजा आदि की राजगद्दी का जश्न।

जश्ने नौरोज़ (جشن نوروز) फा. पुं.–नये साल के आने की ख़ुशी, नव वर्षोत्सव।

जश्ने फ़त्ह (جشن فتح) फा. अ. पुं.–विजय प्राप्ति की ख़ुशी, जयोल्लास, विजयोत्सव।

जश्ने मीलाद (جشن میلاد) फा. अ. पुं.–दे. 'जश्ने विलादत'।

जश्ने विलादत (جشن ولادت) फा. अ. पुं.–किसी के पैदा होने का जश्न, जन्मोत्सव।

जश्ने सालगिरिह (جشن سالگرہ) फा. पुं.–किसी महान् व्यक्ति की वर्षगाँठ की ख़ुशी, जयंती।

जश्ने सीमीं (جشن سیمیں) फा. पुं.–पचास वर्षों की आयु पूरी होने पर मनाया जानेवाला उत्सव, रजतोत्सव; आजकल इसे 'स्वर्णजयन्ती' कहते हैं।

जश्ने सुल्ह (جشن صلح) फा. अ. पुं.–दो राष्ट्रों में संधि होने का जश्न, संधि-उत्सव।

जस (جص) अ. पुं.–चूना, गच।

जसद (جسد) अ. पुं.–शरीर, देह, जिस्म।

जसदी (جسدی) अ. वि.–शरीर से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु; शरीर का।

जसदे ख़ाकी (جسد خاکی) अ. फा. पुं.–मिट्टी से बना हुआ शरीर, तुच्छ और नश्वरदेह।

जसामत (جسامت) अ. स्त्री.–लंबाई, चौड़ाई और (मोटाई, गहराई या ऊँचाई) हज्म, दल; मोटापा, पीनता, स्थूलता।

जसारत (جسارت) अ. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी, दिलेरी; धृष्टता, दुःसाहस, बेबाकी।

जसीम (جسیم) अ. वि.–स्थूल, पीवर, पीन, मोटा ताज़ा।

जसूर (جسور) अ. वि.–वीर, शूर, बहादुर।

जस्तः (جستہ) फा. वि.– कूदा हुआ।

जस्तः जस्तः (جستہ جستہ) फा. वि.–कहीं-कहीं से, विशेषतः पुस्तक पढ़ने के लिए आता है।

जस्त (جست) फा. स्त्री.–उछाल, कुदान, उत्फाल।

जस्तोख़ेज़ (جست و خیز) फा. स्त्री.–दौड़-धूप, कोशिश, प्रयत्न।

जस्र (جسر) अ. पुं.–पुल, सेतु।

ज़ह (زہ) फा. पुं.–नुत्फ़:, वीर्य; भ्रूण, जनीन; शिशु, बच्चा।

ज़हदान (زہدان) फा. पुं.–गर्भाशय, जरायु, बच्चादानी, रहिम।

जहन्नम (جہنم) फा. पुं.–नरक, रौरव, दोज़ख; बहुत ही दुःख और कष्ट की जगह।

जहन्नमज़ार (جہنم زار) फा. पुं.–ऐसा स्थान जहाँ चारों ओर नरक-जैसा भीषण और भयानक वातावरण हो।

जहन्नमी (جہنمی) फा. अ. वि.–नरकवासी, नारकी; ऐसा कर्म करनेवाला जिसके फलस्वरूप उसे नरक में जाना पड़े।

ज़हब (ذہب) अ. पुं.–सोना, कुंदन, स्वर्ण, कनक।

जहल: (جہلہ) अ. पुं.–'जाहिल' का बहु., मूर्खगण, घामड़ लोग।

जहाँ (جہاں) फा. पुं.–जहान का लघुरूप, संसार, विश्व, दुनिया।

जहाँआरा (جہاں آرا) फा. वि.–संसार को सुशोभित करनेवाला।

जहाँआफ़रीं (جہاں آفریں) फा. वि.–संसार की उत्पत्ति करनेवाला, सृष्टिकर्ता।

जहाँगर्द (جہاں گرد) फा. वि.–संसार भर में फिरनेवाला, विश्वभ्रमी।

जहाँगीर (جہانگیر) फ़ा. वि.–संसार को अपने वश में करनेवाला, विश्वविजयी।

जहाँदार (جہاندار) फा. वि.–पृथ्वीपाल, सम्राट्, शासक, बादशाह।

जहाँदीद: (جہاندیدہ) फा. वि.–दुनिया देखे हुए, बहुदर्शी, बड़ा अनुभवी और तजरिबाकार, बृहदनुभवी।

जहाँपनाह (جہاں پناہ) फा. वि.–विश्वपाल, संसार को अपनी शरण में लेनेवाला, राजाओं और बादशाहों के लिए संबोधन का शब्द।

जहाँबानी (جہاں بانی) फा. स्त्री.–शासन कर्म, राज्य, हुकूमत।

जहाज़ (جہاز) अ. पुं.–समुद्र में चलनेवाली बहुत बड़ी नाव, पोत, वहिल।

जहाज़राँ (جہازراں) अ. फा. वि.–जहाज़ चलानेवाला, पोतचालक।

जहाज़रानी (جہازرانی) अ. फा. स्त्री.–जहाज़ चलाने का काम या पेशा।

जहाज़ी (جہازی) अ. वि.–जहाज़ से सम्बन्ध रखनेवाला; जहाज़ का; एक प्रकार की सुपारी।

जहाज़े आबी (جہازِ آبی) अ. फा. पुं.–पानी में चलनेवाला जहाज़, जलयान, पोत।

जहाज़े बह्री (جہازِ بحری) अ. पुं.–समुद्र में चलनेवाला जहाज़, पोत, जलयान।

जहाज़े हवाई (جہازِ ہوائی) अ. पुं.–हवा में उड़नेवाला जहाज़, वायुयान, विमान।

ज़हादत (زہادت) अ. स्त्री.–संयम, इंद्रिय निग्रह, परहेज़गारी, मुनिवृत्ति, मनोनिग्रह।

जहान (جہان) फा. पुं.–संसार, विश्व, दुनिया; लोक, आलम।

ज़हानत (ذہانت) अ. स्त्री.–ज़ेहन की तेज़ी, प्रतिभा; दक्षता, विवेक, समझ बूझ; नयी बात निकालने की शक्ति।

जहाने फ़ानी (جہانِ فانی) फा. अ. पुं.–नश्वर संसार, मृत्युलोक, इहलोक, दुनिया, नाश हो जानेवाला संसार।

जहाने बाक़ी (جہانِ باقی) फा. अ. पुं.–शाश्वत संसार, नित्यलोक, परलोक, नाश न होनेवाली दुनिया।

ज़हाब (ذہاب) अ. पुं.–गमन, जाना, गुज़रना।

जहालत (جہالت) अ. स्त्री.–मूर्खता, मूढ़ता, बेवक़ूफ़ी; अज्ञान, जड़ता, नादानी; निरक्षरता, बेइल्मी; असभ्यता, बदतहज़ीबी; उद्दंडता, अक्खड़पन।

ज़हीन (ذہین) अ. वि.–जिसमें ज़हानत हो, दक्ष, कुशल, प्रतिभावान्।

जहीर (جہیر) अ. वि.–वह आदमी जिसकी आवाज़ ऊँची हो, ज़ोर से बोलनेवाला।

ज़हीर (زہیر) अ. वि.–उज्ज्वल, रौशन; मुकुलित, प्रफुल्ल, खिला हुआ; कलियों से लदा हुआ वृक्ष।

ज़हीर (ظہیر) अ. वि.–सहायक, पृष्ठपोषक, मददगार; जिसकी पीठ में दर्द हो, (यह शब्द एक वचन भी है और बहुवचन भी)।

ज़हीर (زحیر) अ. स्त्री.–पेचिश, अतिसार, आँव, मरोड़।

ज़हीरे काज़िब (زحیرِ کاذب) अ. स्त्री.–झूठी पेचिश।

ज़हीरे सादिक़ (زحیرِ صادق) अ. स्त्री.–सच्ची पेचिश।

ज़हूक (ضحوک) अ. वि.–बहुत हँसनेवाला; चौड़ा और खुला हुआ मार्ग।

जहूद (جہود) फा. पुं.–यहूदी।

जहूल (جہول) अ. वि.–बहुत बड़ा जाहिल, निपट मूर्ख।

जह्द (جہد) अ. पुं.–शक्ति, ज़ोर; प्रयत्न, प्रयास, कोशिश; कष्ट, दुःख, तक्लीफ़।

जह्दे जहीद (جہدِجہید) अ. पुं.–भरसक प्रयत्न, पूरी कोशिश।

ज़ह्मत (زحمت) अ. स्त्री.–कष्ट, क्लेश, तक़्लीफ़।

ज़ह्रः (زہرہ) फा. पुं.–पित्ता, पित्ताशय, वह थैली जिसमें पित्त (सफ़्रा) रहता है; पित्त, सफ़्रा; जीवट, साहस, हिम्मत; वीरता, बहादुरी।

ज़ह्रःशिगाफ़ (زہرہشگاف) फा. वि.–पित्ता पानी कर देनेवाला, साहस तुड़वा देनेवाला, भयंकर, भयानक, ज़ोरदार।

ज़ह्र (زہر) फा. पुं.–विष, गरल, हलाहल।

जह्र (جہر) अ. पुं.–ज़ोर की आवाज़, ऐसी आवाज़ जो पासवाला सुन सके।

ज़ह्रआगीं (زہرآگیں) फा. वि.–ज़हरीला, विषैला, विषाक्त।

ज़ह्रआमेज़ (زہرآمیز) फा. वि.–विष मिला हुआ, विष मिश्रित, विषदुष्ट।

ज़ह्रआलूदः[द] (زہرآلود[ہ]) फा. वि.–दे. 'ज़ह्रआमेज़'।

ज़ह्रख़ंद (زہرخند) फा. पुं.–खिसयानी हँसी, झेंप की हँसी।

ज़ह्रख़ुरानी (زہرخورانی) फा. स्त्री.–विष खिलाना, किसी को मारने के लिए खाने आदि में मिलाकर विष देना।

ज़ह्रख़ुर्दः (زہرخوردہ) फा. वि.–जिसने विष खाया हो; जिसे विष दिया गया हो।

ज़ह्रख़ूरी (زہرخوری) फा. स्त्री.–विष खा लेना, ज़हर खाकर ख़ुदकुशी करना।

ज़ह्रगिया (زہرگیا) फा. स्त्री.–एक विषैली घास, बछनाग।

ज़ह्रताब (زہرتاب) फा. वि.–ज़ह्र में बुझा हुआ, तीर, तलवार आदि जो विष में बुझे हों।

ज़ह्रदार (زہردار) फा. वि.–विष मिला हुआ, विषैला; जिसके डंक या दाँत में ज़हर हो, विषैला कीड़ा।

ज़ह्रदारू (زہردارو) फा. स्त्री.–विष की दवा, विष दूर करनेवाली औषध, तिर्याक़, विषहर।

ज़ह्रदुम (زہردم) फा. वि.–जिसकी पूंछ में विष हो, जैसे–विच्छू, लूनविष, लूमविष, विषपुच्छ।

ज़ह्रनवा (زہرنوا) फा. वि.–बहुत ही कड़वी बातें करनेवाला, कटुभाषी।

ज़ह्रनाक (زہرناک) फा. वि.–दे. 'ज़ह्रआलूद'।

ज़ह्रनोश (زہرنوش) फा. वि.–विषपायी, ज़हर पीनेवाला; बहुत ही तेज़ शराब पीनेवाला; किसी की कड़वी बातों को सहन करनेवाला।

ज़ह्रनोशी (زہرنوشی) फा. स्त्री.–विष पीना; कड़वी बात को बरदाश्त करना।

ज़ह्रबा (زہربا) फा. वि.–विष मिला हुआ खाना, शत्रु को मारने के लिए।

ज़ह्रबाद (زہرباد) फा. पुं.–एक रोग जिसमें सारे शरीर में विष फैल जाता है।

ज़ह्रमोहरः (زہرمہرہ) फा. पुं.–एक क़ीमती पत्थर जो दवा के काम आता है; एक मनका जिससे विष उतारा जाता है।

ज़ह्रा (زہرا) अ. वि.–गोरे रंग की स्त्री, गौरांगना, गौरवर्णा; हज़रते फ़ातिमा की उपाधि, 'उज़ोह्रा' भी शुद्ध है।

ज़ह्राबः (زہرابہ) फा. पुं.–दे. 'ज़ह्रराब'।

ज़ह्रआब (زہراب) फा. पुं.–विष मिला हुआ पानी, ज़हर का पानी।

ज़ह्राबए ग़म (زہرابۂ غم) फा. अ. पुं.–दे. 'ज़ह्राबेग़म'।

ज़ह्राबे ग़म (زہرابِ غم) फ़ा. अ. पुं.–दुःख रूपी विष का पानी।

ज़ह्रे क़ातिल (زہرِ قاتل) फा. अ. पुं.–ऐसा विष जो घातक हो, बहुत ही तीव्र और प्रचंड विष।

ज़ह्रे मार (زہرِ مار) फा. पुं.–साँप के काटे का विष; साँप की थैली से निकाला हुआ विष।

ज़ह्रे हलाहिल (زہرِ ہلاہل) फा. पुं.–दे. 'ज़ह्रे क़ातिल'।

जह्ल (جہل) अ. पु.–मूर्खता, बवक़ूफ़ी; अज्ञान, नासमझी; असभ्यता, उजड्डपन।

जह्ले बसीत (جہلِ بسیط) अ. पुं.–किसी बात को सिरे से न जानना।

जह्ले मुत्लक़ (جہلِ مطلق) अ. पुं.–दे. 'जह्ले बसीत'।

जह्ले मुरक्कब (جہلِ مرکب) अ. पुं.–किसी बात को बिलकुल ग़लत जानना और उस पर विश्वास रखना, जैसे राँगे को चाँदी समझना और बताने पर भी न मानना।

ज़ह्हाक (ضحاک) अ. पुं.–बहुत हँसनेवाला; ईरान का एक बहुत ही अत्याचारी बादशाह जिसे फ़िरीदूँ ने गिरफ़्तार किया था।

जा

जाँ (جاں) फा. स्त्री.–'जान' का लघुरूप जो यौगिक शब्दों में प्रयोग होता है, दे. 'जान'।

जाँआज़ार (جاں آزار) फा. वि.–सतानेवाला, दुःखदायी।

जाँआज़ारी (جاں آزاری) फा. स्त्री.–जान को दुःख देना, जानदारों को सताना, अत्याचार, ज़ुल्म।

जाँआफ़्रीं (جاں آفریں) फा. वि.–शरीर में प्राण डालनेवाला, मनुष्य की सृष्टि करनेवाला, ईश्वर।

जाँआहन (جاں آہن) फा. वि.–निष्ठुरता, पाषाण-हृदय, बहुत ही बेरहम; शूर, वीर, दिलावर।

जाँकंदनी (جاں کندنی) फा. स्त्री.–दे. 'जाँकनी'।

जाँकनी (جاں کنی) फा. स्त्री.–शरीर से प्राण निकलने की अवस्था, चंद्रा, नज़्अ की हालत, यम-यातना।

जाँकाह (جانکاہ) फा. वि.–प्राणों को घुलानेवाला, अत्यंत कष्ट देनेवाला, हृदयद्रावी।

जाँकाही (جانکاہی) फा. स्त्री.–प्राणों को घुलाना, अत्यंत कष्ट और परिश्रम।

जाँगुज़ा (جاں گزا) फा. वि.–प्राणों को काटने और डसनेवाला, घोर कष्टदायक, अंतःशल्य।

जाँगुसिल (جاں گسل) फा. वि.–हृदय विदारक, प्राणघातक।

जाँदादः (جاں دادہ) फा. वि.–मुग्ध, आसक्त, फ़िरेफ़्तः।

जाँदार (جاندار) फा. पुं.–प्राणी, जिसके जान हो, जीवधारी; हथियारबंद; मित्र, दोस्त।

जाँदारू (جاں دارو) फा. स्त्री.–विषहर, तिर्याक़।

जाँदेही (جاں دیہی) फा. स्त्री.–परिश्रम, प्रयास, कोशिश; संलग्नता, तन्मयता, मश्ग़ूलियत।

जाँनवाज़ (جاں نواز) फा. वि.–प्राणों को आनंद देनेवाला, मनोरम।

जाँनिसार (جاں نثار) फा. वि.–प्राण न्योछावर कर देनेवाला, समय पड़ने पर जान की बाज़ी लगा देनेवाला (दूसरे के लिए)।

जाँनिसारी (جاں نثاری) फा. स्त्री.–समय पड़ने पर प्राण तक दे देना (दूसरे के लिए)।

जाँपनाह (جاں پناہ) फा. वि.–प्राणों की रक्षा करनेवाला, प्राणरक्षक।

ज़ाँपेश (زاں پیش) फा. अव्य.–इससे पहले।

जाँफ़र्सा (جاں فرسا) फा. वि.–दे. 'जाँकाह'।

जाँफ़िज़ा (جانفزا) फा. वि.–प्राणों को बढ़ानेवाला, प्राणवर्द्धक, आयुवर्द्धक।

जाँफ़िशानी (جاں فشانی) फा. स्त्री.–जान तोड़ कोशिश, पूर्ण प्रयत्न।

जाँबख़्श (جاں بخش) फा. वि.–प्राण देनेवाला; मरनेसे बचानेवाला, फाँसी आदि के हुक्म को रद्द कर देनेवाला।

जाँबख़्शी (جانبخشی) फा. स्त्री.–प्राणदान, मरनेसे बचाना, अभयदान देना।

जाँबर (جانبر) फा. वि.–जान बचा ले जानेवाला, ज़िंदा रह जानेवाला।

जाँबरी (جانبری) फा. स्त्री.–जीवित रह जाना, प्राण बच जाना।

जाँबलब (جاں بلب) फा. वि.–जिसके प्राण होंठों पर आ गये हों, मृतप्राय, आसन्न मृत्यु।

जाँबहक़ (جاں بحق) फा. अ. वि.–प्राण ईश्वर के समर्पित, मृत।

जाँबाज़ (جاں باز) फा. वि.–किसी काम के लिए प्राणों की बाज़ी लगा देनेवाला, प्राण घातक।

ज़ाँ बा'द (زاں بعد) फा. अ. अव्य.–इसके पश्चात्, इसके बाद।

जाँसिताँ (جانستاں) फा. वि.–प्राणद्रोही, प्राणघातक, जान ले लेनेवाला; दिल सितां, प्रेम पात्र, मा'शूक़।

जाँसितानी (جانستانی) फा. स्त्री.–प्राण लेना, अत्याचार करना।

जाँसिपार (جاں سپار) फा. वि.–किसी को (प्रेमिका को) अपनी जान का मालिक बना देनेवाला।

जाँसिपारी (جاں سپاری) फा. स्त्री.–किसी को अपने प्राण सिपुर्द कर देना।

जाँसोख़्तः (جاں سوختہ) फा. वि.–जिसके प्राण जल गये हों, दग्धहृदय, प्रेमी।

जाँसोज़ (جاں سوز) फा. वि.–अपनी जान को जलानेवाला, संताप सहनेवाला; सहानुभूति करनेवाला, हमदर्द।

जा (جا) फा. स्त्री.–स्थान, जगह।

ज़ा (زا) फा. प्रत्य.–उत्पादक, पैदा करनेवाला, जैसे–'फ़र्हत ज़ा' प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला।

ज़ाइक़ः (ذائقہ) अ. पुं.–स्वाद, रस, लज़्ज़त; प्रतिकार, प्रत्यपकार, बुरा बदला।

ज़ाइक़ःचश (ذائقہ چش) अ. फा. वि.–मज़ा चखनेवाला, स्वादक; सज़ा भोगनेवाला।

ज़ाइक़ःदार (ذائقہ دار) अ. फा. वि.–स्वादिष्ठ, सुस्वाद, मज़ेदार।

ज़ाइक़ःपसंद (ذائقہ پسند) अ. फा. वि.–जिसे ज़बान का ज़ाइक़ः अच्छा लगता हो, चटोरा, स्वादु काम, जिह्वालोलुप।

ज़ाइक़ (ذائق) अ. वि.–चखनेवाला।

ज़ाइचः (زائچہ) फा. पुं.–जन्मकुंडली, जन्मपत्री, लग्न कुंडली।

जाइज़ः (جائزہ) अ. पुं.–काम या सामान की पूरी जाँच-पड़ताल और हिसाब, निरीक्षण; परीक्षा, इम्तिहान; निगरानी, देखभाल।

ज़ाइदः (زائدہ) अ. पुं.–शरीर के किसी स्थान का बढ़ा हुआ मांस; अतिरिक्त मांस; बढ़ी हुई वस्तु।

ज़ाइद (زائد) अ. वि.–अधिक, बहुत, प्रचुर; अतिरिक्त, फ़ालतू।

ज़ाइद अज़ उम्मीद (زائد از امید) अ. फा. वि.–जितनी आशा हो उससे अधिक, आशातीत।

ज़ाइद अज़ ज़ुरूरत (زائد از ضرورت) अ. फा. वि.–जितनी आवश्यकता हो उससे अधिक।

ज़ाइद अज़ हिसाब (زائد از حساب) अ. फा. वि.–हिसाब से या जितना चाहिए उससे अधिक।

ज़ाइदुलउम्र (زائد العمر) अ. वि.–बड़ी उम्रवाला, बूढ़ा, वयोधिक, वयोवृद्ध।

ज़ाइदुलमीआद (زائد المیعاد) अ. वि.–लंबी मुद्दतवाला; जिसके लिए लंबा समय चाहिए; जो लंबे समय के लिए हो।

ज़ाइदुलवस्फ़ (زائد الوصف) अ. वि.–जिसमें बहुत अधिक गुण हों।

ज़ाइब (ذائب) अ. वि.–पिघलनेवाला; पिघला हुआ, द्रवीभूत।

ज़ाइरः (زائره) अ. स्त्री.–किसी पूज्य स्थान या व्यक्ति के दर्शनार्थ आनेवाली स्त्री।

ज़ाइर (زائر) अ. वि.–किसी पुनीत स्थान या पुण्यात्मा व्यक्ति के दर्शन करनेवाला पुरुष।

जाइर (جائر) अ. वि.–अत्याचार करनेवाला, अनीतिकर्ता।

ज़ाइरात (زائرات) अ. स्त्री.–'ज़ाइरः' का बहु., ज़ियारत करनेवाली स्त्रियाँ।

ज़ाइरीन (زائرین) अ. पुं.–'ज़ाइर' का बहु., ज़ियारत करनेवाले पुरुष।

ज़ाइरे कर्बला (زائر کربلا) अ. फा. पुं.–कर्बला (इराक़) जाकर हज़्रत इमाम हुसैन के रौज़े की ज़ियारत करनेवाला।

ज़ाइरे हरम (زائر حرم) अ. पुं.–मक्का (अरब) जाकर का'बे की ज़ियारत करनेवाला।

ज़ाइरे मदीना (زائر مدینه) अ. पुं.–मदीना की ज़ियारत करनेवाला।

ज़ाइरे हरमैन (زائر حرمین) अ. पुं.–'मक्का' और 'मदीना' दोनों पुनीत स्थानों की ज़ियारत करनेवाला।

जाइल (جاعل) अ. वि.–उत्पन्न करनेवाला; निर्मित करनेवाला; स्रष्टा।

ज़ाइल (زائل) अ. वि.–नष्ट, बरबाद; समाप्त, ख़त्म; निराकृत, रफ़अ'।

जाई (جائی) फा. वि.–स्थान-सम्बन्धी (स्त्री.) जूही का फूल, जुही।

ज़ाईदः (زائیده) फा. वि.–उत्पन्न, जनित, जन्मा हुआ; जना हुआ।

ज़ाईदनी (زائیدنی) फा. वि.–जन्म लेने के योग्य; जनने के योग्य।

ज़ाए' (ضائع) अ. वि.–नष्ट, बरबाद; व्यर्थ, बेकार।

जाए' (جائع) अ. वि.–क्षुधातुर, भूखा।

जाए (جاے) फा. स्त्री.–'जा' का यौगिक रूप, जैसे–'जाए ज़ुरूर'।

जाएअम्न (جاے امن) फा. अ. स्त्री.–शांति और सुकून का स्थान; जहाँ की झंझट न हो; जहाँ जान जोखिम न हो।

जाएआफ़ियत (جاے عافیت) अ. फा. स्त्री.–रक्षा और शांति का स्थान, जाए अम्न।

जाएक़ियाम (جاے قیام) फा. अ. स्त्री.–ठहरने का स्थान; रहने का स्थान, निवासस्थान।

जाएगाह (جائیگاه) फा. स्त्री.–जगह, स्थान।

जाएज़ुरूर (جاے ضرور) फा. अ. स्त्री.–संडास, शौचागार, टट्टी, पाख़ाना।

जाएदाद (جائداد) फा. स्त्री.–भूसंपत्ति, गाँव गिरांव, मकान आदि।

जाएदादे ग़ैरमन्क़ूल (جائداد غیر منقوله) फा. अ. स्त्री.–स्थावर संपत्ति, जो संपत्ति जगह से हट न सके, जैसे—जमींदारी आदि।

जाएदादे ग़ैरमर्हूनः (جائداد غیر مرهونه) फा. अ. स्त्री.–वह संपत्ति जो कहीं गिरवी न हो, अबंधक संपत्ति।

जाएदादे मक्फ़ूलः (جائداد مکفوله) फा. अ. स्त्री.–वह संपत्ति जो कहीं गिरो हो, बंधक संपत्ति।

जाएदादे मन्क़ूलः (جائداد منقوله) फा. अ. स्त्री.–जंगम संपत्ति, जो संपत्ति इधर-उधर हटायी जा सके, जैसे–मवेशी आदि।

जाएदादे मर्हूनः (جائداد مرهونه) फा. अ. स्त्री.–दे. 'जाएदादे मक्फ़ूलः'।

जाएदादे मौक़ूफ़ः (جائداد موقوفه) फा. अ. स्त्री.–वह संपत्ति जो किसी कार्य विशेष के लिए उत्सर्गित हो।

जाएदीगर (جاے دیگر) फा. स्त्री.–अन्य स्थान, दूसरी जगह।

जाएनमाज़ (جاے نماز) फा. अ. स्त्री.–नमाज़ पढ़ने का स्थान; नमाज़ पढ़ने का वस्त्रादि।

जाएपनाह (جاے پناه) फा. स्त्री.–बचाव का स्थान, सुरक्षा स्थान।

ज़ाक (زاک) फा. स्त्री.–फिटकरी।

ज़ाकिर (ذاکر) अ. वि.–वर्णन करनेवाला; इमाम हुसैन की शहादत का हाल बयान करनेवाला व्यक्ति।

ज़ाख़िल (زاخل) फा. पुं.–थूहड़ का पेड़।

ज़ाग़ (زاغ) फा. पुं.–काक, वायस, आत्मघोष, कौआ।

ज़ाग़चश्म (زاغ چشم) फा. वि.–कंजी आँखोंवाला, कंजा, नीलाक्ष।

ज़ाग़ज़बां (زاغ زبان) फा. वि.–जिसका कोसना तुरंत ही लगे, कलत्म जिव्बा, शापसिद्ध।

ज़ाग़दिल (زاغدل) फा. वि.–निर्दय, निष्ठुर, बेरहम।

ज़ाग़नोल (زاغنول) फा. पुं.–कुदाल, कुदाली, लोहे का एक यंत्र।

ज़ाग़पा (زاغپا) फा. पुं.–व्यंग, कटाक्ष, ताना।

जाग़र (جاغر) तु. पुं.–चिड़ियों का पोटा।

जागीर (جاگیر) फा. स्त्री.–जाइदाद या ज़मींदारी, जो सरकार से किसी बड़े काम के बदले मिले।

जागीरदार (جاگیردار) फा. पुं.–जागीर का मालिक, तअल्लुक़:दार।

जागीरदारानः (جاگیردارانہ) फा. वि.–जागीरदारों-जैसा।

जागीरदारी (جاگیرداری) फा. स्त्री.–जागीरदारानः निज़ाम; जागीर का शासन।

ज़ाग़ूत (ضاغوت) अ. पुं.–एक रोग जिसमें रोगी ऐसा अनुभव करता है जैसे कोई बड़ा देव उसका गला घोंट रहा है, काबूस।

ज़ाग़े आबी (زاغ آبی) फा. पुं.–जलकौआ, पनडुब्बी।

ज़ाग़े कमाँ (زاغ کماں) फा. पुं.–सींग के काले टुकड़े जो धनुष के दोनों किनारों पर लगाये जाते हैं।

ज़ाग़े कोही (زاغ کوهی) फा. पुं.–पहाड़ी कौआ, द्रोणकाक, काकोल।

ज़ाज (زاج) अ. स्त्री.–फिटकरी, फटिक।

ज़ाज़ (ژاژ) फा. वि.–मिथ्या, निरर्थक, व्यर्थ, बेहूदा।

ज़ाज़ख़ा (ژاژخا) फा. वि.–मिथ्यावादी, गप्पी, फ़ुज़ूलगो।

ज़ाज़ख़ाई (ژاژخائی) फा. स्त्री.–मुखरता, वाचालता, बकवास।

जाज़िबः (جاذبہ) अ. स्त्री.–आकर्षण शक्ति, खींचनेवाली क़ुव्वत।

जाज़िब (جاذب) अ. वि.–जज़्ब करनेवाला, आत्मसात् करनेवाला, अपने अन्दर मिला लेनेवाला।

जाज़िबीयत (جاذبیت) अ. स्त्री.–आकर्षण, कशिश।

जाज़िबे तवज्जोह (جاذب توجہ) अ. वि.–ख़याल को अपनी ओर खींचनेवाला (वाली), चित्ताकर्षक।

जाज़िबे नज़र (جاذب نظر) अ. वि.–दृष्टि को अपनी ओर खींचनेवाला (वाली) दृष्टयाकर्षक।

जाज़िबे निगाह (جاذب نگاہ) अ. फ़ा. वि.–दे. ‘जाज़िबे नज़र’।

जाजिम (جاجم) तु. स्त्री.–छपा हुआ दोसूती मोटा बिछावन।

जाज़िम (جازم) अ. वि.–दृढ़ निश्चयवाला; अक्षर को हल करनेवाला।

ज़ाजिर (زاجر) अ. वि.–झिड़कनेवाला, डाँट-डपट करनेवाला, भर्त्सक।

ज़ाजिर (ضاجر) अ. वि.–आतुर, व्याकुल।

जाज़े’ (جازع) अ. वि.–अधीर, बेसब्र।

ज़ात (ذات) अ. स्त्री.–कुल, वंश, नस्ल; जाति बिरादरी, क़ौम; व्यक्तित्व, शख़्सीयत; स्वयं, ख़ुद; अस्तित्व, हस्ती (उप.) वाला, जैसे—‘ज़ातुलबुरूज’ बुर्जोंवाला।

ज़ातियात (ذاتیات) अ. स्त्री.–निजी और ज़ाती बातें।

ज़ाती (ذاتی) अ. वि.–निजी, व्यक्तिगत; आत्मीय, ख़ुद का; निजी, प्राइवेट।

ज़ातुर्रियः (ذات الریہ) अ. पुं.–फेफड़े का वरम, निमोनिया, क़्लोमपाक।

ज़ातुलइमाद (ذات العماد) अ. वि.–बहुत-से खंभोंवाली इमारत, बहुत बड़ा प्रासाद।

ज़ातुलकुर्सी (ذات الکرسی) अ. वि.–आस्मानी शक्लों में से एक जो औरत की तरह है।

ज़ातुलजंब (ذات الجنب) अ. पुं.–पसली का दर्द; उरोग्रह, प्लूरिसी।

ज़ातुलबुरूज (ذات البروج) अ. पुं.–राशियोंवाला आकाश, अर्थात् सबसे ऊपरी आकाश।

ज़ातुलबैन (ذات البین) अ. पुं.–दो व्यक्तियों का मामला पटानेवाला, बिचौलिया, दल्लाल।

ज़ातुलयमीन (ذات الیمین) अ. वि.–वे व्यक्ति जिनके कर्मपत्र क़ियामत के दिन सीधे हाथ में होंगे, सदाचारी।

ज़ातुलयसार (ذات الیسار) अ. वि.–वे व्यक्ति जिनके कर्मपत्र क़ियामत के दिन उलटे हाथ में होंगे, पापी लोग।

ज़ातुश्शिमाल (ذات الشمال) अ. वि.–दे. ‘ज़ातुलयसार’।

ज़ातुस्सद्र (ذات الصدر) अ. पुं.–अन्तर्यामी, दिलों की बात जाननेवाला; छाती का वरम।

ज़ातेशरीफ़ (ذات شریف) अ. वि.–केवल व्यंग में धूर्त और फितरती व्यक्ति के लिए आता है, जैसे—हिन्दी में ‘महापुरुष’।

ज़ादः (زادہ) फा. वि.–उत्पन्न, जन्मा हुआ; पुत्र, बेटा।

जादः (جادہ) फा. पुं.–पगदंडी, रास्ते के अतिरिक्त पतला रास्ता; पथ, मार्ग, रास्ता।

जादः (جعدہ) अ. स्त्री.–चोटी, केशकलाप, वेणी; घुंघराले बाल।

जादःपैमा (جادہپیما) फा. वि.–पथिक, राहगीर।

ज़ाद (زاد) फा. पुं.–खाद्य सामग्री, खाने का सामान; पीढ़ी, वंश, नस्ल (प्रत्य.) उत्पन्न, जैसे—‘ख़ान:ज़ाद’ घर में उत्पन्न होनेवाला।

जा’द (جعد) अ. स्त्री.–चोटी, वेणी।

ज़ादए ख़ाक (زادۂخاک) फा. पुं.–धन-दौलत, सोना-चाँदी।

जादए मुस्तक़ीम (جادۂ مستقیم) अ. पुं.–सीधा रास्ता सरल मार्ग।

ज़ादबूम (زادبوم) फा. स्त्री.–पैदाइश की जगह, जन्म-स्थान, जन्मभूमि।

जादिल (جادل) अ. वि.–लड़नेवाला, योद्धा; वाद-विवाद करनेवाला।

जादू (جادو) फा. पुं.–अभिचार, मार डालने, नुक़सान पहुँचाने आदि का कर्म; इंद्रजाल, माया, तिलिस्म; दृष्टिबंध, नज़रबंदी; हस्तकौशल, हाथ की सफ़ाई।

जादूकुश (جادوکش) फा. वि.–जादूगरों का वध करनेवाला।

जादूगर (جادوگر) फा. वि.–जादू करनेवाला, मायावी, ऐंद्रजालिक; शोबदःगर, दृष्टिबंधक।

जादूगरी (جادوگری) फा. स्त्री.–माया कर्म, जादू का काम; दृष्टिबंध, शो'बदःबाज़ी।

जादूनज़र (جادونظر) फा. वि.–जिसकी आँखों में जादू हो, जिसकी आँखों में मोहनी हो।

जादूनिगाह (جادونگاہ) फा. वि.–दे. 'जादूनज़र'।

जादूफ़न (جادوفن) फा. वि.–जादूगर।

जादूबयाँ (جادوبیاں) फा. अ. वि.–जिसकी बातचीत में मोहनी हो; जो अपने वक्तव्य और भाषण से सबको मोहित कर ले।

ज़ादे उक़्बा (زادعقبیٰ) फा. अ. पुं.–परलोक के लिए सामान, अच्छी कृतियाँ, नेकअमल।

ज़ादे राह (زادراہ) फा. पुं.–रास्ते का खाना और ख़र्च, पाथेय, संबल, मार्गव्यय।

ज़ादे सफ़र (زادسفر) फा. अ. पुं.–दे. 'जादेराह'।

जानःदार (جانہدار) फा. वि.–हथियारबंद, सशस्त्र; मित्र, दोस्त।

जान (جان) फा. स्त्री.–प्राणवायु, रूह; जीवन, ज़िंदगी; शक्ति, ज़ोर; साहस, हिम्मत।

जान (جان) अ. पुं.–जिन क़ौम का सर्वप्रथम व्यक्ति, अबुलहसन, सारे जिन जिसकी संतान हैं।

जानदार (جاندار) फा. पुं.–प्राणी, जीवधारी, ज़ी रूह; मानव, मनुष्य, इंसान; जीवित, ज़िंदा; शक्तिशाली, ताक़तवर।

जानमाज़ (جانماز) फा. अ. स्त्री.–नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई आदि।

जानशीन (جانشین) फा. पुं.–जो किसी की जगह पर बैठा हो, स्थानापन्न, क़ाइम मक़ाम; उत्तराधिकारी, वारिस।

जानवर (جانور) फा. पुं.–पशु और पक्षी आदि प्राणी, मनुष्य के अतिरिक्त और सब प्राणी।

जानाँ (جاناں) फा. पुं.–प्रेमपात्र, महबूब; प्रेमिका, प्रेयसी, महबूबः।

जानानः (جانانہ) फा. वि.–प्रेमिका से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु, प्रेमिका का (की)।

जानिब (جانب) अ. स्त्री.–पक्ष, ओर, तरफ़; पार्श्व, पहलू।

जानिबदार (جانبدار) अ. फा. वि.–पक्षपाती, तरफ़दारी करनेवाला।

जानिबदारी (جانبداری) अ. फा. स्त्री.–पक्षपात, तरफ़दारी।

जानिबैन (جانبین) अ. पुं.–उभय पक्ष, दोनों पार्टियाँ।

ज़ानियः (زانیہ) अ. स्त्री.–व्यभिचारिणी, स्वैरिणी, असती, बंधकी, भ्रष्टा, जारिणी, धर्षिणी, फ़ाहिशा।

ज़ानी (زانی) अ. पुं.–व्यभिचारी, परस्त्रीगामी, विषयलंपट, विषयाभ्यस्त, बदचलन, रतनारीच।

जानी (جانی) फा. वि.–जान का, प्राणों का; घनिष्ठ, गहरा।

जानी (جانی) अ. वि.–पापी, पातकी, गुनाहगार; दोषी, अपराधी, मुज़रिम।

ज़ानू (زانو) फा. पुं.–घुटना, जानु।

ज़ानूपोश (زانوپوش) फा. पुं.–वह कपड़ा जो खाना खाते समय घुटनों पर डाला जाता है।

ज़ानूबज़ानू (زانوبزانو) फा. वि.–घुटने से घुटना मिलाकर (बैठना) एक पंक्ति में बराबर-बराबर (बैठना)।

जाने जहाँ (جانجہاں) फा. पुं.–सारे संसार वासियों का प्राण, विश्वजीवन अर्थात् नायिका; ईश्वर।

जाने जाँ (جانجاں) फा. पुं.–प्राणाधार, प्राणों का प्राण अर्थात् प्रेमिका; ईश्वर।

जाने जानाँ (جانجاناں) फा. पुं.–दे. 'जाने जाँ'।

ज़ा'फ़ (ضعف) अ. पुं.–मूर्च्छा, बेहोशी; बुद्धि की हानि अक़्ल की कमी।

ज़ा'फ़ (زعف) अ. पुं.–किसी को जान से मार डालना, इस तरह मारना कि उसी ठौर मर जाय।

जा'फ़र (جعفر) अ. पुं.–नह्र, (नहर) नदी; ख़रबूज़ा; चौदह इमामों में से एक।

ज़ा'फ़र (زعفر) अ. पुं.–दे. 'ज़ा'फ़रान'।

ज़ा'फ़राँ (زعفراں) अ. पुं.–'ज़ा'फ़रान' का लघु., दे. 'ज़ा'फ़रान'।

ज़ा'फ़राँज़ार (زعفرانزار) अ. फा. पुं.–जहाँ चारों ओर केसर के खेत हों।

ज़ा'फ़रान (زعفران) अ. पुं.–कुंकुम, केसर।

जा'फ़रानी (زعفرانی) अ. वि.–केसर के रंग का, केसरी; केसर से बना हुआ।

जा'फ़री (جعفری) अ. वि.–एक पीले रंग का फूल; पीला रंग, पीत।

जा'बः (جعبه) अ. पुं.–तूणीर, निषंग, तरकश।

जा ब जा (جابہ‌جا) फा. वि.–जगह-जगह, यदा-कदा, जहाँ-तहाँ।

ज़ाबितः (ضابطہ) अ. पुं.– नियम, क़ाइदः; प्रणाली, पद्धति, दस्तूर; गुर, आसान क़ाइदः।

ज़ाबित (ضابط) अ. वि.–सहनशील, मुतहम्मिल; प्रवंधक, मुंतज़िम।

ज़ाबितए दीवानी (ضابطۂ دیوانی) अ. फा. पुं.–दीवानी अदालत का क़ानून।

ज़ाबितए फ़ौजदारी (ضابطۂ فوجداری) अ. फा. पुं.–फ़ौजदारी अदालत का क़ानून।

जाबिर (جابر) अ. वि.–अत्याचार करनेवाला, अनीति करनेवाला, ज़बरदस्ती करनेवाला, नाजाइज़ दबाव डालनेवाला।

ज़ाबिलिस्तान (زابلستاں) फा. पुं.–सीसतान, ईरान का एक प्राचीन प्रदेश जो रुस्तम की जन्म-भूमि था।

ज़ाबुलिस्तान (زابلستان) फा. पुं.–दे. 'ज़ाबिलिस्तान', दो. शुद्ध है।

जाबुल्क़ा (جابلقا) फा. पुं.–पूर्व दिशा के अंत में एक बहुत बड़ा कल्पित नगर।

जाबुल्सा (جابلسا) फा. पुं.–पश्चिम दिशा के अंत में एक बहुत बड़ा कल्पित नगर।

ज़ाबह (ذابح) अ. वि.–वध करनेवाला, वधिक।

जामः (جامہ) फा. पुं.–वस्त्र, वसन, पहनने का क़पड़ा; कुर्ताः, क़मीस; बरात में दूल्हा के पहनने के कपड़े।

जामःकन (جامہ کن) फा. पुं.–स्नानागार का पहला कमरा जहाँ कपड़े उतारे जाते और लुंगी बाँधी जाती है।

जामःज़ेब (جامہ زیب) फा. वि.–वह व्यक्ति जिसके शरीर पर कपड़े शोभा दें।

जामःज़ेबी (جامہ زیبی) फा. स्त्री.–शरीर पर कपड़ों का शोभा देना और सजना।

जामःतलाशी (جامہ تلاشی) फा. स्त्री.–सरकारी तौर पर किसी शुबहे में शरीर पर पहने हुए कपड़ों की तलाशी।

जामःदर (جامہ در) फा. वि.–कपड़े फाड़नेवाला, शोकातिरेक या पागलपन से कपड़े फाड़नेवाला।

जामःदरी (جامہ دری) फा. स्त्री.–शरीर पर पहने हुए कपड़ों को फाड़ना, पागलपन की अवस्था।

जामःवार (جامہ وار) फा. पुं.– एक प्रकार की वढ़िया छींट, जिसके अँगरख या शेरवानियाँ बनती हैं।

जाम (جام) फा. पुं.–पियाला, कंस; शराव पीने का पियाला, पानपात्र, चषक।

ज़ा'म (زعم) अ. पुं.–विचार, ख़याल; धारणा, गुमान।

जामए एह्राम (جامۂ احرام) अ. फा. पुं.–वह चादर जो हाजी लोग हज के समय बाँधते हैं।

जामए ग़ूक (جامۂ غوک) फा. पुं.–काई, जो पानी पर जम जाती है।

जामए फ़त्ह (جامۂ فتح) फा. अ. पुं.–वह कपड़ा जिस पर मंत्र आदि लिखे होते हैं और लड़ाई के दिन विजय-प्राप्ति के लिए पहना जाता है।

जामए सूरत (جامۂ صورت) फा. अ. पुं.–वह कपड़ा जिस पर चित्र वने हों, चित्रपट।

जामगी (جامگی) फा. स्त्री.–रोज़ीनः, रातब; पियाले में शराब की तलछट; पुराना कपड़ा।

जामग़ूल (جامغول) तु. वि.–दुरात्मा, शरीर; पापात्मा, ख़बीस।

जामबकफ़ (جام بکف) फा. वि.–हाथ में शराव का पियाला लिये हुए।

जामबलब (جام بلب) फा. वि.–ओंठों से शराव का पियाला लगाये हुए, अर्थात् शराब पीता हुआ।

जामिअः (جامعہ) अ. स्त्री.–विश्वविद्यालय, यूनीवर्सिटी।

जामिईयत (جامعیت) अ. स्त्री.–योग्यता, विद्वत्ता, क़ाबिलीयत; व्यापकता, हावी होने का भाव।

जामि उल उलूम (جامع العلوم) अ. पुं.–सार-संग्रह, इंसाइक्लोपेडिया; विद्याओं का भंडार।

जामि उल कमालात (جامع الکمالات) अ. वि.–जिसमें वहुत से गुण हों, बहुगुणसंपन्न।

जामि उल मतफ़र्रिक़ीन (جامع المتفرقین) अ. पुं.–बिछुड़े हुओं को एकत्र करनेवाला, वियोगियों को मिलानेवाला।

जामि उल लुग़ात (جامع اللغات) अ. पुं.–ऐसा शब्द-कोश जिसमें किसी भाषा के शब्दों का पूर्ण संग्रह हो।

जामिद (جامد) अ. वि.–ठोस, घन; जड़, चेतनारहित। (पुं.) वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द से न वना हो, (व्या.)

जामिदुलअक़्ल (جامد العقل) अ. वि.–जिसकी बुद्धि ठस हो, जिसकी समझ में बात न आये, मन्दमति, घामड़।

ज़ामिन (ضامن) अ. वि–ज़मानत करनेवाला, प्रतिभू; दूध जमाने की चीज़, आतंचन।

ज़ामिनी (ضامنی) अ स्त्री.–ज़मानत करनेवाला; ज़मानत।

जामी (جامی) फा. वि.–'जाम' (नगर) से सम्बन्ध रखनेवाला; मद्यप, मयनोश।

ज़ामी (ظامی) अ. वि.–पिपासु, तृषित, प्यासा।

जामूसः (جاموسہ) अ. स्त्री.–भैंस।

जामूस (جاموس) अ. पुं.–भैंसा।

जामे' (جامع) अ. वि.–संग्रह करनेवाला संग्रहीता; संपादन करनेवाला, संपादक; व्यापक, बहुत ही विस्तृत।

जामे आली (جامِ عالی) फा. अ. पुं.–बहुत बड़ा पियाला।

जामे जम (جامِ جم) फा. पुं.–प्रसिद्ध है कि ईरान के शासक 'जमशेद' ने एक पियाला बनाया था, जिससे संसार का हाल ज्ञात होता था। जहाँ तक इस विषय में ग़ौर किया गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि उस पियाले में कोई भंग-जैसी मादक वस्तु पिलायी जाती होगी, जिससे पीनेवाले को ख़याली चीज़ें दिखाई पड़ती होंगी, जैसा कि आजकल भी अधिक नशा हो जाने पर हम देखते हैं।

जामे जमशेद (جامِ جمشید) फा. पुं.–दे. 'जामे जम'।

जामे जहाँनुमाँ (جامِ جہاں نماں) फा. पुं.–दे. 'जामे जम'।

जामे जहाँबीं (جامِ جہاں بیں) फा. पुं.–दे. 'जामे जम'।

ज़ा'मेबातिल (زعمِ باطل) अ. पुं.–ग़लत गुमान, कुधारणा; भ्रम, वहम।

जामे मय (جامِ مے) फा. पुं.–शराब का पियाला; शराब पीने का पियाला; शराब से भरा हुआ पियाला।

जामे शराब (جامِ شراب) फा. पुं.–दे. 'जामे मय'।

जामे सिफ़ालीं (جامِ سفالیں) फा. पुं.–मिट्टी का कुल्हड़, डबुआ, जामे सिफ़ाल,–"जामे जम से तो मेरा जामे सिफ़ाल अच्छा है"—'ग़ालिब'।

जामेह (جامِح) अ. वि.–उद्दंड, सरकश; विद्रोही, बाग़ी।

ज़ाये (ضائع) अ. वि.–नष्ट, बरबाद; व्यर्थ, बेकार; प्रभावहीन, बेअसर।

जार (جار) अ. पुं.–प्रतिवासी, पड़ोसी; भागीदार, साझी; शरणागत, पनाहयाफ़्तः।

जार [र्र] (جار) अ. वि.–खींचनेवाला; रक्षक, निगहबान; ज़ेर देनेवाला कारक।

जार (جار) तु. पुं.–समुदाय, जनसमूह, जमाअत; ढिंढोरा, मुनादी।

ज़ार (زار) फा. वि.–क्षीण, लाग़र, दुबला-पतला; अशक्त, बेज़ोर; दीन, दुःखी, बेकस।

ज़ार (र्र) (ضار) अ. वि.–हानिकर, अनिष्टकर, नुक़सानदेह।

जारची (جارچی) तु. पूं.–ढिंढोरिया, ढिंढोरा पीटनेवाला, मुनादी करनेवाला।

ज़ारज़ार (زارزار) फा. वि.–बहुत अधिक, फूट-फूटकर (रोना)।

ज़ारनाली (زارنالی) फा. स्त्री.–रोना-पीटना, बहुत व्याकुल होकर रोना।

ज़ारिब (ضارب) अ. वि.–मारनेवाला, प्रहारक, आघातक।

जारियः (جاریہ) अ. स्त्री.–दासी, लौंडी; वह लौंडी जिससे उसका स्वामी सहवास करे; नौका, नाव।

जारिहः (جارحہ) अ. पुं.–हाथ-पाँव आदि अवयव; शिकारी जानवर।

जारी (جاری) अ. वि.–संचालित, चलता हुआ (काम आदि); प्रवाहित, बहता हुआ (पानी); लागू, चालू (क़ानून)।

ज़ारी (زاری) फा. स्त्री.–विलाप, रोना।

ज़ारीदः (زاریدہ) फा. वि.–रोया हुआ, रोदित।

ज़ारोक़ितार (زاروقطار) फा. अ. वि.–दे. 'ज़ारज़ार'।

ज़ारोनज़ार (زارونزار) फा. वि.–बहुत ही दुबला और अशक्त, मरयल।

ज़ारोनालाँ (زارونالاں) फा. वि.–दुखी और रोता हुआ; बहुत अधिक दीन और दुखी।

जारोब (جاروب) फा. स्त्री.–झाड़ू, मार्जनी।

जारोबकश (جاروب کش) फा. वि.–झाड़ू देनेवाला, सफ़ाई करनेवाला, झाड़ू से ज़मीन साफ़ करनेवाला।

जारोबकशी (جاروب کشی) फा. स्त्री.–झाड़ू देना, झाड़ू से जमीन साफ करना।

जालः (جالہ) फा. पुं.–नदी पार करने के लिए कई मश्कों में हवा भरकर और उनके ऊपर लकड़ियों का ठाठ कसकर बनायी जानेवाली नौका।

ज़ालः (ژالہ) फा. पुं.–हिमोपल, घनोपल, ओला।

ज़ालःज़दगी (ژالہ زدگی) फा. स्त्री.–ओली पड़ना, शिलावर्षा, करकापात।

ज़ालःबारी (ژالہ باری) फा. स्त्री.–दे. 'ज़ालःज़दगी'।

जाल (جعل) अ. पुं.–कूटता, जालसाज़ी; छल, वंचकता, फ़रेब।

ज़ाल [ल्ल] (ضال) अ. वि.–मार्गभ्रष्ट, गुमराह; पापी, गुनाहगार।

ज़ाल (زال) फा. वि.–सफ़ेद बालोंवाला बूढ़ा पुरुष; सफ़ेद बालोंवाली बूढ़ी स्त्री; बूढ़ा पुरुष या स्त्री।

जा'लसाज़ (جعل ساز) अ. फा. वि.–कूटकार, जाली काम करनेवाला, नक़ली रुपया या दस्तावेज़ बनानेवाला।

जा'लसाज़ी (جعل سازی) अ. फा. स्त्री.–कूट कर्म, नक़ली रुपया या दस्तावेज़ बनाना।

जालिफ़ (جالف) अ. पुं.–महामारी, ववा, मरी।

जालिब (جالب) अ. वि.–ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला; अपनी ओर खींचनेवाला।

ज़ालिम (ظالم) अ. वि.–अन्यायी, अत्याचारी; निर्दय, कठोर हृदय, निष्ठुर।

ज़ालिमानः (ظالمانہ) अ. फा. वि.–अत्याचारियों-जैसा।

ज़ालिमे अज़्लम (ظالم اظلم) अ. वि.–बहुत वड़ा अत्याचारी।

जालिस (جالس) अ. वि.–बैठनेवाला, वैठा हुआ, आसीन; वैठानेवाला।

जा'ली (جعلی) अ. वि.–कृत्रिम, बनावटी, नक़्ली; कल्पित, फ़र्ज़ी।

जाली (جالی) अ. वि.–शुद्ध करनवाला, चमकानेवाला; प्रकाशित करनेवाला।

जालीनोस (جالینوس) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध यूनानी हकीम।

ज़ालूक (ژالوک) फा. पुं.–गुल्ला, (ग़ुलेल में चलानेवला); गोली (वंदूक में चलनेवाली)।

जालूत (جالوت) अ. पुं.–एक वहुत ही अत्याचारी शासक जिसे हज़रत दाऊद की आज्ञा से 'तालूत' ने मारा था।

जाले' (جالع) अ. वि.–निर्लज्ज, वेहया; धृष्ट, गुस्ताख़, ढीठ।

जावर्स (جاورس) फा. पुं.–वाजरा, एक प्रसिद्ध अन्न।

जाविदाँ (جاوداں) फा. वि.–नित्य, शाश्वत, अनश्वर, हमेशा रहनेवाला।

जाविदानी (جاودانی) फा. वि.–दे. 'जाविदाँ'।

ज़ावियः (زاویہ) अ. पुं.– कोना, एकान्त, ग़ोशः; कोण (रेखागणित)।

ज़ावियए क़ाइमः (زاویۂ قائمہ) अ. पुं.–नब्बे अंश का कोण, समकोण।

ज़ावियए ख़ारिजः (زاویۂ خارجہ) अ. पं.–बहिष्कोण।

ज़ावियए दाखिलः (زاویۂ داخلہ) अ. पुं.–अंतःकोण।

ज़ावियए नज़र (زاویۂ نظر) अ. पुं.–दृष्टिकोण, नुक़्तए नज़र।

ज़ावियए निगाह (زاویۂ نگاہ) अ. फा. पुं.–दे. 'ज़ावियए नज़र'।

ज़ावियए मुन्फ़रिजः (زاویۂ منفرجہ) अ. पुं.–नब्बे अंश से वड़ा कोण, अधिककोण।

ज़ावियए हाद्दः (زاویۂ حادہ) अ. पुं.–नब्बे अंश से छोटा कोण, न्यूनकोण।

जावेद (جاوید) फा. वि.–नित्य, शाश्वत, दाइमी।

जावेदाँ (جاویداں) फा. वि.–दे. 'जावेद'।

जासूस (جاسوس) अ. पुं.–गुप्तचर, सूची, अपसर्पक, प्रतिष्क, चारचक्षु, मुख़विर।

जासूसी (جاسوسی) अ. पुं.–गुप्तचर का काम, मुख़विरी।

जाह (جاہ) फा. स्त्री.–प्रतिष्ठा; इज़्ज़त; पद, रुत्वा; सत्कार, क़द्र।

जाहपरस्त (جاہ پرست) फा. वि.–प्रतिष्ठा पाने का इच्छुक, पदलोलुप; केवल प्रतिष्ठित लोगों का भक्त।

जाहपरस्ती (جاہ پرستی) फा. स्त्री.–प्रतिष्ठा प्राप्ति की इच्छा; प्रतिष्ठित लोगों की भक्ति।

ज़ाहिक (ضاحک) अ. वि.–हँसनेवाला, हँसोड़, प्रहासी।

ज़ाहिदः (زاہدہ) अ. स्त्री.–तपस्विनी, साध्वी, विरक्ता, संयम नियम का पालन करनेवाली स्त्री।

ज़ाहिद (زاہد) अ. पुं.–जितेंद्रिय, संयमी, विरक्त, विषय-विरक्त, संयम-नियम और जप-तप करनेवाला व्यक्ति।

ज़ाहिदे ख़ुश्क (زاہد خشک) अ. फा. पुं.–ऐसा नीरस ज़ाहिद जिसके हृदय में ज़रा भी उदारता न हो।

ज़ाहिर (ظاہر) अ. वि.–व्यक्त, प्रकट, अयाँ; स्पष्ट, प्रत्यक्ष, वाज़ेह।

ज़ाहिर (زاہر) अ. वि.–उज्ज्वल, प्रकाशमान, चमकता हुआ; उच्च, उत्तुंग, ऊँचा, वलंद।

ज़ाहिरदार (ظاہردار) अ. फा. वि.–दिखावे की बातें करनेवाला, दुनियासाज़, अवसरवादी।

ज़ाहिरदारी (ظاہرداری) अ. फा. स्त्री.–वनावट, दिखावा, दुनियासाज़ी, व्याज-व्यवहार।

ज़ाहिरन (ظاہراً) अ. वि.–देखने में, ज़ाहिर में।

ज़ाहिरपरस्त (ظاہر پرست) अ. फा. वि.–जो ऊपरी टीम-टाम पर मरता हो, केवल वाह्यरूप देखनेवाला।

ज़ाहिरपरस्ती (ظاہرپرستی) अ. फा. स्त्री.–केवल वाह्य रूप पर मुग्धता।

ज़ाहिरबीं (ظاہربیں) अ. फा. वि.–वाहरी तड़क-भड़क का दीवाना, ज़ाहिरपरस्त।

ज़ाहिरबीनी (ظاہربینی) अ. फा. स्त्री.–केवल वाहरी टीम-टाम का मोह, ज़ाहिरपरस्ती।

ज़ाहिरा (ظاہرا) अ. वि.–दे. 'ज़ाहिरन'।

ज़ाहिरी (ظاہری) अ. वि.–वाहरी, वाह्य; ऊपरी, देखने भर का।

ज़ाहिरो बातिन (ظاہروباطن) अ. पुं.–अंदर और वाहर, मन और मुख, ज़वान और दिल।

जाहिल (جاہل) अ. वि.–जो कुछ न जानता हो, अज्ञानी; मूर्ख, बेवक़ूफ़; असभ्य, नामुहज़्ज़ब; अशिष्ट, वदसलीक़ः; उद्दंड, अक्खड़; निरक्षर, वेइल्म।

जाहिलीयत (جاہلیت) अ. स्त्री.–दे. 'जहालत'।

जाहिले मुत्लक़ (جاہل مطلق) अ. वि.–जो कुछ भी न जानता हो, निपट मूर्ख; बिलकुल बे पढ़ा-लिखा।

जाहोजलाल (جاہو جلال) अ. पुं.–शानोशौक़त, रोबोदाब।

जाहोमंसब (جاہومنصب) अ. पुं.–पदवी और प्रतिष्ठा।

जाहोहशम (جاہوحشم) अ. पुं.–दे. 'जाहोजलाल'।

जि

ज़िंजार (زنجار) अ. पुं.–दे. 'ज़ंगार'।

ज़िंदः (زندہ) फा. वि.–जीवित, जीता हुआ; नवीन, ताज़ा, जैसे–'ज़िंदःख़ून'।

ज़िंदःदरगोर (زندہدرگور) फा. वि.–जिसका जीवन मुर्दों-जैसा नीरस और व्यर्थ हो, जीवन्मृत।

ज़िंदःदार (زندہدار) फा. वि.–बहुत जागनेवाला।

ज़िंदःदिल (زندہدل) फा. वि.–हर समय प्रसन्न रहने और मज़ेदार बातें करनेवाला, विनोदरसिक।

ज़िंदःदिली (زندہدلی) फा. स्त्री.–प्रसन्न रहने और मनोविनोद करने का भाव।

ज़िंदःबशक्ले मुर्दः (زندہبہشکل مردہ) फा. वि.–ऐसा व्यक्ति जो जीते हुए भी शव के समान हो, अत्यंत दीन दुखी और कष्टग्रस्त, हतजीवित।

ज़िंदःबाद (زندہباد) फा. वा.–चिरजीव हो, जीवित रहो; साधुवाद, शाबाश, "ज़िंदाबाद अय रंजे उल्फ़त जानोदिल तुझ पर निसार, क्योंकि इक तेरे सबब से याद उसकी दिल में है।"

ज़िंदःबाश (زندہباش) फा. वा.–आयुष्मान् हो, बड़ी उम्र मिले; शाबाश, धन्यवाद।

ज़िंदए जावेद (زندۂ جاوید) फा. पुं.–जो सदा जीवित रहे, जो कभी न मरे।

ज़िंदगानी (زندگانی) फा. स्त्री.–दे. 'ज़िंदगी'।

ज़िंदगी (زندگی) फा. स्त्री.–जीवन, प्राण, हयात।

ज़िंदगीबख़्श (زندگیبخش) फा. वि.–जीवन देनेवाला; जीवन बढ़ानेवाला।

ज़िंदाँ (زندان) फा. पुं.–कारागार, कारागृह, क़ैदख़ाना।

ज़िंदाँख़ानः (زندانخانہ) फा. पुं.–दे. 'ज़िंदा'।

ज़िंदानी (زندانی) फा. वि.–कारावासी, क़ैदी, बंदी।

ज़िंदीक़ (زندیق) अ. वि.–नास्तिक, ला मज़हब; अग्निपूजक, आतशपरस्त, ज़रदुश्त का अनुयायी।

जिंस (جنس) अ. स्त्री.–वस्तु, पदार्थ, चीज़; अन्न, ग़ल्ला; जाति।

जिंसख़ानः (جنسخانہ) अ. फा. पुं.–अनाज आदि रखने का कोठा, मोदीख़ाना।

जिंसवार (جنسوار) अ. फा. स्त्री.–पटवारी का काग़ज़ जिसमें बोई हुई जिंस का ब्योरा होता है।

जिंसी (جنسی) अ. वि.–जिंस से सम्बन्ध रखनेवाला।

जिंसीयत (جنسیت) अ. स्त्री.–लिंगता, नर या मादा होना; जातीयता, क़ौमियत।

जिंसेकासिद (جنسکاسد) अ. स्त्री.–ऐसी खोटी वस्तु जो बाज़ार में न बिके।

जिंसनाकारः (جنسناکارہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'जिंसेकासिद'।

जिंसेनाक़िस (جنسناقص) अ. स्त्री.–दे. 'जिंसेकासिद'।

ज़िक [क़्क़] (زق) अ. स्त्री.–पानी भरने का ख़ाल का पात्र, परवाल, मश्क, भस्त्री।

ज़िक़्क़ी (زقی) अ. वि.–पानी की मश्क-जैसा; जलंधर का एक प्रकार जिसमें सारा शरीर सूज जाता है।

ज़िक्र (ذکر) अ. पुं.–चर्चा, तज़्किरः; एक प्रकार का जप।

ज़िक्रे अर्रः (ذکرارہ) अ. पुं.–योग में एक जप जो ज़बान और सीने से होता है।

ज़िक्रे ख़फ़ी (ذکرخفی) अ. पुं.–ऐसा जप जो मन में किया जाय, उपांशु।

ज़िक्रे ख़ैर (ذکرخیر) अ. पुं.–शुभ-चर्चा, अच्छा ज़िक्र; किसी बड़े व्यक्ति की याद और उसकी चर्चा।

ज़िक्रे ग़ैर (ذکرغیر) अ. पुं.–अन्य-चर्चा, दूसरा ज़िक्र; रक़ीब की चर्चा।

ज़िक्रे जहर (ذکرجہر) अ. पुं.–ऐसा जप जो ध्वनित हो, जो आवाज़ के साथ हो।

जिगर (جگر) फा. वि.–शरीर का एक विशेष अवयव, यकृत; साहस, हिम्मत।

जिगरअफ़गार (جگرافگار) फा. वि.–दे. 'जिगरफ़िगार'।

जिगरकावी (جگرکاوی) फा. स्त्री.–कड़ा परिश्रम, सख़्त मेहनत।

जिगरख़राश (جگرخراش) फा. वि.–बहुत अधिक दुःख देनेवाला, हृदय-विदारक।

जिगरख़्वारः (جگرخوارہ) फा. वि.–जिगर को खानेवाला, दुःख देनेवाला।

जिगरख़्वारी (جگرخواری) फा. स्त्री.– जिगर को खाना, दुःख, शोक।

जिगरगोशः (جگرگوشہ) फा.पुं.–जिगर का टुकड़ा अर्थात् पुत्र।

जिगरताब (جگرتاب) फा. वि.–जिगर को गर्म करनेवाला।

जिगरताबी (جگرتابی) फा. स्त्री.–कलेजा गर्म करना।

जिगरदोज़ (جگردوز) फा. वि.–दे. 'जिगरख़राश'।

जिगरपारः (جگرپارہ) फ़ा. पुं.–दे. 'जिगरगोशः'।

जिगरफ़िगार (جگرفگار) फा. वि.–जिसका हृदय टुकड़े-टुकड़े हो, भग्न हृदय, अत्यधिक दुखी।

जिगरबंद (جگربند) फ़ा. पुं.– दे. 'जिगरगोशः'।

जिगरसा (جگرسا) फ़ा. वि.–जिगर को छीलनेवाला, कष्ट देनेवाला।

जिगरसोख़्तः (جگرسوختہ) फ़ा. वि.–दिल जला, जिसका हृदय शोक की आँच से जल गया हो, भृष्ट हृदय, दग्ध-हृदय।

जिगरसोख़्तगी (جگر سوختگی) फ़ा. स्त्री.–हृदय का दग्ध होना।

जिगरसोज़ (جگرسوز) फ़ा. वि.–हृदयदाही, दुःखदायी; सहानुभूति करनेवाला।

जिगरसोज़ी (جگرسوزی) फ़ा. स्त्री.–हृदय जलाना, ग़म उठाना; सहानुभूति करना।

जिगरी (جگری) फ़ा. वि.–हार्दिक, दिली; घनिष्ठ, गहरा; जिगर के रंग का, गहरा लाल।

जिजबिज़ (جزبز) फ़ा. वि.–रुष्ट, अप्रसन्न, नाराज़।

जिज़्यः (جزیہ) अ. पुं.–एक टैक्स जो हिन्दुस्तान में बाज़ मुसलमान शासकों ने हिंदुओं से लिया था और जो तीन से बारह रुपये प्रति वर्ष लगता था, धर्म-कर।

जिद (جِد) अ. स्त्री.–प्रयास, पराक्रम, कोशिश।

ज़िद [द्द] (ضد) अ. स्त्री.–हठ, अड़; विपरीत, विरुद्ध, उलटा; वैमनस्य, रंजिश।

जिदा (زدا) फा. प्रत्य.–शुद्ध करनेवाला।

जिदाइंदः (زدائندہ) फा. वि.–साफ़ करनेवाला; परिमार्जित करनेवाला।

ज़िदाइश (زدائش) फा. स्त्री.–परिमार्जन, सफ़ाई, चमक दमक, जिला।

ज़िदूदः (زدودہ) फा. वि. परिमार्जित, साफ़ किया हुआ, माँजा हुआ।

ज़िदूदनी (زدودنی) फा. वि.–माँजकर साफ़ करने के क़ाबिल, परिमार्जनीय।

जिदार (جِدار) अ. स्त्री.–भीत, भित्त, दीवार।

जिदाल (جِدال) अ. पुं.–युद्ध, लड़ाई; वादविवाद, बहस।

जिदालोक़िताल (جِدال وقتال) अ. पुं.–लड़ाई और रक्तपात, खून-खराबी।

जिद्दः (جِدہ) अ. पुं.–अरब का एक नगर जो प्रसिद्ध बंदरगाह है; जिद्दत।

जिद्दत (جِدت) अ. स्त्री.–अद्भुतता, अनोखापन; नवीनता, नयापन; आविष्कार, ईजाद।

जिद्दतआमेज़ (جدت آمیز) अ. फ़ा. वि.–वह बात जिसमें जिद्दत हो।

जिद्दततराज़ (جدت طراز) अ. फ़ा. वि.–जिद्दत पैदा करनेवाला, नयी-नयी बातें निकालनेवाला, आविष्कारक।

जिद्दततराज़ी (جدت طرازی) अ. फ़ा. स्त्री.–नयी-नयी बातें निकालना, आविष्कार।

जिद्दतपसंद (جدت پسند) अ. फ़ा. वि.–जिसे हर बात में जिद्दत अच्छी लगती हो।

जिद्दतपसंदी (جدت پسندی) अ. फ़ा. स्त्री.–हर बात में जिद्दत अच्छी लगना।

जिद्दत मआब (جدت مآب) अ. वि.–दे. 'जिद्दततराज़'।

जिद्दन (جِداً) अ. स्वि.–प्रयास से, कोशिश करके।

ज़िद्दन (ضداً) अ. वि.–हठ से, हठ के कारण।

ज़िद्दी (ضدی) अ. वि.–हठ करनेवाला, हठी, आग्रही; जो बात ठान ले या कह दे उसी पर अड़ जानेवाला।

ज़िद्दैन (ضدین) अ. पुं.–दो परस्पर विरोधी चीज़ें, जैसे आग और पानी।

जिद्दोजहद (جِد وجہد) अ. स्त्री.–पराक्रम और प्रयास, दौड़-धूप।

जिन [न्न] (جِن) अ. पुं.–एक प्राणी जिसकी उत्पत्ति अग्नि से मानी जाती है, और वह दिखाई नहीं पड़ता।

जिनाँ (جِناں) अ. स्त्री.–'जिनान' का लघु., दे. 'जिनान'।

ज़िनाँ (زنا) अ. पं.–व्यभिचार, परायी स्त्री या पराये पुरुष के पास जाना।

ज़िनाकार (زناکار) अ. फ़ा. वि.–व्यभिचारी; व्यभिचारिणी।

ज़िनाकारी (زناکاری) अ. फ़ा. स्त्री.–व्यभिचार, जारकर्म, हरामकारी।

जिनाज़ः (جِنازہ) अ. पुं.–दे. 'जनाज़ः', दो. शुद्ध हैं, परंतु उर्दू में 'जनाज़ः' ही बोलते हैं।

जिनान (جِنان) अ. स्त्री.–'जन्नत' का बहु., जन्नतें; बाग़-समूह, उर्दू में एक वचन के अर्थ में व्यवहृत है।

जिनायत (جِنایت) अ. स्त्री.–पाप, पातक, गुनाह।

जिनायात (جِنایات) अ. स्त्री.–'जिनायत' का बहु., बहुत से पाप।

जिन्नः (جِنّہ) अ. पुं.–जिनका बहु., जिनों का समूह; जिनों की जाति।

ज़िन्नत (ظنت) अ. स्त्री.– आरोप, लांछन, तोहमत।

जिन्नात (جِنّات) अ. पुं.–'जिन' का बहु., बहुत से जिन, जिनों की जाति।

जिन्नी (جِنّی) अ. पुं.–जिनका; जिन सम्बन्धी; एक जिन।

ज़िन्हार (زنہار) फा. स्त्री.–शरण, त्राण, पनाह। (अव्य.) कदापि, हरगिज़।

ज़िन्हारख़्वार (زنہارخوار) फा. वि.–प्रतिज्ञा भंग करने वाला, वा'दा शिकन।

ज़िन्हारख़्वाह (زنہارخواہ) फा. वि.–पनाह या रक्षा चाहनेवाला, शरणार्थी।

ज़िन्हारी (زنہاری) फा. वि.–त्राण चाहनेवाला, शरणागत; प्रतिज्ञा करनेवाला।

ज़िफ़ाफ़ (زفاف) अ. पुं.–दुल्हन को दूल्हा के घर भेजना; दूल्हा का दुल्हन से पहली बार मिलना।

ज़िफ़्त (زفت) फा. स्त्री.–चीड़ का गोंद, राल।

ज़िफ़्दे (ضفدع) अ. पुं.–दुर्दुर, भेक, मेंढक, मंडूक।

ज़िबस (زبس) फा. वि.–बहुत, अधिक।

ज़िबा (ظبا) अ. पुं.–'ज़बी' का बहु., हरिनों का समूह।

ज़िबाब (ضباب) अ. स्त्री.–'ज़ब' का बहु., गोहें।

जिबायत (جبایت) अ. स्त्री.–धन एकत्र करना; कर एकट्ठा करना।

जिबाल (جبال) अ. पुं.–'जबल' का बहु., पर्वतमाला, बहुत से पहाड़।

जिबाले रासियात (جبالِ راسیات) अ. पुं.–ऊँचे-ऊँचे और बड़े-बड़े पहाड़।

जिबाह (جباہ) अ. स्त्री.–'जब्ह' का बहु., माथे, ललाट।

जिबिल्लत (جبلت) अ. स्त्री.–प्रकृति, स्वभाव, नेचर।

जिबिल्ली (جبلی) अ.वि.–प्राकृतिक, स्वाभाविक, नेचुरल।

जिब्त (جبت) अ. पुं.–हर वह चीज़ जो ईश्वर के अतिरिक्त पूजी जाय।

ज़िब्रः (زبرہ) अ. स्त्री.– एक पुस्तक; एक पत्र।

ज़िब्र (زبر) अ. स्त्री.–पुस्तक, किताब।

ज़िब्रिक़ान (زبرقان) अ. पुं.–संपूर्ण चंद्र, राकेश, सकलेंदु, पूरा चाँद।

जिब्रील (جبریل) अ. पुं.–एक फ़िरिश्ता जो पैग़ंबरों के पास ईश्वर का आदेश पहुँचाया करता था।

ज़िब्ल (زبل) अ. पं.–घोड़े या गधे की लीद।

ज़िब्ह (ذبح) अ. वि.–वधित, जो ज़ब्ह किया गया हो।

ज़िब्हे अक्बर (ذبحِ اکبر) अ. पुं.–वह दुंबा जो हज़्रत इस्माईल के बदले में ज़ब्ह हुआ।

ज़िब्हेअज़ीम (ذبحِ عظیم) अ.पुं.–हज़्रत इमाम हुसैनकी शहादत

जिमाअ (جماع) अ. पुं.–स्त्रीप्रसंग, मैथुन, मुबाशरत।

जिमाउलइस्म (جماع الاثم) अ. पुं.–मद्यपान, शराबनोशी।

जिमाद (جماد) अ. पुं.–'जुम्द' का बहु., ऊँची और कठोर भूमि।

ज़िमाद (ضماد) अ. पुं.–प्रलेप, अंग विशेष पर दवा का लेप।

ज़िमाम (ذمام) अ. पुं.– प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; स्वत्व, हक़।

ज़िमाम (زمام) अ. स्त्री.–ऊँट की नकेल।

ज़िमामे हुकूमत (زمامِ حکومت) अ. स्त्री.–शासन की बागडोर, शासनसूत्र।

ज़िमार (ضمار) अ. पुं.–खोया हुआ माल जिसके मिलन की आशा न हो।

जिमार (جمار) अ. स्त्री.–'जम्रः' का बहु., कंकरियाँ; हज की एक प्रथा जिसमें शैतान को कंकरियाँ मारते हैं।

जिमाल (جمال) अ. पुं.–'जमल' का बहु., बहुत-से ऊँट।

ज़िम्न (ضمن) अ. पं.–अंतर्गत, अंदर; प्रसंग, बात का सिलसिला; विषय।

ज़िम्नन (ضمناً) अ. वि.–किसी प्रसंग में आयी हुई चर्चा।

ज़िम्नी (ضمنی) अ. वि.–किसी मुख्य विषय के अंतर्गत वाला; ग़ैर अहम, गौण।

ज़िम्मः (ذمہ) अ. पुं.–उत्तरदायित्व, ज़िम्मेदारी; प्रतिभूति, ज़मानत।

ज़िम्मःदार (ذمہدار) अ. फा. वि.–उत्तरदायी, जवाबदेह; प्रतिभू, ज़ामिन; ज़िम्मेदारी महसूस करनेवाला।

ज़िम्मःदारी (ذمہداری) अ. फा. स्त्री.–उत्तरदायित्व, जवाबदेही; प्रतिभूति, ज़मानत; कार्यभार, बार।

ज़िम्मत (ذمت) अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा, इक़ार; प्रतिभूति, ज़मानत।

ज़िम्मी (ذمی) अ. पं.–इस्लामी राज्य में ग़ैर मुस्लिम नागरिक।

ज़ियाँ (زیاں) फा.पुं.–हानि, अनिष्ट, ज़रर; टोटा, क्षति, घाटा।

ज़ियाँ (ژیاں) फा. वि.–फाड़ खानेवाला, हिंसक, श्वापद, व्याघ्र।

ज़ियाँकार (زیاںکار) फा. वि.–टोटा देनेवाला, घाटा पहुँचानेवाला; कदाचारी, बदआमाल।

ज़ियाँकारी (زیاںکاری) फा. स्त्री.–टोटा देना; कदाचार, बदआमाली।

ज़िया (ضیا) अ. स्त्री.–प्रकाश, ज्योति, आभा, चमक; सूर्य का प्रकाश।

ज़ियागुस्तर (ضیاگستر) अ. फा. वि.–दे. 'ज़ियापाश'।

ज़ियादः (زیادہ) अ. वि.–अधिक, प्रचुर, बहुत; तिअरिक्त, फ़ालतू।

ज़ियादःख़ोर (زیادہخور) अ. फा. वि.–बहुत ख़ानेवाला, पेटू, बहुभक्षी, पिंडीशूर।

ज़ियादःगो (زیادہگو) अ. फा. वि.–बहुत बातें बनानेवाला, मुखर, वाचाल; मिथ्यावादी, गप्पी।

ज़ियादःगोई (زیادہ گوئی) अ. फा. स्त्री.–बहुत बातें करना; गप हाँकना।

ज़ियादःतर (زیادہ تر) अ. फा. वि.–अधिकतर, बहुधा, अक्सर।

ज़ियादःतलबी (زیادہ طلبی) अ. फा. स्त्री.–हिस्से या हिसाब से अधिक माँगना।

ज़ियादःसरी (زیادہ سری) अ. फा. स्त्री.–स्वच्छंदता, ख़ुदराई; अभिमान, घमंड।

ज़ियादःसितानी (زیادہ ستانی) अ. फा. स्त्री.–अपने भाग से अधिक ले लेना।

ज़ियाद (زیاد) अ. पुं.–अधिक, बहुत; 'इब्ने ज़ियाद' इमाम हुसैन का क़ातिल।

ज़ियादत (زیادت) अ. स्त्री.–अधिकता, बहुतायत।

ज़ियादती (زیادتی) अ. स्त्री.–अधिकता; अत्याचार; अनीति; हठधर्मी।

ज़ियापाश (ضیاپاش) अ. फा. वि.–प्रकाश फ़ैलानेवाला।

ज़ियापाशी (ضیاپاشی) अ. फा. स्त्री.–प्रकाश फैलाना।

ज़ियाफ़त (ضیافت) अ. स्त्री.–अतिथि पूजा, मेहमांदारी; प्रीतिभोज, दावत।

ज़ियाफ़तख़ानः (ضیافت خانہ) अ. फा. पुं.–अतिथियों की भोजनशाला।

ज़ियाबार (ضیابار) अ. फा. वि.–दे. 'ज़ियापाश'।

ज़ियाबारी (ضیاباری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'ज़ियापाशी'।

ज़ियाबीतुस (ذیابیطس) अ. पुं.– एक रोग जिसमें पेशाब बहुत आता है; बहुमूत्र।

ज़ियारत (زیارت) अ. स्त्री.–दर्शन, दीदार; तीर्थाटन, किसी बुज़ुर्ग के मज़ार आदि के दर्शनार्थ सफ़र; किसी बुज़ुर्ग का रौज़ा आदि।

ज़ियारतकदः (زیارت کدہ) अ. फा. पुं.–दे. 'ज़ियारतगाह'।

ज़ियारतगाह (زیادت گاہ) अ. फा. स्त्री.–ऐसी जगह जहाँ किसी बुज़ुर्ग का मज़ार या उसके तबर्रुकात हों।

ज़िराअ (ذراع) अ. पुं.–एक हाथ की नाप; सातवाँ नक्षत्र, पुनर्वसु।

ज़िराअत (زراعت) अ. स्त्री.–कृषि, खेती, काश्त।

ज़िराअतपेशः (زراعت پیشہ) अ. फा. वि.–कृषक, किसान।

ज़िराअती (زراعتی) अ. वि.–कृषि सम्बन्धी, खेती से मुतअल्लिक़; खेती का।

ज़िराब (ضراب) अ. पुं.–नर का मादा पर चढ़ना।

ज़िरार (ضرار) अ. पुं.–एक दूसरे को हानि पहुँचाना; मक्के की एक मस्जिद जिसमें मुहम्मद साहब के शत्रु बैठकर परामर्श करते थे।

जिराहत (جراحت) अ. स्त्री.–घाव, ज़ख़्म, आघात; चीर-फाड़, शल्यक्रिया, दे. 'जराहत'।

ज़िरिश्क (زرشک) फा. स्त्री.–एक खट्टा फल जो चने के बराबर होता है और सुखाकर दवाई के काम आता है।

ज़िरिह (زرہ) फा. स्त्री.–लोहे की ज़ंजीरो का एक पहनावा जो लड़ाई में पहना जाता है, कवच, अंगरक्ष।

ज़िरीहपोश (زرہ پوش) फा. वि.–जो ज़िरिह पहने हो, कवचधारी।

ज़िरीहबाफ़ (زرہ باف) फा. वि.–ज़िरिह बनानेवाला, कवच बनानेवाला, कवचकार।

ज़िरिहसाज़ (زرہ ساز) फा. वि.–दे. 'ज़िरिहबाफ़'।

ज़िर्ग़ाम (ضرغام) अ. पुं.–सिंह, व्याघ्र, शेर।

ज़िर्नीख़ (زرنیخ) अ. स्त्री.–हड़ताल, हरिताल, कांचनक, दे. 'ज़र्नीख', दो. शु. हैं।

ज़िर्ज़ीक (ضرزیک) एक प्रकार की तोप।

जिर्म (جرم) अ. पुं.–पिंड, देह, यह शब्द अधिक अधिक आकाशीय अथवा जड़ पदार्थों के लिए प्रयुक्त होता है।

ज़िर्फ़ीन (زرفین) अ. पुं.–शृंखला, ज़ंजीर; दरवाजे की ज़ंजीर, दे. 'ज़ुर्फ़ीन', दो. शु. हैं।

जिर्यान (جریان) अ. पुं.–शुक्र-प्रमेह, मूत्र-शुक्र, पेशाव के साथ मनी आने का रोग, शुद्ध उच्चारण; 'जरयान' है।

ज़िर्वः (زروہ) अ. पुं.–शृंग, चोटी; ऊँचा स्थान।

ज़िर्स (ضرس) अ. स्त्री.–डाढ़, बड़ा दाँत, जंभ, द्राडक।

ज़िल (ظل) अ. पुं.–छाया, साया, परछाईं।

जिला (جلا) अ. स्त्री.–आभा, प्रभा, चमक; सैक़ल, वर्तनों या हथियारों की चमक।

ज़िला (ضلع) अ. पुं.–पार्श्वास्थि, पसली; जनपद, मंडल, प्रांत का एक भाग जो एक कलक्टर के अधीन होता है।

जिलादार (جلادار) अ. फा. वि.–आभा युक्त, चमकदार; जिस पर सैक़ल हो।

ज़िलेबा (زلیبا) फा. पुं.– प्रसिद्ध मिठाई, बड़ी जलेबी।

जिलौ (جلو) तु. पुं.–कोतल घोड़ा, जो सरदारों और राजाओं की सवारी में काम आता है; लगाम, कविका।

जिलौख़ानः (جلوخانہ) तु. फा. पुं.–अश्वशाला, अस्तवल।

जिलौदार (جلودار) तु. फा. पुं.–श्रेष्ठ अश्वका स्वामी।

जिलौरेज़ (جلوریز) तु. फा. वि.–तेज़ घोड़ा दौड़ानेवाला, सरपट जानेवाला।

ज़िल्अ (ضلع) अ. पुं.–पसली, पार्श्वास्थि; जनपद, मंडल, ज़िला, इस शब्द का उच्चारण 'ज़िला' भी है।

ज़िलक़ा'दः (ذی القعدہ) अ. पुं.–इस्लामी ग्यारहवाँ महीना।

ज़िल्ज़ाल (زلزال) अ.पुं.–हिलाना, कँपाना, हिलाना-डुलाना।

जिल्द (جلد) अ. स्त्री.–त्वचा, त्वक्, शरीर की ऊपरी खाल; किताब की एक प्रति, जैसे—'अमुक पुस्तक की चार जिल्दें' ; पुस्तक पर चढ़ा हुआ कपड़ा आदि, जुज़बंदी; किसी बड़ी पुस्तक का एक भाग, ग्रंथ-खंड ।

जिल्दसाज़ (جلدساز) अ. फा. पुं.– पुस्तक की जिल्दें बाँधनेवाला ।

जिल्दसाज़ी (جلدسازی) अ. फा. स्त्री.–पुस्तक की जिल्दें बनाने का काम ।

जिल्दौ (جلدو) तु. पुं.–पुरस्कार, इन्आम, बख़शिश ।

जिल्फ़ (جلف) अ. वि.–जो अंदर से ख़ाली हो, छूँछा, पोला; खोखला आदमी, ओछा ।

जिल्बाब (جلباب) अ. स्त्री.–चादर, प्रच्छादन ।

ज़िल्लत (ذلت) अ. स्त्री.–ख्वारी, तिरस्कार, अपमान, अनादर ।

ज़िल्लत (زلت) अ. स्त्री.– लग़्जिश, फिसलने की क्रिया; पतन, चूक, त्रुटि, भूल; पाप, गुनाह ।

ज़िल्लत (ضلت) अ. स्त्री.– गुमराही, मार्गभ्रंश, रस्ता भूल जाना; पातक, पाप, गुनाह ।

ज़िल्लत आमेज़ (ذلت آمیز) अ. फा. वि.–अपमानजनक, तिरस्कारयुक्त, ज़िल्लत से भरा हुआ ।

ज़िल्लुल्लाह (ظل اللہ) अ. पुं.–ईश्वर की छाया, अच्छा शासक ।

ज़िल्ले आतिफ़त (ظل عاطفت) अ. पुं.–छत्रछाया, ज़ेरेसाया ।

ज़िल्ले इनायत (ظل عنایت) अ. पुं.–दे. 'ज़िल्ले आफ़ियत' ।

ज़िल्ले ज़मीं (ظل زمیں) अ. फा. पुं.–रात्रि, निशा, रात ।

ज़िल्ले सुब्हानी (ظل سبحانی) अ. पुं.–दे. 'ज़िल्लुल्लाह' ।

ज़िल्ले हक़ (ظل حق) अ. पुं.–ईश्वर की छाया, ईश्वर की कृपा ।

ज़िल्ले हिमायत (ظل حمایت) अ.–दे. 'जिल्ले आतिफ़त' ।

ज़िल्ले हुमा (ظل ہما) अ. फा. पुं.–हुमा पक्षी की छाया, जिसके पड़ने से मनुष्य राजा हो जाता है ।

जिल्वः (جلوہ) अ. पुं.–सही शब्द यही है, परन्तु उर्दू में 'जल्वः' बोला जाता है, दे. 'जल्वः' ।

ज़िलहिज्जः (ذی الحجہ) अ. पुं.–इस्लामी बारहवाँ महीना ।

जिवार (جوار) अ. पुं.–'जवार' ग़लत है, 'जिवार' या 'जुवार' शुद्ध है; पड़ोस, प्रतिवास, हमसायगी; आस-पास, चारों ओर ।

ज़िश्त (زشت) फा. वि.–निकृष्ट, ख़राब, बुरा ।

ज़िश्तआमाल (زشت اعمال) अ. फा. वि.–कदाचारी, दुराचारी, बदआमाल ।

ज़िश्तकार (زشت کار) फा. वि.–दे. 'ज़िश्त आ'माल' ।

ज़िश्तख़ू (زشت خو) फा. वि.–बुरी आदतोंवाला, दुःस्वभाव, दुष्प्रकृति; बदअख़लाक़, दुःशील, कुशील ।

ज़िश्तरू (زشت رو) फा. वि.–बुरी शक्लवाला, कुरूप, कदाकृति, कुदर्शन ।

ज़िश्तरूई (زشت روئی) फा. स्त्री.–कुरूपता, बदशक्ली ।

ज़िश्तिएकार (زشتی کار) फा. स्त्री.–कर्मों की निकृष्टता, पाप, गुनाह ।

ज़िश्ती (زشتی) फा. वि.–निकृष्टता, ख़राबी; कुरूपता, बदशक्ली ।

जिस [स्स]° (جص) अ. पुं.–चूना, गच ।

जिस्म (جسم) अ. पुं.–शरीर, काया, देह; घनत्व, स्थूलता, लंबाई चौड़ाई मोटाई, जसामत ।

जिस्मानी (جسمانی) अ. वि.–शारीरिक, बदनी; शरीर सम्बन्धी, जिस्मी ।

जिस्मानीयत (جسمانیت) अ. स्त्री.–लंबाई चौड़ाई और मोटाई या गहराई और ऊँचाई, स्थूलता, घनत्व ।

जिस्मी (جسمی) अ. वि.–दैहिक, शारीरिक, जिस्मानी ।

जिस्मीयत (جسمیت) अ.स्त्री.–स्थूलता, घनत्व, जसामत ।

जिस्मेख़ाकी (جسم خاکی) अ. फा. पुं.–मिट्टी का बना हुआ शरीर, नश्वर देह, मानवशरीर ।

जिस्मे ता'लीमी (جسم تعلیمی) अ. पुं.–लंबाई चौड़ाई और मोटाई, घनत्व, स्थूलता ।

जिस्मेफ़ानी (جسم فانی) अ. पुं.–नश्वर देह, मिट जानेवाला शरीर, मानवदेह ।

जिस्र (جسر) अ. पुं.–सेतु, पुल, दे. 'जस्न' दो. शु. हैं ।

ज़िह (زہ) फा. स्त्री.–धनुष का कनारा, चिल्ला (आक) साधु, धन्य, वाह ।

ज़िहगीर (زہ گیر) फा. स्त्री.–वह अँगूठी जो तीर चलाते समय उँगली की रक्षा के लिए पहनी जाती है, अंगुलित्राण ।

जिहत (جہت) अ. स्त्री.–दिशा, ओर, तरफ़; कारण, हेतु, सबब ।

जिहाज़ (جہاز) अ. पुं.–ब्याह का दहेज; मृतक का सामान, कफ़न आदि; यात्रा की सामग्री, पाथेय ।

जिहात (جہات) अ. स्त्री.–'जिहत' का बहु., दिशाएँ; सिम्तें; कारण समूह, वज्हें ।

जिहाद (جہاد) अ. पुं.–धर्म के लिए विधर्मियों से युद्ध ।

जिहादे अक्बर (جہاد اکبر) अ. पुं.–बड़ा जिहाद, इंद्रियों का दमन ।

जिहादे अस्ग़र (جہاد اصغر) अ. पुं.–छोटा जिहाद, धर्मयुद्ध ।

जिहाफ़ (زحاف) अ. पुं.–न्यूनता, कमी; छंद के गणों में से मात्राओं की कमी।

जिहाब (زہاب) अ. पुं.–जाना, गमन करना, दे. 'ज़हाब' दो. शु. हैं।

जिहाम (زحام) अ. पुं.–भीड़, जनसमूह; अधिकता, बहुतायत।

जिहार (ظہار) अ. पुं.–पुरुष का स्त्री से यह कहना कि तू मेरे लिए माँ की पीठ है, इससे वह स्त्री व्याह से विछिच्न्न हो जाती है।

जिहार (زہار) अ. पुं.–उपस्थ, कटिदेश, पेड़ू।

जिहिंदः (جہندہ) फा. वि.–उछलनेवाला, कूदनेवाला।

जिहे (زہے) फा. अव्य.–अहो, क़्या ख़ूब, वाह-वाह।

जिहेज (جہیز) फा. पुं.–ब्याह में दुल्हन को दिया जानेवाला सामान; दहेज।

जिह्क (ضحک) अ. पुं.–ज़ोर की हँसी, अट्टहास, क़हक़हा।

जिह्न (ذہن) अ. पुं.–प्रतिभा, तब्बाई; धारणाशक्ति, समझ-बूझ; स्मरणशक्ति, हाफ़िज़; दक्षता, कुशलता, होशियारी।

जिह्ननशीं (ذہن نشیں) अ. फा. वि.–जो बात समझ में आ गयी हो, चित्त पर चढ़ी हुई बात, हृदयंगम, बोधगम्य।

जिह्नी (ذہنی) अ. वि.–हार्दिक, मानसिक, रूहानी।

जिह्नीयत (ذہنیت) अ. स्त्री.–प्रकृति, स्वभाव, आदत; अंतःकरण, अंदरूँ; धारणा, गुमान।

जिह्ने रसा (ذہن رسا) अ. फा. पुं.–किसी बात को जल्दी समझ लेनेवाला ज़िह्न।

जिह्ने सालेह (ذہن صالح) अ.पुं.–अच्छे-बुरे में पूर्ण विवेक करनेवाला ज़िह्न।

जिह्मत (زہمت) अ. स्त्री.–सड़े हुए माँस या मछली की दुर्गंध जो असह्य हो।

जी

जीं (زیں) फा. स्त्री.–'ज़ीन' का लघुरूप, जो समास में व्यवहृत होता है (अव्य.) इससे।

जी (ذی) अ. उप.–एक उपसर्ग जो संज्ञा से पहले आकर 'वाला' का अर्थ देता है, जैसे–'ज़ीअक़्ल' अक़्लवाला।

जीअक़्ल (ذی عقل) अ. वि.–बुद्धिवान्, मेधावी, अक़्लमंद।

जीआबरू (ذی آبرو) अ. फा. वि.–प्रतिष्ठित, सम्मानित, इज़्ज़तदार।

जीइख़्तियार (ذی اختیار) अ. वि.–जिसे अधिकार प्राप्त हो, प्राप्ताधिकार; जो किसी के अधीन न हो, ख़ुद मुख़्तार, स्वाधीन।

जीइज़्ज़त (ذی عزت) अ. वि.– दे. 'ज़ीआबरू'।

जी इस्ते'दाद (ذی استعداد) अ. वि.–विद्वान्, योग्य, शिक्षित, पढ़ा-लिखा, क़ाबिल।

जीक़ (ضیق) अ. वि.–तंगी, संकोच, संकीर्णता; कृष्ट, दुःख, क्लेश, मुसीबत।

जीकमाल (ذی کمال) अ. वि.–गुणवान्, गुणी, हुनरमंद।

जीक़ा'दः (ذی قعدہ) अ. पुं.–इस्लामी ग्यारहवाँ महीना।

जीक़ुन्नफ़स (ضیق النفس) अ. पुं.–दमे की बीमारी, श्वास-कास, श्वास रोग, श्वास कष्ट, उरःस्तंभ।

जीग़ः (جیغہ) फा. पुं.–पगड़ी में बाँधने का एक रत्नजटित आभूषण।

जीज (زیج) फा. स्त्री.–ज्योतिष की किताब जिसमें ग्रहों की गति का विवरण और दूसरी तफ़्सीलें होती हैं।

जीजाह (ذی جاہ) अ. वि.-बड़े पद या बड़ी प्रतिष्ठावाला।

जीनः (زینہ) फा. पुं.–सोपान, निश्रेणी, सीढ़ी; इमारतों की पक्की सीढ़ियाँ।

ज़ीन (زین) फा. पुं.–घोड़े की पीठ पर कसी जानेवाली काठी, पल्ययन।

जीनत (زینت) अ. स्त्री.–शृंगार, सज्जा, सजावट; शोभा, श्री, रौनक़।

जीनतकदः (زینت کدہ) अ. फा. पुं.–सुसज्जित और शृंगारित मकान कोठी आदि; प्रेयसी का निवासस्थान।

जीनतदिह (زینت دہ) अ. फा. वि.–शोभा बढ़ानेवाला, सुशोभित करनेवाला, ज़ीनत देनेवाला।

जीनते आग़ोश (زینت آغوش) अ. फा. स्त्री.–गोद में बैठा हुआ, गोद में बैठकर गोद की शोभा बढ़ानेवाला।

जीनते बज़्म (زینت بزم) अ. फा. स्त्री.–सभा में बैठकर सभा की शोभा को चार चाँद लगानेवाला।

जीनते महफ़िल (زینت محفل) अ. स्त्री.–दे. 'ज़ीनते बज़्म'।

जीनपोश (زین پوش) फा. पुं.–ज़ीन के ऊपर डालनेवाला कपड़ा।

जीनसाज (زین ساز) फा. पुं.–ज़ीन बनानेवाला।

जीफ़ः (جیفہ) फा. पुं.–मरा हुआ पशु आदि, मुर्दार, मृत, गतप्राण।

जीफ़ःख़्वार (جیفہ خوار) अ. फा. वि.–मुर्दा खानेवाला, मृताशी, पूयभुक्।

जीफ़ह्म (ذی فہم) अ. वि.–बुद्धिमान्, मतिमान, मेधावी, अक़्लमंद; प्रतिभाशाली, धारणासम्पन्न, ज़हीन; दूरदर्शी, अग्रशोची, पेशबीं।

जीफ़िरासत (ذی فراست) अ. वि.–दे. 'ज़ीफ़हम'।

जीबक़ (زیبق) अ. पुं.–पारद, पारा, सीमाब।

ज़ीबाल (ذی بال) अ. फा. वि.–जिसके पर हों, पक्षी; प्रतिष्ठित, मान्य, मुअज़्ज़ज़।

ज़ीमर्तबत (ذی مرتبت) अ. वि.–बड़े रुत्बेवाला, प्रतिष्ठावान्, सम्मानित।

ज़ीरः (زیره) फा. पुं.–जीरक, मसाले की एक प्रसिद्ध चीज़।

ज़ीर (زیر) फा. पुं.–धीमी आवाज़, नीचा स्वर।

ज़ीरए सफ़ेद (زیرۂ سفید) फा. पुं.–श्वेतजीरक, सफ़ेद ज़ीरा।

ज़ीरए सियाह (زیرۂ سیاه) फा. पुं.–कृष्ण जीरक, सुषा, काला ज़ीरा।

ज़ीरक (زیرک) फा. वि.– प्रवीण, प्रतिभाशाली, धारणावान्, चतुर, होशयार।

ज़ीरकी (زیرکی) फा. स्त्री.–चातुर्य, दक्षता, कुशलता, प्रवीणता, प्रतिभा, तब्बाई।

ज़ीरुत्बः (ذی رتبه) अ. वि.–दे. 'जीमर्तबत'।

ज़ीरूह (ذی روح) अ. वि.–प्राणी, जीवधारी, जानदार।

ज़ीरोबम (زیروبم) फा. पुं.–स्वर का उतार-चढ़ाव, षड्ज, निषाद इत्यादि।

जीवः (جیوه) फा. पुं.–पारद, पारा, सीमाब।

ज़ीवक़ार (ذی وقار) अ. वि.–दे. 'ज़ीमर्तबत'।

ज़ीवजाहत (ذی وجاهت) अ. वि.–दे. 'ज़ीमर्तबत'।

ज़ीस्त (زیست) फा. स्त्री.–जीवन, जिंदगी।

ज़ीस्तनी (زیستنی) फा. वि.–जीने के लाइक़, जिस का जीना आवश्यक हो, जीवनीय।

ज़ीहयात (ذی حیات) अ. वि.–दे. 'जीरूह'।

ज़ीहशम (ذی حشم) अ. वि.–जिसके पास नौकर चाकर बहुत हों, वैभवशाली।

ज़ीहिस (ذی حس) अ. वि:–जिसे अपनी बुराई-भलाई का एहसास हो, खुददार, स्वाभिमानी।

ज़ीहैसियत (ذی حیثیت) अ. वि.–अच्छी हैसियतवाला; धनवान्, धनी; प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज।

ज़ीहोश (ذی هوش) अ. वि.–संज्ञावान्, सुचेत, जो होश में हो; बुद्धिमान्, अक़्लमंद; दूरदर्शी, दूरंदेश।

जु

जुंद (جند) अ. पुं.–सेना, फ़ौज, पलटन।

जुंदबेदस्तर (جندبیدستر) फा. पुं.–एक समुद्री ऊदबिलाव के अंडकोष का सुखाया हुआ रस जो दवा में चलता है।

जुंदी (جندی) अ. पुं.–सैनिक, सिपाही, लश्करी, फ़ौजी।

जुंबाँ (جنباں) फा. वि.–कंपायमान, हिलता हुआ (प्रत्य.) हिलानेवाला, जैसे—'सिलसिलःजुंबाँ' ज़ंज़ीर हिलानेवाला।

जुंबिश (جنبش) फा. स्त्री.– कंप, हिलन, हरकत; टस से मस होने की हालत; गति, चाल।

जुंबीदः (جنبیده) फा. वि.–हिला हुआ, जुंबिश खाया हुआ।

ज़ुअफ़ा (ضعفا) अ. पुं.–'ज़ईफ़' का बहु., निर्बल और अशक्त लोग; दीन, दुखी, बेकस लोग।

ज़ुअमा (زعما) अ. पुं.–'ज़ईम' का बहु., लीडर लोग, नेतागण।

ज़ुअमाए मिल्लत (زعماۓ ملت) अ. पुं.–राष्ट्र के नेता, क़ौम के लीडर।

ज़ुआफ़ (ذعاف) अ. वि.–हालाहल, कालकूट, घातक विष; घातक, जान लेनेवाला।

ज़ुका (ذکا) अ. स्त्री.–सूर्य, रवि, सूरज; प्रातःकाल, सवेरा।

ज़ुगाल (زگال) फा. पुं.–बुझा हुआ अंगारा, कोयला।

ज़ुग़ाल (زغال) फा. पुं.–दे. 'ज़ुगाल'।

ज़ुग़तः (ضغطه) अ. पुं.–संकोच, तंगी, कठोरता, सख़्ती।

जुग़्रात (جغرات) फा. पुं.–दधि, दही।

जुग़्राफ़ियः (جغرافیه) अ. पुं.–भूगोल; भूगोलशास्त्र।

जुग़्राफ़ियःदाँ (جغرافیه داں) अ. फा. वि.–भूगोल जाननेवाला।

जुग़्राफ़ियःनवीस (جغرافیه نویس) अ. फा. वि.–भूगोल लिखनेवाला।

जुज़ (جز) अ. पुं.–खंड, भाग, टुकड़ा; ग्रंथ खंड, जिल्द; अध्याय, बाब; अतिरिक्त, अलावा; सिवाय; पुस्तक के सोलह पेज का फ़ार्म; जो पूरा न हो, कम, अधूरा, इस शब्द का शुद्ध रूप 'जुज़्व' है।

जुज़दान (جزدان) अ. फा. पुं.–बच्चों की किताबें रखने का बस्ता।

जुज़बंदी (جزبندی) अ. फा. स्त्री.–जिल्दसाज़ी में किताब के हर जुज़ की सिलाई; जिल्दबंदी।

जुज़रस (جزرس) अ. फा. वि.–मितव्ययी, कम खर्च; कृपण, कंजूस।

जुज़रसी (جزرسی) अ. फा. स्त्री.–खर्च कम करना, मितव्यय; कृपणता, कंजूसी।

ज़ुजाज (زجاج) अ. पुं.–काच, काँच, शीशा।

जज़ाम (جزام) अ. पुं.–कुष्ठ रोग, कोढ़।

जुज़ामी (جزامی) अ. वि.–कुष्ठी कोढ़ी।

जुज़्ई (جزئی) अ. वि.–दे. 'जुज़्वी'।

जुज़ईयात (جزئیات) अ. पुं.–किसी बात के तमाम पहलू, छोटी-छोटी बातें।

जुज़्व (جزو) अ. पुं.–दे. 'जुज़', शुद्ध रूप यही है।

LIBRARY
HARDWAR

जुज़्वी (جزوی) अ. वि.–कुल में से एक जुज़, थोड़ा, कम।

जुज़्वेला पतजज़्ज़ा (جزولایتجزی) अ. पुं.–वह सूक्ष्म यंत्र जिसके फिर टुकड़े न हो सकें, त्रसरेणु, अनुरेणु।

जुज़्वेला यन्फ़क(क्क) (جزولاینفک) अ. पुं.–ऐसा अंश जो अपने मूल से पृथक् न हो सके।

जुदा (جدا) फा. वि.–पृथक्, अलग; भिन्न, मख़्तलिफ़; विरहग्रस्त; अन्य, दूसरा।

जुदाई (جدائی) फा. स्त्री.–पृथक्ता, अलगाव; वियोग, फ़िराक़; वैमनस्य, रंजिश।

जुदागानः (جداگانہ) फा. वि.–अलग-अलग, पृथक-पृथक।

जुदै (جدی) अ. पुं.–उत्तरीय ध्रुवतारा, वह ध्रुवतारा जो उत्तरीय ध्रुव के पास है।

जुद्री (جدری) अ. स्त्री.–शीतला रोग, चेचक।

जुनू (جنوں) अ.पुं.–'जुनून' का लघु., दे. 'जुनून', यह रूप यौगिक शब्दों में हो जाता है।

जुनूंअंगेज़ (جنوں انگیز) अ. फा. वि.–ज़ुनून बढ़ानेवाला, उन्मादवर्द्धक।

जुनूंख़ेज़ (جنوں خیز) अ. फा. वि.–जुनून पैदा करनेवाला, उन्मादोत्पादक।

जुनूंजौलाँ (جنوں جولاں) अ. फा. वि.–जुनून बढ़ानेवाला, तीव्र उन्मादक।

जुनूद (جنود) अ. पुं.–'जुंद' का बहु., सेनाएँ, फ़ौजें।

जुनून (جنون) अ. पुं.–उन्माद, विक्षिप्तता, पागलपन।

जुनूने इश्क (جنون عشق) अ. पुं.–प्रेमोन्माद, मुहब्बत का पागलपन,–"सुन अय ज़ुनूने इश्क़ तुझे इसमें क्या मिला ? वरसों जो कोहोदश्त घुमाया किया मुझे।"

जुनैद (جنید) अ. पुं.–बग़दाद के एक बहुत बड़े ऋषि।

ज़ुन्नार (زنار) अ. पुं.–यज्ञोपवीत, जनेऊ।

ज़ुन्नारगुसिस्तः (زنارگسستہ) अ. फा. वि.–जिसने जनेऊ तोड़ डाला हो, जो हिंदू धर्मभ्रष्ट हो गया हो।

ज़ुन्नारदार (زناردار) अ. फा. वि.–जनेऊ धारण करनेवाला, हिंदू।

ज़ुन्नारपोश (زنارپوش) अ. फा. वि.–दे. 'ज़ुन्नारदार'।

ज़ुन्नारबंद (زناربند) अ. फा. वि.–दे. 'ज़ुन्नारदार'।

ज़ुन्नून (ذوالنون) अ. पुं.–हज़्रत यूनुस की उपाधि, आपको मछली निगल गयी थी।

जुफ़्त (جفت) फा. पुं.–जोड़ा, युग्म, युगल; वह संख्या जो दो से बँट जाय, समसंख्या; जूता, पादुका।

जुफ़्तक (جفتک) फा. पुं.–चकवा-चकवी, सुर्ख़ाब का जोड़ा।

जुफ़्तफ़रोश (جفت فروش) फा. वि.–जूते बेचनेवाला।

जुफ़्तसाज़ (جفت ساز) फा. वि.–जूता बनानेवाला, शू-मेकर।

जुफ़्ती (جفتی) फा. स्त्री.–पशुओं आदि का मैथुन।

ज़ुफ़्र (ظفر) अ. पुं.–नख, नाख़ून।

ज़ुबानः (زبانہ) फा. पुं.–आग की लपट, अग्नि-शिखा; तराज़ू की डंडी के बीच का डोरा, दे. 'ज़बानः', दोनों शुद्ध हैं।

ज़ुबान (زبان) फा. स्त्री.–दे. 'ज़बान', दोनों शुद्ध हैं।

ज़ुबाना (زبانا) अ. पुं.–सोलहवाँ नक्षत्र, विशाखा।

ज़ुबाब (زباب) अ. स्त्री.–मक्षिका, मक्खी।

जुबुन (جبن) अ. पुं.–फाड़े हुए दूध का खोवा या पनीर, दे. 'जुब्न नं० २'।

ज़ुबूल (ذبول) अ. पुं.–क्षीणता, दुर्बलता, लाग़री; मलिनता, खिन्नता, अफ़्सुर्दगी।

ज़ुब्दः (زبدہ) अ. पुं.–सार, तत्त्व, ख़ुलासा; नवनीत, मक्खन; शिरोमणि, सरताज।

ज़ुब्दतुलहुकमा (زبدۃالحکما) अ. पुं.–चिकित्सकों में शिरोमणि; वैज्ञानिकों में सर्वश्रेष्ठ।

जुब्न (جبن) अ. पुं.–भीरुता, कायरता, डरपोकपन; फटे हुए दूध का मावा, पनीर, दे. 'जुबुन'।

जुब्बः (جبہ) अ. पुं.–लंबा अँगरखा, चुग़ा।

जुब्बःपोश (جبہ پوش) अ. फा. वि.–चुग़ा पहननेवाला; चुगा पहने हुए।

ज़ुब्र (زبر) अ. पुं.–ग्यारहवाँ नक्षत्र, पूर्वा फाल्गुनी।

जुमल (جمل) अ. पुं.–अवजद के अक्षरों का हिसाब; अवजद के अक्षर।

जुमादल उख़्रा (جمادی الاخری) अ. पुं.–इस्लामी छठा महीना।

जुमादलऊला (جمادی الاولی) अ. पुं.–इस्लामी पाँचवाँ महीना।

जुमान (جمان) अ. पुं.–मोती, मुक्ता; मोती के आकार की चाँदी की घुंडियाँ।

जुमाम (جمام) अ. पुं.–वर्तन का पानी से लबालब भर जाना।

ज़ुमुअः (جمعہ) अ. पुं.–शुक्रवार, दे. 'जुम्अः' दोनों तरह शुद्ध है।

ज़ुमुख़्त (زمخت) फा. पुं.–बरवटा, कसीला, ऐसा स्वाद जैसा हड़ का होता है।

ज़ुमुर (ضمر) अ. पुं.–दुबलेपन की वजह से पेट का पीठ से चिपक जाना।

ज़ुमुर्रुद (زمرد) फा. पुं.–एक हरे रंग का रत्न, पन्ना।

जुमूद (جمود) अ. पुं.–जमना, जम जाना (पानी आदि का); खिन्नता, मलिनता, अफ़सुर्दगी; ठप हो जाना, गत्यावरोध, डैडलाक।

ज़ुमूर (ضمور) अ. पुं.–दुबलापन, क्षीणता, लाग़री।

जुम्अः (جمعہ) अ. पुं.–शुक्रवार, दे. 'जुमुअः', दोनों उच्चारण सही हैं।

जुम्जुमः (جمجمہ) अ. पुं.–कपाल, भगाल, खोपड़ी।

ज़ुम्रः (زمرہ) अ. पुं.–दल, यूथ, जत्था, पार्टी।

ज़ुम्र (ضمر) अ. पुं.–दे. 'जुमूर।

ज़ुम्रए अहबाब (زمرۂ احباب) अ. पुं.–मित्रमंडली, मित्रगण, दोस्तों की पार्टी।

जुम्लः (جملہ) अ. पुं.–समस्त, समग्र, सब, सर्व; वाक्य, शब्दसमूह, फ़िक्रः।

जुमलए इंशाइयः (جملۂ انشائیہ) अ. पुं.–दे. 'जु. इस्मियः'।

जुम्लए इस्तिफ़्हामियः (جملۂ استفہامیہ) अ. पुं.–ऐसा वाक्य जिसमें प्रश्न हो।

जुम्लए इस्मियः (جملۂ اسمیہ) अ. पुं.–ऐसा वाक्य जिसमें क्रिया न हो, संज्ञात्मक वाक्य।

जुम्लए ख़बरीयः (جملۂ خبریہ) अ. पुं.–दे. 'जु० इस्मियः।'

जुम्लए मो'तरिज़ः (جملۂ معترضہ) अ. पुं.–इबारत या तक़्रीर के बीच में ऐसा वाक्य, जो किसी दूसरी बात से सम्बन्धित हो और मूल विषय से उसका कोई सम्बन्ध न हो।

जुम्लगी (جملگی) अ. फा. वि.–सर्वत्व, समस्तत्व, पूर्णता, सारापन।

जुम्हूर (جمہور) अ. पुं.–सर्वसाधारण, जनसाधारण, जनता, अवाम।

जुम्हूरियत (جمہوریت) अ. स्त्री.–गणतंत्र, जनतंत्र, प्रजातंत्र।

जुम्हूरी (جمہوری) अ. वि.–सार्वजनिक, सार्वजनीन।

ज़ुरफ़ा (ظرفا) अ. पुं.–'ज़रीफ़' का बहु., हँसोड़ लोग।

जुम्हूरे अनाम (جمہور انام) अ. वि.–जन साधारण, अवामुन्नास।

ज़ुरात (ضراط) अ. पुं.–तीव्र, तेज़; वह अपान वायु जो शब्द के साथ निकले।

ज़ुरूफ़ (ظروف) अ. पुं.–ज़र्फ़ का बहु., बर्तन-भाँड़े।

ज़ुराफ़ (زراف) अ. पुं.–ऊँट के बराबर एक जंगली जानवर जिसकी पीठ चित्तीदार होती है, दे. 'ज़राफ़', दोनों शुद्ध हैं।

जुर्अः (جرعہ) अ. पुं.–एक घूंट, इतना पानी आदि जो एक बार में पिया जाता है।

जुर्अःकश (جرعہ کش) अ. फा. वि.–घूंट-घूंट करके पीनेवाला; मदिरा पीनेवाला, मद्यप।

जुर्अःकशी (جرعہ کشی) अ. फा. स्त्री.–घूंट-घूंट करके पीना; मदिरा पीना, शराबनोशी।

जुर्अःनोश (جرعہ نوش) अ. फा. वि.–दे. 'जुर्अ:कश'।

जुर्अएमय (جرعۂ مے) अ. फा. वि.–मदिरा का घूंट।

जुर्अत (جرأت) अ. स्त्री.–साहस, हिम्मत; उत्साह, उमंग, हौसला; धृष्टता, दुःसाहस, बेबाक़ी।

जुर्अतअफ़्ज़ा (جرأت افزا) अ. फा. वि.–साहसवर्द्धक, हिम्मत बढ़ानेवाला।

जुर्अतआज़मा (جرأت آزما) अ. फा. वि.–हिम्मत की परीक्षा करनेवाला, यह देखनेवाला कि अमुक काम हो सकेगा या नहीं।

जुर्अतआज़माई (جرت آزمائی) अ. फा. स्त्री.–हिम्मत की परीक्षा, ताक़त का इम्तिहान।

जुर्अतमंद (جرأت مند) अ. फा. वि.–साहसी, उत्साही, हिम्मती, आरभट।

जुर्अतमंदानः (جرأت مندانہ) अ. फा. अव्य.–साहसपूर्ण, हिम्मत से भरा हुआ।

जुर्अतमंदी (جرأت مندی) अ. फा. स्त्री.–उत्साहशीलता, साहसपरता, हौसलामंदी।

ज़ुर्त (زرت) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध अन्न, ज्वार, दे. 'ज़ुर्रत', दोनों शुद्ध है।

जुर्फ़ीन (زرفین) अ. पुं.–दे. 'ज़िर्फ़ीन' दोनों शुद्ध हैं।

जुर्म (جرم) अ. पुं.–अपराध, दोष, क़ुसूर; आरोप, लांछन, इत्तिहाम।

जुर्म ना कर्दः (جرم ناکردہ) अ. फ़ा. वि.–जिसने अपराध न किया हो, अकृतापराध।

जुर्मानः (جرمانہ) अ. फा. पुं.–वह सजा जो धन के रूप में दी जाय, अर्थदंड।

ज़ुर्रः (ذرہ) अ. स्त्री.–ज्वार एक अन्न।

जुर्रः (جرہ) फा. पुं.–नर बाज़, श्येन, बाज़ का नर जुर्रः होता है और मादः बाज़।

ज़ुर्रः (ضرہ) अ. स्त्री.–सौकन, सौत।

ज़ुर्रत (زرت) फा. स्त्री.–एक अन्न, ज्वार, दे. 'ज़ुर्त'।

ज़ुर्राफ़ः (زرافہ) अ. पुं.–दे. 'ज़ुराफ़'।

जुर्राब (جراب) अ. पुं.–मोज़ा।

ज़ुर्रीयत (ذریت) अ. स्त्री.–संतान, बाल-बच्चे; हाली-मवाली, पिछलग्गू।

ज़ुर्रूह (ذروح) अ. पुं.–भ्रमर के आकार का एक लाल रंग का विषैला कीड़ा जिसके परों पर काली बुंदकियाँ होती हैं। यह कीड़ा दवा में काम आता है और शरीर में छाला डालता है, इसे 'ज़रारीह' कहते हैं जो इसका बहुवचन है।

ज़ुर्वः (ذروه) अ. पुं.–शृंग, चोटी; ऊँचा स्थान; शिरोमणि, सर्वश्रेष्ठ।

जुर्ह (جرح) अ. पुं.–घाव, क्षत, ज़ख़्म।

ज़ुलम (ظلم) अ. पुं.–'ज़ुलमत' का बहु., अँधेरे।

ज़ुलल (ظلل) अ.पुं.–'ज़ुल्लः' का बहु., बहुत-से सायबान।

ज़ुलाल (زلال) अ. पुं.–स्वच्छ और शीतल पानी; निथरा हुआ पानी; एक-दो इंच लंबे कीड़े जिन्हें निचोड़ने से बहुत ही ठंडा पानी निकलता है।

ज़ुलुमात (ظلمات) अ. पुं.–'ज़ुलमत' का बहु., अँधेरे, अंधकार-समूह।

जुलूस (جلوس) अ. पुं.–बैठना; राजा आदि का गद्दी पर बैठना; समारोह के साथ गश्त, उत्सव यात्रा, शोभा-यात्रा, चल समारोह।

ज़ुलैख़ा (زلیخا) अ.स्त्री.–मिस्र के नरेश 'अज़ीज़' की स्त्री, जो हज़्रत यूसुफ़ पर मुग्ध हो गयी थी।

ज़ुल्क़र्नैन (ذوالقرنین) अ. पुं.–सम्राट् सिकंदर की उपाधि, जिसके दोनों कंधों पर बालों की लटें पड़ी रहती थीं।

ज़ुल्जनाह (ذوالجناح) अ. पुं.–हज़्रत इमाम हुसैन का घोड़ा, बहुत तेज़ चलने के कारण 'परोंवाला घोड़ा' कहलाता था।

ज़ुल्जलाल (ذوالجلال) अ. पुं.–तेज और प्रतापवाला, अर्थात् ईश्वर।

ज़ुल्फ़ (زلف) फा. स्त्री.–केशपाश, बालों की लट; कनपटी के पासवाले बाल, अलक; केश, बाल।

ज़ुल्फ़क़ार (ذوالفقار) अ. स्त्री.–हज़्रत अली की तलवार, जो बद्र के युद्ध में उन्हें रसूल ने प्रदान की थी।

ज़ुल्फ़बदोश (زلف بدوش) फा.वि.–कंधों पर बाल बिखेरे हुए।

ज़ुल्फ़ीन (زلفین) फा. स्त्री.–शृंखला, ज़ंजीर।

ज़ुल्फ़ुनून (ذوالفنون) अ. वि.–बहुत से गुणों का ज्ञाता।

ज़ुल्फ़े दराज़ (زلفِ دراز) अ. स्त्री.–लंबी ज़ुल्फ़, बालों की लंबी लट।

ज़ुल्फ़ेपरीशाँ (زلفِ پریشاں) फा. स्त्री.–बिखरी हुई ज़ुल्फ़, बिखरे हुए बाल।

ज़ुल्फ़ेपुरख़म (زلفِ پرخم) फा. स्त्री.–घुंघराले बाल।

ज़ुल्फ़ेबरहम (زلفِ برہم) फा. स्त्री.–बिखरे हुए बाल।

ज़ुल्फ़ेरसा (زلفِ رسا) फा. स्त्री.–लंबी ज़ुल्फ़ जो कमर से नीचे तक हो।

ज़ुलबहरैन (ذوالبحرین) अ. वि.–ऐसा शेर जो कई बह्रों में पढ़ा जा सके।

ज़ुल्म (ظلم) अ. पुं.–अत्याचार, कमज़ोर को सताना; अन्याय, बेइंसाफी करना; किसी का हक़ मारना; नदी में पानी की बाढ़; बलात्, ज़बरदस्ती।

ज़ुल्मत (ظلمت) अ. स्त्री.–अंधकार, तम, तिमिर, अँधेरा, तारीकी।

ज़ुल्मतआबाद (ظلمت آباد) अ. फा. पुं.–बहुत ही अँधेरी जगह; संसार, दुनिया।

ज़ुल्मतकदः (ظلمت کده) अ. फा. पुं.–जहाँ अँधेरा ही अँधेरा हो; संसार, दुनिया।

ज़ुल्मदोस्त (ظلم دوست) अ. फा. वि.–जो अत्याचार करना पसंद करता हो, अन्यायप्रिय।

ज़ुल्मपर्वर (ظلم پرور) अ. फा. वि.–अत्याचारी, अन्यायी, जिसके राज्य में अत्याचार का पालन-पोषण होता हो।

ज़ुल्मरसीदः (ظلم رسیده) अ. फा. वि.–जिस पर अत्याचार हुआ हो, नृशंसित, अत्याचार-पीड़ित।

ज़ुल्मशिआर (ظلم شعار) अ. वि.–जिसके स्वभाव में ही अत्याचार हो, अन्यायप्रकृति।

ज़ुल्मात (ظلمات) 'ज़ुलमत' का बहु., अँधेरे; वह घोर अंधकार जो सिकंदर को अमृतकुंड तक पहुँचने में पड़ा था।

ज़ुलमिनन (ذوالمنن) अ. वि. बहुत अधिक ने'मतें देनेवाला, ईश्वर।

ज़ुल्लः (ظله) अ. पुं.–धूप से बचानेवाली चीज़, सायबान, छज्जा।

जुल्लाब (جلاب) अ. पुं.–रेचक, विरेचक, दस्तावर दवा।

जुवार (جوار) अ. पुं.–पड़ोस, प्रतिवेश, हमसायगी; आसपास, चारों ओर।

जुशांदः (جوشانده) फा. पुं.–औटाई हुई दवा का पानी।

जुशा (جشا) अ. स्त्री.–डकार, धूम, उद्गार।

जुस्त (جست) फा. स्त्री.–दे. 'जुस्तजू'।

जुस्तजू (جستجو) फा. स्त्री.–तलाश, मार्गण, गवेषणा।

जुस्तोजू (जुस्तुजू) (جست وجو) फा. स्त्री.–दे. 'जुस्तजू'।

जुस्सः (جثه) अ. पुं.–देह, शरीर, जिस्म।

ज़ुहल (زحل) अ. पुं.–एक ग्रह शनि।

जुहला (جہلا) अ. पुं.–जाहिल का बहु., जाहिल लोग।

ज़ुहूकः (ضحوکه) अ. पुं.–हास्यास्पद, उज़्हूकः।

ज़ुहूक़ (زهوق) अ. पुं.–विनाश, नाश, नापैदी; निशानः चुकना।

ज़ुह्कः (ضحکه) जिस पर सब लोग हँसें, हास्यास्पद, हास्य।

ज़ुहूर (ظهور) अ. पुं.–प्रकट, ज़ाहिर होना; उत्पत्ति, पैदाइश; आविर्भाव, अवतार।

ज़ुह्द (زهد) अ. पुं.–इंद्रिय-निग्रह, संयम, मनोगुप्ति, मुनिवृत्ति, पारसाई, परहेज़गारी, इत्तिक़ा।

जुह्द (جہد) अ. पुं.–शक्ति, बल, ताक़त; प्रयत्न, पराक्रम, कोशिश।

ज़ुह्दशिआर (زہدشعار) अ. वि.–संयमी, यतेंद्रिय, जितेंद्रिय, संयतेंद्रिय।

ज़ुह्रः (زہرہ) अ. स्त्री.–एक ग्रह, शुक्र।

ज़ुह्रःजबीं (زہرہ جبیں) अ. फा. वि.–उज्ज्वल ललाट, शुभ्र भाल, सुन्दरी, चंद्रमुखी, माहरू।

ज़ुह्रःनवा (زہرہ نوا) अ. फा. वि.–बहुत सुन्दर और मधुर स्वरवाली स्त्री।

ज़ुह्रःरुख़ (زہرہ رخ) अ. फा. वि.–दे. 'ज़ुह्रःजबीं'।

ज़ुह्रःशमाइल (زہرہ شمائل) अ. वि.–दे. 'ज़ुह्रःजबीं'।

ज़ुह्र (ظہر) अ. स्त्री.–दोपहर की नमाज़ का वक़्त।

ज़ुह्हाद (زہاد) अ. पुं.–'ज़ाहिद'का बहु. ज़ाहिद लोग।

जुह्हाल (جہال) अ. पुं.–'जाहिल' का बहु., जाहिल लोग।

जू

जू (جو) फा. स्त्री.–नदी, छोटी नदी; नह्र, कुल्या; स्रोत, सोता, चश्मा।

ज़ू (ذو) अ. उप.–वाला के अर्थ में आता है, जैसे—'ज़ू-माना' कई अर्थवाला।

जूअ (جوع) अ. स्त्री.–भूख, क्षुधा, बुभुक्षा।

जूउलअर्ज़ (جوع الارض) अ. स्त्री.–ज़मीन की भूख, राज बढ़ाने का हौका।

जूउलकल्ब (جوع الکلب) अ. स्त्री.–एक रोग जिससे पेट भरा होने पर भी सारे अंग भूखे होते हैं।

जूउलबक़र (جوع البقر) अ. स्त्री.–एक रोग जिसमें कितना भी खाया जाय भूख नहीं जाती।

जूएख़ू (جوے خوں) फा. स्त्री.–रक़्त की नदी।

जूएशीर (جوے شیر) फा. स्त्री.–दूध की नहर, जो फ़र्हाद शीरीं के लिए निकालना चाहता था।

जूक़ (جوق) तु. स्त्री.–समूह, झुंड, गिरोह।

जूक़ दर जूक़ (جوق در جوق) तु. फा. वि.–झुंड के झुंड, गिरोह के गिरोह, बहुत अधिक भीड़।

ज़ूजसदैन (ذوجسدین) अ. वि.–दो शरीरोंवाला, मिथुन राशिवाला, बुध ग्रह, जिसका घर कन्याराशि है।

ज़ूज़ुनाबः (ذوذنابہ) अ. पुं.–वह पुच्छल तारा जिसकी पूँछ पूरब की ओर हो।

ज़ूज़ुवाबः (ذوذوابہ) अ. पुं.–वह पुच्छल तारा जिसकी पूँछ पच्छिम की ओर हो।

जूद (جود) अ. पुं.–दानशीलता, वदान्यता, सख़ावत, बख़शिश।

ज़ूद (زود) अ. वि.–शीघ्र, त्वरित, तुरंत, जल्दी।

ज़ूदअसर (زود اثر) फा. अ. वि.–तुरंत असर करनेवाली ओषधि, शीघ्रकारी।

ज़ूदआश्ना (زود آشنا) फा. वि.–बहुत जल्द घुल-मिल जानेवाला, जल्दी दोस्त बन जानेवाला, आशुमित्र।

ज़ूदख़ेज़ (زود خیز) फा. वि.–फ़ुर्तीला, चुस्तोचालाक।

ज़ूदगो (زود گو) फा. वि.–जल्द शे'र कहनेवाला, शीघ्रकवि, उपस्थित कवि, उपस्थित वक्ता, आशु कवि।

ज़ूदगोई (زود گوئی) फा. स्त्री.–तुरंत कविता करने की क्रिया, आशुकविता करना।

ज़ूदतर (زودتر) फा. वि.–शीघ्रतर, बहुत जल्द।

ज़ूदनवीस (زود نویس) फा. वि.–जल्द लिखनेवाला, त्वरालेखक।

ज़ूदनवीसी (زود نویسی) फा. स्त्री.–जल्द लिखना, त्वरालेखन।

ज़ूदपशेमाँ (زود پشیماں) फा. वि.–अपनी भूल पर बहुत जल्द पछतानेवाला।

ज़ूदफ़ह्म (زود فہم) फा. अ. वि.–जल्द बात समझ जानेवाला, शीघ्रबुद्धि।

ज़ूदबूद (زود بود) फा. वि.–अपार, असीम, बेह्द; अनुचित, बेजा।

ज़ूदरंज (زود رنج) फा. वि.–किसी बात पर जल्द बुरा मान जानेवाला, आशुरोष।

ज़ूदरंजी (زود رنجی) फा. स्त्री.–जल्द बुरा मान जानेवाला।

ज़ूदरफ़्तार (زود رفتار) फा. वि.–तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगामी, द्रुतगामी।

ज़ूदरफ़्तारी (زود رفتاری) फा. स्त्री.–तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

ज़ूदरस (زود رس) फा. वि.–जो किसी बात की तह तक तुरंत ही पहुँच जाय, कुशाग्रबुद्धि।

ज़ूदरसी (زود رسی) फा. स्त्री.–किसी बात की तह तक शीघ्र पहुँच जाना।

ज़ूदसेर (زود سیر) फा. वि.–किसी बात से शीघ्र ही उकता जानेवाला; जिसका पेट जल्द भर जाय।

ज़ूदसेरी (زود سیری) फा. स्त्री.–किसी बात से जल्द उकता जाना; जल्द पेट भर जाना।

ज़ूदहज़्म (زود ہضم) फा. अ. वि.–शीघ्र पच जानेवाला खाद्य पदार्थ, लघु पाक।

ज़ूदहज़्मी (زود ہضمی) फा. अ. स्त्री.–खाद्य पदार्थ का जल्द पच जाना।

ज़ूदी (جودی) अ. पुं.–वह पहाड़ जिस पर हज़्रत नूह की किश्ती जाकर ठहरी थी।

ज़ूदी (زودی) फा. स्त्री.–शीघ्रता, जल्दी।

ज़ूनाब (ذوناب) अ. पुं.–फाड़ खानेवाले दरिंदे, श्वापद, व्याघ्र, हिंसक प्राणी।

ज़ूफ़ा (زوفا) फा. पुं.–एक घास जो दवा में काम आती है।

ज़ूफ़ुनून (ذوفنون) अ. वि.–बहुत-से हुनर जाननवाला, बहुगुना, वेत्ता।

ज़ूबह्रैन (ذوبحرین) अ. वि.–वह शे'र जो दो बह्रों में पढ़ा जा सके।

ज़ूमा'ना (ذومعنیٰ) अ. वि.–वह शब्द, वाक्य या शे'र जिसके दो अर्थ हों।

ज़ूमानी (ذومعنی) अ. वि.–दे. 'ज़ूमा'ना' दोनों शुद्ध हैं।

ज़ूर (زور) फा. पुं.–छल, कपट, फ़िरेब ।

ज़ूरोमक्र (زورومکر) फा. अ. पुं.–छल और कपट, वंचकता और ठगी ।

ज़ूलाँ (جولاں) फा. स्त्री.–जूलान का लघुं, दे. 'जूलन'।

ज़ूलान (جولان) फा. स्त्री.–वह ज़ंजीर जो बंदियों को पहनायी जाती है, बेड़ी।

ज़ूलुबाब (ذولباب) अ. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद।

ज़े

ज़े'ब (ذئب) अ. पुं.–भेड़िया, वृक।

जेब (جیب) अ. स्त्री.–वह थैली जो कुर्ता या अचकन आदि में रुपया आदि रखने की होती है, पाकेट, खलीता।

जेबख़र्च (جیب خرچ) अ. फ़ा. पुं.–वह ख़र्च जो खाने-पीने के अतिरिक्त दूसरे निजी कामों के लिए हो।

जेबतराश (جیب تراش) अ. फा. वि.–जेब काटनेवाला, गिरहकट, ग्रंथि-मोचक, ग्रंथिच्छेदक, पाकेटमार।

जेबतराशी (جیب تراشی) अ. फा. स्त्री.–जेब काटना, गिरिहकटी करना, पाकेटमारी।

ज़ेबा (زیبا) फा. वि.–सुन्दर, मनोरम, मनोज्ञ, दिलकश; शोभनीय, श्रीमान्, बारौनक़; ललित, सूक्ष्म, लतीफ़।

ज़ेबाअंदाम (زیبااندام) फा. वि.–सुडौल और सुन्दर शरीरवाला (वाली) शोभनांग, शोभनांगना।

ज़ेबाइश (زیبائش) फा. स्त्री.–सज्जा, शृंगार, सजावट।

ज़ेबाई (زیبائی) फा. स्त्री.–दे. 'ज़ेबाइश'।

ज़ेबाक़ामत (زیباقامت) फा. अ. वि.–दे. 'ज़ेबाक़ामत'।

ज़ेबाक़ामती (زیباقامتی) फा. अ. स्त्री.–शरीर का साँचे में ढला होना, अंगसौष्ठव।

ज़ेबातल्अत (ذیباطلعت) फा.अ. वि.–जिसकी मुखाकृति अत्यन्त सुन्दर हो, ललित, कांत।

ज़ेबारू (زیبارو) फा. वि.–जिसका चेह्रा-मोह्रा बहुत ही सुन्दर और प्यारा हो।

ज़ेबाशमाइल (زیباشمائل) फा. अ. वि.–जिसका स्वभाव बहुत ही सुन्दर और सुशील हो।

ज़ेबिंदः (زیبندہ) फा. वि.–अच्छा लगनेवाला, छजनेवाला, शोभा देनेवाला।

ज़ेबीदः (زیبیدہ) फा. वि.–सुशोभित, ललित, सुन्दर।

ज़ेबीदनी (زیبیدنی) फा.वि.–छजने योग्य, शोभा देने योग्य।

ज़ेबोज़ीनत (زیب وزینت) फा. अ. स्त्री.–बनाव-सिंगार, वेशभूषा, ठाट-बाट, शृंगार और सजावट।

ज़ेबोज़ैन (زیب وزین) फा. अ. स्त्री.–दे. 'ज़ेबोज़ीनत'।

ज़ेरंदाज़ (زیرانداز) फा. पुं.–किसी चीज़ की हिफ़ाज़त के लिए उसके नीचे बिछाया जानेवाला कपड़ा; क़ालीन, फ़र्श।

ज़ेर (زیر) फा. वि.–उर्दू में 'इ' की मात्रा (ِ); निम्न, नीचे; निर्बल, नाताक़त; परास्त, पराजित, मग़्लूब; निःसहाय, निराश्रय, बेकस, अधीन, तावे'।

ज़ेर अंदाज़ (زیرانداز) फा. पुं.–दे. 'ज़ेरंदाज', शुद्ध उच्चारण वही है।

ज़ेरअफ़गन (زیرافگن) फा. पुं.–दे. 'ज़ेरफ़गन', अधिक शुद्ध उच्चारण वही है।

ज़ेरचाक़ (زیرچاق) फा. वि.–अधीन, तावे'दार; जिसे गुदा मैथुन कराने का व्यसन हो, कोनी।

ज़ेरजामः (زیرجامہ) फा. पुं.–कमर से नीचे पहनने का कपड़ा, अधोवस्त्र; वह कपड़ा जो ज़ीन के नीचे घोड़े की पीठ पर डाला जाता है।

ज़ेरदस्त (زیردست) फा. वि.–अधीन, वशीभूत, तावे'; दीन, दुःखी, असहाय।

ज़ेरदस्ती (زیردستی) फा. स्त्री.–अधीनता, मातहती; दीनता, निःसहायता।

ज़ेरफ़गन (زیرافگن) फा. पुं.–दरी, तोशक; भैरव राग।

ज़ेरबंद (زیربند) फा. पुं.–घोड़े के पेट पर कसा जानेवाला तस्मा।

ज़ेरबार (زیربار) फा. वि.–जो बोझ के नीचे दबा हो; ऋणी, क़र्ज़दार; आभारी, एहसानमंद।

ज़ेरबारी (زیرباری) फा. स्त्री.–क़र्ज़ का बोझ, ऋणभार; एहसान का बोझ, कृतज्ञता।

ज़ेरा (زیرا) फा. अव्य.–क्योंकि, किसलिए; इसलिए।

ज़ेराब (زیراب) फा. स्त्री.–ज़मींदोज़ नाली, ज़मीन के अंदर के नल।

ज़ेरीं (زیریں) फा. वि.–निम्नगत, नीचेवाला।

ज़ेरेअसर (زیراثر) फा. अ. वि.–जो किसी के प्रभाव में हो; जो किसी के अधीन हो।

ज़ेरेआब (زیرآب) फा. वि.–वह ज़मीन जो पानी में डूब गयी हो; पानी के भीतर।

ज़ेरेआस्माँ (زیرآسماں) फा. वि.–आकाश के नीचे, अर्थात् सारे संसार में।

ज़ेरेइस्तेमाल (زیراستعمال) फा. अ. वि.–प्रयोग आ रही हुई वस्तु; सेवन की जानेवाली ओषधि।

ज़ेरेक़दम (زیرقدم) फा. अ. वि.–पाँव के तले; सुगम, सहल।

ज़ेरेख़ाक (زیرخاک) फा. वि.–मिट्टी के भीतर अर्थात् क़ब्र में।

ज़ेरेग़ौर (زیرغور) फा. अ. वि.–जिस पर ग़ौर हो रहा हो, विचाराधीन।

ज़ेरेतज्वीज़ (زیرتجویز) फा. अ. वि.–जिस पर निर्णय के लिए विचार किया जा रहा हो, निर्णयाधीन।

ज़ेरेतन्क़ीद (زیرتنقید) फा. अ. वि.–जिस पर आलोचना लिखी जा रही हो।

ज़ेरेतस्नीफ़ (زیرتصنیف) फा. अ. वि.–जिसकी रचना की जा रही हो।

ज़ेरेता'मीर (زیرتعمیر) फा. अ. वि.–जो बनाया ज़ा रहा हो, जिसका निर्माण हो रहा हो।

ज़ेरेतालीफ़ (زیرتالیف) फा. अ. वि.–जिसका संपादन हो रहा हो, जो लिखा जा रहा हो।

ज़ेरेनगीं (زیرنگیں) फा. वि.–शासनाधीन, मातहत देश या प्रदेश।

ज़ेरेनाफ़ (زیرناف) फा. पुं.–उपस्थ, कटि देश, पेड़ू।

ज़ेरेमश्क़ (زیرمشق) फा. अ. वि.–जिस पर किसी काम की मश्क़ की जाय अर्थात् हाथ साफ़ किया जाय; ऐसा व्यक्ति जो किसी विवशता के कारण किसी का हर एक काम करने को वाध्य हो; वह लड़का जिसका किसी पुरुष के साथ अप्राकृतिक सम्वन्ध हो।

ज़ेरेराँ (زیرراں) फा. वि.–रान के नीचे; क़ावू में; सवारी में।

ज़ेरेलब (زیرلب) फा. वि.–ओठों में, वह वात जो ओठों-ओठों में हो।

ज़ेरेसायः (زیرسایہ) फा. वि.–किसी का आश्रित, किसी की छत्रछाया में।

ज़ेरेहुकूमत (زیرحکومت) फा. अ. वि.–दे. 'ज़ेरेनगीं'।

ज़ेरोज़वर (زیروزبر) फा. वि.–तले-ऊपर, उथल-पुथल, अस्त-व्यस्त।

ज़ेरोबाला (زیروبالا) फा. वि.–दे. 'ज़ेरोज़बर'।

जेवः (جیوہ) फा. पुं.–पारा, सीमाव।

ज़ेवर (زیور) फा. पुं.–आभूषण, आभरण, भूषण, अलंकार, गहना।

ज़ेवरात (زیورات) फा. पुं.–'ज़ेवर' का बहु., बहुत-से आभूषण, गहने।

ज़ेह्न (ذہن) अ. पुं.–प्रतिभा, तब्बाई; बुद्धि, समझ; स्मरण शक्ति, याददाश्त।

ज़ेह्नीयत (ذہنیت) अ. स्त्री.–धारणा, विचार; प्रकृति, स्वभाव।

ज़ेह्नेरसा (ذہن رسا) अ. फा. पुं.–वात की तह को पहुँचनेवाला ज़हन।

ज़ेहग़ीर (زہگیر) फा. पुं.–वह अँगूठी जो तीर चलानेवाले उँगली की रक्षा के लिए पहनते हैं।

जै

ज़ैअः (ضیعہ) अ. स्त्री.–नष्ट होना; व्यापार; उद्योग; खेती की भूमि।

ज़ैअ (ضیع) अ. पुं.–नष्ट होना; मरना।

ज़ैग़म (ضیغم) अ. पुं.–व्याघ्र, सिंह, शेर।

ज़ैग़मशिकार (ضیغم شکار) अ. फा. वि.–सिंह का शिकार करनेवाला; बहुत बहादुर।

ज़ैत (زیت) अ. पुं.–दे. 'ज़ैतून'।

ज़ैतून (زیتون) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध बीज जिसका तेल निकलता है और दवा में काम आता है; उन बीजों का तेल।

ज़ैद (زید) अ. पुं.–अमुक व्यक्ति के लिए व्यवंहृत शब्द।

ज़ैदी (زیدی) अ. वि.–शीओं का एक वंश।

ज़ैन (زین) अ. स्त्री.–सज्जा, शृंगार, सजावट।

ज़ैनब (زینب) अ. स्त्री.–हज्रत इमाम हुसैन की वहन जिन्होंने उनकी शहादत के पश्चात् वड़ी वीरता से 'यज़ीद' के शासन की बुराइयों का पर्दाफ़ाश किया था।

ज़ैफ़ (ضیف) अ. पुं.–आगंतुक, अतिथि, मेहमान।

ज़ैफ़ (زیف) अ. पुं.–रुपया या अशरफ़ी का खोटापन।

जैब (جیب) कुर्ते या अचकन आदि का गला, गिरीबान।

ज़ैयान (ظیان) अ. पुं.–जंगली चमेली; शहद, मधु।

जैयिद (جید) अ. वि.–धुरंधर, प्रचंड, वहुत बड़ा (विद्वान्), खरा, अच्छा, जो खोटा न हो।

ज़ैल (ذیل) अ. पुं.–दामन, कुर्ते आदि का नीचे लटकनेवाला भाग; निम्न, नीचे।

ज़ैलदार (ذیلدار) अ. फा. पुं.–एक निम्न कोटि का राजकर्मचारी।

ज़ैली (ذیلی) अ. वि.–तुफ़ैली, जो किसी के साथ हो।

जैश (جیش) अ. पुं.–सेना, फ़ौज; हाँडी का उबाल; हृदय का वेग।

जैशे मलाइकः (جیشِ ملائکہ) अ. पुं.–फ़िरिश्तों की सेना, देवताओं की फ़ौज।

जैहून (جیحون) अ. पुं.–मध्य एशिया की एक नदी जो 'बलख' के किनारे बहती है।

जो

जोइंदः (جوئندہ) फा. वि.–ढूँढ़नेवाला, तलाश करनेवाला, खोजी, जिज्ञासु।

जोईदः (جوئیدہ) फा. वि.–ढूँढ़ा हुआ, खोज़ा हुआ।

जोईदनी (جوئیدنی) फा. वि.–ढूँढ़ने योग्य, खोजने लाइक़।

जोग़न (جوغن) फा. स्त्री.–ओखली, उलूखल।

ज़ो'फ़ (ضعف) अ. पुं.–निर्बलता, कमज़ोरी; बीमारी की कमज़ोरी; दीनता, बेकसी।

ज़ो'फ़े आ'साब (ضعفِ اعصاب) अ. पुं.–शरीर के पट्ठों की कमज़ोरी।

ज़ो'फ़े इश्तिहा (ضعفِ اشتہا) अ. पुं.–भूख की कमी, मंदाग्नि।

ज़ो'फ़े एतिक़ाद (ضعفِ اعتقاد) अ. पुं.–आस्था या एतिक़ाद की कमी, निष्ठामांद्य।

ज़ो'फ़े क़ल्ब (ضعفِ قلب) अ. पुं.–दिल की कमज़ोरी, हृदय-दौर्बल्य।

ज़ो'फ़े जिगर (ضعفِ جگر) अ. फा. पुं.–एक रोग जिसमें यकृत् अपना कर्तव्य पूरे तौर पर पूरा नहीं करता।

ज़ो'फ़े दिमाग़ (ضعفِ دماغ) अ. पुं.–स्मरण-शक्ति की कमी; समझ-बूझ की कमी।

ज़ो'फ़े दिल (ضعفِ دل) अ. फा. पुं.–दे. 'ज़ो फ़े क़ल्ब'।

ज़ो'फ़े नज़र (ضعفِ نظر) अ. पुं.–दृष्टि की कमज़ोरी, कम दिखाई पड़ना, नेत्र-दुर्बलता।

ज़ो'फ़े बसर (ضعفِ بصر) अ. पुं.–दे. जो'फ़े नज़र।

ज़ो'फ़े बसारत (ظعفِ بصارت) अ. पुं.–दे. 'ज़ोफ़े नज़र।'

ज़ो'फ़े बाह (ضعفِ باہ) अ. फा. पुं.–काम शक्ति में कमी, काम-दौर्बल्य।

ज़ो'फ़े मसानः (ضعفِ مثانہ) अ. पुं.–मूत्राशय की नसों की शिथिलता, जिससे पेशाब जल्दी-जल्दी होता है।

ज़ो'फ़े मे'दः (ضعفِ معدہ) अ. पुं.–पाचन-शक्ति की कमी, मंदाग्नि, अग्निमांद्य।

ज़ो'फ़े हाज़िमः (ضعفِ ہاضمہ) अ. पुं.–अग्निमांद्य, पाचन-शक्ति में कमी।

ज़ो'फ़े हाफ़िज़ः (ضعفِ حافظہ) अ. पुं.–स्मरण-शक्ति की कमी।

ज़ो'म (زعم) अ. पुं.–धारणा, गुमान, ख़याल; अहंकार, अभिमान, घमंड।

जो'मे बातिल (زعمِ باطل) अ. पुं.–ग़लत गुमान, कुधारणा; झूठा घमंड।

जोयां (جویاں) फा. वि.–ढूँढ़ता हुआ, तलाश करता हुआ।

जोया (جویا) फा. वि.–ढूँढ़नेवाला, खोजी।

जोयानीदः (جویانیدہ) फा. वि.–ढुँढ़वाया हुआ।

ज़ोर (زور) फा. पुं.–बल, शक्ति, ताक़त; वश, वस, क़ाबू; प्रयत्न, कोशिश; अनीति, अत्याचार, ज़बर्दस्ती; आश्रय, सहारा; प्रबलता, प्रचंडता, तेज़ी; धाक, रोब।

ज़ोरआज़्मा (زور آزما) फा. वि.–ज़ोर दिखानेवाला, मुक़ाबला करनेवाला; युद्ध करनेवाला, लड़नेवाला।

ज़ोरआज़्माई (زور آزمائی) फा. स्त्री.–मुक़ाबला करना; लड़ना।

ज़ोरआवर (زور آور) फा. वि.–शक्तिशाली, बलवान्, ताक़तवर।

ज़ोरआवरी (زور آوری) फा. स्त्री.–बलवत्ता, ताक़तवरी।

ज़ोरदार (زوردار) फा. वि.–शक्तिशाली, ताक़तवर; प्रचंड, तेज़; जोशीला, आवेगपूर्ण; महत्त्वपूर्ण।

ज़ोरमंद (زورمند) फा. वि.–शक्तिशाली, ज़ोरावर।

ज़ोरमंदी (زورمندی) फा. स्त्री.–शक्तिशालिता, ताक़तवरी।

ज़ोरशिकन (زورشکن) फा. वि.–ज़ोर तोड़नेवाला, दमन करनेवाला।

ज़ोरशिकनी (زورشکنی) फा. स्त्री.–ज़ोर तोड़ना, दमन करना।

ज़ोरेबाज़ू (زورِ بازو) फा. पुं.–बाहुबल, अपना परिश्रम, स्वयं अपना प्रयास।

ज़ोरोशोर (زور و شور) फा. पुं.–कोलाहल, शोरग़ुल; धूम-धाम; तीव्रता, तेज़ी; उत्साह, हौसला।

जोलः (جولہ) फा. पुं.–कपड़ा बिननेवाला; मकड़ी, लूता।

जोल (جول) फा. पुं.–वन, जंगल; चटियल मैदान, बियाबान।

ज़ोलीदः (ژولیدہ) फा. वि.–उलझा हुआ, गुंजलक; अस्त-व्यस्त, तितर-बितर।

ज़ोलीदःबयाँ (ژولیدہ بیاں) फा. वि.–उलझी-उलझी बातें करनेवाला, अनर्गल भाषी, बेतुकी बातें करनेवाला।

ज़ोलीदःबयानी (ژولیدہ بیانی) फा. अ. स्त्री.–उलझी-उलझी बातें करना, व्यर्थ की बातें करना, बेतुकी बातें।

ज़ोलीदःमू (ژولیدہ مو) फा. वि.–उलझे हुए बालोंवाला, व्यस्तकेश।

ज़ोलीदः मूई (ژولیدہمُوئی) फा. स्त्री.–बाल उलझे होना।

ज़ोलीदःहाल (ژولیدہحال) फा. अ. वि.–दुर्दशाग्रस्त, फटे हालों।

ज़ोलीदःहाली (ژولیدہحالی) फा. अ. स्त्री.–दुर्दशा, फटे-हालों होना।

जोश (جوش) फा. पुं.–आवेग, ज़ोर; उफान, उबाल; उमंग, उत्साह; उत्तेजना, इश्तिआल; तीव्रता, तेज़ी; क्रोध, ग़ुस्सा।

जोशज़न (جوشزن) फा. वि.–जोश मारनेवाला, उफ़नता हुआ, उबलता हुआ।

जोशज़नी (جوشزنی) फा. स्त्री.–जोश मारना, उबाल आना।

जोशन (جوشن) फा. पुं.–कवच, ज़िरिह; भुजबंद, केयूर, अंगद, बाज़ूबंद।

जोशनबंद (جوشن‌بند) फा. वि.–कवचधारी, जिरिहपोश।

जोशाँ (جوشاں) फा. वि.–जोश मारता हुआ, उबलता हुआ।

जोशांदः (جوشاندہ) फा. पुं.–क्वाथ, काढ़ा, औटी हुई दवाओं का पानी।

जोशानीदः (جوشانیدہ) फा. वि.–औटाया हुआ, उबाला हुआ।

जोशिश (جوشش) फा. स्त्री.–उबाल, उफान; तीव्रता, ज़ोर।

जोशिशेदहन (جوششدہن) फा. स्त्री.–मुँह आ जाने का रोग, मुहाँ।

जोशीदः (جوشیدہ) फा. वि.–औटा हुआ, जोश खोया हुआ।

जोशीदनी (جوشیدنی) फा. वि.–औटने के योग्य, उबालने के लाइक़।

जोशेअश्क (جوشاشک) फा. पुं.–आँसुओं का ज़ोर, रोने का वेग।

जोशेइश्क़ (جوشعشق) फा. अ. पुं.–प्रेमावेग, मुहब्बत का जोश।

जोशेखूँ (جوشخوں) फा. पुं.–खून का जोश, खानदान की मुहब्बत; ख़ून का विगाड़, रक्तदोष।

जोशेग़ज़ब (جوشغضب) फा. अ. पुं.–ग़ुस्से का जोश, क्रोधावेग।

जोशेग़ैज़ (جوشغیظ) फा. अ. पुं.–दे. 'जोशेग़ज़ब'।

जोशेजुनूँ (جوشجنوں) फा. अ. पुं.–उन्माद और पागलपन का जोश।

जोशोख़रोश (جوشوخروش) फा. पुं.–जोर-शोर, धूम-धाम; उत्साह, उमंग; आवेग, जोश।

ज़ोहीदः (ژوہیدہ) फा. वि.–वर्षा के वेग से टपकी हुई छत आदि।

जौ

जौ (جو) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध अन्न, यव।

ज़ौ (ضو) अ. स्त्री.–प्रकाश, आभा, रौशनी; चमक-दमक; शोभा, छटा।

जौआन (جوعان) अ. वि.–क्षुधातुर, बहुत भूखा, अशनापित।

ज़ौक़ (ذوق) अ. पुं.–स्वाद, मज़ा; रसानुभव, लुत्फ़ लेना; आनन्द, हज़; रसिकता, मज़ाक; रुचि, शौक़।

ज़ौक़आफ़्रीं (ذوق‌آفریں) अ. फा. वि.–ज़ौक़ पैदा करनेवाला।

ज़ौक़ेशे'र (ذوق‌شعر) अ. पुं.–काव्य रसिकता, सहृदयता, कविता करने या समझने का शौक़।

ज़ौक़ेसलीम (ذوق‌سلیم) अ. पुं.–शुद्ध रसिकता, काव्य-मर्मज्ञता की शुद्धता।

ज़ौक़ेसुख़न (ذوق‌سخن) अ. फा. पुं.–दे. 'ज़ौक़ेशे'र'।

जौकोब (جوکوب) फा. वि.–दरदरा कुटा हुआ, मोटा कुटा हुआ, जिसमें दरदरापन हो।

ज़ौक़ोशौक़ (ذوق‌وشوق) अ. पुं.–पूरी रुचि और रसिकता।

ज़ौजः (زوجہ) अ. स्त्री,–पत्नी, भार्या, अर्धांगिनी, गृहिणी, जोरू, जाया।

ज़ौज (زوج) अ. पुं.–पति, स्वामी, ख़ाविंद; वह संख्या जो दो से बँट जाय, तम; युगल, युग्म, जोड़ा।

जौज़ (جوز) अ. पुं.–अखरोट, अक्षोट।

ज़ौजएसानी (زوجۂثانی) अ. स्त्री.–दूसरी ब्याहता पत्नी, दूसरी स्त्री, नयी स्त्री।

जौज़न (جوزن) फा. पुं.–अभिचारक, जादूगर।

जौज़बोया (جوزبویا) अ. फा. पुं.–जायफल, जातीकोश, जातीफल।

जौज़मासिल (جوزماثل) अ. पुं.–धतूरा, धत्तूर।

जौज़र (جوزر) अ. पुं.–नील गाय का बछड़ा।

जौज़ा (جوزا) अ. पुं.–मिथुन राशि, तीसरा बुर्ज।

ज़ौजीयत (زوجیت) अ. स्त्री.–शौहरपन, पतित्व; जोरूपन, स्त्रीत्व।

ज़ौजैन (زوجین) अ. पुं.–पति और पत्नी दोनों, दम्पती, जायापती, मियाँ-बीबी।

जौद (جود) अ. पुं.–अच्छा, उम्दा; अच्छी वस्तुएँ; ज़ोर की वर्षा; दानशीलता।

जौदत (جودت) अ. स्त्री.–पुनीतता, नेकी; अच्छाई, उम्दगी; मनोविनोद।

जौदतेतब्अ (جودت‌طبع) अ. स्त्री.–स्वभाव का मनोविनोद।

ज़ौपाश (ضوپاش) अ. फा. वि.–रौशनी फैलानेवाला. अर्थात् ज्योतिर्मय, द्युतिमान।

ज़ौपाशी (ضوپاشی) अ. फा. स्त्री.–रौशनी फैलाना, जगमगा देना।

जौफ़ (جوف) अ. पुं.–भीतर का ख़ाली भाग; पेट, उदर।

जौफ़रोश (جوفروش) फा. वि.–जौ बेचनेवाला।

ज़ौफ़िगन (ضوفگن) अ. फा. वि.–दे. 'जौपाश'।

ज़ौफ़िशाँ (ضوفشاں) अ. फा. वि.–दे. 'जौफिगन'।

ज़ौबअः (زوبعہ) अ. पुं.–बगूला, बवंडर, वातावर्त, बातचक्र।

जौबजौ (جوبہ جو) फा. वि.–संपूर्ण, समग्र, पूरा।

ज़ौबान (ذوبان) अ. पुं.–पिघलना, द्रवण।

ज़ौबार (ضوبار) अ. फा. वि.–दे. 'जौपाश'।

जौर (جور) अ. पुं.–अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म।

ज़ौरक़ (زورق) अ. पुं.–छोटी नाव, नौका, कश्ती।

जौरब (جورب) अ. पुं.–जुर्राब, मोज़ा।

जौरेबेजा (جوربےجا) अ. फा. पुं.–अकारण और अनुचित अत्याचार।

जौरेबेहद (جوربےحد) अ. फा. पुं.–बहुत अधिक अत्याचार।

जौलक़ी (جولقی) अ. स्त्री.–साधुओं की कमली।

जौलाँ (جولاں) अ. पुं.–घोड़े को कावा देना, घोड़े को फिराना; दौड़ना, फिरना।

जौलाँगाह (جولانگاہ) अ. फा. स्त्री.–घोड़े के दौड़ाने का मैदान; दौड़ने का मैदान।

जौलानी (جولانی) अ. स्त्री.–घोड़ा, अश्व; शराब का पियाला; तेज़ी, फ़ुर्ती; मनोविनोद।

जौश (جوش) अ. पुं.–वक्षस्थल, सीना; आधी रात।

जौशन (جوشن) अ. पुं.–कवच, ज़िरिह।

जौसंग (جوسنگ) फा. वि.–एक जौ के बराबर वज़न।

जौसक़ (جوسق) अ. पुं.–प्रासाद, भवन, महल।

जौहर (جوہر) अ. पुं.–गुण, सिफ़त; दक्षता, होशियारी; सार, सत; रत्न, मणि; कला, फ़न; धर्म, ख़ासियत; वे बारीक़ धारियाँ जो अच्छी तलवार पर होती हैं।

जौहरदार (جوہردار) अ. फा. वि.–गुणी, हुनरमंद; वह खरी तलवार जिस पर जौहर हों।

जौहर नाशनास (جوہرناشناس) अ. फा. वि.–जो गुण को न पहचान सके।

जौहरशनास (جوہرشناس) अ. फा. वि.–जो गुण को पहचानता हो; गुण-ग्राहक।

जौहरी (جوہری) अ. वि.–रत्न बेचनेवाला, मणिकार।

जौहरेअंदेशः (جوہراندیشہ) अ. फा. पुं.–कल्पना शक्ति की सूक्ष्मता।

जौहरेआईनः (جوہرآئینہ) अ. फा. पुं.–दर्पण पर पड़ी हुई धारियाँ, (जब दर्पण लोहे का होता था)।

जौहरेफ़र्द (جوہرفرد) अ. पुं.–वह सूक्ष्म कण जिसके खंड न हो सकें।

जौहरेलतीफ़ (جوہرلطیف) अ. पुं.–किसी पदार्थ का असली सत, ख़ालिस जौहर।

जौहरेशम्शीर (جوہرشمشیر) अ. फा. पुं.–तलवार पर पड़ी हुई बारीक़ लहरें, जो अच्छे लोहे की अलामत हैं।

त

तंगः (تنگہ) तु. पुं.–चालू सिक्का, वह मुद्रा जिसका लेन-देन हो।

तंग (تنگ) फा. वि.–संकीर्ण, संकुचित, कोताह; अल्प, न्यून, थोड़ा, कम; दरिद्र, कंगाल; दीन, दुखी, बेबस; आजिज़, परेशान; क्लेशग्रस्त, मुसीबत का मारा; दुष्कर, मुश्किल; अपर्याप्त, नाकाफ़ी, (पुं.) ज़ीन कसने का तस्मा।

तंगऐश (تنگ عیش) फा. अ. वि.–दरिद्र, कंगाल; दु:खित, ख़स्ता हाल; जिसे जीवन दूभर हो।

तंगऐशी (تنگ عیشی) फा. अ. स्त्री.–दरिद्रता, कंगाली; दु:ख, दीनता, ख़स्तगी; जीवन दूभर होना।

तंगख़याल (تنگ خیال) फा. अ. वि.–अनुदार, संकीर्ण-चित्त, लघुचेता, तंग नज़र; धर्मांध, मुतअस्सिब।

तंगख़याली (تنگ خیالی) अ. फा. स्त्री.–अनुदारता, तंग नज़री; धर्मांधता, तअस्सुब।

तंगचश्म (تنگ چشم) फा. अ. वि.–कृपण, कंजूस; नीच प्रकृति, कमीना।

तंगचश्मी (تنگ چشمی) फा. अ. स्त्री.–कृपणता, कंजूसी; प्रकृति की नीचता, कमीनापन।

तंगज़र्फ़ (تنگ ظرف) फा. अ. वि.–छोटे बर्तनवाला, संकीर्ण पात्र; छोटे हृदयवाला, अनुदार; नीच, कमीना।

तंगज़र्फ़ी (تنگ ظرفی) फा. अ. स्त्री.–बरतन की छोटाई; हृदय की छोटाई; नीचता।

तंगज़ीस्त (تنگ زیست) फा. वि.–दे. 'तंगऐश'।

तंगतलबी (تنگ طلبی) फा. अ. स्त्री.–इस प्रकार माँगना कि देनवाला परेशान हो जाय, ज़िद करके माँगना।

तंगताब (تنگ تاب) फा. वि.–अशक्त, बलहीन।

तंगताबी (تنگ تابی) फा. स्त्री.–अशक्ति, बलहीनता।

तंगदस्त (تنگ دست) फा. वि.–जिसका हाथ ख़ाली हो, जिसके पास धन न हो, निर्धन, कंगाल।

तंगदस्ती (تنگ دستی) फा. स्त्री.–हाथ ख़ाली होना, अर्थात् निर्धनता, कंगाली।

तंगदहन (تنگ دہن) फा. वि.–जिसका मुँह छोटा हो, कलिकामुख, गुंचःदहन।

तंगदहनी (تنگ دہنی) फा. स्त्री.–मुँह का कली की भाँति छोटा होना।

तंगदिल (تنگ دل) फा. वि.–थुड़दिला, कृपण, कंजूस; अनुदार, जो खुले दिमाग़ का न हो; ओछा, कमीना, तुच्छ; जिसमें मज़हबी तंग ख़याली हो, कूप-मंडूक।

तंगदिली (تنگ دلی) फा. स्त्री.–थुड़दिलापन; अनौदार्य; ओछापन; धर्मांधता।

तंगनज़र (تنگ نظر) फा. अ. वि.–संकुचित दृष्टि, अनुदार; मुतअस्सिब, धर्मांध।

तंगनज़री (تنگ نظری) फा. अ. स्त्री.–दृष्टि संकोच, अनुदारता; धर्मांधता, तअस्सुब।

तंगनाए (تنگ نائے) फा. पुं.–तंग और संकुचित स्थान; समाधि, क़ब्र; तंग गली, बीथी।

तंगपोश (تنگ پوش) फा. वि.–चुस्त कपड़े पहनने का शौक़ीन या पहननेवाला।

तंगपोशी (تنگ پوشی) फा. स्त्री.–चुस्त कपड़े पहनने का शौक़।

तंगफ़ुर्सत (تنگ فرصت) फा. अ. वि.–अवकाशहीन, जिसके पास समय कम हो।

तंगफ़ुर्सती (تنگ فرصتی) फा. अ. स्त्री.–अवकाशहीनता, समय की कमी।

तंगबख़्त (تنگ بخت) फा. वि.–मंदभाग्य, हतभाग्य, बदक़िस्मत।

तंगबख़्ती (تنگ بختی) फा. स्त्री.–भाग्य की मंदता, बदक़िस्मती।

तंगबार (تنگ بار) फा. वि.–वह व्यक्ति जिसके पास हर कोई न जा सके; वह स्थान जहाँ हर किसी की पहुँच न हो।

तंगबारी (تنگ باری) फा. स्त्री.–किसी की रसाई और पहुँच न होना।

तंगमआश (تنگ معاش) फा. अ. वि.–निर्धन, कंगाल; मंद जीविका, कम आमदनीवाला।

तंगमआशी (تنگ معاشی) फा. अ. स्त्री.–निर्धनता; जीविका की कमी।

तंगमायः (تنگ مایہ) फा. वि.–निर्धन, कंगाल; अधम, नीच; कमइल्म, विद्याहीन।

तंगमायगी (تنگ مایگی) फा. स्त्री.–निर्धनता; अधमता; विद्वत्ता की कमी।

तंगसार (تنگ سار) फा. वि.–बुद्धि की कमी।

तंगसाल (تنگ سال) फा. वि.–दुर्भिक्ष, क़हत।

तंगवर्ज़ी (تنگ ورزی) फा. स्त्री.–मितव्यय, पसअंदाज़ी।

तंगहाल (تنگ حال) फा. अ. वि.–दुर्दशाग्रस्त, तबाह हाल; निर्धन, कंगाल।

तंगहाली (تنگ حالی) फा. अ. स्त्री.–दुर्दशा; निर्धनता।

तंगहौसलः (تنگ حوصلہ) फा. अ. वि.–मंदोत्साह, पस्त-हिम्मत।

तंगहौसलगी (تنگ حوصلگی) फा. अ. स्त्री.–उत्साहमांद्य, पस्तहौसलगी।

तंग़ार (تنغار) फा. पुं.–सुहागा, एक दवा।

तंगिएजा (تنگیِ جا) फा. स्त्री.–जगह की तंगी, स्थान की संकीर्णता।

तंगिएमआश (تنگیِ معاش) फा. अ. स्त्री.–जीविका की कमी; धन की कमी।

तंगिएरिज़्क़ (تنگیِ رزق) फा. अ. स्त्री.–अन्नकष्ट, रोटी की कमी।

तंगिएरोज़गार (تنگیِ روزگار) फा. स्त्री.–कालचक्र, दिनों का फेर, गर्दिश।

तंगी (تنگی) फा.स्त्री.–न्यूनता, कमी; संकीर्णता, कोताही; क्लेश, कष्ट, मुसीबत; दरिद्रता, कंगाली; कृपणता, कंजूसी; कठिनता, मुश्किल।

तंगुज़ (تنگوز) तु. पुं.–शूकर, वराह, सुअर।

तंज़ (طنز) अ. स्त्री.–व्यंग, ताना; कटाक्ष।

तंज़आमेज़ (طنز آمیز) अ. फा. वि.–व्यंगपूर्ण, तंज़िया, दे. 'तंज़ामेज़', वह अधिक शुद्ध है।

तंज़न (طنزاً) अ. वि.–व्यंग के रूप में, तंज़ के तौर पर।

तंज़निगार (طنز نگار) अ. फा. वि.–व्यंगपूर्ण लेख लिखनेवाला।

तंज़निगारी (طنز نگاری) अ.फा.स्त्री.–व्यंगपूर्ण लेख लिखना।

तंज़ामेज़ (طنز آمیز) अ. फा. वि.–व्यंगपूर्ण, तंज़ भरा हुआ।

तंज़ियः (طنزیہ) अ. वि.–व्यंगपूर्ण, तंज़वाला।

तंज़ीम (تنظیم) अ. स्त्री.–प्रबंध, बंदोबस्त; किसी दल, समुदाय अथवा संस्था को किसी विशेष कार्य के लिए निर्मित करना, संघटन; निर्माण, बनाना।

तंजीम (تنجیم) अ. स्त्री.–ग्रहों आदि की दशा ज्ञात करना; ज्योतिष, नजूम।

तंज़ीयः (طنزیہ) अ. वि.–व्यंगपूर्ण, तंज़आमेज़।

तंज़ीयात (طنزیات) अ.स्त्री.–व्यंगपूर्ण रचनाओं का संग्रह; व्यंगपूर्ण बातें।

तंज़ीर (تنذیر) अ. स्त्री.–डराना, त्रासना, भीत करना।

तंज़ील (تنزیل) अ. स्त्री.–नीचे उतारना; आकाशवाणी, इल्हाम; क़ुरान।

तंजीस (تنجیس) अ. स्त्री.–अपवित्र करना, गंदा करना।

तंज़ीह (تنزیہ) अ. स्त्री.–शुद्ध करना, पवित्र करना, दोष-रहित करना।

तंतनः (طنطنہ) अ. पुं.–आतंक, रोब; कोप, रोष, ग़ुस्सा; अभिमान, घमंड, ग़ुरूर; आनबान; धाक।

तंदूर (تندور) उ. पुं.–दे. शु. शब्द 'तन्नूर'।

तंबाकू (تنباکو) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध पत्ती जिसका धुआँ पिया जाता है, तमाखू, तमाकू।

तंबाकूनोश (تنباکونوش) फा. वि.–तमाकू पीनेवाला।

तंबाकूफ़रोश (تنباکوفروش) फा. वि.–तमाकू बेचनेवाला।

तंबीक़ (تنبیق) अ. स्त्री.–लिखना, लेखन।

तंबीत (تنبیت) अ. स्त्री.–उत्पादन, उगाना, जमाना।

तंबीह (تنبیہ) अ. स्त्री.–चेतावनी, प्रबोध, आगाही; भर्त्सना, तर्जन, डाँट-डपट; हलकी, सज़ा; ताक़ीद; सख़्ती।

तंबीहन (تنبیہاً) अ.वि.–तंबीह के तौर पर, चेतावनी, डाँट, सज़ा या ताक़ीद के तौर पर।

तंबुल (تنبل) फा. वि.–काहिल, आलसी; बहुत मोटा, फप्फस।

तंबुली (تنبلی) फा. स्त्री.–आलस, काहिली; बहुत अधिक मुटापा, फप्फसपन।

तंबूरः (تنبورہ) फा. पुं.–एक तारवाला बाजा, जिसमें नीचे की ओर तुंबी होती है।

तंबूर (تنبور) फा. पुं.–दे. 'तंबूरा'।

तंबूरची (تنبورچی) फा. तु. वि.–तंबूरा बजानेवाला।

तंसीक़ (تنسیق) अ.स्त्री.–प्रबंध करना, इंतिज़ाम करना; क्रमबद्ध करना, तर्तीब देना।

तंसीख़ (تنسیخ) अ. स्त्री.–मंसूख़ करना, रद्द करना, निरसन।

तंसीफ़ (تنصیف) अ. स्त्री.–आधा-आधा करना, दो बराबर भाग करना।

तंसीम (تنسیم) अ. स्त्री.–साँस लेना, दम खींचना।

तअक़्क़ुद (تعقد) अ. पुं.–बँधा होना; अलग रखना।

तअक़्क़ुब (تعقب) अ. पुं.–पीछे जाना; पीछा करना।

तअक़्क़ुल (تعقل) अ. पुं.–समझना, सोचना, विचार करना, ग़ौर करना।

तअक्कुल (تاکل) अ. पुं.–खाना, खान।

तअख़्ख़ुर (تاخر) अ. पुं.–पीछे होना; देर होना।

तअज़्ज़ी (تاذی) अ. स्त्री.–कष्ट पाना, क्लेश पाना; खिन्न होना, मलिन होना।

तअज्जुब (تعجب) अ. पुं.–आश्चर्य, विस्मय, हैरत।

तअज्जुबअंगेज़ (تعجب انگیز) अ. फा. वि.–आश्चर्यजनक, अचंभे में डालनेवाली बात।

तअज्जुबख़ेज़ (تعجب خیز) अ. फा. वि.–दे. 'तअज्जुब अंगेज़'।

तअज्जुबनाक (تعجب ناک) अ. फा. वि.–दे. 'तअज्जुब अंगेज़'।

तअज़्ज़ुम (تعظم) अ. पुं.–पूज्य होना, बुज़ुर्ग होना।

तअज़्ज़ुर (تعذر) अ. पुं.–काम में अड़चन पड़ना, बाधा, विघ्न; उज्र करना, विवशता प्रकट करना।

तअत्तुफ़ (تعطف) अ.पुं.–कृपा, दया, अनुकम्पा, मेहरबानी।

तअत्तुर (تعطر) अ. पुं.–सुगंधित होना; महकना।

तअत्तुल (تعطل) अ. पुं.–निठल्लापन, बेकारी; गत्यवरोध, डेडलाक।

तअत्तुश (تعطش) अ.पुं.–पियासा होना; पियासा, प्यास।

तअद्दा (تعدا) अ. पुं.–दे. 'तअद्दी'।

तअद्दी (تعدی) अ. स्त्री.–अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म।

तअद्दुद (تعدد) अ. पुं.–गिनना, गिनती करना; नियम या हिसाब से अधिक होना।

तअन्नी (تانی) अ. स्त्री.–विलम्ब, ढील; टाल मटोल।

तअन्नी (تعلی) अ. स्त्री.–दुःखित होना, शोक करना।

तअन्नुत (تعنت) अ. पुं.–निंदा, गर्हा, ऐबजोई।

तअन्नुद (تعند) अ. पुं.–शत्रुता करना, लड़ाई ठानना; कलह, लड़ाई।

तअन्नुफ़ (تعنف) अ. पुं.–निन्दा करना, सख़्ती करना।

तअन्नुस (تانس) अ. पुं.–प्रेम होना, मुहब्बत होना; आदत होना, टेव पड़ना।

तअफ़्फ़ुन (تعفن) अ. पुं.–सड़ाँध, गंदगी, दुर्गंध।

तअफ़्फ़ुफ़ (تعفف) अ. पुं.–संयम, इंद्रियनिग्रह, पारसाई।

तअब (تعب) अ. पुं.–परिश्रम, मेहनत; दुःख, तकलीफ़; क्लांति, थकावट।

तअब्बुद (تعبد) अ. पुं.–उपासना करना; उपासना, पूजा।

तअम्मुक़ (تعمق) अ. पुं.–किसी बात की तह तक पहुँचने के लिए चिन्तन करना।

तअम्मुल (تامل) अ. पुं.–विचार, सोच, ग़ौर; विलम्ब, ढील, वक़्फ़ः; शंका, अंदेशा; भ्रम, संदेह, शुब्हा; संकोच, असमंजस, पसोपेश।

तअम्मुल (تعمل) अ. पुं.–कार्यान्वित होना, अमलीजामा पहनना, अमल में आना।

तअय्युन (تعین) अ. पुं.–निश्चय करना, ठहराना; एक मिक़्दार मुक़र्रर करना; नियुक्ति, तैनाती; अस्तित्व, हस्ती।

तअय्युनात (تعینات) अ. पुं.–'तअय्युन' का बहु., हस्तियाँ।

तअय्युश (تعیش) अ. पुं.–भोग-विलास, एशोइश्रत; गुलछर्रे उड़ाना, मज़े करना।

तअय्युशात (تعیشات) अ. पुं.–'तअय्युश' का बहु., भोग-विलास, इंद्रियसुख।

तअर्री (تعری) अ. स्त्री.–नग्न होना, नंगा होना।

तअर्रुज़ (تعرض) अ. पुं.–सामने होना; घटित होना; रोक, विरोध।

तअर्रुफ़ (تعرف) अ. पुं.–जान-पहचान; ढूँढ़ना; पूछना।

तअल्ली (تعلی) अ.पुं.–डींग, शेख़ी; अत्युक्ति, मुबालग़ा।

तअल्लुक़ः (تعلقہ) अ. पुं.–भू-संपत्ति, जाइदाद; क्षेत्र, इलाक़ा; बड़ी ज़मींदारी, रियासत; सरकार की ओर से किसी पुरस्कार में मिली हुई रियासत।

तअल्लुक़ःदार (تعلقہ دار) अ.फा.वि.–जो बहुत बड़ी ज़मींदारी का स्वामी हो; जिसे पुरस्कार में भू-संपत्ति मिली हो।

तअल्लुक़ःदारी (تعلقہ داری) अ. फा. स्त्री.–तअल्लुक़ा का स्वामी होना, बहुत बड़ा ज़मींदार होना।

तअल्लुक़ (تعلق) अ. पुं.–सम्बन्ध, संपर्क, लगाव; स्वजनता, रिश्तेदारी; प्रेम व्यवहार, उंस; सेवा, नौकरी; वास्ता, सम्बन्ध; पक्षपात, तरफ़दारी; नाजाइज़ संपर्क; आश्नाई।

तअल्लुक़ात (تعلقات) अ. पुं.–'तअल्लुक़' का बहु., सम्बन्ध-समूह।

तअल्लुक़ेख़ातिर (تعلقِ خاطر) अ. पुं.–दिली लगाव, चित्तासंग; प्रेम, स्नेह।

तअल्लुम (تالم) अ. पुं.–पीड़ित होना, दर्द से दुःखित होना; कष्ट होना, दुःख होना।

तअल्लुम (تعلم) अ. पुं.–पढ़ना, पठन; शिक्षा प्राप्त करना।

तअव्वुज़ (تعوذ) अ. पुं.–पनाह लेना, शरण में आना; 'अऊज़ु बिल्लाह' कहना।

तअव्वुद (تعود) अ. पुं.–अभ्यस्त होना, आदी होना।

तअश्शी (تعشی) अ. स्त्री.–शाम का खाना खाना।

तअश्शुक़ (تعشق) अ. पुं.–आसक्त होना, मुग्ध होना; प्रेम, स्नेह।

तअश्शुफ़ (تعشف) अ. पुं.–बेराह चलना, कुमार्ग गमन।

तअस्सुफ़ (تاسف) अ. पुं.–पश्चात्ताप, संताप, अफ़्सोस।

तअस्सुफ़ (تعصف) अ. पुं.–कुमार्ग पर चलना,; पथ-भ्रष्ट होना।

तअस्सुब (تعصب) अ. पुं.–धार्मिक पक्षपात; नस्ली और ख़ानदानी पक्षपात; अनुचित पक्षपात, बेजा तरफ़दारी।

तअस्सुर (تاثر) अ. पुं.–प्रभावित होना, असंर लेना; प्रभाव, असर।

तअस्सुर (تعسر) अ. पुं.–कठिन होना, मुश्किल होना; कठिनता, मुश्किल।

तअह्हुद (تعہد) अ. पुं.–किसी काम का बीड़ा उठाना, प्रतिज्ञा करना; प्रतिज्ञा, संविदा, इक़रार; प्रतिभूति, ज़मानत।

तअह्हुल (تاہل) अ. पुं.–घर बसाना, ब्याह करना; बाल-बच्चेदार होना।

तआक़ुद (تعاقد) अ. पुं.–परस्पर प्रतिज्ञा करना, मिलकर किसी काम का वचन देना।

तआक़ुब (تعاقب) अ. पुं.–एक का दूसरे के पीछे भागना; भागनेवाले को पकड़ने के लिए उसके पीछे जाना।

तआतुफ़ (تعاطف) अ. पुं.–परस्पर कृपा करना, एक दूसरे पर मेहरबानी करना; कृपा, दया।

तआनुक़ (تعانق) अ. पुं.–एक दूसरे से गरदन मिलाना, आलिंगन करना; आलिंगन, बग़लगीरी।

तआनुद (تعاند) अ. पुं.–परस्पर शत्रुता रखना; शत्रुता, बैर।

तआमुल (تعامل) अ. पुं.–आपस में मिलकर काम करना।

तआरुज़ (تعارض) अ. पुं.–आमने-सामने होना; मुँह आना, बराबरी करना; हस्तक्षेप करना; विघ्न डालना; कलह, झगड़ा; वाद-विवाद, हुज्जत।

तआरुफ़ (تعارف) अ. पुं.–एक दूसरे को पहचानना; परिचय, जान-पहचान।

तआला (تعالی) अ. वि.–श्रेष्ठ, महान्।

तआवुन (تعاون) अ. पुं.–एक दूसरे की सहायता करना; सहयोग, मदद।

तआहुद (تعاہد) अ. पुं.–परस्पर प्रतिज्ञा करना; प्रतिज्ञा, इक़रार।

तऐयुन (تعین) अ. पुं.–दे. 'तअय्युन'।

तऐयुनात (تعینات) अ. पुं.–दे. 'तअय्युनात'।

तऐयुनेवक़्त (تعین وقت) अ. पुं.–समय निश्चित होना, वक़्त मुक़र्रर होना।

तऐयुश (تعیش) अ. पुं.–दे. 'तअय्युश'।

तऐयुशात (تعیشات) अ. पुं.–भोग-विलास के सामान, भोग-विलास।

तक़त्तो' (تقطع) अ. पुं.–टुकड़े-टुकड़े करना; टुकड़े-टुकड़े होना।

तक़द्दुम (تقدم) अ. पुं.–पहले होना, आगे होना; प्रधानता, तर्जीह।

तक़द्दुम बिज़्ज़मान (تقدم بالزمان) अ. पुं.–पहले होने के कारण श्रेष्ठ और अग्रगण्य होना।

तक़द्दुम बिश्शरफ़ (تقدم بالشرف) अ. पुं.–श्रेष्ठता के कारण अग्रगण्य होना।

तकद्दुर (تکدر) अ. पुं.–मैला होना, गँदला होना; मलिनता, गँदलापन; अप्रसन्नता; उदासी।

तक़द्दुस (تقدس) अ. पुं.–पवित्रता, पुनीतता, पाकीज़गी; महत्ता, श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

तक़द्दुसमआब (تقدس مآب) अ. वि.–अति श्रेष्ठ, अति महान्, बहुत बुज़ुर्ग, धर्मात्मा।

तकफ़्फ़ुल (تکفل) अ. पुं.–किसी बात की ज़िम्मेदारी, ज़मानत; किसी के भरण-पोषण का भार; प्रतिभूति, ज़मानत।

तकब्बुर (تکبر) अ. पुं.–अभिमान, अहंकार, दर्प, ग़ुरूर; अहंवाद, अकड़, शेख़ी।

तक़ब्बुल (تقبل) अ. पुं.–स्वीकार करना, अंगीकार करना, मंज़ूर करना; स्वीकृति, मंजूरी।

तक़य्युद (تقید) अ. पुं.–बंदी होना, क़ैद होना; पाबन्दी, शर्त।

तक़र्रुब (تقرب) अ. पुं.–समीपता, निकटता, नज़दीकी।

तकर्रुम (تکرم) अ. पुं.–कृपा करना; दान करना; कृपा, दया, अनुकंपा।

तक़र्रुर (تقرر) अ. पुं.–नियुक्ति, तैनाती, निश्चय, तऐयुन।

तक़र्रो (تقرع) अ. पुं.–करवटें बदलना।

तक़ल्क़ुल (تقلقل) अ. पुं.–व्याकुलता, बेचैनी; खेद, दुःख; उँडेलने में सुराही का शब्द करना।

तकल्तू (تکلتو) तु. पुं.–ज़ीन का नमदा, ख़ोगीर; डाढ़ी-मूँछें।

तक़ल्लुद (تقلد) अ. पुं.–ज़िम्मेदार होना; अनुयायी होना।

तकल्लुफ़ (تکلف) अ. पुं.–कष्ट सहन करना, तकलीफ़ उठाना; दिखावा, ज़ाहिरदारी; टीम-टाम, ज़ाहिरी, सजावट; संकोच, पसोपेश; बनावट; शील-संकोच, लिहाज़; लज्जा, शर्म; बेगानगी, परायापन।

तकल्लुफ़न (تکلفاً) अ. वि.–तकल्लुफ़ में, तकल्लुफ़ के तौर पर।

तकल्लुफ़ात (تکلفات) अ. पुं.–'तकल्लुफ़' का बहु., बहुत-से तकल्लुफ़।

तक़ल्लुब (تقلب) अ. पुं.–पलटना, उलटा हो जाना; परिवर्तन, रद्दोबदल।

तकल्लुम (تکلم) अ. पुं.–बातचीत करना; बातचीत, वार्तालाप।

तकल्लुस (تکلس) अ. पुं.–चूना बनाना।

तकव्वुन (تکون) अ. पुं.–होना, उत्पन्न होना; सृजन, तख़्लीक़।

तक़श्शुफ़ (تقشف) अ. पुं.–मोटा-झोटा खाना पहनना; संन्यास, दरवेशी; खुरदरापन।

तकश्शुफ़ (تکشف) अ. पुं.–नग्न होना, नंगा होना।

तक़श्शुफ़ेजिल्द (تقشف جلد) अ. पुं.–काम की अधिकता से खाल का मोटा और कड़ापन।

तकस्सुर (تکثر) अ. पुं.–अधिकता, प्राचुर्य, बाहुल्य, कस्रत।

तकस्सुर (تکسر) अ. पुं.–टूटना, टुकड़े होना।

तकस्सुल (تکسل) अ. पुं.–आलस्य, काहिली, सुस्ती।

तक़ाउद (تقاعد) अ. पुं.–काम छोड़ बैठना।

तक़ाज़ा (تقاضا) अ. पुं.–दिये हुए रुपये या वस्तु की माँग; आवश्यकता, जरूरत; किसी काम के लिए किसी से बराबर कहना।

तक़ाज़ाए उम्र (تقاضاے عمر) अ. पुं.–उम्र की माँग, उम्र के लिहाज़ से कोई काम करना या न करना।

तक़ाज़ाए वक़्त (تقاضاے وقت) अ. पुं.–समय की माँग, समय की आवश्यकता, किसी समय क्या करना है, यह माँग।

तक़ाज़ाए शदीद (تقاضاے شدید) अ. पुं.–कड़ा तक़ाज़ा।

तक़ाज़ाए सिन (تقاضاے سن) अ. पुं.–दे. 'तक़ाज़ाए उम्र'।

तक़ातुर (تقاطر) अ. पुं.–बूँद-बूँद टपकना; बूँदा-बाँदी होना।

तक़ातुल (تقاتل) अ. पुं.–एक दूसरे का वध करना।

तक़ातो' (تقاطع) अ. पुं.–एक दूसरे को लाँघना; एक रेखा का दूसरी रेखा को काटना।

तक़ादीर (تقادیر) अ. पुं.–'तक़दीर' का बहु., तक़दीरें, भाग्य; ईश्वरेच्छाएँ।

तक़ादुम (تقادم) अ. पुं.–क़दीम होना, पुराना होना; पुरानापन।

तकान (تکان) फा. स्त्री.–झटकना, छोड़ना; हिलाना; थकावट, थकन।

तकाफ़ी (تکافی) अ. स्त्री.–दे. 'तकाफ़ू'।

तकाफ़ू (تکافو) अ. पुं.–परस्पर बराबर होना; सहगोत्र होना।

तक़ाबुल (تقابل) अ. पुं.-एक दूसरे के आमने-सामने होना।

तकामुल (تکامل) अ. पुं.–पूरा होना, पूर्ण होना।

तक़ारीर (تقاریر) अ. पुं.–'तक़्रीर' का बहु., तक़्रीरें।

तक़ारुब (تقارب) अ. पुं.–परस्पर समीप होना; समीपता, नज़्दीकी।

तकारुम (تکارم) अ. पुं.–परस्पर बख़्शिश करना।

तकालीफ़ (تکالیف) अ. पुं.–'तक्लीफ़' का बहु., तक्लीफ़ें।

तक़ालीब (تقالیب) अ. पुं.–'तक़्लीब' का बहु., दिनों के फेर, काल के चक्र।

तक़ावी (نقاوی) अ. स्त्री.–शक्ति देना, बली बनाना; वह सरकारी क़र्ज़ा जो किसानों को ज़मीन की दशा सुधारने और अच्छे बैल और बीज आदि के लिए दिया जाता है।

तक़ावीम (تقاویم) अ. पुं.–'तक़्वीम' का बहु., जंतरियाँ।

तक़ावुम (تقاوم) अ. पुं.–एक दूसरे के बराबर खड़ा होना।

तक़ावुल (نقاول) अ. पुं.–परस्पर वचन देना; परस्पर वार्तालाप करना।

तकासुफ़ (تکاثف) अ. पुं.–दलदार होना, मोटा होना; एकत्र होना, खट्टा होना।

तक़ासुम (تقاسم) अ. पुं.–परस्पर शपथ लेना; परस्पर बाँटना।

तकासुर (تکاثر) अ. पुं.–प्रचुर होना, बहुतात होना; प्रचुरता, बहुतात।

तकासुल (تکاسل) अ. पुं.–अपने को काहिल और सुस्त दिखाना।

तकाहुल (تکاهل) अ. पुं.–अपने को काहिल दिखाना।

तक़ी (نقی) अ. वि.–संयमी, इंद्रियनिग्रही।

तक़ीयः (تقیہ) अ. पुं.–कोई बात जो भय से की या कही जाय यद्यपि उसके कहने या करने को जीं न चाहता हो। (स्त्री.) साध्वी, तपस्विनी।

तक़ैयुद (تقید) अ. पुं.–दे. 'तक़य्युद'।

तक़्ईद (نقئید) अ. स्त्री.–क़ैद करना, बंदी बनाना; रोक लगाना।

तक़्क़ार (تقار) अ. पुं.–बहुत बोलनेवाला, बहुभाषी; बहुत अच्छा भाषण देनेवाला, भाषण-पटु।

तक्ज़ीब (تکذیب) अ. स्त्री.–किसी की बात का खंडन करना; किसी की बात को झुठलाना।

तक़्तीअ (تقطیع) अ. स्त्री.–टुकड़े-टुकड़े करना; पुस्तक की लम्बाई-चौड़ाई; पद्य के किसी चरण के अक्षरों को गणों की मात्राओं के मुक़ाबले में रखकर यह देखना कि अमुक पद शुद्ध है या नहीं; किसी वस्तु को टुकड़ों में बाँटना।

तक़्तीर (تقطیر) अ. पुं.–बूंद-बूंद करके टपकाना, अरक़ खींचना।

तक़्दिमः (تقدمہ) अ. पुं.–सामने करना; सामने होना; स्वागत; नेता; साई, पेशगी रक़म।

तक़्दीम (تقدیم) अ. स्त्री.–आगे करना, तर्जीह देना; प्रधानता, तर्जीह।

तक़्दीर (تقدیر) अ. स्त्री.–भाग्य, प्रारब्ध, अदृश्य, अदृष्ट, दैव, क़िस्मत।

तक़्दीर आज़्माई (تقدیر آزمائی) अ. फा. स्त्री.–भाग्य-परीक्षा, क़िस्मत का इम्तिहान।

तक़्वीस (تقدیس) अ. स्त्री.–पुनीतता, पवित्रता, श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

तक्फ़ीन (تکفین) अ. स्त्री.–मुर्दे को कफ़न पहनाना, यह शब्द अकेला नहीं बोला जाता 'तज्हीज़' के साथ बोलते हैं।

तक्फ़ीर (تکفیر) अ. स्त्री.–मुसलमान पर कुफ़्र का फ़त्वा लगाना; प्रायश्चित्त देना, कफ़्फ़ारा देना।

तक़्फ़ील (نقفیل) अ. स्त्री.–ताला लगाना, ताले में बंद करना, क़ुफ़ुल देना।

तक्बीर (تکبیر) अ. स्त्री.–'अल्लाहो अक्बर' (ईश्वर सबसे बड़ा है) कहना; नमाज़ में झुकने, खड़े होने अथवा बैठने के लिए 'अल्लाहो अक्बर' कहना।

तक़्बील (تقبیل) अ. स्त्री.–चुम्बन, चूमना, (किसी पदार्थ को चूमना, मनुष्य को नहीं)।

तक़्बीह (تقبیح) अ. स्त्री.–बुराई करना, बुरा काम करना।

तक्मिलः (تکملہ) अ. पुं.–पूर्ति, समाप्ति; किसी काम की पूर्ति में कोई कसर न रहना; परिशिष्ट, ज़मीमा।

तक्मीद (تکمید) अ. स्त्री.–पोटली में दवा भरकर उससे अंग विशेष को सेंकना।

तक्मील (تکمیل) अ. स्त्री.–पूर्ति, समाप्ति; किसी काम की पूर्ति में कोई कसर न रहना।

तक्यः (تکیہ) अ. पुं.–सिर के नीचे रखने का नर्म और गुदगदा वस्त्र, उपधान; पीठ से लगाने का बड़ा वस्त्र, मस्नद; मुसलमानों के मुर्दे दफ़्न होने का स्थान, क़ब्रिस्तान।

तक्यः कलाम (تکیہ کلام) अ. पुं.–वह बात जो कोई व्यक्ति बातों के बीच में बेज़रूरत बार-बार बोलता है।

तक्रार (تکرار) अ. स्त्री.–वाद-विवाद, बहस; वाक्कलह, कहा-सुनी; पुनरावृत्ति, दुहराना; कही हुई बात को बार-बार कहना।

तक़्रीअ (تقریع) अ. स्त्री.–निंदा करना, मलामत करना।

तक़्रीज़ (تقریظ) अ. स्त्री.–जीवित व्यक्ति की प्रशंसा; आलोचना, समालोचना, तब्सिरः।

तक़्रीज़ (تقریض) अ. स्त्री.–दे. 'तक़्रीज़'।

तक़्रीज़निगार (تقریظ نگار) अ. फा. वि.–आलोचना लिखनेवाला, आलोचक।

तक़्रीब (تقریب) अ. स्त्री.–समीप आना; कारण, हेतु, सबब; उत्सव, शादी आदि; किसी व्यक्ति से मुलाकात कराने से पहले उसके सम्बन्ध में कुछ कहना; अवसर, मौक़ा; साधन, ज़रीया।

तक़्रीबन (تقریباً) अ. वि.–प्रायः, अमूमन; बहुधा, अक्सर; अनुमानतः, अंदाज़न।

तक़्रीबात (تقریبات) अ. स्त्री.–'तक़्रीब' का बहु., शादियाँ, उत्सव।

तक्रीम (تکریم) अ. स्त्री.–आदर, सत्कार, इज़्ज़त; आवभगत, तवाज़ो'।

तरक़ी (تقریر) अ. स्त्री.–वार्तालाप, बातचीत; भाषण, वक्तव्य, बयान; वाद-विवाद, हुज्जत।

तक्रीर (تکریر) अ. स्त्री.–बार-बार करना, दुहराना।

तक्रीह (تکریہ) अ. स्त्री.–घृणा करना, नफ़्रत करना; शत्रु बनाना; अप्रसन्न रखना।

तक़्लीद (تقلید) अ. स्त्री.–अनुसरण, अनुकरण, अनुयाय, पैरवी; देखा-देखी कोई काम करना।

तक्लीफ़ (تکلیف) अ. स्त्री.–दुःख, कष्ट; पीड़ा, व्यथा, दर्द; खेद, शोक, रंज; आमय, रोग, मर्ज़; मनोव्यथा, रूही कुल्फ़त; आपत्ति, मुसीबत; निर्धनता, मुफ़्लिसी।

तक्लीफ़दिही (تکلیف دہی) अ. फा. स्त्री.–कष्ट देना, ज़हमत देना; दुःख देना, रंज पहुँचाना।

तक्लीफ़देह (تکلیف دہ) अ. फा. स्त्री.–दुःखदायी, रंज पहुँचानेवाला।

तक्लीफ़फ़र्मा (تکلیف فرما) अ. फा. वि.–कष्ट उठानेवाला, (किसी के काम के लिए); आनेवाला, पधारनेवाला।

तक्लीफ़ फ़र्माई (تکلیف فرمائی) अ. फा. स्त्री.–किसी के काम के लिए कष्ट उठाना; पधारना, आना।

तक्लीफ़े नज़्अ (تکلیف نزع) अ. स्त्री.–मरते समय का कष्ट, चंद्रा, यमयातना।

तक्लीफ़े मालायुताक़ (تکلیف مالایطاق) अ. स्त्री.–वह परिश्रम जो सहन न हो सके।

तक़्लीब (تقلیب) अ. स्त्री.–उलट देना, उलटा कर देना; उलट-पलट, परिवर्तन।

तक़्लीम (تقلیم) अ. स्त्री.–नख काटना, नाख़ून तराशना; काटना, विच्छिन्न करना।

तक्लीम (تکلیم) अ. स्त्री.–घायल करना, ज़ख़्मी करना; बात करना, वार्तालाप करना।

तक़्लील (تقلیل) अ. स्त्री.–कम करना, कमी करना; न्यूनता, कमी।

तक़्लीलेग़िज़ा (تقلیل غذا) अ. स्त्री.–कम खाना, मिताहार।

तक़्वा (تقوا) अ. पुं.–संयम, इंद्रियनिग्रह, परहेज़गारी।

तक़्वाशिआर (تقویٰ شعار) अ. वि.–संयमी, इंद्रियनिग्रही, जितेंद्रिय।

तक़्वाशिकन (تقویٰ شکن) अ. फा. वि.–जो संयम को भंग कर दे (रूप आदि)।

तक़्वियत (تقویت) अ. स्त्री.–बल, शक्ति, ज़ोर; सान्त्वना, ढारस, तसल्ली; सहायता, मदद; आश्रय, सहारा; पृष्ठपोषण, पुश्तपनाही।

तक्वीन (تکوین) अ. स्त्री.–सृजन, तख़्लीक़; उत्पत्ति, पैदाइश।

तक़्वीम (تقویم) अ. स्त्री.–सीधा करना; मूल निश्चित करना; पत्रा, पंचांग, जंतरी।

तक़्वीमुलबुल्दान (تقویم البلدان) अ. स्त्री.–भूगोल, जुग्राफ़िया।

तक़्वीमे पारीनः (تقویم پارینہ) अ.फा.स्त्री.–पुरानी जंतरी, जो बेकार हो जाती है; बेकार वस्तु।

तक़्शीर (تقشیر) अ. स्त्री.–छिलके उतारना।

तक़्सीत (تقسیط) अ. स्त्री.–क़िस्तबंदी करना।

तक़्सीम (تقسیم) अ. स्त्री.–बँटवारा, विभाजन; हिस्सा आदि बाँटना, बाँट; बड़ी संख्या में छोटी संख्या से विभाजन, भाग, विभाजन।

तक़्सीमेकार (تقسیم کار) अ. फा. स्त्री.–हर एक को अलग-अलग काम या ड्यूटी का बँटवारा।

तक़्सीमेमुल्क (تقسیم ملک) अ. स्त्री.–देश का बँटवारा, देश-विभाजन।

तक़्सीमेवतन (تقسیم وطن) अ. स्त्री.–देश या राष्ट्र का बँटवारा, राष्ट्र-विभाजन, देश-विभाजन।

तक़्सीमेहिसस (تقسیم حصص) अ. स्त्री.–दाम का बँटवारा, अंशीकरण; नफ़े के हिस्सों का बँटवारा।

तक़्सीर (تقصیر) अ. स्त्री.–दोष, अपराध, क़ुसूर; न्यूनता, कमी; त्रुटि, भूल; कर्तव्य में कमी।

तक्सीर (تکسیر) अ. स्त्री.–तोड़ना, टुकड़े करना; किसी तावीज, यंत्र या चक्र में संख्याएँ इस प्रकार भरना कि हर ओर से जोड़ बराबर आये।

तक्सीर (تکثیر) अ. स्त्री.–बढ़ाना, अधिक करना; प्रचुरता, अधिकता, बढ़ोत्तरी, बहुतायत।

तक़्सीरवार (تقصیروار) अ. फा. वि.–दोषी, अपराधी, क़ुसूरवार; पापी, गुनाहवार।

तख़त्ती (تخطی) अ. स्त्री.–दोषारोपण, इल्ज़ाम लगाना।

तख़ब्बुत (تخبط) अ. पुं.–कुमार्ग पर चलना; प्रेत का सिर चढ़ कर पागल कर देना।

तख़य्युल (تخیل) अ. पुं.–सोचना, विचारना, ख़याल करना; कल्पना करना, उड़ान भरना; कविता के लिए मज़्मून तलाश करना; कल्पना, उड़ान; भ्रम, वह्म; ध्यान, ख़याल।

तख़य्युलात (تخیلات) अ. पुं.–'तख़य्युल' का बहु., कल्पनाएँ, ख़यालात; भ्रमजाल, वाहिमे।

तख़र्रुक़ (تخرق) अ. पुं.–फटना, फटा होना; झूठ बोलना।

तख़ल्ख़ुल (تخلخل) अ. पुं.–बिखर जाना।

तख़ल्लुक़ (تخلق) अ.पुं.–स्वभाव बनाना, आदत डालना; सुशील होना।

तख़ल्लुफ़ (تخلف) अ.पुं.–प्रतिज्ञा भंग करना; पीछे रहना।

तख़ल्लुस (تخلص) अ. पुं.–शाइर या कवि का वह नाम जो वह अपनी कविता में लिखता है, उपनाम।

तख़श्शी (تخشی) अ. स्त्री.–डरना, भयभीत होना; डराना, त्रासन।

तख़श्शो (تخشع) अ. पुं.–नम्रता, विनीत, आजिज़ी, ख़ाकसारी।

तख़ारुज (تخارج) अ. पुं.–बँटना, तक़्सीम होना।

तख़ालुज (تخالج) अ. पुं.–हृदय में भ्रम होना, शंका होना, शक होना।

तख़ालुफ़ (تخالف) अ. पुं.–शत्रुता, बैर; प्रतिकूलता, मुख़ालफ़त; परिवर्तन, उलट-पलट।

तख़ावुफ़ (تخاوف) अ. पुं.–एक दूसरे से डरना।

तख़ासुम (تخاصم) अ. पुं.–परस्पर शत्रुता करना।

तख़ैयुल (تخیل) अ. पुं.–दे. 'तख़य्युल'।

तख़ैयुलात (تخیلات) अ. पुं.–दे. 'तख़य्युलात'।

तख़्ईल (تخئیل) अ. स्त्री.—किसी को ध्यान में लाना, ध्यान करना; ध्यान, ख़याल; कल्पनाशक्ति, क़ुव्वते फ़िक्र।

तख़्तः (تختہ) फा. पुं.–लकड़ी का लंम्बा, चौड़ा और थोड़ा मोटा टुकड़ा; जहाज़ के फर्श का हर टुकड़ा जो लकड़ी का हो; काग़ज़ का एक शीट; वह लकड़ी का पटरा जिस पर मुर्दा नहलाया जाता है; ज़मीन का साफ़ और हमवार टुकड़ा; बाग़ का क़ता'; खेत आदि की कियारी।

तख़्त (تخت) फा. पुं.–बड़ी चौकी; बादशाह या राजा के बैठने की चौकी; राज्य, राष्ट्र, हुकूमत; पलंग, चारपाई; ज़ीन (वि.) बड़ा, ज्येष्ठ, कलाँ।

तख़्तःबंद (تختہ بند) फा. वि.–बंदी, क़ैदी; क़ैद, कारावास; लकड़ी की वह खपची जो टूटी हड्डी को जोड़ने के लिए बाँधी जाती है।

तख़्तःबंदी (تختہ بندی) फा. स्त्री.–दीवारों को अंदर से तख़्ते जड़वाकर सुरक्षित करना; बाग़ की कियारियों आदि को ढंग से सजाना।

तख़्तए काग़ज़ (تختۂ کاغذ) फा. अ. पुं.–काग़ज़ का ताव, शीट।

तख़्तए ताबूत (تختۂ تابوت) फा. अ. पुं.–वह संदूक़ या पलंग जिसमें मुर्दे को ले जाते हैं।

तख़्तए तालीम (تختۂ تعلیم) फा. अ. पुं.–वह काला पटरा जिस पर बच्चों को अक्षर और गिनती सिखाते हैं, शिक्षा-पटल, ब्लैक बोर्ड।

तख़्तए नर्द (تختۂ نرد) फा. पुं.–चौसर खेलने का तख़्ता।

तख़्तए मय्यित (تختۂ میت) फा. अ. पुं.–मुर्दे को नहलाने का तख़्ता।

तख़्तए मश्क़ (تختۂ مشق) फा. अ. पुं.–बच्चों की तख़्ती; वह चीज़ जो बहुत प्रयुक्त हो।

तख़्तए मीना (تختۂ مینا) फा. पुं.–आकाश, आस्मान।

तख़्तए मुसत्तह (تختۂ مسطح) फा. अ. पुं.–एक प्रकार की मेज़ जो पैमाइश में काम देती है।

तख़्तए याददाश्त (تختۂ یادداشت) फा. पुं.–वह काग़ज़ का तख़्ता जिसमें याददाश्त के लिए आवश्यक बातें नोट रहती हैं, स्मृतिपट।

तख़्तगाह (تختگاہ) फा. स्त्री.–राजधानी, राजकेंद्र, दारुस्सल्तनत।

तख़्तनशीं (تخت نشین) फा. वि.–तख़्त पर बैठनेवाला, बादशाह, राजा, शासक।

तख़्तनशीनी (تخت نشینی) फा. स्त्री.–तख़्त पर बैठना, बादशाह बनना; तख़्त पर बैठने की रस्म, ताजपोशी, अभिषेक, राज्याभिषेक, अपने शासक होने की घोषणा।

तख़्तियः (تخطیہ) अ. पुं.–किसी के काम की ग़लती पकड़ना।

तख़्ती (تختی) फा. स्त्री.–बच्चों के लिखने का लकड़ी का छोटा तख़्ता, पाटी; लकड़ी का बहुत छोटा तख़्ता जो गले आदि में डाला जाता है।

तख़्तेआबनूसी (تخت آبنوسی) फा. पुं.–रात्रि, रात।

तख़्तेख़्वाब (تخت خواب) फा. पुं.–पलंग, चारपाई।

तख़्तेताऊस (تخت طاؤس) फा. पुं.–शाहजहाँ का बनवाया हुआ सिंहासन जिस पर एक रत्नजटित मोर पर फैलाये बादशाह के सर पर छाया किये था, नादिरशाह इस तख़्त को ईरान ले गया।

तख़्तेरवाँ (تخت رواں) फा. पुं.–वह तख़्त जो कहारों के द्वारा कंधों पर चलता है और जिस पर बादशाह सैर को जाता है।

तख़्तेशाही (تخت شاہی) फा. पुं.–राजसिंहासन, बादशाह के बैठने का तख़्त।

तख़्तेसुलैमानी (تخت سلیمانی) फा. अ. पुं.–वह तख़्त जिस पर बैठकर हज़रत सुलेमान उड़ा करते थे।

तख़्तोताज (تخت وتاج) फा. पुं.–शासनसूत्र, राज्यभार, हुकूमत का इंतिज़ाम।

तख़्दीर (تخدیر) अ.स्त्री.–शरीर के किसी अंग को दवाओं के द्वारा सुन्न कर देना; स्त्री को पर्दे में बिठाना।

तख़्फ़ीफ़ (تخفیف) अ. स्त्री.–न्यूनीकरण, कमी करना; हलकापन, कमी।

तख़्मीनः (تخمینہ) अ. पुं.–अनुमान, अटकल, अंदाज़ा; विचार, क़ियास।

तख़्मीन (تخمین) अ. स्त्री.–अनुमान करना, अंदाज़ा लगाना।

तख़्मीनन (تخمیناً) अ.वि.–अंदाज़न, अनुमानतः, कम से कम, या ज़ियादा से ज़ियादा।

तख़्मीर (تخمیر) अ. स्त्री.–ख़मीर उठाना; आटे में नमक और सोडा मिलाकर रखना; दवाओं में रस या पानी आदि डालकर धूप में रखना या ज़मीन में गाड़ना।

तख़्मीस (تخمیس) अ. स्त्री.–पाँच करना, पाँच बनाना; उर्दू शाइरी की परिभाषा में, शे'र के दो मिस्रों में तीन मिस्रे और जोड़कर पाँच कर देना, ख़म्सः, वह शे'र अपना हो या किसी और का; प्रायः ख़म्सः, एक शे'रका नहीं होता बल्कि पूरी ग़ज़ल का होता है।

तख़्रिजः (تخرجہ) अ. पुं.–निकालना, खारिज करना, निष्कासन; उर्दू काव्य-परिभाषा में किसी तारीख़ी मिस्रे में से कोई संख्या कम करना, ताकि मिस्रे से ठीक साल निकल सके।

तख़्रीब (تخریب) अ.स्त्री.–तामीर का उलटा; विनष्ट करना, बरबाद करना; ध्वस्त करना, मुंहदिम करना; किसी काम को बिगाड़ना; विनाश, बरबादी; विध्वंस, तबाही; बिगाड़, ख़राबी।

तख़्लियः (تخلیہ) अ. पुं.–खाली करना; ख़ाली कराना; एकान्त, ख़ल्वत।

तख़्लीक़ (تخلیق) अ. स्त्री.–उत्पत्ति करना, सृजन, पैदा करना।

तख़्लीत (تخلیط) अ.स्त्री.–गड़बड़ करना, गडमड करना, खल्तमल्त करना, मिलाना; किसी मूल ग्रंथ में कुछ इधर-उधर का जोड़ देना; सच्ची बात में अपनी ओर से कुछ झूठ मिला देना।

तख़्वीफ़ (تخویف) अ. स्त्री.–त्रासन, त्रासना, डराना, धमकी देना, आतंक दिखाना।

तख़्वीफ़े मुज्रिमानः (تخویف مجرمانہ) अ.स्त्री.–अवैध त्रास, नाजाइज़ धमकी देकर कुछ प्राप्त करने की कोशिश।

तख़्सीस (تخصیص) अ.स्त्री.–विशेषता, मुख्यता, खुसूसियत।

तख़्सीसी (تخصیصی) अ.वि.–ख़ुसूसियत का, विशेष रूप से।

तग (تگ) फा. स्त्री.–दौड़, भाग, प्रयत्न, कोशिश, उर्दू में अकेला नहीं आता दूसरे शब्द से मिलकर आता है, जैसे–'तगोदौ'।

तग़ज़्ज़ी (تغذی) अ. स्त्री.–ख़ाना खाना; सवेरे का खाना खाना।

तग़ज़्ज़ुल (تغزل) अ. पुं.–ग़ज़ल का रंग, ग़ज़लीयत।

तग़न्नी (تغنی) अ. स्त्री.–गाना, अलापना; निःस्पृह होना, बेनियाज़ी।

तग़य्युर (تغیر) अ. पुं.–बदलना, पलटना, परिवर्तन होना; परिवर्तन, तब्दीली; विकार, ख़राबी; रूप, गंध या दशा का बदल जाना; क्रान्ति, इन्क़िलाब।

तग़य्युरपसंद (تغیرپسند) अ. फा. वि.–जो परिवर्तन को पसंद करता हो, परिवर्त्तनप्रिय।

तग़य्युरात (تغیرات) अ. पुं.–'तग़य्युर' का बहु., परिवर्तन, तब्दीलियाँ; दुर्घटनाएँ; कालचक्र।

तगर्ग (تگرگ) फा. पुं.–ओला, घनोपल, मरुत्फल, वार्पिला, मेघपुष्प, करका।

तगल (تگل) फा. पुं.–सेना, फ़ौज।

तग़ल्लुब (تغلب) अ. पुं.–ग़बन, ख़ुर्दबुर्द, अपहरण, छलहरण, मोषण, खियानत।

तग़श्शी (تغشی) अ. स्त्री.–छिपाना, गोपन; पहनना, ओढ़ना।

तगापो (تگاپو) फा. स्त्री.–पराक्रम, दौड़-धूप; प्रयत्न, कोशिश; तलाश, खोज; चिन्ता, फ़िक्र।

तग़ाफ़ुल (تغافل) अ. पुं.–उपेक्षा, बेतवज्जुही; "क्यों तग़ाफ़ुल मुझ से अय अब्रे करम बहरे सख़ा—मैं ही क्यों महरूम तेरे फ़ैज़े आलमगीर से।" असावधानी, ग़फ़्लत; ढील, विलंब, देर।

तग़ाफ़ुलआश्ना (تغافل آشنا) अ. फा. वि.–जान-बूझकर बेपरवाही बरतनेवाला; ढील डालनेवाला; बेपरवा माशूक़।

तग़ाफ़ुलकेश (تغافل کیش) अ. फा. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुल आश्ना, "अय निगाहे नाज़ तेरी यह तग़ाफ़ुल केशियाँ? लुत्फ़े-तनहाई मुझे हासिल तेरी महफ़िल में है।"

तग़ाफ़ुल दस्तगाह (تغافل دست گاہ) अ. फा. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुलआश्ना'।

तग़ाफ़ुलदोस्त (تغافل دوست) अ. फा. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुलआश्ना'।

तग़ाफ़ुलदोस्ती (تغافل دوستی) अ. फा. स्त्री.–जान-बूझकर बेपरवाही बरतना; देर लगाना।

तग़ाफ़ुलपसंद (تغافل پسند) अ. फा. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुल-आश्ना'।

तग़ाफ़ुलपसंदी (تغافل پسندی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तग़ाफ़ुलदोस्ती'।

तगाफ़ुलपेशः (تغافل پیشہ) अ. फा. वि.–दे. 'तगाफ़ुल आश्ना'।

तग़ाफ़ुलपेशगी (تغافل پیشگی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तग़ाफ़ुलदोस्ती'।

तग़ाफ़ुलमनिश (تغافل منش) अ. फा. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुलआश्ना'।

तग़ाफ़ुलमनिशी (تغافل منشی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तगाफ़ुलदोस्ती'।

तग़ाफुलशिआर (تغافل شعار) अ. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुलआश्ना'।

तग़ाफ़ुलशिआरी (تغافل شعاری) अ. स्त्री.–दे. 'तग़ाफ़ुलदोस्ती'।

तग़ाफ़ुलशेवः (تغافل شیوہ) अ. फा. वि.–दे. 'तग़ाफ़ुलआश्ना'।

तग़ाफ़ुलशेवगी (تغافل شیوگی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तग़ाफ़ुलदोस्ती'।

तग़ाबुन (تغابن) अ. पुं.–एक दूसरे को घाटा पहुँचाना; टोटा, घाटा।

तगामशी (تگامشی) फा. स्त्री.–दौड़-धूप, तगापो; परिश्रम, प्रयास जाँफ़िशानी।

तग़ायुर (تغایر) अ. पुं.–परस्पर एक दूसरे से विपरीत होना; विभिन्नता, इख़्तिलाफ़।

तग़ार (تغار) फा. पुं.–बड़ा तसला; गारे का कुंड; मिट्टी की नाँद।

तग़ीर (تغیر) अ. स्त्री.–दे. 'तग़्ईर'।

तग़ैयुर (تغیر) अ. पुं.–दे. 'तग़य्युर', परिवर्तन, क्रान्ति।

तग़ैयुरात (تغیرات) अ. पुं.–दे. 'तग़य्युरात'।

तगोताज़ (تگ و تاز) फा. स्त्री.–दे. 'तगापो'।

तगोदौ (تگ ودو) फा. स्त्री.–दे. 'तगापो'।

तग़्ईर (تغییر) अ. स्त्री.–बदलना, कुछ का कुछ कर देना; परिवर्तन, तब्दीली।

तग़्ज़ियः (تغذیہ) अ. पुं.–खाना देना, अन्न देना; परवरिश करना, विकास देना।

तग़्फ़ील (تغفیل) अ. स्त्री.–भूलचूक करना, गफ़्लत करना।

तग़्मीज़ (تغمیض) अ. स्त्री.–आँखें बन्द करना।

तग़्रीक़ (تغریق) अ. स्त्री.–डुबोना, ग़र्क़ करना।

तग़्रीब (تغریب) अ. स्त्री.–देश निकाला देना, जलावतन करना।

तग़्रीम (تغریم) अ. स्त्री.–तावान लेना, हर्जा वसूल करना।

तग़्लीक़ (تغلیق) अ. स्त्री.–बाँधना, लपेटना।

तग़्लीज़ (تغلیظ) अ. स्त्री.–गाढ़ा करना; सख़्ती करना।

तग़्लीत (تغلیط) अ. स्त्री.–ग़लती में डालना, भुला देना।

तग़्लील (تغلیل) अ. स्त्री.–सुगंधित करना, ख़ुशबू में बसाना।

तज़क्की (تزکی) अ. स्त्री.–पाक करना, पवित्र करना; माल में से ज़कात देना।

तज़क्कुर (تذکر) अ. पुं.–स्मरण करना, याद करना; स्मरण होना, याद आना।

तजज़्ज़ी (تجزی) अ. स्त्री.–टुकड़े-टुकड़े होना।

तज़ब्ज़ुब (تذبذب) अ. पुं.–असमंजस, ऊहापोह, दुविधा; संदेह, शंका, शक।

तज़म्मुन (تضمن) अ. पुं.–स्वीकार करना; अंतर्गत करना, या होना।

तजम्मुल (تجمل) अ. पुं.–सौन्दर्य, हुस्न; वैभव, शानोशौक़त; धन-संपत्ति; श्रृंगार और आभूषणादि से शरीर की सजावट।

तज़य्युन (تزین) अ. पुं.–सुसज्जित होना, श्रृंगारित होना; शोभित होना; श्रृंगार, सजावट; शोभा।

तजर्रुद (تجرد) अ. पुं.–अकेलापन, तनहाई; स्त्री के बिना जीवन व्यतीत करना; संन्यास, वैराग्य, दरवेशी; संसार से विरक्ति, निस्पृहता; नग्नता, नंगापन।

तज़र्रुर (تضرر) अ. पुं.–हानि उठाना, नुक़सान पाना; दु:खित होना, रंजूर होना।

तजर्रो' (تجرع) अ. पुं.–घूँट-घूँट करके पीना।

तज़र्रो' (تضرع) अ. पुं.–गिड़गिड़ाहट, मिन्नत, ख़ुशामद।

तज़र्व (تذرو) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध चिड़िया, चकोर।

तज़ल्ज़ुल (تزلزل) अ. पुं.–कंपन, हिलना-डोलना; भूकंप, ज़ल्ज़ला; हलचल, खलबली, सनसनी; क्रान्ति, इन्क़िलाब; अस्थिरता, डगमगाहट।

तजल्लियात (تجلیات) अ. स्त्री.–तजल्ली का बहु., प्रकाश-समूह, रौशनियाँ।

तजल्ली (تجلی) अ. स्त्री.–प्रकाश, आभा, नूर; तेज, प्रताप, जलाल; अध्यात्मज्योति, नूरेहक़।

तजल्लीख़ेज़ (تجلی خیز) अ. फा. वि.–दे. 'तजल्लीरेज़'।

तजल्लीगाह (تجلی گاہ) अ. फा. स्त्री.–रौशनी और प्रकाश का स्थान; सुन्दरियों का स्थान।

तजल्लीज़ार (تجلی زار) अ. फा. पुं.–वह स्थान जहाँ प्रकाश ही प्रकाश हो; जहाँ सौन्दर्य ही सौन्दर्य हो।

तजल्लीरेज़ (تجلی ریز) अ. फा. वि.–प्रकाश फैलानेवाला, रौशनी बरसानेवाला।

तज़ल्लुम (تظلم) अ. पुं.–किसी के अत्याचार पर दुहाई देना और विलाप करना।

तज़ल्लुल (تزلل) अ. पुं.–लड़खड़ाहट, लग़्ज़िश।

तज़व्वुज (تزوج) अ. पुं.–ब्याह करना, बीबी बनाना; पति बनाना, 'तज़व्वुद' (अ.) भी शुद्ध है।

तजस्सुस (تجسس) अ. पुं.–जिज्ञासा, पूँछताछ; गवेषणा, मार्गण, तलाश, खोज; दौड़-धूप, प्रयास।

तजस्सुसकुनाँ (تجسس کناں) अ. फा. वि.–खोज करता हुआ, ढूँढ़ता हुआ; पूछताछ करता हुआ।

तज़ाउफ़ (تضاعف) अ. पुं.–दूना होना, दुगुना होना।

तज़ाद (تضاد) अ.पुं.–एक दूसरे के विरुद्ध होना; एक दूसरे का शत्रु होना; विरोध, प्रतिकूलता, इख़्तिलाफ़; शत्रुता, रिपुता, दुश्मनी।

तज़ह्हुद (تزہد) अ. पुं.–ज़ाहिद बनना, आबिद बनना, जगत् से विरक्त होना, 'ज़ुह्द' से बना।

तज़ायुक़ (تضایق) अ. पुं.–तंग होना।

तज़ायुद (تزاید) अ. पुं.–अधिक होना, ज़ियादा होना; अधिकता, बहुतायत से बना।

तजारिब (تجارب) अ. पुं.–'तज्रिबः' का बहु., तज्रिबे, 'तजुर्बा' भी प्रचलित है।

तजावुज़ (تجاوز) अ. पुं.–अपनी हद से बढ़ जाना, सीमोल्लंघन; अपने इख़्तियार से बाहर कोई काम करना; अवज्ञा, हुक्मउदूली; धृष्टता, गुस्ताख़ी।

तजाहुल (تجاہل) अ. पुं.–जान-बूझकर अनजान बनना; बेख़बर और अनजान होना; उपेक्षा, लापरवाही।

तजाहुरे आरिफ़ानः (تجاہل عارفانہ) अ. पुं.–जानते हुए यह ज़ाहिर करना कि जानते नहीं, जान-बूझकर अनजान बनना।

तज़्ईअ (تضئیع) अ. स्त्री.–व्यर्थ खोना, बरबाद करना।

तज़्ईए औक़ात (تضئیع اوقات) अ. स्त्री.–समय का व्यर्थ नष्ट करना।

तज़्ईन (تزئین) अ. स्त्री.–अपने को बनाना, सँवारना; शृंगार, सज्जा, बनाव, सिंगार।

तज़्ईफ़ (تضعیف) अ. स्त्री.–दूना करना; निर्बल करना।

तज़्कार (تذکار) अ. पुं.–चर्चा करना, ज़िक्र करना; स्मृति, यादगार; चर्चा, ज़िक्र।

तज़्कियः (تزکیہ) अ. पुं.–शुद्ध करना, पवित्र करना; माल की ज़कात देना; शुद्धि, सफ़ाई।

तज़्किरः (تذکرہ) अ. पुं.–चर्चा, ज़िक्र; वार्तालाप, बातचीत; ख्याति, शुह्रत; परिपत्र, पास्पोर्ट; प्रसंग, सिलसिला।

तज़्कीर (تذکیر) अ. स्त्री.–पुंल्लिग बनाना; याद दिलाना; पुंल्लिग।

तज़्कीरो तानीस (تذکیروتانیث) अ. स्त्री.–पुंल्लिग और स्त्रीलिंग, याद करना और उन्स (प्रेम) करना।

तज्ज़ियः (تجزیہ) अ. पुं.–अलग-अलग करना, टुकड़े-टुकड़े करना; किसी पदार्थ के सारे अवयव अलग-अलग करके उनकी जाँच करना।

तज्दीद (تجدید) अ. स्त्री.–नवीनीकरण, नया बनाना; नवीनता, नयापन।

तज्दीदेअह्द (تجدیدعہد) अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा भंग हो जाने पर फिर से प्रतिज्ञा करना, नये सिरे से दुबारा वादा करना, नव्य प्रतिज्ञा।

तज्दीदे मुलाक़ात (تجدیدملاقات) अ. स्त्री.–मुलाक़ात को बहुत दिन हो जाने पर फिर से मुलाक़ात करना।

तजनीस (تجنیس) अ. स्त्री.–एकलिंगता, एक जिंस होना; एकरूपता, हमशक्ली; एक शब्दालंकार, जिसमें किसी शे'र में एक-जैसे शब्द लाये जाते हैं, यमक।

तज्फ़ीफ़ (تجفیف) अ. स्त्री.–सुखाना, ख़ुश्क करना।

तज़्मीद (تضمید) अ. स्त्री.–किसी अंग विशेष पर दवा का लेप करना; लेप, प्रलेप, ज़िमाद।

तज़्मीन (تضمین) अ. पुं.–किसी को ज़ामिन बनाना; किसी को अपनी पनाह में लेना; किसी के शे'र या मिस्रे को अपने शेरों में प्रयोग करना, ख़म्सः करना, दो मिस्रों पर तीन मिस्रे और लगाना।

तज्रिबः (تجربہ) अ. पुं.–परीक्षा, जाँच; अनुभव, जानकारी, किसी विषय या कार्य के सारे ऊँच-नीच या अच्छे-बुरे की ख़बर, 'तज्रुबा' और 'तज्रबा' दोनों ही प्रचलित हैं।

तज्रिबःकार (تجربہ کار) अ. फा. वि.–जिसे किसी काम का काफ़ी तज्रिबा हो, अनुभवी; जिसे सांसारिक व्यवहार का अनुभव काफ़ी हो, बहुदर्शी।

तज्रीद (تجرید) अ. स्त्री.–किसी चीज़ पर से उसका सामान उतारकर उसे अपनी असली दशा में कर देना, नंगा कर देना; सँवारना, सजाना, (काट छाँटकर); सुधार करना, दुरुस्ती करना; अकेला जीवन व्यतीत करना, ब्रह्मचर्य।

तज़्लील (تذلیل) अ. स्त्री.–अपमान, तिरस्कार, बेइज़्ज़ती, 'ज़िल्लत' से बना।

तज्वीज़ (تجویز) अ. स्त्री.–विचार, ख़याल; मति, सलाह, राय; प्रबंध, इंतिजाम; योजना, मंसूबा, प्रयत्न, उपाय, कोशिश; निर्णय, फ़ैसला; रिजोल्यूशन, प्रस्ताव।

तज़्वीज (تزویج) अ. स्त्री.–विवाह, पाणिग्रहण, ब्याह, निकाह।

तज्वीद (تجوید) अ. स्त्री.–निर्मल और स्वच्छ करना; किसी शब्द का शुद्ध उच्चारण करना; हाफिज़ों की परि-

भाषा में क़ुरान को शुद्ध उच्चारण और पूर्ण नियम से पढ़ना।

तज्वीफ़ (تجویف) अ. स्त्री.–अन्दर से खुख्खल करना; खोखला, सुषिर।

तज्वीर (تزویر) अ. स्त्री.–धोका, छल, कपट, फ़रेब; मिथ्या, असत्य, झूठ।

तज्हीक (تضحیک) अ. स्त्री.–हँसी उड़ाना, ठठोल करना; तिरस्कार करना, निन्दा करना।

तज्हीज (تجہیز) अ. स्त्री.–मुर्दे के लिए जरूरी सामान तैयार करना, जैसे–कफ़न के लिए कपड़ा, ग़ुस्ल के लिए इत्र, काफ़ूर, क़ब्र के लिए तख़्ते, गुलाबजल आदि, यह शब्द अकेला प्रयुक्त नहीं है तक्फ़ीन के साथ आकर 'तज्हीज़ो तक्फ़ीन' बोला जाता है, जैसे—तक्फ़ीन अलग नहीं बोला जाता।

तज्हीजोतक्फ़ीन (تجہیزوتکفین) अ. स्त्री.–मुर्दे को यथा-नियम नहला-धुलाकर और कफ़न में लपेटकर जनाज़ा तैयार करना।

तज्हीब (تذہیب) अ. स्त्री.–सोना चढ़ाना, सोने का मुलम्मा चढ़ाना, सोने का खोल चढ़ाना।

ततब्बो' (تتبع) अ. पुं.–अनुसरण, अनुकरण, तक़्लीद, इत्तिबाअ।

ततर (تتر) फ़ा. पुं.–'तातार' का लघुरूप, दे. 'तातार'।

ततरी (تتری) फ़ा. वि.–तातार का; तातारियों का; तातार या तातारियों से सम्बद्ध।

तताबुक़ (تطابق) अ. पुं.–समानता, सदृशता, बराबरी; तुलना, उपमा, मुशाबहत।

ततार (تتار) फ़ा. पुं.–'तातार' का लघुरूप, दे. 'तातार'।

ततावुल (تطاول) अ. पुं.–अहंकार, घमंड; द्रोह, सरकशी; अत्याचार, दस्तदराज़ी।

ततिम्मः (تتمہ) अ. पुं.–हर चीज़ का बक़ीया और आख़िरी हिस्सा, किताब का शेष अंश जो बाद को उसमें जोड़ा जाय, पूरक, परिशिष्ट।

तत्बीक़ (تطبیق) अ. स्त्री.–एक चीज़ को दूसरे के मुताबिक़ करना।

तत्वील (تطویل) अ. स्त्री.–लम्बा करना, फैलाना; लम्बाई, फैलाव।

तत्हीर (تطہیر) अ. स्त्री.–पवित्र करना, शुद्ध करना, पाक करना; पवित्रता, शुद्धता, पाकीज़गी।

तदब्बुर (تدبر) अ. पुं.–काम करने से पहले उसका परिणाम सोचना; दूरदर्शिता, दूरबीनी।

तदय्युन (تدین) अ. पुं.–धर्मनिष्ठता, दीनदारी; सत्य-निष्ठता, दियानतदारी।

तदर्व (تدرو) फ़ा. पुं.–एक पक्षी, चकोर, दे. 'तज़र्व'।

तदाख़ुल (تداخل) अ. पुं.–एक चीज़ का दूसरी चीज़ में दाख़िल होना; एक खाना हज़्म होने से पहले दूसरा खाना खा लेना।

तदख़ुले फ़स्लैन (تداخل فصلین) अ. पुं.–दो ऋतुओं की संधि, दो ऋतुओं का संधिकाल, दो मौसिमों के मिलने का समय।

तदाबीर (تدابیر) अ. स्त्री.–'तद्बीर' का बहु., तद्बीरें।

तदारुक (تدارک) अ. पुं.–खायी हुई चीज़ का पता लगाना; रोक, प्रतिरोध; सुधार, इस्लाह; यत्न, उपाय, तद्बीर; ऐसा उपाय जिससे कोई बुरा काम रुक जाय।

तदावी (تداوی) अ. स्त्री.–चिकित्सा, उपचार, इलाज।

तदैयुन (تدین) अ. पुं.–दे. 'तदय्युन'।

तद्क़ीक़ (تدقیق) अ. स्त्री.–बारीक करके कूटना; ख़ूब सोचना-विचारना।

तद्फ़ीन (تدفین) अ. स्त्री.–मुर्दे को ज़मीन में गाड़ना, दफ़्न करना, दफ़न से बना।

तद्बीर (تدبیر) अ. स्त्री.–उपाय, तरकीब; प्रयत्न, कोशिश; उपचार, इलाज; चालाकी, चतुराई, फ़ित्रत; प्रबंध, इंतिज़ाम; पेशबंदी, एहतियात।

तद्बीरे मंज़िल (تدبیر منزل) अ. स्त्री.–घर-गृहस्थी का प्रबंध।

तद्रीज (تدریج) अ. स्त्री.–धीरे-धीरे होना, शनैः शनैः।

तद्रीस (تدریس) अ. स्त्री.–पढ़ाना, पाठन।

तद्वीन (تدوین) अ. स्त्री.–एकत्र करना, संग्रह करना; रचना, बनाना, संपादन करना।

तद्वीर (تدویر) अ. स्त्री.–चारों ओर घुमाना; ज्योतिष की परिभाषा में आकाश का वह विशेष भाग जो किसी आकाश के अंतर्गत हो।

तदहीन (تدہین) अ. स्त्री.–तेल चुपड़ना; चिकना करना।

तनः (تنہ) फ़ा. पुं.–वृक्ष का वह भाग जो उसकी जड़ से वहाँ तक हो जहाँ से डालियाँ निकलती हैं, पेड़ी।

तन (تن) फ़ा. पुं.–देह, शरीर, काया, वपु, तनु, गात्र, जिस्म, बदन; व्यक्ति, पुरुष, आदमी।

तनआसाँ (تن آساں) फ़ा. वि.–दे. 'तनासाँ'।

तनआसानी (تن آسانی) फ़ा. स्त्री.–दे. 'तनासानी'।

तनख़्वाह (تنخواہ) फ़ा. स्त्री.–काम की वह उज्रत जो महीने पर मिले, वेतन, तलब।

तनख़्वाहदार (تنخواہدار) फ़ा. वि.–तनख़्वाह पर काम करनेवाला, तनख़्वाह पानेवाला, वेतनभोगी, भृतक।

तनग़्ग़ुस (تنغّص) अ. पुं.–खिन्नता, मलिनता, तकद्दुर, बदमज़गी।

तनज़्ज़ुल (تنزل) अ. पुं.–नीचे उतरना, नीचे आना; अवनति, पतन, ज़वाल; दरजा टूटना, पदह्रास, तनख़्वाह में कमी होना; ह्रास, कमी, इनहितात, अपदस्थता।

तनदिही (تن دهی) फा. स्त्री.–तन्मयता, संलग्नता, इन्हिमाक; पराक्रम, परिश्रम, मेहनत।

तनदुरुस्त (تندرست) फा. वि.–जिसके शरीर में किसी प्रकार का विकार न हो, निरामय, नीरोग, सुस्थ, स्वस्थ।

तनदुरुस्ती (تن درستی) फा. स्त्री.–स्वास्थ्य, नीरोगिता, सेहतमंदी।

तनपरस्त (تن پرست) फा. वि.–काम न करनेवाला, आलसी; आरामतलब, सुखेच्छु।

तनपरस्ती (تن پرستی) फा. स्त्री.–निकम्मापन, निठल्लापन, आलस, काहिली, सुस्ती।

तनपर्वर (تن پرور) फा. वि.–दे. ‘तनपरस्त’।

तनपर्वरी (تن پروری) फा. स्त्री.–दे. ‘तनपरस्ती’।

तनफ़्फ़ुर (تنفر) अ. पुं.–घृणा, नफ़रत, घिन।

तनफ़्फ़ुस (تنفس) अ. पुं.–साँस की आमदरफ़्त, प्राणवृत्ति; श्वासकास, श्वास रोग, दमे की बीमारी।

तन ब तक़्दीर (تن به تقدیر) फा. अ. अव्य.–भाग्य के सहारे, क़िस्मत के भरोसे पर, जो भी हो।

तनब्बुह (تنبه) अ. पुं.–आगाह होना, जानना; सतर्क होना, चेत जाना, सावधान होना, होशियार हो जाना।

तनव्वो’ (تنوع) अ. पुं.–चित्र-विचित्र होना, रंगबिरंगी होना, भाँति-भाँति होना; नवीनता, नयापन, जिद्दत।

तनहा (تنها) फा. वि.–एकाकी, अकेला; एकमात्र, केवल, सिर्फ़; रिक्त, ख़ाली।

तनहाई (تنهائی) फा. स्त्री.–अकेलापन; एकान्त, गोशा।

तना’उम (تنعم) अ. पुं.–लाड़-प्यार और सुख-चैन में जीवन व्यतीत हो, सुख, चैन, लाड़-प्यार, ऐश।

तनाक़ुज़ (تناقض) अ. पुं.–एक दूसरे के विपरीत और उलटा होना; प्रतिकूलता, विपरीतता; वैमनस्य, मनमुटाव, रंजिश।

तनाक़ुस (تناقص) अ. पुं.–दोष, ऐब; त्रुटि, भूल; अशुद्धि, ग़लती।

तनाज़ो’ (تنازع) अ. पुं.–संघर्ष, कशाकश, खींचातानी।

तनाज़ो’ लिलबक़ा (تنازع للبقا) अ. पुं.–ज़िंदा रहने के लिए परिश्रम और पराक्रम, जीवन-संघर्ष।

तनाफ़ुर (تنافر) अ. पुं.–एक दूसरे से घृणा करना, एक दूसरे से भागना; साहित्य की परिभाषा के अनुसार किसी पद में दो शब्दों के उन दो अक्षरों का पास-पास होना जिनका उद्गम एक हो।

तनाब (طناب) अ. स्त्री.–रावटी और तंबू में लगनेवाली रस्सी, जिसके सहारे वे खड़े होते हैं।

तनाबे अमल (طناب امل) अ. स्त्री.–उम्मेद की डोरी, आशारूपी डोर, आशा-सूत्र; आशा, आस, उम्मेद।

तनाबे उम्र (طناب عمر) अ. स्त्री.–आयुसूत्र, आयुकाल, उम्र की लम्बाई।

तनावर (تناور) फा. वि.–स्थूल, मोटा-ताज़ा; दृढ़ांग, क़वीजुस्स:।

तनावुल (تناول) अ. पुं.–भोजन आदि खाना; सहन करना, उठाना।

तनासाँ (تن آساں) फा. वि.–काहिल, सुस्त, आलसी, आरामतलब, निकम्मा, बेकार।

तनासानी (تن آسانی) फा. स्त्री.–निकम्मापन, आलस, सुस्ती, आरामतलबी।

तनासुख़ (تناسخ) अ. पुं.–प्राण का एक शरीर से निकलकर दूसरे शरीर में जाना, आवागवन, आवागमन।

तनासुब (تناسب) अ. पुं.–परस्पर निस्बत रखना; किसी पदार्थ के तमाम अंगों में जिसको जितना होना चाहिए उतना होना; किन्हीं दो चीज़ों में परस्पर मुनास्बत।

तनासुबे अज्ज़ा (تناسب اجزا) अ. पुं.–किसी नुस्ख़े की तमाम दवाओं की बाहमी मुनासबत, जैसे—किसी साबुन के नुस्ख़े में कास्टिक १ सेर, सेलीकेट १$\frac{१}{२}$ सेर, पानी चार सेर, तेल आठ सेर आदि, भागानुपात।

तनासुबे आ’ज़ा (تناسب اعضا) अ. पुं.–शरीर में अंगों का सुडौलपन, अंग-सौष्ठव, अंग-संहति, अंगानुपात।

तनासुल (تناسل) अ. पुं.–नर और मादा का मिलकर संतान उत्पन्न करना, नस्ल बढ़ाना। यह शब्द अकेला प्रयुक्त नहीं होता, तवालुद के साथ ‘तवालुदो तनासुल’ बोला जाता है, दे. ‘तवालुद’।

तनीन (طنین) अ. स्त्री.–भिनभिनाहट, सनसनाहट।

तनूर (تنور) फा. पुं.–ख़मीरी रोटी पकाने की गहरी डहरनुमा भट्ठी, तंदूर, तन्नूर।

तने तन्हा (تن تنها) फा. वि.–बिलकुल अकेला, एकाकी, नक़ददम, फ़क़तदम।

तने बेजाँ (تن بے جاں) फा. वि.–शव, लाश, प्राणहीन शरीर।

तनोतोश (تن وتوش) फा. पुं.–शरीर का भारी भरकमपन, मोटाताज़ापन।

तनोमंद (تنومند) फा. वि.–स्वस्थ, नीरोग, तन्दुरुस्त; हृष्टपुष्ट, मोटा-ताज़ा, दृढ़ांग।

तन्कः (تنکہ) तु. पुं.–प्रचलित मुद्रा, चाहे वह सोने की हो या चाँदी की या ताँबे की या किसी अन्य धातु की।

तनक़ियः (تنقیہ) अ. पुं.–पेट साफ़ करना, जुलाब लेना, विरेचन।

तन्क़ियए ताम (تنقیۂ تام) अ. पुं.–ऐसा जुलाब जिससे शरीर के सारे अंगों का दूषित मवाद निकल जाय।

तन्क़ीद (تنقید) अ. स्त्री.–परख, पड़ताल, समीक्षा; किसी पुस्तक या निबंध के मज़मून की समीक्षा, समालोचना।

तन्क़ीस (تنقیص) अ. स्त्री.–कम करना, घटाना; तिरस्कार, अपमान, बेइज़्ज़ती; निन्दा, हजो।

तन्क़ीह (تنقیح) अ. स्त्री.–किसी चीज़ में से मिलावट निकालकर उसे शुद्ध और निर्मल करना; न्यायालय की परिभाषा में वाद या अभियोग के आधारभूत विषयों की समीक्षा।

तन्क़ीहतलब (تنقیح طلب) अ. वि.–जिस विषय की तन्क़ीह होना आवश्यक हो।

तन्नाज़ (طنّاز) अ. वि.–बहुत अधिक व्यंगोक्तियाँ कसनेवाला (वाली), बहुत तंज़ करनेवाला (वाली); बहुत ही इठलाकर और नाज़ से चलनेवाला (वाली); बहुत अधिक हावभाव और नाज़-नखरे दिखानेवाली।

तन्मियः (تنمیہ) अ. पुं.–बढ़ना, विकास, नश्वोनमा।

तन्वीन (تنوین) अ. स्त्री.–अनुस्वार पैदा करना, नकार का स्वर निकालना; अरबी शब्द के अंतिम अक्षर पर के दो 'ज़बर', दो 'ज़ेर' या दो 'पेश' जैसे, فوراً पर के दो ज़बर।

तन्वीर (تنویر) अ. स्त्री.–प्रकाशित करना, रौशन करना; प्रकाश, ज्योति, रौशनी, नूर,—"उसके जल्वों में खिंचा हुस्न का नक़शा कामिल, उसकी तन्वीर में तस्वीर की रानाई है।"

तपंचः (تپنچہ) फा. पुं.–'तपांचः' का लघुरूप, थप्पड़; पिस्तौल, तमंचा।

तप (تپ) फा. स्त्री.–ताप, तपन, गर्मी; ज्वर, बुख़ार।

तपाँ (تپاں) फा. वि.–जलता हुआ, तपा हुआ; उत्तप्त; तड़पता हुआ, फड़कता हुआ।

तपांचः (طپانچہ-تپانچہ) फा. पुं.–तमाचा, थप्पड़, चाँटा।

तपाक (تپاک) फा. पुं.–गर्मजोशी, संभ्रान्ति; आवभगत, तवाज़ो'; प्रेम, प्यार; सादर, सोत्साह।

तपिश (تپش) फा. स्त्री.–पतन, गरिमा, गर्मी; दहन, जलन, सोज़िश; मनस्ताप, हार्दिक व्यथा, दिली ग़म; आतुरता, व्याकुलता, बेक़रारी; आतप, धूप।

तपीदः (تپیدہ) फा. वि.–तपा हुआ, उत्तप्त, तप्त।

तपे कुह्नः (تپ کہنہ) फा. स्त्री.–पुराना बुख़ार; जीर्ण ज्वर।

तपे दरूँ (تپ دروں) फा. स्त्री.–मनस्ताप, मानसिक व्यथा, रूही तकलीफ़, मनोदाह।

तपे दिक़ (تپ دق) फा. स्त्री.–राजयक्ष्मा, क्षयरोग, यक्ष्मा, क्षयी रोग।

तपे नौबत (تپ نوبت) फा. अ. स्त्री.–बारी से आनेवाला ज्वर, जैसे—इकतरा, तिजारी, चौथिया आदि।

तपे मोहरक़ः (تپ محرقہ) फा. अ. स्त्री.–मीआदी बुख़ार, टाईफ़ाइड, मोतीझरा।

तपे लर्ज़ः (تپ لرزہ) अ. फा. स्त्री.–कपकपी के साथ आनेवाला बुख़ार, मलेरिया, शीत ज्वर।

तपोलर्ज़ः (تپ و لرزہ) अ. फा. पुं.–बुख़ार और कपकपी।

तफ़ (تف) अ. स्त्री.–उष्णिमा, गरिमा, गर्मी, हरारत।

तफ़क़्क़ुद (تفقد) अ. पुं.–खोई हुई चीज़ की तलाश, खोज; दया, कृपा, अनुकंपा, मेहरबानी।

तफ़क्कुर (تفکر) अ. पुं.–चिन्ता, शोच, फ़िक्र; भय, शंका, अंदेशा।

तफ़क्कुरात (تفکرات) अ. पुं.–चिन्ताएँ, फ़िक्रें, 'तफ़क्कुर' का बहुवचन।

तफ़क्कुह (تفکہ) अ. पुं.–मेवा खाना, फल खाना।

तफ़ज़्ज़ुल (تفضل) अ. पुं.–श्रेष्ठता, पुनीतता, बुज़ुर्गी; दया, कृपा, इनायत; दान, प्रदान, बख़शिश।

तफ़त्तुत (تفتت) अ. पुं.–टुकड़े-टुकड़े हो जाना, टूटकर रेज़ा-रेज़ा हो जाना, चिथरा हो जाना।

तफ़न्नुन (تفنن) अ. पुं.–मनोरंजन, मनोविनोद, हँसी-मज़ाक़, तफ़ीह; रंग-बिरंगी होना, विचित्रता।

तफ़न्नुने तब्अ (تفنن طبع) अ. पुं.–आमोद-प्रमोद, मनोविनोद, दिल का बहलाव।

तफ़र्रुक़ (تفرق) अ. पुं.–अलग-अलग होना, भिन्न-भिन्न होना।

तफ़र्रुक़े इत्तिसाल (تفرق اتصال) अ. पुं.–क्षति, घाव, ज़ख़्म।

तफ़र्रुज (تفرج) अ. पुं.–दरिद्रता और हीनता से समृद्धि और उन्नति की ओर आना; सैर, तमाशा, क्रीड़ा, कौतुक, आनन्द-विहार।

तफ़र्रुजगाह (تفرج گاہ) अ. फा. स्त्री.–सैर-तमाशे का स्थान, तफ़ीहगाह, क्रीड़ास्थल, विनोदस्थल।

तफ़र्रुद (تفرد) अ. पुं.–अद्वितीय होना, अनुपम होना, लासानी होना; एकान्तवासी होना, गोशानशीन होना।

तफ़ल्सुफ़ (تفلسف) अ. पुं.–विज्ञान, हिकमत।

तफ़व्वुक़ (تفوق) अ. पुं.–श्रेष्ठता, प्रधानता, बड़ाई, तर्जीह।

तफ़ह्हुश (تفحش) अ. पुं.–गाली-गलौज करना, फ़ुहश बकना; अश्लीलता, अशिष्टता, फ़क्कड़पन, 'फ़ुहुश' से बना।

तफ़ह्हुस (تفحص) अ. पुं.–खोज लगाना, ढूँढ़ना, तलाश करना; खोज, तलाश, गवेषणा।

तफ़ाउल (تفاؤل) अ. पुं.–शगुन विचारना, फ़ाल लेना।

तफ़ाख़ुर (تفاخر) अ. पुं.–गर्व, अभिमान, फ़ख़्र, गौरव।

तफ़ारीक़ (تفاریق) अ. स्त्री.–'तफ़्रीक़' का बहु., जुदाइयाँ; फ़र्क़; क़िस्तें।

तफ़ारुक़ (تفارق) अ. पुं.–एक दूसरे से जुदा होना, पृथक्ता, अलाहिदगी।

तफ़ावुज़ (تفاوض) अ. पुं.–साझा, भागीदारी; परस्पर परामर्श करना; विचार-विनिमय।

तफ़ावुत (تفاوت) अ. पुं.–अन्तर, फ़ासिला, दूरी; पृथक्ता, जुदाई; विलंब, देरी।

तफ़ावुल (تفاول) अ. पुं.–अच्छा शकुन लेना; शकुन विचारना।

तफ़ासीर (تفاسیر) अ. स्त्री.–'तफ़्सीर' का बहु., तफ़्सीरें, महाभाष्य।

तफ़ासील (تفاصیل) अ. स्त्री.–'तफ़्सील' का बहु., तफ़्सीलें, विवरण।

तफ़ासुल (تفاصل) अ. पुं.–परस्पर अलग-अलग होना।

तफ़ूलियत (طفولیت) अ. स्त्री.–बाल्यावस्था, बचपन।

तफ़्ख़ीम (تفخیم) अ. स्त्री.–श्रेष्ठ मानना, श्रेष्ठ बनाना।

तफ़्जीअ (تفجیع) अ. स्त्री.–पीड़ित् करना, दुःखित करना।

तफ़्ज़ील (تفضیل) अ. स्त्री.–एक को दूसरे पर प्रधानता देना; प्रधानता, तर्जीह; हज़रत अली को पहले तीन ख़लीफ़ाओं से श्रेष्ठ मानना।

तफ़्ज़ीली (تفضیلی) अ. पुं.–वह सुन्नी मुसलमान जो हज़रत अली को बाक़ी ख़लीफ़ाओं में सर्वश्रेष्ठ मानता हो।

तफ़्ज़ीह (تفضیح) अ. स्त्री.–निन्दा करना, बदनाम करना; निंदा, अपयश, बदनामी।

तफ़्तः (تفتہ) फ़ा. वि.–तप्त, दग्ध, जला हुआ।

तफ़्तःजाँ (تفتہ جاں) फ़ा. वि.–दे. 'तफ़्तः जिगर'।

तफ़्तःजिगर (تفتہ جگر) फ़ा. वि.–दिलजला, दग्धहृदय; प्रेमी, आशिक़।

तफ़्ताँ (تفتاں) फ़ा. पुं.–रौग़नी पराठा; धूप या आग पर सेंकी हुई चीज।

तफ़्तीत (تفتیت) अ. स्त्री.–टुकड़े-टुकड़े करना, चूर-चूर करना।

तफ़्तीदः (تفتیدہ) फ़ा. वि.–तपा हुआ, गर्म किया हुआ।

तफ़्तीर (تفطیر) अ. स्त्री.–रोज़ा खुलवाना।

तफ़्तीश (تفتیش) अ. स्त्री.–खोज, तलाश, गवेषणा; पुलिस अफ़सर द्वारा किसी केस की जाँच-पड़ताल।

तफ़्तीह (تفتیح) अ. स्त्री.–खोलना।

तफ़्तीहे मसामात (تفتیح مسامات) अ. स्त्री.–पसीना के लिए शरीर के रोमकूपों को खोलना, (दवाओं द्वारा) वफारा द्वारा।

तफ़्नीद (تفنید) अ. पुं.–भर्त्सना करना, डाँटना, फटकारना।

तफ़्रिक़ः (تفرقہ) अ. पुं.–फूट, परस्पर विरोध; शत्रुता, दुश्मनी; पृथक्ता, जुदाई।

तफ़्रिक़ःअंगेज़ (تفرقہ انگیز) अ. फा. वि.–दे. 'तफ़्रिक़ःअंदाज़'।

तफ़्रिकःअंगेज़ी (تفرقہ انگیزی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तफ़्रिक़ःअंदाज़ी'।

तफ़्रिक़ःअंदाज़ (تفرقہ انداز) अ. फा. वि.–दो व्यक्तियों या दलों में परस्पर फूट डलवानेवाला।

तफ़्रिक़ःअंदाज़ी (تفرقہ اندازی) अ. फा. स्त्री.–परस्पर विरोध-भाव उत्पन्न करना।

तफ़्रिक़ःपरदाज़ (تفرقہ پرداز) अ. फा. वि.–दे. 'तफ़्रिक़: अंदाज़'।

तफ़्रिक़ःपरदाज़ी (تفرقہ پردازی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तफ़्रिक़ःअंदाज़ी'।

तफ़्रिक़ःपर्वर (تفرقہ پرور) अ. फा. वि.–दे. 'तफ़्रिक: अंदाज़'।

तफ़्रिक़ःपर्वरी (تفرقہ پروری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तफ़्रिकःअंदाज़ी'।

तफ़्रिकः सामाँ (تفرقہ ساماں) अ. फा. वि.–फूट के सामान एकत्र करनेवाला, फूट फैलानेवाला।

तफ़्रिक़ः सामानी (تفرقہ سامانی) अः फा. स्त्री.–फूट के सामान एकत्र करके फूट फैलाना।

तफ़्रीक़ (تفریق) अ. स्त्री.–पृथक् करना, अलग करना; फूट डालना, दिलों में भेद डालना; पृथक्ता, जुदाई; फूट, तफ़्रिक़ः; बड़ी संख्या में से छोटी संख्या घटाना, बाकी, व्यवकलन।

तफ़्रीत (تفریط) अ. स्त्री.–किसी काम में आलस्य और बेपरवाही करना; नष्ट करना, बरबाद करना।

तफ़्रीद (تفرید) अ. स्त्री.–अकेला रह जाना, सबसे जुदा हो जाना; अकेला छोड़ देना।

तफ़्रीश (تفریش) अ. स्त्री.–फ़र्श बिछाना, फ़र्श बिछाकर मकान सजाना।

तफ़्रीस (تفریس) अ. स्त्री.–किसी दूसरी भाषा के शब्द को फ़ार्सी बनाना।

तफ़्रीह (تفریح) अ. स्त्री.–मनोविनोद, मनोरंजन, दिल्लगी मज़ाक़; सैर-सपाटा, विहार; क्रीड़ा, कौतुक, खेल-तमाशा; वक़्त काटने के लिए मनबहलाव।

तफ़्रीहगाह (تفریح گاہ) अ. फा. स्त्री.–तफ़्रीह की जगह, विनोदस्थल, क्रीड़ा-क्षेत्र।

तफ़्रीहन (تفریحاً) अ. वि.–तफ़्रीह और मनबहलाव के लिए; मज़ाक़ के तौर पर, दिल्लगी में।

तफ़्रीही (تفریحی) अ. वि.–मनबहलाव का; मनबहलाव से सम्बन्ध रखनेवाला।

तफ़्रीहे तब्अ (تفریح طبع) अ. स्त्री.–मनबहलाव, मनोविनोद, मनोरंजन।

तफ़्वीज़ (تفویض) अ. स्त्री.–सिपुर्द करना, हवाले करना, हस्तान्तरण।

तफ़्साँ (تفساں) फा. वि.–बहुत अधिक गर्म।

तफ़्सीदः (تفسیدہ) फा. वि.–बहुत गर्म।

तफ़्सीर (تفسیر) अ. स्त्री.–व्याख्या, तश्रीह; किसी धर्म-ग्रंथ की व्याख्या, भाष्य।

तफ़्सील (تفصیل) अ. स्त्री.–विस्तार, विवरण; स्पष्टता, तौज़ीह।

तफ़्हीम (تفہیم) अ. स्त्री.–समझाना, बोध कराना।

तब (تب) फा. स्त्री.–दे. 'तप', दोनों शुद्ध हैं।

तबक़ः (طبقہ) अ. पुं.–दे. 'तब्क़ः', शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में 'तब्क़ः' ही बोलते हैं।

तबक़ (طبق) अ. पुं.–बड़ी रिकाबी, थाल; परत, तह; तल, सतह; भग, योनि।

तब्क़गर (طبق گر) अ. फा. वि.–तब्क़ बनानेवाला।

तबक़चः (طبقچہ) अ. फा. पुं.–छोटा तबाक़, छोटी रिकाबी।

तबक़ज़न (طبق زن) अ. फा. स्त्री.–चपटी लड़ानेवाली स्त्री, सा'तरबाज़।

तबक़ात (طبقات) अ. पुं.–'तबक़' का बहु., तब्क़े, परतें।

तबक़ातुलअर्ज़ (طبقات الارض) अ. पुं.–पृथ्वी के परत, ज़मीन के भीतरी परत या दर्जे।

तबख़ालः (تب خالہ) फा. पुं.–वह छोटा फफोला जो गर्मी से होंठों पर निकल आता है।

तबख़्तुर (تبختر) अ. पुं.–नाज़ और ग़ुरूर से चलना; नाज़, ग़ुरूर।

तबद्दुल (تبدل) अ. पुं.–बदल जाना; बदलना, बदला करना; परिवर्तन, इन्क़िलाब।

तबन्नी (تبنّی) अ. स्त्री.–किसी बालक को गोद लेना, बेटा बनाना।

तबर (تبر) फा. पुं.–कुल्हाड़ा, फरसा।

तबरज़द (طبرزد) फा. स्त्री.–क़ंद, शर्करा, मिश्री, सफ़ेद दानेदार चीनी।

तबरज़न (تبرزن) फा. वि.–कुल्हाड़ी चलानेवाला, लकड़हारा; तबर बाँधे हुए सिपाही।

तबरज़ीं (تبرزیں) फा. पुं.–वह तबर जो सवार की ज़ीन के साथ हर वक़्त कसा रहता है।

तबर्रा (تبرا) अ. पुं.–उपेक्षा, घृणा, बेज़ारी; धिक्कार, ला'नत, मलामत; गाली-गलौज, अपशब्द; लानत मलामत जो शीआ लोग पहले तीन ख़लीफ़ाओं की करते हैं।

तबर्राई (تبرائی) अ.फा. वि.–गालियाँ बकनेवाला; तीनों ख़लीफ़ाओं को बुरा-भला कहनेवाला, तबर्राबाज़।

तबर्राबाज़ (تبرّا باز) अ. फा. वि.–दे. 'तबर्राई'।

तबर्रुक (تبرک) अ. पुं.–वह चीज़ जिसमें बरकत होने का विश्वास हो; वह चीज़ जो किसी महात्मा या दरवेश से मिले; वह प्रसाद जो किसी बुज़ुर्ग आदि की फ़ातहा का हो; बुज़ुर्गों से सम्बन्ध रखनेवाली चीज़; बहुत थोड़ी-सी वस्तु (व्यंग); प्रसाद।

तबर्रुकन (تبرکاً) अ. वि.–तबर्रुक के तौर पर; बरकत और मंगल के लिए; प्रसादरूप से।

तबर्रुकात (تبرکات) अ. पुं.–'तबर्रुक' का बहु., तबर्रुक की चीज़ें; बुज़ुर्गों से सम्बद्ध चीज़ें।

तबस्सुम (تبسم) अ. पुं.–हलकी हँसी; मुस्कुराहट, मृदुहास, स्मित, मंदहास, मुस्कान।

तबस्सुमकुनाँ (تبسم کناں) अ. फा. वि.–मुस्कुराता हुआ।

तबह (تبہ) फा. वि.–'तबाह' का लघु., दे. 'तबाह'।

तबहकार (تبہ کار) फा. वि.–दे. 'तबाहकार'।

तबहहाल (تبہ حال) फा. वि.–दे. 'तबाह हाल'।

तबह्हुर (تبحر) अ. पुं.–विद्वत्ता, पांडित्य, इल्म की गहराई, धुरंधरता।

तबाअत (طباعت) अ. स्त्री.–मुद्रण, छपाई।

तबाउद (تباعد) अ. पुं.–एक दूसरे से दूर होना; अन्तर, दूरी, फ़ासिला।

तबाए (طبائع) अ. स्त्री.–'तबीअत' का बहु., प्रकृतियाँ, तबीअतें।

तबाक़ (طباق) तु. पुं.–बड़ी रिक़ाबी, थाली, परात; खाना मेज का बर्तन, ख़्वान।

तबाक़ी (طباقی) उ. वि.–दस्तरख़्वान के साथी, खाने भर के मीत, हाली मवाली।

तबादुर (تبادر) अ. पुं.–परस्पर दौड़ना; दौड़ में आगे निकल जाना; किसी काम को दूसरे से पहले कर लेना।

तबादुरे ज़ेह्न (تبادرذہن) अ. पुं.–ज़ेह्न का किसी ओर तुरंत जाना, तुरंत ही कोई बात ध्यान में आना।

तबादुल (تبادل) अ. पुं.–बदलना, एक चीज़ की जगह दूसरी चीज़ लेना; एक चीज़ के स्थान पर दूसरी चीज़ रखना।

तबायुन (تباین) अ. पुं.–विपरीतता, प्रतिकूलता, उलटापन; अंतर, भेद, फ़र्क़; पृथक्ता, अलाहिदगी।

तबार (تبار) फा. पुं.–वंश, कुल, गोत्र, ख़ानदान।

तबाशीर (تباشیر) फा. पुं.–वंशलोचन, तवक्षीर, एक प्रसिद्ध दवा; सवेरे की सफ़ेदी, ऊषा, उषा।

तबाह (تباہ) फा. वि.–नष्ट, ध्वस्त, बरबाद; जनशून्य, निर्जन, वीरान; निकृष्ट, दूषित, ख़राब; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल।

तबाहकार (تباہکار) फा. वि.–तबाही मचानेवाला, बरबादी फैलानेवाला, विनाशकारी; अत्याचारी, ज़ालिम; बदचलन, कदाचारी।

तबाह रोज़गार (تباہ روزگار) फा. वि.–ज़माने की गर्दिश का शिकार, कालचक्रग्रस्त, दुर्दशाप्राप्त, भाग्यध्वस्त।

तबाहहाल (تباہحال) फा. अ. वि.–मुसीबत का मारा, कालचक्र-पीड़ित; मुफ़्लिस, दरिद्र, निर्धन।

तबाही (تباہی) फा. स्त्री.–विनाश, बरबादी; विध्वंस, ख़राबी, खँडहरपन; अत्याचार, ज़ुल्म; निर्धनता, दरिद्रता, मुफ़्लिसी; आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत।

तबाहीज़दः (تباہی زدہ) फा. वि.–आफ़त का मारा, विपत्तिग्रस्त; निर्धन, कंगाल, बेज़र; भाग्यहीन, बदक़िस्मत।

तबीअत (طبیعت) अ. स्त्री.–धर्म, स्वभाव, ख़ासीयत; प्रकृति, निसर्ग, नेचर, जिबिल्लत; स्वभाव, आदत; रुचि, रग़बत, जी; मन, दिल, चित्त; स्वास्थ्य या रोग के दृष्टिकोण से शरीर की दशा, मिज़ाज।

तबीई (طبیعی) अ. वि.–दे. 'तब्ई'; एक वैज्ञानिक शाखा जिसमें शारीरिक परिवर्तनों और गुणों का विवरण होता है; शरीर धर्मशास्त्र।

तबीख़ (طبیخ) अ. पुं.–औटाई हुई दवा आदि का पानी, जोशाँदः।

तबीब (طبیب) अ. पुं.–दवा करनेवाला, उपचारक, चिकित्सक, वैद्य।

तबीरः (تبیرہ) फा. पुं.–नक़्क़ारा, धौंसा, दुन्दुभी, भेरी।

तबीरःज़न (تبیرہزن) फा. वि.–नक़्क़ारा बजानेवाला, भेरीकार।

तब्अ (طبع) अ. स्त्री.–स्वभाव, आदत; मुद्रण, छापना।

तब्अ आज़माई (طبع آزمائی) अ.फा. स्त्री.–काव्य-रचनाशक्ति की जाँच, किसी समस्या की पूर्ति या किसी विषय पर कविता लिखना।

तब्अज़ाद (طبع زاد) अ. फा. वि.–मन की प्रेरणा से उत्पन्न, गढ़ंत, अपनी विचार-शक्ति की पैदावार, कल्पित, फ़र्ज़ी।

तब्अन् (طبعاً) अ. वि.–स्वभावतः, स्वभाव से, दिल से।

तब्ई (طبعی) अ. वि.–स्वाभाविक, प्राकृतिक, नेचुरल, "अय शम्मा तेरी उम्र तबई (तबीई) है एक रात"–"ज़ौक़"।

तब्ईज़ (تبئیض) अ. स्त्री.–सफ़ेद करना, सफ़ेदी फेरना।

तब्ईन (تبئین) अ. स्त्री.–व्यक्त करना, ज़ाहिर करना; कहना, बयान करना।

तब्ईयत (تبعیت) अ. स्त्री.–अनुकरण, पदानुसरण, पैरवी।

तब्ए रवाँ (طبع رواں) अ. फा. स्त्री.–प्रतिभाशील तबीअत, तेज़ तबीअत, प्रवाहित कल्पना-शक़्ति, उर्वरा प्रतिभा।

तब्ए रसा (طبع رسا) अ.फा. स्त्री.–ऊँची उड़ान भरनेवाली तबीअत या काव्य-शक्ति।

तब्क़ः (طبقہ) अ. पुं.–वर्ग, श्रेणी, दर्जा; लोक, आलम; परत, तह; तल, दर्जा।

तब्क़ःवारानः (طبقہوارانہ) अ.फा.वि.–वर्ग और श्रेणीवाला, छोटे बड़ेवाला; धार्मिक, फ़िर्क़ा वारानः।

तब्ख़ (طبخ) अ. पुं.–पकना, पाक।

तब्ख़ीर (تبخیر) अ. स्त्री.–एक रोग जिसमें खाने के पश्चात् आमाशय से भाप उठती है; भाप बनाना, वाष्पीकरण।

तब्ज़ीर (تبزیر) अ. स्त्री.–फ़ुज़ूलख़र्ची करना, अपव्यय, अतिव्यय; तितर-बितर करना, अस्त-व्यस्त करना।

तब्जील (تبجیل) अ. स्त्री.–सत्कार और आदर करना; श्रेष्ठ और महान् जानना।

तब्दील (تبدیل) अ. स्त्री.–बदलना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना; एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना।

तब्दीली (تبدیلی) अ. स्त्री.–परिवर्तन, उथल-पुथल; एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना, स्थानांतरण; एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना; क्रान्ति, इनक़िलाब।

तब्दीले आबोहवा (تبدیل آب وہوا) अ. फा. स्त्री.–जलवायु का बदलना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

तब्दीले मज़्हब (تبدیل مزہب) अ. स्त्री.–धर्म-परिवर्तन, मज़हब की तब्दीली।

तब्दीले सूरत (تبدیل صورت) अ. स्त्री.–रूप-परिवर्तन, शक्ल बदल जाना; हुलया बदलना, बहुरूपिया बनना।

तब्दीले हैअत (تبدیل ھئیت) अ.स्त्री.–दे. 'तब्दीले सूरत'।

तब्नियत (تبنیت) अ. स्त्री.–ले पालक बनाना, गोद लेना, मुतबन्ना करना।

तब्बाअ (طباع) अ. वि.–प्रतिभाशाली, ज़हीन, जीनियस।

तब्बाई (طباعی) अ. स्त्री.–प्रतिभा, ज़हानत।

तब्बाख़ (طباخ) अ. पुं.–रोटी पकानेवाला, नानबाई; खाना पकानेवाला, बावरची, सूपकार, रसोइया।

तब्बाख़ी (طباخی) अ. स्त्री.–नानबाई का पेशा; बावरची का पेशा।

तब्रीद (تبرید) अ. स्त्री.–ठंडाई, वह ठंडाई जो जुलाब के बाद दी जाती है।

तब्रेज़ (تبریز) फा. पुं.–ईरान के आज़रबाईजान प्रान्त का एक प्रसिद्ध नगर।

तब्रेज़ी (تبریزی) फा. वि.–तब्रेज़ का निवासी।

तब्लः (طبلہ) फा. पुं.–संदूक़ची, पिटारी; ख़ाल मढ़ा हुआ एक रुखा प्रसिद्ध बाजा, तबला।

तब्ल (طبل) फा. पुं.–दुन्दुभि, भेरी, धौंसा, नक़्क़ारा।

तब्लए अंबर (طبلۂ عنبر) फा. अ. पुं.–अंबर की पिटारी, वह डब्बा जिसमें अंबर रहता है।

तब्लक़ (طبلق) तु. स्त्री.–वह काग़ज़ जो पैकिट बनाने के लिए ऊपर चढ़ाया जाता है; दोनों ओर से खुला हुआ लिफ़ाफ़ा; काग़ज़ों का मुट्ठा।

तब्ली (طبلی) अ. वि.–ढोल-जैसा, ढोलनुमा; ज़लंधर की एक क़िस्म जिसमें पेट ढोल की तरह बजता है।

तब्लीग़ (تبلیغ) अ. स्त्री.–प्रोपेगंडा, प्रचार; किसी बात को दूर तक फैलाना, प्रसार।

तब्लीग़े मज़्हब (تبلیغ مذہب) अ. स्त्री.–धर्म प्रचार, मज़्हब की तब्लीग़।

तब्लेजंग (طبل جنگ) फा. पुं.–लड़ाई में बजनेवाला, नक़्क़ारा, रणभेरी, रणदुन्दुभि।

तब्लोअलम (طبل وعلم) फा. अ. पुं.–लड़ाई का झंडा और नक़्क़ारा; वह झंडा और नक़्क़ारा जो सूबेदारों और वज़ीरों की सवारी के साथ चलता है।

तब्वीब (تبویب) अ. स्त्री.–पुस्तक का परिच्छेदों और अध्यायों में विभाजन, बाब=अध्याय से यह शब्द बना है।

तब्शीर (تبشیر) अ. स्त्री.–शुभ सूचना देना, अच्छी ख़बर सुनाना, आशीर्वाद देना।

तब्सिरः (تبصرہ) अ. पुं.–आँखों में रौशनी पहुँचाना, अँख्यारा करना; आलोचना, समीक्षा, तन्क़ीद।

तब्सिरःनिगार (تبصرہ نگار) अ. फा. वि.–समालोचक, समीक्षक, तन्क़ीदनिगार।

तमए ख़ाम (طمع خام) अ. फा. स्त्री.–झूठी अभिलाषा, ऐसी इच्छा जो पूरी न हो, मृगतृष्णा।

तमक्कुन (تمکن) अ. पुं.–जगह पकड़ना, स्थिर होना, ठहरना, टिकना।

तमत्तो' (تمتع) अ. पुं.–लाभ-प्राप्ति, नफ़ा उठाना; लाभ, प्राप्ति, नफ़ा।

तमद्दुद (تمدد) अ. पुं.–खिचाव, तनाव; लंबा होना, दराज़ होना।

तमद्दुन (تمدن) अ. पुं.–शहर में एक जगह मिल-जुलकर रहना और वहाँ का प्रबंध करना, नागरिकता; किसी देश की वेश-भूषा, उनके रहने-सहने का ढंग और उनके आचार-व्यवहार।

तमन्ना (تمنا) अ. स्त्री.–कामना, लालसा, अभिलाषा, आकांक्षा, स्पृहा, इच्छा, ख़्वाहिश, आरज़ू, "बज़्म में वक़्फ़े नज़र है सद तमन्ना-आफ़्रीं—दिल में है महफ़िल कोई या दिल मेरा महफ़िल में है।"

तमन्नाई (تمنائی) अ. वि.–इच्छुक, अभिलाषी, लालसी, स्पृही, आकांक्षी, लिप्सु, ख़्वाहिशमंद।

तमर (تمر) अ. पुं.–सूखा हुआ खजूर, छुहारा, ख़ुर्मा।

तमर हिंदी (تمر ہندی) फा. स्त्री.–इमली, इमली का पेड़; इमली का फल, तितिड़ी।

तमरिस्तान (تمرستان) अ. फा. पुं.–खजूर का बाग़।

तमर्रुद (تمرد) अ. पुं.–द्रोह, सरकशी; अवज्ञा, नाफ़रमानी; अहंकार, गर्व, घमंड; धृष्टता, ढिठाई, गुस्ताख़ी।

तमल्लुक़ (تملق) अ. पुं.–चापलूसी, लल्लोपत्तो, चाटुकारिता, ख़ुशामद।

तमल्मुल (تململ) अ. पुं.–व्याकुलता, आतुरता, बेचैनी, बेआरामी; जागने और सोने के बीच की अवस्था, जब मनुष्य सोता है परन्तु कुछ-कुछ होश में होता है।

तमव्वुज (تموج) अ. पुं.–पानी का मौजें मारना, पानी में ज़ोर-ज़ोर से लहरें उठना, हिल्लोल।

तमव्वुल (تمول) अ. पुं.–धनाढ्यता, समृद्धि, मालदारी, धनसंपन्नता।

तमश्शी (تمشی) अ. स्त्री.–जाना, चलना, गति, गमन।

तमस्ख़ुर (تمسخر) अ. पुं.–मस्ख़रापन, अभिहास, ठठोल; मनोरंजन, दिल्लगी, तफ़्रीह।

तमस्सुक (تمسک) अ. पुं.–ग्रहण करना, लेना, पकड़ना; ऋणपत्र, क़र्ज़नामा; लेख्य, दस्तावेज़।

तमा' (طمع) अ. स्त्री.–लोभ, लोलुपता, हिर्स; इच्छा, अभिलाषा, ख़्वाहिश।

तमाचः (تماچہ) उ. पुं.–दे. 'तपांचः'।

तमाज़त (تمازت) अ. स्त्री.–धूप की गर्मी, सूरज की गर्मी।

तमाज़ते आफ़्ताब (تمازت آفتاب) अ. फा. स्त्री.–सूरज की गर्मी, धूप की गर्मी।

तमादी (تمادی) अ. स्त्री.–अन्त होना, अन्त तक पहुँच जाना, समाप्त हो जाना; लम्बा होना, बढ़ना, बढ़ जाना।

तमानियत (طمانیت) उ. स्त्री.–संतोष, इत्मीनान; सान्त्वना, तसल्ली; विश्वास, एतिबार, मुख्य शब्द 'तुमानीनत' अथवा 'तुमानीयत' है।

तमाम (تمام) अ. वि.–समस्त, समग्र, सब; संपूर्ण, कुल; समाप्त, ख़त्म; निर्मल, ख़ालिस; अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

तमामतर (تمامتر) अ. फा. वि.–सर्व, सारे का सारा, मुकम्मल, पूरा-पूरा।

तमाशः (تماشہ) फा. पुं.–दे. शु. शब्द 'तमाशा'।

तमाशबीन (تماش بین) फा. वि.–ऐयाश, वेश्यागामी, रंडीबाज़।

तमाशबीनी (تماش بینی) फा. स्त्री.–ऐयाशी, वेश्यागमन, रंडीबाज़ी।

तमाशा (تماشا) अ. पुं.–सैर, तफ़्रीह, विहार; दर्शन, दीदार; आनन्द, लुत्फ़; क्रीड़ा, खेल; बाज़ीगरों या मदारियों आदि का खेल; नाटक आदि का खेल; अद्भुतता, अजूबापन; मनोविनोद, हँसी-मज़ाक़; भाँड़ों या बहुरूपियों की नक़्ल या स्वाँग।

तमाशाई (تماشائی) अ. फा. वि.–तमाशा देखनेवाला या देखनेवाले, कौतुकदर्शी।

तमाशाकुनाँ (تماشاکناں) अ. फा. वि.–सैर करता हुआ, सैर से दिल बहलाता हुआ।

तमाशा ख़ानम (تماشاخانم) अ.तु. स्त्री.–हँसने-हँसानेवाली औरत, ऐसी स्त्री जिसकी बातें बड़ी मनोरंजक हों।

तमाशागर (تماشاگر) अ. फा. वि.–तमाशा करनेवाला, कौतुकी।

तमाशागाह (تماشاگاہ) अ. फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ तमाशा होता हो, क्रीड़ास्थल, कौतुकागार, लीलागृह।

तमाशाबीं (تماشابیں) अ. फा. वि.–तमाशा देखनेवाला, कौतुकदर्शी।

तमासील (تماثیل) अ. स्त्री.–'तिम्साल' और 'तम्सील' का बहु., आकृतियाँ, मूर्तियाँ; उपमाएँ, तश्बीहें।

तमासुख़ (تماسخ) अ. पुं.–सूरत बिगाड़ देना, किसी की सूरत इतनी बिगाड़ देना कि वह पहचान में न आ सके।

तमीज़ (تمیز) अ. स्त्री.–'तम्ईज़' का लघु., विवेक, दो वस्तुओं में अन्तर समझ सकने की बुद्धि; पहचान, परख; शिष्टता, सभ्यता, तहज़ीब; बुद्धि, मेधा, अक़्ल; ज्ञान, संज्ञा, होश; सलीक़ा, कौशल, योग्यता; परीक्षा में मिलनेवाला विशेष चिह्न, डिस्टिंक्शन, विशेष योग्यता।

तमीज़दार (تمیزدار) अ. फा. वि.–शिष्ट, सभ्य, मुहज़्ज़ब; कुशल, योग्य, सलीकामंद।

तमूज़ (تموز) फा. स्त्री.–धूप की कड़ी गर्मी, जेठ-बैसाख की गर्मी।

तम्अ (طمع) अ. स्त्री.–दे. 'तमा', दोनों उच्चारण सही हैं।

तम्ईज़ (تمئیز) अ. स्त्री.–दे. 'तमीज़', उर्दू में तमीज़ ही बोला जाता है।

तम्कनत (تمکنت) अ. स्त्री.–अभिमान, गर्व, घमंड, ग़ुरूर; तड़क-भड़क, टीम-टाम।

तम्कीन (تمکین) अ. स्त्री.–स्थिरता, पायदारी; प्रतिष्ठा, सम्मान, वक़्अत; गंभीरता, मतानत, संजीदगी; पद, पदवी, दरजा।

तम्ग़ा (تمغا) तु. पुं.–पदक, मेडिल; राजचिह्न, शाही मुहर; माफ़ी की ज़मीन की सनद, भूमिधर-पत्र।

तम्जीद (تمجید) अ. स्त्री.–किसी को महत्ता और प्रतिष्ठा देना; किसी की महत्ता या प्रतिष्ठा का वर्णन करना; स्तुति, कीर्तन, गुणगान, यशोगान, हम्दोसना।

तम्दीद (تمدید) अ. स्त्री.–खींचना, बढ़ाना, लंबा करना; खिंचाव, बढ़ाव, लंबाई।

तम्मत (تمت) अ. क्रि.–समाप्त हुआ, ख़त्म हुआ।

तम्मत बिलख़ैर (تمت بالخیر) अ. क्रि.–अच्छाई और सुन्दरता के साथ समाप्त हुआ, जो काम सुगमता और शुद्धतापूर्वक समाप्त हो, उसके लिए कहते हैं।

तम्माअ् (طماع) अ. वि.–बहुत अधिक लोभी, अति लोलुप, लिप्सु, लुब्ध।

तम्सील (تمثیل) अ. स्त्री.–उपमा, तुलना, तश्बीह; समानता, बराबरी; दृष्टान्त, उदाहरण, मिसाल।

तम्सीलन् (تمثیلاً) अ. अव्य.–उदाहरणार्थ, मिसाल के तौर पर।

तम्सीली (تمثیلی) अ. वि.–उपमा या तुलनावाला; जिसमें कोई तम्सील हो अर्थात् जिसमें किसी असली व्यक्ति के स्थान पर किसी दूसरे व्यक्ति ने उसका पार्ट अदा किया हो।

तय (طے) अ. पुं.–निर्णीत, फ़ैसल; परिपक्व, पुख़्ता; समाप्त, ख़त्म; निश्चित, यक़ीनी; यमन (अरब) का एक वंश जिसमें 'हातिम' हुआ है।

तय्यारः (طیارہ) अ. पुं.–वायुयान, विमान, हवाई जहाज़।

तय्यारःशिकन (طیارہشکن) अ. फा. स्त्री.–वह तोप जो हवाई जहाज़ को मार गिराये।

तय्यार (تیار) अ. वि.–तत्पर, बद्धकटि, आमादा; समाप्त, ख़त्म; हृष्ट-पुष्ट, मेदुर, लहीम शहीम; परिपूर्ण, मुकम्मल; सुसज्जित, आरास्ता; कोई पदार्थ खाने या प्रयोग करने की अवस्था में, जैसे–भोजन अथवा कपड़ा जो सिलने को दिया हो; वस्त्राभूषण आदि से सुसज्जित; कूच, हमले या छापे के लिए कील-काँटे से लैस; उपस्थित, मौजूद, विद्यमान।

तय्यारची (طیارچی) अ. तु. वि.–वायुयान-चालक, हवाई जहाज़ चलानेवाला, पाइलेट।

तय्यिबः (طیبہ) अ. स्त्री.–पवित्रा, पुनीता, मुक़द्दस स्त्री; धार्मिक दृष्टिकोण से पवित्र नगरों के विशेषतः मदीने के आगे लगाया जानेवाला शब्द।

तय्यिब (طیب) अ. वि.–पवित्र, शुद्ध, पाक; विहित, जायज़, हलाल, वह धन आदि जो पूरे परिश्रम और पूरी ईमानदारी से कमाया गया हो।

तय्यिबात (طیبات) अ. स्त्री.–'तय्यिब': का बहु., पवित्रा और पुनीतात्मा स्त्रियाँ।

तरंजुबीन (ترنجبین) अ. स्त्री.–एक प्रकार की रेचक शकर जो बाज़ पौदों पर जम जाती है और अधिकतर ख़ुरासान (ईरान) से आती है, तुरंजबीन; शिकंजी; नीबू का शर्बत।

तरः (ترہ) फा. पुं.–शाक, भाजी, साग, तरकारी।

तर (تر) फा. वि.–आर्द्र, गीला; नवीन, नया; तत्कालीन, ताज़ा, हाल का; हरा, सब्ज़, सरसब्ज़; लतपत, लथड़ा हुआ; घी आदि से चुपड़ा या उसमें डूबा हुआ, तरतराता; धनवान्, मालदार, (प्रत्य.) अत्यधिक, जैसे—'ख़ूबतर' बहुत अधिक उत्तम या सुन्दर।

तरकश (ترکش) फा. पुं.–तीर रखने का लम्बा खोल जो कमर में लटकाया जाता है, तूणीर, निषंग, त्रोण।

तरकशबंद (ترکش بند) फा. वि.–तूणीरधारी, तरकश बाँधे हुए, निषंगधर।

तरक़्क़ी (ترقی) अ. स्त्री.–उत्थान, उन्नति, उरूज; अधिकता, बहुतायत, ज़ियादती; वृद्धि, बढ़ती; पद या ओहदे में वृद्धि।

तरक़्क़ीपसंद (ترقی پسند) अ. फा. वि.–उन्नति और तरक़्क़ी चाहनेवाला; एक साहित्यिक दल जो साम्यवादी विचारों का प्रचारक और देश में साम्यवाद का हामी है।

तरक़्क़ी पिज़ीर (ترقی پزیر) अ. फा. वि.–दे. 'तरक़्क़ीयाफ़्तः'; उन्नतिप्राप्त (पिज़ीर=प्राप्त)।

तरक़्क़ीयाफ़्तः (ترقی یافتہ) अ.फा. वि.–समुन्नत, वर्द्धमान, तरक़्क़ी को पहुँचा हुआ; सुसभ्य, सुशिष्ट, मुहज़्ज़ब।

तरज़बान (ترزبان) फा. वि.–किसी की प्रशंसा करनेवाला, मद्‌हख़्वाँ; सुन्दर और शिष्ट भाषण देनेवाला, सुवक्ता।

तरजुमान (ترجمان) अ. पुं.–एक भाषा से दूसरी भाषा में बदलनेवाला, भाषान्तरकार; दो ऐसे व्यक्तियों के बीच में मध्यस्थता करनेवाला जो एक दूसरे की भाषा न समझते हों, द्विभाषी।

तरजुमानी (ترجمانی) अ. फा. स्त्री.–दो भाषाओं का उल्था; दो भाषाभाषियों में मध्यस्थता।

तरज्जी (ترجی) अ. स्त्री.–ऐसी वस्तु के मिलने की आशा जिसकी प्राप्ति संभव हो; आशा, आस, उम्मेद।

तरदस्त (تردست) फा. वि.–स्फूर्तियुक्त, चुस्त, फ़ुर्तीला; हाथ से होनेवाली कारीगरी (दस्तकारी, हस्तशिल्प) में दक्ष और होशियार; प्रवीण, कुशल, माहिर।

तरदामन (تردامن) फा. वि.–जो दामन बचाकर न निकल सका हो बल्कि जिसका दामन सन गया हो अर्थात् किसी अपराध में लिप्त, मुज्रिम; पापी, गुनाहगार।

तरदिमाग़ (تردماغ) फा. वि.–मस्त, मतवाला; बुद्धिमान्, अक़्लमंद; ठंडादिमाग़; स्थिरप्रज्ञ; सावधान।

तरद्दुद (تردد) अ. पुं.–चिन्ता, शोच, सोच, फ़िक्र; असमंजस, दुविधा, पसोपेश; घबराहट, आतुरता, परेशानी; खेत की जुताई-बुवाई आदि, कृषि-कर्म।

तरन्नुम (ترنم) अ. पुं.–स्वर-माधुर्य, ख़ुश इल्हानी; हलका गाना, मधुर गान।

तरन्नुमज़ा (ترنم زا) अ. फा. वि.–ऐसा स्वर जिससे तरन्नुम टपके, अत्यन्त मधुर स्वर, मधुर स्वर उत्पादक।

तरन्नुमरेज़ (ترنم ریز) अ. फा. वि.–तरन्नुम से पढ़नेवाला; तरन्नुम से पढ़ता हुआ।

तरन्नुमरेज़ी (ترنم ریزی) अ. फा. स्त्री.–तरन्नुम से पढ़ना।

तरफ़ (طرف) अ. स्त्री.–दशा, ओर, सिम्त; सिरा, किनारा; जानिब; लिहाज़, आदर, पास; पक्ष, पार्टी।

तरफ़दार (طرفدار) अ. फा. वि.–पक्षपाती, हिमायती; सहायक, मददगार।

तरफ़दारी (طرفداری) अ. फा. स्त्री.–पक्षपात, हिमायत; सहायता, मदद।

तरफ़ैन (طرفین) अ. स्त्री.–दोनों पक्ष, दोनों पार्टियाँ, उभय पक्ष।

तरफ़्फ़ुह (ترفہ) अ. पुं.–समृद्धि, विभव, संपन्नता, ख़ुशहाली।

तरफ़्फ़ो' (ترفع) अ. पुं.–अपने को सबसे ऊँचा समझना; अहंकार, अहंवाद, गर्व, ग़ुरूर।

तरब (طرب) अ. पुं.–आनन्द, आह्लाद, हर्ष, उल्लास, सौमनस्य, ख़ुशी, मसर्रत।

तरबअंगेज़ (طربانگیز) अ. फा. वि.–ख़ुशी बढ़ानेवाला, आनन्दवर्धक, हर्षजनक।

तरबअफ़्ज़ा (طربافزا) अ. फा. वि.–दे. 'तरबअंगेज़'।

तरबगाह (طربگاه) अ. फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ ख़ुशियाँ मनाई जा रही हों।

तरबख़ेज़ (طربخیز) अ. फा. वि.–दे. 'तरबअंगेज़'।

तरबज़ा (طربزا) अ. फा. वि.–ख़ुशी उत्पन्न करनेवाला, हर्षजनक, आनंदोत्पादक।

तरबसंज (طربسنج) अ.फा.वि.–तोल-तोलकर आनन्द का ढेर लगानेवाला, बहुत अधिक ख़ुशियों का मालिक।

तरबुज़ (تربز) फा. पुं.–तरबूज़, एक प्रसिद्ध फल, कलींदा, कालिंद, कलिंग, चित्रफल, मांसफल, फलवर्तुल।

तरश्शुह (ترشح) अ. पुं.–हल्की-हल्की फुहार, बूँदा-बाँदी; रिसना, झरना, टपकना; प्रकट होना, ज़ाहिर होना।

तरह (طرح) अ. स्त्री.–न्यास, नींव, बुनियाद; पद्धति, शैली, तर्ज़; वेशभूषा, वज़्अ; समान, भाँति, मिस्ल; घटाना, व्यवकलन, तफ़्रीक़; प्रकार, ढंग; टालना, झगड़े को बढ़ने न देना; युक्ति, तरकीब, जुगत; मुशाइरे के लिए मिस्रा, जिससे उसकी बह्र और रदीफ़ो क़ाफ़िया जाना जाता है, समस्या।

तरहदार (طرحدار) अ. फा. वि.–बाँका, छबीला, चुटपुटा, नाज़ोअंदाज़वाला, (माशूक़) वज़अ्दार।

तरहदारी (طرحداری) अ. फा. स्त्री.–बाँकापन, छबीलापन, हाव-भाव, नाज़-नख़्रा:, हुस्न, सौन्दर्य।

तराइक़ (طرائق) अ. पुं.–'तरीक़ा' का बहु., तरीक़े।

तराज़ (طراز) फा. पुं.–दे. 'तिराज़', वही शुद्ध है।

तराज़िंद: (طرازنده) फा.वि.–दे. 'तिराज़िंद:' वही शुद्ध है।

तराजिम (تراجم) अ. पुं.–'तर्जम:' का बहु. 'तर्जमे'।

तराज़िए तरफ़ैन (تراضئی طرفین) अ. स्त्री.–दोनों पक्षों की रज़ामंदी, उभयपक्ष की स्वीकृति।

तराजी (تراجی) अ. स्त्री.–एक दूसरे से आशा रखना।

तराज़ी (تراضی) अ. स्त्री.–एक दूसरे से रज़ामंद होना; रज़ामंदी, अंगीकृति।

तराज़ू (ترازو) फा. स्त्री.–तौलने का यंत्र, तुला, तखरी, मीज़ान।

तराज़ूए अद्ल (ترازوے عدل) फा. अ. स्त्री.–वह तराज़ू जिसके दोनों पल्लों में तनिक भी अन्तर न हो, न्याय-तुला।

तराज़ूए संगज़न (ترازوے سنگ زن) फा. स्त्री.–वह तराज़ू जिसमें पासंग हो।

तरान: (ترانہ) फा. पुं.–गान, गाना, नग़्म:; एक विशेष प्रकार का गीत।

तरान:ज़न (ترانہزن) फा. वि.–गानेवाला, गायक; गाता हुआ।

तरान:रेज़ (ترانہریز) फा. वि.–दे. तरान:ज़न:।

तरान:संज (ترانہسنج) फा. वि,–दे. 'तरान:ज़न'।

तरान:सरा (ترانہسرا) फा. वि.–दे. 'तरान:ज़न'।

तरान:साज़ (ترانہساز) फा. वि.–दे. 'तरान:ज़न'।

तरार: (طراره) उ. पुं.–दे. 'तर्रार:', वही शुद्ध है।

तरावत (طراوت) अ. स्त्री.–शीतलता, ठंडक, तरी; सरसब्ज़ी, हरियालापन, ताज़गी; दिल और दिमाग़ की ठंडक।

तराविश (تراوش) फा. स्त्री.–टपकन, रंजिश।

तराविशे क़लम (تراوش قلم) फा. अ. स्त्री.–क़लम की टपकन, अर्थात् सियाही की तहरीर।

तराविशे फ़िक्र (تراوش فکر) फा. अ. स्त्री.–कल्पना-शक्ति की टपकन, दिमाग़ की उतरन, मज़्मून, निवन्ध आदि।

तरावीह (تراویح) अ. स्त्री.–रमज़ान के महीने की नमाज़ जो रात में पढ़ी जाती और जिसमें, क़ुरान सुनाया जाता है।

तराश: (تراشہ) फा. पुं.–किसी वस्तु को छीलने में निकला हुआ फोक, छीलन; पत्थर तराशने की छेनी, टाँकी; फाँक, क़ाश।

तराश (تراش) फा. स्त्री.–कटाव, काट-छाँट, कतरब्योंत; काटने का ढंग; कटाव की शक्ल; आविष्कार, ईजाद; धार, बुरिश, काट, (प्रत्य०) काटनेवाला, जैसे—'जेबतराश' जेब काटनेवाला।

तराश ख़राश (تراش خراش) फा. स्त्री.–वेशभूषा, वज़ा क़ता; काट-छाँट, कतरब्योंत।

तराशिंद: (تراشنده) फा. वि.–काटनेवाला; छीलनेवाला; कतरनेवाला।

तराशीद: (تراشیده) फा. वि.–काटा हुआ; छीला हुआ; कतरा हुआ; मनगढ़ंत, कपोल-कल्पित।

तरिक: (ترکہ) अ.पुं.–वह धन और संपत्ति जो किसी के मरने पर उसके उत्तराधिकारियों को मिलती है, दाय, रिक्थ।

तरी (تری) फा. स्त्री.–आर्द्रता, गीलापन; ख़ुश्की का उलटा, पानी का स्थान; सील, नमी, सीड़; समृद्धि, धनाढ्यता, मालदारी।

तरी (طری) अ. वि.–ताज़ा, सरसब्ज़, हरा भरा।

तरीक़: (طریقہ) अ. पुं.–प्रणाली, शैली, तर्ज़; युक्ति, तरकीब; पंथ, मश्रब; नियम, क़ाइदा; परम्परा, रिवाज; चाल-ढाल, रविश; वेशभूषा, वज़ा क़ता।

तरीक़ (طریق) अ. पुं.–"बक़ा का नाम कोई भूलकर नहीं लेता–तेरे तरीक़ ने चौंका दिया, ज़माने को", मार्ग, रास्ता;

शैली, रविश; परम्परा, रिवाज; धर्म, मज़्हब; युक्ति, तरकीब; नियम, दस्तूर।

तरीक़ए ता'लीम (طریقۂ تعلیم) अ. पुं.–शिक्षा-प्रणाली, शिक्षणशैली, पढ़ाने का ढंग।

तरीक़त (طریقت) अ. स्त्री.–आत्मशुद्धि, अंतःशुद्धि, दिल की पाकीज़गी; ब्रह्मज्ञान, अध्यात्म, तसव्वुफ़।

तरीक़े अमल (طریقِ عمل) अ. पुं.–काम करने का तरीक़ा, कार्य-प्रणाली, कार्य-पद्धति।

तरीन (ترین) फा. प्रत्य.–सबसे अधिक, जैसे—'बदतरीन' सबसे अधिक ख़राब, निकृष्टतम।

तरोताज़ः (تروتازہ) फा. वि.–सरसब्ज़, हरा-भरा; प्रफुल्ल, आनंदित, हशशाश, बश्शाश।

तर्क (ترک) अ. पुं.–त्याग, परित्याग. छोड़ना; भूल, भूल में छूट जाना, सह्व।

तर्क़ीक़ (ترقیق) अ. स्त्री.–पतला करना, पानी की तरह पतला करना; पतलापन, तरलता, रक़ीक़ (द्रव) से बना।

तर्कीब (ترکیب) अ. स्त्री.–मिश्रण, मिलाना; बनावट, साख़्त; युक्ति, तद्बीर; ढंग, प्रणाली, तरीक़ा; किसी विशेष चीज़ के बनाने का ढंग; व्याकरण में किसी वाक्य के शब्दों का परिच्छेद।

तर्कीब बंद (ترکیب بند) अ. फा. पुं.–नज़्म की एक क़िस्म, जिसमें कई बंद होते हैं, हर बंद अलग-अलग रदीफ़ क़ाफ़िए में होता है और हर बंद के ख़तम पर एक नया शे'र लाते हैं जो अलग रदीफ़ क़ाफ़िए का होता है, इसमें और 'तर्जीअ बंद' में यही भेद है कि उसमें टीप का शे'र एक ही होता है जो बार-बार आता है और इसमें टीप के सब शेर अलग-अलग होते हैं।

तर्कीबे इस्ते'माल (ترکیبِ استعمال) अ. स्त्री.–किसी दवा के खाने की तरकीब, सेवनविधि।

तर्कीबे नह्वी (ترکیبِ نحوی) अ. स्त्री.–वाक्य-विश्लेषण, विग्रह।

तर्कीबे सर्फ़ी (ترکیب صرفی) अ. स्त्री.–शब्द-निरुक्ति, संधि-विच्छेद, पदान्वय।

तर्क़ूह (ترقوہ) अ. स्त्री.–हँसली की हड्डी।

तर्के अदब (ترکِ ادب) अ. पुं.–किसी के साथ जिस सम्मान या नम्रता से पेश आना चाहिए उसका त्याग देना, आदर-त्याग, गुस्ताख़ी, बदतहज़ीबी।

तर्के अलाइक़ (ترکِ علائق) अ. पुं.–सांसारिक विषयवासना का त्याग; गृहस्थी और बाल-बच्चों का त्याग, निवृत्ति।

तर्के दुन्या (ترکِ دنیا) अ. पुं.–संसार के झगड़ों का त्याग, मोहत्याग, विषयत्याग।

तर्के वतन (ترکِ وطن) अ. पुं.–स्वदेश-त्याग, प्रवास, निर्वासन, जलावतनी।

तर्के लज़्ज़ात (ترکِ لذات) अ. पुं.–सुख-चैन और अच्छा खाना-पीना छोड़ देना, निवृत्ति।

तर्के मुवालात (ترکِ موالات) अ. पुं.–मिल-जुलकर काम करना छोड़ देना, असहयोग, अदमे तआउन।

तर्ग़ीब (ترغیب) अ. स्त्री.–लालच देना, प्रलोभन; उत्तेजना, इश्तिआल; प्रेरणा, शौक़; वरग़लाना, बहकाना।

तर्ज़ (طرز) अ. उभ.–शली, पद्धति, ढंग; स्वभाव, आदत; वेशभषा, वज़ा-क़ता।

तर्जमः (ترجمہ) अ. पुं.–अनुवाद, भाषान्तर, उल्था, तर्जुमा भी प्रचलित है।

तर्जीअ (ترجیع) अ. स्त्री.–जाकर वापस आना, प्रत्यागमन; किसी के मरने पर 'इन्नालिल्लाह' कहना।

तर्जीअबंद (ترجیع بند) अ. फा. पुं.–नज़्म की एक क़िस्म जिसमें कई बंद होते हैं, हर बंद अलग-अलग रदीफ़ क़ाफ़िए में होता है और हर बंद की समाप्ति पर एक शे'र आता है जिसका रदीफ काफ़िया जुदा होता है, और यह शे'र हर बंद की समाप्ति पर आता है, बरखिलाफ़ 'तर्कीबबंद' के जिसमें बीच का हर शे'र नया होता है।

तर्जीह (ترجیح) अ. स्त्री.–प्रधानता, श्रेष्ठता, फ़ौक़ियत; किसी व्यक्ति, विषय या वस्तु को उसी जैसे दूसरे व्यक्ति, विषय या वस्तु पर प्रधानता देना।

तर्जीहे बिलामुरज्जेह (ترجیح بلا مرجح) अ. स्त्री.–एक को दूसरे पर बिना कारण के प्रधानता देना।

तर्जुमान (ترجمان) अ. पुं.–दे. 'तरजुमान'।

तर्ज़े अदा (طرزِ ادا) अ. फा. उभ.–काव्य प्रणाली, शाइरी का तर्ज़; हाव-भाव का तर्ज़, नाज़ोअंदाज़।

तर्ज़े कलाम (طرزِ کلام) अ. उभ.–बात करने का ढंग, वाक्शैली।

तर्ज़े गुफ़्तुगू (طرزِ گفتگو) अ. फा. उभ.–वार्ताशैली, बात-चीत करने का तरीक़ा।

तर्ज़े तक़्रीर (طرزِ تقریر) अ. उभ.–भाषण-शैली, वाक् प्रणाली, तक़रीर करने का ढंग।

तर्ज़े तहरीर (طرزِ تحریر) अ. उभ.–लेखन-शैली, लिखने का ढंग।

तर्ज़े रफ़्तार (طرزِ رفتار) अ. फा. उभ.–चलने का ढंग, गमनप्रकार।

तर्ज़ोअंदाज़ (طرز و انداز) अ. फ़ा. पुं.–वज़ा-क़ता, रंग-ढंग, चाल-ढाल।

तर्तीब (ترتیب) अ. स्त्री.–क्रम, सिलसिला; प्रबंध, बंदोबस्त; संज्जा, दुरुस्ती; चंद चीज़ों को यथास्थान ठीक-ठीक रखना; हर चीज का उसके मुताबिक़ दर्जा नियुक्त करना।

तर्तीब (ترطیب) अ. स्त्री.–ठंडा करना, शीतल करना; शरीर के किसी अंग में तरी पहुँचाना।

तर्तीबवार (ترتیب وار) अ. फा. वि.–तर्तीब से एक के बाद एक।

तर्तील (ترتیل) अ. स्त्री.–क़ुरान को उसके शुद्ध उच्चारण के साथ, धीरे-धीरे और इत्मीनान से पढ़ना।

तर्दीद (تردید) अ. स्त्री.–रद्द करना, लौटाना; खंडन करना, काटना; किसी बात को झूठ साबित करना; किसी के लगाए हुए दोष को ग़लत प्रमाणित करना।

तर्फ़ः (طرفہ) अ. पुं.–एक बार पलक झपकाना; नवाँ नक्षत्र, श्लेषा; नाख़ूनः रोग, जिसमें आँख में एक लाल बूँद पड़ जाती है।

तर्फ़ (طرف) अ. पुं.–पलक झपकाना; आँख; देखना; कोना, कनारा, गोशा; सुनहरी पेटी जो कमर में सजावट के लिए बाँधते हैं; सोने-चाँदी की ज़ंजीर जो कमर में बाँधी जाती है।

तर्फ़ुलऐन (طرفہ العین) अ. पुं.–एक बार पलक का झपकना; बहुत ज़रा-सी देर।

तर्बियत (تربیت) अ. स्त्री.–पालन-पोषण, परवरिश शिक्षा, तालीम; सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा; तादीब; ट्रेनिंग, प्रशिक्षण; सुधार।

तर्बियतयाफ़्तः (تربیت یافتہ) अ. फा. वि.–जो शिष्टता और सभ्यता की शिक्षा पा चुका हो, सभ्य, शिष्ट; ट्रेनिंग पाया हुआ, प्रशिक्षित।

तर्मीम (ترمیم) अ. स्त्री.–मरम्मत करना, सँवारना, दुरुस्त करना; काट-छाँट, इस्लाह; संशोधन, किसी प्रस्ताव में काट-छाँट, परिवर्तन।

तर्रार (طرار) अ. वि.–तेज़ बोलनेवाला, वाचाल, मुखर; चालाक, दक्ष, कुशल; छली, वंचक, हीलागर; चुलबुला, चपल, शोख।

तर्रारी (طراری) अ. स्त्री.–छल, कपट, ठगी; चपलता, चंचलपन, शोख़ी; वाचालता, मुखरता, चौकड़ी, कुलांच।

तर्वीज (ترویج) अ. स्त्री.–रिवाज देना, प्रचलित करना, फैलाना; प्रचार करना, तब्लीग़ करना।

तर्स (ترس) फा. पुं.–भय, डर, खौफ़।

तर्सनाक (ترسناک) फा. वि.–भयभीत, डरा हुआ, भयाक्रांत, भयत्रस्त।

तर्सां (ترساں) फा. वि.–भयभीत, त्रस्त, भयार्त, खौफ़ज़दा।

तर्सा (ترسا) फा. पुं.–ईसाई, ख्रिष्टीय; आतशपरस्त, अग्निपूजक, पार्सी।

तर्साबचः (ترسابچہ) फा. पुं.–ईसाई ख़ूबसूरत लड़का; पार्सी ख़ूबसूरत लड़का।

तर्सिदः (ترسندہ) फा. वि.–डरनेवाला।

तर्सीअ (ترصیع) अ. स्त्री.–किसी ज़ेवर पर नगीने जड़ना; इबारत के दो जुमलों में एक वज़न और क़ाफ़िए के शब्द लाना।

तर्सीदः (ترسیدہ) फा. वि.–डरा हुआ, भयत्रस्त।

तर्सील (ترسیل) अ. स्त्री.–भेजना, प्रेषण; रुपया या ख़त आदि भेजना।

तर्ह (طرح) अ. स्त्री.–दे. 'तरह', दोनों शुद्ध हैं, बुनियाद, नींव।

तर्हअंदाज (طرح انداز) अ. फा. वि.–नींव डालनेवाला, बुनियाद रखनेवाला।

तर्हअफ़गन (طرح افگن) अ. फा. वि.–दे. 'तर्हअंदाज़'।

तर्ही (طرحی) अ. वि.–तर्हवाला, वह मिस्रा जो किसी मुशायरे की तर्ह हो।

तर्हेनौ (طرح نو) अ. फा. स्त्री.–नयी बुनियाद, नये सिरे से कोई तामीर; नये सिरे से कोई काम, अनुष्ठान।

तल (طل) अ. स्त्री.–ओस, शबनम।

तलज़्ज़ुज (تلذذ) अ. पुं.–मज़ा पाना, स्वाद पाना; स्वाद, मज़ा; लज़्ज़त, आनन्द।

तलत्तुफ़ (تلطف) अ. पुं.–कृपा, दया, मेहरबानी।

तलफ़ (تلف) अ. पुं.–नष्ट, विनष्ट, बरबाद, तबाह; हत, हलाक, मृत।

तलफ़्फ़ुज (تلفظ) अ. पुं.–उच्चारण, मुँह से शब्द निकालना।

तुलबः (طلبہ) अ. पुं.–'तालिब' का बहु., विद्यार्थी लोग।

तलब (طلب) अ. स्त्री.–माँगना, याचना; अभियाचना, तक़ाज़ा; वेतन, तनख्वाह; इच्छा, चाह, ख्वाहिश; बुलावा, तलबी; किसी नशीली वस्तु–जिसके खाने या पीने का अभ्यास हो––की चाह।

तलबगार (طلب گار) अ. फा. वि.–इच्छुक, अभिलाषी, ख्वाहिशमंद, "इक बार दिखाकर चले जाओ झलक अपनी, हम जल्वए-पैहमके तलबगार कहाँ हैं ?"––हसरत मोहानी।

तलबा (طلبا) अ. पुं.–'तालिब' का बहु., विद्यार्थीगण, तालिबेइल्म।

तलबानः (طلبانہ) अ. फा. पुं.–अदालत में गवाहों आदि के बुलाने को जमा होनेवाला सफ़रखर्च आदि।

तलबी (طلبی) अ. स्त्री.–आवाहन, बुलावा; न्यायालय में सम्मन द्वारा बुलावा।

तलबीदः (طلبیدہ) फा. वि.–बुलाया हुआ, आहूत; सम्मन द्वारा बुलाना।

तलब्बुस (تلبس) अ. पुं.–कपड़े पहनना।

तलम्मुज़ (تلمذ) अ. पुं.–शिष्य होना, शागिर्द होना; शिष्यता, शार्गिदी, विशेषतः शाइरी की शागिर्दी।

तलव्वुन (تلون) अ. पुं.–रंग बदलना, कभी कुछ होना कभी कुछ।

तलव्वुन मिज़ाज (تلون مزاج) अ. वि.–जो कभी कुछ सोचे कभी कुछ, जिसकी राय हर समय बदलती रहे, अस्थिर-चित्त।

तलव्वुस (تلوث) अ. पुं.–सनना, लथड़ना, भरना।

तलाक़ (طلاق) अ. स्त्री.–विवाह-विच्छेद, मियाँ-बीवी का सम्बन्ध समाप्त करनेवाला अमल।

तलाक़त (طلاقت) अ. स्त्री.–ज़बान की तेज़ी, वाक्य-पटुता।

तलाक़ी (طلاقی) अ. स्त्री.–परस्पर मिलना, मुलाक़ात करना, भेंट करना।

तलाक़े बाइन (طلاق بائن) अ. स्त्री.–वह तलाक़ जिसमें विच्छिन्ना स्त्री जब तक दूसरे आदमी से विवाह न कर ले और उसके साथ सहवास न हो जाय, तब तक पहला आदमी उससे विवाह नहीं कर सकता।

तलाक़े मुग़ल्लज़ः (طلاق مغلظہ) अ. स्त्री.–वह तलाक़ जिसमें फिर पुरुष, विच्छिन्ना स्त्री से विवाह कदापि नहीं कर सकता।

तलाक़े रज्ई (طلاق رجعی) अ. स्त्री.–वह तलाक़ जिसमें पुरुष स्त्री से पुनः विवाह कर सकता है।

तलाक़े शिकम (طلاق شکم) अ.स्त्री.–पेट चलना, दस्त आना।

तलातुम (تلاطم) अ. पुं.–पानी का मौजें मारना; तुग़्यानी, बाढ़।

तलाफ़ी (تلافی) अ. स्त्री.–क्षतिपूर्ति, हानि की पूर्ति, नुक़्सान का बदला, तदारुक।

तलाफ़ीए माफ़ात (تلافئی مافات) अ. स्त्री.–नुक़्सान की तलाफ़ी, क्षतिपूर्ति।

तलामिज़ः (تلامذہ) अ. पुं.–'तिलमीज़' का बहु., शागिर्द लोग।

तलामीज़ (تلامیذ) अ. पुं.–दे. 'तलामिज़ः'।

तलायः (طلایہ) तु. पुं.–रात्रि में पहरा देनेवाली सेना।

तलायःगर्दी (طلایہ گردی) तु. फा. स्त्री.–सेना की रात्रि में पहरा देने की ड्यूटी।

तलायःदार (طلایہ دار) तु. फा. पुं.–तलायः का नायक।

तलाश (تلاش) तु. स्त्री.–खोज, टोह, जुस्तुजू।

तलाशी (تلاشی) तु. स्त्री.–ढूँढ़, खोज, जुस्तुजू; सरकारी आज्ञा से किसी के मकान आदि की छानबीन।

तलीअः (طلیعہ) अ. पुं.–दे. 'तलायः'।

तलीक़ (طلیق) अ.वि.–स्वच्छंद, मुक्त, आज़ाद, निरंकुश।

तलीक़ुल्लिसान (طلیق اللسان) अ. वि.–जिसकी ज़बान आज़ाद हो, जो चाहे कहे, मुँहफट, मुक्तकंठ; वाक्यपटु, तक़्क़ार।

तलीक़ुल यदैन (طلیق الیدین) अ. वि.–मुक्तहस्त, फ़ैयाज़, दोनों हाथों से देनेवाला।

तल्अत (طلعت) अ. स्त्री.–मुख, आकृति, चेहरा; रूप, शोभा, छटा; दर्शन, दीदार।

तल्ईन (تلئین) अ. स्त्री.–'नर्म करना, मुलाइम करना; हलका जुलाब।

तल्क़ (طلق) अ. पुं.–अब्रक, अभ्रक; मदिरा, शराब; दर्दे जेह, प्रसव-कष्ट।

तल्क़ीन (تلقین) अ. स्त्री.–दीक्षा देना, गुरुमंत्र देना, पीर का मुरीद को अमल आदि पढ़ाना; सदुपदेश, वा'ज़, नसीहत।

तल्ख़ः (تلخہ) फा. पुं.–पित्त, सफ़्रा; पित्ताशय, सफ़्रा की थैली।

तल्ख़ (تلخ) फा. वि.–कड़वा, कटु; अरुचिकर, नागवार।

तल्ख़काम (تلخ کام) फा. वि.–असफलमनोरथ, नामुराद।

तल्ख़गो (تلخ گو) फा. वि.–कटुभाषी, कड़वी बातें करनेवाला; सत्यभाषी, ठीक बात कहनेवाला।

तल्ख़ज़बाँ (تلخ زباں) फा. वि.–दे. 'तल्ख़गो'।

तल्ख़ाबः (تلخابہ) फा. पुं.–दे. 'तल्ख़ाब' (तल्ख़=कड़वा+आब=पानी)।

तल्ख़ाब (تلخاب) फा.पुं.–ज़हर का पानी, ऐसा पानी जो पिया न जा सके।

तल्ख़ाबे ग़म (تلخاب غم) फा. अ. पुं.–प्रेम के दुःख का पानी रूपी विष।

तल्ख़ी (تلخی) फा. स्त्री.–कटुता, कड़वापन; सत्यता, सच्चाई; दुःशीलता, कज अख़्लाकी।

तल्ख़ीस (تلخیص) अ. स्त्री.–संक्षिप्त, साररूप, ख़ुलासा; निर्मलता, शुद्धता, खालिसपन।

तल्मीज़ (تلمیذ) अ. पुं.–दे. 'तिल्मीज़', शुद्ध यही है।

तल्मीह (تلمیح) अ. स्त्री.–किसी की ओर उचटती हुई दृष्टि डालना; शे'र या बयान में किसी क़िस्से की ओर संकेत।

तल्मीहतलब (تلمیح طلب) अ. वि.–ऐसा शे'र या मज़्मून जिसमें किसी क़िस्से या बात की व्याख्या ज़ुरूरी हो।

तल्वीन (تلوین) अ. स्त्री.–रंग भरना, रंग-बिरंगी करना।

तवक़्क़ुफ़ (توقف) अ. पुं.–विलंब, ढील, देर।

तवक्कुल (توکل) अ. पुं.–सांसारिक साधनों का भरोसा हटाकर सारे काम ईश्वर की मर्ज़ी पर छोड़ देना।

तवक़्क़ो' (توقع) अ. पुं.–आशा, भरोसा, उम्मीद।

तवज्जोह (توجہ) अ. पुं.–किसी की ओर मुँह करना, ध्यान देना; ध्यान, रुजूअ; ग़ौर, अधिक ध्यान; कृपा, दया, मेहरबानी।

तवत्तुन (توطن) अ. पुं.–वतन बनाना, रहने लगना।

तवर्रो (تورع) अ. पुं.–संयम, यतिधर्म, आत्मसंयम, परहेज़गारी, ज़ुहद्।

तवल्ला (تولی) अ. पुं.–प्रेम, स्नेह, भक्ति, मुहब्बत।

तवल्लुद (تولد) अ. पुं.–उत्पत्ति, पैदाइश, लड़का पैदा होना।

तवस्सुत (توسط) अ. पुं.–बीच की राह पकड़ना, न बहुत अधिकता न बहुत कमी; मध्यस्थता, बिचौलियापन।

तवस्सुल (توسل) अ. पुं.–किसी को किसी काम के लिए वसीला बनाना, सहारा पकड़ना; मा'रिफ़त, ज़रीअः।

तवह्हुम (توہم) अ. पुं.–भ्रम में डालना; भ्रम में पड़ना; भ्रम, भ्रान्ति, वह्म।

तवह्हुमपरस्त (توہم پرست) अ.फा. वि.–वह्म की बातों को माननेवाला, ऐसी बातों पर विश्वास रखनेवाला जिनका कोई अस्तित्व नहीं है, भ्रमवादी।

तवह्हुमपरस्ती (توہم پرستی) अ. फा. स्त्री.–निराधार और काल्पनिक चीज़ों पर विश्वास रखना।

तवह्हुश (توحش) अ. पुं.–बहशी बनना, वहशत होना, किसी चीज़ से घबराना, भागना।

तवाइफ़ (طوائف) अ. स्त्री.–'ताइफ़ः' का बहु., रंडी, गणिका, वारमुखी, क्रीडानारी, वर्चटी, विभावरी, नगरनायिका, वेश्या, मंगलामुखी।

तवाइफ़ज़ादः (طوائف زادہ) अ. फा. पुं.–गणिकात्मज, वेश्यापुत्र, रंडी का लड़का।

तवाइफ़ुल मुलूकी (طوائف الملوکی) अ. स्त्री.–देश का उथल-पुथल, राज का कुप्रबंध, राजगद्दी का बार-बार परिवर्तन, गृह-युद्ध आदि का कुचक्र।

तवाज़ुन (توازن) अ. पुं.–दोनों पल्लों में बोझ बराबर होना, संतुलन, एतिदाल, हमवज़्नी।

तवाज़ुनेक़ुव्वत (توازن قوت) अ. पुं.–दोनों ओर शक्ति की समानता।

तवाज़ी (توازی) अ. स्त्री.–परस्पर बराबर होना; परस्पर बराबर अन्तर होना, समानान्तर।

तवाज़ो' (تواضع) अ. पुं.–आदर, सत्कार, इज़्ज़त; आवभगत, ख़ातिरदारी; आतिथ्य, मेहमाँदारी; नम्रता, विनति, आजिज़ी, ख़ाकसारी।

तवातुर (تواتر) अ. पुं.–निरंतरता, अनवरतता, लगातारपन, तसलसुल।

तवाफ़ (طواف) अ. पुं.–किसी चीज़ के चारों ओर फिरना, परिक्रमण, परिक्रमा, प्रदक्षिणा, पैकरमा।

तवाफ़ुक़ (توافق) अ. पुं.–परस्पर एक जगह रहना; एक दूसरे के अनुकूल होना; एक दूसरे की सहायता करना; एक जैसा होना, सदृशता, यकसानियत।

तवाफ़ुक़े लिसानैन (توافق لسانین) अ. पुं.–दो विभिन्न भाषाओं के किसी शब्द का एक जैसा होना, बनावट में भी और अर्थ में भी, जैसे—"फुल्ल" अरबी और संस्कृत दोनों में फूल को कहते हैं।

तवाबिल (توابل) फा. पुं.–गरम मसाले, काली मिर्च, लौंग, इलाइची, ज़ीरा आदि।

तवाबे' (توابع) अ. पुं.–'ताबे' का बहु., अधीन लोग, अनुयायी लोग।

तवारी (تواری) अ. स्त्री.–छुपना, पोशीदा होना; गुप्ति, गोपन, लोप, पोशीदगी।

तवारीख़ (تواریخ) अ. स्त्री.–'तारीख़' का बहु., तारीख़ें, तिथियाँ; इतिहास, किसी देश की तारीख़।

तवारुद (توارد) अ. पुं.–परस्पर एक जगह उतरना; दो शाइरों के किसी शे'र का मज़्मून एक हो जाना, भावसाम्य।

तवालत (طوالت) अ. स्त्री.–लम्बाई, दीर्घता, आयाम; विलम्ब, ढील, देर; बखेड़ा, झंझट, दर्दसर; मुद्दत की लम्बाई।

तवालिए इज़ाफ़ात (توالیٔ اضافات) अ. स्त्री.–किसी वाक्य के शब्दों में बहुत-सी इज़ाफ़तों का इकट्ठा हो जाना, जैसे––'आप के घर के मालिक के बेटे का नौकर' या जैसे—'गुले सरसब्ज़े बाग़े ख़ुल्देबरीं', यह दोष है।

तवाली (توالی) अ. स्त्री.–लगातार आना या होना।

तवालुद (توالد) अ. पुं.–संतान उत्पन्न करना, यह शब्द अकेला नहीं आता वरन् 'तनासुल' के साथ मिलकर 'तवालुदो तनासुल' बोला जाता है, दे. 'तनासुल'।

तव्वाब (تواب) अ. पुं.–तौबः (पापों की क्षमा याचना) स्वीकार करनेवाला, ईश्वर का नाम।

तशक़्क़ुक़ (تشقق) अ. पुं.–फटना, शक़ होना।

तशक्कुक (تشکک) अ. पुं.–भ्रम और शंका में पड़ना; संदेह, शंका, भ्रम, शक।

तशक्कुर (تشکر) अ. पुं.–शुक्रियः अदा करना, धन्यवाद देना, कृतज्ञता प्रकट करना।

तशक्कुल (تشکل) अ. पुं.–किसी चीज़ का साकार होना।

तशक्की (تشکی) अ. स्त्री.–गिला करना, उलाहना देना।

तशख़्ख़ुस (تشخص) अ. पुं.–निश्चित होना, मुअय्यन होना।

तशत्तुत (تشتت) अ. पुं.–तितर-बितर होना, अस्त-व्यस्त होना, मुंतशिर होना।

तशद्दुद (تشدد) अ. पुं.–सख़्ती करना, ज़ुल्म करना, अत्याचार करना; मारपीट करना।

तशन्नुज (تشنج) अ. पुं.–किसी अंग का अकड़ना, इस प्रकार अकड़ना कि झुके नहीं; अकड़न, ऐंठन।

तशफ़्फ़ी (تشفی) अ. स्त्री.–सान्त्वना, ढाढ़स, तसल्ली; रोगमुक्ति, शिफ़ा।

तशब्बुह (تشبہ) अ. पुं.–सदृश होना, एक-जैसा होना; एकरूपता, सादृश्य, हमशक्ली।

तशय्यो' (تشیع) अ. पुं.–शीआ होना; अपने को शीआ बताना।

तशर्रो' (تشرع) अ. पुं.–शरीअत (धर्मशास्त्र) पर चलना।

तशह्हुद (تشہد) अ. पुं.–'कलिमए शहादत' पढ़ना।

तशाउर (تشاعر) अ. पुं.–अपने को शाइर (कवि) बताना, झूठा शाइर (शायर) बनना।

तशाबुह (تشابہ) अ. पुं.–परस्पर एक-जैसा होना; एक-जैसी आयतें (क़ुरान के वाक्य) होने के कारण हाफ़िज़ का क़ुरान की आयतों को कहीं का कहीं मिला देना।

तशावुर (تشاور) अ. पुं.–परस्पर सलाह-मशवरा करना, विचार-विनिमय करना, परामर्श करना।

तश्कीक (تشکیک) अ. स्त्री.–किसी को शंका या भ्रम में डालना।

तश्ख़ीस (تشخیص) अ. स्त्री.–नियुक्ति करना, निश्चय करना; जाँचना, जानकारी के लिए परखना।

तश्ख़ीसे मरज़ (تشخیص مرض) अ. स्त्री.–रोग-निदान, बीमारी की जाँच।

तश्त (تشت) फा. पुं.–थाली, बड़ी रिकेबी; थाल, परात।

तश्त अज़ बाम (تشت از بام) फा. अव्य.–भेद खुलना, बात सबमें फैल जाना।

तश्तरी (تشتری) फा. स्त्री.–रिकाबी, प्लेट।

तश्दीद (تشدید) अ. स्त्री.–एक अक्षर को दो बार पढ़ना, द्वित्व; उर्दू में तश्दीद का चिह्न (ّ)।

तश्नः (تشنہ) फा. वि.–प्यासा, तृषित, पिपासित; अतृप्त, जिसका जी न भरा हो; तिश्ना भी प्रचलित।

तश्नःकाम (تشنہ کام) फा. वि.–तृषित, प्यासा; असफल-मनोरथ, नाकाम।

तश्नःजिगर (تشنہ جگر) फा. वि.–असफलकाम, नाकामयाब; अभिलाषी, मुश्ताक़।

तश्नःलब (تشنہ لب) फा. वि.–जिसके ओंठ प्यास के मारे सूख गये हों, बहुत प्यासा,—'उम्मीदे लुत्फ़ आपसे है इक ख़याले ख़ाम–कब तश्नालब की प्यास बुझी है सराब से।"

तश्नए ख़ूँ (تشنۂ خوں) ख़ून का प्यासा, जान का दुश्मन, प्राणघातक।

तश्नए दीदार (تشنۂ دیدار) देखने का भूखा, बहुत अधिक अभिलाषी।

तश्नगी (تشنگی) फा. स्त्री.–प्यास, तृष्णा, पिपासा; लालसा, अभिलाषा, इश्तियाक़।

तश्नीअ' (تشنیع) अ. स्त्री.–बुरा-भला कहना, लानत-मलामत करना।

तश्बीब (تشبیب) अ. स्त्री.–क़सीदे में शुरू के शे'र जिनमें कोई दृश्य या किसी घटना का वर्णन होता है और उसके बाद ही गुरेज़ होता है।

तश्बीह (تشبیہ) अ. स्त्री.–एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से करके उसे घटाया या बढ़ाया या बराबर किया जाता है, उपमा।

तश्बीहे ताम (تشبیہ تام) अ. स्त्री.–ऐसी उपमा जो पूरी-पूरी घटित हो, पूर्णोपमा।

तश्बीहे नाक़िस (تشبیہ ناقص) अ. स्त्री.–ऐसी उपमा जो दो वस्तुओं में केवल एक बात में ठीक उतरे, सबमें न हो, लुप्तोपमा।

तश्रीफ़ (تشریف) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, सम्मान, बुज़ुर्गी; ख़िल्अत, राज की ओर से सम्मानार्थ दिये जानेवाले वस्त्रा-भूषण आदि; पदार्पण, आगम; शुभागम।

तश्रीफ़ अर्ज़ानी (تشریف ارزانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'तश्रीफ़ आवरी'।

तश्रीफ आवरी (تشریف آوری) अ. फा. स्त्री.–विराजमान होना, पदार्पण करना, तश्रीफ़ लाना, शुभागमन।

तश्रीफ़फ़र्माई (تشریف فرمائی) अ. फा. स्त्री.–ठहरना, बैठना, तशरीफ़ रखना।

तश्रीफ़बरी (تشریف بری) अ. फा. स्त्री.–तश्रीफ़ ले जाना, वापस जाना, जाना, रुख़सत होना।

तश्रीफ़ात (تشریفات) अ. स्त्री.–जुलूस, शोभायात्रा; ख़िलअत।

तश्‌रीह (تشریح) अ. स्त्री.–खोलकर बयान करना, स्पष्टीकरण, तौज़ीह; व्याख्या, टीका, तफ़स्लील; भाष्य, तफ़्सीर; भाषान्तर, उल्था, तर्जमा; शरीर के अंगों, नसों, हड्डियों आदि का विवरण, अनाटमी, शारीर।

तश्‌रीहुलअब्दान (تشریح الابدان) अ. स्त्री.–शरीर का डाक्टरी विवरण, एनाटोमी, शरीर, शरीर-विज्ञान।

तश्‌वियः (تشویہ) अ. पुं.–भूनना, भृष्टि; दवा को पोटली में रखकर गर्म रेत या राख में दबाकर भूनना।

तश्‌वीश (تشویش) अ. स्त्री.–चिन्ता, सोच, फ़िक्र; भय, त्रास, डर; आतुरता, व्याकुलता, घबराहट।

तश्‌वीशअंगेज़ (تشویش انگیز) अ. फा. वि.–चिन्ताजनक, फ़िक्र पैदा करनेवाला।

तश्‌वीशनाक (تشویش ناک) अ. फा. वि.–भय-संकुल, पुरख़तर।

तश्‌हीर (تشہیر) अ. स्त्री.–किसी को बुरी तरह जनता में बदनाम करना, जैसे—गधे पर चढ़ाकर निकालना या मुँह काला करके चारों ओर घुमाना।

तसद्दुक़ (تصدق) अ. पुं.–न्योछावर होना, सदक़े होना; कृपा, दया, अनुकम्पा, मेहरबानी; भेंट, बलिदान, सद्क़ः, —"जिस जगह देख लिया ज़ान तसद्दुक़ कर दी—मैं तो पाबन्द नहीं काबे या बुतख़ाने का।"

तसन्नुन (تسنن) अ. पुं.–सुन्नी होना, पैग़म्बर के फ़रमान का अनुकरण करना।

तसन्नो (تصنع) अ. पुं.–कृत्रिमता, बनावट; दिखावा, ज़ाहिरदारी; ज़ाहिरी ख़ातिरदारी, कपट-व्यवहार; चापलूसी, चाटुकारिता।

तसर्रुफ़ (تصرف) अ. पुं.–प्रयोग, व्यवहार, इस्तेमाल; अधिकार, क़ब्ज़ा; परिवर्तन, रद्दोबदल; ग़बन, मोषण; किसी चीज़ में कतर-ब्योंत करके अपने मतलब का बना लेना; चमत्कार, करामात।

तसर्रुफ़े बेजा (تصرف بیجا) अ. फा.–ख़ियानत, ग़बन, मोषण, अपहरण।

तसल्ली (تسلی) अ. स्त्री.–सान्त्वना, ढाढ़स, दिलासा; संतोष, सब्र।

तसल्लुत (تسلط) अ. पुं.–अधिकार, क़ब्ज़ा, दख़ल; प्रभुत्व, ग़लबः।

तसल्सुल (تسلسل) अ. पुं.–निरंतरता, लगातारपन; लड़ी में लड़ी गूँथना; शृंखलाबद्ध।

तसव्वुफ़ (تصوف) अ. पुं.–ब्रह्मवाद, अध्यात्मवाद, सूफीइज़्म; मन की सांसारिक विषयों से विरक्ति, परहेज़गारी; वेदान्त, ज्ञानकांड, इल्मे तसव्वुफ।

तसव्वुर (تصور) अ. पुं.–चित्त को एकाग्र करके किसी को ध्यान में प्रत्यक्ष करना; अनुध्यान; ध्यान, विचार, ख़याल; कल्पना, तख़ैयुल।

तसाउद (تصاعد) अ. पुं.–ऊपर चढ़ना, बलंद होना।

तसादुम (تصادم) अ. पुं.–परस्पर टकराना, एक दूसरे को धक्का देना; मुठभेड़, लड़ाई; संघर्ष, टक्कर, टकराव; हानि पहुँचाना, ज़रर देना:

तसानीफ़ (تصانیف) अ.स्त्री.–'तस्नीफ़' का बहु., तस्नीफें, रचनाएँ।

तसाबीह (تسابیح) अ. स्त्री.–'तस्बीह' का बहु., जपमालाएँ, जप करने की मालाएँ।

तसामुह (تسامح) अ. पुं.–वीरता, बहादुरी; दरगुज़र, चश्मपोशी; वक्ता का कुछ कहना और सुननेवाले का कुछ समझना; दुटप्पी बात, जिससे सुननेवाला ग़लती कर सके, या कर दे।

तसावी (تساوی) अ. स्त्री.–परस्पर बराबर होना; समानता, बराबरी।

तसावीर (تصاویر) अ. स्त्री.–'तस्वीर' का बहु. 'तस्वीरें'।

तसाहुल (تساہل) अ. पुं.–आलस्य, अवसन्नता, काहिली, सुस्ती; आसान समझना।

तसीर (تسیر) अ. स्त्री.–सैर करना, विहार करना, सैर-सपाटा, तफ़्रीह।

तस्ईद (تصعید) अ. स्त्री.–ऊँची जगह पर चढ़ना, बलन्द होना; दो हाँडियों या प्यालों में विधिपूर्वक दवाओं का जौहर उड़ाना।

तस्कीन (تسکین) अ. स्त्री.–सान्त्वना, ढाढ़स, दिलासा; संतोष, इत्मीनान; रोग में कमी, इफ़ाक़ः; पीड़ा और दर्द में कमी, आराम; किसी अच् अक्षर को हल करना।

तस्ग़ीर (تصغیر) अ. स्त्री.–छोटा करना, संक्षिप्त करना; किसी शब्द के अर्थ में छोटाई पैदा करना, जैसे—'बाल' से 'बालक' बनाना; इस प्रकार बनाया हुआ शब्द।

तस्ख़ीन (تسخین) अ. स्त्री.–गर्म करना, गर्मी पहुँचाना।

तस्ख़ीर (تسخیر) अ. स्त्री.–वशीभूत करना, ताबे' करना; जीतना, जीतकर क़ब्ज़ा करना; भूत-प्रेत या जिन-परी को बस में करना; किसी को अपने ऊपर मुग्ध करना।

तस्ख़ीरे क़ुलूब (تسخیر قلوب) अ. स्त्री.–लोगों के मन को अपने आचार-व्यवहार से मोह लेना।

तस्ख़ीरे हमज़ाद (تسخیر ہمزاد) अ. फा. स्त्री.–मंत्र आदि के द्वारा 'हमज़ाद' को अपने वस में कर लेना, कहते हैं कि हमज़ाद के वशीभूत हो जाने पर मनुष्य जो चाहे कर सकता है, क्योंकि 'हमज़ाद' बड़ा शक्तिशाली होता है।

तस्ज़ीन (تسجین) अ. स्त्री.–कारागार में बंद करना, जेल में डाल देना।

तस्ज़ील (تسجیل) अ. स्त्री.–तमस्सुक लिखना; रजिस्ट्री (दस्तावेज़) क़रना; लेख्य, दस्तावेज़।

तस्तीर (تسطیر) अ. स्त्री.–लिखना, लेखन-क्रिया; लकीरें खींचना, रेखांकन।

तस्तीर (تستیر) अ. स्त्री.–छिपाना, गोपन; परदा डालना, परिवेष्टन।

तस्दीअः (تصدیعہ) अ. पुं.–एक बार कष्ट देना, एक बार दर्दे सर देना; कष्ट, दुःख, तक्रलीफ़।

तस्दीअ (تصدیع) अ. स्त्री.–सिर की पीड़ा, सर-दर्द; कष्ट, क्लेश, दुःख, तक़्लीफ़।

तस्दीक़ (تصدیق) अ. स्त्री.–सच्चे होने की ताईद करना, सच्चा बताना; प्रमाण, सुबूत।

तस्नियः (تثنیہ) अ. पुं.–एकवचन और बहुव़चन के बीच का, 'द्विवचन', यह हिंदी और उर्दू फ़ारसी में नहीं है, परन्तु संस्कृत और अरबी में है।

तस्नीफ़ (تصنیف) अ. स्त्री.–पुस्तक लिखना, किताब बनाना, रचना; लिखी हुई पुस्तक, बनाई हुई कविता; मनगढ़ंत, कपोल-कल्पित, फ़र्ज़ी बात।

तस्नीफ़ात (تصنیفات) अ. स्त्री.–'तस्नीफ़' का बहु., रचनाएँ, तस्नीफ़ें।

तस्नीम (تسنیم) अ. स्त्री.–स्वर्ग की एक (नहर)।

तस्फ़ियः (تصفیہ) अ. पुं.–आपस का निबटारा, समझौता; निर्णय, फ़ैसला; शुद्ध करना, साफ़ करना; शुद्धि, सफ़ाई; बाहम-परस्पर–दिलों की सफ़ाई, मेल।

तस्फ़ियःतलब (تصفیہ طلب) अ. फा. वि.–वे बातें जिनकी सफ़ाई होनी आवश्यक है।

तस्फ़ियःनामः (تصفیہ نامہ) अ. फा. पुं.–वह काग़ज़ जिसमें आपस के तस्फ़िए की लिखता-पढ़ती हो।

तस्बीग़ (تصبیغ) अ. स्त्री.–रंग करना, रँगना।

तस्बीह (تسبیح) अ. स्त्री.–सुब्हानल्लाह (ईश्वर अत्यन्त पवित्र है) कहना; जपमाला, माला।

तस्बीहख़्वाँ (تسبیح خواں) अ. फा. वि.–तस्बीह पढ़नेवाला; 'सुब्हानल्लाह' का जप करनेवाला।

तस्मः (تسمہ) फा. पुं.–चमड़े की कम चौड़ी और लम्बी पट्टी; जूते का फ़ीता; चमड़े का कोड़ा, दुर्रा।

तस्मःकश (تسمہ کش) फा. वि.–गले में फंदा डालकर मार डालनेवाला, ठग; जल्लाद, क़ातिल।

तस्मःपा (تسمہ پا) फा. पुं.–जिसका पाँव तस्मे से बँधा हो।

तस्मःबाज़ (تسمہ باز) फा. वि.–धूर्त, छली, वंचक, मक्कार; द्यूतकार, जुआरी।

तस्मःबाज़ी (تسمہ بازی) फा. स्त्री.–छल, कपट, फ़रेब; एक प्रकार का जुआ।

तस्मियः (تسمیہ) अ. पुं.–'बिस्मिल्लाह' (ईश्वर के नाम से आरम्भ) कहना; नामकरण, नाम रखना।

तस्मियःख़्वानी (تسمیہ خوانی) अ. फा. स्त्री.–बच्चे को पढ़ने बिठाने का संस्कार, विद्यारम्भ।

तस्मीन (تسمین) अ. स्त्री.–मोटा करना, स्थूल बनाना; खूब घी और चरबी खिलाना।

तस्मीम (تصمیم) अ. स्त्री.–दृढ़ करना, मज़बूत बनाना; दृढ़, पुख़्ता।

तस्लीख़ (تسلیخ) अ. स्त्री.–खाल उतारना, शरीर की खाल अलग करना।

तस्लीब (تصلیب) अ. स्त्री.–सूली पर चढ़ाना, सूली देना, फाँसी देना।

तस्लीम (تسلیم) अ. स्त्री.–सौंपना, सिपुर्द करना; सलाम करना, प्रणाम करना; कबूल करना, स्वीकार करना; आज्ञा का पालन करना, फ़रमाँबरदारी करना।

तस्लीमात (تسلیمات) अ. स्त्री.–'तस्लीम' का बहु., परन्तु एकवचन के अर्थ में आता है, प्रणाम, सलाम।

तस्लीस (تثلیث) अ. स्त्री.–तीन भाग करना, तीन में बाँटना; ईसाइयों का तीन ख़ुदा मानना।

तस्वियः (تسویہ) अ. पुं.–समान करना, बराबर बनाना; सीधा करना।

तस्वीद (تسوید) अ. स्त्री.–काला करना, काला रंग चढ़ाना; लिखना, तहरीर करना; मुसव्वदा लिखना।

तस्वीर (تصویر) अ. स्त्री.–मूर्ति बनाना, चित्र खींचना; चित्र, प्रतिकृति, शबीह; छायाचित्र, आलोकचित्र, फोटो; बहुत ही सुन्दर और हसीन शक्ल; प्रतिमा, मूर्ति, बुत।

तस्वीरकशी (تصویر کشی) अ. फा. स्त्री.–चित्रण, चित्रकर्म, तस्वीर बनाना।

तस्वीरख़ानः (تصویر خانہ) अ. फा. पुं.–वह स्थान जहाँ बहुत से चित्र हों, जो चित्रों से सजाया गया हो; जहाँ बहुत-सी सुन्दर स्त्रियाँ एकत्र हों, परीख़ाना, सनमख़ाना।

तस्वीरे अक्सी (تصویر عکسی) अ. स्त्री.–फ़ोटो, छायाचित्र।

तस्वीरे ख़याली (تصویر خیالی) अ. स्त्री.–किसी की आकृति जो चित्त में आये, तसव्वुर में आया हुआ नक़्शा; काल्पनिक चित्र, फ़रज़ी तस्वीर।

तस्वीरे गिली (تصویر گلی) अ. फा. स्त्री.–मिट्टी की मूर्ति।

तस्वीरे नीमरुख़ (تصویر نیم رخ) अ. फा. स्त्री.–एक तरफ़ से लिया हुआ चित्र, वह चित्र जिसमें मुख का एक रुख़ आये।

तस्सूज (طسوج) अ. पुं.–पात्र, भाजन, बर्तन; तट, किनारा; दो रत्ती की एक तौल, चौथाई 'दांग'।

तस्हील (تسہیل) अ. स्त्री.–सुगम बनाना, सरल करना, आसानी पैदा करना; सुगमता, सरलता, आसानी।

तस्हीले विलादत (تسہیل ولادت) अ. स्त्री.–बच्चा पैदा होने की आसानी, प्रसव की सुगमता।

तस्हीह (تصحیح) अ. स्त्री.–शुद्ध करना, दुरुस्त करना; इबारत आदि की ग़लतियाँ ठीक करना; प्रेस की कापियों या प्रूफ़ों की दुरुस्ती।

तह (تہ) फा. स्त्री.–निचला हिस्सा, तली; थाह, अन्त, इंतिहा; परत, तबक़; पेंदी, तला; रहस्य, भेद, नुक्ता।

तहक्कुम (تحکم) अ. पुं.–हुक्म जताना, ज़ोर दिखाना; ज़बर्दस्ती करना।

तहख़ानः (تہخانہ) फा. पुं.–ज़मीनदोज़ मकान, तलगृह, अधोगृह, भूगेह, भूगर्भगृह।

तहजुर्अः (تہ جرعہ) फा. अ. स्त्री.–तलछट, गाद; नीचे का बचा हुआ पानी या मदिरा; पीने से बची हुई मदिरा।

तहज्जी (تہجی) अ. स्त्री.–किसी की निन्दा या हजो करना; शब्दों के हिज्जे करना।

तहज्जुद (تہجد) अ. पुं.–रात में सोना और रात में ही जाग जाना, (स्त्री.) आधी रात के बाद की नमाज़।

तहज़्ज़ुन (تحزن) अ. पुं.–शोकग्रस्त होना, रंजीदा होना।

तहज्जुर (تحجر) अ. पुं.–पत्थर की तरह कठोर हो जाना; कठोरता, कड़ापन, सख़्ती।

तहत्तुक (تہتک) अ. पुं.–तू-तू, मैं-मैं, वाक्कलह; निन्दा, अपमान, रुस्वाई।

तहदार (تہدار) फा. वि.–सार्थक, बामा'नी; गंभीर, गहरा; गूढ़, दक़ीक़।

तहदेगी (تہ دیگی) फा. स्त्री.–नीचे की खुर्चन, देग या हाँडी की तह में जमी हुई खुर्चन।

तहनशीं (تہ نشیں) फा. वि.–नीचे बैठी हुई चीज़; तलछट।

तहपेच (تہ پیچ) फा. पुं.–पगड़ी के नीचे की टोपी या कपड़ा; लुंगी के नीचे का कपड़ा।

तहपोश (تہ پوش) फा. पुं.–सारी के नीचे का जाँघिया, अंडरवियर।

तहफ़्फ़ुज़ (تحفظ) अ. पुं.–सुरक्षा, हिफ़ाज़त; बचाव, रक्षा।

तहफ़्फ़ुज़े हुक़ूक़ (تحفظ حقوق) अ. पुं.–अपने हक़ों की रक्षा।

तहबंद (تہ بند) फा. पुं.–अधोवस्त्र, नीचे पहनने का कपड़ा; लुंगी, तहमद।

तह ब तह (تہ بہ تہ) फा. वि.–एक के नीचे एक, परत पर परत।

तहबाज़ारी (تہ بازاری) फा. स्त्री.–राज्य की ओर से बाज़ार की ज़मीन का ठेका या उसके किराए की उगाही।

तहब्बुज (تہبج) अ. पुं.–बहुत हलकी सूजन, भरभराहट।

तहमतन (تہمتن) फा. पुं.–महारथी, बहुत बड़ा योद्धा; रुस्तम की उपाधि।

तहमतनी (تہمتنی) फा. स्त्री.–शौर्य, वीरता, बहादुरी, शुजाअत।

तहमैदानी (تہ میدانی) फा. पुं.–ख़ानाबदोश, संचारजीवी।

तहम्मुल (تحمل) अ. पुं.–सहिष्णुता, बुर्दबारी; गंभीरता, संजीदगी; धैर्य, सब्र; नम्रता, नर्मी।

तहय्युज (تہیج) अ. पुं.–ज़मीन से गर्दोग़ुबार उठना।

तहय्युर (تحیر) अ. पुं.–अचम्भा, विस्मय, हैरत, तअज्जुब।

तहर्रुक (تحرک) अ. पुं.–हिलना, हरकत होना, हिलना-डुलना।

तहव्वुर (تہور) अ. पुं.–बहादुरी, वीरता, जवाँमर्दी।

तहव्वुर शिआर (تہور شعار) अ. वि.–शूर, वीर, बहादुर।

तहश्शुम (تحشم) अ. पुं.–बहुत नौकर-चाकरवाला होना; रोब दिखाना; क्रोध प्रकट करना।

तहस्सुर (تحسر) अ. पुं.–शोक, रंज; पश्चात्ताप, अफ़सोस।

तहाइफ़ (تحائف) अ. पुं.–तुहफ़ा का बहु., तोहफ़े।

तहाकुम (تحاکم) अ. पुं.–परस्पर मिलकर हाकिम के पास जाना।

तहालुफ़ (تحالف) अ. पुं.–बाहम किसी षड्यन्त्र करने की शपथ लेना; आपस की क़स्माक़स्मी, किसी बात के झूठ-सच होने के लिए आपस में क़स्मा परतीती।

तहारत (طہارت) अ. स्त्री.–शुद्धता, पवित्रता, पाकीज़गी; शौच, इस्तिंजा; स्नान, ग़ुस्ल।

तहावुर (تحاور) अ. पुं.–परस्पर वार्तालाप, बातचीत।

तहीन (طحین) अ. वि.–पिसा हुआ आटा।

तहीयः (تہیہ) अ. पुं.–इरादः, संकल्प; निश्चय, तय; तत्परता, आमादगी।

तहीयत (تحیت) अ. स्त्री.–सलाम, तस्लीम, प्रणाम, वंदना; रसूल पर दुरूद; जीवनदान करना, ज़िन्दगी देना; सत्ता, राज्य, हुकूमत।

तहीयात (تحیات) अ. स्त्री.–'तहीयत' का बहु., 'वंदनाएँ; दुरूदो सलाम।

तहूर (طہور) अ. वि.–पवित्र, निर्मल, शुद्ध, पाक।

तहेख़ाक (تہخاک) फा. अव्य.–ज़मीन के नीचे, अर्थात् क़ब्र में ।

तहेतेग़ (تہ تیغ) फा. वि.–हत, वधित, मक़्तूल।

तहोबाला (تہ وبالا) फा. वि.–तले-ऊपर, अस्त-व्यस्त, गड़बड़; विनष्ट, विध्वस्त , बरबाद।

तहैयुर (تحیر) अ. पुं.–दे. 'तहय्युर'।

तह्क़ीक़ (تحقیق) अ. स्त्री.–जाँच-पड़ताल, गवेषणा, तफ़्तीश; तलाश, जिज्ञासा; विदित, ज्ञात, दरयाफ़्त; अनुसंधान, रिसर्च।

तह्क़ीक़ात (تحقیقات)अ. स्त्री.–'तह्क़ीक़' का बहु., परन्तु एकवचन में बोलते हैं, सरकारी तौर पर किसी मुआमले की जाँच-पड़ताल।

तह्क़ीक़े हक़ (تحقیق حق) अ. स्त्री.–सत्य की खोज, सत्यान्वेषण, अस्लियत की तलाश।

तह्क़ीर (تحقیر) अ. स्त्री.–अपमान, अनादर, बेइज़्ज़ती; निंदा, अपयश, बदनामी; घृणा, उपेक्षा।

तह्ज़ीब (تہذیب) अ. स्त्री.–सभ्यता, शिष्टता, शाइस्तगी; संस्कृति, परिष्कृति, आरास्तगी; सुशीलता, ख़ुशअख़्लाकी; उठने-बैठने, बातचीत करने, और के सामने जाने का सलीका।

तह्ज़ीबे अख़्लाक़ (تہذیب اخلاق) अ. स्त्री.–अख़्लाक़ की दुरुस्ती, आचार-व्यवहार और नागरिकता के नियमों का पालन।

तह्ज़ीबे जदीद (تہذیب جدید) अ. स्त्री.–नवीन सभ्यता, पाश्चात्य संस्कृति, मग़्रिबी तह्ज़ीब।

तह्त (تحت) अ. वि.–निम्न, नीचे; अधीन, मातह्त; अधिकार, इख़्तियार, दबाव।

तह्तुल्लफ़्ज़ (تحت اللفظ) अ. वि.–नज़्म या ग़ज़ल को तरन्नुम से न पढ़कर साधारण ढंग से पढ़ना, गाकर न पढ़ना; गद्य की भाँति पढ़ी हुई कविता।

तह्तश्शुआअ (تحت الشعاع)अ. वि.–चांद्र मास के वे दो या तीन दिन जब चंद्रमा इतना महीन होता है कि दिखाई नहीं देता। ये दिन अशुभ माने जाते हैं।

तह्तस्सरा (تحت الثرا) अ. पुं.–पृथ्वी का सबसे नीचे का तल, पाताल।

तह्तानी (تحتانی) अ. वि.–उर्दू का वह अक्षर जिसके नीचे नुक़्ते हों।

तह्दियः (تہدیہ) अ. पुं.–किसी को कोई चीज़ भेंट करना, तोहफ़ा देना; भेंट, उपहार, उपायन, तोहफ़ा।

तहदीद (تہدید) अ. स्त्री.–त्रासना, डराना, भय दिखाना; धमकाना, घुड़कना, भर्त्सना।

तह्दीद (تحدید) अ. स्त्री.–ह्द बाँधना, सीमाबद्ध करना, सीमित या नियत करना; तीव्र करना, तेज़ करना।

तह्दीस (تحدیث) अ. स्त्री.–ह्दीस बयान करना।

तह्न (طحن) अ. पुं.–पीसना, आटा पीसना।

तह्मीद (تحمید) अ. स्त्री.–स्तुति करना, ह्म्द करना।

तह्रीक (تحریک) अ. स्त्री.–हिलाना, ह्रकत देना; प्रवृत्त करना, रग़्बत दिलाना; बरग़लाना, बह्काना; प्रस्तावना; आन्दोलन।

तह्रीफ़ (تحریف) अ. स्त्री.–किसी चीज़ की दशा और आकृति बदल देना; किसी बात को कुछ का कुछ कर देना; किसी शब्द के अक्षरों में परिवर्तन करके कुछ का कुछ बना देना।

तह्रीम (تحریم) अ. स्त्री.–किसी चीज़ को अपने या किसी के लिए हराम कर देना; पवित्र करना।

तह्रीर (تحریر) अ. स्त्री.–लिखना, लिखने का अमल; ह्स्तलिपि, हाथ की लिखावट; अक्षरन्यास, लिखावट; लेख्य, लेखपत्र, दस्तावेज़; लिखित प्रमाण, तह्रीरी सुबूत; मज़्मून, इबारत; ह्लकी लकीर या ख़त; सुरमे की लकीर; सनद, प्रमाणपत्र; इक़्रारनामा, संविदापत्र; लिखने की उजरत, लिखाई।

तह्रीरी (تحریری) अ. वि.–लिखित, लिखा हुआ।

तह्रीस (تحریص) अ.स्त्री.–लालच देना, प्रलोभन; प्रेरणा, रग़्बत दिलाना; प्रलोभ, लालच।

तह्ल[लु]कः (تہلکہ) अ. पुं.–कोलाहल, कोह्राम; खलबली, ह्लचल; मरना, निधन।

तह्लील (تحلیل) अ. स्त्री.–विलयन, घुलना; पचन, ह्ज़्म होना; क्षीणता, दुबला होना; किसी पदार्थ का गलना या पिघलना; किसी चीज़ को अलग-अलग करना।

तह्लील (تہلیل) अ. स्त्री.–'ला इलाहः इल्लल्लाह' (एक ईश्वर के सिवाय कोई ईश्वर नहीं है) कह्ना, ईश्वर-स्तुति करना, ह्म्दो सना करना।

तह्वील (تحویل) अ. स्त्री.–फिरना; फिराना; सिपुर्द करना, ह्स्तान्तरित करना; प्रवेश करना, दाख़िल होना; किसी ग्रह का किसी राशि में प्रवेश; दुकान का बकाया रुपया जो हर रोज़ बही में लिखा जाता है, रोकड़।

तह्वीलदार (تحویل دار) अ. फा. पुं.–जिसके पास तह्वील हो, रोकड़िया, ख़ज़ानची।

तह्वीले आफ़्ताब (تحویل آفتاب) अ. फा. स्त्री.–सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, संक्रान्ति।

तह्शियः (تحشیہ) अ. पुं.–किसी पुस्तक आदि पर फुटनोट लिखना।

तह्सीन (تحسین) अ. स्त्री.–प्रशंसा, श्लाघा, तारीफ़।

तह्सीने नाशनास (تحسین ناشناس) अ. फा. स्त्री.–किसी हुनर या काव्य की ऐसे व्यक्ति द्वारा प्रशंसा जो उससे बिल्कुल अनजान हो।

तह्सील (تحصیل) अ. स्त्री.–हासिल करना, उपार्जन; एकत्र करना, इकट्ठा करना; मालगुज़ारी, राजस्व; ज़िले का एक भाग, तहसीलदार की कचहरी।

तह्सीलदार (تحصیلدار) अ. फा. पुं.–तहसील का अफ़सर, जिसका काम मालगुज़ारी इकट्ठा करना होता है।

तह्सीलदारी (تحصیلداری) अ. फा. स्त्री.–तहसीलदार का पद; तहसीलदार का काम।

तह्सीले इल्म (تحصیلِ علم) अ. स्त्री.–इल्म हासिल करना, विद्योपार्जन।

तह्सीले ख़ाम (تحصیل خام) अ. फा. स्त्री.–ज़मींदारी का सारा रुपया, सारी तहसील, कच्ची तह्सील।

तह्सीले ज़र (تحصیل زر) अ. फा. स्त्री.–रुपया कमाना, धनोपार्जन।

तह्सीले हासिल (تحصیل حاصل) अ. स्त्री.–जो प्राप्त है उसकी प्राप्ति का प्रयत्न; व्यर्थ काम।

ता

ता (تا) फा. अव्य.–तक, तलक।

ताअत (طاعت) अ. स्त्री.–उपासना, आराधना, पूजा, इबादत, बंदगी।

ताआत (طاعات) अ. स्त्री.–'ताअत' का बहु., आराधनाएँ, पूजाएँ, इबादतें।

ताइन (طاعن) अ. वि.–बाण मारनेवाला, तीर से घायल करनेवाला; ता'ना देनेवाला।

ताइफ़ः (طائفہ) अ. पुं.–दल, समुदाय, जमाअत; रंडी और उसके साज़िंदे आदि।

ताइफ़ (طائف) अ. वि.–परिक्रमा करनेवाला, किसी चीज़ के चारों ओर फिरनेवाला, तवाफ़ करनेवाला; सोते में आनेवाला खयाल।

ताइब (تائب) अ. वि.–तौबा करनेवाला, पाप या किसी बुरी आदत पर लज्जित होकर उससे अलग रहने की प्रतिज्ञा करनेवाला।

ताइर (طائر) अ. पुं.–वायु में उड़नेवाला; पक्षी, चिड़िया, परंद।

ताइरे अर्श (طائر عرش) अ. पुं.–अर्श (ईश्वर का निवास-स्थान) तक उड़नेंवाला, 'जिब्रील' फ़िरिश्ता, आकाशगामी पक्षी।

ताइरे क़िब्लःनुमा (طائر قبلہ نما) अ. फा. पुं.–कुतुबनुमा की सुई।

ताइरे क़ुद्स (طائر قدس) अ. पुं.–दे. 'ताइरे अर्श'।

ताइरे लाहूत (طائر لاهوت) अ. पुं.–दे. 'ताइरे अर्श'; ब्रह्म-लोक तक उड़कर जानेवाला।

ताइरे सिद्रः (طائر سدره) अ. पुं.–दे. 'ताइरे अर्श'।

ताइल (طائل) अ. पुं.–लाभ, फ़ायदा।

ताई (طائی) अ. पुं.–अरब का एक क़बीलः (वंश) जिसमें 'हातिम' हुआ है।

ताईद (تائید) अ. स्त्री.–सहायता, मदद; पक्षपात, हिमायत; पुष्टि, तस्दीक़; दावे के प्रमाण में कोई दस्तावेज आदि।

ताईदे आस्मानी (تائید آسمانی) अ. फा. स्त्री.–दैवी सहायता, ग़ैबी मदद, अनायास ऐसी बात हो जाना जिससे किसी कठिन काम में सफलता प्राप्त हो जाय।

ताईदे ग़ैबी (تائید غیبی) अ. स्त्री.–दे. 'ताईदे आस्मानी।

ताईदे रब्बानी (تائید ربانی) अ. स्त्री.–दे. 'ताईदे आस्मानी'।

ता'ईन (تعئین) अ. स्त्री.–निश्चय, तऐयुन; नियुक्ति, तक़र्रुर।

ता'ऊन (طاعون) अ. पुं.–एक महामारी, एक वबा, प्लेग।

ताऊस (طاؤس) अ. पुं.–मयूर, वर्ही, शिखी, मोर।

ताए क़रशत (تائے قرشت) अ. स्त्री.–'अबजद' के हिसाब से 'क़रशत' वाली ते (ت)।

ताए सक़ील: (تائے ثقیلہ) अ. स्त्री.–हिंदी का 'ट' (ٹ)।

ताक़ः (طاقہ) अ. पुं.–कपड़े का थान, जिस प्रकार घोड़े के लिए 'रास', हाथी के लिए 'ज़ंजीर', रुपये के लिए 'मुब्लिग़' आता है उसी तरह कपड़े के थान के लिए 'ताक़ः' आता है।

ताक़ (طاق) अ. पुं.–दीवार में बना हुआ छोटा मेहराबदार ख़ोल, मोखलः; वह अंक जो दो से न बँटे, जसे–३, ५, ७, ९; दक्ष, निपुण, चतुर; समाप्त, खत्म, इस अर्थ में केवल 'ताक़त' के लिए आता है, जैसे–'ताक़त ताक़ हो गयी' अर्थात् शक्ति समाप्त हो गयी।

ताक़चः (طاقچہ) अ. फा. पुं.–छोटा ताक़।

ताक़त (طاقت) अ. स्त्री.–शक्ति, बल, ज़ोर; सामर्थ्य, शक्ति, मक़्दरत; साहस, मजाल; उत्साह, उमंग, हौसला; सत्ता, राज, हुकूमत; पात्र, ज़र्फ़।

ताक़तआज़माई (طاقت آزمائی) अ. फा. स्त्री.–ज़ोर लगाना, कोशिश करना।

ताक़तवर (طاقتور) अ. फा. वि.–शक्तिशाली, बलवान्, ज़ोरावर।

ताक़ी (طاقی) फा. स्त्री.–एक लम्बी टोपी जो ताक़ के

आकार की होती है; एक घोड़ा जिसकी एक आँख छोटी और दूसरी बड़ी होती है।

ताकीद (تاکید) अ. स्त्री.–कोई बात ज़ोर देकर कहना; किसी बात का ज़रूर करने या न करने का हुक्म देना; इस्रार, हठ, ज़िद।

ता'क़ीद (تعقید) अ. स्त्री.–इस तरह पर्दे में बात करना कि समझ में न आये; बहुत-सी गाँठें डाल देना; किसी वाक्य में शब्दों का ऐसा उलट-फेर कर देना कि अर्थ समझने में कठिनाई हो।

ताकीदन (تاکیداً) अ. वि.–ताकीद के साथ, ज़ोर देकर।

ताकीदी (تاکیدی) अ. वि.–जिस बात की ताकीद की गयी हो, ज़रूरी, सख़्त।

ताकीदे अकीद (تاکید اکید) अ.स्त्री.–बहुत ही कड़ी ताकीद।

ताक़ीदे मा'नवी (تعقید معنوی) अ. स्त्री.–किसी वाक्य या शे'र में किसी शब्द का ऐसा अर्थ लेना जो उसके साधारण अर्थ के विपरीत हो।

ता'क़ीदे लफ़्ज़ी (تعقید لفظی) अ. स्त्री.–किसी वाक़्य या शे'र में शब्दों का ऐसा उलट-फेर जिससे अर्थ बदल जाय।

ताकीदे शदीद (تاکید شدید) अ. स्त्री.–दे.'ताकीदे अकीद'।

ता कुजा (تا کجا) फा. अव्य.–कब तक, कहाँ तक।

ताक़े निस्याँ (طاق نسیاں) अ.पुं.–विस्मृति का ताक़, विस्मृति रूपी ताक़, जिसमें रखकर हर चीज़ भुला दी जाती है।

ताके (تاکہ) फा. अव्य.–दे. 'ता कुजा'।

ताख़ीर (تاخیر) अ. स्त्री.–विलंब, ढील, देर, "सब्र बड़ा दुश्वार तलब—चाह बड़ी ताख़ीर-पसंद"।

ताख़्तः (تاختہ) फा. वि.–दौड़ा हुआ, भागा हुआ।

ताख़्त (تاخت) फा. स्त्री.–आक्रमण, हमला; धावा, छापा; लूटमार, ग़ारतगरी।

ताख़्तोताराज (تاخت و تاراج) फा. स्त्री.–बरबादी, तबाही, विनाश, विध्वंस, लूटमार, लूट-खसोट।

ताग़ी (طاغی) अ. वि.–अवज्ञाकारी, नाफ़रमान, सरकश; विद्रोही, राजद्रोही, बाग़ी।

ताग़ूत (طاغوت) अ. पुं.–एक बुत; एक पिशाच; अत्यन्त निर्दय और अत्याचारी व्यक्ति।

ताग़ूती (طاغوتی) अ. वि.–पिशाचपन, शैतानी; पिशाच-वृत्त, शैतान।

ताचंद (تاچند) फा. अव्य.–कब तक, कहाँ तक।

ताज़ः (تازہ) फा. वि.–नवीन, नूतन, नया; सरसब्ज़, हरा-भरा; तत्कालीन, हाल का; हाल का बना हुआ; हाल का किया हुआ; हाल का पका हुआ; हाल का आया हुआ; शादाब, तरोताज़ा।

ताज़ःकार (تازہ کار) फा. वि.–नौसिखिया, नवाभ्यस्त।

ताज़ःदम (تازہ دم) फा. वि.–जिसे थकन और कसल न हो, फ़्रेश।

ताज़ःदिमाग़ (تازہ دماغ) फा. अ. वि.–जिसका दिमाग़ थका हुआ न हो, जिस दिमाग़ पर अभी ज़रा भी ज़ोर न पड़ा हो।

ताज़ः ब ताज़ः (تازہ بتازہ) फा. वि.–बिलकुल नया, बिल्कुल हाल का; ताज़ा ताज़ा, गर्मागर्म।

ताज़ःमश्क़ (تازہ مشق) फा. अ. वि.–दे. 'ताज़ःकार'।

ताज़ःवारिद (تازہ وارد) फा. अ. वि.–जो अभी-अभी बाहर से आया हो, नवागत।

ताज़ःविलायत (تازہ ولایت) फा. अ. वि.–जो अभी-अभी किसी अन्य देश से आया हो और इस देश की बोल-चाल और चाल-ढाल से अनभिज्ञ हो।

ताज (تاج) फा. पुं.–मुकुट, शाही टोपी; परंद के सर की कलग़ी, शिखा।

ताज़ (تاز) फा. प्रत्य.–हमला करनेवाला, जैसे–'यक्कः ताज़' अकेला हमला करनेवाला, (स्त्री.) आक्रमण, हमला; दौड़, ताख़्त।

ताज़गी (تازگی) फा. स्त्री.–नवीनता, नयापन; हरा-भरापन, सरसब्ज़ी; चेहरे की रौनक़, मुखश्री; प्रफुल्लता, फ़रहत; प्रसन्नता, ख़ुशी; तरावट, तरी, शीतलता।

ताजदार (تاجدار) फा. पुं.–मुकुटधारी, नरेश, राजा, बादशाह।

ताजपोशी (تاجپوشی) फा. स्त्री.–राजगद्दी, अभिषेक, राज्याभिषेक, बादशाह का गद्दी पर बैठना।

ताजवर (تاجور) फा. पुं.–दे. 'ताजदार'।

ताज़िंदगी (تا زندگی) अ. फा. अव्य.–तमाम उम्र, आजन्म, यावज्जीवन।

ता'ज़ियः (تعزیہ) अ. पुं.–हज़रत इमाम हुसैन के रौज़े की नक़्ल जिसका जुलूस मुहर्रम में उठता है।

ता'ज़ियःदार (تعزیہ دار) अ. फा. पुं.–ताज़िया बनाने और उठानेवाला।

ता'ज़ियःदारी (تعزیہ داری) अ. फा. स्त्री.–ताज़िया बनाना, उठाना और रौशनी वग़ैरः करना।

ता'ज़ियत (تعزیت) अ. स्त्री.–किसी के मर जाने पर उसके घर शोक प्रकट के लिए जाना, पुरसा।

ता'ज़ियतख़ानः (تعزیت خانہ) अ. फा. पुं.–वह घर जिसमें कोई ग़मी हो गयी हो, शोक-गृह।

ता'ज़ियतगाह (تعزیت گاہ) अ.फा.स्त्री.–दे. "ताज़ियतख़ानः"।

ताजियतनामः (تعزیت نامہ) अ. फा. पुं.–किसी के मरने पर उसके उत्तराधिकारियों के शोक का ख़त, शोकपत्र।

ताज़ियानः (تازیانہ) फा. पुं.–कोड़ा, प्रतोद, कशा, चाबुक।

ताजिर (تاجر) अ. पुं.–व्यापारी, सौदागर, व्यवसायी, वणिक्।

ताजिरानः (تاجرانہ) अ. फा. अव्य.–व्यापारियों-जैसा, जैसा व्यापारियों के लिए होता है वैसा।

ताज़ी (تازی) फा. वि.–अरब की भाषा, अरबी; अरब का घोड़ा; शिकारी कुत्ता; अरब का रहनेवाला।

ताज़ीक (تاجیک) फा. पुं.–अरब की वह संतान जो ईरान में रहकर जवान हुई हो।

ताज़ीख़ानः (تازی خانہ) फा. पुं.–कुत्तों के रहने का घर, जहाँ कुत्ते पाले और रखे जायँ, श्वानागार।

ताज़ीनज़ाद (تازی نژاد) फा. वि.–अरब की नस्ल का घोड़ा।

ता'ज़ीब (تعذیب) अ. स्त्री.–कष्ट देना, दुःख देना, मुसीबत पहुँचाना।

ता'ज़ीम (تعظیم) अ. स्त्री.–आदर, सत्कार, सम्मान, इज़्ज़त; प्रणाम, तस्लीम।

ता'ज़ीर (تعزیر) अ. स्त्री.–सज़ा देना, दंड देना।

ता'ज़ीरात (تعزیرات) अ. स्त्री.–'ता'ज़ीर' का बहु., सज़ाएँ; सज़ाओं से संबद्ध न्याय की पुस्तक, दंड-विधान।

ता'जील (تعجیل) अ. स्त्री.–जल्दी करना, शीघ्रता करना; शीघ्रता, जल्दी।

ताज़ीस्त (تازیست) फा. अव्य.–ज़िंदगी भर, आजन्म।

तातार (تاتار) फा. पुं.–तुर्किस्तान का एक इलाक़ा जहाँ तातारी रहते हैं।

तातारी (تاتاری) फा. पुं.–तातार देश का रहनेवाला।

ता'तीर (تعطیر) अ. स्त्री.–इत्र में बासना, सुगंधित करना।

ता'तील (تعطیل) अ. स्त्री.–अवकाश, फ़ुर्सत; निठल्लापन, बेकारी; छुट्टी, कारख़ाने, दफ़्तर या स्कूल के बंद होने का दिन।

तातूरः (تاتورہ) फा. पुं.–धतूरा, धत्तूर, एक प्रसिद्ध विषैला फल।

तादमेज़ीस्त (تادم زیست) फा. अव्य.–जब तक आख़िरी साँस है तब तक, ताज़ीस्त, जीवनभर।

ता'दाद (تعداد) अ. स्त्री.–गणना, गिनती; अनुमिति, अंदाज़ः; संख्या, शुमार।

ता'दियः (تعدیہ) अ. पुं.–रोग का एक स्थान से दूसरे स्थान तक या एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक जाना; अकर्मक क्रिया को सकर्मक बनाना।

तादीब (تادیب) अ. स्त्री.–अदब सिखाना, शिष्ट बनाना; तंबीह करना, घुड़की देना, कान मरोड़ना, सज़ा देना।

ता'दील (تعدیل) अ. स्त्री.–एक वस्तु को दूसरी वस्तु के बराबर करना; समता, बराबरी; ठीक करना, दुरुस्त करना; सीधा करना, टेढ़ निकालना।

ता'नः (طعنہ) अ. पुं.–व्यंग, कटाक्ष, तंज़; उपालम्भ, गिला; निंदा, बुराई।

ता'नःज़न (طعنہ زن) अ. फा. वि.–ता'नः देनेवाला, व्यंग करनेवाला।

ता'नःज़नी (طعنہ زنی) अ. फा. स्त्री.–ता'नः देना, व्यंग करना।

ता'न (طعن) अ. उभ.–कटाक्ष, व्यंग, ता'नः; तीर मारना।

तानीस (تانیث) अ. स्त्री.–स्त्रीलिंग होना; स्त्रीलिंग।

ता'नोतश्नीअ (طعن و تشنیع) अ. स्त्री.–व्यंग और कटाक्ष, तरह-तरह के ताने; लानत-मलामत।

ताफ़्तः (تافتہ) फा. वि.–बटा हुआ, बल दिया हुआ; चमका हुआ; चमकदार, रौशन; एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

ताबः (تابہ) फा. पुं.–रोटी पकाने का बर्तन, तवा।

ताब (تاب) फा. स्त्री.–उष्णता, गर्मी, उष्णिमा; ज्योति, आभा, चमक; बल, पेच, ख़म; शक्ति, ज़ोर; सहन-शक्ति, बरदाश्त; सामर्थ्य, मक़्दूर, (प्रत्य.) रौशन करनेवाला, जैसे—'आलमताब' संसार को चमकानेवाला।

ताबइम्काँ (تابہ امکاں) फा. अ. अव्य.–अपने इम्कान भर, यथासंभव, यथाशक्ति।

ता ब कमर (تا بہ کمر) फा. अव्य.–कमर तक, कमर तक आया या पहुँचा हुआ, जैसे—ता ब कमर पानी या ता ब कमर ज़ुल्फ़।

ताब कुजा (تابہ کجا) फा. अव्य.–कहाँ तक, कब तक, ता कुजा, ताकि।

ता बकै (تا بکے) फा. अव्य.–दे. 'ताब कुजा'।

ताबख़ानः (تاب خانہ) फा. पुं.–गर्म किया हुआ कमरा, गर्म मकान; गर्म हम्माम, गर्म स्नानागार; वह कमरा जहाँ चूल्हा या भट्ठी हो।

ताबख़ानः (تابہ خانہ) फा. अव्य.–घर तक, मकान तक।

ता ब गुलू (تا بہ گلو) फा. अव्य.–गले तक।

ता ब ज़ीस्त (تا بہ زیست) फा. अव्य.–जीवन भर, जीते-जी, आजीवन, आजन्म।

ताबदादः (تابدادہ) फा. वि.–बटा हुआ, बल दिया हुआ, बलित।

ताबदान (تابدان) फा. पुं.–मकान का रौशनदान; गवाक्ष, झरोखा, वातायन।

ताबदार (تابدار) फा. वि.–ज्योतिर्मय, जाज्वल्यमान, ताबाँ; बटा हुआ, बल दिया हुआ, बलित।

ताबनाक (تابناک) फा. वि.–रौशन, प्रकाशमान, ज्योतिर्मय, चमकता हुआ।

ताबनाकी (تابناکی) फा .स्त्री.–चमक, प्रकाश, ज्योति, नूर।

ता ब मक़्दूर (تا بہ مقدور) फा. अ. अव्य.–यथाशक्य, यथाशक्ति, अपनी ताक़त भर, भरसक।

ता ब हद्दे (تا بہ حدے) फा. अ. अव्य.–इस हद तक, यहाँ तक; जिस हद तक, जहाँ तक।

ता ब हयात (تا بہ حیات) फा. अ. अव्य.–दे. 'ता ब ज़ीस्त'।

ताबाँ (تاباں) फा. वि.–प्रकाशमान, दीप्त, ज्वलन्त, रौशन, मुनव्वर।

ताबानी (تابانی) फा.स्त्री.–प्रकाश, आभा, ज्योति, रौशनी, नूर।

ताबिंदः (تابندہ) फा. वि.–चमकनेवाला, प्रकाशमान, रौशन।

ताबिंदगी (تابندگی) फा.स्त्री.–चमक, जिला, जगमगाहट; ज्योति, प्रकाश, नूर, रौशनी।

ताबिई (تابعی) अ. पुं.–वह अरब जिसने रसूल के किसी सिहाबी (निकट जन) को देखा हो।

ताबिए फ़रमान (تابع فرمان) अ. वि.–आज्ञापालक, हुक्म माननेवाला; भक्त, वफ़ादार।

ताबिए मुहमल (تابع مہمل) अ. पुं.–वह अनर्थक शब्द जो किसी शब्द से मिलाकर बोला जाता है, जैसे—'रोटी-वोटी'। इसमें वोटी का कोई अर्थ नहीं हैं, परन्तु बोलते हैं।

ता'बियः (تعبیہ) अ. पुं.–सजाना, सँवारना; क्रमबद्ध करना, तर्तीब देना; लड़ाई के लिए फ़ौज सजाना; पच्चीकारी करना, जड़ना।

ताबिश (تابش) फा. स्त्री.–तपन, उष्णता, गर्मी; ज्योति, प्रकाश, ताबानी; जगमगाहट; चमक-दमक।

ताबिशे आफ़्ताब (تابش آفتاب) फा. स्त्री.–धूप की गर्मी, सूरज की तेज़ चमक।

ताबिस्तान (تابستان) फा. पुं.–ग्रीष्मकाल, गर्मी की ऋतु।

ताबीदः (تابیدہ) फा. वि.–ज्योतिर्मय, प्रकाशित, चमकता हुआ, चमका हुआ।

ता'बीर (تعبیر) अ. स्त्री.–ख़्वाब का नतीजा बयान करना, स्वप्नफल बताना; कष्ट कल्पना करना, तौजीह करना; कहना, बताना।

ताबूत (تابوت) अ. पुं.–वह संदूक़ जिसमें शव को बन्द करके गाड़ते हैं; एक प्रकार का ताज़िया जो शीआ उठाते हैं।

ताबे' (تابع) अ. वि.–वशवर्ती, वशीभूत, अधीन, ज़ेरे हुक्म; आज्ञाकारी, फ़रमाँबरदार; अनुयायी, अनुकर्ता, मुक़ल्लिद।

ताबे ग़म (تاب غم) फा. अ. स्त्री.–दुःख सहने की शक्ति, ग़म की बरदाश्त।

ताबे ज़ब्त (تاب ضبط) फा. अ. स्त्री.–दुःख और कष्ट की सहन-शक्ति, प्रेम के कष्ट सहने की शक़्ति।

ताबे'दार (تابعدار) अ. फा. वि.–अनुयायी, आज्ञाकारी, हुक्म माननेवाला, फ़र्मांबरदार।

ताबे फ़ुग़ाँ (تاب فغاں) फा. स्त्री.–आह करने की शक्ति।

ताबो तुवाँ (تاب و تواں) फा. स्त्री.–शक्ति, सामर्थ्य, ज़ोर, क़ुव्वत।

ता'म (طعم) अ. पुं.–स्वाद, रस, ज़ाइक़ा, मज़ा।

ताम (تام) अ. वि.–समस्त, सर्व, सब; पूर्ण, समग्र, कुल।

तामात (طامات) अ. स्त्री.–डींग, अहंवाद, लाफ़; बनावटी फक़ीरों और साधुओं की वे डींगें जो वे अपनी दुकानदारी चलाने के लिए दूसरे लोगों के सामने मारते हैं और जिनमें वे अपनी करामातों और चमत्कारों का वर्णन बड़े चित्ताकर्षक और रोचक ढंग से करते हैं।

ता'मियः (تعمیہ) अ. पुं.–अंधा करना, आँखें फोड़ना; छिपाना, गोपन करना; 'अबजद' के हिसाब से निकाली हुई तारीख़ में कोई संख्या बढ़ाना, जिससे वर्षों की संख्या पूरी हो जाय, परन्तु इस प्रकार बढ़ाई हुई संख्या 'नौ' से अधिक नहीं हो सकती, बरख़िलाफ़ 'तख़्रिज़:' के जिसमें संख्या घटाने की कोई हद नियत नहीं है।

ता'मीम (تعمیم) अ. स्त्री.–किसी बात को आम कर देना, व्याप्ति, हर एक के लिए कर देना, 'तख़्सीस' न रखना।

ता'मीर (تعمیر) अ. स्त्री.–निर्माण, रचना, बनाना; इमारत बनाना, वास्तु-क्रिया; सुधार, इस्लाह; बनावट, साख़्त; इमारत, बिल्डिग।

ता'मीरी (تعمیری) अ. वि.–इस्लाही, रचनात्मक।

ता'मीरे क़ौम (تعمیر قوم) अ.स्त्री.–राष्ट्र-निर्माण, देश का सुधार; जाति-निर्माण, अपनी बिरादरी, क़ौम या ख़ानदान का सुधार।

ता'मीरे मुल्क (تعمیر ملک) अ. स्त्री.–राष्ट्र-निर्माण, देश का सुधार।

ता'मील (تعمیل) अ.स्त्री.–आज्ञा का पालन करना, हुक्म मानना; किसी परवाने, सम्मन या वारंट की तक़्मील, निष्पादन।

ता'मीलात (تعمیلات) अ. स्त्री.–अदालत में सम्मन आदि की तामीलों का काम, इनकी तामीलें।

ता'मीले हुक्म (تعمیل حکم) अ. स्त्री.–आज्ञा का पालन, हुक्म की तामील।

तामे' (طامع) अ. वि.–लोलुप, लिप्सु, लालची, लोभी।

तामेह (طامیح) अ. वि.–उद्दंड, उजड्ड; अवज्ञाकारी, सरकश; उच्च, बलंद।

ताम्मः (تامہ) अ. स्त्री.–संपूर्ण, सब, तमाम।

तार (تار) फा. पुं.–तन्तु, डोरा; किसी धातु का पतला सूत; क्रम, सिलसिला; धागा, सूत्र; तार की ख़बर, टेलीग्राम; लस, लस का चेप; झड़ी, क़तार, (वि.) 'तारीक' का लघु., अँधेरा, तमिस्र, तारीक।

तारक (تارک) फा. पुं.–माँग, सीमंत; चोटी, शृंग; शिरस्त्राण, खोद।

तारकश (تارکش) फा. पुं.–धातुओं के तार बनानेवाला।

तारकशी (تارکشی) फा.स्त्री.–सोने-चाँदी के तार बनाना; कपड़े के तार अलग करके बेल-बूटे बनाने का काम।

तार तार (تارتار) फा. वि.–टुकड़े-टुकड़े, धज्जी-धज्जी, रेज़ा-रेज़ा; बिल्कुल फटा पुराना कपड़ा।

तारपोद (تارپود) फा. पुं.–दे. 'तारोपोद'।

ताराज (تاراج) फा. पुं.–विनाश, बरबादी; लूटमार, ग़ारतगरी; नष्ट, विनष्ट, बरबाद।

ताराजगाह (تاراجگاہ) फा. स्त्री.–लूट-मार की जगह, वह स्थान जहाँ डाकू रहते हों और लोग लुट जाते हों।

तारिक़ (طارق) अ. पुं.–दुर्घटना, सख़्त हादिसा; प्रातःकाल में उदय होनेवाला एक तारा; हर वह चीज़ जो रात में निकले, इसी लिए चोर और राहगीर को भी कहते हैं; इस्लाम का एक प्रसिद्ध सेनापति।

तारिक (تارک) अ. वि.–त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला; अहंकारी, घमंडी।

तारिकुद्दुन्या (تارکُ الدنیا) जिसने संसार से पूर्णतया सम्बन्ध विच्छिन्न कर लिया हो, विरक्त, निवृत्त, पति।

तारिके दुन्या (تارک دنیا) अ. वि.–दे. 'तारिकुद्दुन्या'।

तारिके लज़्ज़ात (تارک لذات) अ. वि.–जिसने संसार के सारे आनंदों पर लात मार दी हो, निस्पृह, निग्रही।

तारी (طاری) अ. वि.–छा जानेवाला, ढँक लेनेवाला; छाया हुआ, ढाँके हुए।

ता'रीक़ (تعریق) अ. स्त्री.–पसीना निकालना; औषधियों के द्वारा शरीर से पसीना निकालना।

तारीक (تاریک) फा.वि.–तमिस्र, अंधकारमय, अँधियारा।

तारीक ज़मीर (تاریک ضمیر) फा. अ. वि.–अंतःमलिन, जिसका बातिन पापमय हो।

तारीक दरूँ (تاریک دروں) फा. वि.–दे. 'तारीक दिल'।

तारीक दिल (تاریک دل) फा. वि.–जिसके दिल में ईमान की रौशनी न हो, अंधात्मा; ख़बीस, दुष्टात्मा।

तारीक बातिन (تاریک باطن) फा.अ.वि.–दे.'तारीक दिल'।

तारीकिए शब (تاریکئی شب) फा. स्त्री.–रात का अँधेरा।

तारीकी (تاریکی) फा. स्त्री.–अँधियारी, अंधकार, अँधेरा; धुँधलापन।

तारीख़ (تاریخ) अ. स्त्री.–महीने की तिथि, डेट; मुक़द्दमे की सुनवाई का दिन; पिछले हालात का ज़िक्र; इतिहास, तवारीख़; इतिहास की किताब; 'अबजद' के हिसाब से निकाला हुआ किसी वाक़िए का साल; इतिहास-विज्ञान, वह इल्म जिसमें पिछले हालात और वाक़ियात का वर्णन हो।

तारीख़गो (تاریخ‌گو) अ. फा. वि.–वह शाइर जिसे 'अबजद' के हिसाब से किसी घटना की तारीख़ निकालने का अभ्यास हो।

तारीख़दाँ (تاریخ‌داں) अ. फा. वि.–इतिहासवेत्ता, इल्मे तारीख़ का माहिर।

तारीख़नवीस (تاریخ‌نویس) अ. फा. वि.–इतिहासकार, तारीख़ लिखनेवाला, मुअर्रिख़।

तारीख़ी (تاریخی) अ. वि.–प्राचीन इतिहास से सम्बन्ध रखनेवाला, जैसे 'तारीखी मक़ाम'; तारीख़ का, ऐतिहासिक।

ता'रीज़ (تعریض) अ. स्त्री.–सामने रखना, पेश करना; दूसरे पर टालकर बात कहना, व्यंग करना; कटाक्ष, व्यंग; आपत्ति, एतिराज़, गिरिफ़्त।

ता'रीफ़ (تعریف) अ. स्त्री.–प्रशंसा, श्लाघा, मद्ह; परिचय, जानकारी; गुण, जौहर; व्याख्या, तशीह।

ता'रीफ़ुल मज्हूल (تعریف‌المجہول) अ. वाक्य–किसी अज्ञात चीज़ का परिचय अज्ञात चीज़ से, जैसे—कोई पूछे 'चुर्ज़क' किसे कहते हैं और उत्तर में कहा जाय 'उल्मक़' को।

ता'रीब (تعریب) अ. स्त्री.–किसी दूसरी भाषा के शब्द को अरबी बनाना।

तारुम (طارم) अ. पुं.–प्रासाद, महल; अट्टालिका, बाला-खाना; लकड़ी का मकान।

तारे अन्कबूत (تار عنکبوت) फा. अ. पुं.–मकड़ी के जाले का तार; बहुत ही कमज़ोर चीज़।

तारे अश्क (تار اشک) फा.पुं.–आँसुओं का तार, रोने का सिलसिला।

तारे नज़र (تار نظر) फा. अ. पुं.–दे. 'तारे निगाह'।

तारे नफ़स (تار نفس) फा. अ. पुं.–साँस का डोरा, साँस का आना-जाना।

तारे निगाह (تار نگاہ) फा. पुं.–दृष्टि का रश्मि-समूह, निगाह की शुआएँ।

तारे बर्क़ी (تار برقی) फा. अ. पुं.–बिजली का तार।

तारे बाराँ (تار باراں) फा. पुं.–बरसात के पानी की झड़ी।

तारे मिस्तर (تار مسطر) फा. अ. पुं.–'मिस्तर' का तार, लकीरें बनाने के पट्ठे का डोरा।

तालबे गोर (تالب گور) फा. अव्य.–क़ब्र के किनारे तक, क़ब्र के मुँह तक।

तालल्लाह (طال اللہ) अ. अव्य.–ख़ुदा ज़ियादा करे, ख़ुदा बढ़ाये।

तालाब (تالاب) फा. पुं.–तड़ाग, कासार, वापी।

तालार (تالار) फा. पुं.–चार खंभों पर बनाया हुआ मंच, जो खेतों की रखवाली के लिए होता है, मचान, टाँड़।

तालिए ख़ुफ़्तः (طالع خفتہ) अ. फा. पुं.–सोता हुआ नसीब, दुर्भाग्य।

तालिए ख़्वाबीदः (طالع خوابیدہ) अ. फा. पुं.–दे. 'ता० ख़ुफ़्तः'।

तालिएबेदार (طالع بیدار) अ. फा. पुं.–जागता हुआ नसीब, सौभाग्य।

तालिब (طالب) अ. पुं.–इच्छुक, ख़्वाहिशमंद; याचक, माँगनेवाला; अभिलाषी, आर्ज़ूमंद; लालायित, लिप्सु, मुश्ताक़।

तालिबे इल्म (طالب علم) अ. पुं.--विद्यार्थी, पढ़नेवाला, छात्र।

तालिबे उक़्बा (طالب عقبی) अ. पुं.–मोक्ष, स्वर्ग और पुण्य का इच्छुक, दीन्दार, धर्मनिष्ठ।

तालिबे ज़र (طالب زر) अ. फा. पुं.–धनेच्छुक, रुपये का ख़्वाहाँ, दुनियादार।

तालिबे दीदार (طالب دیدار) अ. फा. पुं.–दर्शनों का अभिलाषी।

तालिबे दुन्या (طالب دنیا) अ. पुं.–दे. 'तालिबे ज़र'।

तालिबो मतलूब (طالب و مطلوب) अ. पुं.–प्रेमी और प्रेमिका, नायक और नायिका, आशिक़ और माशूक़।

ता'लीक़ः (تعلیقہ) अ. पुं.–ज़मींदार या सरकार की ओर से खेतों की जिंस पर लगायी हुई रोक, ताकि वाद के निर्णय से पहले माल उठाया न जा सके।

ता'लीक़ (تعلیق) अ. स्त्री.–लटकाना, किसी चीज़ को दूसरे चीज़ के सहारे से ठहराना।

तालीफ़ (تالیف) अ. स्त्री.–दो या कई वस्तुओं को परस्पर संयुक्त करना; कई लेखकों की कृतियों में से छाँटकर अलग एक पुस्तक बनाना, संपादन करना; इस प्रकार बनाई हुई पुस्तक।

तालीफ़े क़ुलूब (تالیف قلوب) अ. स्त्री.–लोगों के मन अपनी ओर इस प्रकार आकर्षित करना जिसमें श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव हो।

ता'लीम (تعلیم) अ. स्त्री.–शिक्षा देना, पढ़ाना; सिखाना, बताना; शिक्षा, पढ़ाई; उपदेश, नसीहत; गुरुमंत्र, दीक्षा, तलक़ीन; नाचने-गाने की शिक्षा।

ता'लीमगाह (تعلیم گاہ) अ. फा. स्त्री.–पढ़ने का स्थान, पाठशाला, मदरसा।

ता'लीमयाफ़्तः (تعلیم یافتہ) अ. फा. वि.–शिक्षित, पढ़ा-लिखा; शिष्ट, सभ्य, तमीज़दार।

ता'लीमे जदीद (تعلیم جدید) अ. स्त्री.–नई तालीम, आज कल की पश्चिमी शिक्षा, नवीन शिक्षा, आधुनिक शिक्षा।

तालीमे निस्वाँ (تعلیم نسواں) अ. स्त्री.–औरतों की तालीम, स्त्री-शिक्षा।

ता'लीमे बालिग़ाँ (تعلیم بالغاں) अ. स्त्री.–ऐसे लोगों की शिक्षा जिनकी आयु काफ़ी हो चुकी हो और जो अपने अपने धंधों में लगे हों, प्रौढ़-शिक्षा।

ता'लील (تعلیل) अ. स्त्री.–कारण बताना; प्रमाण देना; 'अलिफ़' 'वाव' अथवा 'ये' को किसी दूसरे अक्षर से बदलना, (व्या.)।

तालूत (طالوت) अ. पुं.–इस्राईल जाति का एक शासक जो भिश्ती था, उसने जालूत नाम के एक बड़े अत्याचारी नास्तिक को हज़्रत दाऊद की सहायता से मारा था जो उस समय उसकी फ़ौज के सेनापति थे।

ताले (طالع) अ. पुं.–उदय होनेवाला, निकलनेवाला; भाग्य, क़िस्मत, प्रारब्ध।

ताले'आज़माई (طالع آزمائی) अ. फा. स्त्री.–भाग्य की परीक्षा, प्रयत्न, कोशिश।

ताले'मंद (طالع مند) अ. फा. वि.–भाग्यवान्, सुभागीन, ख़ुश इक़्बाल।

ताले'वर (طالع ور) अ. फा. वि.–दे. 'ताले'मंद'।

ताले'शनास (طالع شناس) अ.फा. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

तालेह (طالح) अ. वि.–दुराचारी, कदाचारी, दुष्प्रकृति, बदआ'माल।

तावक़्तेकि (تاوقتیکہ) फा. अ. अव्य.–जब तक कि।

तावान (تاوان) अ. पुं.–नुक़सान का मुआवज़ा, क्षतिपूर्ति; अर्थदंड, जुर्माना; वह धन या सामान आदि जो हारा हुआ राष्ट्र विजेता को देता है।

तावाने जंग (تاوان جنگ) अ. फा. पुं.–वह रक़म और सामान जो पराजित राज्य विजेता को देता है।

ता'वीक़ (تعویق) अ. स्त्री.–विलंब, अति काल, ढील, देर; टालमटोल, आजकल।

ता'वीज़ (تعویذ) अ. पुं.–वह काग़ज़ जिस पर कोई मंत्र आदि लिखकर गले में डालते या बाहु पर बाँधते हैं, कवच,

मंत्रचक्र, रक्षाकवच; क़ब्र पर वना हुआ ईंटों या पत्थर का निशान; गले का एक आभूषण.।

तावील (تاویل) अ. स्त्री.–स्पष्टीकरण, तौज़ीह; किसी वात का अस्ली अर्थ से हटकर दूसरा अर्थ; किसी वात का ऐसा कारण वताना जो करीब-करीब ठीक जान पड़े; स्वप्न-फल कहना, ता'वीर वताना।

ताश (تاش) तु. प्रत्य.–संगी, साथी, शरीक, साझेदार, जैसे—'ख़्वाज़:ताश' एक स्वामी के शरीक, अर्थात् वह नौकर जो दासता में एक स्वामी के शरीक हो।

(उ.) पुं.–खेलने के पत्ते, गंज़िफ़ा।

ताशक़ंद (تاشقند-تاشکند) फा. पुं.–रूसी तुर्किस्तान का एक नगर, जो पहले ईरान के पास था।

तास (تاس–طاس) फा. पुं.–वड़ा तश्त, परात; वह कटोरा जो जल घड़ी की नाँद में पड़ता था; एक सुनहरे तारों का जड़ाऊ कपड़ा।

तासीस (تاسیس) अ. स्त्री.–नींव रखना, वुनियाद डालना; आधार, न्यास, वुनियाद।

तासे' (تاسع) अ. वि.–नवाँ, नवम।

ताहम (تاهم) फा. अव्य.–तौ भी, फिर भी, तथापि, तदपि, तद्यपि।

ताहिर (طاهر) अ. वि.–पवित्र, शुद्ध, पुनीत, पाक।

ति

तिक्कः (تکہ) फा. पुं.–कटिवंध, कमरवंद; गोश्त की लंवी और पतली वोटी; गोश्त का लोथड़ा।

तिनाब (طناب) अ. स्त्री.–दे. 'तनाव', दोनों उच्चारण शुद्ध हैं।

तिफ़्ल (طفل) अ. पुं.–बाल, बालक, बच्चा।

तिफ़्लक (طفلک) अ. फा. पुं.–छोटा बच्चा, शिशु।

तिफ़्लमश्रब (طفل مشرب) अ. वि.–दे. 'तिफ़्लमिज़ाज'।

तिफ़्लमिज़ाज (طفل مزاج) अ. वि.–बच्चों-जैसी हरकतें करनेवाला, जिसके मिज़ाज में लड़कपन हो।

तिफ़्लानः (طفلانہ) अ. फा. वि.–बच्चों-जैसा, बालोचित, शैशव।

तिफ़्लाने चमन (طفلانِ چمن) अ. फा. पुं.–बाग़ के छोटे पौदे, फूल और कलियाँ।

तिफ़्ली (طفلی) अ. स्त्री.–बाल्यावस्था, बचपन, लड़कपन।

तिफ़्ले अश्क (طفل اشک) अ. फा.. पुं.–आँसुओं की बूँदें, अश्रु-विंदु।

तिफ़्ले आतश (طفل آتش) अ.फा. पुं.–अग्निकण, स्फुलिंग, चिनगारी।

तिफ़्ले मक्तब (طفل مکتب) अ. पुं.–अलिफ़-वे पढ़नेवाला, निरक्षर; मूर्ख, वेवक़ूफ़; अनभिज्ञ, अनाड़ी।

तिफ़्ले शीरख़्वार (طفل شیرخوار) अ. फा. उभ.–दुध मुँहा वच्चा, स्तनपायी।

तिफ़्ले हिंदू (طفل هندو) अ. फा. पुं.–आँख की पुतली, कनीनिका।

तिब (طب) अ. स्त्री.–चिकित्साशास्त्र, वैद्यक, आयुर्वेद, हिक्मत।

तिबाअ (تباع) अ. पुं.–अनुसरण, अनुकरण, पैरवी।

तिबाअ (طباع) अ. पुं.–प्रकृति, स्वभाव, आदत; 'तबीअत' और 'तब्अ' का बहु., प्रकृतियाँ।

तिबाबत (طبابت) अ. स्त्री.–तबीव का पेशा, चिकित्सा-कर्म; वैद्यक, आयुर्वेद, हिक्मत।

तिब्न (تبن) अ. स्त्री.–घास, सूखी वास।

तिब्बी (طبی) अ. वि.–चिकित्सा-सम्बन्धी, तिव से सम्बन्ध।

तिब्बे क़दीम (طب قدیم) अ. स्त्री.–प्राचीन चिकित्सा-पद्धति, पुराने तरीक़े का इलाज।

तिब्बे जदीद (طب جدید) अ. स्त्री.–नवीन चिकित्सा-प्रणाली, पाश्चात्य आयुर्वेद।

तिब्यान (تبیان) अ. पुं.–प्रकट होना, व्यक्त होना, वाज़ेह होना; व्यक्त करना, ज़ाहिर करना, कथन, वचन, कलाम, क़ौल।

तिमुर (تیمور - تمر) तु. पुं.–लोह, लोहा, फ़ौलाद; तैमूर लंग, इस शब्द का उच्चारण तैमूर अशुद्ध है, परंतु वोला जाता है।

तिम्साल (تمثال) अ. स्त्री.–आकृति, शक्ल; मूर्ति, प्रतिमा, तस्वीर; राजादेश, फ़रमान।

तिम्सालगर (تمثال گر) अ. फा. पुं.–मूर्तिकार, वुततराश; चित्रकार, मुसव्विर।

तिम्सालदार (تمثال دار) अ. फा. पुं.–दे. 'तिम्सालगर'।

तिम्साह (تمساح) अ. पुं.–घड़ियाल, मगरमच्छ, कुंभीर, ग्राह।

तिर्याक़ (تریاق) अ. पुं.–विषहर, विष का नाशक, ज़ह्र-मोहरा; अफ़्यून, अहिफेन।

तिर्याक (تریاک) फा. पुं.–दे. 'तिर्याक़'।

तिर्याकी (تریاکی) फा. वि.–अफीमखानेवाला, अफ़ीमची।

तिराज़ (طراز) फा. प्रत्य.–चित्रकारी करनेवाला; चित्र, नक़्शोनिगार।

तिला (طلا) फा. पुं.–सुवर्ण, सोना; कामवर्द्धक तेल जो लिंग पर लगाया जाता है।

तिलाई (طلائی) फा. वि.–जिस पर सोने का काम हो; जो बिलकुल सोने का हो; सुनहरे रंगवाला।

तिलाए अहमर (طلاے احمر) फा. अ. पुं.–कुंदन, ख़ालिस सोना।

तिलाए नाब (طلاے ناب) फा. पुं.–खालिस सोना।

तिलाकार (طلاکار) फा. वि.–जिस पर सोने की चित्रकारी हो।

तिलाकारी (طلاکاری) फा. स्त्री.–सोने का काम बनाना; सोने का काम; सोने के काम बनाने का व्यवसाय।

तिलाकोब (طلاکوب) फा. पुं.–सोने के वरक़ बनानेवाला।

तिलादोज़ (طلادوز) फा. पुं.–दे. 'तिलाकार'।

तिलाबाफ़ (طلاباف) फा. पुं.–दे. 'तिलाकार'।

तिलावत (تلاوت) अ. स्त्री.–पढ़ना; किसी धर्मग्रंथ को पढ़ना; क़ुरान पढ़ना।

तिलासाज़ (طلاساز) फा. पुं.–सोना बनानेवाला, कीमियागर।

तिलिस्म (طلسم) अ. पुं.–माया, इंद्रजाल, जादू; दृष्टिबंध, नज़रबंदी; वह मायारचित विचित्र स्थान जहाँ अत्यंत अजीबो ग़रीब व्यक्ति और चीज़ें दिखायी पड़ें और जहाँ जाकर आदमी खो जाय फिर उसे घर पहुँचने का रास्ता न मिले।

तिलिस्मे ज़ीस्त (طلسم زیست) अ. पुं.–जीवन का मायाजाल, ज़िंदगी रूपी जादू का घर, "छोड़ दे, जो कुछ बचे हैं तीर वह भी छोड़ दे, टूट जाये जो तिलिस्मे-ज़ीस्त आबोगिल में है।"

तिलिस्मबंद (طلسم بند) अ. फा. वि.–तिलिस्म और जादू के असर में आया हुआ, मायाग्रस्त।

तिलिस्मबंदी (طلسم‌بندی) अ. फा. स्त्री.–जादू के असर में आ जाना; माया और तिलिस्म की रचना।

तिलिस्मात (طلسمات) अ. पुं.–'तिलिस्म' का बहु., मायारचित स्थान, मायाजाल।

तिलिस्माती (طلسماتی) अ. वि.–मायापूर्ण, तिलिस्मी; मायावी, जादूगर।

तिलिस्मी (طلسمی) अ. वि.–मायानिर्मित, जादू का बना हुआ; माया सम्वन्धी, जादू का।

तिस्अः (تسعہ) अ. वि.–नौ, नौ की संख्या।

तिस्ईन (تسعین) अ. वि.–नव्वे, नवति।

तिहाल (طحال) अ. स्त्री.–तिल्ली, प्लीहा।

तिही (تہی) फा. अ. वि.–रिक्त, ख़ाली।

तिहीक़िस्मत (تہی قسمت) फा. अ. वि.–जिसके भाग्य में कुछ न हो।

तिहीगाह (تہی گاہ) फा. स्त्री.–कुक्षि, कोख; उपस्थ, पेड़ू।

तिहीदस्त (تہی دست) फा. वि.–जिसका हाथ खाली हो, दरिद्र, रिक्तहस्त।

तिहीदामन (تہی دامن) फा. वि.–जिसका दामन खाली हो, वंचित, महरूम।

तिहीदिमाग़ (تہی دماغ) फा. अ. वि.–जिसका मस्तिष्क खुक्खल हो, निर्बुद्धि।

तिहीमग़्ज़ (تہی مغز) फा. वि.–निर्विवेक, ज्ञानशून्य, मूर्ख, जिसकी समझ में बात न आये।

ती

तीन (طین) अ. स्त्री.–मृत्तिका, मिट्टी।

तीन (تین) अ. पुं.–इंजीर, एक प्रसिद्ध फल।

तीनत (طینت) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

तीब (طیب) अ. स्त्री.–प्रसन्नता, ख़ुशी; स्वीकृति, रज़ामंदी।

तीबत (طیبت) अ. स्त्री.–मनोविनोद, मनोरंजन, तफ़ीह, मिज़ाह।

तीमार (تیمار) फा. स्त्री.–बीमार की ख़िदमत, रोगी की देखभाल और शुश्रूषा।

तीमारदार (تیماردار) फा. वि.–रोगी की शुश्रूपा करनेवाला, परिचारक।

तीमारदारी (تیمارداری) फा. स्त्री.–रोगी की सेवा, परिचर्या।

तीरः (تیرہ) फा. वि.–अंधकारमय, तमिस्र, तारीक।

तीरःख़ाकदाँ (تیرہ خاکداں) फा. पुं.–मृत्युलोक, संसार, दुनिया।

तीरःदरूँ (تیرہ‌دروں) फा. वि.–बदबातिन, ख़बीस, अंतर्मलिन, अंधात्मा, जिसका मन बिलकुल ही काला हो।

तीरःदिल (تیرہ‌دل) फा. वि.–दे. 'तीरःदरूँ'।

तीरःबख़्त (تیرہ‌بخت) फा. वि.–हतभाग्य, बदक़िस्मत जिसके भाग्य में अँधेरा ही अँधेरा हो।

तीरःबातिन (تیرہ باطن) फा. अ. वि.–दे. 'तीरःदरूँ।'

तीरःरोज़ (تیرہ‌روز) फा. वि.–दे. तीरःरोज़गार'; छली, वंचक, ठग।

तीरःरोज़गार (تیرہ‌روزگار) फा. वि.–जिसके लिए दुनिया बिलकुल अँधेरी हो, हतभाग्य।

तीर (تیر) फा. पुं.–वाण, शर, नावक; एक ईरानी महीना जो हिंदी हिसाब से सावन होता है; बुध ग्रह, उतारिद; शक्ति, बल, ज़ोर।

तीरअंदाज़ (تیرانداز) फा. वि.–तीर चलानेवाला, तीर मारनेवाला, तीर से शिकार करनेवाला।

तीरअंदाज़ी (تیراندازی) फा. स्त्री.–तीर चलाना, तीर से शिकार करना; धनुर्विद्या, तीरंदाज़ी का फ़न।

तीरअफ़्गन (تیرافگن) फा. वि.–दे. 'तीरअंदाज़'।

तीरओतार (تیرہوتار) फा. वि.—बिलकुल अंधकारमय, घोर अँधियारा।

तीरकश (تیرکش) फा. वि.— तरकश, तूणीर, निषंग; वह सूराख़ जो क़िले में बंदूक़ चलाने के लिए बनाये जाते हैं।

तीरख़ुर्दः (تیرخوردہ) फा. वि.—तीर खाया हुआ, घायल, ज़ख़्मी।

तीरगर (تیرگر) फा. पुं.— तीर बनानेवाला।

तीरगी (تیرگی) फा. स्त्री.—अंधकार, अँधरा, तिमिर।

तीरज़न (تیرزن) फा. वि.—दे. 'तीरअफ़्गन'।

तीरदान (تیردان) फा. पुं.—तरकश, निषंग, तूणीर, त्रोण।

तीरपरताब (تیرپرتاب) फा. पुं.—वह दूरी जो एक तीर चलकर गिरने की हो; वह तीर जो दूर तक फेंकने के काम आता है, निशाने के लिए नहीं होता।

तीरबहदफ़ (تیربہدف) फा. वि.—अचूक, जो ख़ता न करे, जो ठीक निशाने पर बैठे, अमोघ, रामबाण।

तीरावर (تیرآور) फा. वि.—धूर्त, छली, मक्कार; क़ुरम साक़, औरत की कमाई खानेवाला।

तीरे निगाह (تیرنگاہ) फा. पुं.—दृष्टि का बाण, दृष्टि का घाव।

तीरेनीमकश (تیرنیمکش) फा. पुं.—वह तीर जो घाव में से आधा खींचकर छोड़ दिया गया हो, "कोई मेरे दिल से पूछे तेरे तीरेनीमकश को"—ग़ालिब।

तीरे हवाई (تیر ھوائی) फा. अ. पुं.—वह तीर जो हवा में फेंका जाय, निशाने पर न लगाया जाय; एक आतशबाज़ी।

तीर हुक्मी (تیر حکمی), फा. अ. पुं.—वह तीर जिसका निशाना कभी न चूके, अमोघ।

तीह (تیہہ) फा. पुं.—वह भयानक जंगल जहाँ से जानेवाला फिर न लौटे और वहीं मर जाय; वह वन जिसम हज़रत मूसा कई हज़ार आदमियों के साथ चालीस साल भटकते रहे।

तीहूज (تیہوج) फा. पुं.—एक चिड़िया, लवा।

तु

तुंग (تنگ) फा. पुं.—मिट्टी का वह बर्तन जिसका पेट चौड़ा, गर्दन छोटी और मुँह तंग हो।

तुंद (تند) फा. वि.—तीव्र, प्रचंड, तेज़, पुरज़ोर; आवेगपूर्ण, पुरज़ोश; क्रुद्ध, कुपित, ग़ुस्से में; शीघ्र, त्वरित, तेज़।

तुंदख़ू (تندخو) फा. वि.—तेज़ मिज़ाजवाला, ग़ुस्सैल, तीव्र स्वभाव,—"जिधर निगाह उठी बिछ गई सफ़े उश्शाक़, बला है, क़ह्र है, वह तुर्के तुंदख़ू क्या है?"

तुंदबाद (تندباد) फा. स्त्री.—आँधी, झक्कड़, झंझावात।

तुंदमिज़ाज (تندمزاج) फा. अ. वि.—दे. 'तुंदख़ू'।

तुंदर (تندر) फा. पुं.—मेघ-गर्जन, बादल की गरज; बुलबुल, एक प्रसिद्ध मधुरस्वर चिड़िया।

तुंदरफ़्तार (تندرفتار) फा. वि.—बहुत तेज़ चलनेवाला, द्रुतगामी, शीघ्रगति, वायुवेग।

तुंदराय (تندراے) फा. वि.—अदूरदर्शी, अपरिणामदर्शी, आक़बत का अंदेश।

तुंदरौ (تندرو) फा. वि.—दे. 'तुंदरफ़्तार'।

तुंदी (تندی) फा. स्त्री.—तीव्रता, तेज़ी; आवेग, जोश; स्वभाव की तीव्रता, बदमिज़ाजी; लिंगोत्थान, इस्तादगी; कोप, ग़ुस्सा।

तुंबान (تنبان) तु. पुं.—एक प्रकार का ढीला-ढाला पाजामा, शलवार।

तुक्मः (تکمہ) तु. पुं.—बटन की जगह लगायी जानेवाली घुंडी, परंतु उर्दू में उस फंदे को कहते हैं जिसमें घुंडी फँसाई जाती है।

तुक्लान (تکلان) अ. पुं.—विश्वास, आस्था, श्रद्धा, एतिक़ाद; कालतुष्टि, ईश्वरेच्छा, तवक्कुल।

तुख़्मः (تخمہ) फा. पुं.—संतान, औलाद; अंडा, अंड, बैज़ः।

तुख़्मः (تخمہ) अ. पुं.—सख़्त क़िस्म की बदहज़्मी जो हैज़े की शक्ल इख़्तियार कर ले।

तुख़्म (تخم) फा. पुं.—बीज, दाना; गुठली; अंड, अंडा; संतान, औलाद; वीर्य, नुत्फ़ा।

तुख़्मपाशी (تخمپاشی) फा. स्त्री.—खेत में बीज बोना, बीजारोपण।

तुख़्मरेज़ी (تخمریزی) फा. स्त्री.—दे. 'तुख़्मपाशी'।

तुख़्मी (تخمی) फा. वि.—जो बीज बोकर उत्पन्न किया गया हो; देशी आम जो क़लमी न हो।

तुख़्मेकताँ (تخمکتاں) फा. पुं.—अलसी का बीज, अलसी।

तुख़्मे मुर्ग़ (تخم مرغ) फा. पुं.—मुर्ग़ी का अंडा।

तुख़्मे रैहाँ (تخم ریحاں) फा.अ. पुं.—दौने मड़ुए का बीज।

तुग़्यान (طغیان). अ. पुं.—अवज्ञा, अवहेलना, सरकशी; उद्दंडता, जहालत; अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म; पाप, पातक, गुनाह।

तुग़्यानी (طغیانی) अ. स्त्री.—जलप्लावन, सैलाब, बाढ़।

तुग़्रा (طغرا) तु. पुं.—एक प्रकार का ख़त जिसमें कोई शक्ल बना देते हैं; बादशाहों के फ़रमानों पर शाही अल्क़ाबो आदाब लिखने का ख़त।

तुग़्राकश (طغراکش) तु. फा. वि.—तुग़्राख़त में बेल-बूटे या तस्वीरें बनानेवाला।

तुग़्रानवीस (طغرانویس) तु. फा.—दे. 'तुग़्राकश'।

तुग़्रिल (طغرل) तु. पुं.–सलजूक़ी ख़ानदान का पहला बादशाह।

तुज़ुक (توزک) तु. पुं.–सज्जा, सजावट, आराइश; प्रबंध, व्यवस्था, इंतिज़ाम; सैन्यसज्जा, फ़ौज की तर्तीब; राजसभा की सजावट; विधान, क़ानून; अपने क़लम से लिखी हुई अपनी जीवनी, आत्मचरित, ख़ुद-नविश्त हालात।

तुनुक (تنک) फा. वि.–सूक्ष्म, बारीक; अ़ल्प, थोड़ा; मृदुल, नाज़ुक; क्षीण, दुबला-पतला।

तुनुकज़र्फ़ (تنک ظرف) फा. अ. वि.–छिछोरा, लोफ़र; अकुलीन, कमीना; पेट का हलका, जो राज़ की बात दूसरों से कह दे; जो थोड़ी-सी शराब पीकर बहक जाय; जो किसी बड़े आदमी के पास पहुँचकर या बड़ा दरजा पाकर घमंड के कारण आदमी न रहे।

तुनुकदिल (تنک دل) फा. वि.–बहुत छोटे दिल का, अनुदार।

तुनुकमायः (تنک مایہ) फा. वि.–बेहैसियत, अनादृत; तुच्छ, नीच, कमज़र्फ़।

तुनुकमिज़ाज (تنک مزاج) फा. अ. वि.–जो ज़रा-सी बात पर रूठ जाय, चिड़चिड़े स्वभाववाला।

तुनुकसब्र (تنک صبر) अ. फा. वि.–जिसको धैर्य न हो, आतुर, त्वरावान्, जल्दबाज़, बेसब्रा।

तुपक (تپک) तु. पुं.–'तोप' का अल्प रूप, छोटी तोप, बंदूक़।

तुफ़ंग (تفنگ) फा. स्त्री.–बंदूक़, तुपक।

तुफ़ंगअंदाज़ (تفنگ انداز) फा. वि.–बंदूक़ची, निशानेबाज़।

तुफ़ंगची (تفنگ چی) फा. वि.–बंदूक़ चालेवाला; बंदूक़ रखनेवाला; निशानची।

तुफ़ंगे तहपुर (تفنگ تہ پر) फा. स्त्री.–कारतूसी बंदूक़, ब्रीच लोडिंग।

तुफ़ंगे दहनपुर (تفنگ دہن پر) फा. स्त्री.–टोपीदार बंदूक़, मुँह की ओर से भरी जानेवाली बंदूक़।

तुफ़ंगे सोज़नी (تفنگ سوزنی) फा. स्त्री.–ब्रीच लोडिंग राइफ़ल, जिसमें घोड़ा नहीं होता।

तुफ़ (تف) फा. अव्य.–आख़थू, धिक्, किसी के बुरा काम करने पर धिक्कारते हुए कहते हैं।

तुफ़क (تفک) फा. स्त्री.–बंदूक़, तुफ़ंग, तुपक।

तुफ़ू (تفو) फा. स्त्री.–दे. 'तुफ़'।

तुफ़ैल (طفیل) अ. पुं.–द्वारा, कारण, बसबब।

तुफ़ैली (طفیلی) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो बिना निमंत्रण के किसी दूसरे निमंत्रित व्यक्ति के साथ दावत में जाय; किसी सहारे पर रहनेवाला, आश्रित।

तुफ़्फ़ाह (تفاح) अ. पुं.–सेब, एक प्रसिद्ध फल।

तुमतुराक़ (طمطراق) फा. पुं.–वैभव, शानो-शौक़त; धूमधाम, तड़क-भड़क; अहंकार, घमंड।

तुमानीयत (طمانیت) अ. स्त्री.–संतोष, इत्मीनान; सांत्वना, ढारस, उर्दू में यह शब्द 'तमानियत' बोला जाता है।

तुमानीनत (طمانینت) अ. स्त्री.–दे. 'तमानियत', इस शब्द का शुद्धतम उच्चारण यही है।

तुरंजबीन (ترنجبین) अ. स्त्री.–दे. 'तरंजुबीन'।

तुराब (تراب) अ. स्त्री.–मृत्तिका, मिट्टी, सूखी मिट्टी, ख़ाक।

तुरुंज (ترنج) फा. पुं.–मीठा नीबू, मिट्ठा; शिकन, झुर्री, सिलवट।

तुरुंजीदः (ترنجیدہ) फा. वि.–जिसके माथे पर सिलवटें पड़ी हों, ख़फ़ा, कुपित, क्रुद्ध।

तुरुक़ (طرق) अ. पुं.–'तरीक़' का बहु., तरीक़े, रास्ते।

तुरुश (ترش) फा. वि.–अम्ल, खट्टा, तुर्श।

तुरुश अब्रू (ترش ابرو) फा. वि.–जिसकी भौंहें क्रोध से तनी ही रहती हों, बदमिज़ाज, क्रुद्धात्मा।

तुरुशमिज़ाज (ترش مزاج) फा. अ. वि.–बदमिज़ाज, रूखा, खुरदरा, चिड़चिड़ा।

तुरुशरू (ترش رو) फा. वि.–दे. 'तुरुशमिज़ाज'।

तुयूर (طیور) फा. पुं.–'ताइर' का बहु., चिड़ियाँ, परंदे।

तुर्क (ترک) तु. पुं.–तुर्किस्तान का निवासी; सैनिक, योद्धा; प्रेमपात्र, माशूक़।

तुर्कज़ादः (ترک زادہ) तु. फा. पुं.–तुर्क का लड़का; सुंदर, हसीन, प्रेमपात्र, मा'शूक़।

तुर्कताज़ (ترکتاز) तु. फा. स्त्री.–लूटमार, गारतगरी, (पुं.) लुटेरा, ग़ारतगर; सैनिक, सिपाही।

तुर्कबच्चः (ترک بچہ) तु. फा. पुं.–तुर्क का लड़का; सुंदर, ख़ूबसूरत।

तुर्कमान (ترکمان) तु. पुं.–तुर्कों के अंतर्गत एक जाति।

तुर्कमिज़ाज (ترک مزاج) तु. अ. वि.–लुटेरा, ग़ारतगर; माशूकों-जैसे नाज़ोअंदाज़ वाला।

तुर्किस्तान (ترکستان) तु. फा. पुं.–तुर्कों का मुल्क, तुर्की, टर्की।

तुर्की (ترکی) तु. पुं.–तुर्क, तुर्किस्तान का निवासी; तुर्किस्तान, तुर्कों का देश; तुर्कों की भाषा।

तुर्की तमामशुद (ترکی تمام شد) तु. अ. फा. वाक्य–सारी शेख़ी किरकिरी हो गयी, सारा ज़ोर ख़त्म हो गया।

तुर्ब (ترب) फा. स्त्री.–मूली, एक प्रसिद्ध कंद, मूलक।

तुर्बत (تربت) अ. स्त्री.–क़ब्र, समाधि, गोर।

तुर्बुद (تربد) फा. स्त्री.–एक रेचक जड़, निसोत।

तुरः (طرہ) अ. पुं.–ज़ुल्फ़, अलक; बालों की लट, केश-पाश; सुनहरे तारों का गुच्छा जो पगड़ी पर लगाते हैं; टोपी का फुँदना; फूलों की लड़ियों का गुच्छा; पक्षियों के सर की चोटी, कलग़ी; शाख़, बात में बात; अच्छाई, उम्दगी; अद्भुतता, अजूबापन; बढ़कर, सर्वश्रेष्ठ।

तुर्रए तर्रार (طرۂ طرار) अ. पुं.–बल खाये हुए बाल।

तुर्रए दस्तार (طرۂ دستار) अ. फा. पुं.–पगड़ी का झुंपा।

तुर्शः (ترشہ) फा. पुं.–एक खट्टी पत्ती, चूक।

तुर्श (ترش) फा. वि.–खट्टा, अम्ल, तुरुश।

तुर्शी (ترشی) फा. स्त्री.–खटास, अम्लता, खट्टापन; वैर, अदावत।

तुर्रहत (ترہت) अ. स्त्री.–व्यर्थ, मिथ्या, झूठ।

तुर्रहात (ترہات) अ. स्त्री.–'तुर्रहत' का बहु., अनर्गल और अनर्थक बातें।

तुलूअ (طلوع) अ. पुं.–किसी सितारे का निकलना, उदय होना, उदय।

तुल्लाब (طلاب) अ. पुं.–'तालिब' का बहु., विद्यार्थी लोग।

तुवंगर (تونگر) फा. पुं.–धनवान्, धनी, मालदार; शक्तिशाली, समर्थ।

तुवाँ (توان) फा. स्त्री.–शक्ति, बल, ज़ोर; सामर्थ्य, क़ुद्रत।

तुवांगर (توانگر) फा. पुं.–दे. 'तुवंगार'।

तुवाना (توانا) फा. वि.–शक्तिशाली, बलवान्, ज़ोरमंद।

तुवानाई (توانائی) फा. स्त्री.–शक्ति, बल, ज़ोर।

तुवानाए मुत्लक़ (توانائے مطلق) फा. अ. वि.–सर्वशक्तिमान्, क़ादिरे मुतलक़।

तुह्लब (طحلب) अ. स्त्री.–काई जो पानी पर जम जाती है।

तुह्मत (تہمت) अ. स्त्री.–आरोप, लांछन, ग़लत इल्ज़ाम-बुहतान; संदेह, शंका, शक।

तुह्र (طہر) अ. पुं.–स्त्री का रजोमालिन्य से पवित्र होना, औरत की हैज़ की हालत ख़त्म होना; वह दिन जब स्त्री रजोधर्म में न हो, रजस्वला न होनेवाले दिन।

तू

तूत (توت) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध पेड़ और उसका फल, शहतूत।

तूतिया (توتیا) अ. पुं.–सुर्मा, रसांजन।

तूती (توتی–طوطی) फा. स्त्री.–एक चिड़िया जो सिखाने पर मनुष्य की तरह बात करती है, मैना, सारिका; शुक, तोता, जो 'तूत' बहुत खाता है।

तूदः (تودہ) फा. पुं.–मिट्टी का ढेर, ढूह; अंबार, ढेर, राशि, समूह।

तूदःबंदी (تودہبندی) फा. स्त्री.–हदबंदी, मिट्टी के ढेर बनाकर किसी ज़मीन की हदों को सीमित करना।

तूदए ख़ाक (تودۂ خاک) फा. पुं.–मिट्टी का ढेर।

तूफ़ाँ (طوفاں) अ. पुं.–'तूफ़ान' का लघु., दे. 'तूफ़ान'।

तूफ़ाँज़दः (طوفاں زدہ) अ. फा. वि.–जो पानी की बाढ़ आ जाने से पीड़ित हो, जिसका बाढ़ से घर-बार या खेत आदि तबाह हो गये हों।

तूफ़ाँरसीदः (طوفاں رسیدہ) अ. फा. वि.–दे. 'तूफ़ाँज़दः'।

तूफ़ान (طوفان) अ. पुं.–पानी की बाढ़, सैलाब, प्लावन; बहुत ही तेज़ आँधी; बहुत ज़ोर की बारिश; आरोप, लांछन, तुहमत; कोलाहल, हंगामा, शोरोग़ुल; आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत।

तूफ़ानी (طوفانی) अ. वि.–तूफ़ान की तरह तेज़ और जल्दी का, जैसे–तूफ़ानी दौरा; तूफ़ान में फँसा हुआ, जैसे–तूफ़ानी कश्ती; तूफ़ान उठानेवाला, आफ़त का परकाला, मुतफ़न्नी; तूफ़ान से सम्बन्ध रखनेवाला।

तूफ़ाने आतश (طوفانِ آتش) अ. फा. पुं.–आग का तूफ़ान, ज़ोर की आग।

तूफ़ाने आब (طوفانِ آب) अ. फा. पुं.–पानी का तूफ़ान, बाढ़, सैलाब।

तूफ़ाने बाद (طوفانِ باد) अ. फा. पुं.–हवा का तूफ़ान, सख़्त आँधी।

तूफ़ाने बेतमीज़ी (طوفانِ بےتمیزی) अ. फा. पुं.–हुल्लड़, बेकार का शोरोग़ुल।

तूबा (طوبیٰ) अ. पुं.–स्वर्ग का एक वृक्ष, (वि.) बहुत ही अधिक सुगंधित; बहुत ज़ियादा पवित्र, (स्त्री.) मुबारकबाद, शुभ संवाद।

तूमार (طومار) अ. पुं.–लम्बा-चौड़ा पत्र; लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त; किसी विषय के बारे में काग़ज़ों का पुलिंदा; झूठी बातों की भरमार; बहुत अधिक चीज़, बड़ा ढेर।

तूर (تور) फा. पुं.–'फ़िरेदूँ' का बड़ा बेटा जिसने 'तूरान' बसाया था; महारथी, बहुत बड़ा बहादुर।

तूर (طور) अ. पुं.–शाम (सीरिया) का एक पहाड़, जिस पर हज़रत मूसा ने ईश्वर का जल्वा देखा था, तूरे सीना।

तूरान (توران) फा. पुं.–तातार, तुर्किस्तान।

तूरानी (تورانی) फा. पुं.–तूरान का निवासी, तुर्की, तातारी।

तूल (طول) अ. पुं.–आयाम, लम्बाई, दीर्घता; विलम्ब, देर, तवालत।

तूलानी (طولانی) अ. फा. वि.–दीर्घ, लम्बा; ढीलवाला, देर का।

तूलुल्बलद (طول البلد) अ. पुं.–देशान्तर-रेखा।

तूले अमल (طول امل) अ. पुं.–आशा की लम्बाई, मोहजाल।

तूले अमल (طول عمل) अ. पुं.–झंझट, बखेड़ा, किसी नाम की तवालत।

तूस (طوس) फा. पुं.–खुरासान का एक शह्र, मश्हद।

तूसी (طوسی) फा. पुं.–तूस देश का निवासी।

ते

तेग़ः (تیغہ) फा. पुं.–छोटी तलवार।

तेग़ (تیغ) फा. स्त्री.–खड्ग, असि, कृपाण, तलवार।

तेग़आज़मा (تیغ آزما) फा. वि.–तलवार चलानेवाला, लड़नेवाला, वीर, योद्धा, बहादुर।

तेग़आज़माई (تیغ آزمائی) फा. स्त्री.–युद्ध, समर, लड़ाई, जंग।

तेग़ज़न (تیغ زن) फा. वि.–सिपाही, योद्धा, जंगजू।

तेग़ज़नी (تیغ زنی) फा. स्त्री.–सिपाही का पेशा, तलवार चलाने का काम।

तेग़बकफ़ (تیغ بکف) फा. वि.–हाथ में तलवार लिये हुए, मरने-मारने पर आमादा, वध करने को तत्पर।

तेग़राँ (تیغ راں) फा. वि.–दे. 'तेग़ज़न'।

तेग़साज़ (تیغ ساز) फा.पुं.–तलवार बनानेवाला, खड्गकार।

तेग़े अजल (تیغ اجل) फा. अ. स्त्री.–मौत की तलवार, अर्थात् मौत, मृत्यु।

तेग़े कोह (تیغ کوہ) फा. स्त्री.–पहाड़ की चोटी।

तेग़े दुदम (تیغ دودم) फा. स्त्री.–वह तलवार जिसके दोनों ओर धार हों।

तेग़े दुपैकर (تیغ دوپیکر) फा. स्त्री.–दे. 'तेग़े दुदम'।

तेग़े दुसर (تیغ دوسر) फा. स्त्री.–दे. 'तेग़े दुदम'।

तेग़े फ़लक (تیغ فلک) फा. अ. स्त्री.–मंगल ग्रह, मिर्रीख़।

तेग़े बुर्राँ (تیغ براں) फा. स्त्री.–अच्छी काटवाली तलवार, जिसकी धार बहुत ही अच्छी हो।

तेग़े रवाँ (تیغ رواں) फा. स्त्री.–पैनी और तेज़ तलवार।

तेज़ (تیز) फा. वि.–जिसमें धार हो; तीव्र, प्रचंड, शदीद; शीघ्र, द्रुत, जल्द; कुपित, गुस्से; होशियार, धूर्त, चालाक; दक्ष, कुशल, माहिर; जोशीला, उत्साहपूर्ण; प्रतिभाशाली-ज़हीन; बुद्धिमान्, अक़्लमंद; तत्पर, मुस्तइद; दूर तक देखनेवाली (नज़र); महँगा, गिराँ।

तेज़अक़्ल (تیزعقل) अ. फा. वि.–तीव्रबुद्धि, जल्द बात समझ लेनेवाला; ज़हीन, प्रतिभाशाली।

तेज़क़दम (تیزقدم) अ. फा. वि.–तेज़ चलनेवाला, जल्दी-जल्दी डगें मारनेवाला; शीघ्रगति।

तेज़ क़लम (تیز قلم) अ. फा. वि.–जल्द लिखनेवाला, शीघ्र लिपिक।

तेज़गाम (تیزگام) फा. वि.–तेज़क़दम, शीघ्रगामी।

तेज़गामी (تیزگامی) फा. स्त्री.–तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

तेज़गोश (تیزگوش) फा. वि.–जल्द बात सुन लेनेवाला, दूर की बात सुन लेनेवाला, आहिस्ता बात सुन लेनेवाला।

तेज़ तब्अ (تیزطبع) फा. अ. वि.–प्रतिभाशाली, ज़हीन; तीव्रबुद्धि, तेज़अक़्ल।

तेज़तर (تیزتر) फा. वि.–बहुत तेज़; शीघ्रतर; तीव्रतर।

तेज़तरीन (تیزترین) फा. वि.–सबसे अधिक तेज़; शीघ्रतम; तीव्रतम।

तेज़दंदाँ (تیزدنداں) फा. वि.–जिसके दाँत तेज़ हों, फाड़ खानेवाला; लोभी, लालची, हरीस।

तेज़दम (تیزدم) फा. वि.–जोशीला, उत्साही; फुर्तीला, चालाक; ताज़ःदम, दमदार।

तेज़दस्त (تیزدست) फा. वि.–जल्द काम करनेवाला, क्षिप्रहस्त।

तेज़दस्ती (تیزدستی) फा. स्त्री.–फ़ुर्ती, चालाकी, जल्द काम करना।

तेज़दिमाग़ (تیزدماغ) फा. अ. वि.–दे. 'तेज़अक़्ल'।

तेज़नज़र (تیزنظر) फा. अ. वि.–जिसकी दृष्टि तीव्र हो, जो दूर तक देख सके, जो बारीक़ चीज़ें देख सके, तीव्रदृष्टि।

तेज़नाख़ुन (تیزناخن) फा. वि.–जिसके नख तीव्र हों, जो नाख़ूनों से ज़ख़्मी कर सकें।

तेज़निगाह (تیزنگاہ) फा. वि.–दे. 'तेज़नज़र'।

तेज़पर (تیزپر) फा. वि.–दे. 'तेज़परवाज़'।

तेज़परवाज़ (تیزپرواز) फा. वि.–जल्द उड़नेवाला; ऊँचा उड़नेवाला; दूर की लेनेवाला।

तेज़ फ़ह्म (تیزفہم) फा. अ. वि.–शीघ्र ही बात की तह को पहुँच जानेवाला, ज़ूदरस; बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

तेज़बू (تیزبو) फा. वि.–जिसकी गंध तेज़ हो, तीव्रगंध।

तेज़मिज़ाज (تیزمزاج) फा. अ. वि.–चिड़चिड़े मिज़ाजवाला; किसी की बात न सह सकनेवाला; किसी बात पर जल्द बिगड़ जानेवाला; गुस्सैल, क्रोधी।

तेज़रफ़्तार (تیزرفتار) फा. वि.–दे. 'तेज़गाम'।

तेज़रवी (تیزروی) फा. स्त्री.–दे. 'तेज़गामी'।

तेज़रौ (تیزرو) फा. वि.–दे. 'तेज़गाम'।

तेज़होश (تیزہوش) फा. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लवर; प्रतिभावान्, तब्बाअ; दक्ष, कुशल, होशियार।

तेज़ाब (تیزاب) फा. पुं.–एक रासायनिक पानी जो नमक, शोरा आदि चीज़ों से बनता है, अम्ल।

तेज़ाबियत (تیزابیت) फा. स्त्री.–तेज़ाबपन।

तेज़ाबी (تیزابی) अ. वि.–तेज़ाब सम्बन्धी; तेज़ाब का; तेज़ाब से बना हुआ; तेज़ाब मिला हुआ; तेज़ाब के असर से बिगड़ा या बना हुआ।

तेज़ी (تیزی) फा. वि.–धार, बाढ़; तीव्रता, शिद्दत; महँगाई, गिरानी; न्यूनता, कमी; चालाकी, होशियारी; दक्षता, महारत; प्रतिभा, ज़हानत; जोश, उत्साह; हिम्मत, साहस; तत्परता, आमादगी; शीघ्रता, जल्दी; आतुरता, बेसब्री, बेचैनी।

तेज़ोतुंद (تیزوتند) फा. वि.–बहुत तेज़, प्रचंड, अति तीव्र।

तेशः (تیشہ) फा. पुं.–कुद्दाल, कदाल।

तेशःज़न (تیشہ‌زن) फा. वि.–कुदाल से ज़मीन आदि खोदनेवाला।

तेशःज़नी (تیشہ‌زنی) फा. स्त्री.–कुदाल का काम, कुदाल से खुदाई।

तै

तै (طے) अ. पुं.–'हातिम' का वंश; रस्ता चलना, जैसे—मंजिल तै कर ली; निर्णय, फ़ैसला; निर्णीत, फैसल; समाप्ति, ख़ातिमा; चुकता, बेबाक़ी।

तैए अर्ज़ (طے ارض) अ. पुं.–रस्ता तै करना, सफ़र तै करना।

तैए लिसान (طے لسان) अ. पुं.–चुप रहना, अवाक् हो जाना, कुछ न कहना।

तैयारः (طیارہ) अ. पुं.–वायुयान, विमान, हवाई जहाज़।

तैयारःबरदार (طیارہ بردار) अ. फा. पुं.–वह हवाई जहाज़ जो और जहाज़ों को अपने अंदर रखकर लाता है।

तैयारःशिकन (طیارہ شکن) अ. फा. पुं.–वह तोप जो हवाई जहाज़ को गिराती है।

तैयार (تیار) अ. विं.–तत्पर, कटिबद्ध, आमादा; पक्व, पुख़्ता; समाप्त, ख़त्म; संपूर्ण, मुकम्मल; हृष्ट-पुष्ट, फ़रबेह, मोटा-ताज़ा; सुसज्जित, आरास्ता; इस्तेमाल या प्रयोग के क़ाबिल, जैसे—खाना तैयार या कोट तैयार; लैस, फ़िट।

तैयारची (طیارچی) अ. तु. पुं.–हवाई जहाज़ चलानेवाला, पाइलेट, वायुयान-चालक।

तैयारी (تیاری) अ. वि.–तत्परता, मुस्तैदी; समाप्ति, ख़ातिमा; पूर्ति, तक्मील; सज्जा, आरास्तगी; प्रयोग के क़ाबिल होना; रचना, ता'मीर; निर्माण, सृष्टि, तख़्लीक़।

तैयिब (طیب) अ. वि.–पवित्र, शुद्ध, पाक, निमल।

तैयिबात (طیبات) अ. स्त्री.–सती और साध्वी स्त्रियाँ।

तैर (طیر) अ. पुं.–चिड़िया, परंद, पक्षी; चिड़ियाँ, परंदे।

तैरान (طیران) अ. पुं.–हवा में उड़ना, उड्डयन।

तैल[लि]सान (طیلسان) अ. स्त्री.–चादर, दुपट्टा; वह रूमाल जो ख़तीब या वाइज़ ख़ुत्बे के वक़्त कंधों पर डाल लेते हैं।

तैश (طیش) अ.–क्रोध, कोप, ग़ुस्सा।

तैसीर (تیسیر) अ. स्त्री.–सुगम करना, आसान बनाना; सुगमता, सरलता, आसानी।

तो

तोज़ (توز) फा. प्रत्य.–ढूँढ़नेवाला, एकत्र करनेवाला, जैसे—'कीनः तोज़' द्वेप मन में एकत्र करनेवाला।

तोप (توپ) तु. स्त्री.–गोला फेंकनेवाला यंत्र।

तोपख़ानः (توپ‌خانہ) तु. फा.–वह सेना जो वायें चलती है; तोपें रखने का स्थान।

तोपची (توپچی) तु. पुं.–तोप चलानेवाला, तोप से गोला मारनेवाला।

तोबरः (توبرہ) फा. पुं.–घोड़े के दाना खाने का थैला।

तो'मः (طعمہ) अ. पुं.–ख़ुराक, खाद्य, भोजन; जीविका, रोज़ी।

तोलः (تولہ) फा. पुं.–कुत्ते का वच्चा, पिल्ला; एक प्रकार का कुत्ता जो शिकार की वू पाकर उसे पकड़ता है।

तोलचः (تولچہ) फा. पुं.–वारह माशे की तौल, तोला।

तोशः (توشہ) फा. पुं.–सफ़र का सामान खाने-पीने का।

तोशःख़ानः (توشہ‌خانہ) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ खाने-पीने का सामान रहता है, 'तोशकख़ाना' का अपभ्रंश।

तोशःदान (توشہ‌دان) फा. पुं.–दे. 'तोशदान'।

तोश (توش) फा. पुं.–शक्ति, वल, ज़ोर।

तोशएआक़िबित (توشۂ عاقبت) फा. अ. पुं.–अच्छी कृतियाँ जो यमलोक में काम आयें।

तोशक (توشک) फा. स्त्री.–पलँग पर बिछाने का रुईदार गद्दा, निहाली; घर-गृहस्थी का सामान, खाने-पीने की सामग्री।

तोशकख़ानः (توشک‌خانہ) फा. पुं.–दे. 'तोशःख़ानः'।

तोशदान (توشدان) फा. पुं.–सिपाहियों के कारतूस रखने की चमड़े की पेटी; सफ़र के लिए खाना रखने का बर्तन।

तोशमाल (توشمال) फा. पुं.–ख़ानसामाँ, बावरची, रसोइया, पाचक।

तौ

तौअनोकर्हन (طوعاًکرھاً) अ. अव्य.–बिना इच्छा के विवशतापूर्वक, दिल पर जब्र करके।

तौक़ (طوق) अ. पुं.–स्त्रियों के गले में पहनने की सोने-चाँदी की गोल हँसली; लोहे की गोल हँसली जो क़ैदियों के गले में डाली जाती है; वह गोल लकीर जो बाज़ चिड़ियों के गले में होती है; मन्नत की वह हँसली जो बच्चों को पहनाते हैं।

तौक़ीअ (توقیع) अ.स्त्री.–बादशाह का किसी राजादेश पर हस्ताक्षर करना; मोहर, निशान; वह राजादेश जिसमें किसी बात पर क्रोध प्रकट किया गया हो।

तौक़ीर (توقیر) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, मान्यता, एहतिराम; सत्कार, सम्मान, ताज़ीम, इज़्ज़त।

तौक़े ग़ुलामी (طوق غلامی) अ. पुं.–पराधीनता की ला'नत।

तौक़े माह (طوق ماہ) अ. फा. पुं.–चाँद में पड़नेवाला घरा, चंद्रबिम्ब।

तौक़े ला'नत (طوق لعنت) अ. पुं.–धिक्कार की बौछार, धिक्काररूपी गले का तौक़।

तौज़ीअ (توزیع) अ. स्त्री.–बिखेरना, फैलाना; टुकड़े करना, हिस्से बख़्रे करना।

तौज़ीन (توزین) अ. स्त्री.–तुलवाना, वज़्न कराना; तोलना, वज़्न करना; .तोल, वज़्न।

तौज़ीह (توضیح) अ. स्त्री.–स्पष्टीकरण, खोलकर कहना; व्याख्या, विवरण, तफ़्सील।

तौजीह (توجیہ) अ. स्त्री.–कारण बताना, वजह ज़ाहिर करना; किसी की ओर मुंह करना, मुतवज्जेह होना; स्पष्ट करना, साफ़ करना, यह बताना कि ऐसा क्यों है।

तौदीअ (تودیع) अ. स्त्री.–बिदा करना, रुख़्सत करना, रवाना करना; सौंपना, हस्तान्तरित करना।

तौफ़ (طوف) अ. पुं.–किसी के चारों ओर फिरना, परिक्रमा।

तौफ़ीक़ (توفیق) अ. स्त्री.–दैवयोग से ऐसे कारण पैदा हो जाना जिससे अभिलषित वस्तु की प्राप्ति में सुगमता हो; ईश्वर की कृपा, दैवानुग्रह; सामर्थ्य, शक्ति, मक़्दरत; उत्साह, उमंग, हौसला; योग्यता, पात्रता, अहलियत।

तौफ़ीक़ेख़ैर (توفیق خیر) अ. स्त्री.–अच्छी कृतियों की तौफ़ीक़।

तौफ़ीर (توفیر) अ. स्त्री.–आधिक्य, प्राचुर्य, इफ़्रात।

तौबः (توبہ) अ. स्त्री.–किसी बुरे काम से बाज़ रहने की दृढ़ प्रतिज्ञा, इस्तिग़्फ़ार; त्याग, तर्क, छोड़ देना; पछतावा, पश्चात्ताप, (अव्य.) धर्म के विरुद्ध या किसी बड़े अहंकार की बात सुनकर बोला जानेवाला शब्द, जिससे घृणा और नफ़्रत का इज़्हार मंजूर होता है।

तौबःनामः (توبہ نامہ) अ. फा. पुं.–किसी बात से तौबा करने का लिखित पत्र।

तौबःशिकन (توبہ شکن) अ. फा.वि.–की हुई तौबा को तुड़वा देनेवाली बात, "किस क़दर तौबःशिकन शोख़ की अँगड़ाई है, मैक़दा गूँज उठा देखो घटा छाई है।"

तौबीख़ (توبیخ) अ. स्त्री.–झिड़की, घुड़की, भर्त्सना, यह शब्द अकेला नहीं बोला जाता, ज़ज्र के साथ मिलकर 'ज़ज्रो तौबीख़' बोला जाता है, अर्थात् डाँट-फटकार।

तौर (طور) अ. पुं.–शैली, पद्धति, ढंग; आचरण, व्यवहार, तर्ज़े अमल; चाल-ढाल, रविश, रंग-ढंग; लक्षण, लच्छन, अलामत।

तौरात (تورات) अ. स्त्री.–वह आस्मानी ग्रंथ जो हज़्रत 'मूसा' पर उतरा था, तौरैत।

तौरियः (توریہ) अ. पुं.–दिल में कुछ होना और मुँह पर कुछ, मुनाफ़क़त।

तौरीब (توریب) अ. स्त्री.–टेढ़ा करना, ख़म डालना; टेढ़ापन, वक्रता।

तौरैत (توریت) अ. स्त्री.–दे. 'तौरात'।

तौलियः (تولیہ) अ. स्त्री.–दे. 'तौलियत'।

तौलियत (تولیت) अ. स्त्री.–किसी को किसी काम का प्रबंधक नियुक्त करना, वली या मतवल्ली बनाना।

तौलियतनामः (تولیت نامہ) अ. फा. पुं.–मुतवल्ली बनाने की तहरीर।

तौलीद (تولید) अ. स्त्री.–जनना, पैदा कराना; पालन-पोषण करना; उत्पन्न करना, पैदा करना; उत्पत्ति, पैदाइश।

तौलीद ख़ून (تولید خون) अ. फा. स्त्री.–ख़ून की उत्पत्ति, ख़ून की पैदाइश, ख़ून की वृद्धि।

तौलीदेमनी (تولید منی) अ. स्त्री.–वीर्य की उत्पत्ति, मनी की वृद्धि।

तौशीह (توشیح) अ. स्त्री.–गले में हार डालना; सजाना, सँवारना; एक अलंकार जिसमें चंद शेरों या मिस्रों के पहले अक्षर एकत्र करने से किसी का नाम अथवा अक्षरों की संख्या 'अवज़द' के हिसाब से जोड़ने पर कोई विशेष साल निकलता है।

तौसन (توسن) फा. पुं.–अश्व, घोड़ा, तुरंग।

तौसीअ (توسیع) अ. स्त्री.–अधिक करना, ज़ियादा करना; विस्तृत करना, वसीअ करना; विस्तार, कुशादगी, फैलाव।

तौसीए मीआद (توسیع میعاد) अ. स्त्री.–किसी काम का नियत समय बढ़ा देना।

तौसीक़ (توثیق) अ. स्त्री.–दृढ़ करना, मज़बूत करना; दृढ़ता, मज़बूती; पुष्टि करना, समर्थन करना; पुष्टि, समर्थन।

तौहीद (توحید) अ.स्त्री.–ईश्वर को एक मानना, अद्वैतवाद।

तौहीदपरस्त (توحیدپرست) अ. फा. वि.–ईश्वर को एक माननेवाला, अद्वैतवादी।

तौहीन (توہین) अ. स्त्री.–अपमान, अनादर, तिरस्कार, बेइज़्ज़ती।

तौहीने अदालत (توہین عدالت) अ. स्त्री.–किसी न्यायालय का अपमान।

द

दंग (دنگ) फा. वि.–चकित, निस्तब्ध, हक्का-बक्का, शशदर, हैरान।

दंगल (دنگل) फा. पुं.–जनसमूह, भीड़, हुजूम; पहलवानों के कुश्ती लड़ने का अखाड़ा; पहलवानों की कुश्ती।

दंदाँ (دنداں) फा. पुं.–दाँत, दंत।

दंदाँज़नी (دنداںزنی) फा. स्त्री.–शत्रुता, द्वेष, दुश्मनी, बैर।

दंदाँदराज़ (دنداںدراز) फा. वि.–लोलुप, लोभी, लालची।

दंदाँनुमा (دنداںنما) फा. वि.–दाँत दिखानेवाला, जिसमें दाँत दिखाई पड़ें, जैसे—'ख़ंदए दंदाँनुमा'।

दंदाँशिकन (دنداںشکن) फा. वि.–मुँहतोड़, जैसे—'दंदाँशिकन जवाब'।

दंदाँसाज़ (دنداںساز) फा. पुं.–दन्तकार, डेंटिस्ट।

दंदानः (دندانہ) फा. पुं.–किसी आरी आदि का दाँता, दाँतुआ।

दअवात (دعوات) अ. स्त्री.–'दा'वत' का बहु., दुआएँ।

दआवी (دعاوی) अ. पुं.–दा'वा का बहु., दा'वे।

दक़ [क़क़] (دق) अ. पुं.–कूटना, पीसना; ठोंकना, खटखटाना।

दकन (دکن) फा. पुं.–दक्षिण, दक्खिन; कुछ साल पहिले निज़ाम की रियासत के अर्थ में भी प्रयुक्त।

दक़ाइक़ (دقائق) अ. पुं.–'दक़ीक़ः' का बहु., बारीकियाँ, नुक़्ते।

दक़ीक़ः (دقیقہ) अ. पुं.–गूढ़ता, बारीकी; कसर, कमी; एक घंटे का साठवाँ भाग, एक मिनट।

दक़ीक़ःरस (دقیقہرس) अ.फा. वि.–बात की तह को पहुँचजानेवाला, कुशाग्रबुद्धि, तीव्रप्रतिभ।

दक़ीक़ःशनास (دقیقہشناس) अ. फा. वि.–दे. 'दक़ीक़ःरस'।

दक़ीक़ (دقیق) अ. वि.–बारीक, महीन; सूक्ष्म, गूढ़, नाज़ुक; कठिन, मुश्किल।

दक़्क़ाक़ (دقاق) अ. वि.–कूटनेवाला, महीन करनेवाला; गूढ़ और सूक्ष्म बात कहनेवाला, सूक्ष्मवादी।

दक़्क़ुलबाब (دق الباب) अ. पुं.–दरवाज़ा खटखटाना, दस्तक देना।

दक़्क़ोलक़्क़ (دق ولق) अ. वि.–चटियल मैदान।

दक़्यानूस (دقیانوس) अ. पुं.–इतिहास-काल से पहले का एक बहुत ही अत्याचारी नरेश।

दक़्यानूसी (دقیانوسی) अ. वि.–दक़्यानूस के समय का अर्थात् बहुत पुराना; बड़ी आयुवाला, बहुत दुनिया देखे हुए; बहुत ही पुरानी और निकम्मी वस्तु।

दख़ील (دخیل) अ. वि.–क़ाबिज़, उपभोक्ता, प्रभाव रखनेवाला, पहुँच रखनेवाला।

दख़ीलकार (دخیل کار) अ. फा. वि.–वह किसान जिसे अपनी ज़मीन पर क़ब्ज़े का हक़ हासिल हो।

दख़्मः (دخمہ) फा. पुं.–आतशपरस्तों का क़ब्रिस्तान जो कुएँ की शक्ल का होता है।

दख़्ल (دخل) अ. पुं.–पहुँच, रसाई; अधिकार, क़ब्ज़ा; हस्तक्षेप, मुज़ाहमत; थोड़ी-बहुत जानकारी, शुदबुद।

दख़्ल दर मा'क़लात (دخل در معقولات) अ. फा. अव्य.–किसी विषय में बिना कारण दख़्ल देना, अनधिकार चर्चा।

दख़्लदिहानी (دخل دہانی) अ. फा. स्त्री.–क़ब्ज़ा दिलाना, किसी जायदाद आदि पर किसी एक की जगह दूसरे को हक़दार और मालिक बनाना।

दख़्लनामः (دخل نامہ) अ.फा.पुं.–दख़्ल दिलाने की तहरीर।

दख़्लयाब (دخل یاب) अ. फा. वि.–दख़्ल पाया हुआ, जिसे क़ब्ज़ा मिल गया हो।

दख़्लयाबी (دخل یابی) अ. फा. स्त्री.–क़ब्ज़ा पाना, अधिकार-प्राप्ति।

दग़ल (دغل) फा. पुं.–छल, कपट, फ़रेब; खोटा सोना या चाँदी।

दग़ा (دغا) फा. स्त्री.–छल, वंचना, ठगी, मक्कारी।

दग़ाबाज़ (دغاباز) फा. वि.–वंचक, छली, ठगिया।

दग़ाबाज़ी (دغابازی) फा. स्त्री.–विश्वासघात, कटकर्म, फ़रेबकारी।

दग़्दग़ः (دغدغہ) फा. पुं.–शंका, भय, खटका, धड़का।

दजाज (دجاج) अ. स्त्री.–मुर्ग़ी, स्त्री कुक्कुट, (पुं.) मुर्ग़ा, कुक्कुट, दे. 'दिजाज़'।

दज्जाल (دجال) अ. वि.–बहुत बड़ा छली, बहुत बड़ा मायावी, (पुं.) मुसलमानों के मतानुसार एक व्यक्ति जो क़ियामत से कुछ पहले पैदा होगा और ख़ुदा होने का दावा करेगा।

दज्लः (دجلہ) अ. पुं.–एक नदी जो बग़दाद के नीचे बहती है; नदी, दर्या, दे. 'दिज्लः'।

ददः (ددہ) तु. स्त्री.–वह स्त्री जो बच्चों को दूध पिलाती और उसकी देखरेख करती है।

ददः (ددہ) फा. पुं.–फाड़ खानेवाला दरिंदः, श्वापद।

दद (دد) फा. पुं.–श्वापद, हिंसक पशु, ददः।

दनस (دنس) अ. स्त्री.–मलिनता, मैलापन, गंदगी; अपवित्रता, नजासत।

दनानीर (دنانیر) अ. पुं.–दीनार (अरबी 'दिन्नार') का बहु., अशरफ़ियाँ, मुहरें।

दनी (دنی) अ. वि.–पाजी, कमीना, अधम, पामर, नीच।

दनीउत्तब्अ (دنی الطبع) अ. वि.–ज़लील तबीअत का, नीचाशय।

दनीउलफ़ित्रत (دنی الفطرت) अ. वि.–दे. 'दनीउत्तब्अ'।

दफ़ (دف) फा. पुं.–एक गोलाकार खाल मढ़ा हुआ बाजा, बड़ी डफ़्ली।

दफ़ाइन (دفائن) अ. पुं.–'दफ़ीनः' का बहु., दफ़ीने, निधियाँ।

दफ़ातिर (دفاتر) अ. पुं.–'दफ़्तर' का बहु., कार्यालय, दफ़्तर (एक से अधिक)।

दफ़ीनः (دفینہ) अ. पुं.–गड़ा हुआ ख़ज़ाना, निधि।

दफ़्अः (دفعہ) अ. स्त्री.–एक बार, बार; धारा, क़ानून की दफ़ा।

दफ़्अतन (دفعتاً) अ. अव्य.–सहसा, अकस्मात्, अचानक।

दफ़्आत (دفعات) अ. स्त्री. 'दफ़अः' का बहु., बहुत बार; कानून की धाराएँ।

दफ़्ईयः (دفعیہ) अ. पुं.–रोक, निवारण, तदारुक।

दफ़्ए मरज़ (دفع مرض) अ. पुं.–रोग-निवारण, रोग का ख़ातिमा, रोगमुक्ति।

दफ़्तर (دفتر) फा. पुं.–कार्यालय, आफ़िस; किसी बड़ी किताब का एक भाग, जिल्द, ग्रंथखंड, वाल्यूम; कोई लम्बी-चौड़ी बात, तूमार, जैसे—शिकायतों का दफ़्तर।

दफ़्तरनिगार (دفترنگار) अ.फा.पुं.–दफ़्तर का मुहर्रिर, क्लर्क, लिपिक।

दफ़्तरी (دفتری) अ. पुं.–दफ़्तर के रजिस्टरों और काग़ज़ों की जिल्दसाज़ी और रजिस्टरों आदि पर लकीरें वग़ैरह खींचनेवाला।

दफ़्न (دفن) अ. पुं.–ज़मीन में गाड़ना, दफ़्न करना, (वि.) गाड़ा हुआ, मद्फ़ून।

दबरान (دبران) अ. पुं.–चौथा नक्षत्र, रोहिणी।

दबाज़त (دبازت) स्थूलता, मोटापन, गाढ़ापन।

दबिस्ताँ (دبستاں) फा. पुं.–अदबिस्ताँ का लघु., पाठशाला, मदरसा, छोटे बच्चों का स्कूल, मक्तब।

दबीज़ (دبیز) फा. वि.–मोटा, गफ़, संगीन।

दबीर (دبیر) फा. पुं.–मुहर्रिर, क्लर्क, लिपिक; लेखक, इंशापरदाज़।

दबीरिस्तान (دبیرستان) फा. पुं.–मुंशीख़ाना, दफ़्तर; पाठशाला, मक्तब।

दबीरे फ़लक (دبیر فلک) फा. अ. पुं.–बुध ग्रह, उतारिद।

दबीलः (دبیلہ) अ. पुं.–गोल और बड़ा वरम, फोड़ा, व्रण।

दबूर (دبور) अ. स्त्री.–पछवा हवा, पछयाव।

दबूसः (دبوسہ) फा. पुं.–जहाज़ का कमरा या कैबिन जो महिलाओं के लिए होता है।

दब्दबः (دبدبہ) अ. पुं.–रोबोदाब, तेज, प्रताप, प्रभाव, आतंक, कर्रोफ़र।

दब्बः (دبہ) फा. पुं.–चमड़े का कुप्पा, घी का कुप्पा।

दब्बाग़ः (دباغہ) अ. पुं.–चमड़ा पकाने और रँगने का कारख़ाना, टैनरी।

दब्बाग़ (دباغ) अ. वि.–चमड़ा कमानेवाला, चमड़ा पकाने और रँगनेवाला।

दमः (دمہ) फा. पुं.–दमे का रोग, श्वासकास, श्वासरोग, ज़ीक़ुन्नफ़स।

दम (دم) फा. पुं.–साँस, श्वास; छल, धोखा, फ़रेब; शेख़ी, डींग; धार, तीक्ष्णता, तेज़ी; प्राण वायु, रूह; व्यक्तित्व, ज़ात; हुक़्क़े या चिलम का कश; क्षण, पल, लम्हा; कुछ पढ़ के फूँकना; मंत्र, टोटका; समय, काल, वक़्त; बल, शक्ति, ज़ोर।

दम (دم) अ. पुं.–रक्त, लोहू, ख़ून; जीवन, प्राण, ज़िंदगी।

दमकश (دمکش) फा. वि.–मौन, चुप, ख़ामोश; गवैए के साथ स्वर मिलानेवाला।

दमकशी (دمکشی) फा. स्त्री.–मौन, चुप्पी, ख़ामोशी; गानेवाले के स्वर में स्वर मिलाना।

दमख़म (دمخم) फा. पुं.–शक्ति, ज़ोर, ताक़त; उत्साह, उमंग, हौसला; तलवार की धार और उसकी वक्रता।

दमज़दन (دمزدن) फा. पुं.–दम मारना, कुछ कहना; क्षण, लमहा, ज़रा-सी देर।

दमदमः (دمدمہ) फा. पुं.–वह कृत्रिम कोट जो युद्ध के समय थैलों में मिट्टी भरकर बनाते हैं, धुस, मोरचा।

दमदार (دمدار) फा. वि.–ज़ोरदार, शक्तिशाली; प्राणी, जान्दार।

दमपुख़्त (دمپخت) फा. पुं.–हाँडी का मुँह बंद करके हल्की आँच पर पकाई हुई चीज़; (मुर्ग़ के) पेट में कोई चीज़ भरकर पकाया हुआ मुर्ग़; देग का मुँह बन्द करके पकाई हुई बिरयानी या पुलाव।

दम बख़ुद (دم بخود) फा. वि.–मौन, चुप, ख़ामोश, "शमा

चुप, पर्वाना शस्दर, अहले महफ़िल 'दम बख़ुद', हाय क्या तस्वीर का आलम तेरी महफ़िल में है।"—जिगर।

दम बदम (دم بدم) फा. वि.—हरदम, क्षण-प्रतिक्षण; निरन्तर, लगातार।

दमबाज़ (دمباز) फा. वि.—धूर्त, छली, वंचक, मक्कार।

दमबाज़ी (دمبازی) फा. स्त्री.—धूर्तता, मक्कारी, छल, फ़रेब।

दमवी (دموی) अ. वि.—रक्त सम्बन्धी, ख़ून से निस्बत रखनेवाला; ख़ून के दबाव या दोष से होनेवाला।

दमशुमारी (دمشماری) फा. अ. स्त्री.—मरते समय की आख़िरी साँसें, मरते समय की साँसें गिनना।

दमसाज़ (دمساز) फा. वि.—मित्र, सखा, दोस्त, हमदम; गाने या नफ़ीरी आदि में साथ देनेवाला।

दमाँ (دماں) फा. वि.—क्रोध के वेग में डौंकने, दहाड़ने और चिंघाड़नेवाला, यह शब्द विशेषतः हाथी, शेर, अजगर और मगर के लिए आता है, वसे बाढ़ में आयी हुई नदी और पानी की बाढ़ के लिए भी प्रयुक्त होता है।

दमादम (دمادم) फा. अव्य.—निरंतर, लगातार, मुसल्सल; क्षण-प्रतिक्षण, हरदम।

दमामः (دمامہ) फा. पुं.—बड़ा नक़्क़ारा, धौंसा।

दमामील (دمامیل) अ. पुं.—'दुम्मल' का बहु., फोड़े।

दमार (دمار) अ. पुं.—वध, हनन, हलाकी।

दमीदः (دمیدہ) फा. वि.—उगा हुआ, ज़मीन से निकला हुआ; फूँका हुआ।

दमीदगी (دمیدگی) फा. स्त्री.—उगाव, जमाव; फूँक।

दमीम (دمیم) अ. वि.—कुरूप, कदाकार, बदसूरत।

दमे आब (دم آب) फा. पुं.—पानी का एक घूँट।

दमे ईसा (دم عیسیٰ) फा. अ. पुं.—हज्रत ईसा की फूँक, जिससे मृत प्राणी जीवित हो जाते थे, प्राण देनेवाला, जीवित करनेवाला।

दमे एहतिज़ार (دم احتضار) फा. अ. पुं.—प्राण निकलते समय; प्राण निकलने का समय।

दमे चंद (دم چند) फा. पुं.—थोड़ी देर, क्षण भर, इतनी देर जिसमें चार-छः साँसें ली जा सकें।

दमे तस्लीम (دم تسلیم) फा. अ. पुं.—मरते वक़्त की साँसें; मौन, चुप्पी, ख़ामोशी; आज्ञा चाहना।

दमे तेग़ (دم تیغ) फा. पुं.—तलवार की धार।

दमे पसीं (دم پسیں) फा. पुं.—दे. 'दमे वापसीं'।

दमे बाज़पसीं (دم بازپسیں) फा. पुं.—दे. 'दमे वापसीं'।

दमे वापसीं (دم واپسیں) फा. पुं.—मरते समय की अंतिम साँसें।

दमे शमशीर (دم شمشیر) फा. पुं.—दे. 'दमे तेग़'।

दमे सर्द (دم سرد) फा. पुं.—ठंडी साँस, सर्द आह।

दमे सुब्ह (دم صبح) फा. अ. पुं.—प्रातःकाल, तड़का।

दमे सूर (دم صور) फा. अ. पुं.—'सूर' फूँकने का समय, महाप्रलय-काल।

दयाक़ूज़ः (دیاقوذہ) अ. पुं.—एक यूनानी दवा।

दरंग (درنگ) फा. स्त्री.—विलम्ब, ढील, वक़्फ़, देर; आलस्य, सुस्ती, दे. 'दिरंग', दोनों शुद्ध हैं।

दरंदाज़ (درانداز) फा. वि.—दो आदमियों में लड़ाई करा देनेवाला, पिशुन, दे. 'दर अंदाज़'।

दरंदाज़ी (دراندازی) फा. स्त्री.—पिशुनता, चुग़ुलख़ोरी, इधर की उधर लगाकर आपस में लड़ाई कराना।

दरः (درہ) फा. पुं.—दो पहाड़ों के बीच का तंग रास्ता, घाटी, दे. 'दर्रः'।

दर (در) फा. पुं.—दरवाज़ा, द्वार (अव्य.) में, भीतर; जब एक ही दो शब्दों के बीच में आता है तो कभी 'बहुत' का अर्थ देता है जैसे 'सह्रा दर सह्रा' जंगलों में। कभी 'ऊपर' का अर्थ देता है जैसे, 'सूद दर सूद' ब्याज पर ब्याज। कभी गुणा का अर्थ देता है जैसे, 'दह दर दह' अर्थात् १० × १०। (प्रत्य.) चीरनेवाला जैसे, 'सफ़दर' सेना की पंक्तियों को चीर डालनेवाला। (उप.) शब्द के अर्थ में विशेषता पैदा कर देता है, जैसे, 'दरगुज़र' किसी का दोष देखते हुए गुज़र जाना। कहीं-कहीं केवल शब्द-सौन्दर्य के लिए भी आता है जैसे, 'दरमियान' इसका अर्थ वही है जो 'मियान' का यानी 'बीच'।

दरअंदाज़ (درانداز) फा. वि.—दे. 'दरंदाज़'।

दरअंदाज़ी (دراندازی) फा. स्त्री.—दे. 'दरंदाज़ी'।

दरअस्ल (دراصل) फा. अ. अव्य.—वास्तव में, वस्तुतः, हक़ीक़त में, अस्ल में।

दरआमद (درآمد) फा. स्त्री.—दे. 'दरामद'।

दरकः (درکہ) अ. पुं.—नीचे का तल, अधोतल, 'दरजः' का उलटा वह ऊपर की मंज़िल के लिए आता है, नरक, दोज़ख़, दे. 'दर्कः'।

दरकात (درکات) अ. पुं.—नीचे के तल; सारे नरक, सारे दोज़ख़।

दरकार (درکار) फा. अव्य.—वांछित, अभिलषित, मतलूब।

दरकिनार (درکنار) फा. अव्य.—एक तरफ़, अलग; एक तरफ़ रहा, अलग रहा, जैसे—राम तो दरकिनार कृष्ण भी नहीं आया।

दरख़ुर (درخور) फा. अव्य.—योग्य, क़ाबिल जैसे—'दरख़ुरे अर्ज़' कहनेयोग्य; दख़्ल, पैठ, रसाई।

दरख़ुरे एतिना (درخوراعتنا) फा. अ. अव्य.—तवज्जुह के क़ाबिल, ध्यान देने योग्य।

दरखुर्द (درخورد) फा. वि.–योग्य पात्र, लाइक़ (लायक़)।

दरख़्त (درخت) फा. पुं.–वृक्ष, द्रुम, पादप, पेड़।

दरख़्वास्त (درخواست) फा. स्त्री.–प्रार्थनापत्र, निवेदन पत्र, अर्ज़ी; निवेदन, कथन, कहना।

दरगाह (درگاه) फा. पुं.–चौखट, देह्लीज़, आस्तानः; राजसभा, दरबार; किसी वली का मज़ार, रौज़ा।

दरगुज़र (درگزر) फा. स्त्री.–दोष देखकर उसे अनदेखा कर देना, चश्मपोशी; क्षमा, मुआफ़ी।

दरजः (درجه) अ. पुं.–पद, उहदा; श्रेणी, वर्ग, तब्क़ा; राशिचक्र का $\frac{१}{३६०}$ वाँ हिस्सा; मकान की माला, मंज़िल; स्वर्ग की माला या मंज़िल; दुर्गति, बुरी हालत; कक्षा, जमाअत, क्लास; मिनिट, दे. 'दर्जः', उर्दू में वही बोला जाता है और वही शुद्ध भी है।

दरजात (درجات) अ. पुं.–'दरजः' का बहु., दर्जे।

दरदम (دردم) फा. अव्य.–तत्क्षण, उसी समय, तुरंत, फ़ौरन।

दरपए आज़ार (درپئے آزار) फा. अव्य.–सताने और हानि पहुँचाने की घात में।

दरपए जाँ (درپئے جاں) फा. अव्य.–प्राण लेने की घात में, मार डालने की ताक में।

दरपए तज़्हीक (درپئے تضحیک) फा. अ. अव्य.–निन्दा और बदनामी की घात में, बदनाम करने की फ़िक्र में।

दरपर्दः (درپرده) फा. अव्य.–पर्दे में, छुपकर, ख़ुफ़्या तौर पर।

दरपेश (درپیش) फा. अव्य.–किसी समस्या या कार्य की उपस्थिति, जैसे—'मुआमला दरपेश' है' या जैसे—'सफ़र दरपेश' है।

दरपै (درپے) फा. अव्य.–पीछे पड़ा हुआ, संलग्न ; घात में, ताक में; इच्छुक, ख्वाहिशमंद।

दरफ़्शाँ (درفشاں) फा.वि.–प्रकाशमान, ज्योतिर्मय, रौशन, दे. 'दुरफ़्शाँ', दोनों शुद्ध हैं।

दरबंद (دربند) फा. पुं.–परकोट, चारदीवारी; बड़ा दरवाज़ा; नदी का घाट; दो राष्ट्रों के बीच का अन्तर।

दरबदर (دربدر) फा. अव्य.–घर-घर, गली-गली, एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े।

दरबान (دربان) फा. पुं.–द्वारपाल, दरवाज़े की रक्षा पर नियुक्त व्यक्ति, ड्योढ़ीदार।

दरबाब (درباب) फा. अव्य.–बारे में, सम्वन्ध में।

दरबारः (درباره) फा. अव्य.–दे. 'दरबाब'।

दरबार (دربار) फा. पुं.–राजसभा, बादशाही कचहरी; किसी ऋषि, मुनि या वली का आश्रम या ख़ानक़ाह।

दरबारदारी (درباردارى) फा. स्त्री.–किसी बड़े आदमी के यहाँ ख़ुशामद में रोज़ाना की हाज़िरी।

दरबारी (درباری) फा.वि.–दरबार से सम्बन्धित; वह व्यक्ति जो दरबार में निमंत्रित होता हो; राजा या बादशाह का सभासद, पारिषद।

दरबारे आम (دربارعام) फा. अ. पुं.–वह दरबार जिसमें सर्व साधारण जा सकें, जनता का दरबार।

दरबारे ख़ास (دربارخاص) फा. अ. पुं.–वह दरबार जिसमें केवल राज्याधिकारी और बड़े-बड़े लोग ही सम्मिलित हो सकें।

दरमांदः (درمانده) फा.वि.–दुःखित, हीन, निःसहाय, निराश्रय, आजिज, बेकस।

दरमांदगी (درماندگی) फा. स्त्री.–हीनता, दीनता, निःसहायता, बेकसी, मज़बूरी।

दरमाहः (درماهه) फा. पुं.–महीने पर मिलनेवाला वेतन।

दरमाहःदार (درماههدار) फा. वि.–महीने पर तनख़्वाह पानेवाला।

दरमियान (درمیان) फा. पुं.–में, बीच; मध्य, वस्त।

दरमियानः (درمیانه) फा. वि.–बीचवाला, न बड़ा न छोटा।

दरमियानी (درمیانی) फा.वि.–दरमियानवाला, बीच का; बिचौलिया, मध्यस्थ, बीच में पड़कर वाद या झगड़े को ख़त्म करानेवाला व्यक्ति।

दरयाफ़्त (دریافت) फा. स्त्री.–जाँच, टोह, जिज्ञासा; अनुसंधान, गवेषणा, तहक़ीक़।

दरयाब (دریاب) फा. स्त्री.–समझ-बूझ, बुद्धि; नदी, दर्या।

दरयूज़ः (دریوزه) फा. पुं.–भीख़ माँगना, भिक्षाटन।

दरयूज़ःगर (دریوزهگر) फा. वि.–भीख माँगनेवाला, भिक्षुक, भिखारी, मँगता।

दरयूज़ःगरी (دریوزهگری) फा. स्त्री.–भीख माँगना, भिक्षावृत्ति, भिक्षाकर्म, भिक्षाटन।

दरयूज़गी (دریوزگی) फा. स्त्री.–दे. 'दरयूज़ःगरी'।

दरवाज़ः (دروازه) फा. पुं.–द्वार, दर।

दरवेज़ः (درویزه) फा. पुं.–दे. 'दरयूज़ः'।

दरवेश (درویش) फा. पुं.–भिखारी, भिक्षुक; पुनीतात्मा, सिद्ध, ख़ुदा रसीदः; विनीत, विनम्र, ख़ाकसार; संन्यासी, तारिकुद्दुनिया।

दरवेश सिफ़त (درویش صفت) फा. अ. वि.–दरवेशों-जैसा सीधा-सादा स्वभाव रखनेवाला।

दरवेशानः (درویشانه) फा. अव्य.–दरवेशों-जैसा, जैसे—'दरवेशानः ज़िंदगी' सीधी-सादी और मोटी-झोटी जीवनचर्या।

दरवेशी (درویشی) फा. स्त्री.–फ़क़ीरी, संन्यास।

दरहम (درہم) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितिर-बितर, यह शब्द अकेला नहीं बोला जाता 'बरहम' के साथ 'दरहम बरहम' बोला जाता है।

दरा (درا) फा. पुं.–घंटा, घड़ियाल, वह घंटा जो यात्रिदल अर्थात् क़ाफ़िले के साथ रहता है, दे. 'दिरा', दोनों उच्चारण शुद्ध हैं।

दराए कार्वां (درائے کارواں) फा. पुं.–क़ाफ़िले में बजनेवाला घंटा।

दराज़ (دراز) फा. वि.–लंबा, दीर्घ, लंब, तवील।

दराज़क़द (درازقد) फा. वि.–दे. 'दराज़क़ामत', प्रलंबकाय।

दराज़क़ामत (درازقامت) फा. अ. वि.–लम्बे शरीरवाला, लंबकाय, दीर्घकाय।

दराज़गोश (درازگوش) फा. वि.–लंबे कानवाला, लंबकर्ण (पुं.) एक प्रकार का गधा।

दराज़दस्त (درازدست) फा. वि.–अन्यायी, अत्याचारी, ज़ालिम।

दराज़दस्ती (درازدستی) फा. स्त्रीं.–अन्याय, अत्याचार, ज़ुल्म।

दराज़दुम (درازدم) फा. पुं.–लम्बी पूँछवाला, लंबपुच्छ; गिरगट, कृकलास।

दराज़नफ़सी (درازنفسی) फा. अ. स्त्री.–वाचालता, बहुत बोलना, बहुत बातें करना।

दराज़िए उम्र (درازئی عمر) फा. अ. स्त्री.–आयु की लंबाई, अधिक जीना, दीर्घायु।

दराज़ी (درازی) फा. स्त्री.–लंबाई, दीर्घता, तवालत।

दरामद (درآمد) फा. स्त्री.–वह माल जो किसी राष्ट्र में बाहरी राष्ट्रों से आये, आयात।

दराहिम (دراہم) अ. पुं.–'दिर्हम' का बहु., बहुत से दिर्हम।

दरिंदः (درندہ) फा. पुं.–फाड़ खानेवाला जंगली जानवर, श्वापद।

दरीं (دریں) फा. अव्य.–इसमें।

दरींअस्ना (دریں اثنا) फा. अ. अव्य.–इस बीच, इसी बीच, इसी दरमियान।

दरीं ख़ुसूस (دریں خصوص) फा. अ. अव्य.–इस विषय में, इस बारे में, इस सम्बन्ध में।

दरी (دری) फा. स्त्री.–फ़ारसी भाषा की एक शाखा।

दरीचः (دریچہ) फा. पुं.–खिड़की, झरोखा, गवाक्ष, जालार।

दरीदः (دریدہ) फा. वि.–फटा हुआ, विदीर्ण।

दरीदःदहन (دریدہ دہن) फा. वि.–मुँहफट, मुक्तकंठ।

दरूँ (دروں) फा. पुं.–'दरून' का लघु., दे. 'दरून'।

दरून (درون) फा. पुं.–हृदय, मन, चित्त, आत्मा, बातिन, क़ल्ब।

दरूना (درونا) फा. पुं.–वह फोड़ा या घाव जिसका मुँह भीतरी हो।

दरूनी (درونی) फा. वि.–भीतरी, अंदरूनी; मानसिक, हार्दिक, रूहानी।

दरोग़ (دروغ) फा. पुं.–झूठ, असत्य, मिथ्या, ग़लत, दे. 'दुरोग़' दोनों शुद्ध हैं।

दरोग़गो (دروغ گو) फा. वि.–झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, झूठा, काज़िब।

दरोग़गोई (دروغ گوئی) फा. स्त्री.–झूठ बोलना, मिथ्यावाद।

दरोग़ज़न (دروغ زن) फा. वि.–दे. 'दरोग़गो'।

दरोग़बयाँ (دروغ بیاں) फा. अ. वि.–दे. 'दरोग़गो'।

दरोग़बाफ़ (دروغ باف) फा. वि.–झूठ गढ़नेवाला, अपने मन से झूठ बातें बनानेवाला।

दरोग़हल्फ़ी (دروغ حلفی) फा.अ. स्त्री.–झूठी क़सम खाना।

दर्कः (درکہ) अ. पुं.–दे. 'दरकः' उर्दू में 'दर्कः' ही बोलते हैं।

दर्क (درک) अ. पुं.–बुद्धि, अक़्ल, समझ; विवेक, तमीज़, ज्ञान, जानकारी।

दर्जः (درجہ) अ. पुं.–दे. 'दरजः', उर्दू में अधिकतर 'दर्ज' ही बोलते हैं।

दर्ज (درج) अ. वि.–लिखा हुआ, प्रविष्ट, रजिस्टर या बही आदि में लिखा हुआ; लिखना, दर्ज करना।

दर्ज़ (درز) फा. स्त्री.–दरार, शिगाफ़, फटन; खाना, जैसे–मेज़ की दर्ज़।

दर्ज़ी (درزی) फा. पुं.–कपड़ा सीनेवाला, सूचिक।

दर्द (درد) फा. पुं.–कष्ट, व्यथा, यातना, तक्लीफ़; करुणा, दया, तरस, रहम; दुःख, क्लेश, मुसीबत; पीड़ा, टीस, चसक।

दर्दअंगेज़ (درد انگیز) फा. वि.–दर्द पैदा करनेवाला, पीड़ोत्पादक, कष्टजनक।

दर्दअफ़्ज़ा (درد افزا) फा. वि.–दर्द बढ़ानेवाला, पीड़ावर्द्धक।

दर्दआश्ना (درد آشنا) फा. वि.–जो किसी के दर्द को जानता हो, जो किसी के दुःख से वाक़िफ़ हो; सहानुभूतिकर्ता, हमदर्द, दुःख में सहायता देनेवाला, मित्र।

दर्द ना आश्ना (درد ناآشنا) फा. वि.–जो किसी का दर्द न समझे, निर्दय, कठोर हृदय, संगदिल।

दर्दनाक (دردناک) फा. वि.–दे. 'दर्दअंगेज़'।

दर्दफ़िज़ा (درد فزا) फा. वि.–दे. 'दर्दअफ़्ज़ा'।

दर्दमंद (دردمند) फा. वि.–हमदर्द, सहानुभूति करनेवाला, दिलासा देनेवाला।

दर्दमंदी (دردمندی) फा. स्त्री.–हमदर्दी, सहानुभूति, दया और करुणा का भाव।

दर्दा (دردا) फा. अव्य.–हाए अफ़सोस, हा हंत, हाए हाए।

दर्देजिगर (دردجگر) फा. पुं.–दे. 'दर्देदिल'।

दर्देज़ेह (دردزه) फा. पुं.–बच्चा पैदा होने के समय की पीड़ा, प्रसववेदना, प्रसवपीड़ा।

दर्देदिल (درددل) फा. पुं.–मन की व्यथा, मनस्ताप; प्रेम का दुःख, इश्क़ का ग़म।

दर्देसर (دردسر) फा. पुं.–सिर का दर्द, शिर-पीड़ा; झंझट, खटराग।

दर्दोग़म (دردوغم) फा. अ. पुं.–बहुत-सी मुसीबतें, कष्टसमूह।

दर्मां (درماں) फा. पुं.–उपचार, इलाज, चिकित्सा।

दर्मांतलब (درماں طلب) फा. अ. वि.–इलाज या उपचार का इच्छुक।

दर्मांतलबी (درماں طلبی) फा. अ. स्त्री.–इलाज की इच्छा।

दर्मांपिज़ीर (درماں پزیر) फा. वि.–चिकित्सा के योग्य, इलाज के क़ाबिल।

दर्या (دریا) फा. पुं.–नद, नदी, तरंगिणी, सरिता, आपगा, शैवलिनी, तटिनी, निम्नगा।

दर्याई (دریائی) फा. वि.–नदी सम्बन्धी; नदी में रहनेवाला जैसे–दर्याई जानवर; नदी में उत्पन्न होनेवाला, जैसे–दर्याई सदफ़; दर्या का।

दर्याएअह्मर (دریائے احمر) फा. अ. पुं.–लालसागर, बह्रे क़ुल्ज़ुम।

दर्याएज़ख़्ख़ार (دریائے زخار) फा. अ. पुं.–ठाठें मारता हुआ दर्या, लबालब बहनेवाली नदी।

दर्याएशोर (دریائے شور) फा. पुं.–खारे पानी की नदी, खारा समंदर, लवण-सागर; वह समुद्र जिसमें अंडमान और निकोबार के टापू हैं और जहाँ अंग्रेज़ी शासन काल में आजन्म कारावासी भेजे जाते थे।

दर्याचः (دریاچہ) फा. पुं.–छोटी नदी।

दर्यादिल (دریادل) फा. वि.–जो बहुत दानी हो, सख़ी, दाता, दिलदर्याव, मुक्तहस्त, वदान्य, उदारसना।

दर्याबरामद (دریابرآمد) फा. स्त्री.–वह भूमि जो किसी नदी के स्थान छोड़ने से निकली हो, पुलिन, नद्युत्सृष्ट।

दर्याबरार (دریابرار) फा. स्त्री.–दे. 'दर्याबरामद'।

दर्याबार (دریابار) फा. वि.–सख़ी, फ़ैयाज़, वदान्य; बहुत बरसनेवाला जैसे–'अब्रे दर्याबार'।

दर्याबुर्द (دریابرد) फा. स्त्री.–वह भूमि जो नदी की बाढ़ में डूब गयी हो; वह भूमि जो बाढ़ से कटकर नष्ट हो गयी हो।

दर्याबेगी (دریابیگی) फा. पुं.–बह्री फ़ौज का सिपहसालार, जल-सेनापति, नवाधिपति, अमीरुल बह्र।

दर्राक (دراک) अ. वि.–प्रतिभाशाली, कुशाग्र बुद्धि, बहुत ही तेज़ फ़हम।

दर्स (درس) अ. पुं.–पढ़ना, पठन; पढ़ाना, पाठन; शिक्षा, नसीहत; उपदेश, सदुपदेश, वा'ज़।

दर्सोतद्रीस (درس وتدریس) अ. पुं.–पढ़ना-पढ़ाना, पढ़ने-पढ़ाने का व्यापार।

दलाइल (دلائل) अ. पुं.–'दलील' का बहु., दलीलें।

दलालत (دلالت) अ. पुं.–लक्षण, चिह्न, अलामत; तर्क, युक्ति, दलील; मार्ग-प्रदर्शन, रहनुमाई।

दलीदः (دلیدہ) फा. पुं.–दलिया, मोटा दला हुआ अनाज (वि.) दला हुआ।

दलील (دلیل) अ. स्त्री.–तर्क, युक्ति, बुर्हान; प्रमाण, सुबूत।

दलीले क़वी (دلیل قوی) अ. स्त्री.–मज़्बूत दलील, पुष्ट प्रमाण।

दलीले कामिल (دلیل کامل) अ. स्त्री.–पूरा सुबूत, पूर्ण प्रमाण; ऐसी दलील या तर्क जिसका खंडन न हो सके।

दलीले नाक़िस (دلیل ناقص) अ. स्त्री.–वह दलील जो बोदी हो और जिसका खंडन हो सकता हो, कुतर्कक।

दल्क़ (دلق) अ. स्त्री.–भिखमंगों की गुदड़ी; सूफ़ियों के पहनने का ऊनी लिबास।

दल्क (دلک) अ. पुं.–अंगमर्दन, जिस्म को मलना।

दल्क़पोश (دلق پوش) अ. फा. वि.–भिक्षुक, फ़क़ीर; सूफ़ी, ब्रह्मवादी।

दल्लाक (دلاک) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो हम्माम (स्नानागार) में शरीर मलता और मैल छुड़ाता है।

दल्लालः (دلالہ) अ. स्त्री.–कुटनी, कुट्टनी।

दल्लाल (دلال) अ. पुं.–बिकवाल और लिवाल के बीच में सौदा तय करानेवाला, दलाल; आढ़ती, एजेंट।

दल्लाली (دلالی) अ. स्त्री.–बीच में पड़कर सौदा तै कराने का काम; कुटनीपन; आढ़त का काम।

दवाँ (دواں) फा. वि.–दौड़ता हुआ, भागता हुआ।

दवा (دوا) अ. स्त्री.–ओषधि, औषध, भेषज, दवाई; उपचार, इलाज, चिकित्सा; उपाय, तद्बीर।

दवाइर (دوائر) अ. पुं.–'दाइरः' का बहु., दाइरे।

दवाउलमिस्क (دواء المسک) अ. स्त्री.–एक यूनानी औषध जो हृदय के लिए शक्तिवर्द्धक है।

दवाएदिल (دوائے دل) अ. फा. स्त्री.–दिल के रोग की ओषधि, प्रेम-रोग की दवा।

दवाख़ानः (دواخانہ) अ. फा. पुं.–जहाँ दवाएँ बिकती हों, औषधालय।

दवात (دوات) अ. स्त्री.–सियाही रखने का पात्र, मसिपात्र।

दवादविश (دوادوش) फा. अव्य.–दौड़ भाग, कोशिश, परिश्रम।

दवादौ (دوادو) फा. अव्य.–दे. 'दवादविश'।

दवापिज़ीर (دواپزیر) अ. फा. वि.–दवाई के क़ाबिल, साध्य, जो इलाज से अच्छा हो सके।

दवाफ़रोश (دوافروش) अ. फा. पुं.–दवा बेचनेवाला।

दवाब [ब्ब] (دواب) अ. पुं.–'दाब्बः' का बहु., चौपाए, पशु, मवेशी।

दवाम (دوام) अ. पुं.–नित्यता, स्थायित्व, हमेशगी; नित्य, हमेशा।

दवामी (دوامی) अ. वि.–हमेशा रहनेवाला, अनश्वर, नित्य; हमेशा के लिए, स्थायी; जीवन भर के लिए, हीन-हयाती।

दवाल (دوال) फा. स्त्री.–दे. 'दुवाल', दोनों शुद्ध हैं।

दवावीन (دواوین) अ. पुं.–दीवान का बहु., शाइरों के दीवान।

दवासाज (دواساز) अ. फा.–पुं.–दवाएँ बनानेवाला, अत्तार।

दवी (دوی) अ. स्त्री.–कान में होनेवाली झंझनाहट।

दवीदः (دویده) फा. वि.–दौड़ा हुआ।

दश्त (دشت) फा. पुं.– कानन, वन, जंगल, वियाबान।

दश्तआवारः (دشت آواره) फा. वि.–जंगलों में मारा-मारा फिरनेवाला, वनभ्रमी, काननचारी।

दश्तगर्द (دشت گرد) फा. वि.–दे. 'दश्तआवारः'।

दश्तगर्दी (دشت گردی) फा. स्त्री.–जंगलों में मारा-मारा फिरना, वन-भ्रमण।

दश्नः (دشنه) फा. पुं.–ख़ंजर, जंबिया, भुजाली, दे. 'दिश्नः', दोनों शुद्ध हैं।

दसाइस (دسائس) अ. पुं.–'दसीसः' का बहु., साज़िशें, कुचक्र-समूह।

दसातीर (دساتیر) अ. पुं.–'दुस्तूर' का बहु., क़ाइदे, क़ानून, रीतियाँ; पारसियों का धार्मिक ग्रंथ।

दसीसः (دسیسه) अ. पुं.–कुचक्र, दुरभिसंधि, साज़िश, षड्यंत्र।

दस्तंदाज (دست انداز) फा. वि.–दे. 'दस्तअंदाज़'।

दस्तंदाजी (دست اندازی) फा. स्त्री.–दे. 'दस्तअंदाज़ी'।

दस्तंबू (دستنبو) फा. पुं.–कई सुगंधित पदार्थों और इत्रों को मिलाकर बनाया हुआ गुल्ला, जो सूंघने के लिए हाथ में रखा जाय; हर सुगंधित फल जो सूंघा जा सके; कचरी, सुंधिया।

दस्तंबूयः (دستنبویه) फा. पुं.–दे. 'दस्तंबू'।

दस्तः (دسته) फा. पुं.–चाक़ू या छुरी आदि की मूठ; जग या डोंगे आदि का हैंडिल; मुट्ठा, जैसे—गुलदस्ता; २५ काग़ज़ों का मुट्ठा, रीम का बीसवाँ हिस्सा; खरल का मूसला; फ़ौज की टुकड़ी, गारद; संजाफ़, हाशिया।

दस्त (دست) फा. पुं.–कर, हस्त, हाथ; पतला शौच, विरेचन, इस्हाल।

दस्तअंदाज (دست انداز) फा. वि.–किसी काम में हस्तक्षेप करनेवाला, बाधा डालनेवाला, बाधक, विघ्नकारक, मुज़ाहिम, दे. 'दस्तंदाज़'।

दस्तअंदाजी (دست اندازی) फा. स्त्री.–हस्तक्षेप करना, बाधा डालना, मुज़ाहमत, दे. 'दस्तंदाज़ी'।

दस्तअफ़राज (دست افراز) फा. पुं.–कारीगर के काम करने का यंत्र, हथियार, औज़ार, उपकरण, दे. 'दस्तफ़्राज़'।

दस्तअफ़्शाँ (دست افشاں) फा. वि.–किसी काम से विरक्त होनेवाला, त्यागनेवाला, त्यागी, विरक्त, दे. 'दस्तफ़्शाँ'।

दस्तआमोज (دست آموز) फा. वि.–हाथ पर सधाया हुआ जानवर, दे. 'दस्तामोज़'।

दस्तावर (دستاور) फा. वि.–दस्त लानेवाली दवाई, रेचक, जुल्लाब, दे. 'दस्तावर'।

दस्तक (دستک) फा. स्त्री.–ताली, करताल, चर्चरी; खटखटाना; राजादेश, हुक्मनामा; क़ुर्की।

दस्तक़लम (دست قلم) फा. अ. अव्य.–दे. शुद्ध 'दस्तोक़लम'।

दस्तकश (دست کش) फा. वि.–विरक्त, बेतअल्लुक़।

दस्तकशी (دست کشی) फा. स्त्री.–किसी काम में से अपने को निःसम्बन्ध कर लेना, उपेक्षा।

दस्तकार (دست کار) फा. पुं.–शिल्पी, शिलाकार, कारीगर, हाथ के काम का माहिर; वह चीज़ जिस पर हाथ का काम बना हो।

दस्तकारी (دست کاری) फा. स्त्री.–शिल्प, कला, हस्तशिल्प।

दस्तकी (دستکی) फा. स्त्री.–हाथ में लेने या जेब आदि में रखने के क़ाबिल छोटी चीज़।

दस्तख़त (دستخط) फा. पुं.–हस्ताक्षर, स्वाक्षर, अपने क़लम से लिखा हुआ अपना नाम, जो किसी तहरीर की सनद के लिए हो।

दस्तख़ती (دستخطی) फा. वि.–जिस पर दस्तख़त हो।

दस्तगर्दां (دست گرداں) फा. वि.–बग़ैर तहरीर का कर्ज़ा, हथ उधार।

दस्तगह (دستگه) फा. स्त्री–'दस्तगाह' का लघु., दे. 'दस्तगाह'।

दस्तगाह (دستگاه) फा. स्त्री.–सामर्थ्य, शक्ति, कुद्रत; योग्यता, विद्वत्ता, इल्मीयत।

दस्तगिरिफ़्तः (دست گرفته) फा. वि.–जिसका हाथ सहारे के लिए पकड़ा हो, जिसे सहायता दी हो।

दस्तगी (دستگی) फा. स्त्री.–वह दस्ताना जो बाज़ पक्षी को हाथ पर बैठाते समय पहिनते हैं; दस्ता, हेंडिल; पानी का लोटा जिससे वज़ू या शौच करते हैं।

दस्तगीर (دستگیر). फा. वि.–हाथ पकड़कर सहारा देनेवाला, अर्थात्, सहायक, मददगार।

दस्तगीरी (دستگیری) फा. अ. स्त्री.–सहायता, मदद, गिरते को थामना।

दस्तचर्ब (دستچرب) फा. वि.–किसी दस्तकारी में निपुण, (पुं.) सहायता, मदद।

दस्तचीर (دستچیر) फा. वि.–अन्यायी, अत्याचारी; ग़ालिब, बलवान्, ताक़तवर।

दस्तदराज़ (دستدراز) फा. वि.–अन्यायी, जाबिर; हथा छुट, मार बैठनेवाला; निडर, बेबाक।

दस्तदराज़ी (دستدرازی) फा. स्त्री.–ज़ुल्म, अत्याचार; गुस्ताख़ी, दुःसाहस; मारपीट।

दस्तनिगर (دستنگر) फा. वि.–दूसरों का मुंह ताकनेवाला, दूसरों के सहारे जीवन व्यतीत करनेवाला, मुखापेक्षी, पराश्रय।

दस्तपनाह (دستپناہ) फा. पुं.–चीमटा, चूल्हे से आग निकालने का यंत्र।

दस्तपरवर्दः (دستپرورده) फा. वि.–हाथ का पला हुआ, लालन-पालन में रखा हुआ।

दस्तपाक (دستپاک) फा. अ. पुं.–वह कपड़ा जिससे भोजन के बाद मुँह-हाथ पोंछते हैं, रूमाल।

दस्तपेच (دستپیچ) फा. पुं.–दस्तावेज, लेखपात्र; साधन, ज़रीया।

दस्तपैमाँ (دستپیماں) फा. पुं.–वे कपड़े, धन और आभूषण आदि जो ब्याह से पहले दूल्हन के घर जाते हैं।

दस्तफ़रोश (دستفروش) फा. वि.–वह व्यक्ति जो चीज़ों को हाथ में लेकर बेचता है।

दस्तफ़ाल (دستفال) फा. स्त्री.–सबसे पहली बिक्री, बौनी, बुहनी।

दस्तफ़ाज़ (دستافراز) फा. पुं.–उर्दू में 'दस्त अफ़राज़' का शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु ग़लत वह भी नहीं है।

दस्तबंद (دستبند) फा. पुं.–पहुँची, कलाई का एक आभूषण; नृत्य का एक प्रकार।

दस्तबख़ैर (دستبخیر) फा. अ. अव्य.–जब किसी को यह बताना होता है कि अमुक व्यक्ति के शरीर में कोई बाधा या फोड़ा आदि किस स्थान पर है, तो उसके शरीर पर उसी जगह हाथ रखते हुए यह वाक्य कहते हैं, जैसे—कहें दस्तबख़ैर, उनके भी इस स्थान पर फोड़ा है या था।

दस्तबदस्त (دستبدست) फा. अव्य.–हाथों-हाथ, तुरंत; आमने-सामने की, हाथों की, जैसे—'दस्त बदस्त जंग'।

दस्तबदुआ (دستبدعا) फा. अ. अव्य.–ईश्वर से प्रार्थना के लिए हाथ उठाये हुए।

दस्तबरदार (دستبردار) फा. वि.–बेतअल्लुक़, विरक्त।

दस्तबरदिल (دستبردل) फा.वि.–व्याकुल, बेचैन, मुज़्तरिब

दस्तबसर (دستبسر) फा. वि.–सिर पर हाथ रखे हुए, पश्चात्ताप करनेवाला; चकित, हैरान।

दस्तबस्तः (دستبستہ) फा. वि.–हाथ बाँधे हुए, हाथ जोड़े हुए, बद्धकर, बड़ी नम्रता के साथ।

दस्तबाफ़ (دستباف) फा. वि.–सरल, सुगम, आसान।

दस्तबिरंजन (دستبرنجن) फा. पुं.–कंगन।

दस्तबुक़्चः (دستبقچہ) फा. पुं.–छोटी गठरी जो हाथ से उठाई जा सके।

दस्तबोस (دستبوس) फा. वि.–हाथ चूमनेवाला, किसी पूज्य व्यक्ति के हाथों को बोसा देनेवाला।

दस्तबोसी (دستبوسی) फा. स्त्री.–हाथ चूमना, किसी पूज्य व्यक्ति के हाथों को बोसा देना।

दस्तमायः (دستمایہ) फा. पुं.– पूँजी, सरमाया।

दस्तमाल (دستمال) फा. पुं.–हाथ पोंछने का कपड़ा, रूमाल; बावरचीख़ाने की साफ़ी।

दस्तमुज़्द (دستمزد) फा. पुं.–उज्रत, मज़दूरी, भृति, पारिश्रमिक।

दस्तयाब (دستیاب) फा. वि.–हस्तगत, प्राप्त, उपलब्ध, हासिल।

दस्तयाबी (دستیابی) फा. स्त्री.–हुसूल, प्राप्ति, उपलब्धि, उपलब्धता।

दस्तयार (دستیار) फा. वि.–सहायक, मददगार (पुं.) उपकरण, हथियार।

दस्तयारी (دستیاری) फा. स्त्री.–सहायता, मदद।

दस्तरंज (دسترنج) फा. पुं.– श्रम, मेहनत।

दस्तरख़्वान (دسترخوان) फा. पुं.–वह कपड़ा जिस पर खाना खाते हैं।

दस्तरस (دسترس) फा. स्त्री.–पहुँच, रसाई, पैठ।

दस्तरसीदः (دسترسیدہ) फा. वि.–जहाँ तक हाथ पहुँच गया हो।

दस्तलाफ़ (دستلاف) फा. स्त्री.– बोहनी, दस्तफ़ाल।

दस्तवानः (دستوانہ) फा. पुं.–कंगन, पहुँची।

दस्तसाज़ (دستساز) फा. वि.– हाथ का बनाया हुआ।

दस्ताँ (دستاں) फा. पुं.–'दस्त' का बहु., छल, फ़रेब; गति, नग़मा।

दस्तानः (دستانہ) फा. पुं.–हाथों की हिफ़ाज़त के लिए पहना जानेवाला एक विशेष वस्त्र, हस्तत्राण।

दस्तामोज़ (دستاموز) फा. वि.–'दस्तआमोज़' का शुद्ध उच्चारण यही है, वह भी ग़लत नहीं है।

दस्तार (دستار) फा. स्त्री.–पगड़ी, अम्मामा।

दस्तारचः (دستارچہ) फा. पुं.–छोटी पगड़ी।

दस्तारबंद (دستاربند) फा. वि.–जिसने अरबी की पूरी योग्यता प्राप्त कर ली हो और उसे पगड़ी बाँध दी गयी हो, स्नातक।

दस्तारबंदी (دستاربندی) फा. स्त्री.–पूर्ण विद्योपार्जन के पश्चात् पगड़ी बाँधने की रस्म या संस्कार।

दस्तारबुज़ुर्ग (دستاربزرگ) फा.पुं.–क़ुर्रम साक़, वेश्याघटक।

दस्तावर (دستاور) फा. वि.–'दस्त आवर' का शुद्ध रूप, दे. 'दस्त आवर'।

दस्तावेज़ (دستاویز) फा. स्त्री.–व्यवस्थापत्र, लेखपत्र, साधनपत्र, तमस्सुक, क़िबाला।

दस्तास (دستاس) फा. स्त्री.–हाथ की चक्की।

दस्ती (دستی) फा. वि.–हाथ का, हाथ से सम्बन्ध रखनेवाला; हाथ में रखनेवाली चीज़; मशाल, फ़लीता।

दस्तूर (دستور) फा. पुं.–नियम, क़ाइदा; विधान, क़ानून; परंपरा, रवाज; मंत्री, सचिव, वज़ीर; पद्धति, शैली, ढंग; व्यवहार, रविश; हक़, कटौती, कमीशन।

दस्तूरियः (دستوریہ) फा. स्त्री.–जुमहूरियः, गणतंत्र, जनतंत्र।

दस्तूरी (دستوری) फा. वि.–वैधानिक, क़ानूनी (स्त्री.) कमीशन, हक़, कटौती।

दस्तूरुलअमल (دستورالعمل) फा. अ. पुं.–काम का तरीक़ा, कार्य-प्रणाली; कार्यक्रम, लाहियए अमल।

दस्तेक़ुद्रत (دست قدرت) फा. अ. पुं.–सामर्थ्य, शक्ति, मक़्दरत।

दस्तेग़ैब (دست غیب) फा. अ. पुं.–दैवी आय, ग़ैबी आमदनी।

दस्तेदुआ (دست دعا) फा. अ. पुं.–दुआ के लिए उठा हुआ हाथ

दस्तेशफ़क़त (دست شفقت) फा. अ. पुं.–छत्रछाया, परवरिश।

दस्तेशिफ़ा (دست شفا) फा. अ. पुं.–रोग-निवारण की शक्ति

दस्तोक़लम (دست و قلم) फा. अ. वि.–शिक्षित, पढ़ा-लिखा।

दस्तोगिरीबाँ (دست و گریباں) फा. वि.–एक दूसरे का गिरीबान पकड़े हुए, हाथापाई करते हुए।

दस्तोपा (دست و پا) फा. पुं.–हाथ-पाँव; प्रयास, प्रयत्न, मेहनत, कोशिश।

दस्तोबग़ल (دست و بغل) फा. वि.–आलिंगन, बग़लगीर।

दह (دہ) फा. वि.–दस, दश।

दहचंद (دہچند) फा. वि.–दस गुना।

दह दर दह (دہ در دہ) फा. वि.–वह हौज़ जो दस गज़ लंबा और दस गज़ चौड़ा हो।

दहदिलः (دہدلہ) फा. वि.–वीर, बहादुर; चिंतित, फ़िक्रमंद; लोलुप, लालची।

दहन (دہن) फा. पुं.–मुख, मुँह; छिद्र, छेद, सूराख़।

दहनदरः (دہن درہ) फा. पुं.–जँभाई, जृंभा।

दहनदरीदः (دہن دریدہ) फा. वि.–मुँहफट, गुस्ताख़।

दहनेज़ख़्म (دہن زخم) फा. पुं.–ज़ख़्म का मुँह।

दहनेतेग़ (دہن تیغ) फा. पुं.–तलवार की धार; मौत का मुँह।

दहबाशी (دہباشی) फा. तु. पुं.–दस सिपाहियों पर नायक।

दहमर्दः (دہمردہ) फा. वि.–मिथ्यावादी, फ़ुज़ूलगो, अनर्गलवादी; बहुभाषी, वाचाल, बक्की।

दहरोज़ः (دہروزہ) फा. वि.–थोड़े दिन का, अस्थायी, चंदरोजा, आरिज़ी।

दहाँ (دہاں) फा. पुं.–दे. 'दहन'।

दहाँबंद (دہاں بند) फा. पुं.–वह कवच जिससे शत्रु का मुँह बंद हो जाता है।

दहा (دہا) अ. स्त्री.–बुद्धिकुशाग्रता, तेज़ अक़्ली; प्रतिभा, ज़हानत।

दहाक़ीन (دہاقین) अ. पुं.–'देहक़ान' का बहु., किसान लोग, गाँववाले।

दहानः (دہانہ) फा. पुं.–मुँह, दहन; समुद्र में नदी के गिरने का स्थान; भिश्ती की मश्क का मुँह; घोड़े की काँटोंदार लगाम; मोरी, नाली।

दहानए फ़िरंग (دہانۂ فرنگ) फा. पुं.–एक सब्ज़ पत्थर जो रासायनिक गुण रखता है, और विष-नाशक है।

दहुम (دہم) फा. वि.–दसवाँ, दशम।

दह्नः (دہنہ) फा. पुं.–नदीतट, दर्या का किनारा; किसी देश की सरहद; दहानए फ़िरंग।

दह्नए फ़िरंग (دہنۂ فرنگ) फा. पुं.–दे. 'दहानए फ़िरंग'।

दह्र (دہر) अ. पुं.–काल, समय, वक़्त; युग, क़र्न।

दह्रियः (دہریہ) अ. वि.–दे. 'दह्री'।

दह्री (دہری) अ. वि.–अनीश्वरवादी, ख़ुदा को न माननेवाला; नास्तिक, लामज़हब।

दह्शत (دہشت) अ. स्त्री.–डर, भय, ख़ौफ़।

दह्शतअंगेज़ (دہشت انگیز) अ. फा. वि.–भयानक, भीषण, डरावना।

दह्शतअंगेज़ी (دہشت انگیزی) अ. फा. स्त्री.–भयानकपन, डरावनापन, ख़ौफ़नाकी; डरा-धमकाकर किसी से कुछ प्राप्त करने की अवैध कोशिश; किसी क्षेत्र में जनता को

डरा-धमकाकर इस बात पर बाध्य करना कि वह अमुक व्यक्ति या दल का पक्षपात न करे या उसे सहयोग न दे या उसके कामों में गड़बड़ डाले।

दह्शतकदः (دہشت کدہ) अ. फा. पुं.–वह स्थान जो बहुत ही भयंकर हो।

दह्शतज़दः (دہشت زدہ) अ. फा. वि.–भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ।

दह्शतनाक (دہشتناک) अ. फा. वि.–भयसंकुल, दहशत से भरा हुआ, ख़ौफ़नाक।

दाँ (دان) फा. प्रत्य.–जाननेवाला, जैसे–'हमःदाँ' सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ।

दांग (دانگ) फा. पुं.–छः रत्ती की तौल; ओर, दिशा, तरफ़।

दाइन (دائن) अ. पुं.–ऋणदाता, क़र्ज़ देनेवाला।

दाइम (دائم) अ. वि.–नित्य, सदा, हमेशा।

दाइमन (دائماً) अ. अव्य.–नित्यप्रति, हर वक़्त, हर समय, सदा, हमेशा।

दाइमी (دائمی) अ. वि.–नित्य का, हमेशा का; स्थायी, मुस्तक़िल।

दाइमुलख़म्र (دائم الخمر) अ. वि.–सदा शराब के नशे में रहनेवाला, हर वक़्त का पीनेवाला, नित्यमद्यप।

दाइमुलमरज़ (دائم المرض) अ. वि.–सदा बीमार रहनेवाला, जन्मरोगी, नित्यरुग्ण।

दाइमुलहब्स (دائم الحبس) अ. वि.–जिसे पूरे जन्म की सज़ा मिली हो, आजन्म कारावासी; पूरी उम्र की सज़ा, आजन्म कारावास।

दाइयः (داعیہ) अ. पुं.–ज़ोर, अधिकार।

दाइरः (دائرہ) अ. पुं.–परिधि, घेरा; गोल, गोला; वृत्त; मंडल, हल्क़ा; परिषद्, सभा, मजलिस; आश्रम, ख़ानक़ाह; टोला, महल्ला; एकबाजा, दफ; अक्षरों की गोलाई, जैसे–'जीम' या 'सीन' का दाइरा।

दाइरःनुमा (دائرہ نما) अ. फा. वि.–गोलाकार, वर्तुलाकार, वृत्ताकार, मंडलाकार, गोल।

दाइर (دائر) अ. वि.–फिरनेवाला, घूमनेवाला; उपस्थित, दरपेश; उपस्थित करना, चलाना, (वाद)।

दाइरतुलबुरूज (دائرة البروج) अ. पुं.–क्रांतिमंडल, भचक्र, राशिचक्र, वह दाइरा जिसमें बारह बुर्ज हैं।

दाइरतुलमआरिफ़ (دائرة المعارف) अ. पुं.–इंसाइक्लोपीडिया, विश्वकोश।

दाई (داعی) अ. वि.–बुलानेवाला, निमंत्रणकर्ता; दुआ करनेवाला, आशीर्वाददाता।

दाउ (داو) फा. पुं.–जुए की बारी, दाँव; मक्र, छल, फ़रेब।

दाउलअसद (داء الاسد) अ. स्त्री.–कुष्ठरोग, कोढ़।

दाऊद (داؤد) अ. पुं.–एक पैग़म्बर जिनका स्वर बहुत ही मधुर था।

दाख़िलः (داخلہ) अ. पुं.–हस्तांतरण, सपुर्दगी; रुपया दाख़िल करने की रसीद; पहुँच, रसाई; स्कूल या कालिज में प्रवेश।

दाख़िल (داخل) अ. वि.–भीतर आनेवाला, प्रविष्ट, अंदर पहुँचा हुआ; संमिलित, शामिल।

दाख़िल कुनिंदः (داخل کنندہ) अ. फा. वि.–दाख़िल करनेवाला, जमा करनेवाला।

दाख़िल ख़ारिज (داخل خارج) अ. पुं.–ज़मीन या जाइदाद पर से एक व्यक्ति का नाम कटकर दूसरे का चढ़ना, एक व्यक्ति की जगह दूसरे का मालिक नियुक्त होना।

दाख़िली (داخلی) अ. वि.–भीतरी, आंतरिक, अंदरूनी; मानसिक, हार्दिक, रूहानी, दिली।

दाख़िले दफ़्तर (داخل دفتر) अ. अव्य.–किसी प्रार्थना पत्र का अस्वीकृत होकर, मिसिल में किसी सुबूत आदि के लिए सुरक्षित रहना।

दाख़ूल (داخول) फा. पुं.–वह लकड़ी आदि जिसे मनुष्य का रूप देकर खेतों में डराने के लिए लगा देते हैं; बादशाहों और राजाओं के मकान के आगे लोगों के बैठने के लिए बनी हुई इमारत।

दाग़ (داغ) फा. पुं.–चिह्न, धब्बा, निशान; किसी की मृत्यु का ग़म; कलंक, दोष, अपराध; दुःख, क्लेश, रंज, जैसे–'दाग़े हिज्र' विरह का दुःख; ईर्ष्या, डाह, हसद; जलने का चिह्न; फल पर गलने या सड़ने का निशान; घाव का चिह्न।

दाग़गाह (داغگاہ) फा. स्त्री.–कचहरी, जहाँ काग़ज़ात पर मुह्रें लगायी जाती है।

दाग़दार (داغدار) फा. वि.–जिसमें दाग़ हो, धब्बेवाला; दोषी, ऐबदार; किसी अपराध में लिप्त, आलूदः दामन।

दाग़ी (داغی) फा. वि.–दाग़दार, जिस पर धब्बा या निशान हो; दूषित, मा'यूब; सज़ायाब, दंडित; दाग़ा हुआ, जलाया हुआ; अपराधी, मुज्रिम।

दाग़े जिगर (داغ جگر) फा. पुं.–संतान की मृत्यु का शोक; प्रेम की आग का दाग़।

दाग़ेदिल (داغ دل) फा. पुं.–प्रेमाग्नि से जलने का दाग़, हृदय का दाग़।

दाज (داج) अ. पुं.–घटाटोप अंधकार, घोर अँधेरा।

दादः (دادہ) फा. वि.–दिया हुआ।

दाद (داد) फा. स्त्री.–न्याय, इंसाफ़; दान, बख़शिश; प्रशंसा, तहसीन, वाह-वाह (प्रत्य.) दिया हुआ, जैसे—'ख़ुदादाद' ख़ुदा का दिया हुआ।

दादख़्वाह (دادخواہ) फा. वि.–फ़र्यादी, न्याय चाहनेवाला।

दादगर (دادگر) फा. वि.–न्याय करनेवाला, मुंसिफ़।

दादगुस्तर (دادگستر) फा. वि.–दे. 'दादगर'।

दादतलब (دادطلب) फा. अ. वि.–दाद चाहनेवाला, न्याय-याचक; किसी अच्छे काम की प्रशंसा चाहनेवाला।

दाददेही (داددہی) फा. स्त्री.–न्याय करना, फ़र्याद सुनना, दाद देना।

दादनी (دادنی) फा. अव्य.–देने योग्य, देने के लाइक़; किसी चीज़ के लिए पेशगी रुपया देना।

दादबख़्श (دادبخش) फा. वि.–न्यायकर्ता, मुंसिफ़, दादगर।

दादरस (دادرس) फा. वि.–दे. 'दादगर'।

दादरसी (دادرسی) फा. स्त्री.–न्याय, इंसाफ़।

दादार (دادار) फा. पुं.–न्यायकर्ता, मुंसिफ़।

दादोदिहिश (دادودہش) फा. स्त्री.–दानशीलता, फ़ैयाज़ी, सख़ावत।

दादोसितद (دادوستد) फा. स्त्री.–लेन-देन, रुपये के लेन-देन का कारोबार।

दानः (دانہ) फा. पुं.–अनाज, ग़ल्ला; अनाज के ख़ोशे में लगा हुआ बीज; अंगूर का एक फल; खील, भुना हुआ बीज; छोटी फुंसी; चेचक का आबला; आमों की संख्या के लिए, जैसे—'बीस दाने लँगड़े के'; रत्नों की गिंती के लिए जैसे—'याक़ूत का एक दाना'।

दानःख़ोर (دانہ خور) फा. वि.–दाना खानेवाला मवेशी।

दानःख़ोरी (دانہ خوری) फा. पुं.-जानवर को दाना खिलाकर मोटा ताजा करना।

दानःज़द (دانہ زد) फा. वि.–कमीना, खस्ताहाल; कंजूस।

दानःदार (دانہ دار) फा. वि.–जिसमें दाने हों।

दान (دان) फा. प्रत्य.–पात्र, बर्तन जैसे—'क़लमदान' क़लम रखने का पात्र, 'उदूदान' अगर जलाने का बर्तन।

दानए गंदुम (دانۂ گندم) फा. पुं.–गेहूँ का एक दाना या बीज।

दानए ज़ंजीर (دانۂ زنجیر) फा. पुं.–ज़ंजीर की कड़ी, ज़ंजीर का हल्क़ा।

दानए याक़ूत (دانۂ یاقوت) फा. अ.–एक याक़ूत (पद्मराग)।

दानए सीर (دانۂ سیر) फा. अ. पुं–लहसुन का जवा।

दानए हील (دانۂ ہیل) फा. पुं.–इलायची का एक बीज।

दाना (دانا) फा. वि.– बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद; चतुर, कुशल, प्रवीण, होशियार।

दानाई (دانائی) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, मनस्विता, अक़्लमंदी; चातुर्य, दक्षता, निपुणता, होशियारी।

दानाए राज़ (دانائے راز) फा. वि.–भेंदों का जाननेवाला, मर्मज्ञ।

दानाए रोज़गार (دانائے روزگار) फा. वि.–अपने समय का सबसे बड़ा बुद्धिमान, संसार में सर्वोत्तम बुद्धिवाला।

दानाए हाल (دانائے حال) फा. अ. वि.–वास्तविकता जाननेवाला, सच्ची हालत समझनेवाला।

दानादिल (دانادل) फा. वि.–रौशनज़मीर, अंतर्यामी।

दानावबीना (داناوبینا) फा. वि.–जो देखता भी हो और जानता भी हो, बहुत अधिक बुद्धिमान् और अनुभवी।

दानिंदः (دانندہ) फा. वि.–जाननेवाला, ज्ञाता।

दानियाल (دانیال) फा. पुं.–एक पैग़म्बर।

दानिश (دانش) फा. स्त्री.–बुद्धि, अक़्ल; विवेक, तमीज़; विद्या, इल्म।

दानिश आमोज़ (دانش آموز) फा. वि.–विद्या सीखनेवाला (शिष्य); विद्या सिखानेवाला (गुरु)।

दानिशमंद (دانش مند) फा. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; वैज्ञानिक, हकीम; विद्वत्तम, मुतबह्हिर।

दानिशमंदी (دانش مندی) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, मनीषा, अक़्लमंदी; विद्वत्ता, पांडित्य, इल्मीयत; निपुणता, कुशलता, होशियारी।

दानिशवर (دانشور) फा. वि.–दे. 'दानिशमंद'।

दानिस्तः (دانستہ) फा. वि.–जाना हुआ, ज्ञात; जान-बूझकर, क़स्दन।

दानिस्त (دانست) फा. स्त्री.–ज्ञान, जानकारी।

दानिस्तगी (دانستگی) फा. स्त्री.–दे. 'दानिस्त'।

दानिस्तनी (دانستنی) फा. अव्य.–जानने के योग्य, ज्ञातव्य।

दाफ़िअः (دافعہ) अ. स्त्री.–वह शक्ति जो शरीर से मल-मूत्र और पसीना आदि बाहर निकालती है।

दाफ़िउलबलाया (دافع البلایا) अ. वि.–आपत्तियों का नाश करनेवाला, दुःखों का निवारण करनेवाला।

दाफ़िए क़ब्ज़ (دافع قبض) अ. वि.–क़ब्ज़ को रफ़ा करनेवाला।

दाफ़िए ग़म (دافع غم) अ. वि.–रंज और ग़म हटानेवाला, कष्टमोचन।

दाफ़िए ज़हृ (دافع زہر) अ. फा. वि.–विष दूर करनेवाला, विष-दोषहर।

दाफ़िए दर्द (دافع درد) अ. फा. वि.–दर्द मेटनेवाला, वेदनाहर, शूलघ्न।

दाफ़िए मरज़ (دافع مرض) अ. वि.–व्याधिहर, बीमारी का नाशक, रुजघ्न।

दाफ़िए वरम (دافع ورم) अ. फा. वि–शोथनाशक, वरम को दूर करनेवाला।

दाफ़े' (دافع) अ. वि.–निवारक, हटानेवाला, दूर करनेवाला, मोचक।

दाब (داب) अ. पुं.–ढंग, तरीक़ा; वैभव, शानोशौक़त।

दाबे मज्लिस (دابِ مجلس) अ. पुं.–सभा में उठने-बैठने और बातचीत करने का ढंग, आदाबे मज्लिस, सभा-चातुर्य।

दाबे महफ़िल (دابِ محفل) अ. पुं.–दे. 'दाबे मज्लिस'।

दाबे सल्तनत (دابِ سلطنت) अ. पुं.–शासन करने का ढंग, राज्य-कौशल।

दाबे सोहबत (دابِ صحبت) अ.पुं.–बड़े लोगों के पास उठने-बैठने, उनसे वार्तालाप करने और उनकी आज्ञा पालन करने के ढंग, शिष्टता, सभ्यता।

दाब्बः (دابّہ) अ. पुं.–चौपाया, पशु, मवेशी।

दाम (دام) फा. पुं.–फंदा, पाश; बंधन, जाल; जंगली चौपाए जो हिंसक न हों; दवाओं की एक तौल; एक रुपये का चालीसवाँ भाग; एक पैसे का पचीसवाँ भाग।

दामगाह (دامگاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ जाल बिछा हो, जहाँ फँसने का भय हो, फरेब की जगह।

दामन (دامن) फा. पुं.–कुरते या अँगरखे आदि का वह भाग जो लटकता रहता है, अंचल,—"दामन पै तेरे ग़ैर के माथे का पसीना और वह भी मेरी चश्मेगुहरबार के आगे।" मैदान, समतल भूमि।

दामनअफ़्शाँ (دامن افشاں) फा. वि.–दामन झाड़ता हुआ, बिना कुछ लिये हुए ख़ाली हाथ; दामन झटकता हुआ, नाज़ से चलता हुआ।

दामनकशाँ (دامن کشاں) फा. वि.–दामन बचाता हुआ, बेतअल्लुक़; यह खयाल रखकर चलता हुआ कि दूसरे से उसका दामन न छू जाय, अभिमानी, घमंडी।

दामनगीर (دامن گیر) फा. वि.–दामन पकड़नेवाला, दामन पकड़कर रोकनेवाला।

दामनदार (دامن دار) फा. वि.–चौड़ा चकला (केवल घाव के लिए आता है)।

दामनसवार (دامن سوار) फा.वि.–दामन को घोड़ा बनाकर उस पर सवार होनेवाला बालक (बच्चों का एक खेल)।

दामनी (دامنی) फा. स्त्री.–औरतों की ओढ़नी; वह कपड़ा जो घोड़े के पुट्ठों पर पसीने से दामन बचाने को डाला जाता है; एक पाट की वह चादर जो औरतों के जनाज़े पर पड़ती है।

दामने कोह (دامنِ کوہ) फा. पुं.–वह मैदान जो किसी पहाड़ के नीचे स्थित हो।

दामने दौलत (دامنِ دولت) फा. अ. पुं.–संरक्षता, हिमायत, छत्रछाया।

दामने मर्यम (دامنِ مریم) फा. अ. पुं.–हज्रत मर्यम का दामन जो दाग़-धब्बे से बिल्कुल पाक था, अर्थात् सतीत्व, साधुता।

दामने महशर (دامنِ محشر) फा. अ. पुं.–क़ियामत का मैदान।

दामने शब (دامنِ شب) फा. पुं.–रात का अंतिम भाग।

दामाद (داماد) फा. पुं.–लड़की का पति, जामाता।

दामान (دامان) फा. पुं.–दे. 'दामन'।

दामे अजल (دامِ اجل) फा. अ. पुं.–मौत का फंदा, कालपाश।

दामे गेसू (دامِ گیسو) फा. पुं.–केशपाश, बालों की लट।

दामे ज़ुल्फ़ (دامِ زلف) फा. पुं.–दे. 'दामे गेसू'।

दामे तज़्वीर (دامِ تزویر) फा. अ. पुं.–दे. 'दामे फ़िरेब'।

दामे फ़िरेब (دامِ فریب) फा. पुं.–छल रूपी जाल, कूटपाश, कूटबंध।

दामे महब्बत (دامِ محبت) फा. अ. पुं.–प्रेमपाश, प्रेमबंधन, इश्क़ का फ़ंदा।

दायः (دایہ) फा. स्त्री.–दूसरे के बच्चे को दूध पिलानेवाली स्त्री, अंकपाली, अन्ना, पिलाई; बच्चा जनानेवाली स्त्री, धाय, धात्री।

दायःगरी (دایہ گری) फा. स्त्री.–बच्चा जनाने का पेशा, धात्री-कर्म, कौमारभृत्य; बच्चा जनाने की विद्या, धात्री-विद्या।

दार (دار) फा. स्त्री.–सूली, फाँसी (प्रत्यं०) वाला, जैसे—हिस्सेदार।

दार (دار) अ. पुं.–घर, गृह, मकान; स्थान, जगह; लोक, आलम।

दारचीनी (دارچینی) फा. स्त्री.– एक दरख़्त की छाल, दारुसिता।

दारचोब (دارچوب) फा. स्त्री.– अलगनी।

दार फ़िल्फ़िल (دارفلفل) फा.स्त्री.–बड़ी पीपल, गज पिप्पली।

दारबस्त (داربست) फा. स्त्री.–लकड़ी और तख़्तों की बाढ़ जिस पर बैठकर राज और मज़दूर इमारत बनाते हैं; अंगर या कोई दूसरी बेल चढ़ाने की टट्टी।

दारबाज़ (دارباز) फा. वि.–नट, बाज़ीगर; छली, धोकेबाज़।

दारहल्द (دارہلد) फा. स्त्री.– एक दवा, दारुहरिद्रा।

दारा (دارا) फा. पुं.–ईरान का एक बादशाह जिसे सिकंदर ने विजित किया था; बादशाह, नरेश, राजा; धनवान्, मालदार; ईश्वर, विश्वरक्षक।

दाराई (دارائی) फा. स्त्री.–बादशाहत, राज; ख़ुदाई, ईश्वरत्व; एक रेशमी कपड़ा, दरयाई।

दाराए ख़ल्क़ (داراےخلق) फा. अ. पुं.–सारे जगत् का पालन-पोषण और रक्षा करनेवाला, ईश्वर।

दारिंदः (دارندہ) फा. वि.–रखनेवाला।

दारुज़्ज़र्ब (دارالضرب) अ. पुं.–टकसाल, टंकशाला।

दारुज़्ज़ैफ़ (دارالضیف) अ. पुं.–मेहमानख़ाना, अतिथिशाला।

दारुत्तर्बियत (دارالتربیت) अ. पुं.–जहाँ किसी चीज़ की ट्रेनिंग दी जाय, प्रशिक्षण स्थान; जहाँ शिष्टता और सभ्यता सिखायी जाय।

दारुन्नईम (دارالنعیم) अ. पुं.–स्वर्ग, बिहिश्त।

दारुलअदालत (دارالعدالت) अ. पुं.–न्यायालय, कचहरी।

दारुलअमल (دارالعمل) अ. पुं.–संसार, दुनिया; प्रयोगशाला, गवेषणालय।

दारुलअमान (دارالامان) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ लड़ाई-झगड़ा न हो।

दारुलअम्न (دارالامن) अ. पुं.–दे. 'दारुलअमान'।

दारुलआख़िरत (دارالآخرۃ) अ. पुं.–परम धाम, परलोक, उक़्बा।

दारुलइक़ामः (دارالاقامہ) अ. पुं.–बोर्डिंग हाउस, छात्रावास।

दारुलइमारत (دارالامارت) अ. पुं.–राजधानी, शासनकेंद्र।

दारुलइयार (دارالعیار) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ खरा-खोटा सोना-चाँदी परखा जाता है।

दारुलउलूम (دارالعلوم) अ. पुं.–यूनीवर्सिटी, विश्वविद्यालय।

दारुलऐताम (دارالایتام) अ. पुं.–यतीमख़ाना, अनाथालय।

दारुलक़ज़ा (دارالقضا) अ. पुं.–न्यायालय, कचहरी।

दारुलक़रार (دارالقرار) अ. पुं.–परम धाम, स्वर्ग, बिहिश्त।

दारुलकुतुब (دارالکتب) अ. पुं.–किताब-घर, पुस्तकालय, जहाँ किताबें बिकती हैं।

दारुलख़िलाफ़त (دارالخلافت) अ. पुं.–राजधानी।

दारुलख़ैर (دارالخیر) अ. पुं.–जहाँ लोगों को दान आदि बहुत मिलता हो।

दारुलजज़ा (دارالجزا) अ. पुं.–जहाँ किये का फल भोगना पड़े, यमलोक, परलोक।

दारुलफ़ना (دارالفنا) अ.पुं.–दुनिया, संसार, नाशवान् संसार।

दारुलबक़ा (دارالبقا) अ.पुं.–परलोक, आख़िरत, नित्य लोक।

दारुलबवार (دارالبوار) अ. पुं.–नरक, दोज़ख़।

दारुलमर्ज़ा (دارالمرضی) अ.पुं.–मरीज़ों की जगह, रुग्णालय।

दारुलमिह्न (دارالمحن) अ. पुं.–दुःख और क्लेश का स्थान, अर्थात्, संसार।

दारुलमुकाफ़ात (دارالمکافات) अ. पुं.–संसार, दुनिया।

दारुलमुतालअः (دارالمطالعہ) अ. पुं.–वाचनालय, लाइब्रेरी।

दारुलमुल्क (دارالملک) अ. पुं.–राजधानी।

दारुलहर्ब (دارالحرب) अ. पुं.–वह देश जहाँ ग़ैर-मुस्लिम हुकूमत हो और वहाँ का नरेश मुसलमानों को उनकी धार्मिक कृतियाँ न करने दे।

दारुलहुकूमत (دارالحکومت) अ. पुं.–राजधानी।

दारुश्शर्अ (دارالشرع) अ. पुं.–इस्लामी न्यायालय।

दारुश्शिफ़ा (دارالشفا) अ. पुं.–आरोग्यशाला, शिफ़ाख़ाना।

दारुश्शूरा (دارالشوریٰ) अ. पुं.–परामर्श का स्थान, जहाँ बैठकर सलाह की जाय, प्रेक्षागार।

दारुस्सनम (دارالصنم) अ. पुं.–बुतख़ाना, मूर्तिगृह, मंदिर।

दारुस्सफ़ा (دارالصفا) अ. पुं.–पवित्र घर, मक्का।

दारुस्सलाम (دارالسلام) अ. पुं.–शांति का स्थान; स्वर्ग, बिहिश्त।

दारुस्सल्तनत (دارالسلطنت) अ. पुं.–राजधानी।

दारुस्सुरूर (دارالسرور) अ. पुं.–हर्ष और आनंद का स्थान अर्थात्, स्वर्ग, परम धाम।

दारू (دارو) फा. स्त्री.–इलाज, उपचार, चिकित्सा; बारूद, अग्नि-क्रीडा; मदिरा, शराब।

दारैन (دارین) अ. पुं.–दोनों लोक, संसार और परलोक, उभयलोक।

दारोग़ः (داروغہ) फा. पुं.–निरीक्षक, निगराँ; सब-इंस्पेक्टर, पुलिस, थानेदार।

दारोग़ाए तोपख़ानः (داروغۂ توپخانہ) फा. पुं.–तोपख़ाने का अफ़्सर।

दारोग़ाए मह्बस (داروغۂ محبس) अ. फा. पुं.–जेल का अध्यक्ष, जेलर, कारागार-रक्षक।

दारोगीर (داروگیر) फा. स्त्री.–पकड़-धकड़, गिरिफ़्तारियाँ; पूछगच्छ, बाज़पुर्स।

दारोमदार (دارومدار) फा. पुं.–निर्भरता, इनहिसार।

दाल [ल्ल] (دال) अ. वि.–राह दिखानेवाला, पथ-प्रदर्शक।

दालान (دالان) फा. पुं.–बड़ा और लंबा कमरा जिसमें मेहराबदार दरवाज़े होते हैं, या तिदरी होती है।

दालान दर दालान (دالان در دالان) फा. पुं.–दुहरा दालान, दालान के अंदर दालान।

दा'वत (دعوت) अ. स्त्री.–बुलावा, आवाहन; खाने का बुलावा, निमंत्रण; भोज, खाना।

दा'वतनामः (دعوت نامہ) अ. फा. पुं.–किसी सभा आदि में सम्मिलित होने के लिए बुलाने का पत्र; किसी भोज में सम्मिलित होने के लिए बुलाने का पत्र, निमंत्रण-पत्र।

दा'वते आम (دعوت عام) अ. स्त्री.–सर्वसाधारण को बुलावा, "दावते आम है, राहे वफ़ा है, मैं हूँ–वह मेरे साथ चला आये जो आसाँ समझे", सार्वजनिक प्रीतिभोज।

दा'वते जंग (دعوت جنگ) अ. फा. स्त्री.–युद्ध की चुनौती, युद्ध का आवाहन।

दा'वते वलीमः (دعوت ولیمہ) अ. स्त्री.–व्याह के पश्चात् दूल्हा की ओर से भोज, विवाह-भोज।

दा'वते शीराज (دعوت شیراز) अ. फा. स्त्री.–सीधी सादी दावत, जो कुछ मौजूद है उसकी दा'वत , बेतकल्लुफ़ी का खाना।

दा'वते समरक़ंद (دعوت سمرقند) अ. फा. स्त्री.–ठाटदार दावत, बहुत ही तकल्लुफ़ का खाना।

दावर (داور) फा. पुं.–न्यायकर्ता, मुंसिफ़; ईश्वर, ख़ुदा।

दावरी (داوری) फा. स्त्री.–न्याय, इंसाफ़; हुकूमत, राज्य।

दावरीगाह (داوری گاہ) फा. स्त्री.–न्यायालय, पंचायत की जगह।

दावरे महशर (داور محشر) फा. अ. पुं.–क़ियामत के दिन इंसाफ़ करनेवाला, ईश्वर।

दावरे हश्र (داور حشر) फा. अ. पुं.–दे. 'दावरे महशर'।

दा'वा (دعوی) अ. पुं.–वाद, नालिश; अध्यर्य, क्लेम; स्वत्व, हक़; गर्व, अभिमान, घमंड; जो गुण न आता हो अपने में उसे वताना, इद्दिआ; डींग, शेख़ी।

दा'वीदार (دعویدار) अ. फा. पुं.–दावा करनेवाला, अपना अधिकार जतानेवाला; वादी, मुद्दई।

दाश्तः (داشتہ) फा. स्त्री.–घर में डाली हुई स्त्री, रखेली, उपपत्नी।

दाश्त (داشت) फा. स्त्री.–देखरेख, रखवाली, खबरगीरी।

दाश्तनी (داشتنی) फा. अव्य.–रखने के लाइक़।

दास्ताँ (داستاں) फा. स्त्री.–दास्तान का लघु., दे. 'दास्तान'।

दास्ताँ गो (داستاں گو) फा. पुं.–क़िस्से सुनानेवाला, क़िस्से सुनाकर जीविका चलानेवाला, क़िस्सःख़्वाँ।

दास्ताँसरा (داستاں سرا) फा. पुं.–दे. 'दास्ताँगो।

दास्तान (داستان) फा. स्त्री.–कथा, कहानी; वृत्तांत, हाल, लंबी-चौड़ी कथा।

दाह (داہ) फा. पुं.–दास, ग़ुलाम।

दाहियः (داہیہ) अ. स्त्री.–जीवन की कठिनता, संसार का कुचक्र।

दाही (داہی) अ. वि.–वुद्धिमान्, चतुर, अक़्लमंद।

दाहूल (داہول) फा. पुं.–वह कृत्रिम चित्र जो खेतों में जानवरों को डराने के लिए बना देते हैं, दाख़ूल।

दि

दिक़ [क़्क़] (دق) अ. स्त्री.–तपेदिक़, क्षयरोग, यक्ष्मा; तंग, परेशान।

दिक़्क़त (دقت) अ. स्त्री.–कठिनता, मुश्किल; सूक्ष्मता, बारीक़ी।

दिक़्क़ततलब (دقت طلب) अ. वि.–जिसमें कठिनाई का सामना हो, कठिन, दुष्कर, मुश्किल, कष्टसाध्य।

दिक़्क़तपसंद (دقت پسند) अ. फा. वि.–जो दूर की कौड़ी लाना चाहता हो, जिसकी तबीयत गहरे में डूबकर मज़मून आदि लाने की आदी हो, मुश्किलपसंद।

दिक़्क़ते नज़र (دقت نظر) अ. स्त्री.–नज़र की बारीक़ी, नज़र की दूर तक गहराई में पहुँच, तलाश।

दिगर (دگر) फा. पुं.–दीगर का लघु., दे. 'दीगर'।

दिगरगूँ (دگرگوں) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, उथल-पुथल, उलट-पलट।

दिजाज (دجاج) अ. स्त्री.–मुर्ग़ी, स्त्री कुक्कुट (प्र.) मुर्ग़ा, कुक्कुट, दे. 'दजाज', दोनों शुद्ध हैं।

दिज्लः (دجلہ) अ. पुं.–बग़दाद के नीचे वहनेवाली नदी; नदी, दर्या, दे. 'दज्लः' दोनों शुद्ध हैं।

दिनाअत (دنائت) अ. स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनगी, लोफ़रपन।

दिफ़ाअ (دفاع) अ. पुं.–रक्षा, बचाव, हिफ़ाज़त, प्रतिरक्षा।

दिफ़ाई (دفاعی) अ. वि.–बचाव सम्बन्धी, हिफ़ाज़ती।

दिबाग़त (دباغت) अ. स्त्री.–चमड़ा रंगना और वनाना, चमड़ा कमाना।

दिमन (دمن) अ. पुं.– गू, गोबर; वह स्थान जहाँ गू-गोबर और मैला आदि डाला जाय।

दिमाग़ (دماغ) अ. पुं.–मस्तिष्क, मस्तक; बुद्धि, अक़्ल; अहंकार, गर्व, ग़ुरूर; सहन शक्ति, बरदाश्त; संज्ञा, होश; घ्यान, ख़याल।

दिमाग़दार (دماغدار) अ. फा. वि.–अभिमानी, मग़्रूर।

दिमाग़दारी (دماغداری) अ.फा. स्त्री.–अभिमान, गर्व, ग़ुरूर।

दिमाग़सोज़ी (دماغ سوزی) अ. फा. स्त्री.–दिमाग़ी मेहनत, माथा पच्ची।

दिमाग़ी (دماغی) अ. वि.–मस्तिष्क सम्बन्धी, दिमाग़ से सम्वन्ध रखनेवाला।

दिमिश्क़ (دمشق) फा. पुं.–इराक़ की राजधानी (दमिश्क़)।

दियत (دیت) अ. स्त्री.–ख़ून की क़ीमत, किसी से कोई आदमी मर जाय, तो मरनेवाले की औलाद अगर हत्यारे से उसके प्राणदंड के बदले में रुपया लेना चाहती थी तो

उसको दिला दिया जाता था, और हत्यारे को मुक्त कर दिया जाता था, इस रुपये को 'दियत' कहते हैं।

दियानत (دیانت) अ. स्त्री.–ईमानदारी, सत्य निष्ठा।

दियानतदार (دیانتدار) अ. फा. वि.–ईमानदार, सत्यनिष्ठ; जो धरोहर आदि में जरा भी गड़बड़ न करे।

दियानतदारी (دیانتداری) अ. फा. स्त्री.–ईमानदारी, सत्यनिष्ठा।

दियार (دیار) अ. पुं.–'दार' का बहु., परंतु उर्दू में एक० में बोला जाता है। जैसे—घर, मकान; स्थान, मुक़ाम।

दियारे ग़ैर (دیارغیر) अ. फा. पुं.–दूसरों का देश, परदेश।

दिरंग (درنگ) फा. स्त्री.–दे. 'दरंग', दोनों शुद्ध हैं।

दिरम (درم) फा. पुं.–३½ माशे की एक तौल, दिर्हम; चाँदी का एक छोटा सिक्का, चवन्नी।

दिरा (درا) फा. पुं.–कारवाँ के साथ चलनेवाला घड़याल, दे. 'दरा', दोनों शुद्ध हैं।

दिरायत (درایت) अ. स्त्री.–बुद्धि, मेधा, अक़्ल; प्रतिभा, ज़हानत; ज्ञान, जानकारी।

दिरासत (دراست) अ. स्त्री.–बुद्धि, विवेक, दानाई; सबक़ पढ़ना, पठन; सबक़ पढ़ाना, पाठन।

दिरेग़ (دریغ) फा. पुं.–हाय, अफ़सोस, हा; कृपणता, कंजूसी; संकोच, तअम्मुल।

दिरेग़ा (دریغا) फा. अव्य.–हाय, अफ़सोस, हा हंत !

दिरौ (درو) फा. स्त्री.–खेत काटना, बुनाई करना।

दिरौगर (دروگر) फा. वि.–खेत काटनेवाला।

दिर्रः (درہ) अ. पुं.–चमड़े का कोड़ा, जिससे पहले ज़माने में सज़ा दी जाती थी, दुर्रः।

दिल (دل) फा. पुं.–मानस, हृदय, क़ल्ब; उत्साह, उमंग, हौसला; साहस, हिम्मत; वीरता, शौर्य, बहादुरी; रुचि, इच्छा, ख़्वाहिश, मर्ज़ी; दानशीलता, सख़ावत।

दिलअफ़्गार (دل افگار) फा. वि.–दे. 'दिलफ़्गार'।

दिलअफ़्रोज (دل افروز) फा. वि.–दे. 'दिलफ़्रोज़'।

दिलआजार (دل آزار) फा. वि.–दे. 'दिलाज़ार'।

दिलआजारी (دل آزاری) फा. स्त्री.–दे. 'दिलाज़ारी'।

दिलआज़ुर्दः (دل آزردہ) फा. वि.–दे. 'दिलाज़ुर्दः'।

दिलआज़ुर्दगी (دل آزردگی) फा. स्त्री.–दे. 'दिलाज़ुर्दगी'।

दिलआरा (دل آرا) फा. वि.–दे. 'दिलारा'।

दिलआराई (دل آرائی) फा. स्त्री.–दे. 'दिलाराई'।

दिलआराम (دل آرام) फा. वि.–दे. 'दिलाराम'।

दिलआवर (دل آور) फा. वि.–दे. 'दिलावर'।

दिलआवेज (دل آویز) फा. वि.–दे. 'दिलावेज़'।

दिलकश (دلکش) फा. वि.–मनोहर, चित्ताकर्षक, दिल को अपनी ओर खींचनेवाला।

दिलकशी (دلکشی) फा. स्त्री.–मनोहरता, मनोज्ञता, सुंदरता, खुशनुमाई।

दिलकुशा (دل کشا) फा. वि.–रमणीक, रम्य, दिल को आनंद देनेवाला।

दिलख़राश (دل خراش) फा. वि.–बहुत ही कष्ट देनेवाला, हृदय-विदारक।

दिलख़स्तः (دل خستہ) फा. वि.–जिसका हृदय घायल हो, क्षत हृदय।

दिलख़ुशकुन (دل خوش کن) फा. वि.–दिल को खुश कर देनेवाला, आनंददाता।

दिलख़्वाह (دل خواہ) फा. वि.–मर्ज़ी के मुताबिक़, इच्छानुसार।

दिलगर्मी (دل گرمی) फा. स्त्री.–संभ्रांति, तपाक, जोश, गर्मजोशी।

दिलगिरिफ़्तः (دل گرفتہ) फा. वि.–खिन्नचित्त, उदास, रंजीदा, अफ़्सुर्दः।

दिलगीर (دلگیر) फा. वि.–दुःखित, रंजीदा।

दिलगुदाज (دل گداز) फा. वि.–हृदयद्रावी, मन को पिघला डालनेवाला, कष्टजनक, दुःखप्रद।

दिलगुर्दः (دل گردہ) फा. पुं.–साहस, उत्साह, उमंग, हिम्मत।

दिलचस्प (دلچسپ) फा. वि.–दिल को अच्छा लगनेवाला, मनोरंजक, रोचक।

दिलचस्पी (دل چسپی) फा. स्त्री.–रुचि, रग़बत; रोचकता, मनोरंजन, तफ़ीह।

दिलज़दः (دل زدہ) फा. वि.–मनोहत, जिसका दिल घायल हो, दुःखित।

दिलजम्ई (دل جمعی) फा. अ. स्त्री.–ढारस, सांत्वना, दिलासा; यकसूई, चित्तैकाग्रता, मनोयोग, संलग्नता।

दिलजू (دل جو) फा. वि.– सुंदर, शुभदर्शन, हसीन।

दिलजोई (دل جوئی) फा. स्त्री.–सांत्वना, ढारस, तसल्ली।

दिलतंग (دل تنگ) फा. वि.–दुःखित, क्लेपित, रंजीदा; कृपण, कंजूस।

दिलतंगी (دل تنگی) फा. स्त्री.– दुःख, क्लेश, रंज; कृपणता, कंजूसी।

दिलतफ़्तः (دل تفتہ) फा. वि.–दग्ध हृदय, प्रेमदग्ध, दिलजला।

दिलदादः (دل دادہ) फा. वि.–मुग्ध, आसक्त, फ़िरेफ़्तः, मोहित।

दिलदादगी (دل دادگی) आसक्ति, मुग्धता, फ़िरेफ़्तगी।

दिलदार (دلدار) फा. वि.–प्यारा, प्रेमपात्र; प्रेयसी प्रेमिका, माशूक़ा।

दिलदारी (دل داری) फा. स्त्री.–सांत्वना, ढारस, दिलासा, तस्कीन।

दिलदिही (دلدھی) फा. स्त्री.–दे. 'दिलदारी'।

दिलदुज़्द (دلدزد) फा. वि.–दिल का चोर, हृदय-चोर, प्रेमपात्र, माशूक़।

दिलदोज़ (دلدوز) फा. वि.–दिल में घुस जानेवाला, दिल पर असर करनेवाला।

दिलनवाज़ (دل نواز) फा. वि.–दिल को तसल्ली देनेवाला, ढारस बँधानवाला; प्रेमपात्र, महबूब।

दिलनवाज़ी (دل نوازی) फा. स्त्री.–मैत्री, दोस्ती; सान्त्वना, ढारस।

दिलनशीं (دل نشیں) फा. वि.–जो दिल में बैठ गया हो, हृदयस्थ; जो समझ में आ गया हो, हृदयंगम।

दिलनिहाद (دل نہاد) फा. वि.–जिस पर दिल को रुचि हो, प्रेमपात्र, महबूब।

दिलपसंद (دل پسند) फा. वि.–जो दिल को पसंद हो, रुचिकर, मर्ग़ूब।

दिलपिज़ीर (دل پزیر) फा. वि.–दे. 'दिलपसंद'।

दिलफ़रेब (دل فریب) फा. वि.–दे. 'दिलफ़िरेब'।

दिलफ़रोज़ (دل فروز) फा. वि.–दिल को प्रकाशित करनेवाला।

दिलफ़रोश (دل فروش) फा. वि.–दिल बेचनेवाला, आशिक़, नायक।

दिलफ़िगार (دل فگار) फा. वि.–क्षत हृदय, घायल दिलवाला, दुःखित, नायक, आशिक़।

दिलफ़िरेब (دل فریب) फा. वि.–दिल को फ़रेब देनेवाला, नायिका।

दिलफ़्गार (دل افگار) फा. वि.–दे. 'दिलफ़िगार'।

दिलफ़्रोज़ (دل افروز) फा. वि.–दे. 'दिलफ़रोज़'।

दिलबंद (دل بند) फा. पुं.–दिल का टुकड़ा, पुत्र, बेटा।

दिलबर (دلبر) फा. पुं.–दिल उड़ा ले जानेवाला, प्रेमपात्र, माशूक़, नायिका।

दिलबरी (دلبری) फा. स्त्री.–मा'शूक़ी, नायिकात्व।

दिलबरदाश्तः (دل برداشتہ) फा. वि.–उदास, खिन्न, उचाटमन।

दिलबस्तः (دل بستہ) फा. वि.–जिसका दिल कहीं लगा हो, नायक, आशिक़।

दिलबस्तगी (دل بستگی) फा. स्त्री.–दिल की लगन, प्रेम, इश्क़; मनोरंजन, तफ़्रीह, दिलचस्पी।

दिलबाख़्तः (دل باختہ) फा. वि.–जो प्रेम की बाज़ी में अपना दिल हार गया हो, आशिक़।

दिलबाज़ (دل باز) फा. वि.–साहसी, उत्साही, हौसलामंद; शूर, वीर, बहादुर, जाँबाज़।

दिलबाज़ी (دل بازی) फा. स्त्री.–जान की बाज़ी लगा देना, जान को ख़तरे में डाल देना, जाँबाज़ी।

दिलबिरिश्तः (دل برشتہ) फा. वि.–जिसका दिल प्रेम की आग में जलभुन गया हो, दग्ध हृदय।

दिलरुबा (دل ربا) फा. वि.–दिल को उचक ले जानेवाला, माशूक़।

दिलरुबाई (دلربائی) फा. स्त्री.–माशूक़ियत, नायिकापन; नाज़ो अंदाज़, हावभाव।

दिलरेश (دل ریش) फा. वि.–क्षत हृदय, जिसका दिल ज़ख़्मी हो, प्रेमी।

दिलशाद (دل شاد) फा. वि.–ख़ुश, प्रसन्न चित्त।

दिलशिकन (دل شکن) फा. वि.–दिल को तोड़नेवाला, रंज पहुँचानेवाला; हिम्मत तोड़नेवाला।

दिलशिकनी (دل شکنی) फा. स्त्री.–दिल तोड़ना, रंज पहुँचाना; हिम्मत तोड़ना।

दिलशिकस्तः (دل شکستہ) फा. वि.–जिसका दिल टूट गया हो, दुःखित; हतोत्साह, पस्त हौसला।

दिलशिकस्तगी (دل شکستگی) फा. स्त्री.–दे. 'दिलशिकनी'।

दिलशिगाफ़ (دل شگاف) फा. वि.–हृदय विदारक, रूहफ़र्सा।

दिलशुदः (دل شدہ) फा. वि.–ज़िसका दिल खो गया हो, अर्थात् प्रेमी।

दिलसाज़ (دل ساز) फा. वि.–आनंदित, हर्षित, ख़ुश।

दिलसिताँ (دل ستاں) फा. वि.–दे. 'दिलरुबा'।

दिलसितानी (دل ستانی) फा. स्त्री.–दे. 'दिलरुबाई'।

दिलसोख़्तः (دل سوختہ) फा. वि.–दिलजला, दग्ध हृदय।

दिलसोज़ (دل سوز) फा. वि.–सहानुभूति करनेवाला, हमदर्द।

दिलसोज़ी (دل سوزی) फा. स्त्री.–हमदर्दी, सहानुभूति।

दिलहा (دلہا) फा. पुं.–बहुत से दिल, दिल का बहु.।

दिला (دلا) फा. अव्य.–ए दिल, हे मन, दिल का संबोधन।

दिलाज़ार (دل آزار) फा. वि.–सतानेवाला, कष्ट देनेवाला, दुःखदायी; दिल दुखानेवाला नाख़ादार।

दिलाज़ारी (دل آزاری) फा. स्त्री.–संताना, कष्ट देना; कोई ऐसी बात कहना या करना जिससे किसी का दिल दुखे।

दिलाज़ुर्दः (دل آزردہ) फा. वि.–जिसका दिल दुःखित हो, ग़मगीन।

दिलाज़ुर्दगी (دل آزردگی) फा. स्त्री.–दिल का खिन्न और मलिन होना, अफ़सुर्दगी।

दिलारा (دل آرا) फा. वि.–दिल की शोभा वढ़ानेवाला, प्रेमपात्र।

दिलाराई (دل آرائی) फा. स्त्री.–दिल में बसकर उसकी शोभा बढ़ाने का काम।

दिलाराम (دل آرام—دلارام) फा. वि.–हृदय को शान्ति देनेवाला, अर्थात् प्रेमपात्र।

दिलावर (دلاور) फा. वि.–शूर, वीर, बहादुर; साहसी, उत्साही, हौसलामंद।

दिलावरी (دلاوری) फा. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी; साहस, उत्साह, हौसला।

दिलावेज़ (دل آویز—دلاویز) फा. वि.–सुन्दर, शुभ दर्शन, प्रियदर्शन, ख़ुशनुमा।

दिलावेज़ी (دل آویزی) फा. स्त्री.–सौन्दर्य, शोभा, छटा, हुस्न, ख़ूबसूरती।

दिली (دلی) फा. वि.–हार्दिक, मानसिक, क़ल्बी; हृदय से सम्बन्ध रखनेवाली चीज़; घनिष्ठ, गहरा जैसे 'दिलीदोस्त'।

दिलेआगाह (دل آگاہ) फा. पुं.–ऋषियों और मुनियों जैसा दिल, दिव्य दृष्टि रखनेवाला हृदय।

दिलेज़िंदः (دل زندہ) फा. पुं.–ऐसा हृदय जो हर्ष और आनन्द से परिपूर्ण हो; ऐसा हृदय जो ईश्वर भक्ति में संलग्न हो।

दिलेबेक़रार (دل بے قرار) फा. पुं.–प्रेमव्यथा में तड़पता हुआ हृदय, व्यथितहृदय।

दिले मुज़्तर (دل مضطر) फा. अ. पुं.–दे. 'दिले बेक़रार'।

दिले मुज़्तरिब (دل مضطرب) फा. पुं–दे. 'दिले बेक़रार'।

दिलेमुर्दः (دل مردہ) फा. वि.–'दिलेज़िंदः' का उलटा; बुझा हुआ दिल; ईश्वर-भक़्ति से रिक़्त दिल।

दिलेर (دلیر) फा. वि.–शूर, वीर, बहादुर; साहसी, उत्साही, हौसलामंद; अभय, निडर।

दिलेरानः (دلیرانہ) फा. अव्य.–वीरोचित, वीरतापूर्वक।

दिलेरी (دلیری) फा. स्त्री.–शूरता, बहादुरी; साहस, उमंग; निडरपन।

दिले सदचाक (دل صدچاک) फा. पुं.–ऐसा हृदय जिसे प्रेम के निष्ठुर हाथों ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया हो।

दिश्नः (دشنہ) फा. पुं.–दे. 'दश्नः', दोनों उच्चारण शुद्ध हैं।

दिहिश (دہش) फा. स्त्री.–दानशीलता, सख़ावत, यह शब्द उर्दू में दाद के साथ मिलकर 'दादोदिहिश' बोला जाता है, अकेला नहीं बोला जाता।

दिहक़ान (دہقان) अ. पुं.–कृषक, किसान; गँवार, उजड्ड।

दिहक़ानीयत (دہقانیت) अ. स्त्री.–गँवारपन, उजड्डपन।

दिहक़ानी (دہقانی) अ. पुं.–गँवार, उजड्ड; कृषक, किसान; किसान का, देहाती।

दी

दीं (دیں) अ. पुं.–'दीन' का लघु., देखिए 'दीन'।

दींदार (دیں دار) अ. फा. वि.–धर्मनिष्ठ, दीन में पक्का।

दींपनाह (دیں پناہ) अ. फा. वि.–दीन की हिफ़ाज़त करनेवाला, धर्मरक्षक।

दींपर्वर (دیں پرور) अ. फा. वि.–दीन की परवरिश करनेवाला, धर्मपाल।

दी (دی) फा. पुं.–वीता हुआ कल।

दीक (دیک) अ. पुं.–मुर्ग़ा, कुक्कुट।

दीगर (دیگر) फा. वि.–अन्य, और, दूसरा; फिर, दुवारा, पुनः।

दीदः (دیدہ) फा. पुं.–आँख का ढेला, आँख; साहस, जुर्अत।

दीदःदिलेर (دیدہ دلیر) फा. वि.–ढीठ, वेहया, निर्लज्ज, धृष्ट।

दीदःदिलेरी (دیدہ دلیری) फा. स्त्री.–ढिठाई, निर्लज्जता, धृष्टता, वेहयाई।

दीदःबाज़ (دیدہ باز) फा. वि.–नज़र लड़ानेवाला, घूरनेवाला, जिसे हसीनों को घूरने की आदत हो।

दीदःबाज़ी (دیدہ بازی) फा. स्त्री.–नज़र लड़ाना, घूरना, ताक-झाँक करना।

दीदःरेज़ी (دیدہ ریزی) फा. स्त्री.–ऐसा बारीक़ काम करना जिसमें आँखों पर अधिक ज़ोर डालना पड़े; किसी विपय में बहुत अधिक सोच-विचार करना।

दीदःवर (دیدہ ور) फा. वि.–जौहरी, पारखी, किसी चीज़ के गुण-दोष अच्छी तरह समझनेवाला।

दीदःवरी (دیدہ وری) फा. स्त्री.–परख, पहचान, किसी चीज़ की अच्छे बुरे की तमीज़।

दीद (دید) फा. स्त्री.–दर्शन, दीदार।

दीदएतर (دیدۂ تر) फा. पुं.–रोती हुई आँख, आँसुओं से भीगी हुई आँख।

दीदएनम-नमनाक (دیدۂ نم نمناک) फा. पुं.–दे. 'दीदएतर'।

दीदए मिक़्राज़ (دیدۂ مقراض) फा. अ. पुं.–कैंची के घेरे जिनमें उँगलियाँ रहती हैं।

दीदओदानिस्तः (دیدہ ودانستہ) फा. अव्य.–जान-बूझकर, जानते बूझते हुए, क़स्दन, इच्छापूर्वक।

दीदनी (دیدنی) फा. अव्य.–देखने योग्य, देखने के लायक़।

दीदबाज़ी (دیدبازی) फा. स्त्री.–दे. 'दीदःबाज़ी'।

दीदबान (دیدبان) फा. पुं.–वह ऊँची जगह जहाँ से कोई इधर-उधर आने-जानेवालों की चौकसी कर सके; वह व्यक्ति जो इस प्रकार देख-भाल करे; बंदूक़ की मक्खी जिससे निशाना लगाते हैं; जासूस।

दीदबानी (دیدبانی) फा. स्त्री.–किसी ऊँचे स्थान पर बैठकर आने-जानेवालों अथवा ख़तरों की निगरानी।

दीद वा दीद (دیدوادید) फा. स्त्री.–परस्पर एक का दूसरे की मुलाक़ात को जाना।

दीदान (دیدان) अ. पुं.– 'दूद:' का बहु., कीड़े।

दीदानुलअम्आ (دیدان الامعا) अ. पुं.–पेट के कीड़े, पेट में कीड़े पड़ जाने का रोग।

दीदार (دیدار) फा. पुं.–दर्शन, दीद; जल्वा, छबि।

दीदारपरस्त (دیدارپرست) फा. वि.–दर्शनों का अभिलाषी; सूरत और जल्वे का फ़िदाई।

दीदारबाज़ी (دیداربازی) फा. स्त्री.–ताक-झाँक, नज़र-वाज़ी, आँखें लड़ाना।

दीदारू (دیدارو) फा. वि.–शुभ दर्शन, ख़ुशनुमा; रूपवान्, हसीन।

दीन (دین) अ. पुं.–धर्म, मज़्हब; पंथ, मश्रब; विश्वास, एतिक़ाद।

दीनार (دینار) फा. पुं.–एक सोने की मुद्रा, अशरफ़ी।

दीनारेसुर्ख़ (دینارسرخ) फा. पुं.–सोने का दीनार, मोहर, अशरफ़ी।

दीनी (دینی) अ. वि.–धर्म सम्बन्धी, दीन का।

दीनेक़य्यिम (دین قیم) अ. पुं.–सच्चा धर्म, इस्लाम धर्म।

दीने हनीफ़ (دین حنیف) अ. पुं–हज़रत इब्राहीम का धर्म।

दीबा (دیبا) फा. स्त्री.–एक बारीक और चित्रित रेशमी कपड़ा।

दीबाच: (دیباچہ) फा. पुं.–प्रस्तावना, प्राक्कथन।

दीबाज: (دیباجہ) फा. पुं.–दे. 'दीबाच:'।

दीबाज (دیباج) अ.पुं.–एक बहुत बढ़िया रेशमी कपड़ा, दीबा।

दीमक (دیمک) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध कीड़ा।

दीमक ख़ुर्द: (دیمک خوردہ) फा. वि.–जिसे दीमक ने चाट लिया हो, दीमक का खाया हुआ।

दीरोज़: (دی روزہ) फा. वि.–गत कल।

दीरोज़ (دی روز) फा. पुं.–गत कल, बीता हुआ कल।

दीवान: (دیوانہ) फा. पुं.–पागल, विक्षिप्त, सिड़ी; प्रेमी, आशिक़; किसी काम में तन्मय।

दीवान:गर (دیوانہ گر) फा. वि.–पागल बना देनेवाला।

दीवान:नवाज़ (دیوانہ نواز) फा. वि.–दीवानों पर दया करनेवाला; प्रेमी पर कृपा करनेवाली प्रेमिका।

दीवान (دیوان) फा. पुं.–न्यायालय, कचहरी; मंत्री, वज़ीर; अर्थमंत्री, वज़ीरेमाल; ग़ज़लों की किताब।

दीवानख़ान: (دیوان خانہ) फा. पुं.–बैठक, निशस्तगाह; कचहरी का दफ़्तर; बड़े लोगों के बैठने का स्थान।

दीवानगी (دیوانگی) फा. स्त्री.–पागलपन, बुद्धि-विक्षेप।

दीवानी (دیوانی) फा. स्त्री.–वह अदालत जिसमें रुपये के लेन-देन और जायदाद के मुक़दमे तै होते हैं, व्यवहार-न्यायालय।

दीवाने आम (دیوان عام) फा. अ. पुं.–दरबारे आम, बड़ा दरबार करने का स्थान।

दीवाने आ'ला (دیوان اعلی) फा. अ. पुं.–महामंत्री, प्रधान मंत्री, वज़ीरे आ'ज़म।

दीवाने ख़ालिस: (دیوان خالصہ) फा. अ. पुं.–वह मंत्री जिसके पास शाही मुहर रहती है।

दीवाने ख़ास (دیوان خاص) फा. अ. पुं.–मुख्य लोगों का दरबार।

दीवाने जज़ा (دیوان جزا) फा. अ. पुं.–दे. 'दीवाने महशर'।

दीवानेमहशर (دیوان محشر) फा. अ. पुं.–वह महकमा जो क़ियामत के दिन हिसाब-किताब करेगा।

दीवार (دیوار) फा. स्त्री.–भीत, भित्ति, दिवाल।

दीवारगीरी (دیوارگیری) फा. स्त्री.–वह कपड़ा जो दीवारों में सुन्दरता के लिए लगा देते हैं; दीवार में लगाने का लैम्प।

दीवार ब दीवार (دیواربہ دیوار) फा. अव्य.–दीवार से दीवार मिली हुई।

दीवारे क़हक़ह: (دیوارقہقہہ) फा. स्त्री.–चीन की एक दीवार जिसके लिए प्रसिद्ध है कि जो उसमें से झाँकता है वह अनायास बहुत हँसता है—"दीदार दिलरुबा का दीवारे क़हक़हा है–जिसने उधर को झाँका, वह फिर इधर न झाँका।"

दीवारे ज़िंदाँ (دیوارزندان) फा. स्त्री.–जेल की दीवार, क़ैदख़ाने की दीवार।

दीशब (دی شب) फा. स्त्री.–बीती हुई रात, कल की रात।

दु

दुंब: (دنبہ) फा. पुं.–एक प्रकार का मेंढ़ा जिसकी पूँछ पर चर्बी की बड़ी-सी चकती होती है, मेदपुच्छ।

दुंब (دنب) फा स्त्री.–पुच्छू, पूँछ, दुम।

दुंबल (دنبل) फा. पुं.–फोड़ा, व्रण।

दुंबाल: (دنبالہ) फा. पुं.–पूँछ-जैसी चीज़, पूँछ के आकार का; पूँछ, दुम।

दुंबाल:दार (دنبالہ دار) फा. वि.–जिसमें पुछल्ला लगा हो, दुमछल्लेवाला; जिसमें लम्बी नोक निकली हो।

दुंबाल (دنبال) फा. पुं.–दुम, पूँछ, पशुओं की पूँछ, पशु-पुच्छ।

दुअम्ली (دوعملی) फा. अ. स्त्री.–दो प्रकार का राज्य, कहीं कोई क़ानून, कहीं कोई क़ानून; दो शासकों का राज, एक का कुछ हुक्म, दूसरे का कुछ और।

दुअस्पः (دواسپہ) फा. पुं.–शीघ्र गति, तेज़ रफ़्तारी।

दुआ (دعا) अ. स्त्री.–ईश्वर से किसी चीज़ की प्रार्थना; धार्मिक मंत्र, वज़ीफ़ा वग़ैरह; स्तुति, कीर्तन।

दुआएख़ैर (دعاے خیر) अ. स्त्री.–वह दुआ जो किसी की भलाई के लिए की जाय।

दुआएदौलत (دعاے دولت) अ. स्त्री.–किसी की उन्नति और समृद्धि के लिए ईश्वर से प्रार्थना।

दुआज़्दः (دوازدہ) फा. वि.–बारह, द्वादश।

दुआज़्दहुम (دوازدہم) फा. वि.–बारहवाँ, द्वादश।

दुआतशः (دوآتشہ) फा. पुं.–दो बार खींचा हुआ अरक़, तेज़ अरक़।

दुआबः (دوآبہ) फा. पुं.–दो नदियों के बीच का क्षेत्र; गंगा और जमुना के बीच का देश।

दुआलम (دوعالم) फा. अ. पुं.–उभय लोक, दुनिया और उक़्बा, लोक-परलोक।

दुआश्यानः (دوآشیانہ) फा. पुं.–एक प्रकार का तंबू जिसमें दो कमरे होते हैं।

दुकाँ (دکاں) फा. स्त्री.–'दुकान' का लघु., दे. 'दुकान'।

दुकान (دکان) फा. स्त्री.–सौदा बेचने की जगह, पण्यशाला।

दुकानचः (دکانچہ) फा. पुं.–छोटी दुकान।

दुकानदार (دکاندار) फा. पुं.–दुकान में सौदा बेचनेवाला; पेशावर, किसी विषय में दुकानदारों-जैसा मोल-भाव करनेवाला।

दुकानदारी (دکانداری) फा. स्त्री.–दुकान में सौदा बेचने का काम; किसी विषय में मोल-भाव करना।

दुकौन (دوکون) फा. अ. पुं.–दोनों लोक।

दुख़ान (دخان) अ. पुं.–धुआँ, धूम; भाप, वाष्प।

दुख़ानी (دخانی) अ. वि.–आग और भाप के ज़ोर से चलनेवाला, जैसे—'दुख़ानी जहाज़'।

दुख़ूल (دخول) अ. पुं.–प्रवेश, घुसना, अंदर जाना।

दुख़्त (دخت) फा. स्त्री.–'दुख़्तर' का लघु., दे. 'दुख़्तर'।

दुख़्तर (دختر) फा. स्त्री.–पुत्री, लड़की, कन्या।

दुख़्तरे ख़ानः (دخترخانہ) फा. स्त्री.–कुमारी, बिना ब्याही लड़की।

दुख़्तरे रज़ (دختررز) फा. स्त्री.–अंगूर की बेटी, अर्थात् अंगूर की मदिरा।

दुख़्ते रज़ (دخترز) फा. स्त्री.–दे. 'दुख़्तरे रज़'।

दुख़्ते हव्वा (دخت حوا) फा. अ. स्त्री.–हव्वा (हज़रत आदम की पत्नी) की लड़की, अर्थात् स्त्री जाति।

दुगानः (دوگانہ) फा. पुं.–वह फल जिसमें दो फल जुड़े हों, जैसे, दुगानः आम, ऐसा फल जब किसी को धोखे से दे दिया जाता है तो वह उसके बदले दो सौ फल देता है; शुक्राने की नमाज़ की दो रक्अतें।

दुगूनः (دوگونہ) फा. वि.–दो प्रकार का, दो तरह का; दूना, दोचंद।

दुचंद (دوچند) फा. वि.–दूना, दुगुना, द्विगुण।

दुचंदाँ (دوچنداں) फा. वि.–दे. 'दुचंद'।

दुचार (دوچار) फा. वि.–आमना-सामना, मुलाक़ात, साक्षात्।

दुचोबः (دوچوبہ) फा. पुं.–दो बाँसोंवाला ख़ेमा।

दुज़बाँ (دوزباں) फा. वि.–जिसके दो ज़बानें हों, अर्थात् कभी कुछ कहे, कभी कुछ या किसी से कुछ कहे और किसी से कुछ, मुनाफ़िक़ दुमुँहाँ।

दुजहाँ (دوجہاں) फा. पुं.–उभयलोक, दुनिया और आख़िरत, संसार और परलोक।

दुजा (دجیٰ) अ. पुं.–रात की अँधियारी।

दुज़ानू (دوزانو) फा. वि.–घुटनों के बल बैठने की मुद्रा।

दुज़्द (دزد) फा. पुं.–चोर, तस्कर।

दुज़्दिंदः (دزدندہ) फा.वि.–चोरी करनेवाला, चुरानेवाला।

दुज़्दी (دزدی) फा. स्त्री.–चोरी, चौर्य; चोरी का पेशा, चौर्य-कर्म।

दुज़्दीदः (دزدیدہ) फा. वि.–चुराया हुआ, चुराई हुई चीज़।

दुज़्दीदःनज़री (دزدیدہ نظری) फा. अ. स्त्री.–दे. 'दुज़्दीदः-निगाही'।

दुज़्दीदःनिगाही (دزدیدہ نگاہی) फा. स्त्री.–कनखियों से देखना।

दुज़्देशाहीं (دزدشاہیں) फा. पुं.–नज़र के सामने से चीज़ उड़ा ले जानेवाला, शातिर चोर, पश्यतोहर।

दुज़्देहिना (دزدحنا) फा. पुं.–मेंहदी लगाते समय हाथ में एक छल्ला रख लेते हैं, जिससे हथेली पर एक गोल निशान बन जाता है, उसी को 'दुज़्दे हिना' कहते हैं।

दुतर्फ़ः (دوطرفہ) फा. वि.–दोनों तरफ़, इधर भी, उधर भी।

दुता (دوتا) फा. वि.–दुहरा, झुका हुआ, ख़मीदः, जैसे 'पुश्तेदुता' झुकी हुई कमर।

दुतारः (دوتارہ) फा. पुं.–एक बाजा जिसमें दो तार होते हैं।

दुदम (دودم) फा. वि.–दोहरी धारवाली तलवार।

दुदस्तः (دودستہ) फा. वि.–दोनों तरफ़, दुतर्फ़ा।

दुदस्ती (دودستی) फा. स्त्री.–दोनों हाथों से तलवार चलाना; कुश्ती का एक दाँव।

दुदिलः (دودلہ) फा. वि.–चिन्तित, फ़िक्रमंद; वहमी, भ्रमी; दुमुहाँ, मुनाफ़िक़।

दुनीम (دونیم) फा. वि.–आधा-आधा, दो टुकड़े।

दुन्यवी (دنیوی) अ. वि.–संसार सम्बन्धी, सांसारिक; दुनियावाला, दुनिया का।

दुन्या (دنیا) अ. स्त्री.–मर्त्यलोक, मृत्युलोक, जगत्, संसार, आलम; संसार-निवासी, दुनिया के लोग।

दुन्याएदनी (دنیائے دنی) अ. स्त्री.–अधम और निकृष्ट संसार, पापमय संसार, माया और मोह-जैसी नीच प्रवृत्तियोंवाला संसार।

दुन्याएदूँ (دنیائے دوں) अ. फा. स्त्री.–दे. 'दुन्याएदनी'।

दुन्याएफ़ानी (دنیائے فانی) फा. स्त्री.–नश्वर और विनाशकारी संसार।

दुन्यादार (دنیادار) अ. फा. वि.–संसार के मोह में लिप्त; घर गृहस्थीवाला; अवसरवादी, इब्नुल वक़्त।

दुन्यापरस्त (دنیاپرست) फा. वि.–दे. 'दुन्यादार'।

दुन्या व माफ़ीहा (دنیا و ما فیہا) अ. स्त्री.–संसार और संसार के भीतर की सब वस्तुएँ।

दुन्यावी (دنیاوی) अ. वि.–दे. 'दुनयवी', बहुत से विद्वान् 'दुनयावी' को अशुद्ध कहते हैं।

दुन्यासाज़ (دنیاساز) अ. फा. वि.–मुँह पर झूठी और ख़ुशामद की बातें करनेवाला, ज़ाहिरदार, चाटुकार।

दुन्यासाज़ी (دنیاسازی) अ. फा. स्त्री.–ज़ाहिरदारी, बनावट की बातें।

दुपल्का (دوپلکا) फा. पुं.–एक पत्थर जिससे अँगूठी बनती है (उ.) एक प्रकार का नगीना; एक प्रकार का पतंग; एक प्रकार का कबूतर।

दुपायः (دوپایہ) फा. वि.–दो टाँगोंवाला।

दुपारः (دوپارہ) फा. वि.–दो टूक, दो टुकड़े; फटा हुआ, टुकड़े-टुकड़े।

दुपियाज़ः (دوپیازہ) फा. पुं.–एक प्रकार का गोश्त जिसमें केवल पियाज़ पड़ती है।

दुपैकर (دوپیکر) फा. वि.–मिथुन राशि, जौज़ा; दुधारी तलवार।

दुफ़ (دف) अ. पुं.–डफ़, दाइरा, बड़ी डफ़ली।

दुफ़नवाज़ (دف نواز) अ. फा. पुं.–डफ़ बजानेवाला।

दुफ़स्ली (دوفصلی) फा. अ. वि.–वह पेड़ जो साल में दो बार फले; वह ज़मीन जो साल में दो बार बोयी जाय; दुटप्पी, गोल-मोल (बात)।

दुबारः (دوبارہ) फा. वि.–फिर, पुनः; नये सिरे से, फिर से; दूसरी बार, दूसरी मरतबा।

दुबाला (دوبالا) फा. वि.–दुगुना, दूना, दुचंद।

दुबुर (دبر) अ. स्त्री.–पीछा, पुश्त; उपस्थ, मलद्वार, गुदा।

दुब्बे अक्बर (دب اکبر) अ. पुं.–उत्तरी ध्रुव के पास तारों से बनी हुई रीछ की दो आकृतियों में से बड़ी आकृति; सप्तर्षिमण्डल।

दुब्बे अस़ार (دب اصغر) अ. पुं.–उत्तरी ध्रुव के निकट कुछ तारों से मिलकर बनी हुई रीछ की दो आकृतियों में से छोटी आकृति, लघु सप्तर्षिमण्डल।

दुब्र (دبر) अ. स्त्री.–दे. 'दुबुर'।

दुमंज़िलः (دومنزلہ) फा. अ. पुं.–वह मकान जिसमें दो मालाएँ हों, दो मालावाला घर।

दुमाहः (دوماہہ) फा. पुं.–दो महीने की तनख़्वाह।

दुम्मल (دمل) अ. पुं.–फोड़ा, व्रण।

दुरंगी (دورنگی) फा. वि.–कभी कुछ होना कभी कुछ; कभी कुछ कहना और कभी कुछ।

दुर (در) फा. पुं.–मुक्ता, मोती; रत्न, जौहर; कान का आवेज़ः।

दुरअफ़्शाँ (درافشاں) फा. वि.–दे. 'दुरफ़्शाँ'।

दुरकाबः (دورکابہ) फा. पुं.–बहुत ऊँचा घोड़ा, जिस पर दो रकाबों द्वारा चढ़ा जा सके।

दुरख़्श (درخش) फा. स्त्री.–विद्युत्, चपला, चंचला, बिजली; प्रकाश, ज्योति, रौशनी।

दुरख़्शाँ (درخشاں) फा. वि.–प्रकाशमान, ज्योतिर्मय, पुरनूर।

दुरगा (دورگا) फा. वि.–दोग़ला, वर्ण-संकर।

दुरदानः (دردانہ) अ. फा. पुं.–मोती का दाना, एक मोती।

दुरफ़्श (درفش) फा. पुं.–वह तिकोना कपड़ा जो झंडे के सिरे पर लगाते हैं और जो हवा में उड़ता रहता है।

दुरफ़्शाँ (درفشاں) फा. वि.–हिलता हुआ, लहराता हुआ।

दुरफ़्शाँ (درافشاں) फा. वि.–मोती लुटानेवाला, दानी, सख़ी; मधुरभाषी, ख़ुशगो।

दुरफ़्शानी (درافشانی) फा. स्त्री.–मोती लुटाना; दानशीलता, सख़ावत।

दुरफ़्शे कावियानी (درفش کاویانی) फा. पुं.–ईरान के 'कावः' नामी लुहार का झंडा, जिसमें उसने अपनी धौंकनी बाँधी थी और जिसके द्वारा उसने जनता को एकत्र करके फ़ियानी राज्य को नष्ट किया था।

दुरबार (دربار) फा. वि.–मोतियों की वर्षा करनेवाला, वदान्य, सख़ी; मधुरभाषी, ख़ुशबयाँ।

फा. वि.–दे. 'दुरबार'।

दुररेज़ (دورریز) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ दो रास्ते मिले हों।

दुराहः (دوراهه) फा. पुं.–दोनों तरफ़, दुतर्फ़ा; दुमुँहा,

दुरुख़ः (دورخه) फा. पुं.–दोनों तरफ़, दुतर्फ़ा; दुमुँहाँ, मुनाफ़िक़।

दुरख़्श (درخش) फा. स्त्री.–दे. 'दुरख़्श', दोनों शुद्ध हैं।

दुरख़्शाँ (درخشاں) फा. वि.–दे. 'दुरख़्शाँ', दोनों युद्ध हैं।

दुरख़्शंदः (درخشنده) फा. वि.–चमकनेवाला, ज्योतिर्मय।

दुरख़्शंदगी (درخشندگی) फा. स्त्री.–आभा, चमक, ज्योति।

दुरफ़्श (درفش) फा. पुं.–दे. 'दुरफ़्श', दोनों शुद्ध हैं।

दुरफ़्शाँ (درفشاں) फा. वि.–दे. 'दुरफ़्शाँ', दोनों शुद्ध हैं।

दुरुश्त (درشت) फा. वि.–खुरदरा, खुर्रा; कठोर, सख़्त।

दुरुश्तख़ू (درشت خو) फा. वि.–खुर्रेमिज़ाजवाला, रूखा, फ़ीका।

दुरुश्त मिज़ाज (درشت مزاج) फा. अ. वि.–दे. 'दुरुश्त ख़ू'।

दुरुश्ती (درشتی) फा. स्त्री.–खुर्रापन, कठोरता।

दुरुस्त (درست) फा .वि.–ठीक, शुद्ध, सही; सत्य, सच; उचित, मौज़ूँ; साबित, संपूर्ण; अखंडित, जो टूटा न हो; स्वस्थ, तन्दुरुस्त।

दुरुस्ती (درستی) फा. स्त्री.–शुद्धि, संशोधन, इस्लाह; गोशमाली।

दुरूद (درود) फा. स्त्री.–लकड़ी काटने, छीलने और बनाने का काम; खेती की कटाई।

दुरूद (درود) अ. उभ.–दुआ और सलाम विशेषतः रसूल पर।

दुरूदगर (درودگر) फा. पुं.–बढ़ई, काष्ठकार, तक्षक।

दुरूदोसलाम (درودوسلام) अ. पुं.–मुसलमानों की ओर से उनके पैग़ंबर पर दुरूद और सलाम।

दुरूयः (درویه) फा. वि.–दुतर्फ़ा, दोनों तरफ़।

दुरूर (درور) अ. पुं.–पसीना या दूध निकलना।

दुरे ख़ुश आब (درخوش آب) फा. पुं.–अच्छी चमक-दमक का मोती।

दुरेनायाब (درنایاب) फा. पुं.–ऐसा मोती जैसा दूसरा मिल न सके; सुपुत्र।

दुरेनासुफ़्तः (درناسفته) फा. वि.–अनबिधा मोती, वह मोती जिसमें छेद न किया गया हो; कुमारी स्त्री, अक्षता।

दुरेयकता (دریکتا) फा. पुं.–वह मोती जो सीप में एक ही होता है और इस कारण बहुत बड़ा होता है।

दुरेयकदानः (دریکدانه) फा. पुं.–दे. 'दुरेयकता'।

दुरेशहवार (درشهوار) बादशाहों के योग्य मोती, बहुत बड़ा और बहुमूल्य मोती।

दुरोग़ (دروغ) फा. पुं.–मिथ्या, असत्य, झूठ; अपराध, लांछन, तुहमत, दे. 'दरोग़', दोनों शुद्ध हैं।

दुरोग़गो (دروغ گو) फा. वि.–झूठ बोलनेवाला, मिथ्यावादी, असत्यभाषी।

दुरोग़ज़न (دروغ زن) फा. वि.–दे. 'दुरोग़गो'।

दुरोग़बयाँ (دروغ بیاں) फा. अ. वि.–दे. 'दुरोग़गो'।

दुरोग़बयानी (دروغ بیانی) फा. अ. स्त्री.–झूठ बोलना।

दुरोग़बाफ़ (دروغ باف) फा. वि.–झूठ गढ़नेवाला, अपने मन से झूठी बातें उत्पन्न करनेवाला।

दुरोग़ेमस्लहत आमेज़ (دروغ مصلحت آمیز) फा. अ. पुं.–ऐसा झूठ जो किसी के हित के लिए या झगड़ा ख़त्म कराने के लिए बोला जाय।

दुरोज़ः (دروزه) फा. वि.–दो दिन का, थोड़े दिन का, अस्थायी, आरिज़ी।

दुर्ज (درج) अ. स्त्री.–मंजूषा, पिटारी।

दुर्द (درد) फा. स्त्री.–तरल पदार्थ के नीचे जमी हुई कीट, गाद; शराब की तलछट।

दुर्दआशाम (دردآشام) फा. वि.–दे. 'दुर्दकश'।

दुर्दकश (دردکش) फा. वि.–तलछट पीनेवाला, धनी शराबी।

दुर्दी (دردی) अ. स्त्री.–तलछट, नीचे बची हुई शराब।

दुर्दीकश (دردی کش) अ. फा. वि.–दे. 'दुर्दकश'।

दुर्दे तहे जाम (دردته جام) फा. स्त्री.–पियाले में नीचे बची हुई तलछट।

दुर्रः (دره) अ. पुं.–बड़ा मोती।

दुर्रतुत्ताज (درةالتاج) अ. पुं.–बादशाहों के ताज में जड़े जाने के योग्य मोती।

दुर्राज (دراج) अ. पुं.–तीतर पक्षी।

दुर्रेनजफ़ (درنجف) अ. पुं.–एक पत्थर जिसमें बाल से दिखायी पड़ते हैं, जिनको एक सम्प्रदाय हज़रत अली के बाल बताता है और इसलिए इस पत्थर को पवित्र मानता है।

दुर्रेमकनून (درمکنون) अ. पुं.–वह मोती जिसे छिपाकर रखा जाय, बहुत ही बहुमूल्य मोती।

दुर्रेयतीम (دریتیم) अ. पुं.–वह बड़ा और आबदार मोती जो सीप में अकेला पैदा हुआ हो।

दुर्रेशहवार (درشهوار) अ. पुं.–बादशाहों के लायक़ मोती, बड़ा और मूल्यवान् मोती।

दुलदुल (دلدل) अ. पुं.–एक मादा खच्चर जो इस्कंदरीया के शासक ने हज़रत मुहम्मद साहब को भट किया था और आपने उसे हज़रत अली को दे दिया था; घोड़े के आकार का एक ताज़िया; वह घोड़ा जिस पर सामान मातम लादकर अज़ाख़ाने में ले जाते हैं।

दुलदुल सवार (دلدل سوار) अ. फा. पुं.–हज़रत अली की उपाधि।

दुलमः (دلمہ) फा. पुं.–एक प्रकार का सालन जो बैंगन और गाजर में कीमा और पनीर डालकर पकाते हैं।

दुवल (دول) अ. स्त्री.–'दौलत' का बहु., बहुत से राष्ट्र।

दुवार (دوار) अ. पुं.–सर चकराना, सर का चक्कर।

दुवाल (دوال) फा. स्त्री.–चमड़े का तसमा, पेटी; वह तसमा जिससे नक़्क़ारा बजाते हैं।

दुवालबंद (دوال بند) फा. पुं.–पेटी बाँधनेवाला, सिपाही।

दुवालबाज़ (دوال باز) फा. वि.–छली, वंचक, ठग, दग़ाबाज़।

दुवुम (دوم) फा. वि.–द्वितीय, दूसरा।

दुवुमीं (دومیں) फा. वि.–दूसरा, द्वितीय।

दुशंबः (دوشنبہ) फा. पुं.–सोमवार, पीर।

दुशाख़ः (دوشاخہ) फा. पुं.–दो शाख़ोंवाली लकड़ी; दो शाख़ोंवाला पेड़; दो शम्एँ जलाने का शम्अदान; भंग छानने की लकड़ी।

दुशालः (دوشالہ) फा. पुं.–जिसमें दो शाल एक साथ जुड़े हों, ऊन की कामदार दोहरी चादर।

दुश्त (دشت) फा. वि.–निकृष्ट, दुष्ट, ख़राब।

दुश्नाम (دشنام) फा. स्त्री.–अपशब्द, गाली।

दुश्नामतराज़ी (دشنام ترازی) फा. स्त्री.–गालियाँ देना, गाली बकना।

दुश्नामतराशी (دشنام تراشی) फा. स्त्री.–गालियाँ गढ़ना, नयी-नयी गालियाँ गढ़ना।

दुश्नामदेही (دشنام دہی) फा. स्त्री.–गालियाँ देना।

दुश्मन (دشمن) फा. पुं.–शत्रु, रिपु, वैरी, अदू; प्रतिद्वंद्वी, रक़ीब।

दुश्मनकाम (دشمن کام) फा. वि.–वह व्यक्ति जो अपने शत्रुओं की इच्छा के मुताबिक़ आपत्तियों में फँसा हो।

दुश्मनी (دشمنی) फा. स्त्री.–शत्रुता, वैर, अदावत; प्रतिद्वंद्विता, रक़ाबत।

दुश्मने जाँ (دشمن جاں) फा. पुं.–जानी दुश्मन, जान का घातक।

दुश्वार (دشوار) फा. वि.–कठिन, दुरूह, मुश्किल।

दुश्वारगुज़ार (دشوار گزار) फा. वि.–जहाँ से गुज़रना कठिन हो।

दुश्वारी (دشواری) फा. स्त्री.–कठिनता, मुश्किल; तंगीतुर्शी, दरिद्रता; आपत्ति, मुसीबत।

दुसर (دوسر) फा. वि.–दो सरवाला।

दुसरा (دوسرا) फा. पुं.–दोनों जहान, उभयलोक।

दुसरी (دوسری) फा. स्त्री.–निफ़ाक़, मुनाफ़क़त, दिल में कुछ होना और मुँह पर कुछ।

दुसालः (دوسالہ) फा. वि.–दो वर्ष का; दो वर्ष की आयु का; दो बरस का पुराना।

दुसुख़नः (دوسخنہ) फा. पुं.–अमीर ख़ुस्रो की पहेलियों की एक क़िस्म, जिसमें कई सवालों का एक जवाब होता है।

दुसूमत (دسومت) अ. स्त्री.–चिकनाई, चाहे घी की हो, चाहे तेल की और चाहे चर्बी आदि की।

दुहर्फ़ी (دوحرفی) फा. अ. वि.–दो हर्फ़ोंवाला, दो अक्षरोंवाला; बहुत छोटा, बहुत ही संक्षिप्त।

दुहुल (دھل) फा. पुं.–ढोल, धौंसा, नक़्क़ारा।

दुहुलज़न (دھل زن) फा. वि.–नक़्क़ारा बजानेवाला।

दुहुल दरीदः (دھل دریدہ) फा. वि.–निंदित, गर्हित, बदनाम, रुसवा; चुप, मौन।

दुहूर (دھور) अ. पुं.–'दह्र' का बहु., ज़माने।

दुह्न (دھن) अ. पुं.–तेल, तैल, रोग़न; घी, घृत; वसा, मेदा, चर्बी।

दुह्नियत (دھنیت) चिकनाई चाहे तेल की हो, चाहे घी और चाहे चर्बी आदि की।

दुह्मत (دھمت) अ. स्त्री.–कालिमा, सियाही, कालौंच।

दू

दूँ (دوں) फा. वि.–अधम, नीच, पामर, सिफ़ला, कमीना, गुंडा।

दूँनवाज़ (دوں نواز) फा. वि.–कमीनों को मुँह लगानेवाला, नीच आदमियों की पीठ ठोंकनेवाला।

दूँपरस्त (دوں پرست) फा. वि.–गुंडों की रक्षा करनेवाला, कमीनों को बढ़ावा देनेवाला।

दूँपर्वर (دوں پرور) फा. वि.–दे. 'दूँपरस्त'।

दूँहिम्मत (دوں ھمت) फा. वि.–पस्त हिम्मत, हतोत्साह, हतसाहस।

दूँहिम्मती (دوں ھمتی) फा. स्त्री.–पस्त हिम्मती।

दूक (دوک) फा. पुं.–चरख़े का तकला।

दूकदान (دوکدان) फा. पुं.–चर्ख़ा, सूत कातने का यंत्र।

दूदः (دودہ) अ. पुं.–कीट, कीड़ा।

दूद् (دود) अ. पुं.–कीट, कीड़ा।

दूद (دود) फा. पुं.–धुआँ, धूम, दुख़ान।

दूदआहंग (دود آھنگ) फा. पुं.–दे. "दूदकश'।

दूदकश (دودکش) फा. पुं.–धुआँ निकलने का सूराख़, धुआँ निकालने की चिमनी।

दूदमान (دودمان) फा. पुं.–वंश, कुल, ख़ानदान।

दूदी (دودی) फा. वि.–भाप या स्टीम से चलनेवाला।

दूदी (دودی) अ. वि.—नाड़ी का एक प्रकार जिसमें वह बहुत कमज़ोर हो जाती है और मरने के क़रीब चलती है।

दूदुलहरीर (دودالحریر) अ. पुं.—रेशम का कीड़ा।

दूदे आह (دودآہ) फा. पुं.—आह का धुआँ, आह की आग का धुआँ।

दूदे जिगर (دودجگر) फा. पुं.—जिगर की आग का धुआँ, आह।

दून (دون) फा. वि.—दे. 'दूँ'।

दूनाँ (دوناں) फा. पुं.—'दून' का बहु., अधम लोग, पामर लोग, कमीने, गुंडे।

दूबदू (دوبدو) फा. अव्य.—आमने-सामने, मुहाँमुँह।

दूर (دور) फा. वि.—अन्तर पर, फ़ासिले पर; पृथक्, अलग, जुदा; हट ! अलग! ; असम्भव, नामुम्किन।

दूरअंदेश (دوراندیش) फा. वि.—दूरदर्शी, आगमसोची, परिणामदर्शी।

दूरअंदेशी (دوراندیشی) फा. स्त्री.—दूरदर्शिता, परिणामदर्शिता।

दूरअज़हाल (دورازحال) फा. अ. अव्य.—अब से दूर, अच्छी दशा में आने के बाद जब बुरी दशा का वर्णन करते हैं तो यह फ़िक्रा कहते हैं।

दूरतर (دورتر) फा. वि.—बहुत दूर, काफ़ी दूर।

दूरतरक (دورتری) फा. वि.—बहुत ही दूर, बहुत अधिक दूर, दूरतम।

दूरदस्त (دوردست) फा. वि.—काले कोसों, बहुत दूर।

दूरबाश (دور باش) फा. अव्य.—अलग रहो, दूर हटो; एक दुशाख़: नेज़: जो बादशाह की सवारी के आगे चलता था और जिसे देखकर लोग रास्ते से हट जाते थे; वह दुशाख़: नेज़: जिससे दुश्मन के हरबे को काट देते थे; आह, विश्वास।

दूरबीं (دوربیں) फा. वि.—दूरदर्शी, दूर तक सोचनेवाला।

दूरबीन (دوربین) फा. स्त्री.—एक यंत्र जिससे दूर की चीज़ें देखी जाती हैं, दूरदर्शक यंत्र।

दूरबीनी (دوربینی) फा. स्त्री.—दूर तक देखना, दूर तक सोचना।

दूरोदराज़ (دورودراز) फा. पुं.—बहुत दूर, काले कोसों।

दूलाब (دولاب) फा. पुं.—दे. 'दौलाब' और 'दोलाब', तीनों उच्चारण शुद्ध हैं।

दे

देग (دیگ) फा. स्त्री.—छोटे मुँह और बड़े पेट का एक ताँबे का बर्तन जिसमें चावल आदि पकाये जाते हैं।

देगचः (دیگچہ) फा. पुं.—देग से छोटा, देग-जैसा ही बरतन, छोटी देग।

देगदान (دیگدان) फा. पुं.—चूल्हा, आतशदान।

देगशो (دیگشو) फा. पुं.—देग माँजनेवाला, बावरची का मुलाज़िम।

देज़ (دیز) फा. पुं.—रंग, वर्ण, जैसे—'शबदेज़' काले रंग का।

देबा (دیبا) फा. स्त्री.—दे. 'दीबा', शुद्ध 'देबा' ही है, परंतु उर्दूवाले 'दीबा' बोलते हैं।

देर (دیر) फा. स्त्री.—विलंब, ढील, ताख़ीर।

देरआश्ना (دیرآشنا) फा. वि.—दे. 'देराश्ना'।

देरगाह (دیرگاہ) फा. स्त्री.—देर तक, बहुत दिनों तक।

देरपा (دیرپا) फा. वि.—टिकाऊ, मज़बूत।

देरबाज़ (دیرباز) फा. पुं.—'देरयाज़' 'देरबाज़' ग़लत है।

देरमाँ (دیرماں) फा. वि.—स्थायी, दृढ़, मज़बूत, (स्त्री.) दृढ़ता, मज़बूती, स्थायित्व।

देरयाज़ (دیریاز) फा. पुं.—प्राचीन काल, पुराना ज़माना; पुरातत्त्व, पुरानापन।

देराश्ना (دیرآشنا) फा. वि.—वह व्यक्ति जो बहुत देर में दोस्त बने, जो जल्दी घुलना-मिलना न जानता हो; जो हर काम देर में करने का आदी हो।

देरीं (دیریں) फा. वि.—पुरातन, पुराना, देरीनः।

देरीनः (دیرینہ) फा. वि.—पुराना, प्राचीन, देरीं।

देरीनःसाल (دیرینہ سال) फा. वि.—बहुत बूढ़ा, वयोवृद्ध।

देव (دیو) फा. पुं.—राक्षस, एक नरभक्षी प्राणी वर्ग; बहुत लंबा चौड़ा आदमी; ख़बीस, पलीत, पिशाच; भूतप्रेत, बदरूह; परियों के पति।

देवचः (دیوچہ) फा. पुं.—दीमक; जोंक।

देवज़दः (دیوزدہ) फा. वि.—जिस पर भूतों का ख़लल हो, प्रेतबाधाग्रस्त।

देवज़ाद (دیوزاد) फा. पुं.—ग्रांडील और तेज़ घोड़ा; बहुत भारी-भरकम और भयानक आदमी।

देवदार (دیودار) फा. पुं.—चीड़ का पेड़।

देवदिली (دیودلی) फा. स्त्री.—बहादुरी, शुजाअत।

देवबाद (دیوباد) फा. पुं.—चक्रवात, बगूला, बवंडर, वात्यायन, वातचक्र।

देवमर्दुम (دیومردم) फा. पुं.—वनमानुस; ख़बीस और अत्याचारी व्यक्ति।

देवमार (دیومار) फा. पुं.—अजगर, अज़्दहा।

देवलाख़ (دیولاخ) फा. पुं.—राक्षसों के रहने का स्थान।

देवसार (دیوسار) फा. वि.—देव-जैसा, राक्षस की मानिंद।

देवसीरत (دیوسیرت) फा. अ. वि.—जिसका स्वभाव राक्षसों-जैसा हो, असुरप्रकृति।

देवसूरत (دیوصورت) फा. अ. वि.–जिसकी शक्ल राक्षसों जैसी भयानक हो।

देह (دہ) फा. पुं.–ग्राम, गाँव।

देहक़ान (دہقان) फा. पुं.–गाँववाला, किसान, देहाती।

देहक़ानियत (دہقانیت) फा. स्त्री.–गँवारपन, उजड्डपन।

देहक़ानी (دہقانی) फा. पुं.–गाँव का निवासी; गँवार, उजड्ड।

देहिश (دہش) फा. स्त्री.–दानशीलता, सख़ावत।

दै

दै (دے) फा. पुं.–एक ईरानी महीना जो हिंदी का माघ होता है, पतझड़ का महीना।

दैजूर (دیجور) फा. स्त्री.–अँधेरी रात, अमावस्या।

दैन (دین) अ. पुं.–ऋण, क़र्ज़।

दैने मेह्र (دین مہر) अ. पुं.–स्त्री के मेह्र का ऋण।

दैयान (دیان) अ. पुं.–पाप-फल देनेवाला; अच्छी-बुरी कृतियों का हिसाब करनेवाला; ईश्वर।

दैयूस (دیوث) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो अपनी स्त्री की कमाई खाये, उसे दूसरों के पास जाने दे।

दैयसी (دیوثی) अ. स्त्री.–अपनी स्त्री की कमाई खाना, अपनी स्त्री से पेशा कराना।

दैर (دیر) फा. पुं.–इबादतख़ाने का गुंबद; ईसाइयों का गिरजा; बुतख़ाना, मूर्तिगृह।

दैरेख़राबात (دیر خرابات) फा. पुं.–मधुशाला, मदिरालय, शराबख़ाना।

दैरे मुकाफ़ात (دیر مکافات) फा. अ. पुं.–संसार, दुनिया।

दैरे मुग़ाँ (دیر مغاں) फा. पुं.–मधुशाला, शराबख़ाना।

दैहीम (دیہیم) फा. पुं.–राजमुकुट; ताज।

दो

दो (دو) फा. वि.–एक और एक, द्वय।

दोख़्तः (دوختہ) फा. वि.–सिला हुआ।

दोख़्तः लब (دوختہ لب) फा. वि.–जिसके होंठ सिले हों, अर्थात् बिलकुल चुप, अवाक्, मौन।

दोख़्त (دوخت) फा. स्त्री.–सिलाई, सीवन।

दोग़ (دوغ) फा. पुं.–छाछ, मट्ठा; रायता।

दोग़लः (دوغلہ) फा. पुं.–जारज, वर्णसंकर, क्षेत्रज, बद-नस्ल।

दोज़ (دوز) फा. प्रत्य.–सीनेवाला, जैसे—'ख़ैमःदोज़' रावटियाँ सीनेवाला।

दोज़ख़ (دوزخ) फा. पुं.–नरक, जहन्नम।

दोज़ख़ी (دوزخی) फा. वि.–जो नरक में जल रहा हो, नारकी; जो नरक में पड़ने के काम करता हो।

दोज़िंदः (دوزندہ) फा. वि.–सीनेवाला।

दोपियाज़ः (دوپیازہ) फा. पुं.–दे. 'दुपियाज़ः'।

दोल (دول) फा. पुं.–कुएँ से पानी निकालने का बर्तन, डोल।

दोलाब (دولاب) फा. पुं.–दे. 'दौलाब' दोनों उच्चारण शुद्ध हैं दे. 'दूलाब'।

दोशः (دوشہ) फा. पुं.–दूध दुहने का वर्तन; दूध देनेवाला पशु।

दोश (دوش) फा. पुं.–कंधा, स्कंध, मोढ़ा; गत रात्रि, गुज़री हुई रात।

दोशाब (دوشاب) फा. पुं.–अंगूर का शीरा जिस पर दो-एक दिन गुज़र जायँ और उसमें नशा पैदा हो जाय; अंगूर या छुहारे का शीरा।

दोशीज़ः (دوشیزہ) फा. स्त्री.–जवान और अल्हड़ लड़की, कुमारी, अंकुरितयौवना।

दोशीज़गी (دوشیزگی) फा. स्त्री.–अल्हड़पन, कुमारपन।

दोशीदः (دوشیدہ) फा. वि.–दुहा हुआ दूध।

दोशीनः (دوشینہ) फा. वि.–गत रात्रि का, कल रात का।

दोस्त (دوست) फा. पुं.–मित्र, सखा, यार; प्रेमपात्र, माशूक़।

दोस्तकाम (دوستکام) फा. वि.–'दुश्मनकाम' का उलटा, वह व्यक्ति जिसे अपने मित्रों के इच्छानुसार सब सुख प्राप्त हों।

दोस्तदार (دوستدار) फा. वि.–सच्चा दोस्त, शुभचिंतक, ख़ैरख़्वाह, मुख़लिस।

दोस्त नाशनास (دوست ناشناس) फा. वि.–दोस्त की क़द्र न पहचाननेवाला।

दोस्तानः (دوستانہ) फा. पुं.–मैत्री, मित्रता, दोस्ती।

दोस्ती (دوستی) फा. स्त्री.–मित्रता, मैत्री, दोस्ताना।

दौ

दौ (دو) फा. स्त्री.–दौड़, भाग, अकेला नहीं बोला जाता, विशेषत: 'तग' के साथ, 'तगोदौ' बोलते हैं।

दौरः (دورہ) अ. पुं.–चक्र, चक्कर, गर्दिश; बारी, नौबत; अफ़सरों का गश्त।

दौर (دور) अ. पुं.–चक्कर, गर्दिश; गिर्दागिर्द, चारों ओर; बारी, नौबत; परिवर्तन, उलट-फेर; युग, अह्द; शराब या चाय आदि का एक चक्कर जो सारे बैठनेवालों के लिए हो; मुशाअरे या मज्लिस में पढ़ने का चक्कर जो एक-एक बार सबके पढ़ लेने पर ख़त्म हो।

दौरान (دوران) अ. पुं.–चक्कर, दौर; बीच, अस्ना।

दौराने ख़ूँ (دوران خوں) अ. फा. पुं.–ख़ून का शरीर में दौरा, रक्तसंचार।

दौराने सर (دوران سر) अ. फा. पुं.–सर के चक्कर।

दौरी (دوری) अ. वि.–जो बारी से पड़ता हो।

दौरे अव्वल (دور اول) अ. पुं.–प्रारंभिक काल, शुरू का ज़माना।

दौरे आख़िर (دور آخر) अ.पुं.–अंतिम काल, आख़िरी ज़माना।

दौलत (دولت) अ. स्त्री.–धन, सम्पत्ति, रुपया-पैसा; राज्य, सत्ता, हुकूमत; भाग्य, नसीबा।

दौलतकदः (دولت کدہ) अ. फा. पुं.–दे. 'दौलतख़ानः'।

दौलतख़ानः (دولت خانہ) अ. फा. पुं.–बड़े आदमियों के घर के लिए बोलते हैं।

दौलतमंद (دولت مند) अ. फा. वि.–धनवान्, समृद्ध, धन-सम्पन्न, मालदार।

दौलतसरा (دولت سرا) अ. फा. स्त्री.–दे. दौलतख़ाना।

दौलते ख़ुदादाद (دولت خداداد) अ. फा. स्त्री.–ईश्वर का दिया हुआ धन, बहुत अधिक धन।

दौलते ख़्वाबीदः (دولت خوابیدہ) अ. फा. स्त्री.–सोता हुआ इक़्बाल, बदनसीबी, दुर्भाग्य।

दौलते दारैन (دولت دارین) अ. स्त्री.–दुनिया और दीन, दोनों दौलतें।

दौलते बेदार (دولت بیدار) अ. फा. स्त्री.–जागता हुआ इक़्बाल, ख़ुश नसीबी, सौभाग्य।

दौलते हुस्न (دولت حسن) अ.स्त्री.–रूप की दौलत (संपत्ति)।

दौलाब (دولاب) अ. पुं.–रहट, वह चर्ख़ी जिससे कुएँ से पानी खींचते हैं, दे. 'दोलाब' और 'दूलाब'।

न

नंग (ننگ) फा. पुं.–लज्जा, शर्म; दोष, आर।

नंगे अज्दाद (ننگ اجداد) फा. अ. पुं.–जो व्यक्ति अपने दुराचरण के कारण अपने बाप-दादा के नाम को बट्टा लगाता हो, कुलघालक।

नंगे अस्लाफ़ (ننگ اسلاف) फा. अ. पुं.–दे. 'नंगे अज्दाद'।

नंगे इंसानियत (ننگ انسانیت) फा.अ. पुं.–ऐसा कार्य जो मानवता के दृष्टिकोण से लज्जाजनक हो।

नंगे ख़लाइक़् (ننگ خلائق) फा. अ. पुं.–जो व्यक्ति अपने दुर्व्यवहार से सर्वसाधारण के लिए लज्जा का कारण हो।

नंगे ख़ानदान (ننگ خاندان) फा. पुं.–अपने कुल के लिए निंदा का कारण, कुलांगार, कुलकलङ्क।

नंगोनाम (ننگ ونام) फा. पुं.–लज्जा, ग़ैरत; मर्यादा, वक़ार; सतीत्व, इस्मत।

नंगोनामूस (ننگ وناموس) फा. अ. पुं.–दे. 'नंगोनाम'।

नअम (نعم) अ. अव्य.–हाँ, जी हाँ, (पुं.) पशु, चौपाया।

नआइम (نعائم) अ. स्त्री.–बीसवाँ नक्षत्र, पूर्वाषाढ़।

नईक़ (نعیق) अ. स्त्री.–कौए की आवाज़, काँव-काँव।

नईम (نعیم) अ. पुं.–स्वर्ग, बिहिश्त; पुण्य, नेकी; ने'मत, दिव्योपहार।

नऊज़ु बिल्लाह (نعوذ باللہ) अ. अव्य.–हम ईश्वर से पनाह माँगते हैं।

नक़वी (نقوی) अ. पुं.–दसवें इमाम हज़रत अली नक़ी की संतान का व्यक्ति।

नक़ाइस (نقائص) अ. पुं.–'नक़्स' का बहु., ख़राबियाँ, बुराइयाँ, त्रुटियाँ।

नक़ावत (نقاوت) अ. स्त्री.–पवित्रता, पुनीतता, शुद्धता, निर्मलता, पाकीज़गी।

नक़ाहत (نقاهت) अ. स्त्री.–वह निर्बलता जो रोग-मुक्ति के बाद बाक़ी रहती है; निर्बलता, अशक्ति, नातुवानी।

नकिरः (نکرہ) अ. पुं.–वह संज्ञा जो एक जाति की सब चीज़ों पर बोली जाय, जातिवाचक संज्ञा (व्या.); अपरिचय, अनजानपन।

नक़ी (نقی) अ. वि.–पवित्र, निर्मल, ख़ालिस, (पुं.) बारह इमामों में से दसवें इमाम का नाम।

नक़ीज़ (نقیض) अ. स्त्री.–वैर, शत्रुता, दुश्मनी, (वि.) वैरी, शत्रु, दुश्मन; विपरीत, उलटा, बरअक्स।

नक़ीब (نقیب) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो किसी राजा-महाराजा की सवारी के समय आगे आवाज़ लगाता चलता है, चोबदार; वह व्यक्ति जो दरबार के समय, बादशाह से भेंट के लिए जानेवाले का नाम ज़ोर से पुकारता है।

नकीरैन (نکیرین) अ. पुं.–वे दो फ़िरिश्ते जो मरनेवाले से क़ब्र में सवाल-जवाब करते हैं, मुन्कर नकीर।

नक़ीह (نقیہ) अ. वि.–निर्मल, बेमेल, शुद्ध, ख़ालिस।

नक़ूअ (نقوع) अ. पुं.–वह पानी जिसमें दवाएँ या मेवाजात भिगोये जायँ।

नक़्क़ाद (نقاد) अ. पुं.–खोटा-खरा परखनेवाला, पारखी; साहित्यिक गुण-दोष बतानेवाला, समालोचक।

नक़्क़ादानः (نقادانہ) अ. फा. अव्य.–नक़्क़ाद की तरह से, गुण-दोष परखने के दृष्टिकोण से।

नक़्क़ादी (نقادی) अ. स्त्री.–नक़्क़ाद का काम, समालोचना।

नक़्क़ारः (نقارہ) अ. पुं.–धौंसा, दुंदुभी, भेरी, नगाड़ा।

नक़्क़ारःज़न (نقارہ زن) अ. फा. पुं.–नक़्क़ारः बजानेवाला।

नक़्क़ारःनवाज़ (نقارہ نواز) अ. फा. पुं.–दे. 'नक़्क़ारःज़न'।

नक़्क़ारख़ानः (نقارخانہ) अ. फा. पुं.–वह स्थान जहाँ नक़्क़ारे बजते हैं।

नक़्क़ारची (نقارچی) अ. फा. पुं.–नौबत और नक़्क़ारा बजानेवाला; एक क़ौम जो शहनाई और नौबत बजाती है।

नक़्क़ाल (نقال) अ. पुं.–नक़्लें करनेवाला, भाँड़; रूप भरनेवाला, बहुरूपिया, अनुकर्ता।

नक़्क़ाली (نقالی) अ. स्त्री.–नक़्ल का काम—भाँड़ों का काम; बहुरूपिये का काम; तक़्लीद, अनुकरण।

नक़्क़ाश (نقاش) अ. पुं.–चित्र खींचनेवाला, चित्र में रंग भरनेवाला, चित्रकार, चितेरा, मुसव्विर।

नक़्क़ाशी (نقاشی) अ. स्त्री.–चित्र खींचना, तस्वीर बनाना।

नक़्क़ाशे अज़ल (نقاش ازل) अ. पुं.–जगत्स्रष्टा, सृष्टि की रचना करनेवाला, संसार बनानेवाला।

नक़्ज़ (نقض) अ. पुं.–तोड़ना, भंग करना।

नक़्ज़े अम्न (نقض امن) अ. पुं.–शांतिभंग करना, अम्न में खलल डालना, झगड़ा और बल्वा करना, शान्तिभंग।

नक़्द (نقد) अ. पुं.–सोने-चाँदी का सिक्का, रुपया-पैसा; उधार का उलटा, कैश; पूँजी, सरमाया।

नक़्दी (نقدی) अ. स्त्री.–नक़्द रुपया, धन-दौलत।

नक़्दीनः (نقدینہ) अ. फा. पुं.–नक़्द रुपया, नक़्दी।

नक़्दे जाँ (نقد جاں) अ. फा. पुं.–प्राणरूपी धन, प्राणधन।

नक़्दे दिल (نقد دل) अ. फा. पुं.–हृदयरूपी धन।

नक़्दोजिंस (نقدوجنس) अ. पुं.–नक़्द रुपया और सामान-अस्बाब आदि।

नक़्दोनिस्यः (نقدونسیہ) अ. पुं.–नक़्द और उधार, नक़्द का अर्थ है संसार के सुख जो इस समय उपलब्ध हैं, और निस्यः अर्थात् उधार का मतलब है वे सुख जो परलोक में मिलेंगे।

नक़्ब (نقب) अ. स्त्री.–सेंध, सिंदिल।

नक़्बज़न (نقب زن) अ. फा. पुं.–सेंध लगानेवाला, कुंभिल, खानिल, संधितस्कर।

नक़्बज़नी (نقب زنی) अ. फा. स्त्री.–सेंध करना, सेंध लगाकर चोरी करना, संधिभेद, अभिहार।

नक्बत (نکبت) अ. स्त्री.–दरिद्रता, निर्धनता, इफ़्लास, कंगाली।

नक़्ल (نقل) अ. पुं.–स्थानांतरण, एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, (स्त्री.) प्रतिलिपि, कापी; अनुकरण, तक़्लीद; आदर्श, नमूना; चुटकुला, लतीफ़ा; भाँड़ों का स्वाँग; कथा, कहानी।

नक़्ल नवीस (نقل نویس) अ. फा. पुं.–वह कर्मचारी जो सरकारी काग़ज़ों की नक़्लें देता है।

नक़्ली (نقلی) अ. वि.–कृत्रिम, बनावटी, मस्नूई; काल्पनिक, फ़र्ज़ी; मिथ्या, झूठ, कूट, जाली।

नक़्ले मकान (نقل مکان) अ. पुं.–एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, जगह बदलना, स्थानांतरण।

नक़्ले वतन (نقل وطن) अ. पुं.–अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जाकर रहना, स्वदेश-त्याग, प्रवास।

नक़्शः (نقشہ) अ. पुं.–आकृति, शक्ल; चेहरे की साख़्त, मुखाकृति; ढंग, शैली, तर्ज़; सज-धज, वज़ा क़ता; चेष्टा, हुलया; किसी देश आदि का चित्र, मानचित्र; दशा, हालत; साँचा, क़ालिब, "हाथ दिल पर, आह लब पर आँख से आँसू रवाँ; अब तो यह नक़्शा है तेरे आशिक़े नाशाद का।"–दाग़। रेखाचित्र, ख़ाक़ा; नमूना, आदर्श; छवि, छटा।

नक़्शःजात (نقشہ جات) अ. फा. पुं.–नक़्शा का बहु., नक़्शे।

नक़्शःनवीस (نقشہ نویس) अ. फा. पुं.–नक़्शा बनानेवाला; एक राजकर्मचारी जो गाँव या इमारतों के चित्र बनाता है।

नक़्श (نقش) अ. पुं.–चित्र, तस्वीर; अंकित, ख़ुदा हुआ; कवच, ता'वीज़; बेल-बूटे; उभरा हुआ चिह्न।

नक़्शाए हद्दोबस्त (نقشۂ حدوبست) अ. फा. पुं.–किसी गाँव की चौहद्दी और खेतों की नाप-तोल का नक़्शा।

नक़्श कल हजर (نقش کالحجر) अ. पुं.–पत्थर का चिह्न, पत्थर की लकीर, न मिटनेवाली चीज़।

नक़्शगर (نقش گر) अ. फा. पुं.–चित्रकार, नक़्क़ाश।

नक़्शतराज़ (نقش طراز) अ. फा. पुं.–दे. 'नक़्शगर'।

नक़्शपरदाज़ (نقش پرداز) अ. फा. पुं.–दे. 'नक़्शगर'।

नक़्शबंद (نقش بند) अ. फा. पुं.–चित्रकार, मुसव्विर; अंकित, लिखित; एक बुज़ुर्ग की उपाधि।

नक़्शबंदी (نقش بندی) अ. फा. स्त्री.–चित्रकारी, मुसव्विरी; ख्वाजः नक़्शबंद का अनुयायी।

नक़्श बदीवार (نقش بہ دیوار) अ. फा. पुं.–दीवार पर बनाया हुआ चित्र; दीवार के चित्र का प्रकार–निस्तब्ध, मौन और निश्चल।

नक़्श बर आब (نقش برآب) अ. फा. पुं.–पानी पर बनाया हुआ चित्र, अर्थात् नश्वर और भंगुर, अथवा असंभव, अशक्य।

नक़्श बरदीवार (نقش بردیوار) अ. फा. पुं.–दे. 'नक़्श बदीवार' भित्तिलिखित चित्र।

नक़्शी (نقشی) अ. फा. वि.–जिस पर नक़्श हो।

नक़्शे अव्वल (نقش اول) अ. पुं.–चित्रकार का बनाया हुआ सर्वप्रथम चित्र, जिसमें कुछ त्रुटियाँ अवश्य रहती हैं।

नक़्शे क़दम (نقش قدم) अ. पुं.–पाँव का निशान, पद-चिह्न।

नक़्शे ख़याली (نقش خیالی) अ. पुं.–काल्पनिक चित्र, फ़र्ज़ी तस्वीर; हवाई क़िले, फ़र्ज़ी मंसूबे।

नक़्शे जमाली (نقش جمالی) अ. पुं.—वह यंत्र जिसके भरने में कोई भय नहीं होता।

नक़्शे जलाली (نقش جلالی) अ. पुं.—वह यंत्र जिसे बनाने में प्राणों का भय होता है।

नक़्शे तस्ख़ीर (نقش تسخیر) अ. पुं.—वशीकरण यंत्र, वह तावीज़ जो किसी को मुग्ध करने के लिए, अपने वश में करने के लिए लिखा जाय।

नक़्शे पा (نقش پا) अ. फा. पुं.—दे. 'नक़्शे क़दम'।

नक़्शे बातिल (نقش باطل) अ. पुं.—वह ग़लत या अशुद्ध चित्र अथवा लेख जिसे मिटा दिया जाता है।

नक़्शे मुराद (نقش مراد) अ. फा. पुं.—वह यंत्र जो मनोरथ की पूर्ति के लिए होता है।

नक़्शे सानी (نقش ثانی) अ. पुं.—वह चित्र जो चित्रकार का दूसरा प्रयास होता है और जो पहले चित्र की अपेक्षा बहुत सुंदर और कलापूर्ण होता है।

नक़्शे सुवैदा (نقش سویدا) अ. पुं.—एक काला तिल जो हृदय पर होता है।

नक़्शे हुब (نقش حب) अ. पुं.—दे. 'नक़्शे तस्ख़ीर'।

नक़्शोनिगार (نقش ونگار) अ. फा. पुं.—बेल-बूटे, फूल-पत्ती।

नक़्स (نقص) अ. पुं.—त्रुटि, भूल; न्यूनता, कमी; दोष, ऐब; अशुद्धि, ग़लती; नुक़्स भी प्रचलित।

नक़्हत (نکہت) अ. स्त्री.—सुगंध, ख़ुशबू, महक, निक्हत भी प्रचलित है—"है तेरे पैरहने पाक की हसरत उसको, वर्ना क्यों नक्हते गुल जामे से बाहर होती।"—अमीर।

नख़ (نخ) फा. स्त्री.—रेशम की डोर; कच्चा रेशम; पतंग लड़ाने की डोर।

नख़ाअ (نخاع) अ. पुं.—हराम मग़्ज़, रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड।

नख़ील (نخیل) अ. पुं.—खजूर का एक पेड़; खजूर के बहुत से पेड़।

नख़ुद (نخود) फा. पुं.—चना, चणक, एक प्रसिद्ध अन्न।

नख़्ख़ास (نخاس) अ. पुं.—वह बाज़ार जिसमें दासों की खरीद-फ़रोख़्त होती थी; घोड़ों और मवेशियों का बाज़ार।

नख़्चीर (نخچیر) फा. पुं.—आखेट, शिकार; मारा हुआ शिकार, शिकार किया हुआ जानवर।

नख़्ल (نخل) अ. पुं.—खजूर का पेड़; कोई पेड़, वृक्ष, द्रुम, विटप।

नख़्लबंद (نخل بند) अ. फा. पुं.—माली, बाग़बान।

नख़्लबंदी (نخل بندی) अ. फा. स्त्री.—पेड़ लगाना, बाग़ को सजाना।

नख़्लिस्तान (نخلستان) अ. फा. पुं.—रेगिस्तानी इलाक़े में वह हरा-भरा टुकड़ा जहाँ खजूरों के दरख़्त हों।

नख़्ले ताबूत (نخل تابوت) अ. पुं.—ईरान में शव को ले जाते समय उसे सजाते थे, यह सजावट नख़्ले ताबूत कहलाती थी।

नख़्ले तूर (نخل طور) अ. पुं.—वह पेड़ जिस पर हज़रत मूसा को ईश्वर का प्रकाश दिखायी पड़ा था।

नख़्ले मर्यम (نخل مریم) अ. पुं.—खजूर का वह सूखा पेड़ जिसके नीचे हज़रत मर्यम प्रसव-कष्ट से दुःखित होकर बैठ गयी थीं और वह पेड़ हरा-भरा हो गया था।

नख़्ले मातम (نخل ماتم) अ. फा. पुं.—दे. 'नख़्ले ताबूत'।

नख़्वत (نخوت) अ. स्त्री.—दे. शुद्ध शब्द 'निख़्वत'।

नख़्शब (نخشب) फा. पुं.—तुर्किस्तान का एक नगर जहाँ से हकीम इब्नेअता (मुक़न्ना) ने एक चाँद निकाला था जो १२ मील रोशनी फेंकता था।

नख़्स (نخس) अ. पुं.—चुभाना, कोंचना।

नग (نگ) फा. पुं.—'नगीनः' का लघु., दे. 'नगीनः'।

नग़म (نغم) अ. पुं.—'नग़्मः' का बहु., नग़्मे, गाने।

नगीं (نگیں) फा. पुं.—दे. 'नगीनः'; अगूंठी का वह नग जिस पर नाम आदि खुदा रहता है।

नगीनः (نگینہ) फा. पुं.—नग, रत्न, अँगूठी पर जड़ा जानेवाला पत्थर।

नगीनःगर (نگینہ گر) फा. पं—दे. 'नगीनःसाज़'।

नगीनःसाज़ (نگینہ ساز) फा. पुं.—अँगूठी पर नगीना जड़नेवाला।

नग़्ज़ (نغز) फा. वि.—उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा; अद्‌भुत, विचित्र, अजीब; प्रहेलिका, पहेली।

नग़्ज़क (نغزک) फा. वि.—श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा; सुंदर' ख़ुशनुमा, (पुं.) आम, आम्र, एक प्रसिद्ध फल।

नग़्ज़गो (نغزگو) फा. वि.—अच्छी कविता करनेवाला।

नग़्मः (نغمہ) अ. पुं.—सुरीली आवाज़; गीत, गान।

नग़्मःज़न (نغمہ زن) अ.फा. वि.—अच्छी आवाज़ से गानेवाला।

नग़्मःतराज़ (نغمہ طراز) अ. फा. वि.—दे. 'नग़्मःज़न'।

नग़्मःरेज़ (نغمہ ریز) अ. फा. वि.—दे. 'नग़्मःज़न'।

नग़्मःसंज (نغمہ سنج) अ. फा. वि.—दे. 'नग़्मःज़न'।

नग़्मःसरा (نغمہ سرا) अ. फा. वि.—दे. 'नग़्मःज़न'।

नग़्मात (نغمات) अ. पुं.—'नग़्मः' का बहु., नग़्मे, गाने।

नज़ंद (نژند) फा. वि.—अधोमुख, औंधा; अधम, नीच; कुपित, ग़ुस्से में भरा हुआ।

नजफ़ (نجف) अ. पुं.—अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ हज़रत अली का मज़ार है।

नज़र (نظر) अ. स्त्री.—दृष्टि, निगाह; विचार, ग़ौर; ध्यान, खयाल; जाँच, परख; कुदृष्टि, बुरी नज़र जिससे विशेषकर बच्चों को हानि पहुँचती है।

नजरअंदाज (نظرانداز) अ. फा. वि.–जिस पर ध्यान न दिया गया हो, उपेक्षित।

नजरतंग (نظرتنگ) अ. फा. वि.–संकुचितदृष्टि, अनुदार, तंगख़याल।

नजरनवाज (نظرنواز) अ. फा. वि.–आँखों को आनंद देनेवाली चीज़, नेत्रप्रिय।

नजरफ़रेब (نظرفریب) अ. फा. वि.–आँखों को लुभानेवाला, शुभदर्शन।

नजरबंद (نظربند) अ. फा. वि.–वह व्यक्ति जो राजादेश से किसी एक स्थान पर खुले तौर पर रहे, परंतु न तो कहीं आ-जा सके और न किसी से मिल सके।

नजरबंदी (نظربندی) अ. फा. स्त्री.–ऐसी क़ैद जिसमें ज़ाहिरा आज़ादी हो, परन्तु आदमी कहीं जा न सके और न किसी से मिल सके; जादू का खेल, दृष्टिबंध।

नजरबाज (نظرباز) अ. फा. वि.–ताड़नेवाला, पारखी; आँखें लड़ानेवाला, ताक-झाँक करनेवाला।

नजरबाजी (نظربازی) अ. फा. स्त्री.–परख, जाँच, अच्छे-बुरे की तमीज़; आँख लड़ाना, घूरना, ताक-झाँक करना।

नजरी (نظری) अ. वि.–सरसरी, जो तवज्जुह के क़ाबिल न हो।

नजरीयः (نظریہ) अ. पुं.–दृष्टिकोण, नुक़्तए नज़र।

नजरीयात (نظریات) अ. पुं.–'नज़रीयः' का बहु., नज़रीए, कई दृष्टिकोण।

नजरे ग़लत अंदाज (نظر غلط انداز) अ. फा. स्त्री.–ऐसी दृष्टि जो हर व्यक्ति अपनी तरफ़ समझे, भ्रम में डालनेवाली दृष्टि।

नजरे सानी (نظر ثانی) अ. स्त्री.–किसी तै शुदा विषय पर पुनः विचार।

नजाइर (نظائر) अ. पुं.–'नज़ीर' का बहु., नज़ीरें।

नजाकत (نزاکت) फा. स्त्री.–मृदुलता, सुकुमारता, कोमलता; सूक्ष्मता, बारीकी; क्षीणता, लाग़री; नाज़ुकमिज़ाजी।

नजात (نجات) अ. स्त्री.–छुटकारा, बंधन-मुक्ति, गुलूख़लासी; भारमुक्ति, किसी बोझ से छुटकारा; मोक्ष, बख़्शिश्।

नजातदिहंदः (نجات دہندہ) अ.फा. वि.–छुटकारा दिलानेवाला; मोक्ष देनेवाला।

नजाद (نژاد) फा. स्त्री.– कुल, वंश, खानदान।

नजाफ़त (نظافت) अ. स्त्री.–पवित्रता, निर्मलता, पाकीज़गी।

नजाबत (نجابت) अ. स्त्री.–कुलीनता, शराफ़त।

नजारः (نظارہ) अ. पुं.–दे. 'नज़्ज़ारः'।

नजार (نزار) फा. वि.–क्षीण, दुर्बल, लाग़र, कमज़ोर।

नजारत (نضارت) अ. स्त्री.–हराभरापन, ताज़गी।

नजारत (نظارت) अ. स्त्री.–निरीक्षण, निगरानी; नाज़िर का पद; नाज़िर का दफ़्तर।

नजाशी (نجاشی) अ. पुं.–हब्श (एबीसीनिया) का नरेश, जिसने मुहम्मद साहब के ज़माने में मुसलमानों को अपने देश में पनाह दी थी।

नजासत (نجاست) अ.स्त्री.–अपवित्रता, नापाकी; विष्ठा, ग़िलाज़त।

नजाह (نجاح) अ. स्त्री.–बंधन-मुक्ति, छुटकारा; समृद्धि, ख़ुशहाली; इच्छापूर्ति, हाजत रवाई।

नजिस (نجس) अ. वि.–अपवित्र, अशुद्ध, गंदा; मल-दूषित, ग़लीज़।

नजिसुलऐन (نجس العین) अ. वि.–वह चीज़ जो सिर से पाँव तक नापाक हो, जिसका छूना भी वर्जित हो।

नजीफ़ (نظیف) अ. वि.–पवित्र, शुद्ध, पाक।

नजीब (نجیب) अ.वि.–कुलीन, शुद्ध रक्तवाला, जिसके ख़ानदान में मेल न हो।

नजीबुत्तरफ़ैन (نجیب الطرفین) अ. वि.–माता और पिता दोनों ओर से कुलीन।

नजील (نزیل) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो किसी सराय या धर्मशाला में मुसाफ़िर के रूप में उतरे; अतिथि, मेहमान।

नजीर (نذیر) अ. वि.–डरानेवाला; पैगंबर साहब की उपाधि।

नजीर (نظیر) अ. स्त्री.–सदृश, समान, मिस्ल; उदाहरण, दृष्टांत, मिसाल; हाईकोर्ट या प्रीवी कौंसिल का फ़ैसला, जो किसी मुकदमे में दावे की पुष्टि के लिए पेश किया जाय।

नज़्अ (نزع) अ. स्त्री.–प्राणों का अंत, दम टूटना, चंद्रा, जांकनी।

नजाए रवाँ (نزع رواں) अ. फा. स्त्री.–चंद्रा, जांकनी।

नज्जारः (نظارہ) अ. पुं.–दर्शन, दीदार; सैर, दृश्य, तमाशा।

नज्जारःगाह (نظارہ گاہ) अ. फा. स्त्री.–सैरगाह, विनोदस्थल।

नज्जारःपसंद (نظارہ پسند) अ. फा. वि.–जिसे नज़्ज़ारःबाज़ी पसंद हो, जो अच्छे-अच्छे दृश्य देखने का शौक़ीन हो।

नज्जारःफ़रेब (نظارہ فریب) अ. फा. वि.–निगाहों को लुभानेवाला।

नज्जरःबाज (نظارہ باز) अ. फा. वि.–नज़्ज़ारः देखने का शौक़ीन; ताकाझाँकी और घूराघारी करनेवाला।

नज्जारःबाजी (نظارہ بازی) अ. फा. स्त्री.– घूराघारी, ताकाझाँकी, आँखें लड़ाना, आँखें सेंकना।

नज्जारःसंज (نظارہ سنج) अ.फा. वि.–दे. 'नज़्ज़ारःपसंद'।

नज्जार (نجار) अ. पुं.–बढ़ई, काष्ठ-शिल्पी, तक्षक।

नज़्ज़ारए जमाल (نظارۂ جمال) अ. पुं. अच्छी सूरतों के दर्शन।

नज़्ज़ारगी (نظارگی) अ. फा. स्त्री.–नज़्ज़ारःबाज़ी; दृष्टि, नज़र।

नज्जारी (نجاری) अ. स्त्री.–बढ़ई का काम, बढ़ई का पेशा।

नज्द (نجد) अ. पुं.–ऊँची भूमि, टीला; अरब का एक प्रदेश जहाँ से 'वहाबियः' संप्रदाय का जन्म हुआ।

नज़्द (نزد) फा. वि.–'नज़्दीक' का लघु., दे. 'नज़्दीक' और दे. 'निज़्द', दोनों रूप शुद्ध हैं।

नज़्दीक (نزدیک) फा. वि.–समीप, निकट, क़रीब, (अव्य.) राय में, ख़याल में।

नज़्दीकबीं (نزدیک بیں) फा. वि.–'दूरबीं' का उलटा, जो केवल अपने आसपास देखे, दूर तक दृष्टि न डाले।

नज़्दीकी (نزدیکی) फा. स्त्री.–समीपता, निकटता, क़ुर्बत।

नज्म (نجم) अ. पुं.–तारा, उडु, सितारा।

नज़्म (نظم) अ. स्त्री.– पद्य, काव्य, शाइरी, (पुं.) प्रबंध, व्यवस्था, इंतिज़ाम; क्रम, तर्तीब; संघटन, तंज़ीम।

नज़्मगुस्तर (نظم گستر) अ. फा. वि.–काव्यकार, शाइर।

नज़्मगो (نظم گو) अ. फा. वि.–ऐसा शाइर जो शाइरी की तमाम क़िस्मों में से केवल नज़्म (ग़ज़ल-शैली के प्रतिकूल एक ही विषय पर की जानेवाली शाइरी) कहता हो।

नज़्मसंज (نظم سنج) अ. फा. वि.–दे. 'नज़्मगुस्तर'।

नंज्मुस्साक़िब (نجم الثاقب) अ. पुं.–टूटनेवाला तारा, उल्का।

नज्मे साक़िब (نجم ثاقب) अ. पुं.–उल्का, टूटनेवाला तारा।

नज़्मोनसक़ (نظم و نسق) अ. पुं.–प्रबंध, बंदोबस्त।

नज़्मोनस्र (نظم و نثر) अ. स्त्री.–गद्य और पद्य।

नज़्र (نذر) अ. स्त्री.–उपहार, भेंट, तोहफ़ा; चढ़ावा, मन्नत; नियाज़, फ़ातहा; प्रदान, देना।

नज़्रानः (نذرانہ) अ. फा. पुं.–उपहार, उपायन, तोहफ़ा; दक्षिणा, पुरोहित या गुरु आदि को भेंट।

नज़्रे अक़ीदत (نذر عقیدت) अ. स्त्री.–ऐसी भेंट जो भक्ति या श्रद्धा ज़ाहिर करने के लिए दी जाय।

नज़्लः (نزلہ) अ. पुं.–ज़ुकाम की एक दशा जिसमें बलग़म निकलता है।

नज्वा (نجویٰ) अ. स्त्री.–काना-फूँसी, कान से मुँह लगाकर चुपके-चुपके बातें करना।

नताइज (نتائج) अ. पुं.–'नतीजः' का बहु., नतीजे।

नतीजः (نتیجہ) अ. पुं.–परिणाम, फल, अंजाम; परीक्षाफल, जाँच का फल; अंत, आख़ीर; इच्छा, ग़रज़।

नतीजःख़ेज़ (نتیجہ خیز) अ. फा. वि.–जिससे अच्छा नतीजा निकले, सारगर्भ।

नतीजए इम्तिहान (نتیجۂ امتحان) अ. पुं.–पढ़ाई की जाँच का नतीजा, परीक्षाफल।

नतीजतन (نتیجتاً) अ. अव्य.–नतीजे में, फलस्वरूप, फलतः।

नतीन (نتین) अ. वि.–दुर्गन्धयुक्त, वदवूदार।

नतूल (نطول) अ. पुं.–वह पानी जिसमें दवाएँ औटायी गयी हों, और जिससे शरीर के किसी अंग पर धार दी जाय।

नत्न (نتن) अ. पुं.–दुर्गंध, वदवू।

नदम (ندم) अ. पुं.–नदामत, लज्जा, व्रीडा।

नदामत (ندامت) अ. स्त्री.–लज्जा, लाज, हया; पश्चात्ताप, पछतावा।

नदामतज़दः (ندامت زدہ) अ. फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदः; जिसे अपने किये पर पछतावा हो, पश्चात्तापी।

नदारद (ندارد) फा. वि.–विहीन, लुप्त, रिक्त, ग़ाइब, ख़ाली।

नदीदः (ندیدہ) फा. वि.–जिसे देखा न हो; मरभुक्खा, जो हर एक के खाने पर नज़र रखे; अत्यंत लोभी।

नदीद (ندید) अ. वि.–समान, तुल्य।

नदीम (ندیم) अ. पुं.–पार्श्ववर्ती, सखा, पास बैठनेवाला।

नद्दाफ़ (نداف) अ. पुं.–रुई धुनकनेवाला, धुनिया, तूलकार।

नद्दाफ़ी (ندافی) अ. स्त्री.–रुई धुनकने और कपड़ों में भरने का काम, तूलकर्म, धुनियापन।

नद्मान (ندمان) अ. वि.–लज्जित, संकुचित, ख़जिल।

नद्वः (ندوہ) अ. पुं.–सभास्थान, लोगों के बैठकर विचार-विनिमय करने का स्थान, परामर्श-गृह।

नफ़क़ः (نفقہ) अ. पुं.–बीबी-बच्चों का रोटी-कपड़ा।

नफ़र (نفر) अ. पुं.–व्यक्ति, शख़्स; नौकर, दास; मज़्दूर, श्रमिक।

नफ़स (نفس) अ. पुं.–श्वास, साँस, दम; क्षण, पल, लम्हा।

नफ़सशुमारी (نفس شماری) अ. फा. स्त्री.–आख़िरी साँसें जब मौत की घड़ियाँ गिनी जाती हैं।

नफ़से बाज़पसीं (نفس بازپسیں) अ. फा. पुं.–दे. 'नफ़से वापसीं'।

नफ़से वापसीं (نفس واپسیں) अ. फा. पुं.–आख़िरी साँस, जिस साँस के बाद जीवन समाप्त हो जाता है।

नफ़्हः (نفحہ) अ. पुं.–सुगंध, ख़ुशबू।

नफ़्हात (نفحات) अ. स्त्री.–ख़ुशबूएँ, सुगंध।

नफ़ाइस (نفائس) अ. पुं.–'नफ़ीस' का बहु., बढ़िया और बहुमूल्य वस्तुएँ।

नफ़ाज़ (نفاذ) अ. पुं.–नाफ़िज़ होना, जारी होना।

नफ़ासत (نفاست) अ. स्त्री.–स्वच्छता, निर्मलता, सफ़ाई; मृदुलता, कोमलता, लताफ़त; सूक्ष्मता, गूढ़ता, नज़ाकत।

नफ़ासतपसंद (نفاست پسند) अ. फा. वि.–स्वयं साफ़-सुथरा रहने और सब चीजों में सफ़ाई और आरास्तगी पसंद करनेवाला।

नफ़ासतपसंदी (نفاست پسندی) अ. फा. स्त्री.–ख़ुद साफ़ रहना और हर चीज़ को साफ़ देखने का शौक़।

नफ़ासते तब्अ (نفاست طبع) अ. स्त्री.–स्वभाव की स्वच्छता और मृदुलता।

नफ़ी (نفی) अ. स्त्री.–अस्वीकृति, नामंज़ूरी।

नफ़ीर (نفیر) अ. स्त्री.–वह स्वर जो सोने की अवस्था में निकलता है; स्वर, आवाज़; नफ़ीरी।

नफ़ीरची (نفیرچی) अ. फा. पुं.–नफ़ीरी और शहनाई वजानेवाला।

नफ़ीरी (نفیری) अ. फा. स्त्री.– शहनाई।

नफ़ीस (نفیس) अ. वि.–उत्तम, वढ़िया, उम्दा; स्वच्छ, निर्मल, साफ़; कोमल, मृदुल, लतीफ़।

नफ़ूख़ (نفوخ) अ. पुं.–वह सूखी हुई दवाओं का चूर्ण जो नाक में फूँका जाता है, हुलास, सुँघनी।

नफ़ूर (نفور) अ. वि.–नफ़रत करनेवाला, घृणी।

नफ़्अ (نفع) अ. पुं.–लाभ; प्राप्ति, फ़ाइदा; फल, परिणाम, नतीजा; ब्याज, सूद।

नफ़्अअंदोज़ी (نفع اندوزی) अ. फा. स्त्री.–लाभ कमाना, नफ़ा उठाना।

नफ़्अरसाँ (نفع رساں) अ. फा. वि.–फ़ाइदा पहुँचानेवाला, लाभदायक।

नफ़्अरसानी (نفع رسانی) अ. फा. स्त्री.–फ़ाइदा पहुँचाना, लाभकारिता, उपादेयता।

नफ़्ए ज़ाती (نفع ذاتی) अ. पुं.–निजी लाभ, केवल व्यक्तिगत फ़ाइदा।

नफ़्ख़ (نفخ) अ. पुं.–फूँकना; फूलना, विशेषतः पेट फूलना।

नफ़्ख़े शिकम (نفخ شکم) अ. पुं.–पेट का फूलना, अफार।

नफ़्ख़े सूर (نفخ صور) अ. पुं.–हज़रत इस्राफ़ील का क़ियामत के दिन संसार को विध्वंस करने के लिए सूर (तुरही) फूँकना।

नफ़्त (نفت) फा. पुं.–मिट्टी का तेल; उड़नेवाला माद्दः; वारूद, दे. 'निफ़्त', दोनों शुद्ध हैं।

नफ़्फ़ाख़ (نفاخ) अ. वि.–अफार पैदा करनेवाला आहार, वादी चीज़ें।

नफ़्फ़ाख़ी (نفاخی) अ. स्त्री.–अफार पैदा करना।

नफ़्रत (نفرت) अ. स्त्री.–घृणा, घिन, कराहत; परहेज़, बचाव।

नफ़्रतअंगेज़ (نفرت انگیز) अ.फा. वि.–घिन पैदा करनेवाला।

नफ़्रतज़दः (نفرت زدہ) अ. फा. वि.–वह व्यक्ति जिससे घृणा की जाय, घृणित।

नफ़्रीं (نفریں) फा. स्त्री.–धिक्कार, फटकार, ला'नत-मलामत, दे. 'निफ़्री', शुद्ध रूप वही है परंतु उर्दू में 'नफ़्रीं' है।

नफ़्ल (نفل) अ. उभ.–वह नमाज़ जिसके पढ़ने का हुक्म न हो, मगर सवाब के लिए पढ़ी जाय।

नफ़्स (نفس) अ. पुं.–अस्तित्व, वुजूद; सत्यता, सच्चाई; काम-वासना, शह्वत; सार, खुलासा; लिंग, शिश्न, आलत; प्राणवायु, रूह।

नफ़्सकुश (نفس کش) अ. फ़ा. वि.–काम-वासनाओं को दमन करनेवाला, इंद्रियजित, इंद्रियनिग्रही, ज़ाहिद, पारसा।

नफ़्सकुशी (نفس کشی) अ. फ़ा. स्त्री.–भोग-विलास की इच्छा का दमन, इंद्रिय-दमन, ज़ुह्द, पारसाई।

नफ़्सपरस्त (نفس پرست) अ. फा. वि.–विषय-लोलुप, वासनाओं का रसिया, शह्वतपरस्त, ऐयाश।

नफ़्सपरस्ती (نفس پرستی) अ. फा. स्त्री.–ऐयाशी, काम-लोलुपता, विषय-लंपटता।

नफ़्सपर्वर (نفس پرور) अ. फा. वि.–दे. 'नफ़्सपरस्त'।

नफ़्सानियत (نفسانیت) अ. स्त्री.–अभिमान, अहंवाद, ग़ुरूर; स्वार्थपरायणता, ख़ुदग़रज़ी।

नफ़्सानी (نفسانی) अ. वि.–कामवासना से सम्बन्ध रखनेवाली चीज़ें।

नफ़्सी नफ़्सी (نفسی نفسی) अ. अव्य.–आपाधापी, अपनी-अपनी, जहाँ हर व्यक्ति को केवल अपनी फ़िक्र हो वहाँ बोलते हैं।

नफ़्सीयात (نفسیات) अ. स्त्री.–मनोविज्ञान।

नफ़्सुलअम्र (نفس الامر) अ. पुं.–सच्ची बात, असली हक़ीक़त, यथार्थता।

नफ़्से अम्मारः (نفس امارہ) अ. पुं.–वह मानसिक शक्ति जो बुरे कामों की ओर प्रवृत्त करती है।

नफ़्से नातिक़ः (نفس ناطقہ) अ. पुं.–मुख्यार्थ, प्राणवायु, रूह; वह व्यक्ति जो किसी की नाक का बाल हो।

नफ़्से मत्लब (نفس مطلب) अ. पुं.–अस्ल मत्लव, मुख्यार्थ; उद्देश, आशय, मक़्सद।

नफ़्से मुत्मइन्नः (نفس مطمئنہ) अ. पुं.–वह मनोवृत्ति जो आत्मा में संतोष उत्पन्न करती है।

नफ़्से लव्वामः (نفس لوامہ) अ. पुं.–वह मनोवृत्ति जो बुरे कामों पर घृणा प्रकट करती है, जिससे मनुष्य पछताता है।

नफ़्हः (نفحہ) अ. पुं.—सुगंध, अच्छी महक, ख़ुशबू।

नबर्दः (نبردہ) फा. पुं.—शूर-वीर, बहादुर।

नबर्द (نبرد) फा. स्त्री.—युद्ध, लड़ाई, जंग।

नबर्दआज़्मा (نبرد آزما) फा. वि.—युद्ध-कुशल, रणशूर, जंग आज़मूदः।

नबर्दआज़्माई (نبرد آزمائی) फा. स्त्री.—युद्ध, लड़ाई।

नबर्दआज़्मूदः (نبرد آزمود) फा. वि.—जिसे लड़ाई का काफी अनुभव हो, युद्धानुभवी।

नबर्दगाह (نبردگاہ) फा. स्त्री.—मैदाने जंग, रणक्षेत्र, समरांगण, रंगभूमि, युद्धस्थल।

नबर्दपेशः (نبردپیشہ) फा. वि.—जिसका काम ही लड़ना और मरना-मारना हो, रणशूर।

नबवी (نبوی) अ. वि.—नबी से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु।

नबात (نبات) फा. स्त्री.—मिश्री, खंड-शर्करा।

नबात (نبات) अ. स्त्री.—ज़मीन से उगनेवाली सब्ज़ी और पेड़-पौदे।

नबातात (نباتات) अ. स्त्री.—ज़मीन से उगनेवाली चीज़ें, उद्भिज्ज।

नबाती (نباتی) अ. वि.—नबातात का, नबाताती।

नबातीयात (نباتیات) अ. स्त्री.—उद्भिज्ज-विज्ञान, नबातात का इल्म, वृक्षायुर्वेद।

नबिश्तः (نبشتہ) फा. वि.—लिखा हुआ, अंकित, नविश्तः।

नबी (نبی) अ. पुं.—ईशदूत, अवतार, पैग़म्बर।

नबीज़ (نبیذ) अ. स्त्री.—जौ या खजूर की मदिरा।

नबीद (نبید) फा. स्त्री.—दे. 'नबीज़'।

नबीरः (نبیرہ) फा. पुं.—बेटे का बेटा, पोता, पौत्र।

नबीसः (نبیسہ) फा. पुं.—बेटी का बेटा, दौहित्र, नवासा।

नबील (نبیل) अ. वि.—श्रेष्ठ, महान्, अज़ीम; बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद; उत्तम, उम्दा; स्थूल, मेदुर, मोटा-ताज़ा।

नब्ज़ (نبض) अ. स्त्री.—नाड़ी, शिरा; रोग निदान के लिए देखी जानेवाली नाड़ी।

नब्ज़शनास (نبض شناس) अ. फा. वि.—नब्ज़ पहचाननेवाला, हकीम, वैद्य, डाक़्टर।

नब्बाज़ (نباض) अ. वि.—नाड़ी पहचानने में बहुत बड़ा निपुण।

नब्बाज़ी (نباضی) अ. स्त्री.—नब्ज़ की अच्छी पहचान।

नब्बाश (نباش) अ. पुं.—क़ब्र खोदकर कफ़न चुरानेवाला, कफ़नचोर।

नब्बाशी (نباشی) अ. स्त्री.—क़ब्र खोदकर कफ़न उतारना।

नब्श (نبش) अ. पुं.—क़ब्र खोदना, क़ब्र खोदकर मुर्दे का कफ़न उतारना।

नब्शे क़ुबूर (نبش قبور) अ. पुं.—क़ब्रें खोदकर, कफ़न चुराना।

नम (نم)—फा. पुं.—आर्द्र, गीला, तर; आर्द्रता, तरी, नमी।

नमआलूद (نم آلود) फा. वि.—आर्द्र, तर, गीला।

नमक (نمک) फा. पुं.—लवण, लोन, मिल्ह; लावण्य, मलाहत; काव्य-सौन्दर्य, हुस्ने कलाम।

नमकअफ़्शाँ (نمک افشاں) फा. वि.—नमक छिड़कनेवाला (ज़ख़्म पर)।

नमकअफ़्शानी (نمک افشانی) फा. स्त्री.—ज़ख़्म पर नमक छिड़कना।

नमकआलूदः (نمک آلودہ) फा. वि.—वह चीज़ जिसमें नमक लगाया गया हो।

नमककोर (نمک کور) फा. वि.—नमकहराम, विश्वासघाती, कृतघ्न, मुहसिनकुश।

नमकख़ुर्दः (نمک خوردہ) फा. वि.—दे. 'नमकख़्वार'।

नमकख़्वार (نمک خوار) फा. वि.—जिसने नमक खाया हो—नमकहलाल, स्वामिभक्त; नौकर, मुलाज़िम।

नमकचशी (نمک چشی) फा. स्त्री.—खाने का स्वाद मालूम करने के लिए खाने का नमक चखना; पहले पहल बच्चे को नमक चटाने की रस्म, अन्नप्राशन; स्वाद, मज़ा।

नमकज़ार (نمک زار) फा. पुं.—'नमकसार'।

नमकदान (نمکدان) फा. पुं.—नमक रखने का बर्तन।

नमकपर्वर (نمک پرور) फ़ा. वि.—नमक लगाया हुआ।

नमकपर्वर्दः (نمک پروردہ) फ़ा. वि.—नमकख़्वार, नमक के पाले हुए, स्वामिभक्त, वफ़ादार; सेवक, नौकर।

नमकपाश (نمک پاش) फा. वि.—घाव पर नमक छिड़कनेवाला, कष्ट देनेवाला, व्यंग करनेवाला,—"तुम्हारा नाज़ नमकपाश बरक़रार रहे, हमारे ज़ख़्म को अब हाजतेरफ़ू क्या है?"

नमकपाशी (نمک پاشی) फा. स्त्री.—व्यंग और कटाक्ष करना, घाव पर नमक छिड़कना, दुःख देना।

नमकसार (نمکسار) फा. पुं.—नमक की खान, लवणाकर।

नमकहराम (نمک حرام) फा. अ. वि.—कृतघ्न, स्वामिघ्न, मुहसिनकुश, विश्वासघाती।

नमकहलाल (نمک حلال) फा. अ. वि.—कृतज्ञ, स्वामिभक्त, हक़शनास।

नमकीं (نمکیں) फा. वि.—नमक मिला हुआ; लावण्यमय, मलीह।

नमकीनः (نمکینہ) फा. पुं.—दही में नमक-मिर्च मिलाकर बना हुआ खाद्य-विशेष, रायता।

नमकीनी (نمکینی) फा. स्त्री.—साँवलापन, सलोनापन, मलाहत; सौन्दर्य, हुस्न।

नमख़ुर्दः (نمخوردہ) फा. वि.–जिसमें सीलन पहुँच गयी हो, सीड़ा हुआ।

नमगीरः (نمگیرہ) फा. पुं.–एक छोटा शामियाना जो ओस से बचने के लिए होता है; शामियाना, वितान।

नमत (نمط) अ. पुं.–प्रकार, क़िस्म।

नमद (نمد) फा. पुं.–ऊन या पश्म का मोटा बिस्तर, मुलाइम बालों का बिस्तर या गद्दा, नम्दा।

नमदज़ीं (نمدزیں) फ़ा. पुं.–वह नम्दा जो ज़ीन के नीचे घोड़े की पीठ पर डालते हैं।

नमदपोश (نمدپوش) फा. वि.–मोटे कम्मल का लिवास पहननेवाला, कम्मलपोश।

नमदीदः (نمدیدہ) फा. वि.–दे. 'नमख़ुर्दः'।

नमनाक (نمناک) फा. वि.–गीला, तर, आर्द्र।

नमरसीदः (نمرسیدہ) फा. वि.–जिसे सीलन पहुँच गयी हो, नमख़ुर्दः।

नमा (نما) फा. पुं.–विकास, उपज, बढ़ोतरी, यह शब्द अकेला नहीं आता, 'नशवोनमा' बोला जाता है।

नमाज़ (نماز) अ. स्त्री.–मुसलमानों की ईश्वर-प्रार्थना, जो पाँच वक़्त होती है और जिसमें ४२ रक्अत नमाज़ पढ़ी जाती है, एक रक्अत एक बार खड़े होकर बैठने तक की होती है, जिसमें दो सज्दे और एक रुकूअ होता है।

नमाज़गुज़ार (نمازگزار) अ. फा. वि.–पाबंदी से नमाज़ पढ़नेवाला, दीनदार, धर्मनिष्ठ।

नमाज़ी (نمازی) अ.वि.–नमाज़ का पाबंद, नमाज़ पढ़नेवाला।

नमाज़े ईद (نمازِ عید) अ. स्त्री.–ईद की नमाज़ जो दो रक्अत होती है।

नमाज़े क़ज़ा (نماز قضا) अ. स्त्री.–वह नमाज़ जो उसके नियत समय पर न पढ़ी जाकर बाद में पढ़ी जाय।

नमाज़े क़स्र (نماز قصر) अ. स्त्री.–वह नमाज़ जो यात्रा की दशा में पढ़ी जाय, उसमें फ़र्ज़ नमाज़ आधी पढ़ी जाती है और बाक़ी नमाज़ें नहीं पढ़ी जातीं।

नमाज़े जनाज़ः (نماز جنازہ) अ. स्त्री.–वह नमाज़ जो मुसलमानों के जनाज़े पर मृतक की आत्मा की शान्ति के लिए पढ़ी जाती है।

नमिर (نمر) अ. पुं.–व्याघ्र, बाघ, तेंदुआ।

नमी (نمی) फा. स्त्री.–आर्द्रता, तरी; सीड़न, सील।

नमीक़ः (نمیقہ) अ. पुं.–पत्र, चिट्ठी।

नमीम (نمیم) अ. पुं.–पिशुन, चुग़ुलख़ोर।

नमू (نمو) अ. पुं.–दे. शुद्ध रूप 'नुमू'।

नमूनः (نمونہ) फा. पुं.–वानगी; आदर्श, मिसाल; ढब, ढंग, तर्ज़; प्रकार, क़िस्म।

नम्माम (نمام) अ. पुं.–बहुत अधिक चुग़ली खानेवाला, पिशुन।

नम्मामी (نمامی) अ. स्त्री.–पिशनुता, चुग़लख़ोरी।

नम्लः (نملہ) अ. पुं.–च्यूँटी, एक च्यूँटी।

नम्ल (نمل) अ. पुं.–पिपीलिका, च्यूँटी।

नम्ली (نملی) अ. वि.–नाड़ी-गति का एक प्रकार जिसमें उसकी चाल च्यूँटी-जैसी मंद हो जाती है।

नय (نے) फा. स्त्री.–नरकट, नरसल; बाँसुरी, वंशी।

नयचः (نیچہ) फा. पुं.–हुक्के की निगाली।

नयनवाज़ (نے نواز) फा. वि.–वंशी बजानेवाला, मुरलीधर।

नयसाज़ (نےساز) फा. वि.–बाँसुरी बनानेवाला, वंशीकार।

नयस्ताँ (نیستاں) फा. पुं.–नरकट का जंगल; वन, जंगल।

नयस्तानी (نیستانی) फा. वि.–जंगली, वन्य।

नय्यिर (نیر) अ. पुं.–सूर्य, सूरज।

नरः (نرہ) फा. पुं.–शाखा, टहनी; लिंग, शिश्न; दूषित, निकृष्ट; नर, पुरुष प्राणी।

नरःदेव (نرہدیو) फा. पुं.–भयानक राक्षस, विकट मूर्ति।

नर (نر) फा. पुं.–मादा का उलटा, पुरुष प्राणी।

नरमेश (نرمیش) फा. पुं.–मेंढा, नर भेड़।

नरी (نری) फा. स्त्री.–नरपन।

नरीनः (نرینہ) फा. पुं.–नर, जैसे–'फ़र्ज़ंदे नरीनः' अर्थात् लड़का।

नरीमान (نریمان) फा. पुं.–रुस्तम के दादा का नाम।

नर्ग़ः (نرغہ) फा. पुं.–घेरा, घिराव, मुहासरा; भीड़, जमाव; विपत्ति, मुसीबत।

नर्ग़ए आ'दा (نرغۂ اعدا) फा. अ. पुं.–शत्रुओं का घेरा।

नर्गिस (نرگس) फा. स्त्री.–एक फूल; आँख।

नर्गिसी (نرگسی) फा. वि.–नर्गिस-जैसा; नर्गिस का; नर्गिसी कबाब, जो अंडों पर क़ीमा चढ़ाकर बनते हैं।

नर्गिसे जादू (نرگس جادو) फा. स्त्री.–वह सुन्दर आँख जिसमें 'मोहनी' हो।

नर्गिसे बीमार (نرگس بیمار) फा. स्त्री.–चश्मे बीमार।

नर्गिसे शहला (نرگس شہلا) फा. स्त्री.–वह नर्गिस का फूल जिसमें उसके भीतर पीलेपन के बदले कालापन हो।

नर्द (نرد) फा. स्त्री.–चौसर का खेल; चौसर की गोट।

नर्दबाज़ (نردباز) फा. वि.–चौसर का खिलाड़ी।

नर्दबान (نردبان) फा. उभ.–निश्रेणी, सोपान, सीढ़ी।

नर्मः (نرمہ) फा. पुं.–कान की लौ।

नर्म (نرم) फा. वि.–मृदुल, मुलाइम, कोमल, नाज़ुक; पिलपिला; शिथिल, ढीला; लोचदार; सुगम, सरल,

आसान; हलका, अगुरु; सहिष्णु, बुर्दबार; जिसका कोप धीमा पड़ गया हो।

नर्मआवाज़ (نرم آواز) फ़ा. वि.—मधुर और कोमल स्वरवाला।

नर्मआहनी (نرم آهنی) फ़ा. स्त्री.—दीनता, हीनता, दरिद्रता; बदहाली।

नर्मए गोश (نرمۂ گوش) फ़ा. पुं.—कान की लौ, कर्णलता।

नर्मख़ू (نرم خو) फ़ा. वि.—नम्र स्वभाववाला, विनीत, मतीन, संजीदः, नेकदिल।

नर्मगर्दन (نرم گردن) फ़ा. वि.—वशीभूत, आज्ञाकारी।

नर्मज़बान (نرم زبان) फ़ा. वि.—मधुरभाषी, शीरींज़बान।

नर्मतबीअत (نرم طبیعت) फ़ा. अ. वि.—दे. 'नर्मख़ू'।

नर्मदिल (نرم دل) फ़ा. वि.—सदय, आर्द्र हृदय, रहमदिल।

नर्ममिज़ाज (نرم مزاج) फ़ा. अ. वि.—दे. 'नर्मख़ू'।

नर्मरौ (نرم رو) फ़ा. वि.—सुस्त चलनेवाला, मंदगति।

नर्मी (نرمی) फ़ा. वि.—मृदुलता, मुलाइमत; कोमलता, नज़ाकत; सदयता, रह्मदिली; मंदता, आहिस्तगी; धीमापन; सुगमता, आसानी; अगुरुत्व, लघुत्व, हलकापन; गंभीरता, बुर्दबारी।

नवद (نود) फ़ा. वि.—नब्बे, दस कम सौ।

नवर्द (نورد) फ़ा. प्रत्य.—लपेटनेवाला अर्थात् सफ़र तै करनेवाला, जैसे—'राहनवर्द' रस्ता तै करनेवाला।

नवर्दीदः (نوردیده) फ़ा. वि.—लपेटा हुआ।

नवा (نوا) फ़ा. स्त्री.—स्वर, ध्वनि, आवाज़; गान, गाना; सामान, अस्बाब, उपकरण।

नवाइब (نوائب) अ. पुं.—'नाइबः' का बहु., आपत्तियाँ, मुसीबतें।

नवाख़ानः (نواخانه) फ़ा. पुं.—कारागार, क़ैदख़ाना, जेल।

नवाख़्त (نواخت) फ़ा. वि.—अनुकूल, मुआफ़िक़; समान, तुल्य, बराबर।

नवागर (نواگر) फ़ा. वि.—गायक, गवैया।

नवाज़ (نواز) फ़ा. प्रत्य.—बजानेवाला, जैसे—'नयनवाज़' बाँसुरी बजानेवाला; कृपा करनेवाला, जैसे—'ग़रीबनवाज़'।

नवाज़िंदः (نوازنده) फ़ा. पुं.—बजानेवाला; कृपा करनेवाला।

नवाज़िंदगी (نوازندگی) फ़ा. स्त्री.—बजाना।

नवाज़िश (نوازش) फ़ा. स्त्री.—कृपा, अनुकंपा, दया, मेह्रबानी।

नवाज़िशनामः (نوازش نامه) फ़ा. पुं.—कृपापत्र, करमनामः।

नवाज़िशात (نوازشات) फ़ा. स्त्री.—'नवाज़िश' का बहु., कृपाएँ, दयाएँ।

नवादिर (نوادر) अ. पुं.—'नादिरः' का बहु., अद्भुत वस्तुएँ, अजीबो ग़रीब चीज़ें।

नवापरदाज़ (نواپرداز) फ़ा. वि.—दे. 'नवागर'।

नवाफ़िज़ (نوافذ) अ. पुं.—'नाफ़िज़ः' का बहु., कान, नाक, मुँह आदि के सूराख़।

नवाफ़िल (نوافل) अ. पुं.—'नफ़िलः' का बहु., वे नमाज़ें जो केवल सवाब के लिए पढ़ी जायँ, फ़र्ज़ या वाजिब न हों।

नवामीस (نوامیس) अ. पुं.—'नामूस' का बहु., मर्यादाएँ।

नवालः (نواله) फ़ा. पुं.—दे. 'निवालः', दोनों उच्चारण शुद्ध हैं।

नवाल (نوال) अ. स्त्री.—उपकार, एहसान; दानशीलता, बख़्शिश; अनुकंपा, दया।

नवासंज (نواسنج) फ़ा. वि.—दे. 'नवागर'।

नवासः (نواسه) फ़ा. पुं.—बेटी का बेटा, नाती, दौहित्र।

नवासाज़ (نواساز) फ़ा. वि.—दे. 'नवागर'।

नवासिब (نواصب) अ. पुं.—'नासिबी' का बहु., नासिबी संप्रदाय के लोग, हज़रत अली को न माननेवाले।

नवासीर (نواصیر-نواسیر) अ. स्त्री.—'नासूर' का बहु., भगंदर, मलद्वार का फोड़ा।

नवाह (نواح) अ. पुं.—चारों ओर का क्षेत्र, मुज़ाफ़ात।

नवाही (نواحی) अ. पुं.—'नाहियः' का बहु., नगर का चारों ओर।

नवाही (نواهی) अ. पुं.—'नह्इ' का बहु., वे विषय जो धर्मानुसार निषिद्ध हैं।

नवाहे मुल्क (نواح ملک) अ. पुं.—किसी देश के चारों ओर का बाहरी इलाक़ा।

नवाहे शह्र (نواح شهر) अ. फ़ा. पुं.—नगर के आसपास का क्षेत्र, मुज़ाफ़ात।

नविश्तः (نوشته) फ़ा. वि.—लिखा हुआ, लिखित, (पुं.) तमस्सुक, स्टाम्प, लेखपत्र, दे. 'निविश्तः'।

नविश्त (نوشت) फ़ा. स्त्री.—लिखावट, तह्रीर, दे. 'निविश्त'।

नविश्तए क़िस्मत (نوشتۂ قسمت) फ़ा. अ. पुं.—भाग्यलेख, तक़्दीर का लिखा, प्रारब्ध, मुक़द्दर।

नविश्तए तक़्दीर (نوشتۂ تقدیر) फ़ा. अ. पुं.—दे. 'नविश्तए क़िस्मत'।

नविश्तोख़्वाँद (نوشت وخواند) फ़ा. स्त्री.—लिखा-पढ़ी, लिखना-पढ़ना।

नवी (نوی) फ़ा. वि.—नया, नवीन; आधुनिक, जदीद; पाश्चात्य, मग़्रिबी।

नवीस (نویس) फ़ा. प्रत्य.—लिखनेवाला, जैसे—अराइज़नवीस, अर्ज़ियाँ लिखनेवाला।

नवीसिंदः (نویسنده) फ़ा. वि.—लिखनेवाला, लिपिक।

नवेद (نوید) फा. स्त्री.–शुभ सूचना, खुशखबरी; निमंत्रण-पत्र, दावतनामा, दे. 'नुवेद', दोनों रूप शुद्ध हैं।

नवेदे जाँफ़िज़ा (نوید جانفزا) फा. स्त्री.–प्राणों को आनंद देनेवाली शुभ सूचना।

नवेदे मक़्दम (نوید مقدم) फा. अ. स्त्री.–किसी महान् व्यक्ति के आने की शुभ सूचना।

नव्वाब (نواب) अ. वि.–बादशाह का नाइब; किसी रियासत का मुसलमान शासक।

नव्वाबज़ादः (نوابزادہ) अ. फा. पुं.–नव्वाब का लड़का।

नव्वाबी (نوابی) अ. स्त्री.–नव्वाब का पद; राज, हुकूमत; समृद्धि, दौलतमंदी; अपव्यय, फ़ुज़ूलखर्ची।

नव्वाबे बेमुल्क (نواب بے ملک) अ. फ़ा. पुं.–ऐसा नव्वाब जिसके पास रियासत न हो, ऐसे शख़्स के लिए कहते हैं जिसके पास कुछ न हो, मगर उसकी बातें लंबी-चौड़ी हों।

नशाँ (نشاں) फा. पुं.–'नशान' का लघु., दे. 'नशान'।

नशा (نشا) अ. पुं.–शुद्ध रूप 'नश्शः' है; परंतु उर्दू में 'नशा' भी बोलते हैं।

नशात (نشاط) अ. स्त्री.–आनंद, हर्ष, ख़ुशी, निशात भी प्रचलित।

नशातअंगेज़ (نشاطانگیز) अ. फा. वि.–ख़ुशी पैदा करनेवाला, हर्षोत्पादक।

नशातअफ़्ज़ा (نشاطافزا) अ. फा. वि.–आनंदवर्धक, ख़ुशी बढ़ानेवाला।

नशातेकार (نشاطکار) अ. फा. स्त्री.–काम करने की उमंग।

नशातेरूह (نشاط روح) अ. स्त्री.–रूह का आनंद।

नशान (نشان) फ़ा. पुं.–दे. 'निशान', दोनों रूप शुद्ध हैं, परंतु उर्दू में निशान बोलते हैं।

नशास्तः (نشاستہ) फा. पुं.—गेहूँ का सत, गोधूमसार।

नशीं (نشیں) फा. प्रत्य.–बैठनेवाला, जैसे—'तख़्तनशीं' तख़्त पर बैठनेवाला।

नशीद (نشید) फा. पुं.–गान, नग़्मः, दे. 'निशेद', दोनों शुद्ध हैं।

नश्अत (نشائت) अ. स्त्री.–आविर्भाव, उत्पत्ति, पैदाइश।

नश्अते सानियः (نشاۃ ثانیہ) अ. स्त्री.–दुबारा जन्म, पुनर्जन्म; पुनर्जीवन; दुबारा तरक़्क़ी, पुनरुद्धार।

नश्अतैन (نشائتین) अ. स्त्री.–दो पैदाइशें, एक संसार की दूसरी क़ियामत के दिन की।

नश्रः (نشرہ) अ. पुं.–बच्चे के कुरान कंठ कर लेने का संस्कार।

नश्र (نشر) अ. पुं.–घास का फिर से हरा होना; मृतक का फिर से जीवित होना; खबर का सब में फैलाना।

नश्रुस्सौत (نشرالصوت) अ. पुं.–आवाज़ का हर तरफ़ फैलाना, ब्राडकास्ट, ध्वनि-संचार।

नश्व (نشو) अ. पुं.–विकास, उपज, बालीदगी।

नश्वोनमा (نشوونما) अ. पुं.–उगना और विकसित होना, परवरिश पाना।

नश्शः (نشہ) अ. पुं.–मादकता, नशा; उन्माद, मस्ती; अभिमान, घमंड।

नश्शःआमेज़ (نشہ آمیز) अ. फा. वि.–जिस चीज़ में मादक पदार्थ मिला दिया गया हो।

नश्शःआवर (نشہ آور) अ. फ़ा. वि.–नशा पैदा करनेवाली चीज़, मादक।

नश्शःबाज़ (نشہ باز) अ. फा. वि.–जिसे किसी नशेवाली चीज़ खाने या पीने की लत हो।

नश्शए मै (نشۂ مے) अ. फा. पुं.–शराब का नशा।

नश्शए सह्बा (نشۂ صہبا) अ. फा. पुं.–शराब का नशा।

नस[स्स] (نص) अ. स्त्री.–क़ुरान की वे सूक्तियाँ जिनका अर्थ स्पष्ट है; ऐसी बात जिसमें कोई सन्देह न हो; ऐसी बात जिसका पालन आवश्यक हो।

नसक़ (نسق) अ. पुं.–प्रबंध, व्यवस्था, इंतिज़ाम; क्रम, सिलसिला, तर्तीब, यह शब्द प्रायः अकेला नहीं बोलते, नज़्म के साथ मिलाकर 'नज़्मो नसक़' बोलते हैं।

नसक़बंद (نسق بند) अ. फा. वि.–व्यवस्थापक, प्रबन्धक, मुंतज़िम।

नसफ़त (نصفت) अ. स्त्री.–आधों आध करना, बराबर दो भागों में बाँटना; न्याय, इंसाफ़ (निस्फ़त)।

नसब (نسب) अ. पुं.–कुल, वंश, गोत्र, ख़ानदान।

नसबनामः (نسب نامہ) अ. फा. पुं.–वंशावली, वंशक्रम, वंशवृक्ष, कुर्सीनामा, शज्रः।

नसबी (نسبی) अ. वि.–नसब से सम्बन्ध रखनेवाला।

नसा (نسا) अ. स्त्री.–एक रग जो चूतड़ से टख़ने तक आती है, इर्क़ुन्नसा, गृद्धसी स्नायु, साइटिक नर्व।

नसाइह (نصائح) अ. उभ.–'नसीहत' का बहु., नसीहतें, सदुपदेश।

नसारा (نصاری) अ. पुं.–'नस्रानी' का बहु., ईसाई लोग।

नसीज (نسیج) अ. वि.–बुना हुआ; वस्त्र, लिबास; एक रेशमी कपड़ा।

नसीबः (نصیبہ) अ. पुं.–भाग्य, प्रारब्ध, क़िस्मत, मुक़द्दर।

नसीबःवर (نصیبہ ور) अ. फा. वि.–भाग्यशाली, भाग्यवान्, खुशक़िस्मत।

नसीब (نصیب) अ. पुं.–भाग्य, क़िस्मत; लब्ध, प्राप्त, मुयस्सर; अंश, भाग, हिस्सा।

नसीबे आ'दा (نصیب اعدا) अ. पुं.–वह चीज़ जो अपने लिए न हो अपने दुश्मनों को हो; एक आशीर्वाद, जब कोई व्यक्ति किसी रोग या कष्ट में फँसा हो तो उसके मित्र उसका ज़िक्र करते हुए बोलते हैं, जैसे—नसीबे आ'दा, उनका मिज़ाज कुछ नासाज़ है।

नसीबे ख़ुफ़्तः (نصیب خفتہ) अ. फा. पुं.–सोया हुआ नसीब, दुर्भाग्यता, बदक़िस्मती।

नसीबे दुश्मनाँ (نصیب دشمناں) अ. फ़ा. पुं.–दे. 'नसीबे आ'दा'।

नसीम (نسیم) अ. स्त्री.–मृदुल मंद समीर, ठंडी और धीमी हवा।

नसीमासा (نسیم آسا) अ. फा. अव्य.–'नसीम' की तरह, बहुत ही आहिस्ता और मृदुल चाल से।

नसीमे सहर (نسیم سحر) अ. स्त्री.–सबेरे की मंद, शीतल और सुगंधित हवा।

नसीमे सुब्ह (نسیم صبح) अ. स्त्री.–दे. 'नसीमे सहर'।

नसीर (نصیر) अ. पुं.–सहायक, सहाय, मददगार।

नसीहत (نصیحت) अ. स्त्री.–सदुपदेश, सीख; सत्परामर्श, अच्छी सलाह; इब्रत।

नसीहत आमेज़ (نصیحت آمیز) अ. फा. वि.–वह बात जिसमें उपदेश शामिल हो।

नसीहतगर (نصیحت گر) अ. फा. वि.–नसीहत करनेवाला, सदुपदेशक।

नसीहतगुज़ार (نصیحت گزار) अ. फा. वि.–दे. 'नसीहतगर'

नसीहतगो (نصیحت گو) अ. फा. वि.–दे. 'नसीहतगर'।

नसीहतनामः (نصیحت نامہ) अ. फा. पुं.–वह पत्र जिसमें किसी बात के सम्बन्ध में नसीहतें लिखी हों।

नसीहतपिज़ीर (نصیحت پزیر) अ. फा. वि.–नसीहत माननेवाला, जिस पर सदुपदेश का असर हो, नसीहतपसंद।

नसूह (نصوح) अ. वि.–शुद्ध, निर्मल, ख़ालिस; किसी बुरी बात के त्याग की दृढ़ प्रतिज्ञा।

नस्ख़ (نسخ) अ. पुं.–मिटाना, रद करना; एक प्रसिद्ध लिपि जिसमें अरबी लिखी जाती है; किसी चीज़ को हटाकर उससे अच्छी चीज़ लेना।

नस्तरन (نسترن) फा. स्त्री.–सेवती का फूल, सेवती।

नस्ता'लीक़ (نستعلیق) अ. पुं.–सभ्य, शिष्ट, संस्कृत, मुहज़्ज़ब; एक प्रसिद्ध लिपि जिसमें उर्दू लिखी जाती है।

नस्नास (نسناس) अ. पुं.–मनुष्य के आकार का एक जानवर जिसके केवल एक हाथ, एक पाँव और एक कान होता है।

नस्ब (نصب) अ. पुं.–स्थापना, रखना, क़ाइम करना; ज़बर की मात्रा।

नस्बुलऐन (نصب العین) अ. पुं.–उद्देश, आशय, मक़्सद।

नस्या मंसिया (نسیا منسیا) अ. अव्य.–जो बात बिलकुल भूली जा चुकी हो, अरबी का उच्चारण 'नस्यं मंसीया' है।

नस्र (نثر) अ. स्त्री.–गद्य, इबारत, नज़्म का उलटा।

नस्र (نسر) अ. पुं.–गृद्ध, गिद्ध, गीध; कर्गस; एक बुत जो अरब में पूजा जाता था।

नस्र (نصر) अ. स्त्री.–सहायता, मदद।

नस्रनिगार (نثر نگار) अ. फ़ा. पुं.–गद्य-लेखक, नस्र लिखनेवाला।

नस्रनिगारी (نثر نگاری) अ. फ़ा. स्त्री.–गद्य-रचना, नस्र लिखना।

नस्रानियत (نصرانیت) अ. स्त्री.–ईसाईपन, ईसाईयत।

नस्रानी (نصرانی) अ. पुं.–ईसाई, ख्रिष्टीय।

नस्रे आरी (نثر عاری) अ. स्त्री.–वह गद्य जो अलंकारादि से रिक्त बिल्कुल सीधा-सादा हो।

नस्रे ताइर (نسر طائر) अ. पुं.–राशिचक्र के उत्तर में तारों की एक शक्ल जो उड़ते हुए गिद्ध के समान है।

नस्रे मुक़फ़्फ़ा (نثر مقفی) अ. स्त्री.–वह गद्य जिसका हर वाक्य सानुप्रास हो।

नस्रे मुरज्जज़ (نثر مرجز) अ. स्त्री.–वह गद्य जिसके एक वाक्य के तमाम शब्द दूसरे वाक्य के शब्दों के समान हों।

नस्रे मुसज्जा (نثر مسجع) अ. स्त्री.–दे. 'नस्रे मुक़फ़्फ़ा'।

नस्रे वाक़े' (نسر واقع) अ. पुं.–दक्षिणी ध्रुव के पास ठहरे हुए गिद्ध के आकार के तारों की शक्ल।

नस्ल (نسل) अ. स्त्री.–वंश, गोत्र, कुल; संतान, संतति, औलाद।

नस्लअफ़्ज़ाई (نسل افزائی) अ. फा. स्त्री.–नस्ल बढ़ाना, संतान-वृद्धि।

नस्लकशी (نسل کشی) अ. फा. स्त्री.–नस्ल बढ़ाना, संतान-वृद्धि।

नस्लन बाद नस्लन (نسلاً بعد نسلاً) अ. अव्य.–एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल में, पुश्त दर पुश्त।

नस्साज (نساج) अ. पुं.–बुननेवाला, जुलाहा।

नस्साब (نساب) अ. पुं.–वंशविद्या जाननेवाला।

नस्सार (نثار) अ. पुं.–गद्य-लेखक।

नहंग (نہنگ) फा. पुं.–घड़ियाल, कुंभीर, ग्राह, नाका।

नहज (نہج) अ. पुं.–चौड़ी और कुशादः सड़क; पद्धति, शैली, ढंग, दे. 'नहज', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु अधिक प्रचलित 'नहज' है।

नहाफ़त (نحافت) अ. स्त्री.–क्षीणता, दुबलापन, लाग़री; निर्बलता, अशक्ति, कमज़ोरी।

नहार (نہار) अ. पुं.–दिन, दिवस, रोज़।

नहार (نہار) फ़ा. वि.–'नाहार' का लघु.; सबेरे से कुछ न खाये हुए, नहारमुँह।

नहारगाह (نہارگاہ) फ़ा. स्त्री.–सबेरे का समय, प्रातःकाल।

नहारी (نہاری) फ़ा. स्त्री.–वह थोड़ा सा खाना जिससे सुबह का फ़ाक़ा तोड़ते हैं, नाशता; एक प्रकार का शोरबादार गोश्त जिसे ख़मीरी रोटी से खाते हैं।

नही (نہی) अ. स्त्री.–निषेध, रोक; निषेधाज्ञा, मुमानिअत का हुक्म, शुद्ध उच्चारण 'नह्इ' है।

नहीक़ (نہیق) अ. स्त्री.–गधे के रेंकने की आवाज़।

नहीफ़ (نحیف) अ. वि.–क्षीण, क्षाम, दुबला, लाग़र; दुर्बल, अशक्त, कमज़ोर।

नहीफ़ुलजुस्सः (نحیف الجثہ) अ. वि.–दुबले शरीरवाला, क्षीणकाय।

नहीफ़ुलबदन (نحیف البدن) अ. वि.–दे. 'नहीफ़ुलजुस्सः'।

नहीब (نہیب) अ. पुं.–डाकू, लुटेरा, ग़ारतगर।

नह्ज (نہج) अ. पुं.–ढंग, प्रकार, तर्ज़; युक्ति, तर्कीब; मार्ग, पथ, रास्ता।

नह्ब (نہب) अ. पुं.–लूटमार, ग़ारतगरी।

नह्र (نہر) अ. स्त्री.–नदी से काटकर निकाली हुई शाखा, कुल्या (नहर)।

नह्र (نحر) अ. पुं.–ऊँट की क़ुर्बानी, उष्ट्रवध।

नह्री (نہری) अ. वि.–नह्र से सम्बन्ध रखनेवाला; नह्र के पानी से सींची जानेवाली भूमि।

नह्रे फ़ुरात (نہر فرات) अ. फ़ा. स्त्री.–कूफ़े में बहनेवाली नदी, जिसका पानी हज़्रत इमाम हुसैन पर बन्द कर दिया गया था।

नह्रे लबन (نہر لبن) अ. स्त्री.–दूध की नह्र।

नह्व (نحو) अ. पुं.–पद्धति, शैली, ढंग; समान, तुल्य, मिस्ल, (स्त्री.) व्याकरण की वह शाखा जिससे वाक्यों में शब्दों का परस्पर सम्बन्ध और उनकी स्थिति जानी जाती है।

नह्वी (نحوی) अ. वि.–इल्मे नह्व जाननेवाला।

नह्स (نحس) अ. वि.–अशुभ, अमांगलिक, मनहूस।

नह्सक़दम (نحس قدم) अ. वि.–जिसका आना मनहूस हो।

नह्सरू (نحس رو) अ. फ़ा. वि.–जिसकी सूरत मनहूस हो, जो देखने में बुरा लगे, अशुभदर्शन।

ना

नाँ (ناں) फ़ा. स्त्री.–'नान' का लघु., दे. 'नान'।

ना (نا) फ़ा. उप.–शब्द के शुरू में आकर नहीं का अर्थ देता है, जैसे—'नाउम्मीद'।

नाअंदेश (نا اندیش) फ़ा. वि.–न सोचनेवाला।

नाअह्ल (نا اہل) फ़ा. अ. वि.–अयोग्य, नाक़ाबिल; अपात्र, ग़ैर मुस्तहक़।

नाअह्लियत (نا اہلیت) फ़ा. अ. स्त्री.–अयोग्यता, नाक़ाबिलीयत; अपात्रता, नाइस्तेहक़ाक़ी।

नाअह्ली (نا اہلی) फ़ा. अ. स्त्री.–दे. 'नाअह्लियत'।

नाआक़िबत अंदेश (نا عاقبت اندیش) फ़ा. अ. वि.–अदूरदर्शी, अपरिणामदर्शी।

नाआगाह (نا آگاہ) फ़ा. वि.–नावाक़िफ़, अनभिज्ञ, अनजान, अनाड़ी।

नाआज़्मूदः (نا آزمودہ) फ़ा. वि.–जो आज़माया न गया हो, अपरीक्षित।

नाआज़्मूदःकार (نا آزمودہ کار) फ़ा. वि.–जिसे कामों का तज्रिबः न हो, अननुभवी, अनाड़ी।

नाआज़्मूदःकारी (نا آزمودہ کاری) फ़ा. स्त्री.–नातज्रिबःकारी, अनुभव, अनाड़ीपन।

नाआश्ना (نا آشنا) फ़ा. वि.–अपरिचित, नावाक़िफ़; अनभिज्ञ, अनाड़ी।

नाआश्नाए महज़ (نا آشنائے محض) फ़ा. अ. वि.–जो बिलकुल कुछ न जानता हो।

नाइंसाफ़ (نا انصاف) फ़ा. अ. वि.–न्याय न करनेवाला, अन्यायी।

नाइंसाफ़ी (نا انصافی) फ़ा. अ. स्त्री.–अनीति, अन्याय, बेईमानी।

नाइचः (نائچہ) फ़ा. पुं.–नयचा, निगाली, हुक़्क़े की नाल।

नाइज़ः (نائزہ) अ. पुं.–नल की टोंटी; शिश्न, लिंग; नयचा।

नाइत्तिफ़ाक़ी (نا اتفاقی) फ़ा. अ. स्त्री.–फूट, बिगाड़, रंजिश।

नाइबः (نائبہ) अ. वि.–दुर्घटना, हादिसा; बारी से आनेवाला ज्वर; 'नाइब' का स्त्री.।

नाइब (نائب) अ. पुं.–सहायक, असिस्टेंट; स्थानापन्न, काइममक़ाम; 'नायब' भी प्रचलित।

नाइम (نائم) अ. पुं.–सोनेवाला, स्वापक।

नाइरः (نائرہ) अ. पुं.–अग्निज्वाला, लपट, शोलः।

नाइल्तिफ़ाती (نا التفاتی) फ़ा. अ. स्त्री.–बेतवज्जुही, उपेक्षा।

नाइहः (نائحہ) अ. पुं.–आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत।

नाउम्मीद (نا امید) फ़ा. वि.–निराश, हताश; हतोत्साह, हतसाहस, पस्तहौसला।

नाउम्मीदी (ناامیدی) फ़ा. स्त्री.–निराशा, मायूसी; उत्साहहीनता, पस्तहिम्मती।

नाए (ناے) फा. स्त्री.–बाँसुरी, वंशी, नय।

नाक़ः (ناقہ) अ. पुं.–ऊँटनी, साँड़नी।

नाक़ः सवार (ناقہ سوار) अ. फा. वि.–साँड़नी-सवार, अर्थात् दूत, कासिद।

नाक (ناک) फा. प्रत्य.–भरा हुआ, जैसे—दर्दनाक, दुःख से भरा हुआ।

नाकतख़ुदा (ناکتخدا) फा. वि.–दे. 'नाकदख़ुदा'।

नाकतख़ुदाई (ناکتخدائی) फा. स्त्री.–दे. 'नाकदख़ुदाई'।

नाकदख़ुदा (ناکدخدا) फा. वि.–बिन ब्याहा हुआ, कुमार, अविवाहित; बिन ब्याही हुई, अविवाहिता, कुमारी।

नाकदख़ुदाई (ناکدخدائی) फा. स्त्री.–बिन ब्याहा होना, कुँआरापन।

नाक़द्र (ناقدر) फा. अ. वि.–जो क़द्र न जानता हो; जो क़द्र न करता हो।

नाक़द्री (ناقدری) फा. अ. स्त्री.–क़द्र न जानना; क़द्र न करना।

नाक़बूल (نا قبول) फा. अ. वि.–अस्वीकृत, नामंज़ूर।

नाकर्दः (ناکردہ) फा. वि.–न किया हुआ।

नाकर्दःकार (ناکردہکار) फा. वि.–जिसने कोई विशेष कार्य न किया हो, अननुभवी, नातज्रिबःकार।

नाकर्दःगुनाह (ناکردہگناہ) फा. वि.–जिसने क़ुसूर न किया हो, बेक़ुसूर, बेख़ता।

नाकर्दःजुर्म (ناکردہجرم) फा. अ. वि.–दे. 'नाकर्दःगुनाह'।

नाकर्दनी (ناکردنی) फा. अव्य.–जो करने के योग्य न हो, जिसका करना उचित न हो, अकरणीय।

नाकस (ناکس) फा. वि.–अधम, नीच, कमीना, पतित, गर्हित।

नाकसी (ناکسی) फा. स्त्री.–अधमता, नीचता, लोफ़रपन।

नाक़ाबिल (نا قابل) फा. अ. वि.–अयोग्य, अपात्र, नाअहल।

नाक़ाबिलानः (نا قابلانہ) फा. अ. अव्य.–जाहिलों और मूर्खों-जैसा, मूर्खतापूर्ण।

नाक़ाबिलीयत (نا قابلیت) फा. अ. स्त्री.–अयोग्यता, अपात्रता, नाअहली; शिक्षाभाव, कमलियाक़ती।

नाक़ाबिले अदा (نا قابل ادا) फा. अ. वि.–जो अदाइगी के क़ाबिल न हो, न दी जा सकनेवाली रक़म।

नाक़ाबिले अफ़्व (نا قابل عفو) फा. अ. वि.–जो मुआफ़ किये जाने के योग्य न हो, अक्षम्य।

नाक़ाबिले अमल (نا قابل عمل) फा. अ. वि.–जिस पर अमल न किया जा सके, जो व्यवहार में न आ सके, अव्यवहार्य।

नाक़ाबिले आज़माइश (ناقابل آزمائش) फा. अ.–जिसकी परीक्षा न हो सके।

नाक़ाबिले इंतिक़ाल (نا قابل انتقال) फा. अ. वि.–वह संपत्ति जो दूसरे के नाम मुंतक़िल न हो सके।

नाक़ाबिले इंतिख़ाब (نا قابل انتخاب) फा. अ. वि.–जो चुनाव के अयोग्य हो; जो गद्य या पद्य उद्धरण के योग्य न हो।

नाक़ाबिले इंतिज़ाम (نا قابل انتظام) फा. अ. वि.–जिसकी व्यवस्था न हो सके।

नाक़ाबिले इंतिज़ार (نا قابل انتظار) फा. अ. वि.–जिसकी प्रतीक्षा न की जा सके।

नाक़ाबिले इंदिमाल (نا قابل اندمال) फा. अ. वि.–वह घाव जो भरने के योग्य न हो।

नाक़ाबिले इंदिराज (نا قابل اندراج) फा. अ. वि.–जिसका नाम किसी रजिस्टर या खाते में लिखा न जा सके; जो रक़म जमाख़र्च में डाली न जा सके किसी मद में या किसी के नाम।

नाक़ाबिले इंसिदाद (نا قابل انسداد) फा. अ. वि.–जिसका निवारण न हो सके; जो रोका न जा सके।

नाक़ाबिले इआदः (نا قابل اعادہ) फा. अ. वि.–जो बात दुहरायी न जा सके।

नाक़ाबिले इआनत (نا قابل اعانت) फा. अ. वि.–जिसकी मदद न की जा सके; जो मदद करने के अयोग्य हो।

नाक़ाबिले इक़्रार (نا قابل اقرار) फा. अ. वि.–जिसका इक़्रार न किया जा सके, जो माना न जा सके।

नाक़ाबिले इख़्तिलाफ़ (ناقابل اختلاف) फा. अ. वि.–जिससे मतभेद न किया जा सके, सहमति योग्य।

नाक़ाबिले इख़्फ़ा (ناقابل اخفا) फा. अ. वि.–जो छिपाया न जा सके।

नाक़ाबिले इख़्राज (ناقابل اخراج) फा. अ. वि.–जो ख़ारिज न किया जा सके; जो निकाला न जा सके।

नाक़ाबिले इज़्हार (ناقابل اظہار) फा. अ. वि.–जो कहा न जा सके।

नाक़ाबिले इत्तिलाअ (ناقابل اطلاع) फा. अ. वि.–जिसकी सूचना न दी जा सके।

नाक़ाबिले इत्मीनान (ناقابل اطمینان) फा. अ. वि.–जो भरोसे के क़ाबिल न हो, अविश्वस्त।

नाक़ाबिले इन्कार (ناقابل انکار) फा. अ. वि.–जिससे इन्कार न किया जा सके।

नाक़ाबिले इन्क़िसाम (ناقابل انقسام) फा. अ. वि.–जो बाँटा न जा सके, अविभाज्य।

नाक़ाबिले इन्फ़िकाक (ناقابل انفکاک) फा. अ. वि.–जो रेहन रखी हुई चीज़ या ज़मीन, रेहन से छूट न सके।

नाक़ाबिले इन्फ़िसाल (ناقابل انفصال) फा.अ.वि.–जिसका फ़ैसला न हो सके।

नाक़ाबिले इम्तिहान (ناقابل امتحان) फा. अ. वि.–जिसकी परीक्षा न हो सके; जो परीक्षा के अयोग्य हो।

नाक़ाबिले इम्दाद (ناقابل امداد) फा. अ. वि.–जिसकी सहायता न हो सके।

नाक़ाबिले इलाज (ناقابل علاج) फा. अ. वि.–जिसकी चिकित्सा न हो सके, दुःसाध्य।

नाक़ाबिले इल्तिफ़ात (ناقابل التفات) फा.अ. वि.–जिसकी ओर तवज्जुह न की जा सके, उपेक्ष्य।

नाक़ाबिले इशाअत (ناقابل اشاعت) फा. अ. वि.–जिसका प्रचार न हो सके, अप्रकाश्य।

नाक़ाबिले इस्तिदलाल (ناقابل استدلال) फा. अ. वि.–वह काग़ज़ या दस्तावेज़ जो मुकदमे में काम न आ सके।

नाक़ाबिले इस्ते'माल (ناقابل استعمال) फा. अ. वि.–जो प्रयोग के लाइक़ न हो; जो खाने के योग्य न हो; जो व्यवहार के अयोग्य हो।

नाक़ाबिले इस्लाह (ناقابل اصلاح) फा. अ. वि.–जिसका सुधार न हो सके; जिसकी त्रुटियाँ न निकल सकें।

नाक़ाबिले ईफ़ा (ناقابل ایفا) फा. अ. वि.–वह प्रतिज्ञा जो पूरी न हो सके।

नाक़ाबिले उज़्र (ناقابل عذر) फा. अ. वि.–जिस पर उज़्र या एतिराज़ न किया जा सके।

नाक़ाबिले उबूर (ناقابل عبور) फा. अ. वि.–वह नदी आदि जिसे पार न किया जा सके।

नाक़ाबिले ए'तिना (ناقابل اعتنا) फा. अ. वि.–जो ध्यान देने के लाइक़ न हो, उपेक्ष्य।

नाक़ाबिले एतिमाद (ناقابل اعتماد) फा. अ. वि.–जो भरोसे के लाइक़ न हो, अविश्वस्त।

नाक़ाबिले एतिराज़ (ناقابل اعتراض) फा. अ. वि.–जिस पर एतिराज़ न लगाया जा सके, आपत्तिहीन।

नाक़ाबिले ए'लान (ناقابل اعلان) फा. अ. वि.–जिसकी घोषणा न की जा सके, जिसका एलान उचित न हो।

नाक़ाबिले एहतियात (ناقابل احتیاط) फा. अ. वि.–जिसमें सावधानी की आवश्यकता न हो।

नाक़ाबिले एहसाल (ناقابل احصال) फा. अ. वि.–जो लिया न जा सके।

नाक़ाबिले क़बूल (ناقابل قبول) फा. अ. वि.–जो स्वीकार न किया जा सके।

नाक़ाबिले क़ुर्बानी (ناقابل قربانی) फा. अ. वि.–वह पशु जिसकी क़ुर्बानी जाइज़ न हो; वह व्यक्ति जिस पर क़ुर्बानी वाजिब न हो।

नाक़ाबिले ख़रीद (ناقابل خرید) फा. अ. वि.–जो मोल न लिया जा सके।

नाक़ाबिले गिरिफ़्त (ناقابل گرفت) फा. अ. वि.–जिसकी पकड़ न हो सके; जो पकड़ा न जा सके।

नाक़ाबिले गिरिफ़्तारी (ناقابل گرفتاری) फा. अ. वि.–जो गिरिफ़्तार न हो सके।

नाक़ाबिले गुज़ारिश (ناقابل گزارش) फा.अ. वि.–जो कहा न जा सके, अकथनीय।

नाक़ाबिले ग़ौर (ناقابل غور) फा. अ. वि.–जिस पर ध्यान न दिया जा सके।

नाक़ाबिले ज़ब्त (ناقابل ضبط) फा. अ. वि.–जो सहनीय न हो, जिसका सहन मुश्किल हो; जो ज़ब्त न किया जा सके।

नाक़ाबिले ज़ब्ती (ناقابل ضبطی) फा. अ. वि.–वह रक़म या जाइदाद आदि जिसकी ज़ब्ती न हो सके।

नाक़ाबिले ज़मानत (ناقابل ضمانت) फा.अ. वि.–जिसकी ज़मानत न ली जा सके।

नाक़ाबिले जवाज़ (ناقابل جواز) फा. अ. वि.–जो जाइज़ न हो सके।

नाक़ाबिले जवाब (ناقابل جواب) फा. अ. वि.–जिसका जवाब देना ज़रूरी न हो।

नाक़ाबिले ज़वाल (ناقابل زوال) फा. अ. वि.–जिसका कभी पतन न हो, जिसकी अवनति न हो सके।

नाक़ाबिले ज़िक्र (ناقابل ذکر) फा. अ. वि.–अकथनीय, जिसका कहना उचित न हो, जो कहा न जा सके।

नाक़ाबिले जिमाअ (ناقابل جماع) फा. अ. वि.–वह स्त्री जिससे सहवास न हो सके, वीमारी के कारण, छोटी अवस्था के कारण या धर्म-निषेध के कारण।

नाक़ाबिले ज़िराअत (ناقابل زراعت) फा. अ. वि.–वह भूमि जो खेती के अयोग्य हो।

नाक़ाबिले तअज्जुब (ناقابل تعجب) फा. अ. वि.–जिसमें अचंभे की कोई बात न हो।

नाक़ाबिले तआरुज़ (ناقابل تعارض) फा. अ. वि.–जिससे पूछताछ न की जा सके; जिसमें हस्तक्षेप न हो सके।

नाक़ाबिले तआवुन (ناقابل تعاون) फा. अ. वि.–जिसमें सहयोग न दिया जा सके।

नाक़ाबिले तक़र्रुर (ناقابل تقرر) फा. अ. वि.–जिसकी नियुक्ति न हो सके।

नाक़ाबिले तक्ज़ीब (ناقابل تکذیب) फा. अ. वि.–जिसे झुठलाया न जा सके।

नाक़ाबिले तक़्लीद (ناقابل تقلید) फा. अ. वि.–जिसका अनुकरण न हो सके; जिसका अनुकरण उचित न हो।

नाक़ाबिले तक़्सीम (ناقابل تقسیم) फा. अ. वि.–जो बाँटा न जा सके, जिसका बँटवारा न हो सके, अविभाज्य।

नाक़ाबिले तख़ैयुल (ناقابل تخیل) फा. अ. वि.–जिसकी कल्पना न की जा सके; जो सोचा न जा सके, अचिन्त्य।

नाक़ाबिले तग़ैयुर (ناقابل تغیر) फा. अ. वि.–जिसमें परिवर्तन न हो सके।

नाक़ाबिले तद्बीर (ناقابل تدبیر) फा. अ. वि.–जिसका इलाज न हो सके, असाध्य; जिसका कोई उपाय न हो।

नाक़ाबिले तफ़्हीम (ناقابل تفہیم) फा. अ. वि.–जो समझाया न जा सके।

नाक़ाबिले तब्दील (ناقابل تبدیل) फा. अ. वि.–जो वदला न जा सके।

नाक़ाबिले तरक़्क़ी (ناقابل ترقی) फा. अ. वि.–जो तरक़्क़ी के योग्य न हो।

नाक़ाबिले तरद्दुद (ناقابل تردد) फा. अ. वि.–वह खेती जिसे जोता बोया न जा सके; वह विषय जिस पर ग़ौर न किया जा सके।

नाक़ाबिले तरह्हुम (ناقابل ترحم) फा. अ. वि.–दया के अयोग्य, जिस पर रहम न किया जा सके।

नाक़ाबिले तर्क (ناقابل ترک) फा. अ. वि.–जो छोड़ा न जा सके, अत्याज्य।

नाक़ाबिले तर्जीह (ناقابل ترجیح) फा. अ. वि.–जिसे प्रधानता न दी जा सके।

नाक़ाबिले तर्दीद (ناقابل تردید) फा. अ. वि.–जिसका खंडन न हो सके, अकाट्य।

नाक़ाबिले तर्मीम (ناقابل ترمیم) फा. अ. वि.–जिसमें कोई संशोधन न हो सके, जिसमें कमी-बेशी या काट-छाँट न हो सके, अपरिवर्तनीय।

नाक़ाबिले तवज्जुह (ناقابل توجہ) फा. अ. वि.–जिस पर ध्यान न दिया जा सके।

नाक़ाबिले तश्रीह (ناقابل تشریح) फा. अ. वि.–जिसकी व्याख्या न हो सके; जिसकी तफ़्सील न बतायी जा सके।

नाक़ाबिले तश्वीश (ناقابل تشویش) फा. अ. वि.–जिसके लिए चिंता और तश्वीश की ज़रूरत न हो।

नाक़ाबिले तस्दीअ (نافابل تصدیع) फा. अ. वि.–जिसके लिए किसी दर्देसर अथवा खटखट की आवश्यकता न हो।

नाक़ाबिले तस्दीक़ (ناقابل تصدیق) फा. अ. वि.–जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता न हो।

नाक़ाबिले तस्ख़ीर (ناقابل تسخیر) फा. अ. वि.–जिसका पराजित करना असंभव हो; जिसे वशीभूत करना कठिन हो।

नाक़ाबिले तस्रीह (ناقابل تصریح) फा. अ. वि.–जिसका स्पष्टीकरण न हो सके, जिसकी तफ़्सील न बतायी जा सके।

नाक़ाबिले तस्लीम (ناقابل تسلیم) फा. अ. वि.–जिसे माना न जा सके।

नाक़ाबिले दख़्ल अंदाज़ी (ناقابل دخل اندازی) फा. अ. वि.–जिसमें वाधा न डाली जा सके।

नाक़ाबिले दस्त अंदाज़ी (ناقابل دست اندازی) फा. अ. वि.–जिसमें हस्तक्षेप न किया जा सके।

नाक़ाबिले दस्तरस (ناقابل دسترس) फा. अ. वि.–जहाँ तक रसाई न हो सके; जहाँ तक हाथ न पहुँच सके।

नाक़ाबिले दाद (ناقابل داد) फा. अ. वि.–जिसकी प्रशंसा न की जा सके, अप्रशंसनीय।

नाक़ाबिले दादरसी (ناقابل دادرسی) फा. अ. वि.–जो किसी दादरसी के क़ाबिल न हो, जिसे न्याय के अनुसार कुछ मिलने को न हो।

नाक़ाबिले दुरुस्ती (ناقابل درستی) फा. अ. वि.–जिसकी मरम्मत न हो सके; जिसका सुवार न हो सके।

नाक़ाबिले नफ़्रत (ناقابل نفرت) फा. अ. वि.–जो नफ़्रत के क़ाबिल न हो, जिससे घृणा न की जा सके, अघृण्य।

नाक़ाबिले निगारिश (ناقابل نگارش) फा. अ. वि.–जो लिखने योग्य न हो, अलेखनीय।

नाक़ाबिले नुमाइश (ناقابل نمائش) फा. अ. वि.–जिसकी नुमाइश न की जा सके, जो सबको न दिखाया जा सके।

नाक़ाबिले परवाज़ (ناقابل پرواز) फा. अ. वि.–जो उड़ न सके।

नाक़ाबिले परस्तिश (ناقابل پرستش) फा. अ. वि.–जो पूजने के योग्य न हो, जो पूजा न जा सके।

नाक़ाबिले पामाल (ناقابل پامال) फा. अ. वि.–जो पाँव तले मसला न जा सके।

नाक़ाबिले पिज़ीराई (ناقابل پزیرائی) फा. अ. वि.–जो क़बूल न किया जा सके।

नाक़ाबिले पुर्सिश (ناقابل پرسش) फा. अ. वि.–जो पूछने के क़ाबिल न हो; जिसकी पूछ-ताछ न की जा सके।

नाक़ाबिले पैमाइश (ناقابل پیمائش) फा. अ. वि.–जिसकी पैमाइश न हो सके, जिसका क्षेत्रफल न निकाला जा सके।

नाक़ाबिले पैरवी (ناقابل پیروی) फा. अ. वि.–जिसका अनुकरण न हो सके; जिसकी पैरोकारी न हो सके।

नाक़ाबिले फ़त्ह (ناقابل فتح) फा. अ. वि.–जो जीता न जा सके, अजेय।

नाक़ाबिले फ़रामोश (ناقابل فراموش) फा. अ. वि.–जो भुलाया न जा सके, जो बात कभी न भूली जा सके।

नाक़ाबिले फ़रोख़्त (ناقابل فروخت) फा. अ. वि.–जो बेचा न जा सके।

नाक़ाबिले फ़ह्म (ناقابل فہم) फा. अ. वि.–जो समझा न जा सके।

नाक़ाबिले फ़ैसलः (ناقابل فیصلہ) फा. अ. वि.–जिसका निर्णय न हो सके।

नाक़ाबिले बयान (ناقابل بیان) फा. अ. वि.–जो कहा न जा सके, अकथनीय।

नाक़ाबिले बरदाश्त (ناقابل برداشت) फा. अ. वि.–जो सहन न हो सके, असहनीय।

नाक़ाबिले बुत्लान (ناقابل بطلان) फा.अ.वि.–जो झुठलाया न जा सके।

नाक़ाबिले मदद (ناقابل مدد) फा.अ.वि.–जिसकी सहायता न की जा सके।

नाक़ाबिले मरम्मत (ناقابل مرمت) फा. अ. वि.–जिसकी दुरुस्ती न की जा सके।

नाक़ाबिले मलामत (ناقابل ملامت) फा. अ. वि.–जिसकी निंदा न की जा सके, जो भर्त्सना के योग्य न हो।

नाक़ाबिले मुआलजः (ناقابل معالجہ) फा. अ. वि.–जिसकी चिकित्सा न हो सके, असाध्य।

नाक़ाबिले मुक़ाबलः (ناقابل مقابلہ) फा. अ. वि.–जिसका मुक़ाबला न किया जा सके।

नाक़ाबिले मुदाख़लत (ناقابل مداخلت) फा. अ. वि.–जिसमें हस्तक्षेप न किया जा सके।

नाक़ाबिले मुदावा (ناقابل مداوا) फा. अ. वि.–दे. 'नाक़ाबिले मुआलजः'।

नाक़ाबिले मुफ़ाहमत (ناقابل مفاہمت) फा. अ. वि.–जिसमें समझौता न हो सके।

नाक़ाबिले मुवालात (ناقابل موالات) फा. अ. वि.–जिसमें सहयोग न हो सके।'

नाक़ाबिले मुसालहत (ناقابل مصالحت) फा. अ. वि.–जिसमें संधि अथवा सुलह न हो सके।

नाक़ाबिले रज़ामंदी (ناقابل رضامندی) फा. अ. वि.–वह मुक़द्दमा जिसमें दोनों पक्ष राज़ीनामा न कर सकें।

नाक़ाबिले रह्म (ناقابل رحم) फा. अ. वि.–जिस पर दया न की जा सके, जो दया का पात्र न हो।

नाक़ाबिले रिआयत (ناقابل رعایت) फा. अ. वि.–जिसके साथ किसी प्रकार का शील-संकोच और रिआयत न हो सके।

नाक़ाबिले वक़्अत (ناقابل وقعت) फा. अ. वि.–जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो।

नाक़ाबिले वफ़ा (ناقابل وفا) फा. अ. वि.–वह प्रतिज्ञा जो पूरी न हो सके, वह वादा जो वफ़ा न हो सके।

नाक़ाबिले शक (ناقابل شک) फा. अ. वि.–जिसमें किसी संदेह की गुंजाइश न हो, असंदिग्ध।

नाक़ाबिले शनाख़्त (ناقابل شناخت) फा. अ. वि.–जिसकी पहचान न हो सके।

नाक़ाबिले शिकस्त (ناقابل شکست) फा. अ. वि.–जिसे हराया न जा सके; जिससे होड़ न की जा सके।

नाक़ाबिले शिकायत (ناقابل شکایت) फा. अ. वि.–जिसकी शिकायत न की जा सके।

नाक़ाबिले शिफ़ा (ناقابل شفا) फा. अ. वि.–वह रोगी जो अच्छा न हो सके, असाध्य।

नाक़ाबिले शुमार (ناقابل شمار) फा. अ. वि.–जो गिना न जा सके।

नाक़ाबिले सताइश (ناقابل ستائش) फा. अ. वि.–जिसकी प्रशंसा न हो सके।

नाक़ाबिले सज़ा (ناقابل سزا) फा. अ. वि.–जिसे सज़ा न दी जा सके, अदंडनीय।

नाक़ाबिले समाअत (ناقابل سماعت) फा. अ. वि.–जो बात सुनने के योग्य न हो।

नाक़ाबिले सराहत (ناقابل صراحت) फा. अ. वि.–दे. नाक़ाबिले तस्रीह।

नाक़ाबिले सिफ़ारिश (ناقابل سفارش) फा. अ. वि.–जिसकी सिफ़ारिश न की जा सके।

नाक़ाबिले सुल्ह (ناقابل صلح) फा. अ. वि.–दे. 'नाक़ाबिले मुसालहत'।

नाक़ाबिले हिफ़ाज़त (ناقابل حفاظت) फा. अ. वि.–जिसकी रक्षा न हो सके, जो रक्षा करने के योग्य न हो।

नाक़ाबिले हुकूमत (ناقابل حکومت) फा. अ. वि.–जो राज करने के योग्य न हो; जिस पर शासन न चल सके।

नाक़ाबिले हुसूल (ناقابل حصول) फा. अ. वि.–जो प्राप्त न हो सके, जो हासिल न किया जा सके।

नाकाम (ناکام) फा. वि.–असफल, नाकामयाब; निराश, मायूस।

नाकामयाब (ناکامیاب) फा. वि.–असफलमनोरथ, नाकाम; अनुत्तीर्ण, फ़ेल, असफल।

नाकामयाबी (ناکامیابی) फा. स्त्री.–असफलता, नाकामी; उत्तीर्ण न होना, फ़ेल हो जाना।

नाकामी (ناکامی) फा. स्त्री.–असफलता, नाकामयावी; निराशा, नाउम्मीदी।

नाकामिए तक़दीर (ناکامیٔ تقدیر) फा. स्त्री.–भाग्य की वंचना, भाग्य की कुटिलता—"बढ़ते-बढ़ते हद्दे मंज़िल से भी आगे बढ़ गये, हम तो आजिज़ आ गये नाकामिए तक़दीर से।"

नाकामे आर्ज़ू (ناکام آرزو) फा. वि.–जो मनोरथ में सफल न हो; जिसके प्रेम की आशाएँ असफल हो गयी हों।

नाकारः (ناکارہ) फा. वि.–निष्कर्म, निकम्मा; व्यर्थ, वेकार; निष्प्रयोजन, वेमतलव।

नाकारआमद (ناکار آمد) फा. वि.–जिसका कोई प्रयोजन न हो, निष्प्रयोजन।

नाकाश्तः (ناکاشتہ) फा. वि.–वह जमीन जो बोई जोती न गयी हो।

नाक़िद (ناقد) अ. वि.–आलोचक, समालोचक, तन्क़ीद निगार।

नाक़िल (ناقل) अ. वि.–नक़्ल करनेवाला, प्रतिलिपिक; दूसरे से सुनी हुई बात कहनेवाला।

नाक़िस (ناقص) अ. वि.–अपूर्ण, नामुकम्मल; दूषित, विकृत, ख़राव; मिथ्या, कूट, खोटा; धूर्त, पाजी; अरबी का वह शब्द जिसका अंतिम अक्षर अलिफ़, वाव या ये हो।

नाक़िसुलअक़्ल (ناقص العقل) अ. वि.–मंदबुद्धि, विकृत-बुद्धि, कमअक़्ल।

नाक़िसुलख़िल्क़त (ناقص الخلقت) अ. वि.–जिसके शरीर में कोई अंग कम हो, विकलांग।

नाक़िसुलफ़हम (ناقص الفہم) अ. वि.–दे. 'नाकिसुलअक़्ल'।

नाक़ूस (ناقوس) अ. पुं.–दर, कंवु, शंख, संख।

नाकेह (ناکح) अ. वि.–ब्याह (नकाह) करनेवाला।

नाख़ (ناخ) फा. पुं.–नास्पाती की एक जाति।

नाख़लफ़ (ناخلف) फा. अ. वि.–जो लड़का बाप के सदाचरण पर न चले, कपूत।

नाख़िस (ناخس) अ. वि.–चुभनेवाला, गड़नेवाला।

नाख़ुदा (ناخدا) फा. पुं.–कर्णधार, नाविक, मल्लाह।

नाख़ुदातर्स (ناخداترس) फा. वि.–जो ईश्वर से न डरता हो, अर्थात् निर्दय, वेरहम।

नाख़ुदाई (ناخدائی) फा. स्त्री.–नाव चलाना, किश्तीरानी।

नाख़ुनः (ناخنہ) फा. पुं.–आँख का एक रोग जिसमें रक्त की एक विंदी पड़ जाती है।

नाख़ुन (ناخن) फा. पुं.–हाथ या पाँव के नाख़ून, नख।

नाख़ुनतराश (ناخن تراش) फा. पुं.–नाखुन काटने का यंत्र, नहन्नी।

नाख़ुश (ناخوش) फा. वि.–अप्रसन्न, नाराज़; रोगी, वीमार; क्रुद्ध, ग़ुस्सा।

नाख़ुशगवार (ناخوش گوار) फा. वि.–जो मन को अच्छा न लगे, अरुचिकर।

नाख़ुशगवारी (ناخوش گواری) फा. स्त्री.–अप्रसन्नता, नाख़ुशी; अरुचि, वेरग़वती।

नाख़ुशी (ناخوشی) फा. स्त्री.–अप्रसन्नता, नाराज़ी; रोग, वीमारी; क्रोध, ग़ुस्सा।

नाख़ूब (ناخوب) फा. वि.–जो अच्छा न हो, निकृष्ट, वुरा।

नाख़्वांदः (ناخواندہ) फा. वि.–वे वुलाया हुआ; वे पढ़ा-लिखा, अशिक्षित।

नाख़्वांदगी (ناخواندگی) फा. स्त्री.–वे वुलाया हुआ होना; वे पढ़ा-लिखा होना।

नाख़्वास्तः (ناخواستہ) फा. वि.–न चाहा हुआ।

नाख़्वास्त (ناخواست) फा. वि.–अनायास, अकस्मात्, वेइख़्तियार।

नाख़्वाह (ناخواہ) फा. वि.–जो राज़ी न हो, अस्वीकृत।

नाग़ः (ناغہ) तु. पुं.–अनुपस्थिति, ग़ैरहाज़िरी।

नाग़ःनवीस (ناغہ نویس) तु. फा. पुं.–एक कर्मचारी जो राजाओं या नव्वावों की ड्योढ़ी के मुलाज़िमीन की हाज़िरी लेता है।

नागवार (ناگوار) फा. वि.–जो पसंद न हो, जो अच्छा न लगे; निस्वाद, वेमज़ा।

नागवारा (ناگوارا) फा. वि.–दे. 'नागवार'।

नागवारी (ناگواری) फा. स्त्री.–अच्छा न लगना, पसंद न होना।

नागह (ناگہ) फा. वि.–'नागाह' का लघु., दे. 'नागाह'।

नागहाँ (ناگہاں) फा. वि.–अकस्मात्, अचानक; वेमौक़ा, कुसमय; बिना इत्तिलाअ दिये।

नागहानी (ناگہانی) फा. वि.–आकस्मिक, इत्तिफ़ाक़ी; दैविक, ग़ैवी।

नागाह (ناگاہ) फा. वि.–अचानक, अकस्मात्, यकायक; सूचना दिये बग़ैर, वेख़बरी में।

नागुज़ीर (ناگزیر) फा. वि.–जिससे छुटकारा न हो, अनिवार्य, आवश्यक, लाज़िमी।

नागुफ़्तः (ناگفتہ) फा. वि.–जो कहा न गया हो, अकथित।

नागुफ़्तःबेह (ناگفتہ بہ) फा. वि.–जिसका न कहना ही अच्छा हो, जिसके कहने में ख़रावी हो या झगड़ा पड़े, अकथ्य।

नागुफ़्तनी (ناگفتنی) फा. अव्य.–न कहने योग्य, अकथनीय।

•**नाचाक़** (ناچاق) फा. तु. वि.—जो स्वस्थ न हो, अस्वस्थ।

नाचाक़ी (ناچاقی) फा. तु. स्त्री.–वैमनस्य, मनमुटाव, अनबन; बीमारी, रोग।

नाचार (ناچار) फा. वि.–बेबस, असहाय, निराश्रय; दुःखी, दीन, मुसीबतज़दा; मज्बूर, असमर्थ।

नाचारी (ناچاری) फा. स्त्री.–बेबसी, बेकसी, आश्रय-हीनता; दुःख, कष्ट, तकलीफ़; असामर्थ्य, मज्बूरी।

नाचीज़ (ناچیز) फा. वि.–हेच, पोच, नाकारः, निकम्मा; नम्रता-प्रदर्शन के लिए वक्ता अपने को भी कहता है।

नाज़ (ناز) फा. पुं.–हाव-भाव, नाज़ोअदा; मान, अभिमान, घमंड; गर्व, फ़ख़्र।

नाज़नीं (نازنیں) फा. वि.–मृदुल, कोमल, नाज़ुक; सुकुमारी, सुन्दरी।

नाज़पर्वर (ناز پرور) फा. वि.–दे. 'नाज़पर्वर्दः'।

नाज़पर्वर्दः (ناز پرورده) फा. वि.–जिसका पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ हो; सुकुमार, नाज़ुकबदन।

नाज़पेशः (نازپیشه) फा. वि.–जिसे हाव-भाव दिखाने की आदत हो; गणिका, तवाइफ़; प्रेयसी, माशूक़ा।

नाज़पेशगी (نازپیشگی) फा. स्त्री.–नाज़ो अदा दिखाना, हाव-भाव से दिल लुभाना।

नाज़बरदार (نازبردار) फा. वि.–नाज़ उठानेवाला, नायक, आशिक़।

नाज़बरदारी (نازبرداری) फा. स्त्री.–नाज़ उठाना, ख़िदमत करना।

नाज़बालिश (ناز بالش) फा. पुं.–पहलू का तकिया, वह तकिया जो बड़े तकिए के अतिरिक्त इधर-उधर सहारे के लिए रहता है।

नाज़बू (ناز بو) फा. स्त्री.–एक प्रकार की चमेली।

नाज़ाँ (نازاں) फा. वि.–अठलाता हुआ, नाज़ करता हुआ; गर्वान्वित, मग़्रूर।

नाज़ाईदः (نازائیده) फा. वि.–जो उत्पन्न न हुआ हो, अज्ञात।

नाजिंस (ناجنس) फा. अ. वि.–असभ्य, अशिष्ट, नामुहज़्ज़ब; जो सोसाइटी के क़ाबिल न हो।

नाज़िम (ناظم) अ. पुं.–व्यवस्थापक, मुंतज़िम; मंत्री, सेक्रेटरी।

नाज़िरः (ناظره) अ. स्त्री.–नाज़िर की स्त्री., देखनेवाली, (पुं.) क़ुरान का देखकर पढ़ना, कंठ न करना।

नाज़िरःख़्वाँ (ناظرهخواں) अ. फा. वि.–क़ुरान को देखकर पढ़नेवाला, जो हाफ़िज़ न हो।

नाज़िर (ناظر) अ. पुं.–देखनेवाला, दर्शक; एक कर्मचारी।

नाज़िरीन (ناظرین) अ. पुं.–दर्शकगण, देखनेवाले, पढ़नेवाले।

नाज़िलः (نازله) अ. पुं.–आपत्ति, विपद्, मुसीबत, सानिहः।

नाज़िल (نازل) अ. वि.–उतरनेवाला, ऊपर से नीचे आनेवाला; उतरा हुआ, आया हुआ।

नाज़िश (نازش) फा. स्त्री.–नाज़, हाव-भाव; गर्व, फ़ख़्र।

नाजी (ناجی) अ. वि.–मुक्ति पानेवाला, मोक्ष प्राप्त करनेवाला; मुक्त, नजातयाफ़्तः।

नाज़ीदः (نازیده) फा. वि.–गर्वान्वित, मग़्रूर।

नाज़ुक (نازک) फा. वि.–मृदुल, मुलाइम; कोमल, नर्म; सूक्ष्म, लतीफ़; हलका-फुलका; बोदा, कमज़ोर; गूढ़, दक़ीक़; पेचदार, उलझा हुआ; दुबला-पतला; तीव्र, तेज़।

नाज़ुकअंदाम (نازک اندام) फा. वि.–जिसका शरीर दुबला-पतला हो, कृशांग।

नाज़ुककमर (نازک کمر) फा. वि.–वह हसीनः जिसकी कमर पतली हो, कटिक्षीणा।

नाज़ुकख़याल (نازک خیال) फा. अ. वि.–वह कवि जो कविता में गूढ़ अर्थवाले भाव लाता हो।

नाज़ुकतब्अ (نازک طبع) फा. अ. वि.–दे. 'नाज़ुकमिज़ाज़'।

नाज़ुकदिमाग़ (نازک دماغ) फा. अ. वि.–चिड़चिड़े मिज़ाज का, जो बात-बात पर बिगड़े, जो किसी की बात सहन न कर सके।

नाज़ुकदिल (نازک دل) फा. वि.–जिसका हृदय कोमल हो, मृदुलहृदय।

नाज़ुकबदन (نازک بدن) फा. वि.–दे. 'नाज़ुकअंदाम'।

नाज़ुक मिज़ाज (نازک مزاج) फा. अ. वि.–जिसका स्वभाव बहुत ही मृदुल हो; जिसका मिज़ाज चिड़चिड़ा हो।

नाज़ुकमिज़ाजी (نازک مزاجی) फा. अ. स्त्री.–स्वभाव की कोमलता; चिड़चिड़ापन।

नाज़ूरः (ناظوره) अ. स्त्री.–मालिन, मालिनी; प्रेयसी, प्रेमिका, महबूबः।

नाज़ूर (ناظور) अ. पुं.–रक्षक, देख-रेख करनेवाला, निगहबान।

नाज़ेबा (نازیبا) फा. वि.–अनुचित, नामुनासिब; अश्लील, नामुहज़्ज़ब।

नाज़ोनियाज़ (نازونیاز) फा. पुं.–आशिक़ और माशूक़ के मुआमलात, आशिक़ की तरफ़ से नियाज़ और मा'शूक़ की तरफ़ से नाज़।

नाज़ोर (نازور) फा. वि.–अशक्त, निर्बल, नाताक़त।

ना'त (نعت) अ. स्त्री.–हज़्रत मुहम्मद साहब की छंदोबद्ध स्तुति।

ना'तख़्वाँ (نعت‌خواں) अ. फा. वि.–मीलाद के जलसों में ना'त के शे'र पढ़नेवाला।

ना’तगो (نعتگو) अ. फा. वि.–वह शाइर जो केवल ना’त लिखता हो।

नातज्रिबःकार (ناتجربہکار) फा. अ. वि.–जिसे अनुभव न हो, अनाड़ी।

नातज्रिबःकारी (ناتجربہکاری) फा. अ. स्त्री.–अनुभवहीनता।

नातमाम (ناتمام) फा. अ. वि.–अपूर्ण, अधूरा।

नातराशीदः (ناتراشیدہ) फा. वि.–असभ्य, अशिष्ट, नामुहज़्ज़ब।

नातर्बियतयाफ़्तः (ناتربیتیافتہ) फा. अ. वि.–जिसने सभ्यता की शिक्षा न पायी हो; जो ट्रेंड न हो।

नातर्स (ناترس) फा. वि.–निर्दय, वेरह्म।

नातर्सी (ناترسی) फा. स्त्री.–निर्दयता, बेरह्मी।

नातलबीदः (ناطلبیدہ) फा. वि.–जो बुलाया न गया हो, अनाहूत।

नाताक़त (ناطاقت) फा. अ. वि.–निर्बल, अशक्त, बेज़ोर।

नाताक़ती (ناطاقتی) अ. फा. स्त्री.–निर्बलता, अशक्ति, कमज़ोरी।

नाता’लीमयाफ़्तः (ناتعلیمیافتہ) फा. अ. वि.–जो पढ़ा-लिखा न हो, अशिक्षित; असभ्य, अशिष्ट, बेतमीज।

नातिक़ः (ناطقہ) अ. पुं.–वाक्यशक्ति, वाणी, क़ुव्वते गोयाई।

नातिक़ (ناطق) अ. वि.–बोलनेवाला, वक्ता; अंतिम, आख़िरी, जो टले नहीं।

नातुवाँ (ناتواں) फा. वि.–अशक्त, निर्बल, बेज़ोर।

नातुवाँबीं (ناتواںبیں) फा. वि.–डाह करनेवाला, ईर्ष्यालु, ह़ासिद।

नातुवानी (ناتوانی) फा. स्त्री.–शक्तिहीनता, निर्बलता, कमज़ोरी।

नादान (نادان) फा. वि.–अनभिज्ञ, अनाड़ी; मूर्ख, नासमझ।

नादानिस्तः (نادانستہ) फा. वि.–अनजान में, बे जाने-बूझे।

नादानिस्तगी (نادانستگی) फा. स्त्री.–अनजानपन।

नादानी (نادانی) फा. स्त्री.–मूर्खता, बेवक़ूफ़ी; अज्ञान, जहालत।

नादार (نادار) फा. वि.–दरिद्र, निर्धन, कंगाल, मुफ़लिस।

नादारी (ناداری) फा. स्त्री.–दरिद्रता, निर्धनता, मुफ़लिसी।

नादाश्त (ناداشت) फा. वि.–दरिद्र, कंगाल, मुफ़लिस।

नादाश्ती (ناداشتی) फा. स्त्री.–दरिद्रता, कंगाली, ग़रीबी।

नादिम (نادم) अ. वि.–लज्जित, संकुचित, शर्मिंदा; पछतानेवाला।

नादिरः (نادرہ) अ. वि.–अद्‌भुत, अजीबोग़रीव।

नादिर (نادر) अ. वि.–अद्‌भुत, अजीबोग़रीव; श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

नादिरए रोज़गार (نادرۂ روزگار) अ. फा. वि.–दुनिया भर में सबसे श्रेष्ठ।

नादिरी (نادری) अ. स्त्री.–नादिर बादशाह से सम्बन्धित; गंजिफ़े का इक्का; एक प्रकार की बंडी।

नादिहंद (نادہند) फा. वि.–जो रुपया लेकर देने में बहुत टालमटोल करे, लेकर न देनेवाला।

नादिहंदगी (نادہندگی) फा. स्त्री.–रुपया उधार लेकर फिर न देना।

नादी (نادی) अ. वि.–पुकारनेवाला, बुलानेवाला।

नादीदः (نادیدہ) फा. वि.–जिसे देखा न हो, अनदेखा, अदृष्ट।

नादीदःमुश्ताक़ (نادیدہ مشتاق) फा. अ. वि.–देखने का अभिलाषी, जिसने कभी न देखा हो।

नानेजवीं (نان جویں) फा. स्त्री.–जौ की रोटी, मोटी-झोटी रोटी।

नादीदनी (نادیدنی) फा. अव्य.—जो देखने के क़ाबिल न हो, अदर्शनीय।

नादुरुस्त (نادرست) फा. वि.–जो शुद्ध न हो, अशुद्ध; जो सत्य न हो, झूठ; ग़ैर मरम्मतशुदा।

नादुरुस्ती (نادرستی) फा. स्त्री.–अशुद्धि, ठीक न होना; असत्यता, झूठ; बेमरम्मती।

नान (نان) फा. स्त्री.–रोटी, रोटिका; खमीरी रोटी, नाँद।

नानकार (نانکار) फा. स्त्री.–वह ज़मीन जो सेवक को उसकी गुज़र-बसर के लिए पुरस्कार के तौर पर दी जाय।

नानकोर (نانکور) फा. वि.–कृतघ्न, विश्वासघाती, नमकहराम।

नानख़ताई (نانخطائی) फा. स्त्री.–एक प्रकार का मीठा बिस्कुट।

नानख़ुरिश (نانخورش) फा. स्त्री.–सालन, वह चीज़ जिसके साथ रोटी खायी जाय।

नानख़्वाह (نانخواہ) फा. स्त्री.–अजवाइन, यमानिका।

नानपज़ (نانپز) फा. पुं.–रोटी पकानेवाला, नानबाई।

नानफ़रोश (نانفروش) फा. पुं.–रोटी बेचनेवाला, नानबाई।

नानबा (نانبا) फा. पुं.–नानपज़, नानबाई।

ना’ना’अ (نعناع) अ. पुं.–एक प्रकार का पोदीना।

नाने आबी (نان آبی) फा. स्त्री.–आबी रोटी।

नाने ख़ुश्क (نان خشک) फा. स्त्री.–सूखी रोटी, मोटी-झोटी रोटी।

नापदीद (ناپدید) फा. वि.–गुप्त, अव्यक्त, छिपा हुआ।

नापर्वा (ناپروا) फा. वि.–बेपर्वा, जिसे किसी बात की चिन्ता न हो।

नापर्हेजगार (ناپرہیزگار) फा. वि.–जो पर्हेज़गार न हो।

नापसंद (ناپسند) फा. वि.–अरुचिकर, ग़ैर मर्ग़ूब।

नापसंदीदः (ناپسندیدہ) फा. अ. वि.–जो पसंद न हो, अरुचिकर, अप्रिय।

नापसंदीदःकार (ناپسندیدہکار) फा. वि.–वह व्यक्ति जो ऐसे काम करता हो जो अच्छे न हों, अप्रियकर।

नापसंदीदगी (ناپسندیدگی) फा. स्त्री.–पसंद न होने का भाव, अरुचि।

नापाइदार (ناپائدار) फा. वि.–अदृढ़, जो मज़बूत न हो; अस्थायी, आरिज़ी; अनिश्चित, ग़ैर यक़ीनी।

नापाक (ناپاک) फा.वि.–अपवित्र, अशुचि, जो पाक न हो; मलदूषित, नजासत आलूद।

नापाकी (ناپاکی) फा. स्त्री.–अशुद्धता, अपवित्रता; गंदगी।

नापुख़्तः (ناپختہ) फा. वि.–जो पक्का न हो, अपक्व; जो मज़बूत न हो, अदृढ़।

नापुख़्तःकार (ناپختہکار) फा. वि.–नातज्रिबःकार, अननुभवी।

नापुख़्तगी (ناپختگی) फा. स्त्री.–अपरिपक्व, कच्चापन; अदृढ़ता, बोदापन।

नापैद (ناپید) फा. वि.–अप्राप्य, नायाब; अन्तर्द्धान, ग़ाइब; लुप्त, पोशीदा।

नापैदा (ناپیدا) फा. वि.–दे. 'नापैद'।

नापैदाकनार (ناپیداکنار) फा. वि.–जिसका छोर न मिल सके, जिसका किनारा न मिले, अपार।

नाफ़ः (نافہ) फा. पुं.–मृगनाभि।

नाफ़ (ناف) फा. स्त्री.–नाभि, तुंदी, तुंद कूपी।

नाफ़ए आहू (نافۂ آہو) फा. पुं.–मृगनाभि।

नाफ़ए मुश्क (نافۂ مشک) फा. पुं.–मृगनाभि, वह थैली जिसमें मुश्क रहती है।

नाफ़पेच (نافپیچ) फा. स्त्री.–पेचिश।

नाफ़र्जाम (نافرجام) फा. वि.–जिसके काम का परिणाम अच्छा न हो, बदअंजाम।

नाफ़र्मान (نافرمان) फा. वि.–अवज्ञाकारी, हुक्म न माननेवाला; उद्दंड, सरकश।

नाफ़र्मानी (نافرمانی) फा. स्त्री.–अवज्ञा, हुक्मउदूली; उद्दंडता, सरकशी।

नाफ़ह्म (نافہم) फा. अ. वि.–जिसकी समझ मोटी हो, जो बात न समझ सके।

नाफ़ह्मी (نافہمی) फा. अ. स्त्री.–बेअक़्ली, अज्ञान, मूर्खता।

नाफ़िज़ (نافذ) अ. वि.–हुक्म जारी होना; क़ानून लागू होना।

नाफ़िर (نافر) अ. वि.–घिन करनेवाला, घृणी।

नाफ़ी (نافی) अ. वि.–नफ़ी करनेवाला।

नाफ़े' (نافع) अ. वि.–लाभदायक, लाभकारक, नफ़ा देनेवाला।

नाफ़े ज़मीं (ناف زمیں) फा. स्त्री.–मक्का।

नाफ़े हफ़्तः (ناف ہفتہ) फा. स्त्री.–मंगलवार, मंगल।

नाबः (نابہ) फा. वि.–शुद्ध, निर्मल, ख़ालिस; तेज़ और निर्मल मदिरा।

नाब (ناب) फा. वि.–ख़ालिस, निर्मल।

नाब (ناب) अ. पुं.–दंत, दाँत।

नाबकार (نابکار) फा. वि.–नालाइक़, अधम, पामर, नीच।

नाबदान (نابدان) फा. स्त्री.–मकान की मोरी।

नाबलद (نابلد) फा. वि.–अनभिज्ञ, अनजान, नावाक़िफ़।

नाबाइस्तः (نابائستہ) फा.वि.–नाशाइस्तः, अशिष्ट, असभ्य।

नाबालिग़ (نابالغ) फा. अ. वि.–जो बालिग़ न हो, अवयस्क।

नाबालिग़ी (نابالغی) फा. अ. स्त्री.–अवयस्कता, जवानी को न पहुँचना।

नाबित (نابت) अ. वि.–उगनेवाला, उपजनेवाला।

नाबीना (نابینا) फा. पुं.–अंध, अंधा, नेत्रहीन।

नाबूद (نابود) फा. वि.–नष्ट, विध्वस्त, बरबाद; लुप्त, ग़ाइब।

नामंज़ूर (نامنظور) फा. अ. वि.–अस्वीकृत, अनंगीकृत, जो मंज़ूर न हो; रद, ख़ारिज।

नामंज़ूरी (نامنظوری) फा. अ. स्त्री.–अस्वीकृति; ख़ारिज होना, रद होना।

नामः (نامہ) फा. पुं.–चिट्ठी, ख़त, पत्र; ग्रंथ, पुस्तक, (योग में) जैसे—'शाहनामः'।

नामःनिगार (نامہنگار) फा. पुं.–संवादकार, संवाददाता, करस्पांडैंट।

नामःबर (نامہبر) फा. पुं.–ख़त ले जानेवाला, डाकिया, पत्रवाहक।

नामःरसाँ (نامہرساں) फा. पुं.–दे. 'नामःबर'।

नामःसियाह (نامہسیاہ) फा. वि.–जिसका नामए आमाल (कर्मपत्र) बिलकुल काला हो, पापी, दुष्कर्मी, गुनाहगार।

नाम (نام) फा. पुं.–संज्ञा, इस्म; यश, नामवरी; ख्याति, शोहरत; प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; स्मरण-चिह्न, यादगार; उपाधि, लक़ब; धूम, शुह्रः।

नामआवर (نام آور) फा. वि.–ख्यातिप्राप्त, मशहूर; यशस्वी, कीर्तिवान्, साहिबे फ़ैज़।

नामआवरी (نام آوری) फा. स्त्री.–सुख्याति, शोहरत; यश, कीर्ति, फ़ैज़।

नामए अमल (نامۂ عمل) फा.अ.पुं.–दे. 'नामए आ'माल'।

नामए आ'माल (نامۂ اعمال) फा. अ. पुं.–वह काग़ज़ जिस पर यमदूत हरेक व्यक्ति के सत्कर्म और कुकर्म लिखते हैं, कर्मपत्र।

नामए शौक़ (نامۂ شوق) फा. अ. पुं.–मुहब्बत का ख़त, प्रेमपत्र।

नामक़बूल (نامقبول) फा. अ. वि.–जो स्वीकार न किया जा सके, अस्वीकृत।

नामज़दः (نامزدہ) फा. वि.–दे. 'नामज़द'।

नामज़द (نامزد) फा. वि.–ख्यात, मशहूर; किसी काम या चुनाव के लिए मुंतख़ब, मनोनीत, नाम निर्दिष्ट; वह लड़की जो किसी की मँगेतर हो चुकी हो।

नामज़दगी (نامزدگی) फा. स्त्री.–चुनाव आदि में नामज़द होना, नामनयन, नाम-निर्देशन; किसी काम के लिए किसी का तक़र्रुर।

नामजू (نامجو) फा. वि.–नामवरी चाहनेवाला।

नामत्बूअ (نامطبوع) फा. अ. वि.–अप्रिय, अरुचिकर, नामर्ग़ूब; अप्रकाशित, जो छपा न हो।

नामत्लब (نامطلوب) फा. अ. वि.–जिसकी चाह न हो, अवांछित।

नामदार (نامدار) फा. वि.–यशवान्, नामवर; प्रतिष्ठित, ज़ी इज़्ज़त; ख्यातिप्राप्त, मशहूर।

नामबरदार (نامبردار) फा. वि· नामी, प्रतिष्ठित।

नामबुर्दः (نامبردہ) फा. वि.–पहले कहा हुआ व्यक्ति, जिस आदमी का पहले ज़िक्र हो चुका हो, पूर्वोक्त।

नामर्द (نامرد) फा. वि.–भीरु, डरपोक, बुज़दिल; क्लीव, नपुंसक, हीजड़ा।

नामर्दी (نامردی) फा.स्त्री.–भीरुता, डरपोकपन, बुज़दिली; क्लीवत्व, नपुंसकता, ज़नानापन।

नामर्दुम (نامردم) फा. वि.–अधम, पामर, नीच, लोफ़र।

नामर्दुमी (نامردمی) फा.स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनगी।

नामर्बूत (نامربوط) फा.अ.वि.–जो क्रमबद्ध न हो, असंबद्ध; अनमिल, बेजोड़, अंड-बंड।

नामवर (نامور) फा. वि.–मशहूर, प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त; यशवान्, पुण्यश्लोक, बाफ़ैज़।

नामवरी (ناموری) फा. स्त्री.–ख्याति, शोहरत; यश, कीर्ति, फ़ैज़।

नामश्रूअ (نامشروع) फा. अ. वि.–जो काम शर्अ के विरुद्ध हो, अविहित।

नामस्मूअ (نامسموع) फा. अ. वि.–जो सुना न हो, अश्रुत।

नामह्दूद (نامحدود) फा. अ. वि.–अपार, असीम, जिसकी हद न हो।

नामह्रूम (نامحروم) फा. अ. वि.–वह मर्द जिससे स्त्री का पर्दा जाइज़ हो; अपरिचित, अजनबी।

नामा'क़ूल (نامعقول) फा.अ. वि.–अनुचित, नामुनासिब; अश्लील, फुहश; अनर्थक, बेहूदः, बुद्धि में आ न सकनेवाली बात; अरुचिकर, नापसंदीदः; असभ्य, अशिष्ट, ग़ैर मुहज़्ज़ब।

नामानूस (نامانوس) फा. अ. वि.–जिसकी ओर रुचि और लगाव न हो; जो पसंद न हो।

नामा'लूमुलइस्म (نامعلوم الاسم) फा. अ. वि.–जिसका नाम न मालूम हो, अज्ञातनाम।

नामा'लूम (نامعلوم) फा. अ. वि.–जिसका पता न हो, अज्ञात।

नामियः (نامیہ) अ. स्त्री.–उगने और बढ़ने की क़ुव्वत, विकास-शक्ति।

नामी (نامی) फा. वि.–प्रसिद्ध, मशहूर; यशवान्, बाफ़ैज़; श्रेष्ठ, मुअज़्ज़ज़।

नामीदः (نامیدہ) फा. वि.–नाम रखा हुआ।

नामुआफ़िक़ (ناموافق) फा. अ. वि.–प्रतिकूल, अननुकूल, मुख़ालिफ़।

नामुकम्मल (نامکمل) अ. फा. वि.–जो पूरा न हो, अपूर्ण, अधूरा; जो अभी ख़त्म न हुआ हो, असमाप्त।

नामुतनाही (نامتناهی) फा. अ. वि.–असीम, अपार, बेहद, जिसकी इंतिहा न हो।

नामुनासिब (نامناسب) फा. अ. वि.–जो उचित न हो; अनुचित; जो श्लील न हो, अश्लील, फ़ुहश।

नामुबारक (نامبارک) फा. अ. वि.–जो शुभ न हो, अशुभ, अमांगलिक।

नामुम्किन (ناممکن) फा.अ. वि.–जो हो न सके, असंभव।

नामुराद (نامراد) फा. वि.–असफलमनोरथ, नाकाम; दुर्भाग्यवान्, अभागा, बदनसीब।

नामुरादी (نامرادی) फा. स्त्री.–मनोरथ में असफलता, नाकामी; बदनसीबी, दुर्भाग्य।

नामुलाइम (ناملائم) फा. अ. वि.–जो मुलाइम न हो, कठोर, सख़्त; जो श्लील न हो, अश्लील, नामुहज़्ज़ब।

नामुशख़्ख़स (نامشخص) फा. अ. वि.–जिसकी तशख़ीस न हुई हो, अज्ञात; अकुलीन, अज्ञातकुल।

नामुसाअदत (نامساعدت) फा. अ. स्त्री.–प्रतिकूलता, नामुआफ़क़त, नासाज़गारी।

नामुसाइद (نامساعد) फा. अ. वि.–प्रतिकूल, मुख़ालिफ़।

नामुसावी (نامساوی) फा. अ. वि.–जो बराबर न हो, विषम; जो यकसाँ न हो, असमान।

नामूस (ناموس) अ. पुं.–लज्जा, लाज, ग़ैरत; सतीत्व, इस्मत, मर्यादा ; पत्नी, स्त्री।

नामूसियः (ناموسیہ) अ. स्त्री.–मच्छरदानी।

नामूसे अक्बर (ناموس اکبر) अ. पुं.–नियम, क़ाइदा; विधान, दस्तूर; जिब्रील।

नामे ख़ुदा (نام خدا) फा. अव्य.–जहाँ नज़र लगने का भय हो वहाँ बोलते हैं, जैसे—अब वह नामे ख़ुदा तनदुरुस्त हैं; वाह वाह, माशा अल्लाह की जगह; प्रशंसा के लिए।

नामेह्रबाँ (نامہرباں) फा. वि.–बेरहम, दयाहीन; दुश्मन, शत्रु।

नामेह्रबानी (نامہربانی) फा. स्त्री.–बेरहमी, निर्दयता; शत्रुता, बैर।

नामो'तबर (نامعتبر) फा. अ. वि.–जिसका एतिबार न हो, अविश्वस्त।

नामौज़ूँ (ناموزوں) फा. अ. वि.–अनुचित, नामुनासिब; अश्लील, नामुहज़्ज़ब; वह शेर या मिस्रा जो वज़्न से खारिज हो।

नामौजूद (ناموجود) फा. अ. वि.–जो मौजूद न हो, अनुपस्थित।

नामौजूदगी (ناموجودگی) फा. अ. स्त्री.–अनुपस्थिति, अविद्यमानता।

नामौज़ूनी (ناموزونی) फा. अ. स्त्री.–अनुचितपन, नामुनासिब होना; शे'र या मिस्रे का वज़्न में न होना।

नायाब (نایاب) फा. वि.–जिसका मिलना संभव न हो, अप्राप्य।

नायाबी (نایابی) फा. स्त्री.–अप्राप्ति, फ़ुक़्दान।

नारंज (نارنج) फा. पुं.–संगतरः, संतरा, नारंगी।

नारंजी (نارنجی) फा. वि.–नारंगी के रंग का।

ना'रः (نعرہ) अ. पुं.–ज़ोर की आवाज, ललकार; माँग, मुतालबा; किसी माँग या मुतालबे के लिए, उसी आशय के संक्षिप्त शब्दों की घोषणा।

ना'रःज़न (نعرہزن) अ. फा. वि.–नारा लगानेवाला।

ना'रःज़नी (نعرہزنی) अ. फा. स्त्री.–नारे लगाना।

नार (نار) अ. स्त्री.–आग, अग्नि; नरक, दोज़ख़।

नार (نار) फा. पुं.–अनार, दाड़िम।

नारजील (نارجیل) फा. पुं.–नारियल, नारिकेल, गरी, खोपरा।

नारजीले दर्याई (نارجیل دریائی) अ. फा. पुं.–समुद्र में पैदा होनेवाला नारियल, पपीता जो हैज़े में काम आता है।

नारदान (ناردان) फा. पुं.–अनार के बीज, खट्टे अनार के दाने।

नारपिस्ताँ (نار پستاں) फा. वि.–वह स्त्री जिसकी छातियाँ कठोर हों।

नारबुन (ناربن) फा. पुं.–अनार का पेड़, दाड़िम वृक्ष।

नारवन (نارون) फा. पुं.–गुलनार, अनार का एक प्रकार।

नारवा (ناروا) फा. वि.–जो उचित न हो, अनुचित, नामुनासिब; जो जाइज़ न हो, अविहित।

नारस (نارس) फा. वि.–वह फल जो अभी पका न हो, कच्चा।

नारसा (نارسا) फा. वि.–जो पहुँच न सके, जो पा न सके।

नारसाई (نارسائی) फा. स्त्री.–पहुँच न होना, पा न सकना।

नारसी (نارسی) फा. स्त्री.–दे. 'नारसाई'।

नारसीदः (نارسیدہ) फा. वि.–जो फल पका न हो; जो बालिग़ न हो, अवयस्क; जो अनुभवहीन हो, अनाड़ी।

नारसीदगी (نارسیدگی) फा. स्त्री.–फल का पका न होना, कच्चापन; अनुभवहीनता, अनाड़ीपन।

नाराज़ (ناراض) फा.अ. वि.–अप्रसन्न, नाख़ुश; क्रुद्ध, ग़ुस्से में।

नाराज़ी (ناراضی) फा. अ. स्त्री.–अप्रसन्नता, नाख़ुशी; क्रोध, कोप, ग़ुस्सा।

नारास्त (ناراست) फा. वि.–जो सीधा न हो, वक्र, टेढ़ा; जो सच न हो, असत्य, झूठ; खोटा आदमी, धूर्त।

नारास्ती (ناراستی) फा. स्त्री.–वक्रता, टेढ़ापन; असत्यता, झूठ; खोटापन, धूर्तता।

नारी (ناری) अ. वि.–नारकी, दोज़ख़ी; अग्नि से उत्पन्न प्राणिवर्ग, जिन, परी।

नारे जहन्नम (نار جہنم) अ. स्त्री.–नरक की आग, दोज़ख़ की आग।

नारे दोज़ख़ (نار دوزخ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'नारे जहन्नम'।

नारे फ़ार्सी (نار فارسی) अ. फा. स्त्री.–उपदंश, गर्मी रोग।

नारे सईर (نار سعیر) अ. स्त्री.–दे. 'नारे जहन्नम'।

नाल: (نالہ) फा. पुं.–आर्तनाद, फ़र्याद; चीत्कार, चीख़; कोलाहल, शोर।

नाल:कश (نالہکش) फा. वि.–नाला करनेवाला, फ़र्याद करनेवाला।

नाल:कुनाँ (نالہکناں) फा. वि.–नाल: करता हुआ, फ़र्याद करता हुआ।

नाल:गर (نالہگر) फा. वि.–दे. 'नाल:कश'।

नाल:ज़न (نالہزن) फा. वि.–दे. 'नाल:कश'।

नाल (نال) फा. स्त्री.–वह महीन सूत-जैसे रेशे जो क़लम के भीतर होते हैं; भीतर से ख़ाली नरकट, नलकी।

ना'ल (نعل) अ. पुं.–जूता, पादुका; घोड़े या बैल आदि के पाँव में जड़ा जानेवाला लोहे का हल्क़; जूते में जड़ा जानेवाला लोहे का हल्क़ः।

ना'लैन (نعلین) अ. पुं.–दोनों जूते, जूते का जोड़ा।

ना'ल दर आतश (نعل در آتش) अ. फा. वि.–व्याकुल, आतुर, बेक़रार।

ना'लबंद (نعل بند) अ.फा. वि.–जूतों या चौपायों के पाँव में नाल बाँधनेवाला।

ना'लबहा (نعل بہا) अ. फा. पुं.–ख़िराज, चौथ, राजकर।

नालाँ (نالاں) फा. वि.–रोता-चिल्लाता हुआ, वावैला करता हुआ;—"बहार आयी चमन में, और तू इतनी परीशाँ है; बता बुलबुल! तुझे क्या दर्द है, तू जिससे नालाँ है!"; अनुचित, नामुनासिब।

नालाइक़ (نالائق) फा. अ. वि.–अयोग्य, नाअह्ल; नीच, कमीना; अशिष्ट, उजड्ड; धूर्त, चालाक; दुरात्मा, बदबातिन।

नालिंदः (نالندہ) फा. वि.–रोनेवाला, नालः करनेवाला।

नालिश (نالش) फा. स्त्री.–आर्तनाद, फ़र्याद; वाद, दावा; किसी के अत्याचार की शिकायत।

नालिशी (نالشی) फा. वि.–फ़र्याद करनेवाला; दावा करनेवाला, वादी।

नालीदः (نالیدہ) फा. वि.–रोया हुआ, रुदित।

नालीदनी (نالیدنی) फा. अव्य.–रोने के लाइक़।

ना'ले चोबीं (نعل چوبیں) अ. फा. पुं.–खड़ाऊँ, चट्टी, पादुका।

नावः (ناوہ) फा. पुं.–परनाला, वह लकड़ी या मिट्टी का परनाला जो छतों में लगता है।

नाव (ناو) फा. स्त्री.–किश्ती, नौका, नाव।

नावक (ناوک) फा. पुं.–एक प्रकार का छोटा तीर, जिसकी मार कड़ी होती है।

नावकंदाज़ (ناوک انداز) फा. वि.–दे. नावक अंदाज, उच्चारण दोनों तरह होता है।

नावकअंदाज़ (ناوک انداز) फा. वि.–तीर चलानेवाला, कांडीर।

नावकअफ़गन (ناوک افگن) फा. वि.–दे. 'नावकअंदाज़'।

नावकफ़िगन (ناوک فگن) फा. वि.–दे. 'नावकअंदाज़'।

नावदान (ناودان) फा. पुं.–मोरी, नावदान, परनाला।

नावनोश (ناونوش) फा. स्त्री.–पीना-पिलाना, मयनोशी; शराब और नग़्मः, रंगरलयाँ।

नावर्द (ناورد) फा. स्त्री.–युद्ध, लड़ाई, जंग।

नावाक़िफ़ (ناواقف) फा. अ. वि.–अनभिज्ञ, अनाड़ी; अपरिचित, अनजान; अज्ञात, नामालूम।

नावाक़िफ़ीयत (ناواقفیت) फा. अ. स्त्री.–अनभिज्ञता, अनाड़ीपन; अपरिचय, अनजानपन।

नावाजिब (ناواجب) फा. अ. वि.–जो उचित न हो, नामुनासिब; जो श्लील न हो, नामुहज़्ज़ब।

ना'श (نعش) अ. स्त्री.–जनाज़ा, शव, अरथी।

नाशनास (ناشناس) फा. वि.–न पहचाननेवाला, जो पहचानता न हो, अपरिचित।

नाशनासाई (ناشناسائی) फा. स्त्री.–परिचय न होना, न पहचानना, अपरिचय।

नाशाइस्तः (ناشائستہ) फा. वि.–अनुचित, नामुनासिब; अशिष्ट, बदतहज़ीब; अश्लील, फ़ुहश।

नाशाइस्तःअत्वार (ناشائستہ اطوار) फा. अ. वि.–जिसका आचरण श्लील और सभ्य न हो।

नाशाइस्तगी (ناشائستگی) फा. स्त्री.–अशिष्टता, बदतहज़ीबी; अश्लीलता, फक्कड़पन।

नाशाद (ناشاد) फा. वि.–जो ख़ुश न हो, अप्रसन्न; खिन्न, मलिन, अफ़सुर्दः; अभागा, बदनसीब।

नाशादमाँ (ناشادماں) फा. वि.–दे. 'नाशाद'।

नाशादमानी (ناشادمانی) फा. स्त्री.–अप्रसन्नता, नाख़ुशी; खिन्नता, मलिनता, अफ़्सुर्दगी।

नाशिकेब (ناشکیب) फा. वि.–दे. 'नाशिकेबा'।

नाशिकेबा (ناشکیبا) फा. वि.–आतुर, व्याकुल, बेचैन; असहिष्णु, नामुतहम्मिल; अधीर, बेसब्र।

नाशिकेबाई (ناشکیبائی) फा. स्त्री.–आतुरता, बेचैनी; अधीरता, बेसब्री; असहिष्णुता, बेतहम्मुली।

नाशिता (ناشتا) फा. पुं.–सवेरे से नहार मुँह होना; दे. 'नाश्ता'।

नाशिर (ناشر) अ. पुं.–प्रसारक, सबमें फैलानेवाला; प्रकाशक, पब्लिशर।

नाशिरात (ناشرات) अ. स्त्री.–आँधियाँ और झक्कड़।

नाशी (ناشی) अ. वि.–उत्पन्न होनेवाला, पैदा होनेवाला; युवक, युवा, नौजवान।

नाशुक्र (ناشکر) फा. अ. पुं.–अकृतज्ञ, कृतघ्न, एह्सान फ़रामोश, नमकहराम।

नाशुक्रगुज़ार (ناشکرگزار) फा. अ. वि.–जो किसी की भलाई का शुक्रिया अदा न करे, कृतघ्न।

नाशुक्रगुज़ारी (ناشکرگزاری) फा. अ. स्त्री.–उपकार पर कृतज्ञता न प्रकट करना, कृतघ्नता, एह्सान फ़रामोशी।

नाशुदनी (ناشدنی) फा. वि.–असंभव, अशक्य, नामुम्किन; अभागा, बदनसीब।

नाशुन्वा (ناشنوا) फा. वि.–जो किसी की बात न सुनता हो, जिसके यहाँ किसी की पूछताछ न हो।

नाश्ता (ناشتا) फा. पुं.–सबेरे का थोड़ा-सा खाना, जलपान, उपाहार।

नाश्पाती (ناشپاتی) फा.स्त्री.–एक प्रसिद्ध फल, नासपाती।

नास (ناس) अ. पुं.–एक आदमी; बहुत-से आदमी।

नासज़ा (ناسزا) फा. वि.–अनुचित, नामुनासिब; अश्लील, नाज़ेबा।

नासबूर (ناصبور) फा. अ. वि.–अधीर, बेसब्रा; आतुर, जल्दबाज़।

नासब्र (ناصبر) फा. अ. वि.–दे. 'नासबूर'।

नासरः (ناسرہ) फा. वि.–वह सिक्का जो बाज़ार में न चले, खोटा, कूट; वह सोना या चाँदी जिसमें मिलावट या आमेज़िश हो।

नासवाब (ناصواب) फा. अ. वि.–जो सत्य न हो, झूठ; जो ठीक न हो, अशुद्ध।

नासाज़ (ناساز) फा. वि.–नादुरुस्त, ग़ैरसहीह; अननुकूल, प्रतिकूल, नामुआफ़िक़।

नासाज़गार (ناسازگار) फा. वि.–अननुकूल, प्रतिकूल, मुख़ालिफ़।

नासाज़ी (ناسازی) फा. स्त्री.–नादुरुस्ती, खराबी; प्रतिकूलता, मुख़ालफ़त।

नासाफ़ (ناصاف) फा.अ. वि.–जो साफ़ और स्वच्छ न हो; जो ख़ालिस न हो।

नासिक (ناسک) अ. वि.–ईश्वराराधना करनेवाला, इबादतगुज़ार; बलिदान करनेवाला, क़ुर्बानी करनेवाला।

नासिख़ (ناسخ) अ. वि.–लिखनेवाला, लिपिक; रद करनेवाला, निरसक (उर्दू के एक प्रसिद्ध कवि)।

नासितूदः (ناستودہ) फा. वि.–अप्रशंसित, जिसकी तारीफ़ न की गयी हो।

नासिपास (ناسپاس) फा.वि.–नाशुक्रा, अकृतज्ञ, नमकहराम।

नासिपासगुज़ार (ناسپاس گزار) फा. वि.–उपकार की कृतज्ञता न माननेवाला।

नासिपासी (ناسپاسی) फा. स्त्री.–उपकार न मानना, कृतघ्नता, नमकहरामी।

नासिब (ناصب) अ. वि.–स्थापना करनेवाला, लगानेवाला; ज़बर देनेवाला।

नासिबी (ناصبی) अ. वि.–हज़्रत अली को बुरा कहनेवाला संप्रदाय; उक्त संप्रदाय का व्यक्ति।

नासियः (ناصیہ) अ. पुं.–माथा, ललाट, भाल, पेशानी।

नसियःफ़र्सा (ناصیہ فرسا) अ. फा. वि.–माथा रगड़नेवाला अर्थात् ख़ुशामद करनेवाला; ज़मीन पर माथा रखकर पूजा या प्रणाम करनेवाला।

नासियःसा (ناصیہ سا) अ. फा. वि.–दे. 'नासियःफ़र्सा'।

नासिर (ناصر) अ. वि.–सहायक, मददगार; पृष्ठ-पोषक, हिमायती।

नासिर (ناثر) अ. वि.–नस्र लिखनेवाला, गद्यलेखक।

नासी (ناسی) अ. वि.–भूल जानेवाला, भूलनेवाला।

नासुतुर्दः (ناستردہ) फा.वि.–जिसका सर मूँड़ा न गया हो।

नासुफ़्तः (ناسفتہ) फा. वि.–जिसमें छेद न हुआ हो, अनबिधा (मोती); कुमारी, अक्षता, बाकिरः।

नासूत (ناسوت) अ. पुं.–हमारा संसार, मर्त्यलोक, दुनिया।

नासूर (ناسور) अ. पुं.–एक प्रकार का घाव जो हमेशा रिस्ता रहता है और कभी अच्छा नहीं होता, नाड़ीव्रण।

नासेह (ناصح) अ. पुं.–नसीहत करनेवाला, सदुपदेशक; साहित्यिक परिभाषा में प्रेम-त्याग का उपदेश देनेवाला।

नासेहे मुश्फ़िक़ (ناصح مشفق) अ. पुं.–दयावान् और नम्र स्वभाववाला, नासेह।

नास्पाल (ناسپال) फा. पुं.–अनार का छिलका।

नाहंजार (ناہنجار) फा. वि.–अधम, नीच, कमीना; कदाचारी, दुष्कर्मी, बदचलन।

नाहक़ (ناحق) फा. अ. वि.–अकारण, बेसबब; अन्याय, अनीति, नाइंसाफ़ी।

नाहक़कोश (ناحق کوش) फा. अ़. वि.–अनीति और अन्याय की ओर प्रवृत्त रहनेवाला।

नाहक़शनास (ناحق شناس) फा. अ. वि.–सच्चाई को न पहचाननेवाला; ख़ुदा को न पहचाननेवाला।

नाहक़शनासी (ناحق شناسی) फा. अ. स्त्री.–ख़ुदा को न पहचानना; सच्चाई को न पहचानना; अन्याय, अनीति।

नाहमदर्द (ناہمدرد) फा. वि.–जिसमें सहानुभूति न हो, बेमुरव्वत, दुःशील।

नाहमवार (ناہموار) फा. वि.–जो समतल न हो, ऊँचा-नीचा; जो सभ्य और शिष्ट न हो, उजड्ड, असम।

नाहार (ناہار) फा. वि.–जो सवेरे से भूखा हो, नहारमुँह।

नाहियः (ناحیہ) अ. पुं.–किनारा, छोर, हद; किसी देश की आख़िरी हद।

नाही (ناہی) अ. वि.–रोकनेवाला, निवारक; मना करनेवाला, निषेधक।

नाही (ناحی) अ. वि.–इरादा करनेवाला, संकल्पकर्ता।

नाहीद (ناہید) फा. स्त्री.–शुक्र ग्रह, ज़ुहरः।

नि

निअम (نعم) अ. स्त्री.–'ने'मत' का बहु., ने'मतें, अच्छी-अच्छी चीज़ें।

निआल (نعال) अ. पुं.–'ना'ल' का बहु., जूते, पादुकाएँ; घोड़े के नाल।

निक़ात (نقاط) अ. पुं.–'नुक़्त:' का बहु., बिंदियाँ, नुक़्ते, शून्य।

निकात (نکات) अ. पुं.–'नुक्त:' का बहु., सूक्ष्म और गूढ़ बातें।

निक़ाब (نقاب) अ. स्त्री.–मुखावरण, मुखपट, बुर्क़ा; ओट, पर्दा (नक़ाब)।

निक़ाबकुशाई (نقاب کشائی) अ.फा.स्त्री.–दुल्हन के मुँह से निक़ाब उठाने की रस्म; किसी चित्र पर से पर्दा उठाने का उत्सव, अनावरण।

निक़ाबपोश (نقاب پوش) अ. फा. वि.–जो अपना मुँह छिपाये हो, जिसके मुँह पर निक़ाब पड़ी हो।

निक़ाबे रुख़ (نقاب رخ) अ. फा. स्त्री.–मुखपट, बुर्क़ा, घूँघट।

निक़ार (نقار) अ. पुं.–द्वेष, वैर, कीना।

निकाह (نکاح) अ. पुं.–पाणि-ग्रहण, विवाह, ब्याह।

निकाहनाम: (نکاح نامہ) अ. फा. पुं.–वह पत्र जिसमें ब्याह की शर्तें लिखी हों।

निकाहे सानी (نکاح ثانی) अ. पुं.–दूसरा ब्याह, पहले पति के मरने पर दूसरे व्यक्ति के साथ ब्याह, पुनर्विवाह।

निको (نکو) फा. वि.–उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा; सुन्दर, हसीन।

निकोई (نکوئی) फा.स्त्री.–उत्तमता, अच्छाई; सुन्दरता, हुस्न।

निकोकार (نکوکار) फा.वि.–अच्छे आचरणवाला, सदाचार।

निकोख़्वाह (نکوخواہ) फा. वि.–भलाई चाहनेवाला, शुभचिंतक, हितैषी।

निकोनाम (نکونام) फा.वि.–नामवर, उत्तमयश, कीर्तिमान्।

निकोहिश (نکوہش) फा. स्त्री.–भर्त्सना, डाँट-फटकार; निंदा, बुराई।

निकोहीद: (نکوہیدہ) फा. वि.–निंदित, कुत्सित, धिक्कृत।

निक़्मत (نقمت) अ. स्त्री.–कष्ट, पीड़ा, यातना, अज़ाब; द्वेष, कीना।

निक़्रिस (نقرس) अ. पुं.–कमर की जड़ से अँगूठे तक पूरे पाँव में होनेवाला एक दर्द।

निख़्वत (نخوت) अ. स्त्री.–अभिमान, अहंकार, ग़ुरूर।

निख़्वतपसंद (نخوت پسند) अ. फा. वि.–अभिमानी, अहंकारी, मग़्रूर।

निगर (نگر) फा. प्रत्य.–ताकनेवाला, देखनेवाला, जैसे—'दस्तनिगर' दूसरे के हाथ की तरफ़ देखनेवाला, अर्थात् पराश्रय।

निगराँ (نگراں) फा. वि.–निरीक्षक, जाँच-पड़ताल करनेवाला; संरक्षक, मुहाफ़िज़; अभिभावक, गार्जियन; प्रतीक्षक, रस्ता देखनेवाला।

निगरानी (نگرانی) फा. स्त्री.–निरीक्षण, देख-रेख; संरक्षण, हिफ़ाज़त; अभिभावकता, सरपरस्ती।

निगह (نگہ) फा. स्त्री.–'निगाह' का लघु., दे. 'निगाह'।

निगहदाश्त (نگہداشت) फा. स्त्री.–संरक्षण, निगरानी।

निगहबान (نگہبان) फा. वि.–संरक्षक, देख-रेख करनेवाला।

निगार (نگار) फा. पुं.–मूर्ति, प्रतिमा, बुत; चित्र, नक़्श; प्रेमपात्र, महबूब; प्रेयसी, प्रेमिका, महबूब:; हाथ-पाँव पर मेंहदी से बनाये हुए चित्र (प्रत्य.) चित्रित, जैसे—'ज़रनिगार' स्वर्णचित्रित।

निगारख़ान: (نگارخانہ) फा. पुं.–चित्रालय, तस्वीर-घर; सजा हुआ मकान; मूर्तिगृह, बुतख़ाना; जहाँ बहुत-सी सुन्दरियाँ एकत्र हों वह स्थान।

निगारिंद: (نگارندہ) फा. वि.–लिखनेवाला; चित्र बनानेवाला।

निगारिश (نگارش) फा. स्त्री.–लेख, तहरीर; चित्र, नक़्श।

निगारिस्तान (نگارستان) फा. पुं.–चित्रालय, जहाँ बहुत-सी तस्वीरें हों; जहाँ बहुत-सी हसीन शक्लें हों; मूर्ति-गृह।

निगारीं (نگاریں) फा. वि.–चित्रित, नक़्शीन; शृंगारित, मुरस्सा।

निगारेअर्मनी (نگار ارمنی) फा. स्त्री.–फ़र्हाद की प्रेमिका, शीरीं।

निगाश्त: (نگاشتہ) फा. वि.–लिखा हुआ, लिखित; चित्रित, मुनक़्क़श।

निगाश्तनी (نگاشتنی) फा. अव्य.–लिखने योग्य; चित्र बनाने योग्य।

निगाह (نگاہ) फा. स्त्री.–दृष्टि, नज़र, प्रेक्षा।

निगाहदार (نگاہدار) फा. वि.–संरक्षक, निगहबान।

निगाहदाश्त (نگاہداشت) फा. स्त्री.–संरक्षा, हिफ़ाज़त, निगरानी, देख-रेख।

निगाहबान (نگاہبان) फा. वि.–संरक्षक, निगराँ, देख-रेख करनेवाला।

निगाहेक़ह्र (نگاہ قہر) फा. अ. स्त्री.–क्रोध की दृष्टि, ग़ुस्से की नज़र।

निगाहे ग़लत अंदाज़ (نگاہ غلط انداز) फा. वि.–ऐसी दृष्टि जिसे हर व्यक्ति यह समझे कि उसी की ओर है, भ्रम में डालनेवाली दृष्टि।

निगाहे तअम्मक़ (نگاہ تعمق) फा. अ. स्त्री.–सूक्ष्म दृष्टि, गहरी नज़र।

निगाहेनाज़ (نگاہناز) फा. स्त्री.–नाज़ो अंदाज़ की दृष्टि।

निगाहे पर्वरिश (نگاہپرورش) फा. स्त्री.–कृपादृष्टि, मेह्रबानी की नज़र, दयादृष्टि।

निगाहेबद (نگاہبد) फा. स्त्री.–बुरी नज़र, कुदृष्टि, पाप-दृष्टि।

निगाहेमेह्र (نگاہمہر) फा. स्त्री.–कृपा-दृष्टि, दया-दृष्टि, करम की निगाह।

निगूँ (نگوں) फा. वि.–औंधा, उलटा, अधोमुख।

निगूँताले' (نگوں طالع) फा. अ. वि.–दे. 'निगूँबख़्त'।

निगूँबख़्त (نگوں بخت) फा. वि.–औंधी क़िस्मतवाला, हतभाग्य।

निगूँसार (نگوں سار) फा. वि.–औंधा, उलटा, अधोमुख।

निगूँहिम्मत (نگوں ہمت) फा. अ. वि.–हतसाहस, हतोत्साह, पस्त हिम्मत।

निज़ाअ (نزاع) अ. स्त्री.–झगड़ा, दंगा, फ़साद; वैर, शत्रुता, दुश्मनी।

निज़ाएलफ़्ज़ी (نزاع لفظی) अ. स्त्री.–केवल बातों का झगड़ा, ज़बानी झगड़ा, वाक्कलह, शाब्दिक-कलह।

निज़ाद (نژاد) फा. स्त्री.–कुल, वंश, नसब, दे. 'नज़ाद', अधिक शुद्ध वही है।

निज़ाम (نظام) अ. पुं.–प्रबंध, व्यवस्था, इंतिज़ाम; क्रम, सिलसिला; शैली, पद्धति, तर्ज़; संघटन, तंज़ीम।

निज़ामी (نظامی) अ.वि.–सैनिक, फ़ौजी; प्रबंध से सम्बन्ध रखनेवाला।

निज़ामेफ़ीसाग़ोर्स (نظام فیثاغورث) अ. पुं.–दे. 'निज़ामे शम्सी'।

निज़ामेबत्लीमूस (نظام بطلیموس) अ. पुं.–जिसमें यह माना गया है कि पृथ्वी अचल है और चाँद-सूरज आदि ग्रह इसके चारों ओर घूमते हैं।

निज़ामेशम्सी (نظام شمسی) अ. पुं.–जिसमें यह माना गया है कि सूरज अचल है, और पृथ्वी तथा दूसरे ग्रह उसके चारों ओर घूमते हैं, आधुनिक वैज्ञानिकों का मत भी यही है।

निज़ामेसल्तनत (نظام سلطنت) अ. पुं.–राज्य-प्रबंध, राज की व्यवस्था।

निज़ामेहुकूमत (نظام حکومت) अ. पुं.–दे. 'निज़ामेसल्तनत'।

निज्द (نزد) फा. वि.–समीप, निकट, क़रीब, दे. 'नज़्द', दोनों शुद्ध हैं।

निदा (ندا) अ. स्त्री.–बुलाना, पुकारना, आवाह्न; वह शब्द जो बुलाने के लिए प्रयुक्त हो जैसे, 'ओ' 'ए' आदि।

निदाएग़ैब (نداےغیب) अ. स्त्री.–आकाशवाणी, ग़ैबी आवाज़।

निफ़ाक़ (نفاق) अ. पुं.–फूट, एकता का न होना; शत्रुता, वैर, दुश्मनी।

निफ़ाक़अंगेज़ (نفاق انگیز) अ. फा. वि.–फूट डालनेवाली बात, विरोध करानेवाली बात।

निफ़ाक़पर्वर (نفاق پرور) अ. फा. वि.–फूट डालनेवाला व्यक्ति, भेदकर्ता।

निफ़ाक़ेबाहमी (نفاق باہمی) अ. फा. स्त्री.–आपस की फूट, पारस्परिक विरोध।

निफ़ास (نفاس) अ. पुं.–वह रक्तस्राव जो प्रसूतिका के शरीर से बच्चा जनने के चालीस दिन तक होता रहे।

निफ़्तः (نفطہ) अ. पुं.–छाला, फफोला, आब्ला।

निफ़्त (نفت) फा. पुं.–मिट्टी का तेल; बारूद।

निफ़्तअंदाज़ (نفت انداز) फा.वि.–बारूदी हथियार चलानेवाला, गोलंदाज़, तोप दाग़नेवाला।

निफ़्रीं (نفریں) फा. स्त्री.–धिक्कार, लानत।

निब्रास (نبراس) अ. पुं.–दीप, दीपक, चिराग़।

निया (نیا) फा. पुं.–प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; दादा, पितामह; नाना, मातामह; मामूँ, मातुल।

नियाइश (نیائش) फा. स्त्री.–स्तुति, हम्दोसना; प्रशंसा, तारीफ़; साधुवाद, शाबाश।

नियागाँ (نیاگاں) फा. पुं.–'निया' का बहु., पूर्वज, पुरखे, बुज़ुर्ग।

नियाज़ (نیاز) फा. पुं.–प्रार्थना, गुज़ारिश; इच्छा, आर्ज़ू; परिचय, जान-पहचान; साक्षात्, मुलाक़ात (स्त्री.) चढ़ावा, भेंट; चढ़ावे की मिठाई; फ़ातहा, मुर्दे या किसी बुज़ुर्ग का खाना आदि।

नियाज़आगीं (نیاز آگیں) फा. वि.–दे. 'नियाज़मंद'।

नियाज़केश (نیاز کیش) फा. वि.–दे. 'नियाज़मंद'।

नियाज़नामः (نیاز نامہ) फा. पुं.–विनयपत्र, वक्ता अपने पत्र के लिए बोलता है।

नियाज़मंद (نیاز مند) फा. वि.–आज्ञाकारी, ताबेदार; परिचित, मुलाक़ाती; भक्त, फ़िदाई; मित्र, दोस्त।

नियाज़मंदानः (نیاز مندانہ) फा. अव्य.–भक्तों-जैसा, आज्ञाकारियों-जैसा, नम्रतापूर्ण।

नियाज़मंदी (نیاز مندی) फा.स्त्री.–आज्ञाकारिता; भक्ति; मैत्री, दोस्ती।

नियाब (نیاب) अ. पुं.–'नाब' का बहु., सामने के दाँतों और डाढ़ों के बीचवाले दाँत।

नियाबत (نیابت) अ. स्त्री.–प्रतिनिधित्व, क़ाइममुक़ामी; दूत-कर्म, एलचीपन; अभिकर्म, एजेंटी; स्थानापन्नता, क़ाइममुक़ामी।

नियाम (نیام) फा. पुं.–कोष, मियान, तलवार का ग़िलाफ़।

नियोश (نیوش) फा. प्रत्य.–सुननेवाला, जैसे—'हक़नियोश' सच्ची बात सुननेवाला।

नियोशिंदः (نیوشندہ) फा. वि.–सुननेवाला, श्रोता।

निवालः (نوالہ) फा. पुं.–कवल, ग्रास, लुक़्मा।

निविश्तः (نوشتہ) फा. पुं.–लिखित, लिखा हुआ; लेख, तहरीर।

निविश्त (نوشت) फा. वि.–लिखा हुआ, लिखित।

निविश्तए तक़दीर (نوشتۂ تقدیر) फा. अ. पुं.–भाग्य-रेखा, क़िस्मत का लिखा।

निशस्तः (نشستہ) फा. वि.–बैठा हुआ।

निशस्त (نشست) फा. स्त्री.–बैठक, बैठने की मुद्रा; गोष्ठी, मज्लिस; एक बार की बैठक या जलसा।

निशस्तगाह (نشستگاہ) फा. स्त्री.–बैठने का स्थान, दीवानख़ाना।

निशस्तो बरख़ास्त (نشست و برخاست) फा. स्त्री.–उठना-बैठना, आना-जाना।

निशाँ (نشاں) फा. पुं.–'निशान' का लघु, दे. 'निशान', (प्रत्य.) बैठानेवाला, जैसे—'ख़ातिरनिशाँ' दिल में बिठाने या जमानेवाला।

निशाँज़दः (نشاں زدہ) फा. वि.–जिस पर निशान हो, चिह्नित, अंकित।

निशाँदेही (نشاں دہی) फा. स्त्री.–पता देना, निशान बताना।

निशानः (نشانہ) फा. पुं.–वह स्थान जिस पर निशाना लगाया जाय, लक्ष्य; ताकना, निशाना मारना।

निशानःअंदाज़ (نشانہ انداز) फा.वि.–ठीक निशाना लगानेवाला, लक्ष्यभेदी।

निशान (نشان) फा. पुं.–चिह्न, अलामत; धब्बा, दाग़; खोज, तलाश; पता, सुराग़; मुह्र का चिह्न; झंडा, पताका।

निशानची (نشانچی) फा. वि.–झंडा हाथ में लेकर आगे चलनेवाला; अच्छा निशाना लगानेवाला।

निशानी (نشانی) फा. स्त्री.–स्मृति-चिह्न, यादगार; पहचान, शनाख़्त; चिह्न, निशान; लक्षण, अलामत।

निशानेक़दम (نشانِ قدم) फा. अ. पुं.–पाँव का चिह्न, पद-चिह्न।

निशानेपा (نشانِ پا) फा. पुं.–दे. 'निशानेक़दम'।

निशानेमंज़िल (نشانِ منزل) फा. अ. पुं.–मंज़िल का पता, गंतव्य स्थान का चिह्न।

निशानेमील (نشانِ میل) फा. अ. पुं.–सड़क पर मीलों का चिह्न।

निशानेराह (نشانِ راہ) फा. पुं.–रस्ते का पता, रस्ता किधर है यह पता; राह के मील, फ़र्लांग आदि का चिह्न।

निशेद (نشید) फा. पुं.–गान, नग़्मा, गाने की आवाज़।

निशेदख़्वाँ (نشید خواں) फा. वि.–गानेवाला, गायक; मीठी आवाज़ से पढ़नेवाला, तरन्नुमरेज़।

निशेब (نشیب) फा. पुं.–नीची ज़मीन; निचाई, पस्ती, नशेब भी प्रचलित।

निशेबोफ़राज (نشیب و فراز) फा. पुं.–ऊँचा-नीचा, बलंदी और पस्ती; संसार की ऊँच-नीच।

निशेमन (نشیمن) फा. पुं.–घोंसला, कुलाय (नशेमन)।

निश्कुंज (نشکنج) फा. स्त्री.–चुटकी, बकोटा।

निश्तर (نشتر) फा. पुं.–शल्य, चीरफाड़ का आला (नश्तर)।

निश्तरकदः (نشترکدہ) फा. पुं.–आपरेशन रूम, चीरघर।

निश्तरज़न (نشترزن) फा. वि.–निश्तर मारनेवाला, आपरेशन करनेवाला।

निश्तरे फ़स्साद (نشترِ فصاد) फा. अ. पुं.–वह निश्तर जिससे रगों का ख़ून निकाला जाता है।

निश्तरे रगज़न (نشترِ رگ زن) फा. पुं.–दे. 'निश्तरे फ़स्साद'।

निश्वर (نشوار) फा. स्त्री.–जुगाली।

निसा (نسا) अ. स्त्री.–स्त्रियाँ, औरतें।

निसाब (نصاب) अ. पुं.–पूँजी, सरमाया; मूल, आधार।

निसाबे ज़कात (نصابِ زکات) अ. पुं.–वह धन जिस पर ज़कात वाजिब हो जाती है और वह ५० तोला चाँदी और साढ़े सात तोला सोना होता है।

निसाबे ता'लीम (نصابِ تعلیم) अ. पुं.–वे पुस्तकें जो किसी पाठशाला या कक्षा में पढ़ायी जाती हों, पाठ्यक्रम।

निसार (نثار) अ. पुं.–बलि, क़ुर्बान; सद्क़ः, न्योछावर; मुग्ध, फ़िरेफ़्तः।

निसारे यार (نثارِ یار) अ. फा. पुं.–प्रेमिका पर न्योछावर।

निस्फ़ (نصف) अ. वि.–अर्द्ध, आधा।

निस्फ़ुन्नहार (نصف النہار) अ. पुं.–दोपहर, मध्याह्न।

निस्फ़ुल्लैल (نصف اللیل) अ. स्त्री.–आधीरात, अर्द्धरात्रि।

निस्बत (نسبت) अ. स्त्री.–सम्बन्ध, तअल्लुक़; लगाव, संपर्क; सगाई, मँगनी; तुलना, समता, बराबरी।

निस्यः (نسیہ) अ. पुं.–उधार, ऋण, क़र्ज़।

निस्याँ (نسیاں) अ. पुं.–'निस्यान' का लघु., दे. 'निस्यान'।

निस्यान (نسیان) अ. पुं.–भूल, विस्मृति।

निस्रीं (نسریں) अ. पुं.–एक फूल, सेवती।

निस्वत (نسوت) अ. स्त्री.–नारियाँ, स्त्रियाँ, औरतें।

निस्वाँ (نسواں) अ. स्त्री.–'इम्रअत' का बहु., स्त्रियाँ, महिलाएँ।

निस्वानियत (نسوانیت) अ. स्त्री.–स्त्रीत्व, औरतपन; ज़नानापन, नरदारत्व।

निस्वानी (نسوانی) अ. वि.–स्त्रियों का; स्त्रियों से सम्बन्ध रखनेवाला।

निस्वानीयत (نسوانییت) अ. स्त्री.–दे. 'निस्वानियत', दोनों तरह शुद्ध है।

निहाँ (نہاں) फा. वि.–गुप्त, छिपा हुआ।

निहाँख़ानः (نہانخانہ) फा. पुं.–तहख़ाना, तलगृह, अधोगृह।

निहानी (نہانی) फा. वि.–भीतरी, आन्तरिक, अंदरूनी।

निहादः (نہادہ) फा. वि.–रखा हुआ।

निहाद (نہاد) फा. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत; आधार, बुनियाद, (प्रत्य.) स्वभाववाला, जैसे—'नेकनिहाद' अच्छे स्वभाववाला; रखा हुआ, जैसे—'दिलनिहाद' जहाँ दिल रक्खा हो।

निहायत (نہایت) अ. स्त्री.–अंत, छोर, हद; अत्यन्त, बहुत अधिक।

निहायतदर्जः (نہایتدرجہ) अ. वि.–बहुत अधिक, बहुत ज़ियादा।

निहाल (نہال) फा. पुं.–पौधा, छोटा पेड़, (वि.) प्रफुल्ल, प्रसन्न, ख़ुश; समृद्ध, मालामाल।

निहालचः (نہالچہ) फा. पुं.–छोटे बच्चों का बिछौना, जिस पर वह गू-मूत करते हैं।

निहालीं (نہالیں) फा. स्त्री.–दे. 'निहाली'।

निहाली (نہالی) फा. स्त्री.–तोशक, बिस्तर।

निहिंदः (نہندہ) फा. वि.–रखनेवाला।

निहुफ़्तः (نہفتہ) फा. वि.–गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदः।

निहुफ़्त (نہفت) फा. वि.–गुप्ति, छिपाव, पोशीदगी।

निहुफ़्तगी (نہفتگی) फा. स्त्री.–छिपाव, पोशीदगी।

निहुफ़्तनी (نہفتنی) फा. अव्य.–छिपाने योग्य, गुह्य, गोप्य, गोपनीय।

निहेब (نہیب) फा. पुं.–भय, त्रास, डर, ख़ौफ़; भयानक आवाज़, घोर नाद; लूटमार, ग़ारतगरी।

नी

नी (نی) फा. प्रत्य.–के योग्य, जैसे—'कर्दनी', करने के योग्य, 'गुफ़्तनी' कहने के योग्य।

नीज़ (نیز) फा. अव्य.–और, अथवा; भी, अपि।

नीमः (نیمہ) फा. वि.–अर्द्ध, अर्ध, आधा; एक प्रकार का ऊँचा पाजामा।

नीमःआस्तीं (نیمہ آستیں) फा. पुं.–दे. 'नीमआस्तीं'।

नीम (نیم) फा. वि.–अर्द्ध, आधा, निस्फ़; अल्प, न्यून, थोड़ा।

नीमआस्तीं (نیمآستیں) फा. पुं.–एक प्रकार का कुर्ता जिसकी आस्तीनें छोटी होती हैं।

नीमकश (نیمکش) फा. वि.–आधा अन्दर आधा बाहर (विशेषतः बाण), कम खींचकर चलाये हुए धनुष का तीर जो शरीर में से पार न हो सके।

नीमकारः (نیمکارہ) फा. वि.–अपूर्ण, नाक़िस।

नीमकार (نیمکار) फा. वि.–वह कारीगर जो दूसरों के औज़ार से काम करे और मजदूरी में उसे हिस्सा दे।

नीमकुश्तः (نیمکشتہ) फा. वि.–अधमुआ, जिसका गला काटकर छोड़ दिया हो और वह तड़प रहा हो।

नीमख़ुर्दः (نیمخوردہ) फा. वि.–आधा खाया हुआ, जूठा, जूठन, उच्छिष्ट, भुक्तशेष।

नीमख़ेज़ (نیمخیز) फा. वि.–किसी के सम्मानार्थ आधा खड़ा होना।

नीमख़्वाब (نیمخواب) फा. वि.–वह आँख जिसमें कच्ची नींद से जगा देने की-जैसी लालिमा और मस्ती हो, अर्धसुप्त।

नीमख़्वाबी (نیمخوابی) फा. स्त्री.–कच्ची नींद से जागने की कैफ़ियत, कच्ची नींद।

नीमगर्म (نیمگرم) फा. वि.–गुनगुना, कदुष्ण, कवोष्ण, जो न बहुत गर्म हो न बहुत ठंडा।

नीमगुफ़्तः (نیمگفتہ) फा. वि.–आधा कहा हुआ, जो बात कुछ कही जा चुकी हो और कुछ कहना बाक़ी हो।

नीमचः (نیمچہ) फा. पुं.–छोटी तलवार, खड्गपुत्री।

नीमजाँ (نیمجاں) फा. वि.–अधमुआ, जो मरने के क़रीब हो, आसन्नमृत्यु, मृतप्राय।

नीमजोश (نیمجوش) फा. वि.–आधी उबाली हुई चीज़।

नीमतस्लीम (نیمتسلیم) फा. वि.–एक प्रकार का सलाम जिसमें झुककर हाथ पेट तक ले जाते हैं।

नीमदस्त (نیمدست) फा. वि.–बड़े आदमियों के बैठने की मस्नद, छोटी मस्नद।

नीमदस्ती (نیمدستی) फा. स्त्री.–दे. 'नीमदस्त'।

नीमनिगाह (نیمنگاہ) फा. स्त्री.–कनखियों से देखना, तिरछी निगाह, कटाक्ष-पात।

नीमनिगाही (نیمنگاهی) फा. स्त्री.–कनखयों से देखने का भाव।

नीमपुख़्तः (نیمپختہ) फा. वि.–जो पूरी तरह पका न हो, अर्द्धपक्व।

नीमपुख़्त (نیمپخت) फा. वि.–दे. 'नीमपुख़्तः'।

नीमबाज़ (نیمباز) फा. वि.–आधा खुला हुआ, विशेषतः आधी खुली हुई आँख, नशीली आँख।

नीमबिरिश्त (نیم برشت) फा. वि.–आधा भुना हुआ; आधा उबला हुआ, जैसे—नीमबिरिश्त अंडा।

नीमबिर्याँ (نیم بریاں) फा. वि.–आधा भुना हुआ, अधजला।

नीमबिस्मिल (نیم بسمل) फा. वि.–दे. 'नीमकुश्तः'।

नीममस्त (نیم مست) फा. वि.–जिसे मस्ती के साथ कुछ-कुछ होश भी हो, अर्द्धमत्त।

नीमरस (نیم رس) फा. वि.–जो मेवा अभी पूरे तौर से पका न हो, गद्दर।

नीमराज़ी (نیم راضی) फा. वि.–जो कुछ-कुछ रज़ामंद हो, मगर पूरी तरह राज़ी न हो, अर्धसहमत।

नीमरिज़ा (نیم رضا) फा. अ. स्त्री.–आधी रज़ामंदी, अर्धसहमति।

नीमरुख़ (نیم رخ) फा. वि.–चेहरे के एक पार्श्व की तस्वीर।

नीमरोज़ (نیم روز) फा. पुं.–दोपहर, मध्याह्न।

नीमवा (نیم وا) फा. वि.–आधा खुला हुआ, आधा खुला और आधा बंद।

नीमशगुफ़्तः (نیم شگفتہ) फा. वि.–जो फूल आधा खिल गया हो, अर्द्ध-मुकुलित।

नीमशब (نیم شب) फा. स्त्री.–आधीरात, अर्द्धरात्रि।

नीमशिकस्तः (نیم شکستہ) फा. वि.–आधा टूटा हुआ।

नीमसुफ़्तः (نیم سفتہ) फा. वि.–आधा पिरोया हुआ।

नीमसेर (نیم سیر) फा. वि.–जिसका पेट कुछ-कुछ भर गया हो, परन्तु पूरी तरह तृप्त न हुआ हो; जिसकी इच्छा अभी कुछ-कुछ बाक़ी हो, अर्धतृप्त।

नीमसोख़्तः (نیم سوختہ) फा. वि.–आधा जला हुआ।

नीयत (نیت) अ. स्त्री.–संकल्प, इरादा; आशय, मक़्सद; ध्यान, ख़याल।

नीयते बद (نیت بد) अ. फा. स्त्री.–बुरा आशय, बुरा इरादा।

नीरान (نیران) अ. स्त्री.–'नार' का बहु., 'अग्नियाँ'।

नीरू (نیرو) फा. पुं.–शक्ति, बल, ज़ोर।

नीलः (نیلہ) फा. पुं.–नील गाय।

नील (نیل) फा. वि.–नील का रंग; नील का पौधा।

नीलगर (نیل گر) फा. वि.–नील बनानेवाला।

नीलगाव (نیل گاو) फा. पुं.–नीलगाय, नीला।

नीलगूँ (نیلگوں) फा. वि.–नीले रंग का।

नीलफ़ाम (نیل فام) फा. वि.–नीले शरीरवाला, कृष्ण।

नीलम (نیلم) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध रत्न, नीलमणि, नीलकान्त, शनिप्रिय।

नीली (نیلی) फा. वि.–नीले रंग का।

नीलीफ़ाम (نیلی فام) फा. वि.–नीले रंग का आकाश।

नीलीरवाक़ (نیلی رواق) फा. पुं.–जिसकी छत नीली हो, अर्थात् आकाश।

नीलोफ़र (نیلوفر) फा. पुं.–नीलोत्पल, कुमुद, कुईं।

नालोफ़रे आफ़्ताबी (نیلوفر آفتابی) फा. पुं.–कमल, पद्म, नीरज, पंकज, अरविंद, राजीव, तामरस, सरसीरुह, पुष्कर, अंभोज, कँवल का फूल।

नीलोफ़रे माहताबी (نیلوفر ماهتابی) फा. पुं.–कुमुद, कुमुदिनी।

नु

नुआस (نعاس) अ. स्त्री.–तंद्रा, ऊँघ, ग़ुनूदगी।

नुऊज़ (نعوظ) अ. पुं.–लिंगोत्थान, कामवेग से लिंग का खड़ा होना।

नुक़त (نقط) अ. पुं.–'नुक़्तः' का बहु., बिंदियाँ, नुक़्ते, शून्य।

नुक़बा (نقبا) अ. पुं.–'नक़ीब' का बहु., 'चोबदार'।

नुक़ूद (نقود) अ. पुं.–'नक़्द' का बहु., 'नक़्दियाँ'।

नुक़ूल (نقول) अ. स्त्री.–'नक़्ल' का बहु., नक़्लें, प्रतिलिपियाँ।

नुक़ूश (نقوش) अ. पुं.–'नक़्श' का बहु., चित्र, रेखाएँ।

नुक़्तः (نقطہ) अ. पुं.–बिंदी, बिंदु, सिफ़्र; बुँदकी, चिह्न, निशान।

नुक्तः (نکتہ) अ. पुं.–तह की बात; सूक्ष्मता, बारीकी; रहस्य, मर्म, भेद; चुटकुला, लतीफ़ा।

नुक़्तःगाह (نقطہ گاہ) अ. फा. स्त्री.–वृत्त के केन्द्र का बिंदु।

नुक्तःचीन (نکتہ چین) अ. फा. वि.–मीन-मेख निकालनेवाला, ऐब ढूँढ़नेवाला, छिद्रान्वेषी, आलोचक।

नुक्तःदाँ (نکتہ داں) अ. फा. वि.–किसी कलाविशेष की बारीकी जाननेवाला; काव्य-मर्मज्ञ, शे'र की बारीकियाँ समझनेवाला; कला-मर्मज्ञ।

नुक्तःदानी (نکتہ دانی) अ.फा. स्त्री.–मर्म और बारीकियाँ समझना।

नुक्तःनवाज़ (نکتہ نواز) अ. फा. वि.–ज़रा-सी बात पर प्रसन्न हो जानेवाला, आशुतोष; ईश्वर।

नुक्तःनवाज़ी (نکتہ نوازی) अ. फा. स्त्री.–ज़रा-सी बात पर प्रसन्न हो जाना।

नुक्तःरस (نکتہ رس) अ. फा. वि.–दे. 'नुक्तःदाँ'।

नुक्तःरसी (نکتہ رسی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'नुक्तःदानी'।

नुक्तःसंज (نکتہ سنج) अ. फा. वि.–दे. 'नुक्तःदाँ'।

नुक्तःसंजी (نکتہ سنجی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'नुक्तःदानी'।

नुक़्तए इंतिख़ाब (نقطۂ انتخاب) अ. पुं.–वह नुक़्तः जो किसी शे'र आदि के पसंद आने पर, किताब के हाशिए पर लगा देते हैं।

नुक़्तए तक़ातो' (نقطۂ تقاطع) अ. पुं.–वह बिंदु जहाँ पर दो सरल रेखाएँ एक दूसरी को काटें।

नुक़्तए पर्कार (نقطۂ پرکار) अ. फा. पुं.–वृत्त का वह बिंदु जहाँ से परिधि तक जितनी रेखाएँ खींची जायँ सब बराबर हों, केन्द्रबिन्दु।

नुक़्तए मुक़ाबिल (نقطۂ مقابل) अ. पुं.–प्रतिद्वंद्वी, हरीफ़।

नुक़्तए मौहूम (نقطۂ موہوم) अ. पुं.–वह बिन्दु जो इतना सूक्ष्म हो कि अटकल से ही समझा जा सके।

नुक़्तए सुवैदा (نقطۂ سویدا) अ. पुं.–वह काला तिल जो हृदय पर होता है।

नुक़्रः (نقرہ) फा. पुं.–रजत, चाँदी।

नुक़्रई (نقرئی) फा. वि.–चाँदी-जैसा उज्ज्वल; चाँदी का बना हुआ; चाँदी का मुलम्मा किया हुआ।

नुक़्ल (نقل) अ. पुं.–शराब के साथ खायी जानेवाली चीज़; एक मिठाई, गज़क; चुटकुला, लतीफ़; मित्रगोष्ठी में खायी जानेवाली चीज़।

नुक़्लफ़रोश (نقل فروش) अ. फा. वि.–गज़क बेचनेवाला।

नुक़्लेख़्वाजः (نقل خواجہ) अ. फा. पुं.–चिरौंजी, एक प्रसिद्ध मेवा।

नुक़्ले मज्लिस (نقل مجلس) अ. पुं.–वह मिठाई जो मित्र-मंडली में तफ़ीह के तौर पर खायी जाय; वह व्यक्ति जो सभा आदि में लोगों के मनोरंजन का विषय हो।

नुक़्ले महफ़िल (نقل محفل) अ. पुं.–दे. 'नुक़्ले मज्लिस'।

नुक़्सान (نقصان) अ. पुं.–हानि, क्षति, ख़सारा; त्रुटि, कमी; हरज, बाधा; तावान, दंड।

नुक़्सानदेह (نقصان دہ) अ. फा. वि.–हानिकर, नुक़सान पहुँचानेवाला।

नुक़्सानरसाँ (نقصان رساں) अ. फा. वि.–दे. 'नुक़्सानदेह'।

नुक़्साने अज़ीम (نقصان عظیم) अ. पुं.–बहुत बड़ी हानि।

नुक़्साने मायः (نقصان مایہ) अ. फा. पुं.–माली नुक़्सान, अर्थ-हानि।

नुज़्हतगाह (نزہت گاہ) अ. फा. स्त्री.–सैर तफ़ीह की जगह, क्रीडास्थल; सरसब्ज़ और हरा-भरा मुक़ाम।

नुज़्हते ख़ातिर (نزہت خاطر) अ. स्त्री.–चित्त की प्रसन्नता।

नुख़ाअ (نخاع) अ. पुं.–रीढ़ की हड्डी, मेरुदंड।

नुख़ालः (نخالہ) अ. पुं.–भूसी, तुष, चोकर।

नुख़ुस्त (نخست) फा. वि.–पहला, प्रथम।

नुख़ुस्तीं (نخستیں) फा. वि.–प्रथम, प्राथमिक, पहला।

नुजबा (نجبا) अ. पुं.–'नजीब' का बहु., कुलीन लोग।

नुजूम (نجوم) अ. पुं.–'नज्म' का बहु., उडुगण, तारे; ज्योतिष, इल्मे नुजूम।

नुजूमदाँ (نجوم داں) अ. फा. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

नुजूमी (نجومی) अ. वि.–ज्योतिषी, इल्मेनुजूम जाननेवाला।

नुज़ूल (نزول) अ. पुं.–उतरना, ऊपर से नीचे आना; ठहरना, उतरना; सरकारी ज़मीन; मोतियाबिंद।

नुज़ूलेइज्लाल (نزول اجلال) अ. पुं.–किसी महान् व्यक्ति का पदार्पण।

नुज़ूलेमा (نزول ما) अ. पुं.–आँखों में पानी उतरने का रोग, मोतियाबिंद।

नूज़ूलेवही (نزول وحی) अ. पुं.–किसी पैग़म्बर पर ईश्वर का आदेश उतरना।

नुज़्ज (نضج) अ. पुं.–पकना, शरीर में दूषित धातु या मवाद का पककर इस योग्य होना कि वह दवा के ज़ोर से बाहर निकल सके।

नुज़्जेकामिल (نضج کامل) अ. पुं.–मवाद का पूरी तरह पककर इस क़ाबिल हो जाना कि शरीर से निकाला जा सके।

नुज़्ल (نزل) अ. पुं.–आतिथ्य, ज़ियाफ़त, मेहमानदारी।

नुज़्हत (نزہت) अ. स्त्री.–उत्तमता, उम्दगी; पवित्रता, पाकीज़गी; दोष न होना; समृद्धि, ख़ुशहाली।

नुज़्हतकदः (نزہت کدہ) अ. फा. पुं.–दे. 'नज़्हतगाह'।

नुतूल (نطول) अ. पुं.–जोश दिये हुए दवाओं के पानी से शरीर के किसी अंग को धोना।

नुतुव्व (نتو) अ. पुं.–जगह से हट जाना, टल जाना।

नुतुव्वेरहिम (نتو رحم) अ. पुं.–गर्भाशय का अपनी जगह से हट जाना, गर्भच्युति।

नुत्क़ (نطق) अ. पुं.–शब्द, वाणी, बोली; वाक्शक्ति, वाचनशक्ति, गोयाई।

नुत्फ़ः (نطفہ) अं. पुं.–वीर्य, शुक्र, मनी; संतान, औलाद; औरस, पुश्त।

नुत्फ़एनातहक़ीक़ (نطفۂ ناتحقیق) अ. फा. पुं.–जिसके बाप का पता न हो, संकर, जारज।

नुद्बः (ندبہ) अ. पुं.–मृतक के लिए रोना; उसके शोक के शेर पढ़ना।

नुद्रत (ندرت) अ. स्त्री.–नूतनता, नवीनता, नयापन; अद्भुतता, विचित्रता, अजूबापन।

नुफ़ूज़ (نفوذ) अ. पुं.–अंदर घुसना, सरायत करना।

नुफ़ूस (نفوس) अ. पुं.–'नफ़्स' का बहु., व्यक्तियाँ, लोग।

नुफ़ूसे क़ुद्सीयः (نفوس قدسیہ) अ. पुं.–पुनीतात्मा लोग, पाकनफ़्स लोग।

नुबुव्वत (نبوت) अ. स्त्री.–पैग़म्बरी, नबी होना।

नुब्लः (نبلہ) अ. पुं.–ढेला जिससे इस्तिंजा करते हैं।

नुमा (نما) फा. प्रत्य.–दिखानेवाला, जैसे–'राहनुमा' रस्ता दिखानेवाला।

नुमाइंदः (نمایندہ) फा. पुं.–प्रतिनिधि, किसी व्यक्ति की जगह उसका नाइब।

नुमाइंदए ख़ुसूसी (نمایندۂ خصوصی) अ.पुं.–किसी विशेष काम के लिए नियुक्त किया हुआ व्यक्ति-विशेष, मुख्य प्रतिनिधि।

नुमाइंदगी (نمایندگی) फा. स्त्री.–प्रतिनिधित्व, नियाबत।

नुमाइश (نمائش) फा. स्त्री.–प्रदर्शन, दिखावा; शृंगार, सज्जा, सजावट, आराइश; वह मेला जिसमें किसी विशेष चीज़ को सबके सामने पेश किया जाय, जैसे–फूलों की नुमाइश; आम मेला, प्रदर्शनी।

नुमाइशगाह (نمائش گاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ नुमाइश लगी हो।

नुमाइशी (نمائشی) फा. वि.–केवल देखने भर का; जो बोदा और कमज़ोर हो और काम में न आ सके; नुमाइश से सम्बन्ध रखनेवाला।

नुमायाँ (نمایاں) फा.वि.–व्यक्त, ज़ाहिर; स्पष्ट, वाज़ेह।

नुमू (نمو) अ. स्त्री.–उगना, बढ़ना, विकसित होना।

नुमूद (نمود) फा. स्त्री.–आविर्भाव, ज़ुहूर; धूम-धाम, तड़क-भड़क; ख्याति, शोहरत; उगना, निकलना,; अस्तित्व, हस्ती, प्रकट, प्रकाशित।

नुमूदार (نمودار) फा. वि.–आविर्भूत, व्यक्त, ज़ाहिर; अध्यक्ष, नायक, सरदार।

नुमूनः (نمونہ) फा.पुं.–बानगी, नमूना; उदाहरण, मिसाल; आकृति, नक़्शा।

नुम्रूद (نمرود) फा. पुं.–एक बहुत बड़ा अत्याचारी नरेश, जो अपने को ईश्वर कहता था और जिसने हज़्रत इब्राहीम को आग में डलवाया था।

नुवेद (نوید) फा. स्त्री.–शुभ सूचना, ख़ुशख़बरी; निमंत्रण, बुलावा, दे. 'नवेद', उर्दू में वही अधिक व्यवहृत है।

नुशूर (نشور) अ. पुं.–मरे हुए व्यक्तियों का क़ियामत के दिन फिर से उठना।

नुशख़्वार (نشخوار) फा. स्त्री.–जुगाली।

नुसुक (نسک) अ.स्त्री.–'नस्क' का बहु., इबादतें; क़ुर्बानियाँ।

नुसैरी (نصیری) अ. पुं.–एक संप्रदाय जो हज़्रत अली को ख़ुदा मानता है।

नुस्क (نسک) अ.स्त्री.–पूजा, आराधना, इबादत; क़ुर्बानी, बलि।

नुस्रत (نصرت) अ. स्त्री.–सहायता, मदद; समर्थन, ताईद; पृष्ठ-पोषण, हिमायत।

नुस्रतेहक़ (نصرت حق) अ. स्त्री.–ईश्वर की सहायता; सत्य की शक्ति।

नुह (نہ) फा. वि.–नव, नौ, आठ और एक।

नुहाक़ (نہاق) अ. पुं.–गधे की रेंकन।

नुहालः (نحالہ) अ.पुं.–गेहूँ आदि की भूसी, दे. 'नुख़ालः'।

नुहास (نحاس) अ. पुं.–ताम्र, ताँबा।

नुहुम (نہم) फा. वि.–नवम, नवाँ।

नुहूसत (نحوست) अ. स्त्री.–दुर्भाग्य का होना, बदक़िस्मती; अमंगल, नामुबारकी; अविभूति, बेबरकती।

नुह्ज़त (نہضت) अ. स्त्री.–प्रस्थान, प्रयाण, कूच, रवानगी।

नुह्ज़तफ़र्मा (نہضت فرما) अ. फा. वि.–जानेवाला, कूच करनेवाला, प्रस्थायी।

नूह्बत (نہبت) अ. स्त्री.–लूटमार, ग़ारतगरी।

नू

नूँ (نوں) अ. पुं.–नन का लघु., दे. 'नून'।

नून (نون) अ. पुं.–एक अक्षर 'न'; मत्स्य, मछली।

नूनेग़ुन्नः (نون غنہ) अ. पुं.–अनुस्वार, वह 'न' जो नाक में बोला जाय।

नूर (نور) अ. पुं.–प्रकाश, ज्योति, आभा, रोशनी; शोभा, छटा, रौनक़; चमक-दमक; मुखछटा, चेहरे की आबोताब, उजाला, हल्की रोशनी।

नूरअफ़्ज़ा (نورافزا) अ. फा. वि.–रोशनी बढ़ानेवाला।

नूरअफ़्शाँ (نورافشاں) अ. फा. वि.–रोशनी फैलानेवाला।

नूरपाश (نورپاش) अ. वि.–प्रकाश फैलानेवाला।

नूरफ़िशाँ (نورفشاں) अ. फा. वि.–दे. 'नूरअफ़्शाँ'।

नूरबख़्श (نوربخش) अ. फा. वि.–प्रकाश देनेवाला।

नूरबाफ़ (نورباف) अ. फा. वि.–कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा।

नूरबार (نوربار) अ. फा. वि.–प्रकाश फैलानेवाला।

नूरानी (نورانی) अ. वि.–प्रकाशमान, उज्ज्वल, मुनव्वर।

नूरी (نوری) अ. वि.–नूर का, (फा.) एक प्रकार का लाल तोता; ख़ूबानी, ज़र्दालू।

नूरुन अलानूर (نورون علی نور) अ. वि.–नूर के ऊपर नूर, अत्यधिक प्रकाश, बहुत ही मांगलिक और शुभ।

नूरुलऐन (نورالعین) अ. पुं.–आँख की रोशनी, नेत्र-ज्योति, लड़के के लिए बोलते हैं।

नूरे ऐन (نور عین) अ. पुं.–दे. 'नूरुलऐन'।

नूरे चश्म (نور چشم) अ. फा. पुं.–आँख की रोशनी, लड़का, सुपुत्र।

नूरे जहाँ (نور جہاں) अ.फा.पुं.–संसार को प्रकाश देनेवाला।

नूरे दीदः (نور دیدہ) अ. फा. पुं.–दे. 'नूरे चश्म'।

नूरे नज़र (نور نظر) अ. पुं.–दे. 'नूरे चश्म'।

नूरे निगाह (نور نگاہ) अ. फा. पुं.–दे. 'नूरे चश्म'।

नूरे माह (نور ماہ) अ. फा. पुं.–चाँद की रोशनी, चाँदनी, ज्योत्सना, चंद्रप्रभा, कौमुदी, चंद्रिका, चंद्रातप।

नूरे मुजल्ला (نور مجلی) अ. पुं.–छिटका हुआ और साफ़ नूर, प्रकाश।

नूरे मुजस्सम (نور مجسم) अ. पुं.–जो सर से पाँव तक नूर ही नूर हो, जो नूर से बना हो, आपादमस्तक प्रकाश।

नूरे शम्अ (نور شمع) अ. पुं.–मोमबत्ती का प्रकाश।

नूरे शम्स (نور شمس) अ. पुं.–सूरज का प्रकाश, धूप, आतप।

नूरे सहर (نور سحر) अ. पुं.–प्रातःकाल का उजाला।

नूह (نوح) अ. पुं.–एक पैग़म्बर जिनके समय में पानी का बहुत बड़ा तूफ़ान आया था, जिसमें सारा संसार नष्ट हो गया था, कुछ आदमी बचे थे, जिनकी संतान इस समय है।

ने

नेक (نیک) फा. वि.–उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा; मांगलिक, शुभ, मुबारक; सदाचारी, ख़ुश अमल; पुनीतात्मा, पार्सा; सीधा-सादा, सरलस्वभाव; कुलीन, शरीफ़; सदय, रहमदिल।

नेकअंजाम (نیک انجام) फा. वि.–वह काम जिसका परिणाम अच्छा हो।

नेकअंदेश (نیک اندیش) फा. वि.–भलाई सोचनेवाला, शुभचिंतक।

नेक अख़्तर (نیک اختر) फा. वि.–जिसके ग्रह अच्छे हों, भाग्यवान्।

नेकअख़्लाक़ (نیک اخلاق) अ. वि.–जिसका स्वभाव मिलनसार हो, सुशील, सज्जन।

नेकअमल (نیک عمل) फा. अ. वि.–जिसका आचरण अच्छा हो, सदाचारी।

नेकआ'माल (نیک اعمال) फा. अ. वि.–दे 'नेक अमल'।

नेकआ'माली (نیک اعمالی) फा. अ. स्त्री.–सदाचार, अच्छा आचरण, साधु भाव।

नेकक़दम (نیک قدم) फा. अ. वि.–जिसका आना कल्याणकारी हो।

नेककर्दार (نیک کردار) फा. वि.–शुद्धाचारी, साधुवृत्त।

नेकख़याल (نیک خیال) फा. अ. वि.–जिसके विचार शुद्ध हों, शुचिव्रत, पावनचरित, बुद्धिशुद्ध।

नेकख़स्लत (نیک خصلت) फा. अ. वि.–जिसका स्वभाव अच्छा हो, अंतःशुद्ध, साधु शील।

नेकख़ू (نیک خو) फा. वि.–जिसका स्वभाव शुद्ध हो, सत्प्रकृति, पुण्यस्वभाव।

नेकख़ूई (نیک خوئی) फा. स्त्री.–प्रकृति की शुद्धि, स्वभाव की पवित्रता।

नेकख़्वाह (نیک خواہ) फा. वि.–शुभचिंतक, हितैषी, हमदर्द।

नेकगुफ़्तार (نیک گفتار) फा. वि.–साधुभाषी, अच्छी बातें करनेवाला; मिष्टभाषी, मीठी-मीठी बातें करनेवाला।

नेकगुमान (نیک گمان) फा. वि.–जिसके विचार किसी की ओर से अच्छे हों; जिसकी विचारधारा शुद्ध हो।

नेकतब्अ (نیک طبع) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेकतरीन (نیک ترین) फा. वि.–सबसे अच्छा, सबसे अधिक नेक।

नेकतीनत (نیک طینت) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेकदिल (نیک دل) फा. वि.–जिसका हृदय नेक हो, जो स्वभाव से पुनीत हो, अंतःशुद्ध, पुण्यात्मा।

नेकनफ़्स (نیک نفس) फा. अ. वि.–दे. 'नेकदिल'।

नेकनफ़्सी (نیک نفسی) फा. अ. स्त्री.–आत्मशुद्धि, दिल की सफ़ाई।

नेकनाम (نیک نام) फा. वि.–जो बड़ा कीर्तिमान् हो, उत्तमयश, पुण्यश्लोक।

नेकनामी (نیک نامی) फा. स्त्री.–कीर्ति, यश, नामवरी।

नेकनिहाद (نیک نہاد) फा. वि.–अच्छे अख़्लाक़वाला, सदाशय, पावनचरित।

नेकनीयत (نیک نیت) फा. अ. वि.–धर्मात्मा, सत्यसंकल्प, अन्तःशुद्ध; ईमानदार, दियानतदार, धर्मनिष्ठ।

नेकनीयती (نیک نیتی) फा. अ. स्त्री.–अन्तःशुद्धि, पाकदिली; ईमानदारी, दियानतदारी।

नेक फ़र्जाम (نیک فرجام) फा. वि.–पुण्यात्मा; नेकदिल; दे. 'नेकअंजाम'।

नेकफ़ाल (نیک فال) फा. वि.–जिसका मिलना, जिसके दर्शन, जिसकी चर्चा मंगलकारी हो।

नेकबख़्त (نیک بخت) फा. वि.–भाग्यवान्, ख़ुशक़िस्मत; सीधा-सादा, भोला-भाला।

नेकबीं (نیک بیں) फा. वि.–केवल अच्छाई देखनेवाला, साधुदर्शी, हर चीज़ का अच्छा पहलू देखनेवाला।

नेकमंज़र (نیک منظر) फा. अ. वि.–जो देखने में अच्छा लगे, शुभदर्शन, नेत्रप्रिय।

नेकमआश (نیک معاش) फा. अ. वि.–'बदमआश' का उलटा, जिसकी जीविका अच्छे पैसे से हो, जिसकी कमाई शुद्ध हो।

नेकमनिश (نیک منش) फा. वि.–सत्प्रकृति, साधुशील, सज्जन, भला आदमी।

नेकमर्द (نیک مرد) फा. वि.–भलामानस, सज्जन।

नेकमहज़र (نیک محضر) फा. अ. वि.–वह व्यक्ति जो दूसरों को उपस्थिति अथवा अनुपस्थिति में अच्छाई से ही याद करे।

नेकमिज़ाज (نیک مزاج) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू' अथवा 'नेकदिल'।

नेकमिज़ाजी (نیک مزاجی) फा. अ. स्त्री.–स्वभाव की सरलता, चित्त की शुद्धता।

नेकरविश (نیک روش) फा. वि.–सदाचारी, सत्प्रकृति।

नेकराय (نیک رائے) फा. वि.–जिसकी राय और जिसकी सलाह सदा ठीक होती हो, सद्बुद्धि, साधुधी।

नेकराह (نیک راہ) फा. वि.–सन्मार्गी, सत्पथीन, अच्छी राह पर चलनेवाला, सदाचारी।

नेकरोज़ (نیک روز) फा. वि.–समय जिसके अनुकूल हो, भाग्यवान्, जिसका वक़्त बना हो।

नेकशिआर (نیک شعار) फा. अ. वि.–जिसका व्यवहार नेक हो, साधुशील।

नेकसिफ़ात (نیک صفات) फा. अ. वि.–जिसमें अच्छे-अच्छे गुण हों, उत्तमयश।

नेकसियर (نیک سیر) फा. अ. वि.–जिसके स्वभाव शुद्ध हों, अंतःपवित्र, पुनीतात्मा।

नेकसिरिश्त (نیک سرشت) फा. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेकसीरत (نیک سیرت) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेकसूरत (نیک صورت) फा. अ. वि.–जिसकी शक्ल सुन्दर हो, शुभदर्शन; जिसकी सूरत पर बुज़ुर्गी बरसती हो।

नेकू (نیکو) फा. वि.–दे. 'नेक'।

नेकूई (نیکوئی) फा. स्त्री.–अच्छाई, भलाई; सुन्दरता, हुस्न।

नेकूकार (نیکوکار) फा. वि.–सदाचारी, पुण्यात्मा।

नेकूख़साइल (نیکوخصائل) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेकूशमाइल (نیکوشمائل) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेकूसिफ़ात (نیکوصفات) फा. अ. वि.–दे. 'नेकसिफ़ात'।

नेकूसियर (نیکوسیر) फा. अ. वि.–दे. 'नेकख़ू'।

नेको (نیکو) फा. वि.–दे. 'नेकू', दोनों उच्चारण शुद्ध हैं।

नेफ़ः (نیفہ) फा. पुं.–पाजामे का सूराख़ जिसमें कमरबंद डाला जाता है।

ने'मत (نعمت) अ. स्त्री.–ईश्वर का दिया हुआ धन आदि; धन, दौलत; अच्छी-अच्छी चीज़ें।

ने'मतकदः (نعمت کدہ) अ. फा. पुं.–वह स्थान जहाँ अच्छी-अच्छी चीज़ें मिलें; स्वर्ग, बिहिश्त।

ने'मतख़ानः (نعمت خانہ) अ. फा. पुं.–वह मकान जिसमें भोज की सामग्री रहती हो; वह लकड़ी आदि का जालीदार संदूक़ जिसमें खाना रखा जाता है।

ने'मते उज़्मा (نعمت عظمیٰ) अ. स्त्री.–बहुत बड़ी ने'मत।

ने'मते ग़ैरमुतरक़्क़िबः (نعمت غیر مترقبہ) अ. स्त्री.–ऐसी नेमत जिसका हिसाब न लगाया जा सके, बहुत ही अधिक नेमत।

ने'मलबदल (نعم البدل) अ. पुं.–किसी गयी या खायी हुई चीज़ की जगह बिलकुल वैसी ही चीज़।

नेश (نیش) फा. पुं.–डंक, दंश; सुअर के आगे निकले हुए दाँत।

नेशज़न (نیش زن) फा. वि.–डंक मारनेवाला, जो डंक से डसता है; वह व्यक्ति जो हानि पहुँचाने की ताक में रहता हो।

नेशज़नी (نیش زنی) फा. स्त्री.–बिच्छू आदि का डंक मारना; हानि पहुँचाना।

नेशदुम (نیش دم) फा. पुं.–वृश्चिक, बिच्छू।

नेशे अक़्रब (نیش عقرب) फा. अ. पुं.–बिच्छू का डंक।

नेशे ज़ंबूर (نیش زنبور) फा. पुं.–भिड़ का डंक।

नेस्त (نیست) फा. वि.–नहीं है, नास्ति; ध्वस्त, नष्ट, बरबाद।

नेस्ती (نیستی) फा. स्त्री.–ध्वंस, बरबादी; नुहूसत, तबाही; दरिद्रता, कंगाली।

नेस्तोनाबूद (نیست و نابود) फा. वि.–विनष्ट, विध्वस्त, जो बिलकुल बरबाद हो गया हो।

नै

नै (نے) फा. स्त्री.–नरकट, नरसल, नय; बाँसुरी, वंसी, अलग़ोज़ा।

नैचः (نیچہ) फा. पुं.–हुक़्क़े की नै।

नैज़ः (نیزہ) फा. पुं.–कुंत, शक्ति, शंकु, भाला, बरछी; क़लम का नरकट।

नैज़ःदार (نیزہ دار) फा. वि.–नैज़ा चलानेवाला।

नैज़ःबरदार (نیزہ بردار) फा. वि.–नैज़ा लेकर चलनेवाला, बरछी बाँधकर चलनेवाला।

नैज़ःबरदारी (نیزہ برداری) फा. स्त्री.–बरछी या भाला बाँधकर चलना।

नैज़ःबाज़ (نیزہ باز) फा. वि.–बरछी और भाला चलाना जाननेवाला।

नैज़ःबाज़ी (نیزہ بازی) फा. स्त्री.–बरछी और भाला चलाने की महारत।

नैज़क (نیزک) फा. पुं.–छोटा नैज़ा।

नैज़ार (نےزار) फा. पुं.–नरकट का जंगल, जहाँ नरसल बहुत हो।

नैयिर (نیر) अ. पुं.–सूर्य, सूरज, रवि, आफ़्ताब।

नैयिरेन (نیرین) अ. पुं.–दोनों सूरज, दो सूरज, चाँद और सूरज।

नैरंग (نیرنگ) फा.पुं.–छल, धोखा, फ़रेब; माया, तिलिस्म।

नैरंगबाज़ (نیرنگ باز) फा. वि.–मायावी, धूर्त, जादूगर; छली, मक्कार।

नैरंगबाज़ी (نیرنگ بازی) फा. स्त्री.–मायाकर्म, जादूगरी; छल, फ़रेब।

नैरंगसाज़ (نیرنگ ساز) फा. वि.–दे. 'नैरंगबाज़'।

नैरंगसाज़ी (نیرنگ سازی) फा. स्त्री.–दे. 'नैरंगबाज़ी'।

नैरंगिए ज़मानः (نیرنگئی زمانہ) फा. स्त्री.–कालचक्र, दुनिया का उलट-फेर।

नैरंगिए नज़र (نیرنگئی نظر) फा. अ. स्त्री.–दृष्टि की विचित्रता; दृष्टि का भ्रम।

नैरंगिए हुस्न (نیرنگئی حسن) फा. अ. स्त्री.–सौन्दर्य का मायाजाल। हुस्न की शोवदःबाज़ी।

नैरंगिए रोज़गार (نیرنگئی روزگار) फा. अ. स्त्री.–भाग्य-चक्र, भाग्य का उलट-फेर।

नैरंगी (نیرنگی) फा. स्त्री.–माया-कर्म, जादूगरी; छल, कपट, फ़रेब; तलव्वुन, चित्त की चंचलता।

नैरंगीए ख़याल (نیرنگئی خیال) फा. अ. पुं.–ख़याल का धोका, विचार-भ्रम,—"नैरंगिए ख़याल की अल्ला रे शोख़ियाँ—मैं सैर कर रहा हूँ चमन की वहार में।"

नैरंगे आलम (نیرنگ عالم) फा. अ. पुं.–संसार की चित्र-विचित्रता, दुनिया का उलट-फेर।

नैरंगे ज़मानः (نیرنگ زمانہ) फा.पुं.–दे. 'नैरंगे आलम'।

नैरंगे नज़र (نیرنگ نظر) फा. अ. पुं.–वह चीज़ जो आँखों को भ्रम में डाल दे।

नैल (نیل) अ. पुं.–प्राप्त होना, मिलना।

नैले मराम (نیل مرام) अ. पुं.–मनोरथ की प्राप्ति, मक़्सद हासिल होना।

नैशकर (نےشکر) ईख, इक्षु, गन्ना।

नैसाँ (نیساں) फा. पुं.–फ़र्वरदीन (वैसाख) की बारिश, जिसके लिए प्रसिद्ध है कि इस पानी की हर बूंद सीप में मोती बन जाती है; फ़र्वरदीन, वैसाख का मास।

नो

नोक (نوک) फा. स्त्री.–हर चीज़ का तेज़ सिरा; बाँकपन; डून, डींग; आन-बान।

नोकदार (نوک دار) फा. वि.–जिसमें नोक हो।

नोज़दह (نوزدہ) फा. वि.–उन्नीस।

नोज़दहुम (نوزدہم) फा. वि.–उन्नीसवाँ।

नोश (نوش) फा. पुं.–अमृत, सुधा, आबेहयात; स्वादिष्ठ पेय, (प्रत्य.) पीनेवाला, जैसे—'मयनोश' शराब पीनेवाला।

नोशख़ंद (نوش خند) फा. पुं.–'ज़ह्र खंद' का उलटा, मधुर हास, शीरीं हँसी।

नोशदारू (نوشدارو) फा. स्त्री.–ज़ह्र उतारनेवाली दवा, तिर्याक़, विषहर; मदिरा, मद्य, शराब।

नोशादुर (نوشادر) फा. पुं.–नौसादर, एक क्षार, उर्दू में यह उच्चारण नहीं है।

नोशाबः (نوشابہ) फा. पुं.–दे. नोशाब; आज़र बाईजान (ईरान) की एक रानी जिसे सिकंदर ने कष्ट से छुड़ाया था।

नोशाब (نوشاب) फा. पुं.–अमृत-जल, सुधा, आबेहयात; शराब, मदिरा।

नोशानोश (نوشانوش) फा. स्त्री.–ख़ूब पीना और बार-बार पीना।

नोशिंदः (نوشندہ) फा. वि.–पीनेवाला।

नोशीं (نوشیں) फा. वि.–स्वादिष्ठ, सुस्वादु, ख़ुशमज़ा।

नोशीदः (نوشیدہ) फा. वि.–पिया हुआ।

नोशीदनी (نوشیدنی) फा. अव्य.–पीने के लाइक़, पेय।

नोशेजाँ (نوش جاں) फा. पुं.–पीना।

नोशेरवाँ (نوشیرواں) फा. पुं.–दे. 'नौशेरवाँ', दोनों रूप शुद्ध हैं।

नौ

नौ (نو) फा. वि.–नवीन, नूतन, नया; तत्कालीन, हाल का; ताज़ा, हरा-भरा।

नौअ (نوع) अ. स्त्री.–जाति, जो एक-सी सब चीज़ों को शामिल हो, जैसे—आदमी, घोड़ा आदि; प्रकार, क़िस्म, तरह; आकार-प्रकार, वज़ा-क़ता।

नौअरूस (نوعروس) फा. अ. वि.–नवविवाहित; नवविवाहिता।

नौअरूसाने चमन (نوعروسان چمن) फा. अ. वि.–बाग़ में नये जमे हुए पौधे।

नौअरूसी (نوعروسی) फा. अ. स्त्री.–नया विवाह।

नौआईन (نوآئین) फा. वि.–शोभनीय, ललित, ज़ेबा; शृंगारित, सुसज्जित, आरास्ता।

नौआबाद (نوآباد) फा. वि.–वह प्रदेश या इलाक़ा जो हाल में ही बसाया गया हो, नववसित; वह बंजर ज़मीन जो हाल में ही काश्त के लिए तोड़ी गयी हो।

नौआबादियात (نوآبادیات) फा. स्त्री.–वे इलाक़े या प्रदेश जो पश्चिमी राष्ट्रों ने दुनिया के भिन्न-भिन्न स्थानों पर बसाये हैं और वहाँ उनका राज था या है, कालोनीज़, उपनिवेश।

नौआबादी (نوآبادی) फा. स्त्री.–नया आवाद किया हुआ मुल्क, कालोनी, उपनिवेश।

नौआमदः (نوآمدہ) फा. वि.–हाल का आया हुआ, जो अभी आया हो, नवागत।

नौआमोज़ (نوآموز) फा. वि.–नौसिखिया, अनाड़ी, जिसने कोई काम अभी सीखना आरंभ किया हो, नव-शिक्षित।

नौआमोज़ी (نوآموزی) फा. स्त्री.–नौसिखियापन।

नौईजाद (نوایجاد) फा. अ. वि.–जो चीज़ अभी हाल में आविष्कृत हुई हो, नवाविष्कृत।

नौईयत (نوعیت) अ. स्त्री.–प्रकार, क़िस्म; विशेषता, ख़ुसूसियत।

नौउम्र (نوعمر) फा. अ. वि.–अल्पवयस्क, कमसिन, लड़का, बालक।

नौउम्री (نوعمری) फा. अ. स्त्री.–बाल्यावस्था, अल्पवयस्कता, कमसिनी।

नौए इंसानी (نوع انسانی) अ. स्त्री.–मानव-जाति, आदम की संतान।

नौए दिगर (نوع دگر) अ. फा. स्त्री.–दूसरे प्रकार का, बदला हुआ; विकृत, बिगड़ा हुआ; अस्त-व्यस्त, उथल-पुथल।

नौकर (نوکر) तु. पुं.–सेवक, दास, चाकर।

नौकर्दःकार (نوکردہکار) फा. वि.–जिसने कोई काम नया-नया किया हो।

नौकार (نوکار) फा. वि.–ताज़ा, हाल का; जिसने अभी काम प्रारंभ किया हो।

नौकीसः (نوکیسہ) फा. वि.–दे. 'नौदौलत'।

नौख़त(نوخط) फा. वि.–जिसकी मूँछ-दाढ़ी के बाल निकलना शुरू हुए हों, अंकुरितयौवन।

नौख़ास्तः (نوخاستہ) फा. वि.–नया जमा हुआ; नया पट्ठा, नवयुवक; नातज्रिब्राकार, अननुभवी।

नौख़ेज़ (نوخیز) फा. वि.–दे. 'नौख़ास्त', नया उगा हुआ, नवोदित, नवांकुरित।

नौगिरिफ़्तार (نوگرفتار) फा. वि.–जो नया-नया फँसा हो, जो हाल में ही क़ैद हुआ हो; जो नया-नया किसी काम में पड़ा हो; जिसने नया-नया किसी को दिल दिया हो।

नौचः (نوچہ) फा. पुं.–नवयुवक, नयी जवानीवाला, (स्त्री.) नौची, नवयुवती।

नौजवाँ (نوجواں) फा. पुं.–'नौजवान' का लघु., दे. 'नौजवान'।

नौजवान (نوجوان) फा. पुं.–जिसकी युवावस्था का आरंभ हुआ हो, नया पट्ठा, नवयुवक।

नौजवानानः (نوجوانانہ)फा. अव्य.–नये जवानों की तरह।

नौजवानी(نوجوانی) फा. स्त्री.–युवावस्था, नयी जवानी।

नौज़ाईदः (نوزائیدہ) फा. वि.–जो हाल में ही उत्पन्न हुआ हो, नवजात।

नौदामाद (نوداماد) फा. पुं.–वर, दूल्हा।

नौदौलत (نودولت) फा. अ. वि.–जिसने नयी-नयी संपत्ति पायी हो, जो नया-नया अमीर हुआ हो; जो नयी-नयी दौलत पाकर इतरा गया हो।

नौदौलती (نودولتی)फा. अ.स्त्री.–नयी-नयी संपत्ति की प्राप्ति, नया-नया धनवान् होना।

नौनियाज़ (نونیاز) फा. वि.–वह लड़का जिसने अभी पढ़ना-लिखना आरंभ किया हो; वह व्यक्ति जो नया-नया किसी पर मोहित हुआ हो।

नौनिहाल (نونہال) फा. वि.–नया पौधा, नया पेड़; नौउम्र, बालक, वच्चा।

नौनिहालाने चमन (نونہالان چمن) फा. वि.–वाग़ के नये-नये पौधे।

नौपैदा (نوپیدا) फा. वि.–जो हाल में ही उत्पन्न हुआ हो, नवजात, नौज़ाईदः।

नौबत (نوبت) अ. स्त्री.–ओसरी, बारी; दशा, हालत; वार, दफ़ा; राजाओं और अमीरों के दरवाज़े पर बजनेवाली शहनाई।

नौबतख़ानः (نوبتخانہ) अ. फा. पुं.–जहाँ शहनाई वजती हो, नक़्क़ारख़ाना।

नौबतगाह (نوبتگاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'नौवतख़ानः'; कारागार, क़ैदख़ाना।

नौबतज़न (نوبتزن) अ. फा. वि.–नौवत वजानेवाला, नक़्क़ारची।

नौबतनवाज़ (نوبتنواز) अ. फा. वि.–दे. 'नौवतज़न'।

नौबत ब नौबत (نوبت بنوبت) अ. फा. वि.–वारी-वारी से, एक के वाद दूसरा, अपनी-अपनी बारी पर।

नौबती (نوبتی) अ. वि.–वारी का, बारी से होनेवाला; नक़्कारची, नौबतनवाज़; पहरेदार, पासवान; बड़ा ख़ेमा।

नौ ब नौ (نو بہ نو) फा. वि.–नया-नया, ताज़ः व ताज़ः।

नौबर्ग (نوبرگ) फा. वि.–नया पत्ता, मंजरी।

नौबर्दः (نوبردہ) फा. तु. वि.–नया ख़रीदा हुआ दास।

नौबहार (نوبہار) फा. वि.–वसंत ऋतु, वहार का मौसम; वह चीज़ जिस पर ताज़ा रौनक़ हो।

नौम (نوم) अ. पुं.–सोना, स्वप्न, स्वाप।

नौमश्क़ (نومشق) फा. अ. वि.–नौसिखिया, अनाड़ी।

नौमश्क़ी (نومشقی) फा. अ. स्त्री.–नौसिखयापन।

नौमीद (نومید) फा. वि.–निराश, हताश, नाउम्मीद।

नौमीदानः (نومیدانہ) फा. अव्य.–निराशा की हालत में, नाउम्मीदों-जैसा।

नौमीदी (نومیدی) फा. स्त्री.–निराशा, नाउम्मीदी।

नौमुस्लिम (نومسلم) फा. अ. वि.–जो नया-नया मुसलमान हुआ हो, जो खानदानी मुसलमान न हो।

नौरः (نورہ) अ. पुं.–चूना, जिसकी दीवारों पर पुताई होती है।

नौरस (نورس) फा. वि.–नया पका हुआ फल; हर नयी चीज़।

नौरुस्तः (نورستہ) फा. वि.–नया उगा हुआ।

नौरोज़ (نوروز) फा. पुं.–साल का पहला दिन; ईरानियों में फ़र्वरदीन मास का पहला दिन जिसमें वह बहुत बड़ा उत्सव मनाते हैं।

नौरोज़ी (نوروزی) फा. वि.–साल के पहले दिन का, जैसे ––जश्ने नौरोज़ी।

नौवारिद (نووارد) फा. अ. वि.–नया आया हुआ, नवागत; पथिक, मुसाफ़िर।

नौशः (نوشہ) फा. पुं.–वर, दूल्हा।

नौशेरवाँ (نوشیرواں) फा. पुं.–सासानी वंश का एक ईरानी नरेश जो अपनी न्यायपरायणता के लिए प्रसिद्ध है। यह सन् ५३१ ई० में तख़्त पर बैठा था, हज़्रत मुहम्मद साहब इसी के समय में उत्पन्न हुए थे।

नौसफ़र (نوسفر) फा. अ. वि.–जिसने पहले-पहल सफ़र किया हो।

नौसवार (نوسوار) फा. वि.–जिसने घोड़े की सवारी नयी-नयी सीखी हो।

नौहः (نوحہ) अ. पुं.–मृतक के लिए रोना-पीटना, बैन करना; उर्दू पद्य की एक क़िस्म जिसमें करबला के शहीदों पर शोक प्रकट होता है।

नौहःख़्वाँ (نوحہخواں) अ. फा. वि.–मृतक पर विलाप करनेवाला; करबला के शहीदों का नौहः पढ़नेवाला।

नौहःख़्वानी (نوحہخوانی) अ. फा. स्त्री.–मृतक के लिए विलाप; मुहर्रम की मज्लिस में नौहः पढ़ना।

नौहःगर (نوحہگر) अ. फा. वि.–दे. 'नौहःख़्वाँ'।

नौहःगरी (نوحہگری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'नौहःख़्वानी'।

नौहए ग़म (نوحۂ غم) अ. पुं.–मृतक-शोक, मुर्दे का मातम।

नौहए मातम (نوحۂ ماتم) अ. फा. पुं.–दे. 'नौहए ग़म'।

प

पंचक (پنچک) फा. स्त्री.–चर्खे की पोनी, जिसमें से तार निकलता है।

पंजः (پنجہ) फा. पुं.–उँगलियों समेत हथेली, प्रहस्त, अलंबुष, प्रतल; अधिकार, क़ब्ज़ा; ताश का पाँच बुँदकियों-वाला पत्ता; पाँच वस्तुओं की समष्टि; सहायता, मदद।

पंज़ः (پنزہ) फा. पुं.–नृत्य का एक प्रकार जिसमें बहुत-सी स्त्रियाँ एक दूसरे का हाथ पकड़कर नाचती हैं।

पंजःकश (پنجہکش) फा. वि.–पंजा लड़ानेवाला, (पुं.) लोहे का पंजा-जैसा एक यंत्र जिसमें पंजा डालकर ज़ोर किया जाता है।

पंजःकशी (پنجہکشی) फा. स्त्री.–पंजा लड़ाना, पंजे द्वारा ज़ोर करना; बल-परीक्षा, ज़ोर आज़माना।

पंजःनुमा (پنجہنما) फा. वि.–पंजे के आकार का, पंजा-जैसा।

पंजंगुश्त (پنجنگشت) फा. पुं.–एक वृक्ष, सँभालू।

पंज (پنج) फा. वि.–पाँच, पंच, पाँच की संख्या; पाँच वस्तुएँ।

पंजअर्कान (پنج ارکان) फा. अ. पुं.–मुसलमानों की पाँच धार्मिक कृतियाँ–कलिमः, नमाज़, रोज़ा, ज़कात और हज।

पंजआयत (پنج آیت) फा. अ. स्त्री.–क़ुरान की पाँच छोटी-छोटी आयतें जो प्रायः फ़ातहः में पढ़ी जाती हैं।

पंजए अल्मास (پنجۂ الماس) फा. पुं.–पंजे के आकार का वह लौहिक यंत्र, जिसमें पहलवान पंजा डालकर ज़ोर करते हैं, पंजःकश।

पंजए आफ़ताब (پنجۂ آفتاب) फा. पुं.–सूर्य अपनी किरणों समेत।

पंजएख़ुरशीद (پنجۂ خورشید) फा. पुं.–दे. 'पंजए आफ़ताब'।

पंजए निगारीं (پنجۂ نگاریں) फा. पुं.–प्रेमिका का चित्रित पंजा जिसमें मेंहदी या महावर से नक़्शो निगार बने हों।

पंजए मर्जां (پنجۂ مرجاں) फा. अ. पुं.–मूँगे का पेड़, जो पंज़े के आकार का होता है।

पंजए मर्यम (پنجۂ مریم) फा. अ. पुं.–पंजे की आकृति का एक मुट्ठीबंद पौधा, जो पानी में डालने से खुलता है, और प्रसववेदनाग्रस्ता यदि उसे देखती रहे तो उसकी पीड़ा जाती रहती है और बच्चा सुगमता से उत्पन्न हो जाता है।

पंजए मिज़्गाँ (پنجۂ مژگاں) फा. पुं.–पलकों की क़तार।

पंजगंज (پنج گنج) फा. पुं.–पाँचों इंद्रियाँ; पाँचों वक़्त की नमाज़; पर्वेज़ की आठ निधियों में से पाँच।

पंजगानः (پنجگانہ) फा. वि.–पाँच प्रकार का; पाँच उसूलोंवाला, पंचसूत्री; पाँच समय की नमाज़।

पंजगुश्त (پنجگشت) फा. पुं.–दे. 'पंजगुश्त'।

पंजगूनः (پنجگونہ) फा. वि.–पाँच गुना; पाँच प्रकार का।

पंजगोशः (پنجگوشه) फा. वि.–पाँच कोनोंवाला, पंचकोण, पँचकोना; जिसमें पाँच पहलू हों।

पंजतन (پنجتن) फा. पुं.–पाँच व्यक्ति, अर्थात्, हज़्रत मुहम्मद, हज़्रत अली, हज़्रत फ़ातिमः और उनके दोनों पुत्र, इमाम हसन और इमाम हुसैन।

पंजनोश (پنجنوش) फा. पुं.–मंडूर, लोहे का मैल; पारा, ताँवा, लोहा, अभ्रक और मंडूर का एक रासायनिक मिश्रण।

पंजनौबत (پنجنوبت) फा. अ. स्त्री.–वह नौबत जो राजाओं और बादशाहों के द्वार पर पाँचों वक्त वजती है; वह पाँच बाजे जो नौबत में बजते हैं; पाँचों वक़्त की अज़ान।

पंजपा (پنجپا) फा. पुं.–पाँच पाँववाला, अर्थात् केकड़ा।

पंजपायः (پنجپایه) फा. पुं.–दे. 'पंजपा'।

पंजरः (پنجره) फा. पुं.–हर वह वस्तु जो जालीदार हो; मकान की जाली; पिंजड़ा, वितंस; खिड़की, गवाक्ष।

पंजर (پنجر) फा. पुं.–'पंजरः' का लघु., शरीर का ढाँचा, अस्थि-पंजर।

पंजरोज़ः (پنجروزه) फा. वि.–पाँच दिनों का; पाँच दिनों में समाप्त होनेवाला; थोड़े दिनों का, अस्थायी।

पंजवक़्तः (پنجوقته) फा. अ. वि.–पाँचों समयवाला; पाँचों समय की नमाज़।

पंजशंबह (پنجشنبه) फा. पुं.–वृहस्पतिवार, वीर वार, ज़ुमेरात।

पंजशाख़ः (پنجشاخه) फा. पुं.–पाँच शाखाओंवाली वस्तु; एक लम्बी लकड़ी जिसमें बहुत-सी मशालें खोंस लेते हैं और बरात आदि में ज़्लाते हैं।

पंजसालः (پنجساله) फा. वि.–पाँच साल में समाप्त होनेवाला; पाँच साल में एक बार पड़नेवाला; पाँच साल की आयु का।

पंजसूरः (پنجسوره) फा. स्त्री.–क़ुरान की पाँच बहुत छोटी सूरतें जो फ़ातहे में पढ़ी जाती हैं।

पंजहज़ारी (پنجهزاری) फा. पुं.–मुग़ल शासन-काल का एक बहुत बड़ा पद।

पंजहिस[स्स] (پنجحس) फा. अ. स्त्री.–पाँचों इंद्रियाँ–श्रवण शक्ति, नेत्र शक्ति, स्पर्श शक्ति, घ्राण शक्ति, स्वादेंद्रिय।

पंजाह (پنجاه) फा. वि.–पचास।

पंजाहुम (پنجاهم) फा. वि.–पचासवाँ।

पंजुम (پنجم) फा. वि.–पाँचवाँ।

पंजुमीं (پنجمیں) फा. वि.–पाँचवाँ।

पंद (پند) फा. स्त्री.–हितोपदेश, नसीहत; सदुपदेश, वा'ज़; परामर्श, सलाह; शिक्षा, सीख; अच्छी बात का ज्ञान।

पंदआमेज़ (پندآمیز) फा. वि.–नसीहत से भरा हुआ, शिक्षापूर्ण, उपदेशपूर्ण।

पंदआमोज़ (پندآموز) फा. वि.–नसीहत सिखानेवाला; नसीहत सीखनेवाला।

पंदगर (پندگر) फा. वि.–उपदेश देनेवाला, उपदेशक, नसीहत करनेवाला।

पंदगो (پندگو) फा. वि.–दे. 'पंदगर'।

पंदसूदमंद (پند سودمند) फा. पुं.–लाभप्रद उपदेश।

पंदनामः (پندنامه) फा. पुं.–वह पत्र जिसपर उपदेश लिखे हों; उपदेशों की पुस्तक।

पंदनियोश (پندنیوش) फा. वि.–उपदेश सुननेवाला, उपदेश सुनकर उस पर कान धरनेवाला, माननेवाला।

पंदिदः (پندنده) फा. वि.–उपदेश देनेवाला, उपदेशक।

पंदीदः (پندیده) फा. वि.–जिसे उपदेश दिया गया हो।

पंदोनसीहत (پندونصیحت) फा. अ. स्त्री.–नसीहत की वातें।

पंबः (پنبه) फा. पुं.–कपास, रुई, तूल।

पंबःदरगोश (پنبه‌درگوش) फा. वि.–कानों में रूई ठूँसे हुए, अर्थात् किसी की वात न सुननेवाला।

पंबःदहन (پنبه‌دهن) फा. वि.–मुँह में रूई भरे हुए, अर्थात् चुपचाप, मौन।

पंबःदहाँ (پنبه‌دهاں) फा. वि.–दे. 'पंबःदहन'।

पंबःदानः (پنبه‌دانه) फा. पुं.–कपास का बीज, विनौला।

पंबःबगोश (پنبه‌بگوش) फा. वि.–दे. 'पंबःदरगोश'।

पंबए ज़ख़्म (پنبۂ زخم) फा. पुं.–घाव पर रखने की रुई, फाहा।

पंबए मीना (پنبۂ مینا) फा. पुं.–शराव के शीशे पर लगी हुई रुई, रुई की डाट, पहले कार्क के स्थान पर रुई की डाट होती थी।

पंबकी (پنبکی) फा. वि.–रुई से बना हुआ, सूती।

पक्नः (پکنه) फा. वि.–मोटा और बौना व्यक्ति।

पख़ (پخ) फा. स्त्री.–अड़ंगा, पच्चड़; दोप, ऐब; कठिनता, दिक़्क़त; विघ्न, बाधा।

पख़्च (پخچ) फा. वि.–कूटा हुआ; फैलाया हुआ; नीचा, पस्त; मुर्झाया हुआ।

पख़्तः (پخته) फा. पुं.–बिनौला निकली हुई कपास, रुई, तूल।

पख़्तो (پختو) फा. स्त्री.–दे. शु. उ. 'पुख़्तो'।

पख़्मान (پخمان) फा. वि.–उदास, ग़मगीन; मलिन, खिन्न, अफ़्सुर्दः।

पख़्लीचः (پخلیچه) फा. पुं.–दे. 'पख़्ऊचः', दो. शु. हैं।

पख़्लूचः (پخلوچه) फा. पुं.–गुदगुदी।

पख़्स (پخس) फा. वि.–पिघला हुआ, द्रवित; अप्रफुल्ल, पज़मुर्दः।

पख़्सीदः (پخسیده) फा. वि.–खिन्न, मलिन, अफ़्सुर्दः; दुःखित, रंजीदः।

पग (پگ) फा. पुं.–गोली, गुल्ला।

पगह (پگه) फा. स्त्री.–'पगाह' का लघु., दे. 'पगाह'।

पगाह (پگاه) फा. स्त्री.–प्रातःकाल, सवेरा, तड़का।

पगाहतर (پگاهتر) फा. स्त्री.–गजरदम, बहुत तड़के, वासर संग, ब्राह्म मुहूर्त।

पचवाक (پچواک) फा. पुं.–अनुवाद, उल्था, तर्जुमा।

पज़ः (پژه) फा. पुं.–दोहरे कपड़े में नीचे का कपड़ा, अस्तर।

पज (پج) फा. पुं.–पर्वत, पहाड़।

पज़ (پز) फा. प्रत्य.–पकानेवाला जैसे 'खिश्तपज़' ईंटें पकानेवाला।

पज़ (پژ) फा. पुं.–पीप, मवाद; मल, मैल; जीर्ण, पुराना।

पज़न (پژن) फा. स्त्री.–चील पक्षी, चिल्ल।

पज़मान (پژمان) फा. वि.–दे. 'पख़्मान'।

पज़मुर्दः (پژمرده) फा. वि.–खिन्न, मलिन, उदास; दुःखित, ग़मगीन, दे. 'पिज़मुर्दः' दो. शुद्ध हैं।

पज़मुर्दः ख़ातिर (پژمرده خاطر) फा. अ. वि.–दे. 'पज़मुर्दःदिल'।

पज़मुर्दःदिल (پژمردهدل) फा. वि.–जिसका मन उदास हो, खिन्नमनस्क, अप्रसन्नचित्त।

पज़मुर्दःरू (پژمردهرو) फा. वि.–जिसका चेहरा उदास हो, मलिनमुख, अप्रसन्नमुख।

पज़मुर्दगी (پژمردگی) फा. स्त्री.–उदासीनता, खिन्नता, अफ़्सुर्दगी।

पज़मुर्दनी (پژمردنی) फा. वि.–खिन्न होने योग्य, पज़मुर्दा होने के क़ाबिल।

पजार (پجار) फा. पुं.–पर्वत, पहाड़।

पज़ावः (پژاوه) फा. पुं.–ईंट या चूना पकाने का भट्ठा, उर्दू में केवल ईंट के भट्ठे के लिए आता है।

पज़ीरः (پزیره) फा. पुं.–स्वीकार करना, क़बूल करना; किसी के सामने जाना; मक़्बूल, माना हुआ, दे. 'पिज़ीरः', दोनों शुद्ध हैं।

पज़ीर (پذیر) फा. अव्य.–स्वीकार करनेवाला, जैसे 'पोज़िश पज़ीर' उज़्र क़बूल करनेवाला, दे. 'पिज़ीर', दोनों शुद्ध हैं।

पज़ीरा (پزیرا) फा. वि.–स्वीकृत, अंगीकृत, कबूल, दे. 'पिज़ीरा', दोनों शुद्ध हैं।

पज़ीराई (پزیرائی) फा. स्त्री.–स्वीकृति, अंगीकृति, मंज़ूरी, क़बूलियत, दे. 'पिज़ीराई', दोनों शुद्ध हैं।

पज़ोह (پژوه) फा. प्रत्य.–ढूँढ़नेवाला, जैसे—'हक़पज़ोह' सत्य का खोजी, दे. 'पिज़ोह', दोनों शुद्ध हैं।

पज़ोहिंदः (پژوهنده) फा. वि.–ढूँढ़नेवाला, जिज्ञासु, खोजी, दे. 'पिज़ोहिंदः' दोनों शुद्ध हैं।

पज़ोहिश (پژوهش) फा. स्त्री.–खोज, जिज्ञासा, तलाश, दे. 'पिज़ोहिश' दोनों शुद्ध हैं।

पज़ोहीदः (پژوهیده) फा. वि.–खोजा हुआ, ढूँढ़ा हुआ, जिज्ञासित, दे. 'पिज़ोहीदः', दोनों शुद्ध हैं।

पतंग (پتنگ) फा. पुं.–गवाक्ष, खिड़की; रोशनदान।

पतगीर (پتگیر) फा. स्त्री.–छेनी, टाँकी।

पतर (پتر) फा. पुं.–लोहे का तख़्ता, पत्र।

पतीरः (پتیره) फा. पुं.–घिनावनी और निकृष्ट वस्तु।

पतील (پتیل) फा. पुं.–चिराग़ की बत्ती।

पत्यारः (پتیاره) फा. पुं.–आपत्ति, विपदा, मुसीबत; दैवी आपत्ति, बला।

पद (پد) फा. पुं.–वह पेड़ जिसमें फल न लगते हों।

पदरख़्तः (پدرخته) फा. वि.–दुःखित, क्लेशित, रंजीदा; खिन्न, मलिन, उदास।

पदीद (پدید) फा. वि.–प्रकट, व्यक्त, आविर्भूत, ज़ाहिर, दे. 'पिदीद', दोनों शुद्ध है।

पदीदार (پدیدار) फा. वि.–दे. 'पदीद'।

पद्रूद (پدرود) फा. स्त्री.–बिदा, रुख़्सत; त्याग, तर्क।

पनाह (پناه) फा. स्त्री.–रक्षा, त्राण, हिफ़ाज़त; आश्रय, सहारा; पृष्ठ-पोषण, हिमायत; प्राण-रक्षा, जान का बचाव।

पनाहगाह (پناهگاه) फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ सुरक्षित रहा जा सके; वह स्थान जहाँ से भरण-पोषण हो और सहायता मिले।

पनाह बख़ुदा (پناه بخدا) फा. वा.–ईश्वर बचाये।

पनाहे बेकसाँ (پناه بےکساں) फा. स्त्री.–निराश्रय लोगों की रक्षा करनेवाला।

पनीर (پنیر) फा. पुं.–दही का पानी निकालकर उसमें नमक मिलाकर बनाया हुआ एक खाद्य।

पनीरमायः (پنیرمایه) फा. पुं.–एक दवा जो बकरी या ऊँट आदि के हाल के ब्याये हुए बच्चे को उसकी माँ का खूब दूध पिलाकर और फिर उसका वध करके उसके आमाशय को सुखाकर बनाते हैं।

पनीरी (پنیری) फा. वि.–पनीर का; पनीर लगा हुआ; पनीर से सम्बन्ध रखनेवाला।

पयंबर (پیمبر) फा. पुं.—ईश-दूत, अवतार, पैग़म्बर।

पयंबरानः (پیمبرانہ) फा. वि.—पयंबरों-जैसा, अवतारों-जैसा।

पयंबरी (پیمبری) फा. स्त्री.—पयंबर का पद; पयंबर सम्बन्धी; पयंबर का।

पयंबरे वक़्त (پیمبر وقت) फा. अ. पुं.—अपने समय में ऐसे चमत्कारपूर्ण कार्य करनेवाला, जिन्हें केवल ईशदूत ही कर सकता हो।

पय (پے) फा. पुं.—पाँव, चरण; पदचिह्न, पाँव का निशान; पीछा; बार, दफ़ा; पट्ठा, स्नायु, दे. 'पै'।

पय दर पय (پے در پے) फा. वि.—बार-बार, बारंबार; लगातार, निरन्तर, मुसल्सल, दे. 'पै दर पै'।

पय ब पय (پے بہ پے) फा. वि.—दे. 'पय दर पय'।

पयादः (پیادہ) फा. पुं.—पैदल चलनेवाला; चप़रासी, सिपाही; हरकारा, डाकिया; सेना का पैदल सिपाही; शत्रंज का पैदल।

पयादःनिज़ाम (پیادہ نظام) फा. अ. पुं.—सैनिक, फ़ौजी; पियादा, फ़ौजी।

पयादःपा (پیادہ پا) फा. वि.—पाँव-पाँव चलनेवाला, पैदल चलनेवाला।

पयादःपाई (پیادہ پائی) फा. स्त्री.—पाँव-पाँव बिना सवारी के चलना।

पयापय (پیاپے) फा. वि.—दे. 'पय दर पय'।

पयाम (پیام) फा. पुं.—समाचार, ख़बर; संदेश, संदेसा; सगाई की बातचीत।

पयामबर (پیام بر) फा. वि.—ख़बर ले जानेवाला; संदेश पहुँचानेवाला; दूत; संदेशवाहक।

पयामबरी (پیام بری) फा. स्त्री.—ख़बर ले जाना; संदेश पहुँचाना।

पयामबुर्दः (پیام بردہ) फा. वि.—संदेश या ख़बर लेकर गया हुआ।

पयामरसाँ (پیام رساں) फा. वि.—संदेश अथवा ख़बर पहुँचानेवाला।

पयामरसानी (پیام رسانی) फा. स्त्री.—संदेश या ख़बर पहुँचाना।

पयामरसी (پیام رسی) फा. स्त्री.—संदेश या ख़बर पहुँचना।

पयामी (پیامی) फा. वि.—पयाम ले जानेवाला, संदेशवाहक; समाचार ले जानेवाला, ख़बररसाँ।

पयामोसलाम (پیام وسلام) फा. अ. पुं.—दूसरे के द्वारा दो व्यक्तियों की बातचीत।

परंदः (پرندہ) फा. पुं.—पक्षी, चिड़िया।

परंद (پرند) फा. पुं.—पक्षी; तलवार; सादा रेशमी कपड़ा; तलवार का जौहर; कृत्तिका नक्षत्र, पर्वीं।

परः (پرہ) फा. पुं.—पंक्ति, क़तार; क़ुफ़ुल की झड़; घास का तिन्का; छोर, किनारा।

पर (پر) फा. पुं.—पक्ष, पंख।

परअफ़्गंदः (پرافگندہ) फा. वि.—जिसके पर झड़ गये हों, अर्थात् विवश, लाचार।

परअफ़्गंदगी (پرافگندگی) फा. स्त्री.—पर झड़ जाना, विवशता, लाचारी।

परअफ़्शाँ (پرافشاں) फा. वि.—दे. 'परफ़िशाँ'।

परअफ़्शानी (پرافشانی) फा. स्त्री.—दे. 'परफ़िशानी'।

परक़ाज़ः (پرقازہ) फा. पुं.—चित्रकार की कूची, तूलिका।

परकार (پرکار) फा. स्त्री.—दे. 'पर्कार'।

परकालः (پرکالہ) फा. पुं.—दे. 'पर्कालः'।

परख़ाश (پرخاش) फा. स्त्री.—दे. 'पर्ख़ाश'।

परगनः (پرگنہ) फा. पुं.—दे. 'पर्गनः'।

परचीं (پرچیں) फा. स्त्री.—दे. 'पर्चीं'।

परताब (پرتاب) फा. पुं.—दे. 'पर्ताब'।

परतौ (پرتو) फा. पुं.—दे. 'पर्तौ'।

परदाख़्तः (پرداختہ) फा. वि.—दे. 'पर्दाख़्तः'।

परदाख़्त (پرداخت) फा. स्त्री.—दे. 'पर्दाख़्त'।

परदाज़ (پرداز) फा. पुं.—दे. 'पर्दाज़'।

परदार (پردار) फा. वि.—जिसके पर हो।

परदोख़्तः (پردوختہ) फा. वि.—जिसके पर सी दिये गये हों, जो उड़ न सके, अर्थात् विवश, लाचार।

परन (پرن) फा. स्त्री.—कृत्तिका नक्षत्र, पर्वीं।

परनियाँ (پرنیاں) फा. पुं.—दे. 'पर्नियाँ'।

परपा (پرپا) फा. पुं.—घाघस कबूतर, वह कबूतर जिसके पाँव में पर होते हैं।

परफ़िशाँ (پرفشاں) फा. वि.—पर झाड़नेवाला, पर फटफटानेवाला, अर्थात् सांसारिक सुखों का त्यागी।

परफ़िशानी (پرفشانی) फा. स्त्री.—सांसारिक सुखों का त्याग, निवृत्ति।

परबंद (پربند) फा. वि.—दे. 'परबुस्तः'।

परबस्तः (پربستہ) फा. वि.—जिसके पर बँधे हों, जो उड़ने में असमर्थ हो, विवश, लाचार।

परबुरीदः (پربریدہ) फा. वि.—जिसके पर काट दिये गये हों, अर्थात् असमर्थ, मजबूर।

परेरेख़्तः (پرریختہ) फा. वि.—पर झड़ा हुआ, जो उड़ न सके, असमर्थ, विवश।

परवरिश (پرورش) फा. स्त्री.—दे. 'पर्वरिश'।

परवर्दः (پروردہ) फा. वि.–दे. 'पर्वर्दः'।

परवाज़ (پرواز) फा. स्त्री.–उड़ना, दे. 'पर्वाज़', अपने मर्कज़ की तरफ़ मायले परवाज़ था हुस्न, भूलता ही नहीं आलम तेरी अँगड़ाई का।—अजीज़।

परवानः (پروانہ) फा. पुं.–पतंगा, शलभ; आदेशपत्र, हुक्मनामा; राजादेश, फ़र्मान; भक्त, फ़िदाई; मुग्ध, आसक्त, फ़रेफ़्तः; वह कुत्ते बराबर जंतु जो सिंह के आगे-आगे चलता है।

परवानःवार (پروانہوار) फा. अ. वि.–परवाने की तरह, जैसे शलभ दीपक की ओर जाता है, ऐसे बड़े वेग और उत्साह के साथ।

परवानए गिरिफ़्तारी (پروانہ گرفتاری) फा. पुं.–गिरिफ़्तारी का वारंट।

परवानए राहदारी (پروانہ راھداری) फा. पुं.–पासपोर्ट, पारपत्र।

परवानगी (پروانگی) फा. स्त्री.–आज्ञा, अनुमति, इजाज़त।

परवीं (پرویں) फा. स्त्री.–दे. 'पर्वीं'।

परवेज़ (پرویز) फा. पुं.–दे. 'पर्वेज़'।

परवेज़न (پرویزن) फा. स्त्री.–दे. 'पर्वेज़न'।

परशिकस्तः (پرشکستہ) फा. वि.–जिसके पर टूट गये हों, जो उड़ न सके, अर्थात् विवश, असमर्थ, अशक्त, लाचार।

परसियावशाँ (پرثیاوشاں) फा. स्त्री.–एक वनस्पति, हंसराज।

परसुम (پرسم) फा. पुं.–दे. 'पर्सुम'।

परसोख़्तः (پرسوختہ) फा. वि.–जिसके पर जल गये हों, अर्थात्, असमर्थ, लाचार, विवश।

परस्त (پرست) फा. अव्य.–पूजनेवाला, जैसे—'वुतपरस्त' मूर्ति पूजनेवाला।

परस्तार (پرستار) फा. वि.–पूजनेवाला, उपासक, आबिद; भक्त, फ़िदाई।

परस्तारज़ादः (پرستارزادہ) फा. पुं.–दासीपुत्र, लौंडी-बच्चा।

परस्तारी (پرستاری) फा. स्त्री.–पूजा, आराधना, इबादत; भक्ति, फ़िदाइयत।

परस्तिदः (پرستندہ) फा.वि.–पूजनेवाला, पूजक, आराधक।

परस्तिश (پرستش) फा. स्त्री.–पूजा, आराधना, इबादत; बहुत अधिक प्रेम।

परस्तिशकदः (پرستش کدہ) फा. पुं.–दे. 'परस्तिशगाह'।

परस्तिशख़ानः (پرستش خانہ) फा. पुं.–दे. 'परस्तिशगाह'।

परस्तिशगाह (پرستش گاہ) फा. स्त्री.–पूजा का स्थान, आराधनालय, इबादतख़ाना।

परस्तीदः (پرستیدہ) फा. वि.–जिसकी पूजा की जाय, पूजित, आराधित, पूज्य, आराध्य।

परस्तीदनी (پرستیدنی) फा. वि.–पूजने योग्य, पूजनीय, आराधनीय।

परहेज़ (پرھیز) फा. पुं.–दे. 'पर्हेज़'।

परागंदः (پراگندہ) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; असंबद्ध, बेतर्तीब; उद्विग्न, परेशान।

परागंदः ख़ातिर (پراگندہ خاطر) फा. वि.–जिसका मन ठिकाने न हो, व्यस्तचित्त।

परागंदःदिल (پراگندہ دل) फा. वि.–दे. 'परागंदः ख़ातिर'।

परागंदःमू (پراگندہ مو) फा. वि.–जिसके बाल बिखरे हुए हों, बाल बिखेरे हुए।

परागंदःरोज़गार (پراگندہ روزگار) फा. वि.–समय जिसके अनुकूल न हो, कालचक्र-ग्रस्त।

परागंदःरोज़ी (پراگندہ روزی) फा. वि.–जिसकी जीविका निश्चित न हो, अनिश्चित जीविका।

परागंदःहाल (پراگندہ حال) फा. अ. वि.–जिसकी दशा बहुत ही अस्त-व्यस्त हो, व्यस्तावस्था, दुर्दशाग्रस्त, व्यस्तभाग्य।

परागंदगी (پراگندگی) फा. स्त्री.–अस्तव्यस्तता, तितर-बितरपन; असंबद्धता, बेतर्तीबी।

पराज़दः (پرازدہ) फा. पुं.–लोई, गुँधे हुए आटे का पेड़ा।

परानिंदः (پرانندہ) फा. वि.–उड़ानेवाला।

परानीदः (پرانیدہ) फा. वि.–उड़ाया हुआ।

परिंदः (پرندہ) फा. पुं.–पक्षी, चिड़िया।

परिंद (پرند) फा. पुं.–पक्षी, चिड़िया।

परिंदगी (پرندگی) फा. स्त्री.–उड़ना।

परिस्तान (پرستان) फा. पुं.–परियों का स्थान, जहाँ बहुत-सी परियाँ रहती हों।

परी (پری) फा. स्त्री.–एक कल्पित प्राणीवर्ग, जिनके लिए प्रसिद्ध है कि वह अत्यन्त सुन्दरी होती हैं, अप्सरा; बहुत अधिक सुन्दर स्त्री।

परीअंदाज़ (پری انداز) फा. वि.–परियों-जैसे हावभाव रखनेवाला (वाली)।

परीअंदाम (پری اندام) फा. वि.–परियों-जैसे सुंदर शरीर-वाला (वाली)।

परीइज़ार (پری عذار) फा. अ. वि.–परियों-जैसे कपोलों-वाला (वाली)।

परीक़ामत (پری قامت) फा. अ. वि.–परियों-जैसे आकार-वाला (वाली)।

परीख़ानः (پریخانہ) फा. पुं.–परियों के रहने का घर; वह स्थान जहाँ बहुत-सी सुंदर स्त्रियाँ एकत्र हों।

परीख़्वाँ (پریخواں) फा. वि.–जादूगर, इंद्रजाली; भूत-प्रेत उतारनेवाला, भगत, ओझा; जादू के ज़ोर से भूतों की आत्माओं को बुलानेवाला, अज़ीमतख़्वाँ।

परीख़्वानी (پریخوانی) फा. स्त्री.–माया-कर्म, जादूगरी; भूत-प्रेत उतारना; भूत-प्रेत-आत्माओं को बुलाना।

परीचम (پری چم) फा. वि.–परयिों-जैसी अठलाती हुई चाल से चलनेवाला (वाली)।

परीचश्म (پری چشم) फा. वि.–परियों-जैसी सुन्दर आँखों-वाला (वाली)।

परीचेह्रः (پری چہرہ) फा. वि.–दे. 'परीरू'।

परीज़दः (پری زدہ) फा. वि.–जिस पर आसेब का ख़लल हो, प्रेतबाधा-ग्रस्त, भूताविष्ट।

परीजमाल (پری جمال) फा. अ. वि.–परियों-जैसा सौन्दर्य रखनेवाला (वाली)।

परीज़ादः (پری زادہ) फा. पुं.–परियों की औलाद, परियों का लड़का, अप्सरा-पुत्र।

परीज़ाद (پری زاد) फा. पुं.–दे.—'परीज़ादः'।

परीतल्अत (پری طلعت) फा. अ. वि.–दे. 'परीजमाल'।

परीतिम्साल (پری تمثال) फा. अ. वि.–परियों-जैसी सूरत-वाला (वाली), अप्सरामुखी।

परीदः (پریدہ) फा. वि.–उड़ा हुआ, जैसे—परीदःरंग।

परीदःरंग (پریدہ رنگ) फा. वि.–जिसका रंग उड़ गया हो।

परीदोश (پریدوش) फा. स्त्री.–बीती हुई, परसों की रात।

परीपैकर (پری پیکر) फा. वि.–दे. 'परीअंदाम'।

परीफ़ाम (پری فام) फा. व्रि.–परियों-जैसे गोरे रंगवाला (वाली)।

परीबंद (پری بند) फा. पुं.–भुजबंध, बाज़ू का एक ज़ेवर।

परीर (پریر) फा. पुं.–दे. 'परीरोज़'।

परीरुख़ (پری رخ) फा. वि.–दे. 'परीरू'।

परीरुख़सार (پری رخسار) फा. वि.–दे. 'परीरू'।

परीरू (پری رو) फा. वि.–परियों-जैसी शक्ल-सूरतवाला (वाली)।

परीरोज़ (پری روز) फा. पुं.–बीता हुआ परसों का दिन।

परीलिक़ा (پری لقا) फा. अ. वि.–दे. 'परीतलअत'।

परीवश (پری وش) फा. वि.–परियों-जैसा (-जैसी)।

परीशब (پری شب) फा. स्त्री.–बीती हुई परसोंवाली रात।

परीशाँ (پریشاں) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; व्याकुल, आतुर, बेचैन; दुःखित, क्लेशित, रंजीदा; चिंतित, फ़िक्रमंद; स्तब्ध, चकित, हैरान; ध्वस्त, बरबाद।

परीशाँख़याल (پریشاں خیال) फा. अ. वि.–जिसका मन बेठिकाने हो, जो ठीक-ठीक सोच न सकता हो।

परीशाँख़याली (پریشاں خیالی) फा. अ. स्त्री.–ख़यालात की बेतरतीबी, मन की व्यस्तता।

परीशाँख़ातिर (پریشاں خاطر) फा. अ. वि.–व्यग्रचित्त, व्यस्तमना, जिसका मन ठिकाने न हो।

परीशाँख़ातिरी (پریشاں خاطری) फा. अ. स्त्री.–चित्त की व्यग्रता, मन का बेठिकाने होना।

परीशाँगोई (پریشاں گوئی) फा. स्त्री.–बकवास, मिथ्या-वाद, व्यालाप।

परीशाँदिल (پریشاں دل) फा. वि.–दे. 'परीशाँख़ातिर'।

परीशाँनज़री (پریشاں نظری) फा. स्त्री.–निगाह का ठिकाने न होना।

परीशाँमू (پریشاں مو) फा. वि.–जिसके बाल बिखरे हुए हों।

परीशाँरू (پریشاں رو) फा. वि.–जिसका मुँह उतरा हुआ हो, जिसके चेहरे पर परीशानी के आसार हों।

परीशाँरोज़गार (پریشاں روزگار) फा. वि.–जिसका समय प्रतिकूल हो, दुर्दशाग्रस्त।

परीशाँरोज़ी (پریشاں روزی) फा. वि.–जिसको जीविका की ओर से संतोष न हो, बेरोज़गार।

परीशाँसूरत (پریشاں صورت) फा. अ. वि.–जिसकी सूरत से परेशानी टपकती हो।

परीशाँहाल (پریشاں حال) फा. वि.–दुर्दशाग्रस्त, मुफ़लिस, कंगाल, अकिंचन।

परीशाँहाली (پریشاں حالی) फा. अ. स्त्री.–दुर्दशा, ग़रीबी, कंगाली, अकिंचनता।

परीशान (پریشان) फा. वि.–दे. 'परीशाँ'।

परीशानकुन (پرشان کن) फा. वि.–परीशान करनेवाला।

परीशानी (پریشانی) फा. स्त्री.–व्याकुलता, बेचैनी; चिंता, फ़िक्र; दुःख, तक्लीफ़।

परीसीरत (پری سیرت) फा. अ. वि.–परियों-जैसे स्वभाव-वाला (वाली)।

परीसूरत (پری صورت) फा. अ. वि.–दे. 'परीरू'।

परेकाह (پرکاہ) फा. पुं.–घास का तिनका।

परेताऊस (پر طاؤس) फा. पुं.–मोर का पर, मयूरपक्ष।

परेशाँ (پریشاں) फा. वि.–'परेशान' का लघु., दे. 'परेशान'।

परेशान (پریشان) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; व्याकुल, आतुर; दुःखित, रंजीदा; चिंतित, फ़िक्रमंद; स्तब्ध, हैरान; ध्वस्त, बरबाद।

परेशानी (پریشانی) फा. स्त्री.–व्याकुलता, बेचैनी; चिंता, फ़िक्र; दुःख, तक्लीफ़।

परेहुमा (پرہما) फा. पुं.–कल्ग़ी, केस, तुर्रा; हुमा पक्षी का पर, जिसकी परछाई पड़ने से मनुष्य राजा हो जाता है।

परोबाल (پروبال) फा. पुं.–पक्षियों के डैने और पर; बल, शक्ति, ज़ोर; सहायता, मदद; सामर्थ्य, मक़्दूर।

पर्कार (پرکار) फा. स्त्री.–गोलाई खींचने का यंत्र।

पर्कालः (پرکالہ) फा. पुं.–अंश, खण्ड, हिस्सा; चिनगारी, स्फुलिंग, पतंगा।

पर्कालए आतश (پرکالۂ آتش) फा. पुं.–आग की चिनगारी, अग्निकण; बहुत ही धूर्त और चालाक व्यक्ति।

पर्ख़ाश (پرخاش) फा. स्त्री.–वैर, शत्रुता, दुश्मनी; द्वेष, कीना, बुग़्ज़; वैमनस्य, रंजिश।

पर्गनः (پرگنہ) फा. पुं.–ज़िले का एक भाग, तहसील; ग्राम, गाँव।

पर्गार (پرگار) फा. स्त्री.–दे. 'पर्कार', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु 'पर्कार' व्यवहृत है।

पर्चः (پرچہ) फा. पुं.–काग़ज़ का छोटा टुकड़ा; चिट्ठी जो दस्ती भेजी जाय; पत्र, अख़्बार; पुलिस की रिपोर्ट; परीक्षापत्र, प्रश्नपत्र।

पर्चःनवीस (پرچہ‌نویس) फा. वि.–संवाददकार, अख़्बारी नुमाइंदः; गुप्त रिपोर्ट लिखनेवाला, जासूस।

पर्चए इम्तिहाँ (پرچۂ امتحاں) फा. अ. पुं.–परीक्षा के प्रश्नों का पर्चा, परीक्षापत्र।

पर्चए हिसाब (پرچۂ حساب) फा. अ. पुं.–बीजक; वही के हिसाब की नक़्ल; परीक्षा में गणित का पर्चा।

पर्चम (پرچم) फा. पुं.–झंडे का कपड़ा, फ़रैरा; सुरा गाय की पुच्छ; अलक, ज़ुल्फ़।

पर्चमकुशाई (پرچم‌کشائی) फा. स्त्री.–झंडा लहराना, झंडा आरोहण; झंडा लहराने का उत्सव या रस्म; ध्वजोत्तोलन।

पर्चीं (پرچیں) फा. स्त्री.–काँटों या लकड़ियों की बाड़ जो खेत या घर के चारों ओर लगाते हैं।

पर्ताब (پرتاب) फा. पुं.–वह अंतर जो तीर फेंकने और जाकर गिरने के स्थानों के बीच में हो; एक प्रकार का बाण जो बहुत दूर तक जाता है।

पर्ताबी (پرتابی) फा. वि.–तीर चलानेवाला, धनुर्धर, तीरंदाज़।

पर्तौ (پرتو) फा. पुं.–प्रकाश, रोशनी; आभा, चमक; झलक; प्रतिबिंब, अक्स; हलका प्रभाव; छाया, साया।

पर्दः (پردہ) फा. पुं.–आड़, ओट; टट्टी; मुखपट, नक़ाब; घूंघट; स्त्री का परपुरुष से छिपना; आँख, कान आदि की झिल्ली; बाजे का पुर्ज़ा जो स्वर बताता है; राग, नग़्मः; द्वारपट, चिलमन या कपड़ा आदि।

पर्दःदर (پردہ‌در) फा. वि.–दोष प्रकट करनेवाला, निंदक; स्त्री का पर्दा तोड़नेवाला।

पर्दःदरी (پردہ‌دری) फा. स्त्री.–दोष प्रकट करना, छिद्रान्वेषण; स्त्री का पर्दा भंग करना, उसे पर्दे में न रहने देना।

पर्दःदार (پردہ‌دار) फा. वि.–दोष छिपानेवाला; द्वारपाल, दरबान।

पर्दःदारी (پردہ‌داری) फा. स्त्री.–दोष छिपाना; दरबानी।

पर्दःनशीं (پردہ‌نشیں) फा. वि.–पर्दे में रहनेवाली स्त्री, अनिष्कासिनी।

पर्दःनशीनी (پردہ‌نشینی) फा. स्त्री.–स्त्री का पर्दे में रहना, बाहर खुले मुँह न निकलना।

पर्दःपोश (پردہ‌پوش) फा. वि.–दूसरे का दोष छिपानेवाला, दोष और अपराध देखते हुए क्षमा करनेवाला।

पर्दःपोशी (پردہ‌پوشی) फा. स्त्री.–दोष और अपराध पर दृष्टि न डालना, उन्हें छिपाना, क्षमा करना।

पर्दःसरा (پردہ‌سرا) फा. स्त्री.–अंतःपुर, ज़नानख़ाना; ख़ेमा, डेरा, तम्बू; स्त्रियों के रहने का घर।

पर्दःसोज़ (پردہ‌سوز) फा. वि.–दे. 'पर्दःदर'।

पर्दए इनबी (پردۂ عنبی) फा. अ. पुं.–आँख के सात पर्दों में से एक।

पर्दए इस्मत (پردۂ عصمت) फा. अ. पुं.–दे. 'पर्दए बकारत'; सतीत्व, सतीपन, इफ़्फ़त।

पर्दए गोश (پردۂ گوش) फा. पुं.–कान की झिल्ली, जिससे टकराकर आवाज़ सुनाई देती है, श्रवण-पटल।

पर्दए चश्म (پردۂ چشم) फा. पुं.–आँख की सात झिल्लियाँ, चक्षु-पटल।

पर्दए ज़ंबूर (پردۂ زنبور) फा. पुं.–एक प्रकार का जालीदार बुर्क़ा।

पर्दए ज़ंबूरी (پردۂ زنبوری) फा. पुं.–खिड़कियोंवाला घर।

पर्दए दर (پردۂ در) फा. पुं.–दरवाज़े पर पड़ा हुआ पर्दा।

पर्दए नामूस (پردۂ ناموس) फा. अ. पुं.–सतीत्व, इस्मत; प्रतिष्ठा, मर्यादा।

पर्दए बकारत (پردۂ بکارت) फा. अ. पुं.–वह झिल्ली जो योनि पर होती है और पहले सहवास में फट जाती है, योनिपटल; योनिच्छद।

पर्दए बीनी (پردۂ بینی) फा. पुं.–नाक अथवा दोनों नथनों के बीच की दीवार, नासापट।

पर्दए सीमीं (پردۂ سیمیں) फा. पुं.–सिनेमा का पर्दा जिस पर चित्र दिखाई देते हैं, रजत-पट।

पर्दक (پردک) फा. पुं.–पहेली, प्रहेलिका, मुअम्मा।

पर्दगी (پردگی) फा. स्त्री.–पर्दे में रहनेवाली नायिका; द्वारपाल, दरबान।

पर्दाख़्तः (پرداختہ) फा. वि.–सँवारा हुआ, सज्जित; पाला हुआ, पोषित।

पर्दाख़्त (پرداخت) फा. स्त्री.–देखभाल, संरक्षण, रक्षा, हिफ़ाज़त; पालन-पोषण, पर्वरिश।

पर्दाख़्तनी (پرداختنی) फा. वि.–सँवारने योग्य; रक्षा करने योग्य; देखभाल के योग्य; पालन-पोषण के योग्य।

पर्दाज़ (پرداز) फा. पुं.–शौर्य, ढंग; सज्जा, सजावट; संलग्नता, मश्गूली; चित्र की महीन रेखाएँ आदि, (प्रत्य.) सँवारनेवाला, जैसे—'इंशापरदाज़' शब्दों को सुसज्जित करनेवाला।

पर्दाज़िंदः (پردازندہ) फा. वि.–सँवारनेवाला।

पर्ना (پرنا) फा. पुं.–एक चित्रित रेशमी कपड़ा।

पर्नियाँ (پرنیاں) फा. पुं.–एक प्रकार का चित्रित रेशमी कपड़ा।

पर्पहन (پرپہن) फा. पुं.–ख़ुर्फ़े का साग।

पर्मक (پرمک) तु. स्त्री.–उँगली।

पर्मला (پرملا) फा. स्त्री.–मुर्ग़ाबी, एक जल-पक्षी।

पर्रः (پرہ) फा. पुं.–फ़ौज की पंक्ति, परः; क़ुफ़ुल की झड़; घास की पत्ती, तिनका; छोर, किनारा।

पर्रए बीनी (پرۂ بینی) फा. पुं.–नासापटल, नथनों के बीच की दीवार।

पर्रां (پراں) फा. वि.–उड़ता हुआ, उड़ती हुई अवस्था में।

पर्वज़ (پروز) फा. स्त्री.–कुर्ते आदि के दामन पर टाँकी जानेवाली गोट।

पर्वर (پرور) फा. प्रत्य.–पालनेवाला, जैसे—'अद्ल पर्वर' न्याय का पालन करनेवाला।

पर्वरिंदः (پرورندہ) फा. वि.–पालनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला।

पर्वरिश (پرورش) फा. स्त्री.–पालन-पोषण; कृपा, दया; सहायता, मदद।

पर्वरिशख़ानः (پرورش خانہ) फा. पुं.–दे. 'पर्वरिशगाह'।

पर्वरिशगाह (پرورش گاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान• जहाँ बच्चों का पालन-पोषण होता है।

पर्वरिशयाफ़्तः (پرورش یافتہ) फा. वि.–पाला हुआ, पोषित, पालित।

पर्वर्दः (پروردہ) फा. वि.–पाला हुआ, (प्रत्य.) जैसे—'बर्फ़ पर्वर्दः' बर्फ़ में सुरक्षित किया हुआ।

पर्वर्द (پرورد) फा. वि.–दे. 'पर्वर्दः'।

पर्वर्दए नमक (پروردۂ نمک) फा. वि.–जिसने किसी के घर पर्वरिश पायी हो, और नमक खाकर बड़ा हुआ हो, दास।

पर्वर्दए ने'मत (پروردۂ نعمت) फा. अ. वि.–दे. 'पर्वर्दए नमक'।

पर्वर्दगार (پروردگار) फा. पुं.–ईश्वर, परमात्मा, ख़ुदा।

पर्वर्दनी (پروردنی) फा. वि.–पालन-पोषण करने योग्य।

पर्वा (پروا) फा. स्त्री.–चिंता, फ़िक्र; भय, डर; ध्यान, ख़याल; इच्छा, चाह।

पर्वाज़ (پرواز) फा. स्त्री.–उड़ान, उड़ने का भाव, (प्रत्य.) उड़नेवाला, जैसे—'बलंदपर्वाज़' ऊँचा उड़नेवाला।

पर्वानः (پروانہ) फा. पुं.–पतंगा, शलभ; आदेशपत्र, हुक्मनामा; राजादेश, फ़र्मान; मुग्ध, फ़रेफ़्तः; भक्त, फ़िदाई; एक लोमड़ी-जैसा जन्तु जो शेर के आगे-आगे चलता है।

पर्वानःवार (پروانہوار) फा. वि.–जैसे शलभ दीपक की ओर दौड़ता है वैसे, शलभवत्।

पर्वानए राहदारी (پروانۂ راهداری) फा. पुं.–पासपोर्ट, पारपत्र।

पर्वानक (پروانک) फा. पुं.–वह लोमड़ी-जैसा जन्तु जो शेर के आगे-आगे चलता है, पर्वाना।

पर्वानगी (پروانگی) फा. स्त्री.–आज्ञा, अनुमति, इजाज़त।

पर्वारः (پروارہ) फा. पुं.–टेकी, अड़ंगा; झरोखा, गुर्फ़ः।

पर्वार (پروار) फा. पुं.–ज़मीन के नीचे बनाया हुआ घर जिसमें धूप से बचाकर पशु पाले जाते और मोटे किये जाते हैं।

पर्वारी (پرواری) फा. वि.–पर्वार में पला हुआ, वह पशु जो धूप से बचाकर और खूब खिला-पिलाकर मोटा किया गया हो।

पर्वीं (پرویں) फा. स्त्री.–कृत्तिका नक्षत्र, परन; गुच्छा, गुच्छ, खोशः।

पर्वेज़ (پرویز) फा. पुं.–प्रतिष्ठित, संमानित; शकर छानने की चलनी; नौशेरवाँ का पोता जो शीरीं का आशिक़ था।

पर्वेज़न (پرویزن) फा. स्त्री.–छलनी, आटा आदि छानने का यंत्र।

पर्सुम (پرسم) फा. पुं.–पलेथन, रोटी पकाते समय लोई में लगाया जानेवाला आटा।

पर्हेज़ (پرهیز) फा. पुं.–अलग रहना, बचाव; घृणा, नफ़रत; रोगी के खान-पान का बचाव; निषेध।

पहज़गार (پرهیزگار) फा. वि.–संयम नियम का पालन करनेवाला, इंद्रियों को वश में रखनेवाला।

पर्हेज़गारी (پرهیزگاری) फा. स्त्री.–संयम-नियम का पालन, यति-धर्म, इंद्रिय-निग्रह।

पर्हेज़िंदः (پرهیزندہ) फा. वि.–पर्हेज़ करनेवाला।

पहज़ी (پرهیزی) फा. वि.–वह खाना जो रोगी को उसकी दशा के अनुसार दिया जाय।

पहेंज़ीदः (پرہیزیدہ) फा. वि.–जिस वस्तु का पहेंज़ हो।

पलंग (پلنگ) फा. पुं.–एक हिंसक जन्तु, तेंदुआ, जो इसका अर्थ चीता करते हैं, ग़लत करते हैं।

पलंगीनः (پلنگینہ) फा. पुं.–एक ऊनी कपड़ा जिसमें तेंदुए की खाल-जैसे चिह्न होते हैं।

पलः (پلہ) फा. पुं.–ढाक का पेड़, पलाश, टेसू।

पलक (پلک) फा. स्त्री.–नयनपट, दृगंचल।

पलश्त (پلشت) फा. वि.–मलिन, मैला; अपवित्र, गंदा।

पलारक (پلارک) फा. पुं.–एक प्रकार का बढ़िया लोहा; तलवार का जौहर; तलवार, खड्ग।

पलाव (پلاؤ) फा. पुं.–पुलाव, एक प्रसिद्ध भोज्य पदार्थ, इस शब्द का शुद्ध उच्चारण 'पलाव' है, परन्तु उर्दू में 'पुलाव' ही कहते हैं।

पलास (پلاس) फा. पुं.–ढाक का पेड़, टेसू, पलाश; सन का कपड़ा, टाट; बहुत मोटा और खुरदरा कपड़ा।

पलीतः (پلیتہ) फा. पुं.–चराग़ की बत्ती; वह बत्ती जो प्रेतबाधा उतारने के लिए जलायी जाती है।

पलीद (پلید) फा. वि.–अपवित्र, नापाक; मल-दूषित, गंदा; दुष्ट, खबीस।

पलीदी (پلیدی) फा. स्त्री.–अपवित्रता, नापाकी; मलिनता, गंदगी।

पल्क (پلک) फा. पुं.–आँख का पपोटा।

पल्ख़म (پلخم) फा. पुं.–गोफन, ढेला फेंकने का यंत्र, फ़लाखन।

पल्लः (پلہ) फा. पुं.–तराज़ू का पलड़ा, तुला घट; पद, पदवी, दरजा; सीढ़ी का डंडा।

पशंग (پشنگ) फा. पुं.–अफ़्रासियाब के पिता का नाम, जो बड़ा महारथी शासक था, दे. 'पुशंग', दोनों शुद्ध हैं।

पशः (پشہ) फा. पुं.–दे. 'पश्शः।

पशीं (پشیں) फा. पुं.–कैक़ुबाद का लड़का।

पशीज़ (پشیز) फा. पुं.–पैसा, ताँबे का सिक्का; ताँबे का कण।

पशेमाँ (پشیماں) फा. वि.–'पशेमान' का लघु., दे. 'पशेमान'।

पशेमान (پشیمان) फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदा; संकुचित, नादिम; पश्चात्तापी, पछतानेवाला।

पशेमानी (پشیمانی) फा. स्त्री.–लज्जा, शर्मिंदगी; संकोच, नदामत; पश्चात्ताप, अफ़्सोस।

पश्म (پشم) फा. स्त्री.–ऊन, ऊर्ण, उर्दू में पेड़ू के नीचे के बालों के लिए भी बोलते हैं।

पश्मक (پشمک) फा. स्त्री.–एक मिठाई जो बालों के लच्छे-जैसी होती है, बुढ़िया का सूत।

पश्मक़ुली (پشمقلی) फा. तु. पुं.–दे. 'पश्मदीं'।

पश्मदीं (پشمدیں) फा. पुं.–एक गाली, जो किसी को अपमानित करने के लिए उसके नाम के स्थान पर बोलते हैं।

पश्माक़ (پشماق) फा. पुं.–अश्व, वाजि, घोड़ा।

पश्मीं (پشمیں) फा. वि.–ऊन का बना हुआ, ऊनी।

पश्मीनः (پشمینہ) फा. पुं.–एक बहुत बढ़िया ऊनी कपड़ा, जो बड़ा मुलाइम और मज़बूत होता है और कश्मीर में सबसे अच्छा बनता है।

पश्शः (پشہ) फा. पुं.–मच्छर, मशक।

पश्शःख़ानः (پشہخانہ) फा. पुं.–मच्छरदानी, मशकहरी।

पसंदः (پسندہ) फा. पुं.–मांस के पतले टुकड़े जो आग पर सेंके जाते या मसाले में तले जाते हैं।

पसंद (پسند) फा. वि.–रुचिकर, मर्ग़ूब; स्वीकृत, मंज़ूर, (स्त्री.) रुचि, रग़बत; इच्छा, मंशा; स्वीकृति, मंज़ूरी, (प्रत्य.) पसंद करनेवाला, जैसे—'हक़पसंद' सच को पसंद करनेवाला; पसंद आनेवाला, जैसे—'दिलपसंद' मन को भानेवाला।

पसंदाज़ (پس‌انداز) फा. वि.–व्यय के पश्चात् बचा हुआ धन आदि, संचित; बचाकर एकत्र करनेवाला, किफ़ायत-शिआर।

पसंदाज़ी (پس‌اندازی) फा. स्त्री.–व्यय करके धन आदि बचाना, ताकि आगे आवश्यकता पर काम दे, किफ़ायत-शिआरी।

पसंदीदः (پسندیدہ) फा. वि.–पसंद किया हुआ, रुचिकर, मर्ग़ूब; मन को अच्छा लगनेवाला, मनोवांछित, दिलपसंद।

पसंदीदः औसाफ़ (پسندیدہ اوصاف) फा. अ. त्रि.–अच्छे और उत्तम गुणोंवाला व्यक्ति, सद्गुणसंपन्न।

पसंदीदःतर (پسندیدہتر) फा. वि.–बहुत अधिक अच्छा और रुचिकर।

पसंदीदगी (پسندیدگی) फा. स्त्री.–रुचि, रग़बत।

पसंदेश (پس‌اندیش) फा. वि.–केवल पीछे की बात सोचनेवाला, आगे न देखनेवाला, संकुचितबुद्धि।

पसंदेशी (پس‌اندیشی) फा. स्त्री.–पीछे की बात सोचना, आगे न देखना, बुद्धि-संकोच।

पस (پس) फा. अव्य.–पीछे, बाद; अंततः, आख़िरकार; पुनः, फिर।

पसअंदाज़ (پس‌انداز) फा. वि.–दे. 'पसंदाज़', शुद्ध उच्चारण वही है।

पसअंदाज़ी (پس‌اندازی) फा. स्त्री.–दे. 'पसंदाज़ी', शुद्ध उच्चारण वही है।

पसअंदेश (پس اندیش) फा. वि.–दे. 'पसंदेश', शुद्ध उच्चारण वही है।

पसअंदेशी (پس اندیشی) फा. स्त्री.–दे. 'पसंदेशी', शुद्ध उच्चारण वही है।

पसअफ़्गंदः (پس افگندہ) फा. पुं.–दे. 'पसफ़्गंदः', वह उच्चारण अधिक शुद्ध है।

पसआवर्दः (پس آوردہ) फा. पुं.–दे. 'पसावर्दः', वह उच्चारण अधिक शुद्ध है।

पसआहंग (پس آهنگ) फा. पुं.–दे. 'पसाहंग' वह उच्चारण अधिक शुद्ध है।

पसकूचः (پس کوچہ) फा. पुं.–गली के अंदर की गली, बहुत पतली और तंग गली।

पसख़ुर्दः (پس خوردہ) फा. वि.–बचा हुआ खाना, भुक्तशेष, उच्छिष्ट।

पसख़ेज (پس خیز) फा. पुं.–पहलवानों का नया-नया शिष्य।

पसख़ैमः (پس خیمہ) फा. पुं.–सेना की सबसे पिछली रावटी; नतीजा, निष्कर्ष।

पसतर (پس تر) फा. वि.–बहुत पीछे, सबसे पीछे।

पसतर फ़र्दा (پس تر فردا) फा. पुं.–परसों के बादवाला दिन, नरसों, अगली नरसों।

पसपा (پسپا) फा. वि.–लड़ाई में पीछे हटा हुआ, हारा हुआ, पराजित।

पसपाई (پسپائی) फा. स्त्री.–युद्ध में पीछे हटना, पराजय, हार।

पसफ़र्दा (پس فردا) फा. पुं.–कल के बादवाला दिन, परसों, अगली परसों।

पसफ़्गंदः (پس افگندہ) फा. वि.–ख़र्च से बची हुई वस्तु जो दूसरे समय काम आने के लिए उठा रखी जाय; बीट, गोबर।

पसमांदः (پسماندہ) फा. वि.–बचा हुआ, बची हुई वस्तु; मृत पुरुष के बाल-बच्चे; सफ़र में साथियों से पीछे रह जानेवाला।

पसमांदगाँ (پسماندگاں) फा. पुं.–मृत पुरुषके सम्बन्धी जन, बाल-बच्चे; सफ़र में साथियों से पीछे रह जानेवाले।

पसमांदगी (پس ماندگی) फा. स्त्री.–सफ़र में साथियों से पीछे रह जाना; हीनता, दीनता, लाचारी।

पसरवी (پس روی) फा. स्त्री.–पीछे-पीछे चलना, अनुकरण करना।

पसरौ (پس رو) फा. वि.–पीछे चलनेवाला, अनुकरणकर्ता।

पसावर्दः (پساوردہ) फा. पुं.–वह लड़का जो स्त्री के प्रथम पति का हो।

पसावीदः (پساویدہ) फा. वि.–रगड़ा हुआ, मसला हुआ, मला-दला हुआ।

पसावीदनी (پساویدنی) फा. वि.–रगड़ने योग्य, मसलने योग्य, मलने-दलने योग्य।

पसाहंग (پس آهنگ) फा. पुं.–सेना का पिछला भाग।

पसीं (پسیں) फा. वि.–अंतिम, आख़िरी; पिछला, पीछेवाला।

पसेज (پسیج) फा. पुं.–संकल्प, इरादा; तत्परता, तैयारी; कटिबद्धता, आमादगी।

पसेपर्दा (پس پردہ) फा. पुं.–पर्दे के पीछे, आड़ में, गुप्त रूप से, "आ गया कौन है पसेपर्दा—नूर से झिलमिलाती है चिलमन'।.

पसेपुश्त (پس پشت) फा. पुं.–पीठ-पीछे, परोक्ष में।

पसेमर्ग (پس مرگ) फा. पुं.–मरने के वाद, मरण-पश्चात्।

पसेमुर्दन (پس مردن) फा. पुं.–दे. 'पसेमर्ग'।

पस्तः (پستہ) फा. वि.–ह्रस्व, पस्त; लघु, छोटा।

पस्तःक़द (پستہ قد) फा. वि.–ह्रस्वकाय, वामन, बौना, ठिगना।

पस्त (پست) फा. वि.–नीचा, निशेबी; अधम, नीच, कमीना; ह्रस्व, पस्तः; लघु, छोटा।

पस्तअंदेश (پست اندیش) फा. वि.–लघुचेता, मंदबुद्धि, तंगख़याल।

पस्तअंदेशी (پست اندیشی) फा. स्त्री.–तंगख़याली, बुद्धिमांद्य।

पस्तक (پستک) फा. वि.–बहुत अधिक नीचा; बहुत अधिक कमीना; बहुत अधिक लघु।

पस्तक़द (پست قد) फा. वि.–दे. 'पस्तःक़द'।

पस्तक़ामत (پست قامت) फा. अ. वि.–दे. 'पस्तःक़द'।

पस्तक़ामती (پست قامتی) फा. अ. स्त्री.–डीलडौल का छोटा होना, बौनापन, वामनता।

पस्तख़याल (پست خیال) फा. अ. वि.–दे. 'पस्तअंदेश'।

पस्तख़याली (پست خیالی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'पस्तअंदेशी'।

पस्तफ़ित्रत (پست فطرت) फा. अ. वि.–तुच्छ प्रकृतिवाला, कमीना; दुष्टात्मा, ख़बीस।

पस्तफ़ित्रती (پست فطرتی) अ. फा. स्त्री.–प्रकृति की निकृष्टता, कमीनापन; दुष्टता, ख़बासत।

पस्तहिम्मत (پست همت) फा. अ. वि.–हतोत्साह, अल्पसाहस, कमहौसला।

पस्तहिम्मती (پست همتی) फा. अ. स्त्री.–उत्साहहीनता, हौसले और उमंग की कमी।

पस्तहौसलः (پست حوصلہ) फा. अ. वि.–दे. 'पस्तहिम्मत'।

पस्तहौसलगी (پست حوصلگی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'पस्तहिम्मती'।

पस्ती (پستی) फा. स्त्री.–निचाई, निशेब; नीचता, कमीनगी।

पस्तोबलंद (پست و بلند) फा. पुं.–ऊँचा-नीचा, ऊँच-नीच; दुःख-सुख, रंज-राहत; अच्छा-बुरा, नेकी-बदी।

पह (پہ) फा. अव्य.–साधु, वाह, धन्य।

पह पह (پہ پہ) फा. अव्य.–वाह-वाह, धन्य-धन्य, साधु-साधु।

पह्न (پہن) फा. वि.–चौड़ा-चकला, विस्तृत; महान्, अज़ीम।

पह्नक (پہنک) फा. पुं.–फ़ीता।

पह्नचश्म (پہن چشم) फा. वि –निर्लज्ज, वेहया।

पह्नचश्मी (پہن چشمی) फा. स्त्री.–निर्लज्जता, वेहयाई।

पह्ना (پہنا) फा. वि.–विस्तृत, चौड़ा-चकला।

पह्नाई (پہنائی) फा. स्त्री.–विस्तार, लम्बाई-चौड़ाई, वुस्अत।

पह्लवान (پہلوان) फा. पुं.–कुश्ती लड़नेवाला, मल्ल; शक्तिशाली, ताक़तवर; हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा।

पह्लवानी (پہلوانی) फा. स्त्री.–कुश्ती लड़ने का काम; कुश्ती लड़ने का फ़न।

पह्लवी (پہلوی) फा. स्त्री.–ईरान की एक प्राचीन भाषा।

पह्लू (پہلو) फा. पुं.–पार्श्व, बग़ल; कुक्षि, कोख; दिशा, ओर, तरफ़; पद्धति, तर्ज़; अंक, क्रोड, आग़ोश; युक्ति, तर्कीब, ढब; समीपता, नज़्दीकी; संकेत, रम्ज़; मिष, बहाना; पसली।

पह्लूतिही (پہلو تہی) फा. स्त्री.–उपेक्षा, बेइल्तिफ़ाती; बचना, अलग रहना।

पह्लूनशीं (پہلونشیں) फा. वि.–पास बैठनेवाला, पार्श्ववर्ती; सभासद, मुसाहिब।

पह्लूनशीनी (پہلونشینی) फा. स्त्री.–पास बैठना; मुसाहबत।

पा

पांज़दः (پانزدہ) फा. वि.–पंदरह की संख्या; पंदरह वस्तुएँ।

पांज़दहुम (پانزدہم) फा. वि.–पंद्रहवाँ, चौदह के बादवाला।

पा (پا) फा. पुं.–पद, चरण, पग, पाँव।

पाअंदाज़ (پا انداز) फा. पुं.–वह टाट या चटाई आदि जो कमरे आदि के दरवाज़े पर पाँव पोंछने के लिए पड़ी रहती है।

पाअफ़्राज़ (پا افراز) फा. पुं.–जूता, पादुका।

पाअफ़्शार (پا افشار) फा. पुं.–लकड़ी का जूता, खड़ाऊँ, पादुका, चट्टी।

पाअलमख़्वाँ (پاعلم خواں) फा. वि.–वह व्यक्ति जो मुहर्रम के दिनों में अलम के नीचे खड़े होकर मर्सिया पढ़ता है।

पाइंदः (پائندہ) फा. वि.–हमेशा रहनेवाला, नित्य, अनश्वर; स्थायी, पाएदार।

पाइंदःबाद (پائندہ باد) फा. वा.– एक आशीर्वाक्य; अमर रहो, हमेशा रहो; अमर रहे, हमेशा रहे, ज़िंदःबाद, चिरंजीवी।

पाइंदगी (پائندگی) फा. स्त्री.–हमेशगी, नित्यता; स्थायित्व, इस्तिक़्लाल, पाएदारी।

पाइँ (پائیں) फा. वि.–'पाईन' का लघु., दे. 'पाईन'।

पाइँकोह (پائیں کوہ) फा. पुं.–पहाड़ की तराई।

पाइँपरस्ती (پائیں پرستی) फा. स्त्री.–दासता, ख़िदमतगारी।

पाइँबाग़ (پائیں باغ) फा. पुं.–वह बाग़ जो मकान या कोठी से मिला हो, गृह-उद्यान, गृहवाटिका।

पाईज़ (پائیز) फा. पुं.–पतझड़ की ऋतु, ख़ज़ाँ का मौसिम।

पाईदः (پائیدہ) फा. वि.–पाएदार, स्थायी; ठहरा हुआ, दृढ, स्थित।

पाईदनी (پائیدنی) फा. वि.–ठहरने योग्य।

पाईनः (پائینہ) तु. पुं.–दर्पण, मुकुर, आईना।

पाईन (پائین) फा. वि.–पिछला, आख़िरी; निचला, नीचेवाला, (स्त्री.) पाएँती, सिरहाने का उलटा।

पाउफ़्तादः (پاافتادہ) फा. वि.–गिरा हुआ, पतित; लाचार, विवश, हीन, दीन; दुःखित, कष्टग्रस्त।

पाउफ़्तादगी (پاافتادگی) फा. स्त्री.–गिरना, पतन; हीनता, लाचारी; दुःख में होना।

पाएकार (پائکار) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ किसी इमारत बनाने का मसाला इकट्ठा हो।

पाएकाश्त (پاے کاشت) फा. पुं.–वह कृषक जो किसी अन्य गाँव की ज़मीन जोते हो।

पाएकुलाग़ (پاے کلاغ) फा. पुं.–लेखनी, क़लम; बहुत बुरी और टेढ़ी-मेढ़ी लिखावट।

पाएख़ुस्त (پاے خوست) फा. वि.–दे. 'पाएमाल'।

पाएगाह (پائگاہ) फा. स्त्री.–अश्वशाला, तवेला; किसी बड़े रईस या अफ़्सर की ड्योढ़ी।

पाएचः (پائچہ) फा. पुं.–पाजामे का वह भाग जो नीचे लटकता है।

पाएजामः (پائجامہ) फा. पुं.–दे. 'पाजामः', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु वह अधिक फ़सीह है।

पाएतख़्त (پاےتخت) फा. पुं.–राजधानी, शासन-केन्द्र, तख़्तगाह।

पाएतर्सा (پاےترسا) फा. पुं.–मदिरा का प्याला, पानपात्र।

पाएतोग़ (پاےتوغ) तु. पुं.–सेना आदि में आगे झंडा लेकर चलनेवाले का पद।

पाएदान (پاےدان) फा. पुं.–सभा में जूते उतारने का स्थान; गाड़ी, मोटर, रेल आदि के दरवाज़े का तख़्ता जिस पर पाँव रखकर चढ़ते हैं।

पाएदार (پائدار) फा. वि.–दृढ़, मज़बूत; स्थायी, मुस्तक़िल; अचल, स्थिर।

पाएपिस्त (پاےپست) फा. वि.–दे. 'पाएमाल'।

पाएबंद (پاےبند) फा. वि.–दे. 'पाबंद'।

पाएमाल (پائمال) फा. वि.–पाँव के नीचे मसला हुआ, रौंदा हुआ, पददलित, पदध्वस्त।

पाएरंज (پاےرنج) फा. पुं.–वह पुरस्कार जो एलची, दूत, पत्रवाहक अथवा अतिथि को बिदा करते समय सम्मानार्थ दिया जाय।

पाक (پاک) फा. वि.–पवित्र, मुक़द्दस; शुद्ध, ठीक; निष्केवल, ख़ालिस; स्वच्छ, साफ़; निर्दोष, बेक़ुसूर; निर्मल, बेमेल; निर्लिप्त, बेतअल्लुक़; सुरक्षित, महफ़ूज़।

पाकज़ाद (پاکزاد) फा. वि.–स्वच्छ प्रकृतिवाला, शुद्धात्मा।

पाकतीनत (پاکطینت) फा. अ. वि.–दे. 'पाकज़ाद'।

पाकदामन (پاکدامن) फा. वि.–सदाचारी पुरुष; सती और साध्वी स्त्री।

पाकदामानी (پاکدامانی) फा. स्त्री.–नेकचलनी, सदाचार, सतीत्व।

पाकदिल (پاکدل) फा. वि.–जिसके मन में खोट न हो, शुद्धमनस्क, अन्तःपवित्र।

पाकनज़र (پاکنظر) फा. अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी दृष्टि बुराई पर न पड़े, समदर्शी।

पाकनिगाह (پاکنگاہ) फा. वि.–दे. 'पाकनज़र'।

पाकनिहाद (پاکنہاد) फा. वि.–दे. 'पाकदिल'।

पाकनीयत (پاکنیت) फा. अ. वि.–दे. 'पाकदिल'; जो किसी की अमानत में ख़ियानत न करे।

पाकबाज़ (پاکباز) फा. वि.–सदाचारी, शुद्ध आचरणवाला।

पाकबाज़ी (پاکبازی) फा. स्त्री.–सदाचार।

पाकबीं (پاکبیں) फा. वि.–दे. 'पाकनज़र'।

पाकबीनी (پاکبینی) फा. स्त्री.–केवल अच्छाई देखना, बुराई पर दृष्टि न डालना।

पाकरू (پاکرو) फा. वि.–स्वच्छरूप, सुंदर मुखवाला (वाली)।

पाकसिरिश्त (پاکسرشت) फा. वि.–सत्प्रकृति, शुद्धात्मा।

पाकार (پاکار) फा. पुं.–तहसील का प्यादा; दास, ख़िदमती; मज़दूर, श्रमिक; मेहतर, भंगी।

पाकी (پاکی) फा. वि.–शुद्धता; पवित्रता; स्वच्छता, निर्दोषिता; नीचे के बाल।

पाकीज़ः (پاکیزہ) फा. वि.–शुद्ध; पवित्र; स्वच्छ।

पाकीज़ःख़याल (پاکیزہخیال) फा. अ. वि.–अच्छे विचारोंवाला, सद्विचारवान्।

पाकीज़ःख़ू (پاکیزہخو) फा. वि.–स्वच्छ प्रकृतिवाला।

पाकीज़ःगौहर (پاکیزہگوہر) फा. वि.–अच्छे वंशवाला, कुलीन।

पाकीज़ःतीनत (پاکیزہطینت) फा. अ. वि.–सत्प्रकृति, पुनीतात्मा।

पाकीज़ःनफ़्स (پاکیزہنفس) फा. अ. वि.–दे. 'पाकीज़ःतीनत'।

पाकीज़ःबूम (پاکیزہبوم) फा. वि.–अच्छे और पुनीत स्थान का रहनेवाला।

पाकीज़ःमनिश (پاکیزہمنش) फा. वि.–दे. 'पाकीज़ःतीनत'।

पाकीज़ःशिआर (پاکیزہشعار) फा. अ. वि.–अच्छे आचरणवाला, शुद्धाचारी।

पाकीज़ःसिरिश्त (پاکیزہسرشت) फा. वि.–दे. 'पाकीज़ःतीनत'।

पाकीज़ःसीरत (پاکیزہسیرت) फा. अ. वि.–दे. 'पाकीज़ःतीनत'।

पाकीज़ःसूरत (پاکیزہصورت) फा. अ. वि.–अच्छी सूरतवाला, सुन्दर, (वाली) सुन्दरी।

पाकीज़गी (پاکیزگی) फा. स्त्री.–पवित्रता; शुद्धता; स्वच्छता।

पाकोब (پاکوب) फा. वि.–नाचनेवाला, नर्तक; नाचनेवाली, नर्तकी।

पाकोबी (پاکوبی) फा. स्त्री.–नाचना, नर्तन, नृत्य।

पाख़ानः (پاخانہ) फा. पुं.–मल-त्याग का स्थान, शौचालय; पुरीष, विष्ठा, गू।

पागाह (پاگاہ) फा. स्त्री.–दे. 'पाएगाह'।

पागिरिफ़्तः (پاگرفتہ) फा. वि.–ठहरा हुआ, जो चल न रहा हो, स्थावर।

पागीर (پاگیر) फा. स्त्री.–कुश्ती का एक दाँव।

पाग़ुंदः (پاغندہ) फा. पुं.–धुनकी हुई रुई का ग़ाला।

पाग़ुर (پاغر) फा. अ. पुं.–पाँव का एक रोग, पीलपा, श्लीपद।

पाग़ोश (پاغوش) फा. पुं.–ग़ोता, डुबकी, निमज्जन।

पाचंग (پاچنگ) फा. पुं.–गवाक्ष, खिड़की; जूता, पदत्राण।

पाचक (پاچک) फा. स्त्री.–उपला, सूखा गोबर।

पाचक दश्ती (پاچک دشتی) फा. स्त्री.–जंगल में पड़ा हुआ सूखा गोबर जो गोल उपले के आकार का होता है।

पाचाँ (پاچاں) फा. पुं.–छिड़कता हुआ, बरसाता हुआ, दे. 'पाशाँ'।

पाचाक (پاچاک) फा. स्त्री.–दे. 'पाचक'।

पाचायः (پاچایہ) फा. पुं.–पेशाब-पाखाना, गू-मूत्र।

पाचाल (پاچال) फा. पुं.–ग़ार्क़ी, वह गढ़ा जिसमें जुलाहे कपड़ा बिनते समय पाँव लटकाते हैं।

पाचाहः (پاچ'ھہ) फा. पुं.–दे. 'पाचाल'।

पाचाह (پاچاہ) फा. पुं.–दे. 'पाचाल'।

पाचिलः (پاچلہ) फा. पुं.–बरफ़ पर चलने का जूता; पाताबा।

पाचुनार (پاچنار) फा. पुं.–ईरान में एक नगर जहाँ के निवासी आचरण के दृष्टिकोण से बहुत पवित होते हैं।

पाचुनारी (پاچناری) फा. स्त्री.–पाचुनार के निवासियों-जैसा, अधम, लोफ़र, कमीना; सेवक, दास।

पाज़ंग (پازنگ) फा. पुं.–दे. 'पाचंग'।

पाज़ह्र (پازھر) फा. पुं.–दे. 'पादज़ह्र'।

पाज़ाज (پازاج) फा. स्त्री.–धाय, दाया, बच्चे जननेवाली स्त्री।

पाजामः (پاجامہ) फा. पुं.–एक विशेष अधोवस्त्र, इज़ार।

पाजी (پاجی) फा. वि.–पामर, अधम, नीच; धूर्त्त, दुष्ट।

पाज़ेब (پازیب) फा. स्त्री.–पाँव का एक आभूषण, अंदुक, नूपुर।

पात (پات) फा. पुं.–चौकी, तख़्त।

पाताबः (پاتابہ) फा. पुं.–जूते के भीतर का तला; मोज़े के ऊपर पहनने का कपड़े का जूता-जैसा खोल।

पातिलः (پاتلہ) फा. पुं.–पतीला, चौड़े मुँह का देगनुमा देगचा।

पातुराब (پاتراب) फा. वि.–यात्रा के समय इस विचार से कि शुभ मुहूर्त खंडित न हो, एक स्थान से दूसरे स्थान पर चला जाना, चाहे वह स्थान थोड़ी दूर ही क्यों न हो।

पादंग (پادنگ) फा. स्त्री.–धान आदि कूटने की ढेकली।

पादज़ह्र (پادزھر) फा. पुं.–विषनाशक एक ओषधि।

पादरगिल (پادرگل) फा. वि.–दे. 'पावगिल'।

पा दर रिकाब (پا در رکاب) फा. वि.–दे. 'पा व रिकाब'।

पा दर हवा (پا در ھوا) फा. वि.–निराधार, बेबुनियाद; काल्पनिक, ख़याली।

पादशह (پادشہ) फा. पुं.–'पादशाह' का लघु., दे. 'पादशाह'।

पादशाह (پادشاہ) फा. पुं.–राजा, नरेश, बादशाह।

पादशाहज़ादः (پادشاہزادہ) फा. पुं.–शाहज़ादा, राजकुमार।

पादशाही (پادشاھی) फा. स्त्री.–राज्य, सल्तनत; शासन, हुकूमत; बादशाह सम्बन्धी; बादशाह का।

पादस्त (پادست) फा. पुं.–हथ उधार, वह धन जो तुरन्त अदा कर देने के लिए लिया जाय।

पादाम (پادام) फा. वि.–जाल में बँधा हुआ पक्षी आदि।

पादाश (پاداش) फा. स्त्री.–प्रतिकार, बदला, प्रायः बुरे बदले के लिए व्यवहृत है।

पादाशन (پاداشن) फा. स्त्री.–दे. 'पादाश'।

पादाशे अमल (پاداش عمل) फा. अ. स्त्री.–कर्मफल, काम का बदला; कर्मदंड, पाप की सज़ा।

पादाशे जुर्म (پاداش جرم) फा. अ. स्त्री.–अपराध का दंड, पाप की सज़ा।

पानः (پانہ) फा. स्त्री.–आरे से लकड़ी चीरते समय दराज़ में लगाया जानेवाला पच्चर।

पान (پان) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध पत्ता जो कत्था-चूना लगाकर खाया जाता है।

पानदान (پاندان) फा. पुं.–पान रखने की पिटारी।

पापयादः (پاپیادہ) फा. वि.–पैदल चलनेवाला, पैदल।

पापा (پاپا) फा. पुं.–पोप, ईसाइयों का बड़ा पादरी।

पापाए रोम (پاپاے روم) फा. पुं.–रोम का बड़ा पादरी जो सारे संसार के रोमन कैथलिक पादरियों पर शासन करता है।

पापियादः (پاپیادہ) फा. वि.–दे. 'पापयादः', दोनों शुद्ध हैं।

पापोश (پاپوش) फा. स्त्री.–पादुका, पादत्र, जूता।

पापोशकार (پاپوش کار) फा. वि.–जूते बनानेवाला, मोची, पादुकाकार।

पापोशकारी (پاپوش کاری) फा. स्त्री.–जूते बनाने का काम, मोचीपन; जूते पड़ना, किसी की जूतों से मरम्मत।

पाबंद (پابند) फा. वि.–बंदी, गिरिफ़्तार; विवश, लाचार; बाध्य, मजबूर; वचनबद्ध, जिसने ज़बान दी हो; समय या नियम का पालन करनेवाला।

पाबंदी (پابندی) फा. स्त्री.–बाध्यता, मजबूरी; वचनबद्धता, क़ौल-क़रार; समय आदि में नियमबद्धता।

पाबंदे ज़ंजीर (پابند زنجیر) फा. वि.–ज़ंजीर में बँधा हुआ, शृंखलित, पाँव में ज़ंजीर पड़ी हुई।

पाबंदे सलासिल (پابند سلاسل) फा. अ. वि.–दे. 'पाबंदे ज़ंजीर'।

पाबगिल (پابہگل) फा. वि.–दलदल में फँसा हुआ; विवश, लाचार; किंकर्तव्यविमूढ़, हक्का-बक्का ।

पाबज़ंजीर (پابہزنجیر) फा. वि.–पाँव में ज़ंजीर पड़ा हुआ, शृंखलित; क़ैदी, बंदी; विवश, मजबूर ।

पाबजूलाँ (پابہجولاں) फा. वि.–पाँव में बेड़ी पड़ी हुई, क़ैदी, बंदी ।

पाबरजा (پابرجا) फा. वि.–एक स्थान पर पाँव जमाये हुए, डटा हुआ, साबितक़दम, दृढ़निश्चय ।

पाबरह्नः (پابرهنہ) फा. वि.–नंगे पाँव, पादुकाहीन; पुराना, जिस पर एक साल बीत गया हो ।

पाबरिकाब (پابہرکاب) फा. वि.–रिकाब में पाँव डाले हुए; चलने के लिए तैयार; मरने के लिए तैयार, मरणासन्न ।

पाबर्हनः (پابرهنہ) फा. वि.–दे. 'पाबरह्नः', दोनों शुद्ध हैं ।

पाबस्तः (پابستہ) फा. वि.–पाँव बँधा हुआ, गिरिफ़्तार ।

पाबस्त (پابست) फा. वि.–दृढ़, मज़बूत; न्यास, नींव; प्रतीक्षक, मुंतज़िर; बंदी, क़ैदी ।

पाबिरंजन (پابرنجن) फा. स्त्री.–नूपुर, पाज़ेब ।

पाबोस (پابوس) फा. वि.–पाँव चूमनेवाला, पदचुंबक, (पुं.) पाँव चूमना, पद-चुंबन ।

पाबोसी (پابوسی) फा. स्त्री.–पाँव चूमना, पद-चुंबन ।

पामर्द (پامرد) फा. वि.–सहायक, मददगार; साहसी, उत्साही, बाहिम्मत; शूर, वीर, बहादुर ।

पामर्दी (پامردی) फा. स्त्री.–सहायता, मदद; उत्साह, हिम्मत; शूरता, बहादुरी ।

पामाल (پامال) फा. वि.–पाँव-तले रौंदा हुआ, पद-दलित; दुर्दशाग्रस्त, मुसीबतज़दः ।

पामाली (پامالی) फा. स्त्री.–पाँव-तले मसला जाना; दुःख से दलित होना ।

पामाले ग़म (پامالِ غم) फा. वि.–दुःखों के भार से परास्त; प्रेम के दुःख से आक्रांत ।

पामुज़्द (پامزد) फा. स्त्री.–वह मजदूरी जो पाँव द्वारा चल-फिरकर की जाय ।

पायंदः (پایندہ) फा. वि.–दे. 'पाइंदः', दोनों शुद्ध हैं ।

पायंदगी (پایندگی) फा. स्त्री.–दे. 'पाइंदगी', दोनों शुद्ध हैं ।

पायः (پایہ) फा. पुं.–स्तंभ, खंभा; पलंग का मचवा; पद, दरजा; मान, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त ।

पायः ब पायः (پایہ بہ پایہ) फा. वि.–क्रमशः, धीरे-धीरे, दर्जः ब दर्जः ।

पायःशनास (پایہشناس) फा. वि.–किसी की प्रतिष्ठा और क़द्र पहचाननेवाला ।

पायक (پایک) फा. पुं.–हरकारा, पियादा ।

पायाँ (پایاں) फा. पुं.–'पायान' का लघु., दे. 'पायान' ।

पायान (پایان) फा. पुं.–तट, क़िनारा; अन्त, आख़ीर; छोर, सिरा; पराकाष्ठा, इन्तिहा ।

पायानेकार (پایانِکار) फा. पुं.–आख़िरकार, अंततः ।

पायाब (پایاب) फा. वि.–जो गहरा न हो, उथला, गाध (पानी) ।

पायाबी (پایابی) फा. स्त्री.–नदी, ताल आदि के पानी का डुबाऊ न होना, उथलापन, गाधता ।

पारः (پارہ) फा. पुं.–भाग, अंश, हिस्सा; खंड, टुकड़ा; कण, रेज़ः; जोड़, पैवंद; उत्कोच, रिशवत; उपहार, भेंट, तोहफ़ा ।

पारःकार (پارہکار) फा. वि.–नीच, कमीना, लोफ़र ।

पारःकारी (پارہکاری) फा. स्त्री.–नीचता, कमीनगी ।

पारःदोज़ (پارہدوز) फा. वि.–पैवंद गाँठनेवाला, थिगड़ी लगानेवाला ।

पारःदोज़ी (پارہدوزی) फा. स्त्री.–पैवंद सीना, थिगली लगाना ।

पारःपारः (پارہپارہ) फा. वि.–टुकड़े-टुकड़े, धज्जी-धज्जी, पुर्ज़े पुर्ज़े ।

पार (پار) फा. पुं.–गत वर्ष, पिछला साल ।

पारए नाँ (پارۂ ناں) फा. पुं.–रोटी का टुकड़ा ।

पारगानः (پارگانہ) फा. पुं.–तराज़ू का पासंग, पसंगा; गवाक्ष, खिड़की, झरोखा; ख्याति, यशोगान, दे. 'पालगानः' ।

पारगीं (پارگیں) फा. पुं.–पुरानापन, प्राचीनता; फटा-पुरानापन ।

पारगी (پارگی) फा. स्त्री.–कुंडी जिसमें घर और रसोईख़ाने आदि का पानी इकट्ठा हो ।

पारचः (پارچہ) फा. पुं.–दे. 'पार्चः' ।

पारदुम (پاردم) फा. स्त्री.–दे. 'पार्दुम' ।

पारसंग (پارسنگ) फा. पुं.–पासंग, तराज़ू का पसँगा ।

पारसाल (پارسال) फा. पुं.–पिछला वर्ष, गत वर्ष; अगला साल, आगामी वर्ष ।

परार (پارار) फा. पुं.–पिछला तीसरा वर्ष, त्योरुस ।

पारिकाबी (پارکابی) फा. स्त्री.–बहुत थोड़ी मात्रा, किंचित् ।

पारीनः (پارینہ) फा. वि.–पुरातन, पुराना ।

पारोब (پاروب) फा. स्त्री.–वह लकड़ी जिससे घोड़े के सुमों की लीद छुड़ाते हैं ।

पार्गीं (پارگیں) फा. पुं.–दे. 'पारगीं', दोनों शुद्ध हैं ।

पार्गी (پارگی) फा. स्त्री.–दे. 'पारगी', दोनों शुद्ध है ।

पार्चः (پارچہ) फा. पुं.–कपड़ा, वसन; वस्त्र, लिबास ।

पार्चःफ़रोश (پارچه فروش) फा. वि.–कपड़ा बेचनेवाला, बज़ाज़ ।

पार्चःफ़रोशी (پارچه فروشی) फा. स्त्री.–कपड़ा बेचने का काम ।

पार्चःबाफ़ (پارچه باف) फा. वि.–कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा, कोरी ।

पार्चःबाफ़ी (پارچه بافی) फा. स्त्री.–कपड़ा बुनने का काम ।

पार्दुम (پاردم) फा. स्त्री.–घोड़े की ज़ीन की दुमची ।

पार्सः (پارسه) फा. पुं.–भिक्षुक, भिखारी, फ़क़ीर, मँगता ।

पार्स (پارس) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध देश, ईरान ।

पार्सा (پارسا) फा. वि.–संयमी, इंद्रिय-निग्रही, ज़ाहिद ।

पार्साई (پارسائی) फा. स्त्री.–संयम, इंद्रिय-निग्रह, पर्हेज़गारी ।

पार्सी (پارسی) फा. पुं.–ईरान की प्राचीन अग्निपूजक जाति, जो अब भारत में आबाद है; ईरान की भाषा, फ़ारसी ।

पालगानः (پالگانه) फा. पुं.–तराज़ू का पासंग; गवाक्ष, दरीचः; ख्याति, शोहरत, दे. 'पारगानः ।'

पालग़्ज़ (پالغز) फा. पुं.–ऐसा स्थान जहाँ पाँव फ़िसल जाय; ऐसा अवसर जहाँ दोष या पाप हो जाय; पाँव फिसलना; अपराध, पाप; दोष, क़ुसूर; ख़राबी, बुराई ।

पालहंग (پالهنگ) फा. पुं.–घोड़े की बागडोर ।

पाला (پالا) फा. पुं.–कोतल घोड़ा ।

पालाइश (پالائش) फा. स्त्री.–सफ़ाई, मार्जन ।

पालाईदः (پالائیده) फा. वि.–साफ़ किया हुआ, मार्जित ।

पालान (پالان) फा. पुं.–गधे या टट्टू की पीठ पर डालने का टाट ।

पालानी (پالانی) फा. वि.–वह घोड़ा जिससे बोझ ढोने का काम लिया जाता है, लद्दू ।

पालानेख़र (پالانِ خر) फा. पुं.–गधे की पीठ पर डाला जानेवाला टाट ।

पालीदः (پالیده) फा. वि.–साफ़ किया हुआ, मार्जित; ढूंढ़ा हुआ, गवेपित ।

पालूदः (پالوده) फा. वि.–साफ़ किया हुआ, मार्जित, (पुं.) एक पेय, फ़ालूदः ।

पालूनः (پالونه) फा. पुं.–छानने का कपड़ा, साफ़ी, छननी ।

पालेज़ (پالیز) फा. स्त्री.–तरबूज़ या खरबूज़े का खेत ।

पालोश (پالوش) फा. पुं.–वह कपूर जो कृत्रिम हो ।

पावरक़ (پاورق) फा. अ. पुं.–पुस्तक के पन्ने के अन्त में लिखा हुआ अंतिम अक्षर जो अगले पन्ने पर लिखा जाय । (जब किताब के पन्नों पर नम्बर नहीं पड़ते थे उस समय ऐसा लिखा जाता था ।)

पाशंग (پاشنگ) फा. पुं.–वह ककड़ी आदि जो बीज के लिए छोड़ दी जाय, दे. 'पाहंग' ।

पाश (پاش) फा. प्रत्य.–छिड़कनेवाला, जैसे—'गुलाबपाश' गुलाब छिड़कनेवाला; फैलानेवाला, जैसे—'ज़ियापाश', प्रकाश फैलानेवाला ।

पाश पाश (پاش پاش) फा. वि.–चूर-चूर, टुकड़े-टुकड़े ।

पाशाँ (پاشاں) फा. वि.–छिड़कता हुआ, फैलाता हुआ; ऐसी लिखावट जिसमें अक्षर दूर-दूर हों ।

पाशा (پاشا) तु. पुं.–एक उपाधि जो तुर्की में बड़े पदाधिकारियों को दी जाती है; गवर्नर, राजपाल, वजीर ।

पाशिंदः (پاشنده) फा. वि.–छिड़कनेवाला, फैलानेवाला ।

पाशिकस्तः (پاشکسته) फा. वि.–जिसके पाँव टूटे हों, जो चलने-फिरने में असमर्थ हो; विवश, लाचार ।

पाशीदः (پاشیده) फा. वि.–छिड़का हुआ ,बिखेरा हुआ ।

पाशीदनी (پاشیدنی) फा. वि.–छिड़कने योग्य, बिखरने योग्य ।

पाशोयः (پاشویه) फा. पुं.–दवाओं के पानी से रोगी के पाँव धोना, अथवा दवाओं की बुकनी पावों पर मलना ।

पाश्नः (پاشنه) फा. स्त्री.–एड़ी ।

पाश्नःकोब (پاشنهکوب) फा. वि.–पीछे दौड़नेवाला, पीछा करनेवाला, तआक़ुब करनेवाला ।

पाश्नःकोबी (پاشنهکوبی) फा. स्त्री.–तआक़ुब करना, भागते हुए को पकड़ने के लिए उसके पीछे दौड़ना ।

पासः (پاسه) फा. पुं.–आतुरता, बेचैनी; दुःख, क्लेश, रंज ।

पास (پاس) फा. पुं.–एक पहर का समय, प्रहर; निरीक्षण, निगरानी; रक्षा, हिफ़ाज़त; शील संकोच, लिहाज़ ।

पासक (پاسک) फा. स्त्री.–जँभाई, जृंभा ।

पासताँ (پاستاں) फा. वि.–दे. 'पास्ताँ' ।

पासदार (پاسدار) फा. वि.–निरीक्षक, निगराँ; पृष्ठ-पोषक, हिमायती, सहायक, मददगार; पक्षपाती, तरफ़दार ।

पासदारी (پاسداری) फा. स्त्री.–निरीक्षण, निगरानी; पृष्ठ पोषण, हिमायत; सहायता, मदद; पक्षपात, तरफ़दारी ।

पासबान (پاسبان) फा. वि.–निरीक्षक, निगराँ; द्वारपाल, ड्योढ़ीबान ।

पासबानी (پاسبانی) फा. स्त्री.–निरीक्षण, निगरानी; ड्योढ़ीबानी ।

पासब्ज़ (پاسبز) फा. वि.–जिसका आगमन अशुभ और अनिष्टकर हो; दलाल, एजेंट, अभिकर्ता ।

पासब्ज़ी (پاسبزی) फा. स्त्री.–नुहूसत, अकल्याण, अमंगल ।

पासिन (پاسن) फा. स्त्री.–एड़ी ।

पासुख़ (پاسخ) फा. पुं.–उत्तर, जवाव।

पासे अदब (پاس ادب) फा. अ. पुं.–किसी की प्रतिष्ठा का ख़याल, प्रतिष्ठा के अनुसार उसका आदर-सत्कार।

पासे अन्फ़ास (پاس انفاس) फा. अ. पुं.–मुसलमान सूफ़ियों का एक योगाभ्यास, जिसमें उनके हर श्वास के साथ, 'अल्लाह' का शब्द उच्चरित होता है।

पासे आबरू (پاس آبرو) फा. पुं.–प्रतिष्ठा का ख़याल; सतीत्व-रक्षा का ख़याल।

पासे ख़ातिर (پاس خاطر) अ. फा. पुं.–किसी को रुष्ट न करने के लिए उसका मन रखना।

पासे नमक (پاس نمک) फा. पुं.–नमकहलाली, स्वामि-भक्ति, कृतज्ञता।

पासे नामूस (پاس ناموس) फा. अ. पुं.–दे. 'पासे आबरू'।

पासोलिहाज़ (پاس ولحاظ) फा. अ. पुं.–शील संकोच, मुरव्वत, लिहाज़।

पास्ताँ (پاستاں) फा. वि.–'पास्तान' का लघु., दे. 'पास्तान'।

पास्तान (پاستان) फा. वि.–पुरातन, प्राचीन, पुराना।

पास्तानी (پاستانی) फा. वि.–प्राचीनकाल का, पुराने समय का।

पाहंग (پاهنگ) फा. पुं.–दे. 'पाशंग'।

पि

पिगाँ (پگاں) फा. स्त्री.–वह कटोरी जो पानी की नाँद में समय वताने के लिए डाली जाती है।

पिंदारः (پندارہ) फा. पुं.–ध्यान, ख़याल; अनुध्यान, तसव्वुर; चिंतन, फ़िक्र।

पिंदार (پندار) फा. पुं.–ध्यान, ख़याल; कल्पना, तख़ैयुल; अभिमान, गर्व, गुरूर।

पिंदारिंदः (پندارندہ) फा. वि.–सोचनेवाला, विचारने-वाला; जाननेवाला।

पिंदाश्तः (پنداشتہ) फा. वि.–सोचा हुआ; जाना हुआ।

पिंदाश्तनी (پنداشتنی) फा. वि.–सोचने योग्य; जानने योग्य, ज्ञेय।

पिज़मुर्दः (پژمردہ) फा. वि.–दे. 'पज़मुर्दः' दोनों शुद्ध है, परन्तु यह अप्रचलित है।

पिज़िश्क (پزشک) फा. पुं.–चिकित्सक, उपचारक, वैद्य, तवीव, डाक्टर, हकीम।

पिज़िश्की (پزشکی) फा. वि.–चिकित्सा, उपचार, इलाज।

पिज़ीर (پزیر) फा. प्रत्य.–स्वीकृत करनेवाला, जैसे—'पोज़िश पिज़ीर' उज्र स्वीकार करनेवाला, दे. 'पज़ीर', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु यह अधिक व्यवहृत है।

पिज़ीरफ़्तः (پزیرفتہ) फा. वि.–स्वीकृत, माना हुआ, क़बूल किया हुआ।

पिज़ीरफ़्तगार (پزیرفتگار) फा. वि.–दे. 'पिज़ीरफ़्तार'।

पिज़ीरफ़्तार (پزیرفتار) फा. वि.–स्वीकार करनेवाला, माननेवाला; आज्ञाकारी, फ़र्मांबरदार।

पिज़ीरा (پزیرا) फा. वि.–स्वीकार करना, क़बूल करना; स्वीकृत, मंज़ूर, दे. 'पिज़ीरा', दोनों शुद्ध हैं।

पिज़ीराई (پزیرائی) फा. स्त्री.–स्वीकृति, अंगीकृति, क़बूलियत, मंज़ूरी, दे. 'पज़ीराई', दोनों शुद्ध हैं।

पिज़ीरिश (پزیرش) फा. स्त्री.–दे. 'पिज़ीराई'।

पिज़ोलीदः (پژولیدہ) फा. वि.–सताया हुआ, परीशान किया हुआ; उलझाया हुआ।

पिज़ोह (پژوہ) फा. प्रत्य.–दे. 'पज़ोह', दोनों शुद्ध है, परन्तु वह अधिक बोला जाता है।

पिज़ोहिंदः (پژوهندہ) फा. वि.–दे. 'पज़ोहिंदः', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु वह अधिक व्यवहृत है।

पिज़ोहिश (پژوهش) फा. स्त्री.–दे. 'पज़ोहिश', दोनों शुद्ध है, परन्तु वह अधिक बोला जाता है।

पिज़ोहीदः (پژوهیدہ) फा. वि.–दे. 'पज़ोहीदः', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु वह अधिक वोलते हैं।

पिदंदर (پدندر) फा. पुं.–सौतेला बाप।

पिदर (پدر) फा. पुं.–जनक, पिता, बाप।

पिदरानः (پدرانہ) फा. वि.–बाप की तरह स्नेहपूर्ण, बाप-जैसा।

पिदरी (پدری) फा. वि.–बाप का, पैतृक।

पिद्राम (پدرام) फा. वि.–सुसज्जित, शृंगारित, विभूषित, आरास्त; प्रसन्न मुख, हर्षित चित्त, बश्शाश।

पिद्रूद (پدرود) फा. पुं.–विदा करना, रुख़सत करना; त्यागना, छोड़ना।

पिनहाँ (پنہاں) फा. वि.–गुप्त, छिपा हुआ।

पिन्हाँशिकंज (پنہاں شکنج) फा. वि.–मन हीं मन में संतप्त होनेवाला, अपने दुःख को प्रकट न करनेवाला।

पिन्हाँशिकंजी (پنہاں شکنجی) फा स्त्री.–अपने दुःख को प्रकट न करना, मन ही मन में घुलना।

पिन्हानी (پنہانی) फा. वि.–भीतरी, आन्तरिक; मान-सिक, रूहानी।

पियाज़ (پیاز) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध कंद जो खाया जाता है, पलांडु, महाकंद।

पियाज़ी (پیازی) फा. वि.–पियाज़ के रंग का, हलका गुलाबी।

पियादः (پیادہ) फा. पुं.–दे. 'पयादः', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु उर्दू में 'पियादः' अधिक प्रचलित है।

पियादःपा (پیادہپا) फा. वि.–जो सवारी पर न हो, पैदल, पाँव-पाँव।

पियालः (پیالہ) फा.पुं.–चषक, कंस, कटोरा; शराब पीने का पियाला, पान-पात्र, साग़र।

पियालःनुमा (پیالہنما) फा. वि.–पियाले के आकार का, पियाले-जैसा।

पिरिस्तुक (پرستک) फा. स्त्री.–अबाबील, भांडीक, एक प्रसिद्ध पक्षी, जो खँडहरों में रहता है।

पिरिस्तो (پرستو) फा. स्त्री.–दे. 'पिरिस्तुक'।

पिरिस्तोक (پرستوک) फा. स्त्री.–दे. 'पिरिस्तुक'।

पिरेज़ीदान (پریزیدان) फा. पुं.–प्रेसीडेंट, सभापति।

पिरेश (پریش) फा. वि.–परेशान होनेवाला।

पिरेशान (پریشان) फा. वि.–दे. 'परीशान' और 'परेशान', उर्दू में 'पिरेशान' नहीं बोलते।

पिल्लगाँ (پلگاں) फा. पुं.–लकड़ी की सीढ़ी, निसेनी, निःश्रेणी।

पिशक (پشک) तु. स्त्री.–पिल्ली, मार्जारी।

पिशेज़ (پشیز) फा. पुं.–सबसे छोटा सिक्का, जैसे—भारत में पाई, पैसा; ताँबे का कण, दे. 'पशेज़', दोनों शुद्ध है।

पिशोइंदः (پشوئندہ) फा. वि.–अस्त-व्यस्त होनेवाला।

पिश्क (پشک) फा. स्त्री.–'पिश्किल' का लघु., दे. 'पिश्किल'।

पिश्किल (پشکل) फा. स्त्री.–ऊँट या बकरी आदि की मेंगनी, केवल मेंगनी के अर्थ में आता है, गोबर के अर्थ में नहीं।

पिश्वाज़ (پشواز) फा. स्त्री.–'पेशवाज़' का लघु., परन्तु उर्दू में इसका अर्थ नृत्य के समय पहना जानेवाला लहँगा है।

पिसंदर (پسندر) फा. पुं.–सौतेला लड़का।

पिसर (پسر) फा. पुं.–पुत्र, आत्मज, तनय, बेटा, लड़का।

पिसरख़्वाँदः (پسرخواندہ) फा. पुं.–दत्तक पुत्र, लैपालक, मुतबन्ना।

पिसरज़ादः (پسرزادہ) फा. पुं.–बेटे का बेटा, पोता।

पिसरे मुतबन्ना (پسرمتبنی) फा. अ. पुं.–दत्तक पुत्र, लेपालक।

पिस्तः (پستہ) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध मेवा।

पिस्तःलब (پستہلب) फा. वि.–जिसके होंठ पतले और छोटे हों।

पिस्त (پست) फा. पुं.–सत्तू, भुने हुए जौ, गेहूँ अथवा चने आदि का आटा जो एक प्रसिद्ध खाद्य है।

पिस्ताँ (پستاں) फा. स्त्री.–'पिस्तान' का लघु., दे. 'पिस्तान'।

पिस्तान (پستان) फा. स्त्री.–स्तन, उरोज, कुच, छाती, वक्षोज।

पी

पीख़ाल (پیخال) फा. स्त्री.–चिड़ियों का मल, वीट।

पीनः (پینہ) फा. पुं.–पैवंद, टिकली; काम की अधिकता से हाथ या पाँव का गट्टा।

पीनःदोज़ (پینہدوز) फा. वि.–पैवंद लगानेवाला।

पीनःदोज़ी (پینہدوزی) फा. स्त्री.–पैवंद लगाना।

पीनक (پینک) फा. स्त्री.–अफ़ीम की झोंक।

पीनकी (پینکی) फा. वि.–अफ़ीम खाकर पीनक में ऊँघनेवाला।

पीनू (پینو) फा. पुं.–सुखाया हुआ दही, वह दही जिसका पानी निकाल दिया जाय।

पीर (پیر) फा. वि.–वृद्ध, जरत्, वयोवृद्ध, बूढ़ा; धर्मगुरु, मुर्शिद; सोमवार, दोशंबः।

पीरअफ़शानी (پیرافشانی) फा. स्त्री.–बुढ़ापे में जवानों-जैसे कार्य करना।

पीरज़न (پیرزن) फा. स्त्री.–वृद्धा स्त्री, वृद्धा, जरिणी, जरतिका, बूढ़ी स्त्री।

पीरज़ादः (پیرزادہ) फा. पुं.–पीर का लड़का, धर्मगुरु का बेटा।

पीरज़ाल (پیرزال) फा. स्त्री.–दे. 'पीरज़न'।

पीरपरस्त (پیرپرست) फा. वि.–जो अपने पीर को ही सब कुछ समझता हो, धर्मगुरु का भक्त होना।

पीरपरस्ती (پیرپرستی) फा. स्त्री.–अपने पीर को ही सब कुछ समझना, धर्मगुरु-भक्ति।

पीरमर्द (پیرمرد) फा. पुं.–ऐसा व्यक्ति जो बूढ़ा भी हो और सदाचारी भी।

पीरसाल (پیرسال) फा. वि.–वयोवृद्ध, बूढ़ा; वृद्धा, बूढ़ी।

पीरानः (پیرانہ) फा. वि.–बूढ़ों-जैसा; बुढ़ापे का।

पीरानःसर (پیرانہ سر) फा. वि.–बुढ़ापे की अवस्थावाला, बूढ़ा; सफ़ेद बालोंवाला।

पीरानःसरी (پیرانہ سری) फा. स्त्री.–बुढ़ापा, वृद्धावस्था; बालों की सफ़ेदी।

पीरानः साल (پیرانہ سال) फा. वि.–बूढ़ा, वृद्ध; बूढ़ी, वृद्धा।

पीरानःसाली (پیرانہ سالی) फा. स्त्री.–बुढ़ापा, वृद्धावस्था।

पीरायः (پیرایہ) फा. पुं.–दे. 'पैरायः', उर्दू में वही बोलते हैं, परन्तु शुद्ध यही है।

पीरी (پیری) फा. स्त्री.–वृद्धावस्था, बुढ़ापा; पीर का पद या पेशा; धूर्तता, मक्कारी; दावा, इजारा।

पीरे कन्आँ (پیر کنعاں) फा. अ. पुं.–हज़्रत या'क़ूब, जो हज़्रत यूसुफ़ के पिता थे।

पीरे ख़राबात (پیر خرابات) फा. पुं.–मदिरालय का बूढ़ा प्रबंधक।

पीरे ज़मींगीर (پیر زمیں گیر) फा. पुं.–जिसकी कमर बुढ़ापे के कारण इतनी झुक गयी हो कि उसका सिर पृथ्वी से लग गया हो।

पीरे तरीक़त (پیر طریقت) फा. पुं.–धर्मगुरु, मुर्शिद।

पीरे नाबालिग़ (بیر نابالغ) फा. अ. पुं.–वह बूढ़ा जो बच्चों-जैसे काम करे।

पीरे फ़लक (پیر فلک) फा. अ. पुं.–शनि ग्रह, ज़ुहल; पुराना आकाश।

पीरे फ़र्तूत (بیر فرتوت) फा. पुं.–वह व्यक्ति जिसकी बुद्धि बुढ़ापे के कारण नष्ट हो गयी हो, बहुत बूढ़ा, जर्जर, जराजीर्ण।

पीरे मुग़ाँ (پیر مغاں) फा. पुं.–दे. 'पीरे ख़राबात'; आतश-परस्तों का धर्मगुरु।

पीरे हरम (پیر حرم) फा. अ. पुं.–का'बे की सेवा करनेवाला बूढ़ा व्यक्ति, पूज्य व्यक्ति।

पीरोज़ः (پیروزہ) फा. पुं.–दे. 'फ़ीरोज़ः', उर्दू में वही बोलते हैं।

पीरोमुर्शिद (پیرومرشد) फा. अ. पुं.–धर्मगुरु के लिए बोला जानेवाला शब्द; किसी प्रतिष्ठित और वृद्ध व्यक्ति के लिए संबोधन का शब्द।

पीलः (پیلہ) फा. पुं.–रेशम का कीड़ा; रेशम का कोया; पलक, दृगंचल; शत्रंज का एक मोहरा, पील।

पीलःवर (پیلہ ور) फा. वि.–शीशःगर, कंचकार; अत्तार, गंधकार; रेशम का व्यापारी; औषधियाँ बेचनेवाला।

पील (پیل) फा. पुं.–हस्ती, सिंधुर, गज, करि, पीलु, हाथी; शत्रंज का एक मोहरा, पीलः, दे. 'फ़ील', उर्दू उच्चारण वही है।

पीलतन (پیلتن) फा. वि.–हाथी-जैसे डील-डौलवाला; रुस्तम की उपाधि।

पीलनशीं (پیل نشیں) फा. वि.–जिसके द्वार पर हाथी झूमता हो।

पीलपा (پیل پا) फा. पुं.–पाँव सूज जाने का एक रोग, श्लीपद, पादगंडीर।

पीलपायः (پیل پایہ) फा. पुं.–पत्थर या चने का खंभा।

पीलपैकर (پیل پیکر) फा. वि.–दे. 'पीलतन'।

पीलबंद (پیل بند) फा. पुं.–शत्रंज का एक खेल, जिसमें दोनों पील दो-दो पियादों के ज़ोर पर होते हैं और सब घर बंद कर लेते हैं।

पीलबाग़ (پیل باغ) फा. पुं.–पटका, पेटी, कमरपट्टी।

पीलबान (پیل بان) फा. वि.–हाथीवान, हस्तिपक, अंकुश-ग्रह, दे. 'फ़ीलवान', उर्दू उच्चारण वही है।

पीलबानी (پیل بانی) फा. स्त्री.–हाथीवानी, हाथी चलाने का काम, उर्दू उच्चारण 'फ़ीलवानी' है, दे. 'फ़ीलवानी'।

पीलबाला (پیل بالا) फा. वि.–हाथी के बराबर ऊँचे डील का।

पीलमाल (پیل مال) फा. वि.–हाथी के पाँव के नीचे मसला हुआ; हाथी के पाँव-तले मसलवाना।

पीलमुर्ग़ (پیل مرغ) फा. पुं.–एक कल्पित पक्षी जो हाथी को चंगुल में उठा ले जाता है।

पीलस्तः (پیلستہ) फा. पुं.–हाथीदाँत।

पीले गर्दूं (پیل گردوں) फा. पुं.–हाथी रूपी आकाश, जो सबको अपने पाँव-तले रौंदता है।

पीले दमाँ (پیل دماں) फा. पुं.–ग़ुस्से में बिफ़रा हुआ और चिंघाड़ता हुआ हाथी।

पीले माल (پیل مال) फा. पुं.–इतना धन जो एक हाथी पर चले, बहुत अधिक धन।

पीह (پیہہ) फा. स्त्री.–चर्बी, मेदा, वसा।

पीहे ख़ूक (پیہہ خوک) फा. स्त्री.–सुअर की चर्बी।

पीहे ग़ूक (پیہہ غوک) फा. स्त्री.–मेंढक की चर्बी।

पीहे बत (پیہہ بط) फा. स्त्री.–बतख़ की चर्बी।

पीहे बुज़ (پیہہ بز) फा. स्त्री.–बकरी की चरबी।

पीहे मार (پیہہ مار) फा. स्त्री.–साँप की चर्बी।

पीहे मुर्ग़ (پیہہ مرغ) फा. स्त्री.–मुर्ग़ की चर्बी।

पीहे शेर (پیہہ شیر) फा. स्त्री.–सिंह की चर्बी।

पीहे सूसमार (پیہہ سوسمار) फा. स्त्री.–गोह की चर्बी।

पु

पुंबः (پنبہ) फा. पुं.–कपास, रूई; दे, 'पंबः', वही अधिक बोला जाता है।

पुंबःदानः (پنبہ دانہ) फा. पुं.–कपास का बीज, बिनौला, दे. 'पंबःदानः', वह अधिक बोला जाता है।

पुख़ (پوخ) तु. पुं.–मल, विष्ठा, पुरीष, गू।

पुख़्तः (پختہ) फा. वि.–दृढ़, मज़्बूत; परिपक्व, पका हुआ; चूना, गच या सीमेंट से जुड़ा हुआ; स्थिर, पाएदार, टिकाऊ; नियत, तैशुदः।

पुख़्तःअक़्ल (پختہ عقل) फा. अ. वि.–जिसकी समझ-बूझ पुख़्तः हो, स्थिरबुद्धि, परिपक्वमति।

पुख़्तःकार (پختہ‌کار) फा. वि.–जिसे काम का अनुभव हो, कृतकार्य।

पुख़्तःमग़्ज़ (پختہ‌مغز) फा. अ. वि.–दे. 'पुख़्तःअक़्ल'।

पुख़्तःमिज़ाज (پختہ‌مزاج) फा. अ. वि.–जो किसी बात पर अटल रहे, स्थिरचित्त, दृढ़निश्चय।

पुख़्तःमिज़ाजी (پختہ‌مزاجی) फा. अ. स्त्री.–किसी बात पर जमा रहना, चल-विचल न होना।

पुख़्तःराए (پختہ‌رائے) फा. अ. वि.–जिसकी सलाह उचित और शुद्ध होती हो, जो ठीक राय देता हो।

पुख़्त (پخت) फा. स्त्री.–पकने की क्रिया, पकाव; खाना पकाने का कार्य।

पुख़्तगी (پختگی) फा. स्त्री.–पक्कापन, दृढ़ता; परिपक्वता, पकने का भाव।

पुख़्तनी (پختنی) फा. वि.–पकने योग्य; पकाने योग्य।

पुख़्तो (پختو) फा. स्त्री.–अफ़ग़ानियों की भाषा, पुश्तो।

पुख़्तोन (پختون) फा. पुं.–पुख़्तो भाषाबोलनेवाला।

पुख़्तोनिस्तान (پختونستان) फा. पुं.–वह देश जहाँ पुख़्तो भाषा बोली जाती हो।

पुत्क (پتک) फा. पुं.–लोहा कूटने का हथौड़ा, घन।

पुफ़ (پف) फा. स्त्री.–फूँक, फूँक मारना।

पुर (پر) फा. वि.–भरा हुआ, पूर्ण; भरपूर, पूरा।

पुरअंदोह (پراندوہ) फा. वि.–दुःखपूर्ण, क्लेशपूर्ण, मुसीबत से भरा हुआ।

पुरअम्न (پرامن) फा. अ. वि.–शान्तिपूर्ण, शान्तिमय।

पुरअलम (پرالم) फा. अ. वि.–दे. 'पुरअंदोह'।

पुरअश्क (پراشک) फा. वि.–आँसुओं से भरी हुई आँख, आर्द्र नयन।

पुरआब (پرآب) फा. वि.–पानी से भरा हुआ; आँसुओं से भरा हुआ।

पुरआबलः (پرآبلہ) फा. वि.–छालों से भरा हुआ, जिसमें बहुत-से छाले हों।

पुरआर्ज़ू (پرآرزو) फा. वि.–जिसके मन में बहुत-सी अभिलाषाएँ हों।

पुरआशोब (پرآشوب) फा. वि.–घटनाओं और आपत्तियों से भरा हुआ।

पुरउम्मीद (پرامید) फा. वि.–जिसके मन में अभिलाषा हो; जिसे किसी काम के हो जाने की आशा हो।

पुरकार (پرکار) फा. वि.–चालाक, मक्कार; चतुर, होशियार।

पुरकीं (پرکیں) फा. वि.–जिसके मन में द्वेष हो, जो गुप्त शत्रुता रखे।

पुरख़तर (پرخطر) फा. अ. वि.–आपत्तियों और ख़तरों से भरा हुआ, बहुविघ्न; भयानक, भीषण, ख़तरनाक।

पुरख़म (پرخم) फा. वि.–टेढ़ा, तिरछा; घूँघरवाला (बाल); लेख में इबारत आराई, शब्दाडंबर।

पुरख़ार (پرخار) फा. वि.–काँटों से भरा हुआ, कंटक-संकुल; वह जंगल आदि जहाँ बहुत काँटें हो।

पुरख़ुमार (پرخمار) फा. अ. वि.–नशे में चूर, मस्त।

पुरख़ूँ (پرخوں) फा. वि.–ख़ून से भरा हुआ, रक्तपूर्ण; ग़ुस्से से भरी हुई आँख।

पुरग़म (پرغم) फा. अ. वि.–रंज से भरा हुआ, शोकपूर्ण; मुसीबत से भरा हुआ, दुःखपूर्ण।

पुरग़ुरूर (پرغرور) फा. अ. वि.–घमंड में भरा हुआ, अभिमानी, मग़रूर।

पुरगो (پرگو) फा. वि.–बातूनी, वाचाल; बहुत कविता करनेवाला, बहुत शेर कहनेवाला।

पुरगोई (پرگوئی) फा. स्त्री.–वाचालता, बकवास; बहुत कविता करना।

पुरचीं (پرچیں) फा. वि.–बल पड़ा हुआ (माथा आदि); झुर्री पड़ा हुआ (खाल)।

पुरज़र (پرزر) फा. वि.–रुपयों से भरा हुआ; धन-संपन्न, दौलत से पुर।

पुरजोश (پرجوش) फा. वि.–जोशीला, जोश से भरा हुआ; आवेगपूर्ण, ज़ोरदार; उत्साहपूर्ण, उमंग से भरा हुआ।

पुरतकल्लुफ़ (پرتکلف) फा. अ. वि.–जिसमें बहुत तकल्लुफ़ किया गया हो।

पुरताब (پرتاب) फा. वि.–रौशन, प्रकाशमय; शक्तिशाली, ताक़तवर।

पुरदग़ल (پردغل) फा. वि.–दे. 'पुरदग़ा'।

पुरदग़ा (پردغا) फा. वि.–छली, फ़रेबी; धूर्त, चालाक।

पुरदर्द (پردرد) फा. वि.–दुःखपूर्ण, ग़मनाक।

पुरदिल (پردل) फा. वि.–शूर, वीर, बहादुर; उत्साही, साहसी, हिम्मतवर।

पुरनम (پرنم) फा. वि.–गीला, भीगा; आँसुओं से भरी हुई आँख।

पुरनूर (پرنور) फा. अ. वि.–ज्योतिर्मय, प्रकाशमान्, रोशन।

पुरपेच (پرپیچ) फा. वि.–पेचदार, टेढ़ा-मेढ़ा; बलदार, पुरशिकन।

पुरपेचोख़म (پرپیچ‌وخم) फा. वि.–जिसमें बहुत टेढ़-मेढ़ हो; जो बहुत जटिल और पेचीदा हो।

पुरफ़न (پرفن) फा. अ. वि.–धूर्त, वंचक, छली, मक्कार।

पुरफ़रेब (پرفریب) फा. वि.—दे. 'पुरदग़ा'।

पुरफ़िज़ा (پرفضا) फा. अ. वि.—खुला हुआ, हवादार, सरसब्ज़ और विस्तृत स्थान।

पुरबजिद (پربجد) फा. अ. वि.—तत्पर, कटिवद्ध, तैयार।

पुरबहार (پربہار) फा. वि.—फूलों से लदा हुआ सुंदर स्थान; हवादार, खुला हुआ और रमणीक स्थान।

पुरबाद (پرباد) फा. वि.—हवा से भरा हुआ, फूला हुआ; गर्व से भरा हुआ, अभिमानी।

पुरबार (پربار) फा. वि.—बौर अथवा फल से लदा हुआ पेड़; गर्भवती स्त्री, गुर्विणी।

पुरबास (پرباس) फा. वि.—दुःखपूर्ण, कष्टपूर्ण; शोकपूर्ण, खेदपूर्ण।

पुरमग़्ज़ (پرمغز) फा. अ. वि.—सारगर्भ, तत्त्वपूर्ण।

पुरमज़ाक़ (پرمزاق) फा. अ. वि.—विनोदप्रिय, ज़िंदादिल; हँसी और विनोद से भरी हुई बात।

पुरमलाल (پرملال) फा. अ. वि.—दुःखपूर्ण, रंज से भरा हुआ; खिन्न, मलिन, उदास।

पुरमिज़ाह (پرمزاح) फा. अ. वि.—ठठोलिया, विनोदी; हँसी की बात।

पुरमिह्न (پرمحن) फा. अ. वि.—मुसीबतों से भरा हुआ, कष्ट-संकुल।

पुरमेवः (پرمیوه) फा. वि.—मेवों से लदी हुई डाली; मेवों से भरा हुआ पात्र।

पुररौनक़ (پررونق) फा. वि.—जहाँ बहुत रौनक़ हो।

पुरशिकन (پرشکن) फा. वि.—झुर्रियाँ पड़ी हुई खाल या देह; बल पड़े हुए बाल।

पुरशिकम (پرشکم) फा. वि.—जिसका पेट भरा हो, जो अफरा हो, उदरपूर्ण।

पुरशिकोह (پرشکوه) फा. वि.—भीषण, भयानक, डरावना।

पुरशुऊर (پرشعور) फा. वि.—तमीज़दार, शिष्ट; बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

पुरशुकोह (پرشکوه) फा. वि.—वैभवशाली, विभवसंपन्न, शानो-शौक़तवाला।

पुरशोर (پرشور) फा. विं.—शोरोग़ुल से भरा हुआ, कोलाहलपूर्ण; नमक से भरा हुआ, बहुत अधिक नमकीन।

पुरशौकत (پرشوکت) फा. वि.—वैभवशाली, शानदार।

पुरसुकून (پرسکون) फा. अ. वि.—शांतिमय, शांतिपूर्ण, मुतयइन; सारे झंझटों से पाक।

पुरसोज़ (پرسوز) फा. वि.—जलन और तपन से भरा हुआ।

पुरहस्रत (پرحسرت) फा. अ. वि.—निराशापूर्ण, नाउमेदी से भरा हुआ।

पुरहीलः (پرحیلہ) फा. अ. वि.—बहानःबाज़, बहाना करनेवाला, छली।

पुरहैबत (پرہیبت) फा. अ. वि.—डरावना, भयानक।

पुरहौल (پرهول) फा. अ. वि.—भीषण, भयंकर, डरावना।

पुरहौसलः (پرحوصلہ) फा. अ. वि.—उत्साही, साहसी, हौसलःमंद।

पुरिंदः (پرنده) फा. वि.—भरनेवाला।

पुरी (پری) फा. स्त्री.—भराव, भरा हुआ पन।

पुरीदः (پریده) फा. वि.—भरा हुआ, परिपूर्ण।

पुरीदनी (پریدنی) फा. वि.—भरने योग्य।

पुर्ज़ः (پرزه) फा. पुं.—खंड, टुकड़ा; पर्चः, काग़ज़ का टुकड़ा; मशीन का कोई खंड।

पुर्ज़ (پرز) फा. पुं.—रोम, लोम, रोआँ; ओढ़नी, दुपट्टा; दवात में डालने का लत्ता।

पुर्सः (پرسہ) फा. पुं.—मृत्यु हो जाने पर किसी के यहाँ शोक प्रकट करने और सहानुभूति दिखाने के लिए जाना।

पुर्स (پرس) फा. प्रत्य.—पूछनेवाला, जैसे—'हालपुर्स' दशा पूछनेवाला, (स्त्री.) पूछ-ताछ, पूछ।

पुर्सां (پرساں) फा. वि.—पूछनेवाला, पृच्छक, जिज्ञासु।

पुर्साने हाल (پرسان حال) अ. फा. वि.—हाल पूछनेवाला, ख़बर लेनेवाला।

पुर्सिंदः (پرسنده) फा. वि.—पूछनेवाला, पृच्छक।

पुर्सिश (پرسش) फा. स्त्री.—पूछ-ताछ; आदर-सत्कार, इज़्ज़त।

पुर्सीदः (پرسیده) फा. वि.—पूछा हुआ, जिज्ञासित।

पुर्सीदनी (پرسیدنی) फा. वि.—पूछनेयोग्य।

पुल (پل) फा. पुं.—सेतु, नदी आदि के उतरने का साधन; मछली का सिन्ना।

पुल (پول) तुं. पुं.—पैसा।

पुलची (پولچی) तु. वि.—पैसे बेचनेवाला।

पुलाव (پلاؤ) फा. पुं.—एक प्रसिद्ध खाद्य जो गोश्त और चावल से बनता है, इसका शुद्ध उच्चारण 'पलाव' है, परंतु उर्दू में पुलाव ही बोलते हैं।

पुलुफ़्तः (پلفتہ) फा. पुं.—स्फुलिंग, अग्निकण, चिनगारी।

पुश्क (پشک) फा. पुं.—मेंगनी।

पुश्क (پشک) तु. स्त्री.—बिल्ली, मार्जारी।

पुश्तः (پشتہ) फा. पुं.—टीला, ढूह; वह मिट्टी या कंकड़ चूना आदि जो दीवार को मज़बूत करने के लिए उसकी जड़ में लगाते हैं; वह मिट्टी का बंद या दीवार जो नदी के किनारे चढ़ाव का पानी रोकने को बनाते हैं।

पुश्तःबंदी (پشتہ بندی) फा. स्त्री.–दीवार का पुश्ता लगाना; नदी का बंद बाँधना।

पुश्त (پشت) फा. स्त्री.–पृष्ठ, पीठ; पिछाड़ी, पीछा; सहायता, मदद; वंश, नस्ल।

पुश्तक (پشتک) फा. स्त्री.–घोड़े की दुलत्ती।

पुश्तख़म (پشت خم) फा. वि.–कुबड़ा, कुब्ज।

पुश्तख़ार (پشت خار) फा. पुं.–पीठ खुजलाने का पंजा।

पुश्तगर्मी (پشت گرمی) फा. स्त्री.–सहायता, मदद; पृष्ठ-पोषण, हिमायत।

पुश्त दर पुश्त (پشت در پشت) फा. अव्य.–पीढ़ी दर पीढ़ी, नस्ल दर नस्ल।

पुश्तपनाह (پشت پناہ) फा. वि.–सहायक, मददगार; पृष्ठपोषक, हिमायती।

पुश्तपनाही (پشت پناہی) फा. स्त्री.–सहायता, मदद; पृष्ठ-पोषण, हिमायत।

पुश्त बदीवार (پشت بدیوار) फा. वि.–निस्तब्ध, चकित, हैरान।

पुश्त ब पुश्त (پشت بہ پشت) फा. अव्य.–दे. 'पुश्त दर पुश्त।

पुश्तमाही (پشت ماہی) फा. स्त्री.–रात्रि, रात, निशा।

पुश्तवारः (پشتوارہ) फा. पुं.–दे. 'पुश्तारः'।

पुश्तारः (پشتارہ) फा. पुं.–'पुश्तवारः' का लघु., इतना बोझ जो पीठ पर उठाया जा सके, पोट, बोझ, गट्ठर।

पुश्ती (پشتی) फा. स्त्री.–सहायता, मदद; समर्थन, ताईद; पालन-पोषण, पर्वरिश।

पुश्तीबान (پشتی بان) फा. वि.–सहायक, मददगार; टेक, थूनी, आड़।

पुश्तीबानी (پشتی بانی) फा. स्त्री.–सहायता, मदद; सहारा, टेक।

पुश्ते दस्त (پشت دست) फा. स्त्री.–हथेली की पीठ, करपृष्ठ।

पुश्ते पा (پشت پا) फा. स्त्री.–तलवे का ऊपरी भाग।

पुश्तो (پشتو) फा. स्त्री.–दे. 'पुख़्तो'।

पुस (پس) फा. स्त्री.–पुत्र, तनय, आत्मज, लड़का, बेटा।

पू

पूच (پوچ) फा. वि.–दे. 'पोच', शुद्ध 'पूच' है, परंतु प्रचलित 'पोच' है।

पूद (پود) फा. पुं.–बाना, कपड़े की बुनाई में अर्ज़ में पड़नेवाला डोरा।

पूरः (پورہ) फा. पुं.–दे. 'पूर', दोनों शुद्ध हैं।

पूर (پور) फा. पुं.–पुत्र, बेटा, आत्मज, तनय।

पूरे पुशंग (پور پشنگ) फा. पुं.–पुशंग का पुत्र, अफ़्रासियाब।

पूरे सीना (پور سینا) फा. अ. पुं.–हकीम बू अली सीना।

पूरे हाजिर (پور ھاجر) फा. अ. पुं.–हज़्रतं इस्माईल पैग़ंबर।

पे

पेख़्तः (پیختہ) फा. पुं.–मैदा, बारीक आटा।

पेग़ारः (پیغارہ) फा. पुं.–दे. 'पैग़ारः', दोनों शुद्ध हैं।

पेचः (پیچہ) फा. पुं.–अमरबेल, आकाशबेल।

पेच (پیچ) फा. पुं.–घुमाव, चक्कर; बल, लपेट; पेचीदगी, जटिलता; छल, चाल, धोखा; कल, मशीन; कठिनता, दुशवारी; विघ्न, बाधा; कुंडली, हल्क़ः।

पेचक (پیچک) फा. स्त्री.–बटे हुए महीन सूत की गोली; हर लिपटी हुई वस्तु।

पेचकश (پیچ کش) फा. पुं.–ढिबरी आदि खोलने और कसने का यंत्र।

पेच दर पेच (پیچ در پیچ) फा. वि.–जिसमें पेच के अंदर पेच हों, बहुत अधिक जटिल, बहुत पेचीदा।

पेचदार (پیچدار) फा. वि.–जिसमें पेच हों; जिसमें बल हों; जटिल, पेचीदा; उलझा हुआ।

पेचरिश्तः (پیچ رشتہ) फा. पुं.–अंटी, पिंडया, चर्ख़े से निकली हुई सूत की अड़िया।

पेचाँ (پیچاں) फा. वि.–पेचदार; बलदार; लिपटा हुआ; उलझा हुआ।

पेचाक (پیچاک) फा. पुं.–बल, शिकन; टेढ़, वक्रता; अलक, ज़ुल्फ़; तुर्रः, कलग़ी; घींघा।

पेचानीदः (پیچانیدہ) फा. वि.–लपेटा हुआ।

पेचिश (پیچش) फा. स्त्री.–आँतों की ऐंठन के साथ बार-बार पाख़ाने जाने का रोग, मरोड़।

पेचीदः (پیچیدہ) फा. वि.–पेचदार, जटिल; कठिन, मुश्किल; लिपटा हुआ।

पेचीदःदस्त (پیچیدہ دست) फा. वि.–निर्बल, कमज़ोर।

पेचीदगी (پیچیدگی) फा. स्त्री.–जटिलता, उलझाव; कठिनता, मुश्किल; लपेट, लिपटापन।

पेचीदनी (پیچیدنی). फा. वि.–लिपटने के योग्य; लपेटने के योग्य।

पेचोख़म (پیچ وخم) फा. पुं.–टेढ़-मेढ़, चक्कर; जटिलता, दुशवारी; ऊँच-नीच, मारपेच।

पेचोताब (پیچ وتاب) फा. पुं.–क्रोध, ग़ुस्सा; मनस्ताप, दिली ख़लिश।

पेज़न (پیزن) फा. स्त्री.–छानने की वस्तु, छन्नी।

पेज़ीदः (پیزیدہ) फा. वि.–छाना हुआ।

पेरा (پیرا) फा. प्रत्य.–दे. 'पैरा', दो. शु. हैं, परंतु बोला वही जाता है।

पेराइश (پیرائش) फा. स्त्री.–दे. 'पैराइश', दो. शु. हैं, परन्तु व्यवहृत वही है।

पेरामुन (پیرامن) फा. पुं.–दे. 'पैरामुन', दो. शु. हैं, परंतु प्रचलित वही है।

पेरामून (پیرامون) फा. पुं.–दे. 'पैरामून', दो. शु. हैं, परंतु बोलते वही हैं।

पेरास्तः (پیراستہ) फा. वि.–दे. 'पैरास्तः', दो. शु. हैं, परंतु बोला वही जाता है।

पेशः (پیشہ) फा. पुं.–व्यवसाय, धन्धा; उद्योग, उद्यम, रोज़गार; वेश्या-वृत्ति, कमाई।

पेशःवर (پیشہ ور) फा. वि.–उद्यमी, रोज़गारी; जिसने किसी कार्य-विशेष को अपनी जीविका का साधन बना लिया हो, जैसे—पेशःवर शाइर।

पेशःवरानः (پیشہ ورانہ) फा. वि.–पेशःवरों, जैसा, जो पेशःवरों का ढंग है वैसा ढंग।

पेशःवरी (پیشہ وری) फा. स्त्री.–उद्यम करना, रोज़गार करना।

पेश (پیش) फा. पुं.–संमुख, सामने; प्रथम, पहले; अगला भाग; उर्दू में 'उ' की मात्रा।

पेशअंदेश (پیش اندیش) फा. वि.–दे. 'पेशबीं'।

पेशअंदेशी (پیش اندیشی) फा. स्त्री.–दे. 'पेशबीनी'।

पेशअंदाज़ (پیش انداز) फ़ा. पुं.–खाना खाते समय घुटनों पर डाला जानेवाला कपड़ा।

पेशआमद (پیش آمد) फा. स्त्री.–दे. 'पेशामद', वह उच्चारण फ़सीह है।

पेशआहंग (پیش آہنگ) फा. पुं.–दे. 'पेशाहंग', वह उच्चारण फ़सीह है।

पेशक़दमी (پیش قدمی) फा. अ. स्त्री.–पहल, सबक़त; सेना का आक्रमण के लिए आगे बढ़ना।

पेशक़ब्ज़ (پیش قبض) फा. पुं.–भुजाली, जम्बिया, छोटी कटार।

पेशकश (پیشکش) फा. स्त्री.–पुरस्कार, भेंट, नज़रानः; प्रस्ताव, तज्वीज़; प्रार्थना, इल्तिजा।

पेशकार (پیشکار) फा. पुं.–किसी हाकिम की पेशी में काम करनेवाला।

पेशकारी (پیشکاری) फा. स्त्री.–पेशकार का पद, पेशकार का कर्तव्य या काम।

पेशख़ानः (پیش خانہ) फा. पुं.–घर-गिरस्ती का सामान।

पेशख़िद्मत (پیش خدمت) फा. अ. पुं.–सेवक, नौकर; प्राइवेट सेक्रेटरी।

पेशख़ुर्द (پیش خورد) फा. पुं.–सवेरे का नाश्ता, प्रातराशन; खाने का नमक चखना।

पेशख़ेज़ (پیش خیز) फा. पुं.–तेज़ और फुर्तीला नौकर; राग, नग़्मः।

पेशख़ैमः (پیش خیمہ) फा. अ. पुं.–किसी होनेवाले काम की तम्हीद; वह खैमा जो अगले पड़ाव पर पहले से लगा दिया जाता है, ताकि दौरे के पदाधिकारयों को कष्ट न हो; वह खैमा जो फ़ौज में सबसे आग लगाया जाता है।

पेशख़्वाँ (پیش خواں) फा. वि.–वह व्यक्ति जो सभा की कारखाई प्रारम्भ होने से पहले कविता आदि पढ़ता है।

पेशख़्वानी (پیش خوانی) फा. स्त्री.–सभा के प्रारंभ में कविता आदि पढ़ने का कार्य।

पेशगाह (پیشگاہ) फा. स्त्री.–वह फ़र्श जो बादशाहों के तख़्त और मस्नद के आगे बिछाया जाता है; सभापति, सद्रे मज्लिस; अजिर, आँगन।

पेशगी (پیشگی) फा. स्त्री.–बैआनः, अग्रिम धन; पहले से।

पेशगीर (پیشگیر) फा. पुं.–मुँह पोंछने का रूमाल।

पेशगो (پیش گو) फा. वि.–दे. 'पेशींगो'।

पेशगोई (پیش گوئی) फा. स्त्री.–दे. 'पेशींगोई'।

पेशतख़्तः (پیش تختہ) फा. पुं.–डेस्क, ढलवाँ संदूक़।

पेशतर (پیشتر) फा. वि.–पहले, आगे।

पेशतरक (پیشتری) फा. वि.–बहुत पहले।

पेशताक़ (پیش طاق) फा. पुं.–अजिर, आँगन; अमीरों और राजाओं के महल का बड़ा दरवाज़ा; दरवाज़े के सामने का आँगन।

पेशदंदाँ (پیش دنداں) फा. पुं.–सवेरे का जलपान, प्रातराशन, नाश्ता।

पेशदस्त (پیش دست) फा. वि.–पेशकार; प्रतिनिधि, नाइब; सहायक, मददगार; पहल करनेवाला; विजेता, ग़ालिब।

पेशदस्ती (پیش دستی) फा. स्त्री.–पेशकारी; सहायता; पहले-पहले हाथ उठाना, छेड़खानी करना।

पेशदाद (پیش داد) फा. स्त्री.–किसी कार्य-विशेष के लिए पहले दिया हुआ धन, साई।

पेशदादी (پیش دادی) फा. वि.–'होशंग' का वंशज।

पेशदामन (پیش دامن) फा. पुं.–सेवक, नौकर।

पेशनशीं (پیش نشیں) फा. वि.–जो सभा आदि में सबसे आगे बिठाया जाय, अग्रासन।

पेशनिहाद (پیش نہاد) फा. पुं.–इच्छा, इरादा; कामना, मक़्सद।

पेशबंद (پیش بند) फा. पुं.–घोड़े का ज़ेरबंद।

पेशबंदी (پیش بندی) फा. स्त्री.–किसी काम की पेशगी तमहीद; साज़िश, षड्यंत्र।

पेशबाज (پیش باز) फा. पुं.–स्वागत, इस्तिक़्बाल; स्वागत करनेवाला।

पेशबीं (پیش بیں) फा. वि.–आगे की बात सोचनेवाला, दूरअंदेश; बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

पेशबीनी (پیش بینی) फा. स्त्री.–आगे की बात सोचना, दूरअंदेशी; बुद्धिमत्ता, अक़्लमंदी।

पेशयार (پیش یار) फा. पुं.–पेशकार।

पेशरफ़्त (پیش رفت) फा. स्त्री.–आगे बढ़ना; तरक़्क़ी करना; वश, ज़ोर, क़ाबू।

पेशरवी (پیش روی) फा. स्त्री.–आगे चलना, अग्रगमन; राहनुमाई करना, पथ-प्रदर्शन।

पेशरस (پیش رس) फा. पुं.–वह फल जो पेड़ में सबसे पहले पके।

पेशरसी (پیش رسی) फा. स्त्री.–फल का अपनी जाति के फलों में सबसे पहले पकना।

पेशरौ (پیش رو) फा. वि.–आगे चलनेवाला, अग्रगामी; पेशवा, पथ-प्रदर्शक।

पेशवा (پیشوا) फा. वि.–अगुआ, नेता, लीडर।

पेशवाई (پیشوائی) फा. स्त्री.–किसी आनेवाले का, आगे बढ़कर इस्तिक़्बाल।

पेशवाए मुल्क (پیشوائے ملک) फा. अ. पुं.–देश का नेता।

पेशवाज (پیشواز) फा. पुं.–दे. 'पेशबाज़'; दे. 'पिश्वाज़'।

पेशानी (پیشانی) फा. स्त्री.–ललाट, भाल, माथा; भात्री, होनहार; भाग्य, क़िस्मत।

पेशाब (پیشاب) फा. पुं.–मूत, मूत्र, प्रस्राव।

पेशामद (پیش آمد) फा. पुं.–अनुकंपा, दया; पहुँच, रसाई; रिआयत, छूट।

पेशाहंग (پیش آہنگ) फा. पुं.–सेना अथवा यात्रीदल के आगे चलनेवाला व्यक्ति।

पेशीं (پیشیں) फा. वि.–पहला, प्रथम; पुराना, प्राचीन; पहलेवाला, सबसे पहला।

पेशींगो (پیشیں گو) फा. वि.–आगे की बात बतानेवाला, भविष्यवक्ता, आगमज्ञानी।

पेशींगोई (پیشیں گوئی) फा. स्त्री.–आगे की बात बताना, आगमज्ञान, भविष्यवाद।

पेशी (پیشی) फा. स्त्री.–सामने आने का भाव; मुक़दमे आदि में हाकिम के सामने पेश होने का भाव।

पेशीनः (پیشینہ) फा. वि.–अगला, पहला; पुरातन, पुराना।

पेशीनगो (پیشین گو) फा. वि.–दे. 'पेशींगो'।

पेशीनगोई (پیشین گوئی) फा. स्त्री.–दे. 'पेशींगोई'।

पेशीनाँ (پیشیناں) फा. पुं.–पहलेवाले लोग, पूर्वज।

पेशे नजर (پیش نظر) फा. अ. पुं.–दृष्टि के सामने, आँखों के सामने; ध्यान में, ख़याल में।

पेशे निगाह (پیش نگاہ) फा. पुं.–दे. 'पेशे नज़र'।

पेशोपस (پیش وپس) फा. पुं.–आगा-पीछा, असमंजस, तज़ब्ज़ुब।

पेसः (پیسہ) फा. पुं.–जिसे शरीर में सफ़ेद दाग़ों का रोग हो, सिध्मी, मब्रूस।

पेस (پیس) फा. पुं.–सफ़ेद कोढ़, बरस, सिध्म; सफ़ेद कोढ़ का रोगी, सिध्मी।

पै

पै (پے) फा. पुं.–स्नायु, पट्ठा; पद-चिह्न, पाँव का निशान; पीछा, तआक़ुब; बार, दफ़ा; शक्ति, बल; लिए, वास्ते, प्रति; पट्ठे के रेशे जो धनुष आदि पर चिपकाये जाते हैं; पाँव, चरण।

पैक (پیک) फा. पुं.–पत्रवाहक, चिट्ठीरसाँ; हरकारा, पियादा; दूत, क़ासिद, एलची।

पैकर (پیکر) फा. पुं.–देह, शरीर; आकृति, शक्ल।

पैकाँ (پیکاں) फा. पुं.–'पैकान' का लघु., दे. 'पैकान'।

पैकान (پیکان) फा. पुं.–बाण की नोक; बरछी की अनी।

पैकानी (پیکانی) फा. वि.–एक प्रकार का पद्मराग अर्थात् ला'ल; एक प्रकार का नौसादर; एक प्रकार का याक़ूत।

पैकार (پیکار) फा. पुं.–युद्ध, समर, लड़ाई, जंग।

पैके अजल (پیک اجل) फा. अ. पुं.–यमदूत, मौत का पयामी।

पैके ख़याल (پیک خیال) फा. अ. पुं.–कल्पना रूपी दूत जो हर स्थान पर पहुँच सकता है।

पैके निगाह (پیک نگاہ) फा. पुं.–दृष्टि का दूत, या दूत रूपी दृष्टि।

पैग़ंबर (پیغمبر) फा. पुं.–ईशदूत, अवतार, पयंबर।

पैग़ंबरी (پیغمبری) फा. स्त्री.–ईश-दूत का पद; ईश-दूत का कर्तव्य; ईशदूत वाला।

पैग़ाम (پیغام) फा. पुं.–संदेश, सँदेसा, पयाम; समाचार, ख़बर; लड़के की ओर से लड़कीवालों से सगाई की बातचीत।

पैग़ामबर (پیغامبر) फा. वि.–संदेश ले जानेवाला, दूत, क़ासिद, वार्तावह, संदेशवाहक।

पैग़ामबरी (پیغام بری) फा. स्त्री.–संदेश ले जाने का काम, वार्तावहन।

पैग़ामरसाँ (پیغام رساں) फा. वि.–दे. "पैग़ामबर'।

पैग़ामरसानी (پیغام‌رسانی) फा. स्त्री.—दे. 'पैग़ामबरी'।

पैग़ामरसी (پیغام‌رسی) फा. स्त्री.—संदेश पहुँचना, पयाम जाना।

पैग़ामे ज़बानी (پیغامِ زبانی) फा. पुं.—वह ख़बर जो किसी कारण लिखकर नहीं बल्कि ज़बानी कही जाय।

पैग़ार: (پیغارہ) फा. पुं.—भर्त्सना, डाँट-फटकार; कटाक्ष, ताना।

पैगार (پیگار) फा. पुं.—दे. 'पैकार', दोनों शुद्ध हैं, परंतु यह अप्रचलित है।

पैग़ुल: (پیغلہ) फा. पुं.—'पैग़ूल:' का लघु., दे. 'पैग़ूल:'।

पैग़ूल: (پیغولہ) फा. पुं.—कोना, एकांत, गोश:।

पैज़ार (پیزار) फा. स्त्री.—जूता, पादुका।

पै दर पै (پے در پے) फा. अव्य.—लगातार, निरंतर; बार-बार, बारंबार।

पैदा (پیدا) फा. वि.—उत्पन्न, प्रसूत, ज़ाईद:; आविर्भूत, व्यक्त, ज़ाहिर; प्राप्त, हासिल, (पुं.) प्राप्ति, हुसूल।

पैदाइश (پیدائش) फा. स्त्री.—उत्पत्ति, जन्म; आविर्भाव, ज़ुहूर; प्राप्ति, लाभ; प्रारंभ, शुरूआत; उपज, जमना।

पैदाइशी (پیدائشی) फा. वि.—प्राकृत, फ़ित्री; जन्मसिद्ध, जो उत्पन्न होते समय से प्राप्त हो।

पैदावार (پیداوار) फा. स्त्री.—खेती की उपज; व्यवसाय की आयु; माल की उत्पत्ति।

पैदावारी (پیداواری) फा. स्त्री.—दे. 'पैदावार'।

पै ब पै (پے بہ پے) फा. अव्य.—दे. 'पै दर पै'।

पैमाँ (پیماں) फा. पुं.—'पैमान' का लघु., दे. 'पैमान'।

पैमाँगुसिल (پیماں‌گسل) फा. वि.—प्रतिज्ञा भंग करनेवाला, क़ौल से हट जानेवाला, वचनभेदी।

पैमाँशिकन (پیماں‌شکن) फा. वि.—वचन-भंजक, प्रतिज्ञाभेदी, क़ौल तोड़ देनेवाला।

पैमाँशिकनी (پیماں‌شکنی) फा. स्त्री.—वादे से फिर जाना, वचन भंग कर देना।

पैमा (پیما) फा. प्रत्य.—नापनेवाला, जैसे—कोह पैमा, पहाड़ नापनेवाला; पीनेवाला, जैसे—'बाद:पैमा', शराब पीनेवाला; फिरनेवाला, जैसे—'दश्त पैमा', जगंल में फिरनेवाला।

पैमाइंद: (پیمائندہ) फा. वि.—नापनेवाला।

पैमाइश (پیمائش) फा. स्त्री.—नाप; किसी क्षेत्र के रक़्बे की नाप; किसी स्थान की लंबाई-चौड़ाई आदि की नाप।

पैमान: (پیمانہ) फा. पुं.—लंबाई नापने का यंत्र, इस्केल; तरल पदार्थ नापने का यंत्र; शराब का गिलास, पान-पात्र।

पैमान:कश (پیمانہ‌کش) फा. वि.—शराब पीनेवाला, मद्यप, रसाशी।

पैमान:कशी (پیمانہ‌کشی) फा. स्त्री.—शराब पीना, मदिरापान, मद्यपान, रसाशन।

पैमान:बकफ़ (پیمانہ بکف) फा. वि.—हाथ में मदिरापूर्ण गिलास लिये हुए, चषकपाणि।

पैमान:बदस्त (پیمانہ بدست) फा. वि.—दे. 'पैमान:बकफ़'।

पैमान:शिकन (پیمانہ‌شکن) फा. वि.—शराब का गिलास तोड़ देनेवाला, अर्थात् मद्यनिषेधक, मुह्तसिब।

पैमान (پیمان) फा. पुं.—प्रतिज्ञा, वादा; वचन, क़ौल; शपथा-शपथी, क़समा-क़समी।

पैमानए ग़म (پیمانۂ غم) फा. अ. पुं.—प्रेम की मदिरा का प्याला।

पैमानए मय (پیمانۂ می) फा. पुं.—शराब का प्याला, पानपात्र।

पैमूद: (پیمودہ) फा. वि.—नापा हुआ।

पैमूदनी (پیمودنی) फा. वि.—नापने योग्य।

पैमून: (پیمونہ) फा. पुं.—पैमाना।

पैरवी (پیروی) फा. स्त्री.—अनुकरण, अनुसरण, तक़्लीद; किसी की ओर से किसी मुक़दमे आदि की पैरोकारी।

पैरहन (پیرہن) फा. पुं.—कुर्ता, क़मीस; वस्त्र, वसन, लिबास।

पैरा (پیرا) फा. प्रत्य.—सजाने और सँवारनेवाला, जैसे—'चमनपैरा' बाग़ को सजानेवाला।

पैराइंद: (پیرائندہ) फा. वि.—सजानेवाला, सुसज्जित करनेवाला।

पैराइश (پیرائش) फा. स्त्री.—सजावट, सज्जा, आराइश; काट-छाँट करके सजाना।

पैरामन (پیرامن) फा. पुं.—दे. 'पैरामून'।

पैरामुन (پیرامن) फा. पुं.—'पैरामून' का लघु., दे. 'पैरामून'।

पैरामून (پیرامون) फा. पुं.—चारों ओर, इर्द-गिर्द; दौर, गिर्दागिर्द; कपड़े का दामन।

पैराय: (پیرایہ) फा. पुं.—शैली, पद्धति, तर्ज़; सजावट, ज़ीनत; वस्त्र, लिबास; आभूषण, ज़ेवर।

पैरास्त: (پیراستہ) फा. वि.—सजा हुआ, सुसज्जित।

पैरास्तगी (پیراستگی) फा. स्त्री.—सजावट, आरास्तगी।

पैरास्तनी (پیراستنی) फा. वि.—सजाने योग्य।

पैराहन (پیراہن) फा. पुं.—दे. 'पैरहन'।

पैरौ (پیرو) फा. वि.—अनुयायी, अनुसरणकर्ता, पैरवी करनेवाला।

पैवंद (پیوند) फा. पुं.—जोड़, थिगली; रिश्तेदारी, ख़ून का तअल्लुक़; वृक्ष की क़लम।

पैवंदी (پیوندی) फा. वि.—जिसमें पैवंद लगा हो; जो क़लमी हो (फल)।

पैवस्तः (پیوستہ) फा. वि.–सटा हुआ, मिला हुआ; निरंतर, लगातार; गत, गुज़रा हुआ; संर्वदा, हमेशा।

पैवस्त (پیوست) फा. वि.–मिला हुआ, जुड़ा हुआ; अंदर घुसा हुआ।

पैवस्तगी (پیوستگی) फा. स्त्री.–सटा हुआ (होना) निरंतरता, लगातारपन; नित्यता, हमेशगी; अंदर घुसने या पैवस्त होने का भाव।

पैवस्तनी (پیوستنی) फा. वि.–पैवस्त होने योग्य।

पैसः (پیسہ) फा. पुं.–ताँबे का सिक्का, तीन पाई की मुद्रा।

पैसिपुर (پےسپر) फा. वि.–पददलित, पैरों तले कुचला हुआ।

पैसिपुरी (پےسپری) फा. स्त्री.–पामाली, पैरोंतले कुचलना।

पैसुराक (پےسراک) तुं. पुं.–खच्चर, अश्वतर।

पैहम (پیہم) फा. वि.–निरंतर, लगातार; बारंबार, बार-बार,—"हम जल्वए-पैहम के तलबगार कहाँ हैं ?"–हसरत मोहानी।

पो

पोक (پوک) फा. पुं.–खेती का अन्न।

पोचः (پوچہ) फा. स्त्री.–जोंक, रक्तपा, जलौका।

पोच (پوچ) फा. वि.–अधम, नीच; व्यर्थ, फ़ुज़ूल; निकम्मा, नाकारः, अश्लील, फ़ोह्श; निरर्थक, बेमा'नी; अकुलीन, बदनस्ल; लंपट, लोफ़र; वह वस्तु जो बिलकुल ही व्यर्थ हो।

पोचगो (پوچ گو) फा. वि.–अनर्थवादी, व्यर्थभाषी, फ़ुज़ूल की बातें करनेवाला।

पोचगोई (پوچ گوئی) फा. स्त्री.–बकवास, मिथ्यावाद।

पोचबाफ़ (پوچ باف) फा. वि.–दे. 'पोचगो'।

पोचबाफ़ी (پوچ بافی) फा. स्त्री.–दे. 'पोचगोई'।

पोचबीं (پوچ بیں) फा. वि.–संकुचितदृष्टि, तंगनज़र।

पोचबीनी (پوچ بینی) फा. स्त्री.–तंगनज़री, दृष्टि-संकोच।

पोज़ः (پوزہ) फा. पुं.–दे. 'पोज़'।

पोज़ःबंद (پوزہ بند) फा. पुं.–दे. 'पोज़बंद'।

पोज़ (پوز) फा. पुं.–थूथन, थूथनी, पशुओं का मुँह नथने समेत।

पोज़बंद (پوزبند) फा. पुं.–पशुओं के मुँह पर चढ़ाने का छींका, मुसीका।

पोज़माल (پوزمال) फा. पुं.–थूथनी में डालने का फंदा।

पोजशि (پوجش) फा. स्त्री.– दे. 'पोज़िश'।

पोज़िश (پوزش) फा. स्त्री.–उज़्र, विवशता, मज़्बूरी।

पोज़िशपज़ीर (پوزش پزیر) फा. वि.–उज़्र माननेवाला, विवशता पर ध्यान देकर क्षमा करनेवाला।

पोज़ीदः (پوزیدہ) फा. वि.–जिसने अपनी विवशता प्रकट की हो, जिसने उज़्र किया हो।

पोतः (پوتہ) फा. पुं. –भांडागार, मख़्ज़न; लगान, मालगुज़ारी, राजस्व।

पोत (پوت) फा. पुं.–पेट और सीने में जो कुछ हो, आँतें, तिल्ली, जिगर, हृदय आदि।

पोदीनः (پودینہ) फा. पुं.–एक सुगंधित पत्ती, प्रणास।

पोयः (پویہ) फा. पुं.–घोड़े की एक चाल।

पोयाँ (پویاں) फा. वि.–दौड़ता हुआ।

पोया (پویا) फा. वि.–दौड़ता हुआ; दौड़नेवाला।

पोलः (پولہ) फा. पुं.–बिगड़ा और पला हुआ फल।

पोल (پول) फा. पुं.–पैसा, ताँब का सिक्का।

पोलाद (پولاد) फा. पुं.–दे. 'फ़ौलाद'।

पोलाब (پولاب) फा. विं.–जो दिखाई पड़े, दृष्टिगोचर, मर्ई।

पोलाबी (پولابی) फा. वि.–अनुभव होनेवाली वस्तु, हिस्सी।

पोले सफ़ेद (پول سفید) फा. पुं.–रुपया, चाँदी का सिक्का।

पोले सिपाह (پول سیاہ) फा. पुं.–पैसा, ताँबे का सिक्का।

पोश (پوش) फा. प्रत्य.–छिपानेवाला, जैसे—'ऐबपोश' दोष छिपानेवाला।

पोशाक (پوشاک) फा. स्त्री.–पहनने के कपड़े, वस्त्र, वसन, परिच्छद।

पोशिंदः (پوشندہ) फा. वि.–पहननेवाला; छिपानेवाला।

पोशिश (پوشش) फा. स्त्री.–वस्त्र, लिबास; पहनावा।

पोशीदः (پوشیدہ) फा. वि.–पह्नाया हुआ; छिपाया हुआ, गुप्त; ख़िल्अत; शिकारी का जाल।

पोशीदगी (پوشیدگی) फा. स्त्री.–छिपाव, दुराव; पहनाव।

पोशीदनी (پوشیدنی) फा. वि.–पहनाने योग्य; पहनने के कपड़े; छिपाने योग्य।

पोसीदः (پوسیدہ) फा. वि.–पुराना होकर घिसा-पिसा, जीर्ण, जर्जर, शीर्ण।

पोस्तः (پوستہ) फा. पुं.–डाकखाना, पोस्ट आफ़िस।

पोस्त (پوست) फा. पुं.–खाल, त्वचा, जिल्द; पेड़ की छाल; पिशुनता, ग़ीबत।

पोस्तकंदः (پوست کندہ) फा. वि.–स्पष्ट, बिलकुल साफ़, खुला हुआ।

पोस्ततख़्त (پوست تخت) फा. पुं.–साधुओं का बिछौना जो हिरन या शेर की खाल का हो।

पोस्तमाल (پوست مال) फा. पुं.–चमड़ा मढ़ी हुई वस्तु।

पोस्तीं (پوستیں) फा. स्त्री.–'पोस्तीन' का लघु., दे. 'पोस्तीन'।

पोस्तींदोज़ (پوستیں دوز) फा. वि.–पोस्तीन सीनेवाला, अर्थात् बनानेवाला।

पोस्ती (پوستی) फा. वि.–अफ़ीम खानेवाला, मदक पीनेवाला, मदकची।

पोस्तीख़ानः (پوستی خانہ) फा. पुं.–मदकख़ानः।

पोस्तीन (پوستیں) फा. स्त्री.–लोमड़ी, समूर, सिंजाब आदि रुवेंदार जंतुओं की खाल से बनाया हुआ कोट जो शीत-प्रधान देशों में पहना जाता है, इसके रुएँ भीतर और खाल ऊपर रहती है।

पोस्तीने गुर्ग (پوستینِ گرگ) फा. स्त्री.–भेड़िए की खाल या उसका पोस्तीन।

पोस्तीने रोबाह (پوستینِ روباہ) फा. स्त्री.–लोमड़ी की खाल या उसका पोस्तीन।

पोस्तीने शेर (پوستینِ شیر) फा. स्त्री.–शेर की खाल या उसका पोस्तीन।

फ़

फ़ंजनोश (فنجنوش) फा. पुं.–लोहे का मैल, मंडूर, ख़ुब्सुल हदीद।

फ़ंद (فند) अ. पुं.–छल, कपट, मक्र, फ़रेब।

फ़अ्आल (فعال) अ. वि.–बहुत काम करनेवाला।

फ़क़ (فق) अ. वि.–चेहरे की रंगत का विकार या उड़ जाना।

फ़क [क्क] (فک) अ. पुं.–जवड़ा, कल्ला; मोचन, छूटना।

फ़क़त (فقط) अ. वि.–बस, ख़त्म, समाप्त; केवल, सिर्फ़; इतिश्री, तम्मत।

फ़क़ार (فقار) अ. पुं.–'फ़िक्र:' का बहु., पीठ के गुरिए।

फ़क़ाह (فقاہ) अ. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, मेधा, दानाई।

फ़क़ाहत (فقاہت) अ. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, मनीषा, मेधा, अक़्लमंदी।

फ़क़ीअ (فقیع) अ. स्त्री.–जौ की शराब।

फ़क़ीद (فقید) अ. वि.–अप्राप्य, नायाब।

फ़क़ीदुन्नज़ीर (فقیدالنظیر) अ. वि.–जिसके समान दूसरा न हो, अद्वितीय, अनुपम, लाजवाब।

फ़क़ीदुलमिसाल (فقیدالمثال) अ. वि.–दे. 'फ़क़ीदुन्नज़ीर'।

फ़क़ीदुलमिस्ल (فقیدالمثل) अ. वि.–दे. 'फ़क़ीदुन्नज़ीर'।

फ़क़ीर (فقیر) अ. वि.–भिक्षुक, मँगता, भिखमंगा; संन्यासी, दरवेश; आसक्त, आशिक़; नम्रता-प्रदर्शन के लिए वक्ता अपने को भी कहता है।

फ़क़ीरदोस्त (فقیردوست) अ. फा. वि.–साधु-संतों में भक्ति भाव रखनेवाला।

फ़क़ीरमनिश (فقیرمنش) अ. फा. वि.–साधुओं-जैसे सीधे-सादे आचार-व्यवहारवाला।

फ़क़ीरानः (فقیرانہ) अ. फा. वि.–फ़क़ीरों और साधुओं-जैसा।

फ़क़ीरी (فقیری) अ. स्त्री.–साधुता, दरवेशी; भिखमंगापन, मँगताई।

फ़क़ीह (فقیہ) अ. वि.–धर्मशास्त्र का विद्वान्, मुस्लिम धर्मशास्त्र को पूर्णरूपेण जाननेवाला।

फ़क़ीहाँ (فقیہاں) अ. फा. पुं.–'फ़क़ीह' का बहु., फ़क़ीह लोग।

फ़कैफ़ (فکیف) अ. अव्य.–पस, क्योंकर।

फ़क्कुर्रह्न (فک الرہن) अ. पुं.–बंधक-मोचन, रेहन से चीज़ का छूटना।

फ़क्के अस्फ़ल (فک اسفل) अ. पुं.–नीचे का जवड़ा।

फ़क्के आ'ला (فک اعلی) अ. पुं.–ऊपर का जवड़ा।

फ़क्के रह्न (فک رہن) अ. पुं.–बंधन-मोचन।

फ़क़्र (فقر) अ. पुं.–दरिद्रता, कंगाली; साधुता, दरवेशी।

फ़ख़ामत (فخامت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; आदर, क़द्र; मोटापन।

फ़ख़िज़ (فخذ) अ. स्त्री.–जाँघ, रान।

फ़ख़ीम (فخیم) अ. वि.–प्रतिष्ठावान्, ज़ी इज़्ज़त।

फ़ख़्ज़ (فخذ) अ. स्त्री.–रान, जाँघ, दे. 'फ़ख़िज़', दो. शु. हैं।

फ़ख़्र (فخر) अ. पुं.–गर्व, गौरव, नाज़; अभिमान, अहंकार, घमंड; शेख़ी, डींग।

फ़ख़्रआमेज़ (فخرآمیز) फा. अ. वि.–गर्वपूर्ण, फ़ख़्रियः।

फ़ख़्रन (فخراً) अ. अव्य.–गर्वसहित, घमंड के साथ।

फ़ख़्रियः (فخریہ) अ. अव्य.–गर्व के तौर पर, घमंड से।

फ़ख़्री (فخری) अ. वि.–एक क़िस्म का अंगूर; शाह फ़ख़्रुद्दीन के सिलसिले का मुरीद।

फ़ख़्रे क़ौम (فخر قوم) अ. पुं.–वह व्यक्ति जिस पर राष्ट्र गर्व करे।

फ़ख़्रे ख़ानदान (فخر خاندان) अ. फा. पुं.–जिससे कुल की मर्यादा बढ़े, वह व्यक्ति, कुलभूषण।

फ़ख़्रे मिल्लत (فخر ملت) अ. पुं.–दे. 'फ़ख़्रे क़ौम'।

फ़ख़्रे मुल्क (فخر ملک) अ. पुं.–देश के लिए गर्व का कारण व्यक्ति।

फ़ख़्रे वतन (فخروطن) अ. पुं.–दे. 'फ़ख़्रे मुल्क'।

फ़ग़ (فغ) फा. पुं.–मूर्ति, प्रतिभा, बुत।

फ़ग़्फ़ूर (فغفور) अ. पुं.–चीन के शासकों की उपाधि।

फ़ज [ज्ज] (فج) अ. पुं.–दो पहाड़ों के बीच का चौड़ा रास्ता।

फ़जरः (فجرہ) अ. पुं.–फ़ाजिर का बहु., व्यभिचारी लोग, कदाचारी लोग।

फ़ज़ा' (فزع) अ. पुं.–भय, त्रास, डर।

फ़ज़ा (فضا) अ. स्त्री.–खुली हुई जगह, मैदान; वातावरण, माहौल; शोभा, रौनक़, बहार; खुली हुई हरियालीदार जगह।

फ़ज़ाइल (فضائل) अ. पुं.–'फ़ज़ीलत' का बहु., अच्छाइयाँ, ख़ूबियाँ।

फ़ज़ाई (فضائی) अ. वि.–फ़ज़ा से सम्बन्धित।

फ़ज़ाए चर्ख़ (فضاے چرخ) अ. फा. स्त्री.–वह ख़ाली स्थान जो आकाश और पृथ्वी के बीच में है, अंतरिक्ष, शून्य।

फ़ज़ाए ज़ह्र आलूद (فضاے زهر آلود) अ. फा. स्त्री.–दूषित वातावरण, ज़हरीला माहौल।

फ़ज़ाहत (فضاحت) अ. स्त्री.–दे. 'फ़ज़ीहत'।

फ़जीअत (فجیعت) अ. स्त्री.–पीड़ा, वेदना, दर्द; आपत्ति, विपदा, मुसीबत।

फ़ज़ीलत (فضیلت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; प्रधानता, तर्जीह।

फ़ज़ीलतमआब (فضیلت معاب) अ. वि.–प्रतिष्ठावान्।

फ़ज़ीह (فضیح) अ. वि.–निंदित, रुस्वा; अपमानित, अनादृत, ज़लील।

फ़ज़ीहत (فضیحت) अ. स्त्री.–निंदा, अपयश, रुस्वाई; अपमान, ज़िल्लत।

फ़जूर (فجور) अ. वि.–व्यभिचारी, लंपट, हरामकार; दुराचारी, कदाचारी, बद आ'माल।

फ़ज्जार (فجار) अ. वि.–बहुत अधिक दुराचारी और लंपट।

फ़ज्र (فجر) अ. स्त्री.–प्रातःकाल, भोर, सवेरा; सवेरे की नमाज़।

फ़ज्री (فجری) अ. वि.–एक प्रकार का क़लमी आम।

फ़ज़्ल (فضل) अ. पुं.–कृपा, दया, मेह्रबानी; प्रतिष्ठा, श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; विद्वत्ता, फ़ज़ीलत।

फ़ज़्ले इलाही (فضل الہی) अ. पुं.–ईश्वर की दया, दैवी अनुकंपा।

फ़ज़्ले ख़ुदा (فضل خدا) अ. फा. पुं.–ईश्वर की कृपा।

फ़ज़्ले मौला (فضل مولی) अ. पुं.–दे. 'फ़ज़्ले ख़ुदा'; फ़क़ीरों की दुआ, जिसका अर्थ है तुम पर खुदा का साया रहे।

फ़ज़्ले रब्बी (فضل ربی) अ. पुं.–दे. 'फ़ज़्ले ख़ुदा'।

फ़ज़्ले हक़ (فضل حق) अ. पुं.–दे. फ़ज़्ले ख़ुदा।

फ़ज़्ह (فضح) अ. स्त्री.–फ़ज़ीहत, निंदा, रुस्वाई।

फ़ता (فتیٰ) अ. पुं.–युवा, युवक, तरुण, जवान मर्द।

फ़तात (فتات) अ. स्त्री.–युवती, नवला, तरुणी, जवान स्त्री।

फ़तानत (فطانت) अ. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, मेधा, अक़्लमंदी।

फ़तिन (فطن) अ. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद; चतुर, होशियार; प्रतिभाशाली, ज़हीन।

फ़तीन (فطین) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; प्रतिभावान्, तब्बाअ; चतुर, होशियार।

फ़तीर (فطیر) अ. वि.–ख़मीर का उलटा, पतला गुँधा हुआ आटा जिसकी चपाती पकती है।

फ़तीलः (فتیله) अ. पुं.–चिराग़ की बत्ती; भूत और जिन उतारनेवालों की बत्ती जिसे वह चिराग़ में जलाकर प्रेतबाधा-ग्रस्त को दिखाते हैं।

फ़तीलसोज़ (فتیل سوز) अ. फा. पुं.–चौमुखा दीवट।

फ़त्क़ (فتق) अ. पुं.–आँत उतरने का रोग, अंत्रवृद्धि।

फ़त्ताँ (فتاں) अ. वि.–फ़ित्नः पैदा करनेवाला।

फ़त्ताह (فتاح) अ. वि.–खोलनेवाला; ईश्वर।

फ़त्वा (فتوا) अ. पुं.–किसी धार्मिक विषय में धर्मशास्त्र-वेत्ता का लिखित आदेश, धर्मादेश, व्यवस्था।

फ़त्हः (فتحه) अ. पुं.–उर्दू में 'अ' की मात्रा, ज़बर (—')

फ़त्ह (فتح) अ. स्त्री.–विजय, जय, जीत; सफलता, कामयाबी।

फ़त्हनामः (فتح نامه) अ. फा. पुं.–वह गद्य या पद्य का लेख जो किसी विजय के सुअवसर पर लिखा जाय।

फ़त्हमंद (فتح مند) अ. फा. वि.–विजय प्राप्त, विजेता।

फ़त्हमनार (فتح منار) अ. पुं.–वह स्तंभ जो किसी विजय की निशानी के रूप में बनाया जाय, जयस्तंभ।

फ़त्हयाब (فتح یاب) अ. फा. वि.–जिसने विजय प्राप्त की हो, विजेता।

फ़त्हयाबी (فتح یابی) अ. फा. स्त्री.–विजय-प्राप्ति, जीत हासिल करना, जीतना।

फ़त्हे मुबीन (فتح مبین) अ. स्त्री.–खुली हुई और स्पष्ट जीत।

फ़त्होज़फ़र (فتح وظفر) अ. स्त्री.–विजय, जीत।

फ़त्होशिकस्त (فتح وشکست) अ. फा. स्त्री.–जीत और हार, विजय और पराजय।

फ़दक (فدک) अ. पुं.–एक गाँव जिसमें हज़्रत मुहम्मद साहिब का खजूरों का बाग़ था।

फ़दामत (فدامت) अ. स्त्री.–अनीति, अन्याय, ज़ुल्म; उद्दंडता, अक्खड़पन।

फ़न (فن) अ. पुं.–कला, आर्ट; हस्तशिल्प, दस्तकारी; छल, फ़रेब; इंद्रजाल, बाज़ीगरी; गुण, हुनर; विद्या की कोई शाखा, जैसे—'तिब का फ़न' अर्थात् चिकित्साशास्त्र।

फ़नकार (فنکار) अ. फा. पुं.–कलाकार, कलावान्।

फ़नकारानः (فنکارانه) अ. फा. अव्य.–कलापूर्ण।

फ़नकारी (فنکاری) अ. फा. स्त्री.–कलाकारी।

फ़नदाँ (فنداں) अ. फा. वि.–कलाविज्ञ, कला-मर्मज्ञ, कला-निपुण।

फ़नदानी (فن دانی) अ. फा. स्त्री.–कला जानना, कला का मर्म जानना।

फ़ना (فنا) अ. स्त्री.–मृत्यु, मरण, मौत; लुप्त, ग़ाइब; नष्ट, बरबाद।

फ़नाअंजाम (فنا انجام) अ. फा.–जिसका परिणाम मृत्यु हो।

फ़नाआमादः (فنا آمادہ) अ. फा. वि.–जो नष्ट होने के लिए तैयार हो, नाशोन्मुख।

फ़नाईयत (فنائیت) अ. स्त्री.–फ़ना हो जाना, आत्मसात् हो जाना, विलीन हो जाना।

फ़नापिज़ीर (فناپزیر) अ. फा. वि.–जिसे अंत में नाश होना हो, मरणधर्मा।

फ़नाफ़िल्लाह (فنا فی اللہ) अ. वि.–वह जो ईश्वर में लीन हो गया हो, ब्रह्मलीन।

फ़नाफ़िशशैख़ (فنا فی الشیخ) अ. वि.–जो अपने पीर में लीन हो।

फ़न्नी (فنی) अ. वि.–किसी फन से सम्बन्धित।

फ़न्ने किताबत (فن کتابت) अ. पुं.–कापीनवीसी की कला, लिपि-कला।

फ़न्ने जर्राही (فن جراحی) अ. पुं.–चीर-फाड़ अर्थात् शल्य-चिकित्सा की कला।

फ़न्ने ता'मीर (فن تعمیر) अ. पुं.–वास्तुकला, वास्तुविद्या।

फ़न्ने तीरंदाज़ी (فن تیراندازی) अ. फा. पुं.–धनुर्वेद, धनुर्विद्या।

फ़न्ने मुसव्विरी (فن مصوری) अ. पुं.–चित्रकला, चित्रविद्या।

फ़न्ने मूसीक़ी (فن موسیقی) अ. पुं.–गानकला, संगीत-कला, संगीतविद्या, गानविद्या।

फ़न्ने लतीफ़ (فن لطیف) अ. पुं.–ललित कला, सत्कला।

फ़बिहा (فبہا) अ. अव्य.–ठीक, ख़ूब।

फ़म (فم) अ. पुं.–मुख, मुँह।

फ़मे मे'दः (فم معدہ) अ. पुं.–आमाशय का मुँह या द्वार।

फ़मे रहिम (فم رحم) अ. पुं.–गर्भाशय का मुँह।

फ़य्याज़ (فیاض) अ. पुं.–दे. 'फ़ैयाज़'।

फ़रंग (فرنگ) फा. पुं.–दे. 'फरंगिस्तान'।

फ़रंगिस्तान (فرنگستان) फा. पुं.–फरंगियों का देश, इँगलैंड।

फ़रंगी (فرنگی) फा. पुं.–फ़रंगिस्तान का निवासी, अंग्रेज़।

फ़र (فر) फा. स्त्री.–वैभव, शानोशौकत; ज्योति, प्रकाश, चमक; प्रतिबिंब, अक्स।

फ़रजः (فرجہ) अ. पुं.–दरिद्रता और तंगी से छुटकारा पाना, दशा का उन्नतिशील होना।

फ़रज (فرج) अ. स्त्री.–सुगमता, आसानी; सुख, चैन, आराम।

फ़रफ़रः (فرفرہ) फा. स्त्री.–फिरकी।

फ़रफ़र (فرفر) फा. अव्य.–जल्दी-जल्दी।

फ़रस (فرس) अ. पुं.–अश्व, घोड़ा।

फ़रह (فرح) अ. पुं.–हर्ष, आनंद, ख़ुशी, फ़र्हत।

फ़रहबख़्श (فرح بخش) अ. फा. वि.–ख़ुशी देनेवाला, फ़र्हत देनेवाला, आनन्ददाता।

फरहमंद (فوحمند) अ. फा.–हर्षित, आनंदित, ख़ुश।

फ़राइज़ (فرائض) अ. पुं.–'फ़रीज़:' का बहु., कर्तव्य।

फ़राइज़े क़ौमी (فرایض قومی) अ. पुं.–वह कर्तव्य जो राष्ट्र की ओर से आवश्यक हों।

फ़राइज़े मंसबी (فرائض منصبی) अ. पुं.–वह कर्तव्य जो नौकरी के लिए ज़रूरी हों; वह कर्तव्य जो मानवता के नाते लाज़िमी हों।

फ़राइज़े मिल्ली (فرائض ملی) अ. पुं.–दे. 'फ़राइजे क़ौमी'।

फ़राइज़े मुल्की (فرائض ملکی) अ. पुं.–वह कर्तव्य जो एक देशवासी के लिए अनिवार्य हैं।

फ़राइद (فرائد) अ. पुं.–'फ़रीद:' का बहु., अकेले लोग, अद्वितीय वस्तुएँ।

फ़राइनः (فراعنہ) अ. पुं.–'फ़िऔ़न' का बहु., मिस्र के प्राचीन शासक जिनके शव अह्राम में मिलते हैं।

फ़राख़ (فراخ) फा. वि.–विस्तृत, वसीअ, चौड़ा-चकला।

फ़राख़अब्रू (فراخ ابرو) फा. वि.–हँसमुख, ज़िंद:दिल।

फ़राख़आस्तीं (فراخ آستیں) फा. वि.–मुक्तहस्त, दानी, 'सख़ी।

फ़राख़चश्म (فراخ چشم) फा. वि.–ख़ूब ख़र्च करनेवाला, दिल खोलकर खाने-खिलानेवाला।

फ़राख़दस्त (فراخ دست) फा. वि.–ख़ूब देने-लेनेवाला; दौलतमंद, संपन्न।

फ़राखदामन (فراخ دامن) फा. वि.–धनसंपन्न, समृद्ध, दौलतमंद।

फ़राख़दिल (فراخ دل) फा. वि.–दे. 'फ़राखचश्म'।

फ़राख़पेशानी (فراخ پیشانی) फा. वि.–चौड़ी पेशानीवाला, भाग्यवान्; हँसमुख, शीलवान्।

फ़राख़सीनः (فراخ سینہ) फा. वि.–चौड़े सीनेवाला, बहादुर।

फ़राख़हौसलः (فراخ حوصلہ) फा. अ. वि.–बड़े हौसलेवाला, उच्चोत्साही।

फ़राख़हौसलगी (فراخ حوصلگی) फा. अ. स्त्री.–हिम्मत बड़ी होना।

फ़राख़ी (فراخی) फा. स्त्री.–विस्तार, फैलाव, कुशादगी।

फ़राख़ुर (فراخور) फा. पुं.–योग्य, पात्र, लाइक़।

फ़राग़ (فراغ) अ. पं.–दे. 'फ़राग़त'।

फ़राग़त (فراغت) अ. स्त्री.–अवकाश, छुट्टी, फ़ुर्सत; छुटकारा, मुक्ति, नजात; समृद्धि, दौलतमंदी; सुख, आराम; संतोष, इत्मीनान।

फ़राग़बाल (فراغ بال) अ. फा. वि.–संतोष और सुख के साथ जीवन व्यतीत करनेवाला।

फ़राग़बाली (فراغ بالی) अ. फा. स्त्री.–सुख और बेफ़िक्री से जीवन गुज़ारना।

फ़रागे कुल्ली (فراغ کلی) अ. पुं.–पूर्ण संतोष, पूरा इत्मीनान।

फ़राग़े ख़ातिर (فراغ خاطر) अ. पुं.–मन का संतोष, चित्त की एकाग्रता।

फ़राग़े दिल (فراغ دل) अ. फा. पुं.–दे. 'फ़रागे ख़ातिर'।

फ़राग़े बातिन (فراغ باطن) अ. पुं.–दे. 'फ़राग़े ख़ातिर'।

फ़राज़ (فراز) फा. पुं.–ऊँचाई, बलंदी।

फ़राज़िंदः (فرازنده) फा. वि.–उठानेवाला, ऊँचा करनेवाला, उन्नायक।

फ़राज़ोनिशेब (فرازونشیب) फा. पुं.–ऊँच-नीच, उतार-चढ़ाव।

फ़रादीस (فرادیس) अ. पुं.–'फ़िर्दौस' का बहु., स्वर्ग-समूह।

फ़रामीन (فرامین) फा. पुं.–'फ़र्मान' का बहु., राजादेश।

फ़रामुश (فرامش) फा. वि.–'फ़रामोश' का लघु., दे. फरामोश, भूला हुआ, विस्मृत।

फ़रामुशी (فرامشی) फा. स्त्री.–'फ़रामोशी' का लघु., दे. फ़रामोशी, भूल।

फ़रामोश (فراموش) फा. वि.–भूला हुआ, विस्मृत, (प्रत्य.) भूल जानेवाला, जैसे—'वादःफ़रामोश' वादा करके भूल जानेवाला।

फ़रामोशकार (فراموش کار) फा. वि.–भुलक्कड़, बहुत भूलनेवाला।

फ़रामोशकारी (فراموش کاری) फा. स्त्री.–बहुत भूलना।

फ़रामोशी (فراموشی) फा. स्त्री.–भूल, भूलने का भाव।

फ़रार (فرار) फा. पुं.–पलायन, भागना; छुप जाना, रूपोशी, दे. 'फ़िरार', परंतु उर्दू में 'फ़रार' ही बोलते हैं।

फ़राश (فراش) अ. पुं.–पतंगा, शलभ, पर्वाना।

फ़रासिख़ (فراسخ) अ. पुं.–'फ़र्सख़' का बहु.।

फ़राहत (فراهت) अ. स्त्री.–बुद्धि की तीव्रता; चतुरता, होशियारी; घोड़े की अच्छी चाल।

फ़राहम (فراهم) फा. वि.–एकत्र, इकट्ठा, एक जगह।

फ़राहमी (فراهمی) फा. स्त्री.–एकत्र होना, इकट्ठा होना।

फ़रीक़ (فریق) अ. पुं.–पक्ष, पार्टी; दल, गुरोह; वादी और प्रतिवादी।

फ़रीक़े मुख़ालिफ़ (فریق مخالف) अ. पुं.–विरोधी पक्ष या दल।

फ़रीक़े मुतख़ासिम (فریق متخاصم) अ. पुं.–शत्रु या लड़नेवाला पक्ष।

फ़रीक़े सानी (فریق ثانی) अ. पुं.–दूसरे पक्ष अर्थात् विरोधी दल का व्यक्ति।

फ़रीक़ैन (فریقین) अ. पुं.–उभय पक्ष, दोनों पार्टियाँ।

फ़रीज़ः (فریضه) अ. पुं.–कतव्य, फ़र्ज़; नमाज़।

फ़रीज़ाए मज़्हबी (فریضۂ مذهبی) अ. पुं.–धार्मिक कृत्य, जैसे—नमाज़, रोज़ा, हज आदि।

फ़रीद (فرید) अ. वि.–एकाकी, अकेला; अद्वितीय, बेमिस्ल।

फ़रीदुलअस्र (فرید العصر) अ. वि.–जो अपने समय में अकेला हो, अद्वितीय, अनुपम, बेमिसाल।

फ़रेफ़्तः (فریفته) फा. वि.–शुद्ध उच्चारण 'फिरेफ़्तः' है, परंतु उर्दू में 'फ़रेफ़्तः' बोलते हैं, मुग्ध, आसक्त, आशिक़; छलित, धोखा खाया हुआ।

फ़रेब (فریب) फा. पुं.–छल, कपट, धोखा; मिष, मिस, बहाना, इसका शुद्ध उच्चारण 'फ़िरेब' है, परंतु उर्दू में 'फ़रेब' है, (प्रत्य.) छलनेवाला, जैसे—'दिल फ़रेब' मन को छलनेवाला।

फ़रेबकार (فریب کار) फा. वि.–छली, कपटी, धोखेबाज़।

फ़रेबख़ुर्दः (فریب خورده) फा. वि.–छलित, वंचित, ठगा हुआ, फ़रेब खाया हुआ।

फ़रेबख़ुर्दगी (فریب خوردگی) फा. स्त्री.–छला जाना, फ़रेब खाना, धोखे में आ जाना।

फ़रेबदादः (فریب داده) फा. वि.–जिसे धोखा दिया गया हो।

फ़रेबदिहिंदः (فریب دهنده) फा. वि.–धोखा देनेवाला, छल करनेवाला।

फ़रेबदिही (فریب دهی) फा. स्त्री.–धोखा देना, छल करना।

फ़रेबी (فریبی) फा. वि.–धोखेबाज़, छली।

फ़रेबे अक़्ल (فریب عقل) फा. अ. पुं.–बुद्धिभ्रम, अक्ल का धोखा, बुद्धि का धोखे में पड़ जाना।

फ़रेबे नज़र (فریب نظر) फा. अ. पुं.–दृष्टिभ्रम, निगाह का धोखा, दृष्टि का धोखे में पड़ जाना।

फ़रोख़्तः (فروخته) फा. वि.–बेचा हुआ, फ़ारसी 'फ़िरोख़्तः' है, परंतु उर्दू में यही है।

फ़रोख़्त (فروخت) फा. स्त्री.–बिक्री।

फ़रोख़्तगी (فروختگی) फा. स्त्री.–बिक्री, बचने का काम।

फ़रोग़ (فروغ) फा. पुं.–प्रकाश, ज्योति, रोशनी; उन्नति, तरक़्क़ी; शोभा, रौनक़, यह शब्द 'फ़ुरोग़' है, परंतु

उर्दू में 'फ़रोग़' ही है। जैसे—"जितना फ़रोग़ शोलए-हुस्ने-सनम में है, उतनी तपिश कहाँ है, दिले बेक़रार में।"

फ़रोगुज़ाश्त (فروگزاشت) फा. स्त्री.–दे. 'फ़िरोगुज़ाश्त', वही शुद्ध है।

फ़रोज़ाँ (فروزاں) फा. वि.–दे. 'फ़ुरोज़ाँ', वह शुद्ध है।

फ़रोदगाह (فرودگاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति, पथिक के रूप में थोड़े दिन ठहरे, शुद्ध 'फ़िरोद' है परंतु उर्दू में 'फ़रोद' भी है।

फ़रोश (فروش) फा. प्रत्य.–बेचनेवाला, जैसे—'मेव:फ़रोश', मेवा बेचनेवाला।

फ़रोशिंद: (فروشندہ) फा. वि.– बेचनेवाला।

फ़रोशीद: (فروشیدہ) फा. वि.– बेचा हुआ, बेची हुई वस्तु।

फ़रोशीदनी (فروشیدنی) फा. अव्य.–बेचने के योग्य, जो वस्तु बेची जा सके।

फ़र्अ (فرع) अ. स्त्री.–शाखा, डाली; किसी मूल का कोई अंश।

फ़र्ई (فرعی) अ. वि.–जो मूल में से निकला हो।

फ़र्क़ (فرق) अ. पुं.–शिर, सिर, सर; अंतर, भेद; दो संख्याओं का शेष; दूरी, फ़ासिला; पृथक्ता, जुदाई; मतभेद, इख़्तिलाफ़; ह्रास, कमी।

फ़र्क़दैन (فرقدین) अ. पुं.–दो तारे जो उत्तरी ध्रुव में हैं और शाम से सवेरे तक बराबर दिखाई पड़ते हैं, कभी छिपते नहीं।

फ़र्ख़ंद: (فرخندہ) फा. वि.–दे. 'फ़र्ख़ुंद:', दोनों, शुद्ध हैं।

फ़र्ख़ुंद: (فرخندہ) फा. वि.–शुभान्वित, कल्याणकारी, मुबारक।

फ़र्ख़ुंद:ख़ू (فرخندہ خو) फा. वि.–अच्छे स्वभाववाला, सत्प्रकृति।

फ़र्ख़ुंद:ताले' (فرخندہ طالع) फा. अ. वि.–भाग्यशाली, सौभाग्यवान्।

फर्ख़ुंद:पै (فرخندہ پے) फा. वि.–जिसका कहीं आना शुभान्वित हो, मुबारक क़दम।

फ़र्ख़ुंद:फ़ाल (فرخندہ فال) फा. वि.–भाग्यवान्, ख़ुशनसीब।

फ़र्ख़ुंद:बख़्त (فرخندہ بخت) फा. वि.–दे. 'फ़र्ख़ुंद: ताले''।

फ़र्ख़ुंद:राय (فرخندہ رائے) फा. अ. वि.–जिसका परामर्श और जिसकी सलाह बहुत अच्छी होती हो।

फ़र्ख़ुंद:सिफ़ात (فرخندہ صفات) फा. अ. वि.–अच्छे गुणोंवाला, सद्गुण-संपन्न।

फ़र्ग़ुल(-फ़र्गुल) (فرغل-فرگل) फा. उभ.–रुईदार लबादा, रुईदार चुग़ा; वह रुईदार छोटा कोट जो बच्चों को पहनाते हैं और जिसमें टोपी भी लगी रहती है।

फ़र्जः (فرجہ) अ. पुं.–खोलना,; खुलना।

फ़र्ज़ंद (فرزند) फा. पुं.–आत्मज, तनय, पुत्र, बेटा, लड़का।

फ़र्ज़ंदी (فرزندی) फा. वि.–बेटापन, पुत्रत्व, बाप-बेटे का नाता।

फ़र्ज़ंदे अर्जमंद (فرزند ارجمند) फा. पुं.–सपूत, होनहार बेटा, भव्य पुत्र।

फ़र्ज़ंदे नरीनः (فرزند نرینہ) फा. पुं.–बेटा, पुत्र।

फ़र्ज (فرج) अ. स्त्री.–दो चीज़ों के बीच की दरार; शिगाफ़, फटन; विवर, छेद; योनि, भग।

फ़र्ज़ (فرض) अ. पुं.–कर्तव्य, ड्यूटी; ईश्वर की ओर से लगाया हुआ धार्मिक कृत्यों का आदेश; अनिवार्य, ज़ुरूरी; ज़िम्मेदारी; वह नमाज़ जिसका क़ुरान में आदेश है।

फ़र्ज़जः (فرزجہ) अ. पुं.–दवा में भिगोकर योनि या गुदाद्वार में रखने का कपड़ा।

फ़र्ज़न (فرضاً) अ. अव्य.–कर्तव्य द्वारा फ़र्ज़ की रू से।

फ़र्ज़शनास (فرض شناس) अ. फा. वि.–जो अपने कर्तव्य को कर्तव्य समझकर करे, कतर्व्य-पालक।

फ़र्ज़शनासी (فرض شناسی) अ. फा. स्त्री.–अपनी ड्यूटी को कर्तव्य समझकर अंजाम देना।

फ़र्जाद (فرجاد) फा. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद।

फ़र्ज़ानः (فرزانہ) फा. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; चतुर, होशियार; कुशल, दक्ष।

फ़र्ज़ानःख़ू (فرزانہ خو) फा. वि.–बुद्धिमान्, चतुर।

फ़र्ज़ानगी (فرزانگی) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, अक़्लमंदी; चतुरता, होशियारी; दक्षता, क़ाबिलीयत।

फ़र्जाम (فرجام) फा. पुं.–अंत, अख़ीर; परिणाम, नतीजा, (प्रत्य.) अंत या परिणामवाला, जैसे—'नेकफ़र्जाम' जिसका अंत या परिणाम सुंदर हो।

फ़र्ज़ीं (فرزیں) फा. पुं.–शत्रंज का एक मोह्रा, वज़ीर।

फ़र्ज़ी (فرضی) अ. वि.–जिसकी केवल कल्पना हो, मूल में न हो, काल्पनिक, क़ियासी।

फ़र्जी (فرجی) फा. स्त्री.–बिना घुंडी तुक्मे की क़बा जो कपड़ों के ऊपर पहनी जाती है, गाउन।

फ़र्ज़े ऐन (فرض عین) अ. पुं.–मूल कर्तव्य, सही ड्यूटी।

फ़र्ज़े किफ़ायः (فرض کفایہ) अ. पुं.–वह फ़र्ज़ जो एक आदमी के अदा करने से सब की ओर से अदा हो जाय, जैसे—किसी सभा में किसी के सलाम का जवाब एक आदमी दे दे तो सब की ओर से हो जाता है।

फ़र्ज़े मंसबी (فرض منصبی) अ. पुं.–वह कर्तव्य जो किसी के लिए मुक़र्रर हो, जैसे—पुलिस के लिए रक्षा का।

फ़र्जे मुहाल (فرض محال) अ. पुं.–ऐसी बात मान लेना या फ़र्ज़ कर लेना जो हो ही न सके।

फ़र्त (فرط) अ. पुं.–अधिकता, बाहुल्य, इफ़ात।

फ़र्तूत (فرتوط) फा. वि.–बहुत बूढ़ा।

फ़र्ते ऐश (فرط عیش) अ. पुं.–भोग-विलास और धन-दौलत का बाहुल्य।

फ़र्ते ग़ज़ब (فرط غضب) अ. पुं.–क्रोध का आवेग, .कोप का प्रकोप।

फ़र्ते ग़म (فرط غم) अ. पुं.–शोक और दुःख का आधिक्य।

फ़र्ते मसर्रत (فرط مسرت). अ. पुं.–हर्ष और आनंद की प्रचुरता, हर्षातिरेक।

फ़र्ते महब्बत (فرط محبت) अ. पुं.–प्रेम की झोंक, प्रेम का आवेग।

फ़र्ते शादी (فرط شادی) अ. फा. पुं.–दे. 'फ़र्ते मसर्रत'।

फ़र्ते शौक़ (فرط شوق) अ. पुं.–अभिलाषा का जोश।

फ़र्द (فرد) अ. पुं.–एक व्यक्ति, एक शख़्स; एकाकी, अकेला; अद्वितीय, बेमिस्ल; दुलाई, रजाई; चादर।

फ़र्द (فرد) फा. स्त्री.–हिसाब का रजिस्टर; हुक्मनामा; निमंत्रण का सूचीपत्र।

फ़र्दन फ़र्दन (فرداً فرداً). अ. अव्य.–एक-एक करके, हर व्यक्ति को, अलग-अलग।

फ़र्दा (فردا) फा. पुं.–आनेवाला कल।

फ़र्दाए क़ियामत (فردائے قیامت) फा. अ. पुं.–प्रलय का दिन, जब सब के हिसाब-किताब होंगे।

फ़र्दाए महशर (فردائے محشر) फा. अ. पुं.–दे. 'फ़र्दाए क़ियामत'।

फ़र्दाए हश्र (فردائے حشر) फा.अ.पुं.–दे. 'फ़र्दाए क़ियामत'।

फ़र्दे आ'माल (فرد اعمال) अ. फा. स्त्री.–कर्मपत्र, आ'माल-नामः।

फ़र्दे क़रारदादे जुर्म (فرد قرارداد جرم) अ. फा. स्त्री.–अभियोगपत्र, चार्जशीट।

फ़र्दे जुर्म (فرد جرم) फा. अ. स्त्री.–अभियोग-पत्र, फ़र्दे क़रारदादे जुर्म।

फ़र्दे बशर (فرد بشر) अ. पुं.–एक व्यक्ति, एक आदमी।

फ़र्दे बातिल (فرد باطل) फा. अ. स्त्री.–हिसाब का ग़लत काग़ज़; वह काग़ज़ जो कटा-फटा हो और माना न जा सके; निकम्मी चीज़।

फ़र्दे वाहिद (فردواحد) अ. पुं.–एक आदमी, एक व्यक्ति।

फ़र्दे हिसाब (فرد حساب) फा. अ. स्त्री.–हिसाब का काग़ज़, चिट्ठा, बीजक; वह काग़ज़ जिस पर कोई लेन-देन या हिसाब उतारा गया हो।

फ़र्फ़ियून (فرفیون) अ. स्त्री.–थूहड़ का सुखाया हुआ दूध जो दवा के काम आता है।

फ़र्बिही (فربہی) फा. स्त्री.–मोटापा, मोटापन, स्थूलता।

फ़र्बेह (فربہ) फा. वि.–मोटा-ताज़ा, लहीम-शहीम, स्थूल।

फ़र्बेहअंदाम (فربہ اندام) फा. वि.–स्थूलकाय, मोटे-ताज़े शरीरवाला।

फ़र्मां (فرماں) फा. पुं.–आज्ञा; शाहीहुक्म, राजादेश, दे. 'फ़र्मान'।

फ़र्मांगुज़ार (فرماں گزار) फा. वि.–शासक, हाकिम, राजा, बादशाह।

फ़र्मांगुज़ारी (فرماں گزاری) फा. स्त्री.–शासन, हुकूमत, राज्य।

फ़र्मांदेही (فرماں دہی) फा. स्त्री.–शासन, हुकूमत, राज्य।

फ़र्मांपिज़ीर (فرماں پزیر) फा. वि.–दे. 'फ़र्मांबरदार'।

फ़र्मांफ़र्मा (فرماں فرما) फा. वि.–शासक, हुक्म चलानेवाला, राज करनेवाला।

फ़र्मांबरदार (فرماں بردار). फा. वि.–आज्ञाकारी, आज्ञा-पालक, ताबे'दार।

फ़र्मांबरदारी (فرماں برداری) फा. स्त्री.–आज्ञापालन, हुक्म मानना।

फ़र्मांरवा (فرماں روا) फा. वि.–शासक, राजा, बादशाह।

फ़र्मांरवाई (فرماں روائی) फा. स्त्री.–शासन, राज, हुकूमत।

फ़र्मा (فرما) फा. प्रत्य.—फ़रमानेवाला, जैसे—'हुक्मफ़र्मा' हुक्म फ़र्मानेवाला, आज्ञादाता।

फ़र्माइश (فرمایش) फा. स्त्री.–माँगना, तलब करना; किसी काम या किसी चीज़ के लिए कहना; कारख़ाने या दुकान के माल का आर्डर।

फ़र्माइशी (فرمایشی) फा. वि.–जिसकी फ़र्माइश की गयी हो; जो फ़र्माइश द्वारा किया गया हो; याचित।

फ़र्मान (فرمان) फा. पुं.–राजादेश, शाही हुक्म; आज्ञा, आदेश, हुक्म।

फ़र्मूदः (فرمودہ) फा. वि.–उक्त, कहा हुआ, फ़र्माया हुआ।

फ़र्याद (فریاد) फा. स्त्री.–सहायता के लिए पुकार, दुहाई; नालिश, न्याय-याचना, इस्तिग़ासः; शिकायत, परिवाद, अनुयोग; आर्तनाद, दुःख की आवाज़।

फ़र्यादख़्वाह (فریادخواہ) फा. वि.–नालिशी, न्याय-याचक।

फ़र्यादख़्वाही (فریادخواہی) फा. स्त्री.–न्याय-याचना, ज़ुल्म की दादरसी चाहना।

फ़र्यादरस (فریادرس) फा. वि.–फ़र्याद सुननेवाला, न्यायकर्ता।

फ़र्यादरसी (فریادرسی) फा. स्त्री.–न्याय करना, फ़र्याद सुनना।

फ़र्यादशनवा (فریادشنوا) फा. वि.–फ़र्याद सुननेवाला।

फ़र्रार (فرار) अ. वि.–पलायन, भागना, शुद्ध उच्चारण ‘फ़िरार’ है, परंतु उर्दू में ‘फ़रार’ ही है।

फ़र्राश (فراش) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसके ज़िम्मे दरबार या मज्लिस आदि में फ़र्श आदि बिछाने और रोशनी आदि करने का प्रबंध हो।

फ़र्राशख़ानः (فراش خانہ) अ. फा. पुं.–वह मकान जिसमें फ़र्श वग़ैरह रखे जाते हों।

फ़र्राशी (فراشی) अ. वि.–फ़र्राश का काम।

फ़र्रुख़ (فرخ) फा. वि.–शुभ, कल्याणकारी; सुन्दर, अच्छा।

फ़र्रुख़क़दम (فرخ قدم) फा. अ. वि.–जिसका आना शुभान्वित हो, मुबारक पै।

फ़र्रुख़तबार (فرخ تبار) फा. वि.–कुलीन, अच्छे ख़ानदान वाला, आर्यभद्र।

फ़र्रुख़निहाद (فرخ نہاد) फा. वि.–सत्प्रकृतिवाला।

फ़र्वरदीन (فروردین) फा. पुं.–पहला ईरानी महीना।

फ़र्श (فرش) अ. पुं.–बिछौना, बिछाने की चीज़; बड़ी जगह में बिछायी जानेवाली बड़ी दरी; समतल भूमि, हमवार ज़मीन; चौरस गच या सीमेंट से पक्की की हुई ज़मीन; पृथ्वीतल, ज़मीन की सतह।

फ़र्शी (فرشی) अ. वि.–फ़र्श पर रखी जानेवाली चीज़, जैसे फ़र्शी हुक़्क़ा; फ़र्श से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु।

फ़र्शे आब (فرش آب) अ. फा. पुं.–समुद्र या नदी का तल।

फ़र्शे ख़ाक (فرش خاک) अ. फा. पुं.–पृथ्वी का तल, सत्हे ज़मीन।

फ़र्शे गुल (فرش گل) अ. फा. पुं.–फूलों का फ़र्श।

फ़र्शे ज़मीं (فرش زمیں) अ. फा. पुं.–दे. ‘फ़र्शे ख़ाक’।

फ़र्शे राह (فرش راہ) अ. फा. पुं.–ज़मीन में बिछा हुआ, रास्ते में बिछी हुई, विनम्र, विनीत,—“पाँव रखता हूँ जब मुहब्वत में, बेकसी फ़र्शे राह होती है।”—जिगर।

फ़र्संग (فرسنگ) फा. पुं.–दे. ‘फ़र्संख़’।

फ़र्स (فرص) अ. पुं.–काटना, फाड़ना; चीरना।

फ़र्संख़ (فرسخ) अ. पुं.–४००० गज़ की दूरी, अंग्रेज़ी मील के हिसाब से लगभग सवा दो मील।

फ़र्सा (فرسا) फा. प्रत्य.–घटानेवाला, जैसे—‘रूहफ़र्सा’ रूह का कम करनेवाला; घिसनेवाला, जैसे—‘जबींफ़र्सा’ माथा रगड़नेवाला।

फ़र्सूदः (فرسودہ) फा. वि.–घिसा हुआ; पुराना, कम, शीर्ण, जीर्ण।

फ़र्सूदःहाल (فرسودہ حال) फा. वि.–पतले हालोंवाला, जिसकी दशा बहुत ख़राब हो, क्षीण दशावाला।

फ़र्सूदगी (فرسودگی) फा. स्त्री.–घिसा-पिसा होना; फटा-पुराना होना।

फ़र्सूदनी (فرسودنی) फा. वि.–घिसने के योग्य।

फ़र्हंग (فرہنگ) फा. स्त्री.–बुद्धि, विवेक, शुऊर, अक़्ल; शब्दकोश, लुग़ात।

फ़र्हाद (فرہاد) फा. पुं.–शीरीं का प्रेमी जिसने शीरीं की आज्ञा से पहाड़ काटा था और एक कुटनी के धोखा देने से उसने अपना सर फोड़ लिया और मर गया।

फ़लक (فلک) अ. पुं.–आकाश, गगन, अंबर, व्योम, आस्मान।

फ़लक़ (فلق) अ. स्त्री.–सवेरे का उजाला, उषा।

फ़लक असास (فلق اساس) अ. वि.–बहुत मज़बूत और बहुत बलंद।

फ़लकक़द्र (فلک قدر) अ. वि.–बहुत बड़े रुतबे और पदवी-वाला।

फ़लकज़दः (فلک زدہ) अ. फा. वि.–आपत्ति में फँसा हुआ, दशाचक्रग्रस्त।

फ़लकजनाब (فلک جناب) अ. वि.–जिसके मकान की चौखट आकाश हो, बहुत बड़े मरतबेवाला।

फ़लकताज़ (فلک تاز) अ. फा. वि.–आकाश पर धावा बोलनेवाला, बहुत बड़ा साहसी।

फ़लकनवर्द (فلک نورد) अ. फा. वि.–आस्मान पर घूमनेवाला, गगनचारी।

फ़लकपरवाज़ (فلک پرواز) अ. फा. वि.–आकाश पर उड़नेवाला, नभश्चर।

फ़लकपायः (فلک پایہ) अ. फा. वि.–आकाश जैसी महान् प्रतिष्ठावाला।

फ़लकपैमा (فلک پیما) अ.फा. वि.–वह व्यक्ति या मंडली जो किसी पहाड़ की चोटी तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हो, पर्वतारोही।

फ़लकफ़र्सा (فلک فرسا) अ. फा. वि.–दे. ‘फ़लकपरवाज़’।

फ़लकबारगाह (فلک بارگاہ) अ. फा. वि.–दे. ‘फ़लक जनाब’।

फ़लकबोस (فلک بوس) अ. फा. वि.–आकाश को चूमने-वाला, आकाश को छूनेवाला, गगनचुंबी, नभःस्पर्शी।

फ़लकमआब (فلک معاب) अ. वि.–बहुत बड़ी प्रतिष्ठा-वाला।

फ़लकमक़ाम (فلک مقام) अ. वि.–दे. ‘फ़लकमआब’।

फ़लकमर्तबः (فلک مرتبہ) अ. वि.–अकाश-जैसी प्रतिष्ठा-वाला, बहुत बड़े मरतबेवाला।

फ़लकरसा (فلک رسا) अ. फा. वि.–दे. ‘फ़लकबोस’।

फ़लकरिकाब (فلک رکاب) अ. फा. वि.–दे. 'फ़लकमर्तबः'।

फ़लकरिफ़्अत (فلک رفعت) अ. वि.–दे. 'फ़लकपायः'।

फ़लकशिकन (فلک شکن) अ.फा. वि–.दे. 'फ़लकशिगाफ़'।

फ़लकशिगाफ़ (فلک شگاف) अ. फा. वि.–आकाश को छेद डालनेवाला, गगनभेदी।

फ़लकसरीर (فلک سریر) अ. वि.–दे. 'फ़लकपायः' जिसका सिंहासन स्वयं अकाश हो।

फ़लकसैर (فلک سیر) अ. वि.–दे. 'फ़लकपरवाज़'।

फ़लकी (فلکی) अ. वि.–आकाशीय, आस्मानी।

फ़लकीयात (فلکیات) अ. स्त्री.–आस्मानों का इल्म, अंतरिक्ष विज्ञान, इल्मुल अफ़्लाक।

फ़लकुलअफ़्लाक (فلک الافلاک) अ. पुं.–सब आस्मानों से ऊँचा अर्थात् सब आस्मानों के ऊपरवाला आस्मान, नवाँ आकाश।

फ़लके अत्लस (فلک اطلس) अ. पुं.–सब से ऊपर का आकाश, जो अतलस की भाँति बिलकुल सादा है।

फ़लके आ'ज़म (فلک اعظم) अ. पुं.–दे. 'फ़लकुल अफ़्लाक'।

फ़लाकत (فلاکت) अ. स्त्री.–दरिद्रता, निर्धनता, ग़रीबी, मुफ़्लिसी।

फ़लाकतज़दः (فلاکت زدہ) अ. फा. वि.–कंगाली का मारा हुआ, दुर्दशाग्रस्त।

फ़लाकतज़दगी (فلاکت زدگی) अ. फा. स्त्री.–कंगाली, दुर्दशा, दरिद्रता, ग़रीबी।

फ़लाख़न (فلاخن) फा. पुं.–गोफन, जिसमें रखकर ढेला फेंका जाता है।

फ़लातून (فلاطون) अ. पुं.–अफलातून का लघु., दे. 'अफ़्लातून'।

फ़लासंग (فلاسنگ) फा. पुं.–फ़लाख़न, गोफन; कानन, वन, जंगल, बियावान।

फ़लासिफ़ः (فلاسفہ) अ. पुं.–'फ़ल्सफ़ी' का बहु., दार्शनिकगण; वैज्ञानिकगण; नैयायिकगण।

फ़लाह (فلاح) अ. स्त्री.–भलाई, कल्याण; उपकार, नेकी; मोक्ष, निजात।

फ़लाहत (فلاحت) अ. स्त्री.–खेती, काश्तकारी।

फ़लाहतपेशः (فلاحت پیشہ) अ. फा. वि.–किसान, कृषक, खेतिहर, काश्तकार।

फ़लाहे दारैन (فلاح دارین) अ. स्त्री.–संसार और परलोक दोनों लोकों की भलाई।

फ़लिहज़ा (فلہذا) अ. अव्य.–बस इस कारण।

फ़लीतः (فلیتہ) तु. पुं.–दे. मूल शब्द 'फ़तीलः', उर्दू में बेपढ़े लोग 'फ़लीतः' भी बोलते हैं।

फ़ल्स (فلس) अ. पुं.–पैसा, तीन पाई का सिक्का; मछली का सिन्ना, शल्क, शकल।

फ़ल्सफ़ः (فلسفہ) अ. पुं.–दर्शनशास्त्र; विज्ञानशास्त्र; न्यायशास्त्र; तर्क, दलील, मंतिक़; विज्ञान, हिक्मत।

फ़ल्सफ़ःदाँ (فلسفہ داں) अ. फा. पुं.–फ़ल्सफ़ः जाननेवाला।

फ़ल्सफ़ःदानी (فلسفہ دانی) अ. फा. स्त्री.–फ़ल्सफ़ः जानना।

फ़ल्सफ़ियानः (فلسفیانہ) अ. अव्य.–फ़ल्सफ़ियों-जैसा।

फ़ल्सफ़ी (فلسفی) अ. वि.–फ़ल्सफ़ः जाननेवाला।

फ़ल्से माही (فلس ماہی) अ. फा. पुं.–मछली के सिन्ने, शल्क, शकल।

फ़ल्से हूत (فلس ہوت) अ. पुं.–दे. 'फ़ल्से माही'।

फ़वाइद (فوائد) अ. पुं.–'फ़ाइदः' का बहु., बहुत से लाभ।

फ़वाकेह (فواکہہ) अ. पुं.–'फ़ाकिहः' का बहु., मेवे।

फ़वाहिश (فواحش) अ. पं.–'फ़ाहिश' का बहु., दुराचार, बुरे काम।

फ़व्वारः (فوارہ) अ. पुं.–पानी उछालने का एक यंत्र, धारायंत्र, जलयंत्र, फुहारा।

फ़शार (فشار) फा. पुं.–निचोड़ना; भींचना, दबाना; मुर्दे को क़ब्र की ज़मीन का भींचना, मुसलमानों के धर्म के अनुसार पापी मनुष्य को क़ब्रें बड़े ज़ोर से भींचती है।

फ़शारे क़ब्र (فشار قبر) फा. अ. पुं.–दे. 'फ़शार' नं. ३।

फ़शुर्दः (فشردہ) फा. वि.–निचोड़ा हुआ।

फ़शुर्दनी (فشردنی) फा. अव्य.–निचोड़ने के लाइक़।

फ़सक़ः (فسقہ) अ. पुं.–'फ़ासिक़' का बहु., दुराचारी लोग।

फ़सदः (فسدہ) अ. पुं.–'फ़ासिद' का बहु., फ़साद करनेवाले, बलवाई, शरारती।

फ़साँ (فساں) फा. पुं.–वह पत्थर जिस पर सान रखी जाती है, दे. 'फ़िसाँ', दोनों शुद्ध हैं।

फ़साद (فساد) अ. पुं.–दंगा, उपद्रव, बल्वः; विकार, ख़राबी; विघ्न, बाधा, ख़लल; साम्प्रदायिक झगड़ा, फ़िर्क़ःवारानः मारकाट।

फ़सादअंगेज़ (فساد انگیز) अ.फा. वि.–उपद्रव मचानेवाला।

फ़सादअंगेज़ी (فساد انگیزی) अ.फा. स्त्री.–उपद्रव करना।

फ़सादज़दः (فساد زدہ) अ. फा. वि.–वह क्षेत्र अथवा स्थान जहाँ कोई दंगा या बल्वः हो गया हो, बल्वः या दंगे में हानि उठानेवाला।

फ़सादज़दगी (فساد زدگی) अ. फा. स्त्री.–बल्वः या दंगे में प्रभावित होना, नुक़्सान उठाना अथवा मारा जाना।

फ़सादी (فسادی) अ. वि.–फ़साद करनेवाला, उपद्रवकर्ता।

फ़सादे ख़ून (فساد خون) अ. फा. पुं.–ख़ून की ख़राबी, रक्त-दोष।

फ़सादे मे’दः (فساد معدہ) अ. पुं.–पेट का विकार, हाज़िमे की ख़राबी, मंदाग्नि।

फ़सादे हज़्म (فساد ہضم) अ. पु.–हाज़िमे अथवा पाचन-शक्ति की ख़राबी, अजीर्ण, अपच।

फ़सानः (فسانہ) फा. पुं.–कहानी, कथा; उपन्यास, नाविल; वृत्तांत, हाल।

फ़सानःख़्वाँ (فسانہخواں) फा. वि.–कहानी कहनेवाला।

फ़सानःगो (فسانہگو) फा. वि.–दे. ‘फ़सानःख़्वाँ’।

फ़सानःनवीस (فسانہنویس) फा. वि.–कहानियाँ लिखनेवाला, उपन्यासकार।

फ़सानःनिगार (فسانہنگار) फा. वि.–दे. ‘फ़सानःनवीस’।

फ़सानए इश्क (فسانۂ عشق) फा. अ. पुं.–प्रेम की कहानी, प्रेम में अपने ऊपर बीता हुआ वृत्तांत।

फ़सानए ग़म (فسانۂ غم) फा. अ. पुं.–ग़म अर्थात्, प्रेम के ग़म की कथा।

फ़सानए दिल (فسانۂ دل) फा. पुं.–प्रेम में मन की व्यथा का वृत्तान्त।

फ़साहत (فصاحت) अ. स्त्री.–वह लेखन-शैली जिसमें रोज़मर्रः के सरल और हलके-फुलके शब्दों का प्रयोग हो और अलंकार आदि या तो बिलकुल न हों और हों भी तो बहुत कम और सुन्दर हों।

फ़सील (فصیل) अ. स्त्री.–वह दीवार जो नगर के चारों ओर बनायी जाय, वह दीवार जो क़िले के चारों ओर खींची जाय।

फ़सीह (فصیح) अ. वि.–जिसमें फ़साहत हो, ऐसा कलाम; जो फ़साहत के साथ बातचीत करे, ऐसा व्यक्ति।

फ़सीहुलबयान (فصیح البیان) अ. वि.–मँजी हुई सरल और सुन्दर भाषा बोलनेवाला।

फ़सुर्दः (فسردہ) फा. वि.–अफ़्सुर्दः का लघु., खिन्न, मलिन, उदास; मुरझाया हुआ; ठिठुरा हुआ।

फ़सुर्दःख़ातिर (فسردہخاطر) फा. अ. वि.–जिसका मन उदास हो, खिन्नमनस्क, मलिनचित्त।

फ़सुर्दःदिल (فسردہدل) फा. वि.–दे. ‘फ़सुर्दःख़ातिर’।

फ़सुर्दःरुख़ (فسردہرخ) फा. वि.–जिसका चेहरा कुम्हलाया हुआ हो, मलिनमुख।

फ़सुर्दगी (فسردگی) फा. स्त्री.–खिन्नता, मलिनता, उदासी; कुम्हलाहट; ठिठुरन।

फ़स्ख़ (فسخ) अ. वि.–निश्चय बदल देना; तोड़ देना।

फ़स्ख़े अज़ीमत (فسخ عزیمت) अ. पुं.–निश्चय बदल देना, निश्चय-भंग, इरादे की तबदीली।

फ़स्ख़े निकाह (فسخ نکاح) अ. पुं.–विवाह-विच्छेद, विवाह टूट जाना।

फ़स्ख़े बैअ (فسخ بیع) अ. पुं.–मोल ली हुई चीज़ का वापस हो जाना।

फ़स्द (فصد) अ. स्त्री.–रगों से ख़ून निकालना, रक्त-मोचन, रक्त-मोक्षण।

फ़स्दज़न (فصدزن) अ. फा. वि.–रगों से फ़स्द के द्वारा ख़ून निकालनेवाला, रक्त-मोक्षक।

फ़स्ल (فصل) अ. स्त्री.–ऋतु, समय, मौसिम; किताब का बाब, परिच्छेद; अंतर, दूरी; पैदावार; किसी चीज़ के पैदा होने का समय।

फ़स्ल बफ़स्ल (فصل بفصل) अ. फा. अव्य.–हर फ़स्ल में।

फ़स्लानः (فصلانہ) अ. फा. पुं.–फ़स्ल पर दिया जानेवाला हक़ या नज़्रानः।

फ़स्ली (فصلی) अ. वि.–फ़स्ल से सम्बन्ध; फ़स्ल का; किसानों का साल।

फ़स्ले अंबः (فصل انبہ) अ. फा. स्त्री.–आमों की फ़स्ल।

फ़स्ले इस्तादः (فصل استادہ) अ. फा. स्त्री.–खड़ी फ़स्ल जो अभी काटी न गयी हो।

फ़स्ले ख़रीफ़ (فصل خریف) अ. स्त्री.–हिन्दुस्तान की वह फ़स्ल जिसमें मक्का, ज्वार, बाजरा और धान आदि उत्पन्न होता है, कतकिहाई।

फ़स्ले ख़िज़ाँ (فصل خزاں) अ. फा. स्त्री.–पतझड़ की ऋतु।

फ़स्ले गर्मा (فصل گرما) अ. फा. स्त्री.–गर्मी का मौसिम, ग्रीष्म ऋतु।

फ़स्ले गुल (فصل گل) अ. फा. स्त्री.–वसंत ऋतु, बहार का मौसिम।

फ़स्ले बहार (فصل بہار) अ. फा. स्त्री.–दे. ‘फ़स्ले गुल’।

फ़स्ले बाराँ (فصل باراں) अ. फा. स्त्री.–बरसात का मौसिम, वर्षाकाल।

फ़स्ले रबीअ (فصل ربیع) अ. स्त्री.–वह फ़सल जिसमें गेहूँ, जौ, चना आदि उत्पन्न होता है, रब्बी।

फ़स्ले शिता (فصل شتا) अ. फा. स्त्री.–जाड़े का मौसिम।

फ़स्ले सर्मा (فصل سرما) अ. फा. स्त्री.–जाड़े का मौसिम, हिमऋतु, शिशिर, शीतकाल।

फ़स्साद (فصاد) अ. पुं.–रक्त-मोक्षक, रगों से ख़ून निकालनेवाला।

फ़हीम (فہیم) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; समझदार, विवेकी।

फ़हुवलमुराद (فہوالمراد) अ. वा.–तो ठीक है, तो ग़नीमत है, अगर ऐसा हुआ के बाद यह वाक्य आता है और इस वाक्य के बाद वरनः के साथ कोई वाक्य आता है, जैसे—

अगर उसने रुपया दे दिया फ़हुवलमुराद, वरनः मुझे नालिश करनी पड़ेगी।

फ़ह्म (فحم) अ. पुं.–कोयला।

फ़ह्म (فہم) अ. स्त्री.–बुद्धि, समझ; विवेक, तमीज़।

फ़ह्माइश (فہمائش) फा. स्त्री.–चेतावनी, हिदायत; तंबीह, आगाही।

फ़ह्मीदः (فہمیدہ) फा. वि.–समझा हुआ।

फ़ह्मीद (فہمید) फा. स्त्री.–समझ, बुद्धि, विवेक।

फ़ह्मीदनी (فہمیدنی) फा. अव्य.–समझने के योग्य।

फ़ह्मे नाक़िस (فہم ناقص) अ. स्त्री.–कच्ची समझ, नासमझी।

फ़ह्मे सहीह (فہم صحیح) अ. स्त्री.–ठीक समझ।

फ़ह्ल (فحل) अ. पुं.–नर, पुंल्लिग।

फ़ह्हाश (فحاش) अ. वि.–अश्लील बातें करनेवाला।

फ़ह्हाशी (فحاشی) अ. फा. स्त्री.–अश्लीलता।

फ़ाइक़ (فائق) अ. वि.–श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया; जो प्रधान हो, जिसे तर्जीह दी जा सके।

फ़ाइक़तर (فائقتر) अ. फा. वि.–सबसे बढ़िया, सर्वोपरि, सर्वोच्च।

फ़ाइज़ (فائز) अ. वि.–सफल, कामयाब; पहुँचनेवाला।

फ़ाइज़ (فائض) अ. वि.–फ़ैज़ देनेवाला, लाभप्रद।

फ़ाइज़ुलमराम (فائزالمرام) अ. वि.–सफलमनोरथ, मक़्सद में कामयाब।

फ़ाइदः (فائدہ) अ. पुं.–लाभ, नफ़ा; प्राप्ति, हुसूल; निष्कर्ष, नतीजः; गुण, तासीर; रोगमुक्ति, सेहत।

फ़ाइदःबख़्श (فائدہبخش) अ. फा. वि.–लाभदायक, मुफ़ीद।

फ़ाइदःमंद (فائدہمند) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ाइदःबख़्श'।

फ़ाइदःरसाँ (فائدہرساں) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ाइदःबख़्श'।

फ़ाइदःरसानी (فائدہرسانی) अ. फा. स्त्री.–लाभकारिता, नफ़ा पहुँचाना।

फ़ाइल (فاعل) अ. वि.–काम करनेवाला; व्याकरण का 'कर्ता'; गुदामैथुन-कर्ता।

फ़ाइलीयत (فاعلیت) अ. स्त्री.–फ़ाइल होना।

फ़ाइले मुख़्तार (فاعل مختار) अ. पुं.–वह कार्यकर्ता जिसे पूरे अधिकार प्राप्त हों।

फ़ाइले हक़ीक़ी (فاعل حقیقی) अ. पुं.–ईश्वर, अस्ली काम करनेवाला।

फ़ाक़ः (فاقہ) अ. पुं.–अनशन, निराहार, उपवास, कुछ न खाना; बीमार की ग़िज़ा का बंद होना।

फ़ाक़ःकश (فاقہکش) अ. फा. वि.–फ़ाक़े करनेवाला, भूखों मरनेवाला।

फ़ाक़ःकशी (فاقہکشی) अ. फा. स्त्री.–फ़ाक़े करना, भूखों रहना।

फ़ाक़ःज़दः (فاقہزدہ) अ. फा. वि.–भूख का मारा हुआ।

फ़ाक:मस्त (فاقہمست) अ. फा. वि.–जो फ़ाक़ों में भी मस्त रहे।

फ़ाक़ःमस्ती (فاقہمستی) अ. फा. स्त्री.–फ़ाक़ों में बसर करना।

फ़ाक़ःशिकनी (فاقہشکنی) अ. फा. स्त्री.–फ़ाक़ा तोड़ना, कुछ खाना।

फ़ाक़ (فاق) तु. पुं.–सूफ़ार अर्थात् तीर की चुटकी या तीर का पर, जिधर से तीर धनुष में रखते हैं।

फ़ाक़िद (فاقد) अ. वि.–खोनेवाला, जो कोई चीज़ खो दे।

फ़ाक़िदुन्नज़र (فاقدالنظر) अ. वि.–दृष्टिहीन, अंधा, जो अपनी दृष्टि खो चुका हो।

फ़ाक़िदुलबसर (فاقدالبصر) अ. वि.–नेत्रविहीन, अंधा, जो अपनी आँखें खो चुका हो।

फ़ाकेह: (فاکہہ) अ. पुं.–मेवा, हरा मेवा, जैसे–सेब, अनार, अंगूर आदि।

फ़ाकेहात (فاکہات) अ. पुं.–'फाकिह:' का बहु., मेवे।

फ़ाख़ित: (فاختہ) अ. स्त्री.–दे. 'फ़ाख़्त:', उर्दू में वही बोलते हैं।

फ़ाख़िर: (فاخرہ) अ. वि.–अच्छी और बढ़िया चीज़, बहुमूल्य वस्तु।

फ़ाख़िर (فاخر) अ. वि.–फ़ख्र करनेवाला; बहुमूल्य चीज़।

फ़ाख़्त: (فاختہ) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध पक्षी, पंडुक।

फ़ाख़्तई (فاختئی) अ. फा. वि.–फ़ाख़्त:-जैसे रंग की वस्तु।

फ़ाज़: (فازہ) फा. पुं.–जँभाई, मुख-व्यादान, जृंभा; अँगड़ाई।

फ़ाज़:कश (فازہکش) फा. वि.–जँभाई लेनेवाला; अँगड़ाई लेनेवाला।

फ़ाज़ह्र (فازہر) फा. पुं.–दे. 'फ़ादज़ह्र'।

फ़ाजिर: (فاجرہ) अ. स्त्री.–कदाचारिणी, स्वैरिणी, दुश्चरित्रा, बदचलन औरत।

फ़ाजिर (فاجر) अ. पुं.–दुष्टाचारी, दुश्चरित, बदचलन मर्द।

फ़ाज़िल (فاضل) अ. वि.–जिसने पूरी विद्या पढ़ ली हो, स्नातक, फ़ारिग़ुत्तह्सील; अतिरिक्त, फ़ालतू; अधिक, ज़ियादा; बचा हुआ, बाक़ी।

फ़ाज़िलात (فاضلات) अ. पुं.–फ़ाज़िल रुपया, जमा-ख़र्च के बाद बाक़ी बचा हुआ रुपया।

फ़ाज़िले अजल्ल (فاضل اجل) अ. वि.–बहुत बड़ा फ़ाज़िल, धुरंधर विद्वान्, प्रकाण्ड पण्डित।

फ़ातहः (فاتحہ) अ. उभ.—दे. 'फ़ातिहः' उर्दू में दोनों तरह बोलते हैं।

फ़ातिन (فاطن) अ. वि.—चतुर, दक्ष, कुशल, दाना; बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

फ़ातिमः (فاطمہ) अ. स्त्री.—वह स्त्री जो दो बरस के बच्चे का दूध छुड़ा दे; हज़्रत मुहम्मद साहिब की सुपुत्री और हज़्रत इमाम हुसेन की माता जी।

फ़ातिर (فاتر) अ. वि.—मंद, सुस्त; गुनगुना पानी; विकृत, दूषित, जिसमें फ़ुतूर हो।

फ़ातिर (فاطر) अ. वि.—सृष्टिकर्ता, ईश्वर।

फ़ातिरुलअक़्ल (فاتر العقل) अ. वि.—पागल, विकृतमस्तिष्क।

फ़ातिरुस्स्मावात (فاطرالسماوات) अ. वि.—आकाशों की सृष्टि करनेवाला।

फ़ातिहः (فاتحہ) अ. उभ.—क़ुरान की पहली सूरत; मुर्दे की नियाज़।

फ़ातिह (فاتح) अ. वि.—विजेता, जेता, जीतनेवाला; खोलनेवाला।

फ़ातिहए ख़ैर (فاتحۂ خیر) अ. फा. उभ.—फ़ातिहः, तिलांजलि।

फ़ातिहानः (فاتحانہ) अ. फा. अव्य.—जीतनेवालों की तरह; विजयपूर्ण।

फ़ातिहे आ'ज़म (فاتح اعظم) अ. वि.—सब से बड़ा विजेता, महाजयी, दिग्विजयी।

फ़ातिहे आ'लम (فاتح عالم) अ. वि.—संसार को जीत लेनेवाला, विश्वविजयी।

फ़ातिहे कुल (فاتح کل) अ. वि.—सब को जीत लेनेवाला, सर्वविजयी।

फ़ातिहे नफ़्स (فاتح نفس) अ. वि.—अपनी इंद्रियों को जीत लेनेवाला, जितेन्द्रिय, इंद्रियजयी।

फ़ादज़ह्र (فاد زہر) फा. पुं.—एक ओषधि जो हर प्रकार के विषों की नाशक है, विषहर।

फ़ानी (فانی) अ. वि.—नश्वर, नाशवान्, मिट जानेवाला, न रहनेवाला।

फ़ानीज़ (فانیذ) अ. पुं.—सफ़ेद शकर, दाना चीनी।

फ़ानूस (فانوس) फा. पुं.—लैम्प की चिमनी, जिसमें से रोशनी छनती है; वह काँच का प्याला-जैसा पात्र जिसमें मोमबत्ती जलती है; आलोचक, निंदक, बड़ी क़िंदील, कंडील।

फ़ानूसे ख़याल (فانوس خیال) फा. अ पुं —एक प्रकार का काग़ज़ी कंडील जिसमें हाथी-घोड़े आदि की तस्वीरें घूमती हैं।

फ़ानूसे ख़याली (فانوس خیالی) फा अ. पुं.—दे. 'फ़ानूसे ख़याल'।

फ़ानूसे गर्दां (فانوس گرداں) फा. पुं.—दे. 'फ़ानूसे ख़याल'।

फ़ाम (فام) फा. पुं.—रंग; समान, मिस्ल, (प्रत्य.) रंगवाला, जैसे—'सब्ज़ फ़ाम' हरे रंगवाला; समान, जैसे—गुल फ़ाम, फूल-जैसा।

फ़ारः (فارہ) अ. पुं.—एक चूहा, मूषक।

फ़ार (فار) अ. पुं.—'फ़ारः' का बहु., बहुत से चूहे।

फ़ाराँ (فاراں) अ. पुं.—'फ़ारान' का लघु., दे. 'फ़ारान'।

फ़ारान (فاران) अ. पुं.—एक पहाड़।

फ़ारिक़ (فارق) अ. वि.—दो चीज़ों को अलग करनेवाला।

फ़ारिग़ (فارغ) अ. वि.—मुक्त, आज़ाद; निश्चिन्त, बेफ़िक्र; अवकाशप्राप्त, सावकाश, फ़ुर्सत पाया हुआ; जो अपना काम कर चुका हो।

फ़ारिग़ख़ती (فارغ خطی) अ. फा. स्त्री.—रुपया अदा होने की रसीद, ऋणमुक्तिपत्र; तलाक़नामा।

फ़ारिग़ुत्तहसील (فارغ التحصیل) अ. वि.—स्नातक, पारंगत, निष्णात, फ़ाज़िल, जिसने सबसे ऊँची डिग्री पा ली हो।

फ़ारिग़ुलख़िदमत (فارغ الخدمت) अ. वि.—सेवा-मुक्त, जो बुढ़ापे या किसी और कारणवश पेंशन पा गया हो।

फ़ारिग़ुलबाल (فارغ البال) अ. वि.—निश्चिन्त, बेफ़िक्र; जिसे कोई चिन्ता न हो; समृद्ध, सम्पन्न, आसूदःहाल।

फ़ारिस (فارس) अ. वि.—घुड़सवार, अश्वारोही।

फ़ारूक़ (فاروق) अ. वि.—सच और झूठ में फ़र्क़ करनेवाला, सत्य को असत्य से अलग करनेवाला, दे. 'फ़ारूक़े आ'ज़म'।

फ़ारूक़ी (فاروقی) अ. वि.—शेख़ों की एक जाति जो हज़्रत फ़ारूक़ के वंशज हैं, फ़ारूक़ी शेख़।

फ़ारूक़े आ'ज़म (فاروق اعظم) अ. वि.—दूसरे ख़लीफ़ा हज़्रत उमर की उपाधि।

फ़ार्स (فارس) फा. पुं.—ईरान, पारसीक।

फ़ार्सी (فارسی) फा. स्त्री.—ईरान की भाषा।

फ़ार्सीख़्वाँ (فارسی خواں) फा. वि.—फ़ार्सी बोलनेवाला; फ़ार्सी पढ़नेवाला; फ़ार्सी पढ़ा हुआ।

फ़ार्सीगो (فارسی گو) फा. वि.—फ़ार्सी में कविता करनेवाला।

फ़ार्सीदाँ (فارسی داں) फा. वि.—फ़ार्सी भाषा जाननेवाला।

फ़ाल (فال) अ. स्त्री.—सगुन, शकुन।

फ़ालगो (فال گو) अ. फा. वि.—शकुन-विचारक, शकुन बतानेवाला।

फ़ालगोई (فال گوئی) अ. फा. स्त्री.—शकुन बताना।

फ़ालनामः (فال نامہ) अ. फा. पुं.—वह किताब जिससे फ़ाल देखी जाती है।

फ़ालिज (فالج) अ. पुं.–एक रोग जिसमें आधा शरीर बेकाम हो जाता है, पक्षाघात, अर्धांग, लकवा।

फ़ालिजज़दः (فالجزدہ) अ. फा. वि.–जिसे फ़ालिज मार गया हो, अर्द्धांगी।

फ़ालूदः (فالودہ) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध शर्बत के साथ पी जानेवाली चीज़।

फ़ालेज़ (فاليز) फा. स्त्री.–तर्बूज़ या खीरे-ककड़ी का खेत।

फ़ाले नेक (فال نيك) अ. फा. स्त्री.–अच्छा शकुन; अच्छी अलामत, अच्छे लक्षण।

फ़ाले बद (فال بد) अ. फा. स्त्री.–बुरा शकुन; बुरी अलामत, बुरे लक्षण।

फ़ाल्सः (فالسہ) फा. पुं.–एक प्रकार का खट्टा और छोटा फल, परूषक।

फ़ाश (فاش) फा. वि.–व्यक्त, ज़ाहिर, प्रकट; स्पष्ट, खुला हुआ।

फ़ाशगो (فاش گو) फा. वि.–स्पष्ट वक्ता, साफ़-साफ़ कहनेवाला, लगी-लिपटी न रखनेवाला।

फ़ाशगोई (فاش گوئی) फा. स्त्री.–बात साफ़-साफ़ कह देना, कोई झिझक न करना।

फ़ासिक़ः (فاسقہ) अ. स्त्री.–पापिनी, असाध्वी; व्यभिचारिणी, कुलटा।

फ़ासिक़ (فاسق) अ. वि.–पापी, गुनाहगार; व्यभिचारी, दुराचारी, हरामकार।

फ़ासिख़ (فاسخ) अ. वि.–ख़राब और नष्ट करनेवाला; नष्ट और विकृत होनेवाला।

फ़ासिद (فاسد) अ. वि.–दूषित, विकृत, ख़राब, बिगड़ा हुआ।

फ़ासिदुलअक़ीदः (فاسدالعقيدہ) अ. वि.–जिसका धर्म-विश्वास बिगड़ गया हो।

फ़ासिलः (فاصلہ) अ. पुं.–अंतर, दूरी; भेद, फ़र्क़।

फ़ासिल (فاصل) अ. वि.–अंतर डालनेवाला; अलग करनेवाला।

फ़ासिलए दराज़ (فاصلۂ دراز) अ. फा. पुं.–लंबी दूरी, लम्बा फ़ासिला।

फ़ाहिशः (فاحشہ) अ. स्त्री.–व्यभिचारिणी, पुंश्चली, स्वैरिणी, जघनचपला, पांसुला, कुलटा, बंधकी, असती, जारिणी, र्धाषणी, भ्रष्टा, लट्वा, बंधुरा।

फ़ाहिश (فاحش) अ. वि.–बहुत अधिक बुरा, लज्जाजनक।

फ़ि

फ़िंजान (فنجان) अ. स्त्री.–क़हवा पीने की काँच की छोटी पियाली।

फ़िंदुक़ (فندق) अ. स्त्री.–दे. 'फ़ुंदुक़'।

फ़िक़्दान (فقدان) अ. पुं.–अभाव, नायाबी; बहुत अधिक कमी।

फ़िक़्रः (فقرہ) अ. पुं.–वाक्य, जुम्ला; छल की बात, बहाना, मिष; रीढ़ का गुरिया; तंज़, व्यंग, कटाक्ष।

फ़िक़्रःतराश (فقرہتراش) अ. फा. वि.–छल की बात गढ़नेवाला।

फ़िक़्रःबंद (فقرہبند) अ. फा. वि.–तुकबंद।

फ़िक़्रःबंदी (فقرہبندی) अ. फा. स्त्री.–तुकबंदी।

फ़िक़्रःबाज़ (فقرہباز) अ. फा. वि.–फ़िक्रे कसनेवाला, कटाक्ष करनेवाला।

फ़िक़्रःबाज़ी (فقرہبازی) अ. फा. स्त्री.–फ़िक़्रः कसना, व्यंग करना।

फ़िक्र (فكر) अ. उभ.–चिंता, सोच; विचार, ध्यान; शंका, शुबहा; खटका, अंदेशा; दुःख, रंज; ग़ौर, विचार; उपाय, तदबीर; पर्वा, चिंता; देख-रेख; ख़याल, ध्यान; दुबिधा, एहतिमाल।

फ़िक्रत (فكرت) अ. स्त्री.–फ़िक्र।

फ़िक्रमंद (فكرمند) अ. फा. वि.–जिसे किसी बात का खटका हो, चिंतित।

फ़िक्रमंदी (فكرمندی) अ. फा. स्त्री.–चिंता, सोच, खटका।

फ़िक्रात (فقرات) अ. पुं.–'फ़िक़्रः' का बहु., जुम्ले, वाक्य-समूह; रीढ़ के गुरिए।

फ़िक्रे इमरोज़ (فكر امروز) अ. फा. स्त्री.–आज की चिंता, हाल की फ़िक्र।

फ़िक्रे उक़्बा (فكر عقبیٰ) अ. स्त्री.–परलोक की चिंता।

फ़िक्रे फ़र्दा (فكرفردا) अ. फा. स्त्री.–कल की चिंता, आनेवाले समय की फ़िक्र।

फ़िक्रे मआश (فكر معاش) अ. स्त्रीं.–जीविका की चिंता, रोटी कमाने की फ़िक्र।

फ़िक्रे मईशत (فكر معيشت) अ. स्त्री.–दे. 'फ़िक्रे मआश'।

फ़िक्रे शे'र (فكر شعر) अ. स्त्री.–कविता करना, काव्य-रचना में तन्मयता।

फ़िक्रे सुख़न (فكرسخن) अ. फा. स्त्री.–दे. 'फ़िक्रे शे'र'।

फ़िक़्ह (فقہ) अ. स्त्री.–इस्लामी धर्मशास्त्र।

फ़िक़्ही (فقہی) अ. वि.–इस्लामी धर्मशास्त्र सम्बन्धी।

फ़िगंदः (فگندہ) फा. वि.–'अफ़्गंदः' का लघु., डाला हुआ, छोड़ा हुआ, लटकाया हुआ।

फ़िगन (فگن) फा. प्रत्य.–डालनेवाला, लटकानेवाला, फैलानेवाला, जैसे—'जल्वःफ़िगन'।

LIBRARY
HARDWAR

फ़िगार (فگار) फा. वि.–घायल, आहत, ज़ख़्मी; (प्रत्य.) ज़ख़्म खाया हुआ, आहत, जैसे—'दिलफ़िगार' जिसका दिल घायल हो अर्थात् प्रेमी।

फिग़ारीं (فگاریں) फा. वि.–आहत, ज़ख़्मी।

फ़िज़ा (فزا) फा. प्रत्य.–'अफ़्ज़ा' का लघु., बढ़ानेवाला, जैसे —'जाँफ़िज़ा' ज़िंदगी बढ़ानेवाला।

फ़िज़ाइंदः (فزائندہ) फा. वि.–बढ़ानेवाला।

फ़िज़ाइश (فزائش) फा. स्त्री.–अफ़्ज़ाइश, बढ़ोतरी।

फ़िजाजत (فجاجت) अ. स्त्री.–कच्चापन, ख़ामी।

फ़िज़्ज़ः (فضہ) अ. स्त्री.–रजत, चाँदी।

फ़ितन (فتن) अ. पुं.–'फ़ित्नः' का बहु., फ़ित्ने, दंगे, गड़बड़ियाँ, हलचलें।

फ़ित्तीन (فتین) अ. वि.–धूर्त, मक्कार, चालाक, वंचक।

फ़ित्नः (فتنہ) अ. पुं.–उपद्रव, दंगा, फ़साद; विद्रोह, बग़ावत; बहुत ही नटखट, बहुत ही शरीर; एक इत्र; लगाई-बुझाई करनेवाला, पिशुन; हर्फ़ों का बना हुआ।

फ़ित्नःअंग़ेज़ (فتنہ انگیز) अ. फा. वि.–उपद्रव करानेवाला, लोगों को भड़काकर दंगा करा देनेवाला; इधर की उधर लगानेवाला; षड्यंत्री, साज़िशी।

फ़ित्नःअंग़ेज़ी (فتنہ انگیزی) अ. फा. स्त्री.–लोगों को भड़काकर आपस में लड़ा देना; इधर की उधर लगाना; कोई षड्यंत्र खड़ा करना।

फ़ित्नःअंदाज़ (فتنہ انداز) अ. फा. वि.–दे. 'फित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःअंदाज़ी (فتنہ اندازی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'फ़ित्नः अंगेज़ी'।

फ़ित्नःक़द (فتنہ قد) अ. वि.–बहुत छोटे डील-डौल का माशूक़।

फ़ित्नःख़ू (فتنہ خو) अ. फा. वि.–जिसका स्वभाव ही फ़ित्नः खड़ा कर देना हो।

फ़ित्नःख़ेज़ (فتنہ خیز) अ. फा. वि.–दे. 'फित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःगर (فتنہ گر) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःगरी (فتنہ گری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़ी'।

फ़ित्नःज़ा (فتنہ زا) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःजू (فتنہ جو) अ. फा. वि.–फ़ित्ने तलाश करनेवाला, उपद्रव और षड्यंत्र के लिए बहाने ढूँढ़नेवाला।

फ़ित्नःपरदाज़ (فتنہ پرداز) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःपरदाज़ी (فتنہ پردازی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'फ़ित्नः अंगेज़ी'।

फ़ित्नःपर्वर (فتنہ پرور) अ. फा वि –दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःशिआर (فتنہ شعار) अ. वि.–दे. 'फ़ित्नःख़ू'।

फ़ित्नःसंज (فتنہ سنج) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःसामाँ (فتنہ ساماں) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नःसामानी (فتنہ سامانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'फ़ित्नः-अंगेज़ी'।

फ़ित्नःसिगाल (فتنہ سگال) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ित्नःअंगेज़'।

फ़ित्नए आलम (فتنۂ عالم) अ. पुं.–सारे संसार में उपद्रव मचानेवाला, अर्थात् मा'शूक़।

फ़ित्नए ख़्वाबीदः (فتنۂ خوابیدہ) अ. फा. पुं.–सोया हुआ फ़ित्नः, वह विपत्ति जो अभी आयी न हो।

फ़ित्नए दौराँ (فتنۂ دوراں) अ. पुं.–दे. 'फ़ित्नए आलम'।

फ़ित्नए रोज़गार (فتنۂ روزگار) अ. फा. पुं.–दे. 'फ़ित्नए आलम'।

फ़ित्नत (فطنت) अ. स्त्री.–दक्षता, चतुरता, होशियारी; बुद्धिमत्ता, अक़्लमंदी।

फ़ित्रः (فطرہ) अ. पुं.–वह दान या ख़ैरात जो ईद में नमाज़ से पहले अदा हो।

फ़ित्र (فطر) अ. पुं.–लोगों का रोज़ा खुलवाना; रोज़ा खोलनेवाले लोग।

फ़ित्रत (فطرت) अ. स्त्री.–प्रकृति, नेचर; स्वभाव, आदत; उत्पत्ति, पैदाइश; धूर्तता, चालाकी, शरारत।

फ़ित्रतन (فطرتاً) अ. अव्य.–स्वभावतः, आदतन।

फ़ित्रती (فطرتی) उ. वि.–चालाक, धूर्त; शरीर, उत्पाती; बातूनी, झूठी बातें बनानेवाला, प्राकृतिक के अर्थ में फ़ित्री है।

फ़ित्रते सानियः (فطرت ثانیہ) अ. स्त्री.–किसी चीज़ की आदत।

फ़ित्राक (فتراک) फा. उभ.–वह डोरी जो घोड़े की ज़ीन में दोनों ओर शिकार या दूसरी चीज़ बाँधने के लिए लगाते हैं।

फित्री (فطری) अ. वि.–प्राकृतिक, नैसर्गिक, नेचुरल।

फ़िदा (فدا) अ. वि.–मुग्ध, आसक्त, आशिक़; न्योछावर, निसार।

फ़िदाई (فدائی) अ. फा. वि.–भक्त, वफ़ादार; आशिक़, जाँनिसार।

फ़िदाए क़ौम (فدائے قوم) अ. वि.–जाति या राष्ट्र के लिए सब कुछ न्योछावर कर देनेवाला, तन, मन, धन से जाति या राष्ट्र की सेवा करनेवाला।

फ़िदाए मिल्लत (فدائے ملت) अ. वि.–राष्ट्र की सेवा में तन, मन, धन सब कुछ क़ुर्बान कर देनेवाला।

फ़िदाए हक़ (فدائے حق) अ. वि.–सत्यता के लिए सब कुछ त्याग देनेवाला, सच्चाई पर बलिदान हो जानेवाला।

फ़िदाकार (فداکار) अ. फा. वि.–फ़िदाई, भक्त।

फ़िद्यः (فدیہ) अ. पुं.–वह धन जो किसी क़ैदी की मुक्ति के लिए दिया जाय; वह व्यक्ति जो किसी व्यक्ति के बदले में अपनी जान दे; वह धन जो हिंसक से किसी ख़ून के बदले में दिलाया जाय, दियत; ईद के दिन की ख़ैरात, फ़ित्रः।

फ़िद्वी (فدوی) अ. वि.–भक्त, जाँनिसार; प्रार्थी अपने प्रार्थनापत्र में ख़ुद को भी लिखता है।

फ़िन्नार (فی النار) अ. अव्य.–'नरक में जाय' जब कोई दुष्ट व्यक्ति मरता है तो कहते हैं।

फ़िरक़ (فرق) अ. पुं.–'फ़िर्क़ः' का बहु., 'फ़िर्क़ें'।

फ़िराक़ (فراق) अ. पुं.–पृथक्ता, अलाहिदगी; वियोग, जुदाई; घ्यान, धुन, खयाल।

फ़िरार (فرار) अ. पुं.–पलायन, भागना, दे. 'फ़रार', शुद्ध 'फ़िरार' है, परन्तु उर्दू में 'फ़रार' ही बोलते हैं।

फ़िरावाँ (فراواں) फा. वि.–बहुत अधिक, प्रचुर।

फ़िरावानी (فراوانی) फा. स्त्री.–प्रचुरता, बहुलता, अधिकता, इफ़ात।

फ़िराश (فراش) अ. पुं.–सोने का फ़र्श या बिस्तर; सोने के कपड़े।

फ़िरासत (فراست) अ. स्त्री.–दक्षता, प्रवीणता, चतुरता, चातुरी, दानाई; किसी बात को देख या सुनकर फौरन ताड़ जाना; क़ियाफ़ः, सामुद्रिक।

फ़िरासतशनास (فراست شناس) अ. फा. वि.–क़ियाफ़ः शनास, सामुद्रिक।

फ़िरासतुलयद (فراست الید) अ. स्त्री.–हाथ की रेखाओं की विद्या, हस्त सामुद्रिक विद्या।

फ़िरिश्तः (فرشتہ) फा. पुं.–देवता, सुर, फ़रिश्तः; बहुत ही सज्जन और सरल स्वभाव का व्यक्ति।

फ़िरिश्तःख़स्लत (فرشتہ خصلت) फा. अ. वि.–देवताओं-जैसी पुनीत और पावन प्रकृति वाला व्यक्ति, देवतात्मा, देवात्मा।

फ़िरिश्तःख़िसाल (فرشتہ خصال) फा. अ. वि.–दे. 'फ़िरिश्तः ख़स्लत'।

फ़िरिश्तःख़ू (فرشتہ خو) फा. वि.–दे. 'फ़िरिश्तःख़स्लत'।

फ़िरिश्तःसिफ़त (فرشتہ صفت) फा.अ. वि.–जिसमें देवताओं-जैसे गुण हों।

फ़िरिश्तःसीरत (فرشتہ سیرت) फा. अ. वि.–दे. 'फ़िरिश्तः ख़स्लत'।

फ़िरिश्तःसूरत (فرشتہ صورت) फा. अ. वि.–जिसकी सूरत देवताओं-जैसी सुंदर और तेजस्वी हो, देवता-स्वरूप।

फ़िरिस्तादः (فرستادہ) फा. वि.–भेजा हुआ, प्रेषित।

फ़िरिस्तादनी (فرستادنی) फा. अव्य.–भेजने योग्य, प्रेष्य।

फ़िरिस्तिंदः (فرستندہ) फा. वि.–भेजनेवाला, प्रेषक।

फ़िरेफ़्तः (فریفتہ) फा. वि.–मुग्ध, आसक्त, आशिक़; जो किसी काम में बहुत ही रुचि रखे।

फ़िरेब (فریب) फा. पुं.–शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु उर्दू में 'फ़रेब' बोलते हैं, दे. 'फ़रेब'।

फ़िरोकश (فروکش) फा. वि.–ठहरा हुआ, मुक़ीम, अस्थायी रूप में किसी जगह ठहरनेवाला।

फ़िरोख़्तः (فروختہ) फा. वि.–बेचा हुआ, शुद्ध 'फ़िरोख़्त' ही है, परन्तु उर्दू में 'फ़रोख़्तः' है।

फ़िरोख़्त (فروخت) फा. स्त्री.–बिक्री, बिचवाली; बिक्रीत, बिका हुआ।

फ़िरोख़्तगी (فروختگی) फा. स्त्री.–बिक्री, फ़रोख़्त।

फ़िरोगुज़ाश्त (فروگزاشت) फा. स्त्री.–भूल, ग़फ़लत, त्रुटि; कमी, कोताही।

फ़िरोतन (فروتن) फा. वि.–विनीत, विनम्र, आजिज़, ख़ाकसार।

फ़िरोतनी (فروتنی) फा. स्त्री.–विनम्रता प्रकट करना, ख़ाकसारी बरतना।

फ़िरोतर (فروتر) फा. वि.–बहुत नीचे, निम्नतर।

फ़िरोद (فرود) फा. वि.–निम्न, नीचा, उर्दू में 'फ़रोद' भी है।

फ़िरोदगाह (فرودگاہ) फा. स्त्री.–पथिक के रूप में थोड़े दिन ठहरने का स्थान।

फ़िरोदस्त (فرودست) फा. वि.–अधीन, मातहत, ज़ेरदस्त।

फ़िरोदाश्त (فروداشت) फा. वि.–अंत, समाप्ति, अख़ीर।

फ़िरोमांदः (فروماندہ) फा. वि.–लाचार, विवश; दलित, पामाल; शिथिल, अफ़्सुर्दः।

फ़िरोमांदगी (فروماندگی) फा. स्त्री.–लाचारी, विवशता; दलितपन, पामाली; शिथिलता, अफ़्सुर्दगी।

फ़िरोमायः (فرومایہ) फा. वि.–अधम, नीच, कमीना, अकुलीन।

फिरोमायगाँ (فرومایگاں) फा. पुं.–'फ़िरोमायः' का बहु., नीच लोग।

फ़िरोमायगी (فرومایگی) फा. स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनगी।

फ़िर्औन (فرعون) अ. पुं.–मिस्र का नरेश जो बड़ा अत्याचारी था और जो हज़्रत मूसा के शाप से मरा था; बहुत ही अहंकारी।

फ़िर्औन मिज़ाज (فرعون مزاج) अ. वि.–जो फ़िर्औन की तरह अहंकारी और घमंडी हो।

फ़िऔंनियत (فرعونیت) अ. स्त्री.–फ़िऔं न-जैसा अभिमानी होना।

फ़िऔंने बेसामाँ (فرعون بےساماں) अ. फा. पुं.–ऐसा व्यक्ति जिसके पास कुछ न हो, परन्तु अभिमान बहुत हो।

फ़िर्क़ः (فرقہ) अ. पुं.–दल, जमाअत, पार्टी; पक्ष, फ़रीक़; सम्प्रदाय, मज़्हब; ज़ाति, क़ौम।

फ़िर्क़ःपरस्त (فرقہ پرست) अ. फा. वि.–साम्प्रदायिकता रखनेवाला, मज़्हबी तअस्सुब रखनेवाला; साम्प्रदायिक भेदभाव फ़ैलाकर आपस में लड़ानेवाला।

फ़िर्क़ःपरस्ती (فرقہ پرستی) अ. फा. स्त्री.–धार्मिक भेदभाव फैलाकर आपस में लड़ाना।

फ़िर्क़ःबंद (فرقہ بند) अ. फा. वि.–जो गुटबंद हो, दलबंद, पार्टीबंद; जो धार्मिक आधारों पर दलबंदी करे।

फ़िर्क़ःबंदी (فرقہ بندی) अ. फा. स्त्री.–दलबंदी, गुटबंदी; धार्मिक आधार पर गुटबंदी।

फ़िर्क़ःवारानः (فرقہ وارانہ) अ. फा. अव्य.–साम्प्रदायिक, धार्मिक, मज़्हबी, जैसे––'फ़िर्क़ःवाराना' झगड़ा।

फ़िर्क़ःवारी (فرقہ واری) अ. फा. वि.–दलबंदी, गुटबंदी; धार्मिक आधार पर गुटबंदी।

फ़िर्क़ःवारीयत (فرقہ واریت) अ. फा. स्त्री.–दे. 'फ़िर्क़ःवारी'।

फ़िर्ज़ीन (فرزین) अ. पुं.–शतरंज का एक मोह्रा, वज़ीर।

फ़िर्दौस (فردوس) अ. पुं.–स्वर्ग, नाक, बिहिश्त।

फिर्दौसआश्याँ (فردوس آشیاں) अ. फा. वि.–स्वर्गस्थ, स्वर्गीय।

फ़िर्दौसमंज़लत (فردوس منزلت) अ. वि.–वह स्थान जो सजावट में फ़िर्दौस की तरह हो।

फ़िर्दौसमकाँ (فردوس مکاں) अ. वि.–दे. 'फ़िर्दौ स आश्याँ'।

फ़िर्दौसी (فردوسی) अ. वि.–फ़िर्दौ स का निवासी; ईरान का एक प्राचीन और महान् कवि जिसने शाहनामा लिखा है, जो फ़ार्सी साहित्य में सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण महाकाव्य है।

फ़िर्दौ सेबरीं (فردوس بریں) अ. फा. पुं.–सबसे ऊपर का स्वर्ग।

फ़िर्नी (فرنی) फा. स्त्री.–दूध और चावल के आटे की विशेष खीर।

फ़िलिज़्ज़ (فلز) अ. पुं.–धातु, सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि।

फ़िलिज़्ज़ात (فلزات) अ. उभ.–'फ़िलिज़्ज़' का बहु., धातुएँ।

फ़िलिज़्ज़ी (فلزی) अ. वि.–धातु से बना हुआ; खान से निकला हुआ।

फ़िलअस्ल (فی الاصل) अ. अव्य.–मूलतः, यथार्थतः, हक़ीक़त में, सचमुच।

फ़िलजुम्लः (فی الجملہ) अ. अव्य.–कुछ-कुछ, थोड़ा-बहुत; सबमें से कुछ।

फ़िलफ़िल (فلفل) अ. स्त्री.–मरिच, मिर्च।

फ़िलफ़िलगिर्द (فلفل گرد) अ. फा. स्त्री.–गोल मिर्च, काली मिर्च।

फ़िलफ़िल मोयः (فلفل مویہ) अ. फा. स्त्री.–एक ओषधि, पीपलामूल।

फ़िलफ़िल सफ़ेद (فلفل سفید) अ. फा. स्त्री.–सफ़ेद काली मिर्च।

फ़िलफ़िल सियाह (فلفل سیاہ) अ. फा. स्त्री.–काली मिर्च।

फ़िलफ़िल सुर्ख़ (فلفل سرخ) अ. फा. स्त्री.–लाल मिर्च।

फ़िलफ़ौर (فی الفور) अ. अव्य.–तुरंत, त्वरित, शीघ्र, फ़ौरन।

फ़िलबदीह (فی البدیہ) अ. वि.–बिना सोचे कही हुई कोई बात जो बहुत ही ठीक, सुंदर और चमत्कारपूर्ण हो, बरजस्तः।

फ़िलबदीह गो (فی البدیہ گو) अ. फा. वि.–तुरंत बिना सोचे कविता करनेवाला, आशुकवि; बिना सोचे बोलनेवाला, उपस्थित वक्ता।

फ़िलमसल (فی المثل) अ. अव्य.–सदृश, समान; ऐसा, इस प्रकार का।

फ़िलवक़्त (فی الوقت) अ. वि.–तत्क्षण, तत्काल, उसी समय, फ़ौरन।

फ़िलवाक़े' (فی الواقع) अ. वि.–दे. 'फ़िलअस्ल'।

फ़िलहक़ीक़त (فی الحقیقت) अ. वि.–दे. 'फ़िलअस्ल'।

फ़िलहाल (فی الحال) अ. वि.–इस समय, सरेदस्त।

फ़िशाँ (فشاں) फा. प्रत्य.–छिड़कनेवाला, बिखेरनेवाला, जैसे––'ज़रफ़िशाँ' सोना बिखेरनेवाला।

फ़िशांदः (فشاندہ) फा. वि.–छिड़का हुआ, बखेरा हुआ।

फ़िशांदनी (فشاندنی) फा. वि.–छिड़कने के क़ाबिल।

फ़िशार (فشار) फा. पुं.–दे. 'फ़शार', दोनों शुद्ध हैं।

फ़िशारदः (فشاردہ) फा. वि.–निचोड़ा हुआ; चुभोया हुआ।

फ़िशारदनी (فشاردنی) फा. वि.–निचोड़ने योग्य; चुभोने योग्य।

फ़िसाँ (فساں) फा. पुं.–दे. 'फसाँ', दोनों शुद्ध हैं।

फ़िसाल (فصال) अ. पुं.–बच्चे का दूध छुड़ाना; वियोग, जुदाई; पृथक्ता, अलाहिदगी; 'फ़सील' का बहु., फ़सीलें।

फ़िसोस (فسوس) फा. पुं.–खेल, क्रीड़ा; परिहास, दिल्लगी;

मनोविनोद, मनोरंजन, तफ़्रीह; फक्कड़पन; शोक, दुःख, अफ़सोस।

फ़िस्क़ (فسق) अ. पुं.–दुराचार, कदाचार, दुष्कर्म, बदआ'माली; सच्चाई और सत्य को छोड़ देना।

फ़िस्क़ोफ़ुजूर (فسق وفجور) अ. पुं.–दुराचार, दुष्कर्म, बदचलनी।

फ़िस्तक़ (فستق) अ. पुं.–दे. 'फ़ुस्तक़', दोनों शुद्ध हैं, पिस्ता जो एक प्रसिद्ध मेवा है।

फ़ी

फ़ी (فی) फ़ा. स्त्री.–छल, फ़रेब; भेद, रहस्य; त्रुटि, ग़लती।

फ़ी (فی) अ. अव्य.–में, बीच, जैसे—'फ़ी माबैन' दोनों के बीच में।

फ़ीअमानिल्लाह (فی امان اللہ) अ. वा.–ईश्वर की रक्षा में, अर्थात् ईश्वर रक्षा करे, किसी को बिदा करते समय कहते हैं।

फ़ीज़मानिना (فی زماننا) अ. वा.–हमारे समय में अर्थात् इस उपस्थित समय में, साम्प्रत।

फ़ीतः (فیتہ) फ़ा. पुं.–कपड़े की लंबी और पतली पट्टी।

फ़ीनफ़्सिही (فی نفسہ) अ. वि.–वह स्वयं, वह अपनी ज़ात से, जैसे—वह फ़ी नफ़सिही बहुत अच्छा है, अर्थात् वह स्वयं बहुत अच्छा है।

फ़ीमाबैन (فی مابین) अ. अव्य.–दोनों के बीच में।

फ़ीरोज़ः (فیروزہ) फ़ा. पुं.–एक प्रसिद्ध रत्न, हरित मणि।

फ़ीरोज़ (فیروز) फ़ा. वि.–सफलमनोरथ, कामयाब; शुभान्वित, कल्याणकारी, मुबारक।

फ़ीरोज़बख़्त (فیروزبخت) फ़ा. वि.–सौभाग्यशाली, ख़ुशक़िस्मत।

फ़ीरोज़बख़्ती (فیروزبختی) फ़ा. स्त्री.–भाग्य की सफलता, ख़ुशक़िस्मती।

फ़ीरोज़मंद (فیروزمند) फ़ा. वि.–सफलकाम, कामराँ; सौभाग्यवान्, ख़ुशनसीब।

फ़ीरोज़मंदी (فیروزمندی) फ़ा. स्त्री.–कामना की सफलता, कामयाबी; भाग्य की सुंदरता, ख़ुशनसीबी।

फ़ीरोज़ी (فیروزی) फ़ा. वि.–फ़ीरोज़े के रंग का; सफलता, कामयाबी।

फ़ीलः (فیلہ) फ़ा. पुं.–शत्रंज का एक मोह्रा, पील।

फ़ील (فیل) फ़ा. पुं.–हाथी, करि, हस्ती, गज, सिंधुर, पीलु, पील।

फ़ीलक़ामत (فیل قامت) फ़ा. अ. वि.–हाथी-जैसे डील-डौल का।

फ़ीलख़ानः (فیل خانہ) फ़ा. पुं.–हस्तिशाला, हाथीख़ाना।

फ़ीलतन (فیلتن) फ़ा. वि.–हाथी-जैसे भारी-भरकम शरीरवाला, विशाल देहवाला।

फ़ीलदंदाँ (فیل دنداں) फ़ा. पुं.–हाथी जैसे दाँतोंवाला।

फ़ीलनशीं (فیل نشیں) फ़ा. वि.–जिसके दरवाज़े पर हाथी बँधा हो, जो हाथी पर चढ़ता हो, पहले समय में यह बड़ी इज़्ज़त की चीज़ थी।

फ़ीलपा (فیل پا) फ़ा. पुं.–एक रोग जिसमें पाँव सूजकर बहुत मोटे हो जाते हैं, श्लीपद, शिलीपद, पादगंडिर।

फ़ीलपायः (فیل پایہ) फ़ा. पुं.–चूने या सीमेंट या पत्थर का मोटा और बड़ा स्तंभ, खंभा।

फ़ीलबान (فیل بان) फ़ा. पुं.–हाथी चलानेवाला, हस्तिपक, अंकुशग्रह, निषादी।

फ़ीलबाराँ (فیل باراں) फ़ा. पुं.–बरसात की अंतिम वर्षा (हथिया या हस्त नक्षत्र)।

फ़ीलमुर्ग़ (فیل مرغ) फ़ा. पुं.–अमरीका का एक बहुत बड़ा पक्षी जो 'पीरू' के राष्ट्र में पाया जाता है।

फ़ीलसवार (فیل سوار) फ़ा. वि.–हाथी पर बैठा हुआ, हस्त्यारूढ।

फ़ीसद (فی صد) फ़ा. वि.–दे. 'फ़ीसदी'।

फ़ीसदी (فی صدی) फ़ा. वि.–प्रतिशत, फ़ीसद, जैसे—'बीस फ़ीसदी' यानी सौ में बीस।

फ़ीसबीलिल्लाह (فی سبیل اللہ) अ. वा.–ईश्वर की राह में, ईश्वर के नाम पर, ईश्वर के लिए।

फ़ु

फ़ुंदुक़ (فندق) अ. स्त्री.–छोटे बेर के बराबर लाल रंग का एक मेवा।

फ़ुआक़ (فواق) अ. स्त्री.–हिचकी का रोग, हिक्का।

फ़ुआद (فواد) अ. पुं.–हृदय, दिल।

फ़ुक़रा (فقرا) अ. पुं.–'फ़क़ीर' का बहु., फ़क़ीर लोग।

फ़ुक़हा (فقہا) अ. पुं.–'फ़क़ीह' का बहु., बहुत से फ़क़ीह।

फ़ुक़्क़ाअ (فقاع) अ. स्त्री.–चावलों की मदिरा, जो नशा लाती है; एक नशा न लानेवाली शराब; शीशा; पियाला, कूज़ः; बुल्बुला, हबाब।

फ़ुकाहत (فکاہت) अ. स्त्री.–मनोविनोद, मनोरंजन, दिलबहलाव, ख़ुशतब्ई।

फ़ुक़्दान (فقدان) अ. पुं.–अभाव, बिलकुल न प्राप्त होना; बहुत कमी, दे. 'फ़िक़्दान', दोनों शुद्ध हैं।

फ़ुक़्दाने ग़ैरत (فقدان غیرت) अ. पुं.–स्वाभिमान की कमी या अभाव, निर्लज्जता।

फ़ुक़्दाने हया (فقدان حیا) अ. पुं.–लज्जा का अभाव, निर्लज्जता।

फ़ुग़ (فغ) फा. पुं.–मूर्ति, प्रतिमा, बुत, दे. 'फ़ग़', दोनों शुद्ध हैं।

फ़ुग़ाँ (فغاں) फा. स्त्री.–आर्तनाद, नाला; दुहाई।

फ़ुग़ानी (فغانی) फा. वि.–दुहाई देनेवाला, चिल्लानेवाला; नाला करनेवाला; एक ईरानी शाइर।

फ़ुज़ला (فضلا) अ. पुं.–'फ़ाज़िल' का बहु., विद्वज्जन, पंडित लोग।

फ़ुज़ूँ (فزوں) फा. वि.–अफ़्ज़ूँ का लघु., अधिक, प्रचुर, बहुत, ज़ियादा।

फ़ुज़ूदः (فزودہ) फा. वि.–'अफ़्ज़ूदः' का लघु., अधिक किया हुआ, बढ़ाया हुआ।

फ़ुज़ूनी (فزونی) फा. स्त्री.–'अफ़्ज़ूनी' का लघु., अधिकता, प्रचुरता, बहुतात।

फ़ुजर (فجور) अ. पुं.–पाप, गुनाह; व्यभिचार, दुराचार, हरामकारी।

फ़ुज़ूल (فضول) अ. वि.–व्यर्थ, बेकार; निरर्थक, बेमतलब; निकम्मा; फ़िज़ूल।

फ़ुज़ूलख़र्च (فضول خرچ) अ. फा. वि.–बेकार में रुपया ख़र्च करनेवाला, अपव्ययी।

फ़ुज़ूलख़र्ची (فضول خرچی) अ. फा. स्त्री.–बेकार में रुपया ख़र्च करना, अपव्यय।

फ़ुज़ूलगो (فضول گو) अ. फा. वि.–बेकार की बातें बनानेवाला, वाचाल, मिथ्यावादी, चित्रजल्पी।

फ़ुज़ूलगोई (فضول گوئی) अ. फा. स्त्री.–बेकार की बातें बनाना, वाचालता, मिथ्यावाद, चित्रजल्प।

फ़ुज़ूली (فضولی) अ. वि.–वह व्यक्ति जो बेकार के काम करता फिरे; मिथ्याभाषी; फ़ुज़ूल आदमी।

फ़ुज़ूलीयात (فضولیات) अ. पुं.–फ़ुज़ूल और निरर्थक बातें।

फ़ुज्जार (فجار) अ. पुं.–'फ़ाजिर' का बहु., पापी लोग; व्यभिचारी लोग।

फ़ुज़्लः (فضلہ) अ. पुं.–जूठन, बचा हुआ खाना; विष्ठा, पुरीष, गू; फोक, वह चीज़ जो किसी पदार्थ से रस आदि निकाल लेने पर बचती है, जैसे—मूली के पत्तों का अरक निकालकर उसका फोक या फ़ुज़्लः।

फ़ुज़्लात (فضلات) अ. पुं.–'फ़ुज़्लः' का बहु., 'फ़ुज़्ले'।

फ़ुतादः (فتادہ) फा. वि.–गिरा हुआ, पड़ा हुआ।

फ़ुतादगी (فتادگی) फा. स्त्री.–गिरा हुआ होना, पड़ा हुआ होना।

फ़ुतादनी (فتادنی) फा. वि.–गिरने के योग्य।

फ़ुतुव्वत (فتوت) अ. स्त्री.–वीरता, शूरता, बहादुरी; शील, मुरुव्वत।

फ़ुतूर (فتور) अ. पुं.–विकार, दोष, ख़राबी; शरारत, उत्पात।

फ़ुतूरे अक़्ल (فتور عقل) अ. पुं.–बुद्धि-विकार, अक़्ल की ख़राबी।

फ़ुतूरे दिमाग़ (فتور دماغ) अ. पुं.–मस्तिष्क-दोष, दिमाग़ की ख़राबी, बुद्धि-दोष, अक़्ल की ख़राबी।

फ़ुतूरे हज़्म (فتور هضم) अ. पुं.–मंदाग्नि, हाज़िम का बिगाड़।

फ़ुतूह (فتوح) अ. स्त्री.–प्राप्ति, लाभ, फ़ाइदा, हुसूल; समृद्धि, उन्नति, कुशाइश; ऊपर की आय; 'फ़त्ह' का बहु., जीतें।

फ़ुतूहात (فتوحات) अ. स्त्री.–'फ़ुतूह' का बहु., प्राप्तियाँ, लाभ।

फ़ुतूही (فتوحی) उ. स्त्री.–बिना आस्तीनों की बंडी।

फ़ुनून (فنون) अ. पुं.–'फ़न' का बहु., 'कलाएँ'।

फ़ुनूने लतीफ़ः (فنون لطیفہ) अ. पुं.–ललित कलाएँ।

फ़ुयूज़ (فیوض) अ. पुं.–'फ़ैज़' का बहु., फ़ैयाज़ियाँ, बख़्शिशें।

फ़ुरात (فرات) फा. स्त्री.–इराक़ की नदी जिसके किनारे हज़्रत इमाम हुसैन कर्बला में शहीद हुए।

फ़ुरादः (فرادی) अ. वि.–'फ़र्द' का बहु., एक-एक करके, अलग-अलग।

फ़ुरुश (فرش) अ. पुं.–'फ़िराश' का बहु., बिछौने, बिस्तरे।

फ़ुरूअ (فروع) अ. स्त्री.–'फ़र्अ' का बहु., शाखाएँ; मूल वस्तु से निकली हुई वस्तुएँ।

फ़ुरूक़ (فروق) अ. पुं.–दो वस्तुओं में फ़र्क़ करना।

फ़ुरूज (فروج) अ. स्त्री.–'फ़र्ज' का बहु., भग, योनियाँ।

फ़ुरूश (فروش) अ. पुं.–'फ़र्श' का बहु., बहुत से फ़र्श।

फ़ुरोग़ (فروغ) फा. पुं.–दे. 'फ़रोग़', शुद्ध 'फ़ुरोग़' है, परंतु उर्दू में 'फ़रोग़' भी बोलते हैं।

फ़ुरोज़ (فروز) फा. प्रत्य.–रौशन करनेवाला, जैसे—'दिल फ़ुरोज़' दिल को रौशनी देनेवाला।

फ़ुरोज़ाँ (فروزاں) फा. वि.–प्रकाशमान्, रौशन।

फ़ुरोज़िंदः (فروزندہ) फा. वि.–प्रकाशक, उज्ज्वल करनेवाला, चमकानेवाला।

फ़ुरोद (فرود) फा. वि.–निम्न, नीचे।

फ़ुरोदगाह (فرودگاہ) फा. स्त्री.–दे. 'फ़रोदगाह', उर्दू में वही बोलते हैं।

फ़ुर्क़त (فرقت) अ. स्त्री.–वियोग, विरह, जुदाई, फ़िराक़।

फ़ुर्क़तज़दः (فرقت زدہ) अ. फा. वि.–विरहग्रस्त, वियोगी, विरह-पीड़ित।

फ़ुर्क़तनसीब (فرقت نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में जीवन भर वियोग ही वियोग हो।

फ़ुर्क़ान (فرقان) अ. पुं.–क़ुर्आन।

फ़ुर्जः (فرجہ) अ. पुं.–अवकाश, छुट्टी, फ़ुर्सत; शिगाफ़, फटन।

फ़ुर्जःजू (فرجہ جو) अ. फा. वि.–फ़ुर्सत ढूँढ़नेवाला, छुट्टी का वक़्त तलाश करनेवाला।

फ़ुर्सत (فرصت) अ. स्त्री.–अवकाश, छुट्टी; संतोष, इत्मीनान; मुक्ति, नजात; निबटारा, फ़राग़त।

फ़ुर्सततलब (فرصت طلب) अ. वि.–जिसके लिए फ़ुर्सत की ज़रूरत हो, जो फ़ुर्सत में इत्मीनान से हो सके।

फ़ुर्सते ज़ीस्त (فرصت زیست) अ. फा. स्त्री.–जीवन-काल, ज़िंदगी का ज़माना।

फुलाँ (فلاں) अ. पुं.–अमुक, फ़लाना।

फ़ुलूस (فلوس) अ. पुं.–'फ़ल्स' का बहु., पैसे।

फ़ुल्कः (فلکہ) अ. पुं.–चर्ख़े के तकले में लगायी जानेवाली चमड़े की गोल टिकिया; ख़ेमे के बाँसों में लगायी जानेवाली गोल टिकली।

फ़ुल्क (فلک) अ. स्त्री.–नाव, नौक़ा, किश्ती।

फ़ुव्वः (فوہ) फा. पुं.–मजीठ, एक लकड़ी जो रंग के काम आती है।

फ़ुशुर्दः (فشردہ) फा. वि.–निचोड़ा हुआ, अफ़शुर्दः का लघु.।

फ़ुशुर्दनी (فشردنی) फा. वि.–निचोड़ने योग्य, निचोड़े जाने के लाइक़।

फ़ुसहा (فصحا) अ. पुं.–'फ़सीह' का बहु., फ़सीह लोग।

फ़ुसहाए वक़्त (فصحائے وقت) अ. पुं.–अपने समय के सारे 'फ़सीह' व्यक्ति।

फ़ुसूँ (فسوں) फा. पुं.–'अफ़्सूँ' का लघु.; जादू, माया-कर्म; इंद्रजाल, शाबदःबाज़ी।

फ़ुसूँकार (فسوں کار) फा. वि.–दे. 'फ़ुसूँगर'।

फ़ुसूँगर (فسوں گر) फा. वि.–जादूगर, मायावी।

फ़ुसूँतराज़ (فسوں طراز) फा. वि.–दे. 'फ़ुसूँगर'।

फ़ुसूँसाज़ (فسوں ساز) फा. वि.–दे. 'फ़ुसूँगर'।

फ़ुसूल (فصول) अ. स्त्री.–फ़स्ल का बहु., ऋतुएँ; पुस्तक के परिच्छेद।

फ़ुसोस (فسوس) फा. पुं.–अफ़्सोस का लघु., शोक, अफ़्सोस, दुःख; पछतावा, पश्चात्ताप।

फ़ुस्तक़ (فستق) अ. पुं.–पिस्ता जो एक प्रसिद्ध मेवा है।

फ़ुस्साक़ (فساق) अ. पुं.–'फ़ासिक़' का बहु., दुराचारी लोग।

फ़ुस्हत (فسحت) अ. स्त्री.–मकान की लंबाई-चौड़ाई, विस्तार, वुसअत।

फ़ू

फ़ूतः (فوطہ) अ. पुं.–तौलिया, अँगौछा।

फ़ूफ़ल (فوفل) अ. स्त्री.–सुपारी, छालिया, दे. 'फ़ौफ़ल', दोनों शुद्ध हैं।

फ़ूफ़लतराश (فوفل تراش) अ. फा. पुं.–सुपारी काटने का यंत्र, सरौता।

फ़ूम (فوم) अ. पुं.–लहसुन, लशुन; गेहूँ, गोधूम।

फ़े

फ़े'ल (فعل) अ. पुं.–कार्य, काम; क्रिया, वर्ब; कृत्य, कर्म, अमल; बुरी हरकत, बुरा कर्म।

फ़े'लन (فعلاً) अ. अव्य.–अमल और कर्म से, कर्मणा।

फ़े'ले अबस (فعل عبث) अ. पुं.–व्यर्थ का काम, निरर्थक कार्य, जिस काम में कोई लाभ न हो।

फ़े'ले जाइज़ (فعل جائز) अ. पुं.–अच्छा काम, ठीक काम, जिसके करने में न कोई हानि हो न किसी को आपत्ति।

फ़े'ले नाक़िस (فعل ناقص) अ. पुं.–अपूर्ण क्रिया।

फ़े'ले नाजाइज़ (فعل ناجائز) अ. पुं.–वह काम जो उचित न हो, जिसके करने में हानि भी हो और आपत्ति भी; हरामकारी, व्यभिचार।

फ़े'ले नाशाइस्तः (فعل ناشائستہ) अ. फा. पुं.–अश्लील और फ़ुह्श काम; व्यभिचार, हरामकारी।

फ़े'ले बद (فعل بد) अ. फा. पुं.–बुरा काम, दुराचार; व्यभिचार, हरामकारी।

फ़े'ले मक्रूह (فعل مکروہ) अ. पुं.–वह काम जिसके करने में तबीअत घिन करे।

फ़े'ले मज्हूल (فعل مجہول) अ. पुं.–वह क्रिया जिसका कर्ता ज्ञात न हो।

फ़े'ले मा'रूफ़ (فعل معروف) अ. पुं.–वह क्रिया जिसका कर्ता ज्ञात हो।

फ़े'ले मुतअद्दी (فعل متعدی) अ. पुं.–सकर्मक क्रिया।

फ़े'ले लाज़िम (فعل لازم) अ. पुं.–अकर्मक क्रिया।

फ़े'ले शनीअ (فعل شنیع) अ. पुं.–दे. 'फ़ेले वद', कुकर्म।

फ़ेहरिस्त (فہرست) अ. स्त्री.–सूचीपत्र, सूची।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन (فہرست مضامین) अ. स्त्री.–विषय-सूची, किताब के सारे मज़्मूनों की सूची।

फ़ै

फ़ैज़ (فیض) अ. पुं.–दानशीलता, फ़ैयाज़ी; लाभ, नफ़ा; उपकार, भलाई; यश, कीर्ति।

फ़ैज़गुस्तर (فیض گستر) अ. फा. वि.–यशस्वी, कीर्तिमान्; वदान्य, फ़ैयाज़, मुक्तहस्त।

फ़ैज़तलब (فیض طلب) अ. वि.–जो किसी से यश की याचना करता हो, यशोलिप्सु, यशस्काम।

फ़ैज़बख़्श (فیض بخش) अ. फा. वि.–यश देनेवाला; दान देनेवाला; बख़्शिश करनेवाला।

फ़ैज़मआब (فیض مآب) अ. वि.–यशस्वी, कीर्तिमान्, फ़ैयाज़, वदान्य।

फ़ैज़याब (فیض یاب) अ. फा. वि.–जिसने फ़ैज़ पाया हो, प्राप्त-यश, प्राप्त-लाभ।

फ़ैज़याबी (فیض یابی) अ. फा. स्त्री.–फ़ैज़ पाना, यश पाना, लाभ उठाना।

फ़ैज़रसाँ (فیض رساں) अ. फा. वि.–दे. 'फ़ैज़बख़्श'।

फ़ैज़रसानी (فیض رسانی) अ. फा. स्त्री.–फ़ैज़ पहुँचाना, यश देना।

फ़ैज़रसी (فیض رسی) अ. फा. स्त्री.–यश देना।

फ़ैज़ान (فیضان) अ. पुं.–दे. 'फ़ैज़'।

फ़ैज़े आम (فیض عام) अ. पुं.–ऐसी बख़्शिश और ऐसा यश जो सर्वसाधारण के लिए हो।

फ़ैयाज़ (فیاض) अ. वि.–बहुत देनेवाला, सख़ी, दाता, मुक्तहस्त, वदान्य।

फ़ैयाज़तरीन (فیاض ترین) अ. फा. वि.–सब से अधिक बख़्शिश करनेवाला, वदान्यतम।

फ़ैयाज़ी (فیاضی) अ. स्त्री.–बख़्शिश, दानशीलता, सख़ावत।

फ़ैलसूफ़ (فیلسوف) अ. पुं.–वैज्ञानिक, विद्वान्; धूर्त, छली, वंचक।

फ़ैसलः (فیصلہ) अ. पुं.–निर्णय, तै; समझौता, तस्फ़िया; अंत, ख़ातिमा; न्याय, इंसाफ़।

फ़ैसलःतलब (فیصلہ طلب) अ. वि.–जिसका फ़ैसला होना ज़रूरी हो, जिसका निर्णय होना बाक़ी हो।

फ़ैसल (فیصل) अ. वि.–निर्णीत, तै; निर्णय, फ़ैसला।

फ़ो

फ़ोतः (فوتہ-فوطہ) फा. पुं.–लगान, महसूल, भूमि-कर; अंडकोश, पोता।

फ़ोतःख़ानः (فوتہ خانہ) फा. पुं.–कोषागार, लगान का रुपया रखने का घर।

फ़ोतःदार (فوتہ دار) फा. पुं.–ख़ज़ानची, तहसीलदार, पोतदार।

फ़ौ

फ़ौक़ (فوق) अ. वि.–ऊपर, सिरे पर; प्रधानता, तरजीह।

फ़ौक़ज़्ज़िक्र (فوق الذکر) अ. वि.–जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका हो, उपर्युक्त।

फ़ौक़लआदत (فوق العادت) अ. वि.–प्रकृति के विरुद्ध।

फ़ौक़ानी (فوقانی) अ. वि.–ऊपर नुक़्ते रखनेवाला अरबी-फ़ार्सी या उर्दू का अक्षर।

फ़ौक़ियत (فوقیت) अ. स्त्री.–प्रधानता, तरजीह; श्रेष्ठता, उत्तमता, बड़प्पन।

फ़ौक़ी (فوقی) अ. वि.–ऊपरवाला, ऊपरी।

फ़ौज (فوج) अ. स्त्री.–सेना, बल, वाहिनी, अनीकिनी, वरूथिनी, चमू, अनीक, लश्कर।

फ़ौज़ (فوز) अ. पुं.–कल्याण, भलाई; सफलता, कामयाबी।

फ़ौजकशी (فوج کشی) अ. फा. स्त्री.–दुश्मन के मुल्क पर चढ़ाई, युद्धयात्रा।

फ़ौजदारी (فوجداری) अ. फा. स्त्री.–वह न्यायालय जिसमें लड़ाई-झगड़े और क़त्ल, ख़ून के केस हों; मारपीट, लाठी या हथियार की लड़ाई।

फ़ौजी (فوجی) अ. वि.–फ़ौज का जवान, सैनिक; फ़ौज का, सेना का; सेना से सम्बद्ध।

फ़ौज़े अज़ीम (فوز عظیم) अ. पुं.–बहुत बड़ी सफलता।

फ़ौजे बर्री (فوج بری) अ. स्त्री.–वह सेना जो ज़मीन पर लड़े।

फ़ौजे बह्री (فوج بحری) अ. स्त्री.–वह सेना जो समुद्र में जहाज़ों की लड़ाई लड़े, जलसेना।

फ़ौजे हवाई (فوج ہوائی) अ. फा. स्त्री.–वह सेना जो वायुयानों द्वारा लड़े, वायुसेना।

फ़ौज़ोफ़लाह (فوز و فلاح) अ. स्त्री.–उन्नति और भलाई।

फ़ौत (فوت) अ. वि.–मरण, मृत्यु, मौत; मृत, मरा हुआ।

फ़ौती (فوتی) अ. वि.–मरने से सम्बन्ध रखनेवाला।

फ़ौतीनामः (فوتی نامہ) अ. फा.–वह रजिस्टर जिसमें मरनेवालों का नाम, उम्र, तारीख़ आदि लिखी जाती ह।

फ़ौफ़ल (فوفل) अ. स्त्री.–सुपारी, छालिया, दे. 'फ़ूफ़ल', दोनों शुद्ध हैं।

फ़ौर (فور) अ. वि.–फ़ौरन, तुरंत, उर्दू में अकेला नहीं बोला जाता, 'फ़िल फ़ौर' बोलते हैं।

फ़ौरन (فوراً) अ. वि.–तुरंत, तत्क्षण, त्वरित, शीघ्र, सद्यः, उसी क्षण, उसी समय।

फ़ौरान (فوران) अ. पुं.–आवेग, जोश; तीव्रता, तेज़ी।

फ़ौरी (فوری) अ. वि.–शीघ्र, त्वरित, फ़ौरन; अर्जेंट, अतिपाती।

फ़ौलाद (فولاد) अ. पुं.–अस्ली लोहा, लोहसार, कांतिसार।

फ़ौलादी (فولادی) अ. वि.–फ़ौलाद का बना हुआ, लोहमय; फ़ौलाद का, लौहिक।

ब

बंग (بنگ) फा. स्त्री.–भाँग, भंग, विजया, एक प्रसिद्ध मादक बूटी।

बंगनोश (بنگ نوش) फा. वि.–भाँग पीनेवाला, भंगड़।

बंगफ़रोश (بنگ فروش) फा. पुं.–भाँग बेचनेवाला, भंग का ठेकेदार।

बंगिश (بنگش) फा. पुं.–पठानों की एक जाति-विशेष।

बंज (بنج) अ. स्त्री.–अजवाइन ख़ुरासानी, एक दवा।

बंदः (بندہ) फा. पुं.–दास, ग़ुलाम; अधीन; वशीभूत, ताबे'; मनुष्य, आदमी; भक्त, फ़िदाई; आज्ञाकारी; उपासक, इबादत करनेवाला; नम्रता दिखाने के लिए वक्ता अपने लिए भी कहता है।

बंदःज़ादः (بندہ زادہ) फा. पुं.–अपना लड़का, बड़े आदमी से अपने लड़के के लिए कहते हैं।

बंदःनवाज़ (بندہ نواز) फा. वि.–अपने सेवकों और भक्तों पर दया करनेवाला, भक्त-वत्सल।

बंदःनवाज़ी (بندہ نوازی) फा. स्त्री.–अपने सेवकों और भक्तों पर कृपादृष्टि।

बंदःपर्वर (بندہ پرور) फा. वि.–दे. 'बंदःनवाज़'।

बंदःपर्वरी (بندہ پروری) फा. स्त्री.–दे. बंदःनवाज़ी।

बंद (بند) फा. पुं.–अंग का जोड़; कारावास, क़ैद; फंदा, पाश; मेंड़, पुश्ता; पेच, दाँव; रोक, रुकावट; गाँठ, गिरिह, ग्रंथि; बंद किया हुआ; ढाँका हुआ; कविता में 'मुसद्दस' या 'मुख़म्मस' की एक कड़ी जिसमें छः अथवा पाँच मिस्रे होते हैं; 'तर्कीबबंद' या 'तर्जीअबंद' का एक भाग जिसमें कई शे'र होते हैं; (प्रत्य.) बँधा, जैसे—'पाबंद' जिसके पाँव बँधे हों; बाँधनेवाला, जैसे—'नालबंद' नाल बाँधनेवाला।

बंदए आज़ाद (بندۂ آزاد) फा. पुं.–वह सेवक जो सेवा-मुक्त कर दिया गया हो।

बंदए आजिज़ (بندۂ عاجز) फा. अ. पुं.–वक्ता अपने लिए कहता है अर्थात् बहुत ही विनीत और विवश सेवक।

बंदए इश्क़ (بندۂ عشق) फा. अ. पुं.–प्रेम का बंदा, प्रेमिका का भक्त।

बंदए ख़ुदा (بندۂ خدا) फा. पुं.–ईश्वर का बंदा, ईश्वर का उपासक; मनुष्य, व्यक्ति।

बंदए ज़र (بندۂ زر) फा. पुं.–रुपये का बंदा, धनोपासक।

बंदए दरगाह (بندۂ درگاہ) फा. पुं.–किसी महान् व्यक्ति का परम भक्त।

बंदए दिरम (بندۂ درم) फा. पुं.–दे. 'बंदए ज़र'।

बंदए नाचीज़ (بندۂ ناچیز) फा. पुं.–दे. 'बंदए आजिज़'।

बंदए बेज़र (بندۂ بےزر) फा. पुं.–वह भक्त या दास जो बिना ख़रीदे ही भक्त या दास हो।

बंदए बेदाम (بندۂ بےدام) फा. पुं.–वह व्यक्ति जो परम भक्त हो अर्थात् बग़ैर फंदे और जाल के ही प्रेमपाशाबद्ध।

बंदए मिस्कीं (بندۂ مسکیں) फा. अ. पुं.–दे. 'बंदए आजिज़'।

बंदए मुख़्लिस (بندۂ مخلص) फा. अ. पुं.–वह भक्त जो बहुत ही श्रद्धापूर्वक सेवा करे।

बंदए शिकम (بندۂ شکم) फा. पुं.–पेट का बंदा, पेट का कुत्ता, उदर-कृमि।

बंदए हल्क़ःबगोश (بندۂ حلقہ بگوش) फा. अ. पुं.–वह दास जिसके कानों में दासता का कुंडल पड़ा हो।

बंदगी (بندگی) फा. स्त्री.–प्रणाम, सलाम; दासता, ग़ुलामी; उपेक्षा, इज्तिनाब; विनम्रता, इन्किसारी; पूजा, उपासना, इबादत; आज्ञापालन।

बंद बंद (بند بند) फा. पुं.–शरीर का एक-एक जोड़।

बंदर (بندر) अ. पुं.–समुद्रतट, साहिल, बंदरगाह, पोर्ट।

बंदिश (بندش) फा. स्त्री.–ग्रंथि, गाँठ, गिरिह; षड्यंत्र, साज़िश; पेशबंदी, पुरश्चरण; रोक, रुकावट; प्रतिबंध, मनाही; बनावट, साख़्त; बाँधने का काम।

बंदिशे अल्फ़ाज़ (بندش الفاظ) फा. अ. स्त्री.–गद्य या पद्य में शब्दों का यथास्थान उपयोग तथा शुद्ध और चमत्कारपूर्ण विन्यास।

बंदिशे इबारत (بندش عبارت) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बंदिशे अल्फ़ाज़'।

बंदिशे मज़्मून (بندش مضمون) फा. अ. स्त्री.–किसी प्रबंध या मज़्मून का नैसर्गिक और मन को लगनेवाला बयान।

बंदी (بندی) फा. वि.–क़ैदी, कारावासी।

बंदीख़ानः (بندی خانہ) फा. पुं.–क़ैदख़ाना, कारावास।

बंदूक़ (بندوق) अ. स्त्री.–गोली चलाने का प्रसिद्ध यंत्र, शतघ्नी।

बंदूक़ची (بندوقچی) अ. फा. पुं.–बंदूक़ चलानेवाला; निशानची, निशानःबाज़, लक्ष्यभेदी।

बंदूक़साज़ (بندوق ساز) अ. फा. पुं.–बंदूक़ बनानेवाला; बंदूकों की मरम्मत करनेवाला।

बंदे क़बा (بند قبا) फा. अ. पुं.–क़बा या कुर्ते की घुंडी, चोली की घुंडी, "गुल्चीं से कहियो आये चमन में पुकार के, बंदे क़बा खुले हैं उरू से बहार के।"

बंदे ग़म (بند غم) फ़ा. अ. पुं.–दुःख का फंदा; प्रेम का फंदा।

बंदे दस्त (بند دست) फा. पुं.–पहुँचा, हाथ और कलाई के बीच का जोड़।

बंदे दाम (بند دام) फा. पुं.–जाल का फंदा।

बंदे निक़ाब (بند نقاب) फा. अ. पुं.–बुर्क़े की गिरिह।

बंदोकुशाद (بندوکشاد) फा. पुं.–खोलना और बंद करना, अर्थात् प्रबंध, व्यवस्था, इंतिज़ाम।

बंदोबस्त (بندوبست) फा. पुं.–प्रबंध, व्यवस्था, इंतिज़ाम; खेतों की हदबंदी, उनकी मालगुज़ारी का निर्णय और उनके नंबर आदि की व्यवस्था जो नये सिरे से हो।

बंदोबस्ते आरिज़ी (بندوبست عارضی) फा. अ. पुं.–कृषि सम्बन्धी वह बंदोबस्त जो चंद वर्षों के लिए हो, स्थायी न हो।

बंदोबस्ते इस्तिम्रारी (بندوبست استمراری) फा. अ. पुं.–दे. 'बंदोबस्ते दवामी'।

बंदोबस्ते दवामी (بندوبست دوامی) फा. अ. पुं.–खेतों और ज़मीनों का वह बंदोबस्त जो एक बार हो जाय और फिर कभी न बदले, जैसे—बंगाल का बंदोबस्त।

ब अक़्सात (بہ اقساط) फा. अ. अव्य.–क़िस्तों में करके, थोड़ा-थोड़ा करके, कई बार में।

ब अदब (بہ ادب) फ़ा. अ. अव्य.–नम्रता और आदर के साथ, आदरपूर्वक।

ब अल्फ़ाज़े दीगर (بہ الفاظ دیگر) फा. अ. अव्य.–दूसरे शब्दों में, दूसरे प्रकार से।

ब अह्सने वुजूह (بہ احسن وجوہ) फा. अ. अव्य.–बहुत अच्छे प्रकार से, सुंदर रूप से।

ब आज़ादी (بہ آزادی) फा. अव्य.–स्वतंत्रता के साथ, खुले रूप से।

ब आबोताब (بہ آب وتاب) फा. अव्य.–चमक-दमक के साथ, शानो-शौकत के साथ।

ब आराम (بہ آرام) फा. अव्य.–आराम से, इत्मीनान से, सुख-चैन से; सुगमता से, सरलता से।

ब आसाइश (بہ آسائش) फा. अव्य.–दे. 'ब आराम'।

ब आसानी (بہ آسانی) फा. अव्य.–सुगमतापूर्वक, सरलता से, आसानी से।

ब आसूदगी (بہ آسودگی) फा. अव्य.–सुख-चैन से, ऐशो-आराम से; आराम से, सुगमता से।

ब इख़्तियारे ख़ुद (بہ اختیار خود) फा. अव्य.–अपने अधिकार से।

ब इख़्तिसार (بہ اختصار) फा. अ. अव्य.–संक्षेप में, संक्षिप्त रूप से।

ब इज़्ज़तो एहतिराम (بہ عزت و احترام) फा. अ. अव्य.–पूरे संमान के साथ, पूरे आदर-सत्कार के साथ, पूर्ण प्रतिष्ठा तथा सम्मान-सहित।

ब इत्तिफ़ाक़े राय (بہ اتفاق رائے) फा. अ. अव्य.–सबकी सहमति से, सर्वसम्मति से।

ब इत्मीनान (بہ اطمینان) फा. अ. अव्य.–दे. 'ब आराम'।

ब इफ़्रात (بہ افراط) फा. अ. अव्य.–अत्यधिक, बहुत ज़ियादा, ज़रूरत और आवश्यकता से अधिक।

ब इवज़ (بہ عوض) फा. अ. अव्य.–बदले में, इवज़ में।

बईर (بعیر) अ. पुं.–उष्ट्र, ऊँट।

ब उज्लत (بہ عجلت) फा. अ. अव्य.–शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से।

ब एहतियात (بہ احتیاط) फा. अ. अव्य.–सावधानतापूर्वक, एहतियात के साथ।

ब क़द्र (بہ قدر) फा. अ. अव्य.–अनुसार, मुताबिक़; मात्रा में, मिक़्दार में।

ब क़द्रे ज़र्फ़ (بہ قدر ظرف) फा. अ. अव्य.–जितना बर्तन हो उतना, जितनी योग्यता हो उतनी, जितना सामर्थ्य हो उतना।

ब क़द्रे ज़ुरूरत (بہ قدر ضرورت) फा. अ. अव्य.–जितनी आवश्यकता हो उतनी।

ब क़द्रे वुस्अत (بہ قدر وسعت) फा. अ. अव्य.–जितना सामर्थ्य हो उतना; जितनी समाई हो उतनी।

ब क़द्रे शौक़ (بہ قدر شوق) फा. अ. अव्य.–जितनी अभिलाषा हो उतनी।

ब क़द्रे हैसियत (بہ قدر حیثیت) फा. अ. अव्य.–जितना सामर्थ्य हो उतना; जितना धन हो उतना।

ब क़द्रे हौसलः (بہ قدر حوصلہ) फा. अ. अव्य.–जितना साहस हो उतना।

बक़रः (بقرہ) अ. स्त्री.–एक गाय; एक बैल।

बक़र (بقر) अ. पुं.–गो, गाय; वृषभ, बैल।

बक़र ईद (بقر عید) अ. स्त्री.–मुसलमानों की वह ईद जो ज़ीहिज्जा की दसवीं तारीख़ को होती है।

ब कराहत (بہ کراہت) फा. अ. अव्य.–घिन के साथ, नफ़्रत के साथ; जी न चाहने के साथ, मज्बूरी से।

ब कर्रोफ़र (بہ کروفر) फा. अ. अव्य.–तड़क-भड़क के साथ।

ब क़लमे ख़ुद (بہ قلم خود) फा. अ. अव्य.–अपने क़लम से, स्वयं अपने हाथ की लिखावट से।

बक़ा (بقا) अ. स्त्री.–नित्यता, अनश्वरता, दवाम;

अस्तित्व, वुजूद; जीवन, ज़िंदगी; रक्षा, हिफ़ाज़त; सलामती।

बक़ाए दवाम (بقائے دوام) अ. स्त्री.–नित्यता, अनश्वरता।

बक़ाए सालिह (بقائے صالح) अ. स्त्री.–अच्छी चीज़ का बाक़ी रहना।

बक़ायः (بقایہ) अ. पुं.–शेष, बचा हुआ; बची हुई रक़म, रोकड़; ख़र्च से बची हुई रक़म।

बकारत (بکارت) अ. स्त्री.–कौमार्य, कुँआरापन; योनि-पटल का भग्न न होना, अक्षतत्व, अक्षत योनि, यह शब्द 'बिकारत' अथवा 'बुकारत' नहीं है।

बकावल (بکاول) तु. पुं.–शाही रसोईघर का अध्यक्ष, दे. 'बुकाबुल', दोनों शुद्ध हैं।

ब क़ैदे हयात (بہ قید حیات) फा. अ. अव्य.–जीवन-पाश में आबद्ध, जीवित, ज़िंदा।

ब क़ौले शख़्से (بہ قول شخصے) फा. अ. अव्य.–किसी विशेष व्यक्ति के कथनानुसार।

बक़्क़ाल (بقّال) अ. पुं.–सब्ज़ीफ़रोश, कुँजड़ा; वणिक्, वनिया; आटा-दाल बेचनेवाला, परचूनिया।

बक्तर (بکتر) फा. पुं.–कवच, ज़िरिह।

बक्तरगर (بکترگر) फा. पुं.–कवच बनानेवाला, कवचकार।

बक्तरपोश (بکترپوش) फा. वि.–कवचधारी, बक्तर पहने हुए।

बक्तरबंद (بکتربند) फा. वि.–बक्तर पहने हुए, कवचधारी; बक्तर से मढ़ी हुई गाड़ियाँ आदि।

बक्तरसाज़ (بکترساز) फा. वि.–दे. 'बक्तरगर'।

बक़्रात (بقراط) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध यूनानी वैज्ञानिक जो हज़्रत ईसा से ४६० वर्ष पूर्व पैदा हुआ था।

बख़ील (بخیل) अ. पुं.–कृपण, बद्धमुष्टि, तद्धन, व्यय-कुंठ, कंजूस।

बख़ीली (بخیلی) अ. स्त्री.–कृपणता, व्ययकुंठता, कंजूसी।

बख़ुदा (بخدا) फा. अव्य.–ईश्वर के लिए, ख़ुदा के लिए; ईश्वर की सौगंध, ख़ुदा की क़सम।

ब ख़ुशी (بہ خوشی) फा. अव्य.–ख़ुशी के साथ, प्रसन्नता पूर्वक, सानंद, सहर्ष।

ब ख़ूबी (بہ خوبی) फा. अव्य.–पूर्ण रूप से, पूर्णतया, पूर्णतः।

बख़ूर (بخور) अ. पुं.–धूनी; लोबान आदि सुलगाकर उसकी सुगंध फैलाना; दवाओं की धूनी लेना।

बख़ूरदान (بخوردان) अ. फा. पुं.–वह पात्र जिसमें धूप आदि सुलगायी जाय, धूपदानी, ऊददानी।

ब ख़ैर (بہ خیر) फा. अ. अव्य.–सकुशल, अच्छी तरह; स्वस्थ, तनदुरुस्त।

ब ख़ैरोआफ़ियत (بہ خیروعافیت) फा. अ. अव्य.–कुशल-पूर्वक, आनंदपूर्वक।

ब ख़ैरोख़ूबी (بہ خیرو خوبی) फा. अ. अव्य.–आनंदपूर्वक, कुशलपूर्वक, बहुत अच्छी तरह से।

बख़्त (بخت) फा. पुं.–भाग्य, प्रारब्ध, अदृश्य, दैव, अदृष्ट, क़िस्मत।

बख़्तआज़माई (بخت آزمائی) फा. स्त्री.–भाग्य-परीक्षा, किसी काम में पड़ना, यह देखना कि अमुक काम में भाग्य साथ देता है या नहीं अर्थात् वह होता है या नहीं।

बख़्तआवर (بخت آور) फा. वि.–दे. 'बख़्तावर'।

बख़्तबरगश्तः (بخت برگشتہ) फा. वि.–जिसका भाग्य उसके विरुद्ध हो, हतभाग्य, अभागा।

बख़्तयार (بختیار) फा. वि.–जिसका भाग्य उसका मित्र हो, सौभाग्यवान्।

बख़्तवर (بختور) फा. वि.–सौभाग्यशाली, भाग्यवान्, प्रारब्धी, ख़ुशनसीब।

बख़्तवरी (بختوری) फा. स्त्री.–भाग्य की अच्छाई, भाग्यशीलता, ख़ुशनसीबी।

बख़्तावर (بختاور) फा. वि.–भाग्यशाली, भाग्यवान्, प्रारब्धी, क़िस्मतवर।

बख़्ते ख़ुफ़्तः (بخت خفتہ) फा. वि.–सोता हुआ नसीबः, अभागापन।

बख़्ते जवाँ (بخت جوان) फा. पुं.–वह भाग्य जो उन्नति-शील और समृद्धिवान् हो।

बख़्ते तीरः (بخت تیرہ) फा. पुं.–अँधेरी क़िस्मत, बद-क़िस्मती, दुर्भाग्य।

बख़्ते ना फ़र्जाम (بخت نا فرجام) फा. पुं.–खोटी तक़्दीर, दुर्भाग्य।

बख़्ते नारसा (بخت نارسا) फा. पुं.–अधूरी क़िस्मत, अपूर्ण भाग्य।

बख़्ते नासाज़गार (بخت ناسازگار) फा. पुं.–प्रतिकूल भाग्य, मुख़ालिफ़ क़िस्मत।

बख़्ते बरगश्तः (بخت برگشتہ) फा. पुं.–फिरा हुआ नसीबा, विरुद्ध और प्रतिकूल भाग्य।

बख़्ते बलंद (بخت بلند) फा. पुं.–ऊँचा नसीबा, सौभाग्य।

बख़्ते बेदार (بخت بیدار) फा. पुं.–जागता हुआ नसीबा, उन्नतिशील भाग्य।

बख़्ते रसा (بخت رسا) फा. पुं.–अच्छा और पूरा नसीबा, सौभाग्य।

बख़्ते सब्ज़ (بخت سبز) फा. पुं.–अच्छा नसीबा, सौभाग्य।

बख़्तोइत्तिफ़ाक़ (بخت واتفاق) फा. अ. पुं.–भाग्य और दैवयोग।

बख़्यः (بخیه) फा. पुं.–एक प्रकार की मज़बूत सिलाई।

बख़्यःगर (بخیه گر) फा. वि.–बख़्यः करनेवाला, सीनेवाला।

बख़्यःगरी (بخیه گری) फा. स्त्री.–बख़्यः करना, सीना।

बख़्र (بخر) अ. पुं.–दुर्गंध, बास; मुँह की बास।

बख़्रुलफ़म (بخرالفم) अ. पुं.–एक रोग जिसमें मुँह से बास आती है।

बख़्श (بخش) फा. पुं.–अंश, खंड, जुज़; भाग्य, हिस्सा, (प्रत्य.) देनेवाला, जैसे—'जाँबख़्श' प्राण प्रदान करनेवाला; बख़्शनेवाला, जैसे—'ख़ताबख़्श' अपराध क्षमा करनेवाला।

बख़्शाइश (بخشائش) फा. स्त्री.–मुक्ति, मोक्ष, बख़्शिश।

बख़्शिंदः (بخشنده) फा. वि.–बख़्शनेवाला, देनेवाला, दाता; मोक्ष देनेवाला।

बख़्शिश (بخشش) फा. स्त्री.–दान, ख़ैरात; पुरस्कार, इनआम; अनुदान, अतीयः; प्रदान, देना।

बख़्शिशनामः (بخشش نامه) फा. पुं.–'दानपत्र', वह काग़ज़ जिसमें कुछ प्रदान करने की लिखा-पढ़ी हो।

बख़्शी (بخشی) फा. पुं.–सैनिकों को वेतन बाँटनेवाला; क़स्बों में टैक्स वुसूल करनेवाला।

बख़्शीदः (بخشیده) फा. वि.–बख़्शा हुआ, दिया हुआ; क्षमा किया हुआ; मोक्ष दिया हुआ।

बख़्शूदः (بخشوده) फा. वि.–बख़्शा हुआ, दिया हुआ।

बग़ल (بغل) फा. स्त्री.–कुक्षि, काँख; पार्श्व, पहलू; छोर, किनारा; एक ओर, एक तरफ़; कुर्ते या अंगे आदि में बग़ल के नीचे लगनेवाला कपड़ा।

बग़लगीर (بغل گیر) फा. वि.–आलिंगित, जो गले मिला हो, पार्श्ववर्ती, पार्श्वस्थ।

बग़ली (بغلی) फा. वि.–बग़ल से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु; बग़ल का; क़ब्र का वह गढ़ा जो ज़मीन काटकर एक पहलू में बनाते हैं।

बग़ावत (بغاوت) अ. स्त्री.–द्रोह, सरकशी; सैन्य-द्रोह, फ़ौजी ग़द्र; अशांति, बद अम्नी; अवज्ञा, हुक्म उदूली।

बग़ी (بغی) अ. वि.–अवज्ञाकारी, नाफ़रमान; उद्दंड, सरकश।

बग़ैर (بغیر) फा. अ. अव्य.–बिना, बे।

बग़ौर (بغور) फा. अ. अव्य.–ग़ौर से, समीक्षापूर्वक।

बग़्ततन (بغتتاً) अ. अव्य.–अचानक, आकस्मिक, सहसा।

बग़्दाद (بغداد) फा. पुं.–इराक़ की राजधानी, एक प्रसिद्ध और प्राचीन नगर।

बग़्ल (بغل) अ. पुं.–ख़च्चर, अश्वतर, वेसर।

बग़्लक (بغلک) फा. स्त्री.–बग़ल का एक फोड़ा, कखौरी।

बचः (بچه) फा. पुं.–दे. 'बच्चः', दोनों शुद्ध हैं, परंतु उर्दू में 'बच्चः' बोलते हैं।

ब चश्मे अश्कबार (به چشم اشکبار) फा. अव्य.–रोती हुई आँखों के साथ, अर्थात् रोते हुए।

ब चश्मे तर (به چشم تر) फा. अव्य.–भींगी हुई आँखों के साथ, अर्थात् आँखों में आँसू भरे हुए।

ब चश्मे नम (به چشم نم) फा. अव्य.–दे. 'ब चश्मे तर'।

बच्चः (بچه) फा. पुं.–बालक, शिशु; अवयस्क, नाबालिग़; छोकरा, लड़का; पुत्र, बेटा; हरेक प्राणी का शिशु; नासमझ, अबोध।

बच्चःकश (بچه کش) फा. स्त्री.–वह स्त्री जो बहुत से बच्चों की माँ हो, बहुप्रसूता।

बच्चःदान (بچه دان) फा. पुं.–गर्भाशय, रहिम।

बच्चःबाज़ (بچه باز) फा. वि.–गुदमैथुनिक, इग़्लामी।

बच्चःबाज़ी (بچه بازی) फा. स्त्री.–गुदमैथुन, इग़्लाम।

बच्चए आहू (بچهٔ آهو) फा. पुं.–हिरन का बच्चा, मृग-शावक।

बच्चए नौ (بچهٔ نو) फा. पुं.–नयी घटना, नया वाक़िया, नवजात शिशु।

बच्चए फ़ील (بچهٔ فیل) फा. अ. पुं.–हाथी का बच्चा, हस्ति-शावक।

बच्चए मीना (بچهٔ مینا) फा. पुं.–मदिरा, शराब।

बच्चए शुतुर (بچهٔ شتر) फा. पुं.–ऊँट का बच्चा, उष्ट्र-शावक।

ब जब्र (به جبر) अ. फा. अव्य.–बलात्, ज़बरदस्ती, बलपूर्वक।

बजाँ (بجاں) फा. वि.–हृदय से, प्रसन्नतापूर्वक (प्रत्य.), प्राणों में लिये हुए, जैसे—'आतशबजाँ' आग प्राणों में लिये हुए अर्थात् प्राण तपता हुआ।

बजाँ आमदः (بجاں آمده) फा. अव्य.–जान से तंग आया हुआ।

बजा (بجا) फा. वि.–उचित, मुनासिब; सत्य, ठीक, सच; शुद्ध, दुरुस्त।

बजाआवरी (بجاآوری) फा. स्त्री.–आज्ञा-पालन; हुक्म पूरा करना।

बजाए ख़ुद (بجاے خود) फा. अव्य.–अपनी जगह पर, स्वयं, ख़ुद।

बजानोदिल (بجان ودل) फा. अव्य.–हृदय और प्राण से अर्थात् पूरी तरह से, पूर्णरूपेण।

ब ज़ा'मे ख़्वेश (به زعم خویش) फा. अ. अव्य.–अपने ग़लत विचार में।

ब ज़िद (بہ ضد) फा.अं.अव्य.—हठपूर्वक, हठात्, ज़िद के साथ।

बज़ुज़ (بجز) फा. अ. अव्य.—अतिरिक्त, अलावा।

ब ज़ोर (بہ زور) फा. अव्य.—दे 'बजब्र'।

बज़्ज़ाज़ (بزاز) अ. पुं.—कपड़े का व्यापारी, वस्त्र-वणिक्।

बज़्ज़ाज़ख़ानः (بزازخانہ) अ. फा. पुं.—बाज़ार में कपड़े की मंडी, वह स्थान जहाँ कपड़े की दुकानें हों।

बज़्ज़ाज़ी (بزازی) अ. स्त्री.—कपड़े का रोज़गार, कपड़ा बेचने का काम।

बज़्म (بزم) फा. स्त्री.—सभा, गोष्ठी, महफ़िल, उदा.— "बज़्म में बर्क़े नज़र है सद तमन्ना-आफ़्रीं, दिल में है महफ़िल कोई या दिल मेरा महफ़िल में है।"

बज़्मआरा (بزم آرا) फा. वि.—सभा की शोभा बढ़ानेवाला, सभा में विराजमान।

बज़्मगाह (بزمگاہ) फा. स्त्री.—सभा का स्थान।

बज़्मनशीं (بزمنشیں) फा. वि.—सभापति, सद्रे मज्लिस।

बज़्मे अरूसी (بزم عروسی) फा. अ. स्त्री.—विवाह की महफ़िल।

बज़्मे ऐश (بزم عیش) फा. अ. स्त्री.—राग-रंग और ख़ुशी का जलसा।

बज़्मे क़दह (بزم قدح) फा. अ. स्त्री.—पान-गोष्ठी, शराब की मज्लिस।

बज़्मे नशात (بزم نشاط) फा. स्त्री.—दे. 'बज़्मे ऐश'।

बज़्मे नाज़ (بزم ناز) फा. स्त्री.—प्रेमिका की गोष्ठी।

बज़्मे मय (بزم مے) फा. स्त्री.—शराब की महफ़िल, पान-गोष्ठी।

बज़्मे मातम (بزم ماتم) फा. स्त्री.—शोक-सभा, मरनेवाले के शोक में होनेवाली सभा।

बज़्मे मुशाअरः (بزم مشاعرہ) फा. अ. स्त्री.—कवि-सम्मेलन, मुशाअरे की महफ़िल।

बज़्मे रक़्स (بزم رقص) फा. अ. स्त्री.—नाच-गाने का जलसा।

बज़्मे शादी (بزم شادی) फा. स्त्री.—विवाह का जलसा।

बज़्मे शे'र (بزم شعر) फा. अ. स्त्री.—कविगोष्ठी, मुशाअरा।

बज़्मे सुख़न (بزم سخن) फा. स्त्री.—दे. 'बज़्मे शे'र'।

बज़्मे सुरूर (بزم سرور) फा. अ. स्त्री.—दे. 'बज़्मे ऐश'; दे. 'बज़्मे मय'।

बज़्मोरज़्म (بزمورزم) फा. स्त्री.—नाच-रंग की गोष्ठी भी और रंगभूमि अर्थात् युद्ध-क्षेत्र भी।

बज़्र (بذر) अ. पुं.—हर वह बीज जो चने से छोटा हो।

बज़्लः (بذلہ) फा. पुं.—मनोरंजन, विनोद, हँसी-मज़ाक़।

बज़्लःगो (بذلہ گو) फा. वि.—विनोदी, परिहासक, हँसी-मज़ाक़ की बातें करनेवाला।

बज़्लःगोई (بذلہگوئی) फा. स्त्री.—विनोद, परिहास, हँसी-मज़ाक़ की बातें करना।

बज़्लःसंज (بذلہسنج) फा. वि.—दे. 'बज़्लः गो'।

बज़्लःसंजी (بذلہسنجی) फा. स्त्री.—दे. 'बज़्लःगोई'।

बज़्ल (بذل) अ. पुं.—दानशीलता, फ़ैयाज़ी।

बज़्लोजूद (بذل وجود) अ. पुं.—दानशीलता, बख़्शिश।

बज़्लोसख़ा (بذل وسخا) अ. पुं.—दे. 'बज़्लो जूद'।

बत[त्त] (بت) अ. पुं.—काटना, तराशना, विच्छेद, खंडन।

बत (بط) फा. स्त्री.—हंस, बतख़।

ब तअम्मुल (بہ تامل) फा. अ. अव्य.—सोच-विचार के; धीरे से।

ब तकल्लुफ़ (بہ تکلف) फा. अ. अव्य.—तकल्लुफ़ के साथ, संकोच के साथ।

ब तक़्रीब (بہ تقریب) फा. अ. अव्य.—अवसर पर, जैसे—'बतक़्रीबे शादी' विवाह के अवसर पर।

ब तद्रीज (بہ تدریج) फा. अ. अव्य.—क्रमशः, तरतीब से; शनैः-शनैः, धीरे-धीरे।

बतर (بتر) फा. वि.—'बदतर' का लघु., निकृष्ट, ख़राब।

ब तराज़िए तरफ़ैन (بہ تراضئی طرفین) फा. अ. अव्य.—दोनों दलों की रज़ामंदी से।

ब तरीक़े अदावत (بہ طریق عداوت) फा. अ. अव्य.—शत्रुता के रूप में।

ब तरीक़े दोस्ती (بہ طریق دوستی) फा. अ. अव्य.—मित्रता के रूप में।

ब तरीक़े मश्वुरत (بہ طریق مشورت) फा. अ. अव्य.—परामर्श के रूप में।

बतल (بطل) अ. वि.—शूर, वीर, बहादुर।

बतले हुर्रीयत (بطل حریت) अ. वि.—स्वातंत्र्यशूर, आज़ादी के संग्राम में वीरता दिखानेवाला।

ब तवस्सुत (بہ توسط) फा. अ. अव्य.—द्वारा, ज़रीए से।

ब तवस्सुल (بہ توسل) फा. अ. अव्य.—दे. 'ब तवस्सुत'।

ब ताईद (بہ تائید) फा. अ. अव्य.—सहायता से, समर्थन से।

ब ता'जील (بہ تعجیل) फा.अ. अव्य.—शीघ्रता से, जल्दी से।

बतालत (بطالت) अ. स्त्री.—बेकार अर्थात् कार्यहीन होना; छुट्टी में होना।

बती (بطی) अ. वि.—मंद, सुस्त; देर करनेवाला, विलंब-कर्ता।

बतीउलअसर (بطی الاثر) अ. वि.—जो अपना गुण अर्थात् तासीर देर में दिखाये; जो दवा देर में असर करे।

बतीउलहरकत (بطی الحرکت) अ. वि.—जो बहुत धीरे-धीरे चले, मंदगामी।

ब तीबे ख़ातिर (بہ طیب خاطر) फा. अ. अव्य.–हर्षपूर्वक, प्रसन्नता के साथ।

बतूल (بتول) अ. वि.–सांसारिक मोह और माया के बंधनों को तोड़ फेंकनेवाला (वाली); हज़्रत फ़ातिमा की उपाधि।

ब तौए ख़ातिर (بہ طوع خاطر) फा. अ. अव्य.–दे. 'ब तीबे ख़ातिर'।

ब तौरे ख़ुद (بہ طور خود) फा. अ. अव्य.–अपने तौर पर, निजी तरीक़े से; अपनी राय से, अपनी तरफ़ से।

ब तौरे मिज़ाह (بہ طور مزاح) फा. अ. अव्य.–हँसी के तौर पर, मनोरंजन के लिए।

बत्ताल (بطال) अ. वि.–निकम्मा, निरर्थक; मिथ्यावादी, झूठा; शूर, वीर, बहादुर।

बत्न (بطن) अ. पुं.–उदर, पेट, जठर।

बत्नन बाद बत्निन (بطناً بعد بطناً) अ. अव्य.–पुश्त दर पुश्त, नस्ल दर नस्ल, वंशानुगत।

बत्ने मादर (بطن مادر) अ. फा. पुं.–माँ का पेट।

बत्श (بطش) अ. स्त्री.–कड़ा पड़ना, सख़्ती करना; आक्रमण, हम्ला।

बत्हा (بطحیٰ) अ. स्त्री.–मक्के की एक घाटी; मक्का; वह चौड़ी जगह जहाँ पानी बहता हो और जहाँ पत्थर बहुत हों।

बद (بد) फा. वि.–निकृष्ट, ख़राब; उत्पाती, शरीर; उपद्रवी, फ़सादी; निकम्मा, नाक़िस; अशुभ, मनहूस; दुराचारी, बदचलन।

बदअंजाम (بدانجام) फा. वि.–जिसका परिणाम अशुभ हो, जो अंत में विपत्ति का कारण हो।

बदअंदेश (بداندیش) फा. वि.–बुरा सोचनेवाला, दुश्चिंतक, बदख़्वाह।

बदअंदेशी (بد اندیشی) फा. स्त्री.–बुरा सोचना, बदख़्वाही।

बदअक़ीदः (بد عقیدہ) फा. अ. वि.–ज़िसका धर्म-विश्वास ठीक न हो, अनास्थ; जिसे किसी व्यक्ति विशेष में जो सब का श्रद्धापात्र हो, श्रद्धा न हो।

बदअक़ीदगी (بد عقیدگی) फा. अ. स्त्री.–धर्म-विश्वास का ठीक न होना; ऐसे व्यक्ति में श्रद्धा न होना जिस पर प्रायः सभी श्रद्धा रखते हैं, बुरा विश्वास, ग़लत चीज़ पर विश्वास करना।

बदअक़्ल (بدعقل) फा. अ. वि.–हतबुद्धि, मूर्ख, बेवक़ूफ़।

बदअख़्तर (بداختر) फा. वि.–अभागा, कुभागीन, बदक़िस्मत।

बदअख़्लाक़ (بداخلاق) फा. अ. वि.–दुःशील, बेमुरव्वत; दुर्व्यवहार, जिसका व्यवहार अच्छा न हो।

बदअत्वार (بداطوار) फा. अ. वि.–दुराचारी, दुश्चरित, बदआ'माल।

बदअफ़्आल (بدافعال) फा. अ. वि.–दे. 'बदअत्वार'।

बदअमल (بدعمل) फा. अ. वि.–दुष्कर्मी, दुष्कृत्य-कर्ता, जिसका अमल अच्छा न हो।

बदअम्नी (بدامنی) फा. अ. स्त्री.–अशांति, गड़बड़; उपद्रव, दंगा; विद्रोह, बग़ावत।

बदअस्ल (بداصل) फा. अ. वि.–अकुलीन, ग़ैरशरीफ़।

बदअह्द (بدعہد) फा. अ. वि.–वादे पर क़ाइम न रहनेवाला, वचन-भंजक।

बदअह्दी (بدعہدی) फा. अ. स्त्री.–वादे पर अटल न रहना, वचन-भंजन।

बदआईन (بدآئین) फा. वि.–जिसका कोई नियम न हो, बेउसूला।

बदआईनी (بدآئینی) फा. स्त्री.–सिद्धान्तहीनता, कोई नियम न होना।

बदआग़ाज़ (بدآغاز) फा. वि.–जिसकी शुरूआत अच्छी न हो, जिसका प्रारंभ ही अनिष्टकर हो।

बदआ'माल (بداعمال) फा. अ. वि.–बुरे आचार-विचार वाला, दुराचारी।

बदआ'माली (بداعمالی) फा. अ. स्त्री.– दुराचार।

बदआमोज़ (بدآموز) फा. वि.–जिसको बुरी शिक्षा मिली हो।

बदआमोज़ी (بدآموزی) फा. स्त्री.–बुरी शिक्षा मिलना।

बदइंतिज़ामी (بدانتظامی) फा. अ. स्त्री.–प्रबंध की ख़राबी, कुव्यवस्था, कुप्रबन्ध।

बदउन्वानी (بدعنوانی) फा. अ. स्त्री.–बे क़ायदगी, नियम-विरुद्धता।

बदउसूल (بداصول) फा. अ. वि.–दे. 'बदआईन'।

बदउस्लूब (بداسلوب) फा. अ. वि.–बेढंगा, बदनुमा, कदाकार; दुराचारी, कुकर्मी, बदअमल।

बदएतिक़ाद (بداعتقاد) फा. अ. वि.–दे. 'बदअक़ीदः'।

बदएतिक़ादी (بداعتقادی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बदअक़ीदग़ी'।

बदएतिमाद (بداعتماد) फा. अ. वि.–अविश्वस्त, ग़ैर मातबर।

बदएतिमादी (بداعتمادی) फा. अ. स्त्री.–बेएतिबारी, अविश्वास।

बदऔसान (بداوسان) अ. वि.–बदहवास, घबड़ाया हुआ।

बदक़त्अ (بدقطع) फा. अ. वि.–कदाकार, कुरूप, बदसूरत।

बदक़दम (بدقدم) फा. अ. वि.–जिसका आना अनिष्टकर हो, अशुभचरण।

बदकर्दार (بدکردار) फा. वि.–दुराचारी, कदाचारी; व्यभिचारी, हरामकार।

बदकर्दारी (بدکرداری) फा. स्त्री.–दुराचार, कदाचार, दुष्टाचार; व्यभिचार, कामुकता, लंपटता।

बदकलाम (بدکلام) फा. अ. वि.–बदकलामी करनेवाला, गालियाँ बकनेवाला; गुस्ताख़ी से बात करनेवाला।

बदकार (بدکار) फा. वि.–दुराचारी, दुष्कर्मा, बुरे चाल-चलनवाला।

बदकिर्दार (بدکردار) फा. वि.–बुरे काम करनेवाला, कदाचारी।

बदक़िस्मत (بدقسمت) फा. अ. वि.–दुर्भाग्यवान्, बुरी तक़्दीरवाला, भाग्यहीन, हतभाग्य।

बदक़िस्मती (بدقسمتی) फा. अ. स्त्री.–तक़्दीर का खोटापन, दुर्भाग्य।

बदक़ुमाश (بدقماش) फा. वि.–दे. 'बदकार'।

बदक़ुवारः (بدقوارہ) फा. वि.–बुरी सूरतवाला, कदाकृति, कुरूप।

बदकेश (بدکیش) फा. वि.–दुष्प्रकृति, दुष्टात्मा, बुरे स्वभाववाला।

बदक़ौम (بدقوم) फा. अ. वि.–अकुलीन, कमीना, नीच।

बदख़त (بدخط) फा. वि.–जिसकी लिखावट अच्छी न हो, कुलेख, कदक्षर; बुरा लिखा हुआ।

बदख़ती (بدخطی) फा. स्त्री.–बुरा लिखना, कुलेख।

बदख़स्लत (بدخصلت) फा. अ. वि.–बुरी प्रकृतिवाला, दुष्ट स्वभाववाला, नीच प्रकृति।

बदख़स्लती (بدخصلتی) फा. अ. स्त्री.–प्रकृति का खोटापन, स्वभाव की नीचता।

बदख़िसाल (بدخصال) फा. अ. वि.–दे. 'बदख़स्लत'।

बदख़ुल्क़ (بدخلق) फा. अ. वि.–दे. 'बदअख़्लाक़'।

बदख़ुल्क़ी (بدخلقی) फा. अ. स्त्री.–बदअख़्लाक़ी; दुःशीलता, बेमुरव्वती; दुराचार, बदआ'माली।

बदख़ू (بدخو) फा. वि.–बुरे और कड़ुए स्वभाववाला, रूखा, दुःशील।

बदख़ूई (بدخوئی) फा. स्त्री.–स्वभाव का रूखा और कड़वापन।

बदख़्वाबी (بدخوابی) फा. स्त्री.–ठीक तौर से नींद न आना, नींद का बार-बार उचटना; बिलकुल नींद न आना; नींद न आने का रोग, अनिद्रा।

बदख़्वाह (بدخواہ) फा. वि.–अहितचिंतक, दुश्चिंतक, बुराई चाहनेवाला।

बदख़्वाही (بدخواہی) फा. स्त्री.–बदी चाहना, हित न चाहना, अशुभ चाहना।

बदख़्श (بدخش) फा. पुं.–बदख़्शाँ का लघु., दे. 'बदख़्शाँ'।

बदख़्शाँ (بدخشاں) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान का एक प्रदेश जहाँ का लाल (पद्मराग) बहुत बहुमूल्य होता है।

बदख़्शानी (بدخشانی) फा. वि.–जो बदख़्शाँ का हो; जो बदख़्शाँ से सम्बन्ध रखता हो।

बदख़्शी (بدخشی) फा. वि.–दे. 'बदख़्शानी'।

बदगिल (بدگل) फा. वि.–कुरूप, बदसूरत, कदाकार।

बदगुमान (بدگمان) फा. वि.–जो किसी की ओर से बुरी धारणा रखे।

बदगुमानी (بدگمانی) फा. स्त्री.–किसी की ओर से बुरा ख़याल, कुधारणा।

बदगुहर (بدگہر) फा. वि.–अकुलीन, कुल का हेठा; वर्णसंकर, दोग़ला।

बदगो (بدگو) फा. वि.–बदगोई करनेवाला; गालियाँ बकनेवाला; पिशुन, चुग़ल; निंदक, झूठी बुराई करनेवाला।

बदगोई (بدگوئی) फा. स्त्री.–गाली-गलौज, अपशब्द; पिशुनता, चुग़ुलख़ोरी; निंदा, बदनामी।

बदगोश्त (بدگوشت) फा. पुं.–वह अतिरिक्त मांस जो शरीर के किसी अंग में रोग के तौर पर उत्पन्न हो जाता है।

बदगौहर (بدگوہر) फा. वि.–अकुलीन, बदनस्ल।

बदचश्म (بدچشم) फा. वि.–जिसकी नज़र तुरंत लगती हो, दुरक्ष; ईर्ष्यालु, मत्सरी, हासिद।

बदज़न (بدظن) फा. अ. वि.–जो किसी की ओर से बुरा विचार रखे, बदगुमान।

बदज़नी (بدظنی) फा. अ. स्त्री.–किसी की ओर से बुरा विचार, कुधारणा, बदगुमानी।

बदज़ाइक़ः (بدذائقہ) फा. अ. वि.–जो स्वाद में अच्छा न हो, नीरस, निःस्वाद, कुस्वाद, दुःस्वादु।

बदज़ात (بدذات) फा. अ. वि.–नीच, अधम, कमीना; छली, ठग; धूर्त, फ़ित्तीन; दुष्टाचारी, ख़बीस।

बदज़ाती (بدذاتی) फा. अ. स्त्री.–नीचता, अधमता; छल, कपट; धूर्तता, मक्कारी; दुष्टाचार, ख़बासत।

बदजिलौ (بدجلو) फा. तु. वि.–वह घोड़ा जो बहुत ही मुँहज़ोर हो।

बदज़ेब (بدزیب) फा. वि.–भद्दा, बदनुमा, श्रीहीन।

बदज़ेह्न (بدذہن) फा. अ. वि.–जिसका ज़ेह्न अच्छा न हो, मंदप्रतिभ।

बदज़ेह्नी (بدذہنی) फा. अ. स्त्री.–ज़ेह्न का अच्छा न होना, बुद्धि का तेज़ न होना।

बदज़ौक़ (بدذوق) फा. अ. वि.–जो पढ़ने-लिखने में दिल

न लगाये; जो किसी विशेष काम करने में दिलचस्पी न ले; जो काव्य-रसिक न हो।

बदज़ौक़ी (بدذوقی) फा. अ. स्त्री.–पढ़ने-लिखने में दिल न लगाना; किसी विशेष कार्य में रुचि न रखना; कलारसिक न होना।

बदतबार (بدتبار) फा. वि.–अकुलीन, बुरे वंश का।

बदतमीज़ (بدتمیز) फा. अ. वि.–अशिष्ट, असभ्य; उद्दंड, उजड्ड; फूहड़, वदसलीक: ; धृष्ट, गुस्ताख़; बदज़बान।

बदतमीज़ी (بدتمیزی) फा. अ. स्त्री.–अशिष्टता; उद्दंडता; फूहड़पन; धृष्टता; अपशब्द, बदजबानी।

बदतर (بدتر) फा. वि.–बुरे से बुरा, बहुत खराब।

बदतरीन (بدترین) फा. वि.–सब से बुरा, सब से ख़राब।

बदतह्ज़ीब (بدتہذیب) फा. अ. वि.–अशिष्ट, असभ्य; उद्दंड, उज़ड्ड; धृष्ट, गुस्ताख़; अपशब्दी, बदज़बान।

बदतह्ज़ीबी (بدتہذیبی) फा. अ. स्त्री.–अशिष्टता; उद्दंडता, धृष्टता; अपशब्द।

बदतीनत (بدطینت) फा. अ. वि.–दुष्प्रकृति, अंतः कुटिल, वदबातिन।

बदतीनती (بدطینتی) फा. अ. स्त्री.–प्रकृति की निकृष्टता, स्वभाव की अधमता।

बददिमाग़ (بددماغ) फा. अ. वि.–अहंकारी, अभिमानी, घमंडी; ज़रा-सी बात पर बुरा मान जानेवाला, नाज़ुक दिमाग़।

बददिमाग़ी (بددماغی) फा. अ. स्त्री.–अहंकार, ग़ुरूर; ज़रा जरा-सी बात पर बिगड़ जाने की आदत, नाज़ुक दिमाग़ी।

बददियानत (بددیانت) फा. अ. वि.–जो अमानत में ख़ियानत करे, बेईमान।

बददियानती (بددیانتی) फा. अ. स्त्री.–अमानत में ख़ियानत करना, बेईमानी।

बददिल (بددل) फा. वि.–निराश, नाउम्मेद; मलिनचित्त, अफ़्सुर्द:; उदास, ग़मगीन।

बददिली (بددلی) फा. स्त्री.–निराशा, नाउम्मेदी; चित्त की मलिनता; उदासी।

बददुआ (بددعا) फा. अ. स्त्री.–शाप, श्राप, अनिष्ट का वचन; कोसना, बुरा कहना।

बदन (بدن) अ. पुं.–शरीर, देह, जिस्म; योनि, भग, फ़ुर्ज।

बदनज़र (بدنظر) फा. अ. वि.–जिसकी नज़र जल्द लग जाती हो; जो दूसरों को बुरी नज़र अर्थात् पाप की दृष्टि से देखता हो।

बदनज़री (بدنظری) फा. अ. स्त्री.–पाप की दृष्टि से देखना; बुरी नज़र का असर होना।

बदनज़ाद (بدنژاد) फा. वि.–अकुलीन, अज्ञात वंश का, तुच्छ वंश का।

बदनज़्मी (بدنظمی) फा. अ. स्त्री.–कुव्यवस्था, कुप्रबन्ध, बदइंतिज़ामी।

बदनतीज: (بدنتیجہ) फा. अ. वि.–दे. 'बदअंजाम'।

बदनफ़्स (بدنفس) फा. अ. वि.–दे. 'बदबातिन'।

बदनफ़्सी (بدنفسی) फा. अ. स्त्री.–मनकी निकृष्टता, अंतः-कौटिल्य।

बदनसीब (بدنصیب) फा. अ. वि.–अभागा, मंद भाग्य, बदक़िस्मत।

बदनसीबी (بدنصیبی) फा. अ. स्त्री.–भाग्य का खोटापन, तक़दीर की खराबी, बदक़िस्मती।

बदनस्ल (بدنسل) फा. अ. वि.–अकुलीन, वंशहीन, तुच्छ वंशीय।

बदनाम (بدنام) फा. वि.–कुख्यात, जिसकी शोहरत बुरे रूप में हो।

बदनामी (بدنامی) फा. स्त्री.–कुख्याति, बदशोह्रती; अपयश, कुकीर्ति; निंदा, रुस्वाई।

बदनिगाह (بدنگاہ) फा. वि.–दे. 'बदनज़र'।

बदनिहाद (بدنہاد) फा. वि.–दे. 'बदनज़ाद'।

बदनी (بدنی) अ. वि.–शरीर सम्बन्धी; शरीर का; शरीर जनित।

बदनीयत (بدنیت) फा. अ. वि.–बेईमान, बददियानत; लोभी, लालची।

बदनीयती (بدنیتی) फा. अ. स्त्री.–बेईमानी, बददियानती; लोभ, लालच।

बदनुमा (بدنما) फा. वि.–कुरूप, बदशक्ल; दुर्दर्शन, दुर्दृश्य, भोंदा।

बदनुमाई (بدنمائی) फा. स्त्री.–कुरूपता, बदशक्ली; भोंड़ा, भद्दा।

बदनुमूद (بدنمود) फा. वि.–दे. 'बदनुमा'।

बदपरहेज़ (بدپرہیز) फा. वि.–वह बीमार जो परहेज़ न करता हो, बद एहतियात।

बदपरहेज़ी (بدپرہیزی) फा. स्त्री.–बीमार का खाने-पीने में परहेज़ न करना।

बदफ़र्जाम (بدفرجام) फा. वि.–दे. 'बदअंजाम'।

बदफ़े'ली (بدفعلی) फा. अ. स्त्री.–बुरा काम, व्यभिचार, लंपटता।

बदफ़्आत (بدفعات) फा. अ. अव्य.–थोड़ा-थोड़ा करके, कई बार में।

बदबख़्त (بدبخت) फा. वि.–बदक़िस्मत, अभागा।

बदबख़्ती (بدبختی) फा. स्त्री.–भाग्य की ख़राबी, अभागापन, बदक़िस्मती।

बदबला (بدبلا) फा. स्त्री.–चुड़ैल, डाइन; पापी, ख़बीस।

बदबातिन (بدباطن) फा. अ. स्त्री.–बुरी प्रकृतिवाला, दुरात्मा, ख़बीस।

बदबीं (بدبیں) फा. वि.–बुराई देखनेवाला, छिद्रान्वेषी।

बदबीनी (بدبینی) फा. स्त्री.–बुराई देखना, छिद्रान्वेषण।

बदबू (بدبو) फा. वि.–जिसमें बुरी महक हो, दुर्गंधयुक्त; बुरी बास, दुर्गंध।

बदबूदार (بدبودار) फा. वि.–दुर्गंधयुक्त, जिसमें बुरी बास हो।

बदमंज़र (بدمنظر) फा. अ. वि.–जो देखने में बुरा और भद्दा हो, दुर्दर्शन, कुदृश्य।

बदमआल (بدمآل) फा. अ. वि.–दे. 'बदअंजाम'।

बदमआश (بدمعاش) फा. अ. वि.–लुच्चा, शोह्दा, गुंडा, लोफ़र; जिसकी जीविका बुरे कामों से चले; चोर, उठाईगीरा, दुष्ट।

बदमआशी (بدمعاشی) फा.अ. स्त्री.–लुच्चापन, गुंडापन; बुरे कामों से जीविका चलाना; चोरी, उठाईगीरापन आदि।

बदमज़ः (بدمزہ) फा. वि.–कुस्वाद, जिसमें मज़ा न हो; खिन्न, मलिन; उदास, अफ़्सुर्दः।

बदमज़गी (بدمزگی) फा. स्त्री.–स्वाद का न होना; मन की अप्रसन्नता, उदासी; बेलुत्फ़ी, किसी काम में मज़ा न आना।

बदमज़न्नः (بدمظنہ) फा. अ. वि.–वह व्यक्ति जिस पर किसी अपराध का शुब्हा हो।

बदमज़्हब (بدمذہب) फा. अ. वि.–जिसने अपना धर्म त्याग दिया हो; जो विधर्मी हो गया हो, नास्तिक।

बदमज़हबीयत (بدمذہبیت) फा. अ. स्त्री.–अपना धर्म त्याग देना; नास्तिक हो जाना।

बदमस्त (بدمست) फा. वि.–जो शराब आदि के कारण बहुत अधिक अचेत हो, मदोन्मत्त।

बदमस्ती (بدمستی) फा. स्त्री.–शराब आदि के नशे में मस्त होना।

बदमिज़ाज (بدمزاج) फा. अ. वि.–चिड़चिड़े मिज़ाज का; बुरी प्रकृति का; गुस्सैल, क्रुद्धात्मा।

बदमिज़ाजी (بدمزاجی) फा. अ. स्त्री.–चिड़चिड़ापन; बुरा स्वभाव; स्वभाव का ग़ुस्सैल होना।

बदमिह्र (بدمہر) फा. वि.–बेवफ़ा, विश्वासघाती।

बदमुआमलः (بدمعاملہ) फा. अ. वि.–जो लेन-देन में साफ़ न हो, व्यवहार कुटिल; जो मिलने-जुलने में अच्छा न हो।

बदमुआमलगी (بدمعاملگی) फा. अ. स्त्री.–लेन-देन के सम्बन्ध में व्यवहार की ख़राबी; मिलने-जुलने में व्यवहार की ख़राबी।

बदमुह्र (بدمہر) फा. वि.–सुअर, शूकर।

बदयक़ीन (بدیقین) फा. अ. वि.–दे. 'बदएतिक़ाद'।

बदयुम्न (بدیمن) फा. अ. वि.–अशुभ, अनिष्टकर, अकल्याणकारी, मन्हूस।

बदयुम्नी (بدیمنی) फा. अ. स्त्री.–अनिष्टि, अशुभ, अकल्याण, नुहूसत।

बदरंग (بدرنگ) फा. वि.–बुरे रंग का; जिसका रंग फीका हो गया हो; खोटा, ख़राब; ताश में रंग के विरुद्ध पत्ता।

बदरंगी (بدرنگی) फा. स्त्री.–बुरे रंग का होना; रंग का फीकापन; खोटापन; ताश में रंग का पत्ता न होना।

बदर (بدر) फा. वि.–बाहर।

बदरग (بدرگ) फा. वि.–अकुलीन, संकर, दोग़ला।

बदररौ (بدررو) फा. स्त्री.–पानी निकलने की नाली, मोरी।

बदरवी (بدروی) फा. स्त्री.–बुरी राह चलना, कुमार्ग गमन।

बदरवैयः (بدرویہ) फा. अ. वि.–ख़राब व्यवहारवाला, जिसका रवैया अच्छा न हो।

बदराह (بدراہ) फा. वि.–बुरी राह चलनेवाला, कुमार्गगामी।

बदरिकाब (بدرکاب) फा. वि.–वह घोड़ा जो सवारी के वक़्त शरारत करे।

बदरू (بدرو) फा. वि.–बुरी सूरतवाला, कुरूप, कदाकार, दुर्मुख।

बदरोज़ (بدروز) फा. वि.–दे. 'बदरोज़गार'।

बदरोज़गार (بدروزگار) फा. वि.–जो दिनों के फेर में फँसा हो, कालचक्रग्रस्त; बदक़िस्मत, हतभाग्य, दुर्दैव।

बदरौ (بدرو) फा. वि.–बुरे रस्ते पर चलनेवाला, बदराह, कुमार्गगामी।

बदरौनक़ (بدرونق) फा. वि.–हतश्री, भग्नश्री, जिसमें कोई रौनक़ न हो, उजाड़।

बदरौनक़ी (بدرونقی) फा. स्त्री.–शोभा न होना, उजाड़पन।

बदर्जए ग़ायत (بدرجۂ غایت) फा अ पुं.–बहुत अधिक, अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

बदर्जए मज्बूरी (بدرجۂ مجبوری) फा. अ. पुं.–जब कोई न रहे, जब विवशता हो, मज्बूरी की हालत में।

बदर्जहा (بدرجہا) फा. अ. वि.–कई गुना, बहुत अधिक।

बदल (بدل) अ. पुं.–प्रतिकार, बदला; क्षतिपूर्ति, मुआवज़ा; बदले में दी हुई वस्तु; तुल्य, समान, मिस्ल।

बदलगाम (بدلگام) फा. वि.–मुँहज़ोर घोड़ा; मुहफट आदमी।

बदलहजः (بدلہجہ) फा. अ. वि.–जिसके पढ़ने का ढंग अच्छा न हो, जिसकी आवाज़ ख़राब हो।

बदलिहाज (بدلحاظ) फा. अ. वि.–दु:शील, बेमुरव्वत; धृष्ट, गुस्ताख़; जिसे किसी का लिहाज़ न हो, निर्लज्ज।

बदले इश्तिराक (بدل اشتراک) अ. पुं.–समाचार पत्र का मूल्य, अथवा वार्षिक या मासिक मूल्य।

बदले मायतहल्लल (بدل مایتحلل) अ. पुं.–जो छीज जाय या कम हो जाय उसकी पूर्ति।

बदवजाहत (بدوجاہت) फा. अ. वि.–चो चेहरे से रोबदार न जँचे।

बदवज़्अ (بدوضع) फा. अ. वि.–जिसकी वेष-भूषा अच्छी न हो; जिसका शील-स्वभाव शिष्ट न हो।

बदवतीरः (بدوطیرہ) फा. वि.–दे. 'बदख़ू'।

बदवी (بدوی) अ. वि.–बुद्धू, जंगली, गँवार।

बदशक्ल (بدشکل) फा. अ. वि.–क़दाकार, कुरूप, बुरी सूरत, बदसूरत का।

बदशक्ली (بدشکلی) फा. अ. स्त्री.–कुरूपता, सूरत की ख़राबी, बदसूरती।

बदशिआर (بدشعار) फा. अ. वि.–दे. 'बदतीनत'।

बदशुऊर (بدشعور) फा. अ. वि.–अशिष्ट, बेतमीज़; मूर्ख, नादान।

बदशुऊरी (بدشعوری) फा. अ. स्त्री.–अशिष्टता, बेतमीज़ी; मूर्खता, नादानी।

बदशुगून (بدشگون) फा. वि.–मन्हूस, अशुभ।

बदशुगूनी (بدشگونی) फा. स्त्री.–नुहूसत, शगुन का ख़राब होना।

बदशौक़ (بدشوق) फा. अ. वि.–जिसे पढ़ने-लिखने में दिलचस्पी न हो।

बदशौक़ी (بدشوقی) फा. अ. स्त्री.–पढ़ने-लिखने में रुचि का अभाव।

बदसरंजाम (بدسرانجام) फा. वि.–जिस कार्य की पूर्ति ख़राब तरह से हुई हो; जिसका अंजाम अच्छा न हो।

बदसरअंजामी (بدسرانجامی) फा. स्त्री.–किसी कार्य की पूर्ति बुरे प्रकार से होना; किसी कार्य का परिणाम बुरा होना।

बदसलीक़ः (بدسلیقہ) फा. अ. वि.–जिसमें शिष्टता न हो, बेतमीज़; जिसे अच्छी तरह काम करने का ढंग न आता हो, बदशुऊर, फूहड़।

बदसलीक़गी (بدسلیقگی) अ. फा. स्त्री.–शिष्टता का अभाव; अच्छी तरह काम करने के ढंग का अभाव, बदशुऊरी।

बदसिगाल (بدسگال) फा. वि.–अशुभचिंतक; दुश्मन।

बदसिगाली (بدسگالی) फा. स्त्री.–बुराई सोचना; दुश्मनी।

बदसिरिश्त (بدسرشت) फा. वि.–दे. 'बदतीनत'।

बदसीरत (بدسیرت) फा. अ. वि.–दे. 'बदख़स्लत'।

बदसीरती (بدسیرتی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बदख़स्लती'।

बदसुलूकी (بدسلوکی) फा. अ. स्त्री.–बुरा बर्ताव, दुर्व्यवहार।

बदसूरत (بدصورت) फा. अ. वि.–दे. 'बदशक्ल'।

बदसूरती (بدصورتی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बदशक्ली'।

बदसोहबती (بدصحبتی) फा. अ. स्त्री.–बुरी सोहबत, बुरे लोगों में उठना-बैठना, कुसंगति।

बदस्तयारी (بدستیاری) फा. अव्य.–सहायता से, मदद से।

बदस्तूर (بدستور) फा. वि.–पहले की तरह, जैसा पहले था वैसा ही, यथावत्, यथापूर्व।

बदहज़्मी (بدہضمی) फा. अ. स्त्री.–खाना पूरी तरह न पचना, मंदाग्नि, अजीर्ण।

बदहवास (بدحواس) फा. अ. वि.–जिसकी अक़्ल मारी गयी हो, हतबुद्धि; जो बौखलाया हुआ हो, उद्विग्न।

बदहवासी (بدحواسی) फा. अ. स्त्री.–बुद्धि मारी जाना; बौखलाहट, उद्विग्नता।

बदहाल (بدحال) फा. अ. वि.–दुर्दशाग्रस्त, बुरे हालों, कंगाल; रोग-पीड़ित, रोग से बेहाल।

बदहाली (بدحالی) फा. अ. स्त्री.–दुर्दशा, कंगाली; बीमारी से दशा की ख़राबी।

बदहीयात (بدہیات) अ. स्त्री.–दे. 'बदीहीयात', दोनों शुद्ध हैं,

बदहैअत (بدہیئات) फा. अ. वि.–कुरूप, क़दाकार, बदसूरत।

बदहैसियत (بدحیثیت) फा. अ. वि.–अकुलीन, ग़ैर शरीफ़; निर्धन, कंगाल; नीच, लोफ़र।

बदाँ (بداں) फा. अव्य.–बद का बहु., बुरे लोग।

बदाए' (بدائع) अ. पुं.–'बदीअ' का बहु., नयी-नयी चीज़ें।

बदाहत (بداہت) अ. स्त्री.– ऐसी स्पष्टता जिसमें प्रमाण की आवश्यकता न हो; किसी बात या चीज़ का अचानक आना।

बदाहाल (بداحال) फा. अ. अव्य.–बुरी दशा, बुरा हाल।

ब दिक़्क़त (بدقت) फा. अ. अव्य.–कठिनाई के साथ, मुश्किल से, कठिनतापूर्वक।

ब दिलोजाँ (بدل وجاں) फा. अव्य.–प्राण और हृदय से, तन-मन-धन से, पूरी तरह से।

बदीं (بدیں) फा. अव्य.–इससे।

बदींग़रज (بدیں غرض) फा. अ. अव्य.–इस उद्देश से, इस आशा से, इस ग़रज़ से।

बदींलिहाज़ (بدیں لحاظ) फा. अ. अव्य.–यह विचार करके, इस विचार से, इस बात को ध्यान में रखते हुए।

बदींवज्ह (بدیں وجہ) फा. अ. अव्य.–इस कारण से, इस कारण को ध्यान में रखते हुए।

बदींसबब (بدیں سبب) फा. अ. अव्य.–इस कारण से, इस सबब से।

बदी (بدی) फा. स्त्री.–पाप, गुनाह; दोष, ऐब; अपराध, क़ुसूर; निंदा, ग़ीबत; बुराई, ख़राबी; अपकार, नुक़्सान; बदख़्वाही, कृतघ्नता।

बदीअ (بدیع) अ. वि.–अनुपम, अभूत पूर्व, अजीबोग़रीब; नयी बात, अनोखी वस्तु।

बदीउज़्ज़माँ (بدیع ازماں) अ. वि.–सारे संसार में अद्वितीय; अपने समय में सबसे अनोखा।

बदीउल जमाल (بدیع الجمال) अ. वि.–जिसके रूप और सौन्दर्य का जवाब न हो।

बदीउल मिसाल (بدیع المثال) अ. वि.–जिसका दूसरा नापैद हो, जिसके-जैसा दूसरा न हो, अनुपम, अद्वितीय।

बदीउल मुल्क (بدیع الملک) अ. वि.–सारे देश में जिसकी तुलना न हो।

बदीद (بدید) फा. वि.–दे. 'पदीद', दोनों शुद्ध हैं, परंतु उर्दू में 'पदीद' है।

बदील (بدیل) अ. वि.–किसी चीज़ के बदले में मिली हुई दूसरी चीज़।

बदीह (بدیہہ) अ. वि.–बिना सोचे किसी बात का मन में आना; बिना सोचे तुरंत कहा हुआ शे'र आदि।

बदीहगो (بدیہہ گو) अ. फा. वि.–बिना विचारे किसी विषय पर तुरंत बोलनेवाला, उपस्थित वक्ता; बिना सोचे।

बदीहगोई (بدیہہ گوئی) अ. फा. स्त्री.–बिना विचारे तुरंत भाषण देना; बिना विचारे तुरंत कविता करने वाला।

बदीही (بدیہی) अ. वि.–स्पष्ट, साफ़, जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता न हो।

बदीहीयात (بدیہیات) अ. स्त्री.–'बदीही' का बहु., वे बातें जो स्पष्ट हैं और जिनके लिए प्रमाण की आवश्यकता न हो।

बद्दू (بدو) अ. पुं.–अरब का ख़ानाबदोश व्यक्ति, जंगल और गाँव में रहनेवाला अरब।

बदौलत (بدولت) फा. अ. अव्य.–कारण से, सबब से; द्वारा, तुफ़ैल में।

ब नज़रे इस्लाह (بہ نظر اصلاح) फा. अ. अव्य.–सुधार और दुरुस्ती की दृष्टि से।

ब नज़रे तअम्मुक़ (بہ نظر تعمق) फा. अ. अव्य.–गहरी नज़र से, सूक्ष्म दृष्टि से, बड़े ग़ौर से।

ब नज़रे तहक़ीक़ (بہ نظر تحقیق) फा. अ. अव्य.–जाँच की दृष्टि से; गवेषणा की दृष्टि से।

ब नज़रे तहसीन (بہ نظر تحسین) फा. अ. अव्य.–कृतज्ञता की दृष्टि से, सराहनीय तौर पर।

ब नज़रे फ़िरासत (بہ نظر فراست) फा. अ. अव्य.–ताड़नेवाली दृष्टि से, ज़ेहन से।

ब नज़रे हिक़ारत (بہ نظر حقارت) अ. फा. अव्य.–तिरस्कार की दृष्टि से, घृणापूर्वक।

बनफ़्शः (بنفشہ) फा. पुं.–कश्मीर का एक पौदा जो दवा के काम आता है।

बनफ़्शःज़ार (بنفشہ زار) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ बनफ़शा ही बनफ़शा हो।

ब नाचारी (بہ ناچاری) फा. अव्य.–विवशतापूर्वक, मजबूरी से, लाचारी की हालत में।

बनात (بنات) अ. स्त्री.–'बिंत' का बहु, 'लड़कियाँ'।

बनातुन्ना'श (بنات النعش) अ. स्त्री.–वे सात तारे जो ध्रुव के गिर्द घूमते हैं, सप्तर्षि।

बनादिर (بنادر) अ. पुं.–'बंदर' का बहु; समूद्र के तट, समंदर के साहिल।

बनानः (بنانہ) अ. स्त्री.–पाँव की उँगली।

ब निगाहे इताब (بہ نگاہ عتاب) फा. अ. अव्य.–क्रोध की दृष्टि से, ग़ूस्सा भरी आँखों से।

ब निगाहे करम (بہ نگاہ کرم) फा. अ. अव्य.–दया की दृष्टि से, मेहरबानी की नज़र से।

ब निगाहे गर्म (بہ نگاہ گرم) फा. अव्य.–तेज़-तेज़ आँखों से, क्रोध की दृष्टि से।

ब निगाहे ग़ैज़ (بہ نگاہ غیظ) फा. अ. अव्य.–दे. 'ब निगाहे इताब'।

ब निगाहे तेज़ (بہ نگاہ تیز) फा. अव्य.–दे. 'ब निगाहे गर्म'।

ब निगाहे मेह्र (بہ نگاہ مہر) फा. अव्य.–दे. 'ब निगाहे करम'।

ब निगाहे रह्म (بہ نگاہ رحم) फा. अ. अव्य.–करुणा की दृष्टि से, तरस खाते हुए।

ब निगाहे लुत्फ़ (بہ نگاہ لطف) फा. अ. अव्य.–दे. 'ब निगाहे करम'।

ब निगाहे शौक़ (بہ نگاہ شوق) फा. अ. अव्य.–उत्कंठा और लालसा की दृष्टि से, शौक़ की आँखों से।

ब निगाहे हस्रत (بہ نگاہ حسرت) फा. अ. अव्य.–हस्रत भरी दृष्टि से, ऐसी दृष्टि से जिसमें निराशा के साथ दया और करुणा की माँग हो।

बनीअम (بنی عم) अ. पुं.–चचा के लड़के, चचेरे भाई।

बनीआदम (بنی آدم) अ. पुं.–मनुजात, मनुष्य, मानव, आदमी।

बनीइस्राईल (بنی اسرائیل) अ. पुं.–यहूदी, यहूदियों की उपाधि।

बनीजान '(بنی جان) अ. पुं.–जिन्नों की जाति।

बनुफ़्श (بنفش) अ. वि.–नीले रंग का, कबूदी।

बनीनौअ (بنی نوع) अ. पुं.–जाति, किसी जाति के लड़के।

बनीनौए इंसान (بنی نوع انسان) अ. पुं.–मानव जाति, मनुष्यों की जाति, मानव समष्टि।

बनीनौए बशर (بنی نوع بشر) अ. पुं.–दे. 'बनीनौए इंसान'।

बपा (بپا) फा. वि.–उपस्थित, क़ाइम।

ब पासे ख़ातिर (بپاس خاطر) फा. अ. अव्य.–दिल रखने के लिए।

ब फ़ज़्ले एज़दी (بہ فضل ایزدی) फा. अ. अव्य.–ईश्वर की कृपा से, भगवान् की दया से।

ब फ़राग़त (بہ فراغت) फा. अ. अव्य.–संतोषपूवक, इत्मीनान से; सुगमतापूर्वक, आसानी से।

बफ़ा (بفا) उ. स्त्री.–सर में पड़ जानेवाली भूसी।

ब फ़िरासत (بہ فراست) फा.अ. अव्य.–ताड़नेवाले अनुभव से।

ब फ़ौर (بہ فور) फा. अ. अव्य.–तुरंत, तत्क्षण, शीघ्र ही, फ़ौरन।

बबर (ببر) अ.पुं.–दे. 'बब्र' दोनों शुद्ध हैं, परंतु 'बब्र' अधिक बोलते हैं।

ब बांगे दुहुल (بہ بانگ دهل) फा. अव्य.–ढोल बजाते हुए (कहना) ज़ोर-ज़ोर से सबके सामने (कहना)।

बबांगे बलंद (بہ بانگ بلند) फा. अव्य.–चिल्लाकर, ज़ोर-ज़ोर से (कहना) उद्घोष।

बब्र (ببر) अ. पुं.–एक जंतु जो बिल्ली के बराबर होता है, जिसके पूँछ नहीं होती और जो शेर को मार डालता है; शेर की एक जाति, यह शब्द शेर के साथ उसके विशेषण के रूप में अधिक आता है।

बम (بم) फा. पुं.–थप्पड़, चाँटा; ऊँचा स्वर।

ब मंज़िल (بمنزل) फा. अ. अव्य.–दशा में, हालत में।

ब मदारिज (بہ مدارج) फा. अ. अव्य.–कई दरजे, कई गुना।

ब मरातिब (بہ مراتب) फा. अ. अव्य.–दे. 'मदारिज'।

ब मिस्दाक़ (بہ مصداق) फा. अ. अव्य.–अनुसार, मुताबिक़।

ब मुक़्तज़ा (بہ مقتضا) फा. अ. अव्य.–कारण से, के नाते।

ब मुश्किल (بہ مشکل) फा. अ. अव्य.–कठिनाई से, कठिनतापूर्वक, मुश्किल से।

ब मूजिब (بہ موجب) फा. अ. अव्य.–अनुसार, मुताबिक़।

बमूजिबे हुक्म (بموجب حکم) फा. अ. अव्य.–आज्ञानुसार, आदेशानुसार, फ़रमाने के मुताबिक़।

ब यक वक़्त (بیک وقت) फा. अ. अव्य.–एक समय में, एक वक़्त में; एक साथ।

बयाज़ (بیاض) अ. स्त्री.–श्वेतता, सफ़ेदी; कविता की कापी जो हाथ की लिखी हो।

बयाज़े शे'र (بیاض شعر) अ. स्त्री.–कविता का हस्त-लिखित संग्रह जो साथ रह सके।

ब यादगार (بہ یادگار) फा. अव्य.–स्मरण में, यादगारी में।

बयान (بیان) अ. पुं.–बात-चीत, वार्तालाप; भाषण, व्याख्यान, लेक्चर, तक़रीर; चर्चा, ज़िक्र; सूचना, इत्तिलाअ; परिच्छेद, बाब (पुस्तक का); अलंकार-विद्या; मुक़दमे में वादी-प्रतिवादी या साथी का इज़्हार।

बयानात (بیانات) अ. पुं.–'बयान' का बहु.।

बयाबान (بیابان) फा. पुं.–दे. 'बियाबान', शुद्ध दोनों हैं, परंतु वह अधिक शुद्ध और व्यवहृत है।

बयारः (بیارہ) फा. पुं.–बेलदार पेड़, जैसे—लौकी या ककड़ी का।

बरंगेख़्त (برانگیختہ) फा. वि.–क्रोध में भरा हुआ, क्रुद्ध, कुपित; उक्साया हुआ।

बरंदाज़ (برانداز) फा. वि.–नष्ट करनेवाला., उजाड़नेवाला।

बर (بر) फा. अव्य.–पर, ऊपर, (उप.) किसी शब्द पर आकर विशेष अर्थ देता है, जैसे—'आमदन' आना, 'बर आमदन' निकलना, प्रकट होना।

बरअंगेख़्तः (برانگیختہ) फा. अव्य.–दे. 'बरंगेख़्त', शुद्ध उच्चारण वही है।

बरअंदाज़ (برانداز) फा. वि.–दे. 'बरंदाज', शुद्ध उच्चारण वही है।

बरअक्स (برعکس) फा. अ. वि.–विसदृश, प्रतिकूल, ख़िलाफ़; प्रत्युत, बरख़िलाफ़।

बरअफ़्रोख़्तः (برافروختہ) फा. वि.–दे. 'बरफ़्रोख़्तः', शुद्ध उच्चारण वहीं है।

बरआवर्द (برآورد) फा. वि.–दे. 'बरावर्दः' शुद्ध उच्चारण वही है।

बरआशुफ़्तः (برآشفتہ) फा. वि.–दे. 'बराशुफ़्तः', शुद्ध उच्चारण वही है।

बरउफ़्तादः (برافتادہ)–दे. 'बरुफ़्तादः', शुद्ध उच्चारण वही है।

बरकंदः (برکندہ) फा. वि.–उन्मूलित, जड़ से उखेड़ा हुआ, उखेड़कर फेंका हुआ।

बरकत (برکت) अ. स्त्री.–बढ़ती, बढ़ोतरी, ज़ियादती; प्रचुरता, इफ़ात; सौभाग्य, ख़ुश क़िस्मती; कल्याण, बहबूद; ईश्वर की ओर से गुप्तरूप में धन आदि की बढ़ोतरी।

बरक़रार (برقرار) फा. अ. वि.–स्थिर, साबित; जीवित, ज़िंदः; दृढ़, अचल, क़ाइम; बहाल, पुनर्नियुक्त।

बरकात (برکات) अ. उ. भा.–'बरकत' का बहु., बरकतें।

बरख़ास्तः (برخاستہ) फा. वि.–उठा हुआ।

बरख़ास्तःख़ातिर (برخاستہخاطر) फा. अ. वि.–उच्चाटन, जिससे मन उचट गया हो, बददिल।

बरख़ास्तःदिल (برخاستہدل) फा. वि.–दे. 'बरख़ास्तः ख़ातिर'।

बरख़ास्त (برخاست) फा. वि.–समाप्त, ख़त्म; पदच्युत, बरतरफ़; पृथक्।

बरख़ास्तगी (برخاستگی) फा. स्त्री.–समाप्ति, अंत, ख़ातिमः; पदच्युति, बरतरफ़ी, नौकरी से हटना।

बरख़िलाफ़ (برخلاف) फा. अ. वि.–प्रतिकूल, उलटा; विरुद्ध, मुख़ालिफ़; प्रत्युत, बरअक्स।

बरख़ुदग़लत (برخودغلط) फा. अ. वि.–जो अपने को कम होते हुए बहुत अधिक समझता हो।

बरख़ुर्द (برخورد) फा. वि.–सफलता, कामयाबी; सौभाग्य, ख़ुशक़िस्मती।

बरख़ुर्दार (برخوردار) फा. वि.–सौभाग्यशाली, ख़ुशनसीब; सफल मनोरथ, कामरां; बेटा, पुत्र; संपन्न, फला-फूला।

बरख़ुर्दारी (برخورداری) फा. स्त्री.–सौभाग्य, ख़ुशक़िस्मती; सफ़लता, कामयाबी; संपन्नता, फलना-फूलना।

बरगश्तः (برگشتہ) फा. वि.–फिरा हुआ, प्रतिकूल; अवज्ञाकारी, उद्दंड, सरकश।

बरगश्तःऐयाम (برگشتہایام) फा. अ. वि.–जिसके दिन प्रतिकूल हों, हतभाग्य।

बरग्रश्तःक़िस्मत (برگشتہقسمت) फा. अ. वि.–जिसका भाग्य उलटा हो गया हो, अभागा।

बरगश्तःताले' (برگشتہطالع) फा. अ. वि.–दे. 'बरगश्तः क़िस्मत'।

बरगश्तःदौलत (برگشتہدولت) फा. अ. वि.–जिसकी समृद्धि उससे मुँह फेर गयी हो, दुर्दशा-पीड़ित।

बरगश्तःनसीब (برگشتہنصیب) फा. अ. वि.–दे. 'बरगश्तःक़िस्मत'।

बरगश्तःबख़्त (برگشتہبخت) फा. वि.–दे. 'बरगश्तः-क़िस्मत'।

बरगश्तःसर (برگشتہسر) फा. वि.–सर फिरा, पागल।

बरगुज़ीदः (برگزیدہ) फा. वि.–छाँटा हुआ, चुना हुआ; मनोनीत, पसंदीदः; पुनीतात्मा, मुक़द्दस।

बरगुज़ीदगी (برگزیدگی) फा. स्त्री.–पुनीतता, तक़द्दुस; छाँटना, चुनना, पसंद करना।

बरचीदः (برچیدہ) फा. वि.–चुना हुआ, छाँटा हुआ।

बरज़बाँ (برزباں) फा. वि.–जो ज़बानी याद हो, जो रटा हुआ हो, कंठस्थ, मुखाग्र।

बरजस्तः (برجستہ) फा. वि.–तड़ाक से, तुरंत, फ़ौरन; आशु, उपस्थित।

बरजस्तःगो (برجستہگو) फा. वि.–उपस्थित वक्ता, बिना सोचे किसी विषय पर भाषण दे सकनेवाला; उपस्थित-कवि जो तुरंत कविता कर सके; हाज़िरजवाब, वचन-पटु, प्रगल्भ।

बरजस्तःगोई (برجستہگوئی) फा. स्त्री.–तुरंत किसी विषय पर बोलना; तुरंत कविता करना; हाज़िर जवाबी।

बरजा (برجا) फा. वि.–एक स्थान पर।

ब रज़ाओरग़्बत (بہرضاورغبت) फा. अ. अव्य.–प्रसन्नता और रुचिपूर्वक, राज़ी-ख़ूशी से।

ब रज़ामंदी (بہرضامندی) फा. अ. अव्य.–प्रसन्नतापूर्वक, सहर्ष, राज़ी के साथ।

बरजामांदः (برجاماندہ) फा. वि.–एक जगह पर ठहरा या रुका हुआ।

बरतक़्दीर (برتقدیر) फा. अ. अव्य.–भाग्यवश, तक़्दीर से।

बरतबक़ (برطبق) फा. अ. अव्य.–अनुसार, मुताबिक़; तुरंत, फ़ौरन।

बरतर (برتر) फा. वि.–श्रेष्ठ, उत्तम, आला; ऊँचा, बलंद।

बरतरफ़ (برطرف) फा. अ. वि.–पदच्युत, बरख़ास्त।

बरतरफ़ी (برطرفی) फा. अ. स्त्री.–पदच्युति, मौक़ोफ़ी, बरख़ास्तगी।

बरतरी (برتری) फा. स्त्री.–श्रेष्ठता, उत्तमता, बड़प्पन; ऊँचाई, बलंदी।

बरद (برد) अ. पुं.–ओला, हिमोपल।

बरदार (بردار) फा. प्रत्य.–उठानेवाला, जैसे—'नाज़ बरदार', नाज़ उठानेवाला।

बरदाश्तः (برداشتہ) फा. वि.–उठाया हुआ।

बरदाश्तःख़ातिर (برداشتہخاطر) फा. वि.–जिसने अपना मन किसी चीज़ से उठा लिया हो; बेतअल्लुक़, रिक्त; खिन्न, उदास।

बरदाश्तःदिल (برداشتہدل) फा. वि.–दे. 'बरदाश्तःख़ातिर'।

बरदाश्त (برداشت) फा. स्त्री.–सहनशीलता, तहम्मुल; सहन, बोझ उठाना।

बरदाश्तख़ानः (برداشتخانہ) फा. पुं.–सामान रखने का मकान, गोदाम।

बरदोख़्तः (بردوختہ) फा. वि.–सिला हुआ, जुड़ा हुआ।

बररुए यार (برروئے یار) फा. वि.–प्रिय-मुख पर, प्रिय-आनन पर।

बरदोश (بردوش) फा. अव्य.–कंधे पर, कंधे पर उठाये हुए, जैसे–'जनाज़ःबरदोश' कंधे पर अरथी धरे हुए।

बरपा (برپا) फा. वि.–उपस्थित, क़ाइम, खड़ा हुआ।

बरफ़ौर (برفور) फा. अ. वि.–तुरंत, शीघ्रतर, फ़ौरन।

बरफ़ोख़्तः (برافروختہ) फा. वि.–क्रोध में भरा हुआ, कुपित।

बरबस्त (بربست) फा. वि.–नियम, काइदा; विधान, क़ानून; शैली, तर्ज़।

बरबाद (برباد) फा. वि.–ध्वस्त, तबाह; नष्ट, बेनामोनिशान; निर्जन, वीरान; विकृत, ख़राब; ज़ाए, नष्ट।

बरबादकुन (بربادکن) फा. वि.–बरबाद करनेवाला।

बरबादी (بربادی) फा. स्त्री.–विनाश, ख़ातिमः; ध्वंस, तबाही; विकृत, ख़राबी।

बरबिना (بربنا) फा. अ. अव्य.–के नाते, के कारण।

बरबिनाए अदावत (بربنائے عداوت) फा. अ. अव्य.–शत्रुता के कारण, अदावत के नाते।

बरबिनाए इख़्लास (بربنائے اخلاص) फा. अ. अव्य.–मित्रता के नाते, सच्चे प्रेम के कारण।

बरबिनाए ख़ुलूस (بربنائے خلوص) फा. अ. अव्य.–दे. 'बर बिनाए इख़्लास'।

बरबिनाए महब्बत (بربنائے محبت) फा. अ. अव्य.–प्रेम के नाते, प्रेम के कारण।

बरबिनाए मुलाक़ात (بربنائے ملاقات) फा. अ. अव्य.–मेल-जोल के कारण।

बरमला (برملا) फा. वि.–मुँह पर, सामने, खुल्लम-खुल्ला।

बरमहल (برمحل) फा. अ. वि.–ठीक मौक़े पर, ठीक समय पर; उचित, मौज़ूँ; बरजस्तः, मुँहतोड़।

बररू (بررو) फा. वि.– मुँह पर, सामने।

बररूएकार (برروئے کار) फा. अव्य.–कार्यान्वित, अमल में आया हुआ।

बरवक़्त (بروقت) फा. अ. वि.–ठीक समय पर।

बरस (برص) अ. पुं.–सफ़ेद कोढ़, चित्र कुष्ठ, सिद्ध, श्वेत्र।

बरसबील (برسبیل) फा. अ. अव्य.–के तौर पर, के रूप में, के प्रसंग में।

बरसबीले ज़िक्र (برسبیل ذکر) फा. अ. अव्य.–चर्चा चलने पर, चर्चा के तौर पर, चर्चा के प्रसंग में।

बरसबीले तज़्किरः (برسبیل تذکرہ) फा.अ. अव्य.–दे. 'बरसबीले ज़िक्र'।

बरसबीले दवाम (برسبیل دوام) फा. अ. अव्य.–हमेशा के लिए, नित्य के लिए।

बरसबीले शिकायत (برسبیل شکایت) फा. अ. अव्य.–उलाहने के रूप में।

बरसरे आम (برسرعام) फा. अ. वि.–सबके सामने, सारे लोगों के सामने, खुल्लम खुल्ला।

बरसरे कार (برسرکار) फा. वि.–काम पर लगा हुआ, बाकार।

बरसरे कीं (برسرکین) फा. वि.–दे. 'बरसरेकीनः'।

बरसरे कीनः (برسرکینہ) फा. वि.–अदावत पर आमादा, मरने-मारने पर तैयार।

बरसरे ख़ुद (برسرخود) फा. वि.–'बरसरे ख़्वेश'।

बरसरेख़्वेश (برسرخویش) फा. वि.–स्वेच्छाचारी, स्वच्छन्द, ख़ुदराए।

बरसरे जंग (برسرجنگ) फा. वि.–लड़ने-मरने पर तैयार, लड़ाई करने के लिए आमादा।

बरसरे बाजार (برسربازار) फा. अव्य.–बाज़ार में, सारी जनता के सामने।

बरसरे मत्लब (برسرمطلب) फा. अ. अव्य.–अस्ली मतलब पर।

बरसरे मौक़ा (برسرموقعہ) फा. अ. अव्य.–ठीक मौक़े पर, घटनास्थल पर।

बरसे अब्यज़ (برص ابیض) अ. पुं.–वह 'बरस' जो सफेद हो, जिसके धब्बे सफ़ेद हों, धवल कुष्ठ, श्वेत कुष्ठ।

बरसे अस्वद (برص اسود) अ. पुं.–वह श्वेत कुष्ठ जिसके धब्बे काले हों।

बरह्म (برہم) फा. वि.–तितर-बितर, अस्त-व्यस्त, ख़फ़ा, उलझा हुआ, क्रुद्ध, नाराज़, अप्रसन्न।

बरह्मी (برہمی) फा. स्त्री.–क्रोध, गुस्सा; अप्रसन्नता; नाराज़ी; अस्त-व्यस्तता, तितर-बितरपना—"नियाज़े इश्क़ में कोई कमी मालूम होती है, तुम्हारी बरहमी क्यों बरहमी मालूम होती है?"—मजज़ूब।

बरह्नः (برہنہ) फा. वि.–नग्न, नंगा, जो कपड़े न पहने हो, दिगंबर।

बरह्नःगो (برہنہ گو) फा. वि.–साफ़-साफ़ कहनेवाला, लगी-लिपटी न रखनेवाला, स्पष्टवक्ता।

बरह्नःगोई (برہنہ گوئی) फा. स्त्री.–साफ़-साफ़ कहना, लगी-लिपटी न रखना, स्पष्ट कथन।

बरह्नःपा (برہنہ پا) फा. वि.–नग्न पग, नंगे पाँव, जिसके पाँव में जूता आदि न हो।

बरह्नःपाई (برہنہ پائی) फा. स्त्री.–नंगे पाँव होना, नंगे पाँव चलना।

बरह्नःसर (برہنہ سر) फा. वि.–नंगे सर, जिसके सर पर टोपी आदि न हो, नग्नशिर।

बरहनगी (برہنگی) फा. स्त्री.–नग्नता, नंगापन।

बरहम (برہم) फा. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-वितर; क्रुद्ध, नाराज़; अप्रसन्न, खफ़ा; उलझा हुआ।

बरहमन (برہمن) फा. पुं.–ब्राह्मण, हिंदुओं में सर्वोच्च जाति।

बरहमोदरहम (برہم ودرہم) फा. पुं.–तितर-बितर, परीशान, "तुमको नसीव रोज़ वनाना हो ज़ुल्फ़ का। अपना तो हाल वरहमोदरहम बहुत है याँ।"

बराअत (براءت) अ. स्त्री.–दे. 'बरीयत'।

बराए (برائے) फा. अव्य.–लिए, प्रति, वास्ते।

बराए ख़ुदा (برائے خدا) फा. अव्य.–ईश्वर के लिए।

बराए चंदे (برائے چندے) फा. अव्य.–थोड़ी देर के लिए।

बराए नाम (برائے نام) फा. अव्य.–नाममात्र को, कहनेभर को।

बराए बैत (برائے بیت) फा. अ. अव्य.–देखो 'वराए नाम', व्यर्थ, फ़ुज़ूल; शेर की पूर्ति के लिए; भर्ती।

बराज़ (براز) अ. पुं.– दे. शुद्ध उच्चारण 'बिराज़'।

बरात (برات) अ. स्त्री.–आदेश-पत्र, हुक्मनामा; वह पत्र जिससे खज़ाने से रुपया मिले, चेक।

बरादर (برادر) फा. पुं.–भ्रातृ, भाई।

बरादरकुश (برادرکش) फा. वि.–भाई को मार डालने वाला; भाई को नुकसान पहुँचाकर अपना भला करनेवाला।

बरादरकुशी (برادرکشی) फा. स्त्री.–भाई को मार डालना; भाई को नुक़्सान पहुँचाकर अपना भला करना।

बरादरज़ादः (برادرزادہ) फा. वि.–भाई का लड़का, भतीजा, भ्रातृ-सुत।

बरादरज़ादगी (برادرزادگی) फा. स्त्री.–भाई का लड़का होने का नाता।

बरादरानः (برادرانہ) फा. अव्य.–भाइयों-जैसा।

बरादरी (برادری) फा. स्त्री.–एक जाति; एक जाति का व्यक्ति; भाई-वंदी।

बरादरे अख़्याफ़ी (برادر اخیافی) फा. अ. पुं.–वह भाई जिनका वाप एक हो और माँएँ अलग-अलग हों, सौतेले भाई।

बरादरे अल्लाती (برادر علاتی) फा. अ. पुं.–वह भाई जिनकी माँ एक हो और वाप अलग-अलग हों।

बरादरे कलाँ (برادر کلاں) फा. पुं.–वड़ा भाई, पूर्वज।

बरादरे ख़ुर्द (برادر خرد) फा. पुं.–छोटा भाई, अनुज।

बरादरे ख़्वांदः (برادر خواندہ) फा. पुं.–जिसे भाई वना लें, मुँह वोला भाई।

बरादरे तौअम (برادر توام) फा. अ. पुं.–एक साथ पैदा होने वाले भाई, जो एक योनि से एक समय में तले ऊपर पैदा हों, युग्म, यमल।

बरादरे निस्बती (برادر نسبتی) फा. अ. पुं.–साला, बीवी का भाई।

बरादरे बत्नी (برادر بطنی) फा. अ. पुं.–सहोदर, एक पेट से पैदा, सगा भाई।

बरादरे बुज़ुर्ग (برادر بزرگ) फा. पुं.–दे. 'बरादरे कलाँ'।

बरादरे रिज़ाई (برادر رضاعی) फा. अ.–वे दो व्यक्ति जिन्होंने किसी एक स्त्री का दूध पिया हो।

बरादरे सुल्बी (برادر صلبی) फा. अ. पं.–दे. "बरादरे बत्नी'।

बरादरे हक़ीक़ी (برادر حقیقی) फा. अ. पुं.–सहोदर, सगा भाई।

बराबर (برابر) फा. वि.–समान, तुल्य, यकसाँ; सदृश, मिस्ल; एक साथ, इकट्ठे; क्रमवद्ध, सिलसिलेवार; निरन्तर, लगातार; पास, समीप; बारम्बार, बार-बार; समत, हमवार।

बराबर बराबर (برابر برابر) फा. वि.–पास-पास, क़रीब-क़रीब; आधा-आधा।

बराबरी (برابری) फा. स्त्री.–समता, यकसानी; धृष्टता, गुस्ताख़ी; मुक़ावला, सामना; उद्दंडता, सरकशी।

बरामदः (برآمدہ) फा. पुं.–मकान के आगे बग़ैर दरवाज़े का कोठा, दालान, ग़ुलाम गर्दिश।

बरामद (برآمد) फा. वि.–बाहर आया हुआ; वाहर जानेवाला माल, निर्यात।

बरामदगी (برآمدگی) फा. स्त्री.–वाहर आना, वरामद होना; खोये माल का किसी के पास निकलना; माल का देश के बाहर जाना।

बरामिकः (برامکہ) अ. पुं.–'बर्मक' का बहु., बर्मक वंश के व्यक्ति, जो बड़े प्रतिष्ठित और दानशील थे।

बराया (برایا) अ. स्त्री.–'वरीयः' का बहु., मानव जाति, मनुष्य वर्ग।

बरावर्दः (برآوردہ) फा. वि.–बाहर लाया हुआ; एक मद से निकाल कर दूसरी मद में डाला हुआ।

बरावर्द (برآورد) फा. स्त्री.–तनख़्वाह का विल; ख़र्च के हिसाब का पर्चा; तख़्मीने की फ़र्द।

बरावेख़्तः (برآویختہ) फा .वि.–लटकाया हुआ।

बराशुफ़्तः (برآشفتہ) फा. वि.–क्रुद्ध, कुपित, गुस्से में भरा हुआ।

बराहिमः (براہمہ) अ. पुं.–बरहमन का बहु., ब्राह्मण लोग।

बराहीन (براہین) अ. स्त्री.–'बुर्हान' का बहु., दलीलें।

बराहे अदब (براہ ادب) फा. अ. अव्य.–आदर और सम्मान के विचार से; अदब के साथ, शिष्टतापूर्वक।

बराहे आश्ती (براہ آشتی) फा. अव्य.–मित्रता के विचार से।

बराहे इंसाफ़ (براہ انصاف) फा. अ. अव्य.–इंसाफ़ और न्याय की दृष्टि से।

बराहे एहतियात (براہ احتیاط) फा. अ. अव्य.–सावधानता के विचार से।

बराहे करम (براہ کرم) फा. अ. अव्य.–कृपया, कृपा करके।

बराहे नवाज़िश (براہ نوازش) फा. अव्य.–कृपा की दृष्टि से, कृपया, कृपा करके।

बराहे रास्त (براہ راست) फा. वि.–सीधे तौर पर, जिससे काम हो सीधा उसी से, किसी दूसरे को बीच में डाले बिना।

बरींबिना (بریں بنا) फा. अव्य.–इस कारण से, इस आधार पर, इसलिए, अतः।

बरी (بری) अ. वि.–मुक्त, आज़ाद; रिहा, बंधनमुक्त; निर्दोष, बेक़ुसूर; पृथक, अलग।

बरी उज़्ज़िम्मः (بری الذمہ) अ. वि.–जो किसी उत्तरदायित्व से अलग हो, भारमुक्त।

बरीद (برید) अ. पुं.–पत्रवाहक, क़ासिद; दूत, एलची; डाक।

बरीयः (بریہ) अ. स्त्री.–प्राणी, जानदार, मख़लूक़।

बरीयत (بریت) अ. स्त्री.–दे. ‘बरीयः’, बरी होना, मुक्त होना; निरपराध होना, बेक़ुसूरी।

बरुफ़्तादः (برافتادہ) फा. वि.–नष्ट, ध्वस्त, नाबूद; दूर किया हुआ; निर्बल; पराजित।

बरुफ़्तादगी (برافتادگی) फा. स्त्री.–विनाश, ध्वंस, नाबूदगी; दूर होना, अलग होना; निर्बलता, कमज़ोरी; पराजय, हार।

बरूएकार (بروےکار) फा. अव्य.–दे. ‘बररूएकार’।

बरोमंद (برومند) फा. वि.–लाभान्वित, मुस्तफ़ीज; सफल, कामयाब; सौभाग्यशाली, ख़ुशक़िस्मत।

बरोमंदी (برومندی) फा. स्त्री.–लाभ उठाना; सफल होना; सौभाग्य।

बर्उस्साअः (برأساعہ) अ. पुं.–वह दवा जो एक क्षण के अन्दर रोग से मुक्त कर दे।

बर्क़ंदाज़ (برق انداز) उ. वि.–चपरासी; सिपाही; हरकारा; बंदूक़ची; तोपची।

बर्क़ंदाज़ी (برق اندازی) उ. स्त्री.–चपरासी, सिपाही या हरकारे का काम; तोप या बंदूक़ चलाना।

बर्क़ (برق) अ. स्त्री.–चपला, तड़ित, चंचला, बिजली; विद्युत्, प्रयोग में आनेवाली बिजली, इलेक्ट्रिसिटी।

बर्क़अंदाज़ (برق انداز) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़ंदाज़’।

बर्क़अंदाज़ी (برق اندازی) अ. फा. स्त्री.–दे. ‘बर्क़ंदाज़ी’।

बर्क़अफ़्गन (برق افگن) अ. फा. वि.–बिजली गिरानेवाला, बिजलियाँ गिराकर तबाह करनेवाला, दे. ‘बर्क़फ़्गन’।

बर्क़आसा (برق آسا) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़ासा’, दोनों शुद्ध हैं, परन्तु दूसरा अधिक शुद्ध है।

बर्क़आहंग (برق آہنگ) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़ाहंग’, दोनों शुद्ध हैं, परन्तु दूसरा अधिक शुद्ध है।

बर्क़इनाँ (برق عناں) अ. फा. वि.–बिजली के साथ चलनेवाला, अर्थात् बहुत ही चंचल और चपल।

बर्क़ख़िराम (برق خرام) अ. फा. वि.–बिजली की भाँति बहुत ही शीघ्र गतिवाला।

बर्क़गाम (برق گام) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़ख़िराम’।

बर्क़ज़दः (برق زدہ) अ. फा. वि.–जिसे बिजली मार गयी हो, जिसे बिजली का शाक लग गया हो, जिस पर बिजली गिरे।

बर्क़ज़दगी (برق زدگی) अ. फा. स्त्री.–बिजली का मार जाना।

बर्क़जौलाँ (برق جولاں) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़ख़िराम’।

बर्क़ताज़ (برق تاز) अ. फा. वि.–बिजली की तरह गिरनेवाला।

बर्क़ताब (برق تاب) अ. फा. वि.–बिजली की तरह चमकनेवाला।

बर्क़दम (برق دم) अ. फा. वि.–बहुत ही तीक्ष्ण, बहुत ही धारदार।

बर्क़निगाह (برق نگاہ) अ. फा. वि.–जिसकी आँखों में बिजलियाँ हों, जिसकी आँखें बिजलियाँ गिराती हो।

बर्क़नुमा (برق نما) अ. फा. पुं.–एक यंत्र जिससे बिजली का हाल जाना जाता है।

बर्क़फ़्गन (برق افگن) अ. फा. वि.–बिजलियाँ गिरानेवाला।

बर्क़रफ़्तार (برق رفتار) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़ख़िराम’।

बर्क़रफ़्तारी (برق رفتاری) अ. फा. स्त्री.–बिजली की भाँति जल्द चलना।

बर्क़रुबा (برق ربا) अ. फा. वि.–बिजली का कंडक्टर, बिजली उतारनेवाला।

बर्क़वश (برق وش) अ. फा. वि.–बिजली की भाँति चंचल, चपल और तेज़।

बर्क़शिताब (برق شتاب) अ. फा. वि.–बिजली की तरह तेज़ी से काम करनेवाला।

बर्क़सामाँ (برق ساماں) अ. फा. वि.–बिजली की चपलता, चंचलता और उसका प्रकाश आदि रखनेवाला।

बर्क़ासा (برق آسا) अ. फा. वि.–दे. ‘बर्क़वश’।

बर्क़ाहंग (برق آہنگ) अ. फा. वि.–बिजली-जैसी कड़कवाला।

बर्क़ियः (برقیہ) अ. पुं.–तार, टेलीग्राफ।

बर्क़ी (برقی) अ. वि.–बिजली का; बिजली से सम्बन्ध रखनेवाला।

बर्क़े ख़ातिफ़ (برق خاطف) अ. स्त्री.–वह बिजली जो आँखों में चकाचौंध कर दे।

बर्क़े ख़िर्मनसोज़ (برق خرمن سوز) अ. फा. स्त्री.–वह बिजली जो खलियान को जला डाले।

बर्क़े जिहिंदः (برق جہندہ) अ. फा. स्त्री.–तड़पनेवाली बिजली।

बर्क़े तपाँ (برق تپاں) अ. फा. स्त्री.–तड़पनेवाली बिजली।

बर्क़े दमाँ (برق دماں) अ. फा. स्त्री.–कुपित बिजली।

बर्क़े नाज़ (برق ناز) अ. फा. स्त्री.–नाज़ोअदा की बिजली, बिजली की भाँति जला देनेवाले नाज़ोअदा।

बर्क़े नज़र (برق نظر) अ. फा. स्त्री.–निगाह की बिजली, प्रेयसी का कटाक्षपात–"बज़्म में बर्क़े नज़र है सदतमन्ना आफ़्रीं, दिल में है महिफ़ल कोई या दिल मेरा महफ़िल में है।"

बर्क़े निगाह (برق نگاہ) अ. फा. स्त्री.–निगाहों की बिजली।

बर्क़े बेअमाँ (برق بے اماں) अ. फा. स्त्री.–वह बिजली जिससे बचाव न हो सके, जो अवश्य ही गिरकर जान ले ले।

बर्क़े बेज़िन्हार (برق بے زنہار) अ. फा. स्त्री.–दे. 'बर्क़े बेअमाँ'।

बर्ख़ (برخ) फा. पुं.–अंश, भाग, हिस्सा, टुकड़ा।

बर्ग (برگ) फा. पुं.–दल, पत्ता, पत्ती।

बर्गरेज़ (برگ ریز) फा. वि.–खिज़ां का मौसिम, पतझड़।

बर्गुस्तुवाँ (برگستواں) फा. पुं.–ज़ीन पर डालने का कपड़ा, पाखर।

बर्गे ख़ज़ाँ (برگ خزاں) फा. पुं.–वह पत्ता जो पतझड़ के कारण पीला पड़ गया हो या पेड़ से गिर गया हो।

बर्गे ख़ज़ाँदीदः (برگ خزاں دیدہ) फा. पुं.–पतझड़ में गिरा हुआ पत्ता।

बर्गे ख़ज़ाँरसीदः (برگ خزاں رسیدہ) फा. पुं.–वह पत्ता जिसको पतझड़ ने पीला कर दिया हो।

बर्गे गुल (برگ گل) फा. पुं.–गुलाब की पंखड़ी।

बर्गे नौ (برگ نو) फा. पुं.–नया पत्ता, किसलय।

बर्गे सब्ज़ (برگ سبز) फा. पुं.–हरा पत्ता।

बर्गो नवा (برگ ونوا) फा. पुं.–खाने-पीने की सामग्री, जीवन व्यतीत करने के साधन।

बर्गोबार (برگ وبار) फा. पुं.–फल और पत्ते, फल-फूल।

बर्गोसाज़ (برگ وساز) फा. पुं.–साज़ोसामान।

बर्ज़ (برز) फा. पुं.–कृषि, खेती, ज़िराअत; सुन्दरता, शोभा, ज़ेबाई।

बर्ज़ख़ (برزخ) अ. पुं.–परस्पर विरुद्ध रखनेवाली दो चीज़ों के बीच की तीसरी चीज़ जो दोनों से संपर्क रखे, जैसे––बंदर जो मनुष्यों और हैवानों के बीच बर्ज़ख़ है।

बर्ज़गर (برزگر) फा. पुं.–कृषक, किसान।

बर्ज़गरी (برزگری) फा. स्त्री.–कृषि, खेती, किसानी, काश्तकारी।

बर्ज़न (برزن) फा. पुं.–गली, वीथी, कूचा।

बर्दः (بردہ) तु. पुं.–दास, ग़ुलाम; दासी, कनीज़; दायः, धाय।

बर्दःफ़रोश (بردہ فروش) तु. फा. वि.–आदमियों की ख़रीद फ़रोख़्त करनेवाला।

बर्दःफ़रोशी (بردہ فروشی) तु. फा. स्त्री.–आदमियों की ख़रीद-फ़रोख़्त करना।

बर्द (برد) अ. पुं.–शीत, जाड़ा, ठंड।

बर्दे अजूज़ (برد عجوز) अ. पुं.–फागुन के आख़िरी दिनों का जाड़ा जब वह बूढ़ा हो जाता है।

बर्दे अत्राफ़ (برد اطراف) अ. पुं.–बीमार के अन्तिम समय में उसके हाथ-पाँव का ठंडा हो जाना।

बर्दे लयाली (برد لیالی) अ. पुं.–जाड़े की रातों की ठंड।

बर्ना (برنا) फा. वि.–तरुण, युवा, जवान।

बर्नाई (برنائی) फा. स्त्री.–तरुणता, युवावस्था, जवानी।

बर्फ़ (برف) फा. उभ.–जमा हुआ पानी, जो मशीन से बनाते हैं और पानी ठंडा करने के काम आता है, हिम; पाला, तुषार; बहुत अधिक ठंडा।

बर्फ़पर्वर्दः (برف پروردہ) फा. वि.–जो बर्फ़ में लगाकर ठंडा किया गया हो।

बर्फ़पोश (برف پوش) फा. वि.–जो बर्फ़ से ढँका हो, हिमाच्छादित, जैसे––बर्फ़पोश पहाड़।

बर्फ़फ़रोश (برف فروش) फा. वि.–बर्फ़ बेचनेवाला।

बर्फ़बारी (برف باری) फा. स्त्री.–बर्फ़ गिरना, पाला पड़ना।

बर्फ़ानी (برفانی) फा. वि.–बर्फ़ से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु, बर्फ़-जैसी ठंडी, बर्फ़ीली।

बर्फ़ाब (برفاب) फा. पुं.–बर्फ़ से ठंडा किया हुआ पानी।

बर्फ़िस्तान (برفستان) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ बर्फ़ ही बर्फ़ हो, जहाँ बहुत बर्फ़ पड़ती हो।

बर्फ़ी (برفی) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध मिठाई, कलाकंद।

बर्बत (بربط) फा. पुं.–एक बाजा, जो सितार की तरह होता है, परन्तु उसकी तुंबी बड़ी और लम्बाई कम होती है।

बर्बतनवाज़ (بربط نواز) फा. पुं.–बर्बत बजानेवाला।

बर्बर (بربر) अ. पुं.—अफ़्रीक़ा का एक प्रदेश; इस प्रदेश के निवासी।

बर्बरीयत (بربریت) अ. स्त्री.—अत्याचार, अन्याय, ज़ुल्म; पशुता, हैवानियत।

बर्मः (برمہ) फा. पुं.—लकड़ी में छेद करने का यंत्र, भेदीसार।

बर्मक (برمک) फा. पुं.—एक आतशपरस्त जो बलख़ के आतशकदे का अग्निहोत्री था, इसकी संतान बड़े-बड़े पदों पर पहुँची और अपनी विद्वत्ता और दानशीलता के कारण बहुत प्रतिष्ठित हुई, इस संतान के व्यक्ति बर्मक नाम के कारण 'वरामिकः' कहलाये।

बर्शकाल (برشکال) फा. पुं.—बरसात, वर्षाकाल।

बर्साम (برسام) फा. पुं.—सीने का शोथ, ज़ातुलजंब, उरोग्रह, प्लूरसी।

बर्हमन (برہمن) फा. पुं.—दे. 'वरहमन', दोनों शुद्ध हैं, ब्राह्मण, विप्र।

बर्हमनज़ादः (برہمن زادہ) फा. पुं.—वरहमन का लड़का, ब्राह्मणपुत्र।

बर्हमनबचः (برہمن بچہ) फा. पुं.—दे. 'बर्हमनज़ादः'।

बर्राक़ (براق) अ. वि.—उज्ज्वल, शुभ्र, बहुत सफ़ेद, धवल।

बर्राद (براد) अ. पुं.—ठंडा करनेवाला; चायदानी।

बलंद (بلند) फा. वि.—उच्च, ऊँचा; प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज़; महान्, अज़ीम; लंबा, दराज़; अधिक, बहुत।

बलंदअख़्तर (بلنداختر) फा. वि.—जिसके ग्रह उन्नत हों, प्रतापी, तेजस्वी, इक़्बालमंद।

बलंदआवाज़ (بلندآواز) फा. वि.—जिसकी आवाज़ ऊँची अथवा ज़ोरदार हो; ज़ोर से बोलनेवाला; ज़ोरदार बात कहनेवाला।

बलंदआश्याँ (بلندآشیاں) फा. वि.—जिसका घोंसला बहुत ऊँचा हो, अर्थात् बलंद रुत्बेवाला।

बलंदआहंग (بلندآہنگ) फा. वि.—ज़ोर से बोलनेवाला; ज़ोरदार बात कहनेवाला, अर्थात् बड़ा दा'वा करनेवाला।

बलंदइक़्बाल (بلنداقبال) फा. अ. वि.—प्रतापवान्, तेजस्वी, इक़्बालमंद।

बलंदइक़्बाली (بلنداقبالی) फा. अ. स्त्री.—प्रताप, तेज, इक़्बाल।

बलंदक़ामत (بلندقامت) फा.अ. वि.—लंबा-तड़ंगा, दीर्घकाय।

बलंदख़याल (بلندخیال) फा. अ. वि.—उच्चाशय, विशाल हृदय, फ़राख़दिल।

बलंदख़याली (بلندخیالی) फा. अ. स्त्री.—फ़राख़दिली।

बलंदतर (بلندتر) फा. वि.—बहुत ऊँचा, उच्चतर।

बलंदतरीन (بلندترین) फा. वि.—सबसे ऊँचा, उच्चतम।

बलंदनज़र (بلندنظر) फा. अ. वि.—उच्चदर्शी, उच्चाशय, बहुत ऊँची नज़र रखनेवाला।

बलंदनज़री (بلندنظری) फा. अ. स्त्री.—दृष्टि का ऊँचा होना, केवल बड़ी चीज़ों और बड़े उद्देशों पर नज़र रखना।

बलंदनिगाह (بلندنگاہ) फा. वि.—दे. 'बलंदनज़र'।

बलंदनिगाही (بلندنگاہی) फा. स्त्री.—दे. 'बलंदनज़री'।

बलंदपरवाज़ (بلندپرواز) फा. वि.—ऊँचा उड़नेवाला; वलंदख़याल, उच्चाशय।

बलंदपरवाज़ी (بلندپروازی) फा. स्त्री.— फा. स्त्री.—ऊँची उड़ान; आशय का उच्च होना।

बलंदपायः (بلندپایہ) फा. वि.—बड़े पदवाला, बड़ी प्रतिष्ठा वाला।

बलंदपायगी (بلندپایگی) फा. स्त्री.—पद और प्रतिष्ठा का महान् होना।

बलंदफ़ित्रत (بلندفطرت) फा. अ. वि.—जिसकी प्रकृति उच्च दर्शिनी हो।

बलंदबख़्त (بلندبخت) फा. वि.—बड़े भाग्यवाला, सौभाग्यशाली, भाग्यवान्।

बलंदबाँग (بلندبانگ) फा. वि.—जोर से बोलनेवाला; जोरदार दा'वा करनेवाला।

बलंदबाला (بلندبالا) फा. वि.—दे. 'बलंदक़ामत'।

बलंदबीं (بلندبیں) फा. वि.—उच्चदर्शी, वलंदनज़र, केवल बड़े उद्देशों पर दृष्टि रखनेवाला।

बलंदबीनी (بلندبینی) फा.स्त्री.—उच्चदर्शिता, वलंदनज़री।

बलंदमर्तबः (بلندمرتبہ) फा. अ. वि.—दे. 'बलंदपायः'।

बलंदसीरत (بلندسیرت) फा. अ. वि.—दे. 'बलंदफ़ित्रत'।

बलंदहिम्मत (بلندہمت) फा. अ. वि.—बड़ी हिम्मतवाला, उच्चोत्साही।

बलंदहौसलः (بلندحوصلہ) फा. अ. वि.—दे. 'बलंदहिम्मत'।

बलंदी (بلندی) फा. स्त्री.—उत्तुंगता, उँचाई; महत्त्व, अज़्मत; श्रेष्ठता, बड़ाई।

बलंदोपस्त (بلندوپست) फा. पुं.—ऊँचा-नीचा, ऊँच-नीच।

बलख़ (بلخ) फा. पुं.—अफ़ग़ानिस्तान का एक प्राचीन नगर जो इस समय एक छोटा-सा गाँव है।

ब लजाजत (بہ لجاجت) फा. अ. अव्य.—नम्रतापूर्वक, आजिज़ी के साथ; गिड़गिड़ाते हुए, बिनती करते हुए।

ब लताइफ़ुल हियल (بہ لطائف الحیل) फा. अ. अव्य.—अच्छे-अच्छे बहानों के साथ, नये-नये बहाने बनाकर।

बलद (بلد) अ. पुं.—नगर, शह्र (शहर)।

बलद (بلد) फा. पुं.—पथ-प्रदर्शक, राहनुमा; नेता, लीडर।

बला (بلیٰ) अ. अव्य.—हाँ; अवश्य, ज़रूर।

बला (بلا) अ. स्त्री.–विपत्ति, आपत्ति, मुसीबत; दैवी आपत्ति, आस्मानी मुसीबत; प्रेतबाधा, आसेब; दुष्ट, शरीर; धूर्त, ख़बीस; भयानक, ख़ौफ़नाक; बहुत अधिक; कुशल, चालाक—"ऐसे झगड़े मेरी बला जाने, मैं कहाँ वह कहाँ खुदा जाने।"

बलाए अज़ीम (بلائے عظیم) अ. स्त्री.–बहुत बड़ी आपत्ति।

बलाए आस्मानी (بلائے آسمانی) अ. फा. स्त्री.–दैवी आपत्ति, ग़ैबी मुसीबत, अज़ाबे इलाही।

बलाए जाँ (بلائے جاں) फा. स्त्री.–प्राणों के लिए आपत्ति का कारण, जान का जंजाल।

बलाए नागहानी (بلائے ناگہانی) फा. स्त्री.–आकस्मिक विपत्ति, अचानक आनेवाली मुसीबत।

बलाए बेदर्मां (بلائے بے درماں) अ. फा. स्त्री.–ऐसी आपत्ति जिसका कोई तोड़ न हो, जो टल न सके।

बलाए मुजस्सम (بلائے مجسم) अ. स्त्री.–साकार विपत्ति, वह व्यक्ति जो सर से पाँव तक मुसीबत ही मुसीबत हो।

बलाए रोज़गार (بلائے روزگار) अ. फा. स्त्री.–ज़माने के लिए विपत्ति का कारण।

बलाकश (بلاکش) अ. फा. वि.–विपत्तियाँ सहनेवाला, आफतें झेलनेवाला।

बलाग़ (بلاغ) अ. पुं.–पहुँचाना, भेजना।

बलाग़त (بلاغت) अ. स्त्री.–गद्य या पद्य की वह शैली जिसमें अलंकारादि का प्रयोग चमत्कारपूर्वक किया जाय, साहित्य की आलंकारिक शैली।

बलाग़त आईन (بلاغت آئین) अ. फा. वि.–बलाग़त से भरा हुआ, बलीग़।

बलाग़त आमेज़ (بلاغت آمیز) अ. फा. वि.–जिस लेख में बलाग़त हो।

बलागर्दां (بلا گرداں) अ. फा. वि.–वह जो बलि चढ़ा दिया गया हो।

बलाज़दः (بلازدہ) अ. फा. वि.–विपत्तिग्रस्त, मुसीबत का मारा।

बलादत (بلادت) अ. स्त्री.–कुंदज़ेह्नी, बुद्धि की मंदता, प्रतिभा की कमी।

बलादते ज़ेह्न (بلادت ذہن) अ. स्त्री.–ज़ेह्न का कुंदपन, प्रतिभा का कुंठितपन।

बलादुर (بلادر) अ. पुं.–भिलावाँ, भल्लातक।

बलानसीब (بلانصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में आपत्तियाँ ही आपत्तियाँ हों।

बलानोश (بلانوش) अ. फा. वि.–बहुत अधिक पीनेवाला शराबी।

बलानोशी (بلانوشی) अ. फा. स्त्री.–बहुत अधिक शराब पीना।

बलाया (بلایا) अ. स्त्री.–'बलीयः' का बहु., विपत्तियाँ।

बलाहत (بلاہت) अ. स्त्री.–व्यावहारिक विषयों में ज्ञान की कमी; मूर्खता, नादानी, दे. 'बिलाहत', दोनों शुद्ध हैं।

बलीग़ (بلیغ) अ. वि.–जो बलाग़त का ज्ञाता हो; जो लेख बलाग़त से पूर्ण हो; अलंकार-शास्त्री।

बलीद (بلید) अ. वि.–जिसका ज़ेह्न मंद हो, कुंठित-बुद्धि, मंदप्रतिभ, मन्दमति।

बलीदुज़्ज़ेह्‌न (بلید الذہن) अ. वि.–मंदप्रतिभ, लुप्त-बुद्धि, कुंद ज़ेह्न।

बलीयः (بلیہ) अ. पुं.–विपत्ति, आपत्ति, मुसीबत।

बलीयत (بلیت) अ. स्त्री.–आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत।

बलीयात (بلیات) अ. स्त्री.–'बलीयत' का बहु., विपत्तियाँ, आपदाएँ; बलाएँ।

बलूत (بلوط) अ. पुं.–दे. 'बल्लूत', वही शुद्ध है।

बलूर (بلور) फा. अ. पुं.–बल्लूर का लघु. दे., 'बल्लूर'।

बलेलः (بلیلہ) अ. पुं.–बहेड़ा, एक प्रसिद्ध फल, जो त्रिफला का अंश है।

बल्‌अमेबाऊर (بلعم باعور) अ. पुं.–एक वाक्-सिद्ध यहूदी संत जिसके श्राप से हज़्रत मूसा चालीस साल बनों में भटकते फिरे, 'बाऊर' उसका बाप था।

बल्क़ान (بلقان) अ. पुं.–यूरोप का एक प्रायद्वीप जिसमें रोमानिया, बल्गारिया, सर्विया, मक़्दूनिया अल्बानिया, यूनान और रोम सम्मिलित हैं।

बल्कि (بلکہ) अ. फा. अव्य.–वरन्, वरंच, अपितु।

बल्ग़म (بلغم) अ. पुं.–एक धातु, श्लेष्मा।

बल्ग़मी (بلغمی) अ. वि.–श्लेष्मा सम्बन्धी।

बल्दः (بلدہ) अ. पुं.–नगर, पुरी, शह्र; २१वाँ नक्षत्र, उत्तराषाढ़ा।

बल्दियः (بلدیہ) अ. स्त्री.–नगरपालिका, म्यूनिस्पैलिटी।

बल्लूर (بلور) अ. पुं.–एक मूल्यवान् शीशा, स्फटिकमणि।

बल्‌वा (بلوی) अ. पुं.–उपद्रव, दंगा, फ़साद; विद्रोह, बग़ावत; अशांति, बदअम्नी।

बल्साँ (بلساں) अ. पुं.–एक पेड़ जिसके पत्तों से तेल निकलता है, जिसे 'रौग़ने बल्साँ' कहते हैं, यह पेड़ अरब और मिस्र आदि में पैदा होता है।

बवज्हे अह्‌सन (بوجہ احسن) फा. अ. अव्य.–बहुत अच्छी तरह से।

बवज्हे हलाल (بوجہ حلال) फा. अ. अव्य.–हलाल की कमाई से।

बवातिन (بواطن) अ. पुं.–'बातिन' का बहु., हृदयसमूह।

बवादी (بوادی) अ. पुं.–'वादी' का बहु., 'घाटियाँ'।

बवारिक़ (بوارق) अ. स्त्री.–'बारिक़:' का बहु., बिजलियाँ।

बवासिर (بواسیر) अ. स्त्री.–'बासूर' का बहु., एक रोग, अर्श।

बव्वाब (بواب) अ. वि.–द्वारपाल, ड्योढ़ीबान, दरबान।

बव्वाल (بوال) अ. वि.–बहुत पेशाब करनेवाला, मुतोड़ा।

बशरः (بشرہ) अ. पुं.–त्वचा, त्वक्, जिल्द, ऊपरी चमड़ा।

बशर (بشر) अ. पुं.–मनुष्य, मानव, आदमी।

बशरी (بشری) अ. वि.–मानुषिक, आदमी का; मनुष्य सम्बन्धी।

बशरीयत (بشریت) अ. स्त्री.–मानवता, इंसानीयत।

बशर्ते कि (بشرطےکہ) फा. अ. अव्य.–शर्त यह है कि, इस शर्त के साथ कि।

ब शर्हे सद्र (بہشرحصدر) फा. अ. अव्य.–जैसा लिखा है उसी के अनुसार।

बशाशत (بشاشت) अ. स्त्री.–प्रसन्नता, ख़ुशी; आनंद, उल्लास, मसर्रत; प्रफुल्लता, शगुफ़्तगी।

बशाशते क़ल्ब (بشاشتقلب) अ. स्त्री.–हृदय की प्रफुल्लता।

बशाशते रूह (بشاشتروح) अ. स्त्री.–आत्मा की प्रसन्नता।

बशीर (بشیر) अ. वि.–बुशारत देनेवाला, शुभ सूचना सुनानेवाला।

बशीरोनज़ीर (بشیرونزیر) अ. वि.–शुभ सूचना देनेवाला और डरानेवाला, स्वर्ग की सूचना देनेवाला और नरक से डरानेवाला, पैग़ंबर।

बश्काल (بشکال) फा. स्त्री.–वर्षा ऋतु, बरसात।

बश्शाश (بشاش) अ. वि.–हर्षित, आनंदित, ख़ुश।

बसंद (بسند) फा. वि.–पर्याप्त, काफ़ी; प्रचुर, बहुत।

बस (بس) फा. वि.–पर्याप्त, काफ़ी; अधिक, बहुत; समाप्त, खत्म; केवल, सिर्फ़।

बसकि (بسکہ) फा. अव्य.–चूँकि।

बसदउम्मीद (بہصدامید) फा. अव्य.–सैकड़ों आशाओं के साथ।

बसदमुश्किल (بہصدمشکل) अ. फा. अव्य.–सैकड़ों कठिनानाइयों के साथ।

बसबब (بہسبب) फा. अ. अव्य.–कारण से।

बसबीले ज़िक्र (بہسبیلذکر) फा. अ. अव्य.–ज़िक्र अथवा चर्चा चलने पर।

बसबीले तज़्किरः (بہسبیلتذکرہ) अ. फा. अव्य.–दे. 'बसबीले ज़िक्र'।

बसबीले दवाम (بہسبیلدوام) अ. अव्य.–हमेशा के लिए।

बसर (بصر) अ. स्त्री.–दृष्टि, नज़र।

बसर (بسر) फा. स्त्री.–गुज़ारः, गुज़र, जीवन-निर्वाह।

बसरऔक़ात (بسراوقات) फा. अ. स्त्री.–ज़िंदगी काटना, गुज़ारा करना।

बसराहत (بہصراحت) फा. अ. अव्य.–स्पष्टता पूर्वक।

बसरी (بصری) अ. वि.–दृष्टि-सम्बन्धी।

बसरे औक़ात (بسراوقات) फा. अ. स्त्री.–जीवन-यापन, जिंदगी गुज़ारना; जीविका चलाना, रोज़ी कमाना।

बसरो चश्म (بہسروچشم) फा. अव्य.–सर आँखों पर, सहर्ष, ख़ुशी के साथ।

बसाँ (بسان) फा. वि.–तुल्य, समान, मिस्ल।

बसा (بسا) फा. वि.–प्रायः, बहुधा, अक्सर; बहुत, अधिक।

बसाअते सईद (بساعتسعید) फा. अ. अव्य.–शुभ मुहूर्त में, अच्छी घड़ी में।

बसाइत (بسائط) अ. पुं.–'बसीत' का बहु.।

बसाऔक़ात (بسااوقات) फा. अ. अव्य.–बहुधा, प्रायः, अक्सर।

बसातीन (بساتین) फा. पुं.–'बुस्तान' का बहु., बाग़ात।

बसारत (بصارت) अ. स्त्री.–दृष्टि, नज़र।

बसालत (بسالت) अ. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी।

बसीग़ए राज़ (بہصیغۂراز) फा. अ. अव्य.–जो बात या पत्र गोपनीय हो।

बसीत् (بسیط) अ. वि.–विशाल, विस्तृत, चौड़ा चकला; वह पदार्थ या तत्त्व जो अमिश्रित और निष्केवल हो।

बसीर (بصیر) अ. वि.–देखनेवाला, द्रष्टा; दिव्य दृष्टिवाला; ईश्वर।

बसीम (بسیم) अ. वि.–मुस्कुरानेवाला।

बसीरत (بصیرت) अ. स्त्री.–दिल की नज़र, प्रतिभा, चातुर्य, बुद्धिमत्ता, दानाई।

बसुअंत (بہسرعت) फा. अ. वि.–शीघ्रता से, तेज़ी से; जल्दी से, शीघ्र, तुरंत, जल्द।

बसूरते दीगर (بہصورتدیگر) फा. अ. अव्य.–दूसरी अवस्था में, अन्यथा, वरना।

बस्तः (بستہ) फा. वि.–बँधा हुआ; जमा हुआ; तह किया हुआ; गाँठ; अचल; किताबें या काग़ज़ बाँधने का कपड़ा (प्रत्य.) बाँधे हुए, जैसे—कमरबस्तः, कमर कसे हुए; दस्तबस्तः, हाथ बाँधे हुए।

बस्तःआवाज़ (بستہآواز) फा. वि.–जिसकी आवाज़ बैठ गयी हो।

बस्तःकमर (بستہکمر) फा. वि.–कमर बाँधे हुए।

बस्तःदहन (بستہدہن) फा. वि.–जिसका मुँह बंद हो, मौन, ख़ामोश, चुप, जो बोल न सके।

बस्तःपा (بستہ پا) फा. वि.–जिसके पाँव बँधे हों, पाबंद, मज्बूर, विवश।

बस्तःमू (بستہ مو) फा. वि.–जिसके बाल बँधे हों।

बस्तःलब (بستہ لب) फा. वि.–जिसके ओठ बंद हों, जो बोल न सके, चुप, अवाक्।

बस्त (بست) फा. वि.–बंदिश, बँधाई; गाँठ।

बस्त (بسط) अ. पुं.–विस्तार, फैलाव, कुशादगी; विवरण, तफ़्सील।

बस्तए ज़ंजीर (بستۂ زنجیر) फा. वि.–ज़ंजीर में बँधा हुआ, शृंखलित।

बस्तए दाम (بستۂ دام) फा. वि.–जाल में फँसा हुआ; रस्सी में बँधा हुआ।

बस्तए रसन (بستۂ رسن) फा. वि.–रस्सी में बँधा हुआ।

बस्तगी (بستگی) फा. स्त्री.–बँधा होना; लगाव, तअल्लुक़ा।

बस्तत (بسطت) अ. स्त्री.–विस्तार, फैलाव, लंबाई-चौड़ाई।

बस्तोक़ब्ज़ (بسطوقبض) अ. पुं.–फैलना और सुकड़ना, जैसे—नाड़ी (नब्ज़) का।

बस्तोकुशाद (بست وکشاد) अ. पुं.–बंद होना और खुलना, खोल-बाँध, अर्थात् प्रबंध, इंतिज़ाम।

बस्तोबंद (بست وبند) फा. पुं.–बंदोबस्त, प्रबंध, इंतिज़ाम।

बस्मलः (بسملہ) अ. पुं.–'बिस्मिल्लाह' (पूरी) कहना।

बहक़ (بہق) अ. पुं.–त्वचा के हलके धब्बे, छाप, झाईं।

बहज़ार दिक़्क़त (بہ ہزار دقت) फा. अ. अव्य.–सहस्रों आपत्तियों के साथ, हज़ारों कठिनाइयों के पश्चात्।

बहज़ार दुश्वारी (بہ ہزار دشواری) फा. अव्य.–दे. 'बहज़ार दिक़्क़त'।

बहज़ार दुश्वारी (بہ ہزار مشکل) फा. अ. अव्य.–दे. 'बहज़ार दिक़्क़त'।

बहज़ार मुसीबत (بہ ہزار مصیبت) फा. अ. अव्य.–हज़ारों आपत्तियाँ और विपत्तियाँ झेल कर, हज़ारों मुसीबतों के साथ।

बहज़ार शौक़ (بہ ہزار شوق) फा अ. अव्य.–सहस्रों अभिलाषाओं के साथ, बहुत बड़ी उत्कंठा के साथ।

बहद्दे (بہ حدے) फा. अ. अव्य–इस हद तक, यहां तक़, इतना।

बहद्दे कि (بہ حدے کہ) फा. अ. अव्य.–यहाँ तक कि, इतना कि, इतना तक हुआ कि।

बहमःवुजूह (بہ ہمہ وجوہ) फा. अ. अव्य.–पूरे तौरपर, सर्वांगपूर्ण, पूर्णतया।

बहमः सिफ़त मौसूफ़ (بہ ہمہ صفت موصوف) फा. अ. वि.–सारी ख़ूबियों से आरास्तः, सर्वगुणसम्पन्न।

बहम (بہم) फा. वि.–'बाहम' का लघु.; परस्पर, आपस में; मिलकर, साथ होकर, एक साथ।

बहमदीगर (بہم دیگر) फा. वि.–एक-दूसरे के साथ, परस्पर।

बहमरसानी (بہم رسانی) फा. स्त्री.–एकत्र करना, इकट्ठा करना; तलाश करके लाना।

बहमरसीदः (بہم رسیدہ) फा. वि.–तलाश करके लाया हुआ, एकत्र किया हुआ।

बहरउन्वान (بہ ہر عنوان) फा. अ. वि.–हर प्रकार से, जैसे बने तैसे; पूरे तौर से, पूर्णतया।

बहरजा (بہ ہر جا) फा. अव्य.–हर जगह, हर स्थान पर; जिस जगह, जहाँ।

बहरतक़्दीर (بہ ہر تقدیر) फा. अ. वि.–हर प्रकार से, हर अवस्था में।

बहरतौर (بہ ہر طور) फा. अ. वि.–दे. 'बहरहाल', हर प्रकार से।

बहरसूरत (بہ ہر صورت) फा. अ. वि.–दे. 'बहरहाल' हर तरह से,—'बहरसूरत मेरे दिल की परेशानी नहीं जाती।" —जिगर।

बहरहाल (بہ ہر حال) फा. अ. वि.–हर हाल में, हर अवस्था में; हर प्रकार से, जैसे बने वैसे।

बहा (بہا) फा. पुं.–मूल्य, क़ीमत; उत्तमता, अच्छाई; शोभा, रौनक़; प्रकाश, रौशनी।

बहाइम (بہائم) अ. पुं.–'बहीमः' का बहु., चौपाये, मवेशी, पशु।

बहाए ख़ूँ (بہائے خوں) फा. पुं.–ख़ूँबहा, वह धन जो किसी व्यक्ति के मार डाले जानें पर हत्यारे से दिलवाया जाय।

बहादुर (بہادر) तु. वि.–शूर, वीर, सूरमा।

बहादुरानः (بہادرانہ) तु. फा. वि.–बहादुरों-जैसा, वीरोचित।

बहादुरी (بہادری) तु. वि.–शूरता, वीरता, शजाअत।

बहानः (بہانہ) फा. पुं.–मिष, व्याज, हीला; छल, धोखा, फ़रेब; टालमटोल, हीला हवाला; अवसर, मौक़ा; ऐसी बात जिसकी आड़ में कोई काम बन सके।

बहानःख़ू (بہانہ خو) फा. वि.–जिसका स्वभाव बहानेबाज़ी का हो।

बहानःगर (بہانہ گر) फा. वि.–दे. 'बहानःबाज़'।

बहानःगरी (بہانہ گری) फा. स्त्री.–दे. 'बहानःबाज़ी'।

बहानःजू (بہانہ جو) फा. वि.–जो ढूँढ़-ढूँढ़कर बहाने तलाश करे।

बहानःजूई (بہانہ جوئی) फा. स्त्री.–रोज़ नये-नये बहाने तलाश करना।

बहानःतलब (بہانہ طلب) फा. अ. वि.–दे. 'बहानःजू'।

बहानःबाज़ (بہانہباز) फा. वि.–बहाने करनेवाला।

बहानःबाज़ी (بہانہبازی) फा. स्त्री.–बहाने बनाना।

बहानःसाज़ (بہانہساز) फा. वि.–दे. 'बहानः बाज़'।

बहानःसाज़ी (بہانہسازی) फा. स्त्री.–दे. 'बहानःबाज़ी'।

बहार (بہار) फा. स्त्री.–वसंत ऋतु, पुष्पकाल, फूलों का मौसिम; शोभा, रौनक़; मनोविनोद, तफ़्रीह; कौतुक, तमाशा; आनंद, लुत्फ़; जोबन-उठान; अच्छी अवस्था; परिहास, दिल्लगी।

बहारआगीं (بہارآگیں) फा. वि.–पुरबहार; शोभायमान; पुष्पित; आनन्दपूर्ण; कौतुकपूर्ण।

बहार ब दामाँ (بہاربہداماں) फा. वि.–दामन में बहार की शोभाएँ लिये हुए, अपने साथ बहार की छटाएँ लिये हुए।

बहाराँ (بہاراں) फा. पुं.–वसंत ऋतु, बहार।

बहारिस्तान (بہارستان) फा. पुं.–बहारों का स्थान, जहाँ बहार ही बहार हो।

बहारीं (بہاریں) फा. वि.–बहार का, बसंत ऋतु का; बहार सम्बन्धी।

बहारे बेख़ज़ाँ (بہاربےخزاں) फा. स्त्री.–वह बहार जिसमें ख़िज़ाँ (पतझड़) न हो।

बहाल (بحال) फा. अ. वि.–नीरोग रोगमुक्त; पुनर्नियुक्त, मुअत्तली से मुक्त; स्वस्थ-तन्दुरुस्त; आनंदित, ख़ुश।

बहालते परीशाँ (بہحالتپرشاں) फा. अ. वि.–बुरे हालों में, बुरी अवस्था में, कंगाली में।

बहालते मौजूदः (بہحالت موجودہ) फा. अ. वि.–उपस्थित अवस्था में, इस समय, इस हालत में।

बहालाते मौजूदः (بہحالاتموجودہ) फा. अ. वि.–इस समय के हालात देखते हुए, इन दशाओं में।

बहाली (بحالی) फा. अ. वि.–नीरोगिता, रोगमुक्ति; पुनर्नियुक्ति, मुअत्तली से मुक्ति; स्वास्थ्य, तन्दुरुस्ती; आनंद, प्रसन्नता, ख़ुशी; मुखच्छटा, चेहरे की रौनक़।

बहाले अब्तर (بہحالابتر) फा. अ. वि.–बुरे हाल में, फटे हालों, दरिद्रता की दशा में।

बहाले कि (بہالےکہ) फा. अ. अव्य.–इस अवस्था में कि, ऐसे हाल में कि।

बहाले ख़राब (بہحالخراب) फा.अ.वि.–दे. 'बहाले अब्तर'।

बहाले ख़स्तः (بہحالخستہ) फ़ा. अ. वि.–फटे हालों, में, दरिद्रता क़ी दशा में।

बहाले परीशाँ (بہحالپریشاں) फा. अ. वि.–दे. 'बहालते परीशाँ'।

बहाले बद (بہحالبد) फा. अ. वि.–दे. 'बहाले अब्तर'।

बहिफ़ाज़त (بہحفاظت) फा. अ. वि.–हिफ़ाज़त के साथ।

बहिस्सए मुसावी (بہحصۂمساوی) फा. अ. वि.–बराबर-बराबर के भागों में, बराबर बराबर।

बहीज (بہیج) अ. वि.–हर्षित, आनंदित, शादमाँ।

बहीमः (بہیمہ) अ. वि.–पशु, चौपाया, मवेशी।

बहीमानः (بہیمانہ) अ. अव्य.–पशुओं-जैसा, उद्दंडतापूर्ण, वहशियाना।

बहीरः (بحیرہ) अ. पुं.–उपसागर, छोटा समुद्र, इसका शुद्ध उच्चारण 'बुहैरः' है, परंतु उर्दू में 'बहीरः' बोलते हैं।

बहीरए अख़्ज़र (بحیرۂاخضر) अ. पुं.–दे. 'बह्रे अख़्ज़र'।

बहीरए अब्यज़ (بحیرۂابیض) अ. पुं.–दे. 'बह्रे अब्यज़'।

बहीरए अस्वद (بحیرۂاسود) अ. पुं.–दे. 'बह्रे अस्वद'।

बहीरए क़ुल्ज़ुम (بحیرۂقلزم) अ. पुं.–दे. 'बह्रे क़ुल्ज़ुम'।

बहुक्म (بہحکم) फा. अ. अव्य.–आज्ञानुसार, आदेशानुसार, हुक्म से।

बहेच (باھیچ) फा. अव्य.– व्यर्थ, निरर्थक।

बहैअते मज्मूई (بہھیئتمجموعی) फा. अ. अव्य.–पूर्णरूपेण, पूरे तौर पर।

बह्जत (بہجت) अ. स्त्री.–प्रसन्नता, आनंद, हर्ष, ख़ुशी; हराभरापन, सरसब्ज़ी; शोभा, छटा, ज़ेबाई।

बह्ज़ाद (بہزاد) फा. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'बिह्ज़ाद'।

बह्त (بحت) अ. वि.–बेमेल, निर्मल, निष्केवल।

बह्बूद (بہبود) फा. स्त्री.–शुद्ध उच्चारण 'बिह्बूद' है, परंतु उर्दू में यही है, उन्नति, भलाई, कल्याण।

बह्मन (بہمن) फा. पुं.–ईरानी ग्यारहवाँ महीना जो ख़ज़ां का महीना है, जो हिंदुस्तानी फागुन होता है; एक कंद जो दवा में काम आता है और लाल-सफ़ेद होता है; इस्फंदयार का पुत्र।

बह्रः (بہرہ) फा. पुं.–भाग, अंश, हिस्सा।

बह्रःमंद (بہرہمند) फा. वि.–सौभाग्यशाली, ख़ुशनसीब।

बह्रयाब (بہرہیاب) फा. वि.–जिसने अपना भाग पा लिया हो; भाग्यवान्, ख़ुशक़िस्मत।

बह्रवर (بہرہور) फा. वि.–दे. 'बह्रःमंद'।

बह्र (छंद) (بحر) अ. स्त्री.–शे'र का वज़्न, वृत्त, छंद।

बह्र [भू.] (بحر) अ. पुं.–समुद्र, सागर; ओशन, महासागर।

बह्र (بہر) फा. अव्य.–लिए, वास्ते, प्रति।

बह्रए वाफ़िर (بہرۂوافر) फा. अ.–बड़ा भाग, बड़ा हिस्सा, दूसरों से अधिक भाग।

बह्राम (بہرام) फा. पुं.–मंगल राशि, मिर्रीख़; एक ईरानी नरेश।

बह्रामगोर (بہرامگور) फा. पुं.–ईरान के शासक यज़्दजुर्द

का लड़का सन् ४२० ई० में गद्दी पर बैठा, गोरख़र के शिकार का शौक़ीन था, इस कारण बह्राम गोर कहलाया।

बह्रामे चोबीं (بہرام چوبیں) फा. पुं.–ईरान के चतुर्थ हुर्मुज़ का सेनापति था, उसे गद्दी से उतारकर आप नरेश बन बैठा (सन् ई. ५९०) और आठ महीने पश्चात् ख़ुस्रो परवेज़ से हारकर भाग गया।

बह्रियः (بحریہ) अ. पुं.–जलसेना, जंगी बेड़ा।

बह्री (بحری) अ. वि.–समुद्रीय, समुन्दर की; समुद्र सम्बन्धी।

बह्रुलउलूम (بحرالعلوم) अ. पुं.–विद्याओं का समुद्र, अर्थात् बहुत बड़ा और प्रचंड विद्वान्, विद्यासागर।

बह्रुलकाहिल [भू.] (بحرالکاهل) अ. पुं.–शांत महासागर।

बह्रुसीन (بحرالصین) अ. पुं.–चीन का समुद्र।

बह्रे अख़्ज़र [भू.] (بحراخضر) अ. पुं.–कैसपियन (समुद्र)।

बह्रे अज़्रक़ [भू.] (بحرازرق) अ. पुं.–नील नदी की पूर्वी शाखा जो नौ सौ मील लंबी है; आकाश, आस्मान।

बह्रे अब्यज़ [भू.] (بحرابیض) अ. पुं.–रूस के उत्तर में एक छोटा समुद्र, श्वेतसागर।

बह्रे अल्मास [भू.] (بحرالساس) अ. पुं.–वह समुद्र जिसके द्वीपों में बहुमूल्य रत्नों की खानें हों।

बह्रे असम [छं.] (بحراصم) अ. स्त्री.–एक वृत्त जो उर्दू में प्रचलित नहीं है, (ररमय SIS, SIS, SSS ISS) पूरे शे'र में दोबार।

बह्रे अस्वद [भू.] (بحراسود) अ. पुं.–कृष्णसागर, ब्लैक सी, रूस के दक्षिण और अनातूलिया के उत्तर का समुद्र।

बह्रे अह्मर [भू.] (بحر احمر) अ. पुं.–दे. 'बह्रे क़ुल्ज़ुम'।

बह्रे आ'ज़म [भू.] (بحر اعظم) अ. पुं.–महासागर, ओशन।

बह्रे औक़ियानूस [भू.] (بحر اوقیانوس) अ. पुं.–अतलांतक महासागर।

बह्रे उम्मान [भू.] (بحر عسان) अ. पुं.–पूर्वी दक्षिणी अरब का समुद्र।

बह्रे कबीर [छं.] (بحر کبیر) अ. स्त्री.–व्यवहृत नहीं (मल+मल+तगु=SSS,I+SSS,I+SSI,S)—दो बार।

बह्रे क़रीब [छं.] (بحر قریب) अ. स्त्री.–उर्दू में व्यवहृत नहीं है (मल+मल+रल=ISS,I+ISS,I+SIS,I) शे'र में दो बार।

बह्रे क़लीब [छं.] (بحر قلیب) अ. स्त्री.–उर्दू में प्रचलित नहीं है (रगु+रगु+पगु=SIS,S+SIS,S+ISS,S) एक शे'र में दो बार।

बह्रे कामिल [छं.] (بحر: کامل) अ. स्त्री.–उर्दू की प्रचलित बह्र (स ल गु IIS,I,S) एक शे'र में आठ बार।

बह्रे काहिल [भू.] (بحر کاهل) अ. पुं.–प्रशांत महासागर।

बह्रे क़ुल्ज़ुम [भू.] (بحر قلزم) अ. पुं.–अरब और अफ़्रीक़ा के बीच का समुद्र, लालसागर।

बह्रे ख़फ़ीफ़ [छं.] (بحر خفیف) अ. स्त्री.–इसकी शाखाएँ प्रचलित हैं, (सगु+जगु+सगु=IIS,S+ISI,S+IIS,S) शेर में दो बार।

बह्रे ख़ुदा (بحرخدا!) फा. अव्य.–ईश्वर ले लिए।

बह्रे चीन [भू.] (بحر چین) अ. फा. पुं.–चीनी समुद्र।

बह्रे ज़ंग [भू.] (بحر زنگ) अ. फा.–वह समुद्र जो हबश के पूर्व में है।

बह्रे जदीद [छं.] (بحر جدید) अ. स्त्री.–इसकी शाखाएँ प्रचलित हैं, (सगु+सगु+जगु=IIS,S+IIS,S+ISI,S) दो बार।

बह्रे ज़ुल्मात (بحر ظلمات) अ. पुं.–दे. 'बह्रे औक़ियानूस'।

बह्रे तवील [छ.] (بحر طویل) अ पुं–यह और इसकी शाखाएँ प्रचलित हैं (य, य, गु+य, य गु=ISS,ISS,S+IIS,ISS,S) शे'र में दो बार।

बह्रे नदामत (بحر ندامت) अ पुं–लज्जा का समुद्र, बहुत अधिक लज्जा।

बह्रे फ़ना (بحر فنا) अ पुं–मृत्यु का समुद्र।

बह्रे बसीत [छं.] (بحر بسیط) अ. स्त्री–कम व्यवहृत है, इसकी शाखाएँ चलती हैं (तगु+र+तगु+र=SSI,S+SIS SSI,S+SIS) दो बार।

बह्रे बेकराँ (بحر بے کراں) अ.फा. पुं.–वह समुद्र जिसका किनारा न हो।

बह्रे बेपायाँ (بحر بے پایاں) अ. फा. पुं.–वह समुद्र जिसका किनारा न हो; वह समुद्र जो अथाह हो।

बह्रे मग़्रिब [भू.] (بحر مغرب) अ. पुं.–यूरोप का समुद्र।

बह्रे मदीद [छं.] (بحر مدید) अ. स्त्री.–कम व्यवहृत है, शाखाएँ व्यवहृत हैं, (रगु+र+रगु+र=SIS,S+SIS+SISS SIS) दो बार।

बह्रे मव्वाज (بحر مواج) अ. पुं.–मौजें मारता हुआ समुद्र।

बह्रे मुंजमिद [भू.] (بحر منجمد) अ. पुं.–वह समुद्र जिसका पानी जमा हुआ हो।

बह्रे मुंजमिद जुनूबी [भू.] (بحر منجمد جنوبی) अ. पुं.–दक्षिणीय ध्रुव के आस-पास का समुद्र जो बहुत अधिक ठंड के कारण जमा हुआ है।

बह्रे मुंजमिद शिमाली (भू.) (بحر منجمد شمالی) अ. पुं.–उत्तरीय ध्रुव का समुद्र जो बहुत अधिक ठंड के कारण जमा हुआ है।

बह्रे मुंसरेह [छं.] (بحر منسرح) अ. स्त्री.–बहुत व्यवहृत है इसकी शाखाएँ भी (भगु+रल=SII,S+SIS,I) चार बार।

बह्रे मुक़्तज़िब [छं.] (بحر مقتضب) अ. स्त्री.–प्रचलित (रल + भगु = SIS,I + SII,S) चार बार।

बह्रे मुज़ारे' [छं.] (بحر مضارع) अ. स्त्री.–प्रचलित है, शाखाएँ भी (यल + रल = ISS,I + SISI) चार बार।

बह्रे मुज़ील [छं.] (بحر مذیل) अ. स्त्री.–प्रचलित नहीं है, (रगु=SIS,S) छै बार।

बह्रे मुजास [छं.] (بحر مجتث) अ. स्त्री.–बहुत चालू है, शाखाएँ भी (जगु + सगु = ISI,S + IIS,S) चार बार।

बह्रे मुतक़ारिब [छं.] (بحر متقارب) अ. स्त्री.–बहुत चालू है, (य=ISS) आठ बार भुजंगप्रयात।

बह्रे मुतदारिक [छं.] (بحر متدارک) अ. स्त्री.–बहुत चालू है (र=SIS) आठ बार।

बह्रे मुर्दार [भू.] (بحر مردار) अ. फा. पुं.–डेड सी, मृतसागर।

बह्रे मुशाकिल [छं.] (بحر مشاکل) अ. स्त्री.–चालू नहीं, (रल+यगु+यगु=SIS,I+ISS,S+ISS,S) दो बार, इसकी शाखाएँ भी बहुत चालू हैं।

बह्रे रजज़ [छं.] (بحر رجز) अ. स्त्री.–बहुत चालू है, इसकी शाखाएँ भी बहुत चालू हैं, (तगु=SSI,S) आठ बार।

बह्रे रमल [छं.] (بحر رمل) अ. स्त्री.–यह और इसकी शाखाएँ बहुत चालू हैं, (रगु=SIS,S) आठ बार।

बह्रे रवाँ (بحر رواں) अ. फा. पुं.–नौका, नाव, किश्ती।

बह्रे रूम [भू.] (بحر روم) अ. पुं.–रूमसागर।

बह्रे वाफ़िर [छं.] (بحر وافر) अ. स्त्री.–इसकी शाखाएँ चालू हैं, स्वयं बहुत कम है (जलगु=ISI,I,S) आठ बार।

बह्रे सग़ीर [छं.] (بحر صغیر) अ. स्त्री.–चालू नहीं (तगु+रगु+तगु=SSI,S+SIS,S+SSI,S) दो बार।

बह्रे सरीअ [छं.] (بحر سریع) अ. स्त्री.–बहुत चालू है (भगु+भगु+रल=SIS,S+SIS,S+SIS,I) दो बार।

बह्रे सरीम [छं.] (بحر صریم) अ. स्त्री.–चालू नहीं (यगु+रगु+रगु=ISS,S+SIS,S+SIS,S) दो बार।

बह्रे सलीम [छं.] (بحر سلیم) अ. स्त्री.–चालू नहीं (तगु+मल+मल=SSI,S+SSS,I+SSS,I) दो बार।

बह्रे हज़ज [छं.] (بحر ہزج) अ. स्त्री.–बहुत चालू, इसकी शाखाएँ भी बहुत चालू हैं, रुबाई इसी से निकली है (यगु=ISS,S) आठ बार।

बह्रे हमीद [छं.] (بحر حسید) अ. स्त्री.–चालूनहीं (मल+तगु+मल=SSS,I+SSI,S+SSS,I) दो बार।

बह्रे हमीम [छं.] (بحر حسیم) अ. स्त्री.–चालू नहीं (रगु+तगु+तगु=SIS,S+SSI,S+SSI,S) दो बार।

बह्रैन [भू.] (بحرین) पुं.–श्वेतसागर और कृष्णसागर; कृष्णसागर और रूमसागर; फ़ारिस की खाड़ी जहाँ से मोती निकलता है।

बह्स (بحث) अ. स्त्री.–वादविवाद, मुबाहसः; वाक्कलह, लफ़्ज़ीजंग; मुकदमे में सुबूत और सफ़ाई आदि के वाद वकीलों का हाकिम के सामने तर्क-वितर्क।

बह्सतलब (بحث طلب) अ. वि.–जिसमें तर्क-वितर्क की आवश्यकता हो।

बह्सोतम्हीस (بحث وتمحیص) अ. स्त्री.–तर्क-वितर्क, वादविवाद।

बह्सोमुबाहसः (بحث ومباحثہ) अ. पुं.–दे. 'बह्सोतम्हीस'।

बह्हास (بحاث) अ. वि.–बहुत अधिक वाद-विवाद करनेवाला, वादरत।

बा

बाँग (بانگ) फ़ा. स्त्री.–स्वर, ध्वनि, नाद, आवाज़; नमाज़ की अज़ान; मुर्गे की बोली।

बाँगे अज़ाँ (بانگ اذاں) फा. अ. स्त्री.–अज़ान की आवाज़, अज़ान।

बाँगे जरस (بانگ جرس) फा. स्त्री.–क़ाफ़िले में बजनेवाले घंटे की आवाज़।

बाँगे दिरा (بانگ درا) फा. स्त्री.–दे. 'बाँगे जरस'।

बा (با) फा. उप.–शब्द शुरूआत में आकर; साथ; वाला; पूर्ण, आदि का अर्थ देता है, जैसे—'बा आबो ताब', चमक-दमक के साथ; बाईमान, ईमानवाला; बाअसर, प्रभावपूर्ण।

बाअख़्लाक़ (بااخلاق) फा. अ. वि.–अच्छे शील-स्वभाववाला, सुशील, शिष्ट।

बाअदब (باادب) फा. अ. वि.–तमीज़दार, शिष्ट।

बाअसर (بااثر) फा. अ. वि.–प्रभावशाली, असरवाला।

बाआँकि (باآں کہ) फा. अव्य.–इसके बावुजूद।

बाआबरू (باآبرو) फा. वि.–प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार।

बाआबो ताब (باآب وتاب) फा. वि.–चमक-दमक के साथ, शान के साथ।

बाइक़्तिदार (بااقتدار) फा. अ. वि.–जिसके हाथ में सत्ता हो, सत्तावान्।

बाइख़्तियार (بااختیار) फा. अ. वि.–जिसके हाथ में अधिकार हो, प्राप्ताधिकार।

बाइख़्लास (بااخلاص) फा. अ. वि.–जिसमें ख़ुलूस और निष्कपटता हो।

बाइत्मीनान (بااطمینان) फा. अ. वि.–विश्वस्त, मो'तबर; विश्वासपात्र, ईमानदार।

बाइस (باعث) अ. पुं.–कारण, हेतु, निमित्त, सबब; मूल कारण, बुन्याद।

बाइसे इन्फ़िआल (باعث انفعال) अ.पुं.–लज्जा का कारण; पश्चात्ताप का कारण।

बाइसे इफ़्तिराक़ (باعث افتراق) अ. पुं.–फूट का कारण।

बाइसे इब्तिहाज (باعث ابتہاج) अ. पुं.–हर्ष का कारण।

बाइसे इश्तिआल (باعث استعال) अ पुं.–उत्तेजना का कारण।

बाइसे ख़ुशी (باعث خوشی) अ. फा. पुं.–हर्ष का कारण।

बाइसे तफ़ाख़ुर (باعث تفاخر) अ. पुं.–गर्व या मान का कारण।

बाइसे तबाही (باعث تباہی) अ. फा. पुं.–बरबादी अथवा नाश का कारण।

बाइसे दिरंग (باعث درنگ) अ. फा. पुं.–ढील और देर का कारण।

बाइसे नदामत (باعث ندامت) अ. पुं.–दे. ‘बाइसे इन्फ़िआल’।

बाइसे निफ़ाक़ (باعث نفاق) अ. पुं.–फूट का कारण।

बाइसे परवरिश (باعث پرورش) अ. फा. पुं.–कृपा का कारण।

बाइसे फ़ख्र (باعث فخر) अ. पुं.–गर्व का कारण।

बाइसे मन्फ़अत (باعث منفعت) अ. पुं.–लाभ का कारण; भलाई का कारण।

बाइसे मर्हमत (باعث مرحمت) अ. पुं.–अनुकंपा और दया का कारण।

बाइसे मसर्रत (باعث مسرت) अ. पुं.–हर्ष और आनंद का कारण।

बाइसे शकररंजी (باعث شکررنجی) अ. फा. पुं.–वैमनस्य का कारण।

बाइसे शर्म (باعث شرم) अ. फा. पुं.–लज्जा का कारण।

बाइसे शुक्र (باعث شکر) अ. पुं.–धन्यवाद का कारण।

बाइस्तः (بائستہ) फा. वि.–योग्य, लाइक़; उत्तम, बेहतर।

बाइस्तितअत (بااستطاعت) फा. अ. वि.–समर्थ, योग्य; धनवान्, मालदार।

बाइस्ते’दाद (بااستعداد) फा. अ. वि.–विद्वान्, पंडित, काफ़ी पढ़ा-लिखा।

बाइस्मत (باعصمت) फा. अ. वि.–सती, साध्वी, इस्मत-मआब।

बाइंहमः (باایں ہمہ) फा. अव्य.–इन सब बातों के बावुजूद।

बाईमान (باایمان) फा. अ. वि.–धर्मनिष्ठ, ईमान का पक्का; दियानतदार, ईमानदार।

बाईसार (باایثار) फा. अ. वि.–त्यागशील।

बाए (بائع) अ. वि.–बेचनेवाला, विक्रेता।

बाएतिक़ाद (بااعتقاد) फा. अ. वि.–श्रद्धावान्, मोतक़िद; अच्छे एतिक़ादवाला।

बाएतिबार (بااعتبار) फा. अ. वि.–विश्वस्त, मो’तबर।

बाएतिमाद (بااعتماد) फा. अ. वि.–विश्वस्त, मो’तमद।

बाएहतियाज (بااحتیاج) फा. अ. वि.–ज़रूरतमंद, मुहताज।

बाएहतियात (بااحتیاط) फा. अ. वि.–सावधान, सावधानी से रखनेवाला, एहतियात करनेवाला।

बाएहसास (بااحساس) फा. अ. वि–स्वाभिमानी, ख़ुददार।

बाऔलाद (بااولاد) फा. अ. वि.–संतानवाला।

बाक (باک) फा. पुं.–भय, डर, ख़ौफ़; लज्जा, शर्म; संकोच, पसोपेश; आशंका, अंदेशा।

बाकोदो काविश (باکدوکاوش) फा. अव्य.–पूरी दौड़-धूप से।

बाक़ाइदः (باقاعدہ) वि. फा.–क़ाइदे से, क़रीने से, क्रम से; बाज़ाबित:।

बाकमाल (باکمال) फा. अ. वि.–गुणवान्, हुनरमंद; किसी काम या हुनर में बहुत बड़ी महारत रखनेवाला।

बाकार (باکار) फा. वि.–जो काम में लगा हो; जिसका जरीएमआश मौजूद हो, साधनसंपन्न।

बाक़ियात (باقیات) अ. उभ. पुं.–बाक़ी बची हुई वस्तुएँ।

बाक़ियातुस्सालिहात (باقیات الصالحات) अ. स्त्री.-वे अच्छे काम जिनसे नाम बाकी रहे; अच्छी औलाद।

बाकिरः (باکرہ) अ. स्त्री.–कुमारी, अक्षता, बिन ब्याही लड़की, दोशीज़:।

बाक़िर (باقر) अ. पुं.–सिंह, व्याघ्र, शेर; विद्वान्, कोविद, फ़ाज़िल।

बाक़िल्लः (باقلہ) अ. पुं.–मटर।

बाक़ी (باقی) अ. स्त्री.–शेष, बचा हुआ; अमर, अनश्वर, हमेशा रहनेवाला; जो रक़म अदा होने को हो; ईश्वर का एक नाम।

बाकी (باکی) अ. वि.–रोनेवाला।

बाक़ीदार (باقی دار) अ. फा. वि.–जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ बाक़ी हो, जिसे कुछ देना रह गया हो।

बाक़ीमांदः (باقی ماندہ) अ. फा. वि.–बाक़ी बचा हुआ।

बाख़ः (باخہ) तु. पुं.–कछवा, कच्छप, कूर्म।

बाख़बर (باخبر) फा. अ. वि.–सचेत, सतर्क, होशियार; अभिज्ञ, वाक़िफ़; ज्ञाता, जानकार।

बाख़बरी (باخبری) फा. अ. स्त्री.–सतर्कता, होशियारी; अभिज्ञता, वाक़िफ़ीयत; ज्ञान, जानकारी।

बाख़िरः (باخره) अ. स्त्री.–स्टीमर, अग्निबोट।

बाख़िरद (باخرد) फा. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, मनीषी, अक़्लमंद।

बाख़ुदा (باخدا) फा. वि.–सदात्मा, पुण्यात्मा, ख़ुदा-रसीदः।

बाख़ैर (باخیر) फा. अ. वि.–दानशील, फ़ैयाज़; जो सबके साथ भलाई करता हो।

बाख़्तः (باختہ) फा. वि.–हारा हुआ, जुए के दाँव पर हारा हुआ, (प्रत्य०) इन्हीं अर्थों में, जैसे—'दिलवाख़्तः' प्रेम में मन हारा हुआ।

बाख़्तनी (باختنی) फा. अव्य.–हारनेयोग्य।

बाख़्तर (باختر) फा. पुं.–पूर्व, मश्रिक़; कभी पश्चिम के लिए भी आता है; ख़ुरासान।

बाग़ (باغ) फा. पुं.–उद्यान, आराम, वाटिका, गुलिस्ताँ।

बाग़चः (باغچہ) फा. पुं.–छोटा बाग़, फुलवारी।

बाग़पैरा (باغ پیرا) फा. वि.–माली, उद्यानपाल।

बाग़बाग़ (باغ باغ) फा. वि.–बहुत ख़ुश, अति आनंदित।

बाग़बान (باغبان) फा. पुं.–उद्यानपाल, बाग़ की रखवाली करनेवाला, माली।

बाग़बानी (باغبانی) फा. स्त्री.–माली का काम, बाग़ में पौदे और फूल उगाने और उनकी देख-रेख का काम।

बाग़बाने अज़ल (باغبان ازل) फा. अ. पुं.–ईश्वर।

बाग़ियानः (باغیانہ) अ. फा. अव्य.–विद्रोहियों-जैसा, बाग़ियों-जैसा।

बाग़ी (باغی) अ. वि.–विद्रोही, बग़ावत करनेवाला; अवज्ञाकारी, सरकश।

बाग़े अद्न (باغ عدن) फा. अ. पुं.–स्वर्ग, विहिश्त।

बाग़े आम (باغ عام) फा. अ. पुं.–कंपनीबाग, पुरोद्यान।

बाग़े इरम (باغ ارم) फा. पुं.–वह बाग़ जो शद्दाद ने बनाया था, जन्नते शद्दाद।

बाग़े क़ुदुस (باغ قدس) फा. अ. पुं.–स्वर्ग, बिहिश्त।

बाग़े ख़ुल्द (باغ خلد) फा. अ. पुं.–स्वर्ग, बिहिश्त।

बाग़ेबिहिश्त (باغ بہشت) फा. अ. पुं.–स्वर्ग,–"बाग़े बिहिश्त से मुझे हुक्मे सफ़र दिया था क्यों? कारे जहाँ दराज़ है अब मेरा इंतिज़ार कर।"—इक़बाल।

बाग़े जिनाँ (باغ جناں) फा. अ. पुं –स्वर्ग, बिहिश्त।

बाग़े रिज़्वाँ (باغ رضواں) फा. अ. पुं –स्वर्ग, जिहिश्त।

बाग़े वहश (باغ وحش) फा. अ. पुं.–अजाइब घर जिसमें हर प्रकार के जीव जंतु हों, जंतुशाला।

बाग़े शद्दाद (باغ شداد) फा. अ. पुं.–वह कृत्रिम स्वर्ग जो शद्दाद ने वनाया था, और जिसमें प्रवेश करते समय, वह घोड़े से गिरकर मर गया।

बाग़ैरत (باغیرت) फा. अ. वि.–स्वाभिमानी, ख़ुददार; लज्जावान्, वाहया।

बाग़ोबहार (باغ و بہار) फा. स्त्री.–शोभायमान्, वारौनक़।

बाचश्मेतर (باچشم تر) फा. अव्य.–आँखों में आँसू डवडवाते हुए, रोते हुए।

बाचश्मेनम (باچشم نم) फा. अव्य.–दे 'वा चश्मेतर'।

बाज (باج) फा पुं.–ख़िराज़, चौथ।

बाज़ (باز) फा पुं.–एक प्रसिद्ध पक्षी, श्येन; पुनः, फिर, (प्रत्य.)।

बा'ज़ (بعض) अ. वि.–कतिपय, चंद; कोई-कोई।

बाज़ख़्वास्त (بازخواست) फा. स्त्री.–खोज, तलाश; वापस माँगना।

बाज़ख़्वाह (بازخواہ) फा. वि.–वापस माँगनेवाला।

बाज़ख्वाही (بازخواہی) फा. स्त्री.–वापस माँगना।

बाज़गश्त (بازگشت) फा. स्त्री.– वापसी, लौटना।

बाजगीर (باج گیر) फा. वि.–ख़िराज लेनेवाला।

बाजगुज़ार (باج گزار) फा. वि.–ख़िराज़ देनेवाला।

बाजदार (باج دار) फा. वि.–दे. 'बाजगीर'।

बाज़दा'वा (بازدعوی) फा. अ. पुं.–दावे से दस्तवरदार होना, नालिश वापस लेना।

बाज़दीद (بازدید) फा. स्त्री.–जवाबी मुलाक़ात, किसी के मिलने के लिए आने पर उसकी मुलाक़ात को उसके घर जाना।

बाज़पसीं (بازپسیں) फा. वि.–आख़िरी वक़्त, मरने का समय, अंतिम काल।

बाज़पुर्स (بازپرس) फा. स्त्री.–पूछगछ, मूआख़ज़ः।

बाजमाअत (باجماعت) फा. अ. वि.–जमाअत के साथ नमाज़, मस्जिद में सबके साथ की नमाज़।

बाज़मानत (باضمانت) फा. अ. वि.–ज़मानत के साथ जिसके साथ ज़मानत भी देना पड़े।

बाजमाल (باجمال) फा. अ. वि.–रूपवान्, सुंदर, मनोहर, हसीन।

बाज़याफ़्तः (بازیافتہ) फा. वि.–फिर पाया हुआ।

बाज़याफ़्तगी (بازیافتگی) फा. स्त्री.–फिर से पाना, गयी हुई चीज़ का मिल जाना।

बाज़याबी (بازیابی) फा. स्त्री.–दे. 'बाज़याफ़्तगी'।

बाज़रगाँ (بازرگاں) फा. पुं.–'बाज़ारगाँ' का लघु., सौदागर, व्यापारी, वणिक्।

बाज़रगानी (بازرگانی) फा. पुं.–व्यापार, सौदागरी।

बाज़राए (باذرائع) फा. अ. वि.–जिसके पास साधन हों, जो वसीले रखता हो।

बाज़ाइक़ः (باذائقہ) फा. अ. वि.–स्वादिष्ठ, मज़ेदार, सुस्वाद।

बाज़ाबितः (باضابطہ) फा. अ. वि.–क़ानूनी तौर पर नियमपूर्वक, नियमबद्ध, बाक़ाइदः।

बाज़ार (بازار) फा. पुं.–हाट, बज़ार।

बाज़ारगाँ (بازارگاں) फा. पुं.–वणिक्, व्यापारी।

बाज़ारी (بازاری) फा. वि.–बाज़ार का; बाज़ार से सम्बन्ध रखनेवाला; लोफ़र, कमीना, अगर स्त्री के लिए हो तो वेश्या।

बाज़ारे हुस्न (بازارحسن) फा. अ. पुं.–चकला, रंडीख़ाना; वह स्थान जहाँ बहुत-सी रूपवती स्त्रियाँ एकत्र हों।

बाज़िंदः (بازندہ) फा. वि.–धूर्त, चालाक; ऐयार, वंचक, छली; खिलाड़, खिलाड़ी।

बाज़िंदगी (بازندگی) फा. स्त्री.–धूर्तता, मक्कारी; वंचकता, छल; खिलाड़ीपन।

बाज़िल (باذل) अ. वि.–वदान्य, दानशील, सख़ी, फ़ैयाज़।

बाजी (باجی) फा. वि.–बाज देनेवाला, खिराज देनेवाला।

बाजी (باجی) तु. स्त्री.–बड़ी वहन, आपा, अत्तिका।

बाज़ी (بازی) फा. स्त्री.–कौतुहल, तमाशा, खेल; शर्त, पण; शर्त पर लगाया हुआ रुपया; धोखा, छल; ताश, शत्रंज आदि का एक वार का खेल; ठठोल, मस्ख़रःपन।

बाज़ीगर (بازیگر) फा. वि.–कौतुकी, तमाशा करनेवाला; मायावी, शोबदःबाज़।

बाज़ीगरी (بازیگری) फा. स्त्री.–कौतुक दिखाना, खेल तमाशे करना; शोबदःबाज़ी करना, माया-कर्म।

बाज़ीगाह (بازیگاہ) फा. स्त्री.–खेलने की जगह, क्रीडा-स्थल, कौतुक-स्थान।

बाज़ीगोश (بازیگوش) फा. स्त्री.–खिलाड़ी, शरीर; चंचल, चपल; वह लड़का जो खिलाड़ी लड़कों की आवाज़ पर कान लगाये रहे।

बाज़ीचः (بازیچہ) फा. पुं.–खिलौना, जिससे बच्चे खेलें; खेल, तमाशा, क्रीडा, कौतुक।

बाज़ीचए अत्फ़ाल (بازیچۂ اطفال) फा. अ. पुं.–बच्चों का खिलौना; बच्चों का खेल।

बाज़ू (بازو) फा. पुं.–भुजा, बाहु, बाँह; चिड़ियों के डैने जिनमें पंख लगते हैं; सहायता, मदद; बल, ज़ोर; गवैए के साथ स्वर मिलानेवाला।

बाज़ूबंद (بازوبند) फा. पुं.–अंगद, केयूर, बिजायठ, भुजबंद।

बाज़ूशिकन (بازوشکن) फा. वि.–शक्तिशाली, ज़ोरावर।

बाज़ूशिकस्तः (بازوشکستہ) फा. वि.–जिसकी भुजाएँ टूट गयी हों, भग्नबाहु; बेबस, लाचार, दुःखी।

बाज़ौक़ (باذوق) फा. अ. वि.–रसिक, सहृद्, सुख़नशनास।

बातद्बीर (باتدبیر) फा. वि.–प्रवीण, कुशल, होशियार; हर काम को ढंग से करनेवाला, मुदब्बिर।

बातनख़्वाह (باتنخواہ) फा. वि.–जो तनख़्वाह लेकर काम करता हो, जिसे वेतन दिया जाता हो।

बातमीज़ (باتمیز) फा. अ. वि.–जो सारे काम सुगढ़तापूर्वक करे, तमीज़दार; शिष्ट, सभ्य, मुहज़्ज़ब, शाइस्ता।

बातम्कीन (باتمکین) फा. अ. वि.–गंभीर, संजीदः; प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज़।

बातर्जमः (باترجمہ) फा. अ. वि.–जिस मूल पुस्तक के साथ उसका अनुवाद भी हो, सटीक, सानुवाद।

बातर्तीब (باترتیب) फा. अ. वि.–क्रम से लगा हुआ, क्रम-बद्ध, शृंखलित।

बातसल्सुल (باتسلسل) फा. अ. वि.–लगातार, अनवरत, अविच्छिन्न; क्रम-बद्ध, तर्तीब से।

बातह्ज़ीब (باتہذیب) फा. अ. वि.–सभ्य, शिष्ट, महज़्ज़ब।

बातिन (باطن) अ. पुं.–मन, हृदय, दिल; अंदर, भीतर; अंदरूनी हालत।

बातिनी (باطنی) अ. वि.–मानसिक, दिली; आंतरिक, अंदरूनी।

बातनीयः (باطنیہ) अ. पुं.–मुसलमानों का एक सम्प्रदाय।

बातिल (باطل) अ. वि.–असत्य, झूठ, ग़लत; खंडित, रद; ब्यर्थ, बेकार, निकम्मा, बेअसर।

बातिलपरस्त (باطل پرست) अ. फा. वि.–जो सत्यता का पालन न करके असत्यता को अपना ध्येय बनाये।

बातिलशिकन (باطل شکن) अ. फा.–जो असत्य का खंडन करे, सत्यवान्।

बातौक़ीर (باتوقیر) फा. अ. वि.–प्रतिष्ठित, सम्मानित, पूज्य।

बातौफ़ीक़ (باتوفیق) फा. अ. वि.–संपन्न, समृद्ध, धनी; समर्थ, बामक़्दरत।

बादंजान (بادنجان) फा. पुं.–बैंगन, भंटाकी, भाँटा।

बादः (بادہ) फा. स्त्री.–मदिरा, मद्य, वारुणी, कादंबिनी, हाला, माधुरी, सुरा, शराब।

बादःआशाम (بادہ آشام) फा. वि.–शराब पीनेवाला, पानकर्ता, मद्यप, रसाशी, पानप़।

बादःआशामी (بادہ آشامی) फा. स्त्री.–शराब पीना, मद्यपान।

बादःकश (بادہ کش) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःकशी (بادہ کشی) फा. स्त्री –दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःख़ोर (بادہ خور) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःख़ोरी (بادہ خوری) फा. वि.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःख़्वार (بادہ خوار) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःख़्वारी (بادہ خواری) फा. स्त्री.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःगुसार (بادہ گسار) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःगुसारी (بادہ گساری) फा. स्त्री.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःचश (بادہ چش) फा. वि.–थोड़ी-सी शराब पीनेवाला, केवल मुँह का स्वाद बदलने को ज़रा-सी पीनेवाला ।

बादःचशी (بادہ چشی) फा. स्त्री.–मुँह का मज़ा बदलने को ज़रा-सी शराब पीना ।

बादःनोश (بادہ نوش) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःनोशी (بادہ نوشی) फा. स्त्री.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःपरस्त (بادہ پرست) फा. वि.–बहुत अधिक पीनेवाला, मदिराभक्त, पानरत ।

बादःपरस्ती (بادہ پرستی) फा. स्त्री.–मदिरा-प्रेम, बहुत पीना ।

बादःपैमा (بادہ پیما) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःपैमाई (بادہ پیمائی) फा. स्त्री.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःफ़रोश (بادہ فروش) फा. वि.–शराब बेचनेवाला, सुराजीवी, कल्यपाल, शौंडिक, मद्यवणिक् ।

बादःफ़रोशी (بادہ فروشی) फा. स्त्री.–शराब बेचना, मद्यव्यवसाय ।

बादःफ़र्सा (بادہ فرسا) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःफ़र्साई (بادہ فرسائی) फा. स्त्री.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःबजाम (بادہ بہ جام) फा. वि.–पियाले में शराब भरे हुए ।

बादःबलब (بادہ بہ لب) फा. वि.–मुँह से शराब का पियाला लगाये हुए ।

बादःसंज (بادہ سنج) फा. वि.–दे. ‘बादःआशाम’ ।

बादःसंजी (بادہ سنجی) फा. स्त्री.–दे. ‘बादःआशामी’ ।

बादःसाज़ (بادہ ساز) फा. वि.–शराब बनानेवाला, सुराकार।

बादःसाज़ी (بادہ سازی) फा. स्त्री.–शराब बनाना, मद्य संधान ।

बाद (باد) फा. वि.–वात, वायु, हवा; घमंड; ‘बवाद’ का लघु., हो, आशीर्वाद,—(प्रत्य.) हो, रहो, या शाप के लिए शब्द के अंत में आता है, जैसे—‘ज़िंदःबाद’ जीवित रहो अथवा ‘मुर्दःबाद’ नष्ट हो ।

बा'द (بعد) अ. वि.–पश्चात्, उपरांत, पीछे ।

बादअंगेज़ (باد انگیز) फा. वि.–वात यानी सौदा पैदा करनेवाला ।

बा'दअज़ाँ (بعد ازاں) फा. वि.–तत्पश्चात्, इसके बा'द ।

बादअफ़्राह (باد افراہ) फा. पुं.–यह उच्चारण अशुद्ध है, दे. ‘बादाफ़्राह’ ।

बादआवर्द (باد آورد) फा. पुं.–ख़ुस्रौ परवेज़ का ख़ज़ाना; एक बनौषधि ।

बादए अंगूर (بادۂ انگور) फा. स्त्री.–अंगूरी शराब, मालिका, द्राक्षासव ।

बादए अंग्बीं (بادۂ انگبیں) फा. स्त्री.–शहद की शराब, माधवी ।

बादए अर्ग़वानी (بادۂ ارغوانی) फा. स्त्री.–सुर्ख़ शराब ।

बादए अह्मरीं (بادۂ احمریں) फा. अ. स्त्री.–लाल रंग की मदिरा ।

बादए आतशीं (بادۂ آتشیں) फा. स्त्री.–आग के रंग की मदिरा, अग्निवर्णा ।

बादए इनबी (بادۂ عنبی) फा. अ. स्त्री.–अंगूरी शराब, द्राक्षासव ।

बादए इश्क़ (بادۂ عشق) फा. अ. स्त्री.–प्रेम-मदिरा, मुहब्बत की शराब ।

बादए कुह्नः (بادۂ کہنہ) फा. स्त्री.–पुरानी मदिरा, जो बहुत तेज़ होती है ।

बादए गुलफ़ाम (بادۂ گلفام) फा. स्त्री.–गुलाब के रंग-जैसी शराब, गुलाबी शराब ।

बादए गुलरंग (بادۂ گلرنگ) फा. स्त्री.–दे. ‘बादए गुलफ़ाम’ ।

बादए तल्ख़ (بادۂ تلخ) फा. स्त्री.–कड़वी शराब, पुरानी शराब, बहुत तेज़ और अच्छी शराब ।

बादए तहूर (بادۂ طہور) फा. अ. स्त्री.–पवित्र मदिरा, स्वर्ग में मिलनेवाली मदिरा ।

बादए तुंद (بادۂ تند) फा. स्त्री.–तेज़ शराब ।

बादए दोशीनः (بادۂ دوشینہ) फा. स्त्री.–रात की रखी हुई शराब; रात को पी हुई शराब ।

बादए नाब (بادۂ ناب) फा. स्त्री.–बहुत बढ़िया शराब, ख़ालिस और बेमेल शराब ।

बादए नैशकर (بادۂ نیشکر) फा. स्त्री.–गन्ने की शराब, गुड़ की शराब, ठर्रा, सीधु ।

बादए नोशीं (بادۂ نوشیں) फा. स्त्री.–आबेहयात मिली हुई शराब, अमृत-जैसी शराब ।

बादए पसख़ुर्दः (بادۂ پس خوردہ) फा. स्त्री.–पीने से बची हुई शराब ।

बादए ऱैहानी (بادۂ ریحانی) फा. अ. स्त्री.–एक शराब जो बहुत सारे फूलों से बनती है और बड़ी स्वादिष्ठ और सुगंधित होती है।

बादए लालःफ़ाम (بادۂ لالہفام) फा. स्त्री.–लालः-जैसे रंग की बहुत ही सुर्ख़ शराब।

बादए शबीनः (بادۂ شبینہ) फा. स्त्री.–रात की पी हुई शराब।

बादए शौक़ (بادۂ شوق) फा. अ. स्त्री.–प्रेम की मदिरा।

बादए साफ़ी (بادۂ صافی) फा.अ. स्त्री.–स्वच्छ और निर्मल मदिरा।

बादकश (بادکش) फा. पुं.–छत का पंखा; धौंकनी।

बादख़ायः (بادخایہ) फा. पुं.–फ़ोते बढ़ने का मरज़, अंत्र-वृद्धि।

बादख़्वाँ (بادخواں) फा. वि.–डींगिया, शेख़ीबाज़; चाटुकार, ख़ुशामदी; भाट, भटई करनेवाला।

बादगीर (بادگیر) फा. स्त्री.–हवादार खिड़की, गवाक्ष, वातायन।

बादज़न (بادزن) फा. पुं.–पंखा, व्यजन, हाथ का पंखा।

बाददस्त (باددست) फा. वि.–फ़ुज़ूल ख़र्च, अपव्ययी; दरिद्र, कंगाल।

बाददस्ती (باد دستی) फा. स्त्री.–फज़ूलख़र्ची, अपव्यय; दरिद्रता, कंगाली।

बादनुमा (باد نما) फा. पुं.–वायु का वेग बतानेवाला यंत्र।

बादपरीं (باد پراں) फा. वि.–डींगिया, हवा बाँधनेवाला।

बादपर्वा (باد پروا) फा. पुं.–वातायन, गवाक्ष, हवा आने की खिड़की।

बादपा (باد پا) फा. वि.–शीघ्रगति, बहुत तेज़ चलने वाला, प्रायः घोड़े के लिए आता है।

बादपैमा (باد پیما) फा. वि.–शीघ्र गति, तेज़ रफ़्तार; मिथ्यावादी, वकवासी; जंगलों में फिरनेवाला, वनचर।

बादपैमाई (باد پیمائی) फा. अ. स्त्री.–तेज़ चलना; बकवास; जंगलों में फिरना।

बादफ़र (بادفر) फा. स्त्री.–फिरकी।

बादफ़राह (بادفراہ) फा. पुं.–पापदंड, गुनाही सज़ा; प्रत्युपकार, बुराई का वदला।

बादफ़रोश (باد فروش) फा. वि.–बातूनी, गप्पी; चाटुकार, ख़ुशामदी; शेख़ी ख़ोरा, डींगिया।

बादफ़रोशी (باد فروشی) फा. स्त्री.–वकवास; ख़ुशामद; शेख़ी।

बादबाक़ी (باد باقی) फा. अ. स्त्री.–रोकड़, तहवील।

बादबान (بادبان) फा. पुं.–जहाज़ में लगाया जानेवाला पर्दा जिसमें हवा भरकर जहाज़ चलता है, पोतपट, मरुत्पट।

बादबानी (بادبانی) फा. वि.–बादबान द्वारा चलनेवाला पोत; बादबान से सम्बन्ध रखनेवाला।

बादबाने अख़्ज़र (بادبان اخضر) फा. अ. पुं.–आकाश, आस्मान।

बादबेज़न (باد بیزن) फा. पुं.–फ़र्शीपंखा।

बादब्दबः (بادبدبہ) फा. वि.–जिसका दब्दबा बहुत हो।

बादमे नक़्द (بادم نقد) फा. अ. वि.–एकाकी, अकेला, तने तनहा।

बादमे सर्द (بادم سرد) फा. वि.–ठंडी आह भरकर।

बादमोहरः (باد مہرہ) फा. पुं.–साँप का फन, सर्पमणि; एक विष नाशक पत्थर।

बादयान (بادیان) फा. स्त्री.–सौंफ़, शत पुष्पा।

बादयाने ख़ताई (بادیان خطائی) फा. स्त्री.–एक दवा।

बादरंजबोयः (باد رنجبویہ) फा. पुं.–एक दवा, बिलाई लोटन।

बादरफ़्तार (بادرفتار) फा. वि.–हवा की भाँत शीघ्र गति-वाला, वायुवेग।

बादरफ़्तारी (بادرفتاری) फा. स्त्री.–हवा की भाँति तेज़ चलना।

बादरीश (بادریش) फा. वि.–अभिमान, अहंकार, घमंड।

बा'दलममात (بعدالممات) अ. अव्य.–मौत के बा'द, मरण-पश्चात्।

बादशह (بادشہ) फा. पुं.–'बादशाह' का लघु., दे. 'बादशाह'।

बादशाह (بادشاہ) फा. पुं.–शासक, नरेश, राजा।

बादशाही (بادشاہی) फा. स्त्री.–शासन, राज, हुकूमत; राष्ट्र, राज्य, सल्तनत।

बादसंज (بادسنج) फा. वि.–व्यर्थ के काम करनेवाला, व्यर्थकारी; लोलुप, लोभी, लालची।

बादसैर (بادسیر) फा. अ. वि.–दे. 'बादपा'।

बादहवाई (بادھوائی) फा. स्त्री.–गप, वाचालता; व्यर्थ की वकवाद।

बादा (بادا) फा. अव्य.–हो।

बादाफ़्राह (باد افراہ) फा. पुं.–पाप-दंड, गुनाह की सज़ा; प्रत्यपकार, बदी का बदला।

बादाम (بادام) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध मेवा, वाताम, बदाम।

बादामी (بادامی) फा. वि.–बादाम का रंग, हलका पीला जो सफ़ेदी लिये हो।

बादिंजान (بادنجان) फा. पुं.–बैंगन, दे. 'वादंजान' दोनों शुद्ध हैं।

बादियः (بادیہ) अ. पुं.–वन; कानन, विपिन, जंगल।

बादियः (بادیہ) तुं. पुं.–बड़ा पियाला।

बादियःगर्द (بادیہ گرد) अ. फा. वि.–जंगलों में मारा-मारा फिरनेवाला, वनभ्रमी, वनचारी।

बादियःनशीं (بادیہ نشیں) अ. फा. वि.–जंगल में रहनेवाला, जंगली, ख़ान:बदोश।

बादियःपैमा (بادیہ پیما) अ. फा. वि.–दे. 'बादियःगर्द'।

बादियःपैमाई (بادیہ پیمائی) अ. फा. स्त्री.–जंगलों में मारा-मारा फ़िरना।

बादियुन्नज़र (بادی النظر) अ. स्त्री.–पहली दृष्टि, ऊपरी दृष्टि।

बादिर्राय (بادی الرائے) अ. स्त्री.–ऊपरी विचार।

बादिले ख़ारख़ार (بادل خارخار) फा. अव्य.–दुखी मन से, विवशता से, बहुत ही दुःख से।

बादिले ज़ार (بادل زار) फा. अव्य.–रोते हुए दिल से, दुखी हृदय से।

बादिले ना ख़्वास्तः (بادل ناخواستہ) फा. अव्य.–इच्छा के विरुद्ध, मन न चाहते हुए, विवशता से।

बादी (بادی) अ. वि.–प्रारंभकर्ता, शूरूअ करनेवाला; आरंभ, इब्तिदा; व्यक्त, ज़ाहिर।

बादी (بادی) फा. वि.–वायु से सम्बन्धित, हवाई।

बादीदए तर (بادیدۂ تر) फा. अव्य.–भीगी आँखों के साथ, अर्थात् रोते हुए, बहुत ही दुःख के साथ।

बादीदए नम (بادیدۂ نم) फा. अव्य.–दे. 'बादीदए तर'।

बादे ईसा (باد عیسی) फा. अ. स्त्री.–हज्रत ईसा की फूंक, जिससे मुर्दे जी उठते थे।

बादे ख़ज़ाँ (باد خزاں) फा. स्त्री.–पतझड़ की ऋतु की हवा।

बादे ज़म्हरीर (باد زمہریر) फा. स्त्री.–शीतकाल की बहुत ही ठंडी वायु, जिससे हाथ-पाँव ठिठुर जाते हैं।

बादे तुंद (باد تند) फा. स्त्री.–तेज़ वायु, झंझावात, झक्कड़।

बादे नसीम (باد نسیم) फा. अ. स्त्री.–शीतल, मंद और सुगंधित समीर।

बादे फ़त्क़ (باد فتق) फा. अ. स्त्री.–अंत्र-वृद्धि, फ़ोते का वढ़ जाना।

बादे फ़रंग (باد فرنگ) फा. स्त्री.–उपदंश, आतशक, गर्मी रोग।

बादे बहार (باد بہار) फा. स्त्री.–वसंत ऋतु की सुगंधित और शीतल वायु।

बादे बहारीं (باد بہاریں) फा. स्त्री.–दे. 'बादे बहार'।

बादे बहारी (باد بہاری) फा. स्त्री.–दे. 'बादे बहार',

"न छेड़ ऐ नक्हते बादे बहारी राह लग अपनी।
तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम बेज़ार बैठे हैं।"

बादे मुआफ़िक़ (باد موافق) फा. अ. स्त्री.–वह वायु जो नाव के रुख़ पर चले, जिससे नाव शीघ्र और ठीक चले।

बादे मुख़ालिफ़ (باد مخالف) फा. अ. स्त्री.–वह वायु जो नाव की विरुद्ध दिशा में चले, जिससे नाव न चल सके।

बादे मुराद (باد مراد) फा. स्त्री.–दे. 'बादे मुआफ़िक़'।

बादे शुर्त (بادشرط) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बादे मुआफ़िक़'।

बादे सबा (باد صبا) फा. स्त्री.–सवेरे की पुर्वा हवा।

बादे समूम (باد سموم) फा. अ. स्त्र.–कड़ी और घातक लपट, वह वायु जिसमें विष पैदा हो गया हो।

बादे सर्सर (باد صرصر) फा. स्त्री.–झंझावात, झक्कड़।

बादे सहर (باد سحر) फा. अ. स्त्री.–सवेरे के वक़्त पूर्व से चलनेवाली शीतल और मंद वायु।

बानः (بانہ) फा. पुं.–उपस्थ, पेड़ू, नाभि के नीचेवालों का स्थान।

बान (بان) फा. प्रत्य.–वाला, जैसे—'शुतुरबान', ऊँटवाला, (पुं.) वर्ण, रंग।

बान (بان) अ. पुं.–एक पेड़ जिसके फल का तेल दवा में काम आता है।

बानवा (بانوا) फा. वि.–समृद्ध, धनवान्, मालदार।

बानसीब (بانصیب) फा. अ. वि.–भाग्यवान्, भाग्यशाली, ख़ुशक़िस्मत।

बानिए कार (بانیٔ کار) अ. फा. पुं.–किसी कार्य का प्रवर्तक, किसी काम का प्रथम करने वाला।

बानिए जफ़ा (بانیٔ جفا) अ. वि.–अत्याचार करनेवाला।

बानिए ज़ुल्म (بانیٔ ظلم) अ. वि.–दे. 'बानिए जफ़ा'।

बानिए ज़ौर (بانیٔ جور) अ. वि.–दे. 'बानिए जफ़ा'।

बानिए फ़साद (بانیٔ فساد) अ. फा. वि.–झगड़े की जड़, झगड़ा करानेवाला, जिसके कारण कोई झगड़ा हुआ हो।

बानिए फ़ित्नः (بانیٔ فتنہ) अ. फा. वि.–दे. 'बानिए फ़साद'।

बानिए फ़िरेब (بانیٔ فریب) अ. फा. वि.–धोखा देनेवाला, वंचक, ठग।

बानिए बेदाद (بانیٔ بیداد) अ. फा. वि.–दे. 'बानिए जफ़ा।

बानिए शर (بانیٔ شر) अ. वि.–दे. 'बानिए फ़साद'।

बानिए सितम (بانیٔ ستم) अ. फा. वि.–दे. 'बानिए जफ़ा'।

बानी (بانی) अ. वि.–किसी काम की शुरूआत करनेवाला।

बानीकार (بانی کار) फा. वि.–बहुत ही धूर्त और फ़ित्तीन।

बानीमबानी (بانی مبانی) अ. फा. वि.–मूल कारण, अस्ल जड़।

बा पर्हेज़ (باپرہیز) फा. वि.–परहेज़ करनेवाला, बीमारी की दशा में खाने-पीने में ठीक-ठीक रहनेवाला।

बाफ़ (باف) फा. प्रत्य.–बुननेवाला, जैसे—'शालबाफ़' शाल बुननेवाला।

बाफ़कार (بافکار) फा. वि.–बुननेवाला, जुलाहा।

बाफ़राग़त (بافراغت) फा. अ. वि.–संतोषपूर्वक, इत्मीनान से; सुगमतापूर्वक, आसानी से।

बाफ़िंदः (بافندہ) फा. वि.–बुननेवाला, वायक, कुविंद।

बाफ़िंदगी (بافندگی) फा. स्त्री.–कपड़ा बुनने का काम।

बाफ़्तः (بافتہ) फा. वि.–बुना हुआ।

बाफ़्त (بافت) फा. स्त्री.–बुनाई, बुनने का कार्य; विनावट, बुनत।

बाब (باب) फा. पुं.–योग्य, लाइक़; सम्बन्ध, बारः।

बाब (باب) अ. पुं.–द्वार, दरवाज़ा; परिच्छेद, फ़स्ल (पुस्तक का)।

बाबक (بابک) फा. पुं.–सत्यनिष्ठ, अमीन; ईरान का एक प्राचीन शासक।

बाबज़न (بابزن) फा. स्त्री.–कबाब सेंकने की लोहे की सीख़।

बाबत (بابت) फा. स्त्री.–वास्ते, लिए; सम्बन्ध में, बारे में।

बाबर (بابر) तु. पुं.–तुर्की में यह शब्द ‘बाबुर’ है, परंतु उर्दू में ‘बाबर’ हो गया, प्रसिद्ध नरेश जो हुमायूँ का बाप था।

बाबवार (بابوار) अ. फा. वि.–पुस्तक के परिच्छेदों के हिसाब से।

बाबा (بابا) अ. पुं.–पिता, बाप; दादा; नाना; सरदार।

बाबिल (بابل) अ. पुं.–इराक़ का एक प्राचीन नगर जो ईसा से दो हज़ार वर्ष पूर्व इराक़ की राजधानी था, अब खंडहर है। बग़दाद से ६० मील दूर फ़ुरात के किनारे था।

बाबी (بابی) फा. पुं.–एक धर्म जो सैयदअली मुहम्मद ईरानी ने निकाला था; इस धर्म का अनुयायी।

बाबुल (بابل) अ. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण ‘बाबिल’, यह असाधु है।

बाबुस्समाए (باب السماء) अ. पुं.–आकाश-गंगा।

बाबूनः (بابونہ) फा. पुं.–एक पत्ती जो दवा के काम आती है।

बाबूर (بابور) अ. पुं.–स्टीमर, मशीन से चलनेवाली बड़ी नाव।

बाबे अदम (باب عدم) अ. पुं.–यमलोक का द्वार, यमलोक।

बाबे इजाबत (باب اجابت) अ. पुं.–दुआ या प्रार्थना की स्वीकृति का द्वार।

बाबे इल्म (باب علم) अ. पुं.–विद्यारूपी घर का द्वार।

बाबे क़बूल (باب قبول) अ. पुं.–दे. ‘बाबे इजाबत’।

बाम (بام) फा. पुं.–छत, अटारी,—“जो निक़ाबे रुख़ उठा दी तो क़ैद भी लगा दी, उठे हर निग़ाह लेकिन कोई बाम तक न पहुँचे।”

बामगाह (بامگاہ) फा. स्त्री.–प्रातःकाल, तड़का, सवेरा।

बामज़ः (بامزہ) फा. वि.– स्वादिष्ठ, सुस्वाद, मज़ेदार।

बामज़ाक (بامذاق) फा. अ. वि.–सहृदय, रसिक; परिहास-प्रिय, विनोदी, दिल्लगीबाज़।

बामदाद (بامداد) फा. पुं.–तड़के, सबेरे, प्रातःकाल।

बामदादाँ (بامدادان) फा. पुं.–दे. ‘बामदाद’।

बामूए परीशाँ (باموے پریشاں) फा. अव्य.–बाल बिखेरे हुए।

बामे अर्श (بام عرش) फा. अ. पुं.–अर्श की चोटी, बहुत ऊँचा स्थान।

बामे गर्दूं (بام گردوں) फा. पुं.–आकाश की छत, अर्थात् आकाश।

बामे दुन्या (بام دنیا) फा. अ.–संसार की छत, अर्थात् पामीर, जो मध्य एशिया का एक देश है।

बामे नुहुम (بام نہم) फा. पुं.–नवाँ आकाश, अर्थात् अर्श, जहाँ ईश्वर का सिंहासन है।

बामे मसीह (بام مسیح) फा. अ. पुं.–चौथा आकाश, जहाँ हज़्रत ईसा रहते हैं।

बायद (باید) फा. क्रि.–चाहिए।

बायदोशायद (بایدوشاید) फा. वि.–अद्भुत, विचित्र, अनोखा।

बायस्तः (بایستہ) फा. वि.–योग्य, लाइक़; उत्तम, श्रेष्ठ, आ’ला।

बायस्तगी (بایستگی) फा. स्त्री.–उत्तमता, उम्दगी; योग्यता, लियाक़त।

बायस्तनी (بایستنی) फा. वि.–होने के योग्य, जिसको होना चाहिए, आवश्यक, ज़ुरूरी।

बारः (بارہ) फा. पुं.–घेरा, इहाता, प्राचीर; बार, दफ़ा; सम्बन्ध, मुआमला।

बार (بار) फा. स्त्री.–बोझ, भार; आज्ञा, इजाज़त; पहुँच, रसाई; दफ़ा, मरतबा; गर्भ, हम्ल; ऋण, क़र्ज़, (प्रत्य.) बरसानेवाला, जैसे—‘अश्कबार’ आँसू बरसानेवाला।

बारअंदाज़ (بارانداز) फा. पुं.–ठहरना, उतरना, कहीं कियाम करना।

बारआवर (بارآور) फा. वि.–फलदार, जिसमें फल लगे हों; गर्भवती, हामिला; नतीजःखेज़, सफल।

बारकल्लाह (بارک اللہ) अ. पुं.–ईश्वर बरकत अर्थात् समृद्धि और कल्याण प्रदान करें।

बारकश (بارکش) फा. वि.–बोझ ढोनेवाला; हम्माल, भारवाहक; लद्दू जानवर।

बारकशी (بارکشی) फा. स्त्री.–बोझ ढोना, भारवाहन।

बारख़ानः (بارخانہ) फा. पुं.–सामान रखने का मकान, गोदाम।

बारगह (بارگہ) फा. स्त्री.–‘बारगाह’ का लघु., दे. ‘बारगाह’।

बारगाह (بارگاہ) फा. स्त्री.–दरबार, राजसभा; राजमहल, शाही मकान; कचहरी।

बारगी (بارگی) फा. पुं.–अश्व, घोड़ा।

बारगीर (بارگیر) फा. वि.–साईस, अश्वपाल; अश्व, घोड़ा; उष्ट्र, ऊँट; बैल, वृषभ।

बारतंग (بارتنگ) फा. स्त्री.–एक दाना जो दवा में चलता है।

बारदानः (باردانہ) फा. पुं.–दे. 'बारदान'।

बारदान (باردان) फा. पुं.–वह चीज़ जिसमें बोझ अर्थात् सामान रखे, ख़ुर्जी, बोरा आदि।

बारदार (باردار) फा. वि.–फला हुआ, फलित, गर्भवती, हामिला।

बा रद्दोकद (بارد وکد) फा. अ. अव्य.–बड़ी हुज्जतों के साथ, वाद-विवाद होकर।

बारफ़रोश (بارفروش) फा. वि.–थोक सौदा बेचनेवाला।

बारबद (باربد) फा. पुं.–एक गवैया, जो ख़ुस्रौ परवेज़ के दरबार में था।

बारबर (باربر) फा. वि.–बोझ ले जानेवाला, बोझ ढोनेवाला।

बारबरदार (باربردار) फा. वि.–बोझ उठानेवाला, भारवाहक।

बारबरदारी (باربرداری) फा. स्त्री.–बोझ उठाना, भारवहन।

बारयाब (بارياب) फा. वि.–जिसे किसी बड़ी जगह पहुँचने की आज्ञा मिल गयी हो, जो पहुँच गया हो।

बारयाबी (باريابی) फा. स्त्री.–रसाई, पहुँच, किसी बड़े और प्रतिष्ठित आदमी के पास पहुँच।

बारवर (بارور) फा. वि.–फलित, फल आया हुआ; सफल, कामयाब; संतानवान्, औलादवाला।

बारहा (بارہا) फा. वि.–बहुधा, प्रायः, अक्सर; बारंबार, बार-बार।

बारां (باراں) फा. पुं.–वर्षा, बरसात; वर्षाजल, बरसात का पानी; वर्षाऋतु, बरसात का मौसिम।

बारांगीर (باراں گیر) फा. पुं.–घर या मकान का छज्जा, सायबान।

बारांगुरेज़ (باراں گریز) फा. पुं.–दे. 'बारांगीर'।

बारांदीदः (باراں دیدہ) फा. वि.–जिस पर मेंह पड़ चुका हो; अनुभवी, तज्रिबःकार।

बारांबार (باراں بار) फा. पुं.–वर्षा प्रधान देश, वह देश जहाँ पानी बहुत बरसता हो।

बारानी (بارانی) फा. स्त्री.–बरसाती कोट आदि; वह भूमि जो केवल वर्षा के सहारे हो।

बाराने रहमत (باران رحمت) फा. अ. पुं.–वर्षा, बारिश, ऐसी वर्षा जो लाभ दायक हो, अनिष्ट न करे।

बारिक़ः (بارقہ) अ. पुं.–बिजली, तड़ित; चमकनेवाली चीज़; तलवार।

बारिक़ (بارق) अ. वि.–प्रज्वलित, प्रकाशमान, नूरानी, चमकदार।

बारिज़ (بارز) अ. वि.–प्रकट, व्यक्त, ज़ाहिर; स्पष्ट, वाज़िह; आविर्भूत, उत्पन्न।

बारिद (بارد) अ. वि.–ठंडा, सर्द; निस्वाद, नीरस, बेमज़ा।

बारिया (باريا) फा. वि.–पाखंडी, धर्मध्वजी।

बारियाज़त (باریاضت) फा. अ. वि.–तपस्वी, योगी।

बारिश (بارش) फा. स्त्री.–वर्षा, बरसात; वर्षाकाल, बरसात का मौसिम; वर्षाजल, बरसात का पानी।

बारिशी (بارشی) फा. वि.–वर्षा सम्बन्धी; वर्षाका, बरसाती।

बारिशे ख़ूँ (بارش خوں) फा. स्त्री.–रक्तवर्षा, ख़ून बरसना।

बारिशे गुल (بارش گل) फा. स्त्री.–पुष्पवर्षा, फूल बरसना

बारिशेज़र (بارش زر) फा. स्त्री.–स्वर्णवर्षा, सोना अर्थात् धन बरसना, धन का बाहुल्य।

बारी (باری) अ. पुं.–स्रष्टा, पैदा करनेवाला, ईश्वर।

बारी (باری) फा. स्त्री.–नौबत, पारी, जैसे—बुख़ार की बारी।

बारीक (باریک) फा. वि.–महीन, पतला; सूक्ष्म, लतीफ़; गूढ़, दक़ीक़।

बारीकख़याल (باریک خیال) फा. अ. वि.–नाज़ुक ख़याल, सूक्ष्म विचार।

बारीकनज़र (باریک نظر) फा. अ. वि.–बारीकी देखनेवाला, किसी चीज़ के गुण-दोष पहचाननेवाला, मर्मज्ञ।

बारीकनिगाह (باریک نگاہ) फा. वि.–दे. 'बारीकनज़र'।

बारीकबीं (باریک بیں) फा. वि.–सूक्ष्मदर्शी, बारीक नज़र।

बारीकबीनी (باریک بینی) फा. स्त्री.–सूक्ष्मदर्शिता, बारीकी देख लेना।

बारीकमियाँ (باریک میاں) फा. वि.–जिसकी कमर पतली हो, कृशोदरी।

बारीकरौ (باریک رو) फा. वि.–किफ़ायत शिआर, मितव्ययी।

बारीकी (باریکی) फा. वि.–पतलापन; सूक्ष्मता, लताफ़त; गूढ़ता, जटिलता; बात की बारीकी।

बारिदः (باریدہ) फा. वि.–वर्षित, बरसा हुआ।

बारीदनी (باریدنی) फा. अव्य.–वर्षणीय, बरसने योग्य।

बारूत (باروت) फा. स्त्री.– दे. 'बारूद'।

बारूद (بارود) फा. स्त्री.–शोरा, श्वेतक्षार; गंधक और शोरे का मिश्रण, अग्निचूर्ण।

बारूदी (بارودی) फा. वि.—बारूद सम्बन्धी; बारूद की; बारूद बिछी हुई, जैसे—बारूदी सुरंग।

बारे (بارے) फा. अव्य.—अस्तु, ख़ैर; अंततः, आख़िरकार।

बारे अज़ीम (بارعظیم) फा. अ. पुं.—बहुत बड़ा बोझ, बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी।

बारे अमानत (بارامانت) फा. अ. पुं.—अमानत या धरोहर की ज़िम्मेदारी।

बारे अलम (بارالم) फा. अ. पुं.—दुःख का भार; प्रेमके दुःख का भार।

बारे आम (بارعام) फा. अ. पुं.—सब की पहुँच, सब को आने जाने की आज्ञा।

बारे आलाम (بارآلام) फा. अ. पुं.—मुसीबतों के पहाड़, अर्थात् मुसीबतें।

बारे कफ़ालत (بارکفالت) फा. स्त्री.—जायदाद पर ऐसा कर्ज़ जिसके बदले में जायदाद रेहन की गयी हो।

बारे क़र्ज़ (بارقرض) फा. अ. पुं.—ऋण का बोझ।

बारे ख़ातिर (بارخاطر) फा. अ. पुं.—तबीअत का बोझ, ऐसी बात या ऐसा काम जिसे मन न चाहे।

बारे गराँ (بارگراں) फा. पुं.—भारी बोझ, जो उठ न सके या जिसके उठाने में कष्ट हो; बड़ी ज़िम्मेदारी।

बारे गुनाह (بارگناہ) फा. पुं.—गुनाहों का बोझ, पाप-भार।

बारे दिगर (باردگر) फा. स्त्री.—पुनः, फिर, दूसरी बार।

बारो'ब (بارعب) फा. अ. वि.—रोबो'दाबवाला व्यक्ति।

बाल (بال) अ. पुं.—प्राण, जान; दशा, हाल; समृद्धि, दौलत; ऐश, सुख; श्रेष्ठता, बड़प्पन; वैभव, शान।

बाल (بال) फा. पुं.—कंधे से उँगलियों तक, पूरा हाथ; चिड़ियों का डैना, जिसमें पर लगते हैं, बाज़ू; पर, पक्ष, पंख।

बा'ल (بعل) अ. पुं.—पति, भर्ता, खाविंद, शौहर; अरब की एक मूर्ति जिसकी पूजा होती थी।

बालअफ़्शाँ (بال افشاں) फा. वि.—पर फैलाये हुए, पर झाड़ता हुआ, पर फड़फड़ाता हुआ।

बालअफ़्शानी (بال افشانی) फा. स्त्री.—पर झाड़ना, पर फड़फड़ाना, पर तोलना।

बालकुशा (بال کشا) फा. वि.—पर खोले हुए।

बालजुंबानी (بال جنبانی) फा. स्त्री.—पर फटफटाना, पर फैलाना

बालफ़िशाँ (بال فشاں) फा. वि.—दे. 'बालअफ़्शाँ'।

बाला (بالا) फा. वि.—ऊँचा, बलंद; शरीर, देह; आगे, सामने; प्रधान, श्रेष्ठ, जिसे तर्जीह हो; ऊपर, उपरि।

बालाई (بالائی) फा. वि.—ऊपरवाला, ऊपर का; अस्ल के अलावा, मूल के अतिरिक्त; क्षीरसार, मलाई।

बालाए ताक़ (بالاے طاق) फा. वि.—ताक़ पर, पृथक्, अलग, जिससे कोई सम्बन्ध न हो।

बालाए बाम (بالاے بام) फा. वि.—अटारी पर, छत पर, "आखिरे शबदीद के क़ाबिल थी बिस्मिल की तड़प। सुबह दम कोई अगर बालाए बाम आया तो क्या?"

बालाओपस्त (بالا و پست) फा. पुं.—ऊँच-नीच, नीचा-ऊँचा।

बालाख़ानः (بالاخانہ) फा. पुं.—अट्टालिका, छत के ऊपर का मकान।

बालातर (بالاتر) फा. वि.—बहुत ऊँचा, किसी विशेष चीज़ से ऊँचा।

बालादवी (بالادوی) फा. स्त्री.—शीघ्र गति, तेज़ी, जल्दी।

बालादस्त (بالادست) फा. वि.—श्रेष्ठ, प्रतिष्ठित; उच्च, आ'ला, ज़बर्दस्त, अफ़ज़ल बुलंद मर्तबा।

बालानशीं (بالانشیں) फा. वि.—मान्य, पूज्य, प्रतिष्ठित; सभापति, सद्र।

बालापोश (بالاپوش) फा. पुं.—सब कपड़ों से ऊपर पहनने का कपड़ा, उत्तरीयक, निचोल।

बालाबलंद (بالابلند) फा. वि.—लंबे क़द का, लंबे शरीरवाला; लंबे शरीर की नायिका।

बालावपस्त (بالا و پست) फा. वि.—ऊँचा-नीचा, ऊँच-नीच; आकाश और पृथ्वी।

बालिंगू (بالنگو) फा. पुं.—एक दाने जो दवा में काम आते हैं।

बालिग़ (بالغ) अ. वि.—वह लड़का या लड़की जो युवावस्था को प्राप्त हो चुकी हो, वयस्क, वयःप्राप्त।

बालिग़नज़र (بالغ نظر) अ. वि.—अनुभवी, परिपक्व, तज्रिबःकार; मर्मज्ञ, दोषगुण का पारखी।

बालिग़नज़री (بالغ نظری) अ. स्त्री.—अनुभव, तज्रिबः; दोषगुण की परख; मर्मज्ञान।

बालिग़निगार (بالغ نگار) अ. फा. वि.—जिसकी रचना सारगर्भित और मर्मपूर्ण हो।

बालिग़निगारी (بالغ نگاری) अ. फा. स्त्री.—रचना में गूढ़ता और सूक्ष्मता होना।

बालिग़निगाह (بالغ نگاہ) अ. फा. वि.—दे. 'बालिग़नज़र'।

बालिगनिगाही (بالغ نگاہی) अ. फा. स्त्री.—दे. 'बालिग़ नज़री।'

बालिश (بالش) फा. पुं.—तकिया, उपधान, कशिफ़, मसनद, सिरहाना।

बालिशे पर (بالش پر) फा. पुं.—परों का तकिया, वह तकिया जिसके भीतर पर भरे हों।

बालिश्त (بالشت) फा. पुं.—उपधान, तकिया; वितस्ति, बित्ती, नौ इंच की नाप।

बालिश्तक (بالشتک) फा. पुं.–आल्पीनें खोंसने की गद्दी, पिन-कुशन ।

बालीं (بالیں) फा. स्त्री.–तकिया, उपधान; सिरहाना, शिरोहण ।

बालींपरस्त (بالیں پرست) फा. वि.–पलंग पर पड़ा रहनेवाला, आरामतलब ।

बालींपरस्ती (بالیں پرستی) फा. स्त्री.–पलंग पर पड़ा रहना, आरामतलबी ।

बालीदः (بالیدہ) फा. वि.–बढ़ा हुआ, विकसित ।

बालीदगी (بالیدگی) फा. स्त्री.–विकास, बढ़ाव ।

बालूअः (بالوعہ) अ. पुं.–कुंडी, जिसमें बरसात या घर का खराब पानी जाता हो ।

बालून (بالون) अ. पुं.–ग़ुब्बारा, बागोल, अभ्रपथ ।

बाले जिब्रील (بالِ جبریل) फा. अ. पुं.–जिब्रील के पर, जिब्रील की उड़ान ।

बाले हुमा (بالِ ھما) फा. पुं.–हुमा पक्षी का पर, जिसकी परछाईं पड़ने से मनुष्य राजा हो जाता है ।

बालोपर (بال و پر) फा. पुं.–पर और बाज़ू; शक्ति, बल, सामर्थ्य ।

बालोपर शिकस्तः (بال و پر شکستہ) फा. वि.–जिसके बाज़ू और पर टूट गये हों, अर्थात् विवश, लाचार ।

बावक़ार (باوقار) फा. अ. वि.–प्रतिष्ठित, सम्मानित, श्रेष्ठ, मुअज़्ज़ज़ ।

बावक्अत (باوقعت) फा. अ. वि.–दे. 'बावक़ार' ।

बावक्र (باوقر) फा. अ. वि.–दे. 'बांवक़ार' ।

बावज़्अ (باوضع) फा. अ. वि.–वज़्अदार, जो अपनी वज़्अ का पाबंद हो ।

बावफ़ा (باوفا) फा. अ. वि.–नमक हलाल, स्वामिभक्त; आज्ञानुयायी, फर्मांबरदार ।

बावर (باور) फा. पुं.–विश्वास, प्रत्यय, एतिबार ।

बावरची (باورچی) फा. पुं.–खाना पकानेवाला, सूपकार, पाचक, रसोइया ।

बावरचीख़ानः (باورچی خانہ) फा. पुं.–खाना पकाने का स्थान, महानस, पाकशाला ।

बावरचीगरी (باورچی گری) फा. स्त्री.–रसोइया का काम, खाना पकाना; रसोइया का पेशा ।

बावस्फ़ (باوصف) फा. अ. अव्य.–बावुजूद, यद्यपि, सत्यपि ।

बावुजूद (باوجود) फा. अ. अव्य.–बावस्फ़, यद्यपि, सत्यपि ।

बावुजूदे कि (باوجودے کہ) फा. अ. अव्य.–यद्यपि, अगरचे ।

बाशः (باشہ) फा. पुं.–एक शिकारी पक्षी, शिक्रः ।

बाश (باش) फा. प्रत्य.–रहनेवाला, जैसे—'हाज़िरबाश' उपस्थित रहनेवाला ।

बाशद (باشد) फा. क्रि.–हो; शायद ।

बाशद्दोमद (باشد و مد) फा. अ. अव्य.–ज़ोर-शोर के साथ, धूमधाम के साथ; साहस और उमंग के साथ; दा'वे के साथ ।

बाशा (باشا) तु. पुं.–एक बड़ा ख़िताब, पाशा ।

बाशिंदः (باشندہ) फा. पुं.–निवासी, रहनेवाला ।

बाशी (باشی) तु. पुं.–नायक, सरदार ।

बाशुऊर (باشعور) फा. अ. वि.–बुद्धिमान, अक़्लमंद; शिष्ट, तमीज़दार ।

बा'स (بعث) अ. पुं.–जगाना, उठाना; क़ियामत, महाप्रलय ।

बासक (باسک) फा. स्त्री.–जँभाई, जृंभा ।

बासलीक़ः (باسلیقہ) फा. अ. वि.–तमीज़दार, शिष्ट; जिसे चीज़ों को ढंग से रखने और काम को शिष्टता पूर्वक करने की आदत हो ।

बासलीक़ (باسلیق) अ. स्त्री.–हाथ की एक रग जो फ़स्द के लिए खोली जाती है ।

बासलीक़ून (باسلیقون) अ. स्त्री.–मसी, सियाही; कालिमा, कालापन ।

बासित (باسط) अ. वि.–उन्नति और विकास देनेवाला; ईश्वर का एक नाम ।

बासिरः (باصرہ) अ. स्त्री.–दृष्टि, नज़र; नेत्रशक्ति, क़ुव्वते बासिरः ।

बासिलसिलः (باسلسلہ) फा. अ. अव्य.–क्रमबद्ध, सिलसिलेवार ।

बासुकून (باسکون) फा. अ. अव्य.–शांतिमय, संतोषपूर्ण ।

बासूर (باسور) अ. स्त्री.–एक बीमारी; बवासीर, अर्श; नाक का बढ़ा हुआ मांस ।

बासूरी (باسوری) अ. वि.–बासूरसम्बन्धी ।

बासूरे दमवी (باسورِ دموی) अ. स्त्री.–खूनी बवासीर, रक्तार्श ।

बासूरे रियाही (باسورِ ریاحی) अ. स्त्री.–बादी बवासीर, वातार्श ।

बा'सोनश्र (بعث و نشر) अ. पुं.–क़ियामत का दिन, जिस दिन सब लोग उठेंगे और चारों तरफ़ फैल जायेंगे ।

बास्ताँ (باستاں) फा. वि.–प्राचीन, पुरातन, पुराना, इस शब्द का पास्ताँ कहना अशुद्ध है ।

बाह (باہ) अ. स्त्री.–कामशक्ति, मैथुनशक्ति ।

बाहमः ओ बेहमः (باھمہ و بےھمہ) फा. अव्य.–सबके साथ, और किसीके साथ न हो, ऐसा व्यक्ति जो भलाई में सबके साथ हो, और बुराई में किसी के साथ न हो ।

बाहम (باہم) फा. वि.–परस्पर, अन्योन्य, आपस में; एक साथ, मिलकर।

बाहमदिगर (باہمدگر) फा. वि.–परस्पर, एक-दूसरे से मिलकर।

बाहमी (باہمی) फा. वि.–पारस्परिक, आपस का।

बाहमीयत (باحمیت) फा. अ. वि.–स्वाभिमानी, ख़ुददार; लज्जावान्, हयादार।

बाहया (باحیا) फा. अ. वि.–जिसमें लज्जा बहुत हो, शर्मीला; ग़ैरतमंद, लज्जावान्।

बाहवास (باحواس) फा. अ. वि.–जो होशोहवास में हो, सचेत।

बाहिर (باہر) अ. वि.–स्पष्ट, व्यक्त, ज़ाहिर; प्रकाशमान, रौशन।

बाहूर (باحور) अ. पुं.–अत्यंत गर्मी, ग्रीष्म ऋतु के आठ दिन जो बहुत गर्म होते हैं और असाढ़ के अंत में पड़ते हैं।

बाहैसियत (باحیثیت) फा. अ. वि.–प्रतिष्ठित, सम्मानित, इज़्ज़तदार; समर्थ, समृद्ध, मालदार।

बाहौसलः (باحوصلہ) फा. अ. वि.–हिम्मतवाला, उत्साही।

बि

बिंत (بنت) अ. स्त्री.–लड़की, पुत्री, सुता, दुहिता, तनया।

बिंतुलअम्म (بنت العم) अ. स्त्री.–चचा की लड़की।

बिंतुलइनब (بنت العنب) अ. स्त्री.–अंगूर की लड़की, अर्थात् अंगूर की शराब, द्राक्षासव, मदिरा, सुरा।

बिंतुलउख़्त (بنت الاخت) अ. स्त्री.–बहन की लड़की, भानजी, भगिनीसुता, भागिनेयी।

बिंतुलकर्म (بنت الکرم) अ. स्त्री.–दे. 'बिंतुलइनब'।

बिंतुलक़ाफ़ (بنت القاف) अ. स्त्री.–क़ाफ़ की परी, काकेशिया-निवासिनी।

बिंतुलबह्र (بنت البحر) अ. स्त्री.–समुद्र-सुता, जलपरी; लक्ष्मी।

बिंते आदम (بنت آدم) अ. स्त्री.–आदम की लड़की, अर्थात् स्त्रीवर्ग; स्त्री, नारी, औरत।

बिंते इनब (بنت عنب) अ. स्त्री.–शराब, मदिरा।

बिंते हव्वा (بنت حوا) अ. स्त्री.–हव्वा की पुत्री, अर्थात् स्त्रीवर्ग; स्त्री, नारी।

बिंसर (بنصر) अ. स्त्री.–दूसरी छोटी उँगली, अनामिका।

बि अल्क़ा बिही (بالقابہ) अ. अव्य.–अपने सारे अल्क़ाबों के साथ, जिस किसी के नाम के साथ बहुत-सी उपाधियाँ लगती हों उन्हें न लिखकर केवल यह शब्द लिख देते हैं।

बिआ़द (بعاد) अ. स्त्री.–दूरी, फ़ासिला।

बिक (بک) तु. पुं.–दे. 'बिग'।

बिकबाशी (بک باشی) तु. पुं.–दे. 'बिगबाशी'।

बिक्र (بکر) अ. स्त्री.–कुमारी, दोशीज़ः (वि.) ऐसा काम जो पहले न हुआ हो।

बिक्रनिगाह (بکرنگاہ) अ. फा. स्त्री.–वह नायिका जिसे अभी हाव-भाव न आते हों।

बिग (بگ) तु. पुं.–'बेग' का लघु. नायक, सरदार।

बिगताश (بگتاش) तु. पुं.–जिसके बहुत से दास-दासियाँ हों; जो एक ही स्वामी के दास हों, ख़्वाज़:ताश।

बिगबाशी (بگباشی) तु. पुं.–फ़ौज का मेजर, सेनानायक।

बिगयारुक़ (بگیارق) तु. पुं.–एक स्वामी के दास, ख़्वाज़:-ताश।

बिज़न (بزن) फा. पुं.–वध, क़त्ल (क्रि.) मार, जान से मार डाल।

बिज़नगाह (بزنگاہ) फा. स्त्री.–वधस्थल, मक़्तल, क़त्लगाह।

बिज़ाअत (بضاعت) अ. स्त्री.–सामर्थ्य, मक़्दूर; पूँजी, सरमायः।

बिज़ातिही (بذاتہ) अ. अव्य.–अपने दम से, स्वयं आप।

बिजिंसिही (بجنسہ) अ. अव्य.–बिलकुल वैसा ही, तद्रूप, तदाकार, तत्सम।

बिज़्अ (بضع) अ. पुं.–तीन से नौ तक की संख्या, इनके बीच की कोई संख्या।

बिज़्ज़ुरूर (بالضرور) अ. अव्य.–अवश्य, ज़ुरूर ज़ुरूर।

बिज़्ज़ुरूरत (بالضرورت) अ. अव्य.–आवश्यकता पड़ने पर, ज़ुरूरत पर।

बितमामिही (بتمامہ) अ. अव्य.–पूर्णतया, पूरे तौर पर; सबका सब, कुल, संपूर्ण।

बितालत (بطالت) अ. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी।

बित्तक़्दीर (بالتقدیر) अ. अव्य.–भाग्यवश, क़िस्मत से।

बित्तख़्सीस (بالتخصیص) अ.अव्य.–विशेषतः, ख़ास तौर पर।

बित्तफ़्सील (بالتفصیل) अ. अव्य.–विस्तारपूर्वक, तफ़्सील के साथ।

बित्तबअ (بالطبع) अ. वि.–स्वभावतः, स्वभाव से, तबीअत से, दिल से।

बित्तमाम (بالتمام) अ. वि.–सबका सब, पूरे का पूरा।

बित्तर्तीब (بالترتیب) अ. वि.–क्रम के साथ, तर्तीब के साथ; एक के बाद एक, सिलसिलेवार।

बित्तश्रीह (بالتشریح) अ. वि.–व्याख्या के साथ, तस्रीह के साथ; विस्तार के साथ, तफ़्सील के साथ।

बित्तस्रीह (بالتصریح) अ. वि.–विस्तारपूर्वक, तफ़्सील के साथ; स्पष्टतया, वज़ाहत के साथ।

बित्तहक़ीक़ (بالتحقیق) अ. वि.—निश्चयपूर्वक।

बित्तीख़ (بطیخ) अ. पुं.—ख़रबूज़ा।

बित्तीख़े अख़्ज़र (بطیخ اخضر) अ. पुं.—तरबूज़।

बित्यारः (بتیاره) फा. पुं.—आपत्ति, विपत्ति, मुसीबत; बला, दैवी आपत्ति; अभिचार, जादू; छल, फ़रेब; देव, पिशाच।

बित्रीक़ (بطریق) अ. पुं.—पादरी, किलीसाई।

बिदाअत (بدائت) अ. स्त्री.—आरम्भ, प्रारम्भ, अनुष्ठान शुरूआत।

बिदिस्त (بدست) फा. स्त्री.—बालिश्त, बित्ती, बित्ता, वितस्ति।

बिदून (بدون) अ. अव्य.—बिना, बग़ैर।

बिद्अत (بدعت) अ. स्त्री.—नयी बात, नवीनता; धर्म में नयी बात, इस्लाम धर्म में वह बात जो रसूल के समय में न हो।

बिद्अती (بدعتی) अ. वि.—धर्म में व्यवस्था करनेवाला।

बिद्आत (بدعات) अ. स्त्री.—'बिद्अत' का बहु. बिद्अतें, धर्म में नयी बातें।

बिद्राम (بدرام) फा. वि.—दे. 'पिद्राम', वही शुद्ध है।

बिद्रूद (بدرود) फा. स्त्री.—बिदा करना, रुख़्सत करना; त्याग करना, छोड़ना।

बिना (بنا) अ. स्त्री.—नींव, आधार, बुनियाद; कारण, सबब।

बिना अन अलैह (بناءًعلیه) अ. वि.—इस कारण से, इस बुनियाद पर।

बिनाए ज़ुल्म (بنائے ظلم) अ. स्त्री.—अत्याचार की शुरूआत।

बिनाए दा'वा (بنائے دعوا) अ. स्त्री.—दावे के बुन्याद, वादाधार।

बिनाए मुख़ासमत (بنائے مخاصمت) अ. स्त्री.—झगड़े की जड़, फ़साद की बुन्याद; वाद का मूल आधार।

बिनाबर (بنابر) अ. फा. अव्य.—इस कारण, इसलिए।

बिनीयः (بنیه) अ. स्त्री.—दे. 'बुनीयः', दोनों शुद्ध हैं।

बिफ़ज़्लिही (بفضله) अ. वि.—उसके (ईश्वर के) फ़ज़्ल से, ईश्वर की कृपा से।

बिमिन्निही (بمنهٖ) अ. वि.—उसकी (ईश्वर की) दया से, ईश्वर की अनुकंपा से।

बियाबाँ (بیابان) फा. पुं.—'बियाबान' का लघु., दे. 'बियाबान'।

बियाबाँगर्द (بیابانگرد) फा. वि.—काननचारी, वनभ्रमी, ज़ंगल में फिरनेवाला।

बियाबाँनवर्द (بیابان نورد) फा. वि.—दे. 'बियाबाँगर्द'।

बियाबाँनशीं (بیابان نشیں) फा. वि.—जंगल में रहनेवाला, वनवासी।

बियाबान (بیابان) फा. पुं.—वन, कानन, विपिन, अरण्य, जंगल।

बियाबानी (بیابانی) फा. वि.—जंगल का, जंगली; जंगल सम्बन्धी।

बियाबाने क़ुद्स (بیابان قدس) फा. अ. पुं.—बैतुल मुक़द्दस (यरोशलम) का जंगल।

बिरंज (برنج) फा. पुं.—चावल, तंदुल।

बिर [र्र] (بر) अ. पुं.—उपकार, भलाई; यश, पुण्य; दान, बख़्शिश।

बिरजीस (برجیس) अ. पुं.—बृहस्पति, मुश्तरी, दे. 'बिर्जीस'।

बिरजीसक़द्र (برجیس قدر) अ. वि.—बहुत बड़ी प्रतिष्ठावाला।

बिरजीसशियम (برجیس شیم) अ. वि.—बृहस्पति-जैसी बुद्धिवाला, बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

बिरिंज (برنج) अ. पुं.—पीतल, पित्तल, जस्ता और ताँबे के योग से बनी हुई एक धातु।

बिरिंजासफ़ (برنجاسف) अ. पुं.—एक पत्ती जो दवा के काम आती है।

बिरिश्तः (برشته) फा. वि.—भुना हुआ, भृष्ट।

बिरिश्तःक़ल्ब (برشته قلب) फा. अ. वि.—जिसका हृदय प्रेमाग्नि में जलभुन गया हो, अर्थात् प्रेमी।

बिरिश्तःजिगर (برشته جگر) फा. वि.—दे. 'बिरिश्तः क़ल्ब'।

बिरिश्तःदिल (برشته دل) फा. वि.—दे. 'बिरिश्तः क़ल्ब'।

बिर्जीस (برجیس) अ. पुं.—बृहस्पति, मुश्तरी।

बिर्यां (بریاں) फा. वि.—भुना हुआ, भृष्ट।

बिर्यानी (بریانی) फा. स्त्री.—एक प्रकार का पुलाव जिसमें गोश्त भूनकर पड़ता है।

बिलअक्स (بالعکس) अ. वि.—विरुद्ध, प्रत्युत, बरख़िलाफ़।

बिलआख़िर (بالآخر) अ. वि.—अंततः, आख़िरकार।

बिलइज्माअ (بالاجماع) अ. वि.—सम्मतिपूर्वक, सबके मतैक्य से।

बिलइज्माल (بالاجمال) अ. वि.—संक्षेपतः, संक्षेप में।

बिलइत्तिफ़ाक़ (بالاتفاق) अ. वि.—सबकी संमति से, सबकी सलाह से।

बिलइन्फ़िराद (بالانفراد) अ. वि.—एक-एक करके, इन्फ़िरादी तौर पर, व्यक्तिगत।

बिलइरादः (بالاراده) अ. वि.—निश्चयपूर्वक, इरादे से।

बिलइल्तिज़ाम (بالالتزام) अ. वि.—निश्चित रूप से, लाज़िमी तौर पर।

बिलइश्तिराक (بالاشتراک) अ. वि.–साझे में, शिर्कत में।

बिलउमूम (بالعموم) अ. वि.–प्रायः, बहुधा, आमतौर पर, अक्सर।

बिलए'लान (بالاعلان) अ. वि.–सबके सामने, अलानिया तौर पर, डंके की चोट।

बिलक़स्द (بالقصد) अ. वि.–जान-बूझकर, जानते हुए, ब़िलइरादः।

बिलकिनायः (بالکنایہ) अ. वि.–इशारे में।

बिलकुल (بالکل) अ. वि.–नितांत, सर्वथा; सर्व, समस्त; पूर्णतया, पूरेतौर पर।

बिलकुल्लियः (بالکلیہ) अ. वि.–सांगोपांग, पूर्णतया, पूरे तौर पर।

बिलख़ासियत (بالخاصیت) अ. अव्य.–दे. 'बिलख़ास्सः।

बिलख़ास्सः (بالخاصہ) अ. अव्य.–अपने गुण के प्रभाव से।

बिलख़ुसूस (بالخصوص) अ. अव्य.–मुख्यतः, ख़ास तौर पर।

बिलजब्र (بالجبر) अ. वि.–बलपूर्वक, बलात्, जब्रन्।

बिलजुम्लः (بالجملہ) अ. अव्य.–किंबहुना, क़िस्सः मुख्तसर; प्रायः, अमूमन; सर्वथा, बिलकुल।

बिलमर्रः (بالمرہ) अ. वि.–नित्य प्रति, रोज़ाना, हमेशा।

बिलमा'ना (بالمعنی) अ. अव्य.–सत्यतः, हक़ीक़त में; गुप्त रूप में, दूसरे अर्थ में।

बिलमुक़ाबिल (بالمقابل) अ. अव्य.–संमुख, आमने-सामने, मुक़ाबिले में।

बिलमुक़्ता (بالمقطع) अ. वि.–अलल हिसाब, हिसाब किये बिना दी हुई रक़म।

बिलमुज़ाअफ़ (بالمضاعف) अ. अव्य.–दूना, द्विगुण, दुचंद।

बिलमुनासफ़ः (بالمناصفہ) अ. अव्य.–आधा-आधा, दो भागों में बराबर-बराबर।

बिलमुवाजहः (بالمواجہ) अ. वि.–मुक़ाबिले में, संमुख, सामने।

बिलमुशाफ़हः (بالمشافہہ) अ. अव्य.–दे. 'विलमुवाजहः।

बिलमुशाहदः (بالمشاھدہ) अ. अव्य.–दे. 'विलमुवाजहः'।

बिलयक़ीन (بالیقین) अ. अव्य.–निश्चयपूर्वक, यक़ीनन।

बिलवज्ह (بالوجہ) अ. अव्य.–कारणवश, कारण से, सबब के साथ, सबब की बिना पर।

बिलवास्तिः (بالواسطہ) अ. अव्य.–किसी के द्वारा, किसी को बीच में डालकर।

बिला (بلا) अ. अव्य.–बिना, बग़ैर, बिन।

बिला अंदेशः (بلا اندیشہ) अ. फा. अव्य.–दे. 'बिलातरद्दुद'।

बिला इरादः (بلا ارادہ) अ. अव्य.–बिना इरादे के।

बिला इश्तिबाह (بلا اشتباہ) अ. वि.–बिना संदेह के, निःसंदेह, बेशक।

बिला इस्तिस्ना (بلا استثناء) अ. अव्य.–बिना किसी को अलग किये हुए।

बिला उज्र (بلا عزر) अ. अव्य.–बिना किसी उज्र के।

बिला क़ैद (بلا قید) अ. अव्य.–बिना किसी पाबंदी के, बिना किसी शर्त के।

बिला ज़मानत (بلا ضمانت) अ. अव्य.–बिना ज़मानत का, जिसकी ज़मानत न हो सके।

बिला तकल्लुफ़ (بلا تکلف) अ. अव्य.–बिना किसी तकल्लुफ़ के, बिना किसी संकोच के, बिना किसी चिन्ता के, बिना किसी विचार के।

बिला तरद्दुद (بلا تردد) अ. अव्य.–निःशंक, बिना चिंता और फ़िक्र के।

बिला तवक़्क़ुफ़ (بلا توقف) अ. वि.–बिना विलंब के, बिना देर किये, तुरंत, फ़ौरन।

बिला तश्बीह (بلا تشبیہ) अ. अव्य.–बिना उपमा दिये, बिना बराबरी किये।

बिला तश्रीह (بلا تشریح) अ. अव्य.–बिना टीका-टिप्पणी के, बिना व्याख्या किये।

बिला तसन्नो (بلا تصنع) अ. अव्य.–बिना बनावट के, बिना किसी हेरफेर के।

बिला तहाशा (بلا تحاشا) अ. अव्य.–अंधाधुंध, बहुत अधिक; बे सोचे समझे; बिना रुके।

बिलाद (بلاد) अ. पुं.–'बलद' का बहु., नगर-समूह; राष्ट्र-समूह।

बिला दिक़्क़त (بلا دقت) अ. अव्य.–बिना किसी कठिनाई के, सुगमतापूर्वक।

बिला दिरेग़ (بلا دریغ) अ. फा. अव्य.–दे. 'बिला तहाशा'।

बिलादे इस्लामियः (بلاد اسلامیہ) अ. पुं.–वह देश जिनमें मुसलमान शासकों का राज है।

बिलादे मग़्रिब (بلاد مغرب) अ. पुं.–यूरोप के राष्ट्र।

बिलादे मश्रिक़ (بلاد مشرق) अ. पुं.–पूर्वी राष्ट्र, एशियाई देश।

बिलादे हिंद (بلاد ھند) अ. फा. पुं.–भारत के प्रदेश, भारत के देश।

बिला नाग़ः (بلا ناغہ) अ. तु. अव्य.–एक दिन नाग़ा किये बिना, नित्य प्रति, रोज़ाना।

बिला पर्दः (بلا پردہ) अ. फा. अव्य.–बिना किसी आड़ के; बिना मुँह ढाँके; बिना गुप्त रूप के।

बिला पसोपेश (بلا پس وپیش) अ. फा. अव्य.–विना संकोच, बिना कुछ सोचे-विचारे, बिना किसी दुबिधा के।

बिला फ़स्ल (بلا فصل) अ. अव्य.–विना अंतर के, बिना दूरी के।

बिला फ़ाइदः (بلا فائدہ) अ. वि.–बेफाइदः व्यर्थ, बेकार।

बिला फ़ासिलः (بلا فاصلہ) अ. वि.–अंतर के बिना।

बिला रूओ रिआयत (بلا روو رعایت) अ. फा. वि.–बिना किसी शील-संकोच के, बिना किसी पक्षपात के।

बिला वज्ह (بلا وجہ) अ. अव्य.–अकारण, बेसबब।

बिला वासितः (بلا واسطہ) अ. अव्य.–बराहे रास्त, सीधा, डाइरेक्ट।

बिला शक (بلا شک) अ. वि.–निःसंदेह, निःसंशय, निःशंक, बेशक, बेशुब्हः।

बिला शुब्हः (بلا شبہہ) अ. वि.–दे. बिला शक।

बिला सबब (بلا سبب) अ. अव्य.–दे. 'बिला वज्ह'; अकारण, बिला सबब।

बिलाहत (بلاھت) अ. स्त्री.–सांसारिक विषयों में बुद्धि की कमी।

बिलौर (بلور) अ. पुं.–बिल्लौर का लघु., दे. 'बिल्लौर'।

बिल्लौर (بلور) अ. पुं.–एक क़ीमती शीशा, स्फटिक मणि।

बिशारत (بشارت) अ. स्त्री.–ख़ुशख़बरी, शुभ समाचार, सुख-संवाद, दे. 'बुशारत', दोनों शुद्ध हैं।

बिसात (بساط) अ. स्त्री.–फ़र्श, बिछौना; स्तर, सतह; साहस, हिम्मत; सामर्थ्य, मक़्दरत; शतरंज का तख़्ता; पूंजी, सरमायः; हैसियत; पहुँच, दस्तरस।

बिसातख़ानः (بساطخانہ) अ. फा. पुं.–बिसाती का सामान; बिसाती की दुकान।

बिसाती (بساطی) अ. पुं.–बिसातख़ाने का सामान बेचनेवाला, जनरल मर्चेंट।

बिसाते ख़ाक (بساطخاک) अ. फा. स्त्री.–पृथ्वीतल, ज़मीन की सतह।

बिसाते नर्द (بساطنرد) अ. फा. स्त्री.–चौसर खेलने का तख़्ता।

बिसाते शत्रंज (بساطشطرنج) अ. फा. स्त्री.–शत्रंज खेलने का तख़्ता, चेसबोर्ड।

बिस्त (بست) फा. वि.–बीस की संख्या, बीस।

बिस्तर (بستر) फा. पुं.–शय्या, बिछौना।

बिस्तरबंद (بستربند) फा. पुं.–बिस्तर बाँधने की पेटी आदि; होलडाल।

बिस्ताम (بسطام) फा. पुं.–ईरान में ख़ुरासान के प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर, जो महात्मा 'बायज़ीद' का स्थान था।

बिस्तुम (بستم) फा. वि.–बीसवाँ।

बिस्मिल (بسمل) फा. वि.–आहत, क्षत, घायल, ज़ख़्मी।

बिस्मिलगाह (بسملگاہ) फा. स्त्री.–वधस्थल, क़त्लगाह।

बिस्मिल्लाह (بسم اللہ) अ. वा.–क़ुरान की एक आयत, जिसका अर्थ है 'मैं ईश्वर के नाम से प्रारम्भ करता हूँ जो बड़ा दयालु और महा कृपालु है।'

बिस्यार (بسیار) फा. वि.–अधिक, प्रचुर, बहुल, बहुत।

बिस्यारख़ोर (بسیارخور) फा. वि.–बहुत खानेवाला, बहुभोजी।

बिस्यारख़ोरी (بسیارخوری) फा. स्त्री.–बहुत खाना, थूरना।

बिस्यारगो (بسیارگو) फा. वि.–बहुत बोलनेवाला, बहुभाषी; फ़ुज़ूलगो, मिथ्याभाषी।

बिस्यारगोई (بسیارگوئی) फा. स्त्री.–बहुत बोलना; फ़ुज़ूल बातें करना।

बिसयारी (بسیاری) फा. वि.–अधिकता, बाहुल्य, कस्रत।

बिह (بہ) फा. वि.–उत्तम, बढ़िया, अच्छा।

बिहिल (بحل) फा. वि.–मुआफ़।

बिहिश्त (بہشت) फा. पुं.–स्वर्ग, फिर्दौस, जन्नत—"बिहिश्त एक नाम है शायद उसी पाकीज़ा गोशे का।"

बिहिश्ती (بہشتی) फा. वि.–स्वर्गीय, स्वर्ग का; स्वर्ग सम्बन्धी; स्वर्ग का निवासी।

बिहिश्ते बरीं (بہشت بریں) फा. पुं.–सबसे ऊँचा स्वर्ग।

बिहिश्ते शद्दा (بہشت شداد) फा. अ. पुं.–वह स्वर्ग जो शद्दाद ने बनाया था।

बी

बीं (بیں) फा. प्रत्य.–देखनेवाला, जैसे—'दूरबीं' दूर का देखनेवाला।

बीचः (بیچہ) फा. पुं.–'बीबी' का लघु., प्रेमपात्र, मा'शूक़, (स्त्री.) नायिका, प्रेमिका, महबूबः।

बीज़ (بیض) स्त्री.–'बैज़ा' का बहु., गोरी चिट्टी औरतें; पूरी चाँदनीवाली रातें।

बीना (بینا) फा. वि.–देखनेवाला, जिसके आँखें हों।

बीनाई (بینائی) फा. स्त्री.–आँखों की ज्योति, दृष्टि, नज़र।

बीनादिल (بینادل) फा. वि.–रौशन ज़मीर, अंतर्यामी।

बीनिंदः (بینندہ) फा. वि.–देखनेवाला, दर्शक।

बीनिश (بینش) फा. स्त्री.–दृष्टि, नज़र; देखना।

बीनी (بینی) फा. स्त्री.–नासा, नासिका, नाक।

बीम (بیم) फा. पुं.–भय, त्रास, डर; निराशा, नाउम्मेदी।

बीमार (بیمار) फा. वि.–रोगी, रुग्ण, अस्वस्थ, व्याधित, मरीज़।

बीमारख़ानः (بیمارخانہ) फा. पुं.–रुग्णालय, अस्पताल।

बीमारदार (بیماردار) फा. वि.–रोगी की देखभाल करनेवाला, परिचारक, उपचारक।

बीमारदारी (بیمارداری) फा. स्त्री.–रोगी की देखभाल, उपचार, परिचार।

बीमारपुर्सी (بیمارپرسی) फा. स्त्री.–रोगी का हाल पूछना।

बीमारिस्तान (بیمارستان) फा. पुं.–दे. 'बीमारख़ानः।'

बीमारी (بیماری) फा. स्त्री.–रोग, व्याधि, मरज़; कोई बुरी लत।

बीमारे इश्क़ (بیمارعشق) फा. अ. पुं.–प्रेम के रोग का रोगी, नायक, आशिक़।

बीमारे ग़म (بیمارغم) फा. पुं.–दे. 'बीमारे इश्क' ।

बीमारे फ़िराक़ (بیمارفراق) फा. अ. पुं.–विरह के रोग से पीड़ित, जो सदा वियोगी रहे।

बीमेजाँ (بیمجاں) फा. पुं.–प्राणभय, जान का ख़तरा।

बीमोरजा (بیمورجا) फा. अ. पुं.–निराशा और आशा, उम्मेद और नाउम्मेदी।

बीमोहिरास (بیموہراس) फा. पुं.–ख़ौफ़ और निराशा।

बीर (بیر) अ. पुं.–कुआँ, कूप।

बीश (بیش) फा. स्त्री.–सिंघिया, मीठा तेलिया।

बु

बुंदुक़ः (بندقہ) अ. पुं.–गोली, बंदूक़ की गोली।

बुंदुक़ (بندق) अ. पुं.–मिट्टी की गोली, गुल्ला।

बुका (بکا) अ. स्त्री.–रोना, रोदन।

बुकावुल (بکاول) फा. पुं.–शाही बावरचीख़ाने का दारोग़ा, दे. 'बकावल', दोनों शुद्ध हैं।

बुक़ूल (بقول) अ. स्त्री.–'बक़्लः' का बहु., सब्ज़ियाँ, तरकारियाँ, सागपात।

बुक़्अः (بقعہ) अ. पुं.–घर, मकान; स्थान, जगह।

बुक़्अए नूर (بقعۂ نور) अ. पुं.–वह घर या स्थान जहाँ बहुत रौशनी हो।

बुख़ला (بخلا) अ. पुं.–'बख़ील' का बहु., कंजूस लोग।

बुख़ार (بخار) फा. पुं.–वाष्प, भाप; ज्वर, ताप, तप; क्रोध, ग़ुस्सा; द्वेष, बुग़्ज़।

बुख़ारा (بخارا) फा. पुं.–रूसी तुर्किस्तान का एक प्रसिद्ध नगर, जो वहाँ की राजधानी भी है, यहाँ का सौन्दर्य प्रसिद्ध है।

बुख़ारात (بخارات) फा. पुं.–'बुख़ार' का बहु., भापें।

बुख़ारी (بخاری) फा. वि.–भाप सम्बन्धी, भाप द्वारा चलनेवाला यंत्र; बुख़ारा का रहनेवाला; नाज रखने की कोठानुमा खत्ती।

बुख़ूर (بخور) अ. पुं.–धूनी, धूप आदि की धूनी; दवाओं की धूनी जो किसी विशेष अंग को दी जाय।

बुख़ूरदान (بخوردان) अ. फा. पुं.–जिस बर्तन में अगर या लोबान आदि सुलगाया जाय, धूपदान, अगरदान।

बुख़्तनस्सर (بخت نصر) फा. पुं.–बाबुल के १२ वें ख़ानदान का नरेश (१,२०० ई० पू०); बाबुल के १९ वें ख़ानदान का दूसरा नरेश जो ६०४ ई० पू० में गद्दी पर बैठा, बड़े दबदबे का शासक था, बाबुल को बहुत उन्नत किया।

बुख़्ल (بخل) अ. पुं.–कृपणता, कंजूसी।

बुग़्चः (بغچہ) फा. पुं.–छोटी पोटली जो बग़ल में दबायी जा सके।

बुग़्ज़ (بغض) अ. पुं.–वह बैर जो मन ही मन में बढ़ाया जाय, और प्रकट न किया जाय, द्वेष, कीनः।

बुज़ (بز) फा. स्त्री.–अजा, बकरी।

बुज़क़दम (بزقدم) फा. वि.–दुर्बलता के कारण धीरे-धीरे चलनेवाला; तुच्छ।

बुज़गर (بزگر) फा. पुं.–मेंढ़ा लड़ानेवाला।

बुज़ग़ालः (بزغالہ) फा. पुं.–बकरी का बच्चा, अजा-शावक; पहाड़ी बकरी।

बुज़गीर (بزگیر) फा. वि.–छली, मक्कार; तस्कर, चोर।

बुज़जिगर (بزجگر) फा. वि.–भयभीत, भीरु, डरपोक।

बुज़दिल (بزدل) फा. वि.–भीरु, डरपोक, बुज़जिगर।

बुज़दिली (بزدلی) फा. स्त्री.–भीरुता, डरपोकपन।

बुज़बाज़ (بزباز) फा. वि.–बकरी और बंदर का खेल करनेवाला।

बुज़बाज़ी (بزبازی) फा. स्त्री.–बकरी और बंदर का खेल।

बुज़ाक़ (بزاق) अ. पुं.–मुखस्राव, राल; थूक।

बुज़ुर्ग (بزرگ) फा. पुं.–श्रेष्ठ प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज़; वयोवृद्ध, बूढ़ा; पूर्वज, बापदादे; महात्मा, पुण्यात्मा, वली, ख़ुदारसीदः; (व्यंग) धूर्त, उत्पाती, शरीर, बदमआश।

बुज़ुर्गज़ादः (بزرگزادہ) फा. पुं.–बुज़ुर्ग का लड़का।

बुज़ुर्गदाश्त (بزرگداشت) फा. स्त्री.–बुज़ुर्गों की ओर से छोटों पर अनुकंपा और दया।

बुज़ुर्गमनिश (بزرگ منش) फा. वि.–सदात्मा, पुनीतात्मा, महान् व्यक्तियों-जैसे आचरणवाला।

बुज़ुर्गवार (بزرگوار) फा. पुं.–पूज्य, मान्य, प्रायः अपने से बड़ों के लिए पत्रों में लिखते हैं।

बुज़ुर्गसाल (بزرگسال) फा. वि.–बड़ी उम्रवाला, वयोवृद्ध, जरत्।

बुज़ुर्गानः (بزرگانہ) फा. वि.–बुज़ुर्गों-जैसा।

बुज़ुर्गी (بزرگی) फा. स्त्री.–प्रतिष्ठा, मान, बड़ाई; संमान, इज़्ज़त; महात्मापन।

बुज़ुर्गे क़ौम (بزرگ قوم) फा. अ. पुं.–जाति या राष्ट्र का प्रतिष्ठित व्यक्ति।

बुज़ुर्गे ख़ानदाँ (بزرگ خانداں) फा. पुं.–वंश और कुल का प्रतिष्ठित और पूज्य व्यक्ति।

बुज़ूर (بزور) अ. पुं.–‘बज़्र’ का बहु., तरकारियों आदि के बीज।

बुज़ूरी (بزوری) अ. वि.–बीजोंवाला; बीजों से बना हुआ; एक शर्बत जो बीजों से बनता है।

बुज़े अख़फ़श (بزاخفش) फा. अ. पुं.–ऐसा व्यक्ति जो लाख समझाने पर भी कुछ न समझे, महामूर्ख।

बुत (بت) फा. पुं.–मूर्ति, प्रतिमा, प्रतिकृति, मुजस्समः; वह मूर्ति जिसकी पूजा होती है, देवमूर्ति; नायिका मा’शूक़ः।

बुतकदः (بتکدہ) फा. पुं.–मंदिर, मूर्तिगृह, बुतख़ाना जहाँ मूर्तिपूजा की जाती हो।

बुतख़ानः (بتخانہ) फा. पुं.–दे. ‘बुतकदः’।

बुततराश (بتتراش) फा. वि.–मूर्तिकार, पत्थर की मूर्तियाँ बनानेवाला।

बुततराशी (بتتراشی) फा. स्त्री.–मूर्तियाँ बनाने का काम; मूर्तियाँ बनाकर बेचने का पेशा; मूर्ति बनाने की विद्या, मूर्तिकला।

बुतपरस्त (بتپرست) फा. वि.–मूर्तियों की पूजा करनेवाला, मूर्तिपूजक, साकारोपासक।

बुतपरस्ती (بتپرستی) फा. स्त्री.–मूर्तिपूजा, बुतों की इबादत।

बुतफ़रोश (بتفروش) फा. वि.–मूर्तियाँ बेचनेवाला, मूर्ति-व्यवसायी।

बुतशिकन (بتشکن) फा. वि.–मूर्तियों को तोड़नेवाला, मूर्तिभंजक।

बुतशिकनी (بتشکنی) फा. स्त्री.–मूर्तियों को तोड़ना, मूर्ति-खंडन।

बुताने आज़री (بتانِ آزری) फा. पुं.–आज़र (हज़रत इब्राहीम के पिता) की बनायी हुई मूर्तियाँ, जो बड़ी कलापूर्ण होती थीं।

बुतून (بطون) अ. पुं.–‘बत्न’ का बहु., पेट; गुप्ति, छिपाव, पोशीदगी।

बुते पुरफ़न (بتِ پرفن) फा. पुं.–बहुत ही चालबाज़ नायिका।

बुते बेपीर (بتِ بےپیر) फा. पुं.–बड़ी निर्दय और कठोर मन की नायिका।

बुतैन (بطین) अ. पुं.–दूसरा नक्षत्र, भरणी।

बुत्लान (بطلان) अ. पुं.–खंडन, काट, तर्दीद; नाश, ज़ाए होना।

बुद [द्द] (بد) अ. पुं.–उपचार, उपाय, तद्बीर।

बुद (بد) फा. क्रि.–‘बूद’ का लघु., था।

बुदूर (بدور) अ. पुं.–‘बद्र’ का बहु., चौंदहवीं रात का चाँद।

बुद्दूह (بدوح) अ. वि.–ईश्वर का एक नाम।

बुनः (بنہ) फा. पुं.–उपकरण, सामान।

बुन (بن) फा. स्त्री.–वृक्ष, पेड़; पेड़ की जड़, मूल; हर चीज़ का अन्त, अख़ीर; क़हवा के बीज, जिन्हें भून और पीसकर क़हवा बनाते हैं।

बुनगह (بنگہ) फा. स्त्री.–‘बुनगाह’ का लघु., दे. ‘बुनगाह’।

बुनगाह (بنگاہ) फा. स्त्री.–कुठार, वह कोठा जहाँ सामान रहता है।

बुनागोश (بناگوش) फा. स्त्री.–कान की लौ, कर्णलता।

बुनीयः (بنیہ) अ. स्त्री.–आधार, बुन्याद; प्रकृति, स्वभाव; सृष्टि, तख़्लीक़; अस्तित्व, वुजूद।

बुनेरान (بنِ ران) फा. स्त्री.–रान की जड़, चिड्ढा।

बुन्कराँ (بنکراں) फा. स्त्री.–खुर्चन, वे चावल जो देगचे की तली में लग जाते हैं।

बुन्याद (بنیاد) फा. स्त्री.–आधार, नींव; सामर्थ्य, मक़्दूर; सृष्टि, ख़िल्कत; अस्तित्व, वुजूद; अनुष्ठान, आरम्भ, इब्तिदा; मूल, जड़।

बुन्यादी (بنیادی) फा. वि.–आधार भूत, अस्ली; प्रारम्भिक, इब्तिदाई।

बुन्यान (بنیان) अ. स्त्री.–नींव, आधार, बुनयाद।

बुन्याने मर्सूस (بنیانِ مرصوص) अ. स्त्री.–इमारत की ऐसी नींव जिसमें सीसे से जुड़ाई हुई हो, बहुत ही मज़बूत नींव।

बुयूत (بیوت) अ. पुं.–‘बैत’ का बहु., घरों का समूह, बहुत से घर।

बुराक़ (براق) अ. पुं.–मुसलमानों के मतानुसार वह घोड़ा जिस पर उनके रसूल आस्मानों पर गये थे।

बुरादः (برادہ) फा. पुं.–लकड़ी या धातु की छीलन, जो खरादने या आरे से चीरने में गिरती है।

बुरादए आज (برادۂ عاج) फा. अ. पुं.–हाथी-दाँत का बुरादा जो दवा में चलता है।

बुरादए आबनूस (برادۂ آبنوس) फा. पुं.–आबनूस का बुरादा जो दवा के काम आता है।

बुरिंदः (برندہ) फा. वि.–काटनेवाला।

बुरिश (برش) फा. स्त्री.–काट, धार, तीक्ष्णता।

बुरीदः (بریدہ) फा. वि.–काटा हुआ, कटा हुआ, विच्छिन्न।

बुरीदःगोश (بریدہگوش) फा. वि.–जिसके कान कटे हों, कनकटा।

बुरीदःदस्त (بریدہدست) फा. वि.–जिसके हाथ कटे हों।

बुरीदःपा (بریدہپا) फा. वि.–जिसके पाँव कटे हों।

बुरीदःबीनी (بریدہبینی) फा. वि.–जिसकी नाक कटी हो।

बुरीदःमू (بریدہمو) फा. वि.–जिसके बाल कटे हों।

बुरीदःशाख़ (بریدہشاخ) फा. वि.–जिसकी शाखाएँ काट दी गयी हों।

बुरीदःसर (بریدہسر) फा. वि.–जिसका सर काट डाला गया हो, जिसका सर धड़ से अलग हो।

बुरीद (برید) फा. स्त्री.–काट, कटन, कटाव।

बुरीदगी (بریدگی) फा. स्त्री.–काट, कटाव।

बुरीदनी (بریدنی) फा. वि.–काटने योग्य, जो काटने के लाइक हो।

बुरूँ (بروں) फा. वि.–'बेरूँ' का लघु., बाहर, दे. 'बिरूँ', दोनों शुद्ध हैं।

बुरूज (بروج) अ. पुं.–'बुर्ज' का बहु., राशियाँ।

बुरूज़ (بروز) अ. पुं.–प्रकट होना, निकलना।

बुरूत (بروت) अ. स्त्री.–मूँछ, मुच्छ।

बुरूदत (برودت) अ. स्त्री.–शीतलता, ठंडक, ठंड।

बुरूने ख़ानः (برون‌خانہ) फा. वि.–घर के बाहर।

बुरूने दर (برون‌در) फा. वि.–दरवाज़े के बाहर।

बुर्क़ा' (برقع) अ. पुं.–मुंह छिपाने का एक सर से पाँव तक का चुग़ानुमा वस्त्र, निक़ाब, मुखपट।

बुर्क़ा'पोश (برقع‌پوش) अ. फा. वि.–बुर्क़ा' पहने हुए।

बुर्ज (برج) अ. पुं.–गुंबद, मंडप; राशि, दाइरतुल बुरूज का बारहवाँ अंश।

बुर्जे अक़्रब (برج‌عقرب) अ. पुं.–वृश्चिक राशि, आठवाँ बुर्ज।

बुर्जे असद (برج‌اسد) अ. पुं.–सिंहराशि, पाँचवाँ बुर्ज।

बुर्जे आतशी (برج‌آتشی) अ. फा. पुं.–अग्नि तत्त्व से सम्बन्ध रखनेवाली तीन राशियाँ, मेष, सिंह, धनु।

बुर्जे आबी (برج آبی) अ. फा. पुं.–जल तत्त्व से सम्बन्ध रखनेवाली तीन राशियाँ, कर्क, वृश्चिक, मीन।

बुर्जे कबूतर (برج‌کبوتر) अ. फा. पुं.–कबूतरों का दरबा, काबुक।

बुर्जे क़ौस (برج قوس) अ. पुं.–धनु राशि, नवाँ बुर्ज।

बुर्जे ख़ाकी (برج خاکی) अ. फा पुं.–पृथ्वीतल से सम्बन्ध रखनेवाली तीन राशियाँ, वृष, कन्या, मकर।

बुर्जे जदी (برج جدی) अ. पुं.–मकर राशि, दसवाँ बुर्ज।

बुर्ज जौज़ा (برج جوزا) अ. पुं.–मिथुन राशि, तीसरा बुर्ज।

बुर्जे दलव (برج‌دلو) अ. पुं.–कुंभराशि, ग्यारहवाँ बुर्ज।

बुर्जे बादी (برج‌بادی) अ. फा. पुं.–वायुतत्त्व से सम्बन्ध रखनेवाली तीन राशियाँ, मिथुन, तुला, कुंभ।

बुर्जे मीज़ान (برج میزان) अ. पुं.–तुलाराशि, सातवाँ बुर्ज।

बुर्जे संबुलः (برج سنبلہ) अ. पुं.–कन्याराशि, छठा बुर्ज।

बुर्जे सर्तान (برج سرطان) अ. पुं.–कर्कराशि, चौथा बुर्ज।

बुर्जे सौर (برج‌ثور) अ. पुं.–वृषराशि, दूसरा बुर्ज।

बुर्जे हमल (برج‌حمل) अ. पुं.–मेषराशि, पहला बुर्ज।

बुर्जे हूत (برج‌حوت) अ. पुं.–मीनराशि, बारहवाँ बुर्ज।

बुर्तलः (برطلہ) अ. पुं.–टोपी।

बुर्दः (بردہ) अ. स्त्री.–ले जाया हुआ।

बुर्द (برد) फा. स्त्री.–शत्रंज की वह बाज़ी जिसमें आधी मात मानी जाती है और जिसमें हारनेवाले के पास बादशाह के सिवा कोई मोहरा नहीं रहता; नक्शी चादर।

बुर्दबार (بردبار) फा. वि.–गंभीर, शान्तचित्त, मलीन; सहनशील, हलीम।

बुर्दबारी (بردباری) फा. स्त्री.–गंभीरता, महत्ता; सहनशीलता, तहम्मुल, बरदाश्त।

बुर्दे यमानी (برد یمانی) अ. स्त्री.–यमन की एक विशेष बहुमूल्य चादर।

बुर्रां (بّراں) फा. वि.–काटता हुआ; धारदार, तीक्ष्ण।

बुर्रिश (برش) फा. स्त्री.–काट, धार, तीक्ष्णता।

बुर्हान (برهان) अ. पुं.–तर्क, दलील; प्रमाण, सुबूत।

बुलंद (بلند) फा. वि.–यह उच्चारण भी शुद्ध है, परन्तु 'बलंद' अधिक शुद्ध और अधिक साधु है, दे. 'बलंद'।

बुलग़ा (بلغا) अ. पुं.–'बलीग़' का बहु., वे लोग जिनके बोलने और लिखने में बलाग़त होती है।

बुलाक़ (بلاق) तु. स्त्री.–नाक के बीच की हड्डी, नासापट; इसमें पहने जानेवाली छोटी-सी नथ।

बुलूग़ (بلوغ) अ. पुं.–युवावस्था, जवानी; जवानी की अवस्था की प्राप्ति।

बुल्अजब (بوالعجب) अ. वि.–अद्भुत, विलक्षण, विचित्र, (व्यक्ति)।

बुल्फ़ुज़ूल (بوالفضول) अ. वि.–फ़ुज़ूल की बातें करनेवाला, मुखर, बक्की; फ़ुज़ूल के काम करनेवाला।

बुल्फ़ुनून (بوالفنون) अ. वि.–बहुत-से गुण जाननेवाला, बहुगुण वेत्ता (व्यंग) धूर्त, छली, वंचक।

बुल्बुल (بلبل) फा. अ.–एक सुप्रसिद्ध गानेवाली चिड़िया, गोवत्सक।

बुल्बुले शीराज़ (بلبل شیراز) फा. पुं.–शीराज़ का बुलबुल, शेख़ सादी की उपाधि जो फ़ारसी के बहुत बड़े कवि थे।

बुल्बुले हज़ारदास्ताँ (بلبل ہزار داستاں) फा. पुं.–बहुत प्रकार के गाने गानेवाली, बुलबुल।

बुल्हवस (بوالہوس) अ. फा. वि.–लोलुप, लिप्सु, लोभी, लालची।

बुशक़ाब (بشقاب) तु. स्त्री.–बड़ी क़ाब, परात, थाल।

बुशारत (بشارت) अ. स्त्री.–शुभ संवाद, ख़ुशख़बरी।

बुश्रः (بشرہ) अ. पुं.–चेह्रा, मुखाकृति, हुल्या।

बुश्रा (بشری) अ. पुं.–शुभ संवाद, बुशारत।

बुसुद (بسد) अ. पुं.–मूँगा, प्रवाल, विद्रुम, मर्जां, दे. 'बुस्सुद' दोनों शुद्ध हैं।

बुस्ताँ (بستاں) फा. पुं.–उद्यान, आराम, वाटिका, बाग़।

बुस्ताँअफ़्रोज़ (بستاں افروز) फा. पुं.–एक फूल, मुर्ग़केस।

बुस्ताँपैरा (بستاں پیرا) फा. पुं.–बाग़ को सजानेवाला, माली, उद्यानपाल।

बुस्ताँसरा (بستاں سرا) फा. पुं.–ख़ानःबाग़, गृहोद्यान।

बुस्तानी (بستانی) फा. वि.–बाग़ का; बाग़ में पैदा होनेवाला; खेत में काश्त किया जानेवाला।

बुस्सुद (بسد) अ. पुं.–मूँगा, प्रवाल, विद्रुम, दे. 'बुसुद' दोनों शुद्ध हैं।

बुहूर (بحور) अ. पुं.–'बह्र' [छंद] का बहु., वृत्तसमूह।

बुहैरः (بحیرہ) अ. पुं.–छोटा समुद्र, सी।

बुह्तत (بہتت) अ. स्त्री.–आश्चर्य, विस्मय, निस्तब्धता, हैरत।

बुह्तान (بہتان) अ. पुं.–आरोप, झूठा इल्ज़ाम, तुह्मत।

बुह्तानतराशी (بہتان تراشی) अ. फा.–झूठा इल्ज़ाम लगाना, मिथ्यारोपण।

बुह्रान (بحران) अ. पुं.–संघर्ष, कशमकश; रोग में अचानक परिवर्तन, कमी की ओर हो चाहे बढ़ती की ओर, और यह प्रकृति और रोग के परस्पर संघर्ष से होता है। अगर प्रकृति जीत गयी तो रोग का ज़ोर टूट जाता है, अगर रोग विजयी हुआ तो प्रकृति हार जाती है और रोग का प्रकोप बढ़ जाता है (यूनानी तिब)।

बुह्लूल (بہلول) अ. पुं.–हँसमुख व्यक्ति; जाति का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, एक महात्मा।

बुह्हतुस्सौत (بحۃالصوت) अ. स्त्री.–आवाज़ बैठ जाने का रोग, स्वरभंग।

बू

बू (بو) फा. स्त्री.–गंध, महँक; बदबू, बुरी गंध; लक्षण, आसार; भेद, सुकसुक।

बूए अफ़्राज़ (بوئے افراز) फा. पुं.–गर्ममसाला।

बूए ख़ुश (بوئے خوش) फा. स्त्री.–अच्छी महँक, सुगंध।

बूए तेज़ (بوئے تیز) फा. स्त्री.–तेज़ बू, तीव्र गंध।

बूए बद (بوئے بد) फा. स्त्री.–बुरी बू, बदबू, दुर्गंधि।

बूए मह्ब्बत (بوئے محبت) फा. अ. स्त्री.–प्रेम की सुगंध।

बूक़ (بوق) फा. पुं.–नरसिंघा, तुरुही।

बूक़लमूँ (بوقلموں) फा. वि.–चित्र-विचित्र, रंगबिरंग; अद्भुत, विलक्षण, अजीबोग़रीब; एक रेशमी कपड़ा जो क्षण-क्षण पर रंग बदलता है।

बूक़लमूनी (بوقلمونی) फा. स्त्री.–विचित्रता, बुलअजबी; रंग-बिरंगापन।

बूज़ः (بوزہ) फा. स्त्री.–जौ की शराब, बियर।

बूज़ःख़ानः (بوزہ خانہ) फा. पुं.–शराबख़ानः, मदिरालय; शराब बनाने की जगह, भट्ठी।

बूज़िनः (بوزنہ) फा. पुं.–'बूज़ीनः' का लघु., कपि, मर्कट, वानर, शाखा-मृग, बंदर।

बूज़िनःचश्म (بوزنہ چشم) फा. वि.–बंदर-जैसी आँखोंवाला, ज़रा-सी देर में आँखें फेर लेनेवाला, बेमुरव्वत, दुःशील।

बूज़िनःवश (بوزنہ وش) फा. वि.–बंदर-जैसी प्रकृतिवाला, बेमुरव्वत; शरीर, नटखट।

बूज़ीदान (بوزیدان) फा. स्त्री.–एक लकड़ी जो दवा के काम आती है।

बूज़ीनः (بوزینہ) फा. पुं.–वानर, मर्कट, कपि, बंदर, वलिमुख।

बूतः (بوتہ) फा. पुं.–सुनारों की चाँदी-सोना गलाने की घरिया, बोतः, दे. 'बोतः', दोनों शुद्ध हैं; वह वृक्ष जो बड़ा न हो।

बूतए ख़ाक (بوتۂ خاکی) फा. पुं.–मानव-शरीर, आदमी का जिस्म।

बूतए ज़र (بوتۂ زر) फा. पुं.–सोना गलाने की घरयिा।

बूतीमार (بوتیمار) फा. पुं.–बक, बगला।

बूतुराब (بوتراب) अ. पुं.–हज़्रत अली की उपाधि।

बूदः (بودہ) फा. क्रि.–था।

बूद (بود) फा. क्रि.–था; (स्त्री.) अस्तित्व, हस्ती; हैसियत, मर्यादा।

बूदगी (بودگی) फा. स्त्री.–होना, हस्ती, अस्तित्व; हैसियत, मर्यादा।

बूदनी (بودنی) फा. अव्य.–होने योग्य।

बूदमे बेदाल (بودم بے دال) फा. पुं.–बूम, उल्लू, (बूदम शब्द से दाल अक्षर अर्थात् 'द' निकल जाय तो 'बूम' रह जाता है)।

बूदार (بودار) फा. वि.–बदबूदार, दुर्गंधयुक्त।

बूदोबाश (بودوباش) फा. स्त्री.–रहन-सहन, रहाइश।

बुद्नः (بودنہ) फा. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण, 'बोदनः'।

बूबक्र (بوبکر) अ. पुं.–'अबूबक्र' का लघु., हज़्रत अबूबक्र सिद्दीक़, पहले ख़लीफ़ा।

बूम (بوم) फा. पुं.–उलूक, पेचक, उल्लू; बंजर भूमि; प्रकृति, स्वभाव; मूर्ख, बेवक़ूफ़।

बूमख़स्लत (بومخصلت) फा. अ. वि.–उल्लू-जैसे स्वभाववाला, जहाँ रहे वहाँ वीरान बना दे।

बूमतिला (بومطلا) फा. वि.–वह चीज़ जिसकी ज़मीन सुनहरी हो और बेलबूटे दूसरे रंग के।

बूमसिफ़त (بومصفت) फा. अ. वि.–दे. 'बूमख़स्लत'।

बूमी (بومی) फा. वि.–देशीय, देसी; देशवासी, हमवतन।

बूया (بویا) फा. वि.–सुगंध देनेवाली वस्तु; ख़ुशबूदार, सुगंधित।

बूयीदः (بوئیدہ) फा. वि.–सूँघा हुआ।

बूरः (بورہ) फा. पुं.–सुहागा।

बूरए अर्मनी (بورۂارمنی) फा. पुं.–एक प्रकार का नमक, एक प्रकार का सोडा।

बूरक़ (بورق) अ. पुं.–कचलोन।

बूरानी (بورانی) फा. स्त्री.–बैंगन का राइता।

बे

बेअंदाज़ः (بےاندازہ) फा. वि.–बहुत अधिक, जिसका अंदाज़ा न हो सके।

बेअंदाम (بےاندام) फा. वि.–धृष्ट, गुस्ताख़; अशिष्ट, बदतमीज़।

बेअक़्ल (بےعقل) फा. अ. वि.–निर्बुद्धि, मूर्ख, बेशऊर।

बेअदब (بےادب) फा. अ. वि.–धृष्ट, गुस्ताख़; अशिष्ट, बेतमीज़; उद्दंड, उजड्ड; असभ्य, बेतहज़ीब।

बेअदबी (بےادبی) फा. अ. स्त्री.–धृष्टता, गुस्ताख़ी; अशिष्टता, बेतमीज़ी; उद्दंडता, उजड्डपन; असभ्यता, बदतहज़ीबी।

बेअमल (بےعمل) फा. अ. वि.–जो जानता हो मगर उसके अनुसार व्यवहार न करता हो, अकर्मण्य; निकम्मा।

बेअसर (بےاثر) फा. अ. वि.–निष्फल, बेनतीज़ा; अगुणकर, जो तासीर न दिखाये (दवा आदि)।

बेअस्ल (بےاصل) फा. वि.–निर्मूल, निराधार, वस्तुशून्य, बेबुनियाद।

बेआज़ार (بےآزار) फा. वि.–जो किसी को कष्ट न दे।

बेआबरू (بےآبرو) फा. वि.–अपमानित, तिरस्कृत।

बेआबोदानः (بےآب ودانہ) फा. वि.–बेकुछ खाये-पिये, अन्न-जलहीन।

बेआबोरंग (بےآب ورنگ) फा. वि.–निःश्री, बेरौनक़।

बेआराम (بےآرام) फा. वि.–बेचैन, अशान्त, व्याकुल; निरानंद, विसुख, ग़ैर मस्रूर।

बेआरामी (بےآرامی) फा. स्त्री.–बेचैनी, व्याकुलता, आनंदाभाव, तकलीफ़।

बेइंतिहा (بےانتہا) फा. अ. वि.–असीम, अपार, बेहद।

बेइख़्तियार (بےاختیار) फा. अ. वि.–सहसा, बेतहाशा, अधिकारहीन—"ग़ैरों को आज बज़्म में उसकी रुला दिया, बेइख़्तियार नालए बेइख़्तियार ने।"—दाग़।

बेइख़्तियारानः (بےاختیارانہ) फा. अ. अव्य.–बेतहाशा, सहसा।

बेइख़्तियारी (بےاختیاری) फा. अ. स्त्री.–विवशता, मजबूरी।

बेइज़्ज़त (بےعزت) फा. अ. वि.–अपमानित, तिरस्कृत; निंदित, गर्हित, रुसवा।

बेइज़्ज़ती (بےعزتی) फा. अ. स्त्री.–अपमान, तिरस्कार; निंदा, रुसवाई।

बेइल्म (بےعلم) फा. अ. वि.–विद्याहीन, इल्म से ख़ाली; निरक्षर, बेपढ़ा-लिखा, जाहिल।

बेइल्मी (بےعلمی) फा. अ. स्त्री.–विद्याभाव, इल्म न होना; निरक्षरता, जहालत।

बेइश्तिबाह (بےاشتباہ) फा. अ. वि.–निःसंदेह, निःशंक, बेशुब्हः।

बेईमान (بےایمان) फा. अ. वि.–बददियानत।

बेईमानी (بےایمانی) फा. अ. स्त्री.–बददियानती।

बेउज़्र (بےعذر) फा. अ. वि.–जिसे किसी काम के करने में आपत्ति न हो, वह जिससे जो कुछ कहा जाय उसे तुरन्त करे।

बेउसूल (بےاصول) फा. अ. वि.–जिस व्यक्ति का कोई नियम न हो।

बेएतिदाली (بےاعتدالی) फा. अ. स्त्री.–किसी काम में हद से आगे बढ़ जाना; बदपरहेज़ी।

बेएतिनाई (بےاعتنائی) फा. अ. स्त्री.–तवज्जुह न करना, ध्यान न देना, उपेक्षा।

बेएतिबार (بےاعتبار) फा. अ. वि.–अविश्वस्त, अविश्वसनीय, नामो'तबर।

बेएतिबारी (بےاعتباری) फा. अ. स्त्री.–अविश्वास, एतिबार न होना।

बेऐब (بےعیب) फा. अ. वि.–निर्दोष, निर्मल, जिसमें कोई खोंट न हो।

बेऔलाद (بےاولاد) फा. अ. वि.–जिसके कोई संतान न हो, अनपत्य, निःसंतान।

बेक़द्र (بےقدر) फा. अ. वि.–अप्रतिष्ठित, अनादृत, बेइज्ज़त; अपमानित, ज़लील।

बेक़द्री (بےقدری) फा. अ. स्त्री.–अप्रतिष्ठा, बेइज्ज़ती; अपमान, ज़िल्लत।

बेकमोकास्त (بےکم وکاست) फा. वि.–दे. 'बेकमोबेश'।

बेकमोबेश (بےکم وبیش) फा. वि.–घटाये-बढ़ाये बग़ैर, ज्यों-का-त्यों, यथावत्।

बेकराँ (بےکراں) फा. वि.–जिसका किनारा न हो, अपार, असीम।

बेकरानः (بےکرانہ) फा. वि.–दे. 'बेकराँ'।

बेक़रार (بےقرار) फा. अ. वि.–व्याकुल, आतुर, बेचैन; घबड़ाया हुआ, उद्विग्न।

बेक़रारी (بےقراری) फा. अ. स्त्री.–व्याकुलता, बेचैनी; घबराहट, बदहवासी।

बेक़रीनः (بےقرینہ) फा. अ. वि.–बेतर्तीब, क्रमहीन, असंबद्ध; अशिष्ट, बेतमीज़।

बेकस (بےکس) फा. वि.–दुःखित, दुखी, कष्टग्रस्त, पीड़ित, तक्लीफ़ज़दः; निस्सहाय, निराश्रय, बेयारो मददगार।

बेकसी (بےکسی) फा. स्त्री.–दुःख, कष्ट, वित्ति, तक्लीफ़; निःसहायता, बेवसी।

बेक़ाइदः (بےقاعدہ) फा. अ. वि.–बेर्तीब, असंबद्ध; नियम-विरुद्ध, वेज़ाबितः।

बेक़ाइदगी (بےقاعدگی) फा. अ. स्त्री.–असंबद्धता, बेतर्तीबी; नियम-विरोध, बेज़ाबितगी।

बेक़ाबू (بےقابو) फा. वि.–जो क़ाबू में न आ सके, निरंकुश, उच्छासन।

बेकार (بیکار) फा. वि.–जो काम में न लगा हो, निरुद्यम; व्यर्थ, निरर्थक फ़ुज़ूल; निकम्मा, अपाहज,; प्रयोगहीन, नाक़ाबिले इस्तेमाल।

बकारी (بیکاری) फा. स्त्री.–काम का अभाव; व्यर्थपन; निकम्मापन; प्रयोगहीनता।

बेक़ियास (بےقیاس) फा. अ. वि.–बेहिसाब, अत्यधिक।

बेक़ुसूर (بےقصور) फा. अ. वि.–निरपराध, निर्दोष, वेगुनाह।

बेक़ैद (بےقید) फा. अ. वि.–बिला शर्त, बिला पाबंदी के।

बेकैफ़ोकम (بےکیف وکم) फा. अ. वि.–ठीक-ठीक, यथार्थ।

बेख़ (بیخ) फा. स्त्री.–मूल, जड़।

बेख़कन (بیخ کن) फा. वि.–जड़ खोदनेवाला, नाश करनेवाला।

बेख़कनी (بیخ کنی) फा. स्त्री.–उन्मूलन, जड़ खोदना, नाश करना।

बेख़तर (بےخطر) फा. अ. वि.–निडर होकर, निर्भय होकर; जिससे अनिष्ट की आशंका न हो।

बेख़ता (بےخطا) फा. अ. वि.–अमोघ, कारगर, अचूक।

बेख़बर (بےخبر) फा. अ. वि.–संज्ञाहीन, वेहोश; सूचनाहीन, जिसे इत्तिलाअ न हों; अज्ञात, नावाक़िफ़।

बेख़बरी (بےخبری) फा. अ. स्त्री.–संज्ञाहीनता, वेसुधपन; सूचना न होना; नावाक़फ़ीयत।

बेख़ानोमाँ (بےخان ومان) फा. वि.–जिसका घर-बार नष्ट हो गया हो।

बेख़ार (بےخار) फा. वि.–जिस में काँटे न हों, निष्कंटक।

बेख़िरद (بےخرد) फा. वि.–वुद्धिहीन, बेअक़्ल।

बेख़ुद (بےخود) फा. वि.–अचेत, निश्चेष्ट, बेसुध।

बेख़ुदी (بےخودی) फा. स्त्री.–अचैतन्य, बेख़बरी।

बेख़ुरोख़्वाब (بےخور وخواب) फा. वि.–बग़ैर खाये और सोये, बग़ैर आराम के।

बेख़ेश (بےخویش) फा. वि.–जिसका कोई अपना न हो।

बेख़ोबुन (بیخ وبن) फा. स्त्री.–जड़बुन्याद।

बेख़्तः (بیختہ) फा. वि.–छाना हुआ।

बेख़्तगी (بیختگی) फा. स्त्री.–छानन।

बेख़्तनी (بیختنی) फा. वि.–छानने के क़ाबिल।

बेख़्वाब (بےخواب) फा. वि.–जिसे नींद न आये, अनिद्र।

बेख़्वाबी (بےخوابی) फा. स्त्री.–नींद न आना, नींद न आने का रोग, अनिद्रा।

बेख़्वास्त (بےخواست) फा. वि.–बे बुलाया हुआ, अनियंत्रित, बिना चिंता और तलाश के स्वयं आया हुआ।

बेख़्वाहिशी (بےخواهشی) फा. स्त्री.–इच्छा का अभाव, इच्छा न होना, निस्पृहता, अनिच्छा।

बेग (بیگ) तु. पुं.–नायक, अध्यक्ष, सरदार; मुग़लों का क़ौमी लक़ब।

बेग़म (بیغم) तु. स्त्री.–दे. 'वेगम'।

बेग़म (بےغم) फा. अ. वि.–जिसे कोई चिंता न हो, निश्चिंत।

बेगम (بیگم) तु. स्त्री.–श्रीमती, महोदया; पत्नी, बीवी, शुद्ध उच्चारण 'बेगिम' है, परन्तु उर्दू में 'वेगम' ही व्यवहृत है।

बेगमात (بیگمات) तु. फा. स्त्री.–'बेगम' का बहु., बेगमें, महिलाएँ।

बेग़मी (بےغمی) फा. अ. स्त्री.–वेफ़िक्री, निश्चिंतता।

बेग़रज़ (بےغرض) फा. अ. वि.–निःस्वार्थ, जिसका कोई स्वार्थ न हो।

बेग़रज़ानः (بےغرضانہ) फा. अ. अव्य.–निःस्वार्थतापूर्वक।

बेग़रज़ी (بےغرضی) फा. अ. स्त्री.–निःस्वार्थता, ख़ुलूस।

बेगानः (بیگانہ) फा. वि.–अस्वजन, पराया, ग़ैर आदमी; अपरिचित, अनजान।

बेगानःख़ू (بیگانہخو) फा. वि.–बेगानों-जैसा व्यवहार करनेवाला, मेल-जोल न रखनेवाला।

बेगानःवश (بیگانہوش) फा. वि.–बेगानों की तरह रहनेवाला, मेलजोल न रखनेवाला।

बेगानःवशी (بیگانہوشی) फा. स्त्री.–बेगानो की भाँति रहना, मेलजोल न रखना।

बेगानःवार (بیگانہوار) फा. वि.–बेगानों की तरह, जैसे कभी की जान-पहचान ही न हो।

बेगानःसिफ़त (بیگانہصفت) फा. अ. वि.–दे. 'बेगानःवार'।

बेगानगी (بیگانگی) फा. स्त्री.–अस्वजनता, परायापन; अपरिचय, अनजानपन; ज्ञान का न होना, बेइल्मी।

बेग़ायत (بےغایت) फा. अ. वि.–बेहद, अत्यंत, अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

बेगार (بیگار) फा. स्त्री.–वह काम जो ज़बरदस्ती लिया जाय और मज़्दूरी न दी जाय, विष्टि; वह काम जो दिल लगाकर न किया जाय।

बेगारी (بیگاری) फा. वि.–बेगार में काम पर पकड़ा हुआ; उचाटमन से काम करनेवाला।

बेगाह (بےگاہ) फा. वि.–नावक़्त, शाम का वक़्त, सायंकाल।

बेगाहाँ (بےگاھاں) फा. वि.–दे. 'बेगाह'।

बेग़िलोग़िश (بےغل وغش) फा. अ. वि.–बिना खटके, निश्चिंत।

बेगुनाह (بےگناہ) फा. वि.–निर्दोष, निष्पाप, बेक़ुसूर।

बेगुनाही (بےگناھی) फा. स्त्री.–निर्दोषता, बेक़ुसूरी।

बेगुमाँ (بےگماں) फा. वि.–सहसा, अचानक; निःसंदेह, बेशुब्हा।

बेग़ैरत (بےغیرت) फा. अ. वि.–निर्लज्ज, बेहया; अस्वाभिमानी, ग़ैर ख़ुददार।

बेग़ैरती (بےغیرتی) फा. अ. स्त्री.–निलज्जता, बहयाई; अस्वाभिमान, ख़ुददारी न होना।

बेगोरोकफ़न (بےگوروکفن) फा. अ. वि.–वह मृत व्यक्ति जिसे न कफ़न मिला हो न दफ़्न हुआ हो।

बेचारः (بےچارہ) फा. वि.–दुखी, निःसहाय, निरुपाय, बेकस; दरिद्र, कंगाल।

बेचारगी (بےچارگی) फा. स्त्री.–दीनता, हीनता, बेकसी; दरिद्रता, मुफ़लिसी।

बेचिराग़ (بےچراغ) फा. वि.–जिसके घर में चिराग़ न हो, दरिद्र; जिसके औलाद न हो, निःसंतान।

बेचूँ (بےچوں) फा. वि.–अद्वितीय, अनुपम, बेमिस्ल।

बेचूनोचरा (بےچوں وچرا) फा. वि.–ब कुछ कहे सुने, बिना किसी उज़्र के, बिना कान हिलाये।

बेचूनोचिगूँ (بےچوں وچگوں) फा. वि.–दे. 'बेचूनोचरा'।

बेज़ (بیز) फा. प्रत्य.–छाननेवाला, फैलानेवाला, जैसे–'मुश्कबेज़' मुश्क की सुगंध फैलानेवाला।

बेज़बान (بےزبان) फा. वि.–जो कुछ कहना न जानता हो, जो किसी बात की शिकायत न करता हो।

बेज़बानी (بےزبانی) फा. स्त्री.–चुप रहना, कोई शिकायत आदि न करना।

बेज़र (بےزر) फा. वि.–निर्धन, धनहीन, कंगाल, मुफ़लिस।

बेज़रर (بےضرر) फा. अ. वि.–जिससे कोई हानि न पहुँचे।

बेज़री (بےزری) फा. स्त्री.–निर्धनता, कंगाली।

बेजा (بےجا) फा. वि.–अनुचित, नामुनासिब; असंगत, बेतुका।

बेजान (بےجان) फा. वि.–निर्जीव, निष्प्राण, बेरूह।

बेज़ार (بیزار) फा. वि.–पराङ्मुख, विमुख, मुंह फेरे हुए; क्रुद्ध, अप्रसन्न, नाख़ुश।

बेज़ारी (بیزاری) फा. स्त्री.–पराङ्मुखता, विमुखता, मुंह फेरना; रोष, कोप, नाख़ुशी।

बेजिगर (بےجگر) फा. वि.–निडर, निर्भय, बेख़ौफ़, (फ़ार्सी में डरपोक, भीरु)।

बेजिगरी (بےجگری) फा. स्त्री.–निभयता, निडरपन, बेख़ौफ़ी, (फ़ार्सी में भीरुता, डरपोकपन)।

बेज़िनहार (بےزنہار) फा. वि.–बेपनाह, जिससे बचाव न हो सके, घातक।

बेजिहत (بےجہت) फा. अ. वि.–अकारण, बिला सबब।

बेजुर्म (بےجرم) फा. अ. वि.–निर्दोष, निष्पाप, बेक़ुसूर।

बेजुर्मी (بےجرمی) फा. अ. स्त्री.–निर्दोषता, निरपराधता, बेक़ुसूरी।

बेतअम्मुल (بےتامل) फा. अ. वि.–निःसंकोच, बेखटके।

बेतअल्लुक़ (بےتعلق) फा. अ. वि.–बेलगाव, जिसे कोई लगाव न हो, किसी प्रकार का सम्बन्ध न हो, जो दख़्ल न दे।

बेतअल्लुक़ी (بےتعلقی) फा. अ. स्त्री.–सम्बन्ध का न होना, लगाव न होना।

बेतअस्सुब (بےتعصب) फा. अ. वि.–जिसमें धार्मिक पक्षपात न हो।

बेतअस्सुबी (بےتعصبی) फा. अ. स्त्री.–धर्म-सम्बन्धी पक्षपात न होना।

बेतकल्लुफ़ (بےتکلف) फा. अ. वि.–घनिष्ठ, अंतरंग, गहरा; निःसंकोच, बेखटके; संतोषपूर्वक, आराम से।

बेतकल्लुफ़ी (بےتکلفی) फा. अ. स्त्री.–घनिष्ठता, गहराई; संकोच न होना, झक न होना।

बेतकान (بےتکان) फा. वि.–बिना थके हुए; निरंतर, लगातार।

बेतमा (بےطمع) फा. अ. वि.–जिसे कोई लालच न हो, निःस्पृह, बेनियाज़।

बेतमीज़ (بےتمیز) फा. अ. वि.–अशिष्ट, बेसलीक़ः; असभ्य, नामुहज़्ज़ब; उद्दंड, सरकश; धृष्ट, गुस्ताख़।

बेतमीज़ी (بےتمیزی) फा. अ. स्त्री.–अशिष्टता; असभ्यता; उद्दंडता; धृष्टता।

बेतरद्दुद (بےتردد) फा. अ. वि.–बेखटके, निश्चिंत; बे जोती बोई ज़मीन।

बेतरह (بےطرح) फा. अ. वि.–बुरी तरह, ख़ूब-ख़ूब, बहुत अधिक।

बेतर्तीब (بےترتیب) फा. अ. वि.–जिसमें कोई क्रम न हो, असंबद्ध, क्रमहीन।

बेतर्तीबी (بےترتیبی) फा. अ. स्त्री.–कोई क्रम न होना, असंबद्धता।

बेतलब (بےطلب) फा. अ. वि.–बिना माँगे हुए; बिना बुलाये हुए।

बेतहाशा (بےتحاشا) फा. अ. वि.–अचानक, अकस्मात्; सहसा, यकायक; अंधाधुंध, बहुत अधिक।

बेताक़त (بےطاقت) फा. अ. वि.–निर्बल, अशक्त, बेज़ोर।

बेताक़ती (بےطاقتی) फा. अ. स्त्री.–निर्बलता, अशक्ति, बेज़ोरी।

बेताब (بےتاب) फा. वि.–व्याकुल, बेचैन; अधीर, बेसब्र; उत्कंठित, मुश्ताक़; अशक्त, नाताक़त।

बेताबानः (بےتابانہ) फा. अव्य.–बेताबी के साथ, अधैर्यपूर्वक, उत्कंठा के साथ।

बेताबी (بیتابی) फा. स्त्री.–व्याकुलता, बेचैनी; अधैर्य, बेसब्री; उत्कंठा, इश्तियाक़; अशक्ति, बेज़ोरी।

बेतासीर (بےتاثیر) फा. अ. वि.–जिसमें असर न हो, अभावकारी।

बेतौक़ीर (بےتوقیر) फा. अ. वि.–बेइज़्ज़त, अपमानित, तिरस्कृत।

बेद (بید) फा. पुं.–एक प्रकार की लचीली लकड़ी, वेत्र, वेंत।

बेदइंजीर (بیدانجیر) फा. पुं.–अरंड, अंडी।

बेदख़्ल (بےدخل) फा. अ. वि.–जिसका कब्ज़ा हट गया हो, अधिकार-च्युत।

बेदख़्ली (بےدخلی) फा. अ. स्त्री.–कब्ज़ा हट जाना।

बेदबाफ़ (بیدباف) फा. पुं.–वेंत की बुनाई का काम करनेवाला।

बेदम (بےدم) फा. वि.–अशक्त, निर्बल, बेज़ोर।

बेदर्द (بےدرد) फा. वि.–जिसमें दर्द न हो, निर्दय, बेरहम, पाषाण-हृदय, संगदिल।

बेदर्दी (بےدردی) फा. स्त्री.–दर्द का अभाव, निर्दयता।

बेदस्तोपा (بےدست وپا) फा. वि.–जिसके हाथ-पाँव न हों, निःसहाय, निराश्रय।

बेदस्तोपाई (بےدست وپائی) फा. स्त्री.–हाथ-पाँव न होना, आश्रय न होना, सहारा न होना।

बेदहन (بےدهن) फा. वि.–दे. 'बेज़बाँ'।

बेदाग़ (بےداغ) फा. वि.–जिसमें दाग़ धब्बा न हो; निर्दोष, बेऐब।

बेदाद (بےداد) फा. स्त्री.–अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म।

बेदादख़ू (بیدادخو) फा. वि.–जिसका स्वभाव अत्याचार करना हो।

बेदादगर (بیدادگر) फा. वि.–अत्याचार करनेवाला, अत्याचारी।

बेदादगरी (بیدادگری) फा. स्त्री.–अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म।

बेदादपेशः (بیدادپیشہ) फा. वि.–दे. 'बेदादगर'।

बेदादफ़न (بیدادفن) फा. वि.–दे. 'बेदादगर'।

बेदानः (بےدانہ) फा. वि.–जिसके अंदर बीज न हो, जैसे—बेदाना अमरूद।

बेदानिश (بےدانش) फा. वि.–बेइल्म, विद्याहीन; बुद्धिहीन, मूर्ख।

बेदानिशी (بےدانشی) फा. स्त्री.–विद्या का अभाव; बुद्धिहीनता।

बेदार (بےدار) फा. वि.–जाग्रत, सचेत, सोने से उठा हुआ।

बेदारदिल (بےداردل) फा. वि.–जिसका दिल जागता रहता हो, जाग्रतात्मा, महात्मा।

बेदारदिल (بیداردل) फा. वि.–हर बात की ऊँच-नीच समझकर उसी के अनुसार काम करनेवाला, बुद्धि-कुशल।

बेदारमग़्ज़ी (بیدارمغزی) फा. स्त्री.–समय के अनुसार काम करना।

बेदारी (بیداری) फा. स्त्री.–जाग्रति, जागरण।

बेदाश्त (بےداشت) फा. वि.–बेपर्वा, निश्चिंत।

बेदिमाग़ (بےدماغ) फा. अ. वि.–बदमिज़ाज, चिड़चिड़ा; अप्रसन्न, नाराज़।

बेदिरंग (بےدرنگ) फा. वि.–बिना बिलंब के, तुरंत, शीघ्र, तत्क्षण, फ़ौरन।

बेदिरेग़ (بےدریغ) फा. वि.–बे सोचे-समझे; अंधाधुंध; बहुत अधिक; बिना संकोच के।

बेदिल (بےدل) फा. वि.–उदास, खिन्न, अफ़्सुर्दः; मनउचाट, बददिल।

बेदिली (بےدلی) फा. स्त्री.–उदासी; मनउचाट होना।

बेदीन (بےدین) फा. अ. वि.–नास्तिक, नेचरी; विधर्मी, धर्मरहित, ला मज़्हब।

बेदीनी (بےدینی) फा. अ. स्त्री.–नास्तिकता, नेचरीयत; धर्महीनता, ला मज़हबी।

बेदे मज्नूँ (بید مجنوں) फा. अ. पुं.–एक प्रकार का बेद।

बेदे मुश्क (بید مشک) फा. पुं.–एक प्रकार का बेद, जिसके पत्तों के अरक़ से बेद मुश्क बनता है।

बेदे सादः (بید سادہ) फा. पुं.–बिना ख़ुशबूवाला बेद, जो दवा में चलता है।

बेदौलती (بے دولتی) फा. अ. स्त्री.–बद इक़्बाली, प्रतापहीनता; निर्धनता, मुफ़लिसी।

बेनंगोनामूस (بےننگ وناموس) फा. अ. वि.–जिसे न अपनी और न अपने कुल के मर्यादा की लज्जा हो, निर्लज्ज।

बेनज़ीर (بےنظیر) फा. अ. वि.–अद्वितीय, अनुपम, बेमिस्ल।

बेनमक (بےنمک) जिसमें नमक न हो (खाना); जिसमें लावण्य न हो, जो सुंदर न हो।

बेनमकी (بےنمکی) फा. स्त्री.–खाने में नमक न होना; अप्रसन्नता, वैमनस्य, रंजिश; मज़ा किरकिरा होना, बेलुत्फ़ी।

बेनवा (بےنوا) फा. वि.–जिसके पास जीवनयापन की कोई सामग्री न हो, दरिद्र, कंगाल।

बेनवाई (بےنوائی) फा. स्त्री.–दरिद्रता, कंगाली।

बेनसीब (بےنصیب) फा. अ. वि.–बदक़िस्मत, मंदभाग्य, भाग्यहीन।

बेनसीबी (بےنصیبی) फा. अ. स्त्री.–बदक़िस्मती, भाग्यहीनता।

बेनाम (بےنام) फा. वि.–जिसका कोई नाम न हो, अनामक।

बेनामोनिशाँ (بےنام ونشاں) फा. वि.–जिसका कोई अता-पता न हो, गुमनाम।

बेनामोनुमूद (بےنام و نمود) फा. वि.–दे. 'बेनामोनिशाँ'।

बेनियाज़ (بےنیاز) फा. वि.–जिसे किसी से कुछ लेने की इच्छा न हो, निःस्पृह; स्वच्छंद, आज़ाद, बेपर्वा।

बेनियाम (بےنیام) फा. वि.–म्यान से बाहर, नंगी तलवार; आपे से बाहर, ग़ुस्से में बेक़ाबू।

बेनियाज़ी (بےنیازی) फा. स्त्री.–निस्पृहता, किसी चीज़ की इच्छा न होना; बेपर्वाई, उपेक्षा।

बेनिहायत (بےنہایت) फा. अ. वि.–अत्यधिक, अपार, असीम, जिसका अंत न हो।

बेनुक़त (بےنقط) फा. अ. वि.–शब्दों पर नुक़्ते न हों, ऐसी इबारत; बहुत अधिक गालीगलौज।

बेनैले मराम (بےنیل مرام) फा. अ. अव्य.–उद्देश्य में सफलता के बिना, असफल मनोरथ, नाकाम।

बेपनाह (بےپناہ) फा. वि.–जिससे रक्षा न हो सके, बेअमान।

बेपर (بےپر) फा. वि.–जिसके पर न हो, विवश, लाचार; निःसहाय, बेमदद।

बेपरोबाल (بےپروبال) फा. वि.–जिसके पर और बाज़ू न हों; विवश, लाचार; निराश्रय, बेसहारा।

बेपरोबाली (بےپروبالی) फा. स्त्री.–विवशता, लाचारी; निःसहायता, बेसहारापन।

बेपर्दः (بےپردہ) फ़ा. वि.–बिना आड़ के; खुल्लमखुल्ला; स्पष्ट, वाज़ेह; बिना बुर्क़ा ओढ़े हुए (स्त्री.)।

बेपर्दगी (بےپردگی) फा. स्त्री.–स्त्री का पर्दे में न रहना; स्त्रियों का अन्य पुरुष के सामने होना।

बेपर्वा (بےپروا) फा. वि.–निश्चिंत, बेफ़िक्र; निस्पृह, बेनियाज़; अभय, निडर।

बेपर्वाई (بےپروائی) फा. स्त्री.–निश्चिंतता; निःस्पृहता; भयहीनता।

बेपायाँ (بےپایاں) फा. वि.–जिसका अंत न हो, असीम, बेहद।

बेपीर (بےپیر) फा. वि.–जिसका कोई गुरु न हो; निर्दय, निष्ठुर, ज़ालिम।

बेफ़ाइदः (بےفائدہ) फा. अ. वि.–व्यर्थ, वृथा, बेकार, फ़ुज़ूल; बिना प्रयोजन का, निष्प्रयोजन, रद्दी।

बेफ़िक्र (بےفکر) फा. अ. वि.–निश्चित, बेपर्वा; अदूरदर्शी, नाआक़िबत बीं; अभय, निडर।

बेफ़िक्री (بےفکری) फा. अ. स्त्री.–निश्चितता; अदूरदर्शिता; निडरपन, निर्भयता।

बेफ़ैज़ (بےفیض) फा. अ. वि.–अनुपकारी, जिससे किसी को लाभ न हो; अपयशी, जिसका कोई यश न हो; कृपण, कंजूस।

बेबक़ा (بےبقا) फा. अ. वि.–अनित्य, नश्वर, नाशवान्, फ़ानी।

बेबदल (بےبدل) फा. अ. वि.–जिसका जोड़ा न हो, अकेला, अद्वितीय, लासानी।

बेबर्गोनवा (بےبرگ ونوا) फा. वि.–बेसाज़ो सामान, निर्धन; निराश्रय, निःसहाय, बेकस।

बेबर्गोबार (بےبرگ وبار) फा. वि.–बेफलफूल का अर्थात् बे औलाद, निःसंतान; निर्धन, कंगाल।

बेबसर (بےبصر) फा. अ. वि.–दृष्टिहीन, अंधा।

बेबहा (بےبہا) फा. वि.–अमूल्य, बहुमूल्य, बेशक़ीमत।

बेबह्रः (بےبہرہ) फा. वि.–वंचित, मह्रूम; अभागा, बदक़िस्मत।

बेबाक़ (بےباق) फा. अ. वि.–जिसके ज़िम्मे ऋण आदि का बक़ाया न रहा हो, परिशुद्ध, ऋणमुक्त।

बेबाक (بےباک) फा. वि.–धृष्ट, गुस्ताख़; निर्लज्ज, बेहया; अभय, निडर; मुक्तकंठ, मुँहफट।

बेबाकानः (بےباکانہ) फा. अव्य.–धृष्टतापूर्वक; निर्लज्जतापूर्वक; निडरता के साथ; मुँहतोड़।

बेबाक़ी (بےباقی) फा. अ. स्त्री.–ऋण आदि की चुकती, परिशोधन।

बेबाकी (بےباکی) फा. स्त्री.–धृष्टता; निर्लज्जता; निडरपन, मुँहफटपना।

बेबालोपर (بےبال وپر) फा. वि.–निःसहाय, निराश्रय, बेकस, बेबस; निर्धन, कंगाल; जिसके पास जीविका का कोई साधन न हो।

बेबिज़ाअत (بےبضاعت) फा. अ. वि.–जिसके पास पूँजी न हो, निर्धन; जो असमर्थ हो; जो कमइल्म हो।

बेबुन्याद (بےبنیاد) फा. वि.–निराधार, बेअस्ल; मिथ्या, झूठ।

बेमक़्दूर (بےمقدور) फा. अ. वि.–असमर्थ, बेमक़्दरत; अप्रतिष्ठित, बेइज़्ज़त।

बेमग़्ज़ (بےمغز) फा. अ. वि.–निर्बुद्धि, बेअक़्ल; पोच, तुच्छ, लचर; निःसार, खोखला।

बेमज़ः (بےمزہ) फा. वि.–निस्वाद, नीरस, फीका; आनंदरहित, बेलुत्फ़।

बेमज़गी (بےمزگی) फा. स्त्री.–नीरसता फीकापन, स्वाद की ख़राबी; आनंद का अभाव, बेलुत्फ़ी।

बेमस्रफ़ (بےمصرف) फा. अ. वि.–निरर्थक, बेकार; निष्प्रयोजन, नाकार आमद।

बेमहल (بےمحل) फा. अ. वि.–बेमौक़ा, अवसर के विरुद्ध, बेवक़्त; अनुचित, नामुनासिब।

बेमहाबा (بےمحابا) फा. वि.–बेधड़क, संकोच के बिना; तड़ातड़, बेतहाशा; बेपर्दा, खुले मुँह।

बेमा'ना (بےمعنیٰ) फा. अ. वि.–निरर्थक, जिसका कोई अर्थ न हो; व्यर्थ, बेकार, फ़ुज़ूल; निष्फल, बेनतीजा।

बेमानिंद (بےمانند) फा. वि.–जिसकी कोई तुलना न हो, अद्वितीय, अनुपम, बेमिस्ल।

बेमा'नी (بےمعنی) फा. अ. वि.–दे. 'बेमा'ना'।

बेमायः (بےمایہ) फा. वि.–जिसके पास पूँजी न हो, निर्धन; जिसके पास विद्या रूपी पूँजी न हो, बेइल्म।

बेमायगी (بےمایگی) फा. स्त्री.–दरिद्रता, निर्धनता; विद्याहीनता, बेइल्मी, अपांडित्य।

बेमिक़्दार (بےمقدار) फा. अ. वि.–अपमानित, तिरस्कृत, बेइज़्ज़त; अधम, नीच, कमीना।

बेमिन्नते ग़ैरे (بےمنتِ غیرے) फा. अ. अव्य.–दूसरे की ख़ुशामद किये बिना, दूसरे का एहसान लिये बिना।

बेमिसाल (بےمثال) फा. अ. वि.–अनुपम, असमान, अतुल्य, बेनज़ीर, लाजवाब।

बेमिस्ल (بےمثل) फा. अ. वि.–दे. 'बेमिसाल'।

बेमिहार (بےمہار) फा. वि.–जिसकी नाक में नकेल न हो, अर्थात् निरंकुश, स्वच्छंद, आज़ाद, बेलगाम।

बेमुरव्वत (بےمروت) फा. अ. वि.–जिसमें शील संकोच न हो, दुःशील, तोताचश्म, अख्खड़, उजड्ड; निष्ठुर, बेरह्म।

बेमुरव्वती (بےمروتی) फा. अ. स्त्री.–दुःशीलता, तोताचश्मी; अख्खड़पन; निर्दयता, बेरह्मी।

बेमेह्र (بےمہر) फा. अ. वि.–निर्मम, जिसमें ममता न हो; निर्दय, निष्ठुर, बेरह्म।

बेमेह्री (بےمہری) फा. अ. स्त्री.–निर्ममता; निर्दयता।

बेमौक़ा (بےموقع) फा. अ. वि.–दे. 'बेमहल'।

बेमौसिम (بےموسم) फा. अ. वि.–बिना ऋतु का (फल आदि)।

बेयारोमददगार (بےیارومددگار) फा. वि.–जिसका कोई सहायक और ख़बरगीर न हो, निराश्रय, निःसहाय, बेकस।

बेरंग (بےرنگ) फा. वि.–जिसका कोई रंग न हो, अवर्ण; जिसका रंग उतर ग़या हो, बदरंग, कुवर्ण।

बेरंग (بےرگ) फा. वि.–निर्लज्ज, बेग़ैरत।

बेरब्त (بےربط) फा. अ. वि.–असंबद्ध, ग़ैर मर्बूत, बेढंगा, बेमेल।

बेरब्ती (بےربطی) फा. अ. स्त्री.–असंबद्धता, बेढंगापन, बेजोड़पन।

बेरह्म (بےرحم) फा. अ. वि.–निष्ठुर, निर्दय, ज़ालिम।

बेरह्मी (بےرحمی) फा. अ. स्त्री.–निर्दयता, निष्ठुरता, ज़ुल्म।

बेराह (بےراہ) फा. वि.–पथभ्रष्ट, कुमार्गी, गुमराह।

बेराहरवी (بےراہروی) फा. स्त्री.–बुरी राह चलना, कुमार्गगमन।

बेराहरौ (بےراہرو) फा. वि.–कुमार्गी, पथभ्रष्ट, बुरी राह चलनेवाला, पापाचरण करनेवाला।

बेरिया (بےریا) फा. वि.—निश्छल, मुख़्लिस; आडंबरहीन, पाखंड न करनेवाला।

बेरियाई (بےریائی) फा. स्त्री.—निश्छलता, निष्कपटता; आडंबरहीनता ।

बेरीशः (بےریشہ) फा. पुं.—दे. 'बेरीश'।

बेरीश (بےریش) फा. वि.—जिसके दाढ़ी न निकली हो, जो अभी पूरी उम्र का न हो, लड़का, अमरद।

बेरुख़ी (بےرخی) फा. स्त्री.—बेतवज्जुही, उपेक्षा; बेमुरव्वती, दुःशीलता; मुँह फेरना, विमुखता।

बेरूँ (بیروں) फा. वि.—बाहर।

बेरूँजात (بیرونجات) फा. पुं.—नगर के बाहर की बस्तियाँ, मुफ़स्सलात।

बेरू (بےرو) फा. वि.—बेमुरव्वत, दुःशील।

बेरूओरिआयत (بےرووعایت) फा. अ. वि.—बिना किसी के पक्षपात और रियाअत किये।

बेरेशः (بےریشہ) फा. वि.—जिसमें झुथड़े या रेशे न हों, जैसे—बेरेशः आम।

बेरैबोरिया (بےریبوریا) फा. वि.—बिना छल और कपट के, ठीक-ठीक, सीधा-सीधा।

बेरोज़गार (بےروزگار) फा. वि.—जिसके पास धंधा न हो, अनुद्युमी, व्यवसायहीन, बेकार।

बेरोज़गारी (بےروزگاری) फा. स्त्री.—रोज़गार न होना, लोगों को काम न मिलना, बेकारी।

बेरौनक़ (بےرونق) फा. वि.—जिसमें कोई शोभा न हो, शोभाशून्य, श्रीहीन; जहाँ चहल़-पहल न हो, सूना, उजाड़, जिसमें प्रफुल्लता न हो, अफ़्सुर्दः।

बेरौनक़ी (بےرونقی) फा. स्त्री.—शोभा न होना; चहल-पहल न होना; प्रफुल्लता न होना।

बेल (بیل) फा. पुं.—बेलचा, फ़ावड़ा; पतवार, नाव खेने का डाँड।

बेलकश (بیل کش) फा. वि.—फावड़ा चलानेवाला।

बेलगाम (بےلگام) फा. वि.—जिसके मुँह में लगाम न हो; निरंकुश, स्वच्छंद; मुँहफट, बदलगाम।

बेलचः (بیلچہ) फा. पुं.—फावड़ा; फावड़े के आकर का एक खोदने क़ा यंत्र, जिसका दस्ता सीधा होता है।

बेलचःकार (بیلچہ کار) फा. वि.—बेलचे से खोदाई करनेवाला, फावड़ा चलानेवाला।

बेलचक (بیلچک) फा. पुं.—बेलचा, फावड़ा।

बेलज़न (بیل زن) फा. वि.—फावड़ा चलानेवाला; किसान, कृषक।

बेलुत्फ़ (بےلطف) फा. अ. वि.—निरानंद, बेमज़ा, जिसमें कोई दिलचस्पी न हो।

बेलुत्फ़ी (بےلطفی) फा. अ. स्त्री.—आनंद का न होना, मज़ा न आना, दिलचस्पी न होना।

बेलौस (بےلوث) फा. अ. वि.—निःस्वार्थ, मुख़्लिस; जिस पर कोई लांछन न हो, जो पाक-साफ़ हो।

बेलौसी (بےلوثی) फा. अ. स्त्री.—निःस्वार्थता, इख़्लास; निर्लिप्तता, बेतअल्लुक़ी।

बेवः (بیوہ) फा. स्त्री.—विधवा, अधवा, वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, राँड़।

बेवक़ार (بےوقار) फा. अ. वि.—दे. 'बेवक़्अत', निर्धन, बेपूँजी।

बेवक़्अत (بےوقعت) फा. अ.—जिसकी कोई इज़्ज़त न हो, तिरस्कृत; जो माना न जाय, अमान्य।

बेवक़्अती (بےوقعتی) फा. अ. स्त्री.—अपमान, तिरस्कार, बेइज़्ज़ती; तुच्छता, नीचता, ज़लालत।

बेवक़्त (بےوقت) फा. अ. वि.—कुसमय, अकाल, नावक़्त।

बेवक्र (بےوقر) फा. अ. वि.—दे. 'बेवक़्अत'।

बेवक्री (بےوقری) फा. अ. स्त्री.—दे. 'बेवक़्अती'।

बेवगी (بیوگی) फा. स्त्री.—बेवा होने की अवस्था, विधवापन, विधवात्व, वैधव्य, रँडापा।

बेवजह (بےوجہ) फा. अ. वि.—अकारण, बिला वजह।

बेवफ़ा (بےوفا) फा. अ. वि.—जिसमें वफ़ा न हो, कृतघ्न, दग़ाबाज़; जो वादे का पक्का न हो।

बेवफ़ाई (بےوفائی) फा. अ. स्त्री.—कृतघ्नता, दग़ाबाज़ी; वादाख़िलाफ़ी, वचन-भंग।

बेवासितः (بےواسطہ) फा. अ. वि.—अकारण, बेसबब; बिलावास्तः, इन डाइरेक्ट।

बेवुक़ूफ़ (بےوقوف) फा. अ. वि.—बुद्धिहीन, निर्बुद्धि, मूर्ख, नादान।

बेबुक़ूफ़ी (بےوقوفی) फा. अ. स्त्री.—मूर्खता, वुद्धिहीनता, मूर्खता, नादानी।

बेशः (بیشہ) फा. पुं.—शेर के रहने की माँद, कछार; बन, जंगल

बेशःनशीं (بیشہ نشیں) फा. वि.—जंगल में रहनेवाला, तपस्या के लिए जंगल में रहनेवाला।

बेश (بیش) फा. वि.—अधिक, ज़ियादा; मीठा तेलिया, सिंघिया।

बेश अज़ पेश (بیش از پیش) फा. वि.—अधिकाधिक, ज़ियादा से ज़ियादा।

बेश अज़ बेश (بیش از بیش) फा. वि.—पहले की अपेक्षा अधिक, पहले से ज़ियादा।

बेशक (بےشک) फा. अ. वि.–निःसंदेह, निःशंक, बेशुबह; अवश्य, ज़ुरूर।

बेशक़रार (بیش قرار) फा. अ. वि.–पर्याप्त, काफ़ी; अत्यधिक, बहुत।

बेशक़ीमत (بیش قیمت) फा. अ. वि.–बहुमूल्य, बड़े दामों की वस्तु।

बेशक्कोशुब्हः (بےشک وشبہہ) फा. अ. वि.–निःसंदेह, निःशंक, बिना किसी शंका और संदेह के।

बेशतर (بیش تر) फा. वि.–अधिकतर, प्रायः, बहुधा, अमूमन।

बेशबहा (بیش بہا) फा. वि.–दे. 'बेशक़ीमत'।

बेशर्म (بےشرم) फा. अ. वि.–निर्लज्ज, बेहया; बेग़ैरत, स्वाभिमानरहित।

बेशर्मी (بےشرمی) फा. अ. स्त्री.–निर्लज्जता, बेहयाई; अस्वाभाविमान, बेग़ैरती।

बेशाइबः (بےشائبہ) फा. अ. वि.–निःसंदेह, यक़ीनन।

बेशी (بیشی) फा. स्त्री.–अधिकता, ज़ियादती; इज़ाफ़ा, बढ़ती, वृद्धि।

बेशीराज़ः (بےشیرازہ) फा. वि.–असंबद्ध, बेतर्तीब।

बेशुऊर (بےشعور) फा. अ. वि.–निर्बुद्धि, बेअक़्ल; अशिष्ट, नाशाइस्तः; अविवेकी, अच्छे-बुरे की तमीज़ न रखनेवाला।

बेशुऊरी (بےشعوری) फा. अ. स्त्री.–बुद्धिहीनता, बेअक़्ली; बेतमीज़ी, अविवेक।

बेशुब्हः (بےشبہہ) फा. अ. वि.–निःसंदेह, निःशंक, बेशक।

बेशुमार (بےشمار) फा. अ. वि.–असंख्य, अनगिनत, जिनकी गिनती न हो सके, बहुत अधिक।

बेशोकम (بیش وکم) फा. वि.–थोड़ा-बहुत।

बेसत्री (بےستری) फा. अ. स्त्री.–बे पर्दगी, पर्दा न होना, कपड़े का शरीर पर से हट जाना या न होना।

बेसबब (بےسبب) फा. अ. वि.–बिना कारण, अकारण, बेवज़ह।

बेसबब आज़ार (بےسبب آزار) फा. अ. वि.–बिना कारण के कष्ट देनेवाला, अकारण-द्रोही।

बेसब्र (بےصبر) फा. अ. वि.–अधीर, आतुर, जिसे धीरज न हो, जल्दबाज़।

बेसब्री (بےصبری) फा. अ. स्त्री.–अधीरता, आतुरता, जल्दबाज़ी।

बेसरोपा (بےسروپا) फा. वि.–बे सर और पैर का, जिसका सिर-पैर कुछ न हो, झूठा, निराधार।

बेसर्फ़ः (بےصرفہ) फा. अ. वि.–व्यर्थ, निरर्थक, बेकार।

बेसलीक़ः (بےسلیقہ) फा. अ. वि.–जिसे किसी काम करने का ढंग न आता हो; जो शिष्ट न हो, असभ्य।

बेसलीक़गी (بےسلیقگی) फा. अ. स्त्री.–काम का ढंग न आना; अशिष्टता, असभ्यता।

बेसवा (بیسوا) फा. स्त्री.–वेश्या, गणिका, तवाइफ़।

बेसवाद (بےسواد) फा. अ. वि.–निश्री, बेरौनक़; निरक्षर, जाहिल, मूर्ख।

बेसाख़्तः (بےساختہ) फा. वि.–सहसा, बेतहाशा, तुरंत; जो बना-सँवरा न हो, सादा; बे सोचे हुए, फ़िलबदीह।

बेसाख़्तगी (بےساختگی) फा. स्त्री.–बेतहाशापन, शीघ्रता; बनाव-सिंगार न होना; बरजस्तगी।

बेसाज़ोबर्ग (بےسازوبرگ) फा. वि.–दे. 'बेबर्गोनवा'।

बेसिक्कः (بےسکہ) फा. वि.–तुच्छ, नीच, ज़लील, अपमानित, तिरस्कृत।

बेसियाक़ोसिबाक़ (بےسیاق وسباق) फा. अ. वि.–बिना पूर्वापर सम्बन्ध के, (सियाक़ (अर्बी) = चलाना, रविश) सिबाक़–अ. वि. = आगे दौड़नेवाला, फार्सी और उर्दू में 'सियाक़' और 'सिबाक़' समानार्थक शब्द हैं।

बेसुकून (بےسکون) फा. अ. वि.–अशान्ति, जिसे शान्ति न मिले; उद्विग्न, परीशान; चंचल, चपल, शोख़।

बेसुतून (بےستون) फा. पुं.–वह पहाड़ जिसे फ़र्हाद ने काटा था।

बेसूद (بےسود) फा. वि.–निरर्थक, व्यर्थ, बेक़ार; निष्फल, बेनतीजः।

बेहंगाम (بےهنگام) फा. वि.–कुसमय, नावक़्त।

बेहक़ीक़त (بےحقیقت) फा. अ. वि.–तुच्छ, ज़लील; असत्य, झूठ; निराधार, बेबुनियाद।

बेहद (بےحد) फा. अ. वि.–असीम, अपार बेहिसाब; अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

बेहद्दोहिसाब (بےحد وحساب) फा. अ. वि.–जो गिनती और हिसाब से बाहर हो, असंख्य, अपार।

बेहमओबाहमः (بےهمہ وباهمہ) फा. वि.–किसी के साथ नहीं और सबके साथ, सबसे अलग और सबके साथ, अच्छाई में सबके साथ, बुराई में सबसे अलग।

बेहमगी (بےهمگی) फा. स्त्री.–किसी के साथ न होना, सबसे अलग होना।

बेहमता (بےهمتا) फा. वि.–अनुपम, बेमिसाल।

बेहमाल (بےهمال) फा. वि.–अद्वितीय, अनुपम, बेमिस्ल।

बेहमीयत (بےحمیت) फा. अ. वि.–बेग़ैरत, निर्लज्ज।

बेहमीयती (بےحمیتی) फा. अ. स्त्री.–निर्लज्जता, बेग़ैरती।

बेहया (بےحیا) फा. अ. वि.–निर्लज्ज, लज्जा-शून्य, अपत्रप, निस्त्रप, क्षपणक, बेहया।

बेहयाई (بےحیائی) फा. अ. स्त्री.–लज्जाहीनता, निर्लज्जता, बेशर्मी।

बेहाल (بےحال) फा. अ. वि.–अचेत, बेख़बर, संज्ञाहीन; मरणासन्न, मरने के क़रीब; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल।

बेहासिल (بےحاصل) फा. अ. वि.–व्यर्थ, निरर्थक, बेकार; निष्फल, बेनतीजा।

बेहिजाब (بےحجاب) फा. अ. वि.–बेपर्दा, खुलेबंदों, घूँघट खोले हुए।

बेहिजाबानः (بےحجابانہ) फा. अ. वि.–पर्दा उठाये हुए, घूँघट हटाये हुए, मुँह खोले हुए, बेपर्दा।

बेहिजाबी (بےحجابی) फा. अ. स्त्री.–बेपर्दगी, घूँघट उठा देना, खुलेबंदों फिरना (स्त्री का)।

बेहिफ़ाजत (بےحفاظت) फा. अ. वि.–जिसकी रक्षा न हो, अरक्षित।

बेहिफ़ाजती (بےحفاظتی) फा. अ. स्त्री.–रक्षा का अभाव, अरक्षा।

बेहिम्मत (بےہمت) फा. अ. वि.–निरुत्साही, हतोत्साही, जिसकी हिम्मत टूट गयी हो, जिसमें हिम्मत न हो।

बेहिम्मती (بےہمتی) फा. अ. स्त्री.–उत्साह की कमी, उत्साह का अभाव।

बेहिस [स्स] (بےحس) अ. वि.–जिसे एहसास न हो, जिसमें स्वाभिमान न हो; चेतनाशून्य, ग़ाफ़िल; सुन, जडीभूत।

बेहिसाब (بےحساب) फा. अ. वि.–असंख्य, बेशुमार।

बेहिसी (بےحسی) फा. अ. स्त्री.–एहसास का अभाव; चेतना का अभाव; सुन्न हो जाना।

बेहिस्सी (بےحسی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बेहिसी', दोनों शुद्ध हैं।

बेहिस्सोहरकत (بےحس وحرکت) फा. अ. वि.–जो गति और चेतना दोनों से शून्य हो, जडवत्, निस्तब्ध।

बेहुज़ूर (بےحضور) फा. अ. वि.–अनुपस्थित, नामौजूद; लुप्त, ग़ाइब।

बेहुज़ूरी (بےحضوری) फा. अ. स्त्री.–अनुपस्थिति, ग़ैर मौजूदगी; लोप, ग़ाइब होना।

बेहुदः (بیہدہ) फा.वि.–'बेहूदः' का लघु., दे. 'बेहूदः'।

बेहुनर (بےہنر) फा. अ. वि.–जिसमें कोई हुनर न हो, निर्गुण, गुणहीन।

बेहुनरी (بےہنری) फा. अ. स्त्री.–गुण का न होना, निर्गुणता, वैगुण्य।

बेहुर्मत (بےحرمت) फा. अ. वि.–अपमानित, तिरस्कृत, बेइज़्ज़त; गर्हित, निंदित, रुस्वा।

बेहुर्मती (بےحرمتی) फा. अ. स्त्री.–अपमान, बेवक़्अती; गर्हा, निंदा, रुसवाई।

बेहूदः (بیہودہ) फा. वि.–व्यर्थ, अनर्थ, बेकार; निष्प्रयोजन, निकम्मा; असभ्य, अशिष्ट, बदतमीज़; दुःशील, बद-अख़्लाक़; अश्लील, फ़ुह्श; दुश्चरित्र, आवारा।

बेहूदःकलाम (بیہودہکلام) फा. अ. वि.–दे. 'बेहूदगी'।

बेहूदःगो (بیہودہگو) फा. वि.–व्यर्थवादी, फ़ुज़ूल बातें करनेवाला; अश्लील वक्ता, फ़ुहशगो।

बेहूदःगोई (بیہودہگوئی) फा. स्त्री.–व्यर्थ की बकबास; अश्लील बातें।

बेहूदःमिज़ाज (بیہودہمزاج) फा. अ. वि.–असभ्य, अशिष्ट, बदतमीज़; उजड्ड, अख्खड़।

बेहूदःशिआर (بیہودہشعار) फा. अ. वि.–दे. 'बेहूदःमिज़ाज'।

बेहूदःसिरिश्त (بیہودہسرشت) फा. वि.–दे. 'बेहूदःमिज़ाज'।

बेहूदगी (بیہودگی) फा. स्त्री.–अश्लीलता, फ़ुहशपन; असभ्यता, अशिष्टता, बदतमीज़ी।

बेहैसियत (بےحیثیت) फा. अ. वि.–अप्रतिष्ठित, बेइज़्ज़त; निर्धन, मुफ़्लिस।

बेहैसियती (بےحیثیتی) फा. अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा न होना, अप्रतिष्ठा; निर्धनता।

बेहोश (بےہوش) फा. वि.–निश्चेष्ट, अचेत, ग़ाफ़िल; उन्मत्त, बदमस्त।

बेहोशी (بےہوشی) फा. स्त्री.–निश्चेष्टता, गफ़लत; उन्मत्तता, बदमस्ती।

बेहोशोहवास (بےہوش وحواس) फा. अ वि.–जिसकी न अक़्ल ठिकाने हो, न होश, बहुत ही ग़ाफ़िल।

बेहौसलः (بےحوصلہ) फा. अ. वि.–दे. 'बेहिम्मत'।

बेहौसलगी (بےحوصلگی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'बेहिम्मती'।

बै

बैअ (بیع) अ. स्त्री.–बेचना, फ़रोख़्त करना।

बैअत (بیعت) अ. स्त्री.–किसी पीर के हाथ पर उसका मुरीद होना।

बैअनामः (بیع نامہ) अ. फा. पुं.–बेचीनामा, विक्रय-पत्र, बेचने की क़ानूनी तहरीर।

बैआनः (بیعانہ) अ. फा. पुं.–वह धन जो मूल्य तय हो जाने पर ख़रीदार बेचनेवाले को इसलिए देता है कि बात पक्की हो जाय।

बैओशिरा (بیع وشرا) अ. स्त्री.–ख़रीद-फ़रोख़्त, क्रय-विक्रय।

बैज़ः (بیضہ) अ. पुं–अंडा, अंड; अंडकोष, फ़ोता; सिपाहियों का ख़ोद, लोहे की टोपी; पूरे सर का एक दर्द।

बैज़ (بیض) अ. पुं.–'बैज़ः' का बहु., अंडे।

बैज़ए माकियाँ (بیضہ ماکیاں) अ. फा. पुं.–मुर्ग़ी का अंडा।

बैज़ए मार (بیضہ مار) अ. फा. पुं.–साँप का अंडा।

बैज़ए मुर्ग़ (بیضہ مرغ) अ. फा. पुं.–मुर्ग़ी का अंडा।

बैज़ए मोर (بیضہ مور) अ. फा. पुं.–च्यूँटी का अंडा।

बैज़क़ (بیذق) अ. पुं.–दे. 'बैदक़', दोनों शुद्ध हैं।

बैज़वी (بیضوی) अ. वि.–अण्डे के आकार का, अंडाकार।

बैज़ा (بیضا) अ. वि.–प्रकाशमान्, उज्ज्वल, रौशन; श्वेत, सफ़ेद; सूर्य, सूरज; ईरान का एक नगर।

बैज़ावी (بیضاوی) अ. वि.–बैज़ा (ईरान का एक नगर), से सम्बन्ध रखनेवाला।

बैत (بیت) अ. पुं.–घर, गृह, मकान; स्थान, जगह, (स्त्री.) एक शेर, दो मिस्रे।

बैतबह्सी (بیت بحثی) अ. स्त्री.–दे. 'बैतबाज़ी' अन्त्याक्षरी।

बैतबाज़ी (بیت بازی) अ. फा. स्त्री.–लड़कों का एक इल्मी मश्ग़लः जिसमें एक लड़का एक शे'र पढ़ता है और दूसरा लड़का उस शेर के अन्तिम अक्षर से प्रारम्भ होनेवाला दूसरा शे'र पढ़ता है या उसी विषय पर दूसरी उक्ति पढ़ता है।

बैतार (بیطار) अ. पुं.–पशुओं की चिकित्सा करनेवाला, अश्व-चिकित्सक।

बैतुन्नुतफ़ (بیت النطف) अ. पुं.–चकला, वेश्यालय।

बैतुलअतीक़ (بیت العتیق) अ. पुं.–पुराना घर; का'बः, ख़ानए का'बः।

बैतुलअरूस (بیت العروس) अ. पुं.–दुल्हन का कम्रा; ख़ानए का'बः।

बैतुलउलूम (بیت العلوم) अ. पुं.–यूनीवर्सिटी, विश्वविद्यालय।

बैतुलख़ला (بیت الخلا) अ. पुं.–शौचालय, पाख़ाना।

बैतुलग़ज़ल (بیت الغزل) अ. स्त्री.–ग़ज़ल का सबसे अच्छा शे'र।

बैतुलमा'मूर (بیت المعمور) अ. पुं.–चौथे आस्मान पर बनी हुई मस्जिद जो ख़ानए का'बः के ठीक ऊपर है।

बैतुलमाल (بیت المال) अ. पुं.–वह कोष जिसका धन सार्वजनकि कामों में ख़र्च हो।

बैतुलमुक़द्दस (بیت المقدس) अ. पुं.–यरोशलम।

बैतुल्लाह (بیت اللہ) अ. पुं.–ख़ानए का'बः, ईश्वर का घर।

बैतुलहज़्न (بیت الحزن) अ. पुं.–शोकगृह, ग़मी का घर; नायक का घर।

बैतुलहमल (بیت الحمل) अ. पुं.–मेषराशि, पहला बुर्ज।

बैतुलहराम (بیت الحرام) अ. पुं.–ख़ानए का'बः।

बैतुलहुज़्न (بیت الحزن) अ. पुं.–दे. 'बैतुलहज़्न', दोनों शुद्ध हैं।

बैतुश्शरफ़ (بیت الشرف) अ. पुं.–वह राशि जिसमें किसी ग्रह की उन्नति हो।

बैतुस्सक़र (بیت السقر) अ. पुं.–नरक, दोज़ख़।

बैतुस्सनम (بیت الصنم) अ. पुं.–बुतख़ाना, मूर्तिगृह, मंदिर।

बैतुस्सिलाह (بیت السلاح) अ. पुं.–शस्त्रागार, अस्लिहः ख़ानः, मैगज़ीन।

बैदक़ (بیدق) अ. पुं.–शत्रंज का पियादा।

बैदा (بیدا) अ. पुं.–वन, कानन, जंगल, दश्त।

बैन (بین) अ. वि.–बीच, मध्य, दरमियान।

बैनलअक़्वाम (بین الاقوام) अ. वि.–अन्तर्रा।

बैनलअक़्वामी (بین الاقوامی) अ. वि.–अन्तर्राष्ट्रीय।

बैनलमिल्ली (بین الملی) अ. वि.–अंतर्राष्ट्रीय।

बैनलमुल्की (بین الملکی) अ. वि.–अंतर्देशीय।

बैनस्सुतूर (بین السطور) अ. पुं.–दो सत्रों के बीच में छोड़ी हुई जगह।

बैयाअ (بیاع) अ. वि.–बेचनेवाला, विक्रेता; अभिकर्ता, दल्लाल।

बैयिन (بین) अ. वि.–स्पष्ट, वाज़ेह, ज्वलन्त।

बैरक़ (بیرق) तु.पुं.–छोटा झंडा, झंडी, वह झंडा जो ज़मीन पर कब्ज़ा करने या आबाद करने के निशान के लिए गाड़ते हैं।

बो

बोईदः (بوئیدہ) फा. वि.–सूँघा हुआ।

बोतः (بوتہ) फा. पुं.–सुनारों की घरिया, कुठाली, बूतः।

बोदनः (بودنہ) तु. पुं.–बटेर।

बोया (بویا) फा. वि.–सुगंधित, सुवासित, ख़ुशबूदार।

बोरिया (بوریا) फा. पुं.–चटाई, खजूर की चटाई, मंदुरा।

बोरियानशीं (بوریانشیں) फा. वि.–चटाई पर बैठनेवाला, फ़क़ीर।

बोरियाबाफ़ (بوریاباف) फा. वि.–चटाइयाँ, बुननेवाला।

बोरियाबाफ़ी (بوریابافی) फा. स्त्री.–चटाइयाँ बुननेका काम।

बोस (بوس) फा. प्रत्य.–चूमनेवाला, जैसे—'फ़लकबोस' आस्मान चूमनेवाला, गगनचुंबी।

बोसः (بوسہ) फा. पुं.–चुंबन, चूमा।

बोसःगाह (بوسہ گاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान जिसे चूमा जाय।

बोसःज़न (بوسہ زن) फा. वि.–चूमनेवाला, चुंबक।

बोसःबपैग़ाम (بوسہ بہ پیغام) फा.वि.–दूसरे के ज़रिए अपने मक़सद को पा लेना,—"क़ासिद के हाथ चूम लिये मैंने लेके ख़त, ये एक तरह का बोसः ब पैग़ाम हो गया।"

बोसःबाज़ी (بوسہ بازی) फा. स्त्री.–चुंबाचुंबी, एक-दूसरे को चूमना।

बोसीदः (بوسیدہ) फा. वि.–चुंबित, चूमा हुआ; सड़ा-गला, फटा-पुराना।

बोसीदगी (بوسیدگی) फा. स्त्री.–सड़ा-गलापन, फटा-पुरानापन।

बोसीदनी (بوسیدنی) फा. वि.–चूमने के लाइक़, चुंबन-योग्य, चुंबनीय।

बोस्ताँ (بوستاں) फा. पुं.–उद्यान, बाग़, आराम, वाटिका।

बोस्ताँपैरा (بوستاں پیرا) फा. वि.–माली, उद्यानपाल।

बौ

बौज़क (بوزک) फा. स्त्री.–फफूंदी, श्वेता।

बौल (بول) अ. पुं.–मूत्र, प्रस्राव, पेशाब, मूत।

बौलगाह (بول گاہ) अ. फा. स्त्री.–मूत्रालय, पेशाब करने की जगह, यूरिनल।

बौलदान (بول دان) अ. फा. पुं.–पेशाब का बरतन; रोगियों का मूत्र-पात्र, यूरिन-पाट।

बौलफ़िलफ़िराश (بول فی الفراش) अ. पुं.–एक रोग जिसमें रोगी सोते हुए पलंग पर पेशाब कर देता है, प्रायः यह रोग दस बारह बरस के बच्चों को होता है, शय्यामूत्र।

म

मंज़र (منظر) अ. पुं.–दृश्य, नज़्ज़ारः; मुखाकृति, चेह्रः; कौतुकस्थान, तमाशागाह; क्रीडास्थल, सैरगाह; दृष्टि का अंत, हद्दे नज़र।

मंज़रे आम (منظر عام) अ. पुं.–खुली जगह, जहाँ सब लोग आ-जा सकें, सार्वजनिक स्थान।

मंज़िल (منزل) अ. स्त्री.–उतरन की जगह, पड़ाव; जहाँ जाना हो, गंतव्य; एक दिन की यात्रा; मकान का खंड, माला; नक्षत्र, चाँद का घर; लम्बी यात्रा।

मंज़िलगाह (منزل گاہ) अ. फा. स्त्री.–जहाँ जाकर ठहरना हो।

मंज़िलत (منزلت) अ. स्त्री.–आदर, सत्कार, इज़्ज़त; पदवी, दरजा।

मंज़िले अव्वल (منزل اول) अ. स्त्री.–क़ब्र, श्मशान, जहाँ मनुष्य मरने पर पहली बार जाता है।

मंज़िले क़मर (منزل قمر) अ. स्त्री.–नक्षत्र, चाँद के रास्ते में पड़नेवाले २७ स्थानों में से एक, (दे. मनाज़िले क़मर)।

मंज़िले मक़्सूद (منزل مقصود) अ. स्त्री.–वह स्थान जहाँ पहुँचना है; आशय, उद्देश्य।

मंज़िले हस्ती (منزل ہستی) अ. फा. स्त्री.–जीवनयात्रा, आयु, उम्र।

मंज़ूअ (منزوع) अ. वि.–निकाला हुआ, किसी चीज़ में से अलग किया हुआ।

मंज़ूम (منظوم) अ. वि.–पद्यात्मक, छंदोबद्ध, नज़्म की सूरत में लाया हुआ, छंद के रूप में परिवर्तित किया हुआ।

मंज़ूमात (منظومات) अ. स्त्री.–नज़्मों का संग्रह, वह संग्रह जिसमें 'ग़ज़लें' न हों, केवल नज़्में हों।

मंज़ूर (منظور) अ. वि.–दृष्टिगत, दृष्टिगोचर, जो देखा जाय; स्वीकृत, तस्लीम; रुचिकर, पसंदीदः।

मंज़ूरे नज़र (منظور نظر) अ. वि.–प्रिय, प्यारा; कृपापात्र, जिस पर किसी की कृपादृष्टि हो; आँखों को पसंद।

मंद (مند) फा. प्रत्य.–वाला, जैसे—'ज़ुरूरतमंद' 'ज़ुरूरत-वाला।

मंदल (مندل) फा. पुं.–घेरा, इहाता, मंडल।

मंदूबः (مندوبہ) अ. स्त्री.–डेलीगेट स्त्री, प्रतिनिधि महिला।

मंदूब (مندوب) अ. पुं.–डेलीगेट, प्रतिनिधि।

मंदूबीन (مندوبین) अ. पुं.–'मंदूब' का बहु., प्रतिनिधि मंडल, बहुत-से प्रतिनिधि।

मंबा' (منبع) अ. पुं.–स्रोत, चश्मा; उद्गम, मख़्रज।

मंबित (منبت) अ. पुं.–उगने का स्थान, जहाँ कोई पौदा उगे।

मंशा (منشا) अ. पुं.–उद्देश्य, आशय, मक़्सद; अर्थ, मतलब; इच्छा, ख़्वाहिश; कारण, हेतु, सबब; मनोकामना, मनोरथ, दिली मक़्सद।

मंशाए इलाही (منشاے الٰہی) अ. पुं.–ईश्वरेच्छा, ख़ुदा की मर्ज़ी।

मंशाए दिली (منشاے دلی) अ. फा. पुं.–मनोरथ, मनोकामना, दिली आर्ज़ू।

मंशाए मशीअत (منشاے مشیت) अ. पुं.–दे. 'मंशाए इलाही'।

मंशूर (منشور) अ. पुं.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर, बिखरा हुआ; राजाज्ञा, शाहीफ़र्मान।

मंसक (منسک) अ. पु.–वह स्थान जहाँ पूजा की जाय, उपासना-गृह; वह स्थान जहाँ क़ुर्बानी की जाय।

मंसब (منصب) अ. पुं.–पद, उहदा; बड़ी पदवी; अधिकार, हक़; कर्तव्य, फ़र्ज़।

मंसबदार (منصبدار) अ. फा. वि.–पदाधिकारी, उहदेदार; पीढ़ी दर पीढ़ी वज़ीफ़ा पानेवाला।

मंसबी (منصبی) अ. वि.–मंसबवाला, पद-सम्बन्धी, जैसे--'कारे मंसबी', अपना पद-सम्बन्धी काम।

मंसूख (منسوخ) अ. वि.–ख़ारिज, रद्द, निरस्त।

मंसूख़ी (منسوخی) अ. वि.–मंसूख़ होना, निरसन, रद्द होना।

मंसूबः (منصوبہ) अ. पुं.–संकल्प, इरादा; योजना, स्कीम; षड्यंत्र, साज़िश; इच्छा, ख्वाहिश।

मंसूबःबंदी (منصوبہبندی) अ. फा. स्त्री.–मंसूबा गाॅठना, इरादा करना; योजना बनाना, स्कीम बनाना।

मंसूब (منسوب) अ. वि.–सम्बन्धित, जिसकी किसी की ओर निस्वत की गयी हो; जिसकी कहीं मँगनी की गयी हो।

मंसूब (منصوب) अ. वि.–वह अक्षर जिस पर ज़बर हो।

मंसूबइलैह (منسوب الیہ) अ. वि.–जिसकी ओर निस्वत की गयी हो, जिसकी मँगनी की गयी हो।

मंसूर (منثور) अ. वि.–गद्यात्मक लेख, नस्र का कलाम; अनविधा मोती; तितर-बितर, बिखरा हुआ।

मंसूर (منصور) अ. वि.–विजेता, विजयी, फ़ातेह; एक वली जिन्होंने "अनलहक़" कहा था और इस अपराध में उनकी गरदन काटी गयी थी।

मंसूरोमुज़फ़्फ़र (منصورومظفر) अ. वि.–जो बड़ी शान से जीता हो, प्रशंसनीय विजयी।

मंसूस (منصوص) अ. वि.–गवेषणा को प्राप्त, तहक़ीक़शुदः; वह बात जो क़ुरान की स्पष्ट आयतों से प्रमाणित हो।

मअन (معاً) अ. वि.–सहसा, अकस्मात्, अचानक; तुरंत, फ़ौरन, तत्क्षण।

मआइब (معائب) अ. पुं.–'मईब' का बहु. दोष-समूह।

मआख़िज़ (معاخذ) अ. पुं.–'आख़ज़' का बहु., वे किताबें जिनसे मवाद लेकर कोई किताब लिखी गयी हो।

मआज़ (معاذ) अ. वि.–रक्षास्थान, पनाह की जगह।

मआज़ल्लाह (معاذاللہ) अ. वा.–ख़ुदा की पनाह, ईश्वर बचाये।

मआजीन (معاجین) अ. स्त्री.–'मा'जून' का बहु., मा'जूनें, अवलेह।

मआद (معاد) अ. पुं.–लौटकर जाने की जगह, यमलोक।

मआदिन (معادن) अ. पुं.–'मा'दिन' का बहु., खानें।

मआनी (معانی) अ. पुं.–'मा'ना' का बहु., अर्थसमूह।

मआब (معاب) अ. प्रत्य.–युक्त, जैसे—'फ़ज़ीलत मआब' विद्वत्ता से युक्त।

मआबिद (مابد) अ. पुं.–'मा'बद' का बहु., उपासना के स्थान, मंदिर, मस्जिदें, गिर्जा।

मआबिर (معابر) अ. पुं.–'मा'बर' का बहु., नदियों का घाट या पुल।

मआरिक (معارک) अ. पुं.–'मा'रिकः' का बहु., लड़ाई के मैदान, युद्धक्षेत्र; लड़ाइयाँ, युद्ध।

मआरिज (معارج) अ. पुं.–'मे'राज' का बहु., सीढ़ियाँ।

मआरिफ़ (معارف) अ. पुं.–'मा'रफ़' का बहु., पहचानने के स्थान; परिचय, पहचान; 'मा'रिफः' का बहु., परिचित लोग, दोस्त लोग, मित्रगण; विद्वज्जन, इल्मवाले।

मआल (مال) अ. पुं.–परिणाम, निष्कर्ष, नतीजा; अंत, ख़ातिमा; फल, प्रतिकार, बदल,—"मआलेसोज़े ग़महाए निहानी देखते जाओ"—फानी।

मआलअंदेश (مال اندیش) अ. फा. वि.–परिणामदर्शी, नतीजा सोचकर काम करनेवाला।

मआलअंदेशी (مال اندیشی) अ. फा. स्त्री.–परिणामदर्शिता, नतीजः सोचकर काम करना।

मआलनाअंदेश (مال نااندیش) अ. फा. वि.–जो नतीजा न सोचे और काम कर डाले, अपरिणामशोची।

मआलनाअंदेशी (مال نااندیشی) अ. फा. स्त्री.–नतीजा सोचे बिना काम कर डालना, अपरिणामदर्शिता।

मआलबीं (مال بیں) अ. फा. वि.–दे. 'मआल अंदेश'।

मआलबीनी (معال بینی) अ. फा. स्त्री.–दे., 'मआल अंदेशी'।

मआली (معالی) अ. पुं.–'मा'ली' का बहु., ऊँचाइयाँ, बलंदियाँ।

मआले कार (مال کار) अ. फा. पुं.–काम का नतीजा, कार्यपरिणाम।

मआले बद (مال بد) अ. फा. पुं.–बुरा नतीजाः, कुफल, दुष्परिणाम।

मआश (معاش) अ. स्त्री.–जीविका, रोज़ी; ज़मीन या जागीर जो किसी काम के इन्आम स्वरूप मिले।

मआशदार (معاشدار) अ. फा. पुं.–वह व्यक्ति जिसे कोई ज़मीन या जागीर 'मआश' के रूप में मिली हो।

मआशी (معاشی) अ. वि.–जीविका-सम्बन्धी; अर्थ-सम्बन्वी, आर्थिक, इक़्तिसादी।

मआशीयात (معاشیات) अ. स्त्री.–अर्थशास्त्र, इल्मे इक़्तिसादीयात।

मआसिर (ماثر) अ. पुं.–'मासुरः' का बहु., अच्छी निशानियाँ, अच्छे स्मृति-चिह्न; अच्छे काम, सुकृतियाँ।

मआसी (معاصی) अ. पुं.–'मा'सियत' का बहु., पाप-समूह, गुनाह।

मईब (معیب) अ. पुं.–दोष, अवगुण, दूषण, ऐब।

मईयत (معیت) अ. स्त्री.–साथ, हमराही।

मईशत (معیشت) अ. स्त्री.–जीवन, ज़िंदगी; जीविका, मआश; वह चीज़ जो जीवन् का सहारा हो।

मऊनत (معونت) अ. स्त्री.–सहायता, मदद।

मऊल (معول) अ. वि.–भरोसा किया हुआ, विश्वस्त।

मए अंगूर (مے انگور) फा. स्त्री.–अंगूर से बनायी हुई मदिरा, द्राक्षासव।

मए अंग्बीं (مے انگبیں) फा. स्त्री.–शहद की शराब, माधवी।

मए आतशीं (مے آتشیں) फा. स्त्री.–आग-जैसी तेज और लाल मदिरा, अग्निवर्णा।

मए ऐश (مے عیش) फा. अ. स्त्री.–भोग-विलासरूपी मदिरा।

मए हुस्न (مے حسن) फा. अ. स्त्री.–सौंदर्य-सुरा, रूप-मद, "जब मए-हुस्न में है कैफ़े फ़रामोशी भी, नासिहा काम नहीं अब तेरे समझाने का।"

मए कौसर (مے کوثر) फा. अ. स्त्री.–स्वर्ग की मदिरा।

मए गुलगूं (مے گل گوں) फा. स्त्री.–गुलाब के फूल-जैसी सुगंधित और गुलाबी मदिरा।

मए गुलफ़ाम (مے گل فام) फा. स्त्री.–दे. 'मए गुलगूँ'।

मए गुलरंग (مے گل رنگ) फा. स्त्री.–दे. 'मए गुलगूँ'।

मए तहूर (مے طہور) फा. अ. स्त्री.–पवित्र मदिरा, वह मदिरा जो स्वर्ग में मिलेगी।

मए तुंद (مے تند) फा. स्त्री.–तेज़ नशेवाली मदिरा।

मए दुआतशः (مے دوآتشہ) फा. स्त्री.–दो बार खिंची हुई शराब, बहुत तेज़ शराब।

मए दोशीनः (مے دوشینہ) फा. स्त्री.–रात की बची हुई-बासी शराब।

मए नाब (مے ناب) फा. स्त्री.–निर्मल और ख़ालिस मदिरा।

मए नौ (مے نو) फा. स्त्री.–हाल की खिंची हुई शराब।

मए पिंदार (مے پندار) फा. स्त्री.–अहंकार की मदिरा, अहंकाररूपी मदिरा।

मए मुग़ानः (مے مغانہ) फा. स्त्री.–आतशपरस्तों की शराब।

मए रंगीं (مے رنگیں) फा. स्त्री.–रंग-बिरंगी शराब।

मए वस्ल (مے وصل) फा. अ. स्त्री.–संभोग, मैथुन, नायिका का सहवास।

मए शबीनः (مے شبینہ) फा. स्त्री.–रात की बची हुई शराब।

मए शीराज़ (مے شیراز) फा. स्त्री.–वह मदिरा जो शीराज़ की बोतलों में हो; हाफ़िज़ शीराज़ी की कविता।

मए शौक़ (مے شوق) फा. अ. स्त्री.–प्रेम की मदिरा।

मए हराम (مے حرام) फा. अ. स्त्री.–वह मदिरा जिसका पान धर्म में निषिद्ध है।

मए हलाल (مے حلال) फा. अ. स्त्री.–वह मदिरा जिसका पान धर्म में विहित है, स्वर्ग की मदिरा।

मक़र[र्र] (مقر) अ. पुं.–ठहरने का स्थान, अड्डा, पड़ाव।

मक़र्रुलख़िलाफ़त (مقرالخلافت) अ. पुं.–शासनकेंद्र, राजधानी।

मक़र्रुलहुकूमत (مقرالحکومت) अ. पुं.–राजधानी।

मक़र्रुस्सल्तनत (مقرالسلطنت) अ. पुं.–राजधानी।

मक़र्रे ख़िलाफ़त (مقرخلافت) अ. पुं.–'राजधानी'।

मक़स[स्स] (مقص) अ. पुं.–काटने का स्थान, दंशित स्थल।

मकाइद (مکائد) अ. पुं.–'मकीदः' का बहु., छल और फ़रेब, पाखंड, ऐयारियाँ।

मक़ाइद (مقاعد) अ. पुं.–'मक़्अद' का बहु, बैठने के स्थान।

मकातिब (مکاتب) अ. पुं.–'मक्तब' का बहु., प्रारंभिक पाठशालाएँ।

मकाबिते इब्तिदाई (مکاتب ابتدائی) अ. पुं.–प्रारम्भिक पाठशालाएँ, जिनमें शुरूआत की शिक्षा दी जाय।

मकातीब (مکاتیب) अ. पुं.–'मक्तूब' का बहु., चिट्ठियाँ, पत्र-समूह, ख़ुतूत।

मक़ादीर (مقادیر) अ. स्त्री.–'मिक़्दार' का बहु., अंदाज़े, अनुमान, वज़्न; संख्याएँ, आ'दाद।

मक़ादीरे मज्हूलः (مقادیر مجہولہ) अ. स्त्री.–वे संख्याएँ जो ज्ञात न हों (गणित)।

मक़ादीरे मा'लूमः (مقادیر معلومہ) अ. स्त्री.–वे संख्याएँ जो ज्ञात हों (गणित)।

मकान (مکان) अ. पुं.–गृह, गेह, आवास, निकेतन, भवन, सदन, सद्म, घर, वेश्म; स्थान, जगह।

मकानदार (مکان دار) अ. फा. वि.–घर का मालिक, गृह-स्वामी।

मकानात (مکانات) अ. पुं.–मकान का बहु., बहुत-से घर।

मकाने मस्कूनः (مکان مسکونہ) अ. पुं.–रहने का मकान, जिस मकान में कोई रहता हो।

मक़ाबिर (مقابر) अ. पुं.–'मक़्बरः' का बहु., क़ब्रें, मक़्बरे, मज़ारात।

मक़ाम (مقام) अ. पुं.–स्थान, जगह; ठहरने का स्थान; घर, मकान; मंज़िल, पड़ाव; अवसर, मौक़ा; प्रतिष्ठा, इज़्ज़त। 'मुक़ाम' भी प्रचलित है।

मक़ामात (مقامات) अ. पुं.–मक़ाम का बहु., बहुत-से स्थान।

मक़ामी (مقامی) अ. वि.–स्थानीय, लोकल।

मकारिम (مکارم) अ. पुं.–'मक्रुमत' का बहु., कृपाएँ, इनायतें।

मकारह (مکارہ) अ. पुं.–'मुक्रः' का बहु.।

मक़ालः (مقالہ) अ. पुं.–निबंध, लेख, किसी विशेष विषय पर गवेषणापूर्ण लेख; रेखागणित का कोई साध्य।

मक़ालःनवीस (مقالہ نویس) अ. फा. वि.–निबंधकार।

मक़ालःनिगार (مقالہ نگار) अ. फा. वि.–दे. 'मक़ालः नवीस'।

मक़ालःनिगारी (مقالہ نگاری) अ. फा. स्त्री.–निबंध लिखना, प्रबन्ध रचना।

मक़ाल (مقال) अ. पुं.–वार्तालाप, बातचीत, गुफ़्तुगू।

मक़ालात (مقالات) अ. पुं.–'मक़ालः' का बहु., गुफ़्तुगू, वातचीतें; मक़ाले, निबंध।

मक़ालीद (مقالید) अ. पुं.–'मिक़्लीद' का बहु., कुंजियाँ।

मक़ासिद (مقاصید) अ. पुं.–'मक़्सिद' का बहु., उद्देश्य समूह, मंशाएँ।

मकासिब (مکاسب) अ. पुं.–'कस्ब' का बहु., पेशे, उद्योग।

मकीन (مکین) अ. वि.–मकान का रहनेवाला, निवासी।

मक़ूलः (مقولہ) अ. पुं.–कथन, बात, क़ौल; कही हुई बात।

मक़ूलात (مقولات) अ. पुं.–'मक़ूलः' का बहु., क़ौल, बातें।

मक़्अद (مقعد) अ. स्त्री.–मलद्वार, गुदा, मब्रज़।

मक्कः (مکہ) अ. पुं.–हज्रत मुहम्मद साहिब का जन्म-स्थान, अरब की राजधानी, यहीं मुसलमान हज के लिए एकत्र होते हैं, का'बः इसी में है।

मक्कारः (مکارہ) अ. स्त्री.–धूर्त्ता, मायाविनी, वंचिका, हरीफ़ः, बहुत ही चालाक स्त्री।

मक्कार (مکار) अ. वि.–धूर्त, छली, बहुत ही चालाक।

मक्कारी (مکاری) अ. स्त्री.–धूर्त्तता, फ़ित्तीनी, चालाकी।

मक्तब (مکتب) अ. पुं.–पाठशाला, विद्यागृह, बच्चों का स्कूल, मदरसा।

मक्तबख़ानः (مکتب خانہ) अ. फा. पुं.–इस शब्द में 'ख़ानः' अधिक है, क्योंकि मक्तब का अर्थ ख़ुद ही पढ़ाई की जगह है, परन्तु कुछ लोग लिख देते हैं, न लिखना अधिक उचित है।

मक्तबगाह (مکتب گاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मक्तबख़ानः' इसमें भी 'गाह' स्थान के अर्थ में है और वह अशुद्ध है।

मक्तबे इश्क़ (مکتب عشق) अ. पुं.–प्रेम-पाठशाला।

मक़्तल (مقتل) अ. पुं.–क़त्ल करने की जगह, वधस्थान, वधभूमि।

मक़्तूअ (مقطوع) अ. वि.–विच्छिन्न, कटा हुआ।

मक़्तूउन्नस्ल (مقطوع النسل) अ. वि.–जिसका वंश समाप्त हो गया हो, जिसकी संतान में कोई न रहा हो, नष्टवंश।

मक़्तूउलयद (مقطوع الید) अ. वि.–जिसका हाथ कट गया हो, विकल पाणिक, विच्छिन्न हस्त।

मक्तूब (مکتوب) अ. पुं.–लिखित, लिखा हुआ; पत्र, चिट्ठी।

मक्तूबइलैह (مکتوب الیہ) अ. वि.–जिसको पत्र लिखा जाय।

मक्तूम (مکتوم) अ. वि.–गुप्त, गुह्य, छिपा हुआ।

मक़्तूल (مقتول) अ. वि.–जिसे क़त्ल कर दिया गया हो, हत, निहत, वधित।

मक़्तूलीन (مقتولین) अ. पुं.–'मक़्तूल' का बहु., मारे गये लोग।

मक़्तूलो मज्रूह (مقتول ومجروح) अ. पुं.–जो क़त्ल हुए और जो घायल हुए, हताहत।

मक़्दिरत (مقدرت) अ. स्त्री.–दे. 'मक़्दूर'।

मक़्दूनियः (مقدونیہ) अ. पुं.–'बलक़ान' का एक प्रदेश जो पहले तुर्कों के पास था, सिकंदर यहीं राज करता था।

मक़्दूर (مقدور) अ. पुं.–शक्ति, बल, ज़ोर; सामर्थ्य, मक़्दिरत; साहस, हिम्मत; समाई, गुंजाइश; धन, दौलत; बस, क़ाबू।

मक़्ना' (مقنع) अ. पुं.–वह महीन कपड़ा जो निकाह के समय दूल्हा को पिन्हाते हैं, इसका शुद्ध उच्चारण 'मिक़्ना' है, परन्तु उर्दू में 'मक़्ना' भी प्रचलित है।

मक़्नातीस (مقناطیس) अ. पुं.–वह पत्थर जो लोहे को खींचता है, चुंबक, अयस्कांत, आकर्ष, वज्रलोहक, दे. 'मिक़्नातीस', दोनों शुद्ध हैं।

मक्नून (مکنون) अ. वि.–छिपाया हुआ; दिया हुआ; भेद, रहस्य; मन की बात, मंशा।

मक्नूने ख़ातिर (مکنون خاطر) अ. वि.–मन में छिपायी हुई बात, दिल का भेद।

मक्फ़ूफ़ (مکفوف) अ. वि.–कपड़ा लपेटा हुआ; उर्दू छंद में में सप्त अक्षरीयगण (मुस्तफ़अलुन्, मफ़ाईलुन्, फ़ाइलातुन् में से अन्तिम अक्षर कम करके मुस्तफ़्अलु, मफ़ाईलु, फ़ाइलातु बनाना)।

मक्फ़ूल (مکفول) अ. वि.–रेहन रखा हुआ, गिरौ, बंधक।

मक़्बरः (مقبرہ) अ. पुं.–वह क़ब्र जिस पर इमारत या गुंबद हो।

मक़्बूज़ः (مقبوضہ) अ. वि.–जो चीज़ क़ब्ज़े में हो, मिल्कियत।

मक़्बूल (مقبول) अ. वि.–सर्वप्रिय, हरदिल अज़ीज़; स्वीकृत, मंज़ूर; रुचिकर, पसंदीदः।

मक़्बूलियत (مقبولیت) अ. स्त्री.–सर्वप्रियता, हरदिल-अज़ीज़ी; पसंदीदगी, रुचि।

मक़्बूलुद्दुआ (مقبول الدعا) अ. वि.–जिसकी दुआ तुरंत क़बूल होती हो, वाक्‌सिद्ध।

मक़्बूले बारगाह (مقبول بارگاہ) अ. फा. वि.–ईश्वर का प्यारा; किसी बड़े आदमी के यहाँ बहुत संमानित व्यक्ति।

मक्र (مکر) अ. पुं.–छल, धोखा, वंचना, ठगी; मिष, बहाना; धूर्तता, चालाकी।

मक्रुमत (مکرمت) अ. स्त्री.–कृपा, दया, अनुकंपा; संमान, प्रतिष्ठा, वक़ार।

मक्रुमतनामः (مکرمت نامہ) अ. फा. पुं.–कृपापत्र।

मक्रूक़ (مقروق) तु. वि.–वह माल जो क़ुरुक़ हो गया हो, आसंजित।

मक्रूज़ (مقروض) अ. वि.–ऋणी, क़र्ज़दार।

मक्रून (مقرون) अ. वि.–समीप, पास, नज़दीक; मिलाया हुआ, पास किया हुआ।

मक्रूब (مکروب) अ. वि.–दुःखित, ग़मगीन, शोक-संतप्त।

मक्रूह (مکروہ) अ. वि.–घृणित, जिसे देखकर घिन आये; भद्दा, बदनुमा; इस्लाम धर्म में वह चीज़ जिसका खाना अच्छा न हो, परन्तु वह हराम न हो।

मक्रूहात (مکروہات) अ. पुं.–'मक्रूह' का बहु., घृणित वस्तुएँ; व्यर्थ के काम।

मक्रूहाते दुन्यवी (مکروہات دنیوی) अ. पुं.–संसार के झंझट, जीवन की बाधाएँ, दुनिया के झगड़े।

मक्रूहे तह्रीमी (مکروہ تحریمی) अ. पुं.–इस्लाम धर्म के अनुसार ऐसा मक्रूह खाद्य पदार्थ, जो हराम के लगभग पहुँच गया हो।

मक़्लूब (مقلوب) अ. वि.–उलटा हुआ।

मक़्लूबुलइज़ाफ़त (مقلوب الاضافت) अ. पुं.–वह समासगत शब्द जिसकी इज़ाफ़त उलट गयी हो, जैसे—'ख़ानए ख़ुदा' का 'ख़ुदाखान'।

मक़्लूबे कुल (مقلوب کل) अ. पुं.–वह शब्द जो क्रम से बिलकुल उलट गया हो, जैसे—'क़मर' से रमक़।

मक़्लूबे बा'ज़ (مقلوب بعض) अ. पुं.–वह शब्द जिसमें अक्षर क्रम से न उलटें, जैसे—'क़मर' से 'रक़म,।

मक़्लूबे मुस्तवी (مقلوب مستوی) अ. पुं.–वह शब्दसमूह या इबारत जो क्रम से बिलकुल उलट गयी हो।

मक्शूफ़ (مکشوف) अ. वि.–प्रकट, व्यक्त, जाहिर; जो खोला गया हो।

मक़्सद (مقصد) अ. पुं.–शुद्ध उच्चारण 'मक़्सिद' है परन्तु, उर्दू में 'मक़्सद' ही बोलते हैं, उद्देश्य, आशय, मंशा; इच्छा, ख़्वाहिश।

मक़्सिद (مقصد) अ. पुं.–दे. 'मक़्सद', शुद्ध यही है, परन्तु उर्दू में 'मक़्सद' बोलते और लिखते हैं।

मक्सूबः (مکسوبہ) अ. वि.–पैदा की हुई, कमायी हुई जाइदाद आदि।

मक्सूब (مکسوب) अ. वि.–कमाया हुआ, पैदा किया हुआ।

मक़्सूद (مقصود) अ. वि.–उद्देश्य, आशय, मंशा; इच्छा, ख़्वाहिश।

मक़्सूदबिज़्ज़ात (مقصود بالذات) अ. वि.–वह वस्तु जिसकी वास्तविक में इच्छा हो।

मक़्सूदमिन्हः (مقصود منہ) अ. वि.–जिससे मतलब हो।

मक़्सूम (مقسوم) अ. वि.–विभाजित, बाँटा हुआ; भाग्य, क़िस्मत, भाग, हिस्सा; वह संख्या जो बाँटी जाय, भाज्य।

मक़्सूम अलैह (مقسوم علیہ) अ. पुं.–वह संख्या जिससे किसी संख्या में भाग दें, भाजक, हारक।

मक़्सूमअलैहे आ'ज़म (مقسوم علیہ اعظم) अ. पुं.–वह बड़ी से बड़ी संख्या जो कई संख्याओं को पूरा बाँट दे, जैसे ६, जो १२, १८, २४, ३०, ३६, ४२, ४८ को पूरा-पूरा बाँट देती है।

मक्सूर (مقصور) अ. वि.–छोटा किया गया, जो कम या छोटा किया गया हो; कम, छोटा, ह्रस्व।

मक़्सूर (مکسور) अ. वि.–भग्न, शिकस्तः; जिस अक्षर पर 'ज़ेर' दिया गया हो।

मक़्हूर (مقہور) अ. वि.–जिस पर कोप हो, जो कोप का पात्र हो; जिस पर ख़ुदा का क़ह्र हो, दैवकोप-ग्रस्त।

मख़र (مخر) फा. प्रत्य.–मोल न लिया जानेवाला, जैसे—'हेचमख़र' जिसे कोई दो कौड़ी में भी मोल न ले, तुच्छ, नाचीज़।

मख़ाज़िन (مخازن) अ. पुं.–'मख़्ज़न' का बहु., ख़ज़ाने, ढेर।

मख़ातीम (مخادیم) अ. पुं.–'मख़्दूम' का बहु., स्वामिगण; प्रतिष्ठितजन।

मख़ाफ़ (مخاف) अ. पुं.–भय का स्थान, ख़त्रे की जगह।

मख़ाफ़त (مخافت) अ स्त्री–भय, त्रास, डर; शंका, चिंता, फ़िक्र।

मख़ारिज (مخارج) अ. पुं.–'मख़्रज' का बहु., निकलने के स्थान; शब्द उच्चारण के स्थान।

मख़ाविफ़ (مخاوف) अ. पुं.–'मख़वफ़' का बहु., भय के स्थान, ख़ौफ़ की जगहें।

मख़ीज़ (مخیض) अ. पुं.–छाछ, मट्ठा।

मख़्ज़न (مخزن) अ. पुं.–भांडागार, कोष्ठागार, गोदाम; खानि, कान; कोषागार, ख़ज़ाना; शस्त्रागार, मैगज़ीन।

मख़्ज़ून (مخزون) अ. वि.–ख़ज़ाने में रखा हुआ, छिपा हुआ, गड़ा हुआ, गुप्त, रक्षित।

मख़्ज़ूल (مخذول) अ. वि.–अपमानित, तिरस्कृत, ज़लील, ख़्वार।

मख़्तूतः (مخطوطہ) अ. पुं.–प्राचीन हस्तलिखित पत्र आदि।

मख़्तूतात (مخطوطات) अ. पुं.–'मख़्तूतः' का बहु., प्राचीन हस्तलिखित पत्रसमूह।

मख़्तून (مختون) अ. वि.–जिस मनुष्य के ख़त्ने हो गये हों।

मख़्तूबः (مخطوبہ) अ. स्त्री.–जिस लड़की की सगाई हो गयी हो, मँगेतर।

मख़्तूम (مختوم) अ. वि.–मोह्र लगा हुआ, मुद्रांकित; बंद किया हुआ।

मख़्तूर (مخطور) अ. वि.–वह विचार जो मन में उत्पन्न हो; जान जोखिम में डाला हुआ।

मख़्तूरात (مخطورات) अ. पुं.–दिल में उत्पन्न होनेवाली विचार धाराएँ।

मख़्दूमः (مخدومہ) अ. स्त्री.–स्वामिनी, मालिक; श्रीमती, महोदया, देवी (संबोधन में)।

मख़्दूम (مخدوم) अ. वि.–स्वामी, आक़ा; प्रतिष्ठित व्यक्ति, मान्य, पूज्य।

मख़्दूमी (مخدومی) अ. वि.–(संबोधन में) हे स्वामी, हे मालिक, (शब्दार्थ) मेरे स्वामी।

मख़्दूश (مخدوش) अ. वि.–भयसंकुल, पुर ख़तर; भयानक, डरावना; धूर्त, धोखेबाज़; जिसके मन में शंकाएँ हों।

मख़्नूक़ (مخنوق) अ. वि.–जिसका गला घोंटकर मारा गया हो, गला मरोड़ा हुआ।

मख़्फ़ी (مخفی) अ. वि.–गुप्त, छिपा हुआ।

मख़्बूत (مخبوط) अ. वि.–ख़ब्ती, जिसका दिमाग़ ख़राब हो, विकृत-मस्तिष्क।

मख़्बूतुलहवास (مخبوط الحواس) अ. वि.–जिसके होशोहवास जाते रहे हों, विकृत मस्तिष्क, वातुल, पागल।

मख़्मल (مخمل) फा. स्त्री.–एक प्रकार का रंगीन और मुलाइम रुएँदार कपड़ा।

मख़्मली (مخملی) फा. वि.–मख़्मल का बना हुआ, मख़्मल मढ़ा हुआ, मख़्मल-जैसा।

मख़्मसः (مخمصہ) अ. पुं.–बखेड़ा, झंझट, झमेला; चिंता, फ़िक्र; भय, डर।

मख़्मसात (مخمصات) अ. पुं.–बखेड़े, जंजाल, झंझट।

मख़्मूर (مخمور) अ. वि.–नशे में चर, उन्मत्त, मदोन्मत्त।

मख़्रज (مخرج) अ. पुं.–निकलने की जगह; उद्गम, नदी के निकलने का स्थान; अक्षर के उच्चारण का स्थान, कंठ आदि।

मख़्रूत (مخروط) अ. वि.–ख़राद किया हुआ, छीला हुआ; वह पदार्थ जो गाजर की भाँति एक ओर मोटा और दूसरी ओर पतला हो, शुंडाकार।

मख़्रूती (مخروطی) अ. वि.–शुंडाकार, शंक्वाकार, गाजर की तरह एक ओर मोटा और एक ओर पतला।

मख़्लेसी (مخلصی) फा. स्त्री.–वंधनमुक्ति, छुटकारा, रहाई, इस अर्थ में 'मुख़्लिसी' अशुद्ध है।

मख़्लूअ (مخلوع) अ. वि.–वाहर लाया हुआ; निकाला हुआ।

मख़्लूक़ (مخلوق) अ. स्त्री.–उत्पन्न, जनित; संसार, जगत्, दुन्या; दुन्यावाले, मनुष्य, लोग।

मख़्लूक़ात (مخلوقات) अ. स्त्री.–वे सब चीज़ें जो संसार में हैं।

मख़्लूत (مخلوط) अ. वि.–मिश्रित, मिला-जुला, गड्ड-वड्ड।

मख़्लूतुन्नस्ल (مخلوط النسل) अ. वि.–जिसके वंश में गड़वड़ हो, जिसमें दूसरा रक्त भी सम्मिलित हो।

मख़्सूस (مخصوص) अ. वि.–प्रमुख, प्रधान, ख़ास।

मख़्सूसन (مخصوصاً) अ. अव्य.–ख़ास तौर पर, मुख्यतः, प्रधानतः।

मग़ (مغ) फा. वि.–गंभीर, गहरा; छोटी नदी।

मगर (مگر) फा. अव्य.–परंतु, लेकिन।

मगस (مگس) फा. स्त्री.–मक्षिका, मक्खी।

मगसगीर (مگس گیر) फा. वि.–मक्खी पकड़नेवाला, (स्त्री.) मकड़ी, लूता।

मगसराँ (مگس راں) फा. वि.–चँवर, मोरछल; मक्खियाँ उड़ानेवाला।

मगसरानी (مگس رانی) फा. स्त्री.–मक्खियाँ उड़ाना, मोरछल झलना।

मगसी (مگسی) फा. वि.–मक्खी के रंग का, मटमैला।

मग़ाक (مغاک) फा. पुं.–गर्त, गढ़ा, गड्ढा।

मग़ाजी (مغازی) अ. पुं.–'मग़्ज़ा' का बहु., वह किताव जिसमें गाज़ियों के कारनामों का वर्णन हो।

मग़ारः (مغارہ) अ. पुं.–पहाड़ की खोह, गुफा, कंदरा; लूट-मार का स्थान।

मग़ार (مغار) फा. पुं.–गोह, गुफा, कंदरा, पहाड़ की खोह।

मग़ारिब (مغارب) अ. पुं.–'मग़्रिब' का वहु., सूरज डूबने की जगहें।

मग़्ज़ (مغز) फा. पुं.–मस्तिष्क, भेजा; गिरी, गूदा; सार, तत्त्व; बुद्धि, अक़्ल; निष्कर्ष, नतीजा।

मग़्ज़ूब (مغضوب) अ. वि.–जिस पर कोप हो, कोप का पात्र।

मग़्ज़े उस्तुख़्वाँ (مغز استخواں) फा. पुं.–हड्डी का गूदा, मज्जा।

मग़्ज़े सर (مغز سر) फा. पुं.–भेजा, मस्तिष्क।

मग़्ज़े सुख़न (مغز سخن) फा. पुं.–बात का सार, बात की तह, बात का ख़ुलासा; लुब्बेलुबाब, सारांश।

मग़्फ़िरत (مغفرت) अ. स्त्री.–मोक्ष, मुक्ति, नजात; "कहते हैं आज ज़ौक़ जहाँ से गुज़र गया, क्या ख़ूब आदमी था, ख़ुदा मग़्फ़िरत करे।"—ज़ौक़।

मग़्फ़ूर (مغفور) अ. वि.–जिसका मोक्ष हो गया हो, जो मोक्ष को प्राप्त हो गया हो।

मग़्बूत (مغبوط) अ. वि.–जिस पर दूसरे लोग ईर्ष्या करें।

मग़्बून (مغبون) अ. वि.–जिसे हानि पहुँचायी गयी हो, जिसका ग़ब्न किया गया हो।

मग़्मूज़ (مغموز) अ. वि.–जिस पर आरोप लगाया गया हो; दूषित, विकृत, मा'यूब।

मग़्मूम (مغموم) अ. वि.–दुःखित, अनुतप्त, क्लेशित, रंजीदा।

मग़्रिब (مغرب) अ. पुं.–सूरज डूबने की जगह, अस्ताचल; पश्चिम, मग़्रिब।

मग़्रिबज़दः (مغرب زدہ) अ. फा. वि.–जो रहन-सहन में यूरोपीय देशों का अनुकरण करने का गर्व करता हो।

मग़्रिबज़दगी (مغرب زدگی) अ. फा. स्त्री.–रहन-सहन और वेष-भूषा में यूरोप का अनुसरण।

मग़्रिबपरस्त (مغرب پرست) अ. फा. वि.–जो हर बात में यूरोप को ही मान्यता देता हो।

मग़्रिबपरस्ती (مغرب پرستی) अ. फा. स्त्री.–हर बात में यूरोप को ही अच्छा और अनुकरणीय जानना।

मग़्रिबी (مغربی) अ. वि.–पश्चिमी, पच्छिम का; यूरोप का, पाश्चात्य।

मग़्रिबीयत (مغربیت) अ. स्त्री.–यूरोप का असर, नवीन सभ्यता का प्रभाव।

मग़्रूर (مغرور) अ. वि.–अहंकारी, घमंडी।

मग़्लतः (مغلطہ) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति भ्रम में पड़ जाय।

मग़्लूक़ (مغلوق) अ. वि.–वह दरवाज़ा जिसके किवाड़ बंद हों।

मग़्लूब (مغلوب) अ. वि.–पराजित, परास्त, हारा हुआ; अधीन, ज़ेर, दुर्बल।

मग़्लूबुलग़ज़ब (مغلوب الغضب) अ. वि.–वह व्यक्ति जो क्रोध में आपे से बाहर हो जाय।

मग़्लूबुश्शहवत (مغلوب الشہوت) अ. वि.–वह व्यक्ति जो काम शक्ति के वस में हो।

मग़्लूल (مغلول) अ. वि.–शृंखलित, जिसके गले में सज़ा का तौक़ पड़ा हो।

मग़्शूश (مغشوش) अ. वि.–मिलावटवाली चीज़, वह शुद्ध वस्तु जिसमें कुछ अशुद्ध वस्तु मिली हो।

मग़्स (مغص) अ. स्त्री.–मरोड़, पेचिश।

मग़्सूल (مغسول) अ. वि.–नहलाया हुआ; वह दवा जो किसी अरक़ आदि में खरल करके महीन की गयी हो, जैसे—'लाजवर्द मग़्सूल', स्नात, मार्जित।

मज़ः (مزہ) फा. पुं.–स्वाद, ज़ाइक़ा; आनंद, लुत्फ़; तमाशा, सैर; दंड, सज़ा।

मज़ःदार (مزہ دار) फा. वि.–स्वादिष्ठ, लज़ीज़; मनोरंजक, दिलचस्प; उल्लासपूर्ण, पुरलुत्फ़।

मज़न्नः (مظنہ) अ. पुं.–दे. शु. 'मज़िन्नः'।

मज़म्मत (مذمت) अ. स्त्री.–तिरस्कार, बेइज़्ज़ती; निंदा, रुसवाई, बुराई, हज्व।

मज़र्रत (مضرت) अ. स्त्री.–हानि, नुक़्सान।

मज़र्रतदिही (مضرت دہی) अ. फा. स्त्री.–हानि पहुँचाना, नुक़्सान, देना।

मज़र्रतदेह (مضرت دہ) अ. फा. वि.–हानिदायक, हानिकारक, नुक़्सान देनेवाला।

मज़र्रत.साँ (مضرت رساں) अ. फा. वि.–दे. 'मज़र्रत देह'।

मज़र्रतरसानी (مضرت رسانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मजर्रतदिही'।

मज़र्रतरसी (مضرت رسی) अ. फा. स्त्री.–हानि पहुँचना।

मजल्लः (مجلہ) अ. पुं.–पत्रिका, रिसाला; अख़्बार, समाचारपत्र।

मज़ल्लत (مذلت) अ. स्त्री.–तिरस्कार, ज़िल्लत; निंदा, बदनामी।

मज़ल्लत (مزلت) अ. स्त्री.–पाँव फिसलने का स्थान, चूकने का मौक़ा।

मजस [स्स] (مجس) अ. स्त्री.–नब्ज़ पर हाथ रखने की जगह, दे. 'मिजस', दोनों शुद्ध हैं।

मज़ा (مضی) अ. क्रि.–गुज़रा, गत।

मज़ाक़ (مذاق) अ. पुं.–परिहास, दिल्लगी; मनोविनोद, तफ़्रीह; रसिकता, ज़ौक़; सुरुचि; सहृदयता।

मज़ाक़न (مذاقاً) अ. अव्य.–दिल्लगी में, मज़ाक़ के तौर पर।

मज़ाकपसंद (مذاق پسند) अ. फा. वि.–जिसके मिज़ाज में मज़ाक़ बहुत हो, दिल्लगीबाज़, परिहासप्रिय, विनोदी, प्रमोदशील।

मज़ाक़ियः (مذاقیہ) अ. वि.–मज़ाक़ पसंद; परिहासपूर्ण, पुरमज़ाक़।

मज़ाक़े अदब (مذاق ادب) अ. पुं.–साहित्य-रसिकता।

मज़ाक़े शे'र (مذاق شعر) अ. पुं.–काव्यरसिकता।

मज़ाक़े सुख़न (مذاق سخن) अ. फा. पुं.–दे. 'मज़ाक़े शे'र'।

मजाज़ (مجاز) अ. पुं.–जो वास्तविक न हो, भ्रम; लक्षण; ईश्वर के अतिरिक्त सारा संसार।

मजाज़न (مجازاً) अ. अव्य.–लाक्षणिक अर्थ में।

मजाज़ी (مجازی) अ. वि.–जो हक़ीक़ी न हो, भौतिक।

मजाज़ीब (مجاذیب) अ. पुं.–'मज्ज़ूब' का बहु., मज्ज़ूब लोग।

मजानीन (مجانین) अ. पुं.–'मज्नून' का बहु., पागल लोग।

मज़ा मा मज़ा (مضیٰ مامضیٰ) अ. वा.–जो हो चुका सो हो चुका।

मज़ामीन (مضامین) अ. पुं.–'मज़्मून' का बहु., लेख-समूह।

मज़ामीर (مزامیر) अ. पुं.–'मिज़्मार' का बहु., बाँसुरियाँ, बंसियाँ; बजानेवाले सब बाजे।

मज़ार (مزار) फा. पुं.–दर्शन का स्थान; किसी पीर फ़क़ीर की क़ब्र।

मज़ार [र्र] (مضار) अ. पुं.–'मज़र्रत' का बहु., हानियाँ, नुक़्सानात।

मज़ारात (مزارات) अ. पुं.–'मज़ार' का बहु., बुज़ुर्गों के मज़ार।

मजारी (مجاری) अ. पुं.–'मज्रा' का बहु., निकलने के स्थान; चालू रस्ते।

मजाल (مجال) अ. स्त्री.–शक्ति, बल; साहस, हिम्मत; सामर्थ्य, मक़्दूर।

मज़ालिम (مظالم) अ. पुं.–'मज़्लमः' का बहु., अत्याचार, ज़ियादतियाँ, ज़ुल्म।

मजालिस (مجالس) अ. स्त्री.–'मज्लिस' का बहु., सभाएँ; मुहर्रम की मज्लिसें।

मजाले दमज़दन (مجال دمزدن) अ. फा. स्त्री.:–उफ़ करने की ताक़त, दम मारने का साहस।

मजाले सुख़न (مجال سخن) अ. फा. स्त्री.–बात करने का साहस।

मज़ाहिब (مذاہب) अ. पुं.–'मज़्हब' का बहु., धर्मसमूह।

मज़ाहिर (مظاہر) अ. पुं.–'मज़्हर' का बहु., प्रकट होने के स्थान।

मज़िन्नः (مظنّہ) अ. पुं.–जिस पर शक किया जा सके, शंका का स्थान।

मज़िल्लत (مزلت) अ. स्त्री.–फिसलना; फिसलन।

मज़िल्लत (مضلت) अ. स्त्री.–रस्ता भटकने का स्थान; वह स्थान जहाँ रस्ता गुम हो गया हो।

मज़ी (مذی) अ. स्त्री.–एक लेस जो काम वेग के समय निकलता है।

मजीद (مجید) अ. वि.–पूज्य, मान्य, प्रतिष्ठित।

मज़ीद (مزید) अ. वि.–अतिरिक्त, फ़ालतू; अधिक, ज़ियादा; और भी।

मज़ीदअलैह (مزیدعلیہ) अ. वि.–जिस पर कुछ बढ़ाया हो।

मज़ीदबराँ (مزیدبراں) अ. फा. वि.–इसके अतिरिक्त।

मजीदी (مجیدی) अ. स्त्री.–अरब का एक सिक्का।

मजूस (مجوس) अ. पुं.–अग्निपूजक लोग, आतशपरस्त लोग, पार्सी लोग; चाँद या सूरज के पूजनेवाला।

मजूसी (مجوسی) अ. पुं.–अग्निपूजक, आतशपरस्त; सूर्यपूजक, अथवा चंद्रपूजक, सूरज या चाँद को पूजनेवाला।

मज़्ऊम (مزعوم) अ. वि.–विचारा हुआ, सोचा हुआ।

मज़्कूरः (مذکورہ) अ. वि.–कही हुई, कही हुई बात।

मज़्कूर (مذکور) अ. वि.–कहा हुआ ; चर्चा, ज़िक्र।

मज़्कूरएबाला (مذکورۂ بالا) अ. फा. वि.–जिसकी चर्चा ऊपर की इबारत में हो चुकी हो, उपर्युक्त।

मज़्कूरए सद्र (مذکورۂصدر) अ. वि.–उपर्युक्त, पूर्वोक्त, जिसकी चर्चा ऊपर या पहले हो चुकी हो।

मज़्कूरी (مذکوری) अ. पुं.–चपरासी, पियादा, सम्मन आदि की ता'मील करनेवाला चपरासी।

मज़्ग़ (مضغ) अ. पुं.–चबाना, चर्वण।

मज्ज़ूब (مجذوب) अ. वि.–वह फ़क़ीर जो देखनेवालों की दृष्टि में बावला हो, परन्तु ब्रह्मलीन हो,—"तेरा मज्ज़ूब जो महरूमे पिज़ीराई है, क्या जुनूँ में अभी आमेज़िशे-दानाई है।"

मज्ज़ूबसिफ़त (مجذوب صفت) अ. वि.–जिसमें मज्ज़ूबों-जैसी बातें हों।

मज्ज़ूबानः (مجذوبانہ) अ. फा. अव्य.–मज्ज़ूबों की भाँति, मज्ज़ूबों-जैसा (काम आदि)।

मज्ज़ूबियत (مجذوبیت) अ. स्त्री.–जज़्ब, मज्ज़ूब का भाव, तन्मयता, तल्लीनता।

मज्ज़ूम (مجذوم) अ. वि.–जिसे कोढ़ हो, कुष्ठी।

मज्ज़ूम (مجزوم) अ. वि.–निश्चित, यक़ीनी; विच्छिन्न, काटा हुआ; हलन्त, वह अक्षर जिस पर 'जज़्म' हो, हल्।

मज्ज़ूर (مجذور) अ. वि.–वह संख्या जो दो संख्याओं के गुणन से प्राप्त हो, घात, गुणनफल, हासिले ज़र्ब।

मज़्जूर (مزجور) अ. वि.–जिसे झिड़कियाँ दी गयी हो, जिसे डाँट-डपट की गयी हो।

मज्द (مجد) अ. पुं.–श्रेष्ठता, पवित्रता, पुनीतता, बुज़ुर्गी।

मज्दूद (مجدود) अ. पुं.–पुनीतात्मा, श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग।

मज़्दूर (مزدور) अ. फा. पुं.–मज़्दूरी करनेवाला, श्रमिक।

मज़्दूरी (مزدوری) फा. स्त्री.–हाथ-पाँव की मेहनत से जीविका पैदा करना, मेहनत, श्रम।

मज्नूँ (مجنوں) अ. वि.–वातुल, विक्षिप्त, पागल।

मज़्नून (مظنون) अ. वि.–जिसकी तरफ़ किसी बात का शुबहा हो।

मज़्बलः (مزبلہ) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ कूड़ा-करकट और मैला आदि डाला जाय।

मज़्बलःख़ानः (مزبلہ خانہ) अ. फा. पुं.–गंदगी डालने का स्थान, इस शब्द में 'ख़ानः' अधिकहै, क्योंकि 'मज़्बलः' में स्थान का अर्थ मौजूद है।

मज़्बह (مذبح) अ. पुं.–जब्ह किये जाने की जगह, वधभूमि, वधस्थल।

मज़्बूत (مضبوط) अ. वि.–दृढ़, पक्का; निश्चित, यक़ीनी; शक्तिशाली, ताक़तवर; तगड़ा, अधिक ज़ोरवाला; स्थायी, देरपा।

मज़्बूती (مضبوطی) अ. स्त्री.–दृढ़ता, पक्कापन; निश्चय, यक़ीन; शक्ति, ज़ोर; तगड़ापन; स्थायित्व।

मज्बूर (مجبور) अ. वि.–विवश, लाचार; बाध्य,, पाबंद; निःसहाय, निराश्रय; दरिद्र, कंगाल।

मज़्बूर (مذبور) अ. वि.–उक्त, कहा हुआ; उल्लिखित, लिखा हुआ; प्रोक्त; कथित।

मज़्बूर (مزبور) अ. वि.–उक्त, कहा हुआ; लिखित, लिखा हुआ।

मज्बूरन (مجبوراً) अ. अव्य.–विवशतापूर्वक, विवश होकर; अंततः, आख़िरकार।

मज्बूरी (مجبوری) अ. वि.–विवशता, लाचारी; निःसहायता, बेकसी।

मज्बूल (مجبول) अ. वि.–प्राकृतिक, फ़ित्री; प्रकृति पर उत्पन्न किया हुआ।

मज़्बूह (مذبوح) अ. वि.–जब्ह किया हुआ, वधित।

मज्मउलउलमा (مجمع العلما) अ. पुं.–विद्वज्जनों की गोष्ठी, अकादमी।

मज्मउलजज़ाइर (مجمع الجزائر) अ. पुं.–द्वीपसमूह, समुद्र का वह स्थान जहाँ पास-पास बहुत से द्वीप हों।

मज्मए आम (مجمع عام) अ. पुं.–साधारण लोगों का जमाव।

मज्मए ख़िलाफ़े क़ानून (مجمع خلاف قانون) अ. पुं.–ऐसे लोगों का जमाव जिनसे किसी झगड़े की संभावना हो, अवैध समुदाय।

मज़्मज़ः (مضمضہ) अ. पुं.–कुल्ली करना, आचमन; दवाओं के पानी से कुल्ली करना।

मज्मा' (مجمع) अ. पुं.–भीड़, जमाव; सभा, गोष्ठी।

मज्मूअः (مجموعہ) अ. पुं.–कई चीज़ों का समूह, समाहार, समष्टि; लेखों या कविताओं का संकलन, संग्रह।

मज्मूअ (مجموع) अ. वि.–एकत्र, इकट्ठा; समस्त, कुल।

मज्मूई (مجموعی) अ. वि.–सामूहिक, कुल मिलाकर।

मज़्मून (مضمون) अ. पुं.–निबंध, मक़ालः; लेख; विषय, सब्जेक्ट; मुआमला, दशा।

मज़्मूननवीस (مضمون نویس) अ. फा. वि.–लेखक; निबंधकार।

मज़्मूननवीसी (مضمون نویسی) अ. फा. स्त्री.–लेख या निबंध लिखने का काम।

मज़्मूननिगार (مضمون نگار) अ. फा. वि.–दे. 'मज्मूननवीस'।

मज़्मूननिगारी (مضمون نگاری) अ. स्त्री.–दे. 'मज्मून नवीसी'।

मज़्मूम (مضموم) अ. वि.–वह अक्षर जिस पर पेश ('उ' की मात्रा) हो।

मज़्मूम (مذموم) अ. वि.–अश्लील, फ़ुह्श; दूषित, ख़राब; निंदित, क़बीह।

मज़्रए आख़िरत (مزرعۂ آخرت) अ. पुं.–परलोक की खेती अर्थात् पाप और पुण्य।

मज्रा (مجریٰ) अ. पुं.–जारी होने की जगह, बहने का स्थान।

मज़्रा' (مزرع) अ. पुं.–खेती; खेत; छोटा गाँव।

मज़्रूअः (مزروعہ) अ. स्त्री.–जोती बोयी हुई ज़मीन।

मज़्रूअ (مزروع) अ. वि.–जोता-बोया हुआ।

मज़्रूब (مضروب) अ. वि.–जिसे पीटा गया हो; जिसे दुश्मनी में मारा गया हो; जिस संख्या को गुणा किया गया हो।

मज़्रूबफ़ीहि (مضروب فیہ) अ. पुं.–वह संख्या जिसमें गुणा किया गया हो, गुण्य, जैसे—बीस को पाँच से गुणा किया हो तो बीस 'मज़्रूबफ़ीह' है।

मज़्रूबमिन्हु (مضروب منہ) अ. पुं.–जिस संख्या से गुणा किया जाय, गुणक, जैसे—२० को ६ से गुणा किया हो तो ६ 'मज़्रूब मिनहु' है।

मज़्रूफ़ (مظروف) अ. पुं.–वह वस्तु जो बरतन में हो।

मज्रूर (مجرور) अ. वि.–वह अक्षर जिसे ज़ेर ('इ' की मात्रा) दिया गया हो।

मज्रूह (مجروح) अ. वि.–घायल, क्षत, आहत, ज़ख़्मी; वह बयान जो जिरह में बिगड़ गया हो, (न्याय)।

मज्रूहीन (مجروحین) अ. पुं.–बहुत से घायल।

मज़्लिमः (مظلمہ) अ. पुं–दादख़्वाही, न्याययाचना; अत्याचार और अनीति का पाप, बवाल।

मज़्लिम (مظلم) अ. पुं.–अँधेरी जगह, अंधकारमय स्थान।

मज्लिस (مجلس) अ. स्त्री.–सभा, अंजुमन; गोष्ठी, महफिल; समिति, कमेटी; संघ, एसोसीएशन; करबला के शहीदों की शोकसभा।

मज्लिसी (مجلسی) अ. वि.–जो मज्लिस में सम्मिलित हो।

मज्लिसे अदब (مجلس ادب) अ. स्त्री.–साहित्य-गोष्ठी, अदबी जल्सा।

मज्लिसे आमिलः (مجلس عاملہ) अ. स्त्री.–कार्यकारिणी समिति, विषय निर्वाचिनी समिति।

मज्लिसे उदबा (مجلس ادبا) अ. स्त्री.–साहित्यगोष्ठी, कवि-गोष्ठी।

मज्लिसे उमूमी (مجلس عمومی) अ. स्त्री.–दे. 'दारुल अवाम'।

मज्लिसे क़ानूनसाज़ (مجلس قانون ساز) अ. फा. स्त्री.–विधानसभा, क़ानून बनानेवाली एसैम्बली।

मज्लिसे तहक़ीक़ात (مجلس تحقیقات) अ. स्त्री.–परिपृच्छा समिति।

मज्लिसे ता'मीरात (مجلس تعمیرات) अ. स्त्री.–लोक-कर्म-समिति।

मज्लिसे मातम (مجلس ماتم) अ. फा. स्त्री.–शोकसभा।

मज्लिसे मुंतज़िमः (مجلس منتظمہ) अ. स्त्री.–अंतरंग सभा, व्यवस्थापिका।

मज्लिसे मै (مجلس مے) अ. फा. स्त्री.–पानगोष्ठी।

मज्लिसे रक़्सो सरोद (مجلس رقص و سرود) अ.फा. स्त्री.–नाच-रंग की महफ़िल।

मज्लिसे वा'ज़ (مجلس وعظ) अ. स्त्री.–उपदेश सभा, धर्मोपदेशसभा।

मज्लिसे शुअरा (مجلس شعرا) अ. स्त्री.–कविगोष्ठी।

मज्लिसे शूरा (مجلس شوری) अ. स्त्री.–मंत्रणालय।

मज्लिसे शे'र (مجلس شعر) अ. स्त्री.–साहित्यगोष्ठी, कवि-गोष्ठी।

मज्लिसे सुख़न (مجلس سخن) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मज्लिसे शे'र'।

मज़्लूम (مظلوم) अ. वि.–जिस पर ज़ुल्म हुआ हो।

मज़्लूमियत (مظلومیت) अ. स्त्री.–मज़्लूम होने का भाव।

मज़्लूमी (مظلومی) अ. वि.–दे. 'मज़्लूमियत'।

मज़्हकः (مضحکہ) अ. पुं.–हँसी, ठट्ठा, परिहास; निंदा, रुस्वाई, हजो।

मज़्हकःअंगेज़ (مضحکہ انگیز) अ. फा. वि.–जिस पर हँसी आये, जो परिहास का विषय हो।

मज़्हकःआमेज़ (مضحکہ آمیز) अ. फा. वि.–परिहासपूर्ण, जिसमें हँसी-ठठोल शामिल हो।

मज़्हकःख़ेज़ (مضحکہ خیز) अ. फा. वि.–दे. 'मज़्हकः अंगेज़'।

मज़्हब (مذہب) अ. पुं.–धर्म, दीन; मत, अक़ीदः।

मज़्हबी (مذہبی) अ. वि.–धार्मिक, दीनी, धर्मसम्बन्धी।

मज़्हबीयत (مذہبیت) अ. स्त्री.–धर्म में निष्ठा, धर्मित्व।

मज़्हर (مظہر) अ. पुं.–प्रकट होने का स्थान, जहाँ या जिसमें कोई चीज़ प्रकट हो, जैसे—"वह ख़ुदा के नूर का मज़्हर है" अर्थात् उसके रूप में ईश्वर की ज्योति प्रकट हुई है।

मज़्हरुल अजाइब (مظہر العجائب) अ. पुं.–अद्भुत और विचित्र बातें ज़ाहिर होने का स्थान।

मज्हूल (مجہول) अ. वि.–जो ज्ञात न हो, अज्ञात, नामा'लूम; आलसी, सुस्त, काहिल।

मज्हुलुन्नसब (مجہول النسب) अ. वि.–अज्ञात कुल, जिसके वंश का अता-पता न हो।

मज्हूलुलइस्म (مجہول الاسم) अ. वि.–अज्ञात नाम, जिसका नाम न मालूम हो।

मज्हूलुलहाल (مجہول الحال) अ. वि.–जिसका हाल न ज्ञात हो कि वह कैसा व्यक्ति है और किस प्रकार का है, अज्ञातशील।

मतब (مطب) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ चिकित्सक रोगियों के रोग का निदान करता है।

मतर (مطر) अ. पुं.–वर्षा, बरसात।

मताअ' (متاع) अ. उभ.–पूँजी, सरमाया; सामान, माल-अस्बाब, उदा.—"किसी के काम आयेगा मताए रायगाँ होकर, कहाँ जाता है यारब, दिल मेरा अश्केरवाँ होकर।"

मताइन (مطاعن) अ. पुं.–'ता'न', का बहु., ता'ने।

मताइब (متاعب) अ. पुं.–'तअब' का बहु.; दुःख-समूह, रंजोग़म; थकान।

मताए आख़िरत (متاع آخرت) अ. उभ.–परलोक के लिए पूँजी, पुण्य, अच्छे काम।

मताए दिल (متاع دل) अ. फा. उभ.–दिल रूपी पूँजी।

मताए दो (दु) जहाँ (متاع دوجہاں) अ. फा. उभ.–संसार और यमलोक दोनों लोकों के लिए पूँजी, यश, पुण्य।

मतानत (متانت) अ. स्त्री.–गंभीरता, धीरता, संजीदगी।

मताफ़ (مطاف) अ. पुं.–परिक्रमा करने का स्थान।

मताबे' (مطابع) अ. पुं.–'मत्बा' का बहु., मुद्रालय समूह।

मतार (مطار) अ. पुं.–उड़ने की जगह, जहाँ उड़ा जाय, जहाँ से उड़ा जाय।

मतालिब (مطالب) अ. पुं.–'मत्लब' का बहु., अर्थसमूह।

मतीन (متین) अ. वि.–जिसमें मतानत हो, गंभीर, धीर, शांतचित्त, संजीदः।

मतीर (مطیر) अ. वि.–बरसनेवाला (बादल)।

मत्ऊन (مطعون) अ. वि.–कुख्यात, बदनाम; निंदित, गर्हित, कुत्सित, रुस्वा।

मत्ऊने ख़लाइक़ (مطعون خلائق) अ. वि.–जो सब में बदनाम हो, लोकनिंदित।

मत्ऊम (مطعوم) अ. वि.–खाने की चीज़, खाद्य, जो चीज़ खायी जाय।

मत्ऊमात (مطعومات) अ. पुं.–'मत्ऊम' का बहु., खाने की चीज़ें, खाद्य-पदार्थ।

मत्न (متن) अ. पुं.–पुस्तक का मूल लेख जिसकी टीका की जाय; बीच, मध्य; शाल या रजाई आदि का वह भाग जो हाशिए के बीच में होता है।

मत्बख़ (مطبخ) अ. पुं.–रसोईघर, पाकशाला, महानस, बावरचीख़ाना।

मत्बख़ी (مطبخی) अ. वि.–रसोइया, सूपकार, बावरची।

मत्बा' (مطبع) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ किताबें आदि छपती हैं, मुद्रणशाला, यंत्रालय।

मत्बूअ (متبوع) अ. वि.–जिसका अनुकरण किया जाय, अनुसरणीय।

मत्बूअः (مطبوعہ) अ. वि.–मुद्रित, छपी हुई।

मत्बूआत (مطبوعات) अ. वि.–मुद्रित, छपा हुआ; रुचिकर, पसंदीदः, मनोवांछित।

मत्बूअ (مطبوع) अ. पुं.–किसी प्रेस या कार्यालय के ओर से छापी हुई पुस्तकें।

मत्बूख़ (مطبوخ) अ. वि.–आग पर पकी हुई चीज़; जोश दी हुई दवा, जोशांदा, क़्वाथ, काढ़ा।

मत्मह (مطمح) अ. पुं.–ऊँचा स्थान जिस पर दृष्टि पड़े, दृष्टि पड़ने की जगह।

मत्महे नज़र (مطمح نظر) अ. पुं.–दृष्टि पड़ने की ऊँची जगह, आशय, उद्देश्य, मक़्सद।

मत्रूद (مطرود) अ. वि.–बहिष्कृत, निकाला हुआ, भगाया हुआ, राँदः।

मत्लब (مطلب) अ. वि.–उद्देश्य, मंशा; अर्थ, मा'नी; प्रयोजन, वास्ता; इच्छा, ख़्वाहिश; क्या ग़रज़ क्या वास्तः ? ; स्वार्थ, ग़रज़।

मत्लबआश्ना (مطلب آشنا) अ. फा. वि.–स्वार्थी, ख़ुदग़रज़।

मत्लबदोस्त (مطلب دوست) अ. फा. वि.–गौं का यार, स्वार्थपरायण।

मत्लबपरस्त (مطلب پرست) अ. फा. वि.–स्वार्थसाधक, स्वार्थी।

मत्लबपरस्ती (مطلب پرستی) अ. फा. स्त्री.–अपनी ग़रज़ निकालना, स्वार्थपरायणता।

मत्लबबरारी (مطلب براری) अ. फा. स्त्री.–स्वार्थ सिद्ध करना, ग़रज़ निकालना।

मत्लबी (مطلبی) अ. वि.–स्वार्थी, स्वार्थपरायण।

मत्ला' (مطلع) अ. पुं.–ग़ज़ल का पहला शे'र जिसके दोनों मिस्रे सानुप्रास होते हैं।

मत्लूबः (مطلوبہ) अ. वि.–वांछित वस्तु; प्रेमिका।

मत्लूब (مطلوب) अ. वि.–वांछित, मनोनीत, जिसकी इच्छा की जाय; प्रेमपात्र, मा'शूक़।

मत्वी (مطوی) अ. वि.–लिपटा हुआ।

मत्हूल (مطحول) अ. वि.–जिसे तिल्ली का रोग हो, जिसकी तिल्ली बढ़ गयी हो।

मद [द्द] (مد) अ. पुं.–अलिफ़ के ऊपर बनायी जानेवाली लकीर जिससे वह लंबा करके पढ़ा जाता है; समुद्र के पानी का चढ़ाव, ज्वार, (स्त्री.) वह लंबी लकीर जो बही में खींचकर उसके नीचे भिन्न-भिन्न रक़्में लिखते हैं, जैसे—'ख़र्च' की मद, पेटा।

मदद (مدد) स्त्री.–सहायता, इम्दाद; पक्षपात, हिमायत; आश्रय, सहारा; राज मज़दूरों का काम।

मददख़्वाह (مددخواہ) अ. फा. वि.–सहायता माँगनेवाला।

मददगार (مددگار) अ. फा. वि.–सहायक, मदद करनेवाला; पक्षपाती, तरफ़दार; पृष्ठपोषक, हिमायती; आश्रयदाता, सहारा देनेवाला।

मददख़र्च (مددخرچ) अ. फा. वि.–वह धन जो सहायता के रूप में ख़र्च को दिया जाय।

मददे मआश (مددمعاش) अ. स्त्री.–गुज़ारे के लिए सहायता; पिंशिन, वज़ीफ़ा; वह जागीर जो गुज़ारे के लिए दी जाय।

मदनी (مدنی) अ. वि.–मदीने का निवासी; नागरिक, शह्री।

मदनीउत्तब्अ (مدنی الطبع) अ. वि.–वह जो बहुत से आदमियों के साथ मिल-जुलकर रहने का अभ्यस्त हो।

मदाएह (مدائح) अ. पुं.–'मदीहः' का बहु., प्रशंसाएँ, तारीफ़ें।

मदाख़िल (مداخل) अ. पुं.–'मद्ख़ल' का बहु., आमदनियाँ; लगान।

मदार (مدار) अ. पुं.–धुरी, कीली; निर्भरता, इन्हिसार।

मदारअलैह (مدارعلیہ) अ. पुं.–जिस पर कोई चीज़ निर्भर हो, आधार वस्तु, आधेय।

मदारिज (مدارج) अ. पुं.–'मद्रजः' का बहु., पद, दर्जे रुतबे।

मदारिस (مدارس) अ. पुं.–'मद्रसः' का बहु., पाठशालाएँ।

मदारुलमहाम (مدارالمہام) अ. पुं.–प्रधान मंत्री, वज़ीरे आ'ज़म।

मदारे कार (مدارکار) अ. फा. पुं.–कार्यभार, कार्य की निर्भरता।

मदारे ज़ीस्त (مدارِ زیست) अ. फा. पुं.–जीवन की निर्भरता, जिंदगी का इन्हिसार।

मदीद (مدید) अ. वि.–दीर्घ, लंबा; दे. 'बह़्रे मदीद'।

मदीनः (مدینہ) अ. पुं.–नगर, शहर; अरब का एक प्रसिद्ध नगर।

मदीह (مدیح) अ. वि.–प्रशंसा, तारीफ़; स्तुति, ह़म्दोसना।

मद्ऊ (مدعو) अ. वि.–नियंत्रित, बुलाया हुआ; दा'वत में बुलाया हुआ।

मद्क़ूक़ः (مدقوقہ) अ. स्त्री.–तपेदिक़ की रोगिणी।

मद्क़ूक़ (مدقوق) अ. वि.–तपेदिक़ का रोगी।

मद्ख़नः (مدخنہ) अ. स्त्री.–धुवाँ निकलने का स्थान, चिमनी।

मद्ख़ल (مدخل) अ. पुं.–दाख़िल होने का स्थान, प्रवेश-द्वार; आय, आमदनी।

मद्ख़ूलः (مدخولہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो डाल ली हो, रखेली, उपपत्नी।

मद्ख़ूल (مدخول) अ. वि.–दाखिल किया गया, भीतर किया गया।

मद्दज़िल्लुहू (مدظلہ) अ. वा.–उनकी परछाईं लंबी हो अर्थात् उनकी उम्र बड़ी हो।

मद्दाह (مداح) अ. वि.–प्रशंसक, श्लाघी, तारीफ़ करनेवाला; स्तुतिकर्ता, ह़म्दोसना करनेवाला।

मद्दाही (مداحی) अ. स्त्री.–प्रशंसा, श्लाघा, तारीफ़; स्तुति, वंदना, ह़म्दोसना।

मद्दाहे रसूल (مداحِ رسول) अ. वि.–रसूल की प्रशंसा और स्तुति करनेवाला, ना'त लिखनेवाला, ना'त गो शाइर,

मद्देअमानत (مد امانت) अ. स्त्री.–धरोहर की मद का, धरोहर के तौर पर।

मद्दे नज़र (مدنظر) अ. वि.–जो दृष्टि के सामने हो, दृष्टिगत; मनोवांछित, दिली मक़्सूद; चित्त पर चढ़ा हुआ, मन में बसा हुआ।

मद्दे फ़ाज़िल (مد فاضل) अ. स्त्री.–फ़ालतू मद, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निकम्मा।

मद्दे मुक़ाबिल (مد مقابل) अ. पुं.–प्रतिद्वंद्वी, रक़ीब; बराबर का जोड़, बराबर की चोट; विपक्ष, हरीफ़; शत्रु, दुश्मन।

मद्दे सुर्मः (مد سرمہ) अ. फा. स्त्री.–सुरमे की लकीर, जो कनपटी की तरफ़ खींच दी जाती है।

मद्दोजज़्र (مدوجزر) अ. पुं.–समुद्र के पानी का चढ़ाव-उतार, ज्वार-भाटा।

मद्फ़न (مدفن) अ. पुं.–मुर्दे के दफ़्न होने की जगह, क़ब्र, समाधि-भवन।

मद्फ़ूअ (مدفوع) अ. वि.–दफ़्अ किया हुआ, हटाया हुआ, निवारित।

मद्फ़ून (مدفون) अ. वि.–भूनिहित, दफ़्न किया हुआ, ज़मीन में गाड़ा हुआ, (आदमी या धन आदि); गुप्त, गुह्य, पोशीदा।

मद्बूग़ (مدبوغ) अ. वि.–कमाया हुआ चमड़ा।

मद्यून (مدیون) अ. वि.–ऋणी, क़र्ज़दार, अधमर्ण।

मद्रिसः (مدرسہ) अ. पुं.–पढ़ने-पढ़ाने का स्थान, पाठशाला, विद्यालय।

मद्लूल (مدلول) अ. वि.–जिसके लिए दलील दी गयी हो, तर्कित।

मद्ह (مدح) अ. स्त्री.–प्रशंसा, श्लाघा, ता'रीफ़; स्तुति, वंदना, ह़म्दोसना।

मद्हख़्वाँ (مدح خواں) अ. फा. वि.–प्रशंसक, मद्दाह।

मद्हख़्वानी (مدح خوانی) अ. फा. स्त्री.–प्रशंसा करना, ता'रीफ़ करना।

मद्हगो (مدح گو) अ. फा. वि.–दे. 'मद्हख़्वाँ'।

मद्हगोई (مدح گوئی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मद्हख़्वानी'।

मद्हसंज (مدح سنج) अ. फा. वि.–दे. 'मद्हख़्वाँ'।

मद्हसरा (مدح سرا) अ. फा. वि.–दे. 'मद्हख़्वाँ'।

मद्हसराई (مدح سرائی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मद्हख़्वानी'।

मद्हूश (مدہوش) अ. वि.–दे. 'मद्होश' उर्दू में वही बोलते हैं।

मद्हे बेजा (مدحِ بےجا) अ. फा. स्त्री.–झूठी, प्रशंसा, ग़लत ता'रीफ़।

मद्हे वाक़िई (مدحِ واقعی) अ. स्त्री.–सच्ची ता'रीफ़, सच्ची प्रशंसा।

मद्होश (مدہوش) फा. वि.–निश्चेष्ट, बेसुध, गाफ़िल; उन्मत्त, अंटाग़फ़ील, नशे में चूर।

मद्होशी (مدہوشی) फा. स्त्री.–बेसुधपन, निश्चेष्टता; उन्मत्तता, मतवालापन।

मन (من) फा. पुं.–दो रतल का एक प्रमाण; सेर; चालीस सेर का प्रमाण, (सर्वनाम) मैं, अहम्।

मन [न्न] (منّ) अ. पुं.–कौन; एक प्रकार का मीठा पदार्थ जो पौधों पर जम जाता है और खाया जाता है, शीर ख़िश्त।

मनस्सः (منصہ) अ. पुं.–प्रकट होने का स्थान, जल्वःगाह; वह मंच जिस पर विवाह के पश्चात् दुल्हन को बिठाकर सबको दिखाते हैं।

मनस्सए शुहूद (منصۂ شہود) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ ईश्वर की महिमा प्रकट हो।

मनाइर (مناٸر) अ. पुं.–'मनारः' का बहु., 'मीनारें'।

मनाक़िब (مناقب) अ. पुं.–'मन्क़बत' का बहु., धार्मिक महात्माओं के यशोगान।

मनाज़िर (مناظر) अ. पुं.–'मंज़र' का बहु., दृश्यसमूह।

मनाज़िल (منازل) अ. स्त्री.–'मंज़िल' का बहु., मंज़िलें, मरहले।

मनाज़िले क़मर (منازل قمر) अ. स्त्री.–नक्षत्र, जिनकी संख्या २७ है। १. अश्विनी (शुर्तैन–नत्ह), २. भरणी (बुतैन), ३. कृत्तिका (सुरैया), ४. रोहिणी (दबरान), ५. मृगशिरा (हक़्अः), ६. आर्द्रा (हन्अः), ७. पुनर्वसु (ज़िराअ), ८. पुष्य (नस्नः), ९. श्लेषा (तर्फ़ः), १०. मघा (जब्हः), ११. पूर्वा फाल्गुनी (ज़ुब्रः), १२. उत्तरा फाल्गुनी (सर्फ़ः), १३. हस्त (अव्वा), १४. चित्रा (सिमाक), १५. स्वाती (अफ़रः), १६. विशाखा (ज़ुबाना), १७. अनुराधा (इक्लील), १८. ज्येष्ठा (क़ल्ब), १९. मूल (शौलः), २०. पूर्वाषाढ़ा (नआइम), २१. उत्तराषाढ़ा (बल्दः), २२. श्रवण (सा'-देज़ाबेह), २३. धनिष्ठा (बुला'), २४. शतभिषा (आव्बियः), २५. पूर्वा भाद्रपद (सऊद), २६. उत्तरा भाद्रपद (मुक़द्दम), २७. रेवती (मुअख्खर); कुछ लोग २८ मानते हैं उसका नाम अभिजित (बैतुलहूत) है।

मनात (منات) अ. पुं.–अरब की एक प्रतिष्ठित मूर्ति, जो इस्लाम से पूर्व पूजी जाती थी।

मनादील (منادیل) अ. पुं.–'मिंदील' का बहु., सर से बाँधने के रूमाल; कमर से बाँधने के पटके।

मनाफ़िज़ (منافذ) अ. पुं.–'मन्फ़ज़' का बहु., छेद, सूराख़, छिद्र-समूह।

मनाफ़े' (منافع) अ. पुं.–'मन्फ़अत' का बहु., लाभ, प्राप्तियाँ, नफ़े' फ़ाइदे।

मनाब (مناب) अ. पुं.–खड़े होने का स्थान; किसी दूसरे के स्थान पर खड़ा होना, स्थानापन्नता।

मनाबिर (منابر) अ. पुं.–'मिंबर' का बहु., बहुत-से मिंबर।

मनाम (منام) अ. पुं.–सोने का स्थान, शयनागार; सोना, स्वाप।

मनारः (منارہ) अ. पुं.–मीनार, बहुत ऊँचा खंभा; रौशनी का मीनार, दीपस्तंभ।

मनार (منار) अ. पुं.–दे. 'मनारः'।

मनाल (منال) अ. पुं.–धन, संपत्ति, रक़म, जायदाद।

मनासिक (مناسک) अ. पुं.–'मंसक' का बहु., हाजियों की इबादत की जगहें; वे कृतियाँ और संस्कार जो हज करनेवालों को मक्के में करने पड़ते हैं।

मनासिब (مناصب) अ. पुं.–'मंसब' का बहु., पदवियाँ, दर्जे।

मनाहिज (مناہج) अ. पुं.–'मिन्हज' और 'मिन्हाज' का बहु., रास्ते, मार्ग, खुले हुए और सीधे मार्ग।

मनाही (مناہی) अ. पुं.–'मन्ही' का बहु., वह काम जिनसे रोका गया हो (धर्म में)।

मनिश (منش) फा. स्त्री.–प्रकृति, स्वभाव, तबीअत। (प्रत्य.) प्रकृतिवाला, जैसे—'आज़ाद मनिश', स्वच्छन्द प्रकृतिवाला।

मनी (منی) अ. स्त्री.–वीर्य, शुक्र, धातु।

मनी (منی) फा. वि.–ममत्व, मेरापन; अहंकार, अभिमान, ख़ुदी।

मनीअ (منیع) अ. वि.–रोकनेवाला, हटानेवाला; दृढ़, मज़बूत।

मनीयत (منیت) अ. स्त्री.–मृत्यु, मरण, मौत।

मनूब (منوب) अ. वि.–जिसका प्रतिनिधित्व किया जाय।

मनूबअन्हु (منوب عنہ) अ. वि.–प्रतिनिधि, नाइब।

मन्अ (منع) अ. पुं.–रोकना, मना करना; निषेध, मनाही; अविहित, नाज़ाइज; निषिद्ध, मना किया हुआ।

मन्ए मै (منع مے) अ. फा. पुं.–मद्य-निषेध, शराब की मनाही।

मन्क़बत (منقبت) अ. स्त्री.–ख़ुदारसीदः लोगों की गुणगाथा, महात्माओं का यशोगान; अहलेबैत और असहाब की गुणगाथा।

मन्क़ल (منقل) अ. स्त्री.–अँगीठी, अंगारधानी, गोरसी।

मन्क़िज़त (منقضت) अ. स्त्री.–परस्पर विरोध, नक़ीज़; खंडत्व, तोड़।

मन्क़िसत (منقصت) अ. स्त्री.–नक़्स, ह्रास; न्यूनता, कमी; दोष, ऐब, निंदा, हज्व; तिरस्कार, अपमान, बेइज्जती।

मन्क़ूतः (منقوطہ) अ. वि.–वह अक्षर जिस पर नुक़्तः हो, जैसे— ب , ت , ج , ذ , ش आदि।

मन्क़ूत (منقوط) अ. वि.–दे. 'मन्क़ूतः'।

मन्कूब (منکوب) अ. वि.–दरिद्र, कंगाल, दुर्दशाग्रस्त।

मन्क़ूलः (منقولہ) अ. वि.–एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जायी हुई चीज़; नक़्ल की हुई, प्रतिलिपित।

मन्क़ूल (منقول) अ. वि.–एक स्थान से हटाकर दूसरी जगह पहुँचाया हुआ; नक़्ल किया हुआ, प्रतिलिपित; एक से सुनकर दूसरे से कहा हुआ; न्याय की वह शाखा जिसमें केवल उन्हीं प्रमाणों पर तर्क हो जो शास्त्रादि में लिखित हैं।

मन्क़ूल अन्हु (منقول عنہ) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसके मुँह

से सुनी हुई बात कही गयी हो, वह असल काग़ज़ जिसकी प्रतिलिपि की गयी हो ।

मन्क़ूलात (منقولات) अ. पुं.–वे पुस्तकें जिनमें ‘मन्क़ूल’ का वर्णन हो, (दे. मन्क़ूल नं० ४) ।

मन्क़ूश (منقوش) अ. वि.–चित्रित, नक़्शोनिगार बना हुआ; अंकित, गहरा लिखा हुआ ।

मन्क़ूशे ख़ातिर (منقوش خاطر) अ. वि.–हृदयंगम, ज़ेहननशीं ।

मन्क़ूस (منقوص) अ. वि.–जिसमें कमाई की गई हो, ह्रसित ।

मन्कूहः (منکوحہ) अ. स्त्री.–विवाहित, ब्याही हुई स्त्री ।

मन्कूह (منکوح) अ. पुं.–विवाहित, ब्याहा हुआ पुरुष ।

मन्ख़िर (منخر) अ. पुं.–नथना, नासा विवर, दे. ‘मिन्ख़र’ दोनों शुद्ध हैं ।

मन्नाअ' (مناع) अ. वि.–निषेधक, प्रतिरोधक, मना करनेवाला, रोकनेवाला ।

मन्नान (منان) अ. वि.–बहुत अधिक उपकार करनेवाला; ईश्वर का एक नाम ।

मन्नोसल्वा (من وسلوی) अ. पुं.–मन (शीरख़िश्त) और सल्वा (बटेर) ये दोनों चीज़ें हज़्रत मूसा को उस समय ईश्वर की ओर से मिलीं जब उनकी सेनाएँ भूखी थीं और बराबर मिलती रहीं ।

मन्फ़अत (منفعت) अ. स्त्री.–लाभ, फ़ाइदः; फल, नतीजा ।

मन्फ़ज़ (منفذ) अ. पुं.–विवर, छिद्र, सूराख़; मार्ग, राह, रास्ता ।

मन्फ़ी (منفی) अ. वि.–नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ; रद किया हुआ; वह क्रिया जिसमें काम का न होना पाया जाय; ऋण, घटाना ।

मन्फ़ूश (منفوش) अ. वि.–धुनकी हुई रुई या और कोई वस्तु ।

मन्ही (منہی) अ. वि.–वर्जित, रोका हुआ, अविहित, निषिद्ध ।

मन्हीयात (منہیات) अ. स्त्री.–वे वस्तुएँ जिनका खान-पान धर्म में वर्जित हो; वे कर्म जो धर्म में वर्जित हों ।

मन्हूस (منحوس) अ. वि.–अशुभ, अनिष्ट, अकल्याणकारी, बद; अभागा, दुर्भाग्यवान्, बदक़िस्मत ।

मन्हूससूरत (منحوس صورت) अ. वि.–जिसकी सूरत देखना अनिष्टकर हो, जिसे सवेरे-सवेरे देखने में मुसीबतें पड़ें ।

मफ़र [रं] (مفر) अ. पुं.–भागने का स्थान, वह स्थान जहाँ भागकर छिपा जा सके; रक्षा, बचाव; उपाय, तद्बीर ।

मफ़ाख़िर (مفاخر) अ. पुं.–‘मफ़्ख़रः’ का बहु., बुज़ुर्गियाँ, बड़ाइयाँ ।

मफ़ाज़ (مفاز) अ. पुं.–पहुँच का स्थान, गंतव्य, मंज़िल, मक़ाम ।

मफ़ातीह (مفاتیح) अ. स्त्री.–‘मिफ़्ताह’ का बहु., कुंजियाँ, चाबियाँ ।

मफ़ाद (مفاد) अ. पुं.–लाभ, फ़ाइदा, नफ़ा ।

मफ़ादात (مفادات) अ. पुं.–फ़ाइदे, लाभ ।

मफ़ादे आम्मः (مفاد عامہ) अ. पुं.–लोकहित, सर्वार्थ, सब की भलाई के काम ।

मफ़ादे क़ौमी (مفاد قومی) अ. पुं.–जाति की भलाई, जातिहित; राष्ट्र की भलाई, देशहित ।

मफ़ादे ख़लाइक़ (مفاد خلائق) अ. पुं.–दे. ‘मफादे आम्मः’ ।

मफ़ादे ज़ाती (مفاد ذاتی) अ. पुं.–स्वार्थ, अपनी भलाई, आत्महित ।

मफ़ादे मिल्ली (مفاد ملی) अ. पुं.–राष्ट्रहित, देश की भलाई ।

मफ़ादे मुल्की (مفاد ملکی) अ. पुं.–देशहित, मुल्क की भलाई ।

मफ़ादे वतन (مفاد وطن) अ. पुं.–देशहित, वतन अथवा मुल्क की भलाई ।

मफ़ासिद (مفاسد) अ. पुं.–‘मफ़्सिदः’ का बहु., शरारतें, उत्पात; दंगे, उपद्रव, बुराइयाँ, दोष ।

मफ़ासिल (مفاصل) अ. पुं.–‘मस्फ़िल’ का बहु., शरीर के जोड़, गाँठें ।

मफ़्ऊल (مفعول) अ. वि.–(व्या.) कर्म, जिस पर क्रिया का प्रभाव पड़े, दूसरा कारक; वह पुरुष जिसे गुदादान का व्यसन हो; छंद का एक वज़्न, हिंदी ‘तगण’ (ऽऽ।) ।

मफ़्ऊलफ़ीह (مفعول فیہ) अ. पुं.–सातवाँ कारक, अधिकरण ।

मफ़्अलबेह (مفعول بہ) अ. पुं.–तीसरा कारक, करण ।

मफ़्ऊल मालम युसम्मःफ़ाइलुहू (مفعول مالم یسمہ فاعلہ) अ. पुं.–वह कर्म जिसका कर्ता अज्ञात हो ।

मफ़्ऊल मा'हू (مفعول معہ) अ. पुं.–जिसके साथ कोई काम हो ।

मफ़्ऊल मिन्हु (مفعول منہ) अ. पुं.–पाँचवाँ कारक, अपादान ।

मफ़्ऊललहू (مفعول لہٗ) अ. पुं.–चौथा कारक, संप्रदान ।

मफ़्ऊले मुत्लक़ (مفعول مطلق) अ. पुं.–सामान्य कर्म, मफ़्ऊल ।

मफ़ऊले सानी (مفعول ثانی) अ. पुं.–किसी क्रिया का दूसरा कर्म, द्वितीय कर्म।

मफ़क़ूद (مفقود) अ. वि.–अप्राप्य, नायाब; अज्ञात, नामा'लूम; खोया हुआ, गुम; अंतर्द्धान, ग़ाइब।

मफ़क़ूदुल ख़बर (مفقود الخبر) अ. वि.–जिसकी ख़बर न मिले, जो ग़ाइब हो गया हो।

मफ़्तूँ (مفتوں) अ. वि.–मुग्ध, मोहित, फ़िरेफ़्तः; जो आपत्तियों में डाल दिया गया हो।

मफ़्तून (مفتون) अ. वि.–दे. 'मफ़्तूँ', उर्दू में वही बोलते हैं।

मफ़्तूह (مفتوح) अ. वि.–जो खोला गया हो; जो विजित किया गया हो; जिस अक्षर पर 'ज़बर' हो।

मफ़रूक़ (مفروق) अ. वि.–वह संख्या जो किसी बड़ी संख्या में से घटायी गयी हो, वियोज्य; पृथक् किया गया, अलग किया गया।

मफ़रूक़मिन्हु (مفروق منہ) अ. वि.–वह बड़ी संख्या जिसमें से कोई छोटी संख्या घटायी गयी हो, वियोजक।

मफ़रूज़ः (مفروضہ) अ. पुं.–काल्पनिक बात, फ़र्ज़ की हुई बात; भ्रम, वह्म।

मफ़रूज़ (مفروض) अ. वि.–काल्पनिक, फ़र्ज़ी; ईश्वर की ओर से फ़र्ज़ की गयी बात, जिसका करना अनिवार्य हो।

मफ़रूज़ात (مفروضات) अ. पुं.–'मफ़रूज़ः' का बहु., कल्पनाएँ, तीर के तुक्के।

मफ़रूर (مفرور) अ. वि.–पलायित, भागा हुआ; कोई अपराध करके भागा हुआ, वारंटी।

मफ़रूश (مفروش) अ. वि.–बिछा हुआ, जो बिछाया गया हो; फ़र्श, बिछौना।

मफ़्लूक (مفلوک) अ. वि.–दुर्दशाग्रस्त, दरिद्र, मुफ़्लिस।

मफ़्लूकुलहाल (مفلوک الحال) अ. वि.–दुर्दशाग्रस्त, कंगाल, विद्वानों के नज़दीक यह तर्कीब अशुद्ध है।

मफ़्लूज (مفلوج) अ. वि.–जिस पर फ़ालिज गिरा हो, पक्षाघाती, अर्द्धांगी, लकवा मारा हुआ।

मफ़्लूजुद्दिमाग़ (مفلوج الدماغ) अ. वि.–जिसके दिमाग़ पर फ़ालिज गिरा हो, जो कुछ सोच-समझ न सकता हो।

मफ़्सदः (مفسدہ) अ. पुं.–उत्पात, शरारत; उपद्रव, दंगा, फ़साद।

मफ़्सदःपरदाज़ (مفسدہ پرداز) अ. फा. वि.–दंगा-फ़साद करानेवाला, उपद्रव खड़ा करानेवाला; लगाई-बुझाई करके आपस में लड़ानेवाला।

मफ़्सदःपरदाज़ी (مفسدہ پردازی) अ. फा. स्त्री.–दंगा-फ़साद कराना, लगाई-बुझाई करके आपस में लड़ाना।

मफ़्सदःपर्वर (مفسدہ پرور) अ. फा. वि.–दे. 'मफ़्सिदः परदाज़'।

मफ़्सदःपर्वरी (مفسدہ پروری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मफ़्सिदः परदाज़ी'।

मफ़्सिल (مفصل) अ. पुं.–शरीर के अंग का जोड़, अंगसन्धि।

मफ़्हूम (مفہوم) अ. पुं.–अस्ली मत्लब, भाव; मंशा, उद्देश्य; अर्थ, तात्पर्य।

मबाद (مباد) फा. वा.–दे. 'मबादा'।

मबादा (مبادا) फा. वा.–ऐसा न हो।

मबादियात (مبادیات) अ. पुं.–'मबादी' का बहु., शुरू की वे बातें जो किसी विद्या पढ़ने से पहले सीखी जाती हैं और जिनके जाने बिना वह विद्या नहीं आती।

मबादी (مبادی) अ. पुं.–'मब्दा' का बहु., किसी विद्या से सम्बन्धित उसकी प्रारम्भिक बातें, जिनके जाने बिना वह विद्या नहीं आ सकती।

मबाल (مبال) अ. पुं.–मूत्रेंद्रिय, पेशाब का मक़ाम।

मबीअः (مبیعہ) अ. स्त्री.–बिकी हुई चीज़; ख़रीदी हुई चीज़।

मबीअ (مبیع) अ. वि.–बिका हुआ, बेचा हुआ, विक्रीत; मोल लिया हुआ, क्रीत।

मब्ऊस (مبعوث) अ. वि.–अवतरित, जिसने अवतार लिया हो, जो ईश्वर की ओर से भेजा गया हो।

मब्ग़ूज़ (مبغوض) अ. वि.–जिससे द्वेष हो, शत्रु, वैरी।

मब्ज़ूल (مبذول) अ. वि.–दिया गया, बख़्शा गया; आकृष्ट, प्रवृत्त, रुजूअ।

मब्दा (مبدیٰ) अ. पुं.–प्रारम्भ करने का स्थान; प्रकट होने की जगह।

मब्नी (مبنی) अ. वि.–जिसकी नींव रखी गयी हो; निर्भर, मुनहसिर, निर्धारित; वह शब्द जिसका आख़िरी अक्षर किसी कारक में भी न बदले, अव्यय।

मब्रज़ (مبرز) अ. पुं.–मलद्वार, गुदा, मक़्अद।

मब्रूर (مبرور) अ. वि.–जिस पर ईश्वर की दया हो, जो ईश्वर की ओर से सम्मानित किया गया हो; पापमुक्त, मोक्ष-प्राप्त।

मब्रूस (مبروص) अ. वि.–जिसे श्वेत कोढ़ हो, सिध्म, श्वित्री।

मब्लग़ (مبلغ) अ. पुं.–सीमा, हृद; अंत, अख़ीर; मात्रा, मिक़्दार; संख्या, ता'दाद।

मब्लग़े इल्म (مبلغِ علم) अ. पुं.–विद्या की मात्रा, इल्म की मिक़्दार; विद्वत्ता, इल्मीयत।

मब्सूत (مبسوط) अ. वि.–विस्तार के साथ कहा हुआ, विस्तृत।

मब्हूत (مبہوت) अ. वि.–चकित, स्तब्ध, शशदर।

ममर [र्र] (ممر) अ. पुं.–गुज़रने का स्थान; मार्ग, रास्ता; कारण, सबब।

ममात (ممات) अ. स्त्री.–मृत्यु, मरण, निधन, मौत।

ममालिक (ممالک) अ. पुं.–'मम्लुकत' का बहु., बहुत-से देश, बहुत-से राष्ट्र।

ममालिके इस्लामियः (ممالک اسلامیہ) अ. पुं.–वे राष्ट्र जिनमें मुसलमान शासक हैं।

ममालिके ग़ैर (ممالک غیر) अ. पुं.–अन्य देश, दूसरे राष्ट्र।

ममालिके मफ़्तूहः (ممالک مفتوحہ) अ. पुं.–वह देश जो लड़ाई में जीते गये हों।

ममालिके मुत्तहदः (ممالک متحدہ) अ. पुं.–वह देश जो मिलकर एक हो गये हों, संयुक्त देश।

ममालिके मुफ़व्वज़ः (ممالک مفوضہ) अ. पुं.–वह देश जो उसके शासक की ओर से किसी को प्रबंध के लिए दे दिये गये हों।

ममालिके मह्रूसः (ممالک محروسہ) अ. पुं.–वे देश जो किसी अन्य देशीय शासक के अधीन हों।

ममालिके हरीफ़ः (ممالک حریفہ) अ. पुं.–वह राष्ट्र जो दूसरे राष्ट्र के विरोधी दल में हों।

ममालिके हलीफ़ः (ممالک حلیفہ) अ. पुं.–वह राष्ट्र जो एक-दूसरे के मित्र और सहायक हों।

ममालीक (ممالیک) अ. पुं.–'मम्लूक' का बहु., ग़ुलाम लोग।

मम्ज़ूज (ممزوج) अ. वि.–मिश्रित, मिला हुआ।

मम्दूदः (ممدودہ) अ. वि.–वह अलिफ़ जिस पर 'मद' हो और खींचकर पढ़ा जाय।

मम्दूद (ممدود) अ. वि.–खींचा गया, बढ़ाया गया, लंबा किया गया।

मम्दूहः (ممدوحہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसकी तारीफ़ की जाय, प्रशंसिता।

मम्दूह (ممدوح) अ. वि.–जिसकी मद्ह की गयी हो, प्रशंसित।

मम्नूअ (ممنوع) अ. वि.–निषिद्ध, वर्जित, मना', जिससे रोका गया हो; धर्म में वर्जित वस्तु।

मम्नूअ अन्हु (ممنوع عنہ) अ. वि.–जिस बात से रोका गया हो।

मम्नूआत (ممنوعات) अ. पुं.–वे वस्तुएँ जिनका खान-पान धर्म के अनुसार वर्जित हो।

मम्नून (ممنون) अ. वि.–कृतज्ञ, आभारी, अनुगृहीत, शुक्रगुज़ार, मश्कूर।

मम्नूनीयत (ممنونیت) अ. स्त्री.–कृतज्ञता, शुक्रगुज़ारी।

मम्लकत (مملکت) अ. स्त्री.–दे. 'मम्लुकत', यह उच्चारण भी शुद्ध है, परन्तु 'मम्लुकत' अधिक शुद्ध है।

मम्लिकत (مملکت) अ. स्त्री.–दे. 'मम्लुकत', यह उच्चारण भी शुद्ध है, परन्तु 'मम्लुकत' अधिक शुद्ध है।

मम्लुकत (مملکت) अ. स्त्री.–राष्ट्र, राज्य, सल्तनत, दे. 'मम्लकत' और 'मम्लिकत' यह दोनों भी शुद्ध हैं, परन्तु 'मम्लुकत' अधिक शुद्ध है।

मम्लू (مملو) अ. वि.–पूर्ण, परिपूर्ण, भरा हुआ, लबरेज़।

मम्लूकः (مملوکہ) अ. वि.–वह वस्तु जो मिल्कियत में हो।

मम्लूक (مملوک) अ. वि.–दास, ग़ुलाम।

मम्लूह (مملوح) अ. वि.–नमक मिलाया हुआ, नमकीन, लवणमय।

मयामिन (میامن) अ. पुं.–'मैमनत' का बहु., बरकतें, सआदतें, कल्याण, समृद्धियाँ; 'मैमनः' का बहु., शरीर की सीधी ओर के अंग।

मरंजाँमरंज (مرنجاں مرنج) फा. वि.–वह व्यक्ति जो खुद भी दुःखित न हो और दूसरों को भी दुःखी न करे।

मरंजोमरंजाँ (مرنج و مرنجاں) फा. वि.–दे. 'मरंजाँ मरंज'।

मरज (مرج) अ. पुं.–काम का बिगाड़; नाश, तबाही।

मरज़ (مرض) अ. पुं.–रोग, आमय, व्याधि, बीमारी; लत, व्यसन, बुरी आदत।

मरज़ुलमौत (مرض الموت) अ. पुं.–वह रोग जो मृत्यु का कारण बने।

मरज़े मुतअद्दी (مرض متعدی) अ. पुं.–छूतवाला रोग, उड़कर लगनेवाली बीमारी, संक्रामक रोग।

मरज़े मोह्लिक (مرض مہلک) अ. पुं.–वह रोग जो प्राण लेकर पीछा छोड़े, घातक रोग।

मरम्मत (مرمت) अ. स्त्री.–जीर्णोद्धार, टूटी-फूटी चीज़ की दुरुस्ती, जैसे—मकान या जूते की मरम्मत।

मरम्मततलब (مرمت طلب) अ. वि.–जिसमें मरम्मत की आवश्यकता हो।

मराकिज़ (مراکز) अ. पुं.–'मर्क्ज़' का बहु., बहुत-से मर्कज़, बहुत से केन्द्र।

मराकिब (مراکب) अ. पुं.–'मर्कब' का बहु., सवारियाँ; घोड़े।

मराक़िश (مراقش) अ. पुं.–अफ़्रीका का एक प्रसिद्ध प्रदेश, मराको।

मराजे (مراجع) अ. पुं.–'मर्जअ' का बहु., फिरने के स्थान, लौटने के स्थान; सर्वनाम जिनकी ओर फिरें।

मरातिब (مراتب) अ. पुं.–'मर्तबः' का बहु., मर्तबे, दर्जे।

मराबित (مرابط) अ. पुं.–'मिर्बत' का बहु., बंधन, रस्सियाँ, डोरें; 'मर्बत' का बहु., चौपाए बाँधने के बाड़े।

मराम (مرام) अ. पुं.–इच्छा, आशा, मनोकामना, ख़्वाहिश।

मरारः (مرارہ) अ. पुं.–पित्ता, पित्ताशय; पित्ते का पानी।

मरारत (مرارت) अ. स्त्री.–कड़वाहट, कटुता।

मरासिम (مراسم) अ. पुं.–'रस्म' का बहु., मेल-जोल, प्रेम-व्यवहार।

मराहिम (مراہم) अ. पुं.–'मर्हम' का बहु., बहुत-से मर्हम।

मराहिम (مراحم) अ. पुं.–'मर्हमत' का बहु., अनुकंपाएँ, कृपाएँ।

मराहिमे ख़ुस्रवानः (مراحمِ خسروانہ) अ. फा. पुं.–शासकीय कृपाएँ, शाही मेह्‌रबानियाँ।

मराहिल (مراحل) अ. पुं.–'मर्हलः' का बहु., मंज़िलें, पड़ाव।

मरीज़ः (مریضہ) अ. स्त्री.–बीमार स्त्री, रोगिणी, व्याधिता।

मरीज़ (مریض) अ. पुं.–रोगी, व्याधित, रुग्ण, बीमार।

मरीद (مرید) अ. वि.–अवज्ञाकारी, उद्दंड, सरकश; अहंकारी, अभिमानी, घमंडी।

मर्ई (مرعی) अ. वि.–जिसका लिहाज़ या ध्यान रखा जाय।

मर्ऊब (مرعوب) अ. वि.–रोब में आया हुआ, आतंकित, दवा हुआ, डरा हुआ।

मर्कज़ (مرکز) अ. पुं.–केन्द्र, परिधि के ब्रीच का बिन्दु; सद्र मुक़ाम, मुख्यालय; राजधानी, दारुस्सलतनत।

मर्कज़ी (مرکزی) अ. वि.–केन्द्रीय, मर्कज़ का; मर्कज़ से सम्बन्धित।

मर्कज़े सिक़्ल (مرکزِ ثقل) अ. पुं.–गुरुत्व-केन्द्र।

मर्क़द (مرقد) अ. पुं.–समाधि-भवन, क़ब्र।

मर्कब (مرکب) अ. पुं.–वाहन, सवारी; अश्व, घोड़ा।

मर्कूज़ (مرکوز) अ. वि.–केन्द्रित, एक मर्कज़ पर लाया हुआ; जमाया हुआ, दृढ़ किया हुआ।

मर्कूज़े ख़ातिर (مرکوزِ خاطر) अ. वि.–हृदयंगम, दिल में बैठा हुआ।

मर्कूब (مرکوب) अ. वि.–जिस पर सवारी की जाय।

मर्क़ूमः (مرقومہ) अ. वि.–लिखित, लिखा हुआ।

मर्क़ूम (مرقوم) अ. वि.–लिखित, लिखा हुआ।

मर्क़ूमए ज़ैल (مرقومۂ ذیل) अ. वि.–निम्नलिखित, जो नीचे लिखा हो, जिसका ज़िक्र बाद को हो।

मर्क़ूमए बाला (مرقومۂ بالا) अ. फा. वि.–उपर्युक्त, ऊपर लिखा हुआ, जिसकी चर्चा ऊपर हो चुकी हो।

मर्ग (مرگ) फा. स्त्री.–मृत्यु, मरण, मौत।

मर्ग़ (مرغ) फा. पुं.–दूब, घास, दूर्वा।

मर्ग़ज़ार (مرغزار) फा. पुं.–वह मैदान जहाँ दूब बहुत हो, सब्ज़ःज़ार; चरागाह, गोचर।

मर्ग़पेच (مرگ پیچ) फा. पुं.–पगड़ी बाँधने का एक विशेष ढंग, जो इस बात का चिह्न होता है कि पगड़ी बाँधनेवाला प्राण देने पर आमादा है।

मर्गामर्गी (مرگامرگی) फा. स्त्री.–महामारी, वबा।

मर्ग़ूब (مرغوب) अ. वि.–जो मन को पसंद हो, मनोनीत, रुचिकर, मनोवांछित, पसंदीदः।

मर्ग़ूबे तब्अ (مرغوبِ طبع) अ. वि.–जो मन को अच्छा लगे, मनोवांछित, मनोनीत।

मर्ग़ूलः (مرغولہ) अ. पुं.–टेढ़ा-मेढ़ा, पेचदार; धुएँ का छल्ला; बल खाये हुए, घूँघरवाले बाल; आवाज़ की गिटकिरी।

मर्गे जवानानः (مرگِ جوانانہ) फा. स्त्री.–जवानी की मृत्यु।

मर्गे तब्ई (مرگِ طبعی) फा. अ. स्त्री.–वह मृत्यु जो ठीक समय पर आये, जो आयु पूरी होने पर आये, प्राकृतिक मृत्यु।

मर्गे नागहाँ (مرگِ ناگہاں) फा. स्त्री.–वह मृत्यु जो अचानक आ जाये, जैसे–हार्टफ़ेल होने से या डूब जाने आदि से।

मर्गे नौ (مرگِ نو) फा. स्त्री.–नयी घटना, नया हादिसा।

मर्गे मुअल्लक़ (مرگِ معلق) फा. अ. स्त्री.–दे. 'मर्गे नागहाँ।

मर्गे मुफ़ाजात (مرگِ مفاجات) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मर्गे नागहाँ'।

मर्गे मुब्रम (مرگِ مبرم) फा. अ. स्त्री.–वह मृत्यु जो अटल हो, जो प्राण लेकर टले।

मर्ज़ंजोश (مرزنجوش) फा. स्त्री.–एक वनौषधि।

मर्ज़ (مرز) फा. पुं.–खेती की भूमि, ऐसी भूमि जिस पर खेती हो सके; सरहद, सीमांत; कियारी; उद्यान, बाग़; मूषक, चूहा।

मर्जअ (مرجع) अ. पुं.–रक्षा-स्थान, बचाव की जगह, पनाहगाह; वह संज्ञा जिसकी ओर कोई सर्वनाम फिरे।

मर्ज़बान (مرزبان) फा. वि.–कृषक, कृषिकार, किसान, काश्तकार।

मर्ज़बानी (مرزبانی) फा. स्त्री.–कृषि-कर्म, खेती, किसनई, काश्तकारी।

मर्ज़बूम (مرزبوم) फा. स्त्री.–जन्मभूमि, पैदा होने का स्थान, देश, वतन।

मर्जां (مرجان) अ. पुं.–दे. 'मर्जान'।

मर्ज़ा (مرضیٰ) अ. पुं.–'मरीज़' का बहु., बीमार लोग, रोगी लोग।

मर्जान (مرجان) अ. पुं.–प्रवाल, विद्रुम, मूँगा।

मर्ज़ी (مرضی) अ. स्त्री.–इच्छा, ख़्वाहिश; स्वीकृति, रज़ामंदी; आज्ञा, इजाज़त; आदेश, हुक्म।

मर्जूअः (مرجوعہ) अ. पुं.–रुजूअ, आकर्षण, किसी व्यक्ति की ओर किसी कार्य विशेष के लिए लोगों का झुकाव।

मर्जूअ (مرجوع) अ. वि.–रुजूअ किया हुआ, लौटाया हुआ, वह व्यक्ति जिसकी ओर लोग झुकें, अर्थात् रुजूअ हों।

मर्जूम (مرجوم) अ. वि.–जिसे पत्थरों से मारा जाय; जिसका बहिष्कार किया जाय।

मर्जूह (مرجوح) अ. वि.–पराजित, हारा हुआ, मग़लूब।

मर्तबः (مرتبہ) अ. पुं.–पद, दर्जा; वर्ग, तबक़ा; श्रेणी, जमाअत; वार, दफ़ा; प्रतिष्ठा, इज़्ज़त।

मर्तबःदाँ (مرتبہدان) अ. फा. वि.–इज़्ज़त पहचाननेवाला।

मर्तबःदानी (مرتبہدانی) अ.फा. स्त्री.–इज़्ज़त पहचानना।

मर्तबःशनास (مرتبہشناس) अ. फा. वि.–दे. 'मर्तबःदाँ'।

मर्तबत (مرتبت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; पद, उह्दा।

मर्तूब (مرطوب) अ. वि.–आर्द्र, तर, भीगा, गीला; वह ओषधि जिसमें बादी का गुण हो; बादी-गुण रखनेवाली चीज़, जैसे––'मूर्तूब आबोहवा'।

मर्दः (مردہ) फा. वि.–वीर, शूर, बहादुर; साहसी, उत्साही हिम्मती।

मर्द (مرد) फा. पुं.–मनुष्य, आदमी; पुरुष, नर; पति, शौहर; शूर, बहादुर; साहसी, हिम्मतवर।

मर्दअफ़्गन (مردافگن) फा. वि.–शक्तिशाली, ज़ोरावर; पहलवानों को पछाड़ देनेवाला, दे. 'मर्दफ़्गन' वह उच्चारण अधिक शुद्ध है।

मर्दआज़्मा (مردآزما) फा.वि.–दे. 'मर्द अफ़्गन', दे. 'मर्दाज़्मा', वह उच्चारण अधिक शुद्ध है।

मर्दक (مردک) फा. वि.–तुच्छ व्यक्ति, अधम, नीच, ज़लील।

मर्दफ़्गन (مردافگن) फा. वि.–बहादुर, बलवान्; योद्धाओं को पछाड़ देनेवाला, बहुत बड़ा योद्धा, महारथी।

मर्दबचः (مردبچہ) फा. वि.–आदमी का बच्चा अर्थात् आदमी, मनुष्य; बहादुर, शूर।

मर्दबच्चः (مردبچہ) फा. वि.–दे. 'मर्दबचः', अच्छे-बुरे व्यक्ति की परख रखनेवाला।

मर्दशनास (مردشناس) फा.वि.–मनुष्य को पहचाननेवाला।

मर्दाज़्मा (مردازما) फा. वि.–दे. 'मर्दफ़्गन'।

मर्दानः (مردانہ) फा. वि.–मर्दों की तरह; मर्दों-जैसा, जैसे––मर्दाना लिबास; मर्दों-जैसे, मर्दाना दर्जा।

मर्दानःवार (مردانہوار) फा. वि.–मर्दों की तरह, साहसपूर्वक, बहादुराना।

मर्दानगी (مردانگی) फा.स्त्री.–मर्दानापन, पुरुषत्व; साहस; हिम्मत; शूरता, बहादुरी।

मर्दाने ख़ुदा (مردان خدا) फा. पुं.–महात्मा लोग, औलिया अल्लाह।

मर्दी (مردی) फा. वि.–मानवता, इंसानियत; शूरता, बहादुरी; कामशक्ति, क़ुव्वतेबाह।

मर्दुम (مردم) फा. पुं.–मनुष्य, आदमी; सभ्य, मुहज़्ज़ब; आँख की पुतली, कनीनिका।

मर्दुमआज़ार (مردم آزار) फा. वि.–लोगों को सतानेवाला, अत्याचारी, ज़ालिम, सर्वदुःखद।

मर्दुमआमेज़ (مردم آمیز) फा. वि.–लोगों में घुल-मिलकर रहनेवाला।

मर्दुमआज़ारी (مردم آزاری) फा. स्त्री.–लोगों को सताना, अत्याचार, ज़ुल्म।

मर्दुमक (مردمک) फा. स्त्री.–आँख की पुतली, कनीनी, कनीनिका, नयनी।

मर्दुमकुश (مردم کش) फा. वि.–मनुष्य को मार डालनेवाला, नरहिंसक।

मर्दुमकुशी (مردم کشی) फा. स्त्री.–मनुष्य को मार डालना, नरहिंसा।

मर्दुमकेदीदः (مردمک دیدہ) फा. स्त्री.–आँख की पुतली, नयनी, कनीनिका, कनीनी।

मर्दुमख़ेज़ (مردم خیز) फा. वि.–वह स्थान जहाँ से प्रतिभाशाली, प्रतिष्ठित और विद्वज्जन उत्पन्न होते हों।

मर्दुमख़ोर (مردم خور) फा. वि.–मनुष्य को खा जानेवाला, नरभक्षी, नराशी, पुरुषाशी।

मर्दुमखोरी (مردم خوری) फा. स्त्री.–मनुष्य को खा जाना, नरभक्षण।

मर्दुमख़्वार (مردم خوار) फा. वि.–दे. 'मर्दुमखोर'।

मर्दुमगिया (مردم گیا) फा. स्त्री.–एक जड़ जो आदमी की आकृति की होती है, लख्मिनी, यब्रूह।

मर्दुमज़न (مردم زن) फा. वि.–वधिक, जल्लाद।

मर्दुमज़ाद (مردم زاد) फा. पुं.–मनुजात, आदमी, मनुष्य, मानुष।

मर्दुमदर (مردم در) फा. वि.–मनुष्य को फाड़ खानेवाला, विदारक, श्वापद, व्याघ्र।

मर्दुमदारी (مردم داری) फा. स्त्री.–सुशीलता, सद्व्यवहार, ख़ुश अख़्लाक़ी।

मर्दुमबेज़ार (مردم بیزار) फा. वि.–वह व्यक्ति जो मनुष्यों के साथ बैठने-उठने से घबराता हो।

मर्दुमशनास (مردم شناس) फा. वि.–अच्छे-बुरे आदमी

की परख रखनेवाला; अच्छे आदमी की क़द्र करनेवाला।

मर्दुमशनासी (مردم‌شناسی) फा. स्त्री.–अच्छे-बुरे आदमी की परख; अच्छे आदमी की क़द्र।

मर्दुमशुमारी (مردم‌شماری) फा. स्त्री.–किसी देश के निवासियों की गणना जो किसी नियत समय पर हुआ करती है, जन-गणना।

मर्दुमी (مردمی) फा. स्त्री.–मानवता; इंसानियत; पुरुषत्व, पुंस्त्व, कामशक्ति; वीरता, बहादुरी; सुशीलता, सहृदयता, ख़ुश अख़लाक़ी।

मर्दुमे आबी (مردم آبی) फा. पुं.–समुद्र में रहनेवाला मनुष्य, जल-मनुष्य।

मर्दुमे दीदः (مردم دیدہ) फा. पुं.–आँख की पुतली, कनीनिका।

मर्दूद (مردود) अ. वि.–बहिष्कृत, बाहर निकाला हुआ; तिरस्कृत, बेइज़्ज़त; अस्वीकृत, नामक़्बूल।

मर्दूदुश्शहादत (مردودالشہادت) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी गवाही मानी न जा सके।

मर्दूदे बारगाह (مردودہ بارگاہ) फा. वि.–वह व्यक्ति जो किसी बड़े स्थान से निकाल दिया गया हो।

मर्दे आख़िरबीं (مرد آخربیں) फा. वि.–वह व्यक्ति जो परिणाम देखकर कोई काम करे।

मर्दे आदमी (مرد آدمی) फा. वि.–सज्जन व्यक्ति, भला-मानस, शरीफ़ आदमी।

मर्दे कार (مرد کار) फा. पुं.–काम का आदमी, अनुभवी; शूर, साहसी, बहादुर।

मर्दे ख़ुदा (مرد خدا) फा. पुं.–सदात्मा, पुनीतात्मा, ख़ुदा-रसीदः, ईश्वरभक्त, ईश्वरभीरु।

मर्दे मा'क़ूल (مرد معقول) फा. अ. पुं.–सभ्य, शिष्ट और सज्जन व्यक्ति।

मर्दे मैदाँ (مرد میداں) फा. पुं.–महारथी, रण-क्षेत्र में बड़े-बड़ों के मुंह फेर देनेवाला।

मर्दे हक़्आगाह (مردحق آگاہ) फा. अ. पुं.–ईश्वर अथवा सत्य का पहचाननेवाला व्यक्ति।

मर्फ़ूअ (مرفوع) अ. वि.–ऊँचा किया हुआ; उठाया हुआ; पेश ('उ' की मात्रा) दिया हुआ अक्षर।

मर्फ़ूउलक़लम (مرفوع القلم) अ. वि.–जिस पर से क़लम उठा लिया गया हो, जिसके सम्बन्ध में कुछ लिखा न जा सके। अर्थात् पागल, बावला।

मर्बूत (مربوط) अ. वि.–क्रमबद्ध, मुसलसल; प्रसंगयुक्त, बासिल्सिला (गुत्फ़्गू)।

मर्मर (مرمر) फा. पुं.–एक विशेष सफ़ेद तथा श्वेत प्रस्तर।

मर्मरीं (مرمریں) फा. वि.–मर्मर का बना हुआ; मर्मर-जैसा।

मर्मूज़ (مرموز) अ. वि.–जिसकी ओर इंगित या इशारा किया गया हो; राज़ और इशारे में कही हुई बात।

मर्मूज़ात (مرموزات) अ. पुं.–इशारों में कही हुई बातें; इशारों में लिखे हुए ख़त या नुस्ख़े आदि।

मर्यम (مریم) अ. स्त्री.–हज़्रत ईसा की माताजी।

मर्यमपंजः (مریم پنجہ) अ. फा. पुं.–एक घास जो प्रसव वेदनाग्रस्ता स्त्री की पीड़ा दूर करने के लिए व्यवहृत है।

मर्वः (مروہ) अ. पुं.–मक्के की एक पहाड़ी।

मर्व (مرو) फा. पुं.–ख़ुरासान के इलाक़े का एक प्रसिद्ध नगर; एक सुगंधित घास।

मर्वारीद (مروارید) फा. पुं.–मुक्ता, मुक्ताहल, मौक्तिक, मोती।

मर्वारीदेना सुफ़्तः (مرواریدنا سفتہ) फा. पुं.–अनविधा मोती।

मर्वी (مروی) अ. वि.–रिवायत किया गया, दूसरे का सुना हुआ कहा गया।

मर्सूब (مرسوب) अ. वि.–तली में बैठा हुआ, तलछट, गाद।

मर्सूम (مرسوم) अ. वि.–विधान किया हुआ, क़ानून बनाया हुआ; रोज़ का या महीने का वेतन; चिह्न किया हुआ, चिह्नित।

मर्सूस (مرصوص) अ. वि.–नींव में सीसा पिलाया हुआ, अच्छी तरह मज़्बूत किया हुआ।

मर्हब (مرحب) अ. पुं.–खुला हुआ स्थान।

मर्हबा (مرحبا) अ. स्त्री.–धन्य, साधु, बहुत ख़ूब, शाबाश।

मर्हम (مرہم) फा. पुं.–घाव पर लगाने का लेप, स्नेह-लेप।

मर्हमत (مرحمت) अ. स्त्री.–दया, कृपा, अनुकंपा, अनुग्रह, मेह्रबानी; अनुदान, बख़्शिश।

मर्हमे काफ़ूर (مرہم کافور) फा. पुं.–कपूर से बना हुआ मर्हम जो घाव में ठंडक पहुँचाता है।

मर्हमे ज़ंगार (مرہم زنگار) फा. पुं.–ज़ंगार से बना हुआ मर्हम, जो घाव को काट देता है।

मर्हलः (مرحلہ) अ. पुं.–गंतव्य, उतरने का स्थान, मंज़िल; लंबी यात्रा; बड़ा काम, कठिन काम।

मर्हून (مرہون) अ. वि.–वह वस्तु जो गिरौ रखी हो।

मर्हूने मिन्नत (مرہون منت) अ. वि.–कृतज्ञ, आभारी, मम्नून, शुक्रगुज़ार।

मर्हूमः (مرحومہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो मर गयी हो, दिवंगता, स्वर्गगामिनी, स्वर्गीया।

मर्हूम (مرحوم) अ. पुं.–दिवंगत, स्वर्गीय, जन्नतनशीं।

मलंग (ملنگ) फा. पुं.–आज़ाद फ़क़ीर; निश्चिंत व्यक्ति, बेफ़िक्रा।

मलकः (ملکہ) अ. पुं.–अभ्यास, हस्तकौशल, महारत; प्रकृति, सृष्टि, फ़ित्रत; शौक़, रुचि।

मलक (ملک) अ. पुं.–देवता, फ़िरिश्ता।

मलकजमाल (ملک جمال) अ. वि.–देवताओं-जैसी सुंदरता रखनेवाला।

मलकनिहाद (ملک نہاد) अ. फा. वि.–देवताओं-जैसी प्रकृतिवाला, देवात्मा।

मलकसिफ़ात (ملک صفات) अ. वि.–फ़िरिश्तों-जैसी सिफ़तोंवाला, दैवीगुणसंपन्न।

मलकसिरिश्त (ملک سرشت) अ. फा. वि.–दे॰ 'मलकनिहाद'।

मलकसीरत (ملک سیرت) अ. वि. दे.–'मलकनिहाद'।

मलकसूरत (ملک صورت) अ. वि.–जिसकी आकृति फ़िरिश्तों-जैसी हो, देवता-स्वरूप।

मलकात (ملکات) अ. पुं.–'मलकः' का बहु., प्रकृतियाँ, प्रकृति के गुण।

मलकाते फ़ाज़िलः (ملکات فاضلہ) अ. पुं.–सत्त्व गुण।

मलकाते रदीयः (ملکات ردیہ) अ. पुं.–रजोगुण।

मलकाते मज़मूम (ملکات مذموم) अ. पुं.–तमोगुण।

मलकी (ملکی) अ. वि.–देवताओं का, फ़िरिश्ते का; देवता-सम्बन्धी।

मलकीसिफ़ात (ملکی صفات) अ. वि.–देवताओं के गुण रखनेवाला व्यक्ति।

मलकुलमौत (ملک الموت) अ. पुं.–मौत का फ़िरिश्ता, यमराज, धर्मराज, प्राणांतक।

मलकूत (ملکوت) अ. पुं.–सत्ता, राज्य, शासन, हुक्मरानी; देवलोक, फ़िरिश्तों का मक़ाम; फिरश्ते, देवता-समूह।

मलकूती (ملکوتی) अ. वि.–देवताओंवाला।

मलकूतीसिफ़ात (ملکوتی صفات) अ. वि.–देवताओं के गुणवाला, देवताओं-जैसा।

मलख़ (ملخ) फा. स्त्री.–टीडी, टिड्डी, शलभ।

मला (ملا) अ. पुं.–सज्जन और श्रेष्ठ लोगों की मंडली।

मलाइकः (ملائکہ) अ. पुं.–'मलक' का बहु., देवतागण, फ़िरिश्ते।

मलाइक (ملائک) अ. पुं.–दे. 'मलाइकः'।

मलाइक फ़िरेब (ملائک فریب) अ. फा. वि.–देवताओं को मुग्ध करनेवाला, फ़िरिश्तों को लुभानेवाला, प्रायः हुस्न (सौंदर्य) की सिफ़त के लिए आता है।

मलाइनः (ملاعنہ) अ. पुं.–'मल्ऊन' का बहु., दुष्ट और पापाचारी व्यक्ति।

मलाइन (ملاعن) अ. पुं.–'मल्अनत' का बहु., वे चीज़ें जो निंदित और तिरस्कृत हों।

मलाइब (ملاعب) अ. पुं.–'लइब' का बहु., खेल-कूद।

मलाईन (ملاعین) अ. पुं.–दे. 'मलाइनः'।

मलाए आ'ला (ملاء اعلیٰ) अ. पुं.–देवलोक के रहनेवाले, देवता, फ़िरिश्ते।

मलाज़ (ملاذ) अ. पुं.–रक्षा-स्थान, पनाह की जगह।

मलाबिस (ملابس) अ. पुं.–'मिल्बस' का बहु., पहनने के कपड़े।

मलाम (ملام) अ. पुं.–दे. 'मलामत'।

मलामत (ملامت) अ. स्त्री.–झिड़की, डाँट-डपट; भर्त्सना, निंदा, कुत्सा।

मलामती (ملامتی) अ. वि.–जिसकी मलामत की गयी हो।

मलाल (ملال) अ. पुं.–दुःख, रंज; वैमनस्य, रंजिश; पश्चात्ताप, अफ़्सोस; कष्ट, तक्लीफ़।

मलालत (ملالت) अ. स्त्री.–दे. 'मलाल'।

मलासत (ملاست) अ. स्त्री.–नम्रता, विनय, नर्मी; स्वच्छता, सफ़ाई; समता, बराबरी।

मलाहत (ملاحت) अ. स्त्री.–लावण्य, नमकीनी; सौंदर्य, हुस्न।

मलाहिदः (ملاحدہ) अ. पुं.–'मुल्हिद' का बहु., नास्तिक लोग, बेदीन लोग, विधर्मी लोग।

मलाही (ملاہی) अ. पुं.–'लह्व' का बहु., खेल-कूद, अच्छे कामों से रोकनेवाली चीज़ें।

मलिकः (ملکہ) अ. स्त्री.–रानी, राज्ञी, महारानी, बादशाह की बेगम।

मलिक (ملک) अ. पुं.–बादशाह, राजा, शासक, नरेश, सम्राट्, नृपाल।

मलिकज़ादः (ملک زادہ) अ. फा. पुं.–बादशाह का लड़का।

मलिकुत्तुज्जार (ملک التجار) अ. पुं.–व्यापारियों का सरदार, सबसे बड़ा व्यापारी, वणिग्राज।

मलिकुश्शुअरा (ملک الشعرا) अ. पुं.–एक उपाधि जो दरबार के सर्वश्रेष्ठ कवि को मिलती थी, कविसम्राट्।

मलीक (ملیک) अ. पुं.–स्वामी, पति, मालिक।

मलीदः (ملیدہ) उ. पुं.–'मालीदः' उर्दू, में 'मलीदः' ही व्यवहृत है, चूरमा।

मलीह (ملیح) अ. वि.–जिसमें लवण यानी नमक हो, नमकीन, साँवला, सलोना।

मलूम (ملوم) अ. वि.–निंदित, गर्हित, भर्त्सित, जिस पर मलामत की गयी हो।

मलूल (ملول) अ. वि.–उदास, खिन्न, अफ़्सुर्दः; दुःखित, रंजीदा।

मल्अब (ملعب) अ. पुं.–खेल का स्थान, क्रीडास्थल, तफ़्रीहगाह।

मल्ऊन (ملعون) अ. वि.–जिस पर ला'नत की गयी हो, धिक्कृत; दुष्टात्मा, ख़बीस; तिरस्कृत।

मल्ग़ोबा (ملغوبا) तु. पुं.–बहुत-सी गीली चीज़ों का समाहार।

मल्जा (ملجا) अ. पुं.–रक्षा-स्थान, जान बचाने या सुरक्षित रहने की जगह।

मल्जाओमावा (ملجاوماوا) अ. पुं.–जहाँ सब कुछ हो, जिस जगह का बड़ा सहारा हो, जहाँ से हर प्रकार की सहायता आदि मिले।

मल्ज़ूम (ملزوم) अ. वि.–जिस पर कोई चीज़ लाज़िम कर दी गयी हो; जो वस्तु अलग न हो सके, संबद्ध।

मल्फ़ूज़ः (ملفوظه) अ. वि.–बोला हुआ, कहा हुआ।

मल्फ़ूज़ (ملفوظ) अ. वि.–बोला हुआ, कहा हुआ, उच्चरित; प्रतिष्ठित जनों और महात्माओं के प्रवचन।

मल्फ़ूज़ात (ملفوظات) अ. पुं.–'मल्फ़ूज़' का बहु., महात्माओं आदि के प्रवचन; वह पुस्तक जिसमें इन प्रवचनों का संग्रह हो।

मल्फ़ूज़ी (ملفوظی) अ. वि.–मल्फ़ूज़ सम्बन्धी।

मल्फ़ूफ़ (ملفوف) अ. वि.–लपेटा हुआ, कपड़ा या काग़ज़ चढ़ाया हुआ; लिफ़ाफ़े में बंद किया हुआ; लिफ़ाफ़े में बंद ख़त।

मल्बूस (ملبوس) अ. पुं.–वस्त्र, वसन, लिबास।

मल्बूसात (ملبوسات) अ. पुं.–पहनने के कपड़े, वस्त्र।

मल्मस (ململس) अ. पुं.–त्वचा, जिल्द, शरीर के खाल का वह ऊपरी तल जो छुआ जाता है।

मल्लाह (ملاح) अ. पुं.–नाविक, नौचालक, कर्णधार, खेवनहार, कश्तीवान; नमक बनानेवाला।

मल्हमः (ملحمه) अ. पुं.–बहुत बड़ा उपद्रव, बहुत बड़ी हलचल; बहुत बड़ा युद्ध, बहुत बड़ी लड़ाई; लड़ाई का मैदान, रणभूमि।

मल्हूज़ (ملحوظ) अ. वि.–जिसका लिहाज़ रखा जाय, ध्यान में रखा हुआ।

मल्हूज़े ख़ातिर (ملحوظ خاطر) अ. पुं.–जो बात ध्यान में हो, जिस बात का ख़्याल हो।

मवद्दत (مودت) अ. स्त्री.–मित्रता, मैत्री, दोस्ती।

मवाइज़ (مواعظ) अ. पुं.–'मौइज़त' का बहु., धर्म-सम्बन्धी उपदेश और नसीहतें।

मवाइद (مواعد) अ. पुं.–'मौइद' का बहु., वादे के समय; वा'दे की जगहें।

मवाईद (مواعید) अ. पुं.–'मीआद' का बहु., आपस के क़ौल-क़रार।

मवाक़िफ़ (مواقف) अ. पुं.–'मौक़िफ़' का बहु., खड़े होने के स्थान; जगह, स्थान।

मवाकिब (مواکب) अ. पुं.–'मौकिब' का बहु., सवारों की फ़ौज; सवारों के झुंड।

मवाक़ीत (مواقیت) अ. स्त्री.–'मीक़ात' का बहु., वादे के स्थान; काम के समय।

मवाक़े' (مواقع) अ. पुं.–'मौक़ः' का बहु., मौक़े, अवसर।

मवाजिब (مواجب) अ. पुं.–'मौजिब' का बहु., तनख़्वाहें, वेतन।

मवाज़ीन (موازین) अ. स्त्री.–'मीज़ान' का बहु., तराज़ुएँ, तुलाएँ।

मवाज़े' (مواضع) अ. पुं.–'मौज़ा' का बहु., ग्राम-समूह, बहुत-से गाँव।

मवात (موات) अ. वि.–निष्प्राण, बे जान, (स्त्री.) ऊसर भूमि, ऐसी भूमि जिसमें कुछ उपज न सके।

मवातिन (مواطن) अ. पुं.–'मौतिन' का बहु., जन्म-भूमियाँ, वतन।

मवाद (مواد) अ. पुं.–सामग्री, मसाला; पीप और ख़ून जो घाव या फोड़े से निकले; सबूत, प्रमाण।

मवादे फ़ासिद (مواد فاسد) अ. पुं.–सड़ा हुआ मवाद या ख़ून और पीप; शरीर के अंदर की दूषित धातुएँ।

मवाने' (موانع) अ. पुं.–'माने' का बहु., बाधाएँ, विघ्न, रुकावटें।

मवाली (موالی) अ. पुं.–'मौला' का बहु., यार-दोस्त, संगी-साथी; गुंडा, बदमाश।

मवालीद (موالید) अ. पुं.–'मौलूद' का बहु., लड़के, बच्चे।

मवालीदे सलासः (موالید ثلاثه) अ. पुं.–सृष्टि के तीनों वर्ग—प्राणी; वनस्पति; जड पदार्थ।

मवाशी (مواشی) अ. पुं.–'माशियः' का बहु., चौपाए, मवेशी।

मवासीक़ (مواثیق) अ. पुं.–'मीसाक़' का बहु., आपस के क़ौल-क़रार।

मवाहिब (مواهب) अ. पुं.–'मौहिब' का बहु., कृपाएँ, दयाएँ, मेहरबानियाँ, बख़्शिशें।

मवीज़ (مویز) अ. पुं.–सूखा हुआ अंगूर, शुष्कद्राक्ष, मुनक़्क़ा।

मवीज़े मुनक़्क़ा (مویز منقی) अ. पुं.–वह मवीज़ जिसके बीज निकाल डाले गये हों, मुनक़्क़ा का अर्थ है–

पेट साफ़ किया हुआ, चूँकि मुनक़्क़े के बीज निकालने से उसका पेट साफ़ हो जाता है, इस कारण उसे मुनक़्क़ा कहते हैं, मगर अब मुनक़्क़ा उसका नाम ही पड़ गया है।

मव्वाज (مواج) अ. वि.–मौजें मारता हुआ, ज़ोर की लहरें लेता हुआ।

मशक़्क़त (مشقت) अ. स्त्री.–कष्ट, दुःख, तक्लीफ़; श्रम, मेहनत, मज़्दूरी; परिश्रम, दौड़-धूप; तपस्या, रियाज़त।

मशाइख़ (مشائخ) अ. पुं.–'शैख़' का बहु., पीर लोग; सूफ़ी लोग।

मशाम (مشام) अ. पुं.–'मशम्म' का बहु., परंतु एकवचन के अर्थ में व्यवहृत है; मस्तिष्क, दिमाग़; वह स्थान जहाँ सूंघने की शक्ति रहती है।

मशामे जाँ (مشام جاں) अ. फा. पुं.–आत्मा का मस्तिष्क अर्थात् आत्मा।

मशारिक़ (مشارق) अ. पुं.–'मश्रिक़' का बहु., सूर्योदय के स्थान।

मशारिब (مشارب) अ. पुं.–'मश्रब' का बहु., पानी पीने के स्थान।

मशाहिद (مشاھد) अ. पुं.–'मश्हद' का बहु., क़ब्रिस्तान।

मशाहीर (مشاھیر) अ. पुं.–'मश्हूर' का बहु., महान् व्यक्ति, नामवर लोग।

मशाहीरे आलम (مشاھیر عالم) अ. पुं.–संसार के महान् व्यक्ति, बड़े-बड़े लोग।

मशाहीरे वक़्त (مشاھیر وقت) अ. पुं.–अपने समय के बड़े-बड़े लोग।

मशी (مشی) अ. पुं.–चलना; टहलना।

मशीख़त (مشیخت) अ. स्त्री.–बुज़ुर्गी, बड़प्पन; डींग, शेख़ी।

मशीख़तपनाह (مشیخت پناہ) अ. फा. वि.–दे. 'मशीख़त-मआब'।

मशीख़तमआब (مشیخت ماب) अ. वि.– शेख़ीख़ोर, डींगिया।

मशीमः (مشیمہ) अ. पुं.–वह झिल्ली जो उत्पत्ति के समय शिशु के ऊपर लिपटी रहती है; आँख का छटा पर्दा।

मशीयत (مشیت) अ. स्त्री.–ईश्वरेच्छा, ख़ुदा की मर्ज़ी; दैवशक्ति, क़ुदरत।

मशूम (مشوم) अ. वि.–दे. 'मश्ऊम', दोनों शुद्ध हैं, अशुभ, अनिष्ट, मन्हूस।

मशूरः (مشورہ) अ. पुं.–परामर्श, सलाह, दे. 'मश्वुरः' दोनों शुद्ध हैं।

मश्अलः (مشعلہ) अ. पुं.–दे. 'मश्अल'।

मश्अल (مشعل) अ. स्त्री.–एक लंबी लकड़ी में कपड़ा लपेटकर और उसे तेल में तर करके जलाते हैं, यही 'मश्अल' है, मशाल।

मश्अलची (مشعلچی) अ. फा. पुं.–मश्अल लेकर आगे चलनेवाला, मश्अल दिखानेवाला, मशालची।

मश्ऊफ़ (مشعوف) अ. वि.–मुग्ध, आसक्त, शेफ़्तः।

मश्ऊम (مشئوم) अ. वि.–दे. 'मशूम', दोनों शुद्ध हैं, अनिष्ट, अशुभ, मन्हूस।

मश्क़ (مشق) अ. स्त्री.–अभ्यास, किसी काम को बार-बार करना; हस्त-कौशल, महारत; टेव, आदत।

मश्क (مشک) फा. स्त्री.–परवाल, पानी भरने की चमड़े की ख़ाल।

मश्कीज़ः (مشکیزہ) अ. पुं.–छोटी मश्क।

मश्कूक (مشکوک) अ. वि.–जिसमें शक हो, संदिग्ध; जिसे शक हो, शंकित।

मश्कूर (مشکور) अ. वि.–जिसका शुक्रिया अदा किया जाय, प्रशंसित।

मश्के आब (مشک آب) फा. स्त्री.–पानी से भरी हुई मश्क।

मश्क़े सुख़न (مشق سخن) अ. फा. स्त्री.–काव्य-रचना का अभ्यास।

मश्कोए (مشکوے) फा. पुं.–मूर्तिगृह, बुतख़ाना; अंतःपुर, हरमसरा।

मश्ग़लः (مشغلہ) अ. पुं.–व्यापार, शुग़्ल; व्यवसाय, उद्यम, रोज़गार; कार्य, काम।

मश्ग़ूल (مشغول) अ. वि.–संलग्न, प्रवृत्त, लीन, मुनहमिक।

मश्ग़ूलियत (مشغولیت) अ. स्त्री.–संलग्नता, तल्लीनता, प्रवृत्ति, इनहिमाक।

मश्मूम (مشموم) अ. वि.–सूँघा हुआ।

मश्मूल (مشمول) अ. वि.–शामिल किया हुआ, सम्मिलित।

मश्रब (مشرب) अ. पुं.–पानी पीने का स्थान; मत, अक़ीदः।

मश्रिक़ (مشرق) अ. पुं.–पूर्व, पूरब, सूर्य निकलने का स्थान, उदयाचल।

मश्रिक़ी (مشرقی) अ. वि.–पूर्वीय, पूरब का; हिंदुस्तानी, देशी; जो यूरोपीय न हो, बल्कि एशियाई हो।

मश्रिक़ीयात (مشرقیات) अ. स्त्री.–एशियाई संस्कृति और सभ्यता से सम्बन्धित विज्ञान।

मश्रिक़ैन (مشرقین) अ. पुं.–दोनों पूर्व, अर्थात् पूरब और पच्छिम।

मश्रूअ (مشروع) अ. वि.–शास्त्र के अनुसार किया हुआ; इस्लामी धर्मशास्त्र के अनुसार किया हुआ।

मश्रूत (مشروط) अ. वि.–जो किसी शर्त पर निर्धारित हो।

मश्रूब (مشروب) अ. वि.–पीनेवाली वस्तु, पानीय, पेय; पिया हुआ, पीत।

मश्रूबात (مشروبات) अ. पुं.–पीनेवाली वस्तुएँ, पेय।

मश्रूह (مشروح) अ. वि.–विवरण और विस्तार के साथ कहा हुआ।

मश्रूहन (مشروحاً) अ. अव्य.–विस्तारपूर्वक, पूरी तफ़्सील से, स्पष्टतया ।

मश्वरः (مشورہ) अ. पुं.–शुद्ध उच्चारण 'मश्वुरः' है, परंतु उर्दू में 'मश्वरः' ही बोलते हैं, परामर्श, सलाह।

मश्वी (مشوی) अ. वि.–भुना हुआ, भ्रष्ट, बियीं।

मश्वुरः (مشورہ) अ. पुं.–दे. 'मश्वरः' शुद्ध मश्वुरः ही है, परंतु उर्दू में 'मश्वरः' बोलते हैं, परामर्श, मंत्रणा, सलाह।

मश्वुरत (مشورت) अ. स्त्री.–दे. 'मश्वुरः'।

मश्वुरतख़ानः (مشورتخانہ) अ. फा. पुं.–मंत्रणागार, दारुश शूरा।

मश्शाई (مشائی) अ. वि.–'मश्शाईन' में का एक व्यक्ति।

मश्शाईन (مشائین) अ. पुं.–वैज्ञानिक विद्वानों का वह संप्रदाय जो एक दूसरे के पास जाकर पठन-पाठन करते थे, बरखिलाफ़ 'इशाक़ीन' के जो आत्मशक्ति द्वारा पठन-पाठन कर्म करते थे।

मश्शाक (مشاق) अ. वि.–किसी विशेष काम का बहुत अच्छा जानकार, दक्ष, कुशल, विशेषज्ञ।

मश्शाक़ी (مشاقی) अ. स्त्री.–दक्षता, कुशलता, प्रवीणता।

मश्शातः (مشاطہ) अ. स्त्री.–स्त्रियों का बनाव-सिंगार करनेवाली स्त्री, प्रसाधिका।

मश्शातगी (مشاطگی) अ. स्त्री.–स्त्रियों का बनाव-सिंगार कराने का काम, प्रसाधन।

मश्हद (مشہد) अ. पुं.–उपस्थित होने का स्थान; शहीद होने का स्थान, शहादतगाह; शहीदों का क़ब्रिस्तान; ईरान का एक नगर जिसे 'तूस' भी कहते हैं।

मश्हूद (مشہود) अ. वि.–जो उपस्थित किया गया हो; जिस पर गवाही दी गयी हो; ध्येय, मक़्सूद।

मश्हून (مشحون) अ. वि.–जो भरा गया हो, परिपूर्ण।

मश्हूर (مشہور) अ. वि.–ख्याति प्राप्त, शुह्रत पाया हुआ; प्रसिद्ध, विख्यात।

मश्हूरोमा'रूफ़ (مشہور و معروف) अ. वि.–बहुत अधिक प्रसिद्ध, जिसे प्रायः सभी जानते हों, सुप्रसिद्ध, बहुख्यात।

मस [स्स] (مس) अ. पुं.–स्पर्श, छूना; रुचि, रग़्बत।

मस [स्स] (مص) अ. पुं.–चूसना, चूषण।

मसर्रत (مسرت) अ. स्त्री.–हर्ष, आनंद, ख़ुशी।

मसर्रतअंगेज (مسرت انگیز) अ. फा. वि.–हर्षवर्द्धक, ख़ुशी बढ़ानेवाला।

मसर्रतअफ़्ज़ा (مسرت افزا) अ. फा. वि.–दे. 'मसर्रतअंगेज़'।

मसर्रतआमेज (مسرت آمیز) अ. फा. वि.–हर्षपूर्ण, आनंदमय, ख़ुशी से भरा हुआ।

मसर्रते क़ल्बी (مسرت قلبی) अ. स्त्री.–हार्दिक आनंद, दिली ख़ुशी।

मसर्रते बेहद (مسرت بےحد) अ. फा. स्त्री.–अत्यधिक हर्ष, बहुत ज़ियादा ख़ुशी।

मसर्रते रूहानी (مسرت روحانی) अ. स्त्री.–दे. 'मसर्रते क़ल्बी'।

मसल (مثل) अ. स्त्री.–लोकोक्ति, कहावत; समान, तुल्य, मिस्ल।

मसलन (مثلاً) अ. अव्य.–जैसे, मानो, उदाहरणार्थ।

मसल्तुमसलन (مثلت مثلاً) अ. क्रि.–में एक उदाहरण देती हूँ; जैसे, मानो, मसलन।

मसाइब (مصائب) अ. पुं.–'मुसीबत' का बहु., मुसीबतें, आपत्तियाँ; कठिनाइयाँ, दुशवारियाँ।

मसाइल (مسائل) अ. पुं.–'मस्अलः' का बहु., मसअले, समस्याएँ।

मसाई (مساعی) अ. स्त्री.–'मस्आत' का बहु., कोशिशें, प्रयत्न।

मसाकिन (مساکن) अ. पुं.–'मस्कन' का बहु., बहुत-से घर, बहुत-सी जगहें।

मसाकीन (مساکین) अ. पुं.–'मिस्कीन' का बहु., ग़रीब लोग, मँगता लोग।

मसाजिद (مساجد) अ. स्त्री.–'मस्जिद' का बहु., मस्जिदें।

मसादिर (مصادر) अ. पुं.–'मस्दर' का बहु., बहुत से मस्दर, धातुएँ।

मसानः (مشانہ) अ. पुं.–पेशाब की थैली, मूत्राशय, मूत्रकोष।

मसाफ़ (مصاف) अ. पुं.–युद्ध, समर, जंग, लड़ाई।

मसाफ़त (مسافت) अ. स्त्री.–दो स्थानों के बीच की दूरी, फ़ासिला; दूरी, रास्ते की दूरी; यात्रा, सफ़र।

मसाफ़ते बईदः (مسافت بعیدہ) अ. स्त्री.–लंबी यात्रा, दूर की यात्रा, लंबा सफ़र।

मसाम (مسام) अ. पुं.–रोमकूप, रोमगर्त, लोमकूप, लोमविवर, रोमछिद्र।

मसामात (مسامات) अ. पुं.–'मसाम' का बहु., शरीर के रोम-कूप।

मसारिफ़ (مصارف) अ. पुं.–'मस्रिफ़' का बहु., इख़्राजात, ख़र्च, व्यय।

मसारिफ़े ख़ानगी (مصارف خانگی) अ. फा. पुं.–घर का ख़र्च, ज़ाती ख़र्च।

मसारिफ़े ख़ुरोनोश (مصارف خورونوش) अ. फा. पुं.–खाने-पीने का ख़र्च।

मसारिफ़े बारबरदारी (مصارف باربرداری) अ. फा. पुं.–सामान एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने का ख़र्च, गाड़ी-भाड़ा आदि।

मसारिफ़े बेजा (مصارف بےجا) अ. फा. पुं.–अनुचित व्यय, ग़लत ख़र्च।

मसारिफ़े सफ़र (مصارف سفر) अ. पुं.–यात्रा-व्यय, सफ़र का ख़र्च, मार्ग-व्यय।

मसालिक (مسالک) अ. पुं.–'मस्लक' का बहु., रास्ते, मार्ग, पथ।

मसालेह (مصالح) अ. पुं.–'मस्लहत' का बहु., दूरअंदेशिया।

मसावीक (مساویک) अ. पुं.–'मिस्वाक' का बहु., दाँत साफ़ करने की मिस्वाकें, दातून, दंतधावन।

मसास (مساس) अ. पुं.–मैथुन के समय स्त्री के अंगों का मर्दन, दे. 'मिसास', शुद्ध वही है, परंतु उर्दू में 'मसास' ही है।

मसीर (مسیر) अ. पुं.–गमन, जाना।

मसीर (مصیر) अ. पुं.–लौटना, प्रत्यागमन; लौटने का स्थान।

मसील (مثیل) अ. वि.–समान, तुल्य, सदृश, मिस्ल।

मसीह (مسیح) अ. पुं.–हज़रत ईसा, ख्रीष्ट।

मसीहनफ़स (مسیح نفس) अ. पुं.–वह व्यक्ति जिसकी फूंक में हज़रत ईसा की फूँक का गुण हो, जो मुर्दों को जिला देती थी।

मसीहा (مسیحا) अ. पुं.–दे. 'मसीह'।

मसीहाई (مسیحائی) अ. व़ि.–ईसा का काम करना, अर्थात् मुर्दे जिलाना, उदा.—"तू जो चाहे तो मरीज़े ग़मे उल्फ़त बच जाय, तेरी रहमत में निहाँशाने मसीहाई है।"

मसीहादम (مسیحادم) अ. फा. वि.–दे. 'मसीहनफ़स'।

मसीहानफ़स (مسیحانفس) अ. वि.–दे. 'मसीहनफ़स'।

मसीहासिफ़त (مسیحاصفت) अ. वि.–मसीह के गुण रखनेवाला, मुर्दे जिलानेवाला।

मसीहावश (مسیحاوش) अ. फा. वि.–दे. 'मसीहासिफ़त'; मसीह की भाँति।

मसीही (مسیحی) अ. वि.–हज़्रत मसीह को माननेवाला, ईसाई, ख्रिष्टीय।

मसून (مصون) अ. वि.–सुरक्षित, महफ़ूज़।

मस्अलः (مسئلہ) अ. पुं.–समस्या, पेचीदा मुआमला; विषय, मौज़ूअ; धर्मशास्त्र सम्बन्धी हुक्म।

मस्अलत (مسئلت) अ. स्त्री.–पूछना, प्रश्न करना।

मस्ऊद (مسعود) अ. वि.–इष्ट, कल्याणकर, शुभ, नेक, मुबारक।

मस्ऊन (مصئون) अ. वि.–दे. शुद्ध उच्चारण 'मसून', यह उच्चारण अशुद्ध है।

मस्ऊल (مسئول) अ. वि.–जो पूछा जाय, जिससे जवाब लिया जाय, जवाबदेह, ज़िम्मादार, उत्तरदायी।

मस्कः (مسکہ) फा. पुं.–मक्खन, नवनीत, क्षीरसार।

मस्क़त (مسقط) अ. पुं.–अरब की एक ख़ुद मुख़्तार छोटी-सी रियासत; उस रियासत की राजधानी।

मस्कन (مسکن) अ. पुं.–रहने का स्थान, घर, गृह, मकान।

मस्कनत (مسکنت) अ. स्त्री.–नम्रता, विनय, विनीत, आजिज़ी; निर्धनता, दरिद्रता, कंगाली।

मस्क़ित (مسقط) अ. पुं.–गिरने का स्थान।

मस्क़ितुर्रास (مسقط الراس) अ. पुं.–सर गिरने का स्थान, चूँकि जन्म लेते समय पहले सर ज़मीन पर आता है, इसलिए पैदा होने के स्थान को कहते हैं, जन्मभूमि।

मस्कूक (مسکوک) अ. वि.–ठप्पा लगाया हुआ, टकसाल में गढ़ा हुआ, टकसाल में बनाया हुआ।

मस्कूनः (مسکونہ) अ. वि.–जिसमें रहाइश हो, आबाद।

मस्कून (مسکون) अ. वि.–आबाद, व़सित।

मस्क़ूल (مصقول) अ. वि.–सैक़ल किया हुआ, माँजा हुआ; उज्ज्वल, चमकदार; प्रकाशमान्, रौशन।

मस्ख़ (مسخ) अ. वि.–विकार, अच्छी से बुरी सूरत हो जाना; विकृत, बिगड़े हुए रूपवाला।

मस्ख़रः (مسخرہ) अ. पुं.–हँसोड़, हँसी ठट्ठेवाला आदमी; भाँड, नक़्लें करनेवाला, नक़्क़ाल, विदूषक।

मस्ख़रगी (مسخرگی) अ. फा. स्त्री.–हँसी-ठट्ठा, मस्ख़रापन, विदूषकता।

मस्ख़शुदः (مسخ شدہ) अ. फा. वि.–विकृत, रूपांतरित, रूपभ्रष्ट, जो बिगड़कर कुछ का कुछ हो गया हो।

मस्जिद (مسجد) अ. स्त्री.–नमाज़ पढ़ने की जगह, मसीत।

मस्जिदे जामे' (مسجد جامع) अ. स्त्री.–वह मस्जिद जिसमें शुक्रवार की बड़ी नमाज़ होती है, बड़ी मसीत।

मस्जूद (مسجود) अ. वि.–जिसको सज्दा किया जाय, जिसके लिए पूजा में सर झुकाया जाय, ईश्वर।

मस्जूदे मलाइक (مسجود ملائک) अ. वि.–'हज़्रते आदम' जिनको फ़िरिश्तों ने सज्दा किया था।

मस्त (مست) फा. वि.–नशे में चूर, मदोन्मत्त, उन्मत्त, मतवाला; कामातुर, पुरशहवत; निश्चेष्ट, अचेत, बेख़बर, बेसुध; बहुत अधिक प्रसन्न; लाउबाली, बेपर्वा, निस्पृह।

मस्तगी (مصطگی) फा. स्त्री.–एक वृक्ष का गोंद, अरबी शब्द 'मुस्तका' है ।

मस्तबः (مسطبہ-مصطبہ) अ. पुं.–मधुशाला, मदिरालय, शराबख़ाना, दे. 'मिस्तबः', दोनों शुद्ध हैं ।

मस्तानः (مستانہ) फा. वि.–मस्तों की तरह, मस्तों-जैसा; मस्त, मत्त ।

मस्ती (مستی) फा. स्त्री.–उन्माद, नशा; काम-वेग, जोशे शह्वत; निश्चेष्टता, बेख़बरी; ईश्वर-प्रेम का आधिक्य, बेख़ुदी ।

मस्तूरः (مستورہ) अ. वि.–छिपी हुई वस्तु ।

मस्तूर (مستور) अ. वि.–छिपा हुआ, गुप्त, पोशीदा ।

मस्तूर (مسطور) अ. वि.–लिखा हुआ, लिखित ।

मस्तूरात (مستورات) अ. स्त्री.–'मस्तूरः' का बहु., महिलाएँ, स्त्रियाँ ।

मस्तूरी (مستوری) अ. वि.–छिपाव, दुराव, पोशीदगी ।

मस्तूल (مستول) फा. पुं.–जहाज़ का वह लंबा खंभा जिसमें बादबान (मरुत्पट, झंडा) बाँधा जाता है ।

मस्ते अलस्त (مست الست) फा. अ. वि.–जो प्रकृति से मस्त हो, जो हर समय मस्त रहता हो; वह मस्त जो ब्रह्मलीन हो ।

मस्ते मै (مست مے) फा. वि.–शराब के नशे में चूर, मदिरामत्त, मदोन्मत्त ।

मस्ते राह (مست راح) फा. अ. वि.–शराब के नशे में मस्त, मदोन्मत्त ।

मस्ते शबाब (مست شباب) फा. अ. वि.–जवानी के नशे में चूर ।

मस्ते शराब (مست شراب) फा. अ. वि.–दे. 'मस्ते मै' ।

मस्दर (مصدر) अ. पुं.–उद्गम, उत्पत्तिस्थान; वह शब्द जिससे क्रियाएँ और कर्ता, धातु-कर्म आदि बनते हैं ।

मस्दरे ग़ैरवज़ई (مصدر غیروضعی) अ. पुं.–वह मस्दर जो किसी दूसरी भाषा के शब्द से बनाया जाय, जैसे—'आज़माना' ।

मस्दरे मुतअद्दी (مصدر متعدی) अ. पुं.–वह मस्दर जिससे सकर्मक क्रियाएँ बनें ।

मस्दरे लाज़िम (مصدر لازم) अ. पुं.–वह मस्दर जिसकी क्रियाएँ अकर्मक हों ।

मस्दरे वज़ई (مصدر وضعی) अ. पुं.–वह मस्दर जो उसी भापा का हो ।

मस्दूद (مسدود) अ. वि.–रोका हुआ, बंद किया हुआ, अवरुद्ध, निरुद्ध ।

मस्नद (مسند) अ. पुं.–तकिया लगाकर बैठने की जगह; वह फ़र्श जिस पर प्रतिष्ठित जन बैठते हैं; बड़ा तकिया ।

मस्नदआरा (مسندآرا) अ. फा. वि.–मस्नद की शोभा बढ़ानेवाला, अर्थात् मस्नद पर बैठनेवाला ।

मस्नदनशीं (مسندنشیں) अ. फा. वि.–मस्नद पर बैठनेवाला; गद्दीनशीन; तख़्तनशीन ।

मस्नदनशीनी (مسندنشینی) अ. फा. स्त्री.–मस्नद पर बैठना; किसी साधु या फ़क़ीर की गद्दी पर बैठना; राजसिंहासन पर बैठना ।

मस्नवी (مثنوی) अ. स्त्री.–उर्दू पद्य की एक क़िस्म, जिसमें कोई कहानी या उपदेश एक ही वृत्त में होता है और उसका हर शे'र दूसरे शे'र से रदीफ़ क़ाफ़िए में नहीं मिलता, और हर शे'र के दोनों मिस्रे सानुप्रास होते हैं ।

मस्नूअः (مصنوعہ) अ. वि.–बनी हुई वस्तु, कारीगर के हाथ की बनी हुई वस्तु ।

मस्नूअ (مصنوع) अ. वि.–बना हुआ, निर्मित ।

मस्नूआत (مصنوعات) अ. स्त्री.–किसी देश या स्थान की बनी हुई चीज़ें, वे चीज़ें जो किसी देश विशेष की कारीगरी हों ।

मस्नूई (مصنوعی) अ. वि.–कृत्रिम, बनावटी; मिथ्या, झूठा; अप्राकृतिक, अस्वाभाविक, अननेचुरल ।

मस्फ़ूफ़ (مسفوف) अ. वि.–चूर्णित, पिसा हुआ ।

मस्बूक़ (مسبوق) अ. वि.–पहले गुज़रा हुआ, पहले आया हुआ ।

मस्बूक़ुज्ज़िक्र (مسبوق الذکر) अ. वि.–जिसकी चर्चा पहले हो चुकी हो, पूर्वकथित, पूर्वोक्त ।

मस्बूग़ (مصبوغ) अ. वि.–रँगा हुआ, रंगीन, रंजित ।

मस्मूअ (مسموع) अ. वि.–सुना हुआ, श्रुत ।

मस्मूम (مسموم) अ. वि.–ज़हर मिला हुआ, ज़हरीला, विषाक्त ।

मस्रिफ़ (مصرف) अ. पुं.–व्यय करने की जगह; प्रयोजन, इस्तेमाल ।

मस्रूअ (مصروع) अ. वि.–जिसे मिरगी की बीमारी हो, अपस्मारी ।

मस्रूक़ः (مسروقہ) अ. वि.–चुराया हुआ, चोरी का ।

मस्रूक़ (مسروق) अ. वि.–चुराया हुआ, चोरी किया हुआ ।

मस्रूफ़ (مصروف) अ. वि.–काम में लगा हुआ, निरत, प्रवृत्त, संलग्न, मश्ग़ूल; जिसे फ़ुर्सत न हो, अवकाशहीन, अदीमुल फ़ुर्सत ।

मस्रूफ़ियत (مصروفیت) अ. स्त्री.–संलग्नता, मश्ग़ूली; अवकाशहीनता, अदीमुल फ़ुर्सती ।

मस्रूर (مسرور) अ. वि.–प्रसन्न, प्रफुल्ल, हर्षित, आनंदित,

ख़ुश; उल्लसित, उदा०–"किसी का सामने आना मेरा मस्रूर हो जाना, निगाहे मस्त का मिलना मेरा मख़्मूर हो जाना।"

मस्लक (مسلک) अ. पुं.–पथ, रास्ता; पंथ, मत, अकीदः; पद्धति, तरीक़ा।

मस्लख़ (مسلخ) अ. पुं.–जहाँ पशुओं का वध करके उनकी खाल उतारी जाती है, कमेला, बूचड़ख़ाना।

मस्लहत (مصلحت) अ. स्त्री.–परामर्श, सलाह; भेद, राज़; हित, भलाई; अपने बनाव या बिगाड़ का ध्यान रखते हुए कोई काम करना।

मस्लहतअंदेश (مصلحت اندیش) अ. फा. वि.–भला-बुरा सोचकर काम करनेवाला।

मस्लहतआमेज़ (مصلحت آمیز) अ. फा. वि.–जिसमें कोई मस्लहत हो।

मस्लहतख़्वाह (مصلحت خواہ) अ. फा. वि.–दे. 'मस्लहत-पसंद'।

मस्लहतन (مصلحتاً) अ. वि.–मस्लहत से, कारणवश।

मस्लहतपसंद (مصلحت پسند) अ. फा. वि.–शांतिप्रिय, सुल्हजू; शुभेच्छु, ख़ैरख़्वाह; अच्छा-बुरा समझकर काम करनेवाला।

मस्लहतबीं (مصلحت بیں) अ. फा. वि.–दे. 'मस्लहत-अंदेश'।

मस्लहतबीनी (مصلحت بینی) अ. फा. स्त्री.–बुरा-भला समझकर काम करना।

मस्लहते वक़्त (مصلحت وقت) अ. स्त्री.–समय की पुकार।

मस्लूक (مسلوک) अ. वि.–जिसके साथ उपकार किया जाय; गया हुआ।

मस्लूब (مصلوب) अ. वि.–जिसे सूली पर चढ़ाया गया हो।

मस्लूब (مسلوب) अ. वि.–जो सल्ब कर लिया गया हो, जो छीन लिया गया हो, हत, विनष्ट।

मस्लूबुलअक़्ल (مسلوب العقل) अ. वि.–जिसकी बुद्धि सल्ब हो गयी हो, हतबुद्धि।

मस्लूबुलहवास (مسلوب الحواس) अ. वि.–जिसके होशो-हवास सल्ब हो गये हों, हतसंज्ञ।

मस्लूल (مسلول) अ. वि.–जिसे सिल की बीमारी हो, जिसके फेफड़ों से ख़ून आता हो, रक्तकाशी।

मस्साह (مساح) अ. वि.–पैमाइश करनेवाला।

मस्ह (مسح) अ. पुं.–वज़ू के समय सर पर गीला हाथ फेरना।

मस्हूक़ (مسحوق) अ. वि.–पिसा हुआ, रगड़ा हुआ।

मस्हूब (مصحوب) अ. वि.–साथी, हमराही।

मस्हूर (مسحور) अ. वि.–जिस पर जादू किया गया हो, मंत्रमुग्ध।

मह (مہ) फा. पुं.–'माह' का लघु., चंद्र, सोम, चाँद।

महक [क्क] (محک) अ. स्त्री.–कसौटी का पत्थर, कसौटी, निकष, कसवटी।

महताब (مہتاب) फा. पुं.–'माहताब' का लघु., चंद्रमा, चाँद; कौमुदी, चाँदनी।

महताबी (مہتابی) फा. वि.–एक प्रकार की आतशबाज़ी, जिसे छुड़ाने से चाँदनी-सी छिटक जाती है; ज़रबफ़्त, बादला, कमख़्वाब, ज़री; वह अड्डा जिसे कोठे की सीढ़ियों के ऊपर बनाते हैं।

मह्फ़ः (محفہ) अ. पुं.–दे. 'मुहाफ़ः'।

महब्बत (محبت) अ. स्त्री.–प्रेम, स्नेह, प्यार, इश्क़; मित्रता, मैत्री, दोस्ती, यारी; ममता, मामता, माँ-बाप का प्यार; कृपा, दया, मेह्रबानी।

महब्बतआमेज (محبت آمیز) अ. फा. वि.–जिससे प्रेम टपकता हो, प्रेमपूर्ण।

महब्बतनामः (محبت نامہ) अ. फा. पुं.–प्रेमपत्र, आशिक़ानः ख़त; कृपापत्र, नवाज़िशनामा।

महम [म्म], मुहिम (مہم) अ. पुं.–चिंता, फ़िक्र; बड़ा और महत्त्वपूर्ण काम।

महमाअस्कन (مہما امکن) अ. वा.–जब तक हो सके, जहाँ तक मुम्किन हो।

महल [ल्ल] (محل) अ. पुं.–मकान, घर; स्थान, जगह; अवसर, मौक़ा; प्रासाद, हवेली; बीवी, पत्नी।

महलसरा (محل سرا) अ. फा. पुं.–अंतःपुर, रनवास, बड़े लोगों का ज़नानख़ाना।

महल्लः (محلہ) अ. पुं.–नगर का एक भाग, टोला।

महल्लःदार (محلہ دار) अ. फा. पुं.–महल्ले का चौधरी या मुखिया।

महल्लात (محلات) अ. पुं.–'महल' का बहु., अवसर, मौक़े; बड़े लोगों की स्त्रियाँ, हरम।

महल्ले ख़तर (محل خطر) अ. पुं.–जानजोखिम का स्थान, ख़त्रे की जगह।

महल्ले नज़र (محل نظر) अ. पुं.–शक या एतिराज़ का स्थान, जहाँ कोई शंका या आपत्ति उत्पन्न हो।

महवश (مہوش) फा. वि.–चाँद-जैसी आभा और आकृति वाला (वाली)

महाकिम (محاکم) अ. पुं.–'मह्कमः' का बहु., महकमे, विभाग।

महाज़ (محاذ) अ. पुं.–मुक़ाबले या लड़ाई का स्थान।

महाज़े जंग (محاذ جنگ) अ. फा. पुं.–युद्ध-क्षेत्र, रंगभूमि, रणस्थल, मैदाने जंग।

महाफ़िल (محافل) अ. पुं.–'महफ़िल' का बहु., गोष्ठियाँ, सभाएँ।

महाब (مہاب) अ. पुं.–भय का स्थान, डरावनी जगह।

महाबत (مہابت) अ. स्त्री.–आतंक, रोब; भय, त्रास, डर; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

महाम [म्म], मुहाम (مہام) अ. पुं.–'महम' का बहु., बड़े और महत्त्वपूर्ण काम।

महामिद (محامد) अ. पुं.–'मह्मदत' का बहु., कीर्तियाँ, गुणसमूह।

महार (مہار) फा. स्त्री.–ऊँट की नकेल, दे. 'मिहार', दोनों शुद्ध हैं।

महारत (مہارت) अ. स्त्री.–निपुणता, चतुरता, क़ाबिलीयत; अभ्यास, मश्क़; हस्त-कौशल, चाबुकदस्ती; उस्तादी, कारीगरी।

महारिम (محارم) अ. पुं.–'मह्रम' का बहु., राज़दार लोग।

महारीब (محاریب) अ. स्त्री.–'मेह्राब' का बहु., 'मेह्राबें'।

महालः (محالہ) अ. पुं.–उपाय, यत्न, तद्बीर।

महाल [ल्ल] (محال) अ. पुं.–'महल' का बहु., जगहें, स्थान।

महाल (مہال) अ. वि.–भयानक, भीषण, ख़ौफ़नाक।

महालिक (مہالک) अ. पुं.–'मह्लकः' का बहु., जान-जोखिम के स्थान।

महासिन (محاسن) अ. पुं.–'हुस्न' का बहु., अच्छाइयाँ; डाढ़ी, श्मश्रू।

महासिल (محاصل) अ. पुं.–आय, आमदनी; राजस्व, मालगुज़ारी; भूमिकर, लगान।

महासिले ख़ाम (محاصل خام) अ. फा. पुं.–कच्ची निकासी, गाँव की कुल आमदनी जिसमें मालगुज़ारी और नफ़ा' सब शामिल हों।

महीज़ (محیض) अ. स्त्री.–स्त्री के रजस्वला होने की दशा, हालते हैज़।

महीनः (مہینہ) फा. पुं.–'माहीनः' का लघु., साल का १२ वाँ अंश, मास।

महीन (مہین) अ. वि.–बोदा, कमज़ोर; जीर्ण, झन्ना; तुच्छ, हक़ीर।

महीब (مہیب) अ. वि.–भीषण, भयानक, कराल, विकट, डरावना, जिसे देखकर डर लगे।

महीबशक्ल (مہیب شکل) अ. वि.–दे. 'मुहीबुशशक्ल'।

महीबसूरत (مہیب صورت) अ. वि.–दे. 'महीबुशशक्ल'।

महीबुलऐन (مہیب العین) अ. वि.–जिसकी आँखें ख़ौफ़नाक हों, विकटाक्ष, भीषणनेत्र।

महीबुलक़ामः (مہیب القامہ) अ. वि.–दे. 'महीबुलजुस्सः'।

महीबुलजुस्सः (مہیب الجثہ) अ. वि.–जिसका डीलडौल भयानक हो, भीमकाय।

महीबुलवज्ह (مہیب الوجہ) अ. वि.–दे. 'महीबुशशक्ल'।

महीबुशशक्ल (مہیب الشکل) अ. वि.–जिसकी सूरत डरावनी हो, विकट मूर्ति, विकटानन।

महीबुस्सूरत (مہیب الصورت) अ. वि.–दे. 'महीबुशशक्ल'।

महीबुस्सौत (مہیب الصوت) अ. वि.–जिसकी आवाज़ भयानक हो, भैरव।

महील (مہیل) अ. वि.–भय का स्थान, ख़ौफ़ की जगह।

मह्कमः (محکمہ) अ. पुं.–कचहरी, अदालत, न्यायालय; विभाग, सीग़ा, डिपार्टमेंट।

मह्कमःजात (محکمہ جات) अ. फा. पुं.–बहुत से मह्कमे, अन्य विभाग।

मह्कमए आबकारी (محکمہ آبکاری) अ. फा. पुं.–मादक-विभाग।

मह्कमए आबपाशी (محکمۂ آبپاشی) अ. फा. पुं.–सिंचन-विभाग, सिंचाई-विभाग।

मह्कमए आबादकारी (محکمہ آبادکاری) अ. फा. पुं.–पुनर्वास-विभाग।

मह्कमए इंसाफ़ (محکمۂ انصاف) अ. पुं.–न्याय-विभाग।

मह्कमए क़ज़ा (محکمہ قضا) अ.. पुं. न्याय-विभाग।

मह्कमए क़ानून (محکمۂ قانون) अ. पुं.–न्याय-विभाग।

मह्कमए ज़िराअत (محکمۂ زراعت) अ. पुं.–कृषि-विभाग।

मह्कमए ता'मीर (محکمۂ تعمیر) अ. पुं.–निर्माण-विभाग।

मह्कमए ता'लीम (محکمۂ تعلیم) अ. पुं.–शिक्षा-विभाग।

मह्कमए तौसीए तालीम (محکمۂ توسیع تعلیم) अ. पुं.–शिक्षा-प्रसार-विभाग।

मह्कमए दिफ़ाअ (محکمۂ دفاع) अ. पुं.–रक्षा-विभाग।

मह्कमए नश्रोइशाअत (محکمۂ نشرواشاعت) अ. पुं.–प्रचार-विभाग।

मह्कमए फ़ौज (محکمۂ فوج) अ. पुं.–सैन्य-विभाग।

मह्कमए माल (محکمۂ مال) अ. पुं.–राजस्व-विभाग, अर्थ-विभाग।

मह्कमए मेहनत (محکمۂ محنت) अ. पुं.–श्रम-विभाग।

मह्कमए सन्अतोहिफ़ंत (محکمۂ صنعت وحرفت) अ. पु.–उद्योग तथा शिल्प-विभाग।

LIBRARY HARDWAR

मह्कमए सेहत (محکمۂ صحت) अ. पुं.–स्वास्थ्य-विभाग।

मह्कमए हिफ़्ज़ानेसेहत (محکمۂ حفظان صحت) अ.पुं.–स्वास्थ्य-विभाग, स्वास्थ्य-रक्षा-विभाग।

मह्कूक (محکوک) अ. वि.–छीला हुआ, कटा-फटा।

मह्कूम (محکوم) अ. वि.–वशीभूत, अधीन, ज़ेरहुक्म; प्रजा, रिआया; दास, ग़ुलाम।

मह्कूमी (محکومی) अ. स्त्री.–दासता, ग़ुलामी; पराधीनता, नामुख़्तारी।

मह्ज़ (محض) अ. वि.–केवल, सिर्फ़; निर्मल, ख़ालिस।

मह्ज़र (محضر) अ. पुं.–उपस्थित होने का स्थान, दे. 'मह्ज़रनामः'।

मह्ज़रनामः (محضرنامہ) अ. फा. पुं.–वह प्रार्थनापत्र जो बहुत-से आदमियों की ओर से दिया जाय; वह प्रमाणपत्र जिस पर बहुत-से व्यक्तियों के तस्दीक़ी हस्ताक्षर हों।

मह्ज़ूँ (محزوں) अ. वि.–शोकान्वित, ग़मगीन; कष्टग्रस्त, तक्लीफ़ज़दः।

मह्ज़ूज़ (محظوظ) अ. वि.–हर्षित, आनंदित, प्रसन्न, ख़ुश।

मह्ज़न (محزون) अ. वि.–दे. 'मह्ज़ूँ।

मह्ज़ूनी (محزونی) अ. स्त्री.–शोक, ग़म; दुःख, तक्लीफ़।

मह्ज़ूफ़ (محذوف) अ. वि.–वह अक्षर जो लुप्त हो; वह शब्द जो लुप्त हो।

मह्जूब (محجوب) अ. वि.–लज्जित, शर्मिंदा।

मह्ज़ूम (مہزوم) अ. वि.–पराजित, परास्त, हारा हुआ।

मह्ज़ूम (مہضوم) अ. वि.–पचित, जो हज़्म हो गया हो।

मह्जूर (مہجور) अ. वि.–विरहग्रस्त, वियोगी, फ़िराक़ज़दः।

मह्जूरी (مہجوری) अ. स्त्री.–विरह, वियोग, जुदाई, फ़िराक़।

मह्ज़ूल (مہزول) अ. वि.–दुबला-पतला, क्षीण, जीर्ण।

मह्द (مہد) अ. पुं.–हिंडोला, पालना, गह्वारः।

मह्दी (مہدی) अ. वि.–दीक्षित, जिसे हिदायत मिली हो; धर्मनेता, हादी; शीआ संप्रदाय के १२ वें इमाम जिनके प्रति उनका विश्वास है कि वह क़ियामत के क़रीब फिर आस्मान से आयेंगे।

मह्दूद (محدود) अ. वि.–सीमित, हद के भीतर; कतिपय, थोड़े, चंद; घिरा हुआ।

मह्दूम (مہدوم) अ. वि.–ध्वस्त, नष्ट, मुन्हदिम।

मह्दे उल्या (مہد علیا) अ. स्त्री.–बादशाह, राजा या नवाब आदि की वह पत्नी जो युवराज की माँ हो।

मह्फ़िज़ः (محفظہ) अ. पुं.–याददाश्त की कापी, नोटबुक।

मह्फ़िल (محفل) अ. स्त्री.–सभा, गोष्ठी, मज्लिस, जल्सा।

मह्फ़िले रक़्स (محفل رقص) अ. स्त्री.–नाच-गाने का जल्सा।

मह्फ़िले वा'ज़ (محفل وعظ) अ. स्त्री.–धर्मोपदेश की सभा।

मह्फ़िले शे'र (محفل شعر) अ. स्त्री.–शे'रो शाइरी का जल्सा, कवि-गोष्ठी।

मह्फ़ूज़ (محفوظ) अ. वि.–निरापद, सहीह-सलामत; आवश्यकता के लिए बचाकर रखी हुई चीज़, सुरक्षित; कंठ, मुखाग्र, बरज़बाँ।

मह्बस (محبس) अ. पुं.–कारागार, क़ैदख़ाना, जेल।

मह्बित (مہبط) अ. पुं.–जिस जगह कोई बड़ा व्यक्ति उतरता हो अर्थात् ठहरता हो।

मह्बिल (مہبل) अ. स्त्री.–भग का मुँह, योनिद्वार, योनिमुख।

मह्बूबः (محبوبہ) अ. स्त्री.–प्रेयसी, प्रेमिका, मा'शूक़ः।

मह्बूब (محبوب) अ. पुं.–प्रेमपात्र, मा'शूक़; बहुत अधिक प्यारा, अज़ीज़तरीन।

मह्बूबी (محبوبی) अ. वि.–मा'शूक़पन, मा'शूक़ियत।

मह्बूस (محبوس) अ. वि.–क़ैद में पड़ा हुआ, कारावासी, बंदी।

मह्मिदत (محمدت) अ. स्त्री.–गुण-गाथा, कीर्ति-वर्णन, यशोगान, प्रशंसा, सिताइश।

मह्मिल (محمل) अ. पुं.–ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं।

मह्मिलनशीं (محمل نشیں) अ. फा. वि.–मह्मिल में बैठनेवाली, अर्थात् मज्नूँ की प्रेमिका, लैला।

मह्मूज़ (مہموز) अ. वि.–विकृत, दूषित, नाक़िस; अरबी का वह शब्द जिसके अक्षरों में से एक अक्षर अलिफ़ हो।

मह्मूदः (محمودہ) अ. स्त्री.–प्रशंसिता, जिसकी तारीफ़ की गयी हो; सुक़मूनिया, एक दवा।

मह्मूद (محمود) अ. वि.–प्रशंसित, जिसकी तारीफ़ हो; श्रेष्ठ, उत्तम, उम्दा; शुभ, इष्ट, मुबारक।

मह्मूदी (محمودی) अ. स्त्री.–एक प्रकार की बारीक मलमल; मह्मूद सम्बन्धी।

मह्मूम (محموم) अ. वि.–जिसे बुख़ार हो, ज्वरित; जिसका शरीर गर्म हो।

मह्मूम (مہموم) अ. वि.–दुःखित, शोकान्वित, संतप्त, ग़मगीन।

मह्मूलः (محمولہ) अ. वि.–लादी गयी वस्तु; कल्पना की हुई बात, कल्पित बात।

मह्मूल (محمول) अ. वि.–जो लादा गया हो; जिसकी कल्पना की गयी हो।

मह्र (مہر) फा. पुं.–वह रक़म जो निकाह के समय दुल्हन को दिये जाने के लिए तै होती है।

मह्रम (محرم) अ. पुं.–भेद जाननेवाला, राज़दार; मित्र, दोस्त; परिचित, जान-पहचान का; वह व्यक्ति जिससे विवाह जाइज़ न हो।

मह्रमे राज़ (محرم راز) अ. फा. पुं.–भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ।

महरुख़ (مہرخ) फा. वि.–चाँद-जैसी सूरतवाला (वाली), चंद्रमुखी, अर्थात् नायिका।

महरू (مہرو) फा. वि.–दे. 'महरुख़'।

मह्रूक़ (محروق) अ. वि.–जला हुआ, दग्ध।

मह्रूम (محروم) अ. वि.–सम्बन्धित, जिसे न मिला हो; निराश नाउम्मेद; अभागा, बदक़िस्मत; असफल, ना-कामयाब।

मह्रूमियत (محرومیت) अ. स्त्री.–दे. 'मह्रूमी'।

मह्रूमी (محرومی) अ. वि.–दुर्भाग्य, बदक़िस्मती; निराशा, नाउम्मेदी; असफलता, नाकामी; वंचित रहना, न पाना, प्राप्त न होना, उदा०—'किससे मह्रूमीए क़िस्मत की शिकायत कीजे, हमने चाहा था कि मर जायँ सो वो भी न हुआ।"—ग़ालिब।

मह्रूर (محرور) अ. वि.–तप्त, तपा हुआ, गर्म; गर्म मिज़ाजवाला।

मह्रूरुलमिज़ाज (محرورالمزاج) अ. वि.–जिसके स्वभाव में क्रोध अधिक हो, जिसे क्रोध जल्दी आता हो।

मह्रूसः (محروسہ) अ. वि.–अधीन वस्तु, वह वस्तु या देश आदि जो किसी की निगरानी या नियंत्रण में हो।

मह्रूस (محروس) अ. वि.–नियंत्रित, ज़ेरे निगरानी, कंट्रोल में आया हुआ।

मह्लकः (مہلکہ) अ. पुं.–जान जोखिम का स्थान; जान जोखिम।

मह्लूल (محلول) अ. वि.–घुला हुआ, हल किया हुआ, विलीन।

मह्व (محو) अ. वि.–मिटाना, हटाना; तन्मय, तल्लीन, मुस्तग्रक़।

मह्वियत (محویت) अ. स्त्री.–तल्लीनता; इनहिमाक; ब्रह्मलीनता; खुदा में इस्तिग्राक़।

मह्वीयत (محویت) अ. स्त्री.–दे. 'मह्वियत'।

मह्वीयते हक़ (محویت حق) अ. स्त्री.–ख़ुदा में तन, मन और धन से मह्वियत, ब्रह्मलीनता।

मह्वेज़ात (محوذات) अ. वि.–जो ईश्वर में लीन हो, ब्रह्मलीन।

मह्वे दीदार (محودیدار) अ. फा. वि.–जो प्रेमिका के दर्शन में तल्लीन हो।

मह्वे नज़्ज़ारः (محونظارہ) अ. वि.–दे. 'मह्वे दीदार'।

मह्वे हक़ (محوحق) अ. वि.–दे. 'मह्वे ज़ात'।

मह्शर (محشر) अ. पुं.–महाप्रलय, क़ियामत; क़ियामत का दिन; क़ियामत का मैदान।

मह्शरअंगेज़ (محشرانگیز) अ. फा. वि.–क़ियामत उठानेवाला।

मह्शरख़िराम (محشرخرام) अ. फा. वि.–जो अपनी चाल से दुनिया में क़ियामत मचा दे।

मह्शरख़िरामी (محشرخرامی) अ. फा. स्त्री.–ऐसी चाल जिससे क़ियामत आ जाय।

मह्शरज़ा (محشرزا) अ. फा. वि.–दे. 'महशरअंगेज़'।

मह्शरिस्तान (محشرستان) अ. फा. पुं.–क़ियामत का मैदान।

मह्शूर (محشور) अ. वि.–क़ियामत के दिन उठाया गया, जो क़ियामत के दिन ज़िंदा किया जाय।

मह्सूद (محسود) अ. वि.–जो लोगों की हसद का निशाना हो, जिससे लोग ईर्ष्या करें, ईर्षित।

मह्सूब (محسوب) अ. वि.–हिसाब में जोड़ा हुआ; हिसाब में से मिनहा किया हुआ।

मह्सूर (محصور) अ. वि.–घिरा हुआ, घेरे में आया हुआ; दुश्मन के घेरे में आया हुआ।

मह्सूल (محصول) अ. पुं.–वह रक़म जो माल भेजने या मँगाने में उसकी मज़दूरी में दी जाय; किराया, भाड़ा।

मह्सूली (محصولی) अ. वि.–वह भूमि जिस पर लगान देना पड़ता हो; वह चीज़ जिस पर महसूल (टैक्स) लगे।

मह्सूस (محسوس) अ. वि.–वह चीज़ जो इंद्रियों द्वारा जानी जाय; अनुभूत, ज्ञात, मा'लूम; स्पष्ट, प्रकट, ज़ाहिर।

मह्सूसात (محسوسات) अ. पुं.–महसूस की हुई चीज़ें, अनुभूतियाँ।

मा

मा (ما) अ. अव्य.–नहीं, क्या, जोकि, इसके।

माँ (ماں) फा. स्त्री.–माता, अम्मा।

माँदः (ماندہ) फा. वि.–शिथिल, क्लांत, श्रान्त, थका हुआ; बचा हुआ, छोड़ा हुआ, रहा हुआ, (प्रत्य.)–रहा हुआ, छोड़ा हुआ।

माँद (ماند) फा. वि.–रहा हुआ, बचा हुआ।

माँदगी (ماندگی) फा. स्त्री.–क्लांति, शिथिलता, थकावट; आलस्य, सुस्ती; रोग, बीमारी।

माँदोबूद (ماندوبود) फा. स्त्री.–रहने-सहने का ढंग, रहन-सहन ।

मा (ماء) अ. पुं.–जल, पानी; अरक़ ।

माइदः (مائدہ) अ. पुं.–खानों से भरा हुआ ख़्वान ।

माइल (مائل) अ. वि.–आकर्षित, सज्अ; प्रवृत्त, मुतवज्जेह; आसक्त, आशिक़; झुकाव रखनेवाला, झुका हुआ, आमादा ।

माइल ब उरूज (مائل بہ عروج) अ. फा. वि.–उन्नति की ओर आकृष्ट, धीरे-धीरे उन्नति और तरक़्क़ी करनेवाला ।

माइल ब औज (مائل بہ اوج) अ. फा. वि.–ऊपर की ओर आकर्षित, धीरे-धीरे ऊपर की ओर चढ़नेवाला ।

माइल ब करम (مائل بہ کرم) अ. फा. वि.–दया की ओर प्रवृत्त, मेह्रबानी करनेपर आमादा ।

माइल ब ज़र्दी (مائل بہ زردی) अ. फा. वि.–कुछ-कुछ पीलापन लिये हुए ।

माइल ब ज़वाल (مائل بہ زوال) अ. फा. वि.–अवनति की ओर प्रवृत्त, पतनोन्मुख, नीचे को जाता हुआ ।

माइल ब पस्ती (مائل بہ پستی) अ. फा. वि.–दे. 'माइल ब ज़वाल" ।

माइल ब फ़ना (مائل بہ فنا) अ. फा: वि.–नाश की ओर जानेवाला, विनाशोन्मुख ।

माइल ब सफ़ेदी (مائل بہ سفیدی) अ. फा. वि.–कुछ कुछ श्वेतता लिये हुए, हलकी सफ़ेदी लिये हुए ।

माइल ब सब्ज़ी (مائل بہ سبزی) अ. फा. वि.–हलका हरापन लिये हुए, हरिताभ ।

माइल ब सियाही (مائل بہ سیاهی) अ. फा. वि.–हलका कालापन लिये हुए ।

माइल ब सुर्ख़ी (مائل بہ سرخی) अ. फा. वि.–हलकी लालिमा लिये हुए ।

माई (مائی) अ. वि.–पानी का ।

माईयत (مائیت) अ. स्त्री.–पानीपन, तरी ।

माउलक़र्अ (ماء القرع) अ. पुं.–लौकी का पानी ।

माउलजुबन (ماء الجبن) अ. पुं.–फटे हुए दूध का पानी, जो बीमारों को दिया जाता है ।

माउल्लह्म (ماء اللحم) अ. पुं.–दवाओं में गोश्त डालकर खींचा हुआ एक पुष्टिकर अरक़ ।

माउलवर्द (ماء الورد) अ. पुं.–गुलाब-जल, गुलाब का अरक़ ।

माउलहयात (ماء الحیات) अ. पुं.–अमृत-जल, अमृत, आबेहयात; कीमियागरों की परिभाषा में घी, शहद और सुहागे का मिश्रण, जिसके द्वारा हरेक भस्म धातु फिर से जी उठती है ।

माऊफ़ (ماؤف) अ. वि.–विकृत, दूषित, बिगड़ा हुआ ।

माऊफ़ुद्दिमाग़ (ماؤف الدماغ) अ. वि.–विकृतमस्तिष्क, जिसके दिमाग़ में खलल हो ।

माए (مائع) अ. पुं.–हर बहनेवाला पदार्थ, द्रव, तरल ।

माए जारी (ماء جاری) अ. पुं.–बहता हुआ पानी, प्रवाहित जल, जैसे—नदी का पानी ।

माए साकिन (ماء ساکن) अ. पुं.–ठहरा हुआ पानी, स्थिर ज़ल, जैसे—तालाव का जल ।

माकदिर (ماکدر) अ. वि.–जो मैला हो, अस्वच्छ, अशुद्ध, मैला, गदला ।

माक़ब्ल (ماقبل) अ. वि.–जो पहले हो; जो दूसरे से पहले हो, वह शब्द जो दूसरे शब्द से पहले हो ।

माक़ब्लज़्ज़िक्र (ماقبل الذکر) अ. वि.–वह, जिसकी चर्चा पहले हो चुकी हो, पूर्वकथित ।

माकियान (ماکیان) फा. स्त्री.–कुक्कुटी, मुर्ग़ी; कुक्कुट, मुर्ग़ा ।

माकिर (ماکر) अ. वि.–छल करनेवाला, छली ।

माक़ूद (معقود) अ. वि.–ग्रंथित, गाँठ लगा हुआ; विवाहित, ब्याह किया हुआ ।

मा'क़ूल (معقول) अ. वि.–उचित, मुनासिब; उत्तम, उम्दा, सभ्य, शिष्ट, शाइस्ता; शुद्ध ।

माकूल (ماکول) अ. वि.–खाया हुआ, खायी हुई चीज़; खाने की वस्तु, खाद्य-पदार्थ; ख़ुराक, ग़िज़ा ।

मा'क़ूलात (معقولات) अ. स्त्री.–न्यायशास्त्र और विज्ञान की पुस्तकें अथवा कोर्स ।

माकूलात (ماکولات) अ. पुं.–खाने की चीज़ें, वह पदार्थ जो मनुष्य खाता है ।

मा'क़ूली (معقولی) अ. पुं.–न्यायशास्त्र का पंडित, नैयायिक ।

मा'क़ूलीयत (معقولیت) अ. स्त्री.–औचित्य, वाजिबीयत; उत्तमता, उम्दगी; सज्जनता, शराफ़त ।

मा'कूस (معکوس) अ. वि.–उलटा, औंधा, अधोमुख; विपरीत, बरअक्स ।

माख़ज़ (ماخذ) अ. पुं.– लेने का स्थान, वह पुस्तक जिससे किसी लेख या पुस्तक में मवाद लिया जाय ।

माख़ूज़ (ماخوذ) अ. वि.–लिया हुआ, गृहीत; पकड़ा हुआ, गिरिफ़्तार ।

माख़ूलिया (ماخولیا) अ. पुं.–मालीख़ूलिया, अथवा मालनख़ूलिया का लघु., मिराक़, ख़ब्त ।

माचीन (ماچین) फा. पुं.–चीन के दक्षिण और भारत के पूर्व में एक देश, इंडोचाइना, हिन्दचीन ।

माजरा (ماجرا) अ. पुं.–हाल, वृत्तांत; घटना, वाक़िआ।

माजराए दिल (ماجرائے دل) अ. फा. पुं.–हृदय की व्यथा, प्रेम की कहानी।

माजिदः (ماجدہ) अ. स्त्री.–साध्वी, शुद्धचरित्रा, सदाचारिणी, बुज़ुर्ग स्त्री।

माजिद (ماجد) अ. वि.–पुनीत, अंतःशुद्ध, पवित्रात्मा, बुज़ुर्ग।

माज़ियः (ماضیہ) अ. वि.–गत, ग़ुजरी हुई।

मा'ज़िरत (معذرت) अ. स्त्री.–उज़्र; विवशता, मजबूरी।

माज़ी (ماضی) अ. पुं.–गुज़रा हुआ, विगत; भूतकाल, ज़मानए माज़ी।

माज़ी इस्तिम्रारी (ماضی استمراری) अ. पुं.–वह माज़ी जिसमें काम का बराबर होना पाया जाय, जैसे—वह करता था।

माज़ी एहतिमाली (ماضی احتمالی) अ. पुं.–वह माज़ी जिसमें काम के होने में शंका पायी जाय, जैसे—किया होगा।

माज़ी क़रीब (ماضی قریب) अ. पुं.–वह माज़ी जिसमें काम अभी ख़त्म होना पाया जाय, जैसे—किया है।

माज़ी तमन्नाई (ماضی تمنائی) अ. पुं.–जिसमें किसी काम करने की इच्छा पायी जाय, जैसे—करता।

माज़ी नातमाम (ماضی ناتمام) अ. फा. पुं.–दे. 'माज़ी इस्तिम्रारी'।

माज़ी बईद (ماضی بعید) अ. पुं.–वह माज़ी जिसमें काम समाप्त हुए देर हो चुकी हो, जैसे—किया था।

माज़ी मा'तूफ़ः (ماضی معطوفہ) अ. पुं.–वे दो माज़ियाँ जिनके बीच में और आये, जैसे—खाया और गया या खाकर गया।

माज़ी मुत्लक़ (ماضی مطلق) अ. पुं.–आम माज़ी, सामान्य भूत, जैसे—किया, खाया आदि।

माज़ी शक्की (ماضی شکی) अ. पुं.–दे. 'माज़ी एहतिमाली'।

माज़ी शर्ती (ماضی شرطی) अ. पुं.–जिस माज़ी में शर्त पायी जाय, जैसे—अगर वह गया था, या है, या होता।

माज़ू (مازو) फा. पुं.–एक गोल फल जो दवा में चलते हैं, माजूफल।

मा'जून (معجون) अ. स्त्री.–कुटी हुई दवाओं को शहद या शकर के क़िवाम मिलाकर बनाया हुआ अवलेह, इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह स्वादिष्ठ भी हो, जैसी जवारिश होती है।

मा'ज़ूर (معذور) अ. वि.–विवश, लाचार; अपाहज, चलने-फिरने में असमर्थ।

माजूर (ماجور) अ. वि.–जिसे किसी श्रम या सेवा का फल दिया गया हो, प्रतिफलित।

मा'ज़ूरुलख़िद्मत (معذورالخدمت) अ. वि.–जो सेवा करने के अयोग्य हो चुका हो, जिससे सेवा न हो सके।

मा'ज़ूल (معزول) अ. वि.–जो पद से हटा दिया गया हो, पदच्युत, अपदस्थ।

मा'ज़ूली (معزولی) अ. स्त्री.–पद से हटाया जाना, पदच्युति।

मात (مات) अ. पुं.–शब्दार्थ, 'मर गया', शत्रंज की बाज़ी की हार; हार, शिकस्त।

मातक़द्दम (ماتقدم) अ. वि.–वह चीज जो पहले हो चुकी हो।

मातम (ماتم) फा. पुं.–मरनेवाले का ग़म, मृत्यु-शोक।

मातमअंगेज़ (ماتم انگیز) फा. वि.–शोकजनक, ग़मअंगेज़।

मातमकदः (ماتم کدہ) फा. पुं.–दे. 'मातमख़ानः'।

मातमख़ानः (ماتم خانہ) फा. पुं.–जहाँ किसी मरनेवाले का शोक मनाया जा रहा हो, शोक-गृह।

मातमज़दः (ماتم زدہ) फा. वि.–जो किसी मरनेवाले का शोक मना रहा हो, शोकग्रस्त, शोकपीड़ित।

मातमदार (ماتم دار) फा. वि.–शोक मनानेवाला, शोकग्रस्त, शोकी, सोगवार।

मातमदारी (ماتم داری) फा. स्त्री.–मरनेवाले का शोक मनाना; शोक मनाने की दशा।

मातमनशीं (ماتم نشیں) फा. वि.–जो किसी के शोक में बैठा हो, और कहीं आता-जाता न हो।

मातमपुर्सी (ماتم پرسی) फा. स्त्री.–किसी के मरने पर सहानुभूति प्रकट करने के लिए उसके घरवालों के पास जाना।

मातमसरा (ماتم سرا) फा. स्त्री.–दे. 'मातमख़ानः'।

मातमी (ماتمی) फा. वि.–शोकसम्बन्धी, जैसे—मातमी लिबास; मातम करनेवाला, सोगवार, शोकी।

मातहत (ماتحت) अ. पुं.–अधीन, आज्ञाधीन, जेर हुक्म; सहायक, एसिस्टेंट; पराधीन, ग़ुलाम, अस्वतंत्र।

मा'तूफ़ (معطوف) अ. वि.–वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द के साथ मिलकर बोला जाय। जैसे—राम और लछमन, इसमें राम शब्द मातूफ़ है।

मा'तूफ़अलैह (معطوف علیہ) अ. वि.–वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द के साथ मिलकर आये, जैसे—राम और लछमन, में लछमन।

मा'तूब (معتوب) अ. वि.–जिस पर कोप हो, कोप-भाजन, क्रोध-पात्र।

मातह्ती (ماتحتی) अ. स्त्री.–अधीनता, ज़ेरअसरी; पराधीनता, अस्वतंत्रता, गुलामी।

मादः (مادہ) फा. स्त्री–नर का उलटा, स्त्री प्राणी।

मादःरू (مادہ رو) फा. वि.–वह व्यक्ति जिसके दाढ़ी-मूँछें न हों, लड़का; वह व्यक्ति जिसकी दाढ़ी-मूँछें मूड़ी गयी हों, ज़नाना; हिजड़ा ।

मादए अस्प (مادۂ اسپ) फा. स्त्री.–घोड़ी, अश्विनी ।

मादए आहू (مادۂ آہو) फा. स्त्री.–हरनी, मृगांगना, हरिणी ।

मादए ख़र (مادۂ خر) फा. स्त्री.–गधी, गर्दभी ।

मादए ख़ूक (مادۂ خوک) फा. स्त्री.–सुअरनी, शूकरी, वराही ।

मादए गाव (مادۂ گاؤ) फा. स्त्री.–गो, गाय ।

मादए ताऊस (مادۂ طاؤس) फा. स्त्री.–मोरनी, मयूरी, शिखावली ।

मादए फ़ील (مادۂ فیل) अ. फा. स्त्री.–हथनी, गजपत्नी, हस्तिनी, मनाका ।

मादए शुतुर (مادۂ شتر) फा. स्त्री.–ऊँटनी, उष्ट्रिका, उष्ट्री ।

मादए सग (مادۂ سگ) फा. स्त्री.–कुतिया, शुनी, कुक्कुरी ।

मादरांदर (مادر اندر) फा. स्त्री.–उपमाता, सौतेली माँ ।

मादर (مادر) फा. स्त्री.–माता, जननी, माँ, अम्माँ ।

मादरज़न (مادر زن) फा. स्त्री.–सास, श्वश्रू ।

मादरज़ाद (مادر زاد) फा. वि.–जन्मज़ात; पैदाइशी, जन्म का, जन्म से, जन्मजात, जैसे—'मादरज़ाद अंधा'; नितांत, बिलकुल, जैसे—'मादरज़ाद नंगा' ।

मादर बख़ता (مادر بخطا) फा. वि.–एक गाली, हरामी, दोग़ला ।

मादरानः (مادرانہ) फा. अव्य.–माता-जैसा, ममतापूर्वक; माँ का, माता का ।

मादरी (مادری) फा. वि.–माता-सम्बन्धी; माता का; पैदाइशी, जो माँ की गोद में पाया हो ।

मादरे अल्लाती (مادر علاتی) फ. अ. स्त्री.–सौतेली माँ, उपमाता ।

मादरे गेती (مادر گیتی) फा. स्त्री–मातृभूमि, प्यारी ज़मीन ।

मादरे रिज़ाई (مادر رضائی) फा. स्त्री.–दूध पिलानेवाली, अन्ना, धात्री ।

मादरे वतन (مادر وطن) फा. स्त्री.–मातृभूमि, प्यारा वतन ।

मादरे हक़ीक़ी (مادر حقیقی) फा. स्त्री.–अस्ली माँ, मातृ, जननी, माता ।

मादाम (مادام) अ. वि.–सर्वदा, सदा, हमेशा ।

मादामलहयात (مادام الحیات) अ. वि.–ज़िंदगी भर, सारी उम्र, आजन्म, यावज्जीवन ।

मा'दिन (معدن) अ. पुं.–खनि, खान, कान ।

मा'दिनी (معدنی) अ. वि.–खान से निकला हुआ, खनिज ।

मा'दिनीयात (معدنیات) अ. स्त्री.–खान से निकली हुई चीज़ें, खनिज पदार्थ; खनिज विज्ञान, इल्मेजिमादात ।

मा'दिल (معدل) अ. पुं.–दे. 'मुअद्दिल' ।

मा'दिलत (معدلت) अ. स्त्री.–न्याय, इंसाफ ।

मा'दिलतगुस्तर (معدلت گستر) अ. फा. वि.–न्यायशील, न्यायनिष्ठ, मुंसिफ मिज़ाज ।

मा'दिलतपर्वर (معدلت پرور) फा. वि.–दे. 'मा'दिलत गुस्तर' ।

मा'दिलुन्नहार (معدل النہار) अ. पुं.–दे. शुद्ध शब्द 'मुअद्दिलुन्नहार', उर्दू में कुछ लोगों ने इसका यह उच्चारण अशुद्ध लिख दिया है ।

मादिह (مادح) अ. वि.–प्रशंसक, श्लाघी, ता'रीफ़ करनेवाला; स्तुति-पाठक, हम्दोसना करनेवाला ।

मादीन (مادین) फा. स्त्री.–मादा, स्त्री प्राणी ।

मा'दूद (معدود) अ. वि.–कतिपय, थोड़े, चंद, इने-गिने ।

मादूदे चंद (معدودے چند) अ. फा. वि.–बहुत थोड़े, इने-गिने ।

मादून (مادون) अ. अव्य.–अतिरिक्त, सिवाव, अलावा ।

मा'दूम (معدوم) अ. वि.–नष्ट, विनष्ट, बरबाद, ज़ाए; अंतर्द्धान, ग़ाइब ।

मा'दूमुलबसर (معدوم البصر) अ. वि.–नेत्रहीन, नष्ट दृष्टि, अंधा, नाबीना ।

मा'दूमी (معدومی) अ. वि.–विनाश, तबाही, बरबादी ।

माद्दः (مادہ) अ. पुं.–वह मूल पदार्थ जिससे कोई चीज़ बने; योग्यता, पात्रता, सलाहियत; मूल, जड़, बुनियाद; विवेक, तमीज़; बोध, ज्ञान, समझ; पीप, मवाद; वे तत्त्व जिनसे मिलकर सृष्टि की रचना हुई है; प्रकृति, नेचर ।

माद्दः परस्त (مادہ پرست) अ. फा. वि.–वस्तुवादी, नेचरी ।

माद्दःपरस्ती (مادہ پرستی) अ. फा. स्त्री.–वस्तुवाद, प्रकृतिवाद, नेचरीयत ।

माद्दए फ़ासिदः (مادۂ فاسدہ) अ. पुं.–शरीर की दूषित धातु जो बीमारी पैदा करती है; फोड़े आदि का ख़राब मवाद ।

माद्दए मनवीयः (مادۂ منویہ) अ. पुं.–वीर्य, शुक्र, रेतस्, मनी ।

माद्दए रदीयः (مادۂ ردیہ) अ. पुं.–दे. 'माद्दए फ़ासिदः' ।

माद्दी (مادی) अ. वि.–माद्दे से सम्बन्धित; माद्दे का; भौतिक, जो आत्मिक न हो ।

माद्दयित (مادیت) अ. स्त्री.–माद्दे का भाव ।

मानंद (مانند) फा. वि.–शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में 'मानिंद' है, दे. 'मानिंद'।

मा'नन (معناً) अ. वि.–अर्थ के विचार से, मतलब की रू से।

मा'नवी (معنوی) अ. वि.–अर्थवाला; अर्थ का; भीतरी, आंतरिक, आभ्यन्तरिक।

मा'नवीयत (معنویت) अ. स्त्री.–अर्थ की गंभीरता।

मा'ना (معنی) अ. पुं.–अर्थ, मत्‌लब; आशय, मंशा; कारण, सबब; अंतर, बातिन; बहुवचन के अर्थ में भी आता है।

माना (مانا) फा. वि.–समान, तुल्य, मिस्ल।

मानिंद (مانند) फा. वि.–समान, सदृश, तुल्य, मिस्ल।

मा'नी (معنی) अ. पुं.–दे. 'माना', परन्तु यह बहुवचन में व्यवहृत नहीं है।

मानी (مانی) फा. पुं.–एक बहुत ही प्रसिद्ध चित्रकार। यह ८३१ ई० में बाबिल (ईरान) में पैदा हुआ। मदाइन में पढ़ा, जवान होकर इसने नबी होने का दावा किया, जिससे लोग इसके दुश्मन हो गये और यह चीन और तुर्किस्तान की ओर चला गया। बीस साल के बाद वापस लौटा। ८८९ ई० में जब इसकी आयु ५८ साल की थी, बहराम ने इसे मार डाला। इसने एक नया धर्म भी चलाया था और बहुत-सी पुस्तकें भी लिखी थीं।

मा'नीआफ़ीनी (معنی آفرینی) अ. फा. स्त्री.–काव्य में अर्थ का चमत्कार दिखाना; कविता करना।

मानूस (مانوس) अ. वि.–हिला हुआ, जिसकी घबराहट दूर हो गयी हो; मुहब्बत करनेवाला।

माने' (مانع) अ. वि.–रोकनेवाला, निवारक; ख़लल डालनेवाला, बाधक; दख़्लअंदाज़ी करनेवाला, हस्तक्षेपक।

माफ़ात (مافات) अ. पुं.–जो जाता रहा हो; जो गुज़र चुका हो।

माफ़िज़्ज़मीर (مافی الضمیر) अ. पुं.–मन की बात, जो कुछ दिल में हो, आशय, मंशा।

माफ़िज़्ज़ेह्न (مافی الذہن) अ. पुं.–जो कुछ दिमाग़ में हो, जो कुछ याद हो।

माफ़ीहा (مافیہا) अ. पुं.–जो कुछ उसमें है, यह शब्द दुनिया के साथ आता है, अर्थात् संसार और जो कुछ संसार के भीतर है वह सब।

माफ़ौक़ (مافوق) अ. पुं.–ऊपर।

माफ़ौक़ज़्ज़िक्र (مافوق الذکر) अ. पुं.–जिसका ज़िक्र पहले हो चुका है, पूर्वकथित।

माफ़ौक़लआदत (مافوق العادت) अ. पुं.–जो बात प्रकृति के ऊपर अर्थात् प्रकृति के विरुद्ध है, अप्राकृतिक, असंभव।

माफ़ौक़लफ़ित्रत (مافوق الفطرت) अ. पुं.–दे. 'माफ़ौक़लआदत'।

माफ़ौक़लबशर (مافوق البشر) अ. पुं.–वह चीज़ जो मनुष्य की शक्ति के बाहर है।

माबक़ा (مابقا) अ. पुं.–जो बाक़ी रह गया हो, बक़ाय:, शेष।

मा'बद (معبد) अ. पुं.–उपासना-गृह, इबादत-गाह।

मा'बर (معبر) अ. पुं.–नदी आदि को पार करने का स्थान, घाट, तट।

माबा'द (مابعد) अ. पुं.–जो पीछे आयें, पीछेवाला, बाद का, पिछला।

माबा'दत्तबीआत (مابعد الطبیعات) अ. पुं.– वे वस्तुएँ जो प्राकृतिक वस्तुओं के अतिरिक्त हैं, ब्रह्मज्ञान आदि।

माबिहिन्निज़ाअ (مابہ النزاع) अ. पुं.–वह वस्तु जो झगड़े का कारण हो, जिसके विषय में वाद-विवाद हो।

माबिहिलइम्तियाज़ (مابہ الامتیاز) अ. पुं.–जो लक्षण या बात दो चीज़ों में भेद बताये अर्थात् उनका फ़र्क़ बताये, चिह्न, निशान।

माबिहिलएहतियाज (مابہ الاحتیاج) अ. पुं.–जिन वस्तुओं की आवश्यकता हो, ज़रूरी बातें।

मा'बूद (معبود) अ. वि.–जिसको पूजा जाय, ईश्वर।

मा'बूदियत (معبودیت) अ. स्त्री.–ईश्वरत्व।

माबून (مابون) अ. वि.–जिसे गुदादान का व्यसन हो, जिसे इग़्लाम कराने की लत हो, भवेसिया।

माबैन (مابین) अ. पुं.–बीच में, दरमियान में; बीच, दरमियान।

माबैने तहक़ीक़ात (مابین تحقیقات) अ. पुं.–जाँच के बीच में, जाँच होते समय।

माबैने फ़रीक़ैन (مابین فریقین) अ. पुं.–दोनों पक्षों के बीच में।

मामज़ा (مامضی) अ. वा.–जो बीत गया, जो हो चुका, गुज़रा हुआ, बीता हुआ, पहलेवाला।

मामन (مامن) अ. पुं.–रक्षा का स्थान, बचाव की जगह, सहारे और आसरे का स्थान।

मामा (ماما) अ. स्त्री.–घर का कामकाज करनेवाली स्त्री, परिचारिका, दासी।

मामीरान (مامیران) फा. पुं.–ममीरा, जो एक जड़ होती है और आँखों की दवा में पड़ती है।

मामीसा (مامیثا) अ. स्त्री.–एक वनस्पति जो दवा में चलती है, इस दवा का उसारा या सत प्रयुक्त होता है।

मामून (مامون) अ. वि.–सुरक्षित, मह्फ़ूज़, अम्न में ।

मामूरः (معموره) अ. पुं.–बस्ती, आंबादी ।

मा'मूर (معمور) अ. वि.–बसा हुआ, आबाद; भरा हुआ, परिपूर्ण, लबरेज़,; बंद, मुक़फ़्फ़ल; आदमियों से भरा हुआ, खचाखच ।

मामूर (مامور) अ. वि.–जिसे आदेश दिया गया हो, आदेशित; जिसे कहीं मुक़र्रर किया गया हो, नियुक्त ।

मामूर मिनल्लाह (مامور من الله) अ. पुं.–किसी विशेष काम के लिए ईश्वर की ओर से नियुक्त ।

मा'मूरी (معموری) अ. स्त्री.–भरा पूरा होना; आबाद होना; मकान का बंद होना ।

मा'मूलः (معموله) अ. वि.–जो स्त्री अभिचार द्वारा बेसुध की जाय; रोज़ का काम ।

मा'मूल (معمول) अ. वि.–वह बात जो रोज़ की जाय, दस्तूर, नित्य नियम; वह व्यक्ति जिसे अभिचार द्वारा बेसुध किया जाय, जिस पर अमल किया जाय ।

मामूल (مامول) अ. वि.–आशान्वित, पुरउम्मीद; वह चीज़ जिसकी आशा हो ।

मा'मूलात (معمولات) अ. पुं.–रोज़मर्राके काम, नित्यकर्म ।

मा'मूलाते रोज़मर्रः (معمولات روزمره) अ. फा. पुं.–वह काम जो रोज़ के बँधे हुए हों, जैसे—सबेरे उठकर नमाज़, फिर क़ुरान, फिर वज़ीफः, फिर नाश्ता, फिर अख़्बार पढ़ना, फिर लोगों से मिलना आदि ।

मा'मूली (معمولی) अ. वि.–रोज़मर्रा का; साधारण, नाक़ाबिले तवज्जुह; रस्मी, जिसका रवाज हो ।

मा'मूले मज़्हबी (معمول مذهبی) अ. पुं.–धार्मिक कृति, मज़हबी काम, जो नियत समय पर हो ।

मायः (مایه) फा. पुं.–धन, दौलत; पूँजी, अस्लज़र; उपकरण, सामान; योग्यता, क़ाबिलीयत ।

मायःदार (مایه‌دار) फा. वि.–पूँजीवाला, धनी, मालदार ।

मायए नाज़ (مایۂ ناز) फा. पुं.–जिस पर गर्व किया जा सके ।

मायतहल्लल (مایتحلل) अ. पुं.–जो हल हो गया हो, जो तहलील होकर कम हो गया हो, जो नष्ट और ज़ाए हो गया हो ।

मायह्ताज (مایحتاج) अ. पुं–आवश्यक वस्तु, जिसकी मनुष्य को ज़रूरत हो, जीवन-साधन की वस्तु ।

मायुक़्रा (مایقرا) अ. वि.–जो पढ़ा जा सके, ऐसा लिखा हुआ जो पढ़ने में आ सके ।

मा'यूब (معیوب) अ. वि.–निकृष्ट, दूषित, ख़राब, बुरा; लज्जाजनक, क़ाबिले शर्म; ऐब से भरा, दोषपूर्ण ।

मायूस (مایوس) अ. वि.–निराश, हताश, नाउम्मेद ।

मायूसकुन (مایوس کن) अ. फा. वि.–निराश करनेवाला निराशाजनक ।

मायूसानः (مایوسانه) अ. फा. अव्य.–निराशापूर्ण, मायूसी के साथ ।

मायूसी (مایوسی) अ. स्त्री.–निराशा, नाउम्मेदी ।

मार (مار) फा. पुं.–सर्प, अहि, भुजग, भुजंग, नाग, साँप ।

मारगज़ीदः (مارگزیده) फा. वि.–साँप का डसा हुआ, सर्प-दंशित ।

मारगीर (مارگیر) फा. वि.–साँप पकड़नेवाला, सँपेरा ।

मा'रज़ (معرض) अ. पुं.–दे. 'मा'रिज़', दोनों शुद्ध हैं ।

मारगुर्ज़ः (مارگرزه) फा. पुं.–फनवाला साँप, काला साँप, नाग ।

मारपेच (مارپیچ) फा. वि.–टेढ़ा, वक्र; वह चित्र जिसमें कई साँप परस्पर गुँथे हों ।

मारमाही (مارماهی) फा. स्त्री.–बाम मछली, सर्प मीन ।

मारमुहरः (مارمهره) फा. पुं.–साँप का मन, मणि ।

मा'रिकः (معرکه) अ. पुं.–मैदान, क्षेत्र; युद्ध, संग्राम, लड़ाई; वाद-विवाद, बहस; धूम-धाम, हंगामा; उपद्रव, फ़साद ।

मा'रिकःआरा (معرکه آرا) अ. फा. वि.–लड़नेवाला, योद्धा ।

मा'रिकःआराई (معرکه آرائی) अ. फा. स्त्री.–लड़ाई, युद्ध, जंग ।

मा'रिकःगाह (معرکه گاه) अ. फा. स्त्री.–लड़ाई का स्थान, युद्ध-क्षेत्र, समराङ्गण, मैदानजंग ।

मा'रिज़ (معرض) अ. पुं–ज़ाहिर होने की जगह, प्रकट होने का स्थान; दौरान, दरमियान; के लिए ।

मा'रिज़े इल्तिवा (معرض التوا) अ. पुं.–स्थगित होने के लिए, अर्थात् स्थगित, दे. 'मा'रिज़' दोनों शुद्ध हैं, यह 'में' के साथ बोला जाता है जैसे—मा'रिज़े इल्तिवा में ।

मा'रिज़े ख़तर (معرض خطر) अ. पुं.–ख़त्रे के बीच में अर्थात् ख़त्रे में (में के साथ बोला जाता है, जैसे–मा'रिज़े ख़तर में) ।

मारिफ़ः (معرفه) अ. पुं.–व्यक्तिवाचक संज्ञा, किसी ख़ास चीज़ का नाम, जैसे—राम, अली आदि ।

मा'रिफ़त (معرفت) अ. स्त्री.–द्वारा, हस्ते, ज़रिये से; अध्यात्म, तसव्वुफ़; परिचय, जान-पहचान ।

मा'रूज़ः (معروضه) अ. पुं.–प्रार्थना, गुजारिश; प्रार्थना-पत्र, अर्ज़ी ।

मा'रूज़ (معروض) अ. वि.–वह बात जो कही गयी हो, कथित, उक्त ।

मा'रूज़ात (معروضات) अ. स्त्री.–प्रार्थनाएँ, गुज़ारिशें ।

मारूत (ماروت) अ. पुं.–एक फ़िरिश्ता जिसके सम्बन्ध में प्रसिद्धि है कि वह दूसरे फ़िरिश्ते 'हारूत' के साथ, 'बाबिल' के कुएँ में बन्द है, और लोगों को जादू सिखाता है ।

मा'रूफ़ (معروف) अ. वि.–प्रसिद्ध, ख्यात, मशहूर; वह क्रिया जिसका कर्त्ता ज्ञात हो ।

मारे आस्तीं (مار آستیں) फा. पुं.–आस्तीन का साँप, वह दुश्मन जो पास रहता है ।

मारे दुज़बाँ (مار دوزباں) फा. पुं.–दो जीभोंवाला साँप; वह व्यक्ति जो इधर कुछ कहे और उधर कुछ, द्विजिह्व, चुगलखोर, मुनाफ़िक़ ।

मारे सियाह (مار سیاہ) फा. पुं–काला साँप, नाग ।

माल (مال) फा. प्रत्य.–मला-दला हुआ, जैसे—'पामाल' पैरों से मला-दला हुआ ।

माल (مال) अ.पुं.–धन, रकम, दौलत; अच्छे-अच्छे खाने; बहुमूल्य वस्तु; महत्त्व, हक़ीक़त ।

मालख़ानः (مال خانہ) अ. फा. पुं.–माल रखने का मकान, गोदाम; कोषागार, ख़ज़ाना; कलक्टरी आदि का वह सरकारी मकान जिसमें तलाशी से मिला हुआ या इसी प्रकार कोई सामान रखा जाता है ।

मालगुज़ार (مال گزار) अ. फा. वि.–मालगुज़ारी अदा करनेवाला, ज़मींदार ।

मालगुज़ारी (مال گزاری) अ. फा. स्त्री.–ज़मीन का वह कर जो सरकार को दिया जाता है ।

मालज़ब्ती (مال ضبطی) अ. स्त्री.–माल की क़ुर्क़ी और उस पर सरकारी क़ब्ज़ा ।

मालज़ादः (مال زادہ) अ. फा. पुं.–रंडी का लड़का, वेश्या-पुत्र ।

मालज़ादी (مال زادی) अ. फा. स्त्री.–वेश्या-पुत्री, व्यभिचारिणी, एक गाली ।

मालज़ामिन (مال ضامن) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो इस बात की ज़मानत करे कि यदि अमुक व्यक्ति भाग जायगा या रुपया न अदा कर सकेगा तो उसके बदले में अदा करूँगा ।

मालदार (مال دار) अ. फा. वि.–धनी, धनवान्, समृद्ध, दौलतमंद ।

मालनख़ूलिया (مالنخولیا) अ. पुं.–शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु 'मालीख़ूलिया' बोला जाता है, दे. 'मालीख़ूलिया' ।

मालमुज्रिम (مال مجرم) अ. पुं.–माल का चोर, चोर ।

मा लहू व मा अलैह (ما لہ و ما علیہ) अ. वा.–विवरण, तफ़्सील, अच्छाई-बुराई ।

मालामाल (مالامال) अ. फा. वि.–समृद्ध, सम्पन्न, जिसके पास बहुत माल हो; भरपूर, बहुत अधिक ।

माला यन्हल (مالا ینحل) अ. वि.–वह समस्या जो हल न हो सके, असाध्य ।

मालायुताक़ (مالا یطاق) अ. वि.–जिसकी शक्ति न हो, ऐसा काम, बस से बाहर का काम, वह काम जो न हो सके ।

मालिकः (مالکہ) अ. स्त्री.–स्वामिनी, मालिक स्त्री ।

मालिक (مالک) अ. पुं.–स्वामी, आक़ा; पति, शौहर; ईश्वर, ख़ुदा; उपभोक्ता, क़ाबिज़; अधिकारी, मुख़्तार; पदाधिकारी, अफ़्सर; अध्यक्ष, सरदार; नरक का अध्यक्ष देवता ।

मालिकानः (مالکانہ) अ. फा. अव्य.–मालिकों-जैसा, मिल्कियत का ।

मालिकुलमुल्क (مالک الملک) अ. पुं.–मुल्क का मालिक, देश का स्वामी; नरेश; ईश्वर ।

मालिके हक़ीक़ी (مالک حقیقی) अ. पुं.–सच्चा स्वामी अर्थात् ईश्वर ।

मालियः (مالیہ) अ. पुं.–राजस्व, लगान ।

मालियत (مالیت) अ. स्त्री.–धन-दौलत; कुल क़ीमत, पूरा मूल्य ।

मालियात (مالیات) अ. स्त्री.–मालियत का बहु., मालियतें, सम्पतियाँ ।

मालियानः (مالیانہ) अ. फा. अव्य.–राजस्व, लगान, मालिया ।

मालिश (مالش) फा. स्त्री.–मलाई, मर्दन; मतली, जी मतलाना ।

मालीदः (مالیدہ) फा. पुं.–मला हुआ, मर्दित ।

माली (مالی) अ. वि.–माल-सम्बन्धी; माल का ।

मालीख़ूलिया (مالیخولیا) अ. पुं.–मिराक़, ख़ब्त, उन्माद, मस्तिष्क-विकृति, एक रोग विशेष ।

मालीदःगोश (مالیدہ گوش) फा. वि.–जिसके कान उमेठे गये हों, चौकन्ना, चौकस, होशियार ।

मालीदनी (مالیدنی) फा. वि.–मलने के क़ाबिल, मर्दनीय ।

मालूफ़ (مالوف) अ. वि.–जिससे प्रेम हो, प्यारा, अजीज़, जैसे—'वतने मालूफ़' ।

मा'लूम (معلوم) अ. वि.–ज्ञात, जाना हुआ; स्पष्ट, वाज़ेह; प्रकट, ज़ाहिर; असंभव, नामुमकिन ।

मा'लूमात (معلومات) अ. उभ.–जानकारी, इल्म, ज्ञान; अनुभव, तज्रिबा; पांडित्य, इल्मीयत ।

मा'लूल (معلول) अ. वि.–वह चीज़ जिसका कोई कारण हो, कारण सहित ।

माले अम्वात (مال اموات) अ. पुं.–मुर्दों का माल, लावारिसी माल।

माले क़ासिद (مال کاسد) अ. पुं.–खोटा माल, खोटा सोना-चाँदी इत्यादि।

माले ग़नीमत (مال غنیمت) अ. पुं.–युद्ध में शत्रु के देश से लूटा हुआ माल।

माले ग़ैरमन्क़ूलः (مال غیر منقولہ) अ. पुं.–वह संपत्ति जो एक जगह से दूसरी जगह न जा सके, जैसे—मकान आदि, अचल संपत्ति।

माले तैयिब (مال طیب) अ. पुं.–हलाल की कमाई, पसीने की कमाई, पवित्र धन।

माले मक़्रूक़ (مال مقروق) अ. तु. पुं.–क़ुर्क़ी किया हुआ माल, वह माल जो क़ुर्क़ हो गया हो।

माले मत्रूक़ः (مال متروکہ) अ. पुं.–वह धन और संपत्ति जिसे मृत व्यक्ति ने छोड़ी हो, दाय।

माले मन्क़ूलः (مال منقولہ) वह संपत्ति जो हटायी जा सके, जैसे—रुपया, मवेशी आदि, चल संपति।

माले महमूलः (مال محمولہ) अ. पुं.–वह माल जो किसी सवारी पर लदा हो, जैसे—गाड़ी पर, रेल पर या जहाज़ पर।

माले मुफ़्त (مال مفت) अ. फा. पुं.–वह धन जो बिना परिश्रम के फ़ोकट में मिला हो।

माले लावारिस (مال لاوارث) अ. पुं.–वह धन या संपत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

माले वक़्फ़ (مال وقف) अ. पुं.–वह धन या संपत्ति जो किसी कार्य-विशेष के लिए समर्पित हो।

माले साइर (مال سائر) अ. पुं.–मालगुंजारी के अतिरिक्त दूसरी आमदनी से प्राप्त धन, जैसे—कस्टम आदि से।

मालेह (مالح) अ. वि.–नमकीन, लवणयुक्त, सुन्दर, लावण्य।

माले हराम (مال حرام) अ. पुं.–वह धन जो अविहित उपायों से कमाया गया हो, बुरी कमाई, अविनीत संपत्ति।

माले हलाल (مال حلال) अ. पुं.–दे. 'माले तैयिब'।

मालोज़र (مال و زر) अ. फा. पुं.–धन-दौलत, रुपया-पैसा।

मालोमताअ (مال و متاع) अ. फा. पुं.–धन और दूसरा सामान।

मालोमनाल (مال و منال) अ. पुं.–दे. 'मालोमताअ'।

मावजब (ماوجب) अ. वि.–जो उचित हो, जैसा मुनासिब हो, यथोचित।

मावरा (ماورا) अ. वि.–परे, पर, अतीत; अतिरिक्त, अलावा।

मावराउन्नह्र (ماوراءالنہر) अ. पुं.–नदी के उस पार का इलाक़ा, चूँकि तूरान (तुर्किस्तान) जैहून नदी के उस पार था, इसलिए ईरानियों ने उसे 'मावराउन्नह्र' कहा।

मावराए अक़्ल (ماورائے عقل) अ. वि.–बुद्धि की पहुँच से आगे, बुद्धि से परे, दुर्बोध।

मावराए तख़ैयुल (ماورائے تخیل) अ. वि.–ख़याल की पहुँच से परे, कल्पनातीत, जहाँ ख़याल न पहुँच सके।

मावराए नज़र (ماورائے نظر) अ. वि.–नज़र की पहुँच से आगे, जहाँ तक दृष्टि न पहुँच सके, दृष्टि से परे अचक्षु-विषय।

मावराए फ़ह्म (ماورائے فہم) अ. वि.–समझ से बाहर, ज्ञानातीत, अज्ञेय, बोधागम्य।

मावराए हिस (ماورائے حس) अ. वि.–इंद्रियों की पहुँच से आगे, इंद्रियों से परे, अतीन्द्रिय।

मावा (ماوا) अ. पुं.–रक्षा-स्थान, पनाह की जगह, मामन।

माशः (ماشہ) फा. पुं.–आठ रत्ती का एक भार, आठ रत्ती की तोल, तोले का बारहवाँ भाग।

माश (ماش) फा. पुं.–उरद, माष, एक ग़ल्ला।

मा'शर (معشر) अ. पुं.–मित्रों और परिजनों की मंडली, दोस्तों और अज़ीज़ों की जमाअत; दल, समुदाय, जमाअत।

माशाअल्लाह (ماشاءاللہ) अ. वा.–साधु-साधु, वाह-वाह; ईश्वर नज़र लगने से बचाये; (व्या.), वाह-वाह, ख़ूब-ख़ूब, जैसे—माशाअल्लाह आपने अच्छा इंसाफ़ किया (जब अन्याय किया हो)।

माशितः (ماشطہ) अ. स्त्री.–स्त्रियों या दुल्हनों की कंघी-चोटी करनेवाली, नाइन, प्रसाधिका, मश्शातः।

माशियः (ماشیہ) अ. पुं.–चौपाया, पशु, मवेशी।

माशी (ماشی) अ. वि.–पैरों से चलनेवाला; चुग़ुलख़ोर, पिशुन।

मा'शूक़ः (معشوقہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिससे इश्क़ हो, प्रेमिका, प्रेयसी, प्रणयिनी, प्रेमास्पदा, प्रियतमा, प्रिया, कांता, वल्लभा, महबूबः।

मा'शूक़ (معشوق) अ. वि.–प्रेमपात्र, प्रियतम, प्रिय।

मा'शूक़ानः (معشوقانہ) अ. फा. अव्य.–मा'शूक़ों-जैसा, मा'शूक़ियत लिये हुए, नाज़ोअंदाज़ से भरा हुआ।

मा'शूक़ियत (معشوقیت) अ. स्त्री.–मा'शूक़पन, नाज़ो-अंदाज़, हाव-भाव।

माशूक़े मजाज़ी (معشوق مجازی) अ. पुं.–वह मा'शूक़ जो मानवजाति से सम्बन्ध रखता हो, आदमी।

माशूक़े हक़ीक़ी (معشوق حقیقی) अ. पुं.–वह मा'शूक़ जिसका सम्बन्ध आत्मा से हो, ईश्वर।

मासफ़ा (ماصفا) अ. वि.–वह चीज़ जो स्वच्छ और पवित्र हो, साफ़ और अच्छी चीज़।

मासबक़ (ماسبق) अ. वि.–जो पहले गुज़र चुका हो, पहलेवाला; पूर्वकथित, पहले कहा हुआ।

मासलफ़ (ماسلف) अ. वि.–गुज़रा हुआ, विगत, वीता हुआ।

मासिकः (ماسکہ) अ. स्त्री.–वह शक्ति जो आमाशय में ग़िज़ा को रोकती है, आमाशय की ग्राह्यशक्ति।

मा'सियत (معصیت) अ. स्त्री.–पाप, पातक, गुनाह; अवज्ञा, नाफ़रमानी; उद्दंडता, सरकशी।

मा'सियत शिआर (معصیت شعار) अ. वि.–पापी, पातकी, जिसका काम ही पाप करना हो।

मासिवल्लाह (ماسوااللہ) अ. वि.–ईश्वर के अतिरिक्त शेष और सब कुछ, सांसारिक वस्तुएँ।

मासिवा (ماسوا) अ. वि.–'मासिवल्लाह' का लघु., दे. 'मासिवल्लाह'।

मा'सूम (معصوم) अ. वि.–जिसने पाप न किया हो, निष्पाप; वह व्यक्ति जो ईश्वर के यहाँ से निष्पाप आया हो।

मा'सूम सिफ़त (معصوم صفت) अ. वि.–मा'सूमों-जैसा, भोला-भाला, निर्दोष।

मा'सूमियत (معصومیت) अ. स्त्री.–मा'सूमपन, भोलापन, सिधाई।

मा'सूमी (معصومی) अ. वि.–दे. 'मा'सूमियत'।

मास्त (ماست). फा. पुं.–दही, दधि।

मास्तबंद (ماست بند). फा. पुं.–पनीर बनानेवाला।

माह (ماہ) फा. पुं.–चंद्र, चंद्रमा, शशि, इंद्र, विधु, सोम, चाँद, शशांक।

माहचः (ماہچہ) फा. पुं.–वह चाँद जो टोपी आदि में या झंडे के सिरे पर लगाते हैं।

माहजबीं (ماہجبیں) फा. वि.–चाँद-जैसा उज्ज्वल माथा रखनेवाला (वाली). चंद्रभाल।

माहज़र (ماحضر) अ. पुं.–जो कुछ उपस्थित है, जो मौजूद है; वह खाना जो घर में तैयार है, बेतकल्लुफ़ी का खाना, रूखा-सूखा जो कुछ है वह।

माहतल्अत (ماہطلعت) फा. अ. वि.–जो देखने में विलकुल चाँद जान पड़े, अत्यन्त सुन्दर, (सुंदरी) चंद्रानना।

माहताब (ماہتاب) फा. पुं.–चंद्र, चंद्रमा, चाँद; ज्योत्स्ना, चंद्रातप, चंद्रिका, चाँदनी; गंजिफ़े का वज़ीर; एक आतशबाज़ी, महताब।

माहताबी (ماہتابی) फा. स्त्री.–एक प्रकार की आतशबाज़ी, महताब; वह छोटी इमारत जो बाग़ के हौज़ पर चाँदनी की सैर के लिए बनी हो।

माहदरअक़्रब (ماہ درعقرب) फा. अ. वि.–चंद्रमा का वृश्चिक राशि में प्रवेश जो बहुत अशुभ होता है।

माहनामः (ماہنامہ) फा. पुं.–वह पत्रिका जो महीने में एक बार निकले, मासिकपत्र।

माहपारः (ماہپارہ) फा. वि.–चाँद का टुकड़ा, चाँद-जैसी आकृतिवाला (वाली)।

माहपैकर (ماہپیکر) फा. वि.–चाँद-जैसे सुन्दर डीलडौलवाला (वाली)।

माह ब माह (ماہ بہ ماہ) फा. वि.–हर महीने, मास प्रतिमास।

माहरुख़ (ماہرخ) फा. वि.–चाँद-जैसे मुँहवाला (वाली) चंद्रवदन, चंद्रवदना, चंद्रमुख, चंद्रमुखी।

माहरू (ماہرو) फा. वि.–दे. 'माहरुख़'।

माहलिक़ा (ماہلقا) फा. अ. वि.–दे. 'माहतल्अत'।

माहवश (ماہوش) फा. वि.–चाँद-जैसा (-जैसी)।

माहवार (ماہوار) फा. वि.–हर महीने, मासिक।

माहवारी (ماہواری) फा. वि.–दे. 'माहवार', (स्त्री.) मासिक-धर्म, हैज़।

माहशमाइल (ماہشمائل) फा. अ. वि.–दे. 'माहतल्अत'।

माहसल (ماحصل). अ. पुं.–जो कुछ मिला हो, जो हासिल हुआ हो; निष्कर्ष, नतीजः सारांश, खुलासा।

माहसीमा (ماہسیما) फा. अ. वि.–दे. 'माहजबीं'।

माहसूरत (ماہصورت) फा. अ. वि.–दे. 'माहरुख़'।

माहानः (ماہانہ) फा. अव्य.–हर महीने का, माहवार, प्रतिमास।

माहिए बेआब (ماہئی بے آب) फा. स्त्री.–बिना पानी की मछली, जलहीन मीन, अर्थात् बहुत दुखी, बहुत व्याकुल।

माहियानः (ماہیانہ) फा. पुं.–वेतन, तनख़्वाह, माहवारी तनख़्वाह; माहवारी, महीने का, मासिक।

माहिर (ماہر) अ. वि.–दक्ष, कुशल, होशियार; अभ्यस्त, मश्शाक़।

माहिरे कामिल (ماہر کامل) अ. वि.–किसी फ़न का पूरा माहिर, पारंगत।

माहिरे ख़ुसूसी (ماہر خصوصی) अ. वि.–किसी विशेष फ़न का विशेष ज्ञाता, विशेषज्ञ, वैशेषिक।

माहिरे फ़न (ماہر فن) अ. वि.–फ़न का ज्ञाता, कलामर्मज्ञ, कलाकार।

माही (ماحی) अ. वि.–मह्व करनेवाला, मिटानेवाला, नष्टकर्ता।

माही (ماہی) फा. पुं.–मीन, मत्स्य, माछी, मछली।

माहीगीर (ماہی گیر) फा. वि.–मछली पकड़नेवाला, मछलियों का रोज़गार करनेवाला, मत्स्यजीवी।

माहीचः (ماہیچہ) फा. स्त्री.–सिवैयाँ।

माहीखोर (ماہی خور) फा. वि.–मछली खानेवाला, मत्स्य-भोजी।

माहीनः (ماہینہ) फा. अव्य.–महीना, मास।

माहीपुश्त (ماہی پشت) फा. वि.–वह जो बीच में ऊँचा और इधर-उधर नीचा हो, उन्नतोदर, मुहद्दब।

माहीफ़रोश (ماہی فروش) फा. वि.–मछली बेचनेवाला, मत्स्य-वणिक्, मीन-व्यवसायी।

माहीमरातिब (ماہی مراتب) फा. अ. पुं.–मछली आदि के आकार के वह निशानात जो बादशाहों की सवारी के आगे हाथियों पर चलते हैं।

माहीयत (ماہیئت) अ. स्त्री.–वास्तविकता, हक़ीक़त; गुण, खासियत; क्या है, कैसा है, किस प्रकार का है, यह सब विवरण।

मा'हूद (معہود) अ. वि.–वह बात जो दिल में बैठी हो।

मा'हूदानः (ماہودانہ) फा. पुं.–जमालगोटा।

मा'हूदे ख़ारिजी (معہود خارجی) अ. पुं.–वह जातिवाचक संज्ञा जो कारण-विशेष से व्यक्तिवाचक बन जाय, जैसे—'खलील' जो जातिवाचक है, परन्तु हज़्रत इब्राहीम के लिए बोला जाता है।

माहूदे ज़ेह्नी (معہود ذہنی) अ. वि.–वह संज्ञा जो हो तो जातिवाचक, परन्तु किसी के ज़ेहन में व्यक्तिवाचक हो, जैसे—शत्रु जातिवाचक है, परन्तु कोई शत्रु कहकर, मन में उससे 'व्यक्ति-विशेष' को समझता है।

माहे कन्आँ (ماہ کنعاں) फा. अ. पुं.–हज़्रत यूसुफ़।

माहे क़मरी (ماہ قمری) फा. अ. पुं.–चाँद का महीना, चान्द्र-मास, जिस महीने का हिसाब चाँद की घटा-बढ़ी से हो।

माहे कामिल (ماہ کامل) फा. अ. पुं.–चौदहवीं का चाँद, पूरा चाँद, पूर्णचंद्र, राकेश।

माहे ख़ानगी (ماہ خانگی) फा. स्त्री.–घर गिरिस्तनी, जिससे इश्क़ किया जाय, जो बाज़ारी स्त्री न हो।

माहे गिरिफ्तः (ماہ گرفتہ) फा. पुं.–ग्रस्त (ग्रहण लगा) हुआ चाँद।

माहे चारदहुम (ماہ چاردہم) फा. पुं.–चौदहवीं रात का चाँद, पूर्णचंद्र।

माहे ताबाँ (ماہ تاباں) फा. पुं.–चमकता हुआ चाँद, पूरा चाँद, प्रेयसी का चन्द्रानन।

माहे दुहफ़्तः (ماہ دہفتہ) फा. पुं.–चौदहवीं का चाँद, राकेश।

माहे नख़शब (ماہ نخشب) फा. पुं.–वह चाँद जिसे हकीम इब्ने मुक़न्ना ने बनाया था।

माहे नौ (ماہ نو) फा. अ. पुं.–नया चाँद, नवचंद्र, बालेंदु।

माहे मिस्र (ماہ مصر) फा. अ.–हज़रत यूसुफ़।

माहे मुनीर (ماہ منیر) फा. अ. पुं.–चमकनेवाला चाँद, पूरा चाँद।

माहे मुबारक (ماہ مبارک) फा. अ. पुं.–रम्ज़ान शरीफ़ का महीना, रोज़ों का चाँद।

माहे शम्सी (ماہ شمسی) फा. अ. पुं.–वह महीना जिसका हिसाब सूर्य के चक्कर से होता है, ईसवी महीना।

माहे शिकस्तः (ماہ شکستہ) फा. पुं.–नया चाँद, नवचंद्र।

माहे सियाम (ماہ صیام) फा. अ. पुं.–दे. 'माहे मुबारक'।

मि

मिंजल (منجل) अ. स्त्री.–खेत काटने का हँसिया, दराँती।

मिंतक़ः (منطقہ) अ. पुं.–कटिबंध; सर्दी-गर्मी आदि के दृष्टि-कोण से पृथ्वी के खंड, हर खंड एक मितक़ा कहलाता है; पटका, कमर में बाँधने की पेटी।

मिंतक़ (منطق) अ. पुं.–पटका, पेटी, कटिबंध।

मिंतक़ए बारिदः (منطقۂ باردہ) अ. पुं.–शीत कटिबंध, वह मितक़ा जो बहुत अधिक ठंडा है।

मिंतक़ए मा'तदिलः (منطقۂ معتدلہ) अ. पुं.–सम शीतोष्ण कटिबंध, वह मितक़ा जहाँ न बहुत ठंड है न गर्म।

मिंतक़ए मोह्रक़ः (منطقۂ محرقہ) अ. पुं.–दे. 'मिंतक़ए हार्रः'।

मिंतक़ए हार्रः (منطقۂ حارہ) अ. पुं.–उष्ण कटिबंध, वह मितक़ा जो बहुत गर्म है।

मिंतक़तुल बुरूज (منطقۃالبروج) अ. पुं.–राशिचक्र, भचक्र।

मिंतक़ात (منطقات) अ. पुं.–'मिंतक़ः' का बहु., मिंतक़े।

मिंदील (مندیل) अ. पुं.–कमर में बाँधने का विशेष रूमाल; सर पर बाँधने का विशेष रूमाल।

मिंबर (منبر) अ. पुं.–मस्जिद में वह ऊँचा स्थान जहाँ इमाम ख़ुत्बा पढ़ता है।

मिंशफ़ (منشف) अ. पुं.–तौलिया, जिस्म पोंछने का अँगोछा।

मिंशार (منشار) अ. पुं.–आरा, लकड़ी चीरने का यंत्र; ख़बर फैलाने का यंत्र।

मिंसफ़ः (منسفہ) अ. पुं.–वह पाँच शाखोंवाली लकड़ी जिससे खलियान का लाँक ऊपर-नीचे करते हैं, पचा।

मिआ (معا) अ. स्त्री.–अंत्र, आँत।

मिआए मुस्तक़ीम (معاے مستقیم) अ. स्त्री.–सीधी आँत, शरीर की एक आँत।

मिक़स [स्स] (مقص) अ. स्त्री.–वह रस्सी जिससे दुहते समय जानवर के पाँव बाँधते हैं।

मिक़्तल (مقتل) अ. पुं.–क़त्ल करने का आला।

मिक़्ताल (مقتال) अ. पुं.–वध करने का यंत्र, छुरी।

मिक़्दार (مقدار) अ. स्त्री.–मात्रा, वज़्न, तोल; अनुमिति, अंदाज़ा (तोल का)।

मिक्नसः (مکنسہ) अ. स्त्री.–झाड़ू, मार्जनी।

मिक़्ना (مقنع) अ. पुं.–दूल्हा के ओढ़ने का महीन कपड़ा, जिस पर सेहरा रहता है; स्त्रियों के ओढ़ने की महीन चादर, ओढ़नी।

मिक़्नातीस (مقناطیس) अ. पुं.–चुम्बक पत्थर, दे. 'मक़्नातीस', दोनों शुद्ध हैं।

मिक्नास (مکناس) अ. पुं.–दे. 'मिक्नसः'।

मिक्याल (مکیال) अ. पुं.–सूखी वस्तु नापने का बर्तन।

मिक़्यास (مقیاس) अ. पुं.–मानयंत्र, नापने का आला, अनुमान का यंत्र।

मिक़्यासुलमतर (مقیاس المطر) अ. पुं.–वर्षा का जल नापने का यंत्र, वर्षामान।

मिक़्यासुलमा (مقیاس الما) अ. पुं.–पानी का हलका भारीपन जानने का यंत्र।

मिक़्यासुलमौसिम (مقیاس الموسم) अ. पुं.–मौसम का हाल जानने का यंत्र।

मिक़्यासुललबन (مقیاس اللبن) अ. पुं.–दूध की मिलावट जानने का यंत्र।

मिक़्यासुलहरारः (مقیاس الحرارہ) अ. पुं.–शरीर की गर्मी, बुख़ार नापने का यंत्र, थर्मामीटर, तापमापक।

मिक़्यासुलहवा (مقیاس الہوا) अ. पुं.–हवा का वेग जानने का यंत्र, वायुयंत्र।

मिक़्राज़ (مقراض) अ. स्त्री.–क़ैंची, क़र्त्री, कर्तरी, कर्तनी।

मिक़्वल (مقول) अ. पुं.–ज़बान, जीभ, जिह्वा।

मिक़्वा (مقوی) अ. पुं.–दफ़्ती, पट्ठा; वह चीज़ जिससे कोई वस्तु पुष्ट की जाय।

मिक्वात (مکوات) अ. स्त्री.–शरीर के दागने का यंत्र; कपड़ों पर करने की इस्त्री।

मिक्हल (مکحل) अ. स्त्री.–सुर्मा लगाने की सलाई, अंजन-शलाका।

मिख़्लात (مخلات) अ. पुं.–घोड़े का तोबड़ा जिसमें उसे दाना खिलाया जाता है।

मिग़फ़र (مغفر) अ. पुं.–ख़ोद, शिरस्त्राण, लोहे की फ़ौजी टोपी।

मिग़्रफ़ः (مغرفہ) अ. पुं.–डोई, चमचा, कफ़गीर।

मिजस (مجس) अ. पुं.–नब्ज़ पर हकीम के हाथ रखने का स्थान, नाड़ी देखने का स्थान।

मिज़ाज (مزاج) अ. पुं.–स्वभाव, आदत; गुण, ख़ासियत; प्रकृति, तबीअत; अभिमान, घमंड; नाज़-नख़्रा, जी, मन।

मिज़ाजदाँ (مزاجداں) अ. फा. वि.–जो किसी की प्रकृति से परिचित हो, जो स्वभाव पहचानकर उसी के अनुसार बात करता हो।

मिज़ाजदानी (مزاجدانی) अ. फा. स्त्री.–मिज़ाज पहचानना; स्वभाव के अनुसार बात करना; हाँ में हाँ मिलाना।

मिज़ाजपुर्सी (مزاجپرسی) अ. फा. स्त्री.–रोगी को देखने और उसे दिलासा देने के लिए जाना; साधारण किसी से मिलने जाना।

मिज़ाजशनास (مزاجشناس) अ. फा. वि.–दे. 'मिज़ाजदाँ'।

मिज़ाजशनासी (مزاجشناسی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मिज़ाजदानी'।

मिज़ाजे आली (مزاج عالی) अ. पुं.–दे. 'मिज़ाजे मुबारक'।

मिज़ाजे मुबारक (مزاج مبارک) अ. पुं.–आपका मिज़ाज कैसा है? मुलाक़ात के वक़्त कहते हैं।

मिज़ाजे शरीफ़ (مزاج شریف) अ. पुं.–'दे. मिज़ाजे मुबारक'।

मिज्दाफ़ (مجداف) अ. पुं.–वह तिकोनी चौड़ी लकड़ी जो नाव में बाँधते हैं और उससे नाव को चलाते हैं, डाँड़।

मिज़्मर (مزمر) अ. पुं.–एक बाजा, बर्बत; बाँसुरी, मुरली।

मिज्मर (مجمر) अ. स्त्री.–धूपदानी, अगरदानी; अँगीठी, अंगारधानी, गोरसी।

मिज़्मार (مضمار) अ. पुं.–घोड़ों को सधाने के लिए दौड़ाने का मैदान।

मिज़्मार (مزمار) अ. स्त्री.–बाँसुरी, बंसी, वंशी, मुरली।

मित्रक़ः (مطرقہ) अ. पुं.–हथौड़ा, जिससे निहाई पर लोहा कूटते हैं, घन।

मित्हन (مطحن) अ. स्त्री.–आटा पीसने की चक्की, पेषणी।

मिदाद (مداد) अ. स्त्री.–मसि, सियाही, रौशनाई।

मिदफ़ा' (مدفع) अ. पुं.–तोप।

मिद्हत (مدحت) अ. स्त्री.–प्रशंसा, श्लाघा, ता'रीफ़; स्तुति, कीर्तन, हम्दोसना।

मिद्हतसरा (مدحت سرا) अ. फा. वि.–प्रशंसक, श्लाघी, तारीफ़ करनेवाला; स्तुतिपाठक, हम्दोसना करनेवाला।

मिन (من) अ. अव्य–से।

मिन अव्वलिही इला आख़िर ही (من اولہ الی آخرہ) अ. वा.–शुरू से आख़ीर तक, आद्योपान्त।

मिन कुल्लिलवुजूह (من کل الوجوہ) अ. वा.–हर प्रकार से, पूरे तौर पर, सब तरह से।

मिनख़ल (منخل) अ. स्त्री.–चालनी, चलनी;

मिनजानिब (منجانب) अ. अव्य.–ओर से, तरफ़ से।

मिनजानिबिल्लाह (من جانب اللہ) अ. वा.–ईश्वर की ओर से, ईश्वर की महिमा से।

मिनजुम्लः (من جملہ) अ. अव्य.–सब में से।

मिना (منا) अ. पुं.–मक्के का एक स्थान जहाँ हज के दूसरे दिन हाजी लोग क़ुर्बानी करते और हजामत बनवाते हैं।

मिनोअन (من وعن) अ. वि.–पूरा-पूरा, साफ़-साफ़, जैसा का तैसा, ज्यों का त्यों, अक्षरशः।

मिन्क़ार (منقار) अ. स्त्री.–चोंच, चंचु।

मिन वजहिनः (من وجہ) अ. अव्य.–एक प्रकार से, एक तरह से, एक सूरत से।

मिनहा (منہا) अ. वि.–उन सब में से; निकाला हुआ, कम किया हुआ; घटाया हुआ, तफ़्रीक़ किया हुआ।

मिनहाई (منہائی) अ. स्त्री.–कमी, कटौती, तफ़रीक़, व्यवकलन।

मिन्हाज (منہاج) अ. स्त्री.–मार्ग, पथ, रास्ता; राजमार्ग, सड़क।

मिफ़्ताह (مفتاح) अ. स्त्री.–कुंजी, ताली, कुंचिका।

मिब्ज़ाक़ (مبزاق) अ. पुं.–उगालदान, थूकने का पात्र।

मियाँ (میاں) फा. वि.–'मियान' का लघु., दे. 'मियान'।

मियांजी (میانجی) फा. पुं.–एलची, दूत; एलचीगरी, दूतकर्म, दौत्य।

मियाँतिही (میاں تہی) फा. वि.–जिसका बीच ख़ाली हो; वह बिस्तर जिसके बीच में रूई न हो।

मियाँबंद (میاں بند) फा. पुं.–पटका, कमर की पेटी, कटिबंध।

मियाँबाला (میاں بالا) फा. वि.–दरमियानी क़द का, न ठिगना न लंबा।

मियानः (میانہ) फा. पुं.–एक प्रकार की पालकी, (वि.) दरमियानी, बीच का, माध्यमिक।

मियानःक़द (میانہ قد) फा. अ. वि.–बीच के क़द का, न लम्बा न ठिगना।

मियानःक़ामत (میانہ قامت) फा. अ. वि.–दे. 'मियानः क़द'।

मियानःगीर (میانہ گیر) फा. वि.–बीच की चीज़ लेनेवाला, हर काम में एतिदाल बरतनेवाला।

मियानःरवी (میانہ روی) फा. स्त्री.–बीच की चाल, सरलाचार।

मियानःरौ (میانہ رو) फा. वि.–बीच की चाल चलनेवाला, सरलाचारी।

मियान (میان) फा. वि.–मध्य, बीच (स्त्री.); तलवार की मियान, कोष; कमर, कटि।

मियाने राह (میان راہ) फा. पुं.–रास्ते के बीच में, रास्ते में; रास्ते का बीचोंबीच।

मियाने शह्र (میان شہر) फा. पुं.–नगर में; नगर का बीच।

मिराक़ (مراق) अ. पुं.–ख़ब्त, पागलपन।

मिराक़ी (مراقی) अ. वि.–ख़ब्ती, पागल।

मिर्आत (مرآت) अ. पुं.–आईनः, दर्पण, मुकुर, शीशा।

मिर्क़ात (مرقات) अ. पुं.–सोपान, सीढ़ी, ज़ीना।

मिर्ज़ा (مرزا) फा. पुं.–मीर्ज़ा का लघु., दे. 'मीर्ज़ा'।

मिर्ज़ाइयत (مرزائیت) फा. स्त्री.–मिर्ज़ापन; क़ादियानियत।

मिर्फ़क़ (مرفق) अ. स्त्री.–कुहनी।

मिर्वहः (مروحہ) अ. पुं.–पंखा, व्यजन।

मिर्साद (مرصاد) अ. पुं.–चौड़ा रास्ता, राजमार्ग, सड़क।

मिल्ह (ملح) अ. पुं.–नमक, लवण।

मिश्क (مشک) फा. पुं.–दे. 'मुश्क'।

मिश्कात (مشکوات) अ. स्त्री.–वह बड़ा ताक़ जिसमें चिराग़, फ़ानूस या क़िंदील रखा जाय।

मिश्कीं (مشکیں) फा. वि.–दे. 'मुश्कीं'।

मिश्की मू (مشکیں مو) फा. वि.–दे. 'मुश्कीं मू'।

मिश्त (مشط) अ. स्त्री.–कंघी, प्रसाधनी।

मिस (مس) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध धातु, ताँबा, ताम्र।

मिसगर (مس گر) फा. वि.–ताँबे का काम करनेवाला, ठठरा।

मिसाल (مثال) अ. स्त्री.–उदाहरण, नज़ीर; समान, बराबर; चित्र, तस्वीर; आदेशपत्र, पर्वाना; आदर्श, नमूना।

मिसालन (مثلاً) अ. अव्य.–उदाहरणार्थ, मिसाल के तौर पर।

मिसाली (مثالی) अ. वि.–आदर्श, नमूने के तौर पर, नमूने का।

मिसी (مسی) फा. स्त्री.–ताँबे का; एक मंजन जिसे स्त्रियाँ बतौर सिंगार के इस्तेमाल करती हैं, मिस्सी।

मिसीमालीदः (مسی مالیدہ) फा. वि.–मिस्सी मले हुए होंठ।

मिस्क (مسک) अ. स्त्री.–दे. 'मुश्क'।

मिस्क़लः (مصقلہ) अ. पुं.–लोहे का एक यंत्र जिससे तलवार आदि चमकाये जाते हैं।

मिस्क़ल (مصقل) अ. पुं.–हथियारों को चमकाने का यंत्र, मिस्क़लः।

मिस्क़ाल (مثقال) अ. पुं.–साढ़े चार माशे की एक तौल।

मिस्कीं (مسکیں) अ. वि.–दीन, असहाय, आजिज़; दरिद्र, मुफ़्लिस; विनम्र, ख़ाकसार; भोला-भाला, सीधा-सादा, सरल।

मिस्कींतब्अ (مسکیں طبع) अ. वि.–बहुत ही सीधा साधा, सरल स्वभाव।

मिस्कींनवाज़ (مسکیں نواز) अ. फा. वि.–दीनों दुखियों को सहारा देनेवाला, दीन-पोषक।

मिस्कींसूरत (مسکیں صورت) अ. वि.–जिसकी सूरत से सिधाई और नम्रता टपकती हो।

मिस्कीन (مسکین) अ. वि.–दे. 'मिस्कीं'।

मिस्तबः (مستبہ-مصطبہ) अ. वि.–मदिरालय, शराबख़ाना, दे. 'मस्तबः', दोनों शुद्ध हैं।

मिस्तर (مسطر) अ. पुं.–काग़ज़ की दफ़्ती, जिस पर मोटा डोरा सतरों की पैमाइश का लगा देते हैं और वरक़ को उस पर रखकर दबाते हैं जिससे काग़ज़ पर सतरें बन जाती हैं।

मिस्दाक़ (مصداق) अ. वि.–वह, जिस पर कोई बात ठीक-ठीक घटित हो, चरितार्थ।

मिस्बाह (مصباح) अ. पुं.–दीप, दीपक, चिराग़, दिया।

मिस्मार (مسمار) अ. वि.–नष्ट, ध्वस्त, मुनहदिम; सलाख़, मेख़।

मिस्र (مصر) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध राष्ट्र जो अफ़्रीका में है।

मिस्रए तरह (مصرع طرح) अ. पुं.–वह मिस्रा' जो रदीफ़ क़ाफ़िया और वज़्न बताने के लिए मुशायरे में दिया जाता है।

मिस्रा' (مصرع) अ. पुं.–आधार शेर, एक चरण।

मिस्रा'अ (مصراع) अ. पुं.–दे. 'मिस्रा'।

मिस्री (مصری) अ. पुं.–मिस्र देश का निवासी, (स्त्री). मिस्र देश की भाषा; कूज़े या थाल में जमी हुई शकर।

मिस्वाक (مسواک) अ. स्त्री.–दाँत साफ़ करने की रेशेदार लकड़ी, दंतधावन, दतौन।

मिह (مہ) फा. वि.–बड़ा, महान्, बुज़ुर्ग।

मिहतर (مہتر) फा. वि.–महत्तम, बहुत बड़ा; सरदार, नायक; भंगी, मैला उठानेवाला।

मिहार (مہار) अ. स्त्री.–ऊँट की नकेल, दे. 'महार', दोनों शुद्ध हैं।

मिहतरी (مہتری) फा. स्त्री.–महत्त्व, बड़ाई; सरदारी, अध्यक्षता।

मिह्र (مہر) फा. स्त्री.–सूर्य, रवि, भानु, सूरज; प्रेम, दोस्ती। ममता, मामता; कृपा, दया।

मिह्रपर्वर (مہرپرور) फा. वि.–दे. 'मिह्रबान'।

मिह्रबान (مہربان) फा. वि.–दयावान्, कृपालु; मित्र, दोस्त।

मिह्रबानी (مہربانی) फा. स्त्री.–कृपा, दया, अनुग्रह, अनुकंपा, करम।

मिह्रवर (مہرور) फा. वि.–दे. 'मिह्रबान'।

मी

मीअः (میعہ) अ. पुं.–सलारस, एक गाढ़ी दवा, मीअए साइला।

मीअए साइलः (میعۂ سائلہ) अ. पुं.–सलारस।

मीआद (میعاد) अ. स्त्री.–समय, काल, वक़्त; निश्चित काल, मुक़र्ररः वक़्त; वादा, करार; अवधि, मुद्दत (हिन्दी में 'मियाद' इसी अर्थ में प्रचलित है।)

मीआदगाह (میعادگاہ) अ. फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ मिलने का वादा हो, जहाँ मिलना नियत हो।

मीआदी (میعادی) अ. वि.–मीआदवाला, जो किसी नियत समय तक रहे, जैसे—मीआदी बुख़ार।

मीआदे मुऐयिनः (میعاد معینہ) अ. स्त्री.–नियत समय, निश्चित समय।

मीआदे मुक़र्ररः (میعاد مقررہ) अ. स्त्री.–दे. 'मीआदे मुऐयनः'।

मीकलः (میکلہ) अ. स्त्री.–हाँड़ी, देगची।

मीकाईल (میکائیل) अ. पुं.–रोज़ी का फ़िरिश्ता।

मीक़ात (میقات) अ. स्त्री.–वादे का स्थान; हाजियों के एहराम बाँधने का स्थान।

मीकाल (میکال) अ. पुं.–दे. 'मीकाईल'।

मीज़नः (میذنہ) अ. पुं.–मस्जिद में अज़ान देने का स्थान।

मीज़ान (میزان) अ. स्त्री.–तराज़ू, तुला; कई संख्याओं का जोड़, योगफल।

मीज़ानियः (میزانیہ) अ. पुं.–बजट, आयव्ययक, आय-व्यय का सरकारी अनुमान।

मीज़ाने अद्ल (میزان عدل) अ. स्त्री.–सच्ची तराज़ू, जिसमें फेर न हो; वह तराज़ू जिसमें क़ियामत के दिन अच्छे-बुरे कर्म तुलेंगे।

मीज़ाने अमल (میزان عمل) अ. स्त्री.–दे. 'मीज़ाने अद्ल'।

मीज़ाब (میزاب) अ. पुं.–वह परनाला जिससे छनकर पानी आये।

मीना (مینا) फा. पुं.–शराब का जग, शराब का बड़ा कंटर; वह रंगीन शीशा जिससे चाँदी-सोने पर नक़्क़ाशी होती है।

मीनाई (مینائی) फा. वि.–शराब के शीशे से सम्बन्धित; एक वंश, शाहमीना का वंशज।

मीनाए मय (مینائے مے) फा. पुं.–शराब का बड़ा कंटर, क़राबा।

मीनाए लाजवर्द (مینائے لاجورد) फा. पुं.–आकाश, आस्मान।

मीनाकार (میناکار) फा. वि.–जड़ाऊ काम करनेवाला; जिस पर जड़ाऊ काम हो।

मीनाकारी (میناکاری) फा. स्त्री.–जड़ाऊ काम, चाँदी-सोने पर मुरस्सासाज़ी।

मीनाख़ानः (میناخانہ) फा. पुं.–जहाँ शीशे हों।

मीना दर बग़ल (مینادربغل) फा. वि.–बग़ल में शराब की बोतल दबाये हुए।

मीनाफ़ाम (مینافام) फा. वि.–नीले रंगवाला।

मीनाबदस्त (مینابدست) फा. वि.–हाथ में शराब का शीशा लिये हुए।

मीनाबदोश (مینابدوش) फा. वि.–कंधे पर शराब का कंटर रखे हुए।

मीनाबाज़ार (مینابازار) फा. पुं.–वह बाज़ार जिसमें केवल स्त्रियाँ क्रय-विक्रय करें, जिसे अकबर ने प्रचलित किया था।

मीनारंग (مینارنگ) फा. वि.–दे. 'मीनाफ़ाम'।

मीनार (مینار) उ. पुं.–लंबी लाट, मनार; वह ऊँची जगह जहाँ रोशनी करें।

मीनू (مینو) फा. पुं.–स्वर्ग, बिहिश्त; नीले रंग का; वह शीशा जो ज़ेवरों पर जड़ा जाता है, मीना।

मीनूअसास (مینواساس) फा. अ. वि.–स्वर्ग-जैसा सुन्दर और शोभित।

मीनूसवाद (مینوسواد) फा. अ. वि.–दे. 'मीनूअसास'।

मीनूसिरिश्त (مینوسرشت) फा. वि.–दे. 'मीनूअसास'।

मीम (میم) अ. पुं.–उर्दू एक अक्षर जो 'म' की आवाज़ देता है; नायिका के मुँह के दहाने से इसकी उपमा दी जाती है।

मीर (میر) अ. पुं.–'अमीर' का लघु., अग्रगण्य, सरआमद; अध्यक्ष, नायक, सरदार; आगे बढ़ जानेवाला; सैय्यदों की उपाधि।

मीरअर्ज़ (میرعرض) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो लोगों के प्रार्थनापत्र बादशाह के सामने उपस्थित करता है।

मीरआख़ुर (میرآخور) अ. फा. पुं.–अश्वशाला का निरीक्षक, दारोग़ाए अस्तब्ल।

मीरआख़ुरबाशी (میرآخورباشی) तु. पुं.–अश्वशाला के दारोग़ाओं का अध्यक्ष।

मीरआतश (میرآتش) अ. फा. पुं.–तोपख़ाने का अध्यक्ष।

मीरआब (میرآب) अ. फा. पुं.–जलसेना का नायक।

मीरइमारत (میرعمارت) अ. पुं.–शाही इमारतों की देख-रेख करनेवाला, चीफ इंजीनियर।

मीरक़ाफ़िलः (میرقافلہ) अ. पुं.–क़ाफ़िले का सरदार।

मीरकार्वां (میرکارواں) अ. फा. पुं.–दे. 'मीरे क़ाफ़िल'।

मीरज़ा (میرزا) फा. पुं.–शाही ख़ानदान के लोगों की उपाधि; मुग़ल जाति का व्यक्ति।

मीरज़ाई (میرزائی) फा. वि.–मीरज़ापन; सरदारी; शहज़ादगी।

मीरज़ादः (میرزادہ) फा. पुं.–मीर का लड़का, शहज़ादा।

मीरज़ामनिश (میرزامنش) अ. फा. वि.–भलामानस, शरीफ़।

मीरतुज़ुक (میرتوزک) अ. तु. पुं.–सेना का प्रबंध करनेवाला, सेनानायक।

मीरफ़र्श (میرفرش) अ. पुं.–वह भारी पत्थर जो फ़र्श को दबाने के लिए चारों कोनों पर रखे जाते हैं, वह व्यक्ति जो अपने स्थान से हिले-डुले नहीं।

मीरबख़्शी (میربخشی) अ. फा. पुं.–वेतन बाँटनेवाला अफ़्सर।

मीरबह्र (میربحر) अ. पुं.–जलसेना का अध्यक्ष।

मीरमंज़िल (میرمنزل) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो सेना के आगे चलकर पड़ाव का प्रबंध करता है।

मीरमत्बख़ (میرمطبخ) अ. पुं.–बावरचीख़ाने का दारोग़ा।

मीरमह्फ़िल (میرمحفل) अ. पुं.–सभापति, सदरे मज्लिस।

मीरमहल्लः (میر محلہ) अ. पुं.–महल्ले का चौधरी या मुख्या (मुखिया)।

मीरमुंशी (میرمنشی) अ. पुं.–दफ़्तर के तमाम क्लर्कों का नायक।

मीरमुशाअरः (میرمشاعرہ) अ. पुं.–कवि-सम्मेलन का सभापति।

मीरमैदाँ (میرمیداں) अ. फा. पुं.–योद्धा, जंगज; वीर, शूर, बहादुर।

मीरशबगीर (میرشبگیر) अ. फा. पुं.–शहृ कोतवाल, रात में गश्त करनेवाला।

मीरसामाँ (میرساماں) अ. फा. पुं.–खानसामाँ।

मीराँ (میراں) फा. पुं.–'मीर' का बहु., बड़े लोग।

मीरास (میراث) अ. स्त्री.–दाम, तरिका; वह ज़मीन आदि जो किसी को गुज़ारे के लिए दी गयी हो, नानकार।

मीरासी (میراثی) अ. वि.–मुसलमानों की एक जाति विशेष जो गाने-बजाने का काम करती हैं।

मीरी (میری) अ. वि.–अमीरी, सरदारी; सबसे अव्वल आनेवाला।

मीरे अर्ज़ (میر عرض) अ. पुं.–बादशाह के सामने प्रार्थनापत्र पेश करनेवाला (पेशकार)।

मीरे शिकार (میر شکار) अ. फा. पुं.–बादशाहों के शिकारगाह का प्रबंध करनेवाला।

मील (میل) अ. पुं.–सुर्मा लगाने की सलाई, अंजन-शलाका; १७६० गज़ का फ़ासिला; यह दूरी बतानेवाला पत्थर।

मीलाद (میلاد) अ. पुं.–जन्म का समय; हज़्रत मुहम्मद के कथा की सभा।

मीलादख़्वाँ (میلادخواں) अ. फा. वि.–मीलाद पढ़नेवाला, हज़्रत मुहम्मद साहब का गुणगान करनेवाला।

मीलादी (میلادی) अ. वि.–हज़्रत मुहम्मद साहब के जन्मतिथि से प्रारंभ होनेवाला साल।

मीलादे मुबारक (میلاد مبارک) अ. पुं.–मीलाद का जलसा।

मीसाक़ (میثاق) अ. पुं.–प्रतिज्ञा, अहद; वादा, अभिवचन।

मु

मुंजज़िब (منجذب) अ. वि.–जज़्ब होनेवाला, लीन होनेवाला।

मुंज़जिर (منزجر) अ. वि.–अलग रहनेवाला, बाज़ रहनेवाला।

मुंजमिद (منجمد) अ. वि.–जमा हुआ, ठंड से जमी हुई वस्तु।

मुंजर (منجر) अ. वि.–खिंचा हुआ, परिवर्तित।

मुंज़ल (منزل) अ. वि.–नीचे उतरता हुआ, होनेवाली।

मुंजली (منجلی) अ. वि.–प्रकाशमान्, रौशन; उज्ज्वल, शफ़्फ़ाफ़; स्पष्ट, वाज़ेह; देश से बाहर जानेवाला, जलावतन होनेवाला।

मुंज़वी (منزوی) अ. वि.–संसार से विरक्त होकर एकांत में रहनेवाला।

मुंज़िज (منضج) अ. पुं.–पकानेवाला; वह दवा जो दूषित धातुओं को पकाकर इस क़ाबिल कर दे कि जुल्लाब देने पर सुगमता से निकल जायँ।

मुंजिद (منجد) अ. वि.–सहायक, मददगार।

मुंज़िर (منذر) अ. वि.–डरानेवाला।

मुंज़िल (منزل) नीचे उतरनेवाला; वीर्यपात करनेवाला।

मुंजिस (منجس) वि.–अपवित्र करनेवाला।

मुंजी (منجی) अ. वि.–नजात दिलानेवाला।

मुंतक़ल [ल्ल] (منتقل) अ. वि.–एक स्थान से दूसरे स्थान को गया हुआ; एक स्थान से दूसरे स्थान को हटाया हुआ।

मुंतक़ल इलैह (منتقل الیہ) अ. वि.–जिसकी ओर मुंतकिल किया गया हो, जिसके नाम कोई वस्तु लिखी हो या दी हो।

मुंतक़िम (منتقم) अ. वि.–बदी का बदला लेनेवाला, प्रत्यपकारी।

मुंतक़िल (منتقل) अ. वि.–एक स्थान से दूसरे स्थान को जानेवाला; एक स्थान से दूसरे स्थान को हटनेवाली वस्तु; एक स्थान से दूसरे स्थान को तबादले पर जानेवाला नौकर।

मुंतक़िली (منتقلی) अ. वि.–एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना; एक जगह की चीज का दूसरी जगह जाना; नौकर का तबादला।

मुंतख़ब (منتخب) अ. वि.–छाँटा हुआ, चुना हुआ; संकलित, चुना हुआ कलाम या मजमून; निर्वाचित, चुना हुआ आदमी।

मुंतख़बात (منتخبات) अ. पुं.–पुस्तक के रूप में चुने हुए गद्य और पद्य का संग्रह।

मुंतज़र (منتظر) अ. वि.–जिसकी प्रतीक्षा देखी जा रही हो, प्रतीक्ष्य।

मुंतज़िमः (منتظمہ) अ. स्त्री.–प्रबंधकारिणी, इंतिज़ाम करनेवाली।

मुंतज़िम (منتظم) अ. वि.–प्रबंधक, व्यवस्थापक, इंतिज़ाम करनेवाला।

मुंतजिम (منتجم) अ. वि.–प्रकाशमान्, दीप्त, रोशन।

मुंतज़िर (منتظر) अ. वि.–प्रतीक्षक, इंतिजार करनेवाला।

मुंतज़े (منتزع) अ. वि.–उखड़नेवाला, अस्त-व्यस्त होनेवाला।

मुंतफ़ी (منتفی) अ. वि.–नष्ट होनेवाला।

मुंतफ़ी (منطفی) अ. वि.–बुझनेवाला, बुझनेवाली आग या बुझनेवाला चिराग़ आदि।

मुंतफ़े' (منتفع) अ. वि.–लाभ उठानेवाला, लाभान्वित।

मुंतबिक़ (منطبق) अ. वि.–चरितार्थ, ठीक-ठीक घटित होनेवाला।

मुंतबे (منطبع) अ. वि.–छपनेवाला; अंकित होनेवाला।

मुंतशिर (منتشر) अ. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; उद्विग्न, परेशान।

मुंतसिब (منتسب) अ. वि.–सम्बन्ध रखनेवाला, सम्बद्ध।

मुंतहा (منتہا) अ. वि.–पराकाष्ठा, अंतिम सीमा, आख़िरी हद; जो पराकाष्ठा को प्राप्त हो।

मुंतही (منتہی) अ. वि.–पराकाष्ठा या अंत को पहुँचनेवाला; विद्या में पारंगत होनेवाला, स्नातक।

मुंतिज (منتج) अ.वि.–फल देनेवाला, परिणाम देनेवाला।

मुंतिन (منتن) अ. वि.–बदबूदार, दुर्गंधयुक्त।

मुंदफ़े (مندفع) अ. वि.–निवारित, निराकृत, जो दफ़ा हो गया हो।

मुंदमिल (مندمل) अ. वि.–वह घाव जो भर आया हो, रोपित।

मुंदरिज (مندرج) अ. वि.–लिखित, दर्ज, प्रविष्ट, अंकित।

मुंदरिजे ज़ैल (مندرج ذیل) अ. वि.–निम्नलिखित, नीचे लिखा हुआ।

मुंदरिस (مندرس) अ. वि.–फटा-पुराना, कपड़ा, जीर्ण-शीर्ण।

मुंबइस (منبعث) अ. वि.–उठनेवाला।

मुंबसित (منبسط) अ. वि.–प्रसन्न, हर्षित, ख़ुश।

मुंशआत (منشعات) अ. पुं.–ख़तों या मज़मूनों का संग्रह।

मुंशइब (منشعب) अ. वि.–शाख़ों में बटा हुआ, तितर-बितर, मुंतशिर।

मुंशक़[क़्क़] (منشق) अ.वि.–फटा हुआ, जो फट गया हो, विदीर्ण।

मुंशरेह (منشرح) अ. वि.–खुलनेवाला, खुला हुआ।

मुंशिद (منشد) अ. वि.–शेर पढ़नेवाला।

मुंशियानः (منشیانہ) अ. फा. अव्य.–मुंशियों-जैसा, जैसे—'मुंशियानः ख़त'।

मुंशी (منشی) अ. वि.–गद्य लेखक, अदीब; लिपिक, क्लर्क; वकील का मुहर्रिर; कचहरी में अर्जियाँ लिखनेवाला; जिसकी लिखावट अच्छी हो।

मुंशीख़ानः (منشی خانہ) अ. फा. पुं.–मुंशियों के बैठने का स्थान, उर्दू का दफ़्तर।

मुंशीगरी (منشی گری) अ. फा. स्त्री.–लिखने का काम, मुहर्रिरी।

मुंशीए फ़लक (منشی فلک) अ. पुं.–बुध ग्रह, उतारिद।

मुंसद[द्द] (منسد) अ. वि.–रुका हुआ, अवरुद्ध, जिसका इंसिदाद कर दिया गया हो।

मुंसबिग़ (منصبغ) अ. वि.–रंजित, रँगा हुआ।

मुंसरिफ़ (منصرف) अ. वि.–एक दशा से दूसरी दशा में परिवर्तित होनेवाला; व्याकरण में अरबी का वह शब्द जो कारक से प्रभावित होकर अपने अंतिम अक्षर पर ज़ेर, ज़बर, पेश दे, अनव्यय।

मुंसरिम (منصرم) अ. पुं.–प्रबंध, इंतिज़ाम करनवाला; दीवानी का एक उहदेदार।

मुंसलिक (منسلک) अ. पुं.–पिरोया हुआ, लड़ी में डाला हुआ, सूत्रित, नत्थी।

मुंसिफ़ (منصف) अ. वि.–न्यायकर्ता, इंसाफ़ करनेवाला; दीवानी का एक उच्च पदाधिकारी, न्यायधिकर्ता।

मुंसिफ़मिज़ाज (منصف مزاج) अ. वि.–जिसके स्वभाव में न्याय-प्रियता हो, न्यायनिष्ठ।

मुंसिफ़ानः (منصفانہ) अ. फा. अव्य.–मुंसिफ़ों-जैसा, न्यायपूर्ण, न्यायोचित।

मुंसिफ़ी (منصفی) अ. स्त्री.–न्याय, इंसाफ़; मुंसिफ़ की कचहरी; मुंसिफ़ का पद।

मुअंबर (معنبر) अ. वि.–अंबर की सुगंध में बसा हुआ; अंबर-जैसी सुगंध देनेवाला।

मुअंबरीं (معنبرین) अ. फा. वि.–दे. 'मुअंबर'।

मुअक़्क़द (معقد) अ. वि.–ग्रंथित, गठीला; जिस इबारत में ता'क़ीद का दोष हो।

मुअक़्क़र (موقر) अ. वि.–प्रतिष्ठित, पूज्य, क़ाबिले एहतिराम; ज़िम्मेदार, मान्य।

मुअक़्क़िद (معقد) अ. वि.–गाँठ लगानेवाला।

मुअज़्ज़ज़ (معزز) अ. वि.–प्रतिष्ठित, ज़ी इज़्ज़त; संमानित, मोहतरम।

मुअज़्ज़मः (معظمہ) अ. वि.–पूज्य स्त्री; पूज्य स्थान, जैसे–मक्कए मुअज़्ज़मः।

मुअज्जम (معظم) अ. वि.–प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार; श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग।

मुअज्जल (معجل) अ. वि.–शीघ्रित, जल्दी किया हुआ।

मुअज़्ज़िन (معذن) अ. पुं.–मस्जिद में अज़ान देनेवाला।

मुअज़्ज़िब (معزب) अ. वि.–सख़्त कष्ट देनेवाला, अजाब यानी पापदंड देनेवाला।

मुअज्जिल (معجل) अ.वि.–जल्दी करनेवाला, उतावला।

मुअत्तर (معطر) अ.वि.–सुगंधित, सुवासित, ख़ुशबू में बसा हुआ।

मुअत्तल (معطل) अ. वि.–जो काम करने से रोक दिया गया हो; जिसके पास काम न हो, बेकार; जो संस्था अपना काम न कर रही हो, सस्पेण्ड।

मुअत्तिश (معطش) अ. वि.–प्यास लगानेवाली चीज़, जिसके खाने से प्यास अधिक लगे।

मुअर्बद (معربد) अ. वि.–तीव्र प्रकृतिवाला, कटु स्वभाववाला, बदख़ू; लड़ाका, कलहप्रिय।

मुअद्दिल (معدل) अ. वि.–दो बराबर भागों में बाँटनेवाला।

मुअद्दिलुन्नहार (معدل النهار) अ. पुं.–वह वृत्त जिस पर सूर्य के पहुँचने से दिन-रात बराबर होते हैं, नाडीवृत्त।

मुअद्दी (مودی) अ. वि.–पहुँचानेवाला, भेजनेवाला, प्रेषक।

मुअन्वन (معنون) अ. वि.–किसी के नाम सर्मपित की गयी पुस्तक।

मुअद्दद (معدد) अ. वि.–गणित, गिना हुआ, शुमार किया हुआ।

मुअद्दब (مودب) अ. वि.–शिष्ट, सभ्य, तमीज़दार; अदब के साथ, शिष्टतापूर्ण।

मुअद्दा (مودا) अ. वि.–अदा किया हुआ, बेबाक़, शोधित।

मुअन्नस (مونث) अ. स्त्री.–स्त्रीलिंग।

मुअम्मर (معمر) अ. वि.–बड़ी आयुवाला, बूढ़ा, वयोवृद्ध।

मुअम्मा (معما) अ. पुं.–प्रतियोगिता।

मुअय्यिद (موید) अ. वि.–ताईद करनेवाला, हाँ में हाँ मिलानेवाला, समर्थक।

मुअय्यन (معین) अ. वि.–निश्चित, नियत, मुक़र्रर।

मुअर्रब (معرب) अ. वि.–अन्य भाषा का शब्द जो अरबी बना लिया जाय।

मुअर्रा (معرا) अ. वि.–विहीन, रिक़्त, ख़ाली; वह पुस्तक जिसकी टीका न हो; वह गद्य जो बिलकुल सादा हो।

मुअर्रिक़ (معرق) अ. वि.–पसीना लानेवाली दवा।

मुअर्रिख़ (مورخ) अ. वि.–इतिहास लेखक, तारीख़दाँ।

मुअर्रिख़ानः (مورخانہ) अ. फा. अव्य.–इतिहास लेखकों-जैसा।

मुअर्रिख़े वक़्त (مورخ وقت) अ. पुं.–समयरूपी इतिहास लेखक।

मुअर्रिफ़ (معرف) अ. वि.–प्रशंसक, ता'रीफ़ करनेवाला।

मुअल्लक़ः (معلقہ) अ. वि.–बीच में लटकी हुई चीज़; बीच में लटकी हुई स्त्री जिससे पति न तो छोड़े, न अपने पास रखे।

मुअल्लक़ (معلق) अ. वि.–अधर में लटका हुआ, हवा में ठहरा हुआ; वह मृत्यु जो टल जाय; वह काम जो बीच में रुका हो।

मुअल्लफ़ः (مولفہ) अ. वि.–तालीफ़ की हुई पुस्तक, संपादित पुस्तक।

मुअल्लफ़ (مولف) अ. वि.–संपादित, रचित, तालीफ़ किया हुआ।

मुअल्लफ़ात (مولفات) अ. पुं.–संपादित पुस्तकें, लिखी हुई किताबें।

मुअल्ला (معلی) अ. वि.–उच्च, उत्तुंग, ऊँचा, श्रेष्ठ, उत्तम, आला।

मुअल्ला अल्क़ाब (معلی القاب) अ. वि.–बड़े अल्क़ाबोंवाला, अर्थात् श्रेष्ठ व्यक्ति।

मुअल्लिफ़ः (مولفہ) अ. स्त्री.–संपादिका, तालीफ़ करनेवाली, पुस्तक संपादित करनेवाली।

मुअल्लिफ़ (مولف) अ. पुं.–संपादक, संकलन करनेवाला।

मुअल्लिमः (معلمہ) अ. स्त्री.–अध्यापिका, पढ़ानेवाली।

मुअल्लिम (معلم) अ. पुं.–अध्यापक, पढ़ानेवाला।

मुअल्लिमुल मलकूत (معلم الملکوت) अ. पुं.–फ़िरिश्तों को पढ़ानेवाला, शैतान।

मुअल्लिमुल मलाइक (معلم الملائک) अ. पुं.–दे. 'मुअल्लिमुल मलकूत'।

मुअव्वज (معوج) अ. वि.–टेढ़ा, वक्र, ख़मीदः।

मुअस्फ़र (معصفر) अ. पुं.–कुसुम का पेड़, कुसुम।

मुअस्सिर (موثر) अ. वि.–असर डालनेवाला, तासीर दिखानेवाला, गुणकारी।

मुअस्सिस (موسس) अ. वि.–नींव रखनेवाला, शिलान्यासकर्ता।

मुआक़बत (معاقبت) अ. स्त्री.–कष्ट पहुँचाना, पीड़ा देना।

मुआकलत (مواکلت) अ. स्त्री.–साथ-साथ खाना खाना।

मुआक़िब (معاقب) अ. वि.–पीड़ा देनेवाला, कष्टदायी।

मुआख़ज़ः (مواخذہ) अ. पुं.–पकड़, गिरिफ़्त; भूल या अपराध की पकड़; प्रतिकार, बदला।

मुआख़ात (مواخات) अ. स्त्री.–भाईचारा, बन्धुत्व, भाईबिरादरीपन।

मुआख़िज़ (مواخذ) अ. वि.–मुआख़ज़ा करनेवाला, दोष या अपराध पर कड़ी पकड़ करनेवाला।

मुआज़दत (معاضدت) अ. स्त्री.–सहायता, पुष्टि, हिमायत।

मुआज़नः (موازنہ) अ. पुं.–तुलना, समानता, बराबरी।

मुआज़िद (معاضد) अ. वि.–सहायक, हिमायती।

मुआतफ़त (معاطفت) अ. स्त्री.–कृपा, अनुग्रह, दया, मेहरबानी।

मुआतबत (معاتبت) अ. स्त्री.–परस्पर क्रोध करना, एक-दूसरे पर ग़ुस्सा होना।

मुआतात (معاطات) अ. स्त्री.–देना, अता करना।

मुआतिफ़ (معاطف) अ. वि.–कृपा करनेवाला, दयालु।

मुआतिब (معاتب) अ. वि.–क्रोध करनेवाला, क्रोधी।

मुआदलत (معادلت) अ. स्त्री.–न्याय, नीति, इंसाफ़।

मुआदा (معادا) अ. पुं.–'मुआदात' का लघु., दे. 'मुआदात'।

मुआदात (معادات) अ. स्त्री.–परस्पर शत्रुता, आपसी बैर।

मुआदिल (معادل) अ. वि.–न्याय-कर्ता, मुंसिफ़,; बराबर के दो टुकड़े करनेवाला।

मुआनक़ः (معانقہ) अ. पुं.–गले मिलना, एक का दूसरे से गले मिलना, आलिंगन, बग़लगीरी।

मुआनदत (معاندت) अ. स्त्री.–परस्पर द्वेष, आपसी बैर।

मुआनसत (موانست) अ. स्त्री.–परस्पर मैत्री, दोस्ती, मित्रता।

मुआनिक़ (معانق) अ. वि.–गले मिलनेवाला, बग़लगीर होनेवाला।

मुआनिद (معاند) अ. वि.–शत्रु, बैरी, दुश्मन।

मुआनिदीन (معاندین) अ. पुं.–'मुआनिद' का बहु., विरोधी लोग, द्वेष रखनेवाले।

मुआनिस (موانس) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त।

मुआफ़ (معاف) अ. वि.–क्षमा प्राप्त, क्षमित।

मुआफ़क़त (موافقت) अ. स्त्री.–समानता, यकसानियत; अनुकूलता, इत्तिफ़ाक़; मैत्री, दोस्ती।

मुआफ़िक़ (موافق) अ. वि.–अनुकूल, मुत्तफ़िक़; मित्र, दोस्त।

मुआफ़िक़ीन (موافقین) अ. पुं.–'मुआफ़िक़' का बहु., अनुकूल लोग।

मुआफ़ी (معافی) अ. स्त्री.–क्षमा, बख़शिश।

मुआफ़ीदार (معافیدار) अ. फा. वि.–जिसे मुआफ़ी की ज़मीन या जागीर मिली हो।

मुआफ़ीनामः (معافینامہ) अ. फा. पुं.–वह पत्र जिसमें कोई व्यक्ति अपने अपराध-क्षमा की लिखित तह्रीर दे, क्षमापत्र।

मुआमरत (موامرت) अ. स्त्री.–परस्पर सलाह मशवुरः, विचार-विनिमय, परामर्श।

मुआमलः (معاملہ) अ. पुं.–परस्पर मिलकर कोई काम करना; व्यवसाय, कारोबार; लेन-देन; घटना, हादिसा; समझौता, तस्फ़िया; कलह, झगड़ा; विषय, सम्बन्ध; मुक़द्दमा; बरताव, साबिक़ा।

मुआमलःअंदेश (معاملہاندیش) अ. फा. वि.–मुआमले को सोचकर काम करनेवाला।

मुआमलःअंदेशी (معاملہاندیشی) अ. फा. स्त्री.–मुआमला सोच-समझकर काम करना।

मुआमलःदाँ (معاملہداں) अ. फा. वि.–मुआमले को समझनेवाला, दूरदर्शी; बात की तह को समझनेवाला; अनुभवी, तज्रबाकार।

मुआमलःदानी (معاملہدانی) अ. फा. स्त्री.–मुआमला समझकर काम करना; बात की तह को पहुँचना; तज्रबाकारी।

मुआमलःनादाँ (معاملہناداں) अ. फा. वि.–जो मुआमला न समझे, मूर्ख, बेवक़ूफ़।

मुआमलःपसंद (معاملہپسند) अ. फा. वि.–मुआमले की बात को पसंद करनेवाला।

मुआमलःपसंदी (معاملہپسندی) अ. फा. स्त्री.–मुआमले की बात पसंद करना, मुआमले की बात मानना।

मुआमलःफ़ह्म (معاملہفہم) अ. वि.–दे. 'मुआमलः दाँ'।

मुआमलःफ़ह्मी (معاملہفہمی) अ. स्त्री.–दे. 'मुआमलः दानी'।

मुआमलःबंद (معاملہبند) अ. फा. वि.–मुआमलःबंदी करनेवाला।

मुआमलःबंदी (معاملہبندی) अ. फा. स्त्री.–शे'र अर्थात् कविता में नायक और नायिका के प्रेम के मुआमलों को इस प्रकार बाँधना कि उनका प्राकृतिक चित्र आँखों के सामने फिर जाय।

मुआमलःबीं (معاملہبیں) अ. फा. वि.–दे. 'मुआमलः-अंदेश'।

मुआमलःबीनी (معاملہبینی) अ. फा. वि.–दे. 'मुआमलःअंदेशी'।

मुआमलःशनास (معاملہشناس) अ. फा. वि.–दे. 'मुआमलःदाँ।'

मुआमलःशनासी (معاملہشناسی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मुआमलःदानी'।

मुआमलःसंज (معاملہسنج) अ. फा. वि.–दे. 'मुआमलःदाँ'।

मुआमलःसंजी (معاملہسنجی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मुआमलः दानी'।

मुआमलत (معاملت) अ. स्त्री.–बाहमी मुआमलः, पारस्परिक व्यवहार।

मुआमलात (معاملات) अ. पुं.–'मुआमलः' का बहु., काम, उमूर; तअल्लुक़ात, सम्बन्ध; व्यवहार, तर्ज़ेअमल; मुक़द्दमे।

मुआमलाते क़ौमी (معاملات قومی) अ. पुं.–राष्ट्र के राजनीतिक मुआमले; जातीय समस्याएँ, ज़ाति और बिरादरी के मुआमले।

मुआमलाते ख़ानगी (معاملات خانگی) अ. फा. पुं.–घरेलू झगड़े, घरेलू और निजी मुआमले।

मुआमलाते ख़ुफ़्यः (معاملات خفیہ) अ. फा. पुं.–वह मुआमले जो कहे न जा सकें, गुप्त बातें, रहस्य।

मुआमलाते ज़ाती (معاملات ذاتی) अ. पुं.–निजी मुआमले, घरेलू समस्याएँ, वैयक्तिक समस्याएँ ।

मुआमलाते मुल्की (معاملات ملکی) अ. पुं.–राष्ट्र की समस्याएँ, राजनीतिक उलझनें, सियासी मुआमले।

मुआमलाते शख़्सी (معاملات شخصی) अ. पुं.–दे. 'मुआमिलाते ज़ाती' ।

मुआमलाते सल्तनत (معاملات سلطنت) अ. पुं.–राज्य की समस्याएँ, राजनीति की उलझनें या मुआमले ।

मुआमलाते हुकूमत (معاملات حکومت) अ. पुं.–दे. 'मुआमलाते सल्तनत' ।

मुआमिल (معامل) अ. वि.–मुआमला करनेवाला ।

मुआयनः (معاینہ) अ. पुं.–किसी चीज़ या विषय में पूरा ग़ौर करना; पर्यवेक्षण; किसी कार्यालय आदि के कामों की जाँच-पड़ताल करना, निरीक्षण ।

मुआरज़ः (معارضہ) अ. पुं.–कलह, झगड़ा, टंटा; वाद-विवाद, बहस ।

मुआरिज़ (معارض) अ. वि.–कलह और झगड़ा करनेवाला; वाद-विवाद करनेवाला; प्रतिद्वन्द्वी, हरीफ़; विरोधी, मुख़ालिफ़ ।

मुआलजः (معالجہ) अ. पुं.–चिकित्सा, उपचार, इलाज़; यत्न, तदबीर, उपाय ।

मुआलजात (معالجات) अ. पुं.–'मुआलजः' का बहु., इलाज, उपचार; वह ग्रंथ जो चिकित्सा के सम्बन्ध में हों; नुस्ख़ों की किताबें; किसी बड़े हकीम के मतब के नुस्ख़ों का संग्रह।

मुआलफ़त (موالفت) अ. स्त्री.–पस्पर मैत्री, प्रेम-व्यवहार, दोस्ती, मित्रता।

मुआला (موالا) अ. पुं.–'मुआलात' का लघु., दे. 'मुआलात'।

मुआलात (موالات) अ. स्त्री.–परस्पर मित्रता और सहायता, दोस्ती और एक दूसरे की मदद ।

मुआलिज (معالج) अ. पुं.–इलाज करनेवाला, चिकित्सक, वैद्य, भिषक् ।

मुआवज़ः (معاوضہ) अ. पुं.–किसी वस्तु का मूल्य जो वस्तु के बदले में दिया जाय, मूल्य; वह धन जो किसी क्षति के बदले में दिया जाय; क्षति-पूर्ति के लिए धन देना।

मुआवदत (معاودت) अ. स्त्री.–प्रत्यागमन, लौटना, वापसी।

मुआवनत (معاونت) अ. स्त्री.–एक दूसरे की सहायता; सहायता, मदद ।

मुआविन (معاون) अ. वि.–सहायक, मददगार; वह नदी जो किसी बड़ी नदी में मिले, सहायक नदी; पक्षपाती, पृष्ठ-पोषक, हिमायती ।

मुआविने जुर्म (معاون جرم) अ. वि.–जो किसी अपराध या षड्यंत्र में किसी का सहायक हो ।

मुआशरः (معاشرہ) अ. पुं.–दे. 'मुआशरत' ।

मुआशरत (معاشرت) अ. स्त्री.–बहुत-से लोगों का एक स्थान पर रहकर मेल-जोल और एक-दूसरे को सहायता देकर जीवन व्यतीत करना, नागरिकता; सभ्यता, तहज़ीब ।

मुआशिर (معاشر) अ. वि.–मुआशरत करनेवाला, नागरिक; मित्र, सखा, दोस्त, हमदम ।

मुआसरत (معاصرت) अ. स्त्री.–दो या अधिक व्यक्तियों का समकालीन होना ।

मुआसा (مواسا) अ. पुं.–'मुआसात' का लघु., दे. 'मुआसात' ।

मुआसात (مواسات) अ. स्त्री.–सहायता, मदद; सहानुभूति, ग़मख़्वारी; शील, मुरव्वत ।

मुआसिर (معاصر) अ. वि.–एक समय में होनेवाला, एक समय में होनेवाले व्यक्ति, समकालीन ।

मुआसिरीन (معاصرین) अ. पुं.–'मुआसिर' का बहु., समकालीन लोग ।

मुआहदः (معاہدہ) अ. पुं.–परस्पर क़ौलक़रार, आपस में किसी बात की प्रतिज्ञा; ऐग्रीमेंट, संप्रतिज्ञा ।

मुआहदत (معاہدت) अ. स्त्री.–दे. 'मुआहदः' ।

मुआहिद (معاہد) अ. वि.–प्रतिज्ञा करनेवाला; ऐग्रीमेंट करनेवाला ।

मुइज़्ज़ (معز) अ. वि.–संमान, प्रतिष्ठा देनेवाला; ईश्वर का एक नाम ।

मुइद [द्द] (معد) अ. वि.–कटिबद्ध और तैयार करनेवाला।

मुईद (معید) अ. वि.–किसी कार्य को बारंबार करनेवाला ।

मुईन (معین) अ. वि.–सहायक, मददगार; पृष्ठ-पोषक, हिमायती ।

मुऐयनः (معینہ) अ. वि.–नियत, मुक़र्रर, जैसे––'तारीख़े मुअय्यनः' ।

मुऐयन (معین) अ. वि.–नियत, निश्चित, मुक़र्रर, दे. 'मुअय्यन' ।

मुऐयिद (موید) अ. वि.–समर्थक, ताईद और पुष्टि करनेवाला, दे. 'मुअय्यिद' ।

मुकज़्ज़ब (مکذب) अ. वि.–जिसकी बात को झूठ बताया या साबित किया गया हो; जो बात झूठ साबित की गयी हो ।

मुकज़्ज़िब (مکذب) अ. वि.–किसी को झूठा बतानेवाला, किसी की बात को झूठ साबित करनेवाला ।

मुक़त्तर (مقطر) अ. वि.–बूँद-बूँद करके टपकाया हुआ; क़र्अइंबीक़ में खींचा हुआ; निथार, ऊपर का साफ़ पानी या दवा आदि ।

मुक़त्ता' (مقطع) अ. वि.–छाँटा तराशा हुआ; शिष्ट, संस्कृत, शाइस्ता; जिसकी डाढ़ी तर्शी हुई हो।

मुक़द्दमः (مقدمہ) अ. पुं.–बाद, नालिश, दावा; किताब की भूमिका, प्रस्तावना; प्राक्कथन, पेश लफ़्ज़; विषय, मुआमला; कार्य, काम।

मुक़द्दमःबाज़ (مقدمہ باز) अ. फा. वि.–जो बहुत मुक़दमे लड़ता हो; जो ज़रा-ज़रा-सी बात पर मुक़दमे कर देता हो; जो मुक़दमाबाजी में बहुत होशियार हो।

मुक़द्दम (مقدم) अ. वि.–प्रधान, मुरज्जह; मुख्य, ख़ास; (पुं.) गाँव का मुखिया; अगला हिस्सा।

मुक़द्दर (مقدر) अ. पुं.–प्रारब्ध, भाग्य, अदृष्ट, तक़्दीर, भाग, क़िस्मत; वह शब्द जो इबारत में न हो परंतु अर्थ में लिया जाय, लुप्त।

मुकद्दर (مکدر) अ. वि.–मलिन, मैला, गदला; अप्रसन्न, नाख़ुश।

मुक़द्दरआज़्माई (مقدر آزمائی) अ. फा. स्त्री.–भाग्य-परीक्षा, तक़्दीर की आज़माइश, किसी काम में हाथ डालना और यह देखना कि होता है या नहीं।

मुक़द्दरात (مقدرات) अ. पुं.–तक़दीर की बातें, भाग्य में लिखे हुए मुआमलात।

मुक़द्दसः (مقدسہ) अ. वि.–पवित्र, पाक चीज़।

मुक़द्दस (مقدس) अ. वि.–पवित्र, पाक; पुनीतात्मा, बुज़ुर्गी।

मुक़द्दिमः (مقدمہ) अ. वि.–आगे चलनेवाली।

मुक़द्दिमतुलजैश (مقدمۃ الجیش) अ. पुं.–वह थोड़ी सेना जो बड़ी सेना के आगे चलकर उसके पड़ाव आदि का प्रबंध करती या शत्रु की सेना के समाचार प्राप्त करती है, हिरावुल; नायक, सरदार; नेता, लीडर।

मुक़न्नितः (مقننہ) अ. स्त्री.–विधानसभा, लेजिस्लेटिव एसैम्बली।

मुक़न्निन (مقنن) अ. वि.–क़ानून जाननेवाला, क़ानून-पेशः वकील; क़ानून बनानेवाला, विधायक।

मुक़फ़्फ़ल (مقفل) अ. वि.–जिसमें क़ुफ़ुल पड़ा हो, यंत्रित, जैसे—'मुक़फ़्फ़ल संदूक़'।

मुक़फ़्फ़ा (مقفیٰ) अ. वि.–वह गद्य जो अनुप्रासात्मक हो।

मुकब्बर (مکبر) अ. पुं.–मस्जिद में वह ऊँचा स्थान जहाँ तक़्बीर कहनेवाला खड़ा होता है—यह स्थान केवल बहुत बड़ी मस्जिदों में होता है।

मुकब्बिर (مکبر) अ. वि.–तक्बीर कहनेवाला, वह जो मुकब्बर् पर चढ़कर नमाज़ में तक़्बीरें कहे ताकि दूर के नमाज़ी सुन लें।

मुकम्मल (مکمل) अ. वि.–संपूर्ण, कामिल; समाप्त, ख़त्म; सर्वांगपूर्ण, हर तरह से मुकम्मल।

मुकम्मिल (مکمل) अ. वि.–पूर्ति करनेवाला; समाप्ति करनेवाला।

मुक़य्यद (مقید) अ. वि.–जो क़ैद में हो, बंदी, क़ैदी; जिसमें कोई शर्त लगा दी गयी हो।

मुक़य्यश (مقیش) अ. वि.–सोने-चाँदी के तारों का बना हुआ कपड़ा, दे. 'मुक़ैश', उर्दू में अधिकतर यूँ ही बोलते हैं।

मुक़र्नस (مقرنس) अ. वि.–बड़ी और भव्य इमारत; चित्रित, मुनक़्क़श; पाड़ जिस पर बैठकर राज इमारत बनाता है।

मुक़र्रज़ (مقرض) अ. वि.–जिसे कैंची से काटकर महीन किया गया हो।

मुक़र्रब (مقرب) अ. वि.–समीपवर्ती, निकटस्थ, हमनशीं, पास का बैठनेवाला, सभासद्।

मुक़र्रबीन (مقربین) अ. पुं.–'मुक़र्रब' का बहु., सभासद्जन, मुसाहिब लोग।

मुकर्रम (مکرم) अ. वि.–प्रतिष्ठित, पूज्य, मोहतरम।

मुक़र्ररः (مقررہ) अ. वि.–नियत, निश्चित।

मुक़र्रर (مقرر) अ. वि.–नियत, निश्चित, मुअय्यन; नियुक्त, मुअय्यन; अवश्य, यक़ीनी।

मुकर्रर (مکرر) अ. वि.–पुनः, फिर, दुबारा।

मुकर्ररात (مکررات) अ. पुं.–वे बातें जो किसी लेख में बार-बार आयी हों।

मुक़र्रिर (مقرر) अ. वि.–तक़्रीर करनेवाला, वक्ता, भाषण देनेवाला।

मुक़र्रिरीन (مقررین) अ. पुं.–'मुक़र्रिर' का बहु., भाषण देनेवाले, वक्तागण।

मुकल्लफ़ (مکلف) अ. वि.–जिसमें तकल्लुफ़ किया गया हो, पुर तकल्लुफ़; जो ख़ूब सजाया गया हो, सुसज्जित।

मुकल्लफ़ात (مکلفات) अ. पुं.–पुर तकल्लुफ़ चीज़ें।

मुकल्लल (مکلل) अ. वि.–ताज पहने हुए; टोपीदार, छत्तेदार; चमकता हुआ; मुलम्मा किया हुआ।

मुकल्लस (مکلس) अ. वि.–जलाकर चूना बनाया हुआ।

मुक़ल्लिद (مقلد) अ. वि.–तक़्लीद करनेवाला, अनुकारी, अनुकरण करनेवाला; अनुयायी, पैरौ; शिष्य, चेला, मुरीद; मुसलमानों का वह समुदाय जो ख़ुदा और रसूल के अतिरिक्त चारों इमामों को भी मानता है।

मुक़ल्लिदीन (مقلدین) अ. पुं.–वे मुसलमान जो हनफ़ी शाफ़िई आदि मतों को माननेवाले हैं।

मुकल्लिफ़ (مکلف) अ. वि.–कष्टदाता, तक़्लीफ़ देने-

वाला; मिमन्त्रण दाता; चूँकि वह अपने घर बुलाने का कष्ट देता है, इसलिंए स्वयं को 'मुकल्लिफ़' कहता है।

मुक़ल्लिब (مقلب) अ. वि.–पलट देनेवाला, उलटा कर देनेवाला, फेर देनेवाला।

मुक़ल्लिबुल क़ुलूब (مقلب القلوب) अ. वि.–दिलों को बदल देनेवाला, बुरों को अच्छा बना देनेवाला, दिलों में दयाभाव उत्पन्न कर देनेवाला; ईश्वर की सिफ़त।

मुक़व्वस (مقوس) अ. वि.–वह चीज़ जो धनुष की भाँति टेढ़ी हो, झुका हुआ, नमित।

मुक़व्वी (مقوی) अ. वि.–शक्ति देनेवाला, बलवर्द्धक; काम-शक्ति बढ़ानेवाला, पुष्टिकर, कामवर्द्धक।

मुक़व्वीए आसाब (مقوی اعصاب) अ. वि.–रगों और पट्ठों को शक्ति देनेवाली दवा।

मुक़व्वीए बाह (مقوی باہ) अ. वि.–मैथुनबल और काम-शक्ति को बढ़ानेवाली ओषधि, कामवर्द्धक।

मुक़श्शर (مقشر) अ. वि.–छिलका उतरा हुआ।

मुक़स्सर (مقصر) अ. वि.–कम किया हुआ, छोटा किया हुआ।

मुकस्सर (مکسر) अ. वि.–टूटा हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

मुकस्सर (مکثر) अ. वि.–अधिक किया हुआ; दो असमान संख्याओं का गुणनफल।

मुकस्सिर (مکسر) अ. वि.–तोड़नेवाला, टुकड़े-टुकड़े करनेवाला।

मुक़स्सिर (مقصر) अ. वि.–कम करनेवाला, छोटा करनेवाला; त्रुटि करनेवाला, ग़लती करनेवाला।

मुकह्हल (مکحل) अ. वि.–आँखों में सुर्मा लगाये हुए; सुर्मा लगी हुई आँखें।

मुक़्'अर (مقعر) अ. वि.–गहरा, अथाह; गर्त, गढ़ा; भीतरी तल जो खोखला हो।

मुक़ातअः (مقاطعہ) अ. पुं.–काटना, खंडन करना।

मुकातबत (مکاتبت) अ. स्त्री.–परस्पर पत्र व्यवहार, आपस की खतोकितावत।

मुक़ातलः (مقاتلہ) अ. पुं.–एक-दूसरे को वध करना; परस्पर मारकाट; युद्ध, संग्राम, जंग।

मुक़ातिल (مقاتل) अ. वि.–वधिक, हिंसक, क़त्ल करनेवाला।

मुक़ाते (مقاطع) अ. वि.–काटनेवाला, विच्छेदक; ठेका लेनेवाला, ठेकेदार।

मुकाफ़ात (مکافات) अ. स्त्री.–बुराई का बदला, प्रत्यपकार,; पापदंड, गुनाह की सज़ा।

मुकाबरः (مکابرہ) अ. पुं.–परस्पर अपने को दूसरे से बड़ा बताना या साबित करना; कलह, युद्ध, लड़ाई।

मुक़ाबलः (مقابلہ) अ. पुं.–आमना-सामना, संमुखता; समानता, बराबरी; उद्दंडता, सरकशी; सम्बन्धी, कम्पीटीशन; प्रतियोगिता, जाँच का मुक़ाबला; नक़्ल का अस्ल पुस्तक या लेख से मिलान।

मुक़ाबलतन (مقابلتاً) अ. अव्य.–मुकाबले में, अपेक्षा।

मुक़ाबिल (مقابل) अ. वि.–प्रत्यक्ष, संमुख, सामने; समान, बराबर; सदृश, मिस्ल; विरोधी, बैरी; प्रतिद्वंद्वी, रक़ीब।

मुक़ाम (مقام) अ. पुं.–देर तक ठहराव, क़ियाम।

मुक़ामी (مقامی) अ. वि.–मुक़ाम से सम्बन्ध रखनेवाला।

मुक़ारनत (مقارنت) अ. स्त्री.–एक स्थान पर एकत्र होना, इकट्ठा होना; दो ग्रहों का एक राशि में एकत्र होना।

मुक़ारबत (مقاربت) अ. स्त्री.–क़रीब होना, समीप होना; समीपता, नज़्दीक़ी।

मुक़ारिन (مقارن) अ. वि.–एकत्र, इकट्ठा, एक जगह।

मुक़ारिब (مقارب) अ. वि.–समीप होनेवाला।

मुकालमः (مکالمہ) अ. पुं.–वार्तालाप, परस्पर बातचीत; संवाद, कथोपकथन, डायलाग।

मुकालमःनवीस (مکالمہ نویس) अ. फा. वि.–नाटक आदि में डायलाग लिखनेवाला, संवाद-लेखक।

मुकालमःनवीसी (مکالمہ نویسی) अ. फा. स्त्री.–संवाद लिखना।

मुक़ावमत (مقاومت) अ. स्त्री.–किसी के साथ बराबरी करना।

मुक़ावलः (مقاولہ) अ. पुं.–परस्पर कौल-करार, मुआहदः; ठेका।

मुकाशफ़ः (مکاشفہ) अ. पुं.–आत्मशक्ति द्वारा वह कुछ देखना, जो दूसरे नहीं देख सकते; खुले तौर पर शत्रुता करना; खुल्लमखुल्ला लड़ाई लड़ना।

मुकाशफ़ात (مکاشفات) अ. पुं.–'मुकाशफ़ः' का बहु., दिव्य दृष्टि के ज्ञान।

मुकाशहत (مکاشحت) अ. स्त्री.–विरोध, वैर, शत्रुता।

मुक़ासमत (مقاسمت) अ. स्त्री.–परस्पर बँटवारा करना, आपस में बाँटना।

मुक़ासात (مقاسات) अ. स्त्री.–दुःख उठाना, कष्ट झेलना।

मुकिब [ब्ब] (مکب) अ. वि.–मुँह के बल औंधा गिरने अथवा गिरानेवाला।

मुक़िर [र्र] (مقر) अ. वि.–इक़्रार करनेवाला, वचन देनेवाला, वादा करनेवाला।

मुक़िल [ल्ल] (مقل) अ. वि.–भिक्षुक, मँगता; कम करनेवाला।

मुक़ी (مقی) अ. वि.–वह ओषधि जिसके खाने से क़ै हो, वमि।

मुक़ीत (مقیت) अ. वि.–अन्नदाता, रोज़ी देनेवाला; बलवान्, ताक़तवर; रक्षक, रखवाला; साक्षी, गवाह, साखी; उपस्थित, हाज़िर।

मुकीद (مکید) अ. वि.–छली, वंचक, फ़रेबी।

मुक़ीम (مقیم) अ. वि.–थोड़े दिनों के लिए कहीं ठहरा हुआ; निवासी, रहनेवाला।

मुक़ैयद (مقید) अ. वि.–बंदी, क़ैदी।

मुक़ैयश (مقیش) अ.पुं.–दे. 'मुक़्क़ैश'।

मुकौकब (مکوکب) अ. वि.–वह चीज़ जिस पर सितारे जड़े हों; वह चीज़ जिस पर सुनह्ले या रुपहले चाँद-तारे बने हों; जिसमें सोने-चाँदी की सलाख़े गड़ी हों।

मुक़्क़ैश (مقیش) फा. पुं.–चाँदी-सोने के चौड़े तार; इन तारों का बना हुआ कपड़ा।

मुक़्क़ैशी (مقیشی) फा. वि.–बादले का; ज़री का; सोने-चाँदी के तारों का।

मुक़्तज़ब (مقتضب) अ. वि.–काटा हुआ; दे. 'बह्रे मुक़्तज़ब'।

मुक़्तज़ा (مقتضا) अ. वि.–तक़ाज़ा, माँग, इच्छा।

मुक़्तज़ाए उम्र (مقتضاے عمر) अ. वि.–आयु की माँग, उम्र का तक़ाज़ा।

मुक़्तज़ाए फ़ित्रत (مقتضاے فطرت) अ. वि.–स्वभाव का तक़ाज़ा।

मुक़्तज़ाए वक़्त (مقتضاے وقت) अ. वि.–समय की माँग, समय का आदेश।

मुक़्तज़ाए शराफ़त (مقتضاے شرافت) अ. वि.–सज्जनता का तक़ाज़ा।

मुक़्तज़ाए सिन (مقتضاے سن) अ. वि.–दे. 'तक़ाज़ाए उम्र'।

मुक़्तज़िब (مقتضب) अ. पुं.–काटनेवाला।

मुक़्तज़ी (مقتضی) अ. वि.–माँग करनेवाला, तक़ाज़ा करनेवाला, ख़्वाहाँ, इच्छुक।

मुक्ततम (مکتتم) अ. वि.–गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा।

मुक़्तदर (مقتدر) अ. वि.–अधीन, वशीभूत।

मुक़्तदा (مقتدا) अ. वि.–जिसका सब लोग अनुकरण करें; अग्रसर, नेता; पूज्य, श्रेष्ठ।

मुक़्तदाए क़ौम (مقتداے قوم) अ.पुं.–राष्ट्र का नेता, क़ौम का रहनुमा।

मुक़्तदिर (مقتدر) अ. वि.–सत्तावान्, इक़्तिदारवाला।

मुक़्तदी (مقتدی) अ. वि.–जो अनुकरण करे, अनुयायी, अनुकर्ता।

मुक्तनिफ़ (مکتنف) अ. वि.–एकांतवासी, निवृत्त; रक्षा का स्थान ढूँढ़नेवाला।

मुक़्तनिस (مقتنص) अ. वि.–शिकार करनेवाला; बंदी बनानेवाला; कमानेवाला।

मुक़्तफ़ी (مکتفی) अ. वि.–पर्याप्त, काफ़ी, पूरा।

मुक़्तफ़ी (مقتفی) अ. वि.–पीछे से आनेवाला।

मुक़्तर [**र्**](مقتر)अ. वि.–दरिद्र, कंगाल; भिक्षुक, फ़क़ीर।

मुक्तसब (مکتسب) अ. वि.–कमाया हुआ, उपार्जित।

मुक्तसिब (مکتسب) अ. वि.–कमानेवाला, उपार्जन करनेवाला।

मुक़्तसिर (مقتصر) अ. वि.–कम करनेवाला।

मुक्तसी (مکتسی) अ. वि.–कंबल ओढ़नेवाला; कंबल बग़ल में रखनेवाला; कपड़े पहननेवाला।

मुक़्तहिम (مقتحم) अ. वि.–अत्याचारी, ज़ालिम; विजेता, ग़ालिब; धारण करनेवाला।

मुक्नत (مکنت) अ. स्त्री.–शक्ति, ताक़त; धनाढ्यता, मालदारी; सामर्थ्य, क़ुद्रत।

मुक़्बिल (مقبل) अ. वि.–स्वीकार करनेवाला; किसी की ओर मुँह करनेवाला; भाग्यशाली; समृद्ध।

मुक्फ़ी (مکفی) अ. वि.–काफ़ी, पर्याप्त।

मुक़्री (مقری) अ. वि.–पढ़ानेवाला, अध्यापक।

मुक़्लः (مقلہ) अ. पुं.–आँख का ढ़ेला गोलक।

मुक़्ल (مقل) अ. स्त्री.–गूगल, एक प्रसिद्ध गोंद।

मुख़ [**ख़्ख़**] (مخ) अ.पुं.–मज्जा, हड्डी का गूदा; मस्तिष्क, भेजा; सार, तत्त्व, ख़ुलासा।

मुख़ज़्ज़ब (مخضب) अ. वि.–जिसने खिज़ाब किया हो।

मुख़त्तत (مخطط) अ. वि.–धारीदार, जिस पर धारियाँ हों; वह चेहरा जिस पर दाढ़ी के बाल निकल आये हों।

मुख़द्दरः (مخدرہ) अ. वि.–पर्दे में रहनेवाली स्त्री।

मुख़द्दर (مخدر) अ. वि.–जो सुन्न हो गया हो।

मुख़द्दरात(مخدرات) अ. स्त्री.–पर्दे में रहनेवाली महिलाएँ; बड़े घर की पर्दा नशीन औरतें।

मुख़द्दिर (مخدر) अ. वि.–सुन्न कर देनेवाली दवा।

मुख़न्नस (مخنث)अ. पुं.–जो न मर्द हो न स्त्री; नरदारा, नपुंसक, हीजड़ा।

मुख़फ़्फ़फ़ (مخفف) अ. वि.–जिसमें तख़्फ़ीफ़ अर्थात् कमी हुई हो; वह शब्द जिसमें कुछ अक्षर कम कर दिये गये हों, जैसे—'माह' का 'मह'।

मुख़म्मर (مخمر) अ. वि.–जिसका ख़मीर उठाया गया हो, ख़मीर उठा हुआ।

मुख़म्मस (مخمس) अ. पुं.–वह नज़्म जिसमें हर बंद में पाँच-पाँच मिस्रे हों।

मुख़य्यलः (مخیلہ) अ. पुं.–सोचा हुआ, विचारा हुआ; कल्पना किया हुआ, कल्पित; मस्तिष्क, दिमाग़।

मुख़य्यिर (مخیّر) अ. वि.–मुक्तहस्त, वदान्य, दानशील, सख़ी, फ़ैयाज़।

मुख़य्यिलः (مخیلہ) अ. स्त्री.–विचार-शक्ति, ख़याल की कुव्वत; कल्पना-शक्ति, क़ुव्वते मुतख़ैयिलः।

मुख़र्रब (مخرب) अ. वि.–ध्वस्त, नष्ट, बरबाद।

मुख़र्रिब (مخرب) अ. वि.–ध्वस्तकारी, बरबाद करनेवाला।

मुख़र्रिबे अख़लाक़ (مخرب اخلاق) अ. वि.–अख़्लाक़ और आचरण को ख़राब करनेवाला।

मुख़र्रिबे आ'माल (مخرب اعمال) अ. वि.–आचरण को दूषित करनेवाला, बुरा काम।

मुख़लख़ल (مخلخل) अ. वि.–वह चीज़ जिसके टुकड़े परस्पर मिले और जुड़े हुए न हों, जिनके बीच में कुछ अंतर हो।

मुख़ल्लद (مخلد) अ. वि.–नित्य, हमेशा; नश्वर, दवामी।

मुख़ल्ला' (مخلع) अ. वि.–जिसे ख़िलअत दी गयी हो।

मुख़ल्ला (مخلی) अ. वि.–रिक्त किया हुआ, ख़ाली किया हुआ; स्वच्छंद छोड़ा हुआ, स्वतंत्र।

मुख़ल्लाबित्तब्अ (مخلی بالطبع) अ. वि.–जिसे उसके मन पर स्वच्छंद छोड़ दिया जाय, बेतकल्लुफ़।

मुख़व्वफ़ (مخوف) अ. वि.–भयभीत, डरा हुआ; डराया हुआ।

मुख़व्विफ़ (مخوف) अ. वि.–डरानेवाला, त्रासक।

मुख़स्सस (مخصص) अ. वि.–मख़्सूस, जिसके साथ कोई ख़ुसूसियत बरती गयी हो, प्रधान।

मुख़ात (مخاط) अ. स्त्री.–नासा-स्राव, नाक।

मुख़ातबः (مخاطبہ) अ. पुं.–सम्बोधन, किसी की ओर मुँह करके उससे बात करना।

मुख़ातब (مخاطب) अ.वि.–सम्बोधित, जिससे बात की जाय।

मुख़ातबात (مخاطبات) अ. पुं.–'मुख़ातबः' का बहु.; परस्पर बात-चीत; पत्रव्यवहार, ख़तोकिताबत।

मुख़ातरः (مخاطرہ) अ. पुं.–भय, शंका, ख़त्रा।

मुख़ातिब (مخاطب) अ. वि.–सम्बोधन कर्ता, बोलनेवाला, बात करनेवाला।

मुख़ादअत (مخادعت) अ. स्त्री.–छल, मक्र, धोखा।

मुख़ादे' (مخادع) अ. वि.–छली, वंचक, फ़रेबी।

मुख़ाफ़तत (مخافتت) अ. स्त्री.–धीरे-धीरे पढ़ना।

मुख़ाती (مخاطی) अ. वि.–अपराध करनेवाला, ख़ताकार; बिगड़ा हुआ बलग़म जो नाक के रेंट के समान हो जाता है।

मुख़ादआत (مخادعات) अ. पुं.–'मुख़ादअत' का बहु., छल, धोखे, फ़रेब।

मुख़ालतत (مخالطت) अ. स्त्री.–घनिष्ठता, बहुत अधिक मेल-जोल, प्रेम-व्यवहार।

मुख़ालफ़त (مخالفت) अ. स्त्री.–विरोध, इख़्तिलाफ़; शत्रुता, दुश्मनी; हठ, ज़िद; वैमनस्य, कशीदग़ी।

मुख़ालिफ़ (مخالف) अ. वि.–विरोधी, प्रतिकूल, मुख़ालफ़त करनेवाला; शत्रु, दुश्मन।

मुख़ालिफ़ीन (مخالفین) अ. पुं.–'मुख़ालिफ़' का बहु., विरोध करनेवाले, विरोधी गण; शत्रुगण, दुश्मन लोग।

मुख़ासमत (مخاصمت) अ. स्त्री.–परस्पर झगड़ा करना; शत्रुता, दुश्मनी; परस्पर द्वेष रखना; द्वेष, कीना।

मुख़ासिम (مخاصم) अ. वि.–शत्रु, दुश्मन; द्वेषी, बुग़्ज़ रखनेवाला।

मुख़ासिमीन (مخاصمین) अ. पुं.–'मुख़ासिम' का बहु., शत्रुओं का दल।

मुख़िल (مخل) अ. वि.–बाधक, ख़लल डालनेवाला; हस्तक्षेपी, मुज़ाहिम।

मुख़्ततम (مختتم) अ. वि.–समाप्त, ख़त्म; आख़िरी तौर पर ख़त्म, निर्णीत।

मुख़्तफ़ी (مختفی) अ. वि.–गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा।

मुख़्तम [म्म] (مختم) अ. वि.–मुहलगा हुआ, मुह्रबंद; क़ुफ़ुल लगा हुआ, क़ुफ़ुल बंद।

मुख़्तरआत (مخترعات) अ. पुं.–'मुख़्तरा' का बहु., आविष्कृत वस्तुएँ।

मुख़्तरा' (مخترع) अ. पुं.–आविष्कृत, ईजाद की हुई चीज़।

मुख़्तरे' (مخترع) अ. वि.–आविष्कारक, मूजिद; कोई नयी उपज करनेवाला, नयी बात निकालनेवाला।

मुख़्तल [ल्ल] (مختل) वि.–दूषित, विकृत, बिगड़ा हुआ; अस्त-व्यस्त, गड़बड़।

मुख़्तलत (مختلط) अ. वि.–जिसके साथ प्रेम-व्यवहार हो; मिलाजुला, गडमड।

मुख़्तलफ़ (مختلف) अ. वि.–जिससे विरोध हो।

मुख़्तलफ़फ़ीह (مختلف فیہ) अ. वि.–जिस विषय में मतभेद हो, विवादग्रस्त।

मुख़्तलित (مختلط) अ. वि.–मेल-जोल रखनेवाला।

मुख़्तलिफ़ (مختلف) अ. वि.–विभिन्न, दूसरे प्रकार का; अन्य, दूसरा; पृथक्, अलग।

मुख़्तलिफ़ मिज़ाज (مختلف مزاج) अ. वि.–दे. 'मुख़्तलिफ़ुलमिज़ाज'।

मुख़्तलिफ़ुत्तबाए' (مختلف الطبائع) अ. वि.–विभिन्न प्रकृतियोंवाले; विभिन्न स्वभावोंवाले।

मुख़्तलिफ़त्तमद्दुन (مختلف التمدن) अ. वि.–जिनकी संस्कृतियाँ भिन्न-भिन्न हों, जिनका रहन-सहन एक-जैसा न हो।

मुख़्तलिफ़ुत्तहज़ीब (مختلف التہذیب) अ. वि.–जिनकी सभ्यताएँ अलग-अलग हों।

मुख़्तलिफ़ुन्नस्ल (مختلف النسل) अ. वि.–भिन्न-भिन्न नस्लों के, भिन्न-भिन्न जातियों के।

मुख़्तलिफ़ुन्नौअ (مختلف النوع) अ. वि.–जिनके प्रकार अलग-अलग हों, जो एक-जैसे न हों।

मुख़्तलिफ़ुलअक़ाइद (مختلف العقائد) अ. वि.–जिनके मत और विचार जुदा-जुदा हों; जिनके धर्म विचार एक न हों।

मुख़्तलिफ़ुलअश्काल (مختلف الاشکال) अ. वि.–जिनकी आकृतियाँ विभिन्न हों।

मुख़्तलिफ़ुलमिज़ाज (مختلف المزاج) अ. वि.–जिनके स्वभाव एक-दूसरे से अलग हों।

मुख़्तल्लुलहवास (مختل الحواس) अ. वि.–जिसका मस्तिष्क दूषित हो, विक्षिप्त; पागल, ख़ब्तुल्हवास।

मुख़्तस [स्स] (مختص) अ. वि.–ख़ास, मख़्सूस, विशेष।

मुख़्तसर (مختصر) अ. वि.–संक्षिप्त, सार रूप, ख़ुलासा; न्यून, थोड़ा।

मुख़्तसरन (مختصراً) अ. वि.–संक्षिप्त रूप में, संक्षेपतः।

मुख़्तसरनवीस (مختصر نویس) अ. फा. वि.–संक्षिप्त लिपिक, संकेत लिपिक।

मुख़्तसरनवीसी (مختصر نویسی) अ. फा. स्त्री.–संक्षिप्त लिपि, संकेत लिपि, शार्टहैंड।

मुख़्तस्सुलमक़ाम (مختص المقام) अ. वि.–किसी विशेष स्थान पर आसीन, प्रतिष्ठित, पूज्य।

मुख़्तार (مختار) अ. वि.–स्वतंत्र, आज़ाद; स्वच्छंद, ख़ुदराय; अधिकर्ता, एजेंट; कलक्ट्री में वकील से कम दर्जे का वकील; किसी जागीर आदि का व्यवस्थापक।

मुख़्तारनामः (مختار نامہ) अ. फा. पुं.–वह पत्र जिसमें किसी को मुख़्तार बनाने का लिखित प्रमाण हो।

मुख़्तारी (مختاری) अ. स्त्री.–कलक्ट्री और तहसील में वकालत का काम, जो वकील के दर्जे से कम होता है।

मुख़्तारे आम (مختار عام) अ. पुं.–वह मुख़्तार जिसे किसी रियासत में सारे अधिकार प्राप्त हों।

मुख़्तारे कार (مختار کار) अ. फा. वि.–काम करने का अधिकारी, कर्मचारी, कारिंदा।

मुख़्तारे कुल (مختار کل) अ. पुं.–दे. 'मुख़्तारे आम'।

मुख़्तारे ख़ास (مختار خاص) अ. पुं.–वह मुख़्तार जिसे केवल किसी विशेष काम के लिए रखा गया हो।

मुख़्तारे मुत्लक़ (مختار مطلق) अ. पुं.–दे. 'मुख़्तारे आम'।

मुख़्ताल (مختال) अ. वि.–अभिमानी, अहंकारी, घमंडी।

मुख़्ती (مخطی) अ. वि.–अपराधी, दोषी, क़ुसूरवार।

मुख़्नक़ (مخنق) अ. वि.–जिसका गला घोंटा गया हो, गला घोंटकर मारा हुआ।

मुख़्बिर (مخبر) अ. पुं.–किसी विशेष बात की ख़बर देनेवाला; गुप्तचर, जासूस।

मुख़्बिरी (مخبری) अ. स्त्री.–जासूसी, गुप्त चर्या, सूचीकर्म।

मुख़्बिरे सादिक़ (مخبر صادق) अ. पुं.–सच्ची ख़बर देनेवाला; रसूल की उपाधि।

मुख़्रिज (مخرج) अ. वि.–निकालनेवाला, निष्कासक।

मुख़्लिस (مخلص) अ. वि.–जिसमें कोई बनावट न हो, निश्छल, सद्भावक।

मुख़्लिसानः (مخلصانہ) अ. फा. वि.–निश्छलतापूर्ण, सच्चाई के साथ।

मुख़्लिसी (مخلصی) अ. स्त्री.–निश्छलता, इख़्लास, छुटकारा और मुक्ति के अर्थ में यह शब्द बोलना अशुद्ध है, वह 'मख़्लसी' है, दे. 'मख़्लसी'।

मुग़ (مغ) फा. पुं.–अग्नि-पूजक, आतशपरस्त; शराब पिलानेवाला, साक़ी।

मुग़न्नियः (مغنیہ) अ. स्त्री.–गानेवाली, गायिका, गायकी।

मुग़न्नी (مغنی) अ. पुं.–गानेवाला, रागी, गायक।

मुग़बचः (مغبچہ) फा. पुं.–उर्दू साहित्य में साक़ी का वह सुंदर लड़का जो शराब पिलाता है।

मुग़य्यर (مغیر) अ. वि.–परिवर्तित, बदला हुआ।

मुग़य्यिर (مغیر) अ. वि.–परिवर्तन कर्ता, बदलनेवाला।

मुग़र्रा (مغرا) अ. वि.–जो अचंभे में पड़ गया हो, चकित, निस्तब्ध; जो सरेस से चिपकाया गया हो।

मुग़ल (مغل) तु. पुं.–तुर्किस्तान का निवासी, तुर्क, इसका शुद्ध उच्चारण 'मुग़ुल' है, परंतु उर्दू में यही है।

मुग़लज़ादः (مغل زادہ) तु. फा. पुं.–तुर्क का लड़का; तुर्की, मुग़ुल।

मुग़ल्लज़ (مغلظ) अ. वि.–गाढ़ा, ग़लीज़; गंदी गाली।

मुग़ल्लज़ात (مغلظات) अ. स्त्री.–गंदी गालियाँ।

मुग़ल्लिज़ (مغلظ) अ. वि.–गाढ़ा करनेवाला, धातु को गाढ़ा करनेवाली दवा।

मुग़ल्लिज़ात (مغلظات) अ. स्त्री.–वे दवाएँ जो धातु को गाढ़ा करती हैं।

मुग़ल्लिज़े मनी (مغلظ منی) अ. पुं.–वीर्य को गाढ़ा करनेवाली ओषधि।

मुग़ल्लिज़े माद्दः (مغلظ مادہ) अ. पुं.–दे. 'मुग़ल्लिज़े मनी'।

मुग़ां (مغاں) फा. पुं.–अग़्निपूजक, आतशपरस्त; शराब पिलानेवाला, साक़ी।

मुग़ाइर (مغائر) अ. वि.–प्रतिकूल, मुख़ालिफ; बेगाना, अनजान।

मुग़ादरत (مغادرت) अ. स्त्री.– एक-दूसरे के साथ बेवफ़ाई और क्रूरता का व्यवहार करना; क्रूरता, बेवफ़ाई।

मुग़ादिर (مغادر) अ. वि.–क्रूरता और बेवफ़ाई करनेवाला।

मुग़ानः (مغانہ) फा. वि.–आतशपरस्तों-जैसा; मा'शूक़ों-जैसा।

मुग़ायरत (مغایرت) अ. स्त्री.–बेगानापन, अनजानपन, ग़रियत; प्रतिकूलता, नामुआफ़क़त।

मुग़ालतः (مغالطہ) अ. पुं.–धोखा, छल, फ़रेब; भ्रम, वह्म; त्रुटि, भूल; संदेह, शुब्हा।

मुग़ालतःदिही (مغالطہ دہی) अ. फा. स्त्री.–धोखा देना, वंचना, ठगी।

मुग़ील (مغیل) अ. पुं.–दे. 'मुग़ीलां'।

मुग़ीलाँ (مغیلاں) अ. पुं.–बबूल का पेड़, कीकर।

मुग़ीस (مغیث) अ. वि.–फ़र्याद सुननेवाला, दुहाई सुननेवाला, न्यायकर्ता।

मुग़ुल (مغل) तु. पुं.–तुर्क, तुर्किस्तान का निवासी, मुग़ल, उर्दू में 'मुग़ल' बोलते हैं।

मुग़ैर (مغیر) अ. वि.–लूटनेवाला, ग़ारत करनेवाला, दस्यु, डाकू।

मुग़्तज़ी (مغتذی) अ. वि.–ख़ुराक पानेवाला।

मुग़तनमः (مغتنمہ) अ. स्त्री–ग़नीमत, स्त्री वाचक शब्दों के लिए।

मुग़्तनम (مغتنم) अ. वि.–ग़नीमत, जो सब में से अच्छा हो, यद्यपि बहुत अच्छा न हो, परंतु बोलने में बहुत अच्छा के स्थान पर ही बोलते हैं।

मुग़्तनमात (مغتنمات) अ. वि.–वे लोग जो बचे हुए लोगों में से ग़नीमत हों।

मुग़नी (مغنی) अ. वि.–समृद्धि और संपन्नता देनेवाला; ईश्वर का एक नाम।

मुग़्बर (र्) (مغبر) अ. वि.–मटमैला, खाकी रंग का धुमैला।

मुग़्लक़ (مغلق) अ. वि.–वह घर जिसके दरवाज़े बंद हों; वह कलाम जिसका समझना मुश्किल हो, गूढ़, कूट।

मुग़्लिम (مغلم) अ. वि.–गुदामैथुनिक, बच्चःबाज़।

मुग़्वियः (مغویہ) अ. स्त्री.–कुमार्ग पर ले जानेवाली, भड़कानवाली, इग़्वा करनवाली।

मुग़्वियानः (مغویانہ) अ. वि.–इग़्वा करनवालों-जैसा।

मुग़्वी (مغوی) अ. वि.–इग़्वा करनेवाला, बहकानेवाला।

मुग़्सिल (مغسل) अ. वि.–नहलानेवाला, स्नान करानेवाला।

मुचल्का (مچلکا) तु. पुं.–वह प्रतिज्ञापत्र जो अपराधी की ओर से इस बात के लिए हो कि यदि वह फिर अपराध करेगा तो इतने रुपये देगा।

मुजअ्अद (مجعد) अ. पुं.–चोटी बाँध हुए, गुंधे हुए बाल।

मुज़क्कर (مذکر) अ. वि.–नर, पुरुष प्राणी; पुँल्लिग, मेल।

मुज़क्का (مذکی) अ. वि.–वह माल जिसकी ज़कात निकल गयी हो; पवित्र, पाक, शुद्ध।

मुज़ख़्रफ़ (مزخرف) अ.पुं.–वह झूठी बात जो सच जान पड़े, बनावट की बात; बकवाद, अनर्थक गल्प।

मुज़ख़्रफ़ात (مزخرفات) अ.प्रत्य.–'मुज़ख़्रफ़' का बहु.; झूठी बातें; बकवास।

मुजज़्ज़ा (مجزا) अ. वि.–जुज़-जुज़ किया हुआ, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ।

मुजद्दिद (مجدد) अ.पुं.–पुरानी चीज़ को नये सिरे से बनानेवाला, सुधार करनेवाला, सुधारक, रिफ़ार्मर; वह व्यक्ति जो इस्लाम धर्म में सुधार करे।

मुजद्दिदन (مجدداً) अ. वि.–नये सिरे से, फिर से।

मुजफ़्फ़फ़ (مجفف) अ. वि.–सुखाया हुआ, ख़ुश्क किया हुआ।

मुज़फ़्फ़र (مظفر) अ. वि.–विजेता, विजित, जीता हुआ।

मुजफ़्फ़िफ़ (مجفف) अ. वि.–सुखानेवाला, ख़ुश्क करनेवाला।

मुज़ब्ज़ब (مذبذب) अ.वि.–दुविधा में पड़ा हुआ, डाँवाडोल, अनिर्धारित।

मुज़म्मः (مزمہ) अ. पुं.–वह रस्सी जो घोड़े की पिछाड़ी के साथ बाँधते हैं; डाँट-डपट, गोशमाली।

मुज़य्यन (مزین) अ. वि.–सुसज्जित, श्रृंगारित, आरास्ता।

मुज़य्यब (مزیب) फा. वि.–सुन्दर, शोभित, शुभ दर्शन, ज़ेबा।

मुज़य्यिन (مزین) अ. वि.–सजानेवाला, आरास्ता करनेवाला।

मुजर्रद (مجرد) अ. वि.–एकाकी, अकेला; अविवाहित, ग़ैर शादीशुदा; वह फ़क़ीर जो विवाह न करे; वह वस्तु जिसका सम्बन्ध पंच भूत से न हो।

मुजर्रब (مجرب) अ. वि.–वह बात जो आज़मायी जा चुकी हो, अनुभूत, परीक्षित; वह दवा जो परीक्षित हो।

मुजर्रबात (مجربات) अ. पुं.–आज़माई हुई दवाएँ या नुस्खे, अनुभूत योग।

मुजल्लद (مجلد) अ. वि.–जिल्द बँधी हुई पुस्तक, सजिल्द।

मुज़ल्लफ़ (مزلف) फा. वि.–ज़ुल्फ़ोंवाला, जुल्फ़ें बिखेरे हुए।

मुजल्ला (مجلی) अ. वि.–प्रकाशमान, दीप्त, ज्योतिर्मय, रौशन; जिसे माँजकर या सैक़ल करके चमकाया गया हो।

मुजल्ली (مجلی) अ. वि.–रौशन करनेवाला, प्रकाशक।

मुजव्वज़ः (مجوزہ) अ. वि.–निश्चित, तै किया हुआ, निर्णीत।

मुजव्वज़ (مجوز) अ. वि.–दे. 'मुजव्वज़ः'।

मुजव्वफ़ (مجوف) अ. वि.–अन्दर से ख़ाली, खोखला, सुषिर।

मुजव्विज़ (مجوز) अ. वि.–तज़्वीज़ करनेवाला, निर्णय करनेवाला, निर्णेता।

मुजव्विज़ीन (مجوزین) अ. पुं.–निर्णय करनेवालों की मंडली, निर्णायक-मंडल।

मुजव्विज़े कानून (مجوز قانون) अ. पुं.–क़ानून बनानेवाला, विधायक।

मुजस्समः (مجسمہ) अ. पुं.–प्रतिमा, मूर्ति, स्टेचू; रूप, आकृति, शक्ल।

मुजस्सम (مجسم) अ. वि.–साकार, मूर्तिमान्, साक्षात्, (शरीर के साथ)।

मुज़ह्हब (مذہب) अ. वि.–सोने का काम किया हुआ, सोना मढ़ा हुआ, सोने का पानी चढ़ा हुआ।

मुज़ाअफ़ (مضاعف) अ. विं.–दूना, दोचंद, द्विगुण।

मुज़ाकरः (مذاکرہ) अ. पुं.–आपस की बातचीत, वार्तालाप; चर्चा, ज़िक्र।

मुज़ाकरात (مذاکرات) अ. पुं.–'मुज़ाकरः' का बहु., आपस की बातचीत।

मुजाज़ (مجاز) अ. वि.–जिसे इजाज़त प्राप्त हो, जो कोई काम करने का अधिकारी हो, प्राधिकारी, अथार्टी।

मुजादलः (مجادلہ) अ. पुं.–युद्ध, लड़ाई; वाद-विवाद, मुबाहसा।

मुजादिल (مجادل) अ. वि.–युद्ध करनेवाला, लड़नेवाला।

मुजानसत (مجانست) अ. स्त्री.–एक जिंस का होना, जैसे—आदमी होना या पशु होना।

मुजानिस (مجانس) अ. वि.–हमजिंस, हमक़ौम।

मुज़ाफ़ (مضاف) अ. वि.–जोड़ा गया, मिलाया गया; निस्बत किया गया।

मुज़ाफ़ इलैह (مضاف الیہ) अ. पुं.–जिससे जोड़ा या मिलाया गया; जिसकी ओर निस्बत की जाय, जैसे–रमेश का घोड़ा, इसमें घोड़े की निस्बत रमेश की ओर है, इसलिए रमेश 'मुज़ाफ़ इलैह' है, और घोड़ा 'मुज़ाफ़' है।

मुज़ा'फ़र (مزعفر) अ. पुं.–एक प्रकार का मीठा पुलाव जिसमें केसर पड़ता है।

मुज़ाफ़ात (مضافات) अ. पुं.–'मुज़ाफ़' का बहु., निस्बतें; नगर आदि का आस-पास का इलाक़ा।

मुज़ाफ़ाते शह्र (مضافات شہر) अ. पुं.–नगर के आस-पास का इलाक़ा।

मुज़ाब (مذاب) अ. वि.–पिघला हुआ।

मुजाब (مجاب) अ. वि.–जवाब दिया हुआ, उत्तरित।

मुजामअत (مجامعت) अ. स्त्री.–संभोग, सहवास, मैथुन, रति, हमबिस्तरी।

मुजामे (مجامع) अ. वि.–मैथुन करनेवाला, रति-क्रीडक।

मुज़ायक़ः (مضایقہ) अ. पुं.–आपत्ति, क़बाहत; हानि, हरज; समय की तंगी।

मुज़ारबत (مضاربت) अ. स्त्री.–किसी को व्यवसाय के लिए इस शर्त पर माल देना कि लाभ में साझा रहेगा।

मुज़ारे' (مضارع) अ. वि.–सदृश, मिस्ल; साझी, शरीक; वह क्रिया जिसमें वर्तमान और भविष्य दोनों काल पाये जायें।

मुज़ारे' (مزارع) अ. वि.–कृषक, किसान, काश्तकार।

मुजालसत (مجالست) अ. स्त्री.–परस्पर एक जगह बैठना, साथ-साथ बैठना।

मुज़ावजत (مزاوجت) अ. स्त्री.–विवाह, निकाह, ब्याह।

मुजावरत (مجاورت) अ. स्त्री.–पड़ोस, प्रतिवास, हमसायगी।

मुज़ावलत (مزاولت) अ. स्त्री.–किसी काम को बराबर करना, मश्क़, अभ्यास।

मुजाविर (مجاور) अ. वि.–प्रतिवेशी, पड़ोसी; किसी दरगाह आदि का ख़िदमती।

मुज़ाविरी (مجاوری) अ. वि.–मुजाविर का पेशा, दरगाह आदि की सेवा।

मुज़ाहकः (مضاحکہ) अ. वि.–आपस में हँसी-दिल्लगी करना।

मुजाहदः (مجاہدہ) अ. पुं.–तपस्या, इबादत; इंद्रिय-निग्रह, नफ़्सकुशी; पराक्रम, जाँफ़िशानी।

मुज़ाहमत (مزاحمت) अ. स्त्री.–हस्तक्षेप, दख़्लअंदाज़ी; रोक-टोक, मनाही।

मुज़ाहरः (مظاہرہ) अ. पुं.–राज से किसी माँग के लिए लोगों का सामूहिक रूप में नारे आदि लगाना और जुलूस निकालना, प्रदर्शन करना।

मुजाहिद (مجاہد) अ. वि.–पराक्रमी, प्रयत्नशील, कोशिश करनेवाला; विधर्मियों से युद्ध करनवाला।

मुजाहिदानः (مجاہدانہ) अ. वि.–मुजाहिदों की तरह।

मुजाहिदीन (مجاہدین) अ.पुं.–'मुजाहिद' का बहु., विधर्मियों से लड़नेवाले योद्धा।

मुज़ाहिम (مزاحم) अ. वि.–मुज़ाहमत करनेवाला, हस्तक्षेप करनेवाला, रोक-टोक करनेवाला।

मुज़िर [र्र] (مضر) अ. वि.–हानिकर, नुक़्सानदेह।

मुज़िर्रे सेहत (مضر صحت) अ. पुं.–स्वास्थ्य के लिए हानिकारक, अनारोग्य, अपथ्य।

मुज़िल [ल्ल] (مضل) अ. वि.–गुमराह करनेवाला।

मुज़ीअ (مضیع) अ. वि.–नष्ट करनेवाला, बरबाद करनेवाला, विनाशक।

मुजीब (مجیب) अ. वि.–जवाब देनेवाला, उत्तरदाता; स्वीकार करनेवाला।

मुज़ीब (مزیب) अ. वि.–पिघलानेवाला।

मुजीबुद्दा'वात (مجیب الدعوات) अ. पुं.–दुआएँ स्वीकार करनेवाला, ईश्वर।

मुज़ील (مزیل) अ. वि.–ज़ाइल करनेवाला, निवारक, नष्टकर्त्ता।

मुज़ैयन (مزین) अ. वि.–सुसज्जित, शृंगारित, आरास्ता।

मुज़्इफ़ (مضعف) अ. वि.–कमज़ोर करनेवाला, शक्तिहीन करनेवाला।

मुज़्इफ़े बाह (مضعف باہ) अ. वि.–कामशक्ति को कम करनेवाली दवा या ग़िज़ा।

मुज़्ग़ः (مضغہ) अ. पुं.–लोथड़ा, मांसपिंड।

मुज़्ग़ाए गोश्त (مضغۂ گوشت) अ. फा. पुं.–मांसपिंड, गोश्त का लोथड़ा।

मुज़्ज़म्मिल (مزمل) अ. वि.–क़ुरान की एक सूरत।

मुज़्जात (مزجات) अ. पुं.–थोड़ा, अल्प, न्यून।

मुज्तबा (مجتبیٰ) अ. वि.–सम्मानित, प्रतिष्ठित, बुज़ुर्ग।

मुज्तमा' (مجتمع) अ. वि.–एकत्र, इकट्ठा, एक जगह।

मुज्तमे' (مجتمع) अ. वि.–एकत्र करनेवाला, इकट्ठा करनेवाला, इकट्ठा होनेवाला।

मुज़्तर [र्र] (مضطر) अ. वि.–व्याकुल, बेचैन; बेबस, लाचार।

मुज़्तरिब (مضطرب) अ. वि.–व्याकुल, आतुर, बेचैन; अधीर, बेसब्र; घबराया हुआ।

मुज़्तरिबानः (مضطربانہ) अ. फा. वि.–व्याकुलों-जैसा, व्याकुलतापूर्ण।

मुज़्तरिबुलहाल (مضطرب الحال) अ. वि.–घबराया हुआ, उद्विग्न, परेशान।

मुज्तस [स्स] (مجتث) अ. वि.–उन्मूलित, जड़ से उखाड़ा हुआ; दे. 'बह्रे मज्तस'।

मुज्तहिद (مجتہد) अ.पुं.–परिश्रमी, कोशिश करनेवाला; धार्मिक विषयों में विवेकपूर्ण निर्णय करनेवाला; शीआ सम्प्रदाय का आलिम।

मुज़्दः (مژدہ) फा. पुं.–शुभ सूचना, शुभ संवाद, ख़ुशख़बरी।

मुज़्दः बाद (مژدہ باد) फा. वा.–मुबारक हो, धन्यवाद।

मुज़्द (مزد) फा. स्त्री.–पारिश्रमिक, मज़दूरी, भृति।

मुज़्दगानी (مژدگانی) फा. स्त्री.–ख़ुशख़बरी लाने का पुरस्कार।

मुज़्दबर (مزدبر) फा. वि.–कर्मकार, श्रमिक, मज़दूर।

मुज़्दहम (مزدحم) अ. वि.–भीड़ के रूप में आया हुआ।

मुज़्दहिम (مزدحم) अ. वि.–भीड़ करनेवाला।

मुज़्दूर (مزدور) फा. पुं.–श्रमिक, कर्मकार, भृतिक, मजूर।

मुज़्दूरी (مزدوری) फा. वि.–भृति, पारिश्रमिक।

मुज़्निब (مزنب) अ. वि.–पापी, पातकी, गुनाहगार।

मुज़्बतः (مضبطہ) अ. पुं.–मेमोरियल, प्रार्थनापत्र।

मुज़्मर (مضمر) अ. वि.–गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा।

मुज्मल (مجمل) अ. वि.–संक्षिप्त, साररूप, मुख़्तसर।

मुज़्महिल (مضمحل) अ. वि.–क़्लांत, श्रान्त, शिथिल, अफ़्सुर्दः।

मुज्माअलैह (مجمع علیہ) अ. वि.–वह बात जिस पर सब सहमत हों, सर्वमान्य।

मुज़्मिन (مزمن) अ. वि.–देर का बसा हुआ, पुराना, बहुत दिनों का।

मुज़्मिर (مضمر) अ. वि.–छिपानेवाला, गोपक।

मुज्रा (مجرا) अ. पुं.–जारी किया हुआ, बहाया हुआ; छोटे व्यक्तियों का बड़े आदमियों को प्रणाम; मिन्हा, वज़ा'; रंडी का वह गाना जो बैठकर हो।

मुज्राई (مجرائی) अ. फा. वि.–मुज्रा करनेवाला, सलाम करनेवाला।

मुज्रिम (مجرم) अ. वि.–अपराधी, दोषी, क़ुसूरवार।

मुज्रिमानः (مجرمانہ) अ. फा. वि.–अपराधियों-जैसा, अपराधपूर्ण।

मुज्रिमे आदी (مجرم عادی) अ. पुं.–वह अपराधी जो अपराध करने का व्यसनी हो।

मुज़्लिक़ (مزلق) अ. वि.–फिस्लानेवाला।

मुज़्लिम (مظلم) अ. वि.–अँधियारा, तारीक, तमिस्र।

मुज़्हिक (مضحک) अ.वि.–हँसानेवाला, उपहासक।

मुज़्हिकात (مضحکات) अ. स्त्री.–हँसानेवाली चीज़ें, जिन्हें सुनकर हँसी आये।

मुज़्हिर (مظہر) अ. वि.–ज़ाहिर करनेवाला, प्रकट करनेवाला; कचहरी में इज़्हार देनेवाला; गवाह, साक्षी, साखी।

मुतंजन (متنجن) फा. पुं.–इक क़िस्म का मीठा पुलाव जिसमें खटाई भी डाली जाती है, मुतंजन-तुरंज (नीबू) मिश्रित मीठा पुलाव।

मुतअख़्ख़िर (متاخر) अ. वि.–पीछे आनेवाला, जो बाद में हुआ हो, पहले से बा'दवाला।

मुतअख़्ख़िरीन (متاخرین) अ. पुं.–बादवाले समय के लोग, पहलेवालों के बाद होनेवाले लोग।

मुतअज्जिब (متعجب) अ. वि.–आश्चर्य में पड़ा हुआ, आश्चर्यित, चकित।

मुतअज़्ज़िब (متعذب) अ.वि.–स्वादिष्ठ, मज़ेदार; रोचक, दिलचस्प।

मुतअज़्ज़िर (متعذر) अ. वि.–कठिन, दुष्कर, मुश्किल।

मुतअज़्ज़ी (متاذی) अ. वि.–कष्टग्रस्त, क्लेश पानेवाला।

मुतअद्दिद (متعدد) अ. वि.–बहुत, बहुत-से, अधिक; कतिपय, चंद, थोड़े।

मुतअद्दी (متعدی) अ. वि.–अपनी सीमा से आगे बढ़ जानेवाला; छूतदार बीमारी, संक्रामक रोग।

मुतअन्निद (متعند) अ. वि.–द्वेषी, शत्रु, वैरी, दुश्मन।

मुतअफ़्फ़िन (متعفن) अ. वि.–दुर्गंधयुक्त, बदबूदार, सड़ा हुआ।

मुतअब्बिद (متعبد) अ. वि.–आराधना करनेवाला; बनावटी आराधना करनेवाला।

मुतअम्मिल (متامل) अ. वि.–असमंजस में पड़ा हुआ, संकुचित।

मुतअर्रिज़ (متعرض) अ. वि.–घटित होनेवाला, पेश आनेवाला; अर्ज़ करनेवाला, माँगनेवाला, याचक।

मुतअल्लिक़ः (متعلقہ) अ. वि.–सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु, संपर्क रखनेवाली चीज़।

मुतअल्लिक़ (متعلق) अ. वि.–सम्बन्धित, संबद्ध, वाबस्ता; बारे में, विषय में, सम्बन्ध में; नौकर, मुलाज़िम।

मुतअल्लिक़ात (متعلقات) अ. पुं.–सम्बन्धित बातें, वे बातें जिनका किसी विषय से सम्बन्ध हो।

मुतअल्लिक़ीन (متعلقین) अ. पुं.–घरवाले, बाल-बच्चे।

मुतअल्लिमः (متعلمہ) अ. स्त्री.–पाठिका, पढ़नेवाली, छात्रा।

मुतअल्लिम (متعلم) अ. पुं.–पाठक, पढ़नेवाला, छात्र।

मुतअल्लिम (متالم) अ.वि.–पीड़ित, दुःखित, दर्द में मुब्तला।

मुतअव्विद (متعود) अ. वि.–व्यसनी, आदी, ख़ूगर।

मुतअस्सिफ़ (متاسف) अ. वि.–अफ़्सोस करनेवाला, पश्चात्तापी।

मुतअस्सिब (متعصب) अ.वि.–धर्म सम्बन्धी पक्षपात करनेवाला, तंगनज़र, लघुचेता; जातपात या प्रान्तीय पक्षपात करनेवाला।

मुतअस्सिर (متاثر) अ. वि.–प्रभावित, जिस पर किसी बात का असर हुआ हो।

मुतअस्सिर (متعسر) अ. वि.–कठिन, दुष्कर, मुश्किल।

मुतअह्हिद (متعہد) अ. वि.–प्रतिज्ञा करनेवाला; परिचारक, तीमारदार; ज़िम्मेदार, उत्तरदायी।

मुतअह्हिल (متاہل) अ. वि.–बाल-बच्चोंवाला; विवाहित, ब्याहा हुआ, बीबीवाला।

मुतआक़िद (متعاقد) अ. वि.–आपस में क़ौल-क़रार करनेवाला।

मुतआक़िदैन (متعاقدین) अ. पुं.–वे दो व्यक्ति जिनमें परस्पर कोई क़ौल-करार हुआ हो।

मुतआक़िब (متعاقب) अ. वि.–पीछे दौड़नेवाला, पीछा करनेवाला; पीछे से आनेवाला।

मुतआरिज़ (متعارض) अ. वि.–एक-दूसरे का विरोध करनेवाला; ऐसी बात जो दूसरे के विरुद्ध हो।

मुतआरिक (متعارک) अ.वि.–कान उमेठनेवाला; मिटानेवाला; कामना पूरी करनेवाला; सफल होनेवाला; युद्ध करनेवाला; छीला हुआ।

मुतआरिफ़ (متعارف) अ. वि.–परिचित, पहचाननेवाला; शनासा।

मुतआल (متعال) अ. वि.–ऊँचा होनेवाला; पूज्य, संमानित, प्रतिष्ठित।

मुतऐयिन (متعین) अ. वि.–निश्चित, मुक़र्रर; नियुक्त, तईनात।

मुतक़द्दिम (متقدم) अ. वि.–पहले होनेवाला, पहलेवाला।

मुतक़द्दिमीन (متقدمین) अ. पुं.–वे लोग जो पहले गुज़र चुके हैं, 'मुतअख़्ख़िरीन' का उलटा, पुराने लोग।

मुतकफ़्फ़िल (متکفل) अ. वि.–प्रतिभू, ज़ामिन; पालन-पोषण करनेवाला।

मुतकब्बिर (متکبر) अ. वि.–अहंकारी, अभिमानी, घमंडी, मग़्रूर।

मुतकल्लिफ़ (متکلف) अ. वि.–तकल्लुफ़ करनेवाला।

मुतकल्लिम (متکلم) अ. वि.–कलाम करनेवाला, वार्तालाप करनेवाला; इल्मेकलाम जाननेवाला, मीमांसक।

मुतकव्विन (متکون) अ. वि.–पैदा होनेवाला, रूप धारण करनेवाला।

मुतकल्लिमीन (متکلمین) अ. पुं.–मीमांसा जाननेवाले विद्वज्जन, मीमांसक।

मुतकस्सिर (متکسر) अ. वि.–टूटनेवाला, टूटा हुआ, भग्न, खंडित।

मुतक़ाज़ी (متقاضی) अ. वि.–तक़ाज़ा करनेवाला, माँग उपस्थित करनेवाला।

मुतक़ाबिल (متقابل) अ. वि.–आमने-सामने, प्रत्यक्ष, साक्षात्।

मुतक़ारिब (متقارب) अ. वि.–समीप होनेवाला; समीप, क़रीब; दे. 'बह्रे मुतक़ारिब'।

मुतकासिफ़ (متکاثف) अ. वि.–ठोस, दबीज; गाढ़ा, ग़लीज़।

मुतख़य्यलः (متخیلہ) अ. पुं.–सोचने का स्थान, मस्तिष्क, दिमाग़।

मुतख़य्यिल (متخیلہ) अ. वि.–विचार-शक्ति, सोचने की क़ुव्वत; कल्पना शक्ति, वाहिमा।

मुतख़लख़ल (متخلخل) अ. वि.–खोखला, पोला, सुषिर।

मुतख़ल्लिक़ (متخلق) अ. वि.–सुशील, सद्वृत्त, सदाचारी, ख़ुशख़ुल्क़।

मुतख़ल्लिल (متخلل) अ. वि.–विघ्न डालनेवाला।

मुतख़ल्लिस (متخلص) अ. वि.–तख़ल्लुस रखनेवाला तख़ल्लुसवाला।

मुतख़ासिम (متخاصم) अ. वि.–शत्रु, बैरी, दुश्मन।

मुतख़ासिमीन (متخاصمین) अ. पुं.–शत्रु गण, वैरी लोग, दुश्मन।

मुतग़ज़्ज़िल (متغزل) अ. वि.–केवल ग़ज़ल कहनेवाला शाइर; जो ग़ज़ल अधिक कहता हो और दूसरी चीज़ें बहुत कम।

मुतग़ज़्ज़िलीन (متغزلین) अ. पुं.–ग़ज़ल कहनेवाले शाइर।

मुतग़य्यिर (متغیر) अ. वि.–परिवर्तित, बदला हुआ; विकृत, बिगड़ा हुआ।

मुतग़ाइर (متغائر) अ. वि.–पृथक् अलग, जुदा; एक-दूसरे के विरुद्ध, बरअक्स।

मुतग़ैयिर (متغیر) अ. वि.–दे. 'मुतग़य्यिर'।

मुतज़क्किरः (متذکرہ) अ. वि.–ज़िक्र किया हुआ, कथित, चर्चित, कहा हुआ।

मुतज़क्किरए बाला (متذکرۂ بالا) अ. फा. वि.–ऊपर कहा हुआ, पूर्वोक्त, पूर्वकथित।

मुतज़ब्ज़िब (متذبذب) अ. वि.–असमंजस में पड़ा हुआ, दुविधा में पड़ा हुआ, दोलायमान।

मुतज़म्मिन (متضمن) अ. वि.–सम्मिलित, शामिल।

मुतज़र्रर (متضرر) अ. वि.–जिसे हानि पहुँचायी गयी हो, हानिग्रस्त।

मुतज़र्रिर (متضرر) अ. वि.–हानि पहुँचानेवाला, हानिकारक।

मुतज़र्रे' (متضرع) अ. वि.–फूटनेवाला, निकलनेवाला; जड़ में से शाखा के रूप में निकलनेवाला।

मुतज़ल्ज़िल (متزلزل) अ. वि.–हिलने-डोलनेवाला, कंपायमान।

मुतजल्ली (متجلی) अ. वि.–चमकनेवाला, प्रकाशित होनेवाला, प्रकाशमान।

मुतजस्सिस (متجسس) अ. वि.–खोजी, जिज्ञासु, तलाश करनेवाला, गवेषक।

मुतज़ाद (متضاد) अ. वि.–एक-दूसरे के विरुद्ध कथन आदि, (व्यक्ति नहीं)।

मुतजाविज़ (متجاوز) अ. वि.–हद से बढ़ जानेवाला, उल्लंघन करनेवाला।

मुतदय्यिन (متدین) अ. वि.–दियानतदार, ईमानदार, अमानत में ख़ियानत न करनेवाला।

मुतदारिक (متدارک) अ. वि.–खोई हुई वस्तु पानेवाला; दे. 'बह्रे मतदारिक'।

मुतदाविल (متداول) अ. वि.–एक से दूसरे के पास पहुँचनेवाला; एक हाथ से दूसरे हाथ में फिरनेवाला, अर्थात् प्रचलित, राइज।

मुतनफ़्फ़िर (متنفر) अ. वि.–घृणा करनेवाला, भागनेवाला, अलग रहनेवाला।

मुतनफ़्फ़िस (متنفس) अ. वि.–साँस लेनेवाला, अर्थात् प्राणी; मनुष्य, आदमी।

मुतनब्बी (متنبی) अ. वि.–झूठा नबी बननेवाला, नबी होने का दावा करनेवाला; अरब का एक प्रसिद्ध कवि।

मुतनब्बेह (متنبہ) अ. वि.–चौकस, ख़बरदार, सावधान, होशियार।

मुतनव्वे' (متنوع) अ. वि.–भाँति-भाँति का होनेवाला, विचित्र, अजीबो ग़रीब।

मुतनाइम (متنعیم) अ. वि.–लाड़-प्यार में पलनेवाला।

मुतनाफ़िज़ (متنافض) अ. वि.–एक दूसरे के विपरीत, एक दूसरे का उल्टा।

मुतनाज़िअः (متنازعہ) अ. वि.–जिस बात के लिए वाद-विवाद हो।

मुतनाज़ा' (متنازع) अ. वि.–जिस बात (विषय) के लिए झगड़ा हो।

मुतनाज़ा'फ़ीह (متنازع فیہ) अ. वि.–जिस बात में झगड़ा हो, विवादग्रस्त।

मुतनाज़े (متنازع) अ. वि.–वाद-विवाद करनेवाला।

मुतनाफ़िर (متنافر) अ. वि.–परस्पर घृणा करनेवाला, घृणा करनेवाला।

मुतनासिब (متناسب) अ. वि.–जिसमें हर चीज़ सही तनासुब से हो, समानुपातिक।

मुतनासिबुल आ'ज़ा (متناسب الاعضا) अ. वि.–जिसके शरीर के तमाम अंग जैसे सुडोल होने चाहिए वैसे हों।

मुतनाही (متناہی) अ. वि.–अन्त को पहुँचा हुआ, अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

मुतफ़क्किर (متفکر) अ. वि.–चिंतित, चिंताकुल, संचित, किसी विशेष फ़िक्र से परेशान।

मुतफ़न्निन (متفنن) अ. वि.–बहुत से फ़न जाननेवाला।

मुतफ़न्नी (متفنی) अ. वि.–वंचक, धूर्त, ठग, चालाक।

मुतफ़र्रिक (متفرق) अ. वि.–विविध, विभिन्न, मुख़्तलिफ़; पृथक्, जुदा; अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; फुटकर जो इकट्ठा न हो, जैसे––मुतफ़र्रिक ख़र्च।

मुतफ़र्रिक़ात (متفرقات) अ. पुं.–'मुतफ़र्रिक़' का बहु., विभिन्न वस्तुएँ; हिसाब की भिन्न-भिन्न रक़में।

मुतफ़र्रे' (متفرع) अ. वि.–मूल में से निकलनेवाली शाखा।

मुतफ़ाइल (متفائل) अ. वि.–शगुन लेनेवाला, इस शब्द को 'मतफ़ाविल' नहीं कहना चाहिए न 'वाव' से लिखना ही चाहिए।

मुतबन्ना (متبنیٰ) अ. पुं.–गोद लिया हुआ लड़का, लेपालक, दत्तक पुत्र।

मुतबर्रिक (متبرک) अ. वि.–पवित्र, पुनीत, पाक; प्रतिष्ठित, पुण्यात्मा, बुज़ुर्ग।

मुतबस्सिम (متبسم) अ. वि.–मुस्कुरानेवाला, सुस्मित।

मुतबह्हिर (متبحر) अ. वि.–विद्या का समुद्र, प्रचंड विद्वान्, विद्वत्तम, कृतमुख।

मुतबाइन (متبائن) अ. वि.–एक-दूसरे के बिलकुल विरुद्ध, बिलकुल उलटा।

मुतबादिर (متبادر) अ. वि.–जल्दी हृदयंगम होनेवाला, तुरन्त समझ में आ जानेवाला।

मुतबादिल (متبادل) अ. वि.–अदल-बदल होनेवाला।

मुतमक्किन (متمکن) अ. वि.–ठहरा हुआ, जगह पकड़नेवाला, स्थिर।

मुतमत्ते' (متمتع) अ. वि.–लाभ पानेवाला, लाभान्वित।

मुतमद्दिन (متمدن) अ. वि.–नागरिक, शहरी; सभ्य, शिष्ट, मुहज़्ज़ब।

मुतमन्ना (متمنیٰ) अ. वि.–अभिलषित, इच्छित, जिसकी तमन्ना हो।

मुतमन्नी (متمنی) अ. वि.–उत्सुक, अभिलाषी, इच्छुक, आकांक्षी, तमन्ना करनेवाला।

मुतमय्यिज़ (متمیز) अ. वि.–पृथक् होनेवाला, पहचाना जानेवाला।

मुतमर्रिद (متمرد) अ. वि.–उद्दंड, सरकश; विद्रोही, बाग़ी; अवज्ञाकारी, नाफ़रमान।

मुतमल्लिक़ (متملق) अ. वि.–खुशामदी, चाटुकार, चापलूस।

मुतमव्विज (متموج) अ. वि.–मौजें मारता हुआ, लहरें लेता हुआ, तरंगित।

मुतमव्विल (متمول) अ. वि.–धनाढ्य, धनी, मालदार।

मुतमादी (متمادی) अ. वि.–लंबा, दराज़; जिसमें तमादी आरिज़ हो, जिसका नियत समय वीत चुका हो।

मुतमासिल (متماثل) अ. वि.–समान, तुल्य, एक-सा; एकरूप, समरूप, समाकार।

मुतम्मिम (متمم) अ. वि.–समाप्त करनेवाला, खत्म करनेवाला; पूर्ण करनेवाला, खत्म करनेवाला।

मुतयक़्क़न (متیقن) अ. वि.–निश्चित, यक़ीनी; दृढ़, मज़्बूत।

मुतयक़्क़िन (متیقن) अ. वि.–विश्वास करनेवाला, विश्वासी।

मुतयम्मिन (متیمن) अ. वि.–शुभान्वित, बा बरकत, कल्याणकारी।

मुतययन (مطین) अ. वि.–मिट्टी से पोता हुआ; मिट्टी चढ़ाया हुआ।

सुतययब (مطیب) अ. वि.–खुशबू में बसा हुआ, सुगन्धित, सुगंधयुक्त।

मुतय्यिब (مطیب) अ. वि.–खुशबूदार करनेवाला, खुशबू फैलानेवाला।

मुतरक़्क़बः (مترقبہ) अ. वि.–वह वस्तु जिसके मिलने की उम्मीद लगी हो, जिसके आने का इंतिज़ार हो।

मुतरक़्क़ब (مترقب) अ. वि.–जिसकी आस हो; जिसकी प्रतीक्षा हो।

मुतरक़्क़िब (مترقب) अ. वि.–आस लगानेवाला; प्रतीक्षा देखनेवाला।

मुतज़ल्लिम (متظلم) अ. वि.–ज़ुल्म की फ़र्याद करनेवाला, दादख़्वाह, न्याययाचक।

मुतरत्तिब (مترتب) अ. वि.–क्रमबद्ध, क्रमागत, तर्तीब से लगा हुआ।

मुतरद्दिद (متردد) अ. वि.–चिंतित, फ़िक्रमंद, सोच में पड़ा हुआ।

मुतरन्निम (مترنم) अ. वि.–गानेवाला, गायक; जिसमें तरन्नुम हो, सुरीली (आवाज़)।

मुतरश्शेह (مترشح) अ. वि.–टपकनेवाला, रिसनेवाला, अर्थात् प्रकट होनेवाला।

मुतरस्सिद (مترصد) अ.वि.–इच्छुक, अभिलाषी, उम्मेदवार।

मुतरस्सिल (مترسل) अ. वि.–पत्र भोजनेवाला।

मुतराकिब (متراکب) अ. वि.–परस्पर बैठनेवाला।

मुतराकिम (متراکم) अ. वि.–भीड़ करनेवाला।

मुतराक़ी (متراقی) अ. वि.–जादू-टोना करनेवाला, जादूकार।

मुतरादिफ़ (مترادف) अ. वि.–एक के पीछे एक सवार होनेवाला; निरंतर, बराबर; समानार्थक, पर्यायवाची।

मुतरादिफ़ुलमा'ना (مترادف المعنی) अ. वि.–वह शब्द जो एक ही अर्थ रखते हों, समानार्थक, पर्यायवाची।

मुतर्जमः (مترجمہ) अ. वि.–अनुवाद की हुई पुस्तक, अनूदित।

मुतर्जम (مترجم) अ. वि.–अनुवादित, भाषांतरित, अनूदित, तर्जुमा किया हुआ।

मुतर्जिम (مترجم) अ. वि.–अनुवादकर्ता, अनुवादकार, भाषांतरकार, अनुवादक, तर्जमा करनेवाला।

मुतलक़्क़ा (متلقا) अ. वि.–जिससे मुलाकात की गयी हो।

मुतलक़्क़ी (متلقی) अ. वि.–मुलाक़ात करनेवाला।

मुतलज़्ज़िज़ (متلذذ) अ. वि.–आनंद उठानेवाला, लज़्ज़त उठानेवाला।

मुतलत्तिफ़ (متلطف) अ. वि.–कृपा करनेवाला, इल्तिफ़ात करनेवाला।

मुदलव्विन (متلون) अ. वि.–रंग बदलनेवाला, घड़ी में कुछ घड़ी में कुछ होनेवाला।

मुतलव्विन तब्अ (متلون طبع) अ. वि.–दे. 'मुतलव्विन मिज़ाज'।

मुतलव्विन मिज़ाज (متلون مزاج) अ. वि.–जिसका चित्त स्थिर न रहे, कभी कुछ सोचे कभी कुछ, अनियतात्मा, चंचल चित्त, विषयशील।

मुतलव्विन मिज़ाजी (متلون مزاجی) अ. स्त्री.–दे. मु० 'मिज़ाज'।

मुतलातिम (متلاطم) अ. वि.–एक-दूसरे को थपेड़े मारनेवाला; मौजें मारनेवाली नदी।

मुतलाशी (متلاشی) अ. वि.–ध्वस्त, नष्ट, बरबाद, यह शब्द तलाश करनेवाले के अर्थ में अशुद्ध है।

मुतलाशी (متلاشی) तु. वि.–ढूँढ़नेवाला, खोजी, तलाश करनेवाला।

मुतल्लकः (مطلقہ) अ. वि.–वह स्त्री जिसे तलाक़ दे दी गयी हो।

मुतल्ला (مطلا) अ. वि.–जिस पर सोने का काम हो।

मुतवक़्क़िफ़ (متوقف) अ. वि.–ठहरनेवाला, देर लगानेवाला।

मुतवक्किल (متوکل) अ. वि.–ख़ुदा पर भरोसा रखनेवाला; जिसकी कोई निश्चित आय न हो, ऐसा साधु या फ़क़ीर।

मुतवक़्किलन अलल्लाह (متوکلاً علی اللہ) अ. वि.–ईश्वर के भरोसे पर, ईश्वर का भरोसा करके।

मुतवक़्किलानः (متوکلانہ) अ. फा. वि.–मुतवक़्किलों-जैसा, फ़क़ीराना।

मुतवक़्क़े' (متوقع) अ. वि.–आशा रखनेवाला, आशान्वित।

मुतवज़्ज़े' (متوزع) अ. वि.–अस्त-व्यस्त, तितर-बितर; उद्विग्न, परेशान।

मुतवज्जेह (متوجہ) अ. वि.–ध्यान देनेवाला, ख़याल करनेवाला; मुँह करनेवाला, रुख़ मिलानेवाला।

मुतवत्तिन (متوطن) अ. वि.–निवासी, साकिन।

मुतवफ़्फ़ी (متوفی) अ. वि.–मृत, मृतक, दिवंगत, स्वर्गीय, मरहूम।

मुतवर्रिम (متورم) अ. वि.–सूजा हुआ, शोथित।

मुतवर्रे' (متورع) अ. वि.–संयमी, इंद्रिय-निग्रही, परहेज़गार।

मुतवल्लिद (متولد) अ. वि.–उत्पन्न होनेवाला, जात, उत्पन्न।

मुतवल्ली (متولی) अ. वि.–किसी वक़्फ़ जाइदाद की देख-रेख करनेवाला, अधिष्ठाता।

मुतवस्सित (متوسط) अ. वि.–न बड़ा न छोटा, बीच का, मध्यम, माध्यम।

मुतवस्सितुलक़ामत (متوسط القامت) अ. वि.–न बहुत लम्बा न बहुत ठिगना, बीच के डील-डौल का।

मुतवस्सितुलहाल (متوسط الحال) अ. वि.–न बहुत अमीर न बहुत ग़रीब, दरमियानी ज़िंदगी गुज़ारनेवाला, मध्यवर्गीय।

मुतवस्सिल (متوسل) अ. वि.–आश्रय ढूँढ़नेवाला, सहारा पकड़नेवाला, जो किसी के सहारे पर हो, अवलंबित, आश्रित।

मुतवस्सिलीन (متوسلین) अ. वि.–आश्रित जन, वे लोग जो सहारे पर हों।

मुतवह्हिम (متوھم) अ. वि.–वह्मी, भ्रमी, भ्रान्त।

मुतवहि्हश (متوحش) अ. वि.–घबराया हुआ, उद्विग्न।

मुतवाज़िन (متوازن) जिसका वज़न दोनों ओर बराबर हो, तुला हुआ, संतुलित, मोतदिल।

मुतवाज़ी (متوازی) अ. वि.–एक-दूसरे के बराबर चलनेवाला; एक-दूसरे से बराबर अन्तर रखनेवाला; वह रेखा जो किसी रेखा के बराबर अन्तर पर चले, समानान्तर।

मुतवाज़े' (متواضع) अ. वि.–आवभगत और ख़ातिरदारी करनेवाला; विनम्रता और विनीतता का व्यवहार करनेवाला।

मुतवातिर (متواتر) अ. वि.–निरन्तर, अनवरत, सतत, लगातार, बराबर।

मुतवारिद (متوارد) अ. वि.–साथ-साथ उतरनेवाला; वह मज़्मून जो साथ-साथ दो शाइरों के ध्यान में आये, जिसे दो शाइर बाँधे।

मुतवारी (متواری) अ. वि.–छिपनेवाला; गुप्त, दिया हुआ।

मुतवाली (متوالی) अ. वि.–बारंबार आनेवाला; लगातार होनेवाला।

मुतव्वक़ (مطوق) अ. वि.–जिसके गले में तौक़ पड़ा हो; जिसके गले में क़ैदियों का तौक़ हो, अर्थात् जो क़ैद में हो।

मुतव्वज (متوج) अ. वि.–जिसे ताज पहनाया गया हो।

मुतव्वल (مطول) अ. वि.–लम्बा, दीर्घ, तवील; जो लम्बा किया गया हो।

मुतव्विफ़ (مطوف) अ. वि.–परिक्रमण करनेवाला, किसी के चारों ओर फिरनेवाला।

मुतव्विल (مطول) अ. वि.–लंबा करनेवाला।

मुतशक़्किर (متشکر) अ. वि.–कृतज्ञता प्रकट करनेवाला, शुक्रियः अदा करनेवाला, कृतज्ञ, आभारी, मम्नून।

मुतशक़्किल (متشکل) अ. वि.–साकार, साक्षात्, किसी रूप में परिवर्तित।

मुतशक़्की (متشکی) अ. वि.–संदेह करनेवाला, शक करनेवाला।

मुतशत्तित (متشتت) अ. वि.–अस्त-व्यस्त, गड़बड़, तितर-बितर; उद्विग्न, परीशान।

मुतशद्दिद (متشدد) अ. वि.–सख़्ती करनेवाला, अत्याचार करनेवाला।

मुतशद्दिदानः (متشددانہ) अ. फा. वि.–तशद्दुद आमेज़, अत्याचारपूर्ण, हिंसात्मक।

मुतशन्निज (متشنج) अ. वि.–अकड़नेवाला, ऐंठनेवाला, जिसमें ऐंठन न हो।

मुतशर्रे' (متشرع) अ. वि.–शर्अ पर चलनेवाला, शास्त्र-विहित आचरण करनेवाला।

मुतशाइर (متشائر) अ. वि.–झूठ-मूठ का शाइर बननेवाला, जो शाइर न हो मगर शाइर बनता हो।

मुताशाबिहात (متشابہات) अ. स्त्री.–क़ुरान के वे वाक्य जिनका अर्थ स्पष्ट न हो, प्रत्युत 'मुह्कमात'।

मुत शाबेह (متشابہ) अ. वि.–समान, सदृश, तुल्य।

मुतसद्दी (متصدی) अ. वि.–प्रबंधक, मुंतज़िम ; हिसाब-किताब रखनेवाला; अभिकर्ता, गुमाश्ता, पेशकार; लिपिक, मुहर्रिर।

मुतसद्दे (متصدع) अ. वि.–कष्टदाता, तकलीफ़ देनेवाला।

मुतसन्ने' (متصنع) अ. वि.–बनावट करनेवाला।

मुतसर्रिफ़ (متصرف) अ. वि.–तसर्रुफ़ करनेवाला, अधिकार जमानेवाला।

मुतसल्लत (متسلط) अ. वि.–जिस पर तसल्लुत किया जाय, वशीभूत, अधिकृत।

मुतसल्लित (متسلط) अ. वि.–तसल्लुत करनेवाला, विजेता, अधिकार प्राप्त करनेवाला।

मुतसल्ली (متسلی) अ. वि.–सान्त्वना पानेवाला, जिसकी तसल्ली हो गयी हो।

मुतसव्वर (متصور) अ. वि.–जिसका ध्यान किया जाय, जिसका तसव्वर किया जाय।

मुतसव्विर (متصور) अ. वि.–ध्यान करनेवाला।

मुतसाइद (متصاعد) अ. वि.–ऊपर चढ़नेवाला, ऊपर पहुँचनेवाला।

मुतसादिम (متصادم) अ. वि.–एक-दूसरे से टकरानेवाला।

मुतसावियुज़्ज़वाया (متساوی الزوایا) अ. पुं.–वह शक्ल जिसके कोण बराबर हों।

मुतसावियुलअज़्लाअ' (متساوی الاضلاع) अ. पुं.–वह शक्ल जिसकी भुजाएँ बराबर हों।

मुतसावियुस्साक़ैन (متساوی الساقین) अ. पुं.–वह त्रिभुज जिसकी दोनों भुजाएँ बराबर हों, समद्विबाहुक त्रिभुज।

मुतसावी (متساوی) अ. वि.–सम, बराबर; एक-दूसरे के बराबर।

मुतहक़्क़िक़ (متحقق) अ. वि.–निश्चित, यक़ीनी; प्रमाणित, दुरुस्त।

मुतहज्जिर (متحجر) अ. वि.–पत्थर बन जानेवाला, पत्थर की तरह कड़ा पड़ जानेवाला।

मुतहज़्ज़ी (متحظی) अ. वि.–सफल, भाग्यवान्; किसी चीज़ का आनन्द लेनेवाला।

मुतहम्मिल (متحمل) अ. वि.–तहम्मुल करनेवाला, सहिष्णु, सहनशील।

मुतहय्यिर (متحیر) अ. वि.–हैरत में पड़ा हुआ, स्तब्ध, चकित।

मुतहर्रिक (متحرک) अ. वि.–हिलने-डुलनेवाला, गतिशील, गतिमान्, चलनेवाला।

मुतहल्ली (متحلی) अ. वि.–भूषण और वस्त्र से सुसज्जित।

मुतहस्सिन (متحصن) अ. वि.–क़िले में बंद, वह राजा जो शत्रु की सेना के भय से दुर्गस्थ हो गया हो।

मुतहारिब (متحارب) अ. वि.–परस्पर युद्ध करनेवाला, आपस में लड़नेवाला।

मुतहाविन (متہاون) अ. वि.–तिरस्कृत, अपमानित, ज़लील; आलस्य करनेवाला।

मुतहैयिर (متحیر) अ. वि.–दे. 'मुतहय्यिर'।

मुतह्हर (مطہر) अ. वि.–पवित्र, शुद्ध, पाक।

मुतह्हिर (مطہر) अ. वि.–पवित्र करनेवाला।

मुताअ (مطاع) अ. वि.–जिसका हुक्म माना जाय, जिसकी इताअत की जाय।

मुताजरः (متاجرہ) अ. पुं.–आपस में व्यवसाय करना, परस्पर लेन-देन करना।

मुताजरत (متاجرت) अ. स्त्री.–दे. 'मुताजरः'।

मुताबअत (متابعت) अ. स्त्री.–आज्ञापालन, हुक्म मानना; अनुकरण, तक़्लीद।

मुताबक़त (مطابقت) अ. स्त्री.–सदृशता, अनुरूपता, मुशाबहत; समानता, यकसानियत; अनुकूलता, मुआफ़क़त।

मुताबिक़ (مطابق) अ. वि.–सदृश, मिस्ल; समान, बराबर; अनुसार, बमूजिब।

मुतायबः (مطایبہ) अ. पुं.–परस्पर मनोविनोद करना, आपस में हँसी-मज़ाक़ करना; हँसी-मज़ाक़, मनोरंजन, मनोविनोद।

मुतायबात (مطایبات) अ. पुं.–'मुतायबः' का बहु., मनोविनोद की बातें, परस्पर दिल बहलाव की बातें।

मुतारहः (مطارحہ) अ. पुं.–परस्पर तरह पर ग़ज़लें कहना; परामर्श करना; वार्तालाप करना; ख़ुशामद करना।

मुतारहात (مطارحات) अ. वि.–तरह पर होनेवाले मुशाअरे; आपस की बात-चीत।

मुतालअः (مطالعہ) अ. पुं.–किसी चीज़ की पूरी जानकारी के लिए ग़ौर से देखना, समीक्षा, निरीक्षण; पाठ को शुरू से पढ़ने के पूर्व स्वयं पढ़ना ताकि शुद्ध पढ़ा जा सके।

मुतालबः (مطالبہ) अ. पुं.–तलब करना, माँगना; माँग, तक़ाज़ा; अपने हक़ अर्थात् सत्त्व की माँग; बक़ाया रक़म जो अदा करना है; प्रार्थना, इल्तिजा।

मुतालबात (مطالبات) अ. पुं.–'मुतालबः' का बहु., माँगें।

मुतावअत (مطاوعت) अ. स्त्री.–आज्ञापालन, फ़र्मांबरदारी।

मुताव' (مطاوع) अ. वि.–आज्ञापालक, फ़र्मांबरदार।

मुतिम [**म्म**] (متمم) अ. वि.–पूरा करनेवाला, समाप्त करनेवाला, अधूरे काम को पूरा करनेवाला।

मुतीअ (مطیع) अ. वि.–आज्ञाकारी, फ़र्मांबरदार; अनुयायी, पैरौ; अधीन, मातहत।

मुतीओमुन्क़ाद (مطیع و منقاد) अ. वि.–जो पूरी तरह अधीन और वशीभूत हो।

मुत्तका (متکا) अ. वि.–जिस चीज़ का सहारा लिया जाय, सहारा, आश्रय।

मुत्तक़ी (متقی) अ. वि.–संयमी, इंद्रियनिग्रही, पार्सा।

मुत्तकी (متکی) अ. वि.–सहारा लेनेवाला।

मुत्तफ़क़ः (متفقہ) अ. वि.–दे. 'मुत्तफ़क़'।

मुत्तफ़क़ (متفق) अ. वि.–जिस बात या विषय या कार्य से इत्तिफ़ाक़ किया जाय।

मुत्तफ़क़ अलैह (متفق علیہ) अ. वि.–जिस पर सबका इत्तिफ़ाक़ हो, सर्वमान्य, सर्वसंमत।

मुत्तफ़िक़ (متفق) अ. वि.–इत्तिफ़ाक़ करनेवाला, सहमत।

मुत्तफ़िक़ुर्राय (متفق الرائے) अ. वि.–राय से इत्तिफ़ाक़ करनेवाला, सहमत।

मुत्तफ़िक़ुल्लफ़्ज़ (متفق اللفظ) अ. वि.–सहमत, हमज़बान।

मुत्तला' (مطلع) अ. वि.–सूचित, जिसे सूचना दी गयी हो।

मुत्तलिब (مطلب) अ. वि.–हज़्रत मुहम्मद साहब के दादा का शुभनाम; ढूँढ़नेवाला।

मुत्तले (مطلع) अ. वि.–सूचना देनेवाला, सूचक।

मुत्तसफ़ (متصف) अ. वि.–जिसकी तारीफ़ की गयी हो, प्रशंसित।

मुत्तसम (متسم) अ. वि.–दाग़ा हुआ, दग्ध; अंकित, निशान लगाया हुआ।

मुत्तसिफ़ (متصف) अ. वि.–प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

मुत्तसिम (متسم) अ. वि.–दाग़नेवाला; अंकित करनेवाला।

मुत्तसिल (متصل) अ. वि.–समीपवर्ती; क़रीबी; समीप, क़रीब; निरन्तर, लगातार; मिला हुआ।

मुत्तसिलन (متصلاً) अ. वि.–समीप, क़रीब।

मुत्तहदः (متحدہ) अ. वि.–संयुक्त, मिला हुआ।

मुत्तहद (متحد) अ. वि.–संयुक्त, मिला हुआ; सहमत, हमराय।

मुत्तहदुर्राय (متحد الرائے) अ. वि.–सहमत, एकराय।

मुत्तहदुल अक़ीदः (متحد العقیدہ) अ. वि.–सहधर्मी, सहमत, एक मश्रबवाले।

मुत्तहदुलउम्र (متحدالعمر) अ. वि.–समवयस्क, एक आयुवाले, बराबर की आयुवाले।

मुत्तहदुलख़याल (متحدالخیال) अ. वि.–एक-से विचार रखनेवाले।

मुत्तहदुलबत्न (متحدالبطن) अ. वि.–एक पेट से उत्पन्न होनवाले, सहोदर।

मुत्तदुलमज़्हब (متحدالمذہب) अ. वि.–एक धर्म रखनेवाले, सहधर्मी।

मुत्तहदुलमफ़्हूम (متحدالمفہوم) अ. वि.–एक भाववाला, जिनका भावार्थ एक हो।

मुत्तहदुलमा'ना (متحدالمعنیٰ) अ. वि.–एक अर्थवाले, समानार्थक।

मुत्तहदुलवतन (متحدالوطن) अ. वि.–एक देश के रहनेवाले, सहदेशीय।

मुत्तहदुश्शक्ल (متحدالشکل) अ. वि.–एक-जैसी आकृतिवाले, सहरूप, समाकृति।

मुत्तहफ़ (متحف) अ. वि.–जिसे भेंट या उपहार दिया गया हो; उपहृत, पुरस्कृत।

मुत्तहम (متہم) अ. वि.–जिस पर झूठा आरोप लगाया गया हो, आरोपित।

मुत्तहिद (متحد) अ. वि.–मेल-मिलाप रखनेवाला।

मुत्तहिफ़ (متحف) अ. वि.–उपहार देनेवाला।

मुत्तहिम (متہم) अ. वि–आरोप लगानेवाला।

मुत्निब (مطنب) अ. वि.–लंबी बात करनेवाला, बकवादी; बढ़ानेवाला, लंबा करनेवाला।

मुत्फ़ी (مطفی) अ. वि.–आग बुझानेवाला; चिराग़ बुझानेवाला।

मुत्मइन (مطمئن) अ. वि.– संतुष्ट, जिसे इत्मीनान हो; निश्चिन्त, बेफ़िक्र; आनन्दपूर्वक, ख़ुशहाल।

मुत्रिबः (مطربہ) अ. स्त्री.–गानेवाली स्त्री, गायिका, गायकी।

मुत्रिब (مطرب) अ. पुं.–गानेवाला, गायक, रागी।

मुत्लक़ (مطلق) अ. वि.–स्वच्छंद, निरंकुश, आज़ाद; नितान्त, बिलकुल; सामान्य, मामूली, जैसे—'माज़ी मुत्लक़' सामान्य भूत।

मुत्लक़न (مطلقاً) अ. वि.–नितान्त, बिलकुल।

मुत्लक़ुलइनान (مطلق العنان) अ. वि.–स्वच्छंद, निरंकुश, बेमहार।

मुत्लक़ुलइनानी (مطلق العنانی) अ. स्त्री.–स्वच्छंदता, निरंकुशता, बेलगामी।

मुत्लिफ़ (متلف) अ. वि.–नष्ट करनेवाला, बरबाद करनेवाला; ख़राब करनेवाला, बिगाड़नेवाला।

मुदक़्क़िक़ (مدقق) अ. वि.–बाल की खाल निकालनेवाला।

मुदन (مدن) अ. पुं.–'मदीनः' का बहु., नगरसमूह, बहुत से शह्र।

मुदब्बर (مدبر) अ. वि.–वह ओषधि जो यथाविधि शुद्ध कर ली गयी हो, ताकि हानि न करे।

मुदब्बिर (مدبر) अ. वि.–प्रबंधकुशल, इंतिज़ाम में निपुण; दूरदर्शी, पेशबीं; बुद्धिमान्, अक़्लमंद; राजनीति में निपुण, राजनीतिज्ञ।

मुदब्बिराने क़ौम (مدبران قوم) अ. पुं.–राष्ट्र के नेता, क़ौम के लीडर।

मुदम्मिग़ (مدمغ) अ. वि.–अहंकारी, अभिमानी, घमंडी, मग़्रूर।

मुदम्मिल (مدمل) अ. वि.–घाव को भरनेवाला, वह दवा जो घाव को भर दे।

मुदर्रिस (مدرس) अ. पुं.–पढ़ानेवाला, अध्यापक।

मुदर्रिसी (مدرسی) अ. स्त्री.–पढ़ाने का काम, अध्यापन।

मुदल्लल (مدلل) अ. वि.–जो तर्क से परिपुष्ट हो, युक्तिसंगत, युक्तियुक्त।

मुदव्वन (مدون) अ. वि.–संगृहीत, संपादित, संकलित, इंतिख़ाब और तर्तीब के साथ जमा किया हुआ।

मुदव्वर (مدور) अ. वि.–गोलाकार, वृत्ताकार, गोल।

मुदव्विन (مدون) अ. वि.–संपादक, तर्तीब देनेवाला।

मुदह्रज (مدحرج) अ. वि.–गोल, वर्तुलाकार।

मुदाअबत (مداعبت) अ. स्त्री.–मनोरंजन, आमोद-प्रमोद, हँसी-मज़ाक़; क्रीड़ा, खेलकूद, तफ़्रीह।

मुदाख़लत (مداخلت) अ. स्त्री.–विघ्न, बाधा; हस्तक्षेप, दख़्लअंदाज़ी; दख़्ल देना, बीच में टोकना; क़ब्ज़ा, अधिकार।

मुदाख़लते बेजा (مداخلت بےجا) अ. फा. स्त्री.–ऐसा हस्तक्षेप जो क़ानून के ख़िलाफ़ हो।

मुदाफ़अत (مدافعت) अ. स्त्री.–हमले की रोक, बचाव; निवारण, इज़ालः; हटाना, अलग करना।

मुदाफ़े' (مدافع) अ. वि.–हटानेवाला; हमले को रोकनेवाला।

मुदाम (مدام) अ. वि.–नित्य, सदा, हमेशा; निरन्तर, लगातार; मदिरा, शराब।

मुदामी (مدامی) फा. स्त्री.–नित्यता, हमेशगी।

मुदारा (مدارا) अ. पुं.–'मुदारात' का लघु., दे. 'मुदारात'।

मुदारा (مداری) अ. वि.–जिसकी मुदारात की गयी हो, जिसकी आवभगत की गयी हो।

मुदारात (مدارات) अ. स्त्री.–ख़ातिर तवाज़ो', आवभगत; संमान, आदर, एज़ाज़।

मुदावमत (مداومت) अ. स्त्री.–नित्यता, हमेशगी; किसी काम को हमेशा करना।

मुदावा (مداوا) अ. पुं.–'मुदावात' का लघु., दे. 'मुदावात'।

मुदावात (مداوات)अ. स्त्री.–चिकित्सा, उपचार, दवा-दारू इलाज।

मुदाहनत(مداہنت)अ. स्त्री.–दिल में कुछ और ज़बान पर कुछ होना; चापलूसी, चाटुकारिता, रौग़ने क़ाज़ मलना।

मुदाहिन (مداہن)अ. वि.–मुनाफ़िक़, जिसके मन में कुछ हो और मुँह पर कुछ; चाटुकार, ख़ुशामदी।

मुदिर [र्र] (مدر) अ. वि.–पेशाब अधिक लानेवाली दवा।

मुदिर्रात (مدرات) अ. स्त्री.–वे दवाएँ जो पेशाब अधिक लाएँ; जो रजस्राव अधिक करे।

मुदीरः (مدیرہ) अ. स्त्री.–संपादक महिला, संपादिका।

मुदीर (مدیر) अ. पुं.–संपादक, अख़्बार का इडीटर।

मुदीरे आ'ला (مدیراعل) अ. पुं.–प्रधान संपादक।

मुदीर मसऊल (مدیرمسؤل) अ. पुं.–वह संपादक जो अख़्बार के मज़्मूनों का उत्तरदायी हो, समाचार संपादक।

मुदीरे मुआविन (مدیرمعاون) अ. पुं.–सहायक संपादक, उपसंपादक।

मुदुन (مدن) अ. पुं.–'मदीनः' का बहु., बहुत-से नगर।

मुद्ग़म (مدغم) अ. वि.–मिला हुआ, समन्वित; मिले हुए, मिश्र, एक-जैसे दो अक्षर।

मुद्दआ (مدعا) अ. पुं.–दावा किया गया; अर्थ, मतलब; आशय, उद्देश, मंशा; स्वार्थ, ग़रज़; तात्पर्य, खुलासा।

मुद्दआअलैह (مدعاعلیہ) अ. पुं.–जिस पर दावा किया गया हो, प्रतिवादी।

मुद्दआअलैहा (مدعاعلیہا) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिस पर दावा किया गया हो, प्रतिवादिनी।

मुद्दआबिहा (مدعابہا) अ. वि.–वह वस्तु जिसके लिए वाद उपस्थित किया गया हो, जिस चीज़ का दावा हो।

मुद्दई (مدعی) अ. पुं.–दावा करनेवाला, वादी, नालिशी।

मुद्दईयः (مدعیہ) अ. स्त्री.–दावा करनेवाली स्त्री, वादिनी।

मुद्दत (مدت)अ. स्त्री.–अवधि, मीआद; समय, काल, वक़्त; विलंब, देर, अर्सा।

मुद्दते मदीद (مدت مدید) अ. स्त्री.–लंबा अर्सा, लंबा समय।

मुद्दते हयात (مدت حیات)अ. स्त्री.–जीवनकाल, जीने का समय, पूरी आयु।

मुद्रिकः (مدرکہ)अ. स्त्री.–तमीज़ की कुव्वत, विवेक-शक्ति।

मुद्रिक (مدرک) अ. वि.–विवेकी, वुद्धिमान्, समझदार, भले-बुरे की पहचान रखनेवाला।

मुद्रिकात (مدرکات) अ. वि.–'मुद्रिकः' का बहु., विवेक की शक्तियाँ।

मुनक़्क़श (منقش)अ. वि.–चित्रित, जिस पर बेलबूटे हों; अंकित, जिस पर लिखा हो।

मुनक़्क़ह (منقح)अ. वि.–वह बात जिसे झूठ से पाक कर दिया गया हो, सच्ची बात; शुद्ध और निर्मल; जो विषय या मुआमला छानबीन करके स्पष्ट कर दिया गया हो।

मुनक़्क़ा (منقیٰ) अ. वि.–जिसका पेट साफ़ कर दिया गया हो; सूखा अंगूर, दाख, इसे मुनक़्क़ा इसलिए कहते हैं कि इसके बीज निकालकर इसका पेट साफ़ कर दिया जाता है; जो शुद्ध किया गया हो, शुद्ध, निर्मल।

मुनक़्क़िद (منقد)अ. वि.–आलोचक, तन्क़ीद करनेवाला, खोटा-खरा बतानेवाला।

मुनक़्क़िस(منقص)अ. वि.–अपमान करनेवाला, तिरस्कर्ता, कम करनेवाला।

मुनक़्क़ी (منقی) अ. वि.–पेट साफ़ करनेवाला, पेट साफ़ करनेवाली दवा; साफ़ करनेवाला, शुद्धकर्ता।

मुनक़्क़ेह (منقح)अ. वि.–तन्कीह करनेवाला, सच को झूठ से अलग करनेवाला; मुआमले की जाँच करके सच और झूठ निकालनेवाला।

मुनग़्ग़स(منغص)अ. वि.–मलिन, मैला, मुकद्दर; अप्रसन्न, खिन्न, रंजीदः।

मुनग़्ग़िस (منغص) अ. वि.–मैला करनेवाला; अप्रसन्न करनेवाला।

मुनज़्ज़म (منظم) अ. वि.–क्रमबद्ध, क्रियागत, बातर्तीब; संघटित, वे लोग जो किसी उद्देश्य से एक और मज़बूत होकर कोई काम करें।

मुनज़्ज़ल (منزل) अ. वि.–नीचे उतरा हुआ।

मुनज़्ज़ह (منزہ) अ. वि.–पवित्र, पाक; दोषों और त्रुटियों से पाक।

मुनज्जिम (منجم) अ. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

मुनज़्ज़िम (منظم) अ. वि.–संघटन करनेवाला, लोगों को किसी कार्य विशेष के लिए एकत्र करके उन्हें नियमों पर चलानेवाला।

मुनज़्ज़िल (منزل) अ. वि.–नीचे उतारनेवाला।

मुनब्बत (منبت) अ. वि.–वे बेल-बूटे जो उभरे हुए हों, कपड़े पर हों या लकड़ी आदि पर।

मुनब्बतकारी (منبت کاری) अ. फा. स्त्री.–बेल-बूटों का वह काम जो लकड़ी आदि पर किया जाता है।

मुनव्वर (منور) अ. वि.–उज्ज्वल, प्रकाशमान, दीप्त, रौशन।

मुनश्शी (منشی) अ. वि.–नशा पैदा करनेवाली चीज़, मादक।

मुनश्शीयात (منشیات) अ. स्त्री.–नशे की चीज़ें, जैसे—शराब, अफ़ीम. गाँजा, भाँग आदि।

मुनाक़ज़ः (مناقضہ) अ. पुं.–एक-दूसरे की बात को काटना, वाक्कलह; झगड़ा, दंगा, कलह, फ़साद; द्वेष, वैर, मुख़ालफ़त, दुश्मनी।

मुनाक़ज़त (مناقضت) अ. स्त्री.–दे. 'मुनाक़ज़ः'।

मुनाक़बत (مناقبت) अ. स्त्री.–अचानक देखना; मन्क़बत करना, रसूल के घरानेवालों का स्तुतिगान।

मुनाक़शः (مناقشہ) अ. पुं.–आपस का लड़ाई-झगड़ा; झगड़ा, कलह, फ़साद।

मुनाक़सत (مناقصت) अ. स्त्री.–परस्पर एक-दूसरे की बुराई करना।

मुनाकहत (مناکحت) अ. स्त्री.–स्त्री और पुरुष का आपस में विवाह करना, विवाह, पाणिग्रहण, शादी।

मुनाक़िज़ (مناقض) अ. वि.–मुख़ालिफ़, शत्रु दुश्मन; झगड़ा डालनेवाला।

मुनाक़िब (مناقب) अ. वि.–अचानक देखनेवाला; मन्क़बत करनेवाला, गुणगान और कीर्तिगान करनेवाला।

मुनाज़अः (منازعہ) अ. पुं.–कलह, झगड़ा, फ़साद; वाद-विवाद, तर्क-वितर्क, बहस।

मुनाज़अत (منازعت) अ. स्त्री.–दे. 'मुनाज़अः'।

मुनाज़मः (مناظمہ) अ. पुं.–परस्पर नज़्में सुनाना, वह मुशाअरः जिसमें ग़ज़लों की जगह नज़्में पढ़ी जायँ।

मुनाज़रः (مناظرہ) अ. पुं.–किसी विषय पर और विशेषतः धार्मिक विषय पर दो विरोधी दलों का शास्त्रार्थ; वह विद्या जिसमें तर्कशास्त्र के नियम और उसके विषय में ज्ञान बढ़ानेवाली बातों का वर्णन हो।

मुनाजात (مناجات) अ. स्त्री.–ईश-प्रार्थना, ख़ुदा की हम्दोसना; ऐसा स्तुति गान जिसमें अपने लिए कुछ प्रार्थना भी हो।

मुनाजाती (مناجاتی) अ. वि.–मुनाजात करनेवाला, स्तुतिगान-कर्ता।

मुनाज़ा'फ़ीहि (منازع فیہ) अ. वि.–वह चीज़ जिस के विषय में परस्पर झगड़ा हो, झगड़ेवाली चीज़।

मुनाज़िर (مناظر) अ. वि.–मुनाज़रः करनेवाला, शास्त्रार्थ-कर्ता।

मुनाज़िरीन (مناظرین) अ. पुं.–'मुनाज़िर' का बहु., शास्त्रार्थ करनेवाले।

मुनाज़े' (منازع) अ. वि.–झगड़ा करनेवाला, झगड़ालू, विवादी।

मुनादमत (منادمت) अ. स्त्री.–पास बैठना, हाज़िर बाश रहना।

मुनादा (منادیٰ) अ. वि.–जिसे पुकारा जाय, सम्बोधित, आहूत।

मुनादी (منادی) अ. वि.–पुकारनेवाला; एलान करनेवाला, घोषणा करनेवाला; एलान, घोषणा।

मुनादीनवाज़ (منادی نواز) अ. फा. वि.–एलान करने के लिए डुग्गी पीटनेवाला।

मुनाफ़अः (منافعہ) अ. पुं.–लाभ, प्राप्ति, फाइदा; व्यवसाय और रोज़गार का लाभ; फल, नतीजा।

मुनाफ़अत (منافعت) अ. स्त्री.–लाभ होना, प्राप्ति।

मुनाफ़क़त (منافقت) अ. स्त्री.–दिल में कुछ होना और ज़बान पर कुछ, मिथ्याचार, कूटाचार।

मुनाफ़रत (منافرت) अ. स्त्री.–घृणा, नफ़्रत।

मुनाफ़सः (منافسہ) अ. पुं.–किसी चीज़ में बराबरी चाहना; ईर्ष्या करना, हसद करना; बराबरी करना, तुलना करना।

मुनाफ़ात (منافات) अ. स्त्री.–एक-दूसरे को बर्बाद और नष्ट करना; एक-दूसरे को अलग करना।

मुनाफ़िक़ (منافق) अ. स्त्री.–मुनाफ़क़त करनेवाला, जिसके मुँह पर कुछ हो और पेट पर कुछ, बहुमुख।

मुनाफ़िर (منافر) अ. वि.–घृणा करनेवाला।

मुनाफ़ी (منافی) अ. वि.–विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा, मुख़ालिफ़।

मुनाफ़े' (منافع) अ. वि.–लाभ देनेवाला, लाभदायक।

मुनासख़ः (مناسخہ) अ. पुं.–एक क़ाइदा जिसके द्वारा दाय भाग होता है।

मुनासबत (مناسبت) अ. स्त्री.–सम्बन्ध, लगाव; अनुकूलता, मुआफ़क़त; अनुपात, निस्बत।

मुनासरः (مناثرہ) अ. पुं.–गद्य के लेखकों की गोष्ठी, एक जगह बैठकर परस्पर गद्य के लेख सुनाना।

मुनासरत (مناصرت) अ. स्त्री.–परस्पर एक-दूसरे की सहायता करना, सहयोग।

मुनासिब (مناسب) अ. वि.–उचित, ठीक; योग्य, क़ाबिल, पात्र, अहल; यथेष्ट, काफ़ी; संतुलित, मौज़ूँ।

मुनासिबे मौक़ा (مناسب موقعہ) अ. पुं.–अवसर के अनुसार; समय के अनुसार।

मुनासिबे वक़्त (مناسب وقت) अ. पुं.–समय के अनुसार, समयोचित।

मुनासिबे हाल (مناسب حال) अ. पुं.–दशा के अनुसार, दशानुकूल, हालत के मुनासिब।

मुनीफ़ (منیف)अ. वि.–पवित्र, पाक; श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग; उच्च, बलंद; अधिक, ज़ियादा।

मुनीब (منیب) अ. वि.–प्रतिनिधि, नुमाइंदः; अभिकर्ता, एजेंट, गुमाश्ता।

मुनीर (منیر) अ. वि.–उज्ज्वल, प्रकाशमान, दीप्त।

मुन्अक़िद (منعقد) अ. वि.–उपस्थित होनेवाला, होनेवाला, प्रायः जल्से या सभा के लिए आता है।

मुन्अकिस (منعکس) अ. वि.–प्रतिबिंबित, छाया या प्रतिबिम्ब पड़ा हुआ।

मुन्अतिफ़ (منعطف) अ. वि.–फिरनेवाला, आकृष्ट होनेवाला, आकृष्ट हुआ चित्त।

मुन्अदिम (منعدم)अ. वि.–नष्ट होनेवाला, नष्ट, ध्वस्त, नाबूद।

मुन्इम (منعم) अ. वि.–इन्आम देनेवाला; नेमतें देनेवाला, पुरस्कारदाता; समृद्ध, धनाढय, मालदार।

मुन्इमे हक़ीक़ी (منعم حقیقی) अ. पुं.–सच्ची नेमतें देनेवाला, ईश्वर।

मुन्क़ज़ी (منقضی) अ. वि.–गुज़रनेवाला; समाप्त, ख़त्म।

मुन्क़ते' (منقطع) अ. वि.–खंडित, विच्छिन्न, कटा हुआ।

मुन्कदिर (منکدر)अ. वि.–गदला, मलिन, मैला; धुँधला, नासाफ़।

मुन्क़ने' (منقنع) अ. वि.–निःस्पृह, निवृत्त, क़ाने', संतुष्ट।

मुन्क़बिज़ (منقبض)अ. वि.–अप्रसन्न, खिन्न, (मिज़ाज)।

मुन्कर (منکر) अ. वि.–घृणित, मक्रूह; निकृष्ट, ख़राब।

मुन्करनकीर (منکرنکیر) अ. पुं.–दो फ़िरिश्ते जो मुसलमानों के मतानुसार क़ब्र में मुर्दों से पूछताछ करते हैं।

मुन्क़लिब (منقلب) अ. वि.–पलटा हुआ, औंधा; अस्त-व्यस्त, उथल-पुथल।

मुन्क़लिबात (منقلبات)अ. पुं.–वृष, कर्क, तुला और मकर ये चार राशियाँ, क्योंकि इनमें काम़ उलटा होता है।

मुन्क़ले' (منقلع) अ. वि.–उखड़नेवाला; उखड़ा हुआ।

मुन्कशिफ़ (منکشف) अ. वि.–प्रकट, व्यक्त, ज़ाहिर।

मुन्क़सिम (منقسم) अ. वि.–विभाजित, तक़्सीम, बँटनेवाला।

मुन्कसि़र (منکسر)अ. वि.–भग्न, टूटा हुआ; नम्र, विनीत, ख़ाकसार; शीलवान्, ख़ुश अख़्लाक़।

मुन्कसिर मिज़ाज (منکسرمزاج) अ. वि.–दे. 'मुन्कसिरुल मिज़ाज'।

मुन्कसिरुल मिज़ाज (منکسرالمزاج) अ. वि.–विनीतात्मा, विनम्र स्वभाव, ख़ाकसारी बरतनेवाला।

मुन्क़ाद (منقاد) अ. वि.–आज्ञाकारी, फ़र्मांबरदार; अधीन, वशीभूत, ताबे'।

मुन्किर (منکر)अ. वि.–इन्कार करनेवाला; कृतघ्न, एहसानफ़रामोश।

मुन्किराने ख़ुदा (منکران خدا) अ. फा. पुं.–ख़ुदा को न माननेवाले, नास्तिक लोग।

मुन्किरे क़ियामत (منکر قیامت) अ. वि.–क़ियामत पर विश्वास न रखनेवाला, नास्तिक, नेचरी (मुसलमान)।

मुन्किरे ख़ुदा (منکر خدا) अ. फा. वि.–ईश्वर को न माननेवाला, नास्तिक, अनीश्वरवादी।

मुन्किरे ने'मत (منکر نعمت) अ. फा. वि.–नाशुक्रा, कृतघ्न, नमकहराम।

मुन्क़ुलः (منقلہ) अ. स्त्री.–अँगीठी, अंगारधानी।

मुन्क़ुल (منقل) अ. स्त्री.–दे. 'मुन्क़ुलः', दे. 'मन्क़ल'।

मुन्ख़फ़िज़ (منخفض) अ. वि.–गढ़े में पड़ा हुआ; नीचे जानेवाला, पस्त, अवनत।

मुन्ग़मिस (منغمس) अ. वि.–जलमग्न, पानी में डूबा हुआ, ग़रीक़, निमग्न।

मुन्फ़इल (منفعل) अ. वि.–लज्जित, शर्मिदा; संकुचित, पशेमान; प्रभाव क़बूल करनेवाला।

मुन्फ़क [क्क] (منفک) अ. वि.–अलग होनेवाला; पृथक्, अलग; मोचित, मुक्त, छूटा हुआ।

मुन्फजिर (منفجر) अ. वि.–बहनेवाला स्रोत।

मुन्फ़तिर (منفطر) अ. वि.–विदीर्ण, फटा हुआ, शिगाफ़ पड़ा हुआ।

मुन्फ़रिजः (منفرجہ) अ. वि.–चौड़ा, चकला; वह कोण जो ९० अंश से अधिक हो, अधिक कोण।

मुन्फ़रिज (منفرج) अ. वि.–विस्तृत, विशाल, चौड़ा चकला; तुष्ट, समृद्ध, आसूदा।

मुन्फ़रिद (منفرد) अ. वि.–एकाकी, अकेला; अद्वितीय, बेजोड़।

मुन्फ़रेह (منفرح) अ. वि.–हर्षित, आनंदित, प्रसन्न, ख़ुश।

मुन्फसिख़ (منفسخ) अ. वि.–दूषित, विकृत, ख़राब।

मुन्फ़सिल (منفصل) अ. वि.–पृथक्, अलग, जुदा; निर्णीत, फ़ैसल।

मुन्यत (منیت) अ. स्त्री.–उद्देश्य, आशय, मक़्सद, मंशा।

मुन्शइब् (منشعب) अ. वि.–शाख़-शाख़ होनेवाला, मूल में से शाखाएँ बनकर फैलनेवाला।

मुन्हज़िम (منہزم) अ. वि.–पराजित, परास्त, विजित, हारा हुआ।

मुन्हज़िम (منہضم) अ. वि.–पचित, जो हज़्म हो गया हो।

मुनहतिक (منہتک) अ. वि.–पर्दा फटनेवाला, जिसका पर्दा फट जाय, जिसका दोष प्रकट हो जाय, अपमानित, तिरस्कृत।

मुन्हदिम (منہدم) अ. वि.–ध्वस्त, नष्ट, बरबाद (इमारत आदि)।

मुन्हदिर (منحدر) अ. वि.–ऊपर से नीचे उतरनेवाला।

मुन्हनी (منحنی) अ. वि.–दुबला-पतला, कमज़ोर, क्षीण, क्षाम, कृशांग।

मुन्हनी अंदाम (منحنی اندام) अ. फा. वि.–दे. 'मुन्हनी जिस्म'।

मुन्हनी जिस्म (منحنی جسم) अ. वि.–क्षीणकाय, कृशांग, दुबले-पतले शरीरवाला।

मुन्हमिक (منہمک) अ. वि.–तन्मय, तल्लीन, दत्तचित्त, तत्पर, संलग्न, बहुत अधिक मशग़ूल।

मुनहरिफ़ (منحرف) अ. वि.–विमुख, बरगश्तः; अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान; उद्दंड, सरकश।

मुन्हल [ल्ल] (منحل) अ. वि.–विस्तृत, चौड़ा, चकला, कुशादा।

मुन्हसिर (منحصر) अ. वि.–निर्भर, निर्धारित, मौक़ूफ़।

मुनहसिर अलैह (منحصر علیہ) अ. वि.–जिस पर कोई मुआमला निर्भर हो, आधेय; पंच, जो दो व्यक्तियों के बीच में उनका झगड़ा तै करने के लिए मध्यस्थ बना दिया जाय।

मुफ़क्किर (مفکر) अ. वि.–विचारक, सोचनेवाला।

मुफ़क्किरीन (مفکرین) अ. पुं.–'मुफ़क्किर' का बहु.।

मुफ़ख़्ख़म (مفخم) अ. वि.–प्रतिष्ठित, संमानित, बुज़ुर्ग।

मुफ़ख़्ख़र (مفخر) अ. वि.–जिस पर सब गर्व करें, ऐसा व्यक्ति, प्रतिष्ठित, पूज्य, मान्य।

मुफ़ख़्ख़रे मौजूदात (مفخر موجودات) अ. वि.–संसार के लिए गर्व का विषय, संसार में सबसे बड़ा आदमी।

मुफ़ज़्ज़ल (مفضل) अ. वि.–अधिक किया हुआ, बढ़ाया हुआ; प्रधानता दिया हुआ, तर्जीह पाया हुआ।

मुफ़त्तिन (مفتن) अ. वि.–उपद्रवकारी, झगड़े खड़े करनेवाला, धूर्त, फ़ित्तीन।

मुफ़त्तिश (مفتش) अ. वि.–तफ़्तीश करनेवाला, खोज लगानेवाला; ढूँढ़नेवाला, तलाश करनेवाला।

मुफ़त्तेह (مفتح) अ. वि.–खोलनेवाला।

मुफ़र्रिहुल क़ुलूब (مفرح القلوب) अ. वि.–दिलों को आनन्द और उल्लास देनेवाला।

मुफ़र्रेह (مفرح) अ. वि.–मन में उमंग और उल्लास उत्पन्न करनेवाला; वह औषध जो हृदय को आनंदित करे।

मुफ़र्रेहात (مفرحات) अ. स्त्री.–वे दवाएँ जो हृदय में आनंद और विकास की वृद्धि करें।

मुफ़व्वज़ः (مفوضہ) अ. वि.–सिपुर्द की हुई वस्तु।

मुफ़व्वज़ (مفوض) अ. वि.–सिपुर्द किया हुआ, हस्तांतरित।

मुफ़व्विज़ (مفوض) अ. वि.–हस्तांतरण करनेवाला, प्रदान करनेवाला, सिपुर्द करनेवाला।

मुफ़स्सलः (مفصلہ) अ. वि.–विवरण किया हुआ।

मुफ़स्सल (مفصل) अ. वि.–विस्तारपूर्ण, सविस्तार, विस्तृत, स्पष्ट, वाज़ेह, मुशर्रह।

मुफ़स्सलए ज़ैल (مفصلہ ذیل) अ. वि.–जिसका विवरण नीचे दिया गया हो, निम्नांकित।

मुफ़स्सलात (مفصلات) अ. पुं.–किसी नगर के आस-पास की छोटी आबादियाँ।

मुफ़स्सिर (مفسر) अ. पुं.–तफ़्सीर करनेवाला, भाष्यकार; इस्लाम में हदीसों की तफ़्सीर करनेवाला।

मुफ़स्सिरीन (مفسرین) अ. पुं.–'मुफ़स्सिर' का बहु., हदीस की व्याख्या करनेवाले विद्वज्जन।

मुफ़स्सिल (مفصل) अ. वि.–स्पष्टीकरण करनेवाला, तफ़्सील बतानेवाला।

मुफ़ाकहः (مفاقہ) अ. पुं.–परस्पर आमोद-प्रमोद करना; मनोरंजन, मनोविनोद।

मुफ़ाख़रत (مفاخرت) अ. स्त्री.–परस्पर गर्व करना; गर्व, गौरव; डींग, शेख़ी।

मुफ़ाख़िर (مفاخر) अ. वि.–गर्व करनेवाला; डींग मारनेवाला, अभिमानी।

मुफ़ाजा (مفاجا) अ. पुं.–'मुफ़ाजात' का लघु., दे. 'मुफ़ाजात'।

मुफ़ाजात (مفاجات) अ. स्त्री.–आकस्मिक, सहसा, एकाएक, आचानक, एकबारगी।

मुफ़ारक़त (مفارقت) अ. स्त्री.–पृथक्ता, अलाहिदगी; वियोग, जुदाई; तलाक़, विवाह-विच्छेद।

मुफ़ारिक़ (مفارق) अ. वि.–जुदा होनेवाला, अलग होनेवाला; पृथक्, जुदा।

मुफ़ावज़ः (مفاوضہ) अ. पुं.–वह पत्र जो बड़े की ओर से छोटे को लिखा जाय; पत्र, चिट्ठी; बराबरी, समानता।

मुफ़ावज़त (مفاوضت) अ. स्त्री.–एक-दूसरे का सिपुर्द करना; साझा करना; बराबरी करना; मैथुन करना।

मुफ़ावज़ात (مفاوضات) अ. पुं.–'मुफ़ावज़ः' का बहु., ख़तोकिताबत के काग़ज़ात जो बड़े की तरफ़ से छोटों को हों।

मुफ़ाहमत (مفاہمت) अ. स्त्री.–एक-दूसरे को समझाना; समझौता, फ़ैसला।

मुफ़िर [र्र] (مفر) अ. वि.–भागनेवाला, पलायक।

मुफ़ीज़ (مفیض) अ. वि.–फ़ैज़ पहुँचानेवाला, यश देनेवाला।

मुफ़ीदे ज़िंदगी (مفیدزندگی) अ. फा. वि.–जीवनोपयोगी, ज़िंदगी में काम आनेवाला।

मुफ़ीद (مفید) अ. वि.–उपयोगी, कार आमद, लाभकारी, फ़ाइदामंद, हितवर।

मुफ़ीदे आम (مفیدعام) अ. वि.–सबके लिए लाभकारी, सर्वोपकारी।

मुफ़ीदे मत्लब (مفیدمطلب) अ. वि.–अपने उद्देश्य के लिए फ़ाइदामंद, प्रयोजनानुकूल।

मुफ़्त (مفت) फा. वि.–बेदाम; व्यर्थ, बेकार,; नष्ट, ज़ाए'; अकारण, बेसबब ; बिना परिश्रम, बेमेहनत।

मुफ़्तक़िर (مفتقر) अ. वि.–दरिद्र, कंगाल; भिखारी, मँगता।

मुफ़्तख़र (مفتخر) अ. वि.–गर्वान्वित, जिस पर फ़ख़्र हो।

मुफ़्तख़िर (مفتخر) अ. वि.–गर्व करनेवाला, फ़ख़्र करनेवाला, मग़्रूर।

मुफ़्तख़ोर (مفتخور) फा. वि.–जो दूसरे के सिर पड़ा हो; जो मेहनत न करे और खाना चाहे; दूसरों का माल मारनेवाला।

मुफ़्तख़ोरी (مفتخوری) फा. स्त्री.–दूसरे के सिर रहना; बेमेहनत किये खाना चाहना; दूसरों का माल मारना।

मुफ़्ततन (مفتتن) अ. वि.–फ़ितने में डाला हुआ।

मुफ़्तबर (مفتبر) फा. वि.–दूसरों का माल मारनेवाला।

मुफ़्तबरी (مفتبری) फा. स्त्री.–दूसरों का माल मारना।

मुफ़्तरज़ात (مفترضات) अ.पुं.–कल्पित बातें, खयाली मंसूबे।

मुफ़्तरिक़ (مفترق) अ. वि.–फ़र्क़ डालनेवाला, फूट डालनेवाला, दो दोस्तों के वीच में दुश्मनी पैदा करा देनेवाला।

मुफ़्तरी (مفتری) अ. वि.–धूर्त, शरीर; झूठा इल्ज़ाम लगानेवाला, आरोपक।

मुफ़्तरे' (مفترع) अ. वि.–शाखाएँ निकालनेवाला।

मुफ़्तसितां (مفتستاں) फा. वि.–मुफ़्त छीननेवाला, बेदाम दिये लेनेवाला।

मुफ़्तसितानी (مفتستانی) फा. स्त्री.–बेदाम दिये चीज़ का छीन लेना।

मुफ़्तिए आ'ज़म (مفتئی اعظم) अ. पुं.–सबसे बड़ा मुफ़्ती।

मुफ़्ती (مفتی) अ. पुं.–फ़त्वा देनेवाला, मुसलमानों का वह धर्मशास्त्रवेत्ता मौलवी जो धार्मिक समस्याओं का समाधान प्रश्नोत्तर के रूप में करता है।

मुफ़्रद (مفرد) अ. वि.–एक, अकेला।

मुफ़्रदात (مفردات) अ. स्त्री.–वे अक्षर जो अलग-अलग लिखे जायँ, जैसे—अ, ब, स; वे दवाएँ जो मिश्रित न हों, बल्कि पृथक् रूप में हों; वह किताब जिसमें मुफ़्रद दवाओं का वर्णन हो।

मुफ़्रित (مفرط) अ. वि.–अत्यधिक, बहुत ज़ियादा, प्रचुर।

मुफ़्लिस (مفلس) अ. वि.–दरिद्र, निर्धन, धनहीन, कंगाल, ग़रीब।

मुफ़्लिसी (مفلسی) अ. स्त्री.–दरिद्रता, निर्धनता, कंगाली, ग़रीबी।

मुफ़्सिद (مفسد) अ. वि.–उपद्रवी, फ़िसादी; फूट डलवानेवाला; उत्पाती, शरीर; दूषित करनेवाला, बिगाड़नेवाला; धूर्त, छली।

मुफ़्सिदानः (مفسدانہ) अ. वि.–मुफ़्सिदों-जैसा, शरारत और उपद्रव से भरा हुआ।

मुफ़्सिदेअख़्लात (مفسداخلاط) अ. वि.–शरीर की धातुओं को दूषित करनेवाला।

मुफ़्सिदे ख़ून (مفسدخون) अ. फा. वि.–रक्तदूषक, ख़ून को ख़राब करनेवाला।

मुबज़्ज़िर (مبذر) अ. वि.–व्यर्थ और अधिक ख़र्च करनेवाला, अपव्ययी।

मुबद्दल (مبدل) अ. वि.–बदला हुआ, परिवर्तित।

मुबद्रिक़ (مبدرق) अ. वि.–पथप्रदर्शक, मार्गदर्शक, राहनुमा, रास्ता बतानेवाला।

मुबय्यज़ः (مبیضہ) अ. वि.–सफ़ेद किया हुआ।

मुबय्यनः (مبینہ) अ. वि.–बयान किया हुआ, कहा हुआ, कथित, उक्त।

मुबय्यिन (مبین) अ. वि.–बयान करनेवाला, कहनेवाला।

मुबर्रा (مبرا) अ. वि.–बरी किया हुआ, मुक्त; पवित्र, पाक; पृथक्, अलग, दूर; बेतअल्लुक, विरक्त, निःसम्बन्ध।

मुबर्रिद (مبرد) अ. वि.–ठंडा करनेवाला, ठंडक पहुँचानेवाला वह दवा जो ठंडक पहुँचाये।

मुबर्रिदात (مبردات) अ.पुं.–ठंडक पहुँचानेवाली ओषधियाँ।

मुबर्सम (مبرسم) अ. वि.–जो व्यक़्ति 'बर्साम' रोग-से पीड़ित हो।

मुबर्हन (مبرهن) अ. वि.–जो बात प्रमाणों से पूरे तौर पर साबित की गयी हो, प्रमाणित, युक़्तिसंगत।

मुबल्लिग़ (مبلغ) अ. वि.–प्रचार करनेवाला, प्रचारक, विशेषतः धर्मप्रचारक।

मुबव्वब (مبوب) अ. वि.–अध्यायों और परिच्छेदों में बँटी हुई पुस्तक, सर्गबद्ध।

मुबश्शिर (مبشر) अ. वि.–शुभ सूचना देनेवाला, खुशख़बरी सुनानेवाला, शुभसूचक।

मुबस्सिर (مبصر) अ. वि.–पारखी, परख रखनेवाला, अच्छे-बुरे की तमीज़ रखनेवाला, मर्मज्ञ।

मुबह्ही (مبہی) अ. वि.–काम-शक्ति बढ़ानेवाला, कामवर्द्धक, बाजीकरण रसायन।

मुबादरत (مبادرت) अ. स्त्री.–फ़ुरती दिखाना; जल्दी करना; वीरता दिखाना; फ़ुर्ती; शीघ्रता; वीरता।

मुबादलः (مبادلہ) अ. पुं.–अदल-बदल, एक़ चीज़ देकर दूसरी लेना, आदान-प्रदान।

मुबादिर (مبادر) अ. वि.–फुर्ती करनेवाला; वीरता दिखानेवाला।

मुबादिल (مبادل) अ. वि.–एक चीज़ को दूसरी चीज़ से बदलनेवाला।

मुबारक (مبارک) अ. वि.–शुभान्वित, कल्याणकारी, बाबरकत; भाग्यशील, ख़ुशक़िस्मत; शुभसूचना, ख़ुशख़बरी; किसी ख़ुशी के मौक़े पर कहा जानेवाला शब्द, धन्यवाद, बधाई, मांगलिक।

मुबारकअंजाम (مبارک انجام) अ. फा. वि.–जिसका परिणाम कल्याणकर हो।

मुबारकक़दम (مبارک قدم) अ. वि.–जिसका आगमन शुभदायक हो।

मुबारकदम (مبارک دم) अ. फा. वि.–जिसकी फूँक से बीमार अच्छे हों; जिसके आशीर्वाद से लोगों का कल्याण हो।

मुबारकबाद (مبارک باد) अ. फा. वि.–मुबारक हो, कल्याण हो, यह वाक्य प्रायः ख़ुशी के अवसर पर एक-दूसरे से कहते हैं; शुभ सूचना, ख़ुशख़बरी।

मुबारक सलामत (مبارک سلامت) अ. स्त्री.–एक दूसरे को मुबारकबाद देना और उनकी सलामती अर्थात् चिरंजीव होन की दुआ करना।

मुबारज़त (مبارزت) अ. स्त्री.–संग्राम, युद्ध, समर, लड़ाई, जंग; युद्ध क्षेत्र में दोनों ओर से एक-एक योद्धा का निकलकर लड़ना, यह अरब का प्राचीन नियम था।

मुबारात (مبارات) अ. स्त्री.–किसीके साथ झगड़ा करना; किसीके साथ युद्ध में पक्ष करना।

मुबारिज़ (مبارز) अ. वि.–योद्धा, लड़ाकू, लड़नेवाला वीर; एक योद्धा से दूसरे पक्ष का लड़नेवाला योद्धा।

मुबालग़ः (مبالغہ) अ. पुं.–बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना, अत्युक्ति, अतिरंजना।

मुबालग़ःआमेज़ (مبالغہ آمیز) अ. फा. वि.–मुबालग़े से भरा हुआ, अतिरंजित।

मुबालग़ःआमेज़ी (مبالغہ آمیزی) अ. फा. स्त्री.–सच्ची बात में अपनी ओर से और कुछ मिलाकर उसे बहुत बढ़ा देना।

मुबालात (مبالات) अ. स्त्री.–किसी बात की शंका करना; किसी बात से डरना।

मुबाशरत (مباشرت) अ. स्त्री.–सहवास, संभोग, रतिक्रीड़ा, मैथुन, हमबिस्तरी।

मुबाशिर (مباشر) अ. वि.–मैथुनकर्ता, सहवास करनेवाला।

मुबाह (مباح) अ. वि.–विहित, जाइज़, जिसका खाना जाइज़ हो।

मुबाहलः (مباہلہ) अ. पुं.–एक-दूसरे को शाप देना, एक-दूसरे को कोसना।

मुबाहसः (مباحثہ) अ. पुं.–वाद-विवाद, तर्क-वितर्क, बह्सोतम्ह़ीस।

मुबाहात (مباہات) अ. स्त्री.–गर्व, फ़ख़्र; डींग, शेख़ी; अभिमान, घमंड।

मुबाहात (مباحات) अ. पुं.–वे चीज़ें जिनका खानपान धर्मशास्त्रानुसार वर्जित न हो।

मुबीन (مبین) अ. वि.–स्पष्ट, व्यक्त, वाज़ेह, साफ़।

मुबैयनः (مبینہ) बयान किया हुआ, कथित।

मुबैयन (مبین) अ. वि.–दे. 'मुबैयनः।

मुबैयिन (مبین) अ. वि.–बयान करनेवाला, कहनेवाला, वक़्ता।

मुब्तज़ल (مبتذل) अ. वि.–अपमानित, तिरस्कृत, बेइज़्ज़त; अधम, नीच, लोफ़र।

मुब्तदा (مبتدا) अ. वि.–शुरू किया गया, प्रारम्भित; जुम्लए इस्मियः का पहला अंग।

मुब्तदी (مبتدی) अ. वि.–शुरू करनेवाला, प्रारम्भिक; शुरू की पुस्तकें पढ़नेवाला, पारंगत का उलटा; नौसिखिआ, नौमश्क, जिसे अभी अच्छा अभ्यास न हो।

मुब्तदे (مبتدع) अ. वि.–बिद्अती, दीन अर्थात् धर्म में नयी बात निकालनेवाला।

मुब्तला (مبتلا) अ. वि.–ग्रस्त, पकड़ा हुआ; फँसा हुआ; मुग्ध, फ़िरेफ़्तः; आसक्त, आशिक़; जो परीक्षार्थ आपत्तियों में फँसाया गया हो।

मुब्तलाए अज़ाब (مبتلائے عذاب) अ. वि.–पापदंड से पीड़ित; आपत्तिग्रस्त।

मुब्तलाए अलम (مبتلائے الم) अ. वि.–दे. 'मुब्तलाए ग़म'।

मुब्तलाए आफ़त (مبتلائے آفت) अ. फा. वि.–आफ़तों में फँसा हुआ, संकटापन्न, विपद्ग्रस्त क्लेशग्रस्त।

मुब्तलाए आलाम (مبتلائے آلام) अ. वि.–भिन्न-भिन्न आपत्तियों में ग्रस्त, तरह-तरह के दुःखों से पीड़ित।

मुब्तलाए इश्क़ (مبتلائے عشق) अ. वि.–प्रेम के कष्ट में फँसा हुआ, प्रेमाबद्ध।

मुब्तलाए ग़म (مبتلاے غم) अ. वि.–शोक में गिरिफ़्तार, शोकग्रस्त, शोकपीड़ित; प्रेमाबद्ध, प्रेमदुःखग्रस्त।

मुब्तलाए मुसीबत (مبتلاے مصیبت) अ. वि.–दे. 'मुब्तलाए आफ़त'।

मुब्तली (مبتلی) अ. वि.–आज़माइश के लिए आपत्तियों में फँसानेवाला।

मुब्तसिम (مبتسم) अ. वि.–मुस्कुरानेवाला; खिलनेवाला।

मुब्तहिज (مبتہج) अ. वि.–प्रसन्न, आनंदित, हर्षित, मस्रूर।

मुब्तिल (مبطل) अ. वि.–खंडन करनेवाला, काट करनेवाला, झूठा ठहरानेवाला।

मुब्दल (مبدل) अ. वि.–बदला हुआ, परिवर्तित; वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द से बदला गया हो।

मुब्दलमिन्हु (مبدل منہ) अ. पुं.–जिस शब्द से बदला गया, वह शब्द।

मुब्दा (مبدء) अ. पुं.–प्रकट क़रने का स्थान; आरम्भ करने का स्थान, ईश्वर।

मुब्दिए फ़ैयाज़ (مبدۂ فیاض) अ. पुं.–बहुत अधिक फ़ैज़ पहुँचानेवाला अर्थात् ईश्वर।

मुब्दे (مبدع) अ. वि.–अपने मन से कोई निकालनेवाला।

मुब्दे (مبدء) अ. वि.–आरम्भ करनेवाला; प्रकट करनेवाला; सृष्टि करनेवाला, ईश्वर।

मुब्रम (مبرم) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत; अटल, अवश्यंभावी।

मुब्लग़ (مبلغ) अ. वि.–भेजा हुआ, प्रेष्य; खरा, जो खोटा न हो; रुपये के साथ लगाया जानेवाला शब्द जिसका अर्थ यह है कि भेजनेवाला खरा रुपया भेज रहा है।

मुब्लिग़ (مبلغ) अ. वि.–भेजनेवाला।

मुब्हम (مبہم) अ. वि.–ग़ैरवाज़ेह, अस्फुट, अस्पष्ट; निगूढ़, मुग़्लक़।

मुमक्कन (ممکن) अ. वि.–ठहराया हुआ, स्थिर किया हुआ।

मुमक्किन (ممکن) अ. वि.–ठहरानेवाला, स्थिर करनेवाला।

मुमज्जद (ممجد) अ.वि.–प्रतिष्ठित, संमानित, पूजित, बुज़ुर्ग।

मुमद्दद (ممدد) अ. वि.–जो खींचा गया हो।

मुमद्दिद (ممدد) अ. वि.–खींचनेवाला; एक दर्द जिसमें शरीर खिंचता है।

मुमय्यज़ (ممیز) अ. वि.–दूसरे से पृथक् किया गया, छाँटकर अलग किया गया, अच्छा जानकर छाँटा गया।

मुमय्यिज़ (ممیز) अ. वि.–छाँटकर अलग करनेवाला, बुरे-भले में अंतर और भेद करनेवाला।

मुमस्सिलः (ممثلہ) अ. स्त्री.–अभिनेत्री, ऐक्ट्रेस, अदाकार स्त्री।

मुमस्सिल (ممثل) अ. पुं.–अभिनेता, ऐक्टर, अदाकार।

मुमानअत (ممانعت) अ. स्त्री.–निषेध, प्रतिषेध, मनाही, रोक।

मुमारस्त (ممارست) अ. स्त्री.–अभ्यास, मश्क़; अनुभव, तज्रिबः; काम में कोशिश और मेहनत।

मुमारात (ممارات) अ. स्त्री.–किसी के साथ जाना; शत्रुता करना; युद्ध करना।

मुमारिस (ممارس) अ. वि.–काम में कोशिश क़रनेवाला; अभ्यस्त, मश्शाक; अनुभवी, तज्रिबाकार।

मुमास (مماس) अ. वि.–घिसा हुआ; घिसनेवाला; घिसने की जगह।

मुमासख़त (مماسخت) अ. स्त्री.–अच्छी सूरत को बुरी सूरत में परिवर्तित कर देना।

मुमासलत (مماثلت) अ.स्त्री.–एक-जैसा होना; सदृशता, एकरूपता, हमशक्ली; समानता, बराबरी।

मुमासिख़ (مماسخ) अ. वि.–अच्छे रूप को कुरूपता में परिवर्तित कर देनेवाला।

मुमासिल (مماثل) अ. वि.–सदृश, एकरूप, हमशक्ल; समान, बराबर।

मुमिद [द्द] (ممد) अ. वि.–सहायक, मददगार; पक्षपाती, हिमायती, आश्रयदाता, सहारा देनेवाला।

मुमिर [र्र] (ممر) अ. वि.–गुज़रनेवाला, जानेवाला।

मुम्किन (ممکن) अ. वि.–हो सकनेवाली बात, संभव, शक़्य, संभाव्य; शक़्ति, ताकत; सामर्थ्य, मक़्दूर।

मुम्किनात़ (ممکنات) अ. पुं.–'मुम्किन' का बहु., वे बातें जिनका होना संभव हो।

मुम्किनुलअमल (ممکن العمل) अ. वि.–जिस पर अमल करना संभव हो।

मुम्किनुलइलाज (ممکن العلاج) अ. वि.–जिसकी चिकित्सा (इलाज) संभव हो।

मुम्किनुलवुजूद (ممکن الوجود) अ. वि.–जिसका होना और न होना दोनों अनावश्यक हों, अर्थात् मानवजाति।

मुम्किनुलहुसूल (ممکن الحصول) अ. वि.–जिसका मिलना संभव हो, प्राप्य।

मुम्तद (ممتد) अ. वि.–खींचा हुआ; लम्बा, दराज़।

मुम्तने (ممتنع) अ. वि.–निषेधक, रोकनेवाला।

मुम्तली (ممتلی) अ. वि.–भरा हुआ, पूर्ण।

मुम्तहन (ممتحن) अ. वि.–जिसकी परीक्षा ली जाय, परीक्षित, आज़माया हुआ।

मुत्तहन (ممتہن) अ. वि.–तिरस्कृत, अपमानित, निंदित, बेइज़्ज़त।

मुम्तहिन (ممتحن) अ. वि.–इम्तिहान लेनेवाला, परीक्षक।

मुम्ताज़ (ممتاز) अ. वि.–बहुतों में से चुनकर अलग किया हुआ; प्रतिष्ठित, संमानित, मुअज़्ज़ज़; मुख्य, विशिष्ट, खास।

मुम्तिर (ممطر) अ. वि.–बरसनेवाला बादल।

मुम्सिक (ممسک) निकलने से रोकनेवाला; कृपण, कंजूस, बख़ील।

मुर [र्र] (مر) अ. वि.–कड़वा, कटु, तल्ख़; मुरमक्की, एक गोंद जो दवा में चलता है।

मुरक्कब (مرکب) अ. वि.–मिश्रित, मिला हुआ; वह दवा जो कई दवाओं से मिलकर बनी हो।

मुरक्कबात (مرکبات) अ. पुं.–'मुरक्कब' का बहु., मुरक्कब दवाएँ।

मुरक़्क़म (مرقم) अ. वि.–लिखित, लिखा हुआ।

मुरक़्क़ा (مرقع) अ. पुं.–चित्र, तस्वीर; तस्वीरों का अल्बम, चित्रावली।

मुरख़्ख़म (مرخم) अ. वि.–मुलाइम किया हुआ; वह शब्द जिसका अंतिम अक्षर हटा दिया गया हो।

मुरख़्ख़स (مرخص) अ. वि.–रुख़सत किया गया, जिसे जाने की आज्ञा दे दी गयी हो, जो विदा कर दिया गया हो।

मुरग़्ग़न (مرغن) फा. वि.–तेल या घी में तरतराता हुआ, घी में तरबतर।

मुरज्जज़ (مرجز) अ. वि.–वह गद्य जिसके वाक्य परस्पर संतुलित और सानुप्रास हों।

मुरज्जब (مرجب) अ. वि.–प्रतिष्ठित, संमानित।

मुरत्तब (مرتب) अ. वि.–क्रमबद्ध किया हुआ, सिलसिले से लगाया हुआ क्रमागत; संपादित, समाहृत, संगृहीत।

मुरत्तब (مرطب) अ. वि.–जिसको तर किया हो, जिसे तरी पहुँचायी गयी हो।

मुरत्तिब (مرتب) अ. वि.–क्रमबद्ध करनेवाला; संग्रह करनेवाला।

मुरत्तिब (مرطب) अ. वि.–ठंड पहुँचानेवाला, तरी पहुँचानेवाला।

मुरद्दद (مردد) अ. वि.–जिसका खंडन किया गया हो।

मुरद्दफ़ (مردف) अ. वि.–रदीफ़ के हिसाब बनाया हुआ, रदीफ़वार किया हुआ।

मुरद्दिद (مردد) अ. वि.–खंडन करनेवाला, तर्दीद करनेवाला।

मुरफ़्फ़ह (مرفہ) अ. व़ि–सम्पन्न, समृद्ध, आसूदा।

मुरफ़्फ़हहाल (مرفہ حال) अ. वि.–धनाढ्य, मालदार, धनी, सम्पन्न।

मुरब्बा (مربیٰ) अ. वि.–वह मेवा जो विशेष रूप से गलाकर शक्कर के क़िवाम में रखा गया हो।

मुरब्बा' (مربع) अ. वि.–वह समकोण चतुर्भुज जिसकी सब रेखाएँ बराबर हों, वर्गाकार, चौखूँटा।

मुरब्बी (مربی) अ. वि.–पालनेवाला, सरपरस्त, अभिभावक।

मुरमक्की (مرمکی) अ. स्त्री.–एक गोंद जो दवा के काम आता है।

मुरम्ममः (مرممہ) अ. वि.–संशोधित, तर्मीम किया हुआ।

मुरम्मम (مرمم) अ. वि.–दे. 'मुरम्ममः'।

मुरम्मिम (مرمم) अ. वि.–संशोधनकर्ता, तर्मीम करनेवाला।

मुरव्वक़ (مروق) अ. वि.–किसी वनस्पति के पत्तों आदि का कोट का निकाला हुआ अरक जिसे आग पर पकाकर उसकी हरियाली दूर कर दी गयी हो।

मुरव्वजः (مروجہ) अ. वि.–प्रचलित, राइज, जिसका रवाज या चलन हो।

मुरव्वज (مروج) अ. वि.–दे. 'मुरव्वजः'।

मुरव्वत (مروت) अ. स्त्री.–शुद्ध उच्चारण 'मुरुव्वत' है, परन्तु उर्दू में 'मुरव्वत' ही बोलते हैं; शील संकोच, लिहाज़; रिआयत।

मुरव्वतकेश (مروت کیش) अ. फा. वि.–जिसमें मुरव्वत बहुत हो।

मुरव्वतन (مروتاً) अ. वि.–मुरव्वत के ख़याल से, मुरव्वत में।

मुरव्वतशिआर (مروت شعار) अ. वि.–जिसके स्वभाव में मुरव्वत हो।

मुरव्विज (مروج) अ. वि.–रवाज देनेवाला, प्रचार करनेवाला, राइज करनेवाला।

मुरव्विह (مروح) अ. वि.–आनन्द देनेवाला, रत्नजटित; सुगंध फैलानेवाला।

मुरस्सा (مرصع) अ. वि.–जड़ाऊ, जटित; सुसज्जित, आरास्त; संस्कृत, शुस्तः।

मुरस्साकार (مرصع کار) अ. फा. वि.–ज़ेवर में नगीने और जवाहिर जड़नेवाला, जड़िया; नगीने जड़ा हुआ, रत्नजटित, जटित, खचित।

मुरस्साकारी (مرصع کاری) अ. फा. स्त्री.–ज़ेवरों में नगीने जड़ने का काम।

मुरस्सा ग़ज़ल (مرصع غزل) अ. फा.—सुसज्जिता ग़ज़ल, संपूर्ण अलंकृता ग़ज़ल।

मुरस्सा'निगार (مرصع نگار) अ. फा. वि.–जिसका लिखना बहुत अच्छा हो, जो लिखने में नगीने से जड़ता हो; जड़ाऊ, जटित।

मुरस्सा'निगारी (مرصع نگاری) अ. फा. स्त्री.–खुशनवीसी।

मुरस्सासाज (مرصع ساز) अ. फा. वि.–दे. 'मुरस्साकार'।

मुराआत (مراعات) अ. स्त्री.–रक्षा, देख-रेख; रिआयत, मुरव्वत; कनखियों से देखना।

मुराआतुन्नज़ीर (مراعات النظیر) अ. स्त्री.–एक शब्दालंकार जिसमें एक चीज़ के वर्णन में उससे संबद्ध और चीज़ों को भी लाया जाय, जैसे––धनुष के साथ बाण, निषंग अथवा प्रत्यंचा आदि का उल्लेख हो।

मुराई (مراعی) अ. वि.–रिआयत करनेवाला; देख-रेख करनेवाला; चरानेवाला।

मुराक़बः (مراقبہ) अ. पुं.–संसार से हटकर ईश्वर में ध्यान लगाना, समाधि, अवधान, योग, धारणा।

मुराक़िब (مراقب) अ. वि.–समाधिस्थ, मुराक़बे में गया हुआ, अंतर्लीन।

मुराख़तः (مراختہ) फा. पुं.–परस्पर रेख़्ता में कलाम सुनाना, रेख़्ते का मुशाअरा।

मुराग़बत (مراغبت) अ. स्त्री.–इच्छा, अभिलाषा, ख़्वाहिश; रुचि, रग़्बत।

मुराजअत (مراجعت) अ. स्त्री.–वापस आना, प्रत्यागमन।

मुराज़अत (مراضعت) अ. स्त्री.–दूसरे के बालक को दूध पिलाना।

मुराजे' (مراجع) अ. वि.–वापस आनेवाला, लौटनेवाला, प्रत्यागामी।

मुराद (مراد) अ. स्त्री.–इच्छा, कामना, अभिलाषा, आर्ज़ू; आशय, उद्देश्य, मक़्सद; मन्नत, मानता।

मुरादिफ़ (مرادف) अ. वि.–किसी के पीछे बैठनेवाला; वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द का समानार्थक हो।

मुरादिफ़ुलमा'ना (مرادف المعنی) अ. वि.–पर्यायवाची, समानार्थक।

मुरादी (مرادی) अ. वि.–आशय के अनुकूल; काल्पनिक, क़ियासी; आनों के साथ लगनेवाला शब्द, जैसे––'मुरादी आठ आना'।

मुराफ़अः (مرافعہ) अ. पुं.–अपील, पुनर्विचार-प्रार्थना, पुनर्न्याय-प्रार्थना।

मुराफ़क़त (مرافقت) अ. स्त्री.–सहचारिता, हमराही; मैत्री, दोस्ती।

मुराफ़िक़ (مرافق) अ. वि.–सहचर, साथी; मित्र, दोस्त।

मुराफ़े (مرافع) अ. वि.–अपील करनेवाला, पुनर्वादी, पुनरावेदक।

मुराबहत (مرابحت) अ. स्त्री.–लाभ उठाकर किसी वस्तु को वेचना।

मुरासलः (مراسلہ) अ. पुं.–पत्र, चिट्ठी, ख़त।

मुरासलत (مراسلت) अ. स्त्री.–पत्र-व्यवहार, ख़तोकिताबत।

मुरासलात (مراسلات) अ. पुं.–'मुरासलत' का बहु., आपसी पत्र-व्यवहार के काग़ज़ात।

मुराहिक़ (مراہق) अ. पुं.–वह लड़का जो बालिग़ होने के क़रीब हो, अंकुरित यौवन।

मुरुव्वत (مروت) अ. स्त्री.–शील संकोच, लिहाज़; रिआयत; आदर, इज़्ज़त, शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में 'मुरव्वत' अधिक बोलते हैं।

मुरीद (مرید) अ. वि.–शिष्य, चेला, धर्मगुरु का अनुयायी।

मुरीदी (مریدی) अ. स्त्री.–मुरीद का पद; मुरीद का कर्तव्य।

मुरूर (مرور) अ. पुं.–जाना, गमन करना; व्यतीत होना, बीतना।

मुरूरे ऐयाम (مرور ایام) अ. पुं.–समय बीतना, वक़्त गुज़रना।

मुर्ग़ (مرغ) फा. पुं.–पक्षी, खग, विहग, शकुंत, अंडज, चिड़िया; कुक़्कुट, मुर्ग़ा।

मुर्ग़अंदाज (مرغ انداز) फा. पुं.–वह निवाला (कौर) जिसे बिना चबाये निगल लिया जाय।

मुर्ग़बाज (مرغ باز) अ. फा. वि.–जो मुर्ग़ों की पाली बदकर उन्हें लड़ाता है।

मुर्ग़बाजी (مرغ بازی) फा. स्त्री.–मुर्ग़ों की पाली, मुर्ग़ लड़ाना।

मुर्ग़े आतशख़्वार (مرغ آتش خوار) फा. पुं.–आग खाऩेवाली चिड़िया; चकोर; समंदर।

मुर्ग़े क़फस (مرغ قفس) फा. पुं.–वह चिड़िया जो पिंजड़े में बंद हो।

मुर्ग़े क़िब्लःनुमा (مرغ قبلہ نما) फा. अ. पं.–क़ुतुबनुमा की सुई।

मुर्ग़े गिरिफ़्तार (مرغ گرفتار) फा. पुं.–वह चिड़िया जिसके पाँव में डोरा बँधा हो या जो पिंजड़े में क़ैद हो।

मुर्ग़े दस्तआमोज (مرغ دست آموز) फा. वि.–वह चिड़िया जो हाथ पर सधायी जाती है।

मुर्ग़े नामःबर (مرغ نامہ بر) फा. पुं.–ख़त ले जानेवाली चिड़िया; कबूतर; हुदहुद।

मुर्ग़े शानःसर (مرغ شانہ سر) फा. पुं.–सर पर कँलगी रखनेवाली चिड़िया, हुदहुद।

मुर्ग़े सहर (مرغ سحر) फा. अ. पुं.–सवेरे बोलनेवाली चिड़िया, कुक्कुट; बुलबुल।

मुर्ज़िअः (مرضعه) अ. स्त्री.–दूध पिलानेवाली स्त्री, धाय, धात्री।

मुर्तइश (مرتعش) अ. वि.–कंपायमान, हिलता हुआ, स्पन्दमाना।

मुर्तकिब (مرتکب) अ. वि.–पाप या दोष का करनेवाला।

मुर्तज़वी (مرتضوی) अ. वि.–मुर्तज़ा अर्थात् हज़्रतअली से सम्बन्धित; हज़्रतअली का।

मुर्तज़ा (مرتضیٰ) अ. वि.–रोचक, मनोवांछित, पसंदीदः; हज़्रत अली की उपाधि, हज़्रतअली।

मुर्तद [द्द] (مرتد) अ. वि.–जो अपना धर्म छोड़कर दूसरे के धर्म में चला जाय, विधर्मी।

मुर्तफ़े' (مرتفع) अ. वि.–उच्च, उत्तुंग, ऊँचा, बलंद।

मुर्तशी (مرتشی) अ. वि.–रिशवत लेनेवाला, उत्कोचक।

मुर्तसम (مرتسم) अ. वि.–अंकित, नक़्श।

मुर्तसिम (مرتسم) अ. वि.–नक़्श क़बूल करनेवाला।

मुर्ताज़ (مرتاض) अ. वि.–तपस्वी, इबादत करनेवाला; इंद्रियनिग्रही, नफ़्सकुश।

मुर्दः (مرده) फा. पुं.–मृत, निष्प्राण, मरा हुआ; मृतक, मरा हुआ आदमी या प्राणी; दुर्बल, अशक्त, कमज़ोर, मरयल; बहुत अधिक बूढ़ा; बुझी हुई आग या चिराग़; खिन्न, अफ़्सुर्दः; शव, लाश।

मुर्दःख़ोर (مرده خور) फा. वि.–मुर्दारख़्वार, मृताशी, मृतभोजी।

मुर्दःदिल (مرده دل) जिसका मन बहुत ही उचाट और नीरस हो, मृतहृदय, हतमानस, हतचित्र।

मुर्दःदिली (مرده دلی) फा. स्त्री.–मन का खिन्न और मलिन होना।

मुर्दःशो (مرده شو) फा. वि.–मृतक शरीर को स्नान करानेवाला, मृतस्नापक।

मुर्दःसंग (مرده سنگ) फा. पुं.–एक पत्थर जो दवा के काम आता है, मुर्दासंख।

मुर्दगाँ (مردگاں) फा. पुं.–'मुर्दः' का बहु., मरे हुए लोग।

मुर्दनी (مردنی) फा. वि.–मृत्यु के चिह्न जो मरते समय मनुष्य के मुख पर प्रकट होते हैं; मृत्यु, मरण, मौत।

मुर्दाद (مرداد) फा. पुं.–ईरानी पाँचवाँ महीना, जो हिंदी के भादों से मिलता है।

मुर्दार (مردار) फा. वि.–वह पशु जो अपनी मौत से मर गया हो, मृत पशु; अपवित्र, नापाक; मृतक, निष्प्राण (पशु आदि); कुलटा, व्यभिचारिणी, फ़ाहिशा; एक तिरस्कार का शब्द जो क्रोध के समय स्त्री के लिए बोला जाता है।

मुर्दारख़्वार (مردارخوار) फा. वि.–मरे हुए जीव को खानेवाला, मृताशी।

मुर्दारसंग (مردارسنگ) फा. पुं.–एक पत्थर-जैसा पदार्थ जो दवा में काम आता है, मुर्दासंख, लघुतिक्त।

मुर्शिद (مرشد) अ. वि.–धर्म-गुरु, पीर; (व्यंग) धूर्त, वंचक, चालाक।

मुर्शिदज़ादः (مرشدزاده) अ. फा. पुं.–धर्मगुरु का पुत्र, पीर का बेटा।

मुर्शिदे कामिल (مرشد کامل) अ. पुं.–पहुँचा हुआ पीर, बहुत बड़ा वली, महायोगी।

मुर्सलः (مرسله) अ. वि.–भेजी हुई वस्तु, प्रेषित।

मुर्सल (مرسل) अ. वि.–भीजा हुआ; वह पैग़ंबर जिस पर कोई इलहामी किताब उतरी हो।

मुर्सलइलैह (مرسل الیه) अ. वि.–जिसको भेजा जाय, जिसको कोई चीज भेजी गयी हो।

मुर्सलीन (مرسلین) अ. पुं.–'मुर्सल' का बहु., वह रसूल जिन पर दिव्य ग्रंथ उतरे हों।

मुर्सिल (مرسل) अ. वि.–भेजनेवाला, प्रेषक, इर्साल (प्रेषण) करनेवाला।

मुल (مل) फा. स्त्री.–मदिरा, सुरा, शराब।

मुलक़्क़ब (ملقب) अ. वि.–उपाधित, लक़ब दिया गया।

मुलख़्ख़स (ملخص) अ. वि.–संक्षिप्त, खुलासा, तत्त्व, सार।

मुलज़्ज़ज़ (ملذذ) अ. वि.–आनंद देनेवाला; वह दवा जो लिंगेंद्रिय पर लगा लेने से सहवास का आनंद बढ़ा दे।

मुलत्तिफ़ (ملطف) अ. वि.–वह औषध जो दूषित धातुओं को पतला कर दे।

मुलम्मा' (ملمع) अ. पुं.–गिलिट किया हुआ; चाँदी या सोने का पानी चढ़ाया हुआ; क़लई।

मुलम्मा'कार (ملمع کار) अ. फा. वि.–मुलम्मों का काम करनेवाला, जिसके मुँह पर कुछ हो और पेट में कुछ, चापलूस, चाटुकार।

मुलम्माकारी (ملمع کاری) अ. फा. स्त्री.–मुलम्मे का काम बनाना; चाटुकारी, चापलूसी।

मुलम्मागर (ملماگر) अ. फा. वि.–मुलम्मे का काम बनानेवाला।

मुलम्मा'साज़ (ملماساز) अ. फा. वि.–दे. 'मुलम्मागर'।

मुलम्मा'साज़ी (ملمع سازی) अ. फा. स्त्री.–मुलम्मे का काम बनाना।

मुलय्यिन (ملین) अ. वि.–नर्मी पैदा करनेवाला; वह दवा जो पेट को नर्म करके असानी से पाख़ाना लाये, हलकी रेचक दवा।

मुलव्वन (ملون) अ. वि.–रंग किया हुआ, रंजित; रंग-विरंगी, चित्र-विचित्रि।

मुलव्वस (ملوث) अ. वि.–लिथड़ा हुआ, सना हुआ; किसी पाप या अपराध में भागीदार।

मुलव्विन (ملون) अ. वि.–रंगनेवाला, रंजक।

मुलाअबत (ملاعبت) अ. स्त्री.–खेल-कूद, क्रीड़ा; मनोविनोद, आमोद-प्रमोद, तफ़्रीह; चूमा-चाटी, प्यार का खेल।

मुलाअमत (ملائمت) अ. स्त्री.–नर्मी, कोमलता; दो चीज़ों का इकट्ठा करना; दे. 'मुलायमत'।

मुलाइब (ملاعب) अ. वि.–खेलनेवाला, क्रीड़ा करनेवाला।

मुलाइम (ملائم) अ. वि.–नर्म, कोमल; नाज़ुक, मृदुल; लतीफ़, सूक्ष; मधुर, शीरीं; धीमा, ठंडा।

मुलाक़ात (ملاقات) अ. स्त्री.–एक दूसरे से मिलना, भेंट, साक्षात्कार; परिचय, जान-पहचान; मेल-मिलाप, मैत्री, प्रेम-व्यवहार; सहवास, हमबिस्तरी।

मुलाक़ाती (ملاقاتی) अ. वि.–मेल-जोल का व्यक्ति, मित्र; जो प्रायः मिलने आता रहता हो।

मुलाक़ाते बाज़दीद (ملاقات بازدید) अ. फा. स्त्री.–किसी के मिलने के लिए आने पर उस के घर मिलने जाना।

मुलाक़ी (ملاقی) अ. वि.–मिलनेवाला, संयुक्त; मित्र, दोस्त, मुलाक़ाती।

मुलाज़मत (ملازمت) अ. स्त्री.–किसी के पास बराबर रहना; सेवा, नौकरी; बड़े व्यक्ति की मुलाक़ात।

मुलाज़मतपेशः (ملازمت پیشہ) अ. फा. वि.–जिसकी गुज़र-बसर का साहारा नौकरी हो।

मुलाज़िमः (ملازمہ) अ. स्त्री.–नौकरानी, दासी, परिचारिका।

मुलाज़िम (ملازم) अ. पुं.–दास, ख़िदमतगार; सेवक, नौकर।

मुलातफ़ः (ملاطفہ) अ. पुं.–कृपा, दया, अनुग्रह; नम्रता, विनीति, खाकसारी; कोमलता, नर्मी; कृपापत्र, इनायतनामा।

मुलातफ़त (ملاطفت) अ. स्त्री.–कृपा, दया; नम्रता, आजिज़ी; कोमलता, नर्मी।

मुलाबसत (ملابست) अ. स्त्री.–एक दूसरे के सदृश होना, एकरूपता।

मुलायमत (ملایمت) अ. स्त्री.–कोमलता, नर्मी; दो चीज़ों का एक जगह करना।

मुलाहज़ः (ملاحظہ) अ. पुं.–देखना, ग़ौर करना; अनुशीलन, लिहाज़; सम्मुख, सामने।

मुलूक (ملوک) अ. पुं.–'मलिक' का बहु., बादशाह लोग।

मुलूकानः (ملوکانہ) अ. फा. वि.–बादशाहों-जैसा, शाही।

मुलैयिन (ملین) अ. वि.–दे. 'मुलय्यिन'।

मुल्क (ملک) अ. पुं.–देश; राष्ट्र, सल्तनत; जन्मभूमि, वतन; क्षेत्र, इलाक़ा।

मुल्कगीरी (ملک گیری) अ. फा. स्त्री.–दूसरे देशों को जीतना, दूसरे देशों को अपने अधीन करना।

मुल्करानी (ملک رانی) अ. फा. स्त्री.–राज करना, शासन करना, हुकूमत करना।

मुल्कसितानी (ملک ستانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मुल्कगीरी'।

मुल्की (ملکی) अ. वि.–देशीय, देश का; देशनिवासी; देश का रहनेवाला; देशी, नेटिव।

मुल्के अदम (ملک عدم) अ. पुं.–यमलोक, परलोक, जहाँ मरकर जाते हैं।

मुल्के ख़मोशाँ (ملک خموشاں) अ. फा. पुं.–मुर्दों का देश, श्मशान भूमि, क़ब्रिस्तान।

मुल्के फ़ना (ملک فنا) अ. पुं.–नश्वर जगत्, संसार, दुनिया।

मुल्के बक़ा (ملک بقا) अ. पुं.–वह जगत् जहाँ हमेशा रहना है, परलोक।

मुल्ज़मः (ملزمہ) अ. स्त्री.–अपराधिनी, जुर्म करनेवाली स्त्री।

मुल्ज़म (ملزم) अ. पुं.–अपराधी, अभियोगी, क़ुसूरवार जिस पर अपराध लगाया गया हो।

मुल्ज़िम (ملزم) अ. वि.–इल्ज़ाम या अपराध लगानेवाला; किसी चीज़ को अपने ऊपर लाज़िम करनेवाला।

मुल्तक़त (ملتقط) अ. वि.–बीना हुआ, चुना हुआ, उठाया हुआ, रफ़ू किया हुआ।

मुल्तक़ित (ملتقط) अ. वि.–चुननेवाला, रफ़ू करनेवाला, उठानेवाला।

मुल्तज़िम (ملتزم) अ. वि.–अपने ऊपर लाज़िम या ज़ुरूरी करनेवाला।

मुल्तजी (ملتجی) अ. वि.–प्रार्थना करनेवाला, निवेदक, प्रार्थी; कहनेवाला, अर्ज़ करनेवाला; इच्छुक, ख़ाहिशमंद।

मुल्तफ़ित (ملتفت) अ. वि.–आकृष्ट, प्रवृत्त, रुजूअ।

मुल्तबस (ملتبس) अ. वि.–जो छिपाया गया हो; जिस पर शुब्हा किया गया हो।

मुल्तमिस (ملتمس) अ. वि.–प्रार्थना करनेवाला, निवेदक; कहनेवाला।

मुल्तवी (ملتوی) अ. वि.–रुकनेवाला, रुका हुआ, स्थगित।

मुल्तहब (ملتہب) अ. वि.–भड़का हुआ।

मुल्तहम (ملتحم) अ. वि.–भरा हुआ घाव, वह ज़ख़्म जो अच्छा हो गया हो।

मुल्तहिब (ملتهب) अ. वि.–लपटें देनेवाली आग, वह आग जिसमें से लपटें निकल रही हों।

मुल्तहिमः (ملتحمه) अ. स्त्री.–आँख का एक पर्दा, चक्षुः-पटल।

मुल्ला (ملا) अ. पुं.–मौलवी, फ़ाज़िल; मस्जिद में अज़ान देनेवाला; मक्तब में छोटे बच्चों को पढ़ानेवाला।

मुल्लाए मक्तबी (ملاے مکتبی) अ. पुं.–मक्तब में छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ानेवाला अर्थात् कम इल्म।

मुल्हक़ (ملحق) अ. वि.–चिपका हुआ, जुड़ा हुआ; मिला हुआ।

मुल्हिक़ (ملحق) अ. वि.–जुड़नेवाला; मिलनेवाला; वह चीज़ जो किसी चीज़ के आख़िर में जोड़ दी जाय।

मुल्हिक़ात (ملحقات) अ. पुं.–'मुल्हिक़' का बहु., आख़ीर में जोड़ी हुई चीज़ें।

मुल्हिद (ملحد) अ. वि.–नास्तिक, विधर्मी, अनीश्वर-वादी, ख़ुदा पर यक़ीन न रखनेवाला।

मुल्हिदानः (ملحدانه) अ. वि.–मुल्हिदों-जैसा, विधर्मियों-जैसा, धर्म के विरुद्ध।

मुल्हिम (ملهم) अ. वि.–हृदय में बात डालनेवाला; वह दैवी शक्ति जो मन को सचेत करती है, कान्शेन्स।

मुलहिमेग़ैब (ملهم غیب) अ. पुं.–हृदय में ग़ैब से बात डालने-बोलनेवाला, भविष्य की बात से सूचित करनेवाला।

मुवक़्क़र (موقر) अ. वि.–प्रतिष्ठित, मान्य, मुअज़्ज़ज।

मुवक्किल (موکل) अ. पुं.–देवता, हर काम के लिए नियुक्त एक फ़िरिश्ता; वकील का असामी, जो अपना मुक़द्दमा वकील को देता है; वह रूह जिसे आमिल वश में करता है।

मुवज्जल (موجل) अ. वि.–वह मह्र जो तुरंत न अदा किया जाय।

मुवज्जह (موجه) अ. वि.–उचित, मुनासिब; यथार्थ, ठीक; प्रमाणित, तर्क संगत, मुदल्लल।

मुवद्दत (مودت) अ. स्त्री.–दे. शुद्ध उच्चारण 'मवद्दत' यह उच्चारण बिलकुल ग़लत है।

मुवस्सा (موصیٰ) अ. वि.–जिसे वसीयत की गयी हो।

मुवस्सी (موصی) ग. वि.–वसीयत करनेवाला, रिक्थ पत्र-कर्ता, उत्तर साधक।

मुवह्हिद [**मुवहिद**] (موحد) अ. वि.–ईश्वर को एक माननेवाला; एक सम्प्रदाय जो केवल ईश्वर को मानता है, उसके सब अवतारों को या किताबों आदि को नहीं मानता।

मुवह्हिदानः (موحدانه) अ. फा. वि.–मुवह्हिदों-जैसा।

मुवह्हिश (موحش) अ. वि.–भगानेवाला।

मुवाख़ज़ः (مواخذه) अ. पुं.–दे. 'मुआख़ज़ः', शुद्ध उच्चारण वही है।

मुवाख़ात (مواخات) अ. स्त्री.–दे. 'मुआमुख़ात', शुद्ध उच्चारण वही है।

मुवाज़नः (موازنه) अ. पुं.–दे. 'मुआज़नः', शुद्ध उच्चारण वही है।

मुवाज़बत (مواظبت) अ. स्त्री.–काम में लगा रहना, किसी काम को नित्यप्रति करते रहना।

मुवाज़रत (موازرت) अ. स्त्री.–मंत्री का पद ग्रहण करना, मंत्री बनना, मंत्री का काम करना, वज़ीरी।

मुवाजहः (مواجهه) अ. पुं.–संमुख होना, आमने-सामने होना।

मुवाज़ात (موازات) अ. स्त्री.–मुक़ाबला, बराबरी, समानता।

मुवाज़ी (موازی) अ. वि.–मुक़ाबिल, बराबर, बराबर-बराबर।

मुवातात (مواطات) अ. स्त्री.–अनुकूलता, मुआफ़क़त।

मुवादअत (موادعت) अ. स्त्री.–एक-दूसरे से विदा होना; विदा करना।

मुवानसत (موانست) अ. स्त्री.–दे. 'मुआनसत', वही उच्चारण शुद्ध है।

मुवाफ़क़त (موافقت) अ. स्त्री.–दे. 'मुआफ़क़त', वही उच्चारण शुद्ध है।

मुवाफ़िक़ (موافق) अ. वि.–दे. 'मुआफ़िक़', वही उच्चारण शुद्ध है।

मुवामरत (موامرت) अ. स्त्री.–दे. 'मुआमरत', वही उच्चारण शुद्ध है।

मुवाला (موالا) अ. पुं.–'मुवालात' का लघु., दे. 'मुवालात'।

मुवालात (موالات) अ. स्त्री.–परस्पर मैत्री; परस्पर सहयोग, दे. 'मुआलात', दोनों शुद्ध हैं।

मुवासलत (مواصلت) अ. स्त्री.–मुलाक़ात, मेल; सहवास, हमबिस्तरी।

मुवासा (مواسا) अ. पुं.–दे. 'मुआसा', शुद्ध उच्चारण वही है।

मुवासात (مواسات) अ. स्त्री.–दे. 'मुआसात', शुद्ध उच्चारण वही है।

मुवाहनत (مواهنت) अ. स्त्री.–आलस्य, सुस्ती, काहिली।

मुवाहबत (مواهبت) अ. स्त्री.–दान, प्रदान, बख़्शिश।

मुवाहिन (مواهن) अ. वि.–आलसी, काहिल, सुस्त।

मुवाहिब (مواهب) अ. वि.–प्रदाता, बख़्शिश करनेवाला।

मुशंग (مشنگ) फा. पुं.–डाकू, लुटेरा, दस्यु; एक अनाज।

मुशक्कल (مشکل) अ. वि.–साकार, साक्षात्, किसी विशेष शक्ल में आया हुआ।

मुशख़्ख़स (مشخص) अ. वि.–परीक्षित, जाँचा हुआ; अनुमानित, अंदाज़ा किया हुआ; तश्ख़ीस अर्थात् रोग निदान किया हुआ।

मुशज्जर (مشجر) अ. वि.–बेल-बूटे बना हुआ; एक बेल-बूटेदार कपड़ा; एक पत्थर जिस पर प्रायः वृक्षों के चित्र बने होते हैं।

मुशत्तत (مشتت) अ. वि.–अस्त-व्यस्त, परागंदः; चिंतित, फ़िक्रमंद; उद्विग्न, परेशान।

मुशद्द (مشدد) अ. वि.–वह अक्षर जिस पर तश्दीद हो, जो दो बार पढ़ा जाय।

मुशब्बक (مشبک) अ. वि.–जालीदार, जिसमें बहुत से छेद हों।

मुशब्बह (مشبہ) अ. पुं.–वह वस्तु जिसे किसी दूसरी वस्तु से उपमा दी जाय, उपमेय। जैसे—मुख की उपमा चंद्र से दी जाय तो मुख 'मुशब्बह' अर्थात् उपमेय है।

मुशब्बहबिही (مشبہ بہ) अ. पुं.–वह वस्तु जिससे किसी वस्तु की उपमा की जाय, उपमान; उपमित, जैसे—मुख की उपमा चंद्र से दी जाय तो चंद्र 'मुशब्बहबिही' अर्थात् उपमान है।

मुशब्बेह (مشبہ) अ. वि.–उपमा देनेवाला।

मुशय्यन (مشین) अ. वि.–शानदार, रोब-दाबवाला; रूपवान, सुंदर।

मुशर्रफ़ (مشرف) अ. वि.–प्रतिष्ठित, संमानित, इज़्ज़त दिया गया।

मुशर्रह (مشرح) अ. वि.–जिसकी व्याख्या हो गयी हो, व्याख्यात, विस्तृत, भाष्य।

मुशर्रेह (مشرح) अ. वि.–व्याख्या करनेवाला, व्याख्याता, भाष्यकार।

मुशव्वश (مشوش) अ. वि.–घबराया हुआ, उद्विगन, परेशान।

मुशव्वा (مشوی) अ. वि.–भूना हुआ, भृष्ट।

मुशव्विश (مشوش) अ. वि.–घबरा देनेवाला, परेशान करनेवाला।

मुशशदर (مششدر) फा. वि.–चकित, निस्तब्ध, शश्दर।

मुशह्हर (مشہر) अ. वि.–जिसकी शोह्रत हो, कीर्तिवान्, यशस्वी, नेकनाम; जो बहुत प्रसिद्ध हो, सुप्रसिद्ध, विख्यात।

मुशह्ही (مشہی) अ. वि.–भूख लगानेवाली दवा।

मुशाअरः (مشاعرہ) अ. पुं.–बहुत-से कवियों का एक जगह बैठकर परस्पर कविता सुनाना, कवि-गोष्ठी; कवि-सम्मेलन, बहुत-से आदमियों के संमुख कविता सुनाना।

मुशाकलत (مشاکلت) अ. स्त्री.–एक रूपता, सदृशता, एक-जैसी शक्ल होना।

मुशाकिल (مشاکل) अ. वि.–सहरूप, सदृश, हम शक्ल; दे. 'बह्रे मुशाकिल'।

मुशाजरः (مشاجرہ) अ. पुं.–दे. 'मुशाजरत'।

मुशाजरत (مشاجرت) अ. स्त्री.–प्रतिकूलता, मुख़ालफ़त, विरोध।

मुशातमत (مشاتمت) अ. स्त्री.–एक दूसरे को गाली-गलौज करना।

मुशाफ़हः (مشافہہ) अ. पुं.–संमुखता, आमना-सामना।

मुशा'बद (مشعبد) अ. वि.–जिस चीज़ का शोबदा दिखाया जाय।

मुशाबहत (مشابہت) अ. वि.–एक रूपता, हमशक्ली; समानता, बराबरी।

मुशा'बिद (مشعبد) अ. वि.–बाज़ीगर, मायावी; छली, फ़िरेबी; लीलाकार, कौतुकी।

मुशाबेह (مشابہ) अ. वि.–एकरूप, सदृश, हम शक्ल; तुल्य, समान, बराबर।

मुशायअत (مشایعت) अ. स्त्री.–किसी की विदा के समय थोड़ी दूर उसके साथ चलना; जनाज़े के साथ जाना।

मुशार (مشار) अ. वि.–जिसकी ओर संकेत किया जाय, संकेतित।

मुशारकत (مشارکت) अ. स्त्री.–साझा, भागीदारी, शिर्कत।

मुशारुन इलैह (مشارٌ الیہ) अ. वि.–जिसकी ओर संकेत किया जाय, उक़्त, कथित, उपलक्षित, मश्वुरः।

मुशावरत (مشاورت) अ. स्त्री.–परस्पर परामर्श और विचार विनिमय करना; परामर्श, मश्वुरः।

मुशाविर (مشاور) अ. वि.–परामर्शकर्ता, मश्वुरः करनेवाला।

मुशा'शा (مشعشع) अ. वि.–दीप्त, ज्योतिर्मय, रौशन।

मुशाहदः (مشاہدہ) अ. पुं.–निरीक्षण, दर्शन, देखना; अनुभव, तज्रिबा।

मुशाहदात (مشاہدات) अ. पुं.–'मुशाहदः' का बहु., देखी हुई वस्तुएँ, तज्रिबात।

मुशाहरः (مشاہرہ) अ. पुं.–माहवारी तनख़्वाह, मासिक वेतन।

मुशाहिद (مشاہد) अ. पुं.–मुशाहदा करनेवाला, देनेवाला; किसी विशेष कार्य का देखने और उसके सम्बन्ध में गवाही देनेवाला व्यक्ति, आबज़र्वर।

मुशाहिदीन (مشاہدین) अ. पुं.–मुशाहदः करनेवालों की जमाअत, आबज़र्वर्स।

मुशीर (مشیر) अ. वि.–परामर्शदाता, मश्वुरा देनेवाला, सलाहकार।

मुशैयन (مشین) अ. वि.–दे. 'मुशय्यन'।

मुश्क (مشک) फा. पुं.–कस्तूरी, कस्तूरिका, मिश्क।

मुश्कअफ़्शाँ (مشک افشاں) फा. वि.–मुश्क छिड़कनेवाला अर्थात् अत्यंत सुगंधित।

मुश्कआहू (مشک آہو) फा. पुं.–वह हिरन जिसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है, कस्तूरी मृग, पुष्कलक।

मुश्कनाफ़ः (مشک نافہ) फा. पुं.–कस्तूरी की थैली, मृग-नाभि।

मुश्कपाश (مشک پاش) फा. वि.–दे. 'मुश्कबार'।

मुश्कफ़ाम (مشک فام) फा. वि.–कृष्ण वर्ण, काले रंग का।

मुश्कफ़िशाँ (مشک فشاں) फा. वि.–दे. 'मुश्कअफ़्शाँ'।

मुश्कबार (مشک بار) फा. वि.–सुगंध वर्षक, मुश्क–जैसी सुगंध फैलानेवाला, अर्थात् बहुत ख़ुशबूदार।

मुश्कबू (مشک بو) फा. वि.–कस्तूरी-जैसी सुगंध रखनेवाला।

मुश्कबेज़ (مشک بیز) फा. वि.–दे–'मुश्कबार'।

मुश्कबेद (مشک بید) फा. पुं.–बेद की एक जाति जो बहुत सुगंधित होता है और जिसके पत्तों का अरक़ 'बेद मुश्क' कहलाता है।

मुश्करंग (مشک رنگ) फा. वि.–मुश्क-जैसे रंग का।

मुश्कसा (مشک سا) फा. वि.–मुश्क-जैसा ख़ुशबूदार।

मुश्कसार (مشک سار) फा. वि.–दे. 'मुश्कसा'।

मुश्क़ाब (مشقاب) तु. स्त्री.–बड़ी रिकाबी, क़ाब, दे. 'बुशक़ाब'।

मुश्किल (مشکل) अ. स्त्री.–कठिनता, कठिनाई; जटिलता, पेचीदगी; गूढ़ता, दक़ीक़पन; सूक्ष्मता, बारीकी, (वि.) कठिन, दुष्कर; जटिल, पेचीदा; गूढ़, दक़ीक़; सूक्ष्म, बारीक।

मुश्कीं (مشکیں) फा. वि.–मुश्क-जैसा सियाह; मुश्क-जैसा सुगंधित।

मुश्कींइज़ार (مشکیں عزار) फा. अ. वि.–जिसके गाल पर काला तिल हो।

मुश्कींकमंद (مشکیں کمند) फा. वि.–काली और सुगंधित ज़ुल्फ़ों वाला (वाली)।

मुश्कींकुलाह (مشکیں کلاہ) फा. वि.–काली टोपी लगाने वाला।

मुश्कींख़त (مشکیں خط) फा. वि.–सब्ज़ः आग़ाज़, वह सुंदर लड़का जिसकी मूँछ दाढ़ी के बाल निकलने शुरू हो गये हों।

मुश्कींमू (مشکیں مو) फा. वि.–काले और सुगंधित बालोंवाला (वाली)।

मुश्कींमोह्रः (مشکیں مہرہ) फा. वि.–धरती, पृथ्वी, ज़मीन।

मुश्कींरंग (مشکیں رنگ) फा. वि.–मुश्क के रंग का, काला, कृष्ण।

मुश्कींसमंद (مشکیں سمند) फा. वि.–काले घोड़े पर चढ़नेवाला, मा'शूक़।

मुश्की (مشکی) फा. वि.–मुश्क-जैसा काला; काले रग का घोड़ा।

मुश्के अज़्फ़र (مشک ازفر) फा. अ. पुं.–तेज़ बूवाला मुश्क।

मुश्के ख़ता (مشک خطا) फा. पुं.–दे. 'मुश्केचीं।

मुश्के ख़ुतन (مشک ختن) फा. पुं.–चीन या तिव्वत का मुश्क जो सवसे अच्छा होता है।

मुश्के चीं (مشک چیں) फा. पुं.–चीन की कस्तूरी, ख़ालिस मुश्क।

मुश्के तर (مشک تر) फा. पुं.–ताज़ी और निर्मल कस्तूरी।

मुश्के नाब (مشک ناب) फा. पुं.–शुद्ध और बेमेल की कस्तूरी।

मुश्के सारा (مشک سارا) फा. पुं.–ख़ालिस मुश्क।

मुश्कोए (مشکوے) फा. पुं.–अंतःपुर, हरमसरा, रनवास; गृह उद्यान, पाईं बाग़; बड़े व्यक्तियों का निवासस्थान, प्रासाद, महल।

मुश्कोए मुअल्ला (مشکوے معلیٰ) अ. पुं.–शाही ज़नानख़ाना, रनवास।

मुश्त (مشت) फा. स्त्री.–मुट्ठी, मुष्टिका; घूसा, मुष्टी; मुट्ठी भर चीज़।

मुश्तइल (مشتعل) अ. वि.–उत्तेजित, गुस्से में आया हुआ; प्रज्वलित, भड़कता हुआ।

मुश्तग़िल (مشتغل) अ. वि.–लग्न, तन्मय, लीन, मुन्हमिक।

मुश्तक़ [क़्क़] (مشتق) अ. पुं.–वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द से बना हो; वह शब्द जो मस्दर से निकलता हो।

मुश्तज़न (مشت زن) फा. वि.–पहलवान, मल्ल; हस्त मैथुन करनेवाला।

मुश्तज़नी (مشت زنی) फा. स्त्री.–पहलवानी; हस्तमैथुन, हथलस, हैंडप्रेक्टिस।

मुश्तपर (مشت پر) फा. पुं.–एक मुट्ठी पर, बहुत ज़रा-सी जानवाला पक्षी।

मुश्तब्ह (مشتبہ) अ. वि.–संदिग्ध, संदेहयुक्त, मश्कूक; अनिश्चित, ग़ैर यक़ीनी।

मुश्तबेह (مشتبہہ) अ. वि.–संदेह में डालनेवाला।

मुश्तमाल (مشت مال) फा. वि.–मलना-दलना, मसलना; पहलवानों का एक-दूसरे के शरीर को ज़ोर-जोर से मलना ताकि पुष्ट और कठोर हो।

मुश्तमाली (مشت مالی) फा. स्त्री.–दे. 'मुश्तमाल'।

मुश्तमिल (مشتمل) अ. वि.–सम्मिलित, शामिल; व्यापक, हावी।

मुश्तरकः (مشترکہ) अ. वि.–साझे का, मिला हुआ।

मुश्तरक (مشترک) अ. वि.–दे. 'मुश्तरकः'।

मुश्तरकन (مشترکاً) अ. वि.–साझे में।

मुश्तरी (مشتری) अ. वि.–ख़रीदार, क्रेता; बृहस्पति, विर्जीसि।

मुश्तवारः (مشتوارہ) फा. पुं.–मुट्ठी भर, मुट्ठी भर जौ या गेहूँ की बालें।

मुश्तरस (مشت رس) फा. वि.–चुरायी हुई चीज़; मुट्ठी में आयी हुई वस्तु; मुट्ठी भर वस्तु।

मुश्तहर (مشتہر) अ. वि.–जिसका इश्तिहार हो, प्रसिद्ध।

मुश्तहरी (مشتہری) अ. वि.–इश्तिहार द्वारा प्रचार।

मुश्तहिर (مشتہر) अ. वि.–इश्तिहार देनेवाला, विज्ञापक।

मुश्तही (مشتہی) अ. वि.–इच्छा करनेवाला, इच्छुक, यह शब्द भूख बढ़ानेवाले के अर्थ में अशुद्ध है।

मुश्ताक़ (مشتاق) अ. वि.–उत्कंठित, अभिलाषी, उत्सुक, आर्ज़ूमंद।

मुश्ताक़ानः (مشتاقانہ) अ. फा. वि.–अभिलाषापूर्ण, शौक़ के साथ।

मुश्ताक़े जमाल (مشتاق جمال) अ. वि.–दे. 'मुश्ताक़े दीद'।

मुश्ताक़े दीद (مشتاق دید) अ. फा. वि.–दर्शनाभिलाषी, देखने का आर्ज़ूमंद।

मुश्ते उस्तुख़्वाँ (مشت استخواں) फा. पुं.–मुट्ठी भर हड्डियाँ, अर्थात् बहुत ही दुबला-पतला और कमज़ोर व्यक्ति।

मुश्ते ख़ाक (مشت خاک) फा. स्त्री.–मुट्ठीभर ख़ाक; मनुष्य, आदमी।

मुश्ते ख़ाकिस्तर (مشت خاکستر) फा. स्त्री.–वह मुट्ठी भर राख जो आदमी के जलने पर बाक़ी रहती है।

मुश्ते गिल (مشت گل) फा. स्त्री.–दे. 'मुश्ते ख़ाक'।

मुश्ते ग़ुब्बर (مشت غبار) फा. वि.–दे. 'मुश्ते ख़ाक'; वह एक मुट्ठी धूल जो हवा में उड़ा दी जाय; मरे हुए व्यक्ति की ख़ाक।

मुश्ते पर (مشت پر) फा. पुं.–मुट्ठी भर पर, जो किसी पक्षी को मारकर मिलते हैं।

मुशफ़िक़ (مشفق) अ. वि.–कृपा करनेवाला, दयालु; मित्र, दोस्त; डरानेवाला, त्रासक।

मुश्फ़िक़ानः (مشفقانہ) अ. वि.–मित्रतापूर्ण, कृपापूर्ण, दोस्ताना।

मुश्रफ़ (مشرف) अ. वि.–ऊँचा-स्थान, बलंद जगह।

मुश्रिकः (مشرکہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो मुश्रिक हो, जो बहुत-से ईश्वर मानती हो।

मुश्रिक़ (مشرق) अ. वि.–चमकनेवाला, ज्योतिर्मय; तारा, तारिका, उडु।

मुश्रिक (مشرک) अ. वि.–वह व्यक्ति जो ईश्वर को एक नहीं मानता, बल्कि उसके गुणों में औरों को भी सम्मिलित करता है।

मुश्रिक़ात (مشرقات) अ. पुं.–'मुश्रिक़' का बहु., तारे, उडुगण।

मुश्रिकात (مشرکات) अ. स्त्री.–'मुश्रिकः' का बहु., मुश्रिक स्त्रियाँ, जो ईश्वर को एक न मानती हों।

मुश्रिकानः (مشرکانہ) अ. फा. वि.–मुश्रिकों-जैसा, नास्तिकों-जैसा।

मुश्रिकीन (مشرکین) अ. पुं.–'मुश्रिक' का बहु., मुश्रिक लोग, बहुत से ईश्वर माननेवाले।

मुश्रिफ़ (مشرف) अ. वि.–उत्तुंग, ऊँचा, बलंद; ज्ञाता, जानकार; बड़ा मुनीम; बड़ा मुंशी, हेड मुहर्रिर; किसी अच्छी या बुरी घटना का आनेवाले निकट समय में घटित होना।

मुसंदल (مصندل) अ. वि.–चंदन की सुगंध में बसा हुआ।

मुसअ्अद (مصعد) अ. वि.–दो हाँडियों या सकोरों में विधि अनुसार उड़ाया हुआ दवा का जौहर।

मुसक़्क़फ़ (مسقف) अ. वि.–पटी हुई छत, छतवाला, जिसकी छत पटी हो।

मुसक्किन (مسکن) अ. वि.–आराम देनेवाला, शांति पहुँचानेवाला; वह दवा जो रोग विशेष में शांति पहुँचाये।

मुसक्किनात (مسکنات) अ. पुं.–'मुसक्किन' का बहु., वे ओषधियाँ जो किसी रोग विशेष में शांति पहुँचायें।

मुसख़्ख़र (مسخر) अ. वि.–विजित, जीता हुआ; वशीभूत, क़ाबू में आया हुआ; मुग्ध, फ़िरेफ़्तः।

मुसख़्ख़िर (مسخر) अ. वि.–विजेता, फ़ातेह; वश में करनेवाला; मुग्ध करनेवाला।

मुसग़्ग़र (مصغر) अ. वि.–छोटा किया हुआ, लघूकृत।

मुसज्जल (مسجل) अ. वि.–सुसज्जित, आरास्ता; मोहर किया हुआ, मुद्रांकित; रजिस्ट्री किया हुआ, पंजीयित।

मुसज्जा' (مسجع) अ. वि.–वह बात जो क़ाफ़ियों में हो, सानुप्रास, मुक़फ़्फ़ा, (पुं.) एक शब्दालंकार जिसमें शे'र के चार टुकड़े करके, तीन टुकड़े सानुप्रास कर दिये जाते हैं,

जैसे—"जब वह जमाले दिल फ़रोज़, सूरते मेह्रेनीमरोज़, आप ही हो नज़ार: सोज़, पर्दे में मुँह छुपाये क्यों"—ग़ालिब। इसमें फ़रोज़, रोज़ और सोज़ के क़ाफ़िए हैं।

मुसत्तर (مسطر) अ. वि.–लकीरें किया हुआ, सत्रोंदार।

मुसत्तर (مستتر) अ. वि.–गुप्त, गुह्य, छिपा हुआ, पोशीदा।

मुसत्तह (مسطح) अ. वि.–समतल, चौरस, हमवार।

मुसद्दक़ः (مصدقہ) अ. वि.–प्रमाणित।

मुसद्दक़ (مصدق) अ. वि.–तस्दीक किया गया, तज्रिबा किया गया।

मुसद्दस (مسدس) अ. वि.–छः पहलूवाला, (पुं.) छः फ़ाइर का तमंचा; नज़्म की एक क़िस्म जिसमें चार मिस्रे एक क़ाफ़ियों में और दो मिस्रे अलग दूसरे क़ाफिए में होते हैं, और यह छः मिस्त्रों का एक बंद कहलाता है। ऐसे बहुत-से बंदों का समूह मुसद्दस होता है। प्रायः मुसद्दस में कोई उपदेश या किसी घटना का वर्णन होता है, अगर इस मुसद्दस में करबला की शहादत का वर्णन हो तो 'मरसियः' कहलाता है, अगर अपने प्रेम के त्याग का वर्णन हो तो 'वासोख्त' होता है और नायिका के नखशिख का वर्णन हो तो 'सारापा' होता है, मुसद्दस के किसी बंद का अंतिम अर्थात् तीसरा शेर 'टीप' कही जाती है।

मुसद्दिक़ (مصدق) अ. वि.–प्रमाणित करनेवाला, तस्दीक़ करनेवाला।

मुसन्नफ़ः (مصنفہ) अ.वि.–संपादित पुस्तक, रचित, प्रणीत।

मुसन्नफ़ (مصنف) अ. वि.–संपादित, रचित, प्रणीत।

मुसन्नफ़ात (مصنفات) अ. वि.–'मुसन्नफ़ः' का बहु., रचित पुस्तकें।

मुसन्ना (مثنٰی) अ. वि.–दो किया हुआ, दो टुकड़े किया हुआ; दो परत का काग़ज़, जैसे—रसीद; प्रतिलिपि, नक़्ल।

मुसन्ना बिही (مثنٰی بہ) अ. वि.–जिससे प्रतिलिपित हो, मूल, अस्ल।

मुसन्निफः (مصنفہ) अ. स्त्री.–किसी पुस्तक आदि की लेखिका, प्रणेत्री।

मुसन्निफ़ (مصنف) अ. पुं.–ग्रंथकार, लेखक, रचयिता, तस्नीफ़ करनेवाला।

मुसफ़्फ़ा (مصفٰی) अ. वि.–साफ़ किया हुआ, शुद्ध; उज्ज्वल, चमकदार; निथरा हुआ; क़लई किया हुआ; विधिपूर्वक शुद्ध की हुई दवा।

मुसफ़्फ़िए ख़ून (مصفی خون) अ. पुं.–दूषित ख़ून को साफ़ करनेवाली दवा, रक्तशोधक।

मुसफ़्फ़ियात (مصفیات) अ. पुं.–'मुसफ़्फ़ी' का बहु., वे ओषधियाँ जो ख़ून को शुद्ध करती हैं।

मुसफ़्फ़ी (مصفی) अ. वि.–साफ़ करनेवाला, शोधक।

मुसब्बब (مسبب) अ. वि.–कारण किया गया; कारण, सबब।

मुसब्बर (مصبر) अ. पुं.–एक ओषधि, एलुवा।

मुसब्बा' (مسبع) अ. पुं.–सात भाग किया हुआ; सात भुजाओं का क्षेत्र; वह नज़्म जिसमें सात मिस्रे हों, अर्थात् हर तीन शे'र के बाद एक मिस्रा आया करे, चाहे वह मिस्रा एक ही हो, या हर बार नया मिस्रा हो।

मुसब्बिब (مسبب) अ. वि.–कारण पैदा करनेवाला, साधन उपस्थित करनेवाला।

मुसब्बिबुलअस्बाब (مسبب الاسباب) अ. वि.–कारण और साधन उत्पन्न करनेवाला, ईश्वर।

मुसब्बिबे हक़ीक़ी (مسبب حقیقی) अ. वि.–सच्चा साधन उत्पन्न करनेवाला, ईश्वर।

मुसब्बिहः (مسبحہ) अ. स्त्री.–अँगूठे के पासवाली उँगली, तर्जनी; ईश्वर का नाम जपनेवाली स्त्री।

मुसब्बेह (مسبح) अ. वि.–तस्बीह पढ़नेवाला, ईश्वर का गुणगान करनेवाला।

मुसम्मत (مسمط) अ. पुं.–लड़ी में पिरोया हुआ; मोतियों की लड़ी, मुक्तावली; नज़्म की एक क़िस्म, जिसमें चंद मिस्रे एक क़ाफ़िए में कहकर, एक या दो मिस्रे दूसरे क़ाफ़िए के लाये जाते हैं, 'मुख़म्मस' और 'मुसद्दम' आदि इसी की क़िस्में हैं।

मुसम्मन (مثمن) अ. वि.–आठ पहलूवाला, जिसमें आठ कोने हों, अष्टकोण।

मुसम्मन (مسمن) अ. वि.–चर्बीला किया हुआ, मोटा ताज़ा बनाया हुआ, खिला-पिलाकर चर्बी चढ़ाया हुआ।

मुसम्मम (مصمم) अ. वि.–दृढ़, मज़्बूत; निश्चित, यक़ीनी।

मुसम्मर (مسمر) अ. वि.–कीलों से जड़ा हुआ, कीलें ठोंका हुआ, कीलित।

मुसम्मा (مسمٰی) अ. वि.–नाम रखा हुआ, नामधारी; पुरुषों के नाम के पहले लगाया जानेवाला शब्द जो विशेषतः सरकारी काग़ज़ों में लगाया जाता है।

मुसम्मात (مسماۃ) अ. स्त्री.–नाम रखी हुई, नामधारिणी; स्त्रियों के नाम से पहले लगाया जानेवाला शब्द, जो प्रायः सरकारी और अदालती काग़ज़ों में लगाया जाता है; श्रीमती।

मुसम्मिम (مصمم) अ. वि.–निश्चय करनेवाला।

मुसर्रह (مصرح) अ. वि.–स्पष्ट कहा हुआ, व्याख्यात।

मुसर्रेह (مصرح) अ. वि.–स्पष्ट वक्ता, साफ़गो; व्याख्या करनेवाला, तस्रीह करनेवाला।

मुसल्मान (مسلمان) अ. पुं.–इस्लाम धर्म का अनुयायी, मुस्लिम।

मुसल्मानी (مسلمانی) अ. स्त्री.–मुसल्मान का धर्म; मुसल्मान का कर्तव्य; ख़त्ना, सुन्नत।

मुसल्लत (مسلط) अ. वि.–चारों ओर से छाया हुआ, आच्छादित; विवश किया हुआ।

मुसल्लमः (مسلمہ) अ. वि.–जो बात सब को तस्लीम हो, सर्वमान्य; जो साबित हो, प्रमाणित; अखण्ड, संपूर्ण।

मुसल्लम (مسلم) अ. वि.–सर्वमान्य, तस्लीम शुदा; समग्र, सपूर्ण, समूचा; प्रमाणित, मुसद्दक़।

मुसल्लमात (مسلمات) अ. पुं.–'मुसल्लमः' का बहु., वे बातें जो सर्वमान्य हों।

मुसल्लमुश्शहादत (مسلم الشہادت) अ. वि.–वह व्यक्ति जिसकी साक्षी मान्य हो; जो साक्षी द्वारा प्रमाणित हो।

मुसल्लमुस्सुबूत (مسلم الثبوت) अ. वि.–जो सुबूत से साबित हो, प्रमाणसिद्ध, साधनक्षम, प्रत्यक्षसिद्ध।

मुसल्लह (مسلح) अ. वि.– हथियार बंद, सशस्त्र, अस्त्र-सज्ज, सज्जित।

मुसल्ला (مصلا) अ. पुं.–नमाज़ पढ़ने की चटाई अथवा दरी।

मुसल्ली (مصلی) अ. वि.–नमाज़ पढ़नेवाला।

मुसल्सल (مسلسل) अ. वि.–लगातार, निरंतर, अनवरत; ज़ंजीर में बँधा हुआ, क़ैद, शृंखलित; क्रमबद्ध, क्रमागत, बातरतीब; बारंबार, बारबार।

मुसव्वदः (مسودہ) अ. पुं.–किसी लेख का प्रारंभिक रूप, पांडुलिपि, प्रारूप।

मुसव्वदात (مسودات) अ. पुं.–'मुसव्वदः' का बहु., मुसव्वदे, पांडुलिपियाँ।

मुसव्वरः (مصورہ) अ. वि.–दे. 'मुसव्वर'।

मुसव्वर (مصور) अ. वि.–सचित्र, तस्वीरदार; चित्रित, नक़्शीन, तस्वीर बना हुआ।

मुसव्विद (مسود) अ. वि.–मुसव्वदा लिखनेवाला, पांडुलिपिक।

मुसव्विरः (مصورہ) अ. वि.–तस्वीर बनानेवाली स्त्री, चित्रकारिणी।

मुसव्विर (مصور) अ. वि.–तस्वीर बनानेवाला, चित्रकार, चित्रशिल्पी, चितेरा।

मुसव्विरी (مصوری) अ. स्त्री.–तस्वीरें बनाने का काम, चित्र कर्म; तस्वीर बनाने का फ़न, चित्रकला।

मुसह्हद (مسہد) अ. वि.–जगाया हुआ, जाग्रत किया हुआ।

मुसह्हे (مصحح) अ. वि.–दुरुस्त करनेवाला, शुद्ध करने वाला; वह व्यक्ति जो प्रेस के पत्थर की किताबत को ठीक करता है।

मुसाअदत (مساعدت) अ. स्त्री.–सहायता करना, मदद करना; सहायता, मदद।

मुसाइद (مساعد) अ. वि.–सहायक, मददगार; अनुकूल, मुआफ़िक़।

मुसादमत (مصادمت) अ. स्त्री.–एक दूसरे को कष्ट देना।

मुसादरत (مصادرت) अ. स्त्री.–प्रत्यागमन, वापस लौटना।

मुसाफ़रत (مسافرت) अ. स्त्री.–यात्रा करना, सफ़र करना; यात्रा, सफ़र; यात्रा की अवस्था, सफ़र की हालत।

मुसाफहः (مصافحہ) अ. पुं.–मुलाक़ात के समय हाथ मिलाना।

मुसाफ़हः (مسافحہ) अ. पुं.–व्यभिचार, दुराचार, पाप कर्म।

मुसाफ़ात (مصافات) अ. स्त्री.–मैत्री, दोस्ती; निष्कपटता, इख़्लास।

मुसाफ़िर (مسافر) अ. पुं.–यात्री, पथिक, राहगीर, बटोही; ग़रीब मुसाफिर।

मुसाफ़िरख़ानः (مسافرخانہ) अ. फा. पुं.–मुसाफ़िरों के ठहरने का स्थान, पथिकाश्रम, धर्मशाला।

मुसाफिरानः (مسافرانہ) अ. फा. वि.–मुसाफ़िरों–जैसा; सफ़र की अवस्था में।

मुसाब (مصاب) अ. वि.–दुःखित, क्लेषित, रंजीदा।

मुसाबक़त (مسابقت) अ. स्त्री.–पहले करना; आगे बढ़ जाना।

मुसाबरत (مصابرت) अ. स्त्री.–धीरज धरना, संतोष करना, सब्र करना।

मुसामरत (مسامرت) अ. स्त्री.–एक दूसरे को क़िस्से सुनाना।

मुसामहत (مسامحت) अ. स्त्री.–किसी काम को आसान समझकर उसकी ओर ध्यान न देना; मैत्री, दोस्ती।

मुसारअत (مصارعت) अ. स्त्री.–एक दूसरे को ज़मीन पर डाल कर रगड़ना, परस्पर कुश्ती लड़ना।

मुसालमत (مسالمت) अ. स्त्री.–परस्पर संधि करना; मित्रता, दोस्ती।

मुसालहत (مصالحت) अ. स्त्री.–परस्पर संधि करना, संधि; समझौता, तस्फ़िय:; राज़ीनामा, फ़ैसला।

मुसालहतनामः (مصالحت نامہ) अ. फा. पुं.–राज़ीनामा, समझौते का काग़ज़।

मुसावमत (مساومت) अ. स्त्री.–किसी चीज़ के बेचने में देर करना इस विचार से कि दाम बढ़ जायेंगे।

मुसावात (مساوات) अ. स्त्री.–समानता, बराबरी; सबको एक-जैसे अधिकार मिलने का सिद्धांत।

मुसावियुज़्ज़वाया (مساوی الزوایا) अ. पुं.–वह त्रिभुज या चतुर्भुज जिसके आमने-सामने के कोण बराबर हों।

मुसावियुलअज़्लाअ (مساوی الاضلاع) अ. पुं.–वह शक्ल जिसकी सब भुजाएँ बराबर हों, समभुज क्षेत्र।

मुसावियानः (مساویانہ) अ. फा. वि.–बराबर बराबर; एक-जैसा।

मुसावी (مساوی) अ. वि.–समान, तुल्य, बराबर।

मुसाहक़ः (مساحقہ) अ. पुं.–चपटी, स्त्रियों का आपस में चपटी लड़ाना।

मुसाहबत (مصاحبت) अ. स्त्री.–किसी बड़े व्यक़्ति के यहाँ हाज़िर बाशी, बड़े व्यक्ति के यहाँ सोहबत बरतना, उठना-बैठना।

मुसाहमत (مساہمت) अ. स्त्री.–भागीदारी, साझा, शिर्कत।

मुसाहलत (مساہلت) अ. स्त्री.–आलस्य, ढील, सुस्ती।

मुसाहिब (مصاحب) अ. पुं.–किसी बड़े आदमी के पास उठने-बैठनेवाला, पार्षद।

मुसाहिम (مساہم) अ. वि.–भागीदार, साझीदार, शरीक़।

मुसीन [न्न] (مسن) अ. वि.–बूढ़ा, वयोवृद्ध।

मुसिर [र्र] (مصر) अ. वि.–ज़िद करनेवाला, बारबार किसी काम के लिए कहनेवाला।

मुसीब (مصیب) अ. वि.–किसी बात की तह को पहुँचने वाला; ठीक पानेवाला, तलस्पर्शी।

मुसीबत (مصیبت) अ. स्त्री.–दुःघ, क़्लेश, कष्ट, तक्लीफ़; ख़ेद, संताप, विषाद, ग़म; दुर्घटना, सानिहः; कठिनता, मुश्किल; दुर्दशा, नुहूसत; कालचक्र, गर्दिश; विपत्ति, आफ़त।

मुसीबतअंग़ेज़ (مصیبت انگیز) अ. फा. वि.–कष्टजनक, दुःखदायी, मुसीबत देनेवाला।

मुसीबतज़दः (مصیبت زدہ) अ. फा. वि.–मुसीबत में मुब्तला, कष्टग्रस्त, विपन्न, दुरागत।

मुसीबतनाक (مصیبت ناک) अ.फा. वि.–दे. 'मुसीबतज़दः'।

मुसीबते नागहानी (مصیبت ناگہانی) अ. फा. स्त्री.–आकस्मिक विपत्ति, अचानक आनेवाली आफ़त।

मुसैक़ल (مصیقل) अ. वि.–सैक़ल किया हुआ, चमकदार, शफ़्फ़ाफ़।

मुसैतिर (مسیطر) अ. वि.–नियुक्त, मुक़र्रर।

मुस्क़ित (مسقط) अ. वि.–गिरानेवाला; बात में त्रुटि करनेवाला।

मुस्कित (مسکت) अ. वि.–चुप कर देनावाला, क़ाइल कर देनेवाला।

मुस्किर (مسکر) अ. वि.–नशा पैदा करनेवाली चीज़, मादक।

मुस्किरात (مسکرات) अ. वि.–'मुस्किर' का वहु., नशे की चीज़ें।

मुस्तंजिम (مستنجم) अ. वि.–प्रकाशमान, प्रज्वलित, दीप्त, रौशन; प्रकाश चाहनेवाला।

मुस्तंबत (مستنبط) अ. वि.–निकाला हुआ; नतीजा निकाला हुआ।

मुस्तंबित (مستنبط) अ. वि.–नतीजा निकालनेवाला।

मुस्तंसर (مستنصر) अ. वि.–जिसकी मदद की गयी हो।

मुस्तंसिर (مستنصر) अ. वि.–मदद माँगनेवाला।

मुस्तआन (مستعان) अ. वि.–जिससे सहायता माँगी जाय।

मुस्तआर (مستعار) अ. वि.–माँगी हुई चीज़, थोड़े दिनों के लिए माँगा हुआ।

मुस्तइद [द्द] (مستعد) अ. वि.–तत्पर, सन्नद्ध, कटिवद्ध, तैयार; निरालस, सचेष्ट, जिसमें सुस्ती और काहिली न हो, तेज़; फ़ुर्तीला, चाबुकदस्त।

मुस्तइद्दी (مستعدی) अ. स्त्री.–तत्परता, तैयारी; निरालस्य, तेज़ी; फ़ुर्ती।

मुस्तईन (مستعین) अ. वि.–सहायता चाहनेवाला, मदद माँगनेवाला।

मुस्तईर (مستعیر) अ. वि.–रिआयत चाहनेवाला।

मुस्तक़र [र्र] (مستقر) अ. पुं.–ठहरने का स्थान, ठिकाना।

मुस्तक़र्रुलख़िलाफ़त (مستقر الخلافت) अ. पुं.–राजवानी, शासन-केंद्र।

मुस्तक़र्रुलहुकूमत (مستقر الحکومت) अ. पुं.–दे. 'मुस्तक़र्रुल ख़िलाफ़त'।

मुस्तक़िल [ल्ल] (مستقل) अ.वि.–अटल, दृढ़, मुस्तहकम; दृढ़, निश्चिय, साबित क़दम; चिरस्थायी, पाइदार; वह मुलाज़िम जो अस्थायी न हो, स्थायी; निरंतर, लगातार।

मुस्तक़िल मिज़ाज (مستقل مزاج) अ. वि.–जो एक वात तै करके उस पर जमा रहे, दृढ़ चित्त, स्थिरनिश्चयी।

मुस्तक़िल मिज़ाजी (مستقل مزاجی) अ. स्त्री.–एक बात तै करके उस पर डटा रहना, निश्चय की स्थिरता।

मुस्तक़िल्लन (مستقلاً) अ. वि.–स्थिर रूप में, अटल तौर पर; निरंतर, बराबर।

मुस्तक़ीम (مستقیم) अ. वि.–सीधा, सरल, ऋजु, जो टेढ़ा न हो।

मुस्तक़ीमुलअज़्लाअ' (مستقیم الاضلاع) अ. पुं.–वह शक्ल जिसकी सब रेखाएँ सीधी हों, सरल रेखाओंवाला।

मुस्तक्बिर (مستکبر) अ. वि.–अहंकारी, अभिमानी, घमंडी, मग़्रूर।

मुस्तक़्बिल (مستقبل) अ. पुं.–आगे आनेवाला, आगामी; भविष्य, आइंदा ज़माना।

मुस्तख़ीफ़ (مستخیف) अ. वि.–भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ; भीषण, भयानक, ख़ौफ़नाक।

मुस्तख़्दिम (مستخدم) अ. वि.–दूसरों से ख़िदमत चाहनेवाला।

मुस्तख़्लिस (مستخلص) अ. वि.–आज़ादी चाहनेवाला, बंधन मुक्ति का इच्छुक; निर्मल करनेवाला।

मुस्तग़ास (مستغاث) अ. वि.–जिसके पास इस्तिग़ासा ले जायँ, जिससे न्याय याचना करें, दंडाधिकारी मेजिस्ट्रेट।

मुस्तग़ीसः (مستغیثہ) अ. वि.–इस्तिग़ासा करनेवाली स्त्री, न्याय चाहनेवाली, फ़ौज़दारी में दावा करनेवाली।

मुस्तग़ीस (مستغیث) अ. वि.–इस्तिग़ासः करनेवाला, अभियोक्ता, फ़ौजदारी में दावा दाइर करनेवाला।

मुस्तग़्नी (مستغنی) अ. वि.–जिसे किसी बात की इच्छा न हो, निःस्पृह, अनीह, अनपेक्ष्य, निरीह।

मुस्तग़्नी मिज़ाज (مستغنی مزاج) अ. वि.–जिसके मन में कोई लालच या इच्छा न हो, निवृत्तचित्त।

मुस्तग़्फ़िर (مستغفر) अ. वि.–ईश्वर से पापों की क्षमा चाहनेवाला, मुक्ति चाहनेवाला।

मुस्तग़्रक़ (مستغرق) अ. वि.–डूबा हुआ, मग्न, मज्जित, निमज्जित; मुनहमिक, तल्लीन, तन्मय, दत्तचित्त।

मुस्तज़ाद (مستزاد) अ. वि.–बढ़ाया हुआ; अतिरिक्त, फ़ालतू; नज़्म की एक क़िस्म जिसमें किसी ग़ज़ल में उसके हर मिस्रे के अंत में एक टुकड़ा बढ़ा देते हैं।

मुस्तजाब (مستجاب) अ. वि.–स्वीकृत, मंज़ूर किया हुआ, क़बूल किया हुआ।

मुस्तजाबुद्दा'वात (مستجاب الدعوات) अ. वि.–वह सिद्ध व्यक्ति जिसकी हर बात ईश्वर के यहाँ क़बूल हो जाय, वाक्सिद्ध।

मुस्तजाबुद्दुआ (مستجاب الدعا) अ. वि.–दे. 'मुस्तजाबुद्दा'वात'।

मुस्तजार (مستجار) अ. वि.–जिससे रक्षा की प्रार्थना की जाय, जिससे बचाने को कहा जाय, पनाह देनेवाला, त्राणदाता, रक्षक।

मुस्तजीब (مستجیب) अ. वि.–क़बूल करनेवाला, स्वीकार करनेवाला, प्रार्थना स्वीकार करनेवाला।

मुस्तजीर (مستجیر) अ. वि.–पनाह चाहनेवाला, रक्षा का इच्छुक, रक्षा का स्थान ढूँढ़नेवाला; कहीं-कहीं पनाह देनेवाले के अर्थ में भी आया है।

मुस्तज्मउस्सिफ़ात (مستجمع الصفات) अ. वि.–जिसमें बहुत-सी सिफ़तें एकत्र हों, बहुगुणसंपन्न।

मुस्तज्मा' (مستجمع) अ. वि.–एकत्र, इकट्ठा।

मुस्तज्मे' (مستجمع) अ. वि.–एकत्र करनेवाला, इकट्ठा करनेवाला।

मुस्तताअ' (مستطاع) अ. वि.–आज्ञाकारी, फ़र्मांबरदार।

मुस्तताब (مستطاب) अ. वि.–शुभान्वित, कल्याणकारी, मुबारक; स्वादिष्ठ, बामज़ः।

मुस्ततिर (مستتر) अ. वि.–गुप्त, छिपा हुआ, पोशीदा।

मुस्ततीअ' (مستطیع) अ. वि.–समृद्ध, धनाढ्य, मालदार; समर्थ, क़ादिर।

मुस्ततील (مستطیل) अ. पुं.–वह शक्ल जो लंबाई-चौड़ाई में बराबर न हो और उसके चारों कोण बराबर हों, समकोण चतुर्भुज, आयत।

मुस्तदाम (مستدام) अ. वि.–नित्यता, हमेशगी, चाहनेवाला; नित्य, हमेशा, सर्वदा, सदा।

मुस्तदीर (مستدیر) अ. वि.–गोलाकार, वर्तुलाकार, गोल, मुदव्वर।

मुस्तदई (مستدعی) अ. वि.–प्रार्थना करनेवाला, दरख़्वास्त करनेवाला, कहनेवाला।

मुस्तनद (مستند) अ. वि.–प्रमाणित, तस्दीक़शुदा; विश्वस्त, मोतबर; जिसने किसी चीज़ की सनद पायी हो।

मुस्तनीर (مستنیر) अ. वि.–प्रकाशमान, दीप्त, रौशन।

मुस्तन्किर (مستنکر) अ. वि.–निकृष्ट, दूषित, बद; कुरूप, अप्रियदर्शन, ज़िश्तरू।

मुस्तफ़वी (مصطفوی) अ. वि.–मुस्तफ़ा से सम्बन्ध रखनेवाला; मुस्तफ़ा का।

मुस्तफ़ा (مصطفی) अ. वि.–पवित्र, पुनीत, बरगुज़ीदा; निर्मल, शुद्ध, स्वच्छ, साफ़ोशफ़्फ़ाफ़; हज़्रत महम्मद साहिब का ख़िताब।

मुस्तफ़ाई (مصطفائی) अ. वि.–'मुस्तफ़ा' का; मुस्तफ़ा से सम्बन्ध रखनेवाला।

मुस्तफ़ाद (مستفاد) अ. वि.–प्राप्त, लब्ध, हासिल।

मुस्तफ़ीज़ (مستفیض) अ. वि.–फ़ैज़ चाहनेवाला, नफ़ा उठानेवाला, लाभप्राप्तकर्त्ता।

मुस्तफ़ीद (مستفید) अ. वि.–फ़ाइदा चाहनेवाला, लाभ उठानेवाला, लाभान्वित, लाभेच्छुक।

मुस्तफ़्ती (مستفتی) अ. वि.–फ़त्वा पूछनेवाला, फ़तवे का जवाब चाहनेवाला।

मुस्तफ़्सिर (مستفسر) अ. पुं.–पूछनेवाला, पृच्छक, प्रश्नकर्ता।

मुस्तबिद [द्द] (مستبد) अ. वि.–किसी काम पर अकेला

खड़ा हो जानेवाला; किसी चीज़ पर अकेला हक़ जतानेवाला; अनीति और अन्याय करनेवाला; अत्याचारी, ज़ालिम।

मुस्तब्अद (مستبعد) अ. वि.–जो बात क़ियास में न आ सके, कल्पनातीत; दुष्कर, कठिन, दुशवार; दूर, बईद।

मुस्तबइद (مستبعد) अ. वि.–पृथक्ता चाहनेवाला, दूरी का इच्छुक।

मुस्तब्सिर (مستبصر) अ. पुं.–दिव्य दृष्टि रखनेवाला, रौशन ज़मीर।

मुस्तमंद (مستمند) फा. वि.–इच्छुक, अभिलाषी, ख़्वाहिशमंद; दुःखित, ग़मगीन; जिसे किसी बात की आवश्यकता हो, ज़रूरतमंद।

मुस्तमा' (مستمع) अ. वि.–सुना हुआ, श्रुत।

मुस्तमिद [द्द] (مستمد) अ. वि.–मदद चाहनेवाला, सहायेच्छु।

मुस्तमिर [र्र] (مستمر) अ. वि.–हमेशा रहनेवाला, स्थिर, नित्य, अनश्वर; स्थायी, चिरस्थायी, पायदार।

मुस्तमिर्रः (مستمره) अ. वि.–दे. 'मुस्तमिर', स्त्री लिंग शब्दों के साथ, सदैव रहनेवाली।

मुस्तमे' (مستمع) अ. वि.–सुननेवाला, श्रोता।

मुस्तरक़ (مسترق) अ. वि.–चुराया हुआ, चुराया हुआ माल।

मुस्तरक़ [क़्क़] (مسترق) अ. वि.–बंदी बनाया हुआ, क़ैद किया हुआ।

मुस्तरद [द्द] (مسترد) अ. वि.–लौटा हुआ, वापस दिया हुआ, ख़ारिज किया हुआ, रद्द किया हुआ।

मुस्तराह (مستراح) अ. पुं.–आराम करने की जगह, विश्राम स्थान; शौचगृह, संडास, पाख़ाना।

मुस्तर्ख़ी (مسترخی) अ. वि.–ढीला, शिथिल।

मुस्तर्शिद (مسترشد) अ. वि.–सच्चा रास्ता चाहनेवाला, सन्मार्गेच्छुक; चेला, धर्मशिष्य, मुरीद।

मुस्तलहः (مصطلحه) अ. वि.–वह शब्द जो पारिभाषिक रूप में आ गया हो, पारिभाषिक।

मुस्तलह (مصطلح) अ. वि.–दे. 'मुस्तलहः'।

मुस्तलहात (مصطلحات) अ. पुं.–पारिभाषिक शब्दावली।

मुस्तलिज़ [ज़्ज़] (مستلذ) अ. वि.–स्वाद लेनेवाला, मज़ा चखानेवाला; आनंदित, लज़्ज़तयाब।

मुस्तल्क़ी (مستلقی) अ. वि.–चित्त लेटा हुआ, जिसकी पीठ ज़मीन पर हो और पेट ऊपर।

मुस्तल्ज़िम (مستلزم) अ. वि.–कोई चीज़ अपने ऊपर लाज़िम कर लेनेवाला; योग्य, पात्र।

मुस्तल्ज़िमुस्सज़ा (مستلزم السزا) अ. वि.–दे. 'मुस्तलज़िमे सज़ा'।

मुस्तल्ज़िमे सज़ा (مستلزم سزا) अ. वि.–सज़ा के योग्य, दंडनीय।

मुस्तवी (مستوی) अ. वि.–समतल, हमवार; सम, समान, बराबर।

मुश्तशार (مستشار) अ. वि.–जिससे सलाह ली जायँ परामर्शदाता; सलाह ली हुई बात, परामर्शित।

मुश्तशीर (مستشیر) अ. वि.–सलाह लेनेवाला, परामर्शकर्ता।

मुस्तश्फ़ा (مستشفیٰ) अ. वि.–अस्पताल, चिकित्सालय, रुग्णालय, शिफ़ाख़ाना।

मुस्तश्फ़ी (مستشفی) अ. वि.–रोग मुक्ति चाहनेवाला।

मुस्तश्रिक़ (مستشرق) अ. वि.–दीप्त, ज्वलंत, प्रकाशित, रौशन; वह ग़ैर एशियाई व्यक्ति जिसे एशियाई भाषाओं अथवा विद्याओं का पूरा-पूरा ज्ञान हो और उसने इन विषयों पर काफ़ी अनुसंधान और गवेषणा की हो।

मुस्तश्रिक़ीन (مستشرقین) अ. पुं.–'मुस्तश्रिक़' का बहु., वह ग़ैरएशियाई लोग जिन्होंने एशियाई भाषा, विद्या अथवा दूसरी विद्याओं में पूरी जानकारी प्राप्त की हो।

मुस्तस्क़ी (مستسقی) अ. वि.–जिसे जलोदर का रोग हो, जलोदरी; बहुत अधिक पानी माँगनेवाला।

मुस्तसनयात (مستثنیات) अ. पुं.–'मुस्तस्ना' का बहु., वे चीज़ें या व्यक्ति जो मुस्तस्ना हों।

मुस्तस्ना (مستثنیٰ) अ. वि.–जिस पर से कोई शर्त, क़ानून या पाबंदी उठा ली गयी हो, मुक्त; जिस पर कोई क़ानून-विशेष लागू न होता हो; जो किसी शर्त या पाबंदी के भीतर न आता हो; चुना हुआ, प्रतिष्ठित; अपवादित, एक्ज़ेम्प्टेड।

मुस्तस्नामिन्हु (مستثنیٰ منہ) अ. वि.–वे चीज़ें या व्यक्ति जिनमें से 'मुस्तस्ना' को अलग किया गया हो।

मुस्तहक़ [क़्क़] (مستحق) अ. वि.–हक़ रखनेवाला, स्वत्वाधिकारी; योग्य, पात्र, लाइक़; सहायता के योग्य, ज़रूरतमंद।

मुस्तहक़्क़ीन (مستحقین) अ. वि.–'मुस्तहक़' का बहु., मुस्तहक़ लोग; हक़दार लोग, योग्य लोग; ज़रूरतमंद लोग।

मुस्तहक़्क़ेतरिकः (مستحق ترکہ) अ. पुं.–जो तरिके का हक़दार हो, दायाधिकारी, दायबंधु।

मुस्तहक़्क़े नवाजिश (مستحق نوازش) अ. फा. पुं.–कृपा का पात्र, दया के योग्य।

मुस्तहक़्क़े रहम (مستحق رحم) अ. पुं.–दया किये जाने का हक़दार, जो दया का सच्चा पात्र हो, करुणापात्र।

मुस्तहक़्क़े सहीह (مستحق صحیح) अ. पुं.–सबसे उचित हक़दार, सत्पात्र।

मुस्तहब [ब्ब] (مستحب) अ. वि.–अच्छा जाना हुआ, प्रिय, पुनीत; वह कृत्य जिसके करने से पुण्य की प्राप्ति हो और न करने पर कोई दोष न लगे; वह इबादत जिसे हज़्रत मुहम्मद साहब ने स्वयं किया हो, उसकी अच्छाइयाँ बतायी हों, परंतु उसके करने को स्पष्ट रूप से न कहा हो।

मुस्तहान (مستہان) अ. वि.–अपमानित, तिरस्कृत, ज़लील; दूसरों की दृष्टि में निंदित और गर्हित।

मुस्तहाम (مستہام) अ. वि.–उद्विग्न, व्यग्र, परेशान; चकित, निस्तब्ध, हैरान।

मुस्तहील (مستحیل) अ. वि.–असंभव, अशक्य, नामुम्किन; बहानाबाज़, छली; एक अवस्था से दूसरी अवस्था में परिवर्तित।

मुस्तह्कम (مستحکم) अ. वि.–निश्चल, अटल, लाजुंब; दृढ़, मज़्बूत; चिरस्थायी, पाइदार; निश्चित, अटल, यक़ीनी।

मुस्तह्कमतरीन (مستحکمترین) अ. फा. वि.–बहुत अधिक मज़्बूत, सुदृढ़तम।

मुस्तह्कमुलअक़ीदः (مستحکم العقیدہ) अ. वि.–जिसका धर्मविश्वास अटल हो।

मुस्तह्कमुलअदावत (مستحکم العداوت) अ. वि.–जिसके चित्त में किसी की शत्रुता घर कर गयी हो, बद्धवैर।

मुस्तह्कमलअह्द (مستحکم العہد) अ. वि.–अपने वादे का पक्का, सत्यप्रतिज्ञ, दृढ़संकल्प, वचनबद्ध।

मुस्तह्कमुलइरादः (مستحکم الارادہ) अ. वि.–जो अपने इरादे में अटल हो, बद्ध निश्चय, सत्य संकल्प।

मुस्तह्ज़र (مستحضر) अ. वि.–जो दिमाग़ में हर समय सुरक्षित रहे, जो हर समय याद रहे।

मुस्तह्ज़ी (مستہزی) अ. वि.–हँसी उड़ानेवाला, उपहास-कर्ता।

मुस्तह्फ़ज़ (مستحفظ) अ. वि.–सुरक्षित, मह्फ़ूज़; जिसकी देख-रेख और निगरानी की गयी हो।

मुस्तह्लक (مستہلک) अ. वि.–हत, वधित, मारा हुआ; नष्ट, बरबाद।

मुस्तह्सन (مستحسن) अ. वि.–उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा; पुनीत, पवित्र, नेक।

मुस्ताजिर (مستاجر) अ. वि.–ठेकेदार, एकाधिकारी।

मुस्ताजिरानः (مستاجرانہ) अ. फा. वि.–ठेकेदारों-जैसा।

मुस्ताजिरी (مستاجری) अ. वि.–ठेकेदारी, एकाधिकार।

मुस्ता'जिल (مستعجل) अ. वि.–अधीर, आतुर, जल्दबाज़, उतावला।

मुस्तानिस (مستانس) अ.वि.–प्रेम रखनवाला, रुचि रखनेवाला; अभ्यस्त, व्यसनी, आदी।

मुस्ता'फ़ी (مستعفی) अ. वि.–त्यागपत्र देनेवाला, इस्ते'फ़ा देनवाला।

मुस्ता'मन (مستامن) अ. वि.–रक्षा या पनाह चाहा हुआ, रक्षित।

मुस्ता'मरः (مستعمرہ) अ. वि.–नौआबादी, उपनिवेश।

मुस्ता'मर (مستعمر) अ. वि.–नया बसा हुआ, नौआबाद, नवबसित।

मुस्ता'मरात (مستعمرات) अ. पुं.–'मुस्ता'मरः' का बहु., नौआबादियाँ, उपनिवेश-समूह।

मुस्ता'मल (مستعمل) अ. वि.–काम में लाया हुआ, प्रयुक्त, व्यवहृत; प्रचलित, व्यवहृत, मुरव्वज।

मुस्तामिन (مستامن) अ. वि.–अमन और रक्षा चाहनेवाला, शान्तीच्छु।

मुस्तासल (مستاصل) अ. वि.–उन्मूलित, जड़ से उखाड़ फेंका हुआ, समूल विनष्ट।

मुस्तासिल (مستاصل) अ. वि.–उन्मूलन करनेवाला, जड़ से उखाड़ फेंकनेवाला।

मुस्तैक़िज़ (مستیقظ) अ. वि.–जागता हुआ, सजग, जाग्रत, जागरूक, सजागर, बेदार।

मुस्तैसिर (مستیسر) अ. वि.–तत्पर और कटिबद्ध होनेवाला, तैयार होनेवाला।

मुस्तौक़िद (مستوقد) अ. वि.–आग भड़कानेवाला।

मुस्तौजिब (مستوجب) अ. वि.–योग्यपात्र, लाइक़।

मुस्तौजिबे सज़ा (مستوجب سزا) अ. वि.–सज़ा के लाइक़, दंडनीय।

मुस्तौफ़ी (مستوفی) अ. वि.–व्यापक, गृहीत; हेड मुनीम, हेड एकाउंटेंट।

मुस्तौली (مستولی) अ. वि.–छा जानेवाला, ढाँक लेनेवाला, आच्छादक; किसी पर विजय पा लेनेवाला, क़ाबू में कर लेनेवाला।

मुस्तौसा' (مستوسع) अ. वि.–विस्तृत, विशाल, फ़राख़, कुशादा।

मुस्दे' (مصدع) अ. वि.–पृथक्-पृथक् करनेवाला; सर में पीड़ा उत्पन्न करनेवाला।

मुस्नद (مسند) अ. वि.–काल, समय; दत्तक पुत्र, लेपालक; जारज, दोग़ला; वह चीज़ जिस पर सहारा लें; (व्या.) ख़बर।

मुस्नदइलैह (مسند الیہ) अ. वि–(व्या,) मुब्तदा, जैसे––

'राम अच्छा है' में 'राम' मुस्नदइलैह है और 'अच्छा', 'मुस्नद'।

मुस्बतः (مثبتہ) अ. वि.–साबित की हुई चीज़।

मुस्बत (مثبت) अ. वि.–साबित किया हुआ, प्रमाणित; जो मन्फ़ी न हो।

मुस्मन (مسمن) अ. वि.–पैदाइशी मोटा-ताज़ा।

मुस्रिफ़ (مسرف) अ. वि.–बहुत अधिक ख़र्च करनेवाला, बहुव्ययी; फ़ुज़ूल ख़र्च करनेवाला, अपव्ययी।

मुस्रिफ़ (مصرف) अ. वि.–व्यय करनेवाला।

मुस्रिफ़ीन (مسرفین) अ. पुं.–'मुस्रिफ़' का बहु., फ़ुज़ूल ख़र्च करनेवाले।

मुस्रे' (مسرع) अ. वि.–जल्दी काम करनेवाला, शीघ्रकारी; तेज़ चलनेवाला पत्रवाहक।

मुस्लिमः (مسلمہ) अ. स्त्री.–मुसलमान स्त्री।

मुस्लिम (مسلم) अ. पुं.–मुसलमान पुरुष, मुसलमान।

मुस्लिमात (مسلمات) अ. स्त्री.–'मुस्लिमः' का बहु., 'मुसल्मान स्त्रियाँ।

मुस्लिमीन (مسلمین) अ. पुं.–'मुस्लिम' का बहु., मुसलमान मर्द।

मुस्लिहीन (مصلحین) अ. पुं.–'मुस्लेह' का बहु., सुधार करनेवाले, सुधारक, रिफ़ार्मर्स।

मुस्लेह (مصلح) अ. वि.–राजनीतिक, आर्थिक या सामाजिक आदि सुधार करनेवाला, सुधारक; शरीर की धातुओं का दोष दूर करनेवाली दवा, शोधक।

मुस्लेहे क़ौम (مصلح قوم) अ. पुं.–जातीय सुधार करनेवाला, जाति-विशेष का सुधारक; राष्ट्र का सुधारक, देश सुधारक।

मुस्हिल (مسہل) अ. पुं.–दस्त लानेवाली औषध, रेचक, विरेचक, मलभेदक।

मुस्हिलात (مسہلات) अ. पुं.–'मुस्हिल' का बहु., रेचक ओषधियाँ।

मुहंदिस (مہندس) अ. पुं.–गणितज्ञ, रियाज़ीदाँ; इंजिनियर।

मुहक़्क़क़ (محقق) अ. वि.–प्रमाणित, मुसल्लम; गवेषित, जाँचा हुआ।

मुहक़्क़र (محقر) अ. वि.–तुच्छ, अधम, ज़लील; कम क़ीमत, हक़ीर।

मुहक़्क़िक़ (محقق) अ. वि.–किसी बात की वैज्ञानिक जाँच-पड़ताल करनेवाला, गवेषी, अन्वेषक, अनुसंधाता; वैज्ञानिक, फ़िलास्फ़र; वह व्यक्ति जो किसी बात को प्रमाण से सिद्ध करे।

मुहक़्क़िक़ीन (محققین) अ. पुं.–'मुहक़्क़िक़' का बहु., गवेषणा और अनुसंधान करनेवाले।

मुहज़्ज़ब (مہذب) अ. वि.–सभ्य, शिष्ट, तमीज़दार; नागरिक, शह्री; शिक्षित, ता'लीमयाफ़्ता; अदब क़ाइदे का ख़याल रख़नेवाला, शाइस्ता, शिष्ट; सुशील, विनीत, ख़ुशख़ुल्क़; संस्कृत, आरास्ता।

मुहद्दिस (محدث) अ. पुं.–हदीस का विद्वान्, हदीसों की पूरी जानकारी रख़नेवाला, यह जाननेवाला कि कौन-सी हदीस सहीह और कौन-सी ग़लत, किस हदीस को किसने बयान किया है और बयान करनेवाला किस श्रेणी का है, आदि आदि।

मुहद्दिसीन (محدثین) अ. पुं.–'मुहद्दिस' का बहु., हदीस के आलिम।

मुहन्नद (مہند) अ. वि.–वह शब्द जो किसी दूसरी भाषा का हो, परन्तु उसे हिंदी कर लिया गया हो जैसे—'जारूब' से झाड़ू; 'आबख़ोरह' का अमख़ोरा आदि; हिंद के लोहे की बनी हुई तलवार जो काट में प्रसिद्ध होती थी।

मुहम्मद (محمد) अ. वि.–प्रशंसित, स्तुत, सराहा हुआ; हज़्रत पैग़ंबर साहब का शुभ नाम।

मुहम्दी (محمدی) अ. पुं.–मुहम्मद का; मुहम्मद से सम्बन्ध रख़नेवाला; मुसल्मान।

मुहर्रफ़ (محرف) अ. वि.–टेढ़ा किया हुआ, वक्रित, वक्र; फेरी हुई बात या इबारत, मूल अर्थ से हटाया हुआ।

मुहर्रम (محرم) अ. वि.–हराम अर्थात् निषिद्ध किया हुआ; पहला इस्लामी महीना, चूँकि इस्लाम से पहले अरब में इस महीने में रक्तपात धार्मिक रूप में हराम था, इसलिए इस महीने का यह नाम पड़ा।

मुहर्रा (مہرا) अ. वि.–अच्छी तरह पकाया हुआ; वह चीज़ जो आग पर अच्छी तरह गला ली जाय।

मुहर्रिक (محرک) अ. वि.–गति देनेवाला, चलानेवाला; उत्तेजना देनेवाला, उभारनेवाला, उत्तेजक; सभा या कमेटी में कोई सुझाव रख़नेवाला, प्रस्तावक।

मुहर्रिफ़ (محرف) अ. वि.–टेढ़ा करनेवाला; बात को कुछ का कुछ बनानेवाला।

मुहर्रिर (محرر) अ. वि.–लेखक, लिखनेवाला; लिपिक, क्लर्क; वकील आदि का मुंशी।

मुहर्रिरी (محرری) अ. वि.–मुहर्रिर का पेशा; मुहर्रिर का काम।

मुहर्रिरीन (محررین) अ. पुं.–'मुहर्रिर' का बहु., मुहर्रिर लोग।

मुहल्लल (محلل) अ. वि.–तहलील किया हुआ।

मुहल्लिल (محلل) अ. वि.–तहलीन करनेवाला।

मुहल्ललात (محللات) अ. पुं.–'मुहल्लिल' का बहु., तहलील करनेवाली दवाएँ।

मुहव्वतः (محوطه) अ. पुं.–कोई चीज़ सुरक्षित रखने का स्थान; घेरने का स्थान; एकत्र करने का स्थान।

मुहव्वलः (محوله) अ. वि.–सिपुर्द की गयी चीज़; हवाला दी गयी वस्तु।

मुहव्वल (محول) अ. वि.–सिपुर्द किया गया; हवाला दिया गया।

मुहव्वलए बाला (محولۂ بالا) अ. फा. वि.–जिसका हवाला ऊपर दिया गया हो, जिसका उल्लेख ऊपर हो चुका हो।

मुहव्वलए हाशियः (محولۂ حاشیه) अ. वि.–जिसका हवाला हाशिए पर दिया गया हो, जो फुटनोट या टिप्पणी में लिखा गया हो, टिप्पणाङ्कित, मार्जिनली नोटेड।

मुहव्विस (مهوس) फा. वि.–कीमियागर, रसायनविद्, रसायनी।

मुहव्विसी (مهوسی) फा. स्त्री.–कीमियागरी, रसायन विद्या, धातुवाद।

मुहव्विसीन (مهوسین) फा. पुं.–'मुहव्विस' का बहु., कीमियागर लोग।

मुहश्शा (محشی) अ. वि.–हाशिया बनाया हुआ; हाशिए पर लिखा हुआ, टिप्पणी-सहित।

मुहश्शी (محشی) अ. वि.–हाशिया बनानेवाला; टिप्पणी लिखनेवाला।

मुहाकमः (محاکمه) अ. पुं.–हाकिम के पास न्याय को जाना; बीच में पड़कर न्याय करना; निर्णय, फ़ैसला।

मुहाका (محاکا) अ. पुं.–'मुहाकात' का लघु., दे. 'मुहाकात'।

मुहाकात (محاکات) अ. स्त्री.–वार्तालाप, बातचीत; एक-दूसरे को कहानी सुनाना; कथनोपकथन।

मुहाजरत (مهاجرت) अ. स्त्री.–देश छोड़कर विदेश में रहना, घरबार छोड़कर परदेश में रहना।

मुहाज़ात (محاذات) अ. स्त्री.–एक-दूसरे के आमने-सामने होना; एक चीज़ का दूसरी चीज़ के बराबर होना।

मुहाजात (مهاجات) अ. स्त्री.–एक-दूसरे की निन्दा करना; एक दूसरे की हजो में कविता लिखना।

मुहाजिरः (مهاجره) अ. स्त्री.–घरबार छोड़कर परदेस में रहनेवाली स्त्री, शरणार्थिनी।

मुहाजिर (مهاجر) अ. पुं.–घरबार त्याग कर परदेस में रहनेवाला, पुरुषार्थी, शरणार्थी।

मुहाजिरात (مهاجرات) अ. स्त्री.–'मुहाजिरः' का बहु., मुहाजिर औरतें।

मुहाजिरीन (مهاجرین) अ. पुं.–'मुहाजिर' का बहु., शरणार्थी लोग।

मुहाज़ी (محاذی) अ. वि.–सम्मुख, सामने, बराबर।

मुहाफ़ः (محافه) फा. वि.–बड़ी पर्देदार डोली; अरबी में 'महफ़्फ़ः था, फ़ारसी में 'मुहाफ़ः' हो गया।

मुहाफ़ज़त (محافظت) अ. स्त्री.–रक्षा हिफ़ाज़त; देख-रेख, निगरानी; पालन-पोषण, पर्वरिश।

मुहाफ़िज़ (محافظ) अ. वि.–रक्षक, हिफ़ाज़त करनेवाला; निरीक्षक, निगराँ; अभिभावक, सरपरस्त।

मुहाफ़िज़ीन (محافظین) अ. पुं.–'मुहाफ़िज़' का बहु., हिफ़ाज़त करनेवाले।

मुहाबा (محابا) अ. पुं.–'मुहाबात' का लघु., भय, त्रास, डर; संकोच, पसोपेश; चिन्ता, फ़िक्र, उर्दू में प्रायः 'बेमहाबा' बोला जाता है।

मुहाबात (محابات) अ. स्त्री.–दे. 'मुहाबा'।

मुहारबः (محاربه) अ. पुं.–परस्पर युद्ध; युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

मुहारबात (محاربات) अ. पुं.–'मुहारबः' का बहु., लड़ाइयाँ, जंगें।

मुहारिब (محارب) अ. वि.–लड़नेवाला, योद्धा।

मुहाल (محال) अ. वि.–असंभव, नामुमकिन; दुष्कर, कठिन।

मुहालफ़ः (محالفه) अ. पुं.–आपस में क़स्माक़स्मी, परस्पर किसी बात के लिए शपथ लेना।

मुहालबिज़्ज़ात (محال بالذات) अ. वि.–जिसका जैसा होना असंभव हो।

मुहालिफ़ (محالف) अ. वि.–किसी के साथ किसी प्रतिज्ञा पर शपथ लेनेवाला।

मुहाले क़त्ई (محال قطعی) अ. वि.–जो बिलकुल असंभव हो।

मुहाले मुत्लक़ (محال مطلق) अ. वि.–दे. 'मुहाले क़त्ई'।

मुहावरः (محاوره) अ. पुं.–रोज़मर्रः, बोलचाल, किसी भाषा के वाक्यों का वह प्रयोग जो उस भाषा के बोलनेवाले करते हैं और जिसका अर्थ अभिधेय अर्थ से पृथक् होता है, जैसे–'लात ख़ाना', या 'आँख आना', क्योंकि लात रोटी की तरह खाया नहीं जाता, और आँख सफ़र नहीं करती, इनका अर्थ है, लात की मार सहना और आँखों में पीड़ा होना, यही मुहावरा है।

मुहावरत (محاورت) अ. स्त्री.–आपस में बातचीत करना।

मुहावरात (محاورات) अ. पुं.–'मुहावरः' का बहु., मुहावरे।

मुहासदः (محاسده) अ. पुं.–एक-दूसरे से हसद या ईर्ष्या करना; ईर्ष्या, डाह, हसद।

मुहासबः (محاسبہ) अ. पुं.–हिसाब समझना, हिसाब-किताब; पूछ-गाछ, पूछ-ताछ, बाज़पुर्स।

मुहासरः (محاصرہ) अ. पुं.–घेरा डालना, चारों ओर से घेरना; हदबंदी, सीमित करना; घेरा, हल्क़ा।

मुहासिद (محاسد) अ. वि.–हसद करनेवाला, ईर्षालु, डाही।

मुहासिब (محاسب) अ. वि.–हिसाब करनेवाला; हिसाबदाँ, गणितज्ञ; पूछ-गाँछ करनेवाला।

मुहासिर (محاصر) अ. वि.–घेरा डालनेवाला, किसी को घेरे में लेनेवाला।

मुहासिरीन (محاصرین) अ. वि.–'मुहासिर' का बहु., घेरे डालनेवाले लोग।

मुहिब [**ब्ब**] (محب) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त; प्रेमी, आशिक़।

मुहिब्बीन (محبین) अ. पुं.–'मुहिब' का बहु., मित्रगण, दोस्त अहबाब।

मुहिम [**म्म**] (مہم) अ. स्त्री.–कोई बड़ा काम, कठिन काम; युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

मुहिम्मात (مہمات) अ. स्त्री.–'मुहिम' का बहु., बड़े-बड़े काम; युद्ध, लड़ाइयाँ।

मुही (محی) अ. वि.–ज़िंदा करनेवाला, जिलानेवाला, प्राणदाता।

मुहीज (مہیج) अ. वि.–उठानेवाला; बढ़ानेवाला; गर्द उड़ानेवाला।

मुहीत (محیط) अ. वि.–आच्छादित, छाया हुआ; व्यापक, फैला हुआ; नदी, दरया।

मुहीन (مہین) अ. वि.–तिरस्कार करनेवाला, अपमानी, तिरस्कर्ता, ज़लील करनेवाला।

मुहीब (مہیب) अ. वि.–दे. शुद्ध उच्चारण 'महीब'।

मुहीलः (محیلہ) अ. स्त्री.–छली, स्त्री, मायाविनी, धूर्ता, वंचिका।

मुहील (محیل) अ. वि.–धोखेबाज़, छली, कपटी, धूर्त, वंचक।

मुहै (محی) अ. वि.–जीवित करनवाला, ज़िंदा करनेवाला, पुनः प्राण देनेवाला।

मुहैया (مہیا) अ. वि.–एकत्र, इकट्ठा, फ़राहम; उपस्थित, मौजूद; उपार्जित, ज़ख़ीरा; तत्पर, तैयार; उपलब्ध।

मुहैयाकुन (مہیاکن) अ. फा. वि.–एकत्र करनेवाला, फ़राहम करनेवाला; देनवाला, दाता।

मुहैयिर (محیر) अ. वि.–अचंभे में डाल देनेवाला।

मुहैयिरुलउक़ूल (محیر العقول) अ. वि.–अक़्लों को अचंभे में डाल देनेवाला, ऐसी बात जो अचंभे में डाल दे, आश्चर्यजनक, चित्रमति।

मुहैयिरेउक़ूल (محیرِعقول) अ. वि.–दे. 'मुहैयिरुल उक़ूल'।

मुह्‌कम (محکم) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत; चिरस्थायी, पाएदार, टिकाऊ; निश्चित, अटल, यक़ीनी; निःसंदेह, ग़ैर मुश्तबह।

मुह्‌कमतरीन (محکم‌ترین) अ. फा. वि.–बहुत अधिक मज़बूत, सुदृढ़।

मुह्‌कमात (محکمات) अ. स्त्री.–क़ुरान के वे वाक्य जिनका अर्थ स्पष्ट हो, 'प्रत्युत', 'मुतशाबिहात'।

मुह्‌तक़िन (محتقن) अ. वि.–अनीमा देनेवाला।

मुह्‌तकिर (محتکر) अ. वि.–इस आशा पर अन्न संचित करनेवाला कि भाव तेज़ होने पर बेचेगा।

मुह्‌तजिब (محتجب) अ. वि.–छिपनेवाला; छिपा हुआ, गुप्त।

मुह्‌तदा (مہتدیٰ) अ. वि.–जिसे हिदायत या सदुपदेश मिला हो, दीक्षित।

मुह्‌तदी (مہتدی) अ. वि.–हिदायत या सदुपदेश देनेवाला।

मुह्‌तम [**म्म**] (مہتم) अ. वि.–जिसका एहतिमाम किया गया हो, व्यवस्थित, क्रमागत।

मुह्‌तमबिश्शान (مہتم بالشان) अ. वि.–जिसका प्रबंध बहुत शान से किया गया हो, शानदार, भव्य, विशाल, बृहत्।

मुह्‌तमल (محتمل) अ. वि.–जिसमें संदेह हो, संदिग्ध, शंकित, मुशाबह।

मुह्‌तमिम (مہتمم) अ. वि.–प्रबंधकर्ता, संचालनकर्ता, संचालक, व्यवस्थापक।

मुह्‌तरमः (محترمہ) अ. स्त्री.–श्रीमती, महोदया, देवी, मान्या, श्रद्धेया, वरिष्ठा, भट्टारिका।

मुह्‌तरम (محترم) अ. वि.–श्रीमान्, महोदय, पूज्य, श्रद्धेय, प्रतिष्ठित, महानुभाव, मुअज़्ज़ज़; मान्य, पूज्य, श्रेष्ठ बुज़ुर्ग।

मुह्‌तरमात (محترمات) अ. स्त्री.–'मुहतरमः' का बहु., देवियाँ।

मुह्‌तरमीन (محترمین) अ. पुं.–'मुहतरम' का बहु., प्रतिष्ठित जन।

मुह्‌तरिक़ (محترق) अ. वि.–जलनेवाला; जला हुआ, दग्ध, तप्त, ज्वलित।

मुह्‌तरिज़ (محترز) अ. वि.–बचनेवाला, दूर रहनेवाला, परहेज़ करनेवाला।

मुह्‌तरिफ़ (محترف) अ. वि.–एक-सा पेशा करनेवाला, सहव्यवसायी।

मुह्तलिम (محتلم) अ. वि.–जिसको स्वप्नदोष हो जाय, (एहेत्लाम, स्वप्नदोष) से बना शब्द।

मुह्तवी (محتوی) अ. वि.–व्यापी, घेरे हुए आच्छादित, ढके हुए।

मुह्तशिम (محتشم) अ. वि.–नौकर-चाकरवाला; शानो-शौकतवाला।

मुह्तसिब (محتسب) अ. वि.–हिसाब लेनेवाला, पूछ-ताछ करनेवाला; वह कर्मचारी जो लोगों को शराब पीने से रोके और शराबखानों की निगरानी करे।

मुह्मलः (مہملہ) अ. पुं.–वह उर्दू अक्षर जिस पर बिंदी न हो, जैसे––सीन, हे, दाल, आदि।

मुह्मल (مہمل) अ. वि.–अर्थहीन, बेईमानी; व्यर्थ, बेकार; वह व्यक्ति जिसका कोई एतिबार न हो।

मुह्मल गो (مہمل گو) अ. फा. वि.–अनर्गलवादी, बकवासी, फ़ुज़ूल की बातें बनानेवाला।

मुह्मलात (مہملات) अ. पुं.–'मुह्मल' का बहु., फ़ूज़ूल बातें, फ़ूज़ूल काम।

मुह्मलीयत (مہملیت) अ. स्त्री.–अर्थहीनता; अनर्गलता; बकवाद; फ़ूज़ूलपन।

मुह्रः (مہرہ) फा. पुं.–एक पत्थर जिससे साँप का विष दूर करते हैं; साँप का मन, मणि; शत्रंज की गोट; कौड़ी, सीप या घोंघा; पीठ या गर्दन का गुरिया।

मुह्रःचीं (مہرہ چیں) फा. वि.–छली, धूर्त, ठग।

मुह्रःबाज (مہرہ باز) फा. वि.–धूर्त, छली, धोखेबाज़।

मुह्रबाज़ी (مہرہ بازی) फा. स्त्री.–छल, धूर्तता, ठगी।

मुह्र (مہر) फा. स्त्री.–मुद्रिका, अँगूठी; ठप्पा; अशरफ़ी, स्वर्णमुद्रा; अंकक, सील, मोहर।

मुह्रए जाँदार (مہرۂ جاندار) फा. पुं.–साँप का मन, मणि।

मुह्रए मार (مہرۂ مار) फा. पुं.–साँप का मन, मणि।

मुह्रए सफ़ेद (مہرۂ سفید) फा. पुं.–संख, दर, शंख।

मुह्रक़ः (محرقہ) अ. वि.–जलानेवाली; टाईफ़ाइड ज्वर।

मुह्रक़ (محرق) अ. वि.–जला हुआ, भस्म, भस्मीभूत।

मुह्रकन (مہرکن) फा. वि.–मुह्र खोदनेवाला।

मुह्रबलब (مہربلب) फा. वि.–मौन धारण किये हुए, चुप, मौन, खामोश।

मुह्रे ख़ामोश (مہر خاموشی) फा. स्त्री.–मौन, चुप्पी, खामोशी।

मुह्रे सुकूत (مہرسکوت) फा. अ. स्त्री.–दे. 'मुह्रे खामोशी'।

मुह्लत (مہلت) अ. स्त्री.–अवकाश, छुट्टी, फ़ुर्सत; विलंब, ढील, देर; समय, काला।

मुह्लततलब (مہلت طلب) अ. वि.–छुट्टी चाहनेवाला; ऐसा काम जिसके लिए समय और फ़ुर्सत की आवश्यकता हो।

मुह्लिकः (مہلکہ) अ. स्त्री.–मार डालनेवाली, घातिका, जानलेवा।

मुह्लिक (مہلک) अ. वि.–घातक, प्राणघातक, जानलेवा।

मुह्सिनः (محسنہ) अ. स्त्री.–उपकार करनेवाली स्त्री।

मुह्सिन (محسن) अ. वि.–उपकार करनेवाला, उपकारी, भलाई करनेवाला; आड़े वक़्त पर काम आनेवाला; सहायक, हामी।

मुह्सिनकुश (محسن کش) अ. फा. वि.–कृतघ्न, अकृतज्ञ, नमकहराम।

मुह्सिनकुशी (محسن کشی) अ. फा. स्त्री.–कृतघ्नता, नमकहरामी।

मुह्सिनात (محسنات) अ. स्त्री.–'मुह्सिनः' का बहु., उपकार करनेवाली स्त्रियाँ।

मुह्सिनीन (محسنین) अ. पुं.–'मुह्सिन' का बहु., उपकारी लोग।

मू

मू (مو) फा. पुं.–बाल, कच, कुंतल; लोम, रोम, रोआँ; सर के बाल, केश।

मूईनः (موئینہ) फा. पुं.–बालोंदार खाल का पहनने का वस्त्र, पोस्तीन, चर्मचेल।

मूए आतशदीदः (موے آتش دیدہ) फा. वि.–आग में तपाया हुआ बाल, जो टेढ़ा पड़ जाता है।

मूए जिहार (موے زہار) फा. अ. पुं.–नाभि के नीचे के बाल, पेड़ू के बाल।

मूक़लम (موقلم) फा. अ. पुं.–चित्रकार की कूँची, कूर्चिका।

मूकशाँ (موکشاں) फा. वि.–बाल खींचते हुए।

मूचीनः (موچینہ) फा. पुं.–बाल उखाड़ने की चिमटी, मोचना।

मूजज़ (موجز) अ. वि.–सार रूप, ख़ुलासा; संक्षिप्त, मुख़्तसर।

मूजिद (موجد) अ. वि.–ईजाद करनेवाला, आविष्कारक।

मूजिबः (موجبہ) अ. स्त्री.–आवश्यक वस्तु; वह कृत्य जिसका बदला परलोक में मिले।

मूजिब (موجب) अ. पुं.–कारण, हेतु, सबब; द्वारा, ज़रिये।

मूजिबात (موجبات) अ. पुं.–'मूजिब' का बहु., कारण समूह, वुजूह।

मूजिबे क़लक़ (موجب قلق) अ. पुं.–ख़ेद का कारण।

मूज़ी (موذی) अ. वि.–कष्ट देनेवाला, दुःख देनेवाला; अत्याचारी, ज़ालिम; खबीस, शरीर।

मूजे' (موجع) अ. वि.–पीड़ा उत्पन्न करनेवाला, दर्द पैदा करनेवाला।

मूज़ेह (موضح) अ. वि.–स्पष्ट करनेवाला, साफ़ करनेवाला।

मूतमिन (موتمن) अ. वि.–जिसके पास धरोहर रखी जाय, अमानतदार।

मूतमिर (موتمر) अ. वि.–आज्ञाकारी, फ़र्मांबरदार; परामर्श करनेवाला।

मूतराश (موتراش) फा. वि.–बाल बनाने का उस्तुरा, छूरा, क्षुर।

मूदे' (مودع) अ. वि.–रुख़सत करनेवाला।

मूनिस (مونس) अ. वि.–मित्र, दोस्त; साथी, रफ़ीक़।

मूपरीशाँ (موپریشاں) फा. वि.–जिसके बाल बिखरे हुए हों, बाल बिखेरे हुए।

मूबद (موبد) फा. पुं.–दे. 'मूबिद', दोनों शुद्ध हैं।

मूबमू (موبہمو) फा. वि.–अक्षरशः, हर्फ़ ब हर्फ़, ज़रा-ज़रा, ज़र्रा ज़र्रा।

मूबाफ़ (موباف) फा. पुं.–चोटी गूँधने का फ़ीता।

मूबिद (موبد) फा. पुं.–अग्नि पूजकों का पुरोहित, अग्निहोत्री, पारसियों का मुल्ला; वैज्ञानिक, फ़लास्फ़र; बुद्धिमान्, दाना; ज्ञानी, पंडित, आलिम; शराब बेचनेवाला, दे. 'मूबद' दोनों शुद्ध हैं।

मूमा (مومی) अ. वि.–जिसकी ओर संकेत किया जाय, सांकेतिक।

मूमा इलैह (مومی الیہ) अ. वि.–जिसकी ओर संकेत किया जाय; उपलक्षित।

मूमी (مومی) अ. वि.–संकेत करनेवाला, संकेतक।

मूरिस (مورث) अ. वि.–पूर्वज, बापदादा; वंश प्रवर्तक, बानिए ख़ानदान; उत्पन्न करनेवाला।

मूरिसे अव्वल (مورث اول) अ. वि.–ख़ानदान का सबसे पहला आदमी, जिससे वंश चला हो, वंश प्रवर्तक, मूल पुरुष।

मूरिसे आ'ला (مورث اعلی) अ. पुं.–दे. 'मूरिसे अव्वल'।

मूरिसे जुज़ाम (مورث جزام) अ. पुं.–कोढ़ पैदा करनेवाला, कुष्ठोत्पादक।

मूरिसे फ़ासिद (مورث فاسد) अ. पुं.–नाना, मातामह।

मूलिम (مولم) अ. वि.–पीड़ा पैदा करनेवाला, दर्द उत्पन्न करनेवाला।

मूश (موش) फा. पुं.–मूषक, चूहा, उंदुर, आखु।

मूशक (موشک) फा. स्त्री.–चुहिया, छोटा चूहा; छछूंदर।

मूशकदवानी (موشک دوانی) फा. स्त्री.–लगाई-बुझाई, लुतरापन।

मूशिगाफ़ (موشگاف) फा. वि.–बाल की खाल निकालनेवाला, दीदःरेज़ी करनेवाला, बाल चीरनेवाला, सूक्ष्मदर्शी, आलोचक।

मूशिगाफ़ी (موشگافی) फा. स्त्री.–बाल की खाल निकालना, दीदःरेज़ी करना, छिद्रान्वेषण, सूक्ष्मालोचना।

मूशे कोर (موش کور) फा. पुं.–छछूंदर, पूति मूषिका, वेश्मनकुल।

मूशे ख़ुर्मा (موش خرما) फा. स्त्री.–गिलहरी।

मूसे दश्ती (موش دشتی) फा. पुं.–जंगली चूहा जो खेत खा जाता है।

मूशे पर्रां (موش پراں) फा. पुं.–चमगादड़, चर्मचटक, जन्तु।

मूशे सह्राई (موش صحرائی) फा. पुं.–दे. 'मूशे दश्ती'; गिलहरी।

मूसवी (موسوی) फा. वि.–हज़्रत मूसा से सम्बन्ध रखनेवाला; हज़्रत मूसा का।

मूसा (موسی) अ. पुं.–एक पैग़ंबर जिन्होंने फ़िरऔन को मारा था।

मूसा (موصی) अ. वि.–वसीयत किया गया, जिसके नाम रिक़्थपत्र लिखा गया हो।

मूसा इलैह (موصی الیہ) अ. वि.–जिसके नाम वसीयत लिखी गयी हो।

मूसाई (موسائی) अ. वि.–हज़्रत मूसा का अनुयायी यहूदी।

मूसाबिहि (موصی بہ) अ. वि.–दे. 'मूसाइलैह'।

मूसालहू (موصی لہ) अ. वि.–दे. 'मूसाइलैह'।

मूसियः (موصیہ) अ. स्त्री.–वसीयत लिखनेवाली स्त्री।

मूसिर (موثر) अ. पुं.–स्वार्थ त्याग क़रनेवाला, ईसार करनेवाला।

मूसिर (موسر) अ. वि.–शक्तिशाली, ताक़तवर; धनाढ्य, दौलतमंद।

मूसिल (موصل) अ. वि.–पहुँचानेवाला, भेजनेवाला, प्रषक।

मूसी (موصی) अ. वि.–वसीयत करनेवाला, रिक़्थ पत्र कर्ता।

मूसीक़ार (موسیقار) अ. वि.–गान विद्या का अच्छा जाननेवाला, संगीतज्ञ, संगीत कलाकार।

मूसीक़ी (موسیقی) अ. स्त्री.–गानविद्या, संगीतकला, गाने का फ़न; गाना, नग़्मः।

मूहिन (موہن) अ. पुं.–अपमान करनेवाला, तिरस्कर्ता, बेइज़्ज़ती करनेवाला, तौहीन करनेवाला।

मूहिम (موہم) अ. वि.–भ्रम में डालनेवाला, भ्रम उत्पन्न करनेवाला, भ्रमजनक।

मूहिश (موحش) अ. वि.–दुःख पहुँचानेवाला, खेदजनक।

मे

मेख (میخ) फा. स्त्री.–कील, शंकु; खूँटी।

मेख़कोब (میخ‌کوب) फा. स्त्री.–खूँटी ठोंकने की मुँगरी।

मेख़चू (میخ‌چو) उ. स्त्री.–खूँटी ठोंकने की मुँगरी।

मेख़दोज़ (میخ‌دوز) फा. वि.–जो चल-फिर न सके, एक जगह बैठा रहे; जो निकम्मा हो, बस बैठा रहना जानता हो।

मेग़ (میغ) फा. पुं.–मेघ, बादल; काला बादल, घटा; काला।

मेज़ (میز) फा. स्त्री.–दावत का सामान, भोज-सामग्री; वह चौकी जिस पर रखकर खाना खाते हैं। (टेबिल के अर्थ में यह शब्द पुर्तगाली है)।

मेज़बान (میزبان) फा. वि.–मेहमानी करनेवाला, अतिथिपूजक; दावत या भोज करानेवाला; आतिथेय।

मेज़बानी (میزبانی) फा. स्त्री.–मेहमानदारी, आतिथ्य; भोज, दावत।

मेवः (میوہ) फा. पुं.–फल, प्रायः सूखे फल, जैसे—बादाम, पिस्ता आदि।

मेवःख़ोर (میوہ‌خور) फा. वि.–मेवा खानेवाला, फलाहारी।

मेवःजात (میوہ‌جات) फा. पुं.–'मेवः' का बहु., मेवे, फल।

मेवःदार (میوہ‌دار) फा. वि.–वह पेड़ जिसमें मेवा लगा हो, फलदार; फला हुआ, फलित।

मेवःफ़रोश (میوہ‌فروش) फा. वि.–मेवा बेचनेवाला, फलविक्रेता; सब्ज़ी बेचनेवाला, कूँजड़ा, शाकविक्रेता।

मेश (میش) फा. स्त्री.–भेड़, मेष।

मेशचश्म (میش چشم) फा. वि.–जिसकी आँखें भेड़-जैसी काली हों, बहुत काली आँखोंवाला।

मेह्माँ (میہماں) फा. पुं.–अतिथि, आगन्तुक, गृहागत, मिहमान।

मेह्माँदार (میہماں‌دار) फा. वि.–जिसके यहाँ कोई मेहमान हो; अतिथिपूजक, मेहमाननवाज़।

मेह्माँदारी (میہماں‌داری) फा. स्त्री.–अतिथिपूजा, आतिथ्य, मेहमाननवाज़ी।

मेह्माँनवाज़ (میہماں‌نواز) फा. वि.–जो मेहमानों की आवभगत बहुत करता हो, अतिथिपूजक, आतिथेय।

मेह्वाँनवाज़ी (میہماں‌نوازی) फा. स्त्री.–मेहमानदारी, अतिथिपूजा, आतिथ्य।

मेह्मान (میہمان) फा. पुं.–दे. 'मेहमाँ' दोनों प्रकार से शुद्ध है, अकेला बोलने में 'मेहमान' अधिक शुद्ध है।

मेह्मानी (میہمانی) फा. स्त्री.–दे. 'मेहमानदारी'।

मेहमेज़ (مہمیز) फा. स्त्री.–एड़, वह लोहे की कील जो सवार अपने जूते की एड़ी में लगाते हैं।

मेह्र (مہر) फा. स्त्री.–प्रेम, मुहब्बत, प्यार; ममता, मामता; दया, शफ़क़त, रहम; करुणा, तरस।

मेह्रबाँ (مہرباں) फा. वि.–मेह्रबान का लघु., दे. 'मेह्रबान'।

मेह्रबान (مہربان) फा. वि.–दया करनेवाला, दयालु; करुणा करनेवाला, सकरुण; मित्र, दोस्त।

मेह्रबानी (مہربانی) फा. स्त्री.–कृपा, दया; करुणा, तरस; ममता, शफ़क़त।

मै

मै (مے) फा. स्त्री.–सुरा, हाला, इरा, वारुणी, कादम्बरी, माधुरी, मदिरा, मद्य, शराब।

मैआशाम (مے آشام) फा. वि.–शराब पीनेवाला, मद्यप, रसाशी, सुराद।

मैकदः (مے کدہ) फा. पुं.–दे. 'मैख़ानः'

मैकश (میکش) फा. वि.–मै पीनेवाला, मद्यप, सुराशी, शराबी।

मैख़ानः (مے خانہ) फा. पुं.–जहाँ शराब बिकती है, मधुशाला, मदिरालय।

मैख़ुश (مے خوش) फा. वि.–खटमिट्ठा।

मैख़्वार (مے خوار) फा. वि.–दे, 'मैकश'।

मैगुसार (مے گسار) फा. वि.–दे. 'मैकश'।

मैगूँ (مے گوں) फा. वि.–शराब–जैसा लाल रंग लिये हुए, सुर्ख़ी माइल, रक्ताभ, पियाज़ी।

मैतः (میتہ) अ. पुं.–मरा हुआ, मृतक, मुर्दः।

मैदः (میدہ) फा. पुं.–बारीक छना हुआ आटा, समिता।

मैदान (میدان) फा. पुं.–काफ़ी खुली हुई और लंबी चौड़ी जगह, जहाँ पेड़ आदि न हो; घोड़ा दौड़ाने का स्थान। काम करने का हल्क़ा, कार्यक्षेत्र; समतल भूमि, चौरस जगह; युद्धक्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

मैदानी (میدانی) फा. वि.–मैदान का; मैदान से सम्बद्ध; चोबदार; मकान में लगायी जानेवाली बड़ी लालटेन।

मैदाने अमल (میدان‌عمل) फा. अ. पुं.–काम का हल्क़ः, कार्य-क्षेत्र।

मैदाने क़लम (میدان‌قلم) फा. पुं.–क़लम का उतना हिस्सा जो तराशा जाता है।

मैदाने कारज़ार (میدان کارزار) फा. पुं.–दे. 'मैदाने जंग'।

मैदाने जंग (میدان جنگ) फा. पुं.–युद्धक्षेत्र, रणभूमि, समरांगण, रंगमंच, रणस्थल, युद्धाजिर, संडिका, समरक्षेत्र, रणाजिर, लड़ाई का मैदान।

मैदाने हश्र (میدان حشر) फा. अ. पुं.–क़ियामत का मैदान जहाँ मुसलमानों के मतानुसार सबका हिसाब-किताब होगा।

मैनोश (مے نوش) फा. वि.–शराब पीनेवाला, मद्यप।

मैनोशी (مے نوشی) फा. स्त्री.–शराबख़ोरी, मदिरापान।

मैपरस्त (مے پرست) फा. वि.–बहुत अधिक शराब पीनेवाला, मदिराभक्त, मद्य सर्वस्व।

मैपरस्ती (مے پرستی) फा. स्त्री.–बहुत शराब पीना।

मैफ़रोश (مے فروش) फा. वि.–शराब बेचनेवाला, मद्यव्यवसायी, शौंडिक, पानिक।

मैफ़रोशी (مے فروشی) फा. स्त्री.–शराब का कारोबार, मद्यव्यवसाय, कल्यपाल।

मैमनः (میمنہ) अ. पुं.–वह सेना जो दाएँ ओर रहती है।

मैमन्त (میمنت) अ. स्त्री.–कल्याण, भलाई, बरकत।

मैमनतलुज़ूम (میمنت لزوم) अ. वि.–कल्याणकर, शुभान्वित।

मैमिन (میمن) अ. वि.–वह स्थान जहाँ बरकत और कल्याण मिले।

मैमून (میمون) अ. वि.–शुभ, कल्याण, मुबारक।

मैमूनः (میمونہ) फा. पुं.–बंदर, वानर, कपि।

मैयित (میت) अ. स्त्री.–मृतक, मरा हुआ आदमी।

मैल (میل) अ. पुं.–रुचि, रग़बत; आकर्षण, तवज्जुह; प्रवृत्ति, रूजहान।

मैलान (میلان) अ. पुं.–दे. ‘मैल’।

मैलाने तब्अ (میلان طبع) अ. पुं.–अभिरुचि, दिली ख़्वाहिश, तबीअत का झुकाव।

मैले ख़ातिर (میل خاطر) अ. पुं–दे. ‘मैलानेतब्अ’।

मैसरः (میسرہ) अ. पुं.–वह सेना जो उलटे हाथ को रहे।

मैसाज़ (مے ساز) फा. वि.–शराब खींचनेवाला, सुराकार।

मैसाज़ी (مے سازی) फा. स्त्री.–शराब बनाना, सुरा-कर्म।

मैसूर (میسور) अ. वि.–सुगम, सरल, आसान; सम्पन्न, भरापुरा; हराभरा, सरसब्ज़।

मैवः (میوہ) फा· पुं.–दे. ‘मेवः’, दोनों उच्चारण शुद्ध हैं।

मो

मोज़ः (موزہ) फा. पुं.–पाँव में पहनने का जुर्राब।

मोज़ःगीर (موزہ گیر) फा. पुं.–वह घोड़ा जो सवार के पाँव को पकड़े या काटे।

मो’जमः (معجمہ) अ. वि.–वह उर्दू अक्षर जिस पर विंदी हो, जैसे–जीम, शीन, ये, आदि।

मो’जिज़ः (معجزہ) अ. पुं.–वह चमत्कार जो पैग़ंबर दिखाये; वह काम जो मानव-शक्ति से परे हो।

मो’जिज़ (معجز) अ. वि.–अक़्ल को आश्चर्य में डालनेवाला; मोजिज़ः।

मो’जिज़निगार (معجز نگار) अ. फा. वि.–ऐसा अच्छा लेखक जो आश्चर्य में डाल दे।

मो’जिज़नुमा (معجز نما) अ. फा. वि.–मो’जिज़ः दिखानेवाला, चमत्कारी।

मो’जिज़नुमाई (معجز نمائی) अ. फा. स्त्री.–मो’जिज़ः दिखाना।

मो’जिज़बयाँ (معجز بیاں) अ. फा. वि.–बहुत अच्छा बोलनेवाला।

मो’जिज़ बयानी (معجز بیانی) अ. फा. स्त्री.–बहुत अच्छी तक़्रीर या भाषण।

मो’जिज़ात (معجزات) अ. पुं.–‘मो’जिज़ः’ का लघु., मो’जिज़े।

मो’जिब (معجب) अ. वि.–आभिमानी, घमंडी।

मो’तक़द (معتقد) अ. वि.–एतिक़ाद रखा हुआ, वह बात जिसका एतिक़ाद या विश्वास हो।

मो’तक़दात (معتقدات) अ. पुं.–‘मो’तक़द’ का बहु., वे बातें जिनका विश्वास हो, अक़ीदे।

मो’तक़िद (معتقد) अ. वि.–धर्म विश्वास या एतिक़ाद रखनेवाला, श्रद्धालु, श्रद्धावान्।

मो’तकिफ़ (معتکف) अ. वि.–एक कोने में बैठकर ईश्वराधना करनेवाला; सबसे अलग होकर एकान्तवासी हो जानेवाला।

मो’तज़लः (معتزلہ) अ. पुं.–एक संप्रदाय जो कहता है कि ईश्वर दिखाई नहीं दे सकता, और आदमी जो कुछ करता है स्वयं करता है ईश्वर कुछ नहीं कराता।

मो’तज़िली (معتزلی) अ. वि.–मो’तज़लः संप्रदाय का अनुयायी।

मो’तद [द्द] (معتد) अ. वि.–गिना हुआ, शुमार किया हुआ।

मो’तदबिहि (معتدبہ) अ. वि.–काफ़ी, पर्याप्त; अत्यधिक, बहुत।

मो’तदिल (معتدل) अ. वि.–जिसमें गर्मी-सर्दी बराबर हो, समशीतोष्ण; जिसमें कोई बात आवश्यकता से कम या अधिक न हो, संतुलित; दरमियानी, मध्यम।

मो’तबर (معتبر) अ. वि.–जिसका एतिबार हो, विश्वस्त।

मो’तमद (معتمد) अ. वि.–जिस पर भरोसा हो, विश्वासपात्र, विश्वासी।

मो’तमद अलैह (معتمد علیہ) अ. वि.–जिस पर भरोसा हो, विश्वासी, विश्वस्त।

मो’तरज़ात (معترضات) अ. पुं.–एतिराज़ की बातें।

मो’तरिज़ (معترض) अ. वि.–एतिराज़ करनेवाला, आपत्ति-कर्ता।

मो’तरिफ़ (معترف) अ. वि.–एतिराफ़ करनेवाला, स्वीकार करनेवाला, इक़ार करनेवाला।

मो’ताद (معتاد) अ. वि.–मात्रा, मिक़्दार; पूरी ख़ुराक, पूरी मात्रा; आदी, व्यसनी।

मो’ती (معطی) अ. वि.–अता करनेवाला, दाता, प्रदाता, अनुदाता; ईश्वर का एक नाम।

मोम (موم) फा. पुं.–सिक्थ, मधुशिष्ट, माक्षिज।

मोमजामः (موم جامہ) फा. पुं.–वह कपड़ा जो मोम में तर कर लिया गया हो, मोम चढ़ाया हुआ कपड़ा।

मोमरौग़न (موم روغن) फा. पुं.–तेल में मोम मिलाकर बनाया हुआ तेल।

मोमिनः (مومنہ) अ. स्त्री.–मुसलमान स्त्री।

मोमिन (مومن) अ. पुं.–मुसलमान मर्द।

मोमिनात (مومنات) अ. स्त्री.–‘मोमिनः’ का बहु., मुसलमान स्त्रियाँ।

मोमियायी (مومیائی) अ. स्त्री.–पत्थर से टपकनेवाला एक मद, औषध, शिलाजतु, सलाजीत, शिलाजीत।

मोर (مور) फा. स्त्री.–पिपीलिका, च्यूँटी; च्यूँटा, चींटा।

मोरचः (مورچہ) फा. पुं.–जंग; मैल, मल।

मोरचाल (مورچال) फा. पुं.–वह गढ़ा जिसमें बैठकर शत्रु पर गोली चलाते हैं, मोरचा।

मोरे ज़ईफ़ (مورضعیف) फा. अ. स्त्री.–कमज़ोर च्यूंटी अर्थात् असमर्थ और दीन व्यक्ति।

मोरे नातुवाँ (مور ناتواں) फा. स्त्री.–दे. ‘मोरे ज़ईफ़’।

मोरोमलख़ (موروملخ) फा. पुं.–चींटी और टिड्डी, अर्थात् छोटे-छोटे प्राणी।

मोहमल (مہمل) अ. वि.–निरर्थक, बेमानी; व्यर्थ, बेकार; लफ़ंगा, बेएतिबार; बकवास।

मोहमलगो (مہمل گو) अ. वि–बकवासी, फुज़ूल की बातें करनेवाला।

मोहमलगोई (مہمل گوئی) अ. फा. स्त्री.–बकवास, फुज़ूल की बातें करना।

मोहलत (مہلت) अ. स्त्री.–अवकाश, फ़ुर्सत; छुट्टी, ता’तील; समय, वक़्त, विलंब, ढ़ील, देर।

मौ

मौइज़त (موعظت) अ. स्त्री.–सदुपदेश, हितोपदेश, पंद, नसीहत।

मौइदत (موعدت) अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा, वचन, वादा, अह्द।

मौऊद (موعود) अ. वि.–वह चीज़ जिसका वादा किया गया हो, जिसका वचन दिया गया हो।

मौक़ा’ (موقع) अ. पुं.–अवसर, ठीक समय; समय, वक़्त; घटनास्थल, जाए वुकूअः ; स्थान, जगह।

मौक़िफ़ (موقف) अ. पुं.–खड़े होने की जगह; स्थान, जगह; निश्चय, तहैयः।

मौकिब (موکب) अ. पुं.–सेना, फौज; सवारों का समूह।

मौक़ूफ़ (موقوف) अ. वि.–स्थगित, मुल्तवी; पदच्युत, बरख़ास्त; त्यक्त, छोड़ा हुआ; निर्भर, मुनहसिर, वह हल् अक्षर जिससे पहलेवाला अक्षर भी हल् हो।

मौजः (موجہ) अ. पुं.–दे. ‘मौज’, लहर, उमंग, तरंग।

मौज (موج) अ. स्त्री.–तरंग, वीचि, हिल्लोल, लह्र; उत्साह, उमंग, वल्वलः; धुन, ख़याल; आनंद, ख़ुशी।

मौज़ (موز) अ. पुं.–केला, कदली, रम्भा।

मौजए तबस्सुम (موجۂ تبسم) अ.पुं.–मुस्कुराहट की लहर।

मौजख़ेज़ (موج خیز) अ. फा. वि.–नदी, दर्या।

मौजज़न (موج زن) अ. फा. वि.–मौजें मारता हुआ, तरंगित, हिल्लोलित।

मौज़ा’ (موضع) अ. पुं.–स्थान, जगह; ग्राम, गाँव।

मौज़ूँ (موزوں) अ. वि.–उचित, मुनासिब; योग्य, लाइक़; पात्र, अह्ल; यथोचित, वाजिब, तुला हुआ, संतुलित; वह शेर जिसका वज़्न ठीक हो; जँचा-तुला, ठीक-ठीक।

मौज़ूँतब्अ (موزوں طبع) अ. वि.–जो कविता कर लेता हो, जो शेर वज़्न के अंदर कहता हो।

मौज़ूअ (موضوع) अ. वि.–रखा हुआ; विषय, सबजेक्ट।

मौजूदः (موجودہ) अ. वि.–आधुनिक, हाल का; उपस्थित, हाज़िर; जो इस समय मौजूद है, वर्तमान।

मौजूद (موجود) अ. वि.–उपस्थित, हाज़िर; सम्मुख, सामने; जीवित, ज़िंदा; तत्पर, तैयार; कटिबद्ध, मुस्तइद; उपलब्ध, दस्तयाब।

मौजूदफ़िलख़ारिज (موجودفی الخارج) अ. पुं.–जो संसार में होता हो, काल्पनिक न हो।

मौजूदात (موجودات) अ. स्त्री.–‘मौजूदः’ का बहु., संसार की सब चीज़ें; सारा सामान,; शुमार, गिनती, हाज़िरी।

मौज़ून (موزون) अ. वि.–दे. ‘मौज़ूँ’।

मौज़ूनियत (موزونیت) अ. स्त्री.–मौज़ूँ होने का भाव; औचित्य, मुनासबत; तबीअत का ठीक होना; शेर का वज़्न के अंदर होना, योग्यता, क़ाबिलीयत।

मौज़ूनी (موزونی) अ. वि.–दे. “मौज़ूनियत’।

मौजे आब (موجِ آب) अ. फा. स्त्री.–नदी की तरंग, पानी की लह्र।

मौजे कौसर (موجِ کوثر) अ. स्त्री.–स्वर्ग के पानी की लह्र।

मौजे तबस्सुम (موجِ تبسم) अ. स्त्री.–मुस्कुराहट की लह्र।

मौजे नसीम (موجِ نسیم) अ. स्त्री.–सबेरे की हवा का झोंका, समीर की लह्र।

मौजे बला (موجِ بلا) अ. फा. स्त्री.–आपत्तियों की लहरों के थपेड़े।

मौजे बोरया (موجِ بوریا) अ. फा. स्त्री.–चटाई बिछाने से बनी हुई लकीरें, लकीरों की चटाई।

मौजे रेग (موجِ ریگ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'मौजे सराब'।

मौजे सब्ज़ः (موجِ سبزہ) अ. फा. स्त्री.–वह लह्र जो हवा चलने से सब्ज़े में पैदा होती है।

मौजे सराब (موجِ سراب) अ. फा. स्त्री.–रेत की लह्रें जो दूर से पानी जान पड़ती हैं।

मौजे हवा (موجِ ھوا) अ. स्त्री.–हवा की लह्र, हवा का सर्द झोंका।

मौत (موت) अ. स्त्री.–मृत्यु, निधन, मरण, वफ़ात; विनाश, बेरबादी; शायत, दुर्दशा।

मौता (موتیٰ) अ. पुं.–'मैयित' का बहु., मरे हुए लोग।

मौतिन (موطن) अ. पुं.–जन्मभूमि, वतन।

मौफ़ूर (موفور) अ. वि.–प्रचुर, अधिक, बहुत।

मौरिद (مورد) अ. वि.–उतरने का स्थान, ठहरने का स्थान; योग्य, पात्र, अह्ल।

मौरिदे इनायत (موردِ عنایت) अ. पुं.–कृपापात्र, जिस पर कृपा हो।

मौरिदे इन्आम (موردِ انعام) अ. पुं.–पुरस्कार के योग्य, इन्आम का मुस्तहक़।

मौलवी (مولوی) अ. पुं.–इस्लाम धर्म का विद्वान्; बच्चों को पढ़ानेवाला; विद्वान्, आलिम।

मौला (مولا) अ. पुं.–स्वामी, मालिक; ईश्वर, परमेश्वर; वह दास जिसे मुक्ति मिल गयी हो।

मौलाई (مولائی) अ. वि.–सरदारी, अध्यक्षता; प्रतिष्ठा, बुज़ुर्गों को लिखने का एक शब्द।

मौलाना (مولانا) अ. पुं.–आलिमों का एज़ाज़ी ख़िताब।

मौलिद (مولد) अ. वि.–जन्मभूमि, पैदा होने का स्थान, वतन।

मौलूद (مولود) अ. पुं.–बालक, शिशु, नवजात बच्चा; मीलाद।

मौसम (موسم) अ. पुं.–शुद्ध उच्चारण 'मौसिम' है, परन्तु उर्दू में दोनों प्रकार से बोला जाता है।

मौसिम (موسم) अ. पुं.–ऋतु, फस्ल; समय, वक़्त।

मौसिमे गर्मा (موسمِ گرما) अ. फा. पुं.–गर्मी का मौसिम, ग्रीष्म ऋतु।

मौसिमे ख़ज़ा (موسمِ خزاں) अ. फा. पुं.–पतझड़ की ऋतु, शिशिर ऋतु।

मौसिमे गुल (موسمِ گل) अ. फा. पुं.–वसंत ऋतु, बहार का समय।

मौसिमे बहार (موسمِ بہار) अ. फा. पुं.–वसंत ऋतु।

मौसिमे बाराँ (موسمِ باراں) अ.फा. पुं.–वरसात का मौसिम, वर्षाकाल।

मौसिमे सर्मा (موسمِ سرما) अ. फा. पुं.–ठंढी ऋतु, जाड़े का समय।

मौसूफ़ (موصوف) अ. वि.–जिसकी प्रशंसा की जाय, प्रशंसित; (व्या.) विशेष्य, जिस शब्द के साथ कोई विशेषण हो।

मौसूमः (موسومہ) अ. वि.–नाम रखा हुआ।

मौसूम (موسوم) अ. वि.–नाम रखा हुआ, नामधारी।

मौहूबः (موہوبہ) अ. वि.–बख़्शिश की गयी चीज़, दी हुई चीज़।

मौहूब (موہوب) अ. वि.–हिबा किया गया, बख़्शा गया।

मौहूबइलैह (موہوب الیہ) अ. वि.–जिसके नाम हिबा हो।

मौहूबलहू (موہوب لہ) अ. वि.–जिसके नाम हिबा किया जाय।

मौहूम (موہوم) अ. वि.–भ्रममूलक, भ्रमात्मक, जो केवल भ्रम ही भ्रम हो, उसका अस्तित्व न हो।

य

यंग (ینگ) फा. पुं.–विधान, क़ानून; परंपरा, रिवाज (वि.) प्रकाशमान्, रौशन; समान, तुल्य।

यंगा (ینگا) फा. स्त्री.–भाई की पत्नी, भाभी; चचा की पत्नी, चची; विवाहिता, गृहस्वामिनी; नाइन, मश्शातः।

यंबूअ (ینبوع) अ. पुं.–नदी, दर्या; सरिता, चश्मा; स्रोत, सोता।

यआफ़ीर (یعافیر) अ. पुं.–'या'फ़ूर' का बहु., बहुत-से हिरन।

यआबीब (یعابیب) अ. पुं.–'या'बूब' का बहु., तेज़ चलनेवाले घोड़े; तेज़ बहनेवाली नदियों के धारे।

यआमिल (یعامل) अ. पुं.–'या' मल' का बहु., खूब काम करनेवाले ऊँट।

यआमीर (یعامیر) अ.पुं.–'या' मूर' का बहु., बकरी के बच्चे।

यआलील (یعالیل) अ. पुं.–'या' लूल' का बहु., पानी के बुलबुले; मनुष्यों के लिंग।

यआसीब (یعاسیب) अ. पुं.–'या'सूब' का बहु., शहद की मक्खियों के राजा; जाति के सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति।

यऊक़ (یعوق) अ. पुं.–घोड़े के आकार की एक मूर्ति, जिसे हज़रत 'नूह' के अनुयायियों ने पूजा था।

यऊस (یئوس) अ. वि.–निराश, हताश, नाउम्मीद।

यक (یک) फा. वि.–एक की संख्या; एक वस्तु।

यकअस्पः (یک اسپہ) फा. वि.–दे. 'यकस्पः', वह उच्चारण अधिक शुद्ध है, एक घोड़ा।

यकआतशः (یک آتشہ) फा. वि.–दे. 'यकातशः', वह उच्चारण अधिक फ़सीह है, एक आग।

यक़क़ (یقق) अ. वि.–बहुत अधिक सफ़ेद।

यकक़लम (یک قلم) अ. फा. वि.–सिरे से, नितांत, बिलकुल।

यकगूनः (یک گونہ) फा.अ.वि.–किंचित्, किसी क़दर, थोड़ा।

यकचन्द (یک چند) फा. वि.–किंचित्, थोड़ा।

यकचश्म (یک چشم) फा. वि.–काण, काना; सूर्य, सूरज; सबको एक आँख से देखनेवाला, समदर्शी।

यकचश्मी (یک چشمی) फा. स्त्री.–कानापन; समदर्शिता।

यकचोबः (یک چوبہ) फा. पुं.–वह छोटा शामियाना जो एक लकड़ी पर खड़ा होता है।

यक़ज़ः (یقظہ) अ. पुं.–जाग्रति, जागरण, बेदारी; नींद न आने का रोग, अनिद्रा।

यक़ज़ (یقظ) अ. वि.–दे. 'यक़िज़', दोनो शुद्ध हैं; एक-से।

यकजदी (یک جدی) फा. अ. वि.–एक दादा का; एक दादा की संतान।

यकज़बाँ (یک زباں) फा. वि.–सहमत, एक राय।

यकज़बानी (یک زبانی) फा. स्त्री.–सहमति, इत्तिफ़ाक़।

यकजाँ (یک جاں) फा. वि.–घनिष्ठ, दिली।

यकजा (یک جا) फा. वि.–एक जगह; एकत्र, इकट्ठा; सम्मिलित, शामिल।

यकजाई (یک جائی) फा. स्त्री.–इकट्ठापन, एकत्रता।

यकजिंसी (یک جنسی) फा. स्त्री.–एक ही वंश या नस्ल का होना; एक उम्र का होना; एक प्रकृति का होना।

यकजिलौ (یک جلو) फा. वि.–तेज़ चलनेवाला घोड़ा।

यकजिहत (یک جہت) फा. अ. वि.–सहमत, मुत्तफ़िक़; मित्र, दोस्त।

यकजिहती (یک جہتی) फा. अ. स्त्री.–सहमति, इत्तिफ़ाक़; मित्रता, दोस्ती।

यकतनः (یک تنہ) फा. स्त्री.–अकेला, एकाकी, तन्हा।

यकतन (یک تن) फा. वि.–एक व्यक्ति, एक मनुष्य।

यकतरफ़ः (یک طرفہ) फा. अ. वि.–एक ओर का; एक क़तार का, दाहिना या बायाँ; एक ओर का पक्षपात लिये हुए।

यकतही (یک تہی) फा. वि.–जिसमें एक परत हो; गरमियों का हलका लिबास।

यकता (یکتا) फा. वि.–अद्वितीय, अनुपम, वेमिस्ल।

यकताई (یکتائی) फा. स्त्री.–अद्वैत, अकेलापन, बेमिस्ली–"रंगे-यकताई भला इतना तो पैदा करते, अपनी तस्वीर में हरदम तुम्हें देखा करते।"

यकताए अस्र (یکتائے عصر) फा. अ. वि.–अपने समय का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, (किसी कला या विद्या में)।

यकताए अह्द (یکتائے عہد) फा. अ. वि.–दे. 'यकताए अस्र'।

यकताए फ़न (یکتائے فن) फा. अ. वि.–किसी कला विशेष में अद्वितीय और अनुपम।

यकताज (یکتاز) फा. वि.–दे. 'यक्कः ताज़'।

यकतारः (یکتارہ) फा. पुं.–एक तारवाला बाजा, इकतारा।

यकतार (یکتار) फा. वि.–किंचित्, ईषत्, थोड़ा।

यकदंदानः (یکدندانہ) फा. वि.–एक-सा, समान, बराबर।

यकदक (یکدک) फा. वि.–कदुष्ण, गुनगुना।

यकदस्त (یکدست) फा. वि.–समस्त, संपूर्ण, सब; समान, यकसाँ।

यकदस्ती (یکدستی) फा. स्त्री.–संपूर्णता, समस्तता; समानता, एकसानियत।

यकदिगर (یکدگر) फा. वि.–परस्पर आपस में, बाहम।

यकदिलः (یکدلہ) फा. वि.–शूर, वीर, बहादुर; सहमत, मुत्तफ़िक़।

यकदिल (یکدل) फा. वि.–संयुक्त, संघटित, मुत्तहद; मित्र, दोस्त; सहमत, मत्तफ़िक़।

यकदिली (یکدلی) फा. स्त्री.–एकता, इत्तिहाद; मित्रता, दोस्ती; सहमति, इत्तिफ़ाक़।

यकदिश (یکدش) फा. वि.–संकर, जारज, दोग़ला।

यकदीगर (یکدیگر) फा. वि.–परस्पर, आपस में, बाहम।

यकनफ़स (یک نفس) अ. फा. वि.–क्षण भर, थोड़ी देर; सहचर, साथी; मित्र, दोस्त।

यकनफ़सी (یک نفسی) फा. अ. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती, सहचरता, साथ।

यकना'ल (یک نعل) फा. अ. वि.–बड़ी मात्रा में, बहुत अधिक, बइफ़ात।

यकनिशस्त (یک نشست) फा. वि.–साथ उठने-बैठनेवाला, हमनशीं।

यकपा (یکپا) फा. वि.–एक पाँववाला, एक पद।

यकपायः (یکپایہ) फा. वि.–जिसमें केवल एक खंभा हो; एक-जैसे पदवाले, समपद, समान पद।

यकपिदरी (یکپدری) फा. वि.–एक पिता की संतान; एक पिता की संपत्ति आदि।

यकफ़नी (یکفنی) फा. वि.–किसी कला विशेष में निपुण; अनुपम, बेनज़ीर।

यकफ़र्दी (یکفردی) फा. वि.–एक व्यक्तिवाला, जिसे एक व्यक्ति कर सके, जो एक व्यक्ति के योग्य हो।

यकफ़स्ली (یکفصلی) फा. अ. वि.–वह भूमि जिसमें केवल एक फ़स्ल पैदा होती हो।

यकफ़ीसदी (یکفیصدی) फा. अ. वि.–सौ में एक, सौ में एक के अनुपात से, एक प्रतिशत।

यकबग़ल (یکبغل) फा. वि.–बहुत बड़ी मात्रा में, बहुत अधिक।

यक ब यक (یکبیک) फा. वि.–सहसा, अचानक, अनायास, अकस्मात्।

यकबारः (یکبارہ) फा. वि.–अचानक, सहसा, आकस्मिक।

यकबार (یکبار) फा. वि.–दे. 'यकबारः'।

यकबारगी (یکبارگی) फा. वि.–अचानक, अकस्मात्, बे शानोगुमान।

यकमंज़िलः (یکمنزلہ) फा. अ. वि.–वह मकान जिसमें केवल एक ही माता हो, अर्थात् उस पर इमारत न हो।

यकमनी (یکمنی) फा. वि.–एक-से ख़ुदी पसंद, एक-से तकब्बुरवाले, एक-से ग़ुरूरवाले; एक नुत्फ़े के; एक बीज के।

यकमर्तबः (یکمرتبہ) फा. अ. वि.–एक-जैसा श्रेणी और पदवाले, समानपद, समवर्ग।

यकमादरी (یکمادری) फ़ा. वि.–एक माता की संतान।

यकमुश्त (یکمشت) फा. वि.–इकट्ठा, सब का सब; जो थोड़ा-थोड़ा अथवा क़िस्तों में न हो, बल्कि सब हो।

यकरंग (یکرنگ) फा. अ. वि.–एक-जैसे रंगवाले; निश्छल, मुख़्लिस; जो सदा एक-जैसा रहे।

यकरंगी (یکرنگی) फा. स्त्री.–एक रंग का होना; निश्छलता, ख़ुलूस; सदा एक-जैसा रहना।

यकरक़ीब (یکرقیب) फा. पुं.–ईश्वर, ख़ुदा।

यकरह (یکرہ) फा. वि.–समस्त, समग्र, सब; एक बार, एक दफ़ा; निश्चल, बेरिया।

यकराँ (یکراں) फा. पुं.–अस्ली और कुलीन घोड़ा।

यकराई (یکرائی) फा. स्त्री.–एक मत होना, मक्तैय, सहमति।

यकराए (یکراے) फा. वि.–सहमत, एकमत, मुत्तफ़िक़।

यकरिकाबी (یکرکابی) फा. स्त्री.–कार्य में संलग्नता; शीघ्रता, जल्दी; कोतल घोड़ा; कार्यतत्परता, कार्यसंलग्नता, मुस्तइद्दी।

यकरिश्तः (یکرشتہ) फा. वि.–अनुकूल, मुआफ़िक़।

यकरुख़ी (یکرخی) फा. वि.–एक पक्षीय, एक तरफ़ का; जिसमें किसी पक्ष की तरफ़दारी हो; जैसे–'यकरुख़ी फ़ैसलः'।

यकरू (یکرو) फा. वि.–एक दिल, घनिष्ठ, सच्चा दोस्त।

यकरूई (یکروئی) फा. स्त्री.–घनिष्ठता, सच्ची दोस्ती।

यकरोज़ः (یکروزہ) फा. वि.–वह कार्य जो एक दिन में समाप्त हो जाय; जो एक दिन के लिए हो।

यकलख़्त (یکلخت) फा. वि.–सिरे से, नितांत, बिलकुल; आकस्मिक, अचानक।

यकवरक़ः (یکورقہ) फा. अ. वि.–जिसमें केवल एक पन्ना हो; एक वरक़ का लेख।

यकशंबः (یکشنبہ) फा. पुं.–रविवार, इतवार।

यकशबः (یکشبہ) फा. वि.–जो रातभर में समाप्त हो जाय; जो रात भर का हो।

यकशिस्त (یکشست) फा. वि.–सहचर, साथी; सभासद, मुसाहिब।

यकसरः (یکسرہ) फा. वि.–सिरे से, सब; नितांत, बिलकुल।

यकसर (یکسر) फा. वि.–नितांत, बिलकुल; समग्र, समस्त, सब; एक सिरे से दूसरे सिरे तक।

यकसवारः (یکسوارہ) फा. वि.–अकेला, एकाकी, तन्हा।

यकसाँ (یکساں) फा. वि.–समान, बराबर; सदृश, मिस्ल; चौरस, समतल।

यकसानियत (یکسانیت) फा. स्त्री.–समता, साम्य, मुसावात; सदृशता, तुल्यता, बराबरी; चौरसपन।

यकसालः (یکسالہ) फा. वि.–एक साल की आयुवाला; एक वर्ष में एक बार होनेवाला; एक वर्ष में समाप्त होनेवाला।

यकसू (یکسو) फा. वि.–एक ओर, एक तरफ; निश्चित, बेफ़िक्र; एकाग्रचित्त, मुन्हमिक; अवकाश प्राप्त, फ़ारिग़।

यकसूई (یکسوئی) फा. स्त्री.–निश्चिंतता, बेफ़िक्री; अवकाश, फ़ुर्सत; सारे झंझटों से निवृत्ति; एकांत, तन्हाई।

यकस्पः (یکاسپہ) फा. वि.–धीरे-धीरे साधारण चाल से चलने वाला सवार; एक-एक मंज़िल पर रुकनेवाला सवार; अकेला, एकाकी।

यकातशः (یکآتشہ) फा. वि.–वह मदिरा अथवा अरक़ जो एक बार खींचा गया हो।

यकायक (یکایک) फा. वि.–आकस्मिक, अचानक, सहसा; तुरंत, शीघ्र, फ़ौरन।

यक़्क़िक़ (یقق) अ. पुं.–बहुत अधिक सफ़ेद; दे. 'यक़क़', दोनों शुद्ध हैं।

यक़िज़ (يقظ) अ. वि.–सजग, जागरूक, सावधान, जाग्रत, जागता हुआ, बेदार।

यकीता (يکيتا) फा. पुं.–शिक्षक, अध्यापक, पढ़ानेवाला।

यक़ीन (يقين) अ.पुं.–विश्वास, एतिवार; श्रद्धा, एतिक़ाद; संदेह का अभाव, शुब्हा न होना।

यक़ीनन (يقيناً) अ. वि.–संभवतः, अवश्यमेव, यक़ीनी; निःसंदेह, बिला शुबहा।

यक़ीनी (يقينی) अ. वि.–दे. 'यक़ीनन'।

यक़ीने कामिल (يقين کامل) अ. पुं.–दृढ़ विश्वास, पूरा भरोसा, पूरा यक़ीन; अटल धर्म विश्वास, पूरा ईमान।

यक़ीने मोह्कम (يقين محکم) अ. पुं.–दे. 'यक़ीने कामिल'।

यक़ीने वासिक (يقين واثق) अ. पुं.–दे. 'यक़ीने कामिल'।

यक़ुज़ (يقظ) अ. वि.–दे. 'यक़िज़' दोनों शुद्ध है; सजग; सचेष्ट, सावधान।

यकुम (يکم) फा. वि.–प्रथम, पहला; पहली तारीख़।

यके (يکے) फा. वि.–एक, एक व्यक्ति; कोई एक, कोई एक व्यक्ति।

यके बा'दे दीगरे (يکے بعد دیگرے) फा. अ. वि.–एक के पश्चात् दूसरा, उत्तरोत्तर।

यक्कः (يکہ) फा. वि.–अकेला, तन्हा; अनुपम, बे मिस्ल; एक्का, एक घोड़े से चलनेवाली गाड़ी विशेष, इक्का।

यक्कःताज़ (يکہ تاز) फा. वि.–अकेला बहुतों-से लड़नेवाला, महारथी।

यक्कःताज़ी (يکہ تازی) फा. स्त्री.–अकेले बहुतों-से लड़ना।

यक्कःबान (يکہ بان) फा. पुं.–इक्का हाँकनेवाला।

यक्कओतन्हा (يکہ و تنہا) फा. वि.–बिलकुल अकेला।

यक़्ज़ान (يقظان) अ. वि.–जाग्रत, जागरूक, जागता हुआ, बेदार।

यक़्तीन (يقطين) अ. स्त्री.–हर वह बेल जो ज़मीन पर फैलती है, जैसे—लौकी, कद्दू आदि की।

यख़ (يخ) फा. पुं.–ठंढ से जमा हुआ पानी, बर्फ़, हिम।

यख़ख़ुरिदः (يخ خورندہ) फा. वि.–उपेक्षा करनेवाला, बे तवज्जुही बरतनेवाला।

यख़ख़ुर्दः (يخ خوردہ) फा. वि.–उपेक्षित, जिसके साथ बे तवज्जुही की गयी हो।

यख़चः (يخچہ) फा. पुं.–ओला, हिमोपल।

यख़दरबिहिश्त (يخ در بہشت) फा. अ. पुं.–एक प्रकार का हल्वा।

यख़दान (يخدان) फा. पुं.–खाना रखने की अलमारी; बर्फ़ का खाना रखने का संदूक़, रैफ़्रीजेटर।

यख़पर्वर्दः (يخ پروردہ) फा. वि.–जो बर्फ़ में लगाकर ठंडा किया गया हो।

यख़बस्तः (يخ بستہ) फा. वि.–जो ठंड से जम गया हो।

यख़ाच (يخاچ) अ. पुं.–हज़्रत ईसा का चित्र जो गिरजा में रखा जाता है।

यख़्त (يخت) फा. पुं.–वह नाव जिस पर नदी में सैर करते हैं और अपनी निजी होती है।

यख़्नी (يخنی) फा. स्त्री.–अन्न या धन जो आवश्यकता पड़ने पर काम आने के लिए संचित किया जाय, ज़ख़ीरा; गोश्त का शोर्बा जिसमें मसाला न डाला गया हो, और जो रोगियों को दिया जाता है।

यख़्शी (يخشی) तु. वि.–सुंदर, प्रियदर्शन, ख़ुशनुमा; शुभ, कल्याण कर, मुबारक; उत्तम, उम्दा।

यगाँ (یگاں) फा. वि.–अकेला, एकाकी; अनोखा, अनुपम; मनुष्य लोग, सामान्य जन, आम लोग।

यगाँ यगाँ (یگاں یگاں) फा. वि.–एक-एक करके, एक के बाद दूसरा।

यगानः (یگانہ) फा. वि.–स्वजन, आत्मीय, अजीज़; अद्वितीय, ला जवाब; एकाकी, अकेला।

यगानःगो (یگانہ گو) फा. वि.–सत्यवादी, सच्चा, सच बोलनेवाला।

यगानःगोई (یگانہ گوئی) फा. स्त्री.–सत्य बोलना, सच्चाई।

यगानगत (یگانگت) उ. स्त्री.–दे. 'यगानगी'।

यगानगी (یگانگی) फा. स्त्री.–स्वजनता, रिश्तेदारी; सहमति, इत्तिफ़ाक़ेराय; अकेलापन।

यग़ाम (یغام) फा. पुं.–ग़ूले बियाबानी, जंगल में फिरनेवाले भूत-प्रेत।

यग़ूस (یغوث) अ. पुं.–सिंह के आकार की एक मूर्ति जिसकी पूजा इस्लाम से पूर्व अरब में होती थी।

यग़्मा (یغما) तु. पुं.–लूटमार, लुंठन; उचकना, झपटना, छीनना; लूट में प्राप्त माल।

यग़्माई (یغمائی) तु. वि.–जो लूटा गया हो।

यज़क (یزک) तुं. पुं.–सेना का अग्र भाग जो आगे चलता और शत्रु की सेना के समाचार देता है, सेनाग्र; सेना, फ़ौज।

यज़कदार (یزکدار) तु. फा. पुं.–आगे चलनेवाली सेना का सेनापति।

यज़ीद (یزید) अ. पुं.–अमीर मुआवियः का लड़का जो बड़ा ही बदचलन, शराबी और अत्याचारी था, और जिसने हज़्रत इमाम हुसैन को शहीद कराया था, क्योंकि वह इसके शासन के विरुद्ध था।

यज़ीदी (یزیدی) अ. वि.–वह व्यक्ति जो यज़ीद-जैसा निष्ठुर, अत्याचारी और अभिमानी हो; यज़ीद सम्बन्धी; यज़ीद का।

यज़ीदे वक़्त (یزیدِ وقت) अ. पुं.–अपने समय का बहुत ही अत्याचारी, अभिमानी और अनीति पर चलनेवाला शासक।

यज़्द (یزد) फा. पुं.–शीराज़ के प्रांत का एक नगर।

यज़्दाँ (یزداں) फा. पुं.–'यज्दान' का लघु., दे. 'यज़्दान'।

यज़्दाँपरस्त (یزداں پرست) फा. वि.–ईश्वरवादी, आस्तिक, ख़ुदा को माननेवाला।

यज़्दाँपरस्ती (یزداں پرستی) फा. स्त्री.–ईश्वर को मानना, आस्तिकता।

यज़्दाँशनास (یزداں شناس) फा. वि.–दे. 'यज़्दाँपरस्त'; ईश्वर को पहचान कर सत्य और सन्मार्ग पर चलनेवाला।

यज़्दाँशनासी (یزداں شناسی) फा. स्त्री.–दे. 'यज्दाँपरस्ती'; सत्य और सन्मार्ग पर चलना, धर्मनिष्ठा।

यज़्दान (یزدان) फा. पुं.–आतशपरस्तों (ईरान के पुराने अग्निपूजक जो ज़रदुश्त के अनुयायी थे) के मतानुसार, नेकी का ख़ुदा, वे लोग दो ख़ुदा मानते हैं, एक नेकी का दूसरा बदी का जिसे 'अह्रमन' कहते हैं।

यज़्दानी (یزدانی) फा. वि.–ईश्वरीय, ख़ुदाई।

यज़्दी (یزدی) फा. वि.–'यज़्द' का निवासी।

यज़्नः (یزنه) फा. पुं.–बहन का पति, बहनोई।

यताक़ (یتاق) तु. पुं.–पहरा, चौकी, देखभाल, निगरानी।

यताक़ी (یتاقی) तु. वि.–पहरेदार, चौकीदार।

यतामा (یتامیٰ) अ. पुं.–'यतीम' का बहु., वे बच्चे जिनके पिता मर गये हों, अनाथ।

यतीम (یتیم) अ. वि.–वह बालक जिसका पिता मर गया हो, अनाथ।

यतीमख़ानः (یتیم خانه) अ. फा. पुं.–यतीम बालकों के पालन-पोषण का स्थान जो किसी संस्था की देख-रेख में हों, अनाथालय।

यतीमी (یتیمی) अ. स्त्री.–अनाथपन, बे बाप का हो जाना।

यतीमोयसीर (یتیم و یسیر) अ. पुं.–वह बालक जिसके माता-पिता दोनों मर गये हों, यह शब्द उर्दूवालों ने बनाया है।

यतूअ (یتوع) अ. पुं.–दे. 'यत्तूअ'।

यत्तूअ (یتوع) अ. पुं.–वह पेड़ जिसमें दूध होता है, जैसे–आक, थूहड़ आदि।

यत्न (یتن) अ. पुं.–वह बालक जो उलटा उत्पन्न हुआ हो, जिसके पाँव पहले निकले हों।

यद (ید) अ. पुं.–हाथ, कर, हस्त।

यदक (یدک) फा. पुं.–कोतल घोड़ा।

यदुल्लाह (یداللہ) अ. पुं.–ईश्वर का हाथ, अर्थात् ईश्वर की सहायता।

यदे क़ुद्रत (یدِ قدرت) अ. पुं.–क़ुद्रत का हाथ अर्थात् दैवी माया, दैवी शक्ति।

यदे तूला (یدِ طولیٰ) अ. पुं.–बड़ा लंबा हाथ, अर्थात् किसी कार्य विशेष में बहुत अधिक कुशलता।

यदे बैज़ा (یدِ بیضا) अ. पुं.–चमकता हुआ हाथ, हज़्रत मूसा का हाथ, जिसे खोल देने से प्रकाश फैल जाता था।

यदैन (یدین) अ. पुं.–दोनों हाथ।

यनप्लू (ینپلو) फा. स्त्री.–मंडी, जहाँ चारों ओर से माल बिकने आता है; यात्रीदल, क़ाफ़िला।

यनाबीअ (ینابیع) अ. पुं.–'यंबूअ' का बहु., नदियाँ; चश्मे; सोते।

यनूफ़ (ینوف) अ. पुं.–ऊँचा-नीचा टीला।

यपन्लू (یپنلو) फा. स्त्री.–दे. 'यन्पल्', दोनों शुद्ध हैं।

यफ़न (یفن) अ. पुं.–बहुत बूढ़ा व्यक्ति जो सठ्या गया हो, पीरे फ़र्तूत।

यफ़ाअ (یفاع) अ. पुं.–ऊँचा टीला, टीकरा, पहाड़ी।

यफ़्तः (یفته) फा. पुं.–साइनबोर्ड, नाम पट्टिका।

यब (یب) फा. वि.–बूढ़ा, वृद्ध।

यबस (یبس) अ. पुं.–सूखना, शुष्क होना।

यबाब (یباب) अ. वि.–ध्वस्त, बरबाद।

यब्रूह (یبروح) अ. स्त्री.–दे. 'यब्रूहुस्सनम'।

यब्रूहुस्सनम (یبروح الصنم) अ. स्त्री.–एक वनौषधि, लक्ष्मी, लखमनी, ग़र्दुमगिया।

यब्स (یبس) अ. पुं.–सूखना, ख़ुश्क होना।

यमः (یمه) फा. पुं.–वह ख़ुराक या धन जो किसी को रोज़ दिया जाय।

यम (یم) फा. पुं.–नदी, तरंगिणी, दर्या।

यमक (یمک) फा. पुं.–एक नगर जहाँ का सौंदर्य प्रसिद्ध है।

यमन (یمن) अ. पुं.–अरब का एक देश, जहाँ का लाʼल और याक़ूत सारे संसार से अच्छा होता है।

यमनी (یمنی) अ. वि.–यमन का निवासी; यमन सम्बन्धी; यमन की वस्तु।

यमान (یمان) अ. वि.–यमन से सम्बन्ध रखनेवाला।

यमानी (یمانی) अ. वि.–यमन का; यमन-सम्बन्धी।

यमामः (یمامه) अ. पुं.–कबूतर; जंगली कबूतर; कबूतरी; अरब की एक नीली आँखोंवाली स्त्री जो मैदान में ४०-५० मील तक की वस्तु देख लेती थी।

यमाम (یمام) अ. पुं.–जंगली कबूतर, वनकपोत।

यमीनः (یمینه) अ. पुं.–आमाशय, पक़्वाशय, मेदा।

यमीन (یمین) अ. वि.–दाहनी ओर; दाहना; शपथ, सौगन्ध; बल, शक़्ति; श्रेष्ठता, बुज़ुर्ग।

यमीनोयसार (يمين ويسار) अ. पुं.–दाहनी और बायीं ओर, दोनों ओर।

यमूम (يسوم) अ. पुं.–'यम' का बहु., नदियाँ।

यम्नः (يمنه) अ. पुं.–सीधे हाथ की ओर।

यम्सू (يمسو) तु. पुं.– बारूद, अग्निचूर्ण।

य़रः (يره) तु. पुं.–पृथ्वी, ज़मीन, भूमि।

यरक़ाँ (يرقاں) अ. पुं.–'यरक़ान' का लघु., दे. 'यरक़ान'।

यरक़ाँज़दः (يرقاں زده) अ. फा. वि.–जिसे यरक़ान का रोग हो, कमलरोगी।

यरकान (يرقان) अ. पुं.–एक रोग जिसमें सारा शरीर, विशेषतः आँखें पीली पड़ जाती हैं, कमलरोग।

यरक़ानी (يرقانی) अ. वि.–यरक़ान का मरीज़, कमल रोग-ग्रस्त, कमलरोगी।

यरा (يرا) फा. स्त्री.–झुर्री, बल, सिलवट, शिकन।

यराअः (يراعه) अ. पुं.–कलम बनाने का नरकट; बजाने की बाँसुरी; जुगनू; खद्योत।

यराअ (يراع) अ. पुं.–दे. 'यराअः'।

यराक़ (يراق) तु. पुं.–अस्त्र-शस्त्र, अस्लिहः, हथियार; उपकरण, सामान; युद्ध-सामग्री, सामाने जंग।

यराग़ (يراغ) तु. पुं.–डाक का घोड़ा।

यराबीअ (يرابيع) अ. पुं.–'यर्बूअ' का बहु., 'जंगली चहे'; दो पाँववाले चूहे।

यर्ग़माल (يرغمال) तु. पुं.–वह राजवंश का व्यक्ति जो किसी राज की ओर से दूसरे राज को ज़मानत में दिया जाय, ताकि वह राज अपनी प्रतिज्ञा भंग न कर सके।

यर्ग़ा (يرغا) तु. पुं.–तेज़ घोड़ा; तेज़ चलनेवाला व्यक्ति; आक्रमण, हम्ला।

यर्ग़ू (يرغو) तु. स्त्री.–राजनीति, सियासत; दंड, सज़ा।

यर्निश (يرنش) फा. वि.–एक गाँव या नगर के रहनेवाले।

यर्बूअ (يربوع) अ. पुं.–जंगली चूहा; एक चूहा जो दो पाँव का होता है।

यर्मलून (يرملون) अ. पुं.–अरबी के छः अक्षरों का समाहार, जब हल् न (न्) के बाद इनमें से कोई अक्षर आता है तो वह 'न्' वही अक्षर बन जाता है, जैसे—'मिन् रब्बी' का मिर्‌रब्बी, 'मिन्‌लबन' का मिल्लबन, हो गया।

यर्मा' (يرمع) अ. पुं.–सफ़ेद और चमकदार पत्थर।

यर्मुग़ाँ (يرمغاں) तु. पुं.–दे. 'अर्मुग़ाँ'।

यलः (يله) फा. पुं.–मुक्त किया हुआ, रहा शुदा; छोड़ा हुआ, त्यक्त; बंदूक या तोप छोड़ी हुई; दौड़ता हुआ; आक्रमण करता हुआ, (स्त्री.) व्यभिचारिणी, फाहिशा।

यल (يل) फा. पुं.–शूर, वीर, बहादुर; मल्ल, पहलवान।

यलक़ (يلق) अ. पुं.–हर वह वस्तु जो सफ़ेद हो।

यलदगज़ (يلدگز) फा. पुं.– क़िज़िल अर्सलाँ के पिता।

यलबः (يلبه) अ. पुं.–चमड़े की ढाल; चमड़े का कवच।

यलब (يلب) अ. पुं.–दे. 'यलबः'।

यलबुज (يلوج) तु. पुं.– ईश-दूत, पैग़ंबर।

यलाक (يلاق) तु. पुं.– एक तुर्की बादशाह का नाम; मट्टी का टूटा हुआ बरतन।

यलामिक़ (يلامق) अ. पुं.–'यल्मक़' का बहु., कंगन।

यलूज (يلوج) तु. पुं.– दे. शुद्ध उच्चारण 'यलबुज'।

यल्अ (يلع) अ. पुं.–वह जंगल जिसमें दूर-दूर तक वृक्ष और पानी न हो, वियाबान; मृगतृष्णा, मरीचिका, सराब।

यल्ग़र (يلغر) तु. स्त्री.–दे. 'यल्ग़ार', दोनो शुद्ध हैं, परंतु इसका उच्चारण अधिक शुद्ध है।

मल्ग़ार (يلغار) तु. स्त्री.–आक्रमण, चढ़ाई, धावा, शुद्ध उच्चारण 'यल्ग़र' है।

यल्ग़ुर (يلغر) तु. वि.–अकेला, एकाकी, तन्हा।

यल्दा (يلدا) फा. स्त्री.–एक रात जो साल में सब रातों से अधिक लंबी होती है, जब सूर्य धनुराशि के ११ वें अंश पर पहुँचता है (पूस में) तो यह रात पड़ती है और उस रोज़ सबसे छोटा दिन होता है, यह रात अशुभ मानी जाती है।

यल्मः (يلمه) फा. पुं.–क़बा, दोहरे कपड़े का लंबा चुग़ा।

यल्मक़ (يلمق) अ. पुं.–दे· 'यल्मः'।

यल्मान (يلمان) फा. पुं.–तलवार, खड्ग।

यल्सब (يلسب) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो विवाह-सम्बन्धी सारे संस्कार की पूर्ति करे।

यल्लले (يل للے) फा. अव्य.–वह शब्द जो मस्ती और ख़ुशी के समय बोलते हैं, जैसे—अहाहा, उहो हो।

यवाक़ीत (يواقيت) अ. पुं.–याक़ूत का बहु., बहुत-से याक़ूत।

यश्क (يشک) फा. पुं.–नुकीले और बड़े दाँत, हाथी के बाहर निकले हुए दाँत, शेर आदि के लंबे दाँत, कुत्ते के नुकीले दाँत।

यश्कुर (يشکر) अ. पुं.–एक पैग़ंबर का नाम।

यश्ब (يشب) अ. पुं.–एक हरा और कठोर पत्थर जो दवा में चलता है और दिल धड़कने की बीमारी में लाभ देता है।

यश्मः (يشمه) अ. पुं.–कच्चा चमड़ा, कच्ची खाल।

यश्म (يشم) फा. पुं.–दे. 'यश्ब', दोनों शुद्ध है।

यश्माक़ (يشماق) तु. पुं.–स्त्रियों के सर का रूमाल।

यसरः (يسره) अ. पुं.–वे लिपियाँ जो उलटे हाथ की ओर से लिखी जाती हैं, जैसे—हिंदी, अंग्रेजी आदि।

यसल (يسل) अ. पुं.–सेना की पंक्ति, फ़ौज की क़तार।

यसाक़ (یساق) तु. पुं.–लड़ाई की तैयारी, सैन्य-सज्जा; दरबार, राजसभा।

यसार (یسار) अ. वि.–बायीं ओर, वामपक्ष; धनाढ्यता, अमीरी; उलटा हाथ।

यसारत (یسارت) अ. स्त्री.–धनाढ्यता, मालदारी।

यसाल (یسال) अ. पुं.–दे. 'यसल', दोनों शुद्ध हैं।

यसावुल (یساول) तु. पुं.–चोबदार, दंडधारी; दरबार, सेना अथवा सभा का प्रबंध करनेवाला; बंदी, नक़ीब।

यसिर (یسر) अ. वि.–सुगम, सरल, आसान, सहज।

यसीर (یسیر) अ. वि.–सुगम, सरल, सहज; न्यून, थोड़ा; वह बालक जिसकी माँ न हो, (इस अर्थ में उर्दू है)।

यस्त्रः (یسرہ) अ. पुं.–उलटी ओर, बायीं तरफ़, वामपक्ष।

यस्त्र (یسر) अ. पुं.–ऊँट हलाल करना; दान देना, बख़्शना।

यस्त्रिब (یثرب) अ. पुं.–मदीनः, अरब का एक प्रसिद्ध नगर।

यहूद (یہود) अ. पुं.–'यहूदी' का बहु., यहूदी लोग।

यहूदा (یہودا) अ. पुं.–हज़्रत यूसुफ़ के बड़े भाई।

यहूदी (یہودی) अ. पुं.–हज़्रत मूसा के धर्म का अनुयायी, इस्राईली; ज़लील क़िस्म का सरमायादार, धन पिशाच।

यह्क़ूफ़ (یہقوف) अ. वि.–दक्ष, प्रवीण, ज़ीरक; तीव्र बुद्धि, तेज़ अक़्ल; उदास, मलिन, बद दिल।

यह्मूम (یحموم) अ. पुं.–काला धुंवाँ; काली रात; रस्सी बटना।

यह्मूर (یحمور) अ. पुं.–जंगली गधा, वनगर्दभ, गोरख़र।

यह्या (یحییٰ) अ. पुं.–एक पैग़ंबर।

या

या (یا) फा. अव्य.–संबोधन का शब्द, हे, ऐ, ओ, अरे; अथवा, ख़्वाह।

याअसफ़ा (یااسفیٰ) अ. वा.–हाए अफ़्सोस।

याए तहतानी (یاے تحتانی) अ. स्त्री.–वह 'ये' जिसके नीचे नुक़्ते हों, चूँकि फ़ार्सी में 'ता' और 'या' एक से लिखे जाते हैं, केवल ऊपर और नीचे के नुक़्तों का फ़र्क़ है, इसलिए तहतानी लिखने से 'ये' ही समझा जायगा, यह उस समय के लिए था जब किताबें क़लमी लिखी जाती थीं और बहुत ग़लतियाँ होती थीं।

याए फ़ार्सी (یاےفارسی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'याए मज्हूल'।

याए मज्हूल (یاے مجہول) अ. स्त्री.–वह 'ये' जो लंबी लिखी जाती है, और 'ए' की आवाज़ देती है।

याए मा'कूस (یاے معکوس) अ. स्त्री.–दे. 'याए मज्हूल'।

याए मा'रूफ़ (یاے معروف) अ. स्त्री.–वह 'ये' जो गोल लिखी जाती है और 'ई' की आवाज़ देती है।

याक़ः (یاقہ) तु. पुं.–क़मीस का कालर; कुर्ते का गला।

याक़ (یاق) अ. पुं.–कंगन।

याक़िस्मत (یاقسمت) फा. अ. वा.–हाए रे बुरे भाग्य।

याक़ूत (یاقوت) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध रत्न, पुलक; एक बहुत बड़ा ख़ुशनवीस।

याक़ूत रक़म (یاقوت رقم) अ. वि.–याक़ूत ख़ुशनवीस-जैसा लिखनेवाला, अर्थात् बहुत अच्छा लिपिकार।

याक़ूती (یاقوتی) अ. स्त्री.–एक यूनानी दवा जिसमें याक़ूत पड़ता है।

याक़ूते जिगरी (یاقوت جگری) अ. फा. पुं.–कलेजी के रंग का याक़ूत।

याक़ूते रवाँ (یاقوت رواں) अ. फा. पुं.–तरल और बहता हुआ याक़ूत अर्थात् लाल मदिरा।

याक़ूते रुम्मानी (یاقوت رمانی) अ. पुं.–अनार के दानों-जैसा गुलाबी याक़ूत।

याक़ूते सय्याल (یاقوت سیال) अ. पुं.–बहता हुआ याक़ूत, अर्थात् लाल शराब।

या'क़ूब (یعقوب) अ. पुं.–हज़्रत यूसुफ़ के पूज्य पिता जो उनके विरह में अंधे हो गये थे; चकोर।

याख़्तः (یاختہ) फा. वि.–ज़ाहिर किया हुआ, प्रकटित; बाहर निकाला हुआ, बहिष्कृत; किसी काम के करने के लिए बढ़ा हुआ।

याख़्तनी (یاختنی) फा. वि.–प्रकट करने योग्य; बाहर निकालने योग्य; काम के लिए बढ़ने योग्य।

याग़ (یاغ) तु. पुं.–तेल, स्नेह, तैल, रौग़न।

याग़िस्तान (یاغستان) फा. पुं.–अफ़्ग़ानिस्तान का एक इलाक़ा।

याग़ी (یاغی) तु. वि.–विद्रोही, राजद्रोही, बाग़ी।

याज़ः (یازہ) फा. पुं.– कँपकँपी, थरथरी, कंप, लर्ज़ः।

याज़ (یاز) फा. पुं.– इच्छा, ख़्वाहिश; संकल्प, इरादा।

याज़दः (یازدہ) फा. वि.–दे. 'याज़्दः'।

याज़ां (یازاں) फा. वि.–आक्रमण करता हुआ; हाथ बढ़ाता हुआ।

याज़िंदः (یازندہ) फा. वि.–इच्छा करनेवाला, इच्छुक; किसी काम के लिए हाथ बढ़ानेवाला।

याज़िश (یازش) फा. स्त्री.–इच्छा, इरादा; काम के लिए बढ़ना; हस्तक्षेप, दस्तंदाज़ी।

याज़िदः (یازیدہ) फा. वि.–जिस वस्तु की इच्छा की गयी हो; जिस कार्य के लिए हाथ बढ़ाया गया हो।

याजूज (یاجوج) अ. पुं.–एक प्राचीन जाति जिसका वर्णन क़ुरान में है।

याजूजोमाजूज (یاجوج وماجوج) अ.पुं.–याजूज और माजूज दो प्राचीन जातियाँ, जिनके आक्रमण से बचने के लिए दीवारें चीन में बनी थीं।

याज़्दः (یازدہ) फा. वि.–ग्यारह, एकादश।

याज़्दहुम (یازدہم) फा. वि.–ग्यारहवाँ, एकादशा।

याद़ः (یادہ) फा. पुं.–स्मरण शक्ति, क़ुव्वते हाफ़िज़ा।

याद (یاد) फा. स्त्री.–स्मृति, याददाश्त; स्मरण शक़्ति, हाफ़िज़ा; ध्यान, ख़याल; ज़ेह्न, प्रतिभा; चित्त, मन; अनुधान, तसव्वुर; स्मारक, यादगार।

यादआवरी (یادآوری) फा. स्त्री.–दे. 'यादावरी', वह अधिक फ़सीह है।

यादगार (یادگار) फा. स्त्री.–निशानी, स्मृति-चिह्न; स्मारक, यादगारी का कोई विशेष चिह्न, जैसे––मीनार आदि; पुत्र, बेटा।

यादगारी (یادگاری) फा. स्त्री.–दे. 'यादगार'।

यादगारे ज़मानः (یادگار زمانہ) फा. स्त्री.–ऐसा व्यक्ति जो सबके लिए स्मृति का कारण हो।

याददाश्त (یادداشت) फा. स्त्री.–स्मरण शक्ति, हाफ़िज़ा; ज्ञापन, मेमोरैन्डम।

याददेहानी (یاددہانی) फा. स्त्री.–भूली हुई बात को स्मृति में लाना, याद दिलाना, स्मरण कराना।

यादफ़रामोश (یادفراموش) फा. वि.–जिसे बात याद न रहती हो, जो किसी व्यक्ति को याद न रखता हो, स्मृति-विस्मारक।

यादफ़र्माई (یادفرمائی) फा. स्त्री.–याद करना; पास बुलाना।

यादबूद (یادبود) फा. स्त्री.–स्मृति-चिह्न, निशानी।

यादर (یادر) फा. पुं.–हर ईरानी महीने की बारहवीं तारीख़।

यादश बख़ैर (یادش بخیر) फा. अ. वा.–किसी व्यक़्ति की चर्चा चलने पर उसके लिए बोलते हैं, उसकी याद अच्छी रहे।

यादावरी (یادآوری) फा. स्त्री.–याद करना; पास बुलाना।

यादे ऐयाम (یاد ایام) फा. अ. स्त्री.–पिछले अच्छे दिनों का स्मरण।

यानः (یانہ) तु. पुं.–ओर, तरफ़; दिशा, जानिब।

यान (یان) फा. पुं.–बकवास, मिथ्यावाद; बीमारी की बकवास, हज़यान।

यानसीब (یانصیب) फा. अ. वा–दे. 'याक़िस्मत'।

या'नी (یعنی) अ. अव्य.–मत्लब यह कि, अर्थात्।

या'नीचे (یعنی چہ) अ. फा. अव्य.–इसका क्या अर्थ है, ऐसा क्यों है, इसके क्या मा'नी ?

याने' (یانع) अ. पुं.–वह फल अथवा मेवा जो पक गया हो और खाने के योग्य हो।

याफ़ः (یافہ) फा. वि.–दे. 'मावः', दोनों शुद्ध हैं।

याफ़ःदिरा (یافہ درا) फा. वि.–अनर्थवादी, झूठा; बकवासी, वाचाल; डींगिया, शेख़ीख़ोरा।

याफ़ःदिराई (یافہ درائی) फा. स्त्री.–झूठ बोलना; बकवास करना; डींग मारना।

याफ़र (یافر) फा. पुं.–कौतुकी, बाज़ीगर; चित्रकार, मुसव्विर।

याफ़ूख़ (یافوخ) अ. पुं.–तालू, तालव।

या'फ़ूर (یعفور) अ. पुं.–मृग, हरिण, हरिन।

याफ़े' (یافع) अ. पुं.–लंबे डील-डौल का जवान।

याफ़्तः (یافتہ) फा. वि.–पाया हुआ, जिसे मिला हो, दूसरे शब्द के साथ मिलकर आता है, अकेला नहीं बोला जाता, जैसे––ख़िताबयाफ़्तः, सनदयाफ़्तः आदि।

याफ़्त (یافت) फा. स्त्री.–लाभ, प्राप्ति, नफ़ा'; आय, आमदनी; उत्कोच, रिशवत।

याफ़्तनी (یافتنی) फा. वि.–पाने योग्य, मिलने योग्य; जो किसी से मिलना हो (धन)।

याब (یاب) फा. प्रत्य.–प्राप्त होनेवाला, मिलनेवाला जैसे––'कमयाब' कम प्राप्त होनेवाला।

याबान (یابان) अ. पुं.–जापान, एक प्रसिद्ध देश।

याबिंदः (یابندہ) फा. वि.–पानेवाला, प्राप्त करनेवाला।

याबिंदगी (یابندگی) फा. स्त्री.–पाना, प्राप्ति।

याबिस (یابس) अ. वि.–ख़ुश्क, सूखा हुआ, शुष्क; मिज़ाज में ख़ुश्की पैदा करनेवाला।

याबू (یابو) तु. पुं.–टट्टू, छोटा घोड़ा; लद्दू घोड़ा, जिस पर बोझ लादते हैं।

या'बूब (یعبوب) अ. पुं.–तेज चलनेवाला घोड़ा; तेज़ बहनेवाली नदी की धारा।

यामः (یامہ) फा. पुं.–डाक की चौकी, मर्हला।

याम (یام) अ. पुं.– नूह का एक पुत्र।

या'मरः (یعمرہ) अ. पुं.–बकरा जो सिंह के शिकार के लिए बाँधा जाय।

या'मलः (یعملہ) अ. स्त्री.–तगड़ी और लद्दू ऊँटनी।

या'मल (یعمل) अ. पुं.–तगड़ा और लद्दू ऊँट।

यामिन (یامن) अ. पुं.–सीधी ओर, दायीं तरफ़।

यामी (یامی) फा. वि.–रोगी, बीमार।

या'मूर (یعمور) अ. पुं.–बकरी या भेड़ का बच्चा।

या या (یایا) फा. अव्य.–शिकारी चिड़िया।

यारः (یارہ) फा. पुं.–कंगन, कंकण; घाव, ज़ख्म; कर, महसूल।

यार (یار) फा. पुं.–मित्र, दोस्त; सहायक, मददगार; प्रेमपात्र, मा'शूक़; शब्द के अंत में 'वाला' का अथ देता है, जैसे—'होशयार'।

यारक़ंद (یارقند) तु. पुं.–चीनी तुर्किस्तान का एक प्राचीन नगर।

यारक (یارک) फा. स्त्री.–बच्चादानी, गर्भाशय, रहिम।

यारक़ (یارق) अ. पुं.–कंगन, कलाई में पहनने का एक आभूषण, कंकण।

यारगी (یارگی) फा. स्त्री.–बल, शक्ति, ज़ोर; सामर्थ्य, मक़्दूर।

यारनामः (یارنامہ) फा. पुं.–पुण्य और यश का काम, नेकनामी का काम।

यारफ़रोश (یارفروش) फा. वि.–मित्र की प्रशंसा करनेवाला।

यारफ़रोशी (یارفروشی) फा. स्त्री.–मित्र की प्रशंसा करना।

यारबाज़ (یارباز) फा. वि.–दे. 'यारबाश'।

यारबाश (یارباش) फा. वि.–मित्रों में घुल-मिलकर रहनेवाला, मित्रों में अधिक समय व्यतीत करनेवाला।

यारबाशी (یارباشی) फा. स्त्री.–मित्रों में खूब घुल-मिलकर रहना।

यारमंद (یارمند) फा. वि.–दोस्ती निबाहनेवाला, सच्चा दोस्त; सहायक, मददगार।

यारमंदी (یارمندی) फा. स्त्री.–दोस्ती मैत्री; सहायता, मदद।

यारस (یارس) फा. वि.–सहायक, मददगार।

यारस्तः (یارستہ) फा. पुं.–शक्तिशाली, ताक़तवर।

याराँ (یاراں) फा. पुं.–'यार' का बहु., मित्रगण, मित्रमंडली।

यारा (یارا) फा. पुं.–बल, शक्ति, ज़ोर; सामर्थ्य, मक़्दूर; सहनशीलता, तहम्मुल।

याराई (یارائی) फा. स्त्री.–सहायता, मदद; उपचार, इलाज।

याराए ज़ब्त (یارائے ضبط) फा. अ. पुं.–सहन करने की शक्ति, सहनशीलता।

याराए सब्र (یارائے صبر) फा. अ. पुं.–धैर्यशक्ति, धीरज धरने की शक्ति।

यारानः (یارانہ) फा. पुं.–मित्रता, मैत्री, दोस्ती।

याराने अदम (یاران عدم) फा. अ. पुं.–मरे हुए मित्र; यमलोक निवासी, मरनेवाले।

याराने क़दीम (یاران قدیم) फा. अ. पुं.–पुराने मित्र, लँगोटिया यार।

याराने रफ़्तः (یاران رفتہ) फा. पुं.–दे. 'याराने अदम'।

यारी (یاری) फा. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती; सहायता, मदद।

यारीगर (یاریگر) फा. वि.–सहायक, मददगार।

यारीगरी (یاریگری) फा. स्त्री.–सहायता, मदंद।

यारे अज़ीज़ (یارعزیز) फा. अ. पुं.–बहुत ही घनिष्ठ मित्र; बहुत ही प्यारा माशूक़।

यारे ग़ार (یار غار) फा. अ. पुं.–सच्चा और घनिष्ठ मित्र, यह हज़्रत अबूबक्र सिद्दीक़ की ओर संकेत है, जो हज़्रत मुहम्मद साहब के ग़ार में छिपने के समय उनके साथ थे।

यारे जानी (یار جانی) फा. पुं.–प्राणों की भाँति प्यारा मित्र, बहुत ही घनिष्ठ मित्र।

यारे शातिर (یار شاطر) फा. अ. पुं.–ऐसा मित्र जो दुःख और चिंता में मन बहलाए।

यालः (یالہ) फा. पुं.–विषाण, शृंग, सींग।

याल (یال) तु. पुं.–गला, गर्दन; घोड़े के गले के बाल।

यालगूपाल (یالگوپال) फा. पुं.–स्थूलता, मुटापा; वैभव, शानोशौकत।

या'लूल (یعلول) अ. पुं.–पानी का बुलबुला; शिश्न, लिंग।

यावः (یاوہ) तु. वि.–अनर्थ, अनर्गल, बेहूदा; अप्राप्य, नापैद।

यावःकार (یاوہکار) तु. फा. वि.–अनर्थ के कार्य करनेवाला, ऐसे काम करनेवाला जिनका कोई फल न हो, मिथ्याकार।

यावःकारी (یاوہکاری) तु. फा. स्त्री.–व्यर्थ के कार्य करना, मिथ्या कर्म।

यावःगो (یاوہگو) तु. फा. वि.–अनर्थवादी, झूठा; वाचाल, बकबासी; डींगिया, शेख़ीख़ोर।

यावःगोई (یاوہگوئی) तु. फा. स्त्री.–अनर्थवाद, झूठ बोलना; वाचालता, बकवास करना; डींग मारना।

यावःदिरा (یاوہدرا) तु. फा. वि.–दे. 'यावःगो'।

यावःदिराई (یاوہدرائی) तु फा. स्त्री.–दे. 'यावःगोई'।

यावःसरा (یاوہسرا) तु. फा. वि.–दे. 'यावःगो'।

यावःसराई (یاوہسرائی) तु. फा. स्त्री.–दे. 'यावःगोई।'

यावंद (یاوند) फा. पुं.–राजा, बादशाह; प्राप्तकाम, सफल मनोरथ।

यावर (یاور) फा. वि.–सहायक, पोषक, मददगार।

यावरी (یاوری) फा. स्त्री.–सहायता, मदद।

यासः (یاسہ) फा. पुं.–इच्छा, अभिलाषा, आर्ज़ू; आदेश, हुक्म; राजनीति, सियासत; विधान, क़ानून।

यास (یاس) फा. स्त्री.–चमेली, नव मल्लिका।

यास (یاس) अ. स्त्री.–निराशा, नैराश्य, नाउम्मेदी।

यासअंगेज़ (یاس انگیز) अ. फा. वि.–निराशा उत्पन्न करनेवाला, निराशाजनक।

यासआमेज़ (یاس آمیز) अ. फा. वि.–निराशापूर्ण, जिसमें नाउम्मेदी हो।

यासज (یاسج) फा. पुं.–वह बाण जिसमें फल हो; बाण का फल जिसमें दुहरी धार हो; भाला, बरछा; दुःखी की हाय।

यासमन (یاسمن) अ. स्त्री.–दे. 'यासमीन'।

यासमीं (یاسمیں) अ. स्त्री.–'यासमीन' का लघु., दे. 'यासमीन'।

यासमींइज़ार (یاسمیں عذار) अ. वि.–जिसके गाल फूल-जैसे कोमल, मृदुल और सफ़ेद हों।

यासमींबू (یاسمیں بو) अ. फा. वि.–चमेली-जैसी सुगंध रखनेवाला (वाली)।

यासमींरुख़ (یاسمیں رخ) अ. फा. वि.–दे. 'यासमीं इज़ार'

यासमींरू (یاسمیں رو) अ. फा. वि.–दे. 'यासमीं इज़ार'।

यासमीन (یاسمین) अ. स्त्री.–चमेली का फूल, नवमल्लिका।

यासमून (یاسمون) अ. स्त्री.–दे. 'यासमीन'।

यासा (یاسا) तु. पुं.–मृतशोक, मातम; वध, हिंसा, क़त्ल; लूटमार; प्रतिहिंसा, ख़ून का वदला।

यासान (یاسان) फा. पुं.–योग्य, पात्र, लाइक़।

यासिम (یاسم) अ. स्त्री.–दे. 'यासमीन'।

यासीन (یاسین) अ. स्त्री.–क़ुरान की एक सूरत, जो मरते समय मुसलमान को सुनायी जाती है।

यासीनख़्वाँ (یاسین خواں) अ. फा. वि.–यासीन पढ़नेवाला, मरते समय यासीन सुनाने वाला।

या'सूब (یعسوب) अ. पुं.–शहद की मक्खियों का राजा, अपनी जाति का सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, जिसकी आज्ञा का पालन सब करें।

याह याह (یاہ یاہ) अ. अव्य.–ऊँट हाँकते समय बोला जानेवाला शब्द।

याहू (یاہو) फा. पुं.–एक कबूतर, जो 'याहू याहू' बोलता है।

यि

यिमः (یمہ) तु. स्त्री.–भोजन, ख़ुराक।

यिर्लीग़ (یرلیغ) तु. पुं.–राजादेश, राजाज्ञा, फ़र्मान।

यी

यील (ییل) तु. पुं.–वर्ष, वत्सर, साल।

यीलाक़ (ییلاق) तु. पुं.–ग्रीष्म काल में रहने का ठंडा स्थान

यीलान (ییلان) तु. पुं.–सर्प, साँप।

यु

युक़ (یوق) तु. वि.–समीप, निकट, नज़्दीक।

युग़ला (یغلا) अ. पुं.–तलने की छोटी कड़ाही, फ़्राईपैन।

युबूसत (یبوست) अ. स्त्री.–शुष्कता, ख़ुश्की, सूखापन; मिज़ाज की ख़ुश्की; तासीर की ख़ुश्की।

युब्स (یبس) अ. पुं.–दे. 'युबूसत'।

युब्सेबत्न (یبس بطن) अ. पुं.–पेट की ख़ुश्की, अर्थात् कोष्ठबद्धता, क़ब्ज़।

युम्किन (یمکن) अ. वि.–संभव है, मुम्किन है।

युम्न (یمن) अ. पुं.–कल्याण, शुभ कारिता, सआदत।

युम्ना (یمنی) अ. स्त्री.–सीधे ओर की, सीधे पक्ष की।

युराश (یراش) फा. पुं.–प्रस्थान, कूच, खानगी; ध्यान, ख़याल, तवज्जोह।

युरूश (یورش) तु. स्त्री.–आक्रमण, धावा, चढ़ाई; युद्ध में जाने के लिए घोड़े पर चढ़ना; शीघ्रता करना।

युर्त (یرت) तु. स्त्री.–पड़ाव, ठहराव, मंज़िल; आवास, क़ियामगाह; गृह, घर, मकान।

युर्तगः (یرتگہ) तु. पुं.–घर, गेह, मकान; चौकी, पड़ाव, महल्ला।

युल (یول) तु. पुं.–पथ, मार्ग, राह, रस्ता।

युलची (یولچی) तु. वि.–पथप्रदर्शक, राहबर; पथिक, मुसाफ़िर; हरकारा, क़ासिद; रस्ते में बैठकर भीख माँगनेवाला।

युल्मः (یلمہ) तु. पुं.–पशुओं को नाँद में खिलायी जानेवाली वस्तु, सानी।

युवाश (یواش) तु. पुं.–सधाया हुआ मृदु चाल चलनेवाला घोड़ा, जो बड़े लोगों की सवारी के योग्य हो।

युसुर (یسر) अ. पुं.–सुगम होना, आसान होना; जुआ खेलना, द्यूत-कर्म।

युस्र (یسر) अ. पुं.–सुगमता, सरलता, आसानी; जुआ खेलना, क़िमारबाजी।

यू

यूक (یوک) फा. स्त्री.–वह पोटली, जिस पर नान रखकर तनूर में लगाते हैं।

यूजः (یوجہ) फा. पुं.–बूँद, बिंदु, क़त्रा।

यूज़ः (یوزہ) फा. पुं.–पेड़ का तना, पेड़ी, स्कंध।

यूज़ (یوز) फा. पुं.–चीता, एक प्रसिद्ध हिंसक जंतु; खोज, जिज्ञासा, तलाश।

यूज़ (یوز) तु. वि.–एक सौ, शत।

यूज़क (یوزی) फा. पुं.–छोटा चीता, चीते का बच्चा; एक शिकारी कुत्ता जो शिकार की बू पाकर उसका पीछा करता है।

यूज़बाशी (یوزباشی) तु. पुं.–सौ सवारों का अध्यक्ष।

यूज़ीदः (یوزیدہ) फा. वि.–ढूँढ़ा हुआ, तलाश किया हुआ, जिज्ञासित; बुलाया हुआ, आहूत।

यूनान (یونان) अ. पुं.–यूरोप का एक प्रसिद्ध देश जहाँ के वैज्ञानिक लोग सारे संसार के मान्य हुए हैं, और आज साइंस की जितनी उन्नति है, इसकी पहली ज्योति वहीं जगी थी, अब से तीन हज़ार वर्ष पूर्व यह स्थान विद्या का घर था।

यूनानी (یونانی) अ. वि.–यूनान का निवासी; यूनान की भाषा; एक चिकित्सा पद्धति।

यूनुस (یونس) अ. पुं.–एक पैग़म्बर, यह शब्द 'यूनस' और 'यूनिस' भी है।

यूफ़ी (یوفی) फा. वि.–बकवासी, वाचाल, मुखर।

यूसुफ़ (یوسف) अ. पुं.–एक पैग़म्बर जो अत्यंत सुन्दर थे।

यूसुफ़जबीं (یوسف جبیں) अ. वि.–युसूफ़-जैसा माथा रखनेवाला (वाली) अर्थात् बहुत ही सुंदर।

यूसुफ़जमाल (یوسف جمال) अ. वि.–युसुफ़-जैसा सौन्दर्य रखनेवाला (वाली)।

यूसुफ़तल्अत (یوسف طلعت) अ. वि.–दे. 'यूसुफ़जमाल'।

यूसुफ़तिम्साल (یوسف تمثال) अ. वि.–दे. 'यूसुफ़जमाल'।

यूसुफ़शमाइल (یوسف شمائل) अ. वि.–यूसुफ़-जैसे स्वभाववाला

यूसुफ़सिफ़ात (یوسف صفات) अ. वि.–युसुफ़-जैसे गुणोंवाला।

यूसुफ़े सानी (یوسف ثانی) अ. पुं.–जो देखने में बिलकुल यूसुफ़ जान पड़े, अत्यंत सुन्दर, यूसुफ़ का जोड़।

यूह (یوح) अ. पुं.–सूर्य, रवि, सूरज।

यो

योग़ (یوغ) फा. पुं.–बैल की गर्दन पर रखा जानेवाला जुआ।

योयः (یویہ) फा. पुं.–इच्छा, इरादा; संकल्प, अज़्म।

यौ

यौम (یوم) अ. पुं.–दिन, दिवस, दिवा।

यौमन फ़ यौमन (یوماً فیوماً) अ. अव्य.–दिन प्रतिदिन, रोज़ब रोज़; धीरे-धीरे, क्रमशः

यौमियः (یومیہ) अ. वि.–दैनिक, रोजाना; हररोज़, प्रतिदिन; रोज़ीना, रोज मिलनेवाला धन या ख़ुराक़।

यौमीयः (یومیہ) अ. वि.–दे. 'यौमियः', शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु बहुत कम बोला जाता है।

यौमुत्तनाद (یوم التناد) अ. पुं.– दे. 'यौमुलक़ियामत'।

यौमुन्नुशूर (یوم النشور) अ. पुं.–दे. 'यौमुलक़ियामत'।

यौमुलअर्बआ (یوم الاربعا) अ. पुं.–बुधवार।

यौमुलअहद (یوم الاحد) अ. पुं.–रविवार, इतवार।

यौमुल इस्नैन (یوم الاثنین) अ. पुं.–सोमवार, पीर।

यौमुलक़ियामत (یوم القیامت) अ. पुं.–क़ियामत का दिन, जब मुर्दे क़ब्रों से निकलकर उठ खड़े होंगे, वह सब एक बड़े मैदान में एकत्र होंगे और उनके कर्मों का हिसाब-किताब होगा, और दंड अथवा पुरस्कार दिया जायगा।

यौमुलख़मीस (یوم الخمیس) अ. पुं.–बृहस्पतिवार, जुमेरात।

यौमुलजज़ा (یوم الجزا) अ. पुं.–दे. 'यौमुलक़ियामत'।

यौमुलबाहूर (یوم الباحور) अ. पुं.–'बोहरान' का दिन, यूनानी चिकित्सा में इस सिद्धांत के अनुसार युद्धवाला दिन। इस दिन प्रकृति और रोग में युद्ध होता है, जब प्रकृति जीत जाती है तो रोग नष्ट हो जाता है और रोग जीत जाता है तो मृत्यु हो जाती है। इस युद्ध को 'बोहरान' कहते हैं।

यौमुलहश्र (یوم الحشر) अ. पुं.–दे. 'यौमुलक़ियामत'।

यौमुलहिसाब (یوم الحساب) अ. पुं.–दे. 'यौमुलक़ियामत'।

यौमुस्सब्त (یوم السبت) अ. पुं.–शनिवार, शनीश्चर।

यौमुस्सल्सा (یوم الثلثا) अ. पुं.–मंगलवार, मंगल।

यौमे आज़ादी (یوم آزادی) अ. फा. पुं.–स्वतंत्रता दिवस।

यौमे वफ़ात (یوم وفات) अ. पुं.–मरने का दिन।

यौमे विलादत (یوم ولادت) अ. पुं.–जन्म लेने का दिन, जिस दिन जन्म हो, जन्म-दिन।

यौमे हुसैन (یوم حسین) अ. पुं.–हज़्रत इमाम हुसैन की शहादत के दिन का उत्सव।

र

रंग (رنگ) फा. पुं.–चीज़ों का रंग, वर्ण; रंगने का मसाला, रंग; आनंद, लुत्फ़; हर्ष. ख़ुशी; शोभा, रौनक़; पद्धति, तर्ज़; भोग-विलास, ऐश; आचार व्यवहार, रंग-ढंग; होली का अबीर और गुलाल आदि; बदन या चेहरे की रंगत, वर्ण; विचित्र स्थिति या हालत,—"वह रंग होगा हश्र को मुश्ताक़े यार का, जैसे कि ईद को हो रूखे रोज़ादार सुर्ख़।

रंगअंदाज (رنگ انداز) फा. वि.–रंग डालनेवाला, रंग छिड़कनेवाला (वाली)।

रंगअंदाज़ी (رنگ اندازی) फा. स्त्री.–रंग छिड़कना।

रंगअफ़्शाँ (رنگ افشاں) फा. वि.–रंग फैलानेवाला (वाली)

रंगअफ़्शानी (رنگ افشانی) फा. स्त्री.–रंग बिखेरना, रंग फैलाना।

रंगआमेज़ (رنگ آمیز) फा. वि.–रंग भरनेवाला, अर्थात् चित्रकार, नक़्क़ाश।

रंगआमेज़ी (رنگ آمیزی) फा. स्त्री.–चित्र-कर्म, नक़्क़ाशी; अतिरंजन, अत्युक्ति, मुबालग़ः।

रंगत (رنگت) अ. स्त्री.–रंग, वर्ण; दशा, हालत; तौर तरीक़ा, रंग-ढंग; शोभा, रौनक़; आनंद, लुत्फ़, मज़ा; बदन या चेहरे का रंग, वर्ण।

रंगतरः (رنگترہ) फा. पुं.–संतरा, मीठी नारंगी।

रंगदार (رنگدار) फा. वि.–रंगा हुआ, रंजित।

रंगपरीदः (رنگ پریدہ) फा. वि.–उड़े हुए रंगवाला, फीके रंगवाला; जिसका रंग भय या लज्जा से उड़ गया हो।

रंगपरीदगी (رنگ پریدگی) फा. स्त्री.–रंग का फीका पड़ जाना; लज्जा या भय से चेहरे का रंग उड़ जाना।

रंगपाश (رنگ پاش) फा. वि.–रंग छिड़कनेवाला (वाली)।

रंगपाशी (رنگ پاشی) फा. स्त्री.–रंग छिड़कना; होली आदि ख़ुशी के अवसर पर एक-दूसरे पर रंग डालना।

रंगफ़रोश (رنگ فروش) फा. वि.–रंग बेचनेवाला।

रंगफ़रोशी (رنگ فروشی) फा. स्त्री.–रंग बेचने का काम।

रंगफ़िशाँ (رنگ فشاں) फा. वि.–'रंगअफ़्शाँ' का लघु., दे. 'रंगअफ़्शाँ'।

रंगफ़िशानी (رنگ فشانی) फा. स्त्री.–'रंग अफ़्शानी' का लघु., दे. 'रंगअफ़्शानी'।

रंगबरंग (رنگ برنگ) फा. वि.–चित्र-विचित्र, रंगारंग।

रंगबस्त (رنگ بست) फा. वि.–पक्का रंग।

रंगबार (رنگ بار) फा. वि.–दे. 'रंगपाश'।

रंगबारी (رنگ باری) फा. स्त्री.–दे. 'रंगपाशी'।

रंगमहल (رنگ محل) फा. अ. पुं.–बड़ें लोगों के भोग-विलास का स्थान, ऐशगाह।

रंगरज़ (رنگرز) फा. वि.–रंगनेवाला, कपड़े रँगनेवाला, रँगरेज़।

रंगरेज़ (رنگریز) फा. वि.–चित्रकार, चितेरा, रँगनेवाला, रँगरेज़, कपड़े रँगनेवाला।

रंगशिकस्तः (رنگ شکستہ) फा. वि.–जिसका रंग फीका पड़ गया हो, उतरे हुए रंगवाला।

रंगसाज़ (رنگ ساز) फा. वि.–रंग बनानेवाला; रँगनेवाला, पेंटर।

रंगसाज़ी (رنگ سازی) फा. स्त्री.–रंग बनाने का काम; रँगने का काम, पेंटरी।

रंगारंग (رنگا رنگ) फा. वि.–रंग-बरंगी, चित्र-विचित्र।

रंगीं (رنگیں) फा. वि.–'रंगीन' का लघु., दे. 'रंगीन'।

रंगींअंदाम (رنگیں اندام) फा. वि.–गोरे शरीरवाला, गौरवर्ण।

रंगींअदा (رنگیں ادا) फा. वि.–सुंदर अदाओंवाला (वाली)।

रंगींअदाई (رنگیں ادائی) फा. स्त्री.–प्रेमिका की सुंदर अदाओं का भाव।

रंगींइज़ार (رنگیں عذار) फा. अ. वि.–सुर्ख़ गालोंवाला, (वाली)।

रंगींइज़ारी (رنگیں عذاری) फा. अ. स्त्री.–गोरापन, गालों की सुर्ख़ी।

रंगींक़ामत (رنگیں قامت) फा. वि.–दे. 'रंगींअंदाम'।

रंगींचेह्रः (رنگیں چہرہ) फा. अ. वि.–रूपवान्, सुन्दर मुखवाला (वाली)।

रंगींजमाल (رنگیں جمال) फा. अ. वि.–गोरे रंगवाला, गौरवपूर्ण।

रंगींतकल्लुम (رنگیں تکلم) फा. अ. वि.–जिसकी बातचीत बहुत ही सुन्दर और श्रुतिप्रिय हो।

रंगींतबस्सुम (رنگیں تبسم) फा. अ. वि.–जिसकी मुस्कुराहट में मुँह से फूल झड़ते हों।

रंगींतब्अ (رنگیں طبع) फा. अ. वि.–ख़ुशमिज़ाज, ज़िंदःदिल, विनोद रसिक; ऐयाश या शराबी।

रंगींतरन्नुम (رنگیں ترنم) फा. अ. वि.–जिसका गला बहुत ही सुन्दर हो।

रंगींनग़्मः (رنگیں نغمہ) फा. वि.–मधुर स्वरवाला (वाली) कलकंठ।

रंगींनज़र (رنگیں نظر) फा. अ. वि.–जिसकी दृष्टि केवल अच्छी चीज़ों पर पड़े, जो सौंदर्य को देखता हो।

रंगींनज़री (رنگیں نظری) फा. अ. स्त्री.–सौंदर्य को देखना, अच्छी चीज़ों पर नज़र डालना।

रंगींनवा (رنگیں نوا) फा. वि.–अच्छी आवाज़वाला (वाली) कलकंठ, मधुरस्वर।

रंगींनवाई (رنگیں نوائی) फा. स्त्री.–आवाज़ अच्छी होना, कलकंठता, स्वरमाधुर्य।

रंगींनिगाह (رنگیں نگاہ) फा. वि.–दे. 'रंगींनज़र'।

रंगींनिगाही (رنگیں نگاہی) फा. स्त्री.–दे. 'रंगीनज़री'।

रंगींमश्रब (رنگیں مشرب) फा. अ. वि.–ऐयाशी और शराबनोशी करनेवाला, रँगीला, रसिया।

रंगींमिज़ाज (رنگیں مزاج) फा. अ. वि.–हुस्नपरस्त, अच्छी सूरतों का क़द्रदान; शराबनोश, रसाशी।

रंगींमिज़ाजी (رنگیں مزاجی) फा. अ. स्त्री.–हुस्नपरस्ती; शराबनोशी।

रंगींरुख़ (رنگیں رخ) फा. वि.–रूपवान्, सुंदर, हसीन (पुरुष अथवा स्त्री)।

रंगींलब (رنگیں لب) फा. वि.–लाल होंठोंवाली, सुंदर होठोंवाली नायिका।

रंगींला'ल (رنگیں لعل) फा. वि.–दे. 'रंगींलब'।

रंगींलिबास (رنگیں لباس) फा. अ. वि.–रंग-बरंगी कपड़े पहननेवाला (वाली)।

रंगींलिबासी (رنگیں لباسی) फा. अ. स्त्री.–रंग-बरंगी कपड़ों का शौक़।

रंगीन (رنگین) फा. वि.–रँगा हुआ, रंजित; विनोदप्रिय, ख़ुशमिज़ाज; चित्रित, मुनक़्क़श; शोभित, ख़ुशनुमा; चपल, चुलबुला, शोख़; शराब-कबाब और भोग विलास का शौक़ीन, विलासप्रिय।

रंगीनिए अदा (رنگینئی ادا) फा. स्त्री.–अदाओं का सौंदर्य।

रंगीनिए ग़ाज़ः (رنگینئی غازہ) फा. स्त्री.–मुख पर मलने के पाउडर का रंग।

रंगीनिए जमाल (رنگینئی جمال) फा. अ. स्त्री.–सुंदरता की विचित्रता रूप का सौंदर्य।

रंगीनिए तकल्लुम (رنگینئی تکلم) फा. अ. स्त्री.–बातचीत का माधुर्य, वार्तालाप का रस।

रंगीनिए तख़ातुब (رنگینئی تخاطب) फा. अ. स्त्री.–संबोधन का माधुर्य, प्रेयसी का प्रेमी की ओर मुख़ातब होने का माधुर्य।

रंगीनिए तबस्सुम (رنگینئی تبسم) फा. अ. स्त्री.–मुस्कान का माधुर्य और सौंदर्य।

रंगीनिए नज़र (رنگینئی نظر) फा. अ. स्त्री.–दृष्टि का अच्छी चीज़ पर पड़ने का भाव।

रंगीनिए निगाह (رنگینئی نگاہ) फा. स्त्री.–दे. 'रंगीनिए नज़र'।

रंगीनिए बहार (رنگینئی بہار) फा. स्त्री.–वसंत ऋतु की छटा और शोभा, बहार की रंगारंगी।

रंगीनिए माहौल (رنگینئی ماحول) फा. अ. स्त्री.–वातावरण का सौंदर्य, आस-पास का रूप और सुंदरता का वातावरण।

रंगीनिए रुख़ (رنگینئی رخ) फा. स्त्री.–मुखच्छटा, चेहरे का सौंदर्य और गुलाबीपन।

रंगीनिए लब (رنگینئی لب) फा. स्त्री.–होंठों की लाली, होंठों का रस।

रंगीनिए लिबास (رنگینئی لباس) फा. अ. स्त्री.–कपड़ों की रंगीनी और सुंदरता।

रंगीनिए शबाब (رنگینئی شباب) फा. अ. स्त्री.–यौवन का सौंदर्य, यौवन का निखार, यौवन का जोश।

रंगीनिए शराब (رنگینئی شراب) फा. अ. स्त्री.–शराब की रंगीनी; शराब का नशा; शराब की मस्ती।

रंगीनिए सहबा (رنگینئی صہبا) फा. स्त्री.–दे. 'रंगीनिए शराब'।

रंगीनिए हया (رنگینئی حیا) फा. अ. स्त्री.–लज्जा का सौंदर्य, प्रेमिका के मुँह छिपाने या आँखें नीची करने की छटा।

रंगीनिए हयात (رنگینئی حیات) फा. अ. स्त्री.–जीवन का रूप और सौंदर्य या भोग-विलास के बीचमें गुज़रना।

रंगीनिए हुस्न (رنگینئی حسن) फा. अ. स्त्री.–सुंदरता की विचित्रता और रंगीनी।

रंगीनी (رنگینی) फा. वि.–रंगा हुआ होना; मस्ती, उन्माद; शोभा, छटा; ऐश, भोग-विलास।

रंगे गुल (رنگ گل) फा. पुं.–फूल क़ा रंग; गुलाब की लाली; फूल की ताज़गी और हरा-भरापन; वसंत ऋतु की रंगीनी।

रंगे परीदः (رنگ پریدہ) फा. पुं.–उड़ा हुआ रंग, उतरा हुआ रंग, फीका रंग।

रंगे बहार (رنگ بہار) फा. पुं.–वसंत ऋतु की छटा, हर तरफ़ फूलों की शोभा।

रंगे बादः (رنگ بادہ) फा. पुं.–दे. 'रंगे शराब'।

रंगे मीना (رنگ مینا) फा. पुं.–शराब के शीशे का सुंदर रंग जो शराब के कारण हो जाता है।

रंगे मै (رنگ مے) फा. पुं.–दे. 'रंगे शराब'।

रंगे शिकस्तः (رنگ شکستہ) फा. पुं.–हलका रंग, उतरा हुआ रंग, फीका रंग।

रंगे शीशः (رنگ شیشہ) फा. पुं.–शराब की बोतल का रंग जो शराब के कारण हो जाता है।

रंगे हुस्न (رنگ حسن) फा.अ.पुं.–हुस्न की शोभा और छटा।

रंगो बू (رنگ و بو) फा. पुं.–फूलों का रंग और उनकी सुगंध।

रंगोरौग़न (رنگ و روغن) फा. पुं.–रूप और छटा, हुस्न और आबोताब; लकड़ी आदि का रंग और वारनिश।

रंजः (رنجہ) फा. पुं.–कष्ट, क्लेश, तक्लीफ़; दुःख, शोक, ग़म।

रंजःख़ातिर (رنجہ خاطر) फा. अ. वि.–दुःखित हृदय, मनस्तप्त, खिन्न, रंजीदा दिल।

रंज (رنج) फा. पुं.–कष्ट, तक्लीफ़; दुःख, रंज; विपत्ति, मुसीबत; आघात, सद्मः; पीड़ा, दर्द; शोक़, ग़म; मृत-शोक, मातम।

रंजे उल्फ़त (رنج الفت) फा. स्त्री.–प्रेम-वेदना, प्रणय-पीड़ा,

उदा.—"रंजे उल्फ़त में भी हँस-हँस के सहर करते हैं, हम हैं वह फूल जो काँटों में बसर करते हैं।"

रंजअफ़्ज़ा (رنج افزا) फा. वि.—दुःख बढ़ानेवाला, कष्टवर्द्धक।

रंजआगीं (رنج آگیں) फा. वि.—दुःख से भरा हुआ, दुःखपूर्ण।

रंजआश्ना (رنج آشنا) फा. वि.—दे. 'रंजाश्ना'।

रंजकशीदः (رنج کشیدہ) फा. वि.—जिसने दुःख उठाया हों, जो दुःख उठा चुका हो।

रंजज़ा (رنج زا) फा. वि.—दुःख पैदा करनेवाला, कष्टजनक, दुःखोत्पादक।

रंजदिहिंदः (رنج دھندہ) फा. वि.—कष्ट देनेवाला, कष्टदायक, दुःखदायी।

रंजदीदः (رنج دیدہ) फा. वि.—जिसने कष्ट और दुःख उठाया हो, उत्तप्त।

रंजदेह (رنج دہ) फा. वि.—कष्टदायक, दुःखदायी, रंज देनेवाला।

रंजफ़िज़ा (رنج فزا) फा. वि.—'रंजअफ़्ज़ा' का लघु., दे. 'रंजअफ़्ज़ा'।

रंजाश्ना (رنج آشنا) फा. वि.—दे. 'रंजदीदः'।

रंजिश (رنجش) फा. स्त्री.—वैमनस्य, मनोमालिन्य, मनमुटाव; नाराज़ी, अप्रसन्नता, ख़फ़गी।

रंजिशे बेजा (رنجش بیجا) फा. स्त्री.—बिना कारण का वैमनस्य, अकारण क्रोध, फुज़ूल की ख़फ़गी।

रंजीदः (رنجیدہ) फा. वि.—दुःखित, संतप्त, ग़मगीन।

रंजीदःख़ातिर (رنجیدہ خاطر) फा. अ. वि.—दुःखित हृदय, मनस्तप्त, ग़मगीन।

रंजीदःदिल (رنجیدہ دل) फा. वि.—दुःखित हृदय, ग़मगीन।

रंजीदःदिली (رنجیدہ دلی) फा. स्त्री.—हृदय का दुःखित होना, ग़मगीनी।

रंजीदगी (رنجیدگی) फा. स्त्री.—संताप, दुःख, रंज, ग़म।

रंजीदनी (رنجیدنی) फा. वि.—दुःख मनाने योग्य, दुःखित होने योग्य।

रंजूर (رنجور) फा. वि.—दुःखित, ग़मगीन; रुग्ण, रोगी, बीमार।

रंजूरी (رنجوری) फा. स्त्री.—दुःख, कष्ट, ग़म; आमय, रोग, बीमारी।

रंजोअलम (رنج والم) फा. अ. पुं.—शोक और दुःख, बहुत अधिक शोक।

रंजोग़म (رنج وغم) फा. अ. पुं.—कष्ट और दुःख, हर प्रकार के कष्ट।

रंजोतअब (رنج وتعب) फा. अ. पुं.—कष्ट और थकन, परिश्रम और थकावट।

रंजोमिहन (رنج ومحن) फा. अ. पुं.—कष्ट और प्रयास, मेहनत और रंज।

रंदः (رندہ) फा. पुं.—बढ़ई का लकड़ी पर रंदा करने का यंत्र।

रआया (رعایا) अ. स्त्री.—'रईयत' का बहु., प्रजा, जनता, पब्लिक।

रआयापर्वर (رعایاپرور) अ. फा. वि.—रईयत को पालनेवाला, प्रजापालक, अर्थात् राजा, नरेश।

रईयत (رعیت) अ. स्त्री.—प्रजा, रिआया; जनता, अवाम।

रईयतनवाज़ (رعیت نواز) अ. फा. वि.—प्रजा पर दया करनेवाला, प्रजाप्रोषक।

रईयतपर्वर (رعیت پرور) अ. फा. वि.—प्रजा को पालने और परवरिश करनेवाला, प्रजापाल।

रईस (رئیس) अ. वि.—अध्यक्ष, सरदार; शासक, फ़र्मांखा; धनाढ्य, मालदार।

रईसज़ादः (رئیس زادہ) अ. फा. पुं.—रईस का लड़का।

रईसे आ'ज़म (رئیس اعظم) अ. पुं.—सबसे बड़ा रईस।

रऊफ़ (رؤف) अ. वि.—बहुत अधिक दया और अनुकंपा करनेवाला, (पुं.) ईश्वर का एक नाम।

रक़बः (رقبہ) अ. पुं.—गर्दन, ग्रीवा।

रक़म (رقم) अ. स्त्री.—लिखना, मदद, अंक; रुपया-पैसा, धन, माल, (प्रत्य.) लिखनेवाला, जैसे—'ज़ूदरक़म' अर्थात् तेज़ लिखनेवाला।

रक़मज़न (رقم زن) लेखक, लिखनेवाला, लिपिक।

रक़मतराज़ (رقم طراز) अ. फा. वि.—दे. 'रक़मज़न'।

रक़मपिज़ीर (رقم پزیر) अ. फा. वि.—लिखित, लिखा हुआ।

रक़मसंज (رقم سنج) अ. फा. वि.—'दे. 'रक़मज़न'।

रक़मी (رقمی) अ. वि.—लिखित, लिखा हुआ; अंकित, निशान किया हुआ।

रक़ाइम (رقائم) अ. पुं.—'रक़ीमः' का बहु., लिखित पत्र।

रकाकत (رکاکت) अ. स्त्री.—अधमता, तुच्छता, कमीनगी; तिरस्कार, बेइज़्ज़ती।

रक़ाबत (رقابت) अ. स्त्री.—एक नायिका के दो प्रेमियों की परस्पर लाग-डाँट; एक पुरुष की दो चाहनेवालियों में परस्पर डाह।

रक़ीक़ (رقیق) अ. वि.—पतला, तरल; कोमल, मुलाइम; द्रवीभूत, पिघला हुआ।

रकीक (رکیک) अ. वि.—अधम, तुच्छ, कमीना।

रक़ीक़ुलक़ल्ब (رقیق القلب) अ. वि.—जिसका हृदय बहुत ही कोमल हो, जो दूसरों के दुःख पर तुरंत ही पिघल जाय।

रकीकुलहरकात (رکیک الحرکات) अ. वि.—जो बहुत तुच्छ प्रकृति का हो और ओछे काम करे।

रकीन (رکین) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत।

रक़ीबः (رقیبہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो किसी पुरुष से प्रेम रखने के सम्बन्ध में दूसरी स्त्री से डाह रखती हो।

रक़ीब (رقیب) अ. पुं.–किसी स्त्री से प्रेम करनेवाले दो व्यक्ति परस्पर रक़ीब होते हैं।

रक़ीमः (رقیمہ) अ. वि.–लिखित काग़ज़, पत्र, ख़त।

रक़ीम (رقیم) अ. वि.–लिखित, लिखा हुआ।

रक़ीमए नियाज़ (رقیمۂ نیاز) अ. फा. वि.–आवेदनपत्र, विनयपत्र, आज़िज़ानाख़त।

रक्अत (رکعت) अ. स्त्री.–नमाज़ में एक क़याम (खड़ा होना) एक रुक्अ (झुकना) और दो सज्दों (ज़मीन पर माथा टेकना) का मज्मूअः।

रक़्क़ासः (رقاصہ) अ. स्त्री.–नर्तकी, लासिका, नाचनेवाली।

रक़्क़ास (رقاص) अ. पुं.–नर्तक, नाचनेवाला, तांडवी।

रक़्क़ासे फ़लक (رقاص فلک) अ. पुं.–शुक्र ग्रह, ज़ोहरा।

रक़्बः (رقبہ) अ. पुं.–ज़मीन की नाप, क्षेत्रफल; क्षेत्र, इलाक़ा।

रक़्स (رقص) अ. पुं.–तांडव, मर्द का नाच; लास्य, स्त्री का नाच; नृत्य, नर्तन, आम नाच।

रक़्सकुनाँ (رقص کناں) अ. फा. वि.–नाचता हुआ।

रक़्सख़ानः (رقص خانہ) अ. फा. पुं.–दे. 'रक़्सगाह'।

रक़्सगाह (رقص گاہ) अ. फा.स्त्री.–नाटचशाला, नाचघर।

रक़्सपसंद (رقص پسند) अ. फा. वि.–जिसे नाचना पसंद हो; जिसे नाच देखना पसंद हो।

रक़्साँ (رقصاں) अ. फा. वि.–नाचता हुआ, नृत्य करता हुआ।

रक़्सिंदः (رقصندہ) अ. फा. वि.–नाचनेवाला, नर्तन-कर्ता।

रक़्सीदः (رقصیدہ) अ. फा. वि.–नाचा हुआ, जिसने नाच किया हो, जो नाचा हो।

रक़्सीदनी (رقصیدنی) अ. फा. वि.–नाचने के लाइक़, जिसका नाचना अच्छा हो।

रक़्से ताऊस (رقص طاؤس) अ. फा. पुं.–एक नाच, मोर-नाच।

रक़्से पैहम (رقص پیہم) अ. फा. पुं.–बराबर नाच, ऐसा नाच जो ख़त्म न हो।

रक़्से फ़ानूस (رقص فانوس) अ. फा. पुं.–क़ंदील के अंदर तस्वीरों का नाच।

रक़्से बिस्मिल (رقص بسمل) अ. फा. पुं.–आधा वध किया हुआ प्राणी का जमीन पर तड़पना और लोटना।

रक़्से मुसलसल (رقص مسلسل) अ. पुं.–दे. 'रक़्से पैहम'।

रक़्सोसुरोद (رقص وسرود) अ. फा. पुं.–नाचगाना, नाचरंग।

रख़ावत (رخاوت) अ. स्त्री.–शिथिलता, ढ़ीलापन; मंदता, सुस्ती।

रख़ीम (رخیم) अ. वि.–जिसका स्वर धीमा हो, नर्म आवाज़वाला; संयमी, निग्रही, ज़ाहिद।

रख़ीस (رخیص) अ. वि.–मंदा, सस्ता, कम दामों का।

रख़्त (رخت) फा. पुं.–अस्बाब, उपकरण, सामान; वसन, वस्त्र, लिबास।

रख़्तकश (رخت کش) फा. वि.–अस्बाब उठानेवाला, अस्बाब लेकर चलनेवाला, अर्थात् मुसाफ़िर, पथिक।

रख़्ते सफ़र (رخت سفر) फा. अ. पुं.–यात्रा के लिए आवश्यक सामान और अस्बाब।

रख़्नः (رخنہ) फा. पुं.–छिद्र, सूराख़; दोष, ऐब; हस्तक्षेप, मुज़ाहमत; बाधा, रोक; झगड़ा, टंटा, कलह; उपद्रव, फ़साद।

रख़्नःअंदाज़ (رخنہ انداز) फा. वि.–हस्तक्षेप करनेवाला, बाधा डालनेवाला।

रख़्नःअंदाज़ी (رخنہ اندازی) फा. स्त्री.–हस्तक्षेप करना, बाधा डालना, अड़चन पैदा करना।

रख़्नःबंदी (رخنہ بندی) फा. स्त्री.–छेद बंद करना; झगड़ा ख़त्म करना; बाधा हटाना।

रख़्शः (رخشہ) फा. पुं.–आग की लपट, अग्निवाला, अग्निशिखा।

रख़्श (رخش) फा. पुं.–घोड़ा, अश्व; किरण, शुआअ; प्रभा, चमक।

रख़्शाँ (رخشاں) फा. वि.–चमकता हुआ, दीप्त, प्रकाशमान।

रख़्शिंदः (رخشندہ) फा. वि.–चमकनेवाला।

रख़्शिंदगी (رخشندگی) फा. स्त्री.–चमक, आभा, प्रभा, प्रकाश।

रख़्शीदः (رخشیدہ) फा. वि.–दीप्त, प्रकाशित, प्रज्ज्वलित, चमका हुआ।

रग (رگ) फा. स्त्री.–स्नायु, नस; नाड़ी, शिरा, ख़न की नाली।

रगज़न (رگ زن) फा. पुं.–फ़स्द खोलनेवाला, निश्तर से ख़ून निकालनेवाला, फ़स्साद, रक़्तमोचक।

रगज़नी (رگ زنی) फा. स्त्री.–फ़स्द खोलना, रगों से ख़ून निकालना, रक्तमोक्षण।

रगबंद (رگ بند) फा. वि.–पट्टी, ज़ख़्म पर बाँधने का कपड़ा आदि।

रग़ीफ़ (رغیف) अ. स्त्री.–बटी, टिकिया; रोटी, रोटिका।

रग़ीब (رغیب) अ. वि.–लोभी, लोलुप, लालची; इच्छुक, ख़्वाहिशमंद।

रगे अब्र (رگ ابر) फा. स्त्री.–बादल की स्याह धारी।

रगे गर्दन (رگ گردن) फा. स्त्री.–गर्दनवाली ख़ून की रग; अहंकार, अभिमान, घमंड।

रगे ग़ैरत (رگ غیرت) फा. अ. स्त्री.–स्वाभिमान, ख़ुददारी।

रगे जाँ (رگ جاں) फा. स्त्री.–सबसे बड़ी ख़ून की रग जो दिल में जाती है।

रगे तंबूर (رگ تنبور) फा. स्त्री.–सितार का तार।

रगोपै (رگ وپے) फा. पुं.–सारा शरीर, नस और पट्ठे।

रगोरेशः (رگ وریشہ) फा. पुं.–स्वभाव, प्रकृति; भीतरी हालात।

रग़्बत (رغبت) अ. स्त्री.–इच्छा, अभिलाषा, चाह; रुचि, अभिरुचि, दिलचस्पी।

रग़्म (رغم) अ. पुं.–विपरीत, उलटा।

रजः (رجہ-رزہ) फा. स्त्री.–अलगनी, कपड़े आदि टाँगने की रस्सी।

रज़ (رز) फा. पुं.–दाक्षा, अंगूर (प्रत्य.) रँगनेवाला जैसे–'रंगरज़'।

रजज़ (رجز) अ. स्त्री.–युद्ध-क्षेत्र में अपने कुल की शूरता और श्रेष्ठता का वर्णन; दे. 'बह्रे रजज़'।

रजब (رجب) अ. पुं.–इस्लामी सातवाँ महीना।

रजा (رجا) अ. स्त्री.–आशा, आस, उम्मेद।

रज़ाअत (رضاعت) अ. स्त्री.–बच्चे के दूध पीने की अवस्था।

रजाई (رجائی) अ. वि.–आशावादी, जिसके धर्म में निराश होना पाप हो।

रज़ालः (رذالہ) अ. पुं.–अधम, नीच, लंपट, लोफ़र, रज़ील।

रज़ालत (رذالت) अ. स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनापन।

रज़िंदः (رزندہ) फा. वि.–रँगनेवाला, रजक।

रज़ी (رضی) अ. वि.–रुचिकर, मनोनीत, मनोवांछित, पसंदीदः।

रज़ीअः (رضیعہ) अ. स्त्री.–दूध शरीक़ बहिन।

रज़ीअ (رضیع) अ. पुं.–दूध शरीक़ भाई।

रजीअ (رجیع) अ. पुं.–फेंकी हुई चीज़, हटायी हुई वस्तु; विष्ठा, मल, गू.।

रज़ीदः (رزیدہ) फा. वि.–रँगाहुआ, रंजित।

रज़ीदनी (رزیدنی) फा. वि.–रँगने के लाइक़, रंजनीय।

रजीम (رجیم) अ. वि.–ज़िसे पत्थर मारे गये हों, जो भगाया गया हो, जो धिक्कृत हो।

रज़ीयः (رضیہ) अ. स्त्री.–राज़ी की गयी, प्रसन्न की गयी।

रज़ीयः (رزیہ) अ. स्त्री.–विपत्ति, आपत्ति, मुसीबत।

रज़ील (رذیل) अ. वि.–अधम, नीच, कमीना।

रजुल (رجل) अ. पुं.–मनुष्य, मनुज, मानव, आदमी।

रजूम (رجوم) अ. वि.–पत्थर मारकर भगानेवाला।

रज्अत (رجعت) अ. स्त्री.–वापस लौटना, प्रत्यागमन।

रज्अतपरस्त (رجعت پرست) अ. फा. वि.–दे. 'रज्अत पसंद'।

रज्अतपरस्ती (رجعت پرستی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'रज्अतपसंदी'।

रज्अतपसंद (رجعت پسند) अ. फा. वि.–प्रतिक्रियावादी, जिसे तरक़्क़ी पसंद विचार न आते हों।

रज्अतपसंदी (رجعت پسندی) अ. फा. स्त्री.–प्रतिक्रियावाद, विचारों में प्रगतिशीलता का अभाव।

रज्अते क़हक़री (رجعت قہقری) अ. स्त्री.–उलटे पाँव वापस लौटना, जहाँ से चले थे वहीं लौट आना, अवनति।

रज़्ज़ाक़ (رزاق) अ. वि.–खाना देनेवाला, अन्नदाता, पेट भरनेवाला।

रज़्ज़ाक़ी (رزاقی) अ. स्त्री.–खाना देना, अन्न दान करना, भूखों का पेट भरना।

रज़्ज़ाक़े मुत्लक़ (رزاق مطلق) अ. पुं.–वास्तविक में सबका पेट भरनेवाला, ईश्वर।

रज्फ़ः (رجفہ) अ. पुं.–भूकंप, भूचाल, ज़लज़लः।

रज्फ़ (رجف) अ. पुं.–दे. 'रज्फ़ः।

रज़्मः (رزمہ) फा. पुं.–गठरी, पोटली, बुग़चः।

रज्म (رجم) अ. पुं.–पत्थराव करना, पत्थर मारना, पत्थरों से मार-मारकर मार डालना।

रज़्म (رزم) फा. स्त्री.–युद्ध, समर, रण, जंग, लड़ाई।

रज़्मआरा (رزم آرا) फा. वि.–युद्धकर्ता, लड़नेवाला।

रज़्मआराई (رزم آرائی) फा. स्त्री.–युद्धकर्म, लड़ना।

रज़्मख़्वाह (رزم خواہ) फा. वि.–युद्ध चाहनेवाला, लड़ाई का इच्छुक।

रज़्मगाह (رزم گاہ) फा. स्त्री.–लड़ाई का मैदान, युद्धक्षेत्र रंगभूमि, रणस्थल, समरांगण।

रज़्मपसंद (رزم پسند) फा. वि.–जिसे लड़ाई अच्छी लगे, जो चाहता हो कि जंग रहे।

रज्मल लिल ग़ैब (رجماً للغیب) अ. अव्य.–तीर का तुक्का, अक़्ल के गद्दे, अटकलपच्चू।

रज़्मियः (رزمیہ) फा. वि.–युद्ध सम्बन्धी।

रज़्मी (رزمی) फा. वि.–युद्ध सम्बन्धी।

रज्मे शयातीन (رجم شیاطین) अ. पुं.–शैतानों को पत्थर मारना, हज का एक संस्कार।

रतीब (رطیب) अ. पुं.–ताज़ा खजूर।

रतूबत (رطوبت) अ. स्त्री.–तरी, आर्द्रता, गीलापन; शरीर की कोई धातु; शरीर के भीतर की तरी, लसीका।

रतूबते अस्लीयः (رطوبت اصلیہ) अ. स्त्री.–शरीर के भीतर की अस्ली तरी।

रत्क़ (رتق) अ. पुं.–बाँधना, बंधन।

रत्ब (رطب) अ. वि.–ताज़ः, तर।

रत्बुल्लिसान (رطب اللسان) अ. वि.–प्रशंसक, श्लाघी, तारीफ़ करनेवाला।

रत्बोयाबिस (رطب و یابس) अ. पुं.–तर और ख़ुश्क, गीला और सूखा, अर्थात्, सब, समस्त।

रत्ल (رطل) अ. पुं.–एक पौंड का भार; शराब पीने का प्याला।

रत्ले गराँ (رطل گراں) अ. फा. पुं.–बड़ा प्याला जिसमें बहुत शराब आती है।

रदः (ردہ) फा. पुं.–दीवार पर रखा जानेवाला रद्दा।

रद(द्द) (رد) अ. पुं.–फेरना, वापस करना; ख़ारिज करना; नापसंद करना।

रदाअ (رداع) अ. पुं.–कीचड़, कर्दम, जलकल्क, जबाल।

रदाअत (رداعت) अ. स्त्री.–खराबी, विकार, दोष।

रदी (ردی) अ. वि.–विकृत, दूषित।

रदीउलकैमूस (ردی الکیموس) अ. पुं.–वह अन्न जिससे आमाशय में अच्छा रस न बने।

रदीउलहाल (ردی الحال) अ. पुं.–दुर्दशाग्रस्त, जिसकी दशा बड़ी रद्दी हो।

रदीफ़ (ردیف) अ. वि–पीछे चलनेवाली; (स्त्री.) ग़ज़ल में क़ाफ़िए के बाद आनेवाला शब्द या शब्द-समूह।

रदीफ़वार (ردیف وار) अ. फा. वि.–वह दीवान जो रदीफ़ के हिसाब से क्रमबद्ध किया गया हो।

रदीफ़ोक़ाफ़ियः (ردیف و قافیہ) अ. पुं.–ग़ज़ल का काफ़ियः और उसके बाद की रदीफ़।

रद्दः (ردہ) अ. पुं.–दीवार का रद्दा।

रद्दे अमल (رد عمل) अ. पुं.–प्रतिक्रिया, किसी कार्य के फलस्वरूप दूसरी ओर से होनेवाला जवाबी कार्य।

रद्दे क़दह (رد قدح) अ. पुं.–शराब का पियाला न लेना, लौटा देना।

रद्दे ख़ल्क़ (رد خلق) अ. वि.–तमाम संसार का ठुकराया और रद किया हुआ।

रद्दे दा'वत (رد دعوت) अ. स्त्री.–किसी का भोज निमंत्रण स्वीकार न करना।

रद्दे बला (رد بلا) अ. पुं.–आपत्ति का निवारण, आयी हुई बला का टल जाना।

रद्दे सलाम (رد سلام) अ. पुं.–सलाम का उत्तर न देना।

रद्दे सवाल (رد سوال) अ. पुं.–किसी की माँग ठुकरा देना, भिक्षुक के सवाल पर कुछ न देना।

रद्दोकद (رد و کد) अ. उभ.–वाद-विवाद, कहा - सुनी, बहस-मुबाहसा।

रद्दोक़द्ह (رد و قدح) अ. उभ.–दे. 'रद्दोकद'।

रद्दोक़बूल (رد و قبول) अ. उभ.–स्वीकार करना या अस्वीकार करना, लेना या लौटा देना।

रद्दोबदल (رد و بدل) अ. उभ.–परिवर्तन, तब्दीली।

रफ़ (رف) अ. पुं.–मचान, मंच; दरवाज़े का बड़ा ताक़।

रफ़ाक़त (رفاقت) अ. स्त्री.–मैत्री, दोस्ती; सहचरता, साथ; संगत, सोहबत; सहकारिता, एक साथ मिलकर काम करना।

रफ़ाक़ते सफ़र (رفاقت سفر) अ. स्त्री.–यात्रा या पर्यटन में साथ रहना।

रफ़ाहत (رفاہت) अ. स्त्री.–सुख, चैन, आराम; कल्याण, बहबूद।

रफ़ाहीयत (رفاہیت) अ. स्त्री.–दे. 'रफ़ाहत'।

रफ़ीअ' (رفیع) अ. वि.–उच्च, उत्तुंग, बलंद; श्रेष्ठ, विशिष्ट, उत्तम, शरीफ़।

रफ़ीउद्दरजात (رفیع الدرجات) अ. वि.–दे. 'रफ़ीउश्शान'।

रफ़ीउलक़द्र (رفیع القدر) अ. वि.–दे. 'रफ़ीउश्शान'।

रफ़ीउलमंज़लत (رفیع المنزلت) अ. वि.–दे. 'रफ़ीउश्शान'।

रफ़ीउश्शान (رفیع الشان) अ. वि.–बहुत बड़ी शान, प्रतिष्ठा और इज़्ज़त वाला।

रफ़ीक़ः (رفیقہ) अ. स्त्री.–मित्र स्त्री, सहचरी, सखी।

रफ़ीक़ (رفیق) अ. पुं.–मित्र, सखा, दोस्त; सहचर, हमराही।

रफ़ीक़ए ज़ीस्त (رفیقۂ زیست) दे. 'रफ़ीक़ए हयात'।

रफ़ीक़ए हयात (رفیقۂ حیات) अ. स्त्री.–जीवन-संगिनी, अर्धांगिनी, भार्या, पत्नी, बीबी।

रफ़ीक़े राह (رفیق راہ) अ. फा. पुं.–दे. 'रफ़ीक़े सफ़र'।

रफ़ीक़े सफ़र (رفیق سفر) अ. पुं.–यात्रा का साथी, सहयात्री, सहचर।

रफ़ू (رفو) फा. उभ.–एक प्रकार की सिलाई, जिसमें कटा हुआ कपड़ा बेजोड़ हो जाता है; सिलाई।

रफ़ूगर (رفوگر) फा. पुं.–रफ़ू का काम करनेवाला।

रफ़्अः (رفعہ) अ. पुं.–'उ' की मात्रा, 'पेश' की हरकत।

रफ़्अ (رفع) अ. पुं.–उठाना, ऊँचा करना; 'उ' की मात्रा, पेश।

रफ़्ए क़लम (رفع قلم) अ. पुं.–किसी पर से क़लम उठा लेना, अर्थात् उसके सम्बन्ध में कुछ न लिखना, उसका इस

क़ाबिल न रहना जिसके विषय में कुछ लिखा जाय, ऐसा व्यक्ति 'मर्फ़ूउल क़लम' कहलाता है।

रफ़ए निज़ाअ (رفع نزاع) अ. पुं.–झगड़ा तै हो जाना, परस्पर विरोध मिट जाना।

रफ़ए फ़साद (رفع فساد) अ. पुं.–लड़ाई ख़त्म हो जाना, झगड़ा तय हो जाना।

रफ़एं यदैन (رفع یدین) अ. पुं.–दोनों हाथ उठाना, इमाम शाफ़िई के अनुयायियों का नमाज़ पढ़ते समय, हर तक्बीर पर दोनों हाथ कानों तक उठाना, जिसे अन्य मुसलमान जाइज़ नहीं समझते।

रफ़ए शक (رفع شک) अ. पुं.–शंका-समाधान, शक दूर होना।

रफ़ए शर (رفع شر) अ. पुं.–लड़ाई-झगड़ा ख़त्म होना, विरोध का दूर होना।

रफ़ओजर (رفع و جر) अ. पुं.–पेश और ज़ेर 'उ' और 'ई' की मात्राएँ।

रफ़ज़ (رفض) अ. पुं.–अपने स्वामी का परित्याग, जान-जोखिम के समय स्वामी को छोड़ कर भाग जाना।

रफ़्तः (رفتہ) फा. वि.–गया हुआ, गत, विगत; मरा हुआ, मृत।

रफ़्तः रफ़्तः (رفتہ رفتہ) फा. वि.–शनैः-शनैः, धीरे-धीरे, आहिस्तः-आहिस्तः।

रफ़्तःहोश (رفتہ ہوش) फा. वि.–जिसके होश जाते रहे हों, हतसंज्ञ, बेहोश, निश्चेष्ट, संज्ञाहीन।

रफ़्तगाँ (رفتگاں) फा. पुं.–'रफ़्तः' का बहु, गये हुए लोग, अर्थात् मरे हुए व्यक्ति।

रफ़्तगाने ख़ाक (رفتگان خاک) फा. पुं.–ज़मीन के अंदर गये हुए लोग, अर्थात् मुर्दे।

रफ़्तनी (رفتنی) फा. वि.–जाने के योग्य, जिसका जाना उचित हो, जो जानेवाला हो।

रफ़्तार (رفتار) फा. पुं.–चाल, गति; ढंग, तरीक़ा; आचरण, अमल; आचार-व्यवहार, तर्ज़े अमल; प्रगति (तरक़्क़ी) या अवनति (तनज़्ज़ुल) की ओर गमन; दशा, हालत।

रफ़्तारे क़दीम (رفتار قدیم) फा. अ. स्त्री.–पुरानी चाल, पुरानी रविश, पुराना तरीक़ा।

रफ़्तारे ज़मानः (رفتار زمانہ) फा. अ. स्त्री.–सांसारिक दशा, दुनिया की हालत।

रफ़्तारे वक़्त (رفتار وقت) फा. अ. स्त्री.–समय की गति; समय की दशा; वर्तमान समय की माँग।

रफ़्तारे हालात (رفتار حالات) फा. अ. स्त्री.–अपने हालात का रुख अथवा सांसारिक दशाओं की परिस्थिति।

रफ़्तारो करदार (رفتار و کردار) फा. पुं.–आचार और व्यवहार, चाल-ढाल।

रफ़्तारो गुफ़्तार (رفتار و گفتار) फा. स्त्री.–चाल-ढाल और बातचीत।

रफ़्तो गुज़श्त (رفت و گزشت) फा. वि.–गया-बीता हुआ, गया-गुज़रा, समाप्त, ख़त्म।

रफ़्रफ़ (رفرف) अ. पुं.–एक बहुत तेज़ चाल का घोड़ा, बुराक़।

रफ़्राफ़ (رفراف) अ. पुं.–शुतुरमुर्ग़, उष्ट्र पक्षी।

रफ़्ह (رفہ) अ. पुं.–हित, भलाई; सुख, आराम, दे. 'रिफ़्ह', दोनों शुद्ध हैं।

रब [ब्ब] (رب) अ. पुं.–स्वामी, पति, मालिक; बड़ा भाई; अभिभावक, सरपरस्त; ईश्वर, परमात्मा, ख़ुदा।

रबात (رباط) अ. स्त्री.–मुसाफ़िरख़ानः, सराय, पथिकाश्रय।

रबाब (رباب) फा. पुं.–सितार के प्रकार का एक बाजा।

रबाबी (ربابی) फा. वि.–'रबाब' बजानेवाला।

रबीअ (ربیع) अ. स्त्री.–वसंत ऋतु, बहार का मौसिम।

रबीई (ربیعی) अ. वि.–वसंत ऋतु सम्बन्धी, बहार का।

रबीउल अव्वल (ربیع الاول) अ. पुं.–इस्लामी तीसरा महीना।

रबीउल आख़िर (ربیع الاخر) अ. पुं.–इस्लामी चौथा महीना।

रबीउस्सानी (ربیع الثانی) अ. पुं.–दे. 'रबीउल आख़िर'।

रबीबः (ربیبہ) अ. स्त्री.–सौतेली लड़की, वह लड़की जो दूसरे बाप से हो, पहले ब्याह की लड़की।

रबीब (ربیب) अ. पुं.–सौतेला लड़का, वह लड़का जो दूसरे बाप से हो, पहले ब्याह का लड़का।

रबून (ربون) अ. पुं.–बैआना, अग्रिम धन, बियाना।

रबूबीयत (ربوبیت) अ. स्त्री.–स्वामित्व, मालिकीयत; ईश्वरत्व, खुदावंदी।

रब्त (ربط) अ. पुं.–लगाव, सम्बन्ध, तअल्लुक; मेल-जोल, मैत्री, दोस्ती।

रब्ते बाहम (ربط باہم) अ. फा. पुं.–परस्पर मेल-जोल और दोस्ती।

रब्तो ज़ब्त (ربط و ضبط) अ. पुं.–आपस का मेल-मिलाप, बैठना-उठना, मित्रता, दोस्ती।

रब्बानियत (ربانیت) अ. स्त्री.–ईश्वरत्व, खुदाई।

रब्बानी (ربانی) अ. वि.–ईश्वरीय, दैवी, ख़ुदा की तरफ़ से। ग़ैबी, आस्मानी, आकस्मिक।

रब्बी (ربی) अ. वि.–ईश्वरीय, ईश्वर का, ख़ुदा की तरफ़ से।

रब्बुन्नौअ (رب النوع) अ. पुं.–देवता, फ़िरिश्तः।

रब्बुलअर्बाब (رب الارباب) अ. पुं.–सारे स्वामियों का स्वामी, अर्थात् ईश्वर।

रब्बुलआलमीन (ربالعالمین) अ. पुं.–सारे ब्रह्मांड का (जिसमें बहुत-से जगत् हैं) स्वामी, ईश्वर।

रब्बुलमलाइकः (ربالملائکہ) अ. पुं.–सारे फ़िरिश्तों का स्वामी, ईश्वर।

रब्बुस्समावात (ربالسماوات) अ. पुं.–सारे आकाशों का स्वामी, ईश्वर।

रब्व (ربو) अ. पुं.–वामन, ठिगना, छोटे डील-डौल का आदमी।

रमः (رمہ) फा. पुं.–भेड़-बकरी का गल्लः, रेवड़।

रम (رم) फा. पुं.–भगदड़, भागना।

रमक़ (رمق) अ. स्त्री.–अत्यल्प, बहुत थोड़ा; अंतिम प्राण, थोड़ी-सी जान।

रमकर्दः (رمکردہ) फा. वि.–भागा हुआ, पलायित।

रमक़े (رمقے) अ. फा. वि.–बहुत थोड़ी मात्रा में, ज़रा-सा।

रमख़ुर्दः (رمخوردہ) फा. वि.–भागा हुआ, पलायित।

रमज़ान (رمضان) अ. पुं.–इस्लामी नवाँ महीना जिसमें मुसलमान दिन भर रोज़ा रखते और रात में तरावीह पढ़ते हैं, जिसमें महीने भर में पूरा क़ुरान सुनते हैं।

रमद (رمد) अ. पुं.–आँख आना, आयी हुई आँख, आशोबे चश्म, नेत्राभिष्यंद।

रमदीदः (رمدیدہ) फा. वि.–भागा हुआ, पलायित, रमख़ुर्दः।

रमदे चश्म (رمد چشم) अ. फा. पुं.–आशोबे चश्म, नेत्राभिष्यंद, आयी हुई आँख।

रमल (رمل) अ. स्त्री.–एक् विद्या जिससे भविष्य में होनेवाली घटनाएँ बता दी जाती हैं, इस विद्या का मूलाधार नुक़्ते (शून्य) या बिंदियाँ हैं।

रमाद (رماد) अ. स्त्री.–राख, चूल्हे की राख, जले हुए ईंधन की राख, भस्म।

रमानीदः (رمانیدہ) फा. वि.–भगाया हुआ।

रमिंदः (رمندہ) फा. वि.–भागनेवाला, पलायक।

रमिश (رمش) फा. स्त्री.–भागने का अमल, भगदड़।

रमीदः (رمیدہ) फा. वि.–भागा हुआ, पलायित।

रमीदगी (رمیدگی) फा. स्त्री.–भगदड़, पलायन।

रमीम (رمیم) अ. वि.–पुराना, पुरातन; जीर्ण, शीर्ण, कोहनः।

रम्कः (رمکہ) अ. स्त्री.–घोड़ी, अश्विनी।

रम्ज़ (رمز) अ. पुं.–संकेत, इशारा; रहस्य, भेद, राज़।

रम्ज़आगाह (رمزآگاہ) अ. फा. वि.–दे. 'रम्ज़आश्ना'।

रम्ज़आश्ना (رمزآشنا) अ. फा. वि.–भेद जाननेवाला, भेद से वाक़िफ़, मर्मज्ञ, रहस्यवेत्ता।

रम्ज़शनास (رمزشناس) अ. फा. वि.–दे. 'रम्ज़आशना'।

रम्नः (رمنہ) फा. पुं.–गल्लः चराने का मैदान, चरागाह, गोचर।

रम्माज़ (رماز) अ. वि.–गुप्तचर, भेदिया, भेद जाननेवाला, भेद बतानेवाला।

रम्माल (رمال) अ. वि.–'रमल' का इल्म जाननेवाला, रमलवेत्ता।

रम्माह (رماح) अ. वि.–बरछा चलानेवाला, बरछेबाज़।

रम्ल (رمل) अ. पुं.–रेत, बालुका, बालू, रेग।

रवाँ (رواں) फा. वि.–प्रवाहित, बहता हुआ; तीक्ष्ण, धारदार, (स्त्री.) प्राण, प्राण वायु, जान, रूह।

रवाँ दवाँ (رواں دواں) फा. वि.–ज़ोर से बहता हुआ; तेज़ी से जाता हुआ।

रवा (روا) फा. वि.–उचित, वाजिब; विहित, हलाल, (प्रत्य.) पूरा करनेवाला, जैसे—'हाजतरवा' इच्छा पूरी करनेवाला।

रवाई (روائی) फा. स्त्री.–पूरी होना (आशा); रौनक़, शोभा; चलन, रवाज, प्रथा, परंपरा।

रवाएह (روائح) अ. पुं.–'राइहः' का बहु., सुगंधियाँ, ख़ुशबूएँ।

रवाक़ (رواق) अ. पुं.–मकान के ऊपर बना हुआ मकान, अट्टालिका, दे. 'रुवाक़', और 'रिवाक़'।

रवाज (رواج) अ. पुं.–प्रथा, रूढ़ि, परंपरा, परिपाटी, तरीक़ा, दस्तूर, दे. 'रिवाज', दोनों शुद्ध हैं।

रवाज़िन (روازن) अ. पुं.–'रौज़न' का बहु., सूराख, छेद।

रवाजे ख़ानदानी (رواج خاندانی) अ. फा. पुं.–वंश-परंपरा से चला आनेवाला दस्तूर, वंश-परम्परा, पुरुषानुक्रम, रूढ़ि।

रवादार (روادار) फा. वि.–जो इस बात का बहुत खयाल रखता हो कि इसकी बात से किसी का दिल न दुखे, उदारचेता; सहन करनेवाला, बरदाश्त करनेवाला।

रवादारी (رواداری) फा. स्त्री.—किसी का दिल न दुखे यह भावना, सहृदयता, उदारता।

रवादारानः (روادارانہ) फा. वि.–रवादारों-जैसा, रवादारी का।

रवानः (روانہ) फा. वि.–जो कहीं से चल पड़ा हो, प्रस्थित, प्रयात; भेजा हुआ, प्रेषित।

रवानःकुनिंदः (روانہ کنندہ) फा. वि.–भेजनेवाला, प्रेषक।

रवानगी (روانگی) फा. स्त्री.–प्रस्थान, प्रयाण, कूच; प्रेषण, भेजना।

रवानी (روانی) फा. स्त्री.–प्रवाह, बहाव; तीक्ष्णता, धार, तेज़ी; किताब आदि के पढ़ने में कहीं न अटकना; भाषण

देने या बात करने में कहीं न रुकना और शुद्ध और ठीक बोलना।

रवाफ़िज़ (روافض) अ. पुं.–'राफ़िज़ी' का बहु., समय पड़ने पर अपने स्वामी को छोड़ भागनेवाले।

रवाबित (روابط) अ. पुं.–'राबितः' का बहु., मेल-जोल, मेल-मिलाप।

रवांरवी (رواروی) फा. स्त्री.–सरसरी, जल्दी, शीघ्रता; चल-चलाव, कूच की जल्दी।

रवारौ (روارو) फा. स्त्री.–यातायात, आना-जाना, चला-फिरी।

रवाहिल (رواحل) अ. पुं.–'राहिलः' का बहु., सवारी के जानवर, ऊँट घोड़े आदि।

रवाहाल (رواحال) अ. पुं.–तेज़ चलनेवाली सवारी, तेज़ ऊँट या घोड़ा।

रविंदः (روندہ) फा. वि.–जानेवाला, प्रस्थान करनेवाला।

रविश (روش) फा. स्त्री.–आचार-व्यवहार, तर्ज़ोतरीक़ा; पद्धति, शैली, तर्ज़; आचरण, चाल-चलन; बाग़ के अन्दर के पतले रास्ते।

रविशे आम (روش عام) फा. अ. स्त्री.–आम लोगों का तरीक़ा।

रविशे ख़ास (روش خاص) फा. अ. स्त्री.–खास लोगों का तरीक़ा।

रवी (روی) अ. स्त्री.–क़ाफ़िए का अस्ली हर्फ़, जिससे पहले हर्फ़ की मात्रा का एक होना आवश्यक है। जैसे—'नज़र' और 'क़मर' में 'र' हर्फ़े रवी है और 'म' और 'ज़' दोनों अकार हैं।

रवीयः (رویہ) अ. पुं.–आचार-व्यवहार, तर्ज़े अमल; आचरण, रविश; सुलूक, व्यवहार; नियम, क़ाइदा, दस्तूर।

रशद (رشد) अ. क्रि.–दीक्षा, पीर की हिदायत; सन्मार्ग, सीधा और अच्छा रास्ता, दे. 'रुश्द', दोनों शुद्ध हैं।

रशाक़त (رشاقت) अ. स्त्री.–शरीर का सुडौल और सुन्दरपन, ख़ुशक़ामती।

रशाद (رشاد) अ. पुं.–एक दवा, तरातेजक़, हालौन; सन्मार्ग, सदाचार, नेकदिली।

रशादत (رشادت) अ. स्त्री.–धर्मदीक्षा, मुर्शिद की तल्क़ीन; सन्मार्ग, राहे रास्त; सदाचार, नेक कर्दारी।

रशाशः (رشاشہ) अ. पुं.–फुहार, छींट, स्राव, बहाव।

रशाश (رشاش) अ. पुं.–दे. 'रशाशः'।

रशीद (رشید) अ. वि.–सन्मार्ग-प्रदर्शक, सीधा रास्ता दिखानेवाला; सन्मार्गप्राप्त, सीधा रास्ता पानेवाला; जिसने गुरु की सेवा और उसके प्रसाद से किसी विद्या या कला-विशेष में पूरी कुशलता प्राप्त कर ली हो।

रश्क़ (رشق) अ. पुं.–तीर चलाना, बाण चलाना, धनुर्विद्या।

रश्क (رشک) फा. पुं.–किसी को हानि पहुँचाये बिना उस जैसा बनने की भावना, यह जज्बः कि अमुक व्यक्ति ऐसा है हम क्यों नहीं हैं, हमें भी वैसा होना चाहिए, 'रश्क' और 'हसद' में यही फ़र्क़ है, 'हसद' में केवल व्यक्ति अपने लिए चाहता है दूसरे को नहीं देख सकता।

रश्कआमेज़ (رشک آمیز) फा. वि.–रश्क से भरा हुआ, जिसमें रश्क हो।

रश्कीं (رشکیں) फा. वि.–रश्क करनेवाला।

रश्के परी (رشک پری) फा. वि.–परी के सौन्दर्य को लज्जित करनेवाली नायिका।

रश्के माह (رشک ماہ) फा. स्त्री.–चाँद की प्रभा को मन्द कर देनेवाले मुखवाली नायिका।

रश्के मेह्‌र (رشک مہر) फा. स्त्री.–सूर्य की चमक-दमक को फीका कर देनेवाले मुखवाली प्रेयसी।

रश्के यूसुफ़ (رشک یوسف) फा. अ. स्त्री.–यूसुफ़ की सुन्दरता को लजानेवाली सुन्दरी।

रश्के रिज़वाँ (رشک رضواں) अ. पुं.–स्वर्ग के अध्यक्ष को लज्जित करनेवाला मकान, अर्थात् बहुत ही सुसज्जित और शृंगारित भवन।

रश्के हूर (رشک حور) अ. फा. स्त्री.–स्वर्गांगनाओं के सौन्दर्य को लज्जित करनेवाली प्रेमिका।

रश्फ़ (رشف) अ. पुं.–चूसना, चूषण।

रश्मीज़ (رشمیز) फा. स्त्री.–दीमक, वम्री, वल्मी, उत्पादिका।

रश्ह्ः (رشحہ) अ. पुं.–बिंदु, बूंद, क़त्रः; स्राव, टपकना, टपकन, रिसाव।

रश्ह् (رشح) अ. पुं.–प्रतिश्याय, शीत, ज़ुकाम; रिसाव, रेज़िश।

रश्हृए क़लम (رشحۂ قلم) अ. पुं.–लेखनी की टपकन अर्थात् लेख, निबंध, अथवा कविता।

रश्हृए फ़िक्र (رشحۂ فکر) अ. पुं.–विचार का स्राव अर्थात् लेख आदि, विशेषतः कविता।

रश्हात (رشحات) अ. पुं.–'रश्ह्ः' का बहु; टपकनें, रेज़िशें।

रस (رس) फा. प्रत्य.–पहुँचनेवाला, जैसे–'फ़लक रस' आकाश तक पहुँचनेवाला।

रसद (رسد) अ. स्त्री.–अंश, हिस्सा; खाद्य सामग्री, खाने-पीने का सामान।

रसद (رصد) अ. स्त्री.–देख-भाल का स्थान, जहाँ किसी चीज़ को ताका जाय।

रसदगाह (رصدگاہ) अ. फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ से ग्रहों और तारों की गति आदि का निरीक्षण किया जाता है, वेधशाला, मानशाला, यंत्रशाला।

रसदी (رسدی) अ. वि.–भाग के अनुसार, हिस्से के मुताबिक़।

रसन (رسن) फा. स्त्री.–रज्जु, पाश, रस्सी।

रसनबाज़ (رسن باز) फा. वि.–रस्सी पर क़लाबाज़ियाँ खानेवाला, नट; वंचक, छली, मक्कार।

रसनबाज़ी (رسن بازی) फा. स्त्री.–नट का काम; छल, फ़िरेब, धूर्तता।

रसनबाफ़ (رسن باف) फा. वि.–रस्सी बटनेवाला, रज्जुकार।

रसनबाफ़ी (رسن بافی) फा. स्त्री.–रस्सी बटने का काम, या पेशा।

रसाँ (رساں) फा. प्रत्य.–पहुँचानेवाला, जैसे—'नामः रसा' ख़त पहुँचानेवाला।

रसा (رسا) फा. वि.–पहुँचनेवाला; जिसकी किसी जगह पहुँच हो; जो हर जगह पहुँच जाता हो या पहुँचने की राह निकाल लेता हो।

रसाइल (رسائل) अ. पुं.–'रिसालः' का बहु., पत्रिकाएँ, रिसाले।

रसाई (رسائی) फा. स्त्री.–पहुँच, प्रवेश।

रसानत (رصانت) अ. स्त्री.–दृढ़ता, मज़बूती।

रसाँनिदः (رسانندہ) फा. वि.–पहुँचानेवाला, भेजनेवाला।

रसास (رصاص) अ. पुं.–सीसा, सीसक, एक प्रसिद्ध धातु जिसके बंदूक़ की गोलियाँ बनती हैं; राँग, राँगा।

रसिंदः (رسندہ) फा. वि.–पहुँचनेवाला।

रसीदः (رسیدہ) फा. वि.–पहुँचा हुआ।

रसीद (رسید) फा. स्त्री.–रुपये आदि की वसूली का काग़ज़, प्राप्तिपत्र; पहुँच, प्राप्ति, वसूली।

रसीदगी (رسیدگی) फा. स्त्री.–पहुँच।

रसीदनी (رسیدنی) फा. वि.–पहुँचने योग्य।

रसूम (رسوم) अ. पुं.–कर, शुल्क, फ़ीस।

रसूल (رسول) अ. पुं.–ईशदूत, ईश्वरावतार, नबी।

रसूलुल्लाह (رسول اللہ) अ. पुं.–ईशदूत, ईश्वर की ओर से सर्वसाधारण के सुधार के लिए भेजा हुआ व्यक्ति।

रस्तः (رستہ) फा. वि.–बंधनमुक्त, छूटा हुआ; पंक्ति, क़तार; दुकानों की क़तार; पथ, राह।

रस्तगार (رستگار) फा. वि.–बंधनमुक्त, छूटा हुआ, आज़ाद।

रस्तगारी (رستگاری) फा. स्त्री.–मुक्ति, छुटकारा, रिहाई।

रस्ताख़ेज़ (رستاخیز) फा. स्त्री.–महाप्रलय, क़ियामत।

रस्तोख़ेज़ (رستوخیز) फा. स्त्री.–दे. 'रस्ताख़ेज़'।

रस्त्ख़ेज (رستخیز) फा. स्त्री.–दे. 'रस्ताख़ेज़'।

रस्त्गार (رستگار) फा. वि.–बंधनमुक्त, आज़ाद, छुटकारा पाया हुआ।

रस्त्गारी (رستگاری) फा. स्त्री.–बंधन-मुक्ति, रिहाई, छुटकारा।

रस्म (رسم) अ. स्त्री.–परम्परा, रूढ़ि, रवाज; नियम, दस्तूर; कर, महसूल; वेतन, तनख्वाह; कोई क़ाइदा जो बहुत दिनों से किसी खानदान, बस्ती या देश में चला आता हो; संस्कार, तक्रीब।

रस्मन (رسماً) अ. वि.–परंपरानुसार, रिवाज की मुताबिक़; रस्मी तौर पर, छुछा उतारने को, यूँ ही।

रस्मी (رسمی) अ. वि.–परंपरा सम्बन्धी; जो बाक़ाइदा न हो, प्राईवेट; मामूली, साधारण।

रस्मुलख़त (رسم الخط) अ. पुं.–लिपि, अक्षर लिखने की प्रणाली, जैसे—'उर्दू रस्मुलख़त' या 'हिंदी रस्मुलख़त'।

रस्मे निकाह (رسم نکاح) अ. स्त्री.–विवाह-संस्कार, ब्याह की तरकीब।

रस्मे बद (رسم بد) अ. स्त्री.–बुरी परंपरा, बुरा दस्तूर।

रस्मे मुल्क (رسم ملک) अ. स्त्री.–किसी देश की परंपरा, किसी मुल्क का रिवाज।

रस्मोराह (رسم و راہ) अ. फा. स्त्री.–मेल-जोल, मेल-मिलाप।

रस्मोरिवाज (رسم و رواج) अ. स्त्री.–रूढ़ि और परंपरा, दस्तूर और क़ाइदे।

रस्ल (رسل) अ. पुं.–ख़बर भेजना, सूचना पहुँचाना; धीमी चाल।

रस्साम (رسام) अ. वि.–चित्रकार, चितेरा, नक़्क़ाश, मुसव्विर।

रह (رہ) फा. स्त्री.–'राह' का लघु., रस्ता, रास्ता, मार्ग, पथ।

रहआवर्द (رہ آورد) फा. पुं.–दे. 'रहावर्द'।

रहगीर (رہگیر) फा. वि.–दे. 'रहरौ'।

रहगुज़र (رہگزر) फा. स्त्री.–'राहगुज़र' का लघु., आम रास्ता, राजमार्ग, सड़क।

रहज़न (رہزن) फा. पुं.–'राहज़न' का लघु., बाटमार, लुटेरा।

रहज़नी (رہزنی) फा. स्त्री.–'राहज़नी' का लघु., लुटेरापन, रास्ते में पथिकों को लूटने का काम।

रहनशीं (رہنشیں) फा. वि.–'राहनशीं' का लघु. पथस्थ, मार्गस्थ, रास्ते में बैठा हुआ।

रहनुमा (رہنما) फा. वि.–'राहनुमा' का लघु., पथ-प्रदर्शक, रस्ता बतानेवाला, आगे-आगे चलनेवाला।

रहनुमाई (رہنمائی) फा. स्त्री.–'राहनुमाई' का लघु., पथ-प्रदर्शन, रास्ता बताना, आगे-आगे चलना।

रहनुमू (رہنمو) फा. वि.–दे. 'रहनुमा'।

रहबर (رہبر) फा. वि.–'राहबर' का लघु., दे. 'रहनुमा'।

रहबरी (رہبری) फा. स्त्री.–दे. 'रहनुमाई'।

रहरवी (رہروی) फा. स्त्री.–'राहरवी' का लघु., रस्ता चलना, यात्रा करना, मुसाफ़िरत।

रहरौ (رہرو) फा. वि.–'राहरौ' का लघु., रस्ता चलनेवाला, पथिक, बटोही, मुसाफ़िर।

रहवार (رہوار) फा. पुं.–अश्व, हय, घोड़ा।

रहा (رھیٰ) अ. पुं.–चक्की का एक पाट।

रहा (رہا) फा. वि.–मुक्त, बंधन-मुक्त, छूटा हुआ, ख़लास।

रहाई (رہائی) फा. स्त्री.–बंधन मुक्ति, छुटकारा, ख़लासी।

रहावर्द (رہاورد) फा. पुं.–वह उपहार जो यात्रा में जानेवाला व्यक्ति बाहर से लाकर दे।

रहिम (رحم) अ. पुं.–गर्भाशय, जरायु, बच्चादानी।

रही (رہی) फा. पुं.–दास, सेवक, ग़ुलाम, दे. 'रिही', दोनों शुद्ध हैं।

रहीक़ (رحیق) अ. स्त्री.–मदिरा, सुरा, शराब।

रहीज़ादः (رہی زادہ) फा. पुं.–दासी-पुत्र, गुलाम-बच्चा।

रहीन (رہین) अ. वि.–गिरौं रखी हुई वस्तु, बंधक।

रहीने ग़म (رہین غم) अ. वि.–शोकग्रस्त, दुःखग्रस्त, पीड़ाग्रस्त, रंज या मुसीबत में फँसा हुआ।

रहीने मिन्नत (رہین منت) अ. वि.–कृतज्ञ, आभारी, मम्नून।

रहीने सितम (رہین ستم) अ. वि.–अत्याचारपीड़ित, जो किसी के अत्याचारों से दुःखित हो।

रहीब (رحیب) अ. वि.–बहुत खानेवाला, पेटू, बहुभक्षी, अमिताशी, घस्मर।

रहीम (رحیم) अ. वि.–दयालु, कृपालु, महादयालु; ईश्वर का एक नाम।

रहील (رحیل) अ. वि.–प्रस्थान, प्रमाण, कूच, चलाव।

रह्त (رہط) अ. पुं.–जनसमूह, भीड़; समुदाय, यूथ, गिरोह।

रह्न (رہن) अ. पुं.–बंधक, गिरवी।

रह्न दर रह्न (رہن در رہن) अ. फा. पुं.–ऐसी जायदाद जो दो जगह रेहन हो, जिसे मुर्तहिन ने किसी और के पास रेहन रख दिया हो।

रह्ननामः (رہن نامہ) अ. फा. पुं.–बंधकपत्र, रेहन की तह्रीर।

रह्नबिलक़ब्ज़ (رہن بالقبض) अ. पुं.–ऐसा रेहन जिसमें मुर्तहिन को बंधक पर क़ब्ज़ा दिला दिया गया हो और वह उससे लाभ उठाता हो, भोग-बंधक।

रह्नबिलबैअ (رہن بالبیع) अ. पुं.–वह रेहन जिसमें नियत समय पर रुपया न अदा होने पर वह बंधक मुर्तहिन का हो जाय।

रह्नबिलाक़ब्ज़ (رہن بلاقبض) अ. पुं.–वह रेहन जिस पर मुर्तहिन का क़ब्ज़ा न हो, दृष्टबंधक।

रह्ने दख़्ली (رہن دخلی) अ. पुं.–ऐसा रेहन जिस पर मुर्तहिन का क़ब्ज़ा हो और वह ज़मीन या जायदाद का नफ़ा अपने सूद में वसूल करता हो।

रह्ने बिलादख़्ल (رہن بلادخل) अ. पुं.–ऐसा रेहन जिसमें मुर्तहिन को ज़मीन या जायदाद पर क़ब्ज़ा न हासिल हो, केवल उसके पास रेहन हो।

रह्बानियत (رہبانیت) अ. स्त्री.–सारी उम्र ब्रह्मचारी रहना और अच्छे खाने छोड़ देना, कामवासना से बचने के लिए लिंग कटवा देना और सबसे अलग-अलग रहना।

रह्म (رحم) अ. पुं.–करुणा, तरस; दया, मर्हमत; कृपा, मेह्रबानी।

रह्मआगीं (رحم آگیں) अ. फा. वि.–करुणा और दया से भरा हुआ, करुणापूर्ण।

रह्मत (رحمت) अ. स्त्री.–दया, कृपा, रह्म; करुणा, तरस।

रह्मते आलम (رحمت عالم) अ. स्त्री.–संसार के लिए साक्षात् कृपा और दया; हज़्रत मुहम्मद साहिब की उपाधि।

रह्मदिल (رحم دل) अ. फा. वि.–जिसका हृदय बहुत ही दयामय और करुणापूर्ण हो, सदय।

रह्मदिली (رحم دلی) अ. फा. स्त्री.–हृदय में दया और करुणा का भाव होना।

रह्मान (رحمن-رحمان) अ. वि.–दयालु, कृपालु, मेह्रबान; ईश्वर का एक नाम।

रह्मानी (رحمانی) अ. वि.–ईश्वरीय, ईश्वर का; ईश्वर-सम्बन्धी।

रा

राँ (راں) फा. प्रत्य.–चलानेवाला, जैसे–'हुक्मराँ' शासन चलानेवाला।

राँदः (راندہ) फा. वि.–हाँका हुआ, भगाया हुआ; निकाला हुआ, बहिष्कृत।

राँदए दरगाह (راندۂ درگاہ) फा. वि.–किसी बड़ी जगह, सरकार या दरबार से बहिष्कृत।

रा (را) फा. अव्य.–लिए, वास्ते; को।

राइक़ (رائق) अ. वि.–अनाहार, अनशन, नहार मुँह; साफ़ और स्वच्छ वस्तु।

राइज (رائج) अ. वि.–प्रचलित, चालू, जिसका चलन हो।

राइज़ (رائض) अ. वि.–चाबुक सवार, घोड़ा फेरनेवाला।

राइजुलवक़्त (رائج الوقت) अ. वि.–समय के चलन के अनुसार; जो किसी समय विशेष में प्रचलित हो।

राइद (رائد) अ. वि.–जिसके ज़िम्मे मकानों का प्रबंध हो, मीरमंज़िल।

राइलइबाद (راعی العباد) अ. पुं.–प्रजापाल, जनता की देखरेख करनेवाला।

राई (راعی) अ. वि.–चरवाहा, गड़रिया; शासक, नरेश, बादशाह।

राए (رائے) अ. स्त्री.–विचार, ख़याल; मत, वोट; परामर्श, मश्वरः।

राएआम्मः (رائے عامہ) अ. स्त्री.–सारी जनता की राय।

राएगाँ (رائگاں) फा. वि.–नष्ट, बरबाद; निष्फल, बेनतीजा; बेकार, व्यर्थ।

राएजनः (رائےزن) अ. फा. वि.–विचार प्रकट करनेवाला; परामर्शदाता।

राएज़नी (رائےزنی) अ. फा. स्त्री.–अपने विचार प्रकट करना; परामर्श देना।

राएतलबी (رائے طلبی) अ. स्त्री.–राय लेना, सलाह चाहना; वोट माँगना।

राएदिहिंदः (رائےدھندہ) अ. फा. वि.–राए देनेवाला; वोट देनेवाला, मतदाता।

राएदिहिंदगी (رائےدھندگی) अ. फा. स्त्री.–राय देना; वोट देना, मतदान।

राएदिही (رائےدھی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'राएदिहिंदगी'।

राएशुमारी (رائے شماری) अ. फा. स्त्री.–वोटों की गिनती, मत-गणना।

राएहः (رائحہ) अ. पुं.–बू, बास, गंध।

राएह (رائح) अ. वि.–बूदार, बासवाली वस्तु।

राफ़िद (رافد) अ. वि.–सोनेवाला, स्वापक।

राकिद (راکد) अ. वि.–बंद पानी, वह पानी जो ठहरा हुआ हो, प्रवाहित न हो।

राक़िब (راقب) अ. वि.–प्रतीक्षक, मुंतज़िर; आशान्वित, पुरउम्मीद।

राकिब (راکب) अ. वि.–सवार होनेवाला, सवार, घुड़सवार, अश्वारोही।

राक़िमः (راقمہ) अ. स्त्री.–लिखनेवाली; चिट्ठी लिखनेवाली।

राक़िम (راقم) अ. पुं.–लेखक, लिखनेवाला; पत्र लिखनेवाला।

राक़िमुलहुरूफ़ (راقم الحروف) अ. वि.–पत्र-लेखक, चिट्ठी लिखनेवाला।

राक़ी (راقی) अ. पुं.–अभिचारक, जंत्र-मंत्र करनेवाला।

राके' (راکع) अ. वि.–नमाज़ में झुकनेवाला, नमाज़ पढ़नेवाला।

राक़े' (راقع) अ. वि.–कपड़ों में थिगली सीनेवाला, पैवंद सीनेवाला, चकती लगानेवाला।

राग़ (راغ) फा. पुं.–वन, जंगल; सब्ज़:ज़ार, हरा-भरा मैदान; पहाड़ की तराई।

राग़िब (راغب) अ. वि.–आकर्षित, मुतवज्जेह, दिलचस्पी रखने या लेनेवाला।

राज़ (راز) फा. पुं.–रहस्य, भेद, मर्म; मूल, तत्त्व, सार।

राज़आगाह (رازآگاہ) फा. वि.–दे. 'राज़आश्ना'।

राज़आश्ना (رازآشنا) फा. वि.–जो किसी भेद से वाक़िफ़ हो, रहस्यवेत्ता।

राज़दाँ (رازداں) फा. वि.–भेद जाननेवाला, मर्मज्ञ, रहस्यज्ञ।

राज़दार (رازدار) फा. वि.–दे. 'राज़दाँ'।

राज़यानः (رازیانہ) फा. स्त्री.–सौंफ़, शतपुष्पा, बादियान।

राज़िअः (راضعہ) अ. स्त्री.–दूध पीनेवाली बच्ची, स्तनपायिनी।

राज़िकः (رازقہ) अ. पुं.–अन्नदात्री, अन्नपूर्णा; जीविका, वृत्ति, रोज़ी।

राज़िक़ः (رازق) अ. वि.–अन्नदाता, खाना देनेवाला, पालन-पोषण करनेवाला।

राजी (راجی) अ. वि.–आशान्वित, पुरउम्मीद।

राज़ी (راضی) अ. वि.–प्रसन्न, हर्षित, ख़ुश; संतुष्ट, मुत्मइन; अंगीकृत, रिज़ामंद।

राज़ी (رازی) फा. वि.–'रै' नगर का निवासी, 'रै' ईरान में ख़ुरासान प्रान्त का एक प्राचीन नगर है।

राज़ीनामः (راضی نامہ) अ. फा. पुं.–संधिपत्र, सुलहनामा, मुक़दमे के दोनों पक्षों में संधि का लिखित पत्र।

राज़ीबरज़ा (راضی برضا) अ. फा. वि.–किसी की मरज़ी पर राज़ी, अमुक व्यक्ति जो कर दे उसी पर संतुष्ट।

राजे' (راجع) अ. वि.–आकर्षित, मुल्तफ़ित; प्रत्यागामी, वापस लौटनेवाला।

राज़े' (راضع) अ. वि.–दूध पीनेवाला बालक, स्तनपायी।

राज़े सरबस्तः (راز سربستہ) फा. पुं.–ऐसा भेद जो किसी को तनिक भी मालूम न हो।

राजेह (راجح) अ. वि.–आकर्षित, राग़िब; उत्तम, बेहतर; प्रधान, तर्जीहवाला।

राज़े हयात (راز حیات) फा. अ. पुं.–ज़िंदगी का भेद, जीवन-मर्म।

राज़ोनियाज़ (راز ونیاز) फा. पुं.–प्रेम की गुप्त बातें।

रातिब (راتب) अ. पुं.–रोज़ की ख़ुराक; तनख़्वाह; कुत्ते या घोड़े की ख़ुराक।

रातिबख़ोर (راتب خور) अ. फा. वि.–रातिब खानेवाला, रोज़ की ख़ुराक पानेवाला।

रा'द (رعد) अ. पुं.–बिजली की कड़क।

राद [द्द] (راد) अ. वि.–रद करनेवाला, लौटानेवाला।

रा'दआसा (رعدآسا) अ. फा. वि.–बिजली की कड़क-जैसा।

रादिआत (رادعات) अ. स्त्री.–'रादे' का बहु., वे दवाएँ जो ख़राब माद्दे को हटा दें।

रादे' (رادع) अ. वि.–हटानेवाला; रोकनेवाला; वह दवा जो विकृत माद्दे को अंग विशेष से हटा दे।

रान (ران) फा. स्त्री.–जंघा, जाँघ।

रा'ना (رعنا) फा. वि.–सुन्दर, रूपवान्, हसीन; डील-डौल का बहुत सुन्दर।

रा'नाइए ख़याल (رعنائی خیال) फा. अ. स्त्री.–विचारों का सौन्दर्य, ख़यालों की विचित्रता।

रा'नाई (رعنائی) फा. स्त्री.–सुन्दरता, छटा, हुस्न।

राफ़त (رافت) अ. स्त्री.–कृपा, दया, अनुकंपा, मेह्रबानी।

राफ़िज़ः (رافضہ) अ. पुं.–वे लोग जो अपने स्वामी को विपत्ति पड़ने पर छोड़ भागें।

राफ़िज़ (رافض) अ. वि.–वह व्यक्ति जो अपने स्वामी को कष्ट पीड़ित देखकर भाग जाय।

राफ़िज़ी (رافضی) अ. वि.–'राफ़िज़ः' से सम्बन्धित व्यक्ति।

राफ़िद (رافد) अ. वि.–दाता, प्रदाता, देनेवाला; सहायक, मदद करनेवाला।

राफ़े' (رافع) अ. वि.–ऊपर उठानेवाला, उन्नायक, ऊँचा करनेवाला; 'उ' की मात्रा (पेश) देनेवाला।

राफ़ेह (رافہ) अ. वि.–सुख का जीवन व्यतीत करनेवाला।

राबिअः (رابعہ) अ. स्त्री.–चौथी; एक बहुत ही तपस्विनी और साध्वी स्त्री।

राबितः (رابطہ) अ. पुं.–सम्बन्ध, लगाव; संपर्क, वासिता; मेल-जोल, प्रेम-व्यवहार।

राबित (رابط) अ. वि.–मिलानेवाला, संयोजक।

राबियः (رابیہ) अ. स्त्री.–ऊँची भूमि।

राबे' (رابع) अ. वि.–चौथा, चतुर्थ।

राबेह (رابح) अ. वि.–व्याज खानेवाला, कुसीदजीवी, व्याजख़ोर।

राम (رام) फा. वि.–वशीभूत, अधीन, ताबे'।

रामिक़ (رامق) अ. वि.–जाल में बँधा हुआ।

रामिश (رامش) फा. स्त्री.–गान, गाना, नग़्मा।

रामिशगर (رامش گر) फा. वि.–गायक, गवैया, गानेवाला।

रामिशगाह (رامش گاہ) फा. स्त्री.–गाने का स्थान, नाट्यशाला।

रामिशी (رامشی) फा. वि.–दे. 'रामिशगर'।

रामीं (رامیں) फा. वि.–एक आशिक़ का नाम; एक चंग बजानेवाले का नाम।

रामी (رامی) अ. वि.–धनुर्धर, तीरअंदाज़; आरोप लगानेवाला।

रामेह (رامح) अ. वि.–बरछा चलानेवाला, बरछाबाज़।

राय (رائے) अ. स्त्री.–दे. 'राए'।

रायगाँ (رایگاں) फा. वि.–दे. 'राएगां'।

रायज़न (رائے زن) अ. फा. वि.–दे. 'राएज़न'।

रायत (رایت) अ. पुं.–पताका, ध्वजा, झंडा, पर्चम।

रायात (رایات) अ. पुं.–'रायत' का बहु; झंडे।

रायुल ऐन (رائی العین) अ. क्रि.–आँखों से देखना, प्रत्यक्ष दर्शन करना।

रावंद (راوند) फा. स्त्री.–एक जड़, रेवंद चीनी।

रावक़ (راوق) फा. स्त्री.–शराब छानने की साफ़ी; मदिरा, मद्य, शराब।

रावी (راوی) अ. वि.–किसी से कोई बात सुनकर ज्यों की त्यों दूसरे से कहनेवाला; इस्लामी परिभाषा में हज़्रत मुहम्मद साहिब से सुने हुए प्रवचनों को उन्हीं के शब्दों में दूसरे से कहनेवाला।

रा'शः (رعشہ) अ. पुं.–शरीर के अंगों के काँपने का रोग, कंपरोग, कँपकपी।

राश (راش) फा. अ.–अन्न का ढेर, रास, राशि।

राशिद (راشد) अ. वि.–जिसने गुरु से दीक्षा प्राप्त की हो, मुर्शिद से हिदायत पानेवाला।

राशी (راشی) अ. वि.–रिश्वत देनेवाला, बहुत-से लोग रिश्वत लेनेवाले के लिए बोलते हैं, यह अशुद्ध है।

राशेह (راشح) अ. वि.–रिसनेवाला, धीरे-धीरे टपकनेवाला।

रास (راس) अ. पुं.–शिर, सर; मवेशी की तादाद के लिए, जैसे—'एक रास बैल' अर्थात् एक बैल; राहु ग्रह।

रास (راس) फा. स्त्री.–मार्ग, पथ, रास्ता, राह।

रासिख़ (راسخ) अ. वि.–अटल, दृढ़, पक्का।

रासिख़ुलअक़ीदः (راسخ العقیدہ) अ. वि.–जिसका धर्म-विश्वास अटल हो।

रासिख़ुलएतिक़ाद (راسخ الاعتقاد) अ. वि.–दे. 'रासिख़ुल-अक़ीदः'।

रासिद (راصد) अ. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी; प्रहरी, चौकीदार, पहरेदार।

रासिब (راسب) अ. वि.–नीचे बैठ जानेवाला; गाद, तलछट।

रासियः (راسیہ) अ. वि.–मज़बूत पहाड़।

रासियात (راسیات) अ. पुं.–'रासियः' का बहु., मज़बूत पहाड़ों का समूह।

रासुलजदी (راس الجدی) अ. पुं.–राशिचक्र में मकर राशि पर वह बिन्दु जहाँ बाईस दिसंबर को सूर्य पहुँचता है और सबसे छोटा दिन होता है।

रासुलमाल (راس المال) अ. पुं.–मूलधन, अस्ल ज़र।

रासुस्सर्तान (راس اسرطان) अ. पुं.–राशिचक्र में कर्क राशि पर वह बिंदु जहाँ २१ जून को सूर्य पहुँचता है, और साल में सबसे बड़ा दिन होता है।

रासू (راسو) फा. पुं.–नेवला, नकुल, ह्नीक।

रासोज़नब (راس وذنب) अ. पुं.–राहु और केतु।

रास्तः (راستہ) फा. पुं.–मार्ग, पथ, राह, रास्ता।

रास्त (راست) फा. वि.–दाहिना, सीधी तरफ़ का दक्षिण; सरल, सीधा; सत्य, सच।

रास्तकिर्दार (راست کردار) फा. वि.–सरलाचारी, सदाचारी, नेकचलन, सद्वृत्त।

रास्तकिर्दारी (راست کرداری) फा. स्त्री.–सरलाचार, सदाचार, नेकचलनी।

रास्तगुफ़्तार (راست گفتار) फा. वि.–दे. 'रास्तगो'।

रास्तगुफ़्तारी (راست گفتاری) फा. स्त्री.–दे. 'रास्तगोई'।

रास्तगो (راست گو) फा. वि.–सच बोलनेवाला, सत्यवादी, यथार्थवादी, अनृतभाषी।

रास्तगोई (راست گوئی) फा. स्त्री.–सच बोलना, सत्यवाद।

रास्तबाज़ (راست باز) फा. वि.–सच्चा, सत्यनिष्ठ; व्यवहार-कुशल, लेन-देन में साफ़, ईमानदार; सदाचारी, नेकचलन।

रास्तबाज़ी (راست بازی) फा. स्त्री.–सच्चाई; ईमानदारी; सदाचार।

रास्तमिज़ाज (راست مزاج) फा. अ. वि.–सरल स्वभाव, नेकदिल; सत्यनिष्ठ, ईमानदार।

रास्तमिज़ाजी (راست مزاجی) फा. अ. स्त्री.–स्वभाव की सरलता; सत्यनिष्ठता, ईमानदारी।

रास्तमुआमलः (راست معاملہ) फा. अ. वि.–लेन-देन और आचार-व्यवहार में ईमानदार।

रास्तमुआमलगी (راست معاملگی) फा. अ. स्त्री.–लेन-देन और आचार-व्यवहार में ईमनादारी।

रास्तरवी (راست روی) फा. स्त्री.–सीधी राह चलना, सदासाचार, धर्मनिष्ठा।

रास्तरौ (راست رو) फा. वि.–सीधी राह चलनेवाला, सन्मार्गी, सदाचारी, धर्मनिष्ठ।

रास्तशिआर (راست شعار) फा. अ. वि.–दे. 'रास्तमुआमलः'।

रास्ती (راستی) फा. स्त्री.–सरलता, सीधापन; सत्यता, सच्चाई; सदाचार, नेककिर्दारी।

रास्तीआश्ना (راستی آشنا) फा. वि.–धर्मनिष्ठ, सदाचारी, नेक आ'माल।

रास्तीपसंद (راستی پسند) फा. वि.–जिसे सत्यता और धर्मनिष्ठा पसंद हो।

रास्तीपसंदी (راستی پسندی) फा. स्त्री.–सत्यता और धर्मनिष्ठा को पसंद करना।

रास्तीशिआर (راستی شعار) फा. अ. वि.–जिसका आचरण सत्यता और धर्मनिष्ठा पर निर्भर हो।

रास्तीशिआरी (راستی شعاری) फा. अ. स्त्री.–सत्यता और धर्मनिष्ठा को ग्रहण करना और उसी पर चलना।

राहः (راحہ) अ. स्त्री.–हथेली, करतल।

राह (راہ) फा. स्त्री.–मार्ग, पथ, रास्ता; ढंग, तरीक़ा; युक्ति, तर्कीब, यत्न; प्रतीक्षा, इंतिज़ार; आशा, आस, उम्मीद।

राह (راح) अ. स्त्री.–हर्ष, ख़ुशी; मदिरा, शराब।

राहख़र्च (راہ خرچ) फा. पुं.–रास्ते में होनेवाला ख़र्च, मार्ग-व्यय।

राहगीर (راہگیر) फा. वि.–बटोही, पथिक, मुसाफ़िर।

राहगुज़र (راہگزر) फा. स्त्री.–मार्ग, पथ, रास्ता।

राहज़न (راہزن) फा. वि.–बाटमार, रास्ते में लूटनेवाला, पथघ्न।

राहज़नी (راہزنی) फा. स्त्री.–बाटमारी, रास्ते में लूटना, यात्री का धन छीनना।

राहत (راحت) अ. स्त्री.–सुख, चैन, आराम; सुगमता, आसानी; शान्ति, सुकून; रोग या पीड़ा में कमी।

राहतअंजाम (راحت انجام) अ. फा. वि.–जिस कार्य का परिणाम शान्ति अथवा सुख हो।

राहतअफ़्ज़ा (راحت افزا) अ. फा. वि.–शान्ति और सुख बढ़ानेवाला।

राहतकदः (راحت کدہ) अ. फा. पुं.–राहत और सुख का घर, जहाँ सुख और शान्ति प्राप्त हो; शयनागार, ख़्वाबगाह।

राहतगाह (راحت گاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'राहतकदः'।

राहततलब (راحتطلب) अ. वि.–जो सुख चाहता हो, जो काम आदि करने से घबराता हो, आरामतलब, कामचोर।

राहततलबी (راحتطلبی) अ. स्त्री.–सुख चाहना, काम-धंधा न करना, केवल बैठे-बैठे खाने की इच्छा।

राहतपरस्त (راحتپرست) अ. फा. वि.–पलंग पर पड़ा रहनेवाला, काम से जी चुरानेवाला, निकम्मा।

रास्तपरस्ती (راحتپرستی) अ. फा. स्त्री.–काम से जी चुराना, निकम्मापन, कामचोरी।

राहतफ़ज़ा (راحتفزا) अ. फा. वि.–'राहतअफ़्ज़ा' का लघु., दे. 'राहतअफ़्ज़ा'।

राहतरसाँ (راحترساں) अ. फा. वि.–सुख देनेवाला, आराम पहुँचानेवाला, सुखदायी।

राहतरसानी (راحترسانی) अ. फा. स्त्री.–सुख देना, आराम पहुँचाना।

राहती (راحتی) अ. स्त्री.–वह चौकी जो बीमार के पलँग के पास शौचादि के लिए लगा देते हैं।

राहते जाँ (راحت جاں) अ. फा. स्त्री.–प्राणों का सुख, प्राणाधार, विशेषतः लड़के के लिए और साहित्य में प्रेमिका के लिए आता है।

राहते दिल (راحت دل) अ. फा. स्त्री.–दे. 'राहते जाँ'।

राहते रूह (راحت روح) अ. स्त्री.–प्राणों का सुख, आत्मा का चैन, अर्थात् नायिका, प्रेयसी।

राहदार (راھدار) फा. वि.–प्रहरी, चौकीदार; धारीदार कपड़ा।

राहदारी (راھداری) फा. स्त्री.–पारपत्र, पासपोर्ट; चौकीदारी।

राहनशीं (راہنشیں) फा. वि.–रास्ते में बैठा हुआ, पथस्थ, मार्गस्थ।

राहनवर्द (راہنورد) फा. वि.–राहगीर, पथिक, मुसाफ़िर।

राहनवर्दी (راہنوردی) फा. स्त्री.–राहगीरी, राह चलना।

राहनुमा (راہنما) फा. वि.–पथ-प्रदर्शक, मार्ग-दर्शक, रास्ता बतानेवाला; नायक, नेता, लीडर।

राहनुमाई (راہنمائی) फा. स्त्री.–पथ-प्रदर्शन, रास्ता बताना; नेतृत्व, नेतापन, लीडरी।

राहपैमा (راہ پیما) फा. वि.–रास्ता नापनेवाला, राह चलनेवाला, पथिक, यात्री।

राहपैमाई (راہپیمائی) फा. स्त्री.–रास्ता नापना अर्थात् चलना, यात्रा, सफ़र।

राहबर (راہبر) फा. वि.–दे. 'राहनुमा'।

राहबरी (راہبری) फा. स्त्री.–दे. 'राहनुमाई'।

राहरवी (راہروی) फा. स्त्री.–दे. 'राहनवर्दी'।

राहरौ (راہرو) फा. वि.–दे. 'राहनवर्दी'।

राहवार (راھوار) फा. पुं.–अश्व, घोड़ा; क़दम चाल चलनेवाला घोड़ा।

राहवारी (راھواری) फा. स्त्री.–घोड़े की कदम चाल।

राहिन (راھن) अ. वि.–किसी के पास अपनी चीज़ गिरौ रखनेवाला, बंधककर्ता, आधायक।

राहिबः (راھبہ) अ. स्त्री.–वह ईसाई स्त्री जो सांसारिक वासनाओं को छोड़ चुकी हो।

राहिब (راھب) अ. पुं.–वह ईसाई पुरुष जो सांसारिक सुखों से निवृत्त हो चुका हो।

राहिम (راحم) अ. वि.–दया करनेवाला, दयालु।

राहिलः (راحلہ) अ. पुं.–सवारी का जानवर, वाहन।

राहिल (راحل) अ. वि.–पैदल चलनेवाला, पदातिग, पदचर।

राही (راھی) फा. वि.–पथिक, बटोही, राहगीर, मुसाफ़िर।

राहे जहन्नम (راہ جہنم) फा. अ. पुं.–नरक का मार्ग, कदाचार, दुराचार, बदचलनी।

राहे नजात (راہ نجات) फा. अ. पुं.–मुक्तिपथ, मोक्षमार्ग, बख़्शिश का ज़रिया, मुक्ति-साधन।

राहे बुरीदः (راہ بریدہ) फा. पुं.–वह मार्ग जिस पर चलना बंद हो, जिस पर लूटमार का भय हो।

राहे रास्त (راہ راست) फा. पुं.–सीधा रास्ता; धर्म का मार्ग; सत्य का मार्ग।

राहे सख़्त (راہ سخت) फा. पुं.–कठिन और दुष्कर मार्ग; वह रास्ता जिस पर चलना कठिन हो अर्थात् धर्म का मार्ग; वह रास्ता जिस पर जान जोखिम या लुटने का डर हो।

राहोरब्त (راہوربط) फा. अ. पुं.–मेल-जोल, मेल-मिलाप, प्रेम-व्यवहार।

राहोरविश (راہوروش) फा. स्त्री.–आचार-व्यवहार, चाल-ढाल, रंग-ढंग।

राहोरस्म (راہورسم) फा. अ. स्त्री.–दे. 'राहोरब्त'।

रि

रिंद (رند) फा. पुं.–मद्यप, शराबी; रसिया, रँगीला; निश्चिन्त, बेफ़िक्रा; लंपट, औबाश; मस्त, उन्मत्त; धार्मिक बंधनों से मुक्त।

रिंदतब्अ (رندطبع) फा. अ. वि.–जो बहुत ही बेफ़िक्र, ख़ुशमिज़ाज और मनमौजी हो।

रिंदपेशः (رندپیشہ) फा. वि.–बहुत अधिक शराबी, शराबी, मद्यप, रसाशी।

रिंदमज़्हब (رندمذھب) फा. अ. वि.–दे. 'रिंदपेशः'।

रिंदमश्रब (رندمشرب) फा. अ. वि.–दे. 'रिंदपेशः'।

रिंदशिआर (رندشعار) फा. अ. वि.–दे. 'रिंदपेशः'।

रिंदशेवः (رندشیوہ) फा. वि.–दे. 'रिंदपेशः'।

रिंदानः (رندانہ) फा. वि.–रिंदों-जैसा, मतवालों-जैसा, आज़ादों-जैसा।

रिंदी (رندی) फा. स्त्री.–शराबीपन; लंपटता; रँगीलापन; मनमौजीपन; मस्ती।

रिंदे ख़ुशऔक़ात (رند خوش اوقات) फा. अ. पुं.–वह शराबी जिसका अधिक समय पीने-पिलाने में गुज़रे।

रिंदे पार्सा (رند پارسا) फा. पुं.–वह शराबी जो रिंद होने के साथ-साथ संयमी और निग्रही हो।

रिंदे बलानोश (رند بلانوش) फा. पुं.–बहुत अधिक और हर प्रकार की शराब पीनेवाला।

रिंदे बासफ़ा (رند باصفا) फा. अ. पुं.–वह शराबी जो बहुत ही सदाचारी और स्वच्छहृदय हो।

रिंदे लाउबाली (رند لاأُبالی) फा. अ. पुं.–वह शराबी जो बहुत ही बेफ़िक्रा और मनमौजी हो।

रिंदे शाहिदबाज़ (رند شاهدباز) फा. अ. पुं.–वह शराबी जो अच्छी स्त्रियों का भक्त भी हो।

रिंदे सालेह (رند صالح) फा. अ. पुं.–दे. 'रिंदे पार्सा'।

रिआयत (رعایت) अ. स्त्री.–व्यवहार में कोमलता; मूल्य आदि में कमी; विचार, ध्यान, ख़याल।

रिआयती (رعائتی) अ. वि.–रिआयतवाला, रिआयती दामोंवाला।

रिआयते बेजा (رعایت بےجا) अ. फा. स्त्री.–ग़लत रिआयत, ऐसी रिआयत जो उचित न हो।

रिआयते मा'नवी (رعایت معنوی) अ. स्त्री.–वह अर्थालंकार जिसमें किसी शे'र आदि में किसी एक अर्थ से सम्बन्धित और भी समानार्थक शब्द लाये जायँ।

रियायते लफ़्ज़ी (رعایت لفظی) अ. स्त्री.–वह शब्दालंकार जिसमें किसी शे'र आदि में एक शब्द के अनुकूल और भी शब्द लाये जायँ, जैसे—नदी के साथ, नाव, कर्णधार, पतवार आदि के शब्द।

रिक़ [**रुक़**] (رق) अ. स्त्री.–दासता, परिचर्या, सेवा ग़ुलामी, ख़िदमत।

रिक़ाअ (رقاع) अ. पुं.–रुक़्अः (रुक़्क़ः) का बहु., 'चिट्ठियाँ।

रिकाज़ (رکاز) अ. पुं.–दफ़ीना, भूगर्भित धन, भूनिहित धन-संपत्ति।

रिक़ाब (رقاب) अ. पुं.–'रक़बः' का बहु.; गले, गरदनें; दासगण, लौंडी ग़ुलाम।

रिकाब (رکاب) अ. स्त्री.–घोड़े की काठी का पायदान जिसमें पाँव रखकर चढ़ते हैं; सवारी के ऊँट।

रिकाब (رکاب) फा. स्त्री.–नौका, नाव, किश्ती; आठ पहलू का प्याला।

रिकाबदार (رکابدار) फा. वि.–घोड़े पर सवार करानेवाला नौकर; खाना उतारनेवाला, खानसामाँ; मिठाई और हलवे बनानेवाला।

रिकाबी (رکابی) फा. स्त्री.–प्लेट, तश्तरी, रकावी।

रिकेब (رکیب) फा. स्त्री.–दे. 'रिकाव'।

रिक़्क़त (رقت) अ. स्त्री.–आर्द्रता, गीलापन; नम्रता, नर्मी; रोदन, रोना।

रिक़्क़ते क़ल्ब (رقت قلب) अ. स्त्री.–हृदय की आर्द्रता, चित्त की कोमलता, दयाभाव, दिल की नर्मी।

रिक़्क़ते मनी (رقت منی) अ. स्त्री.–वीर्य का पतलापन जो किसी विकार के कारण होता है।

रिक्वः (رکوہ) अ. पुं.–छागल, वहुत छोटी मशक।

रिख़्वः (رخوہ) अ. पुं.–ढीलापन, शिथिलता, रिख़्वत; एक दर्द।

रिख़्व (رخو) अ. पुं.–ढीला, शिथिल।

रिख़्वत (رخوت) अ. स्त्री.–ढीलापन, शिथिलता।

रिग़्वः (رغوہ) अ. पुं.–झाग, फेन, कफ।

रिग़्व (رغو) अ. वि.–झाग, फेन।

रिज़ा (رضا) अ. स्त्री.–स्वीकृति, मंजूरी; आज्ञा, इजाज़त; प्रसन्नता, खुशनूदी; इमाम अली मूसा रिज़ा।

रिज़ाअ (رضاع) अ. स्त्री.–वालक के दूध पीने की अवस्था।

रिज़ाई (رضاعی) अ. वि.–जो किसी दूसरी स्त्री के दूध पीने में शरीक हो, जैसे—'रिज़ाई भाई' या 'रिज़ाई वहन'।

रिज़ाकार (رضاکار) अ. फा. पुं.–स्वयंसेवक, स्वेच्छासेवक, बिना वेतन के किसी कार्य-विशेष में सेवाभाव से भाग लेनेवाला।

रिज़ाकारानः (رضاکارانہ) अ. फा. वि.–स्वयंसेवकों-जैसा, बिना वेतन के कार्यसिद्धि में सहायता।

रिज़ामंद (رضامند) अ. फा. वि.–अंगीकृत, राज़ी; सहमत, हम ख़याल।

रिज़ामंदी (رضامندی) अ. फा. स्त्री.–अंगीकार, क़बूलियत; सहमति, आज्ञा।

रिजाल (رجال) अ. पुं.–'रजुल' का बहु., मनुष्य-समूह, बहुत-से आदमी।

रिजालुलग़ैब (رجال الغیب) अ. पुं.–ग़ैब के आदमी, देवता, फ़िरिश्ते; अलौकिक शक्तियाँ।

रिजाले मईयत (رجال معیت) अ. पुं.–पर्सनल स्टाफ़।

रिज़्क़ (رزق) अ. पुं.–अन्न, ग़िज़ा; जीविका, रोज़ी।

रिज़्मः (رزمہ) अ. स्त्री.–अलगनी, कपड़े टाँगने की रस्सी।

रिज्ल (رجل) अ. पुं.–पाँव, पाद, पद, चरण, पैर।

रिज्लैन (رجلین) अ. पुं.–दोनों पाँव, उभय पद।

रिज़्वाँ (رضواں) अ. पुं.–'रिज़्वान' का लघु., दे. 'रिज़्वान'।

रिज़्वान् (رضوان) अ. पुं.–जन्नत का दारोग़ा, स्वर्गाध्यक्ष।

रिज़्वी (رضوی) अ. वि.–इमाम 'अली मूसा रिज़ा' का अनुयायी या उनका वंशज।

रिज्स (رجس) अ. पुं.–अपवित्रता, अशुद्धता, अशौच, गंदगी, नापाकी।

रित्ल (رطل) अ. पुं.–दे. 'रत्ल', उर्दू में 'रत्ल' ही बोलते हैं, शुद्ध दोनों हैं।

रिदा (ردا) अ. स्त्री.–ओढ़ने की चादर, प्रच्छादन।

रिदाए कुह्नः (ردائے کہنہ) अ. फा. स्त्री.–फटी पुरानी चादर, गूदड़।

रिदापोश (رداپوش) अ. वि.–चादर ओढ़नेवाला।

रिफ़ाक़ (رفاق) अ. पुं.–'रफ़ीक़' का बहु.; मित्रगण, दोस्त लोग; सहचरगण, साथी लोग।

रिफ़ादः (رفادہ) अ. पुं.–घाव पर बाँधने की पट्टी।

रिफ़ाह (رفاہ) अ. स्त्री.–'रफ़्ह' या 'रिफ़्ह' का बहु., हित, भलाइयाँ; सुख, आराम।

रिफ़ाहे आम (رفاہ عام) अ. स्त्री.–लोकहित, जनहित, जनता की भलाई और सुख।

रिफ़ाहे आम्मः (رفاہ عامہ) अ. स्त्री.–दे. 'रिफ़ाहे आम'।

रिफ़ाहे ख़लाइक़ (رفاہ خلائق) अ. स्त्री.–दे. 'रिफ़ाहे आम'।

रिफ़ाहे ख़ल्क़ (رفاہ خلق) अ. स्त्री.–दे. 'रिफ़ाहे आम'।

रिफ़्अत (رفعت) अ. स्त्री.–उच्चता, उत्तुंगता, बलंदी; उन्नति, तरक़्क़ी।

रिफ़्क़ (رفق) अ. स्त्री.–नम्रता, मृदुलता, कोमलता, नर्मी।

रिफ़्ह (رفہ) अ. पुं.–हित, भलाई; सुख, आराम, दे. 'रफ़्ह', दोनों शुद्ध हैं।

रिबा (ربوا) अ. पुं.–ब्याज, कुसीद, सूद।

रिब्अ' (ربع) अ. पुं.–चौथे दिन आनेवाला ज्वर, चौथिया।

रिब्तः (ربطہ) अ. पुं.–नेक्टाई।

रिब्ह (ربح) अ. पुं.–तिजारती सूद या तिजारती लाभ।

रिमायः (رمایہ) अ. पुं.–धनुर्विद्या, तीरअंदाज़ी; तीर चलाना, वाण मारना।

रिमाल (رمال) अ. पुं.–'रम्ल' का बहु., रेत के ज़र्रे, बालू के कण।

रिमाह (رماح) अ. पुं.–'रुम्ह' का बहु., बरछे, शक्तियाँ, नैज़े।

रियः (ریہ) अ. पुं.–फेफड़ा, फुप्फुस, शुश।

रिया (ریا) अ. स्त्री.–पाखंड, आडंबर, दिखावा, नुमाइश।

रियाई (ریائی) अ. फा. स्त्री.–नुमाइशी, दिखावे का, पाखंडवाला।

रियाकार (ریاکار) अ. फा. वि.–पाखंडी, आडंबरी, धर्मध्वजी, आर्यरूप; छली, वंचक, ठग।

रियाकारी (ریاکاری) अ. फा. स्त्री.–पाखंड, ढोंग, धर्मध्वजता।

रियाज़ (ریاض) अ. पुं.–'रौज़ः' का बहु., बहुत से बाग़; कष्ट, परिश्रम, मेहनत; अभ्यास, मश्क; तपस्या, इबादत।

रियाज़त (ریاضت) अ. स्त्री.–परिश्रम, उद्यम, प्रयास, मेहनत; व्यायाम, वरज़िश, कस्रत; तपस्या, जप-तप, इबादत; व्रत आदि के द्वारा इंद्रियों का दमन, नफ़्सकुशी; अभ्यास, मश्क़।

रियाज़तकश (ریاضت کش) अ. फा. वि.–जप, तप और व्रत आदि के द्वारा इंद्रिय-निग्रह करनेवाला; कठोर तपस्या करनेवाला।

रियाज़तकशी (ریاضت کشی) अ. फा. स्त्री.–जप-तप और व्रत आदि; कठोर तपस्या।

रियाज़तगाह (ریاضت گاہ) अ. फा. स्त्री.–तपोवन, जप-तप करने का स्थान।

रियाज़ती (ریاضتی) अ. वि.–कसरती, वरज़िशी; संयमी, जप-तप करनेवाला।

रियाज़ते शाक़्क़ः (ریاضت شاقہ) अ. स्त्री.–बहुत कड़ा परिश्रम; बहुत बड़ी तपस्या।

रियाज़ी (ریاضی) अ. स्त्री.–गणित, बीजगणित, गणित विद्या, इल्मुल हिसाब, मैथमैटिक्स।

रियाज़ीदाँ (ریاضی داں) अ. फा. वि.–बीजगणित जाननेवाला, गणितज्ञ।

रियाज़ीदानी (ریاضی دانی) अ. फा. स्त्री.–गणित विद्या जानना, हिसाब जानना।

रियाल (ریال) अ. पुं.–एक सिक्का।

रियासत (ریاست) अ. स्त्री.–अध्यक्षता, स्वामित्व, सरदारी; सत्ता, शासन, हुकूमत; बड़ी ज़मींदारी, जागीरदारी; जागीर, इलाक़ा।

रियाह (ریاح) अ. पुं.–'रीह' का बहु., हवाएँ; अपान वायु, अधोवायु, गोज़।

रियाही (ریاحی) अ. वि.–रियाह अर्थात् वायु-सम्बन्धी; वात के विकार से उत्पन्न रोग आदि।

रिवाक़ (رواق) अ. पुं.–मकान के ऊपर बना हुआ मकान, अट्टालिका; गैलरी, दे. 'रवाक़' और 'रुवाक़'।

रिवाज (رواج) अ. पुं.–प्रथा, रूढ़ि, परंपरा, चलन; दे. 'रवाज', दोनों शुद्ध हैं।

रिवायत (روایت) अ. स्त्री.–किसी के मुँह से सुनी हुई बात ज्यों की त्यों किसी से कहना; इस्लामी परिभाषा में हज़्रत पैग़म्बर साहब के मुख से सुनी हुई बात दूसरे को उन्हीं के शब्दों में सुनाना, हदीस बयान करना।

रिवायतन (روایتاً) अ. वि.–किसी दूसरे से सुनने के तौर पर।

रिवायात (روایات) अ. स्त्री.–'रिवायत' का बहु., रिवायतें।

रिवायाती (روایاتی) अ. वि.–रिवायात सम्बन्धी, दूसरों से सुने हुए।

रिशा (رشا) अ. स्त्री.–छब्बीसवाँ नक्षत्र, उत्तरा भाद्रपद।

रिश्तः (رشتہ) फा. पुं.–काता हुआ; डोरा, तागा; सम्बन्ध, नाता, क़राबत; नारू रोग, वह कीड़ा जो डोरे की तरह विशेषतः पाँव से निकलता है।

रिश्तःदार (رشتہدار) फा. पुं.–सम्बन्धी, स्वजन, नातेदार, वंशज, परिजन।

रिश्तःदारी (رشتہداری) फा. स्त्री.–अज़ीज़दारी, नातेदारी, स्वजनता, सजातीयता।

रिश्तःबपा (رشتہبپا) फा. वि.–दे. 'रिश्तःबरपा'।

रिश्तःबरपा (رشتہبرپا) फा. वि.–वह पक्षी जिसके पाँव में डोरा बँधा हो और उड़ न सकता हो।

रिश्तए आवाज़ (رشتۂ آواز) फा. पुं.–आवाज़ का डोरा।

रिश्तए उम्र (رشتۂ عمر) अ. पुं.–सालगिरह की गाँठ जो डोरे में दी जाती है।

रिश्तए ख़ूँ (رشتۂ خوں) अ. फा. पुं.–ख़ून का सिलसिला रक्त-सम्बन्ध, एक वंश या ख़ानदान का होना।

रिश्तए जाँ (رشتہ جاں) फा. पुं.–प्राणसूत्र, जीवन-सूत्र; श्वासा, साँस।

रिश्तए पेचाँ (رشتۂ پیچاں) फा. पुं.–बल खानेवाला साँप।

रिश्तए हल्वा (رشتۂ حلوا) फा. अ. पुं.–सिवैयाँ।

रिश्तनी (رشتنی) फा. वि.–कातने योग्य, जो काता जा सके।

रिश्वत (رشوت) अ. स्त्री.–उत्कोच, उपदान, कौशलिक, अभ्युपायन, उपदा, घूस।

रिश्वतख़ोर (رشوتخور) अ. फा. वि.–रिश्वत खानेवाला, उत्कोचभुक्, उत्कोचग्राही।

रिश्वतख़ोरी (رشوتخوری) अ. फा. स्त्री.–रिश्वत खाना, उत्कोच लेना, घूसख़ोरी।

रिश्वतदिहिंदः (رشوتدہندہ) अ. फा. वि.–रिश्वत देनेवाला, उत्कोचदाता।

रिश्वतदिही (رشوتدہی) अ. फा. स्त्री.–रिश्वत देना, उत्कोच दान।

रिश्वतसितानी (رشوتستانی) अ.फा. स्त्री.–रिशवत लेना, उत्कोच ग्रहण।

रिसालः (رسالہ) अ. पुं.–वह पत्रिका जो पुस्तक के रूप में किसी नियत समय पर प्रकाशित हो; किसी विषय पर छोटी-सी पुस्तक; सैनिकों की टुकड़ी, सवारों का दस्ता।

रिसालःदार (رسالہدار) अ. फा. पुं.–सवारों के एक रिसाले का नायक।

रिसालःदारी (رسالہداری) अ. फा. स्त्री.–सवारों के एक रिसाले की अध्यक्षता।

रिसालत (رسالت) अ. स्त्री.–संदेश, सँदेसा, ख़बर; दूतकर्म, सिफ़ारत; ईशदूतता, पैग़ंबरी।

रिसालत पनाह (رسالت پناہ) अ. फा. वि.–रसूल, पैग़ंबर, ईश दूत।

रिसालतमआब (رسالتمعاب) अ. वि.–ईशदूत, पैग़ंबर।

रिहान (رہان) अ. पुं.–गिरौ करना, बंधक रखना; घुड़दौड़ में शर्त लगाना; 'रह्न' का बहु., शर्तें।

रिहाल (رحال) अ. पुं.–'रह्ल' का बहु., कूच, प्रस्थान।

रिही (رہی) फा. पुं.–दास, ग़ुलाम, दे. 'रही', दोनों शुद्ध हैं।

रिह्मः (رہمہ) अ. पुं.–हलकी वर्षा, फुहार।

रिह्ल (رحل) अ. स्त्री.–किताब रखने का विशेष प्रकार का लकड़ी का यंत्र।

री

रीक़ (ریق) अ. पुं.–थूक, मुखस्राव।

रीख़ (ریخ) फा. स्त्री.–पक्षियों की बीट; पतला पाख़ानः, दस्त।

रीचार (ریچار) फा. पुं.–अचार; मुरब्बा, जाम।

रीचाल (ریچال) फा. पुं.–दे. 'रीचार', दो. शु. हैं।

रीबः (ریبہ) अ. पुं.–संदेह में डालनेवाली वस्तु; आरोप, लांछन, तुह्मत।

रीम (ریم) फा. स्त्री.–घाव में से निकला हुआ मवाद, पीप; धातुओं का मैल।

रीमगीं (ریمگیں) फा. वि.–पीप से भरा हुआ।

रीसिया (ریسیا) अ. स्त्री.–एक विद्या जिसके द्वारा मनुष्य जहाँ भी चाहे क्षण भर में पहुँच सकता है।

रीमियादाँ (ریسیاداں) अ. फा. वि.–रीमिया की विद्या जाननेवाला।

रीमे आहन (ریم آہن) फा. पुं.–लोहे का मैल, मंडूर, ख़ुब्सुल हदीद।

रीवाज (ریواج) फा. पुं.–दे. 'रीवास'

रीवास (ریواس) फा. पुं.–एक खटमिट्ठा मेवा।

रीश (ریش) फा. स्त्री.—आस्यलोम, श्मश्रु, डाढ़ी।

रीशख़ंद (ریش خند) फा. पुं.—ठठोल, मस्ख़रापन।

रीशगाव (ریش گاؤ) फा. वि.—मूर्ख, मूढ़, अहमक़, गाव दी।

रीशचग़ज़ (ریش چغز) फा. पुं.—वह फोड़ा जो आपरेशन से अच्छा न हो।

रीशपुरबाद (ریش پرباد) फा. पुं.—अहंकार, अभिमान, घमंड, ग़ुरूर।

रीशबाबा (ریش بابا) फा. पुं.—अंगूर की एक क़िस्म।

रीशमाल (ریش مال) फा. वि.—वह व्यक्ति जो अपनी स्त्री की कमाई खाता हो, भार्याट, भगभक्षी, दैयूस।

रीशमाली (ریش مالی) फा. स्त्री.—दैयूसी, अपनी स्त्री को दूसरों के पास भेजकर उसकी कमाई खाना।

रीशे क़ाज़ी (ریش قاضی) फा. अ. स्त्री.—शराब छानने की छन्नी।

रीशे मुर्सल (ریش مرسل) फा. अ. स्त्री.—लंबी डाढ़ी।

रीह (ریح) अ. स्त्री.—वायु, हवा; गंध, बास; अपानवायु, अधोवायु, गोज़।

रीही (ریحی) अ. वि.—वात के कोप से होनेवाला रोग, बादी।

रीहुल बवासीर (ریح البواسیر) अ. स्त्री.—बादी बवासीर।

रु

रुअसा (رؤسا) अ. पुं.—'रईस' का बहु., रईस लोग।

रुआत (رعاۃ) अ. पुं.—'राई' का बहु., चरवाहे।

रुआफ़ (رعاف) अ. स्त्री.—नक्सीर, नाक से ख़ून आने की बीमारी।

रुऊनत (رعونت) अ. स्त्री.—अहंकार, अभिमान, घमंड; उद्दंडता, सरकशी।

रुऊनतपसंद (رعونت پسند) अ. फा. वि.—अहंकारी, अभिमानी, घमंडी।

रुऊस (رؤس) अ. पुं.—'रास' का बहु., सर।

रुक़बा (رقبا) अ. पुं.—'रक़ीब' का बहु., रक़ीब लोग, प्रतिद्वंद्वी जन।

रुक़ाद (رقاد) अ. स्त्री.—निद्रा, नींद।

रुकूअ (رکوع) अ. पुं.—नमाज़ में झुकने की अवस्था।

रुक़ूद (رقود) अ. पुं.—सोना, नींद लेना।

रुकूब (رکوب) अ. पुं.—सवार होना, चढ़ना।

रुक़्अः (رقعہ) अ. पुं.—पर्चा, काग़ज़ का टुकड़ा; चिट्ठी, पत्री, ख़त।

रुक़्क़ा (رقعہ) अ. पुं.—दे. 'रुक़्अः' परंतु उर्दू में 'रुक़्क़ा', ही बोलते हैं।

रुक्न (رکن) अ. पुं.—स्तंभ, खंभा, स्थूण; सदस्य, मेम्बर।

रुक्नाबाद (رکن آباد) फा. पुं.—ईरान में शीराज़ के पास बहनेवाली नदी।

रुक्ने आ'ज़म (رکن اعظم) अ. पुं.—सबसे बड़ा खंभा जिस पर इमारत का अधिक बोझ रहता है; ख़ास सदस्य।

रुक्ने मज्लिस (رکن مجلس) अ. पुं.—किसी सभा या संस्था का सदस्य।

रुक्ने रकीन (رکن رکین) अ. पुं.—मुख्य सदस्य, ख़ास मेम्बर।

रुक्ने सल्तनत (رکن سلطنت) अ. पुं.—राष्ट्र का प्रमुख अधिकारी।

रुक्ने हुकूमत (رکن حکومت) अ. पुं.—दे. 'रुक्ने सल्तनत'।

रुक्बः (رکبہ) अ. पुं.—जानु, घुटना।

रुख़ (رخ) फा. पुं.—कपोल, गाल; आकृति, शक्ल; मुखाकृति, चेहरा; पक्ष, तरफ़; पार्श्व, पहलू; शत्रंज का एक मोहरा।

रुख़ाम (رخام) अ. पुं.—संगे मरमर, स्फटिक, श्वेत प्रस्तर।

रुख़्शाँ (رخشاں) फा. वि.—दीप्त, प्रकाशमान, रौशन; चमकदार, उज्ज्वल।

रुख़्शंदः (رخشندہ) फा. वि.—चमकनेवाला, ज्वलंत; प्रकाशित, रौशन।

रुख़्शंदगी (رخشندگی) फा. स्त्री.—दीप्ति, प्रकाश, नूर; चमक-दमक, उज्ज्वलता।

रुख़्सत (رخصت) अ. स्त्री.—विदा, विदाई; आज्ञा, इजाज़त, अवकाश, फ़ुर्सत; विश्रामावकाश, ता'तील; दुल्हन का दूल्हा के घर जाना।

रुख़्सततलब (رخصت طلب) अ. वि.—जाने की आज्ञा माँगनेवाला।

रुख़्सतानः (رخصتانہ) अ. फा. पुं.—रुख़्सत के समय दिया जानेवाला हक़्क़, दस्तूर या पुरस्कार आदि।

रुख़्सती (رخصتی) अ. स्त्री.—दुल्हन का दूल्हा के घर जाने का संस्कार, बिदाई।

रुख़्सारः (رخسارہ) फा. पुं.—कपोल, गंडस्थल, गाल, आरिज़।

रुख़्सार (رخسار) फा. पुं.—कपोल, गाल।

रुजूअ (رجوع) अ. स्त्री.—आकर्षण, प्रवृत्ति, रुजूआत; आकृष्ट, प्रवृत्त, राजे'।

रुजूअइलल्लाह (رجوع الی اللہ) अ. स्त्री.—ईश्वर की ओर प्रवृत्ति अर्थात् मन का लगाव, जप-तप आदि की ओर चित्त का आकर्षण।

रुजूआत (رجوعات) अ. स्त्री.—'रुजूअ' का बहु., परंतु एकवचन के अर्थ में व्यवहृत है, दे. 'रुजूअ'।

रुजूए क़ल्ब (رجوع قلب) अ. स्त्री.—हृदय का किसी ओर आकर्षण।

रुजूए ख़ल्क़ (رجوع خلق) अ.स्त्री.–जनता का किसी की ओर आकर्षण, जैसे–किसी साधु की ओर या किसी वैद्य की ओर।

रुजूम (رجوم) अ. पुं.–पथराव करना, किसी को पत्थर मारना।

रुजूलत (رجولت) अ. स्त्री.–पुंस्त्व, पौरुष, मर्दुमी, मर्दपन, कामशक्ति।

रुजूलियत (رجولیت) अ. स्त्री.–दे. 'रुजूलत'।

रुज्हान (رجحان) अ.पुं.–प्रवृत्ति, रुजूआत; रुचि, रग़्बत, आकर्षण, झुकाव; हृदय का किसी ओर विशेष रूप से आकर्षण।

रुतब (رطب) अ.पुं.–तर छुहारा, पिंड खजूर।

रुतूबत (رطوبت) अ. स्त्री.–तरी, आर्द्रता; शरीर में धातुओं की तरी, लसीका।

रुत्बः (رتبہ) अ.पुं.–पद, दर्जा; पदवी, उहदा; उपाधि, ख़िताब; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; महत्ता, बड़ाई।

रुत्बःदाँ (رتبہدان) अ. फा. वि.–किसी के बड़प्पन को ठीक-ठीक समझनेवाला।

रुत्बःशनास (رتبہشناس) अ. फा. वि.–किसी के पद और बड़प्पन को पहचानने और उसकी क़द्र करनेवाला।

रुत्बए बलंद (رتبۂ بلند) अ. फा. पुं.–बड़ा रुत्बा, बड़ी पदवी, बड़ा दरजा।

रुफ़क़ा (رفقا) अ. पुं.–'रफ़ीक़' का बहु., रफ़ीक़ लोग, साथी लोग।

रुफ़ात (رفات) अ. वि.–भग्न, खंडित, टूटा हुआ; टुकड़े-टुकड़े, चूर-चूर।

रुफ़्क़ः (رفقہ) अ. पुं.–साथ-साथ यात्रा करनेवाला, साथियों की टोली।

रुफ़्तः (رفتہ) फा. वि.–झाड़ा हुआ, झाड़ू से साफ़ किया हुआ।

रुफ़्त (رفت) फा. स्त्री.–झाड़-पोंछ, सफ़ाई।

रुफ़्तनी (رفتنی) फा. वि.–झाड़ने के क़ाबिल।

रुब (ब्ब) (رب) अ. पुं.–फलों का पकाया हुआ रस जो गाढ़ा हो गया हो।

रुबा (ربا) फा. प्रत्य.–ले भागनेवाला, उड़ा ले जानेवाला, जैसे—'दिल रुबा' दिल उड़ा ले जानेवाला अर्थात् माशूक़।

रुबाइंदः (ربایندہ) फा. वि.–उड़ा ले जानेवाला, उचक ले जानेवाला, उचक्का।

रुबाई (رباعی) अ. स्त्री.–उर्दू और फ़ार्सी का एक छंद-विशेष जिसका मूल वज़्न १ तगण १ यगण एक सगण और एक मगण होता है (SSI, ISS, IIS, SSS), इसके पहले दूसरे और चौथे पद में क़ाफ़िया होता है, कभी-कभी चारों ही सानुप्रास होते हैं, परंतु अच्छा यही है कि चौथा सानुप्रास न हो।

रुबाईदः (ربائیدہ) फा. वि.–उचक ले जाया हुआ।

रुबाईयात (رباعیات) अ. स्त्री.–'रुबाई' का वहु., रुबाइयाँ।

रुबूदः (ربودہ) फा. वि.–ले जाया हुआ, उचका हुआ।

रुबूदगी (ربودگی) फा. स्त्री.–उचक्कापन।

रुबूबीयत (ربوبیت) अ. स्त्री.–ईश्वरत्व, परवर्दगारी।

रुमूज़ (رموز) अ. पुं.–'रम्ज़' का बहु., बहुत से भेद।

रुमूज़े इश्क (رموز عشق) अ. पुं.–प्रेम के भेद, प्रेम की गहराइयाँ।

रुमूज़े मम्लुकत (رموز مملکت) अ. पुं.–राजनीति के भेद, उसकी गहराइयाँ।

रुम्मान (رمان) अ. पुं.–अनार, दाडिम।

रुम्मानी (رمانی) अ. वि.–अनार-जैसे रंग का, वहुत ही सुर्ख़ रंगवाला।

रुम्ह (رمح) अ. पुं.–वरछा, भाला।

रुवाक़ (رواق) अ. पुं.–मकान के ऊपर का खंड, अट्टा; गैलरी, दे. 'रिवाक़' और 'खाक़'।

रुवात (رواة) अ. पुं.–'रावी' का बहु., रावी लोग, रिवायत करनेवाले।

रुश्द (رشد) अ. पुं.–गुरु की शिक्षा और दीक्षा, पीर की हिदायत।

रुश्दोहिदायत (رشدوہدایت) अ. स्त्री.–दीक्षा और मंत्र आदि।

रुसुग़ (رسغ) अ. पुं.–कलाई, पहुँचा।

रुसुल (رسل) अ. पुं.–'रसूल' का बहु., रसूल और नबी।

रुसूख़ (رسوخ) अ. पुं.–प्रवेश, पहुँच, रसाई, पैठ; प्रेम-व्यवहार, मेल-जोल; जानकारी, दक्षता, कुशलता, महारत।

रुसूब (رسوب) अ. पुं.–नीचे बैठी हुई गाद; पेशाब में नीचे बैठा हुआ मल आदि (क़ारूरे की शीशी में)।

रुसूम (رسوم) अ. पुं.–'रस्म' का बहु., रस्में, रूढ़ियाँ, परम्पराएँ।

रुस्ग़ः (رسغہ) अ. पुं.–पहुँचा, क़लाई।

रुस्ग़ (رسغ) अ. पुं.–दे. 'रुस्ग़ः', दोनों शुद्ध हैं।

रुस्तः (رستہ) फा. वि.–उगा हुआ, अंकुरित।

रुस्तख़ेज़ (رستخیز) फा. स्त्री.–दे. 'रस्तख़ेज़' दोनों शुद्ध हैं।

रुस्तगार (رستگار) फा. वि.–दे. शुद्ध उच्चारण 'रस्तगार'।

रुस्तगी (رستگی) फा. स्त्री.–उगाव, उपज, रोईदगी।

रुस्तनी (رستنی) फा. स्त्री.–तरकारी, शाक, (वि.) उगने योग्य, उपज के क़ाबिल।

रुस्तम (رستم) फा. पुं.–ईरान का एक प्राचीन योद्धा

और पहलवान, जिसका उल्लेख 'फ़िरदौसी' ने 'शाहनामः' में किया है; बहुत बड़ा शूर और वीर।

रुस्तमे जमाँ (رستم زماں) फा. अ. पुं.–अपने समय का सबसे बड़ा योद्धा।

रुस्ताखेज (رستاخیز) फा. स्त्री.-दे. 'रस्ताखेज़', दोनों शुद्ध हैं।

रुस्ती (رستی) फा. स्त्री.–सुख, चैन, जीविका, रोज़ी; समृद्धि, ऐश।

रुस्तोखेज (رستوخیز) फा. स्त्री.–दे. 'रस्तोख़ेज़', दोनों शुद्ध हैं।

रुस्ल (رسل) अ. पुं.–'रसूल' का बहु., पैग़ंबर लोग, दे. 'रुसुल', दोनों शुद्ध हैं।

रुस्वा (رسوا) फा. वि.–जो बहुत बदनाम हो, निंदित, गर्हित।

रुस्वाई (رسوائی) फा. स्त्री.–बदनामी, निंदा, अपयश, कुख्याति,––"यादे ऐयाम कियां तकें शिकेबाई था। हर गली कूचा मुझे कूचए रुस्वाई था।"

रुस्वाए आम (رسوائے عام) फा. अ. वि.–सारे में बदनाम, सर्वनिंदित।

रुहमा (رحما) अ. पुं.–'रहीम' का बहु., दयालु लोग।

रुहबान (رهبان) अ. पुं.–'राहिब' का बहु., वह ईसाई साधु जो सांसारिक विषय-वासनाओं का त्याग कर चुका हो।

रू

रू (رو) फा. पुं.–मुखाकृति, चेहरा; मुख, मुंह; कारण, सबब।

रूअत (روعت) अ. स्त्री.–हृदय, दिल; बुद्धि, अक़्ल।

रूए किताबी (روئے کتابی) फा. अ. पुं.–किसी क़दर लंबोतरा चेहरा।

रूएज़मीं (روئے زمیں) फा. स्त्री.–धरातल, पृथ्वी की सतह।

रूएदाद (روئداد) फा. स्त्री.–वृत्तांत, कथा; कार्यवाही, काररवाई।

रूए बंद (روئے بند) फा. पुं.–दे. 'रूबंद'।

रूए सुख़न (روئے سخن) फा. पुं.–बात का लक्ष्य, जिसे लक्ष्य करके बात की जाय; संबोधन, मुख़तिब।

रूओरिआयत (روورعایت) फा. अ. स्त्री.–मुरव्वत और लिहाज़, शील और संकोच।

रूकश (روکش) फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदा; संमुख, मुक़ाबिल; प्रतिद्वंद्वी, हरीफ़।

रूकशी (روکشی) फा. स्त्री.–लज्जा, शर्म; संमुखता, सामना; प्रतिद्वंद्विता, रक़ाबत।

रूकार (روکار) फा. स्त्री.–मकान के सामनेवाला भाग, सामने का रुख़।

रूगर्दां (روگرداں) फा. वि.–परांमुख, विमुख, मुँह फेरे हुए; अवज्ञाकारी, हुक्म उदूल।

रूगर्दानी (روگردانی) फा. स्त्री.–विमुखता, मुँह फेरना; आज्ञोल्लंघन, हुक्म उदूली।

रू दर रू (رو در رو) फा. वि.–आमने-सामने, मुँह दर मुँह।

रूदाद (روداد) फा. स्त्री.–वृत्तांत, हाल; कथा, कहानी; कार्यवाही, काररवाई।

रूदादे ग़म (روداد غم) फा. अ. स्त्री.–प्रेमव्यथा का वृत्तांत, इश्क़ की कहानी।

रूदार (رودار) फा. वि.–प्रतिष्ठित, संमानित, मुअज़्ज़ज़, पूज्य।

रूदारी (روداری) फा. स्त्री.–प्रतिष्ठा, मान्यता, इज़्ज़त।

रूनास (روناس) फा. स्त्री.–मजीठ, एक लकड़ी जो दवा में चलती और रंग के काम आती है।

रूनुमा (رونما) फा. वि.–मुँह दिखानेवाला।

रूनुमाई (رونمائی) फा. स्त्री.–मुँह दिखाई।

रूपाक (روپاک) फा. पुं.–रूमाल, मुँह पोंछने का कपड़ा।

रूपोश (روپوش) फा. वि.–जो मुँह छिपाये हो; जो भागा हुआ हो, मफ़रूर।

रूपोशी (روپوشی) आ. स्त्री.–मुँह छिपाना; फ़िरार होना, मफ़रूरी।

रूबंद (روبند) फा. पुं.–मुँह पर डालने का कपड़ा, बुर्क़ा, मुखपट, घूँघट।

रूबआस्माँ (روبہ آسماں) आकाश की ओर मुँह किये हुए, ऊपर मुँह उठाये हुए।

रूबक़फ़ा (روبہ قفا) फा. अ. वि.–पीछे मुँह किये हुए।

रूबकार (روبہ کار) फा. वि.–काम में दिल लगायें हुए, दत्तचित्त, दे. 'रोबकार'।

रूबज़वाल (روبہ زوال) फा. अ. वि.–पतन की ओर प्रवृत्त, पतनोन्मुख।

रूबदीवार (روبہ دیوار) फा. वि.–स्तब्ध, चकित, हैरान।

रूबराह (روبراہ) फा. वि.–ठीक रस्ते पर, ठीक-ठीक।

रूबरू (روبرو) फा. वि.–संमुख, आमने-सामने; प्रत्यक्ष, मुक़ाबिल।

रूबसेहत (روبہ صحت) फा. अ. वि.–वह रोगी जो स्वास्थ्य की ओर जा रहा हो।

रूबहवा (روبہ ھوا) फा. अ. वि.–हवा के रुख़ पर।

रूम (روم) अ. पुं.–एक देश।

रूमाल (رومال) फा. पुं.–हाथ-मुँह पोंछने का जेब में रखनेवाला कपड़ा, करपट, रुमाल।

रूमी (رومی) अ. वि.–रूम का निवासी; रूम की भाषा।

रूयत (رویت) अ. स्त्री.–दर्शन, देखना।

रूयते हिलाल (رویت ہلال) अ. स्त्री.–चंद्रदर्शन, नव चंद्र-दर्शन, नया चाँद देखना।

रूया (رویا) अ. पुं.–स्वप्न, ख़्वाब; निद्रा, नींद।

रूयाए सादिक़ः (رویاے صادقہ) अ. पुं.–सच्चा ख़्वाब, वह स्वप्न जिसका फल स्वप्न में देखी हुई बात के अनुकूल हो।

रूशनास (روشناس) फा. वि.–सूरत भर पहचाननेवाला, बहुत कम परिचित; परिचित, वाक़िफ़।

रूशनासी (روشناسی) फा. स्त्री.–केवल सूरत भर पहचानना, बहुत कम परिचय।

रूसख़्तज (روسختج) फा. पुं.–जला हुआ ताँबा जो विशेषतः ख़िज़ाब में काम देता है।

रूसपी (روسپی) फा. स्त्री.–असती, पुंश्चली, भ्रष्टा, फ़ाहिशा।

रूसफ़ेद (روسفید) फा. वि.–नेकनाम, यशस्वी; शिष्टाचारी, नेक कर्दार।

रूसियाह (روسیاہ) फा. वि.–कदाचारी, पापात्मा, बदचलन; पापी, गुनाहगार।

रूसियाही (روسیاہی) फा. स्त्री.–कदाचार, बदचलनी; पापे, गुनाह।

रूस्ता (روستا) फा. पुं.–ग्राम, गाँव, देहात।

रूस्ताई (روستائی) फा. वि.–ग्राम निवासी, देहाती; कृषक, किसान; उजड्डु, अख्खड़, असभ्य, गँवार।

रूस्ताज़ादः (روستازادہ) फा. पुं.–गाँव का लड़का, देहाती लड़का।

रूह (روح) अ. स्त्री.–प्राग-वायु, जान; सत, जौहर; कई बार का खींचा हुआ अरक़; कई बार का बहुत अधिक फूलों से बनाया हुआ इत्र।

रूहअफ़ज़ा (روح افزا) अ. फा. वि.–प्राणवर्द्धक, जीवन बढ़ानेवाला।

रूहपर्वर (روح پرور) अ. फा. वि.–प्राणों को पालने और उनकी रक्षा करनेवाला।

रूहफ़र्सा (روح فرسا) अ. फा. वि.–प्राणों को छीलनेवाला, अर्थात् हृदय को अत्यंत खेद पहुँचानेवाला।

रूहानियाँ (روحانیاں) अ. फा. पुं.–देवतागण, फ़िरिश्ते।

रूहानियात (روحانیات) अ.फा.स्त्री.–अध्यात्मवाद, इलाहीयात।

रूहानी (روحانی) अ. वि.–आत्मिक, रूह सम्बन्धी; हार्दिक, दिली।

रूहानियत (روحانیت) अ. स्त्री.–आत्मवाद, अध्यात्मवाद, तसव्वुफ़।

रूही (روحی) अ. वि.–हार्दिक, दिली; आत्मिक, रूहानी।

रूहुलअमीन (روح الامین) अ. पुं.–हज़्रतजिब्रील।

रूहुलक़ुदुस (روح القدس) अ. पुं.–हज़्रत जिब्रील।

रूहुल्लाह (روح اللہ) अ. पुं.–हज़्रत ईसा।

रूहेआ'ज़म (روح اعظم) अ. पुं.–जिब्रील।

रूहे तब्ई (روح طبعی) अ. स्त्री.–प्राणवायु का वह अंश जो यकृत में रहकर खाद्य पदार्थों को पचाता और शरीर के सारे अंगों को ग़िज़ा पहुँचाता है, (यूनानी तिब)।

रूहे तूतिया (روح توتیا) अ. फा. स्त्री.–जस्ता, एक धातु।

रूहे नफ़्सानी (روح نفسانی) अ. स्त्री.–प्राणवायु का वह अंश जो मस्तिष्क में रहता और इंद्रियों का संचालन करता तथा उन्हें शक्ति प्रदान करता है (यूनानी तिब)।

रूहे नबाती (روح نباتی) अ. स्त्री.–वनस्पति के अंदर संचार करनेवाला प्राणवायु या उसकी जीवन-शक्ति।

रूहे मुअज़्ज़म (روح معظم) अ. पुं.–हज़्रत जिब्रील।

रूहे मुकर्रम (روح مکرم) अ. पुं.–हज़्रत जिब्रील।

रूहे मुजर्रद (روح مجرد) अ. पुं.–दे. 'रूहे मुत्लक़'।

रूहे मुत्लक़ (روح مطلق) अ. पुं.–ईश्वर, परमात्मा।

रूहे रवाँ (روح رواں) अ. फा. स्त्री.–प्राणवायु, वह रूह जो रगों में संचरित रहती है।

रूहे हैवानी (روح حیوانی) अ.स्त्री.–वह प्राणवायु जो शिराओं के द्वारा सारे शरीर में संचार करता है, और यकृत में जाकर अन्न पचाता और बाँटता और मस्तिष्क में जाकर इंद्रियों को शक्ति देता और सारे अंगों को जीवन प्रदान करता, उन्हें पालता और विकसित करता और उनकी शक्ति बढ़ाता है।

रे

रेग (ریگ) फा. उभ.–बालुका, रेत, बालू।

रेगज़ार (ریگزار) फा. पुं.–मरुस्थल, रेगिस्तान।

रेगदान (ریگدان) फा. पुं.–रेत रखने का पात्र जो विशेषतः बही-खाते की स्याही सुखाने के काम आता है।

रेगबूम (ریگ بوم) फा. स्त्री.–रेतेली ज़मीन जिसमें कुछ पैदा न हो; रेगिस्तान।

रेगमाल (ریگ مال) फा. पुं.–एक प्रकार का खुरदरा काग़ज़, जो लकड़ी आदि को साफ़ करने के काम आता है।

रेगमाही (ریگ ماہی) फा. स्त्री.–एक प्रकार की मछली जो रेत में पैदा होती है और दवा में चलती है, सक़न्क़ूर।

रेगशो (ریگ شو) मिट्टी साफ़ करके उससे सोना निकालनेवाला, न्यारिया।

रेगशोई (ریگ شوئی) फा. स्त्री.–मट्टी से सोना-चाँदी निकालने का काम, न्यारा।

रेगिस्तान (ریگستان) फा. पुं.–मरुस्थल, मरुभूमि, रेगिस्तानी इलाक़ा।

रेगिस्तानी (ریگستانی) फा. वि.–रेगिस्तान का निवासी; रेगिस्तान में उत्पन्न होनेवाला।

रेगे गुर्दः (ریگ گردہ) फा. स्त्री.–गुर्दे में पड़नेवाली पथरी।

रेगे मशानः (ریگ مشانہ) फा. अ. स्त्री.–मूत्राशय में पड़नेवाली पथरी।

रेगे रवाँ (ریگ رواں) फा. स्त्री.–हमेशा गतिमान रहनेवाला रेत।

रेख़्तः (ریختہ) फा. पुं.–गिरा पड़ा, बिखरा हुआ; उर्दू भाषा का पुराना नाम जो उसे एक शताब्दी पहले प्राप्त था।

रेख़्तःगर (ریختہگر) फा. वि.–धातु के बरतन ढालनेवाला।

रेख़्तःगरी (ریختہگری) फा.स्त्री.–धातु के बरतन ढालना।

रेख़्तः गो (ریختہگو) रेख़्ता की भाषा में कविता करनेवाला।

रेख़्तःगोई (ریختہگوئی) फा.स्त्री.–रेख़्ता में कविता करना।

रेख़्तःदम (ریختہدم) फा. वि.–धार उतरा हुआ, भोथरा।

रेख़्तःपा (ریختہپا) फा. वि.–शीघ्र गति, तेज़ रफ़्तार, वायुवेग।

रेख़्तःपाई (ریختہپائی) फा.स्त्री.–तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

रेख़्तःमू (ریختہمو) जिसके बाल झड़ गये हों।

रेख़्ती (ریختی) फा. स्त्री.–रेख़्ता की वह क़िस्म जिसमें स्त्रियों की भाषा में (स्त्रैण) कविता की जाती थी।

रेज़ः (ریزہ) फा. पुं.–कण, ज़र्रा; कतरन, किरच; बहुत छोटा टुकड़ा, रवा।

रेज़ःकार (ریزہکار) फा. वि.–बहुत महीन काम करनेवाला।

रेज़ःकारी (ریزہکاری) फा. स्त्री.–बहुत महीन काम बनाना।

रेज़ःख़्वाँ (ریزہخواں) फा. वि.–गानेवाला, गायक; स्वर का उतार-चढ़ाव।

रेज़ःख़्वानी (ریزہخوانی) फा. स्त्री.–गाना, नग़्मः सराई।

रेज़ःचीं (ریزہچیں) फा. वि.–गिरी पड़ी चीज़ें बीननेवाला; दस्तरख़ान की झूठन खानेवाला; विद्या आदि का लाभ प्राप्त करनेवाला।

रेज़ःचीनी (ریزہچینی) फा.स्त्री.–गिरी पड़ी चीज़ें बीनना; झूठन खाना; विद्या आदि प्राप्त करना।

रेज़ःरेज़ः (ریزہریزہ) फा. वि.–चूर-चूर, खंड-खंड, ज़र्रा-ज़र्रा।

रेज़ःसरा (ریزہسرا) फा. वि.–पक्का गाना गानेवाला।

रेज़ःसराई (ریزہسرائی) फा. स्त्री.–पक्का गाना गाना।

रेज़ः (ریز) फा. प्रत्य.–बिखेरनेवाला, जैसे–'गुलरेज़' फूल बिखेरनेवाला।

रेज़गारी (ریزگاری) फा. स्त्री.–रुपये की ख़रीज़, भरत, ख़ुर्दा।

रेज़गी (ریزگی) फा. स्त्री.–छोटा सिक्का, रेज़गारी; कण, जर्रा, छोटा टुकड़ा।

रेज़ाँ (ریزاں) फा. वि.–बिखेरता हुआ, बरसाता हुआ, डालता हुआ।

रेज़िंदः (ریزندہ) फा. वि.–बिखेरनेवाला, बरसानेवाला, गिरानेवाला।

रेज़िंदःअश्क (ریزندہاشک) फा. वि.–आँसू बहानेवाला, रोनेवाला।

रेज़िश (ریزش) फा. स्त्री.–बिखरन, फैलाव, बहाव; नज़्ले के कारण नाक बहना।

रेवंद (ریوند) फा. स्त्री.–एक दवा, रेवंदख़ताई।

रेवंदख़ताई (ریوندخطائی) फा. स्त्री.–एक जड़ जो जिगर के लिए बहुत अच्छी ओषधि है।

रेवंदचीनी (ریوندچینی) फा. स्त्री.–दे. 'रेवंदख़ताई', परंतु रेवंदचीनी के नाम से एक दूसरी दवा चलती है।

रेव (ریو) फा. पुं.–छल, कपट, मक्र, फ़िरेब।

रेवकार (ریوکار) फा. वि.–छली, कपटी, वंचक, मक्कार।

रेवफ़न (ریوفن) फा. वि.–जो छल में बड़ा निपुण हो, धूर्त, फ़ित्तीन।

रेशः (ریشہ) फा. पुं.–लकड़ी का पतला सूत, तंतु; झुथड़ा।

रेशःख़त्मी (ریشہخطمی) फा. स्त्री.–एक दवा, ख़त्मी की जड़ (वि.) मुग्ध, लट, फ़िरेफ़्ता।

रेशःदवानी (ریشہدوانی) फा. स्त्री.–सुआडोरा, किसी काम के लिए गुप्तरूप से कोशिश।

रेशःदार (ریشہدار) फा. वि.–ज़िसमें रेशे हों।

रेश (ریش) फा. पुं.–क्षत, व्रण, घाव, ज़ख़्म।

रेशए क़लम (ریشۂ قلم) फा. अ. पुं.–क़लम के भीतर रहनेवाला सूत।

रेशए नै (ریشۂ نے) फा. पुं.–नरकट के भीतर का सूत।

रेशम (ریشم) फा. पुं.–पाट, एक प्रसिद्ध डोरा जो एक कीड़े से प्राप्त होता है और जिससे रेशमी कपड़ा बनता है।

रेशमीं (ریشمیں) फा. वि.–रेशम का; रेशम का बना हुआ; रेशम सम्बन्धी।

रेशमी (ریشمی) फा. वि.–दे. 'रेशमीं'।

रेसिंदः (ریسندہ) फा. वि.–कातनेवाला।

रेसीदः (ریسیدہ) फा. वि.–काता हुआ।

रेस्माँ (ریسماں) फा. स्त्री.–'रेस्मान' का लघु., दे. 'रेस्मान'।

रेस्माँबाज़ (ریسماں باز) फा. वि.–नट, बाज़ीगर।

रेस्माँबाज़ी (ریسماں بازی) फा. स्त्री.–नट का काम बाज़ीगरी।

रेस्मान (ریسمان) फा. स्त्री.–डोर, डोरी; रस्सी, रज्जु।

रै

रैआन (ریعان) अ. पुं.–अनुष्ठान, उठान; यौवनारंभ, उठती जवानी।

रैआने जवानी (ریعان جوانی) अ. फा. पुं.–जवानी की शुरूआत, यौवनारंभ।

रैआने शबाब (ریعان شباب) अ.पुं.–दे. 'रैआने जवानी'।

रैब (ریب) अ. पुं.–संदेह, आशंका, शक, शुबहा; दुर्घटना, हादिसा।

रैबुलमनून (ریب المنون) अ. पुं.–सांसारिक दुर्घटनाएँ, दुनयावी हादिसे।

रैहाँ (ریحاں) अ.पुं.–'रैहान' का लघु, दे. 'रैहान'।

रैहानः (ریحانہ) अ. स्त्री.–रैहान बोने की ज़मीन।

रैहान (ریحان) अ.पुं.–एक ख़ुशबूदार घास।

रैहानी (ریحانی) अ. वि.–जिसमें रैहान की सुगंध हो; जो रैहान से बनी हो।

रो

रोईं (روئیں) फा. वि.–काँसे का बना हुआ।

रोईंतन (روئیں تن) फा. वि.–जिसका शरीर धातु का बना हो, अर्थात् बहुत मज़बूत शरीरवाला, लौहपुरुष।

रोईदः (روئیدہ) फा. वि.–उगा हुआ, जमा हुआ, अंकुरित।

रोईदगी (روئیدگی) फा. स्त्री.–उगाव, उत्पत्ति जमावट; वनस्पति , घास आदि।

रोईदनी (روئیدنی) फा. वि.–उगने योग्य, अंकुरित होने योग।

रोज़ः (روزہ) फा. पुं.–व्रत, उपवास, उपोषण, (प्रत्य.) दिनोंवाला, जैसे—'हफ़्त रोज़:'सात दिनोंवाला।

रोज:कुशाई (روزہ کشائی) फा. स्त्री.–रोज़ेदारों को रोज़ा खोलने के लिए इफ़्तारी भेजना या अपने घर खिलाना।

रोज़ः ख़ोर (روزہ خور) फा. वि.–जो रोज़ा न रखता हो, रोज़: खा जानेवाला।

रोज:दार (روزہ دار) फा. वि.–जो रोज़े से हो, व्रतधारी।

रोज:शिकनी (روزہ شکنی) फा. स्त्री.–रोजा समय से पहले तोड़ देना।

रोज़ (روز). फा. पुं.–दिवस, दिन, दिवा।

रोज़:अफ़्ज़ूँ (روز افزوں) फा. वि.–जो हर दिन बढ़ता रहे, वृद्धिमान्।

रोज़कोर (روز کور) फा. वि.–वह व्यक्ति जिसे दिन में न दिखाई देने का रोग हो, दिनांध।

रोज़कोरी (روز کوری) फा.स्त्री.–दिन में न दिखाई देने का रोग।

रोज़गार (روزگار) फा. पुं.–उद्योग, व्यवसाय, पेशा; काल, समय, वक़्त; युग, अह्द।

रोज़गारपेशः (روزگار پیشہ) फा. वि.-उद्योगी, व्यवसायी, तिजारत करनेवाला।

रोज़न (روزن) फा. पुं.–छिद्र, विवर, सूराख़।

रोज़नामः (روزنامہ) फा. पुं.–दैनिक पत्र, रोज़ निकलनेवाला अख़्बार, डेली पेपर।

रोज़नामचः (روزنامچہ) फा. पुं.–रोज़ का हाल लिखने की किताब, दैनिकी, डाइरी; पुलिस की रोज़ की काररवाई का रजिस्टर; रोज़ के हिसाब की वही।

रोज़ ब रोज़ (روز بہ روز) फा. वि.–हर रोज, दिन प्रतिदिन।

रोज़मर्रः (روزمرہ) अ. फा. पुं.–प्रतिदिन, हर रोज़, नित्य-प्रति।

रोज़ रोज़ (روز روز) फा. वि.–हर रोज, विला नाग़ा, नित्य प्रति, नित्यशः।

रोज़ानः (روزانہ) फा. वि.–हररोज़, प्रतिदिन, डेली, नित्यशः।

रोज़ी (روزی) फा. स्त्री.–जीविका, आजीविका, वृत्ति।

रोज़ीनः (روزینہ) फा. पुं.–हर रोज़ की तनख़्वाह; एक दिन के हिसाब से मज़्दूरी।

रोज़ीनःदार (روزینہ دار) फा. पुं.–हर रोज़ की तनख़्वाह पानेवाला, एक दिन के हिसाब से मज़्दूरी पानेवाला।

रोज़ीदेहिंदः (روزی دہندہ) फा. वि.–रिज़्क़ देनेवाला, अन्नदाता।

रोज़ीरसाँ (روزی رساں) फा. वि.–रोज़ी देनेवाला, अन्नदाता।

रोज़ीरसानी (روزی رسانی) फा. स्त्री.–रोज़ी देना, अन्नदान।

रोज़े क़ियामत (روز قیامت) फा. अ. पुं.–क़ियामत का दिन जब अच्छे और बुरे कर्मों का हिसाब-किताब होगा।

रोज़े जंग (روز جنگ) फा. पुं.–युद्ध का दिन, लड़ाई का दिन।

रोज़े जज़ा (روز جزا) फा. अ. पुं.–दे. 'रोज़े क़ियामत'।

रोज़े पसीं (روز پسیں) फा. पुं.–मरने का दिन।

रोज़े बद (روز بد) फा. पुं.–बुरा दिन, मनहूस और अशुभ दिन, जिस दिन कोई बुरी घटना हुई हो।

रोज़े बाज़ख़्वास्त (روز بازخواست) फा.पुं.–दे.'रोज़े क़ियामत'।

रोज़े महशर (روز محشر) फा. अ. पुं.–दे. 'रोज़े क़ियामत'।

रोज़े मैदाँ (روز میداں) फा. पुं.–दे. 'रोज़े जंग'।

रोज़े विलादत (روز ولادت) फा. अ. पुं.–'पैदा होने का दिन'।

रोज़े रौशन (روز روشن) फा. पुं.–साफ और उज्ज्वल दिन, जिस दिन बादल या कोहरा आदि न हो।

रोज़े शुमार (روز شمار) फा. अ. पुं.–दे. 'रोज़े क़ियामत'।

रोज़े सियाह (روز سیاہ) फा. पुं.–दे. 'रोज़े बद'।

रोज़े हश्र (روز حشر) फा. अ. पुं.–दे. 'रोज़े क़ियामत'।

रोजे हिसाब (روزحساب) फा. अ. पुं.–दे. 'रोज़े क़ियामत'।

रोज़ोशब (روزوشب) फा. पुं.–रातदिन, अर्हनिश।

रोदः (رودہ) फा. पुं.–ताँत, तंतु; आँत, अंत्र।

रोद (رود) फा. पुं.–नदी, आपगा, तरंगिणी, तटिनी, दर्या।

रोदख़ानः (رودخانہ) फा. पुं.–नदी, दर्या; वह भूमि जो प्रायः नदी की बाढ़ से जलमग्न रहती हो।

रोदख़ेज़ (رودخیز) फा. स्त्री.–पानी की रौ।

रोदबार (رودبار) फा. पुं.–जहाँ बहुत-से नदी नाले हों।

रोबः (روبہ) फा. स्त्री.–'रोबाह' का लघु., लोमड़ी, लोमशा।

रोबःबाज़ी (روبہبازی) फा. स्त्री.–मक्कारी, धूर्तता, छल, कपट, वंचना।

रोब (روب) फा. प्रत्य.–झाड़नेवाला, जैसे—'राक़रोब' मिट्टी झाड़नेवाला।

रो'ब (رعب) अ. पुं.–आतंक, दाब; प्रताप, तेज, इक़बाल; धाक, डर।

रोबकार (روبکار) फा. पुं.–सरकारी काग़ज़, आदेशपत्र, हुक्मनामा।

रोबकारी (روبکاری) फा. स्त्री.–कारंवाई; मुक़दमे आदि की पेशी।

रो'बदार (رعبدار) अ. फा. वि.–जिसकी धाक बैठी हो; जिसका चेहरा रोबीला हो।

रोबरू (روبرو) फा. वि.–आमने-सामने, सम्मुख, प्रत्यक्ष।

रोबाह (روباہ) फा. स्त्री.–लोमड़ी, लोमशा, लोमशी, खिंकिर, लोमालिका, लुखड़िया।

रोबाहख़स्लत (روباہخصلت) फा. अ. वि.–मक्कार, छली, धूर्त, वंचक, ठग।

रोबाहबाज़ी (روباہبازی) फा. स्त्री.–मक्कारी, छल, कपट, धूर्तता।

रोबाहमिज़ाज (روباہمزاج) फा. अ. वि.–जिसकी प्रकृति में छल और धूर्तता हो।

रोबाहसिफ़त (روباہصفت) फा. अ. वि.–मक्कार, छली, ठग, धोखेबाज़।

रोबीदः (روبیدہ) फा. वि.–झाड़ा हुआ, मार्जित, साफ़।

रो'बोदाब (رعبوداب) अ. पुं.–धाक और आतंक, भय और त्रास।

रोयत (رویت) अ. स्त्री.–देखना, दर्शन।

रोयते हिलाल (رویت ہلال) अ. स्त्री.–नवचंद्र-दर्शन, नया चाँद देखना।

रोया (رویا) अ. पुं.–स्वप्न, ख़्वाब।

रोयाए सादिक़ः (رویاے صادقہ) अ. पुं.–सच्चा स्वप्न, जिसका फल सच्चा निकले।

रोशन (روشن) फा. वि.–दीप्त, प्रकाशमान, मुनव्वर; स्पष्ट, वाज़ेह; उज्ज्वल, साफ़।

रोसपी (روسپی) फा. स्त्री.–व्यभिचारिणी, असती, कुलटा, फ़ाहिशा।

रौ

रौअत (روعت) अ. स्त्री.–भय, त्रास, डर।

रौग़न (روغن) अ. पुं.–तेल, तैल; स्नेह, चिकनाई; घी, घृत।

रौग़नगर (روغنگر) अ. फा. वि.–तेल पेरनेवाला, तेली, तैलकार, तैलिक।

रौग़न ज़बानी (روغن زبانی) अ. फा. स्त्री.–चाटुकारिता, ख़ुशामद; वाचालता, चपलता, चर्ब ज़बानी।

रौग़न जोश (روغن جوش) अ. फा. वि–एक प्रकार का पका हुआ गोश्त।

रौग़न दाग़ (روغن داغ) अ. फा. वि.–घी से बघारा हुआ, छौंका हुआ।

रौग़नफ़रोश (روغنفروش) अ. फा. पुं.–तेल बेचनेवाला।

रौग़नी (روغنی) फा. वि.–तेल में बना हुआ; तेल लगा हुआ; चिकना।

रौग़ने क़ाज़ (روغنقاز) अ. फा. पुं.–चापलूसी, चाटुकारिता, ख़ुशामद।

रौग़ने कुंजद (روغنکنجد) अ.फा. पुं.–तिल का तेल, तैल।

रौग़ने गाव (روغنگاؤ) अ. फा. पुं.–गाय का घी, गोघृत।

रौग़ने ज़र्द (روغن زرد) अ. फा. पुं.–घी, घृत।

रौग़ने तल्ख़ (روغن تلخ) अ. फा. पुं.–सरसों का तेल, कड़वा तेल, सर्षप तैल।

रौग़ने शीरीं (روغن شیرین) अ. फा. पुं.–तिल का तेल, तैल।

रौग़ने सर्शफ़ (روغن سرشف) अ. फा. पुं.–सरसों का तेल।

रौग़ने सियाह (روغن سیاہ) अ. फा. पुं.–सरसों का तेल।

रौज़ः (روضہ) अ. पुं.–उद्यान, आराम, वाटिका, बाग़; सब्ज़ःज़ार, शाद्वल, हरा-भरा मैदान; किसी बड़े दरवेश का मक़्बरा।

रौज़ःख़्वाँ (روضہخواں) अ. फा. वि.–मिम्बर पर बैठकर कर्बला की दुर्घटनाओं का व्याख्यान करनेवाला।

रौज़ःख़्वानी (روضہخوانی) अ. फा. स्त्री.–इमाम हुसैन की शहादत का हाल मिम्बर पर बैठकर बयान करना।

रौज़ (روض) अ. पुं.–'रौज़ः का बहु., बहुत से बाग़, उद्यान-समूह।

रौज़ए जन्नत (روضۂ جنت) अ. पुं.–स्वर्गवाटिका, जन्नत का बाग़।

रौज़ए मुबारक (روضۂ مبارک) अ. पुं.–पवित्र और पुनीत रौज़ा।

रौज़ए रयाहीन (روضۂ ریاحین) अ. पुं.–स्वर्ग, जन्नत।

रौज़ए रिज़्वाँ (روضۂ رضواں) अ. पुं.–स्वर्ग, बहिश्त।

रौज़न (روزن) अ. पुं.–छिद्र, छेद, विवर, सूराख़।

रौज़ने दर (روزن در) अ. फा. पुं.–दीवार का छेद, द्रवाज़ा।

रौज़ने दीवार (روزن دیوار) अ. फा. पुं.–दीवार का छेद।

रौज़ात (روضات) अ. पुं.–'रौज़ा' का बहु., उद्यान-समूह, बाग़ात।

रौनक़ (رونق) फा. स्त्री.–शोभा, छटा, सुहानापन; दीप्ति, प्रकाश, चमक-दमक, तड़क-भड़क; प्रसन्नता और हर्ष की लहर।

रौनक़अफ़्ज़ा (رونق افزا) फा. वि.–शोभा बढ़ानेवाला; उपस्थित, मौजूद, तशरीफ फ़र्मा।

रौनक़अफ़्ज़ाई (رونق افزائی) फा. स्त्री.–शोभा बढ़ाना; उपस्थित।

रौनक़अफ़्रोज़ (رونق افروز) फा. वि.–दे. 'रौनक़अफ़्ज़ा'।

रौनक़अफ़्रोज़ी (رونق افروزی) फा. स्त्री.–दे. 'रौनक़अफ़्ज़ाई'।

रौनक़आरा (رونق آرا) फा. वि.–दे. 'रौनक़अफ़्ज़ा'।

रौनक़फ़िज़ा (رونق فزا) फा. वि.–'रौनक़अफ़्ज़ा' का लघु., दे. 'रौनक़अफ़्ज़ा'।

रौनक़े ख़ाना (رونق خانہ) फा. स्त्री.–घर की रौनक़, गृह-दीप्ति; पत्नी, भार्या, बीबी।

रौनक़े चेहरः (رونق چہرہ) फा. स्त्री.–चेहरे की शोभा, मुखश्री, मुखरुचि, मुखकांति।

रौनक़े बज़्म (رونق بزم) फा. स्त्री.–सभा की रौनक़, सभा-भूषण।

रौनक़े मज्लिस (رونق مجلس) फा. अ. स्त्री.–दे. 'रौनक़े बज़्म'।

रौनक़े महफ़िल (رونق محفل) फा. अ. स्त्री.–दे. 'रौनक़े बज़्म'।

रौशन (روشن) अ. वि.–दीप्त, प्रकाशित, मुनव्वर; उज्ज्वल, धवल, शफ़्फ़ाफ़; स्पष्ट, ज्वलंत, वाज़ेह; चमकदार, ज्योतिर्मय, ताबाँ।

रौशनगुहर (روشن گہر) फा. वि.–कुलीन, वंशप्रदीप, आलीख़ानदान।

रौशनजबीं (روشن جبیں) फा. वि.–चमकदार माथेवाला, उज्ज्वलललाट।

रौशनज़मीर (روشن ضمیر) फा. अ. वि.–जो दूसरों के हृदय की बात जानता हो, अन्तर्यामी।

रौशनज़मीरी (روشن ضمیری) फा. अ. स्त्री.–दूसरों के हृदय की बात जानना।

रौशनतब्अ (روشن طبع) अ. वि.–तीव्र बुद्धि, तेज़ फ़हम।

रौशनतर (روشن تر) अ. फा. वि.–बहुत अधिक चमकदार।

रौशनदान (روشندان) फा. पुं.–मकान में रौशनी आने का सूराख़।

रौशनदिमाग़ (روشن دماغ) अ. वि.–दीप्तप्रज्ञ, तीक्ष्ण-बुद्धि, तेज़ अक़्ल; नाक में सूँघने का हुलास।

रौशनदिमाग़ी (روشن دماغی) अ. फा. स्त्री.–बुद्धि की तेज़ी, ज़हानत, प्रतिभा।

रौशनदिल (روشن دل) अ. फा. वि.–दे. 'रौशनज़मीर'।

रौशनदिली (روشن دلی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'रौशनज़मीरी'।

रौशननिगाह (روشن نگاہ) अ. फा. वि.–दूरदर्शी, तेज़ निगाह।

रौशननिहाद (روشن نہاد) अ. फा. वि.–दे. 'रौशनज़मीर'।

रौशनराए (روشن رائے) अ. वि.–जिसकी राय बहुत अच्छी हो; जिसकी सलाह बहुत बढ़िया हो; जो कूटनीति में निपुण हो।

रौशनसवाद (روشن سواد) अ. वि.–जो अच्छी तरह लिख-पढ़ सके, शिक्षित।

रौशनाई (روشنائی) फा. स्त्री.–उजाला, प्रकाश, आँख की तेज़ी, नज़र की दूरबीनी; सियाही, मसि।

रौशनी (روشنی) फा. स्त्री.–प्रकाश, नूर; आभा, चमक।

रौह (روح) अ. स्त्री.–सुगंध, ख़ुशबू; प्रफुल्लता, ताज़गी; सुख, आराम।

रौहात (روحات) अ. स्त्री.–'रौह' का बहु., सुगंधियाँ; सुख-चैन; ठंडी हवाएँ।

ल

लंग (لنگ) फा. पुं.–लँगड़ा, पंगुल, पंगु; लँगड़ापन, पंगुता; मेहन, शिश्न, लिंग।

लंगर (لنگر) फा. पुं.–अपाहिजों और कंगालों को दिया जानेवाला भोजन, जो प्रतिदिन दिया जाय, सदाव्रत; समुद्र में जहाज़ को ठहरानेवाला भारी बोझ।

लंगरअंदाख़्तः (لنگر انداختہ) फा. वि.–ठहरा हुआ, एक स्थान पर रुका हुआ।

लंगरअंदाज़ (لنگر انداز) फा. वि.–समुद्र में ठहरा हुआ जहाज़।

लंगरअंदाज़ी (لنگر اندازی) फा. स्त्री.–लंगर द्वारा समुद्र में जहाज़ का पड़ाव।

लंगरख़ानः (لنگر خانہ) फा. पुं.–वह स्थान जहाँ ग़रीबों को प्रतिदिन खाना बाँटा जाता है, अन्न-सत्र।

लंगरगाह (لنگرگاہ) फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ जहाज़ लंगर से ठहरायें जाते हैं (बीच समुद्र में)।

लंगरपज़ीर (لنگرپزیر) फा. वि.–दे. 'लंगरअंदाज़'।

लंगरी (لنگری) फा. पुं.–लंगर से सम्बन्धित; एक प्रकार का बड़ा प्याला; बड़ी थाली, परात, तश्त।

लंगिदः (لنگندہ) फा. वि.–लँगड़ाकर चलनेवाला।

लंगीदः (لنگیدہ) फा. वि.–लँगड़ाकर चला हुआ।

लंगेपा (لنگ پا) फा. पुं.–पाँव का लँगड़ापन, लँगड़ाहट।

लंज (لنج) फा. पुं.–अठलाकर चलना, चटक-मटक दिखाते हुए चलना।

लंदरः (لندرہ) तु. पुं.–लंदन, इँग्लैंड की राजधानी।

लंबक (لنبک) फा. अ. –बहराम गोर का भिश्ती, जो बड़ा अतिथि-पूजक और दानशील था।

लअल [ल्ल] (لعل) अ. अव्य.–शायद, स्यात्, कदाचित्।

लअस (لعس) अ. पुं.–होठों की लालिमा।

लआली (لعالی) अ. पुं.–'लूलू' का बहु., मुक्तावली, बहुत से मोती।

लअ्आब (لعاب) अ. वि.–बाज़ीगर, मदारी, कौतुकी।

लइब (لعب) अ. पुं.–खेल, क्रीड़ा, खेल-कूद।

लईक़ (لئیق) अ. वि.–योग्य, क़ाबिल; शिष्ट, तमीज़दार।

लईन (لعین) अ. वि.–जिस पर ला'नत भेजी गयी हो, धिक्कृत।

लईम (لئیم) अ. वि.–वह कंजूस व्यक्ति जो न स्वयं खा सके न दूसरे को खिला सके।

लईमुत्तब्‌अ (لئیم الطبع) अ. वि.–जिसकी प्रकृति बहुत ही तुच्छ हो; जो स्वभाव से न स्वयं खा सके न किसी को खिला सके।

लउम्रक (لعمری) अ. अव्य.–शपथ का एक प्रकार, तुम्हारे प्राणों की शपथ।

लऊक़ (لعوق) अ. पुं.–ऐसी औषध जो चाटकर खायी जाय, चटनी, अवलेह।

लक [क्क] (لک) अ. पुं.–कूटना, चूरा करना; मारना, पीटना।

लक (لک) फा. पुं.–मूर्ख, बेवक़ूफ़; लाक्षा, लाख, एक प्रसिद्ध गोंद।

लक़ [क़्क़] (لق) अ. पुं.–वे बालों का, सफाचट।

लक़त (لقط) अ. वि.–भूमि पर पड़ी हुई वस्तु, उठाई हुई; बीनी हुई, चुनी हुई।

लकद (لکد) फा. स्त्री.–लात, दुलत्ती।

लकद (لکد) अ. पुं.–मैल जमना, किसी स्थान का मैला होना।

लकदकोब (لکدکوب) फा. वि.–दुलत्ती मारनेवाला, लतयाव करनेवाला।

लकदकोबी (لکدکوبی) फा. स्त्री.–लतयाव करना, दुलत्ती झाड़ना।

लकदज़न (لکدزن) फा. वि.–दे. 'लकदकोब'।

लकदज़नी (لکدزنی) फा. स्त्री.–दे. 'लकदकोबी।

लकन (لکن) अ. पुं.–हकलापन, हकलाकर बात करना।

लक़फ़ (لقف) अ. पुं.–दीवार का गिरना; हौज़ की दीवारों का गिर जाना, जिससे उसका मुँह चौड़ा हो जाय।

लक़ब (لقب) अ. पुं.–उपाधि, ख़िताब; ऐसा नाम जिसमें उस व्यक्ति के गुणों का पता चले।

लक़म (لقم) अ. पुं.–मार्ग का बीच।

लक़स (لقس) अ. पुं.–हृदय की व्याकुलता और घबड़ाहट; नाश, तबाही।

लक़ह (لقح) अ. पुं.–गर्भ होना, गर्भवती होना।

लक़ा (لقا) अ. पुं.–मैथुन, सहवास।

लक़िन (لقن) अ. वि.–किसी बात की तह को शीघ्र ही पहुँच जानेवाला, प्रतिभावान्।

लकिन (لکن) अ. वि.–हकलाकर बोलनेवाला।

लक़िस (لقس) अ. वि.–आपस में फूट डलवानेवाला।

लक़ीतः (لقیطہ) अ. वि.–वह बालक जो रास्ते में ज़मीन पर पड़ा हुआ मिले, और जिसे पाला जाय।

लक़ीत (لقیط) अ. पुं.–दे. 'लक़ीतः'।

लक़ोदक़ (لق ودق) फा. वि.–चटयल मैदान, ऐसा जंगल जिसमें कोसों न छाया हो न पानी, मूल शब्द 'लग़ोदग़' है।

लक़्अ (لقع) अ. पुं.–आँख झपकाना, पलक मारना, निमेष।

लक़्अ (لکع) अ. पुं.–शरीर पर मैल जमना; साँप का डसना; पशु-शावक का दूध पीते समय थनों को सिर का हूरा देना।

लक़्क़ोदक़ (لق ودق) अ. पुं.–दे. 'लक़ोदक़'।

लक्ज़ (لکز) अ. पुं.–छाती पर लात मारना।

लक़्त (لقط) अ. पुं.–गिरी हुई वस्तु का भूमि से उठाना; बीनना, चुनना।

लक़्न (لقن) अ. पुं.–ताड़ना, परखना, समझना।

लक्म (لکم) अ. पुं.–घूँसा मारना, मुक्केबाज़ी करना।

लक़्म (لقم) अ. पुं.–मार्ग बंद कर देना, रास्ते का मुँह बंद कर देना।

लक़्लक़ः (لقلقہ) अ. पुं.–लक़्लक़ पक्षी की ज़ोरदार आवाज़।

लक़्लक़ (لقلق) अ. पुं.–एक जलीय पक्षी जो साँप और मछली खाता है; सारस पक्षी; ज़बान, जिह्वा।

लक्लक (لکلک) फा. पुं.–दे. 'लक़्लक़'।

लक़्लाक़ (لقلاق) अ. पुं.–लक़्लक़ पक्षी; लक़्लक़ पक्षी का स्वर।

लक़्वः (لقوہ) अ. पुं.–एक रोग जिसमें मुँह एक ओर को फिर जाता है, भंजनक, वरुणग्रह।

लक़्वःज़दः (لقوہ زدہ) अ. फा. वि.–जिसे लक़्वा मार गया हो, वरुणग्रही।

लख़न (لخن) अ. पुं.–मैला होना, गंदा होना।

लख़्चः (لخچہ) फा. पुं.–स्फुलिंग, चिनगारी; अंगार, अंगारा; ज्वाला, शो'लः।

लख़्जः (لخجہ) फा. पुं.–दे. 'लख़्चः'।

लख़्तः (لختہ) फा. पुं.–दे. 'लख़्त'।

लख़्त (لخت) फा. पुं.–खंड, टुकड़ा; अल्प, न्यून, थोड़ा; लोहे का गुर्ज़।

लख़्ते (لختے) फा. वि.–थोड़ा-सा, ज़रा-सा।

लख़्ते जिगर (لخت جگر) फा. पुं.–जिगर का टुकड़ा, पुत्र के लिए बोलते हैं।

लख़्ते दर (لخت در) फा. पुं.–द्वारपट, दरवाज़े के किवाड़।

लख़्ते दिल (لخت دل) फा. पुं.–दे. 'लख़्ते जिगर'।

लख़्लख़ः (لخلخہ) अ. पुं.–सूँघने का एक सुगंधित मिश्रण।

लख़्शः (لخشہ) फा. पुं.–दे. 'लख़्चः'।

लख़्शाँ (لخشاں) फा. वि.–रपटता हुआ, फिसलता हुआ, वह वस्तु जिस पर पाँव फिसले।

लख़्शिंदः (لخشندہ) फा. वि.–रपटनेवाला, फिसलनेवाला।

लख़्शीदः (لخشیدہ) फा. अ. वि.–रपटा हुआ, फिसला हुआ।

लग़त (لغط) अ. पुं.–कोलाहल, शोर; आवाज़, पुकार।

लगन (لگن) फा. स्त्री.–हाथ धोने का तश्त-विशेष; पीतल का दीवट, चौमुखा; अँगीठी।

लगाम (لگام) फा. स्त्री.–कविका, दंतालिका।

लग़ूनः (لغونہ) फा. पुं.–मुखचूर्ण, गुलगूनः।

लग़ोदग़ (لغودغ) फा. पुं.–दे. 'लक़ोदक़', शुद्ध शब्द यही है, परंतु प्रचलित नहीं है।

लग़्ज़ां (لغزاں) फा. वि.–फिसलता हुआ, रपटता हुआ।

लग़िज़दः (لغزندہ) फा. वि.–फिसलनेवाला, रपटनेवाला।

लग़्ज़िश (لغزش) फा. स्त्री.–फिस्लन, रपट; त्रुटि, भूल, ग़लती; अपराध, क़ुसूर।

लग़्ज़िशे पा (لغزش پا) फा. स्त्री.–पाँव फिसलना, डगमगा जाना, विचलित हो जाना, पदकंप।

लग़्ज़िशे बेजा (لغزش بیجا) फा. स्त्री.–अनुचित भूल या ग़लती।

लग़्ज़ीदः (لغزیدہ) फा. वि.–फिसला हुआ, रपटा हुआ।

लग़्म (لغم) अ. पुं.–किसी को ऐसी बात बताना, जिसका उसे विश्वास न हो।

लग़्व (لغو) अ. वि.–अनर्थ, फ़ुज़ूल; असत्य, झूठ।

लग़्वकार (لغوکار) अ. फा. वि.–अनर्थकारी, व्यर्थ के काम करनेवाला, ऐसे काम करनेवाला जिनका कोई परिणाम न हो।

लग़्वकारी (لغوکاری) अ. फा. स्त्री.–व्यर्थ के कार्य करना।

लग़्वगो (لغوگو) अ. फा. वि.–अनर्गलवादी, बकवासी, मिथ्यावादी, अनृतभाषी, झूठा।

लग़्वगोई (لغوگوئی) अ. फा. स्त्री.–मुखरता, वाचालता, बकवास; मिथ्या कथन, झूठ बोलना।

लग़्वबयाँ (لغوبیاں) अ. वि.–दे. 'लग़्वगो'।

लग़्वबयानी (لغوبیانی) अ. स्त्री.–दे 'लग़्वगोई'।

लग़्वियत (لغویت) अ. स्त्री.–अनर्थता, फ़ुज़ूलपन; असत्यता, झूठपन; शरारत, शुहदपन।

लग़्वियतपसंद (لغویت پسند) अ. फा. वि.–जिसे व्यर्थ की बातें पसंद हों।

लग़्वियात (لغویات) अ. स्त्री.–'लग़्वियत' का बहु., अनर्गल बातें, झूठ बातें, शरारत की बातें।

लचक (لچک) तु. पुं.–कामदार ओढ़नी या रूमाल।

लजन (لجن) अ. पुं.–बहुत-से व्यक्तियों का पानी भरने के लिए कुएँ पर इकट्ठा होना; किसी काम के लिए बहुत-से मनुष्यों का जुटना।

लज़्न (لزن) फा. स्त्री. –कीचड़।

लजफ़ (لجف) अ. पुं.–कुएँ के पास का गढ़ा जिसमें पशु पानी पीते हैं।

लज़्म (لزم) अ. पुं.–किसी वस्तु के लिए किसी चीज़ का आवश्यक होना; किसी वस्तु का किसी व्यक्ति को अचंभे में डालना।

लज़ा (لظی) अ. स्त्री.–नरक, दोज़ख़; भड़कनेवाली अग्नि, अग्नि-ज्वाला।

लज़ाइज़ (لذائذ) अ. पुं.–'लज़्ज़त' का बहु., लज़्ज़तें, मज़े, स्वाद।

लज़ाइज़े दुनयावी (لذائذ دنیاوی) अ. पुं.–संसार के स्वाद, सांसारिक सुख।

लज़ाइज़े नफ़्सानी (لزائذ نفسانی) अ. पुं.–शारीरिक सुख, ऐंद्रिय स्वाद, भोग-विलास।

लज़ाइज़े रूहानी (لزائز روحانی) अ. पुं.–आत्मा को सुख देनेवाले स्वाद, जप-तप आदि से प्राप्त सुख, मानसिक सुख।

लजाज (لجاج) अ. पुं.–युद्ध, समर, लड़ाई, जंग।

लजाजत (لجاجت) अ. स्त्री.–युद्ध करना, लड़ना; बढ़ा-

चढ़ाकर बात करना; गिड़गिड़ाना, हाहा खाना, ख़ुशामद के लिए दाँत निकालना; नम्रता, विनीति, आजिज़ी।

लज़ाजतआमेज़ (لجاجت آمیز) अ. फा. वि.–गिड़गिड़ाहट और ख़ुशामद के साथ।

लज़िज़ (لزج) अ. वि.–चिपकनेवाली वस्तु।

लज़िब (لزب) अ. वि.–चिपकनेवाला।

लज़ीज़ (لذیذ) अ. वि.–स्वादिष्ठ, सुस्वाद, मज़ेदार।

लजूज (لجوج) अ. वि.–युद्ध करनेवाला, लड़नेवाला।

लज़्अ (لذع) अ. पुं.–चिनग, जलन, सोज़िश।

लज्जः (لجہ) अ. पुं.–ध्वनि, शब्द, आवाज़; कोलाहल, शोरोग़ुल।

लज्ज़ (لجز) अ. पुं.–चिपकना; फिसलना।

लज़्ज़त (لذت) अ. स्त्री.–स्वाद, मज़ा; आनंद, लुत्फ़; मनोविनोद, तफ़्रीह।

लज़्ज़तआमेज़ (لذت آمیز) अ. फा. वि.–जिसमें स्वाद हो, स्वादयुक्त।

लज़्ज़तआश्ना (لذت آشنا) अ. फा. वि.–जो किसी पदार्थ के स्वाद से परिचित हो, रसज्ञ; अनुभवी, मज़ा चखा हुआ।

लज़्ज़तचश (لذت چش) अ. फा. वि.–स्वाद चखनेवाला; आनन्द लेनेवाला।

लज़्ज़तचशी (لذت چشی) अ. फा. स्त्री.–स्वाद चखना; आनन्द लेना।

लज़्ज़तपसंद (لذت پسند) अ. फा. वि.–जिसे स्वादिष्ठ भोजन पसंद हों, चटोरा, जिह्वा लोलुप।

लज़्ज़तपसंदी (لذت پسندی) अ. फा. स्त्री.–चटोरापन, स्वादिष्ठ भोजन प्रिय लगना।

लज़्ज़ते तक़्रीर (لذت تقریر) अ. स्त्री.–बातचीत की मधुरता, वार्ता-माधुर्य।

लज़्ज़ाअ (لذاع) अ. वि.–जलन डालनेवाला, सोज़िश पैदा करनेवाला।

लज़्ज़ात (لذات) अ. वि.–'लज़्ज़त' का बहु., लज़्ज़तें, मज़े।

लज़्ज़ाब (لزاب) अ. वि.–बहुत चिपकनेवाला।

लज्लाज (لجلاج) अ. वि.–जो अटक-अटक कर बात करे, हकला।

लज़्लाज़ (لغلاض) अ. वि.–पथ-प्रदर्शन में निपुण।

लतंबान (لت انبان) फा. वि.–लोभी, लालची; पेटू, बहुभक्षी।

लतंबार (لت انبار) फा. वि.–दे. 'लतंबान'।

लत [त्त] (لط) अ. पुं.–चिपकना; किसी का हक़ न देना; कोई काम लगातार करना।

लत (لت) फा. पुं.–लात, पाँव; उदर, पेट; टुकड़ा, खंड; अलसी के तार का कपड़ा।

लतअंबान (لت انبان) फा. वि.–दे. 'लतंबान'।

लतअंबार (لت انبار) फा. वि.–दे. 'लतंबार'।

लतत (لطط) अ. पुं.–दाँत गिरना; दाँतों का इतना घिस जाना कि जड़ें रह जायँ।

लतफ़ (لطف) अ. पुं.–उपकार करना, भलाई करना; दान, बख़्शिश; पुरस्कार, तोहफा।

लतमात (لطمات) अ. पुं.–'लत्मः' का बहु., तमाचे, थप्पड़।

लतह (لتح) अ. स्त्री.–भूख, क्षुधा, बुभुक्षा।

लताइफ़ (لطائف) अ. पुं.–'लतीफ़ः' का बहु., लतीफ़े, हँसी की बातें।

लताइफ़ुलहियल (لطائف الحیل) अ. पुं.–ऐसे बहाने जो बहाने न जान पड़ें।

लताइफ़े ग़ैबी (لطائف غیبی) अ. पुं.–वे दिव्य प्रकाश जो शुद्धात्माओं के हृदय-पटल पर पड़ते हैं।

लताइफ़ो ज़राइफ़ (لطائف و ظرائف) अ. पुं.–हँसानेवाली और दिल बहलानेवाली बातें।

लताफ़त (لطافت) अ. स्त्री.–कोमलता, नर्मी; मृदुलता, नज़ाकत; सूक्ष्मता, बारीकी; शुद्धता, पाकीज़गी; नवीनता, ताज़गी; भाव की गंभीरता।

लताफ़ते क़ल्ब (لطافت قلب) अ. स्त्री.–हृदय की कोमलता और मृदुलता।

लताफ़ते मिज़ाज (لطافت مزاج) अ. स्त्री.–स्वभाव की पवित्रता और कोमलता।

लतीफ़ः (لطیفہ) अ. पुं.–चुटकुला, हास्यक; अद्भुत और अनोखी बात।

लतीफ़ःगो (لطیفہ گو) अ. फा. वि.–चुटकुले सुनानेवाला, चुटकुले सुनाकर हँसानेवाला।

लतीफ़ःगोई (لطیفہ گوئی) अ. फा. स्त्री.–चुटकुले कहना, चुटकुले सुनाकर हँसाना।

लतीफ़ःसंज (لطیفہ سنج) अ. फा. वि.–दे. 'लतीफ़ः गो'।

लतीफ़ःसंजी (لطیفہ سنجی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'लतीफ़ः-गोई'।

लतीफ़ (لطیف) अ. वि.–कोमल, नर्म; मृदुल, नाज़ुक; सूक्ष्म, बारीक; शुद्ध, पवित्र, पाकसाफ़; नवीन, नूतन, ताज़ा; बहुत ही हलका फुलका।

लतीफ़तब्अ (لطیف طبع) अ. वि.–दे. 'लतीफ़ मिज़ाज'।

लतीफ़मिज़ाज (لطیف مزاج) अ. वि.–कोमल और मृदुल स्वभाववाला, जिसके मिज़ाज में सफ़ाई और शुद्धता का ख़याल बहुत हो।

लतीफ़ुत्तब्अ (لطیف الطبع) अ. वि.–दे. 'लतीफ़तब्अ'।

लतीफ़ुलमिज़ाज (لطف المزاج) अ. वि. – दे. 'लतीफ़ मिज़ाज'।

लतीफ़ुस्सौत (لطیف الصوت) अ. वि.–जिसका स्वर मधुर, कोमल और मृदुल हो।

लतीम (لطیم) अ. वि.–थप्पड़ खाया हुआ, जिसे चाँटा मारा गया हो।

लतूख़ (لطوخ) अ. पुं.–मलनेवाली औषध, मालिश की दवा।

लत्अ (لطع) अ. पुं.–चाटना, लेहन; पीठ पर ठोकर मारना।

लत्ख़ (لطخ) अ. पुं.–लिप्त होना; बुराई में डालना; दोष लगाना।

लत्मः (لطمہ) अ. पुं.–थप्पड़, चाँटा, तलप्रहार।

लत्म (لطم) अ. पुं.–थप्पड़ मारना, चाँटा लगाना।

लत्म (لتم) अ. पुं.–छाती पर मारना।

लत्स (لطس) अ. पुं.–पाँव से ख़ूब मलना।

लत्ह (لطح) अ. पुं.–पीठ थपथपाना; किसी वस्तु को ज़मीन पर पटकना।

लद [द्द] (لد) अ. पुं.–युद्ध करना, लड़ना; शत्रुता करना, दुश्मनी करना।

लदद (لدد) अ. पुं.–बहुत अधिक शत्रुता होना।

लदम (لدم) अ. पुं.–'लादिम' का बहु., पैंद लगानेवालो; स्वजन, रिश्तेदार; वे व्यक्ति जिनसे स्त्रियाँ पर्दा नहीं करतीं।

लदीग़ (لدیغ) अ. वि.–जिसे साँप ने काटा हो, सर्पदंशित।

लदीद (لدید) अ. पुं.–घाटी का किनारा; मुँह और होठों पर बुरकनेवाली औषध।

लदीम (لدیم) अ. पुं.–पैवंद लगा हुआ वस्त्र।

लदुन (لدن) अ. पुं.–हलका भाला; हर वह वस्तु जो कोमल हो; समीप, पास।

लदुन्नी (لدنی) अ. वि.–बिना प्रयास और साधन के मिली हुई वस्तु, ईश्वरदत्त।

लदूद (لدود) अ. वि.–झगड़ालू, बखेड़िया; लड़नेवाला, फ़सादी; मुँह पर छिड़कने की दवा, लदीद।

लद्ग़ः (لدغہ) अ. पुं.–डंक, दंश; डंक मारना।

लद्ग़ (لدغ) अ. पुं.–दे. 'लद्ग़ः'।

लद्म (لدم) अ. पुं.–धमाका, भारी वस्तु के गिरने का शब्द; कपड़े या जूते में पैवंद लगाना; स्त्री का किसी के शोक में छाती पीटना।

लनतरानी (لن ترانی) अ. वा.–'तू मुझे नहीं देख सकता', यह उस आकाशवाणी के शब्द हैं जब हज़्रत मूसा ने ईश्वर का प्रकाश देखने की प्रार्थना की थी, अब डींग और शेख़ी के अर्थ में बोला जाता है।

लफ़ंग (لفنگ) फा. वि.–अधम, नीच, लफंगा।

लफ़ [फ़्फ़] (لف) अ. पुं.–लपेटना, तह करना।

लफ़ीफ़ (لفیف) अ. पुं.–लिपटी हुई वस्तु; मित्र, दोस्त; वह अरबी शब्द जिसमें दो हर्फ़े इल्लत हों।

लफ़्चः (لفچہ) फा. पुं.–बेहड्डी का मांस।

लफ़्च (لفچ) फा. पुं.–बेहड्डी का मांस; मोटा होंठ; होंठ, अधर।

लफ़्चन (لفچن) फा. पुं.–वह व्यक्ति जिसके होंठ बड़े-बड़े और मोटे हों।

लफ़्ज़ (لفظ) अ. पुं.–शब्द, बोल; बात, वचन।

लफ़्ज़न (لفظاً) अ. वि.–शब्द द्वारा, शब्दों से।

लफ़्ज़न लफ़्ज़न (لفظاً لفظاً) अ. वि.–एक-एक शब्द करके, अक्षरशः; सारा, सब।

लफ़्ज़फ़रोश (لفظ فروش) अ. फा.; वि.–बातूनी, वाचाल, मुखचपल।

लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ (لفظ بہ لفظ) अ. वि.–दे. 'लफ़्ज़न लफ़्ज़न'।

लफ़्ज़ी (لفظی) अ. वि.–शब्द सम्बन्धी; शब्द का।

लफ़्ज़े इस्तिलाही (لفظ اصطلاحی) अ. पुं.–पारिभाषिक शब्द, टर्म।

लफ़्ज़े बामा'नी (لفظ بامعنی) अ. फा. पुं.–वह शब्द जो सार्थक हो, व्यक्त।

लफ़्ज़े बेमा'नी (لفظ بےمعنی) अ. फा. पुं–वह शब्द जो निरर्थक हो, अव्यक्त।

लफ़्ज़े मुफ़रद (لفظ مفرد) अ. पुं.–वह शब्द जो किसी शब्द से बना न हो, न उससे कोई शब्द बने।

लफ़्ज़े मुरक्कब (لفظ مرکب) अ. पुं.–वह शब्द जो दो या अधिक शब्दों से मिलकर बना हो, यौगिक।

लफ़्त (لفت) अ. पुं.–घुमाना और फिराना।

लफ़्तरः (لفترہ) फा. वि.–अधम, नीच, कमीना।

लफ़्फ़ाज़ (لفاظ) अ. वि.–बहुभाषी, मुखचपल, वावदूक, मुखर, बातूनी।

लफ़्फ़ाज़ी (لفاظی) अ. स्त्री.–वाचालता, मुखरता, लस्सानी।

लफ़्फ़ोनश्र (لف و نشر) अ. पुं.–एक शब्दालंकार जिसमें पहले कुछ वस्तुएँ उपमेय के रूप में कही जाती हैं, फिर उन वस्तुओं के लिए उनके उपमान लाते हैं, जैसे–पहले 'मुख' 'दाँत' और 'नेत्र' लायें फिर चाँद', मोती और 'कमल'।

लफ़्फ़ोनश्रे ग़ैर मुरत्तब (لف و نشر غیر مرتب) यदि लफ़्फ़ोनश्र में उपमेय और उपमान क्रम से न आयें तो वह ग़ैर

मुरत्तब अर्थात् क्रम विरुद्ध है, जैसे—'मुख' 'दाँत' और 'नेत्र' के साथ 'मोती' 'चंद्र' और 'कमल'।

लफ़्फ़ोनश्रे मुरत्तब (لف ونشر مرتب) अ. पुं.–यदि लफ़्फ़ो नश्र में उपमेय और उपमान क्रम से आयें तो वह 'मुरत्तब' अर्थात् क्रमबद्ध है, जैसे—मुख, दाँत और नेत्र के साथ, चाँद, मोती और कमल।

लफ़्ह (لفح) अ. पुं.–आग, लपट, या गर्मी से जलना; तलवार मारना।

लब (لب) फा. पुं.–अधर, ओष्ठ, होंठ; तट, कूल, किनारा।

लबकुशा (لب کشا) फा. वि.–बात करनेवाला, बात करता हुआ।

लबकुशाई (لب کشائی) फा. स्त्री.–बात करने के लिए ओंठ खोलना।

लबख़ा (لب خا) फा. वि.–चिड़चिड़ा, झल्ला।

लबख़ुश्क (لب خشک) फा. वि.–जिसके होंठ प्यास के कारण सूख गये हों, बहुत प्यासा।

लबगज़िदः (لب گزندہ) फा. वि.–पछतानेवाला; कुपित होनेवाला।

लबगज़ीदः (لب گزیدہ) फा. वि.–जो पछताया हो; जो कुपित हो।

लबगीर (لب گیر) फा. पुं.–तम्बाकू पीने का पाइप।

लबचरा (لب چرا) फा. पुं.–वह मेवा और चने आदि जो मित्र लोग परस्पर बातें करते समय उठा-उठाकर खाते जाते हैं।

लबचश (لب چش) फा. पुं.–स्वाद, चखना; वह चाश्नी जो स्वाद के लिए चखी जाय।

लबज़दः (لب زدہ) फा. वि.–चुप, मौन, ख़ामोश; बोलनेवाला, बातें करनेवाला।

लबतश्नः (لب تشنہ) फा. वि.–दे. 'लबख़ुश्क'।

लबन (لبن) अ. पुं.–क्षीर दुग्ध, दूध।

लबनीयः (لبنیہ) अ. पुं.–खीर, शीर विरंज।

लबबंद (لب بند) फा. वि.–चुप, मौन, ख़ामोश; बहुत अधिक मिठासवाली वस्तु।

लब ब लब (لب بہ لب) फा. वि.–होठों पर होंठ रखे हुए; एक-दूसरे के होंठ चूमते हुए।

लबबस्तः (لب بستہ) फा. वि.–मौन, चुप, ख़ामोश।

लबरेज़ (لب ریز) फा. वि.–लबालब, मुहाँमुह, ऊपर तक भरा हुआ, परिपूर्ण।

लबरेज़े मय (لب ریز مے) फा. वि.–शराब से भरा हुआ, मदिरा से लबालब।

लबाचः (لباچہ) फा. पुं.–कुर्ते आदि के ऊपर पहनने का वस्त्र विशेष, अबा।

लबादः (لبادہ) फा. पुं.–जाड़ों में पहनने का रूईदार चुग़ा, फ़र्ग़ुल।

लबादःपोश (لبادہ پوش) फा. वि.–लबादा पहने हुए; लबादा पहननेवाला।

लबाद (لباد) फा. पुं.–बरसाती, बरसात में पहनने का कोट।

लबान (لبان) अ. पुं.–वक्षःस्थल, सीना, छाती; कुंदर गोंद, लुबान।

लबाबत (لبابت) अ. स्त्री.–चतुर होना, दक्ष होना, बुद्धिमान् होना।

लबालब (لبالب) फा. वि.–लबरेज़, मुहाँमुंह।

लबाशः (لباشہ) फा. पुं.–दे. 'लबेशः'।

लबिन (لبن) अ. स्त्री.–कच्ची ईंट।

लबीक़ (لبیق) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; प्रतिभावान्, ज़हीन; वाचाल, लस्सान।

लबीद (لبید) अ. स्त्री.–छोटी गोन जिस पर नाज आदि भरकर टट्टू पर लादते हैं।

लबीन (لبین) अ. वि.–दूध पिलाकर पाला हुआ, पोषित, पर्वर्दा।

लबीब (لبیب) अ. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद; दक्ष, कुशल, होशियार।

लबून (لبون) अ. वि.–दूध देनेवाला, दुधार।

लबूस (لبوس) अ. पुं.–कवच, ज़िरिह; वस्त्र, लिबास।

लबे ख़ुश्क (لب خشک) फा. पुं.–सूखे हुए होंठ, प्यासे होंठ।

लबे गोया (لب گویا) फा. पुं.–बात करनेवाले होंठ, बोलते हुए होंठ।

लबे गोर (لب گور) फा. पुं.–क़ब्र का किनारा, क़ब्र के पास।

लबे जू (لب جو) फा. पुं.–नदी का किनारा, नदी-तट।

लबे तर (لب تر) फा. पुं.–गीले होंठ, पानी पिये हुए होंठ।

लबे नाँ (لب ناں) फा. पुं.–रोटी का किनारा, रोटी की कोर।

लबे नोशीं (لب نوشیں) फा. पुं.–वह होंठ जिनसे रस टपकता हो।

लबे फ़र्याद (لب فریاد) फा. पुं.–अत्याचार पर दुहाई देनेवाले होंठ।

लबे फ़र्श (لب فرش) फा. पुं.–सभा आदि में बिछे हुए फ़र्श का किनारा।

लबे ला'लीं (لب لعلیں) फा. अ. पुं.–दे. 'लबे नोशीं'।

लबेशः (لبیشہ) फा. पुं.–एक रस्सी का फंदा जो लकड़ी में

LIBRARY
HARDWAR

लगा होता है, शरीर घोड़ों के ऊपरवाले होंठ में डालकर उसे घुमाते हैं, जिससे घोड़ा घबड़ाकर शरारत भूल जाता है।

लबे शीरीं (لبِ شیریں) फा. पुं.–वह होंठ जिनसे रस (अधरामृत) टपकता हो।

लबोदंदाँ (لبودنداں) फा. पुं.–योग्यता, क़ाबिलीयत, विद्वत्ता।

लबोलह्जः (لبولہجہ) फा. अ. पुं.–बात करने का ढंग, टोन।

लब्क़ (لبق) अ. वि.–दे. 'लबीक़'।

लब्क (لبک) अ. पुं.–घोलना; मिलाना, मिश्रण।

लब्न (لبن) अ. पुं.–दूध पिलाना,; छड़ी से मारना।

लब्बान (لبان) अ. वि.–ईंटें पाथनेवाला।

लब्बैक (لبیک) अ. वा.–'मैं उपस्थित हूँ' मालिक के पुकारने पर दास की ओर से दिया जानेवाला उत्तर।

लब्स (لبس) अ. पुं.–कपड़े पहनना।

लब्स (لبث) अ. पुं.–देर करना, विलंब करना; देर, ढील, विलंब।

लामआत (لمعات) अ. पुं.–'लम्अः' का बहु., रौशनियाँ, प्रकाशपुंज।

लमहात (لمحات) अ. पुं.–'लम्हः' का बहु., बहुत-से क्षण।

लमाक़ (لماق) अ. वि.–थोड़ी वस्तु।

लमाज़ (لماظ) अ. वि.–थोड़ी-सी वस्तु।

लम्अः (لمعہ) अ. पुं.–प्रकाश, तेज, रौशनी, आलोक, ज्योति।

लम्अ (لمع) अ. पुं.–चमकना, प्रकाशित होना।

लम्आन (لمعان) अ. पुं.–चमकना, रौशन होना; चमक, प्रकाश, नूर।

लम्क़ (لمق) अ. पुं.–शुद्ध करना, साफ़ करना; आँखें मलना।

लम्ज़ (لمز) अ. पुं.–दोष करना, ऐब करना; आँख का संकेत करना; जलाना; मारना।

लम्तुर (لمتر) फा. वि.–मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट।

लम्मा (لما) अ. अव्य.–जब, चूँकि; परंतु, मगर।

लम्माज़ (لماز) अ. वि.–ऐब करनेवाला, अपराधक; आँख से संकेत करनेवाला।

लम्यज़ल (لم یزل) अ. वि.–अनश्वर, अविनाशी, लाज़वाल।

लम्स (لمس) अ. पुं.–स्पर्श, छूना; मैथुन, सहवास।

लम्हः (لمحہ) अ. पुं.–क्षण, पल, बहुत थोड़ा समय।

लम्हः ब लम्हः (لمحہ بہ لمحہ) अ. फा. वि.–क्षण प्रति क्षण, थोड़ी-थोड़ी देर बाद।

लयान (لیان) अ. पुं.–सुख, चैन, आराम; समृद्धि, वैभव, फ़रागत।

लयाली (لیالی) अ. स्त्री.–'लैल' का बहु., रात्रियाँ, रातें।

लयूस (لیوس) अ. वि.–तिरस्कृत, अपमानित, बेइज़्ज़त।

लय्यान (لیان) अ. पुं.–लपेटना।

लय्यिन (لین) अ. वि.–नर्म, कोमल, मुलाइम।

लर (لر) तु. अव्य.–एक विभक्ति जो एक वचनवाली संज्ञा के अन्त में आकर उसे बहु वचन बना देती है।

लर्ज़ः (لرزہ) फा. पुं.–कँपकँपी, थरथरी, कंप; कँपकँपी के साथ ज्वर, जूड़ी, कंपज्वर; हलचल, हौल, घबराहट। शरीर के रोंगटों का खड़ा होना, रोमांच।

लर्ज़ःअंगेज़ (لرزہ انگیز) फा. वि.–दे. 'लर्ज़ःख़ेज़'।

लर्ज़ःख़ेज़ (لرزہ خیز) फा. वि.–शरीर के रोंगटे खड़े कर देनेवाला, अर्थात् बहुत भीषण और भयानक।

लर्ज़ः बरंदाम (لرزہ براندام) फा. वि.–जिसका शरीर भय के कारण काँप रहा हो।

लर्ज़ः बर अंदामकुन (لرزہ بر اندام کن) फा. वि.–शरीर में कँपकँपी उत्पन्न कर देनेवाला।

लर्ज़ाँ (لرزاں) फा. वि.–काँपता हुआ, थरथराता हुआ; भय के मारे काँपता हुआ।

लर्ज़िंदः (لرزندہ) फा. वि.–काँपनेवाला, थरथरानेवाला।

लर्ज़िश (لرزش) फा. स्त्री.–कँपकँपी, थरथराहट।

लर्ज़ीदः (لرزیدہ) फा. वि.–काँपा हुआ, थर्राया हुआ।

लर्ज़ीदनी (لرزیدنی) फा. वि.–काँपने योग्य, थर्राने योग्य।

लवाइज (لواعج) अ. पुं.–'लाइज़:' का बहु., जलनें, टपकनें।

लवाएह (لوائح) अ. पुं.–'लाइह:' का बहु., रौशनियाँ, प्रकाशपुंज।

लवाक़ (لواق) अ. वि.–थोड़ी वस्तु, किंचिन्मात्र।

लवाक़ेह (لواقح) अ. स्त्री.–'लाक़ेह' का बहु., गर्भवती मादाएँ; 'मुल्क़ेह' का बहु., नर।

लवाज़िमः (لوازمہ) अ. पुं.–दे. 'लवाज़िम', यह शब्द अशुद्ध है, परन्तु उर्दू में बोलते हैं, बल्कि इसका बहु. 'लवाज़िमात' भी बना लेते हैं, जो बिलकुल ग़लत है।

लवाज़िम (لوازم) अ. पुं.–'लाज़िम' का बहु., किसी कार्य अथवा उद्योग से सम्बन्धित वस्तुएँ।

लवातत (لواطت) अ. स्त्री.–गुद-मैथुन, बाल-मैथुन, इग़लाम, दे. 'लिवातत', दोनों शुद्ध हैं।

लवामे (لوامع) अ. पुं.–'लामिअ:, का बहु., चमकदार वस्तुएँ।

लवाश (لواش) तु. स्त्री.–गेहूँ की पतली रोटी, फुलका, चपाती।

लवास (لواس) अ. पुं.–चखने योग्य, आस्वाद्य।

लवास (لواث) अ. पुं.–पलेथन, ख़ुश्की।

लवाहिक़ (لواحق) अ. पुं.–'लाहिक़:' का बहु., किसी मूल पदार्थ के अन्त में लगायी जानेवाली वस्तुएँ।

लवाहिक़ीन (لواحقین) अ. पुं.–'लाहिक़:' के बहु. का बहु., जो क़ाइदे से अशुद्ध है, परंतु उर्दू में बोलते हैं, लेकिन कम पढ़े लोग।

लवाहिज़ (لواحظ) अ. पुं.–'लाहिज़' का बहु., आँखों के किनारे; कनखियों से देखनेवाले।

लवाहिब (لواهب) अ. पुं.–'लाहिब' का बहु., भड़की हुई आग।

लवीशः (لویشه) फा. पुं.–दे. 'लबेश:', दोनों शुद्ध हैं।

लवूस (لووس) अ. वि.–चक्खा हुआ।

लवेद (لوید) फा. पुं.–खुले मुख का बड़ा पतीला, डेगचा देग।

लव्वामः (لوامه) अ. पुं.–बुरी बातों पर डाँट-फटकार करनेवाला; एक मानसिक शक्ति जो बुरे कर्मों अथवा पापों पर मनुष्य की निन्दा करती और उनसे रोकती है।

लव्वाम (لوام) अ. वि.–निन्दा करनेवाला, भर्त्सना करनेवाला, मलामत करनेवाला।

लश्कर (لشکر) फा. पुं.–सेना, वाहिनी, वरूथिनी, अनीक, चमू, बल, फ़ौज; भीड़, बहुत से व्यक्तियों का समूह।

लश्करआरा (لشکرآرا) फा. वि.–सेना की सज्जा करनेवाला; सेना लेकर मुक़ाबिले पर आनेवाला।

लश्करआराई (لشکرآرائی) फा. स्त्री.–सेना को लड़ने के लिए सजाना; सेना लेकर मुक़ावला करना।

लश्करकशी (لشکرکشی) फा. स्त्री.–चढ़ाई, धावा, सैन्य-यात्रा, आक्रमण।

लश्करगाह (لشکرگاه) फा. स्त्री.–सेनावास, छावनी।

लश्करी (لشکری) फा. वि.–सैनिक, असिजीवी, सिपाही।

लस [स्स] (لس) अ. पुं.–घोड़े का घास खाना।

लसक़ (لثق) अ. पुं.–गीला होना; गीलापन, आर्द्रता।

लसक़ (لسق-لصق) अ. पुं.–चिपकना।

लसद (لسد) अ. पुं.–दूध चूसना, बच्चे का दूध पीना; शहद चाटना।

लसन (لسن) अ. पुं.–भाषानैपुण्य, ज़बानआवरी; कोमलता, फ़साहत।

लसस (لصص) अ. पुं.–दाँतों का पास-पास होना; वृक्ष की डालियों का घना होना।

लसिक़ः (لثقه) अ. पुं.–एक प्रकार का ज्वर।

लसिन (لسن) अ. वि.–भाषाविद्, भाषा-विज्ञान में निपुण; बहुत शुद्ध और सरल भाषा बोलनेवाला।

लस्अः (لسعه) अ. पुं.–डसना, काटना, दंशन।

लस्अ (لسع) अ. पुं.–दे. 'लस्अ:'।

लस्उल हैयः (لسع الحیه) अ. पुं.–साँप का डसना, सर्प-दंशन।

लस्ग़ (لثغ) अ. पुं.–'र' को 'ल' और 'सीन' को 'से' कहना, तुतलाना।

लस्ग़ा (لثغا) अ. स्त्री.–तोतली स्त्री।

लस्द (لسد) अ. पुं.–दे. 'लसद'।

लस्म (لثم) अ. पुं.–चूमना, चंबुन; मुँह में मुसीका लगाना।

लस्सः (لثه) अ. पुं.–मसूढ़ा, दंतपाली, दे. 'लिस्स:' और 'लुस्स:', तीनों शुद्ध हैं।

लस्साअ (لساع) अ. वि.–डसनेवाला, काटनेवाला, विषैला कीड़ा।

लस्सान (لسان) अ. वि.–बातूनी, वावदूक, वाचाल, मुखचपल, लफ़्फ़ाज़।

लस्सानी (لسانی) अ. स्त्री.–मुखरता, मुखचपलता, बाचालता, लफ़्फ़ाज़ी।

लहक़ः (لحقه) अ. पुं.–'लाहिक़' का बहु.; पीछे से पहुँचनेवाले; अंत में मिलाये जानेवाले।

लहक़ (لحق) अ. वि.–जो अपने पहलेवाले से मिले; जो किसी के अंत में जोड़ा जाय।

लहज (لهج) अ. पुं.–लालची होना; मुग्ध होना; वरग़लाना, भड़काना, बहकाना।

लहद (لحد) अ. स्त्री.–बग़्लीवाली क़ब्र; क़ब्र, गोर, समाधि।

लहन (لحن) अ. पुं.–प्रतिभा, कुशलता, ज़हानत; चातुर्य, होशयारी।

लहफ़ (لهف) अ. पुं.–पछताना, अफ़्सोस करना; दु:खित होना, रंजीदा होना।

लहब (لهب) अ. पुं.–आग की लपट, अग्निशिखा, अग्निज्वाला, शो'ला।

लहाक़ (لحاق) अ. पुं.–पहुँचना, जाना; ताड़ना, समझना।

लहाज़ (لحاظ) अ. पुं.–आँख का कोना।

लहाज़िम (لهازم) अ. पुं.–'लहज़म:' का बहु., जबड़े की हड्डियाँ; कनपटी की हड्डियाँ।

लहात (لهات) अ. पुं.–गले का कौआ।

लहास (لحاص) अ. पुं.–आपत्ति, आपदा, कष्ट, मुसीबत; दैवी आपत्ति, बला।

लहिम (لحم) अ. वि.–मांस-भक्षक, गोश्तख़ोर।

लहीद (لهید) अ. वि.–थका हुआ ऊँट।

लहीफ़ (لہیف) अ. वि.–पछतानेवाला, पश्चात्ताप करनेवाला; नि:सहाय, दीन, बेचारा।

लहीब (لہیب) अ. पुं.–अग्नि-ज्वाला, लपट, शो'ला।

लहीम (لحیم) अ. वि.–जिसके शरीर में मांस बहुत हो, मांसल, पीन।

लहीम (لہیم) अ. स्त्री.–आपत्ति, मुसीबत; दरिद्रता, ग़रीबी, कंगाली।

लहीमुलजुस्सः (لحیم الجثہ) अ. वि.–मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट, स्थूलकाय।

लहीमोशहीम (لحیم و شحیم) अ. वि.–जिसके शरीर में मांस और चर्बी दोनों अधिक हों।

लहीस (لحیص) अ. वि.–तंग, संकीर्ण।

लहूम (لہوم) अ. पुं.–बहुत बड़ी सेना।

लह्जः (لہجہ) अ. पुं.–बात करने का ढंग, टोन; पढ़ने का ढंग; स्वर, आवाज़ (गाने की)।

लह्जः (لحظہ) अ. पुं.–क्षण, पल, लम्हः।

लह्जः ब लह्जः (لحظہ بہ لحظہ) अ. फा. वि.–क्षण-क्षण, क्षण-प्रतिक्षण, हरलम्हः, ज़रा ज़रा-सी देर के बाद।

लह्ज़ (لحس) अ. पुं.–एक बार मिली हुई वस्तु की फिर-फिर इच्छा; कुत्ते का बरतन चाटना।

लह्ज (لحظ) अ. पुं.–कनखियों से देखना।

लह्ज (لہز) अ.पुं.–छाती पर घूँसा मारना; मिलाना; बछड़े का दूध पीते समय थनों को सिर का हूरा देना।

लह्जए तलख़ (لہجۂ تلخ) अ. पुं.–पुं.–स्वर की कठोरता; कटुता से कही हुई बात।

लह्ज़मः (لہزمہ) अ. पुं.–कनपटी की हड्डी; जबड़े की हड्डी।

लह्न (لحن) अ. पुं.–स्वर, आवाज़; गानेवाला स्वर, धुन।

लह्ने दाऊदी (لحن داؤدی) अ. पुं.–हज़्रत दाऊद पैग़म्बर-जैसी आवाज़, जो बहुत ही मधुर और मुग्धकर थी।

लह्मः (لحمہ) अ. पुं.–मांसपिंड, लोथड़ा; छोटा बच्चा, शिशु; मांस की बोटी।

लह्म (لحم) अ. पुं.–मांस, आमिष, गोश्त।

लह्मी (لحمی) अ. वि.–मांस सम्बन्धी; मांस का; एक प्रकार का जलंधर।

लह्व (لحو) अ. पुं.–लकड़ी का बकला छुड़ाना; एक वस्तु से दूसरी वस्तु अलग करना।

लह्व (لہو) अ. पुं.–खेल-कूद, मनबहलाव, क्रीड़ा; वह बात जो धार्मिक कामों से रोके।

लह्वुल हदीस (لہو الحدیث) अ. पुं.–क़िस्सा-कहानी, नाचरंग।

लह्वो लइब (لہو و لعب) अ. पुं.–खेल-कूद।

लह्हाम (لحام) अ. वि.–मांस-विक्रेता, गोश्त बेचनेवाला, क़साई।

ला

ला (لا) अ. अव्य.–नहीं, न।

ला (لا) फा. पुं.–तह, परत; दे. 'लाए'।

ला आ'लम (لا اعلم) अ. वा.–मैं नहीं जानता, मुझे नहीं पता, मुझे ख़बर नहीं।

लाइंदः (لائندہ) फा. वि.–बकवास करनेवाला, व्यर्थभाषी, व्यर्थवादी।

लाइक़ (لائق) अ. वि.–योग्य, विद्वान्; पात्र, मुस्तहक़।

लाइजः (لاعجہ) अ. वि.–जलानेवाला।

लाइब (لاعب) अ. वि.–खेलनेवाला, खिलाड़ी।

लाइमः (لائمہ) अ. वि.–निंदा, भर्त्सना, डाँट-फटकार।

लाइम (لائم) अ. वि.–बुरे कामों पर डाँट-फटकार करनेवाला, भर्त्सना करनेवाला।

लाइमः (لاعیہ) अ. पुं.–थूहड़ के प्रकार का एक वृक्ष जिसका दूध बहुत ही विषैला और घातक होता है।

लाइलाज (لاعلاج) अ. वि.–जिसकी चिकित्सा न हो सके, अचकित्स्य, असाध्य; जिसका कोई उपाय न हो, दुष्कर।

लाइल्म (لاعلم) अ. वि.–अपरिचित, नावाक़िफ़; अज्ञात, जाहिल; अशिक्षित, बेपढ़ा-लिखा।

लाइल्मी (لاعلمی) अ. स्त्री.–परचिय न होना, ना वाक़िफ़ीयत; अज्ञान, न जानना; भूल, त्रुटि।

लाइहः (لائحہ) अ. पुं.–दे. 'लाएहः'।

लाईदः (لائیدہ) फा. वि.–डींग मारा हुआ, जिसने डींग मारी हो; जिसने व्यर्थ बात कही हो।

लाईदनी (لائیدنی) फा. वि.–बात करने योग्य; डींग मारने योग्य।

लाउबाली (لاابالی) अ. वि.–निश्चिंत, बेफ़िक्र, बेपर्वा; नि:स्पृह, अनीह, बेनियाज़।

लाए (لاے) फा. स्त्री.–गाद, तलछट।

लाएहः (لائحہ) अ. पुं.–चमकनेवाली वस्तु; प्रोग्राम, कार्यक्रम; सूची, फ़ेहरिस्त।

लाएह (لائح) अ. वि.–चमकनेवाला; उत्पन्न होनेवाला।

लाएहए अमल (لائحۂ عمل) अ. पुं.–किसी कार्य विशेष का प्रोग्राम (कार्यक्रम)।

लाओनअम (لا و نعم) अ. स्त्री.–नहीं और हाँ, अस्वीकृति और स्वीकृति।

लाओह्सी (لا احصی) अ. वा.–यह क़ुरान के एक पूरे वाक्य का टुकड़ा है, जिसका अर्थ है कि ईश्वर मैं तेरे गुणों को सीमित नहीं कर सकता।

लाक (لاک) फा. पुं.–लकड़ी का पियाला।

ला'क़ (لعق) अ. पुं.–चाटना, लेह्न।

लाकपुश्त (لاک پشت) फा. पुं.–कच्छप, कूर्म, कछुआ।

लाकलाम (لاکلام) अ. वि.–निःसंदेह, निःशंक, बेशक; अवश्य, निश्चयपूर्ण, यक़ीनी।

लाकिन (لاکن) अ. अव्य.–लेकिन, परंतु, किन्तु।

लाक़िस (لاقس) अ. वि.–दोष करनेवाला, अपकर्ता।

लाक़ीस (لاقیس) अ. पुं.–एक पिशाच जो नमाज़ पढ़ते समय लोगों के हृदय में अनेक प्रकार के विचार उत्पन्न करता है।

लाक़ेह (لاقح) अ. वि.–गर्भ होना; मादा जिससे नर जुफ़्ती करे; वह खजूर जिससे दूसरे खजूर को गर्भ दें।

लाख़ः (لاخہ) फा. पुं.–धुनकी हुई रूई, रूई का गाला।

लाख़ (لاخ) फा. पुं.–स्थान, जगह, यह शब्द अकेला नहीं आता दूसरे शब्द से मिलकर आता है, जैसे—'संगलाख़', पथरीला स्थान।

लाख़राज (لاخراج) अ. वि.–वह भूमि जिसका लगान न देना पड़े।

लाग़ (لاغ) फा. पुं.–परिहास, ठठोल, मज़ाक़।

लाग़र (لاغر) फा. वि.–क्षीण, क्षाम, कृश, दुबला-पतला।

लागरअंदाम (لاغراندام) अ. वि.–जिसका शरीर दुबला-पतला हो, कृशांग, क्षीणकाय।

लाग़री (لاغری) फा. स्त्री.–क्षीणता, कृशता, दुबलापन।

लागियः (لاغیہ) फा. पुं.–एक क्षुप जो बहुत गर्म और दूध वाला होता है।

लाग़ियः (لاغیہ) अ. स्त्री.–वक्की स्त्री, अनर्गल वादिनी; डींग मारनेवाली स्त्री, अहंवादिनी।

लाग़ी (لاغی) अ. वि.–मिथ्यावादी, झूठा; डींगिया, शेख़ी ख़ोर।

लाचीन (لاچین) तु. पुं.–बाज़ पक्षी, श्येन।

लाजरम (لاجرم) अ.वि.–अवश्य, यक़ीनी; निःसंदेह, बेशुबहः; असाध्य, लाइलाज।

लाजवाब (لاجواب) अ. वि.–जो जवाब न दे सके, निरुत्तर; सज्जित, शर्मिंदः; संकुचित, नादिम; अद्वितीय, बेमिस्ल।

लाज़वाल (لازوال) अ. वि.–जिसका नाश न हो, अनश्वर, अविनाशी, शाश्वत।

लाज़िक़ः (لازقہ) अ. वि.–चिपकने वाली वस्तु (स्त्री)।

लाज़िक़ (لازق) अ. वि.–चिपकनेवाला।

लाज़िब (لازب) अ. वि.–चिपकनेवाला; चिह्न छोड़ जानेवाला।

लाज़िमः (لازمہ) अ. वि.–आवश्यक वस्तु; गुण, ख़ास्सः; अनिवार्य, लाज़िमी।

लाज़िम (لازم) अ.वि.–आवश्यक, ज़रूरी; अनिवार्य, लाज़िमी; उचित, मुनासिब; निश्चित, यक़ीनी; सटा हुआ, मिला हुआ, अकर्मक क्रिया, फ़े'ले लाज़िम।

लाज़िमन (لازماً) अ. वि.–निश्चित रूप से, यक़ीनन।

लाज़िमी (لازمی) अ. वि.–आवश्यक, ज़रूरी; अनिवार्य, लाबुद; उचित, मुनासिब निश्चित, यक़ीनी।

लाज़िमो मल्ज़ूम (لازم و ملزوم) अ. वि.–एक की दूसरे के साथ अनिवार्यता, समवाय।

लाज़िल [ल्ल] (لاظل) अ. वि.–वह सोना जिसमें ज़रा भी खोट न हो।

लाजुर्अः (لاجرعہ) अ. वि.–जो घूंट-घूंट न पिया जाकर एक साथ पिया गया हो, डगडगाकर पिया हुआ।

लाजे (لاذع) अ. वि.–जलन उत्पन्न करनेवाला, सोज़िश पैदा करनेवाला।

लाज्वर्द (لاجورد) फा. पुं.–एक बहुमूल्य पत्थर, लाजावर्त, आवर्त मणि।

लाज्वर्दी (لاجوردی) फा. वि.–लाज्वर्द के रंग का, नीला।

लात (لات) अ. पुं.–एक मूर्ति जिसे हज़्रत 'शुऐब' के अनुयायियों ने पूजा था।

लातज़र (لاتذر) अ. क्रि.–न छोड़।

लाताइल (لاطائل) व्यर्थ, बेकार।

लाता'दाद (لاتعداد) अ. वि.–असंख्य, अगणित, असीम, अपरिमित, बेशुमार।

लातिब (لاتب) अ. वि.–चिपकनेवाला; एक स्थान पर टिका हुआ, डटा हुआ; दृढ़, मज़बूत।

लातीनी (لاطینی) अ. स्त्री.–रूमियों की प्राचीन भाषा, लैटिन।

लातुअद (لاتعد) अ. वि.–जो गिना न जा सके, अगणित, असंख्य।

लातोह्सा (لاتحصی) अ. वि.–जो घेरा न जा सके, जो सीमाबद्ध न हो सके, असीम।

लादः (لادہ) फा. पुं.–मूर्ख, अज्ञानी, बेअक़्ल।

लाद (لاد) फा. पुं.–दीवार की चुनाई का एक रद्दा।

लादनः (لادنہ) फा. पुं.–सन, शण; सन का पेड़; दे. 'लादिनः', दोनों शुद्ध हैं।

लादन (لادن) फा. पुं.–एक प्रकार की सुगंध, अफीम का अर्क।

लादवा (لادوا) अ. वि.–जिसका उपचार न हो सके, असाध्य, निरुपचार; जिसका प्रयत्न न हो सके।

लादा'वा (لادعوی) अ. वि.–जो वाद वापस ले ले, दस्तबरदार।

लादिग़ (لادغ) अ. वि.–डसनेवाला; एक पीड़ा, जिसमें ऐसा अनुभव होता है कि त्वचा को कोई काट रहा है।

लादिनः (لادنه) फा. पुं.–सन; सन का पेड़।

लादिम (لادم) अ. वि.–पैवंद लगाने वाला, थिगली लगानेवाला, चकती लगानेवाला।

लानः (لانه) फा. पुं.–शहद का छत्ता जिसमें शहद न हो; घोंसला, कुलाय, झोंझ।

लान (لان) फा. पुं.–आज़र वाईज़ान का एक पहाड़, जहाँ के तुर्क बहुत ही सुंदर होते हैं।

ला'न (لعن) अ. स्त्री.–धिक्कार, ला'नत।

ला'नत (لعنت) अ. स्त्री.–धिक्कार, फटकार।

ला'नतजदः (لعنت زده) अ. फा. वि.–जिस पर ला'नत की गयी हो, धिक्कृत।

लानुसल्लिम (لانسلم) अ. क्रि.–मैं नहीं मानता, यह मेरे लिए मान्य नहीं है।

लाफ़ (لاف) फा. स्त्री.–डीगें, शेख़ी; गप, जल्प, विकत्थ।

लाफ़गो (لاف گو) फा. वि.–डींगिया, अहंवादी; गप्पी, बकवादीं, जल्पी।

लाफ़गोई (لاف گوئی) फा. स्त्री.–डींग मारना; गप उड़ाना, बकवास।

लाफ़ज़न (لاف زن) फा. वि.–दे. 'लाफ़गो'।

लाफ़ज़नी (لاف زنی) फा. स्त्री.–दे. 'लाफ़गोई'।

लाफ़ानी (لافانی) अ. वि.–अनश्वर, अविनाशी, जो कभी नष्ट न हो, शाश्वत।

लाफ़िंदः (لافنده) फा. वि.–गप्पी, बकवासी; डींगिया, शेख़ीख़ोर।

लाफ़िज़ः (لافظه) अ. स्त्री.–नदी, दर्या; बकरी, अजा; चक्की, पेषणी; कुक्कुटी, मुर्ग़ी।

लाफ़ीदः (لافیده) फा. वि.–गप हाँका हुआ, जो बात गप हो; डींग मारा हुआ, जो बात डींगे हो।

लाफ़ीदनी (لافیدنی) फा. वि.–गप मारने योग्य; डींग मारने योग्य।

लाफ़ेह (لافح) अ. वि.–आग, गर्मी या लपट से जलनेवाला।

लाफ़ोगुज़ाफ़ (لاف و گزاف) फा. स्त्री.–व्यर्थ की और इधर-उधर की गपबाज़ी, ख़ुराफ़ात, बकवास।

लाबः (لابه) फा. पुं.–चाटुकारिता, ख़ुशामद; छल, कपट, वंचना, फ़रेब।

लाबः (لابه) अ. पुं.–पहाड़ी भूमि, पथरीला स्थान।

लाबःकार (لابه کار) फा. वि.–चापलूस, चाटुकार।

लाबःगो (لابه گو) फा. वि.–चापलूस, चाटुकार।

ला'ब (لعب) अ. पुं.–राल बहना, राल टकपना।

ला बर ला (لابرلا) फा. वि.–तह पर तह, परत पर परत

लाबिन (لابن) अ. वि.–दूध पिलानेवाला; दूधवाला।

लाबिस (لابث) अ. वि.–देर करनेवाला, ढील डालनेवाला।

लाबुद (द्द) (لابد) अ. वि.–आवश्यक, ज़रूरी; अनिवार्य, लाज़िमी।

राबुदी (لابدی) अ. वि.–दे. 'लाबुद'।

लामः (لامه) अ. पुं.–लोहे की कड़ियोंवाला कवच, ज़िरीह।

लाम (لام) अ. पुं.–'लामः' का बहु., कवच-समूह; एक अक्षर, 'ल'; अलक, ज़ुल्फ़।

लाम (لام) फा. पुं.–ऊन की एक मोटी टोपी जो विशेषतः माँगनेवाले ओढ़ते हैं।

लामकान (لامکان) अ. पुं.–वह स्थान जो घर न हो; वह जो मकान से परे हो, ईश्वर।

लाम काफ़ (لام کاف) अ. पुं.–गाली-गलौज, अपवाद।

लामज़्हब (لامذهب) अ. वि.–जिसका कोई धर्म न हो नास्तिक, धर्मविमुख।

लामज़्हबीयत (لامذهبیت) अ. स्त्री.–नस्तिकता, धर्मविमुखता।

लामहालः (لامحاله) अ. वि.–अंततः, आख़िरकार; विवशतापूर्वक, लाचारी से।

लामहदूद (لامحدود) अ. वि.–जिसकी कोई हद न हो, असीमित; जो घेरा न जा सके, जिसकी सीमाएँ निश्चित न हों, बेहद।

लामान (لامان) फा. पुं.–छल, कपट, फ़रेब; कृतघ्नता, बेवफ़ाई; समूह, अंबोह; गढ़ा, गर्त।

लामानी (لامانی) फा. वि.–छलपूर्वक, पुरफ़रेब; मिथ्या, झूठ; कवच पहने हुए।

लामिसः (لامسه) अ. स्त्री.–छूनेवाली; स्पर्शशक़्ति, छूने की क़ुव्वत।

लामिस (لامس) अ. वि.–छूनेवाला, स्पर्शी; मैथुनकरनेवाला, संभोगकर्ता।

लामुतनाही (لامتناهی) अ. वि.–जिसका ओर-छोर न हो, अपार, असीम, बेहद।

लामे' (لامع) अ. वि.–चमकनेवाला, चमकीला; प्रकाशमान, रौशन।

लामेअः (لامعه) अ. वि.–चमकनेवाली वस्तु (स्त्री.)।

लायः (لایه) फा. पुं.–दीवार का रद्दा; कपड़े की तह; एक प्रकार का काग़ज़।

लायंबग़ी (لاینبغی) अ. वि.–अनावश्यक, ग़ैरज़ुरूरी; अनुचित, नामुनासिब।

लायकून (لایکون) अ. अव्य.–शायद, स्यात्।

लायज़ाल (لایزال) अ. वि.–जो नष्ट न हो, अनश्वर, अविनाशी, अर्थात् ईश्वर।

लायन्फ़क [क्क] (لاینفک) अ.वि.–जो अलग न हो सके, अविच्छिन्न।

लायन्हल (لاینحل) अ. वि.–जो हल न हो, जो जटिल हो (समस्या)।

लायमूत (لایموت) अ. वि.–जो मरे नहीं, अमर।

लाया'क़िल (لایعقل) अ. वि.–जो कुछ न समझता हो, निर्बुद्ध, अज्ञानी, मूर्ख।

लाया'नी (لایعنی) अ. वि.–जिसका अर्थ न हो; अनर्थक, बेमतलब; व्यर्थ, फ़ुज़ूल।

लाया'लम (لایعلم) अ. वि.–जो कुछ नहीं जानता, अनभिज्ञ, अज्ञानी।

लायुम्किन (لایمکن) अ. वि.–जो मुम्किन न हो, असंभव।

लारैब (لاریب) अ. वि.–निःसंदेह, बेशुब्हा।

लारैबफ़ीह (لاریب فیہ) अ. वा.–इस बात में कोई संदेह नहीं है, ऐसा अवश्य है।

लालः (لالہ) फा. पुं.–एक लाल फूल, पोस्त का फूल, अहिपुष्प।

लालःगूँ (لالہ گوں) फा. वि.–लाला के फूल-जैसा, रक्तवर्ण, सुर्ख़।

लालःज़ार (لالہ زار) फा. पुं.–लाला के फूलों का खेत, अफ़ीम का खेत।

लालःफ़ाम (لالہ فام) फा. वि.–दे. 'लालःफ़ाम'।

लालःरंग (لالہ رنگ) फा. वि.–दे. 'लालःगूँ'।

लालःरुख़ (لالہ رخ) फा. वि.–लाला के फूल-जैसे सुर्ख़ और कोमल गालोंवाला (वाली)।

लालःसाँ (لالہ ساں) फा. वि.–लाला के फूल-जैसा, सुर्ख़, लाल।

लालःसार (لالہ سار) फा. वि.–दे. 'लालःज़ार'।

लालंग (لالنگ) फा. वि.–बचा हुआ खाना, उच्छिष्ट, भुक्तशेष।

लाल (لال) तु. वि.–मूक, गूँगा।

लाल (لال) फा. वि.–रक्त, सुर्ख़; एक रत्न, पद्म राग।

ला'ल (لعل) अ. पुं.–लाल (फा.) का अरबी रूप, पद्म राग, एक बहुमूल्य रत्न।

लालए सह्राई (لالۂ صحرائی) फा. अ. पुं.–जंगल में उत्पन्न होनेवाला लाला का फूल।

ला'लगूँ (لعل گوں) अ. फा. वि.–पद्मराग-जैसे रक्त वर्ण का, रक्तवर्ण।

ला'लफ़ाम (لعل فام) अ. फा. वि.–दे. 'ला'ल गूँ'।

लाला (لالا) फा. पुं.–दास, ग़ुलाम; सेवक, मुलाज़िम; चमकदार, उज्ज्वल (मोती)।

लालाए चश्म (لالاے چشم) फा. पुं.–आँख की पुतली, कनीनी, कनीनिका।

ला'लीं (لعلیں) अ. फा. वि.–लाल-जैसे रंगवाला।

ला'लीं लब (لعلیں لب) अ. फा. वि.–लाल और सुंदर होठों वाली सुंदरी।

ला'ले बदख़्शानी (لعل بدخشانی) अ. फा. पुं.–बदख़्शाँ (अफ़ग़ानिस्तान) में पैदाहोने वाला पद्मराग।

ला'ले मुज़ाब (لعل مذاب) अ. पुं.–पिघला हुआ पद्मराग अर्थात् लाल मदिरा।

ला'ले रुम्मानी (لعل رمانی) अ. पुं.–अनार के दानों-जैसा गुलाबी पद्मराग।

ला'ले लब (لعل لب) अ. फा. पुं.-पद्मराग-जैसे गुलाबी अधर, अधर रूपी पद्मराग।

ला'ले शकरबार (لعل شکربار) अ. फा. पुं.–मीठा अमृत-जल टपकानेवाले अधर।

ला'ले शब चिराग़ (لعل شب چراغ) अ. फा. पुं.–पद्मराग-विशेष, जो अँधेरे में दीपक की भाँति प्रकाश देता है।

लावः (لاوہ) फा. पुं.–बच्चों का एक खेल, गिल्ली-डंडा।

लाव (لاو) फा. पुं.–पंडोल मट्टी, जिससे घर पोता जाता है।

लावलद (لاولد) अ. वि.–जिसके कोई संतान न हो, निर्वंश, अनपत्य, निःसंतान।

लावारिस (لاوارس) अ. वि.–जिंसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

लाशः (لاشہ) फा. वि.–बहुत ही दुर्बल और क्षीण; दुर्बल गधा अथवा घोड़ा; गधा, गर्दभ, (पुं.) लाश, शव।

लाश (لاش) तु. स्त्री.–मृतक देह, शव, लाश।

लाशए बेगोरोकफ़न (لاشۂ بےگور وکفن) फा. पुं.–ऐसा शव जिसे न कफ़न मिला हो न क़ब्र।

लास (لاس) फा. पुं.–बहुत ही ख़राब क़िस्म का रेशम।

लासानी (لاثانی) अ. वि.–अद्वितीय, बेमिस्ल, अनुपम।

लासिम (لاثم) अ. वि.–चूमनेवाला, चुंबक; वह व्यक्ति जो अपना मुँह बंद रखता हो, मितभाषी।

लाह (لاہ) अ. पुं.–ईश्वर, अल्लाह।

लाह (لاہ) फा. पुं.–कच्चा रेशम, ख़राब किस्म का रेशम।

लाहल [ल्ल] (لاحل) अ. वि.–जो हल न हो सके, जिस समस्या का समाधान न हो सके।

लाहासिल (لاحاصل) अ. वि.–निष्फल, व्यर्थ, बेकार; निःसार, बेनतीजा।

लाहिक़ः (لاحقہ) अ. पुं.–वह अक्षर या शब्द-विशेष जो

किसी शब्द के अंत में अर्थ-परिवर्तन के लिए लाया जाता है, प्रत्यय ।

लाहिक़ (لاحق) अ. वि.–मिलनेवाला, युक्त होनेवाला ।

लाहिज़ (لاحظ) अ. वि.–कनखियों से देखनेवाला ।

लाहिब (لاهب) अ. वि.–लपट मारनेवाला, धधकनेवाला ।

लाहिम (لاحم) अ. वि.–गोश्त (मांस) खिलानेवाला; गोश्त बेचनेवाला ।

लाही (لاهی) अ. वि.–अचेत, बेसुध, बेहोश; जिसे ध्यान न रहे, असावधान, ग़ाफ़िल; खेलनेवाला, क्रीडक ।

लाहूत (لاهوت) अ. पुं.–संसार, मर्त्यलोक, दुनिया; ब्रह्मलीनता की अवस्था ।

लाहूती (لاهوتی) अ. वि.–संसार का निवासी, प्राणी; ब्रह्मलीन, फ़ना फ़िल्लाह ।

लाहोरः (لاهوره) फा. पुं.–फाँक, क़ाश ।

लाहौल (لاحول) अ. स्त्री.–घृणा और उपेक्षा-सूचक एक वाक्य ।

लि

लिंगः (لنگه) फा. पुं.–पूरी टाँग, पाँव की उँगलियों से रान की जड़ तक का अवयव ।

लिंग (لنگ) फा. पुं.–पिंडली; पूरी टाँग; रान ।

लिंगबरः (لنگ بره) फा. पुं.–एक खाद्य, गेहूँ के आटे की रस्सी-सी बटकर उसके छोटे-छोटे टुकड़े करके घी में भूनकर गोश्त में पकाये जाते हैं ।

लिआन (لعان) अ. पुं.–एक दूसरे को धिक्कारना, परस्पर ला'नत भेजना ।

लिक़ा (لقا) अ. स्त्री.–दर्शन, दीदार; साक्षात्कार, भेंट, मुलाक़ात ।

लिक़ाह (لقاح) अ. पुं.–गर्भ धारण करना, हामिलः होना ।

लिख़ाफ़ (لخاف) अ. पुं.–सफ़ेद और पतले पत्थर ।

लिग़ाम (لغام) अ. पुं.–पशुओं के मुँह बंद करने की जाली, मुसीका ।

लिग्नः (لگنه) फा. पुं.–दे. 'लिंगः' ।

लिजाम (لجام) अ. स्त्री.–लगाम, कविका ।

लिताम (لطام) अ. पुं.–एक दूसरे को तमाँचे मारना ।

लिदाम (لدام) अ. पुं.–कपड़े में पैवंद लगाना; जूते में थिगली गाँठना ।

लिफ़ [**फ़्फ़**] (لف) अ. पुं.–वह पेड़ जो दूसरे पेड़ में गुथा हो ।

लिफ़ाअ (لفاع) अ. पुं.–चादर ।

लिफ़ाफ़ः (لفافه) अ. पुं.–ऊपर लपेटने की वस्तु; ख़त भेजने का खोल, पत्रवेष्ठन; मुर्दे का कफ़न ।

लिफ़ाफ़ (لفاف) अ. पुं.–मुर्दे के सबसे ऊपरवाला कपड़ा, क़फ़न ।

लिफ़्क़ (لفق) अ. पुं.–छोर, किनारा; दराज़, दरार, दर्ज़ ।

लिफ़्त (لفت) अ. पुं.–शलजम, एक शाक ।

लिब [**ब्ब**] (لب) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो कोई कार्य बराबर करता हो, किसी कार्य-विशेष का पाबंद ।

लिबा (لبا) अ. स्त्री.–प्योसी, खीस ।

लिबास (لباس) अ. पुं.–वस्त्र, वसन, पोशाक ।

लिबासात (لباسات) अ. पुं.–चापलूसी, ख़ुशामद, चाटुकारिता ।

लिबासे अरूसी (لباس عروسی) अ. पुं.–विवाह में दूल्हा और दुल्हन के पहनने के कपड़े ।

लिबासे तक़्वा (لباس تقوی) अ. पुं.–लज्जा, व्रीडा, लाज, शर्म; साधुओं के पहनने के वस्त्र ।

लिबासे रियाई (لباس ریائی) अ. पुं.–धोखा देनेवाले वस्त्र, धोखा देने वाला भेष, छद्मवेश ।

लिबासे शबख़्वाबी (لباس شب خوابی) अ. पुं.–रात में सोते समय पहनने के कपड़े, नाइट ड्रेस, रात्रिवस्त्र ।

लिब्नः (لبنه) अ. स्त्री.–कच्ची ईंट, वह ईंट जो पकायी न गयी हो, एक ईंट ।

लिब्न (لبن) अ. स्त्री.–'लिब्नः' का बहु., कच्ची ईंटें ।

लिब्लाब (لبلاب) अ. स्त्री.–एक बेल, इश्क पेचाँ ।

लिब्स (لبس) अ. पुं.–वस्त्र, वसन, लिबास ।

लिम [**म्म**] (لم) अ. स्त्री.–कारण, सबब, (अव्य.) क्यों, किस लिए ।

लिम्मः (لمه) अ. पुं.–वे बाल जो कनपटी के नीचे लटक आयें ।

लिम्मी (لمی) अ. वि.–न्याय-परिभाषा में एक तर्क, ऐसा किस कारण है ।

लियाक़त (لیاقت) अ. स्त्री.–योग्यता, क़ाबिलीयत; पात्रता, इस्तेहक़ाक़; विद्वत्ता, इल्मीयत; उत्साह, हौसला; सामर्थ्य, मक़्दरत ।

लियाज़ (لیاذ) अ. पुं.–आश्रय लेना, पनाह ढूँढ़ना ।

लियाम (لیام) अ. पुं.–'लईम' का बहु., मक्खीचूस लोग ।

लियामत (لیامت) अ. स्त्री.–भर्त्सना, निंदा, मलामत ।

लियास (لیاس) अ. वि.–जो अपनी स्त्री की कमाई खाता हो, भार्याट, दय्यूस ।

लियाह (لیاح) अ. वि.–सफ़ेद, धवल श्वेत; (स्त्री.) जंगली गाय ।

लिल्लहिल हम्द (لله الحمد) अ. वा.–सारी स्तुतियाँ केवल ईश्वर के लिए हैं; ईश्वर को धन्यवाद, खुदा का शुक्र ।

लिल्लाह (لله) अ. अव्य.–ईश्वर के लिए, ईश्वर के नाम पर, ईश्वरार्पण।

लिवज्हिल्लाह (لوجہ اللہ) अ. अव्य.–ईश्वर के लिए।

लिवा (لوا) अ. पुं.–पताका, ध्वजा, झंडा।

लिवाए हक़ (لواے حق) अ. पुं.–सत्यता का झंडा।

लिवाज़ (لواذ) अ. पुं.–एक दूसरे की रक्षा करना, एक दूसरे को पनाह देना।

लिवातत (لواطت) अ.स्त्री.–गुदमैथुन, पुरुष-मैथुन, इग़लाम, दे. 'लवातत', दोनों शुद्ध हैं।

लिस [स्स] (لص) अ. वि.–चोर, स्तेन, तस्कर।

लिसान (لسان) अ. स्त्री.–जिह्वा, रसना, जीभ; भाषा, बोली, ज़बान।

लिसानी (لسانی) अ. वि.–भाषा-सम्बन्धी।

लिसानीयात (لسانیات) अ. स्त्री.–भाषा-विज्ञान, भाषाओं का इल्म।

लिसानुलअस्र (لسان العصر) अ. पुं.–अपने समय का तर्जुमान।

लिसानुलक़ौम (لسان القوم) अ. पुं.–अपने राष्ट्र का तर्जुमान; अपनी जाति का तर्जुमान।

लिसानुलग़ैब (لسان الغیب) अ. पुं.–भविष्य की बातें जाननेवाला।

लिसानुलमुल्क (لسان الملک) अ. पुं.–अपने देश या राष्ट्र का तर्जुमान।

लिसानुलहमल (لسان الحمل) अ. स्त्री.–एक वनौषधि, बारतंग।

लिसाम (لثام) अ. पुं.–पशुओं के मुँह बाँधने की जाली, मुसीका।

लिस्सः (لثہ) अ. पुं.—मसूढ़ा, दंतमांस, दे. 'लस्सः' और 'लुस्सः', तीनों शुद्ध हैं।

लिहा (لحا) अ. स्त्री.–वल्कल, छाल, बकला।

लिहाज़ (لحاظ) अ. पुं.–आदर, ख़याल; शील, मुरव्वत; लज्जा, शर्म; स्वाभिमान, ग़ैरत; भय, डर; ध्यान, ख़याल; संकोच, नदामत।

लिहाज़ा (لہذا) अ. अव्य.–अतः, सुतराम्, इसलिए।

लिहाफ़ (لحاف) अ. पुं.–मोटी रज़ाई।

लिह्यः (لحیہ) अ. स्त्री.–दे. 'लेह्यः'।

लिह्यान (لحیان) अ. वि.–दे. 'लेह्यान'।

ली

लीक़ः (لیقہ) अ. पुं.–दवात में डालने का लत्ता।

लीक़ (لیق) अ. पुं.–दे. 'लीक़ः'।

लीग़ (لیغ) फा. वि.–उदास, मलिन, बददिल।

लीनः (لینہ) अ. पुं.–खजूर के पेड़ का तना; खजूर की लंबी सोंट।

लीन (لین) अ. स्त्री.–कोमलता, नर्मी।

लीनत (لینت) अ. स्त्री.–कोमलता, नर्मी, मुलायमपन।

लीफः (لیفہ) अ. पुं.–खजूर का बकला; रेशा, तंतु।

लीफ़ (لیف) अ. स्त्री.–दे. 'लीफ़ः'।

लीसुरग़ुस (لیثر غس) अ. पुं.–एक प्रकार का सन्निपात।

लु

लुंग (لنگ) फा. पुं.–लुंगी, तहमद; जाँघिया, लँगोट।

लुंगक (لنگک) फा. पुं.–छोटी-सी लुंगी, अँगौछा, जाँघिया।

लुंज (لنج) फा. पुं.–होंठ, अधर, ओष्ठ।

लुआब (لعاب) अ. पुं.–चेप, लस; राल, लाला; लसदार दवाओं का गाढ़ा पानी।

लुआबदार (لعاب دار) अ. फा. वि.–वह वस्तु जिसमें चेप हो, लेसदार।

लुआबे दहन (لعاب دہن) अ. फा. पुं.–थूक, मुखस्राव; राल, लाला।

लुक (لک) तु. वि.–मोटी भारी, और बेढंगी वस्तु।

लुक़ातः (لقاطہ) अ. वि.–बहुत ही घटिया वस्तु।

लुक्कः (لکہ) फा. पुं.–धब्बा, दाग़; टुकड़ा, खंड।

लुक्कए अब्र (لکۂ ابر) फा. पुं.–बादल का टुकड़ा, अभ्रखंड।

लुक्कहाए अब्र (لکہاے ابر) फा. पुं.–बादलों के टुकड़े।

लुक़्क़ाअः (لقاعہ) अ. वि.–बहुत ही बातूनी, झक़्की; हाज़िरजवाब, शीघ्रोत्तर, प्रत्युत्पन्नमति।

लुक़्तः (لقطہ) अ. पुं.–भूमि पर पड़ी हुई हुई वस्तु जो उठा ली गयी हो; पुराना लत्ता।

लुक्नत (لکنت) अ. स्त्री.–हकलापन, हकलाहट।

लुक्नतआमेज़ (لکنت آمیز) अ. फा. वि.–हकलाहट के साथ; हकलाते हुए।

लुक़्मः (لقمہ) अ. पुं.–ग्रास, कवल, निवाला।

लुक़्मःख़ोर (لقمہ خور) अ. फा. वि.–निवाला खानेवाला।

लुक़्मए अजल (لقمۂ اجل) अ. पुं.–मृत्यु के मुँह का निवाला, मृत्युकवल, मृत, मुर्दा।

लुक़्मए गोर (لقمۂ گور) अ. फा. पुं.–क़ब्र के मुँह का निवाला, मृत, मुर्दा।

लुक़्मए चर्ब (لقمۂ چرب) अ.फा. पुं.–तर निवाला, तरमाल, बढ़िया-बढ़िया खाने; अच्छी प्राप्ति, काफ़ी लाभ।

लुक़्मए तर (لقمۂ تر) अ. फा. पुं.–दे. 'लुक़्मए चर्ब'।

लुक़्मए हराम (لقمۂ حرام) अ. पुं.–हराम की कमाई, दूसरे का माल जो बेईमानी से झटका जाय।

लुक़्मए हलाल (لقمۂ حلال) अ.पुं.–हलाल की कमाई, मेहनत से कमाया हुआ धन।

लुक़्मान (لقمان) अ.पुं.–एक बहुत बड़े वैद्य और वैज्ञानिक जिनकी चर्चा क़ुरान में है।

लुक़्माने वक़्त (لقمان وقت) अ. पुं.–अपने समय का बहुत बड़ा वैज्ञानिक और चिकित्सक।

लुक़्यः (لقیہ) अ. पुं.–साक्षात्कार, भेंट, मुलाक़ात; दर्शन, दीदार।

लुख़ (لخ) फा. पुं.–पानी के किनारे उत्पन्न होनेवाली एक घास जिसकी चटाइयाँ बनती हैं।

लुग़ज़ (لغز) अ. स्त्री.–प्रहेलिका, पहेली, मुअम्मा; जंगली चूहे का बिल जो बहुत टेढ़ा-मेढ़ा होता है।

लुग़त (لغت) अ.पुं.–शब्द, लफ़्ज़; शब्दकोश, लुग़ात।

लुग़त दाँ (لغت داں) अ. फा. वि.–किसी भाषा-विशेष के बहुत अधिक शब्द जाननेवाला।

लुग़तनवीस (لغت نویس) अ. फा. वि.–शब्दकोष लिखनेवाला।

लुग़वी (لغوی) अ. वि.–लुग़त सम्बन्धी; लुग़त के अनुसार।

लुग़ात (لغات) अ. पुं.–'लुग़त' का बहु., शब्दावली, ज़ख़ीरए अल्फ़ाज़; कोष-समूह, बहुत-से लुग़त; लुग़त इस अर्थ में एक वचन है।

लुग़ूब (لغوب) अ. पुं.–दुःख, क्लेश, तक्लीफ़; खेद, शोक, ग़म; रोग, बीमारी।

लुच (لچ) तु. वि.–नग्न, नंगा; भेंगा, ऐंचा ताना; लंपट, लोफ़र।

लुचन (لچن) तु. वि.–कुलटा व्यभिचारिणी, फ़ाहिशा।

लुजज (لجج) अ. पुं.–'लज्जः' का बहु., गहरी नदियाँ; नदियों की गहराइयाँ; भँवर, गिर्दाब।

लुज़ूक़ (لزوق) अ. पुं.–चिपकना।

लुज़ूजत (لزوجت) अ. स्त्री.–चिपक, लेस, चिपकाहट।

लुज़ूम (لزوم) अ.पुं.–अनिवार्यता, लाज़िम होना।

लुजैन (لجین) अ. स्त्री.–खरी चाँदी।

लुज्जः (لجہ) अ.पुं.–नदी का बीच; नदी का सबसे गहरा स्थान; भँवर, जलावर्त।

लुज्जी (لجی) अ. पुं.–बढ़ी-चढ़ी नदी, लबालब नदी।

लुतंबान (لت انبان) फा. वि.–दे. 'लतंबान', दोनों शुद्ध, हैं पर वह अधिक प्रचलित है।

लुतंबार (لت انبار) फा. वि.–दे. 'लतंबार', दोनों शुद्ध हैं, परंतु वह अधिक व्यवहृत है।

लुत्फ (لطف) अ. पुं.–करुणा, तरस; दया, रह्म; अनुकंपा, मेह्रबानी; आनंद, मज़ा; मनोविनोद; तफ़्रीह; दानशीलता, फ़ैयाज़ी; अनुदान, बख़्शिश।

लुत्फ़ी (لطفی) अ.पुं.–दत्तक, लेपालक, मुतबन्ना।

लुत्मः (لطمہ) अ. पुं.–तमाँचा, थप्पड़, तल-प्रहार, थपेड़ा।

लुत्रः (لترہ) फा. वि.–इधर की उधर लगानेवाला, लगाई-बुझाई करनेवाला।

लुद [द्द] (لد) पुं.–'अलद' का बहु., युद्ध करनेवाले, लड़नेवाले, झगड़ा करनेवाले।

लुफ़ाज़ः (لفاظہ) अ. पुं.–वह वस्तु जो मुँह से उगली जाय, मुँह से निकली हुई वस्तु।

लुफ़्फ़ाह (لفاح) अ. स्त्री.–एक बूटी, यब्रूह, लक्ष्मण।

लुब [ब्ब] (لب) अ.पुं.–बुद्धि, अक़्ल; सार, तत्त्व; विशुद्ध, ख़ालिस; मींग, मग़्ज़।

लुबाद (لباد) अ.पुं.–बैल के कंधे पर रखने का जुआ।

लुबान (لبان) अ.पुं.–कुंदुर गोंद।

लुबाब (لباب) अ. पुं.–सार, तत्त्व, मग़्ज़।

लुबूब (لبوب) अ. पुं.–एक कामशक्तिवर्द्धक पाक जिसमें मींगें पड़ती हैं, और जो 'लबूब कबीर' और 'लबूब सग़ीर' के नाम से अत्तारों के यहाँ मिलता है।

लुब्नान (لبنان) अ. पुं.–शाम का एक पर्वत।

लुब्बे लुबाब (لب لباب) अ. पुं.–सार, तत्त्व, निचोड़, ख़ुलासा।

लुब्स (لبس) अ.पुं.–कपड़े पहनना, वस्त्र धारण करना।

लुमास (لماس) अ. स्त्री.–कामना, इच्छा, हाजत।

लुमूअ (لموع) अ. पुं.–चमकना, प्रकाशित होना; 'लम्अः' का बहु., प्रकाशपुंज, रौशनियाँ।

लुम्अः (لمعہ) अ. पुं.–मनुष्यों का समूह; सिर की सफ़ेदी; किसी अंग का वह खंड जो वुज़ू में सूखा रह जाय।

लुर (لر) फा. वि.–मूर्ख, बुद्धू, घामड़।

लुसास (لساس) अ.पुं.–नयी उगी हुई घास।

लुसुन (لسن) अ. पुं.–'लसिन' का बहु.; भाषा-विशेष के विद्वान् लोग; बहुत ही मधुर, सुंदर और कोमल भाषा बोलनेवाले।

लुसूक़ (لصوق-لسوق) अ.पुं.–चिपकना।

लुसूस (لصوص) अ.पुं.–'लिस' का बहु., चोर लोग।

लुस्न (لسن) अ. पुं.–'अल्सन' का बहु., अर्थ के लिए दे. 'लुसुन'।

लुस्सः (لثہ) अ. पुं.–मसूढ़ा, दे. 'लस्सः' और 'लिस्सः,' तीनों शुद्ध हैं।

लुहा (لحا) अ. स्त्री.–'लेह्यः' का बहु., डाढ़ियाँ।

लुहाम (لحام) अ. पुं.–'लह्‌म' का बहु., बहुत-से मांस।

लुहाम (لہام) अ. पुं.–बहुत बड़ी सेना।

लुहूक़ (لحوق) अ. पुं.–पीछे से मिलना या जड़ना; दो या अधिक वस्तुओं का परस्पर मिलना।

लुहून (لحون) अ. पुं.–'लह्‌न' का बहु., आवाज़ें, स्वर-समूह।

लुहूम (لحوم) अ. पुं.–'लह्‌म' का बहु., मांसपिंड-समूह, बंहुत-से गोश्त।

लुह्‌मान (لحمان) अ. पुं.–दे. 'लुहूम'।

लू

लूक़ः (لوقہ) अ. पुं.–ताज़ा घी, ताज़ा मक्खन।

लूक़ा (لوقا) अ. पुं.–यूनान का एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक।

लूख़ (لوخ) फा. पुं.–पानी के किनारे उत्पन्न होनेवाली एक घास जिसकी चटाइयाँ बनती हैं; दे. 'लुख़'।

लूच (لوچ) तु. वि.–नग्न, नंगा; भेंगा, दे. 'लुच'।

लूत (لوت) फा. वि.–नंगा, नग्न।

लूत (لوط) अ. पुं.–एक पैग़ंबर जिनके अनुयायियों ने गुद-मैथुन को धर्म-विहित मान लिया था, जिसके कारण उन पर अज़ाब (यातना) आया और वह सब नष्ट हो गये।

लूती (لوطی) अ. वि.–गुद-मैथुन करनेवाला; धृष्ट, ढीठ, बेहया; स्वच्छंद, जो धमाधर्म का ध्यान न रखता हो।

लूबः (لوبہ) अ. पुं.–पथरीली भूमि, पहाड़ी इलाक़ा, वह पहाड़ी क्षेत्र जहाँ पानी का अभाव हो।

लूब (لوب) अ. पुं.–'लूबः' का बहु., ऐसे पहाड़ी क्षेत्र जहाँ पानी न मिलता हो।

लूलू (لولو) अ. पुं.–मुक़्ता, मोती।

लूलूए लाला (لولوے لالا) अ. पुं.–बहुत बढ़िया और चमकदार मोती।

लूशा (لوشا) अ. पुं.–एक यूनानी वैज्ञानिक।

ले

लेक (لیک) फा. अव्य.–'लेकिन' का लघु., दे. 'लेकिन'।

लेकिन (لیکن) फा. अव्य.–'लाकिन' का फार्सी रूप, परंतु।

लेज़म (لیزم) फा. स्त्री.–व्यायाम करने का एक विशेष प्रकार का धनुष।

लेमूँ (لیموں) फा. पुं.–नीबू, निंबू, निंबूक, जंभीर।

लेमूनी (لیمونی) फा. वि.–जो नीबू के रस से बना हो; जिसमें नीबू का रस पड़ा हो; नीबू से सम्बन्धित।

लेस (لیس) फा. प्रत्य.–चाटनेवाला, जैसे—'कास:लेस' रिकाबी चाटनेवाला।

लेसाँ (لیساں) फा. वि.–चाटता हुआ।

लेसिंदः (لیسندہ) फा. वि.–चाटनेवाला, लेहक।

लेसीदः (لسیدہ) फा. वि.–चाटा हुआ, लेहित।

लेसीदनी (لیسیدنی) फा. वि.–चाटने योग्य, लेहनीय, लेह्य।

लेह्‌यः (لحیہ) अ. स्त्री.–डाढ़ी, श्मश्रु, रीश।

लेह्‌यान (لحیان) अ. वि.–लंबी डाढ़ीवाला, रीशाईल।

लेह्‌यानी (لحیانی) अ. वि.–रीशाईल, जिसकी डाढ़ी बहुत लंबी हो।

लै

लै (لے) अ. पुं.–बटना, रस्सी आदि बटना; लपेटना; ज़बान का लड़खड़ाना; जाल में फड़फड़ाना।

लैअ (لیع) अ. पुं.–डरना, भय खाना; जी उचाट होना, बद दिल होना।

लैत (لیت) अ. अव्य.–ईश्वर ऐसा करता।

लैतक (لیتک) फा. पुं.–दासी-पुत्र, लौंडी-बच्चा।

लैतोलअल [ल्ल] (لیت ولعل) अ. स्त्री.–टालमटोल, हेराफेरी, आजकल, बहानाबाज़ी।

लैन (لین) अ. वि.–दे. 'लैयिन', दोनों शुद्ध हैं।

लैमून (لیمون) अ. पुं.–नीबू, निंबूक, लेमूँ, जंभीर।

लैमूनी (لیمونی) अ. वि.–नीबू से बना हुआ; जिसमें नीबू पड़ा हो; नीबू-सम्बन्धी वस्तु।

लैयान (لیان) अ. पुं.–लपेटना।

लैयिन (لین) अ. वि.–मृदुल, कोमल, नर्म (पुं.) ख़जूर या छुहारे के पेड़ का तना।

लैलः (لیلہ) अ. स्त्री.–रात्रि, निशा, रात, शब।

लैल (لیل) अ. स्त्री.–रात्रि, यामिनी, निशीथिनी, क्षपा, शब,—"छाई हुई हैं ग़म की घटाएँ चहारसू, क्या फ़र्क़ रह गया मेरे लैलोनिहार में।"

लैलतुल अस्रा (لیلۃ الاسری) अ. स्त्री.–दे. 'लैलतुल मे'राज'।

लैलतुलक़द्र (لیلۃ القدر) अ. स्त्री.–रमज़ान के महीने की एक रात्रि, जिसमें जप-तप करना बहुत अच्छा माना गया है।

लैलतुलबद्र (لیلۃ البدر) अ. स्त्री.–चाँद की चौदहवीं रात्रि, पूर्णिमा, पूर्णमासी।

लैलतुलबरात (لیلۃ البرات) अ. स्त्री.–शबेबरात, शबरात, शा'बान मास की चौदहवीं रात्रि।

लैलतुलमे'राज (لیلۃ المعراج) अ. स्त्री.–वह रात जिसमें मुसलमानों के मतानुसार हज़रत मुहम्मद साहिब अर्श पर गये।

लैला (لیلی) अ. स्त्री.–'क़ैस' की प्रेमिका, जिसके इश्क़ में वह पागल हो गया था, और सब उसे 'मज्नून' (पागल) कहने लगे थे।

लैंली (لیلی) अ. स्त्री.–'दे. 'लैला'।

लैंले (لیلے) फा. स्त्री.–दे. 'लैला', यह शब्द केवल फ़ार्सी पद्य में प्रयुक्त हुआ है।

लैंस (لیث) अ. पुं.–सिंह, शेर।

लैंह (لیہہ) अ. पुं.–छिप कर जाना।

लो

लोक (لوک) फा. पुं.–लद्दू ऊँट; जो दुर्बलता और रोग के कारण घिसट-घिसटकर चले, जैसे—बच्चे चलते हैं; दीन, असहाय, लाचार।

लोकाँ (لوکاں) फा. वि.–घुटनों के बल चलता हुआ; घुटनों के बल चलनेवाला।

लोंकिदः (لوکندہ) फा. वि.–घुटनों के बल चलनेवाला।

लोकीदः (لوکیدہ) फा. वि.–जो घुटनों के बल चला हो।

लोकीदनी (لوکیدنی) फा. वि.–घुटनों के बल चलने योग्य।

लोत (لوت) फा. पुं.–अच्छे-अच्छे खाने; बिना दाढ़ी-मूँछ का लड़का।

लोतपोत (لوت پوت) फा. पुं.–अच्छे-अच्छे स्वादिष्ठ खाने।

लोदी (لودی) फा. पुं.–पठानों की एक जाति।

लो'बत (لعبت) अ. स्त्री.–खिलौना; गुड़िया, पुत्तलिका।

लो'बतेचीं (لعبت چیں) अ. फा. स्त्री.–चीनी गुड़िया; चीनी सुंदरी।

लोबान (لوبان) फा. पुं.–एक सुगंधित गोंद।

लोर (لور) फा. पुं.–धुनकने की कमान; वह भूमि जो बाढ़ के पानी से कट जाय; एक नाव-विशेष।

लोरकंद (لورکند) फा. पुं.–वह गढ़ा जो बाढ़ के पानी से बन जाय।

लोरा (لورا) फा. पुं.–पतली लपसी, दलिया; हर पतली वस्तु।

लोरियाँ (لوریاں) फा. पुं.–'लोरी' का बहु., कमीने और अधम लोग।

लोरी (لوری) फा. पुं.–एक जंगली और असभ्य जाति जो नाचने-गाने का पेशा करती है, कंजर; नीच, लोफ़र, कमीना।

लोलः (لولہ) फा. पुं.–भुने हुए अन्न का आटा, सत्तू।

लोलःपेच (لولہ پیچ) फा. पुं.–हर वह कपड़ा जिसका थान दफ़्ती में लपेटा जाय और ऊपर काग़ज़ चढ़ाया जाय।

लोल (لول) फा. वि.–चपल, चंचल, शोख़; निर्लज्ज, धृष्ट, बेहया, ढीठ।

लोलए आबरेज़ (لولۂ آبریز) फा. पुं.–टोंटी, नलकी।

लोलियाँ (لولیاں) फा. स्त्री.–'लोली' का बहु., रंडियाँ।

लोली (لولی) फा. स्त्री.–रंडी, तवाइफ़।

लोश (لوش). फा. वि.–कीचड़, पंक, खाब; अचेत, बेख़बर; टेढ़े मुँहवाला; कोढ़ी।

लोशाक (لوشاک) फा. वि.–कीचड़ मिला हुआ, गदला।

लोस (لوس) फा. पुं.–चापलूसी, चाटुकारिता।

लोसानः (لوسانہ) फा. पुं.–चापलूसी, ख़ुशामद; विनीति, विनय, खाकसारी।

लोह्जः (لہجہ) अ. पुं.–प्रातराश, नाश्ता, सवेरे का जलपान।

लोह्नः (لہنہ) अ. पुं.–नाश्ता, प्रातराश; वह थोड़ा खाना जो मेहमान के सामने रख दिया जाय ताकि खाना तैयार होने तक का आधार हो जाय।

लोह्मः (لحمہ) अ. पुं.–बाज़ के शिकार का गोश्त; कपड़े की चौड़ाई का तार, बाना।

लोह्मान (لحمان) अ. पुं.–'लह्म' का बहु., मांस-पिंड-समूह।

लौ

लौ (لو) फा. पुं.–पुश्ता, उँचाई; पित्त, सफ़्रा।

लौअ (لوع) अ. स्त्री.–प्रेम की व्याकुलता और जलन।

लौअत (لوعت) अ. स्त्री.–प्रेम की तपन, जलन और व्याकुलता, दे. 'लौअ'।

लौआत (لوعات) अ. स्त्री.–'लौअत' का बहु., प्रेम की जलनें।

लौक (لوک) अ. पुं.–चबाना, चर्वण; खाना, खान।

लौज़ः (لوزہ) अ. पुं.–बादाम, एक प्रसिद्ध मेवा; कौआ, गले का कौआ, कंठकाक।

लौज़ (لوز) अ. पुं.–'लौज़ः' का बहु., बहुत-से बादाम।

लौज़ (لوذ) अ. पुं.–बचाव के लिए पनाह ढूँढ़ना; घाटी का किनारा।

लौज़ई (لوذعی) अ. वि.–बुद्धिमान्, मेधावी, दाना; प्रतिभाशाली, ज़हीन।

लौज़नान (لوزنان) फा. पुं.–हल्क़ का कौआ, कंठकाक।

लौज़ियात (لوزیات) फा. पुं.–'लौज़ः' का बहु., परंतु एक वचन में व्यवहृत है।

लौज़ीनः (لوزینہ) फा. पुं.– बादाम का हल्वा।

लौनः (لونہ) अ. पुं.–मुँह पर मलने का पाउडर, मुखचूर्ण, ग़ाज़ा।

लौन (لون) अ. पुं.–रंग, वर्ण।

लौने ग़ामिक़ (لونِ غامق) अ. पुं.–गहरा रंग।

लौने फ़ातेह (لونِ فاتح) अ. पुं.–हलका रंग।

लौने मा'तम (لونِ معتم) अ. पुं.–शोख़ रंग, खुलता हुआ रंग, न बहुत गहरा न हलका।

लौम (لوم) अ. पुं.–भर्त्सना, निंदा, मलामत; कृपणता, कंजूसी।

लौमत (لومت) अ. स्त्री.–दे. 'लौम'।

लौमते लाइम (لومت لائم) अ. स्त्री.–निंदा करनेवाले की निंदा।

लौलौशम (لولوشم) फा. पुं.–एक फूल विशेष।

लौस (لوث) अ. पुं.–लगाव, संपर्क, तअल्लुक़; लथड़ा होना, भरा होना।

लौसे दुन्या (لوث دنیا) अ. पुं.–सांसारिक बंधन, मायाजाल, लिप्ति, अनुराग।

लौह (لوح) अ. स्त्री.–बच्चों के लिखने की पाटी, तख़्ती, पट्टिका; पत्थर का टुकड़ा जिस पर लिखकर क़ब्र आदि पर लगाते हैं।

लौहशल्लाह (لوحش اللہ) अ. बा.–'ला औहशल्लाह' का फ़ार्सी रूप, आदर प्रदर्शन या आश्चर्य प्रकटन के समय बोलते हैं।

लौहे क़ब्र (لوح قبر) अ. स्त्री.–दे. 'लौहे मज़ार'।

लौहे जबीं (لوح جبیں) अ. स्त्री.–दे. 'लौहे पेशानी'।

लौहे तिलिस्म (لوح طلسم) अ. स्त्री.–किसी जादू के मकान में रखी हुई वह तख़्ती जिस पर जादू तोड़ने की विधि लिखी होती है।

लौहे नाख्वाँदः (لوح ناخوانده) अ. स्त्री.–ईश्वरदत्त विद्या, इल्मे लदुन्नी, दे. 'लौहे महफ़ूज़'।

लौहे पेशानी (لوح پیشانی) अ. फा. स्त्री.–ललाटपटल, माथा; भाग्य, तक़्दीर।

लौहे मज़ार (لوح مزار) अ. स्त्री.–वह पत्थर की तख़्ती जो किसी मरनेवाले की क़ब्र पर लगाते हैं और उसमें उसके मरने की तारीख आदि लिखते हैं।

लौहे महफ़ूज (لوح محفوظ) अ. स्त्री.–अर्श पर एक स्थान, जहाँ संसार में होनेवाली सारी घटनाओं का उल्लेख हैं और जिसे कोई पढ़ नहीं सकता।

लौहोक़लम (لوح وقلم) अ. पुं.–तख़्ती और उस पर लिखने का क़लम, अर्थात् वह तख़्ती जिस पर भविष्य में होनेवाली सारी घटनाएँ लिखी हुई हैं और वह लेखनी जिसने यह सब कुछ ईश्वर की आज्ञा से लिखा है।

व

वइल्ला (والّا) अ. अव्य.–नहीं तो, अन्यथा, वर्ना।

वईद (وعید) अ. स्त्री.–सज़ा का वादा, दंड की धमकी।

वक़ाए' (وقائع) अ. पुं.–'वक़ीअः' का बहु., घटनाएँ; समाचार, खबरें।

वक़ाए' नवीस (وقائع نویس) अ. फा. वि.–इतिहासकार, मुअर्रिख़; समाचारलेखक, संवादकार।

वक़ाए' नवीसी (وقائع نویسی) अ. फा. स्त्री.–इतिहास लिखना; संवाद देना।

वक़ाए' निगार (وقائع نگار) अ. फा. वि.–दे. 'वकाए नवीस'।

वक़ाए निगारी (وقائع نگاری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'वक़ाए नवीसी'।

वक़ार (وقار) अ. पुं.–भारी भरकसपन, गुरुत्व; प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; गंभीरता, मतानत; मान-मर्यादा, एहतिराम।

वकालत (وکالت) अ. स्त्री.–वकील का काम, अभिभाषण, अभिवचन।

वकालतन (وکالتاً) अ. फा. वि.–वकील के द्वारा, वकील के ज़रीये।

वकालतनामः (وکالت نامہ) अ. फा. पुं.–वकील बनाने की तहरीर, अभिभाषण पत्र।

वकालतपेशः (وکالت پیشہ) अ.फा. वि.–जो वकालत करता हो, अभिभाषण-व्यवसायी।

वक़ाह (وقاح) अ. वि.–निर्लज्ज़, बेशर्म; धृष्ट, ढीठ; उद्दंड, उजड्ड।

वक़ाहत (وقاحت) अ. स्त्री.–निर्लज्जता, बेहयाई; धृष्टता, गुस्ताख़ी।

वकीअ (وکیع) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत।

वक़ीअ (وقیع) अ. वि.–प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ, इज़्ज़तदार; उच्च, ऊँचा, बलंद।

वक़ीअत (وقیعت) अ. स्त्री.–निंदा, कुत्सा, बदगोई; युद्ध, लड़ाई।

वक़ीद (وقید) अ. पुं.–पतला ईंधन जिससे आग सुलगायी जाती है।

वकील (وکیل) अ. वि.–वकालत करनेवाला, अभिभाषक, अभिवक्ता।

वकीले मुत्लक़ (وکیل مطلق) अ.पुं.–ऐसा वकील जिसे मुअक्किल की ओर से पूरे अधिकार प्राप्त हों।

वकीले सरकार (وکیل سرکار) अ. फा. पुं.–सरकारी मुकद्दमों में पैरवी करनेवाला वकील।

वक़ीह (وقیح) अ. वि.–निर्लज्ज, बेहया; धृष्ट, ढीठ।

वक़ूद (وقود) अ. पुं.–इंधन, जलाने की लकड़ी आदि।

वक़ूर (وقور) अ. वि.–प्रतिष्ठित, ज़ीइज़्ज़त।

वकूल (وکول) अ. वि.–वह लाचार व्यक्ति जो अपना काम दूसरों पर छोड़ दे।

वक़ेह (وقیح) अ. वि.–दे. 'वक़ीह'।

वक़्अ (وقع) अ. पुं.–प्रतिष्ठा, इज़्ज़त (स्त्री.) ऊँचा स्थान, ऊँची जगह।

वक़्अत (وقعت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, इज़्ज़त; महत्त्व, अहम्मीयत; आदर, एहतिराम; उच्चता, बलंदी।

वक्ज़ (وکز) अ. पुं.–घूँसा मारना, मुक्केबाज़ी करना।

वक़्क़ाद (وقاد) अ. वि.–बहुत तेज़ जलनेवाला, शोले फेंकनेवाला; दीप्त, ज्वलंत, रौशन।

वक़्त (وقت) अ. पुं.–समय, काम, ज़माना; अवसर, मौक़ा; ऋतु, मौसिम; बिलंब, देर।

वक़्तगुज़ारी (وقت گزاری) अ. फा. स्त्री.–समय काटना, कालयापन; बुरे-भले जीवन व्यतीत करना।

वक़्तन फ़ वक़्तन (وقتاً فوقتاً) अ. वि.–यदा कदा, कभी-कभी।

वक़्त ब वक़्त (وقت بوقت) अ. फा. वि.–दे. 'वक़्तन फ़ वक़्तन'।

वक़्त बे वक़्त (وقت بےوقت) अ. फा. वि.–अच्छे और बुरे समय पर, सुख-दुःख में, ज़रूरत के वक़्त।

वक़्ती (وقتی) अ. वि.–सामयिक, समय-सम्बन्धी; क्षण-स्थायी, थोड़ी देर का; अस्थायी, आरिज़ी; (प्रत्य.) समय का, जैसे—'पंजवक़्ती नमाज़' पाँच वक़्त की नमाज़।

वक़्ते अजल (وقت اجل) अ. पुं.–मृत्यु-समय, मरने का समय।

वक़्ते आख़िर (وقت آخر) अ. पुं.–अंतिम समय, मृत्यु-काल।

वक़्ते इआनत (وقت اعانت) अ. पुं.–सहायता का अवसर, मदद का समय।

वक़्ते इम्दाद (وقت امداد) अ. पुं.–दे. 'वक़्ते इआनत'।

वक़्ते एहसान (وقت احسان) अ. पुं.–उपकार का समय या अवसर।

वक़्ते ख़्वाब (وقت خواب) अ. फा. पुं.–सोने का समय।

वक़्ते ज़ुरूरत (وقت ضرورت) अ. पुं.–आश्वयकता का अवसर; सहायता का अवसर।

वक़्ते नाज़ुक (وقت نازک) अ. फा. पुं.–आपत्तिकाल, मुसीबत का समय; सावधान रहने और सँभलकर चलने का समय।

वक़्ते फ़राग़त (وقت فراغت) अ. पुं.–छुट्टी का समय; समृद्धि का समय; कार्यनिवृत्ति का समय।

वक़्ते फ़ुर्सत (وقت فرصت) अ. पुं.–दे. 'वक़्ते फ़राग़त'।

वक़्ते बद (وقت بد) अ. फा. पुं.–आपत्तिकाल, मुसीबत का समय; गुंडागर्दी का समय।

वक़्ते मदद (وقت مدد) अ. पुं.–वक़्ते इम्दाद, सहायता का अवसर।

वक़्ते मर्दानगी (وقت مردانگی) अ. फा. पुं.–साहस दिखाने का अवसर; युद्ध में कूद पड़ने का अवसर।

वक़्ते मुलाक़ात (وقت ملاقات) अ. पुं.–मिलने का समय; मिलने के समय।

वक़्ते मुसीबत (وقت مصیبت) अ. पुं.–आपत्तिकाल, विपत्ति-पड़ने के समय।

वक़्ते रवानगी (وقت روانگی) अ. फा. पुं.–प्रस्थान के समय; चलते समय, रवाना होते समय।

वक़्ते रुख़्सत (وقت رخصت) अ. पुं.–विदा होते समय, जाते समय, चलते वक़्त।

वक़्ते वापसीं (وقت واپسیں) अ. फा. पुं.–मरते समय, अंतिम समय।

वक़्ते शिकायत (وقت شکایت) अ. पुं.–शिकायत का समय; शिकायत करते समय।

वक़्ते हिम्मत (وقت ہمت) अ. पुं.–दे. 'वक़्ते मर्दानगी'।

वक़्फः (وقفہ) अ. पुं.–दो कामों के बीच में ठहराव का समय, विराम; इंटरवल टाइम, कालान्तर; देर, विलंब; ठहराव, सुकून।

वक़्फ़ (وقف) अ. पुं.–ईश्वरार्पण, देवोत्तर, उत्सर्ग, ख़ुदा के नाम पर दान की हुई वस्तु या संपत्ति आदि; किसी पुरुष-विशेष के लिए रखी हुई या अलग की हुई वस्तु।

वक्फ़ (وکف) अ. पुं.–बरसात में छत आदि का टपकना; किसी चीज़ से पानी टपकना।

वक़्फ़ अलल औलाद (وقف علی الاولاد) अ. पुं.–वह संपत्ति जो अपनी संतान के लिए वक़्फ़ हो।

वक़्फ़ अलल्लाह (وقف علی اللہ) अ. पुं.–वह संपत्ति जो धार्मिक कार्यों के लिए वक़्फ़ हो।

वक़्फ़नामः (وقف نامہ) अ. फा. पुं.–वक़्फ़ की दस्तावेज़, उत्सर्गपत्र, दानपत्र।

वगर (وگر) फा. अव्य.–अगर, यदि, अब उर्दू में नहीं बोलते।

वगरनः (وگرنہ) फा. अव्य.–अन्यथा, वर्ना, नहीं तो।

वग़ा (وغا) अ. स्त्री.–युद्ध, समर, जंग, लड़ाई।

वग़ैरः (وغیرہ) अ. अव्य.–आदि, इत्यादि, प्रभृति, प्रमुख।

वग़्द (وغد) अ. वि.–अधम, नीच, कुपात्र, कमीना; अयोग्य, नाक़ाबिल।

वज (وج) अ. स्त्री.–वचा, बच, एक लकड़ी जो दवा में चलती है।

वजउलक़ल्ब (وجع القلب) अ. पुं.–हृदय की पीड़ा, दिल का दर्द, हृत्पीडा।

वजउलमफ़ासिल (وجع المفاصل) अ. पुं.–जोड़ों का दर्द, संधिवात, अंगमर्ष, गठिया।

वजउलमे'दः (وجع المعدہ) अ. पुं.–पेट का दर्द, उदर-पीड़ा।

वजउलवरिक (وجع الورک) अ. पुं.–चूतड़ का दर्द, श्रोण-पीडा।

वज़ग़ः (وزغہ) अ. पुं.–मेंढक, मंडूक; कृकलास, गिरगट; गृहगोधिका, छिपकली।

वज़ग़ (وزغ) अ. पुं.–दे. 'वज़ग़ः'।

वजब (وجب) अ. पुं.–बारह अंगुल की नाप, वितस्ति, बित्ती, बालिश्त।

वजर (وجر) अ. पुं.–भय, त्रास, डर।

वजा' (وجع) अ. पुं.–पीड़ा, व्यथा, वेदना, दर्द।

वजा (وجا) अ. पुं.–भय, त्रास, डर, ख़ौफ़।

वज़ाअत (وضاعت) अ. स्त्री.–पवित्रता, पाकीज़गी; सुन्दरता, ख़ूबसूरती; निर्दोष, बेऐबी।

वज़ाअत (وضاعت) अ. स्त्री.–अधमता, नीचता, लोफरपन।

वज़ाइफ़ (وظائف) अ. पुं.–'वज़ीफ़:' का बहु., छात्र-वृत्तियाँ; मंत्रजाप आदि।

वज़ाहत (وضاحت) अ. स्त्री.–विस्तार, फैलाव; स्पष्टता, विवरण, तफ़्सील।

वजाहत (وجاہت) अ. स्त्री.–मुखश्री, मुखकांति, चेहरे की आबोताब; प्रतिष्ठा, मान्यता, इज़्ज़त।

वज़ाहततलब (وضاحت طلب) अ. वि.–जिस बात का स्पष्टीकरण आवश्यक हो।

वजाहतपरस्त (وجاہت پرست) अ. वि.–जो बड़े लोगों की ही ओर आकृष्ट रहता हो।

वज़िंदः (وزندہ) फा. वि.–बहनेवाली वायु, चलनेवाली हवा।

वजिर (وجر) अ. वि.–डरनेवाला, त्रस्त, भयभीत।

वजिल (وجل) अ. वि.–जो भ्रम के कारण डरे, डरने-वाला।

वज़िश (وزش) फा. स्त्री.–हवा की सरसराहट, हवा चलने की हालत।

वजीअ (وجیع) अ. वि.–कष्टग्रस्त, पीड़ित, दर्दनाक।

वज़ीअ (وضیع) अ. वि.–अधम, नीच, कमीना।

वज़ीओशरीफ़ (وضیع و شریف) अ. पुं.–कमीने और भलेमानस लोग, अर्थात् अच्छे-बुरे सब।

वजीज़ (وجیز) अ. वि.–ह्रस्व, छोटा; संक्षिप्त, मुख़्तसर।

वज़ीदः (وزیدہ) फा. वि.–चली हुई हवा, बही हुई वायु, चला हुआ पवन।

वज़ीदनी (وزیدنی) फा. वि.–चलने के क़ाबिल हवा।

वज़ीफ़ः (وظیفہ) अ. पुं.–छात्रवृत्ति, स्कॉलरशिप; वृत्ति, पर्वरिश अलाउंस; निवृत्तिवेतन, पेनशन; किसी मंत्र आदि या कुरान के वाक्यादि का जप।

वज़ीफ़ःख़्वाँ (وظیفہ خواں) अ. फा. वि.–मंत्र आदि पढ़ने-वाला; यशोगान करनेवाला।

वज़ीफ़ःख़्वानी (وظیفہ خوانی) अ. फा. स्त्री.–मंत्र आदि का उच्चारण; यशगान।

वज़ीफ़ःख़्वार (وظیفہ خوار) अ. फा. वि.–पेनशन पाने-वाला, वृत्तिभोक्ता।

वज़ीफ़ःख़्वाह (وظیفہ خواہ) अ. फा. वि.–वज़ीफ़ा चाहने-वाला।

वज़ीफ़ःगो (وظیفہ گو) अ. फा. वि.–वज़ीफ़ा पढ़नेवाला; यशोगान करनेवाला।

वज़ीफ़ःगोई (وظیفہ گوئی) अ. फा. स्त्री.–वज़ीफ़ा पढ़ना; गुणगान करना।

वज़ीफ़ःदार (وظیفہ دار) अ. फा. वि.–वज़ीफ़ा पानेवाला।

वज़ीफ़ःयाब (وظیفہ یاب) अ. फा. वि.–वज़ीफ़ा पाया हुआ, जिसने वज़ीफ़ा पा लिया हो।

वज़ीफ़ए ज़ौजियत (وظیفۂ زوجیت) अ. पुं.–स्त्री-प्रसंग, सहवास, मैथुन।

वज़ीफ़ए ता'लीम (وظیفۂ تعلیم) अ. पुं.–छात्रवृत्ति, स्कॉलरशिप।

वज़ीफ़ए माहानः (وظیفۂ ماھانہ) अ. फा. पुं.–मासिक वृत्ति, हर महीने मिलनेवाला वज़ीफ़ा।

वज़ीसः (وذیسہ) अ. पुं.–पुरस्कार, उपहार, भेंट, हदिया।

वज़ीर (وزیر) अ. पुं.–अमात्य, मंत्री, सचिव।

वज़ीरे अद्ल (وزیر عدل) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे इंसाफ़'।

वज़ीरे आ'ज़म (وزیر اعظم) अ. पुं.–प्रधानमंत्री, महामंत्री, महामात्य।

वज़ीरे आबकारी (وزیر آبکاری) अ. फा. पुं.–आबकारी मंत्री।

वज़ीरे आबपाशी (وزیر آبپاشی) अ. फा. पुं.–सिंचनमंत्री।

वज़ीरे आबादकारी (وزیر آبادکاری) अ. फा. पुं.–पुनर्वास-मंत्री।

वज़ीरे आ'ला (وزیر اعلی) अ. पुं.–मुख्यमंत्री।

वज़ीरे इंसाफ़ (وزیر انصاف) अ. पुं.–न्यायमंत्री।

वज़ीरे इत्तिलाआत (وزیر اطلاعات) अ. पुं.–सूचनामंत्री।

वज़ीरे उमूरे ख़ारिजः (وزیر امور خارجہ) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे ख़ारिजः'।

वज़ीरे उमूरे दाख़िलः (وزیر امور داخلہ) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे दाख़िलः'।

वज़ीरे उमूरे मज़हबी (وزیر امور مذھبی) अ. पुं.–धर्म-मंत्री।

वज़ीरे क़ानून (وزیر قانون) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे इंसाफ़'।

वज़ीरे ख़ारिजः (وزیرخارجہ) अ. पुं.–परराष्ट्र मंत्री।

वज़ीरे ग़िज़ा (وزیر غزا) अ. पुं.–खाद्यमंत्री।

वज़ीरे जंग (وزیر جنگ) अ. फा. पुं,–युद्धमंत्री।

वज़ीरे ज़िराअत (وزیر زراعت) अ. पुं.–कृषिमंत्री।

वज़ीरे तरक़्क़ीयात (وزیر ترقیات) अ. पुं.–विकासमंत्री।

वज़ीरे ता'मीरात (وزیر تعمیرات) अ. पुं.–निर्माणमंत्री।

वज़ीरे ता'लीम (وزیر تعلیم) अ. पुं.–शिक्षामंत्री।

वज़ीरे तिजारत (وزیر تجارت) अ. पुं.–व्यापारमंत्री।

वज़ीरे दाख़िलः (وزیر داخلہ) अ. पुं.–गृहमंत्री।

वज़ीरे दिफ़ाय (وزیر دفاع) अ. पुं.–रक्षामंत्री।

वज़ीरे नौआ बादियात (وزیر نوآبادیات) अ. फा. पुं.–उपनिवेशमंत्री।

वज़ीरे फ़ौज (وزیر فوج) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे जंग'।

वज़ीरे बल्दीयात (وزیر بلدیات) अ. पुं.–स्थानीय स्वशासन-मंत्री।

वज़ीरे बहालीयात (وزیر بحالیات) अ. पुं.–पुनर्वासमंत्री।

वज़ीरे मफ़ादे आम्मः (وزیر مفاد عامہ) अ. पुं.–लोकहित मंत्री।

वज़ीरे माल (وزیر مال) अ. पुं.–अर्थमंत्री, मालमंत्री।

वज़ीरे मुवासलात (وزیر مواصلات) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे रस्लो रसाइल'।

वज़ीरे मेहनत (وزیر محنت) अ. पुं.–श्रममंत्री।

वज़ीरे रस्लो रसाइल (وزیر رسل ورسائل) अ. पुं.–यातायात-मंत्री।

वज़ीरे सन्अतो हिर्फ़त (وزیر صنعت وحرفت) अ. पुं.–उद्योगमंत्री।

वज़ीरे सेहत (وزیر صحت) अ. पुं.–स्वास्थ्यमंत्री।

वज़ीरे हर्ब (وزیر حرب) अ. पुं.–दे. 'वज़ीरे जंग'।

वज़ीरे हुकूमत (وزیر حکومت) अ. पुं.–राज्यमंत्री।

वजीहः (وجیہہ) अ. वि.–श्रीमुख, जिसका चेहरा रोबदार हो।

वजीह (وجیح) अ. वि.–दृढ़, मज़बूत।

वज़ू (وضو) अ. पुं.–नमाज़ के लिए वुज़ू करने का पानी, यह शब्द वुज़ू करने के अर्थ में अशुद्ध है।

वजूर (وجور) अ. पुं.–गले के भीतर टपकानेवाली पतली दवा।

वज़अ (وضع) अ. स्त्री.–रखना; बनाना; करना; जनना; दशा, हालत; वेशभूषा, वज़ाक़ता; पद्धति, शैली, ढंग; हिसाब में से किसी रक़म की कमी, कटौती, मिनहाई; सदैव एक प्रकार से रहना और जिससे जैसा व्यवहार हो, उसे आख़ीर तक वैसे ही निबाहना।

वज़्अदार (وضع دار) अ. फा. वि.–जो अपनी वज़ा का पाबंद हो, सदा एक-सा रहे, और जिससे जो व्यवहार हो आख़ीर तक निबाहे।

वज़्अदारी (وضع داری) अ. फा. स्त्री.–हमेशा अपनी वज़ा पर क़ायम रहना और जिस तरह जिससे मिलना या काम करना हो उसे उसी तरह निबाहना।

वज़्ई (وضعی) अ. वि.–बनाया हुआ, गढ़ा हुआ।

वज़्उलहम्ल (وضع الحمل) अ. पुं.–दे. 'वज़्ए हम्ल', बच्चा पैदा करना।

वज़्ए आज़ादानः (وضع آزادانہ) अ. फा. स्त्री.–आज़ाद लोगों का-सा वेशभूषा।

वज़्ए आमियानः (وضع عامیانہ) अ. फा. स्त्री.–साधारण लोगों-जैसी चाल-ढाल या वेशभूषा।

वज़्ए दरवेशानः (وضع درویشانہ) अ. फा. स्त्री.–साधुओं-जैसी वेशभूषा।

वज़्ए शरीफ़ानः (وضع شریفانہ) अ. फा. स्त्री.–सज्जन लोगों-जैसा आचरण और उन्हीं-जैसी वेशभूषा।

वज़्ए सादः (وضع سادہ) अ. फा. स्त्री.–सादी वेशभूषा जिसमें कोई बनावट न हो, साधारण चाल-ढाल।

वज़्ए हम्ल (وضع حمل) अ. पुं.–बच्चा जनना, प्रसव, जनन, प्रसूति।

वज़्ओ क़त्अ (وضع وقطع) अ. स्त्री.–वेशभूषा, आकार-प्रकार, सज-धज, वज़ाक़ता।

वज़्ज़ाअ (وضاع) अ. वि.–बनानेवाला, गढ़नेवाला।

वज़्ज़ान (وزان) अ. वि.–बहुत अधिक तोलनेवाला।

वज़्ज़ाह (وضاح) अ. वि.–सफ़ेद कोढ़ का रोगी; गोरा चट्टा, गौर वर्ण।

वज्द (وجد) अ. पुं.–आनंदाधिक्य से आत्म विस्मृति; काव्य या संगीत की रसानुभूति से होनेवाली आत्म-विस्मृति ; आनंदातिरेक से झूमनेवाला।

वज्दअंगेज (وجدانگیز) अ. फा. वि.–दे. 'वज्दआफ़्रीं'।

वज्दआफ़्रीं (وجدآفریں) अ. फा. वि.–वज्द में लानेवाला, आनंदातिरेक से मुग्ध कर देनेवाला।

वज्दकुनाँ (وجدکناں) अ. फा. वि.–झूमता हुआ, आनंद-बाहुल्य से वज्द करता हुआ।

वज्दे सिमाअ (وجدسماع) अ. पुं.–गाना सुनकर होनेवाला वज्द।

वज्दोहाल (وجدوحال) अ. पुं.–गाने में आनंदातिरेक से मस्त हो जाना और झूमना।

वज्नः (وجنہ) अ. पुं.–कपोल, गाल, रुख़्सार।

वज़्नः (وزنہ) अ. पुं.–नापने का पैमाना, बारूद नापने का पैमाना।

वज़्न (وزن) अ. पुं.–भार, बोझ; तोलने का बाँट; महत्त्व, अहम्मीयत; छंद, वृत्त, बह्र; तक़्तीअ, काव्य पद के अक्षरों को गणों की मात्राओं से मिलाकर बराबर करना।

वज़्नकश (وزن کش) अ. फा. वि.–तोलनेवाला, तौला।

वज़्नकशी (وزن کشی) अ. फा. स्त्री.–तोलना; तोलने का काम; तोलने का पेशा।

वज़्नी (وزنی) अ. वि.–भारी, बोझल।

वज़्ने शे'र (وزن شعر) अ. पुं.–शे'र की बह्र या वृत्त; शे'र की तक़्तीअ।

वज़्ह (وجہ) अ. स्त्री.–कारण, हेतु, सबब, (पुं.) मुख, मुखाकृति, मुखमंडल, चेहरा।

वज़्हे अदावत (وجہ عداوت) अ. स्त्री.–शत्रुता का कारण।

वज़्हे अह्सन (وجہ احسن) अ. पुं.–सुन्दर, मुख, अच्छी सूरत (स्त्री.) अच्छा कारण, मा'क़ूल वजह।

वज़्हे क़वी (وجہ قوی) अ. स्त्री.–बड़ी वजह, उचित कारण, मा'क़ूल सबब।

वज़्हे काफ़ी (وجہ کافی) अ. स्त्री.–उचित कारण, बड़ा कारण।

वज़्हे ख़ुसूमत (وجہ خصومت) अ. स्त्री.–द्वेष का कारण, रंजिश का सबब।

वज़्हे ख़ुसूसी (وجہ خصوصی) अ. स्त्री.–मुख्य कारण, ख़ास सबब।

वज़्हे तस्मियः (وجہ تسمیہ) अ. स्त्री.–निरुक्ति, नाम होने का कारण, अमुक वस्तु का यह नाम क्यों पड़ा? इसका कारण।

वज़्हे तह्रीक (وجہ تحریک) अ. स्त्री.–चर्चा चलाने या बात उठाने का कारण; प्रस्ताव रखने का कारण।

वज़्हे मआश (وجہ معاش) अ. स्त्री.–जीवन-निर्वाह का साधन, जीविका।

वज़्हे मईशत (وجہ معیشت) अ. स्त्री.–दे. 'वज़्हे मआश'।

वज़्हे मा'क़ूल (وجہ معقول) अ. स्त्री.–उचित कारण, ठीक सबब।

वज़्हे मुख़ालफ़त (وجہ مخالفت) अ. स्त्री.–विरोध का कारण।

वज़्हे मुख़ासमत (وجہ مخاصمت) अ. स्त्री.–शत्रुता का कारण, द्वेष का कारण।

वज़्हे मुवज्जह (وجہ موجہ) अ. स्त्री.–युक्तियुक्त कारण, मा'क़ूल सबब।

वज़्हे रंजिश (وجہ رنجش) अ. फा. स्त्री.–मनमुटाव और नाराज़ी का कारण।

वज़्हे राहत (وجہ راحت) अ. स्त्री.–सुख का साधन, प्रसन्नता का कारण।

वज़्हे वह्शत (وجہ وحشت) अ. स्त्री.–भागने और अलग रहने अथवा घृणा करने का कारण।

वज़्हे शक (وجہ شک) अ. स्त्री.–शंका करने का कारण।

वज़्हे शिकायत (وجہ شکایت) अ. स्त्री.–उपालंभ का कारण, शक्वा करने का सबब।

वज़्हे हलाल (وجہ حلال) अ. स्त्री.–विहित और उचित साधन (जीविका का)।

वज़्हे हसन (وجہ حسن) अ. स्त्री.–मा'क़ल सबब, उत्तम कारण (पुं.) सुन्दर मुख, अच्छी सूरत।

वज़्हे हसीन (وجہ حسین) अ. स्त्री.–सुन्दर मुख, प्यारा चेहरा।

वतद (وتد) अ. पुं.–खूँटा, मेख़; तीन अक्षरोंवाला शब्द।

वतदे मक़्रून (وتد مقرون) अ. पुं.–वह तीन अक्षरोंवाला शब्द जिसका अंतिम अक्षर हल् हो, जैसे––'चमन्'।

वतदे मज्मूअ (وتد مجموع) अ. पुं.–दे. 'वतदे मक़्रून'।

वतदे मफ़्रूक़ (وتد مفروق) अ. पुं.–वह तीन अक्षरवाला शब्द जिसके बीच का अक्षर हल् है, जैसे––'चश्मः'।

वतन (وطن) अ. पुं.–स्वदेश, जन्म-भूमि—"यह गोरे ग़रीबां पे कहती है हसरत, कि असली वतन है यही बेकसी का।"

वतनकुश (وطن کش) अ.फा. वि.–देशद्रोही, वतन के साथ ग़द्दारी करनेवाला।

वतनकुशी (وطن کشی) अ. फा. स्त्री.–देशद्रोह, वतन से ग़द्दारी।

वतनदोस्त (وطن دوست) अ. फा. वि.–देशप्रेमी, अपने वतन से स्नेह करनेवाला।

वतनदोस्ती (وطن دوستی) अ. फा. स्त्री.–देशप्रेम, वतन की मुहब्बत।

वतनपरस्त (وطن پرست) अ. फा. वि.–देशभक्त, वतन को सर्वोत्तम जाननेवाला।

वतनपरस्ती (وطن پرستی) अ. फा. स्त्री.–देशभक्ति, वतन का अत्यधिक प्रेम।

वतनफ़रोश (وطن فروش) अ. फा. वि.–देशविक्रेता, देशद्रोही, वतन का ग़द्दार।

वतनफ़रोशी (وطن فروشی) अ. फा. स्त्री.–देशद्रोह, वतन को दूसरों के हाथ बेच देना।

वतनी (وطنی) अ. वि.–वतन का; वतन-सम्बन्धी; वतन-वाला।

वतनीयत (وطنیت) अ. स्त्री.–देशभक्ति, वतनपरस्ती।

वतने आबई (وطن آبائی) अ. पुं.–बाप-दादा का देश, पुराना वतन।

वतने क़दीम (وطن قدیم) अ. पुं.–पुराना वतन, पुरखों का देश, पूर्वजों का देश।

वतने जदीद (وطن جدید) अ. पुं.–नया वतन, जहाँ हाल में रहना आरंभ किया हो।

वतने मालूफ़ (وطن مالوف) अ. पुं.–वह वतन जिससे प्रेम हो।

वतर (وتر) अ. पुं.–प्रत्यंचा, धनुष की डोरी; बाजे का तार।

वती (وطی) अ. स्त्री.–सहवास, संभोग; मसलना, रौंदना, कुचलना।

वतीरः (وتیرہ) अ. पुं.–ढंग, पद्धति, तरीक़ा; आचरण, व्यवहार, तर्ज़अमल।

वत्वात (وطواط) अ. स्त्री.–अबाबील, भांडीक।

वत्श (وتش) अ. वि.–विनाश, बरबादी; ध्वस्त, तबाह, ख़राब।

वत्ह (وتح) अ. वि.–कृपण, कंजूस; निकृष्ट, ख़राब।

वदा' (ودع) अ. पुं.–शंख, कंबु, संख।

वदाअ़ (وداع) अ. स्त्री.–रुख़सत, विदा, गमन, जाना।

वदाए' (ودائع) अ. पुं.–'वदीअत' का बहु., अमानतें।

वदाए जाँ (وداع جاں) अ. फा. स्त्री.–प्राणों का कूच, मरण, मरना।

वदाए रूह (وداع روح) अ. स्त्री.–आत्मा का गमन, मरण, मृत्यु, मरना।

वदाद (وداد) अ. पुं.–इच्छा, चाह, तलब; मनोकामना, आकांक्षा, मुराद।

वदीअ (ودیع) अ. वि.–रुख़सत करनेवाला।

वदीअत (ودیعت) अ. स्त्री.–अमानत, धरोहर, थाती, न्यास, निक्षेप, आधान, प्राधि, आधि।

वदीद (ودید) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त।

वदूद (ودود) अ. वि.–मित्र, दोस्त।

वफ़ा (وفا) अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा पालन; भक्ति, वफ़ादारी; निर्वाह, निबाह; स्वामी या मित्र के साथ तन, मन, धन से निबाहना और कड़े से कड़े समय पर उसका साथ देना।

वफ़ाअंदेश (وفااندیش) अ. फा. वि.–दे. 'वफ़ादार'।

वफ़ाआमोज़ (وفاآموز) अ. फा. वि.–वफ़ा सिखानेवाला।

वफ़ाआश्ना (وفاآشنا) अ. फा. वि–वफ़ा से परिचित अर्थात् वफ़ादार।

वफ़ाए अह्द (وفاے عہد) अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा का पालन, वादा पूरा करना।

वफ़ाए इश्क (وفاےعشق) अ. स्त्री.–प्रेम करके उसे निबाहना, किसी अवस्था में भी प्रेम न छोड़ना।

वफ़ाए क़सम (وفاے قسم) अ. स्त्री.–खायी हुई क़सम का पालन करना, कही हुई बात निबाहना, शपथपालन।

वफ़ाए क़ौल (وفاے قول) अ. स्त्री.–कही हुई बात निबाहना, प्रतिज्ञा का पालन।

वफ़ाए वा'दः (وفاے وعدہ) अ. स्त्री.–दे. 'वफ़ाए अह्द'।

वफ़ाओजफ़ा (وفاوجفا) अ. स्त्री.–वफ़ादारी और अत्याचार, प्रेमिका की ओर से ज़ुल्म और प्रेमी की ओर से वफ़ा अर्थात् प्रेम-निर्वाह।

वफ़ाकेश (وفاکیش) अ. फा. वि.–दे. 'वफ़ादार'।

वफ़ाकेशी (وفاکیشی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'वफ़ादारी'।

वफ़ाकोश (وفاکوش) अ. फा. वि.–प्रेम निर्वाह की कोशिश करनेवाला, वफ़ादार रहने की कोशिश करनेवाला, अर्थात् प्रेमी, आशिक।

वफ़ाकोशी (وفاکوشی) अ. फा. स्त्री.–प्रेम-निर्वाह में कोशिश करना।

वफ़ाख़मीर (وفاخمیر) अ. वि.–जिसकी प्रकृति में वफ़ा का माद्दा हो, जो स्वभाव से वफ़ादार हो, प्रेमी।

वफ़ाख़ाम (وفاخام) अ. फा. वि.–जो वफ़ा में कच्चा हो, जो समय पड़ने पर धोखा दे सके।

वफ़ागुस्तर (وفاگستر) अ. फा. वि.–दे. 'वफ़ादार'।

वफ़ात (وفات) अ. स्त्री.–मृत्यु, मरण, मौत।

वफ़ातयाफ़्तः (وفات یافتہ) अ. फा. वि.–मृत, मरा हुआ।

वफ़ादार (وفادار) अ. फा. वि.–जो स्वामी या मित्र का तन, मन, धन से भक्त हो।

वफ़ादारी (وفاداری) अ. फा. स्त्री.–स्वामी या मित्र का तन, मन, धन से साथ देना।

वफ़ादोस्त (وفادوست) अ. फा. वि.–जो वफ़ा को अपना सर्वस्व समझता हो, अर्थात् आशिक़।

वफ़ादोस्ती (وفادوستی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा को अपना सब कुछ जानना।

वेफ़ादुश्मन (وفادشمن) अ. फा. वि–.जो वफ़ा का बैरी हो अर्थात् जिसे वफ़ा से चिढ़ हो, बेवफ़ा, कृतघ्न; माशूक़, प्रेयसी।

वफ़ादुश्मनी (وفادشمنی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा से चिढ़, वफ़ा से बैर।

वफ़ानाआश्ना (وفاناآشنا) अ. फा. वि.–जो वफ़ा करना न जानता हो, अर्थात् माशूक़।

वफ़ानाकर्दः (وفاناکردہ) अ. फा. वि.–जिसने कभी वफ़ा न की हो, अर्थात् मा'शूक़।

वफ़ानाशनास (وفاناشناس) अ. फा. वि.–दे. 'वफ़ानाआश्ना'।

वफ़ापरस्त (وفاپرست) अ. फा. वि.–जो वफ़ा की क़द्र करता हो; जो बहुत ही वफ़ादार हो, अर्थात् आशिक़।

वफ़ापरस्ती (وفاپرستی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा की क़द्र करना; बहुत ही वफ़ादार होना।

वफ़ापुख़्तः (وفاپختہ) अ. फा. वि.–जो वफ़ा में बहुत ही पुख़्ता हो, जिसकी ओर से कभी बेवफ़ाई न हो, अर्थात् आशिक़।

वफ़ापुख़्तगी (وفاپختگی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा में दृढ़ और मज़बूत होना।

वफ़ापेशः (وفاپیشہ) अ. फा. वि.–जिसका काम ही वफ़ा करना हो, अर्थात् प्रेमी।

वफ़ापेशगी (وفاپیشگی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा करने का काम।

वफ़ाबेगानः (وفابیگانہ) अ. फा. वि.–दे. 'वफ़ा नाआश्ना'।

वफ़ाबेगानगी (وفابیگانگی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा करना न जानना।

वफ़ामज़्हब (وفامذہب) अ. वि.–जिसका धर्म वफ़ा करना हो, अर्थात् प्रेमी।

वफ़ामश्रब (وفامشرب) अ. वि.–जिसका धर्म-विश्वास वफ़ा पर हो।

वफ़ाशनास (وفاشناس) अ. फा. वि.–वफ़ा को पहचाननेवाला, अर्थात् प्रेमी।

वफ़ाशनासी (وفاشناسی) अ. फा. स्त्री.–वफ़ा को पहचानना।

वफ़ाशिआर (وفاشعار) अ. वि.–दे. 'वफ़ापेशः'।

वफ़ाशिआरी (وفاشعاری) अ. स्त्री.–दे. 'वफ़ापेशगी'।

वफ़ाशिकन (وفاشکن) अ. फा. वि.–जो वफ़ा की प्रतिज्ञा करके तोड़ दे, बेवफ़ा।

वफ़ी (وفی) अ. वि.–संपूर्ण, समग्र, समस्त, सब।

वफ़्क़ (وفق) अ. पुं.–अनुकूल, मुआफ़िक़।

वफ़्द (وفد) अ. पुं.–प्रतिनिधि मंडल, डिपुटेशन।

वबर (وبر) अ. पुं.–बाल, ऊन।

वबा (وبا) अ. स्त्री.–महामरी, संस्पर्श, वह रोग जो मरी के रूप में फैला हो।

वबाई (وبائی) अ. वि.–वबा सम्बन्धी, वबा के रूप में फैला हुआ।

वबाए आम (وبائے عام) अ. स्त्री.–महामारी, सब में फैली हुई वबा।

वबाल (وبال) अ. पुं.–आपत्ति, विपदा, मुसीबत; दुःख, कष्ट, तकलीफ़; जंजाल, झंझट; वह मुसीबत जो दुर्निवार्य हो।

वबाले गर्दन (وبالِ گردن) अ. फा. पुं.–गर्दन के लिए बोझ, गर्दन पर रखा हुआ बोझ, अर्थात् पाप।

वबाले जाँ (وبالِ جاں) अ. फा. पुं.–प्राणों के लिए मुसीबत, जान का जंजाल।

वबाले दोश (وبالِ دوش) अ. फा. पुं.–दे. 'वबाले गर्दन'।

वब्र (وبر) अ. पुं.–बिल्ली के बराबर एक जन्तु जो शेर के आगे चलता है।

वया (ویا) फा. अव्य.–अथवा, या, अब उर्दू में नहीं बोला जाता।

वर (ور) फा. प्रत्य.–वाला, जैसे—'ताक़तवर' शक्तिवाला, (अव्य.) यदि, अगर, और अगर, (पुं.) वक्षःस्थल, सीना (स्त्री) ताप, गर्मी।

वरक़ः (ورقہ) अ. पुं.–पत्र, दल, पत्ता; टिकिट, प्रयोग पत्र।

वरक़ (ورق) अ. पुं.–पृष्ठ, पन्ना, पेज; दल, पत्र, पत्ता।

वरक़गर्दानी (ورق گردانی) अ. फा. स्त्री.–किताब के वरक़ उलटना-पलटना, पुस्तक पढ़ना नहीं केवल उसे इधर-उधर से वरक़ उलटकर देखना।

वरक़दाग़ (ورق داغ) अ. फा. वि.–किताब के पन्ने पर लिखा जानेवाला अंक (संख्या)।

वरक़साज़ (ورق ساز) अ. फा. वि.–चाँदी-सोने के वरक़ बनानेवाला।

वरक़साज़ी (ورق سازی) अ. फा. स्त्री.–चाँदी-सोने के वरक़ बनाने का काम।

वरक़ी (ورقی) अ. वि.–वरक़-जैसा बारीक़।

वरक़ुलख़याल (ورق الخیال) अ. पुं.–विजया, भंगा, भंग, भाँग।

वरक़ुलहशीश (ورق الحشیش) अ. पुं.–भाँग के पत्ते, भाँग का पत्ता।

वरक़े काइनात (ورق کائنات) अ. पुं.–विश्वपटल, वरक़रूपी विश्व।

वरक़े ख़ाम (ورق خام) अ. फा. पुं.–कच्चा चिट्ठा, अंदरूनी हालात; कच्ची बही।

वरक़े गुल (ورق گل) अ. फा. पुं.–फूल की पँखड़ी।

वरम (ورم) अ. पुं.–शोथ, सूजन।

वरमे जिगर (ورم جگر) अ. फा. पुं.–यकृत-शोथ, जिगर का वरम।

वरल (ورل) अ. पुं.–गोह, गोधिका।

वरसः (ورثہ) अ. पुं.–'वारिस' का बहु., उत्तराधिकारी लोग, वारिस लोग।

वरा (ورا) अ. वि.–परे, पीछे, आगे, दूर; अतिरिक्त, अलावा (पुं.) संसार, जगत्, विश्व।

वराए नज़र (ورائے نظر) अ. पुं.–दृष्टि के परे।

वराज़ (وراز) अ. पुं.–शूकर, वराह, कोल, सुअर।

वरासत (وراثت) अ. स्त्री.–दायाधिकार, उत्तराधिकार, तरिका पाना।

वरासतन (وراثتاً) अ. वि.–वरासत की रू से, वरासत में, उत्तराधिकार के रूप में।

वरासतनामः (وراثت نامہ) अ. फा. पुं.–उत्तराधिकारपत्र, वरासत की क़ानूनी दस्तावेज़।

वरिक (ورک) अ. पुं.–श्रोणि, नितंब, कटिदेश, चूतड़।

वरीद (ورید) अ. स्त्री.–शरीर की वे रगें जिनमें रक्त दौड़ता है, रक्तवाहिनी, धमनी।

वरे (ورع) अ. वि.–संयमी, निग्रही, यतात्मा, यतव्रत, परहेज़गार।

वर्अ (ورع) अ. स्त्री.–संयम, इंद्रियनिग्रह, परहेज़गारी, दे. 'वरा', दोनों शुद्ध हैं।

वर्क़ा (ورقا) अ. स्त्री.–फ़ाख़्ता, पंडुक।

वर्काक (ورکاک) अ. पुं.–लुब्धक, चिड़ीमार, बहेलिया; एक मृतभोजी चिड़िया।

वर्ग़लांनिदः (ورغلانندہ) फा. वि.–बहकानेवाला, फुसलानेवाला; कुमंत्रणा देनेवाला, ग़लत राह चलानेवाला।

वर्ग़लानीदः (ورغلانیدہ) फा. वि.–फुसलाया हुआ, बहकाया हुआ; जिसे कुमंत्रणा दी गयी हो।

वर्ज़िदः (ورزندہ) फा. वि.–क़बूल करनेवाला; अभ्यास करनेवाला।

वर्ज़िश (ورزش) फा. स्त्री.–अभ्यास, मश्क; व्यायाम, कसरत; ग्रहण, इख़्तियार।

वर्ज़िशगाह (ورزشگاہ) फा. स्त्री.–व्यायामशाला, कसरत करने का स्थान, अखाड़ा।

वर्ज़िशख़ानः (ورزش خانہ) फा. पुं.–दे. 'वर्ज़िशगाह'।

वर्ज़िशी (ورزشی) फा. वि.–जो व्यायाम का अभ्यस्त हो, कसरत का आदी; कसरत से बनाया हुआ शरीर।

वर्ज़िशे जिस्मानी (ورزش جسمانی) अ. स्त्री.–दैहिक परिश्रम, व्यायाम, कसरत।

वर्ज़ीदः (ورزیدہ) फा. वि.–ग्रहण किया हुआ, क़बूल किया हुआ; मश्क़ किया हुआ, अभ्यस्त।

वर्ज़ीदनी (ورزیدنی) फा. वि.–ग्रहणीय, क़ाबिले क़बूल; क़ाबिले मश्क़, अभ्यास के योग्य, अभ्यसनीय।

वर्तः (ورطہ) अ. पुं.–भँवर, जलावर्त; जान जोखिम का स्थान, प्राणघातक स्थल।

वर्तए हलाकत (ورطۂ ہلاکت) अ. पुं.–ऐसा भँवर जिसमें पड़कर मरने से छुटकारा न हो सके।

वर्तीज (ورتیج) अ. पुं.–बटेर, वार्तक, वाना।

वर्द (ورد) अ. पुं.–गुलाब, गुलाब का फूल।

वर्दी (وردی) अ. वि.–गुलाब के फूल-जैसा; गुलाब सम्बन्धी।

वर्दूक (وردوک) फा. पुं.–छप्पर, फूँस और बाँस की बनी हुई प्रसिद्ध छाजन।

वर्दे मुरब्बा (ورد مربیٰ) अ. पुं.–गुलक़ंद, शकर और गुलाब के फूलों का मिश्रण।

वर्नः (ورنہ) फा. अव्य.–अन्यथा, नहीं तो, वगरना।

वर्राक़ (وراق) अ. पुं.–पुस्तकालयों में कीड़ों से बचाने के लिए पुस्तकों के पन्ने लौटने-पलटनेवाला व्यक्ति।

वर्राद (وراد) अ. वि.–माली, बाग़बान; गुलाब के फूलों से अरक़ या गुलक़ंद बनानेवाला।

वर्सः (ورثہ) अ. पुं.–रिक्थ, दाय, मीरास; पैतृक संपत्ति; पुश्तैनी चली आनेवाली माफ़ी आदि।

वलंदेज़ (ولندیز) अ. पुं.–हालैंड, यूरोप का एक राष्ट्र।

वलद (ولد) अ. पुं.–पुत्र, तनय, सूनु, बेटा, लड़का।

वलदीयत (ولدیت) अ. स्त्री.–लड़केवाला होना; बाप का नाम आदि।

वलदुज़्ज़िना (ولدالزنا) अ. पुं.–हरामी लड़का, जारज, संकर, दोग़ला।

वलदुलजारिय (ولدالجاریہ) अ. पुं.–दासी-पुत्र, लौंडी-बच्चा।

वलदुलहराम (ولدالحرام) अ. पुं.–दे. 'वलदुज़्ज़िना'।

वलह (ولہ) अ. स्त्री.–आसक्ति, मोह, इश्क़।

वला' (ولع) अ. पुं.–लोभ, लालच; आसक्ति, फ़िरेफ़्तगी।

वली (ولی) अ. वि.–उत्तराधिकारी, वारिस; सहायक, मददगार; मित्र, दोस्त; महात्मा, ऋषि।

वलीअहद (ولی عہد) अ. पुं.–बादशाह के बाद होनेवाला जानशीन, युवराज, राजकुमार।

वलीजः (ولیجہ) अ. वि.–घनिष्ठ मित्र, गहरा दोस्त।

वलीद (ولید) अ. पुं.–छोकरा, ख़िदमतगार लड़का।

वली ने'मत (ولی نعمت) अ. पुं.–स्वामी, मालिक; अभिभावक, सरपरस्त।

वलीमः (ولیمہ) अ. पुं.–निकाह के बाद दूल्हा की ओर से दिया जानेवाला खाना, विवाह-भोज।

वलीयः (ولیہ) अ. स्त्री.–उत्तराधिकारिणी, वारिसा; महात्मा स्त्री, ख़ुदा रसीदा; घोड़े का पालान।

वलीयुल्लाह (ولی اللہ) अ. पुं.–ईश्वर का मित्र अर्थात् पहुँचा हुआ साधु, महात्मा, महर्षि।

वलूद (ولود) अ. स्त्री.–बहुत अधिक संतान उत्पन्न करनेवाली स्त्री, बहुप्रसवा।

वले (ولے) फा. अव्य.–'वलेकिन' का लघु., दे. 'वर्लेकिन'।

वलेक (ولیک) फा. अव्य.–'वलेकिन' का लघु., दे. 'वलेकिन'।

वलेकिन (ولیکن) फा. अव्य.–लेकिन, परंतु, मगर।

वल्लाह (واللہ) अ. वा.–ईश्वर की शपथ, ख़ुदा की क़सम।

वल्वलः (ولولہ) अ. पुं.–उत्साह, उमंग; आवेग, जोश; आत्मविस्मृति, बेख़ुदी, उदा०—"जब वल्वलः सादिक़ होता है जब अज़्मे मुसम्मं होता है, तकमील का सामां ग़ैब से खुद उस वक़्त फ़राहम होता है।"

वल्वलःअंगेज (ولولہانگیز) अ. फा. वि.–उत्साहवर्द्धक, उमंग बढ़ानेवाला, जोश पैदा करनेवाला।

वलवलःखेज (ولولہخیز) अ. फा. वि.–दे. 'वल्वलःअंगेज़'।

वश (وش) फा. प्रत्य.–समान, तुल्य, जैसे—'माहवश' चाँद के समान।

वसख (وسخ) अ. पुं.–मैल-कुचैल, मैलापन, मल, मलिनता; मैला, मलिन।

वसन (وثن) अ. पुं.–मूर्ति, प्रतमिा, बुत।

वसनी (وثنی) अ. वि.–मूर्तिपूजक, बुतपरस्त।

वसाइक़ (وثائق) अ. पुं.–'वसीक़ः' का बहु., वसीक़े।

वसाइत (وسائط) अ. पुं.–'वासितः' का बहु., वासिते।

वसाइद (وسائد) अ. पुं.–'विसादः' का बहु., मस्नदें, तकिए।

वसाइल (وسائل) अ. पुं.–'वसीलः' का बहु., साधन, ज़रिए।

वसातत (وساطت) अ. स्त्री.–माध्यम, ज़रीया।

वसायत (وصایت) अ. स्त्री.–अभिभावकता, गार्जियनशिप।

वसाया (وصایا) अ. पुं.–'वसीयत' का बहु., वसीयतें।

वसालत (وسالت) अ. स्त्री.–वसीलः, ज़रीअः, माध्यम।

वसाविस (وساوس) अ. पुं.–'वस्वसः' का बहु., बुरे विचार, पैशाचिक विचार।

वासिख (وسخ) अ. वि.–मैला, गंदा, मलिन, मैला-कुचैला, मलयुक्त।

वसी (وصی) अ. वि.–जिसके लिए वसीयत की गयी हो, रिक्थाधिकारी।

वसीअ (وسیع) अ. वि.–विस्तृत, फैला हुआ, चौड़ा-चकला।

वसीउत्तज्रिबः (وسیع التجربہ) अ. वि.–जिसका तज्रिबा बहुत बढ़ा हुआ हो, बृहदनुभव।

वसीउत्ता'लीम (وسیع التعلیم) अ. वि–जिसकी शिक्षा बहुत अधिक हो, जो बहुत पढ़ा-लिखा हो।

वसीउन्नजर (وسیع النظر) अ. वि.–जिसकी दृष्टि दूर तक देख सकती हो, अग्रशोची, दूरदर्शी, बुद्धिमान्, अनुभव संपन्न।

वसीउन्नज़री (وسیع النظری) अ. स्त्री.–दूरदर्शिता, बुद्धिमत्ता।

वसीउलअख्लाक़ (وسیع الاخلاق) अ. वि.–जिसकी शिष्टता और शीलता बहुत बढ़ी हुई हो, बृहच्छील।

वसीउलक़ल्ब (وسیع القلب) अ. वि.–जिसके हृदय में बड़ी गुंजाइश हो, बहुत ही उदार, उत्तान हृदय, उदाराशय।

वसीउलमश्रब (وسیع المشرب) अ. वि.–जो हरेक धर्मपर आस्था रखे और किसी का दिल न दुखाये।

वसीक़ः (وثیقہ) अ. पुं.–लेखपत्र, व्यवस्था-पत्र, दस्तावेज़; प्रतिज्ञापत्र, अह्दनामा; वह पेंशन जो किसी जायदाद आदि की ज़ब्ती के बाद मिले।

वसीक़ःदार (وثیقہدار) अ. फा. वि.–वसीक़ा अर्थात् पेंशन पानेवाला।

वसीक़ःनवीस (وثیقہنویس) अ. फा. पुं.–दस्तावेज़ लिखनेवाला; मकानों की बिक्री की दस्तावेज़ें लिखनेवाला।

वसीत (وسیط) अ. वि.–जो कुल में उच्च श्रेणी का न हो, परंतु पद में उच्च श्रेणी का हो।

वसीम (وسیم) अ. वि.–सुन्दर, शोभित, ख़ूबसूरत; अंकित, चिह्नित, निशान किया हुआ।

वसीयत (وصیت) अ. स्त्री.–मरनेवाले का अंतिम कथन, मरते समय अपनी जाइदाद और संपत्ति के प्रबंध अथवा व्यय के लिए अंतिम आदेश, प्ररिक्थ।

वसीयतनामः (وصیتنامہ) अ. फा. पुं.–वसीयत की क़ानूनी दस्तावेज़, इच्छापत्र, रिक़्थपत्र, दायपत्र, मृत्युलेख।

वसीलः (وسیلہ) अ. पुं.–साधन, उपकरण, ज़रीया; माध्यम, बिचौलिया।

वसीलए ज़फ़र (وسیلۂ ظفر) अ. पुं.–सफलता का साधन, उन्नति का ज़रीया।

वसीलए नजात (وسیلۂ نجات) अ. पुं.–मुक्ति का साधन, मोक्ष का ज़रीया; छुटकारे का उपाय, बचने का तरीक़ा।

वस्क़ (وثق) अ. पुं.–विश्वास, भरोसा, एतिमाद, यक़ीन।

वस्ख़ (وسخ) अ. पुं.–मैल-कुचैल, मलिनता, गंदगी।

वस्त (وسط) अ. वि.–बीच, मध्य, दरमियान।

वस्ती (وسطی) अ. वि.–बीच का, माध्यमिक, दरमियानी।

वस्ते माह (وسط ماہ) अ. फा. पुं.–महीने का बीच।

वस्नी (وسنی) फा. स्त्री.–सौत, वह दो स्त्रियाँ जिनका एक पति हो, परस्पर 'वस्नी' हैं।

वस्फ़ (وصف) अ. पुं.–गुण, सिफ़त; प्रशंसा, तारीफ़; अच्छाई, उम्दगी।

वस्फ़े इज़ाफ़ी (وصف اضافی) अ.पुं.–वह गुण जो स्वाभाविक न हो, बीच में पैदा हो गया हो।

वस्मः (وسمہ) फा. पुं.–नील की पत्ती जिसका पहले ख़िज़ाब बनता था।

वस्ल (وصل) अ. पुं.–जोड़, मिलान; प्रेमी और प्रेमिका का संयोग, मिलन।

वस्लचः (وصلچہ) अ. फा. पुं.–छोटी वस्ली।

वस्ली (وصلی) अ. स्त्री.–मोटे और चिकने काग़ज़ के घुटे हुए तख़्ते जिन पर लिखने का अभ्यास किया जाता है।

वस्लोहिज्र (وصل وھجر) अ. पुं.–मिलन और वियोग़, नायक और नायिका का आपस में मिलना और बिछुड़ना।

वस्वसः (وسوسہ) अ. पुं.–बुरा ख़याल, बुरी शंका, अनिष्ट की शंका; वह धर्म विरुद्ध विचार जो शैतान उत्पन्न करता है; भ्रम, वह्म।

वस्वास (وسواس) अ. पुं.–दे. 'वस्वसः'।

वस्वासी (وسواسی) अ. वि.–भ्रमी, वहमी।

वहक़ (وھق) अ. पुं.–कमंद, जिससे ऊपर चढ़ते हैं; पाश, रस्सी, फंदा।

वहल (وحل) अ. स्त्री.–कीचड़, कर्दम, जंबाल, जलकल्क, ख़ल्लाब।

वही (وحی) अ. स्त्री.–दे. 'वह्' परन्तु बोलचाल में 'वही' ही बोलते हैं।

वह्इ (وحی) अ. स्त्री.–ईश्वर की ओर से आया हुआ पैग़म्बर के लिए आदेश, वही।

वह्ए मुंज़ल (وحی منزل) अ. स्त्री.–ईश्वर प्रेषित आदेश, ख़ुदा की ओर से आया हुआ हुक्म।

वह्दः (وھدہ) अ. स्त्री.–नीची ज़मीन जहाँ पानी भरे।

वह्दत (وحدت) अ. स्त्री.–एकत्व, एकता, इत्तिहाद; अद्वैत भाव, वहदानियत, ईश्वर को एक मानना।

वह्दतपरस्त (وحدت پرست) अ. फा. वि.–अद्वैतवादी, ईश्वर को एक माननेवाला।

वह्दतपरस्ती (وحدت پرستی) अ. फा. स्त्री.–अद्वैतवाद, ईश्वर को एक मानना।

वह्दतुलबूजूद (وحدت الوجود) अ. स्त्री.–यह सिद्धान्त कि संसार में केवल एक ईश्वर के सिवा और कुछ नहीं है, ब्रह्मवाद।

वह्दते इरादी (وحدت ارادی) अ. स्त्री.–अपनी मर्ज़ी से सबका मिलकर एक होना।

वह्दते क़ह्री (وحدت قھری) अ. स्त्री.–ज़बरदस्ती सब को एक करना, जो हृदय और विचारों की एकता न हों।

वह्दते नौई (وحدت نوعی) अ. स्त्री.–एक प्रकार की वस्तुओं की एकता।

वह्दते लिसानी (وحدت لسانی) अ. स्त्री.–भाषा के दृष्टिकोण से एकता, सब की भाषा का एक होना।

वह्दते सहीहः (وحدت صحیحہ) अ. स्त्री.–सच्ची एकता, वास्तविक में एकता।

वह्दानियत (وحدانیت) अ. स्त्री.–एकत्व, एकता, अकेलापन; अद्वैतवाद, ईश्वर के एक होने का सिद्धान्त।

वह्दानी (وحدانی) अ. वि.–एकवाला, एक से सम्बन्ध रखनेवाला।

वह्न (وھن) अ. स्त्री.–शिशिलता, ढीलापन; आलस्य, अकर्मण्यता, सुस्ती।

वह्ब (وھب) अ. स्त्री.–देन, पुरस्कार, बख़्शिश, दान; ईश्वर की देन।

वह्बी (وھبی) अ. वि.–ईश्वर का दिया हुआ, ईश्वरदत्त।

वह्म (وھم) अ. पुं.–भ्रम, भ्रांति, वाहिमः; भय, डर; शंका, संदेह, शक।

वह्मअसास (وھم اساس) अ. वि.–जिसका आधार भ्रम पर हो, भ्रममूलक।

वह्मनाक (وھمناک) अ. फा. वि.–भ्रमपूर्ण, भ्रांतिसंकुल, वहम से भरा हुआ।

वह्मी (وھمی) अ. वि.–भ्रमी, संशयात्मक, शक्की मिज़ाज।

वह्लः (وھلہ) अ. पुं.–भय, त्रास, डर; बारी, दफ़ा।

वह्ल (وھل) अ. पुं.–ध्यान बँटना, ध्यान का दूसरी ओर चला जाना।

वह्श (وحش) अ. पुं.–'वह्शी' का बहु., जंगली जानवर जो आदमी से भड़कते हों।

वह्शत (وحشت) अ. स्त्री.–आदमियों से भड़कना, बिदक; भय, त्रास, डर; सब से अलग रहना; पागलपन, मिराक़।

वह्शतअंगेज़ (وحشت انگیز) अ. फा. वि.–मन में वह्शत-पैदा करनेवाला; भयजनक; भीषण, डरावना, भयानक।

वह्शतअफ़्ज़ा (وحشت افزا) अ. फा. वि.–दे. 'वह्शत अंगेज़'।

वह्शतअसर (وحشت اثر) अ. वि.–दे. 'वह्शतअंगेज़'।

वह्शतआसार (وحشت آثار) अ. वि.–दे. 'वह्शतअंगेज़'।

वह्शतकदः (وحشت کدہ) अ. फा. पुं.–वह स्थान जहाँ से भागने को जी चाहे, जो सुनसान और उजाड़ हो।

वह्शतख़ेज़ (وحشت خیز) अ. फा. वि.–दे. 'वह्शतअंगेज़'।

वह्शतगाह (وحشت گاہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'वह्शतकदः'।

वह्शतज़दः (وحشت زدہ) अ. फा. वि.–भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ; जो वहशत में हो, आतुर, उद्विग्न।

वह्शतज़दगी (وحشت زدگی) अ. फा. स्त्री.–भयभीत होना; वह्शत में होना, उद्विग्नता।

वह्शतज़ा (وحشت زا) अ. फा. वि.–दे. ‘वह्शतअंगेज़’।

वह्शतत्तराज़ (وحشت طراز) अ. फा. वि.–दे. ‘वह्शतअंगेज़’।

वह्शतनसीब (وحشت نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में वह्शत ही वह्शत हो।

वह्शतनाक (وحشتناک) अ. फा. वि.–भयानक, भीषण, डरावना; सुंसान, निर्जन और डरावना स्थान।

वह्शतसरा (وحشت سرا) अ. फा. स्त्री.–दे. ‘वह्शतकदः’।

वह्शियानः (وحشیانہ) अ. फा. वि.–वह्शियों-जैसा, पागलों-ज़ैसा; निर्दयों-जैसा, बेरह्मानः।

वह्शी (وحشی) अ. वि.–जंगली पशु जो मनुष्यों से भागे; वह व्यक्ति जो मनुष्यों के समागम से बचे और अकेला रहना पसंद करे; पागल, मिराक़ी।

वह्शीतब्अ (وحشی طبع) अ. वि.–दे. ‘वह्शी’ मिज़ाज’।

वह्शीमनिश (وحشی منش) अ. फा. वि.–दे. ‘वह्शी मिज़ाज’।

वह्शीमिज़ाज (وحشی مزاج) अ. वि.–जो जंगली जानवरों की तरह आदमियों से भागे।

वह्शीसिफ़त (وحشی صفت) अ. वि.–जंगली जानवरों-जैसा, वह्शियों की तरह।

वह्शोतैर (وحش وطیر) अ. पुं.–जंगली जानवर और जंगली चिड़ियाँ।

वह्हाज (وهاج) अ. वि.–ज्योतिर्मय, प्रकाशमान, चमकीला।

वह्हाब (وهاب) अ. वि.–बहुत अधिक दान करनेवाला, वदान्य; ईश्वर का एक नाम।

वा

वा (وا) फा. वि.–खुला हुआ, कुशादा; पुनः, फिर (अव्य.) हाय हाय, आह।

वा अजबाह (واعجباه) अ. वा.–कितनी आश्चर्य की बात है।

वा असफ़ा (وااسفا) अ. वा.–हाय हाय, हाय रे।

वाइज (واعظ) अ. वि.–धर्मोपदेशक, वा’ज़ कहनेवाला।

वाई (واعی) अ. वि.–निरीक्षक, निगहबान; याद रखनेवाला।

वाए (وائے) फा. स्त्री.–हाय हाय, हाय वाय।

वाए क़िस्मत (وائے قسمت) अ. फा. स्त्री.–हाय रे भाग्य, हाय री तक़्दीर।

वाए तक़्दीर (وائے تقدیر) फा. अ. स्त्री.–दे. ‘वाए क़िस्मत’।

वाए नसीब (وائے نصیب) फा. अ. स्त्री.–दे. ‘वाए क़िस्मत’।

वाए बरहाल (وائے برحال) फा. स्त्री.–हालत पर अफ़्सोस।

वाक़िअः (واقعہ) अ. पुं.–घटना, हादिसा; वृत्तांत, हाल; समाचार, ख़बर; दुर्घटना, सानिहा।

वाक़िअःतलब (واقعہ طلب) अ. वि.–जिसका सारा वृत्तांत जानना आवश्यक हो, ऐसी घटना।

वाक़िअःनवीस (واقعہ نویس) अ. फा. वि.–संवादकार, घटना लिखनेवाला; इतिहासकार, मुअर्रिख़।

वाक़िअःनिगार (واقعہ نگار) अ. फा. वि.–दे. ‘वाक़िअः नवीस’।

वाक़िअए हायिलः (واقعۂ هائلہ) अ. पुं.–बहुत ही प्रचंड दुर्घटना।

वाक़िअतन (واقعتاً) अ. वि.–वास्तविक में, वस्तुतः, दरहक़ीक़त।

वाक़िआत (واقعات) अ. पुं.–‘वाक़िअः’ का बहु., घटनाएँ।

वाक़िआती (واقعاتی) अ. वि.–घटनाओं से सम्बन्धित, ठीक-ठीक, सच्चा-सच्चा, घटना के मुताबिक़।

वाक़िआते नफ़्सुलअम्री (واقعات نفس الامری) अ. पुं.–ठीक-ठीक हालात जैसे घटित हुए हैं वैसे वृत्तांत।

वाक़िआते हाज़िरः (واقعات حاضره) अ. पुं.–वर्तमान समय की घटनाएँ, वर्तमान समय की राजनीतिक घटनाएँ।

वाक़िआतोहालात (واقعات و حالات) अ. पुं.–घटनाएँ और उनका विस्तारपूर्वक वर्णन।

वाक़िई (واقعی) अ. वि.–यथार्थतः, वास्तविक में, सचमुच।

वाक़िईयत (واقعیت) अ. स्त्री.–यथार्थता, वास्तविकता, अस्लीयत, सत्यता।

वाक़िफ़ (واقف) अ. वि.–अभिज्ञ, जानकार, आगाह; परिचित, शनासा; अनुभवी, तज़्रिबाकार; किसी जाइदाद या संपत्ति को किसी कार्य-विशेष के लिए दान करनेवाला, उत्सर्गकर्ता, समर्पणकर्ता।

वाक़िफ़े कार (واقف کار) अ. फा. वि.–कार्य-विशेष का जानकार; अनुभवी, तज़्रिबाकार।

वाक़िफ़े हाल (واقف حال) अ. वि.–किसी की दशा से ठीक-ठीक परिचित; किसी घटना-विशेष का वृत्तांत जाननेवाला।

वाक़िफ़े हालात (واقف حالات) अ. वि.–सारी घटनाओं और घटना के सारे वृत्तांत का जानकार।

वाक़ी (واقی) अ. वि.–निरीक्षक, निगरानी करनेवाला।

वाक़े’ (واقع) अ. वि.–घटित होनेवाला; घटित, जो हो चुका हो।

वाख़िदः (واخنده) फा. वि.–धुनकनेवाला।

वाख़ीदः (واخیده) फा. वि.–धुनका हुआ, धुनकी हुई वस्तु।

वाख़ुर्दः (واخورده) फा. वि.–जिसने मुलाक़ात की हो, साक्षात्कृत।

वाख़्वास्त (واخواست) फा. पुं.–हिसाब समझना, माँगना; फिर चाहना, वापस लेना।

वागीर (واگیر) फा. पुं.–पहलवानों की ज़ोर करने की एक पद्धति जिसमें वह दोनों हाथ दीवार से टेककर एक एक हाथ की ओर छाती पर ज़ोर देते हैं, इस तरह छाती चौड़ी होती है।

वागुज़श्त (واگزشت) फा. वि.–छूटा हुआ।

वागुजाश्तः (واگزاشتہ) फा. वि.–छूटा हुआ।

वागुज़ाश्त (واگزاشت) फा. स्त्री.–छूट, मुक्ति; आज़ाद, जो छूट गयी हो (जाइदाद आदि)।

वागुज़ार (واگزار) फा. वि.–छोड़नेवाला।

वागुज़ारी (واگزاری) फा. स्त्री.–छूट, मुक्ति (जाइदाद आदि की)।

वागोयः (واگویہ) फा. पुं.–बातचीत, वार्तालाप; चर्चा, ज़िक्र अर्थात सुनी हुई बात को कहना।

वाचीदः (واچیدہ) फा. वि.–चुना हुआ, बीना हुआ, ज़मीन से बीनकर उठाया हुआ।

वा'ज़ (وعظ) अ. पुं.–धर्मोपदेश, मज़्हबी नसीहतें; उपदेश, सीख, नसीहत।

वाज़ (واز) फा. वि.–स्पष्ट, व्यक्त, प्रकट, खुला हुआ।

वाज़ख़्वाँ (وعظخواں) फा. वि.–दे. 'वाज़गो'।

वाज़गूँ (وازگوں) फा. वि.–औंधा, अधोमुख, अवाङ्मुख; अशुभ, अनिष्टकर, मनहूस।

वाज़गूनः (وازگونہ) फा. वि.–दे. 'वाज़गूँ'।

वा'ज़गो (وعظگو) अ.फा. वि.–धर्मोपदेशक, वा'ज़ कहनेवाला।

वाज़िआने क़ानून (واضعان قانون) अ. पुं.–विधान बनानेवाले, विधायकगण।

वाज़िआने दस्तूर (واضعان دستور) अ. पुं.–विधान बनानेवाले, विधायकगण।

वाज़िए क़ानून (واضع قانون) अ. पुं.–क़ानून बनानेवाला, विधायक।

वाजिद (واجد) अ. वि.–प्राप्तकर्ता, पानेवाला; आविष्कारक, नयी बात निकालनेवाला।

वाजिब (واجب) अ. वि.–उचित, मुनासिब; आवश्यक, ज़ुरूरी; अनिवार्य, लाज़िमी; योग्य, लाइक़; इस्लाम की परिभाषा में 'फ़र्ज़' से दूसरे दरजे की इबादत।

वाजिबात (واجبات) अ. पुं.–'वाजिब' का बहु., वाजिब बातें; वाजिब इबादतें।

वाजिबी (واجبی) अ. वि.–उचित, मौज़ूँ, ठीक; जितना ज़रूरी था उतना; किसी क़दर कम।

वाजिबीयत (واجبیت) अ. स्त्री.–औचित्य, मुनासिबत।

बाजिबुज़्ज़ियारत (واجب الزیارت) अ. वि.–दर्शन करने योग्य, देखने योग्य, जिसके दर्शन परम पुनीत हों।

वाजिबुत्तक्रीम (واجب التکریم) अ. वि.–आदर और संमान करने योग्य, मान्य, पूज्य।

वाजिबुत्तर्दीद (واجب الترديد) अ. वि.–खंडन के योग्य, खंडनीय, तर्दीद के क़ाबिल, जिसका खंडन आवश्यक हो।

वाजिबुत्तलब (واجب الطلب) अ. वि.–बुलाने के योग्य, जिसका बुलाना अनिवार्य हो।

वाजिबुत्तस्लीम (واجب التسلیم) अ. वि.–मानने के योग्य, मान्य, स्वीकार्य।

वाजिबुत्ता'ज़ीम (واجب التعظیم) अ. वि.–आदर के योग्य, प्रतिष्ठित, मान्य, आदरणीय।

वाजिबुत्ता'ज़ीर (واجب التعزیر) अ. वि.–सज़ा देने के योग्य, दंडनीय।

वाजिबुत्ता'मील (واجب التعمیل) अ. वि.–पालन करने योग्य (हुक्म); गवाह आदि को देने योग्य (सम्मन)।

वाजिबुर्रह्म (واجب الرحم) अ. वि.–रह्म खाने योग्य, दयनीय।

वाजिबुर्रिआयत (واجب الرعایت) अ. वि.–रिआयत करने योग्य; दया करने योग्य।

वाजिबुलअदा (واجب الادا) अ. वि.–देने या अदा करने योग्य, देय।

वाजिबुलअमल (واجب العمل) अ. वि.–करने योग्य, करणीय, जिसका करना परम आवश्यक हो।

वाजिबुलअर्ज़ (واجب العرض) अ. वि.–कहने योग्य, प्रार्थना करने योग्य; किसान और ज़मींदार के बीच मे तै शुदा अधिकार।

वाजिबुलइआनत (واجب الاعانت) अ. वि.–सहायता के योग्य, मदद करने योग्य।

वाजिबुलइज़्हार (واجب الاظہار) अ. वि.–जिसका कहना और ज़ाहिर करना आवश्यक हो।

वाजिबुलइताअत (واجب الاطاعت) अ. वि.–जिसकी आज्ञा का पालन ज़रूरी हो; जिसकी सेवा करना अनिवार्य हो।

वाजिबुलइत्तिबाअ (واجب الاتباع) अ. वि.–जिसका अनुकरण आवश्यक हो।

वाजिबुलइम्तिसाल (واجب الامتثال) अ. वि.–जिसकी आज्ञा मानना ज़रूरी हो।

वाजिबुलइम्तिहान (واجب الامتحان) अ. वि.–जिसकी परीक्षा आवश्यक हो।

वाजिबुलइम्दाद (واجب الامداد) अ. वि.–जिसकी सहायता ज़रूरी हो।

वाजिबुलइस्लाह (واجب الاصلاح) अ. वि.–जिसका सुधार आवश्यक हो।

वाजिबुलईफ़ा (واجب الایفا) अ. वि.–जिसका पालन आवश्यक हो, (बात)।

वाजिबुलक़त्अ (واجب القطع) अ. वि.–जिसका काटना ज़रूरी हो।

वाजिबुलक़त्ल (واجب القتل) अ. वि.–जिसका बध आवश्यक हो।

वाजिबुलख़िदमत (واجب الخدمت) अ. वि.–जिसकी सेवा करना आवश्यक हो।

वाजिबुलग़ज़ा (واجب الغزا) अ. वि.–जिससे धर्म-युद्ध करना ज़रूरी हो।

वाजिबुलमद्ह (واجب المدح) अ. वि.–जिसकी प्रशंसा करना अनिवार्य हो।

वाजिबुलला'न (واجب اللعن) अ. वि.–जिसको धिक्कृत करना अनिवार्य हो, जिस पर लानत भेजना ज़रूरी हो।

वाजिबुललौम (واجب اللوم) अ. वि.–जिसकी भर्त्सना और निंदा ज़रूरी हो।

वाजिबुलवुजूद (واجب الوجود) अ. वि.–जिसका अस्तित्व दूसरे के सहारे न हो, अर्थात् ईश्वर, जिसका अस्तित्व दूसरे के अधीन नहीं है, यानी वह स्वयंभू है।

वाजिबुलवुसूल (واجب الوصول) अ. वि.–जिसका प्राप्त होना आवश्यक हो, जो किसी से वुसूल किया जाय, प्राप्य।

वाजिबुलहम्द (واجب الحمد) अ. वि.–जिसकी स्तुति ज़रूरी हो।

वाजिबुलहुसूल (واجب الحصول) अ. वि.–जिसका मिलना या जिसका उपार्जन ज़रूरी हो।

वाजिबुस्सना (واجب الثنا) अ. वि.–जिसकी प्रशंसा आवश्यक हो।

वाजिबुस्सिफ़त (واجب الصفت) अ. वि.–जिसका गुणगान आवश्यक हो।

वाज़ूँ (واژوں) फा. वि.–आधा, अधोमुख, बिलकुल उलटा।

वाज़ूँनसीब (واژوں نصیب) अ. फ़ा. वि.–जिसकी तक़्दीर औंधी हो, हतभाग्य।

वाज़ूँबख़्त (واژوں بخت) फ़ा. वि.–हतभाग्य, उलटे नसीबों वाला, औंधीं तक़्दीरवाला।

वाज़ूँमुक़द्दर (واژوں مقدر) फा. अ. वि.–दे. 'वाज़ूँबख़्त'।

वाज़े' (واضع) अ. वि.–बनानेवाला, रचनेवाला; रखनेवाला, धरनेवाला।

वाज़ेह (واضح) अ. वि.–स्पष्ट, ज्वलंत, बहुत ही साफ़।

वा'ज़ोपंद (وعظ وپند) अ. फा. पुं.–तरह-तरह की नसीहतें।

वा'दः (وعدہ) अ. पुं.–प्रतिज्ञा, वचन, अह्द; संविदा, इक़्रार।

वा'दःख़िलाफ़ (وعدہ خلاف) अ. वि.–प्रतिज्ञा भंग कर देनेवाला, वादा न पूरा करनेवाला।

वा'दःख़िलाफ़ी (وعدہ خلافی) अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा भंग करना, वचन पूरा न करना।

वा'दःगाह (وعدہ گاہ) अ. फा. स्त्री.–जहाँ का वादा हो, जहाँ मिलने का क़रार हो।

वा'दःफ़रामोश (وعدہ فراموش) अ. फा. वि.–प्रतिज्ञा करके भूल जानेवाला, वचन देकर याद न रखनेवाला।

वा'दःफ़रामोशी (وعدہ فراموشی) अ. फा. स्त्री.–वचन देकर याद न रखना, वादा करके भूल जाना।

वा'दःफ़र्मा (وعدہ فرما) अ. फा. वि.–वचन देनेवाला, वा'दा करने वाला।

वा'दःफ़र्माई (وعدہ فرمائی) अ. फा. स्त्री.–वचन देना, प्रतिज्ञा करना।

वा'दःवफ़ा (وعدہ وفا) अ. वि.–वचन पूरा करनेवाला, बात कहकर पूरी करनेवाला।

वा'दःवफ़ाई (وعدہ وفائی) अ. स्त्री.–बात कहकर निबाहना, प्रतिज्ञा पूरी करना।

वादःशिकन (وعدہ شکن) अ. फा. वि.–प्रतिज्ञा भंग करनेवाला, बात कहकर पालन न करनेवाला।

वा'दःशिकनी (وعدہ شکنی) अ.फ़ा. स्त्री.–प्रतिज्ञा भंग कर देना, बात कहकर पूरी न करना।

वा'द (وعد) अ. पुं.–शुभ समाचार, ख़ुश ख़बरी।

वादए दीद (وعدۂ دید) अ. फा. पुं.–दर्शन देने का क़रार, मुंह दिखाने और मिलने का वादा।

वा'दए फ़र्दा (وعدۂ فردا) अ. फा.–कल के मिलने का वादा, जो कभी पूरा नहीं होता।

वा'दए मह्शर (وعدۂ محشر) अ. पुं.–क़ियामत में मिलने का वचन, अर्थात् न मिलने की बात।

वा'दए वस्ल (وعدۂ وصل) अ. पुं.–मिलने का क़रार; साथ सोने का क़रार।

वा'दए शब (وعدۂ شب) अ. फा. पुं.–रात में आने का क़रार।

वा'दए हश्र (وعدۂ حشر) अ. पुं.–दे. 'वादए महशर'।

वादिए ऐमन (وادئی ایمن) अ. स्त्री.–वह घाटी जहाँ हज़्रत मूसा ने ईश्वर का प्रकाश देखा था।

वादिए तूर (وادئی طور) अ. स्त्री.–तूर पहाड़ की घाटी जहाँ हज़्रत मूसा ने ईश्वर की झलक देखी थी।

वादी (وادی) अ. उभ.–घाटी, पहाड़ के नीचे का मैदान; जंगल, कानन, वन।

वादीगर्द (وادی گرد) अ. फा. वि.–घाटियों में मारा-मारा फिरनेवाला, जंगलों में फिरनेवाला।

वादीद (وادید) फा. स्त्री.–बाज़दीद, मुलाक़ात करनेवाले की मुलाक़ात।

वादीनवर्द (وادی نورد) अ. फा. वि.–दे. 'वादीगर्द'।

वादीनशीं (وادی نشیں) अ. फा. वि.–जंगल में रहनेवाला, वनस्थ।

वादीपैमा (وادی پیما) अ. फा. वि.–दे. 'वादीगर्द'।

वान (وان) फा.प्रत्य.–वाला, जैसे–'दरवान' अर्थात् दरबान।

वानमूदः (وانمودہ) फा. वि.–प्रकट किया हुआ, दिखाया हुआ।

वापस (واپس) फा. वि.–प्रत्यागत, लौटा हुआ, वापस आया हुआ; प्रतिदत्त, वापस दिया हुआ, अथवा छिपा हुआ।

वापसआमदः (واپس آمدہ) फा.–वापस लौटा हुआ, प्रत्यागत।

वापिस दादः (واپس دادہ) फा. वि.–वापस दिया हुआ, प्रतिदत्त।

वापसीं (واپسیں) फा. वि.–अंतिम, आख़िरी।

वापसी (واپسی) फा. स्त्री.–प्रत्यागम, लौटना; प्रतिदान, लौटाना, फेरना, वापस देना।

वाफ़िद (وافد) अ. पुं.–प्रतिनिधि, मुमाइंदा; दूत, एलची; पत्रवाहक, क़ासिद।

वाफ़िर (وافر) अ. वि.–प्रचुर, बहुत, अत्यधिक, बहुत ज़ियादा।

वाफ़िल हस्ब[हसब] (وافی الحسب) अ. वि.–जो व्यक्ति, विद्या और दूसरे गुणों से संपन्न हो।

वाफ़ी (وافی) अ. वि.–संपूर्ण, समग्र, पूरा, तमाम; प्रचुर, अत्यधिक, काफ़ी।

वाबस्तः (وابستہ) फा. वि.–आबद्ध, बँधा हुआ; संबद्ध, सम्बन्धित, मुतअल्लिक़; संलग्न, सूत्रित, नत्थी; स्वजन, आत्मीय, रिश्तेदार।

वाबस्तए इश्क़ (وابستۂ عشق) फा. अ. वि.–प्रेमाबद्ध, प्रेम-पाश में बँधा हुआ, मुग्ध, मोहित।

वाबस्तए ज़ुल्फ़े (وابستۂ زلف) फा. वि.–प्रेमिका की अलक पाश में बँधा हुआ अर्थात्, मुग्ध, आसक्त।

वाबस्तगाँ (وابستگان) फा. पुं.–'वाबस्तः' का बहु., बँधे हुए लोग।

वाबस्तगाने सहब्बत (وابستگان محبت) फा. अ. पुं.–प्रेम पाश में बँधे हुए प्रेमी।

वाबस्तगी (وابستگی) फा. वि.–बँधाव, बन्धन; संपर्क; सम्बन्ध; प्रेम; स्वजनता, अपनापन।

वाम (وام) फा. पुं.–ऋण, क़र्ज़; वर्ण, रंग।

वामख़्वाह (وامخواہ) फा. वि.–ऋण-ग्राही, अधमर्ण, कर्ज़दार।

वामांदः (واماندہ) फा. वि.–थका हुआ, थककर पीछे रहा हुआ; दीन, दुखी, लाचार।

वामांदए राह (واماندۂ راہ) फा. वि.–रस्ते में थककर बैठा हुआ, रस्ते में थकन के कारण अपने साथियों से छूटा हुआ।

वामांदगी (واماندگی) फा. स्त्री.–थकावट, राह में थककर रह जाना; दीनता, निःसहायता, लाचारी।

वामिक़ (وامق) अ. पुं.–चाहनेवाला, प्यार करनेवाला; अरब का एक प्रेमी जो 'अज़्रा' पर आशिक़ था।

वामुसीबता (وامصیبتا) अ. वा.–हाय री मुसीबत, हाय मुसीबत, किसी विपत्ति के समय बोलते हैं।

वायः (وایہ) फा. पुं.–मनोकामना, मुराद; अफ़ीम आदि की रोज़ की बँधी हुई ख़ुराक, मात्रा, मिक़्दार।

वारः (وارہ) फा. वि.–समान, तुल्य; स्वभाव; ऋतु; स्वामी।

वार (وار) फा. पुं.–आघात, चोट, ज़र्ब; आक्रमण, हम्ला; योग्य, पात्र, लाइक़; पद्धति, रविश, (प्रत्य.) करनेवाला या वाला—जैसे 'सोगवार' या 'तक़्सीरवार'।

वारफ़्तः (وارفتہ) फा. वि.–खोया हुआ, आत्मविस्मृत, बेसुध, बेख़ुद; शिथिल, निढाल।

वारफ़्तःतब्अ (وارفتہ طبع) अ. फा. वि.–दे. 'वा० मिज़ाज'।

वारफ़्तःमिज़ाज (وارفتہ مزاج) फा. अ. वि.–जो खोया खोया-सा रहता हो; ऊलज़लूल, लाउबाली।

वारफ़्तःमिज़ाजी (وارفتہ مزاجی) फा. अ. स्त्री.–खोया खोया-सा रहना; उलजलूलपन।

वारफ़्तगाँ (وارفتگان) फा. पुं.–'वारफ़्तः' का बहु., प्रेम में खोये हुए लोग।

वारफ़्तगी (وارفتگی) फा. स्त्री.–खोया-खोयापन, आत्म-विस्मृति; ऊलजलूलपन।

वारसीदः (وارسیدہ) फा. वि.–पहुँचा हुआ, विगत; सूचित, मुत्तला।

वारसीदगी (وارسیدگی) फा. स्त्री.–पहुँचना; ख़बर पाना।

वारस्तः (وارستہ) फा. वि.–स्वच्छंद, निश्चिंत, बेफ़िक्र, आज़ाद।

वारस्तःमिजाज (وارستہ مزاج) फा. अ. वि.–स्वच्छंद प्रकृति, आज़ाद मिज़ाज, मनमौज़ी।

वारस्तःमिज़ाजी (وارستہ مزاجی) फा. अ. स्त्री.–प्रकृति की स्वच्छंदता, आज़ाद मिज़ाजी, मन की मौज।

वारस्तगी (وارستگی) फा. स्त्री.–स्वच्छन्दता, निश्चिंतता, आज़ादी, मन मौजीपन।

वारिद (وارد) अ. वि.–आनेवाला, आगामी; आया हुआ, आगत; दूत, क़ासिद।

वारिदात (واردات) अ. स्त्री.–'वारिद' का बहु., आनेवाले, अर्थात् घटित होनेवाले, यह शब्द उर्दू में एक वचन के लिए व्यवहृत है, कहते हैं 'वारिदात हो गयी', घटना, वाक़िआ।

वारिदाते क़ल्ब (واردات قلب) अ. पुं.–हृदय में आनेवाली विचार धाराएँ; महात्माओं के हृदय पर पड़नेवाले द्रव्य-प्रकाश।

वारिस (وارث) अ. वि.–उत्तराधिकारी, वसी, रिक्थाधिकारी; अभिभावक, सरपरस्त।

वारिसे तख़्तोताज (وارث تخت وتاج) अ. फा. पुं.–युवराज, राजकुमार, शाहज़ादा, वली अह्द।

वारिसे ताजोनगीं (وارث تاج ونگیں) अ. फा. पुं.–दे. 'वारिसे तख़्तोताज़'।

वालः (والہ) फा. पुं.–एक रेशमी बारीक कपड़ा।

वाल (وال) फा. स्त्री.–एक सिन्नेदार मछली।

वाला (والا) फा. वि.–प्रतिष्ठित, मान्य; उच्च, उत्तुंग; महान्, महत्त्वपूर्ण; श्रेष्ठ, उत्तम।

वालाक़द्र (والاقدر) फा. अ. वि.–उत्तम, प्रतिष्ठित, बड़ी इज़्ज़तवाला।

वालागुहर (والاگہر) फा. वि.–उत्तम कुल, कुलीनतम, बहुत प्रतिष्ठित कुलवाला।

वालाजाह (والاجاہ) फा. वि.–दे. 'वालाक़द्र'।

वालादूदमाँ (والادودماں) फा. वि.–दे. 'वालागुहर'।

वालानज़ाद (والانژاد) फा. वि.–दे. 'वालागुहर'।

वालानामः (والانامہ) फा. पुं.–आदरपत्र, कृपापत्र, बड़े व्यक्ति का पत्र।

वालामर्तबत (والامرتبت) फा. अ. वि.–दे. 'वालाक़द्र'।

वालाशान (والاشان) फा. अ. वि.–दे. 'वालाक़द्र'।

वालासिफ़ात (والاصفات) फा. अ. वि.–उत्तम गुण, बहुत अच्छे और प्रतिष्ठित गुणोंवाला।

वालाहिमम (والاھمم) फा. अ. वि.–उच्चोत्साही, बड़ी हिम्मतवाला।

वालाहिम्मत (والاھمت) फा. अ. वि.–बड़ी हिम्मतवाला, बड़े साहसवाला, महोत्साह, महासाहस।

वालिए अक़्रब (والئی عقرب) अ. पुं.–मंगलग्रह, जो वृश्चिक राशि का स्वामी है।

वालिए तख़्तोताज (والئی تخت وتاج) अ.फा.वि.–युवराज, वली अह्द।

वालिए मुल्क (والئی ملک) अ. पुं.–किसी राष्ट्र का शासक, राजा, बादशाह।

वालिए रियासत (والئی ریاست) अ. पुं.–किसी रियासत का स्वामी, रईस, राजा।

वालिदः (والدہ) अ. स्त्री.–माता, मातृ, जननी, प्रसवित्री, अंबिका, अंबा।

वालिद (والد) अ. पुं.–पिता, पितृ, जनक, अंब, अंबक, प्रसवी।

वालिदए मोहतरमः (والدۂ محترمہ) अ. स्त्री.–पूज्य माता।

वालिदे माजिद (والد ماجد) अ. पुं.–पूज्य पिता।

वालिदैन (والدین) अ. पुं.–मात-पिता, पितरौ, मातरपितरौ, मातापितरौ।

वालिहानः (والہانہ) अ. फा. वि.–प्रेमियों-जैसा, प्रेमपूर्वक।

वाली (والی) अ. पुं.–मित्र, दोस्त; शासक, हाकिम।

वालेह (والہ) अ. वि.–मुग्ध, आसक्त, फ़िरेफ़्ता, जो प्रेम में सुध-बुध खो चुका हो।

वावैला (واویلا) फा. वा.–हाय, अफ़्सोस; कोलाहल, शोरोग़ुल; हाहाकार, कोहराम।

वाशिगाफ़ (واشگاف) फा. वि.–प्रकट, स्पष्ट, खुला हुआ।

वाशी (واشی) अ. वि.–मिथ्यावादी, असत्यभाषी, झूठा; निंदक, चुग़ुलख़ोर; छिद्रान्वेषी, एबेचीं।

वाशुदः (واشدہ) फा. वि.–प्रफुल्ल, विकसित, खिला हुआ, शिगुफ़्ता।

वाशुद (واشد) फा. स्त्री.–खिलावट, प्रफुल्लता, शिगुफ़्तगी।

वाशुदगी (واشدگی) फा. स्त्री.–शिगुफ़्तगी, प्रफुल्लता, विकास, खिलावट।

वाशुदनी (واشدنی) फा. वि.–विकसित होने योग्य, खिलने योग्य, शिगुफ़्तनी।

वासिक़ (واثق) अ. वि.–दृढ़, मज़्बूत, न टूटनेवाला।

वासितः (واسطہ) अ. पुं.–माध्यम, दरमियानी; संपर्क, सम्बन्ध, तअल्लुक़।

वासित (واسط) अ. वि.–बीचवाला, मध्यवर्ती; इराक़ में बस्रे और बग़दाद के बीच एक नगर जहाँ का क़लम बहुत अच्छा होता है।

वासिती (واسطی) अ. वि.–वासित नगर का, विशेषतः क़लम के लिए आता है।

वासिफ़ (واصف) अ. वि.–प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

वासिल (واصل) अ. वि.–मिलनेवाला, मुलाक़ात करनेवाला; सटा हुआ, संयुक्त।

वासिलबहक़्क़ (واصل بحق) अ. फा. वि.–ईश्वर से मिलनेवाला, दिवंगत।

वासिलबाक़ी (واصل باقی) अ. वि.–वुसूल और बाक़ी का हिसाब।

वासिलबाक़ी नवीस (واصل باقی نویس) अ. फा. पुं.–कचहरी का एक मुर्हरिर जो आय-व्यय का हिसाब रखता है।

वासिलात (واصلات) अ. स्त्री.–कुल आय का जोड़, आमदनी का मीज़ान।

वासे' (واسع) अ. वि.–फैलानेवाला, विस्तार करनेवाला; विस्तृत, वसीअ; ईश्वर का एक नाम।

वासोख़्तः (واسوختہ) फा. वि.–जला हुआ विदग्ध; कुढ़ा हुआ, बेज़ार।

वासोख़्त (واسوخت) फा. पुं.–उर्दू पद्य की एक क़िस्म जो मुसद्दस के रूप में होता है और जिसमें प्रेमिका के व्यवहार से नाराज़ होकर प्रेम छोड़ देने और प्रेमिका को त्यागने का वर्णन होता है।

वासोख़्तगी (واسوختگی) फा. स्त्री.–जलन, तपन; बेज़ारी, नाराज़ी।

वाह (واہ) फा. अव्य.–ख़ूब, साधु, धन्य।

वाह वाह (واہ واہ) फा. वि. धन्य-धन्य, साधु-साधु, ख़ूब-ख़ूब।

वाहस्रता (واحسرتا) हाय अफ़्सोस, शोक के समय पर बोलते हैं।

वाहिदः (واحدہ) अ. पुं.–इकाई, यूनिट।

वाहिद (واحد) अ. वि.–एक, यक; ईश्वर का एक नाम।

वाहिदुलऐन (واحد العین) अ. वि.–एक आँखवाला, एकाक्ष, कारण, काना।

वाहिब (واہب) अ. वि.–देनेवाला, प्रदान करनेवाला, दाता।

वाहिबुननिअम (واہب النعم) अ. पुं.–दे. 'वाहिबुलअताया'

वाहिबुलअताया (واہب العطایا) अ. पुं.–पुरस्कार और उत्तम वस्तुएँ देनेवाला, अर्थात् ईश्वर।

वाहिमः (واہمہ) अ. पुं.–भ्रम, भ्रांति, वह्म; कल्पना शक्ति।

वाहिम (واہم) अ. वि.–भ्रमी, वह्म करनेवाला, वहमी, शक्की।

वाहियात (واہیات) अ. स्त्री.–'वाही' का बहु., निरर्थक और व्यर्थ बातें।

वाहीं (واہی) वि.–शिथिल, सुस्त; व्यर्थ, अनर्गल, फ़ुज़ूल।

वि

विआ (وعا) अ. पुं.–पात्र, बरतन, ज़र्फ़'।

विक़ाअ (وقاع) अ. पुं.–युद्ध, लड़ाई; मैथुन, सहवास, मुबाशरत।

विक़ायः (وقایہ) अ. पुं.–रक्षा, देख-रेख, हिफ़ाज़त; जिससे किसी चीज़ की रक्षा करें।

विक़ायत (وقایت) अ. स्त्री.–देख-भाल, रक्षा, हिफ़ाज़त।

विक़ार (وقار) अ. पुं.–दे. 'वक़ार' शुद्ध वही है, परंतु फ़ार्सीवाले बहुत जगह ज़बर को ज़ेर पढ़ते हैं, उसी में से यह भी है।

विकालत (وکالت) अ. स्त्री.–दे. 'वकालत', दोनों शुद्ध हैं।

विजार (وجار) अ. पुं.–विज्जू; भेड़िया, वृक।

विज़ारत (وزارت) अ. स्त्री.–मंत्री का पद; मंत्रित्व, मंत्री का काम।

विज़ारतख़ानः (وزارت خانہ) अ. फा. पुं.–मंत्रालय, वजीर का दफ़्तर।

विज़ारते उज़्मा (وزارت عظمیٰ) अ. स्त्री.–प्रधानमंत्री का पद।

विज़ारते ख़ारिजः (وزارت خارجہ) अ. स्त्री.–विदेशी कामों की देख-रेख करनेवाली विज़ारत, परराष्ट्र-मंत्रित्व।

विजारते दाख़िलः (وزارت داخلہ) अ. स्त्री.–देश के भीतरी विषयों की देख-रेख करनेवाली विज़ारत, गृहमंत्रित्व।

विज्द (وجد) अ. पुं.–शक्तिशाली होना; धनवान् होना; प्राप्त होना।

विज्दान (وجدان) अ. पुं.–खोये हुए को पाना; जानना; खोजना; काव्य रसज्ञता, सहृदयता, ज़ौक़।

विज्दाने सहीह (وجدان صحیح) अ. पुं.–शुद्ध काव्य रसज्ञता, सच्चा ज़ौक़।

विज्नः (وجنہ) अ. पुं.–कपोल, गाल, दे. 'वज्नः' और 'वुज्नः', सब शुद्ध हैं।

विज़्र (وزر) अ. पुं.–भार, बोझ; पीठ पर लादने भर का बोझ; पाप, गुनाह; उपकरण, औज़ार।

वित्र (وتر) अ. पुं.–एक, अकेला; वह संख्या जो दो पर न बटे, विषम।

विदाअ (وداع) अ. स्त्री.–दे. 'वदाअ', शुद्ध उच्चारण वही है, फ़ार्सी में 'विदाअ' हो गया है।

विदाद (وداد) अ. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती।

विफ़ाक़ (وفاق) अ. पुं. अनुकूलता, मुआफ़क़त; मैत्री, दोस्ती; कई राष्ट्रों का संयुक्त मोरचा।

विफ़ाक़त (وفاقت) अ. स्त्री.–अनुकूलता, मुआफ़क़त; मित्रता, दोस्ती।

विफ़ाक़ी (وفاقی) अ. वि.–विफ़ाक़ सम्बन्धी, संयुक्त मोरचे वाला (वाली)।

विरासत (وراثت) अ. स्त्री.–दायाधिकार, रिक्थाधिकार, उत्तराधिकार, मीरास पाना।

विर्द (ورد) अ. पुं.–किसी बात को बार-बार कहना या करना।

विला (ولا) अ. स्त्री.–प्रेम,मुहब्बत; आस्था, श्रद्धा; भक्ति, पूज्य जनों का प्रेम।

विलादत (ولادت) अ. स्त्री.–उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश।

विलायत (ولایت) अ. स्त्री.–परराष्ट्र, अन्य देश, पहले ईरान और तुर्किस्तान आदि को कहा जाता था, अब युरोप और विशेषकर इंगलैंड को कहते हैं; वली या ऋषि होने का भाव, अथवा उनका पद।

विलायती (ولایتی) अ. वि.–विलायत का, विलायत वाला; विलांयत से आया हुआ।

विसादः (وسادہ) अ. पुं.–वड़ा तकिया, मस्नद।

विसाल (وصال) अ. पुं.–मिलन, मेल; प्रेमी और प्रेमिका का संयोग; किसी धार्मिक और पूज्य व्यक्ति का निधन या देवलोक गमन।

वी

वीरां (ویراں) फा. वि.–'वीरान' का लघु., दे. 'वीरान'।

वीरांकुन (ویراں کن) फा. वि.–वीरान करनेवाला, ध्वंसकारी, खंडहर बना देनेवाला, बरबाद कर देनेवाला।

वीरांगर (ویراں گر) फा. वि.–वीरान करनेवाला, ध्वंस कारी; डाकू, लुटेरा।

वीरांसरा (ویراں سرا) फा.स्त्री.–वीरान स्थान, अर्थात् संसार।

वीरानः (ویرانہ) फा. पुं.–वीरान, निर्जन स्थान; वन, कानन, जंगल।

वीराननशीं (ویرانہ نشیں) फ़ा. वि.–वीराने में रहनेवाला, जंगल में रहनेवाला।

वीरानःपसंद (ویرانہ پسند) फा.वि.–जिसे वीराने में रहना अच्छा लगता हो।

वीरान (ویران) फा. वि.–निर्जन स्थान, जहाँ आदमी न हों; जंगल, वन; जिस स्थान की इमारतें गिर गयी हों, जो मकान आदि खँडहर हो गया हो।

वीरानी (ویرانی) फा. स्त्री.–निर्जनता, भग्न का भाव; जंगलपन; खंडहरपन; बेरौनक़ी।

वु

वुअ्'आज़ (وعاظ) अ. पुं.–'वाइज़' का बहु., वाइज़ लोग, धर्मोपदेशक गण।

वुऊद (وعود) अ.पुं.–'वादः' का बहु., वादे, प्रतिज्ञाएँ।

वुक़ूअः (وقوعہ) उ.पुं.–घटना, दुर्घटना, वाक़िआ, हादिसा।

वुक़ूअ (وقوع) अ.पुं.–प्रकट होना, घटित होना, वाक़े' होना; घटना, वाक़िआ।

वुक़ूए जुर्म (وقوع جرم) अ. पुं.–किसी अपराध का घटित होना, अपराध होना।

वुक़ूए सानिहः (وقوع سانحہ) अ. पुं.–किसी घटना का घटित होना, वाक़िअः ज़ाहिर होना।

वुक़ूए हादिसः (وقوع حادثہ) अ. पुं.–किसी दुर्घटना का घटित होना, कोई बुरी घटना होना।

वुक़ूद (وقود) अ. पुं.–आग जलना या जलाना।

वुक़ूफ़ (وقوف) अ. पुं.–ज्ञान, जानकारी, परिचय।

वुज़रा (وزرا) अ. पुं.–'वज़ीर' का बहु., वज़ीर लोग, मंत्रिगण।

वुज़ू (وضو) अ.पुं.–साफ़ चेहरे का होना, चेहरे की सफ़ाई और स्वच्छता; नमाज़ के लिए नियमपूर्वक हाथ-पाँव और मुँह आदि धोना।

वुजूद (وجود) अ. पुं.–अस्तित्व, हस्ती; उपस्थिति, मौजूदगी; देह, जिस्म।

वुजूदोअदम (وجودوعدم) अ.पुं.–होना और न होना, हस्ती और नेस्ती, अस्तित्व और अनस्तित्व।

वुजूब (وجوب) अ. पुं:–वाजिब होना, आवश्यक होना, अनिवार्य होना।

वुज़ूशिकन (وضوشکن) अ. वि.–वुज़ू तोड़ देनेवाला, तप भंग कर देनेवाला (विशेषतः सौंदर्य)।

वुजूह (وجوہ) अ.पुं.–'वहज्' का बहु., कारण-समूह।

वुज्नः (وجنہ) अ. पुं.:–कपोल, गाल दे. 'विज्नः' और 'वज्नः' तीनों शुद्ध हैं।

वुफ़ूद (وفود) अ. पुं.–'वफ़्द' का बहु., प्रतिनिधि मंडल समूह, शिष्ट मंडलों का समूह।

वुफ़ूर (وفور) अ.पुं.–आधिक्य, प्राचुर्य, बाहुल्य, इफ़ात।

वुफ़ूरे इज़्तिराब (وفور اضطراب) अ. पुं.–घबराहट की अधिकता।

वुफ़ूरे ग़म (وفور غم) अ. पुं.–शोक अथवा दुःख का बाहुल्य, शोकाधिक्य्।

वुफ़ूरे शौक़ (وفور شوق) अ. पुं.–लालसा और अभिलाषा की बहुतायत, उत्कंठा।

वुरूद (ورود) अ.पुं.–आगमन, आना; प्रवेश, दाख़िला।

वुरूदे मस्ऊद (ورود مسعود) अ. पुं.–शुभागमन, किसी बड़े और पूज्य व्यक्ति का पदार्पण।

वुरूदे मुबारक (ورود مبارک) अ. पुं.–दे. 'वु. मस्ऊद'।

वुलात (ولات) अ. पुं.–'वाली' का बहु., स्वामिगण; शासकगण।

वुलूअ (ولوع) अ. पुं.–लोभ, लिप्सा, लालच; लोभ होना, लालच होना।

वुलूग़ (ولوغ) अ. पुं.–कुत्ते का चपड़-चपड़ करके पानी पीना; कुत्ते का पानी में मुँह डालना।

वुलूज (ولوج) अ. पुं.–एक चीज़ का दूसरे में प्रवेश।

वुशाक़ (وشاق) तु. पुं.–छोकरा, ऐसा ख़िदमतगार लड़का जिसकी डाढ़ी-मूँछ न निकली हों।

वुशात (وشاۃ) अ. पुं.–'वाशी' का बहु., निंदक लोग; छिद्रान्वेषी लोग; झूठे लोग।

वुश्ता (وشتا) फा. पुं.–पार्सियों के धर्म ग्रंथ 'ज़ंद' का महाभाष्य, उस्ता।

वुसूल (وصول) अ. पुं.–पहुँचना, जाना; प्राप्त होना, मिलना; प्राप्ति, वुसूली।

वुसूलबाक़ी (وصول باقی) अ. पुं.–जो आया और जो बाक़ी रहा।

वुसूलयाब (وصول یاب) अ. फा. वि.–प्राप्त, लब्ध, वुसूल।

वुसूलयाबी (وصول یابی) अ. फा. स्त्री.–प्राप्ति, वुसूली।

वुसूली (وصولی) अ. वि.–प्राप्ति, वुसूलयाबी।

वुस्अ (وسع) अ. स्त्री.–विस्तार, लंबाई-चौड़ाई; शक्ति, ज़ोर; सामर्थ्य, मक़्दिरत।

वुस्अत् (وسعت) अ. स्त्री.–लंबाई-चौड़ाई, विस्तार; सामर्थ्य, मक़्दूर; शक्ति, ताक़त।

बुस्अततलब (وسعت طلب) अ. वि.–जिसके लिए विस्तार की आवश्यकता हो।

बुस्अतपिज़ीर (وسعت پزیر) अ. फा. वि.–विस्तृत, विशाल, लंबा-चौड़ा।

वुसअते अख़्लाक़ (وسعت اخلاق) अ. स्त्री.–शिष्टता और सुशीलता के व्यवहार का आधिक्य।

वुस्अते करम (وسعت کرم) अ. स्त्री.–दानशीलता और वदान्यता का प्राचुर्य।

वुस्अते क़ल्ब (وسعت قلب) अ. स्त्री.–हृदय का विस्तार, उदारता।

वुस्अते शौक़ (وسعت شوق) अ. स्त्री.–अभिलाषा की तीव्रता।

वुस्अते सह्रा (وسعت صحرا) अ. स्त्री.–जंगल का विस्तार।

वुस्अते हौसलः (وسعت حوصلہ) अ. स्त्री.–साहस का आधिक्य।

वुस्ता (وسطیٰ) अ. वि.–दरमियानी, बीच की; बीच की उँगली, मध्यमा।

वुस्लत (وصلت) अ. स्त्री.–पैवंद, जोड़; स्वजनता, रिश्तेदारी; संयोग, मिलन, वस्ल।

वुहूश (وحوش) अ. पुं.–'वहश' का बहु., जंगली जानवर।

वुहूशोतुयूर (وحوش وطیور) अ. पुं.–जंगली जानवर और जंगली चिड़ियाँ।

वै

वैल (ویل) अ. पुं.–हाय, हा, अफ़्सोस; शत्रुता, दुश्मनी; आपत्ति, कष्ट; आपत्ति के समय रोना-धोना; दोज़ख़ का एक तल।

वैलकश (ویل کش) अ. फा. वि.–शत्रुता निवाहनेवाला, बदी का बदला लेनेवाला।

वैस (ویس) अ. पुं.–धिक्कार, लानत।

वैह (ویح) अ. पुं.–साधु, अहो, ख़ूब; हाय, हा हंत; डाँट-फटकार।

वैहकल्लाह (ویحک اللہ) अ. वा.–ईश्वर तुझे खराव करे।

श

शंग (شنگ) फा. वि.–चपल, चंचल, शोख़; लुंठक, लुटेरा, बटमार; तस्कर, चोर।

शंगर्फ़ (شنگرف) फा. पुं.–ईंगुर, एक प्रसिद्ध पदार्थ।

शंगुल (شنگل) फा. वि.– चपल, चंचल, शोख़; छली, चालाक; लुटेरा, बटमार।

शंगूल (شنگول) फा. वि.–दे. 'शंगुल'।

शंजर्फ़ (شنجرف) फा. पुं.–दे. 'शंगर्फ़'।

शंबः (شنبہ) फा. पुं.–वार, दिन; शनैश्चर, सनीचर, फ़ार्सी उच्चारण 'शंबेह' है।

शअफ़ (شعف) अ. पुं.–प्रेम, स्नेह, अनुराग, महब्बत।

शआइर (شعائر) अ. पुं.–'शईरः' का बहु., आराधनाएँ, इबादतें; पशुओं की बलि, क़ुर्बानियाँ।

शआफ़ (شعاف) अ. पुं.–उन्माद, सिड़ीपन, पागलपन, मिराक़

शईरः (شعیرہ) अ. स्त्री.–पशुबलि, क़ुर्बानी; आराधना, इबादत; आँख की गुहाँजनी।

शईर (شعیر) अ. पुं.–जौ, यव, एक प्रसिद्ध अन्न।

शए ज़ाइद (شے زائد) अ. स्त्री.–वह वस्तु जो अधिक हो, जो आवश्यकता से ज़ाइद हो, फ़ालतू।

शए मक़्फ़ूल (شے مکفولہ) अ. स्त्री.–वह वस्तु जो गिरवी हो, बंधक।

शए मबीअः (شے مبیعہ) अ. स्त्री.–बेची हुई वस्तु, बिकी हुई चीज़, विक्रीत।

शए मुतनाज़िअः (شے متنازعہ) अ. स्त्री.–झगड़ेवाली चीज़, जिस पर झगड़ा हो।

शए लतीफ़ (شے لطیف) अ. स्त्री.–प्रतिभा, ज़िहानत; दक्षता, कुशलता, चतुराई।

शक [क्क] (شک) अ. पुं.–शंका, आशंका, संदेह, शुब्हा; भ्रम, भ्रांति, वह्म।

शक़ [क़्क़] (شق) अ. पुं.–फटना, विदारण; फटा हुआ, विदीर्ण।

शक़आफ़्रीं (شق آفریں) अ. फा. वि.–शक पैदा करनेवाला, शंकाजनक।

शकर (شکر) फा. स्त्री.–खाँड, शर्करा, चीनी।

शकरआब (شکرآب) फा. स्त्री.–दे. 'शकराब'।

शकरक़ंद (شکرقند) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध कंद, शकरकंदी।

शकर ख़ंदः (شکرخندہ) फा. पुं.–दे. 'शकर खंद'।

शकरख़ंदः (شکرخند) फा. पुं.–मीठी हँसी, मुस्कुराहट।

शकरख़श (شکرخش) फा. पुं.–नमूना, बानगी, निदर्शन।

शकरख़ा (شکرخا) फा. वि.–शकर चबानेवाला, मधुरभाषी, मिष्टवादी।

शकरख़ोर (شکرخور) फा. वि.–शकर खानेवाला।

शकरख़्वाब (شکرخواب) फा. पुं.–मीठी नींद, सुषुप्ति; सवेरे की नींद।

शकरख़्वारः (شکرخوارہ) फा. वि.–शकर खानेवाला; रस लेनेवाला, आनंदग्राही।

शकरगुफ़्तार (شکرگفتار) फा. वि.–मीठी बातें करनेवाला, मधुरभाषी, शीरींज़बाँ।

शकरगुफ़्तारी (شکرگفتاری) फा. स्त्री.–मीठी मीठी बातें करना, शीरींज़बानी।

शकरचश (شکرچش) फा. पुं.–शकर खानेवाला; नमूना, बानगी; रस लेनेवाला।

शकरज़ार (شکرزار) फा. पुं.–जहाँ शकर ही शकर हो, जहाँ मिठास बहुत हो।

शकरतरी (شکرتری) फा. स्त्री.–सफ़ेद शकर, चीनी, दाना।

शकरदान (شکردان) फा. पुं.–शकर रखने का बरतन, खंडपात्र।

शकरपा (شکرپا) फा. वि.–लँगड़ा, जिसके एक पाँव टेढ़ हो, पंगु।

शकरपारः (شکرپارہ) फा. पुं.–एक प्रकार की मिठाई; सुंदर अदाओंवाली प्रेमिका।

शकरपूरः (شکرپورہ) फा. पुं.–मीठा समोसा, गुझिया, पिराक।

शकरपेच (شکرپیچ) फा. पुं.–मिठाई पर लिपटा हुआ काग़ज़; शकर बांधने की पुड़िया।

शकरफ़रोश (شکرفروش) फा. वि.–शकर बेचनेवाला; मधुरभाषी, शीरीगुफ़्तार।

शकरफ़रोशी (شکرفروشی) फा. स्त्री.–शकर बेचने का काम; मीठी बातें करना।

शकरबार (شکربار) फा. वि.–शकर बरसानेवाला अर्थात् बहुत मीठा; मिष्टभाषी, शीरींसुख़न।

शकरबारी (شکرباری) फा. स्त्री.–शकर बरसाना; मीठी बातें करना।

शकरबूज़ः (شکربوزہ) फा. पुं.–पिराक, गुझिया, मीठा समोसा।

शकररंग (شکررنگ) फा. वि.–मुरझाए रंगवाला, पीला पड़ा हुआ; अप्रसन्न, नाराज़।

शकररंगी (شکررنگی) फा. स्त्री.–अप्रसन्नता, नाराज़ी; वैमनस्य, मनमुटाव।

शकररंज (شکررنج) फा. वि.–अप्रसन्न, नाराज़।

शकररंजी (شکررنجی) फा. स्त्री.–अप्रसन्नता, नाराज़ी।

शकररेज़ (شکرریز) फा. पुं.–न्योछावर, वह वस्तु जो व्याह के दिन दुल्हन और दूल्हा के सरपर से न्योछावर करते हैं; ख़ुशी का रोना।

शकररेज़ी (شکرریزی) फा. स्त्री.–दूल्हा और दुल्हन पर न्योछावर करना, शकर बरसाना।

शकरलंग (شکرلنگ) फा. वि.–हलकी लँगड़ाहट।

शकरलब (شکرلب) फा. वि.–मीठे ओंठोंवाला; मिष्टभाषी; कटे होंठवाला।

शकरलबी (شکرلبی) फा. स्त्री.–होठों की मिठास; बातों की मिठास; होंठ कटा होना।

शकरहर्फ़ (شکرحرف) फा. अ. वि.–मिष्टभाषी, शीरींगुफ़्तार।

शकराब (شکرآب) फा. स्त्री.–हलकी रंजिश, मनोमालिन्य, मनमुटाव।

शकरिस्तान (شکرستان) फा. पुं.–गन्ने का खेत; शकर की फ़ैक्टरी, खंडसाल; जहाँ शकर बहुत हो।

शकरीं (شکریں) फा. वि.–मीठा, मधुर; शकर-सम्बन्धी।

शकरी (شکری) फा. वि.–शकर का, शकर-सम्बन्धी।

शकस्त (شکست) फा. स्त्री.–दे. 'शिकस्त', वही उच्चारण शुद्ध है।

शक़ाइक़ (شقائق) अ. पुं.–गुलेलाला, अहिपुष्प; 'शक़ीक़ः' का बहु., कनपटियाँ।

शक़ाक़ुल (شقاقل) अ. स्त्री.–एक गाँठ जो दवा में काम आती है, शक़ाक़ुल मिस्री।

शक़ावत (شقاوت) अ. स्त्री.–हृदय की कठोरता, निष्ठुरता, निर्दयता; भाग्य की विमुखता, बदक़िस्मती।

शक़ावते क़ल्बी (شقاوت قلبی) अ. स्त्री.–हृदय की निर्दयता, संगदिली।

शक़ावते बातिनी (شقاوت باطنی) अ. स्त्री.–दे. 'श. क़ल्बी'।

शक़िर (شقر) फा. पुं.–जंगली लाले का फूल।

शक़ी (شقی) अ. वि.–निष्ठुर, निर्दय, पाषाण हृदय, संगदिल; भाग्यहीन, अभागा।

शक़ीउत्तबअ (شقی الطبع) अ. वि.–दे. 'शकीउलक़ल्ब'।

शक़ीउलक़ल्ब (شقی القلب) अ. वि.–जिसका हृदय बहुत ही कठोर हो, पाषाण हृदय।

शक़ीउलबातिन (شقی الباطن) अ. वि.–दे. 'शक़ीउल क़ल्ब'।

शक़ीक़ः (شقیقہ) अ. पुं.–कनपटी, गंडस्थल; आधा सीसी का दर्द।

शक़ीक़ (شقیق) अ. पुं.–खंड, टुकड़ा; सगा भाई, सहोदर भ्राता।

शकीलः (شکیلہ) अ. स्त्री.–सुन्दरी, रूपवती, हसीना।

शकील (شکیل) अ. वि.–सुन्दर, रूपवान्, भद्रमुख, श्रीमुख, सुरूप, हसीन।

शक़ीस (شقیص) अ. वि.–साझीदार, भागीदार, शरीफ़; अच्छी चालवाला घोड़ा।

शक़ीह (شقیح) अ. वि.–निकृष्ट, कुरूप, भद्दा, बुरा।

शकूक (شکوک) अ. वि.–शक्की, शब्द करनेवाला, बहुत अधिक शक करनेवाला।

शकूर (شکور) अ. वि.–शुक्र करनेवाला, आभारी, कृतज्ञ; धन्यवाद देनेवाला, बधाई देनेवाला।

शक्कर (شکر) फा. स्त्री.–शकर, खंड शर्करा, चीनी।

शक्करअफ़्शाँ (شکرافشاں) फा. वि.–मधुरभाषी, मिष्टवादी, शीरींसुख़न; शकर छिड़कनेवाला।

शक्करअफ़्शानी (شکرافشانی) फा. स्त्री.–मीठी-मीठी बातें करना, मधुर भाषण।

शक्करदहाँ (شکردہاں) फा. वि.–मीठी-मीठी बातें करनेवाला, मिष्टभाषी।

शक्करदहानी (شکردہانی) फा. स्त्री.–मीठी-मीठी बातें करना, प्रिय बोलना।

शक्करफ़िशाँ (شکرفشاں) फा. वि.–'शक्करअफ़्शाँ' का लघु., दे. 'श. अफ़्शाँ'।

शक्करफ़िशानी (شکرفشانی) फा. स्त्री.–'शक्करअफ़्शानी' का लघु., दे. 'श. अफ़्शानी'।

शक्करमक़ाल (شکرمقال) फा. अ. वि.–मिष्टभाषी, मधुरवादी, शीरींगुफ़्तार।

शक्करमक़ाली (شکرمقالی) फा. अ. स्त्री.–मिष्ट भाषण, मीठी बातें करना, शीरींगुफ़्तारी।

शक्करशिकन (شکرشکن) फा. वि.–शक्कर चबानेवाला अर्थात् रस लेनेवाला, काव्य रसानुभव करनेवाला; मिष्टभाषी, शीरींगुफ़्तार।

शक्करशिकनी (شکرشکنی) फा. स्त्री.–शक्कर चबाना; रसानुभव करना; मीठी बातें करना।

शक्करसुख़न (شکرسخن) फा. वि.–मिष्टभाषी, मधुरभाषी, शीरींकलाम।

शक्करसुख़नी (شکرسخنی) फा. स्त्री.–मीठी बातें करना, शीरींकलामी।

शक्करिस्ताँ (شکرستاں) फा. पुं.–'शक्करिस्तान' का लघु., दे. 'शक्करिस्तान'।

शक्करिस्तान (شکرستان) फा. पुं.–जहाँ शकर बहुत हो; शकर का कारख़ाना, खंडसाल।

शक्करीं (شکریں) फा. वि.–शक्कर का; शक्कर सम्बन्धी; शक्कर का बना हुआ।

शक्करींगुफ़्तार (شکریں گفتار) फा. वि.–मिष्टभाषी, शीरींसुख़न।

शक्करींलब (شکریں لب) फा. वि.–मिष्टभाषी, शीरीं लब; मीठे अधरामृतवाली प्रेमिका।

शक्करीं ला'ल (شکریں لعل) फा. वि.–दे. 'शक्करींलब'।

शक्की (شکی) अ. वि.–जिसके मिज़ाज में शक बहुत हो, वह्मी, भ्रमी।

शक़्क़ुलक़मर (شق القمر) अ. पुं.–चाँद का दो टुकड़े हो जाना, हज़्रत मुहम्मद साहिब का इक मो'जिज़ः अपने चाँद के दो टुकड़े कर दिये थे।

शक्ल (شکل) अ. स्त्री.–आकृति, रूप, डील-डौल; मुखाकृति, मुखमंडल, चेहरा; आकार-प्रकार, वज़ाक़ता; दशा, अवस्था, परिस्थिति, हालत।

शक्लोशबाहत (شکل وشباہت) अ. स्त्री.–डील-डौल; आकार-प्रकार।

शक्लोशमाइल (شکل وشمائل) अ. स्त्री.–रूप और गुण, आकृति और स्वभाव।

शक्लोसूरत (شکل وصورت) अ. स्त्री.–दे. 'शक्लोशबाहत'।

शक्वः (شکوہ) अ. पुं.–दे. शुद्ध रूप 'शक्वा', परन्तु उर्दू में 'शक्वः' भी बोलते हैं।

शक्वाएजौर (شکوۂ جور) अ. पुं.–अनीति और अत्याचार की शिकायत।

शक्वा (شکوا) अ. पुं.–उपालंभ, उलाहना; परिवाद, अनुयोग, शिकायत।

शक्वागुज़ार (شکواگزار) अ. फा. वि.–शिकायत करनेवाला; उलाहना देनेवाला।

शक्वातराज़ (شکواطراز) अ. फा. वि.–दे. 'शक्वागुज़ार'।

शक्वापर्वंर (شکوہ‌پرور) अ. वि.–दे. 'शक्वागुज़ार'।

शक्वासंज (شکوہ‌سنج) अ. फा. वि.–दे. 'शक्वागुज़ार'।

शख़ (شخ) फा. वि.–पुष्ट, दृढ़, मज़बूत, (पुं.); पहाड़; धरती; पहाड़ का दामन, (स्त्री.) 'शाख़' का लघु., डाली, शाखा।

शख़कमाँ (شخ‌کماں) फा. वि.–शक्तिशाली, ज़ोरावर; जिसका धनुष दूसरा न चला सके।

शख़ालीदः (شخالیدہ) फा. वि.–छीला हुआ, खरोंचा हुआ; चुभाया हुआ।

शख़ीदः (شخیدہ) फा. वि.–फिसला हुआ, रपटा हुआ।

शख़ूदः (شخودہ) फा. वि.–नख से खरोंचा हुआ; नख द्वारा घाव किया हुआ।

शख़्स (شخص) अ. पुं.–व्यक्ति, फ़र्द; मनुष्य, आदमी।

शख़्सी (شخصی) अ. वि.–व्यक्तिगत, ज़ाती, इन्फ़िरादी।

शख़्सेग़ैर (شخص‌غیر) अ. पुं.–अन्य पुरुष, दूसरा व्यक्ति; असंबद्ध, ग़ैर मुतअल्लिक़; अपरिचित; अस्वजन।

शख़्सेवाहिद (شخص‌واحد) अ. पुं.–एक आदमी, एकाकी, अकेला मनुष्य।

शग़ (شغ) फा. पुं.–जानवर का सींग जो बीच से ख़ाली हो।

शग़फ़ (شغف) अ. पुं.–रुचि, दिलचस्पी; तल्लीनता, इन्हिमाक।

शग़ब (شغب) अ. पुं.–कोलाहल, शोरग़ुल।

शगर (شگر) फा. पुं.–काली भिड़, जिसका विष तेज़ होता है।

शग़ल (شغل) अ. पुं.–दे. 'शग़्ल' या 'शुग़्ल' सब शुद्ध हैं परंतु 'शग़ल' और 'शुग़ल' व्यवहृत हैं।

शग़ाद (شغاد) फा. पुं.–'रुस्तम' का भाई, जिसने उसे धोखे से कुएँ में गिराकर मारा था।

शग़ाफ़ (شغاف) अ. पुं.–हृदय के ऊपर की झिल्ली; हृदय का काला तिल।

शग़ाल (شغال) फा. पुं.–श्रृगाल, सियार, गीदड़।

शग़ालतब्अ (شغال‌طبع) फा. अ. वि.–दे. 'शग़ालतीनत'।

शग़ालतीनत (شغال‌طینت) फा. अ. वि.–धूर्त, वंचक, ठग, मक्कार, छली।

शग़ालफ़ित्रत (شغال‌فطرت) फा. अ. वि.–दे. 'शग़ालतीनत'।

शग़बः (شغبہ) अ. पुं.–शरीर की वह खाल जो अधिक करने से खुरदरी, काली और मोटी पड़ जाय, (वि.) अपमानित, तिरस्कृत, ज़लील।

शग़्ल (شغل) अ. पुं.–कार्य, काम; धंधा, उद्यम; जीव बहलाने का काम, मश्ग़ला।

शग़लेमै (شغل‌مے) अ. फा. पुं.–शराब पीने का मश्ग़लः, मद्यपान।

शजअः (شجعہ) अ. पुं.–'शजाअ' का बहु., वीर लोग, बहादुर लोग।

शजन (شجن) अ. पुं.–शोक, दुःख, रंज; आवश्यकता, ज़ुरूरत; इच्छा, चाह, दे. 'शज्न', दोनों शुद्ध हैं।

शजर (شجر) अ. पुं.–पेड़, वृक्ष, विटप, द्रुम, दरख़्त।

शजरी (شجری) अ. वि.–पेड़ के आकार का; पेड़वाला; पेड़ सम्बन्धी।

शजरे कलीम (شجر کلیم) अ. पुं.–वह पेड़ जिस पर हज़्रत मूसा को ईश्वर का प्रकाश दिखाई पड़ा था।

शजरे तूर (شجر طور) अ. पुं.–दे. 'शजरे कलीम'।

शजरे मम्नूअः (شجر ممنوع) अ. पुं.–गेहूँ का पेड़, जिसे ईश्वर ने आदम के लिए निषिद्ध कर दिया था; ऐसी चीज़ जिसके पास जाना बुरा हो।

शाजाअ (شجاع) अ. वि.–वीर, बहादुर, दे. 'शुजाअ' और 'शिजाअ', तीनों उच्चारण शुद्ध हैं, परंतु 'शुजाअ' अधिक व्यवहृत है।

शजाअत (شجاعت) अ. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी; रणकौशल, जंग आज़मूदगी।

शज़ाया (شظایا) अ. पुं.–'शज़ीयः' का बहु., दंदाने; टुकड़े; रेशे।

शजीअ (شجیع) अ. वि.–शूर, वीर, बहादुर।

शज़ीयः (شظیہ) अ. पुं.–दंदाना; टुकड़ा; रेशा।

शज्न (شجن) अ. पुं.–दे. 'शजन', दोनों शुद्ध हैं।

शज्रः (شجرہ) अ. पुं.–वंशवृक्ष, वंशावली, नसबनामा।

शत्ता (شتی) अ. स्त्री.–बहुतात, अधिकता, 'शतीत' का बहु., तितर-बितर चीज़ें।

शत्ताह (شطاح) अ. वि.–धर्म-विरुद्ध बातें कहनेवाला।

शत्म (شتم) अ. पुं.–अपशब्द, गाली-गलौज, बुरा-भला कहना।

शत्रंज (شطرنج) फा. स्त्री.–एक प्रसिद्ध खेल, जो भारतवर्ष का प्राचीन आविष्कार है और जिससे अच्छा कोई खेल आज तक संसार में नहीं हो सका, न उसका खेलनेवाला यह दावा कर सकता है कि वह सबसे अच्छा खेलता है।

शत्रंजबाज़ (شطرنج‌باز) फा. वि.–शत्रंज खेलनेवाला; शत्रंज का धनी; शत्रंज का अच्छा खिलाड़ी।

शत्रंजी (شطرنجی) फा. स्त्री.–शत्रंज की बसात के खानों की तरह का बुना हुआ कपड़े का फ़र्श (वि.) शत्रंजबाज़।

शत्हीयात (شطحیات) फा. स्त्री.–'शत्हीयः' का बहु.; धर्म-विरुद्ध बातें; अनर्गल और व्यर्थ की बातें, जल्प।

शद [द्द] (شد) अ. पुं.–दृढ़ करना, मज़बूत करना; स्वर का ऊँचा करना; स्वर का उतार-चढ़ाव।

शदाइद (شدائد) अ. पुं.–'शदीदा:' का बहु., कठिनाइयाँ, बाधाएँ, अड़चनें, रुकावटें; आपत्तियाँ, मुसीबतें।

शदीदः (شدیدہ) अ. स्त्री.–कठिन, दुष्कर, मुश्किल; आपत्ति, विपदा, मुसीबत।

शदीद (شدید) अ. वि.–प्रचंड, तीव्र, तेज़; दुष्कर, कठिन; सख़्ती करनेवाला।

शदीदुलअदावत (شدیدالعداوت) अ. वि.–जो किसी से बहुत अधिक शत्रुता रखे, बद्ध वैर।

शदीदुलअमल (شدیدالعمل) अ. वि.–जो करने में कठिन हो, दु:साध्य, दुष्कर।

शदीदुलक़ुव्वत (شدیدالقوت) अ. वि.–शक्तिशाली, महाबल, ज़ोरावर।

शद्दः (شدہ) अ. पुं.–झंडा, पताका, अलम; मुहर्रम में उठनेवाला अलम।

शद्दाद (شداد) अ. पुं.–बहुत अधिक अत्याचार करनेवाला; एक प्राचीन बादशाह जो अपने को ईश्वर कहलवाता था, उसने एक कृत्रिम स्वर्ग बनवाया था, परंतु उसमें प्रवेश करते समय घोड़े से गिरकर मर गया।

शद्दे मुख़ालिफ़ (شد مخالف) अ. पुं.–ललकार, चुनौती, सत्रु को मुक़ाबले पर आने के लिए ज़ोर से पुकारना।

शद्दरिहाल (شد رحال) अ. पुं.–यात्रा, सफ़र, लंबा सफ़र।

शद्दोमद (شد و مد) अ. पुं.–ज़ोर शोर, धूमधाम।

शनवा (شنوا) फा. वि.–सुननेवाला।

शनाअत (شناعت) अ. स्त्री.–बुराई, बदी, निकृष्टता।

शनाए' (شنائع) अ. पुं.–'शनीअ:' का बहु., बुराइयाँ।

शनाख़्तः (شناختہ) फा. वि.–पहचाना हुआ, जाना हुआ।

शनाख़्त (شناخت) फा. स्त्री.–पहचान; पहचानने का चिह्न, निशानी; लक्षण, अलामत।

शनाख़्तकुनिंदः (شناخت کنندہ) फा. वि.–पहचाननेवाला।

शनात (شنات) अ. पुं.–'शानी' का बहु., शत्रुगण, दुश्मन लोग, बैरी जन।

शनास (شناس) फा. प्रत्य.–पहचाननेवाला, जैसे—'मर्दुमशनास'।

शनासा (شناسا) फा. वि.–पहचाननेवाला, जानकार; परिचित, वाक़िफ़।

शनासाई (شناسائی) फा. स्त्री.–जान-पहचान, तआरुफ़, परिचय।

शनासिंदः (شناسندہ) फा. वि.–पहचाननेवाला, जानकार।

शनासीदः (شناسیدہ) फा. वि.–पहचाना हुआ, जाना हुआ, परिचित।

शनासीदनी (شناسیدنی) फा. वि.–पहचानने योग्य, जिसको पहचानना ज़ुरूरी हो।

शनीअः (شنیعہ) अ. स्त्री.–बुरी, ख़राब।

शनीअ (شنیع) अ. वि.–बुरा, ख़राब, निकृष्ट।

शनीदः (شنیدہ) फा. वि.–सुना हुआ, श्रुत।

शनीद (شنید) फा. स्त्री.–सुनवाई, समाअत।

शनीदनी (شنیدنی) फा. वि.–सुनने के क़ाबिल; दिलचस्प, सुनने में मज़ेदार।

शपुश (شپش) फा. स्त्री.–कपड़े और सर में पड़नेवाला छोटा कीड़ा, जूँ, स्वेदज, लोमयूक, दे. 'शुपुश' और 'शिपिश'।

शप्परः (شپرہ) फा. पुं.–चमगादड़, वातुलि, जतुका, अजिनपत्र।

शप्परःचश्म (شپرہ چشم) फा. वि.–जिसे चमगादड़ की तरह दिन में न दिखाई दे।

शप्पर (شپر) फा. पुं.–दे. 'शप्पर:' दोनों शुद्ध हैं।

शप्लक़ (شپلق) तु. पुं.–तमाँचा, चाँटा, थप्पड़।

शप्लिंदः (شپلندہ) फा. वि.–निचोड़नेवाला।

शप्लीदः (شپلیدہ) फा. वि.–निचोड़ा हुआ।

शफ़क़ (شفق) अ. स्त्री.–ऊषा, उषा, सवेरे या शाम की लालिमा जो क्षितिज पर होती है।

शफ़क़गूँ (شفق گوں) अ. फा. वि.–शफ़क़-जैसे रंग का, उषा वर्ण।

शफ़क़ज़ार (شفق زار) अ. फा. पुं.–जहाँ शफ़क़ बहुत हो।

शफ़क़त (شفقت) अ. स्त्री.–कृपा, दया, मेह्रबानी; सहानुभूति, हमदर्दी; बड़ों की ओर से छोटों पर दया दृष्टि, ममता, आत्मीयता।

शफ़क़ी (شفقی) अ. वि.–शफ़क़ का, शफ़क़ के रंग का; ऊषा-सम्बन्धी।

शफ़त (شفت) अ. पुं.–अधर, ओष्ठ, होंठ, लब।

शफ़तैन (شفتین) अ. वि.–दोनों होंठ।

शफ़वी (شفوی) अ. वि.–होंठवाला; होंठ के सहारे उच्चरित होनेवाला अक्षर।

शफ़ह (شفہ) अ. पुं.–होंठ, अधर, ओष्ठ।

शफ़ही (شفہی) अ. वि.–होंठवाला; होंठ द्वारा उच्चरित अक्षर।

शफ़ा (شفا) अ. पुं.–तट, कूल, किनारा; हर चीज़ का किनारा; जीवन का अंतिम भाग।

शफ़ाअत (شفاعت) अ. स्त्री.–अभिस्ताव, सुफ़ारिश; ईश्वर से अपने अनुयायियों के मोक्ष की सुफ़ारिश।

शफ़ाअतगर (شفاعت گر) अ. फा. वि.–क़ियामत में अपने अनुयायियों के मोक्ष की सुफ़ारिश करनेवाला पैग़ंबर।

शफ़ाअतफ़र्मा (شفاعت فرما) अ.फा.वि.–दे. 'शफ़ाअतगर'।

शफ़ाजुरुफ़ (شفا جرف) अ.पुं.–नदी आदि का तट, किनारा।

शफ़ीअ (شفیع) अ. वि.–सुफ़ारिशी; क़ियामत के दिन मोक्ष दिलानेवाला; शुफ़ा का दावा करनेवाला।

शफ़ीए ख़लीत (شفیع خلیط) अ. पुं.–साझे की ज़मीन पर शुफ़ा का दावा करनेवाला।

शफ़ीए जार (شفیع جار) अ. पुं.–पड़ोस की ज़मीन या मकान पर शुफ़ा' करनेवाला।

शफ़ीक़ (شفیق) अ. वि.–कृपालु, दयालु, मेहरबान; मित्र, सखा, दोस्त।

शफ़्क़त (شفقت) अ. स्त्री.–दे. 'शफ़क़त', उर्दू में दोनों प्रकार से बोलते हैं, बल्कि अधिक यही बोलते हैं।

शफ़्तालू (شفتالو) फा. पुं.–एक फल, आड़ू।

शफ़्फ़ाफ़ (شفاف) अ. वि.–स्वच्छ, उज्ज्वल, चमकदार; निर्मल, शुद्ध, साफ़; क़लई किया हुआ।

शफ़्फ़ाफ़ी (شفافی) अ. स्त्री.–स्वच्छता; निर्मलता; क़ल्ई की चमक।

शबः (شبہ) फा. पुं.–छोटे-छोटे मोती, पोत, पोता।

शब (شب) फा. स्त्री.–निशा, रजनी, यामिनी, शर्वरी, तमस्विनी, विभावरी, यामिका, रात्रि, रात।

शब [ब्ब] (شب) अ. स्त्री.–फटकरी, फटिकर; (वि.) युद्ध लड़ाई; तारुण्य, जवानी; उच्चता; आग जलाना।

शब अंदर रोज़ (شب اندرروز) फा. पुं.–एक कपड़ा।

शबअफ़्रोज़ (شب افروز) फा. पुं.–वह ज़रबफ़्त जिसकी ज़मीन रुपहली हो।

शबआहंग (شب آہنگ) फा. पुं.–दे. 'शबाहंग', वही उच्चारण शुद्धतम है, अशुद्ध यह भी नहीं है।

शबकः (شبکہ) अ. पुं.–जाल, पाश, बंधन; दीवार की जाली, लोहे आदि की जाली जो मकान में लगायी जाती है।

शबक (شبک) अ. पुं.–दे. 'शबकः'।

शबकात (شبکات) अ. पुं.–'शबकः' का बहु., जाल और बंधन; मकान की जालियाँ।

शबकोर (شبکور) फा. वि.–जिसे रतौंधी आती हो, रतौंधी का रोगी, निशांध, रात्र्यन्ध।

शबकोरी (شبکوری) फा. स्त्री.–रात में न दिखाई पड़ने का रोग, तिमि।

शबख़ूँ (شب خوں) फा. पुं.–'शबख़ून' का लघु., दे. 'शबख़ून'।

शबख़ून (شب خون) फा. पुं.–सेना का रात के अँधेरे में शत्रु के दल पर अचानक आक्रमण।

शबख़ेज़ (شب خیز) फा. वि.–रात रहे जाग जानेवाला; रात्रि में उठकर जप-तप करनेवाला।

शबख़ेज़ी (شب خیزی) फा. स्त्री.–रात रहे जागना; रात में उठना; रात में जप-तप करना।

शबख़्वाँ (شب خواں) फा. पुं.–बुलबुल, एक प्रसिद्ध गानेवाली चिड़िया।

शबख़्वाबी (شب خوابی) फा. स्त्री.–रात में सोते समय पहनने के वस्त्र।

शबगज़ (شب گز) फा. स्त्री.–थोड़ी देर की व्यथा, क्षणिक कष्ट।

शबगर्द (شب گرد) फा. वि.–रात में फिरकर पहरा देनेवाला; कोतवाल, थानेदार।

शबगर्दी (شب گردی) फा. स्त्री.–रात में पहरा देना; रात में फिरना।

शबगश्त (شب گشت) फा. वि.–दे. 'शबगर्द'।

शबगाह (شب گاہ) फा. स्त्री.–रात का समय; रात के समय।

शबगीर (شب گیر) फा. वि.–पिछली रात को उठनेवाला या जप-तप करनेवाला; पिछली रात; आधी रात के बाद का समय।

शबगूँ (شب گوں) फा. वि.–काले रंग का, कृष्ण वर्ण।

शबगूनी (شب گونی) फा. स्त्री.–काले रंग का होना, कालापन।

शबचिराग़ (شب چراغ) फा. पुं.–एक बहुमूल्य रत्न जो रात में दीपक की तरह प्रकाश देता है, (वि.) रात्रि-दीपक, रात का चिराग़ अर्थात् चंद्रमा।

शबज़िंदःदार (شب زندہ دار) फा. वि.–रात भर जागने और जप-तप करनेवाला।

शबज़िंदःदारी (شب زندہ داری) फा. स्त्री.–रातभर जाग कर जप-तप और इबादत।

शबताज़ (شب تاز) फा. वि.–रात में आक्रमण करनेवाला, रात के अँधेरे में छापा मारनेवाला।

शबताज़ी (شب تازی) फा. स्त्री.–रात्रि में जब शत्रु ग़ाफ़िल हो उस पर अचानक आक्रमण।

शबताब (شب تاب) फा. वि.–रात को चमकानेवाला; रात को प्रकाशित करनेवाला; चंद्रमा, चाँद।

शबताबी (شب تابی) फा. स्त्री.–रात को चमकाना; रात्रि को चमकदार बनाना।

शबदेग (شب دیگ) फा. स्त्री.–वह हाँडी जो रात भर पकायी जाय।

शबदेज़ (شبدیز) फा. पुं.–मुश्की घोड़ा।

शबनम (شبنم) फा. स्त्री.–ओस, आकाश-जल।

शबनमी (شبنمی) फा. स्त्री.–ओस से बचाव के लिए ताना जानेवाला कपड़ा; मच्छरदानी।

शबनशीं (شب نشیں) फा.वि.–रात-रात भर सभाओं और जलसों में बैठनेवाला; रात-रात भर जलसों में बैठना।

शबपरः (شب پرہ) फा. पुं.–चमगादड़, चर्मचटक।

शबपोश (شب پوش) फा. पुं.–रात्रि में पहनने के कपड़े।

शबबख़ैर (شب بخیر) फा. अ.वि.–एक वाक्य, जो रात में दो मित्र परस्पर विदा होते समय कहते हैं, अर्थ यह है कि आप की रात सुख और शांति से बीते।

शबबरात (شب برات) फा. अ. स्त्री.–मुसलमानों का एक त्योहार, शबरात।

शबबाश (شب باش) फा. वि.–रात में ठहरनेवाला; सहवास करनेवाला।

शबबाशी (شب باشی) फा. स्त्री.–रात भर के लिए कहीं ठहरना; स्त्रीप्रसंग करना।

शबबू (شبو) फा. पुं.–एक फूल जो रात में खिलता और महकता है।

शबबेदार (شب بیدار) फा. वि.–रात भर जागकर जप-तप करनेवाला; रात भर जागनेवाला।

शबबेदारी (شب بیداری) फा. स्त्री.–रात भर जागना; रात भर जागकर तपस्या करना।

शबबो (شب بو) फा. पुं.–दे. 'शबबू'।

शबम (شبم) अ.पुं.–जाड़ा, शीत, ठंड; शरद् ऋतु, सर्मा।

शबमांदः (شب ماندہ) फा. वि.–रात गुज़रा हुआ, रात का रखा हुआ, बासी।

शबमुर्दः (شب مردہ) फा. वि.–रात-रात भर सोनेवाला, सारी रात सोनेवाला।

शबमुर्दगाँ (شب مردگاں) फा. पुं.–'शबमुर्दः' का बहु., सारी रात सोनेवाले।

शबयार (شبیار) फा.पुं.–एक दवा, एलुआ, जो रात में पेट साफ़ करने के लिए खायी जाती है।

शबरंग (شب رنگ) फा. वि.–काले रंग का, कृष्ण वर्ण।

शबरवी (شب روی) फा. स्त्री.–रात में घूमना-फिरना; रात में यात्रा करना; चोरी, तस्करता।

शबराँ (شب راں) फा. वि.–दे. 'शबताज़'।

शबरौ (شب رو) फा. वि.–रात में घूमने-फिरने या यात्रा करनेवाला; रात में जप-तप करनेवाला; चोर, तस्कर।

शबह (شبہ) अ. पुं.–एक धातु, पीतल।

शबह (شبح) अ. पुं.–शरीर, काय, देह, जिस्म।

शबाँ (شباں) फा. पुं.–'शबान' का लघु., दे. 'शबान'।

शबाँगाह (شبانگاہ) फा. स्त्री.–संध्या समय, सायंकाल, शाम।

शबानः (شبانہ) फा. वि.–रात का, रातवाला; रात से सम्बन्धित; बासी, पर्युषित।

शबानःरोज़ (شبانہ روز) फा. वि.–रातदिन, अहर्निश, शबोरोज़।

शबान (شبان) फा. पुं.–चरवाहा, ढोर चरानेवाला; चौपिया।

शबानी (شبانی) फा. स्त्री.–जंगल में चौपायों की देखभाल, चरवाही।

शबाब (شباب) फा. पुं.–तारुण्य, युवावस्था, जवानी; किसी चीज़ की अन्तत और उत्तम अवस्था।

शबाब आवर (شباب آور) अ. फा. वि.–फिर से जवान बना देनेवाला।

शबारोज़ (شباروز) फा. वि.–अहर्निश, रात-दिन, सदा, शबोरोज़।

शबाशब (شباشب) फा. वि.–रातोंरात, रात ही रात में, एक ही रात में।

शबाहंग (شب آہنگ) फा. पुं.–वुल्वुल, गोवत्सक; एक उज्ज्वल तारा जो शाम को चमकता है।

शबाहत (شباہت) अ. स्त्री.–आकृति, शक्ल; सदृशता, समता, यकसानियत; एकरूपता, हमशक्ली।

शबित (شبت) अ. पुं.–सोया, एक शाक, दे. 'शिवित', दोनों शुद्ध हैं।

शबिस्ताँ (شبستاں) फा. पुं.–रात में रहने का स्थान; शयनागार, ख़्वाबगाह।

शबीनः (شبینہ) फा. वि.–रात की बची हुई वस्तु, बासी, पर्युषित; रात का, रात्रीय; रमज़ान के महीने में क़ुरान का वह पाठ जो एक रात में ख़त्म हो जाता है।

शबीह (شبیہ) फा. स्त्री.–चित्र, तस्वीर; छायाचित्र, फोटो; सदृश, समान, मिस्ल।

शबे आशूरः (شب عاشورہ) फा. अ. स्त्री.–मुहर्रम के महीने की दसवीं तारीख़ की रात।

शबे क़द्र (شب قدر) फा. अ. स्त्री.–रजब के महीने की २७वीं तारीख़, शबे मे'राज, इस रात की इबादत का बड़ा पुण्य है।

शबे चक (شب چک) फा. स्त्री.–दे. 'शबे बरात'।

शबे जवानी (شب جوانی) फा. स्त्री.–रात्रि रूपी तारुण्य; युवावस्था का उन्माद।

शबे ज़िफ़ाफ़ (شب زفاف) फा. अ. स्त्री.–दुल्हन की दूल्हा के पास जाने की पहली रात, सुहागरात।

शबे तार (شب تار) फा. स्त्री.–नितान्त अँधेरी रात, तमस्विनी, तमिस्रा, कुहूनिशा।

शबे दैजूर (شب دیجور) फा. अ. स्त्री.–अमावास्या, अमावस की रात; निपट काली रात, कालनिशा, तमिस्रा।

शबे फ़िराक़ (شب فراق) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शबे हिज्र'।

शबे बरात (شب برات) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शबबरात', दोनों शुद्ध हैं।

शबे माह (شب ماہ) फा. स्त्री.–चाँदनी रात, राका, ज्योत्स्ना, सज्योत्स्ना।

शबे मे'राज (شب معراج) फा. अ. स्त्री.–वह रात जिसमें हज़्रत पैग़ंबर साहिब अर्श पर ईश्वर से मिलने गये थे।

शबे यल्दा (شب یلدا) फा. स्त्री.–दे. 'शबे दैजूर'।

शबे वस्ल (شب وصل) फा. अ. स्त्री.–नायक और नायिका के मिलने की रात, मिलनरात्रि, विरहरात्रि का उलटा।

शबे वा'दः (شب وعدہ) फा. अ. स्त्री.–जिस रात को नायिका अपने नायक से मिलने का वादा करे, वह रात।

शबे हिज्र (شب ہجر) फा. अ. स्त्री.–विरहरात्रि, नायिका के वियोग की रात।

शबे हिज्राँ (شب ہجراں) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शबे हिज्र'।

शबोरोज़ (شب وروز) फा. पुं.–रातदिन, अहर्निश; हर समय; निरंतर, लगातार।

शब्आन (شبعان) अ. वि.–पेट भरा हुआ, अफ़रा हुआ, परितृप्त।

शब्बर (شبر) अ. पुं.–हज़्रत इमाम हुसैन।

शब्बाक (شباک) अ. वि.–छेद करनेवाला।

शब्बीर (شبیر) अ. पुं.–हज़्रत इमाम हसन, जो इमाम हुसैन के बड़े भाई थे।

शब्बूर (شبور) अ. पुं.–तुरुही जो पीतल की बनायी जाती है।

शम [म्म] (شم) अ. पुं.–सूँघना, घ्राण।

शमा' (شمع) अ. स्त्री.–मोम, सिक्थ; मोमबत्ती।

शमाइम (شمائم) अ. पुं.–'शमीमः' का बहु., सुगंधियाँ, ख़ुशबूएँ।

शमाइल (شمائل) अ. पुं.–'शमीलः' का बहु., प्रकृतियाँ, स्वभाव, आदतें।

शमातत (شماتت) अ. स्त्री.–किसी की हानि या अवनति पर प्रसन्न होना।

शमामः (شمامہ) अ. पुं.–सुगंध, महक, ख़ुशबू।

शमामचः (شمامچہ) अ. फा. पुं.–सूँघने का सुगंधित पदार्थ।

शमीदः (شمیدہ) फा. वि.–सूँघा हुआ, मूर्छित, बेहोश; उद्विग्न, परीशान।

शमीमः (شمیمہ) अ. स्त्री.–सूँघने का पदार्थ, ख़ुशबू।

शमीम (شمیم) अ. पुं.–सुगंध, महक, ख़ुशबू।

शमीलः (شمیلہ) अ.स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत, ख़स्लत।

शम्अ (شمع) अ. स्त्री.–मोम, सिक्थ; मोमबत्ती; दीपक, चिराग़।

शम्अदान (شمعدان) अ. फा. पुं.–जिसमें मोमबत्ती रखकर जलाते हैं।

शम्अरुख़ (شمع رخ) अ. फा. वि.–दे. 'शम्अरू'।

शम्अरू (شمع رو) अ. फा. वि.–दीप, जैसे—उज्ज्वल और दीप्त मुखवाली सुन्दरी।

शम्असाज़ (شمع ساز) अ. फा. वि.–मोमबत्ती बनानेवाला।

शम्ई (شمعی) अ. वि.–मोम का; मोम का बना हुआ।

शम्ए आलमताब (شمع عالمتاب) अ. फा. स्त्री.–सूर्य, सूरज, भानु, भास्कर।

शम्ए ऐमन (شمع ایمن) अ. स्त्री.–वह प्रकाश जो हज़्रत मूसा को दिखाई पड़ा था।

शम्ए कुश्तः (شمع کشتہ) अ. फा. स्त्री.–बुझा हुआ दीप, वह शम्अ जो बुझ गयी हो, मृतदीप।

शम्ए ख़ामोश (شمع خاموش) अ. फा. स्त्री.–बुझा हुआ चिराग़ या शम्अ।

शम्ए ज़ेरे दामन (شمع زیر دامن) अ. फा. स्त्री.–दामन की आड़ में हवा से बचाकर जलनेवाला चिराग़।

शम्ए तूर (شمع طور) अ. स्त्री.–दे. 'शम्ए ऐमन'।

शम्ए बज़्म (شمع بزم) अ. फा. स्त्री.–सभा में जलनेवाला चिराग़, प्रायः प्रेमिका की गोष्ठी का चिराग़।

शम्ए बालीं (شمع بالیں) अ. फा. स्त्री.–सिरहाने जलनेवाला चिराग़, प्रायः रोगी प्रेमी के सिरहाने का चिराग़।

शम्ए मज़ार (شمع مزار) अ. स्त्री.–क़ब्र पर जलाया जानेवाला चिराग, प्रायः प्रेमी की क़ब्र का चिराग़।

शम्ए महफ़िल (شمع محفل) अ. स्त्री.–दे. 'शम्ए बज़्म'।

शम्ए मुर्दः (شمع مردہ) अ. फा. स्त्री.–दे. 'शम्ए ख़ामोश'।

शम्ए मोमी (شمع مومی) अ. फा. स्त्री.–मोमबत्ती।

शम्ए शबअफ़्रोज़ (شمع شب افروز) अ. फा. स्त्री.–चंद्रमा, चाँद।

शम्ए सहर (شمع سحر) अ.स्त्री.–सवेरे का चिराग़ जो बुझने को होता है, वह व्यक्ति जिसकी आयु थोड़ी रह गयी हो।

शम्ए हयात (شمع حیات) अ. स्त्री.–शम्अ रूपी जीवन, जो जलने के साथ घुलता जाता है।

शम्मः (شمہ) अ. पुं.–बहुत थोड़ा, किंचिन्मात्र।

शम्मामः (شمامہ) अ. पुं.–सेंधी, सुंधिया, कचरी, छोटी फूट जो सुगंधित होती है।

शम्मास (شماس) अ. वि.–सूर्यपूजक, सूरज का पुजारी।

शम्लः (شملہ) अ. पुं.–पगड़ी का सिरा जो पीछे लटकता है; एक छोटी शाल जिसे लपेटते हैं।

शम्शाद (شمشاد) फा. पुं.–सर्व का पेड़, जो सीधा होता है और जिससे नायिका के डील की उपमा दी जाती है।

शम्शादक़द (شمشادقد) फा. अ. वि.–सर्व-जैसे सुडौल और लंबे डीलवाला (वाली)।

शम्शादक़ामत (شمشادقامت) फा. अ. वि.–दे. 'शम्शाद क़द'।

शम्शादबाला (شمشادبالا) फा. वि.–दे. 'शम्शादक़द'।

शम्शीर (شمشیر) फा. स्त्री.–असि, कृपाण, खड्ग, तलवार।

शम्शीरज़न (شمشیرزن) फा. वि.–असिजीवी, सिपाही।

शम्शीरज़नी (شمشیرزنی) फा. स्त्री.–सिपाही का पेशा।

शम्शीरदम (شمشیردم) फा. वि.–तलवार-जैसी तेज़ धारवाला।

शम्शीरबकफ़ (شمشیربکف) फा. वि.–हाथ में तलवार लिये हुए, शस्त्रपाणि; वध करने को तत्पर।

शम्शीरे अजल (شمشیر اجل) फा. अ. स्त्री.–मौत की तलवार।

शम्शीरे आबदार (شمشیر آبدار) फा. स्त्री.–काट करनेवाली तलवार, तेज़ धारवाली।

शम्शीरे दुदम (شمشیر دودم) फा. स्त्री.–दुधारी तलवार, वह तलवार जिसके दोनों ओर धार हो।

शम्शीरे बरह्नः (شمشیر برہنہ) फा.स्त्री.–म्यान से निकली हुई तलवार; स्पष्ट वक्ता, लगी-लपटी न रखनेवाला।

शम्शीरे हिलाली (شمشیرِ ہلالی) फा. अ. स्त्री.–नव चंद्र रूपी तलवार, टेढ़ी तलवार।

शम्शीरोसिनाँ (شمشیروسناں) फा. स्त्री.–तीर और तलवार; युद्ध-सामग्री।

शम्सः (شمسہ) अ. पुं.–रौशनदान।

शम्स (شمس) अ. पुं.–अर्क, मिहिर, मार्तण्ड, अरुण, तरणि, भानु, सूर्य, रवि, सूरज।

शम्सी (شمسی) अ. वि.–सूर्य का; सूर्य-सम्बन्धी; सूर्य के चक्र के हिसाब से सम्बन्धित, जैसे—'शम्सी साल' सौर वर्ष।

शम्सीयः (شمسیہ) अ. स्त्री.–छतरी, धूप से बचने का छाता।

शम्सुलउलमा (شمس العلما) अ. पुं.–विद्वानों में सूर्य के समान; एक उपाधि जो अँग्रेज़ी समय में मुस्लिम आलिमों को सम्मानार्थ दी जाती थी।

शय (شے) अ. स्त्री.–वस्तु, द्रव्य, पदार्थ, चीज़।

शयातीन (شیاطین) अ. पुं.–'शैतान' का बहु., शैतानों का गिरोह, पिशाच-मंडली।

शय्याद (شیاد) अ. वि.–धूर्त, छली, वंचक, मक्कार।

शरंगेज़ (شرانگیز) फा. वि.–आपस में फूट डालनेवाला; झगड़ा-फ़साद खड़ा कर देनेवाला, उपद्रवी।

शरंगेज़ी (شرانگیزی) अ.फा. स्त्री.–उपद्रव मचाना, झगड़ा करना; आपस में लड़ाना, फूट डालना।

शर[र्र] (شر) अ. पुं.–बदी, बुराई; उपद्रव, फ़साद; फूट, निफ़ाक़।

शरअंगेज़ (شرانگیز) अ. फा. वि.–दे. 'शरंगेज़', अधिक वही बोला जाता है।

शरअंगेज़ी (شرانگیزی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'शरंगेज़ी', अधिक वही बोला जाता है।

शरतैन (شرطین) अ. स्त्री.–पहला नक्षत्र, अश्विनी।

शरपसंद (شرپسند) अ. फा. वि.–जो झगड़ा टंटा पसंद करता हो, झगड़ालू, कलहप्रिय।

शरपसंदी (شرپسندی) अ. फा. स्त्री.–झगड़ा पसंद करना, झगड़ालूपन।

शरफ़ (شرف) अ. पुं.–श्रेष्ठता, उत्तमता, बुज़ुर्गी; सम्मान, सत्कार, इज़्ज़त; उत्तुंगता, बलंदी; कुलीनता, शराफ़त।

शरफ़याब (شرفیاب) अ. फा. वि.–सफल, कामयाब।

शरफ़याबी (شرفیابی) अ.फा. स्त्री.–सफलता, कामयाबी।

शरफ़े ज़ियारत (شرف زیارت) अ. पुं.–देखने का सौभाग्य।

शरफ़े मुलाक़ात (شرف ملاقات) अ. पुं.–साक्षात्कार का सौभाग्य, दर्शनों का सौभाग्य।

शरफ़े मुलाज़मत (شرف ملازمت) अ. पुं.–पास बैठने-उठने का सौभाग्य।

शरफ़े हज्जोज़ियारत (شرف حج وزیارت) अ. पुं.–हज करने और मदीना जाने का सौभाग्य।

शरर (شرر) अ. पुं.–अग्निकण, स्फुलिंग, चिनगारी।

शररअंगेज़ (شررانگیز) अ. फा. वि.–चिंगारियाँ फैलानेवाला, शुर्रे छोड़नेवाला, उपद्रवी।

शररअफ़्शाँ (شررافشاں) अ. फा. वि.–दे. 'शररअंगेज़'; दे. शररअफ़्शाँ।

शररफ़िशाँ (شررفشاں) अ. फा. वि.–दे. 'शररअंगेज़' 'शररअफ़्शाँ' का लघु.।

शररफ़्शाँ (شررافشاں) अ. फा. वि.–दे. 'शररअंगेज़'।

शररबार (شرربار) अ. फा. वि.–आग बरसानेवाला, जिससे आग निकले, अग्निवर्षक।

शररबारी (شررباری) अ. फा. स्त्री.–आग बरसाना, आग निकलना, अग्निवर्षा।

शरा (شری) अ. स्त्री.–पित्ती, एक रोग जिसमें सारे शरीर पर लाल दाने पड़ जाते हैं।

शराइत (شرائط) अ. पुं.–'शरतः' का बहु., शर्तें।

शराईन (شرائین) अ. स्त्री.–‘शिर्यान’ का बहु., फड़कनेवाली रगें, धमनियाँ, नाड़ियाँ।

शराए’ (شرائع) अ. पुं.–‘शरीअत’ का बहु., धर्मशास्त्र।

शराकत (شراکت) उ. स्त्री.–भागीदारी, साझा।

शराकतनामः (شراکت نامہ) अ. फा. पुं.–भागीदारी या साझे की दस्तावेज़।

शराब (شراب) अ. पुं.–मदिरा, वारुणी, हाला, सुरा, इरा, कदंबिनी, हलिप्रिया।

शराबकश (شراب کش) अ. फा. वि.–मद्यप, पानकर्ता, रसाशी, सुराशी, शराबी।

शराबकशी (شراب کشی) अ.फा.स्त्री.–मद्यपान, शराब पीना।

शराबख़ानः (شراب خانہ) अ. फा. पुं.–मदिरालय, मधुशाला, सुरावेश्म, पानागार, मदिरागृह, मैख़ाना।

शराबख़ोर (شراب خور) अ. फा. वि.–मद्यप, रसाशी, सुरापायी, पानकर्ता, शराब पीनेवाला।

शराबख़ोरी (شراب خوری) अ. फा. स्त्री.–मद्यपान, शराब पीना।

शराबख़्वार (شراب خوار) अ. फा. वि.–दे. ‘शराबख़ोर’।

शराबज़दः (شراب زدہ) फा. वि.–शराब के नशे में चूर, मदोन्मत्त।

शराबज़दगी (شراب زدگی) फा. स्त्री.–शराब का गहरा नशा, मदोन्माद।

शराबफ़रोश (شراب فروش) अ.फा. वि.–शराब का ठेकेदार, शौंडिक, कल्यपाल, सुराजीवी।

शराबफ़रोशी (شراب فروشی) फा. स्त्री.–शराव बेचना, शराब की ठेकेदारी।

शराबसाज़ (شراب ساز) अ. फा. वि.–शराबकशी करनेवाला, सुराकार।

शराबसाज़ी (شراب سازی) अ. फा. स्त्री.–शराब बनाना, शराब कशीद करना, सुराकर्म।

शराबी (شرابی) अ. वि.–मद्यप, शराब पीनेवाला।

शराबे अंगूरी (شراب انگوری) अ. फा. स्त्री.–अंगूर से बनी हुई शराव, द्राक्षेरा, मालिका।

शराबे असली (شراب عسلی) अ. स्त्री.–शहद की शराब, माधवी।

शराबे अग़वानी (شراب ارغوانی) अ. फा. स्त्री.–लाल रंग की शराब।

शराबे आतशरंग (شراب آتش رنگ) अ. फा. स्त्री.–आग-जैसे रंग की लाल शराब, अग्निवर्ण।

शराबे कोहनः (شراب کہنہ) अ. फा. स्त्री.–पुरानी शराब जिसका नशा तेज़ होता है।

शराबे ख़ानःख़राब (شراب خانہ خراب) अ. फा. स्त्री.–घर उजाड़ देनेवाली शराब, दरिद्र बना देनेवाली शराब।

शराबे ख़ानः साज़ (شراب خانہ ساز) अ. फा. स्त्री.–घर में बनायी हुई शराब।

शराबे जौ (شراب جو) अ. फा. स्त्री.–जौ की शराब, वह शराब जो कच्चे जौ से बनती है, यवेरा, बियर।

शराबे तहूर (شراب طہور) अ. स्त्री.–स्वर्ग में पी जानेवाली शराब।

शराबे दुआतशः (شراب دوآتشہ) अ. फा. स्त्री.–दो बार की खिंची हुई शराब, तेज़ शराब।

शराबे दोशीनः (شراب دوشینہ) अ. फा. स्त्री.–रात की बची हुई शराब।

शराबे मुक़त्तर (شراب مقطر) अ. स्त्री.–निथरी हुई और साफ़ शराब; पहले जोश की बढ़िया शराब।

शराफ़त (شرافت) अ. स्त्री.–कुलीनता, वंश की शुद्धता; सुशीलता, अख़्लाक, सज्जनता।

शराफ़ते नसबी (شرافت نسبی) अ. स्त्री.–कुल का श्रेष्ठ और निर्दोष होना।

शरारः (شرارہ) अ. पुं.–स्फुलिंग, अग्निकण, पतिंगा, चिनगारी।

शरारःख़ेज (شرارہ خیز) अ. वि.–जिससे चिंगारियाँ निकलें।

शरारःबार (شرارہ بار) फा. वि.–अग्निवर्षक, आग बरसानेवाला।

शरार (شرار) अ. पुं.–चिनगारी, पतिंगा, स्फुलिंग, अग्निस्तोक, शरर।

शरारत (شرارت) अ. स्त्री.–दुष्कृत्य, वदी, बुराई; उपद्रव, फ़साद; चंचलता, चपलता, शोख़ी; चिढ़ाने के लिए कोई काम।

शरारत आमेज़ (شرارت آمیز) अ. फा. वि.–शरारत से भरा हुआ, नुक़सान पहुँचाने की बुरी नीयत से किया हुआ।

शरारतन (شرارتاً) अ. वि.–शरारत से, बुरी नीयत से; चिढ़ाने के लिए, तंग करने के लिए।

शरारतपसंद (شرارت پسند) अ. फा. वि.–जिसके मिज़ाज में शरारत हो, उपद्रव प्रिय, फ़सादी; जो छेड़ने के लिए शरारतें बहुत करता हो।

शरासीफ़ (شراسیف) अ. स्त्री.–‘शरसूफ़’ का बहु., नीचेवाली छोटी पस्लियाँ।

शरीअत (شریعت) अ. स्त्री.–खुला हुआ और चौड़ा रास्ता, राजमार्ग; धर्मशास्त्र, धार्मिक क़ानून।

शरीक (شریک) अ. वि.–साझीदार, भागी, हिस्सेदार; मिलकर कोई काम करनेवाले; सम्मिलत, शामिल।

शरीकदार (شریک دار) अ. फा. वि.–साझीदार, भागी।

शरीके ख़ानदान (شریک خاندان) अ. फा. वि.–जो किसी वंश के अंतर्गत हो; जो किसी वंश में सम्मिलित हो।

शरीके ग़ालिब (شریک غالب) अ. फा. वि.–भागीदारों में सबसे बड़ा भाग रखनेवाला।

शरीके ज़िंदगी (شریک زندگی) अ. फा. वि.–अर्धांगिनी, जीवन संगिनी, ज़िंदगी की साथी, अर्थात् पत्नी, भार्या।

शरीके जुर्म (شریک جرم) अ. वि.–जो किसी अपराध में अपराधी का सहायक हो।

शरीके दर्द (شریک درد) अ. फा. वि.–जो विपत्ति में साथ देनेवाला और सहानुभूति रखनेवाला हो।

शरीके रंजोराहत (شریک رنج وراحت) अ. फा. वि.–हर्ष और विपत्ति दोनों का शरीक, हर समय पर साथ देनेवाला, घनिष्ठ।

शरीके राए (شریک راے) अ. वि.–जो किसी सलाह और परामर्श में सम्मिलित हो।

शरीके सोहबत (شریک صحبت) अ. वि.–पास बैठने-उठनेवाला, सोहबत में रहनेवाला।

शरीके हाल (شریک حال) अ. वि.–साथी, संगी, हर अवस्था में साथ रहनेवाला।

शरीके हयात (شریک حیات) अ. वि.–जीवनसंगिनी, पत्नी, भार्या; पति, स्वामी।

शरीजः (شریجہ) अ. पुं.–कबूतरों का दरबा, काबुक।

शरीफ़ (شریف) अ. वि.–कुलीन, ख़ानदानी; सज्जन, सुशील, ख़ुशअख़्लाक; सभ्य, शिष्ट, बातमीज़; निश्छल, निष्कपट, सरल स्वभाव।

शरीफ़ज़ादः (شریف زادہ) अ. फा. वि.–शरीफ़ का लड़का, आर्यपुत्र, कुल-पुरुष।

शरीफ़तब्अ (شریف طبع) अ. वि.–स्वभाव से सज्जन और शिष्ट।

शरीफ़मनिश (شریف منش) अ. फा. वि.–दे. 'शरीफ़तब्अ'।

शरीफ़मिज़ाज (شریف مزاج) अ. वि.–दे. 'शरीफ़तब्अ'।

शरीफ़सूरत (شریف صورت) अ. वि.–देखने में शरीफ़, जिसकी सूरत से सज्जनता और कुलीनता टपकती हो।

शरीफ़ुत्तबअ (شریف الطبع) अ. वि.–दे. 'शरीफ़तब्अ'।

शरीफ़ुन्नफ़्स (شریف النفس) अ. वि.–स्वभावतः सज्जन, शिष्ट और निश्छल।

शरीफ़ुन्नसब (شریف النسب) अ. वि.–उत्तम कुल, महा कुल, जिसके वंश में कोई दोष न हो।

शरीफ़ुन्नस्ल (شریف النسل) अ. वि.–जिसकी जाति शुद्ध रक्तवाली हो, उत्तम वर्ण, कुलीन।

शरीर (شریر) अ. वि.–वदी करनेवाला, दुष्ट; उपद्रवी, फ़सादी; चंचल, चपल, शोख़; चिढ़ाने के लिए छेड़नेवाला; पिशुन, चुग़ुल, लगाई-बुझाई करनेवाला; आपस में दंगा-फ़साद करानेवाला।

शरीरतब्अ (شریرطبع) अ. वि.–जिसके स्वभाव में शरारत हो, धूर्त, फ़सादी; जो चिढ़ाने के लिए शरारतें करता हो।

शरीरमिज़ाज (شریرمزاج) अ. वि.–दे. 'शरीरतब्अ'।

शर्अ (شرع) अ. स्त्री.–चौड़ी सड़क, राजमार्ग; धर्मशास्त्र शरीअत।

शर्ई (شرعی) अ. वि.–धर्मशास्त्र-सम्बन्धी, धार्मिक, मज़हबी।

शर्ए मुहम्मदी (شرع محمدی) अ. स्त्री.–इस्लामी धर्मशास्त्र।

शर्क़ (شرق) अ. पुं.–पूर्व, पूरब, उदयाचल, मश्रिक़।

शर्क़ी (شرقی) अ. वि.–पूर्वीय, पूरब का, मश्रिक़ी।

शर्क़ोग़र्ब (شرق وغرب) अ. पुं.–पूरब-पच्छिम, अर्थात् सारा जगत्, विश्व।

शर्ज़ः (شرزہ) अ. पुं.–बहुत अधिक ग़ुस्सेवाला।

शर्ज़िमः (شرذمہ) अ. पुं.–खंड, टुकड़ा; थोड़े मनुष्यों का समूह; थोड़े-से फलों का ढेर।

शर्त (شرط) अ. स्त्री.–क़रार, पण; प्रतिज्ञा, अह्द; संविदा, वादा; बाज़ी, जुआ।

शर्तियः (شرطیہ) अ. विं.–अवश्य, यक़ीनी; शर्त बाँधकर, शर्त के साथ; अनिवार्य, लाज़िमी।

शर्ती (شرطی) अ. वि.–शर्तवाला; शर्त सम्बन्धी।

शर्बत (شربت) अ. स्त्री.–शकर डालकर मीठा किया हुआ पानी जो पिया जाता है, शर्करोदक; दवाओं से बना हुआ शकर का शीरा, सीरप, मिष्टोद।

शर्बतफ़रोश (شربت فروش) अ.फा. वि.–शर्बत बेचनेवाला।

शर्बतसाज़ (شربت ساز) अ. फा.वि.–शर्बत बनानेवाला।

शर्बती (شربتی) अ. वि.–एक रंग जो हलका गुलाबी होता है।

शर्बते दीद (شربت دید) अ. फा. पुं.–दे. 'शर्बते दीदार'।

शर्बते दीदार (شربت دیدار) अ. फा. पुं.–शर्बत रूपी दर्शन, दृष्टिरस।

शर्बते दीनार (شربت دینار) अ. फा. पुं.–एक यूनानी शर्बत जो विशेषतः जिगर के रोगों पर चलता है।

शर्बते मर्ग (شربت مرگ) अ. फा. पुं.–मौत का शर्बत, मृत्यु, मरण, निधन।

शर्बते वस्ल (شربت وصل) अ. पुं.–शर्बतरूपी नायिका का मिलन; सहवास-रस, मैथुनानंद।

शर्म (شرم) फा. स्त्री.–लज्जा, क्रीडा, लाज, त्रपा, हया; पश्चात्ताप, पछतावा।

शर्मआलूद (شرم آلود) फा. वि.–दे. 'शर्मगीं'।

शर्मगाह (شرمگاہ) फा. स्त्री.–गुह्येंद्रिय; लिंग; भग।

शर्मगीं (شرمگیں) फा. वि.–शर्मिंदा, लज्जित।

शर्मनाक (شرمناک) फा. वि.–लज्जाजनक, घिनावना, बेहयाई का।

शर्मसार (شرمسار) फा. वि.–लज्जित, शर्मिंदा; पश्चात्तापी, पछतानेवाला।

शर्मसारी (شرمساری) फा. स्त्री.–लज़्ज़ा, शर्म; पछतावा, पश्चात्ताप।

शर्मिंदः (شرمندہ) फा. वि.–लज्जित, शर्मसार।

शर्मिंदए इस्याँ (شرمندۂ عصیاں) फा. अ. वि.–पापों से लज्जित।

शर्मिंदए एहसान (شرمندۂ احساں) फा. अ. वि.–आभारी, कृतज्ञ, मम्नून।

शर्मिंदए मा'नी (شرمندۂ معنی) फा. अ. वि.–सार्थक, बामानी।

शर्मिंदगी (شرمندگی) फा. स्त्री.–लज़्ज़ा, क्रीडा, शर्म; पश्चात्ताप, पछतावा।

शर्मे रुस्वाई (شرم رسوائی) फा. स्त्री.–बदनामी की लज्जा।

शर्मे हुज़ूरी (شرم حضوری) फा. अ. स्त्री.–सामने होने या पास आने की मुरव्वत, आँखें चार होने का लिहाज़।

शर्मोहया (شرم وحیا) फा. अ. स्त्री.–लाज और शर्म, लज्जा, क्रीड़ा।

शर्हः (شرحہ) अ. पुं.–खंड, टुकड़ा।

शर्हःशर्हः (شرحہ شرحہ) अ. वि.–टुकड़े-टुकड़े।

शर्हः (شرح) अ. स्त्री.–व्याख्या, तश्रीह; स्पष्टता, वज़ाहत; विस्तार, तफ़्सील; टीका, किसी मूल ग्रंथ का विस्तारपूर्वक वर्णन।

शर्हनवीस (شرح نویس) अ. फा. वि.–किसी मूल ग्रंथ की टीका-टिप्पणी करनेवाला, टीकाकार, भाष्यकार।

शर्हनिगार (شرح نگار) अ. फा. वि.–दे. 'शर्हनवीस'।

शर्हे माआनी (شرح معانی) अ. स्त्री.–क़्लिष्ट शब्दों का अर्थ।

शर्हे मतालिब (شرح مطالب) अ. स्त्री.–क्लिष्ट भावार्थ की व्याख्या।

शर्हे सूद (شرح سود) अ. फा. स्त्री.–ब्याज की दर।

शर्होबस्त (شرح وبست) अ. फा. स्त्री.–विस्तार, व्याख्या, वज़ाहत।

शलंग (شلنگ) फा. स्त्री.–छलाँग, उछाल, कूद।

शल [ल्ल] (شل) अ. वि.–अपाहिज, जिसके हाथ-पाँव काम न दें; काहिल, आलसी; शिथिल, ढीला।

शल्ग़म (شلغم) फा. पुं.–शलजम, एक तरकारी।

शल्जम (شلجم) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध तरकारी, शलजम।

शल्ताक़ (شلتاق) तु. पुं.–युद्ध, लड़ाई; कलह, झगड़ा।

शल्तूक (شلتوک) फा. पुं.–धान, चावल भूसी सहित, शाली।

शल्फ़ (شلف) फा. स्त्री.–व्यभिचारिणी, कुलटा, पुंश्चली, फ़ाहिशा।

शल्लाक़ (شلاق) तु. पुं.–कोड़े या छड़ी से मारना; चपला, चंचल, शोख़; थप्पड़ मारना।

शल्वार (شلوار) फा. स्त्री.–एक प्रकार का ढीला पाजामा।

शवाइब (شوائب) अ. पुं.–'शाइबः' का बहु., मिलावटें, आमेज़िशें।

शवाग़िल (شواغل) अ. पुं.–'शग़ल' का बहु., मश्ग़ले, कामधंधे।

शवाफ़े' (شوافع) अ. पुं.–'शाफ़िई' का बहु., शाफ़िई पंथ के अनुयायी मुसलमान।

शवारिक़ (شوارق) अ. पुं.–'शारिक़ः' का बहु., दीप्त वस्तुएँ; सूर्य की किरणें।

शवारे' (شوارع) अ. पुं.–'शारे' का बहु., बड़े मार्ग, खुले रास्ते, विस्तृत पथ।

शवाहिद (شواهد) अ. पुं.–'शाहिद' का बहु., गवाह लोग, साक्षीगण।

शवाहिक़ (شواهق) अ. पुं.–ऊँची इमारत, बलंद इमारत।

शव्वाल (شوال) अ. पुं.–इस्लामी दसवाँ महीना।

शशः (ششہ) फा. पुं.–शव्वाल महीने के पहले छै दिन, जिनमें रोज़े रक्खे जाते हैं।

शश (شش) फा. वि.–छै, षट्, षट्क, षष्।

शशजिहत (شش جہت) फा. अ. स्त्री.–छैओं तरफ़े, चारों दिशाएँ और ऊपर और नीचे की दो शिशाएँ।

शशदरः (ششدرہ) फा. वि.–छै दरवाज़ों की इमारत; मरणस्थान, हलाकी की जगह; हक्का-बक्कापन, हैरानी।

शशदर (ششدر) फा. वि.–चकित, स्तब्ध, निस्तब्ध, हक्का-बक्का, आश्चर्यान्वित।

शशदांग (شش دانگ) फा. वि.–दे. 'शशजिहत'।

शशपहलू (شش پہلو) फा. वि.–छः कोनोंवाला, षट्कोण।

शशपा (شش پا) फा वि–छै पाँववाला. षड्पद, षडंघ्र।

शशपायः (شش پایا) फा. वि.–जिस इमारत में छै खंभे हों।

शशमाहः (شش ماہہ) फा. वि.–छै महीने की आयु का।

शशमाही (شش ماهی) फा. वि.–छै महीने में एक बार होने वाला, षाण्मासिक, अर्द्धवार्षिक।

शशसरी (ششسری) फा. पुं.–वह सोना जिसमें तनिक भी मैल या मिलावट न हो, कुंदन।

शशुम (ششم) फा. वि.–छठवाँ, षष्ठ।

शशोपंज (ششوپنج) फा. पुं.–संकोच, उधड़-बुन।

शस्त (شصت) फा. वि.–साठ, षष्ठिः।

शस्त (شست) फा. वि.–साठ, षष्ठिः (पुं.) शल्य, निश्तर; फंदा; मिज़्राब, (स्त्री.) निशाना, ताक; मछली पकड़ने की लंबी डोर जिसमें छड़ नहीं होती।

शस्तक (شستک) फा. पुं.–गुदा मैथुन करानेवाले व्यक्तियों का एक लिंग की आकृति का अस्त्र, जिससे वह अपनी खुजली मिटाते हैं; लिंग, मेहन, शिश्न।

शस्तगीर (شستگیر) फा. वि.–धनुर्धर, तीरअंदाज़।

शस्तमीर (شستمیر) फा. वि.–धनुर्विद्या में निपुण, लक्ष्य-भेदी।

शस्तुम (شستم , شصتم) फा. वि.–साठवाँ।

शहंशाह (شہنشاہ) फा. पुं.–वह बादशाह जिसके अधीन कई बादशाह हों, सम्राट, चक्रवर्ती, राजाधिराज।

शहंशाही (شہنشاہی) फा. स्त्री.–साम्राज्य, बादशाहों पर बादशाही।

शह (شہ) फा. पुं.–'शाह' का लघु., दे. 'शाह', बढ़ावा, हुशकारी; शतरंज की किश्त।

शहख़र्च (شہخرچ) फा. वि.–बहुत अधिक ख़र्च करनेवाला, मुक्तहस्त।

शहज़ादः (شہزادہ) फा. पुं.–राजकुमार, राजपुत्र, बादशाह का लड़का; युवराज़, वली अह्द।

शहज़ादगी (شہزادگی) फा. स्त्री.–राजकुमारता, बादशाह का लड़का होना।

शहज़ोर (شہزور) फा. वि.–शक्तिशाली, बलवान्।

शहज़ोरी (شہزوری) फा. स्त्री.–शक्तिशालिता, बली होना।

शहतीर (شہتیر) फा. पुं.–शीशम या शाल आदि की सीधी और चौकोर लकड़ी जो छत पाटने के काम आती है, लट्ठा।

शहतूत (شہتوت) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध छोटा फल, तूत।

शहदुज़्द (شہدزد) फा. पुं.–शातिर चोर, पश्यतोहर।

शहनशीं (شہنشیں) फा. स्त्री.–बैठने की ऊँची इमारत।

शहनाई (شہنائی) फा. स्त्री.–एक बाजा, नफ़ीरी।

शहनाज़ (شہناز) फा. वि.–दुल्हन, नव विवाहिता।

शहपर (شہپر) फा. पुं.–'शाहपर' का लघु., पक्षी का बाज़ू, डैना।

शहबाज़ (شہباز) फा. पुं.–'शाहबाज़' का लघु., बड़ा बाज़, शिकारी बाज़, श्येन।

शहरग (شہرگ) फा. स्त्री.–'शाहरग' का लघु., शरीर की सबसे बड़ी रग जो हृदय में मिलती है।

शहसवार (شہسوار) फा. वि.–घोड़े की बहुत अच्छी सवारी करनेवाला।

शहसवारी (شہسواری) फा. स्त्री.–घोड़े पर बहुत अच्छा बैठना।

शहा (شہا) फा. अव्य.–हे राजा! ऐ बादशाह! शाह का सम्बोधन।

शहादत (شہادت) अ. स्त्री.–साक्षी, गवाही; धर्म या देश आदि के लिए बलिदान; धर्म-युद्ध में वध।

शहादतकदः (شہادتکدہ) अ. फा. पुं.–दे. 'शहादतगाह'।

शहादतगाह (شہادتگاہ) अ. फा. स्त्री.–शहीद होने का स्थान, बलिदान होने या किये जाने की जगह।

शहादतनामः (شہادتنامہ) अ. फा. पुं.–प्रमाणपत्र, सनद; वह ग्रंथ जिसमें किसी के शहीद होने का वर्णन हो।

शहादते इमाम (شہادت امام) अ. स्त्री.–हज़्रत इमाम हुसैन की शहादत।

शहादते उज़्मा (شہادت عظمی) अ. स्त्री.–बहुत बड़ी शहादत, सबसे बड़ा बलिदान; हज़्रत इमाम हुसैन का वध।

शहादते कुब्रा (شہادت کبری) अ. स्त्री.–दे. 'शहादते उज़्मा'।

शहादते हक़्क़ः (شہادت حقہ) अ. स्त्री.–सच्ची गवाही; सत्य के लिए बलिदान; सच्चा बलिदान।

शहानः (شہانہ) अ. फा. वि.–'शाहानः' का लघु., शाहों-जैसा, राज्योचित।

शहाब (شہاب) अ. पुं.–कुत्ते का पिल्ला; वह दूध जिसमें दो भाग पानी मिला हो।

शहाब (شہاب) फा. पुं.–लाल रंग।

शहाबी (شہابی) फा. वि.–लाल, सुर्ख़; रक्त, शोणित।

शहामत (شہامت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, बड़ाई; शूरता, बहादुरी; शक्ति, ज़ोर; प्रसन्नता, ख़ुशी; फ़ुर्ती।

शही (شہی) फा. स्त्री.–'शाही' का लघु., राजाओं का; राजाओं-जैसा।

शहीक़ (شہیق) अ. स्त्री.–गधे की वह भारी आवाज़ जो अंत में निकलती है, गधे की शुरू की आवाज़ "ज़फ़ीर" है।

शहीद (شہید) अ. वि.–जो धर्मयुद्ध में शत्रु से लड़ता हुआ मारा गया हो; जिसने धर्म, देश या किसी लोक-हित के लिए बलिदान किया हो, हुतात्मा; ईश्वर का एक नाम।

शहीदे आ'ज़म (شہید اعظم) अ. पुं.–सबसे बड़ा शहीद, हज़्रत इमाम हुसैन की उपाधि।

शहीदे इश्क़ (شہید عشق) अ. पुं.–प्रेम के मार्ग में जान देनेवाला, प्रेमिका को प्राण अर्पण करनेवाला।

शहीदे कर्बला (شہید کربلا) अ. फा. पुं.–कर्बला के युद्ध में सत्य के लिए बलि होनेवाले, हज़्रत इमाम हुसैन।

शहीदे वतन (شہید وطن) अ. पुं.–वतन की आज़ादी और उन्नति के लिए युद्ध या परिश्रम में मरनेवाला।

शहीम (شحیم) अ. वि.–जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो, मेदुर।

शहीर (شہیر) अ. वि.–प्रसिद्ध, ख्यातिप्राप्त, मशहूर।

शहीह (شحیح) अ. वि.–कृपण, कंजूस, बख़ील।

शहून (شحون) अ. वि.–शक्तिशाली, ज़ोरावर; पूज्य, श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग।

शह्द (شہد) फा. पुं.–मधु, अंग्बीं।

शह्दआमेज़ (شہدآمیز) फा. वि.–जिसमें शह्द मिला हो, मधुर, मीठा।

शह्दगुफ़्तार (شہدگفتار) फा. वि.–जिसकी बातें मीठी हों, मिष्टभाषी, मधुरवादी।

शह्दगुफ़्तारी (شہدگفتاری) फा. स्त्री.–बातों की मिठास।

शह्दमक़ाल (شہدمقال) फा. अ. वि.–दे. 'शह्दगुफ़्तार'

शह्दमक़ाली (شہدمقالی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शह्द गुफ़्तारी'।

शह्न (شحن) अ. पुं.–भरना, पुर करना; हाँकना, चलाना; दूर करना, हटाना।

शह्बः (شہبہ) फा. स्त्री.–बूढ़ी स्त्री, वृद्धा, जरिता।

शह्बरः (شہبرہ) फा. स्त्री.–बूढ़ी स्त्री, वृद्धा।

शह्बा (شہبا) अ. स्त्री.–वह घोड़ी या ऊँटनी जिसका रंग सफेदी मिला काला हो और सफेदी अधिक हो।

शह्मः (شحمہ) अ.पुं.–थोड़ी-सी चर्बी; कान की लौ।

शह्म (شحم) अ. स्त्री.–वसा, मेदा, चर्बी।

शह्मे हज़ल (شحم حظل) अ. पुं.–इंद्रायण, एक प्रसिद्ध कड़वा फल, जो कफ़ का रेचक है।

शह्र (شہر) अ. पुं.–मास, महीना; चंद्र, चाँद; प्रकटन, ज़ुहूर।

शह्र (شہر) फा. पुं.–नगर, पुरी, बड़ी बस्ती, जो क़स्बे से बड़ी हो।

शह्र आशोब (شہر آشوب) फा. पुं.–नज़्म की एक क़िस्म जिसमें राज्य की कुव्यवस्था, शासक की हीनता और प्रजा की दुर्गति का वर्णन होता है।

शह्रताश (شہرتاش) फा. तु. वि.–एक ही नगर के निवासी, हम वतन।

शह्र दर शह्र (شہر در شہر) फा. वि.–नगर-नगर में, हर नगर में, एक नगर से दूसरे नगर में।

शह्रपनाह (شہرپناہ) फा. स्त्री.–नगर के चारों ओर रक्षार्थ बनायी हुई पक्की और ऊँची दीवार, प्राचीर, परकोटा, फ़सील।

शह्रबंद (شہربند) फा. वि.–दुर्ग, कोट, क़िला; कारागार, क़ैदख़ाना; जिसे राजा की ओर से बाहर जाने की आज्ञा न हो, ; किसी सुअवसर पर नगर की सजावट।

शह्रबदर (شہربدر) फा. वि.–नगर से निकाला हुआ, जिसे राज्य की ओर से नगर से निकाल दिया गया हो, नगर बहिष्कृत।

शह्रयार (شہریار) फा. वि.–शासक, नृपाल, राजा, सम्राट्, बादशाह।

शह्रयारी (شہریاری) फा. स्त्री.–राज्य, शासन, बादशाही।

शह्रवा (شہروا) फा. पुं.–वह सिक्का जो किसी नगर-विशेष में चलता हो दूसरी जगह न चलता हो।

शह्री (شہری) फा. वि.–शह्र का निवासी, नगर निवासी; सभ्य, शिष्ट, तमीज़दार; जिसे किसी देश में वहाँ की प्रजा होने का अधिकार प्राप्त हो, नागरिक।

शह्रीयत (شہریت) फा. स्त्री.–सभ्यता, शिष्टता; नागरिकता, सिटीज़नशिप।

शह्रे ख़मोशाँ (شہر خموشاں) फा. पुं.–मूक लोगों का नगर, अर्थात् क़ब्रिस्तान, समाधिक्षेत्र।

शह्रे ग़रीबाँ (شہر غریباں) फा. पुं.–परदेसियों का नगर, जहाँ कोई एक दूसरे को पहचानता न हो।

शह्रे नाबीना (شہر نابینا) फा. पुं.–अंधों का नगर, जहाँ कोई कुछ देख न सकता हो, जहाँ गुण-दोष परखनेवाला न हो।

शह्रेवर (شہریور) फा. पुं.–ईरान का एक महीना जो हिंदी हिसाब से कुआर में पड़ता है।

शह्लः (شہلہ) फा. स्त्री.–वृद्धा स्त्री, बुढ़िया।

शह्ला (شہلا) अ. वि.–काली आँखोंवाली स्त्री; वह नर्गिस जिसके भीतर पीलाहट की जगह कालिमा होती है, और आँख से बहुत मिलती-जुलती है।

शह्वत (شہوت) अ. स्त्री.–इच्छा, अभिलाषा, ख्वाहिश; क्षुधा, भूख, इश्तिहा; कामवेग, कामातुरता, स्त्री-प्रसंग की प्रबल इच्छा।

शह्वतअंगेज़ (شہوت انگیز) अ. फा. वि.–कामवर्द्धक, कामशक्ति-वर्द्धक, शह्वत बढ़ानेवाला।

शह्वतअंगेज़ी (شہوت انگیزی) अ. फा. स्त्री.–कामशक्ति की प्रबलता, शह्वत का जोश।

शह्वतअफ़्ज़ा (شہوت افزا) अ.. फा. वि.–शह्वत बढ़ानेवाला, कामवर्द्धक।

शह्वतकुश (شہوت کش) अ. फा. वि.–शह्वत को मारने वाला, इंद्रियदमन।

शह्वतकुशी (شہوت کشی) अ. फा. स्त्री.–शह्वत् को मारना, इंद्रिय दमन करना।

शह्वतख़ेज़ (شہوت خیز) फा. अ. वि–दे. 'शह्वतअंगेज़'।

शह्वतख़ेज़ी (شہوت خیزی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'श. अंगेज़ी'।

शह्वतपरस्त (شہوت پرست) अ. फा. वि.–इच्छाओं का दास; भोग-विलास का रसिया, व्यभिचारी, लंपट।

शह्वतपरस्ती (شہوت پرستی) अ. फा. स्त्री.–इच्छाओं की पूजा, लिप्सा; कामवासना की रसिकता, व्यभिचार।

शह्वतराँ (شہوت راں) अ. फा. वि.–दे. 'शह्वतपरस्त'।

शह्वतरानी (شہوت رانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'श. परस्ती'।

शह्वते कल्बी (شہوت کلبی) अ. स्त्री.–एक रोग जिसमें भूख बहुत बढ़ जाती है, और कितना भी खाया जाय तृप्ति नहीं होती।

शह्वात (شہوات) अ. स्त्री.–'शह्वत' का बहु., शह्वतें, इच्छाएँ; काम वासनाएँ।

शह्वानी (شہوانی) अ. वि.–इच्छा का; काम वासना का; इच्छा सम्बन्धी; कामवासना-सम्बन्धी।

शह्वानीयत (شہوانیت) अ. स्त्री.–शह्वत, काम वासना, स्त्री-प्रसंग की इच्छा।

शह्वी (شہوی) अ. वि.–दे. 'शह्वानी'।

शा

शांज़दः (شانزدہ) फा. वि.–सोलह, षोडश।

शांज़दहुम (شانزدہم) फा. वि.–सोलहवाँ।

शाइक़ (شائق) अ. वि.–इच्छुक, अभिलाषी; उतकंठित, मुश्ताक़; व्यसनी, शौक़ीन।

शाइक (شائک) अ. वि.–काँटोवाला, काँटोंदार।

शाइबः (شائبہ) अ. पुं.–लवलेश; किंचिन्मात्र, बहुत थोड़ा; मिश्रण, मिलावट।

शाइरः (شاعرہ) अ. स्त्री.–कवि स्त्री, कवयित्री।

शाइर (شاعر) अ. पुं.–कवि, शाइरी करनेवाला।

शाइरात (شاعرات) अ. स्त्री.– 'शाइरः' का बहु., शाइर स्त्रियाँ।

शाइरानः (شاعرانہ) अ. फा. वि.–शाइरों-जैसा।

शाइरी (شاعری) अ. स्त्री.–कविता, शे'र कहना; काव्य, शे'र का फ़न; अत्योक्ति, मुबालग़ः।

शाइरीन (شاعرین) अ. पुं.–'शाइर' का बहु., कविगुण, शाइर हज़्रात।

शाइस्तः (شائستہ) फा. वि.–सभ्य, शिष्ट, मुहज़्ज़ब; योग्य, क़ाबिल; पात्र, मुस्तहक़; संस्कृत, मार्जित, मुजल्ला; उत्तम, श्रेष्ठ, उम्दा।

शाइस्तःअमल (شائستہ عمل) फा. अ. वि.–सदाचारी, शिष्टाचारी, नेक अतवार।

शाइस्तःकलाम (شائستہ کلام) फा. अ. वि.–तमीज़ की बातचीत करनेवाला, सभ्यतापूर्वक बातचीत करनेवाला।

शाइस्तःगो (شائستہ گو) फा. वि.–जिसकी बातचीत सभ्यता और शिष्टता लिये हुए हो।

शाइस्तःमनिश (شائستہ منش) फा. वि.–दे. 'शाइस्तः-मिज़ाज'।

शाइस्तःमिज़ाज (شائستہ مزاج) फा. अ. वि.–सभ्य, शिष्ट, मुहज़्ज़ब।

शाइस्तए कलाम (شائستۂ کلام) फा. अ. पुं.–वह व्यक्ति जिससे बातचीत की जा सके, जो बात करने के योग्य हो।

शाइस्तगी (شائستگی) फा. स्त्री.–सभ्यता, तह्ज़ीब; शिष्टता, तमीज़; योग्यता, क़ाबिलीयत; पात्रता, इस्तेहक़ाक़; संस्कृति, सफ़ाई; उत्तमता, उम्दगी।

शाए' (شائع) अ. वि.–व्यक्त, प्रकट, ज़ाहिर; प्रकाशित, छपा हुआ; प्रसारित, नश्र।

शाए'कर्दः (شائع کردہ) अ. फा. वि.–प्रकाशित किया हुआ, छापा हुआ।

शाए'कुनिंदः (شائع کنندہ) अ. फा. वि.–प्रकाशक, छापनेवाला।

शाएगाँ (شائگاں) फा. वि.–उत्तम, उम्दा; विस्तृत, चौड़ा; 'पर्वेज़' का एक ख़ज़ाना; विष्टि, बेगार; क़ाफ़िए का एक दोष, ईता।

शाक़ (شاق) अ. वि.–असह्य, नाक़ाबिले बरदाश्त; कठिन, दुष्कर, मुश्किल; अरुचिकर, नागवार।

शाक (شاکی) अ. पुं.–सैनिक, सिपाही; सशस्त्र, मुसल्लह; शक करनेवाला।

शाकिए जौर (شاکئی جور) अ. पुं.–अनीति और अत्याचार की शिकायत करनेवाला।

शाकिए ज़ुल्म (شاکئی ظلم) अ. पुं.–दे. 'शाकिए जौर'।

शाकिए सितम (شاکئی ستم) अ. पुं.–दे. 'शाकिए जौर'।

शाकिरः (شاکرہ) अ. स्त्री.–शुक्र करनेवाली स्त्री।

शाकिर (شاکر) अ. पुं.–शुक्र करनेवाला, ईश्वर को धन्यवाद देनेवाला।

शाकिरे ने'मत (شاکر نعمت) अ. पुं.–ईश्वर की दी हुई ने'मतों पर उसको धन्यवाद देनेवाला, कृतज्ञ।

शाकी (شاکی) अ. वि.–शिकायत करनेवाला, परिवादी।

शाक़ूल (شاقول) अ. स्त्री.–राजों की सहावल, जिससे वह दीवार की सीध नापते हैं।

शाक़्क़ः (شاقہ) अ. वि.–बहुत कड़ी, बहुत कठिन।

शाख़ः (شاخہ) फा. पुं.–अपराधी को दंड देने का काठ।

शाख़ (شاخ) फा. स्त्री.–शाखा, डाली; शृंग, विषाण, सींग; अड़चन, बाधा, पख़; खंड, टुकड़ा; शराब का प्याला या सुराही, पानपात्र।

शाख़चः (شاخچہ) फा. पुं.–छोटी शाखा, टहनी, डाली।

शाख़चःबंदी (شاخچہبندی) फा. स्त्री.–पेड़ की क़लम लगाना; लांछन या आरोप लगाना।

शाख़ दर शाख़ (شاخ در شاخ) फा. वि.–एक-एक डाली में; पेचीदः, उलझा हुआ; पहलूदार।

शाख़दार (شاخدار) फा. वि.–जिसमें डालियाँ हों, (पुं.) स्त्री की कमाई खानेवाला, भार्या-घटक, दैयूस।

शाख़बदीवार (شاخبدیوار) फा. वि.–अभिमानी, घमंडी; उद्दंड, सरकश।

शाख़ शाख़ (شاخ شاخ) फा. वि.–टुकड़े-टुकड़े, खंड-खंड।

शाख़शानः (شاخشانہ) फा. पुं.–पख़, बाधा, अड़चन; बात में बात।

शाख़सार (شاخسار) फा. पुं.–जहाँ बहुत-से पेड़ हों।

शाख़ाबः (شاخابہ) फा. पुं.–खाड़ी, ख़लीज।

शाख़िल (شاخل) फा. पुं.–दे. 'शाख़ुल', दोनों शुद्ध हैं।

शाख़िस (شاخص) अ. वि.–जिसकी आँखें खुली रह गयी हों, जो टकटकी बाँधकर रह गया हो।

शाख़ुल (شاخل) फा. पुं.–अरहर, एक प्रसिद्ध अन्न जिसकी दाल बनती है।

शाख़े आर्ज़ू (شاخ آرزو) फा. स्त्री.–इच्छारूपी वृक्ष की शाखा, अर्थात् इच्छा।

शाख़े आहू (شاخ آھو) फा. स्त्री.–धनुष, कमान; झूठा वा'दा; हिरन का सींग।

शाख़े गवज़्न (شاخ گوزن) फा. स्त्री.–बारहसिंगे का सींग।

शाख़े गाव (شاخ گاؤ) फा. स्त्री.–बैल या गाय का सींग।

शाख़े गुल (شاخ گل) फा. स्त्री.–फूलों की डाली; प्रेमिका, मा'शूक़।

शाख़े गेसू (شاخ گیسو) फा. स्त्री.–बालों की लट, केशपाश।

शाख़े जा'फ़रान (شاخ زعفران) फा. अ. स्त्री.–आश्चर्यजनक वस्तु; अनुपम, बेमिस्ल।

शाख़े दर्या (شاخ دریا) फा. स्त्री.–किसी नदी से निकली हुई शाखा, शाखानदी।

शाख़े नबात (شاخ نبات) फा. स्त्री.–बाँस की वे छोटी तीलियाँ, जो मिस्री जमाते समय कूज़े में लगा दी जाती हैं।

शाख़े सुस्त (شاخ سست) फा. स्त्री.–कमज़ोर डाली जिस पर घोंसला बनाने में उसके टूटने का भय हो, अर्थात् संसार।

शाख़ोबुन (شاخ وبن) फा. स्त्री.–जड़ और शाख़ें, सब, तमाम।

शागिर्द (شاگرد) फा. पुं.–विद्यार्थी, तालिबे इल्म; कोई कला या शिल्प सीखनेवाला, शिष्य; कविता के गुण-दोषादि सीखनेवाला।

शागिर्दपेशः (شاگردپیشہ) फा. पुं.–नौकर-चाकर, ख़िदमतगार लोग।

शागिर्दानः (شاگردانہ) फा. वि.–शागिर्दों-जैसा, शागिर्दों की तरह, शिष्योचित।

शागिर्दी (شاگردی) फा. स्त्री.–किसी उस्ताद या आचार्य से किसी कला, शिल्प या विद्या का उपार्जन।

शागिर्दे रशीद (شاگرد رشید) फा. अ. पुं.–वह शागिर्द जिसे उस्ताद ने पूरे ध्यान से किसी कला, शिल्प या विद्या की शिक्षा दी हो, और उसको वह सारी बातें और भेद बता दिये हों जो दूसरों को नहीं बतायी हों।

शाग़िल (شاغل) अ. वि.–निषेधक, मना करनेवाला; मश्ग़ूल, संलग्न।

शाज़ (شاذ) अ. वि.–एकाकी, अकेला; जो बहुत कम होता हो।

शाज़ोनादिर (شاذونادر) अ. वि.–कभी-कभी, यदा-कदा; इक्का-दुक्का, न होने के बराबर।

शात (شات-شاۃ) अ. स्त्री.–अजा, बकरी, बुज़।

शातिन (شاطن) अ. वि.–दुराचारी, मायाचारी, बदकार।

शातिर (شاطر) अ. वि.–शत्रंज का माहिर; शत्रंज खेलनेवाला; धूर्त, छली, ठग; चपल, चंचल, शोख़; धृष्ट, ढीठ।

शातिरज़ादः (شاطرزادہ) अ. फा. पुं.–तेज़ और फुर्तीला नौकर।

शातिरानः (شاطرانہ) अ. फा. वि.–शातिरों-जैसा, धूर्ततापूर्ण, ऐयाराना।

शाती (شاطی) अ. पुं.–नदी का किनारा, नदी-तट।

शातू (شاتو) तु. पुं.–सोपान, निश्रेणी, सीढ़ी।

शाद (شاد) फा. वि.–प्रसन्न, हर्षित, ख़ुश; आनंदित, मौज में।

शादकाम (شادکام) फा. वि.–प्रसन्नचित्त, मस्रूर; सफल-मनोरथ, कामयाब।

शादकामी (شادکامی) फा. स्त्री.–प्रसन्नता, ख़ुशी; सफलता, कामयाबी।

शादख़्वार (شادخوار) फा. वि.–धनाढ्य, मालदार; बे रोक-टोक शराब पीनेवाला।

शादख़्वारी (شادخواری) फा. स्त्री.–समृद्धि, दौलतमंदी; बे रोक-टोक शराब पीना।

शादगूनः (شادگونه) फा. स्त्री.–गानेवाली स्त्री, गायिका, डोमनी; बिछाने का गद्दा, तोशक।

शादज़ी (شادزی) फा. वा.–दे. 'शादबाश'।

शादनः (شادنه) फा. पुं.–एक पत्थर जो छोटे दानों की शक्ल में होता है, और दवा में चलता है।

शादनज (شادنج) अ. पुं.–दे. 'शादनः'।

शादबह्र (شادبهر) फा. वि.–सौभाग्यशाली, ख़ुशक़िस्मत; समृद्ध, ख़ुशहाल।

शादबाद (شادباد) फा. वा.–दे. 'शादबाश'।

शादबाश (شاد باش) फा. वा.–ख़ुश रहो, चैन से जीवन व्यतीत करो, एक आशीर्वाद; शाबाश, धन्यवाद।

शादमाँ (شادماں) फा. वि.–प्रसन्नचित्त, हर्षित, आनंदित।

शादमाँदिल (شادماں دل) फा. वि.–प्रसन्नहृदय, प्रफुल्लमनस्क।

शादमाँरू (شادماں رو) फा. वि.–प्रफुल्लवदन, जिसके चेहरे पर शिगुफ़्तगी हो।

शादमानी (شادمانی) फा. स्त्री.–प्रसन्नता, हर्ष, ख़ुशी।

शादवर्द (شادورد) फा. पुं.–चंद्रमंडल, चंद्रबिंब, हालः।

शादाँ (شاداں) फा. वि.–दे. 'शादमाँ'।

शादाब (شاداب) फा. वि.–हरा-भरा, सरसब्ज़; सिंची हुई काश्त; प्रफुल्ल, शिगुफ़्तः।

शादाबी (شادابی) फा. स्त्री.–हराभरापन, तरोताज़गी; प्रफुल्लता, शिगुफ़्तगी।

शादिन (شادن) फा. पुं.–मृग-शावक, हिरन का बच्चा।

शादियानः (شادیانه) फा. पुं.–बधाई, ख़ुशी के समय बजनेवाला बाजा।

शादी (شادی) फा. स्त्री.–हर्ष, आनंद; विवाह, ब्याह।

शादीचः (شادیچه) फा. पुं.–ऊपर पहनने का कपड़ा, उपरना, बालापोश।

शादीमर्ग (شادی مرگ) फा. वि.–वह व्यक्ति जो हर्षाधिक्य के कारण मर जाय।

शादुर्वान (شادروان) फा. पुं.–शामियाना; पर्दा; फ़र्श; छाजन, साइबान।

शादोआबाद (شادوآباد) फा. वि.–जो प्रसन्न भी हो और समृद्ध भी।

शादोख़ुर्रम (شادوخرم) फा. वि.–प्रसन्न और आनंदित।

शानः (شانه) फा. पुं.–कंघा; कंधा, स्कंध; जुलाहों की राछ; जुलाहों की कूँची; एक शस्त्र।

शानःकश (شانه‌کش) फा. वि.–कंघा करनेवाला।

शानःकशी (شانه‌کشی) फा. स्त्री.–कंघा करना, बालों को कंघे से सुलझाना।

शानःकार (شانه‌کار) फा. वि.–कंघा बनानेवाला।

शानःगर्दानी (شانه‌گردانی) फा. स्त्री.–उपेक्षा, बेतवज्जुही।

शानःबशानः (شانه‌بشانه) फा. वि.–कंधे से कंधा मिलाकर, मिलकर, जुड़कर।

शानःबहा (شانه‌بها) फा. पुं.–बहुत थोड़ा मूल्य।

शानःबीं (شانه‌بیں) फा. वि.–सगुन विचारनेवाला, यह सगुन बकरी की सींग से लिया जाता है।

शानःबीनी (شانه‌بینی) फा. स्त्री.–सगुन विचारना।

शानःसर (شانه‌سر) फा. पुं.–एक पक्षी, हुदहुद।

शान (شان) अ. स्त्री.–वैभव, विभव, शान-शौकत; प्रताप, इक़्बाल; तेज, जलाल; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

शानदार (شاندار) अ. फा. वि.–ठाटदार, उत्तम, बढ़िया; विशाल, भारी।

शानी (شانی) अ. वि.–शत्रु, वैरी, दुश्मन।

शाने नुज़ूल (شان نزول) अ.स्त्री.–आने का कारण, उपस्थिति का सबब; किसी आकाशवाणी का कारण; किसी आकाशीय ग्रंथ या उसके किसी खंड-विशेष के उतरने का कारण।

शानोशौकत (شان‌وشوکت) अ. स्त्री.–ठाट-बाट, तड़क-भड़क; वैभव, विभव, जाहोहशम।

शाफ़ः (شافه) अ. पुं.–गुदा में रखने का दवा में भीगा हुआ कपड़ा आदि।

शाफ़िअः (شافعه) अ. स्त्री.–सुफ़ारिश करनेवाली स्त्री।

शाफ़िई (شافعی) अ. वि.–इमाम शाफ़िई का नाम; इमाम शाफ़िई का अनुयायी मुसलमान।

शाफ़िए मुत्लक़ (شافئی مطلق) अ. पुं.–सच्ची नीरोगिता प्रदान करनेवाला, ईश्वर।

शाफ़ी (شافی) अ. वि.–रोगमुक्त करनेवाला, शिफ़ा देनेवाला।

शाफ़े' (شافع) अ. वि.–सुफ़ारिश करनेवाला; ईश्वर से सुफ़ारिश करके मोक्ष दिलानेवाला।

शाब [ब्ब] (شاب) अ. वि.–युवा, तरुण, जवान।

शा'ब (شعب) अ. पुं.–गर्त, गढ़ा; खोह, कंदरा, गुफा; दरार, दर्ज़; कुल, खानदान।

शा'बदः (شعبده) अ. पुं.–इंद्रजाल, जादू; दृष्टिबंध, नज़रबंदी; टोना-टोटका; नयी और अनोखी बात, चमत्कार; छल, फ़रेब।

शा'बदःगर (شعبده‌گر) अ. फा. वि.–दृष्टिबंधक, मायावी, जादूगर; छली, फ़रेबी।

शा'बदःगरी (شعبده‌گری) अ.फा. स्त्री.–मायाकर्म, इंद्रजाल, जादूगरी; छली, फ़रेब।

शा'बदःबाज़ (شعبده‌باز) अ. फा. वि.–दे. 'शाबदःगर'।

शा’बदःबाज़ी (شعبده بازی) फा. अ. स्त्री.–दे. ‘शा’बदः गरी’।

शा’बदःसंज (شعبده سنج) अ. फा. वि.–दे. ‘शांबदःगर’।

शा’बदःसंजी (شعبده سنجی) अ. फा. स्त्री.–दे. ‘शा’बदःगरी’।

शा’बदात (شعبدات) अ. पुं.–शा’बदः का बहु., शा’बदे।

शा’बान (شعبان) अ. पुं.–इस्लामी आठवाँ महीना।

शाबाश (شاباش) फा. स्त्री.–‘शादबाश’ का लघु., प्रोत्साहन देने और हिम्मत बढ़ानेवाला एक शब्द जो बड़े लोग छोटों के अच्छा काम करने पर कहते हैं।

शाबाशी (شاباشی) उ. स्त्री.–शाबाश देना; शाबाश।

शाम (شام) अ. पुं.–एक देश, सीरिया।

शाम (شام) फा. स्त्री.–संध्या, सायंकाल।

शामगाह (شامگاه) फा. स्त्री.–सायंकाल, संध्याबेला।

शामत (شامت) अ. स्त्री.–अकल्याण, नुहूसत; दुर्भाग्य, बदक़िस्मती; घिरने के लच्छन।

शामते अमल (شامت عمل) अ. स्त्री.–कर्म का खोटापन, बुरे कर्म का बुरा फल।

शामते आ’माल (شامت اعمال) अ. स्त्री.–बुरे कर्मों का फल, पापों का नतीजा।

शामियानः (شامیانه) फा. पुं.–वितान, छाया के लिए ताना जानेवाला विशेष कपड़ा।

शामिल (شامل) अ. वि.–सम्मिलित, एकत्र, एक जगह; अंतर्गत, भीतरी; समन्वित, संयुक्त, मुत्तहद; भागीदार, साझी, शरीक; सहकारी, मददगार।

शामिले हाल (شامل حال) अ. वि.–सम्मिलित, शामिल।

शामी (شامی) अ. वि.–शाम का निवासी; शाम की भाषा।

शामे अबद (شام ابد) फा. अ. स्त्री.–वह समय जब सृष्टि बिलकुल नष्ट हो जायगी, ‘सुब्हे अज़ल’ का उलटा।

शामे ग़रीबाँ (شام غریباں) फा.अ.स्त्री.–परदेसियों की शाम, परदेश की शाम जो बड़ी उदास होती है।

शामे ग़ुर्बत (شام غربت) फा. अ. स्त्री.–परदेस की शाम।

शामे जवानी (شام جوانی) फा. स्त्री.–युवावस्था की शाम, जहाँ से मनुष्य पाप के जगत् में पाँव रखता है।

शामोपगाह (شام و پگاه) फा. स्त्री.–रात-दिन, अहर्निश, अर्थात् हर समय, सदा।

शामोसहर (شام و سحر) फा.अ. स्त्री.–दे. ‘शामोपगाह’।

शाम्मः (شامه) अ. स्त्री.–घ्राणशक्ति, सूँघने की क़ुव्वत।

शायगाँ (شایگاں) फा. वि.–दे. ‘शाएगाँ’।

शायद (شاید) फा. वि.–कदाचित्, कदाचन, स्यात्।

शायदोबायद (شاید و باید) फा. वि.–अद्भुत, अनुपम, अजीबोग़रीब।

शायस्तः (شایسته) फा. वि.–दे. ‘शाइस्तः’।

शायस्तगी (شایستگی) फा. स्त्री.–दे. ‘शाइस्तगी’।

शायाँ (شایاں) फा. वि.–उचित, समुचित, मौज़ूँ, मुनासिब।

शायाने शान (شایان شان) फा. अ. वि.–किसी की हैसियत के मुनासिब, जो व्यक्ति जैसा हो उसके लिए वैसा ही।

शारः (شاره) फा. पुं.–वस्त्र, कपड़ा; पगड़ी; साड़ी, सारी।

शार (شار) फा. स्त्री.–नगर, बस्ती; सारी, साड़ी, (प्रत्य.) स्थान, ऐसा स्थान जहाँ एक ही वस्तु प्रचुर हो, जैसे–– कोहसार, पहाड़ी स्थान।

शा’र (شعر) अ. पुं.–बाल, कच, केश।

शारक (شارک) फा. स्त्री.–मैना पक्षी, सारिका।

शारमार (شارمار) फा. पुं.–अजगर, बड़ा साँप।

शारसाँ (شارساں) फा. पुं.–नगर, शहर; जहाँ बहुत-सी बस्तियाँ हों।

शारिक़ (شارق) अ. वि.–भागनेवाला।

शारिद (شارد) अ. वि.–चमकनेवाला।

शारिब (شارب) अ. वि.–पीनेवाला, पायी।

शारिस्तान (شارستان) फा. पुं.–वह बस्ती जिसके चारों ओर बाग़ हों।

शा’रुलजिन (شعر الجن) अ. पुं.–हंसराज, एक घास जो दवा में चलती है, परसियावशान।

शारे’ (شارع) अ. वि.–इस्लामी शरीअत बनानेवाला अर्थात् हज़्रत पैग़ंबर साहिब; शरीअत का आलिम।

शारेह (شارح) अ. वि.–भाष्यकार, टीकाकार, शर्ह लिखनेवाला।

शालंग (شالنگ) फा. स्त्री.–वह व्यक्ति जो किसी भागे हुए (मफ़्रूर) व्यक्ति की जगह पकड़ा जाय।

शाल (شال) फा. स्त्री.–एक ऊनी कामदार चादर।

शालदोज़ (شال دوز) फा. वि.–शाल बनानेवाला।

शालबाफ़ (شال باف) फा. वि.–दे. ‘शालदोज़’।

शालहंग (شالهنگ) फा. पुं.–अत्याचार, ज़ुल्म; बंधक, रह्न; छल, कपट, फ़रेब।

शाली (شالی) फा. पुं.–धान, भूसी सहित चावल।

शाशः (شاشه) फा. पुं.–मूत्र, प्रस्राव, पेशाब।

शाश (شاش) फा. पुं.–दे. ‘चाच’; दे ‘शाशः’।

शा’शअः (شعشعه) अ. पुं.–किरण, अंशु, रश्मि, दीधिति, मयूख; आतप, धूप, अर्चि।

शाशदान (شاشدان) फा. पुं.–पेशाब करने का बर्तन, रोगियों का मूत्रपात्र।

शाशिंदः (شاشنده) फा. वि.–पेशाब करनेवाला।

शाशीदः (شاشیده) फा. वि.–मूता हुआ, पेशाब किया

हुआ; जो पेशाब कर चुका हो; जिस चीज़ पर पेशाब किया गया हो।

शाशीदनी (شاشیدنی) फा. वि.–पेशाब करने के योग्य, जिस पर पेशाब करना उचित हो; त्यक्त और तिरस्कृत वस्तु।

शाहंशह (شاہنشہہ) फा. वि.–'शाहंशाह' का लघु., सम्राट्, चक्रवर्ती।

शाहंशही (شاہنشہی) फा. स्त्री.–साम्राज्य, शहंशाहियत।

शाहंशाह (شاہنشاہ) फा. वि.–सम्राट, चक्रवर्ती, शाहों के ऊपर बादशाह, जिसके अधीन अन्य राज्य हों।

शाहंशाही (شاہنشاہی) फा. स्त्री.–साम्राज्य, शहंशाहियत।

शाह (شاہ) फा. पुं.–बादशाह, शासक, नरेश, नृप, राजा।

शाहकार (شاہکار) फा. पुं.–किसी कलाकार की सर्वोत्तम कला, अत्युत्तम कृति।

शाहगाम (شاہگام) फ़ा. स्त्री–घोड़े की एक चाल।

शाहज़ादः (شاہزادہ) फा. पुं.–युवराज, राजकुमार, शहज़ादा।

शाहज़ादगी (شاہزادگی) फा. स्त्री.–राजकुमारता, युवराजपन, शहज़ादगी की अवस्था।

शाहत्तरः (شاہترہ) फा. पुं.–एक घास जो दवा में चलती है।

शाहदरः (شاہدرہ) फा. पुं.–राजमार्ग, आमरास्ता।

शाहदानः (شاہدانہ) फा. पुं.–एक बीज जो दवा में काम आते हैं।

शाहनशीं (شاہنشیں) फा. स्त्री.–बैठने की ऊँची जगह।

शाहनामः (شاہنامہ) फा· पुं.–वह महाकाव्य जिसमें किसी राज्य विशेष के बादशाहों का वर्णन हो।

शाहपर (شاہپر) फा. पुं.–पक्षियों का डैना, जिसमें पर होते हैं।

शाहपसंद (شاہپسند) फा. वि.–बादशाहों के लाइक़ जिसे राजा और महाराजा पसंद करें।

शाहबल्लूत (شاہبلوط) फा. पुं.–एक पेड़, जिसे ईसाई पवित्र मानते हैं।

शाहबाज़ (شاہباز) फा. पुं.–बड़ा बाज़, शहबाज़; शूर, वीर, योद्धा, बहादुर।

शाहबाज़ी (شاہبازی) फा. स्त्री.–वीरता, शूरता, बहादुरी।

शाहबैत (شاہ بیت) फा. अ. स्त्री.–ग़ज़ल का वह शे'र जो सबसे अच्छा हो।

शाहरग (شاہ رگ) फा. स्त्री.–एक बड़ी ख़ून फेंकनेवाली रग जो हृदय में जाती है, शहरग।

शाहराह (شاہراہ) फा. स्त्री.–बड़ा रास्ता, राजमार्ग।

शाहवार (شاہوار) फा. वि.–बादशाहों और राजाओं के योग्य अर्थात् बहुमूल्य।

शाहसवार (شاہسوار) फा. वि.–घोड़े का बहुत अच्छा सवार, शरीर से शरीर घोड़े पर सवारी करनेवाला।

शाहिक़ (شاہق) अ. वि.–उत्तुंग, उच्च, श्रेष्ठ, बलंद, ऊँचा; प्रासाद, भवन, महल।

शाहिद (شاہد) अ. वि.–साक्षी, गवाह; नायिका, मा'शूक़; श्रेष्ठ, उत्तम, उम्दा।

शाहिदपरस्त (شاہدپرست) अ. फा. वि.–दे. 'शाहिदबाज़'।

शाहिदबाज़ (شاہدباز) अ.फा. वि.–सुंदर स्त्रियों का शौक़ीन, हुस्नपरस्त; रंडीबाज़, वेश्यागामी।

शाहिदानः (شاہدانہ) अ. फा. वि.–मा'शूक़ों-जैसा, नाज़ो-अंदाज़ और हाव-भावों से भरा हुआ।

शाहिदी (شاہدی) अ. वि.–साक्षी, गवाही, साक्ष्य; नायिकापन, मा'शूक़ीयत।

शाहिदीयत (شاہدیت) अ. स्त्री.–साक्ष्य, गवाही; माशूक़ीयत, नायिकापन।

शाहिदे आदिल (شاہد عادل) अ. वि.–सच्चा गवाह, सत्य साक्षी।

शाहिदे ग़ैब (شاہد غیب) अ. वि.–परोक्ष ज्ञाता, अर्थात् ईश्वर।

शाहिदे बाज़ारी (شاہد بازاری) अ. फा. स्त्री.–गणिका, रूपजीविनी, पण्यस्त्री, ग्रामनायिका, वेश्या, तवाइफ़, रंडी।

शाहिदे मक़्सूद (شاہد مقصود) अ. वि.–मनोकामना, मनोरथ, नायिका रूपी सुंदर मनोरथ।

शाहिदे रोज़ (شاہد روز) अ. फा. पुं.–सूर्य, सूरज।

शाहिदे शब (شاہد شب) अ. फा. पुं.–चंद्रमा, राकेश, चाँद।

शाहिदे हाल (شاہد حال) अ. वि.–घटना का प्रत्यक्ष गवाह।

शाहीं (شاہیں) फा. पुं.–श्येन, पालंगक, विहंगाराति, बाज़ पक्षी; तराज़ू की डंडी, तुलादंड।

शाहीं दुज़्द (شاہیں دزد) फा. पुं.–डंडी मारनेवाला, तोल में अधिक या कम तोलनेवाला।

शाहीं दुज़्दी (شاہیں دزدی) फा. स्त्री.–डंडी मारना, कम या अधिक तोलना।

शाहीं बचः (شاہیں بچہ) फा. पुं.–बाज़ का बच्चा; शूर व्यक्ति का पुत्र, वीरपुत्र।

शाही (شاہی) फा. स्त्री.–राजकीय, सरकारी; राज से सम्बन्धित; राज्य, सत्ता, हुकूमत; राष्ट्र, सल्तनत।

शाहीन (شاہین) फा. पुं.–दे. 'शाहीं'।

शाहे ख़ावर (شاہ خاور) फा. पुं.–पूर्व का बादशाह अर्थात् सूर्य, सूरज।

शाहे नजफ़ (شاہ نجف) अ. फा. पुं.–हज़रत अली।

शाहे नह्ल (شاہ نحل) फा. अ. पुं.–शहद की मक्खियों का बादशाह, या'सूब।

शाहे मग़्रिब (شاہ مغرب) अ. फा. पुं.–चंद्रमा, चाँद।

शाहे मश्रिक़ (شاہ مشرق) फा. अ. पुं.–सूर्य, सूरज।

शाहे रोज़ (شاہ روز) फा. पुं.–सूर्य, रवि, सूरज।

शाहे वक़्त (شاہ وقت) फा. अ. पुं.–वर्तमानकालीन शासक, मौजूदा समय में राज करनेवाला बादशाह।

शाहे हिजाज़ (شاہ حجاز) फा. अ. पुं.–मक्के और मदीने का शासक; हज़्रत मुहम्मद साहिब।

शि

शिआर (شعار) अ. पुं.–स्वभाव, आदत; व्यवहार, तर्ज़े अमल; आचरण, चाल-चलन; ढंग, तरीका; नियम, क़ायदा; चिह्न, निशान।

शिकंजः (شکنجہ) फा. पुं.–दबाने और कसने का यंत्र; काटने के लिए काग़ज़ या किताब दबाने का यंत्र; एक काठ का यंत्र जिसमें दबाकर सज़ा दी जाती थी।

शिकंज (شکنج) फा. स्त्री.–बल, शिकन, झुर्री, सिकुड़न, सिलवट; चुटकी, चेंटुआ।

शिकंबः (شکنبہ) फा. पुं.–पक्वाशय, पेट के भीतर वह थैली जिसमें जाकर अन्न पकता और पचता है।

शिक़ [क़्क़] (شق) अ. स्त्री.–पक्ष, ओर, तरफ़; खंड, टुकड़ा; पख, बाधा, अड़चन।

शिक़दार (شقدار) अ. फा. पुं.–किसी क्षेत्र-विशेष का पदाधिकारी।

शिकन (شکن) फा. स्त्री.–झुर्री, सिलवट, सिकुड़न, बल।

शिकन दर शिकन (شکن در شکن) फा. वि.–जिसमें बहुत बल हों, बहुत उलझा हुआ; घुँघराले बाल।

शिकनिंदः (شکنندہ) फा. वि.–तोड़नेवाला, भंजक, भग्नकर्ता।

शिकम (شکم) फा. पुं.–जठर, कोष्ठ, उदर, पेट; पक्वाशय, आमाशय, पाकस्थली, मे'दा।

शिकमख़ारः (شکم خارہ) फा. वि.–भूखा, क्षुधातुर।

शिकमपरस्त (شکم پرست) फा. वि.–उदर-पिशाच, उदर-सर्वस्व, जिसे पेट ही सब कुछ हो, अपने लिए ही सब कुछ करनेवाला।

शिकमपरस्ती (شکم پرستی) फा. स्त्री.–पेटपूजा, अपने पेट को ही सब कुछ समझना।

शिकमपर्वर (شکم پرور) फा. वि.–दे. 'शिकमपरस्त'।

शिकमपर्वरी (شکم پروری) फा. स्त्री.–दे. 'शिकमपरस्ती'।

शिकमपुर (شکم پر) फा. वि.–जिसका पेट भरा हो, भोजन-तृप्त, भोजन-संतुष्ट।

शिकमपुरी (شکم پری) फा. स्त्री.–पेट भरा हुआ होना, तृप्ति, सेरी।

शिकमबंदः (شکم بندہ) फा. वि.–पेट का बंदा, पेटपूजा की चिंता में ही रहनेवाला।

शिकमबंदगी (شکم بندگی) फा. स्त्री.–पेट की पूजा, पेट की ही फ़िक्र में रहना।

शिकमसेर (شکم سیر) फा. वि.–जिसका पेट भरा हो, अफरा हुआ, भोजनतृप्त।

शिकमसेरी (شکم سیری) फा. स्त्री.–पेट भरा होना, अफरा होना, तृप्ति।

शिकमी (شکمی) फा. वि.–पेट का; भीतरी; बड़े पेट-वाला।

शिकमे मादर (شکم مادر) फा. पुं.–माँ का पेट, मातृयोनि।

शिकरः (شکرہ) फा. पुं.–एक शिकारी चिड़िया।

शिकस्तः (شکستہ) फा. वि.–टूटा हुआ, भग्न, खंडित, शीर्ण; एक लिखावट, घसीट।

शिकस्तःअह्द (شکستہ عہد) फा. अ. वि.–जिसकी प्रतिज्ञा भंग हो गयी हो, भग्नव्रत, भग्नप्रतिज्ञ।

शिकस्तःउम्मीद (شکستہ امید) फा. वि.–जिसकी उम्मीद टूट गयी हो, हताश, भग्नाश।

शिकस्तःकमर (شکستہ کمر) फा. वि.–जिसकी कमर टूट गयी हो।

शिकस्तःक़ीमत (شکستہ قیمت) फा. अ. वि.–जिसके दाम गिर गये हों।

शिकस्तःख़ातिर (شکستہ خاطر) फा. अ. वि.–जिसका दिल टूट गया हो, भग्नहृदय।

शिकस्तःग़ुरूर (شکستہ غرور) फा. अ. वि.–जिसका घमंड मिट गया हो, गलितगर्व, भग्नदर्प।

शिकस्तःज़बाँ (شکستہ زباں) फा. वि.–हकला, तोतला, जो अटक-अटककर बोले; जो शुद्ध भाषा न बोले।

शिकस्तःज़ोर (شکستہ زور) फा. वि.–जिसकी शक्ति टूट गयी हो अर्थात् घट गयी हो, नष्टशक्ति, हतशक्ति।

शिकस्तःदिल (شکستہ دل) फा. वि.–टूटा हुआ दिल; हताश, नाउम्मीद; भग्नहृदय, दुःखी; नष्टोत्साह, भग्न-साहस, पस्तहिम्मत।

शिकस्तःदिली (شکستہ دلی) फा. स्त्री.–दिल टूट जाना; उम्मीद नष्ट हो जाना; साहस टूट जाना; दुःखी होना।

शिकस्तःनवीस (شکستہ نویس) फा. वि.–घसीट लिखनेवाला।

शिकस्तःनवीसी (شکستہ نویسی) फा. स्त्री.–घसीट लिखना, अस्पष्ट लिखावट।

शिकस्तःनाख़ून (شکستہناخن) फा. वि.–जिसके नाख़ून टूट गये हों, उपायहीन, लाचार, बेबस।

शिकस्तःपर (شکستہپر) फा. वि.–जिसके पर टूट गये हों, निराश्रय, असहाय, भग्नपक्ष।

शिकस्तःपा (شکستہپا) फा. वि.–जिसके पाँव टूट गये हों; अपाहिज; निःसहाय, असमर्थ, दीन।

शिकस्तःपाई (شکستہپائی) फा. स्त्री.–पाँव टूट जाना; अपाहिज हो जाना; लाचार हो जाना।

शिकस्तःबाज़ू (شکستہبازو) फा. वि.–जिसकी बाँह टूट गयी हो, भग्नबाहु, जिसका बराबर का साथी न रहा हो।

शिकस्तःबाल (شکستہبال) फा. वि.–दे. 'शिकस्तःपर'।

शिकस्तःरंग (شکستہرنگ) फा. वि.–जिसका रंग मंद पड़ गया हो, मंदवर्ण।

शिकस्तःहाल (شکستہحال) अ. फा. वि.–जिसकी आर्थिक दशा ख़राब हो गयी हो।

शिकस्तःहाली (شکستہحالی) अ. फा. स्त्री.–आर्थिक दशा का ख़राब हो जाना, ग़रीबी।

शिकस्तःहिम्मत (شکستہہمت) फा. अ. वि.–जिसकी हिम्मत टूट गयी हो, हतोत्साह, भग्नसाहस।

शिकस्त (شکست) फा. स्त्री.–पराजय, पराभव, हार; टूट-फूट, शिकस्तगी।

शिकस्तकुनिंदः (شکستکنندہ) फा. वि.–तोड़नेवाला, भंजक।

शिकस्तख़ुर्दः (شکستخوردہ) फा. वि.–हारा हुआ, पराजित, परास्त, पराभूत, विजित।

शिकस्तख़ुर्दगी (شکستخوردگی) फा. स्त्री.–हार जाना, पराभव, पराजय।

शिकस्तगी (شکستگی) फा. स्त्री.–टूटा-फूटा होना; टूट-फूट।

शिकस्ते अह्द (شکستت عہد) फा. अ. स्त्री.–प्रतिज्ञा का टूट जाना।

शिकस्ते क़ीमत (شکست قیمت) फा. अ. स्त्री.–दाम गिर जाना, मोल कम हो जाना।

शिकस्ते ख़्वाब (شکست خواب) फा. स्त्री.–नींद उचट जाना, सोते हुए जाग जाना।

शिकस्ते फ़ाश (شکست فاش) फा. स्त्री.–खुली हुई हार, ऐसी हार जिसमें संदेह न हो; बहुत बुरी और अपमानजनक हार।

शिकस्ते फ़ाहिश (شکست فاحش) फा. अ. स्त्री.–अपमानजनक हार, बहुत बुरी हार।

शिकस्ते रंग (شکست رنگ) फा. स्त्री.–रंग का हलका पड़ जाना।

शिकस्ते सख़्त (شکست سخت) फा. स्त्री.–दे. 'शिकस्ते फ़ाहिश'।

शिकस्तो रेख़्त (شکستو ریخت) फा. स्त्री.–गिरना और बनना, मकान आदि का गिर जाना और फिर बनना।

शिक़ा (شقا) अ. स्त्री.–दुर्भाग्य, बदक़िस्मती; कालचक्र, नुहूसत।

शिक़ाक़ (شقاق) अ. पुं.–विपरीतता, मुख़ालफ़त; शत्रुता; दुश्मनी; वैमनस्य, रंजिश।

शिकायत (شکایت) अ. स्त्री.–चुग़ली, पिशुनता; निंदा, बुराई; उपालंभ, उलाहना; किसी ग़लत काम की उसके मालिक या अफ़सर को सूचना, अनुयोग, परिवाद; रोग, बीमारी।

शिकायतकुनाँ (شکایتکناں) अ. फा. वि.–शिकायत करता हुआ, शिकायत करती हुई अवस्था में।

शिकायतकुनिंदः (شکایتکنندہ) अ. फा. वि.–परिवादी, अनुयोगी, शिकायत करनेवाला।

शिकायतगर (شکایتگر) अ. फा. वि.–शिकायत करनेवाला, अनुयोक्ता।

शिकायतन (شکایتاً) अ. वि.–शिकायत के रूप में।

शिकायतनामः (شکایتنامہ) अ. फा. पुं.–वह पुस्तक जिसमें शिकायतें लिखी जाती हों, परिवाद पुस्तक, कम्प्लैंट बुक।

शिकायतपेशः (شکایتپیشہ) अ. फा. वि.–जिसका काम केवल शिकायतें करना हो।

शिकायात (شکایات) अ. स्त्री.–'शिकायत' का बहु., शिकायतें।

शिकार (شکار) फा. पुं.–जंगली जानवरों का वध, मृगया, आखेट, अहेर; वह जानवर जो शिकार किया जाय, फँसा हुआ, ग्रस्त; वह व्यक्ति जिसके बातों में फँस जाने से काफ़ी लाभ और प्राप्ति हो।

शिकारगाह (شکارگاہ) फा. स्त्री.–शिकार खेलने की जगह, आखेटस्थल, मृगयावन।

शिकारबंद (شکاربند) फा. पुं.–वह डोर या रस्सी जिसमें शिकार को बाँधें।

शिकारी (شکاری) फा. वि.–आखेटक, लुब्धक, व्याध।

शिकारे जौर (شکار جور) फा. अ. पुं.–जिस पर बहुत अत्याचार हुआ हो।

शिकारे तग़ाफ़ुल (شکار تغافل) फा. अ. पुं.–जिसकी ओर से बहुत अधिक बेपरवाई बरती गयी हो।

शिकारे सितम (شکار ستم) फा. अ. पुं.–दे. 'शिकारे जौर'।

शिकाल (شکال) फा. पुं.–छल, धोखा, मक्र, फ़रेब

शिक़ूफ़ः (شکوفہ) फा. पुं.–दे. 'शिगूफ़ः'।

शिकेल (شکیل) फा. पुं.–छल, कपट, फ़रेब।

शिकेब (شکیب) फा. पुं.–धैर्य, धीरज, सब्र; सहनशीलता, सहिष्णुता, तहम्मुल।

शिकेबा (شکیبا) फा. वि.–धीर, साबिर; सहिष्णु, मुतहम्मिल।

शिकेबाई (شکیبائی) फा. स्त्री.–धैर्य, धीरज, सब्र; सहिष्णुता, तहम्मुल।

शिकोह (شکوہ) फा. पुं.–भय, त्रास, डर, दूसरे अर्थ के लिए दे. 'शुकोह'।

शिख़ाब (شخاب) अ. पुं.–ताज़ा निकला हुआ दूध।

शिख़ार (شخار) फा. स्त्री.–क्षार, सज्जी।

शिख़ोलीदः (شخولیدہ) फा. वि.–कुम्हलाया हुआ, खिन्न, पज़मुर्दः।

शिगर्फ़ (شگرف) फा. वि.–मोटा, स्थूल; पुष्ट, मज़बूत; वैभव, शानोशौकत।

शिगाफ़ः (شگافہ) फा. पुं.–मिंज्राब, सितार बजाने का छल्ला जो उँगली में पहनते हैं, वीणा-वादन।

शिगाफ़ (شگاف) फा. पुं.–दराज़, दरार, दर्ज़, (प्रत्य.) दरार डालनेवाला, जैसे—'ख़ाराशिगाफ़' पत्थर में दरार डालनेवाला।

शिगाफ़ज़दः (شگاف زدہ) फा. वि.–जिसमें दरार पड़ी हो, दारित।

शिगाफ़िंदः (شگافندہ) फा. वि.–शिगाफ़ डालनेवाला, चीरनेवाला, फाड़नेवाला।

शिगाफ़्तः (شگافتہ) फा. वि.–दरार पड़ा हुआ, फटा हुआ, विदीर्ण।

शिगाफ़्तनी (شگافتنی) फा. वि.–दरार पड़ने योग्य, फटने योग्य।

शिगाल (شگال) फा. पुं.–गीदड़, सियार, शृगाल।

शिगिफ़्त (شگفت) फा. पुं.–आश्चर्य, अचंभा, हैरत।

शिगुफ़्तः (شگفتہ) फा. वि.–मुकुलित, विकसित, खिला हुआ; प्रसन्न, हर्षित, मस्रूर।

शिगुफ़्तःख़ातिर (شگفتہ خاطر) फा. अ. वि.–प्रसन्नचित्त, प्रहृष्ट, ख़ुशदिल।

शिगुफ़्तःख़ातिरी (شگفتہ خاطری) फा. अ. स्त्री.–चित्त की प्रसन्नता, ख़ुशदिली।

शिगुफ़्तःतब्अ (شگفتہ طبع) फा. अ. वि.–दे. 'शिगुफ़्तःख़ातिर।

शिगुफ़्तःतब्ई (شگفتہ طبعی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शिगुफ़्तःख़ातिरी'।

शिगुफ़्तदिल (شگفتہ دل) फा. वि.–प्रसन्नमना, प्रफ़ुल्लात्मा।

शिगुफ़्तःदिली (شگفتہ دلی) फा. स्त्री.–मन की प्रसन्नता, प्रफुल्लता।

शिगफ़्तःपेशानी (شگفتہ پیشانی) फा. वि.–हँसमुख, प्रफुल्लमुख; सुशील, चारुशील, ख़ुशअख़्लाक़।

शिगुफ़्तःमिज़ाज (شگفتہ مزاج) फा. अ. वि.–दे. 'शिगुफ़्तःख़ातिर'।

शिगुफ़्तःमिज़ाजी (شگفتہ مزاجی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शिगुफ़्तःख़ातिरी'।

शिगुफ़्तःरू (شگفتہ رو) फा. वि.–हँसमुख, प्रसन्नमुख।

शिगुफ़्तःरूई (شگفتہ روئی) फा. स्त्री.–मुख की प्रसन्नता, मुख-प्रसाद।

शिगुफ़्त (شگفت) फा. स्त्री.–खिलावट, विकाश।

शिगुफ़्तगी (شگفتگی) फा. स्त्री.–खिलावट।

शिगूफ़ः (شگوفہ) फा. पुं.–कली, कलिका, ग़ुन्चः; बेल-बूटा; नयी बात, अचंभे की बात।

शिगूफ़ःकारी (شگوفہ کاری) फा. स्त्री.–बेल-बूटे बनाने का काम।

शिगूफ़ःतराशी (شگوفہ تراشی) फा. स्त्री.–नक़्शोनिगार, बेल-बूटे बनाना।

शिगूफ़ए नौ (شگوفۂ نو) फा. पुं.–नयी कली, नयी घटना।

शिजाअ (شجاع) अ. वि.–वीर, योद्धा, बहादुर, उर्दू में 'शुजाअ' ही बोलते हैं, परंतु शुद्ध 'शिजाअ' और 'शजाअ' भी हैं।

शिज्आन (شجعان) अ. पुं.–'शुजाअ' का बहु., वीर लोग।

शिता (شتا) अ. पुं.–शरद ऋतु, जाड़े का मौसिम, शीतकाल।

शिताफ़्तः (شتافتہ) फा. वि.–दौड़ा हुआ।

शिताब (شتاب) फा. वि.–शीघ्र, जल्द; तीव्र, तेज़, (स्त्री.) शीघ्रता, जल्दी।

शिताबकार (شتاب کار) फा. वि.–जल्दी मचानेवाला, उतावला।

शिताबकारी (شتاب کاری) फा. स्त्री.–उतावलापन, जल्दी मचाने का काम।

शिताबाँ (شتابان) फा. वि.–जल्दी करता हुआ; दौड़ता हुआ।

शिताबिंदः (شتابندہ) फा. वि.–दौड़नेवाला।

शिताबी (شتابی) फा. स्त्री.–शीघ्रता, तेज़ी।

शिताबीदः (شتابیدہ) फा. वि.–शीघ्रता किया हुआ।

शितालंग (شتالنگ) फा. पुं.–टख़ना, गट्टा।

शितुरग़ू (شترغو) तु. पुं.–एक बाजा।

शिना (شنا) फा. स्त्री.–तैरने का काम।

शिनावर (شناور) फा. पुं.–तैरनेवाला, तैराक।

शिनावरी (شناوری) फा. स्त्री.–तैरने का काम, पैराकी।

शिनाह (شناه) फा. स्त्री.–तैराकी, पैरने का काम।

शिनूसः (شنوسه) फा. पुं.–छींक।

शिपिश (شپش) फा. स्त्री.–जूँ, बालों में पड़नेवाला कीड़ा, दे. 'शुपुश' और 'शपुश', तीनों शुद्ध हैं।

शिप्लीदः (شپلیده) फा. वि.–निचोड़ा हुआ।

शिफ़ा (شفا) अ. स्त्री.–रोगमुक्ति, रोग के बाद स्वास्थ्य।

शिफ़ाए कामिल (شفاے کامل) अ. स्त्री.–पूरे तौर से रोगमुक्ति।

शिफ़ाख़ानः (شفاخانه) अ. फा.पुं.–रुग्णालय, चिकित्सालय, अस्पताल।

शिफ़ाख़्वाह (شفاخواه) अ. फा. वि.–रोगमुक्ति का इच्छुक।

शिफ़ागाह (شفاگاه) अ. फा. स्त्री.–रोगमुक्त होने का स्थान, स्वास्थ्य-सदन।

शिफ़ायाब (شفایاب) अ. फा. वि.–जिसने मरज़ से छुटकारा पा लिया हो, रोगमुक्त।

शिफ़ायाबी (شفایابی) अ. फा. स्त्री.–रोग से छुटकारा पा ज़ाना, रोगमुक्ति।

शिफ़ाह (شفاه) अ. पुं.–'शफ़त' का बहु., होंठ।

शिब [ब्ब] (شب) अ. स्त्री.–'फिटकरी', दे. 'शब', दोनों शुद्ध हैं।

शिबह (شبہ) अ. वि.–समान, तुल्य, सदृश, मिस्ल, दे. 'शिब्ह', दोनों शुद्ध हैं।

शिबित (شبت) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध साग, सोया।

शिब्क (شبک) अ. पुं.–चरख़े का तकला; तकले की टिकली।

शिब्र (شبر) अ. स्त्री.–बारह अंगुल की नाप, बित्ती, बालिश्त, वितस्ति।

शिब्ल (شبل) अ. पुं.–व्याघ्र-शावक, शेर का बच्चा।

शिब्ली (شبلی) अ. पुं.–एक बहुत बड़े मुसलमान महात्मा।

शिब्ह (شبہ) अ. वि.–दे. 'शिबह', दोनों शुद्ध हैं।

शिमः (شمه) फा. स्त्री.–मलाई, बालाई, क्षीरसार।

शिमाल (شمال) अ. पुं.–उत्तर, उदीची, शुमाल भी प्रचलित।

शिमालरूयः (شمال رویه) अ. फा. वि.–जिसका मुँह उत्तर की ओर हो।

शिमाली (شمالی) अ. वि.–उत्तरीय, उत्तर का।

शिम्मः (شمه) अ. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'शम्मः', यह उच्चारण अशुद्ध है।

शिम्र (شمر) अ. पुं.–हज़्रत इमाम हुसैन के शहीद करनेवाले का नाम।

शिम्शाद (شمشاد) फा. पुं.–दे. 'शम्शाद', दोनों शुद्ध हैं, परंतु उर्दू में 'शम्शाद' ही बोलते हैं, एक सुन्दर वृक्ष जिससे माशूक़ के क़द की उपमा देते हैं।

शियम (شیم) अ. स्त्री.–'शीमः' का बहु., स्वभाव, आदतें।

शियाफ़ (شیاف) अ. पुं.–'शाफ़ः' का बहु., परंतु एकवचन में व्यवहृत है, जौ के आकार की एक वटी जो आँखों में घिसकर लगाते हैं।

शिरा (شرا) अ. पुं.–मोल लेना, क्रयण; बेचना, विक्रयण।

शिराअ (شراع) अ. पुं.–नाव का पाल, बादबान, मरुत्पट।

शिराक (شراک) अ. पुं.–चप्पल, जूते या खड़ाऊँ की डोरी।

शिराके ना'लैन (شراک نعلین) अ. पुं.–जोतों का तस्मा।

शिर्क (شرک) अ. पुं.–ईश्वरत्व में ईश्वर के सिवा और को भी सम्मिलित करना, अनेकेश्वरवादी होना।

शिर्कत (شرکت) अ. स्त्री.–सम्मिलन, शुमूल; सहयोग, तआवुन; साझा, भागीदारी।

शिर्कतनामः (شرکت نامه) अ.फा.पुं.–साझेदारी का लिखित पत्र, भागपत्र।

शिर्कते ग़म (شرکت غم) अ. स्त्री.–दुःख में शरीक होना।

शिर्के ख़फ़ी (شرک خفی) अ. पुं.–ऐसा शिर्क जो देखने में शिर्क न जान पड़े।

शिर्के जली (شرک جلی) अ. पुं.–ऐसा शिर्क जो स्पष्ट रूप में शिर्क हो, जैसे––मूर्तिपूजा।

शिर्यान (شریان) अ. स्त्री.–वह रग जिसमें शुद्ध रक्त और प्राणवायु बहता है, शिरा, नाड़ी।

शिर्वान (شروان) फा. पुं.–ईरान का एक नगर।

शिर्वानी (شروانی) फा. वि.–शिर्वान का निवासी; शिर्वान से सम्बन्ध रखनेवाला।

शिल्लिक (شلک) तु. पुं.–बहुत-सी बंदूकों या तोपों का एक साथ दग़ना, बाढ़।

शिवा (شوا) फा. वि.–भुना हुआ, भृष्ट।

शिहाब (شہاب) अ. पुं.–उज्ज्वल और चमकदार तारा; अग्निज्वाला; टूटनेवाला तारा, उल्का।

शिहाबेसाक़िब (شہاب ثاقب) अ. पुं.–टूटनेवाला तारा, उल्का।

शिह्नः (شحنه) अ. पुं.–कोतवाल, शह्र की कोतवाली का निरीक्षक और संचालक।

शिह्नगी (شحنگی) अ. फा. स्त्री.–कोतवाल का पद, कोतवाल का काम, कोतवाली।

शी

शीअः (شیعہ) अ. पुं.–मुसलमानों का एक सम्प्रदाय, जो हज़्रत अली के अतिरिक्त बाक़ी ख़लीफ़ाओं को नहीं मानता।

शीई (شیعی) अ. वि.–शीअः सम्प्रदाय का व्यक्ति, शीअः।

शीदी (شیدی) अ. पुं.–हब्शी, हबश का रहनेवाला।

शीमः (شیمہ) अ. स्त्री.–प्रकृति, स्वभाव, आदत।

शीम (شیم) फा. स्त्री.–सौरी मछली।

शीरंदाज़ (شیرانداز) फा. पुं.–मनुष्य या पशु का स्तन जिसमें दूध भरा हो।

शीरः (شیرہ) फा. पुं.–फलों का निचोड़ा हुआ रस; दवाओं का पीसकर निकाला हुआ रस; शकर की चाश्नी।

शीर (شیر) फा. पुं.–दूध, क्षीर, दुग्ध; पेड़ या पत्तों का दूध की शक्ल का रस।

शीरअंदाज़ (شیرانداز) फा. पुं.–दे. 'शीरंदाज़'।

शीरअफ़्ज़ा (شیرافزا) फा. वि.–दूध बढ़ानेवाला, वह ओषधि जिसके सेवन से दूध अधिक उत्पन्न हो, क्षीरवर्द्धक।

शीरख़ानः (شیرخانہ) फा. पुं.–मधुशाला, मदिरालय, शराबखाना; दुग्धालय, पयःशाला।

शीरख़िश्त (شیرخشت) फा. स्त्री.–एक गोंद जो दवा के काम आता और अच्छा रेचक है।

शीरख़ुर्मा (شیرخرما) फा. पुं.–दूध में भीगे हुए छुहारे।

शीरख़्वारः (شیرخوارہ) फा. वि.–दूध पीनेवाला शिशु, स्तनपायी।

शीरख़्वार (شیرخوار) फा. वि.–दुधमुँहा, स्तनपायी।

शीरख़्वारगी (شیرخوارگی) फा. स्त्री.–बच्चे की दूध पीने की आयु।

शीरगर्म (شیرگرم) फा. वि.–गुनगुना, नीमगर्म, कदुष्ण।

शीरदान (شیردان) फा. पुं.–दूध देनेवाले पशु की दूध की थैली, ऐन; दूध रखने का बर्तन, दुग्धपात्र।

शीरफ़रोश (شیرفروش) फा. वि.–दूध बेचनेवाला।

शीरबा (شیربا) फा. स्त्री.–खीर, शीरबिरंज।

शीरबिरंज (شیربرنج) फा. स्त्री.–दूध में पके हुए चावल, खीर।

शीरमस्त (شیرمست) फा. वि.–कुलेलें करनेवाला बच्चा।

शीरमाल (شیرمال) फा. स्त्री.–एक रौग़नी रोटी जो दूध में आटा गूँधकर बनती है।

शीराबः (شیرابہ) फा. पुं.–पोस्त का दाना, ख़शख़ाश; ख़शख़ाश का शीरः।

शीराज़ः (شیرازہ) फा. पुं.–क्रम, तर्तीब; किताब की जुज़बंदी; संघटन, तंज़ीम—"शीराज़ः खुल गया है चमन की किताब का।"

शीराज़ःबंदी (شیرازہ بندی) फा. स्त्री.–संघटन, तंज़ीम; पुस्तक की जुज़बंदी।

शीराज़ (شیراز) फा. पुं.–ईरान का एक प्रसिद्ध और प्राचीन नगर जहाँ बहुत बड़े-बड़े कवि हुए हैं, हाफ़िज़ और सा'दी वहाँ के सर्वोत्तम कवि हैं।

शीरीं (شیریں) फा. वि.–मधुर, मीठा; सरस, बामज़ः; इतिहास प्रसिद्ध फ़रहाद की प्रेयसी।

शीरींअदा (شیریں ادا) फा. वि.–जिसकी अदाएँ दिल लुभानेवाली हों।

शीरींअदाई (شیریں ادائی) फा. स्त्री.–अदाओं का दिल को लुभाना।

शीरींकलाम (شیریں کلام) फा. अ. वि.–दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींकलामी (شیریں کلامی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींकार (شیریں کار) फा. वि.–शीरीं अदा; शिष्ट, सभ्य; पुरमज़ाक़, विनोदी।

शीरींगुफ़्तार (شیریں گفتار) फा. वि.–दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींगुफ़्तारी (شیریں گفتاری) फा. स्त्री.–दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींज़बाँ (شیریں زباں) फा. वि.–जिसकी बातचीत में मिठास और रस हो, प्रियंवद, मधुरभाषी, मंजुघोष।

शीरींज़बानी (شیریں زبانی) फा. स्त्री.–बातचीत की मिठास।

शीरींदहाँ (شیریں دہاں) फा. वि.–दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींदहानी (شیریں دہانی) फा. स्त्री.–दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींदहन (شیریں دہن) फा. वि.–दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींदहनी (شیریں دہنی) फा. स्त्री.–दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींनफ़स (شیریں نفس) अ. फा. वि.–दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींनफ़सी (شیریں نفسی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींमक़ाल (شیریں مقال) फा. अ. वि.–दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींमक़ाली (شیریں مقالی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींलब (شیریں لب) फा. वि.–जिसके होंठ मीठे हों, अर्थात् नायिका।

शीरींलबी (شیریں لبی) फा. स्त्री.–होंठों की मिठास, नायिकापन।

शीरींसुख़न (شیریں سخن) फा. वि.—दे. 'शीरींज़बाँ'।

शीरींसुख़नी (شیریں سخنی) फा. स्त्री.—दे. 'शीरींज़बानी'।

शीरींहरकात (شیریں حرکات) फा.अ.वि.—दे. 'शीरींअदा'।

शीरींहरकाती (شیریں حرکاتی) फा. अ. स्त्री.—दे. 'शीरींअदाई'।

शीरीनक (شیرینک) फा. पुं.—मुहासा।

शीरीनिए गुफ़्तार (شیرینئی گفتار) फा. स्त्री.—बातचीत की मिठास, वार्तालाप का रस।

शीरीनिए तक़्रीर (شیرینئی تقریر) फा. अ. स्त्री.—दे. 'शीरीनिए गुफ़्तार'।

शीरीनिए लब (شیرینئی لب) फा. स्त्री.—अधरामृत, होठों की मिठास।

शीरीनिए सुख़न (شیرینئی سخن) फा. स्त्री.—दे. 'शीरीनिए गुफ़्तार।

शीरीनी (شیرینی) फा. स्त्री.—मिठास, माधुर्य, घुलावट; मिठाई, मिष्टान्न।

शीरे गर्म (شیر گرم) फा. पुं.—गर्म दूध।

शीरे ज़क़्क़ूम (شیر زقوم) फा. अ. पुं.—थूहड़ का दूध।

शीरे मादर (شیر مادر) फा. पुं.—माँ का दूध, मातृक्षीर।

शीरे मुर्ग़ (شیر مرغ) फा. पुं.—ऐसी चीज़ जिसका मिलना असंभव हो।

शीरे लुआब (شیر لعاب) फा. अ. पुं.—मधु, शहद।

शीरो शकर (شیرو شکر) फा. वि.—बहुत अधिक मेलजोल, घनिष्ठता; घनिष्ठ, बहुत मेली।

शीशः (شیشہ) फा. पुं.—काँच, कंच; बोतल; दर्पण, आईना; काँच की बहुत बारीक सुराही-जैसी बड़े पेट और तंग मुँह की बोतल जो पहले चलती थी, शराब और गुलाबजल भरने के काम आती थी।

शीशःगर (شیشہ گر) फा. वि.—काँच का सामान बनानेवाला, सीसगर।

शीशःगरी (شیشہ گری) फा. स्त्री.—काँच का सामान बनाना।

शीशःजाँ (شیشہ جاں) फा. वि.—दे. 'शीशःदिल'।

शीशःदिल (شیشہ دل) फा. वि.—जिसका दिल बहुत ही नाज़ुक हो।

शीशःबाज़ (شیشہ باز) फा. वि.—धूर्त, छली, मक्कार; मदारी, बाज़ीगर।

शीशःबाज़ी (شیشہ بازی) फा. स्त्री.—धूर्तता, चालाकी; मदारी का खेल, बाज़ीगरी।

शीशए दिल (شیشۂ دل) फा. पुं.—शीशे की तरह बहुत ही नाज़ुक दिल।

शीशए मै (شیشۂ مے) फा. पुं.—शराब की बोतल।

शीशए साअत (شیشۂ ساعت) फा. अ. पुं.—बालू की घड़ी।

शीशाक (شیشاک) फा. पुं.—चार तार की वीणा या रबाब; साल भर का बकरा या बकरी।

शीस (شیث) अ. पुं.—एक पैग़म्बर।

शीहः (شیہہ) फा. पुं.—घोड़े की हिनहिनाहट।

शीहए अस्प (شیہۂ اسپ) फा. पुं.—घोड़े की हिनहिनाहट।

शु

शुअरा (شعرا) अ. पुं.—'शाइर' का बहु., शाइर लोग, कविगण।

शुआअ (شعاع) अ. स्त्री.—रश्मि, मयूख, दीधिति, अंशु, किरण; ज्योति, प्रकाश, आलोक, नूर।

शुआई (شعاعی) अ. वि.—किरणों का; किरणों से सम्बन्धित।

शुआए माह (شعاع ماہ) अ. फा. स्त्री.—ज्योत्स्ना, चाँदनी; चंद्रकिरण, चाँद की किरन।

शुआए मेह्र (شعاع مہر) अ. फा. स्त्री.—सूरज की किरण, सूर्यरश्मि, अर्चि; आतप, धूप।

शुऊब (شعوب) अ. पुं.—'शा'ब' का बहु., गढ़े, ग़ार; कंदराएँ, गुफाएँ।

शुऊर (شعور) अ. पुं.—संज्ञा, होश; विवेक, समझ, अच्छे बुरे की पहचान; शिष्टता, सलीक़ः; सभ्यता, तमीज़; जानकारी, वाक़िफ़ीयत।

शुऐब (شعیب) अ. पुं.—एक पैग़म्बर।

शुक़ूक़ (شقوق) अ. पुं.—विपादिका, बिवाई, पाँव फटने का रोग; 'शक़' का बहु., दराज़ें, दरारें, शिगाफ़।

शुकूक (شکوک) अ. पुं.—'शक' का बहु., शंकाएँ, शुब्हात।

शुकोह (شکوہ) फा. स्त्री.—शानोशौकत, रोबदाब, कर्रोफ़र।

शुकोहे अल्फ़ाज़ (شکوہ الفاظ) फा. अ. स्त्री.—लेख में भारी-भारी शब्दों का प्रयोग, शब्दाडंबर, उत्कलिका।

शुक़्क़ः (شقّہ) अ. पुं.—पर्चा, काग़ज़ का टुकड़ा; पत्र, ख़त, चिट्ठी; आदेशपत्र, हुक्मनामा।

शुक्र (شکر) अ. पुं.—कृतज्ञता, शुक्रगुज़ारी; धन्यवाद, शुक्रियः।

शुक्रगुज़ार (شکرگزار) अ. फा. वि.—कृतज्ञ, आभारी, मम्नून।

शुक्रगुज़ारी (شکرگزاری) अ.फा.स्त्री.—कृतज्ञता, मम्नूनीयत।

शुक़्त (شقرت) अ. स्त्री.–लालिमा लिये हुए पीला रंग; लालिमा लिये हुए काला रंग।

शुक्रानः (شکرانہ) अ. फा. पुं.–किसी काम की सफलता पर प्रयास करनेवाले को सम्मानार्थ दिया जानेवाला धन; शुक्रिया।

शुक्रियः (شکریہ) अ. पुं.–धन्यवाद, एक शब्द जो कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बोलते हैं, थैंक्स।

शुक्रीयः (شکریہ) अ. पुं.–दे. 'शुक्रियः', उर्दू में वही प्रचलित है, यद्यपि शुद्ध यही है।

शुक्रे ने'मत (شکر نعمت) अ. पुं.–उपकार और प्रदान आदि का शुक्रियः।

शुगुन (شگن) फा. पुं.–दे. 'शुगून', शकुन।

शुग़ुल (شغل) अ. पुं.–दे. 'शुग़्ल' या 'शग़्ल', वही प्रचलित हैं, परंतु शुद्ध यह भी है।

शुगून (شگون) फा. पुं.–शकुन, फ़ाल।

शुग़्ल (شغل) अ. पुं.–काम में लगना, मस्रूफ़ियत; व्यवसाय, धंधा; काम, मशग़लः।

शुग़्ले बादः (شغل بادہ) अ. फा. पुं.–शराब पीने का मश्ग़लः।

शुग़्ले मै (شغل مے) अ. फा. पुं.–दे. 'शुग़्लेबादः।

शुजाअ (شجاع) अ. वि.–वीर, शूर, योद्धा, बहादुर।

शुजाआनः (شجاعانہ) अ. फा. वि.–वीरों-जैसा, बहादुरों-जैसा; वीरतापूर्ण, बहादुरी का।

शुतुर (شتر) फा. पुं.–उष्ट्र, केमिल, ऊँट।

शुतुरअंदाम (شتراندام) फा. वि.–ऊँट-जैसे लम्बे डील-डौल का, उष्ट्रांग।

शुतुरअराबः (شترارابہ) फा. पुं.–ऊँटगाड़ी, उष्ट्रयान।

शुतुरकीनः (شترکینہ) फा. पुं.–वह व्यक्ति जो दिल में द्वेष रखता हो और बरसों भी न भूलता हो।

शुतुरख़ानः (شترخانہ) फा. पुं.–ऊँट रहने का स्थान, उष्ट्रशाला।

शुतुरख़ार (شترخار) फा. पुं.–एक झाड़ी जिसमें काँटे होते हैं और ऊँट बहुत खाता है, ऊँटकटारा।

शुतुरग़म्ज़ः (شترغمزہ) फा. अ. पुं.–व्यर्थ का नख़रा; बुढ़ापे के हाव-भाव।

शुतुरगाव (شترگاؤ) फा. पुं.–ऊँट की आकृति की एक गाय।

शुतुरगुर्बः (شترگربہ) फा. पुं.–काव्य का एक दोष, जिसमें कहीं एकवचन हो और उसी के लिए दूसरी जगह बहुवचन।

शुतुरदिल (شتردل) फा. वि.–डरपोक, थुड़दिला, भीरु, बुज़दिल।

शुतुरदिली (شتردلی) फा. स्त्री.–डरपोकपन, भीरुता, बुज़दिली।

शुतुरनाल (شترنال) तु. स्त्री.–एक तोप जो ऊँट पर लादी जाती थी।

शुतुरपा (شترپا) फा. वि.–ऊँट-जैसे पाँववाला, उष्ट्रपद; सूरजमुखी का फूल।

शुतुरबान (شتربان) फा. वि.–ऊँट पालनेवाला, उष्ट्रपाल।

शुतुरमुर्ग़ (شترمرغ) फा. पुं.–एक बहुत बड़ा पक्षी जो अफ़्रीक़ा में होता है, उष्ट्र पक्षी।

शुतुरसवार (شترسوار) फा. वि.–ऊँट पर चढ़नेवाला।

शुतुरे बेमिहार (شتر بےمہار) फा. पुं.–वे नकेल का ऊँट, अर्थात् स्वेच्छाचारी, निरंकुश, ख़ुदराय।

शुतुलुम (شتلم) अ. पुं,–अत्याचार, अन्याय, ज़ुल्म।

शुदः शुदः (شدہ شدہ) फा. वि.–शनैः-शनैः, धीरे-धीरे; एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे को इसी तरह आगे।

शुदनी (شدنی) फा. स्त्री.–होनहार, होनी, अवश्यंभावी, भवितव्य, दुर्निवार्य।

शुदयार (شدیار) फा. स्त्री.–जोती हुई तैयार ज़मीन।

शुन्अत (شنعت) अ. स्त्री.–बदी, बुराई।

शुन्क़ार (شنقار) अ. पुं.–एक शिकारी चिड़िया।

शुपुश (شپش) फा. स्त्री.–बालों में पड़नेवाला कीड़ा, जूँ, लोमयूक, बारकीट, स्वेदज।

शुफ़्अः (شفعہ) अ. पुं.–पड़ोस के मकान या ज़मीन पर बिकते समय होनेवाला हक़, हक़्क़े हमसायगी।

शुफ़आ (شفعا) अ. पुं.–'शफ़ीअ' का बहु., सुफ़ारिश करनेवाले।

शुबान (شبان) अ. पुं.–भेड़-बकरी चरानेवाला, गड़रिया, अजाजीवी, मेषपाल।

शुब्बान (شبان) अ. पुं.–'शाब' का बहु., जवान लोग।

शुब्बाब (شباب) अ. पुं.–'शाब' का बहु., जवान लोग।

शुब्हः (شبہہ) अ. पुं.–आशंका, संदेह, शंका शक; भ्रम, वह्म।

शुब्हात (شبہات) अ. पुं.–'शुब्हः' का बहु., शंकाएँ, शुब्हे।

शुमारः (شمارہ) फा. पुं.–गिनती, शुमार; नंबर, संख्या।

शुमार (شمار) फा. पुं.–गिनती, गिनना; अदद, संख्या; हिसाब, गिनती; जोड़, मीज़ान।

शुमारकुनिंदः (شمارکنندہ) फा. वि.–गिननेवाला, हिसाब लगानेवाला, गणक।

शुमारिंदः (شمارندہ) फा. वि.–शुमार करनेवाला; गिननेवाला; हिसाब लगानेवाला।

शुमारी (شماری) फा. प्रत्य.–शुमार करने का काम, जैसे—'मर्दुमशुमारी' जनगणना।

शुमुर्दः (شمردہ) फा. वि.–गणित, गिना हुआ।

शुमुर्दनी (شمردنی) फा. वि.–गिनने के योग्य; हिसाब लगाने के योग्य; जोड़ने के योग्य।

शुमूअ (شموع) अ. स्त्री.–'शम्अ' का बहु., शम्एँ, दिए, चिराग़।

शुमूम (شموم) अ. स्त्री.–सूँघने की चीज़।

शुमूल (شمول) अ. स्त्री.–संमिलन, शामिल होना।

शुमूलीयत (شمولیت) अ. स्त्री.–दे. 'शुमूल'।

शुमूस (شموس) अ. पुं.–'शम्स' का बहु., बहुत-से सूरज; बहुत-सी किरणें।

शुयूअ (شیوع) अ. पुं.–प्रकट न होना ज़ाहिर होना; सबमें फैलना, प्रसार।

शुयूख़ (شیوخ) अ. पुं.–'शैख़' का बहु.; बूढ़े लोग; अपने गोत्र के बड़े लोग।

शुरका (شرکا) अ. पुं.–'शरीक' का बहु., साझेदार लोग; किसी काम के करने में शामिल लोग।

शुरकाए कार (شرکاے کار) अ. फा. पुं.–किसी काम के करने में शरीक, किसी काम में परस्पर एक दूसरे के सहायक।

शुरकाए तिजारत (شرکاے تجارت) अ. पुं.–व्यवसाय के भागीदार।

शुरफ़ा (شرفا) अ. पुं.–'शरीफ़' का बहु.; कुलीन लोग; सज्जन लोग।

शुरफ़ाए वक़्त (شرفاے وقت) अ. पुं.–अपने समय के प्रतिष्ठित लोग।

शुरफ़ाए शह्र (شرفاے شہر) अ. फा. पुं.–नगर के प्रतिष्ठित और सम्मानित लोग।

शुरफ़ाए ज़माँ (شرفاے زماں) अ. फा. पुं.–शुरफ़ाए वक़्त, अपने समय के प्रतिष्ठित जन।

शुरूअ (شروع) अ. वि.–प्रारंभ, अनुष्ठान, इब्तिदा, आग़ाज़; आदि, शुरूआत।

शुरूआत (شروعات) अ. स्त्री.–आरम्भ, आग़ाज़।

शुरूए कार (شروع کار) अ. फा. पुं.–काम की शुरूआत, अनुष्ठान।

शुरूए शबाब (شروع شباب) अ. पुं.–युवावस्था का प्रारंभ-काल, यौवनारंभ।

शुरूक़ (شروق) अ. पुं.–आभा, प्रकाश, रौशनी; सूर्योदय, सूरज का उदय।

शुरूत (شروط) अ. स्त्री.–'शर्त' का बहु., शर्तें।

शुरूर (شرور) अ. पुं.–'शर' का बहु., शरारतें।

शुरूह (شروح) अ. स्त्री.–'शर्ह' का बहु., शर्हें, टीकाएँ।

शुर्तः (شرطہ) अ. पुं.–पुलिस का आदमी, आरक्षी; चिह्न, निशान; नाव के लिए अनुकूल वायु; लक्षण, अलामत।

शुर्त (شرط) अ. पुं.–नाव के लिए अनुकूल वायु; लक्षण, अलामत।

शुर्फ़ः (شرفہ) फा. पुं.–कँगूरा, मंडप।

शुर्ब (شرب) अ. पुं.–पीना, पान; शराब पीना, मद्यपान।

शुर्बुलयहूद (شرب الیہود) अ. पुं.–सबसे छिपाकर शराब पीना।

शुर्बे मुदाम (شرب مدام) अ. पुं.–शराब पीना, मद्यपान; हमेशा शराब पीना।

शुलः (شلہ) फा. पुं.–एक प्रकार का खाना जिसमें चावल गोश्त में हरीसे की तरह पकाये जाते हैं, पुलाव।

शुल (شل) फा. पुं.–एक फल, बेल, बेलुआ।

शुल्लः (شلہ) फा. स्त्री.–भग, योनि; मासिक रक्त का लत्ता; गली में गंदी चीज़ें और कूड़ा डालने का स्थान।

शुवाज़ (شواظ) अ. पुं.–अग्नि, वह्नि, आग; अग्निज्वाला, अग्निशिखा, लपट।

शुवात (شوات) फा. पुं.–चकवा पक्षी, सुर्ख़ाब।

शुश (شش) फा. पुं.–फेफड़ा, फुप्फुस, क्लोम।

शुस्तः (شستہ) फा. वि.–मार्जित, शुद्ध, धुला हुआ; स्वच्छ, साफ; सभ्य, शिष्ट, बातमीज़; शिक्षित, पढ़ा-लिखा; संस्कृत, मुजल्ला; सज्जन, शरीफ़।

शुस्तःओ रुफ़्तः (شستہ و رفتہ) फा. वि.–स्वच्छ और शुद्ध, पाक और साफ़।

शुस्तःरू (شستہ رو) फा. वि.–मुँह धोये हुए।

शुस्त (شست) फा. स्त्री.–धुलाई, सफ़ाई।

शुस्तगी (شستگی) फा. स्त्री.–शुद्धता, सफ़ाई; सभ्यता, तहज़ीब; शिक्षित होना; सज्जनता।

शुस्तो शू (شست و شو) फा. स्त्री.–धुलाई, मँजाई, सफ़ाई।

शुहुब (شہب) अ. पुं.–'शिहाब' का बहु., टूटनेवाले तारे, उल्कागण।

शुहूद (شہود) अ. पुं.–'शाहिद' का बहु., साक्षिगण, गवाह लोग; उपस्थिति, मौजूदगी; प्रत्यक्षता, आमना-सामना।

शुहूर (شہور) अ. पुं.–'शह्र' का बहु., महीने,।

शुह्ः (شہرہ) अ. पुं.–ख्याति, प्रसिद्धि, शुह्रत; कीर्ति, नामवरी; यश, फ़ैज़।

शुह्ःआफ़ाक़ (شہرۂ آفاق) अ. वि.–जो सारे संसार में प्रसिद्ध हो, विश्वविख्यात।

शुह्ःवर (شہرہ ور) अ. फा. वि.–ख्यातिप्राप्त, प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

शुह्रए अनाम (شہرۂ انام) अ. वि.–दे. 'शुह्रए आफ़ाक़।

शुह्रए आफ़ाक़ (شہرۂ آفاق) अ. वि.–विश्व-विख्यात, जगत्प्रसिद्ध।

शुह्रत (شہرت) अ. स्त्री.–प्रसिद्धि, ख्याति, शुह्रः; कीर्ति यश, नामवरी; किसी विशेष काम या कला में प्रवीणता और हस्त-कौशल की प्रसिद्धि।

शुह्रतलब (شہرتطلب) अ. वि.–अपनी कीर्ति और यश की कथाएँ दूसरों तक पहुँचाने का अभिलाषी।

शुह्रततलबी (شہرتطلبی) अ. स्त्री.–अपनी प्रसिद्धि और ख्याति की चाह।

शुह्रतपरस्त (شہرتپرست) अ. फा. वि.–शुह्रत का भूखा, अपनी नामवरी की चर्चा सुनने के लिए उत्कंठित।

शुह्रतपरस्ती (شہرتپرستی) अ. फा. स्त्री.–अपनी कीर्ति गान सुनने की उत्कंठा।

शुह्रतपसंद (شہرتپسند) अ. फा. वि.–जो चाहता हो कि उसका यशगान सब में हो।

शुह्रतपसंदी (شہرتپسندی) अ. फा. स्त्री.–अपने यश गान को सबमें फैलाने की लालसा।

शुह्रतयाफ़्तः (شہرتیافتہ) अ. फा. वि.–प्रसिद्ध, मशहूर, ख्यातिप्राप्त।

शुह्रतयाब (شہرتیاب) अ. फा. वि.–ख्यातिप्राप्त, प्रसिद्ध।

शू

शूख़ (شوخ) फा. पुं.–मैल-कुचैल, मैल, गंदगी।

शूख़गीं (شوخگیں) फा. वि.–मैला, गंदा, मलिन।

शूनीज़ (شونیز) फा. पुं.–कलौंजी, प्याज़ का बीज।

शूम (شوم) फा. वि.–अशुभ, अनिष्टकर, मनहूस; अकल्याणकर, नामुबारक; कृपण, मक्खीचूस।

शूमक़दम (شومقدم) फा. अ. वि.–जिसका आगमन अनिष्टकर हो।

शूमताले' (شومطالع) फा. अ. वि.–हतभाग्य, भाग्यहीन, बदक़िस्मत।

शूमिए आ'माल (شومئی اعمال) फा. अ. स्त्री.–कर्मों की निकृष्टता, पापाचार।

शूमिए क़िस्मत (شومئی قسمت) फा. अ. स्त्री.–भाग्य की निकृष्टता, भाग्य का खोटापन।

शूमिए तक़्दीर (شومئی تقدیر) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शूमिए क़िस्मत'।

शूमिए ताले' (شومئی طالع) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शूमिए क़िस्मत'।

शूमिए बख़्त (شومئی بخت) फा. स्त्री.–दे. 'शूमिए क़िस्मत'।

शूमी (شومی) फा. वि.–अनिष्ट, अशुभ, अकल्याण, नुहूसत; कृपणता, कंजूसी; खोट, बुराई।

शूरा (شوریٰ) अ. पुं.–परामर्श, सलाह; विचार-विनिमय, तबादलए ख़यालात; हितोपदेश, नसीहत।

शूरागाह (شوریٰگاہ) अ. फा. स्त्री.–आपस में परामर्श करने का स्थान, मंत्रणालय, प्रेक्षागार।

शे

शेख़ी (شیخی) तु. स्त्री.–डींग, लाफ़; हेकड़ी, शान; दे. 'शैख़ी'।

शेफ़्तः (شیفتہ) फा. वि.–मुग्ध, आसक्त, आशिक।

शेफ़्तगी (شیفتگی) फा. स्त्री.–मोह, आसक्ति, फ़िरेफ़्तगी।

शेब (شیب) फा. वि.–निचाई, निशेब।

शेरंदाम (شیراندام) फा. वि.–वह व्यक्ति जो शेर के साहस का हो; वह व्यक्ति जिसका सीना चौड़ा, कमर पतली और साहसी हो।

शे'र (شعر) अ. पुं.–दो मिस्रों का समाहार, बैत।

शे'र (شیر) फा. पुं.–व्याघ्र, सिंह, पंचानन, केसरी, बाघ।

शेरअंदाम (شیراندام) फा. वि.–दे. 'शेरंदाम'।

शेरअफ़्गन (شیرافگن) फा. वि.–शेर को परास्त करनेवाला, व्याघ्रविजेता।

शे'रआशोब (شعرآشوب) अ. फा. वि.–वह पद्य जिसमें काव्यकला की अनाड़ियों के हाथों दुर्गति का वर्णन हो।

शे'रख़्वाँ (شعرخواں) अ. फा. वि.–शेर पढ़नेवाला।

शे'रख़्वानी (شعرخوانی) अ. फा. स्त्री.–शेर पढ़ना; एक जगह बैठकर परस्पर शेर सुनना-सुनाना।

शेरगीर (شیرگیر) फा. वि.–जो व्यक्ति अधिक शराब पीकर भी बेहोश न हो; प्रतिष्ठित व्यक्ति; मदोन्मत्त, मस्त।

शे'रगो (شعرگو) अ. फा. वि.–शे'र कहनेवाला, कवि, शाइर।

शे'रगोई (شعرگوئی) अ. फा. स्त्री.–शे'र कहना, कविता करना।

शेरदहाँ (شیردہاں) फा. वि.–जिसका मुँह शेर-जैसा हो, व्याघ्रमुख।

शेरदिल (شیردل) फा. वि.–जिसका हृदय शेर-जैसा वीर हो, बहुत बड़ा वीर।

शे'रफ़ह्म (شعرفہم) अ. वि.–शे'र के गुण-दोष समझनेवाला, रसज्ञ, सहृदय, काव्य-मर्मज्ञ।

शे'रफ़ह्मी (شعرفہمی) अ. स्त्री.–शे'र समझना, काव्य-मर्मज्ञता, काव्य-निपुणता।

शेरबचः (شیربچہ) फा. पुं.–शेर का बच्चा, सिंह-शावक।

शेरमर्द (شیرمرد) फा. वि.–शेर-जैसे दिल गुर्दे का मनुष्य, पुरुष-केसरी।

शेरमाही (شیرماہی) फा. स्त्री.–एक बहुत बड़ी मछली।

शेरसवार (شیرسوار) फा. वि.–शेर पर चढ़नेवाला, सिंहवाहन, सिंहयान।

शेरानः (شیرانہ) फा. वि.–शेरों-जैसा; वीरों-जैसा, वीरोचित।

शे'री (شعری) अ. वि.–शे'र का, काव्य का; काव्य-सम्बन्धी।

शे'रीयत (شعریت) अ. स्त्री.–शे'रपन, काव्यकला का रस।

शेरे आबी (شیر آبی) फा. पुं.–पानी का शेर, जलव्याघ्र।

शेरे क़ालीं (شیر قالیں) फा. पुं.–क़ालीन पर बना हुआ शेर जो कोई अनिष्ट नहीं कर सकता।

शेरे ख़ुदा (شیر خدا) फा. पुं.–हज़रत अली की उपाधि, असदुल्लाह।

शे'रे ख़ुश्क (شعر خشک) अ. फा. पुं.–ऐसा शे'र जिसमें कोई रस न हो।

शेरे ज़ियां (شیرژیاں) फा. पुं.–फाड़ खानेवाला शेर।

शे'रे तर (شعر تر) अ. फा. पुं.–काव्यकलापूर्ण शे'र, सरस शे'र।

शेरे नयस्ताँ (شیر نیستاں) फा. पुं.–जंगल में रहनेवाला शेर।

शेरे बब्र (شیر ببر) फा. पुं.–एक प्रकार का शेर जो सबसे अधिक भयानक होता है, सिंह।

शेरे यज़्दाँ (شیر یزداں) फा. पुं.–दे. 'शेरे ख़ुदा'।

शे'रोअदब (شعروادب) अ. पुं.–दे. 'शेरो सुख़न'।

शे'रोसुख़न (شعروسخن) अ. फा. पुं.–कविता, काव्य; साहित्य, अदब।

शेवः (شیوہ) फा. पुं.–शैली, पद्धति, परिपाटी, ढंग, तर्ज़, तरीक़ा।

शेवए ज़ुल्म (شیوۂ ظلم) फा. अ. पुं.–अत्याचार का ढंग।

शेवए बेदाद (شیوۂ بیداد) फा. पुं.–अनीति और अत्याचार का तरीक़ा।

शेवए लुत्फ़ (شیوۂ لطف) फा. अ. पुं.–कृपा और दया का तरीक़ा।

शेवन (شیون) फा. पुं.–रोदन, विलाप, रोना-पीटना; मातम, मृतशोक।

शेवनगर (شیون گر) फा. वि.–विलाप करनेवाला, रोने-पीटनेवाला।

शेवा (شیوا) फा. वि.–भाषण-पटु, कलापूर्ण भाषा में बातचीत करनेवाला।

शेवाज़बाँ (شیوازباں) फा. वि.–दे. 'शेवाबयाँ'।

शेवाज़बानी (شیوازبانی) फा. स्त्री.–दे. 'शेवाबयानी'।

शेवाबयाँ (شیوابیاں) फा. अ. वि.–जिसकी बातचीत बहुत ही सुन्दर और कलापूर्ण हो।

शेवाबयानी (شیوابیانی) फा. अ. स्त्री.–बातचीत की पटुता और सुन्दरता।

शै

शै (شے) फा. स्त्री.–वस्तु, पदार्थ, द्रव्य, चीज़।

शैए मक्फ़ूलः (شے مکفولہ) अ. स्त्री.–वह चीज़ जो गिरवी हो, बंधक; वह जायदाद जो रुपये के बदले रेहनदार के क़ब्ज़े में हो।

शैए मत्लूबः (شے مطلوبہ) अ. स्त्री.–वह चीज़ जिसकी आवश्यकता हो।

शैए मर्हूनः (شے مرہونہ) अ. स्त्री.–वह चीज़ जो रेहन अर्थात् बंधक हो।

शैए लतीफ़ (شے لطیف) अ. स्त्री.–प्रतिभा, ज़हानत।

शैख़ (شیخ) अ. पुं.–बूढ़ा, वृद्ध; अध्यक्ष, सरदार; प्रतिष्ठित, श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग; कुल का नायक।

शैख़ुत्तरीक़त (شیخ الطریقت) अ. पुं.–धर्मगुरु, पीर, मुर्शिद।

शैख़ुत्ताइफ़ः (شیخ الطائفہ) अ. पुं.–अपने गोत्र या पार्टी का अध्यक्ष, दलपति।

शैख़ुर्रईस (شیخ الرئیس) अ. पुं.–रईसों का सरदार; बू अली सीना की उपाधि।

शैख़ुल इस्लाम (شیخ الاسلام) अ. पुं.–इस्लामी धर्मशास्त्र का सबसे बड़ा विद्वान्।

शैख़ुल जामिअः (شیخ الجامعہ) अ. पुं.–यूनीवर्सिटी (विश्वविद्यालय) का चांसलर, कुलपति।

शैख़ुश्शुयूख़ (شیخ الشیوخ) अ. पुं.–तमाम धर्मगुरुओं का गुरु, सबसे बड़ा धर्मगुरु, प्रमुख धर्माचार्य।

शैख़ूख़त (شیخوخت) अ. स्त्री.–वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

शैख़े कामिल (شیخ کامل) अ. पुं.–पहुँचा हुआ पीर, ब्रह्मलीन धर्मगुरु, पूर्ण धर्माचार्य।

शैख़े वक़्त (شیخ وقت) अ. पुं.–अपने समय का सबसे बड़ा धर्मगुरु।

शैख़ोशाब (شیخ وشاب) अ. पुं–बूढ़े और जवान, अर्थात् सब लोग।

शैतनत (شیطنت) अ. स्त्री.–शैतानपन, शरारत, उपद्रव; चपलता, शोख़ी; दुष्टता, कमीनगी।

शैतनतपसंद (شیطنت پسند) अ. फा. वि.–जो बड़ा शरारती या उपद्रवी हो; जो बड़ा दुष्ट हो।

शैतान (شیطان) अ. पुं.–एक फ़रिश्तः जिसने ईश्वराज्ञा का उल्लंघन किया और बहिष्कृत हुआ, और तब से वह मनुष्यों को पाप की ओर प्रवृत्त करता है; इसी प्रकार का मनुष्य जो दूसरों का अनिष्ट चाहे; उपद्रवी, शरारती।

शैतानसीरत (شیطان سیرت) अ. वि.–जिसकी प्रकृति शैतान-जैसी हो, महादुष्ट।

शैतान सूरत (شیطان صورت) अ. वि.–जिसकी आकृति शैतान-जैसी हो।

शैतानी (شیطانی) अ. वि.–शैतान का ; शैतान-सम्बन्धी; निकृष्ट, बुरा; पापमय, गुनाह का।

शैताने मुजस्सम (شیطان مجسم) अ. पुं.–जो सर से पाँव तक शैतान हो, जिसके आचरण पैशाचिक हों।

शैताने लईं (شیطان لعین) अ. पुं.–धिक्कृत और बहिष्कृत शैतान।

शैद (شید) अ. पुं.–छल, धोखा, फ़रेब।

शैदा (شیدا) फा. वि.–मुग्ध, मोहित, फ़रेफ़्तः; आसक्त, आशिक; उन्मत्त, पागल; उद्विग्न, आतुर, परेशान; किसी चीज़ का बहुत अधिक इच्छुक।

शैदाई (شیدائی) फा. वि.–दे. 'शैदा', प्रेमी—"एक यह दिल है जो सौ जान से शैदाई है, एक तुम हो, कि न मिलने की क़सम खायी है।"

शैदाए इल्म (شیدائے علم) फा. अ. वि.–विद्या प्राप्त करने का अत्यधिक अभिलाषी।

शैदाए वतन (شیدائے وطن) फा. अ. वि.–देशभक्त, देश-प्रेम में अनुरक्त।

शैदाए हुस्न (شیدائے حسن) फा. अ. वि.–सुंदरता को हर चीज़ से अधिक पसंद करनेवाला।

शैदी (شیدی) अ. वि.–धूर्त, वंचक, छली।

शैन (شین) फा. पुं.–विलाप, रोना-धोना; दोष, ऐब।

शैपूर (شیپور) फा. पुं.–बिगुल, नफ़ीरी।

शैबः (شیبہ) अ. पुं.–दे. 'शैबत'।

शैब (شیب) अ. पुं.–बुढ़ापा, वृद्धावस्था, जरा।

शैबत (شیبت) अ. स्त्री.–वृद्धावस्था, जरा, बुढ़ापा।

शो

शो (شو) फा. प्रत्य.–धोनेवाला, जैसे—'मुर्दःशो' मुर्दे को धोने या नहलानेवाला, (पुं.) शौहर, पति, भर्ता, नाथ, स्वामी।

शोए (شوے) फा. पुं.–शौहर, भर्तार, पति, (प्रत्य.) धोनेवाला, जैसे—'रंगशोए' न्यारिया।

शोख़ (شوخ) फा. वि.–चंचल, चपल, चुलबुला, शरीर; गहरा (रंग) ; धृष्ट, ढीठ; उद्दंड, गुस्ताख़; अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान; असभ्य, बदतमीज़।

शोख़गीं (شوخگیں) फा. वि.–मैला, गंदा, इस अर्थ में 'शूख़गीं' अधिक उचित है।

शोख़चश्म (شوخ چشم) फा. वि.–बेहया, बेशर्म, निर्लज्ज; धृष्ट, गुस्ताख़।

शोख़चश्मी (شوخ چشمی) फा. स्त्री.–बेहयाई, निर्लज्जता; ढीठपन, धृष्टता, गुस्ताख़ी।

शोख़ज़बाँ (شوخ زباں) फा. वि.–मुँहफट, मुक्तकंठ; बक्की, मुख-चपल, वाचाल।

शोख़ज़बानी (شوخ زبانی) फा. स्त्री.–मुँहफटपन, मुक्तकंठता; बकवास, मुख-चपलता, वाचालता।

शोख़तब्अ (شوخ طبع) फा. अ. वि.–जिसमें चंचलता बहुत हो, चुलबुला; जो विनोदप्रिय हो, ख़ुशमिज़ाज।

शोख़तब्ई (شوخ طبعی) फा. अ. स्त्री.–प्रकृति का चुलबुलापन, मनोविनोद, हँसी-दिल्लगी।

शोख़तरीन (شوخ تریں) फा. वि.–बहुत अधिक चुलबुला; बहुत गहरा (रंग)।

शोख़दीदः (شوخ دیدہ) फा. वि.–दे. 'शोख़चश्म'।

शोख़दीदगी (شوخ دیدگی) फा. स्त्री.–दे. 'शोखचश्मी'।

शोख़मिज़ाज (شوخ مزاج) फा. अ. वि.–दे. 'शोख़तब्अ'।

शोख़मिज़ाजी (شوخ مزاجی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'शोख़तब्ई'।

शोख़िए अल्फ़ाज़ (شوخئی الفاظ) फा. अ. स्त्री.–लेख या भाषण में ऐसे शब्दों का प्रयोग जो हास्यरसान्वित हों।

शोख़िए तक़्रीर (شوخئی تقریر) फा. अ. स्त्री.–भाषण में शोख़ और विनोदमय शब्दों का प्रयोग।

शोख़िए तब्अ (شوخئی طبع) फा. अ. स्त्री.–प्रकृति की चंचलता और विनोदप्रियता।

शोख़िए तक़्दीर (شوخئی تقدیر) फा. अ. स्त्री.–भाग्य की चंचलता, अर्थात् अभागापन, बदक़िस्मती।

शोख़िए तहरीर (شوخئی تحریر) फा. अ. स्त्री.–लेख में ऐसे शब्दों का प्रयोग जो शोख़ हों।

शोख़ी (شوخی) फा. स्त्री.–चपलता, चुलबुलाहट; धृष्टता, गुस्ताख़ी; अशिष्टता, बदतमीज़ी; गहरापन (रंग)।

शोख़ो शंग (شوخ و شنگ) फा. वि.–वह व्यक्ति जो बहुत ही चुलबुला, चतुर और सुंदर हो।

शोनीज़ (شونیز) फा. स्त्री.–कलौंजी, प्याज़ के बीज, दे. 'शूनीज़', दोनों शुद्ध हैं।

शो'बः (شعبہ) अ. पुं.–शाखा, शाख, डाली; विभाग, महकमा; खंड, टुकड़ा।

शोब (شوب) फा. प्रत्य.–धोनेवाला; धुलाई, धोने का भाव, धुलाव, धोव, धोना; उष्णीष, पगड़ी।

शो'बए तस्नीफ़ो तालीफ़ (شعبۂ تصنیف و تالیف) अ.पुं.–वह विभाग जिसका सम्बन्ध पुस्तकें लिखने और संपादन करने से हो।

शोबीदः (شوبیدہ) फा. वि.–धोया हुआ।

शोरः (شورہ) फा. पुं.–एक खार जिससे बारूद बनती है, श्वेत क्षार।

शोरःगर (شورہگر) फा. वि.–शोरा बनानेवाला।

शोरःपुश्त (شورہپشت) फा. वि.–उद्दंड, अख्खड़, मुँहफट, बदतमीज़; झगड़ालू, फ़सादी; अवज्ञाकारी, निरंकुश, जो कहे में न हो।

शोरःबूम (شورہبوم) फा. स्त्री.–ऊसर, वह ज़मीन जिसमें रेह हो, जहाँ कुछ पैदा न हो सके।

शोरःसाज़ (شورہساز) फा. वि.–दे. 'शोरःगर'।

शोर (شور) फा. वि.–खारी, नमकीन; कोलाहल, ग़ुल; शोह्रत, नामवरी; उन्माद, पागलपन।

शोरअंगेज़ (شورانگیز) फा. वि.–ग़ुल मचानेवाला; पागलपन बढ़ानेवाला।

शोरअंगेज़ी (شورانگیزی) फा. स्त्री.–ग़ुल मचाना; पागलपन बढ़ाना।

शोरआगीं (شورآگیں) फा. वि.–उन्माद और पागलपन से भरा हुआ।

शोरग़ार (شورغار) फा. स्त्री.–फिटकरी, स्फटिक।

शोरचश्म (شورچشم) फा. वि.–जिसकी नज़र लग जाती हो।

शोरचश्मी (شورچشمی) फा. स्त्री.–नज़र लगना।

शोरपा (شورپا) फा. वि.–जिसके पाँव चलते समय टकराते हों, दोनों पाँव परस्पर लड़ते हों।

शोरपुश्त (شورپشت) फा. वि.–उद्दंड, अक्खड़, मुँहज़ोर; निरंकुश, बेमहार; धृष्ट, गुस्ताख़।

शोरपुश्ती (شورپشتی) फा. स्त्री.–उद्दंडता, अक्खड़पन; निरंकुशता, बेमहारी; धृष्टता, गुस्ताख़ी।

शोरबख़्त (شوربخت) फा. वि.–हतभाग्य, अभागा, बदक़िस्मत।

शोरबख़्ती (شوربختی) फा. स्त्री.–भाग्य की निकृष्टता, दुर्भाग्य, बदनसीबी।

शोरबा (شوربا) फा. पुं.–गोश्त का पका हुआ रस, पक्वमांसरस।

शोरमोर (شورمور) फा. स्त्री.–बहुत छोटी चींटी, क्षुद्र पिपीलिका; अशुभ, मनहूस, अनिष्टकर।

शोराबः (شورابہ) फा. पुं.–खारा पानी, नमक मिला हुआ पानी।

शोराब (شوراب) फा. पुं.–दे. 'शोरावः'।

शोरिंदः (شورندہ) फा. वि.–शोर करनेवाला, ग़ुल मचानेवाला।

शोरियत (شوریت) फा. स्त्री.–खारीपन, नमकीनी।

शोरिश (شورش) फा. स्त्री.–उपद्रव, दंगा, फ़साद; सैन्यद्रोह, बग़ावत, विद्रोह; खारीपन, नमकीनी; उन्माद, पागलपन।

शोरिशअंगेज़ (شورش انگیز) फा. वि.–उपद्रव और फ़साद फैलानेवाला पदार्थ।

शोरिशअंगेज़ी (شورش انگیزی) अ. स्त्री.–उपद्रव और फ़साद फ़ैलाना।

शोरिशकदः (شورش کدہ) फा. पुं.–उपद्रव का स्थान, फ़साद की जगह, वह स्थान जहाँ फ़साद या बग़ावत हो।

शोरिशकुनिंदः (شورش کنندہ) फा. वि.–फ़साद पैदा करनेवाला, उपद्रवी।

शोरिशगाह (شورش گاہ) फा. स्त्री.– 'शोरिशकदः'।

शोरिशपसंद (شورش پسند) फा. वि.–जो चाहता हो कि कोई न कोई फ़साद या उपद्रव खड़ा ही रहे।

शोरिशपसंदी (شورش پسندی) फा. स्त्री.–उपद्रव चाहना।

शोरिशी (شورشی) फा. वि.–फ़साद या उपद्रव फैलानेवाला।

शोरीदः (شوریدہ) फा. वि.–आतुर, उद्विग्न, परेशान; उन्मत्त, मस्त, दीवाना।

शोरीदःख़ातिर (شوریدہخاطر) फा. अ. वि.–जिसका दिल परेशान हो, खिन्नमना; दुःखित, रंजीदा।

शोरीदःदिमाग़ (شوریدہدماغ) फा. अ. वि.–विकृतमस्तिष्क, पागल, ख़ब्ती, मिराक़ी।

शोरीदःबख़्त (شوریدہبخت) फा. वि.–हतभाग्य, बदनसीब, बदकिस्मत, अभागा।

शोरीदःमिज़ाज (شوریدہمزاج) फा. अ. वि.–खिन्नमनस्क, उद्विग्नचित्त, परेशाँदिल; पागल, ख़ब्ती।

शोरीदःसर (شوریدہسر) फा. वि.–पागल, दीवाना, विकृतमस्तिष्क।

शोरीदःसरी (شوریدہسری) फा. स्त्री.–पागलपन, दीवानगी।

शोरीदःहाल (شوریدہحال) फा.अ.वि.–दुर्दशाग्रस्त, परीशाँहाल, उद्विग्न।

शोरीदःहाली (شوریدہحالی) फा. अ. स्त्री.–परीशाँहाली, दुर्दशा।

शोरीदगी (شوریدگی) फा. स्त्री.–उद्विग्नता, परीशानी; दीवानगी, पागलपन।

शोरे क़ियामत (شور قیامت) फा. अ. पुं.–महाप्रलय के समय का कोलाहल; बहुत अधिक शोरोग़ुल।

शोरेज़ (شوریز) फा. स्त्री.–खेती के क़ाबिल ज़मीन।

शोरे तह्सीन (شور تحسین) फा. अ. पुं.–वाह्-वाह का शोर, प्रशंसा और धन्यवाद का शोर।

शोरे नुशूर (شور نشور) फा. अ. पुं.–क़ियामत के दिन लोगों के उठने का शोर।

शोरे मर्हबा (شور مرحبا) फा. अ. पुं.–धन्यवाद और वाह्-वाह् का शोर।

शोरे मसर्रत (شور مسرت) फा. अ. पुं.–ख़ुशी का शोर, हर्षनाद।

शोरे मह्शर (شور محشر) फा. अ. पुं.–दे. 'शोरे क़ियामत'।

शोरे मातम (شور ماتم) फा. पुं.–किसी के मरने पर रोने-धोने का शोर।

शोरो ग़ुल (شوروغل) फा. पुं.–दे. 'शोरो शग़ब'

शोरोशग़ब (شوروشغب) अ.फा.पुं.–बहुत अधिक कोलाह्ल और शोरोग़ुल।

शोरोशर (شوروشر) फा. अ. पुं.–शोर और फ़साद, हंगामा, बग़ावत और फ़साद का हंगामः।

शोलः (شعلہ) अ. पुं.–अग्निज्वाला, लपट, उदा०—"एक शोलः सा उठा, शीशे से पैमाने में, लो किरन फूटी सवेरा हुआ मैख़ाने में"—"ख़ुमार"।

शो'लःअंगेज़ (شعلہ انگیز) अ. फा. वि.–दे. 'शो'लःअफ़्गन'।

शो'लःअंदाम (شعلہ اندام) अ. फा. वि.–जिसका शरीर अग्नि-जैसा उज्ज्वल और दीप्त हो।

शोलःअफ़्गन (شعلہ افگن) अ. फा. वि.–शो'ले बखेरनेवाला, आग बरसानेवाला, अग्निवर्षक।

शो'लःअफ़्शाँ (شعلہ افشاں) अ. फा. वि.–दे. 'शो'लःअफ़्गन'।

शो'लःआवाज़ (شعلہ آواز) अ. फा. वि.–जिसकी आवाज़ में दर्द हो, बहुत अच्छा गानेवाला।

शो'लःइज़ार (شعلہ عذار) अ. वि.–आग-जैसे उज्ज्वल गालों-वाला (वाली), बहुत ही सुंदर।

शो'लःक़ामत (شعلہ قامت) अ. वि.–दे. 'शो'लःअंदाम'।

शो'लःख़ू (شعلہ خو) अ. फा. वि.–दे. 'शो'लःमिज़ाज'।

शो'लःज़न (شعلہ زن) अ. फा. वि.–शो'ले फेंकनेवाला, बहुत तेज़ जलनेवाली आग।

शो'लःज़बाँ (شعلہ زباں) अ. फा. वि.–बहुत ही तेज़ बोलने-वाला, धुँआँधार भाषण देनेवाला।

शो'लःज़ादः (شعلہ زادہ) अ. फा. वि.–अग्नि से उत्पन्न एक योनि विशेष, देव, परी, जिन, शैतान।

शो'लःज़ार (شعلہ زار) अ. फा. पुं.–जहाँ शो'ले ही शो'ले हों, जहाँ आग ही आग हो।

शो'लःदीदार (شعلہ دیدار) अ. फा. वि.–दे. 'शो'लःरुख़'।

शो'लःनाक (شعلہ ناک) अ. फा. वि.–शो'लों से भरा हुआ।

शो'लःफ़ाम (شعلہ فام) अ. फा. वि.–शो'ले-जैसे लाल और दीप्त रंगवाला (वाली), अग्निवर्ण।

शो'लःफ़िगन (شعلہ فگن) अ. फा. वि.–दे. 'शो'लःअफ़्गन'

शो'लःफ़िशाँ (شعلہ فشاں) अ. फा. वि.–दे. 'शोलःअफ़्गन।

शो'लःबार (شعلہ بار) अ. फा. वि.–आग बरसानेवाला, अग़्निवर्षक।

शो'लःबारी (شعلہ باری) अ. फा. स्त्री.–आग बरसाना, अग़्निवर्षा।

शो'लःमिज़ाज (شعلہ مزاج) अ. वि.–बहुत तीव्र और कड़वे स्वभाव का, बहुत अधिक ग़ुस्सैल।

शो'लःरंग (شعلہ رنگ) अ. फा. वि.–दे. शो'लःफ़ाम'।

शो'लःरुख़ (شعلہ رخ) अ. फा. वि.–अग्नि-जैसे सुर्ख़ और उज्ज्वल गालोंवाला (वाली) परवाने का अपने सूरते शमा। अय शोला रूखो न दिल जलाउ।

शो'लःरुख़सार (شعلہ رخسار) अ.फा.वि.–दे. 'शोल':रुख़'।

शो'लःरू (شعلہ رو) अ. फा. वि.–दे. 'शो'लःरुख़'।

शो'लः सा (شعلہ سا) अ. फा. वि.–शो'लः-जैसा, आग-जैसा।

शो'लःसिफ़त (شعلہ صفت) अ. वि.–शो'लः-जैसा, आग की तरह् रौशन और लाल।

शो'लए जव्वालः (شعلۂ جوالہ) अ. पुं.–आग का वह घेरा जो लकड़ी के दोनों सिरों को जलाकर घुमाने से बनते हैं, आलात-चक्र।

शो'लए जौलाँ (شعلۂ جولاں) अ. फा. पुं.–चलने-फिरने-वाला शो'लः अर्थात् नायिका।

शो'लए ताक (شعلۂ تاک) अ. फा. पुं.–अंगूरी शराब, द्राक्षेरा, द्राक्षासव, मालिका।

शो'लए दीदार (شعلۂ دیدار) अ. फा. पुं.–प्रेमिका के दर्शनों की आग।

शो'लए रुख़सार (شعلۂ رخسار) अ. फा. पुं.–गालों की दीप्ति और चमक जो शो'लः जान पड़ती है।

शो'लीं (شعلیں) फा. वि.–अग्निज्वाला-सम्बन्धी,; लपट-दार, लपटोंवाला; लपटें निकलता हुआ।

शोलीदः (شولیدہ) फा. वि.–स्तब्ध, स्तंभित, हैरान; उद्विग्न, व्याकुल, परेशान।

शोशः (شوشہ) फा. पुं.–खंड, टुकड़ा; सीन या शीन (अक्षर) का दंदानः; सोने या चाँदी का डेला।

शौ

शौ (شو) फा. पुं.–'शौहर' का लघु., शौहर, पति, स्वामी।

शौकः (شوکہ) अ. पुं.–काँटा, कंटक।

शौक (شوق) अ. पुं.–अभिलाषा, उत्कंठा, अधिक चाह, लगन; व्यसन, टेव, आदत।

शौकत (شوکت) अ. स्त्री.–आतंक, दब्दबः; वैभव, ऐश्वर्य, शानोशौकत।

शौकतुलअक़्रब (شوکۃ العقرب) अ. पुं.–बिच्छू का डंक।

शौकतेअल्फ़ाज़ (شوکت الفاظ) अ. स्त्री.–लेख में बड़े-बड़े और क्लिष्ट शब्दों की व्यवस्था, शब्दाडंबर।

शौकते शाही (شوکت شاہی) अ. फा· स्त्री.–बादशाहों का ठाठ-बाट।

शौकराँ (شوکراں) अ. पुं.–एक वनौषधि जो दवा में प्रचलित है।

शौक़ियः (شوقیہ) अ. वि.–शौक़ के तौर पर, केवल मन-बहलाव के लिए।

शौक़ीन (شوقین) उ. वि.–व्यसनी, धती, आदी; किसी कार्य-विशेष में बहुत अधिक रुचि रखनेवाला।

शौक़े आराइश (شوق آرائش) अ. फा. पुं.–बनने-सँवरने का शौक़, ख़ुद को बना-ठना रखने का शौक़।

शौक़े इबादत (شوق عبادت) अ. पुं.–जप-तप का शौक़, ईश्वराराधना की लगन।

शौक़े ज़ीनत (شوق زینت) अ. पुं.–दे. 'शौक़े आराइश'।

शौक़े तज़्ईन (شوق تزئین) अ. पुं.–दे. 'शौक़े आराइश'।

शौक़े बेपायाँ (شوق بےپایاں) अ. फा. पुं.–बहुत अधिक शौक़, हद से बढ़ी हुई उत्कंठा।

शौक़े लिबास (شوق لباس) अ. पुं.–कपड़ों का शौक़, अच्छे-अच्छे कपड़े पहिनने का शौक़।

शौक़ोज़ौक़ (شوق و ذوق) अ. पुं.–बहुत अधिक रुचि, बहुत अधिक शौक़।

शौलः (شولہ) अ. पुं.–उन्नीसवाँ नक्षत्र, मूल।

शौहर (شوہر) फा. पुं.–पति, भर्तार, स्वामी, भर्तृ, ख़ाविंद।

शौहरकुश (شوہرکش) फा. स्त्री.–पति को मार डालनेवाली स्त्री, पतिघातिनी।

शौहरख़्वाह (شوہرخواہ) फा. स्त्री.–पति की इच्छा करनेवाली स्त्री, पतिकामा।

शौहरपरस्त (شوہرپرست) फा. स्त्री.–पति को ईश्वर की तरह पूजनेवाली स्त्री, पतिव्रता, पति-परायणा।

स

संग (سنگ) फा. पुं.–प्रस्तर, पाषाण, पत्थर।

संगअंदाज़ (سنگ انداز) फा. पुं.–पत्थर फेंकनेवाला; क़िले के सूराख़ जिनसे बंदूक चलायी जाती है; गोफन, जिससे ढेला फेंकते हैं।

संगख़ुर्दः (سنگ خوردہ) फा. वि.–जिसे पत्थर की चोट आयी हो, पत्थर से घायल।

संगचः (سنگچہ) फा. पुं.–ओला, घनोपल।

संगज़दः (سنگ زدہ) फा. वि.–जिसे पत्थर से मारा गया हो।

संगज़न (سنگ زن) फा. वि.–वह तराज़ू जिसमें पासंग हो, जो कम तोले।

संगज़र (سنگ زر) फा. पुं.–कसौटी, कसवटी, निकष।

संगजराहत (سنگ جراحت) एक सफ़ेद पत्थर जो घाव भरने के काम आता है; सिंधा, सेलखरी, मरहम बनाने में प्रयुक्त होती है।

संगजाँ (سنگ جاں) फा. वि.–जिसके प्राण मुश्किल से निकलें, सख़्तजाँ; निर्दय, बेरह्म।

संगज़ार (سنگ زار) फा. पुं.–पथरीला स्थान, जहाँ पत्थर ही पत्थर हों।

संगजानी (سنگ جانی) फा. स्त्री.–प्राण कठिनता से निकलना; निर्दयता, संगदिली।

संगतरः (سنگ ترہ) फा. पुं.–संतरा, मीठी नारंगी।

संगतराश (سنگ تراش) फा. वि.–पत्थर का काम करनेवाला, पाषाण-भेदक।

संगतराशी (سنگ تراشی) फा. स्त्री.–पत्थर का काम करना।

संगदस्त (سنگ دست) फा. वि.–दे. 'संगींदस्त'।

संगदस्ती (سنگ دستی) फा. स्त्री.–दे. 'संगींदस्ती'।

संगदानः (سنگ دانہ) फा. पुं.–दे. 'संगदान'।

संगदान (سنگ دان) फा. पुं.–चिड़िया का पोटा।

संगदिल (سنگ دل) फा. वि.–निर्दय, वज्रहृदय, बेरहम, सख़्तदिल।

संगदिली (سنگ دلی) फा. स्त्री.–निर्दयता, बेरहमी, क्रूरता, हृदय का पत्थरपन।

संगपा (سنگ پا) फा. पुं.–झाँवाँ, पाँव माँजने का पत्थर, दे. 'संगेपा'।

संगपुश्त (سنگ پشت) अ. पुं.–कच्छप, कूर्म, कछवा।

संगबकफ़ (سنگ بکف) फा. वि.–हाथ में पत्थर लिये हुए, मारने के लिए पत्थर उठाये हुए।

संग बदामन (سنگ بدامن) फा. वि.–दामन में पत्थर भरे हुए।

संगबस्तः (سنگ بستہ) फा. वि.–सुदृढ़, काफ़ी मज़बूत।

संगबस्त (سنگ بست) फा. वि.–दृढ़, मज़बूत; वह मेवा जो अभी पक्का न हो, गद्दा हो।

संगरू (سنگ رو) फा. वि.–निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म।

संगरेजः (سنگریزہ) फ़ा. पुं.–कंकड़ी, पत्थर का छोटा-सा टुकड़ा।

संगलाख़ः (سنگلاخہ) फ़ा. पुं.–दे. 'संगलाख़'।

संगलाख़ (سنگلاخ) फ़ा. वि.–पथरीली ज़मीन, जहाँ पत्थर बहुत हों; जहाँ से खोदकर कंकर निकाले जायँ।

संगसाज़ (سنگساز) फ़ा. वि.–लीथो प्रेस में पत्थर पर त्रुटियाँ शुद्ध करनेवाला।

संगसाज़ी (سنگسازی) फ़ा. स्त्री.–लीथो प्रेस में पत्थर पर की गलतियाँ शुद्ध करना।

संगसार (سنگسار) फ़ा. वि.–जिसे पत्थर मार-मार कर मार डाला गया हो; पथराव, पथराव करके किसी व्यक्ति को मार डालना; एक सज़ा जो कड़े अपराधियों को दी जाती थी; उसे कमर तक जमीन में गाड़कर उस पर इतने पत्थर बरसाते थे कि वह मर जाय।

संगसारी (سنگساری) फ़ा. स्त्री.–दे. 'संगसार', नं. २, ३।

संगिस्तान (سنگستان) फ़ा. पुं.–पथरीली जगह, पहाड़ी जगह।

संगीं (سنگیں) फ़ा. वि.–'संगीन' का लघु., जो यौगिक शब्दों में व्यवहृत है, अर्थ के लिए दे. 'संगीन'।

संगींजिगर (سنگیں جگر) फ़ा. वि.–निर्दय, कठोरहृदय, बेरहमतरीन।

संगींजिगरी (سنگیں جگری) फ़ा. स्त्री.–बहुत अधिक निर्दयता, इंतिहाई बेरहमी।

संगींदस्त (سنگیں دست) फ़ा. वि.–जो काम करने में बहुत सुस्त हो, काहिल, कामचोर, दीर्घसूत्री।

संगींदस्ती (سنگیں دستی) फ़ा. स्त्री.–कामचोरी, आलस्य, काहिली।

संगींदिल (سنگیں دل) फ़ा. वि.–बहुत ही कठोर हृदय का, बड़ा ही बेरहम, प्रस्तर-हृदय।

संगींदिली (سنگیں دلی) फ़ा. स्त्री.–हृदय का अत्यंत कठोर होना, सख़्त बेरहमी।

संगी (سنگی) फ़ा. वि.–पत्थर का बना; पत्थर से सम्बन्धित; पत्थर का।

संगीन (سنگین) फ़ा. वि.–सख़्त, कड़ा, कठोर; गाढ़ा, गफ़ (कपड़ा); कड़ा, दुष्कर, जैसे— संगीन काम।

संगीन (سنگین) उ. स्त्री.– एक लंबी और पतली बरछी जो बंदूक के सिरे पर लगायी जाती है।

संगीनी (سنگینی) फ़ा. स्त्री.–पत्थर का बना हुआ होना।

संगे अस्वद (سنگ اسود) फ़ा. अ. पुं.–काला पत्थर, कृष्ण प्रस्तर; वह पत्थर जो का'बे में लगा है और जिसे देखने के लिए हर साल मुसलमान मक्के जाते हैं, जिसे हज कहते हैं।

संगे आस्ताँ (سنگ آستاں) फ़ा. पुं.–देहलीज़ का पत्थर, वह पत्थर जिसमें चौखट बाज़ू जड़ा जाता है, ईरान में देहलीज़ में लकड़ी नहीं होती।

संगे आस्तानः (سنگ آستان) फ़ा. पुं.–दे. 'संगे आस्ताँ'।

संगे आहनरुबा (سنگ آہن ربا) फ़ा. पुं.–चुम्बक, चुम्मक पत्थर।

संगे क़नाअत (سنگ قناعت) फ़ा. अ. पुं.–वह पत्थर जो भूक की जलन कम करने के लिए पेट पर बाँधते हैं, यह अरब का रवाज है।

संगे कलाँ (سنگ کلاں) फ़ा. पुं.–कोई बहुमूल्य रत्न, क़ीमती जौहर।

संगे ख़ारा (سنگ خارا) फ़ा. पुं.–एक प्रकार का खुरदरा और लाली लिये हुए पत्थर जो बहुत कड़ा होता है।

संगे गुर्दः (سنگ گردہ) फ़ा. पुं.–गुर्दे में पड़ जानेवाली पत्थरी, किडिनी स्टोन, बृक्क अश्मरी।

संगे जराहत (سنگ جراحت) फ़ा. अ. पुं.–एक सफ़ेद और कोमल पत्थर जो घाव भरने के काम आता है, सिंघा।

संगे ज़ालः (سنگ ژالہ) फ़ा. पुं.–ओला, हिमोपल, वर्षिला।

संगे तराज़ू (سنگ ترازو) फ़ा. पुं.–तोलने का बाँट।

संगे तिफ़्लाँ (سنگ طفلاں) फ़ा. अ. पुं.–वह पत्थर जो लड़के दीवानों यानी पागलों को मारते हैं।

संगे तुर्बत (سنگ تربت) फ़ा. अ. पुं.–वह पत्थर जो क़ब्र के सिरहाने लगाते हैं और जिसमें मृत पुरुष का नाम और तारीख़ आदि लिखते हैं।

संगे नसू (سنگ نسو) फ़ा. पुं.–संगे मरमर, श्वेत प्रस्तर।

संगे पा (سنگ پا) फ़ा. पुं.–झाँवाँ, जिससे पाँव का मैल छुड़ाते हैं।

संगे फ़लाख़न (سنگ فلاخن) फ़ा. पुं.–वह पत्थर जो गोफन में रखकर फेंकते हैं।

संगे फ़साँ (سنگ فساں) फ़ा. पुं.–वह पत्थर जिस पर छुरी, चाक़ू आदि की धार तेज़ करते हैं, सान।

संगे बसरी (سنگ بصری) फ़ा. अ. पुं.–एक पत्थर जो आँखों की दवा में काम आता है, खपरिया।

संगे बाराँ (سنگ باراں) फ़ा. पुं.–ओला, हिमोपल।

संगे बालिश (سنگ بالش) फ़ा. पुं.–वह पत्थर जो सर के नीचे तकिए की जगह रखा जाता है, प्रायः साधु और दरवेश रखते हैं।

संगे बालीं (سنگ بالیں) फ़ा. पुं.–दे. 'संगे बालिश'।

संगे बुन्याद (سنگ بنیاد) फ़ा. पुं.–वह पत्थर जो किसी इमारत की नींव में रखा जाता है, आधार-शिला; नींव, बुन्याद।

संगे बेनून (سنگ بےنون) फा. पुं.–कुत्ता, कुक्कुर, पाजी और दुष्ट आदमी, उर्दू के शब्द 'संग' में से नून निकल जाय तो 'सग' रह जाता है।

संगे मक़्तल (سنگ مقتل) फा. अ. पुं.–वह पत्थर जिस पर वध किया जाता है, वधशिला।

संगे मजाअत (سنگ مجاعت) फा. अ. पुं.–भूख में पेट पर बाँधा जानेवाला पत्थर, अरब का रवाज है।

संगे मक़्नातीस (سنگ مقناطیس) फा. अ. पुं.–चुंबक, चुम्बक पत्थर, आख, पाषाण।

संगे मज़ार (سنگ مزار) फा. अ. पुं.–दे. 'संगे तुर्बत'।

संगे मर्मर (سنگ مرمر) फा. पुं.–एक मशहूर पत्थर, श्वेत प्रस्तर।

संगे मसानः (سنگ مثانہ) फा. अ. पुं.–वह पथरी ज़ो मूत्राशय में पड़ जाती है।

संगे महक (क़्क) (سنگ محک) फा. अ. पुं.–कसौटी का पत्थर, कसौटी, कष'वटी, कषपट्टिका, निकष।

संगे माही (سنگ ماهی) फा. पुं.–दे. 'संगे सरे माही'।

संगे मील (سنگ میل) फा. अ. पुं.–वह पत्थर जो रास्ते में दूरी जानने के लिए एक-एक मील पर लगा देते हैं।

संगे मूसा (سنگ موسی) फा. अ. पुं.–काला पत्थर, एक प्रकार का विशेष काला पत्थर।

संगे यमन (سنگ یمن) फा. अ. पुं.–पद्मराग, ला'ल।

संगे यश्ब (سنگ یشب) फा. अ. पुं.–एक हरा पत्थर जो दवा में काम आता है।

संगे यश्म (سنگ یشم) फा. अ. पुं.–दे. 'संगे यश्ब'।

संगे राह (سنگ راہ) फा. पुं.–वह पत्थर जो रास्ते में पड़ा हो और राहगीरों को रास्ता न चलने दे; वह व्यक्ति जो किसी काम में रुकावट डाले।

संगे रुख़ाम (سنگ رخام) फा. पुं.–संगे मरमर।

संगे शजरी (سنگ شجری) फा. अ. पुं.–एक प्रकार का मूँगा, विद्रुम।

संगे शिहाब (سنگ شہاب) फा. अ. पुं.–वह पत्थर जो शिहाबे साक़िब के गिरने से बन जाता है, उल्कापाषाण।

संगे संदलसा (سنگ صندل سا) फा. पुं.–वह सिल जिस पर चंदन रगड़ते हैं।

संगे समाक़ (سنگ سماق) फा. अ. पुं.–एक पत्थर जो सारे पत्थरों से अधिक सख़्त होता है और बिलकुल घिसता नहीं है, उसके खरल बनते हैं, जो बहुत क़ीमती होते हैं और वह मोती आदि दूसरे जवाहरात पीसने के काम आता है।

संगे सराचः (سنگ سراچہ) फा. पुं.–दे: 'संगे आस्ताँ'।

संगे सरेमाही (سنگ سرماهی) फा. पुं.–एक प्रकार का पत्थर जो बड़ी मछली के सर से निकलता है और दवा के काम आता है।

संगे सिलायः (سنگ صلایہ) फा. अ. पुं.–दवा आदि घिसने का पत्थर।

संगे सुर्ख़ (سنگ سرخ) फा. पुं.–लाल पत्थर जिससे इमारतें बनती हैं और मकानों में लगाया जाता है।

संगे सुर्मः (سنگ سرمہ) फा. पुं.–वह पत्थर जिसका सुर्मा बनाते हैं।

संगे सुलैमानी (سنگ سلیمانی) फा. अ. पुं.–एक नग जो प्रायः दुरंगा या धारीदार होता है और जिसकी तस्बीह फ़क़ीर लोग गले में डालते हैं।

संजः (سنجہ) फा. पुं.–तोलने का बाँट।

संज (سنج) फा. प्रत्य.–तोलनेवाला, जैसे––'सुखनसंज' बात को तोलनेवाला, (पुं.) झाँझ, मजीरा काँसे की दो कटोरियाँ जो बजायी जाती हैं।

संजाब (سنجاب) फा. स्त्री.–एक जानवर जो घूंस के बराबर होता है, उसकी खाल का पोस्तीन बनता है जो बहुत अच्छा होता है।

संजिदः (سنجدہ) फा. वि.–तोलनेवाला।

संजीदः (سنجیدہ) फा. वि.–तोला हुआ, संतुलित; गंभीर, मतीन; शांत, पुरअम्न; सहिष्णु, बुर्दबार; हर बात को ध्यानपूर्वक सुनने और ग़ौर करनेवाला।

संजीदःगुफ़्तार (سنجیدہ گفتار) फा. वि.–जिसकी बात चीत में गंभीरता हो, शांतवादी।

संजीदःगुफ़्तारी (سنجیدہ گفتاری) फा. स्त्री.–बातचीत की गंभीरता।

संजीदःतब्अ (سنجیدہ طبع) फा. अ. वि.–जिसकी प्रकृति गंभीर हो।

संजीदःतब्ई (سنجیدہ طبعی) फा. अ. स्त्री.–प्रकृति की गंभीरता।

संजीदःमिज़ाज (سنجیدہ مزاج) फा. अ. वि.–जिसके मिज़ाज में शांति और गंभीरता हो।

संजीदःमिज़ाजी (سنجیدہ مزاجی) फा. अ. स्त्री–मिज़ाज की शांति और गंभीरता।

संजीदःरफ़्तार (سنجیدہ رفتار) फा. वि.–व्यवहार और आचररण की गंभीरता।

संजीदगी (سنجیدگی) फा. स्त्री.–गंभीरता, मतानत; चित्त की शांति; सहिष्णुता, तहम्मुल।

संजुक़ (سنجق) तु. पुं.–पताका, ध्वजा, केतु, झंडा; कमरबंद, कटिबंध।

संदरूस (سندروس) फा. पुं.–राजन जो एक प्रसिद्ध गोंद है, दे. 'सुंदरूस', दोनों शुद्ध हैं।

संदल (صندل) अ. पुं.–एक सुप्रसिद्ध सुगंधित लकड़ी, चंदन।

संदलसा (صندل سا) फा. वि.–चंदन घिसने की सिल।

संदलीं (صندلیں) फा. वि.–संदल का; संदल की लकड़ी का बना हुआ।

संदली (صندلی) फा. स्त्री.–संदल का; संदल की लकड़ी का; कुर्सी।

संदास (سنداس) फा. पुं.–पाख़ाना, संडास।

संदूक़ (صندوق) अ. पुं.–लकड़ी या टीन की बड़ी पेटी जिसमें कपड़े आदि रखे जाते हैं।

संदूक़चः (صندوقچہ) छोटा संदूक़।

संदूक़नुमा (صندوق نما) अ. फा. वि.–संदूक़ की शक्ल का।

संदूक़साज़ (صندوق ساز) अ. फा. वि.–संदूक़ बनानेवाला।

संदूक़ी (صندوقی) अ. वि.–संदूक़-जैसा, संदूक़ की आकृति का; संदूक़नुमा क़ब्र जिसमें बग़ली नहीं होती।

संदूक़े मुर्दः (صندوق مردہ) अ. फा. पुं.–तावूत, शव रखने का लकड़ी का संदूक़नुमा पात्र।

सअत (سعت) अ. स्त्री.–विस्तार, फैलाव, फ़राख़ी, गुंजाइश।

सआदत (سعادت) अ. स्त्री.–प्रताप, तेज, इक़्बाल; कल्याण, भलाई; बरकत, मुबारकी, शुभकारिता।

सआदत आसार (سعادت آثار) अ. वि.–जिसके लक्षण ऐसे हों कि आगे चलकर वह शुभान्वित होगा।

सआदतकेश (سعادت کیش) अ. फा. वि.–दे. 'सआदतमंद'।

सआदतपज़ोह (سعادت پژوہ) अ. फा. वि.–दे. 'सआदतमंद'।

सआदतपनाह (سعادت پناہ) अ. फा. वि.–तेजस्वी, प्रतापी, इक़्बालमंद।

सआदतमंद (سعادت مند) अ.फा. वि.–भाग्यशाली, नसीबेवर; तेजोमय, इक़्बालमंद; आज्ञाकारी, फर्मांबरदार।

सआदतमंदी (سعادت مندی) अ. फा. स्त्री.–सआदतमंद होना।

सआदतवर (سعادت ور) अ. फा. वि.–दे. 'सआदतमंद'।

सआदतवरी (سعادت وری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सआदतमंदी।

सआदतशिआर (سعادت شعار) अ.वि.–दे. 'सआदतमंद'।

सआदतसंज (سعادت سنج) अ.फा. वि.–दे. 'सआदतमंद'।

सआलिब (ثعالب) अ. पुं.–'सा'लब' का बहु. लोमड़ियाँ।

सआलील (ثعالیل) अ. पुं.–'सूलूल' का बहु., मस्से; भिटनियाँ।

सई (سعی) अ. पुं.–प्रयत्न, पराक्रम, कोशिश—

"तसकीने दिले महज़ूं न हुई वह सईए करम फ़रमा भी गये,
इस सईए करम को क्या कहिए बहला भी गये तड़पा भी गये।"

सईद (صعید) अ.पुं.–मृत्तिका, मिट्टी; पृथ्वी, ज़मीन।

सईद (سعید) अ. वि.–तेजस्वी, इक़्बालमंद; भाग्यशाली, ख़ुशनसीब; कल्याणकारी, मुबारक।

सईर (سعیر) अ. पुं.–अग्निज्वाला, आग की लपट; नरक का एक तल।

सईस (سئیس) अ. पुं.–घोड़े की देख-रेख करनेवाला, अरबी के शब्द 'साइस' का बिगड़ा हुआ रूप।

सऊद (صعود) अ. पुं.–उँचाई, बलंदी; यातना, पीड़ा, अज़ाब; ऊपर चढ़नेवाला।

सऊबत (صعوبت) अ. स्त्री.–दे. शुद्ध उच्चारण 'सुऊबत'।

सऊल (سئول) अ. वि.– बहुत पूछनेवाला, बहुत प्रश्न करनेवाला।

सक़त (سقط) अ.पुं.–लिखने की भूल; हिसाब की भूल; गिरी-पड़ी चीज़; अपशब्द, गाली; निंदा, बदगोई।

सक़तगो (سقط گو) अ. फा. वि.–गाली देनेवाला, गाली-गलौज़ करनेवाला; निंदा करनेवाला, बदगो।

सक़तचीं (سقط چیں) अ. फा. वि.–गिरी-पड़ी चीज़ें बीननेवाला, रेज़े और टुकड़े चुनने वाला।

सक़तफ़रोश (سقط فروش) अ. फा. वि.–गिरी-पड़ी चीज़ें, जैसे—गिरे-पड़े फल आदि बेचनेवाला; बेहूदा बातें बकनेवाला, अनर्गलवादी।

सक़ती (سقطی) अ. वि.–गिरी-पड़ी चीज़ें बेचनेवाला, कबाड़ी।

सकनः (سکنہ) अ. पुं.–'साकिन' का बहु., रहनेवाले, निवासी।

सक़न्क़ूर (سقنقور) अ. पुं.–साँड़ के प्रकार का, परंतु उससे छोटा एक जानवर जिसका मांस बहुत ही कामवर्द्धक है।

सक़म (سقم) अ. पुं.–रोग, बीमारी; त्रुटि, दोष, दे. 'सुक़्म', दोनों शुद्ध हैं।

सक़र (سقر) अ. पुं.–नरक, दोज़ख़।

सकरात (سکرات) अ. स्त्री.–निश्चेष्टता, बेहोशी; प्राण निकलते समय का कष्ट, चंद्रा।

सकरान (سکران) अ. वि.–उन्मत्त, मतवाला, शराब के नशे में चूर।

सक़लैन (ثقلین) अ.पुं.–दो वर्ग, अर्थात् मनुष्यों का और जिन्नों का।

सक़ाफ़त (ثقافت) अ. स्त्री.–अक़्लमंद होना; हल्का होना; तेज़ सिर्का।

सक़ाम (سقام) अ. पुं.–रोग, व्याधि, बीमारी।

सकारा (سکاری) अ. पुं.–'सकरान' का बहु., मस्त और मतवाले लोग, दे. 'सुकारा', दोनों शुद्ध हैं।

सक़ालत (ثقالت) अ. स्त्री.–बोझ, गुरुत्व, भारीपन।

सक़ाहत (ثقاہت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; विश्वस्तता, मो'तबरी।

सक़िरलात (سقرلات) तु. पुं.–ऊनी बानात, सिक़्लात।

सकीनः (سکینہ) अ. स्त्री.–'सकीनत' हज़्रत इमाम हुसैन की सुपुत्री जो बड़ी बहादुर थीं और जिन्होंने हज़्रत इमाम की शहादत के बाद यज़ीद के विरुद्ध बहुत बड़ा प्रचार किया।

सकीनत (سکینت) अ. स्त्री.–आराम, चैन, सुख; मंदता, धीरज, आहिस्तगी।

सक़ीफ़ः (سقیفہ) अ. पुं.–झूठी बात, बकवाद; आरोप, इत्तिहाम; परामर्श, सलाह।

सक़ीम (سقیم) अ. वि.–रोगी, बीमार; दुर्दशाग्रस्त, बदहाल।

सक़ीमुलहाल (سقیم الحال) अ. वि.–जिसकी आर्थिक दशा खराब हो, दरिद्र, निर्धन, दुर्दशाग्रस्त।

सक़ील (ثقیل) अ. वि.–गुरु, भारी, बोझल।

सक़्क़ा (سقا) अ. पुं.–पानी पिलानेवाला; पानी भरनेवाला, बिहिश्ती।

सक़्क़ाई (سقائی) अ. स्त्री.–पानी पिलाने का काम; पानी भरने का काम, भिश्तीगरी।

सक्काक (سکاک) अ. वि.–लौहकार, लुहार; सिक्के पर ठप्पा लगानेवाला।

सक्तः (سکتہ) अ. पुं.–एक रोग जिसमें आदमी बिलकुल मरे हुए प्राणी के समान हो जाता है, मूर्छा रोग ; शे'र में किसी शब्द या अक्षर का कम होना , छंदोभंग, यति-भंग।

सक़्त (سقط) अ. पुं.–पशु का मरना।

सक़्मूनिया (سقمونیا) अ. स्त्री.–एक दवा, जो रेचक होती है, दे. 'सुक़्मूनिया', दोनों शुद्ध हैं।

सक़्रात (سقراط) अ. पुं.–यूनांन का एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक जो हज़्रत ईसा से पाँच सौ साल पहले था।

सख़त (سخط) अ. पुं.–क्रोध, रोष, ग़ुस्सा, दे. 'सुख़्त', वह भी शुद्ध है।

सख़ा (سخا) अ. स्त्री.–दानशीलता, वदान्यता, सखावत।

सख़ाफ़त (سخافت) अ. स्त्री.–तुच्छता, अधमता, कमीनगी; निर्बुद्धिता, बेअक़्ली; हलकापन, ओछापन।

सख़ी (سخی) अ. वि.–मुक्तहस्त, वदान्य, दाता, फ़ैयाज़, दानशील, दानी।

सख़ीन (ثخین) अ. वि.–गाढ़ा, गफ़; दृढ़, मज़्बूत; पुष्ट; कठोर, सख़्त।

सख़ीफ़ (سخیف) अ. वि.–हलका, सबुक; झिंझरा बुना हुआ कपड़ा; तंग ज़र्फ़, छिछोरा, लघुचेता, अनुदार।

सख़ुन (سخن) फा. पुं.–दे. 'सुख़न', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु उर्दू में अधिक व्यवहृत 'सुख़न' ही है।

सख़्त (سخت) फा. वि.–कठोर, कड़ा; अत्यधिक, बहुत ज़ियादः; तीव्र, प्रचंड, तेज़; दुःशील, बेमुरव्वत; निर्दय, बेरहम; दुष्कर, मुश्किल, कठिन; बहुत बड़ा।

सख़्तकमान (سخت کمان) फा. वि.–योद्धा, पहलवान; तीरंदाज, धनुर्धर; शक्तिशाली, शहज़ोर।

सख़्तकोश (سخت کوش) फा. वि.–बहुत अधिक पराक्रमी।

सख़्तगीर (سخت گیر) फा. वि.–भूल-चूक पर कड़ा पकड़नेवाला, रिआयत न करनेवाला, पूरी सज़ा देने वाला।

सख़्तगीरी (سخت گیری) फा. स्त्री.–गलती या भूल या अपराध पर रिआयत न करनेवाला।

सख़्तचावीदः (سخت چاویدہ) फा. वि.–'तुच्छ, अधम, पामर, नीच, पोच।

सख़्तजाँ (سخت جاں) फा. वि.–जिसके प्राण कठिनता से निकलें, निर्लज्जता का जीवन व्यतीत करनेवाला; बहुत बड़ा पराक्रमी, सख़्त मेहनती।

सख़्तजानी (سخت جانی) फा. स्त्री.–निर्लज्जता का जीवन; कठोर पराक्रम।

सख़्तज़ेह (سخت زہ) फा. वि.–दे. 'सख़्तकमान'।

सख़्तदिल (سخت دل) फा. वि.–निर्दय, जिसके हृदय में दयाभाव न हो, संगदिल।

सख़्तदिली (سخت دلی) फा. स्त्री.–निर्दयता, बेरहमी।

सख़्तबाज़ू (سخت بازو) फा. वि.–बहुत मशक़्क़त करनेवाला, बहुपराक्रम, अति परिश्रमी।

सख़्तमीर (سخت میر) फा. वि.–मुश्किल से मरने वाला, जिसके प्राण कठिनता से निकलें।

सख़्तसा (سخت سا) फा. पुं.–पहलवानों का घिस्सा।

सख़्तिए याम (سختیٔ ایام) फा. अ. स्त्री.–दिनों का कष्ट, भाग्य की निष्ठुरता, गर्दिश।

सख़्तिए नज़्अ (سختیٔ نزع) फा. अ. स्त्री.–यम-यातना, चंद्रा, मरते समय का कष्ट।

सख़्ती (سختی) फा. स्त्री.–कठोरता, कड़ापन; दुःशीलता, बेहयाई; कठिनता, मुश्किल; निर्दयता, बेरहमी; तीव्रता, तेज़ी, शिद्दत।

सख़्तीकश (سختی کش) फा. वि.–मुसीबतें झेलनेवाला, विपत्तियों में जीवन व्यतीत करनेवाला।

सग (سگ) फा. पुं.–कुक्कुर, श्वान, शुनि, शुनक, कुत्ता, कूकुर।

सगख़स्लत (سگ خصلت) फा. अ. वि.–कुत्ते-जैसा स्वभाव रखनेवाला, श्वानप्रकृति।

सगगज़ीदः (سگ گزیدہ) फा. वि.–जिसे कुत्ते ने काटा हो।

सगगज़ीदगी (سگ گزیدگی) फा.स्त्री.–कुत्ते का काटना।

सगजाँ (سگ جاں) फा. वि.–लालची, लोभी; निर्दय, बेरह्म।

सगजानी (سگ جانی) फा. स्त्री.–लोभ,लालच; निर्दयता, बेरह्मी।

सगबान (سگ بان) फा. वि.–कुत्ते पालनेवाला; कुत्तों की सेवा करनेवाला नौकर।

सगबानी (سگ بانی) फा. स्त्री.–कुत्ते पालना; कुत्तों का नौकर, श्वानसेवक।

सगसार (سگ سار) फा. वि.–कुत्ते-जैसा अपवित्र और निकृष्ट व्यक्ति।

सग़ीरः (صغیرہ) अ. वि.–छोटी, कम उम्र की, (पुं.) छोटा पाप, लघु पातक।

सग़ीर (صغیر) अ. वि.–छोटा, लघु; दे. 'बह्रेसग़ीर'।

सग़ीरसिन (صغیر سن) अ. वि.–छोटी आयुवाला, अल्पवयस्क, वयोबाल।

सग़ीरसिनी (صغیر سنی) अ. स्त्री.–छोटी उम्र, बाल्यावस्था, अल्प वय।

सग़ीरो कबीर (صغیر و کبیر) अ. पुं.–छोटा और बड़ा; छोटे-बड़े सब आदमी, सब लोग, अवाम।

सगे ख़ामोशगीर (سگ خاموش گیر) फा. पुं.–वह कुत्ता जो बिना भूँके और ग़ुर्राये काट ले।

सगे ताज़ी (سگ تازی) फा. अ. पुं.–शिकारी कुत्ता, जो अरबी नस्ल से हो।

सगे दीवानः (سگ دیوانہ) फा. पुं.–पागल कुत्ता, बावला कुत्ता।

सगे दुंबालःगीर (سگ دنبالہ گیر) फा. पुं.–पीछे से पाँव पकड़ लेनेवाला कुत्ता, भूँककर पीछे दौड़नेवाला कुत्ता।

सगे बाज़ारी (سگ بازاری) फा. पुं.–गलियों में मारा फिरनेवाला कुत्ता।

सजा' (سجع) अ. पुं.–प्रास, अनुप्रास, अंत्यानुप्रास, तुक, तुकान्त; किसी इबारत के दो वाक्यों के अंतिम शब्दों का एक-जैसा होना। इसके तीन प्रकार हैं—अगर उनका वज़्न बराबर है और सानुप्रास हैं तो वह सजा 'मुतवाज़ी' होगा, जैसे–गुल और मुल या बहार और मज़ार; अगर वह सानुप्रास हैं, मगर वज़्न बराबर नहीं है तो 'मुतर्रफ़' होगा, जैसे माल और मनाल या बार और बहार; अगर वज़्न में बराबर हैं मगर सानुप्रास नहीं हैं तो वह सजा मुतवाज़िन होगा, जैसे—हाल और बात, या नज़र और सबक़; कोई वाक्य या पद इस तरह कहना कि उसमें किसी का नाम बड़ी सुंदरता के साथ आ जाय।

सज़ा (سزا) फा. स्त्री.–बुरे काम का राज्य की ओर से दंड; प्रत्यपकार, बुराई का बदला; तावान, अर्थदंड; योग्य, पात्र, लाइक़।

सज़ाए आ'माल (سزاے اعمال) फा. अ. स्त्री.–कर्मों का दंड, कर्मफल।

सज़ाए क़त्ल (سزاے قتل) फा. अ. स्त्री.–प्राणदंड, मृत्युदंड, फाँसी की सजा।

सज़ाए क़ैद (سزاے قید) फा. अ. स्त्री.–कारावास का दंड, जेल की सज़ा।

सज़ाए ताज़यानः (سزاے تازیانہ) फा. स्त्री.–कोड़े मारने का दंड।

सज़ाए मह्ज़ (سزاے محض) फा. अ. स्त्री.–सादी क़ैद जिसमें मेहनत न करनी पड़े।

सज़ाए मौत (سزاے موت) फा. अ. स्त्री.–प्राणदंड, फाँसी।

सज़ाए संगीं (سزاے سنگیں) फा. स्त्री.–दे. 'सज़ाए सख़्त'।

सज़ाए सख़्त (سزاے سخت) फा. स्त्री.–वह कारावास जिसमें कड़ी मेहनत ली जाय।

सज़ाए सादः (سزاے سادہ) फा. स्त्री.–दे. 'सज़ाए मह्ज़'।

सजा'गो (سجع گو) अ. फा. वि.–जो सजा' कहता हो, जो सजा' कहकर उसमें नाम आदि निकालता हो।

सजाया (سجایا) अ. पुं.–'सजीयः' का बहु., स्वभाव, आदतें, प्रकृतियाँ।

सज़ायाफ़्तः (سزا یافتہ) फा. वि.–जिसने पहले किसी अपराध में सज़ा पायी हो, प्राप्तदंड।

सज़ायाफ़्तगी (سزا یافتگی) फा. स्त्री.–सज़ा पाय हुए होना।

सज़ायाब (سزایاب) फा. वि.–जिसे सज़ा हो गयी हो, दंडित।

सज़ायाबी (سزایابی) फा. स्त्री.–सजा होना, सज़ा पाना।

सज़ावार (سزاوار) फा. वि.–योग्य, पात्र, लाइक़।

सज़ावुल (سزاول) तु. वि.–उगाहनेवाला, वुसूल करनेवाला।

सज़ीदः (سزیدہ) फा. वि.–योग्य, पात्र, लाइक़, मुस्तहक़।

सजीयः (سجیہ) अ. पुं.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

सजीयात (سجیات) अ. पं.–'सजीयः' का बहु., आदतें, स्वभाव।

सज्अ (سجع) अ. पुं.–दे. 'सजा', शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु 'सजा' ही बोलते हैं।

सज्अ गो (سجع گو) अ. फा. वि.–दे. 'सजा'गो'।

सज्जादः (سجادہ) अ. पुं.–किसी बड़े फ़क़ीर की गद्दी; जानमाज़, मुसल्ला।

सज्जादःनशीं (سجادہنشین) अ. वि.–गद्दी नशीन, जो किसी बड़े फ़क़ीर या महात्मा के बाद उसकी गद्दी ग्रहण करे।

सज्जादःनशीनी (سجادہنشینی) अ. फा. स्त्री.–किसी बड़े फ़क़ीर या महात्मा के निधन पर उसकी गद्दी पर बैठने का कर्म।

सज्जाद (سجاد) अ. वि.–बहुत अधिक सज्दे करनेवाला, बहुत बड़ा आराधक।

सज्जादगी (سجادگی) अ. फा. स्त्री.–गद्दीनशीनी, सज्जादःनशीनी।

सज्दः (سجدہ) फा. पुं.–माथा टेकना, सर झुकाना; ज़मीन पर सर रखकर ईश्वर को प्रणाम करना; नमाज़ पढ़ते हुए सज्दे में जाना, दे. 'सिज्दः', वह भी शुद्ध है, परन्तु अधिक शुद्ध 'सज्दः' है।

सज्दःगाह (سجدہگاہ) अ. फा. स्त्री.–सज्दः करने का स्थान; शीओं के सज्दः करने की टिकिया।

सज्दः गुज़ार (سجدہگزار) अ. वि.–सज्दः करनेवाला, नमाज़ पढ़नेवाला।

सज्दःगुज़ारी (سجدہگزاری) अ. फा. स्त्री.–सज्दः करना, नमाज़ पढ़ना।

सज्दःरेज़ (سجدہریز) फा. वि.–दे. 'सज्दःगुज़ार'।

सज्दःरेज़ी (سجدہریزی) अ.फा.स्त्री.–दे. 'सज्दःगुज़ारी'।

सज्दए रियायी (سجدۂ ریائی) अ. फा. पुं.–झूठा सज्दः, दिखावे की नमाज़।

सज्दए शुक्र (سجدۂ شکر) अ. पुं.–कृतज्ञता का सज्दः, कोई काम सम्पन्न होने पर ईश्वर को धन्यवाद का सज्दः।

सतर (ستر) फा. पुं.–'अस्तर' का लघु., खच्चर, अश्वतर।

सतरवन (سترون) फा. स्त्री.–बाँझ स्त्री, निष्फला, वन्ध्या।

सत्तार (ستار) अ. वि.–पर्दे से ढाँकनेवाला; दोष छिपानेवाला; ईश्वर का एक नाम।

सत्र (سطر) अ. स्त्री.–क़ापी या किताब की लकीर, रेखा, पंक्ति, लकीर।

सत्र (ستر) अ. पुं.–छिपा; छिपाव।

सत्रबंदी (سطربندی) अ. फा. स्त्री.–लकीरें करना।

सत्रे औरत (ستر عورت) अ.पुं.–शरीर के वह भाग जिनका छिपाना आवश्यक है।

सत्‌वत (سطوت) अ. स्त्री.–धाक, आतंक, दबदबः; प्रताप, तेज, जलाल।

सत्‌हः (سطحہ) अ. पुं.–हर चीज़ का ऊपरी भाग, तल, सत्‌ह।

सत्‌ह (سطح) अ. पुं.–हर चीज़ का ऊपरी भाग, तल, जैसे—सत्‌हे आब, जलतल।

सत्‌ही (سطحی) अ. वि.–ऊपरी; जिस पर ग़ौर न हुआ हो; जो ऊपरी मन से हो; जो निश्चयपूर्वक न हो।

सत्‌हे आब (سطح آب) अ. फा. स्त्री.–पानी की सतह; जलतल; समुद्रतल।

सत्‌हे ज़मीं (سطح زمین) अ. फा. स्त्री.–ज़मीन की सत्‌ह, धरातल।

सत्‌हे माइल (سطح مائل) अ. स्त्री.–झुकी हुई सतह, असमतल, सतहे नाहमवार, वक्रतल।

सत्‌हे मुतवाज़िन (سطح متوازن) अ. स्त्री.–समानान्तर सतह या तल, सर्फ़ेस।

सत्‌हे मुस्तवी (سطح مستوی) अ. स्त्री.–सत्‌हे हमवार, सत्‌हे बराबर, समतल।

सद (صد) फा. वि.–एक सौ, शत।

सद [द्द] (سد) अ.–रोक, आड़; रुकावट, बाधा।

सदआफ़्रीं (صدآفرین) फा. वि.–सौ-सौ धन्यवाद, बहुत बहुत सराहना।

सदक़ः (صدقہ) अ. पुं.–दान, ख़ैरात; सर से कोई चीज़ ख़ैरात करने के लिए उतारना।

सदक़ात (صدقات) अ. पुं.–'सदक़ः' का बहु., सदक़े की चीज़ें।

सदचाक (صد چاک) फा. वि.–जो बहुत जगह से फटा हो, जो टुकड़े-टुकड़े हो।

सदपारः (صد پارہ) फा. वि.–दे. 'सदचाक'।

सदफ़ (صدف) अ. स्त्री.–सीपी, शुक्ति, सींप––"चश्मे तर अश्क से दामन मेरा भर देती है, कैसे-कैसे यह सदफ़ मुझको गुहर देती है।"

सदफ़े पेचाक (صدف پیچاک) अ. फा. पुं.–घोंघा।

सदफ़े मर्वारीद (صدف مروارید) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सदफ़े सादिक़', मुक्ता-शुक्ति, जिस सीपी में मोती निकलता है।

सदफ़े सादिक़ (صدف صادق) अ. स्त्री.–सच्ची सीपी, वह सीपी जिसमें मोती होता है।

सदबर्ग (صدبرگ) फा. पुं.–सौ पत्तियोंवाला, शतदल, शतपत्र; गेंदे का फूल, गोंदा।

सदबार (صدبار) फा. स्त्री.–शतधा, सौ दफ़ा, सौ बार।

सदमर्हबा (صدمرحبا) फा. अ. स्त्री.–दे. 'सदआफ़्रीं'।

सदयक (صد یک) फा. वि.–एक प्रतिशत, एक फ़ी सैकड़ा।

सदर (سدر) अ. पुं.–आँखों का धुन्ध।

सदरह्‌मत (صدرحمت) फा. अ. वि.–ईश्वर की बहुत-बहुत कृपाएँ, शाबाश, धन्य-धन्य।

सदशुक्र (صد شکر) फा. अ. वि.–बहुत-बहुत शुक्रिया, ईश्वर को बहुत-बहुत धन्यवाद, यह प्रायः ईश्वर के लिए आता है।

सदशुक्रियः (صد شکریہ) फा. अ. वि.–बहुत-बहुत धन्यवाद, यह प्रायः मनुष्यों के लिए आता है।

सदसालः (صدسالہ) फा. वि.–सौ बरस का, शतवर्षीय; सौ बरसवाला।

सदा (صدا) अ. स्त्री.–आवाज़, ध्वनि, नाद; फ़क़ीर की आवाज़।

सदाए अर्श (صداے عرش) अ. स्त्री.–अर्श की आवाज़, ईश्वर की आवाज़, आकाशवाणी।

सदाए गुंबद (صداے گنبد) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सदाए बाज़ गश्त', प्रतिध्वनि।

सदाए ग़ैब (صداے غیب) अ. स्त्री.–आकाशवाणी, ग़ैबी आवाज़।

सदाए बर नख़ास्त (صداے بر نخاست) फा. वा.–कोई आवाज़ नहीं उठी, (शब्दार्थ) मौन, ख़ामोशी, सन्नाटा।

सदाए बाज़ गश्त (صداے باز گشت) अ. फा. स्त्री.–प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द, प्रतिवाद, अनुस्वन, अनुनाद, प्रतिश्रुति।

सदाए बेहंगाम (صداے بےہنگام) अ. फा. स्त्री.–बेवक़्त की आवाज़ जो अच्छी न लगे; कुसमय की बात जो भाये नहीं।

सदाए हक़ (صداے حق) अ. स्त्री.–सच्ची बात, इन्साफ़ की बात, जँची-तुली बात।

सदाक़त (صداقت) अ. स्त्री.–सच्चाई, सत्यता; यथार्थता, वाक़िईयत।

सदाक़तकेश (صداقت کیش) अ. फा. वि.–सत्यनिष्ठ, सत्यपाल, सच्चाई को हाथ से न जाने देनेवाला।

सदाक़तपरस्त (صداقت پرست) अ. फा. वि.–सत्यता पर दृढ़, सच्चाई का भक्त।

सदाक़तपरस्ती (صداقت پرستی) अ. फा. स्त्री.–सच्चाई का पालन, सच्चाई पर दृढ़ता।

सदाक़तपज़ोह (صداقت پژوہ) अ. फा. वि.–दे. 'सदाक़तकेश'।

सदाक़तपसन्द (صداقت پسند) अ. फा. वि.–सच्चाई को पसंद करनेवाला।

सदाक़तपसंदी (صداقت پسندی) अ. फा. स्त्री.–सच्चाई को पसन्द करना।

सदाक़तमआब (صداقت معاب) अ. वि.–बहुत ही सच्चा और धर्मनिष्ठ व्यक्ति।

सदाक़तमदार (صداقت مدار) अ. फा. वि.–दे. 'सदाक़तपरस्त'।

सदाक़तशिआर (صداقت شعار) अ. वि.–दे. 'सदाक़तपसंद'।

सदारत (صدارت) अ. स्त्री.–सभापतित्व, अध्यक्षता।

सदारती (صدارتی) अ. वि.–सभापति से सम्बन्धित; सभापति का; सदारत का।

सदारते अंजमन (صدارت انجمن) अ. फा. स्त्री.–किसी समिति या संस्था आदि का सभापतित्व।

सदारते ज़ल्सः (صدارت جلسہ) अ. स्त्री.–किसी सभा की अध्यक्षता।

सदारस (صدارس) अ. फा. वि.–वह स्थान जहाँ तक आवाज़ पहुँचे।

सदिर (سدر) अ. वि.–जिसकी आँखें अचंभे से खुली की खुली रह गयी हों, चकित, निस्तब्ध।

सदी (صدی) फा. वि.–सौ वर्ष का समय, शताब्दी, शती।

सदी (ثدی) अ. स्त्री.–स्तन, पयोधर, छाती, चूची, शुद्ध उच्चारण 'सद्इ' है, परंतु, 'सदी' बोलते हैं।

सदीक़ (صدیق) अ. वि.–दोस्त, मित्र, सुहृद्, सखा।

सदीद (سدید) अ. वि.–सरल, सीधा; यथार्थ, ठीक; दृढ़, मज़बूत; स्थायी, पाएदार।

सदीद (صدید) अ. पुं.–घाव से निकलनेवाला मवाद, पीप, ज़र्दाब।

सद्इ (ثدئی) अ. स्त्री.–स्तन, छाती, मनुष्य का हो या स्त्री का, शुद्ध उच्चारण यही है, दे. 'सिद्इ'।

सद्दः (سدہ) अ. पुं.–ईरानियों का एक महोत्सव जो 'बहमन' मास की दशमी को होता है।

सद्दे बाब (سد باب) अ. पुं.–रोक, निषेध, निवारण।

सद्दे रमक़ (سد رمق) अ. वि.–किंचिन्मात्र, बहुत तनिक, बिलकुल ज़रा-सा।

सद्दे राह (سد راہ) अ. फा. स्त्री.–रास्ते की रोक, गली या रास्ते के बीच का पत्थर जो रास्ता रोक देता है; काम में रुकावट डालनेवाला, बाधक।

सद्दे सिकंदर (سد سکندر) अ. स्त्री.–कहते हैं कि सिकंदर ने एक बहुत बड़ी और मज़बूत दीवार बनवायी थी, परन्तु अब यह बात असत्य सिद्ध हो गयी है। कुछ लोग उस बहुत बड़ी पत्थर की मूर्ति को बताते हैं जो जिब्राल्टर की दो पहाड़ियों के बीच समुद्र में खड़ी है और इतने बृहत् आकार की है कि उसके नीचे से जहाज़ निकल जाते हैं। कुछ लोग दीवारे चीन को बताते हैं, परंतु वह बहुत पहले की सिद्ध हो चुकी है। कुछ लोग यूराल पहाड़ और अल्ताई पहाड़ के बीच में कहते हैं जो उसने इस्कीमो और मंगोलियन क़ौमों से

ख़्वारिज़्मवालों को बचाने के लिए बनवायी थी, परंतु उसका कोई चिह्न नहीं है। कुछ हो, फ़ारसी और उर्दू साहित्य में तो अब भी यह एक अजेय और अटूट दीवार है और रहेगी।

सद्मः (صدمہ) अ. पुं.–आघात, चोट; दुःख, तकलीफ़; शोक, अफ़सोस; पश्चात्ताप, पछतावा; मृतशोक, मरनेवाले का रंज; पीड़ा, दर्द; यातना, अज़ाब।

सद्मए जाँकाह (صدمۂ جانکاہ) अ. फा. पुं.–जानलेवा दुःख या शोक, प्राणों को घुला देनेवाली पीड़ा या दुःख।

सद्मए फ़िराक़ (صدمۂ فراق) अ. पुं.–विरह-क्लेश, वियोग संताप, नायिका से बिछुड़ने का शोक।

सद्मए मौत (صدمۂ موت) अ. पुं.–किसी के निधन का शोक।

सद्मए हिज्र (صدمۂ ہجر) अ. पुं.–दे. 'सद्मए फ़िराक़'।

सद्मात (صدمات) अ. पुं.–'सद्मः' का बहु., सद्मे।

सद्र (صدر) अ. पुं.–सभापति, अध्यक्ष, मीरे मज्लिस; केन्द्रीय स्थान, सद्र मुक़ाम; मुख्य, ख़ास; वक्षःस्थल, छाती, सीना; महा, बड़ा, जैसे—सद्र अस्पताल, सद्र डाकख़ाना।

सद्रदफ़्तर (صدردفتر) अ. पुं.–वह बड़ा दफ़्तर जिसके अधीन कई और दफ़्तर हों।

सद्रनशीं (صدرنشیں) अ. वि.–सभापति, मीरे मज्लिस; प्रतिष्ठित, अग्रगण्य, सरामद।

सद्रबाज़ार (صدربازار) अ. फा. पुं.–छावनी का बाज़ार, उर्दू बाज़ार; बड़ा बाज़ार, ख़ास बाज़ार।

सद्रमक़ाम (صدرمقام) अ. पुं.–किसी उच्च पदाधिकारी का हेड क्वार्टर, मुख्यालय; शासन-केन्द्र, राजधानी।

सद्रमुदर्रिस (صدرمدرس) अ. पुं.–सब अध्यापकों का नायक, मुख्याध्यापक, हेड मास्टर।

सद्रमुहासिब (صدرمحاسب) अ. पुं.–सबसे बड़ा एकाउंटेंट, महालेखापाल, गणनाध्यक्ष।

सद्री (صدری) अ. वि.–सीने का, छाती का; सीने में छिपा हुआ, (स्त्री.) सीने पर पहनने की बंडी, निचोलक।

सद्रुस्सुदूर (صدرالصدور) अ. पुं.–चीफ़ जस्टिस, सबसे बड़ा जज; शाही हरमसरा का संरक्षक, अंतःपुरिक।

सद्रे अमीन (صدر امین) अ. पुं.–दूसरे दरजे का जज, सबार्डिनेट जज।

सद्रे आ'ज़म (صدر اعظم) अ. पुं.–महामंत्री, वज़ीरे आ'ज़म, प्रधान मंत्री।

सद्रे आ'ला (صدر اعلی) अ. पुं.–अव्वल दरजे का जज, सेशन जज, दौरा जज, सत्र-न्यायाधीश।

सद्रे जामिअः (صدر جامعہ) अ. पुं.–यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) का चांसलर, कुलपति।

सद्रे दीवान (صدر دیوان) अ. फा. पुं.–मुख्य मंत्री, प्रधान मंत्री, वज़ीरे ख़ास, वज़ीरे आज़म; शाही ख़ज़ाने का बड़ा अफ़सर, महाकोषाध्यक्ष।

सद्रे बज़्म (صدر بزم) अ. फा. पुं.–दे. 'सद्रे मज्लिस'।

सद्रे मज्लिस (صدر مجلس) अ. पुं.–सभापति, सभाध्यक्ष, मीरे महफ़िल।

सद्रे महफ़िल (صدر محفل) अ. पुं.–दे. 'सद्रे मज्लिस'।

सद्रे मुशाअरः (صدر مشاعرہ) अ. पुं.–कवि-सम्मेलन का सभापति, मीरे मुशाअरः।

सनः (سنہ) अ. पुं.–वत्सर, संवत्, साल, सन।

सन (سن) अ. पुं.–वत्सर, साल, बरस, वर्ष।

सनद (سند) अ. स्त्री.–प्रमाण, सुबूत; प्रमाणपत्र, सर्टीफ़िकेट; आश्रय, सहारा; विश्वास, एतिबार नमूना, मिसाल, निदर्शन, आदर्श; उदाहरण, मिसाल; उपाधि, डिग्री।

सनदन (سنداً) अ. वि.–उदाहरणार्थ, मिसाल के तौर पर; प्रमाणार्थ, सुबूत के रूप में।

सनदयाफ़्तः (سندیافتہ) अ. फा. वि.–उपाधिप्राप्त, जिसने डिग्री पा ली हो।

सनदात (سندات) अ. स्त्री.–'सनद' का बहु., सनदें।

सनदी (سندی) अ. वि.–प्रमाणित, मुसल्लम।

सनदे फ़ज़ीलत (سند فضیلت) अ. स्त्री.–किसी विषय में पारंगत होने की उपाधि।

सनदे फ़राग़त (سند فراغت) अ. स्त्री.–दे. 'सनदे फ़ज़ीलत'।

सनदे मुआफ़ी (سند معافی) अ. स्त्री.–किसी को मुआफ़ी ज़मीन दिये जाने का प्रमाणपत्र।

सनदे विरासत (سند وراثت) अ. स्त्री.–किसी के स्थान पर उपस्थित होने या उत्तराधिकारी होने का प्रमाणपत्र।

सनदे हिक्मत (سند حکمت) अ. स्त्री.–(तबाबत में) स्नात होने की उपाधि।

सनम (صنم) अ. पुं.–मूर्ति, प्रतिमा, बुत; प्रिया, प्रेमिका, प्रेयसी, माशूक़ः।

सनमकदः (صنمکدہ) अ. फा. पुं.–मूर्तिगृह, मंदिर, बुतख़ाना।

सनमख़ानः (صنمخانہ) अ. फा. पुं.–बुतख़ाना, मंदिर, मूर्तिगृह।

सनमपरस्त (صنمپرست) अ. फा. वि.–मूर्तिपूजक, बुतों को पूजनेवाला, साकारोपासक।

सनमपरस्ती (صنمپرستی) अ. फा. स्त्री.–मूर्तिपूजा, बुतपरस्ती।

सनवात (سنوات) अ. पुं.–'सन' का बहु., बरसें, सालें।

सनवी (سنوی) अ. वि.–सनवाला, वर्ष का; वार्षिक, सालाना।

सना (ثنا) स्त्री.–स्तुति, वंदना, हम्द; प्रशंसा, श्लाघा, तारीफ़; इस्लामी परिभाषा में हज़्रत मुहम्मद साहब की गुणगाथा।

सना (سنا) फा. स्त्री.–एक रेचक पत्ती, सनाय, स्वर्ण-पत्री।

सनाए (صنائع) अ. पुं.–'सन्अत' का बहु., सनअतें, कारीगरियाँ; अलंकारादि, अदबी सन्अतें।

सनाए मक्की (سنائے مکی) फा. अ. स्त्री.–सना की पत्ती जो मक्के से आती है। यह सना बहुत ही अच्छी होती है।

सनाए मा'नवी (صنائع معنوی) अ. पुं.–अर्थालंकार, वह अलंकार जिनसे अर्थ की विशेषता प्रकट की जाय और अर्थ का चमत्कार दिखाया जाय।

सनाए लफ़्ज़ी (صنائع لفظی) अ. पुं.–शब्दालंकार, वह अलंकार जिनके द्वारा शब्दों में साहित्यिक चमत्कार पैदा किया जाय, जिन अलंकारों का सम्बन्ध केवल शब्दों से हो।

सनादीद (صنادید) अ. पुं.–'सिंदीद' का बहु., प्रतिष्ठित और महान् व्यक्ति।

सनाया (ثنایا) अ. पुं.–'सनीयः' का बहु., अगले चार दाँत, दो ऊपर के और दो नीचे के।

सनी (سنی) अ. वि.–दे. 'सनीयः'।

सनीन (سنین) अ. पुं.–'सन' का बहु., बहुत से बरस, कई साल।

सनीयः (ثنیہ) अ. पुं.–आगे का एक दाँत, अगला एक दाँत ऊपर का हो या नीचे का।

सनून (سنون) अ. पुं.–दाँतों का मंजन, दंत-मंजन।

सने इसवी (سن عیسوی) अ. पुं.–वह संवत्सर जो हज़रत ईसा के ज़माने से चलता है।

सने वफ़ात (سن وفات) अ. पुं.–मरने का साल, जिस साल किसी व्यक्ति का निधन हुआ हो।

सने विलादत (سن ولادت) अ. पुं.–पैदा होने का साल।

सने हिज्री (سن ہجری) अ. पुं.–वह संवत्सर जो हज़रत मुहम्मद साहब के मक्का छोड़कर मदीना जाने के दिन से चलता है, इस्लामी साल।

सनोबर (صنوبر) फा. पुं.–चीड़ का पेड़, जो लंबा और सुन्दर होता है।

सनोबरक़द (صنوبرقد) फा. वि.–जिसका शरीर सनोबर के पेड़ की तरह लंबा और सुन्दर हो।

सनोबरक़ामत (صنوبرقامت) फा. अ. वि.–दे. 'सनोबरक़द'।

सन्अत (صنعت) अ. स्त्री.–इस शब्द का शुद्ध उच्चारण 'सुन्अत' है, परंतु उर्दू में 'सन्अत' ही प्रचलित है। इसलिए यही शुद्ध है; कला, फ़न; शिल्प, कारीगरी; अलंकार।

सन्अतगर (صنعت گر) अ. फा. वि.–शिल्पकार, शिल्पी, कारीगर; उद्योगजीवी, पेशावर।

सन्अतगरी (صنعت گری) अ. फा. स्त्री.–शिल्पकला, शिल्प-सिद्धि, कारीगरी; उद्योग कर्म, पेशा।

सन्अतगाह (صنعت گاہ) अ. फा. स्त्री.–शिल्पशाला; उद्योगशाला।

सन्अती (صنعتی) अ. वि.–सन्अत से सम्बन्धित; औद्योगिक; शैल्पिक।

सन्अते कर्द (किर्द) गार (صنعت کردگار) अ. फा. स्त्री.–ईश्वर की कारीगरी, प्राकृतिक सौंदर्य।

सन्अते तज़ाद (صنعت تضاد) अ. स्त्री.–वह शब्दालंकार जिसमें दो या कई परस्पर विरोधी चीज़ें लायी जायँ।

सन्अते पर्वर्दगार (صنعت پروردگار) अ.फा. स्त्री.–दे. 'सन्अते कर्दगार'।

सन्अते मक़्लूब (صنعت مقلوب) अ. स्त्री.–वह शब्दालंकार जिसमें किसी शब्द के अक्षर उलटकर कोई दूसरा शब्द बनाकर चमत्कार पैदा किया जाय। "क्यों कर न लुत्फ़े बादाकशी हो सहाब में, बारिश में सारे हर्फ़ मिले हैं शराब के।" बारिश को उल्टो तो शराब के अक्षर मिलते हैं।

सन्अते शे'री (صنعت شعری) अ. स्त्री.–अलंकार, काव्यगत।

सन्नाअ (صناع) अ. वि.–शिल्पकार, शिल्पी, कारीगर; कलाकार, फ़नकार।

सन्नाई (صناعی) अ. स्त्री.–शिल्पकर्म, कारीगरी; कलाकर्म, फ़नकारी; हाथ का बारीक काम।

सन्नाए क़ुद्रत (صناع قدرت) अ. पुं.–प्रकृति, निसर्ग, नेचर।

सपंद (سپند) फा. पुं.–काला दाना, जो नज़र-गुज़र के लिए जलाया जाता है, दे. 'सिपंद', दोनों शुद्ध हैं।

सपंदाँ (سپنداں) फा. वि.–दे. 'सपंद'।

सपेदः (سپیدہ) फा. पुं.–दे. 'सफ़ेदः'।

सपेद (سپید) फा. वि.–दे 'सफ़ेद'।

सपेदए सुब्ह (سپیدۂ صبح) फा. अ. पुं.–प्रातःकाल की सफ़ेदी, सफ़ेदए सहर।

सपेदी (سپیدی) फा. स्त्री.–दे. 'सफ़ेदी'।

सफ़ [फ़्फ़] (صف) अ. स्त्री.–पंक्ति, अवली, क़तार; रेखा, लकीर; लंबी चटाई; नमाज़ या क़वाइद में मनुष्यों की लंबी लाइन।

सफ़आरा (صف آرا) अ. फा. वि.–युद्ध में सम्मुख आया हुआ दल।

सफ़आराई (صف آرائی) अ. फा. स्त्री.–युद्ध के लिए दो दलों का आमने-सामने होना।

सफ़कशी (صف کشی) अ. फा. स्त्री.–फ़ौजकशी, सैन्य-यात्रा, चढ़ाई।

सफ़दर (صفدر) अ. फा. वि.–युद्ध में बँधी पंक्तियों को तोड़ देनेवाला, महारथी, रणशूर; हज़्रत अली की उपाधि।

सफ़न (سفن) अ. पुं.–मछली या मगर का खुरदरा चमड़ा जो तलवार की मूठ पर लगाते हैं ताकि पकड़ मज़बूत रहे; बसूला।

सफ़बंदी (صف بندی) अ. फा. स्त्री.–पंक्तिबद्ध होना, क़तारें बाँधना, लाइन लगाना।

सफ़ ब सफ़ (صف بہ صف) अ. फा. वि.–पंक्तिबद्ध, क़तारें बाँधे हुए, कई पंक्तियों में बँटकर खड़े हुए।

सफ़बस्तः (صف بستہ) अ. फा. वि.–पंक्तिबद्ध, क़तार बाँधे हुए।

सफ़र (سفر) अ. पुं.–यात्रा, मुसाफ़रत; प्रस्थान, कूच; पर्यटन, सियाहत; गमन, जाना।

सफ़र (صفر) अ. पुं.–इस्लामी दूसरा महीना।

सफ़रख़र्च (سفرخرچ) अ. फा. पुं.–मार्ग-व्यय, आने-ज़ाने का सर्फ़ः।

सफ़रजल (سفرجل) अ. पुं.–बिही, एक प्रसिद्ध मेवा।

सफ़रनामः (سفرنامہ) अ. फा. पुं.–वह पुस्तक जिसमें कोई व्यक्ति अपने देश-विदेश पर्यटन करने का विस्तारपूर्वक वृत्तान्त लिखे, भ्रमण-कथा।

सफ़री (سفری) अ. वि.–सफ़र का; सफ़र से सम्बन्धित।

सफ़रे आख़िरत (سفر آخرت) अ. पुं.–अंतिम यात्रा, महाप्रस्थान, परलोक-यात्रा, मरना, मरण।

सफ़रे बह्री (سفر بحری) अ. पुं.–समुद्र के रास्ते पर्यटन, जहाज़ का सफ़र।

सफ़रे हवाई (سفر ہوائی) अ. पुं.–वायुयान द्वारा सफ़र।

सफ़वी (صفوی) अ. वि.–शाह 'सफ़ी' से सम्बन्धित, जो बड़े महात्मा थे और जिनकी संतान ईरान की शासक हुई।

सफ़वीयः (صفویہ) अ. वि.–शाह सफ़ी की संतानवाले।

सफ़शिकन (صف شکن) अ. फा. वि.–युद्ध में पंक्तिबद्ध सेना को चीर डालनेवाला, महारथी।

सफ़शिकनी (صف شکنی) अ. फा. स्त्री.–सेना की पंक्तियों में दरार डाल देना।

सफ़ह (سفہ) अ. स्त्री.–मूर्खता, निर्बुद्धित्व, बेअक़्ली।

सफ़ा (صفا) अ. स्त्री.–स्वच्छता, विशुद्धता, सफ़ाई; चमक-दमक, आबोताब; मक्के की एक पहाड़ी, (वि.) साफ़तौर से, स्पष्ट रूप से।

सफ़ाइन (سفائن) अ. पुं.–'सफ़ीनः' का बहु., नौकाएँ, नावें, कश्तियाँ।

सफ़ाई (صفائی) अ. स्त्री.–स्वच्छता, शुभ्रता, उजलापन; विशुद्धता, निर्मलता, ख़ालिसपन; पवित्रता, पाकीज़्गी; निर्दोषता, बेएबी; मुक़दमे में दोष के सुबूत के बाद निर्दोष का सुबूत (फ़ौजदारी में)।

सफ़ाए क़ल्ब (صفائے قلب) अ. स्त्री.–हृदय की शुद्धि, चित्त की पवित्रता, अंतःशुद्धि, मनःसंस्कार।

सफ़ाए बातिन (صفائے باطن) अ. स्त्री.–दे. 'स. क़ल्ब'।

सफ़ाकेश (صفاکیش) अ. फा. वि.–शुद्धात्मा, पाकबातिन; सदाचारी, नेकअत्वार।

सफ़ामश्रब (صفامشرب) अ. वि.–दे. 'सफ़ाकेश'।

सफ़ारा (صف آرا) अ. फा. वि.–दे. 'सफ़आरा'।

सफ़ाराई (صف آرائی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सफ़आराई'।

सफ़ाहत (سفاہت) अ. स्त्री.–कमीनापन, अधमता, नीचता, पामरता।

सफ़िलः (سفلہ) अ. पुं.–'सिफ़्लः' का बहु., सिफ़्ले, नीच लोग, कमीने।

सफ़ी (صفی) अ. वि.–स्वच्छ, धवल, साफ़; स्वच्छात्मा, पाकीज़ःमिज़ाज; मित्र, सखा, दोस्त; हज़्रत आदम का लक़ब।

सफ़ीउल्लाह (صفی اللہ) अ. पुं.–ईश्वर का मित्र; हज़्रत आदम।

सफ़ीनः (سفینہ) अ. पुं.–नौका, नाव, कश्ती; परवाना, आदेशपत्र; कविता की किताब।

सफ़ीयः (صفیہ) अ. स्त्री.–शुद्ध अंतःकरणवाली; हज़्रत मुहम्मद साहिब की एक सुपत्नी का शुभ नाम।

सफ़ीर (صفیر) अ. स्त्री.–सीटी जो मुँह की आवाज़ से बजायी जाय; पक्षियों की बोली।

सफ़ीर (سفیر) अ. पुं.–पत्रवाहक, चिट्ठी ले जानेवाला; संदेशवाहक, पैग़ाम पहुँचानेवाला; दूत, राजदूत।

सफ़ीह (سفیہہ) अ. वि.–अधम, नीच, कमीना; निर्बुद्धि, मूर्ख, नादान।

सफ़ूफ़ (سفوف) अ. पुं.–पिसी हुई चीज़, चूर्ण।

सफ़े जंग (صف جنگ) अ. फा. स्त्री.–फ़ौज की क़तार, सेना-पंक्ति।

सफ़ेदः (سفیدہ) फा. पुं.–फूँका हुआ जस्त, ज़िन्क आक्साइड; सफ़ेदी, श्वेतता।

सफ़ेद (سفید) फा. वि.–शुभ्र, उजला; श्वेत, सपेद।

सफ़ेदए सहर (سفیدۂ سحر) फा. अ. पुं.–प्रातःकाल का हलका प्रकाश।

सफ़ेदचश्म (سفیدچشم) फा. वि.–निर्लज्ज, बेहया।

सफ़ेदपोश (سفیدپوش) फा. वि.–सफ़ेद कपड़े पहननेवाला, श्वेतांबर; भलामानस, सज्जन; वह व्यक्ति जो कम आमदनी पर भी शिष्टता से जीवन-निर्वाह करे।

सफ़ेदबख़्त (سفیدبخت) फा. वि.–भाग्यवान्, ख़ुशनसीब।

सफ़ेदी (سفیدی) फा. वि.–श्वेतता, सपेदी; शुभ्रता, उजलापन।

सफ़ेदोसियाह (سفیدو سیاہ) फा. पुं.–काला और सफ़ेद, श्वेत-कृष्ण, सितासित।

सफ़े निआल (صف نعال) अ. स्त्री.–सभा में वह स्थान जहाँ जूते रखे जाते हैं, जूते रखने का स्थान; सबसे नीचा स्थान।

सफ़े मातम (صف ماتم) अ. फा. स्त्री.–वह फ़र्श जिस पर मृत्युशोक प्रकट करने के लिए लोग एकत्र हों।

सफ़े लश्कर (صف لشکر) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सफ़े जंग'।

सफ़्क (سفک) अ. पुं.–रक्तपात, हिंसा, खूँरेज़ी।

सफ़्के दिमा (سفک دما) अ. पुं.–ख़ून बहाना, हिंसा करना, रक्तपात।

सफ़्फ़ाक (سفاک) अ. वि.–रक्तपाती, ख़ून बहानेवाला; निष्ठुर, बेरहम; अत्याचारी, ज़ालिम।

सफ़्फ़ाकी (سفاکی) अ. स्त्री.–रक्तपात, खूँरेज़ी; निष्ठुरता, संगदिली; अत्याचार, ज़ुल्म।

सफ़्रः (سفرہ) अ. पुं.–दस्तरख़्वान, वह चीज़ जिस पर खाना रखकर खाते हैं, इसका मूल उच्चारण 'सुफ़्रः' है, दे. 'सुफ़्रः'।

सफ़्रःचीं (سفرہچیں) अ. फा. वि.–दस्तरख़्वान का बचा हुआ खानेवाला।

सफ़्रःची (سفرہچی) अ. फा. पुं.–ख़ानसामा, खाना खिलानेवाला, बैरा।

सफ़्रा (صفرا) अ. पुं.–एक धातु, पित्त; कटुता, कड़वाहट; पीले रंग की चीज़; धनुष।

सफ़्रावी (صفراوی) अ. वि.–सफ़्रा का, पित्त का; पित्त से सम्बन्धित; पित्त के दोष से उत्पन्न।

सफ़्राशिकन (صفراشکن) अ. फा. वि.–पित्तनाशक, पित्त को ख़त्म करनेवाली दवा।

सफ़्ला (سفلیٰ) अ. वि.–निम्नतम, बहुत नीचा; बहुत अधम, लोफ़र।

सफ़्वत (صفوت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; निर्मलता, सफ़ाई; संक्षिप्त, ख़ुलासा; निर्मल, साफ़, यह शब्द 'सिफ़्वत' और 'सुफ़्वत' भी है।

सफ़्हः (صفحہ) अ. पुं.–पृष्ठ, पन्ना, पेज; तल, सत्ह।

सफ़्हए आस्माँ (صفحۂ آسماں) अ. फा. पुं.–आकाश-पटल, तख़्ता रूपी आकाश।

सफ़्हए काग़ज़ (صفحۂ کاغذ) अ. पुं.–काग़ज़ का पन्ना, पत्र का एक ओर।

सफ़्हए क़िर्तास (صفحۂ قرطاس) अ. पुं.–दे. 'सफ़्हए काग़ज़'।

सफ़्हए ज़मीं (صفحۂ زمین) अ. फा. पुं.–पृथ्वी का चौरस तल, धरातल।

सफ़्हए हस्ती (صفحۂ ہستی) अ. फा. पुं.–पत्ररूपी संसार, पटलरूपी जीवन, जीवन-पटल।

सब [ब्ब] (صب) अ. पुं.–पानी फैलना, पानी बहना; आशिक़, आसक्त।

सब [ब्ब] (سب) अ. स्त्री.–गाली-गलौज, अपशब्द।

सबक़ (سبق) अ. पुं.–पाठ, जितना एक दिन में गुरु से पढ़ा जाय; शिक्षा, सीख; नसीहत, इब्रत; अनुभव, तज्रिबः।

सबक़आमोज़ (سبق آموز) अ. फा. वि.–सबक़ सिखानेवाला, पढ़ानेवाला; नसीहत करनेवाला, उपदेश देनेवाला।

सबक़त (سبقت) अ. स्त्री.–आगे निकल जाना, बढ़ जाना; अव्वल आना, सबसे अधिक नंबर पाना।

सबद (سبد) फा. स्त्री.–टोकरी, डलिया।

सबदे गुल (سبد گل) फा. स्त्री.–फूलों की टोकरी, माली की फूलों से भरी डलिया।

सबब (سبب) अ. पुं.–कारण, हेतु, वज्ह; मूल कारण; वह दो अक्षरी शब्द जिनमें एक हल् हो या दोनों अज्।

सबब (صبب) अ. पुं.–नीची भूमि, निशेबी ज़मीन; आशिक़ होना।

सबल (سبل) अ. पुं.–परबाल, वह बाल जो आँखों में पैदा हो जाते हैं और बहुत कष्ट देते हैं और जिनसे आँखें ख़राब हो जाती हैं।

सबलत (سبلت) अ. स्त्री.–मूँछ।

सबा (سبا) अ. पुं.–यमन का एक शहर जो हज़्रत सुलैमान को दहेज में मिला था; अब्दुल्ला का बाप, यह वही अब्दुल्ला है जो इब्ने सबा के नाम से प्रसिद्ध है और जिसने एक नया धर्म बनाकर लोगों को ठगा था।

सबा (صبا) अ. स्त्री.–पुर्वा हवा, ठंडी मृदुल और मधुर हवा, समीर, मंद समीर।

सबाक़ (سباق) अ. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'सिबाक़'।

सबाख़िराम (صبا خرام) अ. फा. वि.–सबा की तरह अठलाकर धीरे-धीरे चलनेवाला (वाली), मृदुगामिनी।

सबात (ثبات) अ. पुं.–दृढ़ता, स्थिरता, मज़बूती; चिरस्थायित्व, पायदारी।

सबाते अक़्ल (ثبات عقل) अ. पुं.–बुद्धि की स्थिरता और पुख़्तगी, बुद्धि का दोष रहित होना।

सबाते राय (ثبات رائے) अ. पुं.–राय और विचार की सुदृढ़ता, ख़याल की पुख़्तगी, राय का ठीक होना।

सबाते होशोहवास (ثبات ہوش و حواس) अ. फा. पुं.–होश और संज्ञा का ठीक होना, होश में होना।

सबारफ़्तार (صبا رفتار) अ. फा. वि.–दे. 'सबाख़िराम'।

सबाह (صباح) अ. स्त्री.–प्रातःकाल, प्रभात, तड़का; गोरा, सुन्दर, रूपवान्।

सबाहत (صباحت) अ. स्त्री.–गोरापन, रंग की सफ़ेदी; सुन्दरता, रूप, हुस्न।

सबाहत (سباحت) अ. स्त्री.–पैराकी, पानी में तैरना, दे. 'सिबाहत', दोनों शुद्ध हैं।

सबाहे ईद (صباح عید) अ. स्त्री.–ईद के दिन का सवेरा; ख़ुशी और आनंद का उदय।

सबिर (صبر) अ. पुं.–एलुआ, इस अर्थ में 'सब्र' और 'सिब्र' भी है।

सबी (صبی) अ. पुं.–दूध पीता बालक, शिशु, दुधमुँहा।

सबीयः (صبیہ) अ. स्त्री.–दूध पीती बच्ची।

सबील (سبیل) अ. स्त्री.–मार्ग, रास्ता; उपाय, यत्न, तदबीर; पद्धति, शैली, तर्ज़; पानी पिलाने का स्थान, पियाऊ; मुहर्रम में शर्बत पिलाने का स्थान।

सबीह (صبیح) अ. वि.–गोरा-चट्टा, जिसका रंग ख़ूब साफ़ हो, गौरवर्ण; सुन्दर, हसीन।

सबुई (سبعی) अ. वि.–दे. 'सबुईयत'।

सबुईयत (سبعیت) अ. स्त्री.–भेड़ियापन, दरिंदगी; निर्दयता, बेरहमी।

सबुक (سبک) फा. वि.–अगुरु, हलका; अधम, नीच, लोफ़र; चुस्त, फुर्तीला; शीघ्रता, जल्दी, 'सुबक' भी प्रचलित।

सबुकइनाँ (سبک عناں) फा. वि.–शीघ्रगति, शीघ्रगामी, तेज़रफ़्तार।

सबुकख़िराम (سبک خرام) फा. वि.–तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगति।

सबुकख़ेज़ (سبک خیز) फा. वि.–सवेरे बहुत तड़के उठनेवाला।

सबुकगाम (سبک گام) फा. वि.–शीघ्रगति, तेज़ चलनेवाला; मृदुलगामी, हलकी चाल से चलनेवाला।

सबुकगामी (سبک گامی) फा. स्त्री.–तेज़ चलना; हलकी चाल से चलना।

सबुकजौलाँ (سبک جولاں) फा. वि.–शीघ्रगामी, तेज़रौ।

सबुकतिगीं (سبکتگیں) तु.. पुं.–सुलतान महमूद के बाप का नाम, दे. 'सुबुकतिगीं', दोनों शुद्ध हैं।

सबुकदस्त (سبک دست) फा. वि.–जिसका हाथ किसी काम पर सधा हो; जो तेज़ी से काम करे, चालाक।

सबुकदस्ती (سبک دستی) फा. स्त्री.–किसी काम पर हाथ का सधा होना; तेज़ी से काम करना।

सबुकदोश (سبک دوش) फा. वि.–भारयुक्त, ज़िम्मेदारी से अलग; पिंशिनयाफ़्तः, अवकाशप्राप्त।

सबुकदोशी (سبک دوشی) फा. स्त्री.–ज़िम्मेदारी से अलाहिदगी; पिंशिन, निवृत्ति।

सबुकपरवाज़ (سبک پرواز) फा. वि.–तेज़ उड़नेवाला; ऊँचा उड़नेवाला।

सबुकपरवाज़ी (سبک پروازی) फा. स्त्री.–तेज़ उड़ना; ऊँचा उड़ना।

सबुकपा (سبک پا) फा. वि.–शीघ्रगति, तेज़क़दम।

सबुकपाई (سبک پائی) फा. स्त्री.–तेज़ चलना, शीघ्रगमन, तेज़क़दमी।

सबुकबार (سبک بار) फा. वि.–जिसके सर से बोझ उतर गया हो, भारमुक्त, निवृत्त।

सबुकबाल (سبک بال) फा. वि.–तेज़ उड़नेवाला।

सबुकमग़्ज़ (سبک مغز) फा. वि.–मंदबुद्धि, अल्पबुद्धि; कमअक़्ल; तिरस्कृत, अपमानित, बेइज़्ज़त।

सबुकमग़्ज़ी (سبک مغزی) फा. स्त्री.–बुद्धि की मंदता, बेअक़्ली; तिरस्कार, निंदा, बेइज़्ज़ती।

सबुकरफ़्तार (سبک رفتار) फा. वि.–शीघ्रगति, आशुगामी, तज़ेरौ।

सबुकरफ़्तारी (سبک رفتاری) फा. स्त्री.–तेज़ चलना, शीघ्र गमन।

सबुकरवी (سبک روی) फा. स्त्री.–तेज़ रफ़्तारी; तेज़ चलना।

सबुकरूह (سبک روح) फा. अ. वि.–हँसमुख, ज़रीफ़; निवृत्त, बेतअल्लुक़; हर काम में होशियार; जो किसी से द्वेष, बैर आदि न रखे।

सबुकरूही (سبک روحی) फा. अ. स्त्री.–हँसमुख होना; निवृत्ति, बेतअल्लुक़ी; फुरती, तेज़ी; किसी से कोई द्वेष आदि न रखना।

सबुकरौ (سبک رو) फा. वि.–दे. 'सबुकरफ़्तार'।

सबुकसंग (سبک سنگ) फा. वि.–अधम, नीच, कमीना।

सबुकसर (سبک سر) फा. वि.–अधम, ओछा, लोफ़र; जो अपना धैर्य और गंभीरता छोड़कर अपनी जगह से नीचे उतर आये।

सबुकसरी (سبکسری) फा. स्त्री.–ओछापन; अपनी मर्यादा का त्याग, अपने दरजे से नीचे उतरना।

सबुकसार (سبکسار) फा. वि.–जो सांसारिक बंधनों से निवृत्त हो, फ़ारिग़ल बाल।

सबुकसैर (سبکسیر) फा.वि.–दे. 'सबुकरफ़्तार'।

सबुकसैरी (سبکسیری) फा.अ.स्त्री.–दे. 'सबुकरफ़्तारी'।

.सबुक़हिम्मत (سبکہمت) फा. अ. वि.–हतोत्साह, मंदोत्साह, अल्पसाहस, कमहौसला।

सबुकहिम्मती (سبکہمتی) फा. अ. स्त्री.–उत्साह और साहस की कमी, कमहिम्मती।

सबुकी (سبکی) फा. स्त्री.–हलकापन; लज्जा, ख़िफ़्फत; नीचता, कमीनगी।

सबू (سبو) फा. पुं.–घड़ा, घट, कुंभ; शराब की मटकी, मद्यघट, 'सुबू' भी प्रचलित,—"किया है मस्त जिन्हें तेरी चशमे मैगूंने, वह किस लिये हवसे साग़री सबू करते।"

सबूए मै (سبوے مے) फा. पुं.–शराब का घड़ा, मद्य-घट।

सबूकश (سبوکش) फा. वि.–जो पूरा मटका शराब पी जाय, पक्का शराबी।

सबूकशी (سبوکشی) फा. स्त्री.–शराबनोशी, मद्यपान।

सबूचः (سبوچہ) फा. पुं.–छोटा घड़ा, मटकी।

सबूदान (سبودان) फा. पुं.–घड़ा रखने की तिपाई आदि।

सबूर (صبور) अ. वि.–धैर्यवान्, धीरज धरनेवाला, सब्र करनेवाला।

सबूरी (صبوری) अ. स्त्री.–धैर्य, धीरज, सब्र।

सबूस (سبوس) फा. स्त्री.–भूसी, तुष।

सबूसाज़ (سبوساز) फा. वि.–कुंभकार, कुम्हार।

सबूसे अस्पग़ोल (سبوس اسپغول) फा. स्त्री.–ईसबगोल की भूसी।

सबूह (صبوح) अ. वि.–सवेरे तड़के पी जानेवाली शराब।

सबूही (صبوحی) अ. स्त्री.–दे. 'सबूह'।

सबूहीकश (صبوحی کش) अ. फा. वि.–सवेरे की शराब पीनेवाला।

सब्अः (سبعہ) अ. वि.–सात, सप्त, एक संख्या।

सब्अ (سبع) अ. वि.–सप्त, सात की संख्या।

सब्ग़ (صبغ) अ. पुं.–रँगना, रंग करना, रंजन।

सब्ज़ः (سبزہ) फा. पुं.–हरी घास; हरियाली; सब्ज़ रंग का घोड़ा।

सब्ज़ःआग़ाज (سبزہ آغاز) फा. वि.–जिसकी मूँछ-दाढ़ी के बाल निकलने शुरू हो गये हों, अंकुरितयौवन।

सब्ज़ःख़त (سبزہ خط) फा. वि.–जिसकी मूँछ-दाढ़ी के बाल नये-नये निकले हों।

सब्ज़ःख़ेज़ (سبزہ خیز) फा. वि.–हरा-भरा, हरियाली से परिपूर्ण।

सब्ज़ःज़ार (سبزہ زار) फा. पुं.–जहाँ हरियाली ही हरियाली हो, घास का मैदान।

सब्ज़ःरंग (سبزہ رنگ) फा. वि.–हरे रंग का; मलीह, नमकीन, साँवला, सलोना।

सब्ज़ःरुख़ (سبزہ رخ) फा. वि.–दे. 'सब्ज़ःख़त'।

सब्ज़ःरू (سبزہ رو) फा. वि.–दे. 'सब्ज़ःख़त'।

सब्ज़ःखेज़ (سبزہ خیز) फा. वि.–हरा, हरा रंग; हरे रंग से रँगा हुआ।

सब्ज़ए ख़ुदरो (سبزۂ خودرو) फा. पुं.–अपने आप जमनेवाली घास।

सब्ज़ए नौख़ेज़ (سبزۂ نوخیز) फा. पुं.–नयी उगी हुई घास; नयी निकली हुई दाढ़ी, दाढ़ी-मूँछ के नये बाल।

सब्ज़क (سبزک) फा. पुं.–नीलकंठ, चाष।

सब्ज़क़दम (سبزقدم) फा. अ. वि.–जिसका आना अनिष्टकर हो, मनहूसक़दम, अशुभचरण।

सब्ज़क़दमी (سبزقدمی) फा. अ. स्त्री.–आना अशुभ होना।

सब्ज़कार (سبزکار) फा. वि.–जिसके हाथ से काम अच्छी तरह निकलें, जो हर काम सफलतापूर्वक करे।

सब्ज़पा (سبزپا) फा. वि.–दे. 'सब्ज़क़दम'।

सब्ज़पाई (سبزپائی) फा. स्त्री.–दे. 'सब्ज़क़दमी'।

सब्ज़पोश (سبزپوش) फा. वि.–हरे रंग के कपड़े पहननेवाला, हरितांबर।

सब्ज़पोशी (سبزپوشی) फा. स्त्री.–हरे कपड़े पहनना।

सब्ज़फ़ाम (سبزفام) फा. वि.–हरे रंगवाला, हरितांग।

सब्ज़फ़ामी (سبزفامی) फा. स्त्री.–हरा रंग होना, शरीर का रंग हरा होना।

सब्ज़बख़्त (سبزبخت) फा. वि.–भाग्यवान्, ख़ुशक़िस्मत; तेजस्वी, प्रतापी, इक़्बालमंद।

सब्ज़बख़्ती (سبزبختی) फा. स्त्री.–भाग्यवानी; प्रताप, इक़्बाल।

सब्ज़रंग (سبزرنگ) फा. वि.–हरे रंग का; सलोना, साँवला, मलीह।

सब्ज़रंगी (سبزرنگی) फा. स्त्री.–हरा रंग होना; सलोनापन, साँवलापन।

सब्ज़ाने चमन (سبزان چمن) फा. पुं.–बाग़ के पेड़, बाग़ के वृक्ष।

सब्ज़ी (سبزی) फा. स्त्री.–हरापन, हरियालापन; घास, सब्ज़ः; शाक, भाजी, तरकारी; भंग, भाँग।

सब्ज़ीख़ोर (سبزی خور) फा. वि.–शाकाहारी, सागपात खानेवाला।

सब्ज़ीनः (سبزینہ) फा. पुं.–साँवले रंग का मा'शूक़।

सब्ज़ीफ़रोश (سبزی فروش) फा. वि.–साग-तरकारी बेचनेवाला, कुँजड़ा।

सब्त (سبط) अ. स्त्री.–छुटे हुए बाल, खुले हुए बाल, बाल जिनका जूड़ा न बँधा हो।

सब्त (ثبت) अ. वि.–अंकन, लिखना; अंकित, लिखित, लिखा हुआ।

सब्त (سبت) अ. पुं.–शनिवार, शंबः, सनीचर।

सब्बाक (سباک) अ. वि.–स्वर्णकार, सुनार।

सब्बाग़ (صباغ) अ. वि.–रँगनेवाला, रंजक, रंगरेज़।

सब्बाग़ी (صباغی) अ. स्त्री.–रँगने का काम।

सब्बाग़े ज़मीं (صباغ زمیں) अ. फा. पुं.–रवि, सूरज, क्योंकि पृथ्वी के तमाम प्राणिवर्ग, वनस्पतिवर्ग और धातुवर्ग को रंग सूरज से ही मिलता है।

सब्बाबः (سبابہ) अ. स्त्री.–तर्जनी, अँगूठे के पास की उँगली।

सब्बाह़ (سباح) अ. वि.–तैरनेवाला, नदी आदि का तैराक।

सब्बूह (سبوح) अ. पुं.–स्तुति करनेवाला, प्रशंसा करनेवाला।

सब्बो शत्म (سب و شتم) अ. पुं.–गाली-गलौज।

सब्र (صبر) अ. पुं.–धैर्य, धीरज, सबूरी; एलुआ, इस अर्थ में 'सिब्र' और 'सबिर' भी है।

सब्रआज़्मा (صبر آزما) अ. फ़ा. वि.–वह काम जो सब्र की आज़माइश करे अर्थात् देर में हो।

सब्रतलब (صبر طلب) अ. वि.–जिसमें सब्र और धैर्य की आवश्यकता हो।

सब्रे ऐयूब (صبر ایوب) अ. पुं.–'हज्रत ऐयूब'–जैसा सब्र और धैर्य।

सब्रो शुक्र (صبر و شکر) अ. पुं.–हर काम में धीरज धरना और ईश्वर को धन्यवाद देना।

समंद (سمند) फा. पुं.–अश्व, घोड़ा।

समंदर (سمندر) फा. पुं.–'सामंदर' का लघु., अग्निकीट, आग का कीड़ा, एक कीड़ा जिसकी उत्पत्ति अग्नि से है।

समंदल (سمندل) फा. पुं.–दे. 'समंदर'।

सम [म्म] (سم) अ. पुं.–विष, गरल, ज़हर; सुई का नाका।

समक (سمک) अ. स्त्री.–मीन, मत्स्य, मछली; वह मछली जिसकी पीठ पर पृथ्वी स्थिर है।

समकीयाँ (سمکیاں) अ. फा. पुं.–मर्त्यवाले, संसारवाले।

समद (صمد) अ. वि.–श्रेष्ठ, पूज्य, बुज़ुर्ग; अनीह, निःस्पृह, बेनियाज़; नित्य, अनश्वर, दाइम; वह व्यक्ति जो भूखा-प्यासा न हो; ईश्वर।

समदीयत (صمدیت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; निःस्पृहता, बेनियाज़ी; हर प्रकार की इच्छाओं से रहित होना।

समन (ثمن) अ. पुं.–मूल्य, दाम, क़ीमत।

समन (سمن) अ. स्त्री.–चमेली का फूल।

समनअंदाम (سمن اندام) फा. वि.–चमेली के फूल–जैसे शुभ्र और सुगंधित अथवा मृदुल शरीरवाला (वाली)।

समनइज़ार (سمن عذار) फा. अ. वि.–जिसके गाल चमेली के फूल की तरह मृदुल, कोमल और शुभ्र हों।

समनख़द (سمن خد) फा. वि.–दे. 'समनइज़ार'।

समनज़ार (سمن زار) फा. पुं.–जहाँ चमेली ही चमेली हो, चमेली का वन या बाग़।

समनबार (سمن بار) फा. वि.–फूल बरसानेवाला (वाली)

समनबू (سمن بو) फा. वि.–फूल-जैसे सुगंधवाला।

समनरू (سمن رو) फा. वि.–चमेली के फूल–जैसा धवल और उज्ज्वल मुख रखनेवाला (वाली)।

समनसाक़ (سمن ساق) फा. वि.–चमेली–जैसी सफ़ेद पिंडलियोंवाली सुन्दरी।

समनसीमा (سمن سیما) फा. वि.–चमेली-जैसे माथेवाला (वाली)।

समम (صمم) अ. पुं.–बहरापन, बधिरता।

समरः (ثمرہ) अ. पुं.–फल, मेवा; प्रतिकार, बदला; परिणाम, नतीजा।

समर (سمر) अ. पुं.–कथा, किस्सा, कहानी; कथन, बात।

समर (ثمر) अ. पुं.–फल, मेवा; प्रतिकार, बदला; परिणाम, नतीजा।

समरात (ثمرات) अ. पुं.–'समरः' का बहु., फल, मेवे; परिणाम, नतीजे।

समा (سما) अ. पुं.–आकाश, अंबर, गगन, आस्मान।

समाँ (سماں) अ. मंज़र, नज़्ज़ारा, दृश्य।

समाअ (سماع) अ. पुं.–श्रवण, सुनना, गाना-बजाना; वज्द करना, झूमना।

समाअत (سماعت) अ. स्त्री.–श्रवण, सुनना; श्रवण-शक्ति, सुनने की क़ुव्वत।

समाई (سماعی) अ. स्त्री.–सुना हुआ, सुनी हुई बात।

समाक़ (سماق) अ. पुं.–एक बहुत ही कड़ा पत्थर, जिसके खरल बहुत क़ीमती होते हैं।

समाजत (سماجت) अ. स्त्री.–निकृष्टता, ख़राबी; विनती, विनय, ख़ुशामद, गिड़गिड़ाहट।

समानियः (ثمانیہ) अ. वि.–अष्ट, आठ।

समानीन (ثمانین) अ. वि.–अस्सी।

समावात (سماوات) अ. पुं.–'समा' का बहु., आकाश-समूह, बहुत–से आस्मान।

समाव़ार (سماوار) फा. पुं.–चाय पकाने या पानी गर्म करने का टंकीनुमा बर्तन, जिसमें टोंटी हो।

समावी (سماوی) अ. वि.–आस्मानी, आकाशीय; ग़ैबी, दैवी।

समाह (سماح) अ. पुं.–दे. 'समाहत'।

समाहत (سماحت) अ. स्त्री.–दानशीलता, फ़ैयाज़ी।

समी (سمی) अ. वि.–सहनाम, एक नामवाले; तुल्य, समान, मिस्ल।

समीअ (سمیع) अ. वि.–सुननेवाला; ईश्वर का एक नाम।

समीज़ (سمیز) अ. स्त्री.–मैंदे की सफ़ेद रोटी।

समीद (سمید) फा. स्त्री.–दे. 'समीज़'।

समीन (سمین) अ. वि.–मोटा, चर्बीला।

समीन (ثمین) अ. वि.–मूल्यवान्, क़ीमती।

समीम (صمیم) अ. वि.–निर्मल, ख़ालिस; हृदय का भीतरी भाग; वधिर, बहरा।

समीमे क़ल्ब (صمیم قلب) अ. वि.–हृदय का भीतरी भाग, तहेदिल; निष्केवलता, ख़ुलूस।

समीर (ثمیر) अ. वि.–फलदार, फलवाला, वह पेड़ जिसमें फल लगे हों।

समूद (ثمود) अ. पुं.–हज़्रत नूह की चौथी पुश्त में एक व्यक्ति का नाम था। उसके वंशज 'बनी समूद' कहलाते थे और 'हज़्रत सालेह' के अनुयायी थे। इन्होंने हज़्रत सालेह के साथ गुस्ताख़ी की थी जिससे सब तबाह हो गये थे।

समूम (سموم) अ. स्त्री.–कड़ी लपट, ज़ह्रीली हवा।

समूर (سمور) अ. वि.–एक जानवर जिसकी खाल से बढ़िया पोस्तीन बनती है।

समूरी (سموری) अ. स्त्री.–समूर की खाल का बना हुआ।

सम्अ (سمع) अ. स्त्री.–श्रवण, सुनना; श्रवण-शक्ति, समाअत।

सम्अख़राश (سمع خراش) अ. फा. वि.–कान खानेवाला, बकबक करके कानों को कष्ट देनेवाला।

सम्अख़राशी (سمع خراشی) अ. फा. स्त्री.–बकबक से कानों को कष्ट देना।

सम्ग़ (صمغ) अ. पुं.–गोंद, निर्यास।

सम्ग़े अरबी (صمغ عربی) अ. पुं.–बबूल का गोंद।

समत (سمط) अ. पुं.–मोती, मुक्ता, दे. 'सिम्त', दोनों शुद्ध हैं।

सम्त (صمت) अ. पुं.–शान्ति, सुकून; मौन, ख़ामोशी।

सम्त (سمت) अ. स्त्री.–दिशा, तरफ़; सदाचार, नेकचलनी; सरल मार्ग, सीधा रास्ता; आकृति, शक्ल; इरादा, संकल्प, मानस कर्म।

सम्तुर्रास (سمت الراس) अ. स्त्री.–आकाश का वह बिंदु जो मनुष्य के चंद्रमा के ठीक सामने पड़े, शीर्षबिन्दु, आकाश बिन्दु, खमध्य।

सम्ते जुनूब (سمت جنوب) अ. स्त्री.–दक्षिण की दिशा, दक्षिण, दक्खिन।

सम्ते मग़्रिब (سمت مغرب) अ. स्त्री.–पश्चिम की दिशा, पच्छिम, प्रत्यक्।

सम्ते मश्रिक़ (سمت مشرق) अ. स्त्री.–पूर्व की दिशा, पूर्व, प्राक्।

सम्ते मुख़ालिफ़ (سمت مخالف) अ. स्त्री.–वामपक्ष, विरोधी दल।

सम्ते शिमाल (سمت شمال) अ. स्त्री.–उत्तर की दिशा, उत्तर, उदक्।

सम्न (سمن) अ. स्त्री.–घी, घृत, रौग़न।

सम्मी (سمی) अ. वि.–विषाक्त, ज़ह्रआलूद, जिसमें ज़ह्र अथवा विष हो।

सम्मीयत (سمیت) अ. स्त्री.–विषत्व, ज़ह्रपन; विष, ज़ह्र; विष का असर।

सम्मे क़ातिल (سم قاتل) अ. पुं.–बहुत ही सख़्त विष, जिसके खा लेने से मनुष्य किसी प्रकार न बचे।

सम्साम (صمصام) अ. स्त्री.–तेज़ तलवार, काटदार तलवार।

सय्याद (صیاد) अ. वि.–शिकारी, आखेटक, लुब्धक, व्याध, चिड़ीमार, चिड़ियाँ पकड़नेवाला, शाकुनिक।

सय्यादी (صیادی) अ. वि.–शिकार का पेशा; निर्दयता, संगदिली।

सय्यादे अजल (صیاد اجل) अ. पुं.–मौत का शिकारी, मृत्युरूपी व्याध।

सय्याफ़ (سیاف) अ. वि.–तलवार चलानेवाला; जल्लाद, वधिक।

सय्याल (سیال) अ. वि.–तरल, बहनेवाला पदार्थ।

सय्यारः (سیارہ) अ. पुं.–तारा, उडु; ग्रह, सितारा; सैर करनेवाला।

सय्यार (سیار) अ. वि.–घूमनेवाला, सैर करनेवाला; वह तारा जो घूमता है, स्थिर नहीं रहता, ग्रह।

सय्यास (سیاس) अ. वि.–राजनीति में निपुण, राजनीतिज्ञ, सियासतदाँ।

सय्याह (سیاح) अ. पुं.–पर्यटक, सियाहत करनेवाला, देश-विदेश घूमनेवाला।

सय्याहीं (سیاحی) अ. स्त्री.–पर्यटन, देशाटन, देश-विदेश घूमना, सियाहत करना।

सरंगुश्त (سرانگشت) फा. स्त्री.–उँगली का पोरा; उँगली का सिरा।

सरंजाम (سرانجام) फा. पुं.–अन्त, अख़ीर; पूर्ति, तकमील; परिणाम, नतीजा; प्रबंध, बंदोबस्त; उपकरण, सामग्री, सामान।

सरः (سرہ) फा. वि.–निर्मल, निष्केवल, बेमेल, ख़ालिस; खरा रुपया और सिक्का।

सर (سر) फा. पुं.–शिर, सिर, मूँड़; श्रेष्ठ, उत्तम; ध्यान, ख़याल; सिरा, अगला भाग, (उप.) श्रेष्ठता, उच्चता, सिरा, आदि के अर्थ में आता है।

सरअंगुश्त (سرانگشت) फा. स्त्री.–दे. ‘सरंगुश्त’ उच्चारण वही अधिक शुद्ध है।

सरअंज़ाम (سرانجام) फा. पुं.–‘दे. ‘सरंजाम’, उच्चारण वही अधिक शुद्ध है।

सरअफ़गंदः (سرافگندہ) फा. वि.–दे. ‘सरफ़गंदः’ उच्चारण वही अधिक शुद्ध है।

सरआमद (سرآمد) फा. वि.–दे. ‘सरामद’, उच्चारण वही अधिक शुद्ध है।

सरक़तार (سرقطار) फा. अ. वि.–मुखिया, अगुआ, लीडर, नेता।

सरकर्दः (سرکردہ) फा. वि.–अगुआ, सरग़ना, मुखिया।

सरकर्दगी (سرکردگی) फा. स्त्री.–अगुआपन, नेतृत्व।

सरक़ल्यान (سرقلیان) फा. स्त्री.–चिलम, तमाकू पीने की चिलम।

सरकश (سرکش) फा. वि.–अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान; विद्रोही, बाग़ी; उद्दंड, उजड्ड; अशिष्ट, नामुहज़्ज़ब; मुँहफट, बदलगाम; स्वेच्छाचारी, ख़ुदराय।

सरकशी (سرکشی) फा. स्त्री.–अवज्ञा, हुक्मउदूली; विद्रोह, बग़ावत; उद्दंडता, उजड्डपन; बदलगामी, मुँहफट होना।

सरकार (سرکار) फा. स्त्री.–राज्य, हुकूमत; शासक, हाकिम; राष्ट्र, मम्लुकत; बड़े व्यक्तियों के लिए संबोधन का शब्द; कचहरी, न्यायालय; दरबार, राजसभा।

सरकारी (سرکاری) फा. वि.–राजकीय, हुकूमती, सरकार का।

सरकोचकी (سرکوچکی) फा. स्त्री.–अधमता, नीचता, पामरता, कमीनगी।

सरकोब (سرکوب) फा. वि.–सर कुचलनेवाला, दमन करनेवाला; दमदमः।

सरकोबी (سرکوبی) फा. स्त्री.–सर कुचलना, दमन करना।

सरख़त (سرخط) फा. पुं.–तनख़्वाह आदि के हिसाब का काग़ज़; दस्तख़ती तहरीर; स्टाम्प, तमस्सुक।

सरख़ुश (سرخوش) फा. वि.–हलके नशे में मस्त।

सरख़ुशी (سرخوشی) फा. स्त्री.–हलका नशा।

सरख़ैल (سرخیل) फा. वि.–अपने दल का नायक, सरदार।

सरग़नः (سرغنہ) फा. वि.–मुखिया, सरदार।

सरगर्दां (سرگرداں) फा. वि.–दे. ‘सरगश्तः’।

सरगर्म (سرگرم) फा. वि.–तन्मय, तल्लीन, मह्व; तत्पर, कटिबद्ध, मुस्तइद।

सरगर्मी (سرگرمی) फा. स्त्री.–तन्मयता, संलग्नता, मुस्तइद्दी, तत्परता।

सरगर्मेकार (سرگرمکار) फा. वि.–किसी काम में पूरी तन्मयता से लगा हुआ।

सरगश्तः (سرگشتہ) फा. वि.–हैरान, उद्विग्न, परीशान; रास्ते में भटका हुआ, राह भूला हुआ।

सरगश्तगीं (سرگشتگی) फा. स्त्री.–उद्विग्नता, हैरानी; राह भूल जाना, भटकते फिरना।

सरगर्दानी (سرگردانی) फा. स्त्री.–दे. ‘सरगश्तगी’।

सरगिराँ (سرگراں) फा. वि.–रुष्ट, अप्रसन्न, नाख़ुश, ख़फ़ा।

सरगिरानी (سرگرانی) फा. स्त्री.–रोष, अप्रसन्नता, ख़फ़गी।

सरगुज़श्त (سرگزشت) फा. स्त्री.–वृत्तान्त, हाल; घटना, वाक़िआ।

सरगुम (سرگم) फा. वि.–जिसका आदि और अन्त न हो, जिसकी इब्तिदा और इन्तिहा न हो।

सरगुरोह (سرگروہ) फा. वि.–मुखिया, नायक, अपने दल का सरदार।

सरगोशी (سرگوشی) फा. स्त्री.–कान से मुँह मिलाकर चुपके-चुपके बातें करना, कानाफूँसी।

सरचंग (سرچنگ) फा. पुं.–थप्पड़, चाँटा, तल-प्रहार।

सरचश्मः (سرچشمہ) फा. पुं.–स्रोत, सोत, सोता; उद्गम, मख़ज।

सरचस्पाँ (سرچسپاں) फा. पुं.–बोतल या डिब्बे आदि पर चिपकाने का लेबिल।

सरजंग (سرجنگ) फा. पुं.–सेनापति, सिपहसालार।

सरज़दः (سرزدہ) फा. वि.–निश्चेष्ट, संज्ञाहीन, बेख़बर।

सरज़द (سرزد) फा. वि.–घटित, वाक़े’।

सरज़न (سرزن) फा. वि.–अवज्ञाकारी, उद्दंड, सरकश।

सरज़निश (سرزنش) फा. स्त्री.–डाँट-फटकार, भर्त्संना, तंबीह।

सरज़नी (سرزنی) फा. स्त्री.–अवज्ञा, नाफ़र्मानी।

सरज़मीं (سرزمیں) फा. स्त्री.–पृथ्वी, ज़मीन; देश, मुल्क।

सरज़ूक़ः (سرجوقہ) फा. पुं.–दे. 'सरगुरोह'।

सरज़ोर (سرزور) फा. वि.–विद्रोही, बाग़ी; अवज्ञाकारी, नाफ़र्मान।

सरज़ोरी (سرزوری) फा. स्त्री.–विद्रोह, बग़ावत; अवज्ञा, नाफ़र्मानी।

सरजोश (سرجوش) फा. वि.–हर वह चीज़ जो देग से पहले जोश में उतारी जाय, सार, सत, जौहर।

सरतराश (سرتراش) फा. वि.–नापित, नाई, सर छीलनेवाला, क्षौरकर्मकार।

सरतराशी (سرتراشی) फा. स्त्री.–नापित-कर्म, नाई का काम, नाईपन।

सरताज (سرتاج) फा. वि.–शिरोमणि, सबसे अच्छा; पति, शौहर; स्वामी, मालिक; नायक, सरदार।

सरतान (سرطان) अ. पुं.–दे. 'सर्तान'।

सरतापा (سرتاپا) फा. वि.–सर से पाँव तक, आपादमस्तक; आद्योपान्त, शुरू से आखिर तक।

सरताबक़दम (سرتابہقدم) फा. अ. वि.–दे. 'सरतापा'।

सरताबी (سرتابی) फा. स्त्री.–अवज्ञा, हुक्मउदूली; उद्दंडता, सरकशी।

सरतासर (سرتاسر) फा. वि.–आदि से अंत तक, शुरू से अखीर तक।

सरतेज़ः (سرتیزہ) फा. पुं.–संगीन, लंबी पतली छुरी।

सरतेज़ (سرتیز) फा. वि.–लड़ाकू, जंगजू; नोकदार।

सरदफ़्तर (سر دفتر) फा. वि.–हेडक्लर्क, दफ़्तर का इनचार्ज।

सर दर गिरीबाँ (سر در گریباں) फा. वि.–सोच में पड़ा हुआ।

सरदर्द (سردرد) फा. पुं.–सिर की पीड़ा, सर का दर्द; झंझट, जंजाल, बखेड़ा; श्रम, मेहनत।

सरदर्दी (سردردی) फा. स्त्री.–दे. 'सरदर्द'।

सरदस्त (سردست) फा. वि.–पोच, ओछा, बेक़द्र; क़लंदरों के हाथ में रखने की लकड़ी।

सरदार (سردار) फा. पुं.–नायक, अध्यक्ष; स्वामी, पति।

सरदारी (سرداری) फा. स्त्री.–अध्यक्षता; स्वामित्व।

सरनविश्त (سرنوشت) फा. स्त्री.–भाग्यलेख, तक़दीर का लिखा; वृत्तान्त, हाल।

सरनामः (سرنامہ) फा. पुं.–खत का अल्क़ाबो आदाब।

सरनाम (سرنام) फा. पुं.–प्रसिद्ध, मशहूर; यशस्वी, नामवर।

सरनिगूँ (سرنگوں) फा. वि.–सर झुकाये हुए; औंधा, अधोमुख; लज्जित, शर्मिंदा।

सरनिहादः (سرنہادہ) फा. वि.–सर टेके हुए, सर झुकाये हुए।

सरपंजः (سرپنجہ) फा. वि.–हाथ का पंजा, प्रहस्त, अलंबुष; शक्तिशाली, ताक़तवर; अत्याचारी, ज़ालिम।

सरपंजगी (سرپنجگی) फा. स्त्री.–शक्ति, ज़ोर; अत्याचार, ज़ुल्म।

सरपरस्त (سرپرست) फा. वि.–जो किसी की देख-रेख और पालन-पोषण करे, पोषक, संरक्षक; गार्जियन, अभिभावक; पक्षपाती, हिमायती।

सरपरस्ती (سرپرستی) फा. स्त्री.–पालन-पोषण, देख-रेख; गार्जियनशिप, अभिभावकता; पक्षपात, तरफ़दारी।

सरपेच (سرپیچ) फा. पुं.–पगड़ी में बाँधने का एक आभूषण।

सरपोश (سرپوش) फा. पुं.–ढक्कन।

सरपोशीदः (سرپوشیدہ) फा. स्त्री.–कुँवारी लड़की, कुमारी।

सरफ़राज़ (سرفراز) फा. वि.–दे. 'सरफ़ाज़'।

सरफ़राज़ी (سرفرازی) फा. स्त्री.–दे. 'सरफ़ाज़ी'।

सरफ़रोश (سرفروش) फा. वि.–जान की बाज़ी लगा देनेवाला, जाँनिसार।

सरफ़रोशी (سرفروشی) फा. स्त्री.–जान की बाज़ी लगाना, जाँनिसारी।

सरफ़िग़ंदः (سرفگندہ) फा. वि.–दे. 'सरफ़्गंदः'।

सरफ़्गंदः (سرافگندہ) फा. वि.–सर झुकाये हुए।

सरबंद (سربند) फा. पुं.–जिसका मुँह बंद हो, सर बमुह्र।

सरबकफ़ (سربکف) फा. वि.–हाथ पर सर रखे हुए, अर्थात् मरने पर उद्यत।

सरबख़्श (سربخش) फा. पुं.–किसी वस्तु के कई भागों में से सबसे बड़ा भाग।

सर ब गिरीबाँ (سر بہ گریباں) फा. वि.–दे. 'सर दर गिरीबाँ'।

सर बज़ानू (سربزانو) फा. वि.–घुटनों में सर डाले हुए, उदास, चिंतित।

सर ब मुह्र (سر بہ مہر) फा. वि.–मोह्र किया हुआ, बंद किया हुआ, और मुँह पर मोह्र किया हुआ।

सरबर (سربر) फा. वि.–दे. 'सरबलंद'।

सरबरआवर्दः (سربرآوردہ) फा. वि.–दे. 'सरबरावर्दः'।

सरबरहनः (سربرہنہ) फा. वि.–नंगे सर, सर खोले हुए।

LIBRARY HARDWAR

सरबरावर्दः (سربرآوردہ) फा.वि.–प्रतिष्ठित और सम्मानित व्यक्ति, बड़ा आदमी, मुखिया।

सरबराह (سربراہ) फा. वि.–प्रबंधक, मुंतज़िम।

सरबराहकार (سربراہکار) फा. पुं.–कारकुन, कारिंदा, एजेंट, अभिकर्ता।

सरबराहकारी (سربراہکاری) फा. स्त्री.–कारिंदगरी, एजेंटी।

सरबराही (سربراهی) फा. स्त्री.–प्रबंध, इंतिज़ाम।

सरबलंद (سربلند) फा. वि.–प्रतिष्ठित, मुअज्ज़ज़।

सरबलंदी (سربلندی) फा. स्त्री.–प्रतिष्ठा, इज्ज़तदारी; उत्थान, तरक़्क़ी।

सरबसर (سربسر) फा. वि.–नितान्त, बिल्कुल।

सरबसह्रा (سربصحرا) फा. अ. वि.–जंगल में मारा-मारा फिरनेवाला।

सरबस्तः (سربستہ) फा.वि.–मुँहबंद, सर ब मोह्र; गुप्त, पोशीदः।

सरबस्त (سربست) फा. पुं.–पहेली, प्रहेलिका।

सरबहा (سربہا) फा. पुं.–ख़ूँबहा, ख़ून की क़ीमत।

सरबाज़ (سرباز) फा. वि.–सिपाही, सैनिक; योद्धा, बहादुर।

सरबाज़ारी (سربازاری) फा. वि.–अधम, नीच, लोफ़र, शोहदः।

सरबाज़ी (سربازی) फा. स्त्री.–शूरता, वीरता, बहादुरी।

सरबार (سربار) फा. पुं.–सर का बोझ।

सरबारी (سرباری) फा. स्त्री.–वह छोटा बोझ जो बड़े बोझ के ऊपर सिर पर रखते हैं।

सरबाला (سربالا) फा. वि.–ऊँचे सर का, सरदार।

सरबुरीदः (سربریدہ) फा. वि.–जिसका सर काट लिया गया हो।

सरमद (سرمد) फा. वि.–नित्य, अनश्वर, लाज़वाल।

सरमदी (سرمدی) फा. वि.–नित्यता, लाज़वाली।

सरमश्क़ (سرمشق) फा. अ. पुं.–तख़्ती, मश्क़ करने की तख़्ती; ख़ुशनवीस का लिखा हुआ क़ता’ जिसे देखकर ख़ुशख़ती की मश्क़ की जाती है।

सरमस्त (سرمست) फा. वि.–उन्मत्त, मदोन्मत्त, बेसुध।

सरमस्ती (سرمستی) फा. स्त्री.–उन्माद, बदमस्ती।

सरमायः (سرمایہ) फा. पुं.–पूँजी, अस्ल ज़र; धन, दौलत।

सरमायःदार (سرمایہدار) फा. वि.–पूँजीपति, कैपिटलिस्ट; धनवान्, मालदार।

सरमायःदारानः (سرمایہدارانہ) फा. वि.–पूँजीपतियों-जैसा, धनियों की तरह।

सरमायःदारी (سرمایہداری) फा. स्त्री.–पूँजीवाद, रुपया लगाकर ग़रीबों की मेहनत से नाजाइज़ नफ़ा कमाना।

सरयान (سریان) फा. पुं.–एक चीज़ का दूसरी चीज़ में प्रवेश।

सररिश्तः (سررشتہ) फा. पुं.–विभाग, महकमा; योग्यता, क़ाबिलीयत; इच्छा, ख़्वाहिश; अधिकार, इख़्तियार; सूत्र, डोरा।

सरलश्कर (سرلشکر) फा. वि.–सेनापति, सेनाध्यक्ष, सिपहसालार।

सरलौह (سرلوح) फा. अ. स्त्री.–वह चित्रादि जो किताब के मुखपृष्ठ पर बनाये जाते हैं।

सरवर (سرور) फा. वि.–सरदार, सर्वश्रेष्ठ, नायक, प्रधान।

सरवरक़ (سرورق) फा. अ. पुं.–मुखपृष्ठ, पुस्तक का ऊपर का पन्ना जिसमें किताब का नाम आदि होता है।

सरवरी (سروری) फा. स्त्री.–नायकत्व, अध्यक्षता, सरदारी।

सरवरे कौनैन (سرور کونین) फा. अ. पुं.–दोनों लोक के सरदार, हज़्रत साहिब की उपाधि।

सरशार (سرشار) फा. वि.–ऊपर तक भरा हुआ, परिपूर्ण, लबरेज़; छलकता हुआ; उन्मत्त, मस्त।

सरशीर (سرشیر) फा. स्त्री.–दूध की मलाई, दुग्धाग्र, क्षीरसार, बालाई।

सरशेब (سرشیب) फा. वि.–औंधा, अधोमुख।

सरशो (سرشو) फा. वि.–सर धोने की मिट्टी; जिस चीज़ से सर धोया जाय।

सरसबद (سرسبد) फा. वि.–फूलों की टोकरी में सबसे सुन्दर और सबसे उत्तम फूल।

सरसब्ज़ (سرسبز) फा. वि.–हरा-भरा, शाद्वल; समृद्ध, मालदार; सफल, कामयाब; उन्नतिशील, तरक़्क़ीयाफ़्तः; आबाद, वीरान का उलटा; उपजाऊ, ज़रख़ेज़।

सरसब्ज़ी (سرسبزی) फा. स्त्री.–हरा-भरापन; उपजाऊपन; उन्नति; आबादी; सफलता; समृद्धि।

सरसरी (سرسری) फा. वि.–बेदिली और बेतवज्जुही का काम; जल्दी का काम; उचटती हुई नज़र डालने का काम।

सरसोज़न (سرسوزن) फा. पुं.–सुई का नाका, सूची-अग्र।

सरहंग (سرهنگ) फा. पुं.–सैनिक, सिपाही; कोतवाल; सेनानायक, फ़ौज का सरदार; अवज्ञाकारी, उद्दंड, सरकश।

सरहंगज़ादः (سرهنگزادہ) फा. पुं.–सैनिक-पुत्र, सिपाही का लड़का।

सरहद (سرحد) फा. स्त्री.–सीमा, हद; सीमान्त, आख़िरी हद; किसी देश की वह सीमा जो किसी दूसरे देश से मिली हो।

सरहदी (سرحدی) फा. स्त्री.–सरहद का; सरहद के पास का; सीमान्त का निवासी।

सरहम्माम (سرحمام) फा. अ. पुं.–हम्माम का गर्म कमरा जिसमें नहाया जाता है।

सरहल्क़ः (سرحلقہ) फा. वि.–सरदार, अध्यक्ष।

सरहिसाब (سرحساب) फा. अ. वि.–सूचित, आगाह; परिचित, वाक़िफ़; सचेत, होशियार।

सरा (سرا) फा. स्त्री.–मकान, घर, गृह; पथिकाश्रय, मुसाफ़िरख़ाना; स्थान, जगह, (प्र.) गानेवाला, जैसे–'नग़्मःसरा' गीत गानेवाला।

सरा (ثریٰ) अ. पुं.–ज़मीन का नीचे का तल, पाताल; गीली मिट्टी।

सराइंदः (سرائندہ) फा. वि.–गानेवाला, गायक।

सराईदः (سرائیدہ) फा. वि.–गाया हुआ, गीत।

सराए फ़ानी (سرائے فانی) फा. अ. स्त्री.–नश्वर स्थान अर्थात् संसार, मृत्युलोक, मर्त्यलोक।

सराग़ोश (سرآغوش) फा. पुं.–सर के बाल सँवारने और बाँधने की जाली, गेसूपोश।

सराचः (سراچہ) फा. पुं.–छोटा घर; बड़ा ख़ैमः; एक बाना।

सरा पर्दः (سرا پردہ) फा. पुं.–पर्देवाला मकान, हरमसरा; बड़ा ख़ैमः।

सरापा (سراپا) फा. पुं.–आपादमस्तक, सर से पाँव तक; नितान्त, बिलकुल; नायिका के नख-शिख का पद्यात्मक, वर्णन, उदा.–"अल्ला रे हुस्नेयार की सरमस्तियों का रंग, डूबे हुए हैं आज सरापा शराब में।"

सरापाख़ुलूस (سراپاخلوص) फा. अ. वि.–बहुत अधिक मुख़्लिस व्यक्ति।

सरापानियाज़ (سراپانیاز) फा. वि.–बहुत अधिक विनम्र और विनीत; बहुत बड़ा भक्त।

सरापारहमत (سراپارحمت) फा: अ. वि.–सर से पाँव तक कृपा और दया ही दया, दया और कृपा की साकार मूर्ति।

सराफ़त (صرافت) अ. स्त्री.–सिक्के या चाँदी-सोने आदि का खरा होना, कैवल्य, निष्कूटता।

सराफ़ील (سرافیل) फा. पुं.–'इस्राफ़ील' का लघु. वह फ़िरिश्तः जो क़ियामत के दिन तुरही फूंकेगा, जिससे सारा ब्रह्मांड नष्ट हो जायगा।

सराब (سراب) फा. पुं.–वह रेत जो गर्मियों में दूर से पानी की तरह चमकता हुआ दिखाई पड़ता है और प्यासे उसे पानी समझकर उसकी ओर दौड़ते हैं, मृगतृष्णा।

सरा बुस्ताँ (سرا بستاں) फा. पुं.–पाईंबाग़, वह बाग़ जो महल या कोठी के साथ हो, गृहोद्यान, गृहवाटिका।

सरामत (صرامت) अ. स्त्री.–शूरता, बहादुरी; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी; विच्छेद, काटना; फुर्ती, तेज़ी।

सरामद (سرآمد) फा. वि.–सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम; अध्यक्ष, पति, सरदार।

सरायत (سرایت) फा. स्त्री.–एक चीज़ का दूसरी में प्रवेश, सरयान; प्रभाव, असर।

सरारू (سرارو) फा. स्त्री.–एक बड़ी रग जिसकी फ़स्द ली जाती है, सरोरू, क़ीफ़ाल।

सरासर (سراسر) फा. वि.–नितान्त, बिलकुल; एक सिरे से।

सरासीमः (سراسیمہ) फा. वि.–उद्विग्न, आतुर, व्याकुल, परीशान, बदहवास।

सरासीमगी (سراسیمگی) फा. स्त्री.–उद्विग्नता, व्याकुलता, परीशानी, बदहवासी।

सराहत (صراحت) अ. स्त्री.–स्पष्टीकरण, वज़ाहत; सविस्तर विवरण, तफ़सील, ।

सराहतन (صراحتاً) अ. वि.–सराहत के साथ, विस्तारपूर्वक, सविस्तर।

सरिक़ः (سرقہ) अ. पुं.–चोरी, चौर्य, स्तेय, तस्करता, दुज़्दी।

सरिक़त (سرقت) अ. स्त्री.–दे. 'सरिक़ः'।

सरिश्तः (سرشتہ) फा. पुं.–'सररिश्तः' का बिगड़ा हुआ रूप, विभाग, महकमा, डिपार्टमेन्ट।

सरिश्तःदार (سرشتہدار) फा. वि.–एक कर्मचारी।

सरिश्तःदारी (سرشتہداری) फा. स्त्री.–सरिश्तःदार का पद; उक्त पद का काम।

सरी (سری) फा. वि.–सरदारी, अध्यक्षता।

सरीअ (سریع) अ. वि.–शीघ्र, तेज़।

सरीउज़्ज़वाल (سریع الزوال) अ. वि.–जो शीघ्र ही नाश हो जाय, जो अधिक देर न रहे, क्षणभंगुर।

सरीउत्तासीर (سریع التاثیر) अ. वि.–जो अपना प्रभाव शीघ्र ही दिखाये, शीघ्रकारी, आशु प्रभावकारी, त्वरित-गुणदायी।

सरीउलअमल (سریع العمل) अ. वि.–वह दवा जो अपना असर जल्द करे।

सरीउलअसर (سریع الاثر) अ. वि.–जल्द प्रभाव दिखानेवाला, शीघ्र गुणकारी।

सरीउलइंज़ाल (سریع الانزال) अ. वि.–जो पुरुष मैथुन के समय अधिक न ठहर सके, शीघ्रपतन।

सरीउलइंदिमाल (سریع الاندمال) अ. वि.–वह घाव जो शीघ्र भर जाय।

सरीउलइज़ालः (سریع الازالہ) अ. वि.–जिसकी हानि-पूर्ति जल्द हो जाय।

सरीउलइन्हिज़ाम (سریع الانہضام) अ. वि.–जो जल्दी हज़्म हो जाय, लघुपाक।

सरीउलइल्तिहाब (سریع الالتہاب) अ. वि.–जो शीघ्र ही जलने लगे, जरा-सी गर्मी में आग पकड़ ले, ज्वलनशील, विस्फोटक।

सरीउलएहसास (سریع الاحساس) अ. वि.–जो किसी बात का जल्द असर ले।

सरीउलक़बूल (سریع القبول) अ. वि.–जो किसी बात या गुण-दोष से जल्द प्रभावित होकर उसे ग्रहण कर ले।

सरीउलग़ज़ब (سریع الغضب) अ. वि.–जिसे जल्दी ही ग़ुस्सा आ जाता हो, शीघ्रकोपी।

सरीउलफ़ह्म (سریع الفہم) अ. वि.–जो हर बात तुरंत ही समझ जाता हो, शीघ्रबुद्धि, प्रतिभाशाली।

सरीउलहज़्म (سریع الہضم) अ. वि.–दे. 'सरीउल इन्हिज़ाम'।

सरीउलहरकत (سریع الحرکت) अ. वि.–तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगति।

सरीउस्सैर (سریع السیر) अ. वि.–तेज़ चलनेवाला, शीघ्रगामी।

सरीचः (سریچہ) फा. पुं.–ममोला पक्षी।

सरीद (ثرید) अ. पुं.–शोरबे में चूर की हुई रोटी।

सरीयः (صریسہ) अ. पुं.–काम छोड़ बैठना, हड़ताल।

सरीयः (سریہ) अ. पुं.–पैग़म्बर साहब के समय की वे लड़ाइयाँ जिनमें आप सम्मिलित न थे।

सरीर (سریر) अ. पुं.–सिंहासन, तख़्त।

सरीर (صریر) अ. स्त्री.–लिखते समय क़लम की चिरचिराहट, चलते समय मनुष्य के पैर की चाप।

सरीरआरा (سریرآرا) अ. फा. वि.–सिंहासनारूढ़, तख़्तनशीं; शासक, हुक्मराँ।

सरीरत (سریرت) अ. स्त्री.–भेद, रहस्य, मर्म, राज़।

सरीरे क़लम (صریرقلم) अ. स्त्री.–क़लम की चिरचिराहट जो लिखते समय होती है।

सरीह (صریح) अ. वि.–स्पष्ट, व्यक्त, साफ़, वाज़ेह, खुल्लमखुल्ला।

सरीहन (صریحاً) अ. वि.–खुल्लम खुल्ला, स्पष्ट रूप से, साफ़-साफ़।

सरूँ (سروں) फा. पुं.–सींग, शृंग, विषाण।

सरूँगाह (سُروں گاہ) फा.स्त्री.–कनपटी, पशु के सींग निकलने का स्थान।

सरीही (صریحی) अ. वि.–दे. 'सरीहन'।

सरे ज़ुल्फ़ (سر زلف) फा. पुं.–अलक, ज़ुल्फ़; हावभाव, नाज़ोअदा।

सरे तन्हा (سر تنہا) फा. पुं.–अकेला, एकांकी।

सरे दस्त (سر دست) फा. वि.–तत्काल, इस समय, फ़िलहाल, सम्प्रति।

सरे नौ (سر نو) फा. वि.–नये सिरे से, फिर से, पुनः।

सरे पा (سر پا) फा.स्त्री.–ठोकर,(पुं.) पाँव का सिरा, पंजा।

सरे पिस्ताँ (سر پستاں) फा. पुं.–स्तन की घुंडी, भिटनी, स्तनवृन्त, नर्मठ।

सरे पै (سر پے) फा. स्त्री.–ठोकर, (पुं.) पाँव का अगला भाग, पंजा।

सरे बज़्म (سر بزم) फा. पुं.–भरी सभा में, सबके सामने।

सरे बाज़ार (سر بازار) फा. पुं.–बीच बाज़ार में; सबके सामने, खुल्लमखुल्ला।

सरे बाम (سر بام) फा. पुं.–अटारी पर, छत पर।

सरे बालीं (سر بالیں) फा. पुं.–सिरहाने।

सरेमू (سرمو) फा. पुं.–बाल की नोक के बराबर, ज़रा-सा भी, किंचिन्मात्र।

सरे रहगुज़र (سر رہگزر) फा. पुं.–दे. 'सरे राह'।

सरे राह (سر راہ) फा. पुं.–रास्ते में, रास्ता चलते हुए।

सरेश (سریش) फा. स्त्री.–देखें शुद्ध उच्चारण 'सिरेश'।

सरे शाम (سر شام) फा. पुं.–सूरज डूबते समय, संध्यामुख।

सरे शोरीदः (سر شوریدہ) फा. पुं.–वह सर जिसमें प्रेम का पागलपन भरा हो; पागल व्यक्ति का मस्तिष्क।

सरोकार (سروکار) फा. पुं.–प्रयोजन, वास्ता; सम्बन्ध, तअल्लुक़।

सरोद (سرود) फा. पुं.–दे. शु. उ. 'सुरोद' या 'सुरूद'।

सरोपा (سروپا) फा. पुं.–सर-पैर, प्रायः 'बे' के साथ बोला जाता है।

सरोबंद (سرو بند) फा. पुं.–समय, काल, वक़्त, ज़माना।

सरोबर्ग (سرو برگ) फा. पुं.–ध्यान, ख़याल।

सरोबुन (سرو بن) फा. पुं.–सरोपा, सर-पैर, आदि-अंत, शुरू और अख़ीर।

सरोरू (سرورو) फा. स्त्री.–एक रग, दे. 'सरारू'।

सरोश (سروش) फा. पुं.–दे. शु. उ. 'सुरोश'।

सरोसामान (سرو سامان) फा. पुं.–उपकरण, सामग्री, सामान; ज़िंदगी का ज़रूरी सामान।

सर्अ (صرع) अ. स्त्री.–अपस्मार, मिर्गी रोग।

सर्तान (سرطان) अ. पुं.–कर्क, कर्कट, केकड़ा, घिंघचा, कर्कराशि, बुर्जे सर्तान।

सर्द (سرد) फा. वि.–शीतल, ठंडा; मंद, धीमा; निःश्री, बेरौनक़; नपुंसक, हीजड़ा।

सर्दख़ुश्क (سرد خشک) फा. वि.–वह दवा या ग़िज़ा जिसमें सर्दी के साथ ख़ुश्की भी हो।

सर्दतर (سردتر) फा. वि.–बहुत अधिक सर्द; वह दवा जो सर्द के साथ तर भी हो।

सर्दबाज़ारी (سرد بازاری) फा. स्त्री.–बेरौनक़ी, श्रीहीनता; बाज़ार भाव का मंदा होना; नाक़द्री, पूछ-ताछ न होना।

सर्दमिज़ाज (سردمزاج) फा. अ. वि.–जिसकी प्रकृति शीतल हो, शान्त प्रकृति।

सर्दमेह्र (سردمہر) फा. वि.–निःशील, बेमुरव्वत; कठोर, बेरहम; जो बेदिली से मिले।

सर्दमेह्री (سردمہری) फा. स्त्री.–दुःशीलता, बेमुरव्वती; कठोरता, बेरहमी; बेदिली, कमतवज्जुही।

सर्दसेर (سردسیر) फा. वि.–वह स्थान जहाँ की आबोहवा सर्द हो।

सर्दाबः (سردابہ) फा. पुं.–तहख़ानः, तलगृह।

सर्दी (سردی) फा. स्त्री.–शीतता, ठंडक; ठंड का मौसिम, हेमंत ऋतु; ज़ुकाम, प्रतिश्याय।

सर्दोगर्म (سردوگرم) फा. वि.–गर्म और ठंडा; दुनिया का अच्छा और बुरा।

सर्दोगर्म चशीदः (سردوگرم چشیدہ) फा. वि.–गर्म और ठंडा चखा हुआ अर्थात् अनुभवी।

सर्फ़ः (صرفہ) फा. पुं.–लाभ, नफ़ा; व्यय, ख़र्च; बारहवाँ नक्षत्र, उत्तराफाल्गुनी; कृपणता, कंजूसी, अधिकता, ज़ियादती; न्याय, इंसाफ़।

सर्फ़ (صرف) अ. पुं.–व्यय, ख़र्च; उपभोग, इस्ते'माल; व्याकरण की एक शाखा, पदव्याख्या।

सर्फ़ी (صرفی) अ. वि.–जो व्याकरण में 'सर्फ़' का ज्ञाता हो।

सर्फ़ोनह्व (صرف و نحو) अ. स्त्री.–व्याकरण, क़वाइद, पदव्याख्या और वाक्य-विश्लेषण।

सर्ब (ثرب) अ. पुं.–चर्बी की बारीक चादर जो उदर आदि पर चढ़ी रहती है।

सर्मक़ (سرمق) अ. पुं.–बथुआ, एक साग।

सर्मा (سرما) फा. पुं.–जाड़े का मौसिम, शीतकाल।

सर्माई (سرمائی) फा. वि.–जाड़े के मौसिम का; जाड़े के पहनने के कपड़े।

सर्माए गुल (سرمائے گل) फा. पुं.–गुलाबी जाड़ा, शुरू बहार का जाड़ा, हलका जाड़ा।

सर्माए तल्ख़ (سرمائے تلخ) फा. पुं.–कड़ा जाड़ा, चिल्ले का जाड़ा।

सर्माज़दः (سرمازدہ) फा. वि.–जिसे पाला मार गया हो।

सर्मासोख़्तः (سرماسوختہ) फा. वि.–वह पेड़ जिसे पाला मार गया हो, जो पाले से जल गया हो।

सर्राफ़ः (صرافہ) अ. पुं.–सराफ़ों का बाज़ार, जहाँ चाँदी-सोना बेचनेवालों की मंडी हो।

सर्राफ़ (صراف) अ. वि.–चाँदी-सोना बेचनेवाला।

सर्राफ़ी (صرافی) अ. स्त्री.–चाँदी सोना बेचने का काम।

सर्वंदाम (سرواندام) फा. वि.–सर्व-जैसे सीधे और सुन्दर शरीरवाला।

सर्व (سرو) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध पेड़, सरो, जो सीधा और सुन्दर होता है।

सर्वअंदाम (سرواندام) फा. वि.–दे. 'सर्वंदाम'।

सर्वक़द (سروقد) फा. वि.–दे. 'सर्वंदाम'।

सर्वक़ामत (سروقامت) फा. अ. वि.–दे. 'सर्वंदाम'।

सर्वत (سروت) अ. स्त्री.–धनाढ्यता, समृद्धि, मालदारी; ऐश्वर्य, ऐश, फ़राग़त।

सर्वबाला (سروبالا) फा. वि.–दे. 'सर्वंदाम'।

सर्वे आज़ाद (سرو آزاد) फा. पुं.–वह सर्व जिसमें शाखें और फल न हों।

सर्वे ख़िरामाँ (سرو خراماں) फा. पुं.–चलने-फिरनेवाला सर्व अर्थात् मा'शूक़।

सर्वे चमन (سرو چمن) फा. पुं.–बाग़ का सर्व का पेड़।

सर्वे चिराग़ाँ (سرو چراغاں) फा. पुं.–सर्व के वृक्ष के आकार का काँच का झाड़ जिसमें मोमबत्तियाँ जलती हैं।

सर्वे नाज़ (سرو ناز) फा. पुं.–वह सर्व जिसकी शाखें झुककर आपस में मिल गयी हों।

सर्वे बाला (سرو بالا) फा. पुं.–लंबा सर्व।

सर्वे सिही (سرو سہی) फा. पुं.–बिलकुल सीधा सर्व।

सर्शफ़ (سرشف) फा. स्त्री.–सरसों, एक प्रसिद्ध दाना, जिसका तेल कड़वे तेल के नाम से खाने के काम आता है।

सर्सर (صرصر) फा. स्त्री.–झक्कड़, गर्म हवा के झोंके, झंझा, तेज़ हवा के झोंके, उदा०—"यह भी अय सय्याद है जौरे फ़लक। क़ैद हों हम बाग़ में सर सर चले।"

सर्साम (سرسام) अ. पुं.–दिमाग़ के वरम की एक बीमारी, सन्निपात।

सर्सामी (سرسامی) अ. वि.–सरसाम का रोगी।

सलफ़ः (سلفہ) अ. पुं.–'सलफ़' का बहु., पुराने लोग, पूर्वज।

सलफ़ (سلف) अ. पुं.–पूर्वज, पुराने लोग।

सलवात (صلوات) अ. स्त्री.–'सलात' का बहु., नमाज़ें; रसूल पर दुरूद।

सला' (صلع) अ. पुं.–बालों का एक रोग, गंज।

सला (صلا) अ. स्त्री.–आवाज़ देना, बुलाना।

सलाए आम (صلاے عام) अ. स्त्री.–सबका बुलावा, सबकी दा'वत, सार्वजनिक निमंत्रण।

सलाक (سلاک) फा. स्त्री.–सोने-चाँदी की सलाख़।

सलाख़ (سلاخ) तु. स्त्री.–सलाई, शलाका; लोहे की छड़; लकीर।

सलात (صلاۃ) अ. स्त्री.–नमाज़; दुरूद।

सलातीन (سلاطین) अ. पुं.–'सुल्तान' का बहु., बादशाह लोग, शासकगण।

सलाबत (صلابت) अ. स्त्री.–कठोरता, सख़्ती।

सलाम (سلام) अ. पुं.–प्रणाम, तस्लीम; शान्ति, सलामती; नौहे की एक क़िस्म; घृणा और बेज़ारी के लिए भी बोलते हैं।

सलामत (سلامت) अ. स्त्री.–सुरक्षित, महफ़ूज़; जीवित, ज़िंदा; पूर्ण, पूरा; स्वस्थ, तनदुरुस्त।

सलामत बाशेद (سلامت باشید) अ. फा. वा.–जीवित रहो, ज़िंदा रहो।

सलामतरवी (سلامت روی) अ. फा. स्त्री.–सबसे हेल-मेल से रहना; ख़र्च आदि में किफ़ायत बरतना।

सलामती (سلامتی) अ. स्त्री.–शान्ति, अमन, रक्षा; स्वास्थ्य, तनदुरुस्ती।

सलामी (سلامی) अ. वि.–किसी बड़े आदमी के आने पर तोपों के फ़ैर।

सलामुन अलैकुम (سلامٌ علیکم) अ. वा.–तुम पर सलामती हो, मुसलमानों का सलाम जो वह एक दूसरे से कहते हैं।

सलामो अलैकुम (سلامو علیکم) अ. वा.–दे. 'सलामुन अलैकुम'।

सलामो पयाम (سلام و پیام) अ. फा. पुं.–किसी का सलाम के साथ कोई सँदेशा आना; किसी को सलाम के साथ कोई सँदेसा भेजना; लड़के या लड़कीवालों की ओर से विवाह या सगाई की बातचीत चलना।

सलासत (سلاست) अ. स्त्री.–सरलता, रवानी, सलीसपन; नम्रता, नर्मी; हलके-फुलके और सुंदर शब्दों का व्यवहार जिसमें कोई क्लिष्ट शब्द न हो और न ऐसे शब्द हों जिनसे ज़बान को तोड़ना मरोड़ना पड़े।

सलासते ज़बान (سلاست زبان) अ. फा. स्त्री.–भाषा की मृदुलता, शब्दों का माधुर्य; गद्य या पद्य में कोमल, मृदुल और सरल उच्चारणवाले शब्दों का प्रयोग, फ़साहत।

सलासते बयान (سلاست بیان) अ. स्त्री.–बातचीत की मधुरता।

सलासिल (سلاسل) अ. स्त्री.–'सिल्सिलः' का बहु., ज़ंजीरें, बेड़ियाँ।

सलाह (صلاح) अ. स्त्री.–अच्छाई, भलाई; परामर्श, मशवुरः; उद्देश्य, मंशा, मंसूबः; राय, तजवीज़।

सलाहअंदेश (صلاح اندیش) अ. फा. वि.–नेकअंदेश, ख़ैरख़्वाह, शुभचिंतक, हितैषी।

सलाहकार (صلاح کار) अ. फा. वि.–सदाचारी, नेकअमल; परामर्शदाता, मश्वुरः देनेवाला; सदुपदेशक, नासेह।

सलाहिफ़ (سلاحف) अ. पुं.–'सुलहफ़ात' का बहु., 'कछवे'।

सलाहीयत (صلاحیت) अ. स्त्री.–भलाई, अच्छाई, ख़ूबी; सदाचार, संयम, इंद्रिय-निग्रह, पारसाई; योग्यता, पात्रता, अह्लीयत; विद्वत्ता, इल्मीयत; गंभीरता, मतानत; मुसाफ़िरों का पुलिस के रजिस्टर में इंदिराज।

सलाहे कार (صلاح کار) अ. फा. स्त्री.–काम की क़ाबिलीयत, कार्य-क्षमता।

सलाहे नेक (صلاح نیک) अ. फा. स्त्री.–अच्छी सलाह, सत्-परामर्श।

सलाहे बद (صلاح بد) अ. फा. स्त्री.–बुरी सलाह, दुस्संमति।

सलाहे वक़्त (صلاح وقت) अ. स्त्री.–समय के अनुसार सलाह, समय की माँग।

सलिसुल बौल (سلس البول) अ. पुं.–एक मूत्ररोग जिसमें पेशाब बार-बार आता है, बहुमूत्र।

सलीक़ः (سلیقہ) अ. पुं.–शिष्टता, तमीज़, शुऊर; क्रम, तर्तीब; योग्यता, हुनरमंदी; सुघड़ापा, सुघड़या; हर चीज़ को उसके मुनासिब मौक़ा रखने की तमीज़; सभ्यता, तहज़ीब।

सलीक़:मंद (سلیقہ مند) अ. फा. वि.–शिष्ट, बाशुऊर; सुघड़, हुनरमंद; सभ्य, मुहज़्ज़ब।

सलीक:मंदी (سلیقہ مندی) अ. फा. स्त्री.–शिष्टता, तमीज़दारी; सुघड़पन; सभ्यता, तहज़ीब।

सलीक़:शिआर (سلیقہ شعار) अ. वि.–दे. 'सलीक़:मंद'।

सलीक़:शिआरी (سلیقہ شعاری) अ. स्त्री.–दे. 'सलीक़:मंदी'।

सलीक (سلیک) अ. वि.–पिरोई हुई चीज़, गुंथिल; नत्थी, मुंसलिक, संलग्न।

सलीब (صلیب) अ. स्त्री.–सूली, दार; हज़्रत ईसा को सूली देने की टिकठी जो चौपारे की आकार की थी; वह चौपारे का चिह्न जो ईसाइयों का धार्मिक चिह्न है, क्रास।

सलीबी (صلیبی) अ. वि.–सलीब का; सलीब की शक्ल का; ईसाई धर्म सम्बन्धी।

सलीम (سلیم) अ. वि.–गंभीर, शांत, मतीन; सहनशील,

बुर्दबार; शांतिप्रिय, जिसे शोरोशर या लड़ाई दंगा पसंद न हो; स्वस्थ, चंगा, तनदुरुस्त।

सलीमुत्तब्अ (سلیم الطبع) अ. वि.–ज़िसका स्वभाव बहुत ही शांतिप्रिय हो, सौम्य।

सलीमुलमिज़ाज (سلیم المزاج) अ.वि.–दे. 'सलीमुत्तब्अ'।

सलीस (سلیس) अ. वि.–नर्म, कोमल, मृदुल; सरल, सुगम, आसान; सुबोध, आमफ़ह्म, बालबोध; सभ्य, शिष्ट, तमीज़दार; वह गद्य या पद्य जो बहुत ही सरल और कोमल हो, कोमल।

सल्अः (سلعہ) अ. पुं.–बड़ा मस्सा, बतौड़ी, मांसार्बुद।

सल्ख़ (سلخ) अ. पुं.–खाल खींचना, खाल उतारना; कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि।

सल्ज (ثلج) अ. पुं.–हिम, बर्फ़।

सल्जम (سلجم) अ. पुं.–शल्जम, एक प्रसिद्ध तरकारी।

सल्जूक़ (سلجوق) तु. पुं.–एक व्यक्ति जिससे सल्जूक़ी वंश चला है, इसी की चौथी पुश्त में तुग़्रुल बेग सलजूक़ नाम का शासक हुआ है।

सल्जूक़ी (سلجوقی) तु. पुं.–सल्जूक़ का वंशज।

सल्तनत (سلطنت) अ. स्त्री.–राज्य, राष्ट्र, मुल्क; शासन, सत्ता, हुकूमत।

सल्तनते जुम्हूरी (سلطنت جمہوری) अ. स्त्री.–जनता का राज, गणतंत्र, जनतंत्र।

सल्तनते शख़्सी (سلطنت شخصی) अ. फा. स्त्री.–व्यक्तिगत राज्य, साम्राज्य।

सल्ब (سلب) अ. पुं.–निवारण, दफ़ीअः; विनाश, ख़ातिमा; छीन लेना, जब्ज़ कर लेना।

सल्बे मरज़ (سلب مرض) अ. पुं.–किसी के रोग को आत्मशक्ति द्वारा नष्ट कर देना।

सल्म (سلم) अ. स्त्री.–बच्चों के लिखने की तख़्ती, पाटी, पट्टिका, दे: 'सिल्म', दोनों शुद्ध हैं।

सल्मान (سلمان) अ. पुं.–पैग़ंबर साहब के एक सिहाबी, सल्मान फ़ारिसी; ईरान का एक शाइर, सल्मान सावजी।

सल्लाख़ (سلاخ) अ. पुं.–खाल उतारनेवाला; जल्लाद, फाँसी देनेवाला, (देखो 'सल्लाख़ी')।

सल्लाख़ी (سلاخی) अ. स्त्री.–खाल उतारना, पुराने ज़माने में एक सज़ा यह भी थी कि ज़िंदा आदमी की खाल उतार दी जाती थी और इस तरह वह बड़े कष्ट से मारा जाता था, यह काम सल्लाख़ी कहलाता था।

सल्वा (سلوا) अ. स्त्री.–बटेर, एक पक्षी, वार्त्तक, वाना।

सल्सबील (سلسبیل) अ. स्त्री.–स्वर्ग का एक चश्मा; नर्म और मुलायम चीज़; मदिरा, शराब।

सल्साल (صلصال) अ. स्त्री.–कच्ची और सूखी मिट्टी, जिससे हज़्रत आदम की सृष्टि हुई।

सवा (سوا) अ. वि.–समता, बराबरी; समान, बरांबर।

सवाइक़ (صواعق) अ. पुं.–'साइक़:' का बहु., बादल से ज़मीन पर गिरनेवाली बिजलियाँ।

सवाकिन (سواکن) अ. पुं.–'साकिन:' का बहु., निवासी लोग, रहनेवाले।

सवाक़िब (ثواقب) अ. पुं.–'साक़िब' का बहु., रौशनीदार चीज़ें।

सवाते (سواطع) अ. पुं.–'सातिअ:' का बहु., ऊँचे स्थान।

सवाद (سواد) अ. पुं.–कालिमा, सियाही; काली बिंदी जो हृदय पर होती है; आस-पास की भूमि, हवाली; प्रतिभा, ज़हानत।

सवादे आ'ज़म (سواد اعظم) अ. पुं.–बड़ा नगर, बड़ी बस्ती।

सवादे कुफ़्र (سواد کفر) अ. पुं.–नास्तिकों की बस्ती; नास्तिकता का वातावरण।

सवानिहे उम्र (سوانح عمر) अ. पुं.–दे. 'सवानिहे हयात'।

सवानिहे हयात (سوانح حیات) अ. पुं.–जीवनी, जीवनचरित, किसी के जीवन का सविस्तर लेख।

सवानेह (سوانح) अ. पुं.–'सानिह:' का बहु.; घटनाएँ, वाक़िआत; दुर्घटनाएँ, हादिसात।

सवानेहनवीस (سوانح نویس) अ. फा. वि.–समाचार-लेखक, वाक़िअ:निगार; इतिहासकार; जीवनी-लेखक।

सवानेहनवीसी (سوانح نویسی) अ. फा. स्त्री.–समाचार लिखना; इतिहास लिखना; जीवनी लिखना।

सवानेहनिगार (سوانح نگار) अ. फा. वि.–दे. 'सवानेहनवीस'

सवानेहनिगारी (سوانح نگاری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सवानेहनवीसी'।

सवाब (صواب) अ. वि.–यथार्थ, ठीक, दुरुस्त; उत्तम, श्रेष्ठ, उम्द:; वास्तविकता, हक़ीक़त।

सवाब (ثواب) अ. पुं.–वह फल जो किसी सत्कर्म करने पर परलोक में मिले, पुण्य।

सवाबअंदेश (صواب اندیش) अ.फा. वि.–ठीक-ठीक सोचनेवाला, अच्छी राय देनेवाला; शुभचिंतक, ख़ैरख़्वाह।

सवाबदीद (صواب دید) अ. फा. स्त्री.–सलाह, मशवुर:; अच्छी राय, अच्छी तजवीज़।

सवाबिक़ (سوابق) अ. पुं.–'साबिक़:' का बहु., पहलेवाले, गुज़रे हुए।

सवाबित (ثوابت) अ. पुं.–'साबित' का बहु., वे तारे जो गतिशील न हों, ठहरे हुए तारे, उडुगण।

सवाबितो सैयार (ثوابت وسیار) अ. पुं.–गतिमान् और अचल सब प्रकार के तारे।

सवामे' (سوامع) अ. पुं.–'सामिअः' का बहु., सुनने की शक्तियाँ; सुननेवाले लोग।

सवार (سوار) फा. वि.–जो किसी सवारी पर बैठा हुआ हो, आरूढ़; अश्वारोही, घुड़सवार।

सवारिक़ (سوارق) अ. पुं.–'सारिक़' का बहु., चोर लोग।

सवारिम (صوارم) अ. पुं.–'सारिमः' का बहु., धारदार तलवारें।

सवाल (سوال) अ. पुं.–शुद्ध उच्चारण 'सुआल' है, परंतु उर्दू में 'सवाल' ही बोलते हैं; प्रश्न पूछना; प्रार्थना, इल्तिजा; इच्छा, आकांक्षा, आर्ज़ू; भीख की प्रार्थना; प्रार्थनापत्र, अर्ज़ी।

सवालख़्वानी (سوال خوانی) अ. फा. स्त्री.–अदालत में आम अर्ज़ियाँ लेने की पुकार।

सवालनामः (سوال نامہ) अ. फा. पुं.–प्रश्नावलीपत्र, वह पर्चा जिसमें किसी सभा आदि में पूछने के सवाल लिखे हों।

सवालात (سوالات) अ. पुं.–'सवाल' का बहु., बहुत से सवाल, प्रश्नावली।

सवालिफ़ (سوالف) अ. पुं.–'सालिफ़ः' का बहु., गुज़रे हुए लोग, पूर्वज।

सवाली (سوالی) अ. वि.–याचक, माँगनेवाला; भिक्षुक, भिखमंगा।

सवाले वस्ल (سوال وصل) अ. पुं.–नायक की ओर से नायिका से मिलने की इच्छा का इज़हार।

सवालोजवाब (سوال و جواب) अ. पुं.–प्रश्न और उसका उत्तर, प्रश्नोत्तर; वाद-विवाद, कथनोपकथन, बह्स।

सवाहिल (سواحل) अ. पुं.–'साहिल' का बहु., बंदरगाहें, समुद्रतट।

सहरः (سحرہ) अ. पुं.–'साहिर' का बहु., जादूगर लोग।

सहर (سحر) अ. स्त्री.–प्रातःकाल, प्रात, प्रभात, भोर, तड़का; सहरी, सहरगही।

सहर (سہر) अ. स्त्री.–जागरण, जागना; जाग्रति, बेदारी, जागर्ति।

सहरख़ंद (سحرخند) अ. फा. वि.–ऐसी मुस्कुराहट जिसमें दाँत खुल जायँ; इतना उज्ज्वल जो प्रभात की सफ़ेदी पर हँसे।

सहरख़ेज़ (سحرخیز) अ. फा. वि.–बहुत तड़के उठने का अभ्यस्त, तड़के सोकर उठनेवाला।

सहरख़ेज़ी (سحرخیزی) अ. फा. स्त्री.–तड़के उठने का अभ्यास, सोकर तड़के उठना।

सहरगह (سحرگہ) अ. फा. स्त्री.–'सहरगाह' का लघु., दे. 'सहरगाह'।

सहरगही (سحرگہی) अ. फा. स्त्री.–'सहरगाही' का लघु., दे. 'सहरगाही'; रोज़ों के दिनों में पिछली रात का खाना।

सहरगाह (سحرگاہ) अ. फा. स्त्री.–बहुत तड़के, गजरदम, प्रातःकाल, गोविसर्ग, उषःकाल।

सहरगाहाँ (سحرگاہاں) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सहरगाह'।

सहरगाही (سحرگاہی) अ. फा. स्त्री.–सवेरे तड़के की, प्रातःकाल का; प्रातःकाल सम्बन्धी।

सहरदम (سحردم) अ. फा. पुं.–सवेरे-सवेरे, बहुत तड़के, गजरदम।

सहरी (سحری) अ. वि.–प्रातःकाल का; रमज़ान के दिनों में कुछ रात रहे का खाना, जिसे खाकर रोज़ा रखा जाता है, सहरगही।

सहरोशाम (سحروشام) अ. फा. पुं.–सुब्ह और शाम, सवेरे और संध्या के समय।

सहाइफ़ (صحائف) अ. पुं.–'सहीफ़ः' का बहु.; पुस्तकें, ग्रंथ; आकाश से उतरी हुई पुस्तकें, धर्मग्रंथ।

सहाबः (صحابہ) अ. पुं.–मित्रता करना; मित्रगण।

सहाबत (صحابت) अ. स्त्री.–मित्रता करना; सहायता करना।

सहारा (صحارا) अ. पुं.–'सह्रा' का बहु., जंगल, बड़े-बड़े जंगल।

सहारी (صحاری) अ. पुं.–'सह्रा' का बहु., बहुत से जंगल, वन-समूह।

सहाह (صحاح) अ. वि.–स्वस्थ, तनदुरुस्त; निर्दोष, बेऐब, (स्त्री.) स्वास्थ्य, तनदुरुस्ती; पवित्रता, पाकी।

सही (سہی) फ़ा. वि.–सरल, सीधा, जो लंबाई में सीधा हो; सर्व का सीधा पेड़, यह शब्द अकेला सीधे के अर्थ में बोला नहीं जाता, दूसरे शब्द से मिलकर बोला जाता है जैसे–'सहीक़द' या 'सर्वेसही'।

सहीक़ः (سحیقہ) अ. पुं.–पिसी हुई चीज़, चूर्ण, सुफ़ूफ़।

सहीक़ (سحیق) अ. वि.–पिसा हुआ, चूर्णित, चूर्ण, सफ़ूफ़।

सहीक़द (سہی قد) फा. वि.–सीधे और लंबे आकार का।

सहीक़ामत (سہی قامت) फा. अ. वि.–दे. 'सहीक़द'।

सही बाला (سہی بالا) फा. वि.–दे. 'सहीक़द'।

सहीफ़ः (صحیفہ) अ. पुं.–पुस्तक, किताब; धर्मग्रंथ, मज़हबी किताब।

सहीफ़ए आस्मानी (صحیفہ آسمانی) अ. फा. पुं.–आस्मान से उतरी हुई किताब जो किसी पैग़ंबर पर उतरी हो।

सहीम (سہیم) अ. वि.–भागीदार, हिस्सेदार।

सहीह (صحیح) अ. वि.–सत्य, सच; यथार्थ, ठीक; निर्दोष, बेऐब; स्वस्थ, चंगा; पूर्ण, पूरा; साबित, समूचा; (पुं.) वे अरबी अक्षर जो 'अलिफ़', 'वाव' और 'ये' के अतिरिक्त हैं।

सहीहुज़्ज़ेह्न (صحیح الزہن) अ. वि.–जिसका ज़ेहन ठीक हो; जिसकी बुद्धि ठीक हो; जिसके विचार ठीक हों।

सहीहुद्दिमाग़ (صحیح الدماغ) अ. वि.–जिसका मस्तिष्क ठीक हो, जिसकी अक़्ल ठीक काम करती हो, जो पागल न हो।

सहीहुन्नसब (صحیح النسب) अ. वि.–जिसका वंश निर्मल हो, शुद्धरक्त (मनुष्य)।

सहीहुन्नस्ल (صحیح النسل) अ. वि.–जो अच्छे वंश का हो, जिसकी जाति अच्छी हो (पशु)।

सहीहुन्नुत्फ़ः (صحیح النطفہ) अ. वि.–दे. 'सहीहुन्नसब'।

सहीहुर्राय (صحیح الرائے) अ. वि.–जिसकी राय ठीक होती हो, बुद्धिमान्।

सहीहुलअक़्ल (صحیح العقل) अ. वि.–जिसमें बुद्धिदोष न हो, शुद्धबुद्धि।

सहीहुलफ़ह्म (صحیح الفہم) अ. वि.–जो बात को जल्द समझता हो, प्रमाता।

सहीहुलमिज़ाज (صحیح المزاج) अ. वि.–स्वस्थ, नीरोग, तनदुरुस्त; शुद्धात्मा, नेकतब्अ।

सहीहुश्शुऊर (صحیح الشعور) अ. वि.–जिसकी विवेचन-शक्ति शुद्ध हो।

सहीहोसालिम (صحیح و سالم) अ. वि.–सुरक्षित, महफ़ूज़; स्वस्थ, तंदुरुस्त; जीवित, ज़िंदा।

सहूर (سحور) अ. स्त्री.–सहरी, सहरगही, रोज़े के दिनों में सवेरे का खाना जिसके बाद रोज़ः होता है।

सह्क़ (سحق) अ. पुं.–रगड़ना, पीसना; स्त्रियों का परस्पर चपटी लड़ाना।

सह्ज (سحج) अ. स्त्री.–मरोड़, आँव, आँतों की मिलन।

सह्न (صحن) अ. पुं.–अजिर, आँगन, अँगनाई; एक रेशमी कपड़ा।

सह्नक (صحنک) फा. स्त्री.–छोटा तबाक़; रिकाबी, तश्तरी; हज़्रत फ़ातिमा की नियाज़ का खाना।

सह्नची (صحنچی) फा. स्त्री.–दालान के अगल-बग़ल की कोठरियाँ।

सह्ने चमन (صحن چمن) अ. फा. पुं.–बाग़ के भीतर का सरसब्ज़ तख़्ता।

सह्ने बाग़ (صحن باغ) अ. फा. पुं.–दे. 'सह्ने चमन'।

सहने बुस्ताँ (صحن بستاں) अ. फा. पुं.–दे. 'सह्ने चमन'।

सह्ने मकाँ (صحن مکاں) अ. पुं.–घर का आँगन, अजिर, अंगण।

सह्ने लामकाँ (صحن لامکاں) अ. पुं.–अंतरिक्ष, ख़ला।

सह्ब (صحب) अ. पुं.–'साहिब' का बहु., मित्रगण, दोस्त।

सह्बा (صہبا) अ. स्त्री.–मदिरा, मद्य, शराब, लाल रंग की शराब।

सह्बाई (صہبائی) अ. फा. वि.–मद्यप, सुराशी, शराबी।

सह्बान (سحبان) अ. पुं.–अरब का एक बहुत बड़ा शाइर।

सह्म (سہم) अ. पुं.–कमान से छूटा हुआ तीर; भाग, अंश, हिस्सा।

सह्म (سہم) फा. पुं.–भय, त्रास, डर, ख़ौफ़।

सह्मगीं (سہمگیں) फा. वि.–भयभीत, त्रस्त, डरा हुआ, ख़ौफ़ज़दः।

सह्मनाक (سہمناک) फा. वि.–भयंकर, भयानक, डरावना; भयभीत, ख़ौफ़ज़दः।

सह्मुलग़ैब (سہم الغیب) अ. पुं.–जन्मपत्री में भाग्य के शुभ ग्रहों का योग।

सह्मुलमौत (سہم الموت) अ. पुं.–मौत का तीर, बाण-रूपी मृत्यु, मृत्युरूपी बाण।

सह्रा (صحرا) अ. पुं.–कानन, अरण्य, वन, जंगल; चटयल मैदान, बियाबान।

सह्राई (صحرائی) अ. फा. वि.–जंगली, जंगल का; जंगल सम्बन्धी; असभ्य, उजड्ड, हूश।

सह्राए आ'ज़म (صحرائے اعظم) अ. पुं.–अफ़्रीका का रेतीला मैदान जो दुनिया में सबसे बड़ा जंगल है।

सह्राए क़ियामत (صحرائے قیامت) अ. पुं.–क़ियामत का मैदान जिसमें सारे मुर्दे एकत्र होंगे।

सह्राए मह्शर (صحرائے محشر) अ. पुं.–दे. 'सह्राए क़ियामत'।

सह्राए लक़्क़ोदक़ (صحرائے لق ودق) अ. पुं.–चटयल मैदान, जिसमें न वृक्ष हों न पानी।

सह्रागर्द (صحراگرد) अ.फा.वि.–जंगलों-जंगलों मारा फिरनेवाला, वनचर, काननचारी।

सह्रागर्दी (صحراگردی) अ.फा. स्त्री.–जंगलों में मारा-मारा फिरना।

सह्रानवर्द (صحرانورد) अ. फा. वि.–जंगलों की छानबीन करनेवाला, जंगलों के ज़ख़ीरे खोजनेवाला; दे. 'स.गर्द'।

सह्रानवर्दी (صحرانوردی) अ.फा. स्त्री.–जंगलों में छानबीन करना; जंगलों-जंगलों मारा फिरना।

सह्रानशीं (صحرانشیں) अ.फा. वि.–जंगल में रहनेवाला, जंगल का निवासी।

सह्रानशीनी (صحرانشینی) अ. फा. स्त्री.–जंगल में रहन-सहन करना, जंगल में रहना ।

सह्रानियोश (صحرانیوش) अ. फा. वि.–दे. 'सह्रागर्द' ।

सह्लंगार (سہل انگار) अ. फा. वि.–सुगमता ढूँढ़नेवाला, आलसी, काहिल, सुस्त ।

सह्लंगारी (سہل انگاری) अ. फा. स्त्री.–सुगमता ढूँढ़ना, आलस, काहिली ।

सह्ल (سہل) अ. वि.–सरस, सुगम, सहज, आसान ।

सह्लअंगार (سہل انگار) अ. फा. वि.–दे. 'सह्लंगार' ।

सह्लअंगारी (سہل انگاری) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सह्लंगारी' ।

सह्लुलअमल (سہل العمل) अ. वि.–वह काम जो सुगमतापूर्वक हो जाय, सुसाध्य, सुखसाध्य ।

सह्लुलवुसूल (سہل الوصول) अ. वि.–जो सह्ज में वुसूल हो जाय ।

सह्लुलहुसूल (سہل الحصول) अ. वि.–जो सुगमतापूर्वक प्राप्त हो जाय ।

सह्ले मुम्तना (سہل ممتنع) अ. वि.–ऐसा शे'र जो बहुत सरल जान पड़े परंतु वैसा कहना असंभव हो ।

सह्व (صحو) अ. पुं.–सचेष्टता, होशयारी ।

सह्व (سہو) अ. पुं.–विस्मरण, प्रमाद, भूल; त्रुटि, भ्रांति, ग़लती ।

सह्वन (سہواً) अ. वि.–विस्मृतिवश, भूल में; अज्ञानतः, अनजान में ।

सह्वे क़लम (سہو قلم) अ. पुं.–क़लम से कुछ का कुछ लिख जाना, लेखनी-भ्रम ।

सह्वे किताबत (سہو کتابت) अ. पुं.–लिखने की त्रुटि, भूल में कुछ का कुछ लिख जाना ।

सह्वे सज्दः (سہو سجدہ) अ. पुं.–नमाज़ में यह याद न रहना कि एक सज्दः किया है या दो ।

सह्हास (سہام) अ. वि.–तीरंदाज़, धनुर्धारी ।

सा

सां (ساں) फा. वि.–समान, तुल्य, मिस्ल ।

सा (سا) फा. वि.–समान, मानिंद, (प्रत्य.) घिसनेवाला, जैसे 'जबींसा' माथा रगड़नेवाला ।

साअः (ساعہ) अ. पुं.–दे. 'साअत'; घड़ी ।

साअ (صاع) अ. पुं.–नीची ज़मीन; २ सेर १४ छटाँक और ४ तोले का वज़्न ।

साअत (ساعت) अ. स्त्री.–ढाई घड़ी का समय, एक घंटा; मुहूर्त, अच्छी या बुरी घड़ी; क्षण, लम्हा; समय, वक़्त; क़ियामत का दिन ।

साअते उमूमी (ساعت عمومی) अ. स्त्री.–घंटाघर ।

साअते नह्स (ساعت نحس) अ. स्त्री.–बुरी घड़ी, अशुभ मुहूर्त, जिसमें कोई काम करना उचित न हो ।

साअते नेक (ساعت نیک) अ. फा. स्त्री.–अच्छी घड़ी, शुभ मुहूर्त, जिसमें कोई काम करना लाभकर हो ।

साअते बद (ساعت بد) अ. फा. स्त्री.–दे. 'साअते नह्स' ।

साअते मज्लिसी (ساعت مجلسی) अ. स्त्री.–दीवार की घड़ी, क्लाक ।

साअते मनहूस (ساعت منحوس) अ. स्त्री.–दे. 'साअते नह्स' ।

साअते संगीं (ساعت سنگیں) अ. फा. स्त्री.–कठिन वक़्त, आपत्ति-काल, मुसीबत का समय ।

साअते सईद (ساعت سعید) अ. स्त्री.–दे. 'साअते नेक' ।

साआत (ساعات) अ. स्त्री.–'साअत' का बहु., मुहूरतें; घड़ियाँ, क्षण ।

साइंदः (سایندہ) फा. वि.–घिसनेवाला, रगड़नेवाला, पीसनेवाला, घर्षक ।

साइक़ः (صاعقہ) अ. स्त्री.–गिरनेवाली बिजली; तड़ित, विद्युत्, बिजली ।

साइक़ःअफ़्गन (صاعقہ افگن) अ. फा. वि.–बिजलियाँ गिरानेवाला (वाली), वह दृष्टि जो बिजलियाँ गिराये ।

साइक़ःज़ा (صاعقہ زا) अ. फा. वि.–बिजलियाँ पैदा करनेवाला (वाली), वह दृष्टि जिससे बिजलियाँ पैदा हों ।

साइक़ःफ़िगन (صاعقہ فگن) अ. फा. वि.–दे. 'साइक़ःअफ़्गन' ।

साइक़ःबार (صاعقہ بار) अ. फा. वि.–बिजलियाँ बरसानेवाला (वाली), वह दृष्टि जो बिजलियों की बारिश करे ।

साइक़ (سائق) अ. वि.–अंधे को पीछे से सहारा देकर आगे बढ़ानेवाला, जैसा कि 'क़ाइद' अंधे को आगे से सहारा देता है ।

साइग़ (صائغ) अ. वि.–स्वर्णकार, सुनार ।

साइद (ساعد) अ. पुं.–पहुँचा, कलाई ।

साइद (صاعد) अ. वि.–ऊपर चढ़नेवाला ।

साइब (صائب) अ. वि.–पहुँचनेवाला, रसा; शुद्ध, सही ।

साइबान (سائبان) फा. पुं.–मकान का छज्जा, छाजन; छप्पर आदि जो धूप की आड़ को हो ।

साइबुर्राय (صائب الرائے) अ. वि.–जिसकी राय बहुत ठोस और शुद्ध हो ।

साइबुलअक़्ल (صائب العقل) अ. वि.–जिसकी बुद्धि ठीक सोचती हो ।

साइमः (صائمہ) अ. स्त्री.–रोज़ःदार स्त्री, वह स्त्री जो रोज़े से हो ।

साइम (صائم) अ. पुं.–रोज़:दार मर्द, रोज़ा रखनेवाला, व्रती।

साइमुद्दह्र (صائم الدھر) अ. पुं.–हमेशा रोज़ा रखनेवाला, नित्यव्रती।

साइमुल्लैल (صائم اللیل) अ. पुं.–रात का रोज़: रखनेवाला।

साइर: (سائرہ) अ. स्त्री.–घूमने-फिरनेवाली।

साइर (سائر) अ. वि.–घूमने-फिरने वाला; सब, तमाम; शेष, बाक़ी; चुंगी का महसूल।

साइल: (سائلہ) अ. स्त्री.–माँगनेवाली, भिखारिन; सवाल करनेवाली।

साइल (سائل) अ. पुं.–सवाल करनेवाला, पूछनेवाला; भिक्षुक, भिखमंगा; प्रार्थी, दरख़्वास्त देनेवाला; उम्मीदवार, आसरा लगानेवाला।

साइल बकफ़ (سائل بہ‌کف) अ. फा. वि.–हाथ में माँगनेवाला, जिसके पास माँगने का बर्तन न हो, केवल हाथ हों।

साइस (سائس) अ. पुं.–सईस, घोड़े का रखवाला।

साई (ساعی) अ. वि.–कोशिश करनेवाला, प्रयत्नशील।

साईद: (سائیدہ) फा. वि.–पिसा हुआ, चूर्णित।

साईदनी (سائیدنی) फा. वि.–पीसने के लायक़।

साए (سائے) फा. प्रत्य.–दे. 'सा'।

साएबान (سائبان) फा. पुं.–दे. 'साइबान'।

साक़: (ساقہ) अ. पुं.–सेना का वह भाग जो पीछे रहता है, चिंदावुल।

साक़ (ساق) अ. स्त्री.–पिंडली।

साक़िए कमनिगाह (ساقئی کم نگاہ) अ. फा. पुं.–वह साक़ी जो पीनेवालों की ओर ध्यान न दे।

साक़िए कौसर (ساقئی کوثر) अ. पुं.–कौसर की शराब पिलानेवाला साक़ी, अर्थात् हज़्रत मुहम्मद।

साक़िए दर्यादिल (ساقئی دریادل) अ.फा. पुं.–जो ख़ूबदिल खोलकर पिलाये।

साक़िए महशर (ساقئی محشر) अ. पुं.–क़ियामत के दिन बिहिश्त की शराब पिलानेवाला, पैग़बर साहब।

साक़ित (ساقط) अ. वि.–गिरनेवाला, जाता रहनेवाला; गिरा हुआ, त्यागा हुआ।

साकित (ساکت) अ. वि.–मौन, चुप, खामोश; गतिहीन, निश्चल, बे हरकत।

साक़ितुलएतिबार (ساقط الاعتبار) अ. वि.–जिसका विश्वास उठ गया हो; अविश्वासी।

साक़ितुलमिल्कियत (ساقط الملکیت) अ. स्त्री.–जिस पर अधिकार न रहे।

साकितोसामित (ساکت وصامت) अ. वि.–जो न बोले न हिले-डुले, जड़वत्, निस्तब्ध।

साकिन (ساکن) अ. वि.–स्थिर, ठहरा हुआ, जिसमें हरकत न हो; निवासी, रहनेवाला, बाशिंद:; किसी शब्द का वह अक्षर जो हल्हो।

साकिनुलअव्वल (ساکن الاول) अ. वि.–वह शब्द जिसका पहला अक्षर हल् हो, अरबी या फ़ार्सी में ऐसा शब्द नहीं होता।

साकिनुलआखिर (ساکن الاخر) अ. वि.–वह शब्द जिसका अंतिम अक्षर हल् हो, हलंत।

साकिनुलऔसत (ساکن الاوسط) अ. वि.–वह शब्द जिसका बीचवाला अक्षर हल् हो।

साक़िब (ثاقب) अ. पुं.–चमकनेवाला, प्रकाशमान; एक दर्द जिसमें ऐसा कष्ट होता है जैसे कोई शरीर में छेद कर रहा हो।

साक़ियः (ساقیہ) अ. स्त्री.–शराब पिलानेवाली स्त्री; छोटी नदी; रहट।

साक़िया (ساقیا) अ. फा. पुं.–ऐ साक़ी।

साक़ी (ساقی) अ. वि.–शराब पिलानेवाला।

साक़े बिलूरीं (ساق بلوریں) अ. फा. स्त्री.–बिल्लूर-जैसी सफ़ेद और उज्ज्वल पिंडलियाँ।

साक़े सीमीं (ساق سیمیں) अ. फा. स्त्री.–चाँदी-जैसी सफ़ेद और चमकदार पिंडलियाँ।

साक़ैन (ساقین) अ. स्त्री.–दोनों पिंडलियाँ।

साख़्तः (ساختہ) फा. वि.–बनाया हुआ, निर्मित; कृत्रिम, मस्नूई; कूट, नक़्ली, जाली।

साख़्तः परदाख़्तः (ساختہ پرداختہ) फा. वि.–बनाया-सँवारा; पाला-पोसा; किया-कराया।

साख़्तरू (ساختہ رو) फा. वि.–लज्जा से मुँह बनाये हुए; मुँह को पौडर और लिपिस्टिक आदि से सँवारे हुए।

साख़्त (ساخت) फा. स्त्री.–बनावट, गढ़ंत; कृत्रिमता, मसनूईपन; काट, तराश; मिष, बहाना।

साख़्तगी (ساختگی) फा. स्त्री.–बनावट।

साग़र (ساغر) फा. पुं.–शराब का प्याला, चषक, पानपात्र।

साग़रकश (ساغرکش) फा. वि.–मद्यप, शराबी।

साग़रनोश (ساغرنوش) फा. वि.–दे. 'साग़रकश'।

साग़रपैमा (ساغرپیما) फा. वि.–दे. साग़रकश'।

साग़र बकफ़ (ساغر بہ‌کف) फा. वि.–हाथ में शराब का पैमाना लिये हुए।

साग़र बदस्त (ساغر بہ‌دست) फा. वि.–दे. 'साग़र बकफ़'।

साग़री (ساغری) तु. स्त्री.–गुदा, मलद्वार, मक़्अद।

साग़रे मै (ساغر مے) फा. पुं.–शराब का प्याला, पानपात्र।

साग़रे सरशार (ساغر سرشار) फा. पुं.–शराब से लबालब प्याला, मुँह तक भरा हुआ प्याला।

साचक़ (ساچق) तु. स्त्री.–ब्याह से एक दिन पहले की रस्म जिसमें दूल्हा के घर से बरी का सामान मेंहदी, सुहाग पुड़ा, तेल-इत्र, मेवा-मिस्री आदि कुछ आदमियों के साथ दुल्हन के घर जाता है। (इस शब्द का शुद्ध रूप 'साचिक़' है।)

साचिक़ (ساچق) तु. स्त्री.–'साचक़' का शुद्ध रूप, परंतु उर्दू में 'साचक़' ही बोलते हैं।

साच्मः (ساچمہ) तु. पुं.–छर्रे की थैली, मोटे छर्रों या पैसों की थैली जो तोप में छुड़ाई जाती है, जिससे एक साथ बहुत से लोग मरते हैं।

साज (ساج) अ. पुं.–साखू का पेड़, साल।

साज़ (ساز) फा. पुं.–उपकरण, सामान; प्रबंध, इंतिज़ाम; बाजा, वाद्य; मेल-जोल, रब्त-ज़ब्त; अनुकूलता, मुआफ़क़त; घोड़े का सामान, जैसे ज़ीन, लगाम, काठी आदि (प्रत्य.)।

साज़गर (سازگر) फा. वि.–बाजा बनानेवाला, वाद्यकार।

साज़गरी (سازگری) फा. स्त्री.–बाजे बनाने का काम, वाद्यकर्म।

साज़गार (سازگار) फा. वि.–अनुकूल, मुआफ़िक़; शुभान्वित, मुबारक; जो बात रास आ जाय।

साज़गारी (سازگاری) फा. स्त्री.–अनुकूलता, मुआफ़क़त; शुभकारिता, कल्याण; किसी बात का रास आ जाना।

साज़ज (ساذج) अ. वि.–सामान्य, सादा; एक दवा, तेजपात।

साज़बाज़ (سازباز) अ. स्त्री.–गठजोड़, साज़िश; किसी ग़लत काम के लिए कुछ लोगों का मतैक्य।

साज़मंद (سازمند) फा. वि.–सुसज्जित, आरास्ता; अनुकूल, साज़गार।

साज़मंदी (سازمندی) फा. स्त्री.–सुसज्जा, सजावट; अनुकूलता, साज़गारी।

साज़िंदः (سازندہ) फा. वि.–साज़ बजानेवाला वादक, तंत्री; नाच में सारंगी बजानेवाला।

साज़िंदगी (سازندگی) फा. स्त्री.–साज़ बजाने का काम, वादकर्म; नाच में सारंगी बजाना।

साजिद (ساجد) अ. वि.–सज्दः करनेवाला, ईश्वर के आगे झुकनेवाला।

साज़िश (سازش) फा. स्त्री.–किसी को हानि पहुँचाने या अवैधानिक रूप में किसी से कुछ प्राप्त करने के लिए कुछ लोगों का गुप्त रूप में गठजोड़, षड्यंत्र, कुचक्र।

साज़िशकुनिंदः (سازش کنندہ) फा. वि.–षड्यंत्री, कुचक्री, साज़िशी।

साज़िशी (سازشی) फा. वि.–चक्रांतकारी, कुचक्री, षड्यंत्री, साज़िश करनेवाला।

साज़े ऐश (ساز عیش) फा. अ. पुं.–भोग-विलास का सामान; खुशी के शादयाने।

साज़े सफ़र (ساز سفر) फा. अ. पुं.–सफ़र में साथ जाने का ज़रूरी सामान, यात्रोपकरण।

साज़ो बर्ग (ساز و برگ) फा. पुं.–दे. 'साज़ो सामान'; धन-दौलत।

साज़ो सामान (ساز و سامان) फा. पुं.–उपकरण, सामान; किसी काम की ज़रूरी सामग्री; सामान के तैयारी।

सा'तर (صعتر) अ. स्त्री.–एक घास जो दवा में काम आती है।

सा'तरबाज़ (صعترباز) अ. फा. स्त्री.–चपटी लड़ानेवाली स्त्री।

सातरी (سعتری) अ. फा. स्त्री.–चपटी लड़ानेवाली स्त्री।

सातिर (ساتر) अ. वि.–छिपानेवाला, गोपक।

सातूर (ساطور) अ. पुं.–बड़ी और धारदार छुरी।

साते' (ساطع) अ. वि.–उत्तुंग, ऊँचा, बलंद; उज्ज्वल, धवल, शफ़्फ़ाफ़; दीप्त, रौशन।

सात्गीं (ساتگیں) तु. पुं.–प्रेयसी, नायिका, माशूक़; शराब का प्याला, पानपात्र, चषक।

सादः (سادہ) फा. वि.–कोरा, बेदाग़; भोला-भाला, सीधा; बेडाढ़ी मूँछ का; निर्मल, खालिस; निश्छल, साफ़ दिल; मूर्ख, बेवक़ूफ़; बे लिखा काग़ज़, या बिना काम बना हुआ कपड़ा आदि।

सादःकार (سادہ کار) फा. वि.–सादा और हलका काम बनानेवाला; वह सुनार जो ज़ेवरों पर बहुत अच्छा काम बनाये।

सादःकारी (سادہ کاری) फा. स्त्री.–सादःकार का काम, ज़ेवरों पर बहुत सबुक और बारीक काम बनाना।

सादःतब्अ (سادہ طبع) फा. अ. वि.–भोला-भाला, सीधा-सादा, सरलस्वभाव।

सादःतब्ई (سادہ طبعی) फा. अ. स्त्री.–भोला-भालापन, सीधा-सादापन।

सादःतौर (سادہ طور) फा. अ. वि.–सीधे-सादे आचरण-वाला, जिसमें टीपटाप न हो।

सादःदिल (سادہ دل) फा. वि.–निश्छल, निष्कपट, साफ़ दिलवाला; भोला-भाला; बुद्धू, मूर्ख।

सादःदिली (سادہ دلی) फा. स्त्री.–निश्छलता, साफ़-दिली; भोला-भालापन; बुद्धूपन।

सादःपुरकार (سادہ پرکار) फा. वि.–जो देखने में सीधा-सादा हो मगर बड़ा चतुर और छली हो।

सादःपुरकारी (سادہ پرکاری) फा. स्त्री.–देखने में भोला-भाला होना, परंतु बड़ा छली होना।

सादःमिज़ाज (سادہ مزاج) फा. अ. वि.–दे. 'सादः तौर'।

सादःमिज़ाज़ी (سادہ مزاجی) फा. अ. स्त्री.–रंचमात्र की सादगी।

सादःरुख़ (سادہ رخ) फा. वि.–दे. 'सादःरू'।

सादःरू (سادہ رو) फा. वि.–जिसके दाढ़ी-मूँछें न निकली हों, परंतु जवानी पर पहुँच गया हो, अंकुरितयौवन।

सादःलौह (سادہ لوح) अ. फा. वि.–भोला-भोला, निश्छल; बुद्धू, मूर्ख।

सादःलौही (سادہ لوحی) फा. अ. स्त्री.–भोला-भालापन; बुद्धूपन।

सादःवज़्अ (سادہ وضع) फा. अ. वि.–दे. 'सादःतौर'; वेश-भूषा में टीपटाप को पसंद न करनेवाला।

सादःवज़्ई (سادہ وضعی) फा. अ. स्त्री.–वेश-भूषा की सादगी; मिज़ाज की सादगी।

सा'द (سعد) अ. वि.–शुभ, मुबारक; श्रेष्ठ, पुनीत, नेक; बाईसवाँ नक्षत्र, श्रवण।

साद (صاد) अ. पुं.–अरबी का चौदहवाँ अक्षर; ठीक होने पर बनाया जानेवाला चिह्न (صم); आँख।

सादगी (سادگی) फा. स्त्री.–कोरापन; भोलापन; निश्छलता; बिना मूर्खता; चिह्न, चित्र या काम बना होना।

सादगीए मिज़ाज (سادگی مزاج) फा. अ. स्त्री.–स्वभाव की सरलता, सीधा-सादापन।

सादात (سادات) अ. पुं.–'सादत'; श्रेष्ठ जन, बुज़ुर्ग लोग; सैयद ख़ानदान के लोग।

सादिक़ (صادق) अ. वि.–सत्यवादी, सच्चा; न्यायनिष्ठ, मुंसिफ़; स्वामिभक्त, वफ़ादार; चरितार्थ, चस्पाँ।

सादिक़ुर्राय (صادق الرائے) अ. वि.–जिसकी सलाह और राय सच्ची होती हो।

सादिक़ुलअह्द (صادق العہد) अ. विं.–जो वा'दे का पक्का हो, दृढ़प्रतिज्ञ, सत्यसंकल्प।

सादिक़ुलएतिक़ाद (صادق الاعتقاد) अ. वि.–जिसका धर्म-विश्वास अटल हो।

सादिक़ुलक़ौल (صادق القول) अ. वि.–बात का पूरा, क़ौल का पक्का, सत्यव्रत, सत्यसंगर।

सादिक़ुलवा'द (صادق الوعد) अ. वि.–दे. 'सादिक़ुल अह्द'।

सादिर (صادر) अ. वि.–न निकलनेवाला; चालू होनेवाला; जारी होनेवाला।

सादिर (سادر) अ. वि.–निस्तब्ध; चकित, शशदर; उद्विग्न, आतुर, परेशान।

सादिस (سادس) अ. वि.–छठा, छठवाँ, षष्ठ।

सा'दुस्सऊद (سعد السعود) अ. पुं.–बृहस्पति ग्रह, मुश्तरी; चौबीसवाँ नक्षत्र, शतभिषा।

सा'दे अक्बर (سعد اکبر) अ. पुं.–बृहस्पति, मुश्तरी।

सा'दे कूफ़ी (سعد کوفی) अ. पुं.–एक ओषधि, नागरमोथा, भद्रमुस्तक।

सा'दे ज़ाबेह (سعد ذابح) अ. पुं.–बाईसवाँ नक्षत्र, श्रवण।

सा'दैन (سعدین) अ. पुं.–शुक्र और बृहस्पति, वे दो ग्रह, ज़ोह्रः और मुश्तरी।

सान (سان) फा. पुं.–चाकू या छुरी आदि पर धार रखने का पत्थर, षाण।

सानज़दः (سان زدہ) फा. वि.–सान रक्खा हुआ, षाणित।

सानवी (ثانوی) फा. वि.–द्वितीय, दूसरा; दूसरे से सम्बन्धित, दूसरावाला।

सानिए क़ुद्रत (صانع قدرت) अ. पुं.–चित्रकार रूपी प्रकृति; ईश्वर, स्रष्टा।

सानिए मुत्लक़ (صانع مطلق) अ. पुं.–ईश्वर, मूलस्रष्टा, अस्ली बनानेवाला।

सानिए हक़ीक़ी (صانع حقیقی) अ.पुं.–दे. 'सासए मुत्लक़'।

सानिहः (سانحہ) अ. पुं.–दुर्घटना, हादिसः; आपत्ति, मुसीबत; कोई बुरे समाचार, किसी के मरने आदि की ख़बर।

सानिहए ईतिहाल (سانحۂ ارتحال) अ. पुं.–किसी के मरने की दुर्घटना।

सानियः (ثانیہ) अ. पुं.–मिनिट, १।६० घंटा; क्षण, लम्हा; दूसरी।

सानियन (ثانیاً) अ. वि.–दुबारा, पुनः; दूसरे यह कि।

सानियलहाल (ثانی الحال) अ. वि.–दूसरा वक़्त, दूसरे समय।

सानी (ثانی) अ. वि.–द्वितीय, दूसरा; अन्य, दीगर।

साने (صانع) अ. वि.–निर्माता, बनानेवाला, रचयिता, स्रष्टा; कारीगर।

साफ़ः (صافہ) अ. पुं.–पगड़ी, शिरोवेष्टन, उष्णीष।

साफ़ (صاف) अ. वि.–स्पष्ट, वाज़ेह; पवित्र, पाक; स्वच्छ, शफ़्फ़ाफ़; निर्मल, ख़ालिस; निर्दोष, बेऐब; सुगम, सरल, आसान; कोरा, बेदाग़; चिकना; सपाट।

साफ़गो (صاف گو) अ. फा. वि.–लगी-लिपटी न रखनेवाला, स्पष्टवादी; मुँहफट, बेबाक।

साफ़गोई (صاف گوئی) अ. फा. स्त्री.–सच्ची बात कह देना, लगी-लिपटी न रखना, दो टूक बात करना।

साफ़ज़मीर (صاف ضمیر) अ. वि.–जिसका मन साफ़ हो, जिसके अंतःकरण में पाप न हो, अंतःशुद्ध।

साफ़तब्अ (صاف طبع) अ. वि.–दे. 'साफ़ तीनत'।

साफ़तीनत (صاف طینت) अ. वि.–अंतःशुद्ध, पवित्रमनस्क, पाकबातिन।

साफ़दिल (صاف دل) अ. फा. वि.–दे. 'साफ़तीनत'; किसी की ओर से मन में द्वेष न रखनेवाला।

साफ़दिली (صاف دلی) अ. फा. स्त्री.–अंतःशुद्धि, चित्त का निर्मल और निष्पाप होना; किसी की ओर से दिल में द्वेष या वैरभाव न होना।

साफ़बयान (صاف بیان) अ. वि.–दे. 'साफ़गो'।

साफ़बयानी (صاف بیانی) अ. स्त्री.–दे. 'साफ़गोई'।

साफ़बातिन (صاف باطن) अ. वि.–शुद्ध अन्तःकरणवाला, शुद्धात्मा।

साफ़ बातिनी (صاف باطنی) अ. स्त्री.–आत्मा की शुद्धि, मन की सफ़ाई।

साफ़िए मय (صافئی مے) अ. फा. स्त्री.–शराब छानने का कपड़ा, छन्ना।

साफ़िन (صافن) अ. स्त्री.–पिंडली की एक रग।

साफ़िल (سافل) अ. वि.–निकृष्ट, नीच; नीचा, पस्त, नीचेवाला।

साफ़ी (صافی) अ. वि.–शुद्ध करनेवाला; शुद्धता, सफ़ाई; छानने का कपड़ा, छन्ना।

साफ़ी मनिश (صافی منش) अ. फा. वि.–सदाचारी, अच्छे स्वभाव और व्यवहारवाला।

साफ़ो शफ़्फ़ाफ़ (صاف و شفاف) अ. वि.–बहुत ही निर्मल और स्वच्छ; बहुत चमक-दमकवाला।

सा'ब (صعب) अ. वि.–कठिन, दुष्कर, मुश्किल; अवज्ञाकारी, सरकश, उद्दंड।

सा'बतर (صعب تر) अ. फा. वि.–अत्यंत कठिन, बहुत ही मुश्किल।

साबिक़ः (سابقہ) अ. वि.–अगलेवाली, पहली; सम्बन्ध राबितः; प्रयोजन, वासितः; पिछली जान-पहचान; काम, मुआमलः; वह अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी शब्द के पहले लाया जाय, उपसर्ग।

साबिक़ (سابق) अ. वि.–पिछला, गुज़रा हुआ; आगे बढ़ जानेवाला।

साबिक़ुज़्ज़िक्र (سابق الذکر) अ. वि.–जिसका ज़िक्र पहले हो चुका हो, पूर्वकथित, पूर्वोक्त।

साबिक़ुलमज़्कूर (سابق المذکور) अ. वि.–दे. 'साबिक़ुज़्ज़िक्र'।

साबिक़े दस्तूर (سابق دستور) अ. वि.–पहले की तरह, पूर्ववत्, जैसा पहले था वैसा ही, यथापूर्व।

साबिग़ (صابغ) अ. वि.–रँगनेवाला।

साबित (ثابت) अ. वि.–स्थिर, साकिन; प्रमाणित, मुसल्लम; समग्र, सब, पूरा, समूचा; दृढ़, मज़बूत।

साबितक़दम (ثابت قدم) अ. वि.–जो अपने इरादे पर अटल रहे, दृढ़निश्चय–जो अपने क़ौल और बात पर अटल रहे, दृढ़ प्रतिज्ञ।

साबित क़दमी (ثابت قدمی) अ. स्त्री.–इरादे की दृढ़ता; क़ौल और वादे की दृढ़ता।

साबिरः (صابرہ) अ. स्त्री.–हरेक अवस्था में ईश्वर पर निर्भर रहनेवाली स्त्री।

साबिर (صابر) अ. पुं.–हर हाल में ईश्वरेच्छा चाहनेवाला व्यक्ति; सहिष्णु, सहनशील, मुतहम्मिल।

साबिरो शाकिर (صابر و شاکر) अ. वि.–जो हर साल हाल में सब्र करे और ईश्वर का धन्यवाद दे।

साबी (صابی) अ. वि.–धर्म-परिवर्तन करनेवाला, विधर्मी।

साबुन (صابن) अ. पुं.–दे. 'साबून', परंतु उर्दू में 'साबुन' ही बोलते हैं।

साबुनफ़रोश (صابن فروش) अ. फा. वि.–साबुन बेचनेवाला।

साबुनसाज़ (صابن ساز) अ. फा. वि.–साबुन बनानेवाला।

साबून (صابون) अ. पुं.–दे. 'साबुन'।

साबूनी (صابونی) अ. वि.–एक प्रकार की मिठाई।

साबे' (سابع) अ. वि.–सातवाँ, सप्तम।

सामंदर (سام اندر) फा. पुं.–समंदर, वह कीड़ा जो आग में रहता है।

साम (سام) फा. पुं.–शोथ, वरम, सूजन; पीड़ा, दर्द; अग्नि, आग; रुस्तम के बाप का नाम।

साम (سام) अ. स्त्री.–मृत्यु, मरण, मौत; हनन, हलाकी; हज़्रत नूह का एक लड़का।

सामअंदर (سام اندر) फा. पुं.–दे. 'सामंदर'।

सामान (سامان) फा. पुं.–उपकरण, सामग्री, मसाला; किसी काम के लिए उसकी आवश्यक वस्तुएँ; सजावट, आरास्ती; बंदोबस्त, प्रबंध; अस्वाब, चीज़ वस्त।

सामाने ऐश (سامان عیش) फा. अ. पुं.–सुख और भोग-विलास की सामग्री, उपभोग, सुख-सामग्री।

सामाने ख़ानःदारी (سامان خانہ داری) फा. पुं.–घर-गिरस्ती की आवश्यक वस्तुएँ, गृहोपकरण।

सामाने ख़ुरोनोश (سامان خور و نوش) फा. पुं.–खाने-पीने की चीज़ें, खाद्य-सामग्री।

सामाने ज़ीनत (سامان زینت) फा. अ. पुं.–अपनी सजावट का सामान, प्रसाधन; जगह आदि की सजावट की सामग्री।

सामाने ज़ुरूरी (سامان ضروری) फा. अ. पुं.–आवश्यक वस्तुएँ, उपकल्प।

सामाने मईशत (سامان معیشت) फा. अ. पुं.–जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक वस्तुएँ।

सामाने राहत (سامان راحت) फा. अ. पुं.–दे. 'सामाने ऐश'।

सामाने सफ़र (سامان سفر) फा. अ. पुं.–यात्रा में साथ ले जानेवाली आवश्यक वस्तुएँ।

सामिअः (سامعہ) अ. स्त्री.–श्रवण-शक्ति, क़ुव्वते समाअत।

सामिअःख़राश (سامعہخراش) अ. फा. वि.–जो बात कानों को अप्रिय लगे, कर्णकटु, श्रुत्यप्रिय।

सामिअःनवाज़ (سامعہنواز) अ. फा. वि.–जो बात कानों को अच्छी लगे, कर्णप्रिय, कर्ण-सुखद।

सामिईन (سامعین) अ. पुं.–सुननेवाले, श्रोतागण, श्रोतृ-मंडली।

सामित (سامت) अ. वि.–मौन, चुप, खामोश।

सामिन (ثامن) अ. वि.–आठवाँ, अष्टम।

सामिरी (سامری) अ. पुं.–'सामिरा' नगर का रहनेवाला एक जादूगर, जिसने हज़्रत मूसा की उम्मत में गाय की पूजा प्रचलित की।

सामिरी फ़न (سامری فن) अ. वि.–जादूगर, मायावी; छली, वंचक, मक्कार।

सामिरीयत (سامریت) अ. स्त्री.–मायाकर्म, इंद्रजाल, जादूगरी।

सामी (سامی) फा. वि.–उच्च, उत्तुंग, बलंद, ऊँचा; श्रेष्ठ, पूज्य, बुज़ुर्ग।

सामे' (سامع) अ. वि.–सुननेवाला, श्रोता।

सामे अब्रस (سام ابرص) अ. स्त्री.–गृहगोधा, छिपकली; गोह, गोधा।

सायः (سایہ) फा. पुं.–छाया, परछाईं; प्रतिबिम्ब, अक्स; प्रेतबाधा, आसेब; आश्रय, शरण, पनाह; पक्षपात, पृष्ठ-पोषण, हिमायत; प्रभाव, असर।

सामःअफ़गन (سایہافگن) फा. वि.–साया डालनेवाला; रक्षा और कृपा करनेवाला।

सायःगाह (سایہگاہ) फा. स्त्री.–सुरक्षा स्थान, इत्मीनान की जगह, पनाहगाह।

सायःगुस्तर (سایہگستر) फा. वि.–दे. 'सायःअफ़गन'।

सायःज़दः (سایہزدہ) फा. वि.–जिसको आसेब ने मारा हो, प्रेतबाधाग्रस्त, भूताविष्ट।

सायःदार (سایہدار) फा. वि.–जिसमें साया हो, जिसके साये में लोग बैठें।

सायःपर्वर (سایہپرور) फा. वि.–दे. 'सायःपर्वर्दः'।

सायःपर्वर्दः (سایہپروردہ) फा. वि.–लाड़-प्यार में पला हुआ, सुकुमार; घर पाला हुआ, नमक का पला हुआ; किसी की कृपा से पला हुआ।

सायःफ़िगन (سایہفگن) फा. वि.–दे. 'सायःअफ़गन'।

सायःरुस्त (سایہرست) फा. वि.–लाड़-प्यार में पला हुआ, नाज़पर्वर्दः।

सायए आतिफ़त (سایۂ عاطفت) फा. अ. पुं.–अनुकंपा और दया की छाँव, अर्थात् कृपा और दया।

सायए तेग़ (سایۂ تیغ) फा. पुं.–तलवारों की छाँव, तलवारों के तले।

सायए दस्त (سایۂ دست) फा. पुं.–सहायता, मदद; सुरक्षा, हिफ़ाज़त।

सारः (سارہ) फा. पुं.–एक प्रकार की चादर; आड़, ओट, परदा; उत्कोच, रिश्वत।

सार (سار) फा. पुं.–एक चिड़िया; उष्ट्र, ऊँट; (प्रत्य.) वाला, जैसे—'शर्मसार' बहुतात, जैसे–'कोहसार'; समान, जैसे–'देवसार'।

सारबान (ساربان) फा. वि.–ऊँटवाला, उष्ट्रपाल।

सारा (سارا) फा. वि.–निष्केवल, ख़ालिस, बेमेल; अकृत्रिम, ग़ैरमस्नूई।

सारिक़ः (سارقہ) अ. स्त्री.–चोर स्त्री.।

सारिक़ (سارق) अ. पुं.–चोर, तस्कर।

सारिफ़ (سارف) अ. वि.–ख़र्च करनेवाला, कंज़्यूमर; फेरनेवाला; कालचक्र, गर्दिश।

सारिम (صارم) अ. स्त्री.–बहुत तेज़, तलवार, काटदार तलवार।

सारी (ساری) अ. वि.–सरायत करनेवाला, प्रवेश करनेवाला।

सालः (سالہ) फा. प्रत्य.–सालवाला, जैसे–'यकसालः' एक सालवाला।

साल (سال) फा. पुं.–वत्सर, वर्ष, बरस।

सालख़ुर्दः (سالخوردہ) फा. वि.–वयोवृद्ध, जरत्, बूढ़ा।

सालख़ुर्द (سالخورد) फा. वि.–बूढ़ा, जराग्रस्त, बुड्ढा।

सालगिरिह् (سالگرہ) फा. स्त्री.–जन्मदिन, जन्मतिथि, हर साल जन्मदिन पर मनाया जानेवाला उत्सव।

सालनामः (سالنامہ) फा. पुं.–वह विशेषांक जो कोई पत्रिका वर्ष में एक बार बहुत अच्छे प्रकार से निकाले।

सा'लब (ثعلب) अ. स्त्री.–लोमड़ी, लोखड़ी, शोमशा, लोमशी, लोमालिका।

साल बसाल (سال بۂسال) फा. वि.–हर साल, वर्ष प्रति वर्ष, प्रतिवर्ष।

सालहा साल (سالہا سال) फा. वि.–बरसहा बरस, बरसों, मुद्दतों, बहुत अधिक समय तक।

सालानः (سالانہ) फा. वि.–वार्षिक, आब्दिक, वात्सरिक, साल का।

सालार (سالار) फा. पुं.–सेनापति, सिपहसालार; अध्यक्ष, नायक, सरदार।

सालारी (سالاری) फा. स्त्री.–सेनापतित्व, सिपहसालारी; अध्यक्षता, सरदारी।

सालारे क़ाफ़िलः (سالار قافلہ) फा. अ. पुं.–क़ाफ़िले अर्थात् यात्रीदल का मुखिया।

सालारे कार्वां (سالار کارواں) फा. पुं.–दे. 'सालारे क़ाफ़िलः'।

सालारे क़ौम (سالار قوم) फा. अ. पुं.–राष्ट्र का नेता, मुल्क का लीडर; किसी जाति-विशेष का नेता।

सालारे जंग (سالار جنگ) फा. पुं.–सेनापति, फ़ौज का सरद्ार।

सालिक (سالک) अ. वि.–पथिक, बटोही, रस्तःगीर; वह व्यक्ति जो गृहस्थाश्रम में रहते हुए बहुत बड़ा साधक हो।

सालिफ़ (سالف) अ. वि.–आगे गया हुआ, गुज़रा हुआ, पूर्वज।

सालिक़ः (سالقہ) अ. स्त्री.–कवच, ज़िरिह।

सालिब (سالب) अ. वि.–सल्ब करनेवाला, निवारक।

सालिम (سالم) अ. वि.–संपूर्ण, समग्र, समूचा; स्वस्थ, तन्दुरुस्त; सुरक्षित, महफ़ूज़; यथावत्, ज्यों का त्यों।

सालिमन (سالماً) अ. वि.–पूरे तौर पर, पूर्णतया; सुरक्षतापूर्वक, बहिफ़ाज़त।

सालियाँ (سالیاں) फा. पुं.–'साल' का बहु., बरस।

सालियानः (سالیانہ) फा. वि.–वार्षिक, सालाना, पुं. वह हक़ या इन्आम जो प्रतिवर्ष दिया जाता हो।

सालिस (ثالث) अ. वि.–तीसरा, तृतीय; मध्यस्थ, पंच, बिचौलिया, हकम।

सालिस बिलख़ैर (ثالث بالخیر) अ. पुं.–वह पंच जो किसी का पक्षपात किये बिना अपना निर्णय दे।

सालिसी (ثالثی) अ. स्त्री.–पंचायत, पंचायत द्वारा किसी झगड़े का निर्णय।

सालिहः (صالحہ) अ. स्त्री.–साध्वी, सच्चरित्रा, नेक और पार्सा स्त्री।

सालिह (صالح) अ. वि.–सदाचारी, शुद्धचरित, पुण्यचरित्र, नेक और परहेज़गार, दे. 'सालेह्'।

सालिहात (صالحات) अ. स्त्री.–'सालिहः' का बहु., साध्वी स्त्रियाँ, परहेज़गार औरतें।

सालिहुलकैमूस (صالح الکیموس) अ. वि.–वह भोजन जिससे अच्छा रस बने जो शुद्ध रक्त बना सके।

साली (سالی) फा. वि.–पुराना, जीर्ण, (प्रत्य.) साल, जैसे 'ख़ुश्कसाली' क़ह्त का साल।

सालूक़ (سالوک) अ. वि.–बहुत अधिक चलनेवाला।

सालूस (سالوس) फा.अ. वि.–चापलूस, चाटुकार, ख़ुशामदी; छली, वंचक, मक्कार।

सालूसी (سالوسی) फा. स्त्री.–चाटुकारिता, ख़ुशामद; छल, धूर्तता, फ़िरेब।

साले आइंदः (سال آیندہ) फा. पुं.–आगामी वर्ष, आनेवाला, साल, अगला साल।

साले ईसवी (سال عیسوی) फा. अ. पुं.–वह संवत्सर जो हज़्रत ईसा के फाँसी पाने के समय से चला है।

साले कबीसः (سال کبیسہ) फा. अ. पुं.–लौंद का साल, वह साल जिसमें लौंद का महीना पड़े; वह ईसवी साल जिसमें फ़रवरी २९ दिन का हो।

साले क़मरी (سال قمری) फा. अ. पुं.–वह साल जिसके महीनों का हिसाब चाँद की घटाबढ़ी से हो।

साले गुज़श्तः (سال گزشتہ) फा. पुं.–गत वर्ष, बीता हुआ साल।

साले जलाली (سال جلالی) फा. अ. पुं.–जलालुद्दीन मलिक शाहे सलजूक़ी का चलाया हुआ साल जो ३६५ दिन और ६ घंटों का होता था, और अब तक वही हिसाब राइज है।

साले तमाम (سال تمام) फा. अ. पुं.–पूर्ण वर्ष, सारा साल।

साले नबवी (سال نبوی) फा. अ. पुं.–दे. साले हिज्री।

साले पैवस्तः (سال پیوستہ) फा. पुं.–गुज़रा हुआ साल, गत वर्ष।

साले फ़स्ली (سال فصلی) फा. अ. पुं.–किसानों का साल, जिसके हिसाब से वह लगान देते हैं।

साले बिक्रमी (سال بکرمی) फा. अ. पुं.–राजा विक्रमादित्य का चलाया हुआ संवत् जो हिन्दुस्तान का मुख्य संवत्सर है।

साले माल (سال مال) फा. अ. पुं.–साले फ़स्ली, किसानों का साल।

साले रवाँ (سال رواں) फा. पुं.–चालू साल, वह साल जो इस समय चल रहा है, प्रस्तुत वर्ष।

साले शम्सी (سال شمسی) फा.अ. पुं.–वह साल जिसमें सूर्य के गिर्द पृथ्वी का चक्कर पूरा होने पर दिन-रात का हिसाब

होता है और ३६५ दिन से कुछ अधिक समय का पूरा वर्ष गिना जाता है।

सालेह (صالح) अ. वि.–सदाचारी, शुद्धचरित्र, पुण्यात्मा, नेक और परहेज़गार।

साले हिज्री (سال هجری) फा.अ. पुं.–मुसलमानों का साल जो हज़्रत मुहम्मद साहब के मक्का छोड़कर मदीने जाने की तारीख़ से शुरूअ होता है और जिसका हिसाब चाँद की घटा-बढ़ी से है और जो शमसी साल से १०-११ दिन छोटा होता है।

सालो माह (سال وماه) फा. पुं.–वर्ष और महीने।

सा'वः (صعوه) अ. स्त्री.–इक छोटा पक्षी, ममोला।

सास (ساس) फा. पुं.–खटमल, मत्कुण।

सासान (ساسان) फा. पुं.–बहमन का लड़का जो अपनी बहन के डर से भाग गया था और संन्यास धारण कर लिया था, सासानी उसी के वंश के लोग हैं।

सासानी (ساسانی) फा. वि.–'सासान' के वंशज।

साहत (ساحت) अ. स्त्री.–विस्तार, विशालता, फैलाव, कुशादगी; चारों ओर की खुली हुई जगह।

साहब (صاحب) अ. वि.–दे. 'साहिब', उर्दू में दोनों प्रकार से बोलते हैं, परंतु 'अंग्रेज़' या बड़े अफ़सर के अर्थ में साहब ही कहते हैं।

साहबआलम (صاحب عالم) अ. पुं.–देहली के शाहज़ादों का लक़ब।

साहबबहादुर (صاحب بهادر) अ. फा. पुं.–अंग्रेज़ों का लक़ब; वह व्यक्ति जो अँगरेजी चाल-ढाल में ढल गया हो।

साहिबः (صاحبه) अ. स्त्री.–श्रीमती जी, महोदया; महिला, स्त्री, जैसे—'एक साहिबः आई हैं'।

साहिब (صاحب) अ. पुं.–एक सम्मान-सूचक शब्द जो नाम के अन्त में लगाया जाता है; स्वामी, मालिक; मित्र, दोस्त; सहायक, साथी; वाला, जैसे—'साहिबे इल्म' इल्मवाला।

साहिब आलम (صاحب عالم) अ. पुं.–दे. 'साहब आलम'।

साहिब कमाल (صاحب کمال) अ.वि.–हुनरमंद, गुणवान्।

साहिब क़िराँ (صاحب قران) अ. वि.–तेजस्वी, प्रतापी, जिसके भाग्य के शुभ ग्रह किसी अच्छी राशि में एकत्र हो। सिकंदरे आ'ज़म की उपाधि।

साहिबख़ानः (صاحب خانه) अ. फा. पुं.–घर का मालिक, गृहस्वामी।

साहिब ग़रज़ (صاحب غرض) अ. वि.–ग़रज़मंद, जिसका कोई काम अटका हो; स्वार्थी, ख़ुदग़रज़।

साहिबज़ादः (صاحب زاده) अ. फा. पुं.–सुपुत्र, भलेमानस का भला लड़का।

साहिब दिल (صاحب دل) अ. फा. वि.–सुहृद्, सहृदय, मनस्वी, जो दिल रखता हो, जो मनुष्य को परख सके और बात को समझ सके; पुण्यात्मा, महात्मा, ख़ुदाशनास।

साहिब नज़र (صاحب نظر) अ. वि.–नज़रवाला, परखनेवाला, पारखी, क़द्रदान, दृष्टिवंत।

साहिबनसीब (صاحب نصیب) अ. वि.–भाग्यशाली, भाग्यवान्, ख़ुशनसीब।

साहिबान (صاحبان) अ. पुं.–'साहिब' का बहु., लोग, मनुष्य, जैसे—सब साहिबान; वाले, जैसे—'साहिबाने कमाल'।

साहिबी (صاحبی) अ. वि.–सरदारी, अध्यक्षता; स्वामित्व, मालिकीयत।

साहिबुज़्ज़माँ (صاحب الزمان) अ. वि.–हज़्रत इमाम मेहदी का लक़ब।

साहिबुर्राय (صاحب الرائے) अ. वि.–जिसकी राय उम्दः और संजीदः हो।

साहिबुलजरीदः (صاحب الجریده) अ. पं.–अख़बार का मालिक।

साहिबे अक़्ल (صاحب عقل) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

साहिबे अख़्लाक़ (صاحب اخلاق) अ. वि.–जिसका व्यवहार अच्छा हो, सत्त्वशील, शीलवान्।

साहिबे अमल (صاحب عمل) अ. वि.–जो सिर्फ़ कहता ही न हो बल्कि करता भी हो, कर्मठ।

साहिबे इक़्तिदार (صاحب اقتدار) अ. वि.–जिसके हाथ में सत्ता हो।

साहिबे इक़्बाल (صاحب اقبال) अ. वि.–प्रतापी, तेजस्वी, इक़्बालमंद; भाग्यशाली, ख़ुशनसीब।

साहिबे इख़्तियार (صاحب اختیار) अ. वि.–जिसको अधिकार प्राप्त हो, अधिकार-संपन्न, अधिकारी।

साहिबे ऐ'तिबार (صاحب اعتبار) अ. वि.–विश्वस्त, मो'तबर।

साहिबे औसाफ़े हमीदः (صاحب اوصاف حمیده) अ.वि.–सद्गुण-संपन्न, अच्छे गुणों से परिपूर्ण।

साहिबे कमाल (صاحب کمال) अ. वि.–साहिबे हुनर, गुणवान्।

साहिबे क़लम (صاحب قلم) अ. वि.–जो अच्छे क़िस्म का लेखक हो, जिसकी लेखनी में ज़ोर हो।

साहिबे क़िस्मत (صاحب قسمت) अ. वि.–भाग्यशाली, भाग्यवान्, नसीबेवर।

साहिबे क़ुद्रत (صاحب قدرت) अ. वि.–समर्थ, सामर्थ्यवान्, ज़ी मक़्दरत; शक्तिशाली, ज़ोरावर।

साहिबे क़ुर्आन (صاحب قرآن) अ. पुं.–मुहम्मद साहिब, जिन पर क़ुरान उतरा है।

साहिबे क़ुव्वत (صاحب قوت) अ. वि.–शक्तिशाली, बलवान्, ज़ोरदार।

साहिबे ख़ानः (صاحب خانہ) अ. फा. वि.–गृहस्वामी, घर का मालिक।

साहिबे ख़ैर (صاحب خیر) अ. वि.–दानशील, जो अच्छे कामों में रुपया ख़र्च करता हो।

साहिबे ग़रज़ (صاحب غرض) अ. वि.–जिसकी कोई ग़रज़ अटकी हो; जो अपनी ग़रज़ का यार हो, स्वार्थी।

साहिबे ज़बाँ (صاحب زباں) अ. फा. वि.–जो किसी भाषा का पैदाइशी जानकार हो, अहले ज़बान।

साहिबे जमाल (صاحب جمال) अ. वि.–रूपवान्, सुन्दर, हसीन।

साहिबे ज़र (صاحب زر) अ. फा. वि.–धनवान्, मालदार।

साहिबे जलाल (صاحب جلال) अ. वि.–तेजस्वी, तेजवान्; क्रुद्धात्मा, ग़ुस्सःवर, उग्रतेजा।

साहिबे जाएदाद (صاحب جائداد) अ. फा. वि.–संपत्तिवान्, जिसके पास जायदाद हो।

साहिबे जागीर (صاحب جاگیر) अ. फा. वि.–भूसंपत्तिवान्, जिसके पास बहुत से गाँव हों।

साहिबे ज़िला (صاحب ضلع) अ. पुं.–ज़िलाधीश, ज़िले का हाकिम, कलक्टर।

साहिबे ज़ुका (صاحب ذکا) अ. वि.–जिसकी बुद्धि तेज़ हो, कुशाग्रबुद्धि, प्रतिभावान्।

साहिबे ज़ौक़ (صاحب ذوق) अ. वि.–रसिक, सहृदय, काव्यमर्मज्ञ, जिसे साहित्य का प्रेम और उसके गुण-दोष की परख हो।

साहिबे तख़्त (صاحب تخت) अ. फा. वि.–शासक, नरेश, राजा, बादशाह।

साहिबे तख़्तोताज (صاحب تخت وتاج) अ. फा. वि.–नरेश, बादशाह।

साहिबे तदबीर (صاحب تدبیر) अ. वि.–नीतिज्ञ, सियासतदाँ; बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

साहिबे तमीज़ (صاحب تمیز) अ. वि.–सभ्य, शिष्ट, सलीक़ः-मंद।

साहिबे ताज (صاحب تاج) अ. फा. वि.–शासक, नरेश, बादशाह, मुकुटधारी।

साहिबे ताजोतख़्त (صاحب تاج وتخت) अ. फा. वि.–नरेश, बादशाह।

साहिबे दर्द (صاحب درد) अ. फा. वि.–दयालु, दयावान्, रहमदिल; जो दूसरे का दुःख-दर्द पहचाने।

साहिबे दानिश (صاحب دانش) अ. फा. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; दूरदर्शी, दूरंदेश।

साहिबे दिमाग़ (صاحب دماغ) अ. वि.–अहंकारी, घमंडी; बुद्धिमान्, अक़्लवर; नकचिढ़ा, मिज़ाज़।

साहिबे दिल (صاحب دل) अ. फा. वि.–महात्मा, तत्त्वज्ञानी, आरिफ़; दयालु, रहमदिल।

साहिबे दीवान (صاحب دیوان) अ. वि.–वह शाइर जिसका दीवान पूरा हो गया हो या छप गया हो।

साहिबे दौलत (صاحب دولت) अ. वि.–धनाढ्य, धनवान्, मालदार।

साहिबे नज़र (صاحب نظر) अ. वि.–दोष-गुण को पहचाननेवाला, दृष्टिवान्।

साहिबे नसीब (صاحب نصیب) अ. वि.–भाग्यशाली, ख़ुशक़िस्मत।

साहिबे निगाह (صاحب نگاہ) अ. फा. वि.–दे. 'साहिबे नज़र'।

साहिबे नियाज़ (صاحب نیاز) अ. फा. वि.–नियाज़मंद, भक्त।

साहिबे निस्बत (صاحب نسبت) अ. वि.–किसी बड़े दरवेश से सम्बन्ध रखनेवाला, किसी बड़े ख़ानदान का मुरीद।

साहिबे नुफ़ूज़ (صاحب نفوذ) अ. वि.–जिसकी कहीं पैठ हो, रसाईवाला।

साहिबे फ़िराश (صاحب فراش) अ. वि.–बीमार, रुग्ण, रोगी, पलंग पर पड़ा रहनेवाला बीमार, जो चल-फिर न सके, रुग्णशय्याग्रस्त।

साहिबे मक़्दूर (صاحب مقدور) अ. वि.–धनवान्, रुपयेवाला, मालदार।

साहिबे मज्लिस (صاحب مجلس) अ. वि.–सभापति, मीर मज्लिस; मज्लिस करनेवाला, जिसके घर मज्लिस हो।

साहिबे महफ़िल (صاحب محفل) अ. वि.–दे. 'साहिबे मज्लिस'।

साहिबे मह्बस (صاحب محبس) अ. वि.–कारागारवासी, क़ैदी।

साहिबे माल (صاحب مال) अ. वि.–धनवान्, दौलतमंद; जिसकी कोई चीज़ हो, माल का मालिक।

साहिबे मुरव्वत (صاحب مروت) अ. वि.–सुशील, मुरव्वतवाला।

साहिबे राज़ (صاحب راز) अ. फा. वि.–जिसका कोई भेद हो; जो भेद जानता हो, मर्मज्ञ।

साहिबे राय (صاحب رائے) अ. वि.–जिसकी राय शुद्ध और ठीक हो।

साहिबे रीश (صاحب ریش) अ. फा. वि.–डाढ़ीवाला, जिसके डाढ़ी हो, श्मश्रुल।

साहिबे रेश (صاحب ریش) अ. फा. वि.–जिसके शरीर में कोई घाव हो, घाववाला।

साहिबे लौलाक (صاحب لولاک) अ. पुं.–हज़्रत मुहम्मद साहिव का लक़व।

साहिबे विलायत (صاحب ولایت) अ. वि.–बहुत बड़ा वली, जिसके अधीन कोई इलाक़ा हो, जिसकी रक्षा वह अपनी आत्मशक्ति द्वारा करता हो।

साहिबे शौक़ (صاحب شوق) अ. वि.–शौक़ीन, किसी बात का शौक़ रखनेवाला।

साहिबे सज्जादः (صاحب سجادہ) अ. पुं.–सज्जादःनशीन, गद्दीनशीन, किसी फ़क़ीर का जानशीन।

साहिबे सलीक़ः (صاحب سلیقہ) अ. वि.–सलीक़ःमंद, सुघड़, ढंग के साथ काम करनेवाला (वाली)।

साहिबे हया (صاحب حیا) अ. वि.–जिसके स्वभाव में शर्मीलापन हो।

साहिबे हिम्मत (صاحب ہمت) अ. वि.–साहसवाला, साहसी, उत्साही।

साहिबे हैसियत (صاحب حیثیت) अ. वि.–इज़्ज़तवाला, प्रतिष्ठित; मालदार, धनी।

साहिबे हौसलः (صاحب حوصلہ) अ. वि.–दे. 'साहिबे हिम्मत'।

सि

सिंगर (سنگر) फा. पुं.–छोटा नेज़ः।

सिंजाब (سنجاب) फा. पुं.–एक जानवर जिसकी खाल की पोस्तीन वनती है; उस जानवर की खाल।

सिंदबाद (سندباد) फा. पुं.–हकी अर्ज़क़ की लिखी हुई एक किताव जिसमें उपदेश हैं।

सिंदान (سندان) फा. स्त्री.–निहाई, अहरन, वह लोहा, जिस पर रखकर लोहा पीटा जाता है।

सिंदीद (صندید) अ. पुं.–अपने वंश का प्रतिष्ठित और महान् व्यक्ति; किसी देश का वड़ा और प्रतिष्ठित व्यक्ति।

सिअत (سعت) अ. स्त्री.–विस्तार, लंबाई, चौड़ाई, फैलाव।

सिआयत (سعایت) अ. स्त्री.–पिशुनता, चुगुलखोरी; निंदा, वदगोई।

सिकंजुबीन (سکنجبین) फा. स्त्री.–सिर्क़ः मिला हुआ नीवू का शर्वत जो दवामें काम आता है; नीबू का शर्बत जो गर्मी में पीते हैं।

सिकंदर (سکندر) फा. पुं.–यूनान का एक प्रसिद्ध और प्रतापी नरेश, जो मक़्दूनियाँ के नरेश फ़ैलक़ूस का बेटा और अरस्तू का शागिर्द था।

सिकंदर सौलत (سکندر صولت) फा. अ. वि.–सिकंदर-जैसा रोब-दाब रखनेवाला।

सिकंदरहशम (سکندرحشم) फा. अ. वि.–सिकंदर-जैसी शानोशौकत और बड़ाई रखनेवाला।

सिकंदरी (سکندری) फा. वि.–सिकंदर का; सिकंदर से सम्बन्धित; घोड़े की ठोकर।

सिकंदरे आ'ज़म (سکندر اعظم) फा. अ. पुं.–सिकंदरे रूमी की उपाधि, सिकंदरे ज़ुलक़रनैन।

सिक़ः (ثقہ) अ. वि.–एक व्यक्ति जो देखने में शरीफ़, आचरण में शुद्ध और विश्वस्त हो।

सिक (سک) फा. पुं.–सिर्का।

सिकबा (سکبا) फा. पुं.–एक खाना जो गेहूँ के दलिए और गोश्त में सिर्का और किशमिश आदि डालकर बनता है।

सिक़ात (ثقات) अ. पुं.–'सिक़' का बहु., श्रेष्ठ और विश्वस्त लोग।

सिक़ाम (سقام) अ. पुं.–'सक़िम' का बहु., रोगी लोग।

सिक़ायः (سقایہ) अ. पुं.–पानी का हौज़ या टंकी जो मस्जिद आदि में होती हैं और जिसे ग़लती से लोग सक़ाबः कहते हैं।

सिक़ायत (سقایت) अ. स्त्री.–पानी पिलाना।

सिकालिश (سکالش) फा. स्त्री.–ध्यान, ख़याल; चिंता, फ़िक्र; परामर्श, मश्बुरः।

सिकीज़ः (سکیزہ) फा. पुं.–छलाँग मारना, कूदना; लात चलाना, दुलत्ती मारना।

सिक्कः (سکہ) अ. पुं.–रुपया-पैसा, मुद्रा; छाप, मुह्र; धाक, रोब; पद्धति, तर्ज़।

सिक्कःज़न (سکہ زن) अ. फा. वि.–सिक्का ढालनेवाला, टकसालिया।

सिक्कःजात (سکہ جات) अ. फा. पुं.–'सिक्कः' का बहु., सिक्के।

सिक्कए क़ल्ब (سکۂ قلب) अ. पुं.–दे. 'सिक्कए कासिद'।

सिक्कए कासिद (سکۂ کاسد) अ. पुं.–जाली सिक्का, कूटमुद्रा, वह सिक्का जो टकसाली न हो, खोटा।

सिक्कए राइज (سکۂ رائج) अ. पुं.–वह सिक्का जिसका लेन-देन हो, जो व्यवहृत हो।

सिक्कीन (سکین) अ. स्त्री.–छुरी, बड़ा चाक़ू।

सिक्कीर (سکیر) अ. वि.–जो हर समय नशे में धुत रहे।

सिक़्त (سقط) अ. पुं.–मरा हुआ बच्चा पैदा होना; मरा हुआ बच्चा।

सिक़्लात (سقلات) तु. पुं.–एक क़ीमती ऊनी बानात, सक़िरलात।

सिक़्ले बत्न (ثقل بطن) अ. पुं.–पेट का भारीपन, अपच, बदहज़्मी।

सिक़्ले समाअत (ثقل سماعت) अ. पुं.–बधिरता, बहरापन।

सिख़्न (ثخن) अ. पुं.–मोटाई, दल, दबाज़त।

सिग़र (صغر) अ. वि.–लघुता, छोटाई, ख़ुर्दी।

सिग़रसिन (صغرسن) अ. वि.–अल्पवयस्क, वयोबाल, कमउम्र।

सिग़रसिनी (صغرسنی) अ. स्त्री.–अल्पवयस्कता, बाल्यावस्था, कमउम्री।

सिग़ार (صغار) अ. पुं.–'सग़ीर' का बहु., छोटी उम्र के लड़के लोग; 'सुग़्रा' का बहु., छोटी उम्र की स्त्रियाँ, लड़कियाँ।

सिग़ारो किबार (صغارو کبار) अ. पुं.–छोटे और बड़े, बच्चे और जवान और बूढ़ी, छोटे-बड़े सब।

सिगाल् (سگال) फा. स्त्री.–चिंता, फ़िक्र; ध्यान, सोच, ख़याल, विचार, (प्रत्य.) सोचनेवाला, जैसे––'ख़ैरसिगाल' भलाई सोचनेवाला।

सिगालिंदः (سگالندہ) फा. वि.–सोचनेवाला।

सिगालिश (سگالش) फा. स्त्री.–चिन्ता, फ़िक्र; विचार, ख़याल।

सिगालीदः (سگالیدہ) फा. वि.–सोचा हुआ, विचारा हुआ।

सिगालीदनी (سگالیدنی) फा. वि.–सोचने योग्य, विचारने योग्य।

सिग्ऱ (صغر) अ. पुं.–दे. शुद्ध उच्चारण 'सिग़र', 'सिग्ऱ' ग़लत है।

सिजंजल (سجنجل) अ. पुं.–दर्पण, मुकुर, आईना।

सिजाफ़ (سجاف) फा. स्त्री.–कपड़े के चारों ओर लगायी जानेवाली गोट, संजाफ़।

सिजिल [ल्ल] (سجل) अ. वि.–दस्तावेज़ जो रजिस्ट्रार की मुह्र और दस्तख़त आदि से ठीक हो गयी हो; बैनामा, विक्रयलेख।

सिज्जीन (سجین) अ. स्त्री.–भयानक कारागार; एक नरक; बुरे आचरणवालों का रजिस्टर।

सिज्जील (سجیل) अ. पुं.–एक पत्थर, कच्चा पत्थर, कंकर।

सिज्दः (سجدہ) अ. पुं.–ईश्वर के लिए सर झुकाना; नमाज़ में जमीन पर सर रखना।

सिज्दःरेज़ (سجدہریز) अ. फा. वि.–सज्दा करनेवाला।

सिज़्दःरेज़ी (سجدہریزی) अ. फा. स्त्री.–सज्दा करना, सज्दे में गिरना।

सिज्न (سجن) अ. पुं.–जेलख़ाना, कारागार।

सितंबः (ستنبہ) फा. पुं.–बुरी और डरावनी शक्ल; स्वप्न में डरानेवाला भूत।

सितद (ستد) फा. स्त्री.–लेना, लेन, यह शब्द अकेला नहीं बोला जाता, 'दाद' के साथ मिलाकर 'दादोसितद' बोलते हैं।

सितब्र (سطبر) फा. वि.–मोटा, दलदार, दबीज़।

सितम (ستم) फा. पुं.–अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म; ईशकोप, ग़ज़ब; ज़बर्दस्ती, हठ ; बहुत अधिक, बहुत; अंधेर।

सितमईजाद (ستم ایجاد) फा. अ. वि.–बहुत बड़ा अत्याचारी, जो नये-नये अत्याचार ईजाद करता हो।

सितमकश (ستم کش) फा. वि.–सितम उठानेवाला, अत्याचार सहनेवाला।

सितमकशी (ستم کشی) फा. स्त्री.–अत्याचार सहना, सितम बरदाश्त करना।

सितमकशीदः (ستم کشیدہ) फा. वि.–सितम उठाये हुए, अत्याचार सहा हुआ, मज़्लूम, पीड़ित।

सितमकुश्तः (ستم کشتہ) फा. वि.–जो किसी के अत्याचार से मारा गया हो।

सितमकेश (ستم کیش) फा. वि.–जिसका स्वभाव ही अत्याचार करना हो, बहुत बड़ा अन्यायी।

सितमगर (ستم گر) फा. वि.–सितम करनेवाला, अत्याचारी––"मैंने चाहा था कि अनदोहे जफ़ा से छूटूँ। वह सितमगर मेरे मरने पे भी राज़ी न हुआ।"

सितमगरी (ستم گری) फा. स्त्री.–अत्याचार करना।

सितमगार (ستم گار) फा. वि.–दे. 'सितमगर'।

सितमगारी (ستم گاری) फा. स्त्री.–दे. 'सितमगरी'।

सितमगिर्वीदः (ستم گرویدہ) फा. वि.–जो किसी के अत्याचारों पर मुग्ध हो, जो चाहता हो कि उस पर अत्याचार होते ही रहें अर्थात् प्रेमी।

सितमगिर्वीदगी (ستم گرویدگی) फा. स्त्री.–अत्याचार पर मुग्ध होना, यह चाहना कि अत्याचार होते रहें।

सितमजदः (ستم زدہ) फा. वि.–अत्याचारग्रस्त, जिस पर सितम हो, मज़्लूम, पीड़ित।

सितमजदगी (ستم زدگی) फा. स्त्री.–सितमज़दः होना।

सितमजरीफ़ (ستم ظریف) फा. अ. वि.–जो हँसी-हँसी में अत्याचार करे, हँसते-हँसते मार रखनेवाला।

सितमज़रीफ़ी (ستم‌ظریفی) फा. अ. स्त्री.–हँसी के पर्दे में अत्याचार करना।

सितमदीदः (ستم‌دیدہ) फा. वि.–दे. 'सितमकशीदः'।

सितमपर्वदः (ستم‌پروردہ) फा. वि.–जिसका जीवन सितम सहते बीता हो।

सितमपेशः (ستم‌پیشہ) फा. वि.–दे. 'सितमकेश'।

सितमपेशगी (ستم‌پیشگی) फा. स्त्री.–सितमपेशः होना।

सितमरसीदः (ستم‌رسیدہ) फा. वि.–दे. 'सितमकशीदः'।

सितमरानी (ستم‌رانی) फा. स्त्री.–सितम करना, पीड़ा देना।

सितमशिआर (ستم‌شعار) फा. वि.–दे. 'सितमकेश'।

सितमशिआरी (ستم‌شعاری) फा. अ. स्त्री.–सितमशिआर होना, स्वभाव में अत्याचार होना।

सिताँ (ستاں) फा. प्रत्य.–लेनेवाला, जैसे—'जाँसिताँ' प्राण लेनेवाला।

सिता (ستا) फा. प्रत्य.–प्रशंसा करनेवाला, जैसे—'ख़ुद-सिता' अपनी प्रशंसा करनेवाला।

सिताइंदः (ستائندہ) फा. वि.–प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

सिताइश (ستائش) फा. स्त्री.–प्रशंसा, श्लाघा, तारीफ़; स्तुति, हम्दोसना।

सिताइशगर (ستائش‌گر) फा. वि.–प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला; स्तुतिकर्ता, हम्द करनेवाला।

सिताईदः (ستائیدہ) फा. वि.–प्रशस्त, तारीफ़ किया हुआ।

सिताज़न (ستازن) फा. वि.–सितार बजानेवाला, तंत्री।

सितादः (ستادہ) फा. वि.–'इस्तादः' का लघु., खड़ा हुआ।

सितानिंदः (ستانندہ) फा. वि.–लेनेवाला, ग्राहक।

सितारः (ستارہ) फा. पुं.–तारा, उडु; ग्रह, सैयारः; भाग्य, तक़्दीर।

सितारःजबीं (ستارہ‌جبیں) फा. वि.–दे. 'सितारःपेशानी'।

सितारः दाँ (ستارہ‌داں) फा. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

सितारःपरस्त (ستارہ‌پرست) फा. वि.–तारों की पूजा करनेवाला।

सितारःपेशानी (ستارہ‌پیشانی) फा. वि.–वह घोड़ा जिसके माथे पर सफ़ेद छोटा चिह्न हो, ऐसा घोड़ा अशुभ समझा जाता है।

सितारःबीं (ستارہ‌بیں) फा. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

सितारःबीनी (ستارہ‌بینی) फा. स्त्री.–ग्रहों के द्वारा शुभाशुभ फल का ज्ञान।

सितारःशनास (ستارہ‌شناس) फा. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

सितारःशनासी (ستارہ‌شناسی) फा. स्त्री.–ज्योतिष, नुजूम।

सितार (ستار) फा. पुं.–एक बाजा, तंत्री।

सितारज़न (ستارزن) फा. वि.–सितार बजानेवाला, तंत्री।

सिताम (ستام) फा. पुं.–घोड़े का आभूषण।

सिती (ستی) फा. स्त्री.–साध्वी, सती, पार्सा स्त्री।

सितूदः (ستودہ) फा. वि.–प्रशस्तः, तारीफ़ किया हुआ।

सितूदःऔसाफ़ (ستودہ‌اوصاف) अ. फा. वि.–दे. 'सितूदःसिफ़ात'।

सितूदःकार (ستودہ‌کار) फा. वि.–जिसका काम क़ाबिले तारीफ़ हो।

सितूदःख़साइल (ستودہ‌خصائل) फा. अ. वि.–जिसकी आदतें तारीफ़ के योग्य हों, अच्छे स्वभाववाला।

सितूदःसिफ़ात (ستودہ‌صفات) फा. अ. वि.–जिसके गुण प्रशंसनीय हों, अच्छे गुणोंवाला।

सितेज़ः (ستیزہ) फा. पुं.–युद्ध, लड़ाई, जंग।

सितेज़ (ستیز) फा. पुं.–युद्ध, जंग, लड़ाई; शत्रुता, दुश्मनी; प्रतिकूलता, नामुआफ़क़त।

सितेज़ाँ (ستیزاں) फा. वि.–युद्ध करता हुआ, लड़ता हुआ।

सितेज़िंदः (ستیزندہ) फा. वि.–लड़नेवाला, योद्धा।

सितेहिश (ستیہش) फा. स्त्री.–लड़ाई, झगड़ा, युद्ध।

सित्तः (ستہ) अ. वि.–छै, षट्।

सित्तः अशर (ستہ‌عشر) अ. वि.–सोलह, षोडश।

सित्रः (سترہ) अ. पुं.–कोट, बड़ा कोट।

सित्र (ستر) अ. पुं.–पर्दा, छिपाव, घूँघट।

सिदी (ثدی) अ. स्त्री.–स्तन, पिस्ताँ, मर्द का हो या स्त्री का, दे. 'सदी'।

सिद्इ (ثدئی) अ. स्त्री.–'सिदी' का शद्ध उच्चारण यही है, स्तन, चूची, दे. 'सद्इ'।

सिद्क़ (صدق) अ. पुं.–सत्यता, सच्चाई, यथार्थता, वाक़िईयत; निश्छलता, ख़ुलूस।

सिद्क़दिली (صدق‌دلی) अ. फा. स्त्री.–निश्छलता, निष्कपटता, स्वभाव की सरलता, ख़ुलूस।

सिद्क़मक़ाल (صدق‌مقال) अ. वि.–बात का पक्का, जो कह दे उसे अवश्य करनेवाला, सत्यधृति, सत्यवचन; सत्यवादी, सच बोलनेवाला।

सिद्क़मक़ाली (صدق‌مقالی) अ. स्त्री.–बात कहकर उसे निबाहना, वचन की दृढ़ता; सच बोलना।

सिद्क़शिआर (صدق‌شعار) अ. वि.–सत्यनिष्ठ, सच्चाई को हाथ से न देनेवाला।

सिद्क़शिआरी (صدق‌شعاری) अ. स्त्री.–सच्चाई पर दृढ़ता, सत्यनिष्ठता।

सिद्क़े आ'माल (صدق اعمال) अ. पुं.–आचरण की शुद्धि; किसी अच्छे फल की कामना के बिना धर्म करना।

सिद्क़े नीयत (صدق نیت) अ. पुं.–अंतःशुद्धि, मन की पवित्रता; किसी की चीज़ की ओर नज़र न करना, ईमानदारी।

सिद्दीक़ (صدیق) अ. वि.–बहुत ही सच्चा और जाँनिसार दोस्त जिस पर किसी अवस्था में भी भरोसा किया जा सके।

सिद्दीक़े अक्बर (صدیق اکبر) अ. पुं.–इस्लाम के पहले ख़लीफा हज़्रत अबूबक्र की उपाधि।

सिद्रः (سدرہ) अ. पुं.–स्वर्ग के सबसे ऊँचे मकान पर एक बेर का पेड़।

सिद्रतुलमुंतहा (سدرۃالمنتہی) अ. पुं.–बेर का एक पेड़ जो सातवें आस्मान पर है, और जहाँ तक किसी की पहुँच नहीं है, केवल 'जिब्रील' जा सकते हैं, उससे आगे कोई नहीं जा सकता।

सिन [न्न] (سن) अ. पुं.–आयु, उम्र; साल; दंत, दशन, दाँत।

सिनरसीदः (سن رسیدہ) अ. फा. वि.–वयोवृद्ध, गतायु, बूढ़ा।

सिनरसीदगी (سن رسیدگی) अ. फा. स्त्री.–वृद्धावस्था, बुढ़ापा।

सिनाँ (سناں) फा. स्त्री.–बाण की नोक, अनी; बरछा, भाला, कुंत, शक्ति; बरछी की नोक।

सिनाँकश (سناں کش) फा. वि.–तीरंदाज़, धनुर्धर।

सिनाअत (صناعت) अ. स्त्री.–व्यवसाय, उपजीविका, पेशा; शिल्प, दस्तकारी, कारीगरी।

सिनान (سنان) स्त्री.–दे. 'सिनाँ'।

सिनीन (سنین) अ. पुं.–'सिन' का बहु., बरस, साल।

सिनीने माज़ियः (سنین ماضیہ) अ. पुं.–गुज़रे हुए बरस, बीते हुए साल।

सिनीने मुस्तक़्बिलः (سنین مستقبلہ) अ. पुं.–आनेवाला साल, आगामी बरस।

सिने तमीज़ (سن تمیز) अ. पुं.–अच्छे-बुरे में विवेक कर सकने की आयु, प्रौढ़ावस्था।

सिने बुलूग़ (سن بلوغ) अ. पुं.–बालिग़ होने की उम्र, युवावस्था।

सिने शबाब (سن شباب) अ. पुं.–जवानी की उम्र, युवावस्था।

सिने शुऊर (سن شعور) अ. पुं.–दे. 'सिने तमीज़'।

सिने शैख़ूख़त (سن شیخوخت) अ. पुं.–जरावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ापे की आयु।

सिन्नौर (سنور) अ. स्त्री.–बिल्ली, मार्जारी।

सिन्फ़ (صنف) अ. स्त्री.–जाति, जिंस; वर्ग, तब्क़ः; वंश, नस्ल।

सिन्फ़े नाज़ुक (صنف نازک) अ. स्त्री.–स्त्रीवर्ग, महिलाएँ, स्त्रियाँ, औरतें।

सिन्फ़े लतीफ़ (صنف لطیف) अ. स्त्री.–दे. 'सिन्फ़े नाज़ुक'।

सिपंज (سپنج) फा. पुं.–थोड़े दिन, चंद दिन।

सिपंजी (سپنجی) फा. वि.–थोड़े दिन का, चंदरोज़ः, क्षणस्थायी।

सिपंद (سپند) फा. पुं.–काला दाना जो नज़र उतारने को जलाया जाता है, दे. 'सपंद', दोनों शुद्ध हैं।

सिपंदाँ (سپنداں) फा. पुं.–दे. 'सिपंद'।

सिपर (سپر) फा. स्त्री.–तलवार रोकने के अस्त्र, ढाल, चर्म, कवच।

सिपरअंदाख़्तः (سپرانداختہ) फा. वि.–जिसने लड़ाई में हार मान ली हो, हार मानकर अपनी ढाल-तलवार रख दी हो।

सिपरअंदाज़ी (سپراندازی) फा. स्त्री.–हार मान लेना।

सिपरग़म (سپرغم) फा. पुं.–एक वनौषधि, मरुआ, रैहाँ।

सिपरी (سپری) फा. वि.–समाप्त, ख़त्म।

सिपस (سپس) फा. वि.–तत्पश्चात्, उसके बाद।

सिपह (سپہ) फा. स्त्री.–'सिपाह' का लघु., सेना, बल, फ़ौज।

सिपहगरी (سپہ گری) फा. स्त्री.–सिपाहीपन; फ़ौज की नौकरी; शूरता, बहादुरी।

सिपहदार (سپہدار) फा. पुं.–सेनानायक, फ़ौज का अफ़सर।

सिपहबद (سپہبد) फा. पुं.–दे. 'सिपहसालार'।

सिपहबुद (سپہبد) फा. पुं.–दे. 'सिपहसालार'।

सिपहसालार (سپہسالار) फा. पुं.–सेनापति, सेनानी, सेनाध्यक्ष, कमांडर।

सिपहसालारी (سپہسالاری) फा. स्त्री.–सेनापतित्य, सेनापति का पद।

सिपानाख़ (سپاناخ) फा. स्त्री.–एक साग, पालक।

सिपारिंदः (سپارندہ) फा. वि.–सौंपनेवाला, हस्तान्तरण करनेवाला।

सिपारी (سپاری) फा. स्त्री.–पान में खाई जानेवाली डली, छालिया, सुपारी।

सिपास (سپاس) फा. स्त्री.–कृतज्ञता, एहसानमंदी; धन्यवाद, शुक्रियः; स्तुति, गुणगान, हम्दोसना; प्रशंसा, तारीफ़।

सिपासगुज़ार (سپاس گزار) फा. वि.–कृतज्ञता, एहसानमंदी; स्तुति-पाठक, हम्दख़्वाँ; प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

सिपासगुज़ारी (سپاس گزاری) फा. स्त्री.–कृतज्ञता, स्तुति-पाठ; प्रशंसा।

सिपासगो (سپاس گو) फा. वि.–दे. 'सिपासगुज़ार'।

सिपासनामः (سپاس نامہ) फा. पुं.–अभिनंदनपत्र, मान-पत्र, प्रतिष्ठापत्र।

सिपाह (سپاہ) फा. स्त्री.–सेना, बल, फ़ौज।

सिपाहगरी (سپاہ گری) फा. स्त्री.–सिपाही का पेशा; शूरता, बहादुरी; सिपाही का फ़न।

सिपाहाँ (سپاہاں) फा. पुं.–ईरान का एक प्रसिद्ध नगर इस्फ़िहान।

सिपाहियानः (سپاہیانہ) फा. वि.–सिपाहियों-जैसा; वीरतापूर्ण, बहादुराना।

सिपाही (سپاہی) फा. पुं.–फ़ौजी, सैनिक, फ़ौज का जवान; बहादुर और पराक्रमी व्यक्ति।

सिपाहीबचः (سپاہی بچہ) फा. पुं.–सिपाही का लड़का, सैनिक पुत्र; जिसके वंश में और लोग सिपाही हों।

सिपिस्ताँ (سپستاں) फा. स्त्री.–लहसोड़ा, लसोड़ा।

सिपिह्र (سپہر) फा. पुं.–आकाश, गगन, आस्मान।

सिपिह्रे गर्दाँ (سپہر گرداں) फा. पुं.–घूमनेवाला आकाश।

सिपिह्रे बरीं (سپہر بریں) फा. पुं.–सबसे ऊँचा आकाश, नवाँ आस्मान।

सिपुर्दः (سپردہ) फा. वि.–सौंपा हुआ, हस्तांतरित, दिया हुआ।

सिपुर्द (سپرد) फा. वि.–सौंपा हुआ, हवाले, हस्तगत; सौंपना, देना, हवाले करना।

सिपुर्दगी (سپردگی) फा. स्त्री.–सौंप, हवालगी; हवालात, हिरासत।

सिपुर्दनी (سپردنی) फा. वि.–सौंपने योग्य, हस्तांतरित करने योग्य।

सिपुर्दार (سپردار) फा. पुं.–जिसके सिपुर्द कोई माल किया जाय विशेषतः कुर्क़ी का माल।

सिपुर्दारी (سپرداری) फा. स्त्री.–सिपुर्दगी में माल देना, किसी को सिपुर्दार बनाना।

सिपेदः (سپیدہ) फा. पुं.–सफ़ेदी।

सिपेदःदम (سپیدہ دم) फा. पुं.–गजरदम, बहुत तड़के।

सिपेद (سپید) फा. वि.–सफ़ेद।

सिपेदए शफ़क़ (سپیدۂ شفق) फा. अ. पुं.–सवेरे की सफ़ेदी।

सिपेदए सुब्ह (سپیدۂ صبح) फा. अ. पुं.–सवेरे की सफ़ेदी, जो निकलने से पहले आकाश पर फैल जाती है।.

सिपेदी (سپیدی) फा. स्त्री.–श्वेतता, शुभ्रता, सफ़ेदी।

सिपोख़्तः (سپوختہ) फा. वि.–दे. 'सिपोज़ीदः'।

सिपोज़ीदः (سپوزیدہ) फा. वि.–एक चीज़ में दूसरी चीज़ घुसेड़ी हुई; एक चीज़ में से दूसरी चीज़ निकाली हुई।

सिपोज़ीदगी (سپوزیدگی) फा. स्त्री.–अंदर घुसेड़ना; बाहर निकालना।

सिफ़त (صفت) अ. स्त्री.–प्रशंसा, तारीफ़; गुण, वस्फ़; उत्तमता, उम्दगी; प्रभाव, तासीर; समान, तुल्य, जैसे—'सगसिफ़त' कुत्ते-जैसा; (व्या.) विशेषण, किसी चीज़ का गुण।

सिफ़ाक़ (صفاق) अ. स्त्री.–आँतों पर चढ़ी हुई एक बारीक झिल्ली।

सिफ़ात (صفات) अ. उभ.–'सिफ़त' का बहु., सिफ़तें।

सिफ़ाती (صفاتی) अ. वि.–वह दोष या गुण जो किसी के स्वभाव में न हो, अस्थायी रूप से हो।

सिफ़ाते ज़ाती (صفات ذاتی) अ. उभ.–वह अच्छाइयाँ जो किसी के स्वभाव में हों, बनावटी न हों।

सिफाते हसनः (صفات حسنہ) अ.उभ.–अच्छे गुण, ख़ूबियाँ।

सिफ़ाद (صفاد) अ. स्त्री.–बेड़ी और हथकड़ी।

सिफ़ानत (سفانت) अ. स्त्री.–जहाज़ बनाने का काम, नावें बनाने का फ़न।

सिफ़ारत (سفارت) अ. स्त्री.–सफ़ीर का काम, दूतकर्म, एलचीगरी।

सिफ़ारतख़ानः (سفارتخانہ) अ. फा. पुं.–सफ़ीर के रहने और उसके दफ़्तर का स्थान, दूतावास।

सिफ़ारिश (سفارش) फा. स्त्री.–शु. उ. 'सुफ़ारिश' है, परन्तु उर्दू में सिफ़ारिश ही है, अभिस्ताव, अनुशंसा।

सिफ़ाल (سفال) फा. स्त्री.–मिट्टी का बरतन; मिट्टी का ठीकरा।

सिफ़ालगर (سفالگر) फा. वि. कुंभकार, कुम्हार, मिट्टी के बरतन बनानेवाला।

सिफ़ालीं (سفالیں) फा. वि.–मिट्टी का बना हुआ, मृण्मय।

सिफ़ाह (سفاح) अ. स्त्री.–व्यभिचार, बुरा काम, हराम, ज़िना।

सिफ़्तः (سفتہ) फा. वि.–हर मोटी और गफ़ चीज़; मोटा कपड़ा।

सिफ़्र (صفر) अ. पुं.–बिन्दु, नुक़्ता; शून्य, ख़ाली।

सिफ़्लः (سفلہ) अ. वि.–अधम, नीच, कमीना, लोफ़र।

सिफ़्लःकार (سفلہ کار) अ. फा. वि.–जिसके काम बहुत ही गिरे हुए हों।

सिफ़्लःख़ू (سفلہ خو) अ. फा. वि.–जिसका स्वभाव बहुत ही कमीना हो, क्षुद्रप्रकृति।

सिफ़्लःनवाज़ (سفلہ نواز) अ. फा. वि.–कमीनों को बढ़ावा देने और उनका पक्षपात करनेवाला।

सिफ़्लःनिहाद (سفلہ نہاد) अ. फा. वि.–दे. 'सिफ़्लःख़ू'।

सिफ़्लःमिज़ाज (سفلہ مزاج) अ. वि.–दे. 'सिफ़्लःख़ू'।

सिफ़्लःपर्वर (سفلہ پرور) अ. फा. वि.–दे. 'सिफ़्लनवाज़'।

सिफ़्लः वंरी (سفلہ پروری) अ. फा. स्त्री.–नीच और लोफ़र लोगों को प्रोत्साहन देना, शरीफ़ों के मुक़ाबले में उनकी हिमायत करना।

सिफ़्लःमज़ाक़ (سفلہ مذاق) अ. वि.–पस्तमज़ाक़, जिसकी साहित्य-रसज्ञता निम्न कोटि की हो।

सिफ़्लःशिआर (سفلہ شعار) अ. वि.–नीच स्वभाववाला, क्षुद्रप्रकृति।

सिफ़्ल (سفل) अ. पुं.–निचाई, निम्नता, पस्ती।

सिफ़्लगी (سفلگی) अ. स्त्री.–अधमता, नीचता, कमीनगी, लोफ़रपन, छिछोरापन, ओछापन।

सिफ़्ली (سفلی) अ. स्त्री.–निम्न कोटि का, घटिया; भूत-प्रेतवाला अमल।

सिफ़्वत (صفوت) अ. स्त्री.–श्रेष्ठता, उत्तमता, बुज़ुर्गी; पवित्रता, पाकी; (वि.) पवित्र, निर्मल, साफ़; श्रेष्ठ, उत्तम, बुज़ुर्ग; सार, तत्त्व, ख़ुलासा।

सिबाअ़ (سباع) अ. पुं.–'सब' का बहु., फाड़ खानेवाले जानवर, दरिंदे।

सिबाक़ (سباق) अ. पुं.–दौड़ में आगे बढ़ जाना।

सिबाल (سبال) अ. स्त्री.–'सबलत' का बहु., मूँछें।

सिबाहत (سباحت) अ. स्त्री.–तैरना, पैरना, तैराकी, दे. 'सबाहत', दोनों शुद्ध हैं।

सिब्ग़ः (صبغہ) अ. पुं.–वर्ण, रंग; धर्म, दीन।

सिब्ग़ (صبغ) अ. पुं.–वर्ण, रंग।

सिब्ग़तुल्लाह (صبغۃاللہ) अ. पुं.–इस्लाम धर्म।

सिब्त (سبط) अ. पुं.–लड़की का लड़का, दौहित्र, दुहितासुत, नाती, नवासा।

सिबते नबी (سبط نبی) अ. पुं.–पैग़ंबर साहिब का नवासा, हज़्रत फ़ातिमा का लड़का।

सिब्तैन (سبطین) अ. पुं.–दोनों नाती, अर्थात् नवासे; हज़्रत मुहम्मद साहिब के दोनों नवासे, हसनैन।

सिब्र (صبر) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध ओषधि, एलुआ, दे. 'सब्र' और 'सबिर', तीनों शुद्ध हैं।

सिमाअ (سماع) अ. पुं.–गाना सुनना; वज्द और हाल आना।

सिमाक (سماک) अ. पुं.–चौदहवाँ नक्षत्र, चित्रा।

सिमाके आ'ज़ल (سماک اعزل) अ. पुं.–चौदहवें नक्षत्र का एक सितारा, जिसके पास दूसरा तारा नहीं है।

सिमाके रामेह (سماک رامح) अ. पुं.–चौदहवें नक्षत्र का एक तारा, जिसके पास एक तारा और है।

सिमाख़ (سماخ صماخ) अ. पुं.–कान का छेद, श्रवण-रंध्र, कर्ण-विवर।

सिमात (سماط) अ. स्त्री.–चटाई, दस्तरख़्वान; पंक्ति, क़तार।

सिमात (سمات) अ. पुं.–'सम्त' का बहु., दिशाएँ; 'सिमत' का बहु., बहुत से दाग़ या निशान।

सिमाम (صمام) अ. पुं.–मुँहबंद बोतल।

सिम्त (سمت) अ. स्त्री.–दे. 'सम्त' शुद्ध वही है, परंतु उर्दू में 'सिम्त' भी बोल देते हैं, दिशा, तरफ़।

सिम्त (سمط) अ. स्त्री.–मोती, मुक्ता,, मौक्तिक, दे. 'सम्त' दोनों शुद्ध हैं।

सिम्सिम (سمسم) अ. स्त्री.–तिल्ली, एक प्रसिद्ध बीज, तिल।

सियर (سیر) अ. स्त्री.–'सीरत' का बहु., सीरतें, जीवन-चरित।

सियह (سیہ) फा. वि.–'सियाह' का लघु., दे. 'सियाह'।

सियहकार (سیہ کار) फा. वि.–दे. 'सियाहकार'।

सियहकारी (سیہ کاری) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहकारी'।

सियहकासः (سیہ کاسہ) फा. वि.–दे. 'सियाहकासः'।

सियहकासगी (سیہ کاسگی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहकासगी'।

सियहखानः (سیہ خانہ) फा. वि.–दे. 'सियाहख़ानः'।

सियहचर्दः (سیہ چردہ) फा. वि.–दे. 'सियाहचर्दः'।

सियहचश्म (سیہ چشم) फा. वि.–दे. 'सियाहचश्म'।

सियहचश्मी (سیہ چشمی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहचश्मी'।

सियहज़बान (سیہ زبان) फा. वि.–दे. 'सियाहज़बान'।

सियहजबानी (سیہ زبانی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहज़बानी'।

सियहजर्दः (سیہ جردہ) फा. वि.–काले चमड़ेवाला, जिसका रंग काला हो, हबशी।

सियहताब (سیہ تاب) फा. वि.–दे. 'सियाहताब'।

सियहताले' (سیہ طالع) फा. अ. वि.–दे. 'सियाहताले'।

सियहदस्त (سیہ دست) फा. वि.–दे. 'सियाहदस्त'।

सियहदिल (سیہ دل) फा. वि.–दे. 'सियाहदिल'।

सियहदिली (سیہ دلی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहदिली'।

सियहनामः (سیہ نامہ) फा. वि.–दे. 'सियाहनामः'।

सियहपिस्ताँ (سیہ پستاں) फा. वि.–दे. 'सियाहपिस्ताँ'।

सियहपोश (سیہ پوش) फा. वि.–दे. 'सियाहपोश'।

सियहपोशी (سیہ پوشی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहपोशी'।

सियहफ़ाम (سیہ فام) फा. वि.–दे. 'सियाहफ़ाम'।

सियहफ़ामी (سیہ فامی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहफ़ामी'।

सियहबख़्त (سیہ بخت) फा. वि.–दे. 'सियाहबख़्त'।

सियहबख़्ती (سیہ بختی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहबख़्ती'।

सियहबहार (سیہ بہار) फा. वि.–दे. 'सियाहबहार'।

सियहबातिन (سیہ باطن) फा. अ. वि.–दे. 'सियाहबातिन'।

सियहबातिनी (سیہ باطنی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'सियाहबातिनी'।

सियहबादाम (سیہ بادام) फा. वि.–वह सुन्दर स्त्री जिसकी आँख़ें काली हों; काली आँख।

सियहमस्त (سیہ مست) फा. वि.–दे. 'सियाहमस्त'।

सियहमस्ती (سیہ مستی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहमस्ती'।

सियहरू (سیہ رو) फा. वि.–दे. 'सियाहरू'।

सियहरूई (سیہ روی) फा. स्त्री.–दे. 'सियाहरूई'।

सियहरोज़ (سیہ روز) फा. वि.–दे. 'सियाहरोज़'।

सियहरोज़गार (سیہ روزگار) फा. वि.–दे. 'सियाह रोज़गार'।

सियहरोज़ी (سیہ روزی) फा. वि.–दे. 'सियाहरोज़ी'।

सियहसाल (سیہ سال) फा. वि.–दे. 'सियाहसाल'।

सियाक़ (سیاق) अ. पुं.–हाँकना, चलाना; बाज़ पक्षी के पाँव की डोर; गणित, हिसाब।

सियाक़े इबारत (سیاق عبارت) अ.पुं.–इबारत का ढंग, जैसे–सियाक़े इबारत से पता चलता है कि आपको रुपये की आवश्यकता है।

सियाक़े बयान (سیاق بیان) अ. पुं.–बात का ढंग, तक़्रीर का अंदाज़, जैसे–सियाक़े बयान से मालूम होता है कि आप को एतिराज़ है।

सियाक़ोसिबाक़ (سیاق و سباق) अ. पुं.–अगला-पिछला, इबारत का अगला-पिछला भाग जिससे किसी बात का अंदाज़ा हो।

सियादत (سیادت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, बुज़ुर्गी; अध्यक्षता, सरदारी; सैयिद होना।

सियानत (صیانت) अ. स्त्री.–संरक्षण, निगहबानी, निगरानी।

सियाब (ثیاب) अ. पुं.–सियाब का बहु., कपड़े।

सियाम (صیام) अ. पुं.–रोज़ों के दिन, रोजों का महीना, रोज़े।

सियासत (سیاست) अ.स्त्री.–राजनीति, नीति, पालिटिक्स; छल, फ़रेब, मक्कारी; राष्ट्र का प्रबंध, मुल्क का इंतिज़ाम; डाँट-डपट, तंबीह; दंड, सज़ा।

सियासतगर (سیاست گر) अ. फा. वि.–सज़ा देनेवाला।

सियासतगाह (سیاست گاہ) फा. स्त्री.–सज़ा देने का स्थान; ऐसी जगह जहाँ कूटनीति और मक्कारी चलती हो।

सियासतदाँ (سیاست داں) अ. फा. वि.–राजनीति जाननेवाला, नीतिज्ञ।

सियासतदानी (سیاست دانی) अ. फा. स्त्री.–राजनीति जानना।

सियासते मुदन (سیاست مدن) अ. स्त्री.–नगर का प्रबंध।

सियासी (سیاسی) अ. फा. वि.–राजनीति का; राजनीति से सम्बद्ध, राजनीति जाननेवाला।

सियासीयात (سیاسیات) अ. स्त्री.–सियासत की बातें; सियासतें।

सियाहः (سیاہہ) फा. पुं.–माल के दफ़्तर की कच्ची बही, जिसमें नाज या नक़्दी लिखी जाती है।

सियाहःनवीस (سیاہہ نویس) फा. पुं.–सियाहे का रजिस्टर लिख़नेवाला।

सियाह (سیاہ) फा. वि.–कृष्ण, असित, काला।

सियाह (صیاح) अ.पुं.–ज़ोर की आवाज़, नाद; चीख़, पुकार, फ़र्याद; वावैला, रोना-पीटना।

सियाहक़लम (سیاہ قلم) फा. अ. स्त्री.–वह चित्र जो बिलकुल काला बनाया जाय; साँवले रंग का माशूक़।

सियाहक़ल्ब (سیاہ قلب) फा. अ. वि.–पापात्मा, पापी; कठोरहृदय, बेरहम।

सियाहकाम (سیاہ کام) फा. वि.–असफलमनोरथ, नाकामयाब, अभागा, बदक़िस्मत।

सियाहकार (سیاہ کار) फा. वि.–दुश्चरित, पापाचारी, पापी, गुनाहगार।

सियाहकारी (سیاہ کاری) फा. स्त्री.–पापकर्म, गुनाह।

सियाहकासः (سیاہ کاسہ) फा. वि.–कृपण, कंजूस, बख़ील।

सियाहख़ानः (سیاہ خانہ) फा. पुं.–मुसीबत का घर, आपत्तियों और कष्टोंवाला घर; क़ैदख़ाना, कारागार; जिसका घार-बार उजड़ गया हो, ख़ानःवीराँ; अभागा, बदक़िस्मत।

सियाह गिलीम (سیاہ گلیم) फा. वि.–अभागा, बदक़िस्मत; निर्धन, कंगाल।

सियाहगोश (سیاہ گوش) फा. पुं.–एक कुत्ते के बराबर जानवर जिससे शेर डरता है।

सियाहचर्दः (سیاہ چردہ) फा. वि.–काले चमड़े का, काले रंगवाला, हब्शी।

सियाहचश्म (سیاہ چشم) फा. वि.–जिसकी आँखें काली हों; काली आँखोंवाली सुन्दरी, जो बहुत अच्छी होती है; शिकारी चिड़िया।

सियाहचश्मी (سیاہ چشمی) फा. स्त्री.–आँख का काला होना।

सियाहचाल (سیاہ چال) फा. वि.–अंधा कुआँ जिसमें पहले ज़माने में मुज्रिम बंद किये जाते थे।

सियाहज़बाँ (سیاہزباں) फा. वि.—जिसका कोसना तुरन्त लग जाय, शापसिद्ध।

सियाहज़बानी (سیاہزبانی) फा. स्त्री.—कोसना तुरन्त लगना।

सियाहज़र्दः (سیاہجردہ) फा. वि.—दे. ‘सियाहचर्दः’।

सियाहत (سیاحت) अ. स्त्री.—देश-देश घूमना, पर्यटन; सफ़र, यात्रा।

सिहायताब (سیاہتاب) फा. वि.—वह रंग जो साफ़ किये हुए लोहे पर नींबू लगाकर आग में तपाने से हो जाता है।

सियाहताले’ (سیاہطالع) फा. अ. वि.—बुरे भागोंवाला, अभागा, बदक़िस्मत।

सियाहदरूँ (سیاہدروں) फा. वि.—जिसका दिल काला हो, पापी; निष्ठुर, बेरहम।

सियाहदस्त (سیاہدست) फा. वि.—कृपण, कंजूस, बख़ील।

सियाहदस्ती (سیاہدستی) फा. स्त्री.—कृपणता, कंजूसी, बख़ीली।

सियाहदानः (سیاہدانہ) फा. पुं.—कलौंजी, प्याज़ का बीज; इस्पंद, जो जलाया जाता है।

सियाहदिल (سیاہدل) फा. वि.—पापी, गुनाहगार; निष्ठुर, बेरहम।

सियाहदिली (سیاہدلی) फा. स्त्री.—पापकर्म, गुनाहगारी; हृदय की कठोरता, संगदिली।

सियाहनामः (سیاہنامہ) फा. वि.—बदआ’माल, पापी।

सियाहपिस्ताँ (سیاہپستاں) फा. स्त्री.—वह स्त्री जिसकी संतान न जीती हो।

सियाहपीर (سیاہپیر) फा. पुं.—वह दास जो बूढ़ा हो गया हो, पुराना ख़िदमती, स्वामिभक्त।

सियाहपोश (سیاہپوش) फा. वि.—काले कपड़े, पहनिनेवाला, सितांबर; मृतलोकग्रस्त, मातमदार।

सियाहपोशी (سیاہپوشی) फा. स्त्री.—काले कपड़े पहनना; किसी का शोक मनाना।

सियाहफ़ाम (سیاہفام) फा. वि.—काले रंग का, कृष्णांग।

सियाहफ़ामी (سیاہفامی) फा. स्त्री.—काला रंग होना, हब्शी होना।

सियाहबख़्त (سیاہبخت) फा. वि.—काले भागोंवाला, बुरे भाग्यवाला, हतभाग्य।

सियाहबख़्ती (سیاہبختی) फा. स्त्री.—भाग्य का बुरा होना, अभागापन।

सियाहबहार (سیاہبہار) फा. वि.—वह हरियाली जो शीतप्रधान देशों में बर्फ़ के नीचे दबकर गर्मियों में निकलती है और बहुत हरी होती है।

सियाहबातिन (سیاہباطن) फा. अ. वि.—काले अंतःकरणवाला, पापात्मा; दुराचारी, ख़बीस।

सियाहबातिनी (سیاہباطنی) फा. अ. स्त्री.—अंतःकरण का काला होना।

सियाहमस्त (سیاہمست) फा. वि.—बहुत अधिक मस्त।

सियाहमस्ती (سیاہمستی) फा. स्त्री.—बहुत अधिक मस्ती।

सियाह मू (سیاہ مو) फा. वि.—जिसके बाल काले हों; जो अभी जवान हो।

सियाहरंग (سیاہرنگ) फा. वि.—काले रंगवाला, कृष्णवर्ण।

सियाहरू (سیاہرو) फा. वि.—पापी, दुराचारी, मसिमुख, बदकार; जिसका मुँह काला हो, कृष्णमुख।

सियाहरूई (سیاہروئی) फा. स्त्री.—पाप, दुराचार, बदकारी; मुँह का रंग काला होना, हब्शीपन।

सियाहरोज़ (سیاہروز) फा. वि.—जिसके दिन ख़राब हों, जो गर्दिश का शिकार हो, कालचक्रग्रस्त।

सियाहरोज़गार (سیاہروزگار) फा. वि.—कालचक्रग्रस्त, मुसीबत में गिरिफ़्तार, बदक़िस्मत, भाग्यहीन।

सियाहरोज़ी (سیاہروزی) फा. स्त्री.—बदक़िस्मती, दिनों का फेर, गर्दिश, कालचक्र।

सियाहसंग (سیاہسنگ) फा. वि.—जुरजान का एक गाँव।

सियाहसर (سیاہسر) फा. वि.—मगरमच्छ, घड़ियाल।

सियाहसाल (سیاہسال) फा. वि.—दुर्भिक्ष का समय, दुर्भिक्ष का वर्ष, क़हतसाली का साल।

सियाहसोख़्तः (سیاہسوختہ) फा. वि.—बहुत अधिक जला हुआ, बिलकुल जला हुआ।

सियाही (سیاہی) फा. स्त्री.—कालिमा, असितता, कालौंच; अंधकार, तिमिर, अँधेरा; काजल, कज्जल; कलंक, दोष, बदनामी का टीका; मसि, रौशनाई।

सियाहोसफ़ेद (سیاہوسفید) फा. पुं.—काला और सफ़ेद, सितासित; संपूर्ण, सब, पूरा, जैसे—सियाहोसफ़ेद का मालिक।

सिर [र्ं] (سر) अ. पुं.—मर्म, भेद, राज़, रहस्य।

सिराज (سراج) अ. पुं.—दीप, दीपक, दिया, चिराग़।

सिरात (صراط) अ. स्त्री.—मार्ग, पथ, रास्ता।

सिराते मुस्तक़ीम (صراط مستقیم) अ. स्त्री.—सरल मार्ग, सीधा रास्ता; धर्मपथ, सन्मार्ग, सच्चाई का रास्ता।

सिरिश्क (سرشک) फा. पुं.—नेत्रजल, अश्रु, आँसू; अश्रुबिंदु, आँसू की बूँद; बिन्दु, बूँद, क़त्रः।

सिरिश्तः (سرشتہ) फा. पुं.—गूँधा हुआ।

सिरिश्त (سرشت) फा. स्त्री.—स्वभाव, प्रकृति, ख़स्लत;

गुण, ख़वास, धर्म; ख़मीर, जिससे कोई वस्तु बनायी जाय; (प्रत्य.) स्वभाववाला, जैसे—इफ़्फ़तसिरिश्त, स्वभाव से पतिव्रता।

सिरेश (سریش) फा. स्त्री.–एक चिपकनेवाला पदार्थ, जो ऊँट, गाय-भैंस आदि के कच्चे चमड़े से बनता और लकड़ी आदि जोड़ने के काम आता है, सरेस।

सिरेशम (سریشم) फा. पुं.–दे. 'सिरेशम माही'; दे. 'सिरेश'।

सिरेशम माही (سریشم ماہی) फा.पुं.–एक विशेष मछली का बना हुआ सिरेश जो दवा के काम आता है और राज़रोग अर्थात् तपेदिक़ की बहुत अच्छी दवा है।

सिर्कः (سرکہ) फा. पुं.–फल, गन्ने या ताड़ी आदि का रस जो धूप में रखकर खट्टा किया जाता है।

सिर्कःजबीं (سرکہ جبیں) फा. वि.–दुःशील, बदख़ू; चिड़चिड़ा, तुरुशरू।

सिर्कःपेशानी (سرکہ پیشانی) फा. वि.–दे. 'सिर्क़ःजबीं'।

सिर्कःफ़रोश (سرکہ فروش) फा. वि.–सिर्का बेचनेवाला; रूखी और बेमुरव्वती बातें करनेवाला।

सिर्फ़ (صرف) अ. वि.–निष्केवल, परिशुद्ध, ख़ालिस; केवल, फ़क़त; एकाकी, अकेला; निरा, सब।

सिर्बाल (سربال) अ. पुं.–वस्त्र, लिबास, वसन, पहनने की चीज़।

सिर्रे पिनहाँ (سر پنہاں) अ. फा. पुं.–गुप्त भेद, गूढ़ मर्म, ऐसा राज़ जो कहा न जा सके।

सिर्हान (سرحان) अ. पुं.–वृक, भेड़िया।

सिलः (صلہ) अ. पुं.–प्रतिकार, बदला; प्रत्यपकार, बुराई का बदला; प्रत्युपकार, भलाई का बदला; पुरस्कार, इन्आम; उपहार, तोहफ़ा; किसी परिश्रम का फल या बदला, धन के रूप में हो या किसी दूसरे रूप में।

सिल (سل) अ. स्त्री.–फेफड़ों का ज़ख्म, रक्तकास, यह तपेदिक़ नहीं होती, परंतु इसकी चिकित्सा न होने पर वन जाती है।

सिलए रहिम (صلۂ رحم) अ.पुं.–अपने परिवारवालों से प्रेम रखना और यथाशक्ति उनकी सहायता करना।

सिलह (سلح) अ. पुं.–शस्त्र, आयुध, हथियार।

सिलहख़ानः (سلح خانہ) अ. फा. पुं.–जहाँ हथियार रहते हों, शस्त्रागार।

सिलहदस्त (سلح دست) अ. फा. वि.–हाथ में हथियार लिये हुए, खड्गपाणि, सशस्त्र।

सिलहदार (سلح دار) अ. फा. वि.–हथियारबंद, शस्त्रधारी; योद्धा, सिपाही, शस्त्रजीवी।

सिलहदारी (سلح داری) अ. फा. स्त्री.–हथियारबंद होना; सिपाहीपन; सिपाही का पेशा।

सिलहपोश (سلح پوش) अ. फा. वि.–हथियारबंद, शस्त्रधारी।

सिलहशोर (سلح شور) अ. फा. वि.–दे. 'सिलहदार'।

सिलात (صلات) अ. पुं.–सिलः का बहु., सिले, बदले, पुरस्कार, बख़्शिशें।

सिलायः (صلایہ) अ. पुं.–रगड़ने या घिसने का बट्टा; जिस पर कोई चीज़ घिसी या पीसी जाय, सिल।

सिलाह (سلاح) अ. पुं.–शस्त्र, अस्त्र, आयुध, हथियार।

सिलाह (صلاح) अ. पुं.–संधि, मुसालहत; मित्रता, दोस्ती; शान्ति, सुकून।

सिलाहदस्त (سلاح دست) अ. फा. वि.–हथियारबंद, हाथ में हथियार लिये हुए, खड्गपाणि।

सिलाहदस्ती (سلاح دستی) अ. फा. स्त्री.–हथियारबंदी, हाथ में हथियार होना।

सिलाहशोर (سلاح شور) अ. फा. वि.–हथियारबंद, सशस्त्र; शस्त्रधारी, सैनिक।

सिलाहशोरी (سلاح شوری) अ. फा. स्त्री.–हथियारबंदी; सशस्त्रता, सिपाहीपन, सैनिकता।

सिलाही (سلاحی) अ. वि.–सैनिक, सिपाही, फ़ौजी।

सिल्क (سلک) अ. उभ.–तंतु, डोरा, तागा; वह डोरा जिसमें मोती पिरोये हों; तार, धातु का तार।

सिल्की (سلکی) अ. वि.–डोरे का, डोरे से सम्बन्धित; तार का, तार से सम्बन्धित।

सिल्के कहरुबाई (سلک کہربائی) अ. उभ.–बिजली का तार, बिजली के तार की लाइन।

सिल्के मर्वारीद (سلک مروارید) अ. स्त्री.–मोतियों की लड़ी।

सिल्तः (سلطہ) अ. पुं.–तेज़, तीव्र; लंबा, दीर्घ।

सिल्म (سلم) अ. स्त्री.–लड़कों के लिखने की तख़्ती, पट्टिका, दे. 'सल्म', दोनों शुद्ध हैं।

सिल्सिलः (سلسلہ) अ. पुं.–शृंखला, ज़ंजीर; पंक्ति, क़तार, जैसे—पहाड़ों का सिलसिला; कुल, वंश, गोत्र; वंश वृक्ष, शज्रः; किसी बड़े महात्मा के शिष्यों का अनुक्रम; क्रम, तर्तीब।

सिल्सिलःज़ुंबाँ (سلسلہ جنباں) अ. फा. वि.–किसी बातको उठानेवाला, कोई प्रसंग छेड़नेवाला, कोई तहरीक करनेवाला।

सिल्सिलःज़ुंबानी (سلسلہ جنبانی) अ. फ़ा. स्त्री.–किसी बात को उठाना, क़िसी बात की तहरीक करना।

सिल्सिलःबंदी (سلسلہ بندی) अ. फा. स्त्री.–क्रमबद्धता, बातर्तीबी; पंक्तिबद्धता, क़तारबंदी।

सिल्सिलःवार (سلسلہ وار) अ. फा. वि.–क्रम से, क्रमशः, तर्तीब से; एक-एक करके; एक के बाद एक।

सिल्सिलए कलाम (سلسلۂ کلام) अ. पुं.–बातों का सिलसिला।

सिल्सिलए कोह (سلسلۂ کوہ) अ. फा. पुं.–पहाड़ों का सिलसिला, पर्वतमाला।

सिल्सिलए ख़यालात (سلسلۂ خیالات) अ. पुं.–विचार-क्रम, ख़यालों का तार।

सिल्सिलए नसब (سلسلۂ نسب) अ. पुं–वंशानुक्रम, वंशावली; नसबनामः।

सिल्सिलए हादिसात (سلسلۂ حادثات) अ. पुं.–एक के बाद दूसरी घटना का सिलसिला, घटनाचक्र, घटनाक्रम।

सिवा (سوا) फा. अव्य.–अतिरिक्त, अलावा; बिना, वग़ैर; अन्य, दूसरा; फ़ालतू, फ़ाज़िल।

सिवुम (سوم) फा. वि.–तृतीय, तीसरा; मुसलमान मरनेवाले के तीजे का फ़ातहः।

सिह (سہ) फा. वि.–तीन, त्रय।

सिहगूनः (سہ گونہ) फा. वि.–तीनगुना, त्रिगुण, तिगुना।

सिहगोशः (سہ گوشہ) फा. वि.–तीन कोनोंवाला, त्रिकोण।

सिहचंद (سہ چند) फा. वि.–तीनगुना, त्रिगुण।

सिहज़मानी (سہ زمانی) फा. अ. वि.–तीनों कालों से सम्बन्ध रखनेवाला, त्रैकालिक।

सिहनिकाती (سہ نکاتی) फा. अ. वि.–तीन उसूलोंवाला फ़ार्मूला, त्रिसूत्री।

सिहपहलू (سہ پہلو) फा. वि.–तीन कोनोंवाला, त्रिकोण, त्रिपार्श्व।

सिहमंज़िलः (سہ منزلہ) फा. अ. वि.–तीन खंडोंवाला घर, जिसमें तले-ऊपर तीन दर्जे हों।

सिहमाहः (سہ ماہہ) फा. वि.–तीन महीने में होनेवाला, त्रैमासिक; तीन महीने की आयु का।

सिहरंगी (سہ رنگی) फा. वि.–तीन रंगोंवाला, त्रैवर्णिक।

सिहशंबः (سہ شنبہ) फा. पुं.–मंगलवार, मंगल का दिन।

सिहसालः (سہ سالہ) फा. वि.–तीन वर्षों में होने या पड़नेवाला, त्रैवार्षिक; तीन वर्ष की आयु का।

सिहाम (سہام) अ. पुं.–'सहम' का बहु., बहुत से बाण; हिस्से, अंश, भाग।

सिहाह (صحاح) अ. पुं.–'सहीह' का बहु., स्वस्थ और नीरोग लोग, (स्त्री.) हदीस का एक सुप्रसिद्ध ग्रंथ।

सिह्र (سحر) अ. पुं.–मंत्र-तंत्र द्वारा हिंसाकर्म, अभिचार; शावदःबाज़ी, मायाकर्म, इंद्रजाल; टोना, टोटका; तिलिस्म, माया और छल से रचित स्थान; चमत्कार, अचंभे में डालनेवाली बात।

सिह्रअंगेज़ (سحرانگیز) अ. फा. वि.–जादू का असर रखनेवाला, आश्चर्यजनक।

सिह्रअंगेज़ी (سحر انگیزی) अ. फा. स्त्री.–जादू के असर का होना।

सिह्रआफ़्रीं (سحرآفریں) अ. फा. वि.–जादू पैदा करनेवाला, चमत्कार दिखानेवाला।

सिह्रआफ़्रीनी (سحرآفرینی) अ. फा. स्त्री.–जादू पैदा करना, अचंभे में डालना।

सिह्रआमेज़ (سحرآمیز) अ. फा. वि.–जिसमें जादू मिला हो अर्थात् आश्चर्यजनक।

सिह्रआमेज़ी (سحرآمیزی) अ. फा. स्त्री.–जादू मिला होना।

सिह्रकलाम (سحرکلام) अ. वि.–जिसकी बातों में जादू हो।

सिह्रकलामी (سحرکلامی) अ. स्त्री.–बातों में जादू का असर होना।

सिह्रकार (سحرکار) अ. फा. वि.–जादूगर, मायावी, इंद्रजाली, मायाकार।

सिह्रतराज़ (سحرطراز) अ. फा. वि.–जादूगर, इंद्रजाली।

सिह्रतराज़ी (سحرطرازی) अ. फा. स्त्री.–जादूगरी, मायाकर्म।

सिह्रफ़न (سحرفن) अ. वि.–जादूगर, इंद्रजालिक, तांत्रिक, मायाकार।

सिह्रबयान (سحربیان) अ. वि.–दे. 'सिह्रकलाम'।

सिह्रबयानी (سحربیانی) अ. स्त्री.–दे. 'सिह्रकलामी'।

सिह्रबाज़ (سحرباز) अ. फा. वि.–दे. 'सिह्रकार'।

सिह्रबाज़ी (سحربازی) अ. फा. स्त्री.–सिह्रकारी, जादूगरी, मायाकर्म।

सिह्रबार (سحربار) अ. फा. वि.–जादू फैलानेवाला, चत्मकार करना।

सिह्रबारी (سحرباری) अ. फा. वि.–स्त्री, जादू फैलाना, चमत्कार करना।

सिह्रसंज (سحرسنج) अ. फा. वि–जादूगर, इंद्रजाली, मायाकार।

सिह्रसंजी (سحرسنجی) अ. फा. स्त्री.–जादूगरी, मायाकर्म, इंद्रजाल।

सिह्रसाज़ (سحرساز) अ. फा. वि.–दे. 'सिह्रकार'।

सिह्रसाज़ी (سحرسازی) अ. फा. स्त्री.–सिह्रकारी, माया कर्म।

सिह्रे सामिरी (سحر سامری) अ. पुं.–सामिरी का जादू जिसने धातु के बछड़े में प्राण डाल दिये थे, बहुत बड़ा जादू।

सिह्रे हलाल (سحر حلال) अ. पुं.–वह जादू जिसका करना धर्म में विहित है, कविता का जादू।

सिह्हत (صحت) अ. स्त्री.–स्वास्थ्य, तनदुरुस्ती; शुद्धि, दुरुस्ती।

सिह्हतअफ़्ज़ा (صحت افزا) अ. फा. वि.–स्वास्थ्यवर्द्धक, तनदुरुस्ती बढ़ानेवाला।

सिह्हतख़ानः (صحت خانہ) अ. फा. पुं.–शौचालय, संडास, पाख़ानः।

सिह्हतनामः (صحت نامہ) अ. फा. पुं.–शुद्धिपत्र, किसी पुस्तक के साथ लगाया जानेवाला त्रुटियों की शुद्धि का पत्र।

सिह्हतबख़्श (صحت بخش) अ. फा. वि.–स्वास्थ्यदायक, तनदुरुस्ती देनेवाला, रोगमुक्त करनेवाला।

सिह्हतमंद (صحت مند) अ. फा. वि.–स्वस्थ, तनदुरुस्त; जिसमें कोई दोष न हो, बढ़िया, उत्तम।

सी

सी (سی) फा. वि.–तीस, तीस की संख्या, त्रिंशत्।

सीकनक (سیکنک) तु. वि.–आहिस्तः, धीरे, होले।

सीकी (سیکی) फा. स्त्री.–शराब जिसे इतना औटाया जाय कि वह तिहाई रह जाय।

सीख़ (سیخ) फा. स्त्री.–लोहे की सलाख़, शलाका।

सीख़चः (سیخچہ) फा. पुं.–छोटी सीख़, छोटी सलाख़।

सीख़पर (سیخ پر) फा. पुं.–चिड़िया का वह बच्चा जिसके पर अभी-अभी निकले हों; मुर्ग़ाबी से छोटा एक आबी परंद।

सीख़पा (سیخ پا) फा. वि.–पिछले पैरों पर खड़ा हुआ घोड़ा।

सीख़े जारोब (سیخ جاروب) फा. स्त्री.–झाड़ू की सींक।

सीग़ः (صیغہ) अ. पुं.–शीओं का ब्याह; विभाग, महकमः।

सीग़ए ग़ाइब (صیغۂ غائب) अ. पुं.–प्रथम पुरुष, जिसके विषय में बात की जाय (व्या.)।

सीग़ए मुतकल्लिम (ضیغۂ متکلم) अ. पुं.–उत्तम पुरुष, जो बात करनेवाला है (व्या.)।

सीग़ए राज़ (صیغۂ راز) अ. फा. पुं.–गुह्य, गोपनीय, छिपाई जानेवाली बात।

सीग़ए हाज़िर (صیغۂ حاضر) अ. पुं.–मध्यमपुरुष, जिससे संमुख होकर बात की जाय (व्या.)।

सीत (صیت) अ. स्त्री.–चर्चा, ज़िक्र; ख्याति, शोहरत।

सीनः (سینہ) फा. पुं.–वक्षःस्थल, अंतरंस, छाती; स्तन, पयोधर, चूची।

सीनःअफ़्गार (سینہ افگار) फा. वि.–जिसका हृदय फट गया हो, विदीर्णहृदय, भग्नहृदय।

सीनःकावी (سینہ کاوی) फा. स्त्री.–कड़ा परिश्रम, कड़ा प्रयास।

सीनःकोबी (سینہ کوبی) फा. स्त्री.–छाती पीटना, सीना कूटना; मातम करना, मातम, धम्माल।

सीनःचाक (سینہ چاک) फा. वि.–जिसकी छाती फट गई हो, अर्थात् जिसको कोई बहुत बड़ा शोक सहना पड़ा हो।

सीनःज़न (سینہ زن) फा. वि.–सीना कूटनेवाला अर्थात् मातम करनेवाला।

सीनःज़नी (سینہ زنی) फा. स्त्री.–छाती कूटना, अर्थात् मातम करना।

सीनःज़ोर (سینہ زور) फा. वि.–अत्याचारी, ज़ालिम; विद्रोही, बाग़ी; उद्दंड, सरकश।

सीनःज़ोरी (سینہ زوری) फा. स्त्री.–अत्याचार; विद्रोह; उद्दंडता।

सीनःदरसीनः (سینہ درسینہ) फा. वि.–दे. 'सीनः बसीनः'।

सीनःदरी (سینہ دری) फा. स्त्री.–सीना चाक करना, शोक में अस्त-व्यस्त होना।

सीनःपोश (سینہ پوش) फा. पुं.–छाती ढाँकनेवाला कपड़ा, सीनःबंद, उरस्थान, उरश्छद।

सीनःफ़िगार (سینہ فگار) फा. वि.–भग्नहृदय, जिसकी छाती फट गई हो, जिसको कोई बहुत ही बड़ा शोक सहना पड़ा हो।

सीनःबंद (سینہ بند) फा. पुं.–अँगिया, चोली; छाती गर्म रखनेवाला एक वस्त्र; बच्चों की राल टपकने का कपड़ा, जो सीने पर बाँधते हैं।

सीनःबसीनः (سنیہ بہ سینہ) फा. वि.–छाती से छाती मिलाये हुए; वह बात जो किसी वंश में एक दूसरे की बताई हुई चली आती हो।

सीनःबाज़ (سینہ باز) फा. वि.–खुले सीने का; चौड़े सीनेवाला।

सीनःरेश (سنیہ ریش) फा. वि.–जिसका हृदय घायल हो; प्रेमी, आशिक़; शोक-संतप्त, ग़मज़दः।

सीनःशिगाफ़ (سینہ شگاف) फा. वि.–दे. 'सीनःचाक'।

सीनःसाफ़ (سینہ صاف) फा. अ. वि.–निश्छल, बेकपट, साफ़ दिल का, स्वच्छहृदय।

सीनःसिपर (سینہ سپر) फा. वि.–डटकर मुक़ाबले पर आया हुआ, सीनः सामने करके लड़नेवाला।

सीनःसियाह (سینہ سیاہ) फा. वि.–जिसका दिल काला हो अर्थात् जो बड़ा पापी हो, पापात्मा; कठोरहृदय, संगदिल।

सीनःसोख़्तः (سینہ سوختہ) फा. वि.–दग्धहृदय, तप्त-हृदय, मुसीबत का मारा, आफ़तज़दः।

सीन (شین) अ. पुं.–अरबी का १२वाँ, फ़ारसी का १५वाँ, उर्दू का १८वाँ और हिंदी का ३०वाँ अक्षर।

सीन (صین) अ. पुं.–चीन, एक प्रसिद्ध देश।

सीपारः (سی پارہ) फा. पुं.–तीस टुकड़ों में बँटा हुआ; क़ुरान के तीस खंडों में से एक।

सीना (سینا) अ. पुं.–शाम (अरब) का एक पहाड़, कोहे तूर; बूअली का बाप, जिसके सम्बन्ध से वह 'बूअली सीना' कहलाता है।

सीम (سیم) फा. स्त्री.–रजत, चाँदी, नुक़:; धन, दौलत, परंतु दूसरे अर्थ में 'ज़र' के साथ 'सीमो ज़र' आता है।

सीमअंदाम (سیم اندام) फा. वि.–जिसका शरीर चाँदी-जैसा धवल और उज्ज्वल हो, रजतांगना, गौरवर्णा।

सीमकार (سیم کار) फा. वि.–अच्छी अदाओंवाला (वाली)।

सीमकारी (سیم کاری) फा. स्त्री.–हाव-भाव, नाज़ो अंदाज़।

सीमकुश (سیم کش) फा. वि.–फ़ुज़ूलख़र्च, अपव्ययी।

सीमकुशी (سیم کشی) फा. स्त्री.–फ़ुज़ूलखर्ची, अपव्यय।

सीमगिल (سیم گل) फा. स्त्री.–पोतने की मिट्टी, पंडोल; गोरा चट्टा, सफ़ेद चमड़े का।

सीमज़क़न (سیم ذقن) फा. वि.–जिसकी ठोड़ी पर बाल न हों और वह साफ़ हो, नौख़ेज़ लड़का, अम्रद।

सीमतन (سیم تن) फा. वि.–चाँदी-जैसे सफ़ेद शरीरवाला, गौरवर्ण, रजतांग (पुं.), गौरवर्णा, रजतांगना (स्त्री.)।

सीमबर (سیم بر) फा. वि.–चाँदी-जैसी गोरी और सख़्त वक्षःस्थलवाली नायिका।

सीमसाक़ (سیم ساق) फा. वि.–जिसकी पिंडलियाँ चाँदी-जैसी गोरी और सख़्त हो।

सीमसुरीं (سیم سریں) फा. वि.–सुन्दर नितम्बवाली नायिका, नितंबिनी।

सीमा (سیما) फा. स्त्री.–ललाट, भाल, माथा, पेशानी; ऐसा चिह्न जिससे किसी चीज़ की पहचान हो सके।

सीमाब (سیماب) फा. पुं.–पारद, पारा, एक धातु।

सीमाबगूँ (سیماب گوں) फा. वि.–पारे के रंगवाला, पारे जैसा सफ़ेद।

सीमाब दरगोश (سیماب درگوش) फा. वि.–बधिर, बहिरा, जो ऊँचा सुने।

सीमाबदिल (سیماب دل) फा. वि.–अधीर, आतुर, उतावला, बेसब्रा।

सीमाबवार (سیماب وار) फा. वि.–पारे की तरह व्याकुल या चंचल, अस्थिर।

सीमाबसिफ़त (سیماب صفت) फा. अ. वि.–पारे-जैसा चंचल; व्याकुल; जिसे एक जगह क़रार न हो।

सीमाबियत (سیمابیت) फा. स्त्री.–पारा-जैसा चंचल या व्याकुल होना, अस्थिरता।

सीमाबी (سیمابی) फा. वि.–पारे का; पारे का बना हुआ; पारे से संबंधित।

सीमाबे कुश्तः (سیماب کشتہ) फा. पुं.–मरा हुआ पारा, पारे का कुश्तः, पारद-भस्म।

सीमिया (سیمیا) अ. स्त्री.–वह विद्या जिससे मनुष्य अपना शरीर छोड़कर दूसरे के शरीर में दाखिल हो जाता है, पर-काय-प्रवेश-विद्या; ऐसी वस्तुओं को देखना जो वास्तविक में न हों।

सीमीं (سیمیں) फा. वि.–चाँदी का; चांदी का बना हुआ; चाँदी-जैसा।

सीमींअंदाँम (سیمیں اندام) फा. वि.–रजतांग, चाँदी-जैसे उज्ज्वल शरीरवाला (पुं.); रजतांगना (स्त्री.)।

सीमींआरिज़ (سیمیں عارض) फा. अ. वि.–दे. 'सीमींइज़ार'।

सीमींइज़ार (سیمیں عذار) फा. अ. वि.–चाँदी-जैसे सफ़ेद और दीप्त गालोंवाला, रजतकपोल (पुं.), रजतकपोला (स्त्री.)।

सीमींज़क़न (سیمیں ذقن) फा. अ. वि.–जिसकी ठोड़ी पर बाल न आये हों, सुन्दर लड़का।

सीमींतन (سیمیں تن) फा. वि.–चाँदी-जैसे धवल और उज्ज्वल अंगोंवाला (वाली)।

सीमींबदन (سیمیں بدن) फा. वि.–दे. 'सीमींतन'।

सीमींरुख़ (سیمیں رخ) फा. वि.–दे. 'सीमींइज़ार'।

सीमींसाक़ (سیمیں ساق) फा. वि.–उज्ज्वल और कठोर पिंडलियोंवाली नायिका।

सीमुर्ग़ (سیمرغ) फा. पुं.–एक बहुत बड़ा पक्षी, जो क़ाफ़ पहाड़ में रहनेवाला माना गया है।

सीमे ख़ाम (سیم خام) फा. स्त्री.–ख़ालिस और बेमेल चाँदी।

सीमे ख़ालिस (سیم خالص) फा. अ. स्त्री.–खरी और निर्मल चाँदी।

सीमे नाब (سیم ناب) फा. स्त्री.–दे. 'सीमे ख़ालिस'।

सीमे सोख़्तः (سیم سوختہ) फा. स्त्री.–खालिस चाँदी, खरी चाँदी; लाजवर्द, एक रत्न, राजावर्त।

सीमे हलाल (سیم حلال) फा. अ. स्त्री.–ख़ालिस चाँदी।

सीमो ज़र (سیم و زر) फा. पुं.–सोना और चाँदी आर्थात् धन-दौलत, माल, दौलत।

सीर (سیر) फा. पुं.–लहसुन, लशुन।

सीरत (سیرت) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत; जीवन-चरित, सवानेहउम्री; अख़्लाक़, सौजन्य।

सीरतन (سیرتۃً) अ. वि.–स्वाभावतः, आदत में, स्वभाव से।

सीरते ख़ूब (سیرتِ خوب) अ. फा. स्त्री.–अच्छा स्वभाव, अच्छी आदतें।

सीरते पाक (سیرتِ پاک) अ. फा. स्त्री.–पवित्र स्वभाव; .पवित्र जीवनचरित्र।

सीली (سیلی) फा. स्त्री.–चारों उँगलियों को खड़ा करके किसी की गर्दन पर मारना, पहले यह एक सज़ा भी थी।

सीस्तान (سیستان) फा. पुं.–दक्षिणी ईरान का एक प्रसिद्ध प्रदेश।

सु

सुंदरूस (سندروس) फा. पुं.–राजन, एक प्रसिद्ध गोंद, दे. संदरूप।

सुंदुस (سندس) अ. पुं.–एक बहुत ही महीन और बहुमूल्य रेशमी कपड़ा।

सुंदूक (صندوق) अ. पुं.–शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु उर्दू में 'संदूक़' कहते हैं, दे. 'संदूक़'।

सुंबः (سنبہ) फा. पुं.–लोहे में छेद करने का लोहे का छोटा-सा औज़ार; लकड़ी में सूराख करने का औज़ार, बरमा।

सुंबुक (سنبک) फा. स्त्री.–छोटी नाव जो बड़ी नाव के साथ रहती है।

सुंबुलः (سنبلہ) अ. पुं.–गेहूँ की बाल; कन्याराशि, बुर्जे संबुलः।

सुंबुल (سنبل) अ. स्त्री.–गेहूँ या जौ की बाल, एक सुगंधित वनौषधि, बालछड़; अलक, ज़ुल्फ़।

सुंबुलुत्तीब (سنبل الطیب) अ. स्त्री.–बालछड़, जटामाँसी।

सुआद (سعاد) अ. स्त्री.–अरब की एक सुन्दरी।

सुआल (سعال) अ. स्त्री.–खाँसी, कास।

सुआल (سوال) अ. पुं.–प्रश्न, सवाल, इसका शुद्ध उच्चारण यही है, परन्तु उर्दू में 'सवाल' ही है।

सुऊद (صعود) अ. पुं.–ऊपर जाना, ऊपर उठना; ऊपर आना।

सुऊद (سعود) अ. पुं.–'सा'द' का बहु., शुभ ग्रह, जैसे—वृहस्पति, शुक्र और चंद्र।

सुऊबत (صعوبت) अ. स्त्री.–कठिनता, कष्ट, दुशवारी; व्यथा, पीड़ा, तकलीफ़।

सुक [क्क] (سک) अ. पुं.–एक सुगंधित पदार्थ जो कई सुगंधित पदार्थों से मिलकर बनता है।

सुकारा (سکاریٰ) अ. पुं.–'सकरान' का बहु., मतवाले, नशे में चूर लोग, मस्त लोग।

सुक़ुब (ثقب) अ. पुं.–'सुक़्बः' का बहु., सूराख़ (बहुत से), छिद्र-समूह।

सुकुर्रः (سکرہ) अ. पुं.–मिट्टी का छोटा प्याला, कुल्हड़।

सुक़ूत (سقوط) अ. पुं.–गिरना, पात, पतन।

सुकूत (سکوت) अ. पुं.–मौन, चुप्पी, ख़ामोशी; सन्नाटा—"मेरे सुकूते यास पे इतना न हो मलूल। मुझको ख़ुदा न ख़्वास्ता तुझसे गिला नहीं।" (फ़िराक़)

सुकूते कामिल (سکوت کامل) अ. पुं.–पूरा सन्नाटा, बिलकुल ख़ामोशी।

सुकूते महज़ (سکوت محض) अ. पुं.–पूरा सन्नाटा।

सुकून (سکون) अ. पुं.–सन्नाटा, ख़ामोशी; शान्ति, अम्न; बीमारी में कमी; ठहराव, क़रार, विराम; आराम, इत्मीनान; संतोष, इत्मीनान; धैर्य, सब्र; जी ठंडा होना; अक्षर का हल् होना।

सुकूनत (سکونت) अ. स्त्री.–निवास, क़ियाम, बसाव।

सुकूनतपिज़ीर (سکونت پذیر) अ. फा. वि.–निवासी, बाशिंदः।

सुकूनती (سکونتی) अ. वि.–रहने का, रहने योग्य, जैसे—सुकूनती मकान।

सुकूने अबदी (سکون ابدی) अ. पुं.–मौत, मरण, हमेशा के लिए सुकून और शान्ति।

सुकूने आरिज़ी (سکون عارضی) अ. पुं.–थोड़े दिनों का इत्मीनान, अस्थायी संतोष।

सुकूने कामिल (سکون کامل) अ. पुं.–पूरी ख़ामोशी; पूरा संतोष; मौत की ख़ामोशी।

सुकूने दाइमी (سکون دائمی) अ. पुं.–दे. 'सुकूने अबदी'।

सुकूने मुत्लक़ (سکون مطلق) अ. पुं.–दे. 'सुकूने कामिल'।

सुकैनः (سکینہ) अ. स्त्री.–हज़्रत सकीनः का शुभ नाम, जो हज़्रत इमामहुसैन की सुपुत्री थीं।

सुक्कर (سکر) अ. स्त्री.–चीनी, शकर, शर्करा।

सुक्कान (سکان) अ. पुं.–साकिन का बहु., रहनेवाले, निवासी।

सुक्काने समावात (سکان سماوات) अ. पुं.–आस्मान के रहनेवाले, फ़िरिश्ते।

सुक़्तः (سقطہ) अ. पुं.–किसी चीज़ का गिरा हुआ टुकड़ा; बादल का टुकड़ा।

सुक्ना (سکنیٰ) अ. स्त्री.–निवास, बसना; निवासी, बसनेवाला।

सुक़्बः (ثقبہ) अ. पुं.–छिद्र, विवर, छेद, सूराख़।

सुक़ब (ثقب) अ. पुं.–'सुक़्वः' का बहु., छिद्र-समूह, छेद, दे. 'सुक़ुब', दोनों शुद्ध हैं।

सुक़्बए इन्बीयः (ثقبۂ عنبیہ) अ. पुं.–आँख का एक पर्दा, एक चक्षुपटल।

सुक़्म (سقم) अ. पुं.–रोग, बीमारी।

सुक़्मूनिया (سقمونیا) अ. स्त्री.–एक विरेचक गोंद जो बहुत अच्छी दवा है।

सुक्र (سکر) अ. पुं.–मद, अभिमान, मादकता, नशा।

सुख़न (سخن) फा. पुं.–वार्ता, बात, कथन; शब्द, ध्वनि; वार्तालाप, बातचीत; संविदा, वादा, क़ौल; कविता, काव्य, शेर, शाइरी; प्रवचन, मक़ूलः, दे. 'सख़ुन', दोनों शुद्ध हैं।

सुख़नआफ़्रीं (سخن آفریں) फा. वि.–कवि, शाइर।

सुख़नआफ़्रीनी (سخن آفرینی) फा. स्त्री.–कविता, काव्य-रचना, शाइरी।

सुख़नआरा (سخن آرا) फा. वि.–कवि, शाइर।

सुख़नआराई (سخن آرائی) फा. स्त्री.–काव्य-रचना, शाइरी।

सुख़नगुस्तर (سخن گستر) फा. वि.–कवि, शाइर; काव्य-मर्मज्ञ, शे'रशनास।

सुख़नगुस्तरी (سخن گستری) फा. स्त्री.–कविता कहना; कविता का गुण-दोष समझना।

सुख़नगो (سخن گو) फा. वि.–कवि, शाइर।

सुख़नगोई (سخن گوئی) फा. स्त्री.–कविता, शाइरी।

सुख़नगोया (سخن گویا) फा. वि.–सुख़नगो, शाइर, कवि।

सुख़नचीं (سخن چیں) फा. वि.–छिद्रान्वेषी, ऐबचीं; पिशुन, चुग़ुलख़ोर; निन्दक, लुतरा।

सुख़नचीनी (سخن چینی) फा. स्त्री.–ऐब ढूँढ़ना; पिशुनता; लुतरापन।

सुख़नतकियः (سخن تکیہ) फा.अ. पुं.–वह शब्द या वाक्य जो किसी की ज़बान पर चढ़ जाय और बातों में उसका प्रयोग बार-बार करे, चाहे उसकी आवश्यकता हो या न हो।

सुख़न तराज़ (سخن طراز) फा. वि.–कवि, शाइर।

सुख़नतराज़ी (سخن طرازی) फा. स्त्री.–कविता, शाइरी।

सुख़नदाँ (سخن داں) फा. वि.–शाइर, कवि; सुख़नफ़ह्म, काव्य-मर्मज्ञ।

सुख़नदानी (سخن دانی) फा. स्त्री.–शाइरी, काव्य-रचना; कविता की परख।

सुख़ननवाज़ (سخن نواز) फा. वि.–कवियों और शाइरों की क़द्र करनेवाला, काव्यप्रेमी।

सुख़ननवाज़ी (سخن نوازی) फा. स्त्री.–कविता की क़द्र, कवियों का आदर।

सुख़नपरदाज़ (سخن پرداز) फा. वि.–कवि, शाइर।

सुख़नपरदाज़ी (سخن پردازی) फा. स्त्री.–कविता, शाइरी।

सुख़नपर्वर (سخن پرور) फा. वि.–कवि, शाइर; अपनी बात की पच करनेवाला; ग़लत या सही जो कह दिया उस पर अड़ा रहनेवाला, हठधर्म, हठी।

सुख़नपर्वरी (سخن پروری) फा. स्त्री.–कविता; बात की पच; हठधर्मी।

सुख़नफ़रामोश (سخن فراموش) फा. वि.–बात कहकर भूल जानेवाला; वादा याद न रखनेवाला।

सुख़नफ़रामोशी (سخن فراموشی) फा. स्त्री.–बात भूल जाना; वादा याद न रखना।

सुख़नफ़ह्म (سخن فہم) फा. अ. वि.–कविता का गुणदोप समझनेवाला, सहृदय, काव्य-मर्मज्ञ; बात की तह को पहुँच जानेवाला।

सुख़नफ़ह्मी (سخن فہمی) फा. अ. स्त्री.–कविता का गुण-दोष समझना, काव्य-मर्मज्ञता; जल्द बात की तह को पहुँचना।

सुख़नबाफ़ (سخن باف) फा. वि.–बातूनी, वाचाल, मुखर।

सुख़नबाफ़ी (سخن بافی) फा. स्त्री.–वाचालता, मुखरता, बातूनीपन।

सुख़नरस (سخن رس) फा. वि.–दे. 'सुख़नफ़ह्म'।

सुख़नरसी (سخن رسی) फा. स्त्री.–दे. 'सुख़नफ़ह्मी'।

सुख़नवर (سخن ور) फा. वि.–कवि, शाइर।

सुख़नवरी (سخن وری) फा. स्त्री.–कविता, शाइरी।

सुख़नशनास (سخن شناس) फा. वि.–दे. 'सुख़नफ़ह्म'।

सुख़नशनासी (سخن شناسی) फा. स्त्री.–दे. 'सुख़नफ़ह्मी'।

सुख़नशनौ (سخن شنو) फा. वि.–बात सुननेवाला, बात समझनेवाला, बात की क़द्र करनेवाला।

सुख़नसंज (سخن سنج) फा. वि.–दे. 'सुख़नफ़ह्म'; दे. 'सुख़नवर'।

सुख़नसंजी (سخن سنجی) फा. स्त्री.–काव्य-मर्मज्ञ; कवि।

सुख़नसरा (سخن سرا) फा. वि.–कवि, शाइर; तरन्नुम से शे'र पढ़नेवाला।

सुख़नसराई (سخن سرائی) फा. स्त्री.–कविता, शाइरी; तरन्नुम से शे'र पढ़ना।

सुख़नसाज़ (سخن ساز) फा. वि.–कवि, शाइर; बातों का चालाक; छली, मक्कार।

सुख़नसाज़ी (سخن سازی) फा. स्त्री.–कविता, शाइरी; बातों की चालाकी, ज़मानःसाज़ी; छल, फ़रेब।

सुख़ने गर्म (سخن گرم) फा. पुं.–तेज़ बात––ग़ुस्से की बात; ग़ुस्सा दिलानेवाली बात।

सुख़ने तल्ख़ (سخن تلخ) फा. पुं.–कड़वी बात; सच्ची और खरी बात; बदज़बानी, मुख-चपलता।

सुख़ुन (سخن) फा. पुं.–दे. 'सुख़न', शुद्ध यह भी है, परंतु 'सुख़न' बहुत अधिक शुद्ध है।

सुख़ूनत (سخونت) अ. स्त्री.–गर्म होना, उष्ण होना; उष्णता, उष्णिमा, गर्मी।

सुख़्तः (سخته) फा. वि.–तोला हुआ, तुलित।

सुख़्त (سخط) अ. पुं.–कोप, क्रोध, ग़ुस्सः, दे. 'सख़्त', दोनों शुद्ध हैं।

सुख़्तनी (سختنی) फा. वि.–तोलने के योग्य, जिसे तोला जा सके।

सुख़्रः (سخره) फा. स्त्री.–बेगार, बिना मज़दूरी का काम, विष्टि।

सुख़रः (سخره) अ. पुं.–मनोविनोद, मनोरंजन, ख़ुशतबई जिस पर लोग हँसें, हास्यास्पद, उपहसित; मस्ख़रः, विदूषक।

सुख़्रत (سخرت) अ. स्त्री.–परिहास; उपहास, हँसी उड़ाना; मनोरंजन, तफ़रीह।

सुख़्री (سخری) अ. वि.–पश्चात्ताप, अफ़सोस।

सुख़्रीयः (سخریه) अ. पुं.–मनोविनोद, तफ़रीह; ठठोल, फक्कड़पन; मस्खरःपन, विदूषकता।

सुगाचः (سگاچه) फा. पुं.–काबूस रोग, जिसमें स्वप्न में ऐसा जान पड़ता है कि कोई काला देव गला दबा रहा है।

सुग़्द (سغد) फा. स्त्री.–नीची ज़मीन जहाँ बरसात का पानी इकट्ठा होता है; समरक़ंद के पास एक नगर।

सुग़्दी (سغدی) फा. स्त्री.–ईरान की सात भाषाओं में से एक।

सुग़्रा (صغری) अ. स्त्री.–छोटी स्त्री; हर छोटी चीज़ जो स्त्रीलिंग हो।

सुग़्राक़ (سغراق) तु. पुं.–बड़ा प्याला, वादियः।

सुजूद (سجود) अ. पुं.–प्रणाम करना, सर झुकाना; ईश्वर के आगे सर झुकाना; नमाज़ में सज्दः करना।

सुतुर्ग (سترگ) फा. वि.–ज्येष्ठ, बड़ा; श्रेष्ठ, अज़ीम।

सुतुर्दः (سترده) फा. वि.–मूँड़ा हुआ, मुंडित।

सुतुर्लाब (سطرلاب) फा. पुं.–ग्रहों और तारों आदि के नापने का यंत्र।

सुतूअ (سطوع) अ. पुं.–बलंद होना, ऊँचा होना।

सुतूदः (ستوده) फा. वि.–प्रशंसित, सराहा हुआ, जिसकी तारीफ़ की गयी हो।

सुतूदःकार (ستوده‌کار) फा. वि.–जिसके काम क़ाबिले तारीफ़ हों।

सुतूदःसिफ़ात (ستوده‌صفات) फा. अ. वि.–अच्छे गुणोंवाला, अच्छे आचार-व्यवहारवाला।

सुतूदाँ (ستودان) फा. पुं.–आतशपरस्तों अर्थात् पार्सियों का समाधिस्थान या क़ब्रिस्तान।

सुतून (ستون) फा. पुं.–स्थूण, खंभा; मीनार, लाट, स्तंभ।

सुतूने जराइद (ستون جرايد) फा. अ. पुं.–अख़्बार का कालम, स्तंभ।

सुतूर (سطور) अ. स्त्री.–'सत्र' का बहु., सत्रें, लकीरें, पंक्तियाँ।

सुतूरे ज़ैल (سطور ذيل) अ. स्त्री.–लेख के नीचे की पंक्तियाँ।

सुतूरे बाला (سطور بالا) अ. फा. स्त्री.–लेख के ऊपर की पंक्तियाँ।

सुतूह (سطوح) अ. स्त्री.–'सत्ह' का बहु., सत्हें।

सुतोर (ستور) फा. पुं.–गो, वृष, बैल; उष्ट्र, क्रमेल, ऊँट; अश्व, वाजि, घोड़ा।

सुतोह (ستوه) फा. वि.–तंग आया हुआ, आजिज़; दुःखित, पीड़ित, रंजीदः; निःसंबंध, बेलगाव, बाज़।

सुदद (سدد) अ. पुं.–'सुद्दः' का बहु., सुद्दे, ग्रंथियाँ, गाँठें, मल या मवाद की गाँठें।

सुदाअ (سداع) अ. पुं.–सरदर्द, शिरः-पीड़ा।

सुदाद (سداد) अ. पुं.–एक रोग है जिसमें नाक और सीने के रास्ते बंद हो जाते हैं।

सुदाब (سداب) फा. स्त्री.–एक क्षुप जिसकी पत्ती औषधि में काम आती है, तितली।

सुदुस (سدس) अ. वि.–छठा षष्ठ, छठा।

सुदूर (صدور) अ. पुं.–जारी होना, निकलना।

सुद्ग़ः (صدغه) अ. पुं.–कनपटी।

सुद्ग़ (صدغ) अ. पुं.–कनपटी।

सुद्ग़तैन (صدغتين) अ. पुं.–दोनों कनपटियाँ।

सुद्दः (سده) अ. पुं.–मवाद की गाँठ जो आँतों या रगों में पड़ जाती है।

सुद्स (سدس) अ. वि.–छठा षष्ठ।

सुनन (سنن) अ. स्त्री.–'सुन्नत' का बहु., सुन्नतें।

सुनाई (ثنائی) अ. वि.–दो अक्षरवाला शब्द; आगे के दो दाँत, ऊपर के हों या नीचे के।

सुनान (صنان) अ. स्त्री.–बग़ल की दुर्गंध; एक रोग जिसमें बग़ल से बू आती है।

सुन्अ (صنع) अ. स्त्री.–बनाना, पैदा करना; कारीगरी, शिल्प।

सुन्‌ए परवर्दगार (صنعِ پروردگار) अ. फा. स्त्री.–ईश्वर की कारीगरी।

सुन्क़ुर (سنقر) तु. पुं.–एक शिकारी पक्षी जो बाज़ की क़िस्म का होता है, और भारत में गर्मी के कारण ज़िंदः नहीं रहता।

सुनः (سنہ) अ. पुं.–दे. 'सुन्नत'।

सुन्नत (سنت) अ. स्त्री.–नियम, क़ाइदः; पद्धति, तरीक़ः; मार्ग, रास्ता; प्रकृति, फ़ित्रत; स्वभाव, आदत; वह काम जो पैग़ंबर साहिब ने किया हो; ख़त्नः, मुसलमानी।

सुन्नते आबा (سنتِ آبا) अ. स्त्री.–बापदादा का दस्तूर, ख़ानदान का रवाज।

सुन्नते पैग़म्बरी (سنتِ پیغمبری) अ. फा. स्त्री.–पैग़ंबर साहिब का किया हुआ अमल, जिसके करने से सवाब मिलता है।

सुन्नते रसूल (سنتِ رسول) अ. स्त्री.–दे. 'सुन्नते पैग़ंबरी'।

सुन्नी (سنی) अ. पुं.–सुन्नत का अनुयायी, सुन्नी मुसलमान, मुसलमानों का एक समुदाय।

सुपार (سپار) फा.प्रत्य.–सौंपनेवाला, जैसे—'जाँसुपार' जान सौंपनेवाला।

सुपारिश (سپارش) फा. स्त्री.–दे. 'सिफ़ारिश'।

सुपुर्ज़ (سپرز) फा. स्त्री.–प्लीहा, तिल्ली, एक विशेष अवयव।

सुपुर्दः (سپردہ) फा. वि.–सौंपा हुआ, दिया हुआ।

सुपुर्द (سپرد) फा. वि.–सौंपा हुआ, दिया हुआ।

सुपुर्दगी (سپردگی) फा. स्त्री.–सुपुर्द करना, किसी को देना।

सुपुर्दार (سپردار) फा. पुं.–वह व्यक्ति जिसके सुपुर्द किसी क़ुर्क़ी का माल हो।

सुपुश (سپش) फा. स्त्री.–जूँ, वह कीड़ा जो बालों में पड़ जाता है, स्वेदज लोम-यूक।

सुफ़रा (سفرا) अ. पुं.–'सफ़ीर' का बहु., दूत लोग, देशों के सफ़ीर।

सुफ़हा (سفہا) अ. पुं.–'सफ़ीह' का बहु., अधम लोग, कमीने।

सुफ़ारिश (سفارش) फा. स्त्री.–शुद्ध उच्चारण यही है, परंतु उर्दू में सिफ़ारिश ही बोलते हैं, इसलिए उर्दू में सिफ़ारिश ही शुद्ध है, दे. अर्थ के लिए 'सिफ़ारिश'।

सुफ़ाल (سفال) फा. पुं.–मिट्टी का बरतन; ठीकरा, दे. 'सिफ़ाल' वह भी शुद्ध है।

सुफ़ालीं (سفالیں) फा. वि.–मिट्टी का बना हुआ, मृण्मय।

सुफ़ुन (سفن) अ. पुं.–'सफ़ीनः' का बहु., नौकाएँ, नावें, कश्तियाँ।

सुफ़ूल (سفول) अ. पुं.–निचाई, निम्नता, पस्ती; नीचे उतरना, नीचे आना।

सुफ़्तः (سفتہ) फा. वि.–छेद किया हुआ; एक बाण; पिरोया हुआ।

सुफ़्तःगोश (سفتہ گوش) फा. वि.–जिसके कान छिदे हों; दास, ग़ुलाम; आज्ञापालक, मुतीअ'।

सुफ़्त (سفت) फा. पुं.–छेद, विवर, छिद्र, सूराख़।

सुफ़्तजः (سفتجہ) फा. स्त्री.–हुंडी, चेक, धनादेश।

सुफ़्तनी (سفتنی) फा. वि.–पिरोने योग्य; छेद करने योग्य।

सुफ़्तीदः (سفتیدہ) फा. वि.–पिरोया हुआ, बिंधा हुआ।

सुफ़्फ़ः (صفہ) अ. पुं.–पटाव का मकान, साय:दार जगह; छज्जा, साइबान।

सुफ़्यान (سفیان) अ. पुं.–पाक, साफ़, परहेज़गीर।

सुफ़्रः (سفرہ) फा. पुं.–गुदा, मलद्वार, मक़्अद।

सुफ़्रः (سفرہ) अ. पुं.–वह कपड़ा जिस पर खाना खाते हैं, दस्तख़्वान; तोशदान, टिफिन कैरियर, चूँकि सुफ़्रः का अर्थ फ़ारसी में मलद्वार है, इसलिए अरबी के शब्द सुफ़्रः को 'सफ़्रः' पढ़ने लगे हैं, दे. सफ़्रः।

सुफ़्रःचीं (سفرہ چیں) फा. वि.–दस्तरख़्वान का जूठा खानेवाला, अर्थात् दास, ग़ुलाम।

सुफ़्रची (سفرچی) फा. पुं.–ख़ानसामा बैरा, खाना खिलानेवाला।

सुफ़्रत (صفرت) अ. स्त्री.–पीलापन, पीतिमा, ज़र्दी, पीलाहट।

सुफ़्ल (سفل) अ. पुं.–निचाई, निम्नता, मस्ती, दे. 'सिफ़्ल', वह भी शुद्ध है।

सुफ़्ला (سفلیٰ) अ. स्त्री.–'अस्फ़ल' का स्त्री.–बहुत नीची, निकृष्टा, अधमा।

सुफ़्ली (سفلی) अ. वि.–नीचे का, नीचेवाला, नीचे से संबंधित, दे. 'सिफ़्ली'।

सुबाई (سباعی) अ. स्त्री.–एक नज़्म जिसमें सात मिस्रे होते हैं; सप्त ग्रहों का समूह; सातों आकाश।

सुबात (سبات) अ. पुं.–समय, काल; स्वप्न, ख़्वाब, नींद; एक रोग जिसमें रोगी बहुत सोता है।

सुबुकतिगीं (سبکتگیں) तु. पुं.–सुल्तान महमूद के बाप का नाम, दे. 'सबुकतिगीं', वह भी शुद्ध है।

सुबू (سبو) फा. पुं.–पानी आदि का घड़ा, घट, मटका, कुंभ।

सुबूचः (سبوچہ) फाः पुं.–छोटा घड़ा, ठिलिया, गागर, मटकी।

सुबूत (ثبوت) अ. पुं.–प्रमाण; तर्क, दलील; उदाहरण, मिसाल।

सुबूदान (سبودان) फा. पुं.–घड़ा रखने की टिकटी।

सुबूह (صبوح) अ. स्त्री.–प्रातःकाल, तड़का; सवेरे की शराब पीना।

सुबूह (سبوح) अ. वि.–अत्यन्त पवित्र, बहुत पाक; ईश्वर का एक नाम।

सुब्ह़ः (سبحہ) अ. पुं.–जपमाला, सुमरन, तस्बीह।

सुब्ह़ःख़्वाँ (سبحہخواں) अ. फा. वि.–तस्बीह पढ़नेवाला, जप करनेवाला, जापक।

सुब्ह़ःख़्वानी (سبحہخوانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सुब्ह़ः-गर्दानी'।

सुब्ह़ःगर्दानी (سبحہگردانی) अ. फा. स्त्री.–तस्बीह फेरना, तस्बीह पढ़ना, माला फेरना, जप करना।

सुब्ह़रानी (سبحہرانی) अ.फा. स्त्री.–दे. 'सुब्ह़ःगर्दानी'।

सुब्ह़ (صبح) अ. स्त्री.–प्रातःकाल, प्रभात, प्रात, भोर, तड़का।

सुब्ह़ख़ंद (صبح‌خند) अ. फा. पुं.–ऐसी मुस्कुराहट जिसमें दाँत दिखाई दे जायँ, दे. 'सहरख़ंद' नं० २।

सुब्ह़ख़ेज़ (صبح‌خیز) अ. फा. वि.–जिसे तड़के उठने की आदत हो।

सुब्ह़गाह (صبح‌گاہ) फा. पुं.–प्रातःकाल, तड़के, गजरदम, गोविसर्ग, वासर संग।

सुब्ह़गाही (صبح‌گاہی) फा. स्त्री.–प्रातःकाल का, सवेरे का (की); प्रातःकाल, तड़का, सवेरा।

सुब्ह़दम (صبحدم) अ. फा. पुं.–बहुत तड़के, गजरदम।

सुब्ह़े अज़ल (صبح ازل) अ. स्त्री.–जब सृष्टि की रचना हुई वह समय।

सुब्ह़े अलस्त (صبح الست) अ. स्त्री.–सृष्टि-रचना, काल।

सुब्ह़े आख़िर (صبح آخر) अ. स्त्री.–दे. 'सुब्ह़े सादिक़'।

सुब्ह़े उम्मीद (صبح امید) अ. फा. स्त्री.–आशारूपी प्रभात।

सुब्ह़े काज़िब (صبح کاذب) अ. स्त्री.–झूठा सवेरा, वह रौशनी जिसके बाद फिर अँधेरा हो जाता है।

सुब्ह़े क़ियामत (صبح قیامت) अ. स्त्री.–क़ियामत' के दिन का सवेरा, वह सवेरा जिस दिन क़ियामत होगी और सब लोग जी उठेंगे और अपना हिसाब देने के लिए एक बड़े मैदान में एकत्र होंगे।

सुब्ह़े जज़ा (صبح جزا) अ. स्त्री.–उस दिन का सवेरा जिस रोज़ क़ियामत में पाप-पुण्य का हिसाब-किताब होगा।

सुब्ह़े दुवुम (صبح دوم) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सुबहे सादिक़'।

सुब्ह़े नुख़ुस्तीं (صبح نخستیں) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सुब्ह़े अज़ल'।

सुब्ह़े बहार (صبح بہار) अ. फा. स्त्री.–वसंत ऋतु की शुरूआत, पुष्प-समय का प्रारंभ।

सुब्ह़े मह्शर (صبح محشر) अ. स्त्री.–दे. 'सुबहे क़ियामत'।

सुब्ह़े रुस्तख़ेज़ (صبح رستخیز) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सुबहे क़ियामत'।

सुब्ह़े सादिक़ (صبح صادق) अ. स्त्री.–सच्चा सवेरा, जो सचमुच सवेरा हो, प्रात, प्रभात, तड़का।

सुब्ह़े सानी (صبح ثانی) अ. स्त्री.–दे. 'सुब्ह़े सादिक़'।

सुब्ह़े ह़श्र (صبح حشر) अ. स्त्री.–दे. 'सुबहे क़ियामत'।

सुब्ह़ोमसा (صبح و مسا) अ. स्त्री.–रातदिन, अहर्निश, हर समय।

सुब्ह़ोशाम (صبح و شام) अ. फा. स्त्री.–रातदिन, हर समय।

सुम (سم) फा. पुं.–चौपाए का खुर; घोड़े की टाप।

सुमअफ़्गंदः (سم افگندہ) फा. वि.–चलने में असमर्थ; लँगड़ा, पंगु।

सुमुन (ثمن) अ. वि.–आठवाँ अंश।

सुमुव [व्व] (سمو) अ. पुं.–उँचाई, बलंदी, उच्चता, उत्तुंगता।

सुमूत (صموت) अ. पुं.–चुप रहना, ख़ामोश रहना; मौन, ख़ामोशी।

सुम्अः (سمعہ) अ. पुं.–दे. 'सुम्अत'।

सुम्अत (سمعت) अ. स्त्री.–अपनी अच्छी बातें दूसरों को सुनवाना ताकि लोग अच्छा समझें, रियाकारी, पाखंड, आडंबर।

सुम्चः (سمچہ) फा. पुं.–ज़मीन के अंदर की गुफ़ा, तहख़ाना, तलगृह।

सुम्नः (سمنہ) फा. पुं.–एक मेवा, चिरौंजी।

सुम्न (ثمن) अ. वि.–आठवाँ अंश, १/८, दे. 'सुमन'।

सुम्मः (ثم) अ. वि.–फिर, पुनः।

सुम्माक़ (سماق) अ. पुं.–एक खट्टा फल जो दवा में काम आता है।

सुयूफ़ (سیوف) अ. पुं.–'सैफ़' का बहु., तलवारें।

सुराक़ः (سراقہ) अ. पुं.–चोरी का माल; क़ुरैश वंश (अरब) का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति।

सुराग़ (سراغ) तु. पुं.–पाँव का चिह्न, खोज; पता, निशान, ठिकाना; अनुसंधान, जिज्ञासा, तलाश।

सुराग़रसाँ (سراغ رساں) तु. फा. वि.–खोज लगानेवाला, खोजी; गुप्तचर, जासूस।

सुराग़रसानी (سراغرسانی) तु. फा. स्त्री.–खोज लगाना, तलाश करना; गुप्तचर्या, जासूसी।

सुराग़रसी (سراغرسی) तु. फा. स्त्री.–दे. 'सुराग़रसानी'।

सुरादिक़ (سرادق) अ. पुं.–बड़ा तंबू, बड़ा ख़ेमः; शामियानः, वितान।

सुरादिक़ात (سرادقات) अ. पुं.–'सुरादिक़' का बहु; बड़े-बड़े ख़ैमे; शामियाने।

सुराह (صراح) अ. वि.–सार, तत्त्व, ख़ुलासः; निष्कर्ष, निचोड़; एक अरबी शब्दकोष।

सुराही (صراحی) अ. स्त्री.–पानी रखने का एक विशेष प्रकार का मिट्टी का पात्र, जल की कुंभी।

सुराहीदार (صراحی دار) अ. फा. वि.–दे. 'सुराहीनुमा'।

सुराहीनुमा (صراحی نما) अ. फा. वि.–सुराही के आकार का, सुराही जैसा।

सुरीं (سریں) फा. स्त्री.–'सुरीन' का लघु., दे. 'सुरीन'।

सुरीन (سرین) फा. स्त्री.–नितंब, चूतड़।

सुरुब (سرب) अ. पुं.–एक धातु, सीसः, सीसक।

सुरूँ (سروں) फा. स्त्री.–दे. 'सुरून'।

सुरूद (سرود) फा. पुं.–गाना, नग़्मः; राग, गीत; एक बाजा।

सुरून (سرون) फा. स्त्री.–नितंब, उपस्थ, सुरीन।

सुरूर (سرور) अ. पुं.–हर्ष, ख़ुशी; आनंद, लज़्ज़त; हलका नशा।

सुरूरअंगेज़ (سرورانگیز) अ. फा. वि.–नशा पैदा करनेवाला, मादक; हर्ष देनेवाला, आनंदवर्द्धक।

सुरूरअफ़्ज़ा (سرورافزا) अ. फा. वि.–आनंद बढ़ानेवाला, हर्षवर्धक।

सुरूरख़ेज़ (سرورخیز) दे. 'सुरूरअफ़्ज़ा'।

सुरूरपर्वर (سرورپرور) अ. फा. वि.–दे. 'सुरूरअफ़्ज़ा'।

सुरूरफ़िज़ा (سرورفزا) अ. फा. वि.–दे. 'सुरूरअफ़्ज़ा'।

सुरूरेइबादत (سرور عبادت) अ. पुं.–ईश्वर की आराधना का आनंद, भजनानंद।

सुरूरे क़ल्ब (سرور قلب) अ. पुं.–हृदय का आनंद, चित्त-प्रसाद।

सुरूरे दाइमी (سرور دائمی) अ. पुं.–हमेशः रहनेवाला आनंद।

सुरैया (ثریا) अ. स्त्री.–तीसरा नक्षत्र, कृत्तिका; कान में पहनने का झुमका; रौशनी का झाड़।

सुरैयाबाम (ثریا بام) अ. वि.–जिसकी अटारी सुरैया जितनी ऊँची हो, जहाँ किसी की पहुँच न हो सके।

सुरोद (سرود) फा. पुं.–गाना, गान; गीत।

सुरोदसंज (سرودسنج) फा. वि.–गायक, गानेवाला, गाने के फ़न का उस्ताद।

सुरोदी (سرودی) फा. वि.–गायक, गवैया।

सुरोदे मस्ताँ (سرود مستاں) फा. पुं.–नशे में चूर लोगों का गाना।

सुरोश (سروش) फा. पुं.–जिब्रील, फ़िरिश्तः; हर वह फ़िरिश्तः जो अच्छी ख़बर और शुभ संदेश लाये।

सुरोशे ग़ैब (سروش غیب) फा. अ. पुं.–ग़ैबी फ़िरिश्तः, आकाशवाणी करनेवाला।

सुर्अत (سرعت) अ. स्त्री.–शीघ्रता, तेज़ी, जल्दी; उतावलापन, आतुरता; फुरती, चुस्ती।

सुर्अते इंज़ाल (سرعت انزال) अ. स्त्री.–संभोग के समय शीघ्र वीर्यपात हो जाने का रोग।

सुर्ख़ः (سرخہ) फा. वि.–आँख में निकलनेवाली गुहांजी।

सुर्ख़ (سرخ) फा. वि.–लाल रंग; लाल रँगा हुआ; घुँघची, एक रत्ती का वज़न।

सुर्ख़अंदाम (سرخ اندام) फा. वि.–लाल रँग का, जिसका शरीर लाल हो, रक्तांग।

सुर्ख़गूँ (سرخ گوں) फा. वि.–लाल रंग का, जिसका रंग लाल हो।

सुर्ख़चः (سرخچہ) फा. पुं.–ख़स्रः, छोटी चेचक जो प्रायः छोटे बालकों को निकल आती है।

सुर्ख़चश्म (سرخ چشم) फा. वि.–जिसकी आँखें लाल हों, रक्ताक्षु।

सुर्ख़पोश (سرخ پوش) फा. वि.–लाल कपड़े पहननेवाला, रक्तांबर।

सुर्ख़पोशी (سرخ پوشی) फा. स्त्री.–लाल कपड़े पहनना।

सुर्ख़फ़ाम (سرخ فام) फा. वि.–जिसके शरीर का रंग लाल हो, रक्तांग।

सुर्ख़बादः (سرخ بادہ) फा. पुं.–लाल दाने या दाग़ जो रक्त के प्रकोप से बच्चों के शरीर पर हो जाते हैं।

सुर्ख़मू (سرخ مو) फा. वि.–जिसके सर और डाढ़ी के बाल लाल हों, रक्तकेशी।

सुर्ख़रंग (سرخ رنگ) फा. वि.–लाल रंगवाला, रक्तवर्ण।

सुर्ख़रू (سرخ رو) फा. वि.–सम्मानित, इज़्ज़त किया गया; सफ़ल, कामयाब, "सुर्ख़रू होता है इंसाँ ठोकरें खाने के बाद, रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद।"

सुर्ख़रूई (سرخ روئی) फा. स्त्री.–सम्मान, इज़्ज़त; सफलता, कामयाबी।

सुर्ख़लब (سرخ لب) फा. वि.–जिसके होंठ लाल हों; जो होंठ पान या लिपिस्टिक से लाल हों।

सुर्ख़लबी (سرخ‌لبی) फा. स्त्री.–होठों का लाल होना।

सुर्ख़ाब (سرخاب) फा. पुं.–एक जलपक्षी, चकवा, जिसके लिए प्रसिद्ध है कि इनका जोड़ा रात में जुदा हो जाता है और दिन भर साथ साथ रहता है।

सुर्ख़िए चश्म (سرخئ چشم) फा. स्त्री.–आँख की लाली।

सुर्ख़िए मै (سرخئ مے) फा. स्त्री.–शराब के नशे की लाली; शराब के रंग की लाली।

सुर्ख़िए लब (سرخئ لب) फा. स्त्री.–होंठों की लाली।

सुर्ख़िए शफ़क़ (سرخئ شفق) फा. अ. स्त्री.–उषा की लालिमा, सवेरे या शाम की शफ़क़ की सुर्ख़ी।

सुर्ख़ी (سرخی) फा. वि.–लाली, लालिमा।

सुर्ना (سرنا) फा. पुं.–'सूर नाए' का लघु., शहनाई जो शादी के मौक़े पर बजती है।

सुर्नाची (سرناچی) फा. वि.–शहनाई बजानेवाला।

सुर्फ़ः (سرفہ) फा. पुं.–खाँसी, कास।

सुर्फ़िदः (سرفندہ) फा. वि.–खाँसनेवाला।

सुर्फ़ीदः (سرفیدہ) फा. वि.–जिसने खाँसा हो, खाँसा हुआ।

सुर्मः (سرمہ) फा.पुं.–एक पत्थर जो पीसकर आँखों में लगाया जाता है; आँखों में लगाने की सूखी और बारीक पिसी हुई दवा, रसांजन।

सुर्मःआगीं (سرمہ آگیں) फा. वि.–सुर्मः लगी हुई आँख, अंजित, अंजनसार।

सुर्मःआलूद (سرمہ آلود) फा. वि.–दे. सुर्मःआगीं।

सुर्मःआवाज़ (سرمہ آواز) फा. वि.–जो बोल न सके।

सुर्मःख़ुर्दः (سرمہ خوردہ) फा. वि.–जिसने सुर्मः खाया हो, जो बोल न सकता हो।

सुर्मःचश्म (سرمہ چشم) फा. वि.–आँखों में सुर्मः लगाये हुए, अंजनसार।

सुर्मःचोब (سرمہ چوب) फा. स्त्री.–सुर्मः लगाने की सलाई, अंजन, शलाका।

सुर्मः दरगुलू (سرمہ درگلو) फा. वि.–दे. 'सुर्मःख़ुर्दः'।

सुर्मःदान (سرمہ دان) फा. पुं.–सुर्मः रखने की शीशी आदि, सुर्मेदानी।

सुर्मःफ़रोश (سرمہ فروش) फा. पुं.–जो सुर्मः बेचता हो, जो कई प्रकार के सुर्मे बनाकर बेचता हो।

सुर्मःसा (سرمہ سا) फा. वि.–सुर्मे की तरह बिलकुल बारीक पिसा हुआ; रेज़ः-रेज़ः, चूर-चूर।

सुर्म (سرم) अ. पुं.–आँत का मुँह जिससे मल निकलता है, मलद्वार।

सुर्मए चश्म (سرمۂ چشم) फा. पुं.–आँखों में लगाने का सुर्मा।

सुर्मए दुंबालःदार (سرمۂ دنبالہ دار) फा.पुं.–आँखों में लगा हुआ वह सुर्मः जिसकी लकीर आँख से बाहर कनपटी की ओर तक बढ़ी हुई हो।

सुर्मगीं (سرمگیں) फा. वि.–अंजनसार, अंजित, सुर्मः लगी हुई आँख।

सुर्रः (سرہ) फा. स्त्री.–नाभि, नाफ़, तुंडी, टुंडी।

सुर्रः (صرہ) अ. पुं.–थैली, रुपया-पैसा रखने की थैली; पोटली, छोटी पोटली।

सुर्रःबस्तः (صرہ بستہ) अ. फा. वि.–वह दवा जो पोटली में बाँधकर औंटाई जाय।

सुलहफ़ात (سلحفات) अ. पुं.–कछवा, कूर्म, कच्छप।

सुलहा (صلحا) अ. पुं.–'सालेह' का बहु., 'संयमनिष्ठ और सदाचारी लोग'।

सुलाक़ (سلاق) अ. पुं.–एक रोग जिसमें पलकें लाल और भारी हो जाती हैं।

सुलामियात (سلامیات) अ. पुं.–वह स्थान जहाँ नाख़ून जमते हैं, नखस्थान।

सुलालः (سلالہ) अ. पुं.–किसी चीज़ से खींचा हुआ सार, निष्कर्ष, निचोड़; नवजात शिशु।

सुलालात (سلالات) अ. पुं.–'सुलालः' का बहु., चीज़ों के निचोड़, सार-समूह; नवजात बच्चे, शिशुगण।

सुलस (ثلث) अ. वि.–तृतीयांश, तीसरा हिस्सा, दे. 'सुल्स', दोनों शुद्ध हैं।

सुलूक (سلوک) अ. पुं.–रास्ता चलना; व्यवहार, तर्ज़ेअमल; ग़रीबों और दुखियारों को रुपये-पैसे से सहायता; ईश्वर की खोज।

सुलूके नेक (سلوک نیک) अ. फा. पुं.–अच्छा बरताव, सद्व्यवहार।

सुलूके बद (سلوک بد) अ.फा. पुं.–बुरा बरताव, कुव्यवहार, दुर्व्यवहार।

सुलूज (ثلوج) अ. पुं.–'सल्ज' का बहु., 'बरफ़' का समूह; पाला पड़ना, तुषार पड़ना, बर्फ़बारी।

सुल्त (سلت) अ. पुं.–जौ, यव, एक प्रसिद्ध नाज।

सुल्तान (سلطان) अ. पुं.–शासक, नरेश, बादशाह, राजा।

सुल्तानी (سلطانی) अ. वि.–शासन, राज, बादशाही।

सुल्फ़ः (سلفہ) अ. पु.–सवेरे का हलका खाना, नाश्ता, नहारी, उपाहार, जलपान।

सुल्ब (صلب) अ. पुं.–पीठ के गुरिए, अस्थि-शृंखल; कड़ा, सख़्त, दे. 'सलब'; नुत्फ़ः, वीर्य।

सुल्बी (صلبی) अ. वि.–औरस, एक नुत्फ़े से, सहोदर, हक़ीक़ी।

सुल्बीयः (صلبیہ) अ. पुं.–आँख का सातवाँ पर्दा।

सुल्लम (سلم) अ. पुं.–निःश्रेणी, सोपान, सीढ़ी।

सुल्स (ثلث) अ. वि.–तीसरा हिस्सा, तृतीयांश, दे. 'सुलुस', वह भी शुद्ध है।

सुल्सुल (صلصل) अ. स्त्री.–पंडुकी, फ़ाख़्तः; हौज़ का बचा हुआ पानी; घोड़े के माथे के बाल।

सुल्ह (صلح) अ. स्त्री.–मेल, मिलाप, आश्ती; संधि, मुसालहत; मैत्री, दोस्ती; दो व्यक्तियों में परस्पर विरोध के बाद आपस में मेल।

सुल्हकुल (صلح کل) अ. वि.–जो सबके साथ दोस्ती रक्खे, जो किसी से झगड़ा न करे।

सुल्हख़ू (صلح خو) अ. फा. वि.–जिसके स्वभाव में मेल-जोल से रहना हो।

सुल्हजू (صلح جو) अ. फा. वि.–मेल-जोल से रहनेवाला, झगड़े-टंटे को नापसंद करनेवाला।

सुल्हजूई (صلح جوئی) अ. फा. स्त्री.–परस्पर मेल-जोल से रहना।

सुल्हदोस्त (صلح دوست) अ. फा. वि.–जो मेल-जोल पसंद करनेवाला हो, शान्तिप्रिय।

सुल्हदोस्ती (صلح دوستی) अ. फा. स्त्री.–मेल-जोल से रहना पसंद करना।

सुल्हपसंद (صلح پسند) अ. फा. वि.–दे. 'सुल्हदोस्त'।

सुल्हपसंदी (صلح پسندی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सुल्हदोस्ती'।

सुल्हशिकन (صلح شکن) अ. फा. वि.–मेल-जोल को तोड़नेवाला; आपस की संधि को तोड़नेवाला।

सुल्हशिकनी (صلح شکنی) अ. फ़ा. स्त्री.–मेल-जोल को ख़त्म कर देना; परस्पर संधि के नियमों का उल्लंघन।

सुल्हसामाँ (صلح ساماں) अ. फा. वि.–दे. 'सुल्हदोस्त'।

सुल्हसामानी (صلح سامانی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'सुल्हदोस्ती'।

सुल्होजंग (صلح و جنگ) अ. फा. स्त्री.–लड़ाई और मेल; युद्ध और संधि।

सुवर (صور) अ. स्त्री.–'सूरत' का बहु., सूरतें, शक्लें।

सुवाल (سوال) अ. पुं.–दे. 'सवाल'।

सुवैदा (سویدا) अ. वि.–वह काला तिल जो हृदय पर होता है।

सुस्त (سست) फा. वि.–अशक्त, कमज़ोर; मंद, धीमा; जो फुर्तीला न हो, स्फूर्तिहीन; शिथिल, ढीला; खिन्न, मलिन, अफ़्सुर्दः; आलसी, काहिल; जिसमें काम-शक्ति कम हो, मंदकाम; मंदगति, धीरे चलनेवाला; दीर्घसूत्री, धीरे-धीरे काम करनेवाला।

सुस्तअह्द (سست عہد) फा. अ. वि.–दे. 'सुस्त पैमाँ'।

सुस्तएतिक़ाद (سست اعتقاد) फा. अ. वि.–जिसका धर्मविश्वास अटल न हो, जिसे किसी विशेष महात्मा आदि से श्रद्धा न हो।

सुस्तएतिक़ादी (سست اعتقادی) फा. अ. स्त्री.–धर्मविश्वास की कमी, अश्रद्धा।

सुस्तक़दम (سست قدم) फा.अ.वि.–धीरे-धीरे चलनेवाला, मंदगति, मंदगामी।

सुस्तक़दमी (سست قدمی) फ़ा अ. स्त्री.–धीरे-धीरे चलना, मंद गति।

सुस्तगाम (سست گام) फा. वि.–दे. 'सुस्तक़दम'।

सुस्तगामी (سست گامی) फा. स्त्री.–दे. 'सुस्तक़दमी'।

सुस्तगो (سست گو) फा. वि.–धीरे-धीरे बातें करनेवाला; बहुत धीरे-धीरे सोचकर और देर में शे'र कहनेवाला।

सुस्ततब्अ (سست طبع) फा. अ. वि.–सुस्त, काहिल, आलसी, जिसकी तबीअत में आलस हो।

सुस्ततरीन (سست ترین) फा. वि.–सबसे अधिक धीमा; सबसे अधिक काहिल।

सुस्तदिमाग़ (سست دماغ) फा. अ. वि.–कमअक़्ल, मंदबुद्धि।

सुस्तपरवाज़ (سست پرواز) फा. वि.–धीमे-धीमे उड़नेवाला, कम उड़नेवाला।

सुस्तपैमाँ (سست پیماں) फा. वि.–वादे का कच्चा, वादा करके न निबाहनेवाला, मंदप्रतिज्ञ।

सुस्तबुन्याद (سست بنیاد) फा. वि.–जिसकी बुनियाद कमज़ोर हो।

सुस्तरफ़्तार (سست رفتار) फा. वि.–दे. 'सुस्तक़दम'।

सुस्तरफ़्तारी (سست رفتاری) फा. स्त्री.–दे. 'सुस्तक़दमी'।

सुस्तरवी (سست روی) फा. स्त्री.–दे. 'सुस्तक़दमी'।

सुस्तराए (سست رائے) फा. अ. वि.–जिसकी राय, ठीक न होती हो मंदगति; जिसकी बुद्धि कमज़ोर हो, मंदबुद्धि।

सुस्तरीश (سست ریش) फा. वि.–मूर्ख, मूढ़, अज्ञान, अहमक़।

सुस्तरौ (سست رو) फा. वि.–दे. 'सुस्तक़दम'।

सुस्त वफ़ा (سست وفا) फा. अ. वि.–दे. 'सुस्तपैमाँ'।

सुस्ती (سستی) फा. स्त्री.–आलस्य, काहिली; शिथिलता, ढीलापन; कामशक्ति की मंदता; फुर्ती न होना, अस्फूर्ति; दीर्घसूत्रिता, काम धीरे-धीरे करना।

सुहा (سہا) फा. पुं.–एक बहुत छोटा तारा जो सप्तर्षिमंडल के तीन तारों में से बीच का है।

सुहास (سہام) अ. पुं.–अंधकार, अँधेरा; रूपविकार, चेहरे का ख़राब हो जाना; दुबला हो जाना।

सुहूबत (صہوبت) अ. स्त्री.–पीलाहट लिये हुए लाल रंग; गुलाबी रंग; कालापन लिये हुए लाल रंग; वह रंग जो लाल बालों का होता है।

सुहूलत (سہولت) अ. स्त्री.–सुगमता, सरलता, आसानी।

सुहैब (صہیب) अ. पुं.–एक सिहाबी जो रूम से आकर मुसलमान हुए थे।

सुहैल (سہیل) अ. पुं.–एक प्रसिद्ध तारा जो यमन देश में दिखाई देता है, उसके प्रभाव से चमड़े में सुगंध पैदा होती है और कीड़े मर जाते हैं।

सुह्बत (صحبت) अ. स्त्री.–संगत, पास बैठना; मित्रता, दोस्ती; गोष्ठी, छोटी महफ़िल; सहवास, मैथुन, हमबिस्तरी।

सुह्बतदारी (صحبت داری) अ. फा. स्त्री.–मैथुन, सहवास, हमबिस्तरी।

सुहबते तालेह (صحبت طالح) अ. स्त्री.–दुष्टजनों की संगत, बुरी सुहबत, कुसंग।

सुहबते सालेह (صحبت صالح) अ. स्त्री.–अच्छे आदमियों की संगत, सत्संग।

सुह्र (سہر) अ. पुं.–एक रोग जिसमें नींद उड़ जाती है, अनिद्रा।

सुह्रवर्दी (سہروردی) फा. वि.–सुह्रवर्द (इराक़) का निवासी।

सुह्राब (سہراب) फा. पुं.–रुस्तम का लड़का, जिसे रुस्तम ने अनजानपन से मार दिया और बाद को पहचानकर बहुत पश्चात्ताप किया।

सू

सू (سو) तु. स्त्री.–मदिरा शराब, (पुं.) पानी, जल।

सू (سو) फा. स्त्री.–ओर, तरफ़, "छाई हुई हैं ग़म की घटाएँ चहार-सू"।

सू (سو) अ. वि.–निकृष्ट, दूषित, ख़राब।

सूए अदब (سوے ادب) अ. पुं.–धृष्टता, गुस्ताख़ी।

सूए अमल (سوے عمل) अ. पुं.–दुराचार, बदअमली।

सूए इत्तिफ़ाक़ (سوے اتفاق) अ. पुं.–दुर्योग, कुयोग, बुरा इत्तिफ़ाक़।

सूए एतिक़ाद (سوے اعتقاد) अ. पुं.–किसी की श्रद्धा न होना, अश्रद्धा।

सूए एतिबार (سوے اعتبار) अ. पुं.–बेएतिबारी, अविश्वास।

सूए ख़ुल्क़ (سوے خلق) अ. पुं.–दुःशीलता, बदख़ुल्क़ी; अशिष्टता, बदअख़्लाक़ी।

सूए चर्ख़ (سوے چرخ) फा. स्त्री.–आकाश की ओर, आस्मान की तरफ़।

सूए ज़न (سوے ظن) अ. पुं.–किसी की ओर से बुरा ख़याल, कुधारणा।

सूए ज़मीं (سوے زمیں) फा. स्त्री.–पृथ्वी की ओर, ज़मीन की तरफ़।

सूए तद्बीर (سوے تدبیر) अ. स्त्री.–प्रयत्न या उपाय की ख़राबी, ठीक उपाय या कोशिश या इलाज न होना।

सूए तनफ़्फ़ुस (سوے تنفس) अ. पुं.–साँस का विकार, साँस का ठीक न चलना; साँस का उखड़ जाना।

सूए तरीक़ (سوے طریق) अ. पुं.–मार्ग की ख़राबी, रास्ते का ऊबड़-खाबड़ होना।

सूए दिमाग़ (سوے دماغ) अ. पुं.–दिमाग़ की ख़राबी, बुद्धि-विक्षेप, पागलपन।

सूए मिज़ाज (سوے مزاج) अ. पुं.–शरीर की धातुओं का विकार; किसी अंग या शरीर के मिज़ाज का विकार; रोग, बीमारी।

सूए हज़्म (سوے ہضم) अ. पुं.–हाज़िमे की ख़राबी, अपच, अजीर्ण।

सूक़ (سوق) अ. पुं.–बाज़ार, हाट, पण; 'साक़' का बहु., शाखाएँ, शाख़ें।

सूक़ियानः (سوقیانہ) अ. फा. वि.–बाज़ारू, बाज़ारी, लोफ़रों जैसा।

सूक़ी (سوقی) अ. वि.–बाज़ारी, बाज़ार का; निकृष्ट, नीच।

सूची (سوچی) तु. पुं.–पानी पिलानेवाला; मदिरा बेचनेवाला।

सूचीख़ानः (سوچی خانہ) तु. फा.–मदिरालय, शराबख़ानः।

सूदः (سودہ) फा. वि.–घिसा हुआ, रगड़ा हुआ, मर्दित; चूर, चूर्ण, सुफ़ूफ़, घिसन।

सूद (سود) फा. पुं.–लाभ, नफ़ा; कुसीद, ब्याज।

सूद (سود) अ. पुं.–'अस्वद' का बहु., काले रंग की चीज़ें।

सूदए अल्मास (سودۂ الماس) फा. पुं.–हीरे की घिसन, हीरे का सफ़ूफ़।

सूदख़ोर (سودخور) फा. पुं.–ब्याज खानेवाला, कुसीदजीवी, कौसीद।

सूदख़ोरी (سودخوری) फा. स्त्री.–ब्याज खाना, सूद का कारोबार करना।

सूदत (سودت) अ. स्त्री.–अध्यक्षता, सरदारी; श्रेष्ठता, बुज़ुर्गी।

सूद दर सूद (سود در سود) फा. पुं.–ब्याजकी एक क़िस्म जिसमें ब्याज मूलधन में मिलकर उस पर ब्याज चलता है, चक्रवृद्धि।

सूद बालाए सूद (سودبالاے سود) फा.पुं.–दे. 'सूद दर सूद'।

सूदमंद (سودمند) फा. वि.–लाभकारी, फ़ाइदःमंद।

सूदमंदी (سودمندی) फा. स्त्री.–लाभकारिता, फ़ाइदःमंदी।

सूदान (سودان) अ. पुं.–अफ़्रीक़ा का एक देश, सूडान।

सूदी (سودی) फा.वि.–सूद का, ब्याज का; सूद से संबंधित।

सूदोज़ियाँ (سودوزیاں) फा. पुं.–लाभ और हानि, नफ़ा और नुक़्सान।

सूनिश (سونش) फा. स्त्री.–धात का बुरादः जो रेती से गिरे; लोहे, ताँबे या हीरे का बुरादा।

सूफ़ (صوف) अ. पुं.–ऊन, ऊर्ण; एक प्रकार का ऊनी कपड़ा; बकरी या भेड़ के बाल।

सूफ़ (سوف) अ. स्त्री.–विज्ञान, हिक्मत।

सूफ़ार (سوفار) फा. पुं.–तीर का मुंह, बाण का वह भाग जिसे धनुष की ताँत पर रखकर छोड़ते हैं।

सूफ़िया (صوفیا) अ. पुं.–'सूफ़ी' का बहु., सूफ़ी लोग।

सूफ़ियानः (سوفیانہ) अ. फा. वि.–सूफ़ियों जैसा; अच्छी वज़ा का; हलके रंग का।

सूफ़िस्ता (سوفسطا) अ. स्त्री.–एक मत जिसमें सारी चीज़ों को कल्पनात्मक समझते हैं।

सूफ़िस्ताई (سوفسطائی) अ. वि.–सूफ़िस्ता मत को माननेवाला, यह माननेवाला कि सारा जगत् केवल एक कल्पना है और इसकी हर चीज़ कल्पित है।

√**सूफ़ी** (صوفی) अ. पुं.–ब्रह्मज्ञानी, अध्यात्मवादी, तसव्वुफ़ का अनुयायी, सारे धर्मों से प्रेम करनेवाला।

सूफ़ीमनिश (صوفی منش) अ. फा. पुं.–जो किसी धर्म से बैर न रक्खे, सबको एक आँख से देखनेवाला।

सूबः (صوبہ) अ. पुं.–प्रान्त, प्रदेश, किसी राष्ट्र का वह भाग जिसमें बहुत से जिले हों और एक गवर्नर के शासन में हो।

सूबःजात (صوبہ جات) अ. पुं.–सूबः का बहु., सूबे, प्रान्त-समूह।

सूबःदार (صوبہ دار) अ. फा. पुं.–सूबे का शासक, गवर्नर, राज्यपाल; सिपाही से बड़ा एक ओहदः।

सूबःदारी (صوبہ داری) अ. फा. स्त्री.–राज्यपाल का पद, गवर्नरी; सूबेदार का ओहदः, जमादारी।

सूबःपरस्ती (صوبہ پرستی) अ. फा. स्त्री.–अपने प्रान्त का पक्षपात, अपने प्रान्त में रहनेवाले के साथ रिआयत करना और उसे अनुचित बढ़ावा देना।

सूबःवारानः (صوبہ وارانہ) अ. फा. वि.–प्रान्तों के हिसाब से।

सूबसू (سوبہ سو) फा.वि.–चारों ओर, हर तरफ़, हर ओर; जगह-जगह, ठौर-ठौर।

सूबाई (صوبائی) अ. वि.–प्रान्तीय, सूबे का।

सूम (ثوم) अ. पुं.–लहसुन, लशुन।

सूरः (سورہ) अ. पुं.–क़ुरआन की सूरत, क़ुरान में कुल ११४ सूरतें हैं, सबसे बड़ी सूरत पूरे क़ुरान का $\frac{१}{१२}$ अंश है और सबसे छोटी केवल दो पंक्तियों की है।

सूर (صور) अ. पुं.–वह तुरही जो क़ियामत के दिन हज़्रत इस्राफ़ील फूँकेंगे।

सूरए इख़्लास (سورۂ اخلاص) अ.स्त्री.–क़ुरान की एक सूरत।

सूरए फ़ातिहः (سورۂ فاتحہ) अ. स्त्री.–क़ुरान की सर्वप्रथम सूरत।

सूरए यासीन (سورۂ یاسین) अ. स्त्री.–क़ुरान की एक सूरत जो मरते समय सुनाई जाती है।

सूरत (سورت) अ. स्त्री.–दे. 'सूरः'।

सूरत (صورت) अ. स्त्री.–रूप, आकृति, शक्ल; मुखाकृति, चेहरा; दशा, हालत; चित्र, तस्वीर; उपाय, तदबीर; समान, मिस्ल; ख़ाकः, रूपरेखा।

सूरतआश्ना (صورت آشنا) अ. फा. वि.–जो केवल सूरत पहचानता हो और कोई बात (नाम आदि) न जानता हो।

सूरतगर (صورت گر) अ. फा. वि.–सूरत बनानेवाला, ईश्वर; चित्रकार मुसव्विर।

सूरतगरी (صورت گری) अ. फा. स्त्री.–सूरत बनाना; तस्वीर बनाना, चित्रकारी।

सूरत पज़ीर (صورت پزیر) अ. फा. वि.–चित्रित, तस्वीर खिंचा हुआ।

सूरतपज़ीरी (صورت پزیری) अ. फा. स्त्री.–चित्रण, सूरत या तस्वीर बनाना।

सूरतपरस्त (صورت پرست) अ. फा. वि.–ऊपरी टीपटाप देखनेवाला; मूर्तिपूजक, बुतपरस्त; अच्छे रूप का पुजारी, हुस्न का पुजारी।

सूरतपरस्ती (صورت پرستی) अ. फा. स्त्री.–ऊपरी टीपटाप देखना; मूर्ति पूजना; अच्छे रूप को पूजना।

सूरतबाज़ (صورت باز) अ. फा. वि.–बहुरूपिया, नक़्क़ाल।

सूरतबाज़ी (صورت بازی) अ. फा. स्त्री.–बहुरूपियापन, नक़्क़ाली।

सूरतहराम (صورت حرام) अ. वि.–जो बिलकुल निकम्मा हो, कोई काम आदि न करे।

सूरते हाल (صورت حال) अ. स्त्री.–मौजूदः हालत।

सूराख़ (سوراخ) फा. पुं.–छिद्र, विवर, रंध्र, छेद।

सूराख़दार (سوراخ دار) फा. वि.–छिद्रित, छेददार।

सूराख़े गोश (سوراخ گوش) फा.पुं.–कान का छेद, श्रवण-रंध्र।

सूराख़े बीनी (سوراخ بینی) फा. पुं.–नाक का छेद, नासा-विवर।

सूरिंजान (سورنجان) फा. पुं.–सिंघाड़े के आकार की एक ओषधि।

सूरिया (سوریا) अ. पुं–शाम देश (अरब)।

सूरी (سوری) अ. वि.–एक लाल फूल; हर लाल फूल।

सूरी (صوری) अ. वि.–सूरत का, मुख का; सूरत से संबंधित; ऊपरी, ज़ाहिरी, बाह्य।

सूलूल (ثولول) अ. पुं.–स्तनवृन्त, स्तनाग्र, भिटनी; मस्सा।

सूस (سوس) अ. पुं.–रेशम के कपड़े को खा जानेवाला कीड़ा; मुलैठी का पेड़।

सूसमार (سوسمار) फा. पुं.–गोह, गोधा, एक प्रसिद्ध जंतु।

से

सेज़दः (سیزده) फा. वि.–तेरह।

सेज़दहुम (سیزدهم) फा. वि.–तेरहवाँ।

सेब (سیب) फा. पुं.–एक प्रसिद्ध फल, उत्कोल, सेव।

सेबे ज़क़न (سیب ذقن) फा. पुं.–सेब के आकार की ठुड्डी।

सेबे ज़नख़दाँ (سیب زنخداں) फा. पुं.–दे. 'सेबे ज़क़न'।

सेर (سیر) फा. वि.–तृप्त, जिसका पेट भरा हो; निःस्पृह, जिसे कोई कामना न हो; अघाया हुआ, भरा-पूरा।

सेरआहंग (سیر آهنگ) फा. वि.–जिसकी आवाज़ बड़ी और भारी हो।

सेरख़ोर (سیرخور) फा. वि.–पेट भरकर खानेवाला।

सेरचश्म (سیرچشم) फा. वि.–खिलाने-पिलाने में दिल-वाला; जो परितृप्त हो, अघाया हुआ।

सेरचश्मी (سیرچشمی) फा. स्त्री.–खिलाने-पिलाने में दिलवाला होना; मन का संतुष्ट होना।

सेरहासिल (سیرحاصل) अ. फा. वि.–वह ज़मीन जो उपजाऊ हो, उर्वरा; वह बात जो सारगर्भित हो।

सेराब (سیراب) फा. वि.–पानी से सींचा हुआ; खूब पानी पिये हुए, तृप्त।

सेराबी (سیرابی) फा. वि.–सिंचा हुआ होना; प्यास न होना; संतोष, इत्मीनान।

सेली (سیلی) फा. स्त्री.–थप्पड़, तमाचा, चाँटा।

सेहत (صحت) अ. स्त्री.–स्वास्थ्य तन्दुरुस्ती; शुद्धि, त्रुटि न होना।

सेहतमंद (صحتمند) अ. फा. वि.–स्वस्थ, तन्दुरुस्त; उत्तम, श्रेष्ठ, बेहतर।

सै

सैक़ल (صیقل) अ. स्त्री.–तलवार आदि को रगड़ंकर उसमें चमक पैदा करना।

सैक़लगर (صیقل گر) अ. फा. वि.–तलवार या दूसरे अस्त्रों को चमकदार बनानेवाला; बरतनों पर क़लई करनेवाला।

सैक़ली (صیقلی) अ. फा. स्त्री.–सान, वह पत्थर जिस पर रगड़कर तलवार आदि में धार पैदा करते हैं।

सैद (صید) अ. पुं.–मृगया, आखेट, अहेर, शिकार; शिकार किया हुआ ज़ानवर।

सैद (سید) अ. पुं.–'सैयिद' का लघु., दे. 'सैयिद'।

सैद अफ़गन (صیدافگن) अ. फा. वि.–आखेटक, लुब्धक, व्याध, शिकारी।

सैदअफ़गनी (صیدافگنی) अ. फा. स्त्री.–शिकार खेलना, आखेट, मृगया।

सैदकुन (صیدکن) अ. फा. वि.–शिकार करनेवाला, आखेटिक।

सैदकुनाँ (صیدکناں) अ. फा. वि–शिकार करता हुआ, शिकार खेलता हुआ।

सैदगाह (صیدگاه) अ. फा. स्त्री.–वह जंगल जहाँ शिकार खेला जाय, मृगयावन, आखेट-स्थल।

सैदगीर (صیدگیر) अ. फा. स्त्री.–शिकार पकड़नेवाला, जाल या कुत्ते से शिकार खेलनेवाला।

सैदा (صیدا) अ. पुं.–वन, कानन, जंगल, बीहड़।

सैदे ज़बूँ (صید زبوں) अ. फा. पुं.–बहुत ही छोटा शिकार जिससे किसी का पेट न भरे।

सैदे रमीदः (صید رمیده) अ. फा. पुं.–गोली खाकर भागा हुआ शिकार।

सैदे हरम (صید حرم) अ. पुं.–वह जानवर जो मक्के के आस-पास पूर्व-पश्चिम २४ कोस और उत्तर-दक्खिन ३६ कोस के भीतर रहते हैं और जिनका वध धर्मानुसार हराम है।

सैफ़ः (سیفه) अ. पुं.–जिल्दसाज़ों का वह औज़ार जिससे वह काग़ज़ काटते हैं।

सैफ़ (سیف) अ. स्त्री.–तलवार, खड्ग, कृपाण, तेग़।

सैफ़ (صیف) अ. पुं.–गर्मी का मौसिम, ग्रीष्म ऋतु।

सैफ़ज़बाँ (سیف زباں) अ. फा. वि.–जिसकी ज़बान में तलवार जैसी काट हो; जो बहुत तेज़ बोले; जो हृदय को काटनेवाली बातें करे।

सैफ़ज़बानी (سیف زبانی) अ. फा. स्त्री.–तेज़ और ज़ोरदार भाषण देना; हृदय को दुःख पहुँचानेवाली बातें करना।

सैफ़ी (سیفی) अ. स्त्री.–एक अभिचार जिससे शत्रु का मारण करते हैं।

सैफ़ी (صیفی) अ. वि.–ग्रीष्मकाल का, गर्मी के मौसिम का।

सैफ़ूर (سیفور) फा. पुं.–एक काला बहुमूल्य रेशमी कपड़ा।

सैफ़ो क़लम (سیفو قلم) अ. पुं.–तलवार और क़लम, सिपाहीपन और कलाकारी।

सैयाग़ (صیاغ) अ. पुं.–स्वर्णकार, सुनार।

सैयाद (صیاد) अ. पुं.–हिरन आदि का शिकार करनेवाला, मृग-लुब्धक; चिड़िया पकड़नेवाला, शकुंतिक, बहेलिया।

सैयादफ़ित्रत (صیادفطرت) अ वि.–जो दूसरों को जाल में फँसाना ख़ूब जानता हो; निर्दय, कठोरहृदय, ज़ालिम।

सैयादसीरत (صیادسیرت) अ. वि.–दे. 'सैयादफ़ित्रत'।

सैयादी (صیادی) अ. स्त्री.–सैयाद का काम; निर्दयता, बेरहमी।

सैयादे अजल (صیاد اجل) अ. पुं.–मौत का शिकारी, यमराज, मलकुल मौत।

सैयाफ़ (سیاف) अ. वि.–खड्गजीवी, तलवार से रोज़ी कमानेवाला; जल्लाद, वधिक।

सैयाफ़ी (سیافی) अ. स्त्री.–तलवार चलाना, काट-मार करना; तलवार से क़त्ल करना, जल्लादी।

सैयारः (سیارہ) अ. पुं.–वह तारा जो एक जगह न रहे बल्कि गतिमान हो, ग्रह; तारा, सितारा।

सैयारःदाँ (سیارہداں) अ. फा. वि.–ज्योतिषी, नुजूमी।

सैयारःबीं (سیارہبیں) अ. फा. वि.–दे. 'सैयारःदाँ'।

सैयारःशनास (سیارہشناس) अ.फा. वि.–दे. 'सैयारःदाँ'।

सैयार (سیار) अ. वि.–बहुत चलने-फिरनेवाला; सैयारः, ग्रह।

सैयारात (سیارات) अ. पुं.–'सैयारः' का बहु., सैयारे, सितारे, ग्रह-समूह।

सैयाह (سیاح) अ. वि.–यात्री, मुसाफ़िर; पर्यटक, देश-देश फिरनेवाला।

सैयाही (سیاحی) अ. स्त्री.–यात्रा, सफ़र; देश-देश की सैर करना और वहाँ के हालात देखना।

सैयिअः (سیئہ) अ. स्त्री.–बुराई, ख़राबी, बदी।

सैयिआत (سیئات) अ. स्त्री.–'सैयिअः' का बहु., बुराइयाँ, ख़राबियाँ।

सैयिदः (سیدہ) अ. स्त्री.–सय्यिद ख़ानदान की स्त्री, हज़्रत इमाम हुसैन की वंशजा।

सैयिद (سید) अ. पुं.–सय्यिद ख़ानदान का व्यक्ति, हज़्रत इमाम हुसैन की औलाद का वंशज।

सैयिदज़ादः (سیدزادہ) अ. फा. पुं.–सय्यिद का लड़का।

सैयिदैन (سیدین) अ. पुं.–दोनों सैय्यिद अर्थात् इमाम हसन और हज़्रत इमाम हुसैन।

स़ैयिब (ثیب) अ. वि.–वह स्त्री या पुरुष जो कुँवारा न हो।

सैर (سیر) अ. स्त्री.–पर्यटन, सियाहत; मनोविनोद, तफ़्रीह; घूमना-फिरना, सैर-सपाटा; चिहिलक़दमी, वायु-सेवन, हवाख़ोरी; कौतुक, तमाशा।

सैरकुनाँ (سیرکناں) अ. फा. वि.–घूमते-फिरते हुए, देखते-भालते हुए।

सैरगाह (سیرگاہ) अ. फा. स्त्री.–सैर करने का स्थान।

सैर पसंद (سیرپسند) अ. फा. वि.–बहुत अधिक घूमने-फिरनेवाला।

सैरफ़ी (صیرفی) अ. वि.–सर्राफ़, खोटा खरा सिक्का परखनेवाला।

सैरान (سیران) अ. पुं.–सैर करना, घूमना-फिरना।

सैरे अफ़्लाक (سیر افلاک) अ. स्त्री.–आस्मानों में घूमना, आकाश-भ्रमण।

सैरे क़मर (سیر قمر) अ. स्त्री.–चाँद की सैर, चाँद तक पहुँचना, चंद्रलोक की सैर करना।

सैरे मिर्रीख़ (سیر مریخ) अ. स्त्री.–मंगल ग्रह की सैर, मंगल ग्रह तक पहुँच।

सैरो तफ़्रीह (سیرو تفریح) अ. स्त्री.–घूमना और दिल बहलाना, दिल बहलाने के लिए घूमना।

सैरो शिकार (سیرو شکار) अ. फा. पुं.–जंगल में घूमना और शिकार खेलना।

सैल (سیل) अ. पुं.–पानी का बहाव; प्लावन, सैलाब।

सैलान (سیلان) अ. पुं.–स्राव, बहाव।

सैलानी (سیلانی) अ. वि.–बहाव से संबंधित; जिसे सैरो तफ़्रीह बहुत पसंद हो।

सैलानुर्रहिम (سیلان الرحم) अ. पुं.–एक रोग जिसमें गर्भाशय से पानी बहता है, रक्त प्रदर।

सैलाब (سیلاب) अ. फा. पुं.–जल-प्लावन, नदी आदि के पानी की बाढ़।

सैलाबज़दः (سیلاب زدہ) फा. वि.–वह ज़मीन जो नदी की बाढ़ से डूब गई हो या उसकी खेती ख़राब हो गई हो।

सैलाबज़दगी (سیلاب زدگی) फा. स्त्री.–नदी की बाढ़ से ज़मीन या काश्त का ख़राब होना।

सैलाबदीदः (سیلاب دیدہ) फा. वि.–जिस ज़मीन पर से बाढ़ का पानी गुज़रा हो।

सैलाबी (سیلابی) फा. वि.–बाढ़ का; बाढ़ से सम्बन्धित।

सैले अरिम (سیل عرم) अ. पुं.–ज़ोर की बाढ़, प्रचंड बाढ़।

सैले अश्क (سیل اشک) अ. फा. पुं.–आँसुओं की बाढ़।

सैले हवादिस (سیل حوادث) अ० पुं०–दुर्घटनाओं और आपत्तियों की बाढ़, आपत्ति-रूपी नदी की बाढ़।

सैहः (صیحہ) अ. पुं.–चीख़, चीत्कार, ज़ोर की आवाज़।

सैहून (سیحون) अ. पुं.–इराक़ की एक नदी।

सैहूनियत (صیہونیت) अ. स्त्री.–यहूदीपन।

सो

सोक (سوک) फा. पुं.–सोग, दुःख, विषाद, रंज।

सोख़्तः (سوختہ) फा. वि.–जला हुआ, दग्ध।

सोख़्तःक़िस्मत (سوختہقسمت) फा. अ. वि.–हतभाग्य, बदक़िस्मत।

सोख़्तःकौकब (سوختہکوکب) फा. वि.–जिसके सौभाग्य के ग्रह जल गये हों, बदक़िस्मत, अभागा।

सोख़्तःजाँ (سوختہجاں) फा. वि.–दग्धहृदय, दिलजला, अर्थात् प्रेमी।

सोख़्तः जिगर (سوختہجگر) फा. वि.–दे. 'सोख़्त:दिल'।

सोख़्तःदिल (سوختہدل) फा. वि.–दग्धहृदय, दिलजला, प्रेमी।

सोख़्तःपा (سوختہپا) फा. वि.–जिसके पाँव जल गये हों, जो कहीं आने-जाने में असमर्थ हो अर्थात् बेबस।

सोख़्तःबख़्त (سوختہبخت) फा. वि.–दे. 'सोख़्त:क़िस्मत'।

सोख़्तःबाल (سوختہبال) फा. वि.–जिसके पर जल गये हों, जो उड़ न सके, बेबस, लाचार, दीन-हीन।

सोख़्त (سوخت) फा. वि.–जलन, जलावट; नष्ट, बरबाद।

सोख़्तगी (سوختگی) फा. स्त्री.–जलन, जलावट।

सोख़्तनी (سوختنی) फा. वि.–जलाने के क़ाबिल, जैसे––सोख़्तनी लकड़ी।

सोग (سوگ) फा. पुं.–किसी के मरने का रंज, शोक, मृत-शोक, मातम।

सोगनामः (سوگ نامہ) फा. पुं.–शोकपत्र, मातमपुर्सी का ख़त।

सोगवार (سوگوار) फा. वि.–शोकग्रस्त।

सोगवारी (سوگواری) फा. स्त्री.–किसी के मरने पर शोक में होना।

सोग़ात (سوغات) तु. स्त्री.–उपहार, उपायन, तोहफ़ः, दे. 'सौग़ात', दोनों शुद्ध हैं।

सोगियानः (سوگیانہ) फा. वि.–मातमी लिबास, शोकवस्त्र।

सोगी (سوگی) फा. वि.–शोकग्रस्त, शोक मनानेवाला।

सोज़ (سوز) फा. प्रत्य.–जलानेवाला, जैसे—'जाँ सोज़' जान का जलानेवाला, (पुं.) जलन, तपिश, ताप; मुहर्रम में पढ़ी जानेवाली एक प्रकार की नज़्म, ऐय हुसने अता के दीवाने तू राज़े मशीयत क्या जाने। बे सोज़ तमन्नाओं से दुआ महरूमे असर हो जाती है।—वज्द।

सोज़ख़्वाँ (سوزخواں) फा. वि.–मुहर्रम में 'सोज़' पढ़नेवाला'।

सोज़ख़्वानी (سوزخوانی) फा. स्त्री.–मुहर्रम में 'सोज़' पढ़ना।

सोज़न (سوزن) फा. स्त्री.–सुई, सूची।

सोज़नकारी (سوزن کاری) फा. स्त्री.–सुई से बनाया हुआ कपड़े पर बारीक काम।

सोज़न ज़दः (سوزن زدہ) फा. वि.–सुई चुभोया हुआ, जिसे सुई चुभोई गई हो।

सोज़नाक (سوزناک) फा. वि.–दग्ध, जला हुआ।

सोज़नी (سوزنی) फा. स्त्री.–सोज़नकारी किया हुआ कपड़ा; पलंग पर बिछाने का एक कपड़ा।

सोज़ाँ (سوزاں) फा. वि.–जलता हुआ, ज्वलित।

सोज़ाक (سوزاک) फा. पुं.–एक बीमारी, शुक्रकृच्छ्र, मूत्रकृच्छ्र, गनोरिया, मूत्राघात।

सोज़िंदः (سوزندہ) फा. वि.–जलानेवाला।

सोज़िश (سوزش) फा. स्त्री.–जलन, प्रदाह।

सोज़िशे दुरूँ (سوزش دروں) फा. स्त्री.–हृदय की जलन, प्रेम की आग।

सोसः (سوسہ) फा. पुं.–गेहूँ का कीड़ा, घुन।

सोहान (سوہان) फा. पुं.–रेतने का यंत्र, रेती।

सौ

सौगंद (سوگند) फा. स्त्री.–शपथ, क़सम।

सौग़ात (سوغات) तु. स्त्री.–उपहार, भेंट, तोहफ़ः, उपायन।

सौत (صوت) अ. स्त्री.–ध्वनि, आवाज़, नाद।

सौत (سوط) अ. पुं.–कषा, कोड़ा, चाबुक।

सौती (صوتی) अ. वि.–ध्वनि से संबंधित; ध्वनि का।

सौते हमीर (صوت حمیر) अ. स्त्री.–गधे की रेंक।

सौदा (سودا) अ. पुं.–शरीर की एक धातु, वात; मस्तिष्क-विकार, विक्षेप, पागलपन; प्रेम, इश्क़; काली स्त्री; बेचने का सामान।

सौदाई (سودائی) अ. वि.–विक्षिप्त, पागल; प्रेमी, आशिक़;० बेअक़्ल, ख़ब्ती, उदा०—"जिसके बदले में लुटा आये हैं दुनियाए निशात––वह ख़लिश दिल में छिपाये तेरा सौदाई है।"

सौदाए ख़ाम (سودائے خام) फा. अ. पुं.–पागलपन, मिराक़।

सौदागर (سوداگر) फा. पुं.–सौदा बेचनेवाला, वणिक्।

सौदागरी (سوداگری) फा. स्त्री.–सौदा बेचना, वाणिज्य।

सौदाज़दः (سودازده) अ. फा. वि.–पागल, मिराक़ी; प्रेमी, अनुरागी।

सौदाज़दगी (سودازدگی) अ. फा. स्त्री.–पागलपन; प्रेम का पागलपन।

सौदान (سودان) अ. पुं.–काले रंग के मनुष्य।

सौदावियत (سوداویت) अ. स्त्री.–वात का विकार; पागलपन।

सौदावी (سوداوی) अ. वि.–वात के कोप से उत्पन्न रोग; वात सम्बन्धी।

सौब (صوب) अ. स्त्री.–ओर, तरफ़; दिशा, सिम्त।

सौब (ثوب) अ. पुं.–पहनने का कपड़ा, वस्त्र।

सौबान (ثوبان) अ. पुं.–प्रत्यागमन, वापस लौटना, फिरना।

सौम (صوم) अ. पुं.–व्रत, रोज़ा।

सौम (سوم) अ. पुं.–मँहगा करके बेचना; भाव चुकाना।

सौमअः (صومعه) अ. पुं.–आराधनालय, उपासना-गृह, इबादतख़ाना।

सौमोसलवात (صوم و صلوٰة) अ. स्त्री.–रोज़ा नमाज़, धर्मनिष्ठा।

सौरः (ثوره) अ. पुं.–उपद्रव, विद्रोह, राजद्रोह, सैन्यद्रोह, बग़ावत।

सौर (ثور) अ. पुं.–वृष, वृषभ, वलीवर्द, बैल, साँड़।

सौरत (سورت) अ. स्त्री.–तीव्रता, प्रचंडता, तेज़ी।

सौरान (ثوران) अ. पुं.–ख़ून का जोश, रक्तकोप; उपद्रव, दंगा, फ़साद।

सौलत (صولت) अ. स्त्री.–आतंक, रो'ब, दब्बा।

सौलतपनाह (صولت پناه) अ. फा. वि.–बहुत बड़े आतंकवाला, प्रतापी, रोबोदाबवाला।

सौलते शाही (صولت شاهی) अ. फा. स्त्री.–राज्यातंक, शाही दबदबा।

सौसन (سوسن) फा. स्त्री.–एक नीला फूल जिसकी पँखुड़ी ज़बान-जैसी होती है।

सौसनी (سوسنی) फा. वि.–सौसन के रंग का, नीले रंग का।

सौहान (سوهان) फा. पुं.–रेती, धातु रेतने का यंत्र।

सौहानगीर (سوهان گیر) फा. वि.–नम्र, नर्म, मुलाइम।

सौहानज़दः (سوهان زده) फा. वि.–रेता हुआ।

सौहाने रूह (سوهان روح) फा. अ. पुं.–रूह के लिए रेती के समान अर्थात् कष्टदायक।

ह

हंगामः (هنگامه) फा. पुं.–उपद्रव, फ़साद; विप्लव, क्रांति, उथल-पुथल; विद्रोह, बग़ावत; कोलाहल, उत्क्रोश, शोरोग़ुल; भीड़, संदोह, संकुल; मारपीट, दंगा; युद्ध, समर, जंग।

हंगामःआरा (هنگامه آرا) फा. वि.–उपद्रव करनेवाला, फ़साद मचानेवाला; युद्ध करनेवाला, लड़नेवाला।

हंगामःआराई (هنگامه آرائی) फा. स्त्री.–उपद्रव करना, फ़साद मचाना; युद्ध करना, लड़ना।

हंगामःख़ेज़ (هنگامه خیز) फा. वि.–उपद्रव और क्रांति उत्पन्न करनेवाली बात, क्रांति-उत्पादक।

हंगामःख़ेज़ी (هنگامه خیزی) फा. स्त्री.–उपद्रव और क्रांति।

हंगामःगर्मकुन (هنگامه گرم کن) फा. वि.–शोर-ग़ुल और उपद्रव करनेवाला।

हंगामःगीर (هنگامه گیر) फा. वि.–भीड़ इकट्ठी करनेवाला, मज्मा' लगानेवाला।

हंगामःगीरी (هنگامه گیری) फा. स्त्री.–भीड़ इकट्ठी करना, मज्मा इकट्ठा करना।

हंगामःपर्दाज़ (هنگامه پرداز) फा. वि.–उपद्रव खड़ा करने वाला, फ़साद पैदा करनेवाला।

हंगामःपर्दाज़ी (هنگامه پردازی) फा. स्त्री.–उपद्रव खड़ा करना, फ़साद मचाना।

हंगामःपर्वर (هنگامه پرور) फा. वि.–दे. 'हंगामःपर्दाज़'।

हंगामःपर्वरी (هنگامه پروری) फा. स्त्री.–दे. 'हंगामःपर्दाज़ी'।

हंगामःपसंद (هنگامه پسند) फा. वि.–जो चाहता हो कि हंगामे होते रहें, झगड़े-बखेड़ों का शौक़ीन।

हंगामःपसंदी (هنگامه پسندی) फा. स्त्री.–हंगामे पसंद करना।

हंगामःबन्दी (هنگامه بندی) फा. स्त्री.–दिखावा, तड़क-भड़क।

हंगाम (هنگام) फा. पुं.–समय, काल, वक़्त; ऋतु, मौसम।

हंगामए कारज़ार (هنگامۀ کارزار) फा. पुं.–लड़ाई का हंगामा, युद्ध, लड़ाई।

हंगामए क़ियामत (هنگامۀ قیامت) फा. अ. पुं.–क़ियामत की भीड़भाड़, क़ियामत का शोरो-ग़ुल।

हंगामए बग़ावत (هنگامۀ بغاوت) फा. अ. पुं.–राजद्रोह का हंगामा।

हंगामए मर्ग (هنگامۂ مرگ) फा.पुं.–मौत का शोरोगुल।

हंगामए हश्र (هنگامۂ حشر) फा. अ. पुं.–दे. 'हंगामए क़ियामत'।

हंगामी (هنگامی) फा. वि.–सामयिक, वक़्ती; अस्थायी, आरिज़ी; क्षणिक, ज़रा सी देर का; आवश्यक, ज़रूरी, जैसे––'हंगामी इज्लास'।

हंगामे· नज़्अ (هنگام نزع) फा. अ. पुं.–प्राण निकलने का समय, चंद्रा, जांकनी।

हंगुफ़्त (هنگفت) फा. वि.–मोटा, स्थूल; गफ़, दबीज़, दलदार।

हंजरः (حنجره) अ. पुं.–कंठ, गला, जहाँ से आवाज़ निकलती है।

हंजर (حنجر) अ. पुं.–दे. 'हंजरः'।

हंज़ल (حنظل) अ. पुं.–एक कड़वा फल, इंद्रायन।

हंजार (هنجار) फा. पुं.–पद्धति, शैली, ढंग, तर्ज़; मार्ग, पथ, रास्ता; नियम, क़ाइदा।

हंदसः (هندسه) अ. पुं.–दे. 'हिंदसः', दोनों शुद्ध हैं, परन्तु उर्दू में वही प्रचलित है।

हक़ [क़्क़] (حق) अ. पुं.–सत्य, सच; यथार्थ, वाक़ई; यथोचित, मुनासिब; स्वत्व, इस्तेहक़ाक़; अधिकार, इख़्तियार; पारिश्रमिक, मेहनताना; उत्कोच, रिश्वत; ईश्वर।

हक [क्क] (حک) अ. पुं.–खुरचना, छीलना; काटना, क़लमज़द करना।

हक़अंदेश (حق اندیش) अ. फा. वि.–सच्ची बात सोचनेवाला; भलाई चाहनेवाला।

हक़अः (هقعه) अ. पुं.–पाँचवाँ नक्षत्र, मृगशिरा।

हक़आगाह (حق آگاه) अ. फा. वि.–सत्यनिष्ठ, बाईमान; महात्मा, वलीअल्लाह।

हक़गो (حق گو) अ. फा. वि.–सत्यभाषी, सच्ची बात कहनेवाला।

हक़गोई (حق گوئی) अ. फा. स्त्री.–सच्ची बात कहना, सत्यवादिता।

हक़ तआला (حق تعالی) अ. पुं.–ईश्वर, परमात्मा।

हक़तलफ़ी (حق تلفی) अ. स्त्री.–किसी का हक़ या अधिकार मारा जाना, स्वत्व-हानि।

हक़दार (حق دار) अ. फा. वि.–अधिकारी, मुख़्तार; पात्र, मुस्तहक़; दायाधिकारी, तरिकः पाने का मुस्तहक़।

हक़नाशनास (حق ناشناس) अ. फा. वि.–जो ख़ुदा को न पहचाने; जो सत्य को न पहचाने; कृतघ्न, एहसान-फ़रामोश।

हक़नाशनासी (حق ناشناسی) अ. फा. स्त्री.–ख़ुदा को न पहचानना; सत्य को न पहचानना; कृतघ्नता, एहसान-फ़रामोशी।

हक़नियोश (حق نیوش) अ. फा. वि.–सच्ची बात सुननेवाला।

हक़नियोशी (حق نیوشی) अ.फा.स्त्री.–सच्ची बात सुनना।

हक़परस्त (حق پرست) अ. फा. वि.–सत्यनिष्ठ, सत्य का पुजारी; ईश्वर का पुजारी, धर्मात्मा।

हक़परस्ती (حق پرستی) अ. फा. स्त्री.–सत्यनिष्ठता, सत्य की पूजा; ईश्वर की पूजा, धर्मपरायणता।

हक़पसंद (حق پسند) अ. फा. वि.–जिसे सत्य पसंद हो, सत्यनिष्ठ।

हक़पसंदी (حق پسندی) अ. फा. स्त्री.–सत्य को पसंद करना, सत्यप्रियता।

हक़फ़रामोश (حق فراموش) अ. फा. वि.–कृतघ्न, एहसान न माननेवाला, एहसान और उपकार भूल जानेवाला, नमकहराम।

हक़फ़रामोशी (حق فراموشی) अ. फा. स्त्री.–कृतघ्नता, एहसान भूल जाना, नमकहरामी।

हक़ बजानिब (حق بجانب) अ. फा. वि.–जिसकी ओर सच्चाई हो, जो सत्य के पक्ष में हो, जो अपनी बात में सच्चा हो।

हक़बीं (حق بیں) अ. फा. वि.–केवल सत्य को देखनेवाला, सत्यनिष्ठ, सत्यपरायण।

हक़बीनी (حق بینی) अ. फा. स्त्री.–सत्य को देखना, सत्य का पक्ष लेना, सत्यनिष्ठता।

हकम (حکم) अ. वि.–वह व्यक्ति जो दो आदमियों के बीच में पड़कर उनका झगड़ा ख़त्म करा दे, पंच, सरपंच, मध्यस्थ।

हक़मक़ाल (حق مقال) अ. वि.–दे. 'हक़गो'।

हक़मक़ाली (حق مقالی) अ. स्त्री.–दे. 'हक़गोई'।

हक़रसानी (حق رسانی) अ. फा. स्त्री.–किसी का हक़ उसको पहुँचाना, किसी का हक़ दिलाना।

हक़रसी (حق رسی) अ. फा. स्त्री.–किसी का हक़ पहुँचना, किसी का हक़दार होना।

हक़शनास (حق شناس) अ. फा. वि.–सत्य को पहचाननेवाला; ईश्वर को पहचनानेवाला।

हक़शनासी (حق شناسی) अ.फा.स्त्री.–सत्य को पहचानना; ईश्वर को पहचानना।

हक़शिआर (حق شعار) अ. वि.–दे. 'हक़पसंद'।

हक़शिआरी (حق شعاری) अ. स्त्री.–दे. 'हक़पसंदी'।

हक़ाइक़ (حقائق) अ. पुं.–'हक़ीक़त' का बहु., हक़ीक़तें।

हक़ाइक़पसंद (حقائق پسند) अ. फा. वि.–हक़ीक़त अर्थात् यथार्थता को पसंद करनेवाला।

हक़ाइक़बीं (حقائق بیں) अ.फा.वि.–हक़ीक़त या यथार्थता देखनेवाला।

हक़ाइक़शनास (حقائق شناس) अ. फा. वि.–हक़ीक़त या यथार्थता को पहचाननेवाला।

हक़ारत (حقارت) अ.स्त्री.–तिरस्कार, अपमान, बेइज्ज़ती।

हक़ारतआमेज़ (حقارت آمیز) अ. फा. वि.–तिरस्कारपूर्ण, ज़िल्लतआमेज़।

हक़ीक़त (حقیقت) अ. स्त्री.–यथार्थता, वाक़ईयत; सत्यता, सच्चाई; मर्यादा, हैसियत।

हक़ीक़तआगाह (حقیقت آگاہ) अ. फा. वि.–यथार्थता और सच्चाई क्या है इससे वाक़िफ़।

हक़ीक़तआश्ना (حقیقت آشنا) अ. फा. वि.–दे. 'हक़ीक़तआगाह'।

हक़ीक़तन (حقیقتاً) अ. वि.–यथार्थतः, वातस्व में, वाक़ई, सचमुच।

हक़ीक़तपसंद (حقیقت پسند) अ. फा. वि.–यथार्थता और सत्यता को पसंद करनेवाला।

हक़ीक़तबयानी (حقیقت بیانی) अ. स्त्री.–सच्ची बात कहना, हक़ीक़त बयान करना।

हक़ीक़तबीं (حقیقت بیں) अ. फा. वि.–हर बात में यथार्थता और सच्चाई को देखनेवाला।

हक़ीक़तशनास (حقیقت شناس) अ. फा. वि.–यथार्थता को जाननेवाला।

हक़ीक़ते नफ़्सुलअम्र (حقیقت نفس الامر) अ.स्त्री.–किसी घटना की यथार्थता।

हक़ीक़ते हाल (حقیقت حال) अ. स्त्री.–सच्चा हाल, अस्लियत, यथार्थता, वास्तविकता।

हक़ीक़ी (حقیقی) अ. वि.–सच्चा, अस्ली, वास्तविक, यथार्थ।

हकीम (حکیم) अ. वि.–वैद्य, तबीब; चिकित्सक, मुआलिज; वैज्ञानिक, साइंसदाँ; मीमांसक, फ़्लासफ़र।

हकीमानः (حکیمانہ) अ. फा. वि.–विज्ञानपूर्ण, फ़्लासफ़रों-जैसा; विद्वज्जनों-जैसा, अक़्लमंदानः।

हक़ीर (حقیر) अ. वि.–तुच्छ, क्षुद्र, कमीना; अत्यल्प, बहुत छोटा; अति न्यून, बहुत थोड़ा।

हक़ीरतरीन (حقیرترین) अ. फा. वि.–बहुत ही तुच्छ, बहुत ही कमीना; बहुत ही थोड़ा; बहुत ही छोटा।

हक़्क़ा (حقا) अ. फा. वि.–ईश्वर की शपथ, ख़ुदा की क़सम।

हक्काक (حکاک) अ. पुं.–खुरचनेवाला, छीलनेवाला; नगीना आदि तराशनेवाला।

हक़्क़ानी (حقانی) अ. वि.–ईश्वरीय, ख़ुदाई; कोई ऐसा गाना जिसमें ख़ुदा और रसूल का ज़िक्र हो।

हक़्क़ानीयत (حقانیت) अ. स्त्री.–सत्यता, सच्चाई; यथार्थता, वाक़ईयत।

हक़्क़ुज़्ज़हमत (حق الزحمت) अ. पुं.–किसी काम में तकलीफ़ और परिश्रम करने का हक़, कमीशन, पारिश्रमिक।

हक़्क़ुलइबाद (حق العباد) अ. पुं.–आम लोगों का हक़, जनता का हक़, जिसका छीन लेना क़ानून में भी और ईश्वर के यहाँ भी पाप है।

हक़्क़ुलमेहनत (حق المحنت) अ. पुं.–पारिश्रमिक, कमीशन।

हक़्क़ुलयक़ीन (حق الیقین) अ. पुं.–पूरा यक़ीन, कामिल यक़ीन, अटल विश्वास।

हक़्क़ुल्लाह (حق اللہ) अ. पुं.–ईश्वर का हक़ जो जनता पर है, जैसे—पूजा, व्रत और दूसरे धार्मिक कर्म।

हक़्क़े आसाइश (حق آسائش) अ.फा. पुं.–वह हक़ जो एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को देने के लिए बाध्य है, सुखाधिकार।

हक़्क़े ज़ौजीयत (حق زوجیت) अ. पुं.–वह हक़ जो पत्नी को अपने पति पर प्राप्त हैं; सहवास, मैथुन, स्त्री-प्रसंग।

हक़्क़े नमक (حق نمک) अ. फा. पुं.–किसी के नमक खाने का हक़, नमक हलाल करना, कृतज्ञता।

हक़्क़े मुरूर (حق مرور) अ. पुं.–निकलने-पैठने और आने-जाने का हक़ जो हर व्यक्ति को प्राप्त है।

हक़्क़े शुफ़अः (حق شفعہ) अ. पुं.–पड़ोस की ज़मीन या मकान पर वह हक़ जो उसके बिकते समय पड़ोसी को प्राप्त रहता है कि वह ज़मीन या मकान सबसे पहले उसे मिले।

हक़्कोइस्लाह (حک و اصلاح) अ. स्त्री.–किसी लेख में काट-छाँट और संशोधन।

हक़्क़ो सदाक़त (حق و صداقت) अ. स्त्री.–सत्यता और यथार्थता।

हज[ज्ज] (حج) अ. पुं.–मुसलमानों का एक धार्मिक कृत्य जो मक्के (अरब) में जाकर अदा करना पड़ता है और धनाढ्य लोगों को उम्र में एक बार उसके करने का हुक्म है।

हज़[ज़्ज़] (حظ) पुं.–आनंद, मज़ा; सुख, राहत; हर्ष, ख़ुशी; भाग, हिस्सा।

हज़्ज (ہزج) अ. पुं.–सुरीली आवाज़; दे. 'बह्रे हज़ज'।

हज़्द (ہزد) फा. पुं.–एक पानी का जानवर, ऊद।

हज़्न (حزن) अ. पुं.–दुःख, क्लेश, कष्ट, मुसीबत; शोक, खेद, ग़म।

हज़यान (هذیان) अ. पुं.–वह बकवास जो रोगी बेहोशी की अवस्था में करता है; बड़बड़ाहट, बकवास, ख़ुराफ़ात, दे. 'हज़्यान', दोनों शुद्ध हैं।

हज़र (حذر) अ. पुं.–बचाव, उपेक्षा, परहेज़; भय, त्रास, डर।

हज़र (حضر) अ. पुं.–घर में रहना, उपस्थिति, मौजूदगी, 'सफ़र' का उलटा।

हजर (حجر) अ. पुं.–पाषाण, प्रस्तर, पत्थर।

हजरी (حجری) अ. वि.–पत्थर का; पत्थर का बना हुआ।

हजरीयत (حجریت) अ. स्त्री.–पत्थरपन, पथरीलापन।

हजरुलबक़र (حجرالبقر) अ. पुं.–गोरोचन, एक पत्थर जो गाय या बैल के मूत्राशय में पड़ जाता है।

हजरुलयहूद (حجرالیہود) अ. पुं.–एक पत्थर जो दवा में काम आता है।

हजरे अस्वद (حجر اسود) अ. पुं.–वह काला पत्थर जो मक्के में है और जिसकी परिक्रमा हज में की जाती है।

हजलः (حجلہ) अ. पुं.–दुल्हन का कमरा, दुल्हन का छपरखट, दे. 'हज्लः', दोनों शुद्ध हैं।

हज़ाइर (حظائر) अ. पुं.–'हज़ीरः' का बहु., बाड़े।

हज़ाक़त (حذاقت) अ. स्त्री.–दक्षता, प्रवीणता, कुशलता, महारत; विद्वत्ता, निपुणता, चातुर्य, दानाई।

हज़ाक़तमआब (حذاقت‌مآب) अ. वि.–बहुत ही दक्ष और कुशल; बहुत ही विद्वान् और निपुण।

हज़ाज़ (حزاز) अ. स्त्री.–बफा, सर की भूसी।

हज़ाजिर (حضاجر) अ. पुं.–बिज्जू, हुंडार, एक मृताशी जंतु, जो विशेषतः क़ब्रिस्तान में मुर्दे खाता है।

हजामत (حجامت) अ. स्त्री.–बाल बनाना; बाल बनवाना, दे. 'हिजामत'।

हज़ामत (حزامت) अ. स्त्री.–दक्षता, कुशलता, प्रवीणता, होशियारी।

हज़ारः (ہزارہ) फा. पुं.–एक फूल; पौदों को पानी देने का एक पात्र, जिसकी टोंटी में 'फ़व्वारः' होता है।

हज़ार (ہزار) फा. वि.–दस सौ की संख्या, सहस्र; दस सौ का अंक, (पुं.) बुलबुल, "तुम सलामत रहो हज़ार बरस। हर बरस के हों दिन पचास हज़ार। ––ग़ालिब।

हज़ारआवाज़ (ہزارآواز) फा. वि.–बहुत से स्वर निकालनेवाला, (पुं.) बुलबुल, गोवत्सक।

हज़ारख़ानः (ہزارخانہ) फा. पुं.–बकरी या भेड़ की ओझड़ी, पेट की थैली, पक्वाशय।

हज़ारगाईदः (ہزارگائیدہ) फा. स्त्री.–बहुत ही व्यभिचारिणी, अति-कुलटा।

हज़ारचंद (ہزارچند) फा. वि.–हज़ारगुना; बहुत अधिक।

हज़ारचश्मः (ہزارچشمہ) फा. पुं.–केकड़ा, कर्कट; कैंसर का रोग, अदीठ, सर्तान।

हज़ारचश्म (ہزارچشم) फा. वि.–हज़ार आँखोंवाला, सहस्रनेत्र।

हज़ारदानः (ہزاردانہ) फा. पुं.–एक पौदा; हज़ार मनकों की माला।

हज़ारदास्ताँ (ہزارداستاں) फा. पुं.–बुलबुल, एक प्रसिद्ध गानेवाली चिड़िया।

हज़ारपा (ہزارپا) फा. पुं.–कनखजूरा, शतपाद, चित्रंगी, (वि.) सहस्रपद, हज़ार पाँववाला।

हज़ारपायः (ہزارپایہ) फा. पुं.–दे. 'हज़ारपा'।

हज़ारमेख़ (ہزارمیخ) फा. पुं.–गुदड़ी, कंथा।

हज़ारसुतून (ہزارستون) फा. पुं.–वह भवन या इमारत जिसमें हज़ार खंभे हों।

हज़ारहा (ہزارہا) फा. वि.–हज़ारों, सहस्रों।

हज़ारहैफ़ (ہزارحیف) फा. अ. वि.–बहुत-बहुत पश्चात्ताप।

हज़ाराँ (ہزاراں) फा. वि.–हज़ारों, सहस्रों।

हज़ाराँ हज़ार (ہزاراں ہزار) फा. वि.–हज़ारों, सहस्रों।

हज़ारी (ہزاری) फा. वि.–एक हज़ारवाला; एक हज़ार से सम्बन्धित।

हज़िक़ (حذق) अ. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; दक्ष, कुशल, होशियार; प्रतिभाशाली, ज़हीन।

हज़िन (حزن) अ. वि.–दुःखित, शोकान्वित, रंजीदः।

हज़िर (حذر) अ. वि.–डरनेवाला, भयभीत; चौकन्ना, सतर्क।

हज़ीं (حزیں) अ. वि.–'हज़ीन' का लघु., दे. 'हज़ीन'।

हज़ीज़ (حضیض) अ. स्त्री.–गढ़ा, निचाई, पस्ती; अवनति, ज़वाल।

हज़ीज़ (ہضیض) अ. वि.–भग्न, विच्छिन्न, खंडित, टूटा हुआ।

हज़ीनः (حزینہ) अ. वि.–दुःखी स्त्री, क्लेशिता, पीड़िता।

हज़ीनः (ہزینہ) अ. पुं.–बीबी-बच्चों का ख़र्च– व्यय, ख़र्च, कोष, ख़ज़ाना, (वि.) नित्य, हमेशा।

हज़ीन (حزین) अ. वि.–दुःखित, क्लेशित, पीड़ित, रंजीदः।

हजीन (ہجین) अ. वि.–अधम, नीच, कमीना; वर्णसंकर, दोग़ला।

हज़ीमः (ہضیمہ) अ. पुं.–मौत का खाना।

हज़ीमत (ہزیمت) अ. स्त्री.–पराजय, हार, शिकस्त; हारकर सेना का तितर-बितर हो जाना।

हज़ीमत (هضیمت) अ. स्त्री.–अत्याचार, अनीति, ज़ुल्म; क्रोध, कोप, ग़ुस्सा।

हज़ीमतख़ुर्दः (هزیمت خوردہ) अ. फा. वि.–पराजित, परास्त, हारा हुआ।

हज़ीरः (حظیرہ) अ. पुं.–बाड़ा, चौपायों के रहने का घेरा।

हजीर (هجیر) अ. स्त्री.–दोपहर की गर्मी; दोपहर की कड़ी धूप, (पुं.) बड़ा हौज़।

हज़ीर (حذیر) अ. वि.–डरपोक, भीरु; त्रस्त, भयभीत, ख़ाइफ़।

हज़ीर (هزیر) बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद।

हजून (هجون) अ. वि.–आलसी, काहिल, सुस्त।

हज़ूर (حذر) अ. वि.–डरनेवाला, भय खानेवाला; त्रस्त, डरा हुआ, भीरु, डरपोक।

हजूल (هجول) अ. वि.–व्यभिचारिंणी, कुलटा, फ़ाहिशः।

हज़्ज़त (هزت) अ. स्त्री.–आनंद, ऐश, भोग-विलास।

हज्जाज (حجاج) अ. वि.–बहुत अधिक वाक्कलह करनेवाला, हुज्जती।

हज्जाम (حجام) अ. पुं.–नापित, क्षौरिक, नाई; पछने लगानेवाला, सिंघी लगानेवाला।

हज़्ज़ाल (هزال) अ. वि.–बहुत अधिक निन्दाजनक बातें करनेवाला।

हज्जे अक्बर (حج اکبر) अ. पुं.–वह हज जिसमें हज के दिन शुक्रवार पड़े।

हज़्ज़े नफ़्सानी (حظ نفسانی) अ. पुं.–इंद्रियों का सुख, भोग-विलास आदि का आनंद, जीवन-सुख।

हज़्ज़े रूहानी (حظ روحانی) अ. पुं.–आत्मा सम्बन्धी सुख, जप-तप आराधना आदि का आनंद।

हज़्दः (هژدہ - هجدہ) फा. वि.–अट्ठारह, अष्टादश।

हज़्दःहज़ार (هژدہ هزار) फा. वि.–अट्ठारह हज़ार।

हज़्दहुम (هژدهم) फा. वि.–अट्ठारहवाँ।

हज़्न (حضن) अ. पुं.–बच्चों का पालन-पोषण; चिड़ियों का अंडे सेना।

हज़्फ़ (حذف) अ. पुं.–विच्छेद, अलग कर देना; किसी शब्द से एक अक्षर कम कर देना।

हज्मः (هجمه) अ. पुं.–चालीस ऊँटों से अधिक का गल्ला।

हज्म (حجم) अ. पुं.–मोटाई, दल, स्थूलता।

हज़्म (حزم) अ. पुं.–दक्षता, कुशलता, होशियारी; सावधानी, सतर्कता, चौकसी; दूरदर्शिता, दूरबीनी।

हज़्म (هزم) अ. पुं.–सेना का तितर-बितर हो जाना, परास्त होकर सेना का भागना।

हज़्म (هضم) अ. पुं.–पक्वाशय में भोज़न का पकना, पाक, पचन; पाचन-शक्ति, हाज़िमः।

हज़्मे कामिल (هضم کامل) अ. पुं.–पक्वाशय में अन्न का पूर्ण रूप से पच जाना।

हज़्मे ग़िज़ा (هضم غذا) अ.फा. पुं.–पक्वाशय में अन्न का पचना, अन्नपाक।

हज्मे ज़ख़ीम (حجم ضخیم) अ. पुं.–बहुत काफ़ी मोटाई।

हज़्मे नाक़िस (هضم ناقص) अ. पुं.–पक्वाशय में अन्न का पूर्ण रूप से न पकना।

हज़्मे सहीह (هضم صحیح) अ. पुं.–दे. 'हज़्मे कामिल'।

हज़्मो एहतियात (حزم و احتیاط) अ.–सावधानी और दूरदर्शिता।

हज़्मो शिकस्त (هزم و شکست) अ. फा. स्त्री.–सेना की हार और भगदड़।

हज़्र (هذر) अ. पुं.–बकवास, वाचालता, मुखरता, जल्प।

हज्र (حجر) अ. पुं.–कुक्ष, बग़ल; क्रोड़, गोद, आगोश।

हज्र (هجر) अ. पुं.–वियोग, जुदाई; मध्याह्न, दोपहर; रोगी की बकवास, हज़यान।

हज़्र (حزر) अ. पुं.–खेत में खड़े हुए नाज का अंदाज़ः, कूत; पेड़ में लगे हुए फलों का अनुमान।

हज़्रत (حضرت) अ. पुं.–किसी बड़े व्यक्ति के नाम से पहले सम्मानार्थ लगाया जानेवाला शब्द; कोई प्रतिष्ठित और पूज्य व्यक्ति; (व्यंग) धूर्त, चालाक; पाखंडी, ऐयार; बदमाश।

हज़्रत सलामत (حضرت سلامت) अ. पुं.–प्रतिष्ठित जनों के लिए संबोधन का शब्द।

हज़्रते अक़्दस (حضرت اقدس) अ. पुं.–पूज्य और पवित्र व्यक़्ति के लिए व्यवहृत शब्द।

हज़्रते आली (حضرت عالی) अ. पुं.–दे. 'हज्रते अक़्दस'।

हज़्रते मोहतरम (حضرت محترم) अ. पुं.–दे. 'हज्रते अक़्दस'।

हज़्रते वाइज़ (حضرت واعظ) अ. पुं.–उर्दू साहित्य में वह धर्मोपदेशक व्यक़्ति जो शराब न पीने के लिए बाध्य करता और इसके विरुद्ध धार्मिक दलीलें बयान करता है।

हज़्रते वाला (حضرت والا) अ. पुं.–दे. 'हज्रते अक़्दस'।

हज़्रते शैख़ (حضرت شیخ) अ. पुं.–उर्दू साहित्य में वह धार्मिक व्यक्ति जो बुरे कामों से रोकता, शराब से मना करता और नमाज़ आदि की पाबंदी के लिये समझाता है।

हज़्रात (حضرات) अ. पुं.–'हज्रत' का बहु., व्यक्तियाँ लोग।

हज्लः (حجلہ) अ. पुं.–दुल्हन का सजा हुआ कोठा या छपरखट, दे. 'हजलः', दोनों शुद्ध हैं।

हज़्ल (هزل) अ. पुं.–अश्लीलता, फक्कड़पन; अश्लील कविता।

हज्ल (هجل) अ. पुं.–पहाड़ों के बीच की नीची भूमि।

हज्लए अरूसी (حجلۂ عروسی) अ. पुं.–नवविवाहिता का सजा हुआ हुआ छपरखट या कोठा।

हज़्लगो (هزل گو) अ. फा. वि.–अश्लील और हँसानेवाली कविता करनेवाला।

हज़्लगोई (هزل گوئی) अ. फा. स्त्री.–अश्लील कविता करना।

हज़्लपसंद (هزل پسند) अ. फा. वि.–जिसे फक्कड़पन अच्छा लगे; जो अश्लील कविता पसंद करे।

हज़्लीयात (هزلیات) अ. स्त्री.–अश्लील काव्य-संग्रह।

हज़्लोतफ़न्नुन (هزل و تفنن) अ. पुं.–फक्कड़पन और मज़ाक़।

हज़्व (حذو) अ. पुं.–दो वस्तुओं को परस्पर बराबर करना।

हज्व (هجو) अ. स्त्री.–निंदा, तिरस्कार, अपमान; ऐसी कविता जिसमें किसी की निंदा की जाय।

हज्वगो (هجوگو) अ. फा. वि.–वह कवि जो अपनी कविता में लोगों की निंदा करता हो।

हज्वगोई (حجوگوئی) अ. फा. स्त्री.–कविता में दूसरों की निंदा करना।

हज्वीयात (هجویات) अ. स्त्री.–दूसरों की निंदा में की गयी कविताओं का संग्रह।

हज्वे मलीह (هجو ملیح) अ. स्त्री.–ऐसी निंदा जो देखने में प्रशंसा जान पड़े, व्याजनिंदा।

हज्वे सरीह (هجوصریح) अ. स्त्री.–स्पष्ट निंदा, साफ़-साफ़ निंदा, जिसमें कोई दुराव न हो।

हज़्हाज़ (هزهاز) अ. पुं.–बुलाना, पुकारना।

हतब (حطب) अ. स्त्री.–जलाने की लकड़ी, ईंधन।

हतिम (حطم) अ. वि.–भग्न, विच्छिन्न, टूटा हुआ, शिकस्तः।

हतिल (هطل) अ. वि.–बहुत बरसनेवाली घटा।

हतीम (حطیم) अ. पुं.–भग्न, खंडित, टूटा हुआ; का'बे की पच्छिमी दीवार।

हत्क (حتک) अ. पुं.–दौड़ कर चलना, भागना।

हत्क (هتک) अ. स्त्री.–अपमान, तिरस्कार, बेइज़्ज़ती।

हत्के इज़्ज़त (هتک عزت) अ. स्त्री.–मानहानि, इज़्ज़त पर हम्ला, तौहीन।

हत्तलइम्कान (حتی الامکان) अ. वि.–जहाँ तक मुम्किन है, यथासंभव।

हत्तल इस्तिताअत (حتی الاستطاعت) अ. वि.–जहाँ तक मक़्दूर है, यथासामर्थ्य।

हत्तलमक़्दूर (حتی المقدور) अ. वि.–जहाँ तक शक्ति है, यथाशक्ति, यथाशक्य, यथासाध्य।

हत्तलवुस्अ (حتی الوسع) अ. वि.–दे. 'हत्तलमक़्दूर'।

हत्ता (حتیٰ) अ. वि.–जब तक, जहाँ तक, यावत्, यथा।

हत्ताक (هتاک) अ. वि.–अपमान करनेवाला; छिद्रान्वेषी।

हत्तात (حتات) अ. वि.–बकवासी, मुखर, वाचाल; फुर्तीला, चुस्त, चालाक।

हत्ताब (حطاب) अ. पुं.–लकड़हारा, लकड़ियाँ बेचनेवाला।

हत्न (حتن) अ. पुं.–गर्मी की तेज़ी।

हत्फ़ (حتف) अ. पुं.–मृत्यु, मरण, निधन, मौत।

हत्फ़ (هتف) अ. पुं.–आवाज़, स्वर, शब्द।

हत्म (حتم) अ. पुं.–दृढ़ता, मज़बूती, पुख़्तगी।

हत्मन (حتماً) अ. वि.–दे 'हत्मी'।

हत्मी (حتمی) अ. वि.–निश्चित रूप से, पुख़्तः तौर पर, यक़ीनी।

हत्ल (هطل) अ. पुं.–मेंह का बराबर बरसना; झड़ी लगना; आँसुओं की झड़ी।

हद [द्द] (حد) अ. स्त्री.–पराकाष्ठा, किनारा, अख़ीर; सीमा, छोर; ओट, आड़।

हदक़ः (حدقہ) अ. पुं.–आँख का कालापन; पुतली, कनीनी।

हदक़ (حدق) अ. पुं.–'हदक़ः' का बहु., आँख की पुतलियाँ; आँख की सियाहियाँ; बैंगन, भाँटा।

हदफ़ (هدف) अ. पुं.–लक्ष्य, निशाना; ऊँचा पुश्ता; वह गोलाई जिस पर निशाना सीखने के लिए गोलियाँ मारते हैं।

हदफ़े तीर (هدف تیر) अ. फा. पुं.–तीर का निशाना मारने का स्थान, लक्ष्य; जिस पर तीर मारे जायँ।

हदफ़े मलामत (هدف ملامت) अ. पुं.–जिस पर चारों ओर से धिक्कार पड़े, जिसकी सब निंदा करें।

हदबंदी (حدبندی) अ. फा. स्त्री.–दो चीज़ों या ज़मीनों के बीच में ऐसा चिह्न जो दोनों की सीमा निश्चित करे।

हदबः (حدبہ) अ. पुं.–कूबड़, कुबड़ापन, कुब्ज।

हदब (حدب) अ. पुं.–कुबड़ापन, कुब्ज; टीला, उठी हुई ज़मीन।

हदर (هدر) अ. पुं.–किसी का बध जाइज़ हो जाना, ख़ून मुआफ़ हो जाना।

हदस (حدث) अ. पुं.–वह चीज़ जिससे वज़ू टूट जाय।

हदसात (حدثات) अ. स्त्री.–'हदसः' का बहु., युवा स्त्रियाँ, जवान औरतें।

हदाइक़ (حدائق) अ. पुं.–'हदीक़ः' का बहु., बग़ीचे, बाग़।

हदाया (هدایا) अ. पुं.–'हदीयः' का बहु., तोहफ़े, भेंटें, नज़्राने।

हदासत (حداثت) अ. स्त्री.–नूतनता, नयापन; आरम्भ, शुरूआत।

हदासते सिन (حداثت سن) अ. स्त्री.–बाल्यावस्था, बचपन।

हदीक़ः (حدیقہ) अ. पुं.–वह बाग़ जिसके चारों ओर दीवार हो।

हदीद (حدید) अ. पुं.–लोहा, लौह, फ़ौलाद; तेज़ और धारदार पदार्थ।

हदीयः (ہدیہ) अ. पुं.–पुरस्कार, उपहार, भेंट, नज़्र, दे. 'हद्यः', दोनों शुद्ध हैं।

हदीस (حدیث) अ. स्त्री.–नयी बात, नयी ख़बर; पैग़ंबर साहिब की फ़रमाई हुई बात।

हद्क़ः (حدقہ) अ. पुं.–आँख की गोलाई, आँख का हल्क़ा।

हद्दाद (حداد) अ. वि.–लोहकार, लुहार; कारा-रक्षक, बंधनपाल, जेलर।

हद्दादी (حدادی) अ. स्त्री.–लुहार का काम।

हद्दे अदब (حد ادب) अ. स्त्री.–आदर और लिहाज़ की अंतिम सीमा, जहाँ तक आदर किया जा सके।

हद्दे फ़ासिल (حد فاصل) अ. स्त्री.–दो पदार्थों के बीच में अंतर डालनेवाली वस्तु, ओट, आड़।

हद्दे शर्ई (حد شرعی) अ. स्त्री.–वह सज़ा जो इस्लाम धर्म के अनुसार दी जाय।

हद्बा (حدبا) अ. स्त्री.–कुब्जा, कुबड़ी स्त्री।

हद्म (ہدم) अ. पुं.–ढाना, गिराना, तोड़-फोड़ करना, निर्जनता, वीरानी।

हद्यः (ہدیہ) अ. पुं.–उपहार, भेंट, तोहफ़ा, दे. 'हदीयः', दोनों शुद्ध हैं।

हद्र (ہدر) अ. पुं.–दे. 'हदर', दोनों शुद्ध हैं।

हद्सः (حدثہ) अ. स्त्री.–युवा स्त्री, जवान औरत।

हद्स (حدس) अ. पुं.–प्रतिभा, चातुर्य, ज़हानत; बुद्धिमत्ता, मेधा, अक़्लमंदी।

हनक (حنک) अ. पुं.–तालु, तालू।

हनक़ (حنق) अ. पुं.–द्वेष, कीनः, बुग़्ज़; शत्रुता वैर, दुश्मनी।

हनकी (حنکی) अ. वि.–वह अक्षर जो तालू से उच्चरित हो, तालव्य।

हनफ़ी (حنفی) अ. वि.–इमाम अबू हनीफ़ः के अनुयायी मुसलमान।

हनी (ہنی) अ. वि.–पाचक, हाज़िम; स्वादिष्ठ, लज़ीज़; सुगम, सहज।

हनीन (حنین) अ. पुं.–विलाप, रोना-पीटना; कामना, चाह, इच्छा।

हनीफ़ (حنیف) अ. वि.–धर्मपरायण, सत्यनिष्ठ, धर्म में पक्का; हज़्रत इब्राहीम के धर्म का अनुयायी।

हनीफ़ी (حنیفی) अ. वि.–धर्मनिष्ठ, धर्म में अटल; हज़्रत इब्राहीम के धर्म को माननेवाला।

हनूत (حنوط) अ. पुं.–वह सुगंधित पदार्थ जो मृतक शरीर पर मला जाय।

हनूद (ہنود) अ. पुं.–'हिंदू' का बहु., हिंदू लोग।

हनोज़ (ہنوز) फा. अव्य.–अभी तक, अब भी, अब तक, अद्यापि।

हन्नात (حناط) अ. वि.–गेहूँ बेचनेवाला; सुगंध बेचनेवाला, गंधी।

हन्नानः (حنانہ) अ. वि.–बहुत रोनेवाला।

हन्नान (حنان) अ. वि.–मोक्ष देनेवाला; कृपा करनेवाला; ईश्वर का एक नाम।

हफ़द (حفد) अ. पुं.–'हाफ़िद' का बहु., सहायक जन, मददगार लोग।

हफ़नज़र (حفِ نظر) अ. वा.–ईश्वर बुरी दृष्टि के प्रभाव से रक्षा करे।

हफ़वत (ہفوت) अ. स्त्री.–अपवाद, बकवास, अनर्गल प्रलाप।

हफ़वात (ہفوات) अ. स्त्री.–'हफ़वत' का बहु., अनर्गल और व्यर्थ की बातें।

हफ़ादत (حفادت) अ. स्त्री.–कृपा, अनुकंपा, दया, मेह्रबानी; हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी, दे. 'हिफ़ादत', दोनों शुद्ध हैं।

हफ़ीज़ (حفیظ) अ. वि.–रक्षक, संरक्षक, देख-रेख करनेवाला; ईश्वर का एक नाम।

हफ़ीर (حفیر) अ. वि.–गर्त, गढ़ा; क़ब्र, गोर।

हफ़्तः (ہفتہ) फा. पुं.–सात दिनों का समय, सप्ताह; शनिवार, सनीचर।

हफ़्तःवार (ہفتہ وار) फा. वि.–साप्ताहिक, हफ़्ते में एक बार होनेवाला।

हफ़्तःदोस्त (ہفتہ دوست) फा. वि.–वह व्यक्ति जिससे दूर की जान-पहचान हो।

हफ़्तःवारी (ہفتہ واری) फा. स्त्री.–दे. 'हफ़्तःवार'।

हफ़्त (ہفت) फा. वि.–सात की संख्या, सात।

हफ़्तअंदाम (ہفت اندام) फा. स्त्री.–एक बड़ी रग जिसकी फ़स्द खोली जाती है।

हफ़्तअख़्तर (ہفت اختر) फा. पुं.–सातों सितारे, सातों ग्रह, सप्तग्रह।

हफ़्तइक़्लीम (ھفت اقلیم) फा. अ. स्त्री.–सातों महाद्वीप अर्थात् सारी दुनया।

हफ़्तऔरंग (ھفت اورنگ) फा. पुं.–सप्तर्षि, बनातुन्ना'श।

हफ़्तक़लम (ھفت قلم) फा. अ. वि.–अरबी-फ़ारसी की सातों लिपियाँ लिखनेवाला।

हफ़्तकिश्वर (ھفت کشور) फा. पुं.–दे. 'हफ़्तइक़्लीम'।

हफ़्त क़ुल्ज़ुम (ھفت قلزم) फा. अ. पुं.–सातों महासागर, अर्थात् सारे समुद्र।

हफ़्तख़्वाँ (ھفت خواں) फा. पुं.–वह सातों मंज़िलें जो रुस्तम को तै करनी पड़ी थीं।

हफ़्तगुंबद (ھفت گنبد) फा. पुं.–सातों आकाश।

हफ़्तज़बाँ (ھفت زباں) फा. वि.–जो सात भाषाएँ जानता हो।

हफ़्तजोश (ھفت جوش) फा. पुं.–सातों धातुओं का योग।

हफ़्ततबक़ (ھفت طبق) फा. अ. पुं.–पृथ्वी के सातों तल।

हफ़्तदर्या (ھفت دریا) फा. पुं.–दे. 'हाफ़्तक़ुल्ज़ुम'।

हफ़्तदह (ھفتدہ) फा. वि.–सत्रह, सप्तदश।

हफ़्तदोज़ख़ (ھفت دوزخ) फा. पुं.–नरक के सातों भाग।

हफ़्तपर्दः (ھفت پردہ) फा. पुं.–सातों आकाश।

हफ़्तपुश्त (ھفت پشت) फा. स्त्री.–सात पीढ़ियाँ, पुश्त दर पुश्त।

हफ़्तपैकरः (ھفت پیکر) फा. पुं.–सातों सितारे, सप्तग्रह।

हफ़्तमंज़िल (ھفت منزل) फा. अ. स्त्री.–सातों तल; सात मालाओं का भवन।

हफ़्तरंग (ھفت رنگ) फा. वि.–सात रंगोंवाला।

हफ़्तरोज़ः (ھفت روزہ) फा. वि.–साप्ताहिक, सात दिन में पड़ने या होनेवाला; साप्ताहिक पत्र, हफ़्तःवार अख़बार।

हफ़्तसालः (ھفت سالہ) फा. वि.–सप्तवर्षीय, सात बरस-वाला।

हफ़्तहज़ारी (ھفت ھزاری) फा. पुं.–मुग़ल राजकाल की एक प्रतिष्ठित पदवी; इस पदवी का अधिकारी।

हफ़्तहैकल (ھفت ھیکل) फा. अ. स्त्री.–जीवरक्षा की सात दुआएँ।

हफ़्ताद (ھفتاد) फा. वि.–सत्तर।

हफ़्तादोदो (ھفتاد و دو) फा. वि.–बहत्तर, सत्तर और दो।

हफ़्तुम (ھفتم) फा. वि.–सातवाँ, सप्तम।

हफ़्तुमीं (ھفتمیں) फा. वि.–सातवाँ।

हफ़्दः (ھفدہ) फा. वि.–'हफ़्तदह' का लघु., सत्तरह, सप्तदश।

हफ़्दहुम (ھفدھم) फा. वि.–सत्तरहवाँ।

हफ़्र (حفر) अ. पुं.–ज़मीन की खुदाई।

हफ़्ल (حفل) अ. पुं.–भीड़, जमाव, जन-समूह; एकत्र करना, इकट्ठा करना।

हफ़्स (حفص) अ. पुं.–शेर का बच्चा, व्याघ्र-शावक।

हब[ब्ब] (حب) अ. स्त्री.–गोली, वटिका, वटी।

हबक (ھبک) अ. स्त्री.–हथेली, करतल।

हबन्नक़ (ھبنق) अ. वि.–मूर्ख, बौड़म, बुद्धू।

हबशः (حبشہ) अ. पुं.–दे. 'हबश'।

हबश (حبش) अ. पुं.–अफ़्रीक़ा का एक प्रसिद्ध देश, हबशः।

हबशी (حبشی) अ. वि.–हबश का निवासी।

हबाब (حباب) फा. पुं.–बुल्बुलः, बुद्बुद।

हबाब आसा (حباب آسا) फा. वि.–बुल्बुले-जैसा, बहुत ही नाज़ुक, क्षणभंगुर।

हबाबी (حبابی) फा. वि.–बुल्बुले की तरह नाज़ुक और क्षण-भंगुर।

हबीब (حبیب) अ. वि.–मित्र, सखा, दोस्त; प्रेमपात्र, मा'शूक़।

हबूत (ھبوط) अ. वि.–नीचे उतरनेवाला।

हबूब (ھبوب) अ. पुं.–वायु का झक्कड़, धूल मिली हुई तेज़ हवा।

हब्बः (حبہ) अ. पुं.–दाना, बीज; रत्ती भर, आठ चावल का भार; बहुत थोड़ा, ज़रा सा।

हब्बज़ा (حبذا) अ. अव्य.–वाह-वाह, धन्य-धन्य, साधु-साधु।

हब्बुज़्ज़लम (حب الزلم) अ. पुं.–'ज़लम' एक औषध द्रव्य द्वारा निर्मित बटी, ज़लम की गोली।

हब्बुर्रिशाद (حب الرشاد) अ. पुं.–हालौन, एक दाना जो दवा में चलता है।

हब्बुलक़ुत्न (حب القطن) अ. पुं.–कपास का बीज, बिनौला।

हब्बुलग़ुराब (حب الغراب) अ. पुं.–कुचला, एक विषैला दाना, विषमुष्टि, विषतुंदक।

हब्बुलमुलूक (حب السلوی) अ. पुं.–जमालगोटा, दंतिका।

हब्बुस्समनः (حب السمنہ) अ. पुं.–चिरौंजी, एक प्रसिद्ध मेवा।

हब्बुस्सलातीन (حب السلاطین) अ. पुं.–जमालगोटा, अजयपाल, दंतिका।

हबल (حبل) अ. स्त्री.–रस्सी, रज्जु; डोरा, तार; रग, धमनी।

हब्लुज़्ज़िराअ (حبل الذراع) अ. स्त्री.–हाथ की एक रग।

हब्बुलमतीन (حبل المتین) अ. स्त्री.–दृढ़ रस्सी।

हब्बुलवरीद (حبل الورید) अ. स्त्री.–गर्दन की एक रग।

हब्स (حبس) अ. पुं.–उपग्रह, कारावास, क़ैद; उमस, बरसात में हवा बंद होने की अवस्था; अवरोध, रुकाव।

हब्सीयात (حبسیات) अ. स्त्री.–क़ैद के समय की बातें या कविता आदि; कारागार सम्बन्धी चीज़ें।

हब्से तम्स (حبس طمث) अ. पुं.–मासिक धर्म का बंद हो जाना।

हब्से दम (حبس دم) अ. फा. पुं.–साँस रुकना, दम घुटना, श्वासरोध; साँस रोककर की जानेवाली एक तपस्या, कुंभक प्राणायाम।

हब्से दवाम (حبس دوام) अ. पुं.–आजन्म कारावास, उम्र भर की क़ैद।

हब्से बेजा (حبس بیجا) अ. पुं.–अवैध रूप से किसी को बंद रखना।

हब्से बौल (حبس بول) अ. पुं.–पेशाब का रुक जाना, मूत्र-निरोध, मूत्राघात।

हब्से रियाह (حبس ریاح) अ. पुं.–पेट में वायु का रुक जाना।

हमः (ہمہ) फा. वि.–सर्व, सब, कुल; समस्त, समग्र, समूचा; पूर्ण, पूरा।

हमःउम्र (ہمہ عمر) फा. अ. वि.–सारी उम्र, आजीवन, जीवनभर।

हमःऔक़ात (ہمہ اوقات) फा. अ. वि.–हर समय, हर वक़्त।

हमःख़ोर (ہمہ خور) फा. वि.–सब कुछ खा जानेवाला, सर्वभक्षी, जिसे खाने में धर्माधर्म का विचार न हो।

हमःख़ोरी (ہمہ خوری) फा. स्त्री.–सब कुछ खा जाना, धमाधर्म का विचार किये बिना जो पाना वह खा जाना।

हमःगीर (ہمہ گیر) फा. वि.–जो हर तरफ़ फैला और छाया हुआ हो, सर्वव्यापी, सार्वभौम।

हमःगीरी (ہمہ گیری) फा. स्त्री.–हर ओर फैला और छाया होना, सर्वव्यापित।

हमःतन (ہمہ تن) फा. वि.–सारे शरीर के साथ, अर्थात् पूरी तल्लीनता के साथ।

हमःतनगोश (ہمہ تن گوش) फा. वि.–जो सर से पाँव तक कान बन गया हो, अर्थात् जो किसी बात के सुनने के लिए बहुत अधिक उत्कंठित हो, उत्कर्ण।

हमःदाँ (ہمہ داں) फा. वि.–सब कुछ जाननेवाला, सर्वज्ञ, बहुत बड़ा विद्वान्।

हमः दानी (ہمہ دانی) फा. स्त्री.–सब कुछ जानना, सर्वज्ञता, विद्वत्ता।

हमःदुश्मन (ہمہ دشمن) फा. वि.–जो सबका शत्रु हो; जिसके सब शत्रु हों।

हमःदोस्त (ہمہ دوست) फा. वि.–जो सबका दोस्त हो; जिसके सब दोस्त हों।

हमःने'मत (ہمہ نعمت) फा. अ. स्त्री.–सारी ने'मतें, हर प्रकार की सुख-सामग्री।

हमःवक़्त (ہمہ وقت) अ. फा. वि.–हर समय, हर वक़्त; हर दशा में, हर हालत में।

हमःसम्त (ہمہ سمت) फा. अ. वि.–चारों ओर, चतुर्दिक्, चहुँपास, हर तरफ़, सब ओर।

हमःसाअत (ہمہ ساعت) फा. अ. वि.–प्रतिक्षण, हर लम्हः; हर समय, हर वक़्त।

हमःसिफ़त (ہمہ صفت) फा. अ. वि.–सारे गुणोंवाला, सारी सिफ़तोंवाला।

हमःसिफ़त मौसूफ़ (ہمہ صفت موصوف) फा. अ. वि.–सारे गुणों से भरा हुआ, जिसमें सारी ख़ूबियाँ हों, सर्वगुणसंपन्न।

हमःसू (ہمہ سو) फा. वि.–हर ओर, हर तरफ़, चतुर्दिक्, चहुँओर।

हम (ہم) फा. उप.–साथवाला, जैसे—'हमउम्र'; बराबर-वाला, जैसे—'हमक़ीमत' आदि, (अव्य.) भी, अपि, नीज़।

हम [म्म] (ہم) अ. पुं.–दुःख, खेद, रंज, ताप, ग़म (जिसके आने का भय हो); रोग का शरीर को घुला देना; बच्चे को लोरी से सुलाना।

हम (حم) अ. पुं.–सुसराल के रिश्तेवाला, सुसराली रिश्तेदार।

हमअक़ीदः (ہم عقیدہ) फा. अ. वि.–किसी एक पंथ के माननेवाले, सधर्मानुयायी; किसी एक बात पर विश्वास रखनेवाले।

हमअलामत (ہم علامت) फा. अ. वि.–एक-जैसे लक्षणों-वाले; एक-जैसे चिह्नोंवाले।

हमअस्र (ہم عصر) फा. अ. वि.–एक समय में होनेवाले व्यक्ति, समकालीन।

हमअह्द (ہم عہد) फा. अ. वि.–दे. 'हमअस्र'।

हमआग़ोश (ہم آغوش) फा. वि.–एक दूसरे को गोद में लिये हुए, आलिंगित, बग़लगीर।

हमआग़ोशी (ہم آغوشی) फा. स्त्री.–आलिंगन, बग़लगीरी, एक दूसरे को गोद में लेना।

हम आवर्द (ہم آورد) फा. वि.–प्रतिद्वंद्वी, हरीफ़, मुक़ा-बिल; सहव्यवसायी, हमपेशः।

हमआवाज़ (ہم آواز) फा. वि.–जिनकी आवाज़ एक-सी हो; जो किसी विषय में सहमत हों।

हमआहंग (ہم آہنگ) फा. वि.–एक-सी आवाज़वाले; एक-से इरादेवाले; एक-सी रायवाले।

हमआहंगी (ہمآہنگی) फा. स्त्री.–एक-सी आवाज़; एक-सा इरादा; एक-सी राय।

हमइनाँ (ہمعناں) फा. अ. वि.–साथ चलनेवाला, सहचर; सदृश, समान।

हमइयार (ہمعیار) फा. अ. वि.–सदृश, समान; सहपद, हमदर्जः।

हमउम्र (ہمعمر) फा. अ. वि.–एक-सी आयुवाले, समवयस्क, समसामयिक, वयःस्थ।

हमउम्री (ہمعمری) फा. अ. स्त्री.–आयु में बराबरी, समवयस्कता, समावस्था, वयस्य भाव।

हमऔसाफ़ (ہماوصاف) फा. अ. वि.–गुणों में एक-जैसे व्यक्ति, एकगुण।

हमक़द (ہمقد) फा. अ. वि.–एक-जैसे डीलवाला, समकाय।

हमक़दम (ہمقدم) फा. अ. वि.–साथ-साथ चलनेवाले, सहचर।

हमक़दमी (ہمقدمی) फा. अ. स्त्री.–साथ-साथ चलना।

हमक़दह (ہمقدح) फा. अ. वि.–एक प्याले में शराब पीनेवाले, बहुत ही घनिष्ठ शराबी दोस्त।

हमक़द्र (ہمقدر) फा. अ. वि.–एक-जैसी प्रतिष्ठावाले, एक-जैसी इज़्ज़तवाले।

हमक़रीं (ہمقریں) फा. अ. वि.–दे. शुद्ध उच्चारण 'हमक़िराँ'

हमक़लम (ہمقلم) फा. अ. वि.–एक दफ़्तर में काम करनेवाले, एक दफ़्तर के क्लर्क।

हमकलाम (ہمکلام) फा. अ. वि.–किसी के साथ बात करनेवाला या बात करता हुआ।

हमकलामी (ہمکلامی) फा. अ. स्त्री.–आपस की बातचीत, दो व्यक्तियों का परस्पर वार्तालाप।

हमकार (ہمکار) फा. अ. वि.–एक-सा काम करनेवाले।

हमकासः (ہمکاسہ) फा. वि.–एक प्याले में साथ-साथ खानेवाले अर्थात् घनिष्ठ मित्र।

हमक़ितार (ہمقطار) फा. अ. वि.–एक ही पंक्ति में खड़े हुए; एक ही वर्गवाले।

हमकिनार (ہمکنار) फा. वि.–दे. 'हमआग़ोश'।

हमकिनारी (ہمکناری) फा. स्त्री.–दे. 'हमआग़ोशी'।

हमक़िराँ (ہمقراں) फा. अ. वि.–साथ बैठनेवाला, मित्र, दोस्त; सभासद, मुसाहिब।

हमक़िरानी (ہمقرانی) फा. अ. स्त्री.–साथ उठना-बैठना, मैत्री; मुसाहबत।

हमक़ीमत (ہمقیمت) फा. अ. वि.–बराबर मूल्यवाले, एक-जैसे मोल के।

हमकुफ़्व (ہمکفو) फा. अ. वि.–एक गोत्रवाले, एक जातिवाले, समवर्ण, सहगोत्र, सजातीय।

हमक़ौम (ہمقوم) फा. अ. वि.–एक जातिवाले, सजातीय; एक राष्ट्रवाले, सहराष्ट्र।

हमख़याल (ہمخیال) फा. अ. वि.–एक रायवाले, सहमत; एक धर्म-विश्वासवाले।

हमख़याली (ہمخیالی) फा. अ. स्त्री.–राय का एक होना; धर्म-विश्वास अर्थात् अक़ीदे की यकसानियत।

हमख़वास (ہمخواص) फा. अ. वि.–एक-जैसी गुणवाली ओषधियाँ।

हमख़वासी (ہمخواصی) फा. अ. स्त्री.–एक-जैसे गुण होना।

हमख़ानः (ہمخانہ) फा. वि.–एक घर में रहनेवाले, सहनिवासी।

हमख़ानदान (ہمخاندان) फा. वि.–एक वंशवाले, एकवंशीय।

हमख़ास्सः (ہمخاصہ) फा. अ. वि.–दे. 'हमख़वास'।

हमख़ू (ہمخو) फा. वि.–एक-से स्वभाववाले।

हमख़ूई (ہمخوئی) फा. स्त्री.–स्वभाव का एक होना।

हमख़्वाबः (ہمخوابہ) फा. स्त्री.–साथ सोनेवाली अर्थात् पत्नी, भार्या, बीवी।

हमख़्वाब (ہمخواب) फा. वि.–साथ सोनेवाला, सहशायी, अंकशायी।

हमख़्वाबी (ہمخوابی) फा. स्त्री.–साथ-साथ सोना, सहशय्या।

हमग़म (ہمغم) फा. वि.–हमदर्द, सहानुभूति करनेवाला।

हमग़मी (ہمغمی) फा. स्त्री.–सहानुभूति, हमदर्दी।

हमगाँ (ہمگاں) फा. वि.–सर्व, सब।

हमगिनाँ (ہمگناں) फा. वि.–सर्व, सब; सब आदमी।

हमगीं (ہمگیں) फा. वि.–सब, सर्व, तमाम़।

हमगी (ہمگی) फा. वि.–दे. 'हमगीं'।

हमगुरोह (ہمگروہ) फा. वि.–एक दलवाले, यौथिक।

हमगोशः (ہمگوشہ) फा. वि.–हमसायः, पड़ोसी; हमजिंस, मित्र, दोस्त।

हमचश्म (ہمچشم) फा. वि.–बराबरवाला, मित्र, दोस्त।

हमचश्मी (ہمچشمی) फा. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती, बराबरी।

हमचुनाँ (ہمچناں) फा. वि.–इतना, उसी तरह, उसी क़दर।

हमचुनीं (ہمچنیں) फा. वि.–इतना, इस क़दर।

हमचो (ہمچو) फा. वि.–समान, सदृश, तुल्य, मिस्ल।

हमज़ः (ہمزہ) अ. पुं.–पैशाचिक विचार, शैतानी वस्वसे।

हमजंब (ہمجنب) फा. अ. वि.–पास बैठनेवाला, साथी, हमपह्लू।

हमज़बाँ (ہمزباں) फा. वि.–सहमत, एक राय; एक भाषा बोलनेवाले; दोस्त, मित्र।

हमज़बानी (ہمزبانی) फा. स्त्री.–एकराय होना; एक भाषा बोलना; दोस्ती, मित्रता।

हमजमाअत (ہمجماعت) फा. अ. वि.–एक वर्गवाले, सहवर्गीय; एक कक्षा में साथ पढ़नेवाले, सहपाठी।

हम जल्सः (ہمجلسہ) फा. अ. वि.–साथ बैठने-उठनेवाले, मित्र, दोस्त।

हमज़ात (ہمذات) फा. अ. वि.–एक ज़ातवाले, सहजाति।

हमज़ाद (ہمزاد) फा. वि.–साथ पैदा होनेवाला, सहजात; एक योनि-विशेष, वेताल।

हमज़ानू (ہمزانو) फा. वि.–साथ मिलकर बैठनेवाला, पहलू से पहलू या घुटने से घुटना मिलाकर बैठनेवाला।

हमजिंस (ہمجنس) फा. अ. वि.–सजातीय, एक ज़ात का व्यक्ति।

हमजिंसी (ہمجنسی) फा. अ. स्त्री.–एक जाति का होना।

हम जिवार (ہمجوار) फा. अ. वि.–पड़ोसी, प्रतिवासी, प्रतिवेशी।

हमज़ुल्फ़ (ہمزلف) फा. पुं.–साढ़ू; दो सगी बहनों के पति।

हमज़ोर (ہمزور) फा. वि.–शक्ति में बराबर।

हमज़ौक (ہمذوق) फा. अ. वि.–एक-जैसा शौक़ रखनेवाले।

हमतंग (ہمتنگ) फा. वि.–अनुकूल, मुआफ़िक़; समान, बराबर।

हमतग (ہمتگ) फा. वि.–क़दम से क़दम मिलाकर चलनेवाला।

हमतराज़ू (ہمترازو) फा. वि.–शक्ति में बराबर; प्रतिद्वंद्वी, मुक़ाबिल।

हमतरीक़ (ہمطریق) फा. अ. वि.–एक रास्ते पर चलनेवाले, एक रास्ते के मुसाफ़िर।

हमतर्ज़ (ہمطرز) फा. वि.–एक-जैसी तर्ज़वाले।

हमतर्ह (ہمطرح) फा. अ. वि.–एक-जैसे, यकसाँ, सदृश।

हमता (ہمتا) फा. वि.–समान, तुल्य, मिस्ल।

हमताई (ہمتائی) फा. स्त्री.–समानता, सदृशता, यकसानियत।

हमताले (ہمطالع) फा. अ. वि.–एक-जैसी तक़्दीरवाले।

हमदफ़्तर (ہمدفتر) फा. वि.–एकही आफ़िस में क़ाम करनेवाले।

हमदबिस्ताँ (ہمدبستاں) फा. वि.–एक पाठशाला में साथ पढ़े हुए, सहपाठी।

हमदम (ہمدم) फा. वि.–हर समय का साथी, मित्र, दोस्त।

हमदर्द (ہمدرد) फा. वि.–दुःख-दर्द का साथी, सहानुभूति करनेवाला।

हमदर्दी (ہمدردی) फा. स्त्री.–सहानुभूति, दुःख-दर्द की शिर्कत।

हमदर्स (ہمدرس) फा. अ. वि.–साथ पढ़नेवाला, सहपाठी।

हमदस्त (ہمدست) फा. वि.–शरीक, साझी; एक-जैसा, तुल्य।

हमदस्ती (ہمدستی) फा. स्त्री.–साझा, शिर्कत; एक-जैसा होना।

हमदामाँ (ہمداماں) फा. पुं.–साढ़ू, हमज़ुल्फ़।

हमदास्ताँ (ہمداستاں) फा. वि.–वार्तालाप करनेवाला, हमकलाम।

हम दिगर (ہمدگر) फा. वि.–परस्पर, बाहम, आपस में।

हमदिल (ہمدل) फा. वि.–मित्र, दोस्त।

हमदिली (ہمدلی) फा. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती।

हमदीवार (ہمدیوار) फा. वि.–पड़ोसी, प्रतिवेशी।

हमदोश (ہمدوش) फा. वि.–बराबर-बराबर, मिल-जुलकर।

हमनफ़स (ہمنفس) फा.अ. वि.–साथी, संगी; मित्र, दोस्त।

हमनफ़सी (ہمنفسی) फा. अ. स्त्री.–मित्रता, दोस्ती; साथ, संग।

हमनबर्द (ہمنبرد) फा. वि.–प्रतिद्वंद्वी, हरीफ़।

हमनवर्द (ہمنورد) फा. वि.–दे. 'हमनबर्द'; साथ-साथ चलनेवाला, हमराही।

हमनवा (ہمنوا) फा. वि.–सहमत, एकराय।

हमनवाई (ہمنوائی) फा. स्त्री.–'मतैक्य, राय की एकता।

हमनशीं (ہمنشیں) फा. वि.–साथ बैठनेवाला, मित्र; सभासद, मुसाहिब।

हमनशीनी (ہمنشینی) फा. स्त्री.–साथ बैठना-उठना; मुसाहबत।

हमनसब (ہمنسب) फा. अ. वि.–एक वंशवाले, सहवंशीय।

हमनस्ल (ہمنسل) फा. अ. वि.–एक जातिवाले, एक गोत्रवाले, सजातीय।

हमनाम (ہمنام) फा. वि.–एक नामवाले, जिनके एक ही नाम हों, समनाम।

हमनिवालः (ہمنوالہ) फा. वि.–साथ-साथ खानेवाले।

हमपंजः (ہمپنجہ) फा. वि.–समान, बराबर; शक्ति में बराबरवाले।

हमपंजगी (ہمپنجگی) फा. स्त्री.–समानता, बराबरी; शक्ति में बराबरी।

हमपल्लः (ہمپلہ) फा. वि.–तुल्य, समान, बराबर; पद और दर्जे में बराबर।

हमपहलू (ہمپہلو) फा. वि.–पार्श्ववर्ती, पहलू में बैठनेवाला।

हमपा (ہمپا) फा. वि.–साथी, हमराही।

हमपायः (ہمپایہ) फा. वि.–दे. 'हमपल्लः'।

हमपियालः (ہمپیالہ) फा. वि.–एक प्याले में खाने-पीनेवाले।

हमपुश्त (ہمپشت) फा. वि.–सहायक, मददगार।

हमपेशः (ہمپیشہ) फा. वि.–एक ही व्यवसाय करनेवाले, सहवृत्ति, सहव्यवसायी।

हमपैमाँ (ہمپیماں) फा. वि.–एक प्रतिज्ञा में बँधे हुए।

हमपैमानः (ہمپیمانہ) फा. वि.–एक प्याले में शराब पीनेवाले, घनिष्ठ मित्र शराबी।

हमबग़ल (ہمبغل) फा. वि.–आलिंगित, बग़लगीर; पार्श्व में बैठनेवाला।

हमबज़्म (ہمبزم) फा. वि.–एक सभा में जाने-आनेवाले, एक सभा के सदस्य।

हमबाज़ (ہمباز) फा. वि.–शरीक, साझी, भागीदार।

हमबिस्तर (ہمبستر) फा. वि.–एक शय्या पर सोनेवाला (किसी के साथ); सहवास करनेवाला।

हमबिस्तरी (ہمبستری) फा. स्त्री.–किसी के साथ एक शय्या पर सोना; मैथुन करना, सहवास।

हममक्तब (ہممکتب) फा. अ. वि.–जो एक मक्तब में साथ-साथ पढ़े हों, सहपाठी, सहाध्यायी।

हममज़हब (ہممذہب) फा. अ. वि.–एक धर्म के माननेवाले, सहधर्मी।

हममज़्हबीयत (ہممذہبیت) फा. अ. स्त्री.–एक धर्मावलंबी होना।

हममर्कज़ (ہممرکز) फा. अ. वि.–जिन सबका एक केन्द्र हो, सहकेंद्र।

हममर्कज़ीयत (ہممرکزیت) फा. अ. स्त्री.–एक मर्कज़ी होना, एक केन्द्र से सम्बन्धित।

हममश्रब (ہممشرب) फा. अ. वि.–एक पंथ के अनुयायी; एक आचार-विचारवाले।

हममश्रबीयत (ہممشربیت) फा. अ. स्त्री.–एक पंथ का अनुकरण करना; एक आचार-विचार का होना।

हममा'ना (ہممعنی) फा. अ. वि.–एक अर्थवाले शब्द, पर्यायवाची, समानार्थक, एकार्थी।

हममुर्शिद (ہممرشد) फा. अ. वि.–एक धर्मगुरु के माननेवाले।

हममुल्क (ہمملک) फा. अ. वि.–एक देश के निवासी, सजनपद।

हमरंग (ہمرنگ) फा. वि.–एक-जैसे वर्णवाले, समवर्ण, एकवर्ण; एक-जैसे आचार-विचारवाले।

हमरंगी (ہمرنگی) फा. स्त्री.–एक-जैसे रंग का होना; एक-जैसे आचार-विचार का होना।

हमरहिम (ہمرحم) फा. अ. वि.–सगा, सहोदर, सोदरीय, हक़ीक़ी।

हमराए (ہمراے) फा. वि.–जिनकी राय एक हो, सहमत।

हमराज़ (ہمراز) फा. वि.–जो किसी का गुप्त भेद जानता हो, मर्मज्ञ; मित्र, दोस्त।

हमराह (ہمراہ) फा. वि.–रास्ते का साथी, साथ चलनेवाला, सहपंथी; साथ।

हमराही (ہمراہی) फा. पुं.–रास्ते में साथ चलनेवाला, सहपंथी; रस्ते में साथ चलना।

हमराहे रिकाब (ہمراہ رکاب) फा. वि.–घुड़सवार के साथ चलनेवाला; साथ चलनेवाला।

हमरिकाब (ہمرکاب) फा. वि.–दे. 'हमराहे रिकाब'।

हमरकाबी (ہمرکابی) फा. स्त्री.–साथ चलना।

हमरिश्तः (ہمرشتہ) फा. वि.–एक डोरे में पिराई हुई चीज़ें; रिश्तेदार, स्वजन; सूत्रित, संलग्न, नत्थी, मुंसलिक।

हमरिश्तगी (ہمرشتگی) फा. स्त्री.–एक डोरे में पिरोया हुआ होना; रिश्तेदारी; नत्थी होना, संलग्न होना।

हमरुत्बः (ہمرتبہ) फा. अ. वि.–एक-जैसे पदवाले, एक श्रेणीवाले।

हमरोज़ः (ہمروزہ) फा. वि.–उसी दिन, उसी रोज़; उसी दिन का।

हमल (حمل) अ. पुं.–भेड़ या बकरी का बच्चा; मेष राशि, बुर्जे हमल।

हमवज़्न (ہموزن) फा. अ. वि.–तौल में बराबर, समतुलित; छंद की मात्राओं के हिसाब से बराबर; समान, तुल्य, मिस्ल।

हमवतन (ہموطن) फा. अ. वि.–एक नगर के रहनेवाले; एक देश के रहनेवाले।

हमवतनी (ہموطنی) अ. फा. स्त्री.–एक नगर या देश का निवास।

हमवारः (ہموارہ) फा. वि.–सदा, सर्वदा, हमेशा; निरंतर, लगातार।

हमवार (ہموار) फा. वि.–समतल, चौरस; अंगीकृत, राज़ी।

हमशक्ल (ہمشکل) फा. अ. वि.–एक-जैसी शक्लवाले, एकरूप, अनुरूप, तद्रूप, समाकार।

हमशक्ली (ہمشکلی) फा. अ. स्त्री.–रूप की समानता, एक-जैसा होना, एकरूपता, तद्रूपता, रूप-सादृश्य।

हमशबीह (ہمشبیہ) फा. अ. वि.–दे. 'हमशक्ल'।

हमशीरः (ہمشیرہ) फा. स्त्री.–भगिनी, सहोदरा, स्वसा, बहन।

हमशीर (ہمشیر) फा. स्त्री.–दे. 'हमशीरः'।

हमशीरज़ादः (ہمشیرزادہ) फा. पुं.–बहन का लड़का, भानजा, भगिनीसुत, भागिनेय।

हमशोए (ہمشوے) फा. स्त्री.–एक शौहरवाली स्त्रियाँ, वह स्त्रियाँ जिनका पति एक हो।

हमशौहर (ہمشوہر) फा. स्त्री.–दे. 'हमशोए'।

हमसंग (ہمسنگ) फा. वि.–हम वज़्न, बराबर, तुल्य, समान।

हमसफ़र (ہمسفر) फा. अ. वि.–यात्रा का साथी, सहपंथी, सहप्रयायी।

हमसफ़री (ہمسفری) फा. अ. स्त्री.–यात्रा में साथ होना, सफ़र का साथ।

हमसफ़ीर (ہمصفیر) फा. अ. वि.–बाग़ में साथ चहचहानेवाली चिड़ियाँ; मित्र, दोस्त।

हमसफ़्रः (ہمسفرہ) फा. अ. वि.–एक ही दस्तरख़्वान् पर खाना खानेवाले, घनिष्ठ मित्र।

हमसबक़ (ہمسبق) फा. अ. वि.–साथ पढ़नेवाले, सहपाठी।

हमसर (ہمسر) फा. वि.–बराबर, समान।

हमसरी (ہمسری) फा. स्त्री.–समानता, बराबरी; उद्दंडता, अक्खड़पन।

हमसाज़ (ہمساز) फा. वि.–मित्र, दोस्त।

हमसायः (ہمسایہ) फा. पुं.–प्रतिवासी, पड़ोसी, प्रतिवेशी।

हमसायगी (ہمسایگی) फा. स्त्री.–पड़ोस, प्रतिवास।

हमसाल (ہمسال) फा. वि.–एक ही सन की पैदाइश, समसामायिक, हमउम्र।

हमसिन (ہمسن) फा. अ. वि.–समवयस्क, वयःस्थ, समसामयिक, एक उम्रवाले।

हमसिनी (ہمسنی) फा. अ. स्त्री.–उम्र की बराबरी, सवयस्कता।

हमसिल्क (ہمسلک) फा. अ. पुं.–समधी, दूल्हा और दुल्हन के बाप आपस में।

हमसुख़न (ہمسخن) फा. वि.–साथ-साथ बातें करनेवाले; साथ-साथ कविता करनेवाले।

हमसुख़नी (ہمسخنی) फा. स्त्री.–परस्पर वार्तालाप करना; साथ-साथ क़विता करना।

हमसुहबत (ہمصحبت) फा. अ. वि.–सहवास करनेवाला, हमबिस्तर; पास बैठने-उठनेवाला, सभासद।

हमसूरत (ہمصورت) फा. अ. वि.–दे. 'हमशक्ल'।

हमसौत (ہمصوت) फा. अ. वि.–जिनकी आवाज़ एक-सी हो, हमआवाज़।

हमहमः (ہمہمہ) फा. पुं.–शेर की दहाड़, सिंह-गर्जन; आतंक, धाक; ज़ोर-शोर, धूमधाम।

हमाँ (ہماں) फा. वि.–वही; वह।

हमाँदम (ہماں دم) फा. अव्य.–उसी समय, तत्क्षण, उसी वक़्त।

हमाइद (حمائد) अ. पुं.–'हमीदः' का बहु., अच्छांइयाँ, ख़ूबियाँ।

हमाइल (حمائل) अ. स्त्री.–बग़ल में लटकाने की चीज़; छोटा क़ुरान; गरदन में पड़ा हुआ हाथ।

हमाक़त (حماقت) अ. स्त्री.–मूर्खता, मूढ़ता, निर्बुद्धता, बेवक़ूफ़ी; अज्ञान, जहालत।

हमाक़तआगीं (حماقت آگیں) अ. फ़ा. वि.–मूर्खतापूर्ण, बेवक़ूफ़ी से भरा हुआ।

हमाक़तआमेज़ (حماقت آمیز) अ. फा. वि.–दे. 'हमाक़तआगीं'।

हमाक़तमआब (حماقت معاب) अ. वि.–बहुत बड़ा मूर्ख, जिसकी सारी बातें ही बेवक़ूफ़ी की होती हों।

हमाक़तशिआर (حماقت شعار) अ. वि.–महामूर्ख, बहुत बड़ा बेवक़ूफ़।

हमाना (ہمانا) फा. अव्य.–निश्चित, यक़ीनी; कदाचित्, शायद; मानो, गोया, जैसे।

हमामः (حمامہ) अ. पुं.–हर वह पक्षी जिसके गले में कंठी हो; कबूतर, कपोत।

हमाम (حمام) अ. पुं.–कपोत, पारावत, कबूतर।

हमारः (ہمارہ) फा. पुं.–अनुमान, अंदाज़ा; संतत, सदा, हमेशा।

हमासत (حماست) अ. स्त्री.–वीरता, शूरता, शौर्य, बहादुरी।

हमाल (ہمال) अ. वि.–सदृश, समान, तुल्य, मिस्ल।

हमीं (ہمیں) फा. वि.–यही; यह।

हमीदः (حمیدہ) अ. वि.–साध्वी, पुनीता, पवित्रा, पूज्या, श्रेष्ठा और उत्तमा स्त्री।

हमीद (حمید) अ. वि.–पुनीत, सदाचारी; प्रशंसित, सराहनीय।

हमीम (حمیم) अ. वि.–गर्म, उष्ण; गर्म पानी, उष्ण जल; स्वजन, रिश्तेदार; जिसे ज्वर हो।

हमीयत (حمیت) अ. स्त्री.–लज्जा, लाज, ग़ैरत; स्वाभिमान, ख़ुददारी।

हमीर (حمیر) अ. पुं.–'हिमार' का बहु., गधे।

हमेशः (ھمیشہ) फा. वि.–सर्वदा, सदा; नित्य, हर वक़्त; निरंतर, लगातार; अधिकतर, प्रायः।

हमेशः पा (ھمیشہ پا) फा. वि.–हमेशा रहनेवाला, बारहमासी।

हमेशगी (ھمیشگی) फा. स्त्री.–नित्यता; निरंतरता; सदवता।

हम्ज़ः (حمزہ) अ. पुं.–शेर, सिंह, व्याघ्र।

हम्ज़ः (ھمزہ) अ. स्त्री.–अरबी का अलिफ़ जिस पर ज़बर, ज़ेर या पेश हो।

हम्ज़ (ھمز) अ. पुं.–निचोड़ना; आँख मारना।

हम्द (حمد) अ. स्त्री.–प्रशंसा, तारीफ़; ईश्वर की स्तुति, ख़ुदा की तारीफ़।

हम्दगो (حمدگو) अ. फा.–ईश्वर की वंदना और स्तुति करनेवाला।

हम्दसरा (حمدسرا) अ. फा. वि.–ईश्वर का गुणगान करनेवला, स्तुति-पाठक।

हम्दसराई (حمدسرائی) अ. फा. स्त्री.–ईश्वर की स्तुति करना।

हम्दूनः (حمدونہ) फा. पुं.–कपि, मर्कट, वानर, बंदर।

हम्दून (حمدون) फा. पुं.–शिश्न, मेहन, लिंग, केर।

हम्माम (حمام) अ. पुं.–स्नागार, गुस्लख़ाना; वह गुस्लख़ाना जिसमें गर्म कमरे हों और नहलानेवाले शरीर मलते और मैल छुड़ाते हों।

हम्मामी (حمامی) अ. वि.–गर्म हम्माम के अन्दर नहलाने और देह मलनेवाला।

हम्माल (حمال) अ. पुं.–बोझ ढोनेवाला, भार-वाहक।

हम्माली (حمالی) अ. स्त्री.–बोझ ढोने का काम, मज़दूरी।

हम्रा (حمرا) अ. वि.–लाल रंग की स्त्री, ख़ूब गोरी स्त्री।

हम्लः (حملہ) अ. पुं.–आघात, चोट, वार; आक्रमण, सेना का हम्ला; चढ़ाई, युद्धयात्रा।

हम्लःआवर (حملہآور) अ. फा. वि.–आक्रमणकारी, हम्ला करनेवाला, आक्रामक।

हम्लःआवरी (حملہآوری) अ. फा. स्त्री.–आक्रमण करना, चढ़ाई करना, धावा बोलना।

हम्लःगीरी (حملہگیری) अ. फा. स्त्री.–शत्रु के आक्रमण को सहन करना, हम्ला बरदाश्त करना।

हम्लःवर (حملہور) अ. फ़ा. वि.–दे. ‘हम्लःआवर’।

हम्लःवरी (حملہوری) अ. फा. स्त्री.–दे. ‘हम्लःआवरी’।

हम्ल (حمل) अ. पुं.–बोझ उठाना; बोझ, भार; विचार, ख़याल; भारित, मह्मूल; गर्भ, पेट।

हम्स (ھمس) अ. स्त्री.–नर्म आवाज़, कोमल और मृदुल ध्वनि।

हया (حیا) अ. स्त्री.–लज्जा, व्रीड़ा, शर्म।

हयात (حیات) अ. स्त्री.–जीवन, ज़िंदगी।

हयातीन (حیاتین) अ. पुं.–विटैमिन, जीवति।

हयाते फ़ानी (حیات فانی) अ. स्त्री.–नष्ट होनेवाला जीवन, नश्वर प्राण।

हयाते मुस्तआर (حیات مستعار) अ. स्त्री.–थोड़े दिनों का जीवन, अस्थायी ज़िंदगी।

हयातोममात (حیات و ممات) अ. स्त्री.–जीवन-मरण, मौत और ज़िंदगी।

हयादार (حیادار) अ. फा. वि.–जिसमें लज्जा हो, लज्जाशील, लज्जाशालीन।

हयापर्वर (حیاپرور) अ. फा. वि.–लज्जावान्, लज्जाशील, हयादार।

हयारफ़्तः (حیارفتہ) अ. फा. वि.–विगतलज्ज, बेहया, जिसकी लज्जा चली गयी हो।

हयासोज़ (حیاسوز) अ. फा. वि.–लज्जाजनक, घृणित, घिनावना।

हर[रं] (حر) अ. स्त्री.–गर्मी, उष्णता; ताप, हरारत।

हर (ھر) फा. वि.–सब कोई, हरेक।

हर आँकि (ھر آنکہ) फा. अव्य.–जो कोई, जो व्यक्ति।

हर आँचे (ھر آنچہ) फा. अव्य.–जो चीज़।

हर आइनः (ھر آئینہ) फा. अव्य.–अवश्य, ज़रूर; विवशतापूर्वक, नाचार; निःसंदेह, बेशक।

हरक़ (حرق) अ. पुं.–अग्नि, आग, आतश।

हरकत (حرکت) अ. स्त्री.–गति, चाल; बुरा काम, बदमआशी।

हरकते मज़्बूही (حرکت مذبوحی) अ. स्त्री.–बुरी हरकत, नुक़्सान पहुँचानेवाली हरकत।

हरकात (حرکات) अ. स्त्री.–‘हरकत’ का बहु., हरकतें।

हरकारः (ھرکارہ) फा. पुं.–डाक ले जानेवाला, एक जगह से दूसरी जगह चिट्ठी आदि पहुँचानेवाला, धावक।

हर कसो नाकस (ھر کس و ناکس) फा. वि.–हर कोई, छोटे-बड़े सब, अच्छे-बुरे सब।

हर कुजा (ھر کجا) फा. वि.–हर जगह, हर स्थान पर; जिस जगह, जहाँ।

हरगह (ھرگہ) फा. वि.–‘हरगाह’ का लघु., दे. ‘हरगाह’।

हरगाह (ھرگاہ) फा. वि.– हर समय; जिस समय।

हरगिज़ (ھرگز) फा. अव्य.–कदापि, कभी नहीं।

हरचंद (ھرچند) फ़ा. अव्य.–जितना कुछ, जिस क़दर;

कितना ही, कितना भी; यद्यपि, अगरचे, उदा०—"है वह ग़ुरूरे हुस्न से बेगानए वफ़ा। हरचंद उसके पास दिले हक़शनास है।"—ग़ालिब।

हरचे (ہرچہ) फा. अव्य.—जो कुछ।

हरचे बादाबाद (ہرچہ باداباد) फा. वा.—जो हो सो हो।

हरज (ہرج) अ. पुं.—हानि, नुक़्सान; उपद्रव, गड़बड़।

हर जा (ہر جا) फा. वि.—हर जगह, हर स्थान पर।

हरजाई (ہرجائی) फा. वि.—हर जगह पहुँचनेवाला (वाली); हरेक के पास रहनेवाली स्त्री, कुलटा, व्यभिचारिणी।

हरदम (ہردم) फा. वि.—हर समय, हर वक़्त; निरंतर, लगातार; नित्य, हमेशा।

हरदमख़याल (ہردمخیال) फा. वि.—ऐसा आदमी जो समय-समय पर अपनी राय बदले, विषमशील, अनेकचित्त।

हरदिलअज़ीज़ (ہردلعزیز) फा. अ. वि.—जिसे सब पसंद करें, सर्वप्रिय, लोकप्रिय।

हरदो (ہردو) फा. वि.—दोनों, उभय।

हरदोसरा (ہردوسرا) फा. स्त्री.—उभयलोक, संसार और परलोक।

हरनफ़स (ہرنفس) फा. अ. वि.—हरदम, हरवक़्त।

हरनौई (ہرنوعی) फा. अ. वि.—हर प्रकार का, हर तरह का।

हरब (ہرب) अ. पुं.—बहुत अधिक दुःख; पलायन, भागना।

हरबाबी (ہربابی) फा. वि.—सर्वज्ञ, सब कुछ जाननेवाला।

हरबार (ہر بار) फा. वि.—हर दफ़ा, हर मर्तबा।

हरम (حرم) अ. पुं.—का'बा, ख़ुदा का घर; मक्के के आसपास का क्षेत्र जिसके अंदर किसी प्राणी की हिंसा करना महापाप है; श्रेष्ठ जनों के घर की स्त्रियाँ; अंतःपुर, ज़नानख़ाना; वह बाँदी जिसे पत्नी बना लिया गया हो।

हरम (ہرم) अ. पुं.—प्राचीन इमारत; गुंबद; बुढ़ापा, जरा।

हरमख़ानः (حرمخانہ) अ फा. पुं.—दे. 'हरम सरा'।

हरमगाह (حرمگاہ) अ. फा. स्त्री.—दे. 'हरम सरा'।

हरम सरा (حرم سرا) अ. फा. स्त्री.—बड़े आदमियों का ज़नानख़ाना, अंतःपुर।

हरमाहः (ہرماہہ) फा. वि.—हर महीने होनेवाला।

हरमैन (حرمین) अ. पुं.—दोनों हरम अर्थात् मक्का और मदीना।

हरयक (ہریک) फा. वि.—हर एक, हर कोई।

हररोज़ः (ہرروزہ) फा. वि.—हर दिन होनेवाला; हर दिन का।

हरलम्हः (ہرلمحہ) फा. अ. वि.—हर क्षण, प्रति क्षण।

हरवक़्त (ہروقت) फा. अ. वि.—हर समय, हर दम; निरंतर, लगातार।

हरशबः (ہرشبہ) फा. वि.—हर रात का; हर रात को होनेवाला।

हरस (حرس) अ. पुं.—शाही ज़नानख़ाने का संरक्षक, अंतःपुरिक; बहुत अधिक समय।

हरसालः (ہرسالہ) फा. वि.—हर वर्ष होने या पानेवाला; हर साल का।

हर सू (ہر سو) फा. वि.—हर तरफ़, चारों ओर, चहुँओर, चारों तरफ़।

हरहफ़्त (ہرہفت) प्रा. स्त्री.—औरतों के सिंगार की सात वस्तुएँ (ईरानी); वस्यः; मेंहदी; गूलगूनः; सफ़ेदाब; ज़रक; ग़ालियः; सुर्मः;—हिंदी; वस्त्र; आभूषण; मेहदी; सुर्मा; पान; मिस्सी; बालों की सजावट।

हराज (حراج) अ. पुं.—नीलाम।

हराम (حرام) अ. पुं.—जिसका खान-पान धर्म में वर्जित हो, अविहित; व्यभिचार, परस्त्री अथवा परपुरुष गमन, ज़िना; प्रतिष्ठित, पूज्य, मुक़द्दस।

हरामकार (حرامکار) अ. फा. वि.—व्यभिचारी, लंपट, परस्त्रीगामी, ज़ानी।

हरामकारी (حرامکاری) अ. फा. स्त्री.—व्यभिचार, परस्त्रीगमन, ज़िना।

हरामख़ोर (حرامخور) अ. फा. वि.—मेहनत न करके मुफ़्त का खानेवाला; कामचोर; कृतघ्न, नमकहराम।

हरामख़ोरी (حرامخوری) अ. फा. स्त्री.—मुफ़्त का खाना; कामचोरी करना; कृतघ्नता, नमकहरामी।

हरामज़ादः (حرامزادہ) अ. फा. वि.—हराम का बच्चा, दोग़ला, जारज, वर्ण-संकर; धूर्त, ख़बीस।

हरामज़ादगी (حرامزادگی) अ. फा. स्त्री.—दोग़लापन; धूर्तता, ख़बासत।

हरामतोशः (حرامتوشہ) अ. फा. वि.—नमकहराम, कृतघ्न।

हराममग़ज़ (حراممغز) अ. पुं.—रीढ़ की हड्डी का गूदा।

हरामसूरत (حرامصورت) अ. वि.—सूरतहराम, जो कुछ करे धरे नहीं और मुफ़्त में खाना चाहे; पाजी, कमीना।

हरामी (حرامی) अ. वि.—दोग़ला, जारज, संकर।

हरामुद्दहर (حرامالدہر) अ. वि.—ख़बीस, दुष्टात्मा, बहुत ही पाजी, धूर्त, एक गाली।

हरारः (حرارہ) अ. पुं.—दे. 'हरारत'।

हरारत (حرارت) अ. स्त्री.—उष्णता, गर्मी; हलका ज्वर, हलका बुख़ार।

हरारते ग़रीज़ी (حرارت غریزی) अ. स्त्री.—शरीर के भीतर

की वह गर्मी जिससे शरीर के सारे कल-पुर्ज़े ठीक-ठीक काम करते हैं, प्राणाग्नि।

हरारते ग़रीबी (حرارت غریبی) अ. स्त्री.–दे. 'हरारतें ग़ैरतब्ई'।

हरारते ग़ैरतब्ई (حرارت غیرطبعی) अ. स्त्री.–शरीर के भीतर की अप्राकृतिक गर्मी, जैसे—ज्वर आदि की गर्मी।

हरारते तबई (حرارت طبعی) अ. स्त्री.–दे. 'हरारते ग़रीज़ी' प्राकृतिक गर्मी।

हरिक़ (حرق) अ. वि.–दग्ध, जला हुआ; जलन, तपन।

हरिम (حرم) अ. पुं.–जरित, वृद्ध, बूढ़ा।

हरीक़ (حریق) अ. वि.–दग्ध, जला हुआ; ताप, जलन।

हरीफ़ (حریف) अ. पुं.–जिससे मुक़ाबला हो, प्रतिद्वंद्वी; शत्रु, दुश्मन; जिससे लाग-डाँट हो; रक़ीब एक नायिका के दो प्रेमी परस्पर, प्रतिनायक।

हरीफ़ानः (حریفانہ) अ. फा. वि.–हरीफ़ों-जैसा; प्रति द्वंद्वियों-जैसा; शत्रुओं-जैसा; रक़ीबों-जैसा।

हरीफ़े मुक़ाबिल (حریف مقابل) अ. पुं.–जिससे मुक़ाबला हो, जिससे होड़ हो, जिससे लड़ाई हो।

हरीम (حریم) अ. पुं.–घर की चारदीवारी, प्राचीर; घर, मकान, भवन, प्रासाद।

हरीमे किब्रिया (حریم کبریا) अ. पुं.–अर्श, वह स्थान जहाँ ईश्वर का सिंहासन है।

हरीमे क़ुद्स (حریم قدس) अ. पुं.–अर्श।

हरीमे नाज़ (حریم ناز) अ. फा. पुं.–दे. 'हरीमे यार'।

हरीमे यार (حریم یار) अ. फा. पुं.–प्रेमिका का घर।

हरीरः (حریرہ) अ. पुं.–एक मीठा पेय, आटा, शकर, मेवा और घी से बना हुआ पतला लपटा।

हरीर (حریر) अ. पुं.–एक रेशमी और बारीक कपड़ा।

हरीश (حریش) अ. स्त्री.–एक पतला कीड़ा, कनसलाई।

हरीसः (ہریسہ) अ. पुं.–एक प्रकार का पतला लपटा।

हरीस (حریص) अ. वि.–लोलुप, लोभी, लिप्सु, लालची।

हर्क़ (حرق) अ. पुं.–जलना।

हर्कत (حرکت) अ. स्त्री.–दे. 'हरकत' शुद्ध वही है, परंतु यह भी बोलते हैं।

हर्जः (ہرجہ) फा. पुं.–तावान, क्षतिपूर्ति, हरजाना।

हर्ज़ः (ہرزہ) फा. पुं.–व्यर्थ, अनर्गल, बेहूदा।

हर्ज़ःकार (ہرزہکار) फा. वि.–व्यर्थ के और फ़ुज़ूल के काम करनेवाला, व्यर्थकारी।

हर्ज़ःकारी (ہرزہکاری) फा. स्त्री.–व्यर्थ के काम करना।

हर्ज़ःगर्द (ہرزہگرد) फा. वि.–व्यर्थ में इधर-उधर मारा-मारा फ़िरनेवाला, व्यर्थ भ्रमी।

हर्ज़ःगर्दी (ہرزہگردی) फा. स्त्री.–व्यर्थ और बेकार में घूमना फिरना।

हर्ज़ःगो (ہرزہگو) फा. वि.–व्यर्थ की और निःसार बातें करनेवाला, अनर्गलवादी।

हर्ज़ःगोई (ہرزہگوئی) फा. स्त्री.–व्यर्थ की बातें करना।

हर्ज़ःगोश (ہرزہگوش) फा. वि.–व्यर्थ की बातें सुनने में समय गँवानेवाला।

हर्ज़ःचानः (ہرزہچانہ) फा. वि.–दे. 'हर्ज़ः गो'।

हर्ज़ःदवी (ہرزہدوی) फा. स्त्री.–व्यर्थ में इधर-उधर भागना, व्यर्थ का प्रयास करना।

हर्ज़ःदिरा (ہرزہدرا) फा. वि.–दे. 'हर्ज़ःगो'।

हर्ज़ःदिराई (ہرزہدرائی) फा. स्त्री.–दे. 'हर्ज़ःगोई'।

हर्ज़ःला (ہرزہلا) फा. वि.–दे. 'हर्ज़ःगो'।

हर्ज़ःसरा (ہرزہسرا) फा. वि.–दे. 'हर्ज़ःगो'।

हर्ज़ःसराई (ہرزہسرائی) फा. स्त्री.–दे. 'हर्ज़ःगोई'।

हर्जमर्ज (ہرج مرج) फा. पुं.– उपद्रव, गड़बड़, दंगा।

हर्जानः (ہرجانہ) फा. पुं.–वह धन जो किसी हानि की पूर्ति के लिए दिया जाय, तावान।

हर्फ़ (حرف) अ. पुं.–अक्षर, वर्ण; बात, शब्द; दोष, ऐब, बुराई; (व्या.) अव्यय।

हर्फ़अंदाज़ (حرف انداز) अ. फा. वि.–धूर्त, वंचक, चालाक।

हर्फ़अंदाज़ी (حرف اندازی) अ. फा. स्त्री.–धूर्तता, छल, चालाकी, फ़रेब।

हर्फ़आशना (حرف آشنا) अ. फा. वि.–बहुत कम पढ़ा-लिखा जो अटक-अटककर उलटा-सीधा पढ़नेवाला।

हर्फ़गीर (حرف گیر) अ. फा. वि.–आलोचना क़रनेवाला, ऐब निकालनेवाला, छिद्रान्वेषी।

हर्फ़गीरी (حرف گیری) अ. फा. स्त्री.–आलोचना, ऐब-जोई, छिद्रान्वेषण।

हर्फ़ज़न (حرف زن) अ. फा. वि.–बात करनेवाला, बातें करता हुआ।

हर्फ़ज़नी (حرف زنی) अ. फा. स्त्री.–बातें करना, वार्तालाप करना।

हर्फ़न हर्फ़न (حرفاً حرفاً) अ. वि.–अक्षरशः, एक-एक हर्फ़ करके, पूरा-पूरा, विस्तारपूर्वक।

हर्फ़नाआश्ना (حرف ناآشنا) अ. फा. वि.–अशिक्षित, बे पढ़ा-लिखा।

हर्फ़ बहर्फ़ (حرف بہ حرف) अ. फा. वि.–दे. 'हर्फ़न हर्फ़न'।

हर्फ़शनास (حرف شناس) अ. फा. वि.–केवल अक्षर जाननेवाला, बहुत कम पढ़ा-लिखा।

हर्फ़शनासी (حرف شناسی) अ. फा. स्त्री.–केवल अक्षरों का ज्ञान, बहुत कम पढ़ा होना।

हर्फ़ी (حرفی) अ. वि.–अक्षरवाला; अक्षर का; अक्षर-सम्बन्धी।

हर्फ़े अत्फ़ (حرف عطف) अ. पुं.–वह अक्षर जो दो शब्दों को परस्पर मिलाने के लिए उनके बीच में आये, जैसे—रोज़ोशब (रोज़ व शब) में 'वाव'।

हर्फ़े आख़िर (حرف آخر) अ. पुं.–आख़िरी बात, अंतिम निर्णय; अटल बात, पक्की बात।

हर्फ़े इज़ाफ़त (حرف اضافت) अ. पुं.–दो शब्दों के सम्बन्ध के लिए बीच में आनेवाला अव्यय, जैसे—'राम का घोड़ा' में 'का'।

हर्फ़े इल्लत (حرف علت) अ. पुं.–उर्दू में अलिफ़, वाव और ये, हिंदी में 'स्वर', इंगलिश में 'वावेल'।

हर्फ़े इस्तिद्राक (حرف استدراک) अ. पुं.–वह अव्यय जो प्रश्नवाचक हो।

हर्फ़े इस्तिस्ना (حرف استثنا) अ. पुं.–वह अव्यय जिससे कोई मुस्तस्ना बनता हो, जैसे–"सब आ गए मगर राम" में मगर।

हर्फ़े क़मरी (حرف قمری) अ. पुं.–दे. 'हुरूफ़े क़मरी'।

हर्फ़े ग़लत (حرف غلط) अ. पुं.–वह अक्षर जो अशुद्ध हो और जिसका मिटाना अनिवार्य हो, जैसे—हर्फ़े-ग़लत की तर्ह मुझे क्यों मिटा दिया? झूठी बात।

हर्फ़े जर (حرف جر) अ. पुं.–इज़ाफ़त देनेवाला अव्यय।

हर्फ़े तंबीह (حرف تنبیہ) अ. पुं.–चेतावनी देनेवाली बात।

हर्फ़े तर्दीद (حرف تردید) अ. पुं.–खंडन करनेवाला कथन।

हर्फ़े तश्बीह (حرف تشبیہ) अ. पुं.–वह शब्द जो उपमा के लिए आये, जैसे—समान, तुल्य, सदृश।

हर्फ़े ताकीद (حرف تاکید) अ. पुं.–दे. 'हर्फ़े तंबीह'।

हर्फ़े नफ़ी (حرف نفی) अ. पुं.–वह शब्द जो 'न' के अर्थ में आये।

हर्फ़े निदा (حرف ندا) अ. पुं.–वह शब्द जिससे सम्बोधन किया जाय।

हर्फ़े नुद्बः (حرف ندبہ) अ. पुं.–वह शब्द या अव्यय जो विलाप के लिए बोला जाय, जैसे—हाय, आह।

हर्फ़े मत्लब (حرف مطلب) अ. पुं.–मतलब की बात, उद्देश्य, आशय।

हर्फ़े मुकर्रर (حرف مکرر) अ. पुं.–दुबारा आया हुआ शब्द, दो बार कही हुई बात।

हर्फ़े वस्ल (حرف وصل) अ. पुं.–दो शब्दों को जोड़नेवाला अक्षर।

हर्फ़े शम्सी (حرف شمسی) अ. पुं.–दे. 'हुरूफ़े शम्सी'।

हर्फ़े सहीह (حرف صحیح) अ. पुं.–सच्ची बात; व्यंजन, वह अक्षर जो स्वर न हो, वह हर्फ़ जो हर्फ़े इल्लत न हो।

हर्फ़ोहिकायत (حرف وحکایت) अ. स्त्री.–कथोपकथन, वार्तालाप, बातचीत।

हर्बः (حربہ) अ. पुं.–अस्त्र, शस्त्र, हथियार; आक्रमण, आघात, वार; साँग, शक्ति।

हर्ब (حرب) अ. पुं.–युद्ध, संग्राम, समर, लड़ाई, जंग।

हर्बगाह (حربگاہ) अ. फा. स्त्री.–युद्धक्षेत्र, रणस्थल, मैदाने जंग।

हर्बी (حربی) अ. वि.–युद्ध सम्बन्धी; सैनिक, जंगी।

हर्बोज़र्ब (حرب و ضرب) अ. पुं.–मारकाट, लड़ाई-झगड़ा, ख़ून-ख़राबा।

हर्राफ़ः (حرافہ) अ. स्त्री.–बहुत अधिक बातूनी स्त्री; कुलटा, भ्रष्टा, असाध्वी, धूर्ता।

हर्राफ़ (حراف) अ. वि.–वाचाल, मुखर, बातूनी, लस्सान; धूर्त, चालाक।

हरास (حراث) अ. वि.–कृषक, किसान, काश्तकार।

हर्स (حرث) अ. पुं.–कृषि, खेती, काश्त।

हर्स (حرس) अ. पुं.–हिरासत, पकड़, निगरानी।

हल [ल्ल] (حل) अ. पुं.–समाधान, सुलझाव; घुल जाना, विलयन; मुअम्मे के रिक्त स्थानों की पूर्ति; सुगमता, सरलता, आसानी।

हलकः (هلکہ) हालिक का बहु., मरनेवाले, हत होनेवाले, हलाक होनेवाले।

हलक (حلک) अ. स्त्री.–गहरी कालिमा, गहरी सियाही।

हलब (حلب) अ. पुं.–ताज़ा दुहा हुआ दूध; एक प्रसिद्ध नगर जहाँ का दर्पण प्रसिद्ध है (शाम)।

हलबी (حلبی) अ. वि.–हलब का निवासी; हलब सम्बन्धी; हलब का बना हुआ।

हलमः (حلمہ) अ. स्त्री.–भिटनी, वृंत, स्तनवृंत, स्तनाग्र, पुरश्छद।

हलाइल (حلائل) अ. स्त्री.–'हलील:' का बहु., ब्याहता पत्नियाँ।

हलाक (هلاک) फा. वि.–हत, मक़्तूल, वधित; किसी घटना में मरा हुआ, जैसे—रेल की टक्कर में या महामारी में।

हलाकख़ोर (هلاک خور) फा. वि.–मृतपशु का मांस खानेवाला।

हलाकत (هلاکت) फा. स्त्री.–किसी घटना में मरना; क़त्ल होना, वध।

हलाकू (هلاکو) तु. पुं.–दे. 'हुलाकू', वही शुद्ध है।

हलालः (حلالہ) अ. पुं.–तलाक़ की एक क़िस्म जिसमें

स्त्री को दूसरे व्यक्ति से व्याह करना पड़ता है और उसके तलाक़ देने पर पहले पति से ब्याह कर सकती है।

हलाल (حلال) अ. वि.–विहित, जाइज़, जिसका खाना और पीना धर्म में वर्जित न हो; ज़ब्ह किया हुआ, ज़बीहः।

हलालख़ोर (حلال‌خور) अ. फा. पुं.–मेहतर, भंगी।

हलालज़ादः (حلال‌زادہ) अ. फा. पुं.–जो शुद्ध औरस से हो, कुलीन।

हलावत (حلاوت) अ. स्त्री.–माधुर्य, मिठास, शीरीनी, "ज़ाहिरा बेरुख़ी है ख़्वाब में छुपकर मिलना—क्या हलावत से भरा तर्ज़ है तड़पाने का।"

हलावतचश (حلاوت‌چش) अ. फा. वि.–मिठास चखनेवाला, स्वाद लेनेवाला, आनन्द उठानेवाला।

हलावतपसंद (حلاوت‌پسند) अ. फा. वि.–जिसे मिठास प्रिय लगती हो, मिठाई अधिक खानेवाला।

हलावते ज़बाँ (حلاوت‌زباں) अ. फा. स्त्री.–बातों का रस; भाषा की मधुरता; कविता का रस और घुलावट।

हलावते सुख़न (حلاوت‌سخن) अ. फा. स्त्री.–बातों की मिठास, वतरस, वार्ता माधुर्य; काव्य-माधुर्य, शाइरी का रस।

हलाहिल (ہلاہل) अ. वि.–कालकूट, हलाहल, बहुत ही तीव्र और प्रचंड विष।

हलीफ़ (حلیف) अ. वि.–जिसने किसी के साथ किसी बात की शपथ ली हो; मित्र, दोस्त।

हलीब (حلیب) अ. पुं.–ताज़ा दूध, कच्चा दूध।

हलीमः (حلیمہ) अ. स्त्री.–सहनशीला, गंभीर स्त्री; वह जिसने हज़्रत मुहम्मद साहब को दूध पिलाया था।

हलीम (حلیم) अ. वि.–सहनशील, गंभीर, मतीन, बुर्दबार; एक खाना, खिचड़ी।

हलीमुत्तब्अ (حلیم‌الطبع) अ. वि.–जो प्रकृति से सहिष्णु और गंभीर हो।

हलीलः (حلیلہ) अ. स्त्री.–विवाहिता, पत्नी, भार्या।

हलील (حلیل) अ. पुं.–पति, स्वामी, शौहर; प्रतिवासी, पड़ोसी; एक ही घर में रहनेवाला, सहनिवासी।

हलैलः (ہلیلہ) अ. पुं.–हड़, हरीतकी, एक फल जो दवा में काम आता है।

हल्क़ः (حلقہ) अ. पुं.–परिधि, मंडल, घेरा; मंडली, समुदाय, जमाअत; क्षेत्र, प्रक्षेत्र, इलाक़ा।

हल्क़ःनुमा (حلقہ‌نما) अ. फा. वि.–गोलाकार, गोल।

हल्क़दरगोश (حلقہ‌درگوش) अ. फा. वि.–दे. 'हल्क़ःबगोश'

हल्क़ःबगोश (حلقہ‌بگوش) अ. फा. वि.–जिसके कान में दासता का कुंडल पड़ा हो, दास; भक्त, श्रद्धालु, अनुयायी, बहुत अधिक श्रद्धा रखनेवाला।

हल्क़ (حلق) अ. पुं.–कंठ, गला; बाल मुँडना, मुंडन।

हल्क़ए अइज़्ज़ः (حلقۂ اعزہ) अ. पुं.–रिश्तेदारों की जमाअत, बंधुवर्ग।

हल्क़ए अह्बाब (حلقۂ احباب) अ. पुं.–दोस्तों का हल्क़ा, मित्र-मंडली, मित्रवर्ग, मित्रगण।

हल्क़ए आग़ोश (حلقۂ آغوش) अ. फा. पुं.–हाथों से बनाया हुआ आलिंगन के लिए घेरा, भुज-बंधन।

हल्क़ए इरादत (حلقۂ ارادت) अ. पुं.–अनुयायियों की मंडली, भक्तगण।

हल्क़ए गिर्दाब (حلقۂ گرداب) अ. फा. पुं.–भँवर, जलावर्त।

हल्क़ए चश्म (حلقۂ چشم) अ. फा. पुं.–आँख का घेरा, नेत्र-मंडल, नेत्र-गोलक।

हल्क़ए ज़ंजीर (حلقۂ زنجیر) अ. फा. पुं.–ज़ंजीर की कड़ी, शृंखला का छल्ला।

हल्क़ए दर (حلقۂ در) अ. फा. पुं.–दरवाज़े की कुंडी, किवाड़ों की जंज़ीर।

हल्क़ए मक़्अद (حلقۂ مقعد) अ. पुं.–गुदावर्त, गुदाद्वार, मब्रज़ का मुँह।

हल्क़ए माह (حلقۂ ماہ) अ. फा. पुं.–चाँद के चारों ओर पड़नेवाला घेरा, चंद्रमंडल, परिवेष, तेजोमंडल।

हल्क़ए मेह्र (حلقۂ مہر) अ. फा. पुं.–सूरज के चारों ओर पड़नेवाला घेरा, रविमंडल, रविबिंब।

हल्क़ची (حلقچی) अ. फा. स्त्री.–जलेबी, एक प्रसिद्ध मिठाई।

हल्कान (ہلکان) तु. वि.–परास्त, चूर-चूर, क्लांत, श्रांत; अधमुआ।

हल्क़ी (حلقی) अ. वि.–कंठ का; कंठ सम्बन्धी; कंठ से उच्चरित (अक्षर)।

हल्क़ूम (حلقوم) अ. पुं.–कंठ, गला, हल्क़।

हल्क़े रास (حلق راس) अ. पुं.–सर मुँड़ाना, मुंडन।

हल्ज़ून (حلزون) अ. पुं.–शंबुक, दर, शंख, संख।

हल्फ़ (حلف) अ. पुं.–शपथ, सौगंध, क़सम।

हल्फ़दरोग़ी (حلف‌دروغی) अ. फा. स्त्री.–अदालत में झूठा हल्फ़ लेना, झूठी शपथ उठाना।

हल्फ़न (حلفاً) अ. वि.–क़सम से, शपथपूर्वक।

हल्फ़नामः (حلف‌نامہ) अ. फा. पुं.–शपथपत्र, इस बात की तहरीर कि अमुक बात शपथपूर्वक कही गयी है।

हल्फ़ी (حلفی) अ. वि.–हल्फ़ के साथ, शपथपूर्वक।

हल्फ़े शर्ई (حلف شرعی) अ. पुं.–धर्मशास्त्र के अनुसार उठाई हुई शपथ।

हल्ब (حلب) अ. पुं.–दूध दूहना।

LIBRARY
HARDWAR

हल्लाक़ (حلاق) अ. वि.–मूँड़नेवाला, क्षौरिक, नापित, नाई।

हल्लाकी (حلاقی) अ. स्त्री.–क्षौरकर्म, मूँड़ने का काम।

हल्लाज (حلاج) अ. पुं.–रुई धुननेवाला, धुनिया।

हल्लाफ़ (حلاف) अ. वि.–वह व्यक्ति जो शपथ लेने का आदी हो।

हल्लाल (حلال) अ. वि.–ग्रंथि खोलनेवाला, समाधान करनेवाला।

हल्ले मुश्किल (حل مشکل) अ. पुं.–जटिल समस्याओं या कठिनाइयों को हल करना।

हल्लो अक़्द (حل و عقد) अ. पुं.–खोलना और बाँधना, प्रबंध, व्यवस्था।

हल्वा (حلوا) अ. पुं.–मीठी चीज़; घी शकर मेवा और आटा आदि से बना हुआ खाद्य पदार्थ, संयाब।

हल्वाई (حلوائی) अ. पुं.–हल्वा या मिठाई बनाने और बेचनेवाला।

हल्वाए तर (حلوائے تر) अ. फा. पुं.–घी में तरबतर हल्वा।

हल्वाए बेदूद (حلوائے بےدود) अ. फा. पुं.–वह हल्वा जो ऐसी आग पर पका हो जिसमें धुँआँ न हो, अर्थात् सूरज की गर्मी से पके हुए फल।

हल्वाख़ोर (حلواخور) अ. फा. वि.–हल्वा खानेवाला।

हल्वाफ़रोश (حلوافروش) अ. फा. वि.–हल्वा बेचनेवाला।

हवन्नक़ (ہونق) उ. वि.–बुद्धू, बौड़म, गावदी।

हवल (حول) अ. वि.–भेंगापन, ऐंचातानापन।

हवस (ہوس) अ. स्त्री.–उत्कंठा, लालसा; बढ़ा हुआ शौक़; लोभ, लालच।

हवसकार (ہوس کار) अ. फा. वि.–लोलुप, लोभी, लालची।

हवसकारी (ہوس کاری) अ. फा. स्त्री.–लालच करना, लोभ करना।

हवसनाक (ہوس ناک) अ. फा. वि.–दे. 'हवसपरस्त'।

हवसनाकी (ہوس ناکی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'हवसपरस्ती'।

हवसपरस्त (ہوس پرست) फा. वि.–लोभी, लालची, जो बहुत बड़ा लोभी हो।

हवसपरस्ती (ہوس پرستی) फा. स्त्री.–लोभ, लालच।

हवसपेशः (ہوس پیشہ) फा. वि.–दे. 'हवसपरस्त'।

हवसपेशगी (ہوس پیشگی) फा. स्त्री.–दे. 'हवसपरस्ती'।

हवसराँ (ہوس راں) फा. वि.–दे. 'हवसपरस्त'।

हवसरानी (ہوس رانی) फा. स्त्री.–दे. 'हवसपरस्ती'।

हवा (ہوا) अ. स्त्री.–इच्छा, आकांक्षा, ख़्वाहिश; लिप्सा, लोभ, लालच; धाक, रोब; बात, वायु, हवा।

हवाइज (حوائج) अ. पुं.–'हाजत' का बहु., आवश्यकताएँ।

हवाइजे ज़ुरूरी (حوائج ضروری) अ. पुं.–प्रातःकर्म, शौचादिकर्म, पेशाब पाख़ाना वग़ैरः।

हवाइजे सित्तः (حوائج ستہ) अ. पुं.–जीवन के लिए छः मुख्य आवश्यकताएँ; पेशाब-पाख़ाना; खाना-पीना; सोना-जागना; चलना-फिरना; साँस लेना; ख़ुशी और ग़म।

हवाई (ہوائی) अ. वि.–वायु-सम्बन्धी; वायु का; एक आतशबाज़ी, बान।

हवाए गर्म (ہوائے گرم) अ. फा. स्त्री.–गर्म हवा, तप्त वायु, लपट, लू।

हवाए तुंद (ہوائے تند) अ. फा. स्त्री.–तेज़ हवा, झक्कड़।

हवाए समूम (ہوائے سموم) अ. स्त्री.–ज़ह्रीली हवा, विषाक्त वायु।

हवाए सर्द (ہوائے سرد) अ. फा. स्त्री.–ठंडी हवा, शीतल वायु।

हवाए सर्सर (ہوائے صرصر) अ. स्त्री.–झक्कड़, आँधी, तेज़ हवा।

हवाख़ेज़ी (ہواخیزی) अ. फा. स्त्री.–हवा उखड़ना, बँधी हुई बात बिगड़ना, जमी हुई धाक का उखड़ना।

हवा ख़ोर (ہواخور) अ. फा. वि.–सवेरे तड़के खुली हवा में टहलनेवाला, वायु सेवन करनेवाला।

हवाख़ोरी (ہواخوری) अ. फा. स्त्री.–सवेरे तड़के खुली हवा में टहलना, वायु-सेवन।

हवाख़्वाह (ہواخواہ) अ. फा. वि.–शुभचिंतक, भलाई चाहनेवाला, ख़ैरख़्वाह।

हवाख़्वाही (ہواخواہی) अ. फा. स्त्री.–भलाई चाहना, ख़ैरख़्वाही।

हवादार (ہوادار) अ. फा. वि.–शुभचिंतक, बिहीख़्वाह; मित्र, दोस्त; एक खुली हुई पालकी।

हवादारी (ہواداری) अ. फा. स्त्री.–हितचिंतन, ख़ैरख़्वाही; मैत्री, दोस्ती।

हवादिज (ہوادج) अ. पुं.–'हौदज' का बहु., हाथी के हौदे।

हवादिस (حوادث) अ. पुं.–'हादिसः' का बहु., हादिसे, दुर्घटनाएँ।

हवादिसआश्ना (حوادث آشنا) अ. फा. वि.–जो दुर्घटनाएँ सहने का आदी हो।

हवादिसख़ेज़ (حوادث خیز) अ. फा. वि.–हादिसे और दुर्घटनाएँ उठानेवाला।

हवादिसे ज़मानः (حوادث زمانہ) अ. पुं.–दे. 'हवादिसे रोज़गार'।

हवादिसे रोज़गार (حوادث روزگار) अ. फा. पुं.–कालचक्र, समय की उलट-पलट।

हवान (ھوان) अ. स्त्री.–अपमान, तिरस्कार, बेइज़्ज़ती।

हवापरस्त (ھواپرست) अ. फा. वि.–मौक़ापरस्त, अवसरवादी, जिधर की हवा देखे उधर चलनेवाला।

हवापरस्ती (ھواپرستی) अ. फा. स्त्री.–मौक़ापरस्ती, अवसरवादिता, जिधर की हवा हो उधर चलना।

हवाबाज़ (ھواباز) अ. फा. वि.–हवाई जहाज़ उड़ानेवाला, वायुयान-चालक, पाइलेट।

हवाबाज़ी (ھوابازی) अ. फा. स्त्री.–हवाई जहाज़ चलाना; हवाबाज़ का पेशा या पद।

हवाम (ھوام) अ. पुं.–ज़मीन के भीतर रहनेवाले प्राणी, जैसे—साँप-बिच्छू और चूहे-च्यूँटी, कीड़े-मकोड़े आदि।

हवामिल (حوامل) अ. स्त्री.–'हामिलः' का बहु., गर्भवती स्त्रियाँ।

हवारफ़्तार (ھوارفتار) अ. फा. वि.–हवा की भाँति तेज़ चलनेवाला, वायुवेग।

हवारफ़्तारी (ھوارفتاری) अ. फा. स्त्री.–हवा की तरह तेज़ चलना।

हवारी (حواری) अ. पुं.–प्रतिष्ठित, मुख्य, बुज़ुर्ग; सहायक, मददगार; हज़्रत ईसा का सहचर।

हवालः (حوالہ) अ. पुं.–सिपुर्दगी, हस्तांतरण; नज़ीर, अवतरण।

हवालःजात (حوالہ جات) अ. पुं.–'हवालः' का बहु., हवाले, अवतरण समूह, अनूकाश समूह।

हवालात (حوالات) अ. स्त्री.–'हवालः' का बहु., मुक़द्दमा तै होने से पहले अपराधियों को रखने का स्थान।

हवालाती (حوالاتی) अ. वि.–जो 'हवालात' में बंद हो।

हवालिए शह्र (حوالیٔ شہر) अ. फा. पुं.–नगर के आसपास का इलाक़ा।

हवाली (حوالی) अ. पुं.–आस-पास, चहुँपास, चहुँओर।

हवाशी (حواشی) अ. पुं.–'हाशियः' का बहु., टिप्पणियाँ, फ़ुटनोट्स।

हवास [स्स](حواس) अ. पुं.–'हास्सः' का बहु., इंद्रियाँ।

हवासगुम (حواس گم) अ. फा. वि.–दे. 'हवासबाख़्तः'।

हवास बरजा (حواس برجا) अ. फा. वि.–जिसके होशोहवास ठीक हों, दृढ़संज्ञ।

हवासबाख़्तः (حواس باختہ) अ. फा. वि.–जिसके होशोहवास ठीक न हों, हतसंज्ञ।

हवासिल (حواصل) अ. पुं.–'हौसलः' का बहु., पक्षियों के पोटे; एक जलपक्षी जिसका पोटा बड़ा होता है।

हवासे ख़म्सः (حواس خمسہ) अ. पुं.–पाँचों इंद्रियाँ, पंचेंद्रिय।

हवासे ज़ाहिरी (حواس ظاہری) अ. पुं.–बाहरी अर्थात् दिखाई देनेवाली इंद्रियाँ; स्पर्श; श्रवण; घ्राण; स्वाद; दृष्टि।

हवासे बातिनी (حواس باطنی) अ. पुं.–भीतरी इंद्रियाँ; स्मरण; विचार; कल्पना।

हवेली (حویلی) फा. स्त्री.–'हवाली' का इमालः, पक्का और बड़ा मकान, भवन।

हश्फ़ः (حشفہ) अ. पुं.–लिंगेंद्रिय की सुपारी, लिंगाग्न, दे. 'हश्फ़ः' दोनों शुद्ध हैं।

हशम (حشم) अ. पुं.–'हाशिम' का बहु., वह नौकर जो स्वामी के लिए लड़ें; नौकर-चाकर।

हशमत (حشمت) अ. पुं.–नौकर-चाकर, दूसरे अर्थ के लिए दे. 'हिश्मत'।

हशमोख़दम (حشم وخدم) अ. पुं.–नौकर-चाकर, लाव लशकर, नौकरों की भीड़-भाड़।

हशरः (حشرہ) अ. पुं.–रेंगनेवाला कीड़ा।

हशरात (حشرات) अ. पुं.–'हशरः' का बहु., कीड़े-मकोड़े।

हशरातुलअर्ज़ (حشرات الارض) अ. पुं.–ज़मीन पर रेंगनेवाले कीड़े-मकोड़े।

हशा (حشا) अ. पुं.–जो कुछ पेट और सीने के भीतर है, आतें पीतें आदि।

हशाइश (حشائش) अ. पुं.–'हशीश' का बहु., सूखी घासें; भाँगें।

हशाशत (ھشاشت) अ. स्त्री.–प्रफुल्लता, प्रसन्नता, ख़ुश तब्ई।

हशीश (حشیش) अ. पुं.–सूखी घास; भंग, विजया।

हश्तंगुश्त (ھشت انگشت) फा. वि.–आठ अंगुल लंबा; आठ अँगलियोंवाला।

हश्त (ھشت) फा. वि.–आठ, अष्ट।

हश्त अंगुश्त (ھشت انگشت) फा. वि.–दे. 'हश्तंगुश्त'।

हश्तगंज (ھشت گنج) फा. पुं.–ख़ुस्त्रौ पर्वेज़ की आठ निधियाँ।

हश्तगोशः (ھشت گوشہ) फा. वि.–आठ कोनोंवाला, अष्टकोण।

हश्तनिकाती (ھشت نکاتی) फा. अ. वि.–आठ उसूलों वाला, अष्टसूत्री।

हश्तपहलू (ھشت پہلو) फा. वि.–आठ पार्श्ववाला; अष्टसूत्री, हश्तनिकाती।

हश्तबिहिश्त (ھشت بہشت) फा. स्त्री.–आठों स्वर्ग।

हश्तबुस्ताँ (هشت بستاں) फा. पुं.–आठों बाग़ अर्थात् आठों स्वर्ग।

हश्तमंज़र (هشت منظر) फा. अ. पुं.–आठों स्वर्ग।

हश्तमावा (هشت ماوی) फा. अ. पुं.–आठों स्वर्ग।

हश्तसद (هشت صد) फा. वि.–आठ सौ।

हश्ताद (هشتاد) फा. वि.–अस्सी, चालीस का दूना।

हश्तादसालः (هشتاد سالہ) फा. वि.–अस्सी बरस का; अस्सी बरस में होनेवाला; अस्सी वर्ष का बूढ़ा।

हश्तुम (هشتم) फा. वि.–आठवाँ, अष्टम्।

हश्तुमीं (هشتمیں) फा. वि.–आठवाँ।

हश्फ़ः (حشفہ) अ. पुं.–दे. 'हशफ़:' दोनों शुद्ध हैं।

हश्र (حشر) अ. पुं.–क़ियामत, महा प्रलय; क़ियामत में मरे हुए लोगों का उठना; आपत्ति, विपदा, मुसीबत।

हश्रअंगेज़ (حشر انگیز) अ. फा. वि.–क़ियामत उठानेवाला, हलचल और हंगामा मचा देनेवाला, उपद्रवकारी, प्रलयंकर।

हश्रअंगेज़ी (حشر انگیزی) अ. फा. स्त्री.–उपद्रव और हलचल खड़ीकर देना, हंगामा मचाना।

हश्रक़ामत (حشر قامت) अ. वि.–प्रेयसी, प्रेमिका।

हश्रख़िराम (حشر خرام) अ. फा. वि.–अपनी चाल से क़ियामत उठानेवाला, ऐसी चाल चलनेवाला जिससे संसार उथल-पुथल हो जाय।

हश्र ख़िरामी (حشر خرامی) अ. फा. स्त्री.–चाल से संसार को उलट-पलट देना।

हश्रज़ा (حشر زا) अ. फा. वि.–दे. 'हश्रअंगेज़'।

हश्रज़ाई (حشر زائی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'हश्रअंगेज़ी'।

हश्रतराज़ (حشر طراز) अ. फा. वि.–दे. 'हश्र अंगेज़'।

हश्रतराज़ी (حشر طرازی) अ. फा. स्त्री.–दे. 'हश्र अंगेज़ी'।

हश्रपर्वर (حشر پرور) अ. फा. वि.–उपद्रवों और हंगामों की पर्वरिश करनेवाला।

हश्रसामाँ (حشر ساماں) अ. फा. वि.–उथल-पुथल और हंगामों का सामान साथ रखनेवाला या सामान करनेवाला।

हश्रसामानी (حشر سامانی) अ. फा. स्त्री.–उथल-पुथल करना, क़ियामत उठाना, संसार को अस्त-व्यस्त करना।

हश्रोनश्र (حشر و نشر) अ. पुं.–महाप्रलय, क़ियामत, मुर्दों का जी उठना और हर तरफ़ फैल जाना।

हश्व (حشو) अ. पुं.–भरती की चीज़, अंदर भरी जानेवाली चीज़; साहित्य में वह शब्द या वाक्य जिसके बिना भी अर्थ में कमी न आये; उर्दू छंद में पद के आदि और गणों के अंत के अतिरिक्त बीच में आनेवाले गण।

हश्शाश (حشاش) अ. वि.–भंगड़, भंग पीनेवाला।

हश्शाश (هشاش) अ. वि.–हृष्ट, हर्षित, प्रसन्न, प्रफुल्ल, ख़ुश।

हश्शाशोबश्शाश (هشاش و بشاش) अ. वि.–जो वहुत ही प्रसन्न और प्रफुल्ल हो; जो वहुत ही स्वस्थ हो।

हसक (هسک) फा. पुं.–सूप, छाज, नाज फटकने का यंत्र।

हसक (حسک) अ. पुं.–गुखरू, गोखरू, विकंटक; लोहे के गुखरूनुमा काँटे जो लड़ाई में शत्रु के रास्ते में विछा दिये जाते थे।

हसद (حسد) अ. पुं.–ईर्ष्या, मत्सर, डाह, जलन।

हसनः (حسنہ) अ. पुं.–भली चीज़, सुंदर वस्तु; भलाई, नेकी।

हसन (حسن) अ. वि.–रूपवान्, सुंदर, ख़ूबसूरत; प्रियदर्शन, ख़ुशनुमा; उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया; हज़्रत अली के बड़े लड़के, इमाम हुसैन के बड़े भाई।

हसनात (حسنات) अ. पुं.–'हसन:' का वहु., भलाइयाँ, नेकियाँ, सुकृतियाँ।

हसनी (حسنی) अ. वि.–इमाम हसन से सम्बन्ध रखनेवाला; उनका अनुयायी; उनका वंशज।

हसनैन (حسنین) अ. पुं.–दो 'हसन' अर्थात् हसन और हुसैन।

हसबः (حصبہ) अ. पुं.–ख़स्र:, छोटे-छोटे लाल दाने जो बच्चों को निकल आते हैं, दे. 'हुस्व:' दोनों शुद्ध हैं।

हसब (حسب) अ. पुं.–गणना, शुमार; अनुमान, अंदाज़; श्रेष्ठता, बड़ाई।

हसब (حصب) अ. स्त्री.–ईंधन, जलाने की लकड़ी आदि।

हसबोनसब (حسب و نسب) अ. पुं.–कुलीनता और श्रेष्ठता, वंश और प्रतिष्ठा, ख़ानदानी हालत।

हसा (حصا) अ. पुं.–'हसात' का बहु., कंकरियाँ, संगरेज़े।

हसात (حصات) अ. स्त्री.–कंकर, पत्थर, कंकरी, ठीकरी; गुर्दे या मूत्राशय में बननेवाली पथरी, अश्मरी।

हसाफ़त (حصافت) अ. स्त्री.–बुद्धि परिपक्वता, अक़्ल की पुख़्तगी; संवेदनशीलता, तज्रिबाकारी।

हसीद (حصید) अ. वि.–काटा हुआ खेत, काटी हुई खेती।

हसीनः (حسینہ) अ. स्त्री.–सुन्दर स्त्री, सुन्दरी, रूपवती, वरारोहा, शोभना, वरांगना।

हसीनः (حصینہ) अ. वि.–दृढ़ और मज़बूत चीज़।

हसीन (حسین) अ. वि.–सुंदर, रूपवान्, सुरूप, ख़ूबसूरत; प्रियदर्शन, शोभन, ख़ुशनुमा।

हसीन (حصین) अ. वि.–सुदृढ़, सुस्थिर, अविचल, मुस्तह्कम।

हसीनतरीन (حسین ترین) अ. फा. वि.–बहुत अधिक रूपवान्, सुंदरतम।

हसीनुलवज्ह (حسین الوجہ) अ. वि.–अच्छी सूरतवाला, रूपवान्, सुरूप।

हसीब (حسیب) अ. वि.–हिसाब करनेवाला; पूज्य, मान्य, बुज़ुर्ग; ईश्वर का एक नाम।

हसीर (حصیر) अ. स्त्री.–खजूर की चटाई।

हसीर (حسیر) अ. वि.–दुःखित, तप्त, क्लेशित, रंजीदा; श्रान्त, क्लांत, शिथिल, माँदा।

हसूक (حسوک) अ. वि.–काँटोंदार, सकंटक; निकृष्ट, उपद्रवी, शरीर।

हसूद (حسود) अ. वि.–बहुत अधिक डाह करनेवाला।

हसून (حصون) अ. वि.–संयमी, इंद्रिय निग्रही, परहेज़गार, ज़ाहिद।

हसूर (حصور) अ. वि.–वह पुरुष जो स्त्री की ओर आकृष्ट न होता हो, यद्यपि वह नपुंसक न हो।

हस्त (ھست) फा. अव्य.–है, अस्ति (स्त्री.) अस्तित्व, वुजूद; उपस्थिति, मौजूदगी।

हस्तिए चंदरोज़ः (ھستیِ چندروزہ) फा. स्त्री.–थोड़े दिनों का जीवन, अस्थायी और क्षणिक ज़िंदगी।

हस्तिए जाविदाँ (ھستیِ جاوداں) फा. स्त्री.–ऐसा जीवन जो कभी नाश न हो।

हस्तिए दुरोज़ः (ھستیِ دوروزہ) फा. स्त्री.–दे. 'ह. चंदरोज़ः'।

हस्तिए नापाएदार (ھستیِ ناپائدار) फा. स्त्री.–वह जीवन जो स्थायी और दृढ़ न हो, नश्वर जीवन।

हस्तिए फ़ानी (ھستیِ فانی) फा. अ. स्त्री.–दे. 'ह. नापाएदार'।

हस्तिए मुस्तआर (ھستیِ مستعار) फा. अ. स्त्री.–थोड़े दिनों के लिए प्राप्त जीवन; थोड़ दिनों रहनेवाला संसार।

हस्तिए मौहूम (ھستیِ موھوم) फा. अ. स्त्री.–वह जीवन जो देखने में तो जीवन हो परंतु उसका कोई अस्तित्व न हो।

हस्ती (ھستی) फा. स्त्री.–अस्तित्व, वुजूद; जीवन, प्राण, ज़िंदगी; संसार, दुनिया; प्राणीवर्ग, मख़्लूक़ात; सामर्थ्य, मक़्दूर।

हस्तोनेस्त (ھست و نیست) फा. पुं.–उत्पत्ति और विनाश, पैदा होना और मरना, होना और न होना, पूर्ण, सर्व, सब, तमाम, जैसे—हस्तोनेस्त का इख़्तियार।

हस्तोबूद (ھست و بود) फा. स्त्री.–है और था।

हस्ना (حسنا) अ. स्त्री.–सुंदरी, रूपवती, ख़ूबसूरत स्त्री; हर सुंदर और प्रियदर्शन वस्तु जो स्त्रीलिंग हो।

हस्ब (حسب) अ. वि.–अनुसार, बमूजिब, मुआफ़िक़।

हस्बा (حصبا) अ. स्त्री.–कंकरी, ठीकरी, संगरेज़ः।

हस्बुत्तलब (حسب الطلب) अ. वि.–बुलाने के अनुसार, तलबी के बमूजिब; माँगने के अनुसार।

हस्बुत्तह्रीर (حسب التحریر) अ. वि.–लिखने के अनुसार; हुक्म के मुताबिक़, आज्ञानुसार।

हस्बुलअम्र (حسب الامر) अ. वि.–कहने के बमूजिब, कथानुसार; हुक्म के मुताबिक़, आदेशानुसार।

हस्बुलहुक्म (حسب الحکم) अ. वि.–हुक्म के बमूजिब, आज्ञानुसार, आदेशानुसार, यथानिर्दिष्ट।

हस्ब अक़्ल (حسب عقل) अ. वि.–बुद्धि के अनुसार, समझ के मुताबिक़, यथामति।

हस्बे आदत (حسب عادت) अ. वि.–स्वभाव के अनुसार, आदत के मुताबिक़; नित्य नियमानुसार, रोज़मर्रा के मुताबिक़।

हस्बे इंसाफ़ (حسب انصاف) अ. वि.–न्याय की रू से, यथा न्याय, न्यायानुसार, न्यामतः, न्यायानुकूल, यथानीति।

हस्बे इजाज़त (حسب اجازت) अ. वि.–आज्ञानुसार, अनुमति के बमूजिब, इजाज़त के मुताबिक़।

हस्बे इत्तिफ़ाक (حسب اتفاق) अ. वि.–इत्तिफ़ाक़ी तौर पर, इत्तिफ़ाक़िया, अकस्मात्, दैवयोगेन।

हस्बे इर्शाद (حسب ارشاد) अ. वि.–कहने के मुताबिक़, कथनानुसार, यथोक्त।

हस्बे इस्तिताअत (حسب استطاعت) अ. वि.–अपने मक़्दूर भर, यथासामर्थ्य, यथाशक्ति।

हल्वे ईमा (حسب ایما) अ. वि.–इशारे के मुताबिक़, संकेतानुसार; हुक्म के बमूजिब, आज्ञानुसार।

हस्बे ए'लान (حسب اعلان) अ. वि.–घोषणा के अनुसार, एलान के मुताबिक़।

हस्बे क़ाइदः (حسب قاعدہ) अ. वि.–नियमानुसार, क़ाइदे के मुताबिक़; विधि के अनुसार, क़ानून के मुताबिक़।

हस्बे क़ानून (حسب قانون) अ. वि.–विधि के अनुसार, क़ानून के मुताबिक़।

हस्बे ख़िदमत (حسب خدمت) अ. वि.–सेवा के अनुसार, जिसकी जितनी सेवा हो उसके हिसाब से।

हस्बे ख़्वाहिश (حسب خواھش) अ. फा. वि.–इच्छानुसार, जितनी ज़रूरत हो उतना; जिसकी इच्छा हो वह।

हस्बे ज़र्फ़ (حسب ظرف) अ. फा. वि.–हिम्मत के मुताबिक़; शक्ति के मुताबिक़; योग्यता के मुताबिक़।

हस्बे जाबितः (حسب ضابطہ) अ. वि.–दे. 'हस्बे क़ानून'; 'हस्बे क़ाइदः'।

हस्बे जुस्सः (حسب جثہ) अ. वि.–डील-डौल के मुताबिक़, यथाकाय।

हस्बे ज़ैल (حسب ذیل) अ. वि.–जो नीचे दिया गया हो, जिसका ब्योरा नीचे लिखा हो, निम्नलिखित।

हस्बे तंबीह (حسب تنبیہ) अ. वि.–चेतावनी के अनुसार; हिदायत के मुताबिक़।

हस्बे तज्वीज़ (حسب تجویز) अ. वि.–राय के मुताबिक़; निर्णय के मुताबिक़।

हस्बे तर्तीब (حسب ترتیب) अ. वि.–सिलसिले के मुताबिक़, क्रमानुसार, यथाक्रम।

हस्बे तलब (حسب طلب) अ. वि.–दे. 'हस्बुत्तलब' दोनों शुद्ध हैं।

हस्बे तह्रीर (حسب تحریر) अ. वि.–दे. 'हस्बुत्तह्रीर' दोनों शुद्ध हैं।

हस्बे तौफ़ीक़ (حسب توفیق) अ.वि.–दे.'हस्बे इस्तिताअत'।

हस्बे दस्तूर (حسب دستور) अ.वि.–दस्तूर के मुताबिक़, यथाविधि, विधिपूर्वक; यथानियम, क़ाइदे के बमूजिब।

हस्बे दिलख़्वाह (حسب دلخواہ) अ. फा. वि.–मनोवांछित, मनमाना, जैसा चाहिए था वैसा, इच्छानुसार।

हस्बे फ़राइज़ (حسب فرائض) अ. वि.–ड्यूटी और फ़र्ज़ के मुताबिक़, यथाकर्तव्य।

हस्बे फ़र्माइश (حسب فرمائش) अ. फा. वि.–कहने के मुताबिक़, कथनानुसार; आज्ञा के बमूजिब, आज्ञानुसार।

हस्बे फ़ह्माइश (حسب فہمائش) अ. फा. वि.–दे. 'हस्बे तंबीह'।

हस्बे बरदाश्त (حسب برداشت) अ. फा. वि.–जहाँ तक सहा जा सके, जितना उठ सके, सहनानुसार।

हस्बे बिसात (حسب بساط) अ. वि.–दे. 'हस्बे मक़दूर'।

हस्बे मंशा (حسب منشا) अ. वि.–दे. 'हस्बे ख़्वाहिश'।

हस्बे मक़्दूर (حسب مقدور) अ. वि.–बस भर, शक्ति भर; सामर्थ्य भर, इस्तिताअत भर।

हस्बे मज़्कूर (حسب مذکور) अ. वि.–कहे हुए के मुताबिक़; ऊपर लिखे हुए के अनुसार।

हस्बे मुराद (حسب مراد) अ. वि.–मंशा के मुताबिक़, यथेच्छ, यथेष्ट, यथाकाम।

हस्बे मौक़ा' (حسب موقعہ) अ.वि.–समय के मुताबिक़, यथा समय, कालानुसार; जगह के मुताबिक़, यथास्थान।

हस्बे रफ़्तार (حسب رفتار) अ. फा. वि.–चाल के मुताबिक़, रवाज के मुताबिक़।

हस्बे रवाज (حسب رواج) अ. वि.–रवाज और रस्म के मुताबिक़, यथाप्रथा, यथारीति, यथानुपूर्वक।

हस्बे रिवायात (حسب روایات) अ. वि.–रिवायतों अर्थात् रवाजों और प्रथाओं के अनुसार; पुराने वंश परंपराओं के अनुसार, खानदान में होनेवाले तौर-तरीक़ों के अनुसार।

हस्बे साबिक़ (حسب سابق) अ. वि.–पहले की तरह, यथापूर्व।

हस्बे हाल (حسب حال) अ. वि.–हालत और दशा के अनुसार; जैसी दशा हो वैसा।

हस्बे हिसस (حسب حصص) अ. वि.–हिस्से और भाग के अनुसार, यथाभाग, विभागतः।

हस्बे हुक्म (حسب حکم) अ. वि.–दे. 'हस्बुल हुक्म' दोनों शुद्ध हैं।

हस्बे हैसियत (حسب حیثیت) अ. वि.–हैसियत के मुताबिक़; शक्ति के मुताबिक़; सामर्थ्य के मुताबिक़।

हस्बे हौसलः (حسب حوصلہ) अ. वि.–हिम्मत के मुआफ़िक़, उत्साह के अनुसार, जितनी हिम्मत हो उतना।

हस्म (حسم) अ. पुं.–विच्छेद, काटना।

हस्र (حصر) अ. पुं.–निर्भरता, इन्हिसार; अवलंबन, सहारा; वाद निर्णय के लिए किसी पर निर्भरता।

हस्रत (حسرت) अ. स्त्री.–निराशा, नाउम्मेदी; दुःख, कष्ट, मुसीबत; अभिलाषा, लालसा, इच्छा; पश्चात्ताप, अफ़्सोस उदा०—"दिल को नियाज़े हस्रते दीदार कर चुके। देखा तो हममें ताक़ते दीदार भी नहीं।"—ग़ालिब।

हस्रतअंगेज़ (حسرت انگیز) अ. फा. वि.–निराशा बढ़ानेवाला, निराशा पैदा करनेवाला।

हस्रतअंजाम (حسرت انجام) अ. फा. वि.–जिस कार्य का अंत निराशा हो, दुःखांत; जिस काम के करने से बाद को पश्चात्ताप हो।

हस्रत आगीं (حسرت آگیں) अ. फा.वि.–नाउम्मेदी से भरा हुआ, निराशापूर्ण।

हस्रत आफ़्रीं (حسرت آفریں) अ. फा. वि.–नाउम्मेदी पैदा करनेवाला, निराशाजनक।

हस्रत इंतिमा (حسرت انتما) अ.वि.–निराशा बढ़ानेवाला, दुःख बढ़ानेवाला।

हस्रत कदः (حسرت کدہ) अ. फा. पुं.–निराशा का घर, दुःख का घर, अर्थात् नायक का घर।

हस्रत ख़ेज (حسرت خیز) अ. फा. वि.–दे. 'हस्रत अंगेज़'।

हस्रतगाह (حسرت گاہ) अ. फा. स्त्री.–निराशा का स्थान, जहाँ निराशा ही निराशा हो।

हस्रतज़दः (حسرت زدہ) अ. फा. वि.–निराशाग्रस्त, नाउम्मीदी का मारा हुआ।

हस्रतजा (حسرت زا) अ. फा. वि.–निराशा पैदा करनेवाला, दुःख बढ़ानेवाला।

हस्रततलब (حسرت طلب) अ.वि.–जो निराशा की कामना करता हो, जो आशान्वित न हो।

हस्रत दीदः (حسرت دیدہ) अ. फा. वि.–दे., हस्रतज़दः'।

हस्रत नसीब (حسرت نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में निराशा ही निराशा और दुःख ही दुःख हो।

हस्रतनाक (حسرت ناک) अ. फा. वि.–दुःखान्वित, निराशान्वित, निराशापूर्ण, दुःखपूर्ण।

हस्रतपरस्त (حسرت پرست) अ. फ़. वि.–निराशा की पूजा करनेवाला, निराशावादी।

हस्रतपसंद (حسرت پسند) निराशा और दुःख को प्रिय जाननेवाला, निराशान्वित।

हस्रतमंद (حسرت مند) अ. फा. वि.–निराशान्वित, निराशावादी, निराश, हताश, मायूस; अभिलाषी, इच्छुक, ख्वाहिशमंद।

हस्रतमआब (حسرت معاب) अ. वि.–निराशावादी, जो निराशा ही को सब कुछ समझता हो, अर्थात् नायक।

हस्रतमानूस (حسرت مانوس) अ. वि.–जिसकी रुचि निराशा पर हो, जो निराशा को दोस्त रखता हो।

हस्रतरसीदः (حسرت رسیدہ) अ. फा. वि.–दे. 'हस्रतज़दः'।

हस्रतशिकार (حسرت شکار) अ. फा. वि.–जिसे निराशा ने मारा हो।

हस्रतसंज (حسرت سنج) अ. फा. वि.–दे. 'हस्रतपसंद'।

हस्रतसरा (حسرت سرا) अ. फा. स्त्री.–दे. 'हस्रतकदः'।

हस्रत सामाँ (حسرت ساماں) अ. फा. वि.–जिसके पास लेदेकर केवल निराशा ही निराशा हो।

हस्रती (حسرتی) अ. वि.–निराश, हताश, मायूस; अभिलाषी, इच्छुक, आर्ज़ूमंद।

हस्रते दीद (حسرت دید) अ.फा. स्त्री.–दे. 'हस्रते दीदार'।

हस्रते दीदार (حسرت دیدار) अ. फा. स्त्री.–दर्शनों की इच्छा, देखने की अभिलाषा।

हस्रते मुलाक़ात (حسرت ملاقات) अ. स्त्री.–देखने और मिलने की इच्छा।

हस्रते वस्ल (حسرت وصل) अ.स्त्री.–नायिका के मिलने की अभिलाषा।

हस्रतोअर्मां (حسرت و ارماں) अ. फा. पुं.–इच्छाएँ और अभिलाषाएँ।

हस्साद (حصاد) अ. वि.–खेती काटनेवाला।

हस्सान (حسان) अ.पुं.–बहुत सुंदर, बहुत ख़ूबसूरत; अतिउत्तम; बहुत अच्छा।

हस्सास (حساس) अ.वि.–स्वाभिमानी, ख़ुददार; संवेदनशील, हिसवाला।

हह्‌हसः (حصحصہ) अ. पुं.–हिला-हिलाकर भरना।

हा

हाँ (ھاں) फा. अव्य.–सावधान ! ख़बरदार ! देखो ! होशयार !

हा (ھا) फा. प्रत्य.–शब्द को अन्त में आकर बहुवचन बनाता है, जैसे–'दरख़्तहा' वृक्ष-समूह, प्रायः निष्प्राण वस्तुओं के लिए आता है; एक अक्षर, 'हे', हिंदी 'ह'।

हाइक (حائک) अ. पुं.–कपड़ा बुननेवाला, वायक, कुविंद।

हाइज़ः (حائضہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो महीने से हो, पुष्पिणी, ऋतुमती, उदक़्या, मलिष्ठा, आत्रेयी, रजवती, स्त्रीधर्मिणा, अंतर्वर्ती, रजस्वला।

हाइज़ (حائض) अ. स्त्री.–वह स्त्री जो बालिग़ हो गयी हो और हैज़ आने के क़ाबिल हो।

हाइत (حائط) अ. स्त्री.–भीत, भित्त, दीवार।

हाइब (ھائب) अ. वि.–डरनेवाला।

हाइम (ھائم) अ. वि.–आसक्त, प्रेम मग्न, बहुत प्यासा।

हाइर (حائر) अ. वि.–स्तब्ध, चकित, उद्विग्न, हैरान; दुर्बल, क्षीर्ण, दुबला-पतला; भँवर, वर्त, जलावर्त, गिदीब; वह स्थान जहाँ हज़्रत इमाम हुसैन शहीद हुए थे।

हाइलः (ھائلہ) अ. वि.–दे. 'हाइल'।

हाइल (حائل) अ.वि.–बीच में आनेवाला, आड़ बननेवाला।

हाइल (ھائل) अ. वि.–भयंकर, भीषण, भयानक, विकराल, खौफ़नाक।

हाए (ھاے) फा.–कराह की आवाज़, आह, हा।

हाए मख़्लूत (ھاے مخلوط) अ. स्त्री.–वह 'हे' जो दूसरे शब्द में मिलाकर पढ़ी जाये, जैसे—'कुम्हार' की 'हे'।

हाए मुख़्तफ़ी (ھاے مختفی) अ. स्त्री.–वह हे जो लिखी जाय मगर पढ़ी न जाय और केवल यह ज़ाहिर करने के लिए आये कि अंतिम अक्षर हल् नहीं है, जैसे—'परवानः'।

हाए मुज़ह्हर (ھاے مظہر) अ. स्त्री.–वह 'हे' जो ज़ाहिर हो, जैसे—'जगह' की 'हे'।

हाए मुशक़्क़क़ (ھاے مشقق) अ. स्त्री.–दो चश्मी (ھ)।

हाए हव्वज़ (ھاے ھوز) अ. स्त्री.–छोटी 'हे' (ہ)।

हाए हुत्ती (ھاے حطی) अ. स्त्री.–बड़ी 'हे' (ح)।

हाक़ (حاق) अ. वि.–बीचोबीच, मध्य, दरमियान।

हाकिम (حاکم) अ. वि.–पदाधिकारी, अफ़सर; स्वामी, मालिक; शासक, फर्मांरवा; नरेश, राजा, बादशाह; अध्यक्ष, सरदार।

हाकिमानः (حاکمانہ) अ. फा. वि.–अफ़सरों-जैसा।

हाकिमी (حاکمی) अ.वि.–पदाधिकार, अफ़्सरी; स्वामित्व, मालिकी; शासन, राज; राजशाही; अध्यक्षता, सरदारी।

हाकिमे आ'ला (حاکم اعلی) अ. पुं.–उच्चाधिकारी, बड़ा अफ़्सर।

हाकिमे बाला (حاکم بالا) अ.फा. पुं.–दे. 'हाकिमे आला'; किसी अफ़्सर से ऊपर का अफ़्सर।

हाकिमे वक़्त (حاکم وقت) अ. पुं.–वर्तमान समय का शासक।

हाकिमे हक़ीक़ी (حاکم حقیقی) अ. पुं.–ईश्वर, परमात्मा।

हाकी (حاکی) अ. वि.–वार्तालाप करनेवाला, बातचीत करनेवाला; कहानी सुनानेवाला।

हाक़्क़ः (حاقہ) अ. स्त्री.–महाप्रलय, क़ियामत।

हाज [ज्ज] (حاج) अ. वि.–हज करनेवाला, हाजी।

हाज (حاج) अ. स्त्री.–'हाजत' का बहु, हाजतें, इच्छाएँ।

हाजत (حاجت) अ. स्त्री.–इच्छा, अभिलाषा, ख़्वाहिश; मनोकामना, मनोवांछा, दिली मक़्सद।

हाजतख़्वाह (حاجتخواہ) अ. फा. वि.–कामनापूर्ति चाहनेवाला।

हाजतगाह (حاجتگاہ) अ. फा. स्त्री.–वह स्थान जहाँ से कामनापूर्ति की इच्छा हो।

हाजतबरारी (حاجتبراری) अ. फा. स्त्री.–इच्छा पूरी करना, कामना पूरी करना।

हाजतमंद (حاجتمند) अ. फा. वि.–इच्छुक, अभिलाषी, ख़्वाहिशमंद; निर्धन, मोहताज।

हाजतमंदी (حاجتمندی) अ. फा. स्त्री.–इच्छा, चाह, तलब; निर्धनता, मोहताजी।

हाजतरवा (حاجتروا) अ. फा. वि.–इच्छा और कामना पूरी करनेवाला।

हाजतरवाई (حاجتروائی) अ. फा. स्त्री.–इच्छा और कामना पूरी करना।

हाजती (حاجتی) अ.वि.–इच्छुक, अभिलाषी, (स्त्री.) वह चौकी जो रोगी के पलंग के पास लगा दी जाती है ताकि पेशाब-पाख़ाने में उसे कष्ट न हो।

हाजर (ہاجر) अ. स्त्री.–हज़्रत इस्माईल की माता का नाम।

हाज़िक़ (حاذق) अ. वि.–दक्ष, प्रवीण, कुशल, माहिर; वह चिकित्सक जो अपने फ़न में बहुत ही निपुण हो।

हाजिज़ (حاجز) अ. वि.–बीच में पर्दे की तरह आ जानेवाला; वक्षःस्थल और उदर के बीच की एक झिल्ली।

हाजिब (حاجب) अ.वि.–द्वारपाल, प्रहरी, दरबान; चोबदार, दंडधारी; भ्रू, भौं।

हाजिन (ہاجن) अ. स्त्री.–वह नाबालिग़ स्त्री जिसका ब्याह हो गया हो; हर जानवर का मादा बच्चा।

हाज़िमः (ہاضمہ) अ. पुं.–पाचन शक्ति, क़ुव्वते हज़्म।

हाज़िम (حازم) अ. वि.–दूरदर्शी, अग्रशोची, दूरंदेश; बुद्धिमान्, मेधावी, अक़्लमंद।

हाज़िम (ہاضم) अ. वि.–पाचक, खाना हज़्म करनेवाला।

हाज़िमे तआम (ہاضم طعام) अ. पुं.–अन्नपाचक, खाना हज़्म करनेवाली दवा।

हाजिरः (ہاجرہ) अ. स्त्री.–हिज्रत करनेवाली स्त्री, घरबार छोड़कर परदेश में आनेवाली स्त्री, शरणार्थिनी; बहुत गर्म और तपनेवाली दोपहर।

हाजिर (ہاجر) अ. वि.–घर-बार छोड़नेवाला, मुहाजिर, परदेसी, शरणार्थी।

हाजिर (حاجر) अ. वि.–रोकनेवाला, मना करनेवाला, निषेधक; ऊँची भूमि; नदी की कगार।

हाज़िर (حاضر) अ. वि.–उपस्थित, मौजूद; विद्यमान; किसी न्यायालय में वारंट या सम्मन के द्वारा लाया गया या तारीख़ मुक़द्दमा में आया हुआ; स्कूल या कारख़ाने के रजिस्टर में हाज़िरी की प्रविष्टि के समय उपस्थित।

हाज़िर जवाब (حاضرجواب) अ. वि.–जो तुरंत ही किसी बात का उचित और चमत्कारपूर्ण उत्तर दे, प्रगल्भ, प्रत्युत्पन्नमति।

हाज़िरजवाबी (حاضرجوابی) अ. स्त्री.–किसी बात का तुरंत ही उचित और मौज़ूँ जवाब देना, प्रगल्भता।

हाज़िरज़ामिन (حاضرضامن) अ. वि.–किसी अभियुक्त की न्यायालय में उपस्थिति की ज़िम्मेदारी लेनेवाला।

हाज़िरज़ामिनी (حاضرضامنی) अ. स्त्री.–किसी अभियुक्त की न्यायालय में उपस्थिति की ज़मानत।

हाज़िरदिमाग़ (حاضردماغ) अ. वि.–जो कोई बात फ़ौरन ही ठीक समझ ले और ठीक ही राय दे सके।

हाज़िरदिमाग़ी (حاضردماغی) अ. स्त्री.–बात की तह को फ़ौरन ही पहुँचकर ठीक राय देना।

हाज़िरबाश (حاضرباش) अ. फा. वि.–किसी बड़े आदमी के पास हर वक़्त का बैठने-उठनेवाला।

हाजिरबाशी (حاضرباشی) अ. फा. स्त्री.–किसी बड़े आदमी के पास हर वक़्त बैठना-उठना।

हाज़िरात (حاضرات) अ. स्त्री.–'हाज़िरः' का बहु., 'उपस्थित' स्त्रियाँ; जिनों अथवा भूतों को बुलाने का अमल, जिससे वे किसी पर बुलाये जाते हैं, और सवालों का जवाब देते हैं।

हाज़िराती (حاضراتی) अ. पुं.–जिनों भूतों को किसी पुरूष या स्त्री पर बुलानेवाला, आमिले जिन, ओझा।

हाज़िरी (حاضری) अ. स्त्री.–उपस्थिति, मौजूदगी; मज़दूरों या विद्यार्थियों की गिनती; विद्यमानता, वुजूद होना; न्यायालय में वारंट या सम्मन द्वारा प्रतिवादी तथा गवाहों आदि की उपस्थिति।

हाज़िरीन (حاضرین) अ. पुं.–'हाज़िर' का बहु., हाज़िर लोग, उपस्थित गण।

हाज़िरीने जल्सः (حاضرین جلسہ) अ. पुं.–क़िसी सभा में उपस्थित लोग।

हाज़िरीने मज्लिस (حاضرین مجلس) अ. पुं.–किसी गोष्ठी में सम्मिलित लोग।

हाज़िरोनाज़िर (حاضروناظر) अ. पुं.–जो किसी स्थान पर उपस्थित भी हो और सारी घटनाएँ देखता भी हो; ईश्वर, परमात्मा।

हाज़िल (ہازل) अ. वि.–फक्कड़ बकनेवाला, अश्लील बोलनेवाला; हज़्ल की कविता करनेवाला।

हाज़ी (حاجی) उ. पुं.–हज करनेवाला, (अरबी शब्द 'हाज' है)।

हाज़ी (ہاجی) अ. वि.–निंदा करनेवाला, हज्व करनेवाला; हिंज्जे करनेवाला।

हाज़ूम (ہاضوم) अ. वि.–अन्नपाचक औषधि, खाना हज़्म करनेवाली दवा।

हाज्जः (حاجّہ) अ. स्त्री.–हज करनेवाली स्त्री, हज्जन।

हातम (حاتم) अ. पुं.–यमन का एक सरदार जो बड़ा उदार और दानशील था, 'बनीतय' के गोत्र में होने के कारण 'ताई' कहलाता है, दे. हातिमताई।

हातिन (ہاتن) अ. पुं.–बरसनेवाला बादल।

हातिफ़ (ہاتف) अ. वि.–पुकारनेवाला, बुलानेवाला।

हातिफ़े ग़ैब (ہاتف غیب) अ. पुं.–वह देवता जो दिल में बात डालता या आकाशवाणी बोलता है।

हातिब (حاطب) अ. वि.–लकड़ी बेचनेवाला, लकड़ियाँ लानेवाला, लकड़हारा।

हातिम (حاتم) अ. पुं.–न्यायाधीश, जज, क़ाज़ी; एक बड़ा कव्वा, दे.—'हातम' दोनों शुद्ध हैं।

हातिमताई (حاتم طائی) अ. पुं.–दे. 'हातम'।

हातिमे वक़्त (حاتم وقت) अ. पुं.–अपने समय का बहुत ही दानशील और अतिथिपूजक व्यक्ति।

हातिल (ہاطل) अ. वि.–वह घटा जो बहुत ज़ोर से बरसे, घनघोर घटा।

हाद [द्] (ہاد) अ. पुं.–वह ज़ोरदार आवाज़ जो नदी या समुद्र से उठती और कनारे पर सुनाई देती है।

हाद[द्] (حاد) अ. वि.–तीव्र, प्रचंड, तेज़, सख़्त।

हादिए मुत्लक़ (ہادئی مطلق) अ. वि.–सच्चा सन्मार्ग दर्शक अर्थात् ईश्वर।

हादिम (ہادم) अ. वि.–नष्ट करनेवाला, ध्वंसकारी।

हादिमुल्लज़्ज़ात (ہادم اللذات) अ. पुं.–यमराज, यमदूत, धर्मराज, मौत का फ़िरिश्ता।

हादिर (ہادر) अ. पुं.–वह दूध जो ऊपर से जमकर दही बन गया हो और नीचे पतला पानी हो।

हादिसः (حادثہ) अ. पुं.–दुर्घटना; सानिहः; नया वाक़िअः, नयी घटना; विपत्ति, मुसीबत।

हादिस (حادث) अ. वि.–नयी पैदा होनेवाली वस्तु; जो सदा से न हो, जो क़दीम न हो, माद्दः भूत।

हादिसए फ़ाजिअः (حادثہ فاجعہ) अ. पुं.–बहुत ही भयानक दुर्घटना, मृत्यु आदि की घटना।

हादी (حادی) अ. पुं.–सारबान, ऊँटवाला, उष्ट्रपाल।

हादी (ہادی) अ. वि.–पथप्रदर्शक, रास्ता दिखानेवाला; नेता, लीडर।

हादी अशर (حادی عشر) अ. वि.–ग्यारहवाँ।

हाद्दः (حادّہ) अ. वि.–तीव्र, प्रचंड, तेज़ (स्त्रीलिंग शब्दों के साथ)।

हानम (ہانم) तु. स्त्री.–ख़ानम, ख़ातून, महोदया, श्रीमती।

हानिस (حانث) अ. वि.–शपथ तोड़नेवाला।

हानूत (حانوت) अ. स्त्री.–दुकान, पथ्यशाला; शराब की दुकान।

हाफ़िज़ः (حافظہ) अ. पुं.–याददाश्त की क़ुव्वत, स्मरण शक्ति।

हाफ़िज़ (حافظ) अ. पुं.–जिसकी याददाश्त अच्छी हो; जिसे क़ुरान कंठ हो; रक्षक, बचानेवाला।

हाफ़िज़े कुर्आन (حافظ قرآن) अ. पुं.–जिसे पूरा क़ुरान जबानी याद हो।

हफ़िज़े हक़ीक़ी (حافظ حقیقی) अ.पुं.–सच्ची रक्षा करनेवाला, अर्थात् ईश्वर।

हाफ़िदः (حافدہ) अ. स्त्री.–पोती, लड़के की लड़की; नवासी, लड़की की लड़की।

हाफ़िद (حافد) अ. वि.–मित्र, दोस्त; सेवक, खिदमी; पोता, लड़के का लड़का; नवासा, लड़की का लड़का।

हाफ़िर (حافر) अ. वि.–गढ़ा खोदनेवाला; कुआँ खोदनेवाला; घोड़े की टाप।

हाफ़ी (حافی) अ. वि.–नंगे पाँव फिरनेवाला; न्यायकर्ता, क़ाज़ी।

हाबित (هابط) अ. वि.–नीचे उतरनेवाला, ऊपर से नीचे आनेवाला।

हाबिसः (حابسہ) अ. स्त्री.–रोकनेवाली, रोधिका।

हाबिस (حابس) अ. वि.–रोकनेवाला, रोधक; शरीर से रक्त आदि को निकलने से रोकनेवाली ओषधि।

हाबिसात (حابسات) अ. स्त्री.–हाबिसः का बहु., वह ओषधियाँ जो शरीर से निकलनेवाली धातुओं को रोकें।

हाबिसे इस्हाल (حابس اسہال) अ. वि.–दस्तों को रोकनेवाली ओषधि।

हाबिसे ख़ून (حابس خون) अ. फा. वि.–रक्त-प्रवाह को रोकनेवाली दवा, रक्तावरोधक।

हाबिसे तम्स (حابس طمث) अ. वि.–रजःस्राव को रोकनेवाली ओषधि।

हाबिसे दम (حابس دم) अ. वि.–रक्तावरोधक, ख़ून को निकलने से रोकनेवाली दवा।

हाबी (هابی) अ. स्त्री.–क़ब्र की मिट्टी।

हाबील (هابیل) अ. पुं.–आदम का पुत्र, जिसे क़ाबील ने मार डाला था।

हामः (هامہ) अ. स्त्री.–कपाल, खोपड़ी; ललाट, माथा; अपन गोत्र या जाति का नायक।

हाम (حام) अ. पुं.–नूह का एक लड़का।

हामान (هامان) अ. पुं.–फ़िरऔन का वज़ीर जो बड़ा अत्याचारी था।

हामिज़ (حامض) अ. वि.–खट्टा, अम्ल, तुरुश।

हामिद (هامد) अ. पुं.–सूखी घास; पुराना वस्त्र।

हामिज़ (هامز) अ. वि.–निंदा करनेवाला, आँख से संकेत करनेवाला।

हामिद (حامد) अ. वि.–प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

हामिलः (حاملہ) अ. स्त्री.–वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी, अंतर्वत्नी, गुर्विणी, सगर्भा, आपन्नसत्त्वा, अंतर्वती, अंतःसत्त्वा, द्विहृदया, गर्भगुर्वी, गर्भवती; बोझ उठानेवाली।

हामिल (هامل) अ. पुं.–वह ऊँट जो बिना रखवाले के चरागाह में छोड़ दिया गया हो।

हामिल (حامل) अ. वि.–बोझ उठानेवाला; धारण करनेवाला, रखनेवाला।

हामिले अरीज़ः (حامل عریضہ) अ. पुं.–चिट्ठी अपने पास रखनेवाला, जो किसी के पास अपने काम के लिए या किसी के लिए चिट्ठी ले जाय।

हामिले मत्न (حامل متن) अ. वि.–वह पुस्तक जिसमें टीका के साथ उसका मूल भी हो।

हामिले वही (حامل وحی) अ. पुं.–ईश्वरादेश ग्रहण करनेवाला, ईशदूत, पैग़ंबर।

हामिश (هامش) अ. पुं.–हाशिया, किनारा।

हामी (هامی) अ. वि.–चकित, निस्तब्ध, हैरान; आतुर, व्याकुल, परीशान।

हामी (حامی) अ. वि.–पक्षपाती, सहायक, मददगार; मित्र, दोस्त; पृष्ठ-पोषक, हिम्मत बढ़ानेवाला।

हामुन (هامن) फा. अ. पुं.–'हामून' का लघु., दे. 'हामून'।

हामूँ (هاموں) फा. पुं.–'हामून' का लघु., दे. 'हामून'।

हामूँगर्द (هاموں گرد) फा. वि.–जंगलों में मारा-मारा फिरनेवाला, वनभ्रमी।

हामूँनवर्द (هاموں نورد) फा. वि.–दे. 'हामूँगर्द'।

हामून (هامون) फा. पुं.–बड़ा मैदान; वन, जंगल; मरुभूमि, रेगिस्तान।

हामूम (هاموم) अ. पुं.–पिघली हुई चर्बी; ऊँट का कोहान।

हारः (حارہ) फा. पुं.–किसी नगर या क़स्बे का महल्ला, टोला।

हार [र्र] (حار) अ. वि.–उष्ण, तप्त, गर्म; गर्म ख़ासियत रखनेवाला स्वभाव या औषधि, उष्णवीर्य।

हार (هار) फा. पुं.–माला, फूलों या मोतियों आदि की माला।

हार (هار) अ. वि.–गिरा हुआ, नष्ट, ध्वस्त।

हारिज (هارج) अ. वि.–उपद्रवकारी, गड़बड़ी फैलानेवाला।

हारिज (حارج) अ. वि.–हानिकर, नुक़सान करनेवाला।

हारिब (هارب) अ. वि.–भागनेवाला, पलायक।

हारिश (هارش) फा. स्त्री.–अपने को बना-ठना दिखाने का शौक़।

हारिस (حارث) अ. पुं.–व्याघ्र, शेर; कृषीवल, कृषक, किसान।

हारिस (حارس) अ. वि.–संरक्षक, देख-रेख करनेवाला, निगहबान।

हारिस (حارص) अ. वि.–लोलुप, लोभी, लालची।

हारूँ (هاروں) अ. पुं.–'हारून' का लघु., दे. 'हारून'।

हारूत (هاروت) अ. पुं.–एक फ़िरिश्तः जिसके लिए कहा जाता है कि 'मारूत' के साथ बाबिल के कुएँ में बंद है और लोगों को जादू सिखाता है।

हारूतफ़न (هاروت فن) अ. फा. वि.–जादूगर, इंद्रजाली, मायावी, इंद्रजालिक।

हारूती (هاروتی) अ. वि.–जादू का काम, मायाकर्म, इंद्रजाल।

हारून (هارون) अ. पुं.–दूत, क़ासिद; राजदूत, सफ़ीर; संरक्षक, पासबान।

हारूनी (هارونی) अ. वि.–दूतकर्म, क़ासिदी; राजदूत का काम या पद, सिफ़ारत; रक्षा, हिफ़ाज़त।

हारः (حارہ) अ. वि.–गर्म, तप्त (स्त्रीलिंग वस्तु); खेती की ज़मीन, बोये हुए खेत।

हालः (هالہ) फा. पुं.–चाँद या सूरज के गिर्द पड़नेवाला घेरा, मंडल, परिवेष।

हाल (حال) अ. पुं.–दशा, हालत; वृत्तांत, कैफ़ियत; वज्द, झूमना।

हालए माह (هالۂ ماہ) फा. पुं.–चंद्रमंडल, चंद्रबिंब, शशिमंडल।

हालए मेह्र (هالۂ مہر) अ. पुं.–रविमंडल, रविबिंब, सूर्यमंडल।

हालए शम्स (هالۂ شمس) फा. अ. पुं.–दे. 'हालए मेह्र'।

हाल (حال) अ. पुं.–वृत्तांत, बयान; दशा, हालत; वर्तमान काल, ज़मानए हाल; समाचार, खबर।

हाल (هال) फा. पुं.–सफ़ेद इलाइची; सुख, चैन; नर्त, नाच; चौगान की गेंद।

हालगाह (هالگاہ) फा. स्त्री.–चौगान खेलने का मैदान।

हालत (حالت) अ. स्त्री.–दशा, अवस्था; वृत्तांत, हाल; घटना, वाक़िअः; समाचार, खबर।

हालते इंतिज़ार (حالت انتظار) अ. स्त्री.–प्रतीक्षा की अवस्था, किसी के राह देखने की बेचैनी।

हालते नज़अ (حالت نزع) अ. स्त्री.–मरते समय की दशा, जांकनी, चंद्रा।

हालते मौजूदः (حالت موجودہ) अ. स्त्री.–आधुनिक अवस्था; उपस्थित अवस्था।

हालाँकि (حالانکہ) अ. फा. अव्य.–यद्यपि, अगरचे।

हालात (حالات) अ. पुं.–'हालत' का बहु., हालतें, दशाएँ।

हालाते मौजूदः (حالاتموجودہ) अ. पुं.–आजकल के समाचार, ताज़ा खबरें; मौजूदः समय की सियासी हलचलें; उपस्थित समय की उथल-पुथल।

हालिक (حالک) अ. वि.–बहुत अधिक काला।

हालिक (هالک) अ. वि.–प्राण लेनेवाला, घातक।

हालिब (حالب) अ. वि.–दूध दुहनेवाला, दोहक; रान की एक रग।

हालियः (حالیہ) अ. वि.–आधुनिक, उपस्थित समय का; ताज़ा, नया।

हाली (حالی) अ. वि.–हाल का, आधुनिक; आभूषित, शृंगारित, ज़ेवर से आरास्तः।

हावन (هاون) फा. पुं.–लकड़ी की ओखली, उलूखल; लोहे का दवा आदि कूटने का ओखली-जैसा पात्र।

हावनदस्तः (هاوندستہ) फा. पुं.–लोहे की ओखली और कूटने का मूसल।

हावियः (هاویہ) अ. पुं.–नरक का सातवाँ तल।

हावी (حاوی) अ. वि.–छाया हुआ, आच्छादित, जिसने किसी चीज़ को ढाँक लिया हो; जो अपनी चतुराई, शक्ति या छल से किसी पर क़ाबू रखता हो।

हावून (هاوون) अ. पुं.–दे. 'हावन'।

हाशःलिल्लाह (حاش اللہ) अ. वा.–ख़ुदा ऐसा न करे, ऐसा कभी न हो, इस शब्द को 'हाशालिल्लाह' पढ़ना ग़लत है, जैसा अक्सर कमइल्म लोग बोलते या लिखते हैं।

हाशा (حاشا) अ. वि.–कदापि, हरगिज़; त्राहि, पनाह; पवित्रता, पाकी, ऐसे समय बोलते हैं जब किसी बात से अपनी बिलकुल ही अज्ञानता या निष्पक्षता प्रकट करनी होती है।

हाशा व कल्ला (حاشاوکلا) अ. वि.–कदापि नहीं, ज़रा भी नहीं, जब किसी (विशेषतः बुरी) बात से अपनी निष्पक्षता और बे तअल्लुक़ी ज़ाहिर करनी होती है तो कहते हैं।

हाशा सुम्मः हाशा (حاشاثمحاشا) अ. वि.–दे. 'हाशा व कल्ला।

हाशिम (هاشم) अ. वि.–हज़्रत मुहम्मद साहब के वंशप्रवर्तक; पियाले में रोटी मलनेवाला।

हाशिमी (هاشمی) अ. वि.–'हाशिम' के वंशज।

हाशियः (حاشیہ) अ. पुं.–चादर या सारी आदि के किनारे की गोंट या बेलबूटे, किनारा; किसी पुस्तक के नीचे दी हुई टीका-टिप्पणी।

हाशियः नशीन (حاشیہنشین) अ. फा. वि.–दरबार आदि में मंडलाकार बैठनेवाले सभासद; किसी बड़े आदमी के पास उठने-बैठनेवाले मुसाहिब।

हाशियःनशीनी (حاشیہنشینی) स्त्री० दरबारदारी, किसी बड़े आदमी की सेवा में प्रायः उपस्थिति।

हाशिर (حاشر) अ. पुं.–हज़्रत मुहम्मद साहब का एक नाम।

हासिद (حاسد) अ. वि.–हसद करनेवाला, डाही, ईर्ष्यालु, मत्सरी।

हासिदीन (حاسدین) अ. पुं.–'हासिद' का बहु., डाह करनेवाले लोग, जलने और हसद करनेवाले।

हासिब (حاصب) अ. पुं.–वह आँधी जिसमें कंकड़ पत्थर हों; वह बादल जो ओले बरसाये।

हासिर (حاصر) अ. वि.–गिननेवाला, शुमार करनेवाला; निर्भर रहनेवाला, हस्र करनेवाला।

हासिर (حاسر)अ. वि.–पश्चात्ताप करनेवाला, हस्रत करनेवाला, अफ़सोस करनेवाला।

हासिल (حاصل) अ. वि.–प्राप्त, वुसूल; उपलब्ध, दस्तयाब; आय, आमदनी; राजस्व, ज़मीन की आमदनी; निष्कर्ष, नतीजा।

हासिलख़ेज़ (حاصل‌خیز) अ. फा. वि.–उर्वरा, उपजाऊ, ज़रख़ेज़।

हासिलवुसूल (حاصل‌وصول)अ. पुं.–लाभ, नफ़ा; परिणाम, नतीजा।

हासिलात (حاصلات) अ. स्त्री.–'हासिल' का बहु., गाँव की आमदनी, ज़मीनों और खेतों का लगान।

हासिले कलाम (حاصل کلام) अ. पुं.–बात का निचोड़, गुफ़्तगू का सार या निष्कर्ष।

हासिले क़िस्मत (حاصل قسمت) अ. पुं.–दे. 'हासिले तक़्सीम'।

हासिले जम्अ (حاصل جمع) अ. पुं.–जोड़, योगफल, मीज़ान।

हासिले ज़र्ब (حاصل ضرب)अ. पुं.–दो संख्याओं को परस्पर गुणा करने से प्राप्त संख्या, घात, गुणनफल।

हासिले तक़्सीम (حاصل تقسیم) अ. पुं.–बड़ी संख्या को छोटी संख्या में भाग देने से प्राप्त संख्या, लब्धांक, भजनफल, भागफल, लब्धि।

हासिले तफ़्रीक़ (حاصل تفریق) अ. पुं.–बंड़े अदद में से छोटे अदद को घटाने से प्राप्त अदद, शेष।

हासिले बाज़ार (حاصل بازار) अ. फा. पुं.–बाज़ार की आमदनी।

हासिले मत्लब (حاصل مطلب)अ. पुं.–सारांश, ख़ुलासा; निष्कर्ष, नतीजा।

हि

हिंतः (حنطه) अ. पुं.–गेहूँ, गोधूम।

हिंद (هند) फा. पुं.–भारत, हिंदुस्तान।

हिंदबा (هندبا) फा. स्त्री.–कासनी, एक वनौषधि जो दवा के काम आती है।

हिंदसः (هندسه) अ. पुं.–संख्या, अदद; गणित, रियाज़ी।

हिंदसःदाँ (هندسه‌دان) अ. फा. वि.–रियाज़ी का माहिर, गणितज्ञ।

हिंदसःदानी (هندسه‌دانی)अ.फा. स्त्री.–रियाज़ी जानना, गणितज्ञता।

हिंदी (هندی) फा. स्त्री.–देवनागरी भाषा, नागरी, (पुं.) भारत का निवासी, हिंदुस्तानी।

हिंदीज़बाँ (هندی‌زبان) फा. वि.–हिंदीभाषा-भाषी, जिसकी मातृभाषा हिंदी हो।

हिंदीदाँ (هندی‌دان) फा.वि.–हिंदी भाषा जाननेवाला, जो हिंदी लिखना-पढ़ना जानता हो।

हिंदीदानी (هندی‌دانی) फा. स्त्री.–हिंदी लिखना-पढ़ना जानना।

हिंदी नज़ाद (هندی‌نژاد) फा. वि.–जो व्यक्ति हिंदुस्तान में पैदा हुआ हो, हिंदी, भारतीय।

हिंदुआनः (هندوانه) फा. पुं.–तरबूज़, कलींदा, मांसफल, चित्रफल, फलराज।

हिंदुस्ताँ (هندستان) फा. पुं.–'हिंदुस्तान' का लघु., दे. 'हिंदुस्तान'।

हिंदुस्तान (هندستان)फा. पुं.–भारत, भारतवर्ष, इंडिया, हिंद।

हिंदुस्तानी (هندستانی) फा. पुं.–भारत का निवासी, भारतीय, (स्त्री.) हिंदुस्तान की भाषा, एक भाषा जो हिंदी-उर्दू के मिश्रण से बनी है।

हिंदू (هندو) फा. पुं.–हिंदुस्तान का वह व्यक्ति जो मूर्तिपूजा करता और वैदिक धर्मावलंबी है।

हिंदुए चर्ख़ (هندوے چرخ). फा. पुं.–शनि ग्रह, ज़ुहल।

हिंदूए चश्म (هندوے چشم) फा. पुं.–आँख की पुत्ली, कनीनी।

हिंदूए फ़लक (هندوے فلک) फा. अ. पुं.–दे. 'हि. चर्ख़'।

हिंदू कश (هندو کش) फा. पुं.–एक पहाड़।

हिंदूकोह (هندو کوه) फा. पुं.–दे. 'हिंदूकश'।

हिंदूज़न (هندوزن) फा. स्त्री.–हिंदू स्त्री जो पतिव्रता और साध्वी होती और अपने धर्म कर्त्तव्य का पालन करने की चेष्टा करती है।

हिंदूज़ादः (هندو زاده) फा. पुं.–हिंदू का लड़का।

हिंदूमज़्हब (هندو مذهب) फा. अ. वि.–हिंदूधर्म रखनेवाला।

हिंदोस्ताँ (هندوستان) फा. पुं.–हिंदोस्तान' का लघु., दे. 'हिंदोस्तान'।

हिंदोस्ताँज़ाद (هندوستان‌زاده) फा. पुं.–हिंदुस्तान में पैदा होनेवाला, हिंदुस्तानी।

हिंदोस्तान (هندوستان) फा. पुं.–भारत, हिंदुस्तान।

हिंदोस्तानी (هندوستانی) फा. पुं.–भारतीय, हिंदुस्तानी, (स्त्री.) एक भाषा हिंदुस्तानी।

हिकम (حکم) अ. स्त्री.–'हिक्मत' का बहु., हिक्मतें, ज्ञान की बातें।

हिकायत (حکایت) अ. स्त्री.–कथा, कहानी; वार्ता, बात; वृत्तांत, हाल।

हिकायतगर (حکایت گر) अ. फा. वि.–कहानी कहनेवाला, क़िस्सा सुनानेवाला; वृत्तांत बतानेवाला, हाल कहनेवाला।

हिकायतन (حکایتاً) अ. वि.–कहानी के तौर पर, सुनी-सुनायी बात के रूप में।

हिक्कः (حکّہ) अ. स्त्री.–खुजली, खर्जू, कंडू।

हिक़्द (حقد) अ. पुं.–द्वेष, कीना, ग़ुबार; शत्रुता, वैर, दुश्मनी।

हिक्मत (حکمت) अ. स्त्री.–विज्ञान, साइंस; आयुर्वेद, तिब; बुद्धिमत्ता, दानाई; युक्ति, तर्कीब।

हिक्मतआईन (حکمت آئین) अ. फा. वि.–हिक्मत और युक्ति से पूर्ण, बुद्धि और विवेक से पूर्ण।

हिक्मतआगीं (حکمت آگیں) अ. फा. वि.–दे. 'हिक़्मत-आईन'।

हिक्मतआमेज़ (حکمت آمیز) अ. फा. वि.–युक्तिपूर्ण, बुद्धिपूर्ण, दानाई और तदब्बुर से भरा हुआ।

हिक्मतआमोज़ (حکمت آموز) अ. फा. वि.–बुद्धि और मनीषा सिखानेवाला।

हिक्मतआरा (حکمت آرا) अ. फा. वि.–बुद्धिमान्, विवेकी, मनीषी, दाना।

हिक्मते अमली (حکمت عملی) अ. स्त्री.–कूटनीति, पालिसी।

हिक्मते इलाही (حکمت الٰہی) अ. स्त्री.–ईश्वरेच्छा, ख़ुदा की मर्ज़ी।

हिक्मते बालिग़ः (حکمت بالغہ) अ. स्त्री.–बहुत बड़ी हिक्मत, पूरी चतुराई और बुद्धिमत्ता।

हिकमते मुदनी (حکمت مدنی) अ. स्त्री.–नगर का प्रबंध, परस्पर रहन-सहन के उसूल।

हिज़ब्र (ہزبر) अ. पुं.–व्याघ्र, सिंह, शेर।

हिजा (ہجا) अ. स्त्री.–निंदा, अपवाद, अपकीर्ति, बुराई; अक्षरों का मात्राओं के साथ उच्चारण।

हिज़ाअ (ہزاع) अ. पुं.–दुर्बल और अशक्त व्यक्ति; उदासीन, खिन्न, बददिल।

हिजाज़ (حجاز) अ. पुं.–अरब का वह प्रदेश जिसमें मक्का और मदीना है।

हिजाब (حجاب) अ. पुं.–आड़, पर्दा, ओट; लज्जा, लाज, शर्म; संकोच, झिझक, हिचकिचाहट।

हिजाबत (حجابت) अ. स्त्री.–द्वारपाल का काम, ड्योढ़ीदारी।

हिजामत (حجامت) अ. स्त्री.–पछने या सिंघी लगवाना; पछने या सिंघी लगाना।

हिजारः (حجارہ) अ. पुं.–पत्थर, प्रस्तर, पाषाण।

हिज़ार (حذار) अ. पुं.–भय, त्रास, डर।

हिजाल (حجال) अ. पुं.–'हजलः' का बहु., दुल्हनों के कमरे, दुल्हनों की सेजें।

हिज्जः (حجّہ) अ. पुं.–वर्ष, साल; एक बार हज करना।

हिज्जीर (ہجّیر) अ. स्त्री.–स्वभाव, प्रकृति, आदत।

हिज़्ब (حزب) अ. पुं.–पक्ष, दल, पार्टी, जमाअत, गुरोह।

हिज़्बुल अह्रार (حزب الاحرار) अ. पुं.–आज़ाद मेम्बरों की पार्टी, लेब्रल पार्टी, स्वतंत्र दल।

हिज़्बुल इक़्तिदार (حزب الاقتدار) अ. पुं.–शासन-पक्ष, हुकूमत की पार्टी।

हिज़्बुलइख़्तियार (حزب الاختیار) अ. पुं.–दे. 'हिज़्बुल-इक़्तिदार'।

हिज़्बुलइख़्तिलाफ़ (حزب الاختلاف) अ. पुं.–मुख़ालिफ़ मेम्बरों की पार्टी, विरोधी दल।

हिज़्बुलउम्माल (حزب العمال) अ. पुं.–मज़दूरों की पार्टी, लेबरपार्टी, श्रमिकदल।

हिज़्बुलमुस्तबिद्दीन (حزب المستبدین) अ. पुं.–कँज़र-वेटिव पार्टी, अनुदार दल।

हिज़्बुल्लाह (حزب اللہ) अ. पुं.–महात्माओं की जमाअत।

हिज़्बे इक़्तिदार (حزب اقتدار) अ. पुं.–दे. 'हिज़्बुल-इक़्तिदार'।

हिज़्बे इख़्तिलाफ़ (حزب اختلاف) अ. पुं.–विरोधी पक्ष, ख़िलाफ़ पार्टी।

हिज़्बे मुआफ़िक़ (حزب موافق) अ. पुं.–सहपक्ष, एकपक्षीय।

हिज़्बे मुख़ालिफ़ (حزب مخالف) अ. पुं.–विरोधी पक्ष, मुख़ालिफ़ पार्टी, विपक्ष।

हिज्र (ہجر) अ. पुं.–वियोग, विरह, जुदाई, फ़िराक़।

हिज्रत (ہجرت) अ. स्त्री.–देश की जुदाई, वतन छोड़ना, परदेस में बसना, प्रवास।

हिज्रनसीब (ہجرنصیب) अ. वि.–जिसकी क़िस्मत में वियोग ही वियोग हो।

हिज्राँ (ہجراں) अ. फा. पुं.–हिज्र, वियोग, जुदाई।

हिज्राँज़दः (ہجراں زدہ) अ. फा. वि.–वियोग का सताया हुआ, विरहग्रस्त।

हिज्राँदीदः (ہجراں دیدہ) अ. फा. वि.–जिसने विरह का दुःख देखा और सहा हो।

हिज्राँनसीब (ہجراں نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में सदा ही विरहग्रस्त होना लिखा हो।

हिज्री (ھجری) अ. वि.–हिज्रतवाला; इस्लामी संवत्सर जो हज़्रत मुहम्मद साहिब की हिज्रत से प्रारंभ होता है।

हिज़्लाज (ھزلاج) अ. पुं.–वृक, भेड़िया, (वि.) फुर्तीला, चुस्त।

हिदायत (ھدایت) अ. स्त्री.–शिक्षा, सीख; आदेश . हुक्म; अमुक कार्य में ऐसा-ऐसा करना है, यह सूझ निदेश, अनुदेश; सन्मार्ग दिखाना, रहनुमाई करना; गुरुदीक्षा, पीर की तल्क़ीन।

हिदायतआमेज़ (ھدایت آمیز) अ. फा. वि.–हिदायतों से भरा हुआ, शिक्षापूर्ण।

हिदायतआमोज़ (ھدایت آموز) अ. फा. वि.–हिदायतें सिखानेवाला, सीख देनेवाला।

हिदायतकार (ھدایت کار) अ. फा. वि.–हिदायत देनेवाला, निर्देशक, अनुदेशक, निर्देष्टा।

हिदायतनामः (ھدایت نامہ) अ. फा. पुं.–वह पत्र जिसमें हिदायतों का विवरण हो, अनुदेशपत्र।

हिद्दत (حدت) अ. स्त्री.–तीव्रता, उग्रता, तेज़ी; उष्णता, गर्मी, हरारत; क्रोध, ग़ुस्सा; प्रकोप, शरीर की धातु में तीव्रता।

हिद्दते मिज़ाज (حدت مزاج) अ. स्त्री.–स्वभाव में क्रोध होना, मिज़ाज में ग़ुस्सा होना।

हिद्दते सफ़्रा (حدت صفرا) अ.स्त्री.–पित्त का प्रकोप, सफ़्रे की तेज़ी।

हिना (حنا) फा. स्त्री.–एक पत्ती जिससे हाथ-पाँव रँगे जाते हैं, रक्तगर्भा, रक्त रंगा, मेंहदी।

हिनाई (حنائی) अ. वि.–मेंहदी लगा हुआ, मेंहदी लगाकर लाल किया हुआ।

हिनाबंद (حنابند) फा. वि.–मेंहदी लगानेवाला।

हिनाबंदी (حنابندی) फा. स्त्री.–मेंहदी लगाना।

हिनाबस्तः (حنابستہ) फा. वि.–मेंहदी लगा हुआ, हाथ या पाँव जिसमें मेंहदी लगी हो।

हिफ़ाज़त (حفاظت) अ. स्त्री.–रक्षा, बचाव; देख-रेख, निरीक्षण; सतर्कता, होशियारी, सावधानी।

हिफ़ाज़ती (حفاظتی) अ. वि.–जो रक्षा के लिए हो, जैसे––'हिफ़ाज़ती दस्तः'।

हिफ़ाज़ते ख़ुदइख़्तियारी (حفاظت خوداختیاری) अ. फा. स्त्री.–आत्मरक्षा।

हिफ़ाज़ते जानोमाल (حفاظت جان و مال) अ. फा. स्त्री.–प्राण अथवा धन की रक्षा, पूरी रक्षा।

हिफ़ादत (حفادت) अ. स्त्री.–अनुकंपा, दया, मेह्रबानी; हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी, दे. 'ह्फादत' दोनों शुद्ध हैं।

हिफ़्ज़ (حفظ) अ. पुं.–रक्षा, हिफाज़त; कंठ, मुखाग्र, वरज़वाँ।

हिफ़्ज़ान (حفظان) अ. पुं.–रक्षा, हिफाज़त, संरक्षण।

हिफ़्ज़ाने सेहत (حفظان صحت) अ. पुं.–तन्दुरुस्ती की हिफाज़त, स्वास्थ्य-रक्षा; सेहत का मह्कमा, स्वास्थ्य-विभाग।

हिफ़्ज़े अम्न (حفظ امن) अ. पुं.–अम्न की हिफ़ाज़त, शान्तिरक्षा।

हिफ़्ज़े मरातिब (حفظ مراتب) अ. पुं.–हैसियत और दर्ज का लिहाज़।

हिफ़्ज़े मातक़द्दम (حفظ ماتقدم) अ. पुं.–अनिष्ट से बचने के लिए पहले से किया जानेवाला उपाय।

हिफ़्ज़े शबाब (حفظ شباب) अ. पुं.–जवानी की हिफ़ाज़त, यौवनरक्षा।

हिबः (ھبہ) अ. पुं.–दान, अनुदान, बख़्शिश; पुरस्कार, पारितोषिक, इनआम।

हिबःकुनिंदः (ھبہ کنندہ) अ. फा. वि.–दान करनेवाला, अनुदाता; पुरस्कारदाता, इन्आम में कोई चीज़ लिखनेवाला।

हिबः नामः (ھبہ نامہ) अ. फा. पुं.–दानपत्र, बख़्शिशनामा।

हिमम (ھمم) अ.स्त्री.–'हिम्मत' का बहु., हिम्मतें, उदारताएँ।

हिमायत (حمایت) अ. स्त्री.–पक्षपात, तरफ़दारी; सहायता, मदद; पृष्ठ पोषण, थपकी, पीठ ठोंककर हिम्मत बढ़ाना; मंत्री, दोस्ती।

हिमायतगर (حمایت گر) अ. फा. वि.–पक्षपाती, तरफ़दार; सहायक, मददगार; पृष्ठपोषक, थपकी देनेवाला।

हिमायती (حمایتی) अ. वि.–पक्षपाती; सहायक; पृष्ठ-पोषक; मित्र।

हिमारः (حمارہ) अ. स्त्री.–गर्दभी, रासभी, गधी, मादा ख़र।

हिमार (جمار) अ. पुं.–गर्दभ, रासभ, वासत, गधा, ख़र।

हिम्मत (ھمت) अ. स्त्री.–साहस, जुर्अत; उत्साह, हौसला; धृष्टता, ढीठपन।

हिम्मतअफ़्ज़ा (ھمت افزا) अ. फा. वि.–हौसला बढ़ानेवाला, प्रोत्साहन देनेवाला।

हिम्मतअफ़्ज़ाई (ھمت افزائی) अ. फा.—हौसला बढ़ाना, प्रोत्साहन देना।

हिम्मतवर (ھمت ور) अ. फा. स्त्री.–हिम्मतवाला, साहसी, उत्साही।

हिम्मतवरी (ھمت وری) अ. फा. स्त्री.–हिम्मती होना, साहसी होना।

हिम्मतशिकन (ھمت شکن) अ. फा. वि.–हौसला तोड़नेवाला, उत्साह भंग करनेवाला।

हिम्मतशिकनी (همتشکنی) अ. फा. स्त्री.–हौसला तोड़ना, उत्साहभेदन।

हिम्मिस (حمص) अ. पुं.–चना, चणक, एक प्रसिद्ध अन्न।

हियल (حیل) अ. पुं.–'हील:' का बहु. हीले, बहाने, छल।

हियातत (حیاطت) अ. स्त्री.–संरक्षण, निगहबानी, चौकसी; सावधानी, सतर्कता, एहतियात।

हिरक़्ल (هرقل) अ. पुं.–प्राचीन रोम के शासकों की उपाधि।

हिरा (حرا) अ. पुं.–मक्के के पास एक पहाड़ जिसमें हज़्रत मुहम्मद साहब ईश्वर का ध्यान किया करते थे।

हिरात (هرات) फा. पुं.–अफ़ग़ानिस्तान का एक नगर।

हिरावूल (هراول) तु. पुं.–सेना का वह भाग जो आगे चलता है, सेनाग्र।

हिरासः (هراسه) फा. पुं.–वह कृत्रिम मनुष्य जो खेत आदि में जंगली जानवरों को डराने के लिए बना देते हैं।

हिरास (هراس) फा. पुं.–भय, त्रास, डर; शंका, आशंका, ख़त्रा; निराशा, नाउम्मेदी।

हिरास आमेज़ (هراس آمیز) फा. वि.–निराशापूर्ण, नाउम्मीदानः; भयपूर्ण, ख़ौफ़ से भरा हुआ।

हिरासत (حراست) अ. स्त्री.–निरीक्षण, निगरानी; ऐसी निगरानी जिसमें आदमी कहीं जा-आ न सके, न किसी से बात कर सके, न खुला रह सके, हवालात।

हिरासत (حراثت) अ. स्त्री.–खेतीबाड़ी, कृषिकर्म, काश्तकारी।

हिरासती (حراستی) अ. वि.–हिरासत में लिया हुआ।

हिरासाँ (هراساں) फा. वि.–भयभीत, डरा हुआ, ख़ाइफ़; निराश, हताश, नाउम्मेद।

हिरासिंदः (هراسنده) फा. वि.–डरानेवाला, ख़ौफ़ दिलानेवाला।

हिरासीदः (هراسیده) फा. वि.–डराया हुआ, भयभीत किया हुआ।

हिर्क़िल (هرقل) अ. पुं.–दे. 'हिरक़्ल' दोनों शुद्ध हैं।

हिर्ज़ (حرز) अ. पुं.–ता'वीज़, रक्षा-कवच; दृढ़ स्थान, मज़्बूत जगह।

हिर्ज़ून (حرزون) अ. स्त्री.–छिपकली, गोधिका, गृहगोधा, अजरा।

हिर्ज़े जाँ (حرزجاں) अ. फा. पुं.–प्राणों की रक्षा का कवच; बहुत ही प्रिय वस्तु।

हिर्दी (هردی) फा. स्त्री.–हल्दी, हरिद्रा, ज़र्दचोब:।

हिर्फ़ः (حرفه) अ. पुं.–उद्यम, रोज़गार; व्यवसाय, पेशा।

हिर्फ़त (حرفت) अ. स्त्री.–उद्यम, रोज़गार; व्यवसाय, पेशा; शिल्प, दस्तकारी; धूर्तता, चालाकी; छल, फ़रेब।

हिर्फ़ती (حرفتی) उ. वि.–उद्यम सम्बन्धी; धूर्त, वंचक, ठग।

हिर्बा (حربا) फा. पुं.–गिरगिट, कृकलास, सरट, कुलाहक।

हिर्म (حرم) अ. वि.–वह पदार्थ जिसका खान-पान धर्म में वर्जित हो।

हिर्मां (حرماں) अ. पुं.–निराशा, नैराश्य, नाउम्मेदी; दुर्भाग्य, बदक़िस्मती।

हिर्मांज़दः (حرماں زده) अ. फा. वि.–निराशाग्रस्त, नाउम्मीद; अभागा, बदनसीब।

हिर्मांनसीब (حرماں نصیب) अ. वि.–जिसके भाग्य में निराशा ही निराशा हो।

हिर्मांपसन्द (حرماں پسند) अ. फा. वि.–जिसको निराशा ही जीवन हो, निराशावादी।

हिर्मास (هرماس) अ. पुं.–व्याघ्र, केसरी, सिंह, शेर।

हिर्रः (هره) अ. स्त्री.–मार्जारी, बिल्ली।

हिर्रीफ़ (حریف) अ. वि.–जिसका स्वाद चरपरा हो।

हिर्स (حرص) अ. स्त्री.–लोभ, लिप्सा, लालच, हवस।

हिर्सो आज़ (حرص و آز) अ. फा. स्त्री.–लोभ और लालच, लालच की प्यास।

हिर्सो हवस (حرص وهوس) अ. फा. स्त्री.–दे. 'हिर्सो आज़'।

हिर्सो हवा (حرص وهوا) अ. फा. स्त्री.–लोभ और लालच, बढ़ी हुई हिर्स।

हिलाल (هلال) अ. पुं.–नवचन्द्र, नया चाँद, बालेंदु, बालचंद्र।

हिलालनुमा (هلال نما) अ. फा. वि.–नये चाँद के आकार का।

हिलाली (هلالی) अ. वि.–नये चाँद-जैसा, नव चंद्राकार; टेढ़ा, वक्र, ख़मीद:।

हिलाले ईद (هلال عید) अ. पुं.–ईद का चाँद।

हिलाले नौ (هلال نو) अ. फा. पुं.–नया चाँद, नवचंद्र, बालेंदु।

हिल्तीत (حلتیت) अ. स्त्री.–हींग, एक प्रसिद्ध गोंद, हिंगु।

हिल्म (حلم) अ. पुं.–गंभीरता, धीरता, शान्ति, मतानत; सहिष्णुता, सहनशीलता, तहम्मुल।

हिल्मशिआर (حلم شعار) अ. वि.–गंभीर, धीर, शान्त, मतीन; सहिष्णु, सहनशील, बुर्दबार।

हिल्यः (حلیه) अ. पुं–मुखाकृति, चेहरा; नखशिख, सरापा; आभूषण, ज़ेवर।

हिल्यून (هلیون) अ. पुं.–एक दाने जो दवा में काम आते हैं।

हिल्लः (حله) अ. पुं.–स्थान, जगह; गंतव्य, मंज़िल; सभा, मज्लिस।

हिल्लत (حلت) अ. स्त्री.–खान-पान का धर्म के अनुसार ठीक होना, विहित होना, हलाल होना।

हिल्लतो हुर्मत (حلت و حرمت) अ. स्त्री.–धर्म के अनुकूल या धर्म के प्रतिकूल होना, विहित या वर्जित होना, हरामो हलाल।

हिल्स (حلس) अ. पुं.–मोटी कमली, मोटा धुस्सा।

हिश्तः (هشتہ) फा. वि.–छोड़ा हुआ।

हिश्तनी (هشتنی) फा. वि.–छोड़ने योग्य।

हिश्फ़ (حشف) अ. स्त्री.–आहट, सुक सुक।

हिश्मत (حشمت) अ. स्त्री.–आतंक, रोब; तेज़, प्रताप, इक़्बाल; लज्जा, शर्म; श्रेष्ठता, बुज़र्गी; क्रोध।

हिस [स्स] (حس) अ. स्त्री.–संवेदन, अनुभव, एहसास; संवेदन शक्ति, क़ुव्वते हिस।

हिसस (حصص) अ. पुं.–'हिस्सः' का बहु, हिस्से, टुकड़े, खंड, अंश।

हिसान (حصان) अ. पुं.–अश्व, घोड़ा; साँड़ घोड़ा।

हिसानत (حصانت) अ. स्त्री.–दृढ़ता, पुष्टि, पाइदारी, मज़बूती।

हिसाब (حساب) अ. पुं.–गणना, शुमार; गणित, रियाज़ी; लेन-देन, व्यवहार; दर, शर्ह, निर्ख़; दी जाने या ली जानेवाली रक़म; क़ियामत के दिन नेकी-बदी का हिसाब।

हिसाबदाँ (حساب داں) अ. फा. वि.–गणितज्ञ, रियाज़ीदाँ, हिसाब जाननेवाला।

हिसाबदानी (حساب دانی) अ. फा. स्त्री.–गणितज्ञता, रियाज़ी जानना।

हिसाबफ़ह्मी (حساب فہمی) अ. फा. स्त्री.–लेन-देन का परस्पर हिसाब समझना।

हिसाबी (حسابی) अ. वि.–हिसाब सम्बन्धी; हिसाब का अच्छा जाननेवाला।

हिसाबे दोस्ताँ (حساب دوستاں) अ. फा. पुं.–मित्रों का हिसाब, जिसमें कमी-बढ़ी का सवाल नहीं होता।

हिसाबो किताब (حساب و کتاب) अ. पुं.–लेन-देन का हिसाब, बहीखाते का हिसाब।

हिसार (حصار) अ. पुं.–परिधि, घेरा, इहाता; दुर्ग, गढ़, क़िला; मंत्र द्वारा बनाया हुआ वह घेरा जिसमें कोई आपत्ति प्रवेश नहीं कर सकती, कुंडली, चक्र।

हिसारबन्द (حصاربند) अ. फा. वि.–जो क़िले में बंद होकर बैठ जाय; वह व्यक्ति जो मंत्र द्वारा बनाये हुए कुंडल में आपत्तियों से सुरक्षित बैठा हो।

हिसारबंदी (حصاربندی) अ. फा. स्त्री.–क़िले में बंद होकर बैठ जाना; कुंडली में बैठना।

हिसारे आफ़ियत (حصارِ عافیت) अ. पुं.–रक्षा का स्थान, जहाँ कोई जान जोखिम न हो।

हिसेब (حسیب) फा. पुं.–'हिसाव' का इमालः, दे. 'हिसाव'।

हिस्न (حصن) अ. पुं.–रक्षास्थान, बचाव की जगह; दुर्ग, गढ़, क़िला।

हिस्ने मुअल्लक़ (حصن معلق) अ. पुं.–आकाश, अंबर, आस्मान।

हिस्ने हसीन (حصن حصین) अ. पुं.–ऐसा दुर्ग जो न तो जीता जा सके, न टूट सके, न उसमें शत्रु प्रवेश कर सके, बहुत ही दृढ़ और मज़्बूत क़िला या रक्षास्थान।

हिस्रिम (حصرم) अ. पुं.–कच्चे अंगूरों का गुच्छा।

हिस्सः (حصہ) अ. पुं.–खंड, भाग, टुकड़ा; व्यवसाय में साझे का भाग, अंश; बाँट में आनेवाला भाग; कथा, मीलाद या ब्याह-शादी के अवसर पर मिलनेवाली मिठाई आदि।

हिस्सःकशी (حصہ کشی) अ. फा. स्त्री.–हिस्से लगाना, भाग करना; हिस्सों के हिसाब से बाँटना।

हिस्सःख़्वाह (حصہ خواہ) अ. फा. वि.–अपना भाग चाहनेवाला।

हिस्सःदार (حصہ دار) अ. फा. वि.–जो हिस्सा पाने का अधिकारी हो; जो हिस्से का मालिक हो, अंशी, साझी।

हिस्सःदारी (حصہ داری) अ. फा. स्त्री.–साझा, भागीदारी।

हिस्सःबख़्रः (حصہ بخرہ) अ. पुं.–टुकड़बाँट, टुकड़े-टुकड़े करके बाँटना।

हिस्सए मुसावी (حصۂ مساوی) अ. पुं.–बराबर का भाग, समानांश, समांश।

हिस्सए रसदी (حصۂ رسدی) अ. पुं.–जिसको जितना चाहिए उसके हिसाब से हिस्सा, यथांश।

हिस्सी (حسی) अ. वि.–इंद्रिय-सम्बन्धी।

हिस्सीयात (حسیات) अ. स्त्री.–इंद्रिय से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुएँ।

हिस्से ज़ाहिरी (حس ظاہری) अ. स्त्री.–बाह्येंद्रिय।

हिस्से बातिनी (حس باطنی) अ. स्त्री.–अंतरिंद्रिय।

हिस्से मुश्तरक (حس مشترک) अ. स्त्री.–वह शक्ति जिसके द्वारा सारी इंद्रियाँ (बाहरी इंद्रियाँ) अपना अपना काम करतीं और उससे शक्ति प्राप्त करती हैं।

हिस्सोहरकत (حس و حرکت) अ. स्त्री.–गति और संवदन, एहसास और हरकत, चलना-फिरना, हिलना-डुलना।

ही

हीज़ (هیز) फा. वि.–क़्लीब, नपुंसक, नामर्द।

हीतः (حیطہ) अ. पुं.–परिधि, घेरा, इहाता; सीमा, हद।

हीतए इक़्तिदार (حیطۂ اقتدار) अ. पुं.—सत्ता और प्रभुत्व की सीमा।

हीतए इख़्तियार (حیطۂ اختیار) अ. पुं.—अधिकार की सीमा।

हीतए क़ुद्रत (حیطۂ قدرت) अ. पुं.—सामर्थ्य और शक्ति की सीमा।

हीतान (حیطان) अ. पुं.—'हाइत' का बहु., दीवारें।

हीतान (حیتان) अ. स्त्री.—'हूत' का बहु., मछलियाँ।

हीन (حین) अ. अव्य.—समय, काल, वक़्त।

हीनहयात (حین حیات) अ. वि.—आजीवन, यावज्जीवन, आजन्म, जिंदगीभर, जीतेजी।

हीमिया (ہیمیا) अ. स्त्री.—इंद्रजाल, मायाकर्म, तिलिस्म, जादू।

हीमियागर (ہیمیاگر) अ. फा वि.—दे. 'हीमियादाँ'।.

हीमियादाँ (ہیمیاداں) अ. फ़ा. वि.—इल्मे तिलिस्म जाननेवाला, ऐंद्रजालिक, मायावी।

हीरियः (ہیریہ) अ. स्त्री.—बफा, सर की भूसी।

हीलः (حیلہ) अ. पुं.—छल, कपट, मक्र, फ़रेब; मिष, ब्याज, बहाना; मिथ्या, अनर्थ, झूठ; टरकाना, आजकल करना।

हीलःकार (حیلہ کار) अ. फा. वि.—दे. 'हीलःगर'।

हीलःकारी (حیلہ کاری) अ. फा. स्त्री.—दे. 'हीलःगरी'।

हीलःगर (حیلہ گر) अ. फा. वि.—बहाने बनानेवाला, चालबाज़; धोखेबाज़, छली।

हीलःगरी (حیلہ گری) अ. फा. स्त्री.—चालबाज़ी, बहानेबनाना; धोखाबाज़ी, छल।

हीलःतराश (حیلہ تراش) अ. फा. वि.—नये-नये बहाने गढ़नेवाला।

हीलःतराशी (حیلہ تراشی) अ. फा. स्त्री.—नये-नये बहाने गढ़ना।

हीलःपर्वर (حیلہ پرور) अ. फा. वि.—दे. 'हीलःगर'।

हीलःपर्वरी (حیلہ پروری) अ. फा. स्त्री.—दे. 'हीलःगरी'।

हीलःपसंद (حیلہ پسند) अ. फा. वि.—जिसे बहानाबाज़ी अच्छी लगती हो।

हीलःपसंदी (حیلہ پسندی) अ. फा. स्त्री.—बहानाबाज़ी अच्छी लगना।

हीलःबाज़ (حیلہ باز) अ. फा. वि.—दे. 'हीलःगर'।

हीलःबाज़ी (حیلہ بازی) अ. फा. स्त्री.—दे. 'हीलःगरी'।

हीलःशिआर (حیلہ شعار) अ.वि.—जिसका काम ही बहाने बनाना हो।

हीलःशिआरी (حیلہ شعاری) अ. स्त्री.—बहाने बनाने की प्रकृति।

हीलःसाज़ (حیلہ ساز) अ. फा. वि.—दे. 'हीलःगर'।

हीलःसाज़ी (حیلہ سازی) अ. फा. स्त्री.—दे. 'हीलःगरी'।

हीलःसामाँ (حیلہ ساماں) अ. फा. वि.—दे. 'हीलःगर'।

हीलःसामानी (حیلہ سامانی) अ. फा. स्त्री.—दे. 'हीलःगरी'।

हील (ہیل) फा. स्त्री.—इलाइची।

हीलाज (ہیلاج) अ. पुं.—जन्मपत्री, जन्मकुंडली, ज़ाइचा।

हीले कलाँ (ہیل کلاں) फा. स्त्री.—बड़ी इलाइची।

हीले ख़ूर्द (ہیل خرد) फा. स्त्री.—छोटी इलाइची।

हीले सफ़ेद (ہیل سفید) फा. स्त्री.—छोटी इलाइची।

हु

हुकमा (حکما) अ. पुं.—'हकीम' का बहु., वैज्ञानिकजन, फ़लसफ़ी; हकीम लोग, वैद्य लोग।

हुकमाए वक़्त (حکماے وقت) अ. पुं.—किसी समय में उस समय के वैज्ञानिक लोग या वैद्य लोग।

हुक़ूक़ (حقوق) अ. पुं.—'हक़' का बहु., अधिकार समूह।

हुक़ूक़े इंसानियत (حقوق انسانیت) अ. पुं.—वह अधिकार जो मानवजाति को प्राप्त हैं; वह अधिकार जो दूसरे जीवधारियों के मानवजाति पर हैं।

हुक़ूक़े ज़ौजीयत (حقوق زوجیت) अ. पुं.—वह अधिकार जो पत्नी को पति पर प्राप्त हैं।

हुक़ूक़े निस्वानी (حقوق نسوانی) अ. पुं.—वह अधिकार जो स्त्री वर्ग को मनुष्यों पर प्राप्त हैं।

हुक़ूक़े शह्रीयत (حقوق شہریت) अ. फा. पुं.—वह अधिकार जो नगरवासियों को प्राप्त हैं, नागरिकता।

हुक़ूक़े शौहरीयत (حقوق شوہریت) अ. फा. पुं.—वह अधिकार जो पति को पत्नी पर प्राप्त हैं।

हुकूमत (حکومت) अ. स्त्री.—शासन, सत्ता, राज; राज्य, राष्ट्र, सल्तनत; अत्याचार, ज़ुल्म, ज़बरदस्ती; सरकार, राज।

हुकूमते आइनी (حکومت آئینی) अ. स्त्री.—वह राज जो विधान द्वारा चलाया जाय।

हुकूमते इलाही (حکومت الہی) अ. स्त्री.—ईश्वरीय सत्ता, मशीयत।

हुकूमते ख़ुदइख़्तियारी (حکومت خوداختیاری) अ. फा. स्त्री.—वह राज जिसमें किसी की पराधीनता न हो, स्वायत्त शासन।

हुकूमते ग़ैरआइनी (حکومت غیر آئینی) अ. फा. स्त्री.—वह राज जिसमें कोई विधान न हो।

हुकूमते जुम्हूरी (حکومت جمہوری) अ. स्त्री.—वह राज जो जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चले, जनतंत्र, गणतंत्र।

हुकूमते शख़्शी (حکومت شخصی) अ. स्त्री.–वह राज जिसमें व्यक्ति अपनी राय से राज्य करे ।

हुकूमते शैतानी (حکومت شیطانی) अ. स्त्री.–अनीति, अत्याचार और अन्याय की हुकूमत ।

हुक्कः (ھکہ) फा. स्त्री.–हिचकी, हिक्का ।

हुक़्क़ः (حقہ) अ. पुं.–पिटारी, टोकरी; इत्र या आभूषण रखने का डब्बा; गुड़गुड़ी, चिलम पीने का हुक़्क़ा ।

हुक़्क़ःबाज़ (حقہ باز) अ. फा. वि.–मदारी, पिटारी में से शाबदे दिखानेवाला; छली, ठग, मक्कार ।

हुक़्क़ःबाज़ी (حقہ بازی) अ. फा. स्त्री.–मदारीपन, खेल तमाशे दिखाना; छल करना, ठगई, फ़रेबकारी ।

हुक्काम (حکام) अ. पुं.–'हाकिम' का बहु., हाकिम लोग, पदाधिकारी वर्ग ।

हुक्कामरस (حکام رس) अ. फा. वि.–जो हाकिमों से मेल-जोल रखता और उन पर अपना प्रभाव डाल सकता हो ।

हुक्कामरसी (حکام رسی) अ. फा. स्त्री.–हाकिमों से मेल-जोल ।

हुक्कामे बाला (حکام بالا) अ. फा. पुं.–किसी पदाधिकारी के ऊपरी अफ़्सरान ।

हुक्कामे वक़्त (حکام وقت) अ. पुं.–वर्तमानकाल के पदाधिकारी लोग ।

हुक्चः (ھکچہ) फा. स्त्री.–हिचकी , हिक्का ।

हुक़्नः (حقنہ) अ. पुं.–स्नेह वस्ति, अनीमा, डूश ।

हुक्म (حکم) अ.पुं.–आज्ञा, इजाज़त; आदेश, फ़रमान; राजादेश, हुक्मनामा ।

हुक्मअंदाज़ (حکم انداز) अ. फा. वि.–निशाने पर ठीक गोली लगानेवाला, लक्ष्य-भेदी ।

हुक्मअंदाज़ी (حکم اندازی) अ. फा. स्त्री.–ठीक निशाना मारना, लक्ष्य-भेद ।

हुक्मउदूल (حکم عدول) अ. वि.–अवज्ञाकारी, आज्ञापालन न करनेवाला, उद्दंड, सरकश, अवज्ञ ।

हुक्मउदूली (حکم عدولی) अ. स्त्री.–आज्ञापालन न करना, उद्दंडता, सरकशी ।

हुक्मन (حکماً) अ. वि.–हुक्म से, आदेश द्वारा ।

हुक्मनामः (حکم نامہ) अ. फा. पुं.–आदेशपत्र, वह काग़ज़ जिस पर कोई हुक्म हो ।

हुक्मबरदार (حکم بردار) अ. फा. वि.–दे. 'हुक्म राँ' ।

हुक्मबरदारी (حکم برداری) अ. फा. वि.–दे. 'हुक्मरानी' ।

हुक्मराँ (حکمراں) अ. फा. वि.–शासन चलानेवाला, शासक, हाकिम ।

हुक्मरानी (حکمرانی) अ. फा. स्त्री.–शासन चलाना, हुकूमत करना ।

हुक्मी (حکمی) अ. वि.–निश्चित, यक़ीनी; अचूक, अमोघ, ख़ता न करनेवाला, (दवा या निशाना) ।

हुक्मे आख़िर (حکم آخر) अ. पुं.–दे. 'हुक्मे क़त्ई ।

हुक्मे इम्तिनाई (حکم امتنائی) अ. पुं.–वह हुक्म जो मुक़द्दमे के बीच में किसी कार्य विशेष को रोकने के लिए दिया जाय, निषेधादेश ।

हुक्मे क़ज़ा (حکم قضا) अ. पुं.–ईश्वरीय आदेश, ख़ुदा का हुक्म; होनहार, भावी, शुदनी ।

हुक्मे क़ज़ाओक़दर (حکم قضاوقدر) अ. पुं.–भावी और होनहार; ईश्वरेच्छा, मशीयत ।

हुक्मे क़त्ई (حکم قطعی) अ.पुं.–आख़िरी और अटल हुक्म, अंतिम निर्णय, अंतिमादेश ।

हुक्मे गश्ती (حکم گشتی) अ. फा. पुं.–विभागों में भेजा जानेवाला हुक्म, परिपत्र, सरकुलर ।

हुक्मे ज़ह्री (حکم ظہری) अ.पुं.–वह आदेश जो प्रार्थनापत्र की पुश्त पर लिखा जाता है ।

हुक्मे नातिक़ (حکم ناطق) अ. पुं.–दे. 'हुक्मे क़त्ई' ।

हुक्मे मशीयत (حکم مشیت) अ. पुं.–दे. 'हुक्मे क़ज़ा' ।

हुक्मे रब्बी (حکم ربی) अ. पुं.–ईश्वरादेश, ख़ुदा का हुक्म, अवश्यंभावी, मशीयत, शुदनी ।

हुक्मे हाकिम (حکم حاکم) अ.पुं.–हाकिम का हुक्म, राज्यादेश ।

हुकहुक् (ھکہک) फा. स्त्री.–हिक्का, हिचकी ।

हुजज (حجج) अ. स्त्री.–हुज्जत का बहु., हुज्जतें ।

हुज़ाल (ھزال) अ. पुं.–दुबलापन, कमज़ोरी; तपेदिक़ का एक दरजा ।

हुज़ुज़ (حضض) अ. स्त्री.–रसौत, एक प्रसिद्ध औषधि ।

हुजुब (حجب) अ. पुं.–'हिजाब' का बहु., पर्दें, आड़ें ।

हुजूअ (ھجوع) अ. पुं.–निद्रा, नींद; स्वाप, ख़्वाब; शांति, सुकून; सुख, आराम ।

हुजूद (ھجود) अ. पुं.–रात को जागना ।

हुजूम (ھجوم) अ. पुं.–जन-समूह, भीड़, मज्मा; किसी चीज़ की भीड़, उदा०—"बस हुजूमे ना उमीदी ख़ाक में मिल जायगी । यह जो एक लज़्ज़त हमारी सईए ला हासिल में है ।"—ग़ालिब ।

हुज़ूर (حضور) अ. पुं.–उपस्थिति, हाज़िरी; विद्यमानता, मौजूदगी; साक्षात, आमना-सामना; सम्बोधन के लिए एक आदरसूचक शब्द ।

हुज़ूरी (حضوری) अ. स्त्री.–उपस्थिति, हाज़िरी; विद्यमानता, मौजूदगी; संमुखता, सामना ।

हुज़ूरे यार (حضور یار) अ. फा. पुं.–नायिका के सामने, मा'शूक़ के समक्ष।

हुज़ूरेवाला (حضوروالا) अ. फा. पुं.–बड़े आदमी के लिए प्रतिष्ठासूचक सम्बोधन का शब्द।

हुज़ूरोग़ैब (حضوروغیب) अ.पुं.–प्रत्यक्ष और परोक्ष, सामना और पीठ पीछा।

हुज़ैफ़ः (حذیفہ) अ.पुं.–पैग़ंबर साहिब के एक सिहाबी।

हुज्जत (حجت) अ. स्त्री.–तर्क, दलील; प्रमाण, सुबूत; कलह, झगड़ा; वादविवाद, बहस्; तू-तू, मैं-मैं।

हुज्जती (حجتی) अ. वि.–हुज्जत करनेवाला ; तू-तू, मैं-मैं करनेवाला; वाद-विवाद करनेवाला।

हुज्जतुल्लाह (حجتہ اللہ) अ. स्त्री.–ईश्वर के सत्य होने का प्रमाण।

हुज्जतेक़ाते' (حجت قاطع) अ.स्त्री.–युक्ति युक्त दलील, अटल प्रमाण।

हुज्जते गोया (حجت گویا) अ.फा.स्त्री.–बोलती हुई दलील, तर्क संगत प्रमाण।

हुज्जते मुवज्जहः (حجت موجہہ) अ. स्त्री.–दे. 'हुज्जते क़ाते'।

हुज्जते मोह्कम (حجت محکم) अ. पुं.–मज़बूत दलील, मख्मल का वह लिंगरूपी यंत्र जिसे एक स्त्री अपनी कमर में बाँधकर दूसरी स्त्री से चपटी लड़ाती है।

हुज्जाज (حجاج) अ.पुं.–'हाज' का बहु., हाजी लोग।

हुज्जाब (حجاب) अ.पुं.–'हाजिब' का बहु., ड्यूढ़ीदार लोग।

हुज़्ज़ार (حضار) अ. पुं.–'हाज़िर' का बहु., उपस्थितजन, हाज़िरीन।

हुज़्न (حزن) अ.पुं.–दुःख, खेद, शोक, संताप, ग़म, रंज।

हुज़्नीयः (حزنیہ) अ. पुं.–वह खेल या ड्रामा जिसका अंत दुःख पर हो, दुःखांत।

हुज़्मः (حزمہ) अ. पुं.–मुट्ठा, पूला।

हुतमः (حطمہ) अ. स्त्री.–प्रचंडाग्नि, बहुत ही तेज आग; नरक का तीसरा तल।

हुताम (حطام) अ. पुं.–थोड़ा अंश, ज़रा सा।

हुत्ती (حطی) अ. स्त्री.–अब्जद के हिसाब से हे, तो और ये जिनके अंक क्रमशः ८, ९, १० हैं।

हुदः (ہدہ) फा. पुं.–सत्य, ठीक; लाभ, फ़ाइदा।

हुदा (حدی) अ. पुं.–अरब के ऊँटवालों का विशेष गाना, जो वह ऊँट चलाते समय गाते हैं।

हुदा (ہدی) अ. पुं.–सरल मार्ग, सीधा रास्ता; सत्यता, सच्चाई।

हुदात (ہداۃ) अ. पुं.–'हादी' का बहु., हिदायत करनेवाले, सच्चा मार्ग दिखानेवाले।

हुदूद (حدود) अ. उभ.–'हद' का बहु., सीमाएँ, हदें।

हुदूदे अर्बअः (حدود اربعہ) अ. पुं.–चौहद्दी, किसी स्थान या मकान से मिले हुए चारों ओर के मकान या ज़मीन।

हुदूदे शर्ई (حدود شرعی) अ. पुं.–धर्मशास्त्र की सीमाएँ; धर्मानुसार दिये जानेवाले दंड।

हुदूस (حدوث) अ. पुं.–नवीनता, नयापन; किसी वस्तु का नया पैदा होना।

हुदूसो क़िदम (حدوث وقدم) अ. पुं.–नयापन और पुरानापन; नित्यता और नश्वरता।

हुदैबियः (حدیبیہ) अ. स्त्री.–अरब का एक स्थान।

हुद्हुद (ہدہد) अ. पुं.–एक कलग़ीदार पक्षी।

हुनर (ہنر) फा. पुं.–शिल्प, दस्तकारी; कला, फ़न; गुण, ख़ूबी; हाथ की सफ़ाई, चालाकी; विद्या, इल्म।

हुनरआश्ना (ہنر آشنا) फा. वि.–हुनर जाननेवाला, गुणी।

हुनरनाआश्ना (ہنرناآشنا) फा. वि.–जो कोई हुनर न जानता हो, गुणहीन, कलाहीन।

हुनर नाशनास (ہنرناشناس) फा.वि.–जो हुनर न जानता हो; जो हुनर की क़द्र न पहचानता हो।

हुनरमंद (ہنرمند) फा. वि.–हुनर जाननेवाला, गुणवान, कलाकार, शिल्पकार, गुनी।

हुनरमंदी (ہنرمندی) फा.स्त्री.–हुनर जानना, गुनी होना।

हुनरवर (ہنرور) फा. वि.–दे. 'हुनरमंद'।

हुनरशनास (ہنرشناس) फा. वि.–हुनर जाननेवाला; हुनर की क़द्र पहचाननेवाला।

हुनरशनासी (ہنرشناسی) फा.स्त्री.–हुनर जानना; हुनर की क़द्र पहचानना।

हुफ़्नः (حفنہ) अ. पुं.–अंजलि, करपुट, लप।

हुफ़्फ़ाज़ (حفاظ) अ. पुं.–'हाफ़िज़' का बहु., वह लोग जिन्हें क़ुरान कंठ हो।

हुफ़्रः (حفرہ) अ. पुं.–गर्त, गढ़ा; छिद्र, सूराख़।

हुब [ब्ब] (حب) अ. स्त्री.–प्रेम, स्नेह, महब्बत।

हुबल (ہبل) अ. पुं.–अरब की एक मूर्ति, जो इस्लाम से पूर्व का'बे में थी।

हुबाब (حباب) अ. पुं.–मित्रता, दोस्ती; अहि, साँप; पिशाच, देव।

हुबाला (حبالی) अ.स्त्री.–'हुब्ला' का बहु., गर्भवती स्त्रियाँ।

हुबाहिब (حباحب) अ. पुं.–जुगनू, खद्योत।

हुबूत (ہبوط) अ. पुं.–नीचे उतरना; मूल्य गिरना; निचली भूमि; दुबलापन।

हुबूत (حبوط) अ. पुं.–पुण्यों और सत्कर्मों का विनाश।

हुबूब (حبوب) अ. स्त्री.–'हब' का बहु., गोलियाँ।

हुबूब (هبوب) अ. पुं.–वायु का बहना, हवा का चलना।

हुबूर (حبور) अ. पुं.–'हिब्र' का बहु., बुद्धिमान् लोग। हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी।

हुब्बुलवतन (حب الوطن) अ. पुं.–स्वदेशप्रेम, देशभक्ति, इश्क़े वतन।

हुब्ला (حبلی) अ. स्त्री.–गर्भवती, अंतर्वली, हामिला।

हुमक़ा (حمقا) अ. पुं.–'अहमक़' का बहु., मूर्ख लोग।

हुमा (ہما) फा. पुं.–उर्दू और फ़ार्सी साहित्य का एक कल्पित पक्षी, जिसकी छाया पड़ जाने से मनुष्य राजा हो जाता है, वह पक्षी केवल हड्डियाँ खाता है।

हुमायूँ (ہمایوں) फा. वि.–शुभ, मंगलमय, मुबारक, (पु.) एक मुग़ल शासक जो 'अकबर' का पिता था।

हुमायूँबख़्त (ہمایوں بخت) फा. वि.–सौभाग्यशाली, बलंद इक़बाल।

हुमुक़ (حمق) अ. पुं.–मूर्खता, अज्ञानता, नादानी, जहालत।

हुमुर (حمر) अ. पुं.–'हिमार' का बहु., गधे।

हुमूज़त (حموضت) अ. स्त्री.–खट्टापन, खटास, अम्लता।

हुमूल (حمول) अ. पुं.–योनि के भीतर रखने की ओषधि।

हुमैक़ा (حمیقا) अ. स्त्री.–मूर्ख स्त्री, बेवकूफ़ औरत।

हुमैरा (حمیرا) अ. स्त्री.–लाल रंग की स्त्री, गोरी चिट्टी स्त्री।

हुम्क़ (حمق) अ. पुं.–मूर्खता, नादानी, अज्ञान, हुमुक़।

हुम्मस (حمص) अ. पुं.–चना, चणक, एक प्रसिद्ध अन्न।

हुम्मा (حمی) अ. पुं.–ज्वर, ताप, बुख़ार।

हुम्माए दमवी (حماے دموی) अ. पुं.–वह ज्वर जो रक़्त के कोप से आये।

हुम्माए नाइबः (حماے نائبہ) अ. पुं.–वह ज्वर जो बारी से आये।

हुम्माए बलग़मी (حماے بلغمی) अ. पुं.–कफ़ के प्रकोप से आनेवाला ज्वर, कफ़ ज्वर।

हुम्माए मुज़्मिनः (حماے مزمنہ) अ. पुं.–बसा हुआ बुख़ार, सतत ज्वर।

हुम्माए मोह्‌रिक़ः (حماے محرقہ) अ. पुं.–टाई फ़ाइड बुख़ार।

हुम्माएराबिअः (حماے رابعہ) अ. पुं.–चौथिया बुख़ार, चतुर्थक।

हुम्माए सफ़्रावी (حماے صفراوی) अ. पुं.–पित्त के कोप से आनेवाला ज्वर, पित्तज्वर।

हुम्माए सौदावी (حماے سوداوی) अ. पुं.–वात के दोष से आनेवाला वर, वातज्वर।

हुम्माज़ (حماض) अ. पुं.–एक खट्टी घास, चूका साग।

हुम्रः (حمرہ) अ. पुं.–शरीर में लाल रंग के दाने निकलने का रोग, सुर्ख़ बादा।

हुम्रत (حمرت) अ. स्त्री.–रक़्तता, लालिमा, सुर्ख़ी।

हुम्री (حمری) अ. वि.–सुर्ख़, रंग का।

हुर [र्र] (حر) अ. वि.–स्वतंत्र, आज़ाद; प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़ज़; वह दास जो सेवा-मुक्त हो गया हो।

हुरसा (حرصا) अ. पुं.–'हरीस' का बहु., लालची लोग।

हुरुम (حرم) अ. पुं.–एहराम बाँधे हुए लोग।

हुरूफ़ (حروف) अ. पुं.–'हर्फ़' का बहु., अक्षर माला।

हुरूफ़ शनास (حروف شناس) अ. फा. वि.–केवल अक्षर ज्ञान रखनेवाला, कम पढ़ा-लिखा।

हुरूफ़े क़मरी (حروف قمری) अ. पुं.–अरबी में वे अक्षर जिनमें 'ल' मिलता नहीं है, जैसे–'अल क़मर' और वे अक्षर हैं—

ہ ی و م ک ق ف غ ع خ ح ج ب ا

हुरूफ़े शम्सी (حروف شمسی) अ. पुं.–अरबी के वे अक्षर जिनमें 'ल' मिलकर वही अक्षर बन जाता है जिससे वह मिलता है, जैस–अश्शम्स (अल शम्स) वे अक्षर हैं—

ن ل ظ ط ض ص ش س ز ر ذ د ث ت

हुरूब (حروب) अ. पुं.–'हर्ब' का बहु., लड़ाइयाँ, जंगें।

हुरूबे सलीबी (حروب صلیبی) अ. पुं.–वह प्राचीन लड़ाइयाँ जो तुर्कों और ईसाइयों में हुईं।

हुरूर (حرور) अ. पुं.–गर्मी, उष्णता।

हुरैरः (ہریرہ) अ. स्त्री.–छोटी और ख़ूबसूरत बिल्ली।

हुर्क़त (حرقت) अ. स्त्री.–जलन, रोज़िश, (विशेपतः पेशाब की)।

हुर्क़ते बौल (حرقت بول) अ. स्त्री.–पेशाब की जलन।

हुर्फ़ (حرف) अ. पुं.–एक दाने जो दवा में चलते हैं, चंसुर, हालौन।

हुर्मत (حرمت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठा, संमान, इज़्ज़त; मर्यादा, नामूस; सतीत्व, इस्मत; किसी वस्तु के खान-पान का धर्म में वर्जित होना, निषेध, मनाही।

हुर्मत बहा (حرمت بہا) अ. फा. पुं.–वह धन जो किसी की मानहानि के बदले में दिलाया जाय।

हुर्मान (حرمان) अ. पुं.–बुद्धि, मेधा, अक़्ल।

हुर्मास (ہرماس) फा. पुं.–पार्सियों का बुराई का ख़ुदा, अह्रमन, शैतान।

हुर्मुज (ہرمز) फा. पुं.–'हुर्मुज़्द' का लघु., दे. 'हुर्मुज़्द'; एक द्वीप; खलीज फ़ारिस।

हुर्मुज़्द (هرمزد) फा. पुं.–बृहस्पति, मुशतरी, दे. 'होर मुज़्द' दोनों शुद्ध हैं।

हुर्रः (حرہ) अ. स्त्री.–स्वतंत्र स्त्री; वह दासी जो सेवा मुक्त कर दी गई हो।

हुर्रा (هرا) फा. पुं.–कोलाहल, शोर; भयानक शब्द, डरावनी आवाज़।

हुर्रास (حراث) अ. पुं.–'हारिस' का बहु., किसान लोग, कृषक वर्ग।

हुर्रीयत (حریت) अ. स्त्री.–स्वतंत्रता, स्वाधीनता, आज़ादी।

हुर्रीयतपरस्त (حریت پرست) अ. फा. वि.–जो पराधीनता के बंधनों से मुक्ति चाहता हो, और इसके लिए हर क़ुर्बानी को तैयार हो।

हुलफ़ा (حلفا) अ. पुं.–'हलीफ़' का बहु., वह लोग या राष्ट्र जिन्होंने परस्पर मित्र रहने की संधि की हो।

हुलल (حلل) अ. पुं.–'हुल्लः' का बहु., स्वर्ग के वस्त्राभूषण।

हुलाकू (هلاکو) तु. पुं.–एक बहुत ही अत्याचारी तुर्की नरेश जो चिंगेज़ ख़ाँ का पोता था।

हुलुम (حلم) अ. पुं.–स्वप्न, ख़्वाब, दे. 'हुल्म' दोनों शुद्ध हैं।

हुलूक (هلوک) अ. पुं.–विनाश, बरबादी; हनन, वध, क़त्ल।

हलूल (حلول) अ. पुं.–भीतर समाना, प्रवेश; एक आत्मा का दूसरे शरीर में प्रवेश।

हल्क़ (هلک) अ. पुं.–विनाश, बरबादी; बध, क़त्ल, हत्या।

हुल्बः (حلبہ) अ. पुं.–मेथी, एक प्रसिद्ध शाक।

हुल्म (حلم) अ. पुं.–स्वप्न, ख़्वाब, दे. 'हुलुम', दोनों शुद्ध हैं।

हुल्यः (حلیہ) अ. पुं.–आभूषण, ज़ेवर; किसी आदमी या पशु की तलाश के लिए दिये जानेवाले शरीर के चिह्न।

हुल्लः (حلہ) अ. पुं.–वह कपड़े जो स्वर्ग में दिये जाते हैं।

हुल्लान (حلان) अ. पुं.–भेड़ या बकरी का छोटा बच्चा, हलवान।

हुल्लाम (حلام) अ. पुं.–भेड़ या बकरी का बच्चा।

हुल्व (حلو) अ. वि.–मधुर, मीठा।

हुवः हुवः (هوهو) अ. अव्य.–अक्षरशः, हर्फ़ ब हर्फ़; जूँ का तूँ, जैसा था वैसा ही।

हुवल्लाह (هواللہ) अ. वा.–वही ईश्वर है।

हुवैदा (هویدا) फा. वि.–प्रकट, व्यक्त, ज़ाहिर।

हुशयार (هشیار) फा. वि.–'होशयार' का लघु., दे. होशयार।

हुशयारी (هشیاری) फा. स्त्री.–'होशयारी' का लघु., दे. 'होशयारी'।

हुशवार (هشوار) फा. वि.–दे. 'हुशयार'।

हुशाशः (حشاشہ) अ. पुं.–बचे हुए ज़रा-से प्राण।

हुसान (حسان) अ. वि.–रूपवान्, सुंदर, हसीन व्यक्ति।

हुसाम (حسام) अ. पुं.–खड्ग, कृपाण, तलवार।

हुसूद (حسود) अ. पुं.–'हासिद' का बहु., ईर्षालु व्यक्तियाँ, डाही लोग।

हुसून (حصون) अ. पुं.–'हिस्न' का बहु., क़िले, दुर्ग; रक्षा के स्थान।

हुसूल (حصول) अ. पुं.–प्राप्ति, लब्धि, मिलना; लाभ, नफ़ा; आय, आमदनी; परिणाम, फल; निष्कर्ष, नतीजा।

हुसूले इक़्तिदार (حصول اقتدار) अ. पुं.–सत्ता की प्राप्ति।

हुसूले इल्म (حصول علم) अ. पुं.–इल्म की प्राप्ति, विद्यालाभ।

हुसूले कामयाबी (حصول کامیابی) अ. फा. पुं.–सफलता प्राप्ति, किसी काम में सफल होना।

हुसूले ता'लीम (حصول تعلیم) अ. पुं.–विद्योपार्जन, शिक्षा लाभ, पढ़ाई हासिल करना।

हुसूले नजात (حصول نجات) अ. पुं.–मुक्ति लाभ, बख़्शिश हासिल होना।

हुसूले नियाज़ (حصول نیاز) अ. फा. पुं.–मुलाक़ात होना, भेंट होना।

हुसूले फ़ैज़ (حصول فیض) अ. पुं.–कीर्तिलाभ, यशलाभ; अर्थलाभ।

हुसूले बरकत (حصول برکت) अ. पुं.–प्रसादलाभ।

हुसूले बिहिश्त (حصول بہشت) अ. फा. पुं.–स्वर्गलाभ, बिहिश्त मिलना।

हुसूले मक़्सद (حصول مقصد) अ. पुं.–आशा की प्राप्ति, मनोकामना की प्राप्ति।

हुसूले मत्लब (حصول مطلب) अ. पुं.–अर्थसिद्धि, मत्लब की प्राप्ति।

हुसूले मुद्दआ (حصول مدعا) अ. पुं.–दे. 'हु. मत्लब'।

हुसूले मुराद (حصول مراد) अ. पुं.–मक़्सद और मनोकामना में सफलता, मनोवांछित वस्तु की प्राप्ति।

हुसूले मे'राज (حصول معراج) अ. पुं.–उन्नति की अंतिम सीमा पर पहुँच जाना।

हुसूले शिफ़ा (حصول شفا) अ. पुं.–रोगमुक्ति, स्वास्थ्य-प्राप्ति।

हुसूले शुह्रत (حصول شہرت) शुह्रत और ख्याति का प्राप्त होना, किसी कार्य या कलाविशेष में प्रसिद्धि।

हुसूले सआदत (حصول سعادت) अ. पुं.–किसी पूज्य व्यक्ति

की सेवा का सौभाग्य प्राप्त होना, किसी उपकार का यश मिलना।

हुसूले सेहत (حصول صحت) अ. पुं.–स्वास्थ्य प्राप्ति, रोग मुक्ति, मरज़ से शिफ़ा।

हुसैन (حسین) अ. पुं.–हज़्रतअली के छोटे सुपुत्र का नाम जिन्होंने यज़ीद का शासन स्वीकार नहीं किया था और इसके कारण उनको शहीद किया गया।

हुस्न (حسن) अ. पुं.–सौंदर्य, सुंदरता, ख़ूबसूरती; शोभा, छटा, रौनक़, उदा०––"हुस्न ग़मज़ा की कशाकश से छुटा मेरे बाद, बारे आराम से हैं अहले जफ़ा मेरे बाद।"–ग़ालिब

हुस्न (حصن) अ. स्त्री.–सतीत्व, इफ़्फ़त।

हुस्नअफ़ज़ा (حسن افزا) अ. फा. वि.–सुंदरता बढ़ानेवाला, रूपवर्द्धक।

हुस्नआरा (حسن آرا) अ. फा. वि.–सुंदर, रूपवान्, अच्छी शक्लवाला (वाली), सुंदरता का श्रृंगारित करनेवाला।

हुस्नआराई (حسن آرائی) अ.फा.स्त्री.–सुंदरता को आभूषित और श्रृंगारित करना अर्थात् बहुत सुंदर होना।

हुस्नख़ेज़ (حسن خیز) अ. फा.वि.–वह स्थान जहाँ के लोग सुंदर होते हों, सुंदरता की उत्पत्ति करनेवाला।

हुस्नख़ेज़ी (حسن خیزی) अ.फा.स्त्री.–सुंदरता की उत्पत्ति, सौंदर्य की बहुतात।

हुस्नपरस्त (حسن پرست) अ. फा. वि.–सौंदर्य की पूजा करनेवाला; सुंदर स्त्रियों को चाहनेवाला; सुंदर वस्तुओं पर लट्टू रहनेवाला।

हुस्नपरस्ती (حسن پرستی) अ. फा. स्त्री.–सुंदर स्त्रियों की क़द्रदानी; सुंदर चीज़ों पर मुग्धता।

हुस्नपसंद (حسن پسند) अ. फा. वि.–अच्छी चीज़ें पसंद करनेवाला; अच्छी स्त्रियों से मेल-जोल रखने और उन्हें चाहनेवाला।

हुस्नपसंदी (حسن پسندی) अ. फा. स्त्री.–सुंदर वस्तुओं को पसंद करना; अच्छी शक्लवालों को चाहना।

हुस्नफ़रोश (حسن فروش) अ. फा. स्त्री.–गणिका, वेश्या, तवाइफ़, रूप बेचनेवाली।

हुस्नबख़्श (حسن بخش) अ. फा. वि.–सुंदरता प्रदान करनेवाला अर्थात् रूप देनेवाला, सुंदर बनानेवाला।

हुस्ना (حسنا) अ. स्त्री.–अति सुंदर स्त्री, बहुत ही हसीन औरत, रूपवती, लावण्यप्रभा।

हुस्नियात (حسنیات) अ. स्त्री.–'हुस्ना' का बहु., सुंदर और रूपवती स्त्रियाँ।

हुस्ने अंजाम (حسن انجام) अ. फा. पुं.–किसी कार्य का फल और परिणाम अच्छा होना।

हुस्ने अक़ीदत (حسن عقیدت) अ. पुं.–किसी की ओर अत्यधिक श्रद्धा।

हुस्ने अख़्लाक़ (حسن اخلاق) अ. पुं.–सुशीलता, आचार व्यवहार में सद्वृत्ति।

हुस्ने अदा (حسن ادا) अ. फा. पुं.–बात कहने का अच्छा ढंग, लिखने की अच्छी शैली।

हुस्ने आग़ाज़ (حسن آغاز) अ. फा. पुं.–कार्यारंभ में अच्छे शगुन और सुविधाओं की प्राप्ति।

हुस्ने इंतिज़ाम (حسن انتظام) अ. पुं.–कार्य विशेष के प्रबन्ध की सुंदरता, सुप्रबंध।

हुस्ने इंसिराम (حسن انصرام) अ. पुं.–दे. 'हु. इंतिज़ाम'।

हुस्ने इत्तिफ़ाक़ (حسن اتفاق) अ. पुं.–किसी बात का अचानक तौर पर अच्छा हो जाना, दैवयोग।

हुस्ने एतिक़ाद (حسن اعتقاد) अ. पुं.–दे. 'हु. अक़ीदत'।

हुस्ने एतिमाद (حسن اعتماد) अ. पुं.–किसी पर अत्यधिक विश्वास।

हुस्ने क़बूल (حسن قبول) अ. पुं.–किसी मिली हुई चीज़ को अच्छे प्रकार से क़बूल करना; किसी दी जानेवाली वस्तु का भली-भाँति स्वीकार किया जाना।

हुस्ने ख़िताब (حسن خطاب) अ. पुं.–अच्छे प्रकार से सम्बोधित करना।

हुस्ने ख़ुदादाद (حسن خداداد) अः फा. पुं.–ईश्वर का दिया हुआ सौंदर्य, अर्थात् प्राकृतिक सुंदरता, ईश्वरदत्त सौंदर्य।

हुस्ने ख़ुल्क (حسن خلق) अ. पुं.–दे. 'हु. अख़्लाक़'।

हुस्ने गंदुमगूँ (حسن گندم گوں) अ. फा. पुं.–गेहुएँ रंग का सौंदर्य।

हुस्ने गंदुमीं (حسن گندمیں) अ. फा. पुं.–दे. 'हु. गंदुमगूँ'।

हुस्ने गुफ़्तार (حسن گفتار) अ. फा. पुं.–बोल-चाल की शिष्टता और माधुर्य।

हुस्ने गुलूसोज़ (حسن گلوسوز) अ. फा. पुं.–साँवलापन, मलाहत।

हुस्ने ज़न (حسن ظن) अ. पुं.–किसी की ओर से अच्छा ख़याल, सुधारणा।

हुस्ने तक़्रीर (حسن تقریر) अ. पुं.–भाषण या बातचीत की सुंदरता और मधुरता।

हुस्ने तद्बीर (حسن تدبیر) अ. पुं.–प्रयत्न की पटुता, युक्ति-चातुर्य; प्रबंध की कुशलता; कूटनीति, पालीसी।

हुस्ने तलब (حسن طلب) अ. पुं.–माँगने का अच्छा ढंग, ऐसे ढंग से चीज़ माँगना कि देनेवाला देते हुए ख़ुशी महसूस करे।

हुस्ने ता'लील (حسن تعلیل) अ. पुं.–एक अर्थालंकार।

हुस्ने नज़र (حسن نظر) अ. पुं.–दृष्टि की अच्छे बुरे की परख,

दृष्टि का केवल अच्छी चीज़ों को छाँटना और उन्हीं की ओर जाना।

हुस्ने नमकीं (حسن نمکیں) अ. फा. पुं.–साँवला हुस्न, नमकीनी, मलाहत।

हुस्ने फ़िरंग (حسن فرنگ) अ. फा. पुं.–इंगलिस्तान का सौंदर्य, जिसमें दिखाऊपन ज़्यादा होता है।

हुस्ने बिरिश्तः (حسن برشتہ) अ. फा. पुं.–साँवला हुस्न, मलाहत।

हुस्ने मत्ला' (حسن مطلع) अ. पुं.–ग़ज़ल में पहले शे'र (मत्ला) के बादवाला शे'र।

हुस्ने मलीह (حسن ملیح) अ. पुं.–साँवलापन, मलाहत, नमकीनी।

हुस्ने महफ़िल (حسن محفل) अ. पुं.–जिससे सभा की रौनक़ हो, ऐसा व्यक्ति।

हुस्ने मुक़ैयद (حسن مقید) अ. वि.–सांसारिक सौंदर्य, परिमित सुंदरता।

हुस्ने मुजस्सम (حسن مجسم) अ. पुं.–जो सर से पाँव तक हुस्न ही हुस्न हो, बहुत अधिक सुंदर।

हुस्ने मुत्लक़ (حسن مطلق) अ. पुं.–ईश्वरीय सौंदर्य, जमाले ख़ुदावंदी।

हुस्ने यूसुफ़ (حسن یوسف) अ. पुं.–'यूसुफ़' का सौंदर्य जो सांसारिक रूपों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

हुस्ने लाज़वाल (حسن لازوال) अ. पुं.–दे. 'हुस्ने मुत्लक़'।

हुस्ने सबीह (حسن صبیح) अ. पुं.–गोरापन, शुभ्रता।

हुस्ने सब्ज़ (حسن سبز) अ. फा. पुं.–दे. 'हुस्ने मलीह'।

हुस्ने समाअत (حسن سماعت) अ. पुं.–बात अच्छे प्रकार से ध्यानपूर्वक सुनना; अच्छी आवाज़ और अच्छी बातें सुनना।

हुस्ने साख़्तः (حسن ساختہ) अ. फा. पुं.–अप्राकृतिक रूप, बनावटी हुस्न; अलंकार और आभूषण द्वारा सजाया हुआ हुस्न।

हुस्ने सादः (حسن سادہ) अ. फा. पुं.–बिलकुल साधारण और सरल रूप जिसमें बनावट को तनिक भी दखल न हो।

हुस्ने सादगी (حسن سادگی) अ. फा. पुं.–स्वभाव की सरलता और भोलापन।

हुस्ने सिमाअ (حسن سماع) अ. पुं.–गाने का सौंदर्य, श्रवण रस।

हुस्ने सुलूक (حسن سلوک) अ. पुं.–व्यवहार की शिष्टता; दीन-दुखियों की आर्थिक सहायता।

हुस्नोइश्क़ (حسن وعشق) अ. पुं.–सुंदरता और प्रेम; नायक और नायिका।

हुस्नोजमाल (حسن وجمال) अ. पुं.–रूप और सौंदर्य।

हुस्बः (حصبہ) अ. पुं.–ख़स्रः, हल्की चेचक, दे. 'हसबः', दोनों शुद्ध हैं।

हुस्बान (حسبان) अ. पुं.–गणना, शुमार; अनुमान, अंदाज़ा; गिनती, गिनना।

हुस्साद (حساد) अ. पुं.–'हासिद' का बहु., ईर्ष्या करनेवाले लोग, डाह करनेवाले व्यक्ति।

हू

हूँ (ھوں) फा. अव्य.–सावधानी सूचक शब्द, 'हाँ; घृणा, सूचक शब्द, नहीं।

हू (ھو) फा. उभ.–ब्रह्म, ईश्वर; शून्य, ख़ला; सुन्सान, ख़ाली।

हूत (حوت) अ. स्त्री.–मत्स्य, मछली; मीन राशि, बारहवाँ बुर्ज, बुर्जे हूत।

हून (ھون) अ. पुं.–तिरस्कार, अपमान, बेइज़्ज़ती।

हूबः (حوبہ) अ. पुं.–वह व्यक्ति जो न भलाई कर सके न बुराई; दरिद्र बाल-बच्चे।

हूब (حوب) अ. पुं.–पाप, गुनाह; हत्या, हलाकत।

हूबहू (ھوبہو) फा. वि.–एक-जैसा, बिलकुल एक-सा; सदृश, समान, तुल्य, मिस्ल।

हूर (حور) अ. स्त्री.–'हौरा' का बहु., परंतु उर्दू और फ़ार्सी में एक वचन बोलते हैं; वह स्त्री जिसके बाल और आँखें बहुत स्याह हों और शरीर बहुत गोरा हो; स्वर्ग में रहने वाली सुंदर स्त्री, स्वर्गांगना, स्वर्ग वधू।

हूर (حور) अ. पुं.–हत्या, हलाकत; हानि, नुक़्सान।

हूर जमाल (حورجمال) अ. वि.–जिसका रूप स्वर्गांगना-जैसा हो, अर्थात् बहुत ही सुंदर स्त्री।

हूर तलअत (حورطلعت) अ. वि.–दे. 'हूर जमाल'।

हूर शमाइल (حورشمائل) अ. वि.–स्वर्गांगनाओं-जैसे हाव-भाववाली स्त्री।

हूराने बिहिश्त (حوران بہشت) अ. फा. स्त्री.–स्वर्ग में रहनेवाली स्त्रियाँ, स्वर्गांगनाएँ।

हूरुलईन (حورالعین) अ. स्त्री.–सुंदर आँखोंवाली हूर।

हूरेईं (حورعین) अ. फा. स्त्री.–दे. 'हूरुलईन'।

हूरोक़ुसूर (حوروقصور) अ. पुं.–स्वर्ग और स्वर्गांगना, बिहिश्त और हूर।

हूश (ھوش) फा. वि.–जंगली जानवर, उजड्ड, गँवार।

हूहक़ (ھوحق) अ. स्त्री.–हा-हा, हू-हू, शोरोग़ुल; चहल-पहल, अबादानी।

LIBRARY
HARDWAR

हे

हेच (هیچ) फा. वि.–तुच्छ, पोच; व्यर्थ, बेकार; कोई, कश्चित्।

हेचकस (هیچ کس) फा. वि.–अधम, नीच कमीना; कोई व्यक्ति।

हेचकार: (هیچ کارہ) फा. वि.–निकम्मा, काहिल, जिसके किये–धरे कुछ न हो।

हेचगून: (هیچ گونہ) फा. वि.–क़िसी तरह, कैसे भी।

हेचमदाँ (هیچ مداں) फा. वि.–कुछ न जाननेवाला, निपट मूर्ख।

हेचमदानी (هیچ مدانی) फा. स्त्री.–कुछ न जानना, मूर्खता, अज्ञान।

हेचमयर्ज़ (هیچ میرز) फा. वि.–जिसका कोई मूल्य न हो, बेक़द्र, तुच्छ।

हेचमर्द (هیچ مرد) फा. वि.–दीन और दुःखी व्यक्ति।

हेम (هیم) फा. स्त्री.–'हेमियः' का लघु., जलाने की लकड़ी, ईंधन।

हेमियः (هیمیہ) फा. स्त्री.–ईंधन, जलाने की लकड़ी।

हेलः (هیلہ) फा. पुं.–'हलैलः' का लघु., हड़, हरीतकी।

है

हैअत (هیئت) अ. स्त्री.–रूप, आकृति, शक्ल; ज्योतिर्विद्या, नजूम; आकाशीय पदार्थों की विद्या, खगोल विद्या।

हैयतदाँ (هیئت داں) अ. फा. वि.–खगोल विद्या का जाननेवाला; ज्योतिषी।

हैअते कज़ाई (هیئت کذائی) अ. स्त्री.–वेषभूषा, सूरत शक्ल, ऐसी धज जिसमें कोई हँसी का पहलू हो।

हैअते मज्मूई (هیئت مجموعی) अ. स्त्री.–कोई वस्तु अपने सारे अंगों के साथ।

हैकल (هیکل) अ. स्त्री.–प्रसाद, भवन, बड़ी इमारत; हार, गले की माला; आकृति, रूप; वेशभूषा, सजधज; मूर्तिगृह, मंदिर; कवच, ता'वीज़।

हैज़: (هیضہ) अ. पुं.–क़ै दस्त का घातक रोग, विसूचिका।

हैज़ (حیض) अ. पुं.–आर्तव, पुष्प, रज, ऋतु, कुसुम, स्त्री का मासिक धर्म का ख़ून।

हैज़ए वबाई (هیضۂ وبائی) अ. पुं.–वह हैज़ा जो महामारी की शक्ल में फैला हो।

हैज़ा (حیضا) अ. स्त्री.–रजस्वला, पुष्पवती, जिस औरत को मासिक धर्म हो रहा हो।

हैजा (هیجا) अ. पुं.–युद्ध, समर, जंग, लड़ाई।

हैजान (هیجان) अ. पुं.–अशांति, गड़बड़ी; आवेश, जोश; कोलाहल, शोर; बेचैनी, इज़्तिराब।

हैजानअंगेज़ (هیجان انگیز) अ. फा. वि.–गड़बड़ी मचानेवाला, अशांति फैलानेवाला; बेचैनी फ़ैलानेवाला।

हैजान ख़ेज़ (هیجاں خیز) अ. फा. वि.–दे. 'हैजानअंगेज़'।

हैजानी (هیجانی) अ. वि.–अशांति और बेचैनी से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तु।

हैज़ुम (هیزم) फा. स्त्री.–जलाने की लकड़ी, ईंधन।

हैज़ुमकश (هیزم کش) फा. वि.–लकड़हारा; लगाई-बुझाई करनेवाला।

हैज़ुमकशी (هیزم کشی) फा. स्त्री.–लकड़हारे का काम; लगाई-बुझाई।

हैज़ुमफ़रोश (هیزم فروش) अ. फा. वि.–ईंधन बेचनेवाला, जलाने की लकड़ी का व्यापारी।

हैज़ुमफ़रोशी (هیزم فروشی) फा. स्त्री.–ईंधन बेचने का पेशा।

हैज़ुर्रिजाल (حیض الرجال) अ. पुं.–ग़ीबत, चुग़ली, पिशुनता, निंदा।

हैतान (هیتان) अ. पुं.–अकृत, असत्य, झूठ।

हैदर (حیدر) अ. पुं.–शेर, सिंह, व्याघ्र; हज़रत अली की उपाधि।

हैदरे कर्रार (حیدر کرار) अ. पुं.–हज़रत अली की उपाधि, बारंबार शत्रु की सेना पर टूटनेवाला।

हैफ़ (حیف) अ. पुं.–हा, आह, हाय-हाय, अफ़्सोस।

हैफ़ा (هیفا) अ. स्त्री.–कृशोदरी, पतली कमरवाली।

हैबत (هیبت) अ. स्त्री.–आतंक, रो'ब, धाक; भय, त्रास, डर; तेज, जलाल; प्रताप, इक़्बाल।

हैबतअंगेज़ (هیبت انگیز) अ. फा. वि.–भय उत्पन्न करनेवाला, भयकारक, त्रासजनक।

हैबतअंगेज़ी (هیبت انگیزی) अ. फा. स्त्री.–भय उत्पन्न करना, त्रासजनक होना।

हैबतज़द: (هیبت زدہ) अ. फा. वि.–त्रस्त, भयभीत, डरा हुआ।

हैबतज़दगी (هیبت زدگی) अ. फा. स्त्री.–त्रास, भयभीत होना।

हैबतज़ा (هیبت زا) अ. फा. वि.–दे. 'हैबतअंगेज़'।

हैबतनाक (هیبت ناک) अ. फा. वि.–भयंकर, रौद्र, भयानक, ख़ौफ़नाक।

हैबतनाकी (هیبت ناکی) अ. फा. स्त्री.–भयानक होना, ख़ौफ़नाकी।

हैमा (هیما) अ. पुं.–बे पानी का जंगल, बियाबान।

हैमीयः (هیمیه) फा. स्त्री.–जलाने की सूखी लकड़ी।

हैयः (حیه) अ. पुं.–अहि, सर्प, साँप।

हैयात (حیات) अ. पुं.–'हैयः' का बहु., बहुत से साँप।

हैयाल (حیال) अ. वि.–बहुत बड़ा छली, बहुत बड़ा धूर्त, बहुत बड़ा मक्कार।

हैयिज़ (حیز) अ. पुं.–स्थान, जगह; छोर, किनारा।

हैयिज़े ख़ाकी (حیز خاکی) अ. फा. पुं.–मर्त्यलोक, संसार, दुनिया।

हैयुलआलम (حیی العالم) अ. पुं.–एक बूटी जो सदा हरी भरी रहती है।

हैरत (حیرت) अ. स्त्री.–आश्चर्य, विस्मय, तअज्जुब, अचंभा; निस्तब्धता, चकितता, भौचक्कापन।

हैरतअंगेज़ (حیرت انگز) अ. फा. वि.–आश्चर्यजनक, अजूबा, अजीबोग़रीब।

हैरतअंगेज़ी (حیرت انگیزی) अ. फा. स्त्री.–अजूबापन, आश्चर्यजनकता।

हैरतअफ़ज़ा (حیرت افزا) अ.फा.वि.–आश्चर्यवर्द्धक, अचंभा बढ़ानेवाला।

हैरतकदः (حیرت کده) अ.फा.पुं.–जहाँ हर बात आश्चर्यजनक हो, जहाँ हर तरफ़ अचंभेवाली बातें हों।

हैरतख़ानः (حیرت خانه) अ. फा. पुं.–दे. 'है. कदः'।

हैरतख़ेज़ (حیرت خیز) अ. फा. वि.–दे. 'है. अफ़ज़ा'।

हैरतज़दः (حیرت زده) अ. फा. वि.–चकित, विस्मित, निस्तब्ध, अचंभे में पड़ा हुआ।

हैरतज़दगी (حیرت زدگی) अ. फा. स्त्री.–अचंभे में पड़ा हुआ होना।

हैरतज़ा (حیرت زا) अ. फा. पुं.–दे. 'हैरतअफ़ज़ा'।

हैरतनाक (حیرت ناک) अ. फा. वि.–दे. 'है. अंगेज़'।

हैरत फ़ज़ा (حیرت فزا) अ. फा. वि.–'हैरतअफ़ज़ा' का लघु., दे. 'हैरत अफ़ज़ा'।

हैरतसरा (حیرت سرا) अ. फा. स्त्री.–दे. 'है. कदः''।

हैरतसामाँ (حیرت ساماں) अ. फा. वि.–'दे. 'है. अंगेज़'।

हैरती (حیرتی) अ. वि.–आश्चर्य में पड़ा हुआ, चकित, निस्तब्ध।

हैरते जल्व (حیرت جلوه) अ. स्त्री.–प्रेमिका के दर्शन से उत्पन्न निस्तब्धता।

हैरते हुस्न (حیرت حسن) अ. स्त्री.–सुंदरता के अनुभव से उत्पन्न होनेवाली हैरत।

हैरान (حیران) अ. वि.–चकित, निस्तब्ध, हक्का-बक्का।

हैरानी (حیرانی) अ. स्त्री.–विस्मय, आश्चर्य, तअज्जुब, हैरत।

हैल (حیل) अ. स्त्री.–शक्ति, बल, ज़ोर, ताक़त।

हैलूलः (حیلوله) अ. पुं.–आड़, ओट, आवरण, पर्दा।

हैवान (حیوان) अ. पुं.–पशु, चौपाया; वन-पशु, जंतु, जंगली जानवर; हर वह चीज़ जो प्राण रखती हो, जीवधारी।

हैवानात (حیوانات) अ. पुं.–'हैवान' का बहु., पशुगण, चौपाए, मवेशी।

हैवानी (حیوانی) अ. वि.–पशु-सम्बन्धी; पशुओं का; पशुओं-जैसा।

हैवानीयत (حیوانیت) अ. स्त्री.–पशुता, पाशव, अमानवता, निर्दयता, कठोरता।

हैवाने ज़ाहिक (حیوان ضاحک) अ. पुं.–हँसनेवाला प्राणी, अर्थात् बंदर।

हैवाने नातिक़ (حیوان ناطق) अ. पुं.–बोलनेवाला प्राणी, अर्थात् मनुष्य।

हैवाने मुत्लक़ (حیوان مطلق) अ. पुं.–निरा पशु, बिलकुल जानवर।

हैस (حیص) अ. स्त्री.–युद्ध, कलह, लड़ाई; कुमार्ग गति, बेराही।

हैसबैस (حیص بیص) अ. स्त्री.–वाक्कलह, वादविवाद, तू-तू, मैं-मैं।

हैसियत (حیثیت) अ. स्त्री.–प्रतिष्ठित, इज़्ज़त; आर्थिक अवस्था, माली हालत।

हैसियतदार (حیثیت دار) अ. फा. वि.–प्रतिष्ठित, ज़ी-इज़्ज़त; धनवान्, मालदार।

हैसियतमंद (حیثیت مند) अ. फा. वि.–दे. 'है. दार'।

हैसियते उर्फ़ी (حیثیت عرفی) अ. स्त्री.–सबमें मानी हुई प्रतिष्ठा।

हैहात (هیهات) अ. स्त्री.–हा हंत, हाय अफ़्सोस, हाय-हाय।

हो

होज़ (هوز) फा. वि.–चकित, हैरान; त्रस्त, ख़ौफ़ज़दः।

होज़ाँ (هوزاں) फा. वि.–प्रफुल्ल, विकसित, शिगुफ़्तः, (स्त्री.) नर्गिस का फूल।

होर (هور) फा. पुं.–रवि, सूर्य, सूरज।

होरख़्श (هورخش) फा. पुं.–सूर्य, रवि, सूरज।

होरमुज़्द (هورمزد) फा. पुं.–बृहस्पति, मुश्तरी, एक प्रसिद्ध ग्रह।

होशंग (هوشنگ) फा. पुं.–ईरान का एक प्राचीन नरेश।

होश (هوش) फा. पुं.–बुद्धि, समझ, अक़्ल; संज्ञा, चेतना, ख़बरदारी; विवेक, तमीज़, अच्छे-बुरे के फ़र्क़ की बुद्धि; नशे के उतार की अवस्था।

होशबाख़्तः (ہوش باختہ) फा. वि.–जिसका दिमाग़ ठिकाने न हो, हतसंज्ञ।

होशमंद (ہوش مند) फा. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; सचेत, होशियार।

होशमंदी (ہوش مندی) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता, अक़्लमंदी; चेतना, होशियारी।

होशयार (ہوش یار) फा. वि.–बुद्धिमान्, अक़्लमंद; चतुर, चालाक; सचेत, हवास में; छली, ठग; दक्ष, कुशल, माहिर।

होशयारी (ہوش یاری) फा. स्त्री.–बुद्धिमत्ता; चातुर्य; चेतना; छल; धूर्तता; कुशलता।

होशरुबा (ہوش ربا) फा. वि.–होश उड़ा देनेवाला, संज्ञाहीन कर देनेवाला।

होशोख़िरद (ہوش وخرد) फा. पुं.–संज्ञा और बुद्धि, अक़्ल और तमीज़।

होशोहवास (ہوش وحواس) फा. अ. पुं.–दे. 'होशोख़िरद'।

हौ

हौज़ः (حوضہ) अ. पुं.–छोटा हौज़।

हौज़ः (حوزہ) अ. पुं.–राज का केंद्र, राजधानी; छोर क़नारा; भग, योनि।

हौज (ہوج) अ. स्त्री.–अज्ञानता, नासमझी; आतुरता, अधीरता, जल्दबाज़ी।

हौज़ (حوض) अ. पुं.–पानी का पक्का कुंड जो मस्जिदों या बग़ीचों में होता है।

हौदज (ہودج) अ. पुं.–ऊँट या हाथी की पीठ पर रखी जानेवाली अम्बारी, हौदा।

हौन (ہون) फा. पुं.–खेत की ज़मीन जिसमें ढेले बहुत हों।

हौन (ہون) अ. पुं.–सुख, शान्ति; प्रतिष्ठा, वक़ार; विनय, नम्रता; हलकापन।

हौबः (حوبہ) अ. पुं.–ननिहाल।

हौब (حوب) अ. पुं.–पाप करना, गुनाह करना; इच्छा, ख़्वाहिश; घबराहट; दुःख, रंज।

हौबत (حوبت) अ. स्त्री.–पाप-कर्म, गुनाहगारी।

हौबा (حوبا) अ. स्त्री.–सुखेच्छा, आरामतलबी; आलस्य, काहिली।

हौमः (حومہ) अ. पुं.–महायुद्ध, बहुत बड़ा जंग; हर बड़ी वस्तु।

हौरा (حورا) अ. स्त्री.–गोरी स्त्री जिसके बाल और आँखें स्याह हों।

हौल (حول) अ. पुं.–आसपास, चौगिर्द; शक्ति, तुवानाई।

हौल (ہول) अ. पुं.–भय, त्रास, डर, ख़ौफ़।

हौलअंगेज़ (ہول انگیز) अ. फा. वि.–भय उत्पन्न करनेवाला, भयजनक।

हौलअफ़्ज़ा (ہول افزا) अ. फा. वि.–भय बढ़ानेवाला, भयवर्द्धक।

हौलज़दः (ہول زدہ) अ. फा. वि.–भयभीत, भयाकुल, त्रस्त, डरा हुआ।

हौलज़ा (حول زا) अ. फा. वि.–दे. 'हौलअंगेज़'।

हौलनाक (ہول ناک) अ. फा. वि.–भयंकर, भयानक, भीषण, डरावना, ख़ौफ़नाक।

हौलिगी (ہولگی) अ. फा. वि.–त्रस्त, भयभीत, ख़ाइफ़; उद्विग्न, व्याकुल, परीशान।

हौश (حوش) अ. पुं.–घर, गृह, मकान; स्थान, जगह।

हौसलः (حوصلہ) अ. पुं.–उत्साह, हिम्मत; धृष्टता, ढीठपन; साहस, जुर्अत; उद्दंडता, गुस्ताख़ी; आवेग, जोश, वल्वला।

हौसिलः अफ़्ज़ा (حوصلہ افزا) अ. फा. वि.–उत्साहवर्द्धक, उत्साह बढ़ानेवाला, प्रोत्साहन देनेवाला।

हौसलः अफ़्ज़ाई (حوصلہ افزائی) अ. फा. स्त्री.–प्रोत्साहन, हिम्मत बढ़ाना।

हौसलःमंद (حوصلہ مند) अ. फा. वि.–साहसी, उत्साही, हिम्मती।

हौसलःमंदी (حوصلہ مندی) अ. फा. स्त्री.–उत्साह होना, जोश और वलवला होना।

हौसलःशिकन (حوصلہ شکن) अ. फा. वि.–हिम्मत तोड़नेवाला, उत्साह भेदी, दिल तोड़ देनेवाला।

हौसलःशिकनी (حوصلہ شکنی) अ. फा. स्त्री.–हिम्मत तोड़ना, प्रोत्साहन न देना, दिल तोड़ना।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

पुस्तक लौटाने की तिथि अन्त में अङ्कित है। इस तिथि को पुस्तक न लौटाने पर छै नये पैसे प्रति पुस्तक अतिरिक्त दिनों का दण्ड लगेगा।

STOCK VERIFY
2020
G.K.V. Library

COMPILED